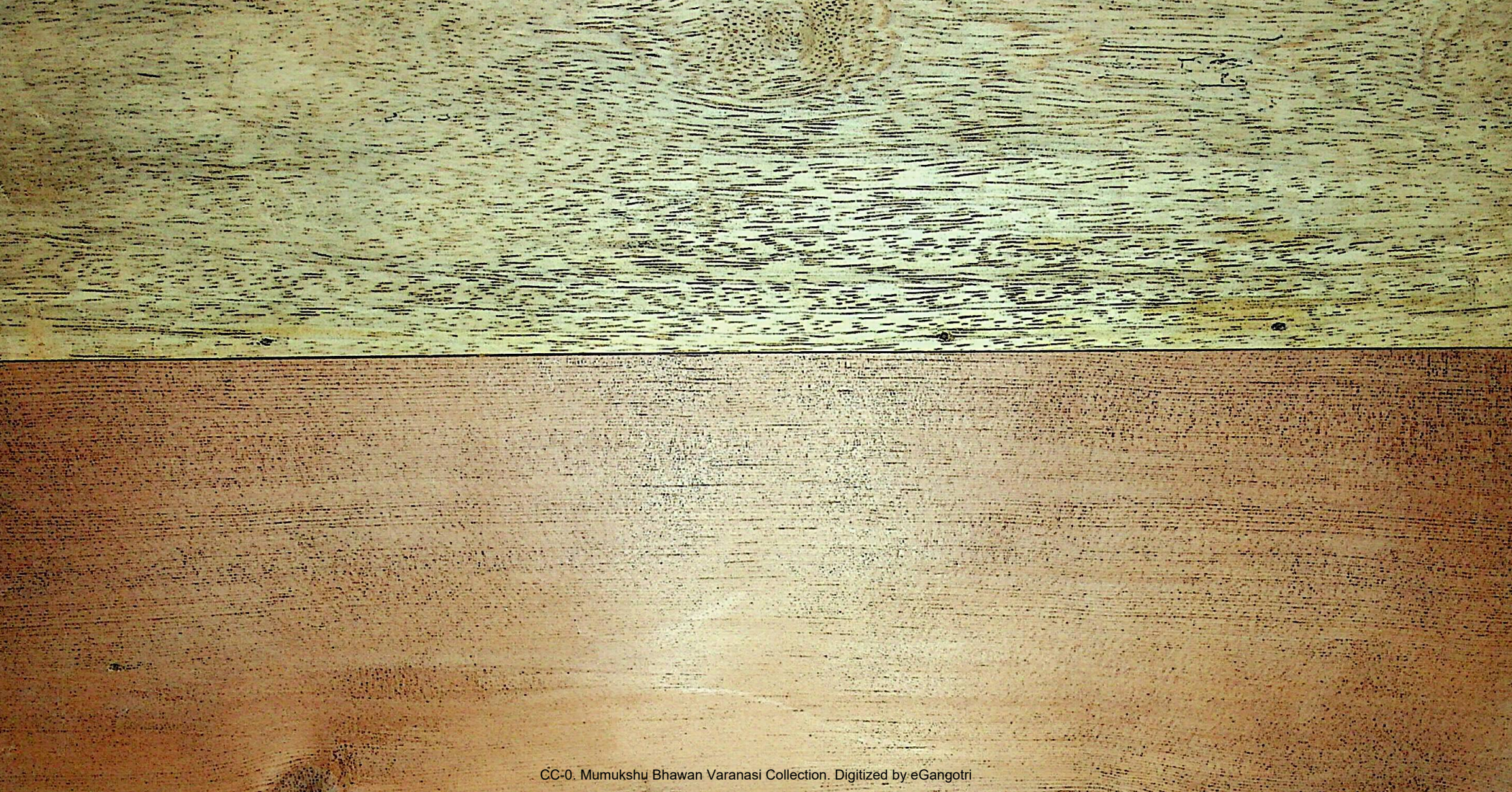

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ अथ श्रीयोगवासिष्ठे वैराग प्रकरणं प्रथमं प्रारभ्यते ॥

श्री १०८ ईश्वर मठ
पुस्तकालय,
मुमुक्षु भवन, वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

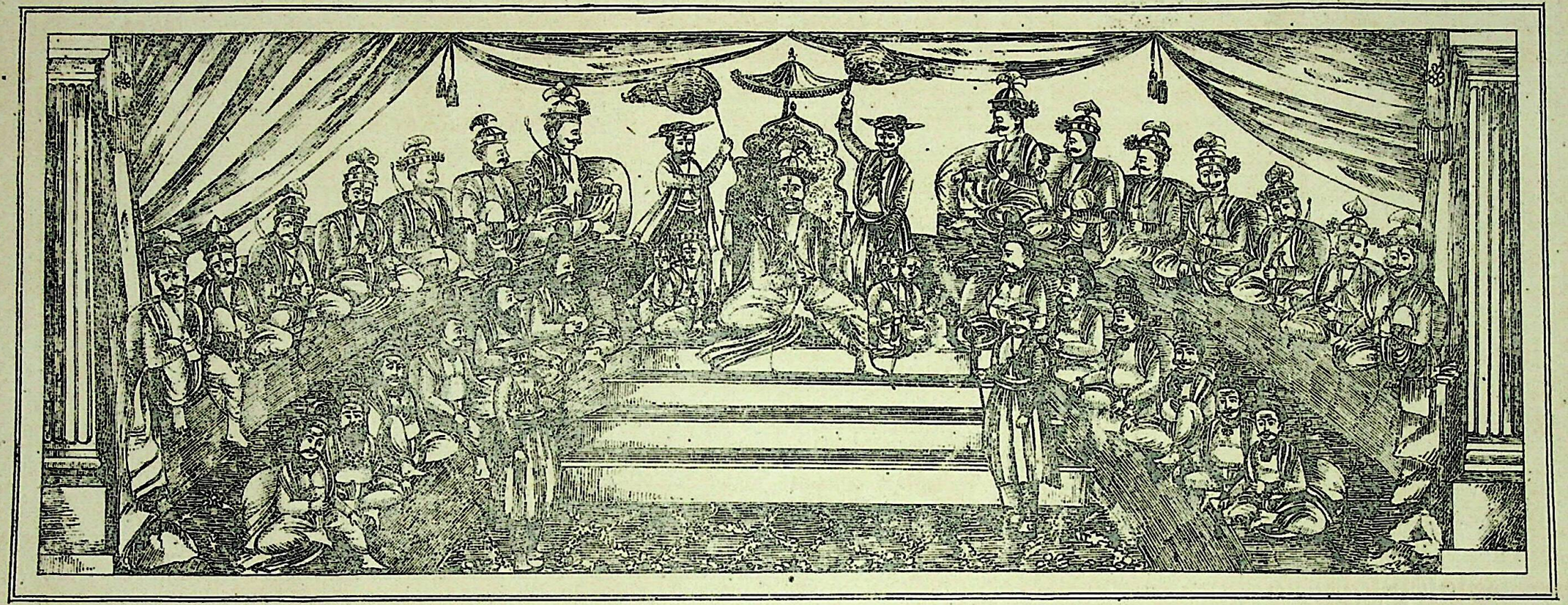

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीपरमात्मनेनमः ॥ ॥ अथ श्री योगवासिष्ठे प्रथम वैराग प्रकरण प्रारंभः ॥ ॥ सत् चित् आनंद रूप जो आत्मा हे तिसकों नमस्कार हे ॥ कैसा हे सत् चित् आनंद रूपसो कहत हैं ॥ जीसतें यह सर्व भासते हे, अरू जीस विषे यह सर्व लीन होत हे, अरु जीस विषे सब स्थित होत हे तिस सत्य आत्माकों नमस्कार हे ॥ ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय, दृष्टा, दर्शन, दृश्य, कर्त्ता, करण, क्रिया, जीसकरकें सिद्ध होतें हें, ऐसा जो ज्ञान रूप आत्मा हे तिसकों नमस्कार हे ॥ जीस आनंदके समुद्रके कणकरि संपूर्ण विश्व आनंदवान् हे, अरु जीस आनंद करि सब जीव जीते हे; तिस आनंद रूप आत्माकों नमस्कार हे ॥ कोऊ अेक सुतिच्छन अगस्तका सिख होत भया, तिसके मनमें अेक संशय उत्पत्ति भया, तिसकों निवृत्ति करनेके अर्थ अगस्त मुनिके आश्रमकों गमन किया॥ जाय कर बिधि संयुक्त प्रनाम करि स्थित भया; ओर नम्रता भावसों प्रश्न करत भया ॥ ॥ सुतिच्छनोवाच ॥ हे भगवन्! सर्व तत्वज्ञसर्व शास्त्रों के ज्ञाता, अेक संशय मुजकों हे, सो तुम कृपा करकें निवृत्त करो, जो मोक्षका कारन कर्म हे अथवा ज्ञान हे, अथवा दोंनों हें ॥ जो मोक्षका कारन होय सो कहो ॥ ॥ अगस्त्योवाच ॥ हे ब्रह्मण्य! केवल कर्म मोक्षका कारन नही, ओर केवल ज्ञानतेंभि मोक्ष प्राप्त नहि होता ॥ दोंनों करकें मोक्षकी प्राप्ति होती हे ॥ कर्म करकें अंतःकरन शुद्ध होता हे ॥ मोक्ष नहि होता ॥ अरु अंतःकरन शुद्धि बिना, केवल ज्ञानतें भि मुक्ति नहि होती ॥ अर्थ इह जो शास्त्रहुंका अर्थ तात्पर्य ज्ञानका निश्चय, अंतःकरन शुद्धि हुअे बीना ज्ञानकी स्थिति नांहि होती ॥ तातें दोंनों करि मोक्षकी सिद्धि होती हे कर्म करकें प्रथम अंतःकरन शुद्धि होती हे ॥ बहुरि ज्ञान उपजता हे ॥ तब मोक्ष सिद्धि होती हे ॥ जेसें दोनो पंख करकें पंखी आकाश मारगकों सुखेनसों उडता हे, तेसें कर्म अरु ज्ञान दोनों कर मोक्षकी सिद्धता होती हे ॥ हे ब्रह्मण्य ! इस अर्थके अनुसार अेक पुरातन इतिहास हे सो तुं श्रवन कर ॥ अेक कारन नाम ब्राह्मन अग्निवेषका पुत्र था ॥ सो गुरुके निकट जाय कर चार बेद खट अंग सहित अध्ययन करत भया ॥ अध्ययन करकें बहुरि गृहमें आवत भया ॥ ओर कर्मतें रहित होय कर तूष्णीस्थित रहा ॥ अर्थ यह जो संशय संयुक्त कर्महितें रहित भया ॥ तब पिताने देख्या जो यह कर्मतें रहित हो कर स्थित भया हे ॥ ऐसा देखकें इस प्रकार कहत भया॥ ॥ अग्निवेषोवाच ॥ हे पुत्र ! कर्मकी पालना क्यों नहि कर्त्ता ॥ ओर तुं कर्मके अकरनेतें सिद्धताकों कैसें प्राप्त होवेगा ॥ जीसकर तुं कर्मतें रहित हुआहे, सो कारन कहिदे ॥ ॥ कारणोवाच ॥ हे पिता एक संशय मुजकों उत्पन्न हुआ हे ॥ तिस करकें में कर्मतें तूष्णी रहाहों, सो श्रवन करो ॥ बेदमें अेक ठोर कहा हे, जो जब लग जीता रहे तब लग कर्मकों करनां ॥ जो अग्नि होत्रादिक कर्म हेसो करताइ रहे ॥ अरु ओर ठोर कहा हे, जो न धन करिकें मोक्ष होता हे न कर्म करकें मोक्ष होता हे, न पुत्रादिक करकें मोक्ष होता हे, न केवल त्यागतें मोक्ष होता हे, इन दोनों विषे मुजकों का कर्त्तव्य हे, यह संशय हे सो तुम कृपा करकें कहो, जो क्या कर्त्तव्य हे ॥ ॥ अगस्त्योवाच ॥ हे सुतिच्छन, ऐसें जब कारननें पिताकों कहा; तब तिसका बचन शुनकर अग्निवेष कहत भया ॥ ॥ अग्निवेषोवाच ॥ हे पुत्र ! अेक कथा मुजतें तुं श्रवन कर ॥ जो पहिलें हुइ हे, तिसकों शुन कर हृदेविषे धरकें, आगें जो तेरी इच्छा होय सोइ करनीं ॥ अेक सुरुचि नाम अप्सरा थी, सो केसीथी जो जेती कछु अप्सरा हैं, तिनविषे उत्तम थी ॥ सो अेक कालमें हिमालयके शिखर पर बेठीथी ॥ सो हिमालय पर्वत केसा हे, सो जो कामना करकें संतप्त जिनके हृदे हे ॥ ऐसे देवता अरु किंनरके गन तहां अप्सराके साथ क्रीडा करते हे बहुरी केसाहे ॥ जहां गंगाजीका प्रवाह लहरी देत चला आता हे ॥ सो गंगा केसीहे जो महा पवित्र जल हे जीसका ऐसे शिखरपर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुरुचि अप्सरा बेठीथी ॥ तिसनें इंद्रका दूत अंतरिक्षतें चला आवता देखा ॥ जब निकट आया तब तिसकों कहा ॥ अहो सौभाग्य देवदूत ! तूं देवगनमें श्रेष्ठहे तुं कहांतें आया, ओर अब कहां जायगा, सो कृपा करकें कहिदे ॥ ॥ देवदूतोवाच ॥ हे सुभद्रे ! तेनें पुछ्या हे सो श्रवन कर ॥ अरिष्टनेमी अेक राजर्षि था सो अपनें पुत्रकों राज दे कर, बैराग लिया, संपूरन विषयोंकी अभिलाषा त्याग करिकें, गंधमादन पर्वतमें जाय कर तप करने लगा ॥ अरू धर्मात्मा था, तिसके साथ मेरा अेक कारज था, सो कार्य करकें में अब इंद्रपास चला जातहों ॥ तिसका में दूतहो ॥ संपूरन वृत्तांत निवेदन करनेकों चलाहों ॥ ॥ अप्सरोवाच ॥ हे भगवन् ! यह वृत्तांत कोंनसा हे ॥ सो मोकों कहो ॥ मेरेकों तुं अति प्रिय हे; यह जांन कर पुछती हों ॥ ओर जो महा पुरुष हे तिनसों कोइ प्रश्न करता हे, तब उद्वेगतें रहित होकर उत्तर कहतें हे, तातें तुं कहिदे ॥ ॥ देवदूतोवाच ॥ हे भद्रे ! जो वृत्तांत हे सो शुन ॥ विस्तार करकें में तुझकों कहता हों ॥ उह जो राजा गंधमादन पर्वतमें तप करनें लगा, अरु वडा तप किया ॥ तब देवताके राजा जो इंद्र हे, तिसने मुजकों बुलाय कर आज्ञा करी जो, हे दूत ! तुं गंधमादन पर्वतपें जाय; विमान ओर अप्सरा ओर नाना प्रकारकी सामग्रीअरु गंधर्व, यक्ष, सिद्ध, किंनर, ताळ, मृदंग, आदि वाजीत्र, संग ले जा ॥ ओर गंधमादन पर्वत केसा हे, जो नाना प्रकारकी लता वृच्छ करकें पूरनहे, तहां जायकें राजाकों विमान पर बेठायकें, इहां ल्याव ॥ हे सुंदरी ! जब इंद्रनें ऐसा कहा, तब में विमान अरु सामग्री सहित जहां राजाथा तहां आया ॥ अरु में राजाकों कहा हे राजन् तेरे कारन विमान ले आया हों, तापर आरूढ होकर तुं स्वर्गकों चल, ओर देवतानके भोग भोगु ॥ जब में ऐसें कहा तब मेरा बचन शुन कर राजा बोलत भया ॥ ॥ राजोवाच ॥ हे देवदूत ! प्रथम स्वर्गका वृत्तांत तुं मुजकों कहिदे ॥ जो तेरे स्वर्गमें दोष कहा अरु गुन कहा हे, तिनकों शुनकें में हृदयमें विचारों, पाछें जो मेरी इच्छा होवेगी तो आऊंगा ॥ ॥ देवदूतोवाच ॥ हे राजन् ! स्वर्गमें बडे दिव्य भोगहे, सो स्वर्ग वडे पुन्यसों जीव पाता हे ॥ जो बडे पुन्यवारे होत हे सो उत्तम सुख स्वर्गकों पातें हे ॥ जो मध्यम पुन्य वारे हे सो मध्यम सुख स्वर्गकों पातें हे ॥ अरु कनिष्ठ पुन्य वारे हे सो कनिष्ठ सुख स्वर्गकों पातें हे ॥ यह तो गुन स्वर्गमें हे सो तोकों कहे ॥ ओर स्वर्गके जो दोष हे सो शुन ॥ हे राजन् ! जो आपतें ऊंचे बेठे द्रिष्ट आते हे, अरु उत्तम सुख भुगते हे तिनकों देखकें तापकी उत्पत्ती होती हे; क्यों जो उनकी उत्कृष्टता सही नही जाती हे ॥ अरू जो कोइ अपने समान सुख भुगते हे तिनकों देखकें क्रोध उपजता हे ॥ जो मेरे समान क्यों बेठे हे ॥ अरु जो आपतें नीचें बेठे हे, जो कनिष्ट पुन्यवारे, तिनको देखकें आपकों अभिमान उपजता हे ॥ जो में इनतें श्रेष्टहों ॥ ओर अेक ओरभी दोष हे जो जब इसके पुन्य छीन होते हे, तब तिसि कालमें इसकों मृत्यु लोकमें गिराय देतें हे ॥ अेक छीनभी रहन देते नही ॥ हे राजन् ! इह जो दोष कहे सो स्वर्गमें हे ॥ जो तेनें पुछा सो मेंनें गुंन अरु दोष कहा ॥ हे भद्रे ! जब इस प्रकार राजाकों मेंनें कहा, तब मोकों राजानें कहा, हे देवदूत इस स्वर्गके जोग हम नांही ॥ अरु हमकों इच्छाभि नही हे ॥ हम उग्र तप करेंगे ॥ तप करकें इस देहकोंबी त्याग देंगे ॥ जेसें सर्प अपनी त्वचाकों पुरातन जांनीकें, त्याग करता हे, तेसें हमभी त्याग करदेंगे ॥ हे देवदूत ! तुम तुमारे विमानकों जहांतें लायाहो, तहां लेजाओ ॥ हमारे तो नमस्कार हे ॥ हे देवी ! जब इस प्रकार राजानें मुजकों कहा, तब विमान अप्सरा आदि सबकों लेकें स्वर्गमें गया, अरु संपूरन वर्त्तमान इंद्रकों कह्या ॥ तब इंद्र प्रसन्न हुआ अरु सुंदर वांनी करकें मुजकों कहत भया ॥ हे दूत, तुं बहुरि जहां राजा हे तहां जा ॥ वह संसारतें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपरांत हुआ हे ॥ इसकों अब आत्म पदकी इच्छा हुइ हे ॥ इसकों साथ लेकें वाल्मीक केपास जा, सो वाल्मिक केसा हे ॥ जीसनें आत्म तत्वकों आत्मा करी जान्या हे ॥ तिसकें पास ले
जाय मेरा संदेशा देना ॥ जो हे महाऋषी ! इस राजाकों तत्वबोधका उपदेश करना ॥ जो यह बोधका अधिकारी हे ॥ काहे तें जो इसकों स्वर्गकीभी इच्छा नांहीं ॥ अरु अवरकीभी
वांछा नही ॥ तातें तुम इसकों तत्वबोधका उपदेश करो ॥ जो तत्वबोधकों पाय करकें संसार दुःखतें मुक्त होवे ॥ हे सुभद्रे ! जब इस प्रकार देवराजानें मुजकों कह्या, तब में चला ॥
जहां राजाथा, वहां जाइ करीकें मेनें कह्या, जो हे राजन् ! तुं संसार समुद्रतें मोक्ष होनेके निमित्त वाल्मीकके पास चल ॥ वाल्मीक तुजकों उपदेश करेगा ॥ तब तिसकों साथ ले कर,
में वाल्मीकके स्थान पर आय प्राप्त भया ॥ तिस स्थानमें राजाकों बेठाया ॥ अरु इंद्रका संदेशा दिया ॥ जो उहां बृत्तांत भया सो सुन ॥ जब उहां गये; अरु प्रनाम कर बेठे,
तब वाल्मीकनें कह्या ॥ हे राजन् ! कुशल हे ? ॥ ॥ राजोवाच ॥ हे भगवन् ! परम तत्वज्ञ, ओर वेदांत जानने वारेमें श्रेष्ठ में अब कृतारथ हुआ ॥ तुमारे दर्शन करकें, अब मुझकों
कुशल हुआ हे ॥ अरू कछु पुछता हों ॥ कृपा करकें उत्तर केहेना, जो संसार बंधनतें मुक्ति होय ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे राजन् ! महारामायण ओरवद तुझकों कहता हों ॥ सो
श्रवन करकें तिसका तात्पर्य हृदेविषे धारणका यत्न कर ॥ जब तात्पर्य हृदे बिषे धरेगा, तब जीवन्मुक्त होय कर बीचरेगा ॥ हे राजन् ! वसिष्ठजी अरु रामचंद्रजीका संवाद हे ॥ तिसमें
सब कथा मोक्षका सोइ उपाय कहा हे ॥ तिसकों शुनकें जेसें रामचंद्रजी अपने स्वभाव बिषे स्थित हुअे, अरु जीवन्मुक्त होयकें बिचरे हे, तेसे तुंभी बिचरेगा ॥ .. ॥ राजोवाच
हे भगवन् ! रामचंद्रजी कवन था, अरू केसाथा, अरू केसें होकर बिचर्या हे, सो कृपा करकें कहो ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे राजन् ! शापके बसतें, हरि जो विष्णु तिननें छल धरकें
मनुष्यका देह धर्या, सो अद्वैत ज्ञानकर संपन्न हे, तोभी कछुक अग्यानको अंगीकार करकें, मनुष्यका शरीर धर्या था ॥ ॥ राजोवाच ॥ हे भगवन् ! चिदानंद रूप जो हरी हे, ति
सकों शाप किस कारन हुआ ! अरू किसने दिया, सो कहो ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे राजन् ! अेक कालमें सनत्कुमार जो निष्काम हे सो ब्रह्मपुरीमें बेठे थे; अरू त्रिलोककापती
जो विष्णु भगवान, सो वैकुंठतें उतरकें ब्रह्म पुरीमें आये ॥ तब ब्रह्मा सहित सर्व सभा उठकें खडी हुइ ॥ अरु पूजन किया ॥ अरु सनत्कुमारनें पूजन किया नांहीं ॥ तिसकों देख
कर विष्णु भगवान बोलत भया ॥ हे सनत्कुमार ! तुजकों निष्कामताका अभिमान हे ॥. तातें तुं काम करकें आतुर होवेगा, अरु स्वामी कार्त्तिक तेरा नाम होवेगा ॥ जब विष्णु भग
वाननें ऐसा कहा, तब सनत्कुमार बोला हे विष्णु ! सर्वज्ञताका अभिमान तुजकों हे ॥ तेरी सर्वज्ञता कोइ काल निवृत्त होवेगी, अरु अज्ञानी होवेगा ॥ हे राजन् ! अेकतो इह साप
हुआ; ओरभी शुन ॥ अेक कालमें भृगुकी स्त्रीजात रहीथी; तिसके विजोगकर वह ऋषी तपायमान हुआथा ॥ तिसकों देखकें बिष्णुजी हसे, तब भृगु ब्राह्मनने शाप दिया ॥ हे बिष्णु !
मेरेपर देखी तेंनें हांसी करी हे ॥ सो मेरी नांइ तुंभी स्त्रीके विजोग कर आतुर होवेगा ॥ अरु एक दिवस देवशर्मा ब्राह्मननें नरसिंगभगवानकों शाप दियाथा ॥ सो सुन ॥ अेक दिनां
नरसिंह भगवान गंगाके तीरपर गयेथे, तहां देवशर्मा ब्राह्मनकी स्त्रीथी ॥ तिसकों देखकें, नरसिंहजी भयानकरूप देखायकें हसे ॥ तिनकों देखकें, ऋषीकी लुगाइनें भय पाय प्रान
छोडदीने, तब देवशर्माने शाप दिया ॥ जो तुमने मेरी स्त्रीका विजोग किया तातें तुमभी स्त्रीकाविजोग पाओगे ॥ हे राजन् ! सनत्कुमार, अरू भृगु अरू देवशर्मा के शाप करकें विष्णु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवाननें मनुष्यका शरीर धर्या ॥ सो राजा दशरथके घरमे प्रगटे ॥ हे राजन् ! अे जो शरीर धर्या हे, अरु आगें जो वृत्तांत हुआ हे सो सावधान होय श्रवन कर ॥ दिव्य जो हे देव लोक, अरु भू जो हे पृथ्वी लोक, अरु पाताळ लोक अेसी त्रिलोकीकों प्रकाशता हे ॥ अरु अंतर बाहिर आतम तत्वकरी पूरन हे ॥ ऐसा अनुभवात्मक मेरा आत्मा हे ॥ तिस सर्वात्माकों नमस्कार हे ॥ हे राजन् ! इहशास्त्र जो आरंभ किया हे, तिसका बिषय क्या हे ! अरू प्रयोजन क्या हे ; अरू संबंध क्या हे ! अरु अधिकारी कोन हे ; सो श्रवन कर ॥ सत, चित, आनंद, रूप अचिंत्य चिन्मात्र आत्माकों जतावता हे, सो विषय हे ॥ अरू परमानंद आत्माकी प्राप्ती, अरु अनात्म अभिमान दुःखकी निवृत्ति इह, प्रयोजन इसमें हें अरु ब्रह्मविद्या मोक्ष उपाय कर आत्मपद प्रतिपादन हे, सो संबंध हे ॥ अरु जीसकों यह निश्चय हे, जोमें अद्वैत ब्रह्म अनात्म देह साथ बांध्या हुआहों, सो किसी प्रकार छुटों सो, न अति ग्यान वान हे, न मूर्ख हे ॥ अेसा जो विकृति आत्मा हे, सो इहां अधिकारी हे ॥ इस, शास्त्रका मोक्ष उपाय हे ॥ परंतु केसा हे , मोक्ष उपाय परमानंदकी प्राप्ती करनहारा हे ॥ जो पुरुष इसकों विचारे सो ग्यांनवान होवे ॥ बहुरी जन्ममृतक संसारमें न आवे ॥ हे राजन् ! यह महा रामायण जो हे सो पावन हे ॥ श्रवन मात्रतें सब पापका नाश कर्त्ता हे ॥ जीस विषे रामकथा हे सो प्रथम में अपने भारद्वाज शिष्यकों श्रवन कराइ हे ॥ अेक समे भारद्वाज चित्तकों अेकाग्र करकें मेरे पास आया था ॥ तिसकों में उपदेश किया था ॥ तिसकों श्रवन करकें वचनरूपी समुद्रतें सार रूपी रत्न निकार करकें हृदे विषे धरकें अेक समे सुमेरू परवतपर गया ॥ तहां पितामह जो ब्रह्मा सो बेठाथा ॥ अरू भारद्वाजनें जायकर प्रनाम किया ॥ अरु पास बेठा ॥ अरु ब्रह्माजीकों यह कथा सुनाइ ॥ तब ब्रह्मानें प्रसंन होय कर भारद्वाजकों कह्या ॥ हे पुत्र ! कछुवर मांग ! में तुझ पर प्रसंन हुआ हों ॥ हे राजन् ! जब इस प्रकार ब्रह्माजीनें कह्या, तब परम उदार जिसका आशय हे, ऐसा जो भारद्वाज सो कहत भया ॥ हे भूत भविष्यके इश्वर ! जब तुम प्रसंन हुवे हो, तब यह वर देहु : जो संपूर्ण जीव संसार दुःखतें मुक्त होहीं ॥ अरु पदम परकों पावहीं ॥ सो उपाय कहो ॥ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ हे पुत्र ॥ तुं अपने गुरु वाल्मीकपास गमन कर ॥ बहुरी जो तिसनें, आत्मबोध महारामायन अनिंदित शास्त्रका आरंभ किया हे, तिसकों शुंन कर जीव महा मोह संसार समुद्रतें तरेंगे ॥ केसा शास्त्र हे, महा रामायन, जो संसार समुद्र तरनेका पूल हे, अरु परम पावन हे ॥ ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे राजन् ! जब इस प्रकार कहा, तब आप परमेष्टी ब्रह्मा सो भारद्वाजकों साथ ले कर मेरे आश्रममें आये ॥ तब मैंने भले प्रकारसों इसका पूजन किया ॥ सो ब्रह्माजी केसे हें , सर्व भूतके हितमें प्रीती हे जीसकी, सोमुजको कहत भये ॥ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ हे मुनीमें श्रेष्ठ वाल्मीक ! यह जो रामके सुभावका कथनका आरंभ तुमी किया हे तिस उद्यमका त्याग नांहीं करना ॥ इसकों आदीतें अंत पर्यंत समाप्त करना ॥ केसा हे यह मोक्ष उपाय, जो संसार रूपी समुद्रके पार करनेको जहाज हे ॥ इस कर सब जीव कृतार्थ होवेंगे ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे राजन् ! इस प्रकार ब्रह्माजी मुजकों कहीकें अंतर्ध्यान हो गये ॥ जेसें समुद्रतें आवर्त्त चक्र अेक मुहूर्त्त पर्यंत उठकें बहुरी लीन हो जावे तेसें ब्रह्माजी अंतर्ध्यान हो गये ॥ तब में भारद्वाजकों कहा ॥ हे पुत्र ! ब्रह्माजीनें क्या कहा ॥ ॥ भारद्वाजोवाच ॥ हे भगवन् ! तुमकों ब्रह्माजीनें अेसा कहा, जो हे मुनि श्रेष्ठ यह जो तुमनें रामके स्वभावका कथनका उद्यम कियाहे तिसका त्याग नांहीं करनां॥ अंत पर्यंत समाप्तीकरना ॥ काहेतें जो यह संसार समुद्रके पार करनेकों वह कथा जहाज हे ॥ इसकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनेक जीव कृतारथ होवेंगे अरु संसार संकटतें मुक्त होवेंगे ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे राजन् ! जब इस प्रकार ब्रह्माजीनें मुझकों कहा, तब ब्रह्माजीकी आग्याके अनुसार मैंनें ग्रंथ कीया ॥ अरु भारद्वाजकों कह्या ॥ हे पुत्र ! वसिष्ठजीके उपदेशकों पायकर जीस प्रकार रामजी निःशंक होइ बिचरे हैं, तैसें तुंभी बीचर ॥ तब उन प्रश्न किया ॥ ॥ भारद्वाजोवाच॥ हे भगवन् ! जीस प्रकार रामचंद्रजी जीवन्मुक्त होकर बिचरे हे, सो आदीसों क्रम करकें मुजकों कहो॥ ॥वाल्मीकोवाच॥हे भारद्वाज ! रामचंद्र, लछमन, भरत, शत्रुघ्न, सीता, कौशल्या, सौमित्रा, दशरथ, अष्ट तो इंह जीवन्मुक्त हुअे हैं ॥ अरु अष्टमंत्री, अष्टगुण, अरु वसिष्ठ वामदेवतें आदि अष्टविंशति जीवन्मुक्त होय बिचरे हे, तिनके नाम सुन ॥ रामजीतें लेक र दसरथ पर्यंत आठतो ये कृतारथ हुअे हे ॥ अविरोध परम बोधवान भये हैं ॥ ओर कुंतभासी १, शतवर्धन २, सुखधाम ३, बिभीषण ४, इंद्रजित ५, हनुमान ६, वसिष्ठ ७, वामदेव ८, अे अष्टमंत्री सो निःशंक होय चेष्टा करत भये हे; अरु सदा अद्वैत निष्ट हुअे हे ॥ इनकों कदाचित् स्वरूपतें द्वैत भाव नही फुर्या हे ॥ अनामय पदविषे स्थितिमें तृप्त रहे हे ॥ जो केवळ चिन्मात्र, शुद्धपद, परमपावन, ताकों प्राप्त हुअे हे ॥ ॥ इतिश्री यो० वै० कथारंभ वर्णनं नाम प्रथमः सर्गः॥ ॥ १ ॥ ॥ भारद्वाजोवाच ॥ हे भगवन् ! जीवन्मुक्तकी स्थिति केसी हे ? अरु रामजी केसें जिवन्मुक्त हुअे हे ? सो आदीतें लेकर अंत पर्यंत सब कहो ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे पुत्र ! यह जगत जो भासता हे, सो वास्तविक कछु नही उत्पत्ति भया ॥ अविचार करकें भासता हे ॥ विचार कियेतें निवृत्ति हो जाता हे ॥ जेसें आकाशमें नीलता भासती हे सो भ्रम करकें हे; जब बिचार करकें देखियें तब नीलता प्रतीति दूर हो जाती हे ॥ तेसें अविचार करकें जगत भासता हे ॥ अरु विचारतें लीन हो जाता हे ॥ हे शिष्य; जबलग सृष्टिका अत्यंत अभाव नही होता; तब लग परम पदकी प्राप्ती नांहीं होती ॥ जब दृश्यका अत्यंत अभाव होय जावे, तब पाछें शुद्ध चिदाकाश आत्मसत्ता भासेगी ॥ कोइ इस दृश्यकों महा प्रलयमें कदाचित अभाव कहते हैं; परंतु में तुजकों तीनोइ कालका अभाव कहता हों ॥ सो सशास्त्रकर इसशास्त्रमें श्रद्धा संयुक्त आदीतें लेकर अंत्यतक श्रवन करे; अरु तिनकों धारन करे तब भ्रांति निवृत्ति होय जावे ॥ अरु अव्याकृत पदकी प्राप्ती होवे ॥ हे शिष्य ! संसारभ्रम मात्र सिद्ध हे, इसकों भ्रम मात्र जानकर विस्मरन करनां, यही मुक्ती हे ॥ अरु इसकों बंधनका कारन बासना हे ॥ बासना करकें भटकत फीरता हे ॥ जब वासनाका क्षय होय जाय, तब परम पदकी प्राप्ती होवे ॥ अेक बासनाका पुतला हे तिसका नाम मन हे ॥ जेसें जल सरदीकी दृढ जडतापायकें बरफ होता हे, पाछें सूर्यके तापतें बहुरी पिगलकर जल होता हे, तब केवळ शुद्ध जल होय रहता हे ॥ तेसें आत्मा रूपी जल हे, तिस बिषे संसारकी सत्यता रूपी जडता सीतलता हे ॥ तिस करकें मनरूपी बरफका पुतला हुआ हे, जब ज्ञानरूपी सूर्य उदय होवेगा, तब संसारकी सत्यतारूपी जडता, सीतलता, निवृत्त हो जावेगी ॥ जब संसारकी सत्यता अरु वासना निवृत्त हुइ, तब मन नष्ट हो जावेगा ॥ जब मन नष्ट हुआ, तब परम कल्यान हुआ ॥ तातें इसकों बंधका कारन वासना हे ॥ अरु वासनाके क्षय हुवेंतें मुक्ति हे॥ सो वासना दो प्रकारकी हे ॥ अेक शुद्ध अरु दुसरी अशुद्ध ॥ यह जो अपने वास्तविक स्वरूपके अज्ञानतें अनात्मा जो देहादिक, तिनमें अहंकार करना, जब इसको अनात्ममें आत्म अभिमान हुआ, तब नानाप्रकारकी वासना उपजती हे ॥ तिस करकें घटी यंत्रकी नांइ पड्या भ्रमता हे ॥ हे साधु ! यह जो पंच भूतका शरीर तुं देखता हे ॥ सो सब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वासना रूप हे ॥ वासना करकें खडा हे ॥ जेसें मणके धागेके आश्रयतें खडे होते हे, जब धागा टुट पर्या, तब मनका न्यारा न्यारा होय पडतें हे, अरु ठहरता नांही हे ॥ तेसें वासनाके क्षय हुअे पंचभूतका शरीर नही रहता ॥ तातें सब अनरथका कारन वासना हे ॥ अरु जो शुद्ध वासना हे तिनमें जगत्का अत्यंत अभाव निश्चय होता हे ॥ हे शिष्य! अग्यानीका जो निश्चय हे, सो वासना कर बहुरी जन्मका कारन हो जाता हे ॥ अरु ग्यानीकी वासना सो बहुरी जन्मका कारन नही होता ॥ जेसें अेक कच्चा बीज होता हे ॥ दुसरा दग्ध बीज होताहे ॥ तिसमें जो कच्चा हे सो बहुरी उगता हे अरु जो दग्ध हुआ हे सो बहुरी नांही उगता ॥ तेसें अग्यानीकी वासना रस सहित हे, सो जनमका कारन हे ॥ अरु ज्ञानीकी वासना रस रहित हे, सो जनमका कारन नही ॥ ज्ञानीकी चेष्टा स्वाभाविक गुन करकें पडी होती हे ॥ उह किसी गुन साथ मिलकर अपनेमें चेष्टा नांही देखता ॥ खाताहे॥ पीता हे ॥ लेता हे ॥ देता हे ॥ बोलता हे ॥ चलता हे ॥ व्यवहार करता हे ॥ अरु अंतर सदा अद्वैत निश्चयकों धरता हे॥ कदाचित् द्वैत भावना तिसकों फुरती नांही हे ॥ अपने स्वभाव विषे स्थित हे ॥ तातें निर्गुन अरु अरूप हे ताकी चेष्टाभी जनमका कारन नही हे ॥ जेसें कुंभारका चक्र हे, सो जबलग उसकों फेर चढावें, तबलग वह फीरता हे ; ओर जब फेर चढावना छोड दिया, तब स्थीयमानगतीसें उतरत उतरत फीरकें स्थिर रेहे जाताहे ॥ तेसें जबलग अहंकार सहित वासना होती हे तबलग जनम पावता हे ॥ जब अहं कारतें रहित हुआ तब बहुरी जनम नहीं पावता ॥ हे साधु ! यह जो अज्ञानरूपी वासना हे तिसकों नाश करनेका उपाय अेक ब्रह्मविद्या श्रेष्ठ हे ॥ जो ब्रह्मविद्या मोक्ष उपायक शास्त्र हे जब इसतें ओर शास्त्र रूपी गर्तमें गीरेगा, तब कल्पपर्यंत अकृत्रिम पदकों न पावेगा ॥ अरु जो ब्रह्मविद्याका आश्रय करेगा सो सुखनसों आत्म पदकों प्राप्त होवेंगा ॥ हे भारद्वाज ! यह मोक्ष उपाय रामजी अरु वसिष्ठजीका संवाद हे सो विचारने जोग्य हे ॥ बोधका परम कारन हे ॥ तातें आदीतें लेकर अंत पर्यंत मोक्ष उपाय श्रवन कर ॥ जेसें रामजी जीवन्मुक्त बिचरे हे सो सुन ॥ अेक दिनां रामजी बिद्या पढकें अध्ययन शालातें अपने गृहमें आये ॥ अरु संपूरन दिन विचार सहित व्यतीत करतभया ॥ बहुरी मनमें तीर्थ ठाकुरद्वारका संकल्प धर कर पिता दशरथके पास आया ॥ पिता केसा था जो संपूरन प्रजाकों सुखमें रखता था; अरु सब प्रजा तीसके निकट रेहेकें सुख पाइ ॥ तिस दशर थका चरण श्री रघुनाथजीनें गृहन कीया ॥ जेसें सुंदर कमलकों हंस गृहन करे॥जेसें कमलफूलके तले कोमल तरैयां होतिहे, तिन तरैयां सहित कमलकों हंस पकडता हें, तेसें दशर थजीकी अंगुरीनकों रामजी गृहन किया ॥ अरु बोले जो, हे पिता ! मेरा चित्त तीर्थ अरु ठाकुरद्वारके दर्शनकों उठा हे ॥ तातें तुम आग्या करो तो में तीर्थका अरु ठाकुरद्वारका दर्शन कर आउं ॥ में तुमारा पुत्र हुं ॥ तुमारे पालना करनी जोग्य हे॥ ओर आगे में कबी कहा नही यह प्रार्थना अब करी हे ॥ तातें तुम आग्या देहु ; जो में जाउं॥ यह बचन मेरा फेरना नांही ॥ काहेतें जो अेसा त्रिलोकीमें कोउ नांही हे, जीसका मनोरथ इस घरतें सिद्ध हुआ नांही हे ॥ सबका मनोरथ सिद्ध हुआ हे ॥ तातें मुझकों कृपा कर आग्या देहु ॥ वाल्मीकोवाच ॥ ॥ हे भारद्वाज ! इस प्रकार जब रामजी कहा, तब वसिष्ठजी पास बेठेथे, तिननेंभी दशरथकों कहा, हे राजन् ! रामजीकों आग्या देहु ॥ सो तीरथ कर आवे ॥ जो इनका चित्त उठ्या हे ॥ राजकुमार हे इसकों साथ सेना दीजें ॥ धन दीजें ॥ मंत्री दीजें ॥ ब्राह्मण दीजें ॥ जो यह दर्शन कर आवे ॥ हे भारद्वाज ! जब अेसें बिचार किया, तब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शुभ मुहूर्त देखकर रामजीकों आग्या दीनी॥जब चलने लागे, तब पिता अरु माताके चरन लागे ॥ अरु सभकों कंठ लगाइ रुदन करने लागे ॥ तिनकों मिलकर आगें चले ॥ केसें चले जो लछमन आदी जो भाइ हे, ओर मंत्री थे, तिनकों साथ लेकर, अरु वशिष्ठ आदी जो ब्राह्मण विधीकों जानने वारे थे; अरु बहुत धन, बहुत सेना तिनकों साथ ले चले॥ ओर दान पुन्य करते जब गृहके बाहिर नीकसे, तब ऊंहाकें जो लोग थे अरु स्त्रियां थी तिन सबने रामजीके उपर फुल अरु कलीकी मालाकी बरखा करी ॥ सो केसी बरखा जेसें बरफ बरखती हे अरु रामजीकी जो मूर्ति हे सो हृदयमें धर लीनी ॥ इसी प्रकार रामजी उहांसों चले; तहां ब्राह्मन अरु निर्धनकों दान देते देते तीर्थ जो गंगा, जमुना, सरस्वती, आदी देकें हे , इसमें स्नान विधी संयुक्त कर पृथ्वीके चारो कोंन उत्तर, दच्छन, पूर्व, पच्छमकों दान किया ॥ अरु चारों ओर समुद्रके स्नान कीये ॥ अरु सुमेर पर्वतपर गये ॥ हिमालय पर्वतपर गये ॥ संपूरन गंगा आदीके स्नान कीये ॥ अरु शाळीग्राम, बद्रिकेदार, आदीमें स्नान किये ॥ अरु दरशन किये ॥ अेसें सब तीर्थ स्नान, दान, तप, ध्यान, विधी संयुक्त यात्रा करत भये ॥जेसी जेसी जहां बिधी थी तेसी तेसी तहां करी अेक वर्षमें संपूर्न यात्रा करकें रामजी बहुरी अपने नगरमें आये ॥ ॥ इतिश्री यो० वै०तीर्थयात्रा वर्णनं नाम द्वितीयः सर्गः ॥ ॥ २ ॥ ॥ वाल्मीकोवाच॥ हे भारद्वाज ! जब रामजी यात्रा करकें अपनी अयोध्यामें आवत भये, तब नगरके वासि लोग पुरुष ओर स्त्री फुलकी ओर कली की बरखा करत भये ॥ अरु जे जे शब्द मुखतें उचारन लागे, अरु बडे उत्साहकों प्राप्त भये ॥ ओर जेसें इंद्रका पुत्र अपने स्वर्गमें आवत हे, तेसें रामचंद्रजी अपने घरमें आये ॥ पहिलें राजा दशरथकों प्रनाम कर, फिर वशिष्ठजीकों प्रनाम कर, फिर सब सभाके लोगकों जथा जोग मिलकें, फिर अंतःपुरमें आवत भये ॥ तहां कौशिल्या आदि जो माता थी इनकों जथाजोग नमस्कार किये ॥ ओर जो भाइ बांधव कुटुंब था तिन सबनकों मिले ॥ हे भारद्वाज ! इस प्रकार रामजीके आवनेका उत्साह सप्तदिनपर्यंत होत रहा ॥ वा समयमें कोउ मिलने आवे कोउ कछु लेंनें आवे तिनकों दानपुन्य करत बाजे बजत बहुत, उत्साह हुआ ॥ भाट आदि स्तुति करन लागे ॥ तदनंतर रामजीका आचरन हुआ सो सुन ॥ प्रातः कालमें उठकें स्नान संध्यादिक सत्कर्म करते ॥ बहुरी भोजन करहीं ॥ बहुरि भाइ बंधुकों मिल अपने तीर्थकी कथा करतेही, देवद्वारके दरशनकी वार्त्ता करते ॥ इस प्रकारसों उत्साह करदिन रातकों बीतावतेथे ॥ अेक दिन प्रातःकालमें उठकें पिताजी दशरथकों देखे सो जेसें चंद्रका तेज हे तेसा तेजवान् देख्या ॥ अरु वशिष्ठादिककी सभा बेठीथी तहां वशिष्ठजीके साथ कथा वार्त्ता रामजी करहीं, तहां अेक दिन राजा दशरथ कहत भया, हे रामजी ! तुम शिकार खेलने जैया करो ॥ ता समयमें रामजीकी अवस्था वर्ष १६ में थोरेक महिना कमतीका राजकुमार था॥अरु लछमन, शत्रुघ्न भाइ तब साथ थे॥ भरत नहांनकों गयाथा ॥तिनहुं साथ चरचा हुलास करहीं फिर तिनके साथ स्नानसंध्यादिक नित्य कर्म करकें भोजन करकें शिकार खेलने जाते ॥ तहां जो जीवकों दुःख देंनहारे जानवर देखे तिनकों मारते॥ अरु अवर लोककों प्रसंन करतें, इसप्रकार दिनकों शीकार खेलत जाते॥रात्रीकों बाजते निसांन अपने घरमें आवते॥अेसें करत केतेक, दिन बीते तब रामजी बाहीरते अपने अंतःपुरमें आय शोक सहित स्थित भये ॥ हे भारद्वाज ! जेती कछु राजकुमारकी चेष्टा थी सो सब कों त्याग करकें अेकांत विषे चिंता सहित बैठी रहते ॥ जेते कछु रस संयुक्त इंद्रियोंके विषय हे इनकों त्यागकें शरीरतें दुर्बल जेसे होत मुखकी कांती घट गई ॥ पीत बरन होय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गये ॥ जेसें कमल शुखकें पीतबरन होय जाता हे तेसें रामजीका मुख पीरा होय गया ॥ अरु सुखे कमलपर भंवरे बेठतेहे तेसें शुखे मुखकमलपर नेत्ररूपी भंवरे भासन लागे ॥ सोइ शोभा होन लगी ॥ अरु इच्छा निवत्त होय गइ ॥ जेसें शरत्कालमें ताल निर्मल होताहे; तेसें इच्छारूपी मलनतें रहित चित्तरुपी तालइ निर्मल होता हे ॥अरु दिन दिनपें शरीर निर्बल होत जावे अरु जहां बेठे तहां चिंता संयुक्त बेठे रहि जावे ॥ उठें नांही ॥ अरु बेठे तब हाथपें चिबुक धरकें बेठे ॥जब टहलुअे मंत्री बहुत कहहीं, जो हे प्रभो! यह स्नान संध्याका समय हुआ हे सो अब उठो, तब उठकर स्नानादिक करहीं ॥ अरु हृदयमें न बिचारहीं ॥ जेती कछु खाने पीने, बोलने, चलने, पहिरनेकी क्रिया हे सो सब बिरस होय गइ हे ॥ अेसें रामचंद्रजी भये ॥तब लछमन अरु शत्रुघ्न रामजीकों संशययुक्त देखकें तिस प्रकार हो बेठे ॥ तब दशरथ यह बारता सुनकें रामजी पास आय बेठे ॥ अरु देखे तब महा कंश जेसा होय गया हे ॥ इस चिंता करकें आतुर हुआ ॥ जो हाय हाय इनकी क्या अवस्था हुइ हे ! इस शोकके लिये रामजीकों गोदमें बेठाये ॥ अरु पूछन लगा, कोमल सुंदर शब्द करकें बोले॥ जो हे पुत्र ! तुमकों क्या दुःख प्राप्त भया हे, जीस कर तुम शोकवान हुअे हो ॥ तब रामजीने कहा जो हे पिंता ! हमकों तो दुःख कोउ नांही हे ॥ अेसें कहेकें चुप हो रहा ॥ जब कितेक दिवस इस प्रकार बितीत भये ॥ तब राजाबी शोकवान हुआ ॥ अरु सब स्त्रियांबी शोकवान भइ ॥ अरु राजा, मंत्री, मिलकें बिचार करन लगे जो पुत्रका किसी ठोर विवाह करना ॥ अरु यहभी विचार किया ॥ जो क्या हुआ हे, जो मेरे पुत्र शोकवान होय रहते हे ॥ तब वशिष्ठजीकों पुछा, जो हे मुनीश्वर ! मेरे पुत्र शोकमें क्यों रहेते हे ! तब वशिष्ठजीने कहा॥हे राजन् !महा पुरुषकों जो क्रोध होता हे, सो कीसी अलप कारन कर नांही होता॥अरु मोहभी अलप कारन कर नांही होता॥अरु शोकभी अलप कारन कर नांही होता ॥ जेसें, पृथवी, जल, तेज, वायु, आकाश, जो महा भूत हे, सो अलप कारजमें बिकारवान नांही होते ॥ जब जगतकी उत्पत्ति प्रलय होता हे तब विकारवान होते हे ॥ तेसें महा पुरुष अलप कारजमें बिकारवान नही होते ॥ तातें हे राजन् ! तुम शोक करने जोग नांही ॥ अरु रामजी शोकवान हुआ हे, सोभी केसे अर्थके निमित्त होया होवेगा॥ पाछें इसकों सुख मिलेगा ॥ तुम शोक मत करो ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे भारद्वाज ! अेसें वशिष्ठजी अरु राजा दशरथ बिचार करते थे, तिसकालमें विश्वामित्र अपने यज्ञके अर्थ आवत भये ॥राजा दशरथके गृहमें आयकर जेष्टीकों कहत भये; जो राजा दशरथकों कहो ॥ गाधीका पुत्र विश्वामित्र बाहीर खडे हे ॥ तब इननें ओरहुंको जाय कह्या ॥ हे स्वामी ! अेक बडा तपसी द्वारपें आय खडा हे, तीन हमकों कह्या जो राजा दशरथके पास जाय कहो,जो विश्वामित्र आये हे॥सो शुनकें राजा दशरथके पास गये॥अरु कह्या जो विश्वामित्र, गाधीका पुत्र बाहीर खडा हे ॥ अरु संपुरन मंडलेश्वर कर पुज्य जो राजा दशरथ सबन सहीत अपने सिंहासन पर बेठा हे ॥ अरु बडे तेज कर संपंन हे॥तिसकों कह्या, जो विश्वामित्रनें हमकों कह्या हे जो दशरथके पास जाय कहो जो,विश्वामित्र बाहीर खडा हे ॥ हे भारद्वाज ! जब इसप्रकार जेष्टीनें राजाकों कह्या तब राजा जो मंडलेश्वर कर आच्छाद्य बेठाथा अरु बडा तेजवान था सो शुनकर सुबरनके सिंहासनतें उठ खडा हुआ ॥ अरु चरणों करके चल्या ॥ राजाकी अेक ओर बशिष्ठजी, ओर दुसरी ओर वामदेवजी, अरु सुभटकी नांइ मंडलेश्वर, स्तुति करत चले ॥ तब जहांतें विश्वामित्र दृष्टी आये तब तहांते प्रनाम करने लागे ॥ जहांपृथवीपर शीश राजाका लागे तांहां पृथवीभी हीरा मोतीकी सुंदर होय जावे ॥ इसप्रकार शीश नमावत नमावत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजा विश्वामित्रके आगें चल्या॥सो विश्वामित्र केसा हे जो बडी जटा शिर परतें कांध तक परी हुइ अग्नीकी नांइ प्रकाशित हे ॥ अरु शरीर सुवरनकी नांइ प्रकाशता हे ॥ अरु हृदयमें शांति, कोमल स्वभाव, जानवेमें आवे अेसे अरु महा तेजवान्, सुंदर कांति, अरु शांतिरूप, अरु हाथमें वांसकी तंद्री, अरु महा धैर्यवान अेसे विश्वामित्रकों प्रनाम करता राजा दशरथ चरन उपर जाय गिऱ्या ॥ जेसें सूर्य सदाशिवके चरन पर जाय गिरे तेसें मस्तक नँवाय कर कह्या, मेरे बडे भाग्य हुअे जो तुमारा दर्शन हुआ हे ॥ हमारे उपर तुम बडा अनुग्रह किया हे ॥ हमकुं बडा आनंद प्राप्त हुआ हे ॥ जो अनादि, अनंत हे ॥ आदि, मध्य, अंत्यतें रहित अविनाशि हे ॥ अेसा जो अकृत्रिम आनंद हे, सो तुमारे दर्शन कर मुजकों प्राप्त हुआ दृष्टिमें आवता हे॥हे भगवन्! आज मेरे बडे भाग्य हुअे हे! जो में धर्मात्माके गिननेमें आउंगा, काहेतें जो तुम मेरे कुशल निमित्त आये हो॥हे भगवन्! तुमारा आवना हमारा लक्षमें नही था॥अरु तुमने बडा अनुग्रह किया हे॥जेसें सूर्य कोइ कार्य करनेकों पृथ्वीपर आवे, तेसें तुम मुजकों दृष्टीमें आते हो ॥ अरु सबतें उत्कृष्ट दृष्टीमें आते हो काहे तें जो तुममें दो गुन हे ॥ अेक तो क्षत्रियका स्वभाव तुमारेमें हे, अरु दुसरा बंमनका सुभावबी तुमारेमें भासता हे ॥ अरु शुभ गुन कर संपूरन हो ॥ हे मुनीश्वर ! तुम क्षत्रियमेंते ब्राह्मन भये हो॥ अेसी कोइकी सामर्थ्य नही देखी ॥ अरु तुमारा शरीर प्रकाशकर दीखता हे ॥ अरु जीस मारग तुम आये हो, अरु जीस मारग तुम दृष्टी करत आये हो ॥ तहांतें अमृत दृष्टी करत आये हो, अेसा दृष्टी आता हे ॥ हे मुनीश्वर ! तुम आये सो तुमारे दर्शन कर मुझकों बडा लाभ हुआ हे ॥ हे भारद्वाज ! इस प्रकार राजा दशरथ विश्वामित्रकों बोल्या ॥ अरु वशिष्ठजी आय कर विश्वामित्रकों कंठ लगायकें मिले ॥ ओर जो मंडळेश्वर राजा थे इनोंनें बहुत प्रनाम करे ॥ इस प्रकार सब मिले ॥ तब विश्वामित्रकों राजा दशरथ घरमें ले आया ॥ जाहां राज सिंघासन था, तहां आन कर बेठाया ॥ अरु वशिष्ठ वामदेवकों बेठाये ॥ ओर राजा दशरथने विश्वामित्रका पूजन किया ॥ अरु अर्घ पादार्चन करकें प्रदच्छना करी ॥ बहुरी वशिष्ठजीनें विश्वामित्रका पूजन किया ॥ अरु विश्वामित्रनें वशिष्ठजीका पूजन किया॥अेसें अन्योन्य पूजन हुआ॥इस प्रकार पूजन करकें सब अपने अपने आसनपर यथा योग्य बैठे॥ तबराजा दशरथ बोले ॥ हे भगवन् ! हमारे बडे भाग्य हे जो तुमारा दर्शन हुआ ॥ जेसें कोउ तप्तकों अमृत प्राप्ती होवे॥अरु जन्मांधकों नेत्र प्राप्ती होवे, सो आनंद पावे ॥जेसें निर्धनकों चितामणि प्राप्त होवे, अरु आनंदकों पावे ॥ अरु जेसें किसीका बांधव मुवा होय, सो विमान पर चढ्या हुआ आकाशतें आवे, उसकुं जेसा आनंद प्राप्त होवे तेसें तुमारे दर्शन कर, में आनंदकों प्राप्त हुआ हों ॥ हे मुनीश्वर ! तुमारा आवना जिस अर्थ हुआ हे, सो कृपा कर कहो ॥ अरु जो तुमारा अर्थ हे सो पूरन हुआ जानों ॥ काहेतें जो अेसा पदारथ कोउ नांही, जो तुमकों देना कठीन हे ॥ सब कछु मेरे विद्यमान हे ॥ जो तुमारा अर्थ हे, सो निश्चय कर जानने योग्य होय रहा हे ॥ जो कछु तुम आग्या करोगें सो में देऊंगा ॥

॥ इतीश्री योगवासिष्ठे वैराग्य प्रकरणे विश्वामित्रागमनवर्णनं नाम तृतीयः सर्गः ॥ ॥ ३ ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे भारद्वाज ! जब इस प्रकार राजा दशरथनें कहा तब, मु निमें शार्दुल जो विश्वामित्र, सो बहुत प्रसन्न भये ॥ अरु रोम खडे हो आये ॥ जेसें पूर्नमासीके चंद्रमाकों देखकें छीर सागर प्रसंन होता हे, तेसें प्रसन्न होकर कहत भया ॥ हे राजशार्दूल ! तुम धन्य हो ! अेसा क्यों न होवे, जो तुमारेमें दो गुन श्रेष्ठ हे ॥ अेकतो रघुवंशी हो ॥ दुसरा वशिष्ठजी तुमारा गुरु हे ॥ ताकी आग्यामें चलते हो ॥ तातें हें राजन् ! जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कछु मेरा प्रयोजन हे, सो तुमारे विद्यमान प्रगट करता हों, श्रवन करो ॥ दशरात्र यज्ञका मैनें आरंभ कीया हे; सो जब यज्ञकों करनें लगता हों, तब राच्छस, खर अरु दूखन सो आय विध्वंस करते हे ॥ जहां जहां मैं जायकर यज्ञ करता हों, तहां तहां आय कर विध्वंस कर जाते हे, अर्थ इह जो अपवित्र कर जाते हे ॥ जो रुधिर अरु मांस अरु अस्थि सो डार जातें हे ॥ सो स्थान यज्ञ करने योग्य नही रहता ॥ ओर बहुरी मैं ओर ठोर करने लगता हों तहांभी उसी प्रकार अपवित्र करजातें हैं ॥ तिसके नाश करनेके निमित्त मैं तुमारे पास आयाहों ॥ कदाचित् अेसें कहोगे जो तुमभी समर्थ हो ॥ तो हे राजन् ! मैं यज्ञका आरंभ किया हे ॥ तीसका अंग छमा हे ॥ जो उसकों मैं शाप देऊं, तो वह भस्म हो जावे; परंतु श्राप क्रोध बिना होत नांही ॥ अरु क्रोध कियेतें यज्ञ निष्फल हो जाता हे ॥ अरु जो मैं चुप कर रहों हों तो वह राच्छस अपवित्र वस्तु डार जाते हे तातें मैं तुमा री शरन आया हों ॥ मेरा कारज करो ॥ हे राजन् ! तेरा जो रामजी पुत्र हे, सो कमलनेंनं काकपक्ष संयुक्त हे ॥ अरथ यह जो बालक दुसरी शिखासहित रहे हे ॥ तिसकों मेरे साथ देहु ॥ जो राच्छसंकों मारे, तब मेरा यज्ञ सफल होय ॥ ओर तुमारे अेसा शोक करना नही जो मेरा पुत्र बालक हे ॥ यह तो बडे इंद्रके समान शूरवीर हे ॥ इसके समीप वह राच्छस ठहर न सकेंगे ॥ जेसें सिंहकें सन्मुख मृगके बच्चा नहीं ठहर शकता, तेसें तेरे पुत्रके सन्मुख राच्छस न ठहरी शकेंगे तातें मेरे साथ उनकुं तुम देहु ॥ जो तुमारावी धर्म रहेगा अरु जसबी रहे ॥ मेरा कारजबी होवे ॥ इसमें संदेह नहीं करनां ॥ हे राजन् ! अेसा पदारथ त्रिलोकीमें कोउ नांही जो रामजीका किया कछु न होवे ॥ इसीतें मैं तेरे पुत्रकों ले जात हों ॥ यह मेरे करसों ढांप्या रहेगा; अरु इसकों कोइ बीघन में होने न देऊंगा ॥ अरु जो तेरे पुत्र वस्तु हे सो मैं जानता हुं; ओर वशिष्ठजीहु जानते हे ॥ ओर जो ग्यानवान त्रिकाल दर्शी होवेगा, सोभी इसकों जानत होयगा ॥ ओर कोइकी समर्थता नहीं हे, जो इसकों जान सकै; तातें तुम इसकों मेरे साथ देहु, जो मेरे कारजकी सिद्धी होइ ॥ हे राजन् ! जो समे कर कारज होता हे, सो थोरे करभी बहुत सिद्धि पावताहे ॥ जेसें दुतियाके चंद्रमाकों देखकें अेक तंतुका दान किया होय, सोबी बहुत हे; पीछें वस्त्रका दान कियेतें भी तेसा कारज सिद्धि नही होता ॥ तेसें समे कर थोडा कारजभी बहुत सिद्धिकों देता हे ॥ अरु समेबिना बहुत कारजभी थोरे फलकों देता हे ॥ तातें तुम मेरे साथ अब रामजीकों दीजें ॥ खर, दूखन, अे बडे दैत्य हे ॥ सो आयकर मेरा यज्ञखंडन करते हे ॥ जब रामजी आवेंगे तब वह भाज जायगें ॥ रामजीके आगें खडे होय न शकेंगें ॥ इसके तेज कर उह सब अलप हो जावेंगे ॥ जेंसें सूरजकें तेज करके तारागनका प्रकास छीप जाता हे, तेसें रामजीके दर्शन कर वह स्थित न रहेंगें ॥ जेसें गरुडके आगें सरप नांही ठहर सके, तेसें रामजी के आगें राच्छस न ठहर सकेंगे ॥ देख कर भाग जायगे ॥ तातें तुम मेरे साथ देहु जो मेरा कारज होवे; अरु तुमारा धरमभी रहे ॥ रामजीके निमित्त संदेह मत करना वह राच्छ सकी समर्थता नहीं जो रामजीके निकट आवे ॥ अरु मैंभी रामजीकी रक्षा करुंगा ॥ ॥ वाल्मीकोवाच॥हे भारद्वाज ! जब विश्वामित्रनें अेसें कहा तब राजा दशरथ सुनकर तूष्णी रहा, अरु गिर पड्या ॥ अेक मुहूर्त पर्यंत पर्या रहा ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे वैराग्य प्रकरणे विश्वामित्र विषादो नाम चतुर्थः सर्गः ॥ ॥ ४ ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे भारद्वाज ! अेक मुहूर्त्त पाछें राजा उठे अरु महा दीन जेसे हो गये ॥ अरु महा मोहकों प्राप्त होय गये ॥ धैर्य तें रहित होकर बोले ॥ ॥ राजोवाच ॥ हे मुनीश्वर ! तुम क्या कहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामजी अव तो कुमार हे ॥ शस्त्रविद्या, अस्त्रविद्याभी शीखे नांही हे ॥ अवतो फूलकी सजा पर शयन करने वारे हें ॥ वह जुद्धकों क्या जाने ॥ अंतःपुरमें स्त्रियनके पास बैठने वारा हे॥ राजकुमार बालकके साथ खेलने वारा हें ॥ ओर कदाचित् रणभूमी देखीहु नांही हे ॥ भकुटीकों चढायकें कदाचित् युद्धवी नही किया ॥ अरु कमलके नांइ जीसीके हाथ हे ॥ अरु कोमल जीसका शरीर हे ॥ वह राच्छसके साथ युद्ध केसें करेगा ॥ कहुं पथ्थरका अरु कमलकाभी युद्ध हुआ हे ? रामजीका वपु कमल समान कोमल हे ॥ अरु वह महा कूर पथ्थरकी नांइं हे ॥ उनके साथ युद्ध केसें होवेगा ॥ हे मुनीश्वर ! में नव सहस्र वरषका हुआहों ॥ अब दसमा सहस्र लग्या हे ॥ वृद्ध हुआ हों ॥ यह वृद्धावस्थामें मेरे घर पुत्र हुवे हें ॥ सो चारोंके मध्य रामजी कमलनेंन, कछु षोडश वरषका हुआ हे ॥ अरु मुझकों बहुत प्रियतम हे ॥ अरु मेरा प्रान हे ॥ रामजी बिन में अेक छीनभी रही नही शकता ॥ जो तुम इनकों ले जाओगे, तो मेरा प्रान नीकस जायगा ॥ में मृतक हो जाऊंगा ॥ हे मुनीश्वर ! केवल मेराइ अेसा सनेह सो नांही हे ॥ इसका भाइ जो लछमन, भरत, शत्रुघ्न, अरु उसकी माता जो हे ॥ सो सवहीके प्रान रामजी हे ॥ जो तुम रामजीकों ले जाओगे, तो हम सवही मर जायगे ॥ विजोग करकें जो हमकों मारनें आये हो तो ले जाओ ॥ हे मुनीश्वर ! मेरे चित्तमें रामइ पुर रह्या हें ॥ तिसकों में तुमारे साथ केसें देऊं ॥ में उसकों देखत देखत प्रसन्न होताहों ॥ जेसें पूर्नमासीकें चंद्रमाकों देखकर छीर समुद्र प्रसन्न होता हे; अरु चंद्रमाकों देख कर चकोर प्रसन्न होता हे ॥ अरु मेघ बुंदकों देख कर पपैया प्रसन्न होता हें ॥ तेसें रामजीकों देख कर में प्रसन्न होता हों ॥ तव रामजीके बिजोग कर मेरा जीवना केसा होयगा ? ॥ हे मुनीश्वर ! मेरेकों रामजी जेसी प्रिय स्त्रीभी नहीं ॥ अरु धनवी अेसा प्रिय नांही ॥ अरु राजभी अेसा प्रिय नहीं ॥ अवर पदारथभी मुझकों कोइ रामके समान नांही हे॥ अेसा रामजी प्यारा हे॥ हे मुनीश्वर!तुमारे बचन शुनकें वडा शोककों प्राप्त हुआ हों॥मेरे बडे अभाग्य आयें हें, जो तुमारा आवना इस निमित्त हुआ हे ॥ तुमारे बचन शुनकर जेसें कमलके उपर बरफकी बरखा होय अेसी व्यथा मेरेकों होतहे ॥ अरु बरफकी बरखातें जेसें कमल नष्ट हो जाते हें, तेसें तुमारे बचनतें मेरी नष्टता हो जायगी ॥ जेसें वडा मेघ चढ आवे, तामें बडा पवन चले, तब मेघकी गंभीरताका अभाव होय जाय ॥ तेसें तुमारे बचनतें मेरी बडी प्रसंनताका अभाव होय जाताहे॥जेसें बसंत ऋतूकी मंजरी ज्येष्ठ, अषाढमे शूक जाती हे, तेसें तुमारे बचन शुन मेरे हृदेकी प्रसंनता जर जाती हे ॥ हे मुनीश्वर ! रामजीकों देनें में समर्थ नांही हों॥जो तुम कहोतो अेक अक्षौणी सेना मेरी हे, सो बडे शूर वीरकी हे, जीसकों शस्त्रविद्या, अस्त्रविद्या, मंत्रविद्या, सब आती हे॥ ओर सबै युद्धमें चतुर हे तिनके साथ में तुमारे संग चलता हों ॥ जायकर में उनकों मारुंगा ॥ अरु हस्ति, घोडा, रथ, प्यादे, अेसी चतुरंगिनी सेनाकों साथ ले जाओं॥अरु जो तिहारें यज्ञके खंडनहारे हे तिसकों नाश करो॥अरु अेक साथ में युद्ध नांही कर शकोंगा॥जो कदाचित यज्ञ खंडन हारा कुवेरका भाइ,अरु विश्रवसका पुत्र, रावन होवेतो उस साथ युद्ध करनेंकुं में समर्थ नहीं ॥ हे मुनीश्वर ! आगें मेरेमें बडा पराक्रम था; वेसा त्रिलोकीमे कोउकों नांही था ॥ जो मेरे निकट मारनेकों आवे, तो तो वाकों मार देता ॥ अब मेरी वृद्धावस्था हुइ हे; अरु देह जर्जरी भावकों प्राप्त हुआ हे ॥ इस कारन रावन साथ युद्ध करनेकों में समर्थ नहीं ॥ हे मुनीश्वर! मेरे बडे अभाग्य हे जो तुमारा आवना इस निमित्त हुआ हे ॥ अब मेरा वेसा पराक्रम नही ॥ में रावनसों कंपता हों केवल में नहीं कंपता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इंद्रादिक देवता सब रावनतें कंपते हैं॥ अरु राच्छस सब उसके बस बरते हे ॥ अब किसकी शक्ती हे जो रावनके साथ युद्ध करे ? इस कालमें वह बडा सूरबीर हे ॥ हे मुनीश्वर ! जब मेरी समर्थताभी नही रही तो राजकुमार रामजी केसें समरथ होवेंगें ॥ अरु जीस रामजीकों लेन कर तुम आये हो, सो रोगी होय रह्या हे ॥ उसकों चिंता अेसी आय लगी हे, जीसकर वह महा दुर्बल हो गया हें ॥ अरु अंतःपुरमें अेकांतमें बेठ रहता हे ॥खाना पीना इत्यादिक जो राजकुमारकी चेष्टा हे सों सब उसकों विरस हो गइ हे ॥ अरु में नहीं जानता जो उसकों क्या दुःख प्राप्त हुआ हे ॥ जेंसे कमल सुखकें पीतबरन होय जाता हे, तेसा उसका मुख होय गया हे ॥ उसकों युद्ध करनेकी समरथता नही अरु अपने स्थानतें बाहीरकी पृथ्वीभु नहीं देखीहे ॥ सो युद्ध केसें करेंगें ! हे मुनीश्वर ! वह युद्ध करनेकों समर्थ नहीं हे ॥ अरु हमारे प्रान वही हे ॥ जो उसका विजोग होवेगा तो हमारा जीवना नही होवेगा ॥ जेसें जल विना मच्छी जीवती नही हे तेसें रामजी बीना केसें जीवेंगे ॥ अरु जो राच्छसके युद्ध निमित्त कहो तो हम तुमारे साथ चलें अरु रामजी युद्ध करनेकों योग्य नहीं ॥ ॥ इतीश्री योगवासिष्ठे वैराग्य प्रकरणे दशरथोक्ति वर्ननंनाम पंचमः सर्गः॥ ॥ ५ ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे भारद्वाज ! जब इस प्रकार राजा दशरथ कहा, तब महादीन जेसे मोह सहित अधीर्य बान वचन सुनकर, क्रोधसों विश्वामित्र कहत भया ॥ ॥ विश्वामित्रोवाच ॥ हे राजन् ! तुं अपने धरमका सुमिरन कर॥ यह प्रतिज्ञा तेनें करी हे ॥ जो तेरा अर्थ होवेगा सो पूरन करुंगा ॥ ओर पूरन हुवा जानना ॥ अेसा तुमने कहा हे ॥ अब तुं अपने धरमकों त्यागता हे ॥ ओर जो तुं सिंह हुआ मृगोंकी नांइ भाजता हे तो भाज, परंतु आगें रघुवंशमें अेसा कोइ नांही हुआ ॥ जेसें चंद्रमाके मंडलमें शीतलता होती हे ॥ अग्नि नीकसता नांहीं हे ॥ तेसें तुमारे कुलविषे अेसा कदाचित नहीं हुआ; अरु जो तुं करता हे तो कर ॥ हम उठ जांयगे ॥ काहेतें जो शुने गृहतें शुनेइ जाता हे ॥ परंतु यह तुमकों जोग नथा ॥ अरु तुंम बसते रहो ॥ राज करते रहो, अरु जो कछु होवेगा सो हम समझ लेयेंगे ॥ अरु जो अपने धरमकों तुं त्यागता हे, तो त्याग दे ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे भारद्वाज ! इस प्रकार जब संपूर्न क्रोधमान होकर विश्वामित्र बोल्या, तब इसके क्रोधकर पंचास कोट पृथ्वी कंपनें लागी ॥ अरु इंद्रादिक देवताभी भयकों प्राप्त हुवे ॥ जो ये क्या हुवा ॥ तब वसिष्ठ बोले ॥ ॥ वशिष्ठोवाच ॥ हे राजा ! इक्ष्वाकुके कुलमें सब परमार्थी हुअे हें ॥ ओर तुं दशरथ अपने धरमकों क्यों त्यागता हे ? मेरे विद्यमान तेनें कहा हे, जो तुमारा अर्थ होवेगा, सो में पूरन करुंगा, अब तुं क्यों भाजता हे ? रामजीकों इसके साथ दे ॥अरु यही तेरे पुत्रकी रक्षा करेंगे ॥ जेसें सर्पतें अमृतकी रक्षा गरुड करता हे, तेसें तेरे पुत्रकी रक्षा वह करेगा ॥ अरु यह केसा पुरुष हे॥ सो श्रवन कर॥ इसके समान बल किसीका नहीं ॥ साक्षात् बलकी मूरती हे, अरु धर्मात्मा हे, साक्षात् धरमकी मूरती हे, अरु अेसे जो तपसी कोइ नांही हे ॥ अरु तपकी खानी हे ॥ अरु इसके समान कोऊ बुद्धिमान नांहीं हे ॥ अरु इसके समान कोइ सुरमां नांहीं हे ॥ अरु अस्त्र शस्त्र विद्यामें इसी जेसा कोऊ नांहीं हे ॥ काहेतें जो दक्ष प्रजापतीकी दोइ पुत्री थी ॥ अेक जै, अरु अेक सुभगा ॥ सो ये ऋषीकों दीनी हे ॥ अरु जै थी, तीसकों दैत्यके मारने निमित्त पांचसो पुत्रकों प्रगट कीयेथे ॥ अरु सुभगाकेभी पांचसों पुत्र भयेथे ॥ सो सब दैत्यके नाश निमित्त उत्पत्ति कीयेथे ॥ सो स्त्रियां इसके विद्यमान मूर्ती धरके स्थित हुइ हे ॥ तातें इसकों जीतने कोउ समर्थ नहीं हे ॥ जीसका साथी विश्वामित्र होवे, सो त्रिलोकीमें काहु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सों डरे नांहीं ॥ तातें इसके साथ तुं अपना पुत्र दे ॥ अरु संशय मती कर ॥ किसीकी सामरथ नही जो इसके होतें तेरे पुत्रकों कछु कोउ कही सके ॥ इसकी दृष्टीके देखने तें दुःख का अभाव हो जाता हे ॥ जेसें सूर्यके उदयतें अंधकारका अभाव हो जाता हे ॥ हे राजन् ! इसके साथ तेरे पुत्रकों खेद कहा होवे ॥ तुं इक्ष्वाकुके कुलका हे ॥ अरु दशरथ तेरा नाम हे ॥ सो तुं जेसे जब अपने धरममें स्थित न रहे तो ओर जीवतें धरमकी पालना केसें होयगी ॥ जो कछु श्रेष्ठ पुरुष चेष्टा करते हैं ॥ तीनके अनुसार ओर जीव करते हैं ॥ जो तुम सरखे अपने वचनकी पालना न करेंगे तब, ओर किसीसों कहा बनेगी ?अरु तुमारे कुलमें अेसा बचनसों फिरनां कबहु नहीं हुवा, तातें अपने धर्मकों त्यागना योग्य नांहीं॥ तुं अपने पुत्रकों दे॥ अरु जो तुं उनके भय कर शोकवान होवे, तोभी नां मत कहे॥ओर मूर्ती धारी काल आय कर स्थित होवे तोभी विश्वामित्रके विद्यमान तेरे पुत्रकों कछु होवे नांहीं तुं शोक मत कर ॥ अपने पुत्रकों इसीके साथ दे॥ अरु जो न देगा, तो दो प्रकारका तेरा धन नष्ट होवेगा ॥ अेक धन यह हे जो कूप बावरी, ताल, कराये होयगे, तीनका जो पुन्य हे, सो नष्ट हो जावेगा ॥ अरु तप; व्रत, यज्ञ, दान, स्नानादिक जो पुन्य हे, अरु क्रिया हे तिस सबका फल नष्ट हो जावेगा, जो तेरा गृह निरर्थ होय जावेगा ॥ तातें मोह अरु शोककों त्याग; अरु अपने धरमकों सुमरन कर ॥ रामजी इसीके साथ दे दे ॥ तेरे सब कारज सुफल होवेंगे ॥ हे राजन् ! इस प्रकार जब तेरे करना था, तब प्रथम हीं बिचार कर केहेना था ॥ जो बिचार बिना काम करनेका परिनाम दुःख होता हे ॥ तातें इसीके साथ तेरे पुत्रकों देहु ॥ ॥ वाल्मीकउवाच ॥ हे भारद्वाज ! जब इस प्रकार वसिष्ठजी कहा, तब राजा दशरथ धैर्यवान होकर, भृत्यमें जो श्रेष्ठ भृत्य था, वाकों बुलाय कर कहत भया ॥ हे महा बाहु ! रामजीकों ले आओ ॥ तब इसके साथ जो चाकर अंतर बाहीर आने जाने वारा था, अरु छलतें रहित था, सो राजाकी आग्या लेकर रामजीके निकट गया ॥ अेक मुहूर्त पाछें पीछा आया ॥ अरु कहत भया हे देव ! रामजी तो बडी चितामें बेठे हैं ॥ में रामजीकों वारंवार कहा जो अब चलियें, तब वह कहत हे जो चले हैं ॥ अेसें कही कही चुप हो रहें हे ॥ हे भारद्वाज ! इस प्रकार जब राजाने श्रवन किया तब कहा ॥ रामजीके मंत्री अरु टहलुअे सब बुलाओ ॥ तब सबकों बुलाय निकट ल्याये ॥ तब राजा आदरसों कौमल सुंदर बचन युक्तिसों कहत भया ॥ हे रामजीके प्यारे ! रामजीकी कहा दशा हे ? ॥ ओर अेसी दशा क्यों कर हुइ हे ? ॥ सो सब क्रम करकें कहों ॥ ॥ मंत्रीउवाच ॥ हे देव !हम कहा कहें ॥ जेते हम कछु दृष्ट आते हे सो सब आकार अरु प्रान देखने मात्र हम हे ॥ अरु सब हम मृतकहें ॥ काहेतें जो हमारा स्वामी रामजी बडी चिंताकों प्राप्त हुआ हे ॥ हे राजन् ! जिस दिनके रघुनाथजी तीर्थ कर आये हें तिस दिनके चिंताकों प्राप्त भये हे ॥ जब उत्तम भोजन हम ले जाते हैं, ओर पान करनेका पदारथ, ओर पेहेरनेका पदारथ, अरु देखनेका पदारथ, कछु ले जातें हे, सो सुखदाइ पदारथ रस सहित, सो देखकें किसी प्रकार प्रसन्न होइ तो भला परंतु हमने नही देख्या हे ॥ अेसी चिंताके विषे वह लीन हे, जो देखता भी नही ॥ अरु जो देखता हे तो क्रोध करता हे ॥ अरु सुखदाइ पदारथका निरादर करताहे ॥ अरु अंतःपुरमें इनकी माता, नाना प्रकारके हीरे अरु मनीके भूषन देती हे, तो उनकोंभी डार देता हे ॥ नांहीं तो कीसी निर्धनकों देता हे ॥ प्रसन्न किसी पदारथपें होते नांहीं हे ॥ सुंदर स्त्रियां खडी विद्यमान होतियां हे, नानां प्रकारके भूषन सहित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महा मोह करने हारियां निकट होइ करी लीला करतियां हें, कटाक्षद्वं सहित प्रसन्न करनें निमित्त तोभी विषवत् जानता हे ॥ उनकी ओर देखताभी नांही जैसें पपैया अवर जलकों देखताभी नही ॥ जब अंतःपुर विषे निकसताहे ॥ तब उनकों देखी करी क्रोधवान होता हे ॥ हे राजन् ! अवर कछु उसकों भला नहीं लगता ॥ किसी बडी चिंताविषे मग्न हे ॥ ओर तृमहो करी भोजन नहीं करता, क्षुधावंत रहता हे ॥ न कछु पहरने, खानें, पीनेंकी इच्छा रखता हे, न राजकी इच्छा हे, न किसी इंद्रियद्वं के सुखकी इच्छा हे ॥ महा उन्मत्तकी नांइ बैठा रहता हे, अरु जब कोइ सुखदाइ पदारथ फुलादिक ले जातें हें तब क्रोध करता हे ॥ हम नहीं जानतें जो क्या चिंता उसकों भइ हे ॥ अेक कोटरीमें पद्मासन करकें अरु हाथमें मुख धरी बेठ रहते हैं ॥ अरु जो कोउ बडा मंत्री आयकें पुछता हे, तब ताकों कहता हे, जो तुम जीसकों संपदा मानते हो सोइ आपदा हे ॥ जीसकों आपदा जानते हो सो आपदा नांहीं हे ॥ अरु नाना प्रकारके संसारके पदारथ, जो रमनीय कर जानते हो, सो सब झुठे हे ॥ याहीमें सब डूबे हे ॥ ये सब मृग तृष्णाके जलवत् हे; तिनकों सत्य जानी मूरख जो हरन सो दोरते हें ॥ अरु दुःख पावते हें॥हे राजन् ! कदाचित बोलते हे तो अेसें बोलते हे॥ ओर कछु उनके और सुखदाइ नहीं भासता हे ॥ अरु जो हम हांसीकी वारता करते हें, तो वह हसत नांहीं हे ॥ जीस पदारथकों प्रीती संयुक्त लेतेथे तीस पदारथकों अबडारी देते हें ॥ अरु दिन दिनपें दुर्बल जेसें होत जाते हें ॥ अरु अंतःपुरमें स्त्रियोंके पास बेठता हे; अरु वह नाना प्रकारकी चेष्टा रामजीकों प्रसन्न करने निमित्त देखावती हे इनकोंभी देखके प्रसन्न नांहीं होता ॥ अरु जेसें मेघकी बुंदतें पर्वत चलायमान नांहीं होते हे ॥ तेसें आप चलायमान नांहीं होते हे ॥ अरु जो बोलता हे तो अेसे कहता हे, न राज सत्य हे, न भोग सत्य हे ॥ न इह जगत सत्य हे, न भात सत्य हे; न मित्र सत्य हे; मिथ्या पदारथके निमित्त मूरख परे जतन करते हे ॥ जीनकों सत्य जानते हें अरु सुखदायक जानते हें, सो बंधनका कारन हे, ओर कहा कहियें ॥ जो कोइ इनके पास राजा अथवा पंडित जावे तिनकोंदेखकर कहता हे, यह पशु हे॥आशारुपी फांशीकर बांधे हुअे हे॥हे राजन्! जो कछु भोग्य पदारथ हे तिनकों देखकर उसका चित्त प्रसन्न नांहीं होता ॥ अरु देखकें क्रोधवान होता हे ॥ जेसे पपैया मारवाडमें आवे , अरु मेघकी बुंदद्वं देखता नहीं हे अरु खेदवान होताहे, तेसें रामजी विषयद्वंतें खेदवान होता हे ॥ हे राजन् ! इनकरकें हरखवान नहीं होता, तातें हम जानते हे जो इसकों परमपद पावनेकी इच्छा हे परंतु कदाचित् मुखतें सुन्या नांहीं हे ॥ अरु त्यागका अभिमानभी कदाचित् सुन्या नहीं हे ॥ कबहु गाता हे, अरु बोलता हे, तब अेसें कहता हे ॥ हाय हाय ! में अनाथ मार्या गया हों, अरे मूरख तुम संसार समुद्रमें क्यों डुबते हो ? ॥ यह संसार परम अनर्थका कारन हे ॥ इसमें सुख कदाचित् द्वं नांहीं हे ॥ इसते छुटनेका उपाय करो ॥ हे राजन् ! अेसेबी कदाचित् हम सुनते हे ॥ अरु किसी साथ बोलता नहीं हे ॥ न हसता हे, न मंत्रीके साथ, न आपने अंतःपुरनकी स्त्रीयोकें साथ के न माताके साथ बोलता हे ॥ कोउ परम चिंतामें मगन हे ॥ अरु किसी पदारथ कर आश्चर्यवान् नहीं होता ॥ जो कोउ कहे जो आकाशमें बाग लगा हे, तिसमें फूल फूले हे तिसकों में ले आया हो ; तीसकों सुनकरभी आश्चर्यवान् नहीं होता ॥ सब भ्रम मात्र देखता हे ॥ न कोउ पदार्थतें उसकों हरख होता हे, न कोउ पदार्थ तें उसको शोक होता हें, कीसी बडी चिंतामें मगन हे ॥ सो कोउ चिंता निवारनेमें हम समर्थ नहीं देखते हे ॥ वह तो चिंताके समुद्रमें मगन हे॥हे राजन् यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चिंता हमकों लग रही हे; जो रामजीकों न खानेकी इच्छा हे, न पहीरनेकी इच्छा हे, न बोलनेकी, न देखनेकी इच्छा रही हे न कोउ कर्मकी इच्छा रहीहे ॥ तातें मृतक न हो जावे अेसी चिंता हे॥अरु जो कोउ कहता हे जो तुं चक्रवर्ती राजा हे, तेरो बडो आयबल होइ, अरु बडे सुखकों पाओ॥तब तीसके बचन शुनकर कठोर बोलता हे ॥ हे राजन्! केवल रामजीकों अेसी चिंता नहीं॥ लछमन अरु शत्रुघ्नकोंभी अेसी चिंता लगि रही हे॥रामकों देखकर जो कोउ उनकी चिंता दूर करनहार होवे तो करे; नांहीं तो बडी चिंता महीं डूबी रहेंगे ॥ किसी पदारथकी इच्छा उनकों नांहीं रहत हे, हे राजन् अब कहा कहता हे? तेरा पुत्र अब अतीत होय रह्या हे॥अेक वस्त्र उपरेना ओढी बेठा हे॥तातें सोइ उपाय करो, जीसकर उसकी चिंता निवृत्तहोवे ॥ ॥विश्वामित्रोवाच॥हे साधु! जो रामजी अेसें हे, तो हमारे विद्यमान पास लाओ, हम उसका दुःख निवृत्ति करेंगे ॥ हे राजा दशरथ! तुं बडा धन्य हे! जो जीसका पुत्र विवेक अरु वैरागकों प्राप्त भया ॥ हे राजन्! हम जो बेठेहें सो तेरे पुत्रकों परम पदकी प्राप्ति करेंगे॥ अबी सब दुःख उनके मिट जाअेंगे ॥ हम बसिष्ठादि जो बेठे हें, सो अेक युक्ति करी उपदेश करेंगे ॥ तिसकर उनकों आतम पदकी प्राप्ती होवेगी ॥तब वह दशा तेरे पुत्रकी होवेगी जो लोष्ट अरु पथ्थर अरु सुवरनकों समान जानेंगे ॥ अरु जो कछु तुमारे छत्रीकी प्रकृतीका आचरन हे, सो करेंगे ॥ अरु हृदयमें प्रेमतें उदासी होवेंगे ॥ तातें हे राजन्! उसकर तुमारा कुल कृतकृत्य होवेगा ॥ तातें रामजीकों शीघ्र बोलावहु ॥ ॥ वाल्मीकोवाच हे भारद्वाज! अेसे मुनींद्रके बचन सुनकर राजा दशरथ मंत्री अरु नोकरकों कहत भया ॥ जो रामजी अरु लछमन अरु शत्रुघ्नकों साथ ले आओ ॥ जेसें हरनीकों हरन ले आते हे तेसें ले आओ ॥ जब राजा दशरथनें अेसा कहा तब मंत्री अरु भृत्य रामजीके पास जायकें कह्या; तब रामजी आये ॥ सो आवत आवत राजा दशरथ, अरु वशिष्ठजी, अरु विश्वामित्रकों देखे, सो तीनोंके पर चमर होय रहेहें; अरु बडे मंडलेश्वर बेठे हें॥ तिननेंहु रामजीकों देखे ॥ जो शरीरतें कृश होय रहे हे॥जेसें महादेवजी स्वामी कार्तीकेकों आवत देखे तेसें रामजीकों आते राजा दशरथ देखत हे ॥ तहां रामजी आयकर राजा दशरथजीके चरनपें मस्तक लगाय नमस्कार किया ॥ फेर तेसेंइ वसिष्ठजीकों अरु विश्वामित्रकों नमस्कार किया ॥ बहुरी सभामें जो ब्राह्मण बडे बडे बेठेथे, तिनकोंहु नमस्कार किये ॥अरु जो बडे बडे मंडलेश्वर बेठेथे तिननें उठकर रामजीकों प्रनाम किया ॥ फिर राजा दशरथनें रामजी कों गोदमें बेठाया ॥ अरु देखकर मस्तक चुंब्या ॥ अरु बहुत प्रेम पुलकित होय रामजीकों कहत भया ॥ हे पुत्र! केवळ विरक्तता कर परम पदकी प्राप्ति नांहीं होती हे ॥अरु वसिष्ठ जी गुरु हे, तिनका उपदेशकी युक्ति कर परम पदकी प्राप्ती होयगी ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! तुम धन्य हो! अरु बडे सुरमे हो, जो विषय रुपी शत्रु तुमने जीते हे ॥ जो विषय अजीत हे, अरु दुष्ट हे ताकों तुमने जीते, तातें तुम धन्यहो! धन्य हो! ॥ ॥ विश्वामित्रोवाच ॥ हे कमलनयन राम! अपने अंतरकी चपलता हे तिनकों त्याग करकें जो कछु तुमारा आशय होय सो प्रगट कर कहो ॥ हे रामजी! यह जो तुमकों मोह प्राप्त हुआ हे; सो केसें हुआ हे? अरु किस कारन हुआ हे? अरु केताक हैं? सो कहो॥ अरु जो अब कछु तुमकों वांछित होय सो कहो, हम तुमकों तिसी पदमें प्राप्त करेंगे ॥ जीसमें दुःख कदाचित् होवे नही, ओर आकाशकों चुहा काटी नांहीं सकत हे, तेसें तुमकों पीडा कदाचित् न होवेगी ॥ हे रामजी तुमारे संपुरन दुःख नाशकर देयगे ॥ तुम संशय मत करो; जो कछु तुमारा वृत्तांत होय सो हमकों कहो ॥ ॥ बाल्मीकोवाच ॥ हे भारद्वाज! जब अेसें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्वामित्रनें कहा, सो शुनकर रामजी बहुत प्रसन्न भये; अरु शोककों त्याग दिया ॥ जेसें मेघकों देखकें मोर प्रसन्न होता हे; तेसें विश्वामित्रके बचन शुनकर रामजी प्रसन्न हुअे ॥ अरु अपने हृदयमें निश्चय किया, जो अब मुझकों वह पदकी प्राप्ति होवेगी ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे वैराग्य प्रकरणे रामसमाज वर्ननं नाम षष्ठः सर्गः ॥ ६ ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे भारद्वाज ! अेसें मुनीश्वरके बचनकों रामजी शुनकें बहुत प्रसन्न होयकें बोले ॥ ॥ श्रीरामोवाच ॥ हे भगवन् ! जो वृत्तांत हे सो तुमारे विद्यमान क्रम करकें कहता हों ॥ यह राजा दशरथके घरमें जो उत्पत्ति पाया हों, बहुरी क्रम करकें बडा हुआ हों ॥ उपवित्त पाया हों, अरु चारोवेद पढकर ब्रह्मचर्यादि व्रत पाया हों, तापाछें अेक दिन पढकें में घरमें आया ॥ तब मेरे हृदयमें बात आय रही जो तीर्थाटन करों, अरु देवद्वारमें जायकें देवनके दर्शन करों; तब में पिताकी आग्या ले कर तीर्थकों गया ॥ अरु गंगा आदि संपूरन तीर्थमें स्नान किया; अरु शालिग्राम अरु केदार आदि ठाकुरके विधी संयुक्त दर्शन किये; अरु जात्रा करकें इहां आया ॥ फिर उत्साह हुआ, तब मेरेमें विचार आया, जो प्रातःकाल उठकें स्नान संध्यादिक कर्म करना, बहुरी भोजन करना अेसें इस प्रकारसों केतेक दिन व्यतीत भये, तब मेरे हृदयमें विचार उत्पन्न हुआ ॥ सो विचार मेरे हृदयकों खेंच ले गया ॥ जेसें नदीके तट पर तृन वल्ली होत हे तिसकों नदीका प्रवाह खेंच ले जाता हे, तेसें मेरे हृदयमें जो कछु जगतकी आस्था रूप वल्लीथी सो विचार रूपी प्रवाह ले गया ॥ तब में जानत भया जो राज करकें क्या हे॥ अरु भोगतें क्या हे, अरु जगत क्या हे ? सब भ्रम मात्र हे, इसकी वासना मूरख रखते हैं ॥ यह थावर जंगम रूपी जेता कछु जगत हे, सो सब मिथ्या हे ॥ हे मुनीश्वर ! जेते कछु पदारथ हे, सो मनसों करकें हे ॥ सो मनभी भ्रम मात्र हे ॥ अन होता मन दुखदाइ हुआ हे ॥ मन जो पदारथ सत्य जान कर दोरताहे, अरु सुखदायक जानता हे, सो मृगतृष्णाके जलवत् हे ॥ जेसें मृगतृष्णाकों देखकर मृग दोरते हैं, अरु हे नही; सो मृग दोरत दोरत थककें पड जाता हे; तोहु जल तिसकों प्राप्त नहीं होता, तेसें मूरख जीव पदारथकों सुखदाइ जान कर भोगनेका जतन करता हे; अरु शांतिकों नही पावता हे ॥ तेसें हे मुनीश्वर ! इंद्रियके भोग सर्पवत् हे ॥ जीनका मान्या हुआ जनम मरनकों पावता हे ॥ जन्मतें जन्मांतरकों पावता हे ॥ भोग अरु जगत सब भ्रम मात्र हे ॥ तिन विषे जो आस्था करते हे, सो महामूर्ख हैं ॥ अेसा में विचार करकें जानता हों ॥ जो सब आगमापाइ हे ॥ अर्थ यह जो आवते हु हे, अरु जाते हु हे ॥ तातें जीस पदारथका नाश न होय, सो पदारथ पावने योग्य हे ॥ इसी कारनतें में भोगका त्याग किया हे ॥ हे मुनीश्वर ! जेते जो कछु संपदा रूप पदारथ भासतें हे, सो सब आपदा हे॥इनमें रंचकहु सुख नांही हे॥जब इनका विजोग होता हे, तब कंटककी नांइ मनमें चुभता हे॥जब इंद्रियकों भोग प्राप्त होता हे, तब राग दोषकर जलते हे ॥ अरु जब नही प्राप्त होता तब तृष्णा कर जलते हे ॥ तातें भोग दुःख रूप हे ॥ जेसें पथ्थरकी शिलामें छिद्र नही होता, तेसें भोगरूपी दुःखकी शिलामें रंचकभी सुखरूपी छिद्र नही होता हे ॥ हे मुनीश्वर ! विषयकी तृष्णामें बहुत कालसों जलता रह्या हों ॥ जेसें हर्या वृच्छके छिद्रमें रंचक अग्नि धर्‍या होय, तब धुंवा होय थोरा थोरा जलता रहता हे; तेसें भोगरूपी अग्नि करकें मन जलता रहेता हे ॥ यह विषयमें सुख कछुहु नांही ॥ अरु दुःख बहुत हे॥इनकी इच्छा करनी सोइ मूरखता हे ॥ जेसें खाइके उपर तृन अरु पान होता हे, तिस कर खाइ आच्छादित होय जाती हे, तिसकों देखके हरन कूद परता हे अरु दुःख पावता हे; तेसें मुरख भोगकों सुखरूप जानकें भोगनेकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरु तेरी बुद्धिमें शुभ गुननें आयकें निवास किया हे; जेसें सूर्यमें सब प्रकाश आय हुवे हे, तेसें संतनें अरु शास्त्रनें जो निर्मल गुन कहे हे, सो सब तेरेमें पैयत हे; हे रामजी! अब तुं मेरे बचनका अधिकारी भयाहे; जेसें तंद्रीके सुननेकों अंदोरा अधिकारी होता हे; जेसें चंद्रमाके उदयतें चंद्र वंशी कमल खील आते हें, तेसें शुभ गुनकर तेरी बुद्धि खील आइ हे ॥ हे रामजी! सत्संग अरु सतशास्त्रद्वारा बुद्धिकों तीक्ष्ण कियेतें शीघ्र आत्मतत्वमें प्रवेश होता हे, तातें श्रेष्ठ पुरुष वही हे, जिननें संसारकों विरस जानकें त्याग किया हे; अरु संत अरु सतशास्त्रके बचन द्वारा आत्मपद पावनेका यत्न करते हें, सो अविनाशी पदकों प्राप्त होते हें ॥ ओर जो शुभमार्ग त्याग करकें संसारकी ओर लगे हे ॥ सो महामूर्ख जड हे; जेसें जल शीतलता करकें वरफ हो जाता हे, तेसें अज्ञानी मूर्खता करकें दृढ आत्म मार्गतें जड होइ रहे हे ॥ हे रामजी! अज्ञानीके रिदेरूपी बिलमें दुराशारूपी सर्प रहता हे, सो कदाचित शांति नांहीं पावता, अरु आनंदसों कबहुं प्रफुल्लित नांहीं होता ॥ अरु आशा करकें सदा संकुचित रहता हे ॥ जेसें अग्नि विषे मांस संकुच जाता हे ॥ हे रामजी! आत्मपदके साक्षात्कारमें विशेष आवरन आशाही हे; जेसें सूर्यके आगें मेघका आवरन होता हे, तेसें आत्मतत्वके आगें दुराशा आवरन हे; जब आशारूपी आवरन दुर होवे, तब आत्मपदका साक्षात्कार होवे ॥ हे रामजी! आशा तब दूर होवे, जब संतकी संगति अरु सतशास्त्रका बिचार होवे ॥ हे रामजी! संसाररूपी अेक बडा वृच्छ हे, सो बोधरूपी खड्गकर छेदा जाता हे; जब सत्संग अरु सतशास्त्रकर तिच्छन बुद्धि होवे, तब संसाररूपी भ्रमका वृच्छ नष्ट हो जाता हे ॥ जब शुभ गुन होते हे, तब आत्मज्ञान आयकें विराजता हे; जहां कमल होते हे, तहां भौंरे आयकें स्थित होते हे; तब शुभ गुनमें आत्मज्ञान रहता हे ॥ हे रामजी! शुभ गुनरूप पवनकर जब इच्छारूपी मेघ निवृत्त होता हे, तब आत्मारूपी चंद्रमाका साक्षात्कार होता हे ॥ जेसें चंद्रमाके उदय हुवे आकाश शोभता हे, तेसें आत्माके साक्षात्कार हुवे तेरी बुद्धि खिलेगी ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे वसिष्ठोपदेशो नाम एकादशःसर्गः ॥ ॥ ११ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! अब तुं मेरे बचनका अधिकारी हे, काहेतें जो, तप, वैराग, विचार, संतोष, आदि जो शुभ गुन संत अरु शास्त्रने कहे हे, सो सब तेरेमें पैयत हे; तातें तुं मेरे बचनकों सुन, सो रज तम गुनकों त्यागकर शुद्ध सात्विकवान होकर सुन ॥ राजस जो विच्छेप अरु तामस जो लय निद्रामें होत हे सो दोउका त्याग करकें सुन ॥ जेते कछु जिज्ञासुके गुन शास्त्रमें बर्नन किये हे, सो सब कर तुं संपन्न हे अरु जेते कछु गुरुके गुन शास्त्रमें बर्नन किये हे, सो सब मेरेमें हें ॥ जेसें रत्नकर समुद्र संपन्न हे तेसें मैं संपन्न हों ॥ तातें मेरे बचनका तुं अधिकारी हे; ओर मूर्खकों मेरे बचनका अधिकार नांहीं ॥ हे रामजी! जेसें चंद्रमाके उदयतें चंद्रकांत मनी द्रवीभूत होती हे, तब तामेंतें अमृत सरता हे; ओर पथ्थरकी शिला हे, तिनतें द्रवीभूत नांहीं होता हे; तेसें जो जिज्ञासु होता हे, तिसकों परमार्थ बचन लगता हे; अरु अज्ञानीकों नांहीं लगता; हे रामजी! शिष्य तो शुद्ध पात्र होवे, अरु उपदेश करनेहारा ज्ञानवान न होवे तो उसकों आत्माका साक्षात्कार नांहीं होवे, जेसें चंद्रमुखी कमलनी निर्मल होय, अरु चंद्रमा न होय तब प्रफुल्लित नांहीं होती तेसें ॥ तातें तुं मोक्षका पात्र हे; अरु मेंबी परमगुरु हों; मेरे उपदेश कर तेरा अज्ञान नष्ट होय जावेगा ॥ में मोक्षका उपाय कहता हों जब तिसकों तुं भले प्रकार विचारेगा ॥ तब जेती कछु मलीनरूपी मनकी वृत्ति हे, तिनका अभाव हो जायगा; जेसें महा प्रलयके सूर्यकर मंदराचल पर्वत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जल जाता हे; तातें हे रामजी! वैराग अरु अभ्यासके बलकर इस मनकों अपने विषे लीन कर शांतात्मा होवहु; तेनें बालकावस्थासों लेकर अभ्यास कर रख्या हे, तातें मन उपसम पायकें आत्मपदकों प्राप्त होवेगा ॥ हे रामजी! सत्संग अरु सतशास्त्र द्वारा जो आत्मपद पाया हे, सो सुखी भये हे; फिर तिनकों दुःख नांही लगता; काहेतें जो दुःख देहाभिमानकर होता हे, सो देहका अभिमान तो तेनें त्याग दिया हे; तेसें जिसनें देहका अभिमान त्याग दिया हे; अरु देहका आत्मता करकें बहुरी यहंन नांही करता, तातें सुखी रहेता हे ॥ हे रामजी! जिननें आत्माका बल धरकें बिचारद्वारा आत्मपद प्राप्त किया हे, सो अकृत्रिम आनंदकर सदा पूर्न हे; सब जगत तिसकों आनंदरूप भासता हे; अरु जो असम्यग्दर्शी हे, तिनकों जगत अनर्थरूप भासता हे ॥ हे रामजी! संसरनरूप जो यह संसार सर्प हे; सो अज्ञानिके हृदेमें दृढ हो गया हे, सो जोगरूपी गारुड मंत्र करकें नष्ट हो जाता हे; अन्यथा नांही होता, ओर सर्पका बिष हे, सो अेक जन्ममें मारता हे; अरु संसरनरूप जो बिष हे, तिसकरकें अनेक जन्म पायकें मरता चल्या जाता हे; शांतिवान कदाचित् नांही होता ॥ हे रामजी! जो पुरुष सत्संग अरु सतशास्त्रके बचनद्वारा आत्मपदकों पाया हे, सो आनंदित भये हे; अरु अंतर्बाहिर सब जगत इनकों आनंद रूप भासता हे; अरु सब क्रिया करनेमें आनंद विलास हे ॥ ओर जिननें सत्संग अरु सतशास्त्रका बिचार त्याग्या हे, अरु संसारके सन्मुख हे, तिसकर तिसकों संसार अनर्थरूप हे, सो अेसा दुःख देते हे ॥ जेसें सर्पके दंसतें दुःखी होते हे, अरु शस्त्रकर घाअेल होते हे, अरु अग्निमें परेकी नांइ जलते हे, अरु जेवरीके साथ बंध होते हे, अरु अंध कूपमें गिरेतें कष्ट पाते हे; तेसें संसारमें मनुष्य दुःख पाते हे ॥ हे रामजी! जो पुरुष सत्संग अरु सतशास्त्रद्वारा आत्मपदकों नांही पाया, सो अेसे कष्ट पाते हे, सो नरकरूपी अग्निमें जरते हे; अरु चक्की विषे पीसाते हे; पाषानकी बरखाकर चूरन होते हे; कोलुमें पीलाते हे; अरु शस्त्र साथ कटते हे; इत्यादिक जो बडे कष्ट हे, सो तिनकों प्राप्त होते हे ॥ हे रामजी! अेसा दुःख कोउ नांही! जो इस जीवकों प्राप्त नांही होता; आत्माके प्रमादसों सब दुःख होते हैं; अरु जिन पदारथकों यह रमनीक जानते हे, सो चक्रकी नांइ चंचल हे; कबहु स्थिर नांही रहते; सतमारगकों त्यागकर जो इनकी इच्छा करते हैं, सो महा दुःखकों प्राप्त होते हैं ॥ अरु जिन पुरुषनें संसारकों विरस जान्या हे, ओर पुरुषार्थकी ओर दृढ भये हे, तिनकों आत्मपदकी प्राप्ती होती हे ॥ हे रामजी! जा पुरुषकों आत्मपदकी प्राप्ति भइ हे, तिनकों फिर दुःख नांही होता, ओर तिनके दुःख जो नष्ट नांही होते, तो ज्ञानके निमित्त पुरुषार्थ कोउ नांही करता ॥ जो अज्ञानी हे तिनकों संसार दुःखरूप हे; अरु ज्ञानीकों सब जगत आनंदरूप हे; अपने आपुइ हे; उनकों भ्रम कोउ नांही रहता ॥ हे रामजी! ज्ञानवानमें नाना प्रकारकी चेष्टाबी दृष्ट आती तौभी सदा शांतरूप हे, अरु आनंदरूप हे; संसारका दुःख कोउ नांही परश कर शकता; काहेतें जो तिननें ज्ञानरूपी कवच पहिऱ्या हे ॥ हे रामजी! ज्ञानवानकोंभी दुःख होता हे, बडे बडे ब्रह्मर्षि, अरु राजर्षि बहोत ज्ञानवान भये हे, सोभु दुःखकों प्राप्त होते हे, परंतु दुःख सों आतुर नांही होते; क्यों जो ज्ञानवाननें ज्ञानका कवच पहिऱ्या हे, तातें कोउ दुःख परश नांही करता, सदा आनंदरूप हे, जेसें ब्रह्मा विष्णु रुद्र नाना प्रकारकी चेष्टा करते ओर जीवकों दृष्ट आवते हे ॥ अरु अंतरतें सदा शांतरूप हे; इस प्रकार ओरभी जो ज्ञानवान उत्तम पुरुष हे सो शांतरूप हे, ताकों कर्त्ताका अभिमान कोउ नांही फुरता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे रामजी ! अज्ञानीरूपी जो मेघ हैं, तिसकर मोहरूपी कुहाडाका वृच्छ हे, सो ज्ञानरूपी शरत्काल करकें नष्ट हो जाता हे; तातें स्वसत्ताकों प्राप्त होय हे; अरु सदा आनंदकर पूरन हे ॥ हे रामजी! जो कछु क्रिया करते हैं, सो तिनकों विलासरूप हे; अरु सब जगत् आनंदरूप हैं; अरु शरीररूपी रथ, इंद्रियरूपी अश्व, ओर मनरूपी रसा, तासों अश्व कों खेंचता हे; अरु बुद्धिरूपी रथ वही हे, तिस रथमें वह पुरुष बेठा हे; अरु इंद्रियरूपी अश्व इसकों खोटे मारगमें डारते हे; अरु ज्ञानवानके इंद्रियरूपी अश्व हे सो अेसे हे जो जहां जाते हे तहां आनंदरूप हे, किसी ठोरमें खेद नांही पावता; सब क्रियामें उनकों बिलास हे; सर्वदा आनंद कर तृप्त रहेते हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे तत्व ज्ञमाहात्म्यं नाम द्वादशः सर्गः ॥ ॥ १२ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! इसी दृष्टीकों आश्रयकर, जो तेरा हृदय पुष्ट होवे, बहुरी संसारके इष्ट अनिष्ट कर चलायमान न होवे; जिस पुरुषकों इस प्रकार आत्मपदकी प्राप्ति भइ हे, सो परम आनंदित भये हे; शोककों कर्त्ता नांही हे ॥ न यांचना करता हे, हेयोपादेयतें रहित परम शांतिरूप अमृतकर पूरन होय रहे हैं; सो पुरुष नाना प्रकारकी चेष्टा करतें दृष्ट आवते हे, परंतु कछु नांही करते ॥ जहां उनके मनकी वृत्ति जाति हे, तहां आत्मसत्ता भासती हे, सो आत्मानंदकर पूरन होय रहे हे ॥ जेसें पूर्नमासीका चंद्रमा अमृतकरी पूर्न रहता हे, तेसें ज्ञानवान परमानंदकरी पूरन रहता हे ॥ हे रामजी! यह जो में तुझकों अमृतरूपी वृत्ति कही हे, इसकों जब जानेगा तब तुझकों साक्षात्कार होवेगा; जब जिसकों आत्मज्ञानकी प्राप्ति होती हे, तब सब दुःख नष्ट हो जाते हैं; जेसें चंद्रमाके मंडलमें ताप नांही होता, अरु अज्ञानीकों शांति कबहु नांही होती ॥ ओर जो कछु क्रिया करता हे, तिसमें दुःख पावता हे; जेसें कक्करके वृच्छमें कंटककी उत्पत्ति होती हे, तेसें अज्ञानीकों दुःखकी उत्पत्ति होती हे ॥ हे रामजी! इस जीवकों मूरखता करकें बडे दुःख प्राप्त होते हैं, अेसा दुःख अद्भुत ओर कोउ नांही, अरु किसी आपदा करकेंभी अेसा दुःख नांही होता; जेसा दुःख मूर्खता करकें पाते हे अेसा दुःख कोउ नांही ॥ हे रामजी! हाथमें ठीकरा ले चंडालके घरकी भिक्षा ग्रहन करे, ओर आत्मतत्वकी जिज्ञासा होवे, तौभी अवर ऐश्वर्यतें श्रेष्ठ हे, परंतु मूरख तासों जीवना व्यर्थ हे; तिस मूरखताकों दूर करनेकों मोक्ष उपाय में कहता हो ॥ हे रामजी; यह मोक्ष उपाय परम बोधका कारन हे; कछुक बुद्धि संस्कृत होवे, अर्थ यह जो पद पदार्थके जाननेहारी होवे, अरु मोक्ष उपाय शास्त्रकों बिचारे, तो तिसकी मूर्खता नष्ट हो जावेगी, अरु आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी ॥ जेसा आत्मबोधका कारन यह शास्त्र हे, तेसा ओर शास्त्र त्रिलोकी विषे कोउ नांही ॥ नाना प्रकारके दृष्टांत सहित इतिहास हे जामें, तिसकों जब बिचारेगा तब परमानंदकों प्राप्त होवेगा; अज्ञानरूपी तिमिर नाश करनेकों ज्ञानरूपी शिलाका हे ॥ जेसें अंधकारकों सूर्य नाश करता हे, तेसें अज्ञानकों यह शास्त्रका बिचार नाश करता हे ॥ हे रामजी ! जिस प्रकार इसका कल्यान होता हे सो श्रवन कर ॥ गुरु जो ज्ञानवान हे सो शास्त्रका उपदेश करे, अरु अपने अनुभवसों ज्ञान पावे ॥ जब गुरु अरु शास्त्र ओर अपना अनुभव यह तीनो इकठे मिले तब इसका कल्यान होवे; जबलगी अकृत्रिम आनंदकों प्राप्त नांही भया, तबलगी दृढ अभ्यास करे; तिस अकृत्रिम आनंदकों प्राप्ति करनेहारा में गुरु हों ; जीव मात्रका में परम मित्र हों ; अेसा मित्र अवर कोउ नांही; हमारी संगती जीवकों आनंद प्राप्त करनेहारी हे; तातें जों कछु में कहता हों सो तुं कर ॥ हे रामजी ! यह जो संसारके भोग हे, सो छिनमात्र हे; तातें इनको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्याग करहु; ओर विषयके परिनाममें दुःख अनंत हे; इनकों दुःखरूप जानकर त्याग दे, अरु हम सारिखे हो ज्ञानवानका संग कर; ओर हमारे बचनके विचारतें तेरे सब दुःख नष्ट हो जायगे ॥ हे रामजी! जिस पुरुषनें हमारे संग प्रीती करी हे, तिसकों हमनें आनंद पदकी प्राप्ति कर दीनी हे, जिस आनंदतें ब्रह्मादिक आनंदित भये हे; ओर ज्ञानवानहु आनंदित भये हे, सो निर्दुःख पदकों प्राप्त भये हे ॥ हे रामजी! श्रेष्ठ पुरुष सोइ हे; जाने हमारे साथ प्रीति कीनी हे ॥ जिसने संत अरु शास्त्रके विचारद्वारा दृश्यकों अदृश्य जान्या हे, अरु निर्भय हुवा हे; आत्माका प्रमाद जीवकों दीन करता हे; अज्ञानीका हृदयरूपी कमल तबलग सकुच्या रहता हे, जबलग तृष्णारूपी रात्र होती हे; जब ज्ञानरूपी सूर्य उदय होता हे, तब तृष्णारूपी रात्र नष्ट हो जाती हे ॥ अरु हृदयरूपी कमल आनंदकर खिली आते हे ॥ हे रामजी! जा पुरुषनें परमारथ मारगकों त्याग्या हे, अरु संसारका खान पान आदि भोगमें मगन हुवा हे, तिनकों तुं मेंडुक जान, जेसें कीचमें मेंडुक पर्या शब्द करता हे, तेसा वह पुरुष हे ॥ हे रामजी! यह संसार बडा आपदाका समुद्र हे; तामें जो कोउ श्रेष्ठ पुरुष हे, सो सत्संग अरु सतशास्त्रके विचार करकें संसार समुद्र उलंघता हे, अरु परमानंदकों प्राप्त होता हे ॥ आदि, अंत, मध्य, रहित निर्भय पदकों प्राप्त होता हे ॥ अरु जो संसार समुद्रके सन्मुख हुवा हे, सो दुःखतें दुःखरूप पदकों प्राप्त भया हे, कष्टतें कष्ट, नरककों प्राप्त होता हे ॥ जेसें बिषकों बिष जान तिसका पान करता हे, सो बिष उसकों नाश करता हे, तेसें जिस पुरुष संसार असत्य जानकें बहुरी संसारके ओर जतन करता हे, सो मृत्युकों प्राप्त होता हे ॥ हे रामजी! जो पुरुष आत्म पदतें विमुख हे, अरु आत्म पदकों कल्यानरूप जानता हे, अरु आत्मपदका अभ्यासका त्याग कर संसारकी ओर धावता हे, सो जेसें किसीके घरमें अग्नि लगी, अरु तृनका घर, अरु तृनकी सज्या करीकें शय न करता हे, सो जेसें नाशको पावे तेसें जन्म मृत्युकों प्राप्त होवहिगे; ओर संसारके पदारथ देखकर राग दोषवान हुवे हे, सो सुख बिजुरीका चमका जेसा हे, ओर जो होयकें मिट जावे, स्थिर नांहीं रहे; तेसा संसारका दुःख आगमापाइ हे ॥ हे रामजी! यह संसार अविचार करकें भासता हे; अरु विचार कियेतें लीन हो जाता हे; विचार कियेतें लीन जो नांहीं होता, तो तुमकों उपदेश करनेका काम नांहीं था; सो तो विचार कियेतें लीन हो जाता हे, इसी कारनतें पुरुषारथ चहियें ॥ जेसें हाथमें दीपक होवे, अरु अंध होय कुपमें गिरे सो मूर्खता हे, तेसें संसार भमके निवारनहारे गुरु शास्त्र विद्यमान हे ॥ तिनकी शरन न आवे सो मूर्ख हे ॥ हे रामजी! जो पुरुष संतकी संगति, अरु सतशास्त्रके विचारद्वारा आत्म पदकों पाया हे, सो पुरुष केवल कैवल्य भावकों प्राप्त भये; अर्थ यह जो शुद्ध चैतन्यकों प्राप्त हुवे हे; अरु संसार भम तिनका निवृत्त हो गया हे ॥ हे रामजी! यह संसार मनके संसरनेतें उपज्या हे, सो इसका कल्यान बांधव करकें नांहीं होता हे ॥ अरु धन करकेंभी नांहीं होता हे, प्रजा करकेंभी नांहीं होता हे अरु तीर्थ अरु देवद्वार करकेंभी नांहीं होता हे, ऐश्वर्य करकेंभी नांहीं होता हे, अेक मनके जीतनेतें कल्यान होता हे, हे रामजी! जिसकों ज्ञान परमपद कहते हे, ओर जिसकों रसायन कहते हे; जिसके पायेतें इसका नाश नांहीं होय, अरु अमर होवे, अरु सब सुखकी पूर्नता होवे, इसका साधन समता अरु संतोष हे; इनकर ज्ञान उत्पन्न होता हे सो आत्मज्ञानरूपी अेक वृच्छ हे, तिसका फूल शांति हे; अरु स्थिति इसका फल हे; जिस पुरुषकों यह ज्ञान प्राप्त हुवा हे, सो शांतिवान हुवा हे; सो निर्लेप रहता हे, तिसकों संसारका भावाभावरूप स्पर्श नांहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जेसें मेघका नाश करनहारा शरत्काल हे; तेसें वैरागका नाश करनहारा अहंकार हे ॥ मोहादिक विकाररूप जो सर्प हे, तिनकों रहनेका अहंकाररूपी बिल हे; अरु अहंकार का मी पुरुषकी नांइं हे ॥ जेसें कामी पुरुष कामकों भुगतता हे, अरु फूलकी माला गरेमें डारकें प्रसन्न होता हे, तेसें तृष्णारूपी तागा हे; अरु मनुष्यरूपी फूलके मनका हे ॥ सो तृष्णारू पी तागेके साथ परोये हे ॥ सो अहंकाररूपी कामी पुरुष गरेमें डारता हे अरु प्रसन्न होता हे ॥ हे मुनीश्वर ! आत्मारूपी सूरज हे, तिसका आवरन करनहार मेघरूपी अहंकार हे, जब ग्यानरूपी शरत्काल आवे, तब अहंकाररूपी मेघका नाश हो जाता हे ॥ अरु तृष्णारूपी तुषारकाभी नाश होवे ॥ हे मुनीश्वर ! यह निश्चय कर मेंने देख्या हे, जो जहां अहंकार हे, तहां सब आपदा आय प्राप्त होती हे ॥ जेसें समुद्रमें सब नदी आयकें प्राप्त होती हे, तेसें अहंकारमें सब आपदाकी प्राप्ती हे ॥ तातें सोइ उपाय कहो जीसकर अहंकारका नाश होवे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे वैराग प्रकरणे अहंकार दुराशा वर्णनं नाम दशमः सर्गः ॥ १० ॥ ॥ श्रीरामोवाच ॥ हे मुनीश्वर ! यह जो मेरा चित्त हे, सो काम, क्रोध, लो भ, मोह तृष्णादिक दुःखकर जर्जरी भाव हो गया हे ॥ अरु महा पुरुषके जो गुन वैराग, विचार, धैर्य संतोष, तिनकी ओर नही जाता ॥ सर्वदा विषयकी गिरदमें उडता हे ॥ जेसें मोरका पंख पवनके लागे ठहरता नही, तेसें यह चित्त सर्वदा भटकत फिरता हे, अरु इसकों लाभ कछु प्राप्त नही होता ॥ जेसें श्वान द्वार द्वारपें भटकत फिरता हे, तेसें यह चि त्त पदारथके पावनें निमित्त भटकत फिरता हे, ओर प्राप्त कछु नही होता ॥ अरु जो कछु प्राप्त होता हे तिसकरी तृप्त नहीं होता ॥ अंतर तृष्णा रही आती हे ॥ जेसें पिटारेमें जल भरिये, तासों वह पूर्न नही होता, क्यों जो छिद्रतें जल निकस जाता हे; अरु पिटारा शून्यका शून्य रहेता हे ॥ तेसें चित्तकों भोग पदारथ प्राप्त होता हे, तासों संतुष्ठ नही होता हे ॥ सदा तृष्णाइ रहत हे ॥ हे मुनीश्वर ! यह चित्तरूपी महा मोहका समुद्र हे तिसमें तृष्णारूपी तरंग उठतेइ रहते हे; सो कदाचित् स्थिर नहीं होता ॥ जेसें समुद्रमें तिच्छन वेगकर तरंग होता हे, सो तटके वृच्छकों लागता हे, अरु जलमें बहे जाते हे, तेसें चित्तरूपी समुद्रमें विषय बह्या जाता है ॥ वासनारूपी तरंगके बेगसों मेरा जो अचल स्वभाव था, सो चलायमान होगया हे ॥ सो इस चित्तसों में महा दिन हुआ हों ॥ जेसें जलमें पर्या पंखी दीन हो जाता हे, तेसें चित्त धीवरकी बासनारूपी जालमें बध्या हुवा में दिन हो गया हुं ॥ जेसें मृगके समूहतें भूली मृगी अकेली खेदवान होती हे, तेसें में आत्म पदतें भूल्या हुआ चित्तमें खेदवान हुआहों ॥ हे मुनीश्वर ! यह चित्त सदा क्षोभवान रहता हे, कदाचित् स्थिर नहीं होता ॥ जेसें क्षीर समुद्र मंद्राचल करकें क्षोभवान हुआ था, तेसें यह चित्त संकल्प विकल्प कर खेद पावत हे ॥ जेसें पिंजरेमें आया सिंह पिंजरेमें फिरता हे, तेसें वा सनामें आया चित्त स्थिर नहीं होता ॥ हे मुनीश्वर ! इस चित्तनें मेरेकों दूरतें दूर डार्या हो ॥ जेसें भारी पवनसों शुका तृन दूरतें दूर जाय परता हे; तेसें चित्तरूपी पवननें मुझकों आत्मानंदतें दूर डार्या हे ॥ जेसें सुके तृनकों अगन जरावती हे, तेसें मोकों चित्त जारता हे ॥ जेसें अग्नितें धूम नीकसतें हें, तेसें चित्तरूपी अग्नितें तृष्णारूपी धूम निकसता हे, तिसक र में परम दुःख पावंताहों ॥ यह चित्त हंस नही बनता हे ॥ जेसें राजहंस दूध अरु जल मिलेकों भिन्नभिन्न करता हे, तिसकी नांइ में अनात्मा साथ अग्यान करकें अेकसा हो गया हों, तिसकों भिन्न नही करी शकता हों ॥ जब आत्मपद पावनेका जतन करता हों, तब अग्यान प्राप्त करने नहीं देता ॥ जेसें नदीका प्रवाह समुद्रमें जाता हे, तिसकों पहार सूधे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चलनें नही देता हे, अरु समुद्रकी ओर जाने नही देता हे ॥ तेसें मुझकों चित्त आत्माकी ओरतें रोकता हे ॥ सो परम शत्रु हे ॥ हे मुनीश्वर ! तातें सोइ उपाय कहो, जीसकर चित्त रूपी शत्रुका नाश होवे ॥ यह तृष्णा मेरा भोजन करती रहती हे; जेसें मृतक शरीरकों स्वान अरु श्वाननी भोजन करते हे, तेसें आत्माके ज्ञान विन मैं मृतक समान हों ॥ जेसें बाल क अपनी परछांहींकों बैताल मानकर भयकों पावता हे, सो जब विचार करकें समर्थ होता हे, तब बैतालका भय पावता नही ॥ तेसें चित्तरूपी बैतालनें मेरा स्पर्श किया हे ॥ ति सकर मैं भयकों पावता हों ॥ तातें तुम सोइ उपाय कहो; जीसते चित्तरूपी बैताल नष्ट होय जावे ॥ हे मुनीश्वर ! अग्यान करकें मिथ्या बैताल चित्तमें दृढ हो रह्या हे, तिसके नाश करनेकों में समर्थ नही हो शकता हों ॥ अगनमें बेठना सोबी में सुगम जानता हों, ओर चलकें बडे पर्वतके उपर जाना, सोबी में सुगम मानता हों ॥ अरु बडे बज्रका चूरन करना यह बी में सुगम मानता हों ॥ परंतु चित्तका जीतना महा कठिन हे अेसा मैं जानता हों ॥ चित्त सदाइ चलायमान सुभाववारा हे ॥ जेसें थंभके साथ बांध्या हुआ बानर कदाचित् स्थिर हो य नहीं बेठता, तेसें चित्त वासनाके मारे स्थिर कदाचित् नही होता हे ॥ हे मुनीश्वर ! बडा समुद्रका पान कर जाना सुगम हे, अरु अग्निका भच्छन करनाबी सुगम हे, ओर सुमेरुका उ लंघन करना सोबी सुगम हे; परंतु चित्तकों जितना महा कठिन हे; जो सदा चळरूप हे॥ जेसें समुद्र अपना द्रवसुभावका कदाचित् नही त्याग करता, अरु महा द्रविभूत रहता हे तिसकर नाना प्रकारके तरंग होतें हे, तेसें चित्तबी चंचल स्वभावकों कबी न त्यागता हे ॥ नाना प्रकारकी वासना उपजती रहती हे, अरु बालककी नांइ चंचल हे, सदा विषयकी ओर धावता हे ॥ कछु पदारथकी प्राप्ती होती हे, परंतु अंतरतें सदा चंचल रहता हे, जेसें सूरजके उदय हुअे दिन होता हे, अरु अस्त हुअेतें नाश पावता हे; तेसें चित्तके उदय हुअे त्रिलोकीकी उत्पत्ति हे, अरु चित्तके लीन हुअेतें लीन हो जाती हे॥ हे मुनीश्वर ! कोउ समुद्रमें जल गंभीर हे, तिसमें बडे सर्प रहते, सो जब कोउ समुद्रमें प्रवेश करे, तब वह सर्प उनकों काटता हे, तिनकों विष चढ जाता हे, तिस कर बडा दुःख पावता हे॥ सो दृष्टांत सुनीयें॥ चित्तरूपी समुद्र हे; अरु वासनारूपी जल हे; तिसमें छलरूपी सर्प हे॥ जब जीव उसके निकट जाता हे, तब भोगरूपी सर्प उसकों काटता हे; तब तृष्णारूपी बिख पसरता हे, तिसकर मरते हैं ॥ हे मुनीश्वर ! जो भोगकों सुखरूप जानकर चित्त दोरता हे ॥ सो भोग दुःखरूप हे ॥ जेसें तृनसों खाइ आच्छादित होय जाती हे, तिसकों देखकर मूरख मृग खानेकों दोरता हे, तब खाइमें गिर परता हे, दुःख पावता हे ॥ तेसें चित्तरूपी मृग भोगका सुख जानकर भोगनेकों लगता हे, तब तृष्णा रूपी खाइमें गिर परता हे, अरु जन्मांतर दुःखकों भुगता हे, हे मुनीश्वर ! यह चित्त कबहु बडा गंभीर हो बेठता; ओर जब भोगकों देखता हे, तब तिनकी ओर चीलकी नांइं लग परता हे ॥ जेसें चील पंखी आकाशमें चढ फिरता हे, सो जब पृथवीपर मांसकों देखता हे, तब तहांतें आय पृथ्वीपर बेठता हे, अरु मांसकों लेता हे, तेसें यह चित्त तब लग उदार हे जबलग भोगकों न देखता हे॥ जब विषय देखे तब आशक्ति पाय विषयमें गिर जाता हे; अरु यह चित्त वासनारूपी सज्जामें सोया रहता हे; अरु आत्मपदकी ओर जागता नहीं॥ इस चित्तकी जालमें में पकराया हों; सो केसी जाल हे, तामें वासनारूपी सूत्र हे, अरु संसारकी सत्यतारूपी ग्रंथी हे, अरु भोगरूपी तिसमें चून हे; इसकों देखकें मैं फस्या हों ॥ कबहु पा तालमें, कबहु आकाशमें वासनारूपी जेवरीकर घटी जंत्रकी नांइं बध्या हों तातें हे मुनीश्वर ! तुम सोइ उपाय कहो, जीसकर चित्तरूपी शत्रुकों जीतों ॥ अब मुझकों किसी भोगकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इच्छा नहीं ॥ अरु जगतकी लक्ष्मी मुझकों विरस भासती हे ॥ जेसें चंद्रमा बादरकी इच्छा नांही करता, अरु चतुर्मासेमें आच्छादित होय जाता हे ॥ तातें मैं भोगकी इच्छा नहीं करता, ओर जगतकी लक्ष्मीकों मैं नहीं चाहता, अरु मेरा चित्त हे सो परम शत्रु हे ॥ हे मुनीश्वर ! महा पुरुष जो जितनेका जतन करते हे, सो जब चित्तकों जीतें, तब परम पदकों पावे; तातें मुझकों सोइ उपाय कहो, जीसकर मनकों जीतों, सब दुःख इस्के आश्रयतें रहते हे ॥ जेसें पर्वतपर बन हे सो पर्वतके आश्रयतें रहता हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्टे वैराग प्रकरणे चित्त दौरात्म्य वर्णनं नाम अेकादशः सर्गः ॥ ११ ॥ ॥ श्रीरामोवाच ॥ हे ब्रह्मन् ! चैतनरूपी आकाशमें जो तृष्णारूपी रात्री आइ हे तामें काम, क्रोध, लोभ, मोहादिक घुवड बिचरते हे ॥ जब ज्ञानरूप सूर्य उदय होवे, तब तृष्णारूपी रात्रका अभाव होय जावे ॥ जब रात्र नष्ट भइ, तब मोहादिक उलूकभी नष्ट हो जाते हे ॥ जब सूर्यका उदय होता हे, तब बरफ उष्ण होय पिगर जाता हे; तेसें संतोषरूपी रसकों तृष्णारूपी उष्णता सुकावती हे ॥ बहुरी तृष्णा केसी हे; जेसें शून्य बनमें पिशाचनी अपने परिवार सहित फिरत रहती हे, अरु प्रसन्न होती हे ॥ सो वन अरु पिशाच कैसा हे; आत्मपदतें शून्य जो चित्त सो भयानक शून्य बन हे; तिसमें तृष्णारूपी पिशाचनी हे ॥ अरु मोहादिक उसका परिवार हे उनकों साथ लेकर फिरती हे ॥ हे मुनीश्वर ! चित्तरूपी पर्वत हे; तिसकेआश्रयतें तृष्णारूपी नदीका प्रवाह चलता हे ॥ अरु नाना प्रकारके संकल्परूपी तरंगकों पसारतें हे ॥ जेसें मेघकों देखकर मोर प्रसन्न होता हे; तेसें तृष्णारूपी मोर भोगरूपी मेघकों देखकें प्रसन्न होता हे, तातें परम दुःखका मूल तृष्णा हे॥ जब मैं किसी संतोषादि गुनका आश्रय करता हों, तब तृष्णा तिसकों नाश कर देती हे ॥ जेसें सुंदर सारंगीकों चुहा तोरी डारता हे ॥ तेसें संतोषादि गुनको तृष्णा नाश करती हे ॥ हे मुनीश्वर ! सबतें उत्कृष्ट पदमें बिराजवेका मैं जतन करता हों ॥ तब तृष्णा बिराजने नही देती ॥ जेसें जालमें फस्या हुआ पंछी आकाशमें उडवेका जतन करता हे; परंतु उड नही सकता हे; तेसें मैं अनात्मपदमेंतें आत्मपदकों प्राप्त नही हो शकता ॥ स्त्री, पुत्र, अरु कुटुंब, तिसनें जाल बिछाइ हे, तामें फस्या हों सो निकस नही शकता ॥ सो आशारूपी फांशीमें बंध्या हुआ कबहुं उरधकों जाता हों, कबहु अधःपात होता हों; सो घटी यंत्रकी नांइ मेरी गती हे ॥ जेसें इंद्रका धनुष्य मलिन मेघमें होता हे, सो बडा अरु बहोत रंगसों भर्‍या होता हे, परंतु मध्यतें शून्य हे, तेसें तृष्णा मलिन अंतःकरनमें होती हे, सो बडी हे, अरु गुनरूपी धागेतें रहित हें ॥ उपर तें हे देखने मात्र सुंदर हे ॥ परंतु इससें कारज सिद्धि कछु नही होती ॥ हे मुनीश्वर ! तृष्णारूपी मेघ हे; तिसतें दुःखरूपी बुंद निकसते हें ॥ अरु तृष्णारूपी काली नागनी हे; उसका स्पर्श तो कोमल हे, परंतु बिखकर पूरन हे; तिसके डसेतें मृतक हो जाता हे ॥ अरु तृष्णारूपी बादुर हे, सो आत्मरूपी सूरजके आगें आवरन करता हे ॥ जब ग्यानरूपी पवन नीकसे तब तृष्णारूपी बादरका नाश होवे; अरु आत्मपदका साक्षात्कार होवे, अरु ग्यानरूपी कमलकों संकोच करनहारी तृष्णारूपी निशा हे; अरु तृष्णारूपी महा भयानक काळी रात्र हे, जीसकर बडे धीरवानभी भयभीत होतें हें, अरु नेनवारेकोंभी अंध कर डारती हे; जब यह आवती हे, तब वैराग्य अरु अभ्यासरूपी नेत्रकों अंध कर डारती हे; अर्थ यह जो सत्य असत्यकों विचारने नही देती॥हे मुनीश्वर ! तृष्णारूपी डाकनी हे, सो संतोषादिक पुत्रकों मार डारती हे अरु तृष्णारूपी कंदरा हे, तिसमें मोहरूपी उन्मत्त हस्ती गरजते हे॥ अरु तृष्णारूपी समुद्र हे, तिसमें आपदारूपी नदी आय प्रवेश करती हे॥तातें सोइ उपाय मुझकों कहो, जीसकर तृष्णारूपी दुःखतें छूटों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे मुनीश्वर ! अग्नीसोंभी अेसा दुःख नही होता ॥ अरु खड्गके प्रहार करभी अेसा दुःख नही होता ॥ अरु इंद्रके वज्रकरभी अेसा दुःख नही होता, जेसा दुःख तृष्णाकर होता हे ॥ सो तृष्णाके प्रहारसों घाइल बडे दुःखकों पावता हे ॥ अरु तृष्णारूपी दीपक पर्या जरता हे; तिसमें संतोषादि पतंगिये जर जातें हे ॥ जेसें जलमें मच्छी रहती हे, सो जलमें कंकरी रेती आदी वेसेकों देख मांस जानकर वह मुखमें लेती हे; तातें उसका अर्थ सिद्धी कछु नही होता; तेसें तृष्णाभी जो कछु पदारथ देखती हे, तिसके पास उडती हे॥अरु तृप्ती किसी करी नहीं होती॥ अरु तृष्णारूपी अेक पंखनी हे, सो कबहु कहुं उड जाती हे अरु स्थिर कबहुं नही होती; तेसें तृष्णाभी कबहुं किसी पदारथकों, कबहु किसीकों ग्रहन करती हे ॥ परंतु स्थिर कबहु नही होती ॥ अरु तृष्णारूपी वानर हे सो कबहु किसी बृच्छपर, कबहु किसीके उपर जाता हे, स्थिर कबहुं नहीं होता हे ॥ जो पदारथ नहीं प्राप्त होता, तिसके निमित जतन करता हे ॥ तेसें तृष्णाहु नाना प्रकारके पदारथका ग्रहन करती हे ॥ अरु भोग कर तृप्त कदाचित् नहीं होती ॥ जेसें घृतकी आहुती कर अग्नी तृप्ती नही पावे तेसें जो पदारथ प्राप्ती योग्य नहीं हे, तिसके ओरभी तृष्णा दोरती हे ॥ शांतीको नहीं पावती हे ॥ हे मुनीश्वर ! तृष्णारूपी उन्मत्त नदी हे, तिसमें जो वहाया पुरुष, ताकों कहांका कहां ले जाती हे ॥ कबहु तो पहार की बाजुमें ले जाय; कबहु दिशामें ले जाय; परंतु इनकों ले फिरती हें ॥ तेसें तृष्णारूपी नदी हे, सो मुझकों ले फिरती हे ॥ अरु तृष्णारूपी नदी हे, इसमें वासनारूपी अनेक तरंग उठते हे, कदाचित मिटते नांहीं हे ॥ अरु तृष्णारूपी नटनी हे, अरु जगतरूपी अखाडा तिसनें लगाया हे ॥ तिसकों शिर ऊंचा कर देखती हे, अरु मूरख बडे प्रसन्न होते हे ॥ जेसें सूर्यके उदय हुअे सूर्यमुखी कमल खिलकें ऊंचा आता हे तेसें मुरख तृष्णाकों देखकर प्रसन्न होते हें ॥ तृष्णारूपी वृद्ध स्त्री हे; जो पुरुष इसका त्याग करता हे, तब वाके पाछें लगी फिरती हे, कबहु इसका त्याग नहीं करती ॥ अरु तृष्णारूपी डोर हे, तिस साथ जीवरूपी पशु बांधे हुअे हे तिसकर भमते फिरते हे ॥ अरु तृष्णा दुष्टनी हे; जब शुभ गुनकों देखे, तब तिनकों मार डारती हे ॥ तिसके संजोगतें में दीन हो जाता हों ॥ जेसें पपैया मेघकों देखकर प्रसन्न होता हे, अरु बुंद ग्रहन करन लगता हे, ओर मेघकों जब पवन ले जाता हे, तब पपैया दीन हो जाता हे ॥ तेसें तृष्णा शुभ गुनका नाश करती हे; तब में दीन हो जाता हों, हे मुनीश्वर ! तृष्णानें मुझको दूरतें दूर डाऱ्या हे ॥ जेसें सूके तृनकों पवन दूरतें दूर डारता हे तेसें तृष्णारूपी पवननें मुझकों दूरतें दूर डाऱ्या हे ॥ आत्म पदतें दूर पर्या हों ॥ हे मुनीश्वर ! जेसें भोंरा कमलके उपर जाता हे; कबहु नीचे वेठता हे ॥ कबहु आसपास फिरता हे; अरु स्थिर नही होता; तेसें तृष्णारूपी भंवरा संसाररूपी कमलके नीचे उपर फिरता हे ॥ कदाचित् ठहरता नहीं हे ॥ जेसें मोतीका वांस होता हे तिसतें अनेक मोती निकसते हें, तेसें तृष्णारूपी बांसतें जगतरूपी अनेक मोती निकसते हें, तिसकर लोभीका मन पूरन नहीं होता ॥ दुःखरूपी रतनका तृष्णारूपी डब्बा हे ॥ तेसें अनेक दुःख रहते हे ॥ तातें सोइ उपाय कहो, जीसकर तृष्णा निवृत्त होवे ॥ हे मुनीश्वर! यह विरागसें निवृत्ति पाती हे॥ ओर किसी उपाय कर निवृत्ति नही होती हे॥जेसें अंधकारका प्रकाश कर नाश होता हे,ओर किसी उपाय कर नहीं होतां; तेसें तृष्णाका नाश ओर उपायसों नहि होता हे॥ अरु तृष्णारूपी हल हे सो गुनरूपी पृथ्वीकों खोद डारता हे; अरु तृष्णारूपी वल्ली हे; गुनरूपी रसकों पीती हे ॥ अरु तृष्णारूपी धूर हे, सो अंतःकरनरूपी जलमें उछलकें मलीन करती हे ॥ हे मुनीश्वर ! नदी हे, सो बरखा कालमें बढती हे, फिर घट जाती हे ॥ तेसें जब इष्ट भोगरूपी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जल प्राप्त होता हे, तब हर्षकर बढती हे ॥ जब भोगरूपी जल घट जाता हे, तब शूखकैं छीन हो जाती हे ॥ हे मुनीश्वर ! इस तृष्णाने मुझकों दीन किया हे ॥ जेसें सुखे तृनकों
पवन उडाता हे, तेसें मुझकों उडातो हे; तातें सोइ तुम उपाय कहो, जिसकर तृष्णाका नाश होवे, अरु आत्मपदकी प्राप्ति होवे, अरु दुःख नष्ट होवे, अरु आनंद होवे ॥ ॥ इति
श्री योगवासिष्ठे वैराग प्रकरणे तृष्णा गारुडी वर्णनं नाम द्वादशः सर्गः ॥ ॥ १२ ॥ ॥ श्रीरामोवाच ॥ हे मुनीश्वर ! यह जो अमंगळरूप शरीर जगतमें उत्पत्ति पाया हे सो बडा
अभाग्यरूप हे ॥ सदा विकारवान, मांस मज्जा कर पूरन हे; सदा अपवित्र हे ॥ इनकरकें में कछु अर्थ सिद्धि होता नही देखता ॥ तातें तिन विकाररूप शरीरकी इच्छा में नहीं रख
ता ॥ यह शरीर न अज्ञ हे, न तज्ञ हे ॥ अर्थ यह जो न जड हे न चैतन्य हे ॥ जेसें अग्निके संजोग कर लोहा अग्निवत् होता हे; सो जलताभी हे; परंतु आप नहीं जलता ॥ तेसें
यह देह न जड हे, न चैतन्य हे ॥ जड इस कारनतें नही, जो इसतें कारजभी होता हे ॥ अरु चैतन्य इस कारनतें नही, जो इसकों आपतें ज्ञान कछु नही होता; तातें मध्यम भाव
में हे ॥ काहेतें जो चैतन्य आत्मा इसमें व्याप रहा हे, सो लोह अग्नीकी नांइ जानत हों, अरु आपतें तो अपवित्ररूप अस्थि, मांस, रुधिर, मूत्र, विष्टा करी पूरन, अरु विकारवान, अेसी
जो देह हे सो दुःखका स्थान हे ॥ अरु इष्टके पायेतें हर्षवान होती हे, अरु अनिष्टके पायेतें शोकवान होती हे; तातें अेसे शरीरकी मुझकों इच्छा नही ॥ यह अज्ञान कर उपजता
हे ॥ हे मुनीश्वर ! अेसे अमंगळरूपी शरीरमें जो अहंपन फुरता हे; सो दुःखका कारन हे ॥ यह संसारमें स्थित होकर नाना प्रकारके शब्द करता हे ॥ जेसें कोटडीमें
बिल्ला बेठा हुआ नाना प्रकारका शब्द करता हे तेसें अहंकाररूपी बिलाडा देहमें रहा हुआ, अहं, अहं, करता हे; चुप कदाचित नही रहता हे ॥ हे मुनीश्वर !
जो किसीके निमित्त शब्द होवे सो सुंदर हे; अन्यथा शब्द व्यर्थ हे ॥ जेसें जयकें निमित्त ढोलका शब्द सुंदर होता हे; तेसें अहंकारके रहित जो पद हे सो शोभनीक हे; ओर
सब व्यर्थ हे ॥ अरु शरीररूपी नौका; भोगरूपी रेतीमें परी हे, इसकों पार होना कठिन हे ॥ जब बैरागरूप जल बढे अरु प्रवाह होवे; अरु अभ्यासरूपी पतवारीका बल
होवे; तब संसारके पाररूपी किनारेपें पहुंचे अरु शरीररूपी बेडा हे; अरु संसाररूपी समुद्र ओर तृष्णारूपी जलमें पऱ्या हे; अरु बडा प्रवाह हे ॥ अरु भोगरूपी तिसमें मगर हे;
सो शरीररूपी बेडाकों पार लग़नें नही देता ॥ जब शरीररूपी बेडाके साथ बैरागरूपी बायु लगे, अरु अभ्यासरूपी पतवारीका बल लगे, तब शरीररूपी बेडा पारकों पावे ॥ हे मु
नीश्वर ! जीन पुरुषनें अेसे बेडेकों उपाय कर आपकों संसार समुद्रतें पार किया हे; सो सुखी भये हें ॥ अरु जिननें नही किया; सो परम आपदाकों प्राप्त होता हे; सो इस बेडे क
र उलटे डुबेइंगे ॥ जेसें बेडामें छिद्र होवे; ओर वामेंतें जल प्रवेश कर आवे, तब वह डूब जाता हे; अरु तिसमें जो मच्छ हे सो खाइ जाता हे; सो इहां शरीररूपी बेडेका तृष्णारूपी
छिद्र हे; तिस करकें इहां संसार समुद्रमे डुब जाता हे; अरु भोगरूपी मगर इसकों खाता हे ॥ अरु यह आश्चर्य हे जो बेडा अपने निकट नही भासता हे ॥ अरु मनुष्य सो मूखता
करकें आपकों बेडा मानता हे; अरु तृष्णारूपी छिद्र करकें दुःख पावत हें ॥ अरु शरीररूपी वृक्ष हे, तामें भुजारूपी शाखा हे; अरु अंगुरी इसके पत्र हे; अरु जंघा इसका थंब हे;
अरु मांसरूपी अंतरका भोग हे ॥ अरु वासना इसकी जड हे; अरु सुख दुःख इसके फूल हे; अरु तृष्णारूपी घुना हे; सो शरीररूपी वृच्छकों खात रहता हे ॥ जब इसकों श्वेत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फूल लगे है तब नाशका समय पाता हैं; कारन जो मृत्युके निकटवर्त्ति होता हे ॥ बहुरी शरीररूपी वृच्छ कैसा हे जो भुजारूपी इसके टास हे अरु हस्तपाद इसके पत्र हें ॥ अरु गिटे इसका गुंछा हे; अरु दांत फूल हे; जंघा स्थंभ हे अरु कर्म जलकर बढ जाता हे ॥ जेसें वृच्छतें जल निकसता हे; सो चिकटा हे ॥ तेसें जल शरीरके द्वार निकसता रहेता हे अरु तृष्णारूपी बिषतें पूरन सरपनी रहती हे ॥ अरु जो कामनाके लिये इस वृच्छका आश्रय लेता हे तब तृष्णारूपी सरपनी तिसकों डसती हे; तिस बिखसों वह मरी जाता हे ॥ हे मुनीश्वर ! अेसा जो अमंगलरूपी शरीर वृच्छ हे, तिनकी इच्छा मुझकों नही हे ॥ यह परम दुःखका कारन हे ॥ जबलग यह पुरुष अपने परिबारमें बध्या हुआ हे, तबलगी मुक्ति न ही होती; जब परिवारका त्याग करे तब मुक्ति होवे ॥ देह, इंद्रिय, प्रान, मन, बुद्धि इसका परिवार हे; इनमें जो अहंभाव हे, वाका त्याग करे तब मुक्ति होवे अन्यथा मुक्ति नही होती ॥ हे मुनीश्वर ! जो श्रेष्ठ पुरुष हे, सो पवित्रइ स्थानमें रहते हे; अपवित्रमें नहीं रहते ॥ सो अपवित्र स्थान यह देह हे; इसमें रहेनेवाराभी अपवित्र हे, अरु अस्थिरूपी यह घरमें लकडे हे; वामें रुधिर, मूत्र विष्टाका इसमें कीच लगाया हे; अरु मांसकी कहगील करी हे; अरु अहंकाररूपी इसमें खपच रहेता हे; अरु तृष्णारूपी खपचनी इसकी स्त्री हे, अरु काम, क्रोध, मोह, लोभ इसका बेटा हे ॥ आंत्र अरु विष्टादिक करी पूरन भऱ्या हुआ हे ॥ अेसा जो अपवित्र स्थान, अमंगलरूप जो शरीर, तिनका में अंगीकार नांहीं करता; यह शरीर रहो चाय मत रहो; इसके साथ मेरे अब कछु प्रयोजन नांहीं ॥ हे मुनीश्वर ! अेक बडा घर हे, तिसमें बडे पशु रहते हैं; सो धूरकों उडावते हैं ॥ सो गृहमें को उ जाता हे, तब सिंघसों मारने लगता हे, अरु धूडभी उसके उपर गिरती हे ॥ सो शरीररूपी बडा गृह हे, तिसमें इंद्रियरूपी पशु हे ॥ जब इस गृहमें पेठता हे, तब बडी आपदा कों प्राप्त होता हे ॥ तात्पर्य यह जो इसमें अहंभाव करता हे, तब इंद्रियरूपी पशु सो विषयरूप सिंघसों मारते हे; अरु तृष्णारूपी धूड इसकों मलीन करती हे ॥ हे मुनीश्वर ! अेसा शरीरका में अंगीकार नहीं करता ॥ जिसमें सदा कलह पडेइ रहते हैं; तिसमें ज्ञानरूपी संपदा प्रवेश नहीं होती ॥ अेसा जो शरीररूपी गृह हे, तिसमें तृष्णारूपी चंडी स्त्री रहती हे ॥ सो इंद्रियरूपी द्वारसो देखती रहती हे, सो सदा कल्पना करत रहती हे; तिसकर शम दमादिरूप संपदाका प्रवेश नही होता ॥ तिस घरमें अेक सज्या हे, जब उनके उपर विश्राम करता हे, तब कछुक सुख पाता हे; परंतु तृष्णाका जो परिवार हे सो विश्राम करने नही देता ॥ सो सुषुप्तिरूपी सज्या हे; जब उसमें विश्राम करता हे, तब काम क्रोधादिक रुदन करते हे ॥ अरु अे चंडी स्त्रीका जो परिवार, काम क्रोध, लोभ, मोह, इच्छा हे सो उठाइ देते हे; विश्राम करने नहीं देते ॥ हे मुनीश्वर ! अेसा दुःखका मूल जो शरीररुपी गृह हे, तिसकी इच्छा मेंने त्याग दीनी हे ॥ यह परम दुःख देनहारा हे, इसकी इच्छा मुझकों नहीं ॥ हे मुनीश्वर ! शरीररूपी वृच्छ हे; तिसमें तृष्णारूपी कौवानी आय स्थित भइ हें, सो जेसें कौवानी नीच पदारथके पास उड़ती हे; तेसें तृष्णारूपी कौवानी भोगरूपी मलिन पदारथके पास उडती हे ॥ बहुरी तृष्णा बंदरीकी नांइं शरीररूपी वृच्छकों हिलाती हे; वृच्छकों स्थिर होने देती नहीं ॥ अरु जेसें उन्मत्त हस्ति कीचमें फस जाता हे, अरु निकस नही शकता, अरु खेदवान होता हे, तेसें अग्यानरूपी मद कर उन्मत्त हुआ जीव शरीररूपी कीचमें फस्या हे, सो निकस नही शकता हे, पच्याइ दुःख पावता हे ॥ अेसें दुःख पावनेवारा शरीर हे, तिसका में अंगीकार नही करता ॥ हे मुनीश्वर ! यह शरीर अस्थि, मांस, रुधिर करी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूरन हे, सो अपवित्र हे ॥ जैसें हस्तीके करन सदाइ हलते हैं, तेसें इसकों मृत्यु परा हिलाता हे ॥ कछु कालका विलंब हे, परंतु मृत्यु इसका ग्रास कर लेवेगा॥तातें मैं इस शरीरका अंगीकार नही करता हों ॥ यह शरीर कृतघ्न हे; भोग भुगतता हे; वडे ऐश्वर्यकों प्राप्ति करता हे; परंतु मृत्यु इनकी सखापन नही करता हे, जब जीव इसकों छांडकर परलोक जाता हे; तब अकेला जाता हे; ओर शरीरकों छोड देता हे॥ जीव इसके सुख निमित्त अनेक जतन करता हे; परंतु संगमें सदा नही रहता ॥ अेसा जो कृतघ्न शरीर हे, इसका मेनें मनसों त्याग किया हे सो यह दुःख देनहारा हे ॥ हे मुनीश्वर ! ओर आश्चर्य देखो , जो वाइका भोग करता हे, तिसके साथ चलता नही; जेसें धुर कर मारग भासनेतें रहे जाता हे; तेसें यह जीव जब चलने लगता हे; तब शरीर साथ क्षोभवान होता अरु वासनारूप धूर संयुक्त चलता हे; परंतु दिखाता नही जो कहां गया ॥ जब परलोक जाता हे, तब बडा कष्ट होता हे; काहेतें जो शरीरके साथ परश किया हे ॥ हे मुनीश्वर ! यह शरीर छिनभंग हे ॥ जेसें जलकी बुंद पत्रके उपर गिरती हे, सो छिनमात्र रहती हे; तेसें शरीरभी छिनभंग हे ॥ अेसे शरीरमें आस्था करनी, सो मूरखता हे; अरु अेसे शरीरके उपर उपकार करनाभी दुःखके निमित्त हे, सुख कछु नांहीं हे ॥ ओर जो धनाढ्य हे सो शरीरसों वडे भोग भुगतें हे; ओर निर्धन थोडे भोग भुगते हे परंतु जरावस्था अरु मृत्यु दोनोकों होते हें ॥ इसमें विशेषता कछु नही ॥ शरीरका उपकार करना, ओर भोग भुगतना, सो तृष्णा करकें उलटा दुःखका कारन हें, जेसें कोउ नागनी घरमें रखकें इसकों दूध प्यावे; तोउ आखर उसकों काटके मारेगी; तेसें जिवनें तृष्णारूपनी नागनी साथ सखाइ करी हे, सो मरेगा; क्यों जो नाशवंत हे ॥ इसके निमित्त जो भोग भुगतनेका जतन करना सो मुरखता हे ॥ जेसें पवनका वेग आता हे, अरु जाताहे; तेसें यह शरीर नाशवंत हे ॥ इससों प्रीति करनी, सो दुःखका कारन हे ॥ सब जीव इसकी आस्थामें बांधे हुअे हे; इसीका त्याग कोउ विरलानेइं किया हे ॥ जेसें कोउ विरला मृग होता हे, सो मरुथलकें जलकी आस्था त्यागता हे; और सबपरे भमते हे ॥ हे मुनीश्वर ! वीजलीका अरु दीपकका प्रकाशभी आता जाता दिखता हे; परंतु इस शरीरका आदिअंत नहीं दिखता हे; जो कहां तें आता हे, अरु कहां जाता हे ॥ जेसें समुद्रमें बुदबुद उपजता हें, अरु मिट जाते हे, तिसकी आस्था करनेतें कछु लाभ नहीं; तेसें यह शरीरकी आस्था करनी योग्य नहीं; यह अत्यंत नाशरूप हे, स्थिर कदाचित नहीं होता हे ॥ जेसें बिजुरी स्थिर नहीं होती, तेसा शरीरभी स्थिर नहीं रहता; इसकी में आस्था नहीं करता ॥ इसका अभिमान मेंनें त्याग्या हे ॥ जेसें कोउ शूके तृनकों त्याग देता हे; तेसें मेनें अहंममता त्यागी हे ॥ हे मुनीश्वर ! अेसे शरीरकों पुष्ठ करना, सो दुःखके निमित्त हे ॥ इस शरीर किसी अर्थ आवने जोग नहीं; जलावने जोग हे ॥ जेसें लकडी जलाअे बिन ओर काममें नहीं आती हे; तेसें यह शरीरभी जड अरु गुंगा जलावनेके अर्थ हे ॥ हे मुनीश्वर ! जिन पुरुषने काष्टरूपी शरीरकों ज्ञानाग्नि कर जलाया हे; तिनका परम अर्थ सिद्ध भया हे॥अरु जीननें नहीं जलाया सो परम दुःख पाया हे ॥ हे मुनीश्वर ! न में शरीरहों, न मेरा शरीर हे, न इसका में हो, न यह मेरा हे; अब मुझकों कामना कोउ नहीं हे ॥ में निरासी पुरुष हों ॥ अरु शरीर साथ मुझकों प्रयोजन कछु नहीं हे ॥ तातें तुम सोइ उपाय कहो; जीसकर में परम पदकी प्राप्ती पांउं ॥ हे मुनीश्वर ! जीस पुरुषनें शरीरका अभिमान त्यागा हे, सो परमानंदरूप हे; ओर जीसकों देहका अभिमान हे, सो परम दुःखी हे ॥ जेते कछु दुःख हे, सो शरीरके संयोग करी होते हें ॥ मान, अपमान, जरा, मृत्यु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दंभ, भ्रांति, मोह, शोक, आदि सर्व विकार देहके संजोग कर होते हे ॥ जीसकों देहमें अभिमान हे, तिनकों धिःकार हे ॥ ओर सब आपदाभी तीसकों प्राप्त होती हे ॥ जेसें समुद्रमें न दी आय प्रवेश करती हे; तेसें देहाभिमानमें सर्व आपदा आय प्रवेश करती हे ॥ जीसकों देहका अभिमान नहीं, सो पुरुषनमें उत्तम हे, अरु वंदना करने जोग्य हे; अेसेकों मेरा न मस्कार हे, अरु सर्व संपदाभी तिसकों प्राप्त होतीहे ॥ जेसें मान सरोवरमें सब हंस आय रहते हे, तेसें जहां देहाभिमान नहीं रहा, तहां सर्व संपदा आय रहती हे ॥ हे मुनीश्वर ! जेसें अपनी छायामें बालक बैताल कलपता हे; अरु तिसकर भय पाता हे; जब इसकों विचारकी प्राप्ती होती हे, तब बैतालका अभाव हो जाता हे, तेसे अज्ञानकर मुझकों अहंकाररू पी पिशाचनें शरीरमें दृढ आस्था बताइ हे, तातें सोइ उपाय कहो! जीसकर अहंकाररूपी पिशाचका नाश होवे; अरु आस्थारूपी फांसी टूटे ॥ हे मुनीश्वर ! प्रथम जो मुझकों अ ज्ञान कर संजोग था, सो अहंकाररूपी पिशाचका था, तिसतें अनंतर शरीरमें आस्था उपजी हे ॥ जेसें बीजतें प्रथम अंकुर होता हे; फिर अंकुरतें वृच्छ होता हे; तेसें अहंकारतें श रीरकी आस्था होती हे ॥ हे मुनीश्वर ! इस अहंकाररूपी पिशाचनें सब जीवनकों दीन किये हे ॥ जेसें बालककों छायामें बैताल भासता हे; अरु दीनताकों प्राप्त होता हे; तेसें अंहकाररूपी पिशाचनें मुझकों दीन किया हे; सो अहंकाररूपी पिशाच अविचारतें सिद्ध हे; अरु विचार किये तें अभावकों प्राप्त होता हे ॥ जेसें प्रकाशकर अधंकार नाश हो जाता हे; तेसें विचार कि येनें अहंकार नाश हो जाता हे ॥ हे मुनीश्वर ! जो शरीरमें आस्था रखी हे, सो शरीर जलका प्रवाहकी नांइं स्थिर नहीं होता; अेसा चळ हे ॥ जेसें बिजुरीका चमका स्थिर नहीं होता; अरु गंधर्व नगरीकी आस्था व्यर्थ हे॥तेसें शरीरकी आस्था करनी व्यर्थ हे॥ हे मुनीश्वर ! अेसें शरीरकी आस्था करकें अहंकार करते हे; अरु जगतके पदारथ निमित्त जतन करते हेसो महा मूरख हे॥जेसें स्वप्न मिथ्या हे, तेसें यह जगत मिथ्या हे; तिसकों सत्य जानकर जो इसका जतन करता हे, सो अपने बंधनके निमित्त करता हे ॥जेसें धुरान गुफा बनाती हे, सो अपने बंध नके निमित्त हे, अरु पतंग दीपककी इच्छा करता हे; सो अपने नाशके निमित्त हे; तेसें अग्यानी जो अपने देहका अभिमान कर भोगकी इच्छा करता हे, सो अपने नाश निमित्त हे ॥ हे मुनीश्वर ! में तो इस शरीरका अंगीकार नहीं करता; इस शरीरका अभिमान परम दुःख देनहारा हे ॥ जीसकों देह अभिमान नहीं रहा, तिसकों भोगकी इच्छाभी न रहेगी ॥ तातें में निराश हों, अरु परम पदकी इच्छा हे; जीसके पाये तें बहुरी संसार समुद्रकी प्राप्ती न होवे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे वैराग प्रकरणे, देह नैराश्य वर्णनं नाम त्रयोदशः सर्गः ॥ १३ ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर ! यह संसार समुद्रमें जो जन्म पाया हे, तामें बालक अवस्था इसकों प्राप्त भइ हे, सोभी परम दुःखका मूल हे; तिसमें परम दीन हों जा ता हे; अरु जेते ओगुन इसमें आय प्रवेश करते हे, सो कहत हों ॥ अशक्तता, मूर्खता, इच्छा, चपळता, दीनता, अरु दुःख संताप, अेते विकार इसकों आय प्राप्त होते हे ॥ यह बा लावस्था महा विकारवान हे; अरु बालक पदारथकी ओर धावता हे; अेक वस्तुका ग्रहन कर दुसरीकों चाहाता हे; स्थिर नही रहता हे; फिर ओरमें लग जाता हे ॥ जेसें बानर ठहर कें नही बेठता, अरु जो कोउकी उपर क्रोध करता हे, तब अंतरतें पन्या जलता हे; अरु बडी बडी इच्छा करता हे तिसकी प्राप्ती नही होती; सदा तृष्णामें रहता हे; अरु छिनमें भय भीत हो जाता हे; शांतिकों प्राप्त नही होता; फिर महा दीन हो जाता हे ॥ जेसें कदली बनका हस्ति शांकरसो बांध्या हुआ दीन हों जाता हे; तेसें यह चैतन्य पुरुष बालक अवस्था

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर दीन हो जाता हे; जो कछु इच्छा करता हे, सो बिचार बीन हे; तिसकर दुःख पाता हे; अरु मूढ गुंग अवस्था हे तिसकर कछु सिद्धि नही होती; कोउ पदारथकी प्राप्ति होती हे, तिसमें छिनमात्र सुखी रहता है; बहुरी तपने लगता हे ॥ जेसें तपती पृथ्वीपर जल डारियें तब अेक छिन शीतल होती हे; फिर उसी प्रकारसों तपती हे; तेसें उहभी तपता रहता हे ॥ जेसें रात्रीके अंतमें सूर्य उदय होता हे, तिसकर उलुकादि कष्टवान होते हे; तेसें यह जीवकों स्वरूपके अग्यान कर बालावस्थामें कष्ट होता हे ॥ हे मुनीश्वर ! जो बाळक अवस्थाकी संगती करता हे, सोभी मूरख हैं; काहेतें जो यह विवेकरहित अवस्था हे; अरु सदा अपवित्र हे; ओर सदा पदारथकी ओर धावता हे; अेसी मूढ अरु दीन अवस्थाकी मुझकों इच्छा नही ॥ जिस पदारथकों देखता हे तिसकी ओर धावता हे; अरु छिन छिन अपमानकों पावता हे ॥ जेसें कूकर छिन छिनमें द्वारकी ओर धाता हे, अरु अपमान पावता हे, तेसें बालक अपमानकों प्राप्त होता हे ॥ अरु बालककों सदा माता अरु पिताका भय रहता हे ॥ बांधवका सदा भय रहता हे, अरु आपतें बडे बालककाभी भय रहता हे; अरु पशु पंछीहुका भय रहेता हे ॥ हे मुनीश्वर ! अेसी दुःखरूप अवस्थाको मुझकों इच्छा नही ॥ जेसा स्त्रीका नेंन चंचल हे, अरु नदीका प्रवाह चंचल हे, इसतेंभी मन अरु बालक चंचल हे, अेसें जानता हों; अरु सब चंचलता बालकतें कनिष्ट हे; बालक सबतें चंचल हे ॥ जेसा मन चंचल हे तेसा बालकभी चंचल हे ॥ मनका रूप बालक हे ॥ हे मुनीश्वर ! जेसें वेश्याका चित्त अेक पुरुषमें नही ठहरता, तेसें बालकका चित्त अेक पदारथमें नही ठहरता ॥ जो इस पदारथ कर मेरा नाश होवेगा, अेसा विचारभी तिसकों नहीं, अरु इस कर मेरा कल्यान होवेगा सो विचारभी नही ॥ अेसेंइ पच्या चेष्टा करता हे; अरु सदा दीन रहेता हे; अरु सुख दुःख इच्छा होंस करकें तपायमान रहता हे; जेसें जेष्ठ आषाढमें पृथ्वी तपायमान होती हे, तेसें बालक तपताइ रहेता हे, शांतीकों कदाचित् नही पावता ॥ अरु जब विद्या पढने लगता हे, तब गुरुसों बडा भयभीत होता हे; जेसें कोउ जमकों देखकें भय पावे, ओर गरुडकों देखकें जेसें सर्प भय पावे, तेसैं भयभीत हो जाता हे ॥ जब शरीरकों कोउ कष्ट आय प्राप्त होता हे, तब बडे दुःखकों प्राप्त होता हे ॥ परंतु दुःखके निवारनमें समर्थ नही होता; अरु सहनकोंभी समर्थ नही॥ अंतरतें पच्या जलता हे; अरु मुखतें कछु बोल शकता नही ॥ जेसें बृच्छ कछु नही बोल शकता, अरु जेसे अवर तिर्यक् जोनी दुःख पावतहे; अरु कहि न शकत हे अरु दुःखका निवारन नही करी शकता, न संहार कर शकता, अंतरतें पच्या जलता हे; तेसें बालक गुंग मूंढ हुआ दुःख पावता हे ॥ हे मुनीश्वर ! अेसी जो बालककी अवस्था, तिसकी जो स्तुती करता हे, सो मूर्ख हे ॥ यह तो परम दुःखरूप अवस्था हे; इसमें विवेक विचार कछु नही ॥ अेक खानेकों पाता हे, अरु रुदन करता हे ॥ अेसी ओगुनरूप अवस्था मुझकों नही सुहाती हे ॥ जेसें बिजुरी अरु जलके बुदबुदे स्थिर नही रहते तेसें बालकहु स्थिर कदाचित् नही होता ॥ हे मुनीश्वर ! यह महा मूर्ख अवस्था हे; कबहु कहता हे, हे पिता ! मुझकों बरफका टुकडा भुनी देहु ॥ कबहु कहता हे, मुझकों चंद्रमा उतार देहु ॥ अे सब मूर्खताके बचन हे ॥ तातें अेसी मूर्खावस्थाकों में अंगीकार नही करता ॥ जेसें दुःखका अनुभव बालककों होता हे, सो हमारे सुपनेमेंभी नही आया; तात्पर्य यह जो बालावस्थामें बडा दुःख हे ॥ यह बालावस्था ओगुनका भूखन हे; सो अवगुन कर शोभती हे; अेसी नीच अवस्थाकों में अंगीकार नही करता ॥ इसमें गुन कोउभी नांही हे ॥ ॥ इतिश्रीयो० वै० बालावस्था वर्णनं नाम चतुर्दशः सर्गः ॥ ॥१४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ रामोवाच॥हे मुनीश्वर ! दुःखरूप बालावस्थाके अनंतर जो जुवा अवस्था आती हे, सो नीचेतें ऊंची चढती हे; सोभी उत्तम गिनवेके निमित्त नही हे, अधिक दुःखदायक हे ॥ जब जुवा अवस्था आती हे, तब कामरूपी पिशाच आय लगता हे ॥ सो कामरूपी पिशाच जुवा अवस्था रूपी गडेलेमें आय स्थित होता हे; चित्त फिराता हे; अरु इच्छामें पसारता हे ॥ जेसें सूर्यके उदय हुवे सूर्यमुखी कमल खिली आता हे, अरु पंखुरीनकों पसारता हे, तेसें जुवा अवस्थारूपी सूर्य उदय होता हे, तब चित्तरूपी कमल इच्छारूपी पंखुरीको पसारता हे तब फुरती हे; अरु कामरूपी पिशाच इसकों स्त्रीमें डार देता हे तहां पर्या दुःख पाता हे, जेसें कोउकों अग्निके कुंडमें डारी दिया होय, अरु वह दुःख पावे, तेसें कामके बश हुआ दुःखकों पाता हे ॥ हे मुनीश्वर ! जो कछु विकार हे, सो सब जुवा अवस्थामें आयकें प्राप्त हुअे हें ॥ जेसें धनवानकों देखकें निर्धन सब धनकी आशा करते हे, तेसें जुवा अवस्थाकों देखकर सब दोष आय इकठे होते हे ॥ अरु जो भोगकों सुखरूप जानकर भोगकी इच्छा करता हे, सो परम दुःखका कारन हे; जेसें मद्यका घट भऱ्या हुआ देखने मात्र सुंदर लगता हे, परंतु जब उनका पान करै, तब उन्मत्त होय जाय; तिस उन्मत्तता कर दीन होजाता हे; अरु निरादरकों पावता हे ॥ तेसें यह भोग देखने मात्र सुंदर भासता हे; परंतु जब इनकों भुगतता हे, तब तृष्णाकर उन्मत्त हो जाता हे; अरु पराधीन होय जाता हे ॥ हे मुनीश्वर ! यह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ये सब जो चोर हे, सो जुवारूपी रात्रकों देखकर लुंटने लगते हे; अरु आत्मज्ञानरूपी धनकों चोर ले जाता हे; तिसकर यह दीन होता हे ॥ यह पुरुष आत्मानंदके बिजोगकर दीन हुआ हे ॥ हे मुनीश्वर ! अेसी जो दुःख देनहारी जुवा अवस्था, तिसका में अंगीकार नही करता; अरु शांति जो हे, सो चित्त स्थिर करनेके लिये हे; सो चित्त जुवा अवस्थामें विषयकी ओर धावता हे, जेसें बान लच्छकी ओर जाता हे, तब उसकों विषयका संजोग होता हे; सो विषयकी तृष्णा निवृत्त नांही होती; अरु तृष्णाके मारे जन्मतें जन्मांतररूप दुःखकों पावता हे ॥ हे मुनीश्वर! अेसी दुःखदायक जुवा अवस्थाकी मुझकों इच्छा नांही हे ॥ हे मुनीश्वर! जेते कछु दुःख हे, सो सब जुवा अवस्थामें आयकर प्राप्त होता हे ॥ काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, चपलता, इत्यादिक जो दुःख हे, सो सब जुवा अवस्थामें स्थिर होते हे ॥ जेसें प्रलय कालमें सब रोग आय स्थिर होते हे, तेसें जुवावस्थामें सब उपद्रव आय मिलते हें; ओर छिनभंग हे॥ जेसें बिजुरीका चमका होयकें मिट जाता हे; जेसें समुद्रमें तरंग होते हें; अरु मिट जाते हे, तेसें जुवा अवस्था होयकें मिट जाती हे ॥ जेसें स्वप्नमें कोइ स्त्री विकारकर छल जाती हे, तेसें अज्ञानकर जुवा अवस्था छल जाती हे ॥ हे मुनीश्वर ! जुवा अवस्था जीवकी परम शत्रू हे ॥ जो पुरुष इस शत्रूके शस्त्रतें बचे हें, सो धन्य हे ! इसके शस्त्र काम, क्रोध, हे; जो इसतें छुट्या हे, सो वज्रके प्रहार करभी छेद्या न जावेगा ॥ जो इनकर बांध्या हुआ हे, सो पशु हे, हे मुनीश्वर ! जुवावस्था देखनेमें तो सुंदर हे; परंतु अंतरतें तृष्णा करकें जरजरीत हे ॥ जेसें वृच्छ देखनेमें तो सुंदर होय, अरु अंतरतें घुना लग्या हुआ हे; तेसें जुवावस्था जो भोगके निमित्त जतन करती हे, सो भोग आपात रमणीय हे ॥ कारन यह जो जबलग इंद्रिय अरु विषयका संजोग हे, तबलग अविचारित भला लगता हे; अरु जब बिजोग हुआ तब दुःख होता हे ॥ तातें भोग करकें मूरख प्रसंन होते हे, अरु उन्मत्त होते हे, तिसकों शांति नांही होती ॥ अरु अंतरतें सदा तृष्णा रहती हे ॥ स्त्रीमें चित्तकी आशक्ति रहती हे ॥ जब इष्ट वनिताका बिजोग होता हे ॥ तब तिसके समरन करकें जलता हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जेसें वनका वृच्छ अगन करकें जलता हे, तेसें जुवावस्थामें इष्ट विजोग करकें जीव जलता हे ॥ जेसें उन्मत्त हस्ती सांकर करकें बंधन पाता है, तब स्थिर होता है; कछु जाय नांही शकता; तेसें कामरूपी हस्ति हे, तिसकों सांकररूप जुवा अवस्था बंधन करती हे, अरु जुवावस्थारूपी नदी हे, तिसमें इच्छारूपी तरंग उठते हे; सो कदाचित शांतिकों नांही पाता हे; अरु हे मुनीश्वर ! यह जुवावस्था बडी दुष्ट हे; कोउ बडा बुद्धिवान होवे; अरु सदा निर्मल प्रसन्न होवे; ऐसे गुन करकें संपन्न होवे; तिसकी बुद्धिकोंभी जुवावस्था मलीन कर डारती हे ॥ जेसें निर्मल जलकी बडी नदी होवे; अरु जब बरषाकाल आवे, तब मलीन होय जावे; तेसें जुवावस्थामें बुद्धि मलीन होय जाती हे ॥ हे मुनीश्वर! शरीररूपी वृच्छ हे, तिसमें जुवावस्थारूपी वल्ली प्रगट होती हे; सो पुष्ट होती हे, तब चित्तरूपी भंवरा आय बेठता हे; सो तृष्णारूपी तिसकी सुगंध करकें उन्मत्त होता हे; अरु सब बिचार भूल जाता हे ॥ जेसें जब प्रबल पवन चलता हे, तब सूखे पत्रकों उडाय ले जाता हे; अरु रहने नांही देता; तेसें जुवावस्था आवती हे तब, वैराग, संतोषादिक गुनका अभाव करती हे ॥ अरु दुःखरूपी कमलका जुवावस्थारूपी सूर्य हे; जुवावस्थाके उदयतें सब दुःख प्रफुल्लित होय आते हैं ॥ तातें सब दुःखका मूल जुवावस्था हे ॥ जेसें सूर्यके उदयतें सूर्यमुखी कमल खील आते हैं, तेसें चित्तरूपी कमल, संसाररूपी पंखुरी, अरु सत्यतारूपी सुगंधकर खीली आता हे ॥ अरु तृष्णारूपी भौंरा तिसपर आय बेठता हैं, अरु विषयकी सुगंध लेता हे ॥ हे मुनीश्वर! संसाररूपी रात्री हे, तिसमें जुवावस्थारूपी तारागन प्रकाशते हे; कारन यह जो शरीर जुवावस्था करी सुशोभित होता हे ॥ अरु जुवावस्था शरीरकों जर्जरीभाव करकें हो आती हे ॥ जेसें धानके छोटे वृच्छ हरा तबलगै रहे, जबलग उसकों फूल नांही आया; जब फूल आता हे, तब सुखनेकों लगता हे; अरु अंनके कन परिपक्व होते हैं, तब अंनके छोटे वृच्छ जर्जर भावकों पावते हे ॥ उसकी हरियावल नांही रह शकती ॥ तेसें जबलगी जुवानी नांही आइ, तबलगी शरीर सुंदर कोमल रहता हे; जब जुवानी आइ तब शरीर क्रूर हो जाता हे, फेर परिपक्व होकर छीन हो जाता हे; अरु वृद्ध होता हे; तातें हे मुनीश्वर! ऐसी दुःखकी मूलरूप जुवा अवस्था हे तिसकी मुझकों इच्छा नांही; जेसें समुद्र बडे जलकर पूरन हे; तरंगकों पसारता हे; अरु उछलता हे; तोउभी मर्यादाका त्याग नांही करता; ईश्वरकी आग्या मर्यादामें रहेनेकी हे; अरु जुवावस्था तो ऐसी हे, जो शास्त्र की मर्यादा, अरु लोकको मर्यादा मेटकें चलती हे; अरु तिनकों अपना बिचार नांही रहेता ॥ जेसें अंधकारमें पदारथका ग्यान नांही होता, तेसें जुवावस्थामें शुभ अशुभका त्याग नांही होता ॥ जीसकों बिचार नांही रह्या तिसकों शांति कहांते होवे ? सदा व्याधी तापमें जऱ्या रहता हे ॥ जेसें जलबिना मच्छकों शांति नांही होती, तेसें बिचार बिना पुरुष सदा जलता रहेता हे ॥ जब जुवावस्थारूप रात्र आती हे, तब काम पिशाच आयकें गरजता हे; तिसकर इसकों यही संकल्प उठते हैं; जो कोउ कामी पुरुष आवे, तिसकें साथ में यही चर्चा करो ॥ हे मित्र ! यह केसी सुंदर हे ? अरु केसे उसके कटाच्छ हे ? सो किस प्रकार मोकों प्राप्त होय ?॥ हे मुनीश्वर ! इह इच्छा साथ वह सदा जरताइ रहता हे ॥ जेसें मरुथलकी नदीकों देख मृग दोरता हे; अरु जलकी अप्राप्ति कर जलता हे; तेसें कामी पुरुष विषयकी वासना करकें जलता हे, अरु शांति नांही पावता हे ॥ हे मुनीश्वर ! मनुष्य जन्म उत्तम हे; परंतु जिनके अभाग्य हे, तिनकों विषयतें आत्मपदकी प्राप्ति नांही होती ॥ जेसें चिंतामणि कोइकों प्राप्त होवे, सो तिसका निरादर करे ओर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसकों जाने नांही, ओर डारी देवे; तेसें जो पुरुष मनुष्य शरीर पायकर आत्मपद नांही पाया, सो बडे अभागी हे; अरु मुरखता करकें अपने जीवनेकों व्यर्थ खोय डारता हे ॥ अरु जुवान अवस्थामें परम दुःखका क्षेत्र अपने निमित्त बोता हे; अरु अेते विकार जुवावस्थामें हे, सो सब आयकें इनकों प्राप्त होते हे ॥ मान मोह, मद इत्यादि विकार करकें पुरुषार्थका नाश करता हे ॥ हे मुनीश्वर! अेसें जुवावस्था बडे विकारकों प्राप्त करती हे ॥ जेसें नदी वायुसों अनेक तरंग पसारती हे, तेसें जुवावस्था चित्तके अनेक कामकों उठावती हे ॥ जेसें पंखी पंख कर बहुत उडता हे; जेसें सिंह भुजाके बलसों पशुकों मारनेकों दोरता हे, तेसें चित्त जुवावस्था कर विक्षेपकी ओर धावता हे ॥ हे मुनीश्वर! समुद्रका तरना कठिन हे, काहेतें जो तामें जल अथाग हे, अरु बिस्तारबी बडा हे; अरु तिसमें मच्छ, कच्छ, मगर बडे देहधारी रहते हे; अेसा दुस्तर समुद्रका तरना सो मैं सुगम मानता हों, परंतु जुवावस्थाका तरना महा कठिन हे ॥ कारन यह जो जुवावस्थामें निर्दोष रहना कठिन हे; अेसी संकटवारी जो जुवावस्था हे, तिसमें चलायमान नांही होते सो पुरुष धन्य हे! अरु बंदना करने जोग हे ॥ हे मुनीश्वर! यह जुवावस्था चित्तकों मलीन कर डारती हे॥जेसें जलकी बावरी हे, तिसके निकट राख कांटे रहे होय, सो पंवन चलनेतें सब आय बावरीमें गिरे; तेसें पवनरूपी जुवावस्था दोषरूपी धुर कांटेनकों चित्तरूपी बावरीमें डारकें मलीन कर देता हे ॥ अेसे औगुन करकें पूरन जो जुवावस्था, तिसकी इच्छा मुझकों नांही हे ॥ जुवावस्था! मेरेपर यही कृपा करनी, जो तेरा दर्शन नांही होवे; तेरा आवना में दुःखका कारन मानता हों ॥ जेसें पुत्रके मरनका संकट पिता शोष नांही शकता, अरु सुखका निमित्त नांही देखता; तेसा तेरा आवना में सुखका निमित्त नांही देखता, तातें मुझपर दया करनी जो अपना दर्शन न होवे! हे मुनीश्वर! जुवावस्थाका तरना महा कठिन हे ॥ जो कोउ जोबनवान होवे, सो नम्रता संयुक्त होवे; ओर शास्त्रके गुन, वैराग, विचार, संतोष, शांति, इनकर संपन्न होवे सो दुर्लभ हे ॥ जेसें आकाशमें वन होना आश्चर्य हे; तेसें जुवावस्थामें, वैराग, विचार शांति, संतोष पावना अे बडा आश्चर्य हे ॥ तातें मुझकों सोइ उपाय कहो, जीसकर जुवावस्थाके दुःखकी मुक्ति होय जाय; अरु आत्मपदकी प्राप्ति होय ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे वैराग प्रकरणे जुवा गारुडी वर्णनं नाम पंचदशःसर्गः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥१५॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर! जिस काम विलासके निमित्त स्त्रीकी वांछा करता हे, सो स्त्री, अस्थि, मांस, रुधिर, मूत्र, विष्ठाकरी पूरन हे; इसीकी पूतरी बनी हुइ हे; जेसें जंत्रीकी बनी पूतरी होती हे, सो तागेसोंकर अनेक चेष्टा करती हे; तेसें यह अस्थि, मांसादिककी पूतरीमें कछु ओर नांही हे ॥ जो बिचार कर नहि देखता तिसकों रमनीक दिखती हे ॥ जेसें पर्वतके शिखर दूरतें संदर, अरु गंगमालासहित भासतें हें, अरु निकटतें असार हे; पडे पथ्थरइ दिखते हे; तेसें स्त्री, वस्त्र अरु भूखनसों करी सुंदर भासती हे; अरु जो अंगकों भिन्न भिन्न बिचार कर देखो तो सार कछु नांही हे ॥ जेसें नागनीके अंग बहुत कोमल होते; परंतु उसका स्पर्श करे तो काटकें मार डारती हे; तेसें जो कोइ स्त्रीकों स्पर्श करते हे तिनको नाश कर डारती हे; जेसें बिषकी बेली देखने मात्र सुंदर लगती हे, परंतु स्पर्श कियेतें मार डारती हे; जेसें हस्तिकों जंजीर कर बांधो तब जिस द्वारपें रहता हे, तहांइ स्थिर रहता हे; तेसें अग्यानीका जो चित्तरूपी हस्ति हे, सो कामरूपी जंजीरकर बध्या हुआ स्त्रीरूपी अेक स्थानमें स्थिर रहता हे; उहांतें कहुं जाय नांही शकता ॥ ओर जब हस्तिकों महावत अंकुश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का प्रहार करता हे, तब बंधनकों तोरकें निकस जाता हे, तेसें यह चित्तरूपी मूर्ख हस्ति है, सो महावतरूपी गुरुका उपदेशरूपी अंकुशका वारंवार प्रहार करता हे, तब सोबी निर्बंध होय जा
ता हे॥ हे मुनीश्वर! कांमी पुरुष जो स्त्रीकी वांछा करता हे सो अपने नाशके निमित्त करता हे; जेसें कदलीबनकां हस्ति, कागदकी हस्तनी देखकर छल पायकें बंधनमें आता हे, तातें
परम दुःख पाता हे; तेसें परमदुःखका मूल स्त्रीका संग हे ॥ हे मुनीश्वर! जेसें बनके दाहकी अग्नि सबनकों जलावती हे, तेसें स्त्रीरूपी अग्नि तिसतें अधिक हे; काहेतें जो उस अग्निके
परस कियेतें तप्त होते हे; ओर स्त्रीरूपी अग्नि तो स्मरन मात्रतें जलाती हे ॥ ओर जो सुख रमनीय दिखाता हे, सो आपात रमनीय हे; जब स्त्रीका सुखका विजोग होता हे, तब
मुरदेकी नांइं हो जाता हे ॥ तिस कालमेंभी शब जेसा हो जाता हे ॥ हे मुनीश्वर! यह तो अस्थि, मांस, रुधिरका पिंजरा हे, सो अग्निमें भस्म हो जायगा; अथवा पशु पंखीकों
खानेका आकार होयगा ॥ जीनकों देखकर पुरुष प्रसंन होता हे, अरु प्रान आकाशमें लीन हो जातें हे; तातें इस स्त्रीकी इच्छा करनी सो मूर्खता हे ॥ जेसें अग्निकी ज्वालाके
उपर स्यामता हे; तेसें स्त्रीके शीस उपर स्याम केश हे ॥ जेसें अग्निके स्पर्श कियेतें जलता हे; तेसें स्त्रीके स्पर्श कियेतें पुरुष जलता हे ॥ तातें जलना दोनोमें तुल्य हे ॥ हे मुनीश्वर!
इसकों नाश करनहारी स्त्रीरूपी अग्नि हे; जो स्त्रीकी इच्छा करतें हे; सो महामूर्ख अग्यानी हे; सो अपने नाशके निमित्तइ इच्छा करते हे ॥ जेसें पतंग अपने नाशके निमित्त दीप
ककी इच्छा करते हे; तेसें कामी पुरुष अपने नाशके निमित्त स्त्रीकी इच्छा करता हे ॥ हे मुनीश्वर! स्त्रीरूपी विषकी वल्ली हे; अरु हस्त पावके अग्र तिसके पत्र हे; अरु भुजा
डारी हे; ओर अस्थिरूप गुंछे हे; नेत्रादिक इंद्रिय तिसके फूल हे; अरु कामी पुरुषरूपी भौंरे आय बेठते हे; अरु कामरूपी धीवरने स्त्रीरूपी जाल पसारी हे; तिसपर कामी पुरुष
रूपी पंछी, आय फसते हे ॥ कामरूपी धीवर तिनकों फसायकर परम कष्ट प्राप्त करता हे ॥ अेसें दुःखके देनहारी स्त्रीकी जो वांछा करते हे, सो महा मूर्ख हे ॥ हे मुनीश्वर! स्त्री
रूपी सरपनी हे; जब तिसका फुत्कारा निकसता हे, तब तिसके निकट कमल फूल सब जल जाते हे; अेसी स्त्रीरूपी सरपनी हे, तिसका इच्छारूप जो जो फुत्कारा निकसता हे, तब
वैरागरूपी कमल जर जाते हे; अरु जब सरपनी दसती हे तब बिष चढता हे ॥ ओर स्त्रीरूपी सरपनीकी चितौंनी करी तब अंतरतें आपेंइ विष चढ जाता हे ॥ हे मुनीश्वर! जेसें
व्याध छलकर मच्छीकों फसावता हे; तेसें कामी पुरुष मच्छीवत सुंदर स्त्रीरूपी जाल देखकें फसाता हे; ओर स्नेहरूपी तागेसों कामी पुरुष बंधन पाय खेंचाया चला जाता हे;
फिर तृष्णारूपी छुरीसों काम मार डारता हे ॥ हें मुनीश्वर! अेसें दुःखके देनहारी स्त्रीकी मुझकों इच्छा नांहीं; अरु कामरूपी पाराधि हे, तिसनें रागरूपी इंद्रियसों जाल बिछाय
कामी पुरुषरूपी मृगकों आशक्ति कर डारता हे ॥ अरु स्त्रिका स्नेहरूपी डोरी हे; तिसकर कामी पुरुषरूप बेलसो बध्या हे ॥ अरु स्त्रीका मुखरूपी जो चंद्रमा हे, तिसकों देखकर कामी
पुरुषरूपी कमलनी खीली आती हे; जेसें चंद्रमुखी कमल चंद्रमाकों देखकर प्रसन्न होते हे; ओर सूर्यमुखी नांहीं होतें, तेसें यह कामी पुरुष भोगकुंकर प्रसन्न होते; अरु ग्यानवान प्रसन्न
नांहीं होते हे॥ जेसें नकुल सर्पकों बिलमेंतें निकासकें मारता हे; तेसें कामी पुरुषकों स्त्री, आत्मानंदमेंतें निकालकें मार डारती हे॥ जब स्त्रीके निकट जाता हे ॥ तब उसकों भस्म कर डारती
हे ॥ जेसें सूखे तृन अरु घृतकों अग्नि भस्म कर डारती हे, तेसें कामी पुरुषकों स्त्रीरूपी नागनी भस्म कर डारती हे ॥ हे मुनीश्वर! स्त्रीरूपी जो रात्रि हे, तिसका स्नेहरूपी अंधकार हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिसमें कामक्रोधादिक उलूक अरु पिशाच हैं ॥ हे मुनीश्वर ! जो स्त्रीरूपी खड्गके प्रहारतें जुवारूपी संग्राममेंतें बच्या हे, सो पुरुष धन्य हैं! तिसकों मेरा नमस्कार हैं ॥ स्त्रीका संजोग परम दुःखका कारन हे, तातें मुझकों इसकी इच्छा नांही ॥ हे मुनीश्वर! जो रोग होता हे, तिसके अनुसार ओषद करता हे, तब रोग निवृत्त होता हैं; अरु कौउ कुपथ्य दिये, तब वाका प्रलय होता हे, रोग वढ जाता हे; तातें मेरे रोगके अनुसार ओखद करो; सो मेरा रोग सुनियें ॥ जरा अरु मृत्यु मुझकों वडा रोग हे; तिसका नाशका ओषद मुझकों दीजियें ॥ ओर स्त्रीयादिक जो भोग हे, सो सब इस रोगके वृद्धि करता हे ॥ जेसें अग्निमें घृत डारिये, तब वढ जाती हे; तेसें भोगसो जरा मृत्यु आदिरोग सो वढता हे; तातें इस रोगकी निवृत्तिका ओखद करो, नांही तो सबका त्याग कर वनमें जाय रहुंगा ॥ हे मुनीश्वर! जिसकों स्त्री हे तिसकों भोगकी इच्छाभी होती हैं, ओर जीसकों स्त्री नांही तिसकों स्त्रीकी इच्छाभी नांही ॥ जिसने स्त्रीका त्याग किया हे, तिनने संसारकाभी त्याग किया हे, सोइ सुखी हे; संसारका वीज स्त्री हे, तातें मुझकों स्त्रीकी इच्छा नांही, मुझकों सोइ ओखद दीजें, जिसतें जरा मृत्यु आदि रोगकी निवृत्ति होइ ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे वैराग प्रकरणे स्त्रीदुराशा वर्णनं नाम षोडशः सर्गः ॥ ॥ १६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ श्रीरामोवाच ॥ हे मुनीश्वर ! बालक अवस्थातो महाजड हे, अरु अशक्त हे; ओर जब जुवावस्था आती हे, तब वालावस्थाको ग्रहन कर लेती हे ॥ तिसके अनंतर वृद्धावस्था आती हे, तब शरीर जर्जरभूत हो जाता हे ॥ अरु वुद्धी छीन हो जाती हे; वहुरी मृत्युकों पावता हे ॥ हे मुनीश्वर ! इस प्रकार अग्यानीका जीवना व्यर्थ हे, कछु अर्थकी सिद्धि नांही हे ॥ जेसें नदीके तटपर वृच्छ होते हे, सो जलके प्रवाह कर जर्जरीभूत हो जाते हे; तेसें वृद्धावस्थामें शरीर जर्जरीभूत हो जाता हे ॥ जेसें पवनसों पत्र उड जाता हे, तेसें वृद्धावस्थामें शरीर नाश पाता हे, जेते कछु रोग हे सो सब वृद्धावस्थामें आय प्राप्त होते हे; अरु शरीर कृश होय जाता हे; अरु स्त्री पुत्रादिक सब वृद्धका त्याग कर देते हे; जेसें पक्के फलकों वृच्छ त्याग देता हे, तेसें वृद्धकों कुटुंव त्याग देता हे, अरु देख हसते हे; जेसें बावेरकों देखकें हसकें वोलते हैं जो इनकी बुद्धि सव जात रही ॥ जेसें कमल फूलनके उपर बरफ पडताहे, अरु कमल जर्जरीभूत हो जाता हे, तेसें जरा अवस्थामें पुरुष जर्जरी भावकों प्राप्त होता हे, अरु शरीर कुवरा हो जाता हे; केश स्वेत हो जाते हे; शक्ति छीन हो जाती हे ॥ जेसें चिरकालका वडा वृच्छ होता हे, तिसमें घुना होता हे; तेसें शक्ति कछु रहत नांही ॥ हे मुनीश्वर! ओरडु सब कृति छीन हो जाती हे; परंतु अेक आशक्ति मात्र रहती हे ॥ जेसें वडे वृच्छपें उलूक आय रहते हैं; तेसें इसमे क्रोधशक्ति आय रहती हे; ओर शक्ति सब छीन हो जाती हे ॥ हे मुनीश्वर ! जरा अवस्था दुःखका घर हे; जब जरा अवस्था आती हे, तब सब दुःख इकठे होते हैं, तिनकर महा दीन हो जाते हे; अरु जुवावस्थाका जो कामका वल रहता हे, सो जरामें छीन हो जाता हे ॥ अरु इंद्रियकी आशक्ति घट जाती हे, तिनतें चपलताका अभाव हो जाता हे ॥ जेसें पिताके निर्धन डुवे पुत्र दीन हो जाता हे, तेसें शरीर निर्बल डुवे इंद्रियांडु निर्वल हो जाती हे; ओर अेक तृष्णा उन्मत्त हो वढ जाती हे ॥ हे मुनीश्वर ! जब जरारूपी रात्रि आती हे, तब खांसी रूपी श्यार आय शब्द करती हे; अरु आधि व्याधिरूपी उलूक आय निवास करते हे ॥ हे मुनीश्वर ! अेसी जो नीच वृद्धावस्था हे, तिसकी मुझकों इच्छा नहीं ॥ यह देह जरा आयेतें कूवरी होय जाती हे; जेसें पक्के फलसोंकर वृच्छ झुक जाता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे, तेसें जराके आयेतें देह कूबरी हो जाती हे ॥ जो जुवावस्थामें स्त्री पुत्रादिक चाहतें थे, अरु टहल करतेथे, सो सब उसकों त्याग देतें हे ॥ जेसें वृद्ध बेलकों बेलवारा त्याग देता हे; तेसें इसकों बंधु त्याग देतें हे; ओर देखके हसते हे, अरु अपमान करते हे ॥ तिनकों ऊंटकी नांइ भासता हे॥हे मुनीश्वर ! अेसी जो नीच अवस्था हे, तिनकी मुझकों इच्छा नांहीं॥ अब जो कछु कर्त्तव्य मुझकों कहो सो में करों ॥ इस शरीरकी तीनो अवस्थामें कोउ सुखदाइ नांहीं हे ॥ क्यों जो बाळावस्था महा मूढ हे; अरु जुवावस्था महा बिकारवान हे; अरु जरा अवस्था महा दुःखका पात्र हे॥बालावस्थाकों जुवा अवस्था ग्रास कर लेती हे; अरु जुवाअवस्थाका जरा अवस्था ग्रास कर लेतीहे जरा अवस्थाका मृत्यु ग्रास कर लेता हे॥यह अवस्था सब अल्प कालकी हे; इनके आश्रय करकें मेरेकों कहा सुख होना हे; तातें मुझकों सोइ उपाय कहो, जिसकर इस दुःखतें मुक्त हो जाऊं ॥हे मुनीश्वर ! जब जरावस्था आती हे, तब मरनाभी निकट आता हे॥ जेसें संध्याके आये रात्र तत्काल आय जाती हे; ओर जो संध्याके आये दिनकी इच्छा करते हें, सो मूरख हे, तेसें जराके आये जिवनेकी आशा रखनी सो महा मुरखता हे॥हे मुनीश्वर ! जेसें बिल्ली चितौंनी करती हे, चुहा आवे तो पकर लेऊं; तेसें मृत्यु चितवत हे, जो जरा अवस्था आवे तो में इसका ग्रहन कर लेऊं; अरु जरा अवस्था मानो कालकी सखी हे॥रोगरूपी मशालेकर शरीररूपी मांसकों शुखाती हे, तब काल जो इसका स्वामी हे, सो आयकर भोजन कर लेताहे;अरु शरीररूपी घर हे तिसका स्वामी काल हे;काल जब घर में आवे, तब तिसके आगें तीन पटरानी आती हे; पहिली अशक्तता, दुसरी अंगमें पीडा, तिसरी खांसी ॥ सो शीघ्र स्वासकों चलावती हे, अरु श्वेत केश होते हे, सो चमरकी नांइ झुलते हे ॥ अेसी जो कालकी सहेली हे सो प्रथमही आइ प्रवेश करती हे; अरु जरारूपी कहगीलसों शरीरकों बनावती हे, तब जो वाका स्वामी काल हे, सो आय प्रवेश करता हे ॥ हे मुनीश्वर! जो परम नीच अवस्था हे, सो जराइ हे; सो जब आती है तब शरीर जर्जरीभूत कर देती हे; कंपनेकों लगती हे; अरु शरीरकों निर्बल कर देती हे; अरु कूर कर देती हे ॥ जेसें कमलपर बरफकी बरखा होवे, अरु जर्जरभूत होय जाय, तेसें शरीरकों जर्जरभूत कर डारती हे ॥ जेसें बनमें बाघन आयकें शब्द करते हे, अरु मृगका नाश करतें हे, तेसें खांसीरूपी बाघन आय मृगरूपी बलका नाश करते हे ॥ हे मुनीश्वर! जब जरा आवत हे, तब मृत्यु प्रसन्न होता हे॥ जेसें चंद्रमाके उदयतें कमलनी खिल आती हे, तेसें मृत्यु प्रसन्न होता हे अरु यह जरा अवस्था बडी दुष्ट हे ॥ बडे बडे जोधे हुअे हे तिसकोंभी दीन कर दिये हे ॥ जद्यपी बडे शूरमेनें संग्राममें शत्रुकों जीते हें, सो उकोंहु जरानें जीत लीये हे; अरु बडे पर्वतके चूरन कर डारे हे ताकोंहु जरा पिशाचनीनें महा दीन कर दिये हे ॥ यह जरारूपी जो राक्षसी हे, तिसने सबकों दीन कर दिये हे, सो सबकों जीतनेवारी हे ॥ हे मुनीश्वर! यह जरा शरीरकों अग्निकी नांइ लगती हे॥ जेसें अग्नि वृच्छकों लगता हे, अरु धूम निकसता हे; तेसें शरीररूपी वृच्छमें जरारूपी अग्नि लगकें तृष्णारूपी धुंवे निकसते हे ॥ जेसें डिब्बेमें बडे रत्न रहते हे, तेसें जरारूपी डिब्बेमें दुःखरूपी अनेक रत्न रहे हे ॥ अरु जरारूपी बसंतऋतू हे, तिस करकें शरीररूपी वृच्छ दुःखरूपी रस करकें पूरन होता हे॥ जेसें हस्ति सांकरसों बध्या हुआ दीन हो जाता हे, तेसें जरारूपी सांकर करकें बध्या पुरुष दीन हो जाता हे; अरु अंग सब शिथिल हो जाता हे; बल छीन हो जाता हे, अरु इंद्रियांभी निर्बल हो जाती हे; अरु शरीर जर्जरी भावकों प्राप्त होता हे; परंतु तृष्णा नांहीं घटती हे; नित्य बढती चली जाती हे ॥ जेसें रात्र आती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब सूर्यबंशी कमल सब मूंद जाते हे; तब पिशाचनी आय बिचरने लगती हे, अरु प्रसंन होती हे; तेसें जरारूपी रात्रिके आयेतें सब शक्तिरूप कमल मूंद जाते हे, अरु तृष्णारूपी पि
शाचनी प्रसंन होती हे ॥ हे मुनीश्वर ! जेसें गंगाके तटपर वृच्छ रहते हें, सो गंगाजलके बेगसों जर्जरीभूत हो जाते हें, तेसें जो आयुरूपी प्रवाह चलता हे, तिसके बेगकर शरीर जर्ज
रीभूत हो जाता हे, जेसें मांसके टुकडेकों देख आकाशतें उडती चील नीचें आय ले जाती हे; तेसें जरा अवस्थामें शरीरूपी मांसकों काल ले जाता हे ॥ हे मुनीश्वर ! यह तो कालका
ग्रास बन्या हुआ हे ॥ जेसें वृच्छकों हस्ति खाय जाता हे, तेसें जरा वारा शरीरकों काल देखकें खाता हे ॥ ॥ इतिश्री यो० वै० प्र०जरावस्था निरूपणं नाम सर्गः ॥ १७ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर ! संसाररूपी गर्त्त हे, तिसमें अज्ञानी गिर्या हे; सो संसाररूपी गर्त्त अल्प हे; अरु अग्यानी तो बडा हो गया हे ॥ संकल्प विकल्पकी आधिक्यतातें बढे
हे ॥ अरु जो ग्यानवान पुरुष हे सो संसारकों मिथ्या जानता हे, फिर संसाररूपी जालमें फसता नांही ॥ अरु जो अग्यानी पुरुष हे सो संसारकों सत्य जानकर संसारकी आस्थारूपी
जलमें फसता हे ॥ अरु संसारके भोगकी वांच्छा करते हे ॥ सो अेसे हे, जेसें दर्पनमें प्रतिबिंब देखकर बालक पकरनेकी इच्छा करता हे; तेसें अग्यानी संसारकों सत्य जानकर
जगतके पदारथकी वांछा करता हे; यह मेरेकों होवें; यह मेरेकों नांही होवे; अरु यह जो सुख हे सो नाशात्मक हे, अभिप्राय यह जो आवतें हे अरु जाते हे; सो स्थिर नही रहते
हे; इनकों काल ग्रास करता हे ॥ जेसें पक्के अनारकों चुहा खाय जाता हे, तेसे सब पदारथकों काल खाता हे ॥ हे मुनीश्वर ! जेते कछु पदारथ हे, सो कालग्रसित हे; बडे बडे ब
ली सुमेरु जेसे गंभीर बलवारे पुरुषके ग्रास कालने किये हे ॥ जेसें सर्पकों नकुल भच्छन कर जाता हे, तेसें बडे बलिका ग्रास काल कर जाता हे ॥ अरु जगतरुपी अेक गुलर
का फल हे तिसमें जो मज्जा हे सो ब्रह्मादिक हे, सो फलका जो वृच्छ हे, तिनका जो बन हे, सो ब्रह्मरूप हे, तिस ब्रह्मरुप बनमें जेते कछु वन हे, सो सब इसका आहार हे, सब
कों भच्छन काल कर जाता हे ॥ हे मुनीश्वर ! यह काल बडा बलिष्ठ हे; जो कछु देखनेमें आता हे, सो सब इस ग्रास कर लिया हे; तब अवरकी का कहनी हे ॥ ओर हमारे जो ब
डे ब्रह्मादिक, तिनकाभी काल ग्रास कर जाता हे ॥ जेसें मृगका ग्रास सिंघ कर लेता हे, ओर काल किसी करकें जान्या नही जाता, छिन, घरि; प्रहर, दिन, मास, ओर वर्षादिक कर
जानियें सो काल हे; ओर कालकी मूर्ती प्रगट नांही हे, अेसा अप्रगटरूप हे; अरु कीसीकी स्थिति होने नही देता ॥ अरु अेक वेली कालने पसारी हे, तिनकी त्वचा रात्रि हे; अरु
फूल तिसका दिन हे; ओर जिवरूपी भौंरे तिसपर आय बेठतें हे ॥ हे मुनीश्वर ! जगतरूपी गुलरका फूल हे, तिसमें जीवरूपी मच्छर वहोत रहेते हे; तिस फूलका भच्छन काल कर
जाता हे ॥ जेसें अनारका भच्छन तोता करता हे, तेसें काल भच्छन करता हे; अरु जगतरूपी वृच्छ हे, अरु जीवरूपी तिसके पत्र हे, तिसका कालरूपी हस्ति भच्छन कर जाता हे ॥
अरु शुभ अशुभरूपी भेंशानकों कालरूपी सिंह छेदछेदकें खाता हे ॥ हे मुनीश्वर ! यह काल महा क्रूर हे ॥ सो किसी परी दया नही करता; सबका भोजन कर जाता हे ॥ जेसें
मृग सब कमलकों खाय जाता हे, तिसतें कोउ रहता नांही हे ॥ परंतु अेक कमल उसतें बचे हे सो कमल केसा हे ॥ शांति अरु मैत्री तिसके अंकूर हे, अरु चेतना मात्र प्रकाश
हे, इस कारनतें वह बचा हे; सो कालरूपी मृग इसकों पोंहोंच नही शकता ॥ इसमें प्राप्त हुआ कालभी लीन हो जाता हे; ओर जेता कछु प्रपंच हे, सो सब कालके मुखमें हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, कुबेर, आदीकर सब मूर्ती कालकी धरी हुइ हे; फिर तिनकोंभी अंतर्ध्यान कर देता हे ॥ हे मुनीश्वर ! उत्पत्ति, स्थिति, अरु प्रलय; सब कालतें होते हे ॥ अनेक बेर महा कलपकाहु ग्रास कर लेता हे; अरु अनेक बेर करेगा ॥ अरु कालकों भोजन कियेतें तृप्ति कदाचित् नही होती; अरु कदाचित् होनहारीहु नांही॥ जेसें अग्नि घृतकी आहुती सों तृप्त नही होता, तेसें जगत अरु सब ब्रह्मांडका भोजन करतेहु काल तृप्त नही होता; अरु इसका अेसा सुभाव हे जो, इंद्रकों दरिद्री कर देता हे, अरु दरिद्रीकों इंद्र कर देता हे; ओ र सुमेरुकों राइ बनाता हे, अरु राइका सुमेरु करता हे; सबतें बडे अैश्वर्यवारेकों नीच कर डारता हे; सबतें नीचकों ऊंच कर डारता हे; अरु बुंदका समुद्र कर डारता हे, अरु समुद्र का बुंद करता हे, अेसी शक्ति कालमें हे ॥ अरु जीवरूपी जो मच्छ हे, तिनकों शुभाशुभ कर्मरूपी छुरेसों छेदत रहता हे; फिर केसा हे ॥ जो कालकूपका चक्र हे; जीवरूपी हंडीकों शुभ अशुभ कर्मरूपी रसुरीसों बांधकर ले फिरता हे ॥ फिर केसा हे ? जिवरूपी वच्छकों रात्र अरु दिनरूपी कुहाराकर छेदता हे ॥ हे मुनीश्वर ! जेता कछु जगत बिलास भासता हे, सो सबका ग्रहन काल कर लेवेगा अरु जिवरूपी रतनका काल डिब्बा हे; सो अपने उदरमें डारता जाता हे, ओर खेल करता हे; अरु चंद्र सूर्यरूपी गेंदकों कबहु उरध उछालता हे॥ कबहु नीचें डारता हे; अरु जो महा पुरुष हे सो उत्पत्ति प्रळयमें जो पदार्थ हे, तिनमें स्नेह किसीके साथ नही करता; तिसका नाश करनेकों काल समरथ नांही ॥ जेसें मुंडकी मा ला महा देवजी गरेमें धरते हें; तेसें यहभी जीवकी माला गरेमें डारता हे ॥ हे मुनीश्वर ! जो बडे बडे बलिष्ठ हे, तिनकाभी काल ग्रहन कर लेता हे ॥ जेसें समुद्र बडा हे, तिनका वाडवाग्नि पान कर लेता हे; ओर जेसें पवन भोजपत्रकों उडाता हे, तेसा कालका बल हे ॥ किसीकी सामर्थ्य नांही, जो इसके आगें स्थित रहे ॥ हे मुनीश्वर ! शांतिगुन प्राधान्य जो देवता हे, अरु रजोगुन प्राधान्य जो बडे राजा हे; अरु तमोगुन प्राधान्य जो दैत्य राच्छस हे, तीनमें कोऊ समर्थ नांही, जो इसके आगें स्थित होवे ॥ जेसें टोकनीमें अंन अरु जल धरकें अग्निपर चढाय दियेतें फिर उछलते हे, सो अंनके दाने कडछी करी कबहु उर्ध ओर कबहु नीचे फिर जाते हे, तेसें जीवरूपी अन्नके दाने जगतरूपी टोकनीमें परे हुअे राग द्वेषरूपी अग्नीपें चढे हे, अरु कर्मरूपी कडछीकर कबहु उरध जाता हे, कबहु नीचे जाता हे ॥ हे मुनीश्वर ! यह काल किसीकों स्थिर न होने देता, महाकठोर हे, दया किसीपर नहीं धरता इसका भय मुझकों रहेता हे, ताते सोइ उपाय मुझकों कहो, जिसकर में कालतें निर्भय हो जाउं॥ ॥इतिश्रीयो० वै० प्रकरणे काल वृत्तांत निरूपणं नाम अष्टादशःसर्गः॥ १८॥

॥ श्रीरामोवाच ॥ हे मुनीश्वर ! यह काल बडा बलिष्ठ हे; जेसें राजाके पुत्र शिकार खेलने जाते हें, तब बनमें बडे पशु पंछी खेदकों प्राप्त होते हे; तेसें यह संसाररूपी बन हे, तिसमें प्रानीमात्र पशु पंछी हे; जब कालरूपी राजपुत्र तिसमें शिकार खेलने आता हे, तब सब जीव भयकों पावते हे, अरु जर्जरीभूत होते हे, फिर तिसकोंइ मारता हे ॥ हे मु नीश्वर ! यह काल महा भैरव हे, सबका ग्रास कर लेता हे ॥ प्रलयमें सबका प्रलय कर डारता हे; अरु इसकी जो चंडिका शक्ति हे, तिसका बडा उदर हे; अरु कालिका सब का ग्रास करती हे, पाछें नृत्य करती हे ॥ जेसें बनके मृगकों सिंह अरु सिंहनी भोजन करते हे, ओर नृत्य करते हे, तेसें जगतरूपी बनमें जीवरूपी मृगका भोजन करकें काल अरु कालिका नृत्य करते हे ॥ बहुरी इनतें जगतका प्रादुर्भाव होता हे ॥ नाना प्रकारके पदार्थनकों रचते हें, पृथ्वी, बगीचे, बावरी, आदि सब पदारथ इनहीतें उत्पन्न होते हे;

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरु सुंदर जीवकीहु उत्पत्ति इनतें होती हे; ओर अेक समेमें उनका नाशभी कर देती हे ॥ सुंदर समुद्र रचकें फिर वामें अग्नि लगाय देती हे; अरु सुंदर कमलकों बनायके फिर वाके उपर बरफकी बरखा करती हे; इत्यादि नाना पदार्थनकों रचिकें तिनका नाश करत हें ॥ जाहां बडे स्थान बसते हें तिनकों उजड कर डारती हे; फिर उजाडमें बस्ती कर धरती हे; अरु नाशभी करत हे; स्थिर रहेने किसीकों नांही देती ॥ जेसें बागमें बानर आयकें बृच्छकों ठहरनें नांही देता, तेसें कालरूपी बानर किसी पदारथकों स्थिर रहेने नांही देता ॥ हे मुनीश्वर! यह प्रकारसों सब पदारथ कालसोंकर जर्जरीभूत होतें हे, तिसका में आश्रय किसी रीतसों करों ॥ मुझकों तो नाशरूप भासता हे; तातें अब मुझकों किसी जगतका पदारथकी इच्छा नांही ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे वैराग प्रकरणे काल बिलासवर्णनं नाम अेकोनविंशतिमः सर्गः ॥ ॥ १९ ॥ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर! इस कालका महा पराक्रम हे; इसके तेजके सन्मुख रहनेकों कोउ समरथ नांही; छिनमें उंचको नीच कर डारता हे, अरु नीचको उंच कर डारता हे, तिसका निवारन कोउ कर नांही शकता ॥ सब इसीके भयसें परे कंपते हे ॥ यह महा भैरव हे, सब विश्वका ग्रास कर लेता हे; अरु इसकी चंडिकारूप शक्ति हे सो बलवान हे, सो नदीरूप हे, तिसका उल्लंघन कोउ नांही करी शकता हे; अरु महा कालरूप काली हे, तिसका बडा भयानक आकार हे ॥ अरु कालरूप जो रूद्र हे, तिसतें अभिन्नरूपी कालिका हे; सो सबका पान कर लेतीहे; पाछें भैरव अरु भैरवनी नृत्य करते हे; सो काल कालिका केसी हे, बडा जिसका आकार हें अरु आकाश शीश हे, अरु जिसका पा तालमें चरन हे, दशों दिशा जिसकी भुजा हे; सप्त समुद्र जिसके हाथमें कंकन हे, संपूर्न पृथ्वीरूप तिसके हाथमें पात्र हे, तिस उपर जीव हे सो भोजन योग्य हे ॥ हिमालय अरु सुमेरु पर्वत दोनो कानमें बडे रतन हे ॥ चंद्रमा सूर्य जिसके लोचन हे; अरु सब तारागन वाके मस्तकमें बिंदु हे; अरु हाथमें त्रिशूल अरु मुशल आदि शस्त्र हे; अरु जिसके हाथमें तंद्रारूपी फांसा हे, तिसकर जीवकों मारतीहे ॥ अेसी जो कालिका देवी हे, सो सब जीवका ग्रास करकें महा भैरव जो रुद्र हे तिसके आगें नृत्य करती हे; अरु अट्ट! अट्ट! अेसा शब्द करती हे; अरु जीवका भोजन करकें उनकी रुंडमाला गरेमें धारन करती हे; सो भैरवके आगें नृत्य करती हे ॥ अरु भैरव केसा हे, जो जिसके बल आगे सन्मुख रहेनेकी शक्ति कोउमें नांही हे; अरु जहां उजार हे तहां छिनमें बस्ती कर डारते हे; अरु जहां बस्ती होवे तांहा छिनमें उजार करते हे ॥ इसीतें तिनका नाम देव कहते हे, अरु तिसको कृतांतभी कहते हे ॥ अरु बडे बडे पदारथ उपजत होते हे, अरु तिसका नाशभी होता हे, अरु स्थिर किसीकों रहेने नांही देता; तिसतें इसका नाम कृतांत हे; अरु नित्यरूपीहु यही हे ॥ जो इस आदि धन्या हे सोइ कर्त्ता अरु कर्मरूप हे; काहेतें जो परिनाम जिसका अनित्यरूप हे; इसीतें इसका कर्म नाम हे; सो केसें नाश करता हे; जब अभावरूपी धनुष हाथमें धरता हे; तिसकर राग दोषरूपी बान चलाता हे, तिस बानते जर्जरीभूत करकें नाश करता हे; अरु उत्पत्ति नाशमें उसकों जतनभी कछु करना नांही पडता हे; इसकों तो खेल जेसा हे; जेसें बालक मृत्तिकाकी सेना बनाता हे, फिर उठायकर नाशभी कर देता हे, तेसें कालकों उपजावने अरु नाश करनेमें जतन करना नांही पडता हे ॥ हे मुनीश्वर! कालरूपी धीवर हे, तिसने क्रियारूपी जाल पसारी हे ॥ तिस विषे जीवरूपी पंछी पडे फसते हें, सो फसे हुअे शांतिकों नांही प्राप्त होते ॥ हे मुनीश्वर!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह तों सब नाशरूप पदार्थ हे, इनमें आश्रय किसीका करना, जिसकर सुखी होवे, तो स्थावरजंगम जगत सब कालके मुखमें हे; यह सब नाशरूप मुझकों दृष्टिमें आवे हे, तातें जो निर्भय पद होय सो मुझकों कहो ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे वैराग प्रकरणे काल जुगुप्सा वर्णनं नाम विंशतिमः सर्गः ॥ ॥ २० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ श्रीरामोवाच ॥ हे मुनीश्वर! जेते कछु पदारथ भासते हे, सो सब नाशरूप हे, तातें किसकी इच्छा करों? ओर कोनका आश्रय करों? इनकी इच्छा करनी सो मूरखता हे; अरु जेती कछु चेष्टा अग्यानी करता हे सो सब दुःखके निमित्त हे ॥ अरु जीवनेमें अर्थकी सिद्धि कछु नांही हे; काहेतें जो बालक अवस्था होती हे, तब मूढता रेहेती हे, विचार कछु नांही रेहेता, अरु जब जुवा अवस्था आती हे, तब मूरखता करकें विषयकों सेवतें हें; अरु मानमोहादि विकारसों मोहेइ जाते हें; तामेंभी बिचार कछु नांही होता, अरु स्थिरभी नांही रहतें, फिर दीनका दीन रहीकें बिषयकी तृष्णा करता हे; शांतिकों नांही पावता हे ॥ हे मुनीश्वर! आयुष्य जो हे सो महा चंचल हे; अरु मृत्यु तो निकट हे, वाको अन्यथा भाव नांही होत ॥ हे मुनीश्वर! जेते कछु भोग हे सो रोग हे; अरु जिसकों संपदा जानते हें, सो आपदा हे; अरु जिसकों सत्य कहेते हें सो असत्यरूप हे; अरु जिस स्त्री पुत्रादिकको मित्र जानते हें, सो सब बंधनका करता हे; अरु इंद्रिय जो हे सो महा शत्रुरूप हे, सो सब मृग तृष्णाके जलवत् हे; अरु यह देह हे सो विकाररूप हे; अरु मन महा चंचल हे; ओर सदा अशांतरूप हे; अरु अहंकार जो हे सो महा नीच हे ॥ इसनेंइ दीनताकों प्राप्त किया हे; इसकर जेते कछु पदारथ इसकों सुखदायक भासते हें, सो सब दुःखके देनहारे हे तिसकर इसकों कदाचित् शांति नांही होती, तातें मुझकों इनकी इच्छा नांही ॥ जद्यपी देखने मात्र सुंदर भासते हें, तोभी इनमें सुख कछु नांही; सो पदारथ स्थिर रहेनेका नांही ॥ जेसें समुद्रमें नाना प्रकारके तरंग भासतें हें, सो सब बडवाग्निकर नाश होते हें, तेसें यह पदारथभी नाशकों पावते हें ॥ में अपनी आ यविषे केसें आस्था करों? हे मुनीश्वर! बडे समुद्र जो दृष्ट आवते हे, अरु सुमेरु आदि बडे पदार्थ हे, सो सब नाशकों पाते हें; तब हमसारिखेकी कहा बारता हे!? ओर बडे बडे दैत्य राक्षसद्रु होयकें नाश पाय गये हे, तो हम सारिखेकी कहा बारता हे!? अरु देवता, सिद्ध, गंधर्व, द्रुअे हें सो सब नाशकों पाते हे, तिनकी नाम संज्ञाभी नांही रही तब हम सारिखेकी कहा बारता! पृथ्वी, जल, अरु अग्नि जो दाहक शक्ति धरने हारे ॥ अरु पवन जो हे सो वीर्यसहित सब नाश होय जायगे, कछु इनकी सत्यताभी न रहेगी, तो हम सारिखेकी कहा बारता! अरु यम, कुबेर, बरुन, इंद्र; बडे तेजवारे हें सो सब नाश पावेगे तो हम सारखेकी कहा केहेनी हे! ओर तारा मंडल जो दृष्ट आते हे, सो सब गिर पडेंगे ॥ जेसें सुखे पात दृच्छतें बायुसो गिर जाते हे, तेसें तारे गिरते हें, तब हम सारिखेकी कहा बारता! हे मुनीश्वर! ध्रुव, जो स्थिर भासता हे, सोबी अस्थिर होय जाय गा, अरु चंद्रमा अमृतमय मंडलका दृष्टमें आता हे, ओर सूर्य अखंड मंडल हे जिसका, अेसा जो प्रकाश संयुक्त दृष्ट आता हे, सो सब नाश हो जावहिंगे, तो हमसारिखेकी कहा बारता हे ? ओरकीहु कहा बारता हे! यह जो बडे इश्वर जगतके अधिष्ठाता हे तिनकाबी अभाव होय जाता हे ॥ परमेष्ठि जो ब्रह्मा हे, तिनकाभी अभाव होय जाता हे; हरि जो बिष्णु सोभी हरें जायगे ॥ महा भैरवरूप जो रुद्र, सोभी शून्य हो जायगा, तो हम सारिखेकी कहा बारता करनी? अरु काल जो सबकों भक्षन करनेहारा हे, सोभी टु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कटुक होयकें नाशकों प्राप्त होवेगा; अरु कालकी स्त्री जो नेती हे, सोइ अनेतताकों प्राप्त होवेगी ॥ अरु सबका आधार जो आकाश हे; सोभी नाश हो जायगा, तो हम सारि खेकी कहा बारता? अरु जेता कछु जगत अर्थ कर सिद्ध होता हे, सो सब नाश हो जावेगा ॥ कोउछु स्थिर रेहेनेका नांही तब हम किसकी आस्था करे,? अरु किसका आश्रय करें? यह जगत् सब भ्रम मात्र हे; अग्यानीकी इसमें आस्था होती हे, ओर हमारी नांही हे ॥ जो जगत भ्रम केसें उत्पत्ति भया हे, अरु में इतना जानता हों, जो संसारमें इतना दुःखी होते हे, सो अहंकारनें किया हे ॥ हे मुनीश्वर! इसका जो परम शत्रु अहंकार हे, इस करकें भटकता फिरता हे ॥ जेसें जेवरी साथ बांधे हुअे पतंग कबहु ऊर्ध, कबहु नीचे जाता हे, स्थिर कबहु नांही रेहेता, तेसें जीवहु अहंकार करकें कबहु उर्ध कबहु अध जाता हे, स्थिर कबहु नांही होता॥जेसें अश्वतें आरूढ रथ तिनके उपर बेठकें सूर्य आकाशमारगमें भ्रमता हे, तेसें यह जीव भ्रमता हे, स्थिर कदाचित् नांही होता॥हे मुनीश्वर! यह जीव परमार्थ सत्यस्वरूपतें भूला हुआ भटकता हे; अरु अज्ञान करकें संसारमें आस्था करता हे; अरु भोगहुंकों सुखरूप जानकर तिसमें तृष्णा करता हे ओर जिसकों सुखरुप जानता हे, सो रोग समान हे;॥ओर बिषकर पूरन सर्प जेसें हे, सो जीवका नाश करनहारे हे॥ ओर जिनकों सत्य जानता हे, सो असत्य हे॥ सब कालके मुखमें ग्रसे हुअे हे॥ हे मुनीश्वर! बिचार बिना अपना नाश आपही करता हे; काहेतें जो इसका कल्यान करनेहारा बोध हे; जो सत्य बिचार बो धके शरन जाय तो कल्यान होवे; ओर जेते पदारथ हे, सो स्थिर कोउ नांही॥ इनकों सत्य जानना दुःखके निमित्त हे॥ हे मुनीश्वर! जब तृष्णा आती हे, तब आनंद अरु धिरजकों नाश कर देती हे॥ जेसें बायु मेघका नाश कर डारता हे, तेसें तृष्णा नाश कर डारती हे ॥ तातें मुझकों सोइ उपाय कहो, जिसकर जगतका भ्रम मिट जावे, अरु अविनाशी पदकी प्राप्ति होवे ॥ इस भ्रमरूप जगतकी आस्था में नांही देखता; तातें इच्छा चाहे तेसी करों, परंतु सुख दुःख इसीकों होने हे सो होइंगे, मिटवेके नांही ॥ भावे पहारकी कंदरामें बेठो, भावे कोटमें बेठो, परंतु जो होनेका सो मिथ्या हे, इस निमित्त जतन करना मूरखता हे॥ इतिश्री योगवासिष्ठे वै० प्र० कालविलास वर्णनं नाम अेकविंशतिमःसर्गः ॥ २१ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर! यह जो नाना प्रकारके सुंदर पदारथ भासते हे, सो सब नाशरूप हे, इसकी आस्था मूरख करतें हे; यह तो मनकी कल्पना करकें रचे हुअे हे ॥ तिसमें किसकी आस्था करों ? हे मुनीश्वर! अग्यानी जीवका जीवना व्यर्थ हे; काहेतें जो जीवनेतें उनका अर्थ सिद्धि कछु नांही होता॥ जब कुमार अवस्था होती हे, तब मूढ बुद्धि होती हे, तिसमें बिचार कछु नहीं होता॥ जब जुवावस्था आती हे, तब काम क्रोधादिक विकार उत्पन्न होते हे, तिसकर सदा ढांपे रहेते हे ॥ जेसें जालमें पंछी बध जाता हे, अरु आकाश मारगकों देखी नही शकता हे, तेसें काम क्रोधादिक करी ढप्या हुआ बिचार मारगकों देखी नही शकता; जब वृद्धावस्था आती हे, तब शरीर जर्जरी भूत होजाता हे; अरु महा दीन होता हे॥ बहुरी शरीरकोंभी त्याग देता हे॥ जेसें कमलके उपर बरफ पडता हे, तब तिसका भोंरा त्याग करता हे, तेसें जब शरीररूपी कमल कों जराका स्पर्श होताहे, तब जिवरूपी भौंरा त्याग कर देता हे॥ हे मुनीश्वर! यह शरीर तबलग सुंदर हे, जबलग वृद्धावस्था प्राप्त नही होती; जेसें चंद्रमाका प्रकाश राहु दैत्यनें आवरन नही किया तबलग रहता हे, जब राहु दैत्य आवरन करता हे, तब प्रकाश नही रहता हे, तेसे जरा अवस्थाके आये जुवा अवस्थाकी सुंदरता जाती रहती हे॥ हे मुनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्वर ! जराके आयेतें शरीर कृश हो जाता हे, अरु तृष्णा बढ जाती हे; जैसें वर्षा कालमें नदी वढ जाती हे; तेसें जरा अवस्थामें तृष्णा बढ जाती हे; अरु जो पदारथकी तृष्णा करता हे, सो पदारथभी दुःखरूप हे; तृष्णा करकें आपही दुःख पावता हे ॥ हे मुनीश्वर ! तृष्णारूपी समुद्र हे, तिसमें चित्तरूपी बेडा पऱ्या हे; राग दोषरूपी मच्छ करी क वहु उरध जाते हे, कबहु निचे आते हे, स्थिर कदाचित् नही रहते ॥ हे मुनीश्वर ! कामरूपी वृच्छ हे, सो वृच्छमें तृष्णारूपी लता लगती हे, तिसमें विषयरूपी फूल हे; जब जीव रूपी भौंरा तिसके उपर बेठते हे, तब विषयरूपी वेलीसों मृतक हो जाते हैं ॥ हे मुनीश्वर ! तृष्णारूप अेक बडी नदी हे, तिसमें राग दोषादिक बडे मच्छ रहते हे; तिस नदीमे प रे हुअे जीव दुःख पाते हैं; अरु जो संसारकी इच्छा करता हे , सो नाशरूप हे ॥ हे मुनीश्वर ! उन्मत्त हस्ति अरु तुरंगके समूह अेसा जो रनरूपी समुद्र तिसकों तर जाते हे तिस कोंभी में शूरा नहीं मानता, परंतु जो इंद्रियरूपी समुद्र, तिसमें मनोवृत्तिरूपी तरंग उठते हे, अेसे समुद्रकों जो तर जाता हे, तिसकों शूरा मानता हो; जिसके परिनाममें दुःख होवे, तेसी क्रिया अज्ञानी जीव आरंभ करते हे; ओर जिसका परिनाममें सुख हे, तिसका आरंभ नही करता ॥ ओर कामके अर्थकी धारना करता हे, अेसे आरंभ कियेते शरीरकी शांति पाछेंहु सुखकी प्राप्ति नांही होती ॥ अेसेइ कामना करके सदा जलते रहते हे; अनात्म पदारथकी तृष्णा करतें हे, सो शांतिकों केसें प्राप्त होवे ?॥ हे मुनीश्वर ! यह तृष्णारू पी नदी हे, तिसमें वडा प्रवाह हे, तिसके किनारे वैराग अरु संतोष दोनो वृच्छ खडे हे, सो तृष्णा नदीके प्रवाहतें वे दोंनोका नाश होता हे ॥ हे मुनीश्वर ! तृष्णा बडी चंचल हे, किसीकों स्थिर होने नही देती ॥ अरु मोहरूपी अेक वृच्छ हे, तिसके चहुंफेर स्त्रीरूपी वल्ली हे, सो विष करके पूरन हे, तिसपर चित्तरूपी भौंरा आय बेठता हे, तब स्पर्श मात्रतें नाश पावता हे ॥ जेसें मोरका पुछ हिलत रहेता हे, तेसें अज्ञानीका चित्त चंचल चलता हे, सो मनुष्य पशुके समान हे; जेसें पशु दिनकों जंगलमें जाय आहार करते चलते फिरते हे, अरु रात्रीकों आय घरमें खुंटासो बंधन पावत हे ॥ तेसें मूरख मनुष्यहु दिनकों घर छोडकें व्योहारमें फिरते हें, अरु रात्रिकों आय अपने घरमें स्थिर होते हे, तातें परमारथकी सिद्धि कछु नांही होती जीवना वृथा गुमावता हे ॥ बालक अवस्थामें शून्य रहते हें ॥ अरु जुवा अवस्थामें काम करी उन्मत्त होते हें सो काम करके चित्तरूपी उ न्मत्त हस्ति स्त्रीरूपी कंदरामें जाय स्थित होते हे ॥ सोभी छिनभंगुर हे; बहुरी वृद्धावस्था होती हे, तिसकर शरीर कृश हो जाता हे; जेसें बरफते कमल जर्जरीभावकों प्राप्त होता हे, तेसें जरा करकें शरीर जर्जरी भावकों प्राप्त होता हे; अरु सब अंग छीन हो जाता हे; अरु अेक तृष्णा बढ जाती हे ॥ हे मुनीश्वर ! यह पुरुष महा पशु हे, सो आकाशके फूल ले नेकी इच्छा करता हे ॥ अेसे बडे पर्वतपर चढकर आकाशका फूल लेनेकी इच्छा करता हे, सो फिर बडी कंदरा अरु वृच्छमें गिर पडता हे! तेसें यह जीव मनुष्यरूपी पर्वतपर आय रह्या हे, अरु आकाशके फूलरूपी जगतके पदारथकी इच्छा करता हे, सो नीचेंकों गिर पडनेका हे; सो राग दोषरूपी कंटक वृच्छमें जाय पडेगा ॥ हे मुनीश्वर ! जेते कछु जगत के पदार्थ हे सो सब आकाशके फूलकी नाइं नाशवान हें, इनमें आस्था करनी सो मूरखता हे; यह तो शब्द मात्र जेसा हे; तिसतें अर्थसिद्धि कछु नांही होती; अरु जो ज्ञानवान पुरुष हे, तिनकों विषयभोगकी इच्छा नांही रहती; काहेतें जो आत्माके प्रकाश कर इनकों मिथ्या जानते हें ॥ हे मुनीश्वर ! एसे ग्यानवान पुरुष सो दुर्विज्ञेय हे; हमकों तो सुप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नेभी नही भासते हे; ओर यह विरक्तात्मा दुर्लभ हे; जीनकों भोगकी इच्छा नांही हे, सर्वदा ब्रह्मकी स्थिति कर भासते हे; अेसे पुरुषकों संसारकी इच्छा कछु नहीं रहेती; काहेतें जो यह पदारथ नाशरूप हे ॥ हे मुनीश्वर ! पर्वतकों जिस ओर देखीये तहां पथथरकर पूर्न दृष्ट आता हे ॥ अरु पृथ्वी पूर्न मृत्तिकाकरी दृष्ट आती हे, अरु वृच्छ काष्ठकरी पूरन दृष्ट आता हे; समुद्र जलकर पूरन दृष्ट आता हे, तेसें शरीर अस्थि, मांसकर पूरन भासता हे ॥ ये सब पदार्थ पांच तत्व करी पूर्न हे, ओर नाशरूप हे ॥ अेसा रूप ज्ञानी जान के किसीकी इच्छा नहीं करता ॥ हे मुनीश्वर ! यह जगत सब नाशरूप हे, देखतें देखतें नाशकों पाता हे; तिसमें में किसका आश्रय करकें सुख पाउ ॥ जब जुगकी सहस्र चो करी होती हे, तब ब्रह्माका अेक दिन होता हे; तिस दिनके क्षय हुअेतें सब जगत्का प्रलय होता हे; बहुरी ब्रह्माहु कालकर नाश हो जाता हे; अरु ब्रह्माहु जितने हो गये हे, तिनकी संख्या नांही होती; असंख्य ब्रह्मा नाश हो गये हे तो हमसारखेकी कहा बारता करनी हे ? हम कोउ भोगकी वासना नांही करते, क्यों जो सब चलरूप हे, कछु स्थिर रहेनेका नां हीं, सब नाशरूप हे, इनकी आस्था मूरख करते हे, तिसके साथ हमकों कछु प्रयोजन नांही ॥ जेसें मृग मरुथलकों देख जलपान करनेकों दोरताहे, शांतिकों नहीं पावता, तेसें मूरख जीव जगतके पदारथकों सत्य मानकर तृष्णा करता हे, परंतु शांतिकों नहीं पावता, काहेतें जो सब असाररूप हे; अरु जो स्त्री, पुत्र कलत्र भासते हैं, सो जबलग शरीर नष्ट नही हुआ तबलग भासते हे; जब शरीर नष्ट हो जायगा तब जानिवेमेंभी न आवेगा जो कहां गया ? अरु कहांतें आया था ? जेसें तेल अरु बत्ती कर दीपक प्रकाशता हे, तब बडा प्रकाशवान दृष्ट आवता हे, पाछे जब बूझ जाता हे, तब जान्या नही जाता जो कहां गया, तेसें बत्तीरूप बांधव हे; ओर तिसविषे स्नेहरूपी तेल हे ॥ तिसकर जो श रीर भासता हे सो प्रकाश हे ॥ जब शरीर रूपी दीपका प्रकाश बूझ जाता हे तब जान्या नही जाता जो कहां गया ॥ हे मुनीश्वर ! यह बंधुका मिलाप हे; सो जेसें तीर्थ जात्राका संघ चल्या जाता होवे, सो सब अेक छिनमें वृच्छकी छांया नीचे बेठते हे; फिर न्यारे न्यारे होय जाते हें, तेसा बांधवका मिलाप हे ॥ जेसें उस जात्रामें स्नेह करना मूरखता हे, तेसें इनमेंइ स्नेह करना मूरखता हे ॥ हे मुनीश्वर ! अहं ममताकी जेवरीके साथ बांधे हुअे घटी जंत्रकी नांइ सब भमते फिरतेहे, तिनकों शांति कदाचित् नही होती; यह देखने मात्र तो चेतन दृष्ट आता हे, परंतु पशु अरु बंदर इनतें श्रेष्ठ हे; जिनकी संमति देह इंद्रियके साथ बांधी हुइ हे, अरु आगमा पाइ हे; इसमें आस्था रखनी सो महा मूरख ता हे; उनकों आत्मपदकी प्राप्ति होनी कठिन हे ॥ जेसें पवनकर वृच्छके पात तूटकें उड जाते हे ॥ फिर उनकों वृच्छके साथ लगना कठिन हे, तेसें जो देहादिक साथ बांधे हुअे,हे तिसकों आत्मपद पावना कठिन हे ॥ हे मुनीश्वर ! जब आत्मपदतें विमुख होता हे, तब जगतके भमकों देखता हे; अरु जब आत्मपदकी ओर आता हे, तब संसार इसकों वडा बिरस लगता हे; ओर अेसा पदारथ जगतमें कोउ नांही जो स्थिर रहेगा, जो कुछ पदारथ हे सो नाशकों प्राप्त होते हे, ताते में किसकी आस्था करो ? ओर किसका आश्रय क रों ? सब नाशवंत भासते हे, वह पदारथ मुझकों कहो, जिसका नाश न होवे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे वैराग प्रकरणे सर्व पदार्थाभाव वर्ननं नाम द्वाविंशतिमः सर्गः ॥ २२ ॥ ॥

॥ श्रीरामोवाच ॥ हे मुनीश्वर ! जेता कछु स्थावर जंगम जगत दीसता हे ॥ सो सब नाशरूप हे, कुछबी स्थिर रहेनेका नांही ॥ जो खाइथी सो जलकर पूरन हो गइ हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरु जो बडे जलकर समुद्र पूरन दिखते थे, सो खाइरूप व्है गये; अरु जो सुंदर बडे बगीचे थे, सो आकाशकी नांइं शून्य हो गये, अरु जो शून्य स्थान थे, सो सुंदर उच्छ
ड्डअे बनकर दृष्ट आते हे ॥ जाहां वस्ती थी, तहां उजार हो गइ हे; अरु जहां उजार थी तहां बस्ती हो गइ हे; अरु जहां गडेले थे, तहां पर्वत हो गये हे; अरु जहां वडे पर्वत
थे, तहां समान पृथ्वी हो गइ ॥ हे मुनीश्वर ! इस प्रकार पदार्थ देखत विपर्यय हो जाते है, स्थिर नांहीं रहते, बहुरी में किसका आश्रय करों? अरु किस पावनेका जतन करों;
यह पदारथ तो सव नाशरूप हे ॥ अरु जो बडे बडे ऐश्वर्यकर संपन्न थे; अरु जो बडे कर्त्तव्य करते थे, ओर बडे वीर्यवान, बडे तेजवान ड्डअे हे, सोभी मरन मात्र हो गये हे॥
तव हम सारिखेकी कहा बारता हे? सब नाश होते हे तव हमारेभी घडी पलमें चल जाना हे, रहना किसीकों नांहीं ॥ हे मुनीश्वर! यह पदार्थ बडे चंचलरूप हे, सो अेकरस क
दाचित्ड्ड नांहीं रहता ॥ अेक छिनमें कछु हो जाता हे, डुसरी छिनमें कछु हो जाता हे ! अेक छिनमें दरिद्री हो जातें हे, डुसरी छिनमें संपदावान हो जाते हे! अेक छिनमें जी
वते दृष्ट आवते हे, डुसरी छिनमें मर जाते हे ॥ अेक छिनमें मुवेभी जीते उठते हे; यह संसारकी स्थिरता कबड्ड नांहीं होती ॥ ज्ञानवान इसकी आस्था नांहीं करते॥ अेक छिनमें
समुद्रके प्रवाहके ठिकाने मरुथल होय जाते हे, अरु मरुथलमें जलके प्रवाह हो जाते हे ॥ हे मुनीश्वर! इस जगतका आभास स्थिर नांहीं रहता; जेसें बालकका चित्त स्थिर
नांहीं रहता तेसें जगतका पदारथ अेकभी स्थिर नांहीं रेहेता ॥ जेसें नट स्वांगको धरता हे, सो कबड्ड केसा कबड्ड केसा ; सो अेक स्वांगमें नांहीं रहेता; तेसें जगतकें पदारथ
अरु लच्छमी अेकरस नांहीं रहते; कबड्ड पुरुष स्त्री हो जाता हे ॥ कबड्ड स्त्री पुरुष हो जाती हे; अरु मनुष्य पशु हो जाता हे, पशु मनुष्य हो जाता हे; ओर स्थावरका जंगम,
अरु जंगमका स्थावर हो जाता हे; मनुष्य देवता हो जाता हें, ओर देवताका मनुष्य हो जाता हे ॥ इस प्रकार घटी जंत्रकी नांइं जगतकी लच्छमी स्थिर नांहीं रहेती॥ कबड्ड
उरधकों जाती हे, कबड्ड अधकों जाती हे, स्थिर कबड्ड नांहीं रहती, सदा भटकत रहती हे ॥ हे मुनीश्वर ! जेते कछु पदारथ दृष्टिमें आते हे, सो सब नष्ट हो जानेके हे ॥ केसें
ड्ड स्थिर रहेनेका नांहीं ॥ अे सब नदियां हे सो सब बडवाग्निमें लय होय जायगी; तेसें जेते कछु पदारथ हे सो सब अभावरूपी बडवाग्निकों प्राप्त होंहिगे ॥ अरु बडे बलिष्टड्ड मेरे
देखते लीन हो गये हें; अरु जो बडे सुंदर स्थान सो शून्य हो गयें हे; अरु जो सुंदर ताल, अरु बगीचें, मनुष्य करी संपूरन, अेसे स्थान सो शून्य हो गये हे; अरु जो मरुथलकी
भूमिका, सो सुंदरताकों प्राप्त भइ हे, अरु घटपट हो गये हे; वरकें साप हो जाते हे; सापके वर हो जाते हे ॥ इस प्रकार हे विप्र! जो जगत दृष्टिमें आता हे, सो कबड्ड संपदा,
कबड्ड आपदा दृष्टिमें आती हे; अरु महा चपल दृष्ट आते हे ॥ हे मुनीश्वर! अेसे सब अस्थिरूप पदारथं हे, तिसका बिचार बिना में केसें आश्रय करों, अरु किसकी इच्छा करों!
सब नाशरूप हे; ओर जो यह सूर्य प्रकाशकर दृष्टिमें आवता हे, सोभी अंधकाररूप हो जायगा; अरु अम्रत कर पूरन जो चंद्रमा दृष्टिमें आवता हे, सोभी शून्य हो जायगा;
अरु सुमेरु आदिक जो पर्वत दृष्ट आवते हे, सो सब नाश होयगें; ओर सब लोक नाश हो जायगे; अरु मनुष्यं, देवता, यक्ष, राक्षस, सब नाश पावेंगें॥ तातें हे मुनीश्वर! ओर
किसीकी क्या कहनी हे; ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, जो जगतके इश्वर हे, सोभी शून्य हो जायगे, तो हम सारिखेकी कहा बारता कहेनी हे! जेता कछु जगत दृष्ट आवता हे, सो स्त्री, पुत्र,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बांधव, ऐश्वर्य, वीर्य, तेज, करीकें नाना प्रकारके जीव जो भासते हे, सो सब नाशरूप हे; बहुरी मैं किस पदारथका आश्रय करौं, ओर किसकी इच्छा करौं! हे मुनीश्वर! जो पुरुष दीर्घदर्शी हे, तिनकों तो सब पदारथ विरस हो गये; किसी पदारथकी इच्छा नही करते, काहेतें जो सब पदारथ नाशरूप भासते हे; ओर अपनी आयुष्यकों बिजुरीके चम कारवत् देखते हे; जेसें बिजुरीका चमत्कार होता हे, तेसी शरीरकी आयुष्य हे ॥ जिसकों अपनी आयुष्यकी प्रतीति होती हे, सो किसीकी इच्छा करत नांही ॥ जेसें किसीकों ब लिदान अर्थ पालते हे, तब उह खाने, पीने, भुगतनेकी इच्छा नही करता; तेसें जीसकों अपना मरना सन्मुख भासता हे, तिसकोंभी किसी पदारथकी इच्छा नही रहेती; यह सब पदारथ आपही नाशरूप हे; तो हम किसका आश्रय कर सुखी होवें? जेसें कोउ पुरुष समुद्रमें मच्छके आश्रय करकें कहे जो में इसपर बेठकें समुद्रके पार जाउंगा, अरु सुखी होऊंगा, सो मूर्खता करकें डूबही मरेगा; तेसें जिस पुरुषनें इस पदारथका आश्रय लिया हे, अरु अपने सुखके निमित्त जानता हे, सो नाशकों प्राप्त होयगा ॥ हे मुनीश्वर! जो पुरु ष जगतकों बिचारता रहता हे, तिनकों यह जगत रमनीय भासता हे, अरु रमनीय जानकें नाना प्रकारके कर्म करता हे ॥ अरु नाना प्रकारके संकल्प करके जगतमें भटकते हे कबहु उपर, कबहु नीचे आते हे ॥ जेसें पवन कर धूर कबहु उंचे कबहु नीचे आती हे, अरु स्थिर नही रहती, तेसें यह जीव भटकते फिरते हे, स्थिर कबहु नही रहेते; अरु जि स पदारथकी इच्छा करते हें, सो सब कालका ग्रासरूप हो गये हे; जेसें बनमें अग्नि लगती हे, तब सब इंधनादिककों जारती हे, तेसें जेते कछु पदारथ हे, सो सब इंधनरूपी जगत बन हे; तिसकों कालरूपी अग्नि लगी हे, तिसनें सबकों ग्रास लिया हे; बहुरी जो इस पदारथकी इच्छा करते हे सो महा मूरख हे; अरु जिनकों आत्म बिचारकी प्राप्ति हे, तिनकों य ह जगत भ्रमरूप भासता हे; अरु जिसकों आत्म बिचारकी प्राप्ति नांही हे, तिनकों यह जगत रमनीय भासता हे; अरु जगतकों देखते नाशइ हो जाता हे ॥ सुपन पुरीकी नांइ संसार की में केसें इच्छा करो? यह तो दुःखके निमित्त हे ॥ जेसें मिठाइमें बिख मिलाया हे, तिसका भोजन करने वारे मृत्युकों प्राप्त होते हे, तेसें विषय भूगतने वारे नाशकों प्राप्त होते हे॥

इतिश्री योगवासिष्ठे वैराग प्रकरणे जगद्विपर्यय बर्ननं नाम त्रयोविंशतिमः सर्गः ॥ २३ ॥ ॥ ॥ श्रीरामोवाच ॥ हे मुनीश्वर! इस संसारमें भोगरूपी अग्नि लगी हे, तिसकर सब जलते हे; भोगसों जीव दीन हो गया हे; जेसे तालमें हाथीके पावसोंकर कमलका चूरन हो जाता हे, तेसें भोगसोंकर मनुष्य दीन हो जाते हे ॥ जेसें वायुसों मेघ नष्ट हो जाता हे, तेसें काम क्रोध दुराचारसों शुभ गुन नष्ट हो जाते हे ॥ जेसें कंटारीकें पत्तेमें अरु फलमें कांटे हो जाते हे, तेसें विषयकी वासनारूपी कंटक आय लगते हे ॥ हे मुनीश्व र! यह जगत सब नाशरूप हे; किसी पदारथका स्थिर रहना नाही हे ॥ वासनारूपी जल, अरु इंद्रियांरूपी गांठी हे, तिसमें पुरुष कालसों आय फस्या हे, सो बडे दुःखकों प्राप्त हो वेगा ॥ हे मुनीश्वर! वासनारूपी सूतमें जीवरूपी मोती परोये हुअे हे; अरु मनरूपी नट आय परोयकर चैतन्यरूपी आत्माके गरेमें डारता हे ॥ जब वासनारूपी तागा टूटी पर्‍या तब यह सब भ्रमभी निवत्ती होय जावेगा ॥ हे मुनीश्वर! इसका भोगकी इच्छा सो बंधनका कारन हे, भोगकी इच्छा कर भटकता हे, शांतिकों प्राप्त नही होता, तातें मुझकों किसी भोगकी इच्छा नांही॥न राजकी इच्छा हे, न घरकी, न बनकी इच्छा हे, न मरनेकर दुःख मानता हों॥न जीनेकर सुख मानता हों॥किसी पदारथका सुख नांही; सुख जो होना सो आत्मज्ञा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नकर होना हे, अन्यथा किसी पदारथकर होता नांहीं; जेसें सूर्यके उदय हुअेबिना अंधकारका नाश नांहीं होता, तेसें आत्मज्ञानबिना संसारका दुःखका नाश नांहीं होता; तातें सोइ उपाय मुजकों कहो जिसकर मोहका नाश होवे, ओर में सुखी होउं ॥ हे मुनीश्वर! भोगकों भुगतनहारा जो अहंकार हे, सो मेंने त्याग दिया फिर भोगकी इच्छा केसें होवे ? हे मुनीश्वर! यह विषयरूप सर्पनें जिसका स्पर्श किया हे, तिसका नाश हो जाता हे॥अरु सर्प जिसकों काटता हे, सो अेक बेर इसकों मार डारता हे; अरु विषयरूप सर्प जिनकों काटतें हे, सो अनेक जन्म पर्यंत मारतेइ चले जाते हे, तातें परम दुःखका कारन विषय भोग हे; यातें विषयरूपी परम विष हे ॥ हे मुनीश्वर! आरेके साथ अंगका काटना सहन होता हे, अरु वज्र करकें शरीरका चूरन होना सोभी में सहुंगा, परंतु विषयका भुगतना मेरेसों केसेंइ सह्या नांहीं जाता ॥ यह मुझकों दुःख दायक दृष्टिमें आता हे; तातें सोइ उपाय मुझकों कहो, जिसकर मेरे हृदयतें अज्ञानरूपी अंधकारका नाश होवे; अरु जो न कहोगे तो में मेरी छातीपर धीरजरूपी शिला धरकें बेठा रहोंगा, परंतु भोगकी इच्छा न करोंगा ॥ हे मुनीश्वर! जेते कछु पदारथ हे, सो सब नाशरूप हे; जेसें बिजुरीका चमत्कार होय छीप जाता हे, अरु अंजलिमें जल नांहीं ठहरता, तेसें विषय भोग अरु आयुष्य नाश होय जाते हे, ठहरते नांहीं ॥ जेसें कंढी कर मच्छी दुःख पाती हे, तेसें भोगकी तृष्णा कर जीव दुःख पाते हे, तातें मुझकों किसी पदारथकी इच्छा नांहीं ॥ जेसें किसीने मरीचिकाके जलकों सत्य जान जलपानकी इच्छा करी दोन्या सो जल पावत नांहीं, तातें में किसी पदारथकी इच्छा नांहीं करता ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे वैराग प्रकरणे सर्वांत प्रतिपादनं नाम चतुर्विंशतिमः सर्गः ॥ ॥ २४ ॥ ॥ श्रीरामोवाच ॥ हे मुनीश्वर! संसाररूपी गडेलामें अरु मोहरूपी कीचमें मूर्खका मन गिर जाता हे, तिसकर पन्या दुःख पावता हे, शांति वान कबहु नांहीं होता ॥ जब जरा अवस्था आती हे, तब सर्व शरीर जर्जरीभूत होकर कांपने लगते हें; जेसें पुरातन बृच्छके पत्र पवन कर हिलते हें, तेसें जरा अवस्थाकर अंग हिलते हें, अरु तृष्णा वृद्धि हो जाती हे; जेसें नीमका बृच्छ ज्यों ज्यों वृद्ध होता हे, त्यों त्यों कटुता बढती हे, तेसें तृष्णा बढती हे ॥ हे मुनीश्वर! जिस पुरुषनें देह, इंद्रियादिकनका आश्रम अपने सुख निमित्त लिया हे, सो मूरख संसाररूपी अंधकूपमें गिरताहे, निकस नही शकता; अरु अग्यानीका चित्त भोगका त्याग कदाचित् नही करता हे ॥ हे मुनीश्वर! जगतके पदारथमें मेरी बुद्धि मलीन हो गइ हे ॥ जेसें बरखा कालमें नदी मलीन होती हे; जेसें मागशर मासमें मंजरी सुखी जाती हे; तेसें जगतकी शोभा देखत देखत बिरस हो जाती हे ॥ जेसें जगतका पदारथ मूर्खकों रमनीय भासता हे; जेसें पानीका गडेला तृनकरी आच्छादित होता हे, अरु मृगका बालक तिस तृनकों रमनीय जानकर खाने जाते हे, फिर गिर जाते हे; तेसें यह मूरख भोगकों रमनीय जानी भूगतकें गिर परे हे, फिर महादुःख पाते हे ॥ जेसें मृग गडेलापर उडना हे, सो सुखी नहीं होता, तेसें यह संसारके पदारथ गडेलेरूप इन उपर मनरूपी मृग दोडनहारा केसें सुखी होवे ॥ हे मुनीश्वर! जगतके पदारथसोंकर मेरी बुद्धी चंचल हो गइ हे, तातें सोइ उपाय कहो, जिसकर पर्वतकी नांइ मेरी बुद्धी निश्चल होवे ॥ सो पद केसा हे, जो परमानंदके जतनमें रहता हे, अरु निर्भय, निराकार पद, जिसके पायेतें संसार कछुभी नांहीं रहता हे, बहुरी पावना कछु नांहीं रहता हे; तेसें संपूरन जगतकी नाना प्रकारकी रचना सब दब जाती हे; तिस पद पावनेका उपाय मुझकों कहो ॥ हे मुनीश्वर! अेसें पदतें मेरी बुद्धि शून्य हे, तातें मे शांतिवान नांहीं होता॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह संसार अरु संसारके कर्म मोहरूप हे; इसमें पडे हुअे शांतिकों प्राप्त नांही होते ॥ अरु जनकादिक संसारमें रहे हुअे कमलकी नांइ निर्लेप रहते हे, शांतिवान संसारमें निर्लेप रहते हे ॥ सो जेसें कोउ कीचसों पूरन होय, अरु कहे जो मुझकों कीचका परश नांही हुआ, तेसें राजके विक्षेपरूपी कीचमें परेहुअे शांतिवान केसें निर्लेप रहे हे, तिसकी समुझ क हा हे, सो कृपा कर कहो ॥ अरु तुम जेसें जो संत जन हे ॥ सो विषयकों भुगततें दृष्ट आते हें, अरु जगतकी चेष्टा सब करते हें; सो निर्लेप केसें रहते हें ? सो जुक्ति कहो ॥ जेसें तुम जल कमलवत् रहते हो सो कहो ॥ यह बुद्धि तो मोह करी मोही जाती हे ॥ जेसें तालमें हस्ति प्रवेश करता हे, ओर पानी मलीन हो जाता हे, तेसें मोह करी बुद्धी मलीन होय जाती हे, तातें सोइ उपाय कहो, जिसकर बुद्धि निर्मल होवे ॥ यह संतोषमें बुद्धि स्थिर कबहु नांही रहती ॥ जेसें मूलसों कुहारे कर कट्या वृच्छ स्थिर नांही होता, तेसें वासनासों कटी बुद्धि स्थिर नांही रहती ॥ हे मुनीश्वर! संसाररूपी विशूचिका मुझकों लगी हे, तातें सोइ उपाय कहो, जिसकर दृश्यका नाश होवे, इसनें मुझकों वडा दुःख दिया हे; अरु आत्मज्ञान कब प्रकाश होय, जिसके उदय हुअे मोहरूपी अंधकारका नाश होवे ॥ हे मुनीश्वर! जेसें बादरसों चंद्रमा आच्छादित होय जाता हे, तेसें बुद्धिकी मलीनताकर में आ च्छादित हुआ हों, तातें सोइ उपाय कहो जिसकर आवरन दूर होवे ॥ अरु जो आत्मानंद हे सो नित्य हे, जिसके पायेतें बहुरी पावना कछु नांही रहेता, इसतें संपूरन दुःख नष्ट हो जाते हें ॥ अरु अंतर शीतल हो जाता हे, अेसा जो पद हे, तिसकी प्राप्तिका उपाय मुझकों कहो ॥ हे मुनीश्वर! आत्म ज्ञानरूपी चंद्रमाकी मुझकों इच्छा हे, जिसके प्रकाश कर बुद्धिरूपी कमलनी खिली आती हे, अरु जिसकी अमृतरूपी किरन कर तृप्त वृत्ति होती हे सो कहो ॥ हे मुनीश्वर! अब मुझकों गृहमें रहेनेकी इच्छा नांही, अरु बन विषे जा नेकीभी इच्छा नांही ॥ मुझकों तो इसी पदकी इच्छा हे, जिस पायेतें भीतर शांति होय जाय ॥ ॥ इतिश्री यो० वै० प्र० वैराग प्रयोजनवर्णनं नाम पंचविंशतिमः सर्गः ॥ २५ ॥

॥ श्रीरामोवाच ॥ हे मुनीश्वर! जो जीवनेकी आस्था करते हे, सो मूरख हे; जेसें पत्रपर जलकी बुंद ठहरती नांही, तेसें आयुष्यभी छिनभंगुर हे ॥ जेसें वरखा कालमें दरदुर बोलते हे, तब उनका कंठ चंचल सदा फिरकता रहता हे, तेसें आवरदा छिन छिनमें चंचल हो जाती हे ॥ जेसें शिवजीके कपालमें चंद्रमाकी रेखा कलुसी हे, तेसा यह शरीर हे ॥ हे मुनीश्वर! जिसकों इनमें आस्था हे, सो महा मूरख हे, यह तो कालका ग्रास हे ॥ जेसें बिल्ली चुहेकों पकर लेती हे, तेसें सबकों काल पकर लेता हे ॥ जेसें बिल्ली चुहेकों संभाल करने नांही देती, तेसें सबकों काल अचानक ग्रहन कर लेता हे, अरु किसीकों भासता नहि ॥ हे मुनीश्वर! जब अग्यानरूपी मेघ आय गरजता हे, तब लोभरूपी मोर प्रसन्न होयके नृत्य करता हे; जब अग्यानरूपी मेघ वरखा करता हे, तब दुःखरूपी मंजरी बढने लगती हे; अरु लोभरूपी बिजुरी छिन छिनमें होय होय नष्ट हो जाती हे, अरु तृष्णा रूपी जालमें फसे हुअे जीवरूपी पंछी परे दुःख पाते हे; शांतिकी प्राप्ति नही होती ॥ हे मुनीश्वर! यह जगत्रूपी वडा रोग लग्या हे, तिसका निवारन करनेका कोनसा पदारथ हे ? जो पावनेकों योग्य हे, जिसकर भमरूपी रोग निवृत्त होवे, सोइ उपाय कहो ॥ यह जगत मूरखकों रमनीय दिखता हे, अेसे पदारथ पृथ्वीपर, अरु आकाशमें, अरु देवलोकमें अरु पातालमें कोउ नांही जो ज्ञानवानकों रमनीय दिखे ॥ ज्ञानज्ञानकों सब भमरूप भासता हे; अरु अज्ञानी जगतमें आस्था करता हे ॥ हे मुनीश्वर! चंद्रमामें जो कलंक हे, तिसकर शो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भा सुंदर नही लगती, जब कलंक दूर होय जाय, तब सुंदर लगे; तेसें मेरे चित्तरूपी चंद्रमामें कामरूपी कलंक लग्या हे, तिसकर उज्वल नही भासता, तातें सोइ उपाय कहो ; जिसक र कलंक दूर हो जाय ॥ हे मुनीश्वर! यह चित्त बहुत चंचल हे, स्थिर कदाचित् नांही होता ॥ जेसें अग्निमें डार दिया पारा उड जाता हे, तेसें चित्तबी स्थिर नही होता, विषयकी तरफ सदा धावता हे, तातें सोइ उपाय कहो, जिसकर चित्त स्थिर होवें; ओर संसाररूपी बनमें भोगरूपी सर्प रहते हे, सो जीवका दंश करते हे, तिससों बचनेका उपाय कहो; अरु जेती कछु क्रिया हे, सो रागद्वेषके साथ मिली हुइ हे, तातें सोइ उपाय कहो जिसकर रागदोषका प्रवेश न होवे ॥ जेसें समुद्रमें परे होय, अरु जलकास्परश न होय, तेसें यह संसारमें हे तिसकों तृष्णारूपी जलका परश न होय, अेसा उपाय कहो; जिसकर इसकों रागदोषका परश न होय; अरु मनमें जो मननरूपी सत्ता हे, सो जुगतीसों कर दूर होती हे, अन्यथा दूर नही होती ॥ सो निवृत्तिके अर्थ आप मेरेकों जुक्ति कहो; ओर आगें जिसकों जिस प्रकार निवृत्ति हुइ हे, सो कहो ॥ अरु जिस प्रकार तुमारे अंतरमें शीतलता हुइ हे सो कहो ॥ हे मुनीश्वर जेसें तुम जानते हो सो कहो ; अरु जो तुमारे विद्यमान वह जुगती नहि पाइ, तब में तो कछु नांही जानता, तो में सब त्यागकर निरअहंकार होय रहोंगा ॥ जबलग उह जुगती मुझकों न प्राप्त होवेगी तबलग में भोजन नांही करोंगा, अरु जलपानभी नांही करुंगा, अरु स्नानादिक क्रियाभी नांही करोंगा ॥ संपदाका कारजभी नांही करोंगा, ओर आपदाका कारजभी नांही करोंगा, निरहंकार होउंगा ॥ ओर ये न मेरी देह हे, ओर न मे देह हों, सब त्याग करकें बेठी रहोंगा ॥ जेसें कागदके उपर मूर्त्ति चीत्रित होती हें, तेसें होय रहोगा ॥ स्वाश आवते जाते आपही छीन होय जायगे ॥ जेसें तेलविना दिपक बुझता हे, तेसें अनर्थविन देह निर्वान होय जायगा, तब महा शांतिकों प्राप्त होउंगा ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे भारद्वाज! अेसें कही करी रामजी चुप होय रहे ॥ जेसें बडे मेघकों देखकें मोर शब्द करकें चुप हो जाता हे ॥ ॥ इतिश्री यो० वै० प्रकरणे अनन्यत्यागदर्शनं नाम षड्विंशतिमः सर्गः ॥ ॥ २६ ॥

॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे पुत्र ! जब इसप्रकार रघुवंशरूपी आकाशके रामचंद्ररूपी चंद्रमा बोले, तब सबही मौंन हो गये; अरु सबके नेन खडे हो गये; मानों रोमहु खडे होकर रामजीके बचन सुनते हे ! अरु जेते कछु सभामें बेठेथे, सो सब निर्वासनारूपी अमृतके समुद्रमें मग्न हो गये ॥ वसिष्ठ, वामदेव, विश्वामित्र, आंदिजो मुनीश्वर थे; ओर जेते दृष्टि आ दिक जो मंत्री थे, ओर राजा दशरथ अरु जेते मंडलेश्वर थे, ओर जेते चाकर नोकर थे, ओर मात कौशल्या आदिक सब मौंन हो गये ॥ अर्थ यह जो अचल हो गयें हे; अरु पि जरेमें जो तोते थे सोभी मौंन हो गये; अरु बगीचेमें पशु आदि थे, सोभी मौंन हो गये; अरु चारा तृन खात रही गये; अरु जो पंछी आलयमें बेठेथे, सोभी सुनकर मौंन हो गये, अ रु आकाशके पंछी जो निकट थे, सोभी स्थिर हो गये; अरु आकाशमें देव, सिद्ध, गंधर्व, विद्याधर, किन्नर, थे; सोभी आय सुनने लागे ॥ अरु फुलकी बरषा करने लागे सब धन्य धन्य शब्द करने लागे ! ओर फूलकी बरखा भइ सो मानो बरफकी बरखा होती हे; अरु छीर समुद्रके तरंग उछलते आते होय, अरु मानो मोतीकी मालाकी वृष्टि आवत हो य; ओर जेसें माखनके पिंड उडते होय, इस प्रकार आधी घडी पर्यंत फुलकी बरखा भइ; अरु बडी सुगंध आय पसरी, अरु फुलपरी भौंरे फिरने लागे ! ओर बडा विलास तिस कालमें हो रह्या; अरु नमोनमः शब्द करने लागे ॥ ॥ देवोवाच ॥ हे कमलनेन रघुवंशी ! आकाशमें चंद्रमारूप आप रामजी ! तुम धन्य हो ! तुमने बडे श्रेष्ट स्थान देखे हे, अरु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुत प्रकारके बचन शुने हे; यातें जेसे आप बचन कहे हे, अेसे बचन कबहु नांही सुने ॥ इस वचन शुनकें हमारा जो देवताका अभिमान था, सो सब निवृत्त भया हे ॥ अमृत रूपी बचन शुनकर हमारी बुद्धि पूरन हो गइ हे ॥ हे रामजी ! जेसे बचन तुमने कहे हे, अेसे बचन बृहस्पतिहु कहेनेकों समर्थ नांही; तुमारे बचन परमानंदके करनहारे हे, तातें तुम धन्य हो !॥ इतिश्री योगवासिष्ठे वैराग प्रकरणे सिद्ध समाज बर्ननं नाम सप्तविंशतिमः सर्गः ॥ ॥ २७ ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे भारद्वाज ! अेसे वचन सिद्ध कहीकें विचार करत भये ॥ रघुवंशका कुल पूजवे जोग हे; तिसमें रामजीनें बडे उदार बचन मुनीश्वरके विद्यमान कहे हे; अब जो मुनीश्वरका उत्तर होयगा, सोबी श्रवन किया चहिये ॥ जेसें फूलके उपर भौंरा स्थिर होते हे, तेसें व्यास, नारद, पुलह, पुलस्त्य, आदि सब साधु सभामें स्थित भये ; तब वसिष्ठ, विश्वामित्र आदि मुनीश्वर उठकें खडे हुअे, अरु तीनकी पूजा करने लागे ॥ प्रथम पूजा राजा दशरथनें करी, फिर, नाना प्रकारसों सबने वाकी पूजा करी; ओर जथाजोग आसनके उपर बेठे; सो केसें हे जो नारद बहुत सुंदर मूर्तिवारे हाथमें बीना लेयकें बेठे, अरु स्याम मूर्ति व्यासजी आय बेठे; ओर नाना प्रकारके रंगसों रंजित वस्त्र पहिरे हुअे मानो तारामें महा स्याम घटा आइ हे अेसे अरु दुर्वासा, वामदेव पुलह, पुलस्त्य, अरु बृहस्पतिके पिता अंगिरा, अरु भृगु, ओर मेंहु तहां था ओर ब्रह्मर्षि, राजर्षि, देवर्षि, देवता, मुनीश्वर सब आयकें सभामें स्थित हुअे ॥ किसीकों बडी जटा हे; कोइनें मुगट पेरे हे; किसीनें रुद्राक्षकी माला पेरी हे, किसीने मोतीकी माला पेरी हे; किसीके कंठमें रत्नकी माला हे; ओर हाथमें कमंडलु, मृगछाला, किसीके महा सुंदर वस्त्र; किसीकी कटिपें कोपीन, कीसीकी कटिपें सुवर्नकी जंजीर अेसे बडे तपसी आयके बेठे ॥ तामें केउ राजसी स्वभावके, केउ सात्वीक स्वभावके; अेसे बडे बडे आये; अरु सब विद्वत् वेद पढनहारे प्राप्त हुअे ॥ ओर किसीका सूर्यवत, किसीका चंद्रमावत्, किसीका तारावत्, किसीका रत्नवत्, अेसे बडे प्रकाश वारे पुरुषार्थपर जतन करनेहारे, सो जथाजोग, आसनपें स्थिर भये, ओर मोहनी मूर्ति रामजी अरु दीन सुभाववारे हाथ जोरके सभामें बेठे, तिसकी सब पूजा करत भये; कहत हे जो हे रामजी ! तुम धन्य हो ! ओर नारद सबके विद्यमान कहत भये, जो हे रामजी ! तुमने बडे विवेक अरु बैरागके बचन कहे, सो सबकों प्यारे लगे; सबके कल्यान करनेहारे हे; ओर मरम बोधके कारण हे ॥ हे रामजी तुम बडे बुद्धिवान उदारात्मा दृष्ट आवते हो; अरु महा वाक्यका अर्थ तुमसें प्रगट होता हे; अेसा उजवल पात्र साधमें ओर अनंत तपसीमें कोउक होते हे; अरु जेते कछु मनुष्य हे, सो सब पशु जेसे दृष्टिमें आवते हे; क्यों जो जिसकों संसार समुद्रके पार होनेकी इच्छा हे; ओर जो पुरुषार्थ पर जतन करते हे ॥ सोइ मनुष्य हे ॥ साधो ! वृच्छतो बहुत होते हे, परंतु चंदनका वृच्छ कोउ होता हे; तेसें शरीर धारी बहुत हे, परंतु अेसा कोउ होता हे; ओर सब अस्थि मांस रुधिरके पुतरे साथ मिले हुअे भटकते फिरते हे; सो जेसी जंत्रीकी पूतरी होती हे, तेसें अज्ञानी जीव हे; ओर हस्तितो बहुत हे; परंतु जिसके मस्तकमेंतें मोती निकसता हे, सो बिरला हे ॥ तेसें मनुष्य तो बहुत हे, परंतु पुरुषार्थ पर जतन करनेहारे कोउ होते हे ॥ जेसें वृच्छ बहुतेरे, परंतु लवंगका वृच्छ कोउ होता हे तेसें मनुष्य बहुत परंतु अेसा कोइ विरला होता हे अेसे पात्रकों थोर अर्थ कहाभी बहुत हो जाता हे जेसें तेलकी बुंद थोरी जल में डारी बिस्तारकों पावती हे; तेसें थोरे बचन जो आपके हियेमें बहुत होते हे; आपकी बुद्धि बहुत विशेष हे; अरु दीपक जेसी प्रकाश वारी हे; अरु बोधका परम पात्र हे, ओर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ कहने मात्रतें आपकों शीघ्र ज्ञान होवेगा ॥ अरु जो हम सब बेठे हे, सो हमारे विद्यमान आपकों ज्ञान न होवेगा, तब जानना जो हम सब मूर्ख बेठे हे ॥

॥ इतिश्री योगवासिष्ठे वैराग प्रकरणे मुनिसमाज वर्नन नाम अष्टाविंशतिमः सर्गः ॥ ॥ २८ ॥

॥ समाप्तोऽयं योगवासिष्ठे वैराग प्रकरणं प्रथमं ॥

अनुक्रमणिका.

सर्गांक	सर्गनाम	पृष्ठ	सर्गांक	सर्गनाम	पृष्ठ	सर्गांक	सर्गनाम	पृष्ठ	सर्गांक	सर्गनाम	पृष्ठ
१	कथारंभ	१	८	लक्ष्मीनैराश्य	८	१५	जुवागारुडी	१५	२२	सर्व पदार्थ भाव	२०
२	तीर्थयात्रा	२	९	संसारसुख निषेध	९	१६	स्त्रीदुराशा	१६	२३	जगद्विपर्यय	२१
३	विश्वामित्रा गमन	३	१०	अहंकार दुराशा	१०	१७	जरावस्थानिरूः	१७	२४	सर्वांत प्रतिपादन	२२
४	विश्वामित्र विवाद	४	११	चित्तदौरात्म्य	११	१८	कालदत्तात	१८	२५	वैरागप्रयोजन	२२
५	दशरथोक्तिवर्णन	५	१२	तृष्णागारुडी	१२	१९	कालविलास	१८	२६	अनन्यत्यागदर्शन	२३
६	रामसमाज	६	१३	देहनैराश्य	१३	२०	कालजुगुप्सा	१९	२७	सिद्धसमाज	२३
७	रामेणवैरागवर्णन	८	१४	बालावस्थावर्णन	१४	२१	कालविलास	१९	२८	मुनिसमाज	२४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ इति श्रीयोगवासिष्ठे वैराग प्रकरणं प्रथमं समाप्तं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री १०८ ईश्वर मठ
पुस्तकालय,
मुमुक्षु भवन, अस्सी, काशी.

॥ अथ श्रीयोगवासिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणं द्वितीयं प्रारभ्यते ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

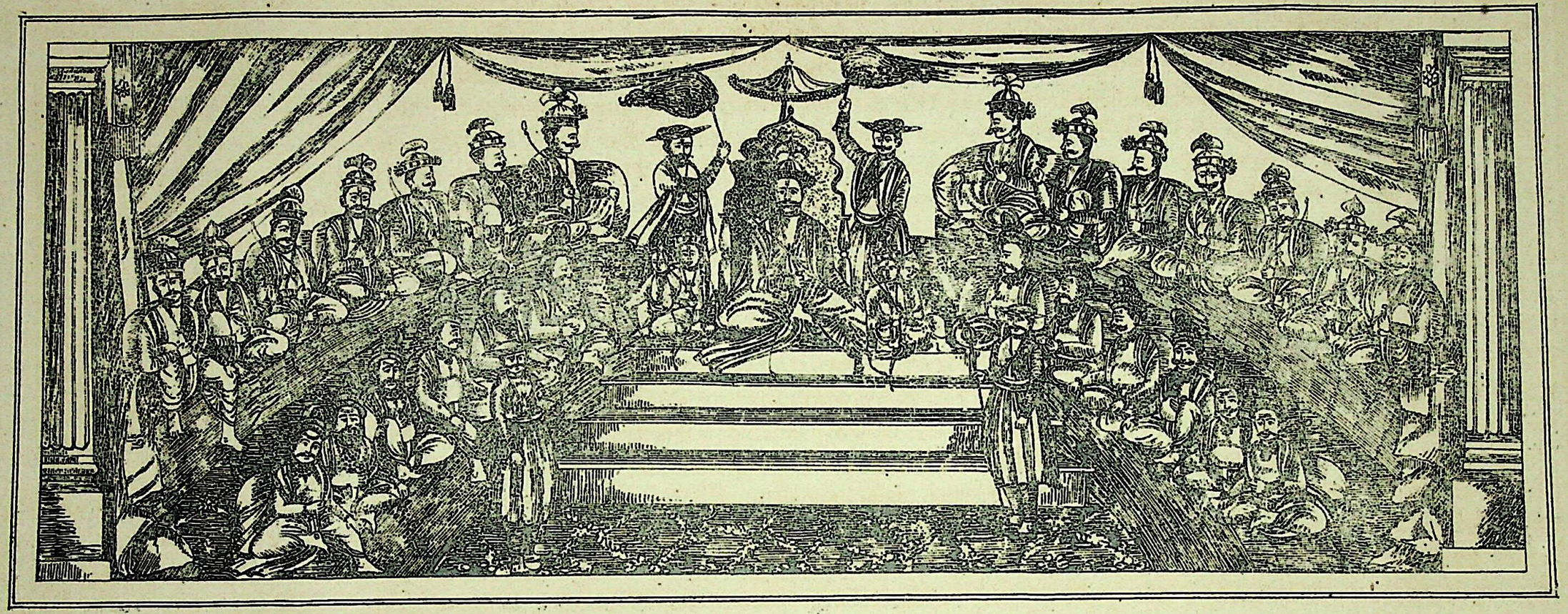

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीपरमात्मनेनमः ॥ ॥ अथ श्री योगवासिष्ठे द्वितीय मुमुक्षु प्रकरण प्रारंभः ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे साधो ! यह जो बचन हे सो परमानंद रूप हे; अरु कल्यानके कर्त्ता हे॥ इसमें श्रवणकी प्रीति तब उपजती हे ॥ जब अनेक जन्मके बडे पुन्य आय इकठे होते हैं ॥ जेसें कलपबृच्छकेफलकों बडे पुन्यसों पातें हैं, तेसें जिसके बडे पुन्यकर्म अेकठे आय हो ते हैं, ॥ तिसकी प्रीति यह बचनके श्रवनमें होती हे; अन्यथा प्राप्ति नही होती ॥ यह बचन परम बोधका कारन हे ॥ बैराग प्रकरनके अेक सहस्र पांचशो श्लोक हे ॥ हे भारद्वाज! इस प्रकार जब नारदजीनें कहा, तब विश्वामित्र बोले ॥ ॥ विश्वामित्रोवाच ॥ हे ज्ञानवानमें श्रेष्ठ रामजी ! जेता कछु जानने जोग था सो तैंनें जान्या हे, ॥ इसतें जानना ओर नही रह्या॥ अरु तिसमें विश्राम पावने निमित्त कछुक मार्जन करना हे ॥ जेसें अशुद्ध आदर्शकी मलिनता दूर करि होय, तब मुख स्पष्ट भासता हे; तेसें कछु उपदेशकी तुझकों अपेक्षा हे ॥ हे रामजी ! तेरे जेसा भगवान व्यासजीका पुत्र शुक देवजी भया हे, सोबी बडा बुद्धिवान था तिसनें जो जानने जोग था सो जान्या हे, अरु विश्रामके निमित्त तिसकोंभी अपेच्छा थी, सो विश्रामकों पायकर शांतिवान भये हे ॥ ॥रामोवाच ॥ हे भगवन् ! शुकजी केसा बुद्धिवान अरु ज्ञानवान था; अरु केसी विश्रामकी अपेच्छा तिसकों थी, फिर केसें विश्रामकों पाव त भया, सो कृपा करिकें क्रहो ॥ विश्वामित्रोवाच ॥ हे रामजी ! अंजनके पर्वतकी नांइं जिसका आकार हे, अेसे जो भगवान व्यासजी, सो स्वर्नके सिंहासनपर राजा दशरथके पास यहां बेठा हे, अरु सूर्यकी नांइं प्रकाशवान जिसकी कांति हे, तिसका पुत्र शुकजी था सो सब शास्त्रका वेत्ता था; सत्यकों सत्य जानता था, असत्यकों असत्य जानता था; सो शांति रूप, ओर परमानंदरूप आत्मामें विश्राम न पावत भया, तब उसकों विकल्प उठ्या जो जिसकों में जान्या हे, सो न होवेगा; काहेतें जो मुझकों आनंद नांहीं भासता, सो संशयकों धरकें अेक कालमें व्यासजी सुमेरु पर्वतकी कंदरामें बेठे थे, तिनके निकट आयकर कहत भये ॥ हे भगवन् ! यह संसार सब भ्रमात्मक कहांसें भया हे; वाकी निवृत्ति केसें होयगी; ओर आगें कोइकों इसकी निवृत्ति भइ हे ? सो कहो ॥ हे रामजी ! इस प्रकार जब शुकजीनें कह्या, तब विद्वत वेदशिरोमनी जो बेद व्यासजी हे सो तत्काल उपदेश करत भये ॥ तब शु कजीनें कह्या, हे भगवन् जो कछु तुम कहो हो, सो तो में आगेंसों जानता हों, इसकर मुझकों शांति प्राप्त नांहीं होती ॥ हे रामजी ! जब इस प्रकार शुकजीनें कह्या, तब सर्वज्ञ जो वेद व्यासजी हे, सो विचार करत भये, जो मेरे बचनकर इसकों शांति प्राप्त न होवेगी, क्यों जो इसकों अब पिता पुत्रका संबंध भासता हे; अेसें विचार करकें व्यासजी कहत भये, हे पुत्र ! में सर्व तत्वज्ञ नांहीं, तुं राजा जनकके निकट जा, वे सर्व तत्वज्ञ हे, अरु शांतात्मा हे, उससों तेरा मोह निवृत्त होवेगा ॥ हे रामजी ! जब इस प्रकार व्यासजीनें कह्या; तब शुकदे वजी उहांसों चले; तब जो मिथिला नंगरी राजा जनककी थी तिसमें आयकर राजा जनकके द्वारपें स्थित भया ॥ तब जेष्टीनें जायकर जनककों कह्या, जो व्यासजीके पुत्र शुकजी आय खडे हे; तब राजानें जान्या, जो इसकों जिज्ञासा हे, तब कह्या खडा रहो; तब खडे ही रहे ॥ इसी प्रकार ज्येष्टी जाय कह्या, तब सात दिन खडे रहत बीत गये, तब राजानें फेर पूछ्या जो शुकजी खडे हे ? ॥ के चलते रहे हे ? तब ज्येष्टी कहा खडे हे ॥ तब राजानें कहा आगें ले आओ, तब आगें ले आये; उस दरवज्जेपेंबी सात दिन खडे रहे ॥ बहुरी राजानें पूछ्या, जो शुकजी हे ? तब ज्येष्टीनें कहा जो खडा हे ॥ तब राजानें कह्या, अंतःपुरमें ले आओ; उसकों नाना प्रकारके भोग भुगताओ ॥ तब अंतःपुरमें ले गये, उहां स्त्रियनके पास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सात दिन खडे रहे ॥ तब राजानें जेष्टीकों पूछया, जो तिसको दशा केसी हे, ओर आगें कहा दशा थी ? तब ज्येष्टीनें कहा जो आगें निरादर करकें न शोकवान हुआथा; अरु अब भोगकर न प्रसंन हुआ हे; इष्ट अनिष्टमें समान हे ॥ जेसें मंद पवन करकें मेरु चलायमान नांही होवे, तेसें यह बडा भोगका निरादरकर चलायमान नांही भये ॥ जेसें पपैयेकों मेघके जल बिना नदी, ताल, आदिके जलकी इच्छा नांही होती, तेसें उसकों किसी पदारथकी इच्छा नांही ॥ तब राजानें कह्या, इहां ले आओ तब सो ले आअे ॥ जब शुकजी आये तब राजा जनक उठकें खडे होय प्रनाम किया, फिर दोउ बेठ गये ॥ तब राजानें कह्या जो हे मुनीश्वर! तुम किस निमित्त आये हो; तुमकों कहा बांछा हे सो कहो, तिसकी प्राप्ती में कर देडुं ॥ ॥ श्रीशुकउवाच ॥ हे गुरु! यह संसारका आडंबर केसें उत्पन्न हुआ हे, फिर केसें शांत होवेगा, सो तुम कहो ? ॥ ॥ विश्वामित्रोवाच ॥ हे रामजी! जब इस प्रकार शुक देव जीनें कहा तब राजा जनकनें यथाशास्त्र उपदेश जो कछु व्यासजीनें कह्या था सोई कह्या ॥ बहुरी शुकजीने कह्या, भगवन् जो कछु तुम कहो हो, सोइ मेरा पिताजी कहत था ॥ अरु सोइ शास्त्र कहत हे, ओर बिचारसों मेंडु अेसा जानता हों, जो यह संसार अपने चित्तमें उत्पन्न होता हे, अरु चित्तका निर्वेद हुवे भमकी निवृत्ति होती हे, फिर विश्राम मुझकों नांही प्राप्त होता हे ॥ ॥ जनकउवाच ॥ हे मुनीश्वर ! जो कछु मेनें कह्या हे, अरु जो तुम जानते हो, इसतें अवर उपाय कछु हे, अेसा जानना नांही, अरु कहनाभी नांही ॥ यह संसार चित्तके संवेदनकर हुआ हे ॥ जब चित्त फुरनेतें रहित होता हे, तब भम निवृत्त हो जाता हे; अरु आत्मतत्व नित्य शुद्ध हे, अरु परमानंद स्वरूप हे; केवळ चैतन्य हे; तिसका अभ्यास करेगा, तब तुं विश्रामकों पावेगा; अरु तुं मुक्ति स्वरूप हे; काहेतें जो तेरा जतन आत्माकी ओर हे, दृश्यकी ओर नांही, तातें तुं बडा उदारात्मा हे ॥ हे मुनीश्वर ! तुं मोकों व्यासतें अधिक जान मेरे पास आया हे; ओर तुं मेरेतेंभी अधिक हे; काहेतें जो हमारी चेष्टा बाहिरतें दृष्ट आवती हे, ओर तेरी चेष्टा बाहिरतें कछुभी नांही; अरु अंतरतें हमारी इच्छाभी नांही ॥ ॥ विश्वामित्रोवाच ॥ हे रामजी ! जब इस प्रकार राजा जनकने कह्या, ॥ तब शुकजी निःसंग, निःप्रयत्न, निर्भय होकर चले; सुमेरु पर्वतकी कंदरामें जाय निर्विकल्पक समाधि दश सहस्र वर्ष तांइं करी ॥ बहुरी निर्वान हो गये ॥ जेसें तेल बिना दीपक निर्वान हो जाता हे, तेसें निर्वान हो गये, जेसें समुद्रमें बुंद लीन हो जाती हे, जेसें सूर्यका प्रकाश संध्याकालमें सूर्यके पास लीन हो जाता हें; तेसें कलनारूप कलंककों त्यागकर ब्रह्म पदकों प्राप्त भये ॥ ॥ इतिश्री यो० मु० शुक निर्वाण वर्णनं नाम प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥

विश्वामित्रोवाच ॥ हे राजा दशरथ ! जेसें शुकजी शुद्ध बुद्धिवारे थे, तेसे रामजीभी हे ॥ जेसें शांतिके निमित्त उसकों कछु मार्जन कर्त्तव्य था, तेसें रामजीकों विश्रामके निमित्त कछु क मार्जन चहियें, काहेतें जो आवरन करनहारे भोग हे; सो इच्छा तिनतें निवृत्ति भई हे; अरु जो कछु जानवे जोग था सो जान्या हे; अब हमारे कछुक जुगती करनी हे, तिस करकें उसकों विश्राम होवेगा ॥ जेसें शुकजीकों थोडेसे मार्जन करकें शांतिकी प्राप्ति भइ थी, तेसें इनकोंवी होवेगी ॥ हे राजन् ! अब रामजीकों भोगकी इच्छा स्पर्श नही करती ॥ जेसें ज्ञानवानकों अध्यात्मक आदि दुःख स्पर्श नांही करता, तेसें रामजीकों भोगकी इच्छा स्पर्श नांही करती, भोगकी इच्छा सबकों दीन करती हे, इसकाइ नाम बंधन हे; अब भोगकी वासनाका क्षय करना, इसकाइ नाम मोक्ष हे ॥ ज्यों ज्यों भोगकी इच्छा करता हे, त्यों त्यों लघु हो जाता हे; अरु ज्यों ज्यों भोगकी वासना क्षय होती हे, त्यों त्यों गरिष्ट होता हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जबलग इसकों आत्मानंद प्रकाश नांही होता, तबलग विषयकी वासना दूर नांही होती; जब आत्मानंद प्राप्त होता है, तब विषय वासना कोउ नांही रहती ॥ जेसें मरुथलमें वल्ली उत्पन्न नांही होती, तेसें ज्ञानवानकों विषय वासनाकी उत्पत्ति नांही होती ॥ हे साध! ज्ञानवान जो विषय भोगका त्याग करता है, सो किसी फलकी इच्छा करकें नांही करता; सुभावतेंइ ज्ञानवानकी विषय वासना चलती रहती है ॥ जेसें सूरजके उदय हुअे अंधकारका अभाव हो जाता है तेसें रामजीकों अब किसी भोग पदारथकी इच्छा रही नांही; अब विदित वेद हुआ है; अब आप विश्रामकी इच्छा चाहाता है, तातें जो कहों, सोइ करो; जिसकर विश्रामवान होय ॥ हे राजन्! यह जो भगवान वसिष्ठजी है, इनकी जुक्ति करकें शांत होवेगा; अरु आगेंभी सोइ रघुवंश कुलके गुरु है; इनके उपदेशद्वारा आगेंभी रघुवंशी ज्ञानवान भये है ॥ जो सर्वज्ञ है, अरु साक्षिरूप है, ओर त्रिकालज्ञ है, ओर ज्ञानके सूरज है, इनके उपदेशकर रामजी आत्मपदकों प्राप्त होवेगा ॥ हे वसिष्ठजी! वह ब्रह्माका उपदेश तुमारें समरनमें है, क्यों जो जब तुमारा हमारा विरोध हुआ था, तब उपदेश किया ओर जो सब ऋषीश्वर अरु बृच्छ करी पुरन है, अेसा जो मंदिराचल पर्वतमें आयकर ब्रह्माजीनें संसार वासनाके नाश निमित्त उपदेश किया था, अरु तुमारा हमारा विरोध था, तिसके निमित्त अरु ओर जीवके कल्याण निमित्त जो उपदेश किया था; अब यही उपदेश तुम रामजीकों करो; यहभी निर्मल ज्ञानपात्र है ॥ अरु ज्ञानबी वही है, अरु विज्ञानबी वही है, अरु निर्मल जुक्ति वही है, जो शुद्ध पात्रमें अरपन होवे; अरु पात्रबिना उपदेश नांही सुहात है, अरु जिसमें शिष्यभाव न होवे, अरु विरक्तता न होवे, अेसा जो अपात्र मूर्ख होवे, तिनकों उपदेश करना व्यर्थ है; अरु जो विरक्त होवे, अरु शिष्य भावना न होवे, तउंभी उपदेश नांही करना, अरु दोनो करी संपन होवे तब करना; पात्रबिना उपदेश व्यर्थ होता है; अर्थ यह जो अपवित्र हो जाता है ॥ जेसें गौका दूध महा पवित्र है, अरु श्वानकी त्वचामें डारिये, तब वह अपवित्र हो जाता है, तेसें अपात्रकों उपदेश करना व्यर्थ है ॥ हे मुनीश्वर! जो शिष्य बैराग करी संपन्न होता है, अरु उदार आत्मा है, सो तुमारे उपदेशके योग्य है; अरु तुम केसे हो; जो बीतराग हो, भय अरु क्रोधतें रहित हो; परम शांतिरूप हो, सो तुमारे उपदेशका पात्र रामजी है ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ इस प्रकार जब विश्वामित्रनें कह्या; तब नारद अरु व्यासादिकननें साधु! साधु! करकें कह्या, अर्थ यह जो भला! भला! कह्या; अेसेंही यथार्थ है ॥ तब राजा दशरथके पास बडे प्रकारके साधु बैठे हुअे थे ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ब्रह्माजीके पुत्र वसिष्ठजीने तिनकों कह्या जो, हे मुनीश्वर! जो कछु तुमने आग्या करी है, सो हमनें मानी है; अेसा समरथ कोउ नांही, जो संतकी आग्या निवारन करे ॥ हे साधो! जेते कछु राजा दशरथके पुत्र है, तिन सबके हृदयमें जो अग्यानरूपी तम है; सो मैं ज्ञानरूपी सूर्यकर निवारन करोंगा ॥ जेसें सूर्यके प्रकाशकर अंधःकार दूर होता है; हे मुनीश्वर! जो कछु ब्रह्माजीनें उपदेश किया था, सो मुझकों अखंड सुमरन है, सोइ उपदेश करोंगा, जिसकर रामजी निःसंशय पदकों प्राप्त होवेगा ॥ वाल्मीकोवाच ॥ इस प्रकार वसिष्ठजीनें विश्वामित्रकों कह्या, ताके अनंतर, मोच्छका उपाय सब रामजीकों कहत भया ॥ ॥ इतिश्री यो० मु० विश्वामित्रोपदेशो नाम द्वितीयः सर्गः ॥ ॥ २ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! जो कछु कमलज जो ब्रह्माजी तिसने मुजकों जीवके कल्यान निमित्त उपदेश किया है, सो भले प्रकार मेरे सुमरनमें आता है, सो अब तुझकों कहता हों ॥ ॥ श्रीरामोवाच ॥ हे भगवन्! कछुक प्रश्न करवेका अवसर आया है; अब अेक संशयकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूर करो ॥ मोक्ष उपाय जो संहिता कहते हो, सो सब तुम कहोगे, परंतु यह जो तुमने कह्या, जो शुकदेवजी विदेह मुक्ति हो गये, ॥ तो भगवान व्यासजी जो सर्वज्ञ हे, सो विदेह मुक्ति क्यों न हुवे? ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जेसें सूर्यके किरनसों त्रसरेनू उडत दिख परती हे, तिनकी संस्था कछु नांहीं होती, तेसे परम सूर्यके संवेदनरूपी किरनमें त्रिलोकीरूपी त्रिसरेनू हे, सो असंख्य हे ; ओर अनंत होकर मिट जाते हें ; अरु ओर अनंत होते हे ; अनंत त्रिलोकी ब्रह्म समुद्रमें होवेंगी ; तिसकी संख्या कछु नांहीं ॥ ॥ श्रीरामोवाच ॥ हे भगवन् ! जो आगें ब्यतीत हो गये हे; ओर आगें जो होवेगे, तिनकी संख्या केती हे ? अरु वर्त्तमानकों तो जानता हों ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! अनंत कोटि त्रिलोकीके गन उपजे हे, अरु मिट गये हे, अरु केइ होवे हे, अरु केइ होवेगे ॥ गिननेकी संख्या कछु नांहीं, काहेतें जो जीव असंख्य हे ॥ अरु जीव जीव प्रती अपनी अपनी सृष्टि हे ; जब यह जीव मृतक हो जाते हे, तब उसी स्थानमें अपनें अंतवाहक संकल्परूपी पुर विषे इसका बंध भास आता हे ॥ अरु इसी स्थानमें परलोक भास आता हे ॥ पृथ्वी, आप, तेज, वाय, आकाश, पंचभूत भासता हे ॥ अरु नाना प्रकारकी वासनाके अनुसार अपनी अपनी सृष्टि भास आती हे ॥ बहुरी जब उहांतें मृतक होता हे, तब उही सृष्टी भास आती हे ; नामरूप संयुक्त उही जाग्रत सत्य होकर भास आती हे, बहुरी जब उहांतें मरता हे, तब इस पंचभूत सृष्टिका अभाव हो जाता हे ; ओर अवर भासती हे ; अरु ताहांके जो जीव होते हे, तिनकोंभी इसी प्रकार अनुभव होता हे ॥ इसी प्रकार अेक अेक जीवकी सृष्टि होती हे, अरु मिट जाती हे, तिसकी संख्या कछु नांहीं ; तब ब्रह्माकी सृष्टिकी संख्या केसें होवे ! जेसें पुरुष फेरी लेता हे, अरु तिसकों सर्व पदारथ भमतें दृष्ट आवते हे ; अरु जेसें नौकामें बेठे हुअे नदी तटके बृच्छ चलते दृष्ट आतें हे ; जेसें नेत्रके दोषकर आकाशमें मोतीकी माला दृष्ट आती हे ; जेसें सुपनेमें सृष्टि भासती हे ; तेसें जीवकों भम करकें यह लोक परलोक भासता हे ; वास्तवतें जगत कछु उपजाइ नांहीं ; अेक अद्वैत परमात्म तत्व अपने आपविषे स्थित हे; तिसविषे द्वैत भम अविद्या करकें भासता हे ; जेसें बालककों अपने परछैयांमें बेताल भासता हे , अरु भयकों पावता हे, तेसें अज्ञानीकों अपनी कल्पना जगतरूप होय भासती हे ॥ हे रामजी ! यह व्यासदेव बत्तीस बेर मेरे देखनेमें आया हे, तिसमें दश तो अेक आकाररूप हे ; अरु अेकही जेसें क्रिया, अरु अेकही जेसे निश्चा हुआ हे ; अरु अवर दश समानही सम हुवे हे ; अरु बारे विलक्षण आकार , विलक्षण क्रिया चेष्टावारे हुवे हे ॥ जेसें समुद्रमें तरंग होते हे, तामें केइ सम अरु केइ विलक्षण उपजते हे, तेसें व्यास हुवे हे ; अरु सम जो दश हुवे हे, तिनमें दस व्यास यही हे ; अरु आगेंभी अष्टबेर यहीं होवेगा ; बहुरी महा भारत कहेगा ॥ बहुरी नौमीबेर ब्रह्मा होकर विदेह मुक्ति होवेगा ; अरु हमभी होवेगें ॥ अरु वाल्मीकभी होवेगा ; भृगुभी होवेगा, अरु बृहस्पतिका पिता अंगिराभी होवेगा ; इत्यादिक अवरभी होवेगे ॥ हे रामजी ! अेक सम होते हे, अेक विलक्षण होते हे ; अरु मनुष्य, देवता, तिर्यगादिक जीव केइ बेर समान होते हे ; केइ बेर विलक्षण होते हे ; केइ जीव समान आकार आगें जेसें कुल क्रिया सहित होते हे ; अरु केइ संकल्पकर उडते फिरते हे ; आनां, जानां, जीनां, मरनां, सुपन भमकी नांइं दिखता हे ; अरु वास्तवतें कोउ आता हे न जाता हे ; न जनमता हे, न मरता हे ॥ यह भम अग्यानसोंकर पडा भासता हे, विचार कियेतें कछु निकसता नांहीं ॥ जेसें कदलीका थंभ देखनेमें बडा पुष्ट आता हे, फिर खोद देखो तो सार कछु नांहीं निकसता ! तेसें जगत् भम अविचारतें सिद्ध हे ; विचार कियेते कछु भासता नांहीं ॥ हे रामजी !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो पुरुष आत्म सत्तामें जग्या हे, तिसकों द्वैत भ्रम नांही भासता हे; उह आत्म दर्शी, सदा शांत, आत्मा, परमानंद स्वरूप हे; अरु सब कलनातें रहित हे; अेसे जीवन्मुक्तकों कोइ च
लाय नांही सकता; अेसे जो व्यासदेवजी हे, तिसकों सदेह मुक्ति, अरु विदेहमुक्तिकी कोउ कलना नांही ॥ सदा अद्वैतरूप हे; हे रामजी ! जीवन मुक्तिकों सर्वत्र सर्वात्मा पूरन भास
ता हे; अरु स्वस्वरूप हे ॥ स्वरूप सार शांतिरूप अमृत करी पूरन हे, अरु निर्वानमें स्थित हे ॥ ॥ इतीश्री योगवासिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे असंख्य सृष्टिप्रतिपादनं नाम तृतीयः
सर्गः ॥ ॥ ३ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जीवन्मुक्ति अरु विदेह मुक्तिमें भेद कछु नांही ॥ जेसें स्थिर जल हे, तोभी जल हे; अरु तरंग फिरते हे, तोभी जल हे; तेसें जी
वन्मुक्ति अरु विदेहमुक्तिमें भेद कछु नांही ॥ हे रामजी ! जीवन्मुक्ति अरु विदेहमुक्तिका अनुभव तुझकों प्रत्यच्छ नांही भासता ! काहेतें जो स्वसंवेद हे; अरु तिनमें जो भेद भासता हे,
सो असम्यक्दर्शीकों भासता हे; ज्ञानवानकों भेद कछु नांही भासता हे; हे मननहारीविषे श्रेष्ठ रामजी ! जेसें वायु स्पंदरूप होता हे तोभी वायु हे; अरु निस्पंदरूप होता हे तोभी
वायु हे; उसके वायेतें निश्चय विषे भेद कछु नांही; पर अवर जीवकों स्पंद होती हे, तो भासती हे; अरु निस्पंद होती हे तो नांही भासती हे; तेसें ज्ञानवान पुरुषकों जीवन्मुक्ति
अरु विदेहमुक्तिमें भेद कछु नांही ॥ उह सदा अद्वैत कलनातें रहित हे ॥ जब जीवकों उसका शरीर भासता हे, तब जीवन्मुक्ति कहते हैं; जब शरीर अदृश्य होता हे, तब विदेह मुक्ति
कहेतें हे ॥ अरु उसकों दोइ तुल्य हे ॥ हे रामजी ! अब प्रकृत प्रसंगकों सुन, ॥ जो श्रवनका भूखन हे ॥ जो कछु सिद्ध होता हे, सो अपने पुरुषार्थ कर सिद्ध होता हे; पुरुषार्थ विन
सिद्धि कछु नांही होती; ओर कहते हैं जो दैव करैगासो होवेगा, सो मूरखता हे; यह चंद्रमा हृदयकों शीतल अरु उल्लास कर्त्ता भासता हे; सो इसमें शीतलता पुरुषार्थकरी हुइ
हे ॥ हे रामजी ! जिस अर्थकी प्रार्थना करे, अरु जतन करे, अरु तिसमें फिरे नांही तो अविस्मय कर जरूर पाता हे; ओर पुरुष प्रयत्न किसका नाम हे, सो श्रवन कर ॥ संतजन
अरु सत्य शास्त्रके उपदेशरूप उपायकर तिसके अनुसार चित्तका बिचरना होय सो पुरुषार्थ प्रयत्न हे, तिसतें इतर जो चेष्टा करता हे, तिसका नाम उन्मत्त चेष्टा हे; अरु जिस निमित्त
जतन करता हे सोइ पावता हे; अेक जीव था, सो पुरुषार्थ प्रयत्न करत अपुन इंद्रकी पदवी पाइ त्रिलोकीका पति होय सिंघासनपर आरूढ हुवा ॥ हे रामचंद्र ! आत्म तत्वमें जो
चैतन्य संपद, इस संपदरूप होकर स्फूर्त्ति हे, सो अपने पुरुषार्थकर ब्रह्माके पदकों प्राप्त भइ हे; तातें देख, जिसकों कछु सिद्धता प्राप्त हुइ सो अपने पुरुषार्थकर हुइ हे ॥ केवळ चै
तन्य जो आत्मतत्व हे, तिसमें चित्तसंवेदन स्पंदरूप हे ॥ यह चैतन्य संवेदन अपने पुरुषार्थ करके गरुडपर आरूढ होय विष्णुरूप होता हे; अरु पुरुषोत्तम कहाता हे ॥ अरु यह चैतन्य
संवेदन अपने पुरुषार्थ करकें रुद्ररूप भया हे, अरु अर्द्धांगमें पार्वतीकों धरी रखा हे, अरु मस्तकमें चंद्रमाकों धऱ्या हे, अरु निलकंठ परम शांतिरूप हे; तातें जो कछु सिद्ध होता हे
सो पुषार्थकर होता हे ॥ हे रामजी ! पुरुषार्थ करकें सुमेरुका चूरन किया चाहे, तोभी कर शकता हे ॥ जेसें पूर्व दिनमें दुष्कृत किया होय, अरु अगले दिनमें सुकृत करे, तब दुष्कृत
दूर हो जाता हे ॥ जो अपने हाथ द्वारा चरनामृतभी ले नहीं शकता, सो पुरुषार्थ करे तो वही पृथ्वी खंड खंड करनेकों समर्थ होता हे ॥ ॥ इतिश्री यो० मु० पुरुषार्थोपक्रमो नाम
चतुर्थःसर्गः ॥४॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जो चित्त कछु वांछा करता हे, अरु शास्त्रके अनुसार पुरुषार्थ नही करता, सो सुखकों न पावेगा; उसकी उन्मत्त चेष्टा हे ॥ अरु पुरु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

षार्थभी दो प्रकारका हे ॥ अेक शास्त्र अनुसार हे, अेक शास्त्र विरुद्ध हे ॥ जो शास्त्रकों त्याग करी अपनी इच्छाके अनुसार विचरता हे, सो सिद्धताकों न पावेगा; अरु जो शास्त्रके अनुसार पुरुषार्थ करता हे, तिसकर सो सिद्धताकों प्राप्त होवेगा, अरु दुःखभी न होवेगा ॥ जो अनुभवतें समरन होता हे, अरु सुमरनतें अनुभव होता हे; सो दोनो इसहीतें होते हे, दैव तो कछु न हुवा ॥ हे रामजी ! अवर देव कोउ नहीं, इसका किया इसकों प्राप्त होता हे, परंतु जो बलिष्ठ होता हे सो तिसके अनुसार विचरता हे ॥ जो पूर्वके संस्कार बली होते हे, तो उसकी जय होती हे अरु जो विद्यमान पुरुषार्थ बली होता हे, तब उसकों जीती लेते हे ॥ जेसें अेक पुरुषके दो घेंटे हे, अरु जो तिनकों लडावता हे, तो दोनो विषे जो बली होता हे, तिसकी जय होती हे ॥ परंतु दोंनो उसके हे, तेसें दोंनो करम इसकें हे, जो पूर्वका संस्कार बली होता हे, तोइ इसकी जय होती हे ॥ हे रामजी ! यह जो सत्संग करता हे, अरु सत शास्त्रद्रुकों विचारता हे, बद्रुरी पंछीकी नांइं संसार वृक्षद्रुकी ओर उडता हे, तो पूर्वका संस्कार बली हे, तिसकरीस्थिरहो नहीं सकता; अेसें जानी करी तेंनें पुरुष प्रयत्नका त्याग नांहीं करना जो पूर्वके संस्कारतें अन्यथा नांहीं होता, परंतु पूर्वका संस्कार बलीभी होवे, परंतु जब सत्संग करे, अरु सत शास्त्रद्रुंका दृढ अभ्यास होवे, तो पूर्वके संस्कारकों पुरुष प्रयत्न करी जीत लेता हे; जेसें पूर्वके संस्कारमें दुष्कृत किया हे, आगें सुकृत किया हे; तो अगलेका अभाव हो जाता हे; सो पुरुष प्रयत्न होता हे ॥ सो पुरुषार्थ क्या हे? अरु तिसकर सिद्ध क्या होता हे? सो श्रवन करकें ज्ञानवान जो संत हे अरु सतशास्त्र जो ब्रह्मविद्या हे; तिसके अनुसार प्रयत्न करना; तिसका नाम पुरुषार्थ हे, अरु पुरुषार्थ करकें पावणे जोग आत्मा हे, जिसकरी संसार समुद्रका पार होवे ॥ हे रामजी ! जो कुछ सिद्ध होता हे, सो अपने पुरुषार्थ करी होता हे ॥ अवर देव कोउ नांहीं; अरु जो शास्त्रके अनुसार पुरुषार्थकों त्याग करी कहता हे जो, जो कछु करना हे, सो दैव करेगा, सो मनुष्यमें गर्दभ हे, तिसका संग न करना, उसकी संगती करनी सो दुःखका कारन हे ॥ इस पुरुषकों प्रथम तो यह कर्त्तव्य हे जो, अपने वर्नाश्रम विषे शुभ आचारकों ग्रहन करना, अरु अशुभका त्याग करना; बद्रुरी संतका संग, अरु सतशास्त्रका विचारना ओर तिसके विचार कर अपने गुणदोषद्रुंका विचार करना जो दिन अरु रात्रमें में शुभ क्या करता हों, अरु अशुभ क्या करता हों ॥ आगें गुन अरु दोषद्रुका साक्षीभूत होकर जो संतोष, धीरज, वैराग, विचार, अभ्यास गुन हे तिसकों बढावना; अरु जो दोष विपरीत हे, तिसका त्याग करना ॥ जब अेसे पुरुषार्थकों अंगीकार करेगा, तब परमानंदरूप आत्मतत्वकों पावेगा ॥ तातें हे रामजी ! वनके घाअेल हुअे मृगकी नांइं नांहीं होना, जो घास, तृन, पातकों रसीला जानकें पत्या चुगता हे; तेसें स्त्री, पुत्र, बांधव, धनादिक विषे मग्न हो रहेना, सो नांहीं होनां; इनतें विरक्त होना ॥ दंतद्र साथ दंतद्रुकों चवाय करी संसार समुद्रकों पार होनेका जतन करना; अरु बलतें बंधनकों तोडी करी निकसी जाना ॥ जेसें केसरी सिंग बल करकें पिंजरेमेंतें निकस जाता हे, तेसें निकस जाना सोइ पुरुषार्थ हे ॥ हे रामजी ! जिसकों कछु सिद्धताकी प्राप्ती हुइ हे, सो अपने पुरुषार्थकर हुइ हे; पुरुषार्थ बिना नांहीं होती ॥ जेसें प्रकाश विन पदारथका ज्ञान नांहीं होता ॥ जिस पुरुषनें अपना पुरुषार्थ त्याग दिया हे; अरु देवके आश्रय हुअे हे, जो हमारा देव कल्यान करेगा, सो न होवेगा ॥ जेसें पथरसों तेल निकस्या चाहे, सो नांहीं निकसता; तेसें उसका कल्यान देवतें न होवेगा ॥ हे रामजी ! तुम तो देवका आश्रय त्यागकर अपने पुरुषार्थका आश्रय करो ॥ जिसनें अपना पुरुषा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

र्थ त्याग्या हे, तिसकों सुंदर कांति लक्ष्मी त्याग जाती हे; जेसें वसंत ऋतुकी मंजरी वसंत ऋतुकें गयेतें विरस हो जाती हे, तेसें उनकी कांति लघु हो जाती हे ॥ जिस पुरुषनें अेसा निश्चय किया हे, जो हमारे पालनेहारा देव हे सो पुरुष अेसा हे, जेसें कोउ अपनी भुजाकों सर्प जानकें भय पायकें दोरते हे, ओर जानते नांही जो अपनी भुजा हे; तेसें अपने पुरुषार्थकों त्यागकें देवका आश्रय लेता हे; अरु भयकों पावता हे ॥ पुरुषार्थ नाम इसका हे जो संतद्रुका संग अरु सतशास्त्रोंका विचार करकें तिनके अनुसार विचरना ॥ अरु जो तिनकों त्यागकें अपनी इच्छाके अनुसार विचरतें हें, सो सुखकों नांही पावेंगे; न सिद्धताकों पावेंगे ॥ अरु जो शास्त्रके अनुसार विचरते हे; सो इहांभी सुख पावेंगे, अरु आगेंभी सुख पावेंगे, तेसेंइ सिद्धताकों पावेंगे; तातें संसाररूपी जालविषे नांही गिरना, सो पुरुषार्थ हे; संतजनद्रुकें संग अरु सतशास्त्रके अर्थ हृदयरूपी पत्रपें लिखना; बोधरूपी कानी करनी अरु विचाररूपी स्याही करनी ॥ जब अेसें पुरुषार्थ करी लिखेगा, तब संसाररूपी जालमें न गिरेगा ॥ हे रामजी ! जेसें यह आदि नेति द्रुइ हें, जो पट हे सो पटही हे, जो घट हे सो घटही हे; घट हे सो पट नांही, और पट हे सो घट नांही; तेसें यहभी नेति द्रुइ हे ॥ अपने पुरुषार्थ विना परम पदकी प्राप्ति नांही होती ॥ हे रामजी जो संतद्रूकी संगती करता हे, अरु सतशास्त्रभी विचारता हे; अरु उनके अर्थमें पुरुषार्थ नांही करता, तिसकरी सिद्धता प्राप्त नांही होती ॥ जेसें अमृतके निकटइ बेठा होवे, अरु पान किये बिना अमर नांही होता, तेसें अभ्यास किये बिना अमर नांही होता ओरसिद्धता प्राप्त नांही होती ॥ हे रामजी ! अग्यानी जीव अपना जन्म व्यर्थ खोते हे; जब बालक होतें हे, तब मूढ अवस्थामें लीन रहते हे; अरु जुवा अवस्थामें विकारद्रुकों सेवते हें; अरु जरामें जर्जरीभूत होते हें; इसी प्रकार जीवना व्यर्थ खोते हें; अरु जो अपना पुरुषार्थ त्याग करकें देवका आश्रय लेता हे, सो अपने हंता होते हें, सो सुखको नांही पावेंगे ॥ हे रामजी ! जो पुरुष व्योहार विषे अरु परमार्थ विषे आलसी द्रुवे हे, अरु परमार्थकों त्यागकें मूढ हो रहे हें, सो दीन द्रुअे हे, मानों पशु हें; अरु दुःखकों प्राप्त द्रुवे हे; यह में विचार करकें देख्या हे; तातें पुरुषार्थका आश्रय करो ॥ सतसंग अरु सतशास्त्ररूपी आदर्श करकें अपने गुन करकें दोषकों देखकें दोषका त्याग करो; अरु शास्त्रका सिद्धांत जो हे, तिसका अभ्यास करो ॥ जब दृढ अभ्यास करोगे, तब शीघ्रही आनंदवान होद्रुगे ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ जब इस प्रकार वसिष्ठजी कहा, तब सायंकाल समय द्रुआ तब सब सभा स्नानके निमित्त उठकें खडी भइ ॥ परस्पर नमस्कार करकें अपने घरकों गये ॥ बद्रुरी सूर्यकी कीरनद्रू साथ आय स्थिर भये; ॥ ॥ इति श्री योगवासिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे पुरुषार्थ वर्णनं नाम पंचमः सर्गः ॥ ५ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इसका जो पूर्वका किया पुरुषार्थ हे, तिसका नाम दैव हे, अवर देव कोउ नांही ॥ जब यह सतसंग अरु सतशास्त्रका विचार पुरुषार्थ करे, तब पूर्वके संस्कारकों जीत लेता हे ॥ जिस पुरुष इष्ट पावनेका यह शास्त्र द्वारा जतन करेगा, तिसकों अवश्यमेव अपने पुरुषार्थतें पावेगा; अन्यथा कछु नांही होती, न द्रुइ हे, न होवेगी ॥ पूर्व जो कोउ पांप किया होता हे, तिसका फल जब दुःख पावता हे, तब मूरख कहता हे जो हाअे देव ! हाअे देव ! हाअे कष्ट ! हाअे कष्ट ! हे रामजी ! इसका जो पुरुषार्थ पूर्वका हे, तिसका नाम दैव हे, अवर देव कोउ नांही ॥ अवर जो कोउ देव कलपते हे, सो मूर्ख हे ॥ अरु जो पूर्वके जन्म सुकृत करकें आया होता हे; उही सुकृत सुख होयकें देखाइ देता हे ॥ जो पूर्वका सुकृत बली होता हे तो उसहीकी जय होती हे ॥ जो पूर्वका दुष्कृत बली होता हे, अरु शुभ

३१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का पुरुषार्थ करता हे; सतसंग अरु सतशास्त्रद्वंका विचार श्रवन करता हे, तो पूर्वके संस्कारकों जीत लेता हे ॥ जेसें प्रथम दिन पाप किया होवे, दुसरे दिन वडा पुन्य करे, तो पूर्वका पाप निवृत्त हो जाता हे; तेसें जब इहां दृढ पुरुषार्थ करे, तो पूर्वके संस्कारकों जीत लेता हे ॥ तातें जो कछु सिद्ध होता हे, सो इसकों पुरुषार्थ करकें सिद्ध होता हे ॥ जो अेकत्र भाव करी प्रयत्न करना, इसीका नाम पुरुषार्थ हे; जिसका यत्न अेकत्र भाव होयकें करेगा, तिसकों अवश्यमेव प्राप्त होवेगा ॥ जो पुरुष अवर देवकों जानकें अपना पुरुषार्थ त्याग बेठा हे, सो दुःखकों पावेगा ॥ शांतिवान कबहु न होवेगा ॥ हे रामजी ! मिथ्या देवके अर्थकों त्यागकें तुम अपनें पुरुषार्थका अंगीकार करो ॥ जो संतजन अरु सतशास्त्रद्वंके वचन अरु जुगती साथ जतन करकें आत्मपदकों अभ्यास करकें प्राप्त होना, इसीका नाम पुरुषार्थ हे ॥ प्रकाश करकें जेसें पदार्थद्वंका ज्ञान होता हे ॥ तेसें पुरुषार्थकर आत्मपदकी प्राप्ति होती हे ॥ जो पूर्वके किये बडा पापी होता हे, अरु इहां दृढ पुरुषार्थ कियेतें उसकों जीत लेता हे ॥ जेसें बडा मेघ होता हे, अरु तिसका पवन नाश करता हे; अरु जेसें वर्ष दिन द्वंका क्षेत्र पक्का होता हे, अरु बरफ तिसका नाश कर देता हे; ॥ तेसें पूर्वका संस्कार पुरुष प्रयत्न करकें नाश होता हे, हे रामजी ! श्रेष्ठ पुरुष सोइ हे, जानें सतसंग अरु सतशास्त्र द्वारा बुद्धिकों तिक्ष्ण करकें संसार समुद्र तरनेका पुरुषार्थ किया हे ॥ अरु जिनहूं सतसंग अरु सतशास्त्रद्वारा बुद्धि तिक्ष्ण नांहीं करी, अरु पुरुषार्थकों त्याग बेठे हे, सो पुरुष नीचतें नीच गतीकों पावेंगे ॥ अरु जो श्रेष्ठ पुरुष हे, सो अपने पुरुषार्थ करकें परमानंद पदकों पावेंगे, जिसके पायेतें बहुरी दुःखी नांहीं होता ॥ अरु जो देखने करी दीन होते हे; अरु सतसंगति अरु सतशास्त्रके अनुसार पुरुषार्थ करता हे, सो उत्तम पदवीकों प्राप्त होते दृष्ट आवते हे ॥ हे रामजी! जिन पुरुषनें पुरुष प्रयत्न किया हे, तिसकों सव संपदा आय प्राप्त होती हे, अरु परमानंद करी पूरन हो रहे हे ॥ जेसें रत्नहूकरी समुद्र पूरन हे, तेसें उह परमानंद करकें पूरन द्वअे हे ॥ तातें जो श्रेष्ठ पुरुष हे, सो अपने पुरुषार्थ द्वारा संसारके बंधनतें निकस जाते हे ॥ जेसें केसरी सिंह अपने बलसों पिंजरेतें निकस जाता हे, तेसें उह अपने पुरुषार्थ करी संसार बंधनतें निकस जाता हे ॥ हे रामजी! यह पुरुष और कछु न करे तौ यह करे जो अपने वर्नाश्रमके अनुसार विचरे, अरु सार पुरुषार्थ करे; जो संतद्व अरु सार शास्त्रद्वंका आश्रय होवे तिसके अनुसार पुरुषार्थ करे, तव सव बंधनतें मुक्त होवेगा ॥ अरु जिस पुरुष अपने पुरुषार्थका त्याग किया हे; किसी अवर देवकों मानकें कहता हे, जो उह मेरा कल्यान करेगा॥ सो जन्म मरनकों प्राप्त होवेगा, अरु शांतिवान कबहु न होवेगा॥हे रामजी! इस जीवकों संसाररूपी विशूचिका रोग हे, तिसकों दूर करनेका उपाय में कहता हों ॥ संतजन अरु सतशास्त्रद्वंके अर्थविषे दृढ भावना करनी; जो कछु तिनद्वंमेंतें सुन्या हे, तिसका वारंवार अभ्यास करना; अवर सब कल्पना त्यागकें अेकांत होयकें तिसका चिंतवन करना, तव इसकों परमपदकी प्राप्ति होवेगी; अरु द्वैत भ्रम निवृत्त हो जावेगा ॥ अद्वैतरूप पडा भासेगा ॥ इसीकाइ नाम पुरुषार्थ हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे परमपुरुषार्थ वर्णनं नाम षष्टः सर्गः ॥ ॥ ६ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! अपुरुषार्थ करकें इसकों अध्यात्मक आदि ताप आय प्राप्त होते हें ॥ तिसकरी शांतिकों नांहीं पावता; तुमहूनें रोगी नांहीं होवना ॥ अपने पुरुषार्थ द्वारा जन्म मरनके बंधनतें मुक्त होद्व ॥ अवर किसी दैव मुक्ति नांहीं करनेका; अपने पुरुषार्थ द्वारा संसार बंधनतें मुक्त होना हे ॥ जिस पुरुषनें अपने पुरुषार्थका त्याग किया हे, अरु किसी अवर देवकों मानी करी तिस परायन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुवे हे; तिसका धर्म, अर्थ, काम नष्ट हो जावेगा; अरु नीचतें नीच गतिकों प्राप्त होवेगा ॥ हे रामजी! शुद्ध चैतन्य जो इसका अपना आप हे, अरु वास्तवरूप हे, तिसके आश्रय
जो आदि चित्त संवेदन स्फूर्त्ति हे; जो अहं ममत संवेदन होयकें फुरने लगती हे, बहुरी इंद्रिय अहं स्फूर्त्ति हे ॥ जब यह स्फूर्ना संत अरु शास्त्रकें अनुसार होवे, तब उह पुरुष परम
शुद्धताकों प्राप्त होता हे ॥ अरु जो सतशास्त्रकें अनुसार न होवे, तब वासनाके अनुसार भाव अभावरूप जो भ्रम जाल हे, तिस विषें पर्या घटी यंत्रकी नांइं भटकता हे, शांतिवान
कबहु नांहीं होता ॥ हे रामजी! जिस किसीकों सिद्धता प्राप्त हुइ हे, सो अपने पुरुषार्थकर हुइ हे, विना पुरुषार्थ सिद्धताकों प्राप्त न होवेगा ॥ जब किसी पदारथकों ग्रहन कर
ना होता हे; सो भुजा पसारियें तो ग्रहन करना होता हे; अरु जो किसी देशकों प्राप्त होना होवे, तब जब चलें तब जाअे पहुंचीअे; अन्यथा नांहीं होता; तातें पुरुषार्थ बिना
सिद्ध कछु नांहीं होता ॥ जो कोउ कहता हे, दैव करेगा सो होवेगा, सो मूर्ख हे ॥ हे रामजी! अवर दैव कोउ नांहीं, इस पुरुषार्थका नाम दैव है ॥ यह दैव शब्द मूरखहुंका पर
चावा हें; जो किसी कष्ट साथ दुःख पाया; तिसकों कहेतें हें, दैवका किया हे, सो अवर तो दैव कोउ नांहीं ॥ हे रामचंद्र! जो अपना पुरुषार्थ त्यागकें दैवके आश्रय हो रहेगा,
सो सिद्धताकों प्राप्त न होवेगा; काहेतें जो अपने पुरुषार्थ विना सिद्धता किसीकों प्राप्त नांहीं होती ॥ अरु बृहस्पति जो दृढ पुरुषार्थ किया हे, तब सर्व देवताहुका राजा इंद्रका गुरु
हुआ हे; अरु शुक्रजी अपने पुरुषार्थद्वारा सर्व दैत्यहुका गुरु हुआ हे; अरु अवर जो समान जीव हे तिस विषे जिस पुरुष प्रयत्न किया हे, सो पुरुष उत्तम हुवा हे; जिसकों जातें
सिद्धता प्राप्त भइ हे, सो अपने पुरुषार्थकरी भइ हे ॥ अरु जिस पुरुषनें संत अरु शास्त्रहुंके अनुसार पुरुषार्थ नांहीं किया, सो मेरें देखते देखते बडे राज, अरु प्रजा, अरु धनतें
अवर विभूतितें छीन हो गये हे, अरु नरकहु विषे परे जलते हें ॥ जिस करकें कछु अर्थ सिद्धि होवे तिसका नाम पुरुषार्थ हे; अरु जिस करकें अनर्थकी प्राप्ति होवे, तिसका
नाम अपुरुषार्थ हें ॥ हे रामजी! इस पुरुषकों कर्त्तव्य यही हे; जो सतशास्त्र अरु संतहुको संग करी बुद्धि तीक्ष्ण करे, अरु शुभ गुनकों पुष्ट करे, दया, धीरज, संतोष, वैरागके
अभ्यास करकें बुद्धि तीक्ष्ण करे; अरु तीक्ष्ण बुद्धि करकें इनकों पुष्ट करे ॥ जेसें बडे तालतें मेघ पुष्ट होता हे, बहुरी वर्षा करकें मेघ तालकों पुष्ट करता हे; तेसें शुभ गुन करकें
बुद्धि पुष्ट होती हे; अरु पुष्ट बुद्धि करी शुभ गुन पुष्ट होते हे ॥ हे रामजी! जो बालक अवस्थातें लेकर अभ्यास किया होता हे, उसकों शुद्धता प्राप्त होती हे; अर्थ यह जो
दृढ अभ्यास विना शुद्धता प्राप्त नांहीं होती हे ॥ जो किसी देश अथवा तीर्थ जाना होवे, तब मार्ग विषें निरआलस होयकें चल्या जावे, तो जाय पहुंचेगा, अरु जब भोजन करेगा
तब क्षुधा निवृत्त होवेगी, अन्यथा नांहीं होवेगी; अरु जब मुखविषे जिव्हा शुद्ध होवेगी तब पाठ स्पष्ट होवेगा; गुंगे सो पाठ नांहीं होता ॥ तातें जो कछु कारज सिद्ध होता हे,
सो अपने पुरुषार्थकर सिद्ध होता हे, तूष्णीं हो रहनेतें कोउ कारज सिद्ध नांहीं होता ॥ अरु सबही गुरु बेठे हें, इनहुंते पूछ देखो, आगें जो तेरी इच्छा व्है सो करों ॥ अरु जो
मुझसों पूछे, तो सब शास्त्रका सिद्धांत कहतां हों, जीसकरी सिद्धताकों प्राप्त होवेगा ॥ हे रामजी! संत जो हे, ग्यानवान पुरुष, अरु सतशास्त्र जो हे, ब्रह्मविद्या; तिनके अनु
सार संवेदन अरु मन अरु इंद्रीहूंका विचारना होवें; अरु इसतें विरुद्ध होवे तिसतें वर्ज्य रखना; तिस करकें तुझकों संसारका राग दोष स्पर्श नांहीं करेगा; सबतें निर्लेप रहेगा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जैसें जलतें कमल निर्लेप रहता हे, तेसें तुं निर्लेप रहेगा ॥ हे रामजी; जिस पुरुषद्वतें शांति प्राप्त होवै, तिसकी भली प्रकार सेवा करियें, काहे तें जो उनका बडा उपकार हे; जो संसार समुद्रतें निकासी लेते हे ॥ हे रामजी ! संत जनभी उही हे, अरु सतशास्त्रभी उही हे, जिसके विचारकरी अरु संगती करी संसारतें चित्त उह प्रती होवे, मोच्छका उपाय उही हे ; तातें अवर सब कल्पनाकों त्यागकें अपने पुरुषार्थको अंगीकार करद्व, तब जन्म मरनका भय निवृत्त हो जावे; हे रामजी ! जिस यह वांछा करता हे, अरु तिसके निमित्त दृढ पुरुषार्थ करता हे, तब अवश्यमेव तिसकों पावे; अरु जो बडे तेज अरु विभूति करकें संपन्न तुजकों दृष्ट आता हे, अरु सुनता हे; सो अपने पुरुषार्थ करी भये हे ॥ अरु जो महानिष्ट सर्प कीट आदिक तुझकों दृष्ट आता हें तिननें अपने पुरुषार्थका त्याग किया हे, तब ऐसे द्वये हे ॥ हे रामजी ! अपने पुरुषार्थकों आश्रय कर, नांही तो सर्प कीटादिक नीच योनिकों प्राप्त होवेगा; जिन पुरुषनें अपना पुरुषार्थ त्याग्या हे, ओर कीसी दैवका आश्रय धर्या हे, सो महा मूरख हे ॥ काहे तें जो यह वारता व्योहारमेंवी प्रसिद्ध हे जो अपने उद्यम किये बिना किसी पदारथकी प्राप्ति नांही होती; तो परमारथकी प्राप्ति केसें होवे! तातें दैवकों त्याग करी संतजन अरु सतशास्त्रोंके अनुसार जतन करद्व; परम पद पावनेके निमित्त जो दुःखहीते मुक्त होवहीं ॥ हे रामजी ! जो जनार्दन विष्णुजी हे, सो अवतार धारी करी दैतद्वूंकों मारता हे, अरु अवर चेष्टाभी करता हे, परंतु पापका स्पर्श उसकों नांही होता, काहे तें जो अपने पुरुषार्थ करकें अक्षय पदकों प्राप्त द्वुवा हे; तुमभी पुरुषार्थका आश्रय करो, अरु संसार समुद्रकों तरी जावद्व ॥ ॥इतिश्री योगवासिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे पुरुषार्थोपमा वर्णनं नाम सप्तमः सर्गः ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच.॥ हे रामजी ! यह जो दैव शब्द हे, सो मूर्खद्वूंनें कल्प्या हे, जो दैव हमारी रक्षा करेगा ॥ हमकों दैवका आकार कोउ दृष्ट नांही आवता, न कोउ दैवका काल हे, न दैव कछु करताही हे; मुरख लोक दैव दैव परे कहते हें; अवर दैव कोउ नांही ; इसका पूर्वका कर्महीं दैव हे; हे रामजी! जिस पुरुषने अपने पुरुषार्थका त्याग किया हे; अरु दैव परायन द्वुवे हे; जो हमारा कल्यान करेगा सो मूरख हे; काहे तें जो अग्नि विषे यह जाय पडे, अरु दैव इसकों निकासी लेवे, तब जानियें जो कोउ देवभी हे, सो तो नांही; अरु जो दैव करता हे; तो इह स्नान, दान, भोजन, आदिहूका त्याग करी तूष्णी होय बेठे; आपेइ दैव कर जावेगा; सोभी इसकों किये बिना नांही होता; तातें अवर दैव कोउ नांही ॥ अपना पुरुषार्थही कल्यान कर्त्ता हे; हे रामजी! जो इसका किया कछु नांही होता, अरु दैवही कर नेहारा होता; तो शास्त्र अरु गुरुका उपदेशभी नांही होता ॥ सो सतशास्त्रके उपदेश करकें अपने पुरुषार्थद्वारा इसकों वांछित पदवी प्राप्त होती हे; तातें अवर जो कोउ देव शब्द हे सो व्यर्थ हे; इस भमकों त्याग करकें संत अरु शास्त्रद्वुके अनुसार पुरुषार्थ करे, तब दुःखद्वुतें मुक्त होवेगा ॥ हे रामजी! अवर दैव कोउ नांही; इसका पुरुषार्थ जो हे स्पंद सोइ दैव हे ॥ हे रामजी! जो कोउ अवर देव करनेहारा होता, तो जब इह शरीरकों त्यागता हे, अरु शरीर सब नाश हो जाता हे; क्रिया शरीरसों कछु नांही होती; काहेतें जो चेष्टा करनेहारा त्याग जाता हे, जो दैव होता तौ सबी शरीरसों चेष्टा करावता; सो तो चेष्टा कछु नांही होती, तातें जानीता हे जो दैव शब्द व्यर्थ हे ॥ हे रामजी! पुरुषार्थकी वार्त्ता हे, सो अज्ञानी जीवद्वकोंभी प्रत्यक्ष हे, जो अपने पुरुषार्थ बिना कछु होता नांही ॥ गोपालभी जानता हे जो में गैयांकों चराउं नांही तो भूखीही रहेगी; तातें अवर देवके आश्रय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बैठी नांही रहता, आपही चराय ले आता हे ॥ हे रामजी ! अवर दैवकी कल्पना भ्रम करके परे करते हैं; अवर दैव तो हमकों कोउ दृष्ट नही आता ॥ हस्त, पाद, शरीर, दैव का कोउ दृष्ट नांही आता ॥ अपने पुरुषार्थ करी सिद्धता दृष्ट आवती हे ॥ अरु जो कोउ आकारतें रहित दैव कल्पियें तो नांही बनता; काहेतें जो निराकार अरु साकारका संजोग केसें होवे ? हे रामजी ! अवर दैव कोउ नांही, अपना पुरुषार्थही दैवरूप हे ॥ जो राजा रिद्धि, सिद्धि, संयुक्त भासता हे, सोभी अपने पुरुषार्थ करी हुअे हे ॥ हे रामजी ! यह जो विश्वामित्र हे, यानें दैव शब्द दूरहीतें त्याग किया हे; सोभी अपने पुरुषार्थ करकें क्षत्रियतें ब्राह्मन हुवे हे; अरु अवर जो बडे विभूतिवान हुवे हे, सोभी अपने पुरुषार्थ करी दृष्ट आवते हे ॥ हे रामजी ! जो दैव पढे बिना पंडित करे तो जानियें जो दैवनें किया, सोतो पढे विना पंडित कहूं नांही होता; अरु जो अज्ञानीतें ज्ञानवान होते हे, सोभी अपने पुरुषार्थ करी होते हे, तातें अवर दैव कोउ नांही ॥ मिथ्या भ्रमकों त्याग करी संतजन अरु सतशास्त्रहुके अनुसार संसार समुद्र तरनेका प्रयत्न करहु; तेरे पुरुषार्थ बिना अवर दैव कोउ नांही ॥ जो अवर दैव होता तो बहुत बेर क्रिया बलभी अपनी क्रियाकों त्यागकें सोइ रेहेता, आपे दैवही पडा करेगा, सो अेसें तो कोउ नांही करता; तातें अपने पुरुषार्थ बिना कछु सिद्ध नांही होता; अरु जो इसका किया कछु न होता तो पाप करनेहारे नरक न जाते, अरु पुन्य करनेहारे स्वर्ग न जाते; परंतु पाप करनेहारे नरकमें जातें हे; अरु पुन्य करनेहारे स्वर्गमें जातें हे, तातें जो कछु प्राप्त होता हे, सो अपने पुरुषार्थ करी होता हे ॥ हे रामजी ! जो कोउ अवर देव करता हे अेसा कहे तिसका शिर काटिअें !! अरु दैवके आश्रय जीवता रहे तो जानियें जो कोउ दैव हे, सो तो जीवता कोउ नांही तातें दैव शब्दकों मिथ्या भ्रम जानकें संतजन अरु सतशास्त्रहुंके अनुसार अपने पुरुषार्थकरी आत्मपद विषे स्थित होहु ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे परम पुरुषार्थ वर्णनं नाम अष्टमः सर्गः ॥ ॥ ८ ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् सर्व धर्महुंके वेत्ता! तुम कहते हो ओर दैव कोउ नांही, परंतु ब्राह्मनभी दैव हे अेसा कहते हे, ओर दैवका किया सब कछु होता हे, अरु सुख दुःखके देनेहारे देव है यह लोकविषे प्रसिद्ध है ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! में तुझकों अेसे कहता हों, ज्यों तेरा भ्रम निवृत्त हो जावे, इसहीका कर्म किया हुवा हे ॥ शुभ अथवा अशुभ तिसका फल अवश्यमेव भोगना हे, सो दैव कहो; पुरुषार्थ कहो अवर दैव कोउ नांही ॥ अरु कर्त्ता, क्रिया, कर्म आदिकहु विषे तो दैव कोउ नांही; अवर कोउ दैवका स्थान नांही, रूप नांही, तो अवर देव क्या कहिअें ॥ हे रामजी! मूरख हुके परचावने निमित्त दैव शब्द कहा हे ॥ जेसें आकाश शून्य हे, तेसें दैवभी शून्य हे॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् सर्व धर्महुके वेत्ता! तुम कहते हो जो अवर दैव कोउ नांही, सो आकाशकी नांइं शून्य हे, सो तुमारे कहने करभी दैवसिद्ध होता हे ॥ तुम कहते हो जो इसके पुरुषार्थका नाम दैव हे, अरु जगत विषेभी दैव शब्द प्रसिद्ध हे ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! में अेसें तुझकों कहता हों, जिस करी दैव शब्द तेरे रिदेसों उठी जावे; अर्थ यह जो शून्य हो जावे ॥ दैवनाम अपने पुरुषार्थका हे, अरु पुरुषार्थ नाम कर्मका हे, अरु कर्मनाम वासनाका हे, वासना मनतें होती हे ॥ अरु मनरूपी पुरुष हे, जिसकी वासना करता हे, सोइ इसकों प्राप्त होता हे ॥ जो गांवकों प्राप्ति होनेकी वासना करता हे सो गांवकों प्राप्त होता हे; जो पत्तनकी वासना करता सो पत्तनकों प्राप्त होता हे; तातें अवर दैव कोउ नांही ॥ पूर्वका जो शुभ अथवा अशुभ दृढ पुरुषार्थ किया तिसका परिनाम सुख

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुःख अवश्य होता हे, ओर तीसीकाइ नाम दैव हे ॥ हे रामजी ! तुम विचार कर देखो जो अपना पुरुषार्थ कर्मइंते भिन नांही तो सुख दुःख देनहारा अरु लेनहारा दैव कोउ नांही हुआ क्यों ? यह जो पापकी वासना करता हे, अरु शास्त्रविरुद्ध कर्म करता हे सो किस करी करता हे ? पूर्वका जो इसका दृढ पुरुषार्थ कर्म हे, तिसकरी यह पाप करता हे; अरु जो पूर्वका पुन्य कर्म किया होता हे, तो यह शुभ मारगविषे विचरता हे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! जो पूर्वकी दृढ वासनाके अनुसार यह विचरता हे, तो में क्या करों? मुझकों पूर्वकी वासनानें दीन किया हे, अब मुझकों क्या कर्त्तव्य हे ? ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जो कछु इसकी पूर्वकी वासना दृढ हो रही हे, तिसके अनुसार यह विचरता हे; अरु जो श्रेष्ठ मनुष्य हे, सो अपने पुरुषार्थ करकें पूर्वके मलीन संस्कारकों शुद्ध करते हे; तिसके मेल दूर हो जाते हे ॥ सतशास्त्र अरु ग्यानवानके बचन अनुसार दृढ पुरुषार्थ करोगे, तब मलीन वासना दूर हो जावेगी ॥ हे रामजी ! पूर्वके मलीन पाप केसें जानियें, अरु शुभ केसें जानियें सो श्रवन करहु ॥ जो चित्त विषयकी ओर धावे, अरु शास्त्रविरुद्ध मार्गकी ओर जावे अरु शुभकी ओर न धावे, तो जानियें, जो पूर्वका कर्म कोउ मलीन हें; अरु जो संतजनहु अरु सतशास्त्रहुके अनुसार चेष्टा करे; अरु संसार मार्गतें विरक्त होवे, तब जानियें जो पूर्वका कर्म शुद्ध हे ॥ तातें हे रामजी ! तुझकों दोनो करकें सिद्धता हे; जो पूर्वका संस्कार शुद्ध हे, तातें तेरा चित्त शीघ्रही सत्संग अरु सतशास्त्रहुके वचनकों ग्रहन करी लेवेगा, अरु शीघ्रही तुझकों आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी ॥ अरु जो तेरा चित्त इस शुभ मार्गविषे स्थिर नांही हो सक्ता, तो दृढ पुरुषार्थ करी संसार समुद्रतें पार होवहु ॥ हे रामजी ! तुं चैतन हे, जड तो नांही, अपने पुरुषार्थका आश्रय करहु, मेराभी यही आशिर्वाद हे, जो तुमारा चित्त शीघ्रही शुभ आचरन विषे स्थिर होवे, अरु ब्रह्म विद्याका जो सिद्धांत सार हे, तिसविषे स्थित होवे ॥ हे रामजी ! श्रेष्ठ पुरुषभी वही हे, जिसका पूर्वका संस्कार यद्यपि मलीनभी था, परंतु संत अरु सतशास्त्रके अनुसार दृढ पुरुषार्थ किया हे, सो सिद्धताकों प्राप्त भया हे; अरु जो मूरख जीव हे तिनहुंने अपना पुरुषार्थ त्याग किया हे, तातें संसारते मुक्त नांही होता ॥ पूर्वका जो कोउ पाप कर्म किया होता हे, तिसके मलन करकें पापमें धावता हे; अपना पुरुषार्थ त्यागनेतें अंध हो जाता हे, अरु विशेषकरी धावता हे ॥ जो श्रेष्ठ पुरुष हे तिनकों यह कर्त्तव्य हे ॥ प्रथम तो पांचों इंद्रिय वश करनी; शास्त्र अनुसार तिनकों वर्त्तावनी; शुभ वासना दृढ करनी; अशुभका त्याग करना; जद्यपि त्यागनी दोनो वासना हे ॥ प्रथम शुभ वासनाकों इकठी करनी; अरु अशुभका त्याग करना ॥ जब शुद्ध वासना करकें कषाय परिपक्व होवेगा; अर्थ यह जो अंतःकरन जब शुद्ध होवेगा, तिस विचार रिदेविषे संत अरु सतशास्त्रका जो सिद्धांत हे, तिसका विचार उत्पन्न होवेगा, ओर तातें तुझकों आत्मज्ञानकी प्राप्त होवेगी ॥ तिस ज्ञान द्वारा आत्म साक्षात्कार होवेगा; बहुरी क्रिया ज्ञानकाभी त्याग हो जावेगा ॥ केवल शुद्ध अद्वैतरूप अपना आप शेष भासेगे ॥ तातें हे रामजी ! अवर सब कल्पनाका त्याग करी संतजन अरु सतशास्त्रहुके अनुसार पुरुषार्थ करहु ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे परम पुरुषार्थ वर्णनं नाम नवमः सर्गः ॥ ॥ ९ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! मेरे वचनका ग्रहन करो, सो वचन बांधव जेसे हे; बांधव कहियें जो तेरे परम मित्र होवहिंगे, अरु दुःखहुतें तेरी रक्षा करेंगे ॥ हे रामजी ! यह जो मोक्ष उपाय तुझकों कहता हों, तिसके अनुसार तुं पुरुषार्थ करहु ॥ तब तेरा परम अर्थ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिद्ध होवेगा ॥ अरु यह चित्त जो संसारके भोगकी ओर धावता हे, तिस भोगरूपी खाड विषे चित्तकों गिरनें मत देहु ॥ भोगकों विरस जानीके त्याग देहु; उह त्याग तेरा परम मित्र होवेगा; अरु त्यागभी अेसा करहु जो बहुरी भोगहुंका ग्रहन न होय ॥ हे रामजी ! यह मोच्छ उपाय संहिता हे; चित्तकों अेकाग्र करकें इसकों श्रवन करी तिसकरी परमानंदकी प्राप्ति होवेगी ॥ प्रथम शम अरु दमकों धारी, अर्थ इह जो संपूर्न संसारकी वासनाका त्याग करहु, अरु उदारता करकें तूम रहन, इसका नाम शम हे ॥ अरु दम अर्थ इह जो बाह्य इंद्रियकों वश करना ॥ जब इसकों प्रथम धारेगा तब परम तत्वका बिचार आय उत्पन्न होवेगा ॥ तिस विचारतें विवेकद्वारा परमपदकी प्राप्ति होवेगी, जिस पदकों पायेकरी बहुरी दुःख कदाचित् न होवेगा; अविनासी सुख तुझकों आय प्राप्त होवेगा ॥ तातें जो कछु मोक्ष उपाय यह संहिता हे, तिसके अनुसार पुरुषार्थ करहु, तब आत्मपदकों प्राप्त होवहिंगा, पुर्व जो कछु ब्रह्माजी हमकों उपदेश किया हे, सो में तुझकों कहता हों ॥ ॥ रामोवाच॥ हे मुनीश्वर ! तुमकों जो ब्रह्माजीनें उपदेश कियाथा, सो किस कारन किया था, अरु केसें तुमने धार्‍या सो कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामचंद्र ! शुद्ध चिदाकाश अेक हे, अरु अनंत हे, अविनाशी हे, परमानंदरूप हे, चिदानंदस्वरूप हे, ब्रह्म हे; तिसविषे संवेदन स्पंदरूप होत हे, सो विष्णुसों करी स्थित भइ हे सो विष्णुजी केसा हे, जो स्पंद अरु निस्पंद विषे अेक रस हें ॥ कदाचित् अन्यथा भावकों नांही प्राप्त हुवा॥ जेसें समुद्र विषे तरंग उपजते हे तेसें शुद्ध चिदाकाशतें स्पंद करकें विष्णु उत्पन्न हुआ हे; तिस विष्णुजीके स्वर्नवत् कीर्न नाभिकमलतें ब्रह्माजी प्रगट भया हे; तिस ब्रह्माजी ऋषि, मुनीश्वर सहित स्थावर जंगम प्रजा उत्पन्न करी, तिस मनोराज करी ब्रह्माजी जगतकों उत्पन्न किया; तिस जगतकी कोंन विषे जो जंबुद्वीप, भरत खंड हे तिसविषे मनुष्यकों दुःख करी आतुर देखी करी ब्रह्माजीकों करुना उपजी, जेसें ज्यों पुत्रकों देखी पिताकों करुना उपजती हे ॥ तब तिसके सुख निमित्त ब्रह्माजी तप उत्पन्न किया, जो सुखी होवहीं; अरु आज्ञा करी जो तप करों; तब तप करत भये; तिस तप करी स्वर्गादिकहुकों जाय प्राप्त होने लगे; तिन सुखहुकों भोगी करी बहुरी गीरहीं, तब दुःखी रहे ॥ अेसें ब्रह्माजी देखी करी सत्यवाक् धर्मको प्रतिपादन करत भये; तिनके सुखके निमित्त आज्ञा करी; तिस धर्मके प्रतिपादन करी लोकहुंकों सुख प्राप्त होवने लगे; तहां केताक काल सुख भोग करी बहुरी गीरहीं, तब दुःखीके दुःखी रहे; बहुरी ब्रह्माजीनें दान तीर्थादिक पुन्यक्रिया उत्पन्न करकें उनकों आज्ञा करी जो इनके सेवने करी तुम सुखी होहुगे ॥ जब वह जीव उनकों सेवने लगे, तब बडे पुन्य लोकहुंकों प्राप्त भये; अरु तिनके सुख भोगने लगे ॥ बहुरी केताक काल अपने कर्मके अनुसार भोग भोगी गिरें; तब तृष्णाकरी बहुत सुख दुःख भये; अरु दुःखकरी आतुर हुवे, तब ब्रह्माजी देखत भया, जो जन्म अरु मरनके दुःखकरी महा दीन होते हे, तातें सोइ उपाय करियें, जिसकरी उनका दुःख निवृत्त होवे ॥ हे रामचंद्रजी ! ब्रह्माजी बिचारत भया, जो इसका दुःख आत्मज्ञान विना निवृत्त नांही होनेका; तातें आत्मज्ञानकों उत्पन्न करीयें, जो यह सुखी होवही, इस प्रकार बिचार करी आत्मतत्वका ध्यान करत भया ॥ आत्मतत्वके ज्ञानतें संकल्प किया; तिस ध्यानके करनेतें जो शुद्ध तत्वज्ञान हे, तिसकी मूर्त्ति होकरी में प्रगट भया; सो में केसा हों? जो ब्रह्माजीके समान हों; जेसें उनके हाथ विषे कमंडलु हे, तेसें मेरे हाथ विषे कमंडलु हे; जेसें उनके कंठ विषे रुद्राक्षकी माला हे, तेसें मेरे कंठमेंभी रुद्राक्षकी माला हे, जेसें उनके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपर मृग छाला हे, तेसें मेरे उपर मृग छाला हे; इस प्रकार ब्रह्माजीका अरु मेरा समान आकार हे; अरु मेरा शुद्ध ज्ञान स्वरूप हे, मुझकों जगत कछु नांही भासता; सुषुप्तिकी नांइ जगत मुझकों भासता हे ॥ तब ब्रह्माजी बिचार किया जो इसकों में जीवद्धके कल्याण निमित्त उत्पन्न किया हे; अरु यह तो शुद्ध ज्ञान स्वरूप हे; अरु अज्ञान मार्गकों उपदेश तब होवे, जब कछु प्रश्न उत्तर होवे; अरु तब मिथ्याका विचार होवे ॥ हे रामजी! जीवद्धके कल्यान निमित्त मुझकों ब्रह्माजीनें गोदमें बेठाया, अरु शीशपें हाथ फेर्या, तिस करी में शीतल हो गया ॥ जेसें चंद्रमाकी कीर्न करी सीतलता होती हे, तेसें मैं शीतल भया ॥ तब ब्रह्माजी मुझकों जेसें हंसकों हंस कहे यों कह्या; हे पुत्र! जीवद्धंके कल्यान निमित्त अेक मुहूर्त्त पर्यंत तुं अज्ञानकों अंगीकार करद्ध, श्रेष्ठ पुरुष जो हे सो अवरद्धके निमित्तभी अंगीकार करते आये हे ॥ जेसें चंद्रमा बद्धत निर्मल हे, परंतु स्यामताकों अंगीकार किया हे; तेसें तुंभी अेक मुहूर्त्त अज्ञानकों अंगीकार करद्ध ॥ हे रामजी! इस प्रकार मुझकों कही करी ब्रह्माजीनें श्राप दिया, जो तुं अज्ञानी होवेगा; तब में ब्रह्माजीकी आज्ञा मानी श्रापकों अंगीकार किया ॥ तब मेरा जो शुद्ध आत्मतत्व अपुना आपथा तिसतें में अन्यकी नांइं होत भया, मेरी स्वभाव सत्ता मुझकों विस्मरन होगइ, अरु मेरा मन जागी आया ॥ भाव अभावरूप जगत मुझकों भासने लगा, अरु आपकों में वसिष्ठ जानत भया, अरु ब्रह्माजीका पुत्र, यों जानत भया॥ अरु नाना प्रकारके पदार्थ सहित जगत जानत भया; अरु तिनकी ओर चंचल होत भया; तब में संसार जालकों दुःखरूप जानी करी ब्रह्माजीतें पूछत भया; हे भगवन्! यह संसार केसें उत्पन्न भया अरु केसें लीन होता हे? हे रामजी! जब इस प्रकार पिता ब्रह्माजीसों प्रश्न किया, तब भली प्रकार मुझकों उपदेश करत भये, तिसकरी मेरा अज्ञान नष्ट हो गया ॥ जेसें सूर्य उदय द्धवे तम निवृत्त हो जाता हे, तेसें मेरा अज्ञान निवृत्त हो गया; अरु में शुद्धताकों प्राप्त भया ॥ जेसें आदर्शकों मार्जन करता हे, अरु शुद्ध हो आवता हे; तेसें में शुद्ध द्धवा ॥ हे रामजी! में ब्रह्माजीतेंभी अधिक होत भया, तब मुझकों परमेष्ठी ब्रह्माजी आज्ञा करी; हे पुत्र! जंबुद्वीप भरतखंडमें जाय, तुझकों अष्ट प्र जापतिका अधिकार हे तहां जाइ करी जीवद्धंकों उपदेश करद्ध; जीसकों संसारके सुखकी इच्छा होवे, तिसकों कर्ममार्गका उपदेश करना; तिसकरी स्वर्गादिक सुख भोगेंगे; अरु संसार तें विरक्त होवे, सो जीनकों आत्मपदकी इच्छा होवे, तिसकों ज्ञान उपदेश करना; तातें तुं अब भूलोक विषे जाद्ध ॥ हे रामजी! इस प्रकार मेरा उपदेश अरु उपजंना द्धवा हे, अरु इस प्रकार मेरा आवना द्धवा हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे वसिष्ठोत्पत्ति तथा वसिष्ठोपदेशागमनं नाम दशमः सर्गः ॥ ॥ १० ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! इस प्रकार पृथ्वीविषे मेरा आवना भया ॥ मे केसा हों? जाकों जो ज्ञानकी वांछा होवे सो पूर्न करिवेके लिये ब्रह्माजी मुझकों उत्पन्न करत भया ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन्! तिस ज्ञानकी उत्पत्तितें अनंत जीवनकी शुद्धि केसें भइ, सो कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! जो शुद्ध आत्मतत्व हे, तिसका स्वभावरूप संवेदन स्फूर्त्ति हे; सो ब्रह्माजीरूप हो करी स्थित भइ हे ॥ जेसें समुद्र अपनी द्रवता करकें तरंगरूप होता हे, तेसें ब्रह्माजी भया हे ॥ बद्धरी संपूरन जगतकों उत्पन्न किया, अरु तीनो काल उत्पन्न किये, तब के ता काल ब्यतीत द्धवा; अरु कलिजुग आया; तिसकरी जीवद्धकी बुद्धि मलीन हो गइ; अरु पापविषे विचरने लगे; शास्त्र वेदकी आज्ञा मानवेतें रही गये; इस प्रकार धरमकी मरजादा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छुपी गइ, अरु पाप प्रगट भया; जेती कछु राज धर्मकी मरजादा थी, सो सब नष्ट हो गइ; अरु अपनी इच्छाके अनुसार जीव बिचरने लगे, तातें कष्ट पावने लगे; तिनकों देखी करी ब्रह्माजीकों करुना उपजी, तिस दयाकों धारी करी भूमी लोकविषे मुझकों भेज्या, अरु कह्या, ॥ हे पुत्र! जायकरी तुम धर्मकी मर्यादा स्थापन करो; अरु जीवनकों शुद्ध उपदेश करो ॥ जिसकों भोगद्रुकी इच्छा होवे, तिसकों कर्म कांडका उपदेश करना, ओर जप तप स्नान, संध्या, यज्ञादिकका उपदेश करना; अरु जो संसारतें विरक्त द्रुवे हे, अरु मुमुक्षु हे, जाकों परम पद पावनेकी इच्छा हे; तिसकों ब्रह्मविद्याका उपदेश करना ॥ हे रामचंद्र! जिस प्रकार मुझकों आज्ञा करी भूमि लोकविषे भेजते भये, तेसेंइ सनत्कुमार, नारदकोंद्रु कहते भये; तब हम सब ऋषीश्वर इकट्ठे हो करी बिचारत भये; जो जगतकी मरजादा किसी प्रकार होवे, अरु जीव शुभ मार्ग विषे केसें बिचरही; तब हमद्रुनें यह बिचार किया, जो प्रथम राज्यका स्थापन करना, जो जीव तिनकी आज्ञा अनुसार विचरहीं ॥ प्रथम दंड कर्त्ता राज्यस्थापन किया, सो केसा राजा जो बडा वीर्यवान, अरु तेजवान, बडा उदार आत्मा भया; तिन राजद्रुंकों हम अध्यात्म विद्या उपदेश करी; तिसकरी परम पदकों प्राप्त भये ॥ जो परमानंदरूप अविनाशी पद हे, तिस ब्रह्मविद्याका उपदेश तिसकों भया, तब सुखी भये॥ इस कारनतें ब्रह्मविद्याका नाम राजविद्या हे; तब हमद्रुनें वेद, शास्त्र, श्रुति, पुरान, करी धर्मकी मर्यादा स्थापन करी; सो जप, तप, यज्ञ, दान, स्नान आदिक क्रियाकों प्रगट कीनी; अरे जीव! तुम इसके सेवने करी सुखी होद्रुगे; तब सब फलकों धारी करी तिनकों सेवने लगे; तामें कोउ विरला निरहंकार रिदे शुद्धताके निमित्त कर्म करते थे॥ हे रामजी! जो मूरख थे सो कामनाके निमित्त मनमें फूलके कर्म करते थे॥सो घटीयंत्रकी नांइं भटकते फिरते थे॥सो कबहु उर्ध अरु कबहु नीचें आते थे; ओर जो निष्काम कर्म करते थे, तिसका हृदय शुद्ध होता हे, फिर सो ब्रह्मविद्याके अधिकारी होते हे; ताके उपदेश द्वारा आत्मपदकी प्राप्ति होत हे ॥ इस प्रकारसों जीवन्मुक्त द्रुवे हे; केइ राजा विदितवेद सिद्ध द्रुवे हे; सो राजको परंपरा चलावता हमारे उपदेश द्वारा ज्ञानकों प्राप्त भये हे; ओर राजा दशरथद्रु ज्ञानवान भया हे; ओर तुंभी इसी दशाकों आयकें प्राप्त द्रुवा हे, सो तुं सबतें श्रेष्ठ द्रुवा हे; जेसें तुं विरक्त आत्मा द्रुवा हे, तेसें आगेंद्रु स्वभाविक विरक्त आत्मा भये हे; सो स्वभावकर देह शुद्धि कर द्रुवा हे; इसी कारनतें तुं श्रेष्ठ हे ॥ जो कोउ अनिष्ट दुःख प्राप्त होता हे; तिसकर विरक्तता उपजती हे; सो तुझकों नांहीं भइ; तुझकों सब इंद्रियकें विषय विद्यमान हे; तेसें होत तेरेकौं वैराग द्रुआ हे, तातें तुं श्रेष्ठ हे ॥ हे रामजी! जो मसान आदिक कष्टके स्थानक हे, सो देखके सबकों वैराग उपजता हे ॥ जो कछु नांहीं, मर जाना हे! तिनमें जो कोउ श्रेष्ठ पुरुष होता हे, सो वैरागकों दृढकर रखता हे; ओर जो मूर्ख हे, सो फिर विषयमें आशक्त हो जाता हे, तातें जिनकों अकारन वैराग उपजता हे, सो श्रेष्ठ हे; हे रामजी! जो श्रेष्ठ पुरुष हे, सो अपने वैराग अरु अभ्यासके बल करकें संसार बंधनतें मुक्त हो जाते हे ॥ जेंसें हस्ति बंधनकों तोरकें अपने बलसों निकस जाता हे, तब सुखी होता हे, तेसें वैराग अभ्यासके बलकर बंधनतें ज्ञानी मुक्त होत हे ॥ हे रामजी! यह संसार बडा अनर्थ रूप हे; जा पुरुषनें अपनें पुरुषार्थ करके बंधनकों नांहीं तोऱ्या, तिनकों राग दोषरूपी अग्नि जरावत हे; अरु जिस पुरुषने अपने पुरुषार्थ करकें शास्त्र ओर गुरुकों प्रमान करकें ज्ञान साध्या हे, सो उस पदकों प्राप्त भये हे ॥ तिनकों अध्यात्मक, आधिदैविक, आधिभौतिक, ताप जलाय शकता नांहीं; जेसें बरखा कालमें बहुत बरखाके होत बनकों दावान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ल जलाय नांही शकता, तेसें ज्ञानीकों अध्यात्मक आदि ताप कष्ट नांही देत ॥ हे रामजी! जिन श्रेष्ठ पुरुषनें संसारकों विरस जानकर त्याग किया हे, तिनकों संसारका पदार्थ गि राय नांही शकता ॥ अरु जो मूरख हे तिनकों गिराय देते हे; जेसें अंध्येरी चलत तीक्ष्ण पवनके बेगसों वृच्छ गिर जाते हे; परंतु कल्पवृच्छ गिरता नांही; तेसें हे रामजी! श्रेष्ठ पुरुष वही जिसकों संसार विरस हो गया हे; सो केवल आत्मतत्वकी इच्छा करकें तिस परायन भये हे; तिनकोंइ ब्रह्मविद्याका अधिकार हे; सोइ उत्तम पुरुष हे ॥ हे रामजी! तुंभी तेसा उजवल पात्र हे, जेसें कोमल पृथ्वीमें बीज बोते हे, तेसें तुझकों में उपदेश करता हों ॥ ओर जिसकों भोगकी इच्छा हे, ओर संसारकी ओर जतन करता हे, सो पशुवत हे; श्रेष्ठ पुरुष वही हे, जिसकों संसार तरनेका पुरुषार्थ होता हे ॥ हे रामजी! प्रश्न तिनके पास करियें, जानवेमें आवे जो मेरा प्रश्नका उत्तर देनेकों समरथ हे; ओर जिसमें उत्तर देवेके सामर्थ्य दिखवेमें नांहि आवे, तिससों प्रश्न करना नांही; ओर उत्तर देनेकों जो समरथ देखियें, ओर तिसके बचनमें भावना न होय, तबभी तिससों प्रश्न नांही करियें; काहेतें जो दंभकर प्रश्न करनेमें पाप होता हे; ओर गुरुभी उपदेश तिनकों करता हे, जो संसारते विरक्त होवे; अरु केवल आत्मपरायण होनेकी श्रद्धा होवे; अरु आस्तिक भाव होवे, अेसा पात्र देखकें उपदेश करे ॥ हे रामजी! जो गुरु अरु शिष्य दोनों उत्तम होते हे, तब वचन शोभते हे; तुम उपदेशका शुद्ध पात्र हो; जेते कछु गुन शिष्यके शास्त्रमें वर्नन किये हे, सो सब तेरेमें पैयत हे; ओर में उपदेश करनेमें समरथ हों तातें कारज शीघ्र होवेगा ॥ हे रामजी! शुभ गुन साथ तेरी बुद्धि निर्मल होय रही हे; तेरा जो सिद्धांतका सार बचन हे सो तेरे रिदमें प्रवेश कर रहेगा ॥ जेसें उज्वल वस्त्रकों केशरका रंग शीघ्र चढ जाता हे, तेसें तेरे निर्मल चित्तकों उपदेशका रंग लगेगा ॥ जेसें सूर्यके उदयतें सूर्यमुखी कमल खीलते हे, तेसे तेरी बुद्धि शुभ गुन कर खील आइ हे, हे रामजी! जो कछु शास्त्रका सिद्धांत आत्मतत्व में तुझकों कहता हों, तिसमें तेरी बुद्धि शीघ्र प्रवेश करेगी ॥ जेसें निर्मल जलमें सूर्यकी कांति प्रवेश करत हे, तेसें तेरी बुद्धि आत्मतत्वमें शुद्धता करकें प्रवेश करेगी ॥ हे रामजी! में तेरे आगें हाथ जोरकें प्रार्थना करत हों, जो कछु में तुझकों उपदे श करता हों तिसविषे तुं आस्तिक भावना करीयो, जो इन बचन कर मेरा कल्यान होवेगा; अरु जो तुझकों धारना न होवे, तो प्रश्न मत करना ॥ जा शिष्यकों गुरुके बचनमें आस्तिक भावना होती हे, तिसका शीघ्र कल्यान होता हे; तातें मेरे बचनमें आस्तिक भावना करियो; ओर जिसकर तुं आत्मपदकों प्राप्त होवेगा सो में कहता हों ॥ प्रथम तो यह करजो अज्ञानि जीवमें असत्य बुद्धि हे, तिनका संग त्याग कर; अरु मोक्ष द्वारके जु चार द्वारपाल हे, तिनसों मित्र भावना कर; जब तिनसों मित्रभाव होयगा, तब वह मोक्ष द्वारमें पहुंचाय देयगे; तब आत्म दर्शन तुझकों होवेगा; सो द्वारपालके नाम श्रवन करः सम, संतोष, बिचार, सत्संग ॥ यह चारो द्वारपाल हे; जिन पुरुषने इनकों वश किया हे तिसकों यह शीघ्र मोक्षरूपी द्वारके अंतर कर देते हे ॥ हे रामजी! सो चारों वश न होवे, तो तीनकों वश करने; अथवा दोकों वश कर ले, अथवा अेककों वश कर; जो अेक वश होवेगा, तो चारोंइ वश हो जायगे, इस चारोंका परस्पर स्नेह हे; जहां अेक आता हे तहां चारो आयकें रहते हे ॥ जा पुरुषने इनसों स्नेह किया हे सो सुखी भये हे ॥ ओर जिननें इसका त्याग किया हे, सो दुःखी हे ॥ हे रामजी! जद्यपि प्रानका त्याग होवे, तोभी अेक साधन तो बल करकें वश करना; अेकके वश कियेतें चारोंही वशी होयगे;

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरु तेरी बुद्धिमें शुभ गुननें आयकें निवास किया हे; जेसें सूर्यमें सब प्रकाश आय ड्डवे हे, तेसें संतनें अरु शास्त्रनें जो निर्मल गुन कहे हे, सो सब तेरेमें पैयत हे; हे रामजी! अब तुं मेरे वचनका अधिकारी भयाहे; जेसें तंद्रीके सुननेकों अंदोरा अधिकारी होता हे; जेसें चंद्रमाके उदयतें चंद्र वंशी कमल खील आते हैं, तेसें शुभ गुनकर तेरी बुद्धि खील आइ हे ॥ हे रामजी! सत्संग अरु सतशास्त्रद्वारा बुद्धिकों तीक्ष्ण कियेतें शीघ्र आत्मतत्वमें प्रवेश होता हे, तातें श्रेष्ठ पुरुष वही हे, जिननें संसारकों बिरस जानकें त्याग किया हे; अरु संत अरु सतशास्त्रके बचन द्वारा आत्मपद पावनेका यत्न करते हैं, सो अविनाशी पदकों प्राप्त होते हैं ॥ ओर जो शुभमार्ग त्याग करकें संसारकी ओर लगे हे ॥ सो महामूर्ख जड हे; जेसें जल शीतलता करकें बरफ हो जाता हे, तेसें अज्ञानी मूर्खता करकें दृढ आत्म मार्गतें जड होइ रहे हे ॥ हे रामजी! अज्ञानीके रिदेरूपी बिलमें दुराशारूपी सर्प रहता हे, सो कदाचित शांति नांहीं पावता, अरु आनंदसों कबहुं प्रफुल्लित नांहीं होता ॥ अरु आशा करकें सदा संकुचित रहता हे ॥ जेसें अग्नि विषे मांस संकुच जाता हे ॥ हे रामजी! आत्मपदके साक्षात्कारमें विशेष आवरन आशाही हे; जेसें सूर्यके आगें मेघका आवरन होता है, तेसें आत्मतत्वके आगें दुराशा आवरन हे; जब आशारूपी आवरन दुर होवे, तब आत्मपदका साक्षात्कार होवे ॥ हे रामजी! आशा तब दूर होवे, जब संतकी संगति अरु सतशास्त्रका बिचार होवे ॥ हे रामजी! संसाररूपी अेक बडा बृच्छ हे, सो बोधरूपी खड्गकर छेद्या जाता हे; जब सत्संग अरु सतशास्त्रकर तिच्छन बुद्धि होवे, तब संसाररूपी भ्रमका बृच्छ नष्ट हो जाता हे ॥ जब शुभ गुन होते हे, तब आत्मज्ञान आयकें बिराजता हे; जहां कमल होते हे, तहां भौंरे आयकें स्थित होते हे; तब शुभ गुनमें आत्मज्ञान रहता हे ॥ हे रामजी! शुभ गुनरूप पवनकर जब इच्छारूपी मेघ निवृत्त होता हे, तब आत्मारूपी चंद्रमाका साक्षात्कार होता हे ॥ जेसें चंद्रमाके उदय ड्डवे आकाश शोभता हे, तेसें आत्माके साक्षात्कार ड्डवे तेरी बुद्धि खिलेगी ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे वसिष्ठोपदेशो नाम एकादशःसर्गः ॥ ॥ ११ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! अब तुं मेरे बचनका अधिकारी हे, काहेतें जो, तप, वैराग, विचार, संतोष, आदि जो शुभ गुन संत अरु शास्त्रने कहे हे, सो सब तेरेमें पैयत हे; तातें तुं मेरे बचनकों सुन, सो रज तम गुनकों त्यागकर शुद्ध सात्विकवान होकर सुन ॥ राजस जो विच्छेप अरु तामस जो लय निद्रामें होत हे सो दोउका त्याग करकें सुन ॥ जेते कछु जिज्ञासुके गुन शास्त्रमें बर्नन किये हे, सो सब कर तुं संपन्न हे अरु जेते कछु गुरुके गुन शास्त्रमें बर्नन किये हे, सो सब मेरेमें हैं ॥ जेसें रत्नकर समुद्र संपन्न हे तेसें मैं संपन्न हों ॥ तातें मेरे बचनका तुं अधिकारी हे; ओर मूर्खकों मेरे बचनका अधिकार नांहीं ॥ हे रामजी! जेसें चंद्रमाके उदयतें चंद्रकांत मनी द्रवीभूत होती हे, तब तामेंतें अमृत सरता हे; ओर पथ्थरकी शिला हे, तिनतें द्रवीभूत नांहीं होता हे; तेसें जो जिज्ञासु होता हे, तिसकों परमार्थ बचन लगता हे; अरु अज्ञानीकों नांहीं लगता; हे रामजी! शिष्य तो शुद्ध पात्र होवे, अरु उपदेश करनेहारा ज्ञानवान न होवे तो उसकों आत्माका साक्षात्कार नांहीं होवे, जेसें चंद्रमुखी कमलनी निर्मल होय, अरु चंद्रमा न होय तब प्रफुल्लित नांहीं होती तेसें ॥ तातें तुं मोक्षका पात्र हे; अरु मेंबी परमगुरु हों; मेरे उपदेश कर तेरा अज्ञान नष्ट होय जावेगा ॥ में मोक्षका उपाय कहता हों जब तिसकों तुं भले प्रकार विचारेगा ॥ तब जेती कछु मलीनरूपी मनकी वृत्ति हे, तिनका अभाव हो जायगा; जेसें महा प्रलयके सूर्यकर मंदराचल पर्वत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जल जाता हे; तातें हे रामजी! वैराग अरु अभ्यासके बलकर इस मनकों अपने विषे लीन कर शांतात्मा होवहु; तेनें बालकावस्थासों लेकर अभ्यास कर रख्या हे, तातें मन उपसम पायकें आत्मपदकों प्राप्त होवेगा ॥ हे रामजी! सत्संग अरु सतशास्त्र द्वारा जो आत्मपद पाया हे, सो सुखी भये हे; फिर तिनकों दुःख नांही लगता; काहेतें जो दुःख देहाभिमानकर होता हे, सो देहका अभिमान तों तेनें त्याग दिया हे; तेसें जिसनें देहका अभिमान त्याग दिया हे; अरु देहका आत्मता करकें बहुरी ग्रहन नांही करता, तातें सुखी रहेता हे ॥ हे रामजी! जिननें आत्माका बल धरकें बिचारद्वारा आत्मपद प्राप्त किया हे, सो अकृत्रिम आनंदकर सदा पूर्न हे; सब जगत तिसकों आनंदरूप भासता हे; अरु जो असम्यग्दर्शी हे, तिनकों जगत अनर्थरूप भासता हे ॥ हे रामजी! संसरनरूप जो यह संसार सर्प हे; सो अज्ञानिके हृदेमें दृढ हो गया हे, सो जोगरूपी गारुड मंत्र करकें नष्ट हो जाता हे; अन्यथा नांही होता, ओर सर्पका बिष हे, सो अेक जन्ममें मारता हे; अरु संसरनरूप जो बिष हे, तिसकरकें अनेक जन्म पायकें मरता चल्या जाता हे; शांतिवान कदाचित् नांही होता ॥ हे रामजी! जो पुरुष सत्संग अरु सतशास्त्रके बचनद्वारा आत्मपदकों पाया हे, सो आनंदित भये हे; अरु अंतर्बाहिर सब जगत इनकों आनंद रूप भासता हे; अरु सब क्रिया करनेमें आनंद विलास हे ॥ ओर जिननें सत्संग अरु सतशास्त्रका बिचार त्याग्या हे, अरु संसारके सन्मुख हें, तिसकर तिसकों संसार अनर्थरूप हे, सो अेसा दुःख देते हे ॥ जेसें सर्पके दंसतें दुःखी होते हे, अरु शस्त्रकर घाअेल होते हे, अरु अग्निमें परेकी नांइ जलते हे, अरु जेवरीके साथ बंध होते हे, अरु अंध कूपमें गिरेतें कष्ट पाते हे; तेसें संसारमें मनुष्य दुःख पाते हे ॥ हे रामजी! जो पुरुष सत्संग अरु सतशास्त्रद्वारा आत्मपदकों नांही पाया, सो अेसे कष्ट पाते हे, सो नरकरूपी अग्निमें ज रते हे; अरु चक्की विषे पीसाते हे; पाषानकी बरखाकर चूरन होते हे; कोलुमें पीलाते हे; अरु शस्त्र साथ कटते हे; इत्यादिक जो बडे कष्ट हें, सो तिनकों प्राप्त होते हे ॥ हे रामजी! अेसा दुःख कोउ नांही! जो इस जीवकों प्राप्त नांही होता; आत्माके प्रमादसों सब दुःख होते हें; अरु जिन पदारथकों यह रमनीक जानते हे, सो चककी नांइ चंचल हे; कबहु स्थिर नांही रहते; सतमारगकों त्यागकर जो इनकी इच्छा करते हें, सो महा दुःखकों प्राप्त होते हें ॥ अरु जिन पुरुषनें संसारकों विरस जान्या हे, ओर पुरुषार्थकी ओर दृढ भये हे, तिनकों आत्मपदकी प्राप्ती होती हे ॥ हे रामजी! जा पुरुषकों आत्मपदकी प्राप्ति भइ हे, तिनकों फिर दुःख नांही होता, ओर तिनके दुःख जो नष्ट नांही होते, तो ज्ञानके निमित्त पुरुषार्थ कोउ नांही करता ॥ जो अज्ञानी हे तिनकों संसार दुःखरूप हे; अरु ज्ञानीकों सब जगत आनंदरूप हे; अपने आपुइ हे; उनकों भ्रम कोउ नांही रहता ॥ हे रामजी! ज्ञानवानमें नाना प्रकारकी चेष्टाबी दृष्ट आती तौभी सदा शांतरूप हे, अरु आनंदरूप हे; संसारका दुःख कोउ नांही परश कर शकता; काहेतें जो तिननें ज्ञानरूपी कवच पहिन्या हे ॥ हे रामजी! ज्ञानवानकोंभी दुःख होता हे, बडे बडे ब्रह्मर्षि, अरु राजर्षि बहोत ज्ञानवान भये हे, सोभु दुःखकों प्राप्त होते हे, परंतु दुःख सों आतुर नांही होते; क्यों जो ज्ञानवाननें ज्ञानका कवच पहिन्या हे, तातें कोउ दुःख परश नांही करता, सदा आनंदरूप हे, जेसें ब्रह्मा विष्णु रुद्र नाना प्रकारकी चेष्टा करते ओर जीवकों दृष्ट आवते हे ॥ अरु अंतरतें सदा शांतरूप हे; इस प्रकार ओरभी जो ज्ञानवान उत्तम पुरुष हे सो शांतरूप हे, ताकों कर्त्ताका अभिमान कोउ नांही फुरता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे रामजी ! अज्ञानीरूपी जो मेघ है, तिसकर मोहरूपी कुहाडाका वृच्छ है, सो ज्ञानरूपी शरत्काल करकै नष्ट हो जाता है; तातें स्वसत्ताकों प्राप्त होय है; अरु सदा आनंदकर पूरन है ॥ हे रामजी! जो कछु क्रिया करते हैं, सो तिनकों विलासरूप है; अरु सब जगत् आनंदरूप हैं; अरु शरीररूपी रथ, इंद्रियरूपी अश्व, ओर मनरूपी रसा, तासों अश्व कों खेंचता है; अरु बुद्धिरूपी रथ वही है, तिस रथमें वह पुरुष बेठा है; अरु इंद्रियरूपी अश्व इसकों खोटे मारगमें डारते है; अरु ज्ञानवानके इंद्रियरूपी अश्व है सो अेसे है जो जहां जाते है तहां आनंदरूप है, किसी ठोरमें खेद नांही पावता; सब क्रियामें उनकों बिलास है; सर्वदा आनंद कर तृप्त रहेते है ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे तत्व ज्ञमाहात्म्यं नाम द्वादशः सर्गः ॥ ॥ १२ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! इसी दृष्टीकों आश्रयकर, जो तेरा हृदय पुष्ट होवे, बहुरी संसारके इष्ट अनिष्ट कर चलायमान न होवे; जि स पुरुषकों इस प्रकार आत्मपदकी प्राप्ति भई है, सो परम आनंदित भये है; शोककों कर्त्ता नांही है ॥ न यांचना करता है, हेयोपादेयतें रहित परम शांतिरूप अमृतकर पूरन होय रहे हैं; सो पुरुष नाना प्रकारकी चेष्टा करतें दृष्ट आवते है, परंतु कछु नांही करते ॥ जहां उनके मनकी वृत्ति जाति है, तहां आत्मसत्ता भासती है, सो आत्मानंदकर पूरन होय रहे है ॥ जेसें पूर्नमासीका चंद्रमा अमृतकरी पूर्न रहता है, तेसें ज्ञानवान परमानंदकरी पूरन रहता है ॥ हे रामजी! यह जो में तुझकों अमृतरूपी वृत्ति कही है, इसकों जब जानेगा तब तुझकों साक्षात्कार होवेगा; जब जिसकों आत्मज्ञानकी प्राप्ति होती है, तब सब दुःख नष्ट हो जाते हैं; जेसें चंद्रमाके मंडलमें ताप नांही होता, अरु अज्ञानीकों शांति कबहु नांही होती ॥ ओर जो कछु क्रिया करता है, तिसमें दुःख पावता है; जेसें कक्करके वृच्छमें कंटककी उत्पत्ति होती है, तेसें अज्ञानीकों दुःखकी उत्पत्ति होती है ॥ हे रा मजी! इस जीवकों मूरखता करकें बडे दुःख प्राप्त होते हैं, अेसा दुःख अद्भुत ओर कोउ नांही, अरु किसी आपदा करकेंभी अेसा दुःख नांही होता, जेसा दुःख मूर्खता करकें पाते है अेसा दुःख कोउ नांही ॥ हे रामजी! हाथमें ठीकरा ले चंडालके घरकी भिक्षा गृहन करे, ओर आत्मतत्वकी जिज्ञासा होवे, तौभी अवर ऐश्वर्यतें श्रेष्ठ है, परंतु मूरख तासों जीवना व्यर्थ है; तिस मूरखताकों दूर करनेकों मोक्ष उपाय में कहता हो ॥ हे रामजी; यह मोक्ष उपाय परम बोधका कारन है; कलुक बुद्धि संस्कृत होवे, अर्थ यह जो पद पदार्थके जाननेहारी होवे, अरु मोक्ष उपाय शास्त्रकों बिचारे, तो तिसकी मूर्खता नष्ट हो जावेगी, अरु आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी ॥ जेसा आत्मबोधका कारन यह शास्त्र है, तेसा ओर शास्त्र त्रिलोकी विषे कोउ नांही ॥ नाना प्रकारके दृष्टांत सहित इतिहास है जामें, तिसकों जब बिचारेगा तब परमानंदकों प्राप्त होवेगा; अज्ञानरूपी तिमिर नाश करनेकों ज्ञा नरूपी शिलाका है ॥ जेसें अंधकारकों सूर्य नाश करता है, तेसें अज्ञानकों यह शास्त्रका बिचार नाश करता है ॥ हे रामजी ! जिस प्रकार इसका कल्यान होता है सो श्रवन कर ॥ गुरु जो ज्ञानवान हैं सो शास्त्रका उपदेश करे, अरु अपने अनुभवसों ज्ञान पावे ॥ जब गुरु अरु शास्त्र ओर अपना अनुभव यह तीनो इकठे मिले तब इसका कल्यान होवे; जबलगी अकृत्रिम आनंदकों प्राप्त नांही भया, तबलगी दृढ अभ्यास करे; तिस अकृत्रिम आनंदकों प्राप्ति करनेहारा में गुरु हों; जीव मात्रका में परम मित्र हों; अेसा मित्र अवर कोउ नांही; हमारी संगती जीवकों आनंद प्राप्त करनेहारी है; तातें जों कछु में कहता हों सो तुं कर ॥ हे रामजी ! यह जो संसारके भोग है, सो छिनमात्र है; तातें इनको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्याग करहु; ओर विषयके परिनाममें दुःख अनंत हे; इनकों दुःखरूप जानकर त्याग दे, अरु हम सारिखे हो ज्ञानवानका संग कर; ओर हमारे बचनके बिचारतें तेरे सब दुःख नष्ट हो जायगे ॥ हे रामजी! जिस पुरुषनें हमारे संग प्रीती करी हे, तिसकों हमनें आनंद पदकी प्राप्ति कर दीनी हे, जिस आनंदतें ब्रह्मादिक आनंदित भये हे; ओर ज्ञानवानहु आनंदित भये हे, सो निर्दुःख पदकों प्राप्त भये हे ॥ हे रामजी! श्रेष्ठ पुरुष सोइ हे; जाने हमारे साथ प्रीति कीनी हे ॥ जिसने संत अरु शास्त्रके बिचारद्वारा दृश्यकों अदृश्य जान्या हे, अरु निर्भय हुवा हे; आत्माका प्रमाद जीवकों दीन करता हे; अज्ञानीका हृदयरूपी कमल तबलग सकुच्या रहता हे, जबलग तृष्णारूपी रात्र होती हे; जब ज्ञानरूपी सूर्य उदय होता हे, तब तृष्णारूपी रात्र नष्ट हो जाती हे ॥ अरु हृदयरूपी कमल आनंदकर खिली आते हे ॥ हे रामजी! जा पुरुषनें परमारथ मारगकों त्याग्या हे, अरु संसारका खान पान आदि भोगमें मगन हुवा हे, तिनकों तुं मेंडुक जान, जेसें कीचमें मेंडुक पर्या शब्द करता हे, तेसा वह पुरुष हे ॥ हे रामजी! यह संसार बडा आपदाका समुद्र हे; तामें जो कोउ श्रेष्ठ पुरुष हे, सो सत्संग अरु सतशास्त्रके बिचार करकें संसार समुद्र उलंघता हे, अरु परमानंदकों प्राप्त होता हे ॥ आदि, अंत, मध्य, रहित निर्भय पदकों प्राप्त होता हे ॥ अरु जो संसार समुद्रके सन्मुख हुवा हे, सो दुःखतें दुःखरूप पदकों प्राप्त भया हे, कष्टतें कष्ट, नरककों प्राप्त होता हे ॥ जेसें बिषकों बिष जान तिसका पान करता हे, सो बिष उसकों नाश करता हे, तेसें जिस पुरुष संसार असत्य जानकें बहुरी संसारके ओर जतन करता हे, सो मृत्युकों प्राप्त होता हे ॥ हे रामजी! जो पुरुष आत्म पदतें विमुख हे, अरु आत्म पदकों कल्यानरूप जानता हे, अरु आत्मपदका अभ्यासका त्याग कर संसारकी ओर धावता हे, सो जेसें किसीके घरमें अग्नि लगी, अरु तृनका घर, अरु तृनकी सज्या करीकें शय न करता हे, सो जेसें नाशको पावे तेसें जन्म मृत्युकों प्राप्त होवेहिंगे; ओर संसारके पदारथ देखकर राग दोषवान हुवे हे, सो सुख बिजुरीका चमका जेसा हे, ओर जो होयकें मिट जावे, स्थिर नांही रहे; तेसा संसारका दुःख आगमापाइ हे ॥ हे रामजी! यह संसार अविचार करकें भासता हे; अरु बिचार कियेतें लीन हो जाता हे; बिचार कियेतें लीन जो नांही होता, तो तुमकों उपदेश करनेका काम नांही था; सो तो बिचार कियेतें लीन हो जाता हे, इसी कारनतें पुरुषारथ चहियें ॥ जेसें हाथमें दीपक होवे, अरु अंध होय कुपमें गिरे सो मूर्खता हे, तेसें संसार भमके निवारनहारे गुरु शास्त्र विद्यमान हे ॥ तिनकी शरन न आवे सो मूर्ख हे ॥ हे रामजी! जो पुरुष संतकी संगति, अरु सतशास्त्रके विचारद्वारा आत्म पदकों पाया हे, सो पुरुष केवल कैवल्य भावकों प्राप्त भये; अर्थ यह जो शुद्ध चैतन्यकों प्राप्त हुवे हे; अरु संसार भम तिनका निवृत्त हो गया हे ॥ हे रामजी! यह संसार मनके संसरनेतें उपज्या हे, सो इसका कल्यान बांधव करकें नांही होता हे ॥ अरु धन करकेंभी नांही होता हे, प्रजा करकेंभी नांही होता हे अरु तीर्थ अरु देवद्वार करकेंभी नांही होता हे, ऐश्वर्य करकेंभी नांही होता हे, अेक मनके जीतनेतें कल्यान होता हे, हे रामजी! जिसकों ज्ञान परमपद कहते हे, ओर जिसकों रसायन कहते हे; जिसके पायेतें इसका नाश नांही होय, अरु अमर होवे, अरु सब सुखकी पूर्नता होवे, इसका साधन समता अरु संतोष हे; इनकर ज्ञान उत्पन्न होता हे सो आत्मज्ञानरूपी अेक वृच्छ हे, तिसका फूल शांति हे; अरु स्थिति इसका फल हे; जिस पुरुषकों यह ज्ञान प्राप्त हुवा हे, सो शांतिवान हुवा हे; सो निर्लेप रहता हे, तिसकों संसारका भावाभावरूप स्पर्श नांही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे ॥ जेसें आकाशमें सूर्य उदय होता हे, तब जगतकी क्रिया होती हे, फिर जब सो अदृश्य होता हे, तब जगतकी क्रियाभी लीन हो जाती हे; जेसें तिस क्रिया होने न होनेमें आकाश ज्योंका त्यों हे तेसें ज्ञानवान सदा निर्लेप हे; तिस आत्मज्ञानकी उत्पत्तिका उपाय यह मेरा श्रेष्ठ शास्त्र हे ॥ हे रामजी! जो पुरुष इस मोक्षोपाय शास्त्रकों श्रद्धासंयुक्त पढे अथवा शुने तो वाइ दिन सो मोक्षका भागी होय रहे; अरु मोक्षके चार द्वारपाल हे सो में तुझकों कहता हों; सो इनमेंतें अेकडु जब अपने वश होय तब मोक्षद्वारमें इसका शीघ्र प्रवेश होवे; सो चारोंका नाम कहों सो सुन ॥ हे रामजी! यह शम इसकों परम विश्रामका कारन हे, अरु यह संसार जो दिखता हे, सो मरुथलकी नदीवत हे; इसकों देखकर मूर्ख अज्ञानीरूपी जो मृग हे, सो मुखरूप जल जानकर दोरता हे, अरु शांतिकों नांही प्राप्त होता; जब शमरूपी मेघकी बरखा होवे, तब सुखी होवे ॥ हे रामजी! शमही परम आनंद हे, अरु समही परमपद हे, ओर शिवपद हे; जिस पुरुषनें शम पाया हे सो संसार समुद्रतें पार हुवा हे; तिसकों शत्रु सो मित्र हो जातें हे ॥ हे रामजी! जब चंद्रका उदय होता हे, तब अमृतकी कणा फुटती हे, अरु शीतलता होती हे; तेसें जिसके हृदयमें समरूपी चंद्रमा उदय होता हे, तिसके सब ताप मिट जाते हे, अरु परम शांतिवान होते हे ॥ हे रामजी! शम देवताके अमृत समान हे, वही परम अमृत हे; शम करकें इसकों परम शोभा प्राप्त होती हे; जेसें पूर्नमासिके चंद्रमाकी कांति परम उज्वल होती हे, तेसें शमकों पायकें उसकी उज्वल कांति होती हे ॥ जेसें विष्णुके दो हृदय हें, सो अेक तो अपने शरीरमें हे, दुसरा संतमें हे; तेसें इसके दो हृदय होते हे; अेक अपने शरीरमें दुसरा शमभी इनका हृदय होता हे; अेसा आनंद अमृतके पान कियेतेंडु नांही होता ॥ अरु लच्छमीकी प्राप्तितेंभी नांही होता; जो आनंद शमवानकों होता हे ॥ हे रामजी! प्रानडुतेंभी प्रिय कोइ होवे, सो अंतर्ध्यानकर फिर प्राप्त होवे, तेसा आनंद नांही होवे, जेसा आनंद शमवानकों होवे ॥ तीसके दर्शन करभी आनंद प्राप्त होता हे; अरु अेसा आनंद राजाकोंभी नांही होता, जो बाहिरतें श्रेष्ठ मंत्री होता हे, अरु अंतरतें सुंदर स्त्रिया होती हे, तिनकरभी अेसा आनंद नांही होता, जेसा आनंद शमसंपन्न पुरुषकों होता हे ॥ हे रामजी! जीस पुरुषकों शमकी प्राप्ति भइ हे, सो बंदना करने जोग हे, अरु पूजने जोग हे; जिसकों शमकी प्राप्ति भइ हे, तिसकों उद्वेग नांही आवे, अरू लोकडुतें उद्वेग नही पावे, उसकी क्रिया अमृत समा न हे, अरू बचनभी उसके अमृतकी नांई मीठे हें; जेसें चंद्रमाकी कीरन शीतल अरू अमृतरूप हे सो सबकों हृदयाराम हे, तेसें संत जनके बचन हे ॥ जिस पुरुषकों शमकी प्राप्ति भइ हे, तिसकी संगति जब इस जीवकों प्राप्त होती हे, तब सब परम आनंदित होते हे॥हे रामजी! जेसें बालक माताकों पायकें आनंदित होता हे, तेसें जिसकों शमकी प्राप्ति भई हे, तिसके संगकर जीव अधिक आनंदवान होता हे ॥ जेसें किसका बांधव मुवा हुआ फिर आवे, ओर इसकों आनंद प्राप्त होवे, तीसतेंभी अधिक आनंद सम संपन्न पुरुषकों पायकें होता हे ॥ हे रामजी! अेसा आनंद चक्रवर्ती राजके पायेंतेंभी नहीं होता, अरू त्रिलोकीका राज पायेतेंभी नहीं होता ॥ जिसकों समकी प्राप्ति भई हे, तिसके शत्रुभी मित्र हो जाते हे तिसकर कछु भयभी नहीं होता अरू सर्पका भयभी तिसकों नहीं रहता; सिंहका भयभी तिसकों नहीं रहता; ओरडु किसीका भय नहीं रहता; सदा निर्भय शांतरूप रहता हे ॥ हे रामजी ! जो कोउ कष्ट आय प्राप्त होवे, ओर कालकी अग्नि आय लगे, तोभी सो चलायमान नहीं होता, सदा शांतिरूप रहेते हे; जेसें शीतल चांदनी चंद्रमामें स्थित हे, तेसें जो कछु शुभ गुन अरू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संपदा हे, सो सब शमवानके हृदयमें आय स्थित होते हैं ॥ हे रामजी! जो पुरुष अध्यात्मकादि तापकर जलता हे, तिसकों हृदयमें शमकी प्राप्ति होवे, तब ताप मिट जाते हे ॥ जेसें तप्त पृथ्वी वर्षा करकें शीतल हो जाती हे, तेसें उसका हृदय शीतल हो जाता हे ॥ जिसकों शमकी प्राप्ति भई हे, सो सब क्रियामें आनंदरूप हे, तिसकों दुःख कोउ नहीं स्पर्श करता; जेसें वज्र शिलाकों बान वेध नहीं शकता, तेसें जिस पुरुषनें शमरूपी कवच पहिऱ्या हे, तिनकों अध्यात्मकादि ताप बेध नहीं शकता; वह सर्वदा शीतलरूप रहता हे ॥ हे रामजी ! तप स्वी, पंडित, याज्ञिक, धनाढ्य, सो पूजा मान करने योग्य हे, परंतु जिसकों शमकी प्राप्ती भइ हे सो सबसें उत्तम हे ॥ सो सबकों पूजने जोग हे; उसके मनकी वृत्ति आत्मतत्व कों गृहन करती हे; समकर पूरन हे ॥ अरु सब क्रियानमें सोहत हे ॥ जिस पुरुषकों शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध; यह इंद्रियके विषय इष्ट अनिष्टमें राग दोष नांही होत, तिस कों शांतात्मा कहत हे ॥ हे रामजी ! जो संसारके रमनीय पदार्थमें बध्यमान नही होत, अरु आत्मानंदकर पूरन हे, तिसकों शांतिवान कहते हे; वाकों संसारके शुभ अशुभकर म लिनपना नही लगता; सदा निर्लेप रहता हे ॥ जेसें आकाश सब पदारथतें निर्लेप हे तेसें शांतिवान सदा निर्लेप रहता हे ॥ हे रामजी ! अेसा जो पुरुष हे सो इष्ट विषयकी प्राप्ति में हरखवान होते नही; अरु अनिष्ट विषेकी प्राप्तिमें शोकवान होता नही; अरु अंतरतें सदा शांत रहते हे; उसकों कोउ दुःख स्पर्श नही करता; अपनें आपमें सदा परमानंदरूप र हता हे; जेसें सूर्यके उदय हुवे अंधकार नष्ट हो जाता हे; तेसें शांतिके पाये सब दुःख नष्ट हो जाता हे; सदा निर्विकार रहते हे ॥ हे रामजी ! सो पुरुष सब चेष्टा करते दृष्ट आते हे, परंतु सदा निर्गुन रूप हे; कोउ क्रिया उनकों स्पर्श नही करती ॥ जेसें जलमें कमल निर्लेप रहता हे, तेसें शांतिवान सदा निर्लेप रहता हे ॥ हे रामजी ! जो पुरुष बडे राज संपदाकों पायकर अरु बडी आपदाकों पायकर ज्योंका त्यों अलग रहता हे, सो शांतिवान कहिये ॥ हे रामजी जो पुरुष शांतितें रहित हे, तिसका चित्त छिन छिन राग दोषकर तपता हे; अरु जिसकों शांतिकी प्राप्ति भइ हे, सो अंतर्बाहिर शीतल हे; अरु सदा अेक रस हे; जेसें हिमालय सदा शीतल रहता हे, तेसें वह सदा शीतल रहता हे; वाके मुखकी कांति बहोत सुंदर हो जाती हे; जेसें निःकलंक चंद्रमा होवे, तेसें शांतिवान निःकलंक रहता हे ॥ हे रामजी ! जिसकों शांति प्राप्त भइ हे, सो परम आनंदित हुवे हे; परम लाभ तिस कों प्राप्त होत हे ॥ ज्ञानी इसीकों परम पद कहते हे, जिसकों पुरुषार्थ करना हे, तिसकों शांतिकी प्राप्ति करनी चहिये ॥ हे रामजी ! जेसें मैंने कह्या हे, तिस क्रम करके शांतिका गृहन करो, तब संसार समुद्रके पार पहुंचोगे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे मुमुक्ष प्रकरणे सम निरूपणं नाम त्रयोदशः सर्गः॥ ॥ १३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठो वाच ॥ हे रामजी ! अब बिचारका निरूपण शुन !॥ जब हृदय शुद्ध होता हे, तब बिचार होता हे; अरु शास्त्रार्थ बिचार द्वारा बुद्धि तीक्षण होती हे ॥ हे रामजी ! अ ज्ञानरूपी जो बन हे, तिसमे आपदारूपी बेलीकी उत्पत्ति होती हे; तिसकों विचाररूपी खड्ग करकें काटेगा, तब शांत आत्मा होवेगा; अरु मोहरूपी हस्ती हे, सो जीवका हृदय क मलका खंड खंड कर डारता हे, अभिप्राय यह जो इष्ट अनिष्ट पदार्थमें राग दोषकर छेद्या जाता नाहीं; जब बिचाररूपी सिंह प्रगटे, तब मोहरूपी हस्तिका नाश करे; फिर शांता त्मा होवे ॥ हे रामजी ! जिसकों कछु सिद्धता प्राप्त हुइ हे, सो बिचार अरु पुरुषार्थ कर भइ हे; जो राजा होता हे, सो प्रथम बिचार कर पुरुषार्थ करता हे; तिसकर राजकों प्राप्त हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ता हे ॥ बल, बुद्धि अरु तेज, चतुर्थ जो पदार्थका आगमन, अरु पंचम पदार्थकी प्राप्ति होती हे, सो पांचोंकी प्राप्ति बिचारकर होती हे; अर्थ यह जो इंद्रियोंका जीतना; अरु बुद्धि सो आत्मा व्यापीनी, अरु तेज पदार्थका आगमन इनकी प्राप्ति बिचारसों होती हे ॥ हे रामजी! जिस पुरुषनें बिचारका आश्रय लिया हे, सो बिचारकी दृढता करकें जिसकी वांछा करते हे, तिसकों पावते हे; तातें बिचार इसका परम मित्र हे ॥ जो बिचारवान पुरुष हे, सो आपदामें मग्न नांही होता ॥ जेसें तुंबी जलमें डुबत नांही, तेसें वह आपदामें डुबत नांही ॥ हे रामजी! वह बिचार संयुक्त जो करता हे, देता हे ॥ लेता हे, सो सब क्रिया सिद्धताका कारनरूप होती हे ॥ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, बिचारकी दृढता करकें सिद्ध होते हे; बिचाररूपी कल्पवृक्ष हे, तिसमें जिसका अभ्यास होता हे, सोइ पदारथकी सिद्धिकों पावता हे ॥ हे रामजी! शुद्ध ब्रह्मका बिचार गृहन कर आत्मज्ञानकों प्राप्त होड्ड; जेसें दीपकसोंकर पदारथका ज्ञान होता हे, तेसें पुरुष बिचारसोंकर सत्य असत्यकों जानता हे ॥ असत्यकों त्यागकर सत्यकी ओर जतन किया हे, सो बिचारवान कहते हे ॥ हे रामजी! संसाररूपी समुद्रविषे आपदारूपी तरंग चलते हे, जो विचारवान पुरुष हे, सो संसारके भाव अभावमें कष्टवान नांही होता हे ॥ जो कछु बिचार संयुक्त क्रिया होती हे, तिसका परिनाम सुख हे; जो बिचारबिन चेष्टा होती हे, तिसकर दुःख प्राप्त होता हे ॥ हे रामजी! अविचाररूपी कंटक वृक्ष हे, तिसतें दुःखरूपी कंटक पडे उत्पन्न होते हे; अरु अविचाररूपी रात्र हे, तिसमें तृष्णारूपी पिशाचनी आय बिचरती हे ॥ जब बिचाररूपी सूर्य उदय होता हे ॥ तब अविचाररूपी रात्रि अरु तृष्णारूपी पिशाचनी नष्ट हो जाती हे ॥ हे रामजी! हमारा यही आशिर्वाद हे, जो तुमारे हृदयसों अविचाररूपी रात्र नष्ट होड्ड ॥ विचाररूपी सूर्य करकें अविचारित संसार दुःखका नाश होता हे; जेसें बालक अविचार करकें अपनी परछैयाकों बैताल कल्पकें भयकों पावता हे, अरु बिचार कियेतें भय नष्ट हो जाता हे; तेसें अविचार करकें संसार दुःखकों देता हे, ओर शत शास्त्र युक्तिकर बिचार कियेतें संसार भय नष्ट हो जाता हे ॥ हे रामजी! जहां बिचार हे तहां दुःख नांही हे; जेसें जहां प्रकाश होता हे, तहां अंधकार नांही रहता हे; जहां प्रकाश नांही तहां अंधकार रहता हे, तेसें जहां बिचार हें, तहां संसार भय नांही हे, अरु जहां विचार नांही तहां संसार भय रहता हे; अरु जहां आत्मबिचार उत्पन्न होता हे, तहां सुखकों देनहारे शुभ गुन आय स्थित होते हे ॥ जेसें मानस सरोवरमें कमलकी उत्पत्ति होती हे, तेसें विचारमें शुभ गुनकी उत्पत्ति होती हे ॥ जहां बिचार नांही तहां दुःखका आगमन होता हे ॥ हे रामजी! जो कछु अविचारकर क्रिया करतें हे, सो दुःखका कारन होता हे ॥ जेसें चुहा बीलकों खोदकें मृत्तिका निकासता हे, सो जहां इकठी होती हे, तहां बेलीकी उत्पत्ति होती हे, तेसें अविचारकर यह पुरुष मृत्तिकारूपी पाप क्रियाकों इकठो करता हे, तिसतें आपदारूपी बेली उत्पन्न होती हे, अरु अबिचाररूपी घुनाका खाया शूका बृच्छ हे, तिसकों सुखरूपी फल चाहते हे, तेउ नांही निकसते हे; सो अविचार किसका नाम हे? जिस करकें शुभ क्रिया न होवे; अरु जिसकर शास्त्रानुसार क्रिया होवे, तिसका नाम बिचार हे ॥ हे रामजी! विवेकरूपी राजा हे, अरु विचाररूपी धुजा हे, जहां विवेकरूपी राजा आता हे, तहां बिचाररूपी धुजा तिनके साथ फिरती हे; अरु जहां विचाररूपी धुजा आती हे, तहां विवेकरूपी राजाभी आता हे ॥ जो पुरुष बिचार करकें संपन्न हे, सो पूजने जोग हे, तिसकों सब कोउ नमस्कार करते हें॥ जेसें दुतियाके चंद्रमाकों सब नमस्कार करते हैं, तेसें विचारवानकों सब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नमस्कार करते हे ॥ हे रामजी! हमारे देखत देखत अल्प बुद्धिहु बिचारकी दृढतातें मोक्ष पदकों प्राप्त भये हे; तातें बिचार सबका परम मित्र हे; बिचारवान पुरुष अंतर्बाहिर शीतल रहत हे; जेसें हिमालय पर्वत अंतर्बाहिर शीतल रहता हे, तेसें उहभी शीतल रहता हे ॥ देख! बिचार करकें अेसे पदकों प्राप्त होता हे ॥ जो पद नित्य हे, अरु स्वच्छ हे, अनंत हे, परमानंदरूप हे, तिसकों पायकर तिसका त्यागकी इच्छा होती नांही; ओरका ग्रहनकी इच्छा नांही होती हे; उनकों इष्ट अनिष्ट विषे सब समान हे; जेसें तरंग के होनेमें अरु लीन होनेमें समुद्र समान रहता हे, तेसें विवेकी पुरुषकों इष्ट अनिष्ट विषे समता रहती हे, अरु संसारभ्रम मिट जाता हे; आधाराधेयतें रहित केवल अद्वैत तत्व उसकों प्राप्त होता हे ॥ हे रामजी! यह जगत अपनें मनकें मोहतें उपजता हे, अरु अविचार कर दुःखदाइ दिखता हे, जेसें अविचार करकें बालकों वैताल भासता हे, तेसें इसकों जगत भासता हे ॥ जब ब्रह्म बिचारकी प्राप्ति होवे, तब जगत भ्रम नष्ट हो जावे ॥ हे रामजी! जिसके हृदयमें बिचार होता हे, तहां समताकी उत्पत्ति होती हे ॥ जेसें बीजतें अंकुर निकस आता हे, तेसें बिचारतें समता होत आती हे; अरु बिचारबान पुरुष जिसकी ओर देखता हे, तिस ओर आनंद दृष्ट आता हे ; दुःख कोउ नही भासता हे ॥ जेसें सूर्यकों अंधकार दृष्ट नही आवता, तेसें बिचारवानकों दुःख दृष्टिमें नही आवता; जहां अविचार हे तहां दुःख हे; जहां विचार हे तहां सुख हे ; जेसें अंधकारके अभाव हुवे वैतालका भयका अभाव हो जाता हे; तेसें बिचार कियेतें दुःखका अभाव हो जाता हे ॥ हे रामजी ! संसाररूपी दीर्घ रोग हे तिसका नाश करनेकाबिचार बडा औषध हे ॥ जिसकों बिचारकी प्राप्ति भइ हे, तिसके मुखकी कांति उज्वल हो जाती हे; जेसें पूर्नमासिके चंद्रमाकी उज्वल कांति होती हे, तेसी बिचारवानके मुखकी उज्वल कांति होती हे ॥ हे रामजी ! बिचार करकें इसकों परम पदकी प्राप्ति होती हे; जिस करी अर्थ सिद्धी होवे तिसका नाम बिचार हे; अरु जिस करी अनर्थ सिद्धि होवे तिसका नाम अविचार हे ॥ अविचाररूपी मदिरा हे; जो इसका पान करता हे सो उन्मत्त हो जाता हे, तिसतें शुभ बिचार कोउ नही हो आवता; शास्त्रके अनुसार जो कछु क्रिया हे, सो ताते नही होती; तातें अविचार करी अर्थ सिद्ध नही होता; हे रामजी ! इच्छारूपी रोग हे, सो बिचाररूपी औषध करकें निवृत्त होता हे ॥ जिन पुरुषनें बिचार द्वारा परमार्थ सत्ताका आश्रय लिया हे, सो परम शांत हो जाता हे; अरु हेयोपादेय बुद्धि तिसकी नही रहती; सब दृश्यकों साक्षीभूत होकर देखता हे; अरु संसारके भाव अभाव विषे ज्योंका त्यों रहता हे; अरु उदय अस्तें रहित निःसंगरूप हे ॥ जेसें समुद्र जलकरी पूरन हे, तेसें बिचारबान आत्मतत्व करी पूरन हे ॥ जेसें अंधा कुप विषे पर्‍या हुवा हस्तके बल करी निकसता हे, तेसें संसाररूपी अंध कुपमें गिर्‍या हुवा बिचारके आश्रय होकर विचारवान पुरुष निकसनेकों समर्थ होता हे ॥ हे रामजी! राज्यकों जो कोउ कष्ट आय प्राप्त होता हे, तब उह बिचार करके जतनं करतें हे ; तब कष्ट निवृत्त हो जाता हे, तातें तुं बिचार कर देख जो किसीकों कष्ट प्राप्त होता हे सो बिचारतें मिटता हे; तुमभी बिचारका आश्रय करकें सिद्धिकों प्राप्त होहु; सो बिचार इस कर प्राप्त होता हे, जो वेद अरु वेदांतके सिद्धांतकों श्रवन करे, पाठ करे, भले प्रकार बिचारेगा, तब बिचारकी दृढता कर आत्मतत्वकों प्राप्त होवेगा ॥ जेसें प्रकाश कर पदार्थका ज्ञान होता हे, तेसें गुरु अरु शास्त्रका बचन कर तत्वज्ञान होता हे ॥ जेसें प्रकाशमें अंधकों पदारथकी प्राप्ति नांही होती हे, तेसें गुरु अरु शास्त्रसों जो बिचारतें शून्य होवे, तिसकों आत्मपदकी प्राप्ति नांही होती ॥ हे रामजी! जो बिचाररूपी नेत्रकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संपन्न हे, सोइ देखते हे; अरु विचाररूपी नेत्रतें जो रहित हे, सो अंध हे ॥ हे रामजी ! अेसा बिचार कर, जो में कवन हों ? अरु यह जगत क्या हे ? अरु इसीकी उत्पत्ति के
सी हुइ हे; अरु लीन केसें होता हे; इसप्रकार संत अरु शास्त्रके अनुसार विचार कर सत्यकों सत्य जान, अरु असत्यकों असत्य जान; जिसकों असत्य जान्या हे, तिसका त्या
ग कर, अरु सत्यमें स्थित होय इसीका नाम बिचार हे; इस बिचार कर आत्मपदकी प्राप्ति होती हे ॥ हे रामजी ! विचाररूपी दिव्य दृष्टि जिसकों प्राप्त भइ हे , तिसकों सब प
दारथका ज्ञान होता हे; विचारसों आत्मपदकी प्राप्ति होती हे, तिसकों पायेतें परिपूर्न होता हे, फिर शुभ अशुभ संसारमें चलायमान नही होता, ज्योंका त्यों रहता हे॥जबलग प्रारब्ध वेग
होता हे, तबलग शरीरकी चेष्टाहोती हे; जबलग अपनी इच्छा होवे, तबलग शरीरकी चेष्टा करे ॥बहुरी शरीरकों त्याग कर केवळ शुद्धरूप हो जाता हे; तातें हे रामजी ! ब्रह्मविचारकों आ
श्रय कर, संसार समुद्रकों तरजा; जो कोउ रोगी होता हे, सो अेता रुदन नही करता, जेता रुदन बिचार रहित पुरुष करता हे; जिसकों कष्ट प्राप्त होता हे, सोभी अेता रुदन नहीकरता ॥ हे राम
जी! जो पुरुष बिचारतें शून्य हे, तिनकों सब आपदा आय प्राप्त होती हे; जेसें सब नदी स्वभावसों समुद्रमें आय प्रवेश करती हे, तेसें अविचारमें सब आपदा आय प्रवेश करतीहे ॥
हे रामजी ! कीचका कीट होना सो भला हे, अरु गर्त्तका कंटक होना सोभी भला हे ॥ अरु आंधरे बीलमें सरप होना सो भला हे परंतु बिचारतें रहित होना सो तुच्छ हे॥ जो पुरुष बि
चारतें रहित हे, अरु भोगमें दोरता हे सो श्वान हे ॥ हे रामजी ! बिचारतें रहित पुरुष बडे कष्टकों पावता हे, तातें अेक छिनहु बिचारतें रहित नही रहना; बिचारसों दृढ होकर नि
र्भय रहना; जो में कवन हो, अरु दृश्य क्या हे, अेसा विचार करकें सत्यरूप आत्माकों जान कर दृश्यका त्याग करना ॥ हे रामजी ! जो पुरुष बिचारवान हे सो संसार भोगमें न
ही गिर जाता, अरु सत्यमेंइ स्थित होता हे; विचार जब स्थिर होता हे, तब तिसतें तत्वज्ञान होता हे; तब तत्वज्ञानतें विश्राम होता हे; विश्रामतें चित्तका उपशम होता हे, अरु चि
त्तके उपशमतें दुःख नाश होता हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे मुमुक्ष प्रकरणे विचार निरूपणं नाम चतुर्दशः सर्गः ॥ १४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे अविचार शत्रुके नाश कर्त्ता रामजी ! जिस पुरुषकों संतोष प्राप्त भया हे, सो परम आनंदित हुवा हे, अरु त्रिलोकीका अैश्वर्य उसकों तृनकी नांइ तुच्छ भा
सता हे; हे रामजी ! जो आनंद अमृतपान कियेंते नही होता हे; ओर जो आनंद त्रिलोकके राजकर नही होता, तेसा आनंद संतोषवानकों होता हे ॥ हे रामजी ! इच्छारूपी रा
त्री हे, अरु सो हृदयरूपी कमलकों सकुचाय देती हे; ओर जब संतोषरूपी सूर्य उदय होता हे, तब इच्छारूपी रात्रीका अभाव हो जाता हे ॥ जेसें छीर समुद्र उज्वलता करकें
सोहता हे, तेसें संतोषवानकी कांति सुशोभित होती हे ॥ हे रामजी ! त्रिलोकीका राजाकी इच्छा निवृत्त न भइ, तब सो दरिद्री हे, अरु जो निर्धन हे, ओर सो संतोषवान हे, सो स
बका ईश्वर हे ॥ संतोष तिसकाइ नाम हे; श्रवन करी जो अप्राप्त वस्तुकी इच्छा न करे, अरु प्राप्त होइ इष्ट अनिष्टमें राग दोष न धरे, इसका नाम संतोष हे; संतोष सोइ परमपद
हें; संतोषवान पुरुष सदा आनंदरूप हे, अरु आत्म स्थितिसों तृप्त हुवा हे, तिसकों ओर इच्छा कछु नही स्फुरती ॥ अरु संतुष्टता कर तिसका हृदय प्रफुल्लित हुवा हे, जेसें सूर्यके उदय
हुवे सूर्यमुखी कमल प्रफुल्लित होता हे, तेसें संतोषवान प्रफुल्लित हो जाता हे ॥ जो अप्राप्त वस्तु हे तिनकी इच्छा नही करता; अरु जो अनिच्छित प्राप्त भइ हे, तिसकों यथाशास्त्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्रम करकै गृहन करता है, तिसका नाम संतोषावान है॥जैसें पूर्नमासिका चंद्रमा अमृतकर पूरन होता है, तैसें संतोषवानका हृदय संतुष्टता करकें पूर्न होता है; अरु जो संतोषतें रहित है, तिसके हृदयरूपी बनमें सदा दुःख अरु चिंतारूपी फूल फल उत्पन्न होतेइ है ॥ हे रामजी ! जाका चित्त संतोषतें रहित है, तिसकों नाना प्रकारकी इच्छा जैसें समुद्रमें नाना प्रकारके तरंग होते है, तैसें उपजती है; संतुष्टात्मा परम आनंदित है, तिसकों जगतके पदारथमें हेयोपादेय बुद्धि नहीं होती॥हे रामजी ! जेसा आनंद संतोषवानकों होता है, तेसा आनंद अष्टसिद्धिके ऐश्वर्य करकेंभी नही होता; अरु अमृतके पान कियेतेभी नहीं होता॥ संतोषवान सदा शांतिरूप है; ओर सदा निर्मल रहता है॥इच्छारूपी धूर सर्वदा उडतीथी सो संतोषरूपी बरखा कर शांत होगइ है; तिस कारनतें संतोषवान निर्मल है॥हे रामजी ! संतोषवान पुरुष सबकों प्यारा लगता है ॥ जैसें आंबका परिपक्व फल सुंदर होता है, अरु सबकों प्यारा लगता है, तेसा संतोषवान पुरुष सबकों प्यारा लगता है; अरु स्तुति करने जोग है; जिस पुरुषकों संतोष प्राप्त भया है, तिसकों परम लाभ भया है ॥हे रामजी ! जहां संतोष है, तहां इच्छा नही रहती है; अरु संतोषवान भोगमें दीन होकर नहीं रहता; वह उदारात्मा है; सर्वदा आनंद कर तृप्त रहता है; जेसें मेघ पवनके आयेतें नष्ट हो जाता है, तैसें संतोषके आयेते इच्छा नष्ट हो जाती है; अरु जो संतोषवान पुरुष है तिसकों देवता, ऋषीश्वर, सब नमस्कार करते है, अरु धन्य धन्य कहते है ॥ हे रामजी ! जब इस संतोषकों धरेगा, तब परम शोभा पावेगा ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे संतोष निरूपणं नाम पंचदशः सर्गः ॥ १५ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! अवर जेते कलु दान तीर्थादिक साधन है तिनकर आत्मपदकी प्राप्ति नही होती; साधु संगकर आत्मपदकी प्राप्ति होतीहै ॥ साधुसंगरूपी अेक वृच्छ है, तिसका फुल आत्मज्ञान है ॥ जिसपुरुषनें फुलकी इच्छा करी है, सो अनुभवरूपी फलकों पावता है ॥ हे रामजी !जो पुरुष आत्मानंदतें रहित है, सो संतसंगकर आत्मानंदसों पूरन होते है; अरु अज्ञान करकें जो मृत्युकों पावता है, सो संतके संगतें ज्ञान पायकर अमर होता है; अरु जो आपदा करकें दुःखी है, सो संतके संगकर संपदाकों पावता है; आपदारूपी कमलका नाश करनहारी सत्संगरूपी बरफकी बरखा है; संतसंगसों कर आत्मबुद्धि प्राप्त होती है, तिसकर मृत्युतें रहित होता है; ओर सब दुःखतें रहित होता है; अरु परमानंदकों प्राप्त होता है, हे रामजी ! संतकी संगती कर इसके हृदयमें ज्ञानरूपी दीपक जलता है, तिसकर अज्ञानरूपी तम नष्ट हो जाता है; अरु बडे ऐश्वर्यकों प्राप्त होता है; बहुरी किसी भोगपदारथकी इच्छा नही रहती, अरु बोधवान होता है ॥ सबतें उत्तम पदमें विराजता है; जेसें कल्प वृच्छकें निकट गयेतें वांच्छित फलकी प्राप्ति होती है, तैसें संसारसमुद्रके पार उतारनहारे संतजन है; जेसें धीवर नौका करकें पार लगता है, तैसें संतजन जुक्ति करकें संसार समुद्रतें पार करते है॥ अरु मोहरूपी मेघका नाश करनहारा संतका संग पवन है; जिनकों देहादिक अनात्मसों स्नेह नष्ट भया है, अरु शुद्ध आत्माविषे जाकी स्थिति है तिसकर तृप्त भये है, बहुरी संसारके इष्ट अनिष्टतें जाकी चलायमान बुद्धि नही होती, सदा समता भावमें स्थित रहे है अेसें संसार समुद्रके पार उतारनेमें पूल जेसें, अरु आपदारूपी वेलीकों जड समेत नाश करनहारे है ॥ हे रामजी ! संतजन प्रकाशरूप है; तिनके संगतें पदार्थकी प्राप्ति होती है, अरु जो अपने पुरुषार्थरूपी नेत्रतें हीन हुवेहे, इसकों पदार्थकी प्राप्ति नही होती, जिन पुरुषनें सत्संगका त्याग किया है, सो नरकरूपी अग्निमें लकडीकी नांइ जरेंगे; अरु जिन पुरुषनें सत्संग किया है, तिनकों नरकरूपी अग्निका नाश करनहारा स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्संगरूपी मेघ हे ॥ हे रामजी ! सत्संगरूपी गंगा हे; जाने सत्संगरूपी गंगाका स्नान किया, ताकों बहुरी तप, दान, आदि साधनका प्रयोजन नाही; उह सत्संग करकें परम गतिकों प्राप्त होनेका हे; तातें अवर सब उपाय त्यागकर सत्संगकों खोजना ॥ जेसें निर्धन चिंतामनी आदिक धनकों खोजता हे, तेसें मुमुच्छु सत्संगकों खोजता हे; अध्यात्मकादि तीन तापसों जलता हे, तिसकों शीतल करनेहारा सत्संग हे ॥ जेसें तपी हुइ पृथ्वी मेघकर शीतल होती हे, तेसें सत्संग कर हृदय शीतल होता हे; हे रामजी ! मोहरूपी वृच्छका नाश करनहारा सत्संगरूप कुहाडा हे; सत्संग करकें यह पुरुष अविनाशी पदकों प्राप्त होता हे, जिस पदके पायेतें ओर पावनेकी इच्छा नही रहती; अेसा सबतें उत्तम सत्संग हे ॥ जेसें सब अपछरानतें लक्ष्मी उत्तम हे, तसें सत्संग कर्त्ता सबतें उत्तम हे; तातें अपने कल्यानके निमित्त सत्संग करना तुमकों योग्य हे॥ हे रामजी ! यह जो चारो मोक्षके द्वारपाल हे, सो तुझकों कहे; जा पुरुषनें इनके साथ प्रीति करी हे, सो शीघ्र आत्मपदकों प्राप्त होहिंगे; ओर जो इनकी सेवा नही करते सो मोच्छकों प्राप्त नही होते ॥ हे रामजी ! इन चारोमेंतें अेकहु जहां आता हे, तहां तीनो ओरहु आय जाते हे; जहां समुद्र रहता हे, तहां सब नदी आय जाती हे; तेसें जहां शम आता हे तहां संतोष, बिचार, अरु सत्संग ये तीनो आय जाते हे; जहां साधु संगम होता हे, तहां संतोष, बिचार, अरु शम ये तीनो आय जाते हे; जहां कल्पवृच्छ रहता हे तहां सब पदार्थ आय स्थित होते हे; अरु जहां संतोष आता हे, तहांशम, बिचार, सत्संग, ये तीनो आय जाते हे ॥ जेसें पूर्नमासिके चंद्रमामें गुन कला सब इकठ्ठी हो जाती हे, तेसें जहां संतोष आता हे, तहां ओर तीनो आय जाते हे; अरु जहां बिचार आता हे, तहां संतोष, उपशम, अरु सत्संग, ये आय रहते हे ॥ जेसें श्रेष्ठ मंत्रीसों कर राज्य लक्ष्मी आय स्थित होती हे, तेसें जहां बिचार होता हे, तहां ओरभी तीनो आते हे; तातें हे रामजी ! जहां चारो इकठे होत हे, तहां परम श्रेष्ठ जाननो ॥ ओर हे रामजी ! चारो न होही, तो अेकका तो अवश्य आश्रय करना; जब अेक आवेगा तब चारो आय स्थित होवेंगे ॥ मोक्षकी प्राप्ति होनेके यह चार परम साधन हे; ओर उपायसों मुक्ति होनेको नांही ॥ हे रामजी ! यह परम कल्यान

॥ श्लोक ॥ संतोषः परमो लाभः सत्संगः परमंधनं ॥ विचारः परमंज्ञानं शमंच परमं सुखं ॥ १ ॥

९९

कर्त्ता, सो इन चारो करी संपन्न हे, तिसकी ब्रह्मादिक स्तुति करते हे, तातें दंतकों दंत लगाय इनका आश्रय करकें मनकों बशी कर ले ॥ हे रामजी ! मनरूपी हस्ती बिचाररूपी अंकुश करकें बश होता हे, अरु मनरूपी बनमें वासनारूपी नदी चलती हे, तिसके शुभ अशुभ दो किनारे हे; अरु पुरुषार्थ करना यह हे, जो अशुभकी ओरतें रोककें शुभकी ओर चलावना ; जब अंतर्मुख आत्माके सन्मुख वृत्तिका प्रवाह होवेगा, तब तुं परम पदकों प्राप्त होवेगा ॥ हे रामजी प्रथम तो पुरुषार्थ करना यही हे जो अविचार रूपी ऊंचाइकों दूर करना; जब अविचाररूपी बेट दूर होवेगा, तब आपही प्रवाह चलेगा ॥ हे रामजी ! दृश्यकी ओर जो प्रवाह चलता हे, सो बंधनका कारन हे; जब आत्माकी ओर अंतर्मुख प्रवाह होवे, तब मोक्षका कारन होय जाय; आगें जो तेरी इच्छा होवे सो कर॥ इतिश्री योगवासिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे साधुसंग निरूपणं नाम षोडशःसर्गः ॥ १६ ॥

CC-0, Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! यह मेरे बचन हे सो परम पावन हे; जो बिचारवान शुद्ध अधिकारी हे, तिसकों यह बचन परम बोधका कारन हे; जो पुरुष शुद्ध पात्र हे, सो यह बचनकों पायकें सोहत हे; ओर बचनहु उनकों पायकें शोभा पावते हे, जेसें मेघके अभावतें शरदकालमें चंद्रमा अरु आकश सोहते हे, तेसें शुद्ध पात्रमें यह बचन शोभते हे; अरु जिज्ञासु निर्मल बचनका महिमा शुनकें प्रसन्न होता हे ॥ हे रामजी ! तुम परम पात्र हो, अरु मेरे बचन परम उत्तम हे; यह महा रामायन मोक्षोपायक शास्त्र हे, सो आत्म बोधका परम कारन हे; अरु परम पावन वाक्यकी सिद्धता हे; अरु युक्ति युक्तार्थ वाक्य हे; अरु नानाप्रकारके दृष्टांत कहे हे; जिनके बहुत जनमके पुन्य आय इकठ्ठे होते हे, तिनकों कल्पवृच्छ मिलता हे सो फल कर झुक पडता हे; तब तिसकों यह शास्त्र श्रवन होता हे; अरु नीचकों इनका श्रवन प्राप्त नही होता हे, उसकी वृत्ति इनके श्रवनमें नही आती हे; जेसें धर्मात्मा राजाकी इच्छा न्याय शास्त्रके श्रवनमें होती हे, अरु जो पापात्मा राजा हे, तिसकी इच्छा नही होती ॥ हे रामजी ! तेसें पुन्यवानकी इच्छा श्रवनमें होती हे; अरु अधमकी इच्छा नही होती; जो कोइ मोक्षोपायक यह रामायनका अध्ययन करेगा, अथवा निष्काम संतके मुखतें श्रद्धायुक्त श्रवन करेगा, अरु आदितें लेकर अंतपर्यंत अेकत्र भाव होकर विचारेगा, तब तिसका संसार भ्रम निवृत्त हो जावेगा ॥ जेसें जेवरीके जाननेतें सर्पका भ्रम दुर हो जाता हे, तेसें अद्वैतात्मा तत्वके जाननेतें तिसका संसार भ्रम नष्ट हो जावेगा ॥ सो इस मोक्षोपायक शास्त्रका बत्तिस सहस्र श्लोक हे, अरु खट प्रकरन हे ॥ प्रथम वैराग प्रकरन हे, सो बैरागका परम कारन हे ॥ हे रामजी ! मरुथलमे वृच्छ नही होता, परंतु बडी वर्षा होवे तब तहां बृच्छ होता हे; तेसें अज्ञानिका हृदय मरुथलकी नांइ हे, तिनमें वैरागरूपी वृच्छ नही होता, परंतु यह शास्त्ररूपी जो बडी वर्षा होवे, तिसकर बैरागरूपी बृच्छ उत्पन्न होता हे; तिनके अेक सहस्र पांचसों श्लोक हे ॥ तिसके अनंतर मुमुच्छु व्यवहार प्रकरन हे ॥ तिसमें परम निर्मल बचन हे ॥ तिसकरके मलीन मणी हुइ ताका मार्जन कियेतें उज्वल हो आती हे तेसें यह बचनतें ज्ञानीका हृदय निर्मल होता हे; अरु बिचारके बलतें आत्मपद पावनेकों समर्थ होता हे ॥ तिसका अेक सहस्र श्लोक हे; तिसके अनंतर उत्पत्ति प्रकरन हे; तिसके पंच सहस्र श्लोक हे; तिसमें बडी सुंदर कथा दृष्टांत सहित कही हे, जिस विचारतें जगतका सत्यता भाव मनतें चलायमान रहता हे; अर्थ यह जो जगतका अत्यंत अभाव जान परता हे ॥ हे रामजी ! यह जगतमें जो मनुष्य, देवता दैत्य, पर्वत, नदी, आदि, स्वर्ग लोक पृथ्वी; आप, तेज, वायु, आकाश, आदि स्थावर जंगम भासता हे, सो अज्ञान करकें हे; अरु इसकी उत्पत्ति कैसें भइ हे; जेसें जेवरीमें सर्प होता हे, अरु छीपमे रूपा होता हे, अरु सूर्यके किरनमें जल दिखता हे; आकाशमें तरुवर दिखता हे; ओर जेसें दुसरा चंद्रमा दिखता हे; जेसें गंधर्व नगर भासते हे; मनो राजाकी सृष्टि भासती हे; अरु संकल्प पूर होता हे, अरु सुवरनमें भूखन होता हे; समुद्रमें तरंग होता हे; आकाशमें नीलता दिखती हे; जेसें नौकामें बेठेतें किनारेके वृच्छ पर्वत चलते दृष्ट आते हे; अरु बादरके चलेतें चंद्रमा धावता दिखता हे, ओर थंभमें पूतरी भासती हे; भविष्यत नगरतें आदि लेकर असत्य पदार्थ जेसें सत्य भासते हे, तेसें सब जगत आकाशरूप हे; अज्ञान करकें अर्थाकार भासता हे; सो अज्ञान करकें उत्पत्ति दिखाती हे, अरु ज्ञान करके लिन हो जाता हे; जेसें निद्रामें सुपन सृष्टिकी उत्पत्ति होती हे, अरु जागेते निवृत्त हो जाती हे; तेसें अविद्या करकें जगतकी उत्पत्ति होती हे;

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरु सम्यक् ज्ञान करके निवृत्त हो जाता हे; सो अविद्या कछु वस्तुहु नांही, सर्व ब्रह्म चिदाकाशरूप हे; सो शुद्ध हे, अनंत हे; परमानंद स्वरूप हे; तिसमें न जगत उपजता हे, न लीन होता हे; ज्योंकी त्यों आत्मसत्ता अपने आप विषे स्थित हे; तिसमें जगत अेसा हे जेसें भीतमें चित्र होता हे; जेसें थंभमें पूतरियां होती हे, अरु हुवे विना भासती हे; तेसें यह सृष्टि मनमें रही हे, वास्तवतें कछु बनी नाही, सब आकाशरूप हे; जब चित्त संवेदन स्पंदरूप होता हे; तब नाना प्रकारका जगत होयकें भासता हे; अरु जब निस्पंद होता हे; तब जगत् मिट जाता हे; इसप्रकार जगतकी उत्पत्ति कही हे ॥ तिसके अनंतर स्थिति प्रकरण हे; तिसमें जगतकी स्थिति कही हे; जेसें इंद्रका धनुष आकाश रूप हे, ओर अविचार करकें रंग सहित भासता हे; जेसें सूर्यकी कीरनमें जल भासता हे, जेसे जेवरीमें सर्प भासता हे, सो सब सम्यक् दृष्टि करकें निवृत्त होता हे; तेसें अज्ञान करके जगतकी प्रतीति होती हे, सो मनोराज करके जगत रची लेता हे, सो कछु उत्पन्न हुवा नही हे; तेसें यह जगत संकल्प मात्र हे; जबलगी मनोराज हे, तबलगी उह नगर होता हे; जब मनोराजका अभाव हुवा ॥ तब नगरका अभाव होजाता हे, जबलग अग्यान होता हे तबलग जगतकी उत्पत्ति होती हे; जब संकल्पका लय हुवा, तब जगतका अभाव हो जाता हे; जेसें, ब्रह्माके दश पुत्रकी सृष्टि संकल्प करकें स्थित भइ, तेसें यह जगतभी हे; कोउ पदारथ अर्थरूप नांही ॥ हे रामजी ! इस प्रकार स्थिति प्रकरन कह्या हे; तिसके तीन सहस्र श्लोक हे तिसके विचार करकें जगतकी सत्यता जात रहती हे; तिसके अनंतर उपसम प्रकरन हे; तिसके पंच सहस्र श्लोक हे; तिसके विचारते अहंतत्वादिक वासना लीन हो जाती हे, जेसें सुपनेतें जागेतें वासना जात रहती हे, तेसें बिचार कियेतें अहंतादिक वासना लीन होती जाती हे; काहे तें जो उसके निश्चयमें जगत नही रहता; जेसें अेक पुरुष सोया हे, तिसकों सुपनेमें जगत भासता हे, ओर उसके निकट जो जाग्रत पुरुष हे; तिसके सुपनका जगत आकाशरूप हे; जब आकाशरूप हुवा तब वासना केसे रहे ? जबवासना नष्ट भइ, तब मनका उपशम हो जाता हे, तब देखने मात्र उसकी सब चेष्टा होती हे, ओर इसके मनमें अर्थरूप इच्छा नही होती ॥ जेसें अग्निकी मूर्ति देखने मात्र होती हे, अर्थाकार नही होती; तेसें उसकी चेष्टा होती हे ॥ हे रामजी ! जब मनतें इच्छा नष्ट हाती हे, तब मनबी निर्वान हो जाता हे; जेसें तेलतें रहित दीपक निर्वान होता हे, तेसें इच्छातें रहित मन निर्वान होता हे; इसप्रकार उपसम प्रकरन हे; तिसके अनंतर निर्वान प्रकरन हे; जो शेष हे तिसमें परम निर्वान बचन कहे हे; अज्ञान करकें चित्त अरु चित्तका संबंध हे; सो बिचार कियेतें निर्वान हो जाता हे; जेसें शरद कालमें मेघके अभावतें शुद्ध आकाश होता हे, तेसें पुरुष बिचार करकें निर्मल होता हे ॥ हे रामजी ! अहंकाररूपी पिशाच हे, सो बिचार करकें नष्ट होता हे; जेती कछु इच्छा स्फूर्ति हे, सो निर्वान हो जाती हे ॥ जेसें पथ्थरकी शिला फुरनेतें रहित होती हे तेसें ज्ञानवान इच्छातें रहित होता हे; तब जेती कछु जगतकी जात्रा हे, सो इसकों होय चुकती हे ॥ जो कछु करना हे सो कर चुकता हे ॥ हे रामजी ! शरीर होतहीं उह पुरुष अशरीरी हो जाता हे, अरु नाना प्रकारका जगत उसकों नही भासता ॥ जगतकी नेतीतें वह रहित होता हे; अहं तत्वादिक तमरूप जगत तिसकों नहीं भासता हे; जेसें सूर्यकों अंधकार दृष्ट नही आवता, तेसें उसकों जगत दृष्टिमें नही आता, अरु बडे पदकों प्राप्त होता हे ॥ जेसें सुमेरु पर्वतके किसी कोनमें कमल होता हे तिसके पर भौंरा स्थित रहते हे, तेसें ब्रह्मके किसी कौनपें जगत तुषार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूप हे अरु जीवरूपी भौंरे तिसपर स्थित हे; उह पुरुष अचिंत्य चिन्मात्र हे , रूप, अवलोकन, मन, तिसका आकाशरूप हो जाता हे,तिस वहपदकों प्राप्त होता हे, जिस पदकी उपमा योग्य ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र कहनेकों समर्थ नांही; ऐसें अनुपमताके सदृश कोउ नाही हे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे षट् प्रकरण विवरणं नाम सप्तदशः सर्गः ॥ ॥ १७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! यह परम उत्तम वाक्य हे, उसकों बिचारनहारा उत्तम पदकों प्राप्त होता हे; जेसें उत्तम खेतमें उत्तम बीज बोयेतें उत्तम फलकी उत्पत्ति होती हे, तेसें इसकों बिचारनहारा उत्तम पदकों प्राप्त होता हे; यह वाक्य केसें हे जो युक्तिपूर्वक वाक्य हे ॥ ओर युक्तितें रहित वाक्य आर्षभी होही, तो तिनका त्याग करियें; ओर जुक्तिपूर्वक वाक्य अंगीकार करीये ॥ हे रामजी ! जो ब्रह्माके बचन युक्तितें रहित होही, तब तिनकोंभी सूखे तृनकी नांइ त्याग करिये; अरु बालकके बचन जुक्ति पूर्वक होही, तो तिनका अंगिकार करियें; ओर पिताके कूपका खारा जल होवे, तो उसका त्याग करिये ॥ ओर निकट मिष्ट जलका कूप होवे, तब तिनका पान करिये; तेसें बडे अरु छोटेका बिचार न करियें; युक्ति पूर्वक बचनका अंगीकार करना ॥ हे रामजी ! मेरे बचन सब युक्ति पूर्वक हे, अरु बोधके परम कारन हे; जो पुरुष अेकाग्र होयकें इस शास्त्रकों आदितें अंत पर्यंत पढे अथवा पंडितसों श्रवन करकें बिचारे तब तिसकी बुद्धि संस्कारित होवे; प्रथम बैराग प्रकरनकों बिचारेगा, तब वैराग उपजेगा; जेते कछु जगतके रमनीय भोग पदार्थ हे, तिसकों बिरस जानेगा, अरु किसी पदारथकी वांच्छा न करेगा; जब भोगमें बैराग होता हे, तब शांतिरूप आत्मतत्वमें प्रतीति होती हे; जब विचार करकें बुद्धि संस्कारित होवेगी, तब शास्त्रका सिद्धांत बुद्धिमें आयस्थित होवेगा; ओर संसारके विकार रहित बुद्धि निर्मल होवेगी ॥ जेसें शरदकालमें बादुरके अभाव हुवेतें आकाश सब ओरतें स्वच्छ होता हे, तेसें बुद्धि निर्मल होवेगी; बहुरी आधिव्याधिकी पीडा उसकों न होवेगी ॥ हे रामजी ! ज्यों ज्यों विचार दृढ होवेगा; त्यों त्यों शांतात्मा होवेगा, तातें जेतें कछु संसारके जतन हे, तिनका त्याग कर इस शास्त्रकों वारंवार बिचारेतें चैतन्य सत्ता उदय होवेगी ; त्यों त्यों लोभ मोहादिक बिकारकी सत्ता नष्ट होवेगी; जेसे ज्यों ज्यों सूर्य उदय होता हे, त्यों त्यों अंधकार नष्ट होता हे; तेसें बिकारनष्ट होवेगा तब तिस पदकी प्राप्ति होवेगी ॥ जिसके पाये संसारके क्षोभ मिट जायगे; जेसें शरदकालमें मेघ नष्ट हो जाता हे, तेसें संसारके क्षोभ मिट जाते हे ॥ हे रामजी ! ज्ञानवान पुरुषकों संसारके राग दोष बेधी नांही शकते॥जेसें जिस पुरुषनें कवच पेहेन्या होय तिसकों बान बेधी नही शकतें; उसकों भोगकी इच्छा नही रहती; जब बिषयभोग विद्यमान आय रहे, तब तिनकों बिषयभूत जानकें बुद्धि ग्रहन नही करती; अर्थ जानकर बाहिर नही निकसती; अंतर आत्मामेंइ स्थित रहती हे; जेसें पतिव्रता स्त्री अपनें अंतःपुरतें बाहिर नही निकसती, तेसें ताकी बुद्धि अंतरतें बाहिर नही निकसती ॥ हे रामजी ! बाहिरतें तो उहवी प्रकृति जन्यकी नांइं दृष्ट आते हे, जो कछु अनिच्छित प्राप्त होते हे, तिसकों भुगतता हुवा दृष्टिमें आता हे; ओर अंतरतें उसकों राग दोष नही फुरता ॥ हे रामजी ! जेता कछु जगतकी उत्पत्ति प्रलयका क्षोभ हे, सो ज्ञानवानकों नष्ट नही कर शकता; जेसें चित्रकी बेलीकों अंधी चलाय नही शक्ती, तेसें उसकों जगतका दुःख चलाय नही शकता ; अरु संसारकी ओरतें जड हो जाता हे ॥ वृच्छकी नांइ गंभीर हो जाता हे, अरु पर्वतकी नांइ स्थिर हो जाता हे, अरु चंद्रमाकी नांइं शीतल हो जाता हे ॥ हे रामजी ! सो आत्मज्ञान करकें अेसें पदकों प्राप्त होता हे, जिसके पायेतें ओर कछु पावने जोग नही रहता; आत्मज्ञानका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारन यह मोक्षोपाय शास्त्र हे, जामें नाना प्रकारके दृष्टांत कहे हे ॥ जो वस्तु अपरिछिन्न होवे, अरु देखनेमें नआइ होइ; तिसका न्याय देखनेमें होवे; तिसकों दृष्टांत कर वि
धि पूर्वक समुझावे उसका नाम दृष्टांत हे ॥ हे रामजी ! यह जगत कार्य कारणतें रहित हे; अरु आत्मा जगतकी अेकता केसें होवे; तातें जो में दृष्टांत कहोंगा, तिसका अेक अं
श अंगीकार करना; सब देशकर अंगीकार नही करना ॥ हे रामजी ! कार्य कारनकी कल्पना मूर्खनें करी हे, तिसकों निषधने निमित में सुपन दृष्टांत कहो हों, सो समुझनेतें तेरा मन
का संशय नष्ट हो जावेगा ॥ दृग अरु दृश्यका भेद मूरखकों भासता हे; तिसकेदूर करनेके अर्थ सुपन दृष्टांत कहोंगा, तिसके विचारने करी मिथ्या विभाग कल्पनाका अभाव होता हे, हे
रामजी ! अैसी कल्पनाका नाश कर्त्ता यह मेरा मोक्ष उपाय शास्त्र हे; जो पुरुष आदितें अंत पर्यंत बिचारेगा सो संस्कारी होवेगा ॥ जो पद पदार्थकों जाननहारा होवे, अरु
दृश्यकों वारंवार बिचारे तब तिसका दृश्य भम नाश पावे, इस शास्त्रके बिचार बिषे अवर किसी तीर्थ, तप, दान आदिककी अपेक्षा नही; जहां स्थान होवे तहां बेठे; जेसा भोजन
यह बिषे होवे तेसा करे ; अरु वारंबार इसका बिचार करे तब अज्ञान नष्ट हो जावे, अरु आत्मपदकी प्राप्ति होवे ॥ हे रामजी ! यह शास्त्र प्रकाशरूप हे ॥ जेसें अंधकार विषे प
दार्थ नही दिखता ॥ अरु दिपकके प्रकाश कर चक्षु सहित दिखता हे; तेसें शास्त्ररूपी दीपक विचाररूपी नेत्र सहित होवे तव आत्मपदकी प्राप्ति होवे ॥ हे रामजी ! आत्मज्ञान
विचार बीना वर अरु शाप करी प्राप्त नही होता; जब बिचार करी दृढ अभ्यास करीये तब प्राप्त हो ता हे; तांते मोक्ष उपाय जो परम पावन शास्त्र, तिसके बिचारतें जगत भम
नष्ट हो जावेगा ॥ जगकों देखते देखतें जगत भाव मिट जावेगा ॥ जेसें सर्पकी मूर्त्ति लिखी होती हे, अरु अबिचार करकें तिसतें भय पाता हे; जब बिचार करी देखीयें
तव सर्प भम मिट जाता हे, सो सर्पका आकार दृष्ट आता हे, परंतु उसका भय मिट जाता हे; तेसें यह जगतभम बिचार कियेतें नष्ट हो जाता हे अरु जन्म मरनका
भय नही रहता ॥ हे रामजी ! जन्म मरनका भयभी वडा दुःख हे, परंतु इस शास्त्रके बिचारतें नष्ट हो जाता हे ॥ जिनहुनें इसका बिचार त्याग्या हे सो माताके गर्भविषे की
ट होवेगे; अरु कष्टते नही छुटेंगे; अरु बिचारवान पुरुष आत्मपदकों प्राप्त होवेगा; अरु जो श्रेष्ठ ज्ञानी हे तिसकों सृष्टि अनंत हे तिसकों अपना रूप भासता हे, कोउ पदार्थ
आत्मातें भिन नही भासता; जेसें जिसकों जलका ज्ञान हुवा हे तिसकों लहरी आवर्त्त सब जलरूपही भासता हे तेसें ज्ञानवानकों सब आत्मरूप भासता हे ॥ अरु इंद्रियहु
के इष्ट अनिष्टकी प्राप्तिमें इच्छा दोष नही करता, सदा अेक रस मनके संकल्पते रहित शांतरूप होता हे ॥ जेसें मंदराचल पर्वतके निकसेतें क्षीर समुद्र शांतिकों प्राप्त भया, तेसें
संकल्प विकल्प रहित यह पुरुष शांतिरूप होता हे॥हे रामजी ! अवर जो तेज होता हे; सो दाहक होता हे परंतु ज्ञानरूपी तेज जिस घट विषे उदय होता हे, सो शीतल शांतिरूप होता हे
बहुरी तिस बिषे संसारका विकार कोउ नही रहता ॥ जेसें कलियुग विषे शिखावारा तारा उदय होता हे, सो कलियुगके अभाव हुवे नही उदय होता; तेसें ज्ञानवानके चित्तमें विकार
उत्पन्न नही होता॥ हे रामजी ! संसार भम आत्माके प्रमाद करी उत्पन्न होता हे, सो आत्मज्ञानके प्राप्त भये यत्न बिना शांत हो जाता हे ॥ फूल पत्र काटणेतेंभी कछु जतन होता
हे; परंतु आत्माके पावनेमें कछु जतन नही होता; काहेतें जो बोधरूपी बोधही करकें जानता हे ॥ हे रामजी ! जो जानने मात्र ज्ञान स्वरूप हे, तिसमें स्थित होनेंका क्या जतन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे; आत्मा शुद्ध अद्वैतरूप हे; अरु जगत भ्रम मात्र हे ॥ जो पूर्व अपर बिचार कियेतें जिसकी सत्यता न पाइयें तिसकों भ्रम मात्र जानियें, अरु पूर्व अपर बिचार कियेतें सत्य होवे तिसका रूप जानिये; सो इस जगतका सत्यता आदि अंत विषे नांही हे, तातें सुपनवत हे; जेसें सुपन आदि अंतमें कछु हे नही, तेसें जाग्रतभी आदि अंतमें नही हे; तातें जाग्रत सुपन दोनो तुल्य हे ॥ हे रामजी ! यह बार्त्ता बालकभी जानता हे; जो आदि अंतमें जिसकी सत्यता न पाइयें, सो सुपनवत हे; जो आदिभी न होवे अरु अंतभी न रहे, तिसकों मध्यमेंभी असत्य जानिये; तिसबिषे दृष्टांत कहे हे ॥ संकल्प पुरीवत, ध्यान नगरकी नांइ, सुपन पुरीकी नांइ, वर श्राप करकें जो उपजता हे तिसकी नांइ, ओषधीतें उपजकी नांइ इस पदारथकी सत्यता न आदि होती हे;न अंतर होती हे अरु मध्यमें जो भासता हे सोभी भ्रम मात्र हे तेसें यह जगत अकारन हे; अरु कार्य कारन भाव संबंधमें भासता हे; तो कार्य कारन जगत भया, अरु आत्मसत्ता अकारन हे; जगत साकार हे, अरु आत्मा निराकार हे ॥ इस जगतका दृष्टांत जो आत्माबिषे देउंगा तिसका तुम अेक अंश ग्रहन करना ॥ जेसें सुपनकी सृष्टि होती हे, तिसका पूर्व अपर भाव आत्मतत्वविषे मिलता हे, काहे तें जो अकारन हे; अरु मध्यभावका दृष्टांत नहीं मिलता, काहेतें जो उपमेय अकारन हे;तो तिसका इस समान दृष्टांत केसें होवे ? तातें अपने बोधके अर्थ दृष्टांतका अेक अंश ग्रहन करना ॥ हे रामजी ! जो बिचारवान पुरुष हे, सो गुरु अरु शास्त्रके श्रवन करकें सुखबोध के अर्थ दृष्टांतका अेक अंश गृहन करते हे ॥ हे रामजी ! तिसकों आत्मतत्वकी प्राप्ति होती हे, काहेतें जो सार ग्राहक होते हे; अरु जो अपने बोधके अर्थ दृष्टांतका अेक अंश गृहन नही करते, अरु वाद करते हें, तिसकों आत्मतत्वकी प्राप्ति नही होती; तातें दृष्टांतका अेक अंश गृहन करना, सर्व भाव करकें दृष्टांतकों नही मिलावना अरु पृथककों देखी करी तर्क नही करना ॥ अेक अंश दृष्टांतका आत्मबोधके निमित्त सारभूत ग्रहन करना ॥ जेसें अंधकारमें पदार्थ पड्या होवे, सो दीपकके प्रकाशसों देख लेना, जो दीपकके साथ प्रयोजन हे; ओर अेसें नही कहना जो दीपक किसका हे, अरु तेल बाती केसा हे, अरु किस स्थानका हे; दीपकका प्रकाशही अंगीकार करना; तेसें अेक अंश दृष्टांतका आत्मबोधके निमित्त अंगीकार करना॥ हे रामजी ! जिस करी वाक् अर्थ सिद्धि होवे, सो बचन लेना, ओर जिसकर वाक्यार्थ सिद्ध न होवे तिसका त्याग करना; जो बचन अनुभवकों प्रगट करे तिसका अंगीकार करना ॥ जो पुरुष अपने बोधके निमितै बचनकों ग्रहन करता हे, सोइ श्रेष्ठ हे; अरु जो वादके निमित्त ग्रहन करता हे सो चोगचुंच हे; उह अर्थकों सिद्ध नही करता; जो कोउ अभिमानकों ले करी कहता हे, सो हस्तिकी नांइ सिरपर माटी डारता हे, तिसका अर्थ सिद्ध नही होता; अरु जो अपने बोधके निमित्त बचनकों ग्रहन करता हे, अरु विचार करी तिसका अभ्यास करता हे, तब उह आत्माशांतिकों पावता हे ॥ हे रामजी! आत्मपद पावने निमित्त अवश्यमेव अभ्यास चहिता हे; जब सम, बिचार, संतोष, अरु संतसमागम करी बोधकी प्राप्ति होवे, तब परम पदकों पावता हे ॥ हे रामजी ! जिसका दृष्टांत कहता हे, सो अेक देश ले करी कहता हे, सर्व मुख कहनेकरी अखंडताका अभाव होय जाता हे; अरु जो सर्व मुख दृष्टांत मुख्यकों जानिये, सो सत्यरूप होता हे, अेसें तो नहीं; आत्मा सत्यरूप हे; कार्य कारनते रहित शुद्ध चैतन्य हे; तिसका जतावने निमित्त कार्य कारन जगत का दृष्टांत केसें दीजियें? यह जगतका जो दृष्टांत कहता हे सो एक अंश लेके कहता हे; अरु बुद्धिमानभी दृष्टांतके अेक अंशकों ग्रहन करते हे ॥ जो श्रेष्ठ पुरुष हे सो अपने बोधके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निमित्त सारकों ग्रहन करते हे, अरु जिज्ञासुकोंभी यही चहिता हे, जो अपने बोधके निमित्त सारकों ग्रहन करे, अरु वाद न करे ॥ जेसें क्षुधार्थीकों चावलपाक आय प्राप्त होवे; तब भोजन करनेका प्रयोजन हे; अरु उसकी उत्पत्ति अरु स्थितिका वाद करना व्यर्थ हे ॥ हे रामजी ! वाक्य सोइ हे जो अनुभवकों प्रगट करे; अरु जो अनुभवकों प्रगट न करे तिसका त्याग करना ॥ जो स्त्रीका वाक्य होवे अरु आत्मअनुभवकों प्रत्यक्ष करे तिसका ग्रहन करना; अरु परमगुरु वेदवाक्य होवे ओर अनुभवकों प्रगट न करे तिसका त्याग करना ॥ जबलग विश्रामकों नहीं पाया, तबलग विचार कर्त्तव्य हे, विश्रामका नाम तूर्यपद हे; जब विश्रामकी प्राप्ति भइ तब अक्षय शांति होती हे ॥ जेसें मंद्राचल पर्वतके क्षोभतें क्षीरसमुद्र शांत रह्या हे तेसें शांति होती हे ॥ हे रामजी ! तूर्यपद संयुक्त पुरुष हे, तिसका श्रुति स्मृति, उक्त कर्मद्रुके करने करी प्रयोजन सिद्धि कछु नही होता; अरु न करने करी कछु प्रतिवाय नही होता; सदेह होवे भावे विदेह होवे, गृहस्थ होवे भावे विरक्त होवे; तिसकों कर्त्तव्य कछु नहीं ॥ उह पुरुष संसार समुद्रतें पारइ द्रुवा हे ॥ हे रामजी ! उपमेयकों उपमा करी जानता हे; सो अेक अंशकों ग्रहन करी जानता हे, तब बोधकी प्राप्ति होती हे, अरु जो बोधतें रहित हे, सो मुक्तिकों प्राप्त नही होता, उह व्यर्थ वाद करता हे ॥ हे रामजी ! शुद्ध स्वरूप आत्मसत्ता जिसके घटविषे विराजमान हे, तिसकों त्याग करी अवर विकल्प उठावता हे सो चोगचुंच हे अरु मूरख हे ॥ हे रामजी ! जो अर्थ प्रत्यक्ष हे, सो प्रमान मानने जोग हे; अवर जो अनुमान, अर्थापत्ति; आदि प्रमान सों तिसकी सत्ता प्रत्यक्ष करी होती हे ॥ जेसें सब नदीका अधिष्टान समुद्र हे, तेसें सब प्रमानद्रुका अधिष्ठान प्रत्यक्ष प्रमान हे; सो प्रत्यक्ष क्या हे, सो श्रवन करद्रु ॥ हे रामजी ! चक्षुरूपी ज्ञान संमत संवेदन हे, तिस चक्षु करकें विद्यमान होता हे, तिसका नाम प्रत्यक्ष प्रमान हे; तिन प्रमानद्रु को विषय करनेहारा जीव हे; अपने वास्तवस्वरूपके अज्ञानकरी अनात्मारूपी दृश्य बनी हे; तिसविषे अहंकृति करकें अभिमान भया हे ॥ अभिमान सब दृश्य हे, तातें हेयोपादेय बुद्धि भइ हे; अरु राग दोष करकें पड्या जलता हे; आपकों कर्त्ता मानी करी बहिर्मुख द्रुवा भटकता हे ॥ हे रामजी ! जब विचार करकें संवेदन अंतर्मुखी होवे, तब आत्मपद प्रत्यक्ष होता हे, अरु निज भावकों प्राप्त होता हे,प्रछंनभाव नही रहता; शुद्ध शांतिकों प्राप्त नही होता ॥ जेसें सुपनेतें जागेतें सुपनका शरीर अरु दृश्य भम नष्ट हो जाता हे; तेसें आत्मा के प्रत्यक्ष द्रुवेतें सब भम मिट जाता हे; अरु शुद्ध आत्मसत्ता भासती हे ॥ हे रामजी ! यह जो दृश्य अरु दृष्टा हे, सो मिथ्या हे; जो दृष्टा हे सो दृश्य होता हे,अरु जो दृश्य हे सो दृष्टा होता हे, सो यह भम मिथ्या आकाश रूप हे ॥ जेसें पवनमें स्पंद शक्ति रहती हे, तेसें आत्मामें संवेदन रहती हे, जब संवेदन स्पंदरूप होती हे, तब दृश्य रूप होयकें स्थित होती हे ॥ जेसें सुपनेमें अनुभव सत्ता दृश्यरूप होयके स्थित होती हे, तेसें यह दृश्य हे; तातें सब आत्मसत्ता हे; अेसें बिचार करी आत्मपदकों प्राप्त होवद्रु ॥ अरु जो अेसें बिचार करकें आत्म पदकों प्राप्त न होयसको, तब अहंकार जो उल्लेख फुरता हे तिसका अभाव करो; पाछें जो शेष रहेगा सो शुद्ध बोध आत्म सत्ता हे ॥ जब शुद्ध बोधकों तुम प्राप्त होद्रुगे, तब अेसें चेष्टा पडी होवेगी ॥ जेसें जंत्रीकी पुतरी संवेदन बिना चेष्टा करती हे, तेसें देहरूपी पूतरीका पालनहारा मनरूपी संवेदन हे तिस बिना पडी रहेगी; परंतु अहंकृतका अभाव होवेगा; तातें जतन करकें तिस पद पावनेका अभ्यास करो, जो नित्य शुद्ध शांतरूप हे ॥ हे रामजी ! अवर दैव शब्दकों त्याग करी अपना पुरुषार्थ करो, अरु आत्मपदकों प्राप्त होद्रु ॥ कोउ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुरुषार्थमें सूरमा हे सो आत्मपदकों प्राप्त होता हे; अरु जो नीच पुरुषार्थका आश्रय करता हे सो संसार समुद्रमें डुबता हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे दृष्टांत प्रमाणं नाम अष्टादशः सर्गः॥ ॥ १८ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जब सतसंग करकें यह पुरुष शुद्ध बुद्धि करे तब आत्मपद पावनेकों समर्थ होवे; प्रथम सत्संग यह हे जिसकी चेष्टा शास्त्रद्रुके अनुसार होवे तिसका संग करे! तिसके गुनद्रुंकों हृदय विषे धरे; बहुरी महा पुरुषद्रुके शम, संतोष आदिक गुनद्रुका आश्रय करे; शम संतोषादिक करी ज्ञान उपजता हे ॥ जेसें मेघद्रुं करी अंन उपजता हे; अरु अंन करी जगत होते हे; अरु जगतद्रुतें मेघ होता हे; तेसें सम संतोषभी हे; शमादिक गुन अरु आत्मज्ञान परस्पर होता हे; शमादिक गुन करी ज्ञान उपजता हे, अरु आत्मज्ञान करी शमादिक गुन आयस्थित होते हे ॥ जेसें बडे ताल करी मेघ पुष्ट होता हे; अरु मेघकर ताल पुष्ट होता हे॥ तेसें शमादिक गुन करी आत्मज्ञान होता हे, अरु आत्मज्ञानतें शमादि गुन पुष्ट होते हे; अेसें विचार करकें शम संतोषादिक गुनोका अभ्यास करद्रु, तब शीघ्रही आत्मतत्वकों प्राप्त होवेगा ॥ हे रामजी ! ज्ञानवान पुरुषकों शमादिक गुन स्वाभाविक आय प्राप्त होते हे; अरु जिज्ञासिकों अभ्यास करकें प्राप्त होते हे ॥ अरु जेसें धान्यकी पालना स्त्री करती हे, उंचे शब्द करती हे, जिस करी पंछीद्रुकों उडावती हे; जब इसप्रकार पालना करती हे, तब फलकों पावती हे; तिसतें पुष्ट होती हे; तेसें शम संतोषादिकके पालने करी आत्मतत्वकी प्राप्ति होती हे ॥ हे रामजी ! इस मोक्ष उपाय शास्त्रकों आदितें ले करी अंत पर्यंत बिचारे, तब भांति निवृत्त होवे ॥ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सर्व पुरुषार्थ कर सिद्ध होते हे; परंतु यह मोक्ष उपाय शास्त्रका परम कारन हे; जो शुद्ध बुद्धिवान पुरुष इसकों बिचरेगा, तिसकों शीघ्रही आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी, तातें इस मोक्ष उपाय शास्त्रका भली प्रकार अभ्यास करो ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणे आत्मप्राप्ति वर्णनं नाम अेकोन विंशतिमः सर्गः ॥ १९ ॥

॥ समाप्तोऽयं योगवासिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणं द्वितीयं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुक्रमणिका.

सर्गांक	सर्गनाम	पृष्ठांक	सर्गांक	सर्गनाम	पृष्ठांक	सर्गांक	सर्गनाम	पृष्ठांक
१	शुक निर्वाण वर्णनं	१	७	पुरुषार्थोपमा वर्णन	४	१४	विचार निरूपण	११
२	विश्वामित्रोपदेश वर्णन	१	८	परम पुरुषार्थ वर्णन	५	१५	संतोष निरूपण	१२
३	असंख्यसृष्टि प्रतिपादन	१	९	परम पुरुषार्थ वर्णन	५	१६	साधुसंग निरूपण	१३
४	पुरुषार्थोप क्रम	२	१०	वसिष्टोपदेशागमन	६	१७	षट्प्रकरण विवरण	१४
५	पुरुषार्थ वर्णन	२	११	वसिष्ठोपदेश वर्णन	७	१८	दृष्टांत प्रमाण वर्णन	१५
६	परम पुरुषार्थ वर्णन	३	१२	तत्वज्ञ महात्म्यवर्णन	८	१९	आत्मप्राप्ति वर्णन	१७
			१३	समनिरूण	१३			

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ इति श्रीयोगवासिष्ठे मुमुक्षु प्रकरणं द्वितीयं समाप्तं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री १०८ ईश्वर मठ
पुस्तकालय,
मुमुक्षु भवन, अस्सी, काशी.

॥ अथ श्रीयोगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणं तृतीयं प्रारभ्यते ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ ओनमः ॥ अथउत्पत्तिप्रकरणंतृतीयं ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! ब्रह्म अरु ब्रह्मवेत्ता, इह सब शब्दब्रह्मसत्ताके आश्रयतेस्फुरतेहे में अरु तुं ॥ इदं सः इत्यादिक सर्व शब्द आत्म सत्ताके आश्रयतें स्फुरतेहैं ॥ जैसें सुपने विषे शब्द होते हैं ॥ सो सब अनुभव सत्ता विषे होते हैं ॥ तेसें इहभी जान॥ अरु और जो तिसविषे विकल्प होते हैं ॥ जो जगत क्याहैं ॥ अरु केसें उतपति हुआहैं अरु किसका हैं इत्यादिक जो विकल्प हैं सो चोगचंचु हे ॥ हेरामजी! इह सब जगत ब्रह्मरूप हैं ! इहां सुपनका दृष्टांत विचार लेना ॥ प्रथम मुमुक्षु प्रकरण में तुजकों कहा हैं॥ अब उतपति प्रकरण कहता हों केसी उत्पत्ति हे सो श्रवण कर॥ जो ज्ञान हैं जो वस्तु हे जो सुभाव हे जो क्रम हे॥ हे रामजी! बढताभी उहि पदारथ हे जो उपजा होता हे अरु घटताभी उहि हे जो उपजा होता हे अरु बंध अरु मोक्षभी उहि होता हे ॥ उत्तमभी उही होता हे नीचभी उहि हे ॥ जो उपजा होता हे अरु जो उपजा न होवेगा तिसका न बढना हे, न घटना हे, न बंध होना हे, न मोक्ष होना हैं, न उत्तम होना हे न नीच होना हे॥ हे रामजी ! स्थावर जंगम जो कछु जगत दिखता हैं सो सब आकाशरूप हे ॥ दृष्टाका जो दृश्यसाथ संजोग हे इसीका नाम बंधन हे तिस संजोगका निवृत्त होना इसीका नाम मोक्ष हे ॥ सो तिस निवृत्तिका उपाय में कहता हों ॥ देहरूपी जो जगत हे सो चिन्मात्ररूप हैं और कछु उपजा नहि अरु जो उपजा भासता हे सो एसे हैं ॥ जेसे सुषुप्तिमें सुपना होता हैं तेसें जगतकी उत्पत्ति होतिहे जेसें सुपने में सुषुप्ति होति हे तेसें जगतका प्रलय होताहे ॥ जो प्रलय विषे शेष रहता हे तिसकी संज्ञा व्यवहारके निमित्त इह रखता हे॥ नित्य सत्य ब्रह्म आत्मा सच्चिदानंद इत्यादिक जिसके नाम राखे हैं सो सभका अपना आपरूप हैं ॥ चैतनता करिकैं तिसका नाम जीव हुआ हे अरु शब्द अर्थोंकों ग्रहन करने लगा हे ॥ हे रामजी ! शब्द अर्थोंकों जो ग्रहन करता हे सो जीव हे अरु, चैतन विषे जो स्पंदता हुइ हे सो संकल्प विकल्प रूपी मन होकरि स्थित हुवा हे ॥ तिसके संसरने करिकें देश काल नदियां परवत स्थावर जंगम रूप जगत हुआ हे ॥ जैसें सुषुप्ति तें सुपना होवे तेसे जगत हुआ हे ॥ तिसकों कोउ अविद्या कहते हैं॥ केइ जगत कहते हैं, केइ माया कहते हैं, केइ संकल्प कहते हैं, केइ दृश्य कहते हैं अरु वास्तवतें सब ब्रह्मस्वरूप हे इतर कछु नहिं ॥ जैसें स्वर्णतें भूषन होता हे सो भूषन स्वर्नरूप हे स्वर्नतें इतर भूषन कछु वस्तु नहिं ॥ तेसें जगत अरु ब्रह्मविषे कछु भेद नहिं अरु भेद तब होवे जो कछु जग उपजा होवे ॥ जो उपजाहि न होवे तब भेद केसें भासे ? अरु जो भेद भासता हे सो मृग तृष्णाके जलवत् हैं॥ जेसें मृग तृष्णाकी नदी के तरंग भासते हैं तहां सूर्यकी किरनांहि जलकी नांइ भासतीयां हे जलका नामभी नहिं तेसें आत्मा विषे जगत भासता हे॥ चैतनके अणुअणु प्रति सृष्टियां हे अरु केसीयां हे जो आभास रूप हे ॥ कछ उपजीयां नाहिं सर्वदा अद्वैत सत्ता अपने आप विषे स्थित ह ॥ तिसविषे जनम मरन अरु बंध मुक्त केसे होवे ? जेति कछु कलपना बंध मुक्त आदिक भासति हे सो वास्तविक कछु नहिं ॥ आत्माके अज्ञान करिकै भासती हे॥ हे रामजी ! और जगत कोउ नहिं ऊपजा अपनी कल्पनाइ जगत रूप होइ करि भासति हे ॥ अरु प्रमाद करिके सत होइ रहि हे निवृत्त होना कठिन हो रहा हे अनियत नियत शब्द जो कहे हे सो भाव्यर्थ हे ॥एसें वचनों करि तो जगत दूर नहिं होता॥ हे रामजी! जुक्त अर्थ बचनों बिना दृश्य भ्रम निवृत्त नहि होता ॥ जो तर्कों करिकें तप तीर्थदान स्नान ध्यानादिक करिकें जगत भ्रमकों निवृत्त कीया चाहते हैं सो मूर्ख है ॥ इस प्रकारतें तो दृढ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होता हे॥ जहां जावेगा तहां इसकों देश काल क्रिया नित पंचभूतक सृष्टिहि दृष्ट आवेगी और कछु दृष्ट न आवगा ॥ तातें इसका नाश न होवेगा अरु जो जगततें उपरांत होइ करि स
माध लगाइ बैठेगा तबभी चिरकालतें उतरेगा॥ बहुरी जगतके शब्द अरु अर्थ इसकों भास आवेगा॥ जो बहुरी अनर्थरूप संसार भास्या तौ समाधिका क्या सुख हुआ? जब लग समाधि
विषे रहेगा तबलग सुख रहेगा तातें इनों उपायो करिकें जगत निवृत्त नहिं होता॥ जेसें कमल डोडे विषे बीज होताहे ॥ जबलग उस बीजका नाश नहि होता ॥ तबलग बहुरी उत्पन्न
होता हे॥ जो वृच्छके पात तोडियें तौभी बीजका नाश नहि होता तेसें तप दानादिकों करि जगत नहि निवृत्त होता॥ तबलग अज्ञानरूपी बीज नष्ट नहि होता॥ जब अज्ञान रूपी बीज न
ष्ट होवेगा तब जगत रूपी वृच्छका अभाव हो जावेगा ओर जो उपाय हें सो पतोंका तोडना हें अरु और उपायों करि अक्षय पद नहि प्राप्त होता॥ अरु अक्षय समाधि नहि प्राप्त हो
ती॥ हे रामजी! ऐसी समाधि तो किसीकों प्राप्त होत नांही जो शिलाकी नाईं हो जावे॥ मै सभ स्थान देख रह्या हों अरु जो अेसेंभी होवे तौभी संसार सत्ता निवृत्त न होवेगी॥ काहेतें
जो अज्ञानरूपी बीज निवृत्त नहिभया॥ इह समाधि एसी हें जेसें जाग्रततें सुपना होता हे अरु अज्ञानरूपी वासना करि सुषुप्तितें बहुरी जाग्रत आती हें॥ तेसें अज्ञानरूपी वासना करीके
समाधितेंभी जाग आता हें उसकों वासना खेच ले आती हे॥ हे रामजी ! तप समाधि आदिकोंकरी संसार भ्रम निवृत्त नहि होता ॥ जेसें कांजी करिकें क्षुधा किसीकी निवृत्त नहि होति
तेसें तप समाधि करि चित्तकी वृत्ति एकाग्र होति हे परंतु संसार निवृत्त नहि होता॥ जबलग चित्त समाधि विषे लगा हे तबलग सुख होता हे ॥ जब उठ्या तब बहुरी नाना प्रकारके शब्द
अरु अर्थोंसंजुक्त संसार भासता हे॥ हे रामजी! अज्ञान करिके जगत भासता हे अरु विचार कीयेतें निवृत्त होता हे॥ जेसें बालककों अपना अज्ञान करि पछायें विषे वैताल कल्पना होति
हे अरु ज्ञान करिके निवृत्त होति हें तैसें इह जगत अविचार करिकें भासता हें॥ विचारते निवृत्त होता हे॥ हे रामजी! वास्तवतें कछु जगत उपजानहि असतरूप हे जो कछु स्वरूपतें उपजा
होता तब निवृत्त नहि होता॥ तातें विचार करि निवृत्त होता हे॥तातें जानीता हे जो बन्या कछु नहि जो वस्तु सत्य होति है तिसकी निवृत्ति नहि होति,अरु जो असत है सो थिर नहि रहति
हे रामजी! सो सत सरूप आत्मा हे तिसका अभाव कदाचित नहि होता अरु असतरूप जो जगत हे सोस्थिर नहि होता॥ इह जगत आत्मा विषे आभासरूप हें आरंभ अरु प्रणाम करि
कछु उपजा नहिं जहां चैतन्य अनहोता हे तहां सृष्टीभी होति हें काहेतें जो आभासरूप हे आत्मारूप आदर्श हे तिसविषे अनंत सृष्टी प्रति बिंबित होति हे अरु आदर्श विषे प्रतिबिंबभी
तब होता हे जो दूसरा निकट होता हे अरु आत्माके निकट दूसरा कोउ नहि॥ अरु प्रतिबिंब होता हे काहेतें जो आभास रूप हे॥एकहि आत्मसत्ता चैत्यता करिके द्वैतकी नांइ होकरि
भासती हे और कछु बन्या नहि॥ जेसे फुलविषे सुगंधहोति हे, अरु तिलो विषे तेल होता हे अरु अग्निविषे उष्णता होति हे अरु जेसें मनोराजकी सृष्टि होती हे तैसे आत्माविषे जगत हे
जेसें मनोराजतें मनोराजकी सृष्टि भिन नहिं तैसें इह जगत आत्मातें भिन कछु बन्या नहिं॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे बोधहेतु बर्ननं नाम प्रथमःसर्गः॥ ॥ १ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! एक आकाशज आख्यान हे ॥ सो श्रवणका भूषनहे अरु बोधका कारनहे तिसकोंश्रवनकर ॥ आकाशज एक ब्राह्मन होत भया सो केसा
ब्राह्मनहे ? शुद्ध चिदंशतें तिसकी उत्पति भइहे ॥ धर्म निष्ठहे अरु सदाआत्मा स्थित रहताहे अरु भलि प्रकार प्रजाकी पालना करताहे सो चिरंजीवी हे ॥ तब मृत्युदेवता विचार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करतभया जो मैं अविनाशी हौं ॥ अरु जीव जो उपजतहै तिसको मै मारताहौं ॥ परंतु इह जो ब्राह्मनहै ॥ तिनकों मैं नहिं भोजन करि सकता ॥ मेरी शक्ति इस ब्राह्मनपरि कुंठित होगइ हे॥ जैसे खड्गकी धारा पथ्थरपर चलाइ कुंठित होयजातिहै ॥ हे रामजी ! एसें विचार करिकैं मृत्यु ब्राह्मनकों भोजन करनेके निमित्त उठ्या ॥ जेसें श्रेष्ठ पुरुष अपने आचार कर्मकों नहि त्याग करतें ॥ तैसे मृत्यु अपने कर्मोंकों बिचार करि चल्या॥ जब ब्राह्मनके गृहविषे मृत्यु प्रवेश कीया ॥ तब इसकों अग्नि जलावनेकों उडत भइ॥ जेसें प्रलय काल विषे महातेज संयुक्त अग्नि सर्वपदार्थोंकूं जलावने लगतिहै तेसें ॥ तब मृत्यु दौडकें आगें गया ॥ जहां ब्राह्मन बेठाथा अंतःपुर विषे जाइकरि पकडने लगा ॥ परंतु ब्राह्मनकों पकडि न सकें ॥ जेसें बडा बलवान पुरुषभी ओरके संकल्परूप पुरुषकों पकड नहि सकता ॥ तैसें मृत्यु ब्राह्मनकों पकड न सके ॥ तब मृत्यु बहुरी धर्मराजाकें गृहमें आवत भया अरु कहा ॥ हे भगवन् ! जो कोऊ उपजाहे ॥ तिसकों मैं भोजन करताहौं ॥ परंतु एक ब्राह्मन जो आकाशतें उपजाहे ॥ तिसकों मैं वश नहि कर शकता इह क्या कारनहै ? ॥ ॥ यमउवाच ॥ हे मृत्यु ! तुं किसीकों नहि मार शकता ॥ जो कोंउ मरताहे ॥ सो अपने कर्मों करि मरताहैं ॥ जो कोउ कर्मोंका कर्ताहे ॥ तिसके मारनेकों तुं समर्थ होवेगा ॥ अरु जिसका कर्म कोउ नहि ॥ तिसके मारनेकों समर्थ न होवेगा ॥ तातें जाइकरि ब्राह्मनके कर्म खोजो ॥ जब कर्मपावेगा तब उसकों मारनेको समर्थ होवेगा ॥ अन्यथा समर्थ न होवेगा ॥ हे रामजी ! जब इस प्रकार जमनें कहा ॥ तब कर्म खोजनेके निमित्त मृत्यु चल्या ॥ कर्म नाम हे वासनाका ॥ उहां जाइकें ब्राह्मनके कर्मों कों ढुंढणे लागा ॥ दशोंदिशा देखीयां ॥ ताल समुद्र बगीचे देखे द्वीपतें द्वीपांतर देखे ॥ इत्यादिक सब स्थान देखते फिरे॥ परंतु ब्राह्मनके कर्मोंकी प्रतिमा कहुं न पाइ ॥ हे रामजी ! मृत्यु बडा बलवंतहे ॥ परंतु ब्राह्मनके कर्मोंकों न पाया ॥ तब मृत्यु बहुरी धर्मराज पास गया ॥ कैसा धर्मराज हे ॥ जो संपूर्न संशयोंका नाश कर्ताहै॥ अरु सदा ज्ञानस्वरूप हें ॥ तिसकों मृत्यु कहत भया ॥ हे संशयोंके नाशकर्ता ! ब्राह्मनके कर्म मुजकों कहुं नहिं दृष्ट आवते ॥ बहुत प्रकार ढुंढ रहाहौं जो शरीरधारी है ॥ सो सब कर्म संयुक्तहे॥ इसका जो कर्म कोउ नहिहे सो क्या कारनहें ? ॥ यमउवाच ॥ हे मृत्यु इस ब्राह्मनकी उत्पत्ति शुद्ध चिदाकाशतें हुइहे ॥ तहां न कोउ कारण था ॥ जो पदार्थ कारन बिनाहे ॥ सो जिस विषे भास्याहे ॥ सो ईश्वररूप हें ॥ हे मृत्यु शुद्ध आकाशतें जो इसका होना हुआहें ॥ तो इहभी उहि रूपहे ॥ इह ब्राह्मनभी शुद्ध चिदाकाशरूप हे ॥ अरु इसका चेतनहि वपुहे ॥ इसका कर्म कोउ नहिं ॥ न कोउ कर्म कीया हे॥ शुद्ध चिदाकाश इसका स्वरूपहें॥ आपने स्वरूपतें आपहि इसका होना हुवाहें ॥ इस कारनतें इसका नाम स्वयंभू हें ॥ अरु सदा अपने आपविषें स्थितहे ॥ इसकों जगत और कछु नहि भासता ॥ सदा अद्वैत रूपहे ॥ ॥ मृत्युरुवाच ॥ हे भगवन् जो इह आकाशस्वरुप हे ॥ तौ साकार रूप क्यौं दृष्ट आताहे ॥ ॥ यमउवाच ॥ हे मृत्यु इह सदा निराकार चैतन्य वपुहे ॥ इसके साथ आकार कोउ नहि॥ अरु अहंभावभि कोउ इसके साथनहि तातें नाश इसका केसे होवे ? अहं त्वं कोउ जानताहि नहिं ॥ जगतका निश्चयभी इसके विषे कोउ नहिं ॥ इह ब्राह्मन अचेत चिन्मात्रहे ॥ जिसके मनविषे पदार्थोंका सद्भाव होताहें॥ तिसका नाशभी होताहे ॥ जिसकों जगत भासताहि नहिं॥ तिसका नाश केसें होवे ? हे मृत्यु! जो बडा बलिभी कोउ होवे॥ अरु जंजीरसैभी होवे तौभी आकाशकों बांध न सकेगा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तैसें ब्राह्मन आकाशरूप हे ॥ इसका नाश केसें होवे ॥ तातें इसके नाश करनेका उद्यम त्याग करु॥ और देहधारियोंकों जाइ मारो; इह तुमसों न मरेगा॥ हे रामजी ! एसें सुनकर मृत्यु आश्चर्यवत् होकरि अपने गृहविषे आया ॥ ॥ रामउवाच ॥ हे भगवन् ! इह तो हमारे बडे पितामह ब्रह्माकी वार्ता तुमने कहिहे ॥ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे रामजी ! वार्ता तो ब्रह्माकी कही हे ॥ परंतु मृत्यु अरु जमके विवाद निमित्त में तुजकों श्रवन कराइ हे ॥ इस प्रकार जब बहुत काल वितीत हुआ ॥ अरु कल्पका अंत पात हूवा तब मृत्यु सर्व भूतोंकों भोजन करि लाया ॥ बहुरी ब्रह्माकों भोजन करनेकों गया ॥ जैसे किसीका कर्म होताहे ॥ अरु एक वार सिद्ध न भया ॥ तौ छोड नहि देता॥ बहुरी उद्यम करता हे ॥ तेसे मृत्युभी ब्रह्माके सन्मुख गया ॥ तब धर्मराजनें कहा ॥ हे मृत्यु ! इह जो ब्रह्माहै ॥ सो आकाशरूप हे ॥ अरु आकाशहि इसका शरीर हे ॥ तौ आकाशके पकडनेकों तूं कैसें समर्थ होवेगा? ॥ इह तो पंचभूतके शरीरतें रहित हे ॥ जेसे संकल्प पुरुष होताहे ॥ तौ उसका आकाशहि वपु होताहे ॥ तेसें इह आकाशरूप हे ॥ अरु आदि अंत मध्यतें रहितहे ॥ अहं त्वंके उल्लेखते रहितहे ॥ अचेत चिन्मात्रहे इसके मारनेकों तूं केसें समर्थ होवेगा अरु इह जो इसका वपु भासता हे सो एसे हे जैसें शिल्पीके मन बिषे थंभकी पूतलि होतीहे ॥ सो कछु हुइ नहिहे ॥ तेसें स्वरूपतें इतर इसका होना नहि ॥ इह तो ब्रह्म स्वरूपहे ॥ हमारें तुमारे मन विषे इसकी प्रतिमा हूइहे ॥ इह तो निर्वपुहे ॥ जो पुरुष देहवंत होताहै ॥ तिसकों यहन करना सुगम होंताहे ॥ अरु वंध्या पुत्रके यहनकों श्रम होताहे ॥ काहेतें जो निर्वपुहे ॥ तेसें इहभी निर्वपु हे इसकों मारनेकी कल्पनाकों त्याग और देहधारीयोंकों जाइ मार ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठेउत्पत्तिप्रकरणेप्रथमसृष्टिवर्ननंनामद्वितीयःसर्गः ॥ ॥ २ ॥ ॥ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे रामजी ! इस प्रकार मृत्युकों यमनें कह्या ॥ ब्रह्माजी आकाश रूपहे अरु द्वैत कलपना तें रहितहे ॥ हे रामजी ! शुद्ध चिन्मात्र सत्ता सूक्ष्महे॥ जिस विषे आकाशभी पर्वतकी नांइ स्थूलहें ॥ तिस चित विषे जो अहं अस्मि चैत्योन्मुखत्व हुवाहे तिसकरि आपने साथ देहकों देखत भया ॥ सो देहभी आकाशरूप है ॥ हे रामजी ! शुद्धचिन्मात्र बिषे चैत्यका उल्लेख किसी कारनकरिकें नहि हुवा ॥ स्वतःस्वभावही एसे उल्लेख आय फुर्यहिं ॥ तिसका नाम स्वयंभू ब्रह्मा हुआहे॥ तिस ब्रह्माकों सदा ब्रह्महिका निश्चयहे ॥ ब्रह्मा अरु ब्रह्मविषे भेद कछु नहि ॥ जेसे समुद्र अरु तरंग विषे भेद कछु नहि ॥ जेसें आकाश अरु शून्यता विषे भेद कछु नहि ॥ फूल अरु गंध विषे भेद नहि ॥ तेसें ब्रह्मा अरु ब्रह्म विषे भेद नहि ॥ जेसें जल द्रवता करिके तरंग रूप होकरि भास ताहे ॥ तेसें आत्मसत्ता चैतन्यता करिकें ब्रह्मा होकरिकें भासतीहे ॥ ब्रह्मा दुसरी वस्तु कछु नहि ॥ सदा चैतन्य आकाशहें॥ पृथिविआदिक तत्वोंतें रहितहे॥ हे रामजी ! न कोउ इसका कार, नहे ॥ न कोउ कर्महे ॥ ॥ रामउवाच ॥ हे भगवन् तुम कहा जो पृथीवीआदि तत्वोंतें रहित ब्रह्माजीका वपु हे॥ अरु संकल्प मात्र हे॥ तो स्मृतिका संस्कार इसका कारन क्यों न होवे? जेसे हमकों स्मृतिहे ॥ और जीवोंकों स्मृतिहें ॥ तेसें ब्रह्माकीभीहोवे ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी संस्कार स्मृति उसीका कारन होतीहै ॥ जो आगेंभी देहवान होताहें ॥ जो पदार्थ आगे देख्या होताहें तिसकी स्मृति संस्कारतेभी होतिहे ॥ अरु जो देख्या नहि होता ॥ तिसकी स्मृति संस्कारतेंभी नहि होती ॥ सो ब्रह्माजी अद्वैतहे ॥ अज हे ॥ आदि मध्य अंत्यतें र हितहे ॥ इसकी स्मृति कारन केसें होवे इह तो शुद्ध बोधरूप हे ॥ सो आत्मतत्व ब्रह्मारूप होय करिस्थित हुआहे ॥ अपने आपतें जो इसका होना हुआहे ॥ इसीतें इसीका नाम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वयंभू हे शुद्ध बोध विषे चैत्य उल्लेख हुआहे ॥ अर्थ इह जोचित्त चैतन्य स्वरूपको नाम हे॥ अपना चित्त संवित कारन होवे ॥ और दुसरा इसका कारन कोउ नहि ॥ सदा निराकार हे ॥ अरु संकल्परूप इसका शरीरहे ॥ और पृथ्वी आदिक भूततें शुद्ध अंतवाहक इसका वपु हे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर ! जेते कछु जीव हे तिनकों दो दो शरी र हे ॥ एक अंतवाहक शरीर हे दूसरा आधिभौतिक शरीर हें ॥ सो ब्रह्माका एकहि अंतवाहक शरीर केसेंहे ? ॥ यह वार्तास्पष्ट करि कहो॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जो सकारनरूप जीवहें ॥ तिनके दो दो शरीरहे ॥ अरु ब्रह्माजी अकारनहें ॥ इस कारनतें उसका एक अंतवाहकहि शरीरहें ॥ हे रामजी ! सुनो, जीवोंका कारन ब्रह्माहे ॥ इस कारनतें इह जीव दोनों देहोंकों धरतेहें ॥ अरु ब्रह्माजीका कारन कोउ नहि आपने आपतें उपजाहे ॥ इसका नाम स्वयंभू हे ॥ अरु आदि जो इनका प्रादुर्भाव हुआहे ॥ सो अंतवाहक शरीरहे ॥ अपने स्वरूपका विस्मरन नहि भया सदा अपने वास्तव स्वरूप विषे स्थितहे ॥ ताने अंतवाहक हे ॥ अरु दृश्यकों अपने संकल्प मात्र जानतें हे ॥ अरु जिनकों दृश्य विषे दृढ प्रतीति हुइहे ॥ तिनकों अधिभूत कहताहे ॥ जेसें जडता करिकें जलका बरफ होताहे तेसे दृश्यकी दृढता करिकें आधिभौतिक होतेहे॥ हे रामजी ! जेता कछु जगत तुजकों दृष्ट आताहे ॥ सो सब आकाशरूप हे ॥ किसी पृथ्वी आदिक भूतोतें नहि हुआ भ्रम करिकें अधिभूतक भासतें हें ॥ जेसें सुपन नगर आकाशरूप होताहें ॥ किसी कारनसों नहि उपजा न किसी पृथ्वी आदिक तत्वौतें उपजाहे ॥ सब आकाशरूप हे॥ अरु निद्रा दोष करीकें आधिभौतिक होय करि भासताहे॥ तेसें इह जाग्रत जगतभी अज्ञान करिकें आधिभौतिक आ काश भासता हे ॥ जेसें सुपना अज्ञान करिकें अर्थाकार भासता हे ॥ तैसें जगत अज्ञान कर अर्थाकार भासताहे ॥ हें रामजी! इह संपूर्न जगत संकल्प मात्रहें ओर कछु वन्या नहि ॥ जेसें मनोराजके पर्वत आकाशरूप होते हें ॥ तेसें इह जगत आकाशरूपहे ॥ वास्तव कछु वन्या नहि सब संकल्पके पुरुषहे ॥ सब जगत मनतें उपजा हें ॥ जेसें बीजतें देश काल करिकें अंकुर निकसता हें ॥ तेसें सब दृश्य मनतें उपजताहे ॥ सो मनरूपी ब्रह्माहे॥ अरु ब्रह्मादि मनरूप हें ॥ तिसके संकल्पविषे संपूर्न जगत स्थित हे ॥ सो सब आकाशरूप हें ॥ आ धि भौतिक कोऊ नहि ॥ हें रामजी आधिभौतिक जो आत्माविषे भासता हे सो भांतिमात्र हें॥ जेसें बालककों परछैंयामें वैताल भासताहें॥ तेंसें अज्ञानिकों आधिभौतिक भासते हे ॥ सो भांति मात्रहे ॥ वास्तव कछुनहि ॥ हे रामजी जेते कछु जीव हे ॥ सो सभहि अंतवाहक हे ॥ परंतु अज्ञानिकों अंतवाहकता निवृत्त हो गइहे अरु आधि भौतिकता दृढ हो गइ हे॥अरु जो ज्ञानवान पुरुष हे ॥ सो अंतवाहकरूप हे॥ हे रामजी! जिनों पुरुषोंकों प्रमाद नहि हूआ॥ सो सदा आत्माविषे स्थित हे॥ अंतवाहक रूपहें॥ अरु सब जगत आकाश रूपहे॥ जेसें संकल्प पुरुष होताहें, जेसें गंधर्व नगर होताहें ॥ जैसें सुपनपुर होताहें ॥ तेसे इह जगत हें जेसें थंभेविषे पुतलियां शिल्पी कल्पताहें ॥ जो एती पूतलीयां थंभ विषे हें ॥ सो पुत लियां उपजी कछु नहि ॥ ज्योंका त्यों थंभा स्थित हें ॥ पुतलिका सद्भाव सिल्पीके मनविषे होताहें तेसें सब विश्व मनविषे स्थितहें ॥ स्वरूपतें कछु बनी नहि ॥ दृश्यहि मनरूप हें अ रु मन दृश्यरूप हें ॥ जेसें तरंग हि जलरूप हें जलहि तरंगरूप हें ॥ हें रामजी जबलग मनका सद्भावहें ॥ तब लग दृश्यहे दृश्यका बीज मन हें ॥ जेसें कमलडोडेक सद्भाव उसके बी जविषे होताहें ॥ तिसकरि कमलडोडेकी उत्पत्ति होति हें ॥ तेसें जगतका बीज मन हें ॥ सब जगत मनतें उत्पन्न होताहे ॥ हेरामजी जब तुजको सुपना आताहे ॥ तब तेराहि चित्त दृ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्यकों चेतता जाताहे ॥ औरतो हूवा कारन कोउ नहिं ॥ तेसें इह जगतभी जानना इह तेरे अनुभवकीवार्ता कहि हें ॥ काहेतें जो नित तुजकों अनुभव होताहे॥ हे रामजी ! मनहि जग
तका कारनहें और कोउ नहिं ॥ जब मन उपसम होवेगा ॥ तबदृश्यभ्रम मिट जावेगा ॥ जबलग मन उपशम नहि होता तबलग दृश्य भ्रम निवृत्त नहि होता ॥ अरु जब लग दृश्य नि
वृत्त नहि होता तबलग शुद्ध बोध नहि होता ॥ जबलग शुद्ध बोध नहि होता॥ तबलग आत्मानंद नहि होता॥ ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठेउत्पत्तिप्रकरणे बोधहेतुवर्ननंनामतृतीयःसर्गः ॥ ॥३॥

॥ वाल्मीकउवाच ॥ इस प्रकार मुनि शार्दूल वसिष्ठजी कहिकरि तूष्णी भये ॥ अरु सर्व श्रोता वसिष्ठजीके वचनोकों श्रवन करिकें तिनके अर्थ विषे स्थितभये ॥ इंद्रियोंकी च
पलताकों त्याग करि वृत्तिकों स्थित करते भये ॥ अरु तरंगोके घुघर छिनकते थे सो स्थिर हो गए ॥ पिंजरो विषे जो तोने थे सोभी सुनकरी तूष्णी हो गए ॥ अरु ललना जो चपल
थीयां सो तिस काल विषे अपनी चपलताकों त्याग करत भइयां ॥ अरु बनके जो पशुपंछी निकटथे सोभी सुनकरि तूष्णी भये ॥ मध्यानका समय हुआ ॥ तब राजाकों बडे भृ
त्योनें आय कहा ॥ हे राजन ! अब स्नान संध्याका समय हुआ हे ॥ उठकरि स्नान संध्या करो ॥ जब इस प्रकार बडे भृत्योनें कहा तब वसिष्ठजी बोले ॥ हे राजन् ! अब जो कछु क
हना था सो कहि रहे हें॥ काल कछु बहुरी कहेगे ॥ तब राजाने कह्या ॥ अस्तु एसेहि होवे ॥ तब राजा उठि करि अर्घ्यपादनैवेद करि वसिष्टजीका पूजन करत भये ॥ और जो ब्रह्म
र्षीथे तीनकी जथाजोग्य पूजा करि ॥ तब वसिष्ठजी उठ खडे हुए ॥ परस्पर आपसमें नमस्कार कीये ॥ अरु अपने स्थानोकों चले ॥ आकाशचारी आकाशकों गये ॥ पृथ्वीपर रहने
वारे ब्रह्मर्षि राजर्षि पृथ्वीपर गये ॥ पातालवासी पातालकों गये ॥ अरु सूरज भगवान दिनरातकी कल्पनाकों त्यागकरि स्थिर हो रहे हे अरु मंदमंद पवन चल्या सुगंध सहित मानो
पवनभी कृतार्थ होने आया हे ॥ तब सूर्य अस्त हुआ ॥ और ठौरकों प्रकाशने लागे ॥ काहेतें जो संतजन सब ठौरकों प्रकाशते हें ॥ अरु रात्र हुइ तारागन प्रगट होआए ॥ बहुरी
अमृतरूपी किरनकों धारे हुए चंद्रमा आय उदे हुआ ॥ अंधकारका अभाव हो गया ॥ अरु राजाका द्वारभी चंद्रमाकी किरन साथ शीतल होय रहा ॥ मानों वसिष्ठजीके वचनोंकों
सुनकरि इनकी तप्तता मिटि गइ हे अरु सब श्रोता विचारपूर्वक रात्रकों व्यतीत करत भये ॥ जब सूरजकी किरन निकसी ॥ तब अंधकार नष्ट हो गया ॥ जेसे संतोके वचनों करि अ
ज्ञानिके रिदेका तम नष्ट होता हे ॥ तेसे अंधकार नष्ट हो गया अरु सब जगतकी क्रिया प्रगट हो आइ ॥ तब सूर्यकी किरन साथ सब श्रोता स्नान संध्याकों करिकें आयस्थित भये
खेचर भूचर पातालके वासी सब अपने अपने स्थानो विषे आय बेठे ॥ परस्पर नमस्कार कीये ॥ तब पूर्वके प्रसंगकों पायकरि बोलत भये ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् एसा जो म
न हे संसार रूपी दुःखोकी मंजरी जिसतें बढति हे ॥ तिस मनका रूप मुझकों कहो जो क्याहे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस मनका रूप कछु देखने विषे नहि आता ॥ इह म
न नाममात्र हे ॥ वास्तवरूप इसका कछु नहि ॥ आकाशकी नांइं शून्य हे ॥ जेसें आकाश शून्यरूप हे ॥ तेसें मन शून्यरूप हे ॥ हे रामजी ! मन आत्मा विषे कछु नहि उपजा ॥ जे
सें सूर्यविषे तेज होता हे ॥ तेसें आत्माविषे मन हे ॥ जेसें वायु विषे स्पंद हे ॥ जेसें जलविषे तरंग हे ॥ जेसें सुवर्नविषे भूषन हे ॥ तेसें आत्माविषे मन हे ॥ जेसें मरीचिका जल हे
जेसें आकाशविषे दुसरा चंद्रमा हे सो वास्तव कछु नहिं ॥ तेसें मन आत्माविषे कछु वास्तव नहि ॥ हे रामजी ! इह आश्चर्य हे जो वास्तवतें कछु उपजा नहीं ॥ अरु आकाशकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नांइं सब घटों विषे वर्तता हे ॥ अरु संपूर्न जगत मन करिकें भासता हे॥ असतरूपी जगत जिसकरिकें भासता हे ॥ तिसका नाम मन हे ॥ हे रामजी! आत्मा शुद्ध अद्वैत हे॥ तिसविषें द्वैत
रूप जगत जिसकरि भासता हें ॥ तिसका नाम मन हें॥ अरु संकल्प विकल्प जो फुरताहें ॥ सो मनका रूपहे ॥ जहां जहां संकल्प फुरता हे ॥ तहां तहां मन हे ॥ जेसें जहां जहां तरंग फुरतें हें॥
तहां तहां जलहें ॥ तेसें जहां जहां संकल्प फुरताहे ॥ तहां तहां मन हे ॥ औरभी मनके नाम हे ॥ स्मृति कहिये, अविद्या कहिये, मलीनता कहिये, तम कहिये, सब इसके नाम हे ॥ ज्ञानवा
न पुरुष जानते हे ॥ हे रामजी! जेतो कछु जगत जाल भासती हे ॥ सो सब मनतें उत्पन्न हुइ हे ॥ अरु सब दृश्यमनरूपहे ॥ काहेतें जो मनका रचा हुआहे ॥ वास्तव कछु नहिं ॥
हे रामजी! मनरूपी जो देहहे ॥ तिसका नाम अंतवाहक शरीर हे ॥ सो संकल्परूपहे ॥ अरु सब जीवोंका आदि वपु हे ॥ तिस संकल्पविषे जो दृढ आभास हुआहे ॥ तिस करि आ
धिभौतिक भासने लागा हे ॥ अरु आदि स्वरूपका प्रमाद हुआ हे ॥ हे रामजी! इह जगत सब संकल्प रूपहे ॥ स्वरूपके प्रमाद करिकें पिंडाकार भासताहे ॥ जेसें सुपन देहका आ
कार आकाशरूपहें ॥ पृथ्वीआदि तत्वोंका अभाव होताहे ॥ परंतु अज्ञान करिकें आधिभौतिकता भासतहे सो मनहिका संसरनाहें ॥ तेसें इह जगतहे ॥ सब मनके फुरणे करि भास
ताहे ॥ हे रामजी! जहां मन हे तहां दृश्य हे ॥ जहां दृश्य हे तहां मन हे ॥ जब मन नष्ट होवे तब दृश्यभी नष्ट होवे ॥ शुद्ध बोधमात्रविषे जो दृश्य भासताहे सोइ मन हे ॥ जब
लग दृश्य भासताहे ॥ तबलग मुक्त न होवेगा ॥ जब दृश्य भ्रम नष्ट होवेगा तब शुद्ध बोधकों प्राप्त होवेगा ॥ हे रामजी! दृष्टा दर्शन दृश्य इह जो त्रिपुटी भासती हे ॥ सो मनकरि
भासती हे ॥ जेसे सुपनेंविषे त्रिपुटी भासती हे ॥ जब जागीके उठा तब त्रिपुटीका अभाव हो जाता हे ॥ अरु अपना आप भासता हे ॥ तेसें आत्मसत्ताविषे जागे हुए अपना आप
अद्वैतही भासताहें ॥ जबलग शुद्धबोध नहि प्राप्त भया तब लग दृश्य भ्रम निवृत्त नहि होता ॥ अरु बाह्य देखता हे ॥ तब सृष्टिहि दृष्ट आती हे ॥ जब अंतर देखेगा तौभी सृष्टि दृष्टि
आतिहे ॥ अरु तिसकों सत्य जानकरि राग दोष कल्पना उठती होती हे अरु जब मन आत्मपदकों प्राप्त होता हे ॥ तब दृश्य भ्रम निवृत्त हो जाता हे ॥ जेसें जब वायुकी स्पंदता मि
टी ॥ तब वृछके पत्रोंका हलनाभी मिटी जात हे तातें मनरूपी दृश्यहि बंधनका कारन हे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन्! इह दृश्यरूपी विशूचिका रोग हे ॥ तिसकी निवृत्ति केसें होवे!
सो कृपा करिकें कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! संसाररूपी वैताल जिसकों लगाहे ॥ तिसकी निवृत्ति अकस्मात करि होती हे ॥ प्रथम तो बिचार करिकें जगतका स्वरूप जानेगा॥
तिसके अनंतर जब आत्मपद विषे विश्रांत होवेगा ॥ तब तूं सर्व आत्मा होवेगा ॥ हे रामजी! दृश्य भ्रम जो तुझकों भासताहे ॥ तिसकों में उत्तर ग्रंथ करि निवृत्त करोंगा ॥ इस विषे
संदेह नहिं ॥ श्रवनकरु इह दृश्य मनतें उपजा हे ॥ इसका सद्भाव मनविषे हुआ हे ॥ जेसे कमलके डोडेका जो उपजना है ॥ सो कमल डोडेके बीज विषे हे ॥ तेसें संसारका उपज
ना स्मृतितें होताहें ॥ सो स्मृतिअनुभव आकाश विषे होताहे ॥ हे रामजी! स्मृति तिस पदार्थकी होति हें जिसका अनुभव सद्भावरूप ग्रहण होताहें ॥ अरु जेता कछु जगत तुजकों
भासताहे ॥ सो संकल्परूप हे ॥ कोउ पदारथ सतरूप नहिं ॥ जो वस्तु असतरूपहें ॥ तिसकी स्थिरता नहि होति अरु जो सतवस्तु हें तिसका अभाव कदाचित नहि होतां ॥ जेता क
छु प्रपंच भासता हें ॥ सो असतरूप हें मनके चिंतनतें उत्पन्न हुआ हें ॥ जब मन फुरनेतें रहित होवे ॥ तब जगत भ्रम निवृत्त होताहे ॥ हे रामजी! पृथ्वी पर्वत आदिक जगत अ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सतरूप नहिं होता तब मुक्तभी कोऊ नहि होता ॥ मुक्त जो होनाहे सो दृश्य भ्रमते होनाहे ॥ जो दृश्य भ्रम मन नष्ट न होता ॥ तौ मुक्त कोऊ न होता ॥ सो तो ब्रह्मर्षि राजर्षि देवता इत्यादिक बहुतेरे मुक्त हुए हैं ॥ इस कारनतें कहताहैं ॥ जो दृश्य असत्यरूप हे मनके संकल्पविषे स्थित हे ॥ हे रामजी! एक मनकों स्थिर करि देख बहुरी अहंत्वं आदिक जगत तुझकों कछु न भासेगा ॥ चित्त रूपी आदर्श हे ॥ तिस विषे संकल्परूपी दृश्य मलीनता हे ॥ जब मलीनता दूर होवेगी तब आत्माका साक्षात्कार होवेगा ॥ हे रामजी! इह दृश्य भ्रम मिथ्या उदय भया हैं ॥ जेसें गंधर्वनगर होता हे ॥ जैसें सुपनपुर होता हे ॥ तेसें इह जगत भी हे ॥ जेसें शुद्ध आदर्शविषे पर्वतका प्रतिबिंब होता हैं ॥ तेसें चित्तरूपी आदर्शविषे इह दृश्य प्रतिबिंबित हे ॥ मुकुर विषे जो पर्वतका प्रतिबिंब होता हे ॥ सो आकाशरूप हे ॥ कछु पर्वतका सद्भाव नहिं ॥ तेसें आत्माविषे जगतका सद्भाव नहिं ॥ जेसें बालककों भ्रमकरि परछैयां विषे पिशाच बुद्धि होति हे ॥ तेसें अज्ञानीकों जगत भासता हे वास्तवते जगत कछु नहिं ॥ हे रामजी ! न कछु मन उपजा हे न कछु जगत उपजा हे ॥ दोनों असत रूप हे ॥ जेसें आकाशविषे दुसरा चंद्रमा भासता हे ॥ तेसें आत्माविषे जगत भासता हे ॥ जेसें आकाश अपनी शून्यता करिकें पूर्ण हैं ॥ जेसें समुद्र जलकरि पूरन हे ॥ तैसें ब्रह्मसत्ता अपने आपवि षे स्थित पूर्ण हैं ॥ तिसविषे जगतका अत्यंत अभाव हैं ॥ ॥ रामउवाच ॥ हे भगवन्! इह तुमारे वचन एसें हे जेसें कहियें वंध्याके पुत्रनें पर्वत चूर्ण कीया हे ॥ अरु सशेके शृंग अति सुंदर हे ॥ अरु रेतविषे तेल निकसता हे ॥ अरु पथरकी शिला नृत्य करत हे ॥ अरु जेसें कहियें मूर्तिका मेघ गरजता हे अरु पथरकी पुतलियां गान करतीयांहैं ॥ तेसें तुमारे शब्द मु झकों भासते हैं॥ तुम कहते हो दृश्य कछु उपजा नहि अरु हेही नहि ॥ अरु मुझकों जरा मृत्यु आदिक विकारों सहित प्रत्यक्ष भासता हे॥ तातें मेरे मनविषे तुमारे वचनोंका सद्भाव न हि स्थित होता ॥ अरु जो तुमारे निश्चयविषे इसी प्रकार हे ॥ तौ अपना निश्चय मुजकोंभी जताओ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! इह जो हमारे वचन हे सो यथार्थ हे ॥ हमनें अ सत कदाचित नहि कहा ॥ तुम विचार करि देखो ॥ इह जो जगत आडंबर हे ॥ सो कारन बिनाहे ॥ जब महाप्रलय होता हे ॥ तब पाछें शुद्ध चैतन्य संवित रहताहे ॥ तिसविषे का र्य कारण कल्पना कोऊ नहि रहति हे ॥ तिसविषे जो बहुरि जगत फुरताहे ॥ सो कारण बिना फुरताहे ॥ जेसें सुषुप्तिनें स्वप्न सृष्टि फुरि आती हे जेसें स्वप्न सृष्टि अकारणहे ॥ तेसें इह सृष्टिभी अकारण हे॥ हे रामजी! जिसका संवाय कारण अरु निमित्त कारण न होवे ॥ अरु प्रत्यक्ष भासे तब जानियें जो भ्रांति रूप हे॥ जेसें नित्य स्वप्नका अनुभव तुजकों होता हे ॥ तिसविषे नाना प्रकारके पदार्थ कार्य कारण सहित भासते हैं॥ अरु अकारण विना हैं॥ तेसें इह जगतभी कारण बिना हैं ॥तातें आदि कारण बिना जगत उपजा हैं जेसें गंधर्व नगर भासता हैं जेसें संकल्पपुर भासता हैं ॥ जेसें आकाशविषे दुसराचंद्रमा भासता हैं ॥ तेसें इह जगत भासता हैं ॥ कोऊ पदार्थ सत नाहिं ॥ जेसें सुपनविषे राजपति भासतें हैं ॥ अरु नानाप्रकारके पदार्थभी भासते हे ॥ सो किसी कारणतें तौ नहि उपजे ॥ सब आकाशरूप हैं ॥ मनके संसरने करिकें भासते हे ॥ तेसें इह जगत चित्तके संसरने करिकें भासता हे॥ जेसें सुपनेतें और सुपना भासता हे॥ बहुरी और सुपना भासता हैं ॥ तेसें इह जगत भासता हे ॥ तैसें जाग्रत जगत जाल मनकी कल्पना करि भासती हे ॥ हे रामजी ! चलना दौरना देना लेना बोलना सुनना सूंघना इत्यादिक विषयराग द्वेषादिक जो विकार हे ॥ सो सब मनके फुरणे करि होते हैं ॥ आत्माविषे विकार कोउ नहिं जब मन उपसम होता हे ॥ तब सब कल्पना निवृत्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो जाति हे ॥ तातें संसारका कारण मनहें ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे बोधहेतु वर्ननं नाम चतुर्थः सर्गः ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! मनका रूप क्याहे ? इह तो माया मय हे ॥ इसका होना जिसतेंहें सो कवन पद हे ? ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जब महा प्रलय होता हें ॥ तब सब जगतका अभाव होताहे ॥ पाछें जो शेष रहताहै ॥ सो सतरुपहे अरु आदि सर्गकाभी सत्यरूप होताहे ॥ तिसका नाश कदाचित् नहि होता ॥ सदा प्रकाशरूपहे ॥ अरु परम देवहे ॥ शुद्ध परमात्मतत्व अज अविनाशीहे ॥ अद्वैतहे जिसकों वांणि नहि कहि सकती ॥ सो पद जीवन्मुक्त पावताहे ॥ हे रामजी ! आत्म आदिक जो शब्दहे ॥ सोभी उद्देश विषे कल्पित हे ॥ स्वभाविक कोउ शब्द नहि प्रवर्तता ॥ शिष्यकों जतावने निमित्त शास्त्रकारानें एतें नाम देवके कलपे हें ॥ मुख्यतो देवकों पुरुष करि कहतेहें ॥ वेदांतवादी ब्रह्मकरि कहितेहे ॥ विज्ञान वादि बोध तिसकों विज्ञान करिकै कहतेहें ॥ एक कहतेहे निर्मल रूपहे ॥ शून्यवादि कहतेहे शून्याहि शेष रहताहे ॥ एक कहतेहे प्रकाशरूप हे ॥ जिसके प्रकाश करि सूर्यादिक प्रकाश तेहे ॥ एक उसकों वक्ता कहतेहे ॥ जो आदि वेदका वक्ता उहिहें ॥ अरु स्मृति कर्ताकहतेहें ॥ जो सब कछु स्मृति करिकें उह करने हाराहे ॥ सब कछु उसकी इछा करिकें हुआहे ॥ तातें सबका कर्ताहें ॥ सर्व आत्माहें सर्वका कर्ताहे ॥ हे रामजी ! इत्यादिक संज्ञा तिसकी शास्त्रकारोनें करीहे ॥ सर्वका जो अधिष्ठानहे सो परम देवहे ॥ अरु अस्ति आदि षट विकारोंतें रहितहे ॥ शुद्ध चैतन्यहें सूर्यवत् प्रकाशरूपहे ॥ सो देव सब जगतविषे पूर्ण हो रह्याहे ॥ हे रामजी ! आत्मरूपी सूर्य हें ॥ ब्रह्मा विष्णु रुद्रादिक तिसकी किरणांहे ॥ अरु ब्रह्मरूपी समुद्र हे ॥ तिसविषे जगतरूपी तरंग बुदबुदा उत्पन्न होताहे ॥ अरु लीन होताहे ॥ अरु सर्व पदार्थ आत्माके प्रकाश करि प्रकाशतेहें ॥ जेसें दीपक आपने आप करि प्रकाशताहे ॥ अरु औरोकोंभी प्रकाश देताहे ॥ तेसें आत्मा अपने प्रकाश करी प्रकाशताहे ॥ सर्वकों सत्ता देन हाराहे ॥ हे रामजी ! वृच्छ जो उपजतहे ॥ सो आत्मसत्ताकरि उपजता हें ॥ आकाशविषे शून्यता तिसकी करीहें ॥ अग्निविषे उष्णता तिसकि करीहें ॥ जलविषे द्रवता तिसकीकरिहे ॥ पवनविषे स्पर्श तिसका कियाहें ॥ सर्व पदार्थोंकी सत्ता उहिहें ॥ मोरके पंखोविषें जो रंगहें ॥ सो आत्मसत्ताकरि हुआहें ॥ पथ्थरमे मुंगेतिसीकरि हुएहें ॥ ओर पथ्थरविषें जो जडताहें ॥ सोतिसीकी करिहें ॥ स्थावर जंगम जगतका अधिष्ठानरूप ब्रह्महे ॥ हे रामजी ! आत्मरूपी चंद्रमाहें तिसकी कीरणों सो ब्रह्मांडरूपीत्रसरेणु उत्पन्न होतहें ॥ सो केसा चंद्रमाहें जो सीतलता अरु अमृतकरि पूर्णहें ॥ ब्रह्मरुपी मेघहें ॥ तिसतें जीवरूपी बूंदां श्रवतीयाहें जेसें वीजलिका प्रकाश होताहें ॥ अरु छुपजाताहें तैसें जगत प्रगट होताहें ॥ अरु छुप जाता हें ॥ सबका अधिष्ठान आत्मसत्ताहें ॥ सो नित्यशुद्धबुद्ध परमानंद रूपहें ॥ सत्य असत्यरूप पदार्थ सब आत्मसत्ताकरिके होतेहें ॥ हें रामजी ! तिसदेवकीसता करीकें जड पुर्यष्टक चेतन्यहोय करि चैष्टा करतिहें ॥ जेसें चुंबक पथ्थरकी सत्ताकरिके लोहा चेष्टाकरताहें ॥ तेसें चैतन्यरूपी चुंबक मणि करि देह चेष्टा करति हें ॥ सो आत्मचैतन्य नितहें ॥ सबका कर्ता आत्माहिहें ॥ तिसका कर्ता और कोउ नहि सब साथ अभेदरूप हें ॥ समान सत्ताहें ॥ उदय अस्तें रहितहें हे रामजी ! जो पुरुष तिस देवकों साक्षात करताहें ॥ तिसकी सब क्रिया नष्ट होजातहें ॥ अरु चिद जडग्रंथीभेदी जातीहें ॥ केवलबोधरूप होतेहें ॥ जब स्वभाव सत्ता विषे मन स्थित हो ताहें तब मृत्युकों सन्मुख देखकरिभी विह्वल नहि होता ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हें रामजी ! इह देव किसी स्थानविषे रहता नहि ॥ अरु कहुं दुरभीनहि ॥ अपने आपविषें स्थितहें ॥ हेरामजी !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घट घट विषे देवहै ॥ अरु अज्ञानिकों दूर भासताहे सो स्नान दान तप आदि करिकें नहि प्राप्त होता ॥ ज्ञातव्यही करि प्राप्त होताहे ॥ कर्तव्य करिकें नहि प्राप्त होता ॥ जेसें मृगतृष्णाकी नदी भासतिहें ॥ सो कर्तव्यता करि नहि निवृत्त होती ॥ ज्ञातव्य करिकें निवृत्त होतिहे ॥ तेसें जगतकी निवृत्ति आत्मज्ञान करि होतिहे ॥ हे रामजी ! कर्तव्यभी सोइहे जो प्राप्त होनेका जो ज्ञातव्य रूपहे अर्थ यहजो ज्ञातव्यस्वरूपकी प्राप्ति होती हे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! जिस देवके जानेतें पुरुष बहुरी जन्म मरणकों नहि प्राप्त होता सो कहां रहताहे ? अरु किस तपछेश करि तिसकी प्राप्ति होतिहे ? ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! किसि तप करि देवकों नहि प्राप्त होता ॥ अपने पुरुष प्रयत्न करि प्राप्त होताहें ॥ जेता कछु राग द्वेष तम क्रोध मत्सर अभिमान सहित तपहे ॥ सो निष्फल दंभहे ॥ इस करि आत्मपदकी प्राप्ति नहि होती ॥ हे रामजी ! परम औषध सत्संग अरु सतशास्त्रका विचारहे ॥ जिसकरि दृश्यरूपीविशूचिका निवृत्त होतिहे ॥ प्रथम इसका आचारभी शास्त्र अरु लोकों साथ अविरुद्ध होवें ॥ अर्थ इह जो शास्त्रोंके अनुसार होवे ॥ अरु भोगरूपी गरतविषे गिरे नहि ॥ संतोष संयुक्त यथालाभ संतुष्ट होवे ॥ अनिछित भोग प्राप्त होवे अरु शास्त्र अविरुद्ध होवे तिसको गृहन करे अरु विरुद्ध होवे तिसका त्याग करे दीन न होवे ॥ एसा जो उदार आत्माहे ॥ तिसकों शीघ्रही आत्मपदकीप्राप्ति होतिहें ॥ हे रामजी ! आत्मपद पावनेका कारण सत्संग अरु सत्शास्त्रहे ॥ संत कोंन हें जिसकों सब लोक भला साध कहतेहें अरु सतशास्त्र सो हें ॥ जिस विषे ब्रह्मनिरूपण होवे एसें संतोका संग अरु सतशास्त्रोंका विचार होवे ॥ तब शीघ्रहि आत्मपदकी प्राप्तिहोतिहें ॥ जब इह पुरुष श्रुति विचारद्वारा अपने परम स्वभाव विषेस्थित होताहें ॥ तब ब्रह्मा विष्णु रुद्रभी इसकी दया चाहतेहें ॥ कहतेहें जो इह पुरुष परब्रह्म हूआहें ॥ हे रामजी ! संतोका संग अरु सतशास्त्रोंका विचार इसकों निर्मल करताहें ॥ दृश्यरूप जो हे मेल, तिसका नाशकरताहें ॥ जेसें निर्मली रेत करिकें जलका मैल दूर होताहे ॥ अरु परमनिर्मल होताहे ॥ तेसें इह पुरुष निर्मल होताहे अरु चैतन्य होताहे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे प्रयत्नोपदेशनाम पंचमः सर्गः ॥५॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! इह देव जो तुम कह्या ॥ जिसके जानवेतें संसार बंधनतें मुक्त होताहे ॥ सोदेव कहां स्थितहे अरु किस प्रकार तिसकों पावताहे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इह देव दूर नहिं शरीरविषे स्थितहे ॥ नित चिन्मात्रहे ॥ सर्वविषे पूर्णहे अरु सर्व विश्वतें रहितहे ॥ चंद्रमाकों मस्तक विषे धरनहार जो सदाशिव हे सो चिन्मात्र रूपहे अरु कमलज ब्रह्माभी चिन्मात्ररूप हे ॥ अरु कमलनाभ विष्णुभी चिन्मात्रहे ॥ इंद्रादिक सब चिन्मात्ररूपहे अरु सब जगत चिन्मात्र रूपहे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! यहतो अज्ञानी बालकभी कहतें हे जो आत्मा चिन्मात्रहे ॥ यह तुमारे उपदेश करक्या सिद्ध हुवा ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इह विश्व जो चिन्मात्र तुं जानताहे ॥ इसके जानेतें संसार समुद्रकों नाही लंघ सकता ॥ इस चैतन्यका नाम संसार हे ॥ इस चैतन्य जीव हे, पशु हे ॥ संसार नामरूप हे ॥ इसते जरा मरण रूप तरंग उत्पन्न होतेहें ॥ काहेते जो हेयरूप दुःखपावताहे ॥ हे रामजी ! चैतन्यहोकरि जो चैत्य ताहे ॥ सो अनर्थका कारनहे ॥ अरु चैत्यतें रहित चैतन्यहे ॥ सो परमात्माहें तिस परमात्माकों जांनीकरि मुक्ति होतीहे ॥ तब चैत्यता मिटि जातीहे ॥ हे रामजी ! परमात्माके जानेतें हृदयकी चिदजड ग्रंथि टूट पडतीहे ॥ अर्थ इह जो अहं मम नष्ट होजाताहे ॥ अरु सर्वसंशय छेदे जाताहे ॥ सर्व कर्म क्षीण हो जातेहें ॥ ॥ रामउवाच ॥ हे भगवन् ! चित्त चैतन्योन्मुखत्व होताहें ॥ तब आगें दृश्य भासताहे ॥ सो स्पष्ट भासताहें इसके होतें चित्तके रोकनेको केसें समर्थ होताहें ॥ अरु दृश्यकिस प्रकार निवृत्त होताहे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे रामजी! दृश्य संजोगी जो चैतनहे सो जीव हे ॥ जन्मरूपी जंगलविषे भटकता भटकता थक पडताहे ॥ इस चेतनकों जो चैतन कहतेहे ॥ अर्थ इह चिदाभास जीव प्रकाशी सो पंडितभी मूर्खहे ॥ इह तो संसारी जीवहे ॥ इसके जानेतें मुक्त केसें होवे ॥ मुक्ति परमात्माके जानेतें होतिहे ॥ अरु सर्व दुःख नाश होतेंहें ॥ जेसें विष विशूचिका रोग उत्तम औषध करि निवृत्त होताहे ॥ तेसें परमात्माके जानेतें मुक्त होताहे ॥ रामउवाच ॥ हे भगवन्! परमात्माका क्या रूपहे ॥ जिसके जानेतें मोहरूपी समुद्रकों तरताहे? ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी! देशतें देशांतरकों निमेष विषे दूर जो संवित जाताहे ॥ तिनके मध्यजो ज्ञान संवितहे ॥ सो परमात्माका रूपहे ॥ अरु जहां संसारका अत्यंत अभाव होताहे ॥ तिसके पाछें बोधमात्र शेष रहताहे ॥ सो रूप परमात्माका हे ॥ हे रामजी! जहां दृश्यदृष्टा दर्शनका अभाव होताहे ॥ एसा जो आकाशहे ॥ सो रूप परमात्माकाहे ॥ अरु जो अशून्यहे ॥ अरु शून्यकी नांइ स्थितहें ॥ जिसविषे सृष्टिका समूह शून्यहे ॥ इसी अद्वैत सत्ताहे ॥ सो रूप परमात्माका हे ॥ हे रामजी! महाचेतनरूप बडे पर्वतकी नांइ स्थितहें ॥ अरु अजड हे ॥ अरु जडकी नांइ स्थित हे सो रूप परमात्माका हे ॥ सबके अंतर बाहिर स्थितहे अरु सबकों प्रकाशताहे सो रूप परमात्माका हे ॥ हे रामजी! जेसें सूर्यका प्रकाश रूपहे ॥ अरु जेसें आकाश शून्यरूपहे ॥ तेसें इह जगत आत्मरूपहे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हेभगवन्! जो सर्व परमात्माहि हे ॥ तब सो क्यों नहि भासता? ओर सब जगत भासताहे इस जगतका निर्वाण केसें होवे? ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी! इह जगत भ्रम करिके उत्पन्न हुआहे वास्तव कछु नहि ॥ जेसें आकाश विषे नीलता भासतिहे ॥ तैसें आत्माविषें जगत भासताहे ॥ जब जगतका अत्यंत अभाव जानेगा तब परमात्माका साक्षात्कार होवेगा ॥ ओर किसि उपायकरि नहि होवेगा ॥ जब दृश्यका अत्यंत अभाव करेगा ॥ तब दृश्य उसि प्रकार स्थित रहेगा ॥ अरु तुजकों परमार्थ सत्ता ही भासेगी ॥ हे रामजी चित्तरूपी जो आदर्श हे ॥ सो दृश्यके प्रतिबिंब विना कदाचित् नहि रहता ॥ जब लग दृश्यका अत्यंत अभाव नही होता ॥ तब लग परम बोधका साक्षात्कार नहि होता ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन्! इह दृश्य जाल आडंबर मन विषे केसे स्थित हुआहे ॥ जेसें सरस्योंके दाणेंविषें सुमेरका आना आश्चर्य हे ॥ तेसें जगतका आना मनविषे आश्चर्य हे ॥ ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी! एकदिन तुं वेद धर्मकी प्रवृत्ति सकाम यज्ञ यागादिक त्रिगुणतें रहित होकरि स्थित हो ॥ सतसंगत अरु सतशास्त्रपरायण हो ॥ तब एक क्षण विषे दृश्यरूपी मैल दूर करोंगा ॥ जेसें सूर्यकी किरणां जानेते जलका अभाव हो जाताहे ॥ तेसें दृश्य भ्रम तेरा अभाव हो जावेगा ॥ जब दृश्यका अभाव हुआ तब द्रष्टाभी शांत होवेगा ॥ जब दोनोंका अभाव हुआ तब पाछें शुद्ध आत्मसत्ताहि भासेंगी ॥ हे रामजी! जबलग द्रष्टाहे ॥ तब लग दृश्य हे ॥ अरु जबलग दृश्यहे तबलग द्रष्टाहे ॥ जेसे एककी अपेक्षा करी दो होतेंहें ॥ दोहे तोएकहें ॥ एक हे तब दोभीहें ॥ एक न होवे तब दो कहां होवे ॥ तेसें एकके अभाव हुए दोनोका अभाव होताहें ॥ द्रष्टाकी अपेक्षा करि दृश्य हे ॥ दृश्यकी अपेक्षा करिकें द्रष्टाहे ॥ एकके अभाव करि दोनोंका अभाव हो जाताहे ॥ हे रामजी! अहंतातें आदिलेकरि जो दृश्यहे ॥ सो तेरे अर्थ कार्य दूर करूंगा ॥ मार्जन कर देवोंगा ॥ आत्मसत्तातें जो इतर दृश्य सत्ता भासतीहे ॥ हे रामजी! अनात्मा आदि ले करि जो दृश्यहे सोइ मैलहे ॥ तिसतें रहित हुआ चित्तरूपी दर्पण निर्मल होवेगा ॥ जो पदार्थ असत्यहे ॥ तिसका कदाचित् सत नहि होना ॥ अरु जो पदार्थ सतहे सो असत कदाचित नहि होना ॥ जो वास्तव सत न होवें ॥ तिसका मारजन करना क्या बातहे? हे रामजी इह जगत आदि उत्पन्न नहि भया ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो कछु दृश्य भासताहे ॥ सो भ्रांतिमात्रहे ॥ सर्व निर्मल ब्रह्म चैतन्यहें॥ जेसें सुवर्नतें भूषन होताहें ॥सो सुवर्न भूषनतें भिन्न नहिं॥ जगत अरु ब्रह्म विषें भेद कछु नहिं॥ हे रामजी दृश्यरूपी मलके मार्जन अर्थ में बहुत प्रकारकी जुगती तुजकों विस्तार करिकें कहोंगा ॥ तिसकरि तुजकों अद्वैत सत्ताका भान होवेगा इह जगत जो तुजकों भासताहे सो किसी कारण द्वारा उपजा नहि ॥ जैसें मरुथलकी नदी भासतीहे ॥ जेसें आकाशविषे दूसरा चंद्रमा भासताहे ॥ तेसें इह जगत कारणबिना भासताहे ॥ जेसें मरुथलविषें जलनहिं ॥ जेसें बंध्याका पुत्र नहिं ॥ जेसें आकाशविषें वृछ नहि ॥ तेसें इह जगत हे नहि ॥ जो कछु देखताहे सो निरामय ब्रह्महे ॥ इह जो कछु तुजकों कह्याहें ॥ सो वाणी मात्र नहि कह्या ॥ जूक्तिपूर्वक कह्या हे ॥ हे रामजी! गुरोंकी कहि जुक्तकों जो मूर्खताकरि त्याग करतेहे ॥ तिसकों सिद्धांत नहि प्राप्तहोता ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठेउत्पत्तिप्रकरणेदृश्यअसत्यप्रतिपादनंनामषष्ठःसर्गः ॥ ६ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर! उह जुक्ति कवन हे अरु केसें प्राप्त होति हे ॥ जिसके धारेतें पुरुष आत्मपदकों प्राप्त होताहे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! मिथ्याज्ञान विषूचिका जगत नामकी बहुत कालकी दृढ हो रहि हे ॥ सो विचाररूपी मंत्र करिकें शांति होति हे ॥ हे रामजी! बोधकी सिद्धता अर्थ तुजकों आख्यान कहिता हों ॥ तिसकों श्रवनकरके तुं मुक्तात्मा होवेगा ॥ अरु जो अर्ध प्रबुध होइकरि तुं उठजावेगा ॥ तब तिर्यगादिक धर्मकों प्राप्त होवेगा ॥ हे रामजी! जिस अर्थके पावनेकी इछा करताहे ॥ तिसके पावने अनुसार जतनभी करे ॥ तो अवश्यमेव तिसकों पावता हे ॥ जो थकि करि फिरे नहिं ॥ तातें सतसंगत अरु सतशास्त्र परायण होवे ॥ जब तुं इनके अर्थविषे दृढ अभ्यास करेगा ॥ तब केतेक दिनोंविषे परम पदकों पावेगा ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन्! आत्मबोधका कारण कोन शास्त्र हें ? शास्त्रोंविषे श्रेष्ठ कोनहे ? जिसके जानेतें शोक न रहे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे महामते रामजी! आत्मबोधका जो कारणहे ॥ सो शास्त्रविषे परम शास्त्र महारामायण हे॥ जिसविषे बडे इतिहास हे जिस करि परम बोधकी प्राप्ति होती हे ॥ हे रामजी! सर्व इतिहासको सार में तुजकों कहता हों ॥ जिसकों समजी करि जीवन्मुक्त होवेगा ॥ अरु जगत न भासेगा॥ जेसें सुपनें तें जागे हुए सुपनेके पदार्थ भासते हें॥ जो कछु सिद्धांतहे ॥ तिन सबका सिद्धांत इसविषे हे अरु जो इसविषे नहि ॥ सो और विषेभी नहि ॥ इसकों सर्व शास्त्र विज्ञानभंडार बुद्धिमान जानते हे ॥ हे रामजी! जो पुरुष श्रद्धा संयुक्त इसकों श्रवन करे ॥ अरु नित्यहि सुनकें विचारे ॥ तौ उसकी बुद्धि उदार होवे ॥ अरु परमबोधकों प्राप्त होवे ॥ इसविषे संशय नहि ॥ अरु जिसकों इस शास्त्रविषे रुचि नहि सो पापात्माहे ॥ उसकों चहियें जो प्रथम और शास्त्रकों विचारे ॥ तिसके अनंतर इसकों विचारे ॥ इसकों विचारकरि जीवन्मुक्त होवें॥ जेसें उत्तम औषध करी रोग शीघ्रही निवृत्त होताहे ॥ तेसें इस शास्त्रके श्रवण अरु बिचारने करि शीघ्रही अज्ञान नष्ट होवेगा ॥ अरु आत्मपदकों प्राप्त होवेगा ॥ हे रामजी! आत्मपदकी प्राप्ति वर श्रापकी नांइ नहि होती ॥ जो वरदेणे करि आत्मज्ञान प्राप्त होवे जब विचार अभ्यास करे ॥ तब आत्मज्ञान प्राप्त होताहे ॥ हे रामजी! दानदेणें करी, तपस्या करि, वेदकें पठणे करीभी आत्मपदकी प्राप्ति नहि होती ॥ केवल आत्मविचार करि आत्मपदकी प्राप्ति होति हे ॥ अरु संसार भ्रम नष्ट अन्यथा नहि होता॥ ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठेउत्पत्तिप्रकरणें सच्छास्त्रनिर्णयोनामसप्तमःसर्गः ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! जिस पुरुषका चित्त आत्माविषे हे, अरु प्राणोंकी चेष्टाभी आत्माकी ओरहे ॥ अरु परस्पर बोधभी आत्माका हे ॥ अरु कहताभी आत्माका हे ॥ अरु तोषवानभी आत्मा करि हे ॥ र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मताभी आत्माविषे हे ॥ एसा जो ज्ञाननिष्ठ जीवन्मुक्त हे ॥ सो बहुरि विदेहमुक्त होताहे ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर जीवन्मुक्त अरु विदेहमुक्तका क्या लछन हे ? जो उसकी दृष्टि कों लेकरी मेंभी तेसेंहि करों ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे रामजी ! जो पुरुष सब जगतके व्यवहारकरता हे॥ अरु हृदयमें द्वैत भ्रम शांत भया हे॥ सो जीवन्मुक्त हे॥ अरु जो सब क्रियाकों करताहे ॥ अंतरतें आकाशकी नांइं निर्लेप रहता हे ॥ सो जीवन्मुक्त हे ॥ जो पुरुष संसारकी दशातें सुषुप्ति भया हे ॥ अरु स्वस्वरूपविषे जाग्रत भया हे ॥ जगत भ्रम जिसका निवृत्त भयाहे ॥ सो जीवन्मुक्त हे ॥ हे रामजी ! इष्टकी प्राप्तिविषे जिसके मुखकी कांति बढति नहि ॥ अरु अनिष्टकी प्राप्तिविषे न्यून नहि होति ॥ सो पुरुष जीवन्मुक्तहे ॥ ओर जो पुरुष सब व्योहार करताहे ॥ अरु अंतरमें राग द्वेषतें रहित शीतल रहता हे सो जीवन्मुक्त हे ॥ हे रामजी ! जो पुरुष रागद्वेषादिक संयुक्त दृष्ट आवता हे ॥ इष्ट विषें रागवान दिखताहे ॥ अनिष्टविषें द्वेषवान दृष्ट आवता हे ॥ अरु अंतर सदा शांतिरूप हे ॥ सो जीवन्मुक्त हे ॥ जिस पुरुषकों अहंममता अभाव हे ॥ अरु बुद्धि किसीविषे लेपायमान नहि होती सो कर्म करे अथवा नकरे परंतु जीवन्मुक्त हे ॥ हे रामजी ! जिस पुरुषकों मान, अपमान, भय क्रोधविषें बिकार कोउ नहि उपजता ॥ आकाशकी नांइ शून्य होगये हे; सो जीवन्मुक्त हे ॥ जो पुरुष भोगताभी अंतरतें अभोगता हे ॥ सचित दृष्ट आवता हे अरु हे अचित; सो जीवन्मुक्त हें॥ जिसपुरुषतें लाके उद्वेगवान नहि होता॥ अरु लोकोंतें उह उद्वेगवान नहि होता ॥ राग द्वेष भय क्रोधतें रहित हे ॥ सो जीवन्मुक्त हे ॥ हे रामजी ! जो पुरुष चितकें फुरणें करि जगतकी उत्पत्ति जानता हे॥ अरु चित्तके अफुर हुए जगतका प्रलय जानताहे ॥ अरु सर्वविषें समबुद्ध हे सो जीवन्मुक्त हे ॥ जो पुरुष भोगोंकरिकें जीवता दृष्टि आता हे अरु मृतककी नांइ स्थित हे ॥ चेष्टा करता दृष्ट आता हे ॥ पर्वतकी नांइ अचल हे ॥ सो जीवन्मुक्त हे ॥ हे रामजी ! जो पुरुष व्यवहार करता दृष्ट आवता हे॥ अरु चित्तविषें इष्ट अनिष्ट विकार कोउ नहि सो जीवन्मुक्त हे॥ जिस पुरुषकों सब जगत आकाशरूप भयाहे॥ अरु निर्वासना बुद्धि भइ सो जीवन्मुक्तहे ॥ काहेतें जो सदा आत्मस्वभावविषें स्थित हे ॥ सब जगतकों ब्रह्मस्वरूप जानता हे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! जीवन्मुक्तकी तुमने कठन गति कहि हे ॥ इष्ट अनिष्टविषें समसीतल बुद्धि केसें होती हे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इष्ट अनिष्ट रूपी जगत अज्ञानीकों भासता हे॥ ज्ञानीकों सब आकाशरूप भासता हे ॥ राग द्वेष किसीविषे नहि होता ॥ औरकी दृष्टिविषे चेष्टा करता दृष्ट आता हे परंतु जगतकी वार्तातें सुषुप्ति भयाहें ॥ हे रामजी ! जीवन्मुक्त कोउ काल रहिकरि जब शरीरकों त्यागता हे तब ब्रह्मपदकों प्राप्त होता हे ॥ जेसें पवन स्पंदकों त्यागकरि निस्पंद होताहे ॥ तेसें जीवन्मुक्त पदकों त्याग करि विदेहमुक्त होता हे॥ तब एसें होइकरि स्थित होता हे ॥ सूर्य होइ करि तपावता उहि हे ॥ ब्रह्मा होइ करि उत्पन्न करता हे ॥ विष्णु होइ करि प्रतिपालना करताहे ॥ रुद्र होयकें संहार करताहे ॥ पृथ्वी होयकें सब भूतोंकों धारताहे ॥ औषध अन्नादिकोंकों उत्पन्न करताहे ॥ पर्वत होयकें पृथ्वीकों राखताहे ॥ जल होयकें द्रवता रस देताहे अग्नि होयकें उष्णताकों धारताहें ॥ पवन होयकें पदार्थोंकों सुकावताहे ॥ चंद्रमा होयकें औषधीयोंकों पुष्ट करताहे ॥ आकाश होयकें सब पदार्थोंकों ठौर देताहे ॥ मेघ होयकें वर्षा करताहे ॥ स्थावर जंगम जेता कछु जगतहे सर्वविषे आत्मा होयकें स्थित होताहे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! विदेहमुक्त शरीरके धारणतें क्षोभवान होताहे॥ फेर जगतविषें आवताहे॥ त्रैलोकिका भ्रम क्यों नहि मिटता?॥ ॥ वसिष्ठोवाच॥ ॥हे रामजी ! जगत आडंबर अज्ञानिके रिदेमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थित हे॥ ज्ञानवानकों सब चिदाकाश रूपहे ॥ विदेहमुक्त सोइ रूप होताहे ॥ जहां उदयअस्तकी कल्पना कोउ नहि ॥ केवल शुद्धबोधमात्रहैं ॥ हे रामजी ! इह जगत आदितें उपजा नहि॥अज्ञानकरिकें भासताहे ॥ में तुं अरु जगत सब आकाशरूप है ॥ जेसें आकाशमें नीलता ओर दूसरा चंद्रमा भासतें हैं॥ जैसें मरुथलमें जल भासताहे तेसें आत्मामें जगत भासता हे ॥ हे रामजी ! जैसें स्वर्नमें भूषन उपजा कछु नहिं ॥ जेसें समुद्रमें तरंगहोताहे ॥ तेसें आत्मामें जगत उपजा नहि ॥ जेता कछु जगत जालहे सो मनके फुरणेतें भासताहे स्वरूपतें बन्या कछु नांहि ॥ ज्ञानीकों सदा यहि निश्चय रहताहैं ॥ बहुरी जगत क्षोभ उसकों केसें भासे ? हे रामजी ! इह भीमेंतेरे जतावनेके मात्र कहाहे ॥ नहि तो जगत हे कहां ? जगतका अत्यंत अभावहे ॥ ॥रामोवाच॥ हे भगवन्! जगतके अत्यंत अभाव हुएविना आत्मबोधकी प्राप्ति नहि होती? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥हे रामजी! दृश्य द्रष्टा मिथ्या भम उदय हुआहे ॥जब दोनोंमेतें एकका अभाव होवे ॥ तब दोनोंका अभाव होवे ॥ जब दोनोंका अभाव होवें तब शुद्धबोधमात्र शेष रहे ॥ जिस प्रकार जगतका अत्यंत अभाव होवे सो जुगत तुजकों कहों हों ॥हे रामजी! चिरकालका जगत दृढ होरहाहैं॥ सो मिथ्याज्ञान विशूचिका हैं॥ सो विचाररूपी मंत्रसों निवृत्त होताहे॥ जेंसें पर्वतपर चढना अरु उतरना शनैःशनैः होताहे तेसें अविद्धक भम चिरकालका दृढ होरहाहैं॥ विचारकरि अनुक्रमतें तिसकी निवृत्ति होतिहैं॥ जगतके अत्यंत अभाव हुएविना आत्मबोध नहि होता॥ सो अत्यंत अभावके निमित में युक्ति कहताहों॥ तिसके समुझनेतें जगत् भम नष्ट होवेगा ॥ अरु जीवन्मुक्त होकरि तुं विचरेगा ॥ हे रामजी! बंधनकरि सोइ बधताहे ॥ जो उपजा होता हे अरु मुक्तभी सौ होताहे जो उपजा होता हैं ॥ इह जगत तुजकों भासता हे ॥ सों उपजा नाहिं ॥ अरु मरुथलविषे नदी भासति हे ॥ सो उपजी नहि ॥ भमसें भासति हे ॥ तेसें आत्मामें जगत भासता हे ॥ सो उपजा नहि ॥ भमकरिकें भासता हे॥ वास्तव नहि॥ जेसें अर्धमीलितनेत्र पुरुषकों आकाशविषे तिरवरें भासते हैं॥ तेसें भमकरिकें जगत भासता हैं ॥ हे रामजी ! जब महा प्रलय होताहे ॥ तब स्थावर जंगम देवता किन्नर दैत्य मनुष्य ब्रह्मा विष्णु रुद्रादिक जगतका अभाव होताहे ॥ ताके अनंतर जो रहता हे॥ सो इंद्रियग्राहक सत्तानहि ॥ असत्यभी नहि ॥ न शून्य हे, न प्रकाश हे, न अंधकारहे, न द्रष्टा हे, न दृश्य हे, न केवलहे, न अकेवलहैं, न चैतन हे, न जडहे॥ न ज्ञान हे न अज्ञानहे॥ न साकार हे॥ न निराकार हे॥ न किंचन हे॥ न अकिंचन हे, सर्व शब्दोंतें रहित, हे ॥ तिसविषें वाणीकी गम नाहिं ॥ अरु जो हे तो चैत्यतें रहित चैतन आत्मतत्व मात्रहि जिसविषे अहं त्वंकी कल्पना कोउ नहि॥ एसें शेष रहता हे ॥ पूर्ण अपूर्ण आदि मध्य अंत्यतें रहित हे ॥ सोइ सत्ता जगतरूप होय भासति हे ॥ और कछु जगत बन्या नहि ॥ जेसें मरीचिकामें जल भासता हे ॥ तेसें आत्मामे जगत भासता हैं ॥ हे रामजी ! जब चित्तशक्ति स्पंदरूप हो भासतिहे ॥ तब जगदाकार भासताहे ॥ अरु जब निस्पंद होतिहे तब जगतका अभाव होताहे ॥ अरु आत्मसत्ता सदा एकरस रहतीहे ॥ जेसें वायु स्पंदरूप होताहे ॥ तब भासताहे ॥ निस्पंदरूप होताहे तब नहिं भासता ॥ परंतु वायु एकहिहे ॥ तेसें चित संवेदन स्पंदरूप होताहे ॥ तब जगतरूप होय भासताहे ॥ जब निस्पंदरूप होताहे ॥ तब जगत मिट जाताहै ॥ हे रामजी ! चैतनका जाननाभि तब होताहे ॥ जब संवेदन स्पंदरूप होताहे ॥ जेसें सुगंधिका ग्रहण आधारभूत करि होताहे॥ आधारभूत द्रव्य बिना सुगंधका ग्रहण नहि होता ॥ अरु वस्त्र स्वेत होताहे तब रंगकों ग्रहण करताहे ॥ अन्यथा रंग नहि चडता ॥ तेसें आत्माका जानना स्पंद करि होताहे ॥ स्पंदबिना जानवेकि कल्पनाभी नहि होती ॥ जेसें आकाश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में शून्यता भासतिहे ॥ जेसें अग्निमें उष्णता भासतिहे ॥ तेसें आत्मामें जगत भासताहे ॥ अनन्य रूपहे ॥ जेसें जल द्रवतासों तरंगरूप होयकें भासताहे ॥ तेसें आत्मसत्ता जगतरूप होयकें भासतिहे ॥ सो आकाशवत् शुद्धहें ॥ अरु श्रवण चक्षु नासिका त्वचा देहतें रहितहे ॥ शब्द, स्पर्श, रूप, रस गंधतें रहितहें ॥ अरु सर्व ओरतें श्रवण करतें बोलतें सूंघता स्पर्श करता रस लेताभी आपहिहे ॥ आत्मरुपी सूर्यकि किरणां विषे जलरूपी त्रिलोकी फुरति भासतीहें ॥ जेसें जलमें चक्र आदत्त फुरते भासतेहें ॥ सो जलतें इतर कछु नहिं ॥ जलरूपहिहें तेसें जगत आत्मातें भिन कछु नहि ॥ आत्मारूपहे ॥ आत्माहिं जगतरूप होकरि भासताहे ॥ रसना नहि अरु बोलताहे ॥ अभोक्ताहे सोइ भोक्ताहोयकें भासताहे ॥ हे अफुर सोइ फुरता भासताहे ॥ अद्वैतहे सोइ द्वैतरूप होइकरी भासताहे ॥ निराकार हे सोइ साकाररूप होयकें भासताहे ॥ हे रामजी ! सर्व शब्दतें आत्मसत्ता अतीतहे ॥ सोइ सर्व शब्दोंकों धारतिहे ॥ अनद्रष्टा होयकें भासतीयां हे॥परंतु इतर कछु हुआ नहि॥केइसृष्टी समान होतियांहें॥केइ विलक्षण होतियांहि॥परंतु स्वरूपतें इतर कछु हुइ नहि ॥ सदा आत्मरूपहे ॥जेसें सुवर्नमें भूषन समान आकारभी होतेहे ॥ अरु विलक्षण आकारभी होतेहे ॥ कंकनतें आदिलेकें जो भूषनहे सोस्वर्नतें इतर कछु नहि होत स्वर्नरूपहीहे ॥ तेसें जगत आत्मस्वरूपहे ॥ शुद्ध आकाशतेंभी निर्मल हे बोधमात्र हे॥ हे रामजी ! जब तिसमें तूं स्थित होवेगा ॥ तब जगत भ्रम मिट जावेगा जगत वास्तवतें कछुनहि ॥ सदा ज्योंका त्यों अपने आपविषें स्थितहें ॥ मनके फुरणे करि जगत भासताहे ॥ मनके फुरणेंतें रहित हुए सब कल्पना मिटि जातीहें ॥ आत्मसत्ता ज्योंकी त्यों भासतीहें ॥ सो सत्ता ज्यौकी त्योंहिहें ॥ सबका अधिष्ठानरूप हें ॥ इह जगत सब उसीतें हुआहे॥ अरु उहिरूप हें ॥ सबका कारण आत्मसत्ताहे॥ उसका कारण कोउ नहि॥ अकारणहे ॥ काहेतें जो अद्वैतहे॥ सो अजर हे अमर हे ॥ सब कल्पनातें रहित हे ॥ शुद्ध चिन्मात्र रूपहें ॥ ॥ . ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे परम कारण वर्णनं नाम अष्टमः सर्गः ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! जब महाप्रलय होताहें ॥ अरु सब पदार्थ नष्ट होजाताहे ॥ तिसके पाछें जो रहताहे ॥ सो शून्य कहियें ॥ अथवा प्रकाश कहियें ॥ तम हे नहि चैतन हे ॥ अथवा जीवहे ॥ मन हे नहि बुद्धि हे ॥ सत् असत् किंचन आकिंचन इनहुमें कोउ तो होवेगा ? तुम केसें कहते हों जो वाणीकि गम नहि ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इह तुजनें बडा प्रश्न कीयाहे ॥ तिसकों विना जतन मैं नाशकरोंगा ॥ जेसें सूर्य उदय हुए अंधकार नष्ट होताहे ॥ तेसें तेरे संशयका नाश होवेगा ॥ हे रामजी ! जब महाप्रलय होताहे ॥ तब संपूर्ण दृश्यका अभाव होजाताहे ॥ पाछें जो शेष रहताहे सो शून्य नहि ॥ अरु दृश्याभास उसविषे सदा रहताहे ॥ अरु वस्तुतें कछु हुआ नहि ॥ जेसें थंभविषें शिल्पी पूतलियांकों कल्पताहें ॥ जो एती पुतलिया इस थंभसों निकसेंगी ॥ सोउस विषे शिल्पी कल्पताहे ॥ उहां तो थंभाहिहे ॥ जो थंभा न होवे तो शिल्पी पुतलियां किसविषे कल्पे ? ॥ तेसें आत्मरूपी थंभेविषे मनरूपी शिल्पी जगत रूपी पुतलियां कल्पताहे ॥ जो आत्मा न होवे ॥ तब पुतलियां किसविषे कलपे ? जेसें थंभविषे पुतलियां थंभारूपहें ॥ तेसें सब जगत ब्रह्मरूपहें ब्रह्मतें इतर जगतका होनानहि ॥ जेसें पूतलियोका सद्भाव अरु असद्भाव थंभविषेहें ॥ काहेतें जो अधिष्ठान रूप थंभाहे ॥ थंभेबिना पुतलियां नहि होतियां॥ तेसें जगत आत्माबिना नहि होता ॥ हे रामजी ! सदभाव हो जाताहे ॥ सो सततें होताहे ॥ असतते नहि होता ॥ अरु असदभावभी सिद्ध होताहें ॥ सो सतहिविषें होताहे ॥ असतविषे नही होता ॥ तातें सत शू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न्य नहिं ॥ जो शून्य होवे तो भासना किसविषे होवे ? जेसें सोमजलमें तरंगका सद्भावभि होताहे ॥ अरु असद्भावभी होताहे ॥ असद्भाव इस कारणतें होताहे ॥ जो तरंग भिन्न क
छु नहि ॥ अरु सद्भाव इस कारणतें होताहे जो जलहिविषे तरंग होतेहे ॥ सद् असद्भाव इसी कारणते जलविषें होताहे ॥ तेसें जगतका सद्भाव असद्भाव आत्माविषें होताहे ॥ शून्यविषे
नहि होता ॥ जेसें सोमजलमें कहने मात्र तरंग हे नहि ॥ जल हि हे तेसें जगत कहने मात्र हे अरु हुआ कछु नहि ॥ एक सत्ताहि हें॥ अरु शून्यरूप अरु अशून्यभी नहि ॥ काहेतें जो
शून्य अरु अशून्य इह जो दोनों शब्द हे सो उसविषे कल्पित हे ॥ काहेतें जो शून्य उसकों कहते हे जो अभावरूप होवे॥ सद्भावतें रहित॥ अशून्य उसकों कहते हें॥ जो विद्यमान पावे
सो सत्ता इन दोनोंतें रहित हे॥ अरु अशून्यभी शून्यका प्रतियोगी होताहे॥ जो शून्य नहि ॥ तो अशून्य कहांतें होवें॥ इह दोनों अभाव मात्र हे॥ हे रामजी! इह जो सूरज तारा दीपक
आदिक भौतिक प्रकाशहे ॥ सोभी उहां नहिं ॥ काहेतें जो इह प्रकाश अंधकारका विरोधी हे॥ जो इह प्रकाश होता तो अंधकार सिद्ध न होता सो तो अंधकारभी सिद्ध होताहे ॥ इ
सी प्रकारतें कहताहे ॥ जो प्रकाशभी उहां नहि ॥ अरु जो कहियें तमहि रहता होवेगा ॥ तो तमभी नहि ॥ काहेतें जो सूर्य आदिक जिसकरि प्रकाशते हे॥ सो तम केसें होवे? आत्म
प्रकाशविना सूर्यादिकभी तमरूपहे ॥ तातें न शून्य हे न अशून्य हे ॥ न प्रकाश हे न तम हे॥ केवल आत्मतत्व मात्र हे॥ जेसें थंभमें पूतलियां कछु हुइ नहि ॥ तेसें आत्मामें कछु जगत
हुआ नहि ॥ जेसें बिली अरु बिलीकी मज्जाविषे कछु भेद नहि ॥ तेसें आत्मा अरु जगतमें भेद कछु नहि॥ जेसें जल अरु तरंगमें भेद कछु नहि जेसें मृत्तिका अरु घटमें कछु भेद नहि॥
तेसें ब्रह्म अरु जगतमें कछु भेद नहि ॥ नाम मात्र भेद हे ॥ वास्तवतें भेद कछु नहि॥ हे रामजी! जल अरु मृत्तिकाका दृष्टांत जो दीयाहे सो आत्माविषे एसेंभीनहि ॥ जेसें जलमें तरंग
होता हे ॥ मृत्तिकामें घट होता हे ॥ सोभी परिणामरूप होता हे ॥ अरु आत्मामें जगत भान नहि हे अरु जो मानसिकहे तो आकाश रूपहे ॥ तातें जगत भिन्न कछु नहि॥ रूप अवलो
कन मनसा कार्यता कछु भासता हें ॥ सो सब आकाशरूप हे ॥ आत्मसत्ताहि चित्तके फुरणेकरि जगतरूप होय भासती हे ॥ जगत कछु दूसरी वस्तु नहि ॥ जेसें सूर्यकि किरणांविषे
जलाभास होता हे ॥ तेसें आत्माविषे जगत भासता हें ॥ हे रामजी! थंभेविषे जो पूतलियां कल्पताहे सोभी न होति हें ॥ अरु इहां कल्पनेवालाभी बिचकी पुतरी हे ॥ उहभि होवेबि
ना भासति हे ॥ हे रामजी! जिसविषे इह जगत भासता हे ॥ तिसकों शून्य केसें कहियें ॥ अरु जो कहियें चैतन्य हे तोभी नहि ॥ काहेतें जो चैतन जाननाभी तब होताहे ॥ जब
चितकला फुरतिहे ॥ जहां फुरनां न होवें ॥ तहां चैतनता केसें रहे ? जेसें मिरचकों खाताहे॥ तब तिसकि तीखाइ भासतीहे ॥ खाएबिना नहि भासति तेसें चैतन जाननाभी स्पंदकला
विषे होताहे ॥ आत्माविषे जाननाभी नहि ॥ चेतनतातें रहित चिन्मात्रहे अक्षय सुषुप्तिरूपहे ॥ तिसकों तुरीय कहताहे ॥ सो ज्ञेय ज्ञानवानकरि गम्यहे ॥ हे रामजी! जो पुरुष तिसविषे
स्थित हुएहे ॥ तिनकों संसाररूपी सर्प डस नहि सकता ॥ उह अचैत्य चिन्मात्र होताहे ॥ जिसकों आत्माविषे स्थिति नहि तिसकों दृश्यरूपी सर्प डसताहे ॥ आत्मसत्ताविषे तो कछु द्वैत
हुआनहि ॥ आत्मसत्ता आकाशतेंभी स्वच्छ हे ॥ द्रष्टा दर्शन दृश्य इनकी स्वतः जो अनुभवसत्ता हे ॥ सो आत्माका रूपहे जब अभ्यास करीयें तब तिसकों प्राप्तहोवें ॥ हे रामजी ! ति
सविषे द्वैत कल्पना कछु नहि ॥ अद्वैत मात्रहे ॥ न दृष्टाहे ॥ न जीव हे ॥ न कोउ विकार हे॥ अरु न स्थूल हे ॥ न सूक्ष्म हे ॥ एक शुद्ध अद्वैतरूपहे ॥ अपने आपविषे स्थितहे जो यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चैत्यैका फुरणाहि आदि नहि हुआ ॥ चेतनकलाका तब जीव केसें होवे ॥ जो जीवहि नहि तो बुद्धि केसें होवे ! जो बुद्धिहि नहि तो मन इंद्रीयां केसें होवे ? जो इंद्रियां नहि तो देह केसें होवे ! जो देह नहि तो जगत केसें होवे ! हे रामजी ! आत्मसत्ताविषे सबकल्पना मिटजातहे ॥ तिसविषे कछु कहना नहि बनता ॥ पूर्ण अपूर्ण सत असततें न्यारा हे ॥ भाव अभावका विचार कोऊ नहि ॥ आदि मध्य अंतकी कल्पना कोउ नहि ॥ अजर अमर आनंद, अनंत चित्स्वरूप हे ॥ अचेत चिन्मात्र अवाच्यपद हे ॥ सूक्ष्मतेभी सूक्ष्महे आकाशतेंभी अधिक सूक्ष्म हे ॥ अरु स्थूलतेंभी स्थूल हे॥ एक अद्वैतरूप हे अनंत चिद्रूप हे॥ ॥रामोवाच॥ ॥ हे भगवन् ! यह जो अचिंत्य चिन्मात्र परमार्थसत्ता तुमनेकहि॥ तिसका रूप बोधके निमित्त मुजकों बहुरि कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जब महा प्रलय होता हे तब सब जगत नष्ट हो जाता हे ॥ परब्रह्म सत्ता शेष रहति हे ॥ तिसका रूप कहताहों॥ मन रूपी ब्रह्माहे जब मनकी वृत्ति क्षीण होति हे सो वृत्ति कोनहे ॥ एक प्रमाण वृत्ति हे ॥ १ ॥ दूजोविपर्यय वृत्ति हे ॥ २ ॥ तीसरी विकल्प वृत्ति हे ॥ ३ ॥ चौथी अभाव वृत्ति हे ॥ ४ ॥ पंचम स्मरण वृत्ति हे ॥ ५ ॥ प्रमाणवृत्ति आगें तीन प्रकारकी हे एक प्रत्यक्ष, द्वितीय अनुमान धुवा अग्नि जाननेकी वृत्ति ॥ शब्दरूप आप्तकामिका ए तीन प्रमाणवृत्ति हे ॥ द्वितीयविपर्यय वृत्ति, हे, होवे अरु भासें और तृतीय विकल्प वृत्ति सो शब्दज्ञान होवे अरु अर्थज्ञान न होवे ॥ जेसें कहियें चैतन पुरुष कह्या जो एक पुरुष होवे अरु उसका द्वितीय चैतन स्वरूप होवे तब चैतन्य पुरुष कह्या जाय चेतन ईश्वररूपहे अरु साक्षी पुरुष रूप होवे सो जेसें सीप पडी होवे तिसविषे संशय वृत्ति होवे ॥ साक्षीरूपी भासे ॥ साक्षी सीपीभास इसका नाम विकल्प हे ॥ चतुर्थ स्मरणवृत्ति हे ॥ पंचम निद्रा अभाव वृत्ति हे ॥ इह पंचम वृत्ती अरु इनका अभिमानी मन जो है तीन शरीरका अभिमानी अहंकाररूप तिसका जब नाश होवे ॥ तब पाछे जो रहताहे ॥ सो निश्चल सत्ता अनंत आत्माहे ॥ असत नहि कहि सकता हे ॥ हे रामजी ! जब जाग्रतका अभाव होता हे अरु सुषुप्ति नहि आइ उह जु रूपहे ॥ सो परमात्माकाहे ॥ अंगुष्ठकों जो सीत उष्णका स्पर्श होताहे ॥ तिसके अनुभव करनहारी परमात्मसत्ता हे ॥ जिसविषे द्रष्टा दर्शन दृश्य उपजत हे ॥ अरु बहुरी लीन होते हे ॥ सो परमात्माका रूपहे ॥ किसी सत्ताहे ॥ जिसविषे चैतनताभी नहिं ॥ हे रामजी ! चैतन जो हे जीव अरु जड जो हें देहादिक सो जिसविषे दोनों नाहिं॥ एसा जो अचेत चिन्मात्र हे॥ सो परमात्मरूप हे ॥ अरु जो सब व्यवहार होता हे ॥ अरु अंतर जिसके आकाशरूप हे ॥ कोउ क्षोभ नहि एसी जो सत्ता हे ॥ सो परमात्माका रूपहे ॥ शून्य हे परंतु शून्यतातें रहित हे ॥ हे रामजी ! द्रष्टा दर्शन दृश्य जिसविषे तीनो प्रतिबिंबित हे ॥ अरु आकार हे एसी जो सत्ता हे ॥ सो परमात्माका रूपहे ॥ स्थावरविषे जो स्थावर भाव करि व्याप्या हे ॥ चैतनविषे जो चैतन भावकरि व्याप्या हे मनबुद्धि इंद्रायां जिसकों पाइ नहि सकतियां॥ एसी जो सताहे सो परमात्माका रूप हे ॥ हे रामजी ! ब्रह्मा विष्णु रुद्र इनका जहां अभाव होजाता हे॥ तिसके पाछे जो शेष रहता हे जिसविषे विकल्प कोउ नहि अचेत चिन्मात्र जो सत्ता हे ॥ सो रूप परमात्माका हे ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे परमात्मस्वरूपवर्ननंनामनवमःसर्गः ॥ ९ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! इह दृश्य जो स्पष्ट भासतहे ॥ सो महाप्रलयमें कहां जातहे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! बंध्यास्त्रीका पुत्र कहांतें आताहे ॥ अरु कहां जाताहे ? आकाशका बन कहांतें आताहे ॥ अरु कहां जाताहे ? जेसें आकाशका बन हें ॥ तेसें इह जगतहे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर ! बंध्याका पुत्र अरु आकाशका बन तीनों काल हे न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हि ॥ शब्दमात्र हे ॥ उपजा कछु नहि ॥ अरु इह जगत स्पष्ट भासताहे ॥ सा बंध्याके पुत्र समान केसें होवे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जेसें बंध्याका पुत्र अरु आकाशका वन उपजा नहि तेसें इह जगतभी उपजा नहि ॥ जेसें संकल्प पुर होताहे ॥ जेसें सुपन नगर प्रत्यक्ष भासताहे ॥ अरु आकाशरूपहे ॥ कोउ पदार्थ सत नहि ॥ तेसें इह जगत आकाशरूपहे ॥ कछु उपजा नहि ॥ जेसें जल अरु तरंगमें भेद कछु नहि ॥ जेसें काजर अरु स्यामतामें भेद नहि ॥ जेसें अग्नि अरु उष्णतामें भेद नहि ॥ जेसें चंद्रमा अरु सीतलताविषे भेद नहि तेसें ब्रह्म अरु जगतविषें भेद नहि सदा अपने स्वभावविषे स्थितहे ॥ जेसें वायु अरु स्पंदविषे भेद नहि ॥ जेसें आकाश अरु शून्यताविषे भेद नहि ॥ जेसें चंद्रमा अरु शीतलतामें भेद नहि ॥ तेसें ब्रह्म अरु जगतमें भेद नहि ॥ हे रामजी ! जगत कछु बन्या नहि ॥ आत्मसत्ताहि अपने आपविषे स्थितहे ॥ तिसविषे अज्ञान करिकें जगत भासताहे ॥ जेसें आकाशविषे दूसरा चंद्रमा भासताहे ॥ जेसें मरुथलविषे जल भासताहें ॥ जेसें आकाशविषे तरवरे भासतेहे तेसें आत्माविषे अज्ञानकरि जगत भासताहे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! दृश्यके अत्यंत अभावबिना बोधकी प्राप्ति नहि होती ॥ अरु जगत स्पष्टरूप भासता हे ॥ दृष्टा अरु दृश्य जो मनकरि उदय हुएहे ॥ सो भ्रम करिकें हुएहे ॥ जो एकभी हे ॥ तो दोनों बंध हुएहे ॥ जब दोनोविषे एकका अभाव होवे ॥ तब दोनों मुक्त होवे ॥ काहेतें जो जहां द्रष्टा हे ॥ तहां दृश्यभी हे ॥ अरु जहां दृश्यहे ॥ तहां दृष्टाभी हे ॥ जेसें शुद्ध आदर्श प्रतिबिंब बिना नहि होता ॥ तेसें दृष्टा दृश्यबिनां नहि रहता ॥ अरु दृश्य दृष्टा बिना नहि ॥ हे मुनीश्वर ! दोनोंविषे एक नष्ट होवे ॥ तब दोनों निर्वाण होवे ॥ तातें सोइ जुक्ति कहो जिसकरि दृश्यका अत्यंत अभावहोवे ॥ अरु आत्मबोध प्राप्त होवे ॥ एक एसेंभी कहतेहे ॥ जो दृश्य आगें था अब नाशहुआहे ॥ तब उसकोंभी संसार भाव देखावेगा अरु जिसके विद्यमान नहि भासता अरु अंतर उसका सदभावहे ॥ तो फेरी संसार देखेगा जेसें सूक्ष्म बीजविषे वृछका सदभाव होताहे तेसें स्मृति बहुरी संसारकों देखावेगी ॥ अरु तुम कहतेहो जो जगतका अत्यंत अभाव होताहे ॥ अरु जगतका कारन कोउ नहि , आभास मात्र हे ॥ उपज्या कछु नही ॥ हे मुनीश्वर ! जिसका अत्यंत अभाव होताहे उह वस्तु वास्तव नहि होताहै ॥ जो नहि तो बंधनभी किसीकों हुआ ॥ सब मुक्तस्वरूप हूवे ॥ अरु जगत प्रत्यक्ष भासताहे ॥ तातें सोइ जुक्तिकहो ॥ जिसकरि जगतका अत्यंत अभावहोवे ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! दृश्यकेअत्यंत अभाव निमित्त एक कथा श्रवण कराताहों ॥ जिसके अर्थ निश्चयकर समुझेतें दृश्य शांत हो जावेगा ॥ बहुरी संसार कदाचित न उपजेगा ॥ जेसें समुद्रविषे धुड नहि उडति ॥ तेसें तेरे रिदेविषे संसार न रहेगा ॥ हे रामजी ! इह जगत तुजकों भासताहे ॥ सो अकारणरूपहे ॥ इसका कारण कोउ नहि ॥ हे रामजी ! जिसका कारण कोउ न होवे अरु भासें तिसकों जानियें जो भममात्रहे ॥ उपज्या कछु नहि ॥ जेसे सपनेविषे सृष्टि भासतिहें ॥ सो कोइ कारनतें उपजी नहि ॥ संवितरूपहे तेसें सर्ग आदि कारणतें नहि उपज्या ॥ आभास रूपहे, परमात्माका कछु नाहि ॥ हे रामजी ! जो पदार्थ कारणबिना भासे ॥ सो जिसविषे भासताहे ॥ वस्तु सोइहे जो अधिष्ठानरूप हे ॥ जेसे तुमकों सुपनेविषे सुपनका नगर होइ भासताहे ॥ तो और पदार्थ उहां कोउ नहि ॥ आभासरूप हे संवित ज्ञान चैत्यता करिकें नगररूप होइ भासताहें ॥ तेसें विश्व अकारण आभास आत्मसत्तातें होयकें भासताहे ॥ जेसें जलविषे द्रवताहे ॥ वायुविषे स्पंदहें ॥ जेसें जल विषेरसहे जेसें तेजविषे प्रकाशहे ॥ तेसें आत्माविषेचित्त संवेदनहे जब चित्त संवेदन स्पंदरूप होताहे ॥ तब जगतरूप होकरि भासताहें ॥ और जगत कोउ वस्तु नहि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ हे रामजी! जेसें और तत्वोंके अणुहे॥ सो और ठौरभी पाइतेहे ॥ अरु आकाशका अणु ओर ठौर नहि पाइताहे काहेतें जो आकाश शून्यरूप हे ॥ तेसें आत्मातें इतर इस जगतका भाव कछु नहि पाइता॥ काहेतें जो आभासरूप हे॥ किसी कारणतें उपजा नहि॥ जो तुं कहे जो पृथ्वी आदिक तत्वों तें जगत उपजाहे ॥ तोएसें कहनाभी असंभव हे॥ जेसें छायातें धूप न हि उपजता॥ तेसें तत्वों ते जगत नहि उपजता ॥ काहे तें जो आदि आपहि नहिं उपजे तो कारण किसका होवे?॥ तातें सर्वदा ब्रह्मसत्ता अपने आपविषे स्थितहे॥ हे रामजी! आत्मसत्ता जगतका कारण नहि॥ काहेतें जो उह अभूत रूपहे ॥ अरु अजडरूप हे सो भूतका अरु जडका कारण केसें होवे? जेसें धूप पछावेका कारण नहि ॥ तेसें आत्मसत्ता जगतका कारण न हि ॥ तातें जगत कछु हुआ नहि ॥ तोहे क्या? उहि सत्ता जगतरूप होइकरि भासतिहे॥ जेसें स्वरन भूषनरूप होताहे ॥ तौ भूषन कछु उपजा नहि तेसें ब्रह्मसत्ता जगतरूप होकरि भासतिहे ॥ जेसें अनुभव संवित सुपन नगररूप होइ भासताहे॥ तेसें इह सृष्टि किंचनरूप हे दूसरी वस्तु कछु नहि सदा ब्रह्मसत्ता अपने आपविषे स्थितहे॥ जेता कछु जगत स्थावर जंगमरूप भासताहे ॥ सो आकाशरूप हें॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे परमार्थरूप वर्ननं नाम दशमः सर्गः॥ १०॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! आत्मसत्ता नित्य शुद्धहे ॥ अजर अमरहे सदा अपने आपविषे स्थितहे॥ तिसविषे जिस प्रकार सृष्टि उदय भइहे॥ सो श्रवण करु॥ तिसके जानेतें जगत कल्पना मिटि जावेगी॥ हे रामजी! भाव अभाव ग्रहण त्याग स्थूल सूक्ष्म जनम मरन पदार्थों करी जीव पद्या छेदाताहे ॥ सो तिसतें तुं मुक्त होवेगा ॥ जेसें चूहे सुमेर पर्वतकों चूरन नहि करि सकते ॥ तेसें तुजकों संसारके भाव अभाव पदार्थ चूरन न करी सकेगें ॥ हे रामजी! आदि शुद्ध देव अचेत चिन्मात्रहे ॥ तिसविषे चैत्यभाव सदा रहताहे ॥ काहेतें जो चैतन्यरूपहे ॥ जेसें वायुविषे स्पंदशक्ति सदा रहतिहे ॥ तेसें चिन्मात्रविषे चैत्यका फुरणा रहताहे ॥ अहं अस्मि इस भावकों प्राप्त हुआहे ॥ इस कारणतें तिसका नाम चैतन्यहे ॥ हे रामजी! चैतन्य संवित अपने स्वरूपकी ठोर नहि आता ॥ तबलग इसका नाम जीवहे ॥ संकल्पका नाम बीजचित्त संवित हे ॥ तिसतें सर्व भूत जात उत्पन्न हुइहें ॥ ताते सबका जीव चित्त संवितहे ॥ जीव संवित जब चैत्यकों चेतता भया ॥ तब प्रथम शून्य हुवा ॥ तिस विषे शब्द गुण हुआ ॥ तिस आदि शब्द तन्मात्रातें पदवाक्यप्रमाण सहित वेद उत्पन्न भये ॥ जेता कछु जगतविषे शब्द हे तिसका बीज तन्मात्राहे ॥ जिसतें सर्ववायु अरस्परस होताहें ॥ बहुरी रूप तन्मात्रा हुइ ॥ तिसतें सूर्य अग्नि आदिक प्रकाश हुवाहे ॥ बहुरी रस तन्मात्रा हुइ ॥ जिसतें सब जल होताहे ॥ सब जलोंका बीज उहिहे ॥ बहुरी गंध तन्मात्रा हुइ ॥ जिसतें पूर्ण पृथ्वी होतीहें सब पृथ्वीका बीज उहिहे ॥ हे रामजी! इसी प्रकार पांचों भूत हुएहे ॥ पृथ्वी आप तेज वायु आकाशतें बहुरि जगत हुआहे ॥ सो भूत पंचीकृतभी हे ॥ अरु अपंचीकृतभी हे इह भूत शुद्ध चिदाकाश रूप नहि ॥ काहेतें जो संकल्प मैल युक्त भयेहे ॥ तेसें इस प्रकार चिदअणुविषे सृष्टिया भासियांहे जेसें वटबीजमेंतें वटका विस्तार होताहे ॥ तेसें चिद अणुविषे सृष्टि हे॥ कछु क्षणविषे जुग भासता हे कछु युगविषे क्षण भासताहे॥ चिदअणुविषे अनंत सृष्टि पडि फुरतिहे ॥ जब चित्त संवित्त चैत्योन्मुख होताहे ॥ तब अनेक सृष्टि होइ भासती हे॥ अरु जब चित्त संवित आत्माकी ठौर आताहे॥ तब आत्माके साक्षातकार होने करि सब सृष्टि पिंडाकार होइ जातियाहे॥ अर्थ इह जो सब आत्मरूप होतियां हे॥ तातें इस जगतका बीज सूक्ष्म भूतहे॥ अरु इनका बीज चिद अणुहे ॥ हे रामजी! जेसा बीज होताहे ॥ तेसाहि वछ होताहे ॥ तातें सब जगत चिदाकाश रूप हे ॥ संकल्प करकें इह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जगत आडंबर होता हे ॥ संकल्पके मिटेतें सब चिदाकाश होताहे ॥ जेसें संकल्प आकाशरूपहे ॥ तेसें जगतभी आकाशरूपहे ॥ जो सब आत्म अनुभव आकाशरूप हे ॥ तातें क्षण विषे एकरूप होताहे ॥ जेसें संकल्प नगर अरु सुपनपुर होताहे ॥ तेसें इह जगत हे ॥ हे रामजी ! इस जगतका मूल पंचभूत हे ॥ और तिसका बीज संवित हे ॥ तिसका स्वरूप चिदाकाश हे ॥ तातें सब जगत चिदाकाश हे ॥ द्वैत ओर कछु नहि ॥ ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे जगत उत्पत्ति वर्ननं नाम एकादशः सर्गः ॥ ॥ ११ ॥ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! परब्रह्म समहे ॥ शांतहे ॥ स्वच्छहे ॥ अनंतहे ॥ चिन्मात्रहे ॥ सर्वदा काल अपने आपविषे स्थितहे ॥ तिसविषे सम असमरूप जगत उत्पन्न हुआहे ॥ समरूप कहियें सजातीयरूप असम कहियें भेदरूप सो केसे हुए सो सुण ॥ प्रथमतो तिसविषे चैत्यका फुरणा हुआहे तिसका नाम जीव हुआ॥ तिसनें दृश्यकों चेत्याहे ॥ तिस करि तन्मात्रा शब्द स्पर्शरूप रस गंध उपजे हें ॥ तिन्होतें पृथ्वी अप तेज वायु आकाश पांचोंभूत रूपी वछ हुआहे ॥ तिस वछ साथ ब्रह्मांडरूपी फल लागाहे तातें जगतका कारण पंचतन्मात्राहि हे ॥ अरु तन्मात्राका बीज आदि संवित आकाशहे ॥ तातें सर्व जगत ब्रह्मरूप हुआहे ॥ हे रामजी! जेसा बीज होताहे ॥ तेसाहि फल होताहे ॥ जो इसका बीज परब्रह्महे तो इह भी परब्रह्म हुआ आदि जो अचेत चिन्मात्र स्वरूपहे सो परमाकाशहे ॥ अरु जिस चैतन्य संवितविषे जगत भास्याहे ॥ सो जीवाकाशहे ॥ सो इहभी शुद्ध निर्मलहे ॥ काहेतें जो पृथ्वी आदिक भूतोंतें रहितहे॥ हे रामजी! इह जगत जो तुजकों भासताहे ॥ सो सब चिदाकाशरूपहे ॥ और द्वैत वास्तवतें कछु नहि बन्या इह में तुजकों ब्रह्माकाश अरु जीवाकाश कहेहे अब जिसकरि इसकों शरीर ग्रहण हुआहे ॥ सो श्रवण कर ॥ हे रामजी! शुद्ध चिन्मात्रमें जो चैत्योन्मुखत्व हुआहे ॥ अहं अस्मि तिस अहंभाव करिकें आपकों जीव अणु जानत भया ॥ अपना जो वास्तव स्वरूपथा ॥ तिसतें अन्य भावकी नांइ हुआ तिस जीव अणुविषे अहंभाव दृढ हुआ ॥ तिसका नाम अहंकार हुआ ॥ तिस अहंकारकी दृढता करिकें निश्चयात्मक बुद्धि हुइ ॥ तिसतें आगें संकल्प विकल्परूपी मन हुआ ॥ जब मन संसरने लागा इसकी उर तब सुननेकी इछा करि ॥ तिसकरि श्रवण इंद्रिय प्रगट भइ ॥ जब रूप देखनेकों इछा करि तब चक्षु इंद्रिय प्रगट भइ ॥ जब स्पर्शकी इछा करि तब त्वचा इंद्रिय प्रगट भइ ॥ जब रस लेनेकी इछा करि तब जिह्वाइंद्रिय प्रगट भइ ॥ इसी प्रकार देह इंद्रिय चेतता करि भासियां ॥ तिनविषे अहं प्रतीत करने लागा ॥ हे रामजी! जेसें दर्पणविषे पर्वतका प्रतिबिंब होताहे ॥ सो पर्वततें बाह्य होताहे तेसें देह इंद्रियां बाह्य दृश्यहे ॥ अरु अपनेविषे भासियाहे ॥ तिसकरी तिन्होविषे अहं प्रतीत होतिहे जेसें कूपविषे मनुष आपकों देखे॥ तेसें देहविषे आपकों देखताहे जेसे डंबेविषे रत्नहोताहे ॥ तेसें देहविषे आपकों देखताहे॥ सोइ चिदणु देह साथ मिलिकरि दृश्यकों रचताहे॥ तिस अहं करि रूपविषे इह क्रिया भासनेलागी॥ जेसें सुपने विषे दोडता जावे॥ जेसें स्थित विषे स्पंद होताहे॥ तेसें आत्माविषे स्पंद क्रिया हूइहे॥ सो चित्तसंवितकर हूइहे ॥ तिसका नाम स्वयंभू ब्रह्मा हुआ जेसें संकल्प करि दूसरा चंद्रमा भासताहे ॥ तेसें मनोमय जगत भासताहे ॥ जेसें शशेके शृंग होतेहे तेसा इह जगतहे ॥ कछु उपजा नहि॥ चित्तके स्पंद विषे जगत फुरताहे ॥ जेसें जेसें चित्त फुर्या हे ॥ तेसें तेसें देश काल द्रव्य स्थावर जंगम जगतकी मर्यादा भइहे ॥ तातें सब जगत संकल्परूपहे ॥ संकल्पतें इतर जगतका आकार कछु नहि ॥ जब संकल्प फुरताहे ॥ तब आगें जगत दृश्य भासता हे ॥ जब संकल्प निस्पंद होताहे ॥ तब दृश्यका अभाव होताहे ॥ हे रामजी! इस प्रकार करकें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इह ब्रह्मा निर्वाण हुआहे ॥ बहुरी और उपजेहे ॥ तातें सब संकल्पमात्रह ॥ जेसें नटवा नाना प्रकारके पटके स्वांग करके बाहिर निकस आताहे ॥ तेसें देख जो सब मायामात्र हे ॥ हे रामजी! जब चित्तकी और संसरताहे तब दृश्यका अंत नहि आवता ॥ अरु जब अंतर्मुख होताहे ॥ तब सब जगत आत्मरूप होताहे ॥ चित्तके स्पंद होनेकरि एकक्षणविषे निवृत्त होताहे ॥ क्यों जो संकल्प रूपइहे ॥ तातें जो कछु जगत भासताहे सो आकाशरूप हे ॥ उपजा कछु नहि ॥ आत्मसत्ता ज्योंकी त्यों अपने आपविषे स्थितहे ॥ जेसें सुपने विषे पर्वत नदीयां भ्रम करी देखते हें ॥ तेसें भ्रमकरिकें इह जगत भासताहे ॥जेसें सुपनेविषे आपकों मूआ देखता हे॥ सो भ्रममात्र हे तेसें इह जगत भ्रममात्र हे ॥ हे रामजी! स्थावर जंगम जगत कछु भासताहे ॥ सो सब चिदाकाशहे ॥ हमकों तो सदा चिदाकाशहि भासताहे ॥ आदि विराटरूप ब्रह्माभी वास्तवतें कछु उपजा नहि ॥ तो जगत केसें उपजा होवे? जेसें सुपनेविषे नानाप्रकारके देश काल व्यवहार दृष्ट आतेहे ॥ सो अकारणरूपहे ॥ उपजे कछु नहि आभासमात्रहे ॥ तेसें इह जगत आभास मात्रहे ॥ कार्य कारण भासते हे तोभी अकारणहे ॥ हे रामजी! हमकों तो जगत एसा भासताहे ॥ जेसें सुपनेतें जागे मनुषकों भासताहे॥ जो वस्तु अकारण भासीहे॥ सो भ्रांतिमात्रहे॥ जो जगत किसी कारणद्वारा उपज्या नहि॥ तो सुपनवत् हे॥ जेसें संकल्पपुर भासताहे जेसें गंधर्व नगर भासता हे तेसें इह जगतभी जान॥ आदिविराट आत्माहे॥ सो अंतवाहकरूप हे॥ पृथ्वीआदि तत्वोंतें रहितहे आकाशरूपहें ॥ तो इह जगत अधिभूत करके केसें होवे॥ सब आकाशरूपहे ॥ ॥ इति श्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे स्वयंभू उत्पत्ति बर्ननं नाम द्वादशः सर्गः ॥ ॥ १२ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इह द्रश्य मिथ्या असत रूपहे ॥ जो हे सो निरामय ब्रह्म हे ॥ सो ब्रह्म आकाश जीवकी नांइ हुआहे ॥ जेसें समुद्र द्रवता करके तरंगरूप होताहे ॥ तेसें ब्रह्म जीवरूप होताहे ॥ आदि जो संवित स्पंदरूप हुआहे ॥ सो ब्रह्मा हुआहे ॥ तिस ब्रह्मातें आगें जीव हुएहे ॥ जेसें एक दीपकतें बहुत दीपक होतेहे ॥ जेसें एक संकल्पके बहुत संकल्प होतेहे ॥ तेसें एक आदि जीवतें बहुत जीव हुएहे ॥ जेसें थंभेविषे शिल्पी पुतलियां कल्पता हे ॥ जो एति पुतलियां इस थंभेविषे हे ॥ सो पूतलीयां शिल्पीके मनविषे होति याहे ॥ थंभा ज्योंकात्यौं हि स्थितहे ॥ तेसें सब पदार्थ आत्माविषे मन कलपेंहे ॥ वास्तवते ज्योंकात्यौं आत्मा ब्रह्महे ॥ तिनों पूतलीयों विषे वडी पूतली ब्रह्माहे ॥ और जीव छोटी पूतलीयां हे ॥ जेसें वास्तवतें थंभाहे ॥ पूतलि कोउ नहि उपजी ॥ तेसें वास्तव आत्मसत्ताहे ॥ जगत कछु उपजा नहि संकल्प करिके जगत भासताहे ॥ संकल्पके मिटेतें जगत कल्पना मिटि जातहे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन्! एक जीवतें जो बहुत जीव हुएहे ॥ सो पर्वतविषे पाषाणकी नांइं उपजतेहे ॥ जो पर्वतविषे अनंत पिंड आकार होतेहे ॥ कोइ जीवों की खाण हे ॥ जो इस प्रकार एते जीव उत्पन्न हो आतेहे ॥ अथवा मेघविषे बूंदोकी नांइं हे? अथवा अग्नितें विस्फुलिंगोंकी नांइं उपजते हें? सो कहो ॥ और एक जीव कोनहे जिसते संपूर्ण जीव उपजते हे? ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! न एक जीवहे ॥ न अनेक जीवहे ॥ इह तेरे वचन एसेंहे ॥ जेसें कोउ कहे में शशेके शृंग उडते देखेहे ॥ तेसें एक जीवहि उपजा नहि ॥ तो में अनेक केसें कहों ॥ जो एसें उपजे हे ॥ शुद्ध अद्वैत आत्मसत्ता अपने आपविषे स्थितहे ॥ अनंत आत्माहे तिसविषे भेदकी कल्पना कोउ नहि ॥ हे रामजी! जो कछु जगत तुजकों भासताहे ॥ सो सब आकाशरूपहे ॥ कोउ पदार्थ उपज्या नहि ॥ संकल्पके फुरणे करि जगत भासताहे ॥ जीव शब्द अरु जीवशब्दका अर्थ आत्माविषे कोउ उ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हि ॥ शब्दमात्र हे ॥ उपजा कछु नहि ॥ अरु इह जगत स्पष्ट भासताहे ॥ सो बंध्याके पुत्र समान केसें होवे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जेसें बंध्याका पुत्र अरु आकाशका
वन उपजा नहि तेसें इह जगतभी उपजा नहि ॥ जेसें संकल्प पुर होताहे ॥ जेसें सुपन नगर प्रत्यक्ष भासताहे ॥ अरु आकाशरूपहे ॥ कोउ प्रदार्थ सत नहि ॥ तेसें इह जगत आका
शरूपहे ॥ कछु उपजा नहि ॥ जेसें जल अरु तरंगमें भेद कछु नहि ॥ जेसें काजर अरु स्यामतामें भेद नहि ॥ जेसें अग्नि अरु उष्णतामें भेद नहि ॥ जेसें चंद्रमा अरु सीतलनाविषे
भेद नहि तेसें ब्रह्म अरु जगतविषें भेद नहि सदा अपने स्वभावविषे स्थितहे ॥ जेसें वायु अरु स्पंदविषे भेद नहि ॥ जेसें आकाश अरु शून्यताविषे भेद नहि ॥ जेसें चंद्रमा अरु शीतल
तामें भेद नहि ॥ तेसें ब्रह्म अरु जगतमें भेद नहि ॥ हे रामजी ! जगत कछु बन्या नहि ॥ आत्मसत्ताहि अपने आपविषे स्थितहे ॥ तिसविषे अज्ञान करिकें जगत भासताहे ॥ जेसें आ
काशविषे दूसरा चंद्रमा भासताहे ॥ जेसें मरुथलविषे जल भासताहें ॥ जेसें आकाशविषे तरवरे भासतेहे तेसें आत्माविषे अज्ञानकरि जगत भासताहे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् !
दृश्यके अत्यंत अभावविनां बोधकी प्राप्ति नहि होती ॥ अरु जगत स्पष्टरूप भासता हे ॥ दृष्टा अरु दृश्य जो मनकरि उदय हुएहे ॥ सो भ्रम करिकें हुएहे ॥ जो एकभी हे ॥ तो दोनों बंध हु
एहे ॥ जब दोनोविषे एकका अभाव होवे ॥ तब दोनों मुक्त होवे ॥ काहेतें जो जहां द्रष्टा हे ॥ तहां दृश्यभी हे ॥ अरु जहां दृश्यहे ॥ तहां दृष्टाभी हे ॥ जेसें शुद्ध आदर्श प्रतिबिंब बि
ना नहि होता ॥ तेसें दृष्टा दृश्यविनां नहि रहता ॥ अरु दृश्य दृष्टा बिना नहि ॥ हे मुनीश्वर ! दोनोंविषे एक नष्ट होवे ॥ तब दोनों निर्वाण होवे ॥ तातें सोइ जुक्ति कहो जिसकरि दृश्यका अ
त्यंत अभावहोवे ॥ अरु आत्मबोध प्राप्त होवे ॥ एक एसेंभी कहतेहे ॥ जो दृश्य आगें था अब नाशहुआहे ॥ तब उसकोंभी संसार भाव देखावेगा अरु जिसके विद्यमान नहि भासता
अरु अंतर उसका सदभावहे ॥ तो फेरी संसार देखेगा जेसें सूक्ष्म बीजविषे वृछका सदभाव होताहे तेसें स्मृति बहुरी संसारकों देखावेगी ॥ अरु तुम कहतेहो जो जगतका अत्यंत अभा
व होताहे ॥ अरु जगतका कारन कोउ नांहि , आभास मात्र हे ॥ उपज्या कछु नही ॥ हे मुनीश्वर ! जिसका अत्यंत अभाव होताहे उह वस्तु वास्तव नहि होताहै ॥ जो नहि तो बं
धनभी किसीकों हुआ ॥ सब मुक्तस्वरूप हूवे ॥ अरु जगत प्रत्यक्ष भासताहे ॥ तातें सोइ जुक्तिकहो ॥ जिसकरि जगतका अत्यंत अभावहोवे ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! दृश्य
केअत्यंत अभाव निमित्त एक कथा श्रवण कराताहों ॥ जिसके अर्थ निश्चयकर समुझेतें दृश्य शांत हो जावेगा ॥ बहुरी संसार कदाचित न-उपजेगा ॥ जेसें समुद्रविषे घुड नहि उडति ॥
तेसें तेरे रिदेविषे संसार न रहेगा ॥ हे रामजी ! इह जगत तुजकों भासताहे ॥ सो अकारणरूपहे ॥ इसका कारण कोउ नहि ॥ हे रामजी ! जिसका कारण कोउ न होवे अरु भासें ति
सकों जानियें जो भममात्रहे ॥ उपज्या कछु नहि ॥ जेसे सपनेविषे सृष्टि भासतिहे ॥ सो कोइ कारनतें उपजी नहि ॥ संवितरूपहे तेसें सर्ग आदि कारणतें नहि उपज्या ॥ आभास रूपहे, प
रमात्माका कछु नाहि ॥ हे रामजी ! जो पदार्थ कारणविना भासे ॥ सो जिसविषे भासताहे ॥ वस्तु सोइहे जो अधिष्ठानरूप हे ॥ जेसे तुमकों सुपनेविषे सुपनका नगर होइ भासताहे ॥ तो औ
र पदार्थ उहां कोउ नहि ॥ आभासरूप हे संवित ज्ञान चैत्यता करिकें नगररूप होइ भासताहें ॥ तेसें विश्व अकारण आभास आत्मसत्तातें होयकें भासताहे ॥ जेसें जलविषे द्रवताहे ॥ वायु
विषे स्पंदहें ॥ जेसें जल विषेरसहे जेसें तेजविषे प्रकाशहे ॥ तेसें आत्माविषेचित्त संवेदनहे जब चित्त संवेदन स्पंदरूप होताहे ॥ तब जगतरूप होकरि भासताहें ॥ और जगत कोउ वस्तु नहि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ हे रामजी! जेसें और तत्वोंके अणुहे॥ सो और ठौरभी पाइतेहे ॥ अरु आकाशका अणु ओर ठौर नहि पाइताहे काहेतें जो आकाश शून्यरूप हे ॥ तेसें आत्मातें इतर इस जगतका भाव कहुं नहि पाइता॥ काहेतें जो आभासरूप हे॥ किसी कारणतें उपजा नहि॥ जो तुं कहे जो पृथ्वी आदिक तत्वों तें जगत उपजाहे ॥ तोएसें कहनाभी असंभव हे॥ जेसें छायातें धूप नहि उपजता॥ तेसें तत्वों ते जगत नहि उपजता ॥ काहे तें जो आदि आपहि नहिं उपजे तो कारण किसका होवे?॥ तातें सर्वदा ब्रह्मसत्ता अपने आपविषे स्थितहे॥ हे रामजी! आत्मसत्ता जगतका कारण नहि॥ काहेतें जो उह अभूत रूपहे ॥ अरु अजडरूप हे सो भूतका अरु जडका कारण केसें होवे? जेसें धूप पछावेका कारण नहि ॥ तेसें आत्मसत्ता जगतका कारण नहिं ॥ तातें जगत कछु हुआ नहि ॥ तोहे क्या? उहि सत्ता जगतरूप होइकरि भासतिहे॥ जेसें स्वरन भूषनरूप होताहे॥ तौ भूषन कछु उपजा नहि तेंसें ब्रह्मसत्ता जगतरूप होकरि भासतिहे ॥ जेसें अनुभव संवित सुपन नगररूप होइ भासताहे॥ तेसें इह सृष्टि किंचनरूप हे दूसरी वस्तु कछु नहि सदा ब्रह्मसत्ता अपने आपविषे स्थितहे॥ जेता कछु जगत स्थावर जंगमरूप भासताहे॥ सो आकाशरूप हें॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे परमार्थरूप वर्ननं नाम दशमः सर्गः॥ १०॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! आत्मसत्ता नित्य शुद्धहे ॥ अजर अमरहे सदा अपने आपविषे स्थितहे॥ तिसविषे जिस प्रकार सृष्टि उदय भइहे॥ सो श्रवण करु॥ तिसके जानेतें जगत कल्पना मिटि जावेगी॥ हे रामजी! भाव अभाव ग्रहण त्याग स्थूल सूक्ष्म जनम मरन पदार्थों करी जीव पड्या छेदाताहे ॥ सो तिसतें तुं मुक्त होवेगा ॥ जेसें चूहे सुमेर पर्वतकों चूरन नहि करि सकते ॥ तेसें तुजकों संसारके भाव अभाव पदार्थ चूरन न करी सकेगें ॥ हे रामजी! आदि शुद्ध देव अचेत चिन्मात्रहे ॥ तिसविषे चैत्यभाव सदा रहताहे ॥ काहेतें जो चैतन्यरूपहे ॥ जेसें वायुविषे स्पंदशक्ति सदा रहतिहे ॥ तेसें चिन्मात्रविषे चैत्यका फुरणा रहताहे ॥ अहं अस्मि इस भावकों प्राप्त हुआहे ॥ इस कारणतें तिसका नाम चैतन्यहे ॥ हे रामजी! चैतन्य संवित अपने स्वरूपकी ठोर नहि आता ॥ तबलग इसका नाम जीवहे ॥ संकल्पका नाम बीजचित्त संवित हे ॥ तिसतें सर्व भूत जात उत्पन्न हुइहें ॥ ताते सबका जीव चित्त संवितहे ॥ जीव संवित जब चैत्यकों चेतता भया ॥ तब प्रथम शून्य हुवा ॥ तिसविषे शब्द गुण हुआ ॥ तिस आदि शब्द तन्मात्रातें पदवाक्यप्रमाण सहित वेद उत्पन्न भये ॥ जेता कछु जगतविषे शब्द हे तिसका बीज तन्मात्राहे॥ जिसतें सर्ववायु अरस्परस होताहें ॥ बहुरी रूप तन्मात्रा हुइ ॥ तिसतें सूर्य अग्नि आदिक प्रकाश हुवाहे ॥ बहुरी रस तन्मात्रा हुइ ॥ जिसतें सब जल होताहे ॥ सब जलोंका बीज उहिहे ॥ बहुरी गंध तन्मात्रा हुइ ॥ जिसतें पूर्ण पृथ्वी होतीहें सब पृथ्वीका बीज उहिहे ॥ हे रामजी! इसी प्रकार पांचों भूत हुएहे ॥ पृथ्वी आप तेज वायु आकाशतें बहुरि जगत हुआहे ॥ सो भूत पंचीकृतभी हे ॥ अरु अपंचीकृतभी हे इह भूत शुद्ध चिदाकाश रूप नहि ॥ काहेतें जो संकल्प मैल युक्त भयेहे ॥ तेसें इस प्रकार चिदअणुविषे सृष्टिया भासियांहे जेसें बटबीजमेंतें वटका विस्तार होताहे॥ तेसें चिद अणुविषे सृष्टि हे॥ कहुं क्षणविषे जुग भासता हे कहुं युगविषे क्षण भासताहे॥ चिदअणुविषे अनंत सृष्टि पडि फुरतिहे ॥ जब चित्त संवित्त चैत्योन्मुख होताहे ॥ तब अनेक सृष्टि होइ भासती हे॥ अरु जब चित्त संवित आत्माकी ठौर आताहे॥ तब आत्माके साक्षातकार होने करि सब सृष्टि पिंडाकार होइ जातियांहे॥ अर्थ इह जो सब आत्मरूप होतियां हे॥ तातें इस जगतका बीज सूक्ष्म भूतहे॥ अरु इनका बीज चिद अणुहे ॥ हे रामजी! जेसा बीज होताहे ॥ तेसाहि वृछ होताहे ॥ तातें सब जगत चिदाकाश रूप हे ॥ संकल्प करकें इह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जगत आडंबर होता हे ॥ संकल्पके मिटेतें सब चिदाकाश होताहे ॥ जेसें संकल्प आकाशरूपहे ॥ तेसें जगतभी आकाशरूपहे ॥ जो सब आत्म अनुभव आकाशरूप हे ॥ तातें क्षण विषे एकरूप होताहे ॥ जेसें संकल्प नगर अरु सुपनपुर होताहे ॥ तेसें इह जगत हे ॥ हे रामजी ! इस जगतका मूल पंचभूत हे ॥ और तिसका बीज संवित हे ॥ तिसका स्वरूप चिदाकाश हे ॥ तातें सब जगत चिदाकाश हे ॥ द्वैत ओर कछु नहि ॥ ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे जगत उत्पत्ति वर्ननं नाम एकादशः सर्गः ॥ ॥ ११ ॥ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! परब्रह्म समहे ॥ शांतहे ॥ स्वच्छहे ॥ अनंतहे ॥ चिन्मात्रहे ॥ सर्वदा काल अपने आपविषे स्थितहे ॥ तिसविषे सम असमरूप जगत उत्पन्न हुआहे ॥ समरूप कहियें सजातीयरूप असम कहियें भेदरूप सो केसे हुए सो सुण ॥ प्रथमतो तिसविषे चैत्यका फुरणा हुआहे तिसका नाम जीव हुआ॥ तिसनें दृश्यकों चेत्याहे ॥ तिस करि तन्मात्रा शब्द स्पर्शरूप रस गंध उपजे हें ॥ तिन्होंतें पृथ्वी अप तेज वायु आकाश पांचोंभूत रूपी वृछ हुआहे ॥ तिस वृछ साथ ब्रह्मांडरूपी फल लागाहे तातें जंगतका कारण पंचतन्मात्राहि हे ॥ अरु तन्मात्राका बीज आदि संवित आकाशहे ॥ तातें सर्व जगत ब्रह्मरूप हुंआहे ॥ हे रामजी! जेसा बीज होताहे ॥ तेसाहि फल होताहे ॥ जो इसका बीज परब्रह्महे तो इह भी परब्रह्म हुआ आदि जो अचेत चिन्मात्र स्वरूपहे सो परमाकाशहे ॥ अरु जिस चैतन्य संवितविषे जगत भास्याहे ॥ सो जीवाकाशहे ॥ सो इहभी शुद्ध निर्मलहे ॥ काहेतें जो पृथ्वी आदिक भूतोंतें रहितहे॥ हे रामजी! इह जगत् जो तुजकों भासताहे ॥ सो सब चिदाकाशरूपहे ॥ और द्वैत वास्तवतें कछु नहि बन्या इह में तुजकों ब्रह्माकाश अरु जीवाकाश कहेहे अब जिसकरि इसकों शरीर ग्रहण हुआहे ॥ सो श्रवण कर ॥ हे रामजी! शुद्ध चिन्मात्रमें जो चैत्योन्मुखत्व हुआहे ॥ अहं अस्मि तिस अहंभाव करिकें आपकों जीव अणु जानत भया ॥ अपना जो वास्तव स्वरूपथा ॥ तिसनें अन्य भावकी नांइ हुआ तिस जीव अणुविषे अहंभाव दृढ हुआ ॥ तिसका नाम अहंकार हुआ ॥ तिस अहंकारकी दृढता करिकें निश्चयात्मक बुद्धि हुइ ॥ तिसतें आगें संकल्प विकल्परूपी मन हुआ ॥ जब मन संसरने लागा इसकी उर तब सुननेकी इछा करि ॥ तिसकरि श्रवण इंद्रिय प्रगट भइ ॥ जब रूप देखनेकों इछा करि तब चक्षु इंद्रिय प्रगट भइ ॥ जब स्पर्शकी इछा करि तब त्वचा इंद्रिय प्रगट भइ ॥ जब रस लेनेकी इछा करि तब जिह्वाइंद्रिय प्रगट भइ ॥ इसी प्रकार देह इंद्रिय चेतता करि भासियां ॥ तिनविषे अहं प्रतीत करने लागा ॥ हे रामजी! जेसें दर्पणविषे पर्वतका प्रतिबिंब होताहे ॥ सो पर्वततें बाह्य होताहे तेसें देह इंद्रियां बाह्य दृश्यहे ॥ अरु अपनेविषे भासियाहे ॥ तिसकरी तिन्होंविषे अहं प्रतीत होतिहे जेसें कूपविषे मनुष आपकों देखे॥ तेसें देहविषे आपकों देखताहे जेसे डबेविषे रत्नहोताहे ॥ तेसें देहविषे आपकों देखताहे॥ सोइ चिदणु देह साथ मिलिकरि दृश्यकों रचताहे॥ तिस अहं करि रूपविषे इह क्रिया भासनेलागी॥ जेसें सुपने विषे दोडता जावे॥ जेसें स्थित विषे स्पंद होताहे॥ तेसें आत्माविषे स्पंद क्रिया हूइहे॥ सो चित्तसंवितकर हूइहे ॥ तिसका नाम स्वयंभू ब्रह्मा हुआ जेसें संकल्प करि दूसरा चंद्रमा भासताहे ॥ तेसें मनोमय जगत भासताहे ॥ जेसें शशेके शृंग होतेहे तेसा इह जगतहे ॥ कछु उपजा नहि॥ चित्तके स्पंद विषे जगत फुरताहे ॥ जेसें जेसें चित्त फुर्या हे ॥ तेसें तेसें देश वाल द्रव्य स्थावर जंगम जगतकी मर्यादा भइहे ॥ तातें सब जगत संकल्परूपहे ॥ संकल्पतें इतर जगतका आकार कछु नहि ॥ जब संकल्प फुरताहे ॥ तब आगें जगत दृश्य भासता हे ॥ जब संकल्प निस्पंद होताहे ॥ तब दृश्यका अभाव होताहे ॥ हे रामजी! इस प्रकार करकें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इह ब्रह्मा निर्वाण हुआहे ॥ बहुरी और उपजेहे ॥ तातें सब संकल्पमात्रह ॥ जेसें नटवा नाना प्रकारके पटके स्वांग करके बाहिर निकस आताहे ॥ तेसें देख जो सब मायामात्र हे ॥ हे रामजी! जब चित्तकी और संसरताहे तब दृश्यका अंत नहि आवता ॥ अरु जब अंतर्मुख होताहे ॥ तब सब जगत आत्मरूप होताहे ॥ चित्तके स्पंद होनेकरि एकक्षणविषे निवृत्त होताहे ॥ क्यों जो संकल्प रूपइहे ॥ तातें जो कछु जगत भासताहे सो आकाशरूप हे ॥ उपजा कछु नहि ॥ आत्मसत्ता ज्योंकी त्यों अपने आपविषे स्थितहे ॥ जेसें सुपने विषे पर्वत नदीयां भ्रम करी देखते हें ॥ तेसें भ्रमकरिकें इह जगत भासताहे ॥जेसें सुपनेविषे आपकों मूआ देखता हे॥ सो भ्रममात्र हे तेसें इह जगत भ्रममात्र हे ॥ हे रामजी! स्थावर जंगम जगत कछु भासताहे ॥ सो सब चिदाकाशहे ॥ हमकों तो सदा चिदाकाशहि भासताहे ॥ आदि विराटरूप ब्रह्माभी वास्तवतें कछु उपजा नहि ॥ तो जगत केसें उपजा होवे? जेसें सुपनेविषे नानाप्रकारके देश काल व्यवहार दृष्ट आतेहे ॥ सो अकारणरूपहे ॥ उपजे कछु नहि आभासमात्रहे ॥ तेसें इह जगत आभास मात्रहे ॥ कार्य कारण भासते हे तोभी अकारणहे ॥ हे रामजी! हमकों तो जगत एसा भासताहे ॥ जेसें सुपनेतें जागे मनुषकों भासताहे॥ जो वस्तु अकारण भासीहे॥ सो भ्रांतिमात्रहे॥ जो जगत किसी कारणद्वारा उपज्या नहि॥ तो सुपनवत् हे॥ जेसें संकल्पपुर भासताहे जेसें गंधर्व नगर भासता हे तेसें इह जगतभी जान॥ आदिविराट आत्माहे॥ सो अंतवाहकरूप हे॥ पृथ्वीआदि तत्वोंतें रहितहे आकाशरूपहें ॥ तो इह जगत अधिभूत करकेकेसें होवे॥ सब आकाशरूपहे ॥ ॥ इति श्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे स्वयंभू उत्पत्ति बर्ननं नाम द्वादशः सर्गः ॥ ॥ १२ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इह दृश्य मिथ्या असत रूपहे ॥ जो हे सो निरामय ब्रह्म हे ॥ सो ब्रह्म आकाश जीवकी नांइ हुआहे ॥ जेसें समुद्र द्रवता करके तरंगरूप होताहे ॥ तेसें ब्रह्म जीवरूप होताहे ॥ आदि जो संवित स्पंदरूप हुआहे ॥ सो ब्रह्मा हुआहे ॥ तिस ब्रह्मातें आगें जीव हुएहे ॥ जेसें एक दीपकतें बहुत दीपक होतेहे ॥ जेसें एक संकल्पके बहुत संकल्प होतेहे ॥ तेसें एक आदि जीवतें बहुत जीव हुएहे ॥ जेसें थंभेविषे शिल्पी पुतलियां कल्पता हे ॥ जो एति पुतलियां इस थंभेविषे हे ॥ सो पूतलीयां शिल्पीके मनविषे होतियाहे ॥ थंभा ज्यौंकात्यौं हि स्थितहे ॥ तेसें सब पदार्थ आत्माविषे मन कलपेंहे ॥ वास्तवते ज्योंकात्यौं आत्मा ब्रह्महे ॥ तिनों पूतलीयों विषे बडी पूतली ब्रह्माहे ॥ और जीव छोटी पूतलीयां हे ॥ जेसें वास्तवतें थंभाहे ॥ पूतलि कोउ नहि उपजी ॥ तेसें वास्तव आत्मसत्ताहे ॥ जगत कछु उपजा नहि संकल्प करिके जगत भासताहे ॥ संकल्पके मिटेतें जगत कल्पना मिटि जातहे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन्! एक जीवतें जो बहुत जीव हुएहे ॥ सो पर्वतविषे पाषाणकी नांइं उपजतेहे ॥ जो पर्वतविषे अनंत पिंड आकार होतेहे ॥ कोइ जीवोंकी खाण हे ॥ जो इस प्रकार एते जीव उत्पन्न हो आतेहे ॥ अथवा मेघविषे बूंदोकी नांइं हे? अथवा अग्नितें विस्फुलिंगोंकी नांइं उपजते हें? सो कहो ॥ और एक जीव कोनहे जिसते संपूर्ण जीव उपजते हे? ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! न एक जीवहे ॥ न अनेक जीवहे ॥ इह तेरे वचन एसेंहे ॥ जेसें कोउ कहे में शशेके शृंग उडते देखेहे ॥ तेसें एक जीवहि उपजा नहि ॥ तो में अनेक केसें कहों ॥ जो एसें उपजे हे ॥ शुद्ध अद्वैत आत्मसत्ता अपने आपविषे स्थितहे ॥ अनंत आत्माहे तिसविषे भेदकी कल्पना कोउ नहि ॥ हे रामजी! जो कछु जगत तुजकों भासताहे ॥ सो सब आकाशरूपहे ॥ कोउ पदार्थ उपज्या नहि ॥ संकल्पके फुरणे करि जगत भासताहे ॥ जीव शब्द अरु जीवशब्दका अर्थ आत्माविषे कोउ उ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पजा नहि॥इह कल्पना भ्रमकरी भासतीहे॥आत्मसत्ताहि जगतकी नाईं भासती हे॥तिस विषे न एक जीव हे॥न अनेक जीवहे॥ हे रामजी!आदि जो विराट आत्माहे॥सो आकाशरूप हे तिसतें और जगत उपज्या सो तुजकों क्या कहो?जगत विराटरूपहे॥अरु विराट जीवरूपहे॥ अरु जीव आकाशरूपहे॥बड्डरी और जगत क्या रहा?अरु जीव क्या हुआ?सब चिदाकाशरूपहे॥ इह जेते जीव भासतेहे सो सब ब्रह्मस्वरूपहे॥ ओर द्वैत कछु नहि॥न इन विषे कछु भेद हे॥ ॥रामोवाच॥ हे मुनीश्वर!तुम कहते हो आदि जीव कोऊ नहि॥ तो इन जीवोकों पालने हारा कोनहे?जिसकी आज्ञाविषे इह पडे विचरतेहे सो नियामक कोनहे?जो कोऊ हुआ नहि तो इह सर्वज्ञ अरु अल्पज्ञ क्यों करि होत हे॥ एकविषे इह केसेहे?॥ ॥वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी!जिसको तुं आदि जीव कहताहे॥ सो ब्रह्मरूपहे॥ नितहे॥ शुद्ध हे॥ अनंत शक्तिहे अपने आपविष स्थितहे॥ तिसविषे जगत कल्पना कोउ नहि॥ हे रामजी!जो शुद्ध चिदाकाश अनंत शक्ति हे॥ तिसविषे जो आदिचित्त किंचन हुआहे॥ सो शुद्ध चिदाकाश ब्रह्मसत्ताहि जीवकी नांइ भासने लागी हे॥स्पंदद्वारा हुएकी नांइं भासतीहे॥स्वरूपतें इतर कछु हुआ नहि॥चैतन संवित आदि स्पंद करकें विराट आत्मा ब्रह्मा रूप होइ करि स्थित भया हे॥तिसतें आगें संकल्प करिकें जगत रच्याहे॥तिसविषे शुभ अशुभ कर्म रचेहे॥ तिन करि नीति रचिहे॥ जो इह शुभ हे इह अशुभ हे जेसें आदि निति रचि तेसेंहि महाप्रलय पर्यंत ज्युंकी त्यौं चलि जातहे॥ हे रामजी!उह जो देवहे॥ अनंत शक्ति हे तिसविषे जेसे आदि फुरणा हुआ हे॥ तेसे हि स्थित हे॥ जो आदि सर्व शक्ति फुरीहे सो तेसेंइ हे॥ जो अल्पज्ञ फुरियाहे सो अल्पज्ञ हे॥ हे रामजी! इह संसारके जो पदार्थ हे॥ तिनोंविषे नीति शक्ति प्रधानहे॥ तिसके लंघणेंकों कोउ समर्थ नहि जेसें रचि हे तेसें महाप्रलय पर्यंत रहतिहे॥ हे रामजी!आदि नित्य जु विराट पुरुष हे सो अंतवाहकरूपहे॥ पृथ्वी आदिक तत्वौतें रहितहे॥ अरु इह जगतभी अंतवाहकरूपहे॥ पृथ्वीआदिक तत्वौतें नहि उपज्या॥ सब संकल्परूपहे॥ जेसें मनोराजका नगर शून्य होताहे॥ तेसें इह जगत शून्यहे॥ हे रामजी!इस सर्गका निमित्त कारण कोउ नहि॥ अरु संवाय कारणभी कोउ नहि॥ जो पदार्थ निमित्त कारण और संवाय कारण बिना दृष्ट आवे सो भ्रममात्र जानिये उपजा कछु नहि॥ जो पदार्थ उपजताहे॥ सो दोनों कारण करि उपजताहे॥ सो जगतका कारण कोउ नहि॥ ब्रह्मसत्ता नित शुद्धअद्वैत सत्ताहे तिसविषे कारज कारणकी कल्पना केसें होवे॥ हे रामजी!इह जगत अकारण हे॥ भ्रांतकरिके भासताहे॥ जब तुजकों आत्मविचार उपजेगा॥ तब दृश्य भ्रम मिटि जावेगा॥ जेसें दीपक हाथ लेकरि अंधकारकों देखीयें॥ तो दृष्टि नहि आता॥ तेसें विचारकरि देखेगा॥ तो जगत भ्रम मिटि जावेगा॥ जगत भ्रम मनके फुरणे करि उदे हुआहे॥ तातें संकल्पमात्र हे इसका अधिष्ठान ब्रह्महे॥ सब नामरूप ब्रह्मसत्ताविषे कल्पित हे षट विकारभि ब्रह्म सत्ताविषे फुरे हे ओर सबतें रहितभी हे॥ शुद्ध चिदाकाशरूपहे॥ ओर जगतभी उहि रूपहे जेसें समुद्रविषे द्रवता करिकें तरंग बुद्बुदे फेन भासताहे॥ तेसें आत्मसत्ताविषे चित्तके फुरणे कर जगत भासताहे॥ जेसें आदि चित्तविषे पदार्थसत्ता दृढ हुइ हे तसें हि स्थितहे॥ अरु आत्मा साथ अभेदहे॥ इतर कछु नहि सब चिदाकाशहे॥ इछाभी आकाशरूपहे॥ देवताबी आकाशरूपहे॥ समुद्र पर्वतभी आकाशरूपहे॥ हे रामजी! हमकों सदा चिदाकाशरूपहि भासताहे॥ आत्मसत्ताही मनरूप हो भासती हे॥ और बुद्धिरूप हो भासति हे॥ पर्वत कंदरा सब जगत होकरि भासताहे सब चैत्योन्मुखत्व होताहे, तब जगत भासताहे॥ जेसें वायु स्पंदरूप होताहे तब भासताहे॥अरु निस्पंदरूप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होताहे तब नहि भासता ॥ तेसें जब चित्तसंवेदन स्पंदरूपहोताहे ॥ तब जगत भासताहे ॥ जब चित्तसंवेदन अफुर्णरूप होताहे ॥ तब जगत कल्पना मिट जाति हे ॥ हे रामजी! चिन्मात्र विषे जो चैत्यभाव हुआहे इसिका नाम जगत है॥ जब चैत्यतें रहित हुआ॥ तब जगत मिटि जाताहे॥ जो जगत हि न रहा तब भेद कल्पना रही सो भेद कल्पना आत्माविषे केसें होवे? तातें न कोउ कारज हे न कारण हे ॥ न जगत हे सब भममात्र कल्पना हे शुद्ध चिन्मात्र अपने आपविषे स्थितहे ॥ हे रामजी! शुद्ध चिन्मात्रविषे चित्त किंचन सदा रहता हे जेसें मिरचोंके बीजविषे तीक्ष्णता सदा रहतिहे परंतु जब खाताहे तब तीक्ष्णता भासतीहे ॥ अन्यथा नहि भासति ॥ तेसें जब चित्त संवेदन चैतान्मुखत्व होताहे ॥ तब जीव जगत चैतन्य भासता हे ॥ अरु संवेदनतें रहित जीव जगत कल्पना नहि भासति ॥ हे रामजी! जब संवेदन साथ परिछिन्न संकल्प मिलताहे तब जीव होताहे ॥ अरु जब इसतें रहित होताहे ॥ तब शुद्ध चिदात्मा ब्रह्म होताहे ॥ जिस पुरुषकी अशेष विषे कल्पना मिटि गइ हे ॥ अरु जिसकों शुद्ध निर्विकार ब्रह्म सत्ताका साक्षात्कार हूआहे ॥ सो पुरुष संसार भमतें मुक्त हूआहे ॥ हे रामजी! इह सब जगत आत्माका आभासरूपहे ॥ सो आत्मा अछेद हे अदाह्य हे ॥ अक्लेद्यहे ॥ नित शुद्ध हे ॥ सर्वगत स्थाणुकी नांइं अचलहे ॥ सो अहंरूपहे ॥ सब जगत चिदाकाशरूपहे ॥ हमकों तो सदा एसेंहि भासताहे अज्ञानि वाद विवाद पडे करते हे ॥ हमकों वाद विवाद कोउ नहि ॥ काहेतें जो हमारा सब भम नष्ट होगयाहे ॥ हे रामजी! इह सब जगत ब्रह्मरूपहे ॥ ओर द्वैत कछु नहि ॥ जिनकों निश्चय भयाहे तिसकें अंग अपना स्वरूपहीहे ॥ तातें निराकार निर्वपु सत्ताके अंग अपना स्वरूप क्युं न होवे? तातें जेता कछु प्रपंचहे ॥ सो सब चिदाकाशरूपहे ॥ परंतु अज्ञानिकों भिन्न भिन्न भासताहे ॥ अरु जन्म मरण आदिविकार भासता हे ॥ अरु ज्ञानवानकों सब आत्मरूपहि भासते हे ॥ पृथ्वी अप तेज वायु आकाश सब आत्माके आश्रय फुरते हे ॥ अरु चित्तशक्ति हि एसें होइ करि भासते हे ॥ जेसें वसंत ऋतु आतिहे ॥ तिसविषे रसाशक्ति करिकें दछवेलीयां सब प्रफुल्लित होइकरि भासतियां हें ॥ तेसें चित्तशक्ति स्पंदता करकें जगतरूप होइकरि भासति हे ॥ हे रामजी! जेसें वायु स्पंदता करिकें भासताहे तेसें जगत फुरणे करि भासताहे ॥ तेसें हि चित्त संवित जगतरूप होइ करि भासताहे ॥ इस फुरणातें जगत हे अवर वस्तुतें जो कछु हुआ नहि ॥ इसीतें जगत कछु नहि ॥ जेसें समुद्र तरंगरूप होइ भासताहे ॥ तेसें आत्मा जगतरूप हो भासताहे ॥ इसतें जगत दृश्य भाव करि भासताहे ॥ अरु संवितते कछु हुआ नहि ॥ परंतु वायु जडहे ॥ आत्मा चेतन्यहे ॥ अरु जलभी परिणामकरिकें तरंगरूप होताहे आत्मा अच्युतहे निराकारहे ॥ हे रामजी! चैतन्यरूप रत्नहे ॥ जगत तिसका चमत्कारहे ॥ चैतन्यरूपी अग्निहे ॥ तिसविषे जगतरूपी उष्णताहे ॥ हे रामजी! चैतन्य प्रकाश इह भौतिक प्रकाशरूप होकर भासताहे ॥ इसतें जगत हे ॥ अरु वस्तुतें कछु नहि चैतन्य सत्ता इह शून्य आकाशरूप होइ करि भासताहे ॥ इस भावकरि जगतहे ॥ वास्तव हूआ नहि ॥ इसतें जगत कछु नहि ॥ चैतन सत्ताइ पृथ्वीरूप होकरि भासती हे दृश्य विषे होताहे इसते जगतहे ॥ अरु आत्मसतातें इतर कछ हुआ नहि ॥ इसतें चैतन बिन घन अंधकार हे तिसविषे जगतरूपी कृष्णताहे ॥ चैतनरूपी काजलताका पहाड हे ॥ तिसका जगतरूपी प्रमाण भम हे ॥ चैतनरूपी सूरज हे ॥ तिसविषे जगतरूपी दिन हे ॥ आत्मरुपी समुद्र हे तिसविषे जगतरूपी तरंग हे ॥ आत्मारूपी कुसुमह ॥ तिसविषे जगतरूपी सुगंध हे ॥ आत्मारूपी वरफ हे तिसविषे शुक्लसीतारूपी जगत हे आत्मारूपी वेली हे ॥ तिसविषे जगतरूपी फूल हे ॥ आत्मारूपी स्वर्नहे ॥ तिसविषे जगतरूपी भूषण हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मरूपी पर्वतहें ॥ तिसविषे जगतरूपी जड सघनता हे ॥ आत्मरूपी अग्नि हे तिसविषे जगतरूपी प्रकाश हे ॥ आत्मरूपी आकाश हे तिस विषे जगतरूपी शून्यता हे आत्मारूपी द्रव हे ॥ तिसविषे जगतरूपी मधुरता हे ॥ आत्मारूपी दुध हे ॥ तिस विषे जगतरूपी घृत हे ॥ आत्मरूपी मधु हे ॥ तिसविषे जगतरूपी मधुरता हे ॥ आत्मरूपी सूरज हे ॥ तिस विषे जगतरूपी ज लाभास हे ॥ हेइ अरु नहिहेइ ॥ हे रामजी ! इस प्रकार देख जो सर्वब्रह्म हे ॥ नित हे शुद्ध हे ॥ परमानंदस्वरूप हे सर्वदा अपने आपविषे स्थितहे ॥ भेद कल्पना कोउ नहि ॥ जेसें जल द्रवता करिकें तरंगरूप होइ भासतेहे॥ तेसें ब्रह्म सत्ता जगतरूप होइ भासतीहे अरु नको उपजा हे ॥ न को नष्ट होताहे॥ हे रामजी ! आदि जो चित्त शक्ति स्पंदरूप होतहे ॥ सो विराटरूप ब्रह्माहे ॥ सोभी चिदाकाशरूप हे ॥ आत्मसत्तातें इतर भावकों नहिभास भया ॥ जेसें पत्र उपर लीकां होतियांहे ॥ सो पत्रतें भिन्न लोकां कछु नहि वस्तु उहिहे पत्ररूपहे ॥ तेसें ब्रह्म विषे जगत हे कछु इतर नहि ॥ अरु पत्र उपर लाकांभी आकारहे ॥ ब्रह्मविषे जगत कछु आकार नहि सब आकाशरूप मनविषे पडा फुरताहें ॥ जगत कछु हुआ नहि ॥ जेसें शिलाविषे शिल्पी पूतलीयां कल्पताहे ॥ तेसें आत्माविषे मनने जगत कल्पना करिहे वास्तवतें कछु हुआ नहि ॥ शिलाहि वज्रकी नांइ पीनहे ॥ अरु सब जगतकों धारि रही हे ॥ आकाशकी नांइ विस्ताररूप होकरि अरु शांतरूप हे हुआ कछु नहि ॥ जो कछु हे सो परम ब्रह्मरूप हे ॥ जो ब्रह्महि हे तो कल्पना केसें होवे ? ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ इस प्रकार जब मुनि शार्दूल वसिष्टजी कहा ॥ तब सायंकालका समय हुआ सब सभा परस्पर नमस्कार करिकें आश्रमकों गइ ॥ बहुरी सूर्यकी किरणां साथ अपअपने स्थानों परि आनबेठे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे सर्व ब्रह्मप्रतिपादनं नाम त्रयोदशः सर्गः ॥ ॥ १३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! आत्माविषे कछु उपजा नहिं ॥ भ्रम करिकें पडा भासताहे ॥ जेसें आकाशविषे भ्रमकरिकें तिरवरे मुक्तमाला भासतिहें ॥ तेसें अज्ञान करकें आत्माविषे जगत भासताहे ॥ जेसें थंभेविषे उकरे बिना पुतलीयां शिल्पीके मनविषे भासतीहे ॥ जो एती पुतलीयां थंभविषे हे ॥ सो पूतलियां कोउ नहि काहेते जो किसि कारणतें नहि उपजी ॥ तेसें चैत नरूपी थंभेविषे मनरूपी शिल्पी त्रिलोकीरूपी पूतलियां कल्पताहे ॥ परंतु कछु कारण करि उपजी नहि॥ ब्रह्मसत्ता ज्योंकी त्यों स्थित हे॥ जेसें सोमजलविषे त्रिकाल तरंगोंका सदभाव होताहे ॥ वास्तवतें जगतका होणां कछुनहि ॥ चितके फुरणें कार जगत भासताहे ॥ जेसें सूर्यकी किरणां झरोखे विषे आतिहें ॥ तिसविषे सूक्ष्म त्रिसरेणां होत हे ॥ तिसतेंभी चिदअणु सूक्ष्म हे ॥ जेसें त्रिसरेणुतें सुमेरुपर्वत स्थूल हे ॥ तेसें चिदअणुतें त्रिसरेणु स्थूलहे ॥ एसें सूक्ष्म चिदअणुतें इह जगत पडा फुरताहें ॥ सो क्या रूपहे ? आकाशहि रूपहे ॥ कछु उपजा नहि ॥ फुरणे कार जगत भासताहे ॥ हे रामजा ! आकाशपर्वत समुद्र पृथ्वी आदिक जेता कछु जगत भासता हे ॥ सो उपजा कछु नहि ॥ तो और पदार्थ उपज कहां हाव ॥ सब आ काशरूप हे ॥ वास्तवतें कछु उपजा नहि ॥ जो कछु अनुभवविषे होता हे ॥ तोभी असत हे ॥ जेसें सुपन सृष्टि अनुभव होतिहे ॥ तोभी उपजो कछु नहि ॥ असतरूप हे ॥ तेसें इह जगत असतरूपहे ॥ शुद्ध निर्विकार सत्ता अपने आपविषे स्थितहे ॥ तिस सत्ताकों त्याग करि जो अवयव अरु अवयवीके विकल्प उठावते हैं ॥ तिनकों धिक्कारहे ॥ इह सभ जगत आकाशरूपहे ॥ अरु अधिभूतक जगत जो भासताहे ॥ सा गंधर्वनगर सुपन सृष्टिवतूहे ॥ हे रामजी ! पर्वतों सहित जगत भासताहे सो रतीमात्रभी नहि ॥ जेसें सुपनके पर्वत जाग्रत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की रती भारभी नहि होता ॥ काहेतें जो कछु हुए नहि ॥ तेसें इह जगत आत्मरूपहे ॥ भ्रांतकरिकें भासताहे ॥ जेसें संकल्पका मेघ सूक्ष्म होताहे ॥ तेसें इह जगत आत्माविषे तुछहे ॥ जेसें शशेके शृंग असत होते हे ॥ तेसें जगत असतहे ॥ जेसें मृगतृष्णाकी नदी असत होतीहे ॥ तेसें इह जगत असतहे ॥ असम्यक् ज्ञानकरिकें जगत भासताहे ॥ विचारकीये तें शांति हो जातीहे शुद्ध चैतन्य सत्ताविषे जब चितसंवेदन होतिहे ॥ तब उहि संवेदन जगतरूप होय भासताहे ॥ परंतु जगत हुआ कछु नहि ॥ जेसें समुद्र अपनी द्रवता स्वभाव करिकें तरंगरूप होइ भासताहे ॥ परंतु तरंग कछु और भाव वस्तु नहि ॥ जलरूपहे ॥ तेसें ब्रह्मसत्ता जगतरूप होईकरि फुरति हे ॥ सो और तो जगत भिन्न पदार्थ कोउ नहि ॥ ब्रह्म सत्ता किंचनद्वारा अेसें भासतिहे ॥ जेसा बीज होताहे ॥ तेसाहि अंकुर निसकता हे ॥ जेसी आत्मसत्ताहे ॥ तेसेंहि जगतहे ॥ दूसरी वस्तु कोउ नहि ॥ आत्मसत्ता हि अपने आपविषे स्थितहे ॥ चित्तसंवेदनके स्पंद करिकें जगतरूप होतिहे ॥ तिस उपर हे रामजी! एक आख्यान तुजकों कहता हों ॥ सो श्रवणका भूषणहें ॥ तिसके समुझेतें सब संशय मिटि जावेगा ॥ अरु विश्रामकुं प्राप्त होवेगा ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन्! मेरे बोधकी दृढ्ढताके निमित्त मंडप आख्यान जिसपर हुआहे ॥ तेसें संक्षेपते कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! इस पृथ्वीमें एक राजा पद्म होत भयाहें ॥ सो कैसा था जो कुलका कमल प्रफुल्लित था ॥ अरु संतानवानथा ॥ अरु बडी लक्ष्मी करी संपन्न अरु समुद्रवत् मरजादाके धारणेहारा अरु दुष्टोंरूपी तमका नाश कर्ता सूरज ॥ अरु सतगुणोंरूपी हंसोका मानसरोवर ॥ अरु दोषरूपी कौवेकों नाश कर्ता ॥ अरु दोषरूपी तृणोंका नाश कर्ता अग्नि ॥ अरु प्रजाके पालणेंकों शत्रुकें नास करणेकों विष्णुजी ॥ तथा मित्ररूपी चंद्रमुखी कमलनीकों चंद्रमाथा ॥ अरु संपूर्ण राजसी सात्विकी गुणोंकर संपन्नथा ॥ एक लीला नाम तिनकी स्त्रीथी ॥ बहुत सुंदर थी ॥ मानों लक्ष्मीनें अवतार लीयाहे ॥ सो राजाकी प्रसन्नताकों देखकें आपभी प्रसन्न होवे ॥ अरु राजाकों दिलगीर देखकें आपभी दिलगीर होवें ॥ अरु राजाकों क्रोधवान देखे तब भयमान होवे ॥ बहूत शुशीलता संयुक्त रहे ॥ तिस साथ राजा क्रीडाकरत भया ॥ बाग जावे ताल कदंब वृछों कल्प वृछोंके नीचे जावे ॥ सुंदर सुंदर स्थानों विषे जायकें क्रीडाकरें ॥ बरफको मंदिर बनायकें तिसविषे रहे ॥ अरु रत्नमणिके जडे हूए स्थानोंविषे शज्जाविछाइकें विश्राम करे ॥ इस प्रकार विचरते भये ॥ बहुरी ठाकुरद्वारे तीर्थ जो जो दूरभी पुन्य स्थान थे तहां गये इस प्रकार राजसी अरु सात्विकी स्थानोंविषे विचरते भये ॥ आपसमे गुह्यार्थ पावे ॥ एक एक पद कहे ॥ दुसरा तिसकों श्लोक करिकरि उत्तर देवे ॥ अरु श्लोकभी एसें पढेजो पढनेमें भाषा भासें॥ अर्थविषे संस्कृत होवें॥ अरु सेनकी अरु सिंगारकी चतुराइ सीखे ॥अरु राजा चंद्रमाकी नांइ सुंदर ॥ अरु राजसी विद्याकरी पूर्ण ॥ हस्ती घोडे रथ आदिक चलावनेकोंभी विद्यावान शस्त्रोंके चलावनेकी विद्या करिभी संपन्न हुआ ॥ इस प्रकार राजा बहुत चतुर हुआ ॥ अरु दोनोंका परस्पर आपसमें सनेह भया ॥ अरु दोनोंकी जोबन अवस्था हुइ ॥ अरु दोनों गुणवान भये ॥ जो राजाका चित्त और किसी ठोर न जावे ॥ अरु राणीका चित्त भी ओर किसी उर न जावें ॥ राणी पतिव्रता अरु राजा धर्मात्मा हुआ तब एक समय राणी विचार किया जो राजा मुजकों बहुत प्रियहे ॥ अपने प्राणोंकी नांइ प्याराहे ॥ अरु बहुत सुंदरहे ॥ किसी प्रकार इसकी जुवावस्था सदा रहे ॥ जो अजर अमर रहे ॥ इसका अरु मेरा विजोग कदाचित न होवे ॥ सोइ उपाय करों ॥ यज्ञकरों दान तप करों ॥ एसें विचार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करिकें ब्राह्मणों ऋषीश्वरो मुनीश्वरोसों पूछती भई ॥ हे विप्रों! अजर अमर नर किस प्रकार होताहे ? जिस प्रकार होताहे ॥ सो हमकों कहो॥ ॥ विप्रोवाच ॥ हे देवी! जप तप आदि
करिकें सिद्धता प्राप्त होती हे ॥ परंतु अमर नहि होता ॥ सब जगत नाशरूप हे ॥ इस शरीर करि किसी स्थिर नही रहता ॥ हे रामजी ! इस प्रकार ब्राह्मणोंतें सुन करी राणी
भर्ताके विजोगते डरी करी विचार करने लगी ॥ जो भर्तारसोंमे प्रथम मरों ॥ तब मेरे बडे भागहे में सुखवान् होउंगी ॥ अरु जो इह प्रथम मृतक होवे ॥ तब सोइ उपाय करों जिस
करि राजाका जीव मेरे अंतःपुर विषेही रहे ॥ बाह्य न जावे ॥ में दर्शन करति रहों तातें सरस्वतीकों में सेवों॥ हे रामजी! एसें विचार करिकें तप रूप जो सरस्वतीहे॥ तिसकी पूजन करती
भइ ॥ तब त्रिरात्र अरु दिनपर्यंत निराहार रहे॥ चतुर्थ दिनमें पारना करें॥ जिस प्रकार शास्त्र विधि हे तिस प्रकार करे ॥ देवता ब्राह्मण पंडित गुरु ज्ञानीयोंकी पूजा करे॥ स्नान दान तप
ध्यान नित प्रतिकरे॥ इह नेम कीया अरु गृहविषे किरतन जिस प्रकार आगें करती थी उसी प्रकार विचरे॥ भर्ताकों लखावे नहि॥ इस प्रकार नेम संजुक्त क्लेशतें रहित तप करति भइ॥
जब तीनसो दिन वितीत भये ॥तब प्रीति संयुक्त होइकरि सरस्वतीकी पूजाकरी ॥ तब वागेश्वरी प्रसन्न होइकरी दर्शन देती भइ अरु कहा हे पुत्री! तुजनें भर्ताके निमित निरंतर तप की
याहे॥ सो में प्रसन्न भइहों॥ जो तुजकों अभीष्ट वरहे सो माग॥ ॥ लीलाउवाच॥ हे देवी! तेरी जय होवे ॥ में अनाथ तेरी शरन हों ॥ मेरी रक्षा कर ॥ इह जन्म जरा रूपी जो अ
ग्निहे ॥ सो बहुत प्रकारकरि जलावतहे ॥ तिसके शांतिकरनेकों तुम चंद्रमाहो ॥ अरु हृदेविषे जो तम हे ॥ तिसके नाशकरनेकों तुम सूरज हो॥ हे माता! मुझकों दो वर देइ॥ इक इह व
र दे जो जब मेरा भर्ता मृतकहोवे ॥तब इसकावपु जो हे पुर्यष्टक, सो बाह्य न जावे अंतःपुरहि विषे रहे॥ अरु दुसरा वर इहदे, जब मेरी इछा तुमारे दर्शनकी होवे तब दर्शन देहु॥ ॥ सर
स्वतीउवाच॥ एसेंहि होवेगा, हे रामजी! इस प्रकार वर देकें सरस्वती अंतर्ध्यान भइ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग उपजकें लीन होतेहे॥ तेसें देवी अंतर्ध्यान होगइ एसे सुनकें लीला बहुत प्रस
न्न भइ ॥ कालरूपी चक्र फिरताहे ॥ जिसकों क्षणरूपी आरा लगा हुआ हे ॥ तिसके त्रयसो साठ कीले हे ॥ वर्ष पर्यंत उसी ठोर बहूरी आते हे ॥ एसे जो काल चक्रहे तिसकरि राजा
पद्म रण भूमिकातें फटकें आय घरविषे पडा हुआ मृतक भया ॥ तब एसा हो गया ॥ जेसें सूका पत्रसों रस निकसि जातहें तेसें पुर्यष्टकके निकसणें करि राजाका शरीर कुमलाइ ग
या तब राणी उसके मरण करि बहुत शोकवान भइ ॥ मुखकी कांति दूर हो गइ ॥ जेसें कमलनी जलबिना कुमलाइ जातहे ॥ तेसें विलाप करने लागी ॥ कबहूं उंचे स्वरकरी रुदन क
रे ॥ कबहू चुप करि जावे ॥ राजाके विजोग करि बहुत शोकवान भइ ॥ जेसें चकवेके विजोगकरि चकवी शोकवान होतिहे जेसें सर्पके फुत्कार लगेतें कोउ मूर्छित होताहे ॥ तेसें
शोकके स्वासोंकर लीला मूर्छित होगइ अरु व्याकुल होकें प्राण त्यागने लगी ॥ तब सरस्वतिजीने दया करिकें आकाशवाणी करी ॥ हे सुंदरी ! इह जो तेरा भर्ता मृतक भयाहे ॥
तिसकों तूं सर्व औरतें फूलोंकरी ढांपी राख बहुरी तुजकों भर्ताकी प्राप्ति होवेगी ॥ अरु इह फुल नाहि कुमलायगें ॥ तेरे भर्ताकों एसी अवस्था हे ॥ जेसें आकाशकी निर्मल कांति
हे ॥ अरु तेरेहि मंदिरविषे हे ॥ कहुं गया नहि ॥ हे रामजी ! इस प्रकार कृपाकरिकें जब देवी वचन कहे ॥ तब लीला कछुक शांतिवान भइ ॥ जेसें जलबिना मछि तडफडती हुइ
मेघकी वर्षा करिकें कछुक शांतिवान होतिहे ॥ तेसें लीला कछुक शांतिवान होत भइ ॥ बहुरी केसें हुइ जेसें धन होवे अरु कृपणता कर धनका सुख न होवे ॥ तेसें बचनोंकर शांति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वान हुइ ॥ अरु भर्ताके दर्शन बिना सब शांति न हुइ ॥ तब लीला एसेहि करत भइ ॥ उपर नीचे फुलोंकरी भर्ताकों ढाप्या उसके पास आपभी शोकवान होइ करि बेठी रहि ॥ अरु रुदन करनें लागी ॥ बहुरी देवीकी आराधना करी ॥ तब अर्धरात्रके समे देवीजी आय प्राप्त भइ ॥ अरु कहा ॥ हे सुंदरी तेनें मेरा स्मरन किस निमित्त कीयाहे ? अरु तुं शोक किस का रन करतिहे इह तो सभ जगत भांतिमात्र हे ॥ जेसें मृग तृष्णाकी नदी होतिहे ॥ तेसें इह जगत हैं ॥ अहं त्वं इदंतें ले आदिक जो जगत भासता हे ॥ सो सभ कल्पना मात्रहे ॥ भम करिकें भासताहे ॥ आत्माविषे हुआ कछु नहि ॥ तुं किसका शोक करतिहें ? ॥ लीलाउवाच ॥ हे परमेश्वरी ! मेरा भर्ता कहां स्थितहे ॥ अरु क्या रूप धार्या हें ? तिसकों मुझे मि लाउ ॥ तिस बिना में अपना जीना देख नहि सकति ॥ ॥ देवीउवाच ॥ हे लीले ! आकाश तीनहे ॥ एक भूताकाशहे ॥ एक चित्ताकाश हे एक चिदाकाशहे ॥ इह जो आकाश हे ॥ सो भूताकाशहे चित्ताकाशके आश्रयहे ॥ अरु चित्ताकाश चिदाकाशके आश्रय हे ॥ तेरा भर्ता अब भूताकाशकों त्यागकरि चित्ताकाशकों प्रत्यक्ष गयाहे ॥ सो चि त्ताकाश चिदाकाशके आश्रय स्थित हे ॥ जब तूं चिदाकाशविषे स्थित होवेजी तब सब ब्रह्मांड तुजकों भासेगा ॥ तिसविषे प्रतिबिंबित होतेहें ॥ तहां तुझकों भर्ता का अरु जगतका दर्शन होवेगा ॥ हे लीले ! देशतें देशांतरकों क्षणविषे संवित जाताहें ॥ तिसके मध्य जो अनुभव आकाशहे ॥ सो चिदाकाशहे ॥ जब तु संकल्पकों त्याग देवे तिसतें शेष रहे ॥ सो चिदाकाश हे ॥ हे लीले ! इहां जो जीव विचरते हे ॥ सो पृथ्वीके आश्रयहे ॥ अरु पृथ्वी आकाशके आश्रयहे ॥ तातें इह सब जीव जो विचरते हें ॥ सो भूताकाशके आश्रय विचरतेहे ॥ अरु चित्त जिसके आश्रयतें एकक्षण विषे देश देशांतर भटकता हे सो चित्ताकाश हे ॥ हे लीले ! जब द्रश्यका अत्यंत अभाव होताहे ॥ तब परमपदकी प्राप्ति होतिहे ॥ सो चिरकालके अभ्यासतें प्राप्त होतिहे अरु मेरा तुजकों इह वर हे जो तुजकों शीघ्रहि प्राप्तहोवेगी ॥ हे रामजी ! इस प्रकार जब ईश्वरी कहिकरि अंतर्ध्यान होत भइ ॥ तब लीला करिकें लीला राणी निर्विकल्प समाधिविषे स्थितभई ॥ अरु चित्तसहित देहका अहंकार त्यागकरी उडी ॥ जेसें पंखी अपने गृहतें उडकरि आकाशकों गमन करताहे॥ तेसें राणीचिदाकाशकों उडी ॥ तब एकक्षणमें आकाशकों प्राप्त भइ॥ जो नित्यशुद्ध अनंत आत्माहे परम शांतिरूपहे ॥ सर्वका अधिष्ठान हे॥ तिसविषे जाइ करि भर्ताकों देखती भइ ॥ स्पंदक ल्पना ले गइ थी ॥ तिसकरिकें अपने भर्ताकों देखती भइ ॥ अरु बहुत मंडलेश्वर सिंगासनोपर आकाश विषे देखे अरु बडे सिंगासन पर बेठे भर्ताकों देखती भइ ॥ चारों उरतें जय जय शब्द होताहे ॥ जो हे राजा तेरी जय होवे ! तेरी जय होवे ! तूं बहूत जीवे ॥ अरु बडे सुंदर मंदिरकों देखति भइ ॥ राजाके पूर्व दिसाकों देखे ॥ तहां ब्राह्मण ऋषीश्वर मुनीश्वर अ नेक बेठेहे ॥ अरु बडी धुनीसों पाठ करते हे ॥ दक्षिण दिशाकी उर देखे सब सुंदर स्त्रीयां बेठी हे ॥ अरु नानाप्रकारके भूषण सहित अनेकहे ॥ उत्तर दिशाकि उर देखे ॥ तब हस्ती घो डे रथ प्यादे चारों प्रकारकी अनंत सेनाहे॥ पश्चिमकी उर मंडलेश्वर हे एसे देख अरु चारो दिशा मंडलेश्वर इसके आश्रय जीवकें विराजतेहें ॥ सो देखकें आश्चर्यकों प्राप्त भइ॥ और न गर देखे प्रजा देखी ॥ सब अपअपने व्यवहार विषे स्थितहे ॥ बहुरी राजाकी सभाविषे जाइ बेठी राणी सबको देखे ॥ अरु राणीकों कोउ न देखे ॥ जेसें औरके संकल्प पुरकों नहि दे ख सकता ॥ तेसें राणीकों कोउ देख न सके ॥ तब राणी उसका अंतःपुर देखा जहां ठाकुरद्वारे बने हुएहे देवताकी पूजा होतिहे ॥ अरु गंध धूपसों पवन करिकें त्रिलौकी मग्न करति हे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ राजाका जस चंद्रमाकिनाईं बहुत हूआ तब पूर्व दिशासों हलकारा आयकें कह्या ॥ हे राजन ! पूर्व दिशामें और राजाका क्षोभ हुआहे ॥ बहुरी उतर दिशासों हरकारा आया ॥ तिसनें कह्या हे राजन उतर दिशामें और राजाका क्षोभ हुआहे ॥ तुमारे जो मंडलेश्वर हे सों युद्ध करते हे ॥ सोइ प्रकार दक्षिण दिशाकी औरसों आया ॥उसनेंभी कहा ओर राजाका क्षोभ हुआहे ॥ बहुरी पश्चिम दिशा सों आया ॥ उसने कह्या पश्चिम दिशामें क्षोभहुआहे बहुरी ओर आया॥ तिसनें कह्या सुमेरु पर्वत जु देवता सिद्धोंके रहनेका स्थान हे॥ तहां क्षोभ हुआहे ॥ बहुरी अस्ताचल पर्वतसों आया ॥ तिसने कहा अस्ताचलमें क्षोभ हूआहें ॥ तब राजाकी आज्ञाकरि बहुत सेना विद्यमान स्थित आन हुइ ॥ जेसें बडे मेघ आवे तेसें सेना आइ ॥ अरु जेते मंत्री थे ॥ अरु नंद आदिक जो टहलुएथे ॥ और ऋषीश्वर मुनीश्वर तहां देखती भइ ॥ जेते भृत्य थे सो सब सुंदर अरु वर्षातें रहित स्वेत बादरोंकी नांइ तिसके स्वेत वस्त्र देखति भई अरु बडे वेद पाठि ब्राह्मण देखती भइ ॥ जिनके शब्द कर नगारेके शब्दभी सूक्ष्म भासे॥ हे रामजी ! इस प्रकार ऋषीश्वर मंत्री टहलुए बालक देखति भइ ॥ सो अपूर्वदेखती भइ ॥ अरु पूर्वभीदेखती भइ ॥ देखकें आश्चर्यवान हुइ ॥ चित्तविषे इह शंका उपजी जो मेरा भर्ताहि मूआ हे के संपूर्ननगरभी मृतक भया ॥ जो परलोकविषे आएहे ॥ तब देख्या जो मध्यानका सूर्य शीशपर उदितहे ॥ अरु राजा सुंदर वर्ष षोडशका हे ॥ जरा अवस्था प्रथमकों त्यागिकरि नौतन शरीरकों धार बेठाहे ॥ एसें आश्चर्यकों देखकें राणी बहुरीअपने गृहविषे आवति भइ तब देखा जो अर्धरात्रहे ॥ अपनी सहेलीयांकों सोइयां हूइ देखती भइ सहेलीयांकों जगावति भइ अरु कह्या जो सिंगासनपर मेरा भर्ता बेठता था॥ तिसकों साफ करो ॥ में तिसके उपर बेठती हों अरु जिसप्रकार तिसके निकट मंत्री भृत्य आन बेठतेथे॥ तिसी प्रकार करो ॥ इस प्रकार सुनकर सहेलीयां बडेमंत्रीकों कहा ॥ तिन मंत्रीनें सबकों जगाया ॥ सिंहासन झाडकरीके मेघकी नांइ जलकीवर्षा करि ॥ सिंघासन उपर वस्त्र बिछाए ॥आसपासभी वस्त्र बिछाए ॥ मसालां जगाइयां बडा प्रकाश हूआ॥ अंधकार नष्ट भया ॥ जेसें अगस्तमुनी समुद्रकों पान कीयाथा ॥ तेसें अंधकारका प्रकाशनें पान करिलीया ॥ तब मंत्री टेलुए पंडित ऋषीश्वर ज्ञानवान सब आए स्थितहूए॥ जेते कछु राजाके पासथे ॥ सो सब आन स्थितभये ॥ सिंगासनके निकट बेठें और लोकभी आय स्थितहूए ॥ मानों प्रलयकालविषे समुद्र क्षोभ हूआहे ॥बहूरी जलसों पूर्णहूएहे प्रलय हूइ सृष्टि मानों तौ अनंत उत्पन्न भइहे ॥ इस प्रकार मंत्री टेलूए पंडित बालक भर्ता विनां देखके बडे आश्चर्यकों प्राप्त भइ ॥ जो एक आदर्शकों दोनो ओर अंतर्बाहिर दृष्टि भासतिहे॥ इस प्रकार देखकें अंतरकी वार्ता उनकों न जतावत भइ॥ बहूरी अंतर आइकरि कहत भइ बडा आश्चर्यहे ! बडा आश्चर्य हे ईश्वरकी माया जानीनही जाती॥ इह क्याहे ! इस प्रकार आश्चर्यमान होइकरि सरस्वतीजीकी आराधना कीनी॥ तब सरस्वती कुमारी कन्याका रूप धारिकरि आन प्राप्त भइ तब लीला कहा॥हे भगवती ! में वारंवार पूछती हों॥ तुम उद्वेगवान नहि होवणा॥ बडेका इह स्वभावहे ॥ जो शिष्य वारंवार पूछे तोभी खेदवान नहि होते॥अब में पूछतीहों जो इह जगत क्याहे ! अरु उह जगत क्याहे ! दोनों विषे कृत्रिम कोनहे ! अरु अकृत्रिम कोनहे !

॥ देवीउवाच ॥ हे लीले ! तेने पूछा जो कृत्रिम कोनहे॥ अरु अकृत्रिम कौन हे॥ पाछें में तुजकों कहोगी॥ ॥ लीलाउवाच ॥ हे देवि ! जहां तुम हम बेठेहें सो अकृमित्रहें॥ अरु उह जो मेरे भर्ताका स्वर्गहे॥ सोकृत्रिम हे॥ काहेतें जो शून्यस्थानविषे उह सृष्टि हूइहे॥ ॥ देवीउवाच ॥ हे लीले ! जेसा कारण होताहे॥ तेसाहि कारज होताहे॥ जो कारण सतहोताहे॥ तब कारजभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सत होताहे ॥ अरु सततें असत नहि होता ॥ अरु असततें सत नहि होता ॥ कारणतें अन्य कारज नहि होता ॥ तातें जेसें इह जगत हे ॥ तैंसा उह जगतहे ॥ ॥ लीलाउवाच ॥ हे देवी! कारणतें अन्य कारज सत्ताहोति हे ॥ काहेतें जो मृतिका जलके उठावणेकों समर्थ नहि होती ॥ अरु जब मृत्तिकाका घट बनताहे ॥ तब जलकों उठावताहे ॥ तो कारणतें अन्यभी कारजकी सत्ता हुइ क्यौं ? ॥ देवीउवाच ॥ हे लीले! कारणतें अन्य कारजकी सत्ता तब होति हे ॥ जो सहायकारी भिन्न भिन्न होतेहें ॥ जहां सहायकारी नही होता तहां कारणतें अन्य कारजकी सत्ता नहि ॥ तेरे भर्ताकी सृष्टि जो भासीहे ॥ सो कारणबिना भासी हे ॥ उसका जीव जो पुर्यष्टकथी ॥ सो आकाशरूपथि ॥ तहां न कोउ संवाय कारण था ॥ न निमित्त कारण था ॥ तिसकों कृ त्रिम केसें कहियें ? ॥ जो किसीका कीया होवे ॥ तो कृत्रिम होवें ॥ उह तो आकाशरूप पृथ्वी आदिक तत्वौंतें रहितहे ॥ जो संवाय कारण न होवे तो तिसका निमित्त कारण केसें होवे ? ॥ तातें उह जो तेरे भर्ताका सर्गहे सो अकारणहे ॥ ॥ लीलाउवाच ॥ हे देवी ! उस सर्गकी स्मृति जो संस्कारहे सो कारण क्यौं न होवे ? ॥ ॥ देवीउवाच ॥ हे लीले ! स्मृ ति तो कोउ वस्तु नहि ॥ स्मृति आकाशरूपहे ॥ स्मृति नाम संकल्पकाहे ॥ सो संकल्प आकाशरूपहे ॥ और तो वस्तु कछु नहि ॥ मनोराजरूपहे ॥ तातें उसकी सत्ता कछु नहि आ भासरूप हे ॥ ॥ लीलोवाच ॥ हे महेश्वरी ! जो उह संकल्पमात्र आकाशरूप हे तोभी आकाशरूपहे ॥ जहां तुम हम बैठे हे ॥ जेसें उहहे तेसें इहहे दोनों तुल्यहे ॥ ॥ देवीउवाच ॥ हे लीले ! जेसें तुं कहति हे तेसेंहिहे ॥ अहंत्वं इदं इह उह संपूर्न जगत आकाशरूपहे ॥ भ्रांतिमात्र भासते हे उपजा कछु नहि ॥ सब आकाशमात्रहे ॥ स्वरूपतें इनका कछु सद्भाव न हि ॥ जो पदार्थ सत्य न होवे तिनकी स्मृति केसें सत होवे ॥ ॥ लीलाउवाच ॥ हे देवी ! अमूर्तिवत् मेरा भर्ता था ॥ सो मूर्तिवत् हूआ अरु तिसकों जगत भासने लगा ॥ सो केसें भा स्या तिसका स्मृतिकारण हे ? ॥ के किसी ओर प्रकारहे इह मेरे दृश्य भ्रम निवृत्तिके निमित्त मुझकों वहीरूप कहो ॥ ॥ देव्युवाच ॥ हे लीले ! उह सर्गभी भ्रमरूप हे ॥ इहभी भ्र रूपहे ॥ जो इह सत होवे तो इसकी स्मृति सत होवे ॥ इह जगत असत रूपहे जेसें इह भ्रम तुजकों भास्याहे सो सुन ॥ एक महाचिदाकाशहे ॥ तिसका किंचन चिदणु हे ॥ ति सके किसी अंशविषे जगत हे ॥ सो जगतरूपी वृछहे ॥ सुमेर तिसका थंभहे ॥ सप्त लोक तिसके डालाहे ॥ आकाश उसकी शिखाहे ॥ अरु सप्तसमुद्र उसविषे रसहे ॥ तीनों लोक फल हे ॥ तिसविषे सिद्ध गंधर्व देवता मनुष्य दैत्यरूप मछरहे ॥ तारागण तिसके फूल हे ॥ तिसि वृछके किसी छिद्रविषे एक देश हे ॥ तिसविषे एक पर्वतहे ॥ तिसके तरे एक नगर वसताहे ॥ त हां एक नदीका प्रवाह चलताहे ॥ तहां एक वसिष्ठ नाम ब्राह्मण था ॥ सो बडा धर्मीथा ॥ सदा अग्निहोत्र करताथा ॥ धन अरु विद्या करि संपन्न था ॥ जेसा ऋषीश्वर वसिष्ठ हे ॥ विद्या अरु कर्म अरु धन प्राक्रम सब तिसके समानथा ॥ परंतु ज्ञानविषे भेदथा ॥ जो खेचर वसिष्ठका ज्ञानहे ॥ तेसा भूचर वसिष्ठका न था ॥ तिसकी स्त्रीका नामभी अरुंधती सो पति व्रताथी अरु चंद्रमाकी नाइं मुख था जिसका ॥ तिस अरुंधती समान विद्या कर्म क्रांति धन चेष्टा प्राक्रम जिसका ॥ अरु चैतनता जोहे ज्ञान सो समानथा ॥ और सब लछन एक समान था ॥ उह आकाशकी अरुंधतीहे ॥ इह भूमिकी अरुंधती थी ॥ एक कालमें वसिष्ठ ब्राह्मण पर्वतके सिखरपर बेठा था तहां सुंदर हरे तृणोंकरि शोभायमान स्थानथा ॥ एक रा जा उस पर्वतके निकट सिकार खेलनेंके निमित्त सब परिवारसहित चल्या जाता था ॥ सो बडु सुंदर अरु नानाप्रकारके भूषणों सहित भूषित कीयाहुआ ॥ अरु शीसपर चंमर होता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाताथा ॥ मानों चंद्रमाकी किरणां प्रसर रहियांहे॥ अरु शिरपर अनेक प्रकारके छत्रोंकी छाया॥ मानों आकाशभी रुपेका कीयाहे ॥ अरु दूजेभी बहुतहे ॥ अरु रत्न मणिके भूषणों पहिरे हुए मंडलेश्वर साथहे ॥ अरु हस्ती घोडा रथ पैदल चारों प्रकारकी सेना आगें चलि जातीहे तिनकी धूड बादल होइ करि स्थित भइ॥ अरु नौबत नगारे बाजतेहे ॥ तिसकों देखकें वसिष्ठ ब्राह्मण मनविषे चिंतवन करत भया ॥ जो राजाकों बडा सुख प्राप्त होताहे ॥ जो सभ सौभाग करिकें राजा संपन्न होताहे ॥ इस प्रकार राज मुझकोंभी प्राप्त होवे ॥ इह बांछा करत भया ॥ में कब दिसाकों जीतोंगा ? अरु मेरे जश साथ दशदिशा पूर्ण कब होवेगीयां ? एसें छत्र मेरे सिरपर ? कब ढरेंगे? अरु चारा प्रकारकी सेना मेरे आगें कब चलेगी ? अरु सुंदर मंदिरोंविषे सुंदर स्त्रीयां साथ में कब विलास करोंगा ? मंद मंद पवन सीतल सुगंधता साथ कब परस होवेगा ? हे लीले ! इस प्रकार ब्राह्मण संकल्पकों धारता भया ॥ अरु जो कछु अपने स्वकर्म हे सोभी करता रहे ॥ अरु कामना रिदेविषे स्थिर हो रहा ॥ तब ब्राह्मणकों जरा अवस्था आनी प्राप्त भइ शरीर जर्जरी भाव हुआ ॥ जेसें कमल उपर बरफ प डताहे ॥ अरु कुमलाइ जातहे ॥ तेसें ब्राह्मणका शरीर कुमलाइ गया ॥ अरु मृत्युका समय निकट आया तब तिसकी स्त्री भर्तारका मृत्यु निकट देखकें कष्टवान भइ ॥ तब उसने मेरी आराधना करी जेसें तेनें करी तेसें उसनेकरी ॥ भर्ताकी अजर अमरताकों दुर्लभ जानकें मुजसों वर मांगत भइ ॥ हे देवी ! मुजकों इह वर देहु ॥ जब मेरा भर्ता मृतक होवे तब इसका जीव बाह्य न जावे ॥ तब में कहा एसेंही होवेगा ॥ हे लीले ! जब बहुत काल बितित हुआ ॥ तब ब्राह्मण मृतक हुआ ॥ तब उसका जीव मंदिरविषे रहा ॥ जेसें मंदिरविषे आकाशहि रहताहे तेसें मंदिरविषे रहे ॥ हे लीले ! जब आकाशरूप होगये ॥ अरु जो उसकी पूर्यष्टकविषे राजाका दृढ संकल्प था ॥ तब उह संकल्प उसकों आन फुर्या ॥ जे सें बीजतें अंकुर निकस आवताहे ॥ तेसें आन फुर्या तिसकरी अपने राजकों देखता भया ॥ सो केसा राज देखता भया ॥ जो त्रिलोकीका राजहे ॥ अरु परम सौभाग्य करिके सं पन्नहे ॥ दशों दिशा जश करिकें पूर्ण होइ रहिहे ॥ मानों यशरूपी चंद्रमाकी इह पूर्णमासीहे ॥ अरु जेसें प्रकाश अंधकारकों नाश करताहे ॥ तेसें शत्रुरूपी अंधकारका नाश कर्ता प्रकाश हूआ ॥ अरु ब्राह्मणोंके चरनोंका सिंगासन हुआ ॥ अर्थ इह जो ब्राह्मणोंकों बहुत पूजणे लागा ॥ अरु अर्थियोंका कल्पवृक्ष हुआ अरु स्त्रीयोंकों कामदेव हुआ ॥ इत्यादिक जो सात्विकी राजसी गुणहे ॥ तिनों करि संपन्न हुआ ॥ तिसकी स्त्री तिसकों मृतक देखकें बहुत शोकवान भइ ॥ जेसें जेठ आसाढकी मंजरी सूक जातीहे ॥ तेसें शोकवान भइ ॥ तब इहभी शरीरकों छोडकें अंतवाहक शरीर करिकें भर्ताकों जाय प्राप्त भइ ॥ जेसें नदी समुद्रकों जाए प्राप्त होतिहे ॥ अरु ब्राह्मणके जो पुत्रथे ॥ सो धनसंयुक्त अपने गृहविषे रहे उस ब्राह्मणकों मृतक हुए अब आठदिन हुएहे सो वसिष्ठ ब्राह्मण तेरा भर्ता पद्म हुआ ॥ अरुंधति उसकी स्त्री तूं लीला हुइहे ॥ अरु जेता कछु आकाश पर्वत समुद्र पृथ्वी त्रि लोकी हे ॥ सो वसिष्ठ ब्राह्मणके अंतःपुर विषे एक खुणे विषे स्थितहे ॥ उहां तुजकों आठदिन वितीत भयेहे ॥ सूतकभी नहि गया ॥ अरु इह तुम साठसहस्र वर्ष राज्य कीयाहे ॥ ना ना प्रकारके सुंदर भोग भोगेहे ॥ हे लीले ! इस प्रकार तेनें जन्म लीयाहे ॥ सो में सब कहा हे ॥ सो क्याहे ॥ सब भ्रम मात्रहे ॥ जेता कछु जगत तुजकों भासताहे ॥ सो आभास मात्रहे ॥ संकल्प करिकें पडा फुरताहे ॥ वस्तुगत कछु नहि ॥ हे लीले ! जो इह जगत सत न हूआ तो तिसकी स्मृति कैसें सत्य होइ ? तुम हम सब उसि ब्राह्मणके मंदिरविषे स्थितहे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ लीलाउवाच ॥ हे देवी ! तुमारे वचनकों में असत केसे कहों ॥ जो तुम कहतेहो उस ब्राह्मणका जीव अपने गृहविषे रहा ॥ तहां हम तुम बेठेहे ॥ अरु देशदेशांतर पर्वत समुद्र लोक अरु लोकपालक सब जगत उसीही ग्रहविषे हे ॥ सो समावते केसे हे ! इह बचन तुमारे एसेंहे ॥ जेसें सरसवके दाणे विषे उन्मत्त हाथी बांधे हुएहे ॥ अरु सिंघों साथ मछर युद्ध करताहे अरु कमलके डोडे विषे सुमेर पर्वत आयाहे ॥ तिस कमलपर भमरा आन बैठा तिसकों पान करि गया ॥ अरु सुपनेविषे मेघ गरजतहे ॥ अरु चित्रामणके मोर नाचतेहे ॥ एसी वार्ता कहतेहो ॥ अरु जाग्रतकी मूर्ति उपरि लिखा हूआ मोर मेघकों गर्जता देखकें नृत्य करताहे ॥ जेसें इह असंभव वार्ताहे ॥ तेसें तुमारा कहणा मुझकों असंभव भासताहे ॥ ॥ देवीउवाच ॥ हे लीले ! इह में तुजकों जुठ नहि कहा ॥ हमारा कहणा कदाचित असत नहि ॥ काहेंते जो आदि परमात्माकी नीती हे ॥ जो महापुरुष असत नहि कहते ॥ इसी कारण हम असत नहि कहते ॥ हम तो धर्मके प्रतिपादन करणे हारेहे ॥ जहां धर्मकी हानि होतिहे ॥ तहां हम प्रतिपादन नहि करतेहे ॥ जो हम धर्मका प्रतिपादन न करे तब धर्मकों और केसें माने ? हे लीले ! जेसें सोए हूएकों सुपनेविषे त्रिलोकीभास आतीहे सो अंतःकरणविषेही होतीहे ॥ अरु सुपनेतें जाग्रत होती हे ॥ तेसें मरनाभी जान जब जहां मृतक होताहे ॥ तहां जीव जो पुर्यष्टक हे ॥ सो आकाशरूप होइ जातहे ॥ बहुरी वासनाके अनुसार तिसकों जगत भासि आताहे ॥ जेसें सुपने विषे जगत भास आताहे ॥ सो क्या रूपहे ॥ आकाश रूपहे ॥ तेसें इसकोंभी जाण ॥ हे लीले ! इह सब जगत तेरे उसि अंतःपुर विषे हे ॥ काहेनें जो जगत चित्ताकाश विषे स्थितहे ॥ जेसें आदर्श विषें प्रतिबिंब होताहे ॥ तेसें चित्त विषे जगत हे ॥ अरु चित्त आकाशरूप हे ॥ जो चित्त अंतःपुरविषे हुआ ॥ तो जगतभी हुआ क्युं ॥ हे लीले ! इह जगत जो तुजकों भासताहे ॥ सो आकाशरूप हे ॥ जेसें सुपन नगर भासताहे ॥ संकल्प नगर भासताहे ॥ जेसें कथाके अर्थ भासतेहे ॥ तेसें इह जगतभीहे ॥ जेसें मृग तृष्णाका जल भासताहे ॥ तेसें इह जगत जाण ॥ हे लीले ! वास्तवतें कोउ पदार्थ उपजा नहि ॥ भ्रम करिकें पडे भासतेहे ॥ जेसें सुपनेतें सुपनांतर भासताहे ॥ बहुरी ओर सुपना देखताहे ॥ तेसें तुमकों इह सृष्टि भ्रम भास्याहे ॥ हे लीले ! इह जगत आत्मरूपहे ॥ जहां चिदअणुहे ॥ तहा जगतभीहे ॥ परंतु क्यारूपहे ? आभासरूप हे जेसें उह आकाशरूपहे ॥ तेसें इह जगतभी आकाशरूप हे ॥ जिस प्रकार इह चैत्यताहे ॥ तिस प्रकार होइ भासताहे ॥ तातें संकल्प मात्र हे ॥ जेसें सुपन पुर भासताहे ॥ जेसे संकल्प नगर होताहे ॥ तेसें इह जगत हे ॥ जेसें मरुथलकी नदीके तरंग भासतेहे ॥ तेसें इह जगत भासताहे ॥ तातें इसकी कल्पना त्यागकें रहहु ॥ ॥ लीलाउवाच ॥ हे देवी ! तिस वसिष्ट ब्राह्मणकों मूए आठ दिन बीतेहे ॥ अरु हमकों इहां साठ सहस्र वर्ष बीतेहे ॥ इह वार्ता सत केसें जानियें ॥ इह थोडे कालविषे बडा काल केसें हूआ ? ॥ ॥ देवीउवाच ॥ हे लीले जेसें थोडे देशविषे बहुत देश आतेहे ॥ तेसें थोडे कालविषे बहुत कालभी आताहे ॥ अहंता ममता आदिक जेता कछु जगतहे ॥ सो आभास मात्रहे ॥ तिसकों क्रम करिकें सुण ॥ जब इह जीव मृतक होताहे तब मूर्छा हो जातीहे ॥ बहुरी मूर्छासों चैतनता फिरी आतीहे तिसविषे इह भासताहे ॥ जो इह आधार हे इह आधेयहे ॥ इह मेरा हाथहे इह शरीरहे ॥ इह मेरा पिताहे ॥ इसका में पुत्र हों ॥ अब एते वर्षका में हुआ हों ॥ इह मेरे बांधवहे ॥ तिनके साथ स्नेह करताहों ॥ इह मेरा गृह हे ॥ इह मेरा कुल चिरकालका चल्या आताहे ॥ मरणेके अनंतर एते क्रमकों देखताहे ॥ हे लीले ! जिस प्रकार उह देखताहे ॥ तेसें इहभी जान ॥ एक क्षणविषे ओरका और भासने लगताहे ॥ इह जगत चैतनका किंचनहे ॥ जेसें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चैतन संवितविषे चैत्यता होतीहै ॥ तेसा जगत भासताहे ॥ जेसें सुपने विषे द्रष्टा दृश्य दर्शन तीनों भासतेहे ॥ तेसें आत्म सत्ता विषे इह जगत किंचन होताहे ॥ भ्रम करिकें भासताहे वास्तवतें नानात्व कछु हुआ नहि ॥ जेसें सुपने विषे कारणविना नाना प्रकारका जगत भासताहे ॥ तेसें परलोकविषे नाना प्रकारका जगत कारण विना भासताहे सो क्या रूपहे आकाशरूपहे ॥ मनके भ्रम करिकें भासता हे ॥ तेसें इह जगत मनके भ्रमकरि भासताहे ॥ सुपन जगत अरु परलोक जगत अरु जाग्रत जगत विषे भेद कछु नाहिं ॥ जेसें उह भ्रम मात्रहे ॥ तेसें इह भ्रम मात्रहे ॥ वास्तवतें कछु उपजा नहि ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग कछु वास्तव नहि ॥ तेसें आत्माविषे जगत कछु वास्तव नहि ॥ असतहि सतकी नाइ भासताहे ॥ जिस कारणतें उपजा नहि तिसकारणतें अविनाशी हे ॥ हे लीले ! जेसें चैत्योन्मुखत्व हुए चैतन आकाश भासताहे ॥ तेसें चैत्यताविषेभी चैतन आकाशहे ॥ काहेतें जो कछु हूआ नांही ॥ जेसें समुद्रतें तरंग होताहे ॥ सो तरंग कछु जलतें इतर हुआ नहि ॥ जलहीहे ॥ तेसें आत्माविषे जगत कछु इतर नहि हूआ ॥ अरु जलविषे तरंगकी नांइंभी आत्माविषे जगत नहि ॥ जेसें शशेके शृंग असतहे ॥ तेसें जगत असतहे ॥ कछु उपजा नहि ॥ हे लीले ! जब इह पुरुष मृतक होताहे ॥ तब जेसा इसकों देश भासताहे ॥ जेसा काल जेसी क्रिया उत्पत्ति नाश भइहे ॥ कुटंब शरीर वर्ष आदिक नाना रूप भासतहे ॥ सो क्यारूपहे आभासरूपहे ॥ जिस प्रकार क्षण क्षणविषे एते भास आवतेहे ॥ तेसें कारणविना इह जगत भास्याहे तो दृश्य दृष्टाभी कोउ न हूआ ॥ इह जो देशकाल क्रिया द्रव्य देह इंद्रियां प्राण मन बुद्धि सब भ्रम करिकें भासतेहे ॥ आत्मा उपाधितें रहित आकाशरूपहे ॥ तिसके प्रमादकरिकें जगत भ्रम उदय हुआहे ॥ हे लीले ! भ्रमविषे क्या नहि होताहे ॥ जेसें एक रात्रविषे हरिचंदकों द्वादशवर्ष भ्रम करिकें भासे थे ॥ तेसें इहांभी थोडे कालविषे बहुत काल भास्याहे ॥ दोइ अवस्थाविषे इसकों औरका और भासताहे ॥ सुपने विषेभी और भासताहे ॥ अरु उन्मत्तता करिकेंभी औरका ओर भासताहे ॥ हे अभोक्ता अरु आपकों भोक्ता मानताहे ॥ अरु भ्रम करिकें उछाह अरु शोककों एकठा देखताहे ॥ किसीकों उत्साह होताहे ॥ अरु सुपने विषे मृतक भाव शोककों देखताहे ॥ अरु बिछुर्या हुआ होताहें ॥ सो सुपनें विषे मिल्या देखताहें ॥ अरु मिल्या मिल्या सो आपकों बिछुर्याजानताहे ॥ और काल हें ॥ अरु भ्रम करिकें और काल देखताहें ॥ तातें देख जो सब भ्रमरूपहे ॥ जेसें भ्रमकरिकें इह भासताहे ॥ तेसें इह जगतभी भ्रम करि भासताहे ॥ परंतु ब्रह्मतें इतर कछु नहीं ॥ तातें न बंध हे न मोक्ष हे ॥ जेसें मिरचे विषे तीक्ष्णताहे ॥ तेसें आत्माविषे जगत हे ॥ जेसे थंभेविषे पुतलीयां होतिहे तेसें आत्माविषे जगतहे ॥ जेसें थभेविषे पुतलियां कछु हूइ नाहिं ज्योंकां त्योथंभाहे ॥ शिल्पीके मनविषे पूतलियांहे ॥ तेसें ब्रह्म विषे जगत हे नहि ॥ मनरूपी शिल्पीनें जगतरूपी पूत लीयां कल्पीहे ॥ ज्योंकी त्यों आत्मसत्ता अपने आपविषे स्थितहे ॥ नित्यहे शुद्ध हे ॥ अजहे, अमर हे स्वभावविषे स्थितहे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे मंडपाख्याने परमार्थ प्रतिपादनं नाम चतुर्दशः सर्गः ॥ ॥ १४ ॥ ॥ देव्युवाच ॥ हे लीले ! जब इह मृत्यु करि मूर्छा होतीहे ॥ तब शीघ्रही उसकों बहुरी कुल जन्म भासि आताहे ॥ देश काल क्रिया द्रव्य अरु अपना परिवार भासि आताहे ॥ नाना प्रकारका जगत भासि आताहे ॥ अरु वास्तव कछु नहि ॥ स्मृतिभी असतहे ॥ एक स्मृति अनुभवतें होतिहे ॥ एक स्मृति अनुभव बिनाभी होतीहे ॥ अरु दोनो स्मृति मिथ्याहे ॥ जेसें सुपनेविषे अपना देह देखताहे सो अनुभव असतहे ॥ किसि अपने मरनेकी स्मृति करि नहि भासा ॥ अरु तिस मरनेकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्मृतिभी असत हे ॥ सुपनेंविषे कोउ पदार्थ देख्या तिसकों जागृतविषे स्मरण करना उहभी असत्यहे ॥ वस्तुतें कछु हूआ नहि ॥ तातें इह जतगत अकारणरूपहे ॥ जो हे सो चिदाकाश ब्रह्मरूपहे और न कछु विदूरथकी सृष्टि सतहे न इह सृष्टि सतहे ॥ सब संकल्प मात्र हे ॥ ॥ लीलाउवाच ॥ हे देवी ! जो इह सृष्टि भ्रम मात्रहे ॥ तो उह जो विदूरथकी सृष्टि हे ॥ सो इस सृष्टिके संस्कार करिकें हुइहे ॥ अरु इह सृष्टि उस ब्राह्मण अरु ब्राह्मणीकी स्मृति संस्कारतें हूइहे॥ ता ब्राह्मण अरु ब्राह्मणीकी सृष्टि किसकी स्मृतिविषे हूइहे? ॥ देवीउवाच ॥ हे लीले ! उह जो वसिष्ठ ब्राह्मणकी सृष्टि हे ॥ सो ब्राह्मणके संकल्पविषे हुइहे ॥ अरु ब्रह्मा ब्राह्मण वषे फुर्याहे ॥ परंतु वस्तुतें कछु ब्रह्माभी हूआ नहि ॥ तोतिसकी सृष्टि क्या कहों ॥ इहजेति कछु सृष्टि हे सो उसी ब्राह्मणके मंदिर विषेहे ॥ वस्तुतें कछु हूइ नहि॥ सब संकल्प रूपहे ॥ मनके फुरणे करिके भासताहे॥ जेसें जेसें संकल्प फुरताहे ॥ तेसा तैसा होइ करि भासताहे इह सृष्टिजो तेरे भर्ताकों भास आइहे ॥ सो दृढ संकल्पके भावतें भासि आइहे थोडे कालकरि बहुत भ्रम होकरि भासताहे॥ ॥ लीलाउवाच ॥ हे देवी! जहां ब्राह्मणकों मृतक हुए आठ दिन वितीत भये हे ॥ तिस सृष्टिकों हम किस प्रकार देखें?॥ ॥ देवीउवाच ॥ हे लीले ! जब तूं योगाभ्यास करे तब देखे ॥ अभ्यास बिना देखनेकों समर्थ न हो वेगी ॥ काहेतें जो उह सृष्टि चिदाकाश विषें फुरतिहे ॥ जब तूं चिदाकाश विषे अभ्यासकरिकें प्राप्त होवेगी तब तुझकों सब सृष्टि भासि आवेगी ॥ उह जो सृष्टिहे सो औरके संकल्प विषें हे जो उसके संकल्पविषें प्रवेशकरे ॥ तब उसका सृष्टि भासे ॥ अन्यथा नहि भासति ॥ जेसें एकके सुपनेकों दूसरा नहि जानी सकता ॥ तेसें औरकीसृष्टि नहि भासती ॥ जब तूं अंतवाहक रूप होवे तब उह सृष्टिकों देखे ॥ जब लग आधिभौतिक जो हे स्थूल पंचतत्वोंका शरीर तिसविषें अभ्यास हे ॥ तबलग उसकों न देख सकेजी ॥ काहेतें जो निराकारकों निराकार ग्रहण करता हे॥निराकारकों आकार नहि ग्रहण करि सकता॥ तातें इह जो आधिभौतिक देहहे सो भ्रमहे॥ इसकों त्याग करि चिदाकाश सत्ता विषे स्थित होउ ॥ जेसें पंछी आलयकों त्याग करि आकाश विषे उडताहे ॥ तब इछा होवे ॥ तहां चला जाताहे ॥ तेसें चित्तकों एकाग्र करिकें स्थूल शरीरकों त्यागदे ॥ अरु अभ्यास जोग करि आत्मा सत्ता विषे स्थित होइ जब आधिभौतिकों त्यागकरे चिदाकाश विषे अभ्यासके बलतें स्थित होवेगा तब आवरणते रहित होवेगी ॥ बहूरी जहां इछा करेगी तहां चली जावेगी ॥ जो कछु देख्या चाहेगी सो देखेगी ॥ हे लीले ! हम सदा तिस चिदाकाश विषे स्थितहे ॥ हमारा वपु चिदाकाशहे ॥ इस कारणतें हमकों आवरण कोउ रोक नांहि सकता ॥ हम सारखे जो उदारहे ॥ तिनकों सदा स्वरूप विषे स्थिति हे ॥ अरु सदा निरावरण हे॥ कोउ कारज हमकों आवरण नहि करी सकता ॥ हम स्वइछितहे ॥ जाहां गया चाहें तहां जातेहे ॥ सदा अंतवाहक रूपहे ॥ अरू तूं अबलगि आधिभौतिक रूपहे ॥ इस कारणतें उह सृष्टि तुजकों नहि भासति ॥ अरु तूं उहां जायभी नहि सकति ॥ हे लीले! अपनाही जो संकल्प मनोराज होताहे ॥ तिसविषें चित्तकी वृत्ति लागही ॥ तिसविषें काल इह अपना शरीर नहि भासता ॥ तो औरका केसें भासे ॥ जब तुजकों अंतवाहकका दृढ अभ्यास होवे ॥ अरु आधिभौतिक स्थूल शरीरकी औरतें वैराग्य होवे ॥ तब आधिभौतिकता मिटि जावेगी ॥ काहेतें जो आगेहि सब सृष्टि अंतवाहकरूपहे ॥ संकल्पकी दृढता करिकें आधिभौतिक भासता हे ॥ जेसें जल दृढ सीतता करिकें बरफ रूप होजाता हे॥ तेसें अंतवाहकतें आधिभौतिक हो जातेहे ॥ प्रमादरूप संकल्पतें वास्तवतें कछु हुआ नहि ॥ जब उहि संकल्प उलट करि सूक्ष्म अंतवाहककी ओर आताहे ॥ तब आधिभौतिकता मिटी जात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे ॥ अंतवाहकता आन उदय होतिहे॥जब इस प्रकार तुजकों निरावरणरूप उदय होवेगा॥तब देखणे मात्र अरु जाननेविषे जतन कछु न होवेगा ॥ साकार साथ निराकारकों ग्रहण ना हि करि सकता ॥ निराकारकी एकता निराकार साथ होतीहे ॥ अन्यथा नहि होती ॥ जब तूं अंतवाहकरूप होवेगी॥ तब उसकी संकल्पसृष्टिविषे तेरा प्रवेश होवेगा॥ हे लीले ! इह जग त संकल्प भ्रम मात्रहे ॥ वास्तवते कछू हूआ नहि ॥ एक अद्वैत आत्मसत्ता अपने आपविषे स्थितहे ॥ द्वैत कछु हे नहि ॥ ॥ लीलाउवाच ॥ हे देवी ! जो एक अद्वैत आत्मसत्ताहे ॥ तब कलना यहि दूसरी वस्तु क्याहुइ इह कहो ! ॥ देव्युवाच ॥ हे लीले ! जेसें स्वर्नविषे भूषन कछु वस्तु नांहि॥ जेसें सीपी विषे रूपा दूसरी वस्तु कछु नांही॥ जेवरी विषे सर्प नहि॥ तेसें कलनांभी कछु वस्तुनहि॥एक अद्वैत आत्मसत्ता सहज ज्यौंकी त्यौइ स्थितहे तिसविषें नानात्व भासताहे ॥ सोभ्रममात्रहे वास्तव अपना आप एक अनुभव सत्ताहे ॥ ॥ लीलाउवाच ॥ हेदेवी! जो एक अनुभव सत्ताहे॥अरु मेरा अपना आपहे॥ तो में एता काल क्यों भ्रमती रहि ? ॥ देव्युवाच॥ हे लीले ! अविचार भ्रम करिकें भ्रमती रहिहे॥विचार कीयेतें भ्रमशांत हो जाता हे ॥ सो भ्रमभी अरु विचारभी दोनों तेरा स्वरूपहे ॥ तुंहितें उपजाहे ॥ अरु जब तुजकों अपना विचार होवे ॥ तब भ्रम निवृत्त हो जावेगा॥जेसें दीपकके प्रकाश करि अंधकार नष्ट हो जाताहे ॥ तेसें विचार करि द्वैत भ्रम नष्ट हो जावेगा ॥ जेसें जेवरीके जाने सर्पभ्रम नष्ट हो जाताहे ॥ अरु सीपके जाणेतें रूपा भ्रम नष्ट होजाताहे ॥ तेसें आत्माके जानेतें आधिभौति क भ्रम शांत हो जावेगा जब दृश्यकों अत्यंताभाव जानकें दृढ वैराग करियें ॥ अरु आत्मस्वरूपका दृढ अभ्यास होवे ॥ तब आत्माका साक्षात्कार होवे ॥ भ्रम शांत हो जावे इसकर कल्याण हो जावे॥ हे लीले ! जब दृश्य जगतविषे वैराग्य होताहे ॥ तब वासना क्षय होजातिहे॥ वासना क्षय हूवे शांति प्राप्त होतिहे॥ हे लीले ! तूं आत्मसत्ताका अभ्यास कर ॥ तब ज गत भ्रम शांत हो जावेगा॥ भ्रमभी कछु वस्तु नहि ॥ देह आदिक भ्रमभी कछु हूआ नहि ॥ जेसें जेवरीके जाने सर्पका अभाव जतेंनताहे ॥ तेसें आत्माके जाने देहादिकोंका अत्यंत अभाव जनातहे ॥ ॥ इति श्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे विश्रांतिवरननं नाम पंचदशः सर्गः ॥ १५ ॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥

देव्युवाच ॥ हे लीले! जेते कछु शरीर तुजकों भासतेहे ॥ सो सुपनपुरकी नांइंहे ॥ जेसें सुपने विषे शरीर भासताहे॥ जब स्वरूपविषे स्मृति होतीहे ॥ तब सुपनका शरीर वास्तव नहि भा सता ॥ जेसें संकल्पके त्यागेतें संकल्प शरीर भासता नहि ॥ तेसें बोधकालविषे इह शरीर भासता नहि ॥ जेसें मनोराजके त्यागे मनोराजका शरीर भासता नहि ॥ तेसें इह शरीर भी भासतनाही ॥ जब स्वरूपका ज्ञान होवे तब इहभी वास्तव न भासेगा ॥ जेसें स्वरूपके स्मरन हुए सुपनशरीर शांत हो जावे ॥ तेसें वासनाके शांतहुए जाग्रत शरीरभी शांत हो जाताहे ॥ जेसें सुपनका देह अभावज्ञानतें असत होताहें ॥ तेसें जाग्रत शरीरकी भावना त्यागेतें असत भासताहे इसके नष्ट हूए अंतवाहक देह उदयहोवेगा ॥ जेसें निद्राकरिकें सुप नेंविषे राग द्वेषकों पावताहे ॥ जब पदार्थोंकी वासना बोध कर निर्बीज होतीहे, तब उनतें मुक्त होताहे ॥ तेसें जिस पुरुषकी वासना जाग्रत पदार्थोंविषे नष्ट भइहे ॥ सो पुरुष जी वन्मुक्त पदकों प्राप्त होताहे ॥ जब उसविषे बहुरी वासनाभी दृष्ट आवे ॥ तब उह वासनाभी निर्वासनाहे ॥ जो सर्व कल्पनातें रहितहे ॥ तिसका नाम सत्ता सामान्यहे ॥ हे लीले! जि स पुरुषनें वासना रोकीहे ॥ अरु अज्ञान निद्राकरि आवर्या हूआहे ॥ तब उसकों सुषुप्तिरूप जान उसकी वासना सुषुप्त हे ॥ अरु जिसकी वासना प्रगटहे ॥ जाग्रतरूप करि विचर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताहे तिसकों अधिक मोहकरि आवर्या जानिये॥ जो पुरुष चेष्टा करता दृष्ट आताहे ॥ अरु अंतर वासना नष्ट भइहे जिसकी तिसकों तुरिया जान॥ हे लीले! जो पुरुष प्रत्यक्ष चेष्टा करताहे ॥ अरु अंतर वासनातें रहितहे ॥ सो जीवन्मुक्त हे जिस पुरुषका चित्त सतपदकों प्राप्त भयाहे ॥ तिसकों जगतकी वासना नष्ट होजातिहे ॥ जो वासना फुरती भासतिहे ॥ तौभी सत्य जानकें नहि फुरति जब शरीरकी वासना नष्ट होतीहे ॥ तब आधिभौतिकता नष्ट हो जातिहे॥ अंतवाहकता आन प्राप्त होतिहे जेसें बरफकी पूतली सूर्यके तेज लागेतें जलरूप होई जातीहे ॥ तेसे अधिभूतकता क्षीण हो जातिहे ॥ अंतवाहकता प्राप्त होतीहे ॥ अब अंतवाहकता प्राप्त भइ इसका शरीर अमांसमय चित्तरूप होताहे ॥ अरु सर्वका ज्ञान इसकों होइ आवताहे ॥ अपने जन्मांतरोंका ज्ञानभी होइ आवताहे ॥ व्यतीत सृष्टिका ज्ञानभी होइ आवताहे ॥ अरु जहां जानेकी इछाकरे तहां जाय प्राप्त होताहे ॥ किसि सिद्धिके मिलनेकी इछा करै ॥ अथवा कोइ देखनेकी इछा करे ॥ सब कछु सिद्ध होताहे परंतु अंतवाहकबिना शक्ति नहि होति॥जब इस देहसों तेरा अहंभाव उठेगा॥तब सब जगत तुझकों प्रत्यक्ष भासेगा ॥हे लीले! जब आधिभौतिक शरीरकी वासना नष्ट भइ तब अंतवाहक देह होतिहे ॥ जब अंतवाहकविषे स्थिति होतीहे ॥ तब औरके संकल्पकी सृष्टि भासतीहे ॥ तातें वासना घटावनेका यत्न कर ॥ जब वासना नष्ट होवेगी तब तूं जीवन्मुक्त पदकों प्राप्त होवेगी ॥ हे लीले! जबलग तुझकों पूर्ण बोध नहि प्राप्त भया ॥ तबलग देहकों इहां स्थापना करि उह सृष्टि चलहि करि देख ॥ अंतवाहक शरीर साथ मांसमय स्थूलदेहका व्यवहार सिद्ध नहि होता ॥ तेसें स्थुलदेहसाथ सूक्ष्म कार्य नहि होता ॥ तातें अंतवाहक शरीरका अभ्यासकर॥जब अभ्यास करेगी तब उह सृष्टि देखनेकों समर्थ होवेगी ॥ हे लीले! जेसें अनुभवतें संस्थित सो मेनें तुझकों कहिहे ॥ इह वार्ता बालकभी जानतेहे ॥ जो वर अरु श्रापकी नांइ नहिं ॥ जब अपना अभ्यास करेजी ॥ तब बोधकी प्राप्तिहोवेगी ॥ हे लीले! सब जगत अंतवाहकरूप हे ॥ अर्थ इह जो संकल्परूप अबोधरूप संकल्पकें अभ्यासकरिकें आधिभौतिक उत्पन्न हुआहे ॥ तिसकरिकें संसारकी वासना दृढ भइहे ॥ जन्म मरण आदिक जो विकारहे ॥ सो चितविषें पडे भासतेहे ॥ जीव न मरताहे ॥ न जनमता हे ॥ जेसें सुपनें विषे जनम मरन भासते हे ॥ जेसें संकल्प करिकें भ्रम भासताहे ॥ तेसें जनम मरण भ्रमकरिकें भासताहे ॥ जब आत्मपदका अभ्यास करेगी तब इह विकार मिट जावेगा॥अरु आत्मपदकी प्राप्त होवेगी ॥ ॥ लीलाउवाच ॥ हे देवी! तुमनें परम निर्मल उपदेश मुझकों कहाहें॥जिसके जानेतें दृश्य विषूचिका निवृत होतीहे॥सो अभ्यास क्याहे॥ बोधका साधन केसें होताहे अरु अभ्यास पुष्ट केसें होताहे अरु पुष्ट होनेसों फल क्या होताहे? ॥ देवीउवाच॥ हे लीले! जो कछु कोउ करता हे जिसकालविषे ॥ सो अभ्यासबिना सिद्धि नहि होता सबका साधक अभ्यासहे ॥ तातें तूं ब्रह्म अभ्यास कर ॥ हे लीले! चित्तविषे आत्मपदकी चिंतवना होवे ॥ कथनभी आत्माका होवे ॥ परस्पर बोधभी आत्माका होवे ॥ प्राणकी चेष्टाभी आत्मा विषे होवे ॥ मननभी आत्मपदका होवे॥इसका नाम ब्रह्माभ्यास कहतेहे॥ बुद्धिवान चिंतना किसकों कहतेहें ॥ जो शास्त्र अरु गुरुतें महावाक्य श्रवण कियेहें॥तिनकों जुगतिपूर्वक विचारना अरु कथन उसकों कहतेहें॥जो शिष्यकों उपदेश करना ॥ अन्यो अन्य परस्पर बोध करणा समानधर्म निश्चय चर्चा निर्णय करना इन तीनो परायण रहना ॥ तिसका नाम ब्रह्म अभ्यास बुद्धिवान कहतेहें ॥ जिनों पुरुषोंके पाप अंतकों प्राप्त भयेहें ॥ अरु पुन्य बधेहै ॥ सो रागद्वेषतें मुक्त भयेहे ॥ तिन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कों तुं ब्रह्म सेवक जान ॥ हे लीले! जिनपुरुषोंकों रात्रदिन अध्यात्म शास्त्रकी चिंतवनाविषे व्यतीत होताहे॥ अरु वासनाकों प्राप्त नहि हे तिनकों ब्रह्माभ्यासी जान ॥उह ब्रह्म अभ्यास विषें स्थितहे॥हे लीले! जिनकी भोगवासनाक्षीण भइहे॥ अरु संसारके अभावकी भावना करतेहे॥ एसे जो विरक्त चित्त महात्मा पुरुष भव्य मूर्तिहे ॥ सो शीघ्रही आत्मपदकों प्राप्त हो तेहें॥ जिनकी बुद्धि वैरागरूपी रंगसाथ रंगीहे॥ अरु आत्मानंदकी उर वृत्ति धावतीहें॥ एसें जो उदारआत्माहे॥ सो ब्रह्म अभ्यासी कहतेहे॥ हे लीले! जिनपुरुषोनें जगतकों अत्यंत अभाव जान्याहे ॥ जो इह जगत आदितें उत्पन्न हुआ नाही ॥ एसें जानकें दृश्यकों असत जानकें त्यागतेहें ॥ अरु परम तत्वकों सत्य जान्याहें ॥ इस जुक्तिविषें अभ्यास करतेहें सो ब्रह्माभ्यासी कहतेहें ॥ जिस पुरुषकों दृश्य असंभवका बोध हुआहें ॥ रागद्वेषतें रहित हे ॥ इह जगत में हों इस बुद्धिकाभी अभाव करिकें परमात्मपदविषें प्राप्ति करतेहें॥ सो ब्रह्माभ्यासी कहितेहें ॥ हे लीले! दृश्यके अभाव जानें बिना रागद्वेष निवृत्त नहि होता॥ रागद्वेष बुद्धि लोकविषें दुःखों प्राप्त करतीहे ॥ अरु जिसकों दृश्यकी असंभव बुद्धि प्राप्त भइहें ॥ तिसकों ज्ञेय जो परमात्मतत्व हे, तिसका ज्ञान प्राप्त होताहे ॥ जब दृढ अभ्यास तिसपदविषें होताहे ॥ तब परमानंद निर्वाणपदकों प्राप्त होताहे ॥ इस निमित्त जतन करनाहे सो प्राकृतहे ॥ हे लीले! बोधका साधन अभ्यासहे ॥ अरु अभ्यास शास्त्रतें होताहे ॥ अरु प्रयत्न करि पुष्ट होताहे ॥ पुष्ट हुए आत्मतत्व प्राप्ति होतीहे॥ हे लीले! इनका नाम ब्रह्माभ्यासी ब्रह्मके सेवक कहताहे ॥ सो तीन प्रकारकेहे ॥ एक उत्तमहे, एक मध्यम हे, एक प्राकृतहे; उत्तम अभ्यासी उहहे, जिसकों बोधकला उत्पन्न हुआहे ॥ अरु दृश्यका असंभव बोध हुआहे ॥ सो उत्तम हे ॥ अरु जिसकों दृश्यका असंभव बोध हुआहे ॥ अरु बोधकला जो नहि उपजी तिसके अभ्यासविषेहे; सो मध्यम हे ॥अरु जिसकों दृश्यका असंभव नहि हुआ, अरु सदा इहि रिदे विषे रहताहे ॥ जो दृश्यका असंभव होवे ॥ तातें जिस प्रकारमें तुजकों अभ्यास कहाहें ॥ तेसें अभ्यास कीयेतें तूं परमपदकों प्राप्त होवेगी ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! अज्ञानरूपी निद्राविषे इह जीव शयन कर रह्याहे ॥ तिसकरि जगतकों नानाप्रकार देखताहे ॥ तेसें अविद्यारूपी निद्रातें लीलाकों विवेकरूपी बचनोंके जलकी वर्षा करिकें देवीनें जगाइ ॥ तब अज्ञानरूपी निद्रा तिसकी नष्ट होगइ ॥ जेसें शरतकालविषे मेघकी कुहड नष्ट होजातिहे॥तेसें लीलाका अज्ञान नष्ट भया॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ इस प्रकार जब मुनीश्वर कह्या, तब सायं कालका समय हूआ तब सर्व सभा परस्पर नमस्कार करिकें स्नानकों गइ॥ सूरजकी किरणां जब उदय भइ तब बहूरी आय स्थितभये॥ ॥इतिश्रीयोगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे विज्ञान अभ्यास वर्ननंनाम षोडशः सर्गः ॥ १६ ॥ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! इस प्रकार अर्धरात्रकें समय देवी अरु लीलाका संवाद हूआ सभ लोक सहेलियां बाहिर सोए पडेथे लीलाका भरता फुलोंविषे दाब्या हूआथा॥तिसकें पास दिव्य वस्त्र पहिरे हूए चंद्रमाकी नांइं हे कांति जिसकी एसी सुंदर देवीयां सर्व कलनाकों त्यागकें अंगोकों संकोचकरिकें समाधि विषे स्थित भइयां ॥ मांनों रत्नके थंभेसों पुतलियां उतकीर्णकियां स्थितहे अंतःपुरभी तिनके प्रकाश करि प्रकाश मान भयाहे ॥ बहुरी केसीयांहे ॥ मानों कागदउपर मूरंता लिख छोडियांहे ॥ इस प्रकार सब दृश्य कलनाकों त्यागकें निर्विकल्प समाधिविषे स्थित भइयां ॥ जेसें कल्पवृक्षकी लता दूसरी ऋतुके आएतें आगले रसकों त्यागकें दूसरी ऋतुके रसकों अंगीकार करतिहे ॥ तेसें दृश्य भ्रमकों त्यागकें आत्मतत्वविषे स्थित भइयां ॥ तब अहंतातें आदिलेकरि जो दृश्य भ्रमहे ॥ सो तिनका शांति होगया॥दृश्यरूपी पिशाचके शांत हुवे निर्मलभावकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राप्त भइयां ॥ जेसें सरतकालका आकाश निर्मल होताहे ॥ तेसें निर्मल भावकों प्राप्त भइयां ॥ हे रामजी ! इह जगत सशेके शृंगकी नांइ असतहे ॥ जो आदि न होवे अरु अंतभी न रहें ॥ जो वर्तमान दृष्ट आवे तोभी असत जानीये ॥ जेसें मृग तृष्णाका जल असत्य हे ॥ तेसें इह जगत असत्य हे ॥ एसें जब स्वभाव सत्ता रिदे विषे चिदाकाशविषे स्थित भइयां ॥ तब अन्य सृष्टिके देखणेका जो संकल्पथा ॥ सो आन फुर्या ॥ तिस फुरणे करि आकाशरूप देह साथ चिदाकाशविषे उडीयां ॥ सूर्य चंद्रमाके मंडलकों लंघ गइयां दूरतें दूर गइयां ॥ अनंत योजन पर्यंत स्थान लंघीयां॥ तब बहुरी भूतोंकी सृष्टि देखी तिसविषे प्रवेशकीया ॥ ॥इतिश्रीयोगवासिष्ठेउत्पत्ति प्रकरणेलीलाविज्ञानदेहाकाश समागमनं नामसप्तदशः सर्गः॥ १७॥

भूलोकगमन

वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस प्रकार परस्पर हाथ पकडी करि दूरतेंदूर चलीयां जावे ॥ मानों एकहि आसनपर दोनों चलियां जातीयांहे ॥ मेघोके स्थान लंघे ॥ अग्निके, पवनके वेग नदीयोंकी नाइ चलतेंयें ॥ तहांतें लंघीयांगइयां ॥ जहां निर्मलआकाशहि भासे तहांतें आगें गइयां ॥ कहुं चंद्रमा सूर्यका प्रकाशहि नहि ॥ कहुं चंद्रमा सूर्यका प्रकाशहे ॥ देवता विमानों पर आरूढ फिरतेहें ॥ सिद्ध उडते फिरहें ॥ विद्याधर किन्नर गंधर्व गायन करतेहें ॥ कहुं सृष्टि उत्पन्नहोतीहे ॥ कहुं प्रलय पडि होतियांहे ॥ शिखाधारी तारे उपद्रव कर्तीउदयहूएहे ॥ कहुं प्राणी अपने व्यवहारविषे लगे हूएहे ॥ कहुं अनेक महापुरुष ध्यानस्थितहे ॥ कहूं हस्ति विचरतेहें ॥ कहूं और पशुपंछी विचरते हे ॥ कहूं दैत्य डाकणि विचरतेहे ॥ जोगणीयां लीला करतेहे ॥ कहूं अंध गुंगे रहतेहे ॥ कहूं गीध पंछी सिंघ घोडेके मुखवाले गण विचरतेहें ॥ कहुं वरुण कुबेर इंद्र यमादिक लोकपाल बैठेहें ॥ अरु बडे पर्वत सुमेर मंदराचल आदिक देखे ॥ कहुं अनेक जोजनों पर्यंत दलहि चले जातहें कहुं अनेक जोजन पर्यंत अविनाशी प्रकाशहे ॥ कहुं अनेक जोजन पर्यंत अविनाशी अंधकारहें ॥ कहुं जल करि पूर्ण स्थानहे ॥ कहुं सुंदर पर्वतोंपर गंगाके प्रवाह जले जातेहें ॥ कहुं सुंदर बगीचे वावडीयां तालहे ॥ तिनों विषे कमल लगे हुएहें ॥ कहुं भूत भविष्यत होणा दृष्ट आवेहें ॥ कल्पदलोंके वनहे ॥ चिंतामणि अनंतहे ॥ कहुं शून्य स्थानहे ॥ भूत प्राणी कोउ नहि ॥ कहुं देवता अरु दैत्यके युध बडे होतेहे ॥ नक्षत्र चक्र पडे फिरतेहे ॥ कहुं प्रलय पडा होताहें ॥ देवता विमानों सहित पडे फिरतेहे ॥ कहुं स्वामि कार्तिकके राखेहुए मोरोकें समूहविचरतेहें ॥ कहुं कुक्कट मोर आदिक पंछी विद्याधरोंके वाहन पडे विचरतेहें ॥ कहुं यमके वाहन महिषोकें समुह विचरतेहें ॥ कहुं पाषाण संयुक्त पर्वत पडेहें कहुं भैरवके गण नृत्य करतेहें ॥ कहुं विद्युत् चमकते हे ॥ कहुं कल्पतरुहे ॥ मंदमंद सीतल पवन सुगंध समेत चलताहे ॥ कहुं पर्वत रत्न अरु मणीकरी सोभतेहें ॥ हे रामजी ! इत्यादिक जगतोंकी जाल तिनो देवीयांनें देखी ॥ जीवरूपी मछर त्रिलोकरूपी गुल्लरोकें अनंत दल देखे ॥ तिसतें अनंतर भूमंडलकों देखकें महीतलविषे प्रवेशकीया ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे लीलोपाख्याने आकाश गमन वर्णनं नाम अष्टदशः सर्गः ॥ ॥ १८ ॥ ७॥ ॥७॥

वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! तब देवीयां भूतल ग्रामविषे आतभइयां ॥ ब्रह्मांडखपरविषे प्रवेशकीया ॥ केसाहे ब्रह्मांड त्रिलोकिरूपी कमलहें ॥ तिसकी अष्ट पंखडीयां हें तिसविषे पर्वतरूपी डोडाहें ॥ चैतनता सुगंधहे ॥ नदीयां समुद्र तिसके अंबुकणहें ॥ जब रात्ररूपी भवरे आन बिराजतेहें ॥ तब उह कमल सकुचाय जातेहें ॥ पातालरूपी कीचडविषे लागेहै ॥ पत्ररूपी मनुष देवताहें ॥ दैत्य राक्षस तिसके कंटकहे ॥ अरु डोडी उसकी सेषनागहे ॥ जब उह हलताहें ॥ तब भूचालन होताहे ॥ दिनकरिकें प्रकाशताहें ॥ एसा जो कमलहे ॥ ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सका इस प्रकार विस्तारहे ॥ एक लाख जोजन जंबुद्वीपहे ॥ तिसके परें दुणा खारा समुद्रहे ॥ तिस जलकरि द्वीप आवरन कीयाहें जेसें हाथकों कंकन होताहे ॥ तिसतें आगें दुना शाकद्वीपहे ॥ तिसतें दुना क्षीरसमुद्रहे ॥ तिसकरी वेष्टितहे ॥ तिसतें आगें दूनी पृथ्वीहे ॥ तिसका नाम कुशद्वीपहे ॥ तिसतें दूना घृतका समुद्र करिवेष्टितहे ॥ बहुरी दुनी पृथ्वीहे ॥ तिसका नाम क्रौंचद्वीपहे ॥ तहां दुने दधिके समुद्रहे तिसकरि वेष्टित हे ॥ बहुरी शाल्मली द्वीपहे ॥ तिसतें दूना मधुका समुद्रहे ॥ बहुरी प्लक्ष द्वीपहे तिसतें दूना इक्षुरसका समुद्रहे ॥ बहुरी दुना पुष्करद्वीपहे ॥ तिसतें दूना मीठे जलका समुद्रहे ॥ इस प्रकार सप्त समुद्रहे ॥ तिनतें परें दशकोटि जोजन कंचनकी पृथ्वी प्रकाशवानहे तिसतें आगें लोकालोक पर्वतहे ॥ तिसउ पर वडा शून्य वने हे ॥ तिसतें परे एक बडा समुद्र ॥ तिसतें परे दशगुणी अग्निहे ॥ अग्नितेंपरे दशगुणी वायुहे वायुतें परें दस गुणा आकाशहे ॥ आकाशतें परे लक्षजोजन पर्यंत घनरूप ब्रह्मांडका कंधहे ॥ तिसकों देखकें दोनोंफिरीआइयां ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे लीलोपाख्याने भूलोकगमन वर्नन नाम एकोनविंशः सर्गः ॥ ॥ १९ ॥

वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! तहांतें फिरीकें वसिष्ठ ब्राह्मण ओर अरुंधतिका मंडल देखतभइयां बहुरी ग्राम अरु नगरकी शोभादेखीजो जाति रहिहे ॥ जेसें कमलोंपर गडेकी वर्षा होवे ॥ अरु कमलकी शोभा जातीरहे ॥ जेसें वनकों अग्नि लागे अरु बनकी लक्ष्मी जातिरहे ॥ जेसें अगस्तमुनि समुद्रकों पान करिलीया ॥ अरु समुद्रकी शोभाजाती रही ॥ जेसें तेल अरु बातीके पूर्णभयेतें दीपकका प्रकाश अभाव होजाताहे ॥ जेसें वायुके चलने करी मेघका अभाव होताहे ॥ तेसें ग्रामकी शोभाको अभाव देखतभइयां ॥ जो कछु प्रथम शोभा थी सो सब नष्ट होगइथी ॥ दासीयां रुदन करतीथीयां ॥ तब लीलाराणी जिसनें चिरकाल तप ज्ञानका अभ्यास कीयाथा ॥ तिसकों इह इछा उपजी ॥ जो में अरु देवी मेरे बांधव देखें ॥ तब लीलाके सत संकल्प करिकें बांधवलोक देखते भये कह्या जो इह बनदेवी. गौरी अरु लक्ष्मी आइहे ॥ इनकों नमस्कार करियें ॥ हे रामजी ! तब उनकों वानें देखके जेष्टसर्मा जो वसिष्टका बडा पुत्रथा ॥ सो फुलों करी दोनोंकें चरण पूजे ॥ अरु कह्या; हे देवी ! तुमारी जय होवो हे देवीयों ! इहां ब्राह्मण अरु ब्राह्मणी रहतेथे ॥ तिनका परस्पर नेहथा मेरे पिता अरु माताथे ॥ सो अब दोनों कालके वस स्वर्गकों गएहे ॥ तिसकरि हम बहूत सोकवान भएहें ॥ हमकों त्रयलोक शून्य भासतेहे ॥ हम सबहीं रुदन पडे करतेंहें ॥ वछोंपर जो पंछी रहतेथे सोभी उनकों मृतक देखके बनकों चलतें रहेहै ॥ पर्वतकी कंद्रासों पवन आताहे ॥ सो उनकंदरासों रुदन कर आताहें ॥ नदी जो वेगकरि आतीयांहे ॥ अरु तरंग उछलतेहें ॥ मानो उहभी रुदन करतेहें अरु कमलों उपर जो जलके कणहें ॥ मानों कमलोंके नेनसें रुदनकरि जल चलता हे ॥ अरु दिशातें जो उष्ण पवन आताहे ॥ सो मानों दिशाभी उष्ण स्वासोंकों छोडतियांहें ॥ हे देवीयों ! हम सबही शोककों प्राप्त भएहें ॥ तुम कृपा करिकें हमारा शोक निवृत्तकरो ॥ काहेतें जो महापुरुषोंका समागम निष्फल नहिहोता ॥ अरु महापुरुषोंका शरीर परउपकारके निमित्त हे ॥ हे रामजी ! जब इ सप्रकार जेष्टशर्मानें कह्या तब लीलानें कृपाकरिकें सिर उपर हाथ रख्या ॥ लीलाके हाथरखणे करि उसका सब ताप नष्ट होगया ॥ अंतःकरण शांतिकों प्राप्त भया ॥ जेसें जेष्ठ आषाढके दिनोंविषे पृथ्वी तपति हूइ, अरु तिसपर मेघकी वर्षा होतिहे ॥ तब सीतल होजातिहे तेसें उसका अंतःकरण सीतल भया ॥ अरु जो उहांके निर्धनथे सो तिनके दर्शन कर्णेकरी लक्ष्मीवान भए ॥ अरु शांतिकों प्राप्त भए ॥ शोक नष्ट होगया ॥ वछ सूके हूए थे सो तिस समे फल सहित होगये ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! लीलाका पुत्र जो जेष्टसर्माथा ॥ तिसको

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लीलानें मातारूपी होइकरि दर्शन क्यों न दीया?॥ सो कारण मुझकों कहो॥ ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी! शुद्ध आत्मसत्ताविषे जो स्पंद संवेदन हुइहे॥सो संवेदन भूतोका पिंडाकार हो इ भासतिहें ॥ अरु वास्तवतें आकाशरूप हे ॥ भ्रांति करिकें पृथ्वी आदिक भूत भासतेहें ॥ जेसें बालककों छायाविषे भमकरिकें वैताल भासताहे ॥ तेसें संवेदनकें फुरणे करि पृथ्व्या दिक भूत भासतेहें ॥ जेसें सुपनेविषे भ्रम करिकें पिंडाकार भासते हें ॥ अरु जागेतें आकाशरूप भासतेहे ॥ तेसें भ्रमके नष्ट हुए पृथ्वी आदिभूत आकाशरूप भासतेहे ॥ जेसें सुपनेके नगर सुपनकालविषे अर्थाकार भासतेहे ॥ अग्नि जलावतिहे जागेतें सब शून्य होइ जातिहे तेसें अज्ञानके निवृत्त हुएतें इह जगत आकाशरूप होइ जाताहे॥ जेसें मूर्छाविषे नानाप्रकार के नगर भासतेहे ॥ जेसें परलोक जगत भासताहें ॥ जेसें आकाशविषे तरवरे भासतेहे अरु मुक्तमाला भासतियां हें ॥ जेसें नौकापर बेठेकों तटके वृछ चलतें भासतेहें ॥ तेसें इह जगत भ्रमकरिकें अज्ञानीकों भासताहे ॥ अरु जो ज्ञानवानहे॥ तिसकों सब चिदाकाश भासताहे॥ जगतकी कल्पना कोउ नहि फुरति॥ तातें लीला उसकों पुत्रभाव अरु आपकों माताभाव केसें देखे ? उसका अहं अरु ममभाव नष्ट होगयाथा ॥ जेसें सूर्यके उदय हुए अंधकार नष्ट होताहे॥ तेसें लीलाका अज्ञान भ्रम नष्ट होगयाथा॥ सब जगत उसकों चिदाकाश भासताथा ॥ इ स कारणतें आपकों माताभाव न जानत भइ ॥ जो उस विषे कछु ममतहोता तब उसकों माताभाव कर देखती॥ परंतु उसकों इह अहंमम भाव न था॥ इस कारणतें माताभाव न देखा॥ न देवीरूप देखा अरु सिरपर हाथ रख्या अर्थ इह जो संतोका दयाल सुभावहे ॥ और माता पुत्रकी कल्पना उसविषें कछु नथी ॥ इस कारणतें उसके सिरपर हाथ रख्या ॥और कल्पना कछु न थी ॥ केवल आत्मरूप जगत उसकों भास्याथा ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे लीलोपाख्याने सिद्ध दर्शन हेतु कथनं नाम विंशतिमः सर्गः ॥ २० ॥

वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! तिस पर्वत उपर जो ग्राम था ॥ अरु तिसविषे वसिष्ठ ब्राह्मणका गृह था ॥ तिस अंतःपुरसों देवी अरु लीला दोनों अंतर्ध्यान होगइ॥ तब उहांके लोक क हने लागे जो वनदेवीयांने हमारे उपर बडि कृपाकरिकें दुःख नाशकीये ॥ अरु अंतर्ध्यान भइयां ॥हे रामजी ! तब दोनों आकाशविषे आकाशरूप अंतर्ध्यान भइयां॥ अरु परस्पर संवाद करत भई॥ जेसें सुपनेविषे संवाद होताहें ॥ तेसें उनका परस्पर संवाद हूआ॥देवीनें कहा हे लीले जो कछु जाननाथा सो तुजनें जान्याहें क्यु ? अरु जो कछु देखनाथा सो देख्याक्यों ? इह ब्रह्मकी शक्तिहे॥ और कछु पूछनाहोवे सो पूछो ॥ लीलाउवाच ॥ हे देवी ! मेरा जो भर्ता हे विदूरथ; तिस पास मैं गइ तब उसनें मेरेंकों क्यौं न देखी अरु मेरी इछातें जेष्ठसर्मा आदिनें देखी सो कारण कहो ॥ देव्युवाच॥ हे लीले तब तेरा द्वैत भ्रम नष्ट भया नथा॥ अरु अद्वैतकों अभ्यासकरी प्राप्त न भइ थी॥ जेसें धूपमें छायाका सुख नहि अनुभव होता॥ तेसें तुजकों अद्वैतका अनुभव न था॥ हे लीले जेसें ऋतुका फल मधु होताहे॥ जो जेष्ठ आषाढविदितहोताहें॥ अरु वरषा आइ नहि तेसें तूं थी॥ अर्थ इह जो संसारमार्गकों लंघीथी॥ अरु अद्वैत तत्वकों प्राप्त न भइथी ॥ तिसकरि आत्मशक्ति तुजकों प्रत्यक्ष न भइथी तातें आगें तेरा सतसंकल्प न था ॥ अरु अब तूं सतसंकल्प हूइहें ॥ अब तेनें सतसंकल्प कीयाहे ॥ जो तु जकों जेष्टसर्माने देखी ॥ तिसकरि तुजकों देखते भए ॥ अब तुं विदूरथके निकट जावे तब पूर्ववत् तेरे साथ व्यवहार होवे ॥ ॥लीलाउवाच ॥ हे देवी ! इस मंडप आकाशविषे मेरा भर्ता वसिष्ठ ब्राह्मण हूआहे ॥ बहुरी मृतक हूआ तब इसीलोक मंडप आकाशविषे उसकों पृथ्वी लोक फुरि आया॥ पद्मराजा होत भया ॥ चिरकाल पर्यंत उसनें चार द्वीपका राज कीया व

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुरी मृतक हूआ ॥ तव इसी मंडप आकाशविषे उसकों जगत भास्या ॥ अरु पृथ्वीपति हूआ ॥ तिसका नाम विदूरथ भया ॥ हे देवी ! इसी मंडप आकाशविषे जर्जरिभाव अरु जन्म मर
ण हूआ ॥ अरु अनंत ब्रह्मांड इसविषे स्थितहे ॥ जेसें संपुटविषे सरसोंके दाणे अनेक होवे ॥ तेसें इसविषे ब्रह्मांड मुझकों समीपही भासतेहें ॥ भर्ताकी सृष्टिभी मुझकों अब अंतर भास
तियाहें ॥ अब जो कछु तुम आज्ञा करो सो में करो ॥ देवीउवाच ॥ हे भूतलअरुंधती तेरे जन्मतो बहुत विदीत भएहे ॥ अरु अनेक तेरे भर्ता हुएहे तिनविषे इह जो तेरे भर्ताहे सो सब इस
मंडपविषे हे ॥ एक वसिष्ठ ब्राह्मण था ॥ सो मृतक हूआहे तिसका शरीर तो भस्म हो गयाहे ॥ बहुरी पद्म राजा हूआ ॥ सो तेरे मंडपविषे शब पडाहे ॥ अरु तीसरा भर्ता संसार मंडपवि
षे वसुधापति हुआहे ॥ सो संसार समुद्रविषे भोगरूपी कलोलकरि तिसकी चेतनता व्याकुलहे ॥ अरु राजकारजविषे चतुर हुआहे ॥ आत्मपदतें विमुख हुआहे ॥ अज्ञान करिकें जानता
हे जो में ईश्वर हों ॥ मेरी आज्ञा सबके उपर चलतीहे ॥ अरु में बडे भोगोंको भोगनेहारा हों में सिद्ध हों बलवान हों ॥ हे लीले ! अेसें संकल्प विकल्परूपी जेवरी साथ बांध्या हुआहे
अब तूं किस भर्ताके पास चलतीहे ? जहां तेरी इछा होवे तहां में तुजकों लेजाउं जेसें सुगंधकों वायु ले जाताहे ॥ तेसें मे तुजकों लेजाउंगी ॥ हे लीले ! जिस संसारमंडलकों तूं समीप
कहतिहे ॥ सो चिदाकाशकी अपेक्षाकरिके समीप भासताहे ॥ अरु सृष्टिकि अपेक्षा करि अनंतकोटि जोजनोंका भेदहे ॥ अरु आकाशरूप हे वपु तिनका, एसी अनंत सृष्टिपडि फुरती
हे ॥ समुद्र अरु मंदराचल पर्वत आदिक अनंत हे ॥ तिन परमाणुविषे अनंत सृष्टिचिदाकाशके आश्रय पडीफुरती हे ॥ चिदअणू चिदअणुके विषे रुचिके अनुसार सृष्टिबडे आरंभ करि
कें दृष्ट आती हें ॥ अरु बडीस्थूल गिरी पृथ्वी दृष्ट आतीयां हे ॥ अरु विचारकरि तोलीयें तो एक चावलके समानभी नहि होतियां ॥ हे लीले ! नाना प्रकारके रत्नोंकरि पर्वतभी दृष्ट
आतेहें अरु आकाशरूपहे ॥ जेसें सुपनेविषे चैतनका किंचन नानाप्रकारका जगत दृष्टि आताहे ॥ तेसें इह जगत चैतनका किंचनहें ॥ पृथ्वीआदिंक तत्वोंकरि कछु उपजा नही ॥ हे
लीले ! आत्मसत्ता ज्योंकि त्योंहें ॥ अपने आपविषे स्थितहे ॥ अरु जगत आभास उपजताभीहें, मिटिभी जाताहे॥ जेसें नदीविषे नानाप्रकारके तरंग उपजतेभीहे अरु लीनभी होतेहें ॥
तेसें आत्माविषे जगत जाल उपजतीहें॥ अरु नष्टभी हो जातीहें ॥ अरु आत्मसत्ता इनके उपजनेविषे अरु लीनहोनेविषे एकरसहे ॥ आभासरूप हे वास्तव कछु नहि ॥ लीलाउवाच ॥
हे माता ! अब पूर्वकी मुझकों सब स्मृति हुइहे ॥ प्रथम में जो राजसी जन्म ब्रह्मतें पाइहों ? तिसतें आदिलेकरि नानाप्रकारके मैं अष्टसत जन्म पाइहों ॥ सो प्रत्यक्ष मुजकों भासतेहे ॥
प्रथम जो चिदाकाशतें मेरा जन्महे ॥ सो विद्याधरकी स्त्री भइहों॥ तिस जन्मविषे जो कोउ कर्म हुआ तिसकरि में भूतलविषे आन स्थितभइ॥ तिसकरि दुःखीभइ॥ बहुरी पंछनी भइ त
हां जालविषे फसी तिसके अनंतर भीलनी हूइहों ॥ कदंब बनविषे विचरणे लागी ॥ बहुरि वनलता भइहों ॥ तहां गुछेहि मेरे स्तन थे ॥ अरु पत्र मेरे हाथथे ॥ तहां एक ऋषीश्वर मुझ
कों हाथकर स्पर्श कोयाकरताथा तिसकी पर्णकूटीमें में लता थी ॥ तब में मृतक भइ ॥ बहुरी में तिसके गृहविषे पुत्रीभई ॥ तहां जो मुझसों कर्म होवे सो पुरुषहिका कर्महोवे ॥ तिसतें
में बडी लक्ष्मीकरी संपन्नराजा भइ ॥ तहां मुझसों दुष्ट कर्म हुए ॥ तिसकरि मे बंदरी भइ ॥ कुष्ट अंगोंकरि अष्ट वर्ष मैं उहां रहि ॥ बहुरी में बलद हुइ ॥ मुजकों दुष्टनें खेतीके हलविषे
जोडी ॥ तिसकरि दुःख पाइ ॥ बहुरि भमरी भइ ॥ कमलोंपर जाय करी सुगंध लेताथी ॥ बहुरी मृगी भइ चिर पर्यंत बनविषे विचरी ॥ बहुरी एक देशका राजा भइ ॥ सो वर्ष पर्यंत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उहां सुख भोगें ॥ बहुरी कछुवाका जन्म लिया बहुरी राजहंसका जन्म लिया ॥ इस प्रकार मैं जनमोंकों धारति भइ॥ अरु बडे कष्ट पाइ ॥ हे देवी इत्यादिक अष्टसो जन्म पावत फीरी हों ॥ संसार समुद्रविषे वासनाकर घटि यंत्रकी नांइ भमीहों ॥ हे देवी अब मैं निश्चय कीयाहे ॥ जो आत्मज्ञानबिना जन्मोका अंत कदाचित् नहि होता ॥ तुमारी कृपातें अब निःसंक ल्प पदकों पावत हुइहों ॥ ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे लीलोपाख्याने जन्मांतरवर्णनं नाम एकविंशतिमःसर्गः ॥ २१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥७॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् वज्रसारकी नांइं ब्रह्मांड खपर था ॥ अनंत कोटि जोजनों पर्यंत तिसका विस्तार था ॥ एसा ब्रह्मांड खपर था एसें ब्रह्मांडकों दोनों केसें लंघती गइ यां? ॥ ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी वज्रसार ब्रह्मांड खपर कहाहें॥ अरु कोनगयाहे ? न कोउ वज्रसार ब्रह्मांड हे न लंघ गयाहे ॥ सब आकाशरूप हे उसी पर्वतके ग्रामविषे जो वसिष्ट ब्राह्मणका गृह था॥ तिसी मंडप आकाशविषे सृष्टिका अनुभव करत भया हों॥ हे रामजी ! जब वसिष्ठ ब्राह्मण मृतक भया॥ तब उसी मंडपाकाशके कोणे विषे आपकों चारों और समु द्रोंपर्यंत पृथ्वीका राजा जानत भया ॥ जो मैं राजा पद्महों ॥ अरुंधतीकों लीला देखता भया ॥ जो मेरी स्त्री हे ॥ बहुरी मृतक भया ॥ तब उसी आकाश मंडपविषे उसकों और जग तका अनुभव भया ॥ आपकों राजा विदूरथ जानत भया ॥ सो तूं देख जो कहां गया हे ॥ अरु क्या रूप हे ॥ उसी मंडप आकाशविषे उसकों सृष्टिका अनुभव भया ॥ तातें जो सृष्टि हें ॥ सो उसि वसिष्टके चित्तविषे स्थित हे ॥ तब देवी जो ज्ञानिरूप हे तिसकी कृपातें अपनेहि देहाकाशविषे लीला उडी हे अंतवाहक देह जो आकाशरूप हे ॥ तिस करिकें उडीहे ॥ ब्र ह्मांडकों लंघके बहुरी उसी गृहविषे आइ ॥ जेसें सुपनेतें स्वप्ननांतरकों प्राप्त होवे ॥ तेसें देख आइयां ॥ तातें गइयां कहां अरु आइयां कहां ? एकहि स्थानविषे होयकें एक सृष्टितें अ न्य सृष्टिकों देखीहें ॥ अरु हे रामजी ! इनकों ब्रह्मांडके लंघ जाणे विषे कछु जतन नही काहेतें जो उनका शरीर अंतवाहकरूप हे ॥ हे रामजी ! मनकरी लंघ्या चाहीए ताहां लंघ्या जा ताहे क्यों ? तेसे उह प्रत्यक्ष लंघीयांहे॥सत्य संकल्परूप हे॥ अरु वस्तुते कहें तो कछु नही॥ हे रामजी ! जेसें सुपनेकी सृष्टि नानाप्रकारके व्यवहारों सहित बडी गंभीर भासतिहे॥ अरु आ भास मात्र हे ॥ तेसें इह जगत देखेहें ॥ न कोउ ब्रह्मांड हे न कोउ जगत हे ॥ न कोइ कुंडहे ॥ केवल चैतन मात्रका किंचन हें ॥ और बन्या कछु नहि ॥ जेसें चित्तसंवेदन फुरता हे ॥ तेसें आभास होइ भासता हे ॥ केवल वासना मात्रहि जगत हें॥ पृथ्वी आदिक भूत कोउ उपजा नहि हे ॥ निरावरण ज्ञान आकाश अनंतरूप स्थित हे ॥ जेसें स्पंद अरु निस्पंद दोनों रूप पवनहि हे ॥ तेसें स्फुर अफुर रूप आत्माहि हे ॥ किंवनविषेभी ज्युंका त्युं हे शांतरूपहे सर्वरूप चिदाकाश हे ॥ जब चित्तकिंचन होताहे॥ तब आपहि जगतरूप हो भासताहे दूसरा कछु नहि॥जिनो पुरूषोनें आत्माकों जान्याहे ॥ तिनकों जगत आकाशतेंभी शून्य भासताहे ॥ अरु जिनोने नहि जान्या ॥ तिनकों जगत वज्रसारकी नांइं दृढ भासताहे ॥ जेसें सुप नेविषे नगर भासतेहे ॥ तेसें इह जगत हे ॥ जेसें मरुथलविषे जल भासताहे ॥ जेसें सुवर्णविषे भूषण भासतेहे ॥ तेसें आत्माविषे जगत भासताहे॥ हे रामजी ! इस प्रकार देवी अरु लीला संकल्पकरिकें नानाप्रकारके स्थानोंकों देखती भइयां ॥ झरनोंतें जल चल्या आवे बावडीयां सुंदर ताल बगीचे वृछ देखे शब्दकरतेहें अरु सुंदर मेघ पवन संयुक्त देखतेहें ॥ मानों स्वर्ग इहां आया हें ॥ ॥ इति श्रीयोगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे लीलोपाख्याने गिरिग्राम वर्णनंनाम द्वाविंशतिमः सर्गः ॥ २२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! इस प्रकार देखकें दोनों सीतल चित्तयामविषे वासकरत भइयां॥ भोग अरु मोक्षकरी सीतल चित्तहे अर्थ इह जो संतुष्ट चित्तहे ॥ चिरकाल जो आत्म अभ्यास कीयाथा तिसकरि शुद्ध ज्ञानरुप होत भइ ॥ अरु त्रिकाल ज्ञानकरि संपन्नभइ ॥ तिसकरि पूर्वकी स्मृति होत भई ॥ जो कछु अरुंधतीके शरीरकरि कीयाथा ॥ सो देवीकों कहत भइ ॥ हे देवी ! तुमारी कृपातें पूर्वकी स्मृति मुजकों भइ॥ जो कछु इस देशविषे में कीयाथा सो प्रगट भासताहे ॥ एक इहां ब्राह्मणीथी॥ तिसका शरीर वृद्ध होत भया॥ नाडिया दृष्टआवे॥ अरु भर्ताकों बहुत प्यारीथी॥ अरु पुत्रोंकी माताथी सो मेंही हों॥ हे देवी! मेंनें देवता ब्राह्मणोंकी पूजा करीथी॥ इहां में दूध रखतीथी॥ इहां अन्नादिकोंके वासन रखतीथी॥ अरु मेरे पुत्र पुत्रीयां जमाइ दुहितरे बेठते थे ॥ इहां में बेठती थी॥ अरु भृत्योंकों कहतीथी जो सीघ्रही कारज करो ॥ एसें शब्द में करतीथी ॥ हे देवी! इहां में रसोइ करतीथी ॥ भर्ता मेरा साक गोवर ले आताथा ॥ अरु सर्वमर्यादा कहताथा ॥ इह मेरे हाथके चुटे बोए थे ॥ इह वृछ मेरे लगाए हुएहे॥ कछुक फल में इनसों लीयेहें ॥ कछुक रहतेहें सो इहहे॥ इहां मै जलपान करतीथी॥ हेदेवी! मेरा भर्ता सब कर्मोविषे शुद्धथा ॥ अरु आत्मस्वरूपतें शून्य था॥ सब कर्मो मुझकों स्मरन होतेहें॥ इहां मेरा पुत्र जेष्ठशर्मा गृहविषे रुदन पडा करताहे ॥ इहां वेली मेरे गृहविषे विस्तरीहे ॥ अरु सुंदर फूल लगेंहें ॥ इनके गुछे छत्रोंकी नांइहे ॥ अरु झरोंखे वेली करि आवरे हुएहे ॥ इह मेरा मंडप आकाशहे ॥ इसविषे मेरे भर्ताका जीव आकाशहे ॥ ॥ देवीउवाच ॥ हे लीले! इह जो शरीर हे तिसकि नाभिकमलतें दश अंगुल ऊर्ध्व हृदयाकाशहे ॥ सो अंगुष्टमात्र रिदा हें ॥ तिसविषे उसका संवित आकाश हे ॥ तिसविषे जो राजसी वासना थी ॥ तिसकरी तिसकों चारों समुद्र पर्यंत पृथ्वीका राज फुरि आया ॥ जो में राजा हों ॥ इहां आठ दिन मृतक हुए वीतेहें ॥ अरु इहां चिरकाल राज का अनुभव करत भयाहे॥ हे देवि! इस प्रकार थोडे कालविषे बहुतकाल अनुभव करत भयाहे ॥ अरु हमारेहि मंडपविषे उह शब पड्याहे ॥ अरु तिसकी पुर्यष्टकविषे जगत फुरि आयाहे ॥ तिसविषे आपकों राजा विदूरथ जानत भया हे ॥ इस राजके संकल्प करि उसकी संवित इसी मंडपआकाशविषे स्थितहे॥ जेसें आकाशविषे गंधकों लेकें पवन स्थित होवे ॥ तेसें उसकी चैतन संवित संकल्पकों लेकरि इस मंडपाकाशविषे स्थित हे ॥ उसकि संवित इस मंडप आकाशविषे हे उस राजाकी सृष्टिमुझकों कोटि जोजनों पर्यंत भासतीहे॥ पर्वत मेघ अनेक जोजनों पर्यत लंघतीजाओं ॥ तब भर्ताके निकट प्राप्तहोहुं ॥ अरु चिदाकाशकी अपेक्षा करकें अपने पासभासतीहे॥ अव व्योहार दृष्टि कर कोटिजोजनो पर्यंत हे॥ तातें चलो जहां राजा विदूरथ मेरा भर्ताहें ॥ दूर हे तोभि निश्चयवानोंकों निकटहें ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! इस प्रकार कहिकरि दोनों मंडपाकाशविषे उडीयां ॥ जेसें पंखेरु उडताहें तेसें उडीयां ॥ जेसें खडगकी धारा स्याम होतीहे ॥ जेसें विष्णुजीका अंग स्याम होतेहे ॥ जेसें काजर स्याम होताहे॥ जेसें भमरेकी पीठ स्याम होतिहे ॥ तेसें आकाश स्यामहे॥ तिस आकाशविषे अंतवाहक शरीरकरिकें उडीयां ॥ मेघोके स्थान लंघीयां ॥ बडा वायुका स्थान लंघीयां ॥ सूरज चंद्रमाकों लंघ गइयां ॥ ब्रह्म लोकपर्यंत जो देवताके स्थान थे ॥ तिनकों लंघ गइयां ॥ इस प्रकार दूरतें दूर गइयां ॥ शून्य आकाशविषे ऊर्ध्व जाइकें अधकों देखत भइयां ॥ जो सूर्य अरु चंद्रमा आदिक कोउ नहि भासता॥ तब लीलानें कहा॥ हे देवी एता सूरज आदिका प्रकाश था सो कहां गया ॥ इहां तो महा अंधकारहे॥ एसा अंधकार हे मानों मुष्टिविषे ग्रहण होताहें ॥ देवीउवाच ॥ हे लीले! हम महा आकाशविषे आए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं ॥ इहां अंधकारका स्थानहे ॥ सूर्यआदिक केसें भासे? जेसें अंधकूपविषे त्रिसरेणु नहि भासती ॥ तेसें इहां सूर्य चंद्रमा नहि भासते ॥ अपुन बहुत उरधकों आयेहें ॥ ॥लीलाउवाच ॥ हे देवी! बडा आश्चर्य हे ॥ जो हम दूरतें दूर आएहें ॥ जहां सूर्यादिकोंका प्रकाश नहि भासता ॥ इसतें आगें अब कहां जानाहे? देवीउवाच ॥ हे लीले! इसके आगें ब्रह्मांड कपाट आवेगा सो बडा वज्रसारहे ॥ अरु अनंत कोटि जोजनों पर्यंत तिसका विस्तारहे ॥ जिसकी धूडकी कणिकाभी इंद्रके वज्र समानहे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! इस प्रकार देवी कहतीथी ॥ जो आगें ब्रह्मांड कपाट आया॥ महा वज्रसार अरु अनंत कोटि जोजनोपर्यंत तिसका विस्तार देख्या तिसकों लंघि गये ॥ अरु क्लेश कछु न भया काहेतें जो जेसा किसीकों निश्चय होताहे तिसकों तेसाहि अनुभव होताहे ॥ निरावरण आकाशरूप जो देवीयांहे ॥ सो ब्रह्मांड कपाटकों लंघ गइयां तिसकेपरे दशगुणा जलका आवरण हे ॥ तिसके परे दशगुणा अग्नितत्वहे ॥ तिसके परे दशगुणा वायु हे ॥ तिसके परे दशगुणा आकाशहे ॥ तिसके परे परमआकाशहे तिसका आदि मध्य अंत कोउ नहि ॥ जेसें वंध्यापुत्रकि कथा चेष्टाका अंत आदि कोउ नहि तेसें परम आकाशहें आकाशका आदि कोउ नहि नित्य शुद्ध अनंतरूप हें अपने आपविषे स्थित हें तिसके अंत लेनेकों सदाशिव मनरूपी वेगकरि कल्पपर्यंतध्यावे तोभी न पावें ॥ अरु विष्णुजी गरुडपर आरूढ होइकें कल्पपर्यंत ध्यावे ॥ तोभी तिसका अंत न पावे ॥ अरु पवन अंत लीया चाहे तो न पावें ॥ आदि मध्य अंत कलनातें रहित बोध मात्रहे ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे पुनराकाशवर्णनं नामत्रयोविंशतिमःसर्गः ॥ ॥२३॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! जब पृथ्वी अप तेज आदिक आवरणकों लंघ गइयां ॥ तब परमाणुतें रहित परमआकाश उनकों भास्या॥ तिसविषे ब्रह्मांड धूर कणकाकी नांइ भासी ॥ जेसें सूर्यकि किरणांविषें त्रिसरेणु भासतेहें ॥ सो महा शून्यकों धारणेंहारा परम आकाशहें ॥ अरु अपकणचिद अणु सृष्टि जिसविषे फुरतियांहे ॥ एसा महा समुद्र हे कोइ अधकों जाताहें ॥ तिसविषें कोइ ऊरधकों जाताहे ॥ कोइ तिर्यक गतिकों जाताहे॥ हे रामजी! चित संवित विषे जेसा स्पंद स्फुरताहे ॥ तेसा तेसा आकार हो भासताहे ॥ वास्तव न कोउ अध हे न कोउ उर्धहें ॥ न कोउ आता हे न कोउ जाताहे ॥ केवल ज्यौंकि त्यौं आत्मसत्ता अपने आपविषे स्थितहे ॥ फुरणे करि जगत भासताहे ॥ उत्पत्ति होताहे ॥ बहुरी नष्ट होता हे जैसें बालकका संकल्प जो उपजकें नष्ट हो जाताहें ॥ तेसें चैतन संवित विषे जगत फुरकें नष्टहो जाताहे ॥ ॥ रामउवाच ॥ हे भगवन्! अध क्या होताहे ॥ अरु उर्ध क्या होताहे ॥ अरु तिर्यक क्या भासतेहे? अरु इहां क्या स्थितिहे? सो मुझकों कहो॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! परमाकाश जो सत्ताहे सो आवरणतें रहित हे शुद्धबोधरूप हे ॥ तिसविषे जगत एसें भासताहे ॥ जेसें आकाशविषे भ्रांतिकरि तरवरे भासतेहें ॥ तिसविषे अध अरु उर्ध कल्पनामात्रहे ॥ जेसें हलोंके वटेके चौफेर कीडियां फिरति रहे ॥ अरु उनकों मनविषे अध उरध पडा भासें ॥ उनके मनविषे अध उर्धकी कल्पना हुइहे ॥ हे रामजी! इह जगत आत्माका आभासरूप हे ॥ जेसें मंदराचल पर्वतउपर हस्तीयोंके समूह विचरतेहें ॥ तेसें आत्माविषे अनेक जगत फुरते हें ॥ जेसें मंदराचलपर्वतके आगें हस्ति होवे ॥ तेसें ब्रह्मके आगें जगत हे अरु वास्तवतें सर्व ब्रह्मरूप हे॥ कर्ता कारण कर्म आदान उपादानअधिकरण सर्व ब्रह्महि हे॥ इह जगत ब्रह्म समुद्रके तरंगहे तिन जगत ब्रह्मांडोंकों देवीयां देखत भइयां ॥ केसें ब्रह्मांड उनों देखेहें ॥ सो तूं श्रवण कर॥ केइ सृष्टि उत्पन्न होतियां देखीयां॥ केइ प्रलय होतियां देखियां केइ उपजणे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का आरंभ देख्या ॥ जेसें नौतन अंकुर निकसता हे तेसें उपजणें लगीयां हे॥ कहुं जलहि जलहे और कछु नहि ॥ कहुं अंधकारहि हे प्रकाश कछु नहि॥ कहुं सर्व व्यवहार संयुक्त हे॥क हुं अपूर्व वेदशास्त्रके कर्म हे ॥ कहुं आदि ईश्वर ब्रह्मा हे तिसनें सभ सृष्टि हुइहे कहुं आदि ईश्वर विष्णु हे तिसनें सब सृष्टि हुइहे ॥ कहुं आदि ईश्वर सदाशिव हे ॥ इसी प्रकार और प्रजापतिकरि उपजते हे ॥ कहुं नाथकों कोउ नहि मानते अनीश्वर वादिह ॥ कहुं तिर्यकही जीव रहतेहे ॥ कहुं देवताही रहतेहें ॥ मनुषहि रहतेहें ॥ कहुं बडे आरंभ करिकें संपन्न हे ॥ कहुं शून्यरूप हे ॥ हे रामजी ! इस प्रकार अनेक सृष्टि उत्पन्नहोति चिदाकाशविषे देखत भइयां ॥ तिनकी संख्या करनेकों काउ समर्थ नहि ॥ चिदात्माके आभासरूप फुरतीहे ॥ जेसी फुरणा होतीहें तिसके अनुसार फुरतीहे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे ब्रह्मांड वर्ननं नाम चतुर्विंशतिमः सर्गः ॥ २४ ॥ ॥३॥ ॥७॥

वसिष्ठउवाच ॥ हे रामजी! इस प्रकार दोनों देवीयांउठके राजाके जगतविषे आइयां ॥ तहां अपना मंडप स्थानोंकों देखत भइयां ॥ जेसें सोया हुआ जागकें देखताहे॥ तेसें अ पने मंडपविषे प्रवेशकीया ॥ तब क्या देखेजो राजाका फुलोंके साथ ढांप्या हुआ शव पडाहे ॥ अरु अर्धरात्रका समाहे ॥ सर्वलोक ग्रहमें सोयेंपडेहे ॥ अरु राजा पद्मके शबके पास लीलाका शरीर था सो पडाहे ॥ अंतःपुरविषे धूप चंदन कपूर अगरकी सुगंध भरी रहिहे॥ तब विचारकरत भइ॥ जो उहां चले जहां राजा राज करताहे ॥ तब उस भर्ताकी जो पुर्यष्ट क थी जिस विषे विदुरथका अनुभव हुआथा॥ तिस संकल्पके अनुसार विदुरथकी सृष्टि देखणेकों देवीके साथ चली॥ अंतवाहक शरीर साथ आकाशमार्गकों उडी ॥ जातेजाते ब्रह्मांड की वाटकों लंघ गइयां ॥ तब विदुरथके संकल्पविषे जगतकों देखत भइयां॥ जेसें तलावडी विषे सेवाल होतीहे ॥ तेसें जगतकों देखत भइयां ॥ सप्तद्वीप देखे॥ नव खंडदेखे ॥ सुमे रु आदिक पर्वत देखे ॥ समुद्र द्वीपादिक सब रचना देखत भइयां ॥ तिसविषे जंबूद्वीप भरतखंड देख्या ॥ तिसविषे विदुरथ राजाका मंडप स्थान देखत भइयां ॥ तहां राजा सिधकों देखतभइयां ॥ तिसनें कछू विदूरथराजाकी पृथ्वीकी हद भाइयोने दबाइथी ॥ तिनके निमित्त सेनाकों भेजी ॥ अरु राजा विदूरथनेभी सुणके सेनाकों भेज्या ॥ दोनों सेना मिलके जुधकरनें लागेहें ॥ अरु त्रिलोकी युधका कौतुक देखणें आइहे ॥ देवताविमानों पर आरूढ होइकेदेखणे लागेहें ॥ सिद्ध चारण गंधर्व विद्याधर शस्त्रोकों छोडकें देखणेंकों स्थित भएहे ॥ अरु विद्याधरीयां अप्सरा आइ स्थित भइयांहे ॥ जो सूरमे युध विषे प्राणोकों त्यागेगें ॥ तब हम इनकों स्वर्गविषे ले जावेंगें ॥ एसे विचारकरी विद्याधरीयां आन स्थित भइयांहें ॥ अरु रक्तमांस भोजन करणेंकों भूत राक्षसपिसाच जोगणीयांआन स्थित भइयांहें ॥ हे रामजी ! जो पुरुष सूरमे हें ॥ सो तो स्वर्गके भूषणहे ॥ अरु अक्षय स्वर्गकों भोगेंगें ॥ जिनका मरणा धर्मपक्षकरिकें संग्रामविषे होवेगा ॥ सोइ स्वर्गकों जावेंगे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन्! सूरमा किसकों कहते हे॥ अरु जो जुधकरिकें स्वर्गकों नहि प्राप्तहोतें सो कवनहे ? ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जो शास्त्र उक्त युध नहि करते अनर्थरूपी अर्थके निमित्त युध करतेहें सो नरककों प्राप्तहोतेहें ॥ अरु जो पुरुष धर्मके निमित्त जुध करतेहें सो सूरमेहें ॥ सोइ स्वर्गलोककों प्राप्तहोतेहें ॥ अरु जो पुरुष गौके अर्थ युध करते हे॥ के ब्राह्मणके अर्थ मित्रके अर्थसरणागतके अर्थ जुद्ध करतेहें॥ सो मृतक हुए स्वर्गलोककों प्राप्तहोते हें॥ स्वर्गके भूषण कहातेहें सो अरु जो राजा पालनांके निमित्त युद्ध करतेहें॥ सो मूए हुए स्वर्गकों प्राप्तहोतेहें॥ उनका जस स्वर्गविषे बहुत होताहे जो पुरुष धर्मके अर्थ युद्ध करतेहें सो अवश्य स्व

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गॅलोककों प्राप्त होतेहें॥ अरु जो अधर्म करी युद्ध करतेहे सो मृतक हुए नरककों प्राप्त होतेहें॥ हे रामजी ! जो पुरुष कहने हें॥ संग्राम विषे मूए सब स्वर्गकों प्राप्त होतेहें सो मूर्खहें॥ स्वर्गकों उहि जातेहें जिसका मरणा धर्मके अर्थ हुआहे॥ अरु जो किसीभोगके अर्थ युद्ध करतेहें ॥ सो नरककों प्राप्त होवेगे ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे लीलोपाख्याने गगननगरयुद्धप्रेक्षकान्विवर्णनंनामपंचविंशतिमःसर्गः ॥ २५ ॥ ॥७॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे रामजी ! तब दोनों देवीयां रण संग्रामकों देखत भइयां॥ क्या देखेजो महा शून्य वनहें ॥ तिसविषे दोनों सेना जोडीयां हें ॥ जेसें दो बडे समुद्र उछलिकरि परस्पर मिलनेलगे तेसें सेना मिलियां तीसकों इह दखणेकरी संकल्पकों रचिके दोनों विमान तिस उपर स्थित होके देखणे लागी ॥ तब क्या देखेजो जोधे आन स्थित हुएहें ॥ मछ व्यूह, गरुड व्यूह, चक्रव्यूह ॥ इस प्रकार सेनाके भाग भिन्न हुए दोनों सेनाके जोधे एकएक होइकरि युधकरणे लागें॥ प्रथम परस्पर देखे जो इह बाण चलावे अेसे कहें जु तुं प्रथम चलाउ ॥ उनने कहातुं प्रथम चलाउ ॥ अरु क्रोध दृष्टिकरी स्थिर हो रहे ॥ मानों मूरतां लिख छोडियांहें ॥ तिसके अनंतर और जोधे दोनों सेनाके आए मानों प्रलयकालके मेघ उछलेहें तिसके आनेकरी एक एक जोधेकी मर्यादा दूर होगइ ॥ एकठे जुध करने लागे ॥ बडे शस्त्रौके प्रवाहके प्रहार करने लागे ॥ कइं खड्गोंके प्रहार होवहि॥ कुहाडे त्रिसूल भाले बरछीयां कटारी छूरी चक्र गदादिक शस्त्रचलने लगें ॥ जेसें वर्षाकालमे मेघ वर्षाकरते हें ॥ तेसें शस्त्रोंकी वर्षाहोने लगी ॥ बडे शब्दकरें ॥ अरु शस्त्र चलावें ॥ हे रामजी ! जेते कछू प्रलयकालके उपद्रव थे सो एकठे आनहुए ॥ जोधा जो थे सो जानके युधकी उर आये ॥ अरु जो कायर थे सो भागीजावे ॥ एसा संग्राम हुआ जो जोधाके सिर काटे गये ॥ तिनके हस्ती घोडे मृत्युकों प्राप्तभये ॥ जेसें कमलके फूल काटे जातेहें तेसें तिनके शीश काटेजावें तब दोनों सेनाके राजा चिंताकरने लागे ॥ जो क्या होवेगा ? हे रामजी ! एसा जुद्ध हुआ॥ जो रुधिरकी नदीयांचली ॥ तिसविषे प्राणी वहते जावहि॥ अरु बडे शब्दकरे जिन शब्दके आगें मेघोके शब्दभी तुछ भासे॥ हे रामजी ! दोनों देवीयां संकल्पके विमान कलपीकें आकाशविषे स्थित हुइ क्या देख्या एसा जुध हुआहे जो महाप्रलयविषे समुद्र एक रूप होजातेहे ॥ अरु बीजलिकी नांइ शस्त्रोंका चमत्कार होताहे ॥ अरु जो सूरवीर हे तिनके रक्तकी बुंदां पृथ्वी उपर पडतियां हे ॥ तिस बूंदोंविषे जेते मृतकाके कणके लगे होतेहे तेते वर्ष स्वर्गकों भोगेगे ॥ जोजो सूरमा जुद्धविषे मृतक होवे ॥ तिसकों विद्याधरीयां स्वर्गकों लेजावे ॥ अरु देवगण स्तुति करें ॥ जो इह सूरमा स्वर्गकों प्राप्त भया ॥ अक्षय स्वर्गभोगेगा अर्थ इह जो चिरकाल स्वर्गसुख भोग भोगेगा ॥ हे रामजी! सूरमे स्वर्गलोकके भोग मनविषे चिंतनकरी हर्षवान होवे॥ अरु जुद्धकरी नानाप्रकारके शस्त्र चलावे ॥ अरु संहारेहे ॥ बहुरीजुधके सन्मुख होवे धीरज धरकें स्थितहोवे ॥ जेसें सुमेरु पर्वत धीरजवान अचल स्थितहे तिसतेंभी अधिक धीरजवान रहे॥ अेसें संग्रामविषे जोधे चूरण होवे जेसें उखलाविषे चूरण होतीहे ॥ तेसें रणविषे चूरण होवे अरु बहुरी सन्मुख होवे अरु हाहाकार शब्द बडे होवे॥ अरु हस्तिसों हस्तिपरस्पपर युद्ध करे शब्द करे॥ हे रामजी ! अनेक जीव इस प्रकार नाशकों प्राप्त भयें ॥ जो जो सूरमा मरें ॥ तिसकों विद्याधरीयां स्वर्गकों ले जावे ॥ परस्पर बडे जुद्ध होवहि खड्गवाले साथ खड्गवाले जुधकरें ॥ त्रिशूलवाले साथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्रिशूलवाले जुधकरे ॥ जेसा जेसा शस्त्र किसीपास होवे ॥ तेसेही तिससाथ जुद्धकरे ॥ जब शस्त्र पूरन होइ जावे तब मुष्टी साथ जुद्ध करहीं ॥ दशदिशा युद्धकरी पूर्ण होइ गइयां ॥
इतिश्री योगवासिष्ठे लीलोपाख्याने रणभूमी बर्ननंनाम षड्विंशतिमः सर्गः ॥ २६ ॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी!
जब इस प्रकार बडा जुध हूआ ॥ तब सूरमेके रुधिरका प्रवाह चल्या ॥ जेसें गंगाका प्रवाह तीक्ष्ण चलताहे ॥ तेसें तीक्ष्ण प्रवाह चल्या तिस प्रवाहविषे हस्ति घोडा मनुष रथ
सब बहे जावे अरु सेना सृष्टि नाशकों प्राप्त होतिजावे ॥ हे रामजी ! बडा क्षोभ आनकें उदयहूआ ॥ तब राक्षस पिशाच आदिक जो तामसी जीव थे सो भोजन करने लागे मांस खावे ॥
अरु रुधिरपान करे ॥ उनकों उत्साह क्रिया प्राप्त भइ ॥ जेसें मंदराचल पर्वतकरी क्षीर समुद्रकों क्षोभ हुआथा ॥ तेसें जुध संयामविषे योद्धाका क्षोभ हुआ ॥ रुधिरका समुद्र चल्या॥
तिसविषे हस्तिघोडे रथ सूरमे तरंगोकी नांइ उछलते द्रष्ट आवहिं ॥ रथवालेसों रथवाला जुध करे ॥ घोडेवालेसों घोडेवाले जुध करहिं ॥ हस्तिवालेसों हस्तिवाले प्यादेसों प्यादे
युधकरे ॥ हे रामजी ! जेसें प्रलयकालकी अग्निविषे जीव पडे जलतेहें॥ तेसें जो जोधा रणभूमीविषे आवे सो नाशकों प्राप्त होवे॥ जेसें दीपकविषे पतंग प्रवेश करताहे॥ जेसें समुद्रविषे
नदीयां प्रवेश करतीयांहे ॥ तेसें रणभूमिविषे दशदिशाके जोधे प्रवेश करे ॥ किसीका शीश काटा जावे अरु धड जुध करे ॥ किसीकी भुजा काटीजावे ॥ किसीके उपर रथ च
ले जावे ॥ हस्ति घोडे उलट उलट पडे ॥ अरु नाश हो जावे ॥ हे रामजो ! दोनों राज्योंकी सहायताके निमित्त अनेक राजा आयेथे पूर्व दिशातें आयेथे॥ कासी मद्रास देशके, भीला
देसके, मालवदेसके, सकला देसके, कवटा देसके, किरातदेसके, म्लेछदेसके आए जिनोंके शास्त्रके अनुसार मर्जादा नहि सो मलेछ हे॥ पारसीवाले आये॥ कासमीर देशके आए तुरक
देशके आए ॥ पंजाब देशके आए ॥ हिमालयपर्वतके आये॥ सुमेरुपर्वतके आये॥ इत्यादिक अनेक देशपाल आये ॥ जिनके बडे भुजदंडहे अरु बडे केश हे॥ अरु बडे भयानकरूप हे॥
सभ जुधकरणेके निमित्त आये ॥ एते मूर्तिमंत आये ॥ बडी ग्रीवावाले आये ॥ एक टंगे पर्वततें आये ॥ एकाचल एकाक्ष आये ॥ घोडेके मुखवाले आए, श्वानके मुखवाले इसतें लेक
री जोधे आये स्त्री राजतें आये ॥ सुमेरु कैलासके राजा थे जेते कछु पृथ्वीके राजा थे ॥ सो सबहि आये जेसें महाप्रलयके समुद्र उछलतेहे अरु दिशास्थान जलकरी पूर्ण होतेहे ॥ तेसें
सेनाकरिकें सब स्थान पूर्णभये॥दोनों उरतें जुध करने लगे॥चक्रवाले साथ चक्रवाले जुधकरे॥खड्गकुन्हाडे त्रिशूल छुरी कटारीबरछी गदा बाण आदिक शस्त्रों करी परस्पर युध करने लागे ॥
उह कहे प्रथम में जाताहों ॥ उह कहे में प्रथम जाताहों ॥ हे रामजी ! तिसकालमें एसा जुध होने लगा जो कहणेविषे नहि आता ॥ दोडदोडकें जोधे रणविषे जावे ॥ अरु मृत्युकों
प्राप्तहोवे ॥ जेसें अग्निविषे घृतकी आहुति भस्म होतीहे॥ तेसें रणविषे जोधे नाशकों प्राप्तहोवे ॥ एसा जुध हुआ ॥ जो रुधिरका समुद्र चला तिसविषे हस्ती घोडा रथ मनुष तृणोंकी नां
इं वहते जावे ॥ अरु संपूर्णपृथ्वी रक्तमय होगइ ॥ जेसें आंधी करि फूल फल बूटे गिरतेहें ॥ तेसें पृथ्वीपर कटंकट शब्द करते सिर गिरे ॥ हे रामजी ! जो तिसकालमें जुध हुआहे सो
कहनेविषे नहि आता ॥ सहस्रमुख जो शेषनाग हे सो जुधके कर्मोंकों उह बरनन करे तोभी संपूर्नन कर सकेगा ॥ तब और केसें कहेगा ॥ सो संक्षेपतें कछु श्रवण कराया हे ॥ इति
श्रीयोगवासिष्ठे लीलोपाख्याने द्वंद्वजुद्ध वर्ननं नाम सप्तविंशतिमःसर्गः ॥ २७ ॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जब इस प्रकार जुध हुआ तब सूर्य अस्त हुआ ॥ मानों उसकी किरणांभी शस्त्रोंके प्रहारकरी अस्तताकों प्राप्त भइयां ॥ तब विदुरथ जो सेनापती हे ॥ सो मंत्रीयोंकों बुलाइ करि कहतभया ॥ हे मंत्री ! अब युधकों शांत करियें काहेतें जो सूर्य अस्त भयाहे॥ अरु जोधेभी सब युध करिकें थकेहें ॥ रात्रिकों आराम करें ॥ बहुरी दिनकों युद्ध करेगें तातें वस्त्र फेरो जु अब जुद्ध शांत करो ॥ तब मंत्रीनें दोनों सेनाके मध्यविषे उंचे चढकें वस्त्रकों फेरा॥ जो अब जुद्धकों शांतिकरो॥ बहुरि दिनकों जुद्ध करेंगे ॥ तब दोनों सेना नें युद्धका त्यागकीया ॥ अरु अपनी अपनी सेनाविषे नोबत नगारे बजावने लागे ॥ राजा विदूरथभी अपने गृहविषे आयस्थित भया रणभूमिका शांत होईगइ ॥ जेसें सरत्कालविषे मेघोंतें रहित आकाश निर्मल होताहे ॥ तेसें रणविषे संग्राम शांतिकों प्राप्तभया ॥ तब रात्रकों देखकें राक्षस पिशाच गीदड बघाड डाकणी मांसका भोजन करणे आए ॥ अरु रुधिर पा नकरे केइके सिर काटे गये ॥ केइके अंग काटे गये ॥ अरु पडे जीवतेहे ॥ अरु हायहाय सब पडे करतेहें ॥ सो निशाचरकों देखकें डरने लागे ॥ अरु केइ लोक भाइ मित्रोंकों देखते भये ॥ हे रामजी ! तब राजा विदुरथ स्वर्नके मंदिरविषे शय्या उपर विश्राम करतभया ॥ केसी शय्याहे जो फुलों सहित चंद्रमाकी नांइं सीतल अरु सुंदर हे ॥ तिस उपर सब किंवा डोकों चडाइकें विश्राम कीयाहे ॥ अरु मंत्रीयों साथ विचार कीया ॥ जो प्रातःकालकों उठकें अेसें करेंगे ॥ एसें विचार करिकें शयन कीया ॥ मुहूर्त एक पर्यंत राजा सोया ॥ बहुरी चि ता करी जाग उठा ॥ अरु दोंनों देवीयां आकाशतें उतरकें गृहविषे सूक्ष्मरूपसों प्रवेश कीया ॥ जेसें संध्याकालमें कमलके मुख मूंदत हे ॥ तिनोंमें वायु प्रवेश करजावे तेसें मंदिरोंमें सूक्ष्म परमाणुके मार्ग करी प्रवेश किया ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! शरीर साथ परमाणुके रंध्रविषे देवीयां केसें प्रवेश करत भइयां ? उह तो कमलके तंतूतेंभी सूक्ष्म होतेहें ॥ बालके अग्रतेंभी सूक्ष्म होतेहें तिस मार्गविषे केसें प्रवेश करत भइयां ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! भांति करी जो अधिभूतक शरीर देह हुआ हे॥ तिस आधिभौतिक शरीर करी आप तें सूक्ष्म रंध्रविषे प्रवेश कोउ नहि करि सकताहे ॥ परंतु मनरूपी शरीरकों रोक कोउ नहि सकता ॥ हे रामजी! देवी अरु लीलाका अंतवाहक शरीर था तिसतें सूक्ष्म परमाणुके मार्ग उ नकों प्रवेश करनेतें कछु विचार न हुआ ॥ जो उनकों अधिभूत शरीर होता तो यत्नभी होता ॥ जहां अधिभूतक न होवे तहां यत्नकी शंका केसें होवें ? हे रामजी ! औरभी सब शरीर चित्तरूपी हे ॥ अरु जेसा निश्चय अनुभव संवितविषे होताहें ॥ तेसेंही सिद्धता होतीहे अन्यथा नहि होती ॥ जिसके निश्चयविषे इह शरीरादिक आकाशरूपहे ॥ तिसकों अधिभूतक ताका अनुभव नहि होता ॥ अरु जिसके निश्चयविषे अधिभूतकता दृढ होरहिहे ॥ तिसकों अंतवाहकका अनुभव नहि होता ॥ जिस पुरुषकों पूर्वार्धका अनुभव नहि ॥ ति सकों उत्तरार्धविषे गमन नहि होता ॥ जेसें वायुका चलना उर्धकों नही होता तिरछा स्पर्श होताहे अरु अग्निका चलना अधकों नहि होता ॥ जलका उर्ध नहि होता जेसें आदि चैतनसंवितविषे प्रवृत्ति भइहें ॥ तेसें अबलग स्थितहे ॥ तातें जिसकों अंतवाहक शक्ति उदय भइहे तिसकों अंतवाहक शक्ति उदयभइहे ॥ तिसकों आधिभूतकता नहि रहति ॥ अरु जिसकों अधिभूतकता दृढ हे ॥ तिसकों अंतवाहक शक्ति उदय नहि होती ॥ हे रामजी ! जो पुरुष छायाविषे बेठा होवे ॥ तिसकों धूपका अनुभव नहि होता अरु जो धूपविषे बेठाहे तिसकों छायाका अनुभव नहि होता ॥ अनुभव तिसकों होताहे जिसके चितविषे दृढता होतिहे ॥ अन्यथा किसीकों कदाचित नहि होता ॥ हे राम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जी ! जेसा प्रमाण चित्त संवितविषे होताहे ॥ जबलग ओर प्रतीति नहि होति ॥ तबलग तेसेंहि सिद्धता होतीह ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प भासताहे ॥ अरु भयकरि कंपायमान होताहे ॥ सो कंपताभी तबलगहे जबलग सर्पका अनुभव अन्यथा नहि होता ॥ जब जेवरीका अनुभव उदयहुवा ॥ तब सर्पभ्रम नष्ट होताहे ॥ तेसेंही जेसा अनुभव चित्त संवितविषे प्रमाण दृढ होताहे ॥ तिसका अनुभव होताहे ॥ इह वार्ता बालकभी जानताहे जेसी जेसी चित्तकी भावना होतिहे ॥ तेसाहि रूप भासताहे ॥ निश्चय और होवे ॥ अरु अनुभव और प्रकार होवे ॥ सो कदाचित् नहि होता ॥ हे रामजी ! जिनकों इह आकार सुपन संकल्पपुरकी नांइं हुएहें सो आकाशरूपहें ॥ जिनकों अेसा निश्चय होवे तिनकों रोक कोउ नहि सकता ॥ औरों काभी चित्तमात्र शरीर हे ॥ अरु जेसा जेसा संवेदन दृढ भयाहे ॥ तेसातेसा आपकों जानताहे ॥ हे रामजी ! आदि सर्ग आत्मातें स्वाभाविक उपजाहे ॥ सो अकारणरूपहे ॥ पाछेतें प्रमादकरी द्वैत कार्य अकारणरूप होयकें स्थित भयाहे ॥ हे रामजी ! आकाश तीन हे ॥ एक चिदाकाश हे ॥ एक चित्ताकाश हे ॥ एक भूताकाश हे ॥ तिनविषे वास्तव एक चिदाकाश हे ॥ अरु भावनाकरिकें भिन्नभिन्न कलना हुइहे ॥ आदि शुद्ध चिदाकाश अचेत चिन्मात्र विषे जो संवेदन फुर्योहे ॥ तिसका नाम चित्ताकाश हे ॥ तिसविषे इह संपूर्ण जगत हुआ हे ॥ हे रामजी ! चित्तरूपी जो शरीर हे सो सर्वगत होइकरी स्थित भयाहे ॥ जेसा जेसा तिसविषे स्पंद होताहे तेसा होयकें भासताहे ॥ जेते कछु सर्वपदार्थ हे ॥ तिन सर्वोविषे व्याप रहाहे ॥ त्रिसरेणुके अंतरभी सूक्ष्मभावकरि स्थित भयाहे ॥ आकाशके अंतरभी व्यापी रहाहे ॥ जिसके पत्र फल होतेहें जल विषे तरंग होयकें स्थित भयाहे ॥ अरु सैल जो पर्वत हे तिनके अंतरभी इही फुरताहे ॥ अरु मेघ होइकें उही वर्षता हे ॥ अरु जलतें बरफभी चित्तहि होताहे ॥ अनंत आकाशभी उहीहे ॥ परमाणुरूप उहीहे ॥ अंतरबाहिर सर्व जगतमें यहीहे ॥ जेता कछु जगत हे ॥ सो चित्तरूपहि हे ॥ अरु वास्तव आत्मा साथ अनन्यरूप हे ॥ जेसें समुद्र अरु तरंगविषे कछु भेद नहि ॥ तेसें आत्मा अरु चित्तविषे कछु भेद नहि जिस पुरुषकों अेसें अंखड सत्ता आत्माका अनुभव हुआहे ॥ अरु सर्गके आदि चित्तहि जिसका शरीरहे ॥ अधिभूतकताकों नहि प्राप्तभया सो महा आकाशरूप हे ॥ जिनकों पूर्वका स्वभाव स्मरन रहाहे ॥ इस कारणतें तिनका अंतवाहक शरीर हे ॥ हे रामजी ! जिस पुरुषकों अंतवाहकविषे अहंप्रत्यय हे तिसकों सब जगत संकल्पमात्र हो भासताहे ॥ जहां जाणेकी इछा उह करताहे तहां जाताहे ॥ आवरण कोउ उसकों रोक नहि सकता ॥ अरु जिसकों आधिभूतकविषे निश्चय हे ॥ तिसकों अंतवाहक शक्ति नहि होति ॥ हे रामजी ! सबही अंतवाहकरूप हे ॥ अरु भ्रम करिकें अणहोता आधिभूतक देखते हे ॥ जेसें मरुथलबिषे जल भासताहे ॥ सुपनविषे जेसें वंध्याके पुत्रका सतभाव होताहे ॥ तेसें आधिभूतक जगत भासता हे ॥ जेसें जलतें सीतलता करिकें बरफ होजाताहे ॥ तेसें जीव प्रमाद करकें अंतवाहकतें अधिभूतक शरीर होताहें ॥ ॥ रामउवाच ॥ हे भगवन् ! चित्तमें क्याहे ? अरु केसें होताहे अरु केसें नहि होता ॥ अरु इह जगत केसें चित्तरूपहे ? अरु क्षणविषे अन्यथा केसें हो जाताहे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! एक एक जीव प्रति चित्त होताहे ॥ जेसाजेसा चित्त हे ॥ तेसी तेसी शक्ति हे अरु चित्तविषे जगत भ्रम होताहे ॥ क्षणविषे कल्प अरु संपूर्न जगत उदय होआताहे ॥ अरु क्षणविषे संपूर्ण लय होताहे ॥ किसीकों निमेषविषे कल्पहोइ आताहे ॥ किसीकों क्रमकरिकें भासताहे ॥ सो तुं सुण ॥ हे रामजी ! जब मरणेकी मूर्छा होतीहे ॥ तिस महाप्रलयरूप मृत्यु मूर्छाके अनंतर नाना प्रकारका जगत इसकों फुरि आताहे ॥ जेसें सुपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषे सृष्टि फुरि आतिहे ॥ जेसें संकल्पका पुर भासताहे ॥ तेसें मृत्युमूर्छाके अनंतर सृष्टि भासतीहे ॥ जेसें महाप्रलयके अनंतर आदि विराटरूप ब्रह्मा होताहे तेसें मृत्युके अनंतर इसकों अनुभव होताहे ॥ इहभी विराट हीताहे काहेतें जु इसका मनरूपी शरीर होताहे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन्! मृत्युके अनंतर जो सृष्टि होतिहे ॥ सो स्मृतिकरिकें होतिहे ॥ स्मृतिविना तो नहि होति जो मृत्युके अनंतर सृष्टि हुइ तो सकारणरूप हुइ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जब महाप्रलय होताहे ॥ तब हरिहरादिक सबहि विदेह मुक्त होतेहे ॥ बहुरी स्मृतिका संभव केसें होवे ! हम आदिक जो बोध आत्मा हे ॥ जब विदेहमुक्त हुए ॥ तब स्मृति संभव केसें होवे ॥ अरु अबकें जो जीव हें ॥ तिनका जन्म मरन स्मृतिकारणतें होताहे ॥ काहेतें जो मोक्ष नहिं होता ॥ मोक्षका उनकों अभावहे ॥ हे रामजी ! जब इह जीव मरते हें ॥ तब मृत्यु मूर्छा होतीहें अरु कैवल्य भावविषे स्थित नहि होते ॥ मूर्छा करी इसका संवित आकाशस्वरूप होताहे ॥ तिसतें बहुरि चित्त संवेदन फुरि आताहे ॥ तब क्रम करिकें जगत फुरि आताहे ॥ जब बोध होताहें ॥ तब तन्मात्रा अरु कालक्रिया भाव अभाव स्थावर जंगम जगत सब आकाशरूप हो जाताहे ॥ जिसका संवेदन दृश्यकी और धावताहे अज्ञान जन्य तिसकों मृत्यु मूर्छाके अनंतर संवेदन फुरताहे ॥ तिसकरि शरीर इंद्रियां भास आतियांहे ॥ केसा शरीरहे ॥ अंतवाहक शरीरहे ॥ परंतु चिरकालकी प्राप्ति करिकें आधिभूतक होइ भासताहे ॥ तब इसकों देशकाल क्रिया आधार आधेय उदय होइ करि स्थित होतेहें ॥ जेसें वायु स्पंद निस्पंदरूप हे ॥ जब स्पंद होताहे तब भासताहे ॥ अरु निस्पंद हुएतें नहि भासता ॥ तेसें संवेदन करिकें जगत भासताहे तब जानता हे ॥ जो में इहां उपजाहों जेसें सुपन अंगनाका सुपने विषे स्पर्शका अनुभव होताहे ॥ तोभी मिथ्याहे ॥ तेसें भ्रम करिकें आपकों उपजा देखताहे ॥ तोभी मिथ्याहे ॥ हे रामजी ! जहां यह जीव मृतक होताहे तहांहि जगत भ्रम देखताहे अरु वास्तवतें जीवभी आकाशरूपहे ॥ अरु जगतभी आकाशरूप हे ॥ अरु अज्ञान करिकें आपकों उपजा मानता हे ॥ अरु आगें जगत भ्रम देखताहे ॥ इह नगर हे इह पर्वत हे ॥ इह सूर्य चंद्रमा हे इह तारागण हे ॥ अरु जरा मरन आधि व्याधि संकट करिकें व्याकुल होताहे ॥ भाव अभाव भय स्थूल सूक्ष्म चर अचर पृथ्वी नदीयां पर्वत भूत भविष्य वर्तमान क्षय अक्षय भूमिकों देखताहे ॥ में उपजा हों, अमकोंका में पुत्रहों, इह मेरा कुलहे, इह मेरी माता हे, इह मेरे बांधवहे, एता धन हमकों प्राप्त भयाहे ॥ इत्यादिक वासना जालों विषे दुःखी होता हे ॥ अरु कहताहे, इह सुकृतहे, इह देहाकृतिहे, प्रथम में बालक था, अब मेरी इह अवस्था भइहे, इह मेरा वर्ण हे, इत्यादिक जगत कल्पना एक एक जीवकों उदय होतिहे ॥ हे रामजी ! संसाररूपी एक वृक्ष उदय हुआहें ॥ चित्तरूपी बीज हे, तारागण तिसके फूल हे, अरु मेघ चंचल पत्रहे ॥ अरु जंगम जीव मनुष देवता दैत्य आदिक पंछी बेठणें वाले हे! अरु रात्र तिस उपर धूडहे, अरु समुद्र तिसकी तलावडिहे ॥ अरु पर्वत उसविषे सिल बटे हे, अरु अनुभवरूप अंकुर हे ॥ जहां इस जीव मरताहे तहां क्षणविषे देखताहे ॥ इस प्रकार एक एककों अनेक जगत भासतेहे ॥ हे रामजी ! केइ कोटि ब्रह्मा अरु विष्णु रुद्र इंद्र पवन सूर्य आदिक हुएहें जहां सृष्टि हे, तहां इह होतेहें ॥ तातें चिदअणुविषे अनेक सृष्टिहे ॥ जो जीवभी अनंत हूएहें ॥ तिनोंविषे सुमेरु मंडल दीप लोकभी बहुतेरे हूएहें ॥ जो जो चिदअणु विषे सृष्टिका अंत नहि ॥ तो परब्रह्मविषे अंत कहांतें आवे ॥ अरु वास्तवतें हे नहि ॥ जेसें पर्वतकी कंध विषे शिल्पी पुतलीयां कलपे, तो कछु हे नहि, तेसें जगत चिदाकाशविषे नहि ॥ मन मात्रही हे ॥ हे रामजी ! मनन अरु स्मरणभी चिदाकाशरूप हे ॥ अरु चिदाकाशविषे मनन अरु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्मरण हैं ॥ जेसें तरंगभी जलरूप हे अरु जलहिविषे तरंग होतेहैं ॥ जलतें इतर तरंग कछु वस्तु नहि ॥ तेसें मनन स्मरणभी चिदाकाशरूप जान ॥ हे रामजी! दृश्य कछु भिन्न वस्तु नहि॥ दृष्टाहि दृश्यकीनांइं होकरि भासता हे ॥ जेसें इह मनाकाश नानाप्रकार होइ भासताहे ॥ तेसें चिदाकाशका प्रकाश नानाप्रकार जगत होइकर भासताहे ॥ इह विश्व सब चिदाकाशरूप हे ॥ हमकों तो एसें भासताहे॥तुमकों इह जगत अर्थाकाररूप भासताहे॥इसी कारणतें कहाहे ॥ जो लीला अरु सरस्वती आकाशरूप थे ॥ अरु सर्वज्ञ थीयां स्वछरूप निराकार थी॥ जहां चाहे तहां जाइ प्राप्त होतीथी ॥ जेसी इछा करे तेसी सिद्धी होवे ॥ काहेतें जो जिसकों चिदाकाशका अनुभव हुवाहे ॥ तिसकों कोउ रोकी नहि सकता ॥ सर्वरूप होयकें जो स्थित हुआ तिस महविषे प्रवेशका क्या आश्चर्यहे ? उह अंतवाहकरूपहे ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठेउत्पत्ति प्रकरणे लीलोपाख्याने स्मृत्यनुभववर्णनं नामअष्टाविंशतिमःसर्गः ॥ २८ ॥

वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! जब दोनों देवीयां राजाके अंतःपुरविषे प्रवेशकरि संकल्पकरि सिंगासन पर चढकें स्थित भइयां॥ चंद्रमाकी नांइं कांतिहे जिनकी अरु निर्मल कल्पवछों की सुगंध पवन करी शरीरकों स्पर्श करत भइयां ॥ तब बडा प्रकाश अंतःपुरविषे भया ॥ अरु सीतलता करि व्याधि ताप शांत भया॥ जेसें नंदनबन होताहे तेसें अंतःपुर भया ॥ जेसें प्रातःकालविषे सूर्यका प्रकाश होताहे ॥ तेसें देवीयोके प्रकाश करिकें अंतःपुर पूर्ण भया॥ मानों देवीयांके प्रकाशसों राजाके पर अमृतकी सिंचना भइ॥ तब राजा देखत भया मानों सुमेरुके शृंगतें दोनों चंद्रमा उदय हुएहे ॥ एसें देखकें विस्मयकों प्राप्तभया ॥ बहुरी चिंतना करत भया ॥ जु इह देवीयां हे ॥ शय्यातें उठ खडा भया ॥ जेसें शेषनागकी शय्यातें विष्णु भगवान उठताहे ॥ तेसें उठकें वस्त्रकों एक ओरकरि हाथोंविषे पुष्प लीये ॥ हाथ जोडिकें देवीयोंके चरनों उपर चडाये ॥ अरु मस्तक टेक्या ॥ पद्मासन बांधके पृथ्वी उपर बेठा अरु कहत भया ॥ हे देवीयों! तुमारी जय होवे ॥ जन्म दुःख तपतके तुम शांत करनेहारी चंद्रमा हो॥ अरु अपूर्व सूर्य हो ॥ अर्थ इह जो पूर्व सूर्यके प्रकाशकरी बाह्यतम नष्ट होताहे ॥ अरु तुमारे प्रकाशकरी अंतर अज्ञान तमभी नष्ट होताहे ॥ तातें अपूर्व सूर्यहो ॥ जब एसें राजानें पूजन करी कहा तिसतें अनंतर मंत्री जो राजाके पास सोयेथे ॥ जेसें नदीके तट उपर फुलोंका दछ होवे तेसें राजाके पास सोये थे॥ तिसकों जन्म अरु कुलके कहावणे निमित्त संकल्प करीकें देवी जगावती भइ ॥ तब मंत्रीभी उठकें फुलोंकरी देवीयांकों पूजन करी राजाके समीप बेठगये ॥ तब सरस्वती कहत भइ ॥ हे राजन्! तूं कवनहे! किसका पुत्रहे! अरु कवका जन्मलियाहें! हे रामजी! जब इस प्रकार देवीनें पूछा तब निकट जो मंत्री बेठेथे सो बोलत भये ॥ हे देवी! तुमारी कृपा करी राजाका जन्म अरु कुल में कहताहों ॥ इक्ष्वाकु कुलविषे एक राजा होत भयाहे ॥ कमलकीनांइं तिसके नेत्रथे ॥ अरु श्रीमान था ॥ अरु तिसका नाम कुंदरथ भयाहे ॥ तिसका पुत्र बुधरथ भया ॥ तिसका पुत्र सिंधुरथ होत भया॥ तिसका पुत्र महारथ होत भया॥ तिसका पुत्र विष्णुरथ होतभया ॥ तिसका पुत्र कलारथ होतभया ॥ तिसका पुत्र सूर्यरथ होतभया ॥ तिसका पुत्र नभरथ होतभया ॥ तिस नभरथका पुत्र बडे पुन्यकरकें विदूरथ होतभयाहे ॥ जेसें क्षीर समुद्रसों चंद्रमा निकसाहे ॥ तेसें सुमित्रा मातातें उपजाहे ॥ जेसें गौरीजीतें स्वामिकार्तिक उत्पन्न भयाहे ॥ तेसें इह सुमित्रातें उत्पन्न भयाहे ॥ हे देवी! इस प्रकार तो हमारा राजाका जन्म हुआहे ॥ जब दस वर्षका भया तब पिता इसकों राज देकरी आप बनकों उठ गयाहे ॥ तिस दिनतें लेकरी इसनें धर्मकी मर्यादा साथ पृथ्वीकी पालना करीहे॥ अरु बडे पुन्य कीयेहे ॥ जो तिनों पुन्यका फ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ल तुमारा दर्शन इसकों अब भयाहे ॥ हे देवी ! तुमारे दर्शनकें निमित्त जो बहुत वर्ष तप करतेहें ॥ तिनकों तुमारा दर्शन पावना कठनहे ॥ तातें इसके बडे पुन्यहे ॥ जो तुमारा दर्शन प्रा
प्त हुवा ॥ हे रामजी ! इस प्रकार कहिकें मंत्री तूष्णी रहत भया ॥ तब देवीजीनें कृपाकरीकें राजा विदूरथके शीशपर हाथ रख्या ॥ अरु कहा हे राजन् तूं अपने पूर्व जन्मकों विवे
कदृष्टि करिकें देख जो तूं कवन हे ॥ जब इस प्रकार देवीनें कहा तब राजाके रिदेविषे अज्ञान तम था ॥ सो देवीके हाथ रखनेकरी निवृत्त होत भया॥ अरु हृदय प्रफुल्लित हुआ एसें दे
वीके प्रसाद करि राजाकों पूर्वकी स्मृति फुर आइ ॥ लीला अरु पद्मका वृत्तांत संपूर्ण स्मरण करिकें कहत भया॥ हे देवी ! बडा अचरज मैं जान्याहे ॥ जो इह जगत मनकरि रचाहे तेरे
प्रसादकर में जान्याहे॥ जो मैं राजा पद्म था ॥ अरु लीला मेरी स्त्री थी॥ एक दिन मुजकों मृतक हुवे एसे भास्या॥ अरु इहां में सितेर वर्षका भयाहों सो भ्रमकरिकें में नहि जान्या॥
अब प्रत्यक्ष जानता हों॥ अरु अनेक कार्य मेंनें कीयेहें॥ सितेर वर्षोंविषे सो मुझको स्मरण होतेहें॥ अरु प्रपितामहभी मुजकों स्मरणविषे आताहे ॥ अपनी बालक अवस्थाभी स्मरनविषे
आतीह ॥ जौबन अवस्थाभी स्मरनविषे आतीहे ॥ मित्रबांधव स्मरन होतेहें इह बडा आश्चर्य हूआ हे ॥ सरस्वतीउवाच ॥ हे राजन् ! जब इह मृतक होतेहें ॥ तब इसकों बडी मूर्छा हो
तीहे ॥ तिस मूर्छाके अनंतर और लोक भासी आतेहें ॥ एक मुहूर्तविषे वर्षोंका अनुभव होताहे ॥ जेसें सुपनेविषे एक मूहूर्तसों अनेक वर्षोंका अनुभव होताहे ॥ तेसें तुजकों मृत्यु मू
र्छाके अनंतर इह लोकभ्रम भास्याहे ॥ हे राजन् ! तूं जो पद्म राजाथा ॥ तिस अपने गृहविषे मृतक हुए तुजकों एक मूहूर्त वीतीहे ॥ अरु इहां तुजकों बहुतेरे वर्षोंका अनुभव भयाहे ॥
अरु तिसतेंभी जो पीछला वृत्तांत हे सो श्रवण करु ॥ हे राजन् ! एक पहाडके उपर ग्राम था॥ तिसविषे एक वसिष्ठ ब्राह्मण था॥ अरुंधती तिसकी स्त्री थी ॥ दोनों मंदिरविषे रहते थे ॥
तिस अरुंधतीनें मुझसों वर लीया जो जब मेरा भर्ता मृतक होवे तब उसका जीव इसहि मंडपाकाश विषे रहे ॥ हे राजन् ! जब उह मृतक भया तब उसकी पुर्यष्टक उसहि मंदिरविषे
रहि ॥ तिसके संवितविषे राजाकी दृढ वासना थी ॥ तिस मंडपाकाशविषे तिसकों पद्मराजाकी सृष्टि फुरि आइ ॥ अरु अरुंधति तिसकी स्त्री तिसकों लीला होइ करी प्राप्तभइ ॥ अरु
पद्मका मंडप उस ब्राह्मणके मंडपाकाशविषे स्थित फुरि आया ॥ बहुरी तिस मंडपविषे राजा पद्म तुं मृतक भया ॥ तब तेरे संवितविषे नानाप्रकारके आरंभ संयुक्त तुजकों इह जगत
फुरिआया ॥ हे राजन् ! इह जो तेरा जगत हे सो पद्मराजाके हृदयविषे फुरआयाहे ॥ अरु पद्मराजाके मंडपाकाशविषे स्थितहे॥ सो उसहि वसिष्ठ ब्राह्मणके मंडपाकाशविषे स्थितहे ॥
अरु उहि वसिष्ठ ब्राह्मण तूं विदूरथ राजा भयाहे ॥ सो केसें स्थितहे ? हे राजन् ! इह सब जगत प्रतिभा मात्र हे ॥ मनकी कलना करी भासताहे उपजा कछु नहि ॥ ॥ विदुरथउवा
च ॥ बडा आश्चर्य हे जेसें मेरा इह जन्म भ्रमरूप भया ॥ तेसें इक्ष्वाकुका कुलभ्रमरूप तेसें मेरा पिता माता सब भ्रमरूप भये ॥ तिसविषे में जन्मलीया बहुरी बालक हूआ दश वर्षो
का ॥ तब पितानें मुजकों राज देकें बनवास लीया ॥ बहुरी में दिग्विजय करीकें प्रजाकी पालना करी ॥ शत वर्षोंका मुजकों अनुभव होताहे ॥ अरु अब मुजकों दारुण अवस्था जुद्ध
की प्राप्ति आन भइहे ॥ जुद्ध करिकें रात्रकों में गृहविषे आन स्थित भयाहों ॥ बहुरी तुम दोनों देवीयां मेरे गृहविषे आइयां हों॥ में तुमारी पूजा करत भयाहों ॥ बहुरी तुम दोनों विषें
एक देवीनें कृपा करीकें मेरे शीशपर हाथ रख्याहे ॥ तिसी करी मुझकों ज्ञान प्रकाश भयाहे ॥ जेसें सूर्यके प्रकाश करी कमल प्रफुल्लित होताहे ॥ तेसें मेरा हृदय देवीके प्रकाश करी प्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फुल्लित भयाहैं ॥ तेसें इनकी कृपातें कृत कृत्य भयाहे ॥ अब मेरा संताप सभ नष्ट भयाहे ॥ अरु परम निरवाण समता सुखनिर्मळपदकों प्राप्तभया हों॥ ॥ सरस्वतीउवाच ॥ हे राजन्! जो कछु तुझकों भास्याहे ॥ सो सब भममात्र हे॥ नानाप्रकारके व्यवहार अरु लोकांतरभी भममात्र हे ॥ काहेतें जो उहां तुझकों मृतक हुए एक मूहूर्त वितित भइहे ॥ तिसकें अनंतर उहि मंडपआकाश विषे तुझकों इह जगत भास्याहे ॥ अरु उह पद्मराजाकी सृष्टि ब्राह्मणके मंडपविषे स्थितहे ॥ तहां तुझकों नदीयां पर्वत समुद्र पृथ्वी आदिक भूत संपूर्ण जगत भासि आयेंहे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग आदत्त फुरि आतेहें ॥ तेसें जगत भासि आयाहे ॥ हे राजन्! मृत्यु मूर्छाके अनंतर कबहु उहि जगत भासताहे ॥ कबहु ओर प्रकार भासताहे ॥ कब पूर्व अरु अपूर्वभी भासताहे ॥ सो मनको कल्पना करिकें भासता हे ॥ वास्तवतें असतरूप हे ॥ अज्ञानकरिकें सतकी नांइं भासताहे ॥ जेसें एक मूहूर्त शयन करिकें सुपनेविषे बहुतेरे वर्षोंका क्रम देखताहे ॥ तेसें जगतका अनुभव होताहे ॥ जेसें संकल्प पुरविषे अपना जीना बहुरी मरणा देता हें ॥ जेसें गंधर्व नगर भममात्र होताहे ॥ जेसें नौकाविषे बेठे हुएकों तटके वृछ चलते हुए भासतेहे ॥ जेसें भ्रमणे करीकें पर्वत पृथ्वी मंदिर भ्रमते भासतेहे ॥ जेसें सुपनेविषे अपना शिरकाट्या भम करिकें भासताहे ॥ तेसें इह जगत भम करीकें भासताहे ॥ हे राजन्! अज्ञान करिकें मिथ्या कल्पना तुजकों उपजीहे॥ वास्तवतें न तुं मृतक भयाहे ॥ न जन्म लीया हे ॥ शुद्ध विज्ञान शांतिरूप हे ॥ तुं अपना आप जो आत्मपद हे तिसविषे स्थित हो नाना प्रकारका जगत अज्ञान करि भासताहे ॥ सम्यक् ज्ञान करिकें सर्वात्मसत्ता भासतीहे ॥ आत्मसत्ताही जगतकी नांइं भासतीहे ॥ जेसें बडी मणीकी करचां नाना प्रकार होइ भासतीहे ॥ सो मणि तें इतर कछु नहि ॥ तेसें आत्मसत्ताका किंचन आकाशरूप जगत भासताहे॥ गिरि ग्राम तुम किंचन रूप हो ॥ जेता कछु जगत विस्तार तुजकों भासताहे सो लीला अरु पद्म राजाके मंडपाकाशविषे स्थितहे ॥ अरु उह लीला पद्मकी राजधानी उस वसिष्ठ ब्राह्मणके मंडपाकाशविषे स्थितहे ॥ हे राजन्! इह जगत वसिष्ठ ब्राह्मणके हृदय मंडपआकाशविषे पडा फुरताहे॥ केसाहे मंडपाकाश जो आकाशविषे स्थित हे॥ न पृथ्वी न कोउ सैल पर्वतहे न कोउ मेघ हे न कोउ समुद्र हे न कोउ मुमुक्षु हे ॥ केवल शून्य शून्य स्थितहे ॥ और न कोउ जगत हे ॥ न कोउ देखनेवाला हे ॥ इह सब भांति मात्रहे ॥ हे राजन्! इह सब तेरे उस मंडपाकाशविषे पडे फुरते हैं ॥ ॥ विदूरथउवाच ॥ हे देवी! जो एसें हे तो इह मेरे भृत्यभी अपने आत्मविषे सत हे ॥ अथवा असत हे सो कहो ॥ ॥ देवीउवाच ॥ हे राजन्! विदितवेद जो पुरुष हे सो शुद्ध बोधरूप हे तिसकों कछुभी जगत सत्यरूप नहि भासता ॥ सब चिदाकाश रूपही भासता हे ॥ जेसें जेवरीविषे सर्पभम निवृत्त हूए नहि भासता ॥ तेसें जिन पुरुषोंकों आत्मबोध हुआ हे ॥ अरु जगत भम निवृत्त हूआहे तिनकों जगत सत नहि भासता ॥ जेसें सूर्यकी किरणांविषे जलकों असत जाने तब बहुरी जलसत्ता नहि भासती ॥ तेसें जिनकों आत्मबोध हुआहे ॥ अरु जगतकों असत जान्या हे तिनकों सत नहि भासता ॥ हे राजन्! जेसें सुपनेविषे कोउ भम करिकें अपना शीस काट्या देखे॥ अरु जागेतें सुपनका मरणा नहि देखता॥तेसें ज्ञानवानकों जगत सत नहि भासता ॥ जेसें सुपनेका मरणा भमकरि देखताहे ॥ तेसें अज्ञानिकों जगत सत भासताहे परंतु वास्तव कछु नहिं ॥ शुद्धबोध विषे जगत भम भासताहे ॥ जेसें शरत्कालविषे मेघतेंरहित शुद्ध आकाश होताहे ॥ तेसे शुद्धबोधवालेकों अहंत्वं आदिक व्यर्थ शब्दका अभाव होताहे ॥ अरु हे राजन्! तूं अरु तेरे भृत्य इत्यादिक जो इह सृष्टिहे सो सब आ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लातें फुरेहे ॥ जेसें तूं फुर्याहे तेसें इह सभ फुरेहें ॥ अरु वस्तुतें कछू हुआ नहि केवल आत्मसत्ता अपनेआपविषे स्थितहे ॥ भमकरि और कछू भासताहे ॥ शुद्ध विज्ञानघनरूप तिसका शेष रहताहे ॥ वाल्मीकोवाच ॥ इस प्रकार जब देवी अरु विदूरथका संवाद वसिष्ठनें रामजीकों कहा तब सूर्यअस्तभया ॥ सायंकालका समय भया ॥ सर्व सभा परस्पर नमस्कारक रकें स्नानकों गइ ॥ रात्र वितीत भइ तब सूर्यकीकिरणां सहित सभ अपअपने स्थानों उपर आइकें बेठे ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे लीलोपाख्याने भ्रांतिविचारोनाम एकोनत्रिंशतिमःसर्गः २९॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जो पुरुष अबोध हे ॥ अर्थ इह जो परम पदविषे स्थित नहि भये ॥ तिसकों जगत वज्रसारकी नांइ दृढ भयाहे ॥ जेसें मूर्ख बालककों अपने पछावेविषे वैताल भासताहे ॥ तेसें अज्ञानीकों असतरूप जगत सत होय भासताहे ॥ जेसें मरुथलविषे मृगकों असतरूप जलाभास सत्य होइ भासताहे ॥ जेसें सुपने विषे क्रिया अर्थ भमकरीकें भासतीहे जेसें जिसकों सुवर्न बुद्धि नहि होती तिसकों भूषन बुद्धिसत भासती हे ॥ जेसें नेत्र दूषण करिकें आकाशविषे मुक्तमाला भासतीहे ॥ तेसें असम्यग्दर्शीकों असतरूप जगत सत होइ भासताहे ॥ हे रामजी ! इह जगत दीर्घकालका सुपनाहे ॥ सो अहंताकरिकें दृढ जाग्रतरूप हो भासताहे ॥ वास्तवतें कछु उपजा नहि ॥ वस्तुतें परम चि दाकाशहे ॥ सर्वदा शांतिरूप हे ॥ अचिंत्य चिन्मात्र स्वरूपहे ॥ सो सब जगत हे ॥ सर्व शक्ति सर्वात्मा हे ॥ जहां जेसा स्पंद फुरता हे तेसा जगत होइकरी भासताहे ॥ जेसें सुपन सृष्टि भासती हे सो सुपनभम चिदाकाशविषे स्थित हे ॥ तिस चिदाकाशविषे एक सुपनपुर फुरता हे॥ उह द्रष्टा हो दृश्यकों देखता हे ॥ सो द्रष्टा अरु दृश्य दोनों चैतन संवितविषे आभा सरूप हे ॥ तेसें इह जगतभी आभासरूप हे ॥हे रामजी ! सर्गकी आदि जो शुद्ध आत्मसत्ता थी ॥ तिसविषे आदि संवेदन स्पंद हुआहे सो ब्रह्माजी हे ॥ तिसके संकल्पविषे इह संपूर्न जगत स्थितहे ॥ इह संपूर्न जगत सुपनकी नांइहे॥ तिस सुपनरूप विषे तुमारा सदभाव हूआहे जेसें तुमहो तेसें औरभी हे॥ जेसें सुपनेविषे सुपननरकों ओर सुपनहोवे॥ जेसें सुपननगर वास्त व सत नहि होता ॥ तेसें इह जगतभी जो दृष्ट आताहे सो भममात्र हे ॥ जेसें सुपनेविषे असतहि सत होकें भासताहे ॥ तेसे इहभी अहं त्वं आदिक भासतेहें॥ जेसें सुपनविषे सब कर्म हो तेहे तेसें इहभी जान ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् सुपनेतें जब जागता हे ॥ तब सुपनेके पदार्थ असतरूप हो भासतेहे ॥ अरु इह तो ज्यौंके त्यों रहतेहें ॥ जब देखियें तब एसेंही हे ॥ बहुरी जाग्रत अरु सुपनेकों तुल्यकेसें कहिये ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जेसा सुपन हे तेसें जाग्रत हे॥ सुपन अरु जाग्रतविषे भेद कछु नहि ॥ सुपनकोंभी सुपन असत तब जानताहे॥ जब जागता हे ॥ जबलग जाग्या नहि तब लग असत नहि जानता तेसें इहभी जबलग आत्मपदविषे नहि जाग्या ॥ तबलग असत नहि भासता ॥ जब आत्मपदविषे जागे तब इह जगतभी असतरूप भासेगा ॥ हे रामजी ! इह जगत असतरूप हे ॥ अरु भमकरीकें सतकी नांइं भासताहे ॥ जेसें सुपनेकी स्त्री असतरूप होतीहे अरु सतरूप जानताहे ॥ तेसें इह जगतभी असत रूप सत हो दिखाइ देताहे ॥ आभासरूप जगतहे ॥अरु आत्मसत्ता सर्वत्र सर्वदा अद्वैतरूप हे ॥ अरु जहां जेसा चिंतता हे तहां तेसें होकें भासताहे ॥ जेसें डबेविषे अनेक रत्न होतेहे ॥ तामेंतें जिसकों चाहताहे तिसकों लेता हे तेसें सर्वगत चिदाकाशहे ॥ जहां जेसा चिंतता हे तहां तेसा होइ भासताहे॥ हे रामजी ! अब पूर्वका प्रसंग सुन॥ जब देवी विदूरथपर अमृत रूपी ज्ञान बचनोंकी वर्षाकरी ॥ तब उसके हृदयविषे विवेकरूपी सुंदर अंकुर आनि उत्पन्न भया ॥ बहुरी सरस्वती कहत भइ ॥ हे राजन् ! जो कछु कहना था ॥ सो में तुझकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहा हे ॥ अरु अब रण संग्रामविषे मृतक होनाहे इह मे जानतीहों ॥ अरु अब हम जातेहैं लीलादिकों देखावणे निमित्त हम आएथे सो देख्याहे ॥ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे रामजी ! जब इस प्रकार मधुर वाणीकरी सरस्वतीनें कहा ॥ तब बुद्धिवान जो राजा विदूरथ हे सो कहत भया ॥ ॥ विदूरथउवाच ॥ हे देवी ! अब तुमारा दर्शनकीया ॥ अरु बडेका दर्शन निरर्थक नही होता ॥ महाफल देणेहाराहे ॥ हे देवी ! मैंभी एसा होता जो अर्थ मेरेते आन प्राप्तहोता तिसकों मे निरर्थक नहि करता ॥ सबका अर्थ पूर्ण करीदेताथा ॥ अरु तुम तो साक्षात ईश्वर हो ॥ तातें इह वर मुजकों देहु जो देहकों त्यागकरी लोकांतरमें पद्मके शवदेहविषे जायप्राप्त होहुं ॥ जेसें सुपनेतें सुपनांतरकों प्राप्त होताहे ॥ तेसें प्राप्त होउं ॥ हे देवी ! जो भक्त शरणकों आय प्राप्तहोताहे ॥ तिसका बडे त्याग नहि करते ॥ उसका अर्थ सिद्ध करतेहैं ॥ तातें यही वर मुजकों देहु ॥ जु उसी देहविषे प्राप्त होउं ॥ मेरे मंत्री अरु भारजा अरु लीलाभी मेरे साथ होवे ॥ सरस्वतीउवाच ॥ हे राजन् एसेंहि होवेगा ॥ पद्मराजाके शरीरविषे प्राप्त होवेगा ॥ अरु बोधसहित निःशंक होइकरि राज करेगा ॥ हमारा सेवना किसीका व्यर्थ नहि जेसी कामना करीकें कोउ हमकों सेवता हे ॥ सो तेसें फलकों प्राप्त होताहे ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे लीलोपाख्याने सुपन पुरुष सत्यता वर्णनंनाम त्रिंशतितमःसर्गः ॥ ३० ॥

॥ सरस्वतीउवाच ॥ हे राजन ! अब तूं रणविषे मृतक होवेगा ॥ मृतक होयकें पूर्वके पद्म राजाके शरीरविषे जाय प्राप्त होवेगा ॥ अरु इह तुमारी भार्या अरु मंत्रीभी तहां जाय प्राप्त होवेंगे ॥ हे राजन् तुम एसें चले जाओगे जेसें वायु चल्या जाताहे ॥ अब हम जातेहैं ॥ तुमारा हमारा केसे एकठा होवें ॥ जेसे अश्व अरु खर, मृग अरु ऊंट हस्तिका संग नहि होता ॥ तेसें तुमारा हमारा क्या संगहे ॥ तातें हम जातेहे ॥ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे रामजी ! जब इस प्रकार देवीनें कहा ॥ तब एक पुरुष आइ निकसा ॥ अरु कहत भया ॥ हे राजन ! शत्रु आएहैं अरु चक्र गदा आदिक शस्त्रोंकी वर्षा करते आतेहैं ॥ जेसें प्रलयकालविषे मंदराचल पर्वत अस्ताचल आदिक पर्वत वायुकरि उडतेहे ॥ तेसें शत्रु चले आतेहैं ॥ अरु सर्व दिशा सेना करि पूर्ण भइहे ॥ जेसें महा प्रलयविषे सर्वस्थान जलसों पूर्ण होतेहैं ॥ तेसें सेनाकरि सर्वस्थान पूर्ण भएहैं ॥ अरु अग्निभी तिसनें लगाइ दइहे ॥ तिसकरि स्थान जलने लागेहैं ॥ अरु शब्द करतेहे ॥ अरु बाण नदीके प्रवाहकी नाइ चले आतेहैं ॥ अग्नि एसी लागीहे ॥ जेसें महाप्रलयकी वडवाग्नि समुद्रकों सोशतीहे ॥ तेसें नगरोंकों जलातीहे तब दोनो देवीयां अरु राजा अरु मंत्री उंचे होइकें झरोंखाविषे बैठके देखणे लागे ॥ क्या देखेजो बडी सेना चली आतिहे ॥ जेसें प्रलयकालविषे मेघ चले आतेहे ॥ तेसें सेना चली आतीहे ॥ अरु जेसें प्रलयकी अग्नि करी दिशा पूर्ण होतिहे ॥ तेसें अग्निकी ज्वालाकरी पूर्ण भइयांहैं ॥ अरु तिसतें चिणगार उडते हे ॥ मानो तारागण गिरतेहैं ॥ अंगारोकी वर्षा होतीहे ॥ तिसकरि जीव पडे जलतहैं ॥ अरु जो सुंदर स्त्रीयां नानाप्रकारके भूषणोसहित पूर्ण थीयां ॥ सा तृणोंकी अग्निविषे पडीजलतीयांहे ॥ पुरुषके देह अरु वस्त्र पडे जलतेहैं ॥ अरु हायहाय शब्द करते हे ॥ अरु जलते जलते बांधव पुत्र स्त्रियांकों ढूढतेहैं ॥ हे रामजी ! इह आश्चर्य देख जो एसें स्नेहकरिकें जीव बांधे हुएहैं ॥ जो मृत्युकालविषेभी स्नेहकों त्याग नही सकते ॥ इस प्रकार वडा क्षोभ हुआ ॥ अरु सेनाके लोक लोकोकों मारिके स्त्रीयांकों लेजातेहे ॥ केइ अग्निविषे जलतेहैं ॥ हे रामजी ! तिसकालमें एसा शब्द हूआ ॥ जो रणभूमिका शब्द छपा गया एसा शब्दकरे ॥ भाइ हाय पिता हाय माता हाय पुत्रहाय स्त्रीहाय इत्यादिक शब्दोंकरि रणभूमिका शब्द आछाद्यागया ॥ अरु घोडे गो बलद उंट आदिक पशू एकठे मिलगये ॥ अरु अग्नि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की ज्वाला वृद्ध होतीजावे ॥ बडा क्षोभ आनि उदय हूआ ॥ जेसें महाप्रलयकी अग्नि होतीहे तेसें सब स्थान अग्निकरी पूर्णभये ॥ तिनौंविषे अनेक जीव अरु स्थानक पंड दग्ध होतेहें॥ अरु शब्दकरेहे ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे लीलोपाख्याने अग्निदाह वर्ननंनाम एकोत्रिंशतिमःसर्गः ॥ ३१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ हेरामजी ! इस प्रकार राजा नगरकों देखताथा जो उस पुरकी लीला सहेलीयों सहित अपने दूसरे स्थानतें तहां आइ ॥ जहां राजा विदूरथ था ॥ जेसें कमलोविषें लक्ष्मी आवे ॥ तेसें आइ महा सुंदर भूषण कलूक टूटे हुए कलुक सिथिलहे अरु सहेली सहित आइ॥ एक सहेली कहत भइ॥ हे राजन्! तेरे शत्रू बहुतेरे आन पसरेहे ॥ अंतःपुरविषे जो स्त्री थी ॥ सोभी ले गयेहें ॥ तिहांसों इह लीला राणी हम चुराइ ले आयेहें॥ जेसें इंद्रके गृहविषे दैत्य आनपडे तेसें॥ अरु इस राणीकों बचाइ करी तुम पास ले आयेहें सो हम बडा जतन करी ले आयेहें॥ अरु लोकोंकों तिनों शत्रूने बडा कष्ट दीयाहे ॥ तुमारे द्वारेपर जो सेना बेठीहे ॥ तिसकों उह चूर्ण करतेहें ॥ अरु नगर जलाय दीयाहे लुटी लीयाहे ॥ हे रामजी ! जब इस प्रकार राजाकों सहेलीनें कहा तब राजा सरस्वतीजीकों कहा ॥ हे देवीजी ! इह लीला तुमारी सरन आइहे॥ अरु तुमारे चरन कमलोंकी भमरी हे॥ इसकी रक्षा तुमारे करनी में अब जुध करनेकों जाताहों ॥ हे रामजी ! इस प्रकार राजा कहिकरी क्रोध संयुक्त होइकें जुध करनेकों रणकी ओर चला जेसें मत्त हस्ति धावता हे ॥ अथवा सिंघ कंदरातें निकस करि धावताहे ॥ तेसें अर्धरात्रके समय राजा चल्या जब उहां लीला सहेलीयां सहितआइ॥ तब देवी साथ जो प्रथम लीला थी सो देखत भइ ॥ क्या देख्या जु अपनी मूर्ति जेसाइ सुंदर आकार हे ॥ जेसें आरसीविषे प्रतिबिंब होताहे ॥ तेसें देखकें कहत भइ ॥ ॥ प्रबुद्धलीलोवाच ॥ हे देवी ! इह में क्यों करी आन प्राप्त भइहों ॥ जब में प्रथम आइ थी तब मुझकों मंत्री टहलूए पुरवासी अनेक द्रष्ट आयेथे ॥ उह संशय में तुमसों निवृत्त कीयाथा ॥ बहुरी इह जो में उस प्रकार केसें आन स्थित भइहों॥ इह दृश्यरूप केसा आदर्श हे॥ जिसके अंतरबाहिर प्रतिबिंब होताहे॥ जेसें मंत्री टहलूए हे ॥ अरु मेरा स्वरूप इह हे ॥ इह क्याहे दृश्यभाव दो क्यों कर भासताहे ? ॥ इह संशय मेरा दूर करो ॥ ॥ देवीउवाच ॥ हे लीले ! जेसें चित्त संवित्तविषे स्पंद फुरताहे तेसें तत्काल सिद्ध होताहे ॥ जिस अर्थकों चिंतवता चित संवित शरीरकों त्यागताहे ॥ तिसी अर्थकों जाय प्राप्त होताहे ॥ तिसी क्षणविषे देशकाल पदार्थकी दीर्घता होतिहे ॥ जेसें सुपनसृष्टि फुरि आतीहे ॥ तेसें परलोक सृष्टि भास आतीहे ॥ हे लीले ! जब तेरा भर्ता मृतक होणे लागाथा ॥ तब इसका स्नेह जो तेरे विषे अरु मंत्रीयोंविषे बहुत था ॥ तिसकरी उही रूप सत होइकरी अपनी वासनाके अनुसार भास्या ॥ जेसें संकल्पपुर भासताहे जेसें सुपनसेना भासति हे ॥ तेसें इह देश काल पदार्थ, भासेहे ॥ हे लीले ! जो कोउ पदार्थ सतरूप होइकरी भासतेहे सो अज्ञानकालविषे भासतेहे ॥ ज्ञानकालविषे सब तुल्य होइकें जातेहें ॥ अधिक न्यून कोउ नहि रहता ॥ जागृतविषे सुपन झूठ भासताहे ॥ सुपनेविषे जागृत का अभाव होजाताहे ॥ जागृत शरीर मृतकविषे नाश होजाताहें ॥ मृतक जन्मविषे असत होय जाताहे ॥ मृतकविषे जन्म असत होय जाताहे ॥ हे लीले ! जब इस प्रकार इनकों विचारी देखियें तो सब अवस्था भांतिमात्रहे ॥ वास्तव कोउ नहि ॥ हे लीले ! सर्गतें आदि अरु महाप्रलय पर्यंत कछु हूआ नहि ॥ सदा ज्योंकी त्यों ब्रह्मसत्ता अपने आपविषे स्थितहे जगत कल्पना आभासमात्र हे ॥ अज्ञानकरिकें भासता हे ॥ जेसें आकाशविषे तरवरे भासतेहे ॥ तेसें आत्माविषे जगत भ्रम करीकें भासताहें ॥ अरु वास्तवतें किंचितभी कछु नहि ॥ जेसें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समुद्रविषे तरंग उपजकरी लीन होतेहे ॥ तैसें आत्माविषे जगत उपजकरी लीन होतेहे ॥ तातें अहं त्वं आदिक शब्द भ्रांतिमात्रहै ॥ हे लीले ! इह जगत मृगतृष्णाके जलवत् हे ॥ इसविषे आस्था करनी अज्ञान हे ॥ अरु भ्रांतिभी कछु नहि ॥ जेसें घनतमविषे यक्ष भासताहे सो यक्ष वस्तु नहि ॥ ब्रह्मसत्ता ज्यौंकी त्यौंहे ॥ भ्रांतिभी कछु वस्तु नहि ॥ जन्म मृत्यु मोह सब असतरूप हे ॥ जेते कछु अहंत्वं आदिक शब्दहे ॥ सो महाप्रलयविषे अभाव होजातेहे ॥ तिसके पाछैं शुद्ध शांतरूप हे ॥ अबभी सोइ जाण ज्योंकात्यों ब्रह्मसत्ता हे ॥ हे लीले ! इह जो पृथ्वी आदि भूत भासतेहे ॥ सोभी संवितरूप हे ॥ काहेतें जो चित्त संवित जब स्पंदरूप होताहे ॥ तब इह जगत होयकें भासताहे ॥ इस कारणतें संवितरूप हे ॥ हे लीले ! जीवरूप जो समुद्र हे ॥ तिसविषे जगतरूप तरंग उत्पन्न होतेहे ॥ अरु लीनभी होतेहे ॥ अरु स्वरूपतें जलरूप हे ॥ इतर कछु नहि ॥ जेसें अग्निविषे उष्णता होतीहे तैसें जीवविषे सर्ग हे ॥ जो ज्ञानवान हे तिसकों सर्वात्मा भासताहे ॥ अरु अज्ञानीकों भिन भिन कल्पना होतीहे ॥ हे लीले ! जेसें सूर्यकी किरणांविषे त्रिसरेणु भासतहे ॥ जेसें पवनविषे स्पंद होताहे ॥ तिसविषे सुगंध होतिहे सो निराकार हे ॥ तैसें जगत आत्माविषे निर्वपु हे ॥ भाव अभाव ग्रहण त्याग सूक्ष्म स्थुल चर अचर सर्व ब्रह्मके अवयव हे ॥ हे लीले इह जगत जो साकाररूप भासताहे ॥ सो आत्मातें भिन्न नहि ॥ जेसें वृक्षके अंग पत्र फल टासरूप होइ भासतेहे ॥ तैसें ब्रह्मसत्ताहि जगतरूप होइकरी भासतीहे इतर कछु नहि ॥ जेसें चैतन संवितविषे स्पंद फुरताहे ॥ तेसें होइकरि भासता हे ॥ सो आकाशरूप संवित ज्योंकात्योंहै ॥ तिसविषे और कल्पना भममात्रहे ॥ हे लीले ! इह जगत भासताहे सो न सत हे न असत हे ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प भासता हे तैसें आत्माविषे जगत भासताहे ॥ जिसकों असम्यक् ज्ञान होताहे ॥ तिसकों जेवरीविषे सर्प भासता हे तो असत न हुआ ॥ अरु जिसकों सम्यक्बोध हुआ तिसकों सर्प सत नही ॥ तैसें ज्ञानकरी जगत सत्य भासताहे ॥ अरु जिसकों सम्यक्बोध हुआहे ॥ तिसकों सर्प सत नहि ॥ तैसें अज्ञानकरि जगत असत नहिभासता ॥ आत्मज्ञान हूए सत नहि भासता ॥ काहेतें जो कछु वस्तु नहि ॥ हे लीले ! जेसें जिसके अंतर स्पंद फुरताहे तिसका अनुभव करताहे ॥ जब इह जीव मृतक होताहे ॥ तब इसकों क्षणविषे जगत फुरी आताहे ॥ किसीकों अपूर्वरूप फुर आता हे ॥ किसीकों पूर्वरूप फुर आताहे ॥ किसीकों पूर्व अपूर्व मिश्रित फुर आताहे ॥ तिस कारणतें तेरे भर्ताकों उही मंत्री स्त्री, सभा वासनाके अनुसार फुरआयेहें ॥ काहेतें जो आत्मा सर्वत्ररूपहे ॥ जेसा जेसा इसविषे तीव्र स्पंद फुरताहे ॥ तेसा होइकरी भासता हे ॥ हे लीले ! जेसें अपने मनोराजविषे प्रतिभा उदय होआतीहे ॥ सो सतरूप होभासतीहे ॥ तैसें इह जो लीला तेरे सन्मुख बेठीहे सो एहि हूइहे ॥ अरु तेरे भर्ताकी जो तेरेविषे तीव्र वासनाथी ॥ तिस करी राजाकों तेरा प्रतिबिंब रूप होइकरि इह लीला आन प्राप्त भइ हे ॥ तुज जेसा शील अरु आचार कुल वपु इसकों प्रतिबिंब भयाहे ॥ हे लीले ! सर्वगत संवित आकाशहे ॥ जेसा जेसा उसविषे फुरणा होताहे ॥ तेसा चिद्रूप आदर्शविषे प्रतिबिंब भासता हे ॥ जेता कछु जगतहे सो चैतन दर्पणविषे प्रतिबिंब होताहे ॥ वस्तुतें में तूं अरु जगत आकाश भुवन पृथ्वी राजा आदिक सब आत्मरूप हे ॥ आत्माहि जगतरूप होइ भासताहे ॥ जेसें बीलीविषे मज्जा होतीहे ॥ सो बीलीतें इतर कछु नहि ॥ बीलीहि सबरूप हे ॥ तैसें इह जगत ब्रह्मस्वरूप हे ॥ ॥ इतिश्रीयो० उ० ली० अग्निदाह वर्णनं नाम द्वात्रिंशः सर्गः ॥ ३२ ॥

॥ देवीउवाच ॥ हे लीले ! तेरा जो भर्ता राजा विदूरथ हे ॥ सो रणविषे संग्राम करीकें शरीर त्यागेगा ॥ त्याग करी उसही अंतःपुरविषे प्राप्त होवेगा ॥ अरु बहुरी राज करेगा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जब इस प्रकार देवीनें कहा तब विदूरथके पुरकी जो लीला हे ॥ सो हाथ जोडीके देवीकों प्रणाम करत भइ ॥ अरु कहत भइ ॥ ॥ द्वितीयलीलाउवाच ॥ हे देवी भगवती में ज्ञप्तिरूपकों नित्य पूजत भइहों ॥ बहुरी सुपनविषे उसनें मुजको दर्शन दियाहे ॥ जेसें उह इश्वरीथी तेसें तुम मुजकों द्रष्टआतेहों ॥ तातें मुजपर कृपा करीकें मन वांछित फलकों देहु ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जब इस प्रकार विदूरथकी लीलानें कहा ॥ तब अपने भक्त उपर प्रसन्न होइकरि देवी कहत भइ ॥ ॥ देवीउवाच ॥ हे लीले तेंनें अनन्य होइकरी मेरी भक्ति करीहें ॥ तिसकरी तेरा शरीरभी जीर्ण भयाहे ॥ अब में तुझउपर प्रसन्न हों ॥ जो कछु तुजकों वांछित हे सो वर मांग ॥ ॥ द्वितीयलीलाउवाच ॥ जब मेरा भर्ता रणविषे देहकों त्याग करजावे ॥ तब में इसी शरीर साथ तिसकी भार्याहोहुं ॥ ॥ देवीउवाच ॥ तुजनें भली प्रकार भावना सहित पुष्पादिकनसों निर्विघ्न सेवा करीहे ता ते एसें ही होवेगा ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस प्रकार जब देवीनें कहा तब पूर्व लीला कहत भइ ॥ प्रबुद्धलीलोच ॥ हे देवी ! तुम तो सत्य संकल्प सत्यकाम ब्रह्मस्वरूप हो ॥ मुजकों उसी शरीर साथ विदूरथके गृहमे वसिष्ठ ब्राह्मणकी सृष्टीविषे क्यों न लेगये ? ॥ ॥ देवीउवाच ॥ हे लीले में कीसीका कछु नहि करती ॥ सर्व जीवके संकल्प मात्र देह हे ॥ अरु में ज्ञप्तिरूपहों ॥ एक एक जीवके अंतर चैतनमात्र देवता होइकरी स्थित हों ॥ जो जो जीव जेसी जेसी भावनाकों धरता हे ॥ तेसी तेसी तिसकों सिद्धता होतीहे ॥ हे लीले ! जब तेंनें मेरा आराधन कीयाथा ॥ तब इह प्रार्थना करीथी जो मेरे भर्ताका जीव इसी आकाश मंडपविषे रहे ॥ अरु ज्ञानकी प्राप्तिभी मुजकों होवे ॥ तब में तुझकों ज्ञानका उपदेश दीया ॥ तुझकों ज्ञान प्राप्त भयाहे ॥ अरु इसही निमित्त तेनें पूजन कीयाहे ॥ तातें तुजकों इही प्राप्त भया हे ॥ जो देह सहित भर्ता साथ जावेगी ॥ जेसा जेसा चित संवितविषे स्पंद दृढ होताहे ॥ तेसी सिद्धता होतीहे ॥ हे लीले ! इह जो कोउ तप करतेहें ॥ तिसकी दृढता करकें चिदात्माहि देवतारूप होकें फलकों देत हें ॥ जेसें जेसें संकल्प की तीव्रता किसीकों होतहे ॥ चैतन संवितें तिसकों तेसाहि फल होताहें ॥ चित्त संवितें इतर कीसीतें किसीकों कदाचित् कछु फल नहि प्राप्त होता ॥ आत्मा सर्वगत सर्वके अंतर स्थित हे ॥ जेसें तिसविषे चैत्यताका यत्न होताहे ॥ तिसकों तेसाहि शुभ अशुभ भाव प्राप्त होताहे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठ उत्पत्ति प्रकरणे सत्यकाम संकल्पवर्णनं नाम त्रयस्त्रिंशः सर्गः ॥ ॥ ३३ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! राजा विदूरथ जो देवीकों कहीकरि संग्रामविषे गयाथा सो क्या करत भया ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जब राजा गृहतें निकस्या अरु संपूर्न सेनाकरीके शोभता भया जेसें ताराविषे चंद्रमा शोभताहे ॥ तेसें सेनाविषे शोभता भया ॥ तब रथपर आरूढ सभा सहित संग्रामविषे आया ॥ केसा रथ हे जो मोती अरु माणकों साथ पूर्ण हे अरु आठ घोडे हे ॥ वायूतेंभी तीक्ष्ण चलतेहे ॥ पंच धजाहे एसे रथ पर आरूढ हुआ ॥ संग्रामविषे आनि पडा ॥ जेसें सुमेरपर्वत पंखोंसहित समुद्रविषे जायपडे तेसें जायपडा ॥ तब दोनों सेना एकठी हो गइयां ॥ जेसें प्रलय काल विषे समुद्र एकठे हो जातेहें तेसें सेना एकठी भइयां ॥ बडा जुद्ध होनेलगा ॥ अरु मेघोंकीनांइं जोधेके शब्द होने लागे ॥ अरु शस्त्रोंकी वर्षा होने लागी ॥ जेसें मेघ तें बूंदोंकी वर्षा होतीहे ॥ जेसें अग्नितें चिणगारे निकसते हे तेसें जुद्ध करने लागे ॥ जेसें प्रलयकालकी वडवानल अग्नि होतीहे ॥ तेसें शस्त्रौं तें अग्नि निकसे ॥ तिनों शस्त्रों करी अनेक जीव मृत्युकों प्राप्त भये ॥ जिनतें बडवाग्निकी नांइं अग्नि निकसे बडा युद्ध होने लागा ॥ तब विदूरथकी सेना कछुक निर्बल भइ ॥ उर्ध जो दोनों लोला देवीकी दिव्य दृष्टि साथ देखतीथी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिनों कहा ॥ हे देवी ! तूं तो सर्व शक्ति हे ॥ अरु हमारे पर तेरी दयाभी हे॥ हमारे भर्ताका जय क्यों नहि होता इह कारण कहो ॥ ॥ देवीउवाच ॥ हे लीले विदूरथका जो शत्रु सिद्धराजा हे तिसनें चिरकाल पर्यंत जयके निमित्त मेरी पूजा करीहे ॥ अरु तुमारे भर्तानें जयके निमित्त पूजा नही करी ॥ मोक्षके निमित्त पूजा करीहे तातें जीत सिद्धराजाकी होवेगी॥अरु तेरे भरताकों मोक्ष की प्राप्ति होवेगी॥ हे लीले ! जिस जिस निमित्त करी हमारी सेवना कोउ करताहे ॥ हम तिसीकों तेसाहि फल देतेहें ॥ तातें राजा सिद्ध विदूरथकों जीतिकरि राजकरेगा ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस प्रकार देवी कहतीथी॥ फेर सेना सब देखनेलगी अरु दोनों राज्योंका परस्पर तीव्र जुद्ध होने लगा॥ ऐसें बाण चलावे जो मानों दोनों विष्णु होखडेहें॥ एक बाण विदूरथने चलाया॥ तिसकें सहस्र होगये आगें गये तब उहभी लक्ष होगये ॥ बाणही परस्पर युद्धकरते टुकडे टुकडे होकें गिरपडे ॥ अरु एसे बाण दूरतें दूर चले जावे ॥ जेसें दीपक निर्वाण कीया न हि भासता तेसें बाण भासे नहि ॥ तब राजा सिद्धनें मोहरूपी अस्त्र चलाया॥ तिसके आनेकरी एक विदूरथ बिना सभ सेना मोहित भइ ॥ जेसें उन्मत्तकों शुध कछु नहि रहती ॥ तेसें उन कों सुध कछु नही रही नेत्रोंतें परस्पर करीकें देखतेही रहे॥ मानों मुर्ती लिख छोडी हे॥ तब राजा विदूरथकोंभी मोहका आवेश होनेलग॥ तब राजा विदूरथनें प्रबोधरूपी शस्त्र चलाया॥ तिसकरी सबका मोह गया ॥ सबके देह प्रफुल्लित होआये ॥ जेसें सूर्यके उदय हुए सूर्यमुखी कमल प्रफुल्लित होआतेहें ॥ तब सिद्धराजानें नागास्त्र बाण चलाया ॥ तिसकरी अनेक नाग निकस आये ॥ एसे नाग आये मानों पर्वत उडे आतेहें ॥ सब दिशा नागोंकरी पूर्ण होगइयां ॥ अरु तिनके मुखतें विष अरु अग्निकी ज्वाला निकसे ॥ तिसकरी विदूरथकी सेनानें बहुत कष्ट पाया ॥ तब राजा विदूरथनें गरुडास्त्र चलाया ॥ तिसकरी अनेक गरुड प्रकटहोआये ॥ तिनोंकरी सब सर्प नष्ट होगये ॥ जेसें सूर्यके उदय हुए अंधकार नष्ट होजाताहे ॥ तेसें सर्प नष्ट भये ॥ नागोकों नष्ट करिकें गरुडभी अंतर्ध्यान होगये ॥ जेसें सकल्पकें त्यागेतें संकल्प सृष्टिका अभाव होजाताहे ॥ तेसें गरुड अभाव होगये ॥ जेसें सुपनेतें जागे हुए सुपन नगर का अभाव होजाताहे॥ तेसें गरुडका अभाव होगया॥ जो कोउ बाण सिद्ध चलावे तिसकों विदूरथ नष्ट करे॥ जेसें सूर्य तमकों नाश करे॥ अरु बडी बाणोंकी वर्षाकरी ॥ तिसकरी सिद्ध भी क्षोभकों प्राप्त भया ॥ तब पिछली लीलानें झरोंखेविषे देखकें देवीजीकों कहा ॥ हे देवी मेरे भर्ताका अब जय होताहे ॥ तब देवी सुनकें मुसकाये॥ मुखतें कछु न कहा ॥ देवीनें हृदयमें कहा जो जीवका चित्त बहुत चंचल हे ॥ एसें देखतेथे जो सूर्य आय उदय हुआ ॥ मानों सूर्यभी जुद्धका कौतुक देखनेंकों आयाहे ॥ सिद्धने जो तमरूप अस्त्र चलाया ॥ तिसकरी सर्वदिशा स्याम होगइ कछु भास्या नहि ॥ मानों काजलकी समष्टिता एकठी भइहे॥ तब विदूरथनें सूर्यका प्रकाशरूपी अस्त्र चलाया तिसकरी सर्व तम नष्ट होगया॥ जेसें शरदकालक री स्याम घटा सब नाश होजातीहे ॥ शुद्ध आकाशहि रहता हे ॥ जेसें आत्मज्ञान करि लोभादिकका ज्ञानीकों अभाव होजाताहे ॥ जेसें लोभरूपी कज्जलके निवृत्तहुए ज्ञानवानकी बुद्धि निर्मल होतीहे ॥ तेसें प्रकाशकरी तम नष्ट होगया ॥ सर्व दिशा निर्मल भइयां ॥ अरु जेसें अगस्त मुनि समुद्रकों पानकरी गये थे ॥ तेसें प्रकाश तमका पान करगया ॥ तब सिद्धनें वैतालरूप अस्त्र चलाया तिसकरी विदूरथकी सेना मोहित होगइ महा जिनकी विकाल मूर्ती नग्नरूप पछायोंका रूप जिनका अरु स्यामरूप भासे अरु गृहण कीये न जावे अरु जीवके अंतर प्रवेश करजावे तिनके जो रहनेके स्थानहे शून्य मंदिर विषे रहे॥ चिकडोंविषे पर्वतोंविषे मसाणोविषे इसतें लेकरी जो मलिन स्थानहे तिनोंविषे रहतेहे ॥ सो पिशाच कवन होतेहे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिसकी शास्त्रउक्त क्रिया नहि होती मृत्युके समय सो मरीकें भूत पिशाच होकरी वैताल होतेहें ॥ सो अंतरतें राग दोष तृष्णा भूखकरी जलते रहतेहें ॥ अरु दृष्टिरूप इंद्रियनकों नहि प्राप्त होते ॥ एसे जो दुष्ट जीव होतेहे तातें विदूरथकी सेना दुःख पावने लगी ॥ अरु उनका जो कोउ बडा था सो विदूरथके निकट आने लगा ॥ तब विदूरथने रूपका नामक अस्त्र चलाया॥ तब महा भयानक रूप बडे नख केश जिह्वा उदर होठअरु नग्नरूप तिनसाथ उह कडकडि कर भया अरु भैरव भोजनकरे मारे महा विक्राल मूर्ती रक्त भरी खपरमें पीवे नृत्य करे अरु सबनकों दुःख देवे तब सिद्धकों क्रोध चढीकें राक्षसरूपी अस्त्र चलाया ॥ तिसकरिकें कोटि राक्षस निकस आये ॥ भयानकरूप अरु कृष्णवपु अरु जिह्वा निकसी हुइ ॥ अेसा च मत्कार करे ॥ जेसें स्याम मेघविषे बीजली चमत्कार करतीहे ॥ अेसें अनेक राक्षस पातालतें अरु दिशातें निकसकें जो कोउ होवे तिसकों मुखविषे पाइ लेजावे ॥ तिनकों देखकें विदू रथकी सेना बहुत भयकों प्राप्त भइ॥ जिसके सन्मुख हसकें देखे सो भयसों मरि जावे॥ तब राजा विदूरथने अपनी सेनाकों कष्टवान देखकें विष्णुअस्त्र चलाया॥ तिसकरी सब राक्षस न ष्ट होगये ॥ बहुरी राजा सिद्धनें अग्नि नामक अस्त्र चलाया ॥ तब संपूर्ण दिशाविषे अग्नि पसर गइ ॥ तिसकरी लोक जलने लगे॥ तब राजा विदूरथनें वरुणरूपी बाण चलाया॥ तिसकरी अग्निका दाह सब मिटी गया ॥ जेसें संतोके संगकरी अज्ञानीके तिनों ताप मिटी जातेहें ॥ तेसें अग्निका ताप मीटगया ॥ तब जलकरी सब स्थान पूर्ण होगये ॥ अरु सिद्धकी सेना ब हुत जलविषे वहतीगइ॥ तब सिद्धनें शोषनमय अस्त्र चलाया॥ तिसकरि सब जल सूकीगया ॥ कहुं कहुं चिकड रही गया बहुरी तेजोमय बाण चलाया तिसकरी चिकडभी सूकगया॥अ रु विदूरथकी सेना गरमीकरी व्याकुल होगइ तपने लगी ॥ जेसें मूर्खका रिदा क्रोधकरी जलताहे ॥ तब विदूरथनें मेघनामक अस्त्र चलाया ॥ तब मेघ वर्षने लागा ॥ अरु सीतल मंद मंद वायु चला तिसकरी सेनाकी तपत मिटगइ ॥ जेसें आत्माकी ओर आते जीवका संसरना घटता जाताहे ॥ तेसें विदूरथकी सेना सीतल भइ ॥ तब सिद्धनें वायुरूपी अस्त्र चलाया ॥ति सकरी सूके पत्रकी नांइं विदूरथ फिरने लगा ॥ तब विदूरथनें पहाडरूपी अस्त्र चलाया जिसकरी पहाडोंकी वर्षा पडि होवे ॥ अरु वायूका मार्ग रोक्या गया ॥ वायुका क्षोभ मिटिगया ॥ सब पदार्थ स्थिरभूत होगये ॥ जेसें संवेदनतें रहित चित्त शांत होताहे ॥ तेसें शांत होगए ॥ अरु पहाड उडकें सिद्धकी सेनापर पडे ॥ तब सिद्धनें बज्ररूप अस्त्र चलाया तब पर्वत न ष्ट भये ॥ अरु वज्रपडे वर्षे तब विदूरथनें ब्रह्मअस्त्र चलाया ॥ तब वज्र नष्ट भये ॥ अरु ब्रह्मअस्त्र अंतर्ध्यान होगये॥ हे रामजी ! इस प्रकार परस्पर इनका युद्ध होतभया ॥ जो सिद्ध अ स्त्र चलावे ॥ तब विदूरथ उसकों विदारन करे ॥ अरु जो विदूरथ चलावे तब सिद्ध विदारन कर डारे ॥ विदूरथ राजानें एक एसा अस्त्र चलाया जो राजा सिद्धका रथ चूर्ण करी डारा घोडेभी सब पटक डारे ॥ तब सिद्धराजा रथतें निकस खडाहूवा ॥ बहुरी सिद्धनें एसा अस्त्र चलाया जो विदूरथका रथ अरु घोडे नष्ट कीये ॥ तब दोनों ढालां अरु तरवारां ले कर उ तर पडे अरु जुद्ध करने लागे ॥ बहुरी दोनोंके रथवाहक और रथ लेआये ॥ तिसके उपर आरूढ होकरी जुध करने लागे ॥ विदूरथने सिधकों बरछी चलाइ तब उसके रिदे विषे लागी अरु रुधिर चल्या तिसकों देखी लीलाने देवीकों कहा हे देवी !मेरे भर्ताका जय हूआहे॥ हे रामजी ! इस प्रकार लीला कहतीथी॥ तब सिधनें बरछी चलाइ सो विदूरथके रिदे विषे लगी ॥ तिसकों देखकें विदूरथकी लीला शोकवान भइ अरु कहत भइ ॥ हे देवी ! मेरा भर्ता मरताहे॥ सिद्ध दुष्टनें बडा कष्ट दीयाहे॥ हे रामजी ! एसें कहतीथी तहां सिधने खड्ग चलाया सो वि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुरथका पांय काटे गये ॥ बहुरी घोडे काटे गये ॥ तोभी विदूरथ युध करता रहा ॥ बहुरी विदूरथके सिरपर खड्गका प्रहार कीया ॥ तब विदूरथ मूर्छा पायकें गिरपडा ॥ अेसे देखकें उनके सारथी जो रथके चलाने हारे सो रथकों गृहमें ले आनेलगे ॥ तब सिद्ध तिसके पाछें दोडा जो शीश इसका में ले आउं जेसें बांदर कुदकें पडे तेसें दोडने लगा ॥ परंतु पकड न सका ॥ जेसें अग्निविषे मच्छर प्रवेश नहि करी सकता ॥ तेसें देवीके प्रभाव करी विदूरथकों पकड नसका ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्तिप्र० विदूरथमरणवर्ण० चतुस्त्रिंशःसर्गः ॥ ३४ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! तब रथवाही राजाकों गृहमें ले आया ॥ स्त्रीयां मंत्री बांधव कुटुंबि रुदन करने लागे ॥ बडे शब्द होने लागे अरु सिद्धकी सेना लूटने लागी ॥ हस्ति घोडे स्वामी विना फीरे ॥ राजा सिद्धकी जयहे ॥ बहुरी दंडेरा फिराया ॥ तब सर्व उरतें शांति भइ ॥ सिद्धराजाके उपर छत्र होने लगा ॥ सब पृथ्वीका राजा सिद्ध हुआ ॥ तिसका हुकम चला ॥ जेसें क्षीर समुद्र मंदराचल निकसेतें शांत भया तेसें सर्व ओर शांति भइ ॥ हे रामजी ! जब विदूरथ राजा गृहविषे जाय प्राप्त हुआ ॥ तब तिसकों अरु दूसरी लीलाकों देखकें प्रबुधलीला कहत भइ ॥ हे देवी ! इह लीला इस शरीर साथ उहां क्यों करी जाइ प्राप्त होवेगी ॥ इह तो भर्ताकों एसें देखकें मृतकरूप होगइ हे ॥ अरु राजाभी मृत्युके निकट पडाहे ॥ कछूक स्वास आने जानेंहे ॥ ॥ देवीउवाच ॥ हे लीले ! इह जेते आरंभ तूं देखतीहे ॥ जो जुध हुआहे ॥ अरु नाना प्रकारका जगतहे ॥ सो सब भांति मात्रहे ॥ अरु तेरा जो भर्ता पद्म था तिसका रिदा जो मंडपाकाशविषे था ॥ तहां इह संपूर्ण जगत स्थित हे ॥ अरु उह पद्मका मंडप आकाश वसिष्ठ ब्राह्मणके मंडपाकाशविषे स्थितहे ॥ अरु उह वसिष्ठ ब्राह्मणका मंडप आकाश सो चिदाकाशके आश्रय स्थितहे ॥ हे लीले ! इह संपूर्ण जगत वसिष्ठ ब्राह्मणके मंडपाकाशकी पुर्यष्टकविषे हि स्थितहे ॥ सो केसें स्थित हे ॥ आकाशविषेहि आकाश स्थितहे ॥ किंचन हे तिसकरीकें संपूर्ण जगत पडा फुरताहे ॥ अरु वास्तव किंचनभी कछु वस्तु नहि ॥ आत्मसत्ताहि अपने आपविषे स्थितहे ॥ तिस आत्मसत्ताविषे अहं त्वं जगत भ्रमकरीकें भासताहे ॥ उपजा कछु नहि ॥ हे लीले ! तिस वसिष्ठ ब्राह्मणके मंडपाकाशविषे नानाप्रकारके स्थान हे अरु तिनोविषे प्राणी आते जाते व्यवहार होते भासते हैं ॥ जेसें सुपन सृष्टिविषे नानाप्रकारके आरंभ भासतेहैं ॥ सो असतरूप हे तेसें इह जगतभी असतरूप हे ॥ हे लीले ! न इह दृष्टाहे न आगें दृश्यहे ॥ सब भ्रमरूप हे ॥ अरु द्रष्टा दर्शन दृश्य सो त्रिपूटी पदार्थोविषेहैं ॥ जो दृश्य नहि तो द्रष्टा केसें होवे ? सब असतरूपहे ॥ अरु जो इनतें रहित परम पद हे सो उदय अस्ततें रहित नित्य अज शुद्ध अविनाशी अद्वैतरूप अपने आपविषे स्थितहे ॥ जब तिसकों जानताहे ॥ तब दृश्य भ्रम नष्ट होजाताहैं ॥ हे लीले ! दृश्य भ्रम करीकें भासताहे ॥ वास्तवतें कछु नहि ॥ ओर न उपजेगा ॥ जेते कछु सुमेरु आदिक पर्वत जाल भासते हैं ॥ अरु पृथ्वी आदिक तत्व भासतेहे ॥ सो सब आकाशरूप हे वास्तवतें कछु उपजा नहि ॥ जेसें सुपन सृष्टि प्रत्यक्ष पडी भासतीहे ॥ परंतु वास्तव कछु नहि ॥ तेसें इह जगतभी जान ॥ हे लीले ! जीव जीव प्रति अपनी सृष्टि रहति हे परंतु तिसविषे सार कछु नहि ॥ जेसें केलेके थंभसों सार कछु नहि निकसता ॥ तेसें सृष्टिविषे विचार कीयेते सार कछु नहि निकसता ॥ परंतु चित संवेदनके फुरणे करी पडे भासतेहे ॥ हे लीले ! तेरे भर्ता पद्मकी जो सृष्टि हे सो वसिष्ठ ब्राह्मणके मंडपाकाश विषे स्थित हे ॥ अर्थ इह जो विदूरथका जगत पद्मके रिदेविषे स्थितहे तहां तेरा शरीर पडाहे ॥ अरु राजा पद्मका शरीर शव पडाहे ॥ हे लीले ! तेरे भर्ता पद्मकी जो सृष्टि हे ॥ सो हमकों प्रादेश मात्रहे ॥ तिस प्रादेश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मात्र विषे अंगुष्ठ प्रमाण हृदय कमलहे ॥ तिसविषे तेरे भर्ताका जीवाकाश हे तिस विषे इह जगत पडा फुरताहे ॥ सो प्रादेश मात्रभीहे ॥ अरु दूरतें दूर कोटि जोजनोंपर्यंत हे ॥ मार्ग विषे वज्रसारकी नांइं तत्वौका आवरणहे॥ तिसकों लंघके तेरे भर्ताकी सृष्टिहें ॥ जहां उह शव पडाहे तिसके पास इह लीला जाय प्राप्त भइ हे॥ ॥ लीलाउवाच ॥ हे देवी एसें मार्गकों लंघकें उह क्षणविषे केसें जाय प्राप्त भइ ॥ अरु जिस शरीर साथ जानाथा सो तो शरीर इहांही पडाहे ॥ उह किस रूपकरीके प्राप्त भइहे ॥ अरु उहांके लोक उसकों केसें देख जानते भयेहे ॥ सो संक्षेपमात्रतें कहो ? ॥ हे लीले ! इह लीलाका वृत्तांत कथाका महिमा एसाहे ॥ जिसके धारेतें इह जगत भ्रम निवृत्त हो जाताहे ॥ सो संक्षेप मात्र कह तिहों ॥ हे लीले ! जेता कछु जगत भासताहे सो सब भ्रम मात्र हे ॥ इह भ्रमरूप जगत पद्मके रिदेविषे फुरताहे ॥ तिसविषे विदुरथका जन्मभी भ्रम मात्र हे अरु लीलाका प्राप्त होना भी भ्रम हे ॥ संग्रामभी भ्रमरूप हे ॥ विदूरथका मरणाभी भ्रमरूप हे ॥ तिसके भ्रमरूप जगतविषे तुम हम बैठेहें ॥ बहुरी लीला तूंभी अरु राजाभी भ्रमरूपहे ॥ अरु में सर्वात्माहों ॥ मुझकों सदा इहि निश्चय रहताहे ॥ हम जो उदय हूएहें सो उदयकी नांइ उदय नहि हुए ॥ हे लीले जब तेरा भर्ता मृतक होने लगाथा ॥ तब तेरे विषे उसका स्नेह बहुत था ॥ तिस करि मृतक हूएभी कमलनेन जुवावस्था महासुंदर भूषनोंकों पहिरहूवे तूं वासनाके अनुसार उसकों आन प्राप्त भइ ॥ हे लीले ! जब इह मृतक होताहे ॥ तब प्रथम इसका अंतवाहक शरीर होताहे ॥ पाछेंतें वासना करी अधिभूतक होताहे ॥ तेसें तेरा भर्ता जब मृतक हुआ तब प्रथम उसका अंतवाहक शरीरथा॥ तिसतें आधिभूतक हो गया॥ जब आधिभूतक हुआ तब प्रथम उसकों जन्मभी हूआ अरु मरणभी हूआ ॥ जब तेरा भर्ता मृतक हूआ ॥ तब इसकों अपना जन्म अरु कुल भास आया ॥ जननका अर्थ इह जो जनोंका समूह भासी आया॥ लीलाका जन्म भासि आया मातापिता भासीआये ॥ लीला साथ विवाह भासा आया ॥ जेसें तूं पद्मकों भासी आइथी ॥ तेसें उह विदूरथकों भासीआये ॥ इत्यादिक भ्रमकरि अपनी वासनाके अनुसार उसकों भासि आयाहे ॥ हे लीले ! ब्रह्म सर्वात्माहे जेसा जेसा तिसविषे तीव्र स्पंद होताहे तेसेंहि सिद्ध होताहे॥ अरु में जु हों ज्ञप्तिरूप चैतन शक्तिहों॥ तिस मेरेकों जेसी इछा धारिकें पूजतेहे तेसे फलकी प्राप्ति होतीहे ॥ हे लीले ! जेसी जेसी इछा धरी कोउ हमकों पूजतहे ॥ तिसीकों तेसी सिद्धता प्राप्त होतिहे ॥ इसतें लीला जो मुझसों वर मांग्याथा जो में विधवा न होउं ॥ इसी शरीर साथ भर्ताके निकटजाउं तब में कहा जो एसेंहि होवे ॥ तब तिस करि मृत्यु मूर्छाके अनंतर तिसकों अपना शरीर भासि आया ॥ अपने शरीर सहित जहां तेरा भर्ता पद्मका शरीर शव पडाहे ॥ तहां मंडपविषे एसेही शरीर साथ उसके निकट जाय प्राप्त भइहें ॥ हे लीले ! उसकों इह निश्चय रहाहे जो में उस शरीर साथ आइहों ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे लीलोपाख्याने मृत्युमूर्छानंतर प्रतिभावर्णनंनामपंचत्रिंशतमःसर्गः ॥ ३५ ॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जिस प्रकार उह लीला पद्मराजाके मंडपविषे जाय प्राप्त भइ हे सो श्रवण करु ॥ जब उह लीला मृतक मूर्छाकों प्राप्त भइ ॥ तिसके अनंतर उसकों पूर्वके शरीरकी नांइ वासनाके अनुसार अपना शरीर भासी आया ॥ जानती भइ जु में ऊसही शरीर साथ आइहों ॥ परंतु देवीके वरकों पायकें आइहों ॥ सो केसा शरीर हे अंतवाहक शरीर करकें आकाशविषे पंछीकी नांइ उडती जावे ॥ तब तिसकों अपने आगें कुंवारी दृष्ट आइ तब लीलानें कहा॥ हे देवी ! तूं कवनहे तब देवीनें कहा में ज्ञप्ति देवीकी पुत्री हों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेरेकों पहूंचावणेके निमित्त में आइ हों ॥ तब लीलानें कहा हे देवीजी मेरे तांइ मेरे भर्ताके पास ले चलो ॥ हे रामजी! तब उह कुंवारी आगें चली अरु लीला पाछें चली ॥ दोनों आ काशमें उडीयां चिरकाल पर्यंत आकाशविषे उडती गइयां ॥ आगें मेघोके स्थान आये ॥ बहुरी वायुके स्थान आये ॥ तिनकोंभी लंघ गइयां ॥ बहुरी सूर्यका मंडल आया तारा मंडल आये ॥ बहुरी और लोकपालोंके स्थान आये तिनकों लंघ गये ॥ आगें ब्रह्माका लोक आया बहुरी विष्णुका लोक आया ॥ बहुरी रुद्रका लोक आया तिनकोंभी लंघगइयां॥ आगें ब्र ह्मांड कपाट महा वज्र सारकी नांइ आया तिसकोंभी लंघ गइयां ॥ जेसें कुंभविषे बरफ पाइयें तिसकी सीतलता बाहिर प्रगट होतिहे ॥ तेसें उह ब्रह्मांडतें बाह्य निकसी गइयां ॥ तिस ब्रह्मांडतें दशगुण जलतत्व आया ॥ तिसकोंभी लंघ गइयां॥ इस प्रकार अग्नि वायु आकाश तत्व आवरणकोंभी लंघगइयां ॥ तिसके आगें महाचैतन आकाश आया तिसका अंत कहूं नहि ॥ आदि अंत मध्यतें रहितहे ॥ हे रामजी! जो कोटि कल्पपर्यंत गरुड उडता जावे तोभी तिसका अंत न पावे एसें परमाकाशविषे गइयां ॥ तहां इनकों कोटि ब्रह्मांड दृष्ट आ ये ॥ जेसें वनविषे अनेक वृक्षोंके फल होतेहें अरु परस्पर आपापरकों नहि जानते ॥ तेसें उह सृष्टि आपकों न जाने ॥ तब एक ब्रह्मांड रूपी फलविषे दोनों प्रवेश करत भइयां ॥ जेसें फलके मुखमार्गमें चेंटी प्रवेश कर जातीहे, तेसें यह ब्रह्मांडफलविषे प्रवेश कर गैयां ॥ तिसविषे बहुरी ब्रह्मा विष्णु रुद्र सहित त्रिलोकी देखत भइयां॥ तिनके लोक लंघगये ॥ अरु ति नके नीचे और लोकपालके स्थान लंघे॥ बहुरी चंद्रमाका मंडल तारा मंडल लंघी गइयां ॥ वायु अरु मेघमंडलकों लंघकें उतरीयां ॥ जहां राजाका नगर था ॥ तिसविषे जु मंडपाकाश था॥अरु जहां पद्म राजाका शव फूलों साथ ढांप्या पडाथा॥ तहां आय प्रवेश किया॥ तिसकों देखत भइयां तब उह कुमारी अंतर्ध्यान होगइ॥ जेसें मायावी पदार्थ होवे अरु अंतर्ध्या नहो जावे ॥ तेसें अंतर्ध्यान हो गइ ॥ अरु लीला पद्मके पास बेठीरही ॥ अरु मनविषे विचार करत भइ जु इह मेरा भर्ताहे ॥ ऊहां इसने संग्राम कीयाथा ॥ सो अब सूरमाकी गतिकों प्राप्त भयाहे ॥ इह परलोकविषे आयकें शयन करी रहाहे ॥ तिसके पास मेंभी अपने शरीरसाथ देवीजीके वर करीकें आन प्राप्त भइहों ॥ मेरे जेसा अब कोउ नहि ॥ में बडे आनंद कों प्राप्त भइहों ॥ हे रामजी! एसें विचारकें पास चमर पडाथा ॥ तिसकों हाथविषे लेकें भर्ताकों चमर करनेलगी ॥ जेसें चद्रमा कीरणों साथ शोभा पावताहे ॥ तेसें चमर शोभा पाव ताहे ॥ अरु उहां देवीसों लीला पूछत भइ ॥ ॥ प्रबुद्धलीलोवाच ॥ हे देवी! इह राजा तो अब मृतक होताहे ॥ इसके स्वास अब थोडेसे रहेहे ॥ जब इहांतें मृतक होकें पद्मके शरी रविषे जावेगा तब राजाके जागे हूए मंत्री टहलूए केसें जानेंगे? ॥ देवीउवाच हे लीले! तब मंत्री टहलुए जो होवेंगे तिनकों द्वैत कलना कछु न भासेगी जो आश्चर्य हूआहे ॥ इस वृत्तांतकों एक तुं जानेगी एक में जानोंगी एक उह लीला जानेगी ॥ और कोउ न जानेगा ॥ काहेतें जो इसके संकल्पकों और कोउ केसें करी जाने?॥ ॥ लीलाउवाच ॥ हे देवी ! लीला जो उहां जाय प्राप्त भइथी॥ सो शरीर तो इहां पडाहे॥ अरु तुमारा उसकों वरभी था॥इस प्रकार इस देह साथ क्युं न जाय प्राप्त भइ ! ॥ देवीउवाच ॥ हे लीले! छायाभी कदा चित धूपविषे गइ हे॥ अरु साच जूठभी कदाचित एकठा भयाहे इह आदि नीति हे॥जेसें जेसें आदि नीति हुइ हे तेसेंही होताहे अन्यथा नहि होता॥ हे लीले! जो पछाये विषे वैताल कल्पना मिटी॥ तो पछाया वैताल एकठे नही होतें॥तेसे भ्रमरूप जगतका शरीर उस जगतविषे नहि जाता॥जेसें दूसरेके संकल्पविषे दूसरा अपने शरीर साथ जाइ नहि सकता॥ काहेतें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जु उह और शरीर हे ॥ उहभी और शरीर हे ॥ तेसें उह उनके जगत दर्पणविषे इसके संकल्पका शरीर नही प्राप्तहोता ॥ अरु मेरे वर करी प्राप्त होवे जो जब उसकों मृत्यु मूर्छा प्राप्त भइ ॥ तब उसकों इसही जेसा अपना शरीर भासिआया ॥ अरु उसका जो शरीर था सो संकल्पविषे स्थित था ॥ सो अपना संकल्प उह साथ लेगईहे ॥ तातें अपने उसी शरीर साथ उह गइहे ॥ एसें आपकों जानती भइहे जो में उही लीलाहों ॥ हे लीले ! आत्मसत्ता जु हे सो सर्वात्मरूप हे ॥ जेसी जेसी भावना उसविषे दृढ होतीहे ॥ तेसाही रूप इसका होइ जाताहे ॥ जिसकों इह निश्चय हुआ जु में पंचभूतकरूप हों ॥ तिसकों एसेंही दृढ होताहे जो में उड नहि सकता ॥ हे लीले ! इह लीला तो अविदित वेद न थी ॥ अर्थ यह जु अज्ञानसहित थी ॥ अधिभूतक भ्रम नहि निवृत्त भया था ॥ परंतु मेरा वर था इसकारणतें उसकों मृत्यु मूर्छाके अनंतर भासी आया ॥ जु में देवीके वर कर चली जाउंगी ॥ इस वासनाकी दृढता करिकें जाय प्राप्त भइहे ॥ हे लीले ! इह जगत भ्रांतिमात्र हे ॥ जेसें जेवरी विषे सर्प भ्रमकरी भासताहे ॥ तेसें आत्माविषे जगत भ्रमकरि भासताहे ॥ सब जगत आत्माविषे आभासरूप हे ॥ सर्वका अधिष्ठान आत्मसत्ता अपने आपहि अज्ञानकरिके दूर भासताहे ॥ हे लीले ! जो ज्ञानवान पुरुष हे ॥ सो सदा शांतरूप आत्मानंदकरी तृप्त रहतेहे ॥ अरु जो अज्ञानीहे सो शांति केसे पावे ? जेसें जिसकों ताप चडा होताहे ॥ तिसका अंतरभी पडा जलताहे ॥ अरु तृषाभी बहुत लगतीहे ॥ तेसें जिसकों अज्ञानरूपी तप चडया हुआहे ॥ तिसका अंतर राग द्वेषकरीकें पडा जलताहे ॥ अरु विषयोंकी तृष्णारूपी तृषाभी बहुत होतहे ॥ अरु जिसका अज्ञानरूपी तम नष्ट भयाहे ॥ तिनका रागद्वेषादिक करि अंतर नहि जलता ॥ अरु विषयकी तृष्णारूपी तृषाभी नष्ट भइहे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे लीलोपाख्याने मंडपाकाशगमनवर्णनंनाम षड्त्रिंशत्तमःसर्गः ॥ ३६ ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ देवीउवाच ॥ हे लीले ! जो पुरुष अविदित वेद हे अर्थ यह जो जानणे जोग पदकों नहि जाण्या ॥ सो बडा पुन्यवान होवे तोभी तिसकों अंतवाहकता प्राप्त नहि होती ॥ अरु अंतवाहक शरीरभी जुठ हे ॥ काहेतें जो संकल्परूप हे सो जूठ हे ॥ तातें जेता कछु जगत तुजकों भासताहे सो उपजा कछु नहि ॥ शुद्ध चिदाकाश सत्ता अपने आपविषे स्थित हे ॥ लीलाउवाच ॥ ॥ हे देवी ! जो इह सर्व जगत संकल्प मात्र हे ॥ तो भावरूप पदार्थ केसें होतेहे ॥ अरु अभावरूप केसें होतेहे ॥ जो अग्नि उष्णरूपहे ॥ पृथ्वी स्थिररूपहे ॥ बरफ सीतलरूप हे ॥ आकाशकी सत्ताहे कालकी सत्ता हें ॥ कोउ स्थूल पदार्थ हें ॥ कोउ सूक्ष्म पदार्थ हे ॥ गृहण करणा त्याग करणा जन्म अरु मृतक होताहे मृतक हुआ बहुरी जन्मता हे ॥ इत्यादिक सत्ता केसें भासतीहे ?॥ ॥ देवीउवाच ॥ हे लीले ! जब महा प्रलय होताहे तब सर्व पदार्थ अभावकों प्राप्त होतेहे ॥ अरु कालकी सत्ता नष्ट होजातीहे ॥ तिसके पाछें अनंत चिदाकाश सब कलंनातें रहित बोधमात्र ब्रह्म सत्ताही रहतीहे ॥ तिस चैतनमात्र सत्ता तें अब चित संवित चैत्यता होतीहे ॥ तब चैतन संवितविषे आपकों तेज अणु जानत भइ हे ॥ जेसें सुपनेविषे कोउ आपकों पंछीरूप उडता देखे तेसें देखताहे ॥ तिसतें स्थूलता होतिहे ॥ सो स्थूलता ब्रह्मांडरूप होतीहे ॥ तिसविषे तेज अणु आपकों ब्रह्मारूप जानतीहे ॥ जु में ब्रह्मा हों ॥ बहुरी ब्रह्मारूप होइकरि जगतकों रचताहे ॥ जेसें जेसें ब्रह्मा चेतता जावे तेसें तेसें स्थिरतारूप होता जावे ॥ आदि रचना करी जेसें निश्चय धार्या जो इह एसें होवे अरु एता काल रहे ॥ तिसका नाम नीति हे ॥ जेसें आदिहि रचना नीति करिहे सो ज्यौंकी त्यौं होतीहे ॥ तिसके निवारणकों कोउ समर्थ नहिं ॥ अरु वस्तुतें आदि ब्रह्माही अकारणरूप हे ॥ अर्थ यह जु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपजा कछु नहि तो जगतका उपजणा में केसें कहों ? हे लीले ! स्वरूपतें कछु उपजा नहि ॥ परंतु चैतन्य संवेदनके फुरणे विषे जगत आकार होइकें भासता हे ॥ तिसविषे जेसें निश्चयहे तेसेंही स्थितहे ॥ अग्नि उष्णहीहे बरफ सीतलही हे पृथ्वी स्थिररूपहि हे ॥ जेसें उपजे हे तेसेंहि स्थित हे ॥ हे लीले ! जो चैतन हे तिस उपरभी नीतिहें ॥ जु उपदेशका अधिकारी हे अरु जो जड हे तिनोंविषे उह स्वभावहे ॥ जो आदि चित्त संवितविषे आकाशका फुरणा हुआ ॥ तब आकाशरूप होकरि स्थित भया ॥ जब कालका स्पंद फुरताहे तब उही चैतन संवित कालरूप होकरि स्थित होताहे ॥ जब वायुकी चेतनता हुइ तब उही संवित वायुरूप होकरी स्थित होताहे ॥ इसी प्रकार अग्नि जल पृथ्वीरूप होइकरी स्थित भयाहे स्थूल सूक्ष्म रूप होइकरी चैतन संवितहि स्थित होइ रहाहे ॥ जेसें सुपनेविषे चैतन संवितही पर्वत वृछरूप होइकर स्थित होताहे तेसेंहि चैतन संवित जगतरूप होइकरी स्थित भयाहे ॥ हे लीले ! जेसें आदि नीतिविषे पदार्थोंकों संकल्परूप धरे हें तेसेंहि स्थित हे ॥ तिसके निवारणकों समर्थ कोउ नहि का हे तें जु तीव्र अभ्यास चैतनका कोयाहे ॥ जब उहि संवित उलटी करी और प्रकार स्पंद होवे ॥ तब और प्रकार होवे अन्यथा नहि होता ॥ हे लीले ! इह जगत सत नहि ॥ जेसें संकल्प नगर भ्रम सिद्धहे ॥ जेसें सुपन पुरुष असतरूप होताहे ॥ जेसें ध्यान नगर असतरूप होताहे ॥ तैसें इह जगत असतरूप हे ॥ अज्ञान करिकें सतकी नांइ भासताहे ॥ जेसें सुपन सृष्टिके आदि सन्मात्रसत्ता होतिहे॥ तिस सन्मात्रतें आभास किंचन सुपन सृष्टिका अकारण होताहे तेसें इह जाग्रत जगतके आदि सन्मात्र सत्ता होतीहे ॥ तिसतें किंचन अकारण रूप इह जगत होताहे ॥ हे लीले ! इह जगत कछु वास्तवतें उपजा नहि ॥ असतहि सतकी नांइ हो करी भासताहे ॥ जेसें सुपनेकी अग्नि सुपनेविषे असतहि सतरूप होइ भासतिहे ॥ तेसें इह जगत अज्ञानकरि असतरूप सतकरि भासताहे ॥ जेसें जन्म अरु मृत्यु अरु कर्मोंका फल होताहे सो तुं श्रवण कर ॥ हे लीले ! बडा अरु छोटा जो होताहे ॥ सो देशकाल अरु द्रव्यकरी होताहे ॥ एक बालक अवस्थाविषे मृतक होतेहे ॥ एक जौबन अवस्थाविषे मृतक होतेहे॥ जिसकी क्रिया चेष्टा देशकाल द्रव्यकी यथा शास्त्र होतिहे॥ तिसकी क्रियाभी शास्त्रके अनुसार होतिहे ॥ अरु जो चेष्टा शास्त्रतें विरुद्ध होतीहे तो आयुर्बल भी तेसा होताहे ॥ एक क्रिया एसीहे जिसकरी आयु वृद्ध होतिहे एक क्रिया कर घटजातीहे ॥ इसी प्रकार देशकाल क्रिया द्रव्य आयुके घटावने बढावनेवालेहे ॥ तिनों कर जीवोंके शरीर सूक्ष्म बडी अवस्थाविषे सोयेहें ॥ इह आदि नीति रचीहे ॥ युगोंकी मर्यादा हे तेसेंहि हे ॥ केसें हे एक सो वर्ष दिव्य कलियुगके, दोसो वर्ष दिव्य द्वापरके, त्रेसो त्रैताके, चारसो सतयुगके, इह दिव्य वर्ष हे ॥ अरु लौकिक वर्ष इस प्रकारहे ॥ चार लाख बतीस हजार कलिजुगहे ॥ अष्ट लाख चौसठ हजार द्वापारयुगहें ॥ बार लाख छनवे हजार त्रेताहे ॥ सतरा लाख अठाइस हजार सतयुगहे ॥ इस प्रकार युगोंकी मर्यादाहे तिसविषे जीव अपने कर्मोंके फलकरी आयु भोगतेहें ॥ हे लीले ! जो पाप करणे वाले हें सो मृतक होतेहे तिनकों मृत्युकालमेंभी बडा कष्ट प्राप्त होताहें ॥ ॥ लीलोवाच ॥ हे देवी ! मृतक हुवे सुख अरु दुःख केसें होताहे ॥ अरु केसें भोगताहे ?॥ ॥ देवीउवाच ॥ हे लीले ! जीवकों तीन प्रकारके मृत्यु होतेहे ॥ एक मूर्खकों मृत्यु होतेहें ॥ दूसरा धारणाभ्यासीकों होताहें ॥ तिसरा ज्ञानवानकों होताहे ॥ तिनका भिन्न भिन्न वृत्तांत सुण ॥ हे लीले ! जो धारणा अभ्यासीहे सो मूर्खभी नहि अरु ज्ञानवानभी नहि ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सो जिस इष्ट देवताकी धारणा करते हे ॥सो मृतक होइकरी अर्थ यह जो शरीरकों त्यागकें तिसहि देवताके लोककों प्राप्त होतेहें ॥ इह धारणाभ्यासीका मृत्यु हे ॥ अरु जो ब्रह्माभ्यासी हे अरु पूर्ण दिशा नहि प्राप्त हुइ ॥ तिनका सुखसों शरीर छूटता हे ॥ जेसें सुषुप्ति हो जातिहे तेसें धारणाभ्यासी शरीरकों त्यागता हे ॥ त्यागकर सुखकों भोगकर फेरि आत्मतत्वकों प्राप्त होताहे ॥ अरु ज्ञानवानका शरीरभी सुखसों छूटता हे ॥ तिसकोंभी जतन कछु नहि होता ॥ अरु उह ज्ञानीके प्राणभी तहांहि लीन होतेहे ॥ उह विदेहमुक्त होताहे ॥ अरु जब मूर्खका मृत्यु होने लगता हे ॥ सो बडे कष्टकों प्राप्त होताहे ॥ सो मूर्ख कोनहें ॥ जिनकों अज्ञानीयोंकी संगति हें ॥ अरु शास्त्रोंके अनुसार विचरणा नहि अरु सदाविषयोंकी उर धावतेहें ॥ पापाचार करतेहे ॥ एसे पुरुषकों शरीर त्यागणेविषे बडा कष्ट होताहे ॥ हे लीले ! जब इह मृतक होने लगताहे ॥ तब पदार्थोंकरी आवरण अर्थबुद्धिजु संबंधीथा तिनोंसाथ विजोग होने लगताहे ॥ अरु कंठका रोकना होताहे नेत्र फटजातेहे ॥ अरु शरीरकी कांति विरूप जेसी होजातीहे ॥ जेसें कमल फूल काट्या हुवा कुमलाइ जातहे ॥ तेसें मृत्युकालमें शरीर विरूप होय जाताहे ॥ अरु अंग पडे टूटते हे ॥ प्राण नाडियोंसों निकसते हे ॥ जिनों अंगोसों तदात्मसंबंध हुवाथा ॥ अरु पदार्थोंविषे बहुत स्नेह था तिनोंतें विजोग होने लगताहे ॥ तातें बडा कष्ट होताहे ॥ जेसें किसीकों अग्निके कुंडविषे डारते कष्ट होताहे ॥ तेसें उसकों कष्ट होताहे ॥ सब पदारथ भ्रमतें भासतेहे ॥ पृथ्वी आकाशरूप अरु आकाश पृथ्वीरूप भासतेहें ॥ महा विपर्यय दिशाकों प्राप्त होताहे ॥ चित्तकी चैतनता घटति जातीहे ॥ ज्योंज्यों चित्तकी चैतनता घटतीजातीहे ॥ त्योंत्यों पदार्थके ज्ञानतें अंध होताजाताहे ॥ जेसें सायंकालमें सूर्य अस्त होताहे ॥ तब नेत्रभ्रांतिवानकों दिशाका ज्ञान नहि रहता ॥ तेसें इसकों पदार्थोंका ज्ञान नहि रहता ॥ अरु कष्टका अनुभव करताहे ॥ जेसें आकाशतें गिरता कष्ट पावताहे ॥ जेसे पाषाणविषे पीसाता कष्ट पावताहे ॥ जेसें पवनविषे तृणभ्रमता हे कष्ट पावताहे ॥ जेसें अंधकूपविषे गिरता कष्ट पावताहे ॥ जेसें कोलूविषे पीलाता कष्ट पाताहे ॥ जेसें खंभाणीविषे चलाया पथ्थर बडा कष्ट पावताहे ॥ जेसें रथतें गिरता कष्ट पावताहे ॥ जेसें गरमें फांसी डारकें खेचनेतें कष्ट पावताहे ॥ जेसें वायुकरीकें उछलया तरंग वडवाग्निमें पडा जलता कष्ट पावताहे तेसें मूर्ख मृत्युकालविषे कष्ट पावताहे ॥ जब पुर्यष्टकका वियोग हुआ तब मूर्छाकरी जड जेसा होजाताहे ॥ शरीरतो अखंडित पडा रहताहे ॥ लीलोवाच हे देवी ! जब इह मृतक होने लगता हे तब इसकों मूर्छा केसें होतीहे ? शरीरतो अखंडित पडा रहताहे ॥ कष्ट केसें पावताहे ? देवीउवाच ॥ हे लीले ! जो कछु इस जीवने अहंकार भावकों लेकरी कर्म कीयेहें सो सब एकठे होते जातेहें ॥ समयपायकें आप प्रगट होतेहें ॥ जेसें बीजबोया हुआ समय पाइकेंफल आन लागताहे ॥ तेसें तिसकों कर्म वासनासहित फल आन प्रकट होताहे ॥ जब इस प्रकार शरीर छुटने लगताहे ॥ तब शरीरकी तादात्म्यता अरु पदार्थोंके नेहके वियोग करी इसकों कष्ट होताहे ॥ जो प्राण अपानकी कलाहे जिसके आश्रय शरीर होताहे ॥ सो टुटने लगताहे ॥ जिनों स्थानों विषे प्राण फुरतेथे तिनों स्थानों अरु नाडियोंसों निकसते हे जिस थानतें निकसतेहे ॥ तहां बहुरी प्रवेश नहि करते ॥ उहां नाडियां जर्जरी भाव होजातीयांहें ॥ सब स्थानोंकों प्राण जग त्याग जातेहें ॥ तब उह पुर्यकष्ट शरीरकों त्याग निर्वाण होताहे ॥ जेसें दीपक निर्वाण होजाताहे ॥ जेसें पथ्थरकी शिला जडीभूत होतिहे तेसें पुर्यष्टक शरीरकों त्यागकरी जडीभूत होजातीहे ॥ प्राण अपानकी कला टुट पडताहे ॥ हे लीले ! इह मरणा अरु जन्मभीभांति करीकें भासताहे ॥ आत्माविषे कोउ नहि ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संवित मात्रविषे जो संवेदन फुरताहे ॥ सो अन्य स्वभावविषे सत्ताकी नांइं होकरी स्थित होताहे ॥ मरण अरु जन्म तिसविषे भासतेहें ॥ जेसी जेसी वासना होतिहे तिसके अनुसार सुख दुःखका अनुभव करताहे ॥ जेसें कोउ पुरुष नदीविषे प्रवेश करताहे ॥ तिसविषे कइं बडा जल होताहे ॥ कइं छोटा जल होताहे कइं बडे तरंग होतेहें ॥ कइं सोम जल होताहे ॥ सो सभ सोमजलविषे होतेहें तेसें जेसी वासना होतिहे ॥ तीसीके अनुसार सुखदुःखका अनुभव होताहे॥ अध ऊर्ध्व मध्य वासना रूपी गिरतविषे पडे गिरतेहें॥ जेसें वेलीविषे गंठी होतियां हें ॥ तेसें संवेदनविषे जन्म मरणकी कल्पना होतिहे॥ अरु शुद्ध चैतनमात्र विषे कोऊ कल्पना नहि ॥ अनेक शरीर नष्ट होजातेहे ॥ अरु चैतनसत्ता ज्युंकी त्युं रहतीहे ॥ जो चैतनसत्ता भी मृतक होवे ॥ तव एकके नष्ट हुए सब नष्ट हो जावे सो एसें तो नहि ॥ चैतन्यसत्ता सब कछू सिद्ध होतीहे ॥ जो उह न होवे तो कोउ किसीकों न जाने ॥ हे लीले ! चैतनसत्ता जो हे सो न जनमतीहे न मरति हे ॥ सर्व कल्पनातें रहित केवल चिन्मात्र हे ॥ तिसका किसी कालविषे केसें नाश होवे ॥ जन्म मरणकी कल्पना संवेदनविषे होतिहे ॥ अचेत चिन्मात्रविषे कछु हुआ नहि ॥ हे लीले! मृत्यु सोइ होताहे जिसके निश्चयविषे मृत्युका सद्भाव होताहे ॥ जिसके निश्चयविषे मृत्युका सद्भाव नहि सो केसें मरे ॥ जब इसकों दृश्यका अत्यंत अभाव होवे ॥ तव बंधनोंतें मुक्त होवे ॥ वासनाहि इसकों बंधनका कारण हे ॥ जब वासनातें मुक्त होताहे ॥ तब बंधन कोउ नहि रहता ॥ हे लीले! आत्मविचारकरि ज्ञान होताहे ॥ अरु ज्ञानकरीकें दृश्यका अत्यंत अभाव होताहे ॥ जब दृश्यका अत्यंताभाव हुआ तव वासना नष्ट होजातीहे ॥ इह जगत उदय हुआ नहि परंतु उदय हुएकीनांइ वासनाकरीकें भासताहे ॥ तातें वासनाका त्यागकरो जब वासना निवृत्तहोवे ॥ तब वंधन कोउ न रहे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे मृत्युविचारवर्णनं नामसप्तत्रिंशत्तमःसर्गः॥ ३७ ॥

॥ लीलोवाच ॥ हे देवी ! इह जीव मृतक केसें होताहे ? अरु जन्म केसें लेताहे ? मेरे बोधकी दृढ्ढताके निमित्त बहुरी कहो ॥ ॥ देवीउवाच ॥ हे लीले ! इसके अंतर पान अपानकी एक कलाहे ॥ तिसके आश्रय इह शरीर रहताहे ॥ जवलग प्रारब्ध कर्म होताहे ॥ अरु जब मृतक होने लगताहे ॥ तब प्राणवायु अपने स्थानकों त्यागताहे ॥ जब जिसजिस स्थानसों नाडिसों निकसताहे सो स्थान सिथिल होताहे ॥ जब पुर्यष्टक शरीरसों निकसता हे ॥ तब प्राणकला टूट पडती हे ॥ अरु चैतनता जडिभूत होजातिहे ॥ तब परिवारवाले लोक इसकों प्रेत कहतेहे ॥ जू इह मृतक हुआ प्रेत भयाहे ॥ हे लीले ! इसके चितकी चैतन्यता जडीभूत होजातीहे ॥ केवल चैतन्य जो ब्रह्मसत्ता हे सो ज्योंकी त्यों रहतीहे ॥ स्थावर जंगम सर्व जगतविषे व्यापक रहिहे ॥ आकाश पहाड वल अग्नि वायु आदिक सर्व पदार्थों विषे व्याप रहाहे उदय अस्तें रहितहे ॥ हे लीले ! जब इसकों मृत्यु मूर्छा होतिहे तब प्राण पवन आकाश विषे लीन होतेहें ॥ तिस प्राणविषे चैतनता होतिहे ॥ अरु चैतनता विषे वासना होतीहे ॥ अेसी जो प्राण अरु चैतन्यसत्ताहे सो वासनाकों लेकरी आकाश विषे आकाशरूप स्थित होती हे॥ जेसें गंधकों लेकरी आकाशविषे वायु स्थित होताहे ॥ तेसें वासनाकों लेकरी चैतनता स्थित होतीहे ॥ हे लीले ! तिस अपअपनी वासनाके अनुसार देश स्थान बहुरी जगत फुरि आताहे ॥ तिसविषे देश काल क्रिया द्रव्य करकें देखताहे सो मृत्युभी जीवकों दो प्रकारका हे ॥ एक पापात्माका मृत्युहे ॥ एक पुन्यात्माका मृत्युहे ॥ बहुरी पापीभी तीन प्रकारकेहे ॥ एक महापापीहे एक मध्यम पापीहे तीसरे अल्प पापीहे ॥ एसेंइ पुन्यहि तीन प्रकारकेहे ॥ एक महापुन्यवान हे एक मध्यम पुन्यवान हे तीसरा अ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ल्प पुन्यवान हे ॥ प्रथम पापीयोंका मृत्यु सुण ॥ जब बडा पापी मृतक होताहे ॥ तब मरकें जर्जरीभूत हो जाताहे ॥ घन पाषाणकी नांइ सहस्र वर्षोंपर्यंत मूर्छाविषे पडा रहताहे ॥ केइ एसे जीव हे तिस मूर्छाविषेभी उनकों दुःख होताहे ॥ जेसें बाहिर इंद्रियोंकों दुःख होताहे तिसके रागद्वेषकों लेकरी चितकी वृत्ति अंतर रिदेविषे जाय स्थित होतिहें ॥ तेसें पाप वासनाका दुःख अंतर होताहे ॥ तिसकरि दुःख होताहे ॥ अंतर जलताहे इस प्रकार जडीभूत मूर्छाविषे रहताहे ॥ तिसके अनंतर उसकों बहुरी चैतन्यता फुरि आतीहे ॥ अपने साथ शरीर देखताहे ॥ बहुरी नरककों जाय भुगतताहे ॥ चिरकाल पर्यंत नरककों भोगकें बहुतेरे जन्म पशु आदिकोंके भुगतताहे तिनकों भोगकें मनुष शरीरकों पाताहे ॥ महानीच अरु द रिद्री निर्धनोकें गृहविषे जन्म लेताहे ॥ तहांभी दुःखोंकरी तप्त रहताहे ॥ हे लीले ! इह महापापीयोंका मृत्यु तुझकों कहा ॥ अब मध्यम पापीका मृत्यु सुण ॥ जब मध्यमपापीका मृत्यु होताहे ॥ तब उहभी दृछकी नांइ मूर्छाकरी जडीभूत होइ जाताहे ॥ अरु अंतर दुःखकरि जलताहे ॥ जडीभूततें थोडेकालविषे बहुरी चैतनताकों पाताहे ॥ नरकांतरकों जाय भुगतता हे ॥ नरककों भोगकें तीर्यगादिक योनिकों भुगतताहे ॥ तिनकों भोगकें वासनाके अनुसार मनुष शरीरकों पाताहे ॥ अब अल्प पापीका मृत्यु श्रवण कर ॥ हे लीले ! जब अल्प पा पी मृतक होताहे ॥ तब मूर्छित होय जाताहे ॥ केतेक कालतें उसकों चैतनता आय फुरतीहे ॥ चैतनताकों पायकें नरककों जाइकरी भुगतताहे ॥ तिनकों भुगतकें कर्मोंके अनुसार और जन्मोंकों भुगतताहे ॥ बहुरी मनुष्य शरीर आय धारताहे ॥ हे लीले ! इह पापात्माके मृत्यु कहे ॥ अब धर्मात्माके मृत्यु सुण जो महा धर्मात्माहे सो जब मृतक होतेहें तब उनके निमित्त विमान आतेहे ॥ तिनपर आरूढ करिकें स्वर्गमें लेजाताहे ॥ जिस इष्ट देवताकी वासना इसके रिदेविषे होतीहे ॥ तिसके लोकविषे लेजातेहें ॥ तहां जाइकरी स्वर्ग सुख भुगत ताहें ॥ जेसे कर्मकीये होतेहें ॥ तेसे सुखकों भुगतताहे ॥ केसे स्वर्ग सुखहे जों गंधर्वविद्याधर अप्सरा आदिक भोगहे तिनकों भोगकें बहुरी गिरताहे ॥ जिस फलविषे आन स्थित होताहे ॥ तिस फलका मनुष भोजन करताहे ॥ जब वीर्यविषे जाय स्थित होताहे तिस वीर्य साथ माताके गर्भविषे जाय स्थित होताहे ॥ तहांतें वासनाके अनुसार बहुरी जन्म लेताहे ॥ जो कछु भोगकी कामना होतिहे ॥ तब श्रीमान धर्मात्माके गृहविषे जन्म होताहे ॥ अरु जो भोगतें निःकाम होताहे तब संतजनके गृहविषे जन्म लेताहे ॥ अब मध्यम धर्मात्माका मृत्यु सुण ॥ हे लीले ! जो मध्यम धर्मात्मा मृतक होताहे तिसकों शीघ्रही चैतनता फुरि आतिहे ॥ अरु स्वर्गकों चला जाताहे अपने पुन्यके अनुसार स्वर्गकों भोगिकें बहुरी गिरताहे ॥ किसि फलविषे आनि स्थित होताहे ॥ उस फलकों पुरुष भोजन करताहे तब पिताके वीर्यद्वारा माताके गर्भविषे आताहे ॥ वासनाके अनुसार जन्म लेताहे ॥ अरु जो अल्पधर्मात्मा मृतक होताहे त ब उसकों इह फुरी आताहे जु में मृतक हुआहों मेरे बांधव अरु पुत्रोंनें मेरी पिंडक्रिया करीहे ॥ में पितरलोककों चला जातहों ॥ उहां पितर लोकका अनुभव करताहे ॥ पितरलोकके सुख भोगकें गिरताहे ॥ तब धान्यविषे आन स्थित होताहे ॥ जब धानकों पुरुष भोजन करताहे तब वीर्यरूप होयकें स्थित होताहे ॥ तिस वीर्य द्वारा होयकें माताके गर्भविषे आताहे ॥ बहुरी वासनाके अनुसार जन्म लेताहे ॥ हे लीले ! जब पापी मृतक होताहे तब तिसकों महाक्रूर मार्ग भासता हे ॥ तिस मार्गपर चलताहे चरनोविषे कंटक चूभते हैं ॥ शीशपर सूर्य त पताहे ॥ सूर्यके धूपकरी शरीर कष्टवान होताहे ॥ अरु जो पुण्यवान होताहे तिसकों सुंदर छायाका अनुभव होताहे ॥ बावडीयां अरु सुंदर थानोंके मार्गसों जमदूत उसकों लेजातेहें ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जहां धर्मराज बेठाहे तिसके पास ले प्राप्त करतेहें धर्मराज चित्रगुप्तसों पूछताहे तब चित्रगुप्त पुण्यवानोंके पुण्य प्रगट करताहे ॥ पापीके पाप प्रगट करताहे तिनकर्मोंके अनुसार स्वर्ग नरककों भुगतताहे ॥ तिसकों भोगकें बहुरी गिरताहे ॥ धान अथवा और किसी फलविषे आन स्थित होताहे ॥ जब उस अन्नकों पुरुष भोजन करताहे तब उह सुपनवासनाकों लेकरी वीर्यविषे आन स्थित होताहे जब पुरुषका इस साथ संयोग होताहे तब वीर्यद्वारा माताके गर्भविषे आताहे ॥ तहांभी अपने कर्मोंके अनुसार माताके गर्भकों प्राप्त होताहे ॥ तिस माता के गर्भविषे इसकों अनेक जन्मोंका स्मरण होताहे ॥ बहुरी बाल्य निकसीकें बालक अवस्थाकों धरताहे ॥ तब पीछली स्मृति विस्मरण होजातीहे ॥ महा मूढ अवस्थाकों धारताहे ॥ परमार्थकी सुध कछु नहि होती ॥ क्रीडाविषे मग्न होताहे ॥ तिसतें आगें जोबन अवस्था आतीहे ॥ तब कामआदिक विकारोंविषे अंध हो जाताहे ॥ विचार कछु नहि रहता ॥ बहुरी वृद्ध अवस्था आतीहे तब शरीर महा कृश जेसा हो जाताहे ॥ अरु रोग आन उपजतेहें ॥ शरीर कुरूप होजाताहे ॥ जेसें कमलोंपर बरफ पडताहे अरु कुमलाइ जातेहें ॥ तेसें वृद्ध अवस्था विषे शरीर कुमलाइ जाताहे ॥ सब शक्ति घटती जातीहे ॥ अरु तृष्णा बढती जातीहें ॥ बहुरी मृतक होने लगताहे ॥ तब कष्टवान होताहे ॥ कष्टकों भोगकें मृतक होताहे तब वासना के अनुसार स्वर्ग नरककें भोगकों प्राप्त होताहे ॥ इस प्रकार संसारचक्रविषे वासनाके अनुसार घटियंत्रकी नांइं भ्रमताहे ॥ स्थिर कदाचित् नहि होता ॥ हे लीले ! इस प्रकार जीव आ त्मपदके प्रमादकरीकें जन्म मरणकों प्राप्त होताहे ॥ बहुरी माताके गर्भविषे आतेहें ॥ बाल अवस्था जौबन अवस्था वृद्ध अवस्था मृतक अवस्थाकों प्राप्त होतेहें ॥ बहुरी वासनाके अ नुसार परलोककों देखतेहे ॥ जाग्रत सुपनकी नांइं भ्रमते अनंतर भ्रमकों देखतेहे ॥ जेसें सुपनेतें सुपनांतर देखताहे तेसें अपनी कल्पना करकें जगत भ्रम फुरताहे ॥ स्वरूपतें किसीकों कछु भ्रम नही ॥ आंकाशरूप आकाशविषे स्थितहे ॥ भ्रमकरीकें विकार भासतेहे ॥ लीलोवाच ॥ हे देवी! परब्रह्मविषे इह जगत भ्रमकरी केसें हुआहे ॥ सो मेरे बोधके दृढता के निमित्त कहो ॥ देवीउवाच ॥ हे लीले ! स्वरूपतें सब आत्मरूप हे पहाडभी परमार्थघन हे ॥ वृक्षभी परमार्थ घन हे ॥ पृथ्वी आकाश आदिक स्थावर जंगम जेता कछु जगतहे सो सब परमार्थ घन हे ॥ परमार्थ सत्ता सर्व आत्माहे ॥ हे लीले ! तिस सत्ता संवित आकाशविषे जब संवेदन आभास फुरताहे ॥ तिसकरी जगत भ्रम भासताहे ॥ आदि संवेदन जो सं वित मात्रविषे हुआहे ॥ सो ब्रह्मा रूप होइकरी स्थित भयाहे ॥ बहुरी जेसें उह चेतना गया हे तिसी प्रकार स्थावर जंगम जगत होइकरी स्थित भयाहे ॥ हे लीले ! शरीर जो हुआहे ॥ तिसके अंतरविषे नाडी हे नाडीविषे छिद्रहे तिन छिद्रों विषे प्राण स्पंदरूप होईकरी विचरताहे ॥ तिसकों जीव कहताहे ॥ जब उह जीव निकस जाताहे तब शरीर मृतक होताहे ॥ हे लीले ! जेसें जेसें आदी संवित मात्रविषे संवेदन फुर्याहि ॥ तेसें अबलग स्थित हे ॥ जब चेत्या जो में जड होउं तब जडरूप पृथ्वी अप तेज वायु आकाश पर्वत वृक्षादिक स्थित भये जडकी भावना करी जड हुए ॥ चैतनकी भावना करी चैतनरूप होइकरी स्थित भए हे ॥ हे लीले ! जिसविषे प्राणक्रिया होतिहे ॥ सो जंगम रूप बोलते चलते हे ॥ अरु जिसविषे प्रा णस्पंद क्रिया नहि पाइता ॥ सो स्थावररूप हे अरु आत्मसत्ताविषे दोनों तुल्यहें ॥ जेसें जंगम हे तेसा स्थावर हे ॥ अरु दोनों चैतन्य हे ॥ जेसे जंगमविषे चैतन्यता हे ॥ तेसें स्थाव रविषे चैतन्यता हे ॥ अरु जो तुं कहे स्थावरोविषे चैतनता भासती क्यों नहि तिसका उत्तर यहहे ॥ हे लीले ! जेसें उत्तर दिशाके समुद्रवाले मनुष्यकी बोलीकों दक्षण दिशाके स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुद्रवाले नही जानते ॥ अरु दक्षिण दिशाके समुद्रवालेकी बोलीकों उत्तर दिशाके समुद्रवाले नहि समुझ सकते ॥ तेसें स्थावरोकी बोलीकों जंगम नहि समुझ सकते अरु जंगमोकी बोलीकों स्थावर नहि समुझ सकते ॥ परस्पर अपनी अपनी जातिविषे सब चैतन हे ॥ उसका ज्ञान उसकों होताहे ॥ उसका ज्ञान उसकों होताहे ॥ जेसें कूपविषे दर्दुर होताहे सो ओरके कूपके दर्दुरकों नहि जानता ॥ अरु और कूपका दर्दुर उस कुपके दर्दुरकों नहि जानता ॥ तेसें जंगमोंकी बोली स्थावर नहि जान सकते ॥ अरु स्थावरोकी बोलीकों जंगम नहि जान सकते ॥ हे लीले ! जो आदि संवितविषे संवेदन फुर्याहे ॥ तेसा रूप होइकरी महाप्रलय पर्यंत स्थितहे ॥ अन्यथा नहि होता जब तिस संवितविषे अवकाशका संवेदन फुर्या तब आकाशरूप होइकरी स्थित भयाहे ॥ जब स्पंदताकों चेतता भया तब वायुरूप होइकरी स्थित भया ॥ जब उष्णताकों चेतता भया तब अग्निरूप होइकरी स्थित भया ॥ जब द्रवताकों चेतता भया तब जलरूप होइकरी स्थित भया ॥ जब गंधकी चिंतवना करी तब पृथ्वीरूप होइकरी स्थित भया ॥ इस प्रकार जिसजिसकों चेतता भया सो सो पदार्थ प्रगट भया ॥ आत्मसत्ताविषे प्रतिबिंबित भया ॥ वास्तवतें न कोउ स्थावर हे न जंगम हे ॥ केवल ब्रह्मसत्ता ज्युंकीत्युंहे अपने आपविषे स्थितहे ॥ तिसविषे जगत भ्रमकरीकें पडे भास तेहे और दूसरी वस्तु कछु नहि ॥ हे लीले ! अब राजा वीदुरथकों देख जो मृतक होताहे ॥ ॥ लीलोवाच ॥ हे देवी ! इह राजा पद्म शव शरीरवाले मंडपविषे किस मार्गसों जावेगा ॥ अरु इसके पाछें हम किस मार्ग जावेंगे ? ॥ ॥ देवीउवाच ॥ हे लीले ! इह अपनी वासनाके अनुसार मनुष मार्गके राह जावेगा ॥ हे चिदाकाशरूप परंतु अज्ञानके वश इसकों दूर स्थान भासेगा ॥ अरु हमभी इसहीके मार्ग इसके संकल्प साथ अपना संकल्प मिलाइकें जावेंगें ॥ जबलग संकल्प साथ संकल्प मिलता नहि ॥ तबलग एकत्व भाव नहि होता ॥ इसी कारणतें इसके संकल्प साथ हम अपना संकल्प मिलाइकरी इसहीके मार्ग जावेंगें ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस प्रकार देवीजीने लीलाकों उपदेशकीया ॥ केसा उपदेशहे मानों बोधका सूर्य उदय हुआहे ॥ एसें संवाद करते थे तहां राजा जर्जरीभूत होने लगा ॥ ॥ इतिश्रीयो० उ० प्र० लीलो० संसारभ्रमवर्णननांम अष्टात्रिंशत्तमःसर्गः ॥ ३८ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस प्रकार देवी अरु लीला देखतीथी तहां राजाके नेत्र फाटिगये ॥ अरु शरीर निरस होगया अरु गिरपडा ॥ स्वास नासिकाके मार्ग निकसगया ॥ तब जेसें रसतें रहित पत्र होताहे ॥ जेसें काट्या हुआ कमल विरस होजाताहे ॥ तेसें राजाका शरीर निरस होगया ॥ जो कछु चित्तकी चेतनता थी सो जर्जरीभूत हो गइ ॥ मृत्यु मूर्छारूपी अंधकूप विषे राजा जायपडा ॥ अरु प्राण चैतना अरु वासनासंयुक्त आकाशविषे जाइ स्थित भये ॥ प्राणोविषे चेतनाथी अरु चेतनाविषे वासनाथी सो चेतना अरु वासना सहित प्राणाकाशविषे जाय स्थित भये ॥ जेसें वायु गंधको लेकरी स्थित होताहे ॥ हे रामजी ! उह राजाकी पुर्यष्टक तो जर्जरीभूत होगइ ॥ परंतु दोनो देवीयां उसकों दिव्य दृष्टि साथ देखे जेसें भ्रमरी गंधकों देखती हे ॥ तब राजा एक मुहूर्तपर्यंत मूर्छाविषे रहा, बहुरी उसकों चेतनता फुरी आइ ॥ अपने साथ शरीर भासिआया ॥ अरु जानता भया जु मेरे बांधवोनें मेरी पिंडक्रिया करीहे तिसकरी मेरा शरीर भयाहे ॥ अरु धर्मराजाके स्थानकों मूझे दूत ले चले हें ॥ हे रामजी ! इस प्रकार अनुभव करता धर्म राजाके स्थानकों चलाजावे ॥ तिनके पाछें देवी अरु लीलाभी चलीजावे ॥ जेसें वायुके पाछें गंध चली जातीहें तेसें चली जावे जेसें गंधके पाछें दोनों भ्रमरी जावे तेसें तब राजा विदूरथ धर्मराजाके पास जाइ प्राप्त भया ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धर्मराजानें चित्रगुप्तकों कहा जु इसके कर्म विचारकें कहो ॥ तब चित्रगुप्तनें कहा ॥ हे भगवन् इसने कोउ अपकर्म नहि कीये ॥ अरु बडे बडे पुन्य कीयेहे पाप नहि कीये ॥ अरु भगवती सरस्वतीका इसकों वरहे ॥ अरु इसका शव फूलों साथ ढांप्या हुआहे ॥ तिस शरीरविषे भगवतीके वरकरी जाय प्रवेश करेगा ॥ तातें और इसकों अब कछु कहना पूछणा नहि देवीजीके वर साथ बांधाहे ॥ हे रामजी ! एसें उसनें कहा तब राजाकों अपने स्थानतें चलाए दीया जेसें खंभाणी कर पथ्थर बडा वेगसों चला जातहे ॥ तेसेंहि चलाय दीया तब आगें राजा चला जावे ॥ तिसके पाछे दोनो देवीयां चली जावे ॥ राजाकों इह देवीयां देखे अरु राजा इनकों देख न सके ॥ तब तीनों एक ब्रह्मांडकों लंघ गये ॥ जिसका राज विदूरथने कीयाथा ॥ तिसकों लंघकरी दूसरे ब्रह्मांडविषे आए तिसकोंभी लंघते पद्मराजाके देशमें आये ॥ तिसकों लंघकरी पद्मके मंदिरविषे आये ॥ जहां फूलोंसाथ शव ढांप्याथा ॥ एक क्षणविषे देवीयां आन मिलीयां ॥ जेसें मेघकों वायु आन मिलता हे जेसें सूर्यमुखी कमलकों धूप आनि मिलताहे तेसें आन मिलीयां ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् उह तो राजा मृतक हुआथा मृतक होइकरी तिस मारगकों केसें पिछानत भया ॥ जो आय प्राप्त हुआ ? ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! उह विदूरथ जो मृतक भया था सो उसकी वासना तो नष्ट भइ न थी उस अपनी वासना करी अपणे स्थानकों आइ प्राप्त भया ॥ हे रामजी ! भांतिमात्र जो जगतहे सो चिदअणुजीवके उदरविषे हे ॥ जेसें बटके बीजविषे अनंत बट वृछ होतेहे ॥ तेसें चिदअणुविषे अनंत जगत हे ॥ जो अपणे अंतर स्थितहे तिसकों क्यों न देखे ॥ जेसें जीव अपने जीवत्वका अंकुर देखताहे ॥ तेसें स्वभाव चिदअणु त्रिलोकीकों देखता हे ॥ जेसें कोउ पुरुष कीसी स्थान विषे धनकों दाबी राखे ॥ अरु आप दूर देशकों जावे ॥ तो धनकों वासना करीकें पडा देखताहे ॥ तेसें वासनाकी दृढताकरी विदूरथ देखता भया ॥ अरु जेसें कोउ जीव सुपन भमकरी किसी बडे धनवानके गृहविषे जाय उपजताहे ॥ भमके शांत हुए तिसको अभाव देखताहे तेसें अनुभव करतभया ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! जिसकी वासना पाछें पिंडदान क्रियाकी नहि रही ॥ अरु मृतक भयाहे तब उह केसें अपने साथ शरीर देहकों देखताहे जिसकी पिंडक्रिया हुइ नहि ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इह पुरुष पितामाताके पिंड जो करताहे ॥ उनकी वासना इसके रिदेविषे होतीहे सोइ वासना फलरूप होइ करी इसकों भासतीहे ॥ जु मेरा शरीरहे ॥ मेरे पाछें मेरे बांधवनें पिंडदान कियाहे तिसकर मेरा शरीर हुवाहे ॥ अपनी वासनाकरी तिसकों इसी प्रकार अनुभव होताहे ॥ हे रामजी ! सदेह होवे अथवा विदेह होवे अपनी वासनाके अनुसार इसकों अनुभव होताहे ॥ भावनातें इतर अनुभव नहि होता चित्तमय पुरुषहे ॥ जो चित्तविषे पिंडकी वासना दृढ होतिहे तब आपकों पिंडवानही जानताहे ॥ जेसी भावना होतिहे तेसेंही होताहे ॥ भावनाके वशतें असतभी सत होजाताहे ॥ तातें पदार्थोंका कारण भावनाहिहे ॥ कारणविना कारजका नहि उदे होता ॥ महाप्रलय पर्यंत कारणविना कारज होता देखा नहि अरु सुन्याभी नहि ॥ तातें कहाहे जो जेसी वासना होतीहे तेसा अनुभव होताहे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! जिस पुरुषकों अपने पिंडदान आदिक धर्मकी वासना नहि ॥ उह जब मृतक होताहे तब प्रेत वासना संयुक्त होताहे जु मैं प्रेत हूआहों ॥ मैं पापीहों अरु पाछें तिसके बांधव उसके निमत्त धर्मक्रिया करतेहे ॥ सो धर्म बांधवोनें पिंडक्रिया करीहे ॥ तिसकरी मेरा शरीर हुआहे ॥ सो क्रिया उसकों प्राप्त होतीहे अथवा नहि होती ? ॥ बांधवोके मनविषे दृढ भावना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भइ जो इसकों प्राप्त होवगी ॥ अरु उसके मनविषे भावना नहि ॥ जु किस कारणतें धनके अभावतें अथवा पुत्रादिकोंके अभावतें उसकों निरासहे ॥ अरु किसी प्रभावतें किसीनें पिंडा दिक क्रिया करी सो केसें होतहे ?॥ उसकों प्राप्त होताहे अथवा नहीं होता ॥ तुम तो कहते हो जो भावनाके वशतें असतभी सत हो जाताहे इह क्याहे ? वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! भावना जो होतीहे ॥ सो देश काल क्रिया द्रव्य संपदा पांचो करी होतीहे ॥ जेसी भावना होतिहे तेसें सिद्ध होताहे ॥ जिसकि कर्तव्यता बली होतीहे तिसका जय होताहे ॥ इह पुत्र दारादिक जो बांधवहे ॥ सो सब इसकी वासनारूप हे ॥ जो धर्मकी वासना होतीहे तब तिसकी बुद्धिविषे प्रसन्नता उपज आतीहे ॥ तिनके पुण्यकर्मोंकरि पूर्वभावना नष्ट होजातीहे अरु शुभ गतिकों प्राप्त होताहे ॥ जो अति बलि वासना होतीहे तिसहीका जय होताहे तातें अपने कल्याणके निमित्त शुभका अभ्यास कोया चाहे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! जो क्रिया देश काल द्रव्य संपदा पांचोंकरी वासना होतिहे ॥ तो महाप्रलय सर्गकी आदिविषे देश काल क्रिया द्रव्य संपदा कोउ नहि होति ॥ जहां पांचों कारण नहि होते अरु तिनकी वासनाभी नहि होती तिस अद्वैततें जगत भ्रम बहुरी केसें होताहे ?॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! महाप्रलय अरु सर्गकी आदि विषे देश काल क्रिया द्रव्य संपदा कोउ नहि रहती ॥ अरु निमित्त कारण समवाय कारणका अभाव होताहे अरु चिदाकाशविषे जगत कछु उपजानहि अरु हेभी नहि ॥ वास्तवतें दृश्यका अत्यंत अभाव हे ॥ अरु जो कछु भासता हे सो ब्रह्मका किंचन हे ॥ सो ब्रह्मसत्ता सदा अपने आपविषे स्थितहे एसें अनेक युक्ति करी में तुझकों कहोंगा ॥ अब तुं पूर्वकथा सुण ॥ हे रामजी ! जब उह दोनो देवीयां तिस मंदिरविषे जाय प्राप्तभइयां तब देखत भइयां जो महा फूलोंकरी सुंदर सीतल स्थान बने हुएहें ॥ जेसें वसंतऋतु विषे वनभूमिका होतिहे तेसे स्थानहे ॥ अरु प्रातःकालका समयहे सुवर्णके कुंभ जलसाथ भरे मंगलरूपी पडेहे ॥ दीपकोंकी प्रभा मिटगइहे किवाड चडे हुएहे अरु मंदिरोविषे लोक सोए हुएहे ॥ तिसके स्वास आते जातेहें ॥ महा सुंदर झरोखेहे ॥ एसें स्थान बने हुएहे ॥ जेसें संपूर्ण कला करि चंद्रमा शोभताहे तेसें भासते हे ॥ इंद्रके स्थान जेसा सुंदरहे तेसें सुंदर मंदिरहे ॥ जिस कमलतें ब्रह्माजी उपजाहे तेसे उह कमल सुंदरहे ॥ तेसें सुंदरस्थान मंदिरकों देखत भइयां ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे मरणानंतरावस्था वर्णनं नाम एकोनचत्वारिंशत्तमःसर्गः ॥ ॥ ३९ ॥ ॥७॥ ॥७॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! तब दोनों देवीयां तिस शबके पास विदुरथकी लीलाकों देखतभइ ॥ जो उसके मृत्युतें प्रथम तहां आन प्राप्त भइहे ॥ पूर्वजेसें वस्त्रभूषन पहिरे हुएहें ॥ पूर्व जेसा आचार हे पूर्व जेसी सुंदर हे पूर्व जेसा शरीर हे ॥ तिस लीलाकों देखत भइयां ॥ केसा सुंदर मुख हे ॥ जेसें चंद्रमाकीनाइं प्रकाशताहें अरु महासुंदर फूलोंकी भूमि उपर बेठीहे ॥ लक्ष्मीके समान लीला हे अरु विष्णुके समान राजा हे ॥ तिस लीलाकों कछुक चिंतासहित देखत भइयां ॥ जेसें दिनके समय चंद्रमाकी मध्यम प्रभा होतीहे ॥ तेसें कछुक चिंता सहित राजाकी बांइ ओर बेठीहे ॥ चिबुक हाथके आधार रख्या हे ॥ अरु दूसरे हाथकरी राजाकों चमर करतीहे ॥ तिस लीलाकों दोनों देखत भइयां अरु उह लीला इनकों न देखत भइ ॥ काहेतें जो इह दोनों प्रबुध आत्मा थीयां अरु सत संकल्प थीयां ॥ अरु उह लीला इनके समान प्रबुध न थी इस कारणतें उह न देखत भइ ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् तिस मंडपविषे जो पूर्व लीला देहकों स्थापन करी अरु ध्यानविषे विदुरथकी सृष्टि देखणेकों सरस्वती साथ गइथी ॥ सो तिस देहका तुमों वर्णन कछु न कीया जो उस देहकी क्या दशा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भइ अरु कहां गइ तिसका वृत्तांत अब कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! लीला कहां थी अरु लीलाका शरीर कहांथा ॥ अरु तिसकी सत्ता कहांथी ॥ उह तो अंरुधतीक मन विषे लीलाके शरीरकी भांति प्रतिभा हुइ थी ॥ जेसें मारुथलविषे जलकी प्रतिभा होतिहे ॥ तेसें लीलाके शरीरकी प्रतिभा हुइथी ॥ हे रामजी ! इह अधिभूतक अज्ञान करीकें भासताहे ॥ बोधकरीकें अधिभूतकता निवृत्त होइ जातहे ॥ जब तिस लीलाकों बोधविषे परिणाम हुआ ॥ तब तिसका अधिभूतक शरीर निवृत्त होगया ॥ जेसें सूर्यके तेजकरि बरफका पूतला गिल जाताहे तेसें ज्ञानकरिकें तिसकी अधिभूतकता नष्ट होगइ अरु अंतवाहकता आन उदे भइ ॥ हे रामजी ! जेता कछु जगत हे सो सब आकाशरूपहे ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प भ्रमकरीकें भासता हे ॥ तेसें अंतवाहकविषे अधिभूतकता भासतिहे ॥ आदि शरीर अंतवाहक हे अर्थ इह जु संकल्प मात्र तिसविषे जो दृढ भावना होगइ ॥ तिसकरि पृथ्वी आदिक तत्वोंका शरीर भासने लगाहे ॥ वास्तवतें न कोउ भूत आदिक तत्व हे ॥ न कोउ तत्वोंका शरीर हे इनका शब सशेके शृंगोकी नांइ असत हे ॥ हे रामजी ! आत्माविषे अज्ञानकरीकें अधिभूतक भासेहे ॥ जब आत्माका बोध होताहे तब अधिभूतक नष्ट होजातेहे ॥ जेसें कोउ पुरुष सुपनेविषे आपकों हरन देखता भया ॥ जब जाग उठा तब हरणका शरीर दृष्ट नहि आता ॥ तेसें अज्ञानकरीकें अधिभूतकता दृष्ट आइहे ॥ अरु आत्मबोध हूए अधिभूतकता दृष्ट नहि आती ॥ जब सत्यका ज्ञान उदय होताहे तब असतका ज्ञान लीन होजाता हे ॥ जेसें जेवरीके अज्ञानतें सर्प भासे अरु जेवरीके ज्ञान करी सर्पका ज्ञान लीन होताहे ॥ तेसें संपूर्ण जगत मनतें उदय हुआहे ॥ अज्ञानतें करीकें अधिभूतकताकों प्राप्त भया ॥ जेसें सुपनेविषे जगत अधिभूतक होइ भासताहे ॥ अरु जागेतें सुपन शरीर नहि भासता तेसें आत्मज्ञान करी अधिभूतकता निवृत्त होजातिहे ॥ अरु अंतवाहक शरीर भासताहे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! जोगेश्वर जो अंतवाहक शरीर साथ ब्रह्मलोक पर्यंत आते जातेहे तिनके शरीर केसें हो भासतेहें ? ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! अंतवाहक शरीर एसें हे ॥ जेसें कोउ पुरुष सुपनेविषे होवे ॥ तिसको पूर्वका शरीर जाग्रतका स्मरण होवे तब सुपन शरीर इसकों दृष्टभी आताहे अरु तिसकों आकाशरूप जानताहे तेसें अधिभूतकता बोधकरीकें नष्ट हो जातहे ॥ जेसें सरतकालका मेघ देखणे मात्र होताहे ॥ तेसें जोगेश्वर ज्ञानवानका शरीर देखणेमात्र होताहे ॥ अरु अदृश्यरूप हे औरकों शरीर भासताहे ॥ उसकों आकाशरूप भासताहे ॥ हे रामजी ! इह देहादिक आत्माविषे भांतिकरीकें दृष्ट आताहे ॥ आत्मज्ञान करीकें निवृत्त हो जातेहे जेसें जेवरीकें अज्ञानकरिकें सर्प भासताहे जब जेवरीका सम्यक्ज्ञान हुआ तब सर्प भाव तिसका नहि रहता ॥ तेसें तत्व बोधके हुव देह कहां होवे ॥ अरु देहकी सत्ता कहां रहे दोनोंका अभावइ होजाता हे ॥ केवल ब्रह्मसत्ता अद्वैत भासतिहे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! अंतवाहकतें अधिभूतकरूप होताहे अथवा अधिभूतकतें अंतवाहकरूप होताहे ? ॥ सो मुझकों कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! में तुझकों बहुत वार कहाहे जो तूं मेरे कहेकों धारता क्यों नहि मे आगें कहा हे जो जेते कछु जोव हे ॥ सो सब अंतवाहकहे अधिभूतक कोउ नहि ॥ आदि जो शुद्ध संवित मात्रतें संवेदन आभास उठा ॥ तिसकरीकें इस जोवका आदि शरीर अंतवाहक संकल्परूप हुआ जब उसविषे दृढ अभ्यास हुवा ॥ तब उह संकल्परूपी शरीर अधिभूतक होइकरी भासणे लगा ॥ जेसें जल दृढ जडता करीकें बरफरूप होजाताहे ॥ तेसें प्रमाद करीकें संकल्पके अभ्यासतें अधिभूतकरूप होजाताहे ॥ तिस अधिभूतकके तीन लछन हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेहें ॥ भारी शरीर होताहे ॥ अरु कठोर भाव होताहे सिथिल होताहे तिसविषे अहंप्रतीत होतिहे ॥ इस कारणतें अधिभूतक कहताहे ॥ अरु जब तत्वका बोध होताहे ॥ तब अधिभूतक ता आकाशरूप होजातीहे ॥ जेसें सुपनेविषे देहतें आदि लेकरी जगत बडा स्पष्टरूप भासता हे अरु जब सुपनेविषे सुपनेका ज्ञान होताहे जु इह सुपनाहे ॥ तब उह सुपनेका शरीर ल घु होजाताहे॥ अर्थ इह जु संकल्परूप होजाताहे॥ तेसें परमात्माके बोधतें अधिभूतक शरीर निवृत्त होजाताहे॥ संकल्परूप भासताहे॥ हे रामजी ! जो अधिभूतकता इसकों प्राप्त भइहें॥ सो अबोधके अभ्यास करी प्राप्त भइहे ॥ जब उलटकें उही अभ्यासका बोध होवे ॥ तब अधिभूतकता नष्ट होजावे ॥ अरु अंतवाहकता उदय होवे ॥ हे रामजी ! अन्य शरीरोंकों जु इह प्राप्त होताहे ॥ सो एक शरीरकों त्यागकें दूसरेका अंगीकार करताहे ॥ जेसें सुपनेतें सुपनांतरकों प्राप्त होताहे ॥ अरु जब बोध होताहे तब शरीर और कछु वस्तु नहि रहता ॥ उहि अधिभूतक शरीर शांत होजाताहे ॥ जेसें सुपनेंतें जागे हुवे सुपन शरीर शांत होजाताहे ॥ तेसें बोध हूवेतें अधिभूतक शरीर शांत होजाताहे ॥ हे रामजी ! जेता कछु जगत तुझकों भा सताहे सो सब सुपनविषे भममात्र हे अज्ञानकरीकें सतकी नांइ भासताहे ॥ जब आत्मबोध होवेगा तब सब आकाशरूप होवेगा ॥ इ०यो०उ०ली०सुपनप०नि०चत्वारिंशत्तमः सर्गः॥ ४० ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जब उह दोनों देवीयां अंतःपुरविषे गइयां तब प्रबुधलीला कहत भइ ॥ हे देवींजी समाधिविषे लगे मुझकों केता कालवितीत भयाहे अरु में जु ध्यान करीकें भूपालकी सृष्टिविषेगइ थी मेरा शरीर इहां पडाथा सो केसें कहां गया ? ॥ देवीउवाच ॥ हे लीले ! अब तुजकों समाधिविषे लगे एकतीस दिन व्यतीत भयेहे ॥ अरु जब तूं ध्यानविषे लगी तब तेरा पुर्यष्टक विदुरथकी सृष्टिविषे विचरता फिर्या इस शरीरकी वासना तेरी निवृत्त होगइ ॥ तब इह शरीर तेरा निर्जीव होइकरी गिर पडा ॥ जेसें रसतें रहित पत्र सूकी जाताहे ॥ तेसें तेरा शरीर रसतें रहीत भयाथा ॥ जेसें काष्ट पाषाण होताहे तेसें होगयाथा ॥ अरु बरफकि नांइं सीतल होगया तब देखकें सबनें विचार कीया जु इह मृतक भयाहे इनकों जलाइयें ॥ तब चंदन अरु घृत साथ लपेटकें जलाय दीया ॥ बांधव जन रुदन करणे लागे अरु पुत्रोनें पिंड क्रिया करी ॥ हे लीले ! आगें जो तुं ध्यान तें उतरती तब तुझकों देखकें लोक आश्चर्यमान होते ॥ अरु अब देखकें आश्चर्यमान होवेगे ॥ जो राणी परलोकतें बहुरी फिरी आइहे ॥ हे लीले ! तुझकों बोध उदय हुआहे ॥ तिसकरी उस शरीरकी वासना नष्ट भइहे ॥ अरु अंतवाहक विषे दृढ निश्चय भया ॥ इस कारणतें उह शरीर जीवित भया ॥ अब जो उसके समान तेरा शरीर हे ॥ सो इस कारण तेंहें ॥ जो तुझकों बोध हुआहे ॥ सो लीला वासनाविषे हुआ जो मे लीला हों ॥ एसें जु तेरी वासना भइ ॥ इस कारनतें तेरा शरीर तेसा रहा ॥ इह लीला शरीरकी तेरी वासना न ष्ट भइ न थी ॥ इसकारणतें तुं निर्वाण न हुइ ॥ नहि तो विदेह मुक्त होजाती ॥ अब तुं सतसंकल्प भइहे ॥ जेसें तेरी इछा होवे तेसें अनुभव होवेगा ॥ हे लीले ! जेसी वासना जिसकों होतिहे तिसके अनुसार तिसकों प्राप्त होताहे ॥ जेसें बालककों अंधकारविषे जेसी भावना होतहे तेसाहि भान होताहे ॥ जो वैतालकी भावना होतिहे ॥ तब वैताल होइ भासता हे ॥ परंतु वास्तव वैताल कोउ नहि ॥ तेसें जेती कछु अधिभूतकता भासतीहे ॥ सो भ्रम मात्रहे ॥ सब जीवोंकों आदि शरीर अंतवाहक हे ॥ सो प्रमादकरीकें अधिभूतक भासता हे ॥ हे लीले ! एक लिंग शरीरहे एक अंतवाहक शरीरहे ॥ सो दोनों संकल्पमात्र हे ॥ अरु इतना भेद हे लिंग शरीर संकल्परूपी मन हे ॥ तिसविषे जिसकों अधिभूतकताका अभि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मान हूआहे तिसकों गौरत्वरूप अरु कठोररूप अरु वर्णाश्रमका अभिमान हुआहे ॥ जिस पुरुषकों एसें अनात्माविषे आत्माभिमान हुआहे तिसकों अधिभूतक लिंग देह हे ॥ अर्थ यह जु तिसकी चिंतना सत्य नहि होति ॥ अरु जिसकों अधिभूतकका अभिमान नहिं सो अंतवाहक शरीर हे ॥ उह जेसी चिंतवना करताहे ॥ तेसी सिद्ध होतीह ॥ हे लीले ! तूं अब अंतवाहक विषे दृढ स्थित भइहे इस कारणतें तेरा बहुरी उस जेसा शरीर हुआहे ॥ अधिभूतक बुद्धि तेरी नष्ट होगइहे ॥ उह शरीर शव होकरी गिर पडा जेसें जलतें रहित मेघ होताहे ॥ जेसें सुगंधतें रहित फूल होवे ॥ तेसें तेरा शरीर होगया अरु अब तूं सत्यसंकल्प भइहे ॥ जेसी चिंतवना करे तेसें होताहे ॥ हे लीले ! इह जु कमलनेनी लीला तेरा भर्ताके पास बेठीहे ॥ तिसकों इह अंतःपुरकें लोक सहेलीयां जान नही सकतीयां ॥ काहेतें जु मेंनें इनकों निद्रा करीकें मोहित करेथे ॥ जबलग मेरा दर्शन इसकों न होवे तब लग इसकों और कोउ न जानसके अब इह हमकों देखेगी ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! अेसें विचारकें देवी उसकों अपने संकल्प साथ ध्यान करती भइ ॥ तब उस लीलाने देख्या जो अंतःपुरविषे बडा प्रकाश होतभया ॥ जेसें बहुतेरे सूर्यका प्रकाश एकठा होवे अरु चंद्रमाकी नांइ सीतल प्रकाश एसें प्रकाशवान दोनों देवियांकों देखकें नमस्कारकीया मस्तक नमाया अरु दोनोंकों स्वर्णके सिंहासन पर बेठायकें कहत भइ ॥ हे जीवकी दाता तेरी जय होवे तेंनें मेरे पर बडी कृपा करी हे ॥ तेरे प्रसादकरी में इहां आइ प्राप्त भइहों ॥ देवीउवाच ॥ हे पुत्री ! तुं इहां क्युं केसें आन प्राप्त भइहे ? अरु क्या वृत्तांत तुजने देख्याहे सो कहिदे ॥ विदुरथलीलोवाच ॥ हे देवी ! जब मेरा भर्ता संग्रामविषे घायल भयाथा तिसकों देखकें में मूर्छित भइ अरु गिरपडी ॥ में मूर्छित भइ परंतु मृतक न भइ तिसतें अनंतर बहुरी मुझकों चेतना फुरी आइ ॥ तब में अपनेसाथ उहि शरीर देखती भइ ॥ तिस शरीरकरी में आकाश मार्गकों उडी ॥ एक कुंवारी मुझकों उडाती इहां ले आइ ॥ जेसें वायु गंधको लेआतहे तेसें उडावती पर लोकविषे मुजकों भर्ताके पास बेठाइहे अरु आप अंतर्ध्यान होगइ ॥ अरु मेरा भर्ता जो संग्राम करी थकाहे ॥ सो आयकें सोय रहाहे ॥ अरु में संभालती देखती मार्ग विषे आइहों परंतु मुझकों तुम दृष्ट कहुं न आये इहां कृपाकरी तुम दर्शन दीयाहे ॥ ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी ! इस प्रकार सुनकें देवी प्रबुद्धलीलाकों कहत भइ जो अब राजाकी जीवकलाकों छोडती भइहों ॥ एसें कहिकें जीवकलाकों छोड दीनी ॥ तब नासिकाके मार्गसों जीवकला प्रवेश कर गइ ॥ जेसें कमलकी अंतर वायु प्रवेश करिजावे ॥ अथवा शरीरमें वायु प्रवेश कर जावे ॥ तेसें शरीरमें जीवकला प्रवेश कर गइ ॥ केसी जीवकला हे जो वासना करीकें पूरन हे ॥ जेसें समुद्र जलकरीकें पूर्न होताहे ॥ तेसें पूर्यष्टक वासना करी पूर्ण हे ॥ एसी जीवकलानें शरीरविषे प्रवेश कीया तब शरीरकी कांति उज्वल होत भइ ॥ अंगोंविषे प्राण वायु पसरगया ॥ जेसें वसंतऋतुमें फूल वृछविषे रस पसरता हे ॥ तब सब इंद्रियां खिल आइयां जेंसे वसंतऋतुविषे फूल खिल आतेहे ॥ तेसें इद्रियां खिल आइ ॥ तब राजा फूलोंकी शज्जातें उठ खडा भया ॥ जेसें रोक्याहुवा विंध्याचल पर्वत उठआवे तेसें राजा उठा ॥ तब दोनों लीला राजाके सन्मुख आइखडीयां ॥ तब राजानें कह्या मेरे आगें तुम कोन खडे हो ॥ तब प्रबुद्ध लीलानें कहा हे स्वामी में तेरी पूर्व पट्टराणी लीला हों सदा तेरे संग रहिहों जेसें शब्द के संग अथ रहता हे ॥ तेसें में तेरे संग सदा रहीहों ॥ हे राजन् ! जब तुं इहां शरीर त्यागंक परलोकमें गयाथा तब मेरेविषे तेरा स्नेह बहुत था ॥ तिसकरि मेरा प्रतिबिंब इह लीला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुमकों भासीथी ॥ अब एह जो और कथाका वृत्तांत हे सो मैं तुझकों कहोंगी ॥ हे राजन् ! हमारें उपर इस देवीनें कृपा करीहे ॥ तुमारे शीसपर स्वर्णके सिंगासन पर वेठीहे ॥ इह सरस्वती सर्वकी जननीहे ॥ इसनें हमारे उपर बडी कृपा करी हे अरु परलोकतें तुजे ले आइहे ॥ हे रामजी ! एसें सुनकें राजा प्रसन्न हुआ अरु उठ खडा हूआ अरु सरस्वतीके चरनोंपर मस्तक नमाया अरु कहत भया ॥ ॥ राजोवाच ॥ हे सरस्वती ! तुमकों मेरा नमस्कार हे ॥ तूं सबकी हितकारी हे अरु तुजनें मेरेपर बडा अनुग्रह कीयाहे ॥ अब कृपा करी मुझकों इह वर देहु जो मेरी आयुर्बल बडी होवे अरु निःकंटक राजकरों॥ अरु लक्ष्मीभी बहुत होवे अरु रोग कष्टभी न होवे अरु में आत्मज्ञान करीकें संपन्नहोहुं अर्थ इह जो भोग अरु मोक्ष दोनो देहु ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जब इस प्रकार राजानें कहा तब देवीनें उसके शीसपर हाथ धरा अरु आशिर्वाद कहत भइ ॥ ॥ देवीउवाच ॥ हे राजन ! एसेंही होवेगा ॥ तेरी आयुर्बल बडी होवेगी अरु तेरा शत्रुभी कोउ न होवेगा निःकंटक राज तुं करेगा ॥ आपदा तुजकों न होवेगी अरु तुं लक्ष्मी संपदाकर संपन्न होवेगा ॥ अरु तेरी प्रजाभी बहुत सुखी रहेगी ॥ तुझकों देखकें प्रसन्न होवेगी ॥ अरु तेरी प्रजाविषे आपदा किसकों न होवेगी ॥ अरु तुं आत्मानंदकरीभी पूर्ण होवेगा ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे जीवजीवन वर्णनं नामएकचत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस प्रकार कहिकें देवी अंतर्ध्यान होगइ तब प्रातःकालका समय हुआ ॥ सब लोक जागिउठे ॥ सूर्यभी उदय हुआ सूर्यमुखी कमल खिल आये तेसें सब लोक खिल आए ॥ तब राजा दोनों लीलाकों कंठ लगावत भया कृपाकरकें प्रसन्न भया, अरु आश्चर्यमान भया ॥ तब तिस मंदिरविषे नगारे वाजणे लगे ॥ शब्दहोने लगे ॥ बहुरी बहुरी शब्द मंगल गावे अरु हुलास करे ॥ मंदिरविषे बडा हुलास आनंद आन बढा अंगना अनेक नृत्य करने लगी ॥ बडा उत्साह हुआ ॥ विद्याधर सिद्ध देवता फूलोंकी वर्षा करने लगे अरु लोक बडे आश्चर्यकों प्राप्तभये ॥ जो लीला परलोकतें आइहे ॥ अरु भर्ताकोंभी और आप जेसी लीलाकों ले आइहे ॥ हे रामजी इह कथा देशतें देशांतरकों चलीगइ ॥ लोक श्रवणकरकें आश्चर्यकों प्राप्त होवे ॥ जब इस प्रकार इह कथा प्रसिद्ध हुइ तब राजाभी श्रवन कीया ॥ जो में मरीकें फेर जीयाहों इस प्रकार विचारत भया ॥ जो फेर में अभिषेक लेहुं राजा एसें विचारता भया ॥ तब मंत्री अरु मंडलेश्वरनें उत्तर दक्षण पूर्व पश्चिम चारों उरतें समुद्रका जल मंगाया अरु सर्व तीर्थोंका जल मंगाया ॥ अरु राजाकों राजका अभिषेक कीया तब चारों समुद्रों पर्यंत राजा निःकंटक राज करत भया ॥ राजा अरु लीला पूर्वकी कथाकों विचारे अरु आश्चर्यमान होवे ॥ सरस्वतीके उपदेश अरु प्रसाद अरु अपने पुरुषार्थकों पायकें राजा अरु दोनों लीलानें एसें सहस्र वर्ष पर्यंत जीवन्मुक्त होइकें राज कीया ॥ केसें राज कीया जो मनसहित षट् इंद्रियोंकों वशकीया ॥ अरु यथालाभविषे संतुष्टरहे दृश्यभ्रम तिसका नष्ट होगया ॥ एसें जीवन्मुक्त होकें राज करते भये ॥ केसा सुंदर राजाहे जिसकी सुंदरताकी कणिका मानों चंद्रमाहे बहुरी केसा राजाहे जिसके तेजकी कणिका मानों सूर्यहे ॥ इस प्रकार राज करत भए सब प्रजाकों भलीप्रकार संतुष्ट करत भया ॥ सब प्रजा राजाकों देखिकें प्रसन्न होवे ॥ बुद्धिवान ब्राह्मण सभाकों प्रसन्न करणेहारा हुवा ॥ बहुरी विदेहमुक्तनिर्वाण पदकों दोनों लीला अरु तीसरा राजा प्राप्त हुवे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे लीलोपाख्याने निर्वाणवर्णनं नामद्विचत्वारिंशत्तमःसर्गः ॥ ४२ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इह दोनों कथा में तुझकों विस्तारकरी श्रवण कराइयांहे ॥ एक आकाशज ब्राह्मणकी, दुसरी लीलाकी सो दृश्य दोषके निवर्तन अर्थ कहियांहे ॥ हे रामजी ! दृश्यकी दृढता जो होरहिहे तिसकों त्यागकर अब तुं दोनों इतिहासोंकों संक्षेप मात्रते श्रवण कर ॥ इह जगत जो तुजकों भासता हे सो आभासरूप हे॥ आदितें कछु उपजा नहि ॥ जो वस्तु सत होतीहे तिसके निवारणविषे प्रयत्न होताहे ॥ अरु जो वस्तु असतहि होवे तिसके निवृत्त होणेविषे यत्न कछु नहि ॥ इसकारणतें ज्ञानवानकों सब आकाशरूप होजाता हे ॥ अरु आकाशकी नांइ स्थित होताहे ॥ हे रामजी ! आदि जो ब्रह्मसत्ताविषे आभास संवेदन फुर्याहे ॥ सो ब्रह्मारूप होइकरी स्थित भयाहे ॥ सो ब्रह्मा पृथ्वी आदिक भूतोतें रहितहे॥ जो आपहि आभासरूप होवे तीसकें उपजाये जगत केसें सत होवे ? हे रामजी ! ज्ञानवान पुरुष आकाशरूप हे ॥ जिसकों आत्मपदका साक्षात्कार हूआहे तिसकों दृश्यभ्रमका अभाव होजाताहे अरु जो अज्ञानीहे ॥ तिसकों जगत भ्रम स्पष्ट भासताहे ॥ शुद्ध चिदाकाशका एक अणु जीव हे ॥ तिस जीव अणुविषे इह जगत भासताहे ॥ तिस जगतकी सृष्टिमें तुजकों क्याकहों नीती क्या कहों वासना क्या कहों पदार्थ क्या कहों ॥ हे रामजी ! ओर जगत कछु उपजा नहि ॥ संवेदनके फुरणे करीकें जगत भासताहे ॥ शुद्ध संवितविषे संवेदनरूपी नदी चलीहे ॥ तिसविषे इह जगत पडा फुरताहे ॥ जब संवेदनकों यत्न करी रोकेगा ॥ तब दृश्य भ्रम नष्ट हो जावेगा॥ सो प्रयत्न करना इहि हे जो संवेदनकों अंतर्मुख करना ॥ जबलग आत्माकासाक्षात्कार होवे तबलग श्रवण मनन निदध्यासन करी दृढ अभ्यास करीयें ॥ जब साक्षात्कार हूवा तब दृश्य नष्ट हो जाते हे ॥ हे रामजी ! इह सर्व जगत जो तुजकों भासता हे ॥ सो हमकों अखंड ब्रह्मसत्ताहि भासतीहे ॥ जगत मायामय हे परंतु मायाभी कछु और वस्तु नहि ॥ ब्रह्मसत्ता अपने आपविषे स्थित हे॥ रामोवाच॥ बडा आश्चर्य हे बडा आश्चर्य हे॥ हे मुनीश्वर तुमनें मुझकों परम दशा कहिहे ॥ केसा तुमारा उपदेश हे जो दृश्यरूपी तृणोकों नाश कर्ता दावाग्नि हे ॥ अरु अध्यात्मक अधिभूतक अधिदैविक तापोकों शांत कर्ता चंद्रमा हे ॥ हे मुनीश्वर तुमारे उपदेश करि में ज्ञातज्ञेय भयाहों ॥ अरु पांच विकल्प में विचारेहें जो यह जगत मिथ्याहे स्वरूपतें अनिर्वचनीयहे १ आत्माविषे आभासहे २ इसका स्वभाव परिणामीहे ३ अज्ञान करी उपजाहे ४ अरु अनादि अज्ञान पर्यंत हे ५ एसें जानकें में शांतात्मा ज्ञानवानोंकी नांइ भयाहों अरु निर्वाण मुक्तकी नांइ भयाहों ॥ हे मुनीश्वर और शास्त्रोंतें इह तुमारा उपदेश आश्चर्य हे श्रवणरूपी पात्र तुमारे वचनरूपी अमृतकरी में तृप्त नहि होता ॥ तातें इह मेरा संशय दूर करो ॥ जो लीलाके भर्ताकों तीन सृष्टिका अनुभव केसें भया ? प्रथम वसिष्ठकी बहुरी पद्मकी बहुरी विदूरथकी ॥ तिनकेविषे कालका व्यतिक्रम देख्या ॥ जो कइं दिन हुवा कइं मास हुवा कइं वर्षोंका अनुभव भया ॥ सो कालका व्यतिक्रम केसें हूवा ॥ हे मुनीश्वर हलोहरके बटेरेविषे जल नही स्थित होता अरु कुंभविषे स्थित होताहे तातें स्पष्ट कर कहो जो तुमारे वचन मेरे रिदेविषे स्थित होवे ॥ एक वार कहणे करी रिदेविषे स्थित नहिहोता ॥ ताते बहुरी कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! शुद्ध संवित सभका अपना आपहे ॥ तिसविषे जेसा संवेदन फुरताहे तेसा तेसा रूप होइ भासताहे ॥ कइं क्षणविषे कल्पोंके समूह बीते भासतेहे ॥ कइं कल्पविषे क्षणका अनुभव होताहे ॥ हे रामजी ! जिसकों विषविषे अमृत भावना होतिहे ॥ तिसकों अमृत होइ भासता हे ॥ अरु जिसकों अमृतविषे विषकी भावना होतीहे तब उहि विषरूप होइ भासताहे ॥ किसी पुरुषका शत्रु होताहे अरु उसविषे मित्रकी भावना करताहे उह मित्ररूप होइ भासताहे अरु जिसकों मित्रविषे शत्रुभावना होतिहे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब उहि शत्रु होइ भासताहे ॥ हे रामजी ! जेसा संवेदन फुरताहे तेसा स्वरूप होइ भासताहे ॥ जिसका संवेदन तीव्र भाव अभ्यासकरीकें निर्मलभावकों प्राप्त होताहे ॥ तिसका संकल्प सत होताहे जेसें चेतताहे तेसाहि सिद्ध होताहे ॥ तातें संवेदनकी तीव्रता भइ ॥ हे रामजी ! जो कोउ पुरुष रोगी होताहे तिसकों एक रात्र कल्पके समान वितीत होतीहे ॥ अरु जो अ रोगी होताहे तिसकी रात्र एक क्षणकी नांइ वितीत होतिहे ॥ अरु एक मुहूर्तके सुपनेंविषे अनेक वर्षोंका अनुभव करताहे जानता हे जु में उपजा हों ॥ इह मेरे माता पिता हैं ॥ अब में बडा हूवाहों ॥ इह मेरे बांधव हे ॥ हे रामजी एक मुहूर्तविषे एते भ्रम देखताहे ॥ अरु जागेहूवे एक मुहूर्तभी नहि विती ॥ हरिचंदकों एक रात्रिविषे बार वर्षोंका अनुभव हुवा था ॥ राजा लवणकों एक क्षणविषे सौ बर्षका अनुभव हुवाथा॥ तातें जेसें जेसें रूप होइकरी संवेदन फुरताहे ॥ तेसें तेसें होइकरी भासताहे॥ हे रामजी ब्रह्माके एक मुहूर्तविषे मनुष्यकी आयु बर्ला वितीत होजातीहे ॥ सो ब्रह्मा एक मुहूर्तका अनुभव करताहे ॥ मनुष्य पूर्ण आयुर्बलका अनुभव करताहे ॥ अरु जो ब्रह्मा अपनी संपूर्ण आयुर्बलका अनुभव करता हे सो वि ष्णुका एक दिन होताहे ॥ ब्रह्माका आयुर्बलवितीत होताहें ॥ अरु विष्णुको एक दिनका अनुभव होताहे तातें जेसें जेसें संवेदनविषे दृढता होतिहे तेसा तेसा भान होताहे॥ हे रामजी ! जेता कछु जगत तूं देखता हे सो संवेदन फुरणेंविषे स्थितहे ॥ जब संवेदन स्थित होताहे ॥ तब न दिन भासताहे न रात्र भासतिहे न कोउ पदार्थ भासतेहे ॥ न अपना शरीर भासताहे॥ सो केवल आत्मतत्व मात्र सत्ता रहति हे ॥ तातें तूं देख जो सभ जगत मनके फुरणेविषे होताहे ॥ जेसें जेसें फुरता हे ॥ तेसा तेसा रूप हो भासताहे ॥ कटुकविषे जिसकों मधुरकी भावना होतीहे तब कटुक तिसकों मधुर होजाताहे अरु मधुर विषे जिसकों कटुक भावना होतिहे ॥ तब मधुरभी तिसकों कटुक रूप होइ जाताहे ॥ अरु सुपनेविषे शून्य स्थानमें ना ना प्रकारके व्यवहार होते भासतेहे ॥ अरु अस्थिरही होताहे ॥ सुपनेविषे दोडता फिरताहे ॥ तातें जेसा फुरणा मनविषे होताहे तेसाहि हो भासताहें ॥ हे रामजी ! जो कोउ पुरुष नौका विषे बेठा होताहे तिसकों नदीके तट वृक्षोंसहित दोडते भासतेहें ॥ सो स्थिर पदार्थ चलते भासतेहे ॥ जो विचारवान हे ॥ सो चलते भासनेविषे थिर जानतेहे ॥अरु जो पुरुष भ्रमताहे ॥ तिसकों स्थिर भूत मंदिर भ्रमते भासतेहे ॥ अरु जो विचारविषे दृढ हे ॥ तिसकों भ्रमते भासणेविषेभी अचल बुद्धि होतिहे ॥ तातें जेसा जेसा निश्चय होताहे तेसा तेसा होइ भासताहे ॥ हे रामजी ! स्वेतः पदार्थ होताहे अरु किसके नेत्रविषे दूषण होताहे तिसकों पीतवर्ण भासताहे अरु जिसके शरीरविषे वात पित्त कफका क्षोभ होताहे ॥ तब इसकों सर्व पदार्थ विपर्यय भासतेहे ॥ पृथ्वी आकाशरूप पडी भासतीहे अरु आकाश पृथ्वीरूप हो भासतेहे ॥ अरु चल पदार्थ अचल रूप भासताहे अचल पदार्थ चलता भासताहे ॥ हे रामजी सुपनेविषे अंगना असतरूप होतिहे परंतु भांतिकरिकें उसकों स्पर्श करतीहे अरु प्रसन्न होताहे तिस कालविषे प्रत्यक्ष भासतिहे अरु जेसें बालककों पछावेविषे वैताल भासताहे॥ सो असतहि सतरूप होइ भासताहे अर्थ यह जो भयकों देताहे॥ हे रामजी ! शत्रु होताहे अरु जो इसविषे मित्रभावना होतिहे ॥ तब उह शत्रुभी मित्र सुहृद होइ भासताहे अरु जो उसविषे शत्रुभाव हो तीहे ॥ तब उह सुहृद शत्रुरूप होइ भासताहे ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प हे नहि परंतु भ्रमकरिकें सर्प भासता हे अरु भयकों देताहे अरु बांधव में जो उसविषे बांधवकी भावना नकरे तब बांधवभी अबांधव हो भासताहे ॥ अरु अबांधवभी सो भावनाके अभावतें बांधव हो जाताहे ॥ हे रामजी ! शून्य स्थानमें सुपनेविषे बडे क्षोभ भासतेहे ॥ और नि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कटवर्त्ती जागेतें निकटकों कछु नहि भासता सुपनेवालेकों सुपनेका अनुभव होताहे अरु जाग्रतवालेकों जाग्रतका अनुभव होताहे ॥ इत्यादिक पदार्थ विपर्यय होइ भासतेहे सो भ
म करि भासतेहैं ॥ जब मन फुरताहे तबहि भासताहे ॥ तेसें लीलाके भर्ताकोंभी एसी सृष्टिका अनुभव हुआ ॥ जेसें जाग्रतकी मूर्त्तिका सुपनमें बहुत कालका अनुभव होताहें तेसें ली
लाके भर्ताकोंभी हुवाथा ॥ जेसा जेसा मनका फुरना होताहे तेसा तेसा रूप चैतन संवितविषे भासताहे ॥ अरु मुझकों सदा ब्रह्मका निश्चयहे ॥ तातें सब जगत हमकों ब्रह्मस्वरूप भा
सताहे जिसकों जगत भ्रम दृढ हे ॥ तिसकों जगतहि भासता हे ॥ हे रामजी ! जेता कछु जगत भासता हे ॥ सो आदितें कछु उपजा नहि ॥ सब आकाशरूप हे ॥ रोकणेवाली भीत को
उ नहि बडे विस्तारकरि जगत हे परंतु सुपनवत् हे जेसें थंभेविषे कोरेबिना पुतली शिल्पीके मनविषें भासतीहे थंभेविषे कछु बनी नहि ॥ तेसें आत्मारूपी थंभा हे तिसविषे संवेदन जग
तरूपी पुतलीयांकों रचता हे ॥ परंतु पदार्थ कछु हुआ नहि ॥ आत्मसत्ता ज्युंकी त्युंहे ॥ हे रामजी ! जेसें एक स्थानविषे दो पुरुष सोए होवे ॥ तिसविषे एक जाग्रत होवे दूसरा सुपनवि
षे होवे जो सुपनविषेहे तिसकों बडे जुध होते पडे भासतेहे अरु जाग्रतकों आकाशरूप हे तेसें जो प्रबोध आत्मज्ञानवान हे तिनकों जगतका सुषुप्तिकी नांइं अभाव हे ॥ अरु जो अज्ञानी
हे ॥ तिसकों नाना प्रकार व्यवहारों सहित जगत स्पष्ट भासताहे ॥ जेसें वसंतऋतुविषे पत्र फुल गुछे रससहित भासतेहे ॥ तेसें आत्मसत्ता चैत्यताकरीकें जगतरूप भासतीहे ॥ जेसें स्वर्णविषे
द्रवता सदा रहतिहे ॥ परंतु जब अग्निका संजोग होताहे तब उस विषे द्रवता भासतीहे ॥ हे रामजी ! आत्मा अरु जगतविषे कछु भेद नहि ॥ जेसें अवयवी अरु अवयवोंविषे कछू भेद न
हि ॥ जेसें पृथ्वी अरु गंधविषे भेद कछु नहि तेसें आत्मा अरु जगत विषे कछु भेद नहि ॥ ब्रह्मसत्ताही संवेदनकरीकें जगतरूप होइ भासतीहे और कछु दूसरी वस्तु नहि ॥ जब महाप्रलय
होताहे अरु सर्ग नहि होता ॥ तब कार्य कारणकी कल्पना कोउ नहि होति ॥ केवल चिन्मात्र सत्ता होतिहे ॥ तिसतें जु चिदाकाश बहुरी जगत भासता हे ॥ तो उहि रूप हुआ अरु जो तुं
कहे इस जगतका कारण स्मृती होतिहे तो सुण ॥ हे रामजी ! जब महाप्रलय होताहे तब ब्रह्माजी तो विदेहमुक्त होताहे बहुरी उह जगतका कारण केंसें होवे ? अरु जो तुं स्मृतिका कार
ण माने ॥ तो स्मृतिभी अनुभवविषे होतीहे जो स्मृतितें जगत हुवा तोभी अनुभवरूप हुआ ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् पद्मराजाके मंत्री टहलुए सब लोक विदुरथकों जाय प्राप्त
हूवे ॥ सो केसें हूवे इह वार्ता बहूरी कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! केवल चैतन संवित सबका अपना आपहे ॥ जेसें तिस संवितके आश्रयतें संवेदन फुरताहे ॥ तेसा तेसा रूप
होइ भासताहे ॥ हे रामजी ! जब राजा विदूरथ मृतक होनें लगा ॥ तब राजाको वासना उनविषे बहतिथी ॥ अरु मंत्री टेलुवे आदिक राजाके अंगहे इस कारणतें तेसेंहि मंत्री टेलवे
राजाकों प्राप्त भये ॥ जेसें मणिकी किरणां मणिके अंगहे ॥ तेसें मंत्री टेलवे आदिक सामग्री राजाके अंग हे ॥ जेसें सुपनेविषे कोउ आपकों देखे जो में इस कूलविषे उपजा हों ॥ इह
मेरा कुल आचार हे ॥ मे राजाहों इह मेरे मंत्रीहे टेलुए हे और अनेक पदार्थहे तेसेंहि मृतक हुवा राजा विदूरथ देखत भया हे ॥ हे रामजी ! जेसी जेसी भावना संवेदनविषे दृढ होतिहे ॥
तेसा रूप होइ भासताहे ॥ एक चल पदार्थ होतेहे एक अचल पदार्थ होतेहे ॥ जो अचल पदार्थ होताहे ॥ तिसका प्रतिबिंब आदर्शविषे भासताहे अरु चल पदार्थ रहता नहि भासता
तातें उनका प्रतिबिंब नहि भासता ॥ तेसें जिस पदार्थकी तीव्र संवेग भावना होतीहे ॥ तिसका प्रतिबिंब चैतन दर्पणविषे भासताहे ॥ अन्यथा नहि भासता ॥ जेसें तीव्र वेगवान वडा नद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होताहे सो समुद्रकों शीघ्रही जाय प्राप्त होताहे ॥ और नहि प्राप्त होइ सकते तेसें जिसकी दृढ वासना होतिहे तिसके अनुसार शीघ्र जाय पावताहे ॥ हे रामजी ! अनेक वासना जिस के रिदेविषे होतिहे ॥ अरु जिसकी तीव्रता होतहे तिसका जय होतीहे ॥ जेसें समुद्रविषे अनेक तरंग होतेहे कोउ उपजता हे केइ नष्ट होजातेहें केइ सदृश होतेहें ॥ केइ विपर्यय हो तेहें ॥ तेसें उसकों सदृश मंत्री टेलवे हुए ॥ हे रामजी ! तेसें अनेक सृष्टि एक एक चिदअणुविषे स्थित होतहे वास्तवतें कछु नहि ॥ चिदाकाशही चिदाकाशविषे स्थितहे ॥ अरु इह जो जगत भासताहे सो आकाशहिरूपहे जो जाग्रतरूप होइकरी असतहि सतरूपकी नांइ भासताहे जेसें पत्र फूल फल सब वृक्षरूपहे वृक्षही एसेरूप होइ करि स्थितहे ॥ तेसें अनंत शक्ति परमात्मा अनेकरूप होइकरी भासताहे ॥ हे रामजी ! द्रष्टा दर्शन दृश्य जो त्रिपुटी भासती हे सो ज्ञानीकों अजन्मा पद भासतीहे अरू अज्ञानिकों द्वैतरूप जगत होइकरी भासता हे ॥ कडुं शून्य भासताहे कडुं तम भासताहे कडुं प्रकाश भासताहे अरु देश काल क्रिया द्रव्य आदिक सब जगतहे सो सब आदि अंत मध्यतें रहित स्वछ आत्मसत्ता अपने आपविषे स्थित हे ॥ जेसें सोमजलतें तरंगभी होतेहें सो जलहिरूपहे ॥ तेसें अहं त्वं आदिक जगतभी बोधरूप हे सदा अपने आपविषे स्थितहे ॥ तिसविषे द्वैत कलनाका अभावहे ॥

॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे लीलोपाख्याने प्रयोजन वर्णनं नाम त्रिचत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ ४३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! अहं त्वं आदिक जो दृश्यभ्रांति हे सो कारणविना परमात्मातें केसें उदेहुंइहे ॥ जिस प्रकार में समुझों तिसी प्रकार मुझकों बहुरी समुझाओ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जेते कछु कारण कार्यजगत भासताहे तिसका उदय होना आदि परमात्मातें सबहि हुवाहे ॥ अर्थ यह जो संवेदनके फुरणेकरी एकठेहि पदार्थ भा सि आयेहें ॥ अरु सर्वदा सर्व प्रकार सर्वात्मा अजरूप अपने आपविषे स्थित हे ॥ हे रामजी ! इह सर्व शब्द अरु अर्थरूप कलना भासीहे सो ब्रह्मरूप हे ब्रह्मतें इतर कछु नहि ॥ अरु ब्रह्मसत्ता सर्व शब्द अर्थकी कलनातें रहित अपने आपविषे स्थित हे ॥ जेसें सुवर्णतें इतर भूषन नही अरु जलतें इतर तरंग नहि तेसें ब्रह्मतें इतर जगत नहि ब्रह्मस्वरूप हे ॥ हे रामजी ! ईश्वर जो आत्मा हे सो जगतरूप हे जगत ईश्वररूपहे ॥ जेसें स्वर्न भूषनरूपहे भूषन स्वर्न हे ॥ अर्थ यह जो स्वर्नविषे भूषन शब्द अरु अर्थकल्पित हे ॥ वास्तव नही ॥ तेसें जगत आ त्माका आभासरूप हे वास्तवतें कछु नहि ॥ हे रामजी ! जेता कछु जगत हे सो ब्रह्मरूप हे ब्रह्मतें इतर कछु नहि जेसें अवयवीतें भिन्न अवयव नही होता तेसें आत्मातें अवयवी जेता कछु जगत हे सो भिन्न नहि ॥ आत्माविषे संवेदनके फुरनेकरी तन्मात्रा फुरीहे ॥ आत्माविषे इनका उपजना सम हुआहे ॥ पाछें विभाग कल्पना हुइ हे जो तिनतें भूत हुएहें इत्यादि क जगतरूप केसाहे सो आत्मातें अन्य नहि ॥ जेसें शिलाविषे चितेरा भिन्न भिन्न पूतलीकों कल्पताहे सो शिलारूपहि हें इतर कछु नहि तेसे अहं त्वं आदिक जगत चिद्घन आत्माविषे मनरूपी चितारेने कल्पीहे ॥ सो चिद्घनरूपहि हे इतर कछु नहि ॥ जेसें जलविषे तरंग स्थित होतेहें सो जलरूपहि हे ॥ तरंगोका शब्द अरु अर्थ जलविषे कोउ नही तेसें आत्माविषे जगत स्थित हे अरु आत्मा जगतके शब्द अरु अर्थतें रहित हे ॥ हे रामजी ! जगत परम पदतें भिन्न नहि अरु परमपद जगत विना नहि ॥ केवल चिद्रूप अपने आपविषे स्थित हे ॥ अरु जेसें वायु अरु स्पंदविषे भेद कछु नहि ॥ स्पंद अरु निस्पंद दोनोंरूप वायुके हे अरु जब स्पंदरूप होताहे तब स्पर्शरूप होइ करी भासताहे अरु निस्पंद हूवे स्पर्श नहि भासता ॥ तेसें ज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गत अरु ब्रह्मविषे भेद कछु नहि ॥ अरु जब संवेदन किंचितरूप होताहे तब जगतरूप होइ भासताहे ॥ अरु संवेदनके निस्पंद हुवेतें जगत नहि भासता ॥ अरु आत्मसत्ता सदा एकरू
प हे ॥ हे रामजी! जब संवेदन फुरणेतें रहित होकरी आत्मपदविषे स्थित होवे ॥ तब संकल्परूपजगत बहुरी भासे सोभी आत्मरूप भासे जेसें वायुकों स्पंद निस्पंद दोनों रूप अपनाआ
प भासताहे ॥ तेसें इसकों भासता हे ॥जेसें वायुविषे स्पंदता वायुरूप स्थितहे ॥ तेसें आत्माविषे जगत आत्मरूप करी स्थित हे ॥ जेसें तेज अणुका प्रकाश मंदिरविषे होताहें तब बा
हिरभी प्रकाश प्रगट होताहे तेसें जब केवल संवितमात्रविषे संवेदन स्थित होताहे तब फुरणेविषेभी संवितमात्रहि भासताहे ॥ हे रामजी ! जेसें रस तन्मात्राविषे जल स्थित होताहे तेसें
आत्माविषे जगत स्थित हे ॥ जेसें गंध तन्मात्राके अंतर संपूर्ण पृथ्वी स्थित हे ॥ तेसें किंचनरूप जगत आत्माविषे स्थित हे सो आत्मसत्ता निराकार चिन्मात्ररूप हे ॥ उदय अरु अ
स्तें रहित अपने आपविषे स्थित हे ॥ प्रपंच भ्रम तिसविषे कोउ नहि ॥ हे रामजी ! जो ज्ञानवान पुरुष हे तिनकों दृढीभूत जगतभी आकाशरूप भासताहे अरु जो अज्ञानी हे ॥
तिनकों असतरूप जगतभी सतरूप होइ भासता हे ॥ हे रामजी ! जेसाजेसा संवेदन चित्त संवितविषे फुरता हे तेसातेसा रूप जगत होइ भासताहे ॥ इह जेते तत्वहे अरु तन्मात्रा हे सो सब
चित्त संवेदनके फुरणेकरी स्थित हुएहें ॥ जेसा जेसा तिसविषे फुरणा होताहे ॥ सोइ होकरी भासताहे ॥ काहेतें जो आत्मा सर्वशक्तिवान हे जिसजिस पदार्थका फुरणा फुरताहे सोइ अनुभ
वविषे सतरूपहो करि भासताहे ॥ अरु जो कछु पंचज्ञानेंद्रिय छठा मनका विषय होताहे सो सब असतरूप हे ॥ अरु आत्मसत्ता इनतें अतीत हे अरु विश्वभी क्या रूपहे ॥जेसें समुद्रवि
षे तरंग होतेहें तेसें आत्माविषे जगत स्थितहे ॥ जेसें तेज अरु प्रकाश अनन्यरूप हे ॥ तेसें आत्मा अरु जगत अनन्यरूप हे ॥ जेसें थंभेविषे शिल्पी पूतलीयां देखता हे जेसें मृत्तिकाके पिंडविषे कु
लाल बर्त्तन देखताहे जेंसें भीत उपर चितेरा मूरत रंग लिखताहे ॥ सो अनन्यरूप हे तेसें परमात्माविषे सृष्टि अनन्यरूप हे ॥ हे रामजी जेसें मरुथलविषे मृग तृष्णाका जल अरु तरंग
असतहि सतरूप हो भासताहे तेंसें आत्माविषे असतरूप जगत त्रिलोकी भासतीहे जब चित्त संवितिविषे संवेदन फुरता हे तब जगत भासताहे॥ अरू जब संवेदन नहि फुरता तब जगतभी
नहि भासता अरु जगत कछु ब्रह्मतें भिन नहि ॥ जेसें बीज अरु वृछविषे कछु भेद नहि जेसें क्षीर अरु मधुरताविषे भेद नहि ॥ जेसें मिरच अरु तीक्ष्णता विषे कछु भेद नहि ॥ जेसें समु
द्र अरु तरंगविषे कछु भेद नहि ॥ जेसें वायु अरु स्पंदविषे कछु भेद नही ॥ तेसें आत्मा अरु जगतविषे कछु भेद नहि ॥ जेसें अग्निविषे उष्णता स्वभाविक स्थित हे तेसें निराकार आत्मा
विषे सृष्टि स्वाभाविक हे स्थित हे ॥ हे रामजी ! इह जगत ब्रह्मरूपी रत्नका किंचन हे ॥ जेसा जेसा किंचन होताहे तेसा तेसा होइकरि भासताहे ॥ जो किंचनरूप हे अकारण हुएं जो
पदार्थ अकारण होताहे अरु जिस अधिष्ठानविषे भासताहे ॥ तिससों अनन्यरूप होताहे ॥ अधिष्ठानते भिन उसकी सत्ता नहि होती ॥ तेसें इह जगत आत्माविषे अनन्यरूप होताहे ॥
कछु उपजा नहि परंतु संवेदन फुरणे करि भासताहे ॥ जेता जगत हे अरु वासना हे तिनका बीज संवेदन हे इसकरी जगत भ्रम हे ॥ तातें संवेदनके अभावका पुरुषार्थ करो जब संवे
दनका अभाव होवेगा तब जगत भ्रम नष्ट होजावेगा ॥ अरु वास्तवतें कछु न उपजाहे न कछु नष्ट होताहे सर्वशांतरूप चिदघन ब्रह्मशिला घनकी नांइं अपने आपविषे स्थित हे॥ हे रा
मजी ! चित्तपरमाणुविषे चैत्यताकरीकें अनेक सृष्टि भासतीहे॥ तिनों सृष्टि विषे जो परमाणु हे तिनों परमाणु विषे अंतर और सृष्टि स्थित हे तिनकी संख्या कछु नहि॥ जेसें जलविषे

92

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तरंग अनेक होतेहे केइ गुप्तरूप होतेहे ॥ केइ प्रगट होतेहे सोजलकी शक्तिरूप हे ॥ जेसें जाग्रत सुपन सुषुप्ति अवस्था जीवोंके अंतर स्थित हे ॥ केइ गुप्त हे केइ प्रगटरूप हे ॥ हे रामजी ! जब लग इसका संवेदन द्वैतसाथ मिला हुआ हे तबलग सृष्टिका अंत न हे ॥ जब चित उपशम होवेगा तब जगत भ्रम मिटी जावेगा ॥ जब कछुभी भोगोविषे वृत्ति न उपजे तब जानियें जो आत्मपद प्राप्त होवेगा ॥ इह श्रुतिका निश्चय हे ॥ हे रामजी ! ज्युं ज्युं इसका ममत्व दूर होताहे ॥ त्युं त्युं बंधनोंतें मुक्त होताहे ॥ जब अहंभाव जु हे जीवत्वभाव तिस का निर्बाण होताहे ॥ तब जन्मोंकी जो परंपरा संपदा हे सोभी नष्ट हो जातीहे ॥ केवल शुद्धरूपहि होताहे तब तिन पुरुषोंकों स्थावर जंगमरूप जगत सब आत्मरूप होताहे ॥ जेसें समुद्रकों तरंग बुदबुद सब अपना आपरूप भासताहे तेसें ज्ञानवानकों सब जगत आत्मरूप भासताहे ॥ हे रामजी ! शुद्ध आत्मसत्ताविषे जो संवेदन फुर्याहे सो आपकों ब्रह्मारूप जानत भयाहे ॥ तिस ब्रह्मानें आगें भावना करिकें संकल्परूप नाना प्रकारका जगत रचा हे तिसकों असत्यरूप अंतर अनुभव करता भयाहे ॥ तिसविषे कछु निमेष अनेक जुगोका अंत भासताहे ॥ कछु अनेक जुगोविषे निमिषका अनुभव होताहे ॥ ॥ इतिश्री योगवसिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे जगत किंचन वर्णनं नाम चतुश्चत्वारिंशत्तमःसर्गः ॥ ४४ ॥ ॥७॥

॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी ! चिद परमाणुविषे जो निमेष होताहे तिसके लाख भागविषे जगतोंके अनेक कल्प फुरतेहे ॥ तिन सृष्टिविषे जो परमाणु हे तिनोविषे सृष्टि फुरतीयाहे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग फुरतेहे सो जलरूप हें ॥ तरंग शब्द अरु तिसका अर्थ भ्रमरूप हे ॥ तेसेंहि आत्माविषे भ्रमरूप अनेक सृष्टि फुरतियाहे ॥ जेसें मरुथलविषे मृगतृष्णाकी नदी चलती दृष्ट आतिहे तेसें आत्माविषे इह जगत भासताहे ॥ जेसें सुपन सृष्टि भासतीहे जेसें गंधर्व नगर भासताहे जेसें कथाके अर्थ चितविषे आय फुरताहे जेसें संकल्पपुर भासताहे ॥ तेसें जगत असतरूप सत हो भासताहे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे ज्ञानवानोंविषे श्रेष्ठ जिस पुरुषकों विचार द्वारा सम्यक् ज्ञान हूवा अरू निर्विकल्प आत्मपदकी प्राप्ति भइहे ॥ तिसकों देह अपने साथ केसें भासताहे ? अरु देह उसकी केसें रहतिहे ? अरु देह प्रारब्धकरीकें उसका शरीर केसें रहता हे ? ॥ ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी ! आदि जो ब्रह्म शक्तिविषे संवेदन फुर्या हे ॥ तिसका नाम नीति हूआहे ॥ तिसविषे जो संभावना धारीहे जो इह पदार्थ एसें होवेगा अरु इसकरी होवेगा एताकाल रहेगा सो अनेक कल्पपर्यंत एसेंही होताहे ॥ जेताकाल उसने धारा हे तेताकालका नाम नीति हे ॥ महा सतभी तिसकों कहते हे महा चेतनांभि तिसकों कहतें हें ॥ महाशक्तिभी तिसकों कहते हें ॥ महा अदृष्ट महाकृपाभि तिसकों कहते हें महा उद्भवभी तिसकों कहते हें ॥ अर्थ इह जो अनंत ब्रह्मांडोको उपजानेहारी हें ॥ जेसा फुरणा दृढ हुआहे तेसा रूप होइकरी स्थित हे ॥ जो इह स्थावररूप हे इह जंगम रुप हे इह दैत हे; इह देवता हे, इह नाग हे, इह नागनी हे, ब्रह्मातें आदि तृण पर्यंत जेसें तिसविषे अध्यासहे तेसेंहि तिस प्रकार स्थित हे ॥ सरूपतें ब्रह्मसत्ताका व्यभिचार कदाचित नहि हुवा सदा अपने आपविषे स्थित हे ॥ जो ज्ञानवान पुरुषहे तिनकों सब ब्रह्मसरूप भासताहे ॥ अरु जो अज्ञानी हे तिनकों जगत अरु नीतिभी भिन्न भासतीहे ॥ ज्ञानवानकों सभ अचल ब्रह्मसत्ताहि भासतीहे ॥ अज्ञानीकों चलनरूप जगत भासताहे ॥ सो जगत केसा हे जेसें आकाशविषे वृक्ष भासताहे ॥ जेसें शिलाके उदरविषे मूर्त्ती होतीहे सो शिलारूपहि होतिहे ॥ तेसें इह जगत ब्रह्मविषे हे ॥ जो ज्ञानवान हें तिनकों सर्ग अरु निमित्त सब ज्ञानरूपही भासताहे ॥ जेसें अवयवोके अवयव अपना रूप होताहे तेसें ब्रह्मसत्ताके अवयव ब्रह्म नित्य सर्गादि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क अपना रूप हे ॥ हे रामजी ! तिस नीतिकों दैव कहतेहैं ॥ जो कछु किसीकों प्राप्त होताहे ॥ सो तिस दैवकी आज्ञाकरीकें प्राप्त होताहे ॥ काहेतें जो आदि यहि निश्चय धरा हे जो इस साधनकरी इह फल इसकों प्राप्त होवेगा ॥ जेसा साधन होवे तेसा फल अवश्य सर्वकों दैवतें प्राप्त होताहे इस कारणतें नीतिकों दैव कहते हैं दैवकों नीति कहतेहैं ॥ हे रामजी ! इह पुरुष जो कछु पुरुषार्थ करताहे तिसके अनुसार फलकों प्राप्त होताहे ॥ इस कारणतें इसका नाम नीति हे ॥ तिसहिका नाम पुरुषार्थ हे ॥ तुम जो मुजकों देव अरु पुरुषोंका निर्ण य पुछा अरु में कहा तिसकी तुम पालना करो॥ इसका नाम पुरुषार्थ हे॥ तिसका जो फल तुमकों प्राप्त हुवा तिसका नाम दैव हे॥ हे रामजी ! जो पुरुष एसें दैवपरायण हुवा॥ जो मु जकों देव भोजन करावेगा सो करोंगा अरु मौन धारीकें अक्रिय होइ बेठे तिसकों जो आइ प्राप्त होवे सोभी नीति हे अरु जो पुरुष भोगोंके निमित्त पुरुषार्थ करताहे सो भोगोकों भोगे गा अरु अनेक शरीरोकों मोक्षपर्यंत धारेगा इहभी नीतिहे ॥ हे रामजी ! जो आदि संवितविषे संवेदन फुरीकरी भवितव्यता धरीहे ॥तिसहि प्रकार स्थितहे ॥ तिसका नामभी नीतिहे तिस नीतिके उलंघनकों ब्रह्मा विष्णु रुद्रादिकभी समर्थ नही ॥ सब तिनके अनुसार स्थितहे तो ओर केसें उलंघ सके ? हे रामजी ! जो पुरुष पुरुषार्थकों त्याग बेठेहे तिनकों फल नहि प्राप्त होता इहभी नीति हे ॥ अरु जो पुरुष फलके निमित्त पुरुषार्थ करता हे॥तिसकों फल प्राप्त होताहे इहभी नीति हे अरु जो प्रयत्नकों त्यागकरी निक्रिय होइ बेठेहें अरु मनकरी विषयोंकी चित्तमें वासना करतेहें सो निष्फलहि रहतेहें॥ अरु जो पुरुष और कर्तव्यकों त्यागकरी चित्तकी वृत्तिते शून्य देव परायण हो रहेहें॥विषयोंकी चित्तवासना नहि करते तिनकों सफलताहि होती हे काहेतें जो फूरणेतें रहित होनाभी पुरुषार्थ हे॥ इह नीति हे जो अर्थ चितवणेवालेकोंभी नहि प्राप्त होता अरु अयाचककों प्राप्त होताहे॥ हे रामजी ! पुरुषार्थ सफ लभी सोइ हे जो आत्मबोधके निमित्त होवे ॥ जब ब्रह्मसत्ताकी ओर तीव्र अभ्यास होताहे तब परमपदकी अवश्य प्राप्ति होतीहे ॥जब परमपद पाया तब सब जगत चिदाकाशरूप हो इ भासताहे ॥ नीति आदिक जो विस्तार कहाहे सो सर्व भमरूप हे ॥ ब्रह्मसत्ताहि एसें होइ भासती हे जेसें पृथ्वीविषे रस सत्ताहि तृणवेली गुछे फूलरूप होइकरी स्थित हे ॥ तेसें नीति आदिक सब जगत होइकरि ब्रह्महि स्थितहे ओर वस्तु कछु नहि ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे दैवशब्दार्थविचारो नाम पंचचत्वारिंशत्तमःसर्गः ॥ ४५ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जो कछु तुजकों भासताहे ॥ सो सर्व प्रकार सर्वदा काल सर्व ओरतें ब्रह्मतत्व सर्व ओरकरि सर्वात्मा होइ करि स्थित भयाहे ॥ सो अनंत आत्माहे जब तिसविषे चित्तशक्ति प्रगट होतिहे ॥ अर्थ इह जो शुद्ध चैतनमात्रविषे अहंफुरणा होताहे तब आगें जगत भासताहे ॥ कहुं उपजता भासताहे कहुं नष्ट होता भासता हे ॥ कहुं हुलास भासताहे कहुं चित्त भास ताहे ॥ कहुं न किंचन भासता हे ॥ कहुं प्रगट कहुं अप्रगट भासताहे ॥ नाना प्रकारका जगत हे ॥ जहां जेसा तीव्र अभ्यास होताहे तहां तेसा होइकरी भासताहे ॥ काहेतें जो आ त्मा सर्वशक्ति सर्वरूप हे ॥ जेसा जेसा फुरणा तिसविषे दृढ होताहे सोइ रूप होइकरी भासताहे॥ हे रामजी ! इह जो नाना प्रकारकी शक्तियां कहि हे सो वास्तव आत्मातें इतर कछु नहि ॥ बुधिवानोंनें समूझावनेके निमित्त नाना प्रकारकी विकल्प जाल कहीहे ॥ आत्माविषे विकल्प जाल कोउ नहि ॥ जेसें जल तरंगविषे कछु भेद नहि जेसें सुवर्ण भूषनोविषे भेद कछु नहि ॥ जेसें अवयवी अरु अवयव विषे भेद कछु नहि॥ तेसें आत्मा अरु शक्तिविषे भेद नहि ॥ हे रामजी एक संवित हे एक संवेदन हे ॥ संवित जोहे सो वास्तव हे अरु संवेदन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कल्पना हे ॥ जब संवितविषे चिन्मात्र संवेदन फुरताहे ॥ तब उह जेसें चेतता जाताहे ॥ तेसें आगें होइकरि स्थित होताहे शुद्ध चिन्मात्र संवितविषे अंतर अरु बाहिर कल्पना कोउ न
हि ॥ जब स्वभावते किंचनरूप संवेदन होताहे ॥ तब आगें कछु देखत हे ॥ तिस देखणे करी नानाप्रकारके आकार भासते हे ॥ सो और तो कछु नहि सर्व ब्रह्महिहे ॥ हे रामजी ! श
क्ति अरु शक्तिमानविषे भेद अज्ञानी देखतेहें अरु अवयवी अवयव भेदभी कल्पतेहें परमार्थतें भेद कछु नहि ॥ केवल ब्रह्मसत्ता अपने आपविषे स्थितहे ॥ तिसके आश्रय संकल्पजा
ल आभास होतीहे ॥ जिस संकल्पकी तीव्रता होतहे सो सत होवे अथवा असत होवे परंतु तिसहिका भान होताहे॥ इतिश्रीयो०उ०प्र०बीजावतारोनामषट्चत्वारिंशत्तमःसर्गः॥४६॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हें रामजी ! इह जो सर्वगत देव परमात्मा महेश्वर हे सो स्वछ अनुभव परमानंदरूप हे॥ आदि अंततें रहितहे तिस शुद्ध चिन्मात्र परमानंदतें प्रथम जीव उपजा नहि॥
तिसतें चित्तउपजा चित्ततें आगें जगत उपजाहे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! अनुभव परिणामकरिकें जो शुद्ध ब्रह्मतत्व सर्वव्यापी द्वैततें रहित स्थित हे ॥ तिसविषे तुच्छरूप जी
व केसें सत्यताकों पावत भयाहे ? ॥ ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी ! ब्रह्म सदाभास हे ॥ अर्थ यह जो असतरूप जगत जिसकरि सत भासताहे अरु स्वछ हे अर्थ यह जो आभासरूपी
जगततेंभी रहित हे ॥ अरु वृहत् अर्थ यह जो बडा हे ॥ सो बडाभी दो प्रकारकाहे ॥ अविद्या कृत जगत करी जो बडाहे सो अविद्याकी बडाइ हे मिथ्या हे ॥ अरु ब्रह्म बडाइ हे सो
सर्वात्मकरूप हे सो सर्व देश सर्वकाल सर्व वस्तुसों पूर्णहे॥ अरु अविद्या कृत देशकाल वस्तुतें रहित निराकार हे सो ज्ञानीका विषय हे तातें वृहत्हे॥ अरु परम चैतनहे अरु भैरव हे॥ अ
रथ यह जो जिसके भयकरी चंद्रमा अरु सूर्य अग्नि वायु जल अपनी मरजादमें चलतेहे॥ परमानंद अविनाशीहे॥ सर्व ओरतें पूर्णसम हे॥ शुद्ध हे, अचिंत्यहे अर्थ यह जो बानी कर कह्या
नहि जाता एसा परम शांत पद हे क्षोभतें रहित चिन्मात्र हे ॥ एसी जो आत्मसत्ता ब्रह्म हे तिसका जो सुभाव संपत हे तिसका नाम जीव हे॥ अर्थ यह जो शुद्ध चिन्मात्रविषे अहं एसें
जो फुरणा हे तिसका नाम जीवहे ॥ तिस अनुभवरूपी दर्पणविषे अहंरूपी प्रतिबिंब फुरणेका नाम जीव कहतेहे ॥ सो जीव अपणें शांतपदकों त्यागेकि नांइ स्थित होतहे॥सो चिदात्माहि
फुरणे द्वारा आपकों जीवरूप जानत भयाहे ॥ जेसें समुद्रहि द्रवता करिकें तरंगरूप होताहे ॥ समुद्र तरंगविषे भेद कछु नहि तेसें ब्रह्महि जीवरूप हे ॥ ब्रह्म अरु जीवविषे भेद कछु न
हि॥ जेसें वायु अरु स्पंदविषे भेद कछु नहि ॥ जेसें बरफ अरु शीतलताविषे भेद कछु नहि तेसें ब्रह्म अरु जीवविषे भेद कछु नहि ॥ हे रामजी ! चित्तरूपी जो आत्मतत्व हे॥ सो अपने
स्वभाव वशतें मायाकरीकें संवेदन सहित जीवरूप कहतेहें ॥ सो जीव आगें फुरणे करिकें बडे विस्तारकों धारताहें॥ जेसें इंधनकरकें अग्निके बहुत अणु होते हे अरु बडे प्रकाशकों प्राप्त
होताहे तेसें जीव फुरणेकरी जगतरूपकों प्राप्त होताहे जेसें आकाशविषे नीलता भासतीहे सो नीलता कछु भिन्न वस्तु नहि ॥ तेसें अहंभाव करीकें ब्रह्मविषे जीवरूप भासता हे ॥ अरु
अहंकृतिकों अंगीकार करकें कल्पित रूपकी नांइ स्थित होताहे ॥ जेसें घनकि शून्यता करीकें आकाशमें नीलता भासतिहे॥ तेसें स्वरूपके प्रमादकरिकें देश काल वस्तुके परिछेद सहित
अहंकार रूपी जीव भासतेहे ॥ वास्तवतें चिदाकाशहि चिदाकाशविषे स्थितहे ॥ जेसें वायु करिकें समुद्र तरंगरूप होताहे ॥ तेसें संवेदन फुरणे करी आत्मसत्ता जीव रूप होतिहे ॥ सो
जीव चैत्योन्मुखत्वता करीकें एती संज्ञाकों पाताहे, चित्त कहियें, जीवकहीयें, मन बुद्धि अहंकार माया प्रकृति सहित सब तिसहिके नामहे॥ सो जीव संकल्प करिकें पंच भूत तन्मात्रा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कों चेतता भया तब तिन पंच तन्मात्राके आकारतें अणु रूप हो करि स्थित भया ॥ तिसतें अनउपजेहि उपजेकि नांइ स्थित भये अरु भासणे लगे बहुरी उहि चित्त संवेदन सो अणु अंगीकारकरकें जगतकों रचता भया ॥ जेसें बीजतें सत अंकुर वृछ होताहे तेसें संवेदन विस्तारकों पात भया ॥ प्रथम एक अंडरूपी होकरी स्थित भया तिस अंडकों फोडत भया ॥ तब तिसविषे जगत भासने लगा ॥ जेसें गंधर्व नगर भासता हे ॥ जेसें सुपन सृष्टि भासतिहे तेसें जगत भासने लगा ॥ तिसतें भिन्न भिन्न देह अरु भिन्न भिन्न नाम कल्पे ॥ जेसें मृत्तिकाकी सेना बालक कल्पता हे तिनकों भिन्न भिन्न नाम रखताहे ॥ तेसें स्थावर जंगम आदिक नाम कल्पना करी इह पृथ्वी, इह जल, अग्नि, वायु, आकाशहे, तिनों पाचोंभूतों की सृष्टि संकल्पतें उपजत भइ ॥ हे रामजी ! आदि ब्रह्मतें जो जीव फुरे ॥ तिसका नाम ब्रह्माहे सो ब्रह्मा आत्माविषे आत्मरूप होइकरी स्थित हे ॥ तिसतें आगें क्रमकरिकें जगत हुवा हे ॥ जेसें उह चेतता हे तेसा होकर स्थित होताहे जेसें समुद्रविषे द्रवता करिकें तरंग होताहे॥ तेसें ब्रह्मविषे चित्त स्वभावकरिकें जीव होताहे ॥ सो जीव जब प्रमाद करीकें अनात्मभावकों धरने लगा तब कर्मोंकरी बंधमान होने लगा जेसें जल जब दृढ जडताकों अंगीकार करताहे तब बरफरूप होइकरि पथ्थर समान होताहे तेसें जीव जब अनात्मविषे अभिमान करताहे तब कर्मोंके बंधनमें आताहे ॥ हे रामजी ! कर्मोंका बीज संकल्पहें अरु संकल्प जीवतें फुरताहे ॥ अरु जीवत्व भाव इसकों तब होताहे जब शुद्ध चैतनमात्र स्वरूपतें इसका उत्थान होताहे॥ उत्थान अर्थ यह जब प्रमाद होताहे तब इसकों प्रमाद जीवत्वभाव होताहे ॥ जब जीवत्वभाव होनाहे तब आगें अनेक संकल्प कल्पना फुरतीहे ॥ तिस संकल्प कल्पनातें कर्म होतेहें ॥ कर्मोंतें जन्म मरण आदिक नानाप्रकारके विकार होतहे ॥ जेसे बीजतें अंकुर पत्र होतेहे ॥ आगेतें फूल फल टास होते जातहे ॥ तेसें संकल्प कर्मोंतें नानाप्रकारके विकार हे ॥ जेसें जेसें कर्म जीव करताहे ॥ तिनके अनुसार जन्म मरण अधऊर्ध्वकों प्राप्त होताहे ॥ हे रामजी ! कर्म नाम मनके फुरणेका हे फुरणेका नाम चित्त हे ॥ अरु फुरणेका नाम कर्महे फुरणेका नाम दैव हे ॥ तिसहीकरी इसकों शुभ अशुभ जगत प्राप्त होताहे सबका आदि कारण ब्रह्म हे ॥ तिसतें प्रथम मन उत्पन्न भयाहे ॥ तिसहि मननें संपूर्ण जगतकी रचना करीहे ॥ जेसें बीजतें अंकुर होताहे बहुरी पत्र फूल फल टास होतेहें तेसें ब्रह्मतें मन अरु जगत उपजाहे॥ इतिश्रीयो० उत्पत्तिप्रकरणे बीजांकुरवर्णनंनाम सप्तचत्वारिंशत्तमःसर्गः ॥ ४७॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! आदि कारण ब्रह्मतें मन उत्पन्न भयाहे ॥ सो मन संकल्परूप हे अरु मनकरी संपूर्ण जगत भयाहे ॥ अरु मन आत्माविषे मनत्वभाव करीकें स्थित हे ॥ तिस मननें भाव अभावरूपी जगत कलप्याहे जेसें गंधर्वकी इछा करिकें गंधर्वनगर होताहे तेसें मनकरी जगत होताहे ॥ हे रामजी ! आत्माविषे द्वैत भेदकी कल्पना कछु नहि ॥ इस मन करिकें एसी संज्ञा भइहे ॥ ब्रह्म अरु जीव अरु मन अरु माया कर्म जगत द्रष्टा सब भेद मनकरि हूवेहें ॥ आत्माविषे भेद कोउ नहि ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग उछलतेहे अरु बडे विस्तारकों धारताहे तेसें चित्तरूपी समुद्रविषे संवेदन करीकें नानाप्रकारका जगत विस्तारकों पावता हे सो असतरूपो जगत हे काहेतें जो स्थिर नहि रहता सदा चलरूप हे ॥ अरु जो अधिष्ठान स्वरूप भाव करि देखियें तो सतरूप हे तातें द्वैत कछु न हूवा ॥ जेसें सुपनेका जगत सत असतरूप चित करीकें भासताहे ॥ तेसें सत असतरूप इह जगत भासताहे सो वास्तव कछु उपजा नहि ॥ चित्तके भ्रम करीकें भासताहे ॥ जेसें इंद्र जालकी बाजीविषे नानाप्रकारके वृछ औषधी भासतेहे सो भ्रममात्र हे ॥ तेसें इह जगत भ्रममात्र हे॥ हे रा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मजी ! इह जगत दीर्घकालका सुपना हे ॥ मनके भ्रम करीकें सत होइ भासताहे ॥ जेसें स्थाणुविषे पुरुष असम्यक् ज्ञान करीकें भासताहे ॥ अरु चोर जानकें भयकों प्राप्त होताहे ॥ तेसें जीव अनित्यभावकों प्राप्त होइ करी शोककों करताहे ॥ जेसें बालक भ्रम करीकें पडछाया विषे भूत कलपताहें ॥ अरु भयकों प्राप्त होताहे तेसें इह पुरुष चित्तके संजोगकरी द्वैतकों कल्पकें भयकों प्राप्त होतहे ॥ जेसें विचार कीयेतें बैतालका भय नष्ट होताहे तेसें आत्मज्ञान करीकें भय आदिक विकार नष्ट होजाताहे ॥ हे रामजी ! आत्मा अनादि दिव्य स्वरूप हे अरु अंशांशी भावतें रहित हे शुद्ध चैतन्यरूप हे॥ जब उह चैतन संवित चैत्योन्मुखत्व होताहे तब चित्त अर्थ यह जो चैतनताका लक्षण हे तिसतें आगें जीव कल्पना होतिहे ॥ तिस जीवविषे अहंभाव होताहे॥ जो में हों॥ जब अहंभाव हूवा तब तिसतें चित्त फुरताहे॥ चित्ततें इंद्रियां होतीहे, तिन इंद्रियांतें देहभाव होतहे॥ तिस देहभ्रम करि मलिन हुवा नरक स्वर्ग बंध मोक्षको कल्पना होतीहे ॥ जेसें बीजतें अंकुर पत्र फूल फल टास होतेहे ॥ तेसें अहंभावतें जगत विस्तार होताहे ॥ हे रामजी ! जेसें देह अरु कर्मोविषे कछु भेद नहि ॥ जेसें ब्रह्म अरु चित्तविषे कछु भेद नहि ॥ जेसें चित्त अरु जीवविषे कछु भेद नहि ॥ जेसें चित्त अरु देहविषे कछु भेद नहि ॥ जेसें देह कर्मोविषे कछु भेद नहि ॥ जेसें जीव अरु ईश्वरविषे भेद नहि तेसें इश्वर अरु आत्माविषे भेद नहि ॥ हे रामजी ! सर्व ब्रह्मस्वरूप हे द्वैत कछु नहि ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे जीवविचारोनाम अष्टचत्वारिंशः सर्गः ॥४८॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इह जो नानात्व भासताहे सो वास्तव एक ब्रह्मस्वरूप हे चैत्यता करिकें एक सो अनेक रूप हो भासताहे ॥ जेसें एक दीपतें अनेक दीप होतेहें तेसें एक परब्रह्म अनेक रूप होभासताहे ॥ हे रामजो ! इह असतरूपी जगत जिसविषे आभासहे तिस आत्मतत्वका जब पदार्थज्ञान होताहे तब चित्तविषे जो अहंभाव हे सो नष्ट हो जाताहे ॥ तिस अहंभावके नष्टहूवेतें सब शोक नष्ट होजाताहे ॥ हे रामजी ! इह पुरुष चित्तरूपीहे ॥ अरुचित्तविषे जगतहूवाहे ॥ जब चित्त नष्ट होवे तब जगत भ्रमभी नष्ट हो जावेगा ॥ जेसें अपने चरनविषे चरमकी जूती पहिरतेहे तब सर्व पृथ्वी चर्मकरि लपेटी भासतिहे॥ अरु ताप कंटक मिट जातहे तेसें जब चित्त शांति प्राप्त होतीहे तब सर्व जगत शांतरूप होताहे ॥ जेसें केलेका थंभ होताहे तिसविषे पत्रोंतें अन्यसार कछु नहिनिकसता तेसें सब जगत भ्रममात्र हे ॥ और सार कछु नहि निकसता ॥ हे रामजी ! एता भ्रम चित्तकरिकें होताहे ॥ जो बालअवस्थामें क्रीडा करता फिरता हे बहुरी जोबन अवस्थाकों धारता हे परंतु विषयोंकों सेवताहे ॥ वृद्ध अवस्थामें चिंताविषे जर्जरीभाव होताहे ॥ बहुरी मृत्युकों प्राप्त होताहे ॥ कर्मोके अनुसार नरक स्वर्गकों चल्या जाताहे ॥ हे रामजी ! इह सब मनका नृत्य हे ॥ मनही पडा भ्रमता हे ॥ जेसें नेत्र दूषणकरिकें आकाशविषे चंद्रमा भासताहे ॥ तेसें अज्ञानकरिकें जगत भ्रम भासताहे ॥ जेसें मद्यपान करीकें वृक्ष भ्रमते भासतेहें तेसें चित्तके संजोग भ्रम करीकें जगत द्वैत भासते हें ॥ जेसें बालक लीला करिकें भ्रमताहे तब सब जगतकों चक्रकी नांइ भ्रमता देखता हे ॥ तेसें चित्तके भ्रमकरिकें इह जीव जगत भ्रमकों देखताहे ॥ हे रामजी ! जब चित्त द्वैतकों नहि चेतता तब यह द्वैत भ्रम मिट जाताहे ॥ जब लग चित्त सत्ता फुरतिहे तब लग नाना प्रकारका जगत भासताहे ॥ शांतिकों नहि प्राप्त होता अरु जब घन चैतनताकों प्राप्त होताहे ॥ तब शांतिकों प्राप्त होताहे अरु जगत् भ्रम मिटि जाताहे ॥ जेसें पपैया बकता हे ओर शांतिवान नहि होता ॥ अरु जब घन वृषाकों प्राप्त होताहे ॥ तब बकणेतें शांत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होताहे तेसें जब इह महा चैतन घनताकों प्राप्त होताहे तब शांतिवान होजाताहे ॥ व्यवहारविषे होवे अथवा तूष्णी होरहे ॥ सदा शांतिवान होताहे॥ हे रामजी! जब चित्तकी चैतनता फुरति हे तब जगत भम नाना प्रकारके विकार देखता हे ॥ अरु भमकरीकें एसे देखता हे जो में उपजा हों अब बडा भयाहों मरोंगा इत्यादिक विकार असतरूप अपने विषे जानताहे॥ अरु स्वरूपतें चैतन ब्रह्मतें अनन्य हे ॥ जेसें वायु अरु स्पंदविषे कछु भेद नहि तेसें ब्रह्म अरु चैतनताविषे कछु भेद नहि ॥ जब वायु स्पंदरूप होताहे तब स्पर्शकरिकें भासताहे ॥ तेसें चैतनता मिटती नहि अरु ब्रह्मकी चेतना होवे तब जगत भम मिटी जातहे केवल ब्रह्मसत्ताहि पडी भासतिहे जेसें जेवरीकें अज्ञानकरिकें सर्पभम होताहे॥ अरु जेवरीके यथार्थ जानेतें सर्पभम मिट जाताहे तब जेवरी पडी भासतिहे ॥ तेसें ब्रह्मके अज्ञानतें जगत भम करिकें भासता हे ॥ जब चित्तसों दृढ चैत्यता भासति हे तब भमका पदार्थज्ञान होता हे ॥ तब जगत भम मिटि जातहे॥ केवल ब्रह्मसत्ता भासतीहे ॥ हे रामजी! दृश्यरूपी इसकों व्याधरोग लगाहे॥ तिस रोगका नाशकर्ता संवित मात्र हे ॥ जब लग चित्त बहिर्मुख होइ करि दृश्यकों चेतताहे तब लग शांत नहि होता ॥ अरु जब चित्त सर्ववासनाकों त्यागकरि अंतर्मुख अपणे स्वभावविषे स्थित होवेगा तब तिसहि कालमें मुक्तिरूप शांत होवेगा ॥ इस विषे संशय कछु नहि ॥ जेसें जेवरीके दूरसों देखणे करि सर्प भासताहे ॥ अरु जब निकट होइकरि देखेहे तब सर्पभम मिटि जातहे जेवरीहि भासतीहे ॥ तेसें आत्माका विवर्त्तरूप जगत हे ॥ जब बहिर्मुख होइकें देखता हे तब जगतही भासताहे ॥ जब अंतर्मुख होइके देखताहे तब जगत भम मिट जाताहे आत्माहि भासताहे ॥ हे रामजी ! जिस जिस विषे अभिलाषा होवे तहां तिसकों त्यागदे जेसें निश्चय करि मुक्ति प्राप्त होतिहे ॥ सो त्यागणेविषे जतन कछुनहि ॥ महात्मा जो पुरुष हे सो प्राणोंकों तृणकी नांइ त्याग देतेहे ॥ अरु बडे दुःखकों सहि रहतेहे ॥ तुझकों अभिलाषा त्यागणेविषे क्या कठिनता हे ॥ हे रामजी ! आत्माके आगें अभिलाषाहि आवरण हे ॥ अभिलाषाके होते आत्मा नहि भासताहे ॥ जेसें बदलोके आवरण करिकें सूर्य नहि भासता ॥ जब बदलोंका आवरण नाश होताहे तब सूर्य भासताहे ॥ तेसें अभिलाषाके निवृत्त हुए आत्मा भासताहे ॥ तातें जो कछु अभिलाषा उठे तिसकों त्याग अरु निरभिलाषा होइकरी आत्मपद विषे स्थित होइ ॥ अरु प्रकृतआचार जो कछु देह इंद्रियोंकरि ग्रहण करना ॥ अरु जो कछु त्याग करना होवे तिसकों त्यागकरो ॥ अरु देहविषे ग्रहण त्यागकी बुद्धि न होवे ॥ हे रामजी ! जो तुं संपूर्ण दृश्यकी इछा त्यागेगा तब तुझकों प्रत्यक्ष आत्मपद भासेगा ॥ जेसें हाथविषे बिलीफल प्रत्यक्ष होताहे॥ जेसें नेत्रोंके आगें प्रतिबिंब प्रत्यक्ष भासताहे तेसें अभिलाषाके त्यागतें आत्मपद तुजकों प्रत्यक्ष भासेगा अरु सब जगतभी आत्मरूप भासेगा॥ जेसें महाप्रलयविषे सब जगत जलमें भासताहे और कछु दृष्टहि नहि आता ॥ तेसे आत्मपदतें इतर तुजकों कछु न भासेगा ॥ आत्मतत्वकों न जानना इसीका नाम बंधन हे अरु आत्मपदका जानना इसीका नाम मोक्षहे और मोक्ष कोउ नहि ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे संश्रितउपशमयोगोनाम एकोनपंचाशत्तमः सर्गः ॥ ४९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! मन क्युं करी उत्पन्न हुवाहे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! ब्रह्म अनंतशक्ति हे तिसविषे अनेक प्रकारका किंचन होताहे ॥ जहां जहां जेसी जेसी शक्ति फुरतिहे तेसा तेसा रूप होइकरी भासताहे ॥ जब शुद्ध चिन्मात्र सत्ता चैतनविषे फुरतिहे ॥ जो अहं अस्मि ॥ तब तिस फुरणेकरि जीव कहाताहे ॥ सो चित्तशक्ति संक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ल्पका कारण भासतिहे ॥ जब दृश्यकी उर फुरति हे तब जगत दृश्य होइकरी भासताहे ॥ बहुरी नानाप्रकारके कार्य कारण होइ भासताहे ॥ रामोवाच ॥ हे मुनिविषे श्रेष्ठ जो इस प्रकारहे तो देव किसका नाम हे ? अरु कर्म क्या हे ? अरु कारण किसकों कहताहे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! फुरणा अफुरणा दोनो चिन्मात्रसत्ताका स्वभाव हे ॥ जेसें फुरणा अफुरणा दोनों वायुका स्वभाव हे परंतु जब फुरताहे तब आकाशविषे स्पर्श होकरी भासताहे ॥ जब चलणेतें रहित होताहे तब शांत होजाताहे ॥ तेसें शुद्ध चिन्मात्रविषे चैत्यताका लक्षण जु हे अहं अस्मी अर्थ यह जु में हों ॥ तब तिसका नाम स्पंद बुद्धीश्वर कहतेहे ॥ तिसकरि जगत दृश्यरूप होभासताहे ॥ तिस जगत दृश्यतें रहित होना तिसकों निस्पंद कहतेहे ॥ चित्तके फुरणेकरी नाना प्रकार जगत होइ भासताहे ॥ अरु चित्तके अफुर हुवे जगत भ्रम मिटी जातहे ॥ नित्य शांत ब्रह्म पदकी प्राप्ति होतहे ॥ हेरामजी ! जीव अरु कर्म अरु कारण इह सब चित्तस्पंदके नाम हे ॥ अरु चित्तस्पंदतें अनुभव भिन्न नहि ॥ अरु अनुभवहि चित्तस्पंद हुएकी नांइं भासताहे ॥ जीव कर्म कारणका बीजरूप चित्तस्पंद हे ॥ चित्तस्पंद करीकें आगें दृश्य होकरी भासताहे बहुरी चिदाभास द्वारा देहविषे अहंप्रतीत होतिहे ॥ तिस देह विषे स्थित होइकरी चित्त संवेदन दृश्यकी उर संसरताहे ॥ सो संसरना दो प्रकारका हे ॥ एक बडा हे एक अल्पहे ॥ किनकों संसरणेविषे अनेक जन्म वितीतहोतेहे ॥ अरु किनोंकों एक जन्म होताहे आदिहि फुरकर स्वरूपविषे स्थितहें ॥ तिनकों प्रथम जन्म होताहें ॥ अरु जो आदि उपजकर प्रमादी हुएहे ॥ सो फुरकरि दृश्यकी ओर चले जातेहे ॥ तिसकों बहुतेरे जन्म होतेहे ॥ चित्तके फिरणेकरी एसा अनुभव करतहे ॥ पुन्यक्रिया करीकें स्वर्गकों जातेहे ॥ पापक्रिया करी नरककों जातेहे ॥ इस प्रकार दृश्य भ्रमकों देखतेहे ॥ अज्ञानकरीकें बंधनविषे रहतेहे ॥ जब ज्ञान की प्राप्ति होतीहे तब मोक्षका अनुभव करताहे सो बडा संसरनाहे ॥ अरु जो एकहि जन्म पाइकरी आत्माकी उर आतेहे सो अल्प संसरनाहे ॥ हे रामजी ! जेसें स्वर्नहि भूषणरूपकों धारताहे तेसें संवेदनहि काष्ठ लोष्ठ आदिकरूप होइकें भासताहे ॥ इस चित्तके संजोगकरी अज अविनाशी पुरुषकों नानाप्रकारके देह प्राप्त होतेहे अरु जानता हे जो में उपजा हों ॥ अब जीताहों बहुरी मर जाउंगा ॥ इत्यादिक भ्रमकों देखताहे ॥ जेसें नौकाविषे बेठे हुए भ्रमकरी तटके वृछ भूमते दृष्ट आतेहे तेसें भ्रमकरकें अपनेविषे जन्मादि अवस्था भासतीहे आत्माके अज्ञानकरीकें जीवकों अहं आदि कल्पना फुरतीहे ॥ जेसें मथुराके राजा लवणकों सुपनेमें चंडालका भ्रम भयाथा तेसें चित्तके फुरणेकरिकें इह जीव जगतभ्रमकों देखतेहे ॥ हे रामजी ! इह सब जगत मनके भ्रमकरीकें पडा भासताहे ॥ शिव जो परम तत्व हे सो चिन्मात्रहे तिसविषे जब चैत्योन्मुखत्व होताहे जो में हों तिसका नाम जीव हे ॥ जेसें सोमजलविषे कछुक द्रवता होतिहे तिसविषे चक्र फुरतेहे बहुरी तरंग होतेहे ॥ तेसें ब्रह्मरूपी सोमजल हे तिसविषे जीवरूपी चक्र फुरतेहे ॥ बहुरी चित्तरूपी तरंग उदय होतेहे ॥ बहुरी सृष्टिरूपी बुदबुदे होतेहे ॥ उपजकरी लीन होतेहे ॥ हे रामजी ! चैतन फुरणे द्वारा जीवकि नांइं भासताहे ॥ जेसें समुद्रहि द्रवताकरीकें तरंगरूप होइ भासताहे ॥ चित्तचैत्यके संयोगकरी जीव कहताहे ॥ तिस जीवतें जब संकल्पका फुरणा होताहे तब मन कहताहे ॥ अरु संकल्प निश्चयरूप होताहे तब बुद्धि होकरि स्थित होताहे ॥ अरु जब अहंभाव होताहे तब अहं प्रतिकार कहताहे ॥ तिस अहंभावकों पाइकरी तन्मात्राकी कल्पना होतिहे ॥ पृथ्वी जल तेज वायु आकाश इह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूक्ष्मभूत होतेहे तिनके आगें जगत होताहे ॥ हे रामजी! असतरूपी चित्तके संसरणे करिकें जगतरूप होइ भासताहे ॥ जेसें नेत्रदूषण करिकें आकाशविषे मुक्तमाला भासतीहे ॥ जेसें भममात्र गंधर्व नगर भासताहे जेसें सुपन भमकरि सुपन जगत भासताहे ॥ तेसें चित्तके संसरणे करिकें जगत भम भासताहे ॥ हे रामजी शुद्ध आत्मा नित्य नूतन शांतरूपहे अरु सम अपणे आपहि विषे स्थितहे ॥ तिसविषे चित्त संवेदननें जगतकों रच्याहे ॥ तिस जगतकों भमकरिकें सत्यकी नांइ देखताहे ॥ जेसें सुपन सृष्टिकों भमकरि देखताहे तेसें इह जगत फुरणेकरी सत्य भासताहे ॥ हे रामजी! मनके संसरणेका नाम जाग्रतहे अरु अहंकारका नाम सुपनाहे अरु चित्त जो सजातीयरूप चेतणेवालाहे ॥ तिसका नाम सुषुप्तिहे ॥ अरु चिन्मात्रका नाम तुरीयपदहे ॥ जब शुद्ध चिन्मात्रविषे अत्यंत परिणाम होवे तिसका नाम तुर्यातीत पद हे ॥ तिसविषे स्थित हूवा बहुरी शोकवान कदाचित नहि होता॥तिस ब्रह्मसत्तातें सब उदय होतेहे तिसहिविषे सब लीन होतेहे ॥ अरु वास्तवतें न कोउ उपजाहे न कोउ लीन होताहे ॥ चित्तके फुरणे करि सब भम भासताहे ॥ जेसें नेत्रदूषण करी आकाशविषे मुक्तमाला भासतिहे ॥ तेसें चित्तके फुरणेकरी इह जगत भासताहे ॥ हे रामजी ! जेसें बलके बढनेकों आकाश ठोर देताहे जेती कछु बीजकी सत्ता होवे तेता आकाशविषे बढता जावे तेसें सबकों आत्मा ठोर देताहे ॥ अकर्तारूपभी संवेदन करिकें कर्ता भासताहे ॥ हे रामजी ! जेसें लोहा निर्मल कीया हुवा आरसीकी नांइं प्रतिबिंबकों ग्रहण करताहे ॥ तेसें आत्माविषे संवेदनकरिकें जगतका प्रतिबिंब होताहे अरु वास्तवतें जगतभी कछु दूसरी वस्तु नहि ॥ जेसें एक बीजहि पत्र फूल फल टास होइ भासताहे ॥ तेसें आत्मा संवेदनकरीकें नाना रूप जगत होइ भासताहे ॥ जेसें पत्र फूल वृक्षतें भिन्न नही ॥ तेसें अबोधरूप जगतभी बोधरूप आत्मातें भिन्न नहि ॥ अरु जो ज्ञानवानहे तिसकों अखंड सत्ता भासतीहे ॥ अरु अज्ञानीकों भिन्न भिन्न नामरूप सत्ता भासतीहे ॥ जेसें समुद्रही तरंग बुद्बुदे होइकरी भासताहे ॥ जेसें बीजहि पत्र फूल फल टास होइकरी भासताहे ॥ जो मूर्ख देखताहे ॥ तो तिनके नामरूप सत मानता हे अरु ज्ञानवान देखकें एक रूपही जानता हे ॥ तेसें जो मूर्ख अज्ञानीहे सो भिन्नभिन्न नामरूप जगतकों जानतेहे ॥ अरु ज्ञानवानकों एक ब्रह्मसत्ता अनंत भासतिहे ॥ और जगतभम उनकों कोउ नही भासताहे ॥ रामोवाच ॥ बडा आश्चर्य बडा आश्चर्य हे ! जो असतरूपी जगत सत होइकरी भासताहे अरु बडे विस्तारकरि स्पष्ट भासताहे ॥ अरु इह जगत ब्रह्मका आभासहे ॥ अनेक तन्मात्रा तिसके जल अरु बुदोंकी नांइंहे ॥ अरु अविद्या करीकें फुरतीयां हे एसेंभी में श्रवण कीयाहे ॥ हे मुनीश्वर इह केसें फुरणा बहिर्मुख होतीहे अरु अंतर्मुख केसेंहोतीहे ? ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस प्रकार दृश्यका अत्यंत अभाव हे अणहोते दृश्यके फुरणेकरी अनुभव होताहे ॥ शुद्ध चिन्मात्र ब्रह्मसत्ताविषे फुरणेकरी जीवत्व हुआहे सो जीवत्व असत हे अरु सतकी नांइं होताहे ॥ अरु जीव ब्रह्मके साथ अभिन्नहे फुरणे करिकेभिन्नकि नांइ स्थित होताहे तिस जीवविषे संकल्प कलना होतिहे ॥ तब मनरूप होकें स्थित होताहे ॥ अरु स्मरणकरिकें चित्त होताहे निश्चय करिके बुद्धि होतिहे ॥ अहंभाव करीकें अहंकार होताहे ॥ बहुरी काकतालिकी नांइं चिदअणुविषे तन्मात्रा फुर आतीहे ॥ जब शब्दश्रवणकी इछा भइ तब श्रवण इंद्रिय प्रगट भइ ॥ जब देखनेकी इच्छा भइ तब नेत्र इंद्रिय प्रगट भइ॥ गंधलेणेंकी इच्छा कर नासिका इंद्रिय प्रगट भइ ॥ जब स्पर्शकी इछाभइ तब त्वचाइंद्रिय प्रगटभइ ॥ जब रस लेनेकी इछा भइ ॥ तब रसना इंद्रिय प्रगट भइ ॥

96

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस प्रकार पांचो इंद्रियां प्रगट भइयां ॥ भावना करीकें सतही असतकी नांइं भासणे लागीयां हे ॥ हे रामजी ! इस प्रकार आदि जीव हुवेहे तिसकी भावना करिकें अंतवाहक शरीर होय आयेहे ॥ चलते भासतेहे तोभी अचलरूपहे ॥ तातें जेताकछु जगत भासताहे सो सब ब्रह्मस्वरूप हे इतर कछु नहि ॥ प्रमाताभी ब्रह्म हे प्रमाणभी ब्रह्म हे प्रमेयभी ब्रह्म हे अरु संवेदत ब्रह्म करिकें अनेकरूप नाना प्रकार भासतेहे ॥ जेसा जेसा संवेदन फुरताहे तेसा तेसा रूप होइकरी भासताहे जब दृश्यकों चेतताहे ॥ तब नानाप्रकारका दृश्य भासताहे अरु जब अंतर्मुख ब्रह्मकों चेतताहे तब ब्रह्मरूप होइकरी भासताहे हे रामजी ! दृश्य कछु उपजा नहि ॥ आत्मा सदा अपने आपविषे स्थित हे तो दृश्यका असंभव हुवा तब बंधन किसकों कहिये ? अरु मोक्ष किसकों कहिये ? विचार किसका करीयें ? सर्वकल्पनाका अभाव हे ॥ इह जो तेरा प्रश्नहे ॥ तिसका उत्तर सिद्धांत कालविषे होवेगा इहां नांहि बनेगा ॥ जेसें कमल फुलोकी माला जो होतिहे सो अपने कालविषे बणतोहे ॥ समय विना शोभा नहि देती ॥ तेसें तेरे प्रश्न सिद्धांत कालविषे शोभा पावेगा समय बिना सार्थ शब्दभी निरर्थक होताहे ॥ इस कारणतें कहिये जो सिद्धांत कालविषे शोभा पावेगा ॥ सिद्धांत कालविना इह प्रश्न शोभा नहि पावता ॥ हे रामजी ! जेताकछु पदार्थ हे तिनका फलभी समय पायकें होताहें समय बिना नहि होता अब पूर्व प्रसंग सुण हे रामजी ! ब्रह्मविषे चैत्योन्मुखत्व करीकें उह आदि जीव आपकों पिता माता जानत भया ॥ जेसें सुपनेविषे आपकों कोउ देखे ॥ तेसे ब्रह्माजी आपकों जानत भया ॥ सो ब्रह्मा प्रथम ओं शब्दकों उच्चारत भया ॥ तिस शब्द तन्मात्रातें, चारों वेद देखत भया ॥ तिसतें अनंतर मनोराज करीकें सृष्टीकों रचतभया ॥ तब असतरूप सृष्टि भावना करिकें सत्य होइ भासने लगी ॥ जसें सुपनेविषे सर्प भासतेहे ॥ जेसें गंधर्व नगर भासी आवताहे ॥ तेसें असत्यरूप सृष्टि सत्य भासने लगी ॥ हे रामजी ! ब्रह्मसत्तातें जेसें ब्रह्मा आदिका उपजना भयाहे तेसें ओर जीवों कीट आदिका उपजना भयाहे ॥ जगतका कारण संवेदन हे ॥ संवेदन भमकरिकें जीवोंकों जगत भासताहे ॥ तिनकों भौतिक शरीरविषे जो अहं प्रतीत भइहे तिसकरि अपने निश्चयके अनुसार शक्ति भइहे ॥ ब्रह्माविषे ब्रह्माकी शक्तिका निश्चय भया हे ॥ चेंटीविषे चेंटीकी शक्तिका निश्चय भयाहे ॥ हे रामजी जेसी जेसी वासना संवितविषे होतीहे तिसके अनुसारही अनुभव होताहे ॥ शुद्ध चिन्मात्रविषे जो चैत्योन्मुखत्व हुवाहे ॥ तिसका नाम जीव हुवाहे ॥ तिसविषे जो ज्ञानरूप सत्ता हे सो पुरुष हे ॥ तिसविषे जो फुरणा हे सो कर्म हे ॥ जेसें जेसें फुरताहे तेसें तेसें भासताहें ॥ हे रामजी ! आत्मसत्ताविषे जो अहं हुवाहे तिसका नाम चित्त हे तिसतें आगे जगत रचाहे ॥ सोभी अविचार सिद्ध हे ॥ विचार कीयेतें नष्ट होजाताहे ॥ जेसें अविचारकरिकें अपने पछाये विषे भूत पिशाच कल्पता हे ॥ तिसतें भय उत्पन्न होताहे ॥ विचार कीयेतें पिशाच अरु भय दोनों नष्ट होजातेहे ॥ हे रामजी ! तेसें आत्म विचारतें चित्त अरु जगत दोनों नष्ट होजातेहें ॥ हे रामजी ! ब्रह्मसत्ता सदा अपने आपविषे स्थितहे ॥ तिसविषे चित्त कल्पना कोउ नहि ॥ अरु प्रमाता प्रमाण प्रमेयभी ब्रह्मतें इतर कछु नहि ॥ तो द्वैतकी कल्पना केसें होवे ॥ जेसें शशेके शृंग असतहे तेसें आत्मातें द्वैत कल्पना असत्यहे ॥ हे रामजी ! इह ब्रह्मांड भावना मात्रहे ॥ जिसकों सत्य भासताहे तिसकों बंधनका कारण हे ॥ जेसें घुराण अपना गृह बनातिहे सो अपने बंधनका कारण होताहे ॥ तिसविषे आप फसी मरतिहे ॥ तेसें जगतकों सत्य मानते हे तिसकों अपना माननाहि बंधन कर्ता हे ॥ तिसकरी जन्म मरणकों देखताहे ॥ अरु जिसकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जगतका असत्य निश्चय हुवाहे तिसकों बंधन नहि होता ॥ उसकों उल्लास हें अरु हे रामजी ! अनुभव सत्ता सबकी अपना आपहे ॥ तिसविषे जेसा जेसा निश्चय कीया तिसकों अपने अनुभवके अनुसार पदार्थ भासतेहे कोउ निमेषविषे कल्पका अनुभव करतेहें ॥ अरु वास्तवतें जगत उपजाहि नहि ॥ जगतका उपजनाभी मिथ्याहे बढनाभी मिथ्याहे॥ रसभी मिथ्या हे ॥ रस लेने वालाभी मिथ्या हे ॥ शुद्ध ब्रह्म सर्वगत नित्य अद्वैत सदा अपने आपविषे स्थित हे ॥ परंतु अज्ञान करिकें शुद्धभी अशुद्ध भासताहे ॥ सर्व जगतभी परिछिन्न भासताहे ॥ ब्रह्मभी अब्रह्म भासताहे ॥ नित्यभी अनित्य भासताहे ॥ अद्वैत भी द्वैत सहित भासताहे ॥ हे रामजी ! अज्ञान करि एसा भासताहे ॥ जेसें जल अरु तरंगविषे भेद मूर्ख मानतेहें ॥ परंतु भेद नहि ॥ तेसें ब्रह्म अरु जगतविषे भेद अज्ञानी देखतेहे ॥ जेसें सुवर्ण अरु भूषनोंविषे भेद अज्ञानी देखतेहें ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प मूर्ख देखतेहें ॥ तेसें ब्रह्मविषे नानात्व मूर्ख देखतेहें ॥ ज्ञानीकों सब चिदाकाश हे॥ हे रामजी ! जब आत्म सत्ताविषे अनात्मरूप दृश्यकी चैत्यता होतिहे तब कल्पना उत्पन्न होतिहे सो कल्पना मनरूप होईकें स्थित होतिहे॥ तिसतें अनंतर अहंभाव होताहे ॥ बहुरी तन्मात्राकी कल्पना होतिहे ॥ बहुरी शब्द अर्थकी कल्पना होतिहे॥ इसी प्रकार चिदसत्ताविषे जेसी जेसी चैत्यता फुरतीहे ॥ तेसा तेसा रूप भासने लागताहे ॥ सत असत पदार्थ वासनाके वशतें फुरी आतेहें ॥ जेसें सुपन सृष्टि फुर आतीहे ॥ सो अनुभवरूपही होतिहे तेसें इह जगत फुरि आयाहे सो अनुभव रूप हे॥ तातें सृष्टि विषेभी चिन्मात्र हे अरु चिन्मात्रहिविषे सृष्टिहे ॥ सर्वकी सत्तारूपी अंतर बाह्य उर्ध्व अध चिन्मात्रही हे ॥ प्रमाता प्रमाण प्रमेय सर्व पद चिन्मात्रहीविषे धारेहे ॥ नित्य उपशांतरूप हे ॥ सम सत जगतकी सत्ता तिसही करि होतिहे सो एकहि समहे ॥ अरु तुरीया अतीत पदहे नितहि स्थितहे ॥ इतिश्री यो० उ० प्र० सत्योपदेशो नाम पंचाशत्तमः सर्गः ॥ ५० ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस प्रसंग उपर एक पुरातन इतिहास हे तिसविषे महा प्रश्नोका समूह हे सो श्रवण कर॥ एक महा स्याम काजलके पर्वतकी नांइ कर्कटी नाम राक्षसी हिमालय पर्वतके शिखरउपर होत भइ ॥ विसूचिकाभी तिसका नाम हुवा ॥ अथिर वीजलीके नांइं तिसके नेत्र अरु अग्निकी नांइं बडी जिह्वा तिसकी चमत्कार करे ॥ बडे नख अरु उंचा शरीर जिसका जो भोजनकरि तृप्त कदाचित् न होवे ॥ जेसें वडवाग्नि तृप्त नहि होती तेसें तृप्ति न होवे ॥ तब उसके मनविषे उपजा जो जंबुद्वीपके संपूर्न जीवोंको भोजन करों तब तृप्त होउं अन्यथा तृप्ति नहि होती ॥ अरु आपदा उद्यम कीयेतें दूर होतिहे ॥ तातें उद्यम करों जो अखंड चित्त होइकरी तप करों ॥ हे रामजी ! एसें विचार करीकें एकांत हिमालय पर्वतकी कंदराविषे एक टंग करि स्थित भइ ॥ दोनों भुजा ऊर्ध्वकों धारी अरु नेत्र आकाशकी ओर कीये मांनों मेघकों पकडतीहे ॥ शरीर अरु प्राण स्थित करत भइ मूर्त्तिकी नांइं होगइ ॥ सीत अरु उष्णके क्षोभतें रहित भइ ॥ पवनकरि शरीर जर्जरी भाव हुवा ॥ जब इस प्रकार सहस्र वर्ष व्यतीत भया दारुण तप कीया ॥ तब ब्रह्माजी आये तब राक्षसीनें देखकें मनकरी नमस्कार किया अरु मनविषे विचारा जो मेरे वरके निमित्त आयेहें ॥ तब ब्रह्माजी आय कर कहा ॥ हे पुत्री तुजनें बडा तप कीयाहे ऊठ खडी हो जो कछु चाहतहे सो वर मांग ॥ कर्कटीउवाच ॥ हे भगवन् ! में लोहेकी नांइं वज्रसूचिका होउं जो जीवोंके रिंदेविषे प्रवेश करीजाउं ॥ हे रामजी ! जब एसें मूर्ख राक्षसीनें कहा ॥ तब ब्रह्माजीनेकहा एसेंहि होवे ॥ तेरा नामभी प्रसिद्ध विसूचिका होवेगा ॥ हे राक्षसी जो दूराचारी जीवहोवे तिनके रिंदेविषे तुं प्राणवायुके मार्गकरी जाय प्रवेश करेगी ॥ अरु जो गुणवा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न तेरेकों निवृत्त करणेके निमित्त ॐमंत्रकों पढेंगे जो हिमालयके उत्तरशिखर विषे कर्कटी नाम राक्षसी विसूचिका हे सो दूर होवे अरु दुःखी चंद्रमाके मंडलविषे चितवे जो अमृतके कुंडविषे बेठाहों ॥ अरु राक्षसी हिमालयके शिखरकों गइ एसें चितवन करे इस मंत्रकों पढे शुचि पवित्र होकरि तब तुम तिसकों त्याग जाना इह मंत्रहे ॥ तिनविषे तूं प्रवेश न करि सकेगी ॥ हे रामजी ! जब इस प्रकार ब्रह्माजी कहकें आकाशकों उडे तब इंद्रके अरु सिधोंके मार्ग साथ गये ॥ अरु उह मंत्र ब्रह्माजीनें कर्कटीकों कहाथा सो सिधोनें श्रवन कीया था तिनोंनें तिस मंत्रकों प्रसिद्ध कीया तब कर्कटीका शरीर सूक्ष्म होने लगा ॥ जेसें संकल्पका पहाड संकल्पके क्षीण हुएतें क्षीण होजाताहे ॥ तेसें क्रमकरीकें प्रथम जो मेघवत् आकार था सो घटकर वछवत् होगया ॥ फेर पुरुषरूप फेर हस्तमात्र फेर प्रादेशमात्र फेर लोहेकी सूइकी नांइं सूक्ष्म होगइ ॥ जेसें संकल्पका तंतु होताहे तेसें होगइ ॥ हे रामजी ! एसे रूपकों कर्कटी धारति भइ तिसकों देख मूर्ख अविचारी पुरुष तृणकी नांइं शरीरकों त्यागतेहे ॥ अरु जो पुरुष परस्परकों विचारतेहें सो पाछेंतें कष्ट नहि पाते ॥ जो पूर्वापर विचारतें रहित हे सो पाछें कष्ट पावताहे ॥ अनर्थ होइकरी औरोंको कष्ट देतेहे ॥ एक पदार्थकों भला जानकें तीसके निमित्त जतन करतेहे ॥ न धर्मकी ओर देखते हे न सुखकी ओर देखतेहें ॥ इस प्रकार मूर्ख राक्षसीनें भोजनके निमित्त बडे गंभीर शरीरकों त्यागकरी तुछ शरीरका अंगीकार कीया ॥ सो एक शरीर सूक्ष्म हूवा दुसरा पुर्यष्टक भया सूक्ष्म शरीर जाकों इंद्रियां ग्रहण न कर सके तेसे शरीरसें कडुं विसूचिका प्रवेशकरे ॥ कडुं पुर्यष्टक साथ जाय प्रवेशकरे ॥ प्राण वायु साथ प्रवेशकरकें दुःखदेवे प्राणोंकों विपर्यय करे तब प्राणी कष्टकों पावे ॥ रक्त आदिक जो रस हे तिनका पान करे ॥ एक बूंदकरी उदर पूर्ण होजावे परंतु तृष्णा निवृत्त न होवे ॥ अरु शरीरतें बाह्य निकसे तबभी कष्ट पावे वायुचले तिसकरि गिरतविषे गिरे चिकड विषे गिरे चरनोंके तले आवे ॥ देशोंविषे रहे घास तृणोविषे रहे ॥ जो नीच पापी जीव हे तिनकों कष्ट देवे अरु जो गुणवान होवे तिनकों कष्ट देनेकों समर्थ न होवे ॥ जो मंत्र पढे तिसतें निवृत्त होजावे जो आप किसी छिद्र विषे गिरे ॥ तब जाने जो बडे कूपविषे गिरीहों ॥ हे रामजी ! मूर्खता करिकें एते कष्टकों पातभइ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ इस प्रकार जब वसिष्ठजीनें कहा तब सूर्य अस्त भया सायंकालका समय हुवा ॥ सब सभा परस्पर नमस्कार करकें स्नानकों गइ विचार संयुक्त रात्रकों व्यतीत करकें सूर्यकी किरणां जब उदय भइयां तब बहुरी आयकें बेठे ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे विसूचिकाव्यवहार वर्णनं नाम एकपंचाशत्तमःसर्गः ॥ ५१ ॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥

॥ वसिष्ठउवाच ॥ हे रामजी ! जब इस प्रकार प्राणियोंके मारनेविषे केतेक वर्ष उसकों वितीत भये तब उसके मनबिषे विचार उत्पन्न भया ॥ जो बडा कष्ट हे बडा कष्ट हे ॥ इह विशूचिका शरीर मुझकों केसें प्राप्त भयाहे ॥ मैं मूर्खता करिकें इह वर ब्रह्माजीसों मागाथा ॥ मूर्खता बडे दुखःकों प्राप्त करती हे केसा मेघकी नांइं मेरा शरीर था ॥ जो सूर्यादिककों में आछादलेती थी ॥ मंदराचल पर्वतकी नांइ मेरा उदर कहां गया वडवाग्निकी नांइ मेरी जीभ कहां गइ ? जेसें कोउ अभागी पुरुष चिंतामणिकों त्याग देवे ॥ अरु काचकों अंगीकार करे तेसें मेने बडे शरीरकों त्यागकें तुछ शरीरका अंगीकार कीया ॥ केसा तुछ हे जो एक बुंदकरभी तृप्त हो जातहे ॥ परंतु तृष्णा पूरी होत नांही ॥ उस शरीर साथ में निर्भय विचरती थी ॥ इह शरीर पृथ्वीके कणके साथभी दबी जातहे ॥ अब में बडे कष्टकों पाइहों ॥ अब में मृतक होंउ तब छुटों परंतु भाग्या मृत्युभी हाथ नहि आता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तातें में बहुरी उस शरीरके निमित्त तप करों ॥ उह कवन पदार्थहे ॥ जो उद्यम कीयेतें हाथ न आवे ॥ हे रामजी ! इस प्रकार पूर्वके शरीरके निमित्त तप करनेकों समर्थ भइ ॥ तब हिमालय पर्वतके वन निरंजन स्थानविषे एक टंगके आधार स्थित भइ ॥ मुख उर्ध्वकों करीकें तप करने लागी ॥ हे रामजी ! जब पवन चले सो इसके मुखमें फल मांस जलके क णके राखे परंतु उह अंतर गृहण न करे मुखकों मुंदी लेवे ॥ पवन देखकें आश्चर्यमान होवे ॥ जो में सुमेरु आदिककोंभी चलायमान कीयाहे ॥ परंतु इसका निश्चय चलायमान नहि होता मेघकी वर्षाकरी चिकडविषे दब गइ ॥ परंतु ज्योंकी त्यों रहि ॥ मेघके बडे शब्द करीभी चलायमान नहि भइ ॥ हे रामजी ! इस प्रकार सहस्र वर्ष उसकों वितीत भया ॥ तब दृढ वैरागकरिकें उसका नाम चित्त निर्मल भया ॥ तब सब संकल्पके त्यागतें तिसकों परम पदकी प्राप्ति भइ अरु बडे ज्ञानका प्रकाश उदय हुवा परब्रह्मका तिस कों साक्षात्कार हुवा तिसकरी परम पावनरूप भइ तब चित्तसूची हात भइ ॥ अर्थ यह जो चैतनविषे उसका एकत्व भाव हुवा तिसके तप करी सप्त लोक तपाय मान हुवे ॥ तब इंद्रने नारदजीसों प्रश्न कीया जो एसा तप किसने कीया हे ॥ जिसके तप करि लोक जलने लागेहे तब नारदनें कहा हे इंद्र सात सहस्र वर्ष कर्कटी नाम राक्षसीनें बडा दारुण तप कीया हे ॥ तिसकरी सूचिका भइथी तिसकरी बहुत कष्ट पाया ॥ अरु लोकोंको कष्ट दिया ॥ जेसें विराट आत्मानें सबविषे प्रवेश कीयाहें जेसें चित्त शक्तिनें सबविषे प्रवेश कीयाहे तेसें सब देहविषे प्रवेश कीयाहे ॥ परंतु जहां मंत्रजाप होवे तातें निवृत्त होजावे अरु जहां मंत्र जाप न होवे ॥ तिन के अंतर प्रवेश करिकें रक्तमांस भोजन करे परंतु तृप्त न होवे ॥ मनविषे तृष्णा रहें ॥ सूक्ष्म शरीर करी धूडविषे दबीजावे ॥ बहुत कष्टकों पाइकें विचार कीया जो उद्यम करि सप्त कछु प्राप्त होताहे ॥ तातें पूर्वके शरीरके निमित्त बहुरी एकांत स्थानविषे तप जाइ करों ॥ तब एक गीधपंछी उहां आन बेठा कछु भोजन करने लागा तिसकी चंचूके मार्गसों विसूचिका अंतर चली गइ तब उह पंछी कष्ट पाइकें उडा ॥ उह विसूचिका उसकी पुर्यष्टकाके साथ मिलकें उसकों प्रेरकें हिमालय पर्वतकी ओर ले चली ॥ जेसें वायु मेघकों ले जाताहे तेसें हिमालय पर्वतके वनमें ले गइ ॥ उहां इस गीधनें छरदकरी डारी ॥ जेसें जोगेश्वर संवेदनकों त्यागकें निर्विकल्प पदविषे जाताहे ॥ तेसें छरदकों डारकर पंछी उडगया ॥ जेसें पेंडोइ बि गार पोटकों त्याग करि सुखी होताहे तेसें पंछी छरदकों त्यागकरी सुखी भया ॥ तब उसी शरीर साथ विसूचिका तप करने लागी॥ हे रामजी ! इस प्रकार इंद्र सुणकरी उसकों दरवणे निमित्त पवनकों चलाया॥ तब पवन आकाशकों छोडके भूतलविषे उतरा लोकालोक पर्वतकों लंघकरी स्वर्नकी पृथ्वी लंघी फेर समुद्र, फेर द्वीप, फेर समुद्र, अरु द्वीपोंकों लंघके क्रमसों हिमालयके वनविषे सूक्ष्म शरीर साथ उसकों देखत भया पवन चलरहा ॥ सूर्य तपरहा परंतु चलायमान न भइ ॥ प्राणवायुकाभी भोजन न करे ॥ तब पवननेंभी आश्चर्यमान होइ कें कहा हे तपस्विनी तूं किस निमित्त तप करतिहे ? हे रामजी ! एसें जब पवनने कहा तबभी विसूचिका न बोली ॥ पवननें कहा भगवती विसूचिकानें बडा तप कीयाहे अब कोउ कामना इसकों नहि एसें कहिकें उडा ॥ क्रमसों इंद्रके पास गया ॥ इंद्रने विसूचिकाके दर्शनका महात्म्यकरी पवनकों कंठ लगाया मिला आदरकीया ॥ जो तूं बडा पुन्यवानका दर्शन कर आयाहे ॥ पवननेंभी सब वृत्तांत कहि सुनाया ॥ अरु कहा हे राजन् ! उसके तप तेज करी हिमालयकी सीतलता आछादि गइहे ॥ तुम ब्रह्माजी पास चलो नहि तो उस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के तपकरी जगत जलेगा ॥ हे रामजी ! जब इस प्रकार पवननें कहा ॥ तब इंद्र पवन देवता गणों सहित ब्रह्माजीके पास आये ॥ प्रणाम करिकें बैठिगये ॥ तब ब्रह्माजीनें कहा जो तुमारा वृत्तांत मेनें जान्याहे ॥ हेरामजी ! ब्रह्माजी इंद्रकों कहि करी विसूचिका जिसका नाम सूची था तिसके पास आय प्राप्त भये ॥ तिसकों देखकें आश्चर्यमान हुवे ॥ जो तृणकी नांइं विसूचिकानें सुमेरुतेंभी अधिक धीरज धराहे ॥ जेस मध्यानका सूर्य तेजवान होत हे तेसें इसका तप तेज भयाहे अरु परब्रह्मविषे स्थित भइ हे ॥ अरु जगत इसका अब शांत हो गयाहे ॥ तातें बंदना करणेजोग हे ॥ हे रामजी ! जब आकाशतलविषे स्थित होइकरी ब्रह्माजीनें कहा हे पुत्री ! कर्कटी तूं अब वरकों ग्रहण करु तब विसूचिका विचारकरिकें कहने लगी ॥ जो कछु जानने जोग था सो में जान्याहे अरु शांतरूप भइहों संपूर्ण संशय मेरे नष्ट हुवेहे ॥ अब वर साथ मेरा क्या प्रयोजन हे ॥ इह जगत अपने संकल्पतें उपजाहे ॥ जेसें बालककों अपने पछाये विषे बैताल बुधि होतिहे ॥ तिसकरि भयकों प्राप्त होताहे ॥ तेसें में स्वरूपके प्रमादकरी भटकती फिरीहों ॥ अब इष्ट अनिष्ट जगतकी मुजकों इछा कछु नहि ॥ अब में निर्विकल्प शांतिविषे स्थित हों ॥ हे रामजी ! एसें कहि करि सूची तूष्णी होरहि तब ब्रह्माजी वीतराग प्रसन्न बुद्धि उसके भावकों देखकें कहत भया ॥ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ हे कर्कटि तुं कछुक वरकों ग्रहण करु कछुक काल तुजे भूतलविषे विचरणाहे ॥ भोगोकों भोगकें तूं विदेहमुक्त होवेगी ॥ अब तूं जीवन्मुक्त होइकरी विचरेगी ॥ नीतिके निश्चयकों लंघ कोउ नही सकता ॥ अरु जब तुं तप करणे लागीथी तब पूर्व देह पावणेका संकल्प कीयाथा ॥ उह संकल्प अब सफल भया हे ॥ जेसें बीजविषे वृछका सदभाव होताहे सो काल पाय विस्तारकों धरताहे ॥ तेसें तेरेविषे पूर्व शरीरका संकल्प था सो अब प्राप्त होवेगा॥ उसी जेसा शरीर पाइकें तूं हिमालयके वनविषे विचरेगी ॥ हे पुत्री तेरे तो अनिच्छित जोग हुवाहे ॥ जेसें कोउ छायाके निमित्त आंबफलके निकट आनबेठे अरु तिसकों छायाभी प्राप्त होवे अरु फलभी प्राप्त होवे हे ॥ तेनें शरीरकी वृद्धि वासते जतन कियाथा सो तृप्तिकरणे हारा तेरे तांइ हुवाहे॥ अरु तेरे तांइं ब्रह्मतत्व हुवा हे॥ हे पुत्री तूं राक्षसी शरीरविषे जीवन्मुक्त होइकें विचरेगी॥ ओर जन्म तुजकों नहि आवेगा ॥ इस जन्मविषे तूं परम शांत रहेगी अरु शरत्कालके आकाशकी नांइं निर्मल होवेगी ॥ जब तेरी वृत्ति बहिर्मुख फुरेगी तब सब जगत तुजकों आत्मरूप भासेगा ॥ व्यवहारविषे समाधि रहेगी अरु समाधिविषेभी समाधि रहेगी ॥ पापी जीवोंको तुं भोजन करेगी ॥ न्याय बांधव तेरा नाम होवेगा ॥ अरु विवेकपालक तेरा देह होवगा ॥ तातें पूर्वके शरीरकों अंगीकार कर ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! एसें कहिकरि ब्रह्माजी अंतर्धान होतभया ॥ तब सूचिनें कहा एसेंहि होवे ॥ हमकों दोनों तुल्यहे ॥ तब जेसें बीजतें वृछ होताहे तेसें क्रमकरी तिसका शरीर बढगया ॥ केसें बढा जो प्रथम प्रादेशमात्र हुवा ॥ फेर हस्तमात्र फेर वृछमात्र फेर जोजनमात्र होगइ ॥ जेसें संकल्पका वृछ एक क्षणतें बढ जाताहे ॥ तेसें उसका शरीर बढगया ॥ ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे सूचीशरीरलाभोनाम द्विपंचाशत्तमःसर्गः ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जेसें वर्षाकालका बद्दल सूक्ष्मतें स्थूल होजाताहे तेसें सूची सूक्ष्म शरीरतें बहुरी कर्कटि राक्षसी होतभइ॥ जेसें सर्प कंचुकोकों त्यागकें फेर ग्रहण नहिकरता तेसें राक्षसीनें शरीरकों आत्मतत्वके कारननहि ग्रहण कीया ॥ एसे शरीरकों पायकें बहुरी पद्मासन बांधीकें संवित सत्ताविषे निर्विकल्प पदविषे स्थितभइ ॥ षट्मास पर्यंत पहाडके शिखरकी नांइ समाधि स्थित रहि बहुरी प्रारब्ध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेगकरी जाग आइ तब वृत्ति बहिर्मुख भइ ॥ तब क्षुधा लगआइ ॥ काहेतें जो शरीरके सुभाव शरीर पर्यंत रहतेहैं ॥ तब विचारत भइ जो विवेकीहे तिनका मैं भोजन न करोंगी ॥ तिनके भोजनतें मेरा मरणा श्रेष्ठ हे ॥ जो न्यायकर भोजन करणे जोगहे तिसकों करोंगी ॥ जो शरीर नष्ट होवे तोभी न्याय विना भोजन न करोंगी ॥ देहादिक सब संकल्पमात्र हे ॥ मुजे न मरणेकी इछा हे न जीनेकी इछा हे॥ हे रामजी ! एसें विचारकरी सूची तूष्णी होइ बेठी ॥ राक्षसी सुभावका त्याग कीया तब सूर्यभगवान आकाशवाणी करी कहत भया ॥ हे कर्कटी तुं जाइकें मूढ जीवोंका भोजन कर ॥ जब तुं भोजनकरेगी तब उनका कल्याण होवेगा ॥ मूढोंका उद्धार करनाभी संतोंका स्वभाव हें ॥ जो विवेकी पुरुष हे तिनका तुम भोजन नांही करना अरु जो तेरे उपदेशकरी ज्ञानकों पावे तिनकोंभी न मारना॥ अरु जो उपदेशकरीभी बोधात्मा न होवे तिनका भोजन करना इह न्याय हे ॥ तब राक्षसीनें कहा ॥ हे भगवन् ! तुम अनुग्रह करिकें कहाहे ॥ इसी प्रकार मुजकों ब्रह्माजीनेंभी कहाथा ॥ हे रामजी ! एसें कहिकरी सूची हिमालयके शिखरतें उतरी ॥ तहां किरात देश था ॥ बहुत मृग पशू रहतेथे तिनविषे विचरणे लागी ॥ रात्रभी स्याम अरु राक्षसीभी स्याम अरु तमाल वृछभी स्याम महा अंधकार भासे ॥ जेसें भमरेकी पीठ स्याम होतिहे मानों कज्जलका मेघ आय स्थित भयाहे॥ एसी स्यामता विषे किरात देशका राजा मंत्री ओर वीर जात्राकों निकरे॥ तिनकों आते देखकें राक्षसी विचारत भइ ॥ जो मुझे भोजन आय प्राप्त भया ॥ इह मूढ अज्ञानि हे इनकों देह अभिमान हे ॥ इन मूर्खोंके जीनेकरी कछु अर्थ सिद्ध नहि होता ॥ न इह लोक सिद्धहोताहे न परलोक सिद्ध होताहे ॥ एसे जीवोंका जीना दुःखके निमित्तहे ॥ इसकों जतन करीभी मारना जोगहे॥ इनकों पालना अनर्थके निमित्त हे पापकों उदय करतेहे ॥ आदि ब्रह्माकि नीतिहे जो पापी मारणे जोगहे॥ अरु जो गुणवान हे सो मारणे जोग नहि कदाचित् गुणवान होवे तो मैं न मारोंगी ॥ गुणवानभी दो प्रकारके हे ॥ जो अमानी अदंभी अहिंसक शांतिवानहे सो गुणवान हे अरु पुन्यकर्म करणे वालेहे सोभी गुणवान हे ॥ अरु महागुणवान तो ब्रह्मवेत्ताहे ॥ तिनके जीने करि बहुतका कारज सिद्ध होताहे ॥ जो मेरा शरीर भोजन विना नष्ट होजावे तोभी गुणवानकों न मारोंगी ॥ जो उदार पुरुषहे सो पृथ्वीका चंद्रमा हे ॥ तिनकी संगतिकरी स्वर्गभी होताहे अरु मोक्षभी होताहे ॥ जेसें संजीवनी बूंटी करी मृतकभी जीताहे ॥ तेसें संतोके संगकरी अमृत होताहे ॥ तातें मैं प्रश्नकरिकें इनकी परिक्षा करों ॥ कदाचित् इहभी गुणवान होवे ॥ इह कमलनेन ज्ञानवान भासतेहें ॥ जो ज्ञानवान पुरुष हे सो तो पूजने जोग हे ॥ अरु जो मूर्ख हे सो डंड देणे जोगहे ॥ मैं इनकों भोजन करोंगी ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे राक्षसीविचारोनामत्रिपंचाशत्तमःसर्गः ॥ ५३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! तब उह राक्षसी उनकों देखकें मेघकी नांइं गरजणे लगी अरु कहत भइ॥ अरे अटवीरूपी आकाशके चंद्रमा सूर्य तुम कवन हो बुद्धिवान हो अथवा दुर्बुद्धि हो अब कहांतें आयेहो ? ॥ अरु तुमारा क्या आचारहे ? तुम तो मुजकों ग्रास आन प्राप्त भयेहो ॥ अब मैं तुमकों भोजन करोंगी ॥ राजोवाच ॥ अरे इस भौतिक तुछ शरीरकों पाइकरी तुं कहां रहतिहे ॥ हमकों देखकें जो तुं गरजति हे ॥ सो तेरा शब्द हमकों भमरीके शब्दवत् भासताहे ॥ कछु हमकों भय नहि होता ॥ हे राक्षसी ! इह शरीर तेरा माया मात्रहे ॥ इस तुछ सुभावकों त्याग करि जो कछु तेरा अर्थ हे सो कहो हम पूर्ण करि देवेंगे ॥ हे रामजी ! जब इस प्रकार राजानें कहा ॥ तब तिनके चलावने निमित्त राक्षसी प्रलयकालके मेघोकी नांइं बहुरी बडा शब्द करतभइ ॥ जो पहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डभी चूर्ण होजावे तेसा शब्द करणे लागी ॥ सब दिशा शब्द करि भर रहि ॥ ग्रीवाकों अरु भुजा ऊर्ध्व करीकें भयानक शब्द करे ॥ वीजलीकी नांइं नेत्रोंकों चमकावे तिसकीमूर्ति देख
कें राक्षस अरु पिशाचभी कंपायमान होवें॥ एसे भयानक स्वभावकों देखकेंभी दोनों धीरज विषे रहे॥ तव मंत्रीनें कहा अरे राक्षसी एसे शब्द तूं व्यर्थ करतिहे॥ इन करि तो तेरा प्रयो
जन कछु सिद्ध न होवेगा ॥ इस आरंभकों त्यागकें अपना अर्थ होवे सो कह॥ बुद्धिमान जो पुरुष होतेहे सो तिस अर्थकों ग्रहण करतेहे जो अपना विषयभूत होताहे ॥ जो अप
ना बिषयभूत नहि होता ॥ तिसके निमित्त जतन नहि करते ॥ सो हम तेरा विषयभूत नहि ॥ तुज जेसे सहस्रहि मर्दन कीये हे ॥ हे राक्षसी! हमारे धीरजरूपी पवनकरि तुज जेसी अनंत
मखियां तृणवत् उडत फीरतीयांहे ॥ तातें नीच स्वभावकों त्याग स्वस्थचित्त होइकें जो कछु अपना प्रयोजन हे सो प्रगट करु ॥ बुद्धिवान जो व्यवहार करतेहे सो
स्वस्थचित्त होइकें करतेहे ॥ स्वस्थ हुवे विना व्यवहारभी सिद्ध नहि होता ॥ इह आदि नीति हे तातें स्वस्थचित्त होइकरी अपना वृत्तांत अर्थ कहि दे ॥ हम तेरा
अर्थ सिद्ध करि देवेंगे॥ हमारे पासतें सुपनेविषेभी कोउं अर्थी व्यर्थ नहि गया ॥ सभका अर्थ हम पूर्ण करते हैं ॥ तातें अपना प्रयोजन कहिदे ॥ हे रामजी!
जब एसें मंत्रीने कहा तब राक्षसी चितवत भइ ॥ जो इह वडे उदार आत्मा दृष्ट आतेहे ॥ अरु उज्जल आचारवान हे ॥ और जीवोंके समान नहि ॥इह वडे
प्रकाशवान हे अरु धीरजवान हे ॥ उदारता करिकें इसके वचन ज्ञानवानों साथ मिलतेहे॥ अब में इनकों जान्याहे अरु इननें मुजकों जानीहे ॥ मुजसों इसका नाशभी न होवेगा
काहेतें जो इह अविनाशी पुरुष हे ॥ ब्रह्मसत्ता विषे स्थित हे तातें ज्ञानवान हे ॥ एसा निश्चय ज्ञान विना ओर किसका नहि होता ॥ परंतु कदाचित अज्ञानी होवे तो वहुरी सं
देहकों अंगीकार करिकें पुछतीहों ॥ संदेहवान होकरि बोधवानकों नहि पुछते हे सोभी नीच वुद्धि हे ॥ हे रामजी ! एसें मनविषे धारकें वहुरी पुछत भइ ॥ तुम कवन हो अरु तुमारा
आचार क्या हे ? निष्पाप महा पुरुषोंकों देखकें मित्रभाव उपज आताहे ॥ ॥ मंत्रीउवाच ॥ किरात देशका इह राजा हे अरु में इसका मंत्री हों॥ अरु रात्रविषे तुम सारखे दुष्टों
कों मारणे निमित्त उठेहें ॥ रात्रदिनविषे हमारा इहि आचार हे जो जीव धर्मोंकी मर्यादाकों त्यागनेहार हे तिनकों हम नाश करतेहें ॥ जेसें इंधनोकों अग्नि नाश करता हे तेसें
हम दुष्टोंकों नाश करतहे ॥ ॥ राक्षसीउवाच ॥ हे राजन् इह तेरा दुष्ट मंत्री हे॥ जिस राजाका मंत्री भला नहि होता उह राजाभी भला नहि॥ अरु जिस राजाका मंत्री भला होताहे
तिसकी प्रजाभी शांतिवान होतिहे ॥ भला मंत्री सो कहाताहे ॥ जो राजाकों न्यायविषे अरु विवेक विषे जोडे ॥ जो राजाविवेकी होताहे ॥ तो शांतात्मा होताहे ॥ जो राजा शांतिवान
हुवा तब प्रजाभी शांतिवान होतिहे ॥ सब गुणोंतें जो उत्तम गुण हे सो आत्मज्ञान हे ॥ जो आत्माकों जानताहे सोइ राजा हे अरु सोइ मंत्रीहे ॥ जिसविषे प्रभुताभि होवे ॥ अरु
समदृष्टि होवे अरु जो प्रभुता अरु समदृष्टितें रहितहे ॥ सो न राजा हे न मंत्री हे ॥ हे राजन् ! जो तुम आत्मज्ञानवान पुरुष हो तो तुम कल्याणरूप हो ॥ अरु जो ज्ञानतें रहित
हो तब में तुमकों भोजन करोंगी ॥ तुमकों छूटनेका उपाय इहिहे जो में प्रश्नका समूह पूछतीहों तिनका उत्तर देना ॥ जो प्रश्नका उत्तर दीया तब मेरे पूजणे जोग हो अरु जो मेरा अ
र्थ होवेगा सो कहोंगी तुम पूर्ण करोगे॥ अरु जो प्रश्नोका उत्तर न दिया तब तुमारा भोजन करोंगी ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे राक्षसीविचारोनाम चतुःपंचाशत्तमःसर्गः॥५४॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हें रामजी ! जब इस प्रकार राक्षसीनें कहों तब राजानें कहा तु प्रश्न कर हम तुजकों उत्तर देवेंगे ॥ ॥ राक्षसीउवाच ॥ हे राजन् ! यह एक अणु कवन हे जिसतें अनेक प्रकार हुवेहे ? ॥ एकका अनेक नाम हे अरु उह कवन अणुहे जिसविषे अनेक ब्रह्मांड होतेहें ? जेसें समुद्रविषे अनेक बुदबुदे उपज करी लीन होतेहें तेसें एक अणु विषे अनेक ब्रह्मांड उपजतहे अरु लीन होतेहे ॥ अरु उह आकाश कवन हे जो पोलतें रहितहे ॥ अरु उह कवन अणु हे जो न किंचित्हे न आकिंचित्हे ? ॥ अरु उह कवन अणु हे जिसविषे तेरा अहं अरु मेरा अहं फुरता हे ? अरु अहं त्वं एक विषे जनाते हे सो कवन हे ? अरु उह कवन हे जो चल्या जातहे अरु कदाचित् नहि चलता ? अरु सो कवन हे जो तिष्ठितभी हे अरु अतिष्ठतभी हे ॥ अरु उह कवन हे जो पाषाणवत हे अरु उह कवन हें जिसनें आकाश विषे चित्र कीयेहे अरु उह अग्नि कवन हे जो दाह क शक्तिनें रहित हे अरु अग्निरूप हे॥ अरु उह अग्नि कवन हे जिसतें अग्नि उपज्या हे ? अरु उह कवन अणु हे जो सूर्य अग्नि चंद्रमा ताराके प्रकाशतें रहित हे अरु अविनाशी हे ? अरु उह कवन हे जो नेत्रोंकरि देख्या नहि जाता अरु सब प्रकाशोंकों उत्पन्न करताहे ? अरु उह कवन जोति हे जो फुल फल वेलीकों प्रकाशतीहे ? अरु जन्मांधकोंभी प्रकाशता हे ? अरु उह कवन अणु हे जो आकाशादिक भूतोंकों उपजाताहे ? अरु उह कवन अणु हे जो स्वाभाविक प्रकाशमान हे ? अरु उह भंडार कवन हे जिसतें ब्रह्मांडरूपी रत्नउपजतेहें ? अरु उह कवन अणु हे जिसविषे प्रकाश अरु तम एकठे रहतेहे ? अरु उह कवन अणु हे जिसविषे सत असत दोनों एकठे रहतेहे ? अरु उह कवन अणु हे जो दूरभी अदूर हे अरु उह कवन अणु हे जिसविषे सुमेरु आदिक पर्वत समाय रहे हे ? अरु उह कवन अणु हे जिसविषे निमेषमें कल्पहे अरु कल्पमें निमेष हे ? अरु उह कवन हे जो प्रत्यक्ष हे अरु असद्रूप हे ? अरु उहकवन हे जो सतरूप हे अरु अप्रत्यक्षरूप हे ? उह कवन चैतन हे जो अचैतन हे ? अरु उह कवन वायु हे जो अवायुरूप हे ? अरु उह कवन हे जो अशब्दरूप हे ? अरु उह कवन हे जो सर्व हे ? अरु निष्किंचितहे ? अरु उह कवन अणु हे जिसविषे अहं नहि अरु हे ? अरु उह कवन हे जो अनेक जन्मोके जतन करिपावताहे ? अरु पायकें कहता हे जो कछु नहि पाया अरु सभ कछु पायाहे ? अरु उह कवन अणु हे ? जिसविषे सुमेरु आदिक तीनों भूवन तृण समान हे ? अरु उह कवन हे ! जो अनेक जोजनोंकों पूर्ण कर्ताहे ? अरु उह कवन अणु हे जिसके देखणे करि जगत फुरिआताहे ? अरु उह कवन अणुहे ; जो अणुताकों त्यागे बिना सुमेरु आदिक स्थूल आकारकों प्राप्त होताहें ? अरु उह कवन अणु हें जो बालका सोमा भाग सुमेरुतेंभी उंचा भयाहे ? अरु उह कवन अणु हे जिसविषे सब अनुभव स्थित हे ? अरु उह कवन अणु हे जो अत्यंत निस्वादहे ? अरु आपही सब स्वाद होताहे ? अरु उह कवन अणु हे जो अपने ढांपणेकों समर्थ नहि अरु सर्वकों ढांपी रहाहे ? अरु उह कवन अणु हे जिसकरि सब जीवतेहे ? अरु उह कवन अणु हे जिसका अवयव कोउ नहि ॥ अरु सर्व अवयवकों धारी रहा हे ॥ अरु उह कवन निमेष हे जिसविषे बहुतेरे कल्प स्थितहे ? अरु उह कवन अणु हे जिसविषे अनंत जगत स्थितहे जेसें बीजविषे वृछ होताहे ? अरु उह कवन अणु हे जिसविषे बीज तें आदि अरु फल पर्यंत न उदय हुवेभी भासतेहे ? उह कवन हे जो प्रयोजनतें अरु कर्तृत्वतें रहितहे ॥ अरु प्रयोजन वान अरु कर्तृत्ववानकी नांइ स्थितहे ? अरु उह कवन दृष्टाहे जो दृश्यकों मिलिकरि दृश्य होताहे ? अरु उह कवन हे जो दृश्यके नष्ट हुएभी आपकों अखंड देखताहे ? अरु उह कवन हे जिसके जाने तें दृष्टा दर्शन दृश्य तीनो लय होजातेहें ? जेसें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सोनेकों जानेतें भूषन भाव लीन होजातेहें अरु उह कवन हे जिसतें भिन्न कछु नहि ॥ जेसें जलतें भिन्न तरंगोका अभाव हे ॥ अरु उह एकहि कवन हे जो देश, काल, वस्तुके परि छेदतें रहित सत असतकी नांइ स्थित हे? अरु उह कवन अद्वैत हे जिसतें द्वैतभी भिन्न नहि जेसें समुद्रतें तरंग भिन्न नहि ॥ अरु सो कवन हे जिसके देखेते सत्ता असत्ता सब लीन होताहे ॥ अरु उह कवन हे जिसविषे भ्रमरूपी अनंत जगत स्थित हे ॥ जेसें बीजविषे वछ होताहे ॥ अरु उह कवन हे जो सबके अंतर हे? जेसें वछविषें बीज होतेहें ॥ अरु उह कवन हे जो सत्ता असत्तारूपी आपहि भयाहे ॥ जेसें बीज वछरूप हे अरु वछ बीजरूप हे ॥ अरु उह अणु कवन हे जिसविषे तंतुभी सुमेरुकी नांइ स्थूल हे जिसके अंतर कोटि ब्रह्मांड हे ॥ हे राजन्! तिस अणुकों देखाहे तो कहो ॥ हे राजा इह मुजकों संशय हे तिसकों तुम अपने मुखकरि दूर करो ॥ जिसके विद्यमान संशय दूर निवृत्त न होवे तिसकों पंडित नहि कहता ॥ अरु जो ज्ञानवान हे तिनकों इन प्रश्नोका उत्तर कहना सुगम हे ॥ इस संशयकों उह शीघ्रहि छेद डारताहे अरु जो अज्ञानिहे तिनकों उत्तर कहना कठिन हे ॥ हे राजन् जो तुम मेरे प्रश्नोका उत्तर दीया तब तुम मेरे पूजणे जोगहे ॥ अरु जो मूर्खता करिकें प्रश्नोका उत्तर न देओगे अरु प्रश्नोका विपर्यय जानोगे तब तुम मेरे उदररूपी जठराग्निके इंधन हो ॥ दोनों मेरे उदरविषे जाइ पडोगे ॥ तिसतें अनंतर तुमारी सब प्रजाकों ग्रास करी लेउंगी ॥ काहेतें जो मूर्ख पापीयोंका मारणा श्रेष्टहे ॥ आगें पापकरणेतें छुटेंगें तुमारा भोजन करकें पीछें तुमारी सब प्रजाकों भोजन करि लेउंगी ॥ ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी श्याम मेघकी नांइ जिसका आकार हे एसी राक्षसी इस प्रकार कहि करि शुद्ध आशयकों लेकरि तूष्णी भइ ॥ जेसें शरत्कालविषे मेघ मंडल निर्मल होताहे तेसें निर्मल भावकों प्राप्त भइ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे राक्षसी प्रश्न वर्णनं नाम पंचपंचाशत्तमः सर्गः ॥ ५५ ॥

॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी! इह जो अर्धरात्रके समय महा शून्य वनविषे महाराक्षसीनें महाप्रश्नोकों जब कीया ॥ तब महामंत्री तिसकों उतर कहत भया ॥ ॥ महामंत्रीउवाच ॥ हे राक्षसी! इह जो तुमनें संशयसों प्रश्न कीये हे तिनका में क्रमकरि उत्तर कहताहों॥ अरु तेरे संशयकों छेदन करता हों जेसें उन्मत्त हस्तिकों केसरी सिंह नष्ट करताहे ॥ तेसें में तेरे संशयकों छेदन करताहों ॥ हे राक्षसी कमलनेनी जेते कछु तेनें प्रश्नकीये हे सो एक परमात्माहीके कीयेहें॥ तातें तेरा सब प्रश्नोका एकहि प्रश्नहे ॥ परंतु तुमने अनेक प्रकार कर कीयेंहें सो ब्रह्मवेत्ताके जोगहे ॥ हे राक्षसी! जो अनामाख्य हे ॥ अर्थ यह जो सर्व इंद्रियोंका विषय नहि अरु अगम हे अरु मनकी चिंतनातें रहित हे ॥ एसी सत्ता चिन्मात्र हे अरु आकारभी सूक्ष्म हे इस कारणतें सूक्ष्म कहता हे॥ सूक्ष्मता करकें तिसकी अणु संज्ञाहे॥ नहि कछू परमाणुता करकें तिसकी अणु संज्ञाहे ॥ काहेतें जो सर्वात्मा हे॥ तिस अणुविषे सत असतकी नांइं जगत स्थित हे ॥ अरु तिसहि चिदअणुविषे जब कछुक संवेदन फुरताहे ॥ तब उहि संवेदन सत्य असत्य जगतकी नांइं भासताहे तिसकरिकें चित्त कहते हें ॥ अरु सृष्टितें पूर्व तिसविषे कछु न था ॥ तिस करि निष्किंचन कहताहे॥ अरु इंद्रियोंका विषय नहि॥ तातें न किंचित हे अरु उहि चिदणुविषे सबका आत्मा हे ॥ तातें अनंत भोक्तापुरुष किंचन हे ॥ तिसतें इतर कछु नहि तातें न किंचन हे ॥ अरु सोइ चिदअणु सबका आत्मा हे अरु सोइ चिदअणु एकही आभास करिकें अनेकरूप भासताहे॥ जेसें सुवर्णतें नाना प्रकारका भूषन भासतेहें अरु उहि चिदअणु परमाकाशरूप हे ॥ जो आकाशतेंभी सूक्ष्महे अरु मन वाणीतें अतीत हे ॥ सो सर्वात्मा हे शून्य केसें होवें सतकों जो शून्य कहतेहें सो उन्मत्त कहतेहें ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काहेतें जो असतभी सत बिना सिद्ध नहि होता ॥ जिसके आश्रय असतभी सिद्ध होताहे ॥ सो सतहे अरु उहि चिदअणु पंचकोशोविषे छिपता नहि जेसें कपूरकी गंध प्रगट होतिहे॥ छिपति नहि तेसें प्रगट होताहे ॥ पंचकोशविषे आत्मा छिपता नहि अनुभवरूप हे ॥ अरु उहि चिन्मात्र सर्वरूप करी किंचित हे अरु अचेतन चिन्मात्र हे ॥ तातें अकिंचित्हे इंद्रियोंते रहित हे ॥ तातें निर्मल हे तिसहि चिद् अणुविषे फुरणेकरि अनेक जगत स्थितहे ॥ जेसें समुद्रविषे फुरणे करिकें तरंग उपजतेहें बहुरी लीन होतेहें ॥ तेसें चिदअणुविषे फुरणे करी अनेक जगत उपजकें लीन होतेहें ॥ मन अरु इंद्रियोंतें अतीत हे तातें चिदअणु शून्य कहता हे ॥ अपणे आपहि करि प्रकाशता हे तातें अशून्यहे ॥ हे राक्षसी मेरा अहं अरु तेरा अहं भया हे सो आत्मा एकहि भयाहे अहंकी अपेक्षा करिकें त्वं हे ॥ अरु त्वंकी अपेक्षा करिके मैं परिछिन्न हों परंतु दोनोंका उत्थान जोहे सो एक आत्मतत्वतेंहि हे ॥ तिसहि चिदअणुके बोधतें ब्रह्मरूप होताहे ॥ अरु तिसहि बोधविषे अहं त्वं सब लीन होतेहे अथवा सर्व आपहि होताहे त्रिपुटिरूपभी उहि हे अरु उहि चिदअणु अनेक जोजनों पर्यंत जाताहे अरु कदाचित चलायमान नहि भया काहेतें जो संवित अनंत रूप हे ॥ जोजनोंके समूह तिसके अंतर हे न कोउ आता हे न जाताहे ॥ अपने आकाश कोशविषे सब देशकाल स्थित हे ॥ जिसविषे सब कछु होवे तिसकों प्राप्ति वास्तवतें कहा होवे ? ॥ इह जेता जगत हे सो तो आत्माविषे हे ॥ फेर आत्मा कहां जावे ॥ जेसें माताकी गोदविषे पुत्र होवे तिस निमित्त उह कहां जावे ॥ तेसें आत्माविषे इह जगत स्थित हे फेर आत्माकों जाता कहां कहना अरु चलता जो भासताहे सो देहकी अपेक्षाकरि भासताहे ॥ वह कदाचित् चल्या नहि जेसें आकाशविषे घटादिक स्थित हे तेसें चिदअणुविषे देश काल स्थित हे ॥ जेसें घट एक देशतें देशांतरकों जावे तो घट गया हे आकाश नाहीं गयाहे ॥ घटकी अपेक्षाकरी आकाश जाता भासताहे ॥ घटाकाश कहुं गया नहि काहेतें जो आकाशविषे सब देशस्थित हे ॥ इह कहां जावे तेसें आत्मा जाताहे अरु नहि जाता तिसहि चिन्मात्र परमात्मविषे संवेदन आकार रचेहे आदि अंतते रहित विषे विचित्ररूपी जगत रच्याहे अरु सोइ चिदअणु अग्निकी नांइं प्रकाशरूप हे अरु जलानेतें रहित हे ॥ ज्ञान अग्निकरि प्रकाशमान हे ॥ अग्निभी तिसतें उपजाहे अरु सर्वगत उहि हे ॥ अरु द्रव्योकों पचाताभी उहिहे ॥ प्रलयविषे सब भूत तिसविषे लीन होतेहे ॥ अरु पुष्कळ मेघ एकठा होवे तोभी उसकों आवरण नाहीं करे सदा प्रकाशरूप अरु ज्ञानरूप हे ॥ आकाशतेंभी निर्मल हे अरु प्रकाशरूप हे ॥ जु अग्निभी तिसतें उत्पन्न होतहे ॥ अरु सबकों सत्ता देनेहारा हे ॥ सूर्यादिकभी तिसके प्रकाशकरि प्रकाशतेहे॥ अरु अनुभवरूप हे नेत्रों विना भासताहे ॥ एसा हृदयरूपी मंदिरका दीपक हे सो आत्मा हे ॥ अनंत परम प्रकाशरूप हे अरु मन इंद्रियोंका विषय नहि ॥ अरु लता फुल फल आदिक सबकों आत्मत्व करिकें प्रकाशताहे ॥ सबका अनुभव कर्ता उहिहे ॥ काल आकाशक्रीया आदिक पदार्थकों सत्ता देनेहारा उहि चिदअणु हे ॥ अरु सबका स्वामी कर्ता उहिहे सबका पिता उहिहे अरु सबका भोक्ताभी उहीहे ॥ अरु स्वरूपतें सदा अकर्ता अभोक्ता हे रूप जिसका ॥ जेसें सुपनेविषे कर्ता भोक्ता भासताहे अरु अकर्ता अभोक्ताहे तिसतें इतर कछु नहि इस कारणतें किंचनरूप हे ॥ जगतकों धारणे हारा हे स्वरूपतें मातृ मान मेय जिसकरी प्रकाशतेहें उपजा कछु नहि चिदात्माका किंचनहे ॥ किंचन करीकें जगतकी नांइं भासताहे ॥ जो तुजनें पूछाथा जो दूर अरु निकट कवन हे सो अलखभाव करिकें दूरभी उहिहे ॥ अरु चिदरूप भावकरिकें अदूर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी उहिहे अथवा ज्ञानकरिकें अदूरभी उहिहे अरु अज्ञानकरिकें दूरतें दूरहें ॥ अरु अज्ञान करिकें तमरूप अरु ज्ञानकरीकें प्रकाशरूपभी उहिहे अरु तिसहि चिदअणुविषे संवेदनकरीकें सुमेरु आदिक स्थित हे ॥ हे राक्षसी ! जेता कछु जगत भासताहे सो सब संवेदनरूप हे ॥ सुमेरुआदिक पदार्थ कछु उपजे नहि चिदसत्ता ज्यौंकीत्यौं स्थित हे तिसविषे जेसा संवेदन फुरताहे तेसा आकार होइ भासताहे ॥ जहां निमेषका संवेदन फुरताहे ॥ तहां निमेष कहताहे ॥ अरु जहां संवेदन कल्पका फुरताहे तहां कल्प कहतेहे ॥ कल्प क्रिया आदिक जगत विलास सब निमेषविषे फुरि आयेहे ॥ जेसें मनके फुरणे करिकें बहुत जोजनों पर्यंत पुरुष भास आताहे अरु जेसें अल्प मुकुरविषे बडे विस्तारनगरका प्रतिबिंब समाइ जाताहे तेसें निमेषके फुरणेविषे सब जगत फुरि आताहे ॥ अरु निमेषविषे कल्प समुद्र पुर अनंत जोजनोंका विस्तार चिदअणुविषे स्थित हे ॥ अरु द्वैत एक भ्रमतें रहित हे ॥ हे राक्षसी इह जगत स्वरूपतें अवस्तु रूप हे संवेदन करिकें भासताहे ॥ जेसें जेसें संवेदनविषे दृढ प्रतित होतिहे तेसा तेसा अनुभव होताहे ॥ तुं देख क्षणके सुपनेविषे सत असत जगत फुरी आताहे अरु बहूत कालका अनुभव होताहे ॥ जो दुःखी होतेहे तिसकों थोडेकालविषे बहुत भासतेहे ॥ अरु जो सुखी होताहे तिसकों बहुत कालविषे थोडाकाल भासताहे ॥ जेसें हरिचंदकों एक रात्रविषे द्वादश वर्षका अनुभव भया ॥ तातें जेता जेता संवेदन दृढ होताहे ॥ तेसें देश काल होइ भासताहे सतभी असतकी नांइ भासताहे जेसें सुवर्णविषे भूषन बुद्धि होतिहे तब भूषन भासतेहे ॥ अरु समुद्रविषे तरंगोंकी दृढतातें तरंग भिन्न भासतेहें तेसें निमेषविषे कल्प भासतेहें अरु वस्तुतें न निमेष हे न कल्प हे ॥ न दूर हे न निकट हे ॥ सब चिदअणु आत्माका आभास हे ॥ हे राक्षसी प्रकाश अरु तम, दूर अदूर, सब चैतन संपुटविषे रत्नोंकी नांइहे वस्तुतें अनन्यरूप हे ॥ भेदाभेद कछु नहि ॥ हे राक्षसी ! जबलग दृश्यका सदभाव दृढ होताहे तबलग द्रष्टा नहि भासता ॥ जेसें जबलग भूषन बुद्धि होतिहे तबलग स्वर्ण नहि भासता अरु जब स्वर्ण जान्या तब भूषण बुद्धि नहि रहति स्वर्नहि भासता हे ॥ तेसें जबलग दृश्यका स्पंदभाव होताहे तबलग द्रष्टा नहि भासता अरु जब आत्मज्ञान होताहे तब केवल ब्रह्मसत्ता निर्मलहि सद्रूपकरिकें सर्वत्र भासतिहे ॥ अरु दुर्लक्षता करिकें अर्थ यह जो मन इंद्रियांके अविषयतें असतरूप कहतेहें ॥ चैत्यताकरीकें तिसकों चैतन कहतेहें ॥ अरु चैत्यके अभावतें अचैतनरूप कहतेहे अर्थ यह जो चैत्यके अभावतें अचैत्य चिन्मात्र कहतेहे ॥ सो चैतन चमत्कारतें जगतकी नांइ होइ भासताहे ॥ हे राक्षसी और जगत तिसविषे कोउ नहि ॥ जेसें वायुका विरोला दछाकार होय भासताहे अरु जेसें सघनधूप करिकें मृगतृष्णाकी नदी भासतिहे तेसें एक अद्वैत चैतन हे ॥ सो घन चैतनता करिकें जगतकी नांइं होइ भासताहे ॥ जेसें सघन शून्यता करिकें आकाशविषे नीलता भासतिहे ॥ तेसें दृढ सघन चैतनताकरिकें जगत भासताहे ॥ जेसें सूर्यकी सूक्ष्म किरणांका किंचन मृगतृष्णाका जल होताहे तिस नदीका प्रमाण कछु नहि ॥ तेसें इह जगत आस्था भासतिहे सब आकाशरूपहे ॥ जेसें भ्रमकरिकें धूडके कणमें स्वर्नकी नांइं चमत्कार होतेहे तेसें जगत कल्पना चित्तके फुरने करीकें भासतीहे ॥ जेसें सुपनपुर अरु गंधर्व नगर आकार सहित भासतेहे सो न सत हे न असत हे ॥ तेसें इह जगत दीर्घ सुपना हे न सत हे न असत हे ॥ हे राक्षसी जब तिसका आत्माविषे अभ्यास होवे ॥ तब इह कुंडादिक एसेंहि रहे अरु आकाशरूपहि भासे ॥ स्वरूपतें कुंडादिकभी आकाशरूप हे ॥ आकाश अरु कुंड आदिकों विषे भेद कछु नहि मूढता करिकें भेद भासताहे ज्ञानीकों सब चित्ताकाशरूप भासताहे ॥ हे राक्षसी ब्रह्मातें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तृण पर्यंत संवेदन विषे कल्पना दृढ होरहिहे तेसेंहि भासतिहे अरु वास्तवतें उहि चिदाकाश प्रकाशताहे ॥ घन चैतनता करिकें उहि चिदाकाश आकारोंकी नांइं प्रकाशताहे ॥ तिसीका इह प्रकाशहे सो अनन्यरूप हे ॥ जेसें बीज अरु दल अनन्यरूपहे तेसें असंख्यरूप जगत ब्रह्मसत्ताविषे स्थितहे सो अनन्यरूपहे ॥ जेसें बीजविषे दलका भाव स्थितहे सों आकाशरूपहे ॥ तेसें ब्रह्मविषे जगत स्थित हे सो अक्षोभरूप हे ॥ अन्य भावकों नहि प्राप्त हुवे सो ब्रह्मसत्ता सब ओरते शांतरूपहे अज हे, एकहे, आदि मध्य अंत्यतें रहितहे, तिसविषे एक अरु द्वैतकी कल्पना कोउ नहि अनउदयहि उदय हुइहे निर्मल स्वप्रकाश आत्माहिहे ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे राक्षसी प्रश्नभेदो नाम षट्पंचाशत्तमःसर्गः ॥ ५६ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ बडा आश्चर्यहे बडा आश्चर्यहे मंत्रीनें तो इह परम पावन परमार्थ वचन कहेहें ॥ अब कमलनेन राजाभी कछु कहताहे ॥ ॥ राजोवाच ॥ हे राक्षसी इह जो जागृत जगतकी प्रतीत होतिहे सो इसका जब अभाव होवे तब आत्मप्रतीत होतिहे॥ जब सब संकल्पकी चैत्यताका नाशहोवे तब आत्माका साक्षात्कार होवे ॥ सो आत्मसता केसीहे जिसविषे संवेदन फुरणे करि जगत होइ भासताहे ॥ अरु संवेदनके संकोच करि सृष्टिकाप्रलय होताहें तिसका अधिष्टानरूप आत्मसत्ता हे ॥ तिसकों वेदांतवाक्य जतावणेंके अर्थ कछूक कहतेहें काहेतें जो वाणीतें अतीत पदहे ॥ हे राक्षसी ! इह जो द्रष्टा दर्शन दृश्य हे ॥ तिसके अंतर अनुभव सत्ता हे सो परमात्मा हे ॥ सो परमात्माहि द्रष्टा दर्शन दृश्यरूप होइकरी भासताहे तिसविषे जगत लीला हे ॥ नानात्वभाव करिकें भी कछु खंडितभावकों नहि प्राप्त भया अखंडहि रहाहे ॥ तिस सन्मात्रसत्ताकों ब्रह्म करि कहतेहें ॥ हे भद्रे सोइ चिदअणु संवेदन करिकें वायुरूप हूवाहे अरु वायु तिसविषे अत्यंतभांतिमात्र हे ॥ काहेतें जो केवल शुद्ध चिन्मात्र हे ॥ जब तिसविषे शब्दका संवेदन फुरताहे तब शब्दरूप होइ भासताहे ॥ अरु शब्दरूप तिसविषे भांतिमात्रहे तिसविषे शब्द अरु शब्दका अर्थदेखणा दुरतें दूरहे ॥ काहेतें जो केवल चिन्मात्र हे तिसविषे अहंत्वं कछु नहि अरु उह निष्किंचन हे एसेरूप होइ करि भासताहे ॥ काहेतें सो सब शक्तिरूप आत्मा हे ॥ तिसविषे जेसी प्रतिभा फुरतिहे तेसा हि होइकरि भासताहे ॥ तातें फुरणाहि इस जगतका कारणहे अरु अनेक जतनोंकरि पावणें जो गहे सोभी आत्मसत्ता हे ॥ जब तिसकों पावताहे तब उसनें कछु नहि पाया अरु सब कछु पाया हे पाया तो इस कारणतें नहि॥ जो आगेभी अपना आप था अरु सब कछु पाया इस कारणतें जो आत्माके पाएतें कछु और पाना नहि रहता॥ हे राक्षसी ! अज्ञानरूपी वसंतऋतु करके जन्मोंकी परंपरा बेली तबलग बढति जातिहे जबलग इसके काटणे हारा बोधरूपी खडग नहि उदय भया ॥ जब बोधरूपी खडग उदय होताहे तब जन्मरूपी बेलीकों काटता हे ॥ हे राक्षसी चिदअणु संवेदन द्वारा आपकों दृश्यविषे प्राप्ती करताहे॥ जेसें किरणांका चमत्कार जलरूप होकरि स्थित होताहे सो शुद्धहि आपकों संवेदनद्वारा फुरता देखताहे तेसें चिदअणुद्वारा जगत हुवाहे॥ सो मेरुतें आदि ले करि तीनों भुवन किरणोंकी नांइ स्थित होताहे अरु वस्तुतें माया मात्र हे ॥ भमकरिकें पडे भासते हे जेसें सुपनेविषे रागीकों सुपन स्त्रीका आलिंगन होताहे तेसें इह जगत मनके फुरणे करिकें पडा भासताहे सो भममात्रहे ॥ हे राक्षसी ! सर्व शक्तिरूप आत्माविषे जेसें सृष्टिका आदि फुरणा हुवाहे तेसारूप होइकरी भासणे लागा हे ॥ जेसें संकल्पकीयाहे तेसें स्थित भयाहे ॥ तातें सब जगत संकल्पमात्रहे ॥ जेसा जिसविषे बालकका मन लगताहे ॥ तेसा रूप उसका होइ भासताहे तेसें संवितके आश्रय जेसा संवेदन फुरताहे तेसा रूप होइ भासताहे ॥ हे राक्षसी ! चिदअणु परमाणुतेंभी सूक्ष्महे अरु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिसनेंहि सब जगतकों पूर्णकीयाहे सब जगत अनंतरूप आत्माहे तिसविषे संवेदन करिकें जगतकी रचना हुइहे ॥ जेसें नट नायक होताहे सो जेसें जेसें बालककों नेत्रोंकर जतावता हे तेसें उह नृत्य करताहे ॥ अरु जब उह जतावणेतें ठेर जावे ॥ तब उह ठेर जावे हे तेसें चित्तके अवलोकनतें करिकें सुमेरु आदिक तृण पर्यंत ज गत नृत्य करताहे ॥ जेसें चित्त संवेदन फुरंताहे अनंतशक्ति आत्माविषे तेसें तेसें होइ भासताहे ॥ हे राक्षसी! देशकाल वस्तुके भछेदतें आत्मसत्ता रहितहे ॥ इस का रणतें सुमेरु आदिकतें स्थूल हे ॥ तृणके समान सुमेरु आदिकहे अरु बालके अग्रतें सोमा भाग होवे तेसें सूक्ष्महे सो अल्पता करि एसा सूक्ष्म नहि ॥ जिसविषे सरसोंका दाणाभी सुमेरुवत स्थूल हे ॥ मायाकी कला बहुत सूक्ष्महे ॥ तिसतेंभी चिदअणु सूक्ष्म हे काहेतें जो निर्मायिक पद परमात्माहे ॥ जेसें स्वर्ण अरु भूषणकी शोभा समान नहि अर्थ यह जो स्वर्नविषे भूषन कल्पित हे समान केसें होवें॥ तेसें माया परमात्माके समान नहि काहेतें जो कल्पितहे ॥ हे राक्षसी! जेसें कछु सूर्य आदिक प्रकाश हे ॥ सो सब अनुभव करि प्रकाशताहे इनका सदभाव कछु न था तिसही सत्ता करि इनका प्रगट होणा भयाहे ॥ अरु बहुरी जर्जरी भूत होतेहे ॥ प्रकाशरूप शुद्ध चिन्मात्र सत्ता हे ॥ सो सदा अपने आपविषे स्थित हे तिस चिदअणुके अंतर बाह्य प्रकाश हे अरु इह जो सूर्य चंद्रमा अग्नि आदिक प्रकाशहे सो तम साथ मिले हुएहें अर्थ यह जो भेदरूप हे यहभी तम रूपहे काहेतें जो अपेक्षक प्रकाश हे इनोविषे एता भेद हे जो प्रकाश शुक्लरूप हे अरु तम कृष्णरूप हे रंगका भेद हे प्रकाशरूप कोउ नहि ॥ जेसें स्याम कुहिड मेघकी होती हे अरु शुक्ल कुहिड बरफकी होतिहे ॥ अरु दोनों कुहिडहे ॥ तेसें तम अरु प्रकाश दोनों तुल्य हे अरु आत्मसत्ता दोनोंकों प्रकाशति हे ॥ तातें दोनोंकों आश्रयभूत आत्मसत्ता हे॥ हे राक्षसी रा त्र दिन अंतर बाहिर नदियां पहाड आदिक सब लोक आत्मसत्ताके प्रकाशकरी प्रकाशतेहे ॥ जेसें कमल अरु नीलोत्पल दोनोंकों सूर्य प्रकाशताहे ॥ कमलस्वेतहे अरु नीलोत्पल स्याम हे ॥ जहां स्वेत कमल हे तहां नीलोत्पलका अभाव हे अरु जहां नील कमल हें तहां स्वेत कमलका अभाव हे ॥ अरु दोनोंका प्रकाशक सूर्य हे ॥ तेसें तम अरु प्रकाश दोनों का प्रकाशक चिदात्मा हे ॥ जेसें रात्र अरु दिन दोनों सूर्य करीकें सिद्ध होताहे तेसें तम अरु प्रकाश दोनों आत्माकरी सिद्ध होतेहें ॥ जेसें दिन तब कहताहे ॥ जो सूर्य उदय हो ताहे अरु जब सूर्य अस्त होताहे तब रात्र होतिहे ॥ आत्मा तेसेंभी नहि आत्मप्रकाश सदा उदयरूप हे ॥ उदय अरु अस्ततें रहित हे ॥ तिसविनां कछु सिद्ध नहि होता ॥ सबका प्र काशक चिदअणु हे ॥ हे राक्षसी तिस अणुके अंतर विचित्र अनुभव अणुहे ॥ जेसें वसंतऋतुके अंतर पत्र फूल फल टास होतेहे ॥ तेसें चिदअणुतें सब अनुभव अणु होतेहे ॥ जेसें एक बीजतें अनेक दछ क्रम करकें होजातेहें तेसें अनेक चिदअणुतें अनेक अनुभव अणु होतेहे ॥ केइ वितीत भयेहें केइ वर्तमान हे अरु केइ भविष्यत होवेंगें ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग होतेहे सो केइ अब वर्ततेहे केइ आगें होवेंगे तेसें आत्मा विषे तीनों कालको सृष्टि वर्ततीयां हे ॥ हे राक्षसी चिदअणु आत्मा उदासीन हे अरु आसीनकी नांइ स्थित होताहे ॥ सबका कर्ता भीहे अरु भोक्ताभी हे अरु स्पर्श किसी साथ नहि किया ॥ जगतकी सत्यता तिसीतें उदय होतिहे इस कारणतें सबका कर्ताहि अरु सबका अपना आपहे तातें सबकों भोगता हे ॥ अ रु वास्तवतें न कछु उपजा हे न लीन होताहे॥ चिन्मात्र सत्ता ज्योंकि त्यौं सदा अपने आपविषे स्थित हे अरु अखंडहे सूक्ष्महे इस कारणतें किसी साथ स्पर्श नहि किया॥ हे राक्षसी!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जेता कछु जगत दिखताहे ॥ सो सब आत्मरूप हे ॥ आत्मा अरु जगतविषे कछु भेद नहि आत्मा अरु जगत कहणेमात्र दोनों नामहे ॥ वस्तुतें एक आत्माहि हे आत्माका चमत्कारही जगतरूप होइ भासताहे जगत कछु बना नहि ॥ चिन्मात्रसत्ता सदा अपणे आपविषे स्थित हे ॥ और जेता कछु कहणा हे सो उपदेश जतावणेके निमित्त हे वास्तवतें दूसरी वस्तु कछु बनी नहि ॥ तीनों जगत चिदाकाशरूप हे ॥ हे राक्षसी! द्रष्टा जब दृश्य पदकों प्राप्त होताहे तब सुभाविक अपने भावकों नहि देखता ॥ जेसें नेत्र जब घटकों देखताहे तब घ टहि भासताहे अपना नेत्रत्वभाव नहि दृष्ट आता तेसें दृश्यके होते द्रष्टा नहि भासता ॥ अरु जब दृश्य नष्ट होवे तब द्रष्टाभी अवास्तव हे काहेतें जो द्रष्टाभी इसकों दृश्यके संबंध करि कहताहे ॥ जब दृश्य नष्ट होजावे तब द्रष्टा किसका कहियें दृश्य विषयभूत सो होताहे जो अदृश्यहे सो विषयभूत किसिका नहि ॥ इस कारणतें तिसविषे और कल्पना कोउ नहि ब नति ॥ अरु इह जगतभि तिसका आभास हे ॥ हे राक्षसी! जेसें भोक्ताबिना भोग नहि होते तेसें द्रष्टाबिना दृश्य नहि होते जेसें पिता बिना पुत्र नहि होता तेसें एक बिना द्वैत न हि होते ॥ हे राक्षसी! द्रष्टाकों दृश्य उपजानेकी समर्थता हे परंतु दृश्यकों द्रष्टा उपजानेकी समर्थता नहि काहेतें जो दृश्य जड हे ॥ जेसें सुवर्णतें भूषन बनताहे अरु भूषणतें स्वर्न ना हि बनता तेसें द्रष्टातें दृश्य होताहे दृश्यतें द्रष्टा नहि होता ॥ हे राक्षसी स्वर्नविषे जेसें भूषन हे ॥ तेसें द्रष्टाविषे दृश्यहे सो भमरूप हे इसीतें जडरूप हे ॥ जब द्रष्टा दृश्यकों देखताहे ॥ तब दृश्य भासताहे दृष्टत्वभाव नहि भासता अरु जब द्रष्टा अपणे स्वभावविषे स्थित होताहे तब दृश्य नहि भासता ॥ जेसें जबलग भूषनबुद्धि होतीहे तबलग स्वर्ण नहि भासता भूषन हि भासताहे ॥ अरु जब सुवर्नका ज्ञान होताहे ॥ तब सुवर्नहि भासताहे ॥ भूषन नहि भासता ॥ अरु एकसत्ता विषे दोनों नहि सिद्ध होते ॥ जेसें अंधकारविषे पुरुष देख करि तिसविषे पशुत्व भासे तब जबलग पशुबुद्धि होतिहे तबलग पुरुषका निश्चय नहि होता अरु जब निश्चय करिकें पुरुष जाना तब बहुरी पशुबुद्धि नहि रहति ॥ तेसें जब द्रष्टा द्रश्यकों देखता हे त ब द्रष्टा भाव नहि दिखता द्रश्यहि भासताहे ॥ जेसें जेवरीके ज्ञानतें सर्प अभाव होजाताहे ॥ तेसें बोधकरिकें दृश्यका अभाव होताहे तब एकहि परमात्मसत्ता भासतिहे॥ द्रष्टा संज्ञाभि नहि रहति ॥ जेसें दूसरेकी अपेक्षाकरिकें एक कहताहे दूसरेके अभाव हुवे एक कहनाभी नहि रहता तेसें दृश्यके अभाव हुवे द्रष्टा कहणा नहि रहता शुद्ध संवितमात्र पद शेष रहताहे तिसविषे वाणीकी गम नहि ॥ जेसें दीपक पदार्थोंकों प्रकाशताहे तेसें द्रष्टा दर्शन अरु दृश्यकों प्रकाशताहे अरु बोधकरिकें मातृ मान मेय त्रिपुटि लीन होजातिहे ॥ जेसें सुवर्णके जाणेतें भूषन कल्पनाका अभाव होजाताहे तेसें ज्ञानकरिकें त्रिपुटिका अभाव होजाताहे केवल शुद्ध अद्वैतरूप रहताहे ॥ हे राक्षसी परम अणु जो अत्यंत निस्वाद रूप हे सो सर्व स्वादोंको उपजाताहे ॥ जहां रस सहित होताहे तहां चिदअणुकरिकें होताहे ॥ जेसें आदर्शबिना प्रतिबिंब नहि होता तेसें सब स्वाद चिदअणु विना नहि होता ॥ सबकों रसदेणे हारा चिदअणु हे ॥ सब आत्मभाव करीकें सबका अधिष्ठान हे अरु सूक्ष्मतें सूक्ष्महे तातें निस्वाद हे सोइ चिदअणु अपणे गोपकरणेकों समर्थ नहि ॥ अरु सब ज गतकों ढांप राख्याहे ॥ आप किसीकरी आछाद्या नहि जाता ॥ सो सुण जो चिदाकाशरूप हे ॥ अरु सब पदार्थोंकों सत्ता देणे हारा हे अरु सबका आश्रयभूत हे जेसें घासके बनविषे हस्ति नहि छिपता तेसें आत्मा कीसी पदार्थ करि नहि छिपता॥ हे राक्षसी! जिसकरि सब पदार्थ सिद्ध होताहे अरु सदा प्रकाशरूपहे सो मूर्खोंकों नहि भासता इह आश्चर्य हे ॥ सो सदा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुभवरूप हे ॥ इह सब जगत तिहां करि जीताहे जेसें वसंतऋतु करि फूल फल टास पत्र फूलतेंहे ॥ तेसें सब जगत आत्माकरि फूलताहे उहि चिदात्मा जगतरूप होइकें भासताहे ॥ अरु सर्वात्मभाव करकें सर्व तिसके अवयव परमार्थ निरवयवरूप निराकाररूप हे कछु तिसविषे उदय नहि भया ॥ हे राक्षसी एक निमेषके अबोधकरिकें चिदअणुविषे अनेक कल्पों का अनुभव होताहे ॥ जेसें एक क्षणके सुपनेंविषें आपकों बालक बडुरी वृद्ध अवस्था देखणे लगताहे अरु तिनों कल्पोंविषें जो निमेष हे ॥ तिसविषे अनेक कल्प विती होतेहे काहेतें जो अधिष्ठान सर्व शक्तिमान हे ॥ जेसा संवेदन जहां फुरताहे तेसा रूप तहां होइ भासताहे ॥ जेसें सुपनेविषे अभोक्ताकों भोक्तृत्वका अनुभव होताहे तेसें निमेषविषे कल्पका अनुभव होताहे ॥ वासना करि आवेष्ट हुवा अभोक्ताहि आपकों भोक्ता देखताहे ॥ जेसें सुपनेविषे अपना मरण प्रत्यक्ष देखताहे॥ तेसें इह जगतभ्रम भासताहे॥ जेसें फुरण जहां दृढ होताहे तेसा होइकरि तहां भासताहे ॥ हे राक्षसी जेते कछु आकार भासतेहे सो भ्रांतिमात्र हे जेसें निर्मल आकाशविषे नीलता भासतीहे तेसेंहि आत्माविषे विश्व भासताहे आत्मा सर्वगत हे अरु सबका अनुभवरूप हे ॥ हे राक्षसी ! तिसविषे व्याप्य व्यापक भावभी नहि काहेतें जो सर्व आत्माहे अरु सर्वरूपभी वहि हे ॥ जब शुद्ध चित्त संवितविषे संवेदन फुरताहे तब पृथक् पृथक् भावकों चेतताहे ॥ इछा करीकें जिस पदार्थकी उपलब्धि होतिहे ॥ तिसविषे व्याप्य व्यापकभाव कल्पना होतिहे ॥ वस्तुतें जो इछा हे सोइ पदार्थ भया ॥ जेसें जलविषे द्रवता होतिहे तिसकरि तरंग फेन बुदबुदा होताहे सो जलरूप हे जलतें इतर तो कछु नहि तेसें इछाकरी उपजे पदार्थ आत्मारूप हे इतर कछु नहि ॥ आत्मा देशकाल वस्तुके प्रछेदतें रहितहे केवल शुद्ध चिन्मात्र हे अरु सर्वरूप होइकरी स्थित भया हे ॥ सबका अनुभवभी तिसविषे भयाहे ॥ सो तो शुद्ध सत्तामात्र हे तिसविषे द्वैत कल्पना केसें कहियें ॥ हे राक्षसी ! जब कछु द्वैत होताहे तब एकभी होताहे ॥ जो द्वैतहि नहि तो एक केसें कहिये ? जेसें धूपकी अपेक्षाकरी छायाहे अरु छायाकी अपेक्षाकरी धूपहे तेसें एककी अपेक्षाकरी द्वैत कहताहे ॥ इस कल्पनातें रहित हे सो चिन्मात्ररूप हे अरु जगतभी तिसतें व्यति रिक्त नहि॥ जेसें जल अरु द्रवताविषे कछु भेद नहि तेसें आत्मा अरु जगतविषे कछु भेद नहि॥ हे राक्षसी ! नानाप्रकार के आरंभ दृष्ट आतेहे तोभी आत्मसत्ता समहे ॥ हे राक्षसी ! जब इसकों सम्यक् बोध होताहे तब द्वैतभी अद्वैतरूप भासताहे ॥ काहेतें जो अज्ञानकरी द्वैतकलपना होतिहे ॥ वास्तवक छु नहि ॥ अज्ञानके अभावतें द्वैतकाभी अभाव होजाताहे ॥ वास्तवतें ब्रह्म अरु जगतविषे कछु भेद नहि ॥ जेसें जल अरु द्रवताविषे भेद कछु नहि, जेसें वायु अरु स्पंदताविषे कछु भेद नहि जेसें आकाशविषे अरु शून्यताविषे कछु भेद नहि तेसें आत्मा अरु जगतविषे कछु भेद नहि ॥ हे राक्षसी! द्वैत अरु अद्वैत जानना, दुःखका कारण हे द्वैत अद्वैतकी कल्पनातें रहित होना इसीकों परमपद कहतेहे अरु दृष्टारूप जो जगत हे सो चिद परमाणुविषे स्थितहे तिसविषे सुमेरु आदिक स्थित हे॥ तातें बडा अश्चर्य हे ॥ मायाइ महा आश्चर्य हे ॥ सो चिद परम अणुविषे त्रिलोकीयां परंपरा स्थितहे ॥ इसीतें असंभवरूप मायामय हे ॥ जेसें बीजविषे वृछ स्थितहे ॥ तेसें चिदअणुविषे जगत स्थित हे ॥जेसें शाखा पत्र फूल फल करी बीज आपणे बीजत्वकों नहि त्यागता अरु अखंड रहताहे तेसें चिदअणुके अंतर जगतका विस्तार हे॥ अरु अणुत्वभावकों नहि त्यागता अखंडहि रहताहे॥ हे राक्षसी ! बीजभी परिणामकरीकें वृछभावकों प्राप्त होताहे अरु चिदअणु परिणाम करिकें जगतरूप होताहे चिदअणुका किंचन रूप हे चिदअणुहि एसें देखाय देताहे वास्तवतें न द्वैत रूप हे न अद्वैतहें न बीजहे न अंकुर हे न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थुल हे न सूक्ष्म हे न कछु उपजा हे न नष्ट होताहे न अस्ति हे न नास्ति हे ॥ न सम हे न असम हे न जगत हे न अजगत हे केवल चिदानंद आत्मसत्ता अचिंत्य चिन्मात्र अपने आ पविषे स्थितहे॥ सोइ सर्वात्मा हे जेसी जेसी भावना होतिहे तेसे तेसे हो भासताहे॥ हे राक्षसी ! उह अन उदयहि संवेदनके वशतें उदय होइकरि भासताहे॥ जेसें बीजतें वछ अनन्यरूप अनेक होइ भासताहे तेसें एक आत्मा अनेक रूप होइ भासताहे ॥ न कछु उदय हूवाहे न मिटता हे ॥ हे राक्षसी ! तिस चिदअणुतें भीहकी तंतु सुमेरुकी नांइ स्थूल हे ॥ जेसें भिहकी तंतुतें सुमेरु स्थूल हे तेसें चिदअणुतें भीहकी तंतु स्थूल हे अरु दृश्यरूपहे ॥ अरु चिदअणु दृश्य नहि मनसहित षड् इंद्रियोंका विषय नहि ॥ इस कारणतें भिहकि तंतुतें सूक्ष्महें ॥ तिस चिदअणुविषे अनंत सुमेरु आदिक स्थितहे सो क्या रूप हे ॥ जेसें आकाशविषे शून्यता होतिहे तेसें आत्माविषे जगतहे ॥ हे राक्षसी ! जिसकों आत्माका बोध हुवाहे तिस कों जगत सुषुप्तकी नांइ होता हे ॥ सो आत्मसत्ता सदा अद्वैतरूप हे अरु परिणामतें रहित हे ॥ तिसविषे मुक्त पुरुष सदा स्थित हे ॥ परमार्थतें जगतभी ब्रह्मरूप हे भिन्न भाव कछु नहि ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे सूचिउपाख्याने परमार्थ निरूपणं नाम सप्तपंचाशत्तमः सर्गः ॥ ५७ ॥ ॥ ॥७॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस प्रकार राजाके मुखतें श्रवण करिकें कर्कटीनें वनका मर्कटीरूप जीवोंके मारणेकी चपलताकों त्याग कीया अरु अंतरतें सीतल भइ ॥ अरु वि श्रामकों प्राप्त भइ अरु अंतरतें तपत मिटि गइ अरु परमानंदकों प्राप्त भइ ॥ जेसें वर्षाकालविषे मोरनी प्रसन्न होतिहे अरु जेसें चंद्रमाकों देखकें चंद्रवंशी कमल प्रफुल्लित होताहे ॥ जेसें मेघके शब्द करि बगली गर्भवान होतिहे तेसें राजाके वचन श्रवणकरिकें कर्कटी परमानंदकों प्राप्त भइ ॥ राक्षसीउवाच ॥ बडा आश्चर्यहे बडा आश्चर्यहे ! ॥ हे राजा तुमने महा पावन वचन कहेहे तातें तुमारा बोध में विमल देख्याहे अरु अमृतसारहे अरु बोधरूपी सूर्यहे अरु सीतल हे ॥ समरस करि पूर्णहे अरु शुद्ध हे राग द्वेष आदिक मलतें रहितहे ॥ जेसें पूर्णिमाका चंद्रमा सीतल अमृतकरि पूर्ण शुद्ध होताहे तेसे तुमारा बोधहे॥ विवेकी जगतविषे पूज्यहे ॥ तुमारे वचनोंकरि मेरी बुद्धि प्रफुल्लित होआइहे ॥ जेसें चंद्रमाकों देखकें कमल नी प्रफुल्लित होइ आतिहे ॥ जेसें फूलोसाथ मिलि वायु सुगंधमान होताहे ॥ जेसें सूर्यके उदय हुए सूर्यमुखी कमल प्रफुल्लित होआतेहें॥ तेसें संतोकी संगतिकर बुद्धि सुखकों प्राप्त होति हे ॥ हे राजन् ! उह कवन हे जो दीपक हाथविषे होवे अरु टोयेविषे गिरे ? तेसें उह कवन हे जो संतोके संगकरि दुःखी रहे॥ उह कवन हे जिसके हाथविषे दीपक होवे अरु तमकों देखे तेसें उह कवन हे जो संतोंकी संगति करे अरु दुःखी रहे ॥ संतोंके संगकरि सबहि दुःख नष्ट होतेहे ॥ हे राजन् तुम जो इस बनविषे आये हो सो क्या प्रयोजन हे ? तुम तो पूजने जो ग हो तुमारा प्रयोजन कहो ॥ राजोवाच ॥ हे राक्षसी मेरे नगरविषे जो मनुष्य रहते हैं तिनकों एक विषूचिका व्याधिरोग आनि लगाहे तिस विषूचिका करी उह बहुत कष्टमान भयेहैं औषधभी बहुत करी रहेहे अरु दुःख दूर नहि होता अरु हमने सुन्या हे जो एक राक्षसी हे उही जीवोंकों कष्ट देतिहे अरु तिसका मंत्रभी हे तिस मंत्रके पढेतें निवृत्ति होजाति हे तिस तुम साररखेकें मारणे निमित्त में रात्रकों वीर यात्रा करणे निकस्या हों ॥ हे राक्षसी ! जो उह राक्षसी सो तुंहि हे ॥ तो हमारा तुमारा संवादभी हुवाहे तिसकों अंगिकार करिकें प्रा णियोंकी हिंसा करणी छोड देहु किसीकों कष्ट न देहु ॥ राक्षसीउवाच ॥ हे राजन् ! तुमनें सत्य कहा हे अब में हिंसा धर्मका त्याग कीयाहे किसी जीवकों न मारोंगी ॥ राजोवाच ॥

CC-0: Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे राक्षसी ! तेनें कहां में अब किसी जीवकों न मारोंगी सो तेरा आहार तो जीव हे जीवोंकों मारे विना तेरे शरीरका निर्वाह केसें होवेगा ? ॥ ॥ राक्षसीउवाच ॥ हे राजन छसो वर्ष में समाधिविषे स्थित रहिथी तिसतें उपरांत समाधि खुली तब क्षुधा लगी ॥ अब बहुरी हिमालय पर्वतकी कंदराविषे जाइकरी निश्चल समाधिविषे जुडोंगी ॥ जेसें मूर्ति लिखी होतिहे तेसें स्थित होउंगी॥ जब समाधितें उतरोंगी तब अंमृतकी धारणाविषे विश्राम करोंगी॥ जब तिसतें उतरोंगी तब शरीरका त्याग करोंगी परंतु हिंसा न करोंगी ॥ हे राजन् जिस प्रकार में हिंसा धर्मकों अंगीकार कीया हे सो सुण॥ मुझकों क्षुधा जब बडी लगी॥ तब तिसके निवारणेअर्थ हिमालय पर्वतके उत्तर शिख उपर एक बनहे॥ तिसविषे एक सोनेकी सिला हे तिसके पास में लोहेके थंभकी नांइं आकाश साथ जिवोंके नाश निमित तप करणे लगी ॥ जब बहु वर्ष वितीत भये तब मन वांछित वर मुजकों ब्रह्माजीनें दीया ॥ तब मेरे दो शरीर भये ॥ एक आधारभूत सूर्यकी नांइं अरु दुसरा पुर्यष्टकरूप भया ॥ तब में विषूचिका नाम राक्षसी भइ ॥ तिस शरीर साथ में अनेक जीवोंकों भोजन करों अंतर जाय प्रवेश करों परंतु ब्रह्माजी नें मुझकों कहाहे जो गुणवान होवेंगे तिस पर तेरा बल न चलेगा ॥ अरु जहां ओं मंत्र पढेंगें तहांभी तेरा बल न चलेगा तूं निवृत्त हो जावेगी ॥ हे राजन् उहि मंत्रका उपदेश अब तुमभी अंगीकार करो ॥ तिस मंत्रके पाठकरी सबके व्याधिरोग नष्ट होवेंगे ॥ ब्रह्माजीका जो उपदेशहे ॥ तिसकों तुम नदीके तटपर जाइकरि पवित्र होइकरि शीघ्रही ग्रहण करो तिसके पाठकरी तेरी प्रजाका दुःख नष्ट होजावेगा ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस प्रकार जब अर्धरात्रिके समय राक्षसीनें कहा तब निकट नदीके तीरपर राजा मंत्री अरु राक्षसी तीनों गये ॥ अरु अन्वय व्यतिरेक करीकें आपसमों सुहृद भये ॥ तीनों पवित्र होकरि नदीके तीरपर बेठे ॥ तब जो मंत्र राक्षसीकों ब्रह्माजीनें उपदेश कीयाथा ॥ सोइ मंत्र विषूचिका प्रीति संयुक्त राजाकों उपदेश करति भइ ॥ जिसके जपणेकरि कारज सिद्धहोवे तिस मंत्रकों क्रम करि उपदेशकीया अरु चलणे लगी ॥ तब राजानें कहा हे महादेवी तूं हमारी गुरु हे ॥ तु मारे विद्यमान हम कछु प्रार्थना करतेहे सो अंगीकार करणा ॥ जो महापुरुष हे तिनका सुंदर सुरूपपणा बढता जाताहे ॥ अरु तुमारा शरीरभी इच्छाचारी हे तातें लघु शरीरकों धारो ॥ मनके हरणेहार भूषण वस्त्र संयुक्त स्त्रीका शरीर धारीके कोउ काल हमारे नगरविषे निवास करो ॥ राक्षसीउवाच ॥ हे राजन् में तो लघु आकारभी धरोंगी परंतु मेरे भोजन देणेकों तु म समर्थ न होहुगे ॥ जो लघु स्त्रीका शरीर धरोंगी ॥ तोभी मेरा सुभाव राक्षसीका हे ॥ इसकों तृप्त करणा समान जनोंकी नांइं तो नहि ॥ जेसें कछु शरीरोंका सुभाव हे सो सृष्टि पर्यंत तेसेंहि रहताहे अन्यथा नहि होता ॥ राजोवाच ॥ हे कल्याणरूपी तुं स्त्री समान शरीर धारकें हमारे नगरविषे चलकरी रहहु ॥ जो चोर पापी मेरे मंडलविषे आवेगे सो हम तेरे विद्यमान करेंगे ॥ तब तूं स्त्रीरूपकों त्यागकरि राक्षसी शरीरसाथ तिनकों लेजाने ॥ अरु एकांत ठोर बेठ हिमालयकी कंदराविषे जाइकें भोजन करना ॥ काहेतें जो बडे भोजन करनेवालेकों एकांत खाना सुखरूप हे ॥ तिनकों भोजन करकें तृप्त होवेगी तब सोय रहना ॥ जब निद्रातें जागे तब समाधिविषे स्थित होना ॥ जब समाधितें उतरे तब बहुरी हमारे पास आना ॥ हम तेरे निमित्त बंधीजन एकठे करी रखेगें तिनकों ले जाना ॥ तिनकों भोजन करणा ॥ जो धर्मके निमित्त हिंसाहे सो हिंसा पापरूप नहि॥ अरु जिसकी हिंसा करताहे तिसका मरणभी नहि उस उपर दया करताहे ॥ काहेतें जो पापकरनेतें छूटताहे ॥ राक्षसीउवाच ॥ हे राजन् तुम युक्त वचन कहेहे ॥ में स्त्रीका शरीर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धरकरी तुमारे साथ चलतीहों ॥ जुक्ति पूर्वक वचनकों सब कोउ मानते हैं ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस प्रकार कहिकरि राक्षसी महासुंदररूप स्त्रीका शरीर धारिकें बहुत कंकन आदिकके नानाप्रकारके भूषन धारे अरु पट वस्त्र बनाइकरि राजाके साथ चली ॥ राजा अरु मंत्री आगें चले जावे अरु स्त्री पाछें चली जावे ॥ तब तिसी रात्रके समय राजा तिसकों अपणे ठाम ले आया ॥ एकांत स्थानों विषे तीनों जायबेठे ॥ रात्रकों परस्पर चर्चा करते रहे तब प्रातःकाल हूवा ॥ तब सौभाग्यवति स्त्री राक्षसी राजाके अंतःपुरविषे जाइ बेठी ॥ जो कछु स्त्रीयोंका व्यवहार हे सो करती रहे ॥ राजा अरु मंत्री अपणे व्यवहारविषे लगे ॥ जब षट दिन वितीत भये तब राजाके मंडलविषे तीन सहस्र चोर बांधे हूवेथे ॥ उह सबहि राजानें तिस कर्कटीके विद्यमान कोये तब उसनें राक्षसीका शरीर धारिकें उनकों भुजा मंडल विषे लोये ॥ जेसें मेघ बूंदोकों धारताहे तेसें धारिकरि हिमालयके शिखरकों चली ॥ जेसें किसी दरिद्रीकों स्वर्ण प्राप्त होताहे तब प्रसन्न होताहे तेसें उह प्रसन्न भइ अरु लेकरी हिमालयके शिखरकों गइ ॥ तृप्त होइकें भोजन कीया अरु सुखीहोइकें सोइ रहि ॥ दोदिन पर्यंत सोइ रहि उपरांत जागकें समाधि विषे जुरी ॥ पंच वर्ष पर्यंत जुरी रहि तिसतें जब उतरी तब बहुरी राजाके पास आइ ॥ इसहि प्रकार जब आवे तब उह राजा पूजा करे ॥ जेते कछु दुष्ट जन एकठे किये होवे सो तिसके विद्यमान करे ॥ उह लेजावे अरु हिमालयकी कंदराविषे भोजन करे ॥ भोजन करिकें बहुरी ध्यानविषे जुरे ॥ जब ध्यानतें उतरे तब बहुरी तहां आवहि बहुरि ले जावे ॥ हे रामजी ! इस प्रकार जीवन्मुक्त होकरि उह राक्षसी प्रकृत सुभावकों करति रहे ॥ अनेक वर्ष वितीत भये ॥ तब राजा विदेहमुक्त हूवा ॥ बहुरी जो कोउ उस मंडलका राजा होवे ॥ तिसराजा साथभी राक्षसीकी सुहृदता होवे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणेराक्षसीसुहृदता वर्णनं नामअष्ट पंचाशत्तमःसर्गः ॥ ५८ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जब राक्षसी आवे तब किरात देशका राजा पूर्वकी नांइं उसकी पूजा करे अरु जो कछु उनकी प्रजाविषे उत्पात होवे विषूचका अथवा कोउ रोग होवे सो राक्षसी निवृत्त करि देवे ॥ इस प्रकार अनेक वर्ष वितीत भये तब एकवार उसकों ध्यानविषे जुडे बहूत वर्षवितीत भये तब किरात देशका राजा वाका दुःख निवारणे अर्थ एक तिसकी प्रतिमा उंच स्थानपर स्थापन करत भया ॥ तिस प्रतिमाका एक नाम कंदरा देवी दूसरा नाम मंगला देवी ॥ तिसका ध्यानकरिकें पूजा करने लागे ॥ तिसकरीभी तिसका कारज सिद्ध होने लगा ॥ हे रामजी ! तिस प्रतिमा विषे उह देवी आप निवास करत भइ ॥ जो कोउ जिस फलके निमित्त प्रतिमाकी पूजा करे तिसका कारज सिद्ध होवे ॥ अरु न पूजे तो दुःखित होवे ॥ जब पूजन करे तब दुःख नष्ट होवे तिसका कार्य सिद्ध होवे ॥ तातें जो कछु कोउ कारज करने लागे सो प्रथम मंगला देवीकी पूजाकरे तब उनका कार्य सिद्ध होवे ॥ अरु विधिकरिकें तिसकी पूजाकरे तिसकरि बहूत प्रसन्न होवे ॥ हे रामजी ! अब लग उहि प्रतिमा किरात देशविषे स्थित हे ॥ जिस जिस फलके निमित्त उसकी कोउ सेवा करताहे तेसा तेसा फल उसकों देतीहे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे सूच्याख्यानसमाप्ति वर्णनं नामएकोनषष्टितमःसर्गः ॥ ५९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इह आनंदित कर्कटीका आख्यान जेसें पूर्व वितीत भयाहे तेसे में तुजकों कहाहे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! राक्षसीका कृष्ण वपु किस निमित्त था अरु कर्कटी इसका नाम क्यों था ? जेसें हूवा हे तेसें कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इह राक्षसोंके कुलकी कन्या थी सो राक्षसोंका शुक्ल वपुभी होताहे अरु कृष्ण वपुभी होताहे रक्त पीतभी होताहे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे रामजी ! एक जलजंतु कर्कट नाम प्राणी होताहे उसका स्याम आकार होताहे ॥ तिसके समान कर्कट नाम राक्षस था तिसके समान उसकी इह पुत्री भइ ॥ इस कारणतें इसका नाम कर्कटी भया ॥ हे रामजी ! इहां और कर्कटीका प्रयोजन कछु न था ॥ इहां अध्यात्म प्रसंगथा ॥ शुद्ध चैतनके निरूपण निमित्त मैं तुजकों कहाहे ॥ इह आश्चर्य हे जो असतरूप जगतके पदार्थ हे सो सतरूप होइकरि भासतेहे ॥ अरु जो आत्मसत्ता सदासंपन्न रूप हे ॥ सो अविद्यमानकी नांइं भासतेहे ॥ हे रामजी ! वस्तुतें तो एक अनादि अनंत परम कारण आत्मसत्ता स्थितहे तिसविषे भावनाके वशतें जगतरूप भासताहे ॥ अरु स्वरूपतें अनन्यरूप हे ॥ जेसें जल अरु तरंगविषे भिन्नता कछु नहि तेसें ब्रह्म अरु जगतविषे कछु भिन्नता नहि ॥ आत्माविषे जगत कछु द्वैतरूप हुवा नहि ॥ सदा आत्मसत्ता अपने आपहिविषे स्थित हे ॥ तिसविषे जेसा जेसा चित्तस्पंद दृढ होताहे तेसा रूप होकरि भासताहे ॥ जेसें वानर रतिकाकों इकठी करिकें तिसविषे अग्निकी भावना करतेहे अरु तापते हे तब उनका सीत निवृत्त होताहे ॥ तेसें सम स्थिर शांतरूप आत्माविषे जब जगतकी भावना फुरतिहे तब नाना प्रकारका जगत भासताहे ॥ जेसें थंभेविषे पूतलियां अनउदयहि शिल्पीके मनविषे उदयकी नांइं भासतियांहे तेसें भावनाके वशतें जगत होइ भासताहे ॥ जेसें बीजविषे पत्र फूल टास दृढ अनन्यरूप होतेहे ॥ तेसें ब्रह्मविषे जगत अनन्य रूप हे ॥ जेसें बीज दृढविषे कछु भेद नहि तेसें ब्रह्म अरु जगतविषे भेद कछु नहि ॥ अविचारकरिकें भेद भासताहे विचार किये तें जगत भेद नष्ट होजाताहे ॥ हे रामजी ! अब इह विचार नहि करना जो केसें उपजा हे कहांसों आयाहे अरु कबका हुवाहे ॥ जेसें हूवा तेसें हूवा अब इसके निवृत्तिका उपाय करियें ॥ जब तुं जागेगा तब रिदेकी चिदजड ग्रंथि टूट जावेगी ॥ शब्द अरु अर्थकी जेती कछु कल्पना उठतिहे सो मेरे वचनों करि स्वरूप स्थित भयेतें नष्ट हो जावेगी ॥ हे रामजी ! इह सब जगत अनर्थरूप चित्ततें उपजाहे ॥ सो मेरे वचनोंके श्रवण कीयेतें शांतहो जावेगा ॥ इसविषे संशय नहि करणा ॥ सब जगत ब्रह्मतें उपजा हे अरु सब ब्रह्महि स्वरूप हे ॥ जब तूं ज्ञानविषे जागेगा तब ज्योंका त्योंही जानेगा ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! जो जिसतें होताहे सो तिसतें व्यतिरेक होताहे ॥ अर्थ यह जो पंचमी विभक्ति करि जो निरूपण करताहे सो व्यतिरेकके अर्थहे ॥ जेसें कुलालतें घट होताहे ॥ सो कुलालतें भिन्न होताहे ॥ तुम केसें कहतेहो जो सब जगत ब्रह्मतें उपजाहे अरु ब्रह्म स्वरूप हे ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इह जगत ब्रह्मतें उपजा हे जेते कछु प्रतियोगी सहित शब्द शास्त्रोंनें कहेहे सो दृश्यविषे हे शास्त्रनें उपदेश जतावणेके निमित्त कहेहें ॥ वास्तव इह शब्द कोउ नहि ॥ जेसें किसी बालककों पलावेविषे वैताल भासताहे अरु कोउ पूछताहे जो इस बालककों वैतालनें किसभागविषे स्थित होइकरि भय दीयाहे ॥ तिसकों कहताहे अमकी ठोरविषे वैतालनें भय दीयाहे सो व्यवहारके निमित्त उसकों कहताहे और वैताल तो उहां कोउ नहि ॥ तेसें आत्माकेविषे उपदेश निमित्त भेद कल्पना करिहे ॥ वास्तवतें तिसविषे द्वैतकल्पना कोउ नहि ॥ हे रामजी ! ब्रह्मतें जगत हूवा इह अर्थ केवल व्यतिरेकविषे नहि होताहे ॥ जो कुलाल दंडतें घट उपजाताहे सो व्यतिरेकके अर्थहे ॥ स्वामीका टेलुवा इह भिन्नके अर्थहे अरु इह अभिन्नरूपभी होतेहे ॥ जेसें अवयवीके अवयव हे, सुवर्णतें भूषन हुवेहे, मृत्तिकातें घट हूवेहे सो इह अभिन्नरूप हे अवयवी कोशरूपहे ॥ भूषण स्वर्णरूप हे घट मृत्तिका रूपहे तेसें ब्रह्मतें उपजा जगत ब्रह्मरूपहि हे ॥ अरु वास्तवतें भिन्न अभिन्न कारण परिणाम भाव विकार अविद्या अरु विद्या सुख दुःख आदिक मिथ्या कल्पना अज्ञानकरि उठतिहे ॥ हे रामजी ! अबोधकरिकें भेदकल्पना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुइहे ॥ अरु ज्ञानकरिकें सब कल्पना शांत होजातिहे अशब्द पद शेष रहता हे ॥ जब तूं ज्ञान जोग होवेगा तब एसें जानेगा जो आदि मध्य अंततें रहित अविभा
ग अखंड रूप एक आत्मसत्ता ज्यौंकी त्यौंस्थितहें ॥ अज्ञानकरिकें अथवा जिज्ञासीकों उपदेश निमित्त द्वैतवाद कल्पनाहे बोधहूवेतें द्वैत भेद कछु नहि रहता ॥ हे रामजी ! वाच्य वा
चक भाव द्वैतविना सिद्ध नहि होता ॥ जब बोध हूवा तब वाच्यका मौन होताहें ॥ तातें महा वाक्यके अर्थविषे निष्टाकरो अरु जेति कछु भेद कल्पना मननें रचीहे ॥ तिसके निवृत्ति
अर्थ मेरे वचन श्रवन करो ॥ हे रामजी ! इह मन एसें उपजाहे जेसें गंधर्व नगर होताहे ॥ तिसतें आगें जगतकी रचना करिहे ॥ जेसें में देख्याहे तेंसें तुजकों दृष्टांत कहताहों ॥ जिसके
जानेतें सब जगत तुझकों भांतिमात्र भासेगा ॥ अरु निश्चयकों धारिकें जगतकी वासना दूरतें त्याग देवेगा ॥ बोधकरिकें सब जगत मनका मननरूप भासेगा ॥ अरु आत्मरूप होइकरि
अपणे आपविषे निवास करेगा ॥ अर्थ इह जो जगतकी कल्पना त्यागकरि अपणे स्वभावसत्ताविषें स्थित होवेगा ॥ तातें सावधान होकरि सुण ॥ हे रामजी ! इह मनरूपी बडा रोगहे
विवेकरूपी औषधकरि तिसकों शांत करे अरु सब जगत चित्त करि कल्प्याहे ॥ सो शरीर आदिक वास्तव कछु नहि ॥ जेसें रेतिसों तेल नहि निकसता तेसें जगततें वास्तव कछु नहि
निकसता ॥ चित्तकरिकें भासताहे सो चित्तरूपी संसार सुपनकी नांइहे ॥ अरु राग द्वेष आदिक संकल्प करिकें जुक्तिहे तिसतें जो रहित हूवाहे सो संसार समुद्रके पारकों प्राप्त हुवाहे ॥
तातें शुभ गुणोंकरिकें चित्तकी शुद्धता करो अरु जो विवेकीहे ॥ सो शुभ कार्य करतेंहे अशुभकों नहि करतें ॥ आहार अरु व्यवहार सब विचारिकें करतेंहे ॥ तेसेंहि आर्यकी नांइ तुम
सच्चेष्टा शास्त्र अनुसार करो ॥ जब एसें अभ्यास तुमकों होवेगा ॥ तब शीघ्रहि ज्ञानवान होइगे ॥ अरु ज्ञानके प्राप्त हूवे सब कल्पना मिटि जावेगी ॥ आत्मस्थिति होवेगी ॥ इस सब
जगतरूपी चित्र मनहि रचेहे॥ जेसें मोरका इंडा काल पाइकरि अनेक रंगोंकों धारताहे तेसें मन अनेक प्रकारके जगतकों धारताहे॥ सो मन जड अरु अजडरूप हे॥ जो मनविषे चैतन
भाग हे सो सब अर्थका बीजरूप हे बीज कहियें सबका उपादान हे ॥ अरु तिसका जो जडभाग हे सो जगतरूप हे ॥ हे रामजी ! सर्गके आदिविषें पृथ्वी आदिक तत्व अविद्यमान
थे तिनकों विद्यमानकी नांइ ब्रह्मा देखत भया ॥ जेसें सुपनेविषे जगत विद्यमानकी नांइ भासताहे तेसे देखत भया ॥ सो प्रमादकरि देखता भया ॥ जड संवेदनकरि पहाड आदिक ज
गत देखता भया ॥ अरु चैतन संवेदनाकरि जंगम रूप जगतकों देखता भया ॥ सो सब जगत दीर्घ वेदनाहे ॥ वास्तवतें सब देहादिक शून्यरूप हे ॥ सब आत्माकरि व्यापे हूवे हे अरु ति
सका शरीर कोउ नहि ॥ अपणे करिकें जो दृश्यरूप मन चेत्याहे सोइ मन आत्माका शरीरहे ॥ सो आत्मा विस्तरणरूप हे अरु निर्मल स्थित हे मन तिसका आभासरूपहे ॥ जेसें सूर्य
की किरणांकरि जलाभास होताहे तेसें आत्माका आभास मनहे॥ सो मनरूपी बालक जगतरूपी पिशाचकों अज्ञानकरि देखता हे॥ अरु ज्ञानकरिकें परमात्मपद शांतरूप निरामयकों दे
खताहे ॥ हे रामजी ! जब आत्मा चैत्यताकों प्राप्त होताहे तब उहि चित्तरूप दृश्य द्वैत एक ब्रह्मकों देखताहे ॥ तिसके निवृत्ति अर्थ में तुजकों कथा कहताहों ॥ तूं श्रवण करु ॥ जो व
चन दृष्टांत द्राष्टांत सहित होताहें अरु वाणीभी मधुर होतिहे अरु स्पष्ट होवे तब गुरुका बचन श्रोताके रिदेविषे पसरजाताहे ॥ जेसें जलविषे तेलकी बूंद पसरजातीहे तेसें पसर जाताहे ॥
अरु जिसका वचन दृष्टांत द्राष्टांततें रहित होताहे अरु अर्थ स्पष्ट नहि होता ॥ अरु क्षोभ संयुक्त वचन कहताहे अरु अक्षर पूर्ण नहि होता सो वचन श्रोताके रिदेविषे नहि ठरता ॥ उप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देष्टाके वचनभि निष्फल हो जाताहे ॥ अरु मेंतुजकों आख्यान कहताहों सो नानाप्रकारके दृष्टांत सहित मधुर वाणी सहित कहताहों॥ अरु स्पष्ट अर्थ करके कहताहों॥ जेसें चंद्रमा अपणे गृह उपर उदय होवे अरु मंदिर सीतल होजावे तेसें मेरे स्पष्ट वचन अरु प्रकाशरूप अर्थ श्रवणकीयेतें तेरा भ्रम निवृत्त होजावेगा ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे मनअं कुरोत्पत्तिकथनंनामषष्टितमःसर्गः ॥ ६० ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! पूर्व जो मुजकों ब्रह्मानें सर्गका वृत्तांत कहा हे ॥ सो में तुजकों कहताहों ॥ एक काल में ब्रह्माजीपास गयाथा अरु पूछा था ॥जो हे भगवन् इह जगत गण कहांतें आये हे अरु केसें उत्पन्न भये हे ॥ तब पितामहजी मुजकों इंद्र ब्राह्मणका आख्यान कहत भया ॥ ब्रह्माउवाच ॥ हे मुनीश्वर इह सब जगत मनतें उपजा हे अरु मनकरकें भासताहे ॥ जेसें जलतें द्रवताकरिकें नानाप्रकारके तरंग चक्र पडे फुरतेहे सो मनकें फुरनेकरि सब जगत फुरतेहें अरु मनरूप हे॥ हे मुनीश्वर पूर्वकल्पविषे एक वृत्तांत देख्याहे सो सुण ॥ एक समय दिनका क्षय हूवा ॥ में संपूर्ण सृष्टिकों संहारकरिकें एकाग्रभाव होकरि रात्रकों स्वस्थभाव होकरि रहा ॥ जब मेरी रात्र वितीत भइ अरु में जागा तब उठकरि संध्यादिक कर्मविधि संयुक्त करत भया ॥ अरु बडे आकाशकी उर में देखत भया सो तम अरु प्रकाशतें रहित व्यापित शून्यरूप इतरतें रहित में देखत भया ॥ अरु चिदाकाशविषे चित्तकों जोड्या जरु सर्गके उपजाणेका संकल्प चित्तविषे धारा ॥ तब मुजकों शुद्ध सूक्ष्म चिदाकाशविषे सृष्टि दृष्ट आइ सो केसी सृष्टि भासी जो बडे विस्तारसहित अरु परस्पर अदृष्टरूप ॥ जो एक सृष्टिकों दूसरी न देखे ॥ अरु एक एक सृष्टिविषे ब्रह्मा विष्णु रुद्र तीनों देवता रहे ॥ अरु देवता गंधर्व किन्नर मनुष्य सुमेरु मंदराचल कैलास हिमालय आदिक पर्वत पृथ्वी नदीयां सातो समुद्र आदिक सब सृष्टिके विस्तारकों में देखत भया ॥ सो दश सृष्टिकी संख्यादेखी ॥ तिनविषे दश ब्रह्मा देखे मानों मेराहि प्रतिबिंब हे मेरीहि मूरत कमलतें उत्पन्न हूइहे ॥ अरु राजहंसके उपर आरूढ हूवे दशहि ब्रह्मा देखे ॥ अरु भिन्न भिन्न तिनकी सृष्टि देखीयां ॥ बडे नदीके प्रवाह चलतेहे॥ वायु आकाशविषे चलताहे सूर्य चंद्रमा उदय होतेहे ॥ देवता स्वर्गविषे क्रीडा करतेहे मनुष्य पृथ्वीविषे फिरतेहे ॥ दैत्यनाग पातालविषे भोगोकों भोगतेहें ॥ काल चक्र फिरताहे ॥ द्वादशमास तिसके द्वादश कीले हें ॥ षट ऋतु वसंत आदिकहे ॥ वासनाके अनुसार शुभ अशुभ आचारकरिकें नरक स्वर्ग भोगतेंहें अरु मोक्ष फलकों पातेहें ॥ सृष्टि सृष्टिविषे सप्तद्वीप हे ॥ उत्पत्ति प्रलय कल्पकर होतेहे॥ गंगाजीका प्रवाहहे जगतके गलेमें यज्ञोपवीतहे ॥ कहूं एसें स्थितहे ॥ जहां सदा प्रकाश रहता हे कहूं अंधकार रहता हे तिसविषे स्थावर जंगम प्रजा में देखत भया ॥ वीजलीकिनांइं सृष्टि उपजीहे अरु मिट जातिहे ॥ जेसें वृछके पत्र उपजतेहें अरु नष्ट हो जातेहें अरु गंधर्वके नगरवत् सृष्टि देखीयां ॥ एक एक ब्रह्मांडविषे स्थावर जंगम प्रजा देखी जेसें गुलरके फूलविषे अनेक मछर होतेहे तेसें एक एक ब्रह्मांडविषे जीव देखे ॥ आत्माविषे कालकाभी अभावहे सो क्षण लवदिन मास वर्षोंका प्रवाह चलाजाता मेनें देख्या ॥ हे मुनीश्वर अंतवाहक दृष्टि करकें में उन सृष्टिकों देखी ॥ जब में चर्मदृष्टि करि देखों तब कछु न भासे दिव्य दृष्टिकरि सब कछु भासे ॥ चिरकाल पर्यंत में देखता रहा ॥ जो कदाचित् चित्त भ्रम होवे अरु स्पष्टहि भासे ॥ तब एक सृष्टिके सूर्यकों देखकें में आवाहन कीया तब सूर्य मेरे निकट आइकें प्राप्त भया ॥ तिसकों में कहत भया ॥ हे देव देवेश भास्कर तुमकों कुशल हे एसें कहिकरि में बहुरी कहा जो हे सूर्य तूं कवनहे ? अरु इह सृष्टि कहांतें उपजीहे ॥ इह एक जगत हे के एसे अनेक जगत हे ॥ जेसें तुम जानते हो तेसें कहो ॥ तब उह सूर्यभी त्रि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काल ज्ञान रखताथा ॥ मुझकों जानकें प्रणाम कीया ॥ अरु आनंदित वाणी कहत भया ॥ भानुरुवाच ॥ हे इश्वर इस दृश्यरूपी पिशाचके तुम नित्यहि कारण होतेहो ॥ तुम आपहि जानतेहो मेरेकों किस निमित्त पूछतेहो ॥ अरु जो लीलाके अर्थ पूछते हो तो जेसें वृत्तांत हूवाहे तेसें मैं तुमारे विद्यमान प्रार्थना करताहों ॥ हे भगवन् इह जो सत असतरूपी नानाप्रकारोंके व्यवहारों संयुक्त जगत भासताहे सो सब मनके फूरणेविषे स्थितहे ॥ इतिश्रीयो० उत्पत्तिप्र० आदित्यसमागमनंनाम एकषष्ठितमःसर्गः ॥ ६१ ॥ ॥ भानुरुवाच ॥ हे भगवन् ! तुमारा जो कल्पका दिन वितीत भयाहे तिस कल्पविषे जो जंबूद्वीप था ॥ तिसकी कोणविषे कैलास पर्वत था ॥ तिसकी कंदरांविषे स्वर्नजेष्ट नाम एक तुमारा पुत्रथा सो उहां कूटी रचता भयाथा तहां जाइ साधु जन निवास करतेथे ॥ तहां वेदका वेत्ता शांत रूप इंदुनाम ब्राह्मण कश्यप ऋषीके कुलतें प्रगट हुवा था सो तिस कूटीके विषे जाइकें स्त्रीसहित निवास करत भया॥तिस स्त्रीविषे प्राणोंकि नांइ स्नेहथा सो स्त्री पुत्रतें रहित होत भइ॥ जेसें मरुथलविषे घास नहि उपजता तेसें उसतें संतान न उपजें अरु बहूत सुंदर पुत्रतें रहितथी॥ जेसें सरदकाल की वेली बहूत सुंदर होतिहे परंतु फलतें शून्य होतिहे तेसें उह स्त्री थी ॥ तब दोनों पुरुष अरु स्त्री पुत्रके निमित्त तप करने लागे ॥ कैलासके निकट निर्जन स्थानविषे कुंजविषे एक वृछ था तिसके उपर चडि बेठे ॥ तहां बेठकरि तप करणे लागे ॥ जलपान करे अरु भोजन कुछ न करे इस प्रकार रात्रदिन व्यतीत करे॥ बहुरी एकही अंजली पान करने लगे फेर तिसकाभी त्याग किया फुरनेतें रहित वृछकी नांइकें बेठेरहे ॥ तिनकों तप करते त्रेता अरु द्वापर युग वितीतभये ॥ तब शशिकला धारि रुद्र तुष्टमान होइकरि तिनके निकट आये ॥ भवानी शंकर दोनोंतिनके सन्मुख देखते भये ॥ जो स्त्री पुरुष दोनों वृछ उपर बेठेहें तब तिनोनें शिवकों देखकें प्रणामकीया ॥ अरु दोनों प्रफुल्लित होआये ॥ जेसें दिनकी तपतकरि सुकुची हूइ चंद्रमुखी कमलनियां चंद्रमा उदय हूए प्रफुल्लित हो आतियांहे तेसें महा हिमकी नांइ शिवकों देखकरि प्रफुल्लित भइ ॥ मांनों आकाश अरु पृथ्वी दोनों रूप धारकें आन खडे हुवेहें ॥ एसें भवानीशंकर तिस ब्राह्मणकों कहते भये ॥ ॥ ईश्वरोवाच ॥ हे ब्राह्मण ! तूं वर मांग में तुजपर तुष्ट हूवाहों॥ जो कछु तुजकों वांछितवर हे सो तूं मांग॥ हे ब्रह्माजी ! जब एसें शिवनें कहा तब ब्राह्मण प्रफुल्लित होकरि कहत भया॥ हे भगवन् देव देवेश मेरे गृहविषे दश पुत्र होवे सो बडे बुद्धिवान होवे अरु कल्याण मूर्ति होवे जिस करि मुजकों बहुरी शोक कदाचित् न होवे ॥ भानुरुवाच ॥ हे भगवन्! इस प्रकार जब ब्राह्मणनें कहा तब ईश्वरने कहा एसेंहि होवेगा ॥ एसें कहि करि अंतर्धान भये ॥ जेसें समुद्रका तरंग उछलकें मिट जाताहे ॥तेसेंशिव अंतर्धान भये ॥ तब उह पुरुष स्त्री दोनों शिवके चरनोंकों ग्रहण करिकें प्रसन्न भये ॥ जेसें सदाशिव अरु भवानीकी मूर्ति हे तेसें उह प्रसंन होकरि अपणे गृहविषे आवत भये ॥ तब ब्राह्मणी गर्भवान होत भइ ॥ जेसें वर्षाकालके बादल जलकरि पूर्णहोतेहें तेसें उह गर्भकरि पूर्ण भइ ॥ समय पायकें दशहि पुत्र तिसके होत भये ॥ जेसें दूतीयाके चंद्रमाकी शोभा होतिहे तेसें उनकी शोभा भइ अरु षोडश वर्षके आकारकी नांइ ब्राह्मणीका आकार रहा वृद्धभावकों न प्राप्त भइ ॥ अरु उह दशहि संस्कारकों ले उपजे अरु थोडेकालविषे बडे होगये ॥ जेसें वर्षाकालकी बदली थोडीभी शीघ्र बडी हो जातहे तेसें उह थोडे कालविषे बडे होगये ॥ जब सप्त वर्षोंके भये तब सब वाणीके वेत्ता भए ॥ तब उनोंकें माता अरु पिता दोनों शरीरकों त्यागकें अपनी गतिकों प्राप्तभए ॥ उह दशही ब्राह्मण मातापितातें रहित भए ॥ अपणे गृहकों त्यागकरिकें कैलासके शिखर ऊपर चडे अरु परस्पर विचार करने लागे जो उह कवन इश्वर है जो परमेश्व

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूपहे ॥ अरु उह कवन इश्वर पदहे जिसके पाएतें बहुरी दुःखी न होवें अरु जिसका नाशभी न होवे ॥ जिसके पाएतें सबका इश्वर होवे ॥ तब एक भाइने कहा जो सबतें बडा ऐ
श्वर्य मंडलेश्वरकाहे ॥ सब उपर तिसकी आज्ञा चलतीहे ॥ बहूरी दूसरे भाइनें कहा मंडलेश्वरकी विभूतिभी कछु नहि ॥ काहे तें जो उहभी राजाके आधीन होताहे ॥ तातें राजाका पद
बडा होताहे ॥ बहुरी और भाइने कहा राजाकी विभूतिभी कछू नहि काहेतें जो राजा चक्रवर्तीके आधीन होतहे तातें चक्रवर्तीका पद बडाहे, ॥ बहुरी और भाइनें कहा चक्रवर्तीभी
कछु नहि उहभी यमके आधीन होताहे तातें यमका पद बडाहे ॥ बहुरी और भाइनें कहा जो इंद्रके आगें यमकी विभूति कछु नहि तातें इंद्रका पद बडाहे ॥ तब ओर भाइनें कहा इं
द्रकी विभूतिभी कछु नहि ब्रह्माके एक मुहूर्तविषे इंद्र नष्ट होजातहे तब सबके जेष्ट बडा भाइनें कहा जेसें मृगके समूहकों मृग कहे तेसें छोटे भाइकों बुद्धिवान बडा भाइ गंभीर व
चनकरि कहत भया ॥ जेति कछु विभूति हे सो सब ब्रह्माके कल्पविषे नष्ट होजातिहे तातें बडा ऐश्वर्य ब्रह्माजीका हे इसतें बडा और कोउ नहि ॥ हे भगवन् ! इसप्रकार जब बडेभाइ
नें कहा तब सबनें कहा भलि कहि भलि कहि ! तब बडे भाइकों कहि हे तात जो सब दुःखका नाशकर्ता जगत पूज्य ब्रह्मपदहे तिसकों हम केसें प्राप्त होवें ? जिस उपायकरि प्राप्त हो
वे सो उपाय कहो ॥ बहुरी भाइ कहत भया हे भात और सब भावनाकों त्याग करो अरु इह भावना निश्चय करिकेंकरो जो हम ब्रह्मा हें अरु पद्मासन पर बैठेहें मे ब्रह्माहों अरु सब
सृष्टिका करताहों अरु सबकी पालना करताहों अरु संहार कर्ता मेंहि हों ॥ जेति कछु जगत जाल हे तिसका आश्रयभूत मेंहिहों ॥ सब सृष्टि मेरे अंगविषे स्थितहे ॥ एसें निश्चयकों धरि
कें बेठो ॥ अरु सजातिभावनाकों धरकें बेठोंगे तब तुमकों ब्रह्माका पद प्राप्त होवेगा ॥ हे भगवन् ! जब इस प्रकार बडे भाइनें कहा तब छोटे भाइयोंनें कहा हे तात तुमने यथार्थ कहा
हे जेसें तुम कहाहे तेसेंहि हम करतेहें ॥ एसें मानिकरि बडे भाइ सहित सब ध्यानविषे स्थित भए ॥ जेसें कागद उपर मूर्ति लिखी होतिहे ॥ तेसेंहि दशो ध्यानविषे जुरि गये ॥ अरु मन
विषे यही चितवना करते भये जो में ब्रह्मा हों कमल आसन मेरा हे में सृष्टिकर्ताहों भोक्ताभी में ही हों महेश्वरभी मेंहि हों ॥ सांगोपांग जगत् कर्म मेंहि रचेहे ॥ अरु सरस्वति गायत्री स
हित जो वेदहे सो मेरे आगें आय खडेहे ॥ अरु इह लोकपाल अरु सिधोके मंडलोंकों पालणेवाला हों सो सब मेंही रचेहे ॥ स्वर्गलोक भूमिलोक पाताल लोक पाहड नदीयां समुद्र सब
मेंहि रचेहें अरु महा बाहु वज्रके धारणे हारा यज्ञोका भोक्ता इंद्र मेंही रचाहे ॥ अरु सूर्य मेरी आज्ञामें तपताहे ॥ अरु जगतकी मर्यादा निमित्त सब लोक पाल मेंही रचेहें ॥ जेसें गौ
कों गोपालपालताहे तेसें लोकपाल मेरी आज्ञा पाइकरि जीवोंकों पालतेहें ॥ अरु जेसें समुद्रविषे तरंग उपजतेहें बहुरी मिट जातहे तेसें जगत मुझतें उपजाहे बहुरी मेरेहि विषे लीन होते
हें ॥ अरु में सदा आत्मपदविषे स्थित हों ॥ अरु क्षण दिन मास वर्ष युग आदिक काल मेराहि रचा हूवाहे ॥ मेंहि सब कालके नाम राखेहें ॥ मेंहि दिनकों उत्पन्न करताहों ॥ अरु रात्र
कों लीन करि लेताहों ॥ सदा आत्मपदविषे स्थित हों ॥ पूर्ण परमेश्वर मेंहि हों ॥ ॥ हे ब्रह्माजी ! इस प्रकार उह दशहि भाइ भावना धारकरि बेठेरहे ॥ मांनों कागद उपर मूर्ति लिखी
छोडिहे ॥ तेसें सब वृत्तिके जालकों अंतरतें त्यागकरि एक ब्रह्माके ध्यानविषे जुरि गये ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्टे उत्पत्ति प्रक० ऐंदवसमाधि वर्णनं नाम द्विषष्टितमः सर्गः ॥ ६२ ॥

॥ भानुरुवाच ॥ हे भगवन् ! इस प्रकार इंद्रके दशहि पुत्र पितामहकि भावना धारकरिं बेठे ॥ तब तिनके देह धूप अरु पवन करिकें सूकी गए ॥ जेसें जेठ आषाढविषे कमल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पत्र सुकी करि गिर पडते हैं ॥ तेसें तिनके देह सूकी करि गिर पडे ॥ तब बनचर जो जीव थे ॥ सो तिनकों भक्षण करगये ॥ अरु शरीरकों आपोआप खेंचे जेस फलकों बांनर पक
डतेहैं अरु विदारण करतेंहैं तेसें इनके देहकों विदारणे लागे ॥ अरु तिनकी वृत्तिध्यान तें छूटकें बाह्य देहादिक अध्यासविषे न आइ ॥ ब्रह्माकी भावनाविषेहि लगीरही ॥ इस प्र
कार जब चतुर जुगका अंत भया अरु तुमारे कल्प दिनका क्षय होने लागा ॥ द्वादशसूर्य तपणे लगे पुष्कळ मेघ गरजकें बरखने लगे ॥ बडा भूचालन भया ॥ वायु चलने लगा ॥
समुद्र उछलपडे सब जलहि जल होगया ॥ सब भूत क्षयकों प्राप्त भये ॥ सबकों संहार करकें रात्रकों तुम आत्मपद विषे जाय स्थित भये तब उनके शरीरभी नष्ट होगये अरु पुर्य
ष्टक उनकें आकाशविषे आकाशरूप होयकें ब्रह्माके संकल्पकों लेकरि तीव्रभावनाके वशतें दशों सृष्टि सहित दश ब्रह्मा होत भये ॥ भिन्न भिन्न अपनी अपनी सृष्टिके ब्रह्मा भये ॥
अब तुम जागिकरि देखो हो जो आकाशविषे फुरतेहैं॥ हे भगवन् तिन दश ब्राह्मणके चित्त आकाशमेंहि सृष्टि स्थित हे ॥ तिन दश सृष्टिके मध्यविषे एक सृष्टिका सूर्य मैं हों॥ आकाश
विषे मेरा मंदिर हैं काल जोहे क्षण दिन पक्ष मास सब जुग सो मुजहि करि होतहे ॥ इस क्रियाविषे मुजकों उनोनें जोडाहे ॥ हे भगवन् इस प्रकार मैं तुझकों दश ब्रह्मा अरु
दश सृष्टि कहीहे ॥ सो सृष्टि सब मनोमात्र हे ॥ आगें जेसी तुमारी इछा हे तेसें करों ॥ भिन्न भिन्न कल्पना जगत जाल विस्तारकों प्राप्त भइहे ॥ सो इंद्रजालकी नांइं हे चित्तके भ
म करिकें पडे भासते हैं ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे जगतरचना निर्वाणवर्णनंनामत्रिषष्टितमः सर्गः ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ ब्रह्माउवाच ॥ हे ब्राह्मण ब्रह्मवेत्ता विषे श्रेष्ठ इस प्रकार जब ब्रह्माके सूर्यनें ब्रह्माकों कहिकरि सो तूष्णी हुवा तब तिसके वचनोंकों विचारकरि में कहत भया ॥ हे भानु तुमनें
सृष्टि दश कही तीसतें अबमें क्या रचों ? इह तो दश सृष्टि हुइहे अरु दशहि ब्रह्माहे ॥ अब मेरे रचणे करि क्या सिद्ध होवेगा ॥ हे मुनीश्वर जब इस प्रकार में कहा तब सूर्य विचार करि
कहत भया ॥ ॥ सूर्योवाच ॥ हे प्रभो तुम तो निरिछित हो ॥ तुमारे विषे इछा कछु नहि सृष्टि रचणेकी ॥ सृष्टिका रचणा तुमकों विनोद मात्रहे ॥ किस कामनाके निमित्त नहि
रचते ॥ तुम निष्काम रूप हो ॥ जेसें जलकरिकें सूर्यका प्रतिबिंब होताहे ॥ जल बिना प्रतिबिंबकी कल्पना नहि होति तेसें संवेदन करिकें तुमारेविषे सृष्टिकी रचना होतिहे ॥ अज्ञा
निकों तुम सृष्टि कर्ता भासते हो तुम सदा ज्योंके त्यों निष्क्रियरूप हो ॥ हे भगवन् तुमकों शरीरादिककी प्राप्ति अरु त्यागविषे राग द्वेष कछु नहि ॥ उत्पत्ति अरु संहारकी तुमारेविषे
कल्पना कछु नहि ॥ लीलामात्र तुमतें सृष्टि होतीहे ॥ जेसें सूर्य करिकें दिन होताहे ॥ अरु सूर्यके अस्त होणेकरि दिनलय होताहे अरु सूर्य असंशक्त रूप हे तेसें तुमारेविषे संवेदन
के फुरने करि सृष्टि होतहे ॥ अरु संवेदनके अस्फुर हुए सृष्टिका लय होताहे ॥ अरु तुम सदा असंशक्त हो ॥ अरु जगतकी रचना तुमारा नित्य कर्म हे ॥ तिन कर्मके त्याग कीयेतें तु
मकों कछु अपूर्व वस्तुभी प्राप्त नहि होती तातें जो कछु तुमारा नित्य कर्म हे सो तुम करो ॥ हे जगत्पति महापुरुष जो होतेहे सो जो कछु उनकों प्राप्त होताहे तिसमें यथाप्राप्त अ
संशक्त होइ करि विचरतेहैं ॥ कार्यकों करते हैं जेसें निष्कलंक दर्पण प्रतिबिंब अंगीकार करताहे तेसें महा पुरुष यथाप्राप्त कर्मकों असंशक्त होइकरि अंगी कार करतेहे ॥ जेसें ज्ञान
वानकों कर्मकरणेविषे कछु प्रयोजन नहि तेसें तिसकों अकरणेविषे कछु प्रयोजन नहि ॥ करणा अकरणा दोनां तिसकों सम हे ॥ इस कारणतें दोनोंविषे सुषुप्तिरूप हो ॥ हे भगवन् तुम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो सदा सुषुप्तिरूप हो ॥ तुमकों उत्थान किसी प्रकार नहि ॥ तातें तुम सुषुप्ति प्रबोध होकरि अपणे प्रकृत आचारकों करो ॥ जो इंद्र ब्राह्मणोंके पुत्रोंकी सृष्टिकों देखो तबभी विरुद्ध क छु नहि ॥ जो ज्ञानदृष्टि करि देखो तो एकही ब्रह्म अद्वैत हे ॥ और कछु नहि बना ॥ अरु जो चित्तदृष्टि करि देखो तब संकल्परूप अनेक सृष्टि फुरति हे ॥ तिनविषे आस्थाकरणी क्याहे अरु जो चर्मदृष्टि करिकें देखो तो तुमारी सृष्टि भासतिही नहि ॥ उनके साथ तमारे क्या हे ॥ उनकी सृष्टि उनहिके चित्तविष स्थितहे ॥ अरु उनकी सृष्टिकों तुम नाशभी न करी सको गे काहेतें जो कछु इंद्रियां साथ कर्म होतहे ॥ तिसके नाशकरणेकों समर्थ होताहे ॥ परंतु मनके निश्चयकों नाश नहि करि सकता ॥ हे भगवन् जो दृढ निश्चय जिसके चित्तविषे दृढ हो गयाहे तिसकों उह निवृत्त करे तब निवृत्त होताहे ॥ और कोउ निवारणेकों समर्थ नहि॥ देह नष्ट होवे परंतु निश्चय नष्ट नहि होता ॥ जो चिरकालका निश्चय दृढ होइ रहा तिसका स्व रूपतें नाश नहि होता ॥ हे भगवन्! जो मनविषे दृढ निश्चय हो रहाहे सोइ पुरुषका रूप हे ॥ तिसका निश्चय और किसीकरि नही होता ॥ जेसें जलके सीचणे करि पर्वत न हि चलायमान होता ॥ तेसें चित्तका निश्चय और करि नही चलायमान होता ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे ऐंदवनिश्चयकथनं नाम चतुःषष्टि तमः सर्गः ॥ ६४ ॥

॥ भानुरुवाच ॥ हे देवेश इस पर एक पूर्व इतिहास हुवा हे सो तुम श्रवण करो॥ एक इंद्रद्युम नाम राजा था तिसकी कमलनयनी स्त्री थी तिसका नाम अहल्या था ॥ तिसके न गरविषे इंद्र नाम एक पुरुष था सो ब्राह्मणका पुत्र बहुत सुंदर बडा बलवान था ॥ अरु अहल्या राजाकी पट्टराणी थी ॥ तब तिस राणीनें पूर्वकी अहल्या गौतमकी स्त्री अरु इंद्रकी कथा सुणी ॥ तब एक सहेलीनें कहा हे राणी जेसें पूर्व अहल्या थी तेसें तुं हे ॥ अरु जेसा उह इंद्र सुंदर था तेसें तुमारे नगरविषेभी एक इंद्र ब्राह्मण हे ॥ हे भगवन् जब इस प्रकार राणीनें सु न्या तब उस इंद्रविषे राणीका अनुराग हुवा ॥ परंतु उह राणीकों प्राप्त न होवे ॥ राणीका शरीर इसी कारणतें सूकता जावे ॥ तब राजानें सुन्या जो इसकों गरमीका कछु रोग हे ति सके निवारणे अर्थ केलेके पत्र और सीतल औषध तिसकों दिवाये ॥ परंतु उसकों वांछित पदार्थ कोउ दृष्ट न आवे ॥ खान पान शय्यादिक जेता कछु इंद्रियोंके वांछित पदार्थहे सो तिसकों सुखरूप कोउ न भासे उह दिन दिनविषे पीतवर्ण होतिजावे अरु इंद्रके वियोग करिकें तलफत रहे ॥ जेसें जलविना मछी मरुथल विषे तलफे तेसें उह तलफति रहे अरु क हे ॥ हा इंद्र हा इंद्र एसें विलाप करती रहे ॥ लोकलाजकों त्याग दीनी उस इंद्रविषे बहुत सनेह बढगया ॥ तब विचारकरि एक सखीनें कहा ॥ हे राणी में इंद्र ब्राह्मणकों ले आ तीहों ॥ जब इस प्रकार सखीनें कहा तब राणी सावधान हो आइ ॥ जेसें चंद्रमाकों देखकें कमलनी खिल आतीहे तेसें उसके शब्द करि राणी खिल आइ ॥ तब उह सखी ब्राह्मणके घर गइ उस इंद्रकों प्रबोधकरिके रात्रके समे अहल्याके पास ले आइ ॥ तब गोप्यस्थानविषे एकठे भये तहां परस्पर लीला करि ॥ अरु दोनोंका चित्त परस्पर स्नेहकरि बंधायमान भया ॥ अरु बहुत प्रसन्नभी भये॥ जेसें चकवी अरु चकवाका आपसमें स्नेह होताहे तेसें उनका स्नेह भया॥ जेसें रति अरु कामदेवका स्नेह होताहे तेसें उनका स्नेह भया ॥ एक दूसरे विना एक क्षणभी रहि न सके ॥ और सब क्रिया उनकी निवृत्त होगइ अरु लज्जाभी दूर होगइ ॥ जेसें चंद्रमाकों देखकें चंद्रमुखी कमल प्रसन्न होवे तेसें एक दूसरेकों देखकें उह प्र सन्न होवे ॥ हे भगवन् ब्रह्माजी उस राणीका भर्ताभी बडा गुणवान था परंतु राणीनें भर्ताकों त्याग कीया अरु इंद्रसाथ उसका परस्पर स्नेह भया ॥ जब राजानें उनका संपूर्ण वृत्तांत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रवण कीया तब बलकरि इनकों दंडताडना करावणे लगा परंतु उनकों खेद कछु न होवे ॥ जब चिक्कडविषे उनकों डारे तब कमलकी नांइं उपरहि रहे कष्ट कछु न होवे ॥ बहुरो वर
फविषे उनकों डारदीये तोभी खेदवान नहुवे ॥ तब राजानें कहा हे दुर्मतियो तुमकों दुःख कछु क्यों नहि होता ? उनोनें कहा हमकों दुःख केसें होवे हम तो आपकोंभी नहि जानते ॥
तब अहल्याने कहा मुजकों सब इंद्रही भासताहे भिन्न दुःख कहा होवे ॥ इंद्रनें कहा मुजकों सब अहल्याहि भासतिहे भिन्न दुःख कहां होवे ॥ तेरे डंड करने करि हमकों कछु दुःख
नहि होता ॥ परस्पर हम हर्षवानहे ॥ तब राजानें उसकों बांध डारे बहुरी अग्निविषे डारदीये तोभी जले नहि ॥ बहुरी हस्तिके चरनोंविषे डारदीये तोभी कष्ट कछु नभया ॥ तब राजाने
कहा रे पापीयों तुमकों अग्नि आदिकविषे दुःख क्यों नहि होते तब इंद्रनें कहा हे राजन् जेती कछु जगतजाल हे सो मनविषे स्थितहे ॥ अरु जेसा मनहे तेसारूप पुरुषकाहे ॥ जेसा
निश्चय मनविषे दृढ होताहे तिसकों दूरकरनेंकों कोउ समर्थ नहि ॥ भावे सो डंड हमकों दे परंतु कछु दुःख नहि होवे ॥ काहेतें जो हमारे रिदेविषे परस्पर प्रतिभा होरहिहे ॥ जो कोउ
अनिष्ट हमकों होवे तब दुःखभी होवे ॥ अनिष्ट तो कोउ नहि तब दुःख केसें होवे ? हे राजन् जो कछु मनविषे दृढीभूत होताहे सोइ पडा भासताहे ॥ तिसका निश्चय दूर कोउ नहि करि स
कता शरीर नष्ट होजातहे ॥ परंतु मनका निश्चय नाश नहि होता ॥ हे राजन् जो मनविषे तीव्र संवेग होताहे सो वर अरु शापकरीभी दूर नहि होता ॥ जेसें सुमेरु पर्वतकों मंदमंद वा
यु चलाय नहि सकता तेसें मनके निश्चयकों कोउ नहि चलाय सकता ॥ इसी कारणतें कहाहे जो मेरे रिदेविषे इंसकी मूर्ति स्थिरीभूत हे ॥ इसके रिदेविषे मेरी मूर्ति स्थिरीभूत हे ॥ इसकों
सब जगत मेंहि भासताहों अरु मुजकों सब जगत इहि भासतीहे ॥ जो कछु दूसरा भासे तब दुःखभी होवे ॥ जेसें लोहेके कोटविषे होवे तिसकों दुःखदेणेकों कोउ समर्थ नहि तेसें मु
जकों दुःख कोउ नहि ॥ जहां मैं जाताहों तहां सब उरतें अहल्याहि भासतिहे तातें दुःख कोउ नहि ॥ जेसें जेष्ट आषाढकी वर्षा विषे पर्वत चलायमान नहि होता तेसें हमकों दुःख
नहि होता ॥ हे राजन् ! मनका नाम अहल्याहे अरु मनका नाम इंद्र हे अरु मननें सब जगत रचाहे ॥ जेसा जेसा मनविषे दृढ निश्चय होताहे ॥ तेसाहि भासताहे सुमेरुकी नांइं स्थि
र होजाताहे नष्ट नहि होता ॥ जेसें पत्र फूल फल टासके काटेतें वृछ नष्ट नहि होता जब बीजहि नष्ट होवे तब वृछ नष्ट होताहे तेसें शरीरके नष्ट हुवेतें मनका निश्चय नष्ट नहि होता ॥
जब मनका निश्चयहि उलट पडे तबहि दूर होताहे ॥ एक शरीर जब नष्ट होताहे तब और शरीर धारि लेताहे ॥ जेसें सुपने विषे इह शरीर रहता हे अरु और शरीर धारिकें चेष्टा करताहे
तो शरीरके आधीन हुवा क्या ? ॥ तेसें शरीरके नष्ट हुए मनका निश्चय दूर नहि होता ॥ जब मन नष्ट होवे तब शरीरके होतेभी कछु क्रिया सिद्ध नहि होति ॥ तातें सबका बीज मन हे
॥ जेसें पत्र टास फल फूल तिन सबनका कारण जलहे तेसें सब पदार्थका कारण मनहे ॥ जेसा चित्त हे तेसारूप पुरुषकाहे ॥ तातें जहां जाता हे तहां सब ओरतें राणी भासतीहे मुझ
कों दुःखकेसें होवे ॥ ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे कृत्रिम इंद्रवाक्यं नाम पंचषष्टितमःसर्गः ॥ ६५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ भानुरुवाच ॥ हे भगवन् ! इस प्रकार जब इंद्र ब्रा
ह्मणनें कहा तब कमलनयन राजा समीप जो भरत नाम मुनीश्वर बेठाथा तिसकों राजा कहत भया ॥ हे सर्वधर्मोंके वेत्ता भरत मुनीश्वर तुम देखो इह केसा ढीठ पापात्मा हे ॥ जेसा
इनका पाप हे तिनके अनुसार इसकों शाप देहु जो इह मरि जावे ॥ जो मारनें जोग न होवे तिसकों राजा मारे ॥ तब राजाकों पाप होताहे ॥ जेसें तिसके मारणेतें पाप होताहे तेसें पा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीकों न मारेतेंभी पाप होताहे ॥ तातें यह पापीयोंको शाप देहु जो यह नष्ट होजावे ॥ हे भगवन् जब इस प्रकार राजा शार्दूलनें कहा तब भरत मुनिनें तिनके पापकों बिचारकें कहा॥ अरे पापीयों तुम मरीजाओ ॥ जब इस प्रकार मुनीश्वरनें कहा तब उस इंद्रब्राह्मणनें कहा ॥ रे दुष्टो तुमोनें शाप दीया तिससें कहां होएगा ? तिसकरकें शरीर नष्ट होवेगा ॥ तिसकरकें हमारा मन तो नष्ट होनेका नहि ॥ तुम भावे लक्ष यत्न करो तिस मनकरि शरीर होवेगे ॥ हमारेकों मनके नष्ट हुवे विना विपर्यय दशा नही होति ॥ एसा कहिकरि दोनों पृथ्वीपर गिरपडे ॥ जेसें मूलके काटेतें वृछ गिर पडताहे तेसें उह गिर पडे अरु वासना संजोग जो थे तिसकरि दोनों मृग भये ॥ तहांभी परस्पर स्नेह विषे रहे ॥ बहुरी तिस जन्मकों त्यागकें पंछी जन्मकों पाया ॥ हे ब्रह्माजी ! तिस देहकोंभी त्याग कीया ॥ अब हमारी सृष्टिविषे तप करता पुन्यवान ब्राह्मण अरु ब्राह्मणी भयेहें ॥ तातें तुम देखो जो भरत मुनिनें शाप दीया तब ऊनके शरीर नष्ट हूए ॥ परंतु मनका जो कछु निश्चय था सो नष्ट न भया ॥ जहां शरीर पावे तहां दोनों एकठेहि रहे ॥ आपसमें अकृत्रिम प्रेमवान भये सो और किसकरि आनंद मान न होवे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे अहिल्यानुरागसमाप्तिवर्णनंनाम षट्षष्टितमःसर्गः ॥ ६६ ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ भानुरुवाच ॥ हे नाथ तूं देखजो जेसा मनका निश्चय होतहे तिसके अनुसार आगें भासताहे ॥ इंद्रके पुत्रकी सृष्टिवत् मनके निश्चयकों कोउ दूर नहि करि सकता हे जगत्के पति मनही जगत्का कर्ताहे अरु मनहि पुरुष हे मनका किया होताहे शरीरका कीया कार्य नहि होता ॥ जो मनविषे दृढ निश्चय होताहे सो किसी औषध करिकें दूर नही होता ॥ जेसें मणिविषे प्रतिबिंब होता हे ॥ सो मणिके उठाये विना दूर नहि होता तेसें मनका निश्चयभी किसी अवरकरि दूर नहि होता जब मनहि उलटे तबहि दूर होवे ॥ इसितें कहाहे जो अनेक सृष्टिके भ्रम चित्तविषे स्थित हे तातें हे ब्रह्माजी तुमभी चिदाकाशविषे सृष्टिकों रचो ॥ हे नाथ तीन आकाश हे एक भूताकाश हे ॥ एक चित्ताकाशहे ॥ एक चिदाकाश हे सो तीनों अनंतहे इनका अंत कहूं नांहि भूताकाश चित्ताकाशके आश्रय स्थित हे अरु चित्ताकाश चिदाकाशके आश्रय स्थित हे ॥ भूताकाश अरु चित्ताकाश इह दोनों चिदाकाशके आश्रय प्रकाशतेहे ॥ तातें चिदाकाशके आश्रय जेती तुमारी इछा होवे तेती सृष्टि तुमभी रचो ॥ चिदाकाश अनंतरूप हे इंद्र ब्राह्मणके पुत्रोनें तुमारा क्या लियाहे ? अपंना नित्य कर्म तुमभी करो ॥ ब्रह्माउवाच ॥ हे वसिष्ठजी ! इस प्रकार जब सूर्यनें मुझकों कहा जो सब जगत्जाल मनतें उठीहे तब में विचार करिकें कहा हे भानु तुजनें युक्त वचन कहेहें ॥ जो एक भूताकाश हे एक चित्ताकाश हे एक चिदाकाश हे सो तीनों अनंत हे ॥ परंतु भूताकाश चित्ताकाश दोनों चिदाकाशके आश्रय फुरतेहे ॥ तातें हमभी अपणे नित्यकर्मकों करतेहें ॥ अरु जो कछु में तुमकों कहता हों सो तुमभी मानो ॥ मेरी सृष्टिके तुम मनु प्रजापति होहु जेसें तुमारी इछा होवे तेसें रचो एसें जब में कहा तब सूर्य मेरी आज्ञा मानिकें अपणे दो शरीर करत भया ॥ एक तो पूर्वका सूर्य रूप कीया उस सृष्टिका सूर्य हूवा ॥ अरु दूसरा शरीर उस स्वयंभू मनुका कीया ॥ हे वसिष्ठजी ! मेरी आज्ञाके अनुसार उसनें सृष्टि रचि ॥ तातें में तुजकों कहाहे जो इह जगत सब मनका रचा हुवाहे ॥ जो मनविषे दृढ निश्चय होताहे सोइ सफल होताहे ॥ जेसें इंद्र ब्राह्मणकी सृष्टि हूइ ॥ हे मुनीश्वर देहके नष्ट हुवेभी मनका निश्चय दूर नहि होता चित्तविषे उही भासी आताहे ॥ सोचित्त आत्माका किंचनरूप हे ॥ जेसें तिसविषे फुरनाहोतीहे तेसाहि होय भासताहे ॥ प्रथम जो शुद्ध संवितरूपविषे उत्थान हूवाहे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सो अंतवाहक शरीर हे ॥ बहुरी जो उसविषे दृढ अभ्यास हूवाहे अरु स्वरूपका प्रमाद हुवाहे ॥ तब अधिभूतक शरीर हुवे जब अधिभूतकका अभिमानीभया तब इसका नाम जीव हूवा ॥ अरु देहाभिमानकरि नानाप्रकारकी वासना होतिहे ॥ तिसके अनुसार घटियंत्रकी नांइं भटकताहे ॥ जब बहुरी आत्माका बोध होवे तब देहतें आदि लेकरि द्रश्यशांति हो जातहे ॥ हे मुनीश्वर जेता कछु दृश्य भासताहे सो ब्रह्मकरिकें भासताहे ॥ वास्तवतें न कोउ उपजाहे न कोउ जगत हे इह भम सब चित्तकरि रचाहे तिसके अनुसार घटियंत्रकी नांइं भटकता हे ॥ जब बहुरी आत्माका बोध होताहे तब देहतें आदिले करि सब प्रपंच शांत होताहे ॥ हे मुनीश्वर ! जेता कछु दृश्य भासता हे सो मन करकें भासता हे ॥ वास्तवतें नकोउ माया हे नकोउ जगत हे ॥ इह सब भम भासताहे ॥ हे वसिष्ठजी ! और द्वैत कछु नहि चित्तके फुरणे करकें अहं त्वं आदिक भम भासताहे ॥ जेसें इंद्र ब्राह्मणके पुत्र मनके निश्चय करिकें ब्रह्मारूप होतभये तेसें में ब्रह्मा हों ॥ शुद्ध आत्माविषे चैत्यता होतीहे सोइ चैत्यता ब्रह्मारूप होइकरि स्थितहे ॥ अरु शुद्ध आत्माविषे जो चैत्यता होतिहे सोइ मनरूप हे ॥ तिस मनके संयोगकरि चैतनकों जीव कहते हें ॥ जब इसविषे जीवत्व होताहे तब अपनी देहकों देखताहे ॥ बहुरी नानाप्रकारके जगत भमकों देखताहे ॥ जेसें इंद्र ब्राह्मणके पुत्रकों सृष्टि हुइयां तेसे इह जगत हे जेसें भमकरि आकाशविषे दूसरा चंद्रमा भासताहे ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प भासताहे सो जगत सत्यभी नहि अरु असत्यभीनहि ॥ प्रत्यक्ष देखणेकरि सत्य भासताहे ॥ अरु नाश भाव करि असत्य हे ॥ सो सब मनविषे फुरताहे अरु मनके दो रूपहे ॥ एक जडरूपहे दूसरा चैतन रूपहे ॥ जडरूप मनका दृश्यरूपहे अरु चैतनरूप मनका ब्रह्महे ॥ जब दृश्यकी उर फुरताहे तब दृश्यरूप होताहे ॥ जब चैतनभावकी उर स्थित होताहे तब जडभाव दृश्यरूप इसका नष्ट हो जाताहे ॥ जेसें स्वर्णके जानेतें भूषणभाव नष्ट हो जाताहे तेसें ॥ अरु जब जडभावविषे फुरताहे ॥ तब नानाप्रकारके जगतकों देखताहे ॥ वास्तवतें ब्रह्मादि तृण पर्यंत सबहि चैतनरूपहे ॥ जड तिसकों कहताहे जो अभावरूप होवे ॥ जेसें लकडिविषे चित्त नहि भासता अरु प्राणधरियों विषे चित्त भासताहे ॥ परंतु सरूपतें दोनों तुल्यहे काहेतें जो सब परमात्माकरिकें प्रकाशताहे ॥ हे वसिष्ठजी स्वरूपतें सब चैतन स्वरूपहे ॥ जो चैतन स्वरूप न होवे तो क्यों भासे ॥ चैतनता करि उपलब्ध रूप होतेहे जड अरु चैतनका विभाग अवाच्य ब्रह्मविषे नहि पाता ॥ जड चैतनका विभाग प्रमाद दोष करकेंहें वास्तवतें नहि ॥ जेसें सुपनविषे दो प्रकारके भूत भासतेहे ॥ जड अरु चैतनरूप तिसरूपका प्रमाद होताहे तिस चैतनभूत प्राणीकों जड चैतनविभाग भासताहे ॥ अरु स्वरूप दर्शीकों सब एक स्वरूपहे ॥ हे मुनीश्वर ! ब्रह्माविषे चैत्यता भइ सो मन भया ॥ तिस मनविषें जो चैतन भागहे सो ब्रह्माहे अरु जड भागहे सो अबोधहे ॥ जब अबोधभाव होताहे तब दृश्य भमकों देखताहे ॥ जब चैतन भावविषे स्थित होताहे ॥ तब शुद्ध रूप होताहे ॥ हे मुनीश्वर ! चैतन मात्रविषे अहंकार उत्थान दृश्यहे अरु परमार्थतें कछु भेद नहि ॥ जेसें तरंग जलतें भिन्न नहि तेसें अहं चैतनमात्रतें भिन्न नहि होता ॥ सबकी प्रतीत ब्रह्महिविषे होतिहे सो परम पद हे सब दुःखोतें रहितहे ॥ सोइ शुद्ध चित्त जीव चैत्यभावकों चेतताहे तब जडभावकों देखताहे ॥ जेसें सुपनेविषे कोउ अपना मरणा देखताहे तेसें उह चित जडभावकों देखताहे सो आत्मा सर्व शक्तिहे कर्ताहे तोभी कछु नहि करता तिसके समान और कछु नहि ॥ हे मुनीश्वर इह जगत कछु वास्तवतें उपजा नहि चित्तके फुरणे करीकें भासताहे ॥ जब चित्तका फुरणा होताहे तब जगत जाल भासताहे ॥ जब चैतन आत्माविषे स्थित होताहे तब मनका जडभाव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहि रहता ॥ जेसें पारसमणिके मिलापतें तांबा स्वर्न होजाताहे बहुरी तांबा भाव तिसका नहि रहता तेसें जब मन आत्माविषे स्थित होताहे तब मनकी जडता दृश्य भाव नहि रहता ॥ अरु जेसें सुवर्नकों शोधन करताहे तब मेल जलताहे शुद्धहि शेष रहताहे तेसें चित्त जब आत्मविषे स्थित होताहे तब जड भाव इसका जलि जाताहे ॥ शुद्ध चैतनमात्र शेष रहताहे अरु वास्तवतें पूछे तो शुद्धभी द्वैतविषे होताहे आत्माविषे द्वैत कछु नहि ॥ तातें शुद्ध केसें होवें जेसें आकाशके फूल वृथा वास्तवतें कछु नहि तेसें शोधनभी वास्तवतें कछु नहि ॥ हे मुनीश्वर जब लग आत्माका अज्ञानहे तबलग नाना प्रकारका जगत भासताहे ॥ जब आत्माका बोध होताहे तब जगत भ्रम नष्ट होजाताहे इह जगत भ्रम चित्त विषेहे जेसा निश्चय चित्तविषे होताहे तेसाहि हो भासताहे ॥ इस उपर अहल्या अरु इंद्रका दृष्टांत कहाहे ॥ तातें जेसी भावना दृढ होतीहे तेसा होइ भासताहे ॥ हे वसिष्टजी ! जिसकों इहि भावाना दृढ हे जो मे देह हों ॥ सो पुरुष जो कछु चेष्टा करताहे ॥ सो देहके निमित्त करताहे ॥ तिस कारणतें बहुत काल पर्यंत कष्ट पाताहे ॥ जेसें बालक वैतालकी कल्पना करताहे तिसकरि आप भय पावताहे ॥ तेसें देहविषे अभिमान करिकें पुरुष कष्ट पाताहे ॥ अरु जिसकी भावना देहविषे निवृत्त भइ हे अरु शुद्ध चैतन भावविषे प्राप्त भइहे ॥ तिसकें देहादिक जगत भ्रम शांत होजाताहे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे जीवक्रमोपदेशोनाम सप्तषष्ठितमः सर्गः ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जब इस प्रकार ब्रह्माजीनें मुझकों कहा तब में बहुरी प्रश्नकीया जोहे भगवन् तुमोंनें कहा जो शापविषे मंत्रादिकोंका बल होताहे सो शापभी अचलरूप हे मिटता नहि ॥ सो में एसेंभी देखाहे जो शापकरकें मन बुद्धि इंद्रियांभी जडी भूत होजातियांहें ॥ एसें तो नहि जो देहकों शाप होवे अरु मनकों न होवे ॥ हे भगवन् ! मन अरु देह तो अनन्य रूपहे ॥ जेसें वायु अरु स्पंदविषे भेद नहि, जेसें घृत अरु चिकनाइ विषे भेदनहि तेसें मन अरुजगतविषे भेद नहि ॥ अरु जो कहिये देह कछु वस्तु नहि चैतन्यही चित्तहे ॥ देहभी चित्तविषे कल्पितहे जेसें सुपन देह होताहे जेसें मृगतृष्णाका जल होताहे जेसें दूसरा चंद्रमा भासताहे सो एकके नष्ट हुए दोनों क्यो नहि नष्ट होते तेसें देहके शापकरी चाहियें जो मनकों शापभी लग जावे सो में देख्याहे जो शाप करीभी जडीभूत होगयेहे ॥ अरु तुम कहते हो देहका कर्म मनकों नहि लागता सो केसें जाणियें ॥ ब्रह्माउवाच ॥ हे मुनीश्वर ! एसा पदार्थ जगत्विषे कोउ नहि जो सब कर्मकों त्यागकें पुन्यरूप पुरुषार्थ कीयेतें सिद्ध न होवे पुरुषार्थ कीयेतें सब कछु होताहे ॥ ब्रह्मा आदि चेंटी पर्यंत जिस जिसकी भावना होतिहे तेसा रूप हो भासताहे ॥ अरु सब जगतके दो शरीर हे ॥ एक मनरूपी शरीर हे सो चंचलरूप हे दूसरा अधिभूतक मांसमय शरीरहे तिसका कीया कार्य निष्फल हे ॥ अरु जो मनकरिके चेष्टा होत हे सो सफल होतहे ॥ हे मुनीश्वर ! जिस पुरुषकों मांसमय शरीर साथ अहंभाव हे तिसकों आधिव्याधि अरु शापभी अवश्य लागताहे ॥ अरु मांसमय शरीर जो मूक हे गुंगेहे अरु दीनहे अरु क्षण नाशीहे इस साथ जिसका संयोग हे सो दीन रहताहे ॥ अरु चित्तरूपी शरीर चंचल हे ॥ अपणा चित्त वश कीसीकों नहि होता ॥ अर्थ यह जो वशकरणा महा कठिनहे ॥ जब दृढ वैराग अभ्यास होवे तब वश होवे अन्यथा नहि होता ॥ मन महा चंचलहे अरु इह जगत् मनविषे हे ॥ जेसा जेसा मनविषे निश्चय हे सो दूर नहि होता ॥ मांसमयका कीया सफल नहि होता अरु जो मनविषे निश्चयहे सो दूर नहिहोता ॥ हे मुनीश्वर जिन पुरुषोने चित्तकों आत्मपदविषे स्थित कीया हे तिनकों अग्निविषे डारियें तोभी दुःख क

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छु नहि होता ॥ अरु जलविषे डारियें तोभी दुःख नहि होता ॥ काहेतें जो उनका चित्त बाह्य शरीरादिक भावकों ग्रहण नहि करता आत्माविषे स्थित होताहे॥ हे मुनीश्वर! जो सब भा
वकों त्यागकरि मनका निश्चय जिसविषे दृढ होताहे सोइ भासताहे ॥ जहां मनदृढीभूत होकरि लगताहे तिसकों उहि भासताहे और किसी संसारके कष्ट कर अरु शापकरि मन च
लाय मान नहि होता ॥ अरु जो किसी दुःख शाप कर मन विपर्यय भावकों प्राप्त होजावे तो जाणियें जो इह दृढ लगा न था अभ्यासकी सिथिलता हे॥ हे मुनीश्वर !मनकी तीव्रता
के हिलावणेंकों किसी पदार्थकी शक्ति नहि काहेतें जो सृष्टि मानसी हे तातें मनसाथ मनकों समाय चित्तकों परमपद विषे जोडो॥ जब चित्त आत्माविषे दृढहोतहे तब जगतके पदार्थों
करी चलायमान नहि होता ॥ जेसें मांडव ऋषीश्वर शूली पर चडाथा अरु तिसका जो चित्त आत्मपदविषे लगाहुवाथा तिसकों शूलिपरभी खेद न हूवा॥ हे मुनीश्वर! जिसविषे मन दृ
ढ होकरि लगताहे॥ तिसकों चलाय कोउ नहि सकता॥ जेसें इंद्रब्राह्मण चलायमान न भये तेसें मन आत्माविषे स्थिर हुवा चलायमान नहि होता॥हे मुनीश्वर! जेसा जेसा मनविषे तीव्र
भाव होताहे तिसीकी सिद्धता होतिहे ॥ दीर्घ तपा एक ऋषीथा ॥ उह अंधे कूपविषे किसी प्रकार गिर पडा ॥ तिस कूपविषे मनकर यज्ञ करने लागा॥ मनविषे दृढकर यज्ञकों किया ॥
तिस यज्ञकर मनविषे देवता होकरि फल इंद्रपुरि विषे भोगणें लागा अरु जेसें इंद्र ब्राह्मणके पुत्र मनुष्योंके समान थे ॥ अरु मनविषे जो ब्रह्माकी भावना करी तिसकरि दशही ब्रह्मा
भये ॥ अरु दशहि तिननें अपनी अपनी सृष्टि रची सो केसी सृष्टि हे जो मुझकरीभी खंडित नहि होती ॥ तातें जो कछु दृढ अभ्यास होताहे सो नष्ट नहि होता ॥ औरभी जो देवता
महाऋषी आदिधीरजमान हुएहे जिनकी एकक्षणमात्रभी वृत्ति चलायमान नहि होति ॥ तिनकों संसारका ताप आधि व्याधि शाप मंत्र पाप कर्म इसतें लेकर जो संसारके क्षोभ
दुःख हे तिसकों कोउ नही स्पर्श करता ॥ जेसें कमल फूलका प्रहार शिलाकों फोड नहि सकता तेसें धीरजवानकों संसारका ताप नहि खंडन कर सकता ॥ अरु जिसकों आधि व्या
धि दुःख करतें हे सो जाणियें जो परमार्थ दर्शनतें शून्य हे ॥ हे मुनीश्वर ! जो पुरुष स्वरूपविषे सावधान भएहें तिनकों दुखका कोउ नहि स्पर्श करते सुपनेविषेभी तिनकों दुःखका
अनुभव नहि होता ॥ काहेतें जो तिनका चित्त सावधान हे तातें दृढ पुरुषार्थ करि मनके साथ मनकों मारो तिसकरि जगत भ्रम नष्ट हो जावेगा ॥ हे मुनीश्वर जिसकों स्वरूपका प्र
माद होताहे तिसकों क्षणविषे जगतभ्रम दृढ होजाताहे ॥ जेसें बालककों क्षणविषे वैताल भासि आताहे तेसें प्रमादकरि जगत भासताहे ॥ हे मुनिश्वर मनरूपी कुलाल हे अरु वृत्तिरूपी
मृत्तिका हे ॥ तिस मनकरि वृत्ति अनेक आकार क्षणविषे धरती हे ॥ जेसें मृत्तिका कुलाल करि घटादिक अनेक आकारकों धरतीहे ॥ तेसें निश्चयके अनुसार वृत्ति अनेक आका
रोंकों पातिहे ॥ जेसें सूर्यविषे उलूकादिक भावना करकें अंधकारकों देखतेहे अरु किनकों चंद्रमाकी किरणांभी भावनाकरी अग्निरूप भासतीहे ॥ किनकों विषविषे अमृतकी भावना
होतिहे तिनकों विषभी अमृतरूप होइ भासताहे ॥ इसि प्रकार कटुक आम्ललोणभी भावनाके अनुसार भासताहे ॥ जेसा मनविषे निश्चय होताहे तेसाहि इसकों भासताहे ॥ मन
रूपी बाजीगर हे जेसी रचना चाहताहे तेसी रच लेताहे ॥ अरु मनका रचा जगत हे सो सत्य नहि अरु असत्यभी नहि ॥ प्रत्यक्ष भाषणे करि सत्यहे असत्य नहि अरु नष्ट भावतें अ
सत्यहे सत्य नहि ॥ अरु सत्य असत्यभी मनकरिकें भासताहे वास्तव कछु नही ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे मनोमहात्म्य वर्णनं नाम अष्टषष्टितमः सर्गः ॥ ६८ ॥ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस प्रकार प्रथम ब्रह्माजीनें मुझकों कहाथा सो मैंनें अब तुजकों कहाहे ॥ जो प्रथम ब्रह्म अहं शब्द पद विषे स्थित था तिसविषे चित्त हुआ ॥ अर्थ यह जो अहं अस्मी चैतनताका लक्षण हुआ ॥ तिसकी जब दृढता हुइ तब मन हुवा ॥ तिस मननें पंच तन्मात्राकी कल्पना करि सो तेजाकार ब्रह्मा परमेष्ठी कहाताहे ॥ हे रामजी ! सो ब्रह्माजी मनरूपहे ॥ अरु मनहि ब्रह्मारूपहे ॥ तिसका रूप संकल्पहे ॥ बहुरी आगें जेसा संकल्प करताहे तेसाहि होताहे ॥ तिस ब्रह्मानें एक अविद्या शक्ति कलपीहे ॥ अनात्मविषे आत्माभिमान करणा इसका नाम अविद्याहे ॥ बहुरी अविद्याकी निवृत्ति विद्या कलपी ॥ इसी प्रकार पहाड तृणजल समुद्रस्थावर जंगम पूर्ण जगतकों उत्पन्न कीया ॥ इस प्रकार ब्रह्मा हुवा ॥ अरु इसप्रकार जगत हुवा ॥ जेसें तुमनें कहा सो जगत् केसें उपजताहे अरु केसें मिट जावे सो श्रवण करु जेसें समुद्रविषे तरंग उपजतेहे अरु समुद्रहि विषे लीन होतेहे तेसें संपूर्ण जगत ब्रह्म विषे उपजताहे अरु ब्रह्महिविषे लीन होताहे ॥ हे रामजी ! शुद्ध आत्मसत्ताविषे जो अहंका उल्लेख हुवाहे सो मन हे अरु सोइ ब्रह्मा हे ॥ तिसहिनें नाना प्रकार जगत रच्याहे सो सर्व चित्तशक्ति पसरीहे ॥ सो चित्तके फुरणे करी नानात्व भासताहे ॥ हे रामजी ! जेते कछु जीवहे तिनो सर्वोविषे आत्मसत्ता स्थितहे ॥ परंतु अपणे स्वरूपके प्रमादकरिकें पडे भटकतेहे ॥ जेसें वायुकरकें बनके कुंजोविषे सूके पात भटकतेहें तेसें कर्मरूपी वायुकरि जीव भटकतेहें ॥ अध अरु उर्धविषे घटि यंत्रकी नांइ अनेक जन्मोकों धरतेहे ॥ जब काकतालीवत् सत्संगकी प्राप्ति होवे अरु अपणा पुरुषार्थ करे तब मुक्त होवे ॥ इसकी जबलग प्राप्ति नहि भइ तबलग कर्मरूपी जेवरी साथ बांधेहुए अनेक जन्मविषे भटकतेहें ॥ जब ज्ञानकी प्राप्ति होवे तबहि दृश्य भमतें छूटे अन्यथा न छूटेंगे ॥ हे रामजी ! इस प्रकार ब्रह्मातें जीव उपजतेहें अरु मिटतेहें अनंत संकटोका कारण वासनाहि नानाप्रकारके भ्रम दिखातिहे अरु जगत् रूपी बन की जन्मरूपी वैताल वेली वासना जलकरी बढतिहे ॥ जब सम्यक् ज्ञान प्राप्त होवे तब सोइ कुठार करकें काटो ॥ जब मनविषे वासनाका क्षोभमिटे तब शरीररूपी अंकुर मनरूपी बीजतें उपजे नहि ॥ जेसें भुनाबीज अंकुर नहि लेता तेसें वासनातें रहित मन शरीरकों नहि धारता ॥ इतिश्री यो०उ०प्र०वासनात्यागवर्णनं नाम एकोनसप्ततितमः सर्गः ॥ ६९ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जेति कछु भूत जातिहे सो ब्रह्मतें उपजीहे ॥ जेसें समुद्रतें तरंग बुदबुदे केइ बडे केइ छोटे केइ मध्यभावके होतेहें ॥ सो सब जल हे तेसें इह जीव ब्रह्मतें उपजेहें सो ब्रह्मरूप हें ॥ जेसें सूर्यकीकिरणां विषे जल भासताहे जेसें अग्नितें चिणगारे उपजतेहे तेसें ब्रह्मतें जीव उपजतेहें ॥ जेसें कल्पवृक्षकी मंजरी नानारूपकों धरतिहे तेसें ब्रह्मतें जीव हुवेहें ॥ जेसें चंद्रमातें किरणांका विस्तार होताहे अरु जेसें वृक्षतें पत्र फूल फल आदिक होताहे तेसें ब्रह्मतें जीव होतेहें जेसें सुवर्णतें अनेक भूषन होतेहें तेसें ब्रह्मतें जगत होतहे ॥ जेसे झरणोतें जलके कणके उपजतेहे तेसें परमात्मातें भूत उपजतेहें ॥ जेसें आकाश एकहि हे तिसविषे घट मठकी उपाधिकरी घटाकाश मठाकाश कहाताहे तेसें संवेदनके फुरणेकरि जीव कल्पना होतिहे जेसें जलहि द्रवताकरिकें तरंग आवर्तरूप होइ भासता हे तेसें ब्रह्मही संवेदन करिकें जगतरूप होइ भासताहे ॥ द्रष्टादर्शन दृश्य सब ब्रह्मतें उपजाहे जेसें सूरजके तेज करि मृगतृष्णाकी नदी भासतिहे तेसें संवेदन करीकें ब्रह्मविषे द्रष्टा दर्शन दृश्य त्रिपुटी भासतीहे ॥ वास्तवतें द्रष्टा दर्शन दृश्य कल्पना कोउ नहि ॥ जेसें चंद्रमा अरु सीतलताविषे कछु भेद नहि, जेसें सूर्य अरु प्रकाशविषे कछु भेद नहि तेसें ब्रह्म अरु जगतविषे कछु भेद नहि ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग उपजतेहे अरु समुद्रमेंइं लीन होतेहे ॥ तेसें जीव ब्रह्महितें उपजतेहे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरु ब्रह्महिविषे लीन होतहे ॥ केइ जन्म सहस्रके अनंतर प्राप्त होतेहें ॥ केइ थोडे केइ बहुत जन्म करी प्राप्त होतेहें ॥ हे रामजी! इस प्रकार जगत परमात्मातें हुवाहे अरु तिसहिकी इ
छा अनुसार व्यवहार करतेहे सोइ व्यवहारकी नांइं होइ भासतेहें ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे सर्व ब्रह्मप्रतिपादनं नाम सप्ततितमः सर्गः ॥ ७० ॥ ॥७॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! कर्ता अरु कर्म इह अभिन्नरूप हे अरु एकठेही ब्रह्मतें उत्पन्न हुवेहे ॥ जेसें फूल अरु सुगंध दलतें एकठे उत्पन्न होतेहे तेसें कर्ता अरु कर्म एकठे उत्पन्न हुवेहे ॥ जब जीव सब संकल्प कलनाकों त्यागताहे तब निर्मल ब्रह्म होताहे ॥ जेसें आकाशविषे नीलता भासतिहे तेसें आत्माविषे जगत कल्पना फुरतिहे ॥ आत्मा अद्वैत सदा अपणे आपविषे स्थित हे अरु इहभी अज्ञानीके बोध जतावणेकों कहताहे जो जीव ब्रह्मतें उपजेहे ॥ अरु इस प्रकार सात्विक राजस तामस गुणोंके भेद स्थितहे ॥ जो ज्ञानवान हे तिनो प्रति इह कहणाभी नहि बनता ॥ जो ब्रह्मतें उपजेहे तोभी दूसरा कछु नहि दूसरेकों अंगीकार करीकें उपदेश करताहे ॥ वास्तवतें ब्रह्मसत्ताविषे कोउ कल्पना नहि सदा अपणे स्वभावविषे स्थित हे ॥ जो ज्ञानवान हे तिनकों सदा एसेंही प्रत्यक्ष भासताहे अरु अज्ञानी दूरतें दूर चले जात हे तिसकों सुमेरु अरु मंदराचलकि नांइं आत्मा अरु जीवका अंतर भासता हे ॥ जेसें वसंतऋतु करिकें नानाप्रकारके नौतन अंकुर उपजतेहे अरु वसंतऋतुके अभाव हुवे नष्ट होतेहे ॥ तेसें चित्तके फुरने करि जीव राशी उपजतेहें अरु चित्तके अफुर हुवे नष्ट हो तेहें ॥ मन अरु कर्मविषे भेद कछु नहि ॥ मन अरु कर्म एकठेहि उत्पन्न होतेहे जेसें दलसों फल अरु सुगंध एकठे उपजतेहें तेसें आत्मासों मन अरु कर्म एकठेहि उपजतेहें ॥ बहुरी आ
त्माविषे लीन होताहे ॥ हे रामजी ! दैत्य नाग मनुष देवता आदिक जेते कछु जीव तुजकों भासतेहे सो आत्मातें उपजेहे अरु बहुरी आत्माहीविषे लीन होतेहे ॥ इनका उत्पत्तिकारण अज्ञानहे आत्माके अज्ञान करिकें भटकतेहें ॥ जब आत्मज्ञान उपजताहे तब संसारभ्रम निवृत्त होजाताहे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! जो पदार्थ शास्त्रप्रमाण करीकें सिद्ध हे सोइ सत्यहे ॥ अरु शास्त्र प्रमाण उहि हे जिसविषे राग द्वेषतें रहित निर्णय हें अरु अमानित्व अदंभित्व आदिक गुण प्रतिपादन कीयेहें ॥ तिस सब दृष्टि करी जो उपदेश कीयाहे सो पदार्थ प्रमाण हे ॥ तिनके अनुसार जो जीव विचरतेहें सो भलि उत्तम गतिकों प्राप्त होतेहें ॥ अरु जो शास्त्र प्रमाणतें विपरीत वर्ततेहें सो अशुभ गतिकों प्राप्त होतेहें ॥ अरु लोकविषेभी प्रसि
द्ध सुनाता हे जो कर्मोंके अनुसार जीव वर्तते उपजतेहे ॥ जेसें बीजतें अंकुर उपजताहे सो जेसा बीज होताहे तेसाहि तिसतें अंकुर उपजताहे ॥ तेसें जेसा कर्म होताहे तेसी गति इस
कों प्राप्त होतिहे ॥ अरु कर्ता करकें कर्म होताहे ॥ इह परस्पर अभिन्न हे ॥ इनका एकठा होना क्योंकर होवे ॥ कर्ताकर कर्म होतेहे अरु कर्म करिकें गति प्राप्त होतिहे ॥ अरु तुमं क
हते हो मन अरु कर्म ब्रह्मतें एकठेहि उत्पन्न हुवेहे इस करिकें शास्त्रके वचन अरु लोकके वचन अप्रमाण होतेहें ॥ हे देवताविषे श्रेष्ठ इह संशय दूर करनेकों तुमहि योग्य हो जेसें स
त्य हे तेसेंहि कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इह प्रश्न तुजनें भला कीयाहे तिसका उत्तर में तुजकों कहताहों जिसके श्रवण कीयेतें तुजकों ज्ञान प्रकाश आवेगा ॥ हे रामजी !
शुद्ध संवित मात्र आत्मतत्वविषे जो संवेदन फुर्या सो कर्मका बीज मन हुवा सो सबका कर्मरूप हे तिस बीजतें सब फल होताहे तातें कर्म अरु मनमें कछु भेद नहि ॥ जेसें सुगंध अरु
कमलविषे कछु भेद नहि तेसें मन अरु कर्मविषे कछु भेद नहि ॥ मनविषे संकल्प होताहे सो अंकुर कर्म ज्ञानवान कहतेहें ॥ हे रामजी पूर्व इसका देह मनहि हे तिस मनरूपी शरीर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साथ कर्म होतेहे सो फल पर्यंत सिद्ध होताहे ॥ मनविषे जो फुरणा होताहे सोइ क्रिया हे अरु सोइ कर्म हे ॥ तिस मनकरी कीया कर्म अवश्य सिद्ध होताहे अन्यथा नहि होता ॥ ए सा पर्वत कोउ नहि न आकाश हे न कोउ लोक हे जिसको प्राप्त होइकरि कर्मोतें छूटे ॥ जो कछु मनके संकल्प साथ कीयाहे सो अवश्यमेव सिद्ध होतहे पूर्व जो पुरुषार्थ प्रयत्न कछू कीयाहे सो निष्फल नहि होता ॥ अवश्यमेव तिसकी प्राप्ति होतिहे ॥ हे रामजी ! ब्रह्मविषे जो चैत्यता हुइहे सोइ मनहे अरु मन कर्मरूपहे अरु सर्व लोकोंका बीजहे ॥ इतर कछु न हि हे रामजी ! जब कोउ देशतें देशांतरकों जाणे लगता हे तब जाणेका संकल्प लेजाताहे सो चलणा कर्महे तातें फुरणरूप कर्म हुवा अरु फुरणारूप मनका हे ॥ मन अरु कर्मविषे भेद कछु नहि अक्षोभ समुद्ररूपी ब्रह्म हे ॥ तिसविषे द्रवतारूपी चैत्यताहे सो चैत्यता जीवरूप हे ॥ अरु तिसहिका नाम मन हे ॥ सो मन कर्मरूप हे ॥ जेसें मन फुरताहे सोइ सिद्ध होता हे ॥ जो कछु मनकरिकें कार्य करताहे सोइ सिद्ध होताहे शरीर करी चेष्टा सिद्ध नहि होति ॥ इस कारणतें कहाहे जो मन अरु कर्मविषे भेद कछु नहि ॥ भिन्न भिन्न भासतेहे सो मिथ्या कल्पना हे ॥ मिथ्या कल्पना मूर्ख करतेहे ॥ बुद्धिवान नहि करते ॥ जेसें समुद्र अरु तरंगोविषे भेद मूर्ख माननेहे बुद्धिवानकों भेद कछू नहि भासता ॥ प्रथम परमात्मासों मन अरु कर्म एकठेहि उपजेहे जेसें समुद्रसें तरंग द्रवता कर उपजतेहे तेसें चित्तके फुरणे कर कर्म आत्मातें उपजतेहे ॥ जेसें तरंग समुद्र विषे लीन होतेहे तेसें मन अरु कर्म परमात्महि विषे लीन होतेहे ॥ जेसें जो पदार्थ दर्पणके निकट होताहे तेसाहि प्रतिबिंब भासताहे ॥ तेसें जो कछु मनका कर्म होताहे सो आत्मारूपी दर्पणविषे प्रतिबिंब भासताहे ॥ जेसें बरफका रूप सीतल हे ॥ सीतलता बिना बरफ नहि होता ॥ तेसें चित्त कर्म हे कर्मोबिना चित्त नहि होता ॥ जब चित्तसों स्पंदता मिट जातिहे तब चित्तभी नष्ट होजाताहे चित्तके नष्ट हूवे कर्मभी नष्ट होजातेहे ॥ अरु कर्मके नाश हुवे मनका नाश होताहे ॥ जो पुरुष मनतें मुक्त हूवाहे सोइ मुक्तहे जो चित्ततें मुक्त नहि हुवा सो बंधनमें हे ॥ एकके नाश हुवे दोनोका नाश होताहे ॥ जेसें अग्निके नाश हुए उष्णताभि नाश होतिहें अरु उष्णता नाश होतिहे तब अग्निभी नाश होताहे ॥ तेसें मनके नष्ट हुवे कर्मभी नाश होतेहे अरु कर्म नाश हुवे मनभी नष्ट होताहे ॥ एकके अभाव भये दोनोंका आभाव होताहे कर्मरूपी चित्तहे अरु चित्तरूपी कर्महे परस्पर अभेदरूप हे ॥ इति०यो उ०कर्मपौरुषयोरैक्यप्रतिपादनंनाम एकसप्ततितमःसर्गः ॥ ७१ ॥

॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी ! मन भावना मात्र हे भावना नाम फुरणेकाहे ॥ अरु फुरण क्रियारूपहे ॥ तिस क्रियाफुरणे करि सर्व फलकी प्राप्ति होतिहे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे ब्राह्मण ! इस मनका रूप विस्तारिकें कहो ॥ जड अजडरूप मनका हे तिसकों विशेष करी कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! आत्म तत्व अनंत रूप सर्व शक्तिमान हें ॥ जब तिस विषे संकल्प शक्ति फुरतिहे तब तिसकों मन कहताहे ॥ जड अजडके मध्यविषे डोलायमान होताहे तिस मिश्रितरूपका नाम मन हे ॥ हे रामजी ! भावरूप जो पदार्थहे तिसके मध्यविषे जो सत्य असत्यका निश्चय करताहे तिसका नाम मन हे॥ तिसविषे जो इह निश्चय करणा जो में चिदानंद रूप नहि॥ में कृपण हों देहसों मिली करि एसें फुरता हे सो मनका रूप हे जो कल्पना करता रहताहे इसतें रहित मन नहि होता जेसें गुणोंविना गुणी नहि रहता ॥ तेसें कर्म कल्पना बिना मन नहि रहता ॥ जेसें उष्णताकी सत्ता अग्नितें भिन्न नहि पडती तेसें कर्मोंकी सत्ता मनतें भिन्न नहि पाते अरु मन अरु आत्माविषे भेद कछु नहि ॥ हे रामजी ! मनरूपी बीजहे तिसतें संकल्परूपी नाना प्रकारके फूल होतेहें ॥ तिसकरिकें नाना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकारके शरीर होतेहे तिसकर संपूर्ण जगत देखता हे जैसी जैसी मनविषे वासना होतिहे तिसके अनुसार फलकी प्राप्ति होतिहे ॥ तातें मनका फुरणाहि कर्मोंका बीज हे ॥ तिसकरि जो भिन्न क्रिया होतिहे सो तिस दलकी शाखा हे अरु नाना प्रकारके विचित्र फल हे ॥ हे रामजी ! जिस ओर मनका निश्चय होताहे तिसी ओर कर्म इंद्रियांभी प्रवर्त्तती हे अरु जो कर्म हे सोइ मनका फुरणाहे अरु मनहि फुरणरूप हे॥ इसी कारणतें कहा हे जो मन कर्मरूप हे तिस मनकी एती संज्ञा कहिहे ॥ मन, बुद्धि, अहंकार, कर्म, कल्पना, स्मृति, वासना, अविद्या, इंद्रियां प्रर्यंतप्रकृति, माया इत्यादिक कल्पना संसारका कारन हे॥ चित्तकों जब चैत्यका संजोग होताहे तब संसारभ्रम होताहे॥ अरु इह जेती संज्ञा तुजकों कहिहे सो चित्तके फुरणे करिकें काकतालिवत् अकस्मात् फुरि हे॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! अद्वैत तत्व परम संवित आकाशविषे एती कलना केसें हुइहे अरु तिनविषे अर्थ रूप दृढता केसें हुइहे ? ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! शुद्ध संवितमात्र जो सत्ताहे सो फुरणे की नांइं स्थित भइहे तिसका नाम मन हे अरु जब उह वृत्ति निश्चयरूप भइहे॥ जो भाव अभाव पदार्थोंकों निश्चय करत भइ॥ जो इह पदार्थ एसा हे ॥ यह पदार्थ एसे हे तिस वृत्तिका नाम बुद्धि हे अनात्मविषे आत्मभाव परिछिन्न रूप जब मिथ्या अभिमान दृढ हुवा तब तिसका रूप अहंकार हुवा सोइ मिथ्या अहं वृत्ति संसार बंधनका कारणहे ॥ किसी पदार्थकों ग्रहण करतिहे किसीकों त्याग करतिहे ॥ बालककी नांइं विचारतें रहित धावतीहे तिसका नाम चित्त हे अरु वृत्तिका फुरणा धर्महे ॥ तिस फुरणे विषे फलकों आरोप करि तिसकी ओर धावणा अरु कर्तव्यका अभिमान फुरे तिसका नाम कर्म हे॥ अरु पूर्व जो कार्य कीये हें तिस पदार्थकों त्यागकें तिसका संस्कार चित्तविषे धारिकरि स्मरण करणा तिसका नाम स्मृति हे ॥ अथवा पूर्व तीसका अनुभव नहि हुवा ॥ अरु रिदे विषे फुर आवे जो इह पूर्व में कीयाथा तिसका नामभी स्मृतिहे अरु जिस पदार्थका अनुभव होवे तिसका संस्कार रिदेविषे दृढ होवे तिसके अनुसार जो चित फुरे तिसका नाम वासना हे॥ हे रामजी ! आत्मतत्व अद्वैत हे तिसविषे अविद्यमान द्वैत विद्यमान होइ करि भासताहे ॥ जिसकरि तिसका नाम अविद्या हे अरु अपणे स्वरूपकों भूलायकरि अपणे नाशके निमित्त स्पंद चेष्टा करता हे अरु शुद्ध आत्माविषे विकल्प उठते हे तिसका नाम मूल अविद्याहे अरु शब्द स्पर्श रूप रस गंध इन पांचो इंद्रियांकों दिखावणेहारा परमात्माहे ॥ अरु अद्वैत तत्व आत्माविषे जिस दृढ जालकों रचाहे ॥ तिस स्पंदकलनाका नाम प्रकृति कहता हे ॥ अरु असत्यकों सत्यकी नांइं दिखातिहे ॥ अरु सत्यकों असत्यकी नांइं दिखातिहे सो माया कहातीहे ॥ अरु शब्द स्पर्श रूप रस गंध इह कर्म हे अरु जिसकरी शब्द स्पर्श रूप रसगंध होतेहे सो कर्ता कहाताहे ॥ सोइ कार्य कारण कहाताहे अरु शुद्ध चैतन चैत्यकों प्राप्त होताहे सो कलनाकि नांइं होताहे॥ तिस फुरणवृत्तिकों विपर्यय कहे हे सो फुरणे करीकें संकल्पजाल उठतिहे तब इसकों जीव कहताहे ॥ मनभी इसका नाम हे चित्तभि इसका नामहे बंधभी इसका नामहे॥ हे रामजी ! परमार्थ शुद्ध चित्तही चैत्यके संयोग करि स्वरूपतें बरफकी नांइं स्थित भयाहे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! इह मन जड हे किंवा चैतन हे ? सो एकरूप मुझकों कहो जो मेरे रिदेविषे स्थित होवे ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! मन जड नहि अरु चैतनभी नहि ॥ जड चैतनकी जो गांठ हे मध्यभाव तिसका नाम मन हे ॥ अरु संकल्प विकल्प विषे कल्पितरूप मन हे ॥ तिस मनतें इह जगत उत्पत्ति हुआहे जड अरु चैतन दोनों भावविषे डोलायमान हे ॥ अर्थ यह जो कबहु जडभावकी ओर आताहे ॥

113

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कबहु चैतनभावकी और आताहे ॥ तिसका नाम मन हे॥ शुद्ध चैतनमात्रविषे जो फुरणा हुवा तिसका नाम मन हे॥ मन बुद्धि चित्त अहंकार जीव आदिक अनेक संज्ञाकों मनहि प्राप्त हुवाहे ॥ जेसें एक नटवा स्वांगो करिकें अनेक संज्ञाकों पाताहे ॥ जिसका स्वांग ले आताहे तिसी नामकरि कहाताहे तेसें संकल्प करिकें मन अनेक संज्ञाकों पाताहे ॥ जेसें पुरुष वि चित्र कर्मोंकरी अनेक संज्ञाकों पाताहें पाठकरि पाठक कहाताहे ॥ रसोइकरि रसोया कहताहे ॥ तेसें मन अनेक संकल्प करी अनेक संज्ञाकों पाताहे ॥ हे रामजी! इह जो में तुझे चि त्तकी अनेक संज्ञा कहिहे सो अन्यथा अन्यथा करी बहुत प्रकार वादीयोने नाम राखेहे ॥ जेसा जेसा मत हे तेसा स्वभाव लेकरि मन बुद्धि इंद्रियोंकों मानतेहे ॥ जो मनकों जड मा नतेहे अरु जिसकों मनतें भिन्न मानतेहे ॥ अरु अहंकारकों भिन्न मानतेहे सो मिथ्या कल्पना करतेहें॥ नैयायिक कहतेहे सृष्टि तत्वोंके सूक्ष्म परमाणुतें उपजती हे जब प्रलय होताहे तब स्थूल तत्व प्रलय हो जातेहे ॥ तिनके सूक्ष्म परमाणु रहतेहे ॥ बहुरी उत्पत्ति कालविषे उही सूक्ष्म परमाणु दूणें त्रीगुणे आदिक होइ करि स्थुलताकों प्राप्त होतेहे ॥ तिस पांचों तत्वोंतें सृष्टि होतहे अरु सांख्य मतवाले कहतेहे प्रकृति मायाके परिणामतें सृष्टि होतिहे ॥ अरु चारवाक पृथ्वी जल तेज वायु चारो तत्वोंके एकठे होणे करि सृष्टि उपजती मानतेहें अरु चारों तत्वोंके शरीरकों पुरुष मानतेहे॥ जब तत्व आपोआप विषे बिछुर जातहे तब प्रलय होतहे अरु आर्हत औरही प्रकार मानतेहे॥ बौद्ध वैशेषिक आदिक और और प्रकार करि मानते हे॥ पांच रात्रिक और प्रकारहि मानतेहे ॥ परंतु सबहिका सिद्धांत एकहि ब्रह्म आत्मतत्व हे॥ जैसें एकहि स्थानके अनेक मार्ग होवें सो अनेक मार्गोंकरी उहि स्थानकों पहुचताहे॥ तेसें अने क मतोंका अधिष्ठान आत्मसत्ताहे॥ अरु जो भिन्न भिन्न मतनं मानिकें वाद करतेहें सो आत्मतत्वके अज्ञानकरीकें करतेहे॥ सिद्धांत सबका एकहे तिसविषें वाद कोउ नहि प्रवेश करता ॥ हे रामजी! जेते कछु मतवालेहे सो अपणे अपणे मतकी ओर मानतेहे दूसरेका अपमान करतेहे जेसें मार्गके चलनेवाले अपणे अपणे मार्गकी उपमा करतेहें दूसरेकी नहि करेत तेसें मनके भिन्न भिन्न रूप करिकें अनेक प्रकार जगतकों कहतेहे एक मनकी अनेक संज्ञा हुइहे ॥ जेसें एक पुरुषकों अनेक प्रकार करि कहतेहे॥ स्नान करणेतें स्नानकर्ता दान करणेतें दानकर्ता तप करणेतें तपस्वी ॥ इत्यादि क्रिया करिकें अनेक संज्ञा होतीहे तेसें अनेक शक्ति मनकी कहीहे॥ अनेक नामकरी कहताहे मनहिका नाम जीवहे॥ वासनाभी मनहिका नामहें कर्मभी तिसहिका नाम हे ॥ हे रामजी! चित्तहीके फुरणे करिकें संपूर्ण जगत हुवाहे अरु मनहिके फुरणे करि भासताहे॥ जब उह पुरुष चैत्यके फुरणेतें रहित होताहे तब देखताहे तोभी कछु न हि देखता ॥ अरु इह प्रसिद्ध जाणिये जिस पुरुषकों शब्द स्पर्श रूप रस गंध जू इंद्रियोंके विषय हे सो इष्ट अनिष्टविषे हर्ष शोक देतेहें ॥ जो इष्ट सुखविषे हर्ष देतेहे अनिष्ट दुःखविषे शोक होतहे तिसका नाम जीवहे मनहि करि सिद्ध होतहे ॥ सब अर्थोंका कारण मनहि हे जो पुरुष चैत्यतें छूटाहे सो मुक्तरूप हे ॥ अरु जिसकों चैत्यका संयोग हे सो बंधनमें बां ध्या हे ॥ हे रामजी! जो पुरुष इस मनकों केवल जड मानतेहें तिसकों अत्यंत जड जानना अरु जो पुरुष इस मनकों केवल चैतन मानतेहे सोभी जडहे ॥ इह मन केवल जड नहि अरु केवल चैतनभी नहि ॥जो एकहि मनका रूप होवे तब सुख दुःख आदिक विचित्रता न चहियें ॥ अरु जगतकी लीनताभी नहि होती ॥ जो केवल चैतनहिरूप होवे तब जगतका कारण नहि होता ॥ अरु जो केवल जडरूप होवे तबभी जगतका कारण नहि होता ॥ काहेतें जो केवल जड पाषाणरूप होताहें सो पाषाणतें कछु क्रिया नहि उत्पन्न होति ॥ तेसें के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वल जड जगतका कारण नहि होता अरु मन केवल चैतनभी नहि ॥ केवल चैतन आत्माहे तिसविषे कर्तृत्व आदि कल्पना नहिं होती ॥ तातें मन केवल चैतनभी नहिं अरु केवल जड भी नहि ॥ चैतन अरु जडके मध्य भावमें सोइ जगतका कारणहे ॥ हे रामजी ! सब अर्थोंका कारण मन हे जेसें प्रकाश पदार्थोंका कारणहे ॥ जब लग चित्तहे तबलग चैत्य भासता हे ॥ जब चित्त अचित्त होवे तब सर्वभूतजात लीन होजातेहे ॥ जेसें एकहि जल रसकरिकें अनेकरूप होइ भासताहे तेंसे एकहि मन अनेक पदार्थरूप होइकरि भासताहे अरु अनेक संज्ञा इसकी शास्त्रोंके मतवालेनें कल्पीहे ॥ सबका कारण मनहिहे अरु मनभी परमदेव परमात्मा सर्व शक्तिकी एक शक्तिहे ॥ तिस परमात्मातें इह फुरीहे जडभाव फुरि बहुरी तिहीविषे लीन होतिहे ॥ जेसें ववोहा आपहिसों तंतुकों पसराताहे बहुरी आपविषे लीन करी लेताहे ॥ तेसें परमात्मातें जडभाव उपजताहे ॥ हे रामजी ! नित्य शुद्ध बोधरूप ब्रह्महे सोइ जब प्रकृतभावकों प्राप्त होताहे तब अविद्याके वशतें नाना प्रकारके जगतकों धारताहे तिसहिके सर्व पर्यायहें ॥ जीव, मन; चित्त, बुद्धि, अहंकार इत्यादिक संज्ञा मलीन चित्तकी होतहे ॥ तिनकी संख्या भिन्न भिन्न वादीनें कल्पीहे हमकों संख्या साथ क्या प्रयोजनहे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे मनोसंज्ञाविचारो नाम द्विसप्ततितमः सर्गः ॥ ७२ ॥ ॥ ७ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् इह सब जगत आडंबर मनहिनें रचा हे सब मनरूप हे ॥ अरु मनहि कर्मरूप हे ॥ इह तुमारे कहणें करि में निश्चय कीयाहे परंतु इसका अनुभव केसें होवे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इह मन भावनामात्र हे जेसें प्रचंड सूर्यका धूप होतहें सो मरुथलविषे जल होय भासताहे तेसें आत्माका आभासरूप मन होताहे ॥ तिस मनकरि जेता कछु जगत भासताहे सो सब मनरूप हे ॥ कहुं मनुष्यरूप होइ करि भासताहे कहुं देवता होइके भासताहे ॥ कहुं दैत कहुं जक्ष कहुं गंधर्वरूप भयाहे ॥ नाग पुर पत्तन आदिक जेते कछुरूप भासते हे ॥ सो सबहि मनकरि विस्तारकों प्राप्त भयेहें ॥ सो केसें हे तृण अरु काष्ठके तुल्य हे तिनके विचारणे करि क्या हे ॥ इह सब मनकि रचना हे सो मन अविचार सिद्ध हे ॥ विचारकीयेतें नष्ट होजाताहे मनके नष्ट हूवे परमात्माहि शेष रहताहे सो साक्षीभूत सर्वपदतें अतीतहे अरु सर्वव्यापी सर्वका आश्रयभूत हे ॥ तिसके प्रमादकरीकें मन जगत्कों रचणेकों समर्थ होताहे ॥ इस कारणतें कहाहे जो मन अरु कर्म एक रूपहे अरु शरीरोंका कारण हे ॥ हे रामजी ! जन्म मरण आदिक जेते कछु विकार हें सो मन करिकें भासतेहे ॥ अरु मन अविचारसिद्धहे ॥ विचार कीयेतें लीन होजातहे ॥ जब मन लीन हुवा तब कर्म आदिक भ्रमभी सब नष्ट होजात हे जो इस भ्रमतें छूटा सो मुक्त हे ॥ सो पुरुष बहुरी जन्म अरु मरण विषे नहि आता सब भ्रम उसका नष्ट होजाताहे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! तीन प्रकारके सात्विकी राजसी तामसी जीव तुम कहे तिनका कारण प्रथम सत्य असत्य रूपी मन कहा ॥ सो मन अशुद्धरूप शुद्ध चिन्मात्र तत्वतें उपजत भया ॥ अरु उपजकरि बडे विस्ताररूपी विचित्र जगतकों केसें प्राप्त भया ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! आकाश तीन हे एक चिदाकाश हे अरु एक चित्ताकाश हे तीसरा भूताकाश हे ॥ सो आकाश भावकरिकें समानरूप हे ॥ अरु अपअपनी सत्ता हुइहे ॥ चिदाकाश चित्ताकाश कर नित्य उपलब्धरूप हे चैतनमात्र सबके अंतर बाहिर स्थित हे अरु अनुमातारूप हे बोधरूप हे ॥ सर्व भूतोंविषे सम व्याप रहाहे सो चिदाकाश हे अरु जो भूतोंका कारणरूप हे अरु आप विकल्परूप हे अरु सब जगतकों जिसनें विस्ताराहे सो चित्ताकाश कहाताहे अरु दश दिशाकों विस्तारकरि जिसका वपु प्रछेदकों नहि प्राप्त होता अरु शून्यहे स्वरूप जिसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरु पवन आदिक भूतोंका आश्रय भूत हे सो भूताकाश कहाताहे ॥ हे रामजी ! चित्ताकाश अरु भूताकाश इह दोनों चिदाकाशतें उपजे हे अरु सर्वका कारण हे ॥ जेसें दिनकरि सब कारज होतेहे ॥ तेसें चित्तकरि सब पदार्थ प्रगट होतेहे सो चित्त जडभी नहि अरु चैतनभी नहि ॥ आकाशभी तिसतें उपजताहे ॥ हे रामजी ! तीन आकाशभी अप्रबोधका विषय हे ॥ ज्ञानीका विषय नहि अरु ज्ञानवान तीन आकाश कहते हे ॥ सो अज्ञानीकों उपदेश जानवणेके निमित्त कहतेहे ॥ ज्ञानवानकों एक परब्रह्म पूर्ण सर्व कल्पनातें रहित भासताहे ॥ द्वैत अरु अद्वैत शब्दभी उपदेशके निमित्त कहतेहें प्रबोधका विषय कोउ नहि ॥ हे रामजी ! जब लग प्रबोध आत्मा नहि भया तब लग में तीन आकाश कहताहों वास्तवतें कल्पना कोउ नहि ॥ जेसें दावाग्नि लगेतें वन जलीजाताहे सो शून्य जेसा भासताहे ॥ तेसें ज्ञानाग्निकरि जलेहुवे चित्ताकाश अरु भूताकाश चिदाकाशविषे शून्य कल्पना भासतीहे सो फुरणे द्वारा भासतीहे ॥ मलीन चैतन जो चैत्यताकों प्राप्त होताहे इसकरि इह जगत भासताहे ॥ जेसें इंद्रजालकी बाजी होतिहे तेसें इह जगत हे बोध हीनकों इह जगत् भासताहे जेसें असम्यक् दर्शीकों सीपीविषे रूपा भासताहे तेसें अज्ञानिकों जगत भासताहे आत्मतत्व नहि भासता ॥ जब दृश्य भ्रम नष्ट होजावे तब मुक्तरूप होवे ॥ ॥ इतिश्री योग वासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे चिदाकाश महात्म्य वर्णनं नाम त्रिसप्ततितमः सर्गः ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! यह जो कछु उपजा हे सो तुं चित्ततें उपजा जांण सो जेसें उपजा तेसें उपजा ॥ अब तुं इसके निवृत्तिवास्ते जतन करकें आत्मपदविषे चित्तकों जोड तब इह जगत भ्रम नष्ट होजावेगा ॥ हे रामजी ! इह चित्त उपर एक चित्ताख्यान पूर्व हुवा हे सो श्रवण करु ॥ जेसे में देख्या हे तेसें तुजकों कहताहों ॥ एक महा शून्य वनथा तिसके कोउ कोणविषे इह आकाश स्थित हे ॥ तिस उजाडविषे में एक पुरुष देखत भया ॥ सो केसा था जो सहस्र जिसके कर अरु लोचन थे ॥ अरु चंचलरूप अरु व्याकुल रूप अरु बडा आकार जिसका अरु सहस्रहि भुजासाथ अपणे शरीरकों ताडना करे मारे ॥ बहुरी आपही कष्टमान होकरी भागे तब बहुतेरे जोजनों पर चला जावे ॥ अरु दोडता दोडता थक पडे अंग चूर्ण होजावे ॥ एक कृष्णरात्रकी नांइं भयानकरूप कूपविषे जायपडे ॥ जब केताक काल वितीत होवे तब उहांतें निकसि करिकें करजूएके वनविषे जायपडे ॥ तहां कंटक चूभे तब कष्टपावे ॥ जेसें पतंग दीपककों सुखरूप जानकें तिसविषे प्रवेश करे अरु नाश पावे तेसें उह जहां सुखरूप जानकें तिसविषे प्रवेशकरे तहांही कष्ट पावे ॥ बहुरी करजूवेके वनविषे जाइ पडे ॥ बहुरी निकसिकरि आपकों हाथो करी प्रहार करे तब तिसकरि कष्टमान होवे ॥ बहुरी दोडता दोडता अंधेकूपविषे जाय पडे ॥ उहांतें निकसी करी कदलीके वनविषे जाय प्रवेश करे ॥ तिसतें निकस करी बहुरी आपकों प्रहार करने लागे जब कदली वनविषे जावे तब कछुक शांतिवान होवे अरु प्रसन्नताकों प्राप्त होवे बहुरी दोडे ॥ आपकों प्रहार करे कष्टमान होवे होइकें दूरतें दूर जाइ पडे ॥ इसी प्रकार अपणा कीया आपही कष्ट भोगे ॥ इस प्रकार भटकता फिरे तब में उसकों पकडी करिकें पूछत भया ॥ अरे तूं कवन हे अरु इह क्या करताहे अरु किस निमित्त करताहे ? अरु तेरा नाम क्या हे ? अरु इहां क्यों मिथ्या जगतविषे मोहकों प्राप्त हूवाहे ॥ हे रामजी ! जब इस प्रकार में पूछा तब उह मुजकों कहत भया जो न में कछु हों न कछु इह हे ॥ न में कछु करता हों अरु तूं तो मेरा शत्रुहे ॥ तेरे देखणेकरी में नाशकों प्राप्त होताहों ॥ इस प्रकार उह कहि करि अपणे अं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गोंकों देखत भया ॥ देखे अरु रुदन करे क्षणविषे उसका वपु नाश होणे लगा ॥ मेरे देखते देखते उह पुरुष अपणे अंगोंकों त्यागत भया ॥ प्रथम उसका शीस गिर पडा ॥ बहुरी भुजा गिर पडियां ॥ बहुरी वक्षस्थल बहुरी उदर इस प्रकार क्रम करिकें उह पुरुष अपणे शरीरकों त्यागत भया ॥ जेसें सुपनेतें जागे सुपनेका शरीर नष्ट होताहे ॥ तब में नीति शक्तिकों विचार करिकें आगें गया तब और एक पुरुष मेंने देख्या ॥ सोभी इसी प्रकार आपकों आपहि प्रहार करे अरु कष्टमान होयकें दोडे ॥ जायकरि एक कूपविषे गिर पडे ॥ उहांतें निकसकरी बहुरी प्रहार करे ॥ बहुरी बनविषे जावे ॥ कहुं करजूवेके बनविषे कबहु कदली विषे जावे ॥ जब कदली बन विषे जावे तब पुष्ट होवे अरु हर्षकों प्राप्त होवे ॥ जब उसतें निकसे तब बहुरी आपकों प्रहार करे बहुरी दोडे ॥ करजुए कदलि आदिक बनोंविषे जायपडे ॥ तब उसनें मुझकों देख्या देखकें प्रसन्न भया ॥ अरु बडे हर्षकों प्राप्त भया अरु हस्या ॥ तब तिसकों रोककें में उसी प्रकार पूछा ॥ जब में पूछा तब उहभी मेरे देखते देखते अपणे अंगोंकों त्यागत भया त्यागतें कष्टमान हुवा अरु हर्षमानभि हुवा ॥ उसकों देखकरि में बहुरी आगें गया तब और एक पुरुष देख्या उहभी इसी प्रकार करताहे अपणे हाथोंसों आपकों प्रहारकरे बडा अंध कुपविषे जायपडे ॥ हे रामजी ! चिरकाल पर्यंत में उसकों देखत भया कूपतें निकसे तब में उसपर प्रसन्न होकरी उससों पूछत भया ॥ जेसें उनोंसों पूछा था तब उह मूर्ख मुझकों न जानकें दूरतें त्याग गया जो कछु अपणा व्यवहार था तिसविषे जाइ लगा ॥ तिसके अनंतर चिरकाल पर्यंत में उस बनविषे विचरता रहा ॥ तब उसी प्रकार में बहुरी पुरुष देखता रहा जो आपहि आपकों नाश करे ॥ जिसकों में पूछों अरु उह मेरे पास आवे तिसकों में कष्टतें छुडाइ देउं अरु आनंदकों प्राप्त करों ॥ अरु मेरे निकटहि न आवे मुझकों त्याग जावे ॥ उस अटवीविषे उहि तिनका उहि हाल होवे अरु व्यवहार करे ॥ हे रामजी ! उह अटवी तुमनेंभी देखीहे परंतु तुमने उह व्यवहार नहि कीया उस अटवीविषे जाणे जोगभी नहि तुं बालकहे अरु उह अटवी महाभयानकहे तिसकों प्राप्त हूवे कष्टतें कष्टकों प्राप्त होताहे ॥

इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे चित्तोपाख्यान नाम चतुःसप्ततितमः सर्गः ॥७४॥

॥ रामोवाच ॥ हे ब्राह्मण ! उह कवन अटवीहे अरु में कब देखीहे अरु उह कवनहे अरु उह पुरुष अपणे नाशके निमित्त क्यों उद्यम करते थे सो कहो ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! उह अटवी दूर नहि अरु उह पुरुषभी दूर नहि ॥ इह जो गंभीर बडा आकाररूप संसार हे सो अटवीहे ॥ केसी अटवीहे जो शून्यहे अरु विकारोंकरि पूर्णहे ॥ अरु इह अटवीभी आत्माकरि सिद्ध होतिहे अरु तिसविषे जो पुरुष रहतेहें सो सब मनहे दुःखरूपी चेष्टा करतेहे अरु विवेक ज्ञानरूपी जो में था सो उनकों पकडता था ॥ जो मेरे निकट आतेथे सो मेरे प्रकाश करिकें प्रफुल्लित होतेथे ॥ जेसें सूर्यके प्रकाश करिकें सूर्य मुखी कमल खिली आतेहे तेसें मेरे प्रबोध करकें उह महामती हूए अरु उह चित्ततें उपशम हुवे परम पदकों प्राप्त हुवे ॥ अरु जो मेरे निकट न आये ओर अविवेक करीकें मोहे हुवे मेरा निरादर करत भये सो मोह कष्टहिविषे रहे ॥ अब तिनके अंग अरु प्रहार अरु कूप अरु कर जुवे अरु केलेके बनका उपमान सुण ॥ हे रामजी ! जेती कछु विषय अभिलाषाहे सो तिस मनके अंगहे अरु हाथोंकर प्रहार करणा इह हे जो सकाम कर्म करतेहे तिनकरि फटे हूवे दूरतें दूर दोडतेहे सो मृतक होतेहें सोइ अंधकुपविषे गिरतेहे सो विवेकका त्याग करणा इहिहे ॥ इस प्रकार उह पुरुष आपसों करी आपही प्रहार करते भटकत फिरतेहे ॥ अरु अभिलाषारूपी सहस्र अंगोंकरी आवरे हुवे मृतक होकरी नरकरूपी कूपविषे पडे हुए जब बाहर निकसे तब पुन्यकर्मो करि स्वर्गविषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाय प्राप्त होवे सोइ कदलिके वन समानहे ॥ तहां कछुक सुख पावे तिसतें जब निकसे तब करजूवके वनविषे पडे ॥ स्त्री पुत्र कलत्र आदिक जो कुटंबहे सो करजूवेके वन ह अरु करजूवे साथ कंटक होतेहे सो पुत्र धन अरु लोकोंकी कामना करतेहें ॥ तिनकरीपडे कष्ट पातेहे ॥ जब महा पापकर्म करतेहे तब नरकरूपी अंधकूपविषे पडतेहे अरु पुन्यकर्म करतें हे तब कदलिबनकी नांइ स्वर्गकों प्राप्त होतेहे ॥ तब कछुक उल्लासकों प्राप्त होतेहें ॥ हे रामजी ! गृहस्थाश्रम महा दुःखरूपहे करजुवेके बनकी नांइहे ॥ इह मनुष्य एसे मूर्खहे जो अपणे नाशके निमतहि जतन करतेहे ॥ बहुरी उहि दुःखरूप कर्म करतेहे ॥ अरु जो तिनविषे विहित करीकें विवेकके निकट आतेहें सो शुभ अशुभ कर्मोंके बंधनतें मुक्त होइकरी परम पदकों प्राप्त होतेहें ॥ अरु जो विवेक साथ हित नहि करते सो दूरतें दूर भटकतेहे ॥ हे रामजी ! जो पुरुष भोग भोगणेके निमित्त जतन करतेहे ॥ तप आदिक पुन्य कर्म करतेहे सो उत्तम शरीरकों धारिकें स्वर्ग सुख भोगतेहे अरु उह जो मुझकों देखकें मनरूपी पुरुष कहताथा जो तूं हमारा शत्रु हे तुजकरि हम नष्ट होतेहें अरु रुदन करतेथे सोविषय भोग त्यागणेके निमित्त मूर्ख चित्त कष्ट पाताहे ॥ मूर्खकी प्रीति विषय विषे होतिहे ॥ तिसके त्यागणेतें कष्टमान होतेहे अरु विवेककों देखकें रुदन करने लागतेहे ॥ काहेतें जो अर्थ प्रबुधहे ॥ जिनकों परम पदकी प्राप्ति नहि भइ सो भोगोंकों त्यागेतें कष्टमान होतहे अरु रुदन करतेहें ॥ अरु जब अज्ञानकों मूर्ख चित्त अर्थ प्रबोध अभिलाषा रूपी अंगोकों तपायमान हुवा त्यागता हे अरु विवेककों प्राप्त होताहे तब परम तुष्टीमान हुवा हसणे लगताहे ॥ तातें विवेककों प्राप्त होइकरी संसारकी वासनाकों त्यागो तब आनंदमान होउगे ॥ पूर्वका सुभाव अरु नीचचेष्टाकों त्यागकरी हसताहे जो में मिथ्या चेष्टा करताथा ॥ चिरकाल पर्यंत मूर्खता करीकें कष्ट पातारहा ॥ हे रामजी ! इस प्रकार विवेककों प्राप्त होइकरी चित्त परमपदविषे विश्राम पाताहे ॥ तब पूर्वकी दीन चेष्टाकों स्मरण करिकें हसता हे ॥ हे रामजी ! जब में उस मनरूपी पुरुषकों रोककरी पुछता था अरु उह अपणे अंगोकों त्यागता जाते थे सोभीसुण ॥ मैं विवेकरूप हों जब उस चित्तरूपी पुरुषकों मिला तब उसके सहस्रकर अरु लोचनरूपी अभीलाषाका त्यागभया ॥ अरु अपणें प्रहारकरणेतेंभी रहीगये ॥ अरु उसका शीस जो प्रथम गिरपडा सो परिछिन्न देह अभिमानी जो अहंकार हे सो इ शीश था जब उह गिर पडा तब दुर्वासनारूपी अंगोकों त्यागत भया ॥ तिनकों त्यागकरि आपभी नष्ट होगया सो अहंकार अपणी निर्वाणताकों देखता भया ॥ अर्थ यह जो परम ब्रह्मविषे लीन होगया ॥ हे रामजी इस पुरुषकों बंधनका कारण वासना हे जेसें बालक विचारतें रहित चंचलरूपी चेष्टा करताहे सो कष्ट पावताहे ॥ अग्निविषे हाथ डारे खडेविषे गिरपडे अथवा और कोउ कार्य एसाकरे अरु जेसें घुराण कीट आपहि अपणे बेठणेकी गुफा बणाइकें फस मरतिहे ॥ तेसें इह पुरुष अपणी वासनाकरि आपही बंधनमें पडताहे ॥ जेसें मर्कट लकडीविषे हाथ डारकें कीलीकों काढणे लगताहे लीला करताहे तब उसका हाथ फस पडताहे ॥ बहुरी कष्ट पाताहे तेसें अज्ञानिकों अपणी चेष्टाही बंधन करतीहे काहेतें जो बिचार बिना करताहे ॥ तातें हे रामजी ! इस चित्तसाथ शास्त्र अरु संतोके गुणोकरिचिर पर्यंत चलो ॥ जो कछु शास्त्रविषे अर्थ प्रतिपाद्य हे तिसकी दृढ भावना करो ॥ जब अभ्यास करि तेरा चित्त स्वस्थ होवेगा तब तुजकों शोक कोउ न होवेगा ॥ हे रामजी जब चित्त आत्मपदविषे स्थित होवेगा तब राग अरु द्वेषकरि चलायमान नहोवेगा अरु जो कछु देहादि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कों साथ प्रछन्न अहंकार हे सो नष्ट होवेगा ॥ जेसें सूर्य उदेहुए वरफ गलि जातहे तेसें तुछ अहंकार नष्ट होजावेगा अरु सर्व आत्माहि भासेंगा ॥ हे रामजी जबलग इसकों आत्म
ज्ञान नहि प्राप्त भया तबलग शास्त्रके अनुसार अनिंदित आचारविषे विचरे अरु शास्त्रके अर्थविषे अभ्यास करे अरु मनकों रागद्वेषादिकतें मौन करे तब पाछें पावणे जोग अजन्मा शुद्ध
शांतरूप पदकों प्राप्त होवेगा तब सर्व शोककों तरेगा शांतरूप होवेगा ॥ हे रामजी ! जबलग आत्मतत्वका प्रमाद हे तबलग अनेक दुःख वृद्ध होते जातेहे शांति नहि होती ॥ अरु जब आ
त्मपदकी प्राप्ति हूइ तब सब दुख नष्ट होजातेहें ॥ ॥ इतिश्रीयो० उत्प० चित्तोपाख्यान समाप्तिवर्णनंनाम पंचसप्ततितमःसर्गः ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥
हे रामजी ! इह चित्त परब्रह्म तें उपजाहे सो आत्मरूप हे अरु आत्मरूप नहि जेसें समुद्रतें तरंग होतेहें सो तन्मयभी हे अरु भिन्नभीहे तेसें चित्त हे जो ज्ञानवान हे तिनकों चि
त्त ब्रह्मरूपही हे ॥ इतर कछु नहि जेसें जिसकों जलका ज्ञान हे तिसको तरंगभी जलरूप भासता हे अरु जो ज्ञानतें रहितहे तिनकों मन संसार भमका कारण हे जेसें जिसकों ज
लका ज्ञान नहि तिनकों भिन्न भिन्न तरंग भासतेहें तेसें जो अज्ञानीहे तिनकों भिन्न भिन्न जगत भासताहे ॥ अरु ज्ञानवानकों केवल ब्रह्मसत्ताहि भासतीहे ॥ हे रामजी ! जो ज्ञानवान
भेद कल्पतेहे सो अज्ञानीकों उपदेश निमित्त भेद कल्पतेहे अपनी दृष्टिविषे उनकों सर्व ब्रह्महि भासताहे अरु मन आदिकभी तुझकों भासतेहे सो ब्रह्मसों भिन्न नहि अनन्यरूपहे शक्तिरू
पहे तिसतें अन्य कोउ पदारथ नहि ॥ सर्व शक्त परब्रह्महे सो नित्यहे अरु सब ओरतें पूर्णहे अविनाशीहे तिसतें अन्य कोउ पदार्थ नहि ॥ सबहि ब्रह्मसत्ताविषेहे सर्व शक्तिवान आत्माहे ॥
जेसें उसकों रुचति हे सोइ शक्ति प्रत्यक्ष होतिहे ॥ सर्व शक्तिरूप होइकरि पसर्याहे ॥ चैतन शक्ति जीवोंविषे ज्ञानरूप करीकें प्रत्यक्षहे ॥ वायुविषे स्पंद शक्ति उहिहे पथरविषे जड श
क्ति हे ॥ जलविषे द्रवता शक्ति अग्निविषे तेजशक्ति अरु शून्यशक्ति आकाशविषेहे भावशक्ति स्वर्गविषे हे नाशशक्ति कालविषेहे, शोकविषे शोक शक्तिहे, मुदताविषे आनंदशक्ति हे, वी
रोंविषे वीरशक्ति हे, सर्गके उपजाणेविषे उत्पत्तिशक्ति उहिहे, कल्पके अंतविषे सर्वका नाश कर्ता उहिहे नाश विषे नाशशक्ति उसकीहे ॥ इसतें आदि लेकरि जेती कछु भाव अभाव
पदार्थ शक्ति हे सो सब ब्रह्मकी शक्तिहे ॥ जेसें फूल फल वेली पत्र शाखा वृछ जेता कछु विस्तार हे सो बीजके अंतर भाव होताहे तेसें सब जगत् ब्रह्मविषे स्थित होताहे ॥ जीव अरु
चित्त अरु मन आदिकभी ब्रह्महिविषे ब्रह्म स्थितहे ॥ जेसें नानाप्रकारके पत्र फूल फल, बीजके अंतर स्थित होतेहे तेसें सब ब्रह्मविषे स्थितहे ॥ हे रामजी ! जेसें वसंतऋतु करीकें एक
हि रस नानाप्रकारके फूल फल टास बहुत रूपोंकों धारतहे तेसें एकहि आकाश ब्रह्म चैत्यता करि जगत्रूप होइ भासताहे ॥ तिसविषे और देशकाल आदिक विचित्रता कोउ नहि ॥
संपूर्ण जगत ब्रह्म स्वरूप हे सो ब्रह्म आत्मा सर्वज्ञ हे नित्य उदितरूप हे बृहत् रूप हे जो सबतें बडा हे वपु जिसका ॥ हे रामचंद्र तिसविषे कछु मनन कलना होतहे तब तिसकों मन कहा
ताहें ॥ जेसें आकाशविषे आंखसों तरवरे भासतेहे ॥ जेसें सूर्यकी किरणांविषे जल भासताहे ॥ तेसें आत्माविषे मन हे ॥ हे रामजी ! ब्रह्मविषे जो चित्त होताहे सो मनका रूप हे सो म
न ब्रह्मकी शक्तिरूपहे ॥ इसी कारणतें ब्रह्मतें इतर कछु नहि ब्रह्महिहे ब्रह्मतें इतर कछु कल्पना करणी अज्ञानहे ॥ ब्रह्मविषे में एसा उत्थान हुवा हे इसका नाम मन हे जड अजड
रूप मनतें आगें जगत हुवा ॥ मनही आगें प्रतियोगी विवछेदक संख्यारूप इह सब मनके कलपेंहे ॥ प्रति जोगी विवछेद संख्या इनका भेद इहहे प्रतिजोगी कहियें ॥ जेसें चेतनका प्रति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जोगी जड ॥ अरु विवछेदक कहीयें जेसें घट अविछिन पट अविछिन इत्यादिक संज्ञा कहिये अनेक रूप जो दृश्य हे सो सब मनके कलपेहे ॥ जेसें जेसें ब्रह्मविषे दृढ मन होंताहे ते सा तेसा भासताहे ॥ इंद्र ब्राह्मणके पुत्रोंकी नांइं ॥ जेसें समुद्रविषे द्रवता करीकें तरंग चक्र होइ भासतेहें तेसें शुद्ध चिन्मात्रविषे जीव फुरणे करिकें नाना प्रकारका जगत होइ भासता हे ॥ परंतु कछू हूआ नहि ॥ ब्रह्महि आपणे आपविषें स्थितहे ॥ जेसें तरंगोके होणे अरु मिटणेविषे जल एकहि रसहे ॥ तेसें जगतके उपजणे अरु मिटणे विषे ब्रह्म ज्योंका त्योंहे ॥ जे सें सूर्यकी किरणांमें दृढ तेज करिकें जल हो भासताहे तेसें आत्म तत्वविषे विचित्रता भासतिहे ॥ परंतु सदा अपणे आपविषे स्थितहे ॥ हे रामजी ! कारण कर्म कर्ता जन्म मरणादिक जेते कछु भासतेहे सो सब ब्रह्मरूपहे ब्रह्मतें इतर कछु नहि ॥ अरु आत्मा शुद्ध रूप हे तिसविषे न लोभ हे न मोह हे न तृष्णा हे काहेतें जो अद्वैतरूप हे अरु सर्वात्मा हे ॥ जेसें सुवर्णतें नानाप्रका रके भूषन हो भासतेहें तेसें ब्रह्मतें जगत् हो भासताहे जो ज्ञानवान पुरुषहे तिनकों सदा एसेंहि भासताहे अरु जो अज्ञानीहे तिनकों भिन्न भिन्न कल्पना भासतिहे ॥ जेसें किसीका वांधव होवे अरु दूरतें दूर देशतें चिरकाल पाछें आवे तव देशकालके व्यवधान कर बांधवकों अबांधव जानताहे तेसें अज्ञानके व्यवधान करकें अभिन्नरूप आत्माकों भिन्नरूप जानताहे ॥ जेसें आकाशविषे दूसरा चंद्रमा भ्रमकरि भासताहे तेसें सत्य असत्यरूप मन आत्माविषे भासताहे तिस मनने शब्द अर्थ रूप भिन्न भिन्न कल्पना रचिहे अरु आत्मतत्व सदा अपणे आपविषे स्थितहे ॥ तिसविषे बंध मोक्ष कल्पनाका अभावहे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन्! जो मनविषे निश्चय होताहे सोइ होताहे अन्यथा नहि होता ॥ अरु मनविषे बंधका निश्चय होताहे सो बंध केसें सत्य हे? ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! बंधकी कल्पना मूर्ख करतेहे तातें मिथ्याहे ॥ जो बंधकी कल्पना मिथ्या भइ तो बंधकी अपेक्षा करी जो मोक्षहे सोभि मिथ्या हे ॥ तातें बंध मोक्षकी कल्पना मूर्ख मिथ्या करतेहें ॥ वास्तवतें न बंधहे न मोक्षहे ॥ हे महा मती रामजी! अज्ञान करिकें अवस्तुभी वस्तुरूप होइ भासतिहे ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प भा सताहे ॥ अरु ज्ञानवानकों अवस्तु सत्य नहि भासति ॥ जेसें जेवरीके ज्ञानतें सर्प नहि भासता तातें बंध मोक्ष कलना मूर्खोंकों भासतिहे ज्ञानवानकों बंध मोक्ष कलना कोउ नहि भा सति ॥ हे रामजी ! आदि परमात्मातें मन उपजा तिस मननेंहि बंध अरु मोक्ष मोहकरि कल्प्याहे बहुरी दृश्य प्रपंचकों रचाहे सोइ प्रपंच कल्पना मात्रहे ॥ बालककी कथावत् मूर्खोंकों रुचती हें ॥ अर्थ यह जो विचारतें रहितहे ॥ तिनकों इह जगत सत्य भासताहे ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणचित्तचिकित्सावर्णनंनाम षट्सप्ततितमःसर्गः ॥ ७६ ॥ ॥ ७ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे मुनि श्रेष्ठ बालककी कथा क्याहे सो क्रमकरिकें मुझकों कहों ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामचंद्र एक मूर्ख बालक था सो धात्री जु दाइ तिससों पूछता भया ॥ जो कोउ अपूर्व कथा कह जो तुझकों आतिहे जो आगें न हुइ होवे सो मुझकों कह ॥ हे रामजी! जब इस प्रकार कहा तब तिसके विनोद निमित्त महाबुद्धिवान धात्री कथा कहत भइ ॥ ॥ धात्रीउवाच ॥ हे पुत्र सुण, एक बडा शून्य नगर था तिसका एक राजा था तिस राजाके तीन पुत्रथे सो पुत्र शुभ आचारवानथे अरु बडे सुंदर तेजवान थे ॥ जेसें आकाश विषे तारेहे तेसें सुंदर तेजवान थे ॥ सो दोउ तो उपजे न थे ॥ अरु एक गर्भ विषे आया न था ॥ सो तीनों शुभ आचारवान शुभ क्रिया कर्त्ता द्रव्यके अर्थ जीतणेंकों चले ॥ शून्य नग रतें बाहिर निकसें ॥ निर्मार्गरूप तिसके नगरथे ॥ निर्बुध अरु शोक सहित एकठे जावे ॥ जेसें बुध अरु शुक्र अरु शनिश्चर एकठे चले तेसें चले ॥ अर्थ यह जो एकठे चलनेका दृष्टांत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शुक्र शनिश्चर अरु बुधका हे नहि॥ निर्बुध अरु शोकका महणरूप दृष्टांत हे अरु सरसोके फूलकी नांइ तिनके अंग कोमल थे सो मार्गमें थके॥ उपरतें सूर्यकी धूप तपे जेसें जेष्ठ आषा ढके धूप करी कमल कुमलाइ जातेहे तेसें कुमलाइ गये अरु चरन तपत करी तपणे लगे महा शोककों प्राप्त हूवे ॥ चरनोंविषे डाभके कंटक लगे अरु मुख धूर करि धूसल होगया ती नों कष्टमान होइकें आये ॥ आगें तीन वछ देखे सो केसें वछ हे जो दो तो उपजे नहि अरु तीसरेका बीजभी नहि बोया ॥ सो तीनों एक एक वछके नीचे आइकरी विश्राम करते भये ॥ जेसें कल्प वछके नीचे स्वर्गविषे इंद्र अरु जम आइ बेठे तेसें आइ बेठे ॥ अरु तिनकें फल भक्षण कीये ॥ अरु फलोंका रस काटकें पान कीया ॥ अरु तिनोंके फूलोंकी माला गलेविषें पहरी ॥ अरु चिरकाल पर्यंत तहां विश्राम कीया बहुरी चले दूरतें दूर गये ॥ उपर मध्यान्हका समय हुवा तिसकरी तपायमान हुवे तब आगें तीन नदीयां देखी तिनके निकट गये तरंगोंकरी लीलायमानहे और दोनोंविषे जल कछु नहि अरु तीसरी सूकी पडीहे ॥ तिसविषे चिरकाल पर्यंत क्रीडा करते भये ॥ जेसें स्वर्गकी गंगाविषे ब्रह्मा अरु विष्णु रुद्र कलो ल करतेहे तेसें तिसविषे कलोल करे अरु जलपान करे तब दिन अस्त होणे लगा तब उहांतें चले ॥ एक भविष्यत नगरकों देखत भए ॥ बडी ध्वजा करकें संपन्न अरु रत्न मणि स्वर्न करीकें जडीहे ॥ मानों सुमेरुका शिखर हे तिसविषे हीरामणी करीकें जडा एक मंदिर देखा॥ केसा मंदिर जो निर्भयरूप अर्थ इह जो निराकार रूप हे तिसविषे जाय प्रवेशकीया॥ तहां बहुत अंगना हे तिसमंदिरविषे जायकरी विचारत भये जो रसोइ करीयें॥ अरु ब्राह्मणकों भोजन खवाइयें ॥ तब कंचनकी तिन वटलोइयां मगाइयां ॥ सो केसीयां जो दोका करने वाला उपजा नहि अर्थ यह जो आधारतें रहितरूप अरु तीसरी चूर्णरूप ॥ तिस चूर्णरूप बटलोइविषे तिनोंने षोडश शेर रसोइ चढाइ अरु ब्राह्मण अरु आप जो कछु विदेहरूप देह हीन थे॥ तिनोनें अरु निर्मुख ऋषियोनें भोजन कीया॥ तिसकरी सेंकडों ब्राह्मणोकों भोजन कराये ॥ आपभी भोजन करत भये ॥ अर्थ यह जो षोडश सेरका एक द्रोण होताहे॥ ति नोंने चावल रांधे अर्थ यह जो साडे उनतालिस मण अरु चालीस सेर तिनका तोल होतहे॥ तिनोंने साडे उनतालीस मण चारसेर घट रांध्या इस प्रकार उह तीन राजपुत्र आज पर्यंत सुखसाथ स्थित हे ॥ हे पुत्र इहं रमणीक कथा में तुजकों अब सुनाइ हे जब तुं इसकों रिदेविषे धारेगा तब पंडित होवेगा ॥ हे रामजी इस प्रकार धात्रीनें बालककों कथा सुणाइ तब बालकके मनविषे साच आइ गइ ॥ जेसें उस कथाका रूप संकल्पतें इतर कछु न था तेसें इह जगत हे ॥ सब संकल्प मात्र हे ॥ अज्ञानकरीकें रिदेविषे स्थिर हो रहाहे भ्रमकरिकें इस विषे आस्था भइहे ॥ बंध मोक्षभी कल्पना मात्रहे॥ संकल्पतें इतर इसका स्वरूप कछु नहि ॥ हे रामजी शुद्ध आत्मा निंष्किचनरूप हे॥ संकल्पके वशतें किंचनरूप होइ भासताहे॥ पृ थ्वी वायु आकाश पर्यंत नदीयां देश आदिक जो पंचभूतक सृष्टि हे सो सब संकल्प मात्रहे॥ जेसें सुपनेविषे नानाप्रकार सृष्टि भासतिहे अरु हे कछु नहि उपजीभी नहि॥ तेसें इह जग त जाण॥ जेसें कल्पित राजपुत्र भविष्यत नगरविषे स्थित हूवे सो रचना संकल्प बालककों स्थिरभूत भया तेसें इह जगत संकल्पमात्र मनके फुरणे करी दृढ भयाहे॥ जेसें द्रवताकरिकें ज लतें तरंग होतेहे सो जलहि जलविषे हे तेसें आत्माहि आत्माविषे स्थित हे॥ इह सब जगत संकल्प करि उपजाहे अरु बडे विस्तारकों प्राप्त भयाहे॥ जेसें दिनकरिकें व्यवहार विस्तारकों प्राप्त होताहे तेसें संकल्पजाल करि उपजा जगत विस्तारकों प्राप्त होताहे अरु चित्तका विलास हे चित्तके फुरणे करिकें भासता हे ॥ तातें हे रामजी! संकल्परूपी मेलकों त्यागकरि नि

112

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विकल्प आत्मतत्वका आश्रयकरो ॥ जब तिस पदविषे स्थित होइगे तब परम शांतिकी प्राप्ति होवेगी ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उ० प्र० बालकाख्यायिका वर्णनंनामसप्तसप्ततितमःसर्गः ॥ ७७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जो मूढ अज्ञानी पुरुष हे सो अपणे संकल्प करिकें आपहि मोहकों प्राप्त होताहे अरु जो पंडितहे सो मोहकों नहि प्राप्त होता ॥ जेसें मूर्ख बालक अपणे पछावेविषे पिशाच कल्पी करिकें भयकों प्राप्त होतहे तेसें मूर्ख अपणी कल्पना करी दुःखी होताहे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! ब्रह्मवेत्ताविषे श्रेष्ठ उह संकल्प क्या हे अरु छाया क्या हे जो असत्यहि सत्यरूप पिशाचकी नांइं दिखताहे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! पंचभौतिक शरीर पछायेकी नांइं हे काहेतें जो अपणी कल्पना कर रचाहे अरु अहंकाररूपी पिशाच हे ॥ जेसें मिथ्या पछायेविषें पिशाचकों देखकें भयमान होतहे तेसें देहविषे अहंकारकों देखकें खेदकों प्राप्त होताहे ॥ हे रामजी ! एक परम आत्मा सर्वविषे स्थित हे ॥ तब अहंकार केसें होवे वास्तवतें अहंकार कोउ नहि परमात्माहि अभेदरूप हे तिसविषे अहंबुद्धि भ्रम करिकें भासती हे जेसें मिथ्यादर्शीकों मरुथलविषे जल भासताहे तेसें मिथ्या ज्ञान करिकें अहंकार कल्पना होतिहे ॥ जेसें मणिका प्रकाश मणि उपर पडताहे सो मणितें इतर कछु नहि मणिरूप हे तेसें आत्माविषे जगत भासता हे सो आत्माहि विषे स्थित हे ॥ जेसें जलविषे द्रवता करिकें चक्र तरंग होइ भासते हैं सो जलरूप हे ॥ तेसें आत्माविषे चित्तकरिकें नानात्व होइ भासताहे सो आत्मातें इतर कछु नहि ॥ असम्यक् दर्शन करिकें नानात्व भासताहे तातें असम्यक् दृष्टिकों त्यागकें आनंदरूपका आश्रय करो ॥ मोहके आरंभकों त्यागकरी शुधबुधि सहित विचरो ॥ विचारकरिकें सत्यकों गृहण करो असत्यका त्याग करो ॥ हे राम तूं मोहका महात्म्य देख जो देह स्थूलरूप नाशवंत हे तिसके रखणेका उपाय करता हे सो रहता नहि ॥ अरु जिस मनरूपी शरीरके नाश हुवे कल्याण होताहे तिसकों पुष्ट करताहें ॥ हे रामजी ! सब मोहके आरंभ मिथ्या भ्रम करिकें दृढ हुवा हे ॥ अनंत आत्मतत्वविषे कल्पना कोउ नहि कोन किसकों कहे ? जेता कछु नानात्व भासताहे सो हे नहि अरु जीव ब्रह्मसाथ अभिन्न हे तिस ब्रह्मतत्वके विषे कोन बंध कहीये अरु कोन मोक्ष कहियें ॥ वास्तवतें न कोउ बंध हे न मोक्षहे काहेतें जो आत्मसत्ता अनंतरूप हे ॥ हे रामजी ! वास्तव कछु द्वैत कल्पना हुइ नहि केवल ब्रह्मसत्ता अपणे आपविषे हे जो आत्मतत्व अनंतहे सोइ अज्ञानकरिकें अन्यकी नांइं भासताहे ॥ जब अनात्मविषे आत्माभिमान करताहे तब परिछिन्न कल्पना होतहे तब शरीरकों अछेदरूप जानकें कष्टमान होताहे अरु आत्मपदविषे भेद अभेद विकार कोउ नहि काहेतें जो नित्य शुद्ध बोध अविनाशी पुरुष हे ॥ हे रामजी ! आत्मा विषे कोउ विकारहे न बंधहे न मोक्षहे काहेतें जो आत्मतत्व अनंतरूप निर्विकार अछेदरूप हे निराकार अद्वैतरूप हे ॥ तिसकों बंधविकारकल्पना केसी होवे ॥ हे रामजी ! देहके नष्ट हूवे आत्मा नष्ट नहि होता जेसें चमडीविषे आकाश होताहे सो चमडीके नाश हूवे आकाश नाश नहि होता तेसें देहके नाशहुवे आत्मा नाश नहि होता ॥ जेसें फूलके नाश हूवे गंध आकाशविषे लीन होतहे, जेसें कमल उपर बरफ पडताहे तब कमल नष्ट होजाताहे, भ्रमरा नाश नहि होता तेसें देहके नाश हूवे आत्माका नाश नहि होता ॥ जेसें मेघके नाश हूवे पवनका नाश नहि होता ॥ हे रामजी ! सबका शरीर मन हे सो मन आत्माकी शक्तिहे तिस मनविषे आगें इह शरीर आदिक जगत रचाहे ॥ तिस मनका ज्ञानविना नाश नहि होता तो बहुरी शरीर आदिके नष्ट हुवे आत्माका नाश केसें होवे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे रामजी ! शरीरके नष्ट हुवे तरा नाश नहि होता तुं क्यों मिथ्या शोकवान होताहै ॥ तूं तो नित्य शुद्ध ज्ञानरूप आत्माहे ॥ हे रामजी ! मेघके क्षीण हूवे पवन क्षीण नहि होता ॥ कम
लोके सूकेतें भमरा नष्ट नहि होता ॥ तेसें देहके नष्ट हुवे आत्मा नहि नष्ट होता ॥ संसारविषे क्रीडा कर्ता जो मन हे तिसकाभी संसारविषे नाश नहि होता तो आत्माका नाश केसें
होवे ? जेसें घटके नाश हूवेतें घटाकाश नाश नहि होता ॥ हे रामजी ! जेसें जलका कुंडा होताहे तिसविषे सूर्यका प्रतिबिंब पडताहे ॥ तिस कुंडेके नाश हूवे प्रतिबिंब नाश नहि होता
तिस जलकों और ठोर ले जाय तब प्रतिबिंबभी चलता भासताहे तेसें देहविषे जो आत्मास्थित हे सो देहके चलणेतें चलता भासताहे जेसें घटके फूटेतें घटाकाश महाकाशविषे स्थित
हे तेसें देहके नाश हूवे आत्मा निरामयपदविषे स्थित होताहे ॥ हे रामजी ! सब जीवोंका देह मनरूपी हे जब मृतक होताहे तब कोउ काल मुहूर्त पर्यंत देश काल पदार्थका अभाव हो
जाताहे ॥ तिसके अनंतर बहुरी पदार्थ भासतेहे ॥ तिस मूर्छाका नाम मृतकहे ओर आत्माका नाश तो नहि होता चित्तकी मूर्छा करिकें देशकाल पदार्थोंका अभाव होना इसीका नाम
मृतक हे ॥ हे रामजी ! संसार भमके रचनेहारा जो मन हे तिसका ज्ञानरूपी अग्निकरी नाश होताहे आत्मतत्वका नाश केसें होवे ॥ हे रामजी देश काल वस्तु करी मनका निश्चय वि
पर्यय भावकों प्राप्त होताहे परंतु ज्ञान विना नष्ट नहि होता अनेक जतन करे ॥ हे रामजी ! जन्मकल्पित रूपका नाश नहि होता ॥ जगत्के पदार्थ करी आत्मसत्ताका नाश केसें हो
वे ॥ तिस कारणतें शोक किसीका नहि करणा ॥ हे महाबाहो तुं तो नित्य शुद्ध अविनाशी पुरुष हे ॥ इह संकल्प वासना करिकें तेरेविषे जन्ममरण आदिक भासतेहे सो भम मात्र हे ॥
तातें इस वासनाकों त्याग करिकें शुद्ध चिदाकाशविषे स्थित होहु ॥ जेसें गरुडपंछी अंडेकों त्याग करिकें आकाशकों उडता हे तेसें वासनाकों त्यागकरि तुं चिदाकाशविषे स्थित होहु ॥
हे रामजी ! शुद्ध आत्माविषे जो मनन फुरताहे सोइ मन हे ॥ सो मननशक्ति इष्ट अनिष्ट करिकें इसकों बंधनका कारण हे ॥ सो मन मिथ्याभांति करिकें उदय हुवाहे ॥ जेसें सुपनद्रष्टा
भांतिमात्र होताहे तेसें जाग्रत् सृष्टि भांति मात्रहे ॥ हे रामजी ! इह जगत् अविद्याकरीकें बंधनमय हे अरु दुःखका कारणहे सो अविद्याकों तरणा कठिन् हे ॥ अविचार करिकें अविद्या
सिद्ध हे विचार कीयेतें नष्ट होतिहे ॥ तिस अविद्यानें जगत्कों विस्तार्या हे इह जगत् बरफकी कंध हे जब ज्ञानरूपी अग्निका तेज होवे तब निवृत्त होजावेगी ॥ हे रामजी ! इह जगत्
आकाशरूप हे ॥ अविद्या भांति दृष्टिकर आकार होइ भासताहे ॥ असत्य अविद्याकरकें बडे विस्तारकों प्राप्त होतेहे ॥ दीर्घ सुपन हे विचार कीयेतें निवृत्त होजाताहे ॥ हे रामजी ! इह
जगत् भावना मात्र हे वास्तवतें कछु उपजा नहि ॥ जेसें आकाशविषे भांति करिकें मोरपीछकी नांइं तरवरे भासतेहे ॥ तेसें भांति करीकें जगत् भासताहे ॥ जेसें बरफकी शिला तपत क
रीकें लीन होजातीहे तेसें आत्मविचारतें जगत लीन होजाताहे ॥ जेसें बरफकी शिला उष्णता विना सीतत्व भावकों त्यागती नहि तेसें आत्मविचारतें जगत् लीन होजाताहे ॥ हे रामजी !
इह जगत अविद्याकरिकें बांध्याहे ॥ सो अनर्थका कारणहे ॥ जेसें जेसें चित्त फुरताहे तेसें तेसें होय भासताहे ॥ जेसें इंद्रजाली सुवर्णकी वर्षा आदिक माया रचताहे ॥ तेसें चित्त जेसें
फुरताहे तेसा होइकें भासताहे ॥ जेती कछु चेष्टा आत्माके प्रमाद करकें मन करताहे सो अपणे नाशके कारण होतहे॥ जेसें घुराणकी चेष्टा अपणे बंधनका कारण होतीहे तेसें मनकी चे
ष्टा अपणे नाशके निमित्त होतीहे ॥ अरु जेसें नटवा अपणी क्रिया करीकें नानाप्रकारके रूपकों धारताहे तेसें मन अपणे संकल्पकों विकल्प करीकें नाना प्रकारके भाव अभाव रूपोंकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धारताहे अरु जब चित्त अपणे संकल्प विकल्पकों त्यागकरि आत्माकी ओर देखताहे तब चित्त नष्ट होजाताहे ॥ जबलग आत्माकी ओर नहि देखता तबलग जगतकों पसारताहे ॥ सो दुःखका कारण होताहे ॥ हे रामजी ! संकल्पमात्र होणा इसविषे तो जतन कछु नहि ॥ संकल्प आवरणकों दूर करो तब आत्मतत्व प्रकाशेगा ॥ संकल्प विकल्पहि आत्माविषे आवरन हे ॥ जब दृश्यकों त्यागोंगे तब आत्मबोध प्रकाशेगा हे रामजी ! मनके नाशविषे बडा आनंद उदय होतहे अरु मनके उदय हुवे बडा अनर्थ होताहे ॥ तातें मनके नाश करणेकी जतन करो मनकों बढावणेका जतन मत करो॥ हे रामजी ! मनरूपी किरसाणनें जगत्‌रूपी बन रच्या हे तिस बनविषे सुखदुःखरूपी वछहे अरु मनरूपी सर्प तिस विषे रहताहे॥ विवेकतें रहित पुरुषहे तिनकों भोजन करताहे ॥ हे रामजी ! इह मन परम दुःखका कारन हे तातें इस मनरूपी शत्रुकों वैराग अरु अभ्यासरूपी खड्ग साथ मारो तब आत्मपदकों प्राप्त होडुगे ॥ वाल्मीकोवाच ॥ इस प्रकार जब वसिष्ठजीनें कहा तब सायंकालका समय हुवा ॥ सब श्रोता परस्पर नमस्कार करीकें स्नानकों गए ॥ बहुरी सूर्यकी किरणांके उदय हुवे अप अपणे स्थानपर आय बेठे ॥

इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे मननिर्वाणोपदेश वर्णनंनाम अष्टसप्ततितमः सर्गः ॥ ७८ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इह चित्रभी परमात्मातें उठेहे जेसें समुद्रतें लीला करीकें जलकणिका होतहे तेसें परमात्मातें मन हूवा हे ॥ बहुरी मननें जगत रच्याहे सो जगत बडे विस्तारकों प्राप्त हुवाहे छोटेकों बडा कर लेताहे अरु बडेकों छोटे करताहे ॥ जो अपणा आपरूपहे तिनकों अन्यकी नांइ दिखावताहे ॥ अरु जो अन्यरूपहे तिसकों अपणारूप दिखाताहे ॥ अर्थ यह जो आत्माकों अनात्मभाव प्राप्त करतेहे अरु अनात्माकों आत्मभाव प्राप्त करतेहे ॥ एसा जो भ्रांतिरूप मन हे सो निकट वस्तुकों दूर दिखाताहे अरु दूरवस्तुकों निकट करीदिखाताहे ॥ जेसें निकट वस्तु सुपने विषे दूर होय भासतिहे अरु दूर वस्तु निकट होय भासतिहे ॥ हे रामजी ! एक निमेषविषे मन संसारकों उत्पन्न करताहे अरु निमेषविषे लीन करलेताहे ॥ जेता कछु स्थावर जंगमरूप जगत् भासताहे सो सब मनहितें उपजाहे ॥ देशकाल क्रिया द्रव्य अनेक शक्ति विपर्यय रूप मनहि दिखाताहे अपणे फुरणे करिकें नाना प्रकारके भाव अभावकों मनहि प्राप्त होताहे॥ जेसें नट लीला करीकें नाना प्रकारके स्वांगोकों प्राप्त होताहे ॥ साचकों असाच अरु असाचकों साच करि देखाताहे तेसें मनविषे जेसा फुरना दृढ होताहे तेसें हो भासताहे ॥ जेसा जेसा निश्चय चंचल मनविषे होताहे तिनके अनुसार इंद्रियभी विचरतिहे अन्यथा नहि विचरति ॥ हे रामजी ! जो मनकरी चेष्टा होतहे सोइ सफल होतहे ॥ शरीरकी करी चेष्टा मनविना सफल नहि होति ॥ जेसें जेसा वेलीका बीज होताहे तेसाहि उसका फल होताहे और प्रकार नहि होता॥ तेसें जो कछु मनविषे निश्चय होताहे सोइ सफल होताहे ॥ जेसें बालक मृत्तिकाकी सेना बनाताहे अरु नानाप्रकारके नाम रखताहे तेसे मनभी संकल्पकरकें जगतकों रच लेताहे ॥ जेसें माटीकी सेना माटीसों भिन्ननहि तेसें आत्माविषे नानाप्रकारका जगत कल्प्याहे सो आत्मातें भिन्न कछु नहि ॥ जेसें मन संकल्पविषे अर्थोंकों नानाप्रकार कलपताहे ॥ तेसें इह जाग्रतजगतभी भ्रमकरी कल्प्याहे ॥ हे रामजी ! एक गोपदविषे मन अनेक जोजनकों रच लेताहे अरु कल्पका क्षण अरु क्षणका कल्प रच लेताहे ॥ जेसा कछु मनविषे तीव्र संवेग होताहे तेसाहि होकरि भासताहे ॥ तिसकों रचणेविषे विलंब नहि लगता रचणेकों समर्थ हे ॥ जेसा तीव्र संवेग होताहे तेसाहि भासताहे ॥ जे ते कछु देशकाल पदार्थ हे सो मनतें उपजेहे सबका कारणरूप मन हे ॥ जेसें पत्र फूल फल टास वछतें उपजे हे सो वछरूप हे अरु जेसें समुद्रतें लहरी तरंग होतेहे सो जलरूप हे, अरु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जेसें अग्नि उष्णता रूप हे तेसें नानाप्रकारके स्वभाव मनतें उपजे दृष्ट आतेहे सो मनरूप हे ॥ हे रामजी ! कर्ता कर्म क्रिया द्रष्टा दर्शन दृश्य सब मनकाहि पसाराहे ॥जेसें सुवर्नतें नाना प्रकारके भूषन भासताहे अरु जब सुवर्नका ज्ञान हूवा तब सर्व भूषन एक सुवर्नहि भासताहे भूषन भाव नहि भासता ॥ तेसें जबलग आत्माका प्रमाद हे तबलग द्वैतरूप जगत् भासताहे जब आत्मज्ञान हूवा तब सब भ्रम मिटि जाताहे ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठेउत्पत्तिप्रकरणेचित्तमहात्म्यवर्णनंनाम एकोनाशीतितमः सर्गः ॥ ७९॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! अब एक दृत्तांत तुझकों कहताहों जो पूर्व व्यतीतहुवाहे ॥ इह जगत इंद्रजालवत हे जेसें मनरूपी इंद्रजालविषे इह जगत स्थितहे तेसें तूं सुण ॥ हे रामजी ! इस पृथ्वीविषे एक उत्तर पाद नाम देशथा ॥ तहां तिसविषे एक बडा बन था ॥ तिसविषे नानाप्रकारके वृछ अरु फुल फल तालथे ॥ तहांविद्याधरी आय करी कलोल क रतीथी अरु बडे सुंदर स्थान थे ॥ केलेके वृछ अरु खजुर अरु जोवेके वृछ थे तहांमोर शब्द करतेथे और अनेक प्रकारके पंछी शब्द करतेथे॥ अरु अनेक प्रकारकी फूलोंतें सुगंध निक सेहे ॥ तहां विद्याधर अरु सिद्धगण देवता आय विश्राम करतेहे किंनर आय गान करतेहे॥ मंद पवन चलताहे तिस स्थानविषे महा सुंदर रचना बनिथी सुवर्नवत् महा कल्पवृछ पारिजा त वृछ लगे थे ॥ तिस देशका लवण नाम राजा हरचंदके कुलविषे उपजा सो बडा धर्मात्मा होत भया ॥ मानों दूसरा सुर्य बडा तेजवान पृथ्वीविषे आय उदय हुवाहे जेते कछु शत्रु हे तिन सबका कुहाडे साथ नाशकीया ॥ अरु जो साधु पुरुष पुण्यवान थे तिनकि रक्षाकरी ओर दुष्टोंकों मारे ॥ हे रामजी! एसा तेज उंसका हुवा जो शत्रु राजाका नाम स्मरण करे तब उसकों ताप चड जावे ॥ अरु श्रेष्ठ पुरुषकी पालना करें ॥ तिस राजाके जशकरी संपूर्न पृथ्वी पूर्ण भइ ॥ स्वर्गविषे देवता विद्याधर जस गावे लोकपालभि जिसका जस सुणे ॥ स ब लोकविषे उसका यश प्रसिद्ध भया ॥ हे रामजी! तिस राजाके समान और कोउ सुपनेविषेभी दृष्ट न आवे कुटिलता अरु लोभ तिसविषे कछु दृष्ट न आवे अरु बडा बुद्धिवान अरु उदार था ॥ जेसें ब्रह्माजिके कंठ हाथविषे रुद्राक्षकी माला प्रत्यक्ष पाइयें तेसें उसकी उदारता अरु तेज दृष्ट आवे ॥ सो धर्मात्मा एक दिन सभा संयुक्त बेठाथा अरु दो मुहूर्त दिन रहा तब बडे सिंहासन पर बेठा था ॥ जेसें देवताकी सभाविषे इंद्र बेठे तेसें बेठा था अरु मंडलेश्वरकी सेना अंतर प्रवेश करी बाहिर निकसे स्त्रीयोंका नृत्य होता था वाजंत्र बाजते थे मधुर धुनि होतिथी ॥ चमर शीसपर झुलताथा मंत्री आगें खडे थे ॥ जेसें देवगुरु बृहस्पति हे तिसके समान राजाकों देश मंडलकी वार्ता सुणातेहे ॥ अरु इतिहास कथाका पुस्तक वांचीकें ढांपरख्याथा ॥ भट कविस्तुति करतेथे॥ तिस कालविषे एक इंद्रजाली बाजीगर अपणी सभामें आडंबर संयुक्त आया॥ जेसें वर्षाकालका मेघ जलकरि पूर्ण आताहे तेसें आया अरु राजा सुमेरुके शिखर जेसे उंचे आसनपर ग्रीवाकों उंचे कर बेठा था ॥ अरु जेसें पहाड उपर वृछ होताहे अरु तिसके फल लटकतेहे तेसें राजा उंचे सिंहासन पर बेठा था अरु चरन लटकते थे ॥ तिस राजाके निकट इंद्रजाली आया जेसें वृछके निकट मर्कट आतेहे तेसें आयकें कहत भया ॥ हे राजन एक तुम मेरा कौतुक देखो हे रामजी ! एसें कहि करि उसनें पे टारा खोला ॥ तिसतें एक मोरका पूछ भ्रमावर्णे लगा॥तिसके भ्रमणे करि नानाप्रकारकी रचना भासणे लगी मानों परमात्माकी मायाहे ॥ तिसतें नानाप्रकारके रंगोंकों राजा देखत भया॥ जेसें इंद्रधनुष आकाशविषे भासताहे, तेसें सूर्यकी किरणांवत प्रकाशवान रंग भासणे लगे ॥बहुरी तिसी क्षणविषे एक मंडलेश्वरका दूत आया ॥ जेसें आकाशकेविषे तारा मंडलकों लंघ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करि मेघ आताहें तेसें हाथविषे घोडा अरु सभाकों लंघकरी आया कहत भया हे राजन्! इह महाबलवान घोडा मेरे राजाने तुमकों दीयाहे सो केसा घोडा हे जेसें उच्चैश्रवस इंद्रका घोडा समुद्रके मथनेतें निकस्याहे तेसा इह घोडाहे॥ अरु पवनकी नांइ इसका वेगहे मानों पवनकी मूर्ति हे॥ मेरे स्वामीनें कहा जो उत्तम पदार्थहे सो बडेकों देना जोग हे इस कारणतें घोडाविषे रत्न तुमकों दीयाहे ॥ तुमारे जोगहे तातें लेहु ॥ हे रामजी! जब इस प्रकार दूतनें कहा तब इंद्रजाली बोला ॥ जेसें मेघ गरजकरि चुप करताहें अरु पालें बबोहा बोलतहे तेसें इंद्रजालीने कहा ॥ हे राजन् इस घोडेपर तुम आरुढ होकरी विचरो आप शोभा पाओगे जेसें आकाशविषे सूर्य सोभतांहे ॥ अरु जगतकोंभी सोभा देताहे ॥ तेसें तुम शोभोगे ॥ हे राजन तुमभी शोभोगे अरु घोडाभी शोभेगा हे रामजी! जब इस प्रकार इंद्रजालीनें कहा ॥ तब राजा घोडेकी उरदेखत भया॥ देखकर मूर्छित भया ॥ जेसें कागदपर मूरतलिखी होतहें॥ तेसें दो मुहूरत पर्यंत राजा मूर्छित होगया ॥ जेसें वीतराग मुनीश्वर परमानंद आत्मपदविषे स्थित होताहे तेसें राजा होगया ॥ हे रामजी! तिस राजाके भय करिकें मंत्रीभी जगावे नहि ॥ हाथ पाउं राजाके कछु हिले नहि ॥ शिरपर चमर होवे ॥ जेसें चिक्कडविषे कमल अचल होताहे तेसें राजा अचल होगया ॥ जेसें मृत्तिकाके कमल स्पष्ट होताहे तेसें राजा होगया भाट कवि शब्द स्तुति करतेथे सोभी चुप होरहे॥ जेसें वर्षाकालका मेघ गजैकरी शांति होजाताहे तेसे शांत होगए॥ अरु मंत्री टेलूए सब भय संशयके समुद्रविषे डूब गए जानत भये जो राजाके मनविषे कोउ बडी चिंता उपजीहे अरु सब सभाके लोक आश्चर्यमान हुवे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पति प्र० इंद्रजालोपाख्याने नृपमोहो नाम अशीतितमः सर्गः ॥ ८० ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! तब राजा दो मुहूर्त उपरांत चैतन्यता विषे आया जेसें वर्षाकालके मेघतें छूटकरि कमल प्रफुल्लित होइ आतहे तेसें राजा जागकें सिंहासनपर कंपणे लागा ॥ जेसें भूकंपविषे पर्वत हिलतेहे तेसें राजाके अंग हिलणे लागे ॥ जेसें समुद्रके मंथनतें मंदराचल कंपताथा तेसें कंपकरी राजा गिरनेलगा तब मंत्री अरु टहलूए भुजा पकडिकें राजाकों थांभते भए ॥ जेसें प्रलय कालविषे सुमेरु गिरने लगे अरु पास पर्वत थांभ गिरने न देवे तेसें राजाकों गिरने न दीया॥ परंतु राजाकी बुद्धि व्याकुल होगइ॥ तब राजा बोलत भया इह नगर किसकाहे अरु सभा किसकीहे अरु राजा कोनहे इहक्याहे हे रामजी! जब इस प्रकार राजाका बचन सुणा तब मंत्री कछुक शांत भये॥ जेसें सूर्य राहुतें छूटताहे तब कमल खिलि आतेहे ॥ अरु तिनकों देखकें भमरे प्रसन्न होतेहे अरु शब्द करतेहे ॥ तेसें मंत्री टेलूए प्रसन्न होइकें कहत भये॥ जेसें प्रलय क्षोभतें भ्रमत मार्कंडेय ऋषीकों देवता पूछते हे तेसें पूछत भए ॥ हे राजन्! तुं क्यों व्याकुलताकों प्राप्त भयाहे? तेरा तो निर्मल मनहे॥ तूं तो उदार आत्माहे॥ हे देव जिन पुरुषोंकी प्रीति पदार्थविषे हे अरु आपातरमणीय भोगोंविषे जिनका चित्तहे तिनका मन मोहविषे भर जाताहे॥ अरु जो संतजन उदार चित्तहे तिनका मन निर्मल होताहे॥ तिसका मन मोहविषे केसें पडे॥ हे देव जिनका चित्त भोगोंकी तृष्णाविषे बंधमान हे तिनका मन मोहकों प्राप्त होताहे अरु जो महापुरुष संतजन हे तिनका मन मोहविषे डूबता नहि ॥ जिनका चित्त पूर्ण आत्मतत्वविषे स्थित हूवाहे अरु बडे गुणोंकरीकें संपन्न हे तिनकों शरीरके रहणे विषे अरु नष्ट होणे विषे कछु मोह नहि उपजता ॥ अरु जिनकों आत्मतत्वका अभ्यास नहि प्राप्त भया अविवेकी हे ॥ तिनका चित्त देशकाल मंत्र औषधके वशकरी मोहकों प्राप्त होताहे ॥ तुमारा चित्त तो विवेक भावकों ग्रहण करताहे जो नित्यहि नौतन उदार कथा अरु शब्द सुणतेहो अब केसें मोहकरि चलायमान हुवेहो? जेसें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वायु करकें पर्वत चलायमान होवे तैसें तुम चलायमान हुवेहो यह आश्चर्यहै॥ तुम अपणी उदारताकों स्मरण करो॥ हे रामजी ! जब इस प्रकार मंत्री टहलूवे कहतभये तब राजा सावधान भया अरु मुखकी कांति उज्वल भइ जैसें शरत्कालकी मंजरी सुकी हुइ वसंतऋतुविषे प्रफुल्लित होतिहे तैसें राजा नेत्रोंकों खोलकरी देखता भया ॥ जैसें सूर्य राहुकी उर देखताहे ॥ जैसें सर्प नोलेकी उर देखताहे तैसें इंद्रजालकी ओर देखकरी कहा ॥ हे दुष्ट इंद्रजाल तेनें इह क्या कर्म कोया ॥ राजासोंभी कोउ एसा कर्म करताहे जैसें जलबिना मछी कष्ट पायकें बहुरी जलविषे प्रसन्न होवे तैसें में हूआहों ॥ बडा आश्चर्यहे परमात्मा अनंतशक्ति हे ॥ अनेक प्रकारके पदार्थ फूरतेहें ॥ में दो मुहूर्तविषे क्या भ्रम देख्या ॥ मेरा मन सदा ज्ञानके अभ्यासविषे था सो मोहि गया तो प्राकृत जीवोंकी बात क्या करनी ॥ में बडा आश्चर्य भ्रम देखाहे सो सबहि मुझतें सुणो ॥ इह जो इंद्रजाली हे सो मानों संबर दैत्यहे ॥ क्या जो दो मुहूर्तविषे मुझकों अनेक देशकाल पदार्थ दिखाये जैसें ब्रह्मा एक मूहूर्तविषे नानाप्रकारके पदार्थ रच लेवे तैसें एक मूहूर्तविषे इसनें मुझकों अनेक भ्रम दिखायेहे सो सब हि में तुमारे आगें कहताहों ॥ मानों सारी सृष्टि इसके पटारे विषे हे ॥ ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणेराजाप्रबोधोनामएकाशीतितमःसर्गः ॥ ८१ ॥ ॥ ७ ॥

॥ राजोवाच ॥ हे साधो इस पृथ्वीका में राजाहों सब पृथ्वीविषे मेरी आज्ञा चलती हे ॥ अरु में इंद्रजालकी नांइ सिंहासन पर बेठताहों ॥ जैसें स्वर्गविषे इंद्रके आगें देवता होतेहे तैसें मेरे आगें भृत्य मंत्री हे॥ एसी उदारता करि में संपन्न हों॥ सो में बडे भ्रमकों देखत भया॥ हे साधो जब इस इंद्रजालीनें पटारेसों काढिकरि मोरके पूछकों भमाया तब उह पीछ मुझकों सूर्यकि किरणांकि नांइ भास्या ॥ जैसें बडा मेघ गरजकें शांत होताहे अरु पाछतें इंद्रधनुष द्रष्ट आताहे तैसें विचित्ररूप पीछ मुझकों द्रष्ट आया ॥ तब तिसके अनंतर एक दूत घोडा ले आया ॥ तिस घोडे पर में आरूढ भया सो चित्तहि करि घोडा मुझकों दूरतें दूर लेगया ॥ इहांहि बेठा रहा अरु घोडा मुझकों दूरतें दूरलेगया ॥ जैसें भोगोंकी वासनाकरीकें मूर्ख घरहि बेठे दूरतें दूर भटकते फिरे तैसें मुझकों घोडा दूरतें दूर लेगया ॥ एक महा भयानक निर्जन देशविषे लेगया ॥ जैसें प्रलयकालके विषे जलेहुवे थान होतेहें तैसें थानविषे मुजे लेगया मानों दूसरा आकाशहे मांनों सात समुद्रहे तिन समान अष्टमा समुद्र हे ॥ चारोदिशाके जो चार समुद्र वरनन कीयेहे तिन समान मानों पांचमा समूद्र हे ॥ महाभयानक थानोकों ले गया ॥ देशोंकों लंघकरि महा अटवीविषे लेआया ॥ जैसें आकाशवत ज्ञानिका चित्त होताहे ॥ अरु जैसें अज्ञानिका चित्त कठोर होताहे अरु शून्य होता हे तैसा थानविषे ले गया ॥ जहां घास वृछ जीव मनुष कोउ दृष्ट न आवे॥ तहां में महा कष्टवान दीनताकों प्राप्तहूवा ॥ जैसें धन अरु बांधवोतें अरु देश अरु बलतें रहित पुरुष कष्ट पावताहे तैसें में कष्टवान हुवा तब दिनका अंत होगया ॥ तहां उजाडविषे कष्टसाथ में रातकों वितीत कीनी ॥रात्रकों पृथ्वी पर शयन कीया ॥ परंतु निद्रा न आइ कल्प समान रात्र होगइ दुःखकरिकें ॥ जब सूर्यउदय हुवा तब में उहांतें चला ॥ आगें गया पंछीयोंका शब्द सुणा ॥ बहुरी वृछ दृष्टि आये परंतु खानपान कछु न पाया ॥ तिन वृछोंकों देखकें प्रसन्न भया ॥ जैसें मरणेतें छूटे पुरुष रोगकरीभी प्रसन्न होवे तैसें में वृछोंकों देखकरी प्रसन्न हुवा ॥ एक जामके वृछकों में आश्रय लीया॥ जैसें मार्कंडेयऋषीनें प्रलयके समुद्रविषे भ्रमता हुवा बटका आश्रय लियाथा ॥ तैसें में वृछका आश्रय कीया तब घोडा मुझकों छोडकें चलता रहा ॥ जैसें गंगाविषे डबकीलेणेकरी पाप चलते रहते हे तैसें घोडा मुझकों छोड गया

120

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ बहुरी सूर्य अस्त भया तहां रात्र में वितीत करी न कछु भोजन कीया ॥ न जलपान कीया न स्नान कीया ॥ महा दीनताकों में प्राप्त हुवा ॥ जेसें कोउ विकाया मनुष्य दीन हो जा तहें ॥ अरु जेसें अंध कूपविषे गिरा मनुष कष्टमान होवे तेसें कष्टमान हुवा ॥ अरु कल्पके समान रात्र वितीत भइ ॥ दीन हुवा कोउ फूल फल पत्र जल उहां दृष्ट न आवे जेसें मूर्खके शरीरविषे कोउ गुण दृष्ट न आवे ॥ तेसें उहां अन्नपान कछू दृष्ट न आवे तब में आगें गया तहां पंछी शब्द करतेथे अरु आधा पहर दिन रहा ॥ एक कन्या मुझे दृष्ट आइ तिसके हाथविषे मृत्तिकाकी मटकी तिसविषे रंधे चावल अरु जांबूके रसकी टीड भरी हुइ ले जात हे तिसकों देखकरि में तिसके सन्मुख आया ॥ जेसें रात्रके सन्मुख चंद्रमा आतहे तेसें में आइकें कहा हे बाले मुझकों भोजन दे मे क्षुधाकरिकें आतुरहों ॥ जो कोउ दीन आर्तकों अन्न देत हे ॥ सो बडी संपदाकों प्राप्त होताहे तातें तूं भोजन मुझकों दे ॥ हे साधो जब में वारंवार कहा तब उसनें कहा तुं तो कोउ राजा भासताहे जो नाना प्रकारके भूषन वस्त्र पहिरे हुवेहे ॥ तूं जो भोजन मागता हे ॥ सो में न देउगी ॥ एसें कहिकरी आगें चली जावे अरु मेंभी तिसके पाछें जेसे छाया जावे तेसें चला जाउं में कहता जाउं हे बाले मुजे भोजन दे ॥ जो मेरी क्षुधा शांत होवे तब उसनें कहा ॥ हे राजन् हम नीच लोक हे ॥ अपने प्रयोजन विना किसीकों नहि देते ॥ जो तुं मेरा भर्ता होवे तब में देवों ॥ इह अन्न में पिताके निमित्त ले चली हों उह मसानविषे वैतालकी नांइं अवधूत होइ बेठाहे अरु धूर साथ अंग भरेहें जो तुं मेरा भर्ता होवे तब में देतो हों ॥ काहेतें जो भर्ता प्राणोंतेंभी प्यारा होताहे ॥ पितासों क्षमा कराय लेउंगी ॥ हे साधो जब चंडालिनें एसें कहा तब में कहा भला में भर्ता होउंगा ॥ मुजे भोजन दे ॥ हे साधो एसा कोन हे जो एसी आपदाविषे अपणे वर्णाश्रमकें धर्मकों दृढ राखे ? तब उसनें मुजकों अर्ध भाग भोजन दीया अरु अर्ध जांबू का रस दीया तिसका भोजन पानकीया तब कछूक शांतिवान हुवा परंतु मेरा मोह निवृत्त न भया ॥ तब दोनों मेरे हाथ पकडकर मुझकों आगें लगाए लीया ॥ अपणे पिताके निकट लेगइ ॥ जेसें पापीकों जमदूत ले जातेहे तब उसनें कहा हे पिता इह में भरता किया हे पितानें कहा भला कीया ॥ एसें कहि करि चावल अरु जांबूके रसका भोजन कराया ॥ भोजन करकें पिताने कहा ॥ हे पुत्री इसकों अपणे घर ले जाइ तब मुझकों अपणे घर ले गइ ॥ जब घरके निकट गये तब में देखा जो अस्थि मांस रुधिर बहुत पडाहे ॥ कुत्ते कुकुर गर्दभ हस्ति आदिक जीवोंकी खालडीयां पडीहे ॥ तिनकों लंघकरी अपणे घरविषे लेगइ जेसे पापीकों नरकविषे जमदूत ले जाते हैं एक बगीचा निकट था तिसके आगें अपणी माताके पास मुजे ले गइ अरु कहा हे माता इह तेरा जंवाइ हुवा हे माताने कहा भलि बातहे ॥ तब उनके घर हम विश्राम कीया उस चंडालिनें मुजकों भोजन दीया तिसकों भोजन कीया ॥ मांनों अनेक जनमोंके पाप भोगतेहें बहुरी विवाहका दिन थापन कीया ॥ तिस दिनविषे विवाह कीया ॥ चंडाल हसे अरु नृत्य करे मांनों पाप मेरे नृत्य करतेहें ॥ उह चंडालि मुझकों विवाह दीनी जेसें पापीकों शासन देतेहे तेसें चंडालिनें वस्त्र आदिक पदार्थ सहित मुजकों विवाह कर दीया ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे चांडाली विवाह वर्णनं नाम द्व्यशीतितमः सर्गः ॥ ८२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ राजोवाच ॥ हे साधो बहूत कहणे करी क्याहे ॥ उहां में बडा चंडाल होत भया सप्त दिन विवाहका उत्साह होत भया ॥ तहां अष्टमास में रहा ॥ तिसके अनंतर में और थानोंविषे रहा ॥ तब उह चंडालि गर्भवति भइ ॥ तिसतें एक कन्या उत्पन्न भइ ॥ जेसें पाप कीयेतें दुःख उत्पन्न हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेहें तेसें दुःख नाम्नीकन्या भइ ॥ अरु शीघ्रही बढ गइ ॥ जेसें मूर्खके चित्तविषे चिंता बढ जातहे बहुरी तीसरे वर्ष पाछें तिसकों बालक उत्पन्न होगया ॥ जेसें दुर्बुद्धितें अनर्थ उत्पन्न होताहे बहुरी पुत्र बहुरी कन्या उपजी ॥ इसी प्रकार तीन पुत्र अरु तीन कन्या उत्पन्न हुवे ॥ तब में बडा चंडाल परिवारवान हुवा ॥ तिस चंडालि साथ में चिरकाल पर्यंत चंडालोविषे विचरता रहा ॥ जेसें ब्रह्महत्यारा नरकोंविषे चिंता सहित वसता रहे तेसें में रहा अरु तिसके साथ मेरा बहुत स्नेह भया ॥ जेसें जालविषे पंछी बंधायमान होताहे तेसें में तिन्कोंविषे बंधमान भया ॥ हे साधो तिनोंविषे में बडे कष्ट पाय॥ प्रथम जो पटका वस्त्रभी चूभता था॥एसें तिस शिरविषे में भार उठाउं॥अरु नीचे चरन तपायमान होवे अरु सिरपर सूरजतपे॥रात्रकों कंटकों पर शयन करों ॥तिस करि में बडे कष्टकों पात भया ॥ उपर वस्त्र कोउ प्राप्त न होवे अरु पुरातन कोपीन जीवों जंतोकें लोहि साथ भरे हुवे अरु आद्रे सिराने देवे ॥ अरु कुक्कट हस्ति आदिक अशुचि पदार्थों का भोजन करें अरु रुधिरका पान करें एसी हमारी चेष्टा होवे जाल साथ पंछी मारें॥कंडी साथ मछ कछ आदिक मारें अनेक प्रकारके क्रूर नीच कर्म हम करते भये ॥ जेसी केसी वस्तु पाइ सो भोजन करीएं ॥ विचारतें हीन हम चिरकाल पर्यंत एसी चेष्टा करतेहे अरु एसी अवस्था भइ जो अस्थि मांसके निमित्त हम आपसमें लडहिं ॥ पुत्र अरु स्त्री सब लडे अरु सीतकालमें सीतकरी कष्टपावें उष्ण कालमें उष्णताकरि कष्टमान होवें ॥ मेरा शरीर बहुत कृश होगया अवस्थाभी वृद्ध भइ ॥ मसाणोंविषे हमारा बहुत काल वितीत भया ॥ मांस अरु रक्तपान करें अरु जो वैताल जन आवे तिनकों हम मारें ॥ जेसें चंडिकानें दैतकों माराथा आंतिडे अरु चमडे तले विछाइकें शयन करें अरु शिरके सिराने राखे॥ एसें चिरकाल पर्यंत हम चेष्टा करतें रहे ॥ बांधवोंमें स्नेह बहुत बढ गया ॥ एसी नीचताकोंभी हम प्राप्त भये॥अरु तृष्णा बढती जावे जेसें वर्षाकालकी नदी बढती जातिहे तेसें तृष्णा बढति जावे॥ मृत्तिका के पात्रोविषे आगें चंडाल भोजन करी जावे तिनों वासनो विषे हम भोजन करें॥ बहुरी वर्षा होणेंतें रहि गइ काल पडा॥ सूरज तपणे लगा॥ मानों द्वादश सूर्य एकठे तपेहें अरु दावाग्नि वनकों लगा॥ वनके जीव अन्न जलके निमित्त कष्ट पावणे लगे ॥ अपणे देशकों छोडकें देशांतरकों जावे उहां उपद्रव आय प्राप्त हूवा समय बिना मानों प्रलय आयाहे ॥ क्षुधा अरु तृष्णा करिकें केइ जीव मृतक होजावे केइ गिरपडे बहुत कष्ट आय पडा तब हम उहांसों निकसे ॥ तीव पुत्र तीन कन्या स्त्री सहित में निकस्या॥ जहां अन्न जल सुनें तहां जावें मांस खावें ॥ जल अथवा रक्तपान करें बहुरि इहभी हाथ न आवे तब बहुत शोकवान हुवे शरीर निरस जेसा हो गया एसें कष्टमान हूवे॥ पुत्र पिताकों न संभाले अरु पिता पुत्रकों न संभालें॥ बांधवोंका स्नेह आपसमें छूटी गया अपणे वासते सब दोडे॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे इंद्रजालोपाख्याने उपद्रव वर्णनं नाम व्यशीतितमः सर्गः ॥ ८३ ॥ ॥ ७॥

॥ राजोवाच ॥ हे सभा! इस प्रकार हम चिरकाल विचरत फिरे मेरा शरीर वृद्ध हो गया ॥ अरु बाल बरफकी नांइ स्वेत होगये ॥ जेसे सूका पात वायु करीकें विचरताहे तेसें हम कर्मोंके वशतें भ्रमते रहे ॥ जो कछू अपणे राजाका अभिमान था सो मुझे विस्मरन होगया ॥ अरु चंडाल भाव मेरे विषे दृढ होगया ॥ तब में तहां कंपायमान हुवा तुमारी दृष्टीमें आया ॥ अब कछु सावधान भया अरु शब्द तुरीय वाजणे लागे ॥ जेसें पंखोके टूटेतें पहाड अचल भए तेसें चंडाल कल्प मेरेविषे दृढ होगया अरु व्याकुलता करिकें महा कष्टवान हम हुए ॥ तृण फुल फल जल कहुं द्रष्ट न आवे अरु अनेक मृगतृष्णाकी नदीयां द्रष्ट आवे ॥ जब वायु चले तब रेतिके कणके उडते मेघकी नांइं द्रष्ट आवे ॥ सब जीव कष्टमान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होइकें कलत्रकों छोड जावे ॥ कोउ पहाड उपरं चडंकरी दुःखके निमित्त गिरगिर पडे ॥ जेसें चिडीका बाज भोजन करता हे तेसें जीवोकों बिघाड भोजन करें ॥ बहुरी एक वृछ पा
या तिसके नीचे मेनें विश्राम कीया तव एक बालक जो सबतें छोटा था सो मेरे पास आया अरु कहा हे पिता मुझकों मांस द जो में भोजन करों॥ नहि तो मेरे प्राण निकसतेहे तब मेंने
कहा मांस तो हे नहि तब उह कहत भया भावे तहांसों दे तब स्नेह करि बांधा अरु छोटा पुत्र सबतें प्यारा होताहे तिसकर में कहा ॥ हे पुत्र मेरा मांस हे सो खाता हे तब उस दुर्बु
द्धिनें कहा देहु ॥ तब में बनतें लकडीयां तिनकों एकठी करीकें अग्निजलाइ अरु कहा हे पुत्र में अग्निविषे प्रवेश करताहों जब परिपक्व होउं तब तुं भोजन करणा ॥ हे सभा इस प्रकार
में स्नेह करिकें कहा जो किसी प्रकार इह जीते रहें ॥ एसें कहिकरी में चिताविषे प्रवश कीया ॥ जब मुझकों उष्णता लगी तब में कंपायमान हुवा तुमकों दृष्ट आया ॥ बहुरी कछुक
सावधान भया ॥ अरु शब्द तुरीया वाजणे लगी ॥ हे साधो ! में इस प्रकार चरित्र देखाहे तेसें तुमारे आगें कहाहें ॥ जेसें मारकंडेनें प्रलयविषे क्षोभकों देखे ॥ अरु देवताकों कहे तेसें
में तुमकों अपणा वृत्तांत कहाहे ॥ जब इंद्रजालीनें पीछकों भमाया तिसके भ्रमाणे साथ में घोडे पर आरूढ भया ॥ तिस कर एता काल में भ्रमकों प्रत्यक्ष देखता रहा ॥ तातें वडा आ
श्चर्य हे जो मेरे जेसे विवेकवान राजाकों इसनें मोहित कीयाहे तो और प्राकृत जीवोंकी क्या वार्ताहें ॥ माया महा आश्चर्यहे ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जब इस प्रकार तेज
वान राजानें कहा तब उह सांबरीक अंतर्धान हो गया अरु सभाविषे जो मंत्रीतें आदि ले करी बैठथे सो सब आश्चर्यमान हुवें ॥ अरु देखकें परस्पर कहणे लगे बडा आश्चर्यहे बडा
आश्चर्यहे भगवानकी माया विचित्ररूप हे ॥ इह सांबरी माया नहि काहेतें जो सांबरी अपणे लोभके निमित्त दिखाताहे ॥ पाछें जतन करिकें धन आदिक पदार्थ मांगता हे अरु इह
लीये बिना अंतर्धान हो गयाहे ॥ इह ईश्वरकी माया हे तिसकरी एसा विवेकवान राजा मोहकों प्राप्त हुवाहे ॥ जो बडा तेजवान अरु सूरमा राजा मोहित भया तो समान जीवोंकी
क्या बातहे॥ हे रामजी ! एसें संदेह मान होकरी सब स्थित भये अरु मेंभी उस सभा विषे बेठाथा॥ इह वृत्तांत में प्रत्यक्ष देख्याहे ॥ किसीके मुखतें श्रवण करिकें नहि कहा॥ हे रामजी !
इह जो अणुरूप मन हे सो महा मोहहे अरु अविद्याहे ॥ इसके फुरणेकरी अनेक प्रकारोंका मोह दिखताहे जब इह मन उपशम होवे तबहि कल्याणहे ॥ तातें मन जो बहुत कल्पना
उठाताहे तिसकों त्यागकरि आत्मपद विषे स्थित करो ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे सांबरोपाख्यान समाप्ति वर्णनं नाम चतुरशीतितमः सर्गः ॥ ८४ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! आदि जो शुद्ध परमात्मातें चित्त संवेदन फुर्या हे सो कलनारूप होइकें स्थित भयाहे तिसकरी दृश्य सत्य होइ भासता हे ॥ आत्माके प्रमादकरी
कें मोहकों प्राप्त हुवाहे सो चित्तके फुरणे करिकें चिरपर्यंत जगतविषे मग्न होरहाहें सो मन असत्यरूप हे अरु मननेंहि संपूर्ण जगतकों विस्तारा हे तिसकरि अनेक दुःखकों प्राप्त हूवा
हे ॥ जेसें बालक अपणे पछावेविषे वैताल कलपीकरी आपहि भयमान होताहे अरु उहि मन जब संसारकी वासनाकों त्यागकरी आत्मपदमें स्थित होताहे तब एक क्षणविषे सब दुः
ख नष्ट होजातेहे ॥ जेसें सूर्यकी किरणांकरि अंधकार नष्ट होजाताहे हे रामजी ! एसा पदार्थ कोउ नहि जो अभ्यास कीयेतें प्राप्त न होवे ॥ तातें जब आत्मपदका अभ्यास करीये तब
प्राप्त होताहे ॥ आत्मपदके अभ्यास कीयेतें आत्मा निकट भासताहे अरु संसार दूर भासताहे ॥ अरु जब जगत्का अभ्यास दृढ होताहे तब जगत् निकट भासताहे आत्मा दूर भासताहे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे रामजी ! जो मूर्ख मनुष्य है तिनकों अभय पदविषे भय होताहै ॥ जेसें पंथीकों दूरतें वृछविषे वैताल कल्पना होतिहै और भयकों पाताहै ॥ तेसें चित्तकी वासनाकरी जीव भयकों प्राप्त होताहे ॥ हे रामजी ! जो वासना सहित मलीन मन होताहे ॥ तिसविषे नाना प्रकार संसार भ्रम उठताहे ॥ जब आत्मपदविषे स्थित होताहे तब भ्रम मिट जाताहे ॥ अरु जेसा मनविषे निश्चय होताहे तेसाहि हो भासताहे ॥ जब मित्रविषे शत्रुबुद्धि होतहे तब निश्चय कर शत्रु होजाताहे अरु जो मदकरी उन्मत्त होताहे तिनकों संपूर्ण पृथ्वी भ्रमति दृष्ट आतिहे अरु व्याकुल मन होताहे तब चंद्रमाभी स्याम जेसा भासताहे जो अमृतविषे विषकी भावना होतिहे तब अमृतभी विषकी नांइं भासताहे ॥ जेते कछु जाग्रत पदार्थ देश काल क्रिया पत्तन भासताहे सो मनकरि भासतेहे ॥ हे रामजी ! संसारका जो कारण हे सो मोहहे तिस मोहकरिकें जीव भटकताहे तातें ज्ञानरूपी कुहाडेकरीकें वासनारूपी मलीनताकों काटो ॥ आत्मपद पावणेविषे वासनाही आवरनहे ॥ हे रामजी ! वासनारूपी जालकरिकें मनुष्यरूपी हरन आवर्याहे अरु संसाररूपी वनविषे भटकताहे ॥ जिस पुरुषनें विचार करीकें वासनाकों नष्ट कीनीहे तिसकों परमात्म प्रकाश भासताहें जेसें बादलतें रहित सूर्य प्रकाशताहे तेसें वासनारहित चित्तविषे आत्मा प्रकाशताहे॥ हे रामजी ! मनहिकों तुं पुरुष जाण दहकों मनुष नहि जानना काहे तें जो देह जड हे अरु मन जड अरु चैतननतें विलक्षण हे॥ जो मनकरि कार्य करताहे सो कार्य सफल होताहे॥ जो मन करि दीया हे अरु जो मन करि लीया हे सोइ दीया अरु लिया हे॥ जो देह करी-कीया हे सो मननेही कीया हे॥ हेरामजी इह संपूर्ण जगत मनरूप हे मनहि पर्वतहे मनहि आकाश वायु जल अग्नि पृथ्वी सब मनहि हे सूर्याअदिकोंका प्रकाश मनहिकरि होताहे ॥ अरु शब्द स्पर्श रूप रस गंध सब मनहिकरी ग्रहण होतेहें अरु नाना प्रकारकी वासना करिकें नानाप्रकारके रूप मनहि धरताहे॥ जेसें नटवा नाना प्रकारकें स्वांगोको धरता हे तेसें नाना प्रकारके रूप मनहि धरताहे लघु पदार्थकों दीर्घ मनहि करता हे सत्यकों असत्यकी नांइं अरु असत्य जगतके पदार्थकों सत्यकि नांइं करताहे॥ मित्रकों शत्रु करताहे शत्रुकों मित्र करता हे॥ हे रामजी ! जेसी वृत्ति मनकी दृढ होतिहे सोइ सत्य होइ भासति हे॥ हरिचंदकों एक रात्रविषे बारवर्षों होइ भासे अरु इंद्रकों एक मुहूर्तविषे जुगोंका अनुभव हुवा॥ अरु मनहिके दृढ निश्चयतें इंद्र ब्राह्मणके पुत्र दशहि ब्रह्मपदकों प्राप्त भये ॥ हे रामजी ! जो सुख साथ बेठाहे अरु मनविषे कोउ चिंता आन लगी ॥ तो सुखहि विषे उसकों रौरव नरक होजाताहे अरु जो दुःखविषे बेठाहे अरु मनविषे शांतहे तो दुःखभी सुख होजाताहे तातें जेसा निश्चय मनविषे होताहे ॥ तेसाहि होइ भासताहे ॥ अरु जिस उर मनका निश्चय होताहे तिसि ओर मन इंद्रियोंका समूह विचरताहे अरु इंद्रियोंका आधारभूत मन हे जो मन टूट पडता हे तब इंद्रियां भिन्न भिन्न हो जातियांहे॥ जेसें तागेके टूटेतें मणके भिन्न भिन्न होइ पडतेहें तसें मनतें रहित इंद्रियां अर्थोतें रहित भिन्न होतियांहे॥ अरु वास्तव आत्मतत्व सबविषे अधिष्ठान स्थित हे सो स्वछ निर्विकार सूक्ष्म समभाव नित्यहे अरु सबका साक्षीभूत ह अरु सब पदार्थोंका ज्ञाताहे ॥ अरु देहतेंभी अधिक सूक्ष्म रूपहे ॥ अर्थ यह जो अहंभावके उत्थानतें रहित चिन्मात्र हे तिसविषे मनके फुरणे करिकें संसार भासताहे वास्तव द्वत भ्रमतें रहितहे॥ सब जगत् आत्माका किंचनमय रचाहे ॥ सब विषे चैतनशक्ति व्यापीहे वायुविषे स्पंदरूप उहिहे ॥ पृथ्वीविषे कठोरता उहिहे सूर्य अग्नि आदिकविषे प्रकाश उहिहे जलविषे द्रवतारूपी उहिह ॥ आकाशविषे शून्यता उहिहे ॥ सब पदार्थोंविषे चैतनशक्ति व्याप रहिहें सो अनेकता वास्तव नहि ॥ मन करीकें अनेकता भासति हे ॥ शुक्ल पदार्थकों कृष्ण करता हे ॥ दशकाल पदार्थ क्रिया द्रव्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कों मनहि विपर्यय करताहे ॥ हे रामजी ! जेसें निश्चय मनविषे दृढ होताहे सोइ सिद्ध होताहे मन विना किसी पदार्थका ज्ञान नहि होता ॥ हे रामजी ! जिव्हा करिकें नाना प्रकारके भोजन करताहे ॥ परंतु मन और ठोर होताहे तब उसका स्वाद कछु नहि आता ॥ अरु नेत्रोंकरी चित्तसहित देखता हे ॥ बहुरी रूप का ज्ञान होताहे इस कारन मन विना किसी इंद्रियका विषय सिद्ध नहि होता ॥ अंधकार अरु प्रकाशभी मनविना नहि भासता ॥ अरु हे रामजी ! सब पदार्थ भासतेहे सो मन करि भासतेहे ॥ जेसें नेत्रभी होताहे परंतु प्रकास नही होता तो नहि भासता तेसें विद्यमान पदार्थ मनविना नहि भासतेहे ॥ हे रामजी ! इंद्रियांतें मन नहि उपजा परंतु मनतें इंद्रियां ठप जीहे अरु जेता कछु इंद्रियांका विषय दृश्य जाल हे सो सब मनतें उपजाहे ॥ जिन पुरुषनें मनकों वश कीयाहे सोइ महात्मा पुरुष पंडितहे तिनकों नमस्कारहे ॥ हे रामजी ! नाना प्रकारके भूषन अरु फूल पहिरे हुवे स्त्री प्रीति साथ कंठ मिले अरु जो चित्त इसका आत्मपदविषे स्थितहे तब उह उसकों मृतककी कंधके समानहे ॥ अर्थ यह जो उसकों इष्ट अनिष्ट का राग द्वेष कछु नहि उपजता ॥ इष्ट अनिष्टविषे राग द्वेष मन उपजाताहे ॥ मनके स्थित हुवे राग द्वेष कछु नहि उपजता ॥ हे रामजी ! एक वीतराग ब्राह्मण ध्यानस्थित बनविषे वेठा था ॥ तिनके हाथकों कोउ वनचर जीव तोड ले गया परंतु तिसकों कछू कष्ट न भया ॥ काहेतें जो मन थिर था इहि मन फुरने करि सुखकोंभी दुःख करताहें अरु अपणेविषे स्थित हुवे दुःखकोंभी सुख करताहे ॥ हे रामजी ! कथाके श्रवणविषे बेठाहे अरु जो मन चिंतवनाविषे जाताहे तब कथाके अर्थ समुझविषे नहि आते अरु अपणे गृहविषे बेठाहे अरु मनके संक ल्प करीकें पहाड उपर दोडता टूट पडताहे तब उसकों प्रत्यक्ष अनुभव होताहे ॥ सो मनका भ्रम हे ॥ जेसी फुरना मनविषे फुरतीहे सोइ भासतीहे ॥ जेसें सुपनेविषे एक क्षणमें नदी पहाड आकाश आदि पदार्थ भासणे लगतेहे तेसें इह पदार्थ भासतेहे ॥ हे रामजी ! अपणे अंतर सृष्टिभी मनके भ्रमतें भासतीहे ॥ जेसें जलके अंतर अनेक तरंग होतेहे जेसें वृछके अं तर पत्र फुल फल टास होतेहे तेसें एक मनके अंतर जाग्रत सुपन आदिक भ्रम होतेहे ॥ जेसें सुवर्णतें भूषन अन्य नहि होते तेसें जाग्रत अरु सुपन अवस्था भिन्न नहि होती ॥ जेसें तरं ग बुद्बुदा जलतें भिन्न नहि ॥ जेसें नटवा नाना प्रकारके स्वांगोकों लेकर अनेकरूप धरताहे ॥ तेसें मन वासना करिकें अनेक रूपोंको धरताहे ॥ हे रामजी ! जेसें स्पंदविषे दृढ होताहे तेसाहि अनुभव होताहे जेसें लवण राजाकों भरम करिकें चांडालीका अनुभव भया ॥ तेसें इह जगतका अनुभव मनोमात्र हे चित्तके भ्रम करिकें भासताहे ॥ हे रामजी ! जेसी जेसी प्रतिमा मनविषे होतीहे तेसाहि इसकों अनुभव होताहे ॥ इह संपूर्ण जगत् मन मात्रहे जेसें तेरी इच्छा होवे तेसें कर ॥ जेसा जेसा फुरणा मनविषे होताहे तेसा होय भासताहे ॥ मनके फुरनेकरि देवताभी दैत्य होजातेहे अरु दैत्यभी मनके फुरणेकरि देवता होजातेहे ॥ मनुष्य नाग होजातेहे वृछ होजातेहे जेसें लवण राजा आपदाका अनुभव करत भया ॥ हे रामजी ! मनके फुरणेकरी मरणा होताहे बहुरी मनके फुरणेकरि जन्म होताहे ॥ संकल्प करि पुरुषतें स्त्री होजातिहे अरु स्त्रीतें पुरुष होजाताहे पिता पुत्र होजाताहे ॥ अरु पुत्र पिता होजाताहे ॥ जेसें नटवा शीघ्रही अपणे स्वांगकर अनेक रूपोंकों धारताहे ॥ तेसें अपने संकल्प करि मनभी अनेक रूपोकों धरताहे ॥ हे रामजी ! जीव निराकारहे ॥ अरु मन करिकें आकारकी नांइ भासता हे ॥ तिस मनविषे जो मनन हे सो मूढताहे तिस मूढता करिकें जो बासना हुइहे तिस वासनारूपी पवन करिकें इह जीवरूपी पत्र भटकताहे संकल्प

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कें वश हुवा सुख दुःख भयकों प्राप्त होताहे ॥ जेसें तेल तिलोंविषे रहताहे तेसें सुख दुःख मनविषे रहतेहे ॥ जेसें तिलोंकों कोलुविषे पीडताहे तब तेल प्रगट भासताहे तेसें मनकों मन के संयोगतें सुख दुःख प्रगट भासतेहे जो संकल्प देश काल क्रिया करिकें घनत्व होताहे अरु देश काल आदिकभि मनविषे स्थित होतेहें ॥ अरु जिनका मन फुरताहें तिसकों नाना प्रकारका क्षोभवान जगत भासताहे ॥ हे रामजी ! जिनका मन आत्मपदविषे स्थित भयाहे तिनकों क्षोभभी दृष्ट आताहे परंतु मन आत्मपदतें चलायमान नहि होता ॥ जेसें घोडेका असवार रणविषे जाय पडताहे तोभी घोडा उसके वश रहताहे तेसें उसका मन जो विस्तारकी ओर जाताहे तोभी अपणे वशहि रहताहे ॥ हे रामजी ! जब मनकी चपलता वैराग करिकें दूर होतिहें तब मन वश होइ जाताहे ॥ जेसें बंधनों करीकें हस्ति वश होताहे तेसें जिस पुरुषका मन वश होताहे अरु संसारकी उरतें निवृत्त होइकरि आत्मपदविषे स्थित भयाहे सो श्रेष्ठ महापुरुष कहातेहें अरु जिनका मन संसारकी ओर धावताहे सो चिक्कडके कीट हे ॥ अरु जिसका मन अचपल हे शास्त्रके अर्थरूपी संग करी अरु संसारकी ओरतें निवृत्त होकरी एकाग्र भावविषे स्थित हुवाहे अरु आत्मपदके ध्यानविषे लगा हुवाहे सो संसारके बंधनतें मुक्ति होताहे ॥ हे रामजी ! जब मनसों मनन दूर होताहे तब इसकों शांति प्राप्त होतीहे ॥ जेसें क्षीर समुद्रतें मंदराचल निकस्या तब शांतिकों प्राप्त भया जिस पुरुषका मन भोगोंकी ओर प्रवृत्त होताहे सो पुरुष संसाररूपी विषयके वृछका बीज होताहे ॥ हे रामजी ! जिनका चित्त स्वरूपते मुढ हूवाहे अरु संसारके भोगोंविषे लगाहे ॥ सो बडे कष्टकों पातेहे ॥ जेसें तृण जलके चक्रविषे आया क्षोभमान होताहे तेसें इह जीव मनभावकों प्राप्त हूवा भ्रमकों प्राप्त होता हे तातें इन मनकों स्थितकरों जो शांतात्मा होवे ॥ इतिश्रीयो० उत्पत्तिप्रकरणेचित्तवर्णनंनाम पंचाशीतितमःसर्गः ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! यह चित्तरूपी महा व्याधिहे तिसकी निवृत्ति अर्थ में तुझकों श्रेष्ठ औषध कहताहों सो तुं सुण ॥ जतनभी अपणा होवे अरु आपहि साध्य होताहे अरु औषधभी आप होताहे ॥ सब पुरुषार्थ आपहि करि सिद्ध होताहे तातें जतनकरिकें चित्तरूपी वैतालकों नष्ट करो ॥ हे रामजी ! जो कछु पदार्थ तुमकों रस संयुक्त दृष्ट आवे तिसकों त्याग करो ॥ जब वांछित पदार्थकों त्याग करोगे तब मनकी जीत होवेगी अरु अचल पदकों प्राप्त होइगे ॥ जेसें लोहे साथ लोहेकों काटता हे तेसें मन साथ मनकों काटो अरु जतन करिकें शुभ गुणों करिकें चितरूपी वैतालकों दूर करो ॥ अवस्तु देहादिकविषे जो वस्तुकी भावना हे तिसकों त्याग अरु वस्तु आत्मतत्व विषे जो देहादिककी भावना हे तिसका त्यागकर आत्मतत्वमें भावना जोडो ॥ हे रामजी ! जेसें चित्तविषे पदार्थोंकी चिंतना होतीहे ॥ तेसें आत्मपद पावणेकी चिंतना कर सत्य कर्मकी शुद्धता ले कर चित्तकों जतन करकें चैतन संवितकी ओर लगाओ ॥ अरु सब वासनाकों त्यागकें एकाग्रता करो ॥ तब परम पदकी प्राप्ति होवेगी ॥ हे रामजी ! जिन पुरुषोंकों अपनी इच्छा त्यागनी कठिन हुइ हे सो विषयोंके कीटहे ॥ काहेतें जो अशुभ पदार्थ मूढता करकें रमणीय भासते हे ॥ तिस अशुभकों अशुभ अरु शुभकों शुभ जानना यह पुरुषार्थ हे ॥ हे रामजी ! शुभ अशुभ दोनों पहिलवान् हे तिन दोनोंविषे जो बलि होताहे तिनका जय होताहे तातें शीघ्रहि पुरुष प्रयत्न करिके अपणे चित्तकों जीतो जब तुं अचित्त होवेगा तब जतनविना आत्मपदकों प्राप्त होवेगा ॥ जेसें बदलोंके अभाव हुवे जतन विना सूर्य भास आताहे ॥ आत्मपदके आगें चित्तका फुरणा जो बादलवत् आवरणहे सो चित्तका फुरणा जब अभाव होवेगा तब अयत्न सिद्ध आत्मपद भासेगा ॥ सो चित्तके स्थित करणेका मंत्रभी आप करि हो

123

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताहे अरु जिसकों अपणे चित्त वशकरणेकीभी शक्ति नहि तिसकों धिःकार हे उह मनुषविषे गर्दभहे ॥ अपणे पुरुषार्थ करिकें मनकों वशकरणा सो अपणे साथ परम मित्रताहे अरु अपणे मनकों बशकीये बिना अपणा आपहि शत्रुहे ॥ अर्थ यह जो मनकों उपशम कीये बिना घटियंत्रकी नांइं संसार चक्रविषे भटकंताहे अरु जिन मनुषोनें मनकों उपशम कीयाहे तिनकों परम लाभ हुवाहे ॥ हे रामजो ! मनके मारणेका मंत्र यहि हे जो दृश्यकी उरतें चित्तकों निवृत्त करना अरु आत्म चैतन संवितविषे लगाणा इहि मनकों जीतणाहे ॥ आत्म चिंतना करिकें चित्तकों मारणा आपकरिकें सुखरूप हे ॥ हे रामजी ! इछाकरिकें मन पुष्ट रहताहे जब अंतरतें इछा निवृत्त भइ तब मन उपशम होताहे ॥ जब मन उपशम हुवा ॥ तब गुरु शास्त्रोंके उपदेश अरु मंत्र अर्थ आदिकोंकी अपेक्षा नहि रहति ॥ हे रामजी ! जब इह पुरुष असंकल्परूपी औषध करिकें चित्तरूपी रोगकों काटे तब तिस पदकों प्राप्त होवे, जो सर्व हे अरु सर्वगत शांतरूप हे अरु जो देहहे सो निश्चय करिकें मूढ मननें संकल्प करिकें कल्पीहें ॥ तातें पुरुषार्थ करिकें चित्तकों अचित्त करो तब इस बंधनतें छुटोगे ॥ हे रामजी ! शुद्ध चित्त आकाशविषे जतन करिके चित्तकों जोडो जब चिरकाल पर्यंत मनका तीव्र संवेग आत्माकी ओर होवेगा तब चैतन चित्तका भक्षण करि लेवेगा जब चित्त का चित्तत्व निवृत्त होजावेगा तब केवल चैतनमात्रहि शेष रहेगा ॥ हे रामजी ! जब जगत्की भावनातें तुं मुक्त होवेगा तब तेरी बुद्धि परमार्थ तत्वविषे जुडेगी अर्थ यह जो बोधरूप होजावेगी ॥ तातें इस चित्तकों चित्त करिकें ग्रास करिले ॥ जब तुं परम पुरुषार्थ करिकें चित्तकों अचित्त करेगा तब महा अद्वैत पदकों प्राप्त होवेगा ॥ हे रामजी ! मनके जीतणेविषे और तुझकों जतन कछु नहि ॥ एक संवेदनका प्रवाह उलटावणा हे ॥ जो दृश्यकी ओरतें निवृत्त करिकें आत्माकी ओर लगाणा इस करि चित्त अचित्त होजावेगा ॥ चित्तकें क्षोभतें रहित होणा परम कल्याणहे तातें क्षोभतें रहित होहु ॥ जिनने मनकों जीत्याहे तिनकों त्रिलोकीका जीतणा तृण समानहे ॥ हे रामजी ! एसें सूरमाहे जो शस्त्रोंके प्रहारकों सहतेहें अरु अग्नि करि जलणाभी सहतेहे अरु शत्रुकों मारतेहे ॥ तब सुभाविक फुरणेके सहणेविषे तुझकों क्या कृपणताहे ॥ जो समर्थ नहि होता ॥ हे रामजी ! जिसकों अपणे चित्तके उलटावणेकी समर्थता नहि सो नरोविषे अधमहे ॥ जिनका इह अनुभव होतहे जों में जनम्या हों अरु मरोंगा में जीवहो सो असत्यरूप प्रमाद चपलता करिकें भासताहे ॥ जेसें किसी थानविषें बेठा होवे अरु मनके फुरणे करी और देशविषे कार्य करने लगे सो भ्रम रूप हे तेसेंहि आपकों जन्म मरण भ्रम करेकें मानताहे ॥ हे रामजी ! इह पुरुष मन रूपी शरीर साथ इस लोक अरु परलोकविषे भटकताहे सो मोक्ष होणें पर्यंत चितविषे भटकताहे ॥ जो चितभी मोक्ष पर्यंत नाश नहि होता तब तुझकों मृत्युका भय केसें होताहे ? तेरा स्वरूप नित्य शुद्ध बुद्ध सर्व विकारतें रहितहे ॥ अरु इह लोक आदिक भ्रम चितविषे मनके फुरनेतें उपजाहे ॥ मनतें इतर चित्तका रूप कछु नहि ॥ अरु पुत्र भाइ टहलूए आदिक जो स्नेहका स्थानहे तिनके क्लेश करि आपकों क्लेश मानतेहे सोभि चित्तकरि मानताहे ॥ जब चित्त अचित्त होजावे ॥ तब सर्व बंधनतें मुक्त होवे ॥ हे रामजी ! में उर्ध अध सब स्थान देखेहे ॥ अरु सब शास्त्रभि देखेहे ॥ तिनकों एकांत बेठकरि वारंवार विचारेहे जो शांति प्राप्त होणेंकों ओर उपाय कोइ नहि ॥ चितका उपशम करणाहि उपायहे ॥ जब लग चित्त दृश्यकों चितवताहे तबलग शांति नहि प्राप्त होती ॥ अरु जब चित्त उपशम होवे तब इसकों तिसपदविषे विश्राम होताहे जो नित्यहे अरु शुद्धहे सर्वात्माहे सर्वके रिदेविषे चैत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न आकाशहे परम शांतरूपहे तिस पदविषे विश्राम पावेगा ॥ हे रामजी ! हृदयाकाशविषे जो चैतन्य चक्र हे ॥ तिसका अर्थ यह जो ब्रह्माकार वृत्तिहे ॥ जब मनका तीव्र संवेग तिसकी ओर होवे तब सबहि दुःखोंका अभाव हो जावे मनका मनभाव तिस ब्रह्माकार वृत्तिरूपी चक्र करी नष्ट हो जावेगा ॥ हे रामजी ! जो संसारके भोग मनकरी रमणीय भासतेहे सो जब रमणीय भासे नांही तब जानियें जो मनके अंग काटेहे ॥ जेते कछु अहं अरु त्वं आदि शब्दार्थ भासतेहे सो सब मनोमात्र भासतेहे ॥ जब दृढ विचार करकें इनकी अभावना हो वे तब मनकी वासना नष्ट होजावे ॥ जेसें दातृ करकें खेती नष्ट हो जाती हे ॥ तेसें वासना नष्ट होनेतें परम तत्व शुद्ध भासेगा ॥ जेसें घटाके अभाव हुवे शरदकालका आकाश निर्मल भासताहे तेसें वासनातें रहित मन शुद्ध भासेगा ॥ हे रामजी ! मन इसका परम शत्रुहे सो मन इच्छा संकल्प करिकें पुष्ठ होजाताहे ॥ अरु जब इच्छा कोउ न उपजें तब आपही निवृत्त हो जावेगा ॥ जेसें अग्नि विषे काष्ठडारियें तब अग्नि बढ जाताहे अरु जब काष्ट नांही डारे तब अग्नि आपही नष्ट हो जाताहे ॥ हे रामजी ! इस मनविषे जो संकल्प कल्पना उठतीहे तिसका त्याग करे तब तेरा मन स्वतः नष्ट होवेगा ॥ जहां शस्त्र चलते हे अरु अग्नि लगतीहे तहां सूरमा निर्भय होयकें जाय पडतेहें अरु शत्रुकों मारतेहें, प्राण जानेका भय रखते नांही तब तुझकों संकल्प त्यागनेमें क्या भय होताहे ॥ हे रामजी ! चित्त पसारणेविषे अनर्थ होताहे अरु चित्तके अस्फुरण हुवे कल्याण होताहे ॥ इह वार्ता बालकभी जानताहे ॥ जेसें पिता बालककों अनुग्रह करिकें कहताहे तेसें मैं तुझकों समुझाता हों ॥ जो मनरूपी एक शत्रुनें भयकों प्राप्त किया हे ॥ संकल्प कलना करीकें जेती कछु आपदाहे सो मनतें उपजतीहे ॥ जेसें सूर्यकी किरणां करके मृगतृष्णाका जल दिखता हे तेसें सब आपदा मनतें दिखती हे ॥ जिसका मन स्थित हुआहे तिसकों क्षोभ कोउ नहि होता ॥ हे रामजी ! प्रलयकालका पवन चले अरु सप्त समुद्र मर्यादाकों त्यागकें इकट्ठे होजावे अरु द्वादश सूर्य इकट्ठे होकें तपे तोभी मनतें रहित जो पुरुष हे तिसकों विघ्नकोउ नहि होता ॥ उह सदा शांतरूपहे ॥ हे रामजी ! मनरूपी बीज हे तिसतें संसार वृक्ष उपज्याहे ॥ सप्त लोक तिसके पत्र हे अरु शुभ अशुभ सुख दुःख तिसके फल हे ॥ सो मन संकल्पतें रहित नष्ट हो जाताहे ॥ संकल्पके बढणे तें अनर्थका कारण बढता हे ॥ तातें संकल्पतें रहित जो चक्रवर्ती राजपद हे तिसविषे आरूढ हुवा परम पदकों प्राप्त होवेगा ॥ जिस पदविषे स्थित हुऐ चक्रवर्ती राजा तृणवत् भासताहे ॥ हे रामजी ! मनके क्षीण होणे करिकें इह परमानंद उत्तम पदकों प्राप्त होवेगा ॥ हे रामजी ! संतोष करिकें मन वश होताहे ॥ तब नित्य उदयरूप निरीह परम पावन निर्मल सम अरु अनंत सर्व विकार विकल्पतें रहित आत्मपद शेष रहता हे सो तुझकों प्राप्त होवेगा ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्तिप्र० मनशक्तिरूप प्रतिपादनं नाम षडशीतितमः सर्गः॥८६॥

121

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जहां जिसके मन विषे तीव्र संवेग होताहे तिसकों मन देखता हे ॥ अज्ञान करिकें जो दृश्यका तीव्र संवेग भयाहे तिस करकें चित्त जन्म मरणादिक विकारोंकों देखताहे ॥ जिसका निश्चय मन विषे दृढ होताहे तिसीका अनुभव करताहे ॥ जेसा मनका फुरणा फुरता हे तेसा रूप हो जाता हे ॥ जेसें बरफका सीतल शुक्लरूप हे अरु काजलका कृष्णरूप हे तेसें मनका रूप चंचल हे ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे ब्राह्मण ! इह जो मन वेग अवेगका कारण चंचलरूप हे तिस मनकी चपलता जेसें निवृत्त होवे सो प्रकार तुम कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! तूं सत्य कहता हे ॥ चंचलतातें रहित मन कछु नाहि दिखता काहेतें जो मनका चंचल सुभाव हे ॥ हे रामजी ! जो मनविषे चंचल फुरणाशक्ति हे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सो मानसी शक्तिहे ॥ सोइ जगत् आडंबरका कारणरूप हे ॥ जेसें वायुका स्पंदरूप ह तसें मनका चंचलरूपहे ॥ जहां चंचलतातें रहित मन हे तिसकों मृतक कहतेहे ॥ हे रामजी ! त पका अरु शास्त्रका जो सिद्धांत हे हे सो यही हे ॥ मनके मृतक रूपकों मोक्ष कहतेहें ॥ मनक्षीण हुवे सब दुःख नष्ट हो जाताहे ॥ जब चित्तरूपी राक्षस उठता हे तब बडे दुःखकों प्राप्त होताहे ॥ चित्तके लय हुवे अनंत सुख भोग प्राप्त होतेहें ॥ अर्थ यह जो परमानंदस्वरूप आत्मपद प्राप्त होताहे ॥ हे रामजी ! मनविषे जो चंचलता हे सोइ अविचार सि द्ध हे विचारतें नष्ट हो जातीहे ॥ चित्तकी चंचलता रूप जो वासना अंतर स्थित हे ॥ जब इह नष्ट होवे तब परम सारकी प्राप्ति होवे ॥ तातें जतनकरिकें चपलता रूप अविद्याका त्याग करो जब चपलता निवृत्त होवेगी ॥ तब मन शांत हो जाताहे सो मनका रूप सुण ॥ हे रामजी ! सत्य असत्यके मध्य जड चैतनके मध्य जो डोलायमान हे तिसका नाम मन हे ॥ हे रामजी ! जब इह तीव्रता करिकें जडकी उर लगताहे तब आत्माके प्रमाद करी जडरूप होजाताहे अर्थ यह जो अनात्मविषे आत्म प्रतीति होतिहे अरु जब विवेकविचार विषे लगता हे तब तिस अभ्यास करि जडता निवृत्त होजाती हे ॥ केवल चैतन आत्मतत्व पडा भासता हे ॥ जेसें अभ्यास दृढ हो ताहे तेसा अनुभव इसकों होताहे ॥ जेसें पदार्थकी एकता चित्तविषे होतिहे अभ्यासके वशतें चित्त तेसा रूप होजाताहे ॥ हे रामजी ! जिस पदके निमित्त मन पुरुष प्रयत्न करताहे तिस पदकों प्राप्त होताहे अरु अभ्यासकी तीव्रतातें भावितरूप होजाताहे ॥ इसी कारजतें तुझकों कहताहों जो चित्तकों चित्तकरिकें स्थिर करो अरु अशोकपदका आश्रय करो ॥ जेते कछु भाव अभावरूप संसारके पदार्थहे सो सब मनतें उपजेहे ॥ तातें मनकें उपशम करणेका प्रयत्न करो ॥ मनके उपशमविना और उपाय छूटणेका कोउ नहि अरु मनकों मनहि निग्रह करताहे कोउ समर्थ नहि॥ जेसें राजा साथ राजाहि जुद्ध करताहे और कोउ समर्थ नहि तेसें मन साथ मनहि जुद्ध करताहे॥ तातें तुं मनहि साथ मनकों मार जो शांतिकों प्राप्त होवे ॥ हे रामजी ! इह पुरुष बडे संसार समुद्रविषे पडाहे तिसविषे तृष्णारूपी तंतुनें इसका आवरन कीयाहे तिसकरि अधःको चल्या जातहे ॥ अरु राग द्वेष रूपी घुमरघेरविषे कष्ट पा ताहे तिसविषे तरणेके निमित्तभी मनरूपी बेडाहे ॥ जब शुद्ध मनरूपी बेडा पर आरूढ होवे तब संसार समुद्रतें पार पहुंचे अन्यथा कष्टकों प्राप्त होवे ॥ हे रामजी ! अपणा मनहि बंधन का कारण फांसीहे तिसकों मनही साथ छेदन करो ॥ सो किस प्रकार छेदीयें दृश्यकी ओर मन जो सदा धावताहे तिसतें वैराग करे अरु आत्मतत्वका अभ्यास करे तब छुटे ॥ और उ पाय छूटनेका नहि ॥ जहां जेसी वासनाकरि मन आशा करि उठे तिसकों तहांहि बोधकरिकें त्यागेतें तेरी अविद्या नष्ट होजावेगी ॥ हे रामजी ! जब प्रथम भोगोंकी वासनाका त्याग क रेगा तब जतन बिना जगतकी वासना छूट जावेगी ॥ जब भाव अभावरूप जगतका त्याग कीया तब निर्विकल्प सुखरूप होवेगा ॥ जब सब दृश्य भाव पदार्थोंका अभाव होताहे तब भावना करणेहारा मनभी नष्ट होताहे ॥ हे रामजी ! जो कछु संवेदन फुरताहे ॥ इस संवेदनका होणा जगतहे अरु असंवेदन होणा इसिका नाम निर्वाणहे अरु संवेदन होणे करि दुःखहे॥ तातें प्रयत्न करिकें संवेदनका अभाव करणा कर्त्तव्य हे ॥ जब भावनाकी अभावना होवे तब कल्याण होवे ॥ जेते कछु भाव अभाव पदार्थोंका राग द्वेष उठताहे सो मनके अ बोध करि होताहे ॥ उह पदार्थ मृगतृष्णाके जलवत मिथ्याहे तातें इनकी आस्थाकों त्यागकरो ॥ इह सब अवस्तुरूप हे अरु तेरा स्वरूप नित्य मुक्त अपणे आपविषे स्थितहे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे ॥ जो अज्ञानि जाणताहे मैं कृश हौं अति दुःखी हौं वृद्ध हौं हस्तपाद इंद्रिवाला हौं एसें व्यवहार करि बंधमान होताहे ॥ अरु जब एसें जाने जो मैं दुःखी नहि न मेरी देह हे न मेरे बंधन हे तब भावना करी मुक्त होताहे ॥ न मैं मांस हौं न अस्थि हौं देहतें अन्य साक्षी हौं ॥ एसें निश्चयवानकों अंतर अविद्यातें मुक्त कहताहे ॥ जेसें सूर्यविषे अंधकार नहि मणिके प्रकाशविषे अंधकार नहि तेसें आत्माविषे अविद्या नहि ॥ जेसें पृथ्वी पर स्थित पुरुष आकाशविषे नीलता कल्पताहे तेसें अज्ञानि आत्माविषे अविद्या कल्पता हे वास्तव कछु नहि ॥ ॥ रामउवाच ॥ हे भगवन् सुमेरुकी छाया आकाशविषे पडतिहे अथवा तमकी प्रभा हे अथवा औरहे यह आकाशविषे नीलता केसें भासतिहे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! आकाशविषे नीलता हे नहि इह शून्यता गुण हे न सुमेरुकी छाया हे अरु न तम हे आकाश पोल मात्र हे ॥ हे रामजी ! इह ब्रह्मांड तेज रूप हे इसका प्रकाशहि स्वरूप हे तमका स्वभाव नहि ॥ तम ब्रह्मांडके बाह्य हे अंतर नहि ब्रह्मांडका प्रकाश स्वभाव हे अरु इह जो नीलता भासति हे सो दृढ शून्यता करिकें आकाशविषे नीलता भासतिहे और नीलता कछु नहि ॥ जिसकी मंद दृष्टि हे तिसकों नीलता भासति हे ॥ जिसकी दिव्य दृष्टि हे तिसकों नीलता नहि भासति पोल भासतीहे ॥ जेसें मंद दृष्टिकों आकाशविषे नीलता भासतिहे तेसें अज्ञानिकों अविद्या सत्य भासतिहे ॥ जेसें दिव्य दृष्टिवालेकों नीलता नहि भासति तेसें ज्ञानवानकों अविद्या नहि भासति ब्रह्मसत्ताहि भासतिहे ॥ हे रामजी ! जहां लग इसके नेत्रोंकी दृष्टि जातिहे तहां लग अवकाश भासता हे अरु जहां दृष्टि कुंठित होतिहे तहां इसकों नीलता भासतीहे ॥ हे रामजी ! जेसें जिसकी दृष्टि क्षय होतीहे तहां तिसकों नीलता भासतिहे तेसें जहां इस जीवकी आत्मदृष्टि क्षय होतिहे तहां इसकों अविद्यारूपी सृष्टि भासणे लगति हे ॥ सो इह दुःखरूप हे ॥ हे रामजी ! चैतनकों छोड करि जो कछु स्मरण करताहे तिसका नाम अविद्या हे अरु जब चित्त अचल होताहे तब अविद्या नष्ट होजातिहे ॥ अ संकल्प होणे करि अविद्या नष्ट होतीहे जेसें आकाशके फूल तेसें अविद्या हे ॥ इह भमरूप जगत मूर्खोंकों सत्य भासता हे वास्तवतें कछु नहि मनके फुरणेतें रहित होवे तब जगत कछू नहिं ॥ भावना मात्र जगत् हे तिसीका नाम अविद्याहे सो मोहका कारण हे जब उहि भावना उलट करि आत्माकी ओर आवे तब अविद्या नाश होवे ॥ जो वारंवार चिंतना करणी इसका नाम भावनाहे जब भावना आत्माकि ओर वृद्ध होतिहे तब आत्माकी प्राप्ति होतिहे अविद्या नष्ट होजातिहे मनके संसरणेका नाम अविद्या हे जब संसरणा आत्माकी ओर हुवा तब अविद्या नष्ट भइ ॥ हे रामजी ! जेसें राजाके आगें मंत्री टहलूए कारजकों करतेहे तेसें मनके आगें इंद्रियां कार्यकों करतीयांहे ॥ हे रामजी ! बाह्यके विषय पदार्थोंकी भावना छोडकें तुम अंतर आत्माकी भावना करो तब आत्मपदकों प्राप्त होडुगे ॥ जिनों पुरुषोनें अंतर आत्माकि भावनाका जतन कीयाहे सो शांतिकों प्राप्त भयेहे ॥ हे रामजी ! जो पदार्थ आदिविषे नहि होता सो अंतविषेभी नहि रहे तातें जो कछु भासताहे सो सब ब्रह्मसत्ता हे इतर कछु नहि ॥ जो कछु इतर भासताहे सो मननमात्र हे अरु तेरा स्वरूप निर्विकार आदि अंततेंरहित ब्रह्मतत्व हे तूं क्यों शोक करताहे ॥ अपणे पुरुषार्थ करिकें संसारके भोग वासना चित्तसों मूलतें उखाडो अरु आत्मपदका अभ्यास करो जो दृश्य भम मिटि जावे ॥ हे रामजी ! इह संसारकि वासनाका उदय होना जरा मरण मोहकों देणेहाराहे ॥ जब स्वरूपका प्रमाद होताहे तब इसकों इह कल्पना उठतिहे ॥ आशारूपी अनंत फांसियोंकरि बंधमान होताहे अ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रु वासना बद्ध होजातिहे ॥ कहताहे मेरे पुत्रहे, मेरा धनहे, मेरे बांधवहे, इह में हौ, उह ओर हे ॥ इसतें लेकरि वासना तिसके चित्तविषे उत्पत्ति होतिहै ॥ हे रामजी ! एसें शरीर साथ मिलकरि इह कल्पना करताहे सो शरीर शून्यरूपहे ॥ जेसें वायु विरोले साथ तृण उडतेहे तेसें अविद्यारूपी वासना करिकें शरीर उडतेहे ॥ अहं त्वं आदिक जगत सब अज्ञानिकों भासताहे अरु ज्ञानवानकों केवल ब्रह्मसत्य भासताहे ॥ पृथवी नदीयांतें लेकरी जगत अज्ञानमात्र करिकें भासताहे ॥ अरु ज्ञानतें नष्ट होजाताहे ॥ जेसें जेवरीके न जानणे करि सर्प भासताहे अरु जेवरीके सम्यक् ज्ञानकरि नष्ट होजाताहे तेसें आत्माके अज्ञान करिकें जगत भासताहे अरु आत्माके सम्यक् ज्ञान हुवे जगत भ्रम नष्ट होजाताहे ॥ तातें आत्माकी भावना करो ॥ हे रामजी ! जेवरीविषे दो विकल्प होतेहे एक जेवरीका दूसरा सर्पका ॥ सो दोनों विकल्प अज्ञानिकों होतेहे ॥ ज्ञानिकों दो विकल्प नहि होते जो जिज्ञासी होताहे तिसकी वृति सत्य अरु असत्यविषे डोलायमान होतिहे अरु जो ज्ञानवानहे तिसकों विचारतें रहित ब्रह्मतत्वहि भासताहे तातें तूं अज्ञानी मत होउ ज्ञानवान होउ ॥ जेती कछु जगतकी वासनाहे सो सबकों त्याग करु तब शांतिवान होवेगा ॥ हे रामजी ! संसार भोगकी वासनाभी तब होतिहे जब अनात्मविषे आत्माभिमान होताहे सो तुं देहके साथ कायकों अभिमान करताहे ॥ इह देह तो मूक जडहे अरु अस्थि मांसकी थेलीहे ॥ एसें देह तुं क्यों होताहे जबलग देहविषे अभिमान होताहे तबलग सुख अरु दुःखकों भुगततताहे अरु इछा करताहे ॥ जेसें काष्ठ अरु लाखका संयोग होताहे अरु जेसें घट अरु आकाशका संयोग होताहे तेसें देह अरु देहीका संयोग होताहे ॥ जेसें चमडीके अंतर आकाश होताहे सो चमडीके नष्ट हुवे आकाश नष्ट नहि होता अरु जेसें घटके नष्ट हुवे घटाकाश नष्ट नहि होता तेसें देहके नष्ट हुवे आत्मानाश नहि होता ॥ हे रामजी ! जेसें मृगतृष्णाकी नदी भांति करिकें भासति हे तेसें अज्ञानकरकें सुख दुःखकी कल्पना होतिहे ॥ तातें सुख दुःखकी कल्पनाकों त्यागकरि अपणे स्वभावसत्ताविषे स्थित होउ ॥ बडा आश्चर्यहे जो ब्रह्मतत्व सत्य स्वरूपहे सो मनुष्य भूलिगयाहे अरु जो असत्य अविद्याहे तिनकों वारंवार स्मरण करतेहे ॥ एसी अविद्याकों तूं मत प्राप्त होहु ॥ हे रामजी ! मनका जो मनन हे सोइ अविद्याहे अरु इह अनर्थका कारण हे इस करि जीव अनेक भ्रमकों देखताहे ॥ मनके फुरणेकरि चंद्रमाका बिंब अमृतकरि पूर्णभी नरकके अग्निसमान भासताहे अरु बडी लहरि तरंग सहित अरु कमलों संयुक्त जलभी मरुथलकी नदी समान भासताहे ॥ जेसें सुपनेविषे मनके फुरणे करकें नानाप्रकारके सुख अरु दुःखका अनुभव होताहे तेसें इह सब जगत् भ्रम चित्तकी वासना करिकें भासताहे ॥ जाग्रत् अरु सुपनेविषे इह जीव विचित्र रचनाकों देखता हे सो मनके फुरणे करिकें देखताहे ॥ जो स्वर्गविषे बेठा होताहे अरु सुपनेविषे उसकों नरकोंका अनुभव होताहे तेसें आनंदरूप आत्माविषे प्रमादकरी इसकों दुःखका अनुभव होताहे ॥ हे रामजी ! अज्ञानि मनके फुरणे करिकें शून्य अणुविषे संपूर्ण जगत् भ्रमकों देखताहे ॥ जेसें राजा लवण सिंहासन पर बेठा हुवा चंडालकी अवस्थाका अनुभव करतभया ॥ तातें संसारकी वासना चित्ततें त्याग देउ इह संसार वासना बंधनका कारण हे ॥ सर्वभावों विषे वरतो परंतु राग किसविषे न होवे ॥ जेसें फटिकमणि सब प्रतिबिंबकों लेताहे परंतु रंग किसीका नहि लेता तेसें तुम सब कार्य करो परंतु द्वेष किसीविषे न होवे ॥ एसा जो पुरुष हे सो निर्बंधन हे ॥ तिसकों शास्त्रका उपदेश नहि उह निजरूप हे ॥ हे रामजी ! जो कछु प्रकृत आचार तुमकों आय प्राप्त होवे ॥ देणा, लेणा, बोलणा, चलणा, आदिक सब कार्य करो परंतु अंतरतें अभिमान कछु न करो निरभिमान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होकरि कार्य करो इह ज्ञान सबतें श्रेष्ठ हे ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे यथाकथित दोषपरिहारोपदेशोनामनवाशीतितमःसर्गः ॥ ८९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वाल्मीकोवाच ॥ इस प्रकार जब महात्मा पुरुष वसिष्ठजीनें कहा तब कमलनेन रामजी वसिष्ठजीकी और देखत भया अरु अंतःकरण प्रफुल्लित हो आया ॥ जेसें रात्रके मुंदे हुए कमल सूर्यके उदय हुवे प्रफुल्लित हो आतेहे तेसें प्रफुल्लित होइकरि रामजी बोलत भये ॥ ॥ रामोवाच ॥ बडा आश्चर्य हे जो पद्मकी तंतु साथ पर्वत बांधाहे अविद्यमान जु हे अविद्या, तिसनें संपूर्ण जगत् वश कोया हे अरु अविद्यमान जगत्कों वज्रसारवत दृढ कीयाहे सब जगत् असत्यरूप हे सत्यकी नांइं स्थित कियाहे ॥ हे भगवन् इस संसारकी नटनी जो माया हे तिसका रूप क्या हे अरु लवणराजा महापुन्यवान था सो एसी बडी आपदाकों केसें प्राप्त हुवा; अरु इंद्रजाल जो भ्रम दिखात भया सो कवन था अरु उसकों अपणा अर्थ कछु न था ? सो इंद्रजाल कंहां गया अरु इस देहि अरु देहका संबंध केसें हुवाहे ? अरु शुभ अशुभ कर्मोंके फल भोगणेकों केसें समर्थ होताहे ? एते प्रश्नोंका उत्तर मेरे बोधके निमित्त कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इह देह काष्ठ माटीके स मान हे ॥ जेसें सुपनेविषे चित्तके फुरणे करिकें देह भासता हे तेसें इह देह चित्तका कल्पित हुआहे अरु चित्त चैत्य संबंधकरिकें जीवपदकों प्राप्त भयाहे ॥ सो जीव चित्तसत्ताकरि शोभायमान हे ॥ तिस चित्तके फुरणे करिकें संसार उपजाहे सो चित्त वानरके बालक समान चंचल हे ॥ अरु अपणे फुरणे रूप कर्मोंकर नानाप्रकारके शरिरोंकों धरताहे ॥ तिस चि त्तके एते नामहें ॥ अहंकार, मन, जीव, इत्यादिक नाम चित्तकेहे ॥ सो चित्तहि अज्ञानकरिकें सुख दुःखकों भोगताहे शरीर नहि भोगता ॥ अरु जो प्रबोध चित्तहे सो शांतरूप हे ॥ जबलग मन अप्रबोध हे अरु अविद्यारूपी निद्राकरीकें सोयाहे तबलग सुपनरूप अनेक सृष्टिकों देखता हे ॥ अरु जब अविद्या निद्रातें जागताहे तब नहि देखता हे ॥ हे रामजी ! जब लग जीव अविद्या साथ मलिन हे तबलग संसार भ्रमकों देखताहे अरु जब बोधवान हुवा तब संसारभ्रम निवृत्त होताहे ॥ जेसें रात्रकरि कमल मूंदे जातेहे अरु सूर्यके उदय हुवे खि लिआतेहें तेसें अविद्याकरि जगत भ्रम देखताहे ॥ बोधकरिकें अद्वैतरूप होताहे तातें अज्ञानहि दुःखका कारणहे ॥ अविवेक करिकें पंचकोश जो देह हे तिसविषे अभिमानि होइ करि जेसें कर्म करताहे तैसें हि भोगताहे शुभ करताहे तब सुख भोगताहे अशुभ करता हे तब अशुभ दुःख भोगताहे ॥ जेसें नटवा अपणि क्रिया करिकें अनेक स्वांगोंको धरता हे तेसें मन अपणे फुरणे करिकें अनेक शरीरकों धारताहे ॥ जेसें कछू इष्ट अनिष्ट सुख दुःखहे सो एक मनके फुरणे विषे हे शरीरविषे स्थित होइकरि मन करताहे जेसें रथ उपर आरूढ हो इकरि रथवाहि चेष्टा करताहे जेसें कोतर विषे बेठिकें सर्प चेष्टा करतेहे तेसें शरीरविषे स्थित होकरि मन चेष्टा करताहे ॥ हे रामजी ! अचलरूप शरीरकों मन चंचल करताहे जेसें वृक्ष कों वायु चंचल करताहे तेसें जड शरीरकों मन चंचल करताहे ॥ जेती कछु सुख दुःखकी कलनाहे ॥ सो मनहि करताहे मनहि भोगताहे मनहि मनुष हे ॥ हे रामजी अब लवणका व त्तांत सुण ॥ लवणराजा मनके भ्रमणे करिकें चंडाल हुवा ॥ जेता कछु मन करिकें करताहे सो सफल होताहे ॥ हे रामजी ! एक कालमें हरिचंदके कुलतें उपजा जो राजा लवण, सो एकांत बगीचेमें बेठकें विचारत भया ॥ जो मेरा पितामह बडा राजा हुवाहे अरु मेरे बडोंनें राजसूय यज्ञ कीयेहे अरु मेंभी उनके कुलविषे उत्पत्ति भयाहों मेंभी राजसूय यज्ञ करों ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस प्रकार चिंतना करिके लवणनें मानसी यज्ञका आरंभ कीया ॥ देवता ऋषि सुर मुनीश्वर सबनकी मनकरि पूजा करत भया ॥ अग्नि पवन आदिक देवताकों पूजत भया ॥ मंत्र अरु सामग्री जो कछु राजसूय यज्ञका कर्म हे सो संपूर्न करत भया अरु मनहि करि सब दक्षणा देत भया ॥ सवा वर्ष पर्यंत यज्ञ पूर्ण कीया अरु मनहि करि तिसका फल भोगत भया ॥ तातें हे रामजी ! मनहि करि सब कर्म होताहे अरु मनहि भोगताहे ॥ जेसा चित्त हे तेसाहि पुरुष हे ॥ पूर्ण चित्तकरी पूर्ण होताहे अरु नष्ट चित्तकरि नष्ट होताहे ॥ अर्थ यह जो जिसका चित्त आत्मतत्वकरि पूर्ण हे सो पूर्ण हे अरु जो आत्मतत्वतें नष्ट चित्त हे सो नष्ट पुरुष हे ॥ हे रामजी ! जिसकों इह निश्चय हे जो में देह हों सो बुद्धि नीच हे अनेक दुःखकों प्राप्त होवेगी अरु जिसका चित्त पूर्ण विवेकविषे जाग्याहें तिसकों सब दुःखोंका अभाव होजाताहे ॥ जेसें सूर्य उदय हुवे कमलोंका सकुचणा दूर होजाताहे अरु खिलि आतेहें तेसें विवेकरूपी सूर्यके प्रकाशतें रहित पुरुष दुःखोंकरि सकुच रहतेहे ॥ अरु जो विवेकरूपी सूर्यके प्रकाशकरि प्रफुल्लित भयेहे सो संसारके दुःखकों तरि जाताहे ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे सुखदुःखभोक्तव्योपदेशकथनंनामनवतितमःसर्गः ॥ ९० ॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् राजा लवण राजसूययज्ञ मनकरि करत भया अरु मनहि करि तिसका फल भोग्या ॥ परंतु एसा सांबर कोंन था जिसनें उसकों भ्रम दिखाया ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जब उह सांबरी लवण राजाकी सभाविषे आया तब में उहां था में उह देखा था तब तहां मुजसों लवण अरु मंत्री पूछत भये ॥ जो इह कवन था ॥ तब में उनकों जो कछु कहाथा सो तुझकों कहता हों ॥ हे रामजी ! जो पुरुष राजसूय यज्ञ करताहे तिसकों द्वादश वर्षकी आपदा प्राप्त होतिहे ॥ तिस द्वादश वर्षमें अनेक दुःखकों देखताहे ॥ तब राजा लवण जो मन करि यज्ञ करत भया तिसकों आपदाभी मनकरि प्राप्त भइ ॥ स्वर्गतें इंद्रनें अपणा दूत पठायो आपदा भुगतावणे निमित सांबरी आकारवान होइ करि आया ॥ राजाकों चंडालकी आपदा भूगताइ करि बहुरी स्वर्गकों चला गया ॥ हे रामजी ! जो कछू में प्रत्यक्ष देख्या था सो तुझकों कहा तातें मनहि करताहे अरु मनहि भोगताहे ॥ जेसा जेसा दृढ संकल्प मनविषे फुरताहे तिसके अनुसार इसकों सुख दुःखका अनुभव होताहे ॥ हे रामजी ! जबलग चित्त फुरताहे तबलग इसकों आपदा प्राप्त होतिहे ॥ जेसें ज्यों किंकरका बृछ बढताहे त्यों त्यों कंटक बढते जातेहे तेसें मनके फुरणे करि आपदा बढति जातहे ॥ अरु जब मन स्थिर होतहे तब आपदा मिट जातहे ॥ तातें हे रामजी ! इस चित्तरूपी बरफकों विवेकरूपी तपत करि गालो तब परम सारकी प्राप्ति होवेगी ॥ इह चित्तहि परम सकल जगत आडंबरका कारणहे तिसकों तुं अविद्या जान ॥ जेसें किसी वृछ, विटप, तरु, सो एकहि वस्तुके नामहे तेसें किसी अविद्या, जीव, बुद्धि, अहंकार, सब फुरणेके नामहे इसकों विवेककरी लीन करो ॥ हे राम ! जेसा संकल्प इसविषे दृढ होताहे तेसा देखताहे ॥ हे रामजी ! उह कवन पदार्थहे जो जतन कियेतें सिद्ध न होवे ? जो हठ करि पाछें न फिरे तो सब कछु सिद्ध होताहे ॥ जेसें बरफके बासणोंकों जलविषे डारियें तब जलकी एकताही होइ जातहे तेसें आत्मबोधकरि सब पदार्थोंकी एकता होजातीहे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! तुमनें कहा जो सुख दुःख सब मनहिविषे स्थितहे अरु मनकि वृत्ति नष्ट हुवे सब नष्ट हो जातीहे सो चपल वृत्ति केसें क्षय होवे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रघुकुल श्रेष्ठ आकाशके चंद्रमा में तुझकों मनकें उपशमकी युक्ति कहताहों जेसें सवारके वश घोडा होताहे तेसें मन तेरे वश रहेगा ॥ हे राम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जी! सब भूत ब्रह्महिनें उपजेहे सो तिनकि उत्पत्ति तीन प्रकारकीहे ॥ एकसात्विकि एकराजसी एक तामसी ॥ प्रथम जो शुद्ध चिन्मात्र ब्रह्मविषे कलना उठीहे तिस बाह्य मुखी फुरणे का नाम मन हुवा सो ब्रह्मारूपहे॥ सो ब्रह्मा संकल्परूप आगें संकल्प करत भया॥ जेसा संकल्प किया तेसा आगें देखत भया ॥ तिसनें इह भुवन आडंबर कलप्पा॥ तिसविषे जन्म मरण सुख दुःख मोह आदिक संसरणा कलप्या इस प्रकार अपणे आरंभ संयुक्त जेसें बरफका कणका समुद्रतें उपजकरि सूर्यके तेजकरी लीन हो जावे ॥ तेसें आरंभ करि निर्वाण होगया बहुरी संकल्पके वशतें उपजा बहुरी लीन हो गया ॥ इस प्रकार केइ अनंत कोटि ब्रह्मांड ब्रह्मातें उपज उपज लीन होगयेहे अरु केइ होवेंगे ॥ अब जेसें ब्रह्मतत्वतें उपजेहे अरु जेसें मुक्त होतेहे सो सुण ॥ हे रामजी! शुद्ध ब्रह्मतत्वतें प्रथम मन सत्ता उपजीहे सो अब आकाशकों चेतती भइ तब आकाश हुवा, तिसतें बहुरी पवन हुवा, बहुरी अग्नि भया तिसतें आगें जल हुवा, तिसकी दृढतातें पृथ्वी भइ तब चित्त शक्ति दृढ संकल्प करि पांचभूतकों प्राप्त भइ ॥ तब अंतःकरण जो सूक्ष्म प्रकृतिहे सो पृथ्वी, तेज, वायु, साथ मिलकरि धानविषे आय प्राप्त होतीहे तिसकों पुरुष भोजन करतेहे ॥ तब उह परिणाम होइ करि वीर्य, रुधिररूप गर्भविषे निवास करतिहे जिसतें पुरुष उपजताहे ॥ सो पुरुष जन्ममात्रतें वेदकों पढणे लगताहे ॥ बहुरी गुरुके निकट जाताहे बहुरी कम करिकें तिसकी बुद्धि विवेकसों चमतकारवान होजातिहे ॥ ग्रहण अरु त्याग शुभ अशुभविषे विचार उसकों उपजताहे॥ तब निर्मल अंतःकरण सहित पुरुष स्थित होताहे तब क्रमकरिकें सप्तभूमिका चंद्रमाकी नांइ तिसके चित्तविषे प्रकाशतियांहे ॥ इ०उ०प्र० सात्विकजन्मावतारोनाम एकनवतितमः सर्गः॥ ९१ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे सर्व शास्त्रोंके तत्ववेत्ता भगवन् कैसें उह सप्त भूमिका ज्ञानकीया निवास करणेहारीयां हे सो संक्षेपतें मुझकों कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी सप्तभूमिका अज्ञानकी हे अरु सप्त भूमिका ज्ञानकी हे तिनके अंतर्गत और अवस्था बहुत हे तिनकि संख्या कछु नहि ॥ ज्ञानकी अज्ञानकि असंख्य हे ॥ परंतु सप्तके अंतर्गत हे ॥ हे रामचंद्र आत्मरूपी वृछ हे अपणा पुरुषार्थ रूपी वसंत ऋतु हे ॥ तिसकरि दो प्रकारकी वेली उत्पत्ति होतिहे ॥ एक शुभ अरु एक अशुभ हे ॥ तिस पुरुषार्थरूपी रसके बढणेकरि फलकी प्राप्ति होतिहे ॥ अब ज्ञान किसकों कहते हे सो सुन प्रथम शुद्ध चिन्मात्रविषे चैत्य दृश्य फुरणेतें रहित होइकरि स्थित होना इसीका नाम ज्ञान हे अरु शुद्ध चिन्मात्र अद्वैतविषे अहं संवेदना उठती हे सो स्वरूपतें गिरना हे सोइ अज्ञान दशा हे ॥ हे रामचंद्र इह में तुझकों संक्षेपतें ज्ञान अरु अज्ञानका लक्षण कहाहे ॥ शुद्ध चिन्मात्रविषे जिनकी निष्टाहे अरु सत्य स्वरूपतें चलायमान नहि होता अरु राग दोष किसी विषे नहि सो ज्ञानीहे ॥ अरु एसें शुद्ध चिन्मात्र स्वरूपतें जो गिरे हे सो अज्ञानिहे जगतके पदार्थोंविषे मग्नहे सो अज्ञानिहे ॥ इसतें पर मोह कोउ नहि न हुवा हे ॥ यही परम मोहहे अरु स्वरूप स्थिति किसका नामहे ॥ एक अर्थकों छोडकें जो संवित और अर्थकों प्राप्त होताहे ॥ जेसें जाग्रतकों त्याग करि सुषुप्तिकों प्राप्त होतीहे तिसके मध्यविषे जो निर्मननरूप सत्ताहे तिसविषे स्थिति होना सो स्वरूप स्थिति कहा तिहे ॥ हे रामचंद्र भलि प्रकार सर्व संकल्प जिसके शांत हुएहे अरु शिलाके अंतरवत शून्यहे केसी शून्यताहे जो निद्रा अरु जडतातें रहितहे ॥ तिस सत्ताविषे स्थित होना सो स्वरूप स्थिति कहिहे ॥ केसा स्वरूपहे अहं त्वं आदिक फुरणेतें रहित हे ॥ भेद विकारतें रहितहे जडतें रहित अचैत्य चिन्मात्रहे सो आत्मस्वरूप कहाताहे ॥ तिस तत्वतें फिरकरि जो जीवोंकी अवस्था हुइहे सो सुण ॥ हे रामचंद्र एक बीज जाग्रत् हे १ जाग्रत् २ म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हाजागृत् ३ जागृत् सुपन ४ पंचम स्वप्न ५ सुपनजागृत् ६ सुषुप्ति ७ इह सप्त प्रकार मोहकि अवस्था हे॥ इनके अंतर्गत और अनेक हे मुख्य इह सप्त हे अब इनके लक्षन सुण॥ हे रामजी ! प्रथम जो शुद्ध चिन्मात्र अशब्द पद तत्वसों चैतनताका अहं हे तिसका भविष्यत जीव नाम होताहे ॥ सो आदि सर्व पदार्थोंका बीजरूप हे ॥ सो तिसका नाम बीज जागृत् हे॥ अरु तिसके अनंतर जो अहं अरु इह मेरा इत्यादिक प्रतीत दृढ होगइ जन्मांतरविषे भासे तिसका नाम जागृतहे ॥ अरु इह हे सो हे में हों इत्यादिक शब्द साथ तन्मय होना ओर जन्मांतरविषे जो इह दृढ प्रतीत होजावे तिसका नाम महा जागृतहे ॥ अरु महा जागृतविषे बैठे हुवे मन फुरता हे मनोराजविषे उह फुरणा द्रढ हो भासे अथवा अदृढ होवे ॥ सो जागृत सुपन कहाता हे॥ अरु दूसरा चंद्रमा भासे सीपीविषे रुपा भासे मृगतृष्णाका जल भासे इत्यादिक विपर्यय भासणा सो जागृत सुपन हे ॥ अरु निद्रा आइ तिसविषे मन फुरणे लगा ॥ नाना प्रकारके पदार्थ चित्तके फुरणे करि भासणे लगे जब जागी उठा तब कहता है में अल्पकालविषे केते पदार्थ देखे ॥ निद्राकाल विषे जो पदार्थ देखे थे तिनकों असत्यरूप जागृतमें जानत भया॥ तिस निद्राकालविषे फुरणेंका नाम सुपना हे ॥ अरु सुपना आया तिसविषे दीर्घकाल बीत गया प्रफुल्लित अपना बडा वपु देखत भया तिसविषे अहं मम भाव दृढ हुवा अरु आपकों सत्य जान करि जन्म मरण आदिक देखता भया इहां देह रहे अथवा न रहे तिसका नाम सुपन जागृत हे ॥ उह सुपना महा जागृत रूपकों प्राप्त होताहे ॥ इह सुपन जागृत हे अरु इस छ अवस्थाका जहां अभाव होजावे जडरूप होवे अरु भविष्यत होवे तिसका नाम सुषुप्ति हे तिस अवस्थाविषे घास पथर वृछ आदिक स्थित हे ॥ हे रामजी ! इह अज्ञानकी सप्तभूमिका कहियां हें तिनके एकएक विषे अवस्था भेद हे ॥ हे रामचंद्र सुपन चिरकाल करिकें जागृतरूप होजाताहे तिसके अंतर्गत और सुपन जागृत हे तिसके अंतर और हे इस प्रकार एक एकके अंतर अनेक हे इह मोहकी घनता हे ॥ तिसकरि जीव भ्रमते हें ॥ जेसें जल नीचैते नीचेंकों चल्या जाताहें तैसें मोहतें अनंतर मोहकों पातेंहें ॥ हे रामजी ! इह तुजकों अज्ञानकी अवस्था कहीयां हे ॥ नाना प्रकारका मोह भ्रम विकार हे तिनतें तूं बिचारि करि मुक्त हो ॥ जब तुं महात्मा पुरुष आत्मविचार करिकें निर्मल बोधवान होवेगा तब इस भ्रमकों तर जावेगा ॥ इति श्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे अज्ञानभूमिका वर्णनं नाम द्विनवतितमः सर्गः॥ ९२ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामचंद्र ! अब तूं सप्त भूमिका ज्ञानकी सुण॥ भूमिका कहीयें चित्तकी अवस्था ॥ सो ज्ञानकी भुमिका जाननेतें बहुरि मोहरूपी चिकडविषे डूबता नही॥ हे रामचंद्र ! मतो वाले भूमिकाकों बहुत प्रकार करि कहते हें ॥ अरु मेरा अभिमत पूछे तो इह हें ॥ इसकरि सुगम निर्मल बोधकों प्राप्त होताहे ॥ सरूपविषे जागणेका नाम ज्ञान हे तिस ज्ञानकी सप्त भूमिका हे ॥ अरु जो मुक्त इन सप्त भूमिकाके परहे सो विदेहमुक्त हे अब भूमिकाके नाम भेद सुण प्रथम शुभेच्छा, दूसरी विचारणा, तीसरी तनुमानसा, चतुर्थ सत्वापत्ति, पंचम असंशक्ता, षष्टम पदार्थाभावनी, सप्तम तुरीया॥ इसके सारकों प्राप्त हुवा बहुरी शोक नही करता अब इसका अर्थ श्रवण करु॥ हे रामजी ! जिसकों इह विचार फुरि आवे जो में महा मूढ हो रहाहों॥ मेरी बुद्धि सत्यविषे नहि अरु संसारकि ओर लगीहे॥ एसें विचारकरिकें सत शास्त्र अरु संतजनोंकी संगति वैराग पूर्वक सत्यकि इछा होवे इसका नाम शुभेच्छा हे॥ अरु सत शास्त्रोंकों विचारणा अरु संतोकी संगति अरु विषयोंतें वैराग सत्य मार्गका अभ्यास इन सहित सत्य आचारविषे प्रवर्तणा, सत्यकों सत्य जानना अरु असत्यकों असत्य जानकरि त्याग करणा इसका नाम विचारहे ॥ विचार अरु शुभेच्छा सहित तत्वका अभ्यास करणा अरु इंद्रियोंके विषयों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ते वैराग करणा अरु मन सूक्ष्म होताहे सो तीसरी भूमिकाका नाम तनुमानसाहे॥तीन भूमिकाका अभ्यास करणा अरु इंद्रियोंके अर्थतें वैराग करणा जगततें वैराग करणा ॥ अरु श्रवण मनन निदिध्यासन करि सत्य आत्माविषे स्थित होना इसका नाम सत्वापत्तिहे तामें सत्य आत्माका अभ्यास होताहे ॥ इह चार भूमिका जोहे संयम रूप तिसका फल जो है शुद्ध विभूति तिसफलविषे असंशक्त रहणा तिसका नाम असंशक्तिहे ॥ दृश्यका विस्मरण अरु आत्मारामीपना अंतर बाहिरतें नानाप्रकारके पदार्थोंका तुछ भासणा तिसका नाम पदार्थाभावनीहे सो छठी भूमिकाहे ॥ हे रामचंद्र ! चिर पर्यंत जो छठीभूमिकाका अभ्यास करि भेद कलनाका अभाव होजाताहे ॥ स्वरूपविषे दृढ परिणाम होताहे छ भूमिका जहां एकताकों प्राप्त होवे तिसका नाम तुरिया हे ॥ इह जीवन्मुक्तकी अवस्थाहे जीवन्मुक्त तुरीयापद विषे स्थितहे ॥ अर्थ यह जो तीन भूमिका जगतकी जाग्रत अवस्थामेंहे ॥ अरु चौथी तत्व ज्ञानीकीहे अरु पंचमी छठी अरु सातमी जीवन्मुक्तकी अवस्था हे अरु तुरियातीत पदविषे विदेह मुक्त स्थित होताहे ॥ हे रामचंद्र जो पुरुष महा भाग्यवानहे सो सप्तभूमिकाविषे स्थित होताहे ॥ सो आत्मारामी महा पुरुष परम पदकों प्राप्त होतेहे ॥ हे रामचंद्र जो जीवन्मुक्त पुरुषहे सो सुख दुःखविषे मग्न नहि होते ॥ शांतरूप होइकें अपणे प्रकृत आचारकों करतेहे अथवा नही करते तौभी तिनकों बंधन कछु नहि तिनकों क्रियाका बोध कछु नहि रहता ॥ जेसें सुषुप्ति पुरुषके निकट जाइकें क्रिया करे तब बोध कछु नहि तेसें उसकों क्रिया बोध कछु नहि ॥ सुषुप्तिवत उन्मीलित लोचन हे ॥ हे रामचंद्र ! जैसें सुषुप्त पुरुषकों रूप अरु इंद्रियां मनका अभाव होजाताहे तेसें सप्त भूमिकाविषे अभाव होजाताहे ॥ इह सप्त भूमिका ज्ञानकी ज्ञानवानकाविषयहे ॥ पशु वछ म्लेछवत जो मूर्ख हे अरु पापाचारीहे तिनके चित्तविषे इनका अधिकार नहि होता ॥ जिसका मन निर्मलहे तिसकों भूमिकाविषे अधिकार हे ॥ अरु पशु म्लेछ आदिकोंभी इनका अभ्यास होवे तब उहभी मुक्त होजातेहे ॥ इसविषे संशय कछु नहि हे रामचंद्र आत्मज्ञान करि जिनके रिदेकी गांठ टूट गइहे तिनकों संसार मृगतृष्णाके जलवत मिथ्या भासताहे उह मुक्तरूप हे ॥ अरु जो संसारतें विरक्त होइकरि इन भूमिकाविषे आएहे अरु मोहरूपी समुद्रकों तरे नहि पूर्ण पदकों प्राप्त नहि भये अरु सप्त भूमिकाविषे किसी भूमिकाविषे लगेहे सोभी आत्मपदकों पाइकरि पूर्ण आत्मा होवेंगे ॥ हे रामचंद्र एक सप्त भूमिकाकों प्राप्त हुएहे केइ एक भूमिकाकों केइ दूसरी, केइ तीसरीकों प्राप्त हुएहे ॥ केइ चोथी, कोइ पंचम, कोइ छठीकों अरु कोउ अर्ध भूमिकाकों प्राप्त भयाहे ॥ कोउ ग्रहविषे स्थितहे कोउ बनविषे हे, कोउ तपसी हे, कोउ अतीतहे इसतें आदि लेकरि सो पुरुष धन्यहे अरु बडे सूरमे उहिहे ॥ जो बडे दिगपाल हस्तिहे अरु बडे बडे सूरमेहे सो तिनके सूरत्व आगें तृणवतहे काहेते जो ओर सूरत्व सुगमहे ॥ परंतु इंद्रियांरूपी शत्रुकों जीतणा कठिनहे जिनों पुरुषोनें इनकों जीताहे सो बडे सूरमेहे ॥ जिस पुरुषनें किसी भूमिकाकों जीतीहे सो वंदना करणे जोगहे तिसकों चक्रवर्ति राजा जानना ॥ राज अरु और बडा ईश्वर विभूति सब तिनकों तृणवत हे उह परमपदकों प्राप्त हुवेहे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्ति करणे ज्ञानभूमिका उपदेशो नाम त्रिनवतितमः सर्गः ॥ ९३ ॥ ॥ ७ ॥

वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जेसें सुवर्नविषे भूषण फुरे अरु सो अपणा सुवर्णभाव भूलिजावे अरु कहे में भूषन हों तेसें चित्त संवेदन जिस स्वरूपतें फुयाहे तिसतें भूलिकरि अहंवेद ना हुइहे तातें अहंकार रूप धराहे जो में इह कछु हों ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् सुवर्नविषे जो भूषन होतेहे सो में जानता हों परंतु आत्माविषे अहंभाव केसें होताहे सो कहो !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामचंद्र अहंकार आदिकोंका जो होणाहे सो असत्यरूप आगमापाइ हे तिसका कछु भिन्न रूप नहि इह आत्माका चमत्कार हे ॥ वास्तवतें द्वैत कछु नहि जे सें समुद्रविषे अधऊर्ध्व जलहि जलहे और कछु नहि तेसें परम तत्वविषे और विभाग कल्पना कोउ नहि शांतरूप हे ॥ जेसे समुद्रविषे द्रवताकरिकें तरंग आदिक भासतेहें तेसें संवेदना करिकें जगत भम भासतेहें आत्माविषे नानाप्रकारका भम भासताहे परंतु और कछु नहि॥ जेसें सुवर्णविषे भूषन भासतेहें, जेसें जलविषे द्रवता और वायुविषे स्पंद भासतेहें तेसें आत्मा विषे जगत भासताहें ॥ फुरणेंतें रहित शांत रूप परम पद हे ॥ हे रामजी! जेसें मृत्तिकाकी सेना होतिहे तिसविषे हस्ति घोडा पशुहि होतेहें सो सब मृत्तिकारूप हे इतर कछु नहि तेसें सब जगत् आत्मरूप हे भमकरिकें नानात्व भासताहे आत्माही पूर्णरूप हे आपविषे स्थितहे ॥ जेसें आकाशविषे आकाश स्थित हे तेसें ब्रह्मविषे ब्रह्म स्थित हे सत्यविषे सत्य स्थित हे ॥ जेसें दर्पणविषे प्रतिबिंब होताहे तेसें आत्माविषे जगत् हे ॥ जेसें सुपनेविषे दूर पदार्थ अदूर भासतेहें अरु अदूर दूर भासतेहें सो भममात्रहे तेसें आत्माविषे विपर्यय दृष्टिकरि जगत् भा सताहे॥ हे रामजी! असत्य जगत् भमकरिकें सतरूप भासताहे वस्तुतें असत्यरूप हे जेसें दर्पणविषे नगरका प्रतिबिंब होवे, जेसें मृगतृष्णाका जल होताहे जेसें आकाशमें दूसरा चंद्रमा भासताहे, तेसें इह जगत् आत्माविषे भासताहे ॥ जेसें इंद्रजालके जोगकरि आकाशविषे नगर भासे तेसें इह असत्यरूप जगत् अज्ञानकरिकें सत्य भासताहे ॥ जबलग आत्म विचार रूपी अग्निकरी अविद्यारूपी वल्लीकों तूं नही जलावेगा तबलग जगत्रूपी बेल निवृत्त न होवेगी ॥ अनेक प्रकारके सुख दुःख देखावेगी॥ जब विचारकरिकें मूल सहित इसकों जलावे गा तब शांतपदकों प्राप्त होवेगा ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उत्पत्ति प्रकरणे युक्तोपदेशो नामचतुर्नवतितमःसर्गः ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामचंद्र ! जेसें सुवर्णविषे भूषन होतेहे सो मिथ्यारूप हे तेसें आत्मविषे अहं त्वं आदिक अविद्यारूप हे ॥ जो लवणकी कथा तेनें सुनीहे सो अब बहुरी सु ण ॥ हे रामजी ! उह जो लवण राजा था सो दूसरे दिन विचार करने लगा जो इह मुजकों भम भास्याहे परंतु सत्यरूप होकरि देख्याहे ॥ देश नगर मनुष्य आदिक पदार्थ मुझकों प्र त्यक्ष दृष्ट आएहे ॥ बहुरी जाएकरि देखों जो केसें वार्ताहे ? एसें विचार करिकें दिग्विजय मान करिकें मंत्री अरु सेनाकों साथ लेकरि दक्षिण दिशाकि ओर चल्या ॥ देशकों लंघता लंघता विंध्याचल पर्वतकों जाय प्राप्त हुवा ॥ पूर्व अरु दक्षणके समुद्रके मध्यविषे अटवीकों भ्रमता भ्रमता जाय प्राप्त हुवा जेसें आकाश विथीयां विषे सूर्य भ्रमताहे तेसें राजा भम ता देखत भया ॥ जो वृत्तांत अरु देश ग्राम पदार्थ भ्रमविषे देखेथे सो प्रत्यक्ष देखत भया ॥ तब विस्मयकों प्राप्त भया ॥ हे दैव इह क्याहे जो कछु में भम विषे देखाथा सो अब मुझ कों प्रत्यक्ष भासताहे यह बडा आश्चर्यहे ॥ एसें विचारकें आगें गया क्या देख्या जो अग्निकरि बृछ जले हे अरु अकाल दुर्भीक्ष पडाथा ॥ तिसकरि जो संबंधी देखेथे तिनकी चेष्टाके स्थान देखे अरु उनकी कथा सुणी ॥ इस प्रकार देखते देखते आगें गया क्या देख्या जो चंडाल शरीरकी सासु बेठी रुदन करती हे ॥ हे दैव मेरा पुत्र कहां गया ? हे पुत्र तुम कहां गए? मेरी कन्या जीर्ण देह होगइहे ॥ चंद्रमाकी नांइं जिसका मुख एसा राजकुमार था अरु मृगनेनी मेरी बेटीथी अरु दुहित्रे दुहित्रीयां थीयां सो दुर्भिक्षता करि सब जातेरहे ॥ तिनके इह खाणेके पदार्थहे चेष्टाके स्थान हे रतिकाकी माला कंठविषे डारतेथे अरु चेष्टा करतेथे जीवोंके मांस खातेथे अरु रुधिर पान करतेथे उह कहां गये ? इसतें लेकरि पुत्र पुत्री भर्ता जवा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इका नाम लेकरि रुदन करे और लोक आय बेठे उहभी रुदन करे ॥ तब राजानें उसकों रुदननें छुडाइ अरु वृत्तांत पुछने लगा जो तूं किस निमित्त रुदन करतिहे किस साथ तरा वि
योग हूवाहे ?॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे चांडालिशोचनावर्णनं नाम पंचनवतितमःसर्गः ॥ ९५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ चांडालीउवाच ॥ हे राजन् ! एक का
ल वर्षाहोणेते रहिगइ काल पडा जीवोंकों बडा दुःख प्राप्त भया ॥ सब मेरे पुत्र अरु दुहित्रे दुहित्रियां जवाइ भर्ता आदिक बांधव थे सो निकस गये ॥ वह कडुं कष्टकों पावत मरिग
ये ॥ उनके वियोग करिकें में दुःखी होइ करि रुदन करतीहों तिनों बिना में शून्य होगइहों ॥ जेसें बिछुरी हुइ कुंज कुरलातीहे तेसें में कुरलातीहों ॥ हे रामचंद्र ! जब इस प्रकार चां
डालीनें कहा तब राजा विस्मयकों प्राप्त भया अरु मंत्रीके मुखकी ओर देखणे लगा जेसें कागद उपर पुतली होतीहे तेसें राजा होगया ॥ विचारे आश्चर्यमान होवे ॥ उस चांडालिसों
वारंवार पूछे उह बहुरी कहे॥ ओर राजा आश्चर्यमान होवे तब राजा उसकों यथायोग धन देकरि चिरपर्यंत रक्षा ॥ बहुरी अपने राज मंदिरकों आत भया ॥ जब प्रातःकाल हुवा तब
सभाविषे राजा मुजकों पूछत भया ॥ हे मुनीश्वर ! इह सुपना मुजकों प्रत्यक्ष कैसें भया ॥ इसकों देखकरि में आश्चर्यमान हुवाहों ॥ जब इस प्रकार राजानें कहा तब में प्रश्नानुसार उस
कों युक्तिसों उत्तर दीया उसके चित्तका संशय दूर कीया ॥ जेसें मेघकों वायु दूर करे सो तुजकों कहताहों हे रामजी ! अविद्या एसी हे जो असत्यकों शीघ्रही सत्य दिखाती हे अरु
सत्यकों असत्य करि दिखातीहे बडे भ्रमकों दिखाणेहारीहे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! सुपन सत्य केसें हुवा इह मेरे चित्तविषे संशय भारि स्थित भयाहे तिसकों दूर करो ॥
॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस विषे क्या आश्चर्यहे ? अविद्याविषे सब कछु बनता हे॥ सुपनेविषे तूं प्रत्यक्ष देख जो घटतें पट होजाताहे अरु पटतें घट होजाताहे स्वप्नमें अरु मृत्यु
विषे मूर्छाके अनंतर बुद्धि विपर्यय होजातीहे वासना करि वेष्टित जिनका चित्त हे तिनकों जैसा संवेदन फुरता हे तेसें भासता हे ॥ हे रामजी ! जिनका चित्त स्वरूपतें गिर्या हे तिनकों
अविद्या अनेक भ्रम दिखातिहे ॥ हे रामजी जैसें मद्यपान करणेवाला अरु विषपीणेवाला भ्रमकों प्राप्त होताहे ॥ तेसें अविद्या करि जीव भ्रमकों प्राप्त होताहे ॥ एक और राजा था ति
सकों यह अवस्था प्राप्त हुइथी ॥ सो सब लवण राजाके चित्तविषे फुरआइ जेसें उसकी चेष्टा हुइथी तेसें इसकों फुर आइ ॥ तब जानत भया जो में इह क्रिया करीहे ॥ जेसें अभोक्ता
पुरुष आपकों सुपनेविषे भोक्ता देखताहे जो में राजा हुवा हों अरु तृप्त हों अरु भुखा सोया हों अरु सोया तो अकर्ता रूप अरु आपकों कर्ता देखताहें ॥ जो इह क्रिया में करी हे ॥
सुपने विषे जेसें देशांतरकों जावे तब अचलरूपहि चलता भासताहे तैसें लवणकों फुर आया सो प्रतिभाभास मात्र हे ॥ सभाविषे बेठे चंडालि चेष्टा लवणकों फुर आइ अथवा वि
ध्याचल पर्वतके चंडालोंकों लवणकी प्रतिमा फुरी ॥ लवणके चित्तका भ्रम उनकों दृढ हो गयाहे ॥ जेसें एकहि सदृश भ्रम अनेककों फुर आताहे, सुपन सदृश होताहे, एकहि जेवरी
विषे अनेककों सर्प भासताहे ॥ इसी प्रकार अनेक जीवोंकों एक भ्रम अनेक हो भासताहे ॥ हे रामजी ! जेते कछु पदार्थ भासते हें तिसकी सत्तारूप संवेदन हे जेसें तिसविषे संकल्प
दृढ होताहे तैसें होकरि भासताहे ॥ जो पदार्थ सत्यरूप होइ भासता हे सो सत्य होताहे अरु जो असत्यरूप होइ भासताहे सो असत्य हो जाताहे सबहि पदार्थ संवेदनरूप हे ॥ ती
नोंकाल संवेदन करि उपजे हे इनका बीज संवेदन हे ॥ सब पदार्थ अविद्यारूप हे अरु जेसें रेतिविषे तेल हे तेसें आत्मविषे अविद्याहे ॥ आत्माकों अविद्याका संबंध कदाचित् नहि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काहेतें जो संबंध तिसका होताहे जो समरूप होताहे ॥ जेसें काष्ठ अरु लाखका संबंध होताहे सो आकार सहितहे ॥ जो आकारतें रहित होवे तिसका संबंध केसें होवे ? जेसें प्रकाश अरु तमका संबंध नही होता ॥ चैतन साथ चैतनका संबंध होताहे सो सजातीयरूपका संबंध होताहे ॥ विजातीयका संबंध नहि होता ॥ तातें अविद्यारूप देहकों आत्मासाथ संबंध नही ॥ जो जड साथ आत्माका संबंध होवे तब आत्मा जड होवे॥ सोतो आत्मा सदा चैतन रूप हे सर्वदा अनुभव करिकैं प्रकाशताहे तिसकों जड केसें कहीयें ॥ जैसें स्वादकों जिव्हा ग्रहण करतिहे और अंग नहि करते तेसें चैतन साथ चैतनकी, जडसाथ जडकि, जलसाथ जलकी, माटीसाथ माटीकी, अग्निसाथ अग्नीकी, प्रकाश साथ प्रकाशकी; तम साथ तमकी, इसी प्रकार सर्व पदार्थोंकी सजातीय साथ एकता होती हे विजातीयकी नहीहोति॥ तातें सब चैतन्याकाश हे और पाषाणादिक दृश्य वर्ग कोउ नहि ॥ भ्रम करिकें इनके आकार भान रूप भासते हे ॥ जैसें स्वर्न बुद्धिकों त्यागकरि नानाप्रकारके भूषन भासतेहे तैसें जब अहंवेदना आत्माविषे फुरति हे तब अनेकरूप होइकरि विश्व भासताहे॥ जेसें सुवर्नकी ओर देखीये तब सर्व भूषन स्वर्नरूप भासते हैं॥ तेसे जब ब्रह्मसत्ताकी ओर देखीयें तब सर्व जगत् ब्रह्मरूप भासताहे॥ जेसें मृतिकाकि सेना बालककों अनेकरूप भासती हे अरु बुद्धिवानकों एक मृत्तिकारूप हे तेसें अज्ञानीकों इह जगत नानारूप भासताहे ज्ञानवानकों एक ब्रह्मसत्ताहि भासती हे॥ सोकोन ब्रह्म हे जो द्रष्टा दर्शन दृश्य जिसविषे फुरे हे॥ इनके मध्य अरु इनतें रहित जो सत्ता हे सो ब्रह्मसत्ताहे ॥ हे रामचंद्र जो सत्ताअजडरूपहे अरु सिलाके कोशवत् निर्विकल्प हे तन्मयरूपहे॥ तिसविषे जब स्थित होवे॥ जब समाधिविषे रहे अथवा उत्पत्ति न होवेगा तब तुजकों सब उहि रूप भासेगा॥ हे रामचंद्र ! जो पुरुष निर्मन सत्ताविषे स्थित भयाहे सो शरीरके इष्टविषे हर्षवान नही होता अरु अनिष्टविषे शोकमान नहि होता ॥ निर्मन रूप होइ करि स्थित होताहे॥ जेसें भविष्यत नगरविषे जीव बसतेहे अरु अनेक चिंता करि संयुक्त भासतेहे सो सब तिसके चित्तविषे स्थित होतेहे॥ जेसें पुरुष देशांतरकों जातेहे ताकों अनेक पदार्थ मार्गविषे इष्ट अनिष्टरूप भासते हे परंतु जहां जाणाहे तिसकि ओर वृत्ति रहतिहे, मार्गके पदार्थोंविषे उसकों राग द्वेष नहि होता तेसें तूं होजा॥ जेसें पथरसों जल नहि निकसता, जेसें जलसों अग्नि नहि निकसता तेसें आत्माविषे चित्त नहि ॥ अविचार भ्रमकरिकें चित्त जानताहे विचारकरिकें नहि पाता ॥ जेसें भ्रमकरिकें आकाशविषे दुसरा चंद्रमा भासताहे तेसें आत्माविषे चित्त भासताहे वास्तवतें कछु नहि ॥ सो सत्ता नित्य शुद्ध परमानंद स्वरूप अपणे आपविषे स्थित अनुभव रूप हे तिसके विस्मरण करिकें दुःखकों प्राप्त होताहे सो महामूर्ख हे ॥ तिसकों अमृतरूपी चंद्रमाविषे अग्नि प्राप्त होतिहे तातें हे रामचंद्र तूं सावधान हो ॥ इह जो फुरणा उठताहे इसिका नाम चित्तहे और तो चित्त कोउ नहि ॥ इस चित्तकों दूरतें त्याग करे जो तूं हे सोइ स्थितहे ॥ हे रामचंद्र असत्यरूप चित्तहि संसारहे तिसकों असत्य जानकें त्याग नहि करताहे ॥ सो आकाशके बनविषे विचरताहे तिसकों धिक्कारहे ॥ अरु जिसका मननभाव नष्ट हुवाहे सो महा पुरुष संसारके पारकों प्राप्त हुएहे परमपदनिश्चित्त रूपहे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे चित्ताभावप्रतिपादनं नाम षण्नवतितमःसर्गः ॥ ९६ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इहं पूरुष भूमिकाकों ज्यों प्राप्त होताहे तिनका क्रम सुण ॥ प्रथम जन्मतें पुरुषकों कछुक बोध होताहे बहुरी क्रमकरिकें बडा होकरि संतोंकी संगति करताहे॥ सदा सदृशरूप जो संसारका प्रवाह हे तिसके तरनेकों सत्य शास्त्र अरु संतजनोंकी संगति विना समर्थ नहि होता ॥ जब संतोका संग अरु सत शास्त्रोंका विचारकरणे लगताहे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब इसकों ग्रहण अरु त्यागकि बुद्धि उपजतिहे जो इह कर्तव्यहे अरु इह त्यागणे जोगहे इह विचार उपजताहे इसका नाम शुभेछाहे॥ जब इह इछा हुइ तब शास्त्र द्वारा इसकों विचार उपजत्राहे ॥ जो इह शुभहे अरु इह अशुभहे ॥ शुभकों ग्रहण करणा अशुभकों त्याग करणा ॥ यथा शास्त्र विचरणा इसका नाम विचारहे ॥ जब सम्यक विचार दृढ होताहे तब मिथ्या रूप संसारकि वासना त्यागता हे अरु सत्यविषे स्थित होताहे इसका नाम तनुमानसाहे ॥ जब संसारकी वासना क्षीण होतिहे अरु सत्यका दृढ अभ्यास होताहे तब तिस वैराग अरु अभ्यास करि सम्यक ज्ञान उपजताहे आत्माका साक्षातकार होताहे ॥ तिसका नाम सत्वापत्तिहे मनतें वासना नष्ट होजातिहे अरु तिसकरि सिद्धि आदिक पदार्थ प्राप्त होतेहे तिनकी प्राप्ति विषेभी संशक्ति नहि होती स्वरूपविषे सदा सावधान रहताहे सिद्धि आदिक पदार्थ प्रारब्ध करि प्राप्त होतेहे तिनकों सुपनरूप जानताहें ओर कर्मोंके फलविषे बंधमान नहि होता इसका नांम असंशक्तिहे ॥ इसके अनंतर मनकी तनुता होगइहे अरु स्वरूपकी ओर चित्तका परिणाम होताहे तब दृढ परिणाम करिकें व्यवहारकाभी अभाव होजाताहे, जो पलपलविषे कर्म करणा अथवा प्रारब्ध वेग करि करताहे परंतु उसके चित्तविषे फुरणा कछु नहि फुरता, मन क्षीणभावकों प्राप्त होताहे कर्ता हूवाभी उह कछु करता नहि, देखताहे तोभी नहि देखता अर्धसुषुप्तवत् होताहे कर्तव्यकी भावना नहि फुरति मन नहि फुरता इसका नाम पदार्थाभावनी योगभूमिका हे, इसविषे चित्त लीन होजाताहे ॥ इस अवस्था विषे जो अभ्यास होताहे सो स्वाभाविक चित्तका जब केताक काल इस अभ्यासविषे वितीत होताहे अरु अंतरतें पदार्थोंका अभाव दृढ होतेहे तब तुरीयारूप होताहे तब जीवन्मुक्त कहताहे ॥ इष्टकों पायकें हर्षवान नहि होता अरु तिसकी निवत्तिविषे शोकवान नही होता केवल विगतसंदेह होताहे सो उत्तम पदकों प्राप्त होताहे ॥ हे रामचंद्र तुंभी अब ज्ञात ज्ञेय हुवा हे जो कछु जानणे जोग हे सो तुजनें ज्योंका त्यों जान्याहे ॥ सब पदार्थोंकि भावना तेरी तनुताकों प्राप्त भइहे अब तेरे साथ शरीर रहे अथवा न रहे हर्ष शोकतें रहित तुं निरामय आत्मा हे तूं स्वछ आत्मतत्वविषे स्थित हे सर्वगत सदा उद्योतरूप हे ॥ जन्ममरण जरा सुख दुःखतें रहित तुं आत्मरूप हे बोधरूप शोकतें रहित हे ॥ तूं अद्वैतरूप अपणे आपविषे स्थित हे॥ देह उदयभी होताहे अरु लीनभी होजाताहे ॥ देशकाल वस्तुके भेदतें रहित जो आत्माहे सो उदय अरु अस्त केसें होवे ॥ हे रामचंद्र ! तूं अबिनाशीहे आपकों नाशरूप जानकरी शोक कायकों करताहे ? तूं अमृत स्वच्छरूप हे ॥ जेसें घटके फूटणेकरि घटाकाश नाश नहि होता तेसें शरीरके नाश हुवे तूं नाश नहि होता ॥ जेसें सूर्यकि किरणांके जाणेतें मृगतृष्णाके जलका नाश होजाताहे, कछु किरणां नाश नहि होता तेसें ॥ हे रामचंद्र जेते कछु जगतके पदार्थ भासतेहे सो असत्यरूप हे तिसकी वासना भांतिकरिके होतिहे तूं तो अद्वैत रूप हे यह सब तेरी छाया मात्रहे ॥ तूं किसकि वांछा करताहे शब्द स्पर्श रूप रस गंध इह जो पांचों विषय रूप दृश्यहे सो तुजतें भिन्न रंजक मात्रभी नहि सब तेरा स्वरूप हे ॥ तूं भ्रमकों मत प्राप्त हो॥ हे रामजी ! सर्व शक्ति आत्माहे सोइ आभास करिकें अनेक रूप करिकें भासताहे ॥ जेसें आकाशविषे शून्यता शक्तिहे सो आकाशतें भिन्न नहि तेसें आत्माविषे सर्व शक्ति हे ॥ जो जगत् द्वैतरूप होइकरि भासताहे सोइ चित्तकरिके दृढ हुवाहे ॥ सो तीन प्रकारका क्रमकरि त्रयलोक जगत् जीवकों भ्रम हुवाहे ॥ एक सात्विक, एक राजस, एक तामस; जब इन तीनोंको उपशम होवे तब कल्याण होताहे ॥ जब वासना क्षय होवे तब तिसके कर्म क्षय होजातेहे तिस करिभि भ्रम नाश होजाताहे चित्तके संसरणेका नाम वासनाहे सो कर्म

130

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काहेतें जो संबंध तिसका होताहै जो समरूप होताहै ॥ जैसें काष्ठ अरु लाखका संबंध होताहै सो आकार सहितहै ॥ जो आकारतें रहित होवे तिसका संबंध कैसें होवे ! जैसें प्रकाश अरु तमका संबंध नहीं होता ॥ चैतन साथ चैतनका संबंध होताहै सो सजातीयरूपका संबंध होताहै ॥ विजातीयका संबंध नहि होता ॥ तातें अविद्यारूप देहकों आत्मासाथ संबंध नहीं ॥ जो जड साथ आत्माका संबंध होवे तब आत्मा जड होवे ॥ सोतो आत्मा सदा चैतन रूप है सर्वदा अनुभव करिकें प्रकाशताहै तिसकों जड कैसें कहीयें ॥ जैसें स्वादकों जिह्वा ग्रहण करतिहै और अंग नहि करते तैसें चैतन साथ चैतनकी, जडसाथ जडकि, जलसाथ जलकी, माटीसाथ माटीकी, अग्निसाथ अग्नीकी, प्रकाश साथ प्रकाशकी; तम साथ तमकी, इसी प्रकार सर्व पदार्थोंकी सजातीय साथ एकता होती है विजातीयकी नहीहोति ॥ तातें सब चैतन्याकाश है और पाषाणादिक दृश्य वर्ग कोउ नहि ॥ भ्रम करिकें इनके आकार भान रूप भासते है ॥ जैसें स्वर्ण बुद्धिकों त्यागकरि नानाप्रकारके भूषन भासतेहै तैसें जब अहंवेदना आत्माविषे फुरति है तब अनेकरूप होइकरि विश्व भासताहै ॥ जैसें सुवर्णकी ओर देखीये तब सर्व भूषन स्वर्णरूप भासते हैं ॥ तैसे जब ब्रह्मसत्ताकी ओर देखीयें तब सर्व जगत् ब्रह्मरूप भासताहै ॥ जैसें मृत्तिकाकि सेना बालककों अनेकरूप भासती है अरु बुद्धिवानकों एक मृत्तिकारूप है तैसें अज्ञानीकों इह जगत नानारूप भासताहै ज्ञानवानकों एक ब्रह्मसत्ताहि भासती है ॥ सोकोन ब्रह्म है जो द्रष्टा दर्शन दृश्य जिसविषे फुरे है ॥ इनके मध्य अरु इनतें रहित जो सत्ता है सो ब्रह्मसत्ताहै ॥ हे रामचंद्र जो सत्ताअजडरूपहै अरु सिलाके कोशवत् निर्विकल्प है तन्मयरूपहै ॥ तिसविषे जब स्थित होवे ॥ जब समाधिविषे रहे अथवा उत्पत्ति न होवेगा तब तुजकों सब उहि रूप भासेगा ॥ हे रामचंद्र ! जो पुरुष निर्मन सत्ताविषे स्थित भयाहै सो शरीरके इष्टविषे हर्षवान नहीं होता अरु अनिष्टविषे शोकमान नहि होता ॥ निर्मन रूप होइ करि स्थित होताहै ॥ जैसें भविष्यत नगरविषे जीव बसतेहै अरु अनेक चिंता करि संयुक्त भासतेहै सो सब तिसके चित्तविषे स्थित होतेहै ॥ जैसें पुरुष देशांतरकों जातेहै ताकों अनेक पदार्थ मार्गविषे इष्ट अनिष्टरूप भासते है परंतु जहां जाणाहै तिसकि ओर वृत्ति रहतिहै, मार्गके पदार्थोंविषे उसकों राग द्वेष नहि होता तैसें तूं होजा ॥ जैसें पथरसों जल नहि निकसता, जैसें जलसों अग्नि नहि निकसता तैसें आत्माविषे चित्त नहि ॥ अविचार भ्रमकरिकें चित्त जानताहै विचारकरिकें नहि पाता ॥ जैसें भ्रमकरिकें आकाशविषे दुसरा चंद्रमा भासताहै तैसें आत्माविषे चित्त भासताहै वास्तवतें कछु नहि ॥ सो सत्ता नित्य शुद्ध परमानंद स्वरूप अपणे आपविषे स्थित अनुभव रूप है तिसके विस्मरण करिकें दुःखकों प्राप्त होताहै सो महामूर्ख है ॥ तिसकों अमृतरूपी चंद्रमाविषे अग्नि प्राप्त होतिहै तातें हे रामचंद्र तूं सावधान हो ॥ इह जो फुरणा उठताहै इसिका नाम चित्तहै और तो चित्त कोउ नहि ॥ इस चित्तकों दूरतें त्याग करे जो तूं है सोइ स्थितहै ॥ हे रामचंद्र असत्यरूप चित्तहि संसारहै तिसकों असत्य जानकें त्याग नहि करताहै ॥ सो आकाशके वनविषे विचरताहै तिसकों धिक्कारहै ॥ अरु जिसका मननभाव नष्ट हुवाहै सो महा पुरुष संसारके पारकों प्राप्त हुएहै परमपदनिश्चित्त रूपहै ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे चित्ताभावप्रतिपादनं नाम षण्नवतितमःसर्गः ॥ ९६ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इह पूरुष भूमिकाकों ज्यों प्राप्त होताहै तिनका क्रम सुण ॥ प्रथम जन्मतें पुरुषकों कछुक बोध होताहै बहुरी क्रमकरिकें बडा होकरि संतोंकी संगति करताहै ॥ सदा सदृशरूप जो संसारका प्रवाह है तिसके तरनेकों सत्य शास्त्र अरु संतजनोंकी संगति विना समर्थ नहि होता ॥ जब संतोका संग अरु सत शास्त्रोंका विचारकरणे लगताहै

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब इसकों ग्रहण अरु त्यागकि बुद्धि उपजतिहे जो इह कर्तव्यहे अरु इह त्यागणे जोगहे इह विचार उपजताहे इसका नाम शुभेछाहे॥ जब इह इछा हुइ तब शास्त्र द्वारा इसकों विचार उपजताहे ॥ जो इह शुभहे अरु इह अशुभहे ॥ शुभकों ग्रहण करणा अशुभकों त्याग करणा ॥ यथा शास्त्र विचरणा इसका नाम विचारहे ॥ जब सम्यक विचार दृढ होताहे तब मिथ्या रूप संसारकि वासना त्यागता हे अरु सत्यविषे स्थित होताहे इसका नाम तनुमानसाहे ॥ जब संसारकी वासना क्षीण होतिहे अरु सत्यका दृढ अभ्यास होताहे तब तिस वैराग अरु अभ्यास करि सम्यक ज्ञान उपजताहे आत्माका साक्षातकार होताहे ॥ तिसका नाम सत्वापत्तिहे मनतें वासना नष्ट होजातिहे अरु तिसकरि सिद्धि आदिक पदार्थ प्राप्त होतेहे तिनकी प्राप्ति विषेभी संशक्ति नहि होती स्वरूपविषे सदा सावधान रहताहे सिद्धि आदिक पदार्थ प्रारब्ध करि प्राप्त होतेहे तिनकों सुपनरूप जानताहें ओर कर्मोंके फलविषे बंधमान नहि होता इसका नांम असंशक्तिहे ॥ इसके अनंतर मनकी तनुता होगइहे अरु स्वरूपकी ओर चित्तका परिणाम होताहे तब दृढ परिणाम करिकें व्यवहारकाभी अभाव होजाताहे, जो पलपलविषे कर्म करणा अथवा प्रारब्ध वेग करि करताहे परंतु उसके चित्तविषे फुरणा कछु नहि फुरता, मन क्षीणभावकों प्राप्त होताहे कर्ता हूवाभी उह कछु करता नहि, देखताहे तोभी नहि देखता अर्धसुषुप्तवत् होताहे कर्तव्यकी भावना नहि फुरति मन नहि फुरता इसका नाम पदार्थाभावनी योगभूमिका हे, इसविषे चित्त लीन होजाताहे ॥ इस अवस्था विषे जो अभ्यास होताहे सो स्वाभाविक चित्तका जब केताक काल इस अभ्यासविषे वितीत होताहे अरु अंतरतें पदार्थोंका अभाव दृढ होतेहे तब तुरीयारूप होताहे तब जीवन्मुक्त कहताहे ॥ इष्टकों पायकें हर्षवान नहि होता अरु तिसकी निवृत्तिविषे शोकवान नही होता केवल विगतसंदेह होताहे सो उत्तम पदकों प्राप्त होताहे ॥ हे रामचंद्र तुंभी अब ज्ञात ज्ञेय हुवा हे जो कछु जानणे जोग हे सो तुजनें ज्योंका त्यों जान्याहे ॥ सब पदार्थोंकि भावना तेरी तनुताकों प्राप्त भइहे अब तेरे साथ शरीर रहे अथवा न रहे हर्ष शोकतें रहित तुं निरामय आत्मा हे तूं स्वछ आत्मतत्वविषे स्थित हे सर्वगत सदा उद्योतरूप हे ॥ जन्ममरण जरा सुख दुःखतें रहित तुं आत्मरूप हे बोधरूप शोकतें रहित हे ॥ तूं अद्वैतरूप अपणे आपविषे स्थित हे॥ देह उदयभी होताहे अरु लीनभी होजाताहे ॥ देशकाल वस्तुके भेदतें रहित जो आत्माहे सो उदय अरु अस्त केसें होवे ॥ हे रामचंद्र ! तूं अबिनाशीहे आपकों नाशरूप जानकरी शोककायकों करताहे ? तूं अमृत स्वच्छरूप हे ॥ जेसें घटके फूटणेकरि घटाकाश नाश नहि होता तेसें शरीरके नाश हुवे तूं नाश नहि होता ॥ जेसें सूर्यकि किरणांके जाणेतें मृगतृष्णाके जलका नाश होजाताहे, कछु किरणां नाश नहि होता तेसें ॥ हे रामचंद्र जेते कछु जगतके पदार्थ भासतेहे सो असत्यरूप हे तिसकी वासना भांतिकरिके होतिहे तूं तो अद्वैत रूप हे यह सब तेरी छाया मात्रहे ॥ तूं किसकि वांछा करताहे शब्द स्पर्श रूप रस गंध इह जो पांचों विषय रूप दृश्यहे सो तुजतें भिन्न रंजक मात्रभी नहि सब तेरा स्वरूप हे ॥ तूं भ्रमकों मत प्राप्त हो॥ हे रामजी ! सर्व शक्ति आत्माहे सोइ आभास करिकें अनेक रूप करिकें भासताहे ॥ जेसें आकाशविषे शून्यता शक्तिहे सो आकाशतें भिन्न नहि तेसें आत्माविषे सर्व शक्ति हे ॥ जो जगत् द्वैतरूप होइकरि भासताहे सोइ चित्तकरिके दृढ हुवाहे ॥ सो तीन प्रकारका क्रमकरि त्रयलोक जगत् जीवकों भ्रम हुवाहे ॥ एक सात्विक, एक राजस, एक तामस; जब इन तीनोंको उपशम होवे तब कल्याण होताहे ॥ जब वासना क्षय होवे तब तिसके कर्म क्षय होजातेहे तिस करिभि भ्रम नाश होजाताहे चित्तके संसरणेका नाम वासनाहे सो कर्म

130

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संसार माया मात्रहे इसके नष्ट हुए सब शांत होजाताहे ॥ हे रामजी ! इह संसार घटियंत्रकी नांइं हे जीवरूपी टिड वासनारूपी रसी साथ बांधे हुवे भमतेहे ॥ तूं आत्मविचाररूपी शस्त्रकरिकें जतनसों इसकों काट ॥ अरु अविद्याकों जबलग जानता नहि तबलग इह बडे मोह भमकों दिखातिहे अरु जब इसकों जानताहे तब बडे सुखकों प्राप्त करतिहे ॥ अर्थ यह जो जबलग अविद्याकों वस्तुतें नहि जानता जो क्याहे तबलग संसार सत्य भासताहे तिसविषे अनेक भ्रम भासतेहे जब इसकों स्वरूपतें जान्या जो वस्तु कछु नहि भमरूप हे तब संसार वृत्तिकों त्याग करताहे अरु स्वरूपकों प्राप्त होताहे ॥ इह संसारभमतें उपजाहे अरु उसीकरि भोग भोगता हे लीला करताहे बहुरी ब्रह्महीविषे लीन होजाताहे ॥ हे रामचंद्र ! शिवतत्व जो हे सो अनंतरूप हे अरु अप्रमेय निर्दुःखरूप हे सब भूतत्वतें उपजते हे ॥ जलतें तरंग अरु अग्नितें उष्णता होतिहे तेसें ब्रह्मतें जगत होताहे अरु तिसिविषे स्थित हे सो उहि रूप हे सो सबका आत्माहे ॥ सो आत्माहि ब्रह्मकरि कहाताहे तिसके जानेतें जगत् जानताहे अरु तीनों लोकोंको जानेतें उसकों नहि जाणता अच्युत निर्वाण रूप हे ॥ तिसके जानणे निमित्त शास्त्रकारोनें ब्रह्म आत्मा आदिक नाम कलपे हे ॥ वास्तवतें नाम संज्ञा कोउ नहि ॥ हे रामचंद्र ! जो पुरुष रागदोषतें रहितहे इंद्रियों अरु विषयोंके संजोग विजोगविषे द्वेषकों नहि प्राप्त होता ॥ जो एक चैतन शुद्ध संवित अनुभवरूप हे अविनाशी अरु आकाशतेंभी स्वछ निर्मल हे तिसविषे जगत् एसें स्थितहे ॥ जेसें दर्पणविषे प्रतिबिंब होताहे अंतर्बाह्यरूप होइकरि स्थितहे ॥ एसें जो जानताहे तो लोभ मोहादिकतें भिन्न नहि अरु बोध आत्मातें व्यतिरेक नाहि उही रूप हे ॥ तातें द्वैतरूप कछु नही हेरामचंद्र देहतें रहित निर्विकल्प चैतन तेरा आकार हे ॥ लज्जा मोह आदिक विकार तुझकों कहांहें तूं आदिरूप हे ॥ लज्जा हर्ष भय आदिक असत्यरूप हे तुं क्यौं दुर्बुद्धि मूर्खकी नांइं विकल्प जालकों प्राप्त होताहे तूं चैतन आत्मा अखंडरूप हें ॥ देहके खंडित हुवे आत्माका अभाव नहिहोता ॥ असम्यक् दर्शीभी एसें मानतेंहें बोधवानोंकी क्या कहनीहे ॥ हे रामचंद्र चित्त संवेदन जो जानताहें तिसके अनुभव करणेवाली जो सत्ता हे जो सूर्यके मार्ग करिकेंभी नहि रोकी जाती तिसकों तुं चित्त सत्ता जाण सोइ पुरुष हे ॥ शरीर पुरुष रूप नहि ॥ हे रामचंद्र शरीर सत्य होवे अथवा असत्य होवे ॥ पुरुष तो शरीर नहि देहके रहणें अरु नष्ट होणें करि आत्मा ज्यौंका त्यौं हिहें अरु इह जो सुख दुःखकों ग्रहण करतेहें सो देह इंद्रियादिक चिदात्माकों नही ग्रहण करते जिन पुरुषोंका अज्ञान करिकें देहविषे अभिमान हुवाहे तिनकों सुख दुःखका अभिमान होताहे ज्ञानवानकों नहिहोता ॥ आत्माकों दुःख स्पर्श नहि करता ॥ सब विकारोंतें रहितहे मनके मार्गतें अतीत शून्यकी नांइ स्थितहे ॥ तिसकों सुख दुःख केसें होवे ? अरु देह साथ मिल्या हुवा भासताहे सो स्वरूपकों त्यागकरि दृश्यके चेतणे करि देहादिक भ्रम भासतेहे अरु वासनाके अनुसार देह साथ संबंध होताहे ॥ जेसें भमरे अरु कमलोंका संजोग होताहे सो देह पिंजरके नाश हुवे आत्माका नाश तो नहि होता जेसें कमलकें नाश हुवे भमरेका नाश नहि होता तातें तूं क्यों वृथा शोक करताहे ? हे रामजी ! जगतकों असत्य जाणि करि अभावना करे मननिरिछितहो साक्षी भूत सम स्वछ निर्विकल्प चिदात्माविषे जगत होइ भासताहे ॥ जेसें मणि प्रकाशरूप होइ भासताहे बहुरी जगत अरु आत्माका संबंध केसें होवे ? जेसें अनिछित दर्पणविषे प्रतिबिंब आय प्राप्त होताहे तेसें आत्माकों जगतका संबंध भासताहे ॥ ॥ जेसें दर्पणविषे प्रतिबिंब द्वैतरूप होताहे तेसें आत्माविषे जगत भेदभी अभेदरूप हे जेसें

॥ ८२ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूर्यके उदयकरि सब जीवोंकी क्रिया होतिहे, जेसें दीपक करिकें पदार्थोंका ग्रहण होताहे तेसें आत्मसत्ताकरि जगत पदार्थका अनुभव होताहे ॥ इह जगत चैतन्य तत्वके स्वभावतें उप
जाहे प्रथम आत्मातें मन उपजाहे तिस मनकरि इह जगतजाल रचाहे, वास्तवतें आत्मसत्ताविषे आत्मसत्ता स्थितहे जेसें शून्याकाश शून्यताविषे स्थितहे तिसविषे जगत भास्याहे सो
एसेंहे ॥ जेसें आकाशविषे नीलता, इंद्रधनुष, भासताहे सो नानारूप होताहे परंतु स्वरूपतें शून्यहे हुवा तो कछु नहि तेसें इह जगत कछु हूवा नही ॥ हे रामचंद्र इह जगत चित्तविषे
स्थितहे सो चित्त संकल्परूपहे ॥ जब संकल्प क्षय होताहे तब चित्त नष्ट होजाताहे ॥ जब चित्त नष्ट हूवा तब संसाररूपी कुहिड नष्ट होजातीहे निर्मल शरतकालके आकाशवत आत्म
सत्ता प्रकाशतीहे ॥ सो चैतनमात्र सत्ता एक अज आदि अंत मध्यतें रहित हे तिसतें स्पंद फुर्याहे ॥ सो संकल्परूप ब्रह्मा होकरि स्थित भयाहे तिसतें आगें नाना प्रकारका जगत रचा
हे सो जगत शून्यरूपहे मूर्ख बालककों सत्यरूप भासताहे ॥ जेसें बालककों पछावेविषे वैताल भासताहे ॥ जेसें जीवोंकों अज्ञान करि देहाभिमान होताहे असत्यरूपही सत्य होइकरी
भासताहे जब सम्यक ज्ञान होताहे तब लीन होजाताहे, अपणे आपतें उपज करि लीन होजाताहे जेसें समुद्रतें तरंग उपज करि समुद्रविषे लीन होताहे तेसें आत्मा विषे जगत
उपजी करि आत्माविषे लीन होताहे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे आर्षेमहारामायणे शतसाहस्र्यांसंहितायां उत्पत्तिप्रकरणे मोक्षोपायेपरमार्थनिरूपणं नाम सप्तनवतितमः सर्गः ॥ ९७॥

॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणे मोक्षोपायेपरमार्थनिरूपणं नाम सप्तनवतितमःसर्गः ॥ ॥ ९७ ॥

॥ समाप्तोऽयं श्रीयोगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणं तृतीयं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुक्रमणिका

सर्गांक	सर्गनाम	पत्रांक	सर्गांक	सर्गनाम	पत्रांक	सर्गांक	सर्गनाम	पत्रांक
१	बोधहेतुवर्णन	२	१७	लीलाविज्ञानदेहाकाशसमागमन	१९	३३	लीलोपाख्यानेसत्यकामसंकल्प	२९
२	प्रथमसृष्टिवर्णन	२	१८	लीलोपाख्यानेआकाशगमन	२०	३४	लीलोपाख्यानेविदूरथमारण	३०
३	बोधहेतुवर्णन	३	१९	लीलोपाख्यानेभूलोकगमन	२०	३५	ली०मृत्युमूर्छानंतरप्रतिमा	३१
४	बोधहेतुवर्णन	४	२०	लीलोपाख्यानेसिद्धदर्शनहेतु	२०	३६	लीलोपाख्यानेमंडपाकाशगमन	३२
५	प्रयत्नोपदेशवर्णन	६	२१	लीलोपाख्यानेजन्मांतरवर्णन	२१	३७	लीलोपाख्यानेमृत्युविचार	३३
६	दृश्यअसत्यप्रतिपादन	६	२२	लीलोपाख्यानेगिरिग्रामवर्णन	२२	३८	लीलोपाख्यानेसंसारभ्रमविचार	३४
७	सच्छास्त्रनिर्णय	७	२३	लीलोपाख्यानेपुनराकाशगमनव०	२२	३९	लीलोपाख्यानेमरणानंतरावस्था	३६
८	परमकारणवर्णन	७	२४	लीलोपाख्यानेब्रह्मांडवर्णन	२३	४०	ली०स्वप्नपदार्थसत्यतानिर्णय	३७
९	परमात्मास्वरूपवर्णन	९	२५	ली०गगननगरयुद्धप्रेक्षण	२३	४१	लीलोपाख्यानेजीवजीवनवर्णन	३८
१०	परमार्थरूपवर्णन	१०	२६	लीलोपाख्यानेरणवर्णन	२४	४२	लीलोपाख्यानेनिर्वाणवर्णन	३९
११	जगत्उत्पत्तिवर्णन	११	२७	लीलोपाख्यानेद्वंद्वयुद्धवर्णन	२४	४३	प्रयोजनवर्णन	३९
१२	स्वयंभूत्पत्तिवर्णन	११	२८	लीलोपाख्यानेस्मृतिअनुभव	२५	४४	जगतकिंचनवर्णन	४१
१३	सर्वब्रह्मप्रतिपादन	१२	२९	लीलोपाख्यानेभ्रांतिविचार	२६	४५	दैवशब्दार्थविचार	४२
१४	मंडपाख्यानेपरमार्थप्रतिपादन	१३	३०	लीलोपाख्यानेस्वप्नपुरुषसत्यता	२८	४६	बीजावतार	४२
१५	विश्रांतिवर्णन	१७	३१	लीलोपाख्यानेअग्निदाहवर्णन	२८	४७	बीजांकुरवर्णन	४३
१६	विज्ञानअभ्यासवर्णन	१८	३२	लीलोपाख्यानेअग्निदाहराज्ञियुद्ध	२९	४८	जीवविचार	४३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्गांक	सर्गनाम	पत्रांक	सर्गांक	सर्गनाम	पत्रांक	सर्गांक	सर्गनाम	पत्रांक
४९	संश्रितउपशमयोग	४४	६६	कृत्रिमइंद्राहल्यानुराग	५८	८३	इंद्रजालोपाख्यानेउपद्रववर्णन	७०
५०	सत्योपदेश	४४	६७	जीवक्रमोपदेश	५९	८४	संवरोपाख्यानसमाप्ति	७०
५१	विषूचिकाव्यवहार	४६	६८	मनोमाहात्म्य	६०	८५	चित्तवर्णन	७१
५२	सूचिशरीरलाभवर्णन	४७	६९	वासनात्याग	६१	८६	मनशक्तिरूपप्रतिपादन	७२
५३	राक्षसीविचार	४८	७०	सर्वब्रह्मप्रतिपादन	६१	८७	सुखेनोपदेशकथन	७३
५४	राक्षसीविचार	४८	७१	कर्मपौरुषयोरैक्यप्रतिपादन	६१	८८	अविद्यावर्णन	७४
५५	राक्षसीप्रश्नवर्णन	४९	७२	मनोसंज्ञाविचार	६२	८९	यथाकथितदोषप्रतिहार	७६
५६	राक्षसीप्रश्नभेद	५०	७३	चिदाकाशमहात्म्य	६३	९०	सुखदुःखभोक्तव्योपदेश	७७
५७	सूचिउपाख्यानेपरमार्थनिरूपण	५१	७४	चित्तोपाख्यान	६४	९१	सात्विकजन्मावतार	७८
५८	राक्षसीमुद्ददतावर्णन	५३	७५	चित्तोपाख्यानसमाप्ति	६४	९२	अज्ञानभूमिकावर्णन	७८
५९	सूचिउपाख्यानसमाप्ति	५४	७६	चित्तचिकित्सा	६५	९३	ज्ञानभूमिकाउपदेश	७९
६०	मनअंकुरउत्पत्ति	५४	७७	बालकाख्यायिका	६६	९४	युक्तोपदेशवर्णन	७९
६१	आदित्यसमागमन	५६	७८	मननिर्वाणोपदेश	६७	९५	चांडालीशोचना	८०
६२	ऐंदवसमाधि	५६	७९	चित्तमाहात्म्य	६८	९६	चित्तअभावप्रतिपादन	८०
६३	जगतरचनानिर्वाण	५७	८०	इंद्रजालोपाख्यानेनृपमोह	६८	९७	परमार्थनिरूपण	८१
६४	ऐंदवनिश्चय	५७	८१	राजाप्रबोध	६९			
६५	कृत्रिमइंद्रवाक्य	५८	८२	चांडालीविवाह	६९			

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ इति श्रीयोगवासिष्ठे उत्पत्तिप्रकरणं तृतीयं समाप्तं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री १०८ ईश्वर मठ
पुस्तकालय,
मुमुक्षु भवन, वाराणसी, काशी

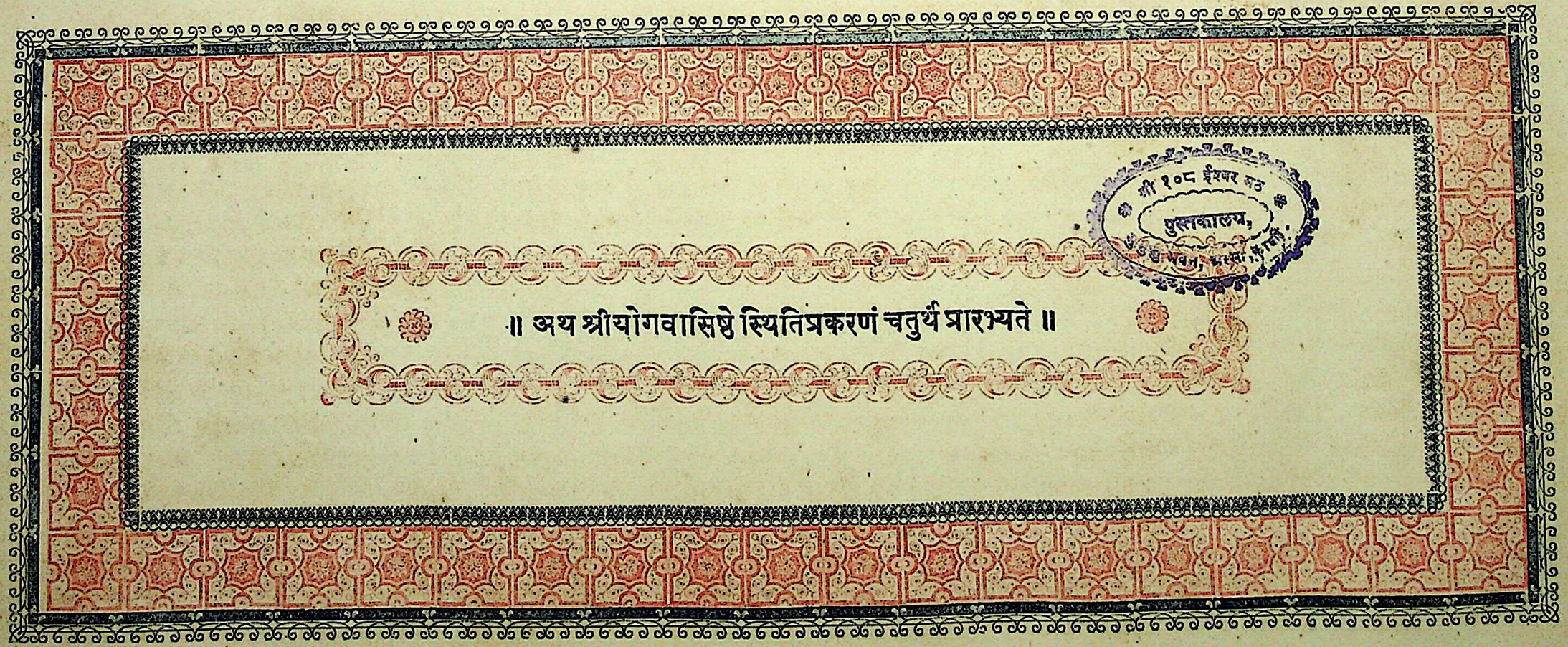

॥ अथ श्रीयोगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणं चतुर्थं प्रारभ्यते ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ ओम्सच्चिदानंदायनमः ॥ अथ स्थितिप्रकरणं चतुर्थं प्रारभ्यते ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! अब स्थिति प्रकरण श्रवण कर ॥ जिसकें सुने तें जगत निर्वाणताकों प्राप्त होवे ॥ केसा हे जगत ? अहंता हे आदि जीसके अेसा जो दृश्य रूप जगत हें ॥ सो भ्रांति मात्र हे ॥ जेसें आकाशं विषे इंद्रधनुष भासता हे ॥ नानाप्रकारके रंग सहित सो असत रूप हे ॥ तेसें इह जगत हे ॥ जेसें दृष्टा बिना अनुभव होता हें ॥ अरु जेसें निद्राबिना सुपन भासता हे ॥ जेसें भविष्यत नगर चित्तके फुरने करी भासता हे ॥ तेसें भ्रम करिकें जगत चित्तविषें स्थित हुवा हे ॥ जेसें बानर रितकाकों एकठी करी अग्निकी कल्पना करते हैं ॥ सो तिसकरी शीत निवृत्त नही होती ॥ भावना मात्र अग्नि होता हे ॥ तेसें यह जगत भावना मात्र हे॥ जेसें आकाशविषे रत्नमणिका प्रकाश अरु गंधर्वनगर भासता हे ॥ जेसें मृग तृष्णाकी नदी भासती हे ॥ तेसें इह जगत असतरूप भ्रम करिकें सतरूप हो भासता हे ॥ जेसें संकल्प दृढ अनुभव करीकें भासता हे ॥ तोभी असत रूप हे जेसें कथाके अर्थ चितविषें भासते हैं ॥ तेसें निःसार रूप जगत चित्तविषे साररूप हो भासता हे ॥ जेसें सुपने विषे पहाड नदी यां भास आती हे ॥ तेसें सब भूत बडेभी भासते हे ॥ तोभी आकाशवत शून्य रूप हें ॥ जेसें सुपनेविषे अंगना साथ प्रेम करता हें ॥ सो अर्थतें रहित असत रूप हे ॥ जेसें सूरतके लिखे अग्नि सूर्य होते हे परंतु तिनतें अर्थसिद्ध कछु नही होता ॥ तेसें इह जगतभी प्रत्यक्ष भासता हे ॥ परंतु वास्तव कछू नही अर्थतें रहित हे ॥ जेसें चित्रके लिखी कमलनी सुगंधतें रहित होती हे ॥ तेसें इह जगत शून्यरूप हे ॥ जेसें आकाशविषे इंद्रधनुष भासता हे ॥ जेसें केलका थंभ सुंदर भासता हे परंतु तिसविषे सार कछू नही निकसता ॥ तेसें इह जगत देखणे मात्र रमणीय भासता हें परंतु अत्यंत असत रूप हे॥ इसविषें सार कछु नहिं निकसता ॥ प्रत्यक्ष देखणेविषे अनुभव होता हे ॥ परंतु मृगतृष्णाकी नदीवत असत रूप हे ॥ हे कछु नही ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! सर्व संशयके नाश कर्ता जब महाकल्पक्षय होता हे ॥ तब दृश्यमान जगत सब आत्मरूप बीजविषे जाए लीन होता हे ॥ जेसें बीजविषे अंकुर रहताहे ॥ बहुरी तिसतें उपजता हे ॥ तिसकरी स्थित होता हे ॥ बहुरी तिसीविषें लीन होता हे इह जो बुद्धि हे सो ज्ञानकी हे॥किंवा अज्ञानकी हे यातें ? सर्व संशयोके निवृत्तिके अर्थ मुझकों स्पष्ट करिकें कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस प्रकार महाकल्पके क्षय हुवें बीजरूप आत्माविषे जगत स्थित होता हे ॥ अैसें कहते हें सो परम अज्ञानी हे ॥ महामूर्ख बालक हे ॥ जो ब्रह्मकों जगतका कारण कहेते हें ॥ बीजतें अंकुरकी नांइ सो मूर्खका कहना हे ॥ बीज तो दृश्यरूप इंद्रियहूका विषे होता हे ॥ जेसें वटबिजतें अंकुर होता हे ॥ बहुरी विस्तारकों पावता हे ॥ सो इंद्रियहूका विषय हे ॥ अरु जो मन सहित षट् इंद्रियतें अतीत हे ॥ अर्थ इह जो इंद्रियहुका विषय नही ॥ आकाशतेंभी अधिक निर्मल हे ॥ तिसकों जगतका बीज केसें कहीयें ? आकाशतेंभी अधिक सूक्ष्म परम उत्तम अनुभव करी उपलब्ध हे ॥ नित्य प्राप्त हे ॥ तिसकों बीजभाव कहना नही बनता ॥ हे रामजी ! जो शांतिसूक्ष्म सदाप्रकाश सत्ता हे ॥ अरु दृश्य जगत जिसविषे अस्त रूप हे ॥ तिसकों बीजरूप केसें कहीयें ? जो बीजरूप कहना नही बनता ॥ तब तिसतें जगत केसें कही यें ? आकाशतें अधिक सूक्ष्म निर्मल परम पदविषे सुमेरु समुद्र आकाश आदिक जगत नही बनता ॥ जो किंचन अरु अकिंचन हें ॥ निराकार सूक्ष्मकी नांइ सत्ता हे ॥ तिसविषे विद्यमान जगत केसें होवे ? महा सूक्ष्म रूप हे दृश्य तिसविषे विरुद्ध रूप हे ॥ जेसें धूपविषे छाया नही ॥ जेसें सूरजविषे अंधकार नही ॥ जेसें अग्निविषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वरफ नही ॥ जेसें अणुविषे सुमेरु नही होता ॥ तेसें आत्माविषे जगत नही होता ॥ सत्यरूप आत्माविषे असत्य रूप जगत केसें होवे ? बटका बीजभी साकाररूप होता हे ॥ अरु निराकाररूप आत्माविषे साकाररूप जगत होना अयुक्त हे ॥हे रामजी ! कारण दो प्रकारका होता हे ॥ एक समवाय कारण ॥ दुसरा निमित्त कारण हे ॥ सो आत्मा दोनो कारण भावतें रहित हे ॥ निमित्त कारण तब होता हे ॥ जब कारजतें कर्ता भिन्न होता हे ॥ आत्मा अद्वैत हे ॥ तिसके निकट दुसरी वस्तु हेइनही ॥ कर्ता केसें होवे अरु किसका होवे ? सहकारीभी नही जिसकरी कार्यकों करे ॥ मन अरु इंद्रियद्वतें रहित निराकार अविकृतरूप हे ॥ अरु समवाय कारणभी परिनाम करिकें होता हे ॥ जेसें वटबीज परिणाम करी वृच्छ होता हे ॥ सो आत्मा अच्युत रूप हे ॥ परिणामकों कदाचित् प्राप्त नही होता ॥ समवाय कारण केसें होवे ? जायते अस्ति, वर्धते, विपरिणमते, क्षीयते, नश्यते, इन षट्विकारद्वं तें रहित निर्विकार आत्मा जगतका कारण केसें होवे ॥ तातें इह जगत अकारणरूप भ्रांति करीके भासता हे जेसें आकाशविषे नीलता अरु सीपविषे रूपा भासता हे ॥ जेसें निद्रादोष करी के सुपन दृष्टि भासती हे ॥ तेसें इह जगत भ्रांति करीकें भासता हे ॥ जब स्वरूपविषे जागे ॥ तब जगतभ्रम मिटि जाता हे ॥ तातें कारण कार्य भ्रमकों त्याग करी अपनें स्वरूपविषे स्थित होऊ ॥ दुर्बोधकरी संकल्परचना द्वइहे ॥ तिसकों त्याग करी आदि मध्य अरु अंततें रहित जो सत्ता हे ॥ तिसी विषे स्थित होऊ ॥ तब जगत भ्रम मिटि जावे ॥ १ ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे जगत निराकरणं नाम प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे देवताविषे श्रेष्ठ रामजी ! बीजतें अंकुरवत् आत्मातें जगत्का होना अंगीकार करीयें तो नही बनता ॥ आत्मा सर्व कल्पनातें रहित महाचैतन्य निर्मल आकाशवत् हे ॥ तिसकों जगतका बीज केसें मानीये ॥ बीज परिणाम करी अंकुर होता हे ॥ अरु कारण समवायी करी होता हे ॥ आत्माविषे समवाय अरु निमित्त सहकारी कदाचित् नहि बनतें ॥ जेसें वंध्या स्त्रीका संतान किसी नही देखा ॥ तेसें आत्मातें जगत नही होता ॥ जो समवाय अरु निमित्त कारण विना सहकारी पदार्थ भासे तो जानियें जो इह हे नही ॥ भांति मात्र भासता हे ॥आत्मसत्ता अपने आपविषे स्थित हे॥सृष्टि स्थिति प्रलय करीकें ब्रह्मसत्ता ही अपने आपविषे स्थित हे जो इस प्रकार स्थित हे तो कारण कार्यका क्रम केसें होवे ? जो कारण कार्यभाव न हुवा तो पृथ्वी आदिक भूत कहांतें उपजे ? कहांहि हे नही ॥ अरु जो कारण कार्य मानीये तो पूरव जो विकार कहे हे ॥ तिनका दूषण आवता हे ॥ तातें न कोउ कारण हे न कार्य हे ॥ कारण कार्यबिना जो पदार्थ भासे तिसकों सतरूप जाने सो मूर्ख बालक हे ॥ उह विवेकतें रहित हे तातें इह जगत न आगें था न अब हे न पाछें होवेगा ॥ स्वच्छ चिदाकाश सत्ता अपने आपविषे स्थित हे ॥ जब जगतका अत्यंत अभाव होता हे ॥ तब संपूर्ण ब्रह्मही दृष्ट आता हे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग भासते हें ॥ तेसें आत्माविषे जगत भासता हे ॥ अन्यथा कारण कार्य भाव कोउ नही ॥ प्रागभाव अरु प्रध्वंसा भाव अन्योन्याभाव कोउ नही ॥ प्रागभाव कहियें जो प्रथम न था ॥ जेसें प्रथममें पुत्र नही होता ॥ अरु पाछें उत्पन्न होता हे ॥ जेस मृतकासों घट उत्पन्न होता हे॥ अरु प्रध्वंसाभाव उह हे ! जो प्रथम होकरी नष्ट हो जाता हे ॥ जेसें घट था अरु नष्ट हो गया॥अरु अन्योन्याभाव कहीयें जेसें घटविषे पटका अभाव हे॥अरु पटविषे घटका अभाव हे॥इह तीन प्रकारका भाव जिसके हृदयविषे हे ॥ तिसकरी जगत दृढ होता हे ॥ उसकों शांति नही प्राप्त होती ॥जब जगतका अत्यंताभाव दिखता हे॥तब चित्त शांतिवान होता हे ॥ सो जगतकें अत्यंताभावका इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जुक्ति बिना अवर उपाय नहीं ॥ अरु अशेष जगतकी निवृत्ति विना मुक्ति नहीं ॥ सूर्यतें आदि लेकरी जेता कछु प्रकाश हे अरु पृथ्वी आदिक तत्व हैं॥ अरु क्षण वर्षकल्प आदिक जो कालहे इह में हों ॥ इह ओर हे ॥ अरु रूप अलोक मन संस्कार इत्यादिक जगत सब संकल्प मात्र हे॥ कल्प अरु कल्पक ब्रह्मांड अरु ब्रह्मा अरु विष्णु रुद्र इंद्र कीटतें आदि ले करी जेतें कछुजगत जाल हे ॥ सो उपजी उपजी अंतर्ध्यान हो जाता हे ॥ महा चैतन्य परम आकाशविषे अनंत वृत्ति उठती हे ॥ जेसें जगतके पूर्व शांत सत्ताथी ॥ तेसें तुं अबभी जान ॥ अवर कछु हुवा नही॥ परमाणूका सहस्रांश होवे तिसकी नांइ सुक्ष्म चित्त कला हे ॥ तिस चित्तकलाविषे अनंत कोटि सृष्टियां स्थित हैं ॥ उहि चित्त सत्ता फुरनेंकरी जगतरूप हो भासती हे ॥ अरु प्रकाशरूप हे ॥ निराकार शांतरूप हे ॥ न उदय होता हे ॥ न अस्त होता हे ॥ न आता हे ॥ न जाता हे ॥ जेसें शिलाविषे रेषा होतीयां हे ॥ तेसें आत्माविषे जगत हे ॥ जेसे आकाश विषे आकाश सत्ता फुरती हे तेसें आत्माविषे जगत फुरता हे ॥ अरु आत्माइ विषे जगत स्थित हे ॥ निराकार निर्विकाररूप विज्ञानघन सत्ता अपने आपविषे स्थित हे ॥ उदय अरु अस्ततें रहित विस्तृत रूप हे॥ हे रामजी ! जो सहकारी कारण कोउ न हुवा ॥ तो जगत शून्य हुवा क्यों जो अेसें जानेतें सर्व कलंक कलना शांत हो जाती हे॥ दीर्घ निद्राविषे सोया हे॥ तिसका अभाव करीकें ज्ञानभूमीकाकों प्राप्त होऊ ॥ जागेतें निःशोक पद प्राप्त होवेगा ॥ २ ॥ ॥इतिश्री योगवासिष्ठे स्थिति प्रकरणे स्मृति बीजोपन्यासो नाम द्वितीयः सर्गः ॥ २ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! महा प्रलयके अंतविषे अरु सृष्टिके आदिविषे जो प्रजापति होता हे ॥ सो जगतकों पूर्वकी स्मृति करिकें तिसी भांति रचता हे ॥ तो जगत स्मृतिरूप क्यौं न होवे ? ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! महाप्रलयके आदिविषे जो प्रजापति होताहे ॥ अरु उह स्मरण करिकें पूर्वकी नांइ जगतकों रचता हे ॥ अेसें मानीये तो नही बनता ॥ का हे तें जो महाप्रलयविषे प्रजापति कहां रहता हे ॥ जो आपहीं न रहे ॥ तिसकी स्मृति केसें मानीये ? जेसें आकाशविषे वृच्छ नही होता ॥ तेसें महा प्रलयविषे प्रजापति नही होता ॥

॥ रामोवाच ॥ हे ब्रह्मण्य ! जगतके आदिविषे जो ब्रह्मथा ॥ अरु तिसनें जगतकों रचाथा महाप्रलयविषे तिसकी स्मृतिका नाश तो नही होता ॥ सुषुप्तितें उठेकी नांइ बहुरी स्मृति करी जगतकों रचता हे तो बनता हे ॥ तुम केसें कहतें हो जो नही बनता ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे शुभ व्रत रामजी ! महा प्रलयके पूर्व जो ब्रह्मादिक होते हैं ॥ सो महा प्रलयविषे सब निर्वाण हो जाते हे ॥ अर्थ इह जो विदेहमुक्ति होते हैं ॥ ब्रह्मतत्वविषे लीन होते हे॥ जो स्मृति करनेवाले अंतर्ध्यान हो गये तो स्मृति कहांरहे ॥ जो स्मृति निर्मूल भइ तो तिसकों जगत का कारण केसें कहियें ॥ महा प्रलय तिसका नाम हे ॥ जहां सर्व शब्द अर्थ सहित निर्मूल हो जाते हे ॥ जहां सर्व अंतर्ध्यान हो गए तहां स्मृति कीसकी कहीयें ॥ जो स्मृतिका अभाव भया ॥ तो कारण किसका किसकी नांइ कहीये ? तातें सर्व जगत चित्तके फुरने मात्र हे ॥ जब महाप्रलय होता हे ॥ तब सभ जतनविनां मोक्षभागी होते हे ॥ जो आत्मज्ञान होवे तो जगतके होतेंभी मोक्षभागी होते हैं ॥ अरु जो आत्मज्ञान नही तो जगत दृढ होता हे ॥ निवृत्त नहीं होता॥ जब दृश्य जगतका अभाव होवे ॥ तब स्वच्छ चैतन्य सत्ता प्रकाशती हे॥ सो आदि अंततें रहित हे ॥ जगतभी सभ उहिरूप भासता हे ॥ अनादि सिद्ध ब्रह्म तत्वहीं प्रकाशता हे तिसविषे जो आदि संवेदन फुरता हे ॥ सो ब्रह्मरूप हे ॥ अंतवाहक देह विराट् जगत हो भासता हे ॥ तिसका अेक परमाणुरूप यह तीनो जगत हे तिसविषे देश, काल, क्रिया, द्रव्य दिन, रात्र क्रम हूवा हे ॥ बहुरी तिसके अणुविषे जगत पडे फुरते हे सो क्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे ! सभ संकल्परूप हे ॥ ब्रह्मसत्ताका प्रकाश हे ॥ जो प्रबुध आत्मज्ञानी हे ॥ तिसकों सब जगत एक ब्रह्मरूप हो भासता हे ॥ अरु जो अज्ञानी हे तिसके चित्तविषे अनेक प्रकार जग तकी भावना होती हे ॥ द्वैत भावना करीकें उह पडा भमता हे ॥ जेसें इस ब्रह्मांडके अनेक जीव परमाणु हे ॥ तिनके अंतर अनंत स्रष्टियां हे ॥ तिनके अंतर ओर अनंत स्रष्टा हे ॥ तेसें ओर जो अनंत स्रष्टा हे ॥ तिनके अंतर ओर अनंत स्रष्टिया फुरतीया हे ॥ सो ब्रह्मतत्वका प्रकाश हे जेसें बडे थंभविषे अनेक पूतलीयां शिल्पी कलपे ॥तिसके अंतर ओर अनेक पुतलीयां कलपे ॥ तिनके अंतर ओर अनेक पुतलीयां होव हि ॥ तेसें परमाणु परमाणुके अंतर त्रिलोकि स्थित हे ॥ सो अभिन्नरूप हे ॥ ओर कछु हुवा नही ॥ जेसें पहाडके अंतर्गत असंख्य परमाणु होते हें ॥ सो तिस साथ अभिन्नरूप हे ॥ तेसें ब्रह्मरूपी महा सुमेरु हे ॥ तिसके अंतर अनेक जगतरूपी परमाणुहे॥सो अभिन्नरूप हे॥हे रामजी ! सूर्यहूकी कीरणका समू ह होवहि तिनविषे सूक्ष्म त्रिसरेंणु होते हें ॥ तिनकी संख्या करनेकों कोउ समर्थभी होवे ॥ परंतु आदि अंततें रहित जो आत्मरूपी सूर्य हे ॥ तिसके त्रिलोकीरूपी परमाणुकी संख्या क रनेकों कोउ समर्थ नही ॥ जेसें समुद्रविषे जलके परमाणु होत हे ॥ जेसें पृथ्वीविषे धूडके परमाणु होत हे सो असंख्य हे तेसें आत्माविषे असंख्य परमाणु स्रष्टियां हे ॥ जेसें आकाश शू न्यरूप हे ॥ तेसें आत्मा चिदाकाश जगतरूप हे ॥ इह जो में उसकों स्रष्टीकही हे ॥ जो इनकों तुं जगत शब्द करी जानेगा तो अज्ञान बुद्धि हे ॥ अरु दुःख भमकों देखेगा ॥ अरु जो इनकों ब्रह्मशब्दका अर्थ करी जानेगा तो इस बुद्धि करी परम सारकों प्राप्त होवेगा ॥ सर्वविश्व ब्रह्मतें फुरता हे अरु विज्ञान घन ब्रह्मरूप हे ॥ ओर द्वैत कछु हुवा नही ॥ जब जा गेगा तब तुझकों अेसें ही भासेगा ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थिति प्रकरणे जगत अनंत वर्णनं नाम तृतीयः सर्गः ॥ ३ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इंद्रियद्वंका जो ग्राम हे तिस साथ युद्ध करणा तिनका जीतणा सो संसाररूपी समुद्रके पार करणेकों बेडा हे ॥ अर्थ इहजो इंद्रियद्वंको जीतणां मोक्षका कारण हे ॥ ओर कीसि क्रम उपाय करी संसार समुद्र तर्या नही जाता ॥ संतका संगकरना ॥ अरु सतशास्त्रका विचारना ॥ इस करी जब आत्मतत्वका बोध होता हे ॥ तब इंद्रियका जीतना होता हे ॥ अरु जगतका अत्यंत अभाव होता हे ॥ जबलग संसारका अत्यंत अभाव नही होता ॥ तबलग आत्मबोध नही होता ॥ इह में तुझकों क्रम कहा हे ॥ सो संसार समुद्र तरनेका उपाय हे ॥ बहुत कहनेतें क्या हे ? सब कर्मका बीज मन हे ॥ मनके छेदेतें सभ जगतका छेद होता हे ॥ जब मनरूपी बीज नष्ट होता हे ॥ तब जगतरूपी अंकुरभी नष्ट हो जाता हे ॥ सर्व जगत मनका रूप हे ॥ इस के अभावका उपाय करो ॥ मलीन मनतें अनेक जन्मके समूह उत्पन्न होते हे ॥ इसके जीतनेतें सर्व लोकमें जय होता हे ॥ सब जगत मन करिके हुवा हें ॥ मन रहित हुवे देहभी न ही भासती ॥ जब मनसों दृश्यका अभाव होता हे ॥ तब मनभी मृतक हो जाता हे ॥ ओर उपाय कोउ नही ॥ हे रामजी ! मनरूपी पिशाच हे ॥ तिसका नाश ओर उपाय किसी क री नही होता ॥ अनेक कल्प बीत गए हे ॥ अरु बीत जाय ॥ तबभी नाश नही होता ॥ तातें जबलग दृश्य मान हे तबलग इसका उपाय करे ॥ जगतका अत्यंत अभाव चितवना अरु स्वरूप आत्माका अभ्यास करना यह परम औषध हे ॥ इस उपाय करी मनरूपी दृष्टा नष्ट होता हे ॥ जबलग मन नष्ट नही होता तबलग मनके मोह करी जन्म मरणकों पावे गा ॥ जब ईश्वरें परमात्माकी प्रसन्नता होती हे ॥ तब मन बंधनतें मुक्त होता हे ॥ संपूर्ण जगत मनके फुरेतें करी भासता हे ॥ जेसें आकाशविषे शून्यता भासती हे ॥ जेसें गंधर्वनगर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भासता हे ॥ तेसें संपूर्ण जगत मनविषे भासता हे ॥ जेसें पुहपमें सुगंध रहती हे ॥ जेसें तिलमें तेल रहता हे ॥ जेसें गुणीमें गुण रहता हें ॥ जेसें धर्मीमें धर्म रहता हे ॥ तेसें इह सत असत स्थूल सूक्ष्म कारण कार्यरूप जगत मनमें रहता हे ॥ जेसें समुद्रमें तरंग फुरते हें ॥ जेसें आकाशमें दूसरा चंद्रमा फूरता हे ॥ जेसें मरुथलमें मृग तृष्णाका जल फुरता हे ॥ तेसें चित्तविषे जगत फुरता हे ॥ जेसें सूर्यविषे किरणां हे ॥ जेसें तेजविषे प्रकाश हे ॥ जेसें अग्निविषे उष्णता हे ॥ तेसें मनविषे जगत हे ॥ जेसें बरफविषे सीतलता हे ॥ जेसें आकाश विषे शून्यता हे ॥ जेसें पवनविषे स्पंदता हें ॥ तेसें मनविषे जगत हें संपूर्ण जगत मनरूप हे ॥ अरु मन जगतरूप हे ॥ परस्पर इक रूप है ॥ दोनों मेंतें एक नष्ट होवे तव दोनों नष्ट हो जाते हें ॥ जब जगत नष्ट होवे तब मनभी नष्ट हो जाता हे ॥ जेसें वृच्छके नष्ट हुवे पत्र टास फूल फल नष्ट हो जाते हे ॥ फूल फलके नष्ट हुवे वृच्छ नष्ट नही होंता ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थिति प्रकरणे अंकुर वर्णनंनाम चतुर्थः सर्गः ॥ ४ ॥ ॥ रामोवाच हे भगवन्! सर्व धर्मोंके वेत्ता! पूर्व अपरके ज्ञाता! मनके फुरणे करिकें जगत केसें फुरता हे? अरु केसें भया हे? जेसें प्राप्त भया हे तेसें दृष्टांत दृष्टि करीकें मुझकों कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी! जेसें इंद्र ब्राह्मणके पुत्रहुंकी दश सृष्टि होत भइयां ॥ अरु दशहि ब्रह्मा होत भये ॥ सो मनके फुरनेतें उपजी करी मनके फुरने विषे स्थित भये ॥ अरु जेसें लवण राजाकों इंद्रजालकी माया करीकें चंडालकी प्रतिमा दृढ हो करी भासी ॥ तेसें इह जगत मनमें स्थित भया हे ॥ जेसें भार्गव शुक्र मनके फूरणे करी चिरकाल स्वर्गकों भोगता रहा ॥ अरु अवर अनेक भ्रम देखे सो मनहीका भ्रम दृढ हो करी भास्या तेसें इह जगत मनके भ्रम करी स्थित भया हे ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन्! भृगुऋषीश्वरके पुत्रने मनके भ्रम करी केसें स्वर्गसुख भोगे हे? अरु केसें भोगका अधिपति हुवा हे? अरु केसें संसारी हो करी भ्रमकों देखता भया हे? वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी! भृगुके पुत्रका वृत्तांत सुन ॥ भृगु अरु कालका संवाद मंद्राचलपर्वत विषे हुवा हे ॥ एक कालमें भृगु अरु शुक्र दोनों मंद्राचल पर्वतविषे स्थित थे चंद्रमाकी नांइ शुक्रका मुख अरु बडा प्रकाशी हे ॥ अरु भृगुजी बडा उदार आत्मा तहा स्थित हे ॥ जहां कल्पवृक्ष अरु मंदारवृक्ष आदिक बहुत सुंदर स्थान दिव्य मूर्ति हे ॥ तहां भृगुजी तप करतेथे ॥ अरु शुक्रजी टहल करतेथे ॥ एक समे भृगुजी निर्विकल्प समाधिमे स्थित भये ॥ तब निर्मल मूर्ति शुक्र एकांत जाय बेठे ॥ कंठविषे मंदार कल्प वृच्छहुंके फूलहुंकी माला पहरी हुइ ॥ सो शुक्र विद्या अरु अविद्याके मध्यमें स्थित था ॥ जेसें त्रिशंकु राजा चंडाल था सो विश्वामित्रके वरकों पायकें स्वर्गमें गया ॥ तब देवतानें अनादर किया स्वर्गतें गिराय दिया जो इह चंडाल हे ॥ तव विश्वामित्रनें देखकें कहा जो इहां ही खडा रहूं॥तब उह भूमि अरु आंकाशके मध्य स्थित भया ॥ तेसें शुक्र बेठा हे तो एक अपछरा तिसकेऊर्ध्व चली आवे ॥ स्वर्गकी ओर ॥ महा सुंदर तिसकों देखत भया ॥ जेसें लक्ष्मीकी ओर विष्णुजी देखे तेसें अप्सराकों देखी ॥ जो महा सुंदर अनेक प्रकारकें भूषण पहरे हुए अरु दिव्य वस्त्र हे ॥ अरु महा सुंगध हे ॥ अरु महा सुंदर आकाश मार्गभी तिसकरी सुगंधीत भया हे ॥ पवन जो तिसकों स्पर्श करी चलता हे ॥ तिसकरी सुंगध पसरती हे ॥ अरु महा मदकरी उसके घुर्ण नेत्र हे ॥ अेसी अप्सराकों देखकें शुक्रका मन क्षोभायमान हुवा ॥ जेसें पूर्न मासिके चंद्रमाकों देखकें क्षीरसमुद्र क्षोभित होता हे ॥ तेसें उसकी वृत्ति ओर मार्ग तें रहित हो करी अप्सराविषे जायस्थित भइ॥ काम देवका बाण जो हे स्मृति करना, सो आय लगा ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थिति प्रकरणे भार्गव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संवित गमनं नाम पंचमः सर्गः ॥ ५ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! इसप्रकार उस अप्सराकों देखकें नेत्र मूंदता भया ॥ मूंदकें मनोराजकों पसारत भया ॥ चिंतनें लगा ॥ जो इह ललना मृगनेनी स्वर्गकों गइ हे ॥ मैं तिसकें निकट जाय प्राप्त होऊं ॥ एसें विचारकें उसके पाछें चला ॥ जाते जाते मनसों स्वर्गमें जाय प्राप्त भया ॥ तहां मंदार कल्पतरू हे ॥ तीसकों फुलकी सुगंधता सहित देखत भया ॥ द्रवत स्वर्नकी नांई शरीर जिनके अेसे देवता हे ॥ अरु हास बिलास संयुक्त स्त्रीयां हरणकी नांई नेत्र जिनके हे सो देखत भया ॥ मणि के समूह देखे ॥ अन्योन्य परस्पर उन विषे प्रतिबिंब पडते हे ॥ विश्वरूपकी उपमा स्वर्गलोकमें देखी ॥ मंदमंद पवन चलता हे ॥ मंदार वृच्छ साथ मंजरी प्रफुल्लित हे ॥ तहां अप्सरा गण विचरते हैं, इंद्र आगमें आगें गया तो अैरावत हस्ति बडे मदसों मस्त खडा हे ॥ जिसनें युद्धमें दंतसाथ दैत्य चूर्ण कीये हे अरु देवता आगें अप्सरा गायन करती हे ॥ अरु स्वर्नके कमल लगे हूवे हे ॥ तहां ब्रह्मके हंस अरु सारस पंछी विचरते हैं ॥ गंगाका प्रवाह चलाजाता हे ॥ देवताके नायक तहां विश्राम करते हैं ॥ बहुरी लोक पालके स्थान देखे ॥ यम, चंद्रमा, सूर्य, इंद्र, वायु, अग्नि, लोकपाल सब देखंता भया महा ज्वालावत् प्रकाश हे जिनका ॥ अेसें देवताके समूह देखत भया ॥ अैरावतके दंतमें दैत्यहुकी पंक्ती देखी ॥ आगें देवता देखे, जो विमानपर आरुढ हुवे फीरते हे ॥ भूषण सहित तिनके हार मणि करकें जडे हुवे हे ॥ सुंदर विमानकि पंक्ती विचरती हे ॥ कहुं मंदार वृच्छ हे ॥ कहूं कल्प वृच्छ हे ॥ तिनसा थ सुंदर वल्लियां हे ॥ गंगाका प्रवाह चलता हे ॥ तहां अप्सरा गण बेठे हैं ॥ कहूं सुंगधता सहित पवन चलता हे ॥ कहूं झरणेमेंतें जल चलता हे ॥ सुंदर नंदन वन हे ॥ कहूं अप्सरा बेठी हे कहूं नारद आदिक बेठे हैं ॥ अवर लोक जितनें पुन्य किये हे ॥ सो बेठे सुख भोगते हे ॥ विमानपर आरूढ हुवे फिरते हे ॥ कहूं इंद्रकों अप्सरा सेवती हे ॥ कामदेव सों मस्त हे शरीर जिनके ॥ जेसें बनकी लता बनकों सेवती हे ॥ तेसें अप्सरा इंद्रकों सेवती हे ॥ जेसे कल्प वृच्छहु साथ पक्के फल लागते हे ॥ तेसें रत्न अरु चिंतामणी लगे हे ॥ कहुं चंद्रकांत मणि श्रवती हे ॥ इसप्रकार मनसों स्वर्गकी रचना शुक्र देखत भया ॥ केसी रचना देखी, मानो त्रिलोककी रचना इहां ही हे ॥ तब शुक्रकों देखकें इंद्र उठी खडा हूवा जो दूसरा भृगु आया हे ॥ बडे प्रकाश संयुक्त शुक्रकी मूर्तिकों इंद्र प्रणाम किया ॥ अरु हाथ ग्रहण करीकें अपने पास बेठाया अरु कहत भया ॥ हे शुक्रजीनें ! आज हमारे धन्य भाग हे ॥ जो तुमारा आगमन भया हे ॥ आजु हमारा स्वर्ग तुमारे आनेसें सफल शोभित निर्मल भया हे ॥ अब तुम चिरपर्यंत इहांइं स्थित होवहूं ॥ जब अेसें इंद्रनें कहा तब शुक्रजी शोभत भये ॥ तिसकों देखकें सूरके समूह प्रणाम करत भये ॥ जो भृगुका पुत्र शुक्रजी आया हे ॥ हे रामजी ! इस प्रकार शुक्रजी मनसों इंद्रके पास जाय बेठा ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थिति प्रकरणे भार्गव मनोराज वर्णनं नाम षष्ठः सर्गः ॥ ६ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! जब इस प्रकार शुक्रजी इंद्रपास जाय बेठा ॥ तब अपना जो कोउ निज भावथा ॥ तिसकों भूलाय दिया ॥ उह जो मंद्राचल पर्वतपें अपना शरीरथा सो भुलि गया ॥ अरु वासनासों मनोराजका शरीर दृढ होगया ॥ एक मुहूर्त पर्यंत इंद्रके पास बेठा रहा ॥ परंतु चित्त उस अप्सरामें रहा ॥ तिसकी अनंतर उठ खडा हुवा स्वर्गकों देखनें लगा ॥ देवताने कहा जो चलो स्वर्गकी रचना देखो ॥ तब शुक्रजी देखत देखत जहां उह अप्सराथी तहां गये ॥ अरु ओर अप्सरा बहुत थी तिनमें उह अप्सराभी बेठी हे मृगके जेसें नेत्र हे जिसके, तिसकों शुक्रजीनें देखी ॥ जेसें चंद्रमा चांदनीकों देखे ॥ तेसें देखकें शुक्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का शरीर द्रवी भूत होगया ॥ प्रस्वेदसों पूर्ण होत भया ॥ जेसें जंद्रमाकों देखके चंद्रकांत मणी द्रवी भूत होती हे ॥ तेसें शरीर होगया ॥ कामदेवके बाण तिसके रिदेमें आय लगे ॥ तिसकरी व्याकुल होगया ॥ अरु शुक्रकों देखकें उसका चित्तभी मोहित होगया ॥ शुक्रविषे कामका बाण उसकोंभी आय लगा ॥ उहभी कामसों पूर्ण होगइ ॥ जेसें वर्षाकालकी नदी जलसों पूर्ण होती हे ॥ तेसें परस्पर नेह बढ्या ॥ तब शुक्रजीनें मनसों तहां तमकों रच्या ॥ तब सब स्थानमें तम हो गया ॥ जेसें लोकालोक पर्वतके तटविषे तम होता हे ॥ तेसा सूर्यका अभाव होगया ॥ तब भूत जात सब अप अपनें स्थानमें गये ॥ जेसें दिनके अभाव हूवे पशु पंछी अपअपने गृहकों जाते हैं ॥ तेसें तमके होने तें सब बनकों चलते रहे ॥ तब उह अप्सरा शुक्रके निकट आई ॥ शुक्रजी श्वेत आसनपर बेठ गया ॥ अप्सराभी चरनके निकट बेठी ॥ सुंदर वस्त्र अरु भूषण पहिरे हूवे हे ॥ स्नेहकरी दोंनो काम वशहुवे ॥ तब अप्सरा मधुरवाणीसों कहत भई ॥ हे नाथ ! में निर्बल हो करी तुमारी शरन आइहों ॥ मुझकों कामदेव दहन करता हे तुम रक्षा करो में इसकरी पूर्ण हो गइ हों ॥ अरु स्नेहरूपी जो रस हे ॥ तिसकों सोइ जानता हे ॥ जिसकों प्राप्त भया हे ॥ जिसकों रसका स्वाद नही आया सो क्या जाने ? हे साध ! एसा सुख त्रिलोकीमें ओर कोउ नही ॥ जेसा सुख परस्पर स्नेहसों होता हे ॥ अब तुमारे चरनोंकों पायकें आनंदवान भइहों ॥ जेसे चंद्रमाकों पायकें कमलिनी आनंदवान होती हे ॥ जेसें चकोर चंद्रमाकी किरणांकों पायकें आनंदवान होता हे ॥ तेसें मुझकों स्पर्श करीकें आनंद होवेगा ॥ जब इसप्रकार अप्सरा कहा ॥ तब दोनों कामके वश हो करी क्रीडा करने लागे ॥ ॥इतिश्री योगवासिष्ठे स्थिति प्रकरणे भार्गव संगमो नाम सप्तमः सर्गः ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! इसप्रकार तिसकों पायके शुक्र आपकों आनंदवान मानत भया ॥ मंदार अरु कल्पवृच्छके नीचे क्रीडा करतहे॥दिव्य वस्त्र अरु भूषन फूलकी माला पहिरी हूइ ॥ बन अरु बगीचे किनारेविषे क्रीडा करत हे ॥ चंद्रमाकी किरणांके मार्गसों अमृतपान करत रहे॥स्वर्गमें विचरहि ॥ विद्याधरके गणसाथ रहत हे ॥ तिसके स्थानमें नंदन बन इत्यादिक स्थानविषे क्रीडा करत भोगते कैलास पर्वतपें गये ॥ अप्सरा सहित तहां बन कुंजमें फिरते रहे ॥ बहुरी लोकालोक पर्वतपर क्रीडा करत भये ॥ मंदराचल पर्वतके कुंजमें विचरत भये ॥ स्वेतद्वीपविषे रहे अर्धशत युगपर्यंत बहुरी गंधर्वके नगरविषें रहे ॥ इंद्रके बनविषे रहें॥बत्रीसयुगपर्यंत स्वर्गमें रहे॥ जब पुन्य क्षीण भया॥तब भूमिलोकमें गिराय दियें गिरतेगिरते तिनके शरीर टूटी गये ॥ जेसें झरणेमेंतें जल बंध होवे ॥ तेसें शरीर अंतर्ध्यान हो गया ॥ तब चिंता संयुक्त उनकी पुर्यष्टक आकाशमें निराधार हो रही ॥ जेसें पंछी नीडबिना स्थित हे ॥ तेसें उनकी पुर्यष्टक चिंतासहित निराधार भई ॥ तब वासनारूप दोनों चंद्रमाकी किरणाविषे जाय स्थित हूवे ॥ बहुरी किरणां द्वारा धान्यमें आय निवास किया ॥ तब दशारण्य नाम ब्राह्मण था ॥ तिसनें धान्यका भोजनकीया ॥ तब उह चावल वीर्य हो करी ब्राह्मणीके गर्भमें जाय रहा ॥ फेर वह धान्यका मालव देशका राजा भोजन करत भया ॥ तिसके वीर्य द्वारा अप्सरा स्त्रीके उदरविषे जाय स्थित भई ॥ अरु दशारण्य ब्राह्मणके गृहमें शुक्र पुत्र हुवा ॥ अरु उह मालव देशके राजाके ह्यां अप्सरा पुत्री हूई ॥ तब क्रम करिकें बडी हुइ ॥जब षोडश वर्षकी भई पिताके गृहविषे जोबनवान हुइ॥तब महादेवकी पूजा करत भइ॥ ओर प्रार्थना करी जो हे देव ! मुजकों पूर्वके भर्तारकी प्राप्ति क्रर देहु ॥ इसप्रकार नित्य पूजन करे अरु वर मागे ॥ अरु उहां उह जोबनवान हूवा ॥इहां इह जोबनवान हूइ॥तब राजानें यज्ञका आरंभ किया तिसमें सब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजा अरु ब्राह्मण आए॥ तहां दशारण्य ब्राह्मण पुत्रसहित आया ॥ तब राजपुत्रीनें तिस पूर्व जन्मके भर्तारकों देख्या ॥ जेसें चंद्रमाकों देखकें चंद्रकांतमणि द्रवीभूत होती हे तेसें राज कन्या होगई ॥ अरु स्नेहसों नेत्रतें जल चलने लगा ॥ तब राजकन्या दशारण्यके पुत्रकों देखकें तिसके कंठविषे फूलकी माला डारकें अपना भर्तार किया ॥ तब यज्ञमें देख कें राजा आश्चर्यमान हुवा अरु निश्चय किया जो भला हूवा ॥ बहुरी क्रमसों विवाह किया ॥ तब राजा, पुत्री अरु जँवाइकों राज्य देकें आप बनकों तप करने लिये चलता रहा इहां इह पुरुष अरु स्त्री मालव देशका राज्य करने लगे ॥ चिरकाल राज्य करते रहे ॥ बहुरी दोनों वृद्ध भये ॥ शरीर जर्जरी भूत होगये ॥ तब तिसकों शरीरमें वैराग हुवा ॥ जो स्त्री महादुःखरूप हें सो दुःखरूपअवस्था देखकें समान वैराग हुवा॥ विशेष वैराग न उपजा॥ जर्जरी भूत अंगविषे सेवनेतें अशक्त भये॥ परंतु तृष्णा निवृत्त नही भई॥राजा मृत्यु अवस्थाकों प्राप्त भया ॥ सो बांधवनें जलाय दिया ॥ यह महा अंधकूप मोहविषे जाय पडा ज्ञानकी प्राप्ति बिनां ॥ हे रामजी ! मृत्यु मूर्च्छाके अनंतर परलोक तिसकों भासी आया ॥ तहां कर्मके अनुसार सुख दुःखकों भोगकें अंग बंग देशमें धीवर हुवा ॥ तहां अपनें धीवरकर्म करत भया ॥ बहुरी वृद्ध अवस्था आइ ॥ तब शरीरविषे वैराग हुवा जो इह संसार महादुः खरूप हे ॥ अेसें जानकें सूर्यभगवानका तप करने लगा ॥ जब मृतक हूवा तब तपके वसतें सूर्यवंश विषे राजा भया ॥ सो भावनाके वसतें तहां कल्पक ज्ञानवान हुवा ॥ जोग क रे अरु वेद पढे ॥ जोगकी भावना करी जो शरीर छुटा ॥ तब बडा गुरु हुवा ॥ सर्वकों उपदेश करे मंत्रसिद्धि करता भया ॥ वेदमें बहुत परिपक्व हुवा ॥ तब मंत्रके बसतें विद्याधर हु वा ॥ चिरकाल पर्यंत विद्याधरमें एक कल्पपर्यंत रहा जब कल्पका अंत भया ॥ तब सशरीर अंतर्ध्यान हो गया ॥ तब इसका पवनरूपी शरीर वासना सहित हो रहा ॥ जब ब्र ह्माकी रात्र क्षय हूइ ॥ अरु दिन हूवा ॥ बहुरी सृष्टि रची तब एक मुनिश्वरके गृहमें पुत्र हूवा ॥ तहां बडा तप करत भया ॥ बहुरी सुमेरु पर्वतपर जाय स्थित भया ॥ एक मन्वंत र पर्यंत उहां रहा ॥ इकहतर चोकडी युग बीतत भइ ॥ तहां भोगकरी हरणीका पुत्र हूवा ॥ अरु मनुषका आकार तहां रहा ॥ तिस पुत्रके स्नेहसों मोहकों प्राप्त भया ॥ जो इस मेरे पुत्रकों धन होउ ॥ गुण आवर्दाबल बहुत होउ ॥ निरंतर यही चिंतन करने लगा ॥ इस कारनतें अपने तप धर्मतें विरक्त हुवा ॥ आयुष्य क्षीण भइ मृतरूप सर्पनें ग्रास लि या तपोभृष्ट निमित्त अरु तपके बल करी शरीर छुटा ॥ तब भोगकी चिंता संयुक्त भद्र देशके राजाके गृहविषे पुत्र हूवा ॥ तिस देशका राजा भया ॥ चिरपर्यंत राजभोग करी वृद्धअवस्थाकों प्राप्त भया ॥ शरीर जर्जरी भूत होगया ॥ तहां तपकी अभिलाषामें शरीर छुटा तिसकरी तपेश्वरके गृहविषे पुत्र हुवा ॥ अब संतापतें रहित होकरी गंगाजीके किना रेपर तप करनेकूं लगा हे ॥ हे रामजी ! इसप्रकार मनके फुरनें करकें शुक्र अनेक शरीरकों भोगत भया ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे भार्गवोपाख्याने विविध ज न्म वर्णनं नाम अष्टमः सर्गः ॥ ८ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! इसप्रकार शुक्र मनसों भमता फिर्या ॥ तब भृगुके पास जो शरीरथा सो निर्जीव हुवा पुर्यष्टक निकरी गइथी ॥ पवन अरु धूपसों शरीर जर्जरीभूत होगया ॥ जेसें मूलतें काट्यावृक्षगिर पडता हे ॥ तेसें शरीर गिर पडा॥ मन जो चंचल हे सो भोगकी तृष्णासों वही गयाथा ॥ जेसें हरण वनविषे भमता हे ॥ जेसें चक्रपर चड्या वासन भमता हे तेसें भमतें भमांतरकों देख्या ॥ जब मुनीश्वरके गृहमें जन्म लिया ॥ तब चित्तमें विश्राम हुवा ॥ गंगाके तटपर तप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने लगा ॥ मंद्राचल पर्वतवाला शरीर निरस होगया ॥ अस्थि चर्म मात्र शेष रही गया ॥ अरु लोहू सूकी गया ॥ शरीरके रंध्रमार्ग करी पवन चले तब बांसुरीवत् शब्द होवे ॥ मानो चेष्टाकों त्यागकें शरीर आनंदवान हुवा हे ॥ जब बडा पवन चले तब भुमिविषे लोटणेलागे नेत्र आदिक जो रंध्रथे सो गर्त गडेले वत् होय गये ॥ अरु मुख पसरी गया ॥ मा नो अपने पूर्व सुभावकों देखकें हसत हे ॥ जब वर्षाकाल आवे तब जलकरी पूरन हो जावे ॥ अरु जल तिसविषे प्रवेश करी रंध्रके मार्गसों निकसे ॥ जेसें झरणेसो जल निकसता हे तेसें निकसे ॥ जब उष्णकाल आवे तब धूपसों सूकी जावे ॥ महा काष्टकी नांइ बनविषे मौनरूप हो करी स्थित भया ॥ अरु मृग पंछी शरीरकों नाश करत न भये ॥ सों एक तो इह कारन हे जो राग दोषतें रहित पुन्य आश्रम था अवर भृगुजी महां तपस्वी तेजवान, तिसके निकट कोउ आय न सके ॥ इस कारणतें देहकों नष्ट न करत भये ॥ इहां श रीरकी इह अवस्था भई ॥ अरु उहां शुक्र पवनके शरीरसों चेष्टा करत भया ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे भार्गव कलेवर वर्ननं नाम नवमः सर्गः ॥ ९ ॥ ॥ वसिष्ठो वाच ॥ ॥ हे रामजी ! जब सहस्र वर्ष बितीत भये ॥ सो भूमिलोकके तिन लाख अरु साठसहस्र वरष भये तब भगवान भृगुजी समाधितें उतरे ॥ जागिकें देखते भये ॥ अपने आ गें शुक्रका शरीर दृष्ट न आया ॥ जब भलि प्रकार नेत्र पसारी देख्या तब तहां देख्या जो कृश जेसा होयकें शरीर गिर पडा हे ॥ जानत भया जो कालनें इसकों भक्षण कीया हे ॥ शरीरधूप अरु वायु मेघकरी जर्जरीभूत होगया हे ॥ नेत्र गडेला रूप होगये हे ॥ शरीरमें कीट आय स्थित भये हे ॥ जीवनें आलय स्थान बनाये हे ॥ घुराण मखियां आवतीयां जातीयां हे ॥ स्वेतदंत निकसी आये हे ॥ मानों शरीरकी दशाकों देखकें हसते हे ॥ मुखग्रीवा महा भयानक रूप खपर स्वेत होगया हे ॥ नासिका श्रवन स्थान सब जर्जरीभूत हो गये हे ॥ वायु चलें तब बांसुरीवत् बाजणे लगते हे ॥ महा आश्चर्यरूप शरीर कृश होयकें गिर पडा हे ॥ राग दोषतें रहित होकरी स्थित भया हे ॥ मृगपंछी भक्षण न करते भए ॥ सो एक तो पुन्यस्थान दुसरा भृगुजीका तेज था ॥ इस कारन तें हिंसक भक्षण न करत भये ॥ शरीरकी इह दशा देखकें भृगुजी उठी खडे हूवे ॥ क्रोधवान होकरी कहने लागे ॥ जो कालने क्या समझा हे ? जो मेरे पुत्रकों मार्या हें शुक्र परम तपस्वी अरु सृष्टिपर्यंत रहने वालाथा ॥ सो बीना काल मेरे पुत्रकों क्यों मारा हे ? इह कोन रीती हे ? में काल कों श्राप देकरी भस्म करोंगा ? मेरे पुत्रकों समेबिना मारा हे ॥ तब कालकारूप जो काल हे ॥ सों अद्भूत शरीर धारी करी आया ॥ षट्मुख षट्भूजा हाथविषे खड्ग त्रिशूल अ रु फांसी अरु कानमे मोती पहिरे हूवे मुखसों ज्वाला निकसती हे ॥ महा स्याम शरीर अग्निवत् जिव्हा हे ॥ कमलकी नांइ ज्वाला निकसती हे ॥ त्रिशूलके अग्रतें अग्निकी लाटा निकसतीयां हें ॥ जेसें प्रलय कालकी अग्नितें धूम निकसता हे ॥ तेसें स्याम शरीर बडे पहाडकी नांइ उग्ररूप हे ॥ जहां चरन रखे तहां पृथ्बी पहाड कांपने लागही ॥ महा भ यानक रूप काल भगवान भृगुऋषीश्वरके निकट आया ॥ अरु भृगु जो महा प्रलयके समुद्रवत् क्रोध करी पूर्ण था तहां आगमन करी कहत भया ॥ हे मुनीश्वर ! जो मर्यादाके वेत्ता हे ॥ अरु परावर परमात्माके वेत्ता हे ॥ सो पुरुष क्रोधकों नहि प्राप्त होते ॥ जो कोउ क्रोध करनेकों आवे तोभी मोहके वश हो करी क्रोधवान नही होते ॥ तुम कारणबिन काहेकों मोहित होय क्रोधको प्राप्त भये हो ? ॥ तुम ब्रह्म तनय तपस्वी हो अरु हम नीतिके पालक हे ॥ हमारे करी तुम पूजणेजोग हो ॥ यही नीतिकी इच्छा हें ॥ अरु तपके बल करी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम क्षोभ मत करो तुमारे श्राप करी में भस्मभी नही होता ॥ प्रलयकालकी अग्निभी मुझकों दग्ध करी नही सकती ॥ तो तुमारे शापकरी में कब भस्म होता हों ? हे मुनीश्वर ! में तो अनेक ब्रह्मांड भक्षण करी गया हों ॥ केइ कोटि ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ग्रास लिये हैं ॥ तेरा श्राप मुझकों क्या करी सकता हे ॥ जेसें आदि नीति इश्वरनें रची हे ॥ तेसें स्थित हे हम सबके भोक्ता हुवे हैं ॥ तुमसारखे हमारा भोग हुवे हे ॥ इह आदि नीत हुइ हे ॥ हे मुनीश्वर ! अग्नि सुभावकर ऊर्ध्वकों जाता हे ॥ अरु जल सुभावकर अधकों जाता हे ॥ अरु भोग जो हे सो भोक्ताकों प्राप्त होता हे ॥ अरु सृष्टि सब कालके मुखमें प्राप्त होती हे ॥ आदि परमात्माकी नेत एसेंहि हुइ हे ॥ जेसें रचि हे तेसें स्थित हे ॥ अरु जो निष्कलंक ज्ञान दृष्टी कर देखीयें तो न कोउ कर्त्ता हे ॥ न कोउ भोक्ता हे ॥ न कारण हे ॥ न कार्य हें ॥ एक अद्वैत सत्ताहि हे ॥ जो अज्ञान कलंक दृष्टी करी देखीयें तो कर्त्ता भोक्ता अनेक प्रकारके भ्रम भासते हे ॥ हे ब्राह्मण ! कर्त्ता भोक्ता आदिक जो भ्रम हे ॥ सो असम्यक ज्ञान करी होता हे ॥ जब सम्यक ज्ञान हुवा ॥ तब कर्त्ता कार्य भोक्ता कोउ नही ॥ जेसें वृच्छ साथ पुष्प स्वभावतें उपजी आते हे ॥ अरु सुभावतेंइ नष्ट हो जाते हे ॥ तेसें भूत प्राणि सृष्टिविषे स्वाभाविक फुरि आते हे ॥ बहुरी स्वाभाविक रीतसों नष्ट हो जाते हें ॥ ब्रह्मा उत्पन्न कर्त्ता हे ॥ बहुरी नष्ट कर्ता हे ॥ जेसें चंद्रमाका प्रतिबिंब जलविषे पडता हे ॥ जलके हिलने करी हिलता भासता हे ॥ ठहरणेकरी ठहरा भासता हे ॥ तेसें मनके फुरणेकरी आत्माविषे कर्तव्य भोक्तव्य भासता हे ॥ वास्तव कछु नही मिथ्याही मनके फुरणे करी लोकविषे कर्तव्य आदिक भासते हे ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प भ्रम करी भासता हे ॥ तेसें आत्माविषे कर्तव्य भोक्तव्य भ्रम करीके भासता हे ॥ वास्तव कछु नही ॥ तातें क्रोध मत करो ॥ इह दुष्टकर्म आपदाका कारण हे ॥ हे मुनीश्वर ! में जो तुझकों इह बचन कहता हों ॥ सो अपनी विभुता अरु अभिमान करी नही कहता ॥ इह स्वतः ईश्वरकी निती हे ॥ हम तिसीविषे स्थित हें ॥ जो बोधवान पुरुष हे सो अपने प्रकृति आचारविषे विचरते हें ॥ उह अभिमान करिकें नही विचरते ॥ जो कर्तव्यके वेत्ता हे सो बाह्य प्रकृत आचारकों करता हे ॥ जेसा आनि प्राप्त होवे ॥ अरु अंतरतें सुषुम्नकी नांइ स्थित हे ॥ उह ज्ञानदृष्टि कहा ॥ उह धैर्यता कहा ॥ अरु उदार दृष्टी कहा ॥ जो शास्त्रकरी प्रसिद्ध हे ॥ तुम क्यों अंधकी नांइ मोह मार्गविषे मोहित होते हो ? ॥ हे साधु ! तुम तो त्रिकाल दर्शी हों ॥ अविचार करिकें मूर्खकी नांई जगत जंत्रविषे क्यों मोहकों प्राप्त होते हो ? तेरा पुत्र अपने कर्महूंके फलकों प्राप्त भया हे ॥ अरु तुं मूर्खकि नांइ मुजकों शाप दीया चाहता हे ॥ हे मुनीश्वर ! इसलोकविषे जीवहुके दोदो शरीर हे ॥ एक मनरूप हे दुसरा अधिभूतरूप हे ॥ अधिभूतरूप जड हे ॥ अत्यंत विनाशी हे ॥ जहां इसकों मन प्रेरता हे तहां चला जाता हे ॥ आपतें कछू करि नहि सकता ॥ जेसें सारथी भला होता हे ॥ तो रथकों भले स्थान ले जाता हें ॥ अरु जो सारथी भला नही होता तो रथकों दुःखके स्थान ले जाता हे ॥ तेसें जब मन भला होता हे ॥ तब उत्तम लोककों प्राप्त करता हे ॥ जब दुष्ट होता हे ॥ तब नीच स्थानकों प्राप्त करता हे ॥ जिसकों मन असत करता हे ॥ सो असत भासता हे ॥ जिसकों मन सत करता हे ॥ सो सत भासता हे ॥ जेसा कमल पत्ता हे ॥ तेसा हो भासता हे ॥ जेसें माटिकी सेना बालक बनावते हे ॥ बहुरी भंग करते हें ॥ कबहुं सत करते हें कबहुं असत करते हें ॥ जेसें करते हे तेसें देखते हे ॥ हे साधो ! इह चित्तरूपी पुरुष हे ॥ जो चित्त करता हे सो कीया होता हे ॥ जो चिंतन करता हे ॥ सो न कीया होता ॥ इह जो फुरना हे ॥ इह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देह हे ॥ इह नेत्र हे ॥ इह सीर है ॥ इह अंग हे ॥ इत्यादिक सब मनरूप है ॥ जीवभी मनका नाम हे ॥ मनका जीवणा जीव है ॥ उही मनकी वृत्ति निश्चयरूप होती हे ॥ त ब तिसका नाम बुद्धि होता हे ॥ अहंरूपकों धरता हे ॥ तब तिसका नाम अहंकार होता हे ॥ देहकों स्मरन करता हे ॥ तब तिसका नाम चित्त होता हे ॥ तातें पृथ्वीरूप शरीर कोउ नही ॥ मन दृढ भावना करी शरीररूप होता हे ॥ सोई आधिभूत हो भासता हे ॥ जब शरीरकी भावनाकों त्यागता हे ॥ तब चित्त परम पदकों प्राप्त होता हे॥जेता कछु जगत हे॥ सो मनके फुरनेविषे स्थित हे ॥ जेसा मनका फुरना होता हे ॥ तेसाहीरूप हो भासता हे ॥ अरु तेरा जो पुत्रथा शुक्र सोभी मनके फुरने करी अनेक स्थानकों देखत भया ॥ जब तु म समाधिविषे स्थित थे तब विश्वाची देवसुंदरी जो अप्सराथी ॥ तिसके पाछे मन करी चला गया इंद्र लोक स्वर्गकों जाय प्राप्त भया ॥ देवता हो करी मंदारवृच्छविषे विचरणें लागा ॥ पारिजात वृच्छहूंविषे तमालहूं अरु नंदनवनविषे विचरता रहा ॥ लोक पालहुके स्थानविषे विचरा॥ बत्तीस युगपर्यंत विश्वाची अप्सरासाथ विचरता रहा ॥ जेसें भंवरा कमलकों सेवता हे ॥ तेसें तिव्र संवेग करी भोगता रहा जब पुन क्षीण हुवा तब तहां तें गिराया ॥ जेसें पका फल वृच्छ ते गिरता हें ॥ तब देवताका शरीर आकाश मार्गविषे अंतर्ध्यान होगया ॥ भूमि लोकविषे आनिपडा ॥ धानविषे आयकरी ब्राह्मणके वीर्यद्वारा ब्राह्मणीका पुत्र भया ॥ मालव देशका राज किया ॥ बहुरी धीवरका जन्म पाया बहुरी सूर्यवंशी राजा हुवा ॥ बहुरी वि द्याधर हुवा कल्पपर्यंत विद्याधरविषे बुद्धिवान रहा ॥ इसप्रकार अनेक शरीरहूंकों पाय करी अब गंगाके तटपर ब्राह्मणका पुत्र हो करी तप करता हें ॥ वसुदेव तिसका नाम हे ॥ हे मु नीश्वर ! इस प्रकार तेरा पुत्र वासना करीकें अनेक शरीर पावता रहा हे ॥ विंध्याचल पर्वतविषे गैबहुवा कांतदेशविषेधीवर हुवा ॥ तरंगीत देशविषे राजा हुवा ॥ क्रांत देशविषे हरण हुवा ॥ ॥ वनमें विचरा बहुरी विद्यावान गुरु हुवा ॥ बहुरी विद्याधर श्रीमान हुवा ॥ बहुरी कुंडलादिक भूषणहूंकरी संपन्न बडा ऐश्वर्यवान गंधर्वहुका मुनिनायक भूषण हुवा ॥ कल्प पर्यंत उहां रहा जब प्रलय होने लगा ॥ तब सब लोक पूर्व भस्म हो गये ॥ जेसें अग्निविषे पतंग भस्म होते हे ॥ तब तेरा पुत्र निराधार निराकार वासना करीकें आकश मार्गविषे भमता रहा ॥ जेसें आलय बिना पंछी रहता हे तेसें रहा ॥ जब ब्रह्माकी रात्र वितीत भई ॥ तब सृष्टिकी रचना बनी ॥ तब उह सतयुगविषे ब्राह्मणका बालक वसदेव नाम गंगा के तटपर तप करता हे ॥ आठसों वरस तिसकों तप करते बीते हे ॥ तूंभी ज्ञानदृष्टी करी देखेगा तो सबही वृत्तांत उसका तुझकों भास आवेगा ॥ तातें देख जो इसी प्रकार हे ॥ अ थवा किसी ओर प्रकार हे ? ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थिति प्रकरणे कालवाक्यं नाम दशमः सर्ग : ॥ ॥ १० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ कालोवाच ॥ ॥ हे मुनीश्वर ! महा तरंग उछलते हे ॥ अरु झनकार शब्द होते हे ॥ अेसी गंगाके तटपर तेरा पुत्र तप करता हे ॥ शीरपर बडी जटा हे ॥ सर्व इंद्रियके भम कों तिसनें जीत्या हे ॥ जो तुमकों उसके मनका विस्तार देखनेकी इच्छा हे ॥ तो इनहुं नेत्रकों मूंदी करी ज्ञानके नेत्रसों देखो ॥ हे रामजी ! जब इसप्रकार जगतके ईश्वर कालनें कहा ॥ केसा काल हे ? जो सम दृष्टि हे जीसकी ॥ तब मुनीश्वर चितवता भया इन नेत्रहूंकों मुंदी करी ज्ञान नेत्र साथ देखा ॥ एक मुहूर्तविषे अपने पुत्रका सब वृत्तांत देखता भया ॥ जेसें कोउ अपनी बुद्धिविषे प्रतिबिंबकों देखे तेसें देखकें बहुरी मंदराचल पर्वतपर जो भृगु शरीर था तिसविषे प्रवेश कीया ॥ अंतवाहक शरीर करी अरु अपने अग्र भागविषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काल भगवानकों देखताभया ॥ पुत्रकों गंगाके तटपर देख्या ॥ आश्चर्यकों प्राप्त हुवा ॥ तब विकार दृष्टीकों त्याग करी निर्मल दृष्टिसाथ वीतराग मुनीश्वर बचन कहत भया ॥ भृगुरुवाच ॥ ॥ हे भगवन् ! तीनहुं कालके ज्ञाता ईश्वर ! हम बालक हे ॥ इसी ते निर्दोष हे ॥ तुमसारखे बुद्धिवान हे तीन काल अमल दर्शी हे ॥ हे भगवन् ! ईश्वरकी माया महा आश्चर्य रूप हे ॥ जीवहुंकों अनेक भ्रम दीखावती हे ॥ बुद्धिवानकोंभी मोह करतीहे ॥ मूर्खहुंकी क्या बात हे ? ॥ तुम सब कछु जानतेहो ॥ जीवहुंकी वार्ता सब तुमारे अंतर्गत हे ॥ जीवके मनकी वृत्त हे ॥ तीसके अनुसार भ्रमते हैं ॥ सो मनकी वृत्ति सब तुमारे अंतर्गत फुरती हे ॥ इन सबनहुंके तुम वेत्ताहो ॥ जेसें इंद्रजाली अपनी बाजीका वेत्ता होता हे ॥ हे भगवन् ! में जो भ्रमकों प्राप्त हो करी क्रोध किया ॥ सो इसकारणतें जो मेरे पुत्रका मृत्यु न था ॥ चिरंजीवी था अरु तिसकों में मृतक हुवा देखकें भ्रमकों प्राप्त भया ॥ अरु हमारा जो क्रोध हे सो आपदाका कारन नही ॥ काहे तें जो में पुत्रका शरीर निर्जीव देख्या तब कहा ॥ जो अकाल मृतक हुवा हे ॥ इस कारनतें क्रोध हुवा ॥ सो क्रोधभी नीतिरूप हे ॥ अर्थ इह जो क्रोधका स्थान होवे तहां क्रोध चहिता हे ॥ में संसारकि गत बिचारकें क्रोध न ही किया ॥ अर्थ इह जो पुत्रकी अवस्था देखकें क्रोध नही किया निर्जीव शरीरकों देखकें क्रोध किया हे ॥ इसीतें इह क्रोध आपदाका कारन नही ॥ अयुक्ति कारण करी जो क्रोध हे ॥ सो आपदाका कारण हे ॥ युक्ती करी जो क्रोध हे सो संपदाका कारण हैं ॥ इह कर्तव्य संसारकी सत्ताविषे स्थित हे ॥ इह नीति हे ॥ जबलग जीव हे तबलग जगत क्रम हे॥जेसें जबलग अग्नि हे ॥ तबलग उष्णताभी हे ॥ तेसें जो कर्तव्य हे सो करना हे ॥ जो त्यागने जोग हे सो त्यागना हे ॥ इह नीति जगतविषे स्थित हे ॥ जो हेयोपादेय नही जानता ॥ तिसकों त्यागना जोग हे ॥ तातें मे पुत्रका अकाल मृत्यु देखकें क्रोध कीयाथा ॥ परंतु विचार करीकें जब तुमनें स्मरन कराया ॥ तब में विचारकरी देखा ॥ जो मेरा पुत्र अनेक भ्रमकों पावता अब गंगाके तटपर तप करता हे ॥ हे भगवन् तुम जो कहा जीवहुंके दो दो शरीर हे एक मनोमय दुसरा अधिभूतक ॥ अरु में तो इह मानता हों ॥ जो शरिर एक मनही हे ॥ दूसरा कोउ नही ॥ मनहीका किया सफल होता हे ॥ शरीरका नही होता ॥ कालोवाच ॥ ॥ हे मुनीश्वर ! तुम यथार्थ कहा हे ॥ शरीर एक मनही हे ॥ स्थूल देह मनकी रची हे ॥ जेसें घटकों कुलाल रचता हे ॥ तेसें मन देहकों रचता हे ॥ जो मन शरीरतें रहित निराकार होता हे ॥ क्षणविषे आकारकों रचिलेता हे ॥ जेसें बालक पलावेविषे वेतालकों रचता हे ॥ भ्रम करके ॥ मनविषे जो फुरण सत्ता हे ॥ सुपन भ्रम तिसकरी दिखाता हे ॥ बडे आकार अरु गंधर्व नगर भासि आते हैं ॥ सो मनहीकी सत्ता हे ॥ स्थूल दृष्टि करी जीवकों दो शरीर भासते हैं ॥ बोधवानकों तीनों जगत मनरूप भासते हैं ॥ सब मनकरी रचे हे ॥ जब भेदवासना होती हे ॥ तब असतरूप जगत नाना प्रकार हो भासता हे ॥ जेसें असम्यक दृष्टी करी दो चंद्रमा भासते हैं ॥ सम्यक् दर्शीकों एक चंद्रमावत् सब शांतरूप आत्माही भासता हे ॥ भेदभावना करी घटपट आदिक अनेक पदार्थ भासते हैं ॥ जो में दुर्बल हों, मोटा हों, सुखी हों, दुःखी हों ॥ इह जगत हे; इह काल हे, इत्यादिक अनेक भ्रमकों देखता हे ॥ सो संसार वासना मात्र हे ॥ जब मन शरीरकी वासनाकों त्याग करी परमार्थकी उर आवता हे ॥ तब भ्रमकों प्राप्त होता हैं ॥ हे मुनीश्वर ! समुद्रतें तरंग उठी करी ऊर्ध्वकों जाता हे॥ जो उह जाने में तरंग होता सो मूर्ख हे ॥यही अज्ञान दृष्टि हे ॥ऊर्ध्वकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जावेगा तब जानेगा में ऊर्ध्वकों गया हों नीचे जावेगा तब जानेगा में पातालकों गया हों॥इह कल्पना अज्ञान हे वास्तव नही॥वास्तव दृष्टि इह हे जो अध होय अथवा ऊर्ध्व होय परंतु आपकों जलरूप जाने ॥ तेसें जो पुरुष प्रछन् देहादिकविषे अहं प्रतीत करता हे ॥ सो अनेक भमकों देखता हे ॥ सम्यक दर्शी सब आत्मरूप जानता हे ॥ सर्व जीव आत्मरूप समुद्रके तरंग हे ॥ अज्ञानकरि भिन्न हे ॥ अरु ज्ञानकरी उहीरूप हे ॥ आत्मरूपी समुद्र सम हे स्वच्छ हे शुद्ध हे आदिरूप हे शीतल अविनाशी विस्तृतरूप अपने महिमाविषे स्थित हे ॥सदा आनंदरूप हे ॥ जेसें कोउ जलविषे स्थित हे ॥ ओर तटउपर पहाड हे तिसकों अग्नि लागी होवे॥अग्निका प्रतिबिंब जलविषे पडता हे ॥ अरु उह कहे में दग्ध होता हों सो जेसें भमकरी उसकों ज्वलनता भासती हे, तेसें जिवकों आभासरूप जगत दुःखदायक भासता हे जेसे तटके वृच्छ पर्वतादि पदार्थ जलमें प्रतिबिंबत भासते हे ॥ अरु उनकों देखकें नाना प्रकार भासे ॥ तेसें आभासरूप जगतकों जीव नानारूप मानते हें ॥ जेसें एक समुद्रविषे नाना तरंग भासते हे तेसें आत्माविषे अनेक आकार जगत भासता हे ॥ वास्तवतें द्वैत कछु नही ॥ सर्व शक्तिरूप ब्रह्मसत्ता हे तिसकरि विचित्ररूप चंचल भासता हे ॥ तोभी एक रूप हे ॥ अपने आपविषे स्थित हे ॥ ब्रह्मविषे जगत फुरता हे ॥ बहुरी तिसीविषे लीन होता हे॥ जेसें समुद्रविषे तरंग उपजे हे ॥ बहुरी तिसीविषे लीन होते हे ॥ ओर भेद कछु नहीं ॥ पूर्णविषे पूर्णइ स्थित हे ॥ जेसें जलतें तरंग भिन्न नहि ॥ जेसें ईश्वरीतें जगत भिन्न नही ॥ जेसें पत्र डार फूल फल वृच्छरूप हे ॥ तेसें सब जगत आत्मरूप हे ॥ सो आत्मा अनेक शक्तिरूप हे ॥ जेसें एक पुरुष अनेक कर्मका कर्त्ता होता हे ॥ जेसा कर्म करता हे तेसे संगकों पावता हे ॥ पाठ करनेतें पाठक कहता हे ॥ पाक करनेतें पाचक कहता हे ॥ जापक तापक आदिक अनेक नामको धारता हे ॥ तेसें एक आत्मा अनेक शक्तिकों धारता हे ॥ जेसें एक पछाया जिस आकारका पडता हे ॥ तेसा आकार भासता हे ॥ जेसें एक मेघविषे अनेक रंग सहित इंद्रधनुष्य भासता हे ॥ तेसें इह अनेक भमकों पावता हे ॥ हे साधु ! सब जगत ब्रह्मतें फुर्या हे ॥ जड भासते हे ॥ सोभी चैतन्य सत्तातें फुरे हे ॥ जेसें बवोहा अपने मुखसों तंतु निकासि करी आपहि ग्रास लेता हे ॥ तेसें चैतन्यतें जड उत्पन्न होते हें ॥ बहुरी लीन हो जाते हें ॥ चैतन्य जीवतें सुषुप्ति जडता उपजती हे ॥ बहुरी तिसीविषे निवृत्त होती हे ॥ तातें अपनी इच्छा करी इह पुरुष बंधमान होता हे ॥ अरु अपनी इच्छा करी मुक्त होता हे॥ जब बहिर्मुख देहादिक अभिमान साथ मिलता हे ॥ तब आपकों बंधमान करता हे ॥ जेसें घुरान आपहि गृह रचिकें बंधमान होती हे ॥ अरु जो पुरुषार्थ करीकें अंतर्मुख होता हे तब मुक्तिकों पावता हे ॥ जेसें अपने हाथके बलकरी बंधनकों तोडीकें कोउ बलि नीकसी जाता हे ॥ हे साधु ! ईश्वरकी विचित्ररूप शक्ति हे॥जेसी शक्ति फुरती हे तेंसा रूप देखावती हे ॥ जेसें ओस आकासविषे उपजती हे॥तिसीकों आच्छादि लेती हे ॥तेसें आत्माविषे जो इच्छाशक्ति उपजति हे॥ सोइ आवरन करी लेती हे ॥ तन्मयरूप हो जाता हें ॥ अरु वास्तवतें इसकों बंधनतें बंधन नही मोक्षसो मोक्ष नही ॥ बंध अरु मोक्ष दोनों शब्द भांति मात्र हे ॥ में जानता नही जो बंध अरु मोक्ष लोकविषे कहांते आए हें ॥ आत्माकों न बंधन हे ॥ न मोक्ष हें ॥ अेसें सतरूपकों असत्य रूपनें गास्या हें ॥ जो कहता हे में दुःखी हों सुखी हों, दुबला हों, मोटा हों, इत्यादिक भमकों देखता हे ॥ माया महा आश्चर्यरूप हे जिसनें जगतकों मोहित कीया हे ॥ हे मुनीश्वर ! जब चित्त संवित कलनारूप होता हे ॥ अर्थ इह जो दृश्य साथ मिलिकें फुरणारूप होता हे ॥ तब घुरानकी नांइ आपही आपकों बंधन करता हें ॥ अरु जब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दृश्यतें रहित अंतर्मुख होती हे ॥ तब शुद्धमोक्षरूप भासता हे ॥ बंध अरु मुक्ति दोनों मनकी शक्ति हे ॥ जेसें जेसें मन फुरता हे तेसा तेसा रूप भासता हे ॥ सो अनेक शक्ति आत्मा साथ अनन्यरूपहे ॥ सब आत्मातें उपज्या हे ॥ अरु आत्माविषे स्थित हे ॥ तिसविषे भिन्नहोकरी भासतीयांहे ॥ तिसविषे लीन होतीयांहे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग उपजते हें तिसविषे स्थित होकरी लीन होजाते हें जेसें चंद्रमातें किरणां उदे होकरी भिन्न भासतीयांहे ॥ बहुरी तिसीविषे लीन होतीयां हें ॥ तेसें परमात्मारूपी महासमुद्र हे ॥ चेतनता रूपी तिसविषे जल हे ॥ तिसतें जीवरूपी अनेक तरंग उपजते हे ॥ तिसविषे स्थित हें बहुरी लीन होजातेहें कोउ तरंग ब्रह्मारूप, कोउ विष्णुरूप, कोउ रुद्ररूप, होकरी प्रकाशतें हे ॥ जीसतें उपजे हे तिसि सुभावविषे स्थित होतेहें ॥ प्रमादतें रहित कोउ लहरि जम, कोउ कुबेर, कोइ इंद्र, कोउ सूर्य, कोउ अग्नि, कोउ मनुष, कोउ देवता, कोउ गंधर्व, विद्याधर, यक्ष किन्नर, आदिक रूप होकरी उपजतेहें ॥ बहुरी लीन होजाते हें ॥ केइ स्थित होकरी चिरकाल पर्यंत रहतेहें ॥ जेसें ब्रह्मादिकहें ॥ केइ उपजी करी कछु काल रहीकरी विध्वंस होजातेहें ॥ सो देवता मनुष आदिक हे ॥ अरु केइ कीट सर्प आदिक फूरते हें चिरकालभी रहते हें ॥ अल्पकालविषे नष्ट हो जाता हे ॥ आत्म समुद्रतें तरंगवत फूरते हें ॥ बहुरी तिसविषें लीन हो जाते हें ॥ केइ ब्रह्मादिक उपजी करी अप्रमादी रहता हें केइ प्रमादी हो जाता हे ॥ तुच्छ शरीर होते हे ॥ इस संसार सुपन आरंभ हे ॥ अरु दृढ होकरी भासता हे ॥ कोउ केसें कोउ केसें रुपकरी स्थित हें ॥ स्वरूपके प्रमादकरी दीनताकों प्राप्त होता हें ॥ अेसें मानते हें ॥ में दुखी हों में कृश हों ॥ इत्यादिक भमकों मूढता करी देखते हें ॥ सो सब आत्मरूपके तरंग पडे फुरते हें ॥ कोउ जंगमरूप कोउ स्थावररूप मनुष देवता दैत्य तिर्यक पशु पंछी सभ आत्मसमुद्रकी लहरी हे ॥ उपजी करी बहुरी लीन हो जाते हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे संसारावर्तवर्णनं नाम एकादशःसर्गः ॥ ११ ॥ ॥ कालोवाच ॥ ॥ हे मुनीश्वर ! देवता दैत्य मनुष आदिक जो आकार हे ॥ सो ब्रह्मसाथ अभिन्नरूप हे ॥ इह सत हे ॥ जब मिथ्या संकल्प साथ जीव कलंकित होता हे ॥ तब जानता हे जो में ब्रह्म नही ॥ इस निश्चयकों पायकें मोहित होता हे ॥ मोहित हूवा अधोकों चला जाता हे ॥ जदपी ब्रह्मसाथ अभिन्नरूप हे ॥ अरु तिसविषे स्थित हे ॥ तोभी भावनाके वसतें आपकों भिन्न जानकें मोहकों प्राप्त होता हे ॥ शुध ब्रह्मविषे संवितका उल्लेख होता हे ॥ सो कलंकितरूप कर्मका बीज होता हें ॥ तिसतें आगें विस्तारकों पावता हे ॥ जेसें जल जिस जिस बीज साथ मिलता हें ॥ तिसी रसकों प्राप्त होता हें ॥ तेसे संवितका फुरना जेसे कर्म साथ मिलता हे ॥ तेसी गतिकों प्राप्त होता हे ॥ संकल्प करी कलंकि तहूवा अनेक दुःख पावता हे ॥ इह प्रमादरूप कर्म केसा हे ॥ जो करजुएका बीज हे तिसकों मुष्टी भरि भरि बोता हे ॥ सो अपने दुःखका कारण हे ॥ इह जगत आत्मरूप समुद्रकी लहरीयां हे ॥ विस्तार करी फुरतीयां हे ॥ कोउ ऊर्धकों जाती हे ॥ कोउ अधकों जाती हे ॥ बहुरी लीन हो जातीयां हे ॥ ब्रह्मा आदि तृणपर्वत इन सबनका इही धर्म हे ॥ जेसें पवनका स्पंद धर्म हे ॥ तेसें इनकाभी हे तिनविषे केइ निर्मल पूजणे जोग हे ॥ सो ब्रह्मा विष्णु रुद्रादिक हे ॥ केइक कछुक मोह संयुक्त हे ॥ जेसे देवता मनुष सर्प हे ॥ केइक अनंत मोहविषे स्थित हे ॥ जेसें पर्वत वृच्छ आदिक हे ॥ केइक अज्ञान करिकें मूढ हे सो कृमी कीट आदिक योनिकों प्राप्त हुवे हे इह दूरतें दूर चले गये हे ॥ जेसें जलके प्रवाह करी तृण चला जाता हे ॥ देवता मनुष सर्प

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदिक केइक भ्रमवानभी होते हैं ॥ केइक तटके निकट आयकें बहुरी वही जाते हे ॥ अर्थ इह जो संत्संग अरु सतशास्त्रोंकों पायकें बहुरी मायाके व्यवहारमे वहिजाते हैं॥ जमरूप जो चूहा हे सोतिनकों पडा काटता हे ॥ एक अल्प मोहकों प्राप्त होकरी बहुरी ब्रह्म समुद्रविषे लीन भये हे ॥ अरु केइक अंतर्गत ब्रह्म समुद्रकों जानकें स्थित हूवे हे ॥ तम अज्ञानकों तरे हे ॥ केइक अनेक कोटि जन्मकरी प्राप्तहोते हैं ॥ केई अधतें उर्धकों चलेजाते हे ॥ बहुरी उर्धतें अध चलेजाते हे ॥ प्रमाद करी अनेक योनि दुःखदूंकों पडे भोगते हैं ॥ जब आत्मज्ञान होता हे ॥ तब आपदातें छूटिकें शांतिवान होते हैं ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे उत्पत्ति विस्तारवर्णनं नाम द्वादशःसर्गः ॥ १२ ॥

॥ कालोवाच ॥ हे साधु ! इह जेता कछू जगत भूत जात विस्तार हे ॥ सो सब आत्मरूप समुद्रके तरंग हे ॥ एकहि अनेक विचित्र विस्तारकों प्राप्त भया हे ॥ जेसें वसंत ऋतुविषे एकही रस अनेक प्रकारके फूल फलकों धारता हे ॥ तेसें इह जीवहूं विषे जिनने मनकों जीति करी सर्वात्मा ब्रह्मका दर्शन कीया हे ॥ सो जीवन्मुक्त हूवे हे ॥ ओर मनुष देवता यक्ष किन्नर गंधर्व आदिक सभ पडे भ्रमते हे ॥ इनतें इतरभी स्थावर मूढ अवस्थाविषे हे तिनकी क्या बात करनी हे ॥ लोकविषे तीन प्रकारके जीव हे ॥ अेक अज्ञानी महामूढ हैं ॥ दूसरे जिज्ञासी हे तीसरे ज्ञानवान हे ॥ जो मूढ हे तिनकों शास्त्रके श्रवन अरु विचारविषे कछु रुचि नही ॥ अरु जो जिज्ञासी हे तिनके निमित्त ज्ञानवाननें शास्त्र रचे हैं ॥ जिस जिस मार्ग करी उह प्रबुध आत्मा हुवे हैं ॥ तिस तिस प्रकारके तिनने शास्त्र रचे हैं ॥ तिस मार्ग करि अवर जीवभी मोक्षभागी होते हे ॥ हे मुनीश्वर ! सतशास्त्र जो ज्ञानवाननें कीये हैं ॥ सो जब निःपाप पुरुष तिनकों बिचारता हे ॥ तब उसकों निर्मल बोध उपजता हे ॥ तिसकरी मोह निवृत्त होता हे ॥ जब निर्मल बुद्धि होती हे ॥ तब सतशास्त्रके अभ्यास करी मोह नष्ट होता हे ॥ जेसें सूर्यके प्रकाश करी तम नष्ट हो जाता हे ॥ अरु जो मूढ अज्ञानी हे सो आत्माके प्रमाद करी विषयकी तृष्णातें मोहकों प्राप्त होते हैं ॥ जेसें अंधेरी रात्र होवें अरु उपरतें कुहिडभी होवे तब तमतें तम होता हे ॥ तेसें मूढ मोहतें मोहकों प्राप्त होते हे ॥ अपने संकल्प करी आपही दुःखी होते हे ॥ जेसें बालक अपने पलावेविषे वैताल कल्पी करी आपही दुःखी होता हे तातें जेते कछु भूतजात हे ॥ तिन सबकों सुखदुःखका कारण मनरूपी शरीर हे ॥ जेसें उह फुरता हे तेसी गतीकों प्राप्त होता हे॥ मांसमय शरीरका कीया क छु सफल नही होता॥ असत मांस आदिकका मिल्या हूवा जो आधिभौतिक शरीर हे॥ सो मनके संकल्प करी रचा हे॥सो वास्तव कछु नही॥ संकल्पकी दृढता तें आधिभौतिक भासनें लागा हे ॥ सुपन शरीरकी नांई हे ॥ मनरूपी शरीर करी जो तेरे पुत्रनें किया हे ॥ तिसी गतीकों प्राप्त भया हे इसीमें हमारा कछु अपराध नही हे ॥ हे मुनीश्वर! अपनी वासनाके अनुसार जेसा कोउ कर्म करता हे ॥ तेसें फलकों प्राप्त होता हे ॥ मांस शरीरमें कछु नही होता ॥ जेसें जेसें तीव्र भावना करी तेरे पुत्रका मन फुरता गया हे॥ तेसीतेसी गतीकों पावता भया हे॥ स्वर्ग नरक सबका भोगता भया हे ॥ आपमें मनके मोह करी सब देख्या हे ॥ बहुत कहने करी क्या हे ॥ उठहु अब तहां हीं चलीयें जहां उह ब्राह्मणका पुत्र हो करी तप करनें लागा हे ॥ गंगाके तटपर तहां उसकों देखांहि॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे भारद्वाज ! इस प्रकार जब काल भगवानने कहा ॥ तब दोनों जगतकी गतीकों हसत उठी खडेहूवे ॥ हाथ साथ हाथ पकडिकें कहते भये ॥ बडा आश्चर्य हे ॥ इश्वरकी नीति आश्चर्यरूप हे ॥ जीवकों बडे भ्रमकों प्राप्त कर्ता हे ॥ जेसें उदयाचल पर्वततें सूर्य उदय होता हे ॥ अरु आकाशमार्गविषे चलता हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेसे प्रकाशकी निधि उदार आत्मा दोनों चले ॥ इस प्रकार वसिष्ठजी रामजीकों कहा ॥ तब सूर्यअस्त हूवा सर्व सभा स्नानकों गइ ॥ दिन हूवे बहुरी अप अपने आसनपर आनि स्थित भये ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे भृगुआश्वासनं नाम त्रयोदशःसर्गः ॥ १३ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी! काल अरु भृगुजी दोनों मंदराचल पर्वतसों भूमिपें उतरे॥जहां पुत्र बेठाथा तहां चले॥देवताके महासुंदर स्थानकों लंघते लंघते तहांगए॥जहां ब्राह्मण शरीर साथ गंगाके किनारे उह तप कर्ताथा समाधिविषें स्थित हे॥ तिसकों देखते भए ॥ मनरूपी जो मृग हें सो अचल होकरी विश्रामकों प्राप्त भया हे॥जेसें चिरकालका थका चिरकालपर्यंत विश्राम पावे तेसे विश्राम पाया हे॥अनेक जन्मकी चिंतनाविषे भटकता भटकता अब तपविषे लगा हे ॥ अरु विश्रामकों पाया हे ॥ जेसें चक्र भमता ठहरी जाता हे ॥ तेसें ठहरी गया हे ॥ संसाररूपी महासमुद्र हे तिसके आवर्तनें निकसी करी एकांत स्थित भया हे ॥ इंद्रिय अरु मनकी चपलनाकों त्यागकें निर्विकल्प समाधिविषे स्थित भया हे ॥ स्थावरकि नांइ अचल भया हे ॥ आधि व्याधि आदिक संपूर्ण कल्पना जालतें मुक्त परम शांतिकों प्राप्त हूवा हे ॥ राग दोषतें रहितहोकरी परमानंद पदविषे स्थित भया हे ॥परमबोधरूप उदारता विषे समाधि स्थित तिसकों देखकें कालने कहा॥हे भृगु ! देख समाधिविषे स्थित हे ॥ अब जगाइयें ॥ इस प्रकार मेघकि नाइं बडे शब्दकरी काल भगवाननें कहा ॥ तब तिसकि कलना फुरनेकरी अरु बाहिर शब्द करी शुक्रजीजागे ॥ जसें मेघके शब्दकरी मोर जागे तेसें जाग्या ॥ अर्धोन्मीलित नेत्र खोलकें काल अरु भृगुकों अपने आगें देखत भया ॥ अरु पछानता न भया ॥ अरु देख्या जो दोनोंके स्याम आकार हे॥अरु बडे प्रकाशरूप हे॥ जेसें विष्णुजी अरु सदा शिवजी होवही ॥ तिनको देखके उठी खडा हूवा ॥ अरु प्रीतिपूर्वक चरण वंदना करी ॥ अरु कहा जो मेरे बडे भाग्य हे ॥ प्रभुके चरण इस स्थानविषे प्राप्त भए हे ॥ बहुरी नम्रता सहित आदर कीया ॥ तब एक सिला पडीथी ॥ तिसपर दोनो बेठिगये ॥ अरु वसुदेव नाम जो शुक्र हे ॥ तपके संयोग करी तिसका नाम सातातप भया ॥ तिस तपसी शांत रिदे अगम बचन कहे काल अरु भृगुकों ॥हे प्रभो! में तुमारे दर्शन करी शांतिकों प्राप्त भया हों. ॥ तुम सूर्य अरु चंद्रमा एकठे मेरे आश्रम आए हो ॥ जो शास्त्रहूं अरु तपकरिकें भी मोह निवृत्त होना कठिन हे ॥ सो तुमारे दर्शनकरी मेरे मनका मोह नष्ट भया हे ॥ हे साधो ! एसा सुख ऐश्वर्य करी नही प्राप्त होता ॥ अरु अमृतकी बर्षाकरीभी अेसा सुख नही प्राप्त होता ॥ जेसा सुख महापुरुषके दर्शन करी होता हे ॥ तुमारे दर्शनकरी हमारा मोह नष्ट भया हे ॥ तुम ज्ञानके सूर्य अरु चंद्रमा हो ॥ हे ऋषीश्वरो ! तुमने हमारा स्थान पवित्र कीया हे ॥ में शांतात्मा हूआहों ॥ तुम कोनहो जो इस प्रकाशरूप उदार आत्मा मेरे स्थानपर आएहो ? ॥ जब इस प्रकार जनमांतरके पुत्रनें भृगुजीकों कहा ॥ तब भृगुजी कहा हे साधो ! तूं आपकों स्मरन कर जो कोन हे ॥ अज्ञानी तो नही ॥ तूं प्रबोधआत्मा हे ॥ जब इस प्रकार भृगुजी कहा तब नेत्र मुंदी करी उही ध्यानविषे जुडीग या ॥ एक मुहूर्तविषे अपना सभ वृत्तांत देखके नेत्र खोले ॥ अरु विस्मय होकरी कहत भया ॥ जो इश्वरकी गति विचित्ररूप हे ॥ इसके बस हूवा में बडे भमकों प्राप्त हूवाहों ॥ जगतरूपी चकपर आरूढ हुवा अनंत जन्म विषे भम्याहों ॥ तिन सभनकों स्मरन करीकें आश्चर्यमान होता हों ॥ जो मे बहुत दुख भोगे हे ॥ अरु अनेक अवस्था भोगी हे ॥ स्वर्गविषे रहाहों ॥ मंदार कल्पवृछ नीचें रहाहों ॥ सुमेरु कैलास आदिक बनकुंजविषे रहाहों ॥ अनेक स्छान विषे ॥ अेसा पदार्थ पावनेका नही जो में नही पाया ॥ अेसा

142

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोउ कार्य नही जोमें नही कीया अेसा कोइ इष्ट अनिष्ट नरक स्वर्ग पदार्थ नही जो में नही देख्या ॥ अब जो कछु जाननेजोगहे सो पाया हों ॥ अब में आत्मतत्वविषे विश्रामवान भयाहों ॥ संकल्प भ्रम मेरा नष्ट होगया हे ॥ अब चलीयें मेरा शरीर जहां मंदराचल पर्वतपर पडा हे ॥हे भगवन् ! अब मुझकों इच्छा कछु नही हे ॥ हेयोपादेय मुझकों कछु रहा नही ॥ तथापि नीतिकी रचना देखकें कहता हों ॥ जो बोधवान हे सो प्रकृत आचारविषे विचरते हे ॥ आगें जेसे इछा होवे तैसें करीयें ॥ बोधवान उसी आचारकों अंगीकार करते हे॥ तातें अपअपने प्रकृत आचारकों ग्रहणकरीकें व्यवहारविषे विचरही ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थिति प्रकरणे भार्गवजन्मांतर वर्णनं नाम चतुर्दशःसर्गः॥ १४ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! इस प्रकार विचारकरीकें तीनो आकाश मार्गको चले ॥ शीघ्रही मेघमंडलकों उल्लंघकें सिद्धके मार्गसों मंदराचल पर्वतपर स्वर्नकी कंदराविषे आय स्थितभए ॥ तब पूर्व जो शुक्रका शरीरथा तिसकों देखतेभए ॥ अरु ब्राह्मण तपस्वी कहा ॥ हे तात! मेरा पूर्व शरीर देखो ॥ जों तुमने बहुत पालन कीयाथा कपूर सुगंध करी सो भित कियाथा ॥ फूलकी सिजापर सैन करताथा ॥ सो अब माटिविषें लपटा पडा हे ॥ अरु सूकी गया हे ॥ जिस शरीरकों देव स्त्रीयां देखके मोहित होतीयांथी ॥ अरु मुक्तमाला कंठ विषे शोभती थी ॥ मांनो तारकी पंक्ति हे ॥ सो शरीर अब पृथ्वीपर गिर पडा हे ॥ नंदनवनविषे इसनें अनेक भोग भोगे हे ॥ आत्मरूप जांनकें इसकों मे पुष्ट करता था ॥ सो अब मुझकों भयानक भासताहे ॥ जो शरीर देव अंगना साथ मिलता था ॥ अरु रागवान होताथा ॥ तिनकी चिंतातें सूकी गया हे ॥ जिन जिन विलासकों चाहाताथा ॥ तिनकों करताथा ॥ अब तो चिंतातें रहित स्थित हो रहा हे ॥ महा अभागी हुवा धूप करीकें सूकि गया हे ॥ महा विकाल भयानक जेसा भासता हे ॥ जिसकों में आत्मरूप जानताथा ॥ जिसविषे अहंकरीकें विलास करताथा ॥ जिस शरीरविषे फुल कमल पडतेथे ॥ अरु तारागण प्रकाशतेथे तिसविषे किडीयां फिरतीयां हें ॥ जो शरीर द्रवत स्वर्नवत् सुंदर प्रकाश रूप था सो धूप करी सूका भयानक भासता हे ॥ सब गुण इसकों छोड गये हे ॥ मानों विरक्तआत्मा भया हे ॥ विषयतें मुक्त निर्विकल्प समाधिविषे स्थित भया हे ॥ हे शरीर ! तुं अदृष्ट तनकों प्राप्त भया हे ॥ अब तेरेविषे क्षोभ कोउ नही ॥ चित्तरूपी वैताल तेरेविषे शांत हो गया हे आने जानेतें रहित विश्रामवान हुवा हे ॥ सब कल्पना तेरी नष्ट भइ हे ॥ संकल्पजाल मिट गइ हे ॥ सुखसाथ सोया हे ॥ चित्तरूप मर्कटतें रहित शरीररूप वृच्छ ठहरी गया हे ॥ हलनेतें रहित भया हे ॥ सब अनर्थतें रहित पहाडकी नांइ अचल भ या हे ॥ इह देह अब सर्व दुःखतें रहित परमानंदविषे स्थित भया हे ॥ हे साधो ! सब अनर्थका कारण चित्त हे ॥ जबलग चित्त शांतिवान नही होता ॥ तबलग जीवकों आनंद प्रा प्त नही होता ॥ जब अमन शक्ति पदकों प्राप्त होते हे ॥ तब महा आधिव्याधि जगतके दुःखकों तरी विगत जो परमानंदकों प्राप्त होता हे ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् ! सर्व धर्म के वेत्ता भृगुका जो पुत्रथा तिसने तो अनेक शरीर धारेथे ॥ अरु बहुरी बहुरी भोग भोगेथे ॥ अरु भृगुतें जो उत्पन्न भया था शरीर तिसकों बहुत परी देवना करी ॥अरु ओरका चि तवना न कीया सोक्या कारण हे ? वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! शुक्रकी जो संवेदन कलनाथी ॥ सो जीव भावकों प्राप्त भइथी ॥ सो कर्मात्मक होकरी भृगुतें उपजीथी सो सुण॥आदि जो परमात्म तत्वतें चितकला फुरी हे ॥ सो भूताकाशकों प्राप्त भइ हे ॥ उही बात कलाविषे स्थित होकरी पान अपानके मार्गसों भृगुकेंरिदे विषे प्रवेश करती भई ॥ वीर्यके स्थानकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राप्त होकरी गर्भमार्गसों उत्पन्न भइ ॥ क्रम करीकै बडी हूई॥ विद्या अरु गुणसंपन्न शुक्र शरीर होतभया ॥ तिसकों जो चिरकाल सेवन कीया था तिसी कारनतें उसकों परिदेवना करी॥
यद्यपि वीतराग अरु निरिछित था ॥ तोभी जो चिरकालका अभ्यास कीयाथा ॥ सोइ फुर आया ॥ हे रामजी ! ज्ञनी होवे अथवा अज्ञानी होवे ॥ व्यवहार दोनोंका तुल्य होता हे ॥
परंतु शक्ति अशक्तिका भेद हे ॥ ज्ञानवान असंशक्त निर्लेप रहता हे ॥ अज्ञानी क्रियाविषे बंधमान होता हे ॥ ज्ञानवान मोक्षरूप हे ॥ अरु अज्ञानी दरिद्री हे ॥ जेसें वनविषे
जालमे पंखी फसता हे तेसें अज्ञानी लोक व्यवहार विषे बंधमान होता हे ॥ व्यवहार जेसे ज्ञानी करताहे तेसें अज्ञानी करता हे ॥ वासना रहित सो निर्बंध हे ॥ वासनासहित बंध हे ॥
वासनामात्र भेद हे ॥ जबलग शरीर हे ॥ तबलग सुख दुःखभी होता हे ॥ परंतु ज्ञानवान दोनों विषे शांतबुद्धि रहता हे ॥ अज्ञानी हर्ष शोक करी तपायमान होता हे ॥ जेसें थंभका
प्रतिबिंब जलविषे पडता हे ॥ सो जलके हिलनेकरी हिलना भासता हे ॥ परंतु स्वरूपतें स्थितही हे ॥ तेसें अज्ञानविषे सुख दुःखकरी सुखी दुःखी भासता हे ॥ परंतु स्वरूप ज्योंका यों
हे ॥ जेसें सूर्यका प्रतिबिंब जलके हिलनेकरी हिलता भासता हे परंतु स्वरूपतें जोंका यों हे ॥ तेसें ज्ञानवान इंद्रियकरी सुखी दुःखी भासता हे ॥ स्वरूपतें ज्योकात्यों हे ॥ अरु अज्ञानी
बाह्यतें क्रियाका त्याग करता हे ॥ तोभी बंध रहता हे ॥ ज्ञानवान क्रिया करता हे ॥ तोभी मोक्षरूप हे ॥ अंतःकरण इंद्रिय करी जो अनात्मधर्म विषे बंधमान हे ॥ बाह्यकर्म इंद्रिय
करी मुक्ति हे ॥ तोभी बंधनमें हे ॥ अरु अंतःकरण करी मुक्ति हे ॥ कर्म इंद्रिय करी बंधन भासता हे ॥ तोभी मुक्तीरूप हे ॥ जो सभ क्रीडाकों त्याग बेठा हे ॥ अरु अंतर जगतकी
सत्यता हे ॥ भावे कछू करे भावे न करे तोभी उह बंधनमें हे ॥ अरु बाह्य भावे तेसा व्यवहार करे ॥ अंतरतें अद्वैत ज्ञान हे तो उह मुक्ति रूप हे ॥ तिसकों कर्म बंधन नही करता ॥
तातें हे रामजी! सब कारज करहु ॥ अरु अंतरतें शून्य रहहू ॥ सर्व ईषणातें रहित आत्मपद विषे स्थित होवहु ॥ अपने प्रकृति व्यवहारकों करहू ॥ इह संसाररूपी समुद्र हे ॥ तिसविषे
आधिव्याधिरूपी गडेले हे ॥ अहंममतारूपी गरत हे ॥ तिसविषे जो गिर्या हे ॥ सो उर्ध्वतें अधकों जाता हे ॥ तातें संसारके भावविषे मत स्थित होहू ॥ शुद्धबुद्धि आत्म सुभाव विषे
स्थित होहूं ॥ ब्रह्महे शुद्ध हे, ॥ सर्वात्मा हे, ॥ निर्विकार निराकार आत्मपदविषे जो स्थित हे ॥ तिनकों नमस्कार हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे शुक्रप्रथम जीवनं
नाम पंचदशःसर्गः ॥ १५ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! इस प्रकार जब शुक्रनें शरीरका बर्नन कीया ॥ अरु विकरालरूप देखकें उसविषे त्यागबुद्धि करी ॥ तब काल भग
वान शुक्रके वचनकों न मानिकें गंभीर वाणीसों बोलत भया॥ ॥ कालोवाच ॥ ॥ हे शुक्र !तुं इस तपरूपी शरीरकों त्याग कर ॥ अरु भृगुका पुत्रका जो शरीर हे भार्गव, तिसकों
अंगीकार कर ॥ जेसें राजा देश देशांतरकों भ्रमता अपने नगरविषे आता हे ॥ तेसें तुं इस शरीरविषे प्रवेश कर ॥ काहेतें जो भार्गव तनु साथ असुरका गुरु होना हे ॥ इह आदि
परमात्माकी नीति हे ॥ महा कल्पपर्यंत तेरी आयुर्बली हे ॥ महा कल्पका अंत होवेगा ॥ तब भार्गव तन नष्ट होवेगा ॥ तुझकों बहुरी शरीरका ग्रहण न होवेगा ॥ जेसें रस सूकेतें पुहप
गिर पडता हे ॥ तेसें प्रारब्ध वेगके पूर्ण हुवे तें तेरा शरीर गिर पडेगा ॥ अरु शरीरके होते जीवन्मुक्ति पदकों प्राप्त हुवा प्रकृत आचारविषे विचरेगा ॥ तातें तुं शुक्र शरीरथा दैत्यका महा
गुरु होकरी स्थित होहू ॥ इह इश्वरकी नीति हे ॥ तातें इस शरीरकों त्याग करी भार्गव शरीरविषे प्रवेश करु ॥ अब हम जाते हे तुम दोनोका कल्याण होवे ॥ तुम अपने वांछित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कों प्राप्त होवहू ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! काल भगवान एसें कही दोनो उपर पुष्प डारे ॥ अरु अंतर्ध्यान हो गया ॥ तब तपसी नीतिकों विचारणे लागा ॥ जो क्या हो ना हे ? विचार करी देख्या ॥ जेसें काल भगवाननें कहा तेसेंहि होना हे ॥ अेसें विचारकरी महा कृशरूप जो शरीर था तिसविषे प्रवेश कीया ॥ अरु तपसी ब्राह्मणका देह त्याग दीया ॥ जेसें वसंतऋतुविषे वल्लिमें रस प्रवेश करता हे ॥ तेसें भार्गव शरीरमें प्रवेश कीया ॥ जेसें सर्प कंचुकीकों त्यागता हे ॥ तेसें तपस्वी शरीरका त्याग कीया ॥ तब उसशरी रकी शोभा जाती रही कंपीकंपी पृथ्वीपर गिर पडा ॥ जेसें मूलके काटेतें वली गिर पडती हे ॥ तेसें उह देह गिर्या ॥ अरु शुक्र देह जीवकला संयुक्त हो आया ॥ तब भृगुजी जी वकला संयुक्त देह कृश जेसा देखकें उठी खडे हुवे ॥ हाथविषे जलका कमंडलु लिया ॥ अरु मंत्रविद्या जो पुष्टि शक्ति हे तिसकों पाठ करी पुत्रके शरीरउपर जल डार्या ॥ तिसके पावनेकरी शरीरकी नाडी सब पुष्ट हो गइयां ॥ जेसें वसंत ऋतुविषे कमलनी प्रफुल्लित होती हे ॥ तेसें शरीर प्रफुल्लित हो आया ॥ स्वास आने जाने लागे ॥ तब पिताके सन्मुख हो करी नमस्कार करत भया ॥ जेसें मेघ जलसों पूर्ण हो करी पर्वतके आगें नमता हे ॥ तेसें विधिसंयुक्त नमस्कार करी नमता भया ॥ अरु स्नेह करी नेत्रतें जल चलणे लागा ॥ तब पुत्रकों देखकें भृगुजी कंठ लगाया ॥ जो मेरा पुत्र हे ॥ अेसें स्नेह करी पूर्ण होगया ॥ हे रामजी ! जबलग देह हे तबलग देहके धर्म फुरी आते हे ॥ इसप्रकार ज्ञानीकों ममता स्नेह फुरी आया ॥ तो अवरकी क्या बात कहनी हे ॥ पिता अरु पुत्र दोनों बेठी गये ॥ एक मुहूर्त पर्यंत कथा वारता करत रहे ॥ बहुरी उठी करी तपस्वी शररीकों जलाया जो बुद्धिवान सो शास्त्राचारविषे स्थित होते हैं ॥ तिसके अनंतर दोनो मंदराचल पर्वतविषे स्थित भए ॥ तप करकें प्रकाशत हे वपु जिनका अरु स्याम कांती हे ॥ जीवन्मुक्त उदार आत्मा होकरी उ हां रहते भये ॥ समय करकें शुक्रजी दैत्यका गुरु होवेगा ॥ अरु भृगुजी समाधिविषे स्थित होवेगा ॥ तातें जो सब विकारतें रहित जीवन्मुक्त पुरुष जगत गुरु हे ॥ सो सबकों पुजने जोग हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थिति प्रकरणे भार्गव जन्मांतर वर्ननं नाम षोडशः सर्गः ॥ १६ ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन्! जेसें भृगुके पुत्रकों इह प्रतिभा फुर ती गई अरु सिद्ध होती गई ॥ तेसें अवर जीवकों सिद्धि क्यों नही होती ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! शुक्रका जो ब्रह्मतत्वतें फुरणा हुवा हे ॥ सो भार्गव जन्म हुआ हे ॥ अवर जन्म कर कलंकित नहीं भया ॥ सर्व इषणातें रहित शुद्ध चैतन्य था ॥ निर्मल हृदयकों जेसा फुरण होता हे तेसि सिद्धि ले हो जाती हे अरु मलिन हृदयवानका शीघ्रहील संकल्प सिद्ध नही होता ॥ जेसें भृगुके पुत्रकों मनोराज हुवा अरु भमता फिर्या हे ॥ तेसें सब ही स्वरूपके प्रमाद करी भमते हे ॥ जबलग स्वरूपका साक्षात्कार नही तबलग शांति प्राप्त नही होती ॥ इह मेंनें भृगुकेपुत्रका वृत्तांत तुजकों सुनाया हे ॥ मनोराजकी दृढता अर्थ जेसें बीजतें अंकुर फूलफल अनेक भावकों प्राप्त होता हे ॥ तेसें सब भूत जातकों मनका भमणा अनेक भ्रमकों प्राप्त कर्ता हे ॥ जेता कछु जगत तुझकों भासता हे ॥ सो सब मनके फुरनेका रूप हे ॥ मिथ्या भम करीकें नानात्व भासता हे ॥ ओर कछु हुवा नही ॥ अेक अेक प्रती अेसा भम हे ॥ सब संकल्प मात्र हे ॥ न कछु उदय होता हे ॥ न अस्त होता हे ॥ कदाचित् किसीकों सब मिथ्यारूप माया मात्र हे ॥ जेसें सुपनपुर अरु संकल्प नगर भासताहे ॥ परस्पर व्य वहार दृष्टी आते हे ॥ अरु हुवा कछु नही ॥ तेसें इह जाग्रत भमभी अज्ञान करी दृष्ट आवता हे ॥ भूत पिशाच आदिक जेते कछु जीव हे तिनकाभी संकल्प मात्र शरीर हे ॥ जेसें उ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नकों सुखदुःखका भोग होता हे ॥ तेसें तुम हमकों होता हे ॥ जेसें इह जगत हे तेसें अनंत जगत पडे वसते हे ॥ परस्पर अज्ञानत्व हे एककों दुसरा न जानता ॥ जेसें एक स्थान विषे बहुत पुरुष शयन करते हे ॥ तिनकों मनोराज सुपन भ्रम परस्पर अज्ञात होता हे ॥ तेसें इह जगत हे ॥ वास्तवतें कछु हुवा नही ॥ केवल ब्रह्मसत्ता अपने आपविषे स्थित हे ॥ जो इस जगतकों सत जानता हे ॥ तिसका पुरुषार्थ नष्ट होता हे ॥ जो भ्रांत करी वस्तु भासती हे ॥ तिसका सम्यक ज्ञान करी अभाव हो जाता हे ॥ इह जाग्रत जगतभी दीर्घ सु
पना हे चित्तरूप हस्तीकों बंधन हे ॥ चित्तसंत्ता करीकें जगत सत भासता हे ॥ अरु जगत सत्ता करीकें चित्त हे ॥ एकके नाश हुवेतें दोनोंका नाश हो जाता हे ॥ जो जगतका स
त भाव नष्ट होता हे ॥ तब चित्त नही रहता ॥ जब चित्त उपसम होताहे ॥ तब जगत शांत होता हे ॥ इसप्रकार एकके नाश हुवे दोनोंका नाश होता हे ॥ सो दोनोंका नाश आत्म
विचार करीके होता हे ॥ अरु विचार तहां उपजता हे जहां हृदय निर्मल होता हे ॥ जेसें उज्वल वस्त्रपर केसरका रंग शीघ्रही चढी जाता हें ॥ मलीन वस्त्रपर नही चढता ॥ सो निर्मल
हृदय तब होता हे ॥ जब शास्त्रके अनुसार क्रिया करता हे ॥ हे रामजी ! एकएक जीवकों हृदयविषे अपअपनी सृष्टि हे ॥ मलीन चित्तकरी एककों दुसरा नही जानता ॥ जब चि
त्त शुद्ध होता हे ॥ तब ओरकी सृष्टिकोंभी जान लेता हे ॥ जेसें शुद्धधातु परस्पर मिली जाती हे ॥ इसकों जब दृढ अभ्यास होता हे ॥ चिरपर्यंत तब सब कछु भासने लगता हे ॥
काहे तें जो सबका अधिष्ठाता एक आत्मा हे ॥ तिसविषे स्थित होनेतें सबका ज्ञान होता हे ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् ! शुक्रकों प्रतिभा मात्र आभास हुवाथा ॥ तिसविषे देश, का
ल, क्रिया, द्रव्य, उसकों दृढ होकरी केसें भास्या हे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! जो कछु जगत शुक्रने देख्या हे ॥ सो अपने अनुभवरूप भंडारविषे मन करी देख्या हे ॥ जेसें
मोरके अंडे सो अनेक रंगवान निकसते हें ॥ तेसें उसकों अपने अंतर भ्रम भास आया ॥ जेसें बीज सों पत्र, टास, फुल, फल, निकसता हे ॥ तेसें जीव जीवकों अप अपने अनुभवविषे
संसार खंड पडे फूरतेहें ॥ ईहां सुपन दृष्टांत प्रत्यक्ष हे ॥ जेसें एक एकके सुपनविषे जगत होता हे ॥ तेसें इह जगत हे ॥ दीर्घ सुपना जाग्रत हो भासता हे ॥ जेसा दृढ होता हे ॥ तेसा
भासने लगता हे ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् ! सृष्टिके समूह परस्पर मिलते केसे हे ॥ अरु नहि मिलते केसें हे ? वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! मलिन चित्त हे सो पररपर नही मिल
ता हे॥ शुद्ध हे सो मिलते हे ॥ जेसें शुद्ध धातु मिलि जाती हे ॥ सुषुप्तरूप आत्मासों सब फुरते हे ॥ सो तन्मय रूप हे ॥ जिसकों तिसविषे विश्राम होता हे ॥ सो ज्ञान दृष्टि करी सब
साथ मिलिजाता हे ॥ जेसें जल साथ जल मिलि जाता हे॥तेसें उह सब साथ मिलिकरी सबकों जानता हे अवर नही जानता॥ ॥ इतिश्रीयो०स्थि०मनोराज संमीलन वर्णनं॥१७॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जेते कछु संसार खंड हे ॥ तिन सबका बीजरूप आत्मा हे ॥ सब आत्माहीका आभास हे ॥ सो आभासके उदय अस्त होणेविषे आत्मसत्ता ज्यों
की त्यों हे अपणे सुभावके त्यागतें रहित हे ॥ अरु सर्वजीवका अपना आप वास्तव रूप हे॥अरु सुषुप्तकी नांइ अस्फुर्ण हे॥ तिस सत्तातें जीव फुरते हे ॥ तब सुपनवत् जगत भ्रमकों देख
ते हें ॥ सो जीव जीव प्रती अपनी सृष्टि स्थित हे ॥ जो पुरुष उलटीकें आत्मपरायण होता हे ॥ सो आत्मपदकों प्राप्त होताहे ॥ जिनपुरुषकों आत्म ब्रह्मसाथ एकता भई हे ॥ तिनकों पर
स्पर ओरकी सृष्टी भासती हे ॥ अंतःकरणविषे सृष्टि होती हे ॥ सो तीनका अंतःकरणमिलता हे ॥ तिस अंतःकरण जीवकलाके मिले तें परस्पर सृष्टि भासी आती हे ॥ उह जानते हे जीवकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अप अपनी सृष्टि हे ॥ सबका अपनाआप सन्मात्र सत्ता हे तिसविषे सब सृष्टि स्थित होतीयां हे ॥ जेसें कपूरका पर्वत होवे ॥ तिसके अणु अणु विषे सुगंधता होती हे अरु सर्व अणुकी सुगंधताकों परवतविषे एकता होतीहे ॥ तेसें सब जीवका अधिष्ठान आत्म सत्ता हे ॥ जेसें सब नदीके जलका अधिष्ठान समुद्र हे ॥ तेसें सब जीवका अधिष्ठान आत्मा हे ॥ सो सृष्टि कहुं परस्पर मिलतीयां हे ॥ कहूं भिन्न भिन्न स्थित हे ॥ जहां चैतन मात्र सत्ता साथ एकता हे तहां चित्तकी वृत्ति जिस साथ मिल्या चाहे तिसकों मिल जाता हे ॥ मलीन चित्त वाला नही मिलि सकता ॥ अरु एक एक जीवविषे सहस्र सृष्टि परस्पर गुप्त रूप होतीयां हे ॥ जहां जेसा फुरणा दृढ होता हे॥तहां तेसाहि भासताहे ॥ जहां मनका फुरना कोमल होता हे ॥ सो सफल नही होता ॥ अरु जहां दृढ होता हे सो भासणे लगता हे ॥ हे रामजी ! जब देहकी भावना मिटिजाती हे अरु प्राण पवनहीस्थित करणें ते चित्तकी वृत्ति सुभाव कर स्थित होती हे ॥ तब अवरके चित्तकी चेष्टा इसके चित्तविषे फुरी आती हे ॥ अरु जबलग चित्त मलीन होता हे ॥ देहकी भावनाकों त्यागता नही ॥ तबलग किसी पदार्थ साथ एकता नही होती ॥ अरु जिसका चित्त निर्मल होता हे॥ तिसकों जेसें ओरके चित्तका ज्ञान हो आता हे ॥ तेसें ओर सृष्टिविषेभी मिलनेकी शक्ति हो आती हे ॥ अशुद्धकों नही होती ॥ अरु सर्व जीवकी तीन अवस्था जाग्रत सुपन सुषुप्ति होती हे इह तीनोंही अवस्था आत्माविषे जीवतका लक्षण हे ॥ जेसें मृगतृष्णाकी नदीके तरंग कीर्णविषे होते हे ॥ तिनका अभाव हे अरु जीवकों आत्माविषे प्रमाद हे ॥ तिसकरि तीनहु अवस्थाविषे पडा भटकता हे ॥ जब चित्तकला तुरियाविषे स्थित होती हे तब जीवन्मुक्त होता हे ॥ आत्मसत्ता सुभावविषे स्थित हुवे तें आत्मा साथ एकताकों प्राप्त होता हे ॥ अरु सब जीव साथ सुहृद भाव होता हे ॥ जब अज्ञानी सुषुप्त आत्मसत्तातें जागता हे ॥ अर्थ इह जो संसारकों चिंतवता हे ॥ तब संसारकों प्राप्त होता हे ॥ संसारविषे ओर संसार, तिसविषे ओर, इसप्रकार प्रमाद करीकें अनेक सृष्टिकों देखता हे ॥ जेसें केलके थंभसों पत्रका समूह निकसी आता हे ॥ तेसें सृष्टीसों सृष्टिकों देखता हे ॥ शांतिकों नही प्राप्त होता ॥ अनेक भ्रमकों देखता हे ॥ जब उलटकें अपने सुभावविषे स्थित होता हे ॥ तब नानात्व भाव मिटि जाता हे ॥ शांतरूप होता हे ॥ जेसें केलेका अंतर सीतल होता हे ॥ हे रामजी ! जगतके समूह भासते हें ॥ तोभी आत्माविषे कछु द्वैत नही ॥ आत्मासाथ एक रूप हे ॥ जेसें केलेके अंतर पत्रतें इतर कछु नही निकसता ॥ तेसें आत्मातें इतर जगत कछु नही ॥ जेसें बीज फूल भावकों प्राप्त होता हे ॥ फूलतें बहुरी बीज होता हे ॥ तेसें ब्रह्मतें मन होता हे ॥ बहुरी बुद्धि करी ब्रह्म होता हे ॥ बीजका कारण उही रस हे ॥ आत्माविषे कारण कार्यभाव कछु बनता नही ॥ अद्वैत अचिंत्यरूप हे ॥ आदिपरमात्मा अकारण रूप हे ॥ सोइ विचारणे जोग हे ॥ ओरसाथ क्या प्रयोजन हे ? बीज जब अपने भावकों त्यागता हे ॥ तब फूल भावकों प्राप्त होता हे अरु ब्रह्मसत्ता अपने सुभावकों कदाचित् नही त्यागती अरु बीज परिणाम करी आकाररूप हे ॥ आत्मा अकृत्रिम निराकार अच्युतरूप हे ॥ इस कारण तें आत्मा बीजकी नांईभी कहना नही बनता ॥ आकाश तें आकाश नही उपजता हे ॥ अरु अभिन्नरूप हे ॥ न कोउ उपजता हे ॥ न कीसीकों उपजाया हे ॥ केवल ब्रह्म आकाश अपने आप विषे स्थित हे ॥ जब द्रष्टा पुरुषकों देखता हे ॥ तब आपकों नही देख सकता ॥ काहेतें जो मनोराजका जगतविषे परिणाम जाता हे ॥ तब विद्यमान वस्तुकी संभाल नही रहती ॥ देहादिक विषे आत्म अभिमान होता हे ॥ जो पुरुष आत्मसत्ताकों दें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खता हे तिसकों जगत भाव नही रहता ॥ अरु जो जगतकों देखता हे तीसकों आत्मसत्ता नही भासती ॥ जेसें मृगतृष्णाकी नदीकों जुठ जानता हे तिसकों जलभाव नही रहता॥ अरु जल जानता हे तीसकों अल्पबुद्धि नहीं होती ॥ आकाशकि नांई पूर्ण पुरुष द्रष्टा हे ॥ जब इस दृश्यकी उर जाते हें ॥ तब आपकों देख नही सकते ॥ आकाशकि नांई ब्रह्मसत्ता सब ठोर पुरन हे ॥ सो अज्ञानीकों नही भासती ॥ अरु जो दृश्यका अत्यंत भाव हे सोइ पडा भासता हे ॥ अनुभवका भासना दूर हो गया हे ॥ हे रामजी ! जो कोउ स्थूल पदार्थ होता हे पहाड वृछ आदिक तिसके आगें पटल आवता हे ॥ तब उह नही भासता ॥ तो जो सूक्ष्म निराकार द्रष्टा पुरुष हे तिसके आगें आवरण आवे ॥ तब उह केसें भासे ॥ जो द्रष्टा पुरुष सो अपनेही भाव विषे स्थित हे ॥ दृश्यभावकों नही प्राप्त होता ॥ अरु दृश्य भासता हे तब द्रष्टा देखणे विषे नही आवता ॥ अरु द्रश्य कछु वस्तु हे नही ॥ तातें द्रष्टा एक परमात्माही अपने आपविषे स्थित हे ॥ जो आत्मरूपसर्व शक्तिमानदेव हे ॥ जेसा फुरणा तिसविषे होता हे ॥ तेसाही शीघ्र भास आवता हे ॥ जेसें वसंतऋतुविषे एक रस अनेक रूप कों धारता हे ॥ टास फूल फल होते हे ॥ तेसें एक आत्मसत्ता अनेक जीव देह होकें भासती हे ॥ जेसें अपणेही अंतर अनेक सुपन भमकों देखता हे ॥ तेसें अहं आदिक जगत दृश्य भमकों अनुभव प्रापही होता हे ॥ अरु स्वरूपतें कछु अवर हूवा नही ॥ जेसें एक बीजके अंतर पत्र टास फूल फल अनेक होते हे ॥ तिसविषें ओर बीज होता हे ॥ बीजके अंतर ओर वृछ तीसके अंतर ओर बीज ॥ इसी प्रकार एक बीजके अंतर अनेक वृछ होते हे ॥ तेसें एक आत्माविषे चिदअणु अनेक फुरते हे ॥ तिनके अंतर सृष्टि बहुरी सृष्टिके अंतर चिद अणु ॥ बहुरी चिदअणुके अंतर सृष्टी ॥ इसी प्रकार आत्मविषे अनेक सृष्टि ब्रह्मांड हे ॥ तिनकी संख्या कछु कही नही जाती ॥ अपणे आप करी फुरते हे ॥ आप स्वाद लेता हे ॥ एक एक चिदअणुके अंतर अनेक सृष्टि हे ॥ जेसें तिलविषे तेल हे ॥ तेसें चिदअणुविषे आकाश पवन आदिक अनेक सृष्टि स्थित हे ॥ आकाशविषे पवन अग्निविषे जल सर्वभू तविषेपृथ्वी सृष्टि स्थित हे ॥ अेसा पदार्थ कोउ नही ॥ जो चित्त सत्तातें रहित होवे ॥ अरु जहां चित्त हे ॥ तहां तिसका आभासरूप दृष्टाभी स्थित हे ॥ जेसें एक डब्बेविषे लौं ग होते हे ॥ तिनके नष्ट हुवे डब्बा नष्ट नही होता ॥ जेसा जेसा तिसविषेफुरना होताहे ॥ तेसा स्थित होता हे ॥ सबका अधिष्ठान रूप आत्मा हे ॥ जेसें जेतेकछु कमल हे तिनकों पूरणहा रा जल हे तिसकरी सब विस्फुर्जित होते हे ॥ अरु प्रकाशते हे ॥ तेसें सब नष्टहुंकों सत्ता देणेहारा आत्मा हे ॥ सबका आश्रयरूप आत्मतत्व हे॥ अरु इह जगत दीर्घ सुपनारूप अपणे अनुभवतें उदय हूवा हे ॥ सो बाह्यरूप होकरी भासता हे ॥ तिस सुपनेतें आगें ओर सुपनांतर होता हे ॥ तिसतें आगें ओर सुपनां इसि प्रकार सृष्टीकी स्थित भइ हे ॥ जेसें एक बीजतें अनेक वृछ होते हे ॥ तेसें एक चिदअणुविषे अनेक सृष्टि स्थित हे ॥ जेसें जलविषेअनेक तरंग भासते हे ॥ तेसें आत्म अनुभवविषे अनेक जगत भासते हे ॥ सो अभिन्नरूप हे ॥ तातें द्वैत भमकों त्याग दे॥ न कोउ देश हे ॥ न कालक्रीया जगत हे ॥ केवल एक अद्वैत आत्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जेसें आकाशविषे आकाश स्थित हे ॥ तेसें आत्म सत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ ब्रह्मा आदि कीट पर्यंत जेता कछु जगत भासता हे ॥ सो एक परमात्माहि अपणे आप विषे किंचनरूप होता हे ॥ जेसें एकरस सत्ता कहूं फूल सुगंध सहित भासती हे ॥ कहूं काष्टरूपकों प्राप्तहोती हे ॥ तेसें एक परमात्मसत्ता कहूं चेतन्यरूप होकरी भासती हे कहूं जडरूप होकरी देखाइ देती हे॥ जो सर्वगत अविनाशी आत्मा हे सोई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सबका बीजरूप हे ॥ तिसीके अंतर सब जगत स्थित हे ॥ जिसकों आत्माका प्रमाद हे ॥तिसकों नानारूप भासता हे ॥ जेसें जलविषे डूबे बहुरी निकसे बहुरी डुबे बहुरी निकसे॥अरु जेसें सुपनेविषे ओर सुपनांतरकों प्राप्त होता हे ॥ तेसें प्रमाद दोष करीकें भमतें भमांतर नाना प्रकारके जगतकों देखता हे ॥ जगत अरु आत्माविषे भेद कछु नही ॥ जगत कछू हुवा नही ॥ काहे तें जो आत्माहि जगत जेसा हो भासता हे ॥ भांति करकें जगत भासता हे ॥ जेसें विचार रहितकों सर्वविषे भूषण बुद्धि होती हे ॥ विचार कीयेतें भूषण बुद्धि नष्ट हो जाती हे ॥ एकही स्वर्न भासता हे ॥ तेसें जो विचारतें रहित हे तिसकों इह जगत पदार्थ भासते हे ॥ जो इह में हों ॥ इह जगत हे ॥ इह उपज्या हे ॥ लीन होता हे ॥ अरु जिसकों सतसंग शास्त्रके संयोगतें विचार उपज्या हे तिसकों दिनदिन प्रति भोगकी तृष्णा घटती जाती हे ॥ आत्म विचार दृढ हो जाता हे ॥ जेसें किसीकों ताप आता हे ॥ सो औषध करिके निवृत्त हो जाता हे ॥ सो दो लक्षण तिसविषे प्रत्यक्ष होते हे ॥ एक तृषा बहुत थी सो निवृत्त हो जाती हे ॥ दुसरी शरीरसों तपत निवृत्त हो जाती हे ॥ सीतलता प्रगट होती हे ॥ तेसें ज्यों ज्यों विवेक दृढ होता हे ॥ त्यों त्यों इंद्रियका जीतणा होता हे ॥ संतोष करी अंतर सीतल होता हे ॥ सर्व आत्माहि भासता हे इह विवेकका फल हे ॥ हे रामजी ! जीस पुरुषकों बचनका विवेक हे अरु निश्चयविषे नही तिसका विवेक कछु कार्य सिद्ध नही करता ॥ जेसें मुरतकी अग्नि लिखी होती हे ॥ तिसतें कछु कार्य सिद्ध नहि होता ॥ तेसें निश्चयतें रहित वचनका विवेक हे ॥ सो दुःखकों निवृत्त नही करता ॥ शांति नही प्राप्त होती हे ॥ जेसें जब पवन चलता हे ॥ तब पत्र वृच्छ हिलते हे ॥ उसका लक्षण भासता हे ॥ अरु वाणी करी कहिये तब हिलतें नही ॥ तेसें जब विवेके हृदयविषे आता हे ॥ तब भोगकी तृष्णा घटि जाती हे ॥ मुखके कहनें करी तृष्णा घटती नही जेसें चित्रकी मूरतपर अमृत लिख्या होवे ॥ सो पान करने अरु अमर होनेका कार्य नही करता ॥ अरु मूरतकी लिखी अग्नि सीतकों निवृत्त नही करती ॥ अरु मूरतकि लिखी स्त्री स्पर्श करने अरु संतान उपजनेका कार्य नही करती ॥ तेसें मुखका विवेक वाणी विलास हे ॥ अरु भोगकी तृष्णाकों निवृत्त करी शांतिकों प्राप्त नही करता ॥ जेसें मूरतां देखणे मात्र हे ॥ तेसें उह विवेक वाग् विलास हे ॥ हे रामजी ! प्रथम जो विवेक आता हे ॥ तब राग दोषकों नाश करता हे ॥ अरु ब्रह्मलोक पर्यंत जेते कछु विषय भोगरूप हे ॥ तिनकी तृष्णा अरु वैरभावकों नष्ट करता हे ॥ जेसें सूर्यके उदय हुवे ॥ अंधकार नष्ट होता हे ॥ तेसें विवेक उदय हुवे अज्ञान नष्ट हो जाता हे ॥ अरु पावन पदकी प्राप्ति होती हे ॥

इतिश्री योगवासिष्ठे स्थिति प्रकरणे जीवपदवर्णनं नाम अष्टादशःसर्गः ॥ १८ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

वसिष्ठोबाच॥ ॥ हे रामजी ! सर्व जीवका बीज परमात्मा हे सो सर्व उरतें आकाशकी नांइं स्थित हे॥ तिसके फुरनेका नाम जीव हे॥सो जीव जीवके अंतर जगत हे॥तिसके आगें ओर नानाप्रकारकी रचना हे ॥ वस्तुतें चिदघन जीवके रूपसों अंतरस्थित भया हे॥ तातें सब जीव चिदघनरूप हे॥जेसें केलेके थंभ विषे पत्र होते हे॥तेसें आत्मसत्ताके अंतर जीव स्थितहे ॥ जेसें पुरुषके अंतर कीट होते हे ॥ तेसें आत्माके अंतर जीवराशि हे ॥ जेसें प्रस्वेद करीकें जुंवां लीखां आदिक जीव उपजते हे ॥ ओर पदार्थतें कीट उपजी आवता हे ॥ तेसें आत्मासों चितकलाके फूरने करी जीवके समूह फुरी आवते हे ॥ बहुरी जीव जेसी जेसी सित्धताके निमित्त जतन उपासना करते हे ॥ तेसी गतीकों प्राप्त होता हे ॥ उपासनाकी विचित्रतातें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाना प्रकारकि गतिकों प्राप्त होते हे ॥ जो देवताकी उपासना करते हे॥सो देवताकों प्राप्त होते हे ॥ यक्षके उपासक यक्षकों प्राप्त होते हे ॥ इसी प्रकार जीसकी उपासना करते हे ॥ तिसीकों प्राप्त होते हे ॥ ब्रह्मकें उपासक ब्रह्मकों प्राप्त होते हे ॥ तातें जो अनुछ पद हे ॥ तिस महत्पदकों आश्रय करहूं ॥ जेसें शुक्र जब दृश्यके ओर लगा ॥ तब अनेक प्रकारके दृश्य भमकों प्राप्त हूवा ॥ जब शुद्ध बुद्धकी उर आया ॥ तब निर्मल बोधकों प्राप्त हूवा ॥ जेसें जिसकी कोउ उपासना करता हे ॥ सो तीसीकों प्राप्त होता हे ॥ अन्यकों न प्राप्त होता ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् जाग्रत अरु सुपनका जो भेद हे सो कहो ॥ जो जाग्रत क्या हे ॥ अरु सुपन क्या हे ! ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी स्थिर प्रतीतका नाम जाग्रत हे ॥ अरु अस्थिर प्रतीतका नाम सुपन हे ॥ जो चिरकाल रहता हे ॥ तिसका नाम स्थिर हे ॥ अरु जो अल्पकाल रहे तिसका नाम अस्थिर हे ॥ दीर्घकाल प्रतीतका नाम जाग्रत हे ॥ अल्पकालका नाम सुपन हे॥ ओर भेद कोउ नही॥दोनोंका अनुभव सम होता हे॥ जो शरीरके अंतर स्थित होकरी शरीरकों जीवावता हे॥तिसका नाम जीव हे॥तेजरूप हे बीजरूपहे॥ जीव धातु हे ॥ इह सब तिसके नाम हे ॥जबजीव धातु स्पंदरूप होताहे जीवतके रंध्र विषे पसरती हे॥तब मनवाणीदेहकरी सब व्यवहार होता हे ॥रंध्र खुलि जाते हैं॥ तब इसकों जाग्रत कहता हे॥अरु जब चित्तकला जाग्रत व्यवहार वषे स्पष्टरूप होती हे ॥ अरु अंतर होकरी फुरती हे तिसकरी अंतर जगत भम भासणे लगता हे तब सुपनां कहताहे॥अब सुषुप्तिका कम श्रवणकर ॥ मन वाणी अरु शरीरकरी जहां क्षोभ कोउ नही ॥ अरु स्वछ वत्ति जीव धातु अंतर स्थित होती हे ॥ हृदय कोशविषे प्राणवायु करी क्षोभ नही होता ॥ नाडी रसकरी पूर्ण होतीयां हे ॥ उस मार्गतें प्राण आनेजानेसों रहित होते हे ॥ क्षोभतें रहित सम वायु चलता हे ॥ तिसका नाम सुषुप्ति हे ॥ जेसें वायुतें रहित दीपक गहविषे एकांत उज्वल प्रकाशता हे ॥ तेसें तहां संवित सत्ता अपने आपका अनुभव लेती हे ॥ जेसें तिलविषे तेल स्थित होता हे तेसें जीव संवित कलनाकरीकें जो कल्पता हे ॥ सो तिस कालमें अपने आपविषे स्थित होता हे ॥ जेसें बरफविषे सीतलता होती हे ॥ घृतविषे चिकनाइ होती हे ॥ तेसें तहां संवितविषे संवितसत्ता स्थित होती हे ॥ तिसका नाम सुषुप्ति अवस्था हे ॥ जडरूप तिस सुषुप्ति अवस्थातें जागे अरु दृश्यभाव कों प्राप्त न होवे ॥ निर्विकल्प प्रकाशता विषे स्थित होवे ॥ सो ज्ञानरूप तुरीया हे ॥ तब व्यवहार पडा करे तोभी जीवन्मुक्त हे ॥ जाग्रत सुपन सुषुप्ति विषे बंधमान नही होता ॥ हे रामजी ! आत्मसत्तातें फुरना होता हे ॥ अरु स्वरूप विस्मरण होजाता हे ॥ अरु फुरना दृढ होकरी स्थित होता हे ॥ इसीका नाम जाग्रत हे ॥ अरु स्वरूपतें प्रमाद दोषकरिके फूरे ॥ जगत भासें तिसकों सतरूप जाणे ॥ इह प्रतीत थोडाकाल रही करी बहुरी निवत्त होजावे ॥ तिसका नाम सुपन हे ॥ अरु द्रश्य फुरनेका अभाव होजावे ॥ अरु अज्ञानवत्ति जडतारूप हे ॥ तिसका नाम सुषुप्ति हे ॥ अरु अनुभवविषे ज्ञान स्थित हे ॥ जाग्रत सुपन सुषुप्ति तिनहूंका व्यवहार होवे ॥ अरु निश्चयविषे इनका सदभाव रंचकभी न होवे ॥ केवल ज्ञान विषे अहंप्रतीत होवे ॥ वत्तितिसतें चलायमान न होवे ॥ तिसका नाम तुरीयापद हे ॥ तिसविषे स्थित भया जीवन्मुक्त होता हे ॥ ओर जो जीव हे ॥ सो जाग्रत् सुपन सुषुप्ति तीन अवस्थाविषे स्थित होते हे ॥ जब नाडी अन्नके रससों पूर्ण हो जातीयां हे ॥ प्राण वायु हृदय नामनी नाडीविषे नही आवता तब चित्त संवित अक्षोभ रूप सुषुप्त होता हे ॥ जब अन्न उस नाडीसों पचताहे अरु प्राण वायु चलणे लगता हे ॥ तब चित्तसंवित क्षोभ रूप फुरणे लगता हे ॥ तिस फूरणेकरी अपणे अंतर ही बडे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जगत भ्रमकों देखता हे ॥ जेसें बीजतें वृच्छ होता हे ॥ जब वायुका रस नाडी विषे वहुत होता हे तब चित्त सत्ता आकाशविषे उडणा अरु वायु अंधारीयादिक पदार्थकों देखता हे ॥ अरु जब कफका रस नाडिविषे अधिक होता हे ॥ तब फूल वलियां बावलियां जल मेघ बगीचे आदिक पदार्थ भासतें हें॥ जब पित्तकी अधिकता होती हे तब उष्णरूप अग्नि रक्त वस्त्र आदिक भासनें लागते हे ॥ इस प्रकार वासनाके अनुसार जगत भ्रमकों देखता हे ॥ जेसी जैसी भावना दृढ होती हे ॥ तेसाहि पदार्थ दृढ हो भासता हे ॥ अरु जब पवन क्षोभायमान होता हे ॥ चित्त संवित नेत्र आदिक द्वारकें वाह्य निकसी करी रूपादिकका अनुभव करती हे ॥ सत जानकें चिरपर्यंतका नाम जाग्रत हे ॥ वासनाके अनुसार मनरूपी शरीरसाथ नेत्र जिव्हादिक विनां रूप रसादिकका अनुभव होता हे ॥ तिसका नाम सुपन हे ॥ स्वरूपतें न कोउ सुपना हे ॥ न जाग्रत हे ॥ न सुषुप्ति हे ॥ केवल सत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ तिसके फुरनेका नाम जाग्रत सुपन सुषुप्ति हे ॥ चिरकाल फुरनेका नाम जाग्रत हे ॥ अल्प कालका नाम सुपन हे ॥ सो प्रतीतका भेद हूवा ॥ वस्तु तें भेद कछु नही ॥ जो वस्तुतें भेद हुवा ॥ तो जगत सुपनरूप हुवा क्यों ? ॥तातें इही भावना दृढ करहु ॥ जो जगत असतरूप सुपनवत् हे सत भावना करनी इसविषे दुःखका कारण हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे जाग्रत सुपन सुषुप्ति तुरीया रूप वर्णनं नाम एकोनविंशतिमःसर्गः ॥ १९ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इह में तुजकों मनका रूप निरूपण करि दिखाया हे ॥ अवस्थाका निरूपणभी इस निमित्त कीया हे ॥ ओर प्रयोजन कछु नही तातें जेसा निश्चय चित्तविषे होता हे.॥ तेसा हि हो भासता हे ॥ जेसें अग्निविषे लोहा डारीयें सो अग्निरूप हो जाता हे ॥ तेसें मन जिस पदार्थ साथ लगता हे तिसका रूप होजाता हे ॥ भाव अभाव ग्रहन त्याग सब मनही करी होते हें ॥ ओर न कोउ सत हे ॥ न असत हे ॥ केवल मनकी चपलता करी पडे फूरते हे॥ मनके मोहकरी जगत भासता हे ॥ मनके नष्टहूवेते जगत नष्ट हो जाता हे ॥ जो मलीन मन हे ॥ सो अपणे फूरनेकरी जगतकों रचता हे ॥ इह मनही पुरुष हे ॥ इसकों तुम अशुभ मार्ग विषे नही जोडनां ॥ जब मनकों जीतोगे ॥ तब सर्व जगतविषे तुमारी जय होवेगी ॥ मनके जीते सब जगत जीतीजाता हे ॥ तब बडी विभूति प्राप्त होती हे ॥ जो शरीरका नाम पुरुष होवे ॥ तो शुक्रका शरीर पडाथा ओर शरीर न रचता ॥ शरीर उहां पडा रहा ॥ अरु मन ओर शरीरकों रचता फीरा तातें शरीरका नाम पुरुष नही ॥ मनहीका नाम पुरुष हे॥ शरीर चित्तका कीया होता हे ॥ शरीरका कीया चित्त नही होता ॥ जिस उर चित्त जाय लागता हे ॥ तिसी पदार्थकी प्राप्ति होती हे ॥ इस विषे संशय नहि ॥ तात अतितुछ पद हे ॥ आत्मसत्ताका चित्तविषे सदा अभ्यास करहु ॥ ओर भ्रमकों त्यागिदे ॥ जब मन दृश्यकी ओर संसरता हे ॥ तब अनेक जन्मके दुःखकों प्राप्त होता हे ॥ अरु जब आत्माकी ओर इसका प्रवाह होता हे॥ तब परमपदकों प्राप्त होता हे ॥ तातें दृश्यभ्रमकों त्यागकें आत्मपदविषे स्थिति करहू ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थिति प्रकरणे भार्गवोपाख्यान समाप्ति वर्णनं नाम विंशतिमः सर्गः ॥ २० ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् ! सब धर्मके वेत्ता मेरे हृदयविषे बडा संशय उत्पन्न भया हे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग उपजीके पसरी जाता हे ॥ तेसें मेरे रिदेविषे संशय पसरी गया हे ॥ जो देश काल वस्तुके प्रछेदतें रहित नित्य निर्मल विस्तृत निरामय आत्मसत्ता हे ॥ तो तिसविषे मलीन संवित जो हे मन नामक सो कहांते आया ॥ अरु केसें स्थित भया जीसतें इतर ओर वस्तुही कछु नही॥ न आगें होवेगी तिसविषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कलंकता कहांतें आई ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी तुझनें भला प्रश्न कीया हे ॥ अब तेरी बुद्धि मोक्षभागीहूइ हे ॥ जेसें नंदनवनके कल्पवल्लसाथ कल्पमंजरी लगती हे ॥ तेसें तेरी बुद्धि पूर्व अपरके विचारतें जागी हे ॥ तूं अब तिस पदकों प्राप्त होवेगा ॥ जिस पदकों शुक्र आदिक प्राप्त हुवे हे ॥ अरु तेरे प्रश्नका उत्तर में सिद्धांत कालविषे कहोंगा ॥ अरु तिस कालविषे तुझकों आत्मपद हस्तामल भासेगा ॥ हे रामजी ! सिद्धांतका प्रश्न उत्तरसिद्धांत कालविषे सोहता हे ॥ जिज्ञासु कालविषे जिज्ञासुका सोहता हे ॥ जेसें वर्षा कालविषे मोरकी वाणी सोभती हे ॥ अरु सरतकालविषे हंसकी वाणी सोभती हे ॥ अरु जेसें वर्षा कालके नष्ट हुवेतें सुभाविकही आकाशकी निलता पडी भासती हे ॥ अरु जेसें वर्षाकाल विषे मेघकी घटा सोभती हें ॥ तेसें प्रश्न उत्तरभी जेसा समा होवे ॥ तेसाहि सोभता हे ॥ हे रामजी ! में तुझकों अनेक प्रकारके दृष्टांत युक्ति करी कहोंगा ॥ मनका स्वरूप अरु जिसप्रकार इह निवृत्त होता हे ॥ सोभी क्रम करी बहुत प्रकार कहोंगा ॥ मनकी शांतिका उपाय वेदनें निर्णय किया हे अरु शास्त्र कारने कहा हे ॥ तिनके लक्षण तूं श्रवन कर ॥ चंचल जो मन हे तिसने जेसा जेसा भाव अंगीकार कीया हे ॥तेसाहि रूपहो करी भासणे लागा हे ॥ जेसें पवन जेसी सुंगध साथ मिलता हे ॥ तेसा तिसका सुभाव हो जाता हे ॥जेसें जल जिस रंगसाथ मिलता हे ॥ तेसा रूपहो भासता हे ॥ तेसें मन जिस पदार्थ साथ मिलताहे ॥तिसका रूप होजाता हे ॥ जो मनतें रहित शरीर साथ क्रिया करता हे ॥ तिसका फल कछु नही होता ॥ अरु मन करिकें करता हे ॥ तिसका फल पूर्ण होता हे॥ जिस उर मन जाता हे शरीरभी तिसी उर लागा जाता हे ॥ जो कर्म इंद्रिय क्षोभवान हुवे ॥ अरु बुद्धि इंद्रिय जो मनरूप हे सो क्षोभकों प्राप्त होवे ॥ अरु देह इंद्रिय स्थिर होवे तो कार्य होता हे ॥ जेसें धूली क्षोभायमान होवे तों पवनविना आकाशकों उडी नही सकती ॥ अरु पवन क्षोभायमान होवे तो भावे तेसी धूड स्थित होवे तिसकों उडाय ले जाता हे ॥ तेसें देह पड़ा रहता हे ॥ मन अपने फूरने करी सुपनेविषे अनेक अवस्थाकों प्राप्त होता हे ॥ अरु जागृतविषेभी जीस ओर मन फुरता हे ॥ देहकोंभी तहां ले जाता हे ॥ तातें सब कार्यका बीज मन हे ॥ मनतें सब कर्म होते हे ॥ मन अरु कर्म परस्पर अभिन्नरूप हे ॥ जेसें फुल अरु सुगंध अभिन्नरूप होते हे ॥ तेसें मन अरु कर्म हे ॥ जिस कर्मका अभ्यास मनविषे दृढ होता हे ॥ तिस कर्मकी शाखा पसरत हे ॥ अरु तिसी फलकों प्राप्त होता हे ॥ अरु तिसी स्वादका अनुभव करता हे ॥ जिस जिस भावकों चित्त ग्रहन करता हे ॥ तिसी भावकों प्राप्त होता हें ॥ अरु तिसीकों कल्पनारूप मानता हे ॥ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, इह चार पदार्थ हे ॥ तिनविषे जिसकी भावना मन दृढ कर्ता हे तिसीकों सिद्ध करता हे ॥ कपिल देवने जो सब शास्त्र कीये सो मनकी सत्ता करी कीये हे॥तिसने निर्णय किया हे ॥ प्रकृत जो हे माया तिसके दो सुभाव हे ॥ एक अनुलोम परिणाम हे ॥ दुसरा प्रतिलोम परिणाम हे ॥ प्रतिलोम परिणाम होता हे तब दृश्यभावकों प्राप्त होता हे ॥ अरु अनुलोम परिणाम होता हे ॥ तब अंतर्मुख आत्माकी ओर आता हे ॥ आत्मा शुद्ध रूप हे ॥ आत्माकी ओर अनुलोम परिणाम मोक्षका कारण हे ॥ ओर उपाय कोउ नही ॥ अरु वेदांत वादीनें इह निश्चय किया हे जो इह सर्व ब्रह्मही हे ॥ शमदमआदिक करी जब मन संपन्न होता हे ॥ तब यह निश्चय धारन होता हे ॥ जो सर्व ब्रह्म हे ॥ ब्रह्मज्ञानबिना ओर जतन करी मोक्ष नही होता ॥ उनके चित्तविषे यहि निश्चय हे ॥ अरु विज्ञान वादी कहते हे ॥ जबलग बुद्धि पडी फुरती हे तबलग संसार हे ॥ जब इसका फुरणा अपने सुभाव विषे होता हे ॥ तब उस काल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषे स्वरूप स्थित होता हे ॥ जब उह काल आवेगा ॥ तब मोक्षकी प्राप्ति होवेगी ॥ अर्हत जें सेवडे हे तिनकों अपने निश्चय अनुसार भासता हे ॥ मीमांसा पातंजल वैशेषिक न्याय तें आदिक लेकरी शास्त्रकार हे ॥ सो अपनी बुद्धि करी जेसा निश्चय तिनने धारा हे तेसाहि तिनकों भासता हे ॥ स्वरूप तें न कोउ मत हे न शास्त्र हे ॥ सबका कारण मन हे ॥ मनकों अंगीकार करकें सब मत डुबे हे ॥ सबका कारण मन हे ॥ न निंब कडु हे ॥ न मधु मिष्ट हे ॥ न अग्नि उष्ण हे ॥ न चंद्रमा सीतल हे ॥ जेसा जेसा जिनकें मन विषे निश्चय होता हे तेसा तेसा तिसकों भासता हे ॥ किसीकों निंब प्यारी होती हे ॥ मधु कटु लगती हे ॥ नीमका जो कीट हे तिसकों मधु नही रुच आता तो मधु कटुक हो गया क्यों ? ॥ इसी कारणतें वास्तव नही ॥ विरहिणी स्त्रीकों चंद्रमा अग्निवत् भासता हे ॥ चकोर अग्निकों भक्षण करी लेता हे ॥ जेसी जेसी भावना पदार्थविषे हो गइ हे ॥ तेसा तेसा हो भासता हे ॥ सब जगत भावना मात्र हे ॥ जिस पुरुषकों दृश्यविषे भावना हे ॥ सो अनेक दुःखभ्रमकों देखता हे ॥ अरु जिसकों शमदमादिक साधन करीकें अकृत्रिम पदकी प्राप्ति हुइ हे ॥ अरु मन तदाकार भया हे ॥ सो शांतिकों प्राप्त भया हे ॥ ओर नही प्राप्त होता ॥ हे रामजी ! इह जगत दृश्य तेरे मनके स्मरणविषे स्थित भया हे ॥ सो तुच्छरूप हें ॥ इसकों मनतें त्याग कर इह सुखदुःख आदिक महा भ्रमकों देणेहारा हे ॥ इह संसार अपवित्र अरु असत मोहरूप महाभयका कारन हे ॥ आभासरूप हे ॥ माया मात्र अविद्यारूप हे ॥ इसकी भावना भयका कारन हे ॥ जगत साथ संवितकी तन्मयता होती हे ॥ इसका नाम कर्म बुद्धीश्वर कहतें हे ॥ जब दृष्टाकों दृश्यके साथ संयोग होता हे ॥ तब बडे मोहकों प्राप्त होता हे ॥ दृश्य साथ मिलिकें भ्रम करी अनात्मविषे आत्माभिमान करता हे ॥ देहादिककों अपना आप जानता हे ॥ संसाररूप मद करीकें उन्मत्त हो जाता हे ॥ स्वरूपकी संभाल इसकों नही रहती ॥ इसका नाम अविद्या बुद्धीश्वर कहते हे ॥ जो दृश्य साथ मिल्या हे तिसका कल्याण नही होता ॥ जिसके आगें मनका पटल हे ॥ तिसकों स्वरूपका भान नही होता ॥ जेसें सूर्य के आगें मेघका आवरन आता हे ॥ तो नही भासता ॥ तेसें मनके आवरन करी आत्मा नही भासता ॥ तातें मनरूपी आवरणकों दूर करहु मनका रूप जो हे सो फुरणा हे तिसकों संकल्प कहिये ॥ जो जो संकल्प फुरे तिसकों त्याग करहु ॥ असंकल्प होनेते मन नष्ट हो जावेगा ॥ हे रामजी ! जब तुं सर्व भावविषे असंग होवेगा ॥ सर्व पदार्थविषे तब दृष्टा पुरुष प्रसन्न होवेगा ॥ तिसकरि निर्विकल्प चिदात्माकी प्राप्ति होवेगी ॥ तहां न जगतकी सत्ता हे ॥ न सुख हे ॥ न दुःख हे ॥ केवल केवली भाव हे ॥ सो अपने आपविषे प्रकाशता हे ॥ जब संसारकी भावना तेरे रिदेतें उठी जावेगी ॥ तब निर्मल स्वरूप विषे स्थित होवेगा ॥ तब दृश्य भ्रम निवृत्त हो जावेगा ॥ जेसें जेवरीके सम्यक् ज्ञानतें सर्प भ्रम नष्ट हो जाता हे ॥ तेसें चिदात्माके सम्यक्ज्ञानतें जगत भ्रम नष्ट हो जावेगा ॥ तातें दृश्य भावनाकों त्यागकें चिदात्माकी भावना कर ॥ जेसें भावना होती हे ॥ तेसें हो भासता हे ॥ जब प्रथम भावनाका त्याग करी और भावना करती हे ॥ तब प्रथमका अभाव हो जाता हे ॥ जेसें दिन डुबेतें रात्रका अभाव हो जाता हे ॥ तेसें आत्म भावना दृश्य भावनाका अभाव होता हे ॥ जेसें लोहेकों लोहा काटता हे ॥ तेसें भावनाकों भावना काटती हे ॥ तातें अतुच्छ पद निरुपाधी निःसंशय रूपका आश्रय करहु ॥ जब तिसकी भावना दृढ होवेगी ॥ तब भ्रमतें रहित सिद्ध पदकों प्राप्त होवेगा ॥ हे रामजी ! तेरा स्वरूप आत्मा हे ॥ तुं बुद्धि आदिककी कल्पना मत करु ॥ जेसें बालककों कहिये जो शून्यविषे सिंह हे ॥ तब उह भ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यवान होता हे ॥ तेसें जब शून्य शरीरादिक विषे विचारतें बुद्धि नही पाइती ॥ इह मैं हौं ॥ इह अवर हे ॥ इत्यादिक जो कल्पना होती हे आत्माकेविषे सो अेसें हे ॥ जेसें बालक कों अपने पछावेविषे वेताल कल्पना होती हे ॥ तेसें इसकों अपनी कल्पनाके वशतें भाव अभाव शुभ अशुभ क्षणक्षणविषे प्राप्त होते हे ॥ कोउ सतरूप कोउ असतरूप भासते हें ॥ जेसी जेसी भावना होती हे तेसा भासता हे ॥ परस्त्री विषे कामबुद्धि होती हे ॥ तब स्पर्शकरी स्त्रीवत आनंददायक होता हे ॥ अरु जो स्त्रीके विषे माताकी भावना करता हे ॥ तब तिसतें कामबुद्धि जात रहती हे ॥ तातें तूं देख जेसी जेसी भावना होती हे ॥ तेसाही हो भासता हे भावनाके अनुसार इसकों फल होता हे ॥ तत्काल तिसी आकारकों देखता हे ॥ एसा पदार्थ कोउ नही ॥ जो सत नही ॥ अरु अेसा कोउ नही जो असत नही ॥ जेसा जेसा किसी निर्णय कीया हे तेसाहि तिसकों भासता हे ॥ तातें इस संसारकी भावनाकों त्याग कें स्वरूप विषे स्थित होहू ॥ हे रामजी ! मणिविषे जो प्रतिबिंब पडता हे तिसीके दूरकरणेंकों मणि समर्थ नही होती ॥ तूं तो मणिवत् जड नहि ॥ तूं चैतन्यरूप आत्मा हे तेरे विषे जो दृश्यका प्रतिबिंब पडता हे ॥ तूं तिसकों त्यागकर केसें त्याग जो संकल्प दृश्यका उठे तिसकों असतरूप जानकें त्याग देहु ॥ अरु प्रकृति व्यवहार आनि प्राप्त होवे तिसकों करहु ॥ अरु मणिकी नांइ अंतरतें रंजततें रहित होहू जेसें प्रतिबिंब बहिर्दृष्टि आता हे अरु अंतरतें रंग नही चढता ॥ तेसा बहिर दृष्टि व्यवहार तेरेविषे भासे अरु अंतर राग दोष स्पर्श न करे॥

इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे विज्ञानवादो नाम एकविंशतिमः सर्गः ॥ २१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जब जीवकों संतके संग अरु सतशास्त्रके विचार करी विचार उपजता हे ॥ तब अवर उरतें वृत्ति उपरत होतीहे॥अरु संसारका मनन निवृत्त होजाता हे॥विवेक रूप बुद्धि आनि उदय होती हे ॥ तब संसार दृश्यकी त्यागबुद्धि होती हे ॥ द्रष्टा आत्माविषे अंगीकार बुद्धि होती हे ॥ द्रष्टा पुरुष प्रगट होता हे ॥ दृश्य जो हे सो अदृश्यताकों प्राप्त होती हे ॥ अर्थ इह जो द्रष्टाके लक्षकरी दृश्यकों असतरूप जानता हे ॥ जब इह पुरुष ज्ञान ज्ञेय होता हे ॥ तब परम तत्वविषे जागता हे ॥ अरु संसारकी उरतें घन सुषुप्त मृतकी नांइं होता हे ॥ संसारकी उरतें वैराग्य भोगविषे अभोग रसविषे निरस बुद्धि उपजती हें ॥ जब एसी बुद्धि हूई तब मन अपनी सत्ताकों त्याग करी आत्मरूप होता हे॥जेसें बरफका पूतला सूर्यके तेजकरी जलरूप होजाता हे ॥ जब मनविषे संसारकी सतता होती हे ॥ तिस फुरनेकरी जडभागी होता हे ॥ जब विवेकरूपी सूर्य उदय होता हे ॥ तब मन गलिकें आत्मरूप हो जाता हे जेसें जबलग मरुथलविषे धूप होता हें ॥ तबलग उहांतें मृगतृष्णाकी नदी नष्ट नही होती जब वर्षा होती हे ॥ तब नष्ट हो जाती हे ॥ तेसें जबलग संसारकि सत्यता होती हें ॥ तबलग मन नष्ट नहि होता ॥ जब ज्ञानकी वर्षा होती हे तब द्रश्य सहित मन नष्ट हो जाता हे॥ हे रामजी ! संसार रूपी वासनांकी जाल हे ॥ तिसविषे जीवरूपी पंछी फसे हे ॥ जब वैरागरूपी चूहा इसकों कतर जाता हे ॥ तब जीव निर्बंध होता हे ॥ जेसें मलीन जल निर्मल होता हे ॥ तेसें वैरागके वसतें जीवका सुभाव निर्मल होता हे ॥ जब जीव निराग निरुपाधि संग होता हे ॥ अरु राग दोष मोहतें रहित होता हे ॥ तब जेसें पिंजर टूटेतें पंछी निर्बंध होता हे ॥ तेसें जीव निर्बंध होता हे ॥ संदेहकी जो दुर्मती हे सो शांत हो जाती हे ॥ जगत भ्रम नष्ट होता हे ॥ अंतर पूर्ण हो जाता हे ॥ जेसें पूर्णमासीका चंद्रमा सोभता हे ॥ तेसें ज्ञानवान शोभता हे ॥ सबतें उत्तम सौंदर्यताकों प्राप्त होता हे ॥ उदे अस्त राग दोष नष्ट होजाता हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरु सर्व समताभाव आनि वर्तता हे ॥ न्यूनता ओर विसेषता भाव नष्ट हो जाता हे ॥ जेसें पवनतें रहित सोम समुद्र अचलरूप होता हे ॥ तेसें असंग पुरुष मूक जड अंध कर्मकी वासनातें रहित अचल होजाता हे ॥ उह सब चैतन प्रकाश देखता हे तिसकी बुद्धि विवेक करी प्रफूल्लित हो आती हे ॥ जेसें सूर्यके उदे हूवे सूर्यमुखी कमल प्रफुल्लित हो आते हे ॥ तेसें उह पुरुष परमलक्ष्मी करी शोभता हे ॥ जेसें पूर्णमासीका चंद्रमा सोभता हे ॥ अरु बहुत कहनेकरी क्या हे ॥ ज्ञान ज्ञेय पुरुष जो हे सो आकाशवत् हो जाता हे ॥ न उदय हो ता हे न अस्त होता हे ॥ विचारकरिकें जिसने आत्मतत्वकों जान्या हे ॥ सो तिस पदकों प्राप्त होता हे ॥ जहां ब्रह्मा विष्णु रुद्र स्थित हे ॥ सभहि तिसपर प्रसन्न होते हे ॥ प्रकट आका र उसका भासता हे ॥ अरु अंतर अहंकारतें रहित हे ॥ विकल्पके समूह तिसकों खेंची नही सकतें ॥ जेसें जलका अभाव जाननेवालेकों मृग तृष्णाकी नदी खेंची नही सकती ॥ हे रामजी ! आविर्भाव अरु तिरोभावरूप जो संसार हे तिसकों रमणीयरूप जानकें ज्ञानवान खेद नहि पावता ॥ देहके नाशविषे अपना नाश नहि मानता ॥ उपजणेविषे उपजणा नही मानता जेसें घट उपजेतें आकाश उपजता नही काहेतें जों आगें सिधि हे अरु घटके अभावतें आकाशका अभाव नही होता ॥ तेसें देहके उपजेतें आत्मा उपजता नही ॥ देहके नष्ट हूवे नष्ट नही होता ॥ जब एसा विवेक उदय होता हे ॥ तब वासनाका जल नष्ट हो जाता हे ॥ कोउ भमनही रहंता ॥ जेसें मृगतृष्णाकी नदी ज्ञान करके अभाव हो जा ति हे ॥ जबलग इसकों इह बिचार नहि उपजता जो में कोन हो , अरु जगत क्या हें , तबलग संसाररूपी अंधकार रहता हे ॥ अरु जो पुरुष एसें जानता हे ॥ जो ससार भम मिथ्या उदयहूवा हे ॥ परम आपदाका कारण देह ॥ अनात्मरूप हे आत्मातें भिन्न इह जगत कछु नही ॥ सब आत्मसत्ता करिकें स्थित हे ॥ जो एसे देखता ह ॥ सोइ यथार्थ दे खता हे ॥ सब चैतन्यसत्ता हे ॥ में अनंत चिदाकाशरूप हों देशकाल वस्तुके प्रछेदतें रहित हों ॥ आधिव्याधिभय उद्वेग जरामरण जन्म आदिक संयुक्त देह हे सो में नही ॥ अेसें जो देखता हे ॥ सोइ देखता हे ॥ बालके अग्रका लक्षभाग करिये बहुरी एक भागकों कोटि भाग करीयें ॥ एसा सुक्ष्म सर्व व्यापी हे ॥ अेसें जो देखता हे सोइ देखता हे ॥ में सर्वशक्त अनंत आत्मा हों ॥ सर्व पदार्थविषे स्थित में अद्वैत चिदादित्य हों ॥ एसें जो देखता हे सोइ देखता हे ॥ अध ऊर्ध्व मध सभाविषे व्याप्या हों ॥ मुझतें इतर द्वैत कछु नही ॥ एसें जो देखता हे सोइ देखता हे ॥ जेसें सूत्रकरी मणके परोए होते हे ॥ तेसें सर्व मुझकरी परोए हे ॥ अेसें जो देखता हे सोइ देखता हे ॥ न में हों न इह जगत हे ॥ केवल ब्रह्मसत्ता स्थित हे ॥ सत असतके मध्यविषे जो एक देव प्रकाशक हे ॥ त्रिलोकीविषे जो एक हे सो में एक अविनाशी पुरुष हों ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग फुरते हे अरु लीन होते हे ॥ तेसें मेरेवि षे जगत फुरते हे ॥ अरु लीन होते हें ॥ अेसें जो देखता हे ॥ अथवा प्रथम अहं हे ॥ तब पाछें दृश्य जगत होता हे ॥ सो न में हों न जगतहे ॥ केवल एक आत्मसत्ता हे ॥ अहं अरु मम तिसविषे कोउ नही एसें जो देखता हे सो देखता हें ॥ दृश्यतें रहित में चैतन्यरूप भैरव अपार हों ॥ में जगत जालकों पूर्न करी रहा हो ॥ एसें जो देखताहे सो देखता हे ॥ जो पुरु ष ज्ञानवान हे ॥ सो सुखदुःख भाव अभावविषे चलायमान नही होता ॥ केवल ब्रह्मरूपविषे स्थित हे ॥ ओर जगतके भावअभावतें रहित अनाभास सन्मात्र रूप हे ॥ जो हेयोपादेय बुधितें रहित आकाशवत् सर्वात्मभावविषे स्थित भया हे ॥ कोउ पदार्थ जगतका उसकों अपने वसकरी नही सकता ॥ सो महात्मा पुरुष महेश्वर तम प्रकाशतें रहित हे ॥ सर्व कल्प

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नातें मुक्त सम स्वच्छरूप हे ॥ उदय अस्तनें रहित समदत्त हे ॥ जिसकों अेसी परम बोध अनंत सत्ता विषेस्थिति हें ॥ तिसकों मेरा नमस्कार है ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थिति प्रकरणे अनुत्तम विश्राम वर्णनं नामद्वाविंशतिमः सर्गः ॥ २२ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! उत्तमपदका जिसनें आश्रय कीया हे॥अेसा जो जीवन्मुक्त पुरुष हे ॥ जिसका कुंभार चक्रकी नांइ प्रारब्ध शेषरहा हे ॥ सो पुरुष शरीररूपी नगरविषे राज करता हे ॥ अरु लेपायमान नही होता ॥ तिसकों भोग अरु मोक्ष दोंनों सिद्ध होते हें ॥ जेसें इंद्रका वन सुखरूप हे ॥ तेसें उसका शरीररूपी नगर सुखरूप होता हे ॥ शरीरके सुखकरी सुखी नही होता ॥ दुःखकरी दुःखी नही होता हे ॥ अपने स्वरूपविषे स्थित रहता हे ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे महामुनीश्वर ! शरीररूपी नगर केसा हे ॥ अरु इस विषे रहीकें जोगीराज केसें करता हे॥ अरु सुख केसें भुगतता हे ! ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! ज्ञानीका शरीररूपी नगर रमणीय होता हे॥सर्व गुणसंयुक्त ज्ञानवानकों अनंत आनंद विलास दिखावता हे ॥ जेसें सूर्य प्रकाशकों उदय करता हे॥तिस नगरका स्वरूप ओर लच्छन श्रवन कर॥शरीरविषे गंठी हे सो इंटां हे ॥अरु रुधिर मांस चिकडके स्थान हे ॥ अस्थि लकडीयां थंभे हे॥ अरु किवाट पट हे ॥ अरु रोम वनस्पति हे उदर खाइ हे ॥ छाती चोक हे ॥ नव द्वार हे ॥ तिन विषे नेत्र झरोखे हे ॥तिस द्वारकरी त्रिलोकीका प्रकाश होता हे ॥ हाथ गली हे ॥ जीसकरी लेता देता हे ॥ मुख बडी कंदरा हे ॥ ग्रीवा शीस बडे मंदिर हे ॥ अरु रेषा माला हे ॥ भिन्न भिन लागी हूई हे ॥ अरु नाडी विभाग करनेके स्थान हे ॥ अरु प्राणवायु आदिककरी नाडी विषे जीव विचरते हे ॥ आत्म चिंतामणिरूपी तिसविषे श्रेष्ठ बुद्धिरूपी स्त्री रहती हे ॥ अरु जिननें इंद्रियरूपी बानर बांधि छोडे हे ॥ हसनेरूप जिसविषे महा सुंदर फूल हे ॥ एसा शरीररूपी पुर ज्ञानवानकों महा सुखके निमित्त हे ॥ सौभाग सुंदररूप हे ॥ शरीरके सुखदुःख करी ज्ञानवान सुखी दुःखी नही होता ॥ हे रामजी ! जो अज्ञानी हे तिसकों शरीररूपी नगर अनंत दुःखका भंडार हे ॥ अज्ञान करीकें शरीरके नष्ट हुवे आपकों नष्ट हुवा मानता हे ॥ अरु ज्ञानवान इसके नाशहूवे नाश नही पावता ॥ जबलग रहता हे ॥ तब लग शब्द स्पर्श रूप रस गंध इनकों ग्रहन करता हे ॥ इष्टरूप होकें भासते हें ॥ अरु शरी रूपी नगरविषे भ्रमतें रहित निष्कंटक राज करता हे लोभतें रहित हे ॥ इस कारनतें शत्रु कछु लेता नही ॥ अरु उनकों अपने स्थानविषे आने नही देता ॥ सो शत्रु कोन हे काम क्रोध मानमोहादिक अज्ञानदेश हे ॥ तिनकेविषे आप प्रवेश नहि करता अरु अपने देशविषे तिनकों आने नही देता ॥ सावधानही रहता हे ॥ सो अपना देश कोंन हे ॥ उदारता धीरज संतोष वैराग समता मैत्रता मुदता उपेक्षा ज्ञानदेश हे ॥ तिसविषे अज्ञानकों प्रवेशकरने नही देता अरु आप ध्यानरूपी नगरविषे रहता हे ॥ सत्यता अरु एकता दोनों स्त्रियांकों साथ रखता हे ॥ तिनकरी सदा शोभायमान रहता हे ॥ जेसें चंद्रमा चित्रा विशाखा दोनों स्त्रियां करी शोभता हे ॥ तेसें ज्ञानवान सत्यता अरु एकता करी शोभता हे ॥ मनरूपी घोडेपर आरूढ होकें तीर्थके स्नानकों गमन करता हे ॥ विचाररूपी तिसकों लगाम रखता हे ॥ अरु जीव ब्रह्मकी एकता रूपी संगम तीर्थविषे स्नान करता हे ॥ सदा आनंद मान रहता हे ॥ भोग अरु मोक्ष दोनों करी संपन्न होता हे ॥ जेसें इंद्र अपने पुरविषे शोभता हे ॥ तेसें ज्ञानवान देह विषे शोभता हे ॥ अ रु जेसें घटके फूटेतें आकाशकी कछु न्यूनता नही होती ॥ तेसें देहके नाश हुवे ज्ञानीकी कछु हानि नही होती ॥ ज्योंका त्यों रहता हे ॥ जो देह होती हे तोभी तिस साथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्पर्श नही करता ॥ जेसें घटसाथ आकाश स्पर्श नही करता ॥ सर्वक्रियाकों कर्ता भोक्ता हे परंतु किसीकरी लेप नही पावता ॥ सदा एक रस भगवान आत्मदेव विषे रहता हे ॥ जब विमानपर आरूढ होकें शरीररूप नगरविषे विचरता हे ॥ तब मैत्रीरूप नेत्रसाथ सभकों देखता स्थित होता हे ॥ मैत्री भाव सदा तिसविषे रहता हे ॥ अरु सत्यता एकता सदा तिसके पास हे ॥ तिसकरी शोभता हे सदा आनंदमान विचरता हे ॥ अवर जीवकों दुःखरूपी आरे साथ कटाते देखता हे ॥ जेसें कोउ पहाड उपर चढीकें पृथ्वीविषे लोककों जलता देखे ॥ अरु आप आनंदवान होवे ॥ तेसें ज्ञानवान जीवकों दुःखी देखता हे अरु आप आनंदमान हे ॥ उसीकि दृष्टिविषे तो सदा अद्वैत रूप हे ॥ अरु आत्मानंदकी अपेक्षा करी अनात्मधर्म कों दुःखी देखता कहता हे ॥ उसके निश्चयविषे जगत जीव कोउ नही ॥ अरु चारों प्रयोजन धर्म अर्थ काम मोक्ष तिनके पूरनताकों प्राप्त होता हे ॥ कीसी उरतें उनकों न्यूनता नही॥ सर्व संपदा संपन्न विराजमान होता हे ॥ जेसें पूर्नमासीका चंद्रमा न्यूनतातें रहित बिराजता हे ॥ जद्यपी भोगकों सेवता हे ॥ तोभी तिसकों दुःखदायक नही होते ॥ जेसें कालकूट विषकों सदाशिवनें पान कीयाथा ॥ परंतु दुःखदायक तिसकों न भया ॥ तेसें उहभी समर्थ हे ॥ तातें भोग दुःखदायक नही होते ॥ जेसें चोरकों जानकें अपने वशवर्ती कीया तब मित्रभाव हो जाता हे ॥ तेसें भोग उसकों दुःख नही देते ॥ जब भोगकों जानता हे जो इह कछु वस्तु नही ॥ तब सुखका कारण होते हें ॥ जबलग इनकों सतजानके आशक्त होता हे ॥ तबलग दुःखका कारन होता हे ॥ हे रामजी ! जेसें कोउ जात्राकों जाता हे॥अरु मार्गविषे स्त्रियां पुरुष मिलते हे उनविषे एकठा बेठना अरु चलनाभी होता हे परंतु आपसमें आशक्त नही होतें ॥ आगें पाछें चले जातें हे ॥ तेसें ज्ञानवान संसारके पदार्थविषे चित्तकों नही लगाता॥ जेसें कोउ कासीद कीसी देशविषे जाता हे ॥ अरु मार्गविषे केइ सुंदर रमणीय स्थान इष्ट आते हे ॥ केइ मलीन कष्टके स्थान भासते हे ॥ परंतु रागदोष किसी विषे नही करता ॥ जेसें तेसें देखता चला जाता हे ॥ तेसें ज्ञानवान भोगक्रियाविषे रागदोषकरी बंधमान नही होता ॥ सर्व संशय तिसके सम्यक् ज्ञानकरी शांत हो जाते हें ॥ कोउ पदार्थ उसकों आश्चर्यता करी देखाइ नही देता ॥ वासनाके समूह नष्ट हो जाते हे ॥ चक्रवर्ती राजाकि नांइ शोभता हे ॥ परिपूर्ण होकें स्थित होता हे ॥ जेसें क्षीर समुद्र अपने आपविषे पूरन समाता नही ॥ तेसें ज्ञानी अपने आपविषे पूरन समाता नही ॥ हे रामजी ! इन जीवकों भोगकी इछा दीन करती हें ॥ तिसकरी आत्मपदतें गिरते हे ॥ अनात्मविषे प्राप्त हूवे कृपन हो जाते हे ॥ तिनकों देखकें आत्म उत्तमपद आलंबी हसते हें ॥ जो इह मिथ्या दीन भावकों प्राप्त हूवेहें ॥ जेसें स्वामी होकरी स्त्रीके वश होवे ॥ स्त्री स्वामीकी नांइ होवे ॥ अरु भर्ता दीन हो जावे ॥ अरु तिसकों देखकें लोक हसते हे ॥ तेसें ज्ञानवान भोगकी तृष्णा वालेकों दीन देखकें हसतें हे ॥ चंचल मनही परम सिद्धांत सुरकेंत जीवकों गिरावता हे ॥ तातें मनरूपी हस्तीकों बिचाररूपी कुंदे साथ वस करहु ॥ तब सिद्धपदकों प्राप्त होवेगा जिस का मन विषयकी ओर पडा धावता हे ॥ सो संसाररूपी विषका बीज बोवता हे ॥ तातें प्रथम इस मनकों ताडन कर ॥ तब शांतिकी प्राप्ति होवेगी ॥ जो मानी होता हे अरु कोउ उसका मान करता हे ॥ तब उह उपकार कछु नही मानता ॥ जब प्रथम उसकों ताडन करता हे ॥ तब बडें थोडे उपकार कियेतें प्रसन्न होता हे ॥ जेसें धान्य जलकरी पूरन होते हे ॥ तब जलके सीचणें करी उनतें उपकार नही होता ॥ अरु जो जेठ आशाढकी धुपकरी तप्त होते हे ॥ तब थोडा जल सीचणे करीभी उनकों अमृतवत् होता हे॥ तेसें जो प्रथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

म मनका सन्मान करीयें तब मित्र भाव नहीं होता ॥ अरु जब ताडन करीकें पाछें सन्मान करीएं तब उपकार मानिके मित्रभाव होरहेगा ॥ सो ताडन करना इह हे ॥ जो विषय तें संयम करना ॥ जब संयम करकें निर्मान हुवा ॥ तब इह सन्मान करना जो संसारके पदार्थ विषे वर्तावना ॥ तब शत्रु भावकों त्यागकें मित्र हो जाता हे ॥ जेसें वर्षा काल विषे नदी जलकरी पूरन होती हे ॥ तिसविषे जलका उपकार नही होता ॥ सरतकालविषे जलका उपकार होता हे ॥ जेसें राजाकों अवर देसका राज प्राप्त होवे ॥ तब उह कछु प्रसन्नताकों नही प्राप्त होता ॥ प्रथम बंदीस्थानविषे डारियें पाछें एक थोडा गिरास दीजियें तिसकरीभी प्रसन्न होता हे ॥ तेसें जब प्रथम मनकों ताडन करीये ॥ तब पाछें थोडे सन्मान करीभी सुखदायक होता हे ॥ तातें हाथसों हाथ मीटकें अरु दंतसों दंत मिलाइकें अंगसों अंग रोकीकें इंद्रियकों जीत ले ॥ इस पुरुषके हृदयविषे मनरूपी सर्प कुंडल मारी बेठा हे॥ अरु कल्पनारूपी विषकरी पूर्न हे॥ जिस पुरुषनें उसकों मर्दन कीया हे॥तीसकों मेरा नमस्कार हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे शरीरनगर वर्णनं नाम सर्गः ॥ २२ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! अज्ञानी जीव महानरककों प्राप्त होता हे ॥ आशारूपी बाणकी सलाका तिनकों लगती हे ॥ इंद्रियरूपी शत्रु मारते हैं ॥ इंद्रियां दुष्ट बडी कृतघ्न हे ॥ जीस देहके आश्रय रहतीयां हे ॥ तिसकों सोक अरु इच्छा करि पूर्ण करतीयां हे ॥ अरु महादुष्ट दुःखदायक भंडार हे ॥ इनकों तुम जीतहु ॥ इंद्रियां मनरूपी चील पंछी हे ॥ जब विषय नही होते ॥ तब उर्धकों उडते हैं ॥ जब विषय प्राप्त होते हैं ॥ तब नीचेकों आय गिरते हैं ॥ जिस पुरुषनें विवेकरूपी जाल साथ इनकों बांध्या हे ॥ तिसकों इह भोजन नही करी सकते ॥ जेसें पाषाणके कमलकों हस्ति भोजन करी नही सकता ॥ हे रामजी ! इह भोग आपातरमणीय हे ॥ अत्यंत विरस हे ॥ जो पुरुष इनविषे रमण करता हे ॥ सो अंत नरककों प्राप्त होवेगा ॥ जो पुरुष ज्ञानके धन करी संपन्न हे ॥ अरु देहरूपि देश विषे रहता हे ॥ सो परम शोभाकों पावता हे ॥ अरु आनंदवान होताहे ॥ काहेतें जो बडा ऐश्वर्य करी तिसने इंद्रियरूपी शत्रु जीते हैं ॥ हे रामजी ! स्वर्नके मंदिरविषे रहणे करी अेसा सुख नही प्राप्त होता ॥ जेसा निरवासनिक ज्ञानवानकों होता हे ॥ जो अपणे शरीरनगरविषे रहता हे ॥ जिस पुरुषनें इंद्रिया अरु असतरूपी शत्रुकों जित्या हे ॥ सो परम शोभा करि शोभता हे ॥ जेसें हिमऋतुकों जीतिकें बसंतऋतु विषे मंजरी सोभती हे ॥ जिस पुरुषके चित्तका गर्व नष्ट भयाहे ॥ अरु इंद्रियांरूपी शत्रु जिते हे ॥ तिसकी भोगवासना नष्ट हो जाती हे ॥ जेसें सितकालविषे पदमनीयां नष्ट हो जाती हे ॥ हे रामजी ! वासनारूपी वैताल निशाचर तबलग विचरते हैं ॥ जबलग एक तत्वका दृढ अभ्यास करीकें मनकों नही जिता ॥ जब विवेकरूपी सूर्य उदय होता हे ॥ तब अंधकार नष्ट होजाता हे ॥ जब विवेक करी मनकों वस करता हे ॥ तब इंद्रियां भृत्य टहलुए हो जाते हैं ॥ अरु मनरूपी सब मित्र हो जाते हैं ॥ आप राजा होकें स्वरूप राजकों भुगतता हे ॥ हे रामजी ! विवेकी की इंद्रियां पतिव्रता स्त्रीवत् हो जातीयां हे ॥ अरु मनसीताकी नांइ पालना करनेवाला होता हे ॥ अरु चित्त सुहृद होजाताहे॥जब निश्चयवान पुरुष सतशास्त्रकों विचारता हे॥ तब परम सिद्धांतकों प्राप्त होता हे ॥ अरु मन अपनें मनन भावकों त्यागकें शांतरूप सो पितावत् प्रतिपालक हो जाता हे॥ तातें मनकों विवेक करीकें वश करहु ॥ जेसें मणिकों धागे साथ छेद पाडकें धागे साथ परोते हे॥अरु कंठविषे पावते हे॥तब बडी शोभाकों प्राप्त होते हैं॥तेसें मनरूपी मणी हे तिसकों आत्मविचार सिलासाथ घसावणा वैराग जलकरी उज्जल करणा अ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भ्यासरूपी छेद पारकें विवेकरूपी तागे साथ परोय कंठविषे स्थित करणेसें सोभा देतीहे॥विवेक केसाहे जो जन्मरूपी दृच्छकों कुहाडा जेसा काटि डारता हे॥अरु मनरूपी शत्रुकों मित्र करता हे सदा शुभकर्मकों करता हे ॥ अरु विषयके परिणामिक दुःखकों निकट आने नही देता ॥ तातें मनकों वश करणा आनंदका कारण हे ॥ जो मन वश नही होता तो दुःख देता हे॥ जब वश होता हे तब सुखदायक होता हे ॥ हे रामजी ! मनरूपी मणि हे ॥ सो भोगकी तृष्णा करी कलंकित हुइ हे॥ जब विवेकरूपी जलकरी इसकों शुद्ध करे ॥ तब सोभायमान होवेगी॥ इह संसार महाभयका देणेदारा हे॥ अल्पविवेकवान पुरुषभी मायारूप संसारविषे गिरपडे हे ॥ तूं छलकरी इतर जीवकी नांइ इसविषे मत गिरहु ॥ इह संसार मायारूप हे ॥ अनेक अर्थकी सांकरसंयुक्त हे ॥ महा मोहरूपी कुहिडकरी जीव अंध हो गये हे ॥ तातें तूं विवेक पदका आश्रयकर ॥ बोधकरी सतका अवलोकन कर ॥ इंद्रियतें वैरागरूपी नौकाकरी संसार समुद्रकों तरी जावहु ॥ शरीरभी असत हे ॥ इस विषे सुख अरु दुःखभी असत हे ॥ तुम दाम व्याल कटकी नांइ मत होवहु ॥ भीम भास दटकी स्थितिकों ग्रहणकरीकें विशोक होहु॥ अहंमम आदिक जो निश्चय हे सो वृथा हे ॥ तिसकों त्यागकें तत्पदका आश्रय करहू ॥ चलतें बेठते खाते पीते मनविषे मननका अभाव होवे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे मनस्विसत्यता प्रतिपादनं नाम चतुर्विंशतिमः सर्गः ॥ २४ ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन्! संसार तापके दूरकरणेहारे इह तुमक्या कहा ॥ इसकों खोलीकरी कहो ॥ दाम व्याल कटकी नांइ केसें ॥ अरु भीम भास दटकी स्थिति केसें हे ? जेसें वर्षाकालके मेघ तपतकों दूर करता हे ॥ मोरकों शब्दकरी जगावता हे ॥ तेसें तुम अपनी कृपाकरी ज गावहू ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! प्रथम इनकी नांइ स्थित होय श्रवन करु ॥ पाछें जो इष्ट होवे तिसविषे विचरना ॥ पाताल कुहर विषे संवरनाम दैत्य राजा होत भयाथा ॥ सो मायारूप गणिका समुद्र अरु सर्व आश्चर्यरूप मनके मोहनहारा रमणीय था ॥ सो दैत्य अपनी मायाकरीकें आकाशविषे नगर रचता भया ॥ बाग रचे दैत्यके मंदिर रचे ॥ सूर्य अरु चंद्रमा रचे ॥ अनंत ऐश्वर्यकरी संपन्न दैत्य रचे ॥ अरु रत्नकी स्त्रीयांरची सो गानकरहीं ॥ तिस गानकरी देवताकी स्त्रीयांभी तिननें जीतीयां ॥ अरु दृछ रचे चंद्रवत तिन साथ फल लागे ॥ अरु कमलनी स्वेत पीत रत्नकी रची ॥ स्वर्नके हंस रचे ॥ अरु सारसपंछी स्वर्नके कमल स्वर्नके दृछकी बडी शाखापर बेठे हुवे ॥ अरु करजुवेके बुटे तिन साथ कमलदृछके फूल लागे ॥ रत्नकरी जडेहूवे सुंदरस्थान बरफकी नांइ सीतल वगीचे बन स्थान चंदनके रचे ॥ इंद्रका नंदन बन तिसतें विशेष ॥ सर्व ऋतुके फूल तिनविषे दैत्यहूकी स्त्री यां क्रीडा करती फिरही ॥ अरु बडे ऐश्वर्य रचे ॥ विष्णु अरु सदाशिवके सदृश ऐश्वर्य संयुक्त अपना नगर कीया ॥ रत्नके तारागण रचे बडे प्रकाश संयुक्त ॥ जब रात्र पडे तब सो चंद्रमाके साथ उदय होवे ॥ अरु पूतलीयां गानकरहीं ॥ अरु मायाके हस्ति एसें रचें जो इंद्रके ऐरावतकों जीती लेवहीं ॥ त्रिलोकीकी विभूतीतें उत्कृष्ट विभूती उसने रची ॥ अंतर्बाहिर सर्व संपदाकों पूरन किया ॥ सब ऐश्वर्य करी संपन्न अरु सब दैत्य मंडलेश्वर वंदना करहीं ॥ आप सर्व दैत्यका राजा हुवा ॥ शासन करनेहारा सब इसकी आज्ञामें वरतही ॥ महा बडी भुजा तिनके नीचे सब दैत्य विश्राम करही ॥ इसप्रकार संपूर्ण राज अरु स्थानके मंडलेश्वर तिसनें रचे ॥ सेना रची अरु राज करत भया ॥ जब संबर दैत्य सयन करे ॥ अथवा देशांतरकों जावे ॥ तब अवकाश देखकें देवताके नायक तिसकी सेनाकों मारी जावे ॥ अरु स्थान लुटि ले जावे ॥ तब संबरने रक्षा करनेहारे सेनापति रचे ॥ बहुरी समय देखकें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवता तिनकोंभी मारी गए ॥ तब संबरनें सुणीकें कोप कीया जो इनकों मारों ॥ अेसें विचारकें अमरापुरीपर चढीकें गया ॥ देवता भयभीत होंकें सुमेरु पर्वतमें भवानीशंकरके पास जायकें छपतहूवे ॥ अवर वन कुंज अरु समुद्रविषे जाय छुपे ॥ जेसें प्रलयकालविषे सब दिशा शून्य होजाती हें ॥ तेसें अमरपुर स्वर्ग शून्य हो गया ॥ तब दैत्यराज अमरपुरीकों शून्य देखकें कोपमान हूवा ॥ अग्री लगाय दे लोकपालके पुर सब जलायदीये ॥ देवताकों ढूंढी रहा ॥ परंतु कहूं देखणेविषे न आये ॥ जेसें पापी पुन्यकों देखे अरु कहूं दृष्टि न आवहीं तेसें देवता कहुं न भासे ॥ तब संबर कोपमान होंकें बडे बली राक्षस सेनाकों रक्षाकें निमित्त मायाकरीकें रचत भया ॥ मानों कालकी मुरतांहे ॥ अेसें होकरी स्थित भये बडे आकार मानों पंखहूं संयुक्त पर्वत हिलते हें ॥ अेसे शरीर दाम, व्याल, कट, इह तीन तिनके नाम हे ॥ अरु हाथविषे बडे शस्त्र ॥ अरु भुजा कल्प दछकी नांइ अरु यथाप्राप्त कर्मविषे लगे रहहीं ॥ इह उनका धर्म अरु उनकों कर्मका अभाव काहे तें जो पूर्ववासना कर्म उनकों न था ॥ निर्विकल्प चिन्मात्र उनका स्वरूप था ॥ अरु अपने सुभाव सत्ताविषे स्थित न थे ॥ अरु अनात्म भावकों प्राप्त भये न थे ॥ एक स्पंदमात्र कर्मरूप चेतना उन विषेथी ॥ सो कर्मका बीज चित्तकलना स्पंद रूप हूइथी ॥ मननात्मक शस्त्रप्रहारकों रचेथे ॥ तिसिकों पडे करहीं ॥ परंतु अंतरविषे स्पष्ट वासना उनकों कोउ न फूरे ॥ अवकाश मात्र सुभावकरी क्रिया उनकी पडी होवे ॥ जेसें अर्ध सुषुप्त बालक अपने अंगकों सुभाविक हिलाता हे ॥ वासनातें रहित ॥ तेसें उह वासना बिना चेष्टा करहीं ॥ गिरना अरु गीरावना कछू न जानहीं ॥ अरु न जानहिं जो हम इसकों मारते हें ॥ न इह जानहिं हम मरते हें ॥ न दोड जानहि न भाग जानहीं ॥ न जानहीं हम जीवते हें ॥ न जानहिं हम मरते हें ॥ जीत अरु हारकों कछु न जानहिं ॥ केवल शस्त्रका प्रहार करहीं ॥ जेसें जंत्रीकी पूतली तागेपर पडी चेष्टा करतीहे विना संवेदन ॥ तेसें दाम व्याल कट चेष्टा करहीं ॥ महाबली जीनके प्रहार करी पहाडभी चूरन हो जावहिं ॥ तिनकों देखकें संबर प्रसन्न हूवा ॥ जो इह सेनाकी रक्षाकों बडे बली हे ॥ इनका नाशभी उनसों न होवेगा ॥ काहेतें जो इनकों इष्ट अनिष्ट कछु नहि ॥ जिनकों इष्ट अनिष्टका ज्ञान अरु वासना नही ॥ तिनका नाश केसें होवे ॥ अरु आगेही केसें ! ॥ जेसें देवताके हाथीभी बडे बली हे तोभी सुमेरुकों उखारी नहि सकते ॥ दंतके चूरन हो जाते हे ॥ तेसें देवता बडे बलीभी हे परंतु इनकों मारी नही सकेंगे ॥ यह बडे बली रक्षक हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे दाम व्याल कट उत्पत्ति वर्णनं नाम पंचविंशतिमः सर्गः ॥ २५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! इसप्रकार निर्नय करीकें संवरने दाम व्याल कटकों स्थापन कीयें ॥ अरु भूतलविषे देवताकी सेनाभी आई ॥ जब संबर चडताथा तब भागी जातेथे ॥ अरु सेनाकों देखकें उहभी निकसे समुद्र अरु पहाडसे उछलीकें एक ओर देवता निकसे ॥ बडी सेना सहित जुद्ध करने लागे ॥ जेसें प्रलयकालके समुद्र क्षोभते हें ॥ अरु सब जलमय हो जाता हे ॥ तेसें देवता अरु दैत्य सर्व उरतें पूरन हो गए बडे बाण करी युद्ध करने लागे ॥ शंखधुनी कर शस्त्र चलहिं ॥ तिनतें शब्द होवहिं ॥ अरु अग्नि निकसे ताराकी नांइ चमत्कार करहिं ॥ शरीरके शिर काटे जावहिं ॥ अरु धड कंपिकंपि गिर पडहिं ॥ परस्पर दोनों उरतें शस्त्र चलहिं ॥ दाम व्याल कट भाग नहीं जानही ॥ मारतेहि जावहि ॥ जिनके प्रहार साथ पहाड चूरन होजावहिं ॥ सब दिशाविषे शस्त्र पूर्ण होगए रुधिरके प्रवाह चलहिं तिनविषे देव दैत्य मरे वहते जावहिं ॥ महाप्रलयकी नांइ भय उदय हुवा ॥ एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक अस्त्र एसा चले जिसतें शस्त्रकी नदीयां चलाहिं ॥ कोउ अग्निका अस्त्र चलावे कोउ मेघका अस्त्र चलावे ॥ कोउ तमअस्त्र चलावे ॥ दूसरा प्रकाशरूप अस्त्र चलावे ॥ कोउ निद्रारूप दूसरा प्रबोधरूप , कोउ सर्परूप दूसरा गरुडरूप ॥ इस प्रकार परस्पर जुद्ध करहिं ॥ बहुरी ब्रह्मास्त्र चलावहीं ॥ सिलाकी वर्षा होवे ॥ सब पृथ्वी रक्त अरु मांसकरी पूर्ण होगई ॥ अनेक जीवके धड शीश गिरपडे ॥ जेसें वृछतें फल गिरते हे ॥ तेसें देवता दैत्य गिरे ॥ बडा युद्ध हूवा, गंधर्व किनर देवता बहूत नष्ट भये दैतभी बहुत नष्टहूवे ॥ परंतु कछु उनकी जीत रहे ॥ इस प्रकार मायावी संबरकी सेना अरु देवताका युद्धहूवा ॥ जेसें वर्षाकालमें आकाशविषे मेघ घटा पूर्ण होजाती हे ॥ तेसें देवता अरु दैत्यकी सेना एकठी हो गई ॥ दिशा विदिशा सब स्थान पूरन होत भए॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे दामव्यालकटसंग्राम वर्नन नाम षड्विंशतिमः सर्ग : ॥२६॥ ॥ वसिष्ठावाच॥ हे रामजी ! इस प्रकार घोरसंग्राम हूवा ॥ देवता अरु दैत्यके शरीर गिरे ॥ जेसें पंख टूटेतें पर्वत गिरते हें ॥ रुधिरके प्रवाह चलहीं बडे शब्द होवहिं ॥ आकाश पृथ्वी शब्दकरी पूर्ण होगए ॥ दामने देवताके समूह वेष्टित कीये ॥ व्यालनें पकडीकें देवताकों पहाडविषे पीसडारे ॥ कटनें देवताके समूह चूरन कीये ॥ उनके स्थान तोडि डारे बडा क्रूर संग्राम कीया ॥ देवताका हस्ती जो मदकरी मत्त था सो ताडन करी क्षीण हो गया ॥ सो उहांतें भागा ॥ भयभीत होकरी देवताभी भागे ॥ तब दैत्यकी सेना वृद्धि होतभई जेसें मध्यान्हके सूर्यका बडा प्रकाश होता हे॥ तेसें दैत्य प्रकाशवान भए देवता बहुत मारे गए ॥ जेसें जलका प्रवाह पुल टूटतें तीक्ष्ण वेगकरी चलता हे ॥ तेसें देवता तीक्ष्ण वेगकरी भागे ॥ जलके प्रवाहवत् मर्यादा छुटीगइ दाम व्याल कटकी सेना जीत पावती भई ॥ देवताके पाछें लागे मारते जावहिं ॥ जेसें काष्टतें रहित अग्नि अंतर्ध्यान हो जाता हे ॥ तेसें बलवान देवता बलसों हीन भए अंतर्ध्यान हो गए ॥ दैत्य ढूंढते फिरे परंतु देवता कहूं न पावे ॥ जेसें जालसों निकसे पंछी कहूं हाथ नही आते ॥ तेसें देवता तिनके हाथ नही आये ॥ जेसें मृग बंधनसों छूटा निकसी जावे अरु हाथ न आवे ॥ तब दाम व्याल कट तीनों सेना सहित पातालविषे आनि स्थित भए ॥ अपना स्वामी जो संबर था तिस पास आए प्रसन्नताके लीये ॥ अरु उहि देवतानें श्रवन कीया जो दैत पातालविषे जाए स्थित भए ॥ तब विचारकरीकें चिंतवते भये ॥ जो कीसी प्रकार इनतें इश्वर हमारी रक्षा करे ॥ एसी चिंता करी आतुर भए ॥ तब ब्रह्माजी देवता के निकट आनिप्राप्त भए ॥ अमित तेज हे जिसका ॥ अरु अमित जिसके रक्त वस्त्र हे ॥ जेसें संध्याकालमे रक्तवर्ण बादल होते हें ॥ तिनविषे चंद्रमा सोभता हे ॥ एसें प्रकाशवान ब्रह्माजीकों देखकें इंद्रादिक देवता प्रणाम करत भये॥संबर दैत्यकी शत्रुताकरिकें कहत भये ॥हे त्रिलोकीके इश्वर! हम तेरी शरन आए हें हमारी रक्षाकरु॥ संबर दैत्यनें हमकुं बहुत दुःख दीया हे ॥ तिसके सेनापति दाम व्याल कट हे ॥ सो बडे दैत्य हे ॥ किसी प्रकार हमसों मारे नही जाते ॥ अरु हमारी सेना उननें बहुत चूरन करी हे ॥ हे रामजी ! इस प्रकार संपूर्ण वृत्तांत दाम व्याल कटका ब्रह्माजीप्रती कहतभये ॥ अरु कहा जो इनके मारनेका उपाय हमकों कहो॥ जिस प्रकार इह नष्ट होवहिं ॥ तब संपूर्ण जगतपर दया करनेहारा ब्रह्माजी बचन कहत भया॥ केसें वचन जो शांतिका कारन हे ॥ ॥ ब्रह्माउवाच ॥ ॥ हे अमरेश ! इह दैत्य अब तो नष्ट नहि होवेंगे ॥ जब इसकों अंहकार उपजेगा तब यह मरेंगे तुमही उनकों जीतोगे ॥ में इनकी भविषत देखी हे ॥ अरु दाम व्याल कट युद्धविषे भागि नहि जान ते ॥ अरु मरने मारनेका ज्ञानभी इनकों नही ॥ इह संबर दैतकी माया करी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रचे हैं ॥ इनका नाश केसें होवे ॥ जिसकों अहंममका अभिमान होवे ॥ तिसका नाशभि होता हे ॥ सो अहंमम आदिक शत्रुकों इह जानते नही ॥ इनका नाश केसें होवें ! इस प्रकार इनका नाश कदाचित होना नहि ॥ जब इनकों अहंकार उपजेगा ॥ तब इनका नाश होवेगा ॥ सो अहंकार उपजानेका उपाय में तुमकों कहता हों ॥ तुम उनके साथ युद्ध करते रहो ॥ इस प्रकार करो कब उनके सन्मुख कब दाहिने कब बांये होइ कब भागी जाइ ॥ इस प्रकार जब तुम वारंवार करोगे ॥ तब उनके युद्धके अभ्यास वसतें अहंक्कारका अंकुर आनि उपजेगा ॥ जब अहंकारका चमत्कार रिदेविषे उपजा तब तिसका प्रतिबिंब इंदरूपभी देखेंगे ॥ बहुरी वासनाभी फुरी आवेगी जो हम इह हैं ॥ हमकों इह कर्तव्य हे ॥ इह पहन करने जोग हे ॥ इह त्यागणे जोग हे ॥ इत्यादिक वासनाजाल उनके चित्तविषे फुरि आवेगी ॥ आपकों दाम व्याल कट जानेंगे ॥ तब तुम उनकों वशकरी लेइगे ॥ तुमारी जय होवेगी ॥ जेसें जालविषे फस्पापंछी वस होता हे ॥ तेसें उह अहंकारकरीकें वश होवेंगें ॥ अब उह वश नही होते ॥ सुख दुःखतें रहित बडे धीरजवान हे ॥ अब तुमारे जीतना उनकों कठिन हे ॥ हे साधो जो पुरुष वासना तंतुसाथ बांधे हुवे हे ॥ अरु कीटके कार्यके बश हे ॥ सो इस लोकविषे बश होजाते हें ॥ अरु जो निर्वासनिक पुरुष बुद्धिवान हे ॥ सर्वत्र असंशक्त बुद्धि हे ॥ किसविषे बंधवान नही होते ॥ इष्ट अनिष्टविषे समभाव रहते हें ॥ सो किसीकरी जीते नही जाते ॥ उह अजीत पुरुष हे ॥ अरु जिनके अंतर वासना हे इसी जेवरी साथ बाधे हुवे हे ॥ देहविषे अभिमान हे ॥ अथवा सर्वका वेत्ताभी हे तो बालकभी उसकों जीती लेते हे ॥ अहं मम आदिक कल्पनाकरी जो कलंकित हे॥ सो सब आपदाका पात्र हे सब आपदा तिसविषे आनि प्रवेश करती हे ॥ इह देहमात्र प्रछन्नरूप जो पुरुष आपकों जानता हे ॥ तिसविषे भावना भावतीकरी हे ॥ जो सर्वज्ञ हे तोभी उह कृपणताकों प्राप्त होता हे॥ उसविषे उदारता कहां हे ॥ इसका अपना स्वरूप अनंत आत्मा हे ॥ अप्रमेय हे ॥ तिस स्वरूपका जिसकों प्रमाद हुवा हे ॥ अरु देहादिक विषे आत्मअभिमान हुवा हे ॥ तिसनें आपकों आपही दीन कीया हे॥ जबलग आत्मतत्वतें इतर इसकों त्रिलोकी विषे कछुभी सत भासता हे ॥ तब लग तिसकी उपादेय बुद्धि होती हे ॥ भावनासाथ बांध्या रहताहे ॥ संसारविषे सतभावना करनी अनंत दुःखका कारण हे ॥ अरु संसारविषे असतबुद्धि सुखका कारन हे ॥ हे साधो जबलग दाम व्याल कटकों जगतके पदार्थोविषे आस्थाभाव नही ॥ तबलग तुम इनकों जितनेंकों समर्थ न होइगे ॥ जेसें मरुखी वायुकों जीतनेकों समर्थ नही होती ॥ ॥ जिसकों देहविषे अहंभावना होती हे ॥ अरु जगतविषे सतबुद्धि होती हे ॥ सो जीव हे अरु दीनताकों प्राप्त होता हे ॥ भावे केसा बली होवे उहीकों जीतना सुगम हे ॥ अरु तुछ कृपण हे ॥ अरु जिसके अंतर वासना नही अरु मक्षिकावत् हे ॥ तोभी सुमेरुकी नांइ गरिष्ट होजाता हे ॥ हे देवता जो वासना संयुक्त हे सो परम कृपणताकों प्राप्त होता हे ॥ सो गुणी गुणोंकरी बंध्याजाता हे ॥ जेसें मणकेविषे छिद्र होता हे ॥ तब तागेकरी परोया जाता हे ॥ अरु छिद्रतें रहित हे ॥ सो परोया नही जाता ॥ तेसें जिसका हृदय वासनाकरी वेध्या हे ॥ तिसके अंतर गुण ओगुण प्रवेशकरते हें ॥ अरु जो निर्वेध हे ॥ तिसके अंतर प्रवेश नही करते हे ॥ तातें जिसप्रकार अहं इदं आदिक वासना दाम व्याल कटके अंतर उपजे सोइ उपाय करो ॥ तब तुमारी जयहोवेगी ॥ जिस जिस इष्ट अनिष्टके भाव अभावकों जीव प्राप्त होते हे ॥ सो तृष्णारूपी करजुवेका बुटा हे ॥ तिसकरी आपदाकों प्राप्त होते हे ॥ इसतें रहित हुवे आपदाका अभाव होजाता हे॥ जो वासनारूपी तंतु साथ बांधे हुए हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सो अनेक जन्म दुःखकों प्राप्त होवेंगे ॥ जो बलवान हे अरु सर्वज्ञ हे ॥ कुलका अधिष्ठाता बडाभी हे ॥ अरु तृष्णासंयुक्त हे तो बांध्या हे ॥ जेसें सिंघ हे अरु संकरसें पिंजरेवि
षे बांध्या हे ॥ तब उसका बल अरु बडाइ किसी कारज नही आती ॥ तेसें जो तृष्णा करी बांध्या हे सो तुच्छ हे ॥ जिसकों देहमात्रविषे अहंभाव हे ॥ रिदेविषे तृष्णा पडी उ
त्पन्न होती हे ॥ सो पुरुष एसा हे ॥ जेसा पंछी तागेसाथ बांध्या होवे ॥ अरु जमभी तिसकों वस करता हे ॥ जेसें रजुसाथ बांधे हुवे पंछीकों बालकभी खेंचि वश करता हे ॥
अरु जो निर्बासनिक पुरुष हे ॥ तिसकों मारी कोउ नही सकता ॥ जेसें आकाशविषे उडते पंछीकों पकडी कोउ नही सकता ॥ तातें शस्त्र युद्धकों त्याग ॥ अरु उनकों वासना
उपजावहु ॥ तब बश होवेगें ॥ हे इंद्र जिसकों अहं मम इदं आदिक वासना नही ॥ राग दोषकरी अंतःकरण क्षोभवान नही होता ॥ तिसकों शस्त्र करी अरु अस्त्र करी जीती कोउ न
ही सकता ॥ तातें दाम व्याल कटके जीतनेकों अवर उपाय करी समर्थ न होऊगे॥ युद्धके अभ्यास करी जब इनकों अहंकार उपजाओगे ॥ तब इह तुमारे वस होहिगें ॥ तुम इनके
जीतणेकों समर्थ होहुगे ॥ हे साधो ! इह तो संवर दैत्यके रचे हुवे जंत्र पुरुष हे ॥ इनके अंतर वासना कोउ नही ॥ जेसें उसने रचे हे तेसेंहि निर्वासनिक पुरुष हे ॥ जब तुम इनकों
युद्धका अभ्यास करावहुगे ॥ तब इनकों अहंकार वासना उपजी आवेगी ॥ इह तुमकों वस करनेकी परम युक्ति कही हे ॥ जबलग उनके अंतर वासना नही फूरती तबलग तुम क
री उह अजीत हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे दामोपाख्याने ब्रह्मवाक्य वर्णनंनाम सप्तविंशतिमः सर्गः ॥ २७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! इस प्रकार कहिकें ब्रह्माजी अंतर्ध्यान होत भया ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग उपजीकें शब्द करी लीन होता हे ॥ तेसें शब्द करीकें अंतर्ध्यान होग
या ॥ तब देवता वचन सुनकें अपनो वांच्छित दिशाकों गमन करते भये ॥ जेसें कमलकी सुगंधकों पवन ले जाता हे॥तेसें जाय करी कोउ दिन अपने स्थानविषे रहे ॥ जेसें भंवरे कम
लविषे रहते हैं ॥ तेसें रहिकें अपने कल्याणके निमित्त उनके नाश करनेकों उठे ॥ अपने स्थानतें उठिकें युद्धकों चले ॥ प्रथम देवतानें शंख बजाए ॥ महा बडे शब्द हुवे ॥ जेसें प्र
लय कालके मेघ गरजते हैं ॥ तेसें शब्द करी संस्थान पूरन होगए ॥ तब पाताल छिद्रतें शब्द सुणीकें दैत निकसे ॥ आकाशमार्गतें देवता आए युद्ध होणे लागा ॥ तब बरछि बाण
मुदगर मूसल गदा चक्र वज्र पहाड वृच्छ सर्प अग्नि आदिक शस्त्र अस्त्र चलाए ॥ एक उर देवता चलावहीं ॥ एक ओर दैत्य चलावहिं ॥ शस्त्रअस्त्रके प्रवाह चले देस प्रदेसविषे पहाड वृ
च्छकी नदी चलीयां ॥ चक्र मुसळ त्रिशूल आदिक शस्त्र एसें चले ॥ जेसें गंगाका प्रवाह चलता हे ॥ तेसें शस्त्रअस्त्रके प्रवाह चले जावहिं ओर अग्नि लगाइ ॥ देवता अरु दैत्यके स
मूह नष्ट होगए ॥ अंग फूटिगए ॥ शीस भूजा काटे गए संपूर्ण पृथ्वी रक्त करी पूर्ण हो गइ ॥ जेसें समुद्रके उछलणे करी पृथ्वी जलसों पूर्ण हो जाती हेतेसें रुधिरकर पूर्ण होगइ ॥
आकाश दिशाविषे अग्निका तेज बढी गया ॥ जेसें प्रलय कालविषे द्वादश सूर्यका तेज होता हे ॥ बडे पहाडकी वर्षा होवे ॥ रुधिरके प्रवाहविषे पहाड भमते फिरहीं ॥ जेसें समुद्र
विषे तरंग घूमर घेर फिरते हे ॥ हे रामजी ! एसा युद्ध हूआ ॥ क्षणविषे पहाडके प्रवाह दृष्टि आवहिं ॥ क्षणविषे शस्त्रके प्रवाह क्षणविषे सर्पके क्षणविषे गरुडके क्षणविषे अप्सरागण अं
तरिक्षविषे भासहीं ॥ क्षणविषे जलमय हो जावे ॥ क्षणविषे सभास्थान अग्निसों पूरन होजावें, क्षणविषे सूर्यका प्रकाश भासे ॥ क्षणविषे सर्व उरतें अंधकार भासे ॥ महा भयानक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

युद्ध होनें लगा दैत्य आकाशविषें उडें ॥ उडी उडि युध करांहिं ॥ देवता वज्र आदिक शस्त्र चलावहिं ॥ जेसें पंखतें रहित पहाड गिरते हैं तेसें दैत्य गिरे ॥ सो भूमिलोक विषे आयपडें अनेक देवता दैत्यके समूह गिरपडे ॥ किसीका सिर किसीकी भुजा कटि गई ॥ चरन हाथ काटेगये ॥ जेसें वृछ पहाड होते हे ॥ अेसें तिनके शरीर हे सो गिर गिर पडे ॥ अनेक संकट कों देवता अरु दैत्य प्राप्त भये ॥ महा दारुन युध होने लागा ॥ ॥ इतिश्री यो० स्थितिप्रकरणे सुरा सुर युद्ध वर्ननं नाम अष्टाविंशतिमः सर्गः ॥२८॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! इस प्रकार जब देवता अरु दैत्यका युद्ध हूवा ॥ बहूरी देवताका धीरज नष्ट होगया ॥ जुद्धतें कृपण होकें अंतर्ध्यान भए ॥ बहुरी पैंतीस वर्षतें उप्रांत युध करने लगे ॥ कबदिन पांच सात अष्ट उप्रांत कब मास उप्रांत युद्ध करहीं ॥ बहुरीछुपी जावहीं ॥ अेसें बिचार करी छलसों उन साथ युध करांहि ॥ कबहूं दाम व्याल कटके निकट जावांहि कबहु दाहिने कबहु बांये कबहु आगें कबहु पाछे दोडने लागे ॥ इधर उधर देखकें मारनेलागे ॥ इस प्रकार जब देवतानें बहुत उपाय कीया ॥ तब युद्धके अभ्यासतें दाम व्याल कटभी देवताके पाछें दोडने लगे ॥ उहभी इधर उधर देखने लागे ॥ देंहादिक विषे तिनकों अहंकार फुरि आया ॥ हे रामजी ! जेसें निकटता करीकें दर्पणमें प्रतिबिंब पडता हे ॥ दूरका नहि पडता ॥ तेसें अतिशय अभ्यासतें अहंकार फुरि आता हे ॥ अन्यथा नही फुरता ॥ जब अहंकार तिनकों फुर्या ॥ तब पदार्थकी बासनाभी फुरी आई ॥ बहुरी इह फुर्या हम दाम व्याल कट हैं ॥ कीसी प्रकार जीते रहें ॥ जीनेकी इच्छा करी दीनभावकों प्राप्त भये ॥ अरु भय पावने लगे ॥ जो इस प्रकार हमारा नाश होवेगा ॥ इस प्रकार हमारी रक्षा होवेगी सो उपाय करहीं ॥ जिस करी हम जीवते रहांहि ॥ इस प्रकार आशाकी फांसी विषे बांधे हुवे दीनभावकों प्राप्त हुवे आपकों देह मात्रविषे आस्था करत भए ॥ जो देहरूपी लता हमारी स्थिर रहें ॥ हम सुखी होवें ॥ इस वासना संयुक्त पूर्वकी धीरजकों त्यागते भये ओर जानने लागे ॥ जो इह हमारे शत्रु हें नाश कर्त्ता हें ॥ इनतें हमारी रक्षा होवे ॥ इत्यादिक कृपणताकों प्राप्त हुवे धीरज नष्ट होगइ ॥ जेंसें जलविना कमलकी शोभा जात हे ॥ तेसें इनकी शोभा जाती रही ॥ खान पानकी बासना फुरी आइ ॥ संसारकी भयानक गतीकों प्राप्त भये ॥ जुध करे तब आश्रय लें कर करांहि ॥ ढाल आदिक आगें रखहीं ॥ अहंकार करिकें भयभीत हुवे इह हमकों मारते हें ॥ हम इनकों मारते हें ॥ इस चिंताकरीकें इनके सबके रिदे फसि गये ॥ सने सने युद्ध करने लागे ॥ जब देवता शस्त्र चलावहीं ॥ तब बच जावांहि ॥ भयभीत होकरी भागहीं ॥ अहंकार जो आय उदय हुवा तिसकरी तिनके मस्तकपर आपदाने चरन आनि रखा ॥ महा दीन जेसे होगए ॥ मुखकी शोभा जाती रही ॥ धैर्यबल नष्ट होगया ॥ एसें होगये जो कोउ आगें पडे तो भी तिसकों मारी न सके ॥ जेसें काष्टतें रहित हूइ अग्नि क्षीरकों नही भक्षण करती ॥ तेसें उह निर्मल हो गए ॥ अंग काटे जावहीं भागी जावांहि ॥ जेसें ओर समान सुरमें युध करते हे ॥ तेसें युध करने लागे ॥ हे रामजी ! बहुत कहना क्या हे ॥ मरनतें डरने लागे ॥ युध करी न सके ॥ तब देवता जो वज्रआदिक करी तिसकों प्रहार करने लागे तिसकरी चूरण होगए ॥ भयभीत होकरी भागे ॥ सब सेना दैतकी भागी जावे ॥ जो जो देश देशांतरसो आएथे सो सब भागे अरु मारे ॥ कोउ कीसी देशकों कोउ कीसी देशकों पहाड कंदरा जलविषे गये ॥ जहां जहां स्थान देख्या तहां तहां चलेगए ॥ दैत्य भयभीत होकरी हारकों प्राप्त भए ॥ अरु देवताकी जीत भइ ॥ दैत्य भागीकें पातालविषे जाए छिपे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे दामव्यालकटोपाख्याने असुर हननं

153

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाम एकोनत्रिंशतितमः सर्गः ॥२९॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी इस प्रकार भया तब देवता प्रसन्न हूए॥अरु दाम व्यालकट भयभीत होकें पातालकों गए ॥ देवताका भयपाये॥ अरु संबरसोंभी भयपाये ॥ जेसें प्रलयकालकी अग्नि प्रज्वलित होती हे ॥ तेसें संबर प्रज्वलित अग्निका रूप हे ॥ तिसके भयकरी दाम व्यालकट सप्तमे पातालविषे जाए स्थित भए ॥ त हां दैत्यके मंडलकों छेदीकें जहां जमकिंकर रहते हे ॥ तिसविषे जाय रहे॥ कुकुहा नाम होकरी तहांतें भए॥नरकरूपी समुद्रके आपालक जमकिंकर हे॥ तिनने दयाकरी इनकों बेठाये जेसें पापीकों चिंता प्राप्त होतीहे तेसें इनकों स्त्रीयां प्राप्त भइ॥ इन सहित सप्तमे पातालविषे रहत भए॥आगें इनका बडा संतान पुत्र पौत्रादीक भए॥सहस्र वर्ष व्यतीत कीए तहां वासना दृढ होगई॥इह में हों इह मेरी स्त्री हे॥ पुत्र कलत्र बांधवविषे स्नेह बहुत होगया ॥एक कालमें तहां अपनी इछाकरी धर्मराज आवत भया॥नरकका कछू कार्य करणाथा॥तिसकों देखकें सब किंकर उठी खडे हूवे प्रणाम कीया ॥ अरु दाम व्याल कट तिसकी बडाइकों जानते न थे॥ओर किंकर समान जानकें प्रणाम कछु न करत भए ॥ तब वैवस्वत जमराजनें कोध कीया॥ जो इह दुष्ट मानी हे ॥ इनकों सासना दिनी चहिए ॥ इस प्रकार बिचारकरीकें किंकरकों इसारत कीनी ॥ जो इनकों परिवार संयुक्त अग्निकी खाइविषे डारि देहु ॥ रुदन करते पुका रते रहे ॥ अरु इनकों डारीदीये ॥ परिवार संयुक्त नरककी अग्निविषे जलिगए ॥ जेसें दावाग्निविषे पत्र टास फूल फल संयुक्त दछ जल जाता हे ॥ तेसें जलि गए ॥ तब मलीन वासना करिकें कांत देशका जो राजाथा तिसके किंकर धीवर जाए हुए ॥ तहां जीवकी हिंसा करत रहे ॥ जब धीवरका शरीर छूटा तब कुंजा हूवे॥ बहुरी चील हुवे ॥ बहुरी बगले हुए ॥ बहुरी तिरगतदेशविषे धीवरहुवे ॥ बर्बर देश विषे मछर हुवे ॥ मगधदेशविषे कीट जाय हुवे ॥ हे रामजी ! इस प्रकार दाम व्याल कट तीनों वासनाकरी अनेक जन्मोंकों प्राप्तभए॥बहुरी अब कासमीरदेसविषे एक ताल हे तिसविषे तीनों मछ हुवें हे ॥ बनकों अग्नि लगी थी ॥ तिसकरी जलभी सूकी गया ॥ अल्प जेसा उष्णजल रहा तिसविषे रहते हे ॥ अरु उही जलपान कर ते हे न मरते हे न जीते हे ॥ जीनकी जो संपदा हे तिसकोंभी नही भोगते ॥ चिंता करी पडे जलते हे ॥ हे रामजी !अज्ञान करी अनेक वार जनमते मरते हे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग उपजते अरु मिटते हे ॥ जेसें जलके घूमरघेर विषे तृण आयभ्रमता हे ॥ तेसें वासना करिकें भ्रमते फिरे ॥ अबलग उनकों शांति नही प्राप्त भइ ॥ अहंकार वासना महादुःखका कारन हे ॥इनके त्यागतें सुख हे ॥ अन्यथा सुख कदाचित नही ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे दामव्याल कट जन्मांतर वर्णनंनाम त्रिंशत्तमः सर्गः ॥ ३० ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! तेरे प्रबोधके निमित्त में तुझकों दामव्याल कटका न्याय कहा हे ॥ जो तिनकी नांइ तूं मत होवहि ॥ इस निमित्त इतिहास कहा हे ॥ अवर कोउ लीलाका प्रयोजन न था ॥ अविवेकीका निश्चय एसा हे ॥ अनेक आपदाकों प्राप्त करता हे ॥ जो अनंत दुःखकों भुगतता हे ॥ कहां संबर दैतकी सेनाके नाथ अरु देवताके नाश कर्ता ॥ अरु कहां तपत जलके मच्छ जर्जरी भावकों प्राप्त हुवे जिनके शरीर॥ कहां उह धेर्य अरु बल जीसकरी देवताकों नाश करना अरु भगावणां अरु आप चलायमान न होना अरु कहां कांत देशके राजाकें किंकर धीवर होना?॥ कहां उह निरहंकार चित्त शांत उदारता अरु धीरज अरु कहां वासना करी मिथ्या अहंकारसों संयुक्त होना ? एते दुःख आपदा कों प्राप्त हुवे ॥ सो अहंकार करी हुवे हे ॥ अहंकार करीकें संसाररूपी विषकी मंजरी शाखा प्रति शाखा बढी हे ॥ संसाररूपी दछका बीज अहंकार हे॥जबलग अहंकार हे तबलग अनेक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुःख आपदा प्राप्त होते हैं ॥ तातें तुम अहंकारकों जतन करकें मार्जन करहु मार्जन करना इह हे जो अहंवृत्ति हे तिसकों असतरूप जान जो में कछू नही ॥ इस मार्जन करी सुखी हो वेगा ॥ हे रामजी ! आत्मरूपी अमृतका चंद्रमा हे॥ सीतल शांतरूप तिसका अंग हे ॥ अहंकाररूपी मेघ आया हे ॥ तिसकरी उह अदृष्ट हुवा भासता नही ॥ जब विवेकरूपी पवन चले॥ तब अहंकार बादल नष्ट होवे ॥ आत्मारूपी चंद्रमा प्रत्यक्ष भासे ॥ अहंकाररूपी पिशाच जब उपजा ॥ तब दामव्यालकट तीनों मायारूप दानव सत होकें अनेक आपदाकों भोगते हे ॥ अबलग कासमीरके तालविषे मच्छ पडे हे ॥ सिवालके भोजन करनेंकों पडे जतन करते हे ॥ जो अहंकार न होता तो एती आपदाकों प्राप्त क्यों होते ? ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् ! सतका अभाव नही होता ॥ अरु असतका भाव नही होता ॥ असत दामव्याल कट सत केसें भये ? वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! इस प्रकार हे ॥ जो सत नही सो किसी कों कबहुकछू भान नही होता ॥ परंतु सत किसीकों असतकों प्राप्त हुवा देखता हे ॥ अरु असतकों न हुवा देख्या हे ॥ जो स्थित हुआ हे॥ इसी तेरे कहनें सों में युक्ति करी तुझकों प्र बोध करोंगा ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् हम तुम जो इह सब हे सो सत्यरूप हे ॥ अरु दामादिक जो थे सो मायामात्र असतरूप थे ॥ सत केसें भए सो कहो ? वसिष्ठोवाच ॥हे रामजी ! जेसें दामादिक मायारूप असतकरी स्थित भये मृगतृष्णाके जलवत तेसेंहि तुम हम देवता दानव संपूर्ण संसार असत मायामात्र सत होकें भासता हे ॥ वस्तुतें कछू हूवा नही ॥ जेसें सुपनेविषे अपना मरणा भासता हे॥ सो असतरूप हे तेसा हम तुम आदिक इह जगत भासता हे सो असतरूप हे ॥ जेसें सुपनेविषे अपनें मरे बांधव आनि मिलते हे॥ ओर चर्चा करते हैं ॥ अरु प्रत्यक्ष भासते हैं ॥ सो असतरूप होतें हे ॥ तेसें इह जगत असतरूप हे ॥ हे रामजी ! इह जो मेरे बचन हे ॥ सो मूढकों विषयभूत नही ॥ उनको नही सोभते काहेतें जो अज्ञानीके रिदेविषे संसारका सदभाव दृढ हो गया हे ॥ अरु अभ्यासबिना इस निश्चयका अभाव नही होता ॥ जेसा निश्चय किसीके रीदेविषे दृढ हो रहा हे ॥ सो दृढ अभ्यासके जतन बिना कदाचित दूर नही होता ॥ जिसकों इह निश्चय हे जो जगत सत हे ॥ सो मूर्ख उन्मत्त हे ॥ अरु जो ज्ञानवान हे तिसके रिदेविषे जगतका सद्भाव नही होता ॥ केवल ब्रह्मसत्ताका भाव होता हे ॥ अरु अज्ञानीकों जगत सत भासता हे ॥ अज्ञानिके निश्चयकों ज्ञानि नही जानता ॥ अरु ज्ञानीके निश्चयकों अज्ञानी नही जानता ॥ जेसें मदकरी मत्त होवे तिसके निश्चयकों अमत्त नही जानता ॥ अरु अमत्तके निश्चयकों मत्त नही जानता॥ तेसें ज्ञानी अज्ञानीका निश्चय एकठा नहि होता ॥ जेसें प्रकाशअरु अंधकार एकठा नही होता ॥ धूप अरु छाया एकठी नही होती ॥ तेसें ज्ञानी अरु अज्ञानीका निश्चय एकठा नही होता ॥ जिसके चित्तविषे जो निश्चय हे ॥ तिसकों उही दूर करे अभ्यास जतन करी तब दूर होता हे ॥अन्यथा नहि होता ॥ ज्ञानीभी अज्ञानीके निश्चयकों दूर नही करी सकता ॥ जेसें मृतककी जीवकलाकों मनुष ग्रहन नही करी सकते ॥ जो उसके निश्चयविषे क्या हे ॥ जो ज्ञानवान हे तिसके निश्चयविषे सर्व ब्रह्मका भान होता हे ॥ ओर जगत द्वैत कछु नही ॥ तिसीकों मेरे वचन शोभते हे ॥ आत्मअनुभव सर्वदा सतरूप हे ॥ ओर सब असत पदार्थ हे ॥ इह बचन प्रबुधकाविषय हे तिसकों सोभते हे ॥ अरु अज्ञानीकों जगत सत भासता हे॥ तातें ब्रह्मवाणी तिसकों सोभा नही देती॥ज्ञानीकों इह निश्चय हे जो जगत रंजकमात्रभी सत्य न ही॥ एक ब्रह्मही परम सत्तास्वरूप हे ॥ इह अनुभव बोधवानका हे तिसके निश्चयकों कोउ दूर नहीं करीसकता ॥ परमात्मातें व्यतिरेक कछू नही ॥ जेसें स्वर्नविषे भूषण भाव नही॥ तेसें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्माविषें सृष्टि भाव नही ॥ अरु अज्ञानीकों पंचभूततें व्यतिरेक कछु नहीं भासता ॥ जेसें स्वर्नविषे भूषण नाममात्र होता हे ॥ तेसें उह आपकों नाममात्र जानता हे॥ सम्यक् दर्शीकों इसतें विपरीत भासता हे ॥ अरु जो पूरुष होवे ओर कहे में घट हों जेसें इह निश्चय उन्मत्त हे तेसें हम तुम आदिक असतरूप हें सत उही हे ॥ जो शुद्ध संवितबोध आकाश निरंजनरूप हे ॥ सर्वगत शांतरूप हे ॥ उदय अस्ततें रहित हे ॥ जेसें नेत्र दूषणवालेकों आकाशविषे तरवरे भासतें हें ॥ तेसें अज्ञानीकों जगत सतरूप भासता हे ॥ आत्मसत्ताविषे जेसा जेसा किसीकों निश्चय होंगया हे ॥ तेसाही तत्काल हों भासता हे ॥ वस्तुतें जेसें दामादिक अणहोते थे ॥ तेसें तुम हम आदिक जगत हे ॥ अनंत चेतन आकाश सर्वगत निराकारविषे फुरना होता हे ॥ सोइ देहाकार हो भासते हे॥जेसें संवितका किंचन दामा देक निश्चय सों आकारवान हो भासे ॥ तेसें हम तुमभी फुरनेमात्र हे संवेदनके फुरनेहिकरी स्थित भए हें॥ जेसें सुपन नगर भासना हे ॥ जेसें मृगतृष्णाकी नदी भासती हे ॥ तेसें हम तुम आदिक जगत आत्मरूप भासता हे ॥ प्रबुधकों सब चिदाकाशही भासता हे ॥ अवर सब मृगतृष्णा अरु सुपन नगर भासता हे ॥ जो आत्माकी उर जागे हें ॥ अरु जगतकी उर सोए हें सो मोक्षरूप हे ॥ अरु जो आत्माकी उरतें सोए हें ॥ जगतकी उर जागे हें सो अज्ञानी बंधरूप हे ॥ अरु वास्तवतें न कोउ सोये हे ॥ न जागता हे ॥ न बंधें हे ॥ न मोक्ष हे ॥ केवल चिदाकाश हे सोइ जगतरूप हो भासता हे ॥ निर्वाण सत्ताहि जगतलक्ष्मी होकरी स्थित भइ हे ॥ अरु जगत निर्बाण रूप हे ॥ दोनों एक वस्तुके पर्याय हे ॥ जेसें तरु अरु विटप एकहि वस्तुके दो नाम हे ॥ तेसें ब्रह्म अरु जगत एकहि वस्तुके पर्याय हे ॥ जेसें आकाशविषे तरवरे भासते हें ॥ अरु हे नही आकाशही हे तेसें अज्ञानीकों ब्रह्मविषे जगत भासते हे ॥ सोहे नही ब्रह्मही हे ॥ जेसें कीसीकों नेत्रविषे तिमिरका रोग होता हे ॥ तिसकरी तरवरे भासते हें ॥ सो तरवरे नेत्ररोगतें भिन्न नही ॥ तेसें अज्ञानीकों अपना आपहि अन्यतूरूप हो भासता हे ॥ सो चिदाकाश स्थानविषे भासता हे ॥ सो चिदाकाश सर्व ओर व्यापकरूप हे॥ तिसतें इतर जगत असतहे ॥ कछु वस्तु नही ॥ सत्यरूप एक विस्तृत आकार उही सत्ता हे ॥ महा शिलावत् घन स्वच्छ निस्पंद उदय अस्ततें रहित हे ॥ सर्व कलनाकों त्याग करी तिसी अपने आपविषे स्थित होहु ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे निर्वाणोपदेशोनाम एकत्रिंशत्तमः सर्गः ॥ ३१ ॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! असतही सतकी नांइ होके स्थित भया हे ॥ जेसें बालककों अपने पछाये विषे वैताल हो भासता हे ॥ सो जेसें हुवा हे तेसें हुवा हे ॥ अब इह कहो ॥ दामव्यालकटक दुःखका अंत केसें होवेगा ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जब तिसकों अग्निविषे जमराजनें भस्म कराये ॥ तब जमराजसों किंकर पूछते भए जो हे प्रभो ! इन का उद्धार कब होवेगा ॥ तब यमराजनें कहा हे किंकरों जब इह तीनों आपसमें बिछुरी जावहिंगे ॥ अरु अपनी संपूर्ण कथा श्रवण करेंगे ॥ तब निःसंदेह होंके मुक्त होवेंगे ॥ इह नीतिहे ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् ! इह वृत्तांत कहां सुणेगें ॥ अरु कब सुणेगें ॥ अरु कोण निरूपण करेगा ! ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! कासमीरदेशविषे एक बडा ताल हे ॥ अरु कमलोंकरी पूरन हे ॥ तिसके निकट एक छोटा ताल हे ॥ तिसविषे चिर पर्यंत वारंवार मछ होवहिंगें ॥ तब मछका शरीर त्यागकरी सारसपंछी होवेंगे ॥ कमलोंके तालउपर रहेंगे ॥ कमल अरु कमलनीयां उत्पल आदिक फूलोंविषे विचरेगे ॥ सुगंधकों लेते चिरकाल वितीत करेंगे ॥ तब दैव संयोग करी उनके पाप नष्ट होवेंगे ॥ अरु बुध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निर्मल हो आवेगी ॥ तब तीनो आपसमें विछूरी जावेंगे अरु मुक्ति जुक्तिकों प्राप्त होवहिंगें ॥ जेसें राजसी तामसी सात्विक गुण आपमें खेछित बिछुरी जाते हें ॥ तेसें उह खेछित बिछुरी जावेंगे ॥ कासमीर देशविषे एक पहाड हे ॥ तिसके सिखरपर एक नगर बसेगा ॥ तिसका नाम प्रथुम्न होवेगा ॥ तिस सिखरपर कमलोंकरी पूरन एक ताल होवेगा ॥ तहां एक राजाका स्थान होवेगा ॥ इशान कोणकी ओर राजाका मंदिर होवेगा तिस मंदिरके इक छिद्रविषे घास तृणकरी आलय बनाया व्यालनाम दैत्य चिडीयां होकरी तहां रहेगा केसा आलय जो वायु करी तिसके तृण पडे हिलाहिंगे ॥ तहां उह शब्द करेगा ॥ केसा जो तिसका अर्थ कछु समझीयें नही ॥ निरर्थक शब्द होवेगा ॥ तिसकालमें श्री शंकर नाम राजा होवेगा ॥ गुण अरु भूति करी संपन्न मानों दुसरा इंद्र हे ॥ तिसके मंदिर छतकी कडीके छिद्रविषे दाम नाम दैत्य मच्छर होकरी रहेगा ॥ भूं भूं शब्द करता विचरेगा ॥ अरु कट नाम दैत्य तहां कीडाका पंछी होवेगा ॥ रत्नोंकरी जडे हुवे पिंजरे विषे रहेगा ॥ तिस राजाका मंत्री बडा बुद्धिवान होवेगा ॥ जेसें हाथ विषे आंबला होता हे ॥ तेसें उस मंत्रीकों बंध अरु मुक्तिका ज्ञान प्रसिद्ध होवेगा ॥ अरु नरसिंह मंत्रीका नाम होवेगा ॥ सो मंत्री राजाके आगें दामव्यालकटकी कथा श्लोक बांध करी कहेगा ॥ तब कर कर नामा पंछी हुवा जो कट दैत्य हे ॥ सो पिंजरेविषे श्रवन करेगा ॥ तिस श्रवन करनेसों उसकों अपना वृत्तांत सब स्मरण आनि होवेगा ॥ तिसकों बिचारेगा ॥ तब मिथ्या अहंकार शांत होवेगा ॥ परम निर्वान सत्ताकों प्राप्त होवेगा ॥ इसी प्रकार राजाके मंदिर विषे चिडियां हुवा व्यालनाम दैत्यभी श्रवन करेगा ॥ उहभी परम निर्वाण सत्ताकोंप्राप्त होवेगा ॥ इस प्रकार लकडीके छिद्रविषे मच्छर हुवा दामनाम दैत्यभी श्रवण करीकें मोक्ष होवेगा ॥ हे रामजी ! करकर पंछी अरु चिडियां अरु मछर तीनो पहाडके सिखरपर राजमंदिरविष वसणेहारे मोक्ष होवेंगा ॥ इह संपूर्ण क्रम तुझकों कहा हे ॥ सो संसार भ्रम मायामय हे ॥ अत्यंत भास्वर प्रकाशरूप भासता हे ॥ तोभी महाशून्य अविचारतें सिद्ध हे ॥ विचार करीकें ज्ञान हूवेतें शांत होजाता हे ॥ जेसें मृग तृष्णाका जल भली प्रकार देखेतें शांत हो जाता हे ॥ यद्यपि अज्ञानी बडे पदकों प्राप्त होता हे ॥ तोभी अधोतें अधो मोहतें चला जाता हे ॥ जेसें दामव्यालकट महा जालविषे पडेथे॥कहां उह बल जो मोहां टेढी करनेंसे सुमेरु मंदराचल जेसे पर्वत पड जावाहिं ॥ अरु कहां राजाके गृहविषे काष्टके छिद्रसों मछर होना ! कहां उह बल जिसके हाथकी चपेटी करी सूर्य अरु चंद्रमा गिर पडे ॥अरु कहां प्रथुम्न पहाडके गृह छिद्रविषे चिडियां होना ! कहां उह बल जो सुमेरु पर्वतकों पीले फुलकी नांइ लीला करी उठाय लेणा ॥ अरु कहां पहाडके सिखरपर गृहविषे पंछी होना ! एक अज्ञानरूपी अहंकार करीकें एती लघुताकों जीव प्राप्त होते हे ॥ अज्ञान करीकें रंजीत हुवे मिथ्या भ्रमकों देखते हे ॥ प्रकाशरूप चिदाकाशसत्ताविनां इनकों भासता हे ॥ अपनी वासनाकी कल्पना करीकें जगत सतरूप भासता हे ॥ जेसें मृग तृष्णाका जल भ्रम करीकें सत भासता हे॥ तेसें अपनी कल्पना करीकें जगत सत भासता हे ॥ इह संसार समुद्रके तरणेकों उही समर्थ होता हे जो शास्त्रके विचारद्वारा निर्वासनिक पुरुष हुवा हे ॥ अरु जो संसारनिरूपणका शास्त्र हे तारक कहनेकों बडा प्रकाशरूप हे शब्दजिसका तिसका आश्रय करता हे ॥ सो संसारके पदार्थकों शुभरूप जानता हे ॥ तिसकरी अधकों गिरता हे ॥ जेसें टोयेकों जलरूप जानकें स्नानके निमित्त जावे अरु गिर पडे ॥ हे रामजी ! अपना अनुभवरूपी जो प्रसिद्ध मार्ग हे ॥ तिसविषे जो प्राप्त भये हे ॥ तिनका नाश नही होता सुखसों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वछंद चले जातहे ॥ जेसें पंथिक सुधे मार्ग चल्या चल्या जातां हे ॥ ब्रह्मनिरूपक जो शास्त्र हे सो निर्वेद मार्ग हे ॥ ओर संसार निरूपक शास्त्र दुःखदायक मार्ग हे ॥ इह जगत असत रूप भांति मात्र हे जिसकी बुद्धि इसीविषे हे ॥ जो इह पदार्थ इह सुख मुझकों प्राप्त होवे ॥ इसप्रकार संसारके विषयकी तृष्णा करते हे सो अभागी हे ॥ अरु जो ज्ञानवान पुरुष हे ॥ तिसकों जगत घास तृणकी नांइ तुच्छ भासता हे॥जिस पुरुषके रिदेविषे परमात्माका चमत्कार भया हे॥सो इस ब्रह्मांड खंड लोक अरु लोक पालकों तृणवत् देखता हे॥जेसें जीव आपदा कों त्यागता हे ॥ तेसें उसके रिदेविषे ऐश्वर्यभी आपदारूप त्यागनें जोग हे ॥ तातें अंतर निश्चयात्मक तत्वविषे रहहु॥अरु बाहिर जेसा अपना आचार हे तेसा करहु आचारका व्यतिक्रम नही करना॥ व्यतिक्रम करने करी शुभ कार्यभी अशुभ हो जाता हे॥जेसें राहु दैत्यनें जो अमृतपान करनेका जतन किया तोभी व्यतिक्रमतें शरीर कटता भया; तातें शास्त्रानुसार चेष्टा करनी कल्याणका कारन हे ॥ संतजनकी संगत अरु सतशास्त्र करी वडा प्रकाश प्राप्त होता हे ॥ जो पुरुष इनकों सेवता हे ॥ सो मोह अंधकूपविषे नही गिरता ॥ हे रामजी ! वैराग धीरज संतोष उदारता आदिक जो गुण हे ॥ सो जिसके रिदेविषे प्रवेश करते हे ॥ सो पुरुष परम संपदावान होता हे ॥ आपदाकों नष्ट करता हे ॥ जो पुरुष शुभ गुण करी संतुष्ट हे ॥ अरु सतशास्त्रके श्रवण रागविषे राग हे अरु सतकी वासना हे सो पुरुष हे ॥ और सब पशु हे ॥ जिसमें वैराग, संतोष, धैर्य आदि गुणकर चांदनी पसरती हे ॥ अरु रिदेरूपी आकाशविषे विवेकरूपी चंद्रमा प्रकाशता हे ॥ सो पुरुष शरीर नही मानो क्षीरसमुद्र हे तिसके रिदेविषे विष्णु विराजत हे॥ जो कछु तिनही भोगना था सो भोगा हे ॥ जो कछु देखना हे सो देख्या हे ॥ बहुरी भोगणे अरु देखनेकी तृष्णा नही रहती ॥ जिस पुरुषका यथाक्रम यथाशास्त्र आचार हे ॥ अरु निश्चय हे ॥ तिसकों भोगकी तृष्णा निवृत्त होजाती हे तिन पुरुषके गुण आकाशविषे सिद्ध देवता अप्सरा गायन करते हे सो मृत्युकों तरते हैं ॥ अवर भोगके तृष्णावाले कदाचित नही तरते ॥ हे रामजी ! जीन पुरुषके गुण चंद्रमाकी नांइ सीतल हे ॥ अरु सिद्ध अप्सरा गान करते हे ॥ सो पुरुष जीवते हे ॥ ओर सब मृतक हे ॥ तातें परम पुरुषार्थका आश्रय करहु तब परम सिद्धताकों प्राप्त होवेगा ॥ उह कोन वस्तु हे ॥ जो शास्त्र अनुसार पुरुषार्थ कीयेतें अनुद्वेग होकरी प्राप्त न होवे॥ अवश्यमेव प्राप्त होता हे यथा शास्त्र क्रिया करे ॥ अरु चिरकाल व्यतीत हो जावे सिद्धता न होवे तो भी उद्वेग न करे ॥ उह फल परिपक्व होकरी प्राप्त होवेगा ॥ जेसें वृच्छसों परिपक्व होकें फल उतरता हे ॥ तब अधिक मिष्ट अरु सुखदायक होता हे ॥ यथा शास्त्र व्यवहार करनेंहारा तिसपदकों प्राप्त होता हे ॥ जहां सोक भयजतन सब नष्ट होजातें हे ॥ अरु शांतिवान होता हे ॥ हे रामजी ! मूर्ख जीवकी नांइ संसार कूपविषे मत गिरहू ॥ इह संसार मिथ्या हे ॥ तुम उदार आत्मा हो ॥ उठि खडे होहु ॥ अपनें पुरुषार्थका आश्रय करहु ॥ अरु इस शास्त्रकों बिचारहु ॥ जेसें रणविषे प्राण निकसने लगे तो भागता नही ॥ शस्त्रकों पकडीके युद्ध करता हे ॥ जो अमर पद प्राप्त होवे तेसें संसाररूपी रणविषे पुरुषार्थ शस्त्र हे ॥ इही पुरुषार्थही करो जो शास्त्रकों विचारो जो कर्तव्य क्या हे ! जो विचारते रहित ह सो दुभागी दीनता अशुभकों प्राप्त करनेहारी हे ॥ महामोहरूपी घन निद्रा हे ॥ तीसकों त्याग करी जागो ॥ पुरुषार्थकों अंगीकार करो ॥ सो जरामृतके शांतिका कारन हे ॥ ओर जेते कछु अर्थ हे ॥ सो सब अनर्थरूप हे भोग सब रोगके समान हे ॥ संपदा सब आपदारूप हे ॥ इह सब त्यागणेजोग हे ॥ सतमार्गको अंगीकार करीकें अपने प्रकृत आचारविषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विचरो ॥ शास्त्र अरु लोक मर्यादा अनुसार व्यवहार करो ॥ शास्त्रके अनुसार कर्मका करणा सुखदायक होता हे ॥ जिस पुरुषका शास्त्रके अनुसार व्यवहार हे ॥ अेसा जो विवेकी पुरुष हे ॥तिसका संसार दुःख नष्ट होजाता हे ॥ आयुर्बल जस गुण लछमी वृद्ध होती हे ॥ जेसें वसंतऋतुकी मंजरी प्रफुल्लित होती हे ॥ तेसें उह प्रफुल्लित होता हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे दामव्यालकटोपाख्याने देशाचार वर्ननं नाम द्वात्रिंशत्तमः सर्गः ॥३२॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! सर्व दुःखके देने हारा सर्व सुखकों फल सब ठोर सब काल विषे सबकों अपने कर्मके अनुसार होता हे ॥ एक दिनां नंदीगन एक सरोवरपें जायकें सदाशिवका आराधन करत भया ॥ तब सदाशिव प्रसन्न भया ॥ तिसकरी उसनें मृत्युकों जीता अरु प्रथम नंदी था ॥ सो नंदीगन नाम भया ॥ अरु मित्र बांधव सबकों सुख देनेहारा भया सो क्यों करी भया ॥ अपने सुभाव जतनकरीकें भया ॥ अरु दैत्य शास्त्रके अनुसार जतन करतें हे ॥ तब क्रमकरीकें देवताकों मारते हे ॥ केसे देवता हे जो सबतें उत्कृष्ट वर्तते हे ॥ जेसें हस्ति कमलकों उखाडते हे ॥ तेसें देवताको दैत्य उखाडत हे सो अपनाही पुरुषार्थ हे ॥ अरु मरुंतराजाके यज्ञविषे संवत नामक एक महा ऋषि आया ॥ तिसनें देवता दैत्य मनुष्य आदिक अपनी सृष्टि रची लीनी ॥ मानों दूसरा ब्रह्मा हे॥ सो एसी सृष्टि अपने पुरुषार्थ करी रची ॥ अरु विश्वामित्रनें वारंवार तप कीया ॥ तपकी अधिकता करी राजर्षितें ब्रह्मर्षिहूवा ॥ सो अपनेहि शुद्धाचार करी हूवा ॥ हे राम जी ! एक दुर्भागी ब्राह्मण था ॥ उपमन्यु तिसका नामथा ॥ तिसकों अपने गृहविषे भोजनको सामान्यप्राप्ति होती ॥ फर उसनें एक गृहस्थके घर पिता संयुक्त भोजन कीया दुध चावल खंड सहित भोजनकरीकें अपने गृहविषे आया बहुरी पिताकों कहने लगा मुझकों उही भोजन देहु जो खायाथा सो ॥ तब पिताने सांवेके चावल अरु आटेका दुध घोलीकें दीया ॥ उसनें भोजन कीया तब तेसा स्वाद न लगा ॥ बहुरी पिताकों कहा मुझकों उही भोजन देही ॥ जो उहांतें खायाथा पितानें कहा हे पुत्र उह भोजन हमारे पास नांही ॥ सदाशिवके पास उह भोजन हे ॥ जो उह देवे तो हम खावें ॥ तब उह ब्राह्मण सदाशिवकी उपासना करने लगा ॥ अेसा तप किया जो शरीर अस्थि मात्र हो रहा ॥ अरु रक्त मांस सब सुकी गया ॥ तब शिवजीनें प्रसन्न होकर दर्शन दीया ॥ अरु कहा हे ब्राह्मण ! जो तुझकों इच्छा हे सो वर माग ॥ ब्राह्मणने कहा दूध अरु चावल देही॥तब सदाशिवनें कहा दूध अरु चावल क्या कछु ओर माग॥ अरु तुजनें कहा हे तो इही भोजन किया कर तब उसकों उही भोजन प्राप्त हूवा ॥ अरु कहा जब तुं चिंतन करेगा ॥ तब मैं दर्शन देउंगा ॥ हे रामजी ! तो इहभी अपना पुरुषार्थ हुवा ॥ त्रिलोकीकी पालना करने वाला विष्णु हे ॥ तिनको काल तृणकी नांइ मर्दन करता हे ॥ तिस कालकों खेतनें जित्या हे ॥ सो अपना उद्यम हुवा अरु सावित्रीका भर्ता मृतक हुआथा उह पतिव्रताथी ॥ सो स्तुति नमस्कार करिकें यमकों प्रसन्न करती भइ ॥ भर्ताकों परलोकसों ले आई ॥ इहभी अपना पुरुषार्थ हे ॥ खेतनामा एक ऋषीश्वर हुवा हे ॥ सो अपणे पुरुषार्थ करी कालकों जीती मृत्युंजय नामकों पावत भया ॥ तातें एसा पदार्थ कोउ नही जो यथाशास्त्र उद्यम कीयेतें प्राप्त न होवे ॥ जो अपने पुरुष प्रयत्नका त्याग करीयें नही तो सुखफल सर्वकी प्राप्ति होती हे ॥ जो अविनाशी सुखकी इच्छा होवे तो आत्मबोधका अभ्यास करे ॥ अवर जेते कछू संसारके सुख हे ॥ सो दुःखसाथ मिले हुवे हे॥ अरु आत्म सुख सब दुःखका नाश कर्ता हे ॥ किसी दुःखसाथ मिल्या नही ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वास्तव कहीये तो सम असम सर्व ब्रह्महीं हे॥यद्यपि एसें हे तोभी सम परम कल्याणका कर्ता हे॥तातें अभिमानका त्याग करी समका आश्रय करहु अरु निरंतर बुद्धिं करी विचार करहु॥ अरु यत्न करी संतका संग करोगे॥ तब परम पदकों प्राप्त होऊगे ॥ हे रामजी ! संसार समुद्रके पार करनेंकों एसा समर्थ तप नही न तीर्थ करने करी ओर समान शास्त्रों करीकें तरनेकों समर्थ होता हे ॥ जेसें संतजनके सेवनसों भवसागरतें सुखसों तरना होताहे ॥ जिस पुरुषके लोभ मोह क्रोध आदिक विकार दिनदिन प्रति क्षिण होजाते हे ॥ अरु यथाशास्त्र तिसका कर्म हे ॥ एसे पुरुषकों संतजन कहतें हैं ॥ अरु आचार्य कहते हैं ॥ तिसकी संगति संसार पापकर्म तें निवृत्त करती हे ॥ अरु शुभविषे जोडती हे ॥ आत्मवेत्ता जो पुरुष हे तिसकी संगति करी इसकी बुद्धिविषे संसारका अत्यंत अभाव होता हे ॥ जब दृश्यका अत्यंत अभाव हुवा तब शेष आत्मा रहता हे ॥ इस क्रम करीकें जीवका जीवनभाव निवृत्त होजाता हे ॥ शेष बोध तत्व रहता हे ॥ जगत न उपजता हे ॥ न आगें होवेगा न वर्तमानविषे हे ॥ इस प्रकार में तुझकों अनंत युक्ति करी कहा हे अरु कहोंगा ॥ ज्ञानवानकों सर्वदा एसेंहि भान होता हे ॥ अचल चिदात्माविषे चंचल चित्त फुर्या हे ॥ तिसनें जगत आभासकों रचे हे ॥ जेसें जेसें फुरता हे तेसें तेसें जगत भासता हे.॥ अरु वस्तुतें अवर कछू हुवा नही ॥ आत्मरूपी सूर्य हे ॥ जगत तिसकी किरणारूप हे ॥ जेसें सूर्य अरु किरणांविषे भेद कछु नही ॥ तेसें जगत अरु आत्माविषे भेद कछु नही ॥ अहंरूप आत्मा हे ॥ तिसविषे आपकों न जानना ॥ सो आत्माकाशविषे मेघरूपी मलीनता हे ॥ जब परमार्थमें अहंभावकों जानेगा ॥ तब अनात्मविषे अहंभाव लीन हो जावेगा ॥ तब चिदाकाश साथ जीवकी अत्यंत एकता होती हे ॥ जेसें घटके फूटेंतें घटाकाशकी महाकाश साथ एकता होती ॥ अहं आदिक जो दृश्य हे सो निश्चय करी जान जो वास्तवतें कछु नही ॥ विचार कियेतें नही रहता ॥ जेसें बालककों पछायेविषे पिशाच भासता हे सो भ्रांति मात्र होता हे ॥ तेसें इह जगत भ्रांति सिद्ध हे ॥ अपनी कल्पना करी भासता हे ॥ अरु दुःखदायक होता हे ॥ विचार कीयेतें नष्ट हो जाता हे ॥ हे रामजी ! आत्मरूपी चंद्रमा सदा प्रकाश हे ॥ अरु अहंकाररूपी तिसके आगें मेघ बादल आया हे ॥ तिसकरी परमार्थबुद्धिरूपी कमलनी विकाशकों नहि प्राप्त होती ॥ मूंदे मुख होरही हे ॥ तातें विवेकरूपी वायुकरी तिसकों नष्ट करो ॥ नरक स्वर्ग बंध मोक्ष तृष्णा ग्रहन त्याग आदिक सब अहंकार करी पडे फूरते हे ॥ रिदेरूपी आकासविषे अहंकाररूपी मेघ जबलग गरजता वर्षा करता हे ॥ ॥ तबलग तृष्णारूपी कटक मंजरी बढती जाती हे ॥ जबलग अहंकाररूपी बादलनें आत्मरूपी सूरजकों आक्रमण कीया हे ॥ तबलग जडता अरु अंधकार हे ॥ प्रकाश उदय नही होता ॥ अहंकार दृढ हे तिसकी अनंत शाखा पसरती हे ॥ अहंमम आदिक विस्तार अनेक अर्थकों प्राप्त करता हे ॥ जो कछु संसारविषे सुख दुःख आदिक प्राप्त होता हे ॥ सो सब अहंकार करीकें प्राप्त होताहे ॥ संसाररूपी चक्र हे ॥ अहंकार तिसकीनाभी हे ॥ तिसकरीकें पडा भ्रमता हे ॥ अरु अहंममरूपी बीज हे ॥ तिसतें अनेक जन्मरूपी दृढकी परंपरा उदय होती हे ॥ अक्षय हो जातीहे ॥ जो नष्ट कबहु नही होती ॥ तातें यत्न करीकें इसकों नाश करो जबलग अहंकाररूपी अंधकार हे तबलग चिंतारूपी पिशाचनी विचरती हे ॥ अरु अहंकाररूपी पिशाचने जिसकों ग्रहन कीया हे ॥ तिस नीचपुरुषकों मंत्रतंत्रभी दीनतातें छुडाए नही सकते ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् निर्मल जो चिन्मात्र आत्मसत्ता हे सो अपनेआपविषे स्थित हे ॥ तिसविषे अहंकाररूपी मलीनता कहांतें प्रतिबिंबित हुइ ? वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे राघव!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अहंकारका जो चमत्कार भासता हैं ॥ सो वास्तव धर्म नही मिथ्या हे ॥ वासना भ्रम करी हुवा हैं ॥ पुरुष प्रयत्न करीकैं नष्ट हो जाता हे ॥ जो न मैं हौं न मेरा कोइ हैं ॥ अहं मममें सार कछू नही ॥ जब इह शांत होवेगा तब दुःखभी कोउ न रहेगा ॥ जब एसि भावनाका निश्चय दृढ होवेगा ॥ तब अहंकार नष्ट हो जावेगा ॥ आत्माविषे अहं कोउ नही न दृश्यमें सार हे ॥ इस प्रकार जब इसका फूरना शांत हूवा ॥ तब अहंकारभी नष्ट हो जावेगा ॥ जब अहंकार नष्ट हूवा तब हेयोपादेय बुद्धिभी शांत हो जावेगी ॥ समता आदिक प्रसन्नता आय उदय होवेगी ॥ अहंकारकी प्रवृत्ति दुःखका कारन हे ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे प्रभो अहंकारका रूप क्या हे ? अरु त्याग केसें होता हे ? ॥ अरु शरीरतें रहित कब होता हे ॥ अरु इसके त्यागतें फल क्या होता हे ? ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! अहंकार तीन प्रकारका हे ॥ दो प्रकारका श्रेष्ठ अंगीकार करनें जोग हे ॥ अरु तिसरा त्यागने जोग हे सो सुन इसका त्याग शरीर सहित होता हैं ॥ इह दृश्य सब मेंही हौं ॥ सो मैं परमात्मा अद्वैत रूप हौं ॥ मुझतें इतर कछु नही ॥ इह निश्चय परम अहंकारका हे ॥ मोक्षकों देनेहारा हे ॥ बंधनका कारन नही ॥ इसविषे जीवन्मुक्त विचरते हे ॥ अरु इह अहंकारभी मैं तुजकों उपदेशके निमित्त कल्पकें कहा हे ॥ वास्तवतें इहभी नही ॥ केवल अचेत चिन्मात्रसत्ता हे ॥ अरु दूसरा अहंकार इह हे जो मैं सर्वतें व्यतिरेक हौं ॥ अरु बालके अग्रतें सौमा भाग सुक्ष्म हौं ॥ एसा जो निश्चय हे सोभी जीवन्मुक्तिका हे ॥ मोक्ष दायक हे ॥ बंधनका कारण नही ॥ इह अहंकारभी तुजकों कल्पकें कहा हे वास्तवतें इह कहनाभी नही ॥ अरु तीसरा अहंकार इह हे ॥ जो हाथ पादतें आदी लेकरी इतना मात्र आपकों जानना इसविषे जिसका निश्चय हे सो तुच्छ हे बंधनका कारण हैं ॥ इसकों त्याग करो इह दुष्टरूप परम शत्रु हे ॥ इस करी जो जीव मरे हे ॥ सो परमार्थकी उर नही आते इह अहंकाररूपी जो शत्रु हे सो चतुर अरु बडा बलि हे ॥ नाना प्रकारके जन्म अरु मानसी दुःख काम क्रोध राग दोष आदिकका देनेहारा हे ॥ सब जीवकों नीच करता हे ॥ अरु संकटविषे जोडता हे ॥ इस दुष्ट अहंकारके त्यागतें पाछें जो शेष रहता हे ॥ सो आत्म भगवान मुक्तीरूप सत्ता हे ॥ हे रामजी ! लोकविषे जो अहंकार भावना हे सो वपुकी हे ॥ मैं इह हौं एता मात्रहौं ॥ सो दुःखका कारण हे ॥ इसकों महापुरुषनें त्याग कीया हे ॥ उह जानते हे हम देह नही शुद्ध चिदानंद स्वरूप हे ॥ प्रथम जो दो अहंकार मैं तुजकों कहे हे ॥ सो अंगीकार करने जोग हे ॥ अरु मोक्षदायक हैं ॥ अरु तिसरा अहंकार त्यागनें जोग हे ॥ काहेतें जो दुःखका कारण हे ॥ अरु तिसि अहंकारकों ग्रहन करीकैं दाम व्याल कट आपदाकों प्राप्त हूवे ॥ जो महा भयदायक कहनेविषे नही आतें ॥ जिनने भोगे हे तिनकी क्या कहनी हे ॥ उही जानते हे ? ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन ! तिसरा अहंकार जो तुमने कहा हे ॥ तिसका त्याग कीयेतें पुरुषका क्या भाव रहता हे ॥ अरु तिसकों क्या विशेषता प्राप्त होती हे ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! जब इह जीव अनात्म अहंकारकों त्याग करता हैं तब परमपदकों प्राप्त होता हे ॥ जेता जेता त्याग करता हे ॥ तेता तेता दुःखतें मुक्त होता हे ॥ तातें इसकों त्यागकरी आनंदमान होहु इसकों त्यागकें महापुरुष शोभता हे ॥ जब तुम इसकों त्यागोगे ॥ तब उंचेपदकों प्राप्त होहुगे ॥ सर्वकाल सर्व जतन करकें दुष्ट अहंकार जो लोक कहे हे तिसकों नष्ट करो ॥ परमानंद बोधके आगें आवरन इह हैं ॥ इसके त्यागतें बोधवान कहते हैं ॥ जब इह अहंकार निवृत्त होता हे ॥ तब शरीर पुन्यरूपी हो जाता हे ॥ अरु परमसारके आश्रयकों प्राप्त होताहे इही परमपद हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब स्थुल अहंकारका त्याग कीया ॥ तब सर्व व्यवहार चेष्टाविषें आनंदमान होता हे ॥ जिस पुरुषका अहंकार शांत हूवा हे ॥ तिसकों भोग अरु रोग दोनों स्वाद नहीं देते ॥ जेसें अम्रत करी जो तृप्त भया हे तिसकों खाटा अरु मीठा दोनों स्वाद नहीं देते ॥ अर्थ इह जो राग दोषकरी चलायमान नही होता एकरस रहते हे ॥ जिसका अनात्माविषे अहंभाव नष्ट हूवा हे ॥ तिसकों भोगविषे राग नही होता ॥ तृष्णा राग दोष नष्ट हो जाता हे॥जेसें सूर्यका उदय हूवे अंधकार नष्ट हो जाता हे॥तेसें अपने दृढ पुरुषार्थ करकें जिसके रिदेसों अहंकारका अनुसंधान नष्ट होता हे ॥ सो संसार समुद्रकों तरी जाता हे॥तातें इही निश्चय धारो न मैं हों न कोउ मेरा हे॥अथवा सर्व मेंही हों ॥ मुझतें इतर कछू वस्तु नही इह निश्चय जब दृढ होवेगा तब संसारकी द्वैतभावना मिटी जावेगी ॥ केवल आत्मतत्वका सर्वदा भानहोवेगा ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थिति प्रकरणे दाम व्याल कटोपाख्यान नाम त्रयस्त्रिंशत्तमः सर्गः ॥ ३३ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! जब दामव्योल कट युद्ध करते भाज गए तब संबरके नगरकी अवस्था हुइ सो सुण केसा नगर हे ॥ जो पहाडके समान हे ॥ तहां संबरकी जेति कछु सेनाथी सो सब नष्ट होगइ ॥ जेसें सरत्कालविषे मेघ नष्ट होजाता हे ॥ तेसें नष्ट होगइ ॥ तब देवता जिती करी अपने स्थानविषे जाय बेठे ॥ अरु संबरभी क्षोभकों पाय केंबेठिरहा ॥ जब केतेक बर्ष बितीत भए ॥ तब देवताके मारणे निमित्त संबर जुक्ती चितवता भया ॥ जो दामादिक माया करींकें रचेथे ॥ सो मूर्ख थे बलवान थे परंतु मिथ्या अहंकारका बीज अज्ञान उनकों था ॥ तिसकरी उनकों मिथ्या अहंकार आनि फुर्या तब नष्ट हुवे अरु भागे ॥ अब में एसे जोधे रचों जो आत्म वेत्ता ज्ञानवान निरहंकार होवहिं जिनकों अहंकार कदाचित् उत्पन्न न होवे ॥ तिनकों जिती कोउ न सकेगा ॥ सब देवताकी सेना मारेगें ॥ हे रामजी ! इसप्रकार चिंतनकरी संबर माया करी दैत्यकों रचता भया ॥ जेसें समुद्र अपने बुद बुदे रचि लेवे ॥ तेसें संबरनें दैत्यकों रचि लीया ॥ सो केसें रचे सर्वज्ञ विद्याके वेत्ता अरु वीतरागआत्मा अरु यथा प्राप्त कामकों करते ॥ आत्मभाव निश्चय अरु आत्मरूप ॥ एसे उत्तम पुरुष उपजे ॥ भीम अरु भास अरु दट तिनके नाम॥ सो तीनों इस संपूर्ण जगतकों तृणवत् जाने ॥ परम पवित्र तिनके हृदय एसे पुरुष उपजाये अरु गर्जत भये ॥ महा बळकरी शब्द करहीं ॥ तिनके शब्द करी आकाश पूर्ण हो गया ॥ इंद्रादिक देवता स्वर्गविषे शब्द श्रवण करते भये ॥ सुनकें बडी सेनाकों संग ले करी आय ॥ अरु इहभी बडे बली चमत्कार विजलीवत् करहीं ॥ महा बडे योद्धे दोनो ओरतें युद्ध करने लागे ॥ शस्त्रकी नदीयांका प्रवाह चलहीं ॥ अरु भीम भासदट धैर्यसों खडे रहे ॥ कबहु कोउ शस्त्रका प्रहार लागे ॥ तब युद्धके अभ्यास करी देहका मोह आनिफुरे ॥ बहुरी विचार विषे सावधान होवहीं ॥ जो हम तो अशरीर हे ॥ चैतन्यमय निराकार निर्विकार अद्वैत अच्युतरूप हे ॥ हमारे संग शरीर कहां हे ॥ जब जब मोह आवे ॥ तब तब एसें विचार करे जरा मरन उनकों कछु न भासे ॥ निर्भय होकरी वर्तमान युद्ध कार्य करते भये वासनाकी जालते मुक्त हुवे ॥ शत्रुकों पकडी मारही॥ हेयोपादेयतें रहित समदृष्टि युद्ध कार्यकों करते रहे ॥ दृढ युद्ध आनि हुवा तब देवताकी सेना मारी ॥ कछू भीम भास दटके भयतें शेष रहे सो भागे ॥ जेसें जल पर्वततें उतरता हे ॥ तीक्ष्ण वेग करी चलता हे ॥ तेसें देवता तीक्ष्ण वेग करी भागे ॥ सो क्षीरसमुद्रविषे विष्णु भगवानकी शरनकों प्राप्त भये ॥ जेसें वायु करी मेघ बादल चला पर्वतके आश्रय जाय रहतहे ॥ तेसें भयकरी भागे गए तब तिनकों देखके विष्णु भगवाननें कहा ॥ तुम इंहां स्थित होहु ॥ मे इनकों युद्ध करी मारी आता हों ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एसें कही करी सुदर्शन चक्रकों लिया ॥ विष्णु भगवान संबरकी उर आए ॥ तब विष्णु भगवान अरु संबरका युद्ध होत भया ॥ बडा युद्ध हुवा मानों अकाल प्रलय आया ह ॥ बडे बडे पर्वत उछलहीं अरु युद्ध होवे ॥ तब संबर चली खडा हुवा ॥ महा प्रकाशरूप सुदर्शन चक्रसाथ विष्णुजीनें संबरकों मारी लीया ॥ संबर शरीरकों त्यागकें विष्णु पुरीकों प्रा
प्त भया ॥ तब विष्णु भगवाननें भीम भास दटके अंतःपुर्यष्टकाविषे जाय प्रवेश कीया॥उनकीचित्तकला जो प्राण साथ मिश्रित थी ॥ तिसकों असत किया ॥ जेसें पवन दीपककों निर्वा
ण करता हे ॥ तेसें उनकी पुर्यष्टक फूरणें तें निर्वाण हुइ ॥ आगें जीवन्मुक्त थे सो विदेह मुक्त भए ॥ हे रामजी ! उह भीम भास दट निर्वासनीक थे इसकारननें दीपकवत् निर्वान होगये
तातें जो वासना संयुक्त हे सो बंधमान हे ॥ जो निर्वासनीक हे सो मुक्तरूप हे॥ तुमभी विवेक करीकें निर्वासनीक होहु ॥ जब यह निश्चय होवे॥जो सर्व जगत असतरूप हे॥ तब वासना
इसकी उर नही फुरती ॥ इसी यथार्थ देखना हे जो कीसी जगतके पदार्थविषे आशक्त बुधि न होवे ॥ वासना कहीयें चित्त कहियें इह एकही वस्तुके नाम हे ॥ सर्व पदार्थके शब्द
अरु अर्थ चित्तविषे स्थित हे ॥ जब सतका अवलोकन सम्यक ज्ञान होवेगा ॥ तब इह लय हो जावेगा ॥ परम पद शेष रहेगा ॥ जो चित्त वासना संयुक्त हे तिसविषे अनेक पदार्थ
की तृष्णा होती हे ॥ तिसतें जो मुक्त हे ॥ सोइ मुक्त कहतें हे ॥ नानाप्रकारके घटपट आदिक आकार भासते हे ॥ सो चित्तफुरने करी अनेकताकों प्राप्त होता हे जेसें पछावेविषे वै
ताल भम होता हे तेसें नानात्व भम चित्तविषे भासता हे॥ हे रामजी ! जेसी जेसी वासनाकों लेकरी चित्त स्थित होता हे ॥ तेसाहि आकार निश्चय होकरी भासता हे ॥ दाम व्याल
कटका रूप चित्तके परिणाम करी विपर्यय हो गया ॥ तुमकों भीम भास दटका निश्चय होवे दाम व्याल कटका निश्चय मत होवें ॥ हे रामजी ! इह वृत्तांत मुजकों पूर्व ब्रह्माजीनें कहा
था ॥ सो मेंनें अब तुमकों कहा हे ॥ इस संसारविषे कोउ विरला सुखी हे ॥ दुःखदशा अनेक हे ॥ जब तुम इस संसारकी भावना त्यागोगे ॥ तब देहादिकविषे बंधमान न होहुगे ॥
व्यवहारविषेभी आशक्तता न होवेगी ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे दाम व्याल कटोपाख्यान समाप्ति वर्णनं नाम चतुस्त्रिंशत्तमः सर्गः ॥ ३४ ॥ ॥०॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! अविद्या करी संसारकी ओर जो मन सन्मुख भया हे तिसकों जिन पुरुषनें जीता हे उही सुखी हे उही सूरमा हे॥तिनहीकी जय हे॥ इह संसार सर्व
उपद्रवके देणेहारा हे ॥ इसका उपाय यही हे जो अपने मनकों वस करनां ॥ इह जो मेरा शास्त्र हे सो सर्व ज्ञान संयुक्त हे ॥ इसकों सुनकें आपकों विचारे जो इह जगतक्या
हे ! एसें विचारकें भोगतें उपांत होना अरु सतस्वरूप आत्माका अभ्यास करना ॥ जेती कछू भोग इछाहे सो बंधनका कारन हे ॥ इसकें त्यागनेका नाम मोक्ष कहतें हे॥ ओर शास्त्रका
सर्व विस्तार हे ॥ जो विषय भोग हे तिनकों विषकी नांइ अरु अग्निकी नांइ जाने ॥ जेसें विष अरु अग्नि नाशका कारन हे ॥ तेसें विषयभोग नाशका कारन हे ॥ अेसें जानकें इनका
त्याग करे ॥ वारंवार इही विचारकरे जो विषय भोग विषकी नांइं हे ॥ एसे विचारकरी चित्तसों त्यागेगा तब सेवतें हुवेभी दुःखदायक न होवांहिगे ॥ जेसें मंत्र शक्ति संपन्नकों सर्प दुःख
दायक नही होता ॥ तेसें तीसकों भोग दुःखदायक नही होते ॥ तातें संसारकों सत जानकें वासना फूरती हे ॥ सो दुःखका कारन हे ॥ जेसें पृथ्वीविषे जो बीज बोता हे सो उगाता हे ॥
कटुकते कटुक उपजता हे ॥ मिष्टतें मिष्ट उपजता हे ॥ तेसें जीसकी बुद्धिविषे संसार भोग वासनारूपी बीज हे ॥ तिसतें दुःखकी परंपरा उत्पन्न होती हे ॥ अरु जिस बुद्धिविषे शांति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की शुभ वासना गर्भित होती हैं तीसतें शुभ गुण वैराग धैर्य उदारता शांतिरूप उत्पन्न होते हैं ॥ अरु शुभ वासनाका अनुसंधान होवेगा ॥ मन बुद्धि निर्मल भावकों प्राप्त होवेंगे ॥ जब मन निर्मल हूवा तब शनैःशनै करी अज्ञान नष्ट हो जावेगा ॥ अरु सज्जनता वृद्धि होवेगी ॥ जेसें शुक्लपक्षके चंद्रमाकी कला बढती जाती हे ॥ जब इन शुभगुणकी परंपरा स्थित होती हे तब विवेक उत्पन्न होता हे ॥ तिसके प्रकाश करी हृदयका मोहरूपी तम नष्ट हो जाता हे जेसें सूर्यके उदय हुवे तम नष्ट हो जाता हे ॥ तब धैर्य उदारता वृद्धि होते हैं ॥ जब सतसंग अरु सतशास्त्रके अभ्यास द्वारा इसविषे शुभ गुण आनि उदय होते हैं ॥ तब महा आनंदका कारण सीतल शांतरूप प्रगट होता हे ॥ जेसें पूर्णमासीके चंद्रमाकी कांति होती हे ॥ आनंददायक सीतलता पसरी जाती हे ॥ तेसें सतसंगरूपी वृच्छका फल इसकों प्राप्त होता हे ॥ हे रामजी !सतसंगरूपी वृच्छ हे तीसतें विवेकरूपी फल प्रगट होता हे ॥ तिस विवेकतें समतारूपी अमृत श्रवता हे ॥ तिसकरी मन निर्द्वंद्व हो जाता हे ॥ सर्व कामनातें रहित निरुपद्रव होता हे ॥ मनकी चपलता शोक अनर्थका कारण हे ॥ सो मनके अचल हुवे शांत हो जाता हे ॥ शास्त्रके अर्थ धारणे करी संदेह नष्ट होजाते हे ॥ नाना प्रकारकी कल्पना जाल शांत हो जाती हे ॥ इसतें जिवन्मुक्त अलेप होता हे ॥ कोउ संसारका क्षोभ तिसकों स्पर्श नही करता ॥ निरिछित निरुपस्थितनिर्लेप निर्दुःख होता हे ॥ शोकरूप कुहीडतें रहित हुवा चित्त जड ग्रंथिसों मुक्त परमानंदरूप होता हे ॥ तृष्णारूपी सूत्रकी जालतें जो पुरुष निकसी गया हे सोइ सूरमा हे ॥ अरु जिस पुरुषनें तृष्णाकों नष्ट नही कीनी सो अनेक जन्म दुःखविषे पडा भ्रमता हे ॥ जब तृष्णा घटती हे ॥ तब मनभी सूक्ष्म हो जाता हे ॥ जो भोगकी तृष्णा नष्ट हूई ॥ तब मनभी नष्ट हो जाता हे ॥ हे रामजी ! जेसें भले टहलुवे होते हे सो स्वामीके निमित्त रणविषे तृणवत् शरीरकों त्यागते हे ॥ तिसकरी स्वामीकी जय होती हे ॥ जो दुष्ट हे सो नही त्यागते तिसकरी दुःखका कारण होते हे ॥ तेसें मनका उदय होना जीवकों दुःखका कारन हे ॥ अरु मनका नष्ट होना सुखदायक हे ॥ ज्ञानवानका मन नष्ट हो जाता हे ॥ अज्ञानीका मन वृद्ध होता हे ॥ संपूर्ण जगत चक्र मनोमात्र हे ॥ इह पर्वत मंडलभी मनोमात्र हे ॥ स्थावर जंगमरूप जेता कछु जगत हे सो सब मनरूप हे ॥ मन कीसकों कहत हे सो श्रवन कर ॥ शुद्धकला चिन्मात्रविषे जो चित्तकलाकों फूरना हूवा हे ॥ अरु उही संवेदन संकल्प विकल्प साथ मिली करी मलीन हुआ हे ॥ अरु स्वरूप विस्मरन भया हे ॥ तिसका नाम मन हे ॥ सोइ मन वासना करीकें संसार भागी होता हे ॥ जब चित्त संवेदन दृश्य साथ मिलता हे तिस साथ तन्मय होने करी चित्त संवितका नाम जीव होता हे ॥ सो जीव दृश्य वर्ग साथ मिलिकें संसार दशामें चला जाता हे ॥ अनेक विस्तारकों प्राप्त होता हे ॥ अरु आत्म पुरुष जो हे सो परब्रह्म हे संसारी नही ॥ सो उह न रुधिर हे न मांस हे न शरीर हैं ॥ शरीरादिक सर्व जडरूप हे ॥ आत्मा चैतन्न आकाशवत् अलेप हे ॥ सो जब शरीरकों भिन्न भिन्न करी देखीये ॥ तब रुधिर मांस अस्थि तें इतर कछू नही निकसता ॥ जेसें केलेके वृच्छकों फोली देखीयें ॥ तो पत्रतें इतर कछू नही निकसता तेसें मनही जीव हे ॥ जीवही मन हैं ॥ मनतें इतर आकार कोउ नही ॥ सर्व विकार भावकों प्राप्त भया हे ॥ हे रामजी ! इस पुरुषकों बंधनका कारन अपनी कल्पना हे ॥ जेसें घुराण अपने जतन करी आपही बंधनकों प्राप्त होती हे ॥ तेसें पुरुष अपनी वासना करी आपही संसारबंधनकों पावता हे ॥ तातें भोगकी वासना मनतें दूरकरो संसारका बीज वासना ही हे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिस वासना संयुक्त दिनविषे विचरता हे तेसा सुपना आता हे ॥ जेसी जेसी वासना होती हे ॥ तेसा पुन्य पाप अनुसार परलोक भासता हे ॥ अपनी वासना करी जगत भास आता हे ॥ जेसें अन्न जिस द्रव्य स्वाद साथ मिलता हे ॥ तेसा भासता हे ॥ मिष्टमाथ मिष्ट खट्टा साथ खट्टा कटुक साथ कटुक होता हे ॥ तेसें जेसी वासना जिसके हृदयविषे दृढ होती हे ॥ तेसें हो भासता हे ॥ जेसें बडा पुन्यवान होता हे ॥ तिसकों सुपनेविषे अपनी इंद्रकी मूर्ती भासती हे नीचकों नीच मूर्ति भासती हे ॥ भूतके संगीकों भूतादिक भासी आता हे ॥ तेसें वासनाके अनुसार परलोक भासी आता हे ॥ जब मनविषे निर्मल भाव स्थित होता हे ॥ तब मनकी कल्पना पापवासना मिटि जाती हे ॥ अरु जब मनविषे मलीन वासना बढती हे ॥ तब निर्मलता नही भासती ॥ उही रूप फल प्राप्त होता हे ॥ तातें दुर्वासना कलंककों त्यागकें पूर्नमासीके चंद्रमावत् विराजमान होहु ॥ इह संसार भांतिमात्र हे सतरूप नही ॥ अज्ञा न करीकें भेद विकार भासते हे ॥ वास्तवतें न कोउ बंध हे न मोक्ष हे न कोऊ बंध करने हारा हे ॥ इस सर्व इंद्रजालकी नांइ मिथ्याभम भासते हैं ॥ जेसें गंधर्व नगर मिथ्या होता हे ॥ जेसें मृगतृष्णाका जल भासता हे ॥ जेसें आकाशविषे दूसरा चंद्रमा भासता हे ॥ सो असतरूप हे ॥ तेसें इह जगत असतरूप हे ॥ जीवकों अज्ञान करीकें एसा निश्चय हो रहा हे जो में अनंत आत्मा नही में लघु नीच हों ॥ जब इस निश्चयका अभाव होवे ॥ अरु आपकों अनंत आत्मा निश्चय करी जाने ॥ सो प्रथम इसका अभ्यास करे ॥ तब हृदयविषे स्थित होवे इस निश्चयकरी उस नीच निश्चयका अभाव होता हे ॥ सर्व जगत स्वछ निर्मल आत्मा हे ॥ तिसविषे जिसकों देहादिक भावना हूइ हे ॥ तिसकों लोकविषे बंधन होता हे ॥ अपने संकल्पकरी आपहि बंधनमें आता हे शुक्रकी नांई ॥ अरु जिसकों स्वरूपविषे भावना होती हे ॥ तिसकों मोक्ष भासता हे ॥ आत्मसत्ता मोक्ष अरु बंध दोनोंतें रहित हे ॥ एक अरु द्वैततें रहित अद्वैत ब्रह्मसत्ता अपने आपविषे स्थित हे ॥ जब मन निर्मल होता हे ॥ तब इस प्रकार भासता हे ॥ कीसी पदार्थविषे बंधमान नही होता ॥ जब मन भावतें रहित अमन होता हे तब ब्रह्मसत्ताकों देखता हे अन्यथा नही देखता जब वैराग अरु अभ्यासरूपी जलकरी मनकों निर्मल भाव होता हे ॥ तब ब्रह्मज्ञानरूपी रंग चडी जाता हे ॥ सर्व आत्माहि भासता हे ॥ जब सर्वा त्म भावना हूई ॥ तब ग्रहण त्यागकी वृत्ति नष्ट हो जाती हे ॥ बंध मोक्षभी नही रहता ॥ जब मनके कषाय परिपक्व होते हे ॥ अर्थ इह जो भोगकी सूक्ष्म वासनातें मुक्त होता हे ॥ सत शास्त्रके विचार करी वैरागके क्रमतें बुद्धिविषे वैराग उपजता हे ॥ तब परम बोधकों प्राप्त होता हे ॥ कमलकी नांइ बुद्धी खीली आती हे ॥ मनकरी सर्व पदार्थ रचे हे ॥ तिनसों मिली करी तद्रूप हो जाता हे ॥ तिसका नाम असम्यक ज्ञान हे ॥ जब सम्यक दृष्टि होती हे ॥ तब तिसका तत्काल नाश करता हें ॥ जब अंतर्बाहिर दृश्यका त्याग करता हे ॥ अरु मन सत भावविषे स्थित होता हे ॥ तब परम पदकों प्राप्त हूवा कहिता हे ॥ हे रामजी ! इह द्रष्टा अरु दृश्य जो स्पष्ट भासते हें सो असत हे तिस असत साथ तन्मय हो जाना इह मनका रूप हे जो पदार्थ आदि अंतविषे न होवे ॥ अरु मध्यविषे भासे तिसकों असतरूप जानीयें ॥ सो इह दृश्य आदिविषेभी नही उपजा अरु अंतविषेभी नही रहता ॥ मध्यविषे जो भासता हे सो असतरूप हे ॥ अज्ञान करीकें जिनकों सतभासता हे तिनकों दुःखकी प्राप्ति हे ॥ आत्मभावना विना दुःखनिवृत्त नही होता ॥ जब द्रश्यविषे आत्मभावना होती हे ॥ तब दृश्यभी मो क्षदायक हो जाता हे जल ओर हे तरंग ओर हे ॥ इह अज्ञानीका निश्चय हे ॥ जल अरु तरंग एकही रूप हे ॥ इह ज्ञानीका निश्चय हे ॥ तेसें नानारूप जगत अज्ञानीकों भासता हे ॥

159

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिसकरी दुःख पावता हे ॥ ग्रहण अरू त्यागकी बुद्धिविषे पडा भटकता हे ॥ अरु ज्ञानीकों सर्व आत्मा भासता हे ॥ भेद भावनातें रहित अंतर्मुख सुखी होता हे ॥ हे रामजी नानात्व हे सो मनके फूरणेकरी रचा हे ॥ अरु मनका रूप हैं ॥ अपने संकल्प बलका नाम मन हे सो असतरूप हे ॥ जो असत विनाशी रूप हे तिसकों सत माननेकरी क्लेश होता हे ॥ जेसें किसीका बांधव परदेसते आवता हे अरू उसकों पिछानता नही ॥ दृष्टी आता हे अरु तिसविषे राग नही होता ॥ जब उसविषे अपनेकी भावना करता हे ॥ तब रागभी होता हे ॥ तेसें जब आत्माविषे अहंप्रतीति होती हे ॥ अरु देहादिकविषे नही होता ॥ तब देहादिक सुख दुःख स्पर्श नही करते ॥ जब देहादिकविषे भावना होती हे ॥ तब स्पर्श करते हे ॥ हे रामजी शिव तत्वका ज्ञान होवे ॥ तब दुःख कोउ नही रहता सो केसा शिवहे ॥ जो द्रष्टा अरु दृश्यके मध्यविषे व्यापक हे ॥ तिसविषे स्थित हूवे मन शांत होजाता हे ॥ जेसें वा युतें रहित धूड उडणेसों रहिजाती हे ॥ तेसें मनके शांत हूवे देहरूपी धूंड शांत होजाती हे ॥ बहुरी संसाररूपी कुहीड नही रहती वर्षाऋतुरूपी वासना क्षीण होजाती हे ॥ तब जान्या नही जाता जो जडतारूपी वल्ली कहां गई ॥ जब अज्ञानरूपी मेघ शांत हूवा ॥ तब तृष्णारूपी वल्ली सुकी जाती हे ॥ रिदेरूपी पवनसों मोहरूपी कुहीड नष्ट होजाती हे ॥ जेसें प्रातः काल हूवे रात्र नष्ट होजाती हे ॥ अज्ञानरूपी मेघके क्षीण हूवे देह अभिमानरूपी जडता जानीनही जाती जो कहां गइ ॥ जब लग अज्ञानरूपी मेघ गरजता हे ॥ तबलग संकल्प रूपी मोर नृत्य करते हैं ॥ जब अहंकाररूपी मेघ नष्ट हो जाता हे तब परम निर्मल चिदाकाश आत्मरूपी सूर्य स्वच्छ प्रकाशता हे ॥ जब मोहरूपी वर्षाकालका अभाव भया तब ज्ञानरूपी सरतकालविषे दिशा निर्मल होजाती हे ॥ आत्मारूपी चंद्रमा सीतल चांदनीसो प्रकाशता हैं ॥ सो सर्व संपदाका देनेहारा हे ॥ परमानंदकी प्राप्ती करनेहारा हे ॥ जब प्रथम शुभ गुणकरी विवेकरूपी बीज संचित होता हे ॥ सो शुभ मन सर्व संपदाके देनेहारा परमानंद अति सफल भूमिकों प्राप्त होता हे ॥ तिस विवेकी पुरुषकों वन पर्वत चतुर्दश भुवन सर्व आत्माही प्रकाशता हे ॥ सो निर्मलतें निर्मल सीतलतें सीतल भावनाविषे भासता हे ॥ रिदेरूपी तलाव अती विस्तारवान होता हे ॥ फटिक मणिवत् उज्वल स्वच्छजल करी पूर्ण होते हैं ॥ तिसविषे धैर्य उदारतारूपी कमल विराजते हे ॥ तिस रिदेरूपी कमलपर अहंकाररूपी भंवरा विचरता हे सो नष्ट हो जाता हे ॥ बहूरी नही उपजता ॥ जो पुरुष निरपेक्ष सर्वतें श्रेष्ठ निर्वासनिक शांत मन अपने देहरूपी नगरविषे विराजमान इश्वर होता हे ॥ जिसकों आत्मप्रकाश उदय हूवा हे ॥ तिस बोधवानका मन अत्यंत गिल जाता हैं ॥ भयआ दिक विकार नष्ट होजाते हैं ॥ देहरूपी नगरविषे विगतज्वर होकें बिराजमान होता हे ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठेस्थितिप्रकरणे उपशमरूप वर्णनं नाम पंचत्रिंशत्तमः सर्गः ॥ ३५ ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ ब्रह्मन् आत्मा चैतनरूप हे अरु विश्वतें अतीत हे ॥ तिस चिदात्माविषे विश्व केसें उत्पन्न भया बोधकी वृधिके निमित्त बहुरी मुझकों कहो ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी! जेसें सोमजलविषे तरंग अव्यक्तरूप होते हे ॥ परंतु त्रिकाल दर्शीकों तिनका सद्भाव नही भासता ॥ तिनका रूप दृष्टमात्र होता हे ॥ तेसें आत्माविषे जगत संकल्पमात्र होता हे जेसें आकाश सर्वगत हे ॥ परंतु सुक्ष्म भावकरी लखणेंविषे नही आता हे ॥ तेसें आत्मा निरंश निराकार सर्वगत सर्वव्यापक हे ॥ परंतु लख्या नही जाता अव्यक्त अच्युतरूप हे ॥ तिस आत्माविषे जगत एसेहे जेसें कोउ थंभ मणीरूप होवे ॥ तिसविषे शिल्पी कल्पता हे जो एती पूतलीयां इसविषे हे सो क्याहे ॥ शिल्पीके मनविषे अणहोतीयां फुरतीयां हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेसें इह जगत आत्माविषे मनरूपी शिल्पीनें कल्प्या हे ॥ सो आत्माके आधार हे ॥ आत्माके आश्रय आत्माविषे स्थितहै ॥ अरु आत्मा कदाचित् इस साथ परस नही करता ॥ जेसें मेघ आकाशके आश्रय आकाशविषे स्थित होता हे ॥ परंतु आकाश तिस साथ परस नही करता ॥ तेसें आत्मा अस्पर्श हे ॥ अरु सर्वत्र पूर्ण हे ॥ परंतु पुर्यष्टकरूप रिदेविषे भासता हे जेसें सूर्यका प्रकाश सभ ठोरव्यापकहे ॥ परंतु जलविषे प्रतिबिंब भासता हे॥ पृथ्वी काष्ठविषे प्रतिबिंब नही भासता॥तेसें आत्माका देह इंद्रियां प्राणविषे प्रतिबिंब नही होता रिदे पुर्यष्टकविषे भासता हे॥ सो आत्मा सर्व संकल्पतें रहित हे सर्व संगतें रहित सरूप तिसकों ज्ञानवान पुरुष उपदेशके निमित्त चैतन्य अविनाशी आत्मा ब्रह्मादिक संगी करी कहते हें ॥ सो आकाशतेंभी सूक्ष्म निर्मल हे ॥ आकाश कलंकित हे ॥ आत्मा आभासकरीकें जगरूप हो भासता हे ॥ ओर जगत कछु वस्तु नही ॥ जेसें जल द्रवताकरिकें तरंगरूप होभासताहे परंतु तरंग कछु भिन्न वस्तु नही ॥ तेसें आत्मातें व्यतिरेक जगत नही ॥ चैतन सत्ता चैत्यता फुरने करी जगतरूप हो भासते हे ॥ परंतु जगत कछु वस्तु नहि ॥ जो ज्ञानवान पुरुष हे तिनकों तो एक आत्मा हि भासता हे ॥ अरु अज्ञानीकों नाना प्रकार जगत भासता हे ॥ ओर जगत कछु वस्तु नही ॥ केवल आत्मसत्ता अपने आपविषे स्थित हे ॥ अनुभव सुभाव करीकें प्रकाशता हे ॥ सूर्य आदिक सर्वकों प्रकाशने हारा हे ॥ सर्व स्वादका स्वाद उही हे सर्व भाव तीसी करी सिद्ध होते हें ॥ सो सत्ता उदय अस्ततें रहित हे ॥ अरु चलने अचलने तें रहित हे ॥ न ले त हे न देत हे अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जेसें अग्निका समूह लाटा रूप हो भासता हे ॥ जलका समूह तरंगरूप हो भासता हे ॥ तेसें आत्मसत्ता जगतरूप हो भासती हे ॥ अपने संवे दन फूरने करी नाना प्रकारके संकल्पसों विपर्ययरूप देखता हे ॥ इह पदार्थहे इह में हों इह अवर हे इत्यादिक भावनाकों प्राप्त होता हे ॥ जब अपने आपकों जानता हे तब अ ज्ञान भ्रम नष्ट हो जाता हे ॥ जेसें बृछविषे बीज सत्ता हे ॥ सो परिणाम करी आकारके आश्रयसों बढता जाता हे ॥ तेसें आत्मसत्ताविषे चित्तसंवेदन फुरता हे ॥ फुरनारूपी रस विपरिण मके आत्मसत्ताके आश्रय विस्तारकों प्राप्त होता हे ॥ सो संकल्प रूप हे ॥ तिसविषे जगतकी दृढता हे ॥ जेसें संवेदन फुरता हे तेसें स्थित होता हे ॥ तिसविषे नीति हुइ हे जो इह प दार्थ इसप्रकार होवे ॥ सो तेसें स्थित हे अन्यथा नही होता ॥ वसंतऋतुविषे रस अति विस्तारकों पावता हे ॥ कतकविषे धान उपजते हे ॥ हिमऋतुविषे जल पाषाणरूप हो जाता हे ॥ अग्नि उष्ण हे ॥ बरफ सीतल हे ॥ इत्यादिक जेते पदार्थ रचे हे ॥ तेसें ही महा प्रलयपर्यंत स्थित हे अन्यथा भावकों नही प्राप्त होते ॥ जगतबिषे चतुर्दश प्रकारके भूतजात हे ॥ तिनविषेजिनकों आत्मज्ञान प्राप्त होता हे ॥ सो शांतिरूप आत्माकों पायके आनंदमान होते हें ॥ अरु जिनकों प्रमाद हे सो पडे भटकते हे ॥ जन्म मरनकों प्राप्त होते हे ॥ जेसें जेसें कर्म करते हे तेसें गतीकों पावते हे ॥ आवागमनमें भटकते भटकते यमके मुखविषे जाय पडते हे ॥ जेसें समुद्र विषे तरंग उपजी करी लय हो जाते हे तेसें जनमी जनमी मरी जाते हे ॥ उन्मत्तकीनांइ प्रमादि पडे भ्रमते हे ॥ ॥इतिश्री योगवासिष्ठे स्थिति प्रकरणे चिदात्मरूप वर्णनं नाम षट्त्रिंशतिमःसर्गः ॥ ॥ ३६ ॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इसप्रकार जगतकी स्थिती हे ॥ सो सर्व चंचल आकार विपरिणाम रूप हे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग चंचलरूप हे ॥ तेसें जगतकी गति चंचल हे ॥ आ त्मातें जगत उपजता हे सो स्वतः होता हे किसी कारन करी नहीं होता पाछें कारन कार्य भाव हो जाता हे ॥ सोइ चित्तविषे दृढ हो भासता हे ॥ आत्माविषे इह कोउ नही ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जेसें सुभाविक जलतें तरंग उठि करी लय हो जाते हे ॥ तेसें आत्मातें सुभाविक जगत उपजीकें लय होते हे ॥ जेसें ग्रीष्मऋतुविषे तपत करी मरुथल जलकी नांइ स्पष्ट भासता हे अरु हे कछू नही ॥ जेसें मदकरी मत्तपुरुष आपकों ओरका ओर जानता कहता हे ॥ तेसें इह पुरुष आत्मरूप हे ॥ चित्तकरी आपकों देवता मनुष आदिक शरीर जानते अरु कह ते हैं ॥ ह रामजी ! इह जगत आत्माविषे न सत हे ॥ न असत हे ॥ जेसे स्वर्नविषे भूषन हे तेसें मूढ जीव आपकों आकार मानते हे ॥ तातें तुम दृश्यकों त्यागके दृष्टाविषे स्थित होडु ॥ जिसकरी शब्द स्पर्श रूप रस गंध आदिक सर्वकों जानता हे ॥ तिसकों आत्म ब्रह्म जान ॥ जो सर्वविषे पूर्ण स्थित हे ॥ स्वछ निर्मल आत्मसत्ताविषे एक द्वैतकल्पना कछु नही ॥ जबलग आत्मातें इतर कछू वस्तु भासती हे ॥ तबलग वासना तिसकी उर धावती हे ॥ हे रामजी ! आत्मातें व्यतिरेक कछू सिद्ध नही होता ॥ जब एसें भासे तब कीसकी वांछा करे किसका अनुसंधान करे ॥ अरु ग्रहन त्याग किसका करे ? ॥ आत्माकों ईप्सित अनीप्सित इष्ट अनिष्ट आदिक विकार विकल्प कोउ स्पर्श नही करता ॥ कर्ता करण कर्म तिनों की एकता हे ॥ न कोउ आधार न आधेय हे द्वैतकल्पनाका असंभव हे ॥ अहंत्वं आदिक कछू नही केवल ब्रह्मसत्ता स्थितहे ॥ एसें जानी सर्वदा निर्द्वंद्व होकरी सर्व संतापतें रहित कार्यविषे प्रवर्त डु ॥ पूर्व जो तुम कछु कीया अरु नही किया तिस करणे नकरने करी तुमकों क्या सिद्ध डुवा हे ॥ अरु क्या पद पावणे जोग पाया हे ॥ ओर भूतकी गणती विषे क्या बात हे ॥ तुम आपकों हृदयविषे अकर्ता भावना करडु ॥ अरु बाहिरतें इंद्रियां करीजगतके कार्य करडु ॥ जब स्थिरता रूप समुद्रविषे तुमारी वृत्ति धैर्यवान होवेगी तब शांत आत्मा होडुगे॥ दृश्य जगतविषे तो दूरतें दूरभी गये ॥ अरु अंतर शांति नही होती ॥ जहां जावे तहां भावे तेसा पदार्थ पावनेका जतन करे ॥ तिसके पायेतेंभी शांति प्राप्त न होवेगी ॥ सर्व दृश्य जगतके पदार्थकर त्याग करी जो शेष अपना सरूप रहताहे सो चिदात्मा हे॥तिसविषे स्थित हूवेतें शांति प्राप्त होवेगी ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे शांति उपदेशकरणं नाम सप्तत्रिंशत्तमः सर्गः ॥ ३७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इसप्रकार जो ज्ञानी पुरुष हे तिसविषे कर्तव्य भावभी दृष्टि आता हे ॥ हे ॥ यज्ञादिक सर्व कर्ता हे ॥ हिंसादिक तामसी कर्मभी दृष्ट आते हैं तोभी सरूपके ज्ञान करी उह अकर्ताही हे ॥ कदाचित कछु नही कीया अरु जो मूढ अज्ञानी हे सो जेसा कर्म करते हैं तेसा फल भोगते हैं ॥ कर्तव्य कीसका नाम हे सो श्रवन करु ॥ मनविषे सत्य जानकें जिस पदार्थके ग्रहनकी इच्छा करता हे ॥ सो फुरना वासनारूप होता हे॥ तिस सदभाव फुरनेका नाम कर्तव्य हैं ॥ तिस चेष्टा तें फलकी प्राप्ति होती हे ॥ जिस पदार्थकों सत जानकें वासना फुरतीहे ॥ तिसका अनुभव होता हे ॥ शरीर करे अथवा न करे जेसी वासना मनविषे दृढ होती हे शुभ अथवा अशुभ तिसके अनुसार दृश्यकों भासी आता हे ॥ शुभ करकें स्वर्ग भासता हे ॥ अशुभ करीकें नरक भासता हे ॥ जिस पुरुषकों आत्माका अज्ञान हे ॥ यद्यपि प्रत्यक्ष अकर्ता हैं तोभी अनेक कर्मके फलके अनुभव करते हे ॥ अरु जो ज्ञानवान हे तिनके रिदेविषे पदार्थका सद्भाव अरु वासना दोनों नही॥इस कारनतें तिनविषे कर्तव्यका अभाव हे ॥ जद्यपि करते हे तोभी कर्तव्यके फलकों नही प्राप्त होते ॥ संसारकों असत्य जानते हैं ॥ केवल शरीरके स्पंदमात्र उनका कर्म हे ॥ हृदय विषे बंधमान नही होते ॥ पूर्वके प्रारब्ध करीकें सुखदुःख फल तिनकोंभी प्राप्त होता हे ॥ परंतु आत्मातें भिन्न तिसकों नही जानते सर्वब्रह्मही देखते हैं ॥ अरु जो अज्ञानी हे सो अ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वयवके स्पंदविषे आपकों कर्ता मानता हे॥ तिसके अनुसार सुखदुःख भोगते हे॥ मोहकों प्राप्त होते हैं मन जिनका अनात्मभावविषे मग्न हैं॥ सो अकर्ताहूवेभी कर्ता होते हैं॥ मनतें रहित केवल शरीर करी कीया हे सो कीयाभी न कीया हे ॥ तातें मन करता हे शरीर कछु नही करता ॥ इह जगत सब मनतें उपजा हे अरु मनरूप हे मनही करी स्थित हे ॥ जिसका मन अमन भावकों प्राप्त भया हे ॥ तिसकों सर्व शांतिरूप हे ॥ जेसें तीक्ष्णधूप करी मृगतृष्णाकी नदी भासती हे जब वर्षा होती हे तब शांत होजाती हे॥ तेसें जब आत्मज्ञान होता हे ॥ तब इह जगत सब शांत होजातें हे ॥ संसारके सुखदुःख तीसकों स्पर्श नही करते न उह चंचल हे न सत्य हे ॥ न असत्य हे ॥ सर्व विकारतें रहित शांतिरूप हे ॥ संसारकी वास नाविषे नही डूबता अज्ञानी हे सो डुबता हे ॥ तिसका मन संसार भमविषे मग्न रहता हे ॥ सदा पदार्थकी तृष्णा पडा करता हे ॥ ज्ञानी नही करता ॥ हे रामजी! ओर दृष्टांत करिकें श्रवण कर जो अज्ञानीकों अकर्तव्यविषे कर्तव्य हे ॥ अरु ज्ञानीकों कर्तव्यविषे अकर्तव्य हे ॥ जेसें एक पुरुष शय्या उपर शयन करी रहा हे ॥ अरु सुपनेविषे गिर्या दुःख पावता हे ॥ सो अकर्तव्यविषे कर्तव्य भया ॥ अरु एक गिरतविषे गीर्या हे अरु उसका मन समाधिविषे स्थित हे सो उसकों सर्व शांतरूप हे ॥ सो कर्तव्यविषे अकर्तव्य भया ॥ क्यों जो शय्या पर सोयाथा तिसका मन चलताथा ॥ तातें अकर्तव्यविषे उसकों कर्तव्य भया दुःखका अनुभव करनेलगा ॥ दुसरेकों सुखका अनुभव भया ॥ तातें इह निश्चयहूवा जेसा मन होता हे तेसि सिद्धताकों प्राप्त होता हे ॥ तुमभी असंशक्त होकरी कर्म करो तब अकर्ताही रहोगे ॥ जेता कछु जगत भासता हे सो आत्मातें व्यतिरेक नही ॥ जिसकों इह निश्चय होता हे॥ तिस ज्ञानवानकों सुखदुःख स्पर्श नही करते ॥ आधार आधेय द्रष्टा दर्शन दृश्य इच्छा आत्मातें भिन्न कछु नही भासता ॥ जब इसकों एसें निश्चय होता हे ॥ म देह नही सर्व पदार्थ हूतें व्यतिरेक बालके अग्रतें सौमाभाग सूक्ष्म हों ॥ अथवा जो कछु दृश्य जगत हे सो सर्व मेंही हों ॥ सर्व तत्वका प्रकाशक हों ॥ सर्व व्यापी हों इह निश्चय करी तिसकों सुख दुःखका क्षोभ नही होता विगत ज्वर होकरी स्थित होताहे ॥ यद्यपि दुःख संकट ज्ञानवानकों आयप्राप्त होता हे तोभी उसकों नही भासता ॥ परमानंद करी आनंदवान लीला मात्र विचरता हे ॥ जेसें चंद्रमाकी चांदनी सीतल प्रकाशती हे तेसें उह पुरुष सीतल प्रकाशवान होता हे तिसकों न चिंता होती हे न कोउ दुःख होता हे ॥ शांतरूप कर्मकों करताभी अकर्ता हे मन करी सदा अलेप रहता हे ॥ हे रामजी ! हस्तपादादिक इंद्रियां करी कर्त्ताका नाम कर्म नही ॥ मनके कर्नेका नाम कर्म हे ॥ मनही सर्व कर्मका कर्ता हे ॥ अहंत्वं स व भाव सब लोकका बीज सर्वगत मन हे ॥ जब मन नाश होवे तब सब कर्म नष्ट हो जाता हे सब दुःख मिटि जाते हे ॥ जेसें बालक मनकरी नगर रचे बहुरी लीन करी लेवे तिसकों उपजावणे लीन करणेविषे हर्ष शोक कछु नही होता ॥ तेसें परमार्थ दर्शीकों किसि कर्मका लेप नही होता कर्ता हुवा कछू नही करता ॥ तिसविषे कर्तव्य भोक्तव्य सुख दुःख अज्ञान मोह करीकें अध्यारोप करते हे अरु कछु नही ॥ ज्ञानवानकों बंध मोक्ष सुख दुःख कछु नही भासता क्यों जो उह असंशक्त मन हे अरु जिसका मन आशक्त हे तिसकों नाना दृश्य भासता हे ॥ ज्ञानवानकों केवल आत्मसत्ता भासती हे ॥ एक द्वैत कलनातें रहित हे जेसें जलतें तरंग भिन्न नही होता तेसें आत्मातें जगत भिन्न नही न कोउ बंध हे न कोउ मोक्ष हे॥ न कोउ बंधणेजोग हे॥ अज्ञान दृष्टि करी दुःख हे॥ बोध करीकें लीन हो जाते हे ॥ बंध अरु मोक्ष संकल्प करी कल्पित मिथ्यारूप हे ॥ तुम इस मिथ्या कल्पना अनात्म अहंका

CC-0: Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रकों त्यागी आत्माविषे निश्चय करहु ॥ धीरज बुद्धिवान होकरी प्रकृत आचारकों करहु तव स्पर्श कछू न करेगा॥ ॥ इतिश्री यो० स्थि० मोक्षोपदेशोनाम अष्टत्रिंशत्तमःसर्गः ॥ ३८ ॥

॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् ! सत्चित् आनंद अद्वैत निर्विकार आदिक गुण करी संपन्न जो ब्रह्मतत्व हे ॥ तिसविषे जो अविद्यमान जगत अविद्या विचित्र कहांतें आइ हे ! वसिष्ठोवाच ॥ हे राजपुत्र ! इह संपूर्ण जगत ब्रह्म स्वरूप हे ॥ ब्रह्म सत्ता सब शक्ति हे इस कारणतें द्रश्यरूप हो करी स्थित रही हे ॥ सत्य असत्य एक अद्वैत आदिक विश्वरूप भा सता हे सो स्वरूपतें एसें हे ॥ जेसें जल विषे जल उल्लास रूप नाना प्रकारके तरंग बुद बुदे आदत्त आकार हो भासता हे ॥ तोभी जल एक रूप हे ॥ तेसें चिदघनविषे चिदघन सव श क्ति सव रूप हो करी फूरता हे ॥ कहूं कर्मरूप, कहूं वाणी रूप, कहूं गुंगे रूप, कहूं मन रूप, कहूं भरण पोषण नाश कारण होता हे ॥ सव पदार्थका बीज़ उत्पत्ति कर्ता ब्रह्म सत्ता हे ॥ जेसें समुद्रतें तरंग उपजी करी तिसीविषे लय होते हे ॥ तेसें सब पदार्थ उपजी करी ब्रह्मविषे लय होते हे ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् ! इह तुमारे वचनका उच्चार प्रगट हे ॥ तोभी कठिन अति गंभीर हे इनका तोल नही पाया जाता तातें अतोल हे इनका यथार्थ भाव में पाय नही सकता ॥ मन संयुक्त षट् इंद्रियांकी वृत्तितें रहित स्वरूप अरु सर्व पदार्थ की रचनातें रहित हे ॥ सो कहां अरु जगत कहां जो पदार्थ जिसतें उपजता हे ॥ सोउही रूप होता हे ॥ जेसें दीपकतें उपज्या दीपक होता हे ॥ मनुष्यतें मनुष्य अरु अग्नितें अग्नि हो ताहे ॥ इस प्रकार कारनतें जो कार्य उपजता हे सो तिसीके सदृश होता हे ॥ तेसें जो निर्विकार आत्मातें जगत उपजा हे सो जगतभी निर्विकार चहिएं सो तो एसें नही ॥ आत्मा निर्विकार शांतरूप हे ॥ अरु जगत विकारी दुःखरूप हे ॥ तिसतें कलंक रूप जगत केसें उपजा हे ? ॥ वाल्मीकोवाच ॥ जब इसप्रकार रामजीनें कहा ॥ तब वसिष्ठजी ब्रह्मऋषि बोलत भया ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इह सब जगत ब्रह्मरूप हे नाना प्रकार मलीनरूप संसार भासता हे ॥ सो मलीनता नही ॥ जेसें तरंगके समूह समुद्रविषे फुरते हे सो मलीनता धूली नही उही रूप हे तेसें आत्माविषे जगत कछु कलंक नही उही रूप हे ॥ जेसें अग्निविषे उष्णता अग्निरूप हे ॥ तेसें आत्माविषे जगत आत्मारूप हे इतर नही ॥ रामोवाच ॥ हे ब्रह्मन् ! निर्दुःख निर्धर्मतें जो जगत् दुःखरूप उपजा सो इह कलंकहे ॥ इह जो तुमारे वचन हे सो आकाशरूप हे सो मेरे तांइं अस्पष्ट भासते हे में इसकों जाणी नही सकता ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे पुत्र ! जब इसप्रकार रामजीनें कहा तब वसिष्ठजी मुनि शार्दूल विचारते भये ॥ जो अब परम प्रकाशकों इसकी बुद्धि प्राप्त नांही भइ ॥ कछुक निर्मल भावकों प्राप्त भइ हे ॥ प दार्थ भूमिकाकों जानता भया हे ॥ अरु परमार्थ वेत्ता नांही भया ॥ जिसकों परमार्थ बोध प्राप्त भया हे अरु मन शांत हुवा हे एसा जो ज्ञात ज्ञेय पुरुष हे सो मोक्ष उपायकी बाणीके पारकों प्राप्त होता हे संसाररूपी अविद्या मल उसकों नही भासता ॥ केवल अद्वैत सत्ता भासती हे ॥ जबलग और उपदेश रामजीकों न करों तबलग इसकों विश्रामही नही होवेगा ॥ जो अर्ध प्रबुद्ध हे तिसकों सव ब्रह्म कहना नही शोभता काहे तें जो चित्त उसका भोगतें सर्वथा व्यतिरेक नही भया ॥ सर्व ब्रह्मके बचन सुनकें भोगविषे आशक्त होवे गा ॥ सो नाशका कारण हे तिसकरी नाश होवेगा ॥ अरु जिसकों परम दृष्टि प्राप्त हुइ हे तिसकों भोगकी इच्छा नही उपजती ॥ तातें सर्व ब्रह्मका कहणा रामजीकों सिद्धांत काल विषे सोभेगा ॥ प्रथम गुरुकों शिष्य प्रती सर्व ब्रह्म कहणा नही बणता ॥ प्रथम शम दम आदिक गुण करी शिष्यकों शुद्ध करे पाछें सर्व ब्रह्म शुद्ध तूं हे ॥ एसें उपदेश करे तिसकरी जागि उठता हे ॥ अरु जो अज्ञानी अर्ध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रबुद्ध हे तिसकों एसें कहणा जो सर्व ब्रह्म तूं हे सो एसा उपदेश करनेवाला गुरु उसकों महा नरकविषे जोडता हे ॥ जो प्रबुद्ध हे तिसकी भोगकी इच्छा क्षीण हो जाती हे उह निःकाम पुरुष हे॥तिसकों अविद्या रूपि मल नही रहता॥तिसकों कहणा नहि बनता हे॥इस प्रकार विचारकरी भगवान वसिष्ठजी अज्ञानरूपी तमके नाशकर्ता ज्ञानके सूर्य मुनि रामजी प्रती कहत भया ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे राघव ! कलनारूप कलंक ब्रह्मविषे हे अरु नही ॥ इह में तुझकों सिद्धांतकाल विषे कहोंगा ॥ अथवा तूं आपही जानेगा ॥ ब्रह्मसत्ता सब शक्तिरूप सर्व व्यापक सर्व गत हे सब तिसीकरी रचे हैं जेसें इंद्रजाली विचित्र शक्तिकरी अनेक रूप रचता हे ॥ सत्यकों असत्य अरु असत्यकों सत्य करि दिखावता हे ॥ तेसें आत्मा मायावी परम इंद्रजाली अघटन घटना हे अर्थ इह जो नबने तिसकों बनावे तिसकी शक्ति हे जो पहाडकों गडेला करता हे॥अरु वल्लिविषे पाषाण लागते हे पाषाणविषे वल्ली लागती हे ॥ बन कीपृथ्वीकों आकाश करता हे आकाशकों पृथ्वी करता हे ॥ अरु वृछ वल्लीसाथ पाषाण लागते हे ॥ अरु आकाशविषे बन लागते हे ॥ जेसें गंधर्वनगर आकाशमें भासता हे अरु बन कों आकाश करता हे ॥ जेसें पुरुषकी छाया आकाश होजाती हे ॥ आकाशकों पृथ्वी भाव प्राप्त करती हे जेसें रत्नकी कंदरा पृथ्वी पर होवे तिसविषे आकाशका प्रतिबिंब पडता हे ॥ हे रामजी! इह विचित्ररूप दृश्य तुझकों कहा हे सो शुद्ध व्यक्त तत्व अचैत्य चिन्मात्रविषे जो चैतनताका लक्षण जानना हे तिसकरी रचीहे सो केसी रचीहे उही चित्त संवेदन फूरनेकरी जगतरूप हो भासता हे ॥ तातें सब प्रकार सबरूप उही हे जो एकरूप अविद्यमान हे हर्ष शोक आश्चर्य किसकी नांई किसका मांनीये ॥ इह अन्यथा कोउ नही सब एकरूप हे ॥ इसी कारनतें हमकों समताभाव रहता हे हर्ष शोक अश्चर्य मोह हमकों नही प्राप्त होता ॥ ममता अरु चपलता आदिक विकार कोउ नही होता ॥ कदाचित् हम जानतेही नही देश काल वस्तु इह जगत अवसानकों प्राप्त हो भासते हे तिनका विपयर्य होनाभी भासताहे ॥ अरु उह अपणे सुभावविषे स्थित हे काहेतें जो इह दृश्य उनकों अपणे स्वरूपका आभास फूरता भासता हे जेता कछु दृश्य प्रपंच हे सो सत्य चित्त संवितकी स्पंदकला करीकें फुरता हे ॥ नाना प्रकार देश काल क्रिया द्रव्य होकरी भासते हे ॥ तिसकों आत्मसत्ता किसी जतन करी नही रचती सुभाविक फुरने करी पडे फूरते हे जेसें समुद्र तरंगकों जतनकरी नही उपजाता अरु लीन करता ॥ सुभाविक चमत्कार फूरता अरु लीन होता हे तेसें आत्मा विषे सुभाविक सृष्टि फुरतीयां हे अरु लय होतीयां हे ॥ जेसें समुद्र अरु तरंगविषे कछु भेद नही तेसें आत्मा अरु जगतविषे कछु भेद नही उही रूप हे ॥ जेसें दुध घृतरूप हे जेसें घट पृथ्वीरूप हे जेसें पटतंतुरूप होता हे तेसें जगत आत्मरूप हे ॥ जेसें बट धान्य वृछरूप हो भासता हे जेसें समुद्र तरंगरूप हो भासता हे तेसें आत्मा जगतरूप हो भासता हे ॥ हे रामजी ! इन दृष्टांतका एक अंग लेणा हे कारण कार्य भावकों लेना नही ॥ आत्माविषे न कोउ कर्ता हे न कोउ भोक्ता हे ॥ न कोउ विनाशकों प्राप्त होता हे ॥ केवल आत्मतत्व साक्षी निरामय अद्भुत अपणे आप सुभावसत्ताविषे स्थित हे इह जगत आत्माका प्रकाश हे जेसें दीपकका प्रकाश सुभाव हे, सूर्यका प्रकाश सुभाव हे, पुष्पका सुगंध सुभाव हे, तेसें आत्माका सुभाव जगत हे किसि कारण कार्य करी नही भया ॥ जगत आत्माका सुभाव आभासरूप हे ॥ आत्मातें इतर कछु नही हुवा ॥ जेसें पवनका सुभाव स्पंदरुप हे सो जब निः स्पंद होता हे तब नही भासता अरु स्पंद करी भासता हे तेसें आत्माविषे संवेदन फूरता हे तब जगत हो भासता हे ॥ जब लय होता हे तब जगत नही भासता ॥ अरु जगत कछू हे नही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न सत हे न असत हे कहूं जगत प्रगट भासता हे कहूं अप्रगट भासता हे ॥ अरु नाना प्रकारका विचित्ररूप भासता हे ॥ जेसें वनविषे पुष्पका रस होता हे ॥ तिनके उपजणे अरु नष्ट होणेकरी न बन उपजता हे न नष्ट हो जाता हे ॥ तेसें आत्मसत्ता जगतके उपजणे अरु नष्ट होणे तें रहित हे अरु वास्तवतें उपजा कछु नही ॥ तातें आत्माहि अपणे आपविषे स्थित हे ॥ असम्यक् ज्ञानकरी जगत भासता हे ॥ अनंत शाखाकरी पसरी रहाहे इनकों ज्ञानरूपी कुठार साथ काटहू तब सुखी होवे जगतरूपी वृछ हे असम्यक् ज्ञान इसका बीज हे ॥ शुभ अशुभरूपी फूल हे ॥ आशारूपी वल्लीकरी वेष्टित हे दुःखरूपी शाखा हे ॥ अरु भोग जरा रूपी फल हे तृष्णारूपी लता करी भूसर भासते हैं ॥ ऐसा जो संसाररूपी वृछ हे तिसकों आत्म विवेकरूपी कुठारसाथ जतनकरकें काटकें मुक्त होहु ॥ जेसें गजपती अपणे बलसों बंधन तोडिकरी सुखे नचेत् विचरता हे तेसें तुम निर्बंध होकरी विचरो ॥ इति श्री योगवासिष्ठे स्थिति प्रकरणे सर्वैकता प्रतिपादनं नाम एकोनचत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ ३९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् इह जो जीव हे सो ब्रह्मतें उत्पन्न केसें हूवे हे अरु केतेक हुवे हे सो मुझकों विस्तार करकें कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे महाबाहो जेसें इह विचित्रतातें उपजते हैं अरु नाश होते हे अरु बढते हे स्थित होते हैं सो क्रम सुण ॥ हे निष्पाप राम शुद्ध जो ब्रह्मतत्व हे तिसकी जो वृत्ति चैतनशक्ति हे सो निर्मल हे जब उह स्फुरनरूप होती हे तब कलनारूप घनभावकों प्राप्त होती हे तब संकल्परूपकों धारती हे ॥ बहुरी तन्मय हो करी मनरूप होती हे ॥ सो मन संकल्पमात्र करीकें जगतकों रचता हे विस्तार भावकों प्राप्त करता हे ॥ जेसें गंधर्व नगर विस्तारकों प्राप्त होता हे तेसें मनकरी जगत विस्तार होता हे अरु ब्रह्म दृष्टिकों त्यागकें रचता हे ॥ सो सब आत्मसत्ताका चमत्कार हे बन्या कछु नही हमकों तो सब आकाशरूप भासता हे ॥ दूरदर्शीकों जगत भासता हे जेसें चित्तसंवितविषे संकल्प फुरता हे तेसा रूप होता हे प्रथम ब्रह्माका संकल्प फुर्या हे सो चित्त संवित आपकों ब्रह्मारूप देखत भया ब्रह्मारूप होकरी जगतकों कल्पता भया तब प्रजापती हो करी चतुर्दश प्रकारके भूत जात उत्पन्न कीये वस्तुतें सब ज्ञप्तिरूप हे ॥ तिसके फूरनेकरी जगत भासता हे ॥ सो चित्तमात्र शून्य आकाशरूप हे ॥ ओर वस्तुतें शरीर कछु नही ॥ संकल्प मात्र नगरवत् भांति करीकें भासते हैं तिस भांतिरूप जगतविषे जो जीव भये हे कोउ मोह करी संयुक्त हे कोउ अज्ञानी हे ॥ कोउ मध्य स्थित हे ॥ कोउ ज्ञानी उपदेष्टा हे जेते कछु भूत जात हे सो सब आधिव्याधि दुःख करी दीन हुवे हे तिनविषे ज्ञानवान सात्विक सात्विकी हे अरु राजसी सात्विकी हे ॥ जो शांतात्मा पुरुष हे तिसकों संसारके दुःख कदाचित् स्पर्श नही करते ॥ उह सदा ब्रह्मविषे स्थित ह ॥ हे रामजी ! इह में तुझकों भूत जात कहे हे सो ब्रह्म शांत अमृतरूप सर्व व्यापी निरामय चैतन्य स्वरूप अनंत आत्मा आधि व्याधि दुःखतें रहित निभ्रम हे ॥ तिसके किसी एक देशविषे जगत स्थित हे ॥ जेसें अनंत सोमजलके किसीस्थानविषे तरंग फुरते हे तेसें परमब्रह्म सत्ताके किसी स्थानविषे जगत प्रपंच फुरताहे ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् ! ब्रह्मतत्व तो अनंत निराकार निरवयव रूप हे तिसका एक अंश एक स्थान केसें हुवा निरवयवविषे अवयव क्रम केसें होता हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! तिसकरीकें उपजे हे अथवा तिसतें उपजे हे इह जो कारन अरु उपादान हे सो भांति मात्र हे ॥ इह शास्त्र रचना व्यवहारके निमित्त कही हे परमार्थ तें कछु नही ॥ अवयव करी जो देशादिक कल्पना हे सो क्रमतें नही उपजी उदय अरु अस्तपर्यंत दृष्टिमात्रभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होती है अरु कल्पना मात्र है ॥ सो कल्पनाभी आत्मरूप है ॥ आत्मातें रहित कल्पनाभी कछु वस्तु नही न हुइ है न कछु होवेगी तिसविषे जो शब्द अर्थ आदिक जुक्ति है सो व्यवहारके निमित्त है परमार्थतें कछु नही शब्दअर्थ मात्र जगत कलना है सो तिस करी उपजा है अरु तिसतें उपजा है ॥ इह द्वितीय कल्पनाभी नही तन्मय रूप है ॥ शांतरूप आत्मा ही है ओर कछु नही ॥ जेसें अग्नितें अग्निकी लाटा फूरतीयां है सो अग्निरूप है अरु तिसतें उपजी सो तिसकरी उपजी इह कल्पना अग्निविषे कोउ नही अग्निही अग्नि है ॥ तेसें जन अरु जनक जो है कार्य अरु कारनभेद सो आत्माविषे कोउ नही ॥ कार्य कारनभाव कल्पना मात्र है ॥ ऊहां अधिकता अरु ऊनता होती है तहां कारन कार्य भाव होता है जो इह अधिक कारन है उन कार्य है ॥ भिन्न भिन्न कारन कार्य शब्द बणताभी है जहां भेद होता है तहां भेदकल्पनाभी होवे ॥ तहां एक अद्वैतविषे शब्द केसें होवे अरु शब्दका अर्थ केसें होवे ॥ जेसें अग्नि अरु अग्निकी शिखाविषे भेद नही ॥ तेसें कारन कार्य भाव आत्माविषे कोउ नही ॥ शब्द अर्थ कल्पना मात्र है ॥ जहां प्रतियोगी विवछेद संख्या भ्रम होता है ॥ तहां द्वैत नानात्व होता है ॥ अर्थ इह जेसें चैतनका प्रतियोगी जड अरु जडका प्रतियोगी चैतन है ॥ अरु विवछेद कहिए परिछिन्न ॥ जेसें घटविषे आकाश होता है संख्या कहियें जो जीव इश्वर इह शब्द अर्थ द्वैत कल्पनाविषें होते हैं ॥ जहां एक अद्वैत आत्माही है ॥ तहां शब्द अर्थ कोउ नही ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग बुदबुदे सबही जलतें है ॥ जलतें इतर कछु नही ॥ तेसें शब्द अरु अर्थ कल्पना ब्रह्म है ॥ जो बोधवान पुरुष है ॥ तिनकों सब ब्रह्मही भासता है ॥ चित्तभी ब्रह्म है मनभी ब्रह्म है ज्ञान शब्द अर्थ ब्रह्मही है ॥ ब्रह्मतें इतर कछु नही तिसविषे जो इतर भासता है सो मिथ्या ज्ञानके विकल्प है ॥ जेसें अग्नि अरु अग्निकी लाटाकी कल्पना भांतिमात्र है तेसें आत्माविषे जगतकी भिन्न कल्पना असतरूप है ॥ जो ज्ञानतें रहित है तिनकों दृष्टि दोषकरी सत्य हो भासता है तातें सर्व ब्रह्म है ॥ ब्रह्मतें इतर कछु नही निश्चय करी परमार्थ ब्रह्मतें सब ब्रह्मही है ॥ सिद्धांतकालविषे तुझकों इही दृष्टि उपजेगी ॥ इह जो सिद्धांत पिंजर में तुजकों कहा है तिसके उपर उदाहरन कहोंगा ॥ जो इह क्रम अविद्याका कछूभी नही अज्ञानके नाश भए अत्यंत असत जाणेगा ॥ जेसें तमकरीकें जेवरीविषे सर्प भासता है॥जब प्रकाश उदय होता है तब ज्योंका त्यों भासता है ॥ सर्प भ्रम नष्ट होजाता है तेसें अज्ञान दृष्टि करी जगत भासता है ॥ जब शुद्ध विचार करी भ्रांति नष्ट होवेगी तब निर्मल प्रकाश सत्ता तुझकों भासेगी इसविषे संशय नही यह निश्चितार्थ है ॥ ॥ इतिश्री यो० स्थिति प्र० ब्रह्मप्रतिपादनं नाम चत्वारिंशत्तमःसर्गः ॥ ४० ॥

॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् ! इह जो तुमारे बचन है सो क्षीरसमुद्रके तरंगवत् उज्वल है ॥ तीन तापके नाश कर्त्ता हृदयको मल दूर करनेकों निर्मल रूप है ॥ अरु अज्ञान रूपी तमके नाश कर्त्ता प्रकाशरूप है ॥ अरु गंभीर है तिनका तोल में पाय नही सकता एक क्षणविषे संशय करी अंधकारकों प्राप्त होता हों ॥ अरु एकक्षणविषे निःसंशय रूप प्रकाशकों प्राप्त होता हों॥जेसें चपलरूप मेघ करी सूर्यका प्रकाश कबहुं भासता है कबहुं आच्छाद्या जाता है॥तातें मेरा संशय दूर करहु जो आत्मानंद सत्ता अप्रमेयरूप है ॥ सब उही प्रकाशरूप है असत्य भावतें रहित साररूप है तो तिस अद्वैत तत्वविषे कल्पना कहांतें आई ? वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जो कछु में तुमकों कहा है सो मेरे बचन यथार्थ है ॥ जेसें कहा है तेसें ही है अरु असमर्थ रूप बचनभी नहि ॥ जिसके रिदेविषे टहर हि तिसकों आत्मपदविषे प्राप्त करही ॥ अरु विरूपभी नही इसका रूप फल प्रगट है ॥ जिनके धारेतें सब दुःख

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संसारके मिटि जाते हे अरु पूर्वापर विरोधभी नही ॥ जो प्रथम कछू ओर कहा पाछें ओर कहा ॥ जो कछु कहाहे सो यथार्थ कहाहे ॥ परंतु ज्ञानदृष्टी करीकें जब तेरा हृदय निर्मल होवेगा ॥ विस्तृत बोधसत्ता रिदेविषे प्रकाशेगी ॥ तब तूं मेरे बचनके तात्पर्यकों रिदेविषे जानेगा ॥ अरु जो तुझकों उपदेश करता हों सो वाच्य वाचक शास्त्रके संबंध तेरे जतावणे निमित करता हों ॥ जब इन युक्त बचन करी तूं जागेगा तब तुझे अद्वैत सत्ता निर्मल भासेगी ॥ ओर जो कछु वाच्यवाचक शब्द अर्थ रचना हे तिसकों त्याग करेगा ॥ ज्ञानवानकों सदा परमार्थ अद्वैत सत्ता भासती हे इच्छादिक कल्पना कछु आत्माविषे नही पाइती आत्मा निर्दुःख निर्द्वंद्व हे ॥ सोइ जगतरूप होकरी स्थित भया हे ॥ इस प्रकार में तुझकों विचित्र युक्ति करी कहोंगा ॥ जबलग सिद्धांत उपदेशका आकाश हे तबलग आत्मसत्ता नही प्रकाशती जब आत्मबोध होवेगा तब आपहि जानेगा ॥ अज्ञानरूपी तम हे सो वाक् विस्तारबिना शांत नही होता ॥ इस प्रकार में तुझकों अनेक युक्ति करी कहोंगा ॥ तबलग सिद्धांत उपदेशका अवकाश हैं ॥ हे रामजी ! शुद्ध जो आत्मसत्ता हे तिसके आश्रय संवेदनाभास फुरता हे ॥ तिसिका नाम अविद्या हे सो दो रूप रखती हे ॥ एक उत्तम एक मलीन हे ॥ जो स्पंदकला अपणे अविद्या नाश निमित्त प्रवर्त्तती हे सो उत्तम हे विद्याभी तिसिका नाम हे ॥ सब दुःखकों नाश करती हे ॥ अरु जो संसारकी ओर फुरती हे सो अविद्या हे ॥ अर्थ इह जो आत्माकी उर फुरती हे सो विद्या हे ॥ अरु जो द्रश्यकी उर फुरती हे सो अविद्या हे सो दोनो स्पंदरूप हे ॥ तातें अविद्या करी अविद्याका नाश करो जेसें ब्रह्म अस्त्र करी ब्रह्मअस्त्र शांत करता हे ॥ जेसें मेलकों कलर मेल दूर करता हे ॥ जेसें विषकों विष नाश करता हे ॥ जेसें शत्रुकों शत्रु मारता हे तेसें अविद्या करी अविद्या नाश होती हे ॥ जो एसें हूवा तो तुम इसकों नाश करहु तब सुखदायक होवेगा ॥ विचारकरी इसका नाश होता हे तब जानी नही जाती जो कहां गई जेसें दीपक साथ अंधकार देखीए तो नही जानता जो कहां गया ॥ बडा आश्चर्य हे जो जीवका ज्ञान इसने आछाद लिया हे ॥ सदा अनुभव आत्मसत्ता उदयरूप हे सो जीवकों नही भासती ॥ जबलग अविद्या नही जानी तबलग फुरती हे ॥ जब जानी तब नही जानता जो कहां गई भममात्र सिद्ध हे ॥ बडा आश्चर्य हे जो मायानें संसारकों बांध्या हे ॥ सत्यकी नाईं प्राप्त भइ हे अरु असत्य हे ॥ बुधिवानकोंभी इसनें नाश करी छोडे हे तो इतर जीवकी क्या कहनी हे ॥ निरंतर अभेदरूप आत्मा हे तिसविषे अविद्याभेद कल्पना कोउ नही ॥ जिस पुरुषने संसार मायाकों ज्योंका त्यों जान्या हे सो पुरुषोत्तम हे ॥ जिसकों इह भावना हूइ हे जो अविद्या परमार्थ तें कछु नही असत्यरूप हे सो ज्ञानवान हे ॥ जो कछु जाननेजोग हे सो तिसने जान्या हे इसविषे संशय नही ॥ जबलग तूं स्वरूपविषे जाग्या नही तबलग मेरे वचनविषे आशक्त बुद्धि कर अरु बडेनिश्चयकों धार जो अविद्या नाशरूप हे अरु हे नही ॥ जेता कछु जगत दृश्य भासता हे सो मनका मन असतरूप हे ॥ जिसकों इह निश्चय हूवा सो पुरुष मोक्षभागी हे इह जो मनका फूरनारूप जगत द्रश्य भावकों प्राप्त हूवा हे सो सब ब्रह्मरूप हे ॥ जिसके अंतर इह निश्चय स्थित हे सो पुरुष मोक्ष भागी हे ॥ अरु जिसकों चराचर जगतविषे दृढ भावना हे सो बंधभागी हे ॥ जेसें पंछी जालविषे बंधायमान होता हे ॥ हे रामजी ! संपूर्ण जीव इस संसारकी सत्य दृष्टि करी बांधे हूवे हें ॥ सब जगत सुपन भांतिरूप हे ॥ तिसविषे जीसकों असत बुद्धि हे अथवा सत ब्रह्म बुद्धि हे ॥ सो आशक्त होकरी संसार दुःखविषे नही डूबता ॥ अरु जिसकों अनात्म धर्म देहादिकविषे भावना हे स्वरूपविषे आत्मबोध नही ॥ सो हर्ष शोक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपदाकों प्राप्त होता हे ॥ अरु जिसकों स्वरूपविषे स्वरूप बोध हे अरु अनात्म धर्मका त्याग हे ॥ तिसकों संसार अविद्या नही रहती दुःख विकार स्पर्श नही करी सकता जेसें जल विषे धूल नही उडती तेसें तिस महात्मा पुरुषके चित्तविषे दुःख उदय नही होते ॥ ज्ञानवान पुरुषके रिदेविषे जगतके शब्द अर्थका रंग नही चढता जेसें तंतु विनां पट नही होता पट तंतुही रूप हे ॥ तेसें आत्माविना जगत नही होता जगत आत्मारूप हे॥ अेसें जानकें जो व्यवहारविषे वर्तता हे सो पुरुष मानसी दुःखकों नही प्राप्त होता अरु जो अविद्या करी संसार विषे पडा भटकता हे सो आत्मतत्वकों पाए नही सकता ॥ विद्यमानभी तिसकों नही भासता ॥ सो आत्मज्ञान करी अविद्याका नाश होता हे ॥ जिसकों आत्मज्ञान हूवा सो अविद्यारूपी नदीकों तरी जाता हे ॥ आत्मसत्ताके प्राप्त हूवे अविद्या क्षीण हो जाती हे ॥ जिनकों अविद्यारूप संसारके पदार्थकी इछा उदय होती हे ॥ सो अविद्यारूपी नदी विषे वही जाते हे ॥ हे रामजी ! इह अविद्या बडे मोह भमकों देती हे ॥ दृढ हो करीस्थित हुइह॥ अरु तत्पदकों आछादि लीया हे ॥ तातें तुम इह न बिचारो जो अविद्या कहां तें उपजी हे ॥ अरु कोन इसका कारन हे ॥ इत्यादिक विचार भम मत करहू ॥ इही बिचारो जो इह नाश केसें होता हें ॥ इसके क्षयका उद्यम करो ॥ जब नष्ट होवेगी तब इसकी उत्पत्तिभी जांन लेवेगा जो इस प्रकार उपजी हे अरु इह स्वरूप इसका हे, अरु इह कारन, अरु इह कार्य हे ॥ हे रामजी ! अविद्या वस्तुतें कछु हे नही अविचार सिद्ध हे ॥ विचार दृष्टितें नष्ट हो जाती हे ॥ तब जानी नही जाती जो कहां गइ ॥ जब स्वरूप विस्मरण होता हे तब उपजी करी दृढ होती हे ॥ बहुरी दुःखकों देती हे ॥ तातें बलकरी इसका नाश करहू ॥ बडेबडे सूरमेभी हूवे हे ॥ तिनकों अविद्यानें व्याकुल कीया हे ॥ एसा बुद्धिवान कोउ नही ॥ जिसकों अविद्यानें व्याकुल नही कीया ॥अविद्या सर्व रोगका मूल हे जतन करीकें इसका औषध करहू ॥ जिसकरी जन्म दुःख कुहिड न प्राप्त होवे ॥ जेती कछु आपदा हे तिसकी यह अधिष्ठाता सखी हे ॥ अज्ञानरूपी दछकी वली हे अनर्थरूपी अर्थकी जननी हे ॥ एसि अविद्या रूपी मलीनताकों दूर करहू ॥ मोह भय आपदा दुःखकों देणेहारी हे ॥ रिदेविषे मोह उपजायकरी जीवकों व्याकुल करती हे ॥ अज्ञान चेष्टाकरी दृध होती हे जब अविद्यारूपी संसार समुद्रतें पार होवेगा तब शांति प्राप्त होवेगी ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे अविद्याकथनं नाम एकचत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ ४१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! अविद्यारूपी रोगकों काटिकरी शांतरूप स्थिति होते हें अरु विचाररूपी नेत्रतें देखतें हे इह नष्ट हो जाती हे सो इस विस्तृत व्याधिका औषध सुण जीव जातका विस्तार में तुझकों कहता हों ॥ सात्विक राजस आदिक मनकी वृति विचारणे अर्थ में प्रवर्ताया था सो अब सुण॥जो तत्व अमृत ब्रह्मस्वरूप हे॥सो सर्व व्यापी निरामय चैतन्य प्रकाश अनंत हे॥ आदि अंतते रहित निःभम चैतन प्रकाश तिसका वपु हे॥जब उह चैतन प्रकाश स्पंदरूप हो फूरता हे तब दीपकवत् तेज प्रकाश चैतनरूप चित्तकला जगतकों चेतने लगती हे तब जगत फूरता हे ॥ जेसें सोमजल समुद्रविषे द्रवताकरी तरंग फूरता हे ॥ सो जलतें इतर कछु नही ॥ तेसें सर्वात्मातें इतर कलाका रूप कछु नही ॥ इह स्पंदरूपभि अभेद हे ॥ जेसें आकाशविषे आकाश स्थित हे ॥ तेसें आत्माविषे चित्तशक्ति हे ॥ जेसें नदीविषे वायुके संयोगतें तरंग उठते हे॥ तेसें आत्माविषे चित्तकला सो द्रश्य जगत होता हे एसेंभी नही ॥ आत्मा अद्वैत हे ॥ स्वतः तिसविषे चित्तकला हो आती हे ॥ जेसें वायुविषे सुभाविक स्पंद होता हे ॥ स्पंदनिस्पंद दोनो वायुके रूप हे ॥ जब स्पंद होता हे तब भासता हे ॥ निस्पंद होता हे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब अलक्ष हो जाता हे ॥ तेसें चित्तकला फूरती हे तब लक्षमें आती हे निस्पंद हुइ अलक्ष होती हे शब्दकी गम नही होती ॥ निस्पंद करीकें जगत भावकों प्राप्त होती हे ॥ जेसें समुद्र विषे तरंग चक्र फुरते हे तेसें चैतनविषे चित्तकला फुरती हे ॥ जेसें आकाशविषे मुक्तमाल भासती हे सो हे नही तेसे आत्माविषे वस्तुतें हे नही स्पंद भावकरी कछु भूषित दूषित हो भासती हे ॥ आत्मातें भिन्न कछु नही परंतु भिन्नकी नांइं भासती हे ॥ जेसें प्रकाशकी लक्ष्मी कोटि रवि जेसी स्थित होती हे तेसें आत्माविषे चित्तशक्ति हे ॥ देशकाल क्रिया द्रव्यकों जेसें जेसें चेतती हे तेसें तेसें हो भासती हे ॥ आगें नाम संज्ञा होती हे अपनें स्वरूपकों विस्मरन करी दृश्य साथ तन्मय होती हे ॥ तोभी स्वरूपतें व्यतिरेक नही होती ॥ परंतु व्यतिरेककी नांइं भावना होती हे ॥ जेसें समुद्रतें तरंग भिन्न नही ॥ सुवर्णतें भूषण भिन्न नही तेसें आत्मातें चित्तशक्ति भिन्न नही ॥ परंतु अपणे अनंत सुभावकों विस्मरन करी देशकाल क्रिया द्रव्यके भेद मानती हे ॥ संकल्पके धारणे करी कलना भावकों प्राप्त होती हे ॥ विकल्प कलना करी चित्तशक्ति क्षेत्रज्ञरूप होती हे ॥ शरीरका नाम क्षेत्री होता हे ॥ शरीरकों अंतर्वाहिर जानने करी क्षेत्रज्ञ नाम होता हे ॥ सो क्षेत्रज्ञ चित्तकला अहंभावकी वासना करती हे ॥ तिस अहंकार करी आत्मातें इतर रूप धरती हे ॥ बहुरी अहंकारविषे निश्चय कलना होती हे तिसका नाम बुद्धि होती हे॥अहंभाव सों जब निश्चय संकल्प कलना होती हे तिसका नाम मन होता हे ॥ उही चित्तकला मन भावकों प्राप्त होती हे ॥ जब मनविषे घन विकल्प उठते हे तब शब्द स्पर्श रूप रस गंधकी भावना करी इंद्रियां फुरि आतीयां हे ॥ बहुरी हस्त पाद प्राण संयुक्त देह भासी आता हे ॥ इस प्रकार जगतविषे देहकों पाय करी जन्म मृत्युकों जीव प्राप्त होता हे ॥ वासनाविषे बांध्या हूवा दुःखके समूहकों पाता हे ॥ कर्मकरी चिंताविषे दीन रहता हे ॥ जेसें कर्म करता हे तेसे आकारकों धारता हे ॥ जेसें समयपायकें फल परिपक्वताकों प्राप्त होता हे तेसें स्वरूपके प्रमाद करी जीव दृश्य भावकों प्राप्त होता हे ॥ आपकों कारन कार्य मानकें अहंभावकों प्राप्त होता हे ॥ निश्चय वृत्ति करी बुद्धि भावकों प्राप्त होता हे संकल्प संयुक्त मनभावकों प्राप्त होता हे ॥ सो मन देह इंद्रियारूप हो करी स्थित होता हे ॥ अपना अनंतरूप भूलि जाता हे प्रछन्न भावकों ग्रहन करीकें प्रतियोग विवछेद भाव भासताहे ॥ तब इच्छा मोहादिक शक्तिकों प्राप्त होता हे ॥ जेसें मदकरी माते वेलकों गउ आनि मिलती हे ॥ तेसें सब आपदा दुःख इसकों आय प्राप्त होता हे ॥ जेसें समुद्रविषे नदीयां आय प्रवेश करतीयां हे ॥ इसी प्रकार अहंकार अपणी रचना करी आपही बंधमान होताहे ॥ जेसें घुराण अपणे स्थानकों रची करी आपही बंधमान होती हे ॥ बडा खेद हे जो आपही संकल्प करी दृश्यकों रचता हे ॥ बहुरी तिसि देहविषे आस्था करता हे तातें आपहीं दुःखी होताहे अंतरतें तपता रहता हे॥आपकों बंधायमानकरी संसार जंगल विषे अविद्यारूप आशाकों ले फिरता हे ॥ अपणे संकल्प कलना करी तन्मात्रा देह हूइ हे तिसविषे अहंप्रतिती होती हे ॥ जेसें जलविषे तरंग होते हे तेसें देहादिक उदय हुवे हे ॥ तिन साथ बांध्या हुवा दुःख पाता हे ॥ जेसें सिंघ संकर करी बांध्या जावे तेसें बांध्या हे ॥ एक स्वरूप हे सोइ फूरनेके वसतें नाना भावकों प्राप्त हुवा हे ॥ कहुं मन, कहुं बुद्धि, कहुं अहंकार, कहुं ज्ञान, कहुं क्रिया, कहुं पुर्यष्टक, कहुं प्रकृति, कहुं माया, कहुं कर्म, कहुं विद्या, कहुं अविद्या, कहुं इछा, कहाती हे ॥ हे रामजी! इसप्रकार जीव अपणे चित्त करी भ्रमको प्राप्त हुवा हे ॥ तृष्णारूपी शोक रोग करी दुःख पाता हे ॥ तुम जतन करीकें इसकों तरहु जरा मरन आदिक जो विकार हे अरु संसारकी भावना इसकों नष्ट करती हे ॥ यह भला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे यहन करीयें यह बुरा त्याग कर्नेजोग हे ॥ तिस करी ग्रस्या अविद्याके रंगसाथ रंजित भया हे ॥ इच्छा कर्नेसों इसका रूप सकुची गया हे ॥ कर्मरूपी अंकुरसों संसाररूपी वृछ ब
ढी गया हे ॥ अपणा वास्तव स्वरूप विस्मरण हुवा हे ॥ कलना करी आपकों मलीन जानता भया हे ॥ अविद्याके संयोग करी नरककों भोगता हे ॥ संसारभावनारूपी पर्वतके नीचे
दबिगया हे ॥ आत्मपदकी ओर उठणेंकों समर्थ नही होता ॥ संसाररूपी विषका वृछ जरा मरनरूपी शाखा करी बढिगया हे ॥ आशारूपी फांसी साथ बांधे हूवे जीव पडे भटकते हे
तिसकरी चिंतारूपी अग्निविषे जलते हे ॥ क्रोधरूपी सर्पनें जीवका चर्बन कीया हे ॥ अपनी वास्तवता इसकों विस्मरण होगइ हे ॥ जेसें हरण अपणे यूथ समूहतें भूला शोक करी
दुःखी होता हे ॥ जेसें पतंग दीपककी शिखामें जल मरता हे ॥ जेसें मूलतें काट्या कमलविरूप होता हे तेसें आशाकरी क्षुद्र हुवा मूर्ख बडा दुःख पाता हे॥ जेसें कोउ मूढ विषकों सुख
रूप जानकें भक्षण करे तब दुःख पाता हे ॥ तेसें इसकों भोगविषे मित्रबुद्धि हुइ हे ॥ परंतु इसके परम शत्रु हे इसकों उन्मत्त करीकें मूर्छा करते हे बडे दुःखकों देते हे ॥ जेसें बांधा हुवा पंछी पिंजरेविषे दुःख पावता हे ॥ तेसें इह दुःख पावता हे ॥ तातें इसकों काटहु ॥ इह जगत जाल असत हे गंधर्व नगरवत् शून्य हे ॥ इसकी इच्छा अनर्थका कारन हे ॥ इस
संसार समुद्रविषे मत डूबहु ॥ जेसें हस्ति कीचडसों अपने बलकरी निकसता हे तेसें अपना उद्धार करहु ॥ संसाररूपी गडेलेविषे मनरूपी बेल गिर्या हे तिसकरी अंग जीर्ण हो गये हे॥
अभ्यास अरु वैरागके बलकरी इसकों निकासहु अपना उद्धार करहु जिस पुरुषकों अपने मनपरभी दया नही उपजती जो संसार दुःखतें निकसे ॥ सो मनुष्यका आकार हे परंतु
राक्षस हे तातें तुम उद्धार करलेहु ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे जीवतत्व वर्णनं नाम द्विचत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ ४२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! इसप्रकार जीव परमात्मा तें फूरी करी संसारभावना करतें हे ॥ तिनकी संख्या कछु करी नही जाती॥ केइ पूर्व उपजे हें केइ अपूर्व उपजे हे अबल
ग उपजते हे ॥ जेसें फूरणेसों जलके कणके प्रगट होते हे ॥ तेसें ब्रह्मसत्तासों जीव फुरते हे ॥ अपनी वासना करी बांधेहुवे भटकते हे ॥ विवश हो करी नाना प्रकारकी दशाकों प्रा
प्त होते हे ॥ चिंताकरी दीन हो जाते हे ॥ दशोदिशा जल थलविषे पडे भमते हे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग उपजते अरु नष्ट होते हें तेसें जन्म अरु मरन पाते हें ॥ केइकों प्रथम जन्म हुवा हे केइकों सो जन्म हुवे हे ॥ केइके असंख्य जन्म हुवे हे ॥ केइ आगें होवेगे ॥ केइ होकरी मिटि गए हे ॥ केइ अनेक कल्प पर्यंत अज्ञान करी पडे भटकेंगे ॥ अब केइ जरा विषे
स्थित हे केइ जोवनविषे स्थित हे केइ मोहकरी नष्ट भएहे ॥ केइ अल्पवय हो करी स्थित हे केइ अनंत आनंदी हुवे हे केइ सूर्यवत् उदित रूप हे केइ किन्नर केइ विद्याधर हो
करी स्थित हे ॥ केइ सूर्य चंद्रमा इंद्र वरुण कुबेर रुद्र ब्रह्मा विष्णु हो करी स्थित भए हे ॥ केइ यक्ष वैताल सर्प आदिक हो करी स्थित भए हे ॥ केइ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र गण
कहाते हे ॥ केइ क्रांत चांडाल आदिक स्थित हे ॥ केइ तृण औषधी पत्र फुल मूलकों प्राप्त भए हे केइ लता गुछे पाषाण शिखर हूए हे केइ कदंब वृछ ताल तमाल हूवे हे केइ मंडले
श्वर चक्रवर्त्ती हूवे भमते हे ॥ केइ मुनीश्वर मौन पदविषे स्थित हे केइ कृमि कीट पीपिलका आदिकरूप हे ॥ केइ सिंघ मृग घोडे खचर गर्दभ बेल आदिक पशु स्थित हे ॥ केइ सारस
चक्रवाक कोकिला बगलादिक पंछी हो करी स्थित हे केइ कमल कली कुमुद सुगंधादिक स्थित हे केइ आपदा करी दुःखी हे ॥ केइ संपदावान हे ॥ केइ स्वर्ग केइ नरक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषेस्थित हे केइ नक्षत्र चक्र केइ आकाश वायु सूर्यकी किरणांविषे केइ चंद्रमाकी किरणाविषे स्थित हे रसलेते हे केइ जीवन्मुक्त हे केइ अज्ञानकरी पडे भमते हे ॥ केइ कल्याणभागी चिर पर्यंत भोगकों पडे भोगते हे ॥ केइ परमात्माविषे प्रणमी गए हे केइ अल्पकाल केइ शीघ्रही आत्मतत्वविषे लय भए हे ॥ केइ चिरकाल करी जीवन्मुक्त होवांहिगे ॥ केइ मूढ दुर्भावना करते हे अनात्माविषे भमते हे ॥ केइ मृतक होकरी इस जगतविषे जनमते हैं ॥ केइ ओर जगतविषे जाय स्थित होता हे ॥ केइ न इहां न उहां उपजते हे ॥ आत्म तत्वविषे लय होते हैं ॥ केइ मंदराचल सुमेरु आदि पर्वत होकरी स्थित होते हैं ॥ केइ क्षीरसमुद्र घृतसमुद्र इक्षुरस जल आदिक समुद्र हूवे हे ॥ केइ नदीयां तडाग वापिका आदि भये हे ॥ केइ स्त्रीयां केइ पुरुष केइ नपुंसक रूप हुवे हे ॥ केइ मुढ केइ प्रबुध केइ अत्यंत मूढ हुवे हे केइ ज्ञानी केइ अज्ञानी केइ विषयतप्त के इ समाधिविषे स्थित हे इसी प्रकार जीव अपनी वासना करी बांधे हूए भमते हे ॥ संसार भावना करी जगतविषे कबहुं अधको कबहुं उर्धकों जाते हे ॥ ॥ कामक्रोधादिक दुःख की पीडाकों पाते हे ॥ कर्म करी भमते हे ॥ आशारूपी फांसी साथ बांधे हूए हे ॥ अनेक देहकों उठाइ फिरते हैं ॥ जेसें भारवाही भारकों उठावते हे ॥ तेसें केइ मनुष्य शरीरतें बहुरी मनुष्य शरीरकों धारते हे बहुरी वृछतें वृछ होते हे केइ औरतें और शरीरकों धारते हे ॥ इसी प्रकार आत्मरूपकों भूलायकरी देहसाथ मिले हुवे वासनारूप कर्म करते हे ॥ ति नके अनुसार अध ऊर्ध पंथविषे भमते हे ॥ जिनकों आत्म बोध हूवा हे सो पुरुष कल्याणरूप हे ॥ और सब दुःखी मायारूप संसारविषे मोहित भएहें ॥ इह संसार रचना इंद्रजा लकी नांइ हे ॥ जबलग अपने आनंद स्वरूपकों नही पाया साक्षात्कार नही भया तबलग संसार भमविषे भमता हे ॥ अरु जिस पुरुषनें अपणे स्वरूपकों जान्या हे ओर जीव की नांइ त्याग नही किया ॥ वारंवार संसारके पदार्थतें रहित आत्माकी उर धावता हे सो समय पाय करी आत्मपदकों प्राप्त होवेगा ॥ बहुरी जन्म न पावेगा ॥ केइ जीव अनेक ज न्म भोगीके ज्ञान करी अथवा तप करी ब्रह्माके लोककों प्राप्त होत हे बहुरी परम पद पावते हे ॥ केइ सहस्र जन्म भोग भोगी करी बहुरी संसारविषे प्राप्त होते हे ॥ केइ बुद्धिवान विवेककोंभी प्राप्त होते हे बहुरी संसारविषे गिरते हे ॥ अर्थ इह जो मोक्ष ज्ञानकों पायकें बहुरी संसारी होत हे केइ इंद्रपद पायकरी तुछ बुद्धि सों बहुरी तिर्यक् पशु योनिकों पाते हे बहुरी मनुष्याकार धारते हैं ॥ केइ महा बुद्धिवान ब्रह्मपदतें उपजि करि तिसी जन्मविषे ब्रह्मपदकों प्राप्त होते हे ॥ केइ अनेक जन्म करी केइ थोडे जन्म करी प्राप्त होते हे ॥ के इ एक जन्म करी ओर ब्रह्मांडकों प्राप्त होते हे ॥ केइ इसीविषे देवतातैं पशु जन्म पावते हे केइ पशुतें देवता हो जाते हे केइ नाग हो जाते हे ॥ जेसी जेसी वासना होती हे तेसाही रूप हो जाता हे ॥ जेसें इह जगत विस्तारूप हे तेसें अनेक जगत हे केइ समानरूप हे केइ विलक्षण आकार हे केइ हूवे हे केइ होवांहिगे, विचित्ररूप सृष्टि उपजतियां हे ॥ अरु मिठतीयां हे ॥ केइ गंधर्व भाव, केइ यक्ष देवता आदिक भावकों प्राप्त भए हैं ॥ जेसें जीव इस जगतविषे व्यवहार करते हे तेसें ओर जगतविषे व्यवहार करते हे ॥ आकार विलक्ष ण हे ॥ अपणे सुभावके बस हुवे जन्ममरनकों पाते हे ॥ जेसें समुद्रतें तरंग उपजते मिटते हे तेसें सृष्टिकी प्रवृत्ति उत्पत्ति लय होता हे जब संवित स्पंद होते हे तब उपजते हैं जब निस्पंद होता हे तब लय होता हे जेसें दीपककां प्रकाश लय होता हे ॥ अरु जेसें सूर्यतें किर्णां निकसतीयां हे ॥ जेसें तपत लोहेतें चिणगारे निकसते हे जेसें अग्नितें चिणगारे निकसते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे जेसें कालतें ऋतु निकसतीयां हे, पुष्पतें सुगंध प्रगट होती हे, समुद्रतें तरंग उपजते हे, बहुरी लय होतेहे ॥ तेसें आत्मसत्तातें जीव उपजते हें बहुरी लय होते हैं जेते कछु जीव हे सो सवही समय करीकें आपने पदविषे लय होवेगे ॥ स्वरूपतें इनका उपजणाभी मिथ्याहे स्थिति बंधनभी मिथ्या हे ॥ नष्ट होना मिथ्या हे ॥ त्रिलोकीरूप महा मायाके मोह करी उपज ते समुद्रके तरंगकी नांइ नाश होते हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे जीवबीज संस्था वर्णनं नाम त्रिचत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥४३॥ ॥७॥ ॥७॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् ! जीव इस क्रम करी आत्म स्वरुपविषे स्थित हे बहुरी अस्थिमांस करी पूर्ण देह पिंजर इसकों केसें प्राप्त भया हे ?॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! में प्रथम तुझकों अनेक प्रकार कहा हे तूं अबलग जाग्रत नही भया ॥ पूर्वा परके विचार करनेहारी तेरी बुद्धि कहां गइ हे ? जेता कछु शरीरादिक स्थावर जंगम जगत दृष्टी आता हे ॥ सो सब आभास मात्र हे सुपनेकी नांइं उठ्या हे दीर्घ सुपन हे, मिथ्या भ्रम करी भासता हे ॥ जेसें आकाशविषे दूसरा चंद्रमा भ्रम मात्र होता हे ॥ जेसें भ्रमणे करी पर्वत भ्रमते भासते हे तेसें जगत अज्ञान करी भासता हे ॥ अरु जिन पुरुषकी अज्ञान निद्रा नष्ट भई अरु निश्चय करी संसार वासना गलित भइ हे सो प्रबुद्धचित्त हे ॥ संसारकों सुपनरूप देखते हे अरु स्वरूप भावकरी कछू देखते नही ॥ अपणेहि सुभावकरी संसार कल्पत हे॥इह जीव संसार मोक्षतें प्रथम सर्वदा सतरूप देखते हें तिनकि संसार भावना असत नही होती जगत आकार सर्वदा अपणे अंतर कलपते हे ॥ अरु जीवके अनेक आकार चपलरूप क्षणभंग होते हे ॥ जेसें जलविषे तरंग चंचलरूप होते हे ॥ जेसें बीजविषे अंकुर रहता हे तिसिके अंतर पत्र फुल फल होते हे तेसें कल्पनारूपी देह मनके फुरनेविषे रहती हे ॥ हे रामजी ! देह न होवे परंतु जहां मन फुरता हे तहांही देहकों रची लेता हे ॥ जेसें सुपनविषे मनोराज देहकों रचिलेता हे तेसें इह देह अरु जगतभी मनकरी रचा हूवा हे ॥ जेसें मृत्तिकाका पिंड चक्र उपर चडाया घटरूप हो जाता हे तेसें मनके फुरने करी देह बनता हे॥ सब देह मनके फुरनेविषे स्थित हे ॥ जेता कछु जगत भासता हे सो सब संकल्पमात्र हे ॥ जेसें मृगतृष्णाका जल असतरूप होता हे तेसें इह जगत असत्य हे ॥ जेसेंबालककों अपणे पछायेविषे वैताल भासता हे तेसें जीवकों अपणे फुरने करी देहादिक भासतें हे ॥ हे रामजी ! सृष्टिके आदिविषे जो शरीर उत्पन्न भए हे॥ सो आभासमात्र संकल्प करी उपजे हे ॥ प्रथम ब्रह्मा पद्मविषे स्थित भया तिसनें संकल्पके क्रम करी विस्तार किया हे ॥ जेसें संकल्प पुर स्थित होवे तेसें स्थित कीया हे सो सब मायामात्र हे ॥ मायाकी घनता करी इस जगत भासता हे स्वरूपतें कछु नही ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! आदि जीव जो मनरूप फुरनेंकों पाएकरी ब्रह्मपदकों प्राप्त भया हे सो ब्रह्मा जेसें हूवा हे अरु स्थित भया हे सो मुझकों क्रम करी कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे महाबाहू रामजी ! प्रथम ब्रह्म शरीरकों पाएकरी ग्रहण किया हे तिसके श्रवणकरी स्थितिभी जानेगा ॥ देश काल आदिकके प्रछेदतें रहित आत्मतत्व अपणे आपविषे स्थित हे सो अपणी लीला शक्ती करी देश काल क्रिया कल्पित रूप भया हे तिसकरी जीवके एते नाम हुवे हे ॥ वासना करी तद्रूप हुई चित्तकला चपलरूप मन हूवा हे सो दृश्य कलनाके सन्मुख हूई ॥ प्रथम उही चित्तकला मानसी शक्ति होकरी आकाशकी भावना करत भइ ॥ खल बीजरूप जो शब्द हे॥ तीसके सन्मुख मध्यविषे उदर धर्म हे ॥ जेसें नौतन बालक प्रगट होता हे तेसें आकाश पोलरूप फुरि आया ॥ बहुरी स्पर्श बीजके सन्मुख हूइ तब पवन फुरिआया ॥ जब शब्द स्पर्श आकाश पवनका संघर्षण भया तब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनके तन्मय होणेकरी अग्निउपजा बडा प्रकाश हूवा बहुरी रस तन्मात्राकी भावना करी तब शीतल भावनासों जल फुरी आया जेसें अति उष्णतातें स्वेद निकसी आता हे बहुरी गंध तन्मात्राकी भावना करी तिसकरी घ्राण इंद्रि निकसी आई ॥ स्थूलकी भावना करी जल चक्र पृथ्वी हो करी स्थित भये आकाशविषे बडा प्रकाश हूवा अहंकारकी कला करी युक्त अरु बुद्धिरूपी बीज करी समुचित रूप हूइ ॥ अष्टम जीवसत्ता हूई इन अष्टका नाम पुर्यष्टक भया ॥ सो देहरूपी कमलका भँवरा हूआ तिस आत्मसत्ताविषे तीव्र भावना करीकें उही चित्त सत्ता बडा स्थूल वपु देखत भई जेसें बीजतें वृछ फूल होणे करी रस प्रणमता हे तेसें निर्मल आकाशविषे वृत्ति स्पंद अस्पंद रूप हुई हे ॥ जेसें संचेविषे भूषण निमित्त स्वर्न आदि क धातु पाइता हे सो भूषणरूप हो जाती हे तेसें ब्रह्माजी अपनी चैतन संवेदन मनरूपी संवितविषे तीव्रभावना करी तिसकरी स्थूलताकों प्राप्त भये ॥ स्वतः इह फुरना दृश्यंका रूप क्रम करी हूआ ॥ जो ऊर्धशीस हे मध्य उदर हे अधःपाद हे चारौ दिशा हस्त हे ॥ मध्यविषे उदर धर्म हे जेसें नौतन बालक प्रगट होता हे ॥ महा उज्वल प्रकाश ज्वालाकी लाटावत् अंग होते हे ॥ तेसें ब्रह्माका शरीर उत्पन्न भया हे इस प्रकार वासना करी कल्पित मन करी शरीर उत्पन्न करी लीया हे ॥ आदि ब्रह्माका प्रकाशही शरीर भया ॥ सब बुद्धिकी समष्टि रूप उसकी बुद्धि अरु बल उत्साहकी समष्टि हे ॥ बहुरी केसा हे सदा ज्ञानरूप हे ॥ संपूर्ण ऐश्वर्य संपूर्ण शक्ति अरु तेज उदारता करी संपन्न स्थित हे ॥ इसप्रकार सब जीवका ब्र ह्माजी अधिपति नायक होत भया हे ॥ अरु द्रवत स्वर्नवत् कांति एसा शरीर परम आकाशतें उपजी करी आकाररूप स्थित भया हे ॥ अपनी लीलाके निमित्त अपणे निवास का गृह रचत भया हे ॥ हे रामजी ! कबहु ब्रह्माजी परम आकाशविषे रहता हे ॥ कबहु कल्पातर महा भास्कर अग्निविषे रहता हे कबहु स्वर्नकमल विष्णुजीके नाभीकमलविषे रहता हे ॥इसी भांति अनेक प्रकारके आसन रचकरी कबहुं कहां कबहूं कहां स्थित होता हे लीला करता हे॥जब परम तत्वसों प्रथम इस प्रकार फूरता हे तब अपने साथ शरीर देख ता हे ॥ जेसें बालक निद्रातें जागि करी अपने साथ शरीर देखता हे तेसें ब्रह्माजी अपने संग शरीर देखत भया केसा शरीर प्रानके प्रवाह संयुक्त प्रान अपान जाते आते हे ॥ तब पंचतत्व जो द्रव्य हे तिनकरी रचता भया ॥ बत्तीस दंत हे तीन थंभ हें अरु पंचदेवता शरीरविषे स्थित हे सो कोन हे ॥ ब्रह्मा विष्णु रूद्र इश्वर सदाशिव पंच भाग शरीरके हे नव द्वार हे दो जंघ स्थल दो पाद अरु दों भुजा विस अंगुल हे, हस्तपादके विस नख हे एक मुख दो नेत्र हे ॥ कबहु अपणी इछासों अनेक भुजा अनेक नेत्र करी लेता हे ॥ मांसकी कह गील करी हे एसा शरीर हुवा ॥ सो चित्तरूपी पंछीका आलणा हे ॥ कामदेव भोगणेका स्थान हे ॥ वासनारूपी पिशाचनीका ग्रह हे ॥ जीवरूपी सिंघकी कंदरा हे ॥ अभिमान रूपी हस्तिका वन हे ॥ इस प्रकार ब्रह्माजी शरीरकों देखत भया ॥वडा उत्तम कांतिवान शरीरकों देख करी ब्रह्माजी चितवत भया॥जो त्रिकाल दर्शी हे ॥ जो इसके आदि क्या हुवा अरु अब हमारे क्या करना हे अेसें परम आकाशविषे सदा निर्मल दर्शी देखत भया ॥ जो आगें भूतका सर्ग वितित भया हे ॥ वेद संयुक्त अेसें अनेक हुवे हे ॥ तिनके सब धर्म स्मर न करीकें देखत भया ॥ वाकमय भगवतिका स्मरन कीया ॥ वेदका स्मरण सर्व सृष्टिके धर्म गुण विकार उत्पत्ति स्थिति वढणा परिणाम क्षीण नाश होता॥सब धर्मकों स्मृति शक्ति करी देखत भया ॥जेसें जोगेश्वरने अपणा अनुभव कीया अरु अवरका कीया ॥ चित्तशक्तिविषे स्थित हो करी स्मृति शक्तिसों देखी लेता हे तेसें ब्रह्माजी अनुभव करत भया ॥ दिव्य नेत्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सों बहुरी इछा हुई जो लीला करी विचित्ररूप प्रजाकों उत्पन्न करों ॥ अेसें विचार करी उत्पत्ति करत भया ॥ जेसें गंधर्व नगर तत्काल हो जाता हे तेसें सृष्टि हो गइ हे ॥ तिसके धर्म अर्थ काम मोक्ष चार पदार्थ तिनके साधन रचे ॥ बहुरी तिनविषे विधिनिषेध रचे ॥ जो इह कर्तव्य हे इह अकर्तव्य हे ॥ तिनके अनुसार फलकी रचना करी ॥ शुभअशुभ विचित्रता रची ॥ हे रामजी ! इसप्रकार फुरने करी सृष्टि हुइ हे ॥ फुरनेकी दृढता करी स्थितिकों प्राप्त भइ हे ॥ तिसविषे नीति काल क्रिया द्रव्य कर्म धर्म रचे हे ॥ जेसें नीति करी हे तेसें स्थित हे ॥ जेसें वसंत ऋतु करी पुष्प उत्पन्न होतें हे तेसें ब्रह्माके मन करी सृष्टि रची हे ॥ विचित्ररूप रचनाका विलास चित्तरूप कमलजा ब्रह्माके चित्त करी कल्प्या हे ॥ सो कलना रूप हे ॥ कालविषे उत्पन्न हुइहे ॥ कालही करी स्थित हे ॥ स्वरूपतें न कछु उपजा हे ॥ न कछु नष्ट होता हे ॥ जेसें सुपनसृष्टि होती हे तेसें इह संसार रचना हे ॥ ॥इ तिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे संसारप्रतिपादनं नाम चतुश्चत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ ४४ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! इस प्रकार जो उपजा हे ॥ सो कछु नही उपजा न स्थित हे शून्य आकाशरूप हे ॥ मनके फुरनेकरी सृष्टि भासती हे॥ बडे देश काल क्रिया संयुक्त जो ब्रह्मांड दृष्टि आता हे ॥ सो परमार्थतें तिसनें कछुभी स्थान रोक्या नही सुपन पुरवत् संकल्प मात्र हे ॥ आधारविना चित्र हे ॥ जेसें मूर्तिका चित्र आधारविना मिथ्या होता हे ॥ तेसें इस जगत बडा भासता हे तोभी मिथ्या हे ॥ असत्य तम रूप हे आकाशविषे चित्रकी नांइ हे ॥ जेसें सुपनेविषे भासरूप जगत भासता हे तोभी असत्रूप हे तेसें इह शरीरादिक जगत मनके फुरनेकरी भासता हे ॥ मनका फुरनाही इसका कारन हे जेसें नेत्रका कारन प्रकाश हे तेसें जगतका कारन चित्त हे सब जगत आकाश मात्र हे ॥ घट पट टोयादिक क्रमसहित भासते हे तोभी असतरूप हे ॥ जेसें जलविषे चक्र आवर्त भासते हे सो असत्यरूप हे तेसे प्रथम पर्वत आदिक जगत असत्यरूप हे ॥ अपने निवासके निमित्त मननें इह शरीर रचा हे ॥ जेसें घुराण अपणे निवासके निमित्त गृह रचती हे ॥ अरु आपहि बंधनमें आती हे तेसें मन शरीरादिककों रचि करी आपही दुःखी होताहे ॥ एसा पदार्थ कोउ नही जो संकल्पतें रहित सिद्ध होवे ॥ अरु मनके जतन करी सिद्ध न होवे ॥ कठिन कूर पदार्थभी मन करी सिद्ध होता हे ॥ परमात्मा जो देव हे सो सब शक्तिमान हे मनभी तिसकी शक्ति हे ॥ उह कवन पदार्थ हे जो मनकरी सिद्ध न होवे सब कछू बन जाता हे काहेतें जो जेते कछु पदार्थ हे तिनविषे सत्ता परमात्माकी हे तिसतें इतर कछु नही ॥ तातें परमात्मा देवविषे सब कछु संभवता हे आदि चित्तकला ब्रह्मारूप हो करी उदय भइ हे ॥ तिस भावनाके अनुसार आपकों ब्रह्माका शरीर देखत भइ ॥ तिस कमलजा ब्रह्मानें कलनारूप जगत रचा हे ॥ देवता, दैत्य, मनुष्य, स्थावर, जंगमरूप जगत् संकल्पविषे स्थित हे ॥ जबलग उसका संकल्प हे तबलग तेसेंहि स्थित हे ॥ जब संकल्प मिटि जावेगा तब सृष्टिभी नष्ट हो जावेगी ॥ जेसें तेलतें रहित दीपक निर्वाण होजाता हे॥ तेसें जगतभी होजावेगा सो आकाशवत् सबही कलना मात्र हे ॥ दीर्घ सुपनवत् स्थित हे ॥ वस्तुतें न कोउ उपजा हे न मरता हे परमार्थतें तो अेसें हे अरु अज्ञानकरी सब पदार्थ विकार संयुक्त भासते हे ॥ न कोउ वृद्ध हे न नष्ट होता हे तिसी विषे ओर विकार केसें मानीयें ॥ जेसें पत्रकी रेखा होवे तिसके उपजणे अरु नाश होणेविषे बनकों कछु अधिकता उनता नही होती तेसें शरीरके उपजणे अरु नष्ट होणेविषे आत्माकों लाभ हानि कछु नही ॥ सब जगत दृश्य भांति करीकें भासता हे ॥ ज्ञान दृष्टिकरी देख अज्ञानीवत् क्यों मोहित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होता हे ॥ जेसें मृग तृष्णाका जल प्रत्यक्ष भासता हे सो मिथ्या भ्रम मात्र होता हे तेसें ब्रह्मातें आदि तृण पर्यंत सब भ्रांति मात्र हे॥जेसें आकाशविषे दूसरा चंद्रमा भासता हे तेसें मिथ्या ज्ञान करी जगत भासता हे ॥ जेसें नौकापर बैठेकों तटके वृक्षस्थान चलते दृष्टि आते हे तेसें भ्रम दृष्टि करी जगत भासता हे ॥ इस जगतकों तूं इंद्रजालवत् जान माया करी रचा जगत देह पिंजर हे ॥ मनके मनन करी असत्यरूपही सत्यकी नांइ स्थित भयाहे ॥ ओर जगत द्वैत कछु हुवा नही ॥ ब्रह्मसत्ता ज्योंकी त्यों स्थित हे ॥ ओर शरीरादिक केसें किसकी नांइ स्थित कहियें ॥ पर्वत तृण आदिक जो जगत आडंबर हे सो भ्रांति मात्र मनकी भावना करी दृढ हो भासता हे ॥ असत्यही सत्यरूप हो स्थित भया हे ॥ हे रामजी ! इहप्रपंच नाना प्रकारकी रचना संयुक्त भासता हे तोभी अंतरतें तुछ हे ॥ इसकी कामना तृष्णा त्याग करी सुखी होहु ॥ जेसें सुपनेविषे बडे आडंबर भासते हें सो भ्रांति मात्र असत्यरूप हे वास्तवतें कछु नही तेसें इह जगत् दीर्घ कालका सुपना हे चित्तकरी कल्पित हे देखणेविषे बडा विस्तार रूप भासता हे विचार करीकें ग्रहन करीए तो हाथ कछु नही आता हे ॥ जेसें सुपन सृष्टि जाग्रतविषे कछु नही पाइतो ॥ जेसें घुराणकों अपणा रचा ग्रहबंधन करता हे तेसें अपणा रचा जगत् मनकों दुःख देता हे तातें इसकों त्याग करहु जिस पुरुषनें इसकों अस त्य जान्या हे सो जगतकी भावना बहुरी नही करता ॥ जेसें मृग तृष्णाके जलकों जिसनें असत्य जान्या हे सो पानके निमित्त धावता नही जेसें अपणे मनकी कल्पी स्त्रीसों बुद्धि वान राग नही करता तेसें ज्ञानवान जगतके पदार्थविषे राग नही करता ॥ अरु जो अज्ञानी हे सो राग करी बंधायमान होते हे ॥ जेसें सुपनेविषे असत्य स्त्रीसों चेष्टा करते हे तेसें अ ज्ञानी असत्य जगतकों सत्य जानकें चेष्टा करते हे ॥ बुद्धिवान सत्य मानी करी नही करते ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प भासता हे तेसें मनके मोहकरी जगत् भासता हे अरु भयदायक होता हे सर्व जगत भावना मात्र हे ॥ जेसें जलविषे चंद्रमाका प्रतिबिंब चंचल भासता हे तिसके ग्रहनकी इच्छा बालक करता हे बुद्धिवान नही करता हे ॥ तेसें जगतके पदार्थकी इछा अज्ञानी करते हे ज्ञानवान नही करते ॥ हे रामजी ! इह में परम गुणका समूह तुझकों उपदेश किया हे ॥ तिसकी भावना करीकें तूं सुखी होवेगा ॥ अरु जो मूर्ख इन बचनकों त्यागकें दृश्यकी उर सुखरूप जानकें लगते हे सो पुरुष एसे हे जेसें कोउ सीत करी दुःखी होवे अरु प्रत्यक्ष अग्निकों त्याग करी जलविषे प्रतिबिंब अग्निका आश्रय करे तिसकरी सीत निवृत्त की या हे सो मूढ हे तेसें आत्मविचारकों त्यागकें जो जगत्के पदार्थकी सुखके निमित्त इछा करते हे सो मूढ हे ॥सब जगत असत्य रूप हे मनके मनन करी रचा हे ॥जेसें सुपनेविषे चित्तकरी नगर भासता हे अरु सुपनेविषेही नगर जलता भासे तो पुरुष कदाचित् नही जलता तेसें जगत्के नाश हुवे आत्मनाश नही होता ॥ उपजणे बढणे घटणे नाश होणे तें आत्मारहित हे॥ जेसें बालक अपणी क्रीडाके निमित्त हस्ति घोडा नगर रचि लेता हे अरु समेटी छोडता हे॥ तो उह उपजणे मिटणे विषे ज्योंका त्यों हे ॥ जेसें बाजीगर बाजीकों पसारता हे बहुरी लय करता हे सो उत्पत्ति लयविषे बाजीगर ज्योंका त्यों हे तेसें आत्मा जगतकी उत्पत्ति लयविषे ज्योंका त्यों हे तिसिका कछु कदाचित् नष्ट नही होता ॥ जो सब सत्य हे तो किसीका कछू नाश नही होता ॥ इस कारणतें जगतविषे हर्ष शोक करणा जोग नही अरु जो सब असत हे तोभी नाश किसीका न हुवा ॥ अरु दुःखभी किसीकों न हुवा सत्य असत्य दोनों प्रकारह र्ष शोक नही होता ॥ स्वरूपतें किसीका नाश नही सब जगत ब्रह्मरूप हे ॥ तो दुःख सुख कहा हे ॥ ब्रह्मसत्ता विषे कछु द्वैत जगत् बन्या नही ॥ सब जगत प्रत्यक्ष जो अनन्वय होता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे तोभी असत्यरूप हे तिस असत्यरूप संसारविषे ज्ञानवानकों ग्रहन करने जोग पदार्थ कोउ नही॥जो जगत सब भूतविषे ब्रह्मतत्व हे इतर कछु नही त्रिलोकीविषे तो इसी पदार्थके यह
ण त्यागकी इछा करीऐ ॥ जगत सत्यरूप होवे अथवा असत्य रूप होवे ॥ ज्ञानवानकों सुखदुःख कोउ नही ॥ तृतीय भांति दृष्टि अज्ञानीकों दुःखदायक होती हे ॥ जो वस्तु आदि अं
त विषे असत्य हे सो मध्यविषेभी असत्य जानीए ॥ तिसके पाछें जो शेष रहता हे सो सत्यरूप हे ॥ जिसकरी असत्यभी सिद्ध होता हे॥ जो मोहकरी आवृत बालबुद्धि हें सो जगतके
पदार्थकी इछा करते हे॥बुद्धवान् नहीकरते बालकंकों जगत विस्ताररूप भासता हे ॥ तिसकरी अपणा प्रयोजन वांछते हे॥बहुरी सुखदुःख भोगते हें ॥ तूं बालक मत होहु जगत अनित्य
हे ॥इसकी आस्था त्याग करी सत्यात्मा विषे स्थित होहु॥ अरु जो आप संयुक्त संपूर्ण जगत असतरूप जाणे तोभी विषाद कछु नही ॥ जो आप संयुक्त सब सत्य जाने तोभी इस दृष्टि
करी हर्ष शोक नही ॥ इह दोनों निश्चय सुखदायक हे आप संयुक्त सब असत्यरूप जाणेगा तो दुःख नही होता ॥ वाल्मीकोवाच ॥ जब इसप्रकार वसिष्ठजीनें कहा तब सूर्य अस्त
हुवा ॥ सब सभा नमस्कार करीकें अपणे स्थानकों गइ ॥ बहुरी सूर्यकी किरणां संग अपणे आसनपर आय बेठे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे यथार्थ उपदेश यो
गो नाम पंचचत्वारिंशतमः सर्गः ॥ ४५ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! जो धन स्त्री आदि नष्ट हो जावहि तो इंद्रजालकी बाजीवत् देखीयें इसकरीभी शोकका अवस
र नही होता क्षणविषे दृष्टि आये बहुरी नष्ट हो गये तिनका शोक करणा व्यर्थ हे ॥ गंधर्वनगर जो रत्नमणी करी भूषित कीया होवे अथवा दुःख करी दूषित कीया होवे हर्ष शोकका
स्थान कहां हे तेसें अविद्या करी रचे पुत्र स्त्री धनादिक हे तिसके सुखदुःखका क्रम कहा हे जो पुत्र धनादिक बढे तोभी हर्ष करणां व्यर्थ हे ॥ जेसें मृगतृष्णाका जल बढ्या तोभी अ
र्थ सिद्ध नही करता तेसें धन दारा आदिक बढे तो हर्ष कहा हे शोकवानही रहता हे उह कोन पुरुष हे जो मोह मायाके बढे हूवे शांतिवान होवे ! उह दुःखदायक हे ॥ जो मूढ हे
सो भोगकों देखकें हर्षवान होते हे अधिकतें अधिक चाहता हे ॥ अरु बुद्धिवानकों तिन भोगतें वैराग उपजता हे जिनकों आत्माका साक्षात्कार नही भया अरु भोगकों अंतवंत
नही जान्या तिनके भोगकी तृष्णा बढती हे ॥ अरु जो बुद्धिवान हे सो भोगकों आदितें अंतवंत जानते हे दुःखरूप जाणी करी तिसकी इछा नही करते ॥ तातें हे राघव ! ज्ञानवान
की नांइं व्यवहारविषे विचरो जो नष्ट होवे सो होवे॥जो प्राप्त होवे सो होवे तिनविषे हर्ष शोक न करहु ॥ तिसकों यथाशास्त्र हर्ष शोकतें रहित भोगहू ॥ अरु जो न प्राप्त होवे तिसकी
इछा न करहु ॥ इह पंडितका लक्षण हे ॥ हे रामजी ! इह संसार दुःखरूप भोग करी आया हे इसविषे मोहकों प्राप्त नही होणा ॥ तेसें ज्ञानवान विचरते हे तेसें विचरणा ॥ मूढवत नही
विचरणा ॥ इह संसार आडंबर अज्ञान करी रचा हे ॥ जो इसकों ज्योंका त्यों नही देखते सो कु बुद्धि नष्ट होते हें जिस जिस संसारके पदार्थकी इछा होती हे सो बंधनका कारन हे
तिनविषे डूबि जाता हे ॥ जो बुद्धिवान हे सो जगतके पदार्थविषे प्रीत नही करते ॥ जिस निश्चय करी जगतकों असत्यरूप जान्या हे सो किसी पदार्थविषे बंधमान नही होता ॥
अविद्यारूप पदार्थ तिसकों खेद नही देते वस्तु बुद्धि करी खेंची नही सकता ॥ जिसकी बुद्धिविषे इह निश्चय हुवा जो सर्व में हों ॥ एसें जानकें किसी पदार्थकी इछा नही करता ॥ हे
रामजी ! शुद्ध तत्व जो सत्यअसत्य जगतके मध्य भाव हे ॥ अंतरतें तिसका आश्रय करहु ॥ ओर जो अंतर बाहीर जगत दृश्य पदार्थ हे तिनकों मत ग्रहण करहु ॥ इनकी आस्था त्याग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करी परम पदकों प्राप्त होहु ॥ अतिविस्तृत स्वछरूप आत्माविषे स्थित होहु ॥ राग दोषतें रहित सब कारज करहु जेसें आकाश सब पदार्थमें व्यापक अरु निर्लेप हे ॥ तेसें सब कार्ज करत निर्लेप होहु ॥ राग दोषतें रहित होहु ॥ जिस पुरुषकों पदार्थ विषे न इछा हे न अनिछा ह कर्मविषे सुभाविक स्थित हे ॥ तिसकों कर्मका स्पर्श नही होता ॥ कमलवत् सदा निर्लेप रहता हे ॥ देखणा सुणना आदिक इंद्रियां करी व्यवहार होता हे ॥ तातें तुम इंद्रियांकरी व्यवहार करहु अथवा न करहु ॥ परंतु इन विषे निरिछित रहो ॥ अभिमानतें रहित होकरी आत्मतत्वविषे स्थित होहु ॥ इह में हों इह मेरा हे इस मिथ्या कल्पनातें रहित सुखी होहु ॥ इंद्रियके अर्थका सार जो अहंकार हे जब इह रिदेविषे न फुरेगा तब तुम जोग पदकों प्राप्त होहूगे ॥ राग दोषतें रहित संसार समुद्रकों तरी जाहुगे जब इंद्रियांके राग दोषतें रहित हुअे तब मुक्तिकी इछा न करे तोभी मुक्तिरूप हे॥ हे रामजी ! इस देहतें आपकों व्यतिरेक जानी करी जो उत्तम आत्म पद हे तिसविषे स्थित होहु तब तुमारा परम यश होवेगा ॥ जेसें पुष्प सुगंध प्रगट होती हे॥इह संसाररूपी समुद्र हे तिसविषे वासनारूपी जल हे तिसविषे जो आत्मवेत्ता बुद्धिरूपी बेडेपर चडते हे सो तरी जाते हें अरु जो नही चडते सो डूबि जाते हे॥ इह बोध में तुझकों क्षुरधारकी नांइ तिक्षण कहाहे सो अविद्याके काटणे हारा हे जिसकों विचार करी आत्म तत्वविषे स्थित होहु जेसें तत्ववेत्ता आत्म तत्वकों जानि करी व्यवहारविषे विचरते हें तेसें तुमभी विचरो ॥ अज्ञानीकी नांइ नही विचरणा ॥ जेसें जीवन्मुक्त पुरुषनें नित्य तृप्तका आचार हे तिसकों अंगीकार करना भोगविषे दीन नही होना मूढके आचारवत् आचार अंगीकार न करणा ॥ जो परावर परमात्मवेत्ता पुरुष हे सो न कछु ग्रहण करते हे न त्याग करते हें ॥ न कीसीकी वांछा करते हे ॥ जेसा व्यवहार प्रारब्ध बेग करी प्राप्त होता हे ॥ तिसी विषे विचरते हें ॥ राग दोष कीसीविषे नही करते ॥ बडा ऐश्वर्य होवे बडे गुण होवे लक्ष्मीआदिक बडी विभूति होवे तोभी ज्ञानवान अज्ञानीवत् अभिमान नही करते ॥ अरु महा शून्य वनविषे खेदवान नही होते ॥ देवताका सुंदर वन विद्यमान होवे ॥ तिसकरी हर्षवान न होवे न कीसी इछा हे न त्याग हे॥ जेसी अवस्था आनि प्राप्त होवे राग दोषतें रहित तिसी विषे विचरतें हे ॥ जेसें सूर्य सम भावसों लीन विचरता हे तेसें अभिमानतें रहित देहरूपी पृथ्वीविषे विचरते हे ॥ अब तूंभी विवेककों प्राप्त होहु ॥ बोधके बलकरी इसविषे स्थित होहु ॥ ओर किसी पदार्थकी उर दृष्टि नही करणी निर्वैर निर्मन दृष्टिकों ले बिचरणा ॥ समभावविषे सम उत्तम भाव पृथ्वीमें स्थित होणा ॥ संसारकी इछा दूरतें त्याग करी यथा व्यवहार विषे विचरणा परम शांतरूप रहणा ॥ वाल्मीकोवाच ॥ ॥जब इस प्रकार निर्मल वाणी करी वसिष्ठजीने कहा तब निर्मल चित्त रामजीका रिदा अमृत करी सीतल अरु पूरन भया ॥ जेसें पूरनमासीका चंद्रमा अमृत करी सीतल पूरन होता हे तेसें रामजी शांति करी पूरन भया ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थिति प्रकरणे यथाभूतार्थ बोधयोगो नाम षट्चत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ ४६ ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् ! सर्व धर्म वेदवेदांतके पारज्ञ तुमारे शुद्ध वचन करी में स्वस्थभया हों केसें तुमारे वचन हे उदार विरक्तरूप हे कोमल अरु उचित हे तिन तुमारे वचनरूपी अमृतकों पान करी में तृप्ति नही होती ॥ हे भगवन् तुम राजस सात्विक जगत कहणे लगे थे सो कछु संक्षेप तें कहाथा तिनविषे अवकाशकों पाएकरी तुमनें ब्रह्माजीकी उत्पत्ति कही ॥ तिसकरी मुझकों इह संदेह उत्पन्न भया सो रिदेविषे विस्तारकों पावत भया हे जो कहुं ब्रह्माकी उत्पत्ति कमलतें कही हे कहूं आकाशतें, कहूं अंडतें, कहूं जलतें, कही हे ॥ सो विचित्ररूप शास्त्र करी केसें कहा हे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम सब संशयके नाश कर्ता हो ॥ कृपा करी शिघ्र मुझकों उत्तर कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! केइ लक्ष ब्रह्मा हुवे हे॥केइ अनेक विष्णु रुद्र होते हैं अबभी अनेक ब्रह्मांडविषे अनेक प्रकारके व्यवहार संयुक्त होते हे केइ तुल्य होतेहैं केइ बडे छोटे कालके होते हैं ॥ सुपन जगतकी नांइ उत्पन्न होते हे॥केइ बीते हैं केइ आगें होवेंगे तिनविषे तुझनें इक ब्रह्माकी उत्पत्ति पूछी हे सो सुन ॥ अरु इहभी अनेक प्रकारके होते हैं कबहु सृष्टि सदाशिवतें उत्पन्न होती हे ॥ कबहुं ब्रह्मातें, कबहुं विष्णुतें, कबहुं मुनीश्वर रची लेते हे कबहुं ब्रह्मा कमलतें उपजता हे ॥ कबहुं जलतें कबहुं पवनतें कबहुं अंडतें उपजा हे ॥ कबहुं किसी ब्रह्मांडविषे इंद्र त्रिनेत्र होता हे ॥ कबहुं पुंडरीकाक्ष विष्णु होता हे ॥ कबहुं सदाशिव होता हे कबहुं सृष्टिविषे पर्वत उपजते हे तिनकरी पृथ्वी निरंध्र हुइ रही हे कबहु मनुष करी पूर्ण कबहु वृछ करी पूर्ण होती हे ॥ अनेक प्रकार सृष्टिकी उत्पत्ति होती हे ॥ किसी ब्रह्मांडविषे मृत्युका भय होता हे कबहु पाषाणमय होती हे कबहु मांसमय होती हे कबहु स्वर्नमय होती हे इस प्रकार पृथ्वी होती हे केइ सृष्टिएसीयां हे चतुर्दश लोक हे॥किसी सृष्टिविषे केइ लोक भये हे॥किसी सृष्टिविषे ब्रह्मा नही हुवा ॥ इसी प्रकार अनेक सृष्टि चिदाकाश ब्रह्मतत्वतें फूरिहे बहुरी लय भइयां हे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग उपजी करी लय होता हे तेसें आत्माविषे अनेक सृष्टि उपजी करी लय हो जातीयां हे ॥ जेसें मरुथलविषे मृग तृष्णाकी नदी भासती हे जेसें पुष्पविषे सुगंध होती हे तेसें परमात्माविषे जगत् हे ॥ जेसें सूर्यकी किरणांविषे त्रिसरेणु भासते हे ॥ तिसकी संख्या कही नही जाती ॥ कोउ ऐसा समर्थभी होवे जो तिनकी संख्या करे ॥ परंतु ब्रह्मतत्वविषे जो सृष्टि फुरतीयां हे तिनकी संख्या करनेकों समर्थ न होवेगा ॥जेसें वर्षाऋतुविषे गनियेके क्षेत्रविषे मछर होते अरु नष्ट हो जाते हे ॥ तेसें आत्मा विषे सृष्टि उपजी करी नष्ट हो जाती हे ॥ उह काल जान्या नही जाता जिस कालविषे सृष्टिका उपजणा हुवा हे ॥ आत्मतत्वविषे नित्यहि सृष्टिका उपजणा लय होणा हे सो अंत कछु नही जेसें समुद्रतें तरंग फुरते हैं उनतें पूर्व ओर बहुरी उनतें पूर्व ओर ॥ इसिप्रकार आदि अ रु अंत कछु जान्या नही जाता ॥ जेसें आत्माविषे सृष्टिका आदि अंत कछु नही ॥ देवता दैत्य मनुष आदिक केइ उपजी करी लय भये हे ॥ केइ आगें होवेंगे ॥ जेसें इह ब्रह्मांड ब्र ह्माकरी रचा हे तेसें अनेक ब्रह्मांड होगये हैं जेसें अनेक घटिका एक वर्षविषे वितीत होतीयां हे तेसें बीते हे जेसें समुद्रविषे तरंग होते हे तेसें ब्रह्मतत्वविषे असंख्य जगत् होते हे केइ सृष्टि हो बीतीयां हे ॥ केइ अब होतीयां केइ आगे होवेंगीयां जेसें मृत्तिकाविषे घट होता हे ॥ जेसें वृछविषे अनेक पत्र होते हे बहुरो मिटि जाते हैं ॥ जेसें जबलग समुद्र हे तिसविषे जल हे तबलग उरमी तरंग आवर्त निवृत्त नही होते ॥ केइ उपजते हे केइ लय होते हे तेसें ब्रह्मचिदाकाश हे ॥ तबलग त्रिलोकी जगत उपजी उपजी करी लय होते हे जबलग अप णे स्वरूपका प्रमाद हे ॥ तबलग विकार संयुक्त जगत फुरते हैं ॥ बडे विस्तार संयुक्त भासता हे ॥ जब आत्मस्वरूप दृष्टि करी देखेगा तब कोउ विकार न भासेगा ॥ जबलग आत्म दृ ष्टि करी नही देख्या ॥ तबलग आभास गतिविषे उपजते अरु मिटते हे न सत्य कहे जाते हे न असत्य कहाते हे ॥ वास्तव तें ब्रह्म अरु जगत्विषे कछु भेद नही ॥ समुद्रविषे तरंगकी नांइ अभेद हे ॥ भिन्न हो करी जो भासते हैं सो अविद्या करी भासते हे विचार किये तें निवृत्त हो जाते हैं ॥ चरअचररूप जगत् नाना प्रकारकी चेष्टा संयुक्त अनंत सर्वेश्वर आत्माविषे फुरते हे सो भिन्न नही ॥ जेसें शाखा फूल फल वृछतें भिन्न नही भिन्न भासते हे तोभी अभिन्न हे ॥ तेसें आत्मातें जगत भिन्न भासते हैं तोभी भिन्न नही आत्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूप हे ॥ हे रामजी ! मैं जो तुझकों सृष्टि चतुर्दश भुवन संयुक्त कहा हे ॥ कोउ अल्प कनिष्टरूप हे ॥ कोउ बडे हे सो सब परमात्मा आकाश विषे उपजते हे अरु उही रूप हे ॥ कबहु ब्रह्म तत्वसों प्रथम ब्रह्मआकाश उपजता हे सो उपजीकरी प्रतिष्ठाकों पाता हे तिसतें ब्रह्मा उपजता हे ॥ तब तिसका नाम आकाशज होता हे ॥ कबहुं प्रथम पवन उपजता हे ॥ प्रतिष्ठित होता हे तिसतें ब्रह्मा उपजता हे सो वायुजा नाम हुवा ॥ प्रजापति करी कबहु होता हे ॥ कबहुं प्रथम जल उत्पन्न होता हे जलस्थित भया तिसते ब्रह्मा उपजी करी जलजा नाम होता हे ॥ कबहु प्रथम पृथ्वी उत्पन्न भइ हे सो विस्तार भावकों प्राप्त भइ हे तिसतें ब्रह्मा उपजा हे तब पार्थिवजा नाम हुवा हे ॥ अग्नितेंउपजा तब अग्निजा नाम पाया हे ॥ हे रामजी , यह पंचभूततें ब्रह्माकी उत्पत्ति भइ तुमकों कही ॥ जब चार तत्वपूर्ण होते हें पंचमतत्व सबतें बढता हे ॥ तब तिसतें प्रजापति उपजी करी अपणे जगतकों रचता हे ॥ कबहु ब्रह्मतत्वतें आपहि फुरी आता हे ॥ जेसें पुष्पतें सुगंध फुरी आती हे तेसें ब्रह्माजी उपजी करी पुरुष भावनातें पुरुष रूप स्थित होता हे ॥ तिसका नाम स्वयंभू होता हे ॥ कबहु पुरुष जो विष्णुदेव हे तिसकी पीठ सों उपजी आता हें ॥ कबहु नेत्रतें प्रगट होता हे ॥ कबहु नाभितें उत्पन्न होता हे तब प्रजापती, नेत्रजा, पद्मजा, होता हे ॥ वास्तवतें सब मायाभात्र हे ॥ सुपनवत् मिथ्यारूपही सत्य हो भासता हे ॥ जेसें मनोराज सृष्टि भासी आति हे ॥ तेसें इह जगत हे जेसें नदीविषे तरंग अभिन्नरूप फुरते हें तेसें आत्मासों अभेद जगत फुरता हे ॥ वास्तवतें कछु हे नही ॥ जब शुद्ध सत्ताका आभास संवेदन फुरता हे तब उही जगतरूप हो भासती हे ॥ जेसें बालकके मनोराजविषे सृष्टि फुरती हे सो वास्तव कछु नही तेसें इह हे ॥ कबहुं शुद्ध आकाशविषे मननकला फूरती हे तिसतें स्वर्नका अंड उपजता हे ॥ अंडते ब्रह्मा उपजी आता हे ॥ कबहुं पुरुष विष्णु देव जलविषे वीर्य डारता हे ॥ तिसतें पद्म उपजता हे ॥ तिसी पद्मसों ब्रह्मा प्रगट होता हे कबहुं सूर्यसों फूरी आता हे ॥ इसी प्रकार विचित्ररूप रचना ब्रह्मपदतें उपजती हे ॥ बहुरी लय हो जाती हे तेरे देखावणेके निमित्त में अनेक प्रकारको उत्पत्ति कही हे सो सब मनके फुरणे मात्र हे अवर हुवा कछु नही ॥ हे रामजी ! तेरे प्रबोधके निमित्त मैं सृष्टिका क्रम कहा हे ॥ अरु इनहुका रूप हे सो मनो मात्र हे ॥ उपजी उपज करी लय हो जाती हे ॥ बहुरी दुःख बहुरी सुख, बहुरी अज्ञान, बहुरी ज्ञान, बहुरी बंध, बहुरी मोक्ष होते हे ॥ कबहुं मित्र, कबहुं शत्रु, होते हे बहुरी मिटिजाते हें ॥ जेसें दीपकका प्रकाश उपजी करी नष्ट हो जाता हे तेसें देह उपजीकरी नष्ट हो जाते हें ॥ कालकी उनता अरु विशेषता यही हें जो कोउ चिरकाल पर्यंत रहता हे कोउ शीघ्रही नष्ट हो जाता हे ॥ परंतु सबही विनाशरूप हे ॥ ब्रह्मातें आदि किट पर्यंत जेते कछु आकार भासता हे सो कालके भेदकों त्याग करी देख जो सब नाशरूप हे ॥ कबहु सतयुग, कबहु त्रेतायुग, कबहु द्वापार, कबहु कलियुग आता हे ॥ बहुरी बहुरी उही आते हे अरु जाते हे ॥ इसी प्रकार कालकाचक्र पंडा भ्रमता हे बहुरी मन्वंतरका आरंभ होता हे॥कालकी परंपरा व्यतित होती हे॥जेसें प्रातःकाल विषे बहुरी प्रातःकाल आता हे तेसें जगतकी उहीउही गती हे बहुरी अंधकार बहुरी प्रकाश होता हे॥ब्रह्मतत्व तें स्फुरणरूप होकरी बहुरी लीन होता हे॥जेसें तपत लोहेतें चिणगारे उडते हें सो लोहविषे होते हें तेसें इह सब भाव चिदाकाशतें उपजते हे सो चिदाकाशविषे स्थित हे॥कबहु अव्यक्त रूप होतेहे कबहु प्रगट होते हें॥जेसें समुद्रविषे तरंग अरु दलविषे पत्र होते हे॥ तेसें आत्माविषे जगत हे॥ जेसें नेत्र दुषण करी आकाशविषे दो चंद्रमा भासते हे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेसें चित्तके फुरनेकरी आत्माविषे जगत भासते हे॥ तिसीविषे स्थित अरु लय होते हे ॥ जेसें चंद्रमाकी किरणा उत्पन्न स्थिति हो करी लय होतीयां हे तेसें आत्माविषे जगत हे सो स्वरूपतें कहूं आरंभ नहीं हूवा ॥ मनके फुरने करी भासते हे ॥ हे रामजी! आत्मा सर्व शक्ति हे जो शक्ति तिसतें फुरती हे सो तिसीका रूप हो भासता हे जगत् सब असत्य रूप हे जिसके चित्तविषे महाप्रलयकी नांइं असत्यका निश्चय हे सो पुरुष बहुरी संसारी नही होता स्वरूपविषे जुड्या रहता हे ॥ अेसें महामतो ज्ञानवानकी दृष्टिविषे सर्व ब्रह्मका निश्चय होता हे॥ हमकों इही निश्चय हे जो संसार नही सर्व ब्रह्म तत्वही हे सदा विद्यमान हे ॥ अरु अज्ञानीकी दृष्टिविषे जगत् निरंतर सत्यरूप हे संसार उसकों विद्यमान हे सो बहुरी बहुरी उपजकरी नष्ट होता हे॥ स्वरूपतें उपजणें बिनसणे करीभी नष्ट नही होता ॥ परंतु अज्ञानी जगत्कों असत्य नही जानते सदा स्थित जानते हे ॥ तिसकरी सब नष्ट होते हे सब पदार्थ जगत्के विनाश रूप हे ॥ परंतु द्रश्यकरी जगत् असत्य नही भासता ॥ जो पदार्थकी सत्यता दृढ हो गइ हे सो नाशरूप हे रहणा कीसी नही ॥ कोउ पदार्थ सत्य भासता हे कोउ असत्य भासता हे ॥ एसा कोन पदार्थ हे इस जगत्विषे जो कलनारूप करने करी विस्तारूप ब्रह्मविषे न बणे ॥ इह जगत् महाप्रलयविषे नष्ट हो जाता हे बहुरी उत्पन्न हो आता हे ॥ बहुरी जन्म अरु मरना होता हे ॥ सुखदुःखदिशा आकाश मेघ पृथ्वी पर्वत सब बहुरी बहुरी उपजी आते हे ॥ जेसें सूर्यकी प्रभा उदय अस्तकों प्राप्त होती रहती हे तेसें सृष्टि उदय अस्त होती भासतीयां हे ॥ बहुरी देवता बहुरी दैत्य लोकांतर क्रम होते हे ॥ स्वर्ग, मोक्ष, इंद्र, चंद्रमा, नारायण, देव, पर्वत, सूर्य, वरुण, अग्नि, आदिक लोकपाल बहुरी बहुरी हो आते हे ॥ सुमेर आदिक स्थान फुरी आते हे तमरूप जो हस्ति हे तिनके भेदणेकों सूर्यरूप केसरी सिंह उपजी आते हे ॥ स्वर्ग इंद्र अप्सरागण अमृत करी आते हें ॥ धर्म अर्थ काम मोक्ष क्रिया कर्म शुभ अशुभ रूप हो आते हे ॥ यज्ञ दान होम आदिक सर्व क्रिया करी संयुक्त जीव संसारी होते हे शुभ कर्म करनेहारे स्वर्गविषे विचरते हें सुख भोगते हे ॥ पुन्यके क्षीण हूवे गिराय देते हे मृत्युलोकविषे आते हे इस प्रकार कर्म करते हे उपजते अरु नष्ट होतेहें ॥ स्वर्ग रूपी कमल हे तिसविषे इंद्र रूपी भँवराहे तिस स्वर्गकी सुगंध लेकरी उह इंद्र चलता रहता हे ॥ अवर इंद्ररूपी भँवरा स्वर्ग कमलकी सुगंधकों लेणे आते हे जेता पुन्य कर्म क्रिया होता हे तेता काल सुख भोगी करी नष्ट हो जाता हे अरु सत्ययुग आदिक युग आते हें सर्व देश काल क्रिया द्रव्य जीव उपजी आते हे जेसें कुलाल चक्र करीकें वासण बणता हे तेसें चितकला फुरनेकरी जगत्के अनेक पदार्थ उत्पन्न करती हे सुंदर स्थान जीव संयुक्त होते हे बहुरी नष्ट हो जाते हे असत्य मात्र जगत्जाल जीविततें रहित शून्य मसाण हो जाते हे कुलाचल पर्वतके आकारवत् जल मेघ वर्षा करते हे तिसविषे जीव बुद्बुदेरूप होकरी स्थित होते हे द्वादश सूर्याग्नि उदय होते हे शेष नागके मुखतें अग्नि निकसता हे तिसकरी सब जगत् दग्ध होता हे बहुरी अग्निकी ज्वाला शांत हो जाती हे एक शून्य आकाश ही शेष रहता हे ॥ रात्र हो जाती हे जब रात्रका भोग चूकता हे बहुरी जीव जीर्ण देहकरी संयुक्त मनरूप ब्रह्मा रचि लेता हे ॥ इस प्रकार शून्य आकाशविषे मन जगत्कों रचता हे जेसें शून्य स्थानविषे गंधर्व मायाकरी नगर रचि लेता हे तेसें जगत्कों मन रचि लेता हे ॥ बहुरी प्रलय हो जाता हे ॥ इस प्रकार जगत् गण उपजीकरी महाप्रलयविषे नष्ट होते हे ब्रह्माके दिन क्षय हूवे फेर जब ब्रह्माका दिन होता हे तब बहुरी रचि लेता हे ॥ बहुरी महाप्रलयविषे ब्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ह्मादिक सब अंतरर्ध्यान हो जाते हे ॥ इस प्रकार प्रलय महाप्रलय अनेक जगत् गण वितीत होय हे ॥ महादीर्घमायारूपी कालचक्र पडा फिरता हे तिसविषे में तुझकों सत्य क्या कहों असत्य क्या कहो सर्व भांतिरूप दासुरके आख्यानवत् जगत् हे कल्पना मात्र रचित चक्र हे वस्तुतें शून्य आकाश रूप हे बडे आरंभ संयुक्त विस्तारूप भासता हे तोभी असत्यरूप हे ॥ जेसें भ्रम करी दूसरा चंद्रमा भासता हे तेसें इह जगत मूढके रिदेविषे सत्य भासता हे ॥ तुम मूढ होना नही ॥ ज्ञानवानवत् विचार करी जगत्कों असत्य जानना ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थिति प्रकरणे जगत सत्यासत्य निर्णयो नाम सप्तचत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ ४७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! भोग अरु ऐश्वर्य करीकें खेंचा हे चित्त जो सो नाना प्रकार क्रीयाके आरंभ करते हे राजसतमस सात्विक कर्म करते हैं ॥ उह मूढ आत्मा शांतिकों नही प्राप्त होता ॥ जब भोगकी तृष्णातें रहित होवे तब आत्माकों देखही ॥ जिन पुरुषकों इंद्रियां गणं वश नही करी सकते ॥ सो आत्माकों प्रत्यक्ष हस्तविषे बिलि फलवत् देखते हे ॥ जिस पुरुषनें विचार करीकें अहंकाररूपी मलीन शरीर का त्याग कीया हे तिनका शरीर जगत्रूप हो जाता हे ॥ जेसें सर्प कंचुकीकों त्यागताहे अरु नौतन पाता हे तेसें मिथ्या शरीरकों त्याग करी आत्मविचारतें आत्मशरीरकों पाता हे ॥ अेसें जो निरहंकार आत्मदर्शी पुरुष हे सो जगत्के पदार्थविषे आशक्त भासते हे तोभी जन्म मरनकों नही पाते जेसें अग्निकरी भूना बीज क्षेत्रमें नही उपजता ॥ तेसें ज्ञानवान बहुरी जन्म नही पाता अरु जो अज्ञानी भोगविषे आशक्त बुद्धि हे सो मन अरु शरीरके दुःख करी दुःखी होते हे वारंवार जन्म अरु मरनकों पाते हे जेसें दिन होता हे बहुरी रात्र होती हे तेसें उह जन्ममरन पाते हे ॥ तातें तुम अज्ञानीकी नांइं नही होणा व्यवहार चेष्टा जेसें अज्ञानीकी होती हे तेसें करहू परंतु अंतरतें भोगादिककी ओर चित्तकों न देहु आत्म परायण रखहु ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् तुम जो कहा संसार चक्र दासुरके आख्यानवत् हे ॥ कल्पना करीकें रचित हे तिसका आकार वस्तुतें शून्य हे यह तुमनें क्या कहा इसकों प्रगट करी कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! जगत् मायारूप वर्णनके निमित्त में तुमकों कहा हे अरु दासुरके प्रसंग साथ प्रयोजन कछु नथा परंतु तेंनें पुछा हे तो अब सुण ॥ हे रामजी ! इस सृष्टिविषे मगध नाम देश हे सो विचित्र वृक्ष फल करी पूर्ण हे बडा कदंब वनस्पति ताल करिकें जंगल विचित्ररूप पंखी सहित हे मनके सोहणेहारा चतुर उरतें निरंध्र कमल पुष्प संयुक्त तडाग बगीचे अति सुंदर देश हे तहां एक पर्वतके तटके उपर निरंध्ररूप केलका खंड हे ॥ अरु ओर अनेक वृक्ष जो फूल फल करी पूर्ण जीवके जीवनरूप हे कोकिला आदिक पंछी शब्द करते हे तहां नगरविषे एक परम धर्मात्मा तपसी होत भया दासुर तीसका नाम था महा तपकरी संयुक्त कदंब वृक्षपर बेठी करी वीत राग महा बुद्धिवान तप करताथा ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन ऋषीश्वर तपसी वनविषे किस निमित्त आयाथा ॥ अरु कदंब वृछपर किस निमित्त बेठा सो कारन कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी सरलोमा नाम ऋषीश्वर तिसका पिता होत भया हे मानों दूसरा ब्रह्माथा सो तिस पर्वतपर रहता था ॥ तिसके गृहविषे दासुर नाम पुत्र होत भया ॥ जेसें बृहस्पतिके गृहविषे कच होवे तेसें दासुरनें पुत्र संयुक्त वनविषे चिरकाल वितीतकीया ॥ तहां जुगके क्षीण भोग कर देहका त्याग कीया सुरग लोककों गमन करत भया ॥ जेसें पंछी आलयकों त्याग करी आकाशमें उडता हे तिस वनविषे दासुर एकाएकी रहि गया ॥ पिताके वियोग करी रुदन करत भया ॥ जेसें कुंज वियोग करी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुरलाती हे जेसें हिमऋतुविषे कमलकी शोभा नष्ट हो जाती हे तेसें दीन हो गया॥तब उहां अदृष्ट शरीर बन देवीथी सो दया करी आकाश वाणी करत भइ॥हे ऋषिपुत्र बुद्धिवान अज्ञा निकी नांइं क्या रुदन करता हे इह संसार सर्व असतरूप हे ॥ तुं इस संसारकों देखता नही इह तो नाशरूप महाचंचल हे॥सब काल उत्पन्न अरु विनाश होताहे कोउ पदार्थ स्थित नही रहता ब्रह्मातें आदि कीट पर्यंत जेता कछु जगत तुजकों भासता हे सो सब नाशरूप हे इसविषे संदेह कछु नही ॥ तातें तूं पिताके मरनेका विलाप मत कर ॥ इह बात अवश्य इसी प्रकार हे ॥ जो उत्पत्ति भया हे सो नष्ट होवेगा ॥ स्थिर कीसी नही रहेगा ॥ जेसें सूर्य उदय होता हे बहुरी अस्त होता हे ॥ हे रामजी ! जब इसी प्रकार अशरीर देवीकी वाणी दासुरनें सुणी तब रक्तनेत्र दासुर धीरजकों प्राप्त भया ॥ जेसें मेघका शब्द सुणी करी मोर प्रसन्न होता हे ॥ तेसें शांतिवान हो करी यथाशास्त्र पिताकी जो क्रिया थी सो सब करत भया तिसकें अ नंतर सिद्धताके निमित्त तत्पदका उद्यम करत भया ॥ ब्राह्मणका जो कर्म हे तप, विद्या सो सब शिख तीसके अध्ययन करी श्रोत्रीय भयाथा परंतु अज्ञात रीदे था ज्ञानी न था ॥ अेसा श्रोत्री हो करी तपके निमित्त उठी बिचार किया ॥ जो कोउ पवित्र स्थान होवे तहां जाय तप करौं देखता देखता पृथ्वीविषे किसी स्थानमें चित्त विश्रांतिवान न भया ॥ सब पृ थ्वी उसकों अशुद्ध दृष्टि आइ ॥ कहुं कोउ विघ्न भासे ॥ इसप्रकार सब पृथ्वीकों अशुद्ध देखी करी विचारत भया ॥ सो ओर स्थान तो सब अशुद्ध हे परंतु वृछकी शाखापर बेठी तप करौं ॥ एसा कोउ उपाय होवे जो वृछकी शाखापर अग्रभागविषे में स्थिति पाउं ॥ एसें चिंतवीकरी अग्नि प्रज्वलित करी अरु अपणे मुखका मांस काटी करी होमनें लगा ॥ तब देवताका मुख जो अग्नि हे सो विचारत भया जो ब्राह्मणका मांस मेरे मुखविषे न आवे ॥ तब अरुचि जेसें देह धारी करी ब्राह्मणके निकट आया अरु कहत भया ॥ जेसें ब्रह्माकों सूर्य कहे तेसें वडे प्रकाश शरीरकों धरकें अग्नि कहत भया ॥ हे ब्राह्मणकुमार जो कछु तुझकों वांछित वर हे सो माग ॥ जेसें भंडारकों खोली करी मणि लेता हे तेसें मुजसों वर लेहु ॥ जब अग्नितें एसें कहा तब दासुरनें पुष्प धूप सुगंध आदिक करी अग्निका पूजन कीया ॥ अरु प्रसन्न हो करी कहत भया हे भगवन् ! प्राणाहुतीके पवन शरीरसों में तप करनेके निमित्त उद्यम कीया हे ॥ सो ओर शुद्ध स्थान कोउ नही मुझकों भासता हे अरु में चाहताहों जो इस वृछकी अग्र शिखाविषे स्थित होणकी मुझकों शक्ति होवे इहां बेठीकरी तप करौं ॥ इह वर देहू ॥ जब इसप्रकार मुनी पुत्रनें कहा तब अग्नि दवनें कहा ॥ अेसेंही होवे इसप्रकार कही करी अंतर्धान हो गया ॥ जेसें संध्याकालके मेघ अंतर्ध्यान हो जाते हें तब वरकों पायकें ब्राह्मण कुमार प्रसन्न भया ॥ जेसें पूर्णमासीका चंद्रमा पूरन कलाकरी प्रसन्न होता हे तेसें भया ॥ जेसें चंद्रमाके प्रकाशकों पाय करी कमलनी शोभती हे तेसें वरकों पाय करी शोभत भया ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे दासुरोपाख्याने वनोपरुदनंनाम अष्टचत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ ४८ ॥ ॥श्री॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! इसप्रकार वरकों पाय करी दासुर कदंब वृछउपर चढनेकी इछा करत भया ॥ केसा हे वृछ अद्भुत सुंदर बडा विस्तार हे जिसका ॥ एसे वृछकों देखकें बुद्धिवान दासुर वृच्छके टासके अग्र उपर जाय बेठा ॥ नौतन कमल पत्र उपर खिलते देखने लगा ॥ दिशाका कौतुक चंचल रूप देख्या दृश्यरूप मानों चंचल पूतली हे ॥ स्याम आकाश तिसका शीस हे ॥ तिसपर श्याम केशही प्रकाशरूप हे ॥ पाताल तिसके चरन हे मेघरूपी वस्त्र हे पुष्पवत् गौर अंग हे ॥ अेसी दृश्यरूपी एक स्त्री हे ॥ समुद्र कैलास तिसके भूषन हे प्राणरूपी फु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रणेतें जल चलता हे सो मानों उरका झनेकार हे मोहरूपी शरीर वनस्पति रोम हे सूर्य चंद्रमा जिसके कुंडल हे ॥ पर्वत वडे हें पवन प्राण वायु हे दिशा हस्त हे, समुद्र आरसी हे ॥ सूर्यादिक उष्णता तिसके पित्त हे चंद्रमा कफ हे एसी त्रिलोकी रूप एक पूतली हे॥ ॥इतिश्री यो०स्थिति प्रकरणे दासुरोपाख्यानेन अवलोकनं नाम एकोनपंचाशत्तमःसर्ग॥ ४९॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! जिसके उपर स्थित होकरी उह तप करणे लगा ॥ तहां तिसका नाम कदंवतपासुर हुवा ॥ एक क्षण दिशाकों देखकें उहांतें वृत्तिकों खेंचत भया ॥ पद्मासन बांधिकरी मनकों एकाग्र कीया सो दासुर परमार्थ पदतें अज्ञात था फलकी कल्पनता करी कर्मांतरविषे स्थित था फलकी ओर मन था ॥ अरु जिस वृक्षका पत्र आकाशकों लगताथा उस पत्र उपर स्थित भया अरु मनकरी यज्ञका आरंभ कीया ॥ जेती कछु सामग्री विधिथी सो सब यथाशास्त्र मन करी करत भया ॥ दश वर्ष मनविषे व्यतीत कीये सर्व देवताका पूजन किया ॥ गोमेध अश्वमेध नरमेध सब यथा विधि संयुक्त मन करी करत भया ॥ ब्राह्मणोंकों बहु दछना दी ॥ इस प्रकारतें समय पाए करी उसका अंतःकरन शुद्ध भया ॥ विस्तीर्ण निर्मल चित्तविषे स्थित भया वलात्कारसों ज्ञान उसके रिदेविषे प्रकाशत भया॥आत्माके आगें वासना मलीन आवरन था सो नष्ट हो गया ॥ जेसें शरत्कालविषे तडाग निर्मल होता हे ॥ तेसें मुनीश्वरका चित्त संकल्पतें रहित भया तब उह जो मुनीश्वर वेठाथा वृछपर टासके अग्रमें तहां एक बन देवीकों अग्रभागविषे देखत भया बडे विलास नेत्र अरु चपलरूप पुष्पकी नांइ दंत, कामदेवकी नांइ महा सुंदर शरीर अरु कामके मदकरी पूर्ण नील कमलकी नांइं लोचन मनके हरनेहारी हे ॥ तिसकों मुनीश्वर कहत भया अरु उह नम्र भूत हो करी देखत भई ॥ जेसें कोकिला कुसम करी पूर्ण बन लताके आगें नम्र होवे तेसें उसकों कहत भया ॥ हे कमलनयनी तूं कवन हे केसी तूं शोभित रूप हे अरु इस पुष्प करी संयुक्त लताविषे किस निमित्त आय स्थित भई हे ॥ जब इसप्रकार मुनीश्वरनें कहा तब काम देवके मोहने हारी गौरी बोलत भई ॥ हे मुनीश्वर! जो पदार्थ इस पृथ्वीविषे बडे कष्ट करी प्राप्त होता हे सो महा पुरुषकी कृपा करी सुगम प्राप्त होता हे॥हम इस वनके देवता हे लीला करते फिरते हें अरु जिस निमित्त में तुमारे आगें आइ हों सो सुणो॥ हे मुनीश्वर! पीछलेदिनकी जो चैत्रशुद्ध त्रयोदशी थी ॥ तिस दिन इंद्रके नंदन वनमें उत्साह हुआथा ॥तब सब वन देवीयां एकत्र भइ थीआं त्रिलोकीमें आगमन कीयाथा॥ तहां सब देवीयां पुत्र संयुक्त बडे पुष्प करी विलास क्रीडा करत भइयां अरु में अपुत्रथी तिस कारनतें में दुःखित भइ ॥ अरु दुःखके निवारणे अर्थ तुमारे पास आई हों ॥ तुम अर्थ के सिद्ध कर्ता हो ॥ बडे वृछपर तुम स्थित हो में अनाथ पुत्रकी वांछा करी तुमारे निकट आई हों तातें मुझकों पुत्र देहु ॥ अरु जो न देहुगे तब में अग्नि प्रज्वलित करी जलीम रोंगी ॥ इस प्रकार पुत्रका दुःख दाहकरी निवृत्त करोंगी ॥ हे रामजी ! जब इसप्रकार बनदेवीनें कहा ॥ तब मुनीश्वरनें हसी करी कहा अरु दया करकें हस्तमें पुष्पदिया ॥ हे सुंदरी तूं जा तुझकों एक मास उप्रांत पूजणे जोग अरु महासुंदर पुत्र होवेगा परंतु तेनें जो इछा धारीथी जो पुत्र न प्राप्त होवे तो जली मरोंगी तिसकरी अज्ञानी पुत्र होवेगा जतन करी ज्ञान तिसकों प्राप्त होवेगा ॥ जब इस प्रकार मुनीश्वरनें कहा तब प्रसन्न होकरी बनदेवी कहत भई ॥ हे मुनीश्वर में इहां रही करी तुमारी टहल करोंगी परंतु मुनीश्वरनें इसका त्याग कीया अरु कहा हें सुंदरी! तुं अपणे स्थानविषे जाय रह ॥ तब उह अपणी बनदेवीविषे जाय रही तिसकों समय पाय पुत्र उत्पन्न हुवा जब दश वर्षका बालक भया तब मुनीश्वरके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निकट ले आई ॥ आए करी पुत्र संयुक्त दोनोनें प्रणाम कीया अरु पुत्रकों मुनीश्वरके आगें स्थापन करी कहत भई ॥ हे भगवन्! इह कल्याण मूर्ती बालक हे सो तुम हम दोनों का पुत्र हे ॥ उसकों मे संपूर्ण विद्या शिखाई हे ॥ अरु परिपक्व कीया हे सर्वका वेत्ता भया हे परंतु केवल ज्ञानकों प्राप्त नही भया तातें जीसकरी इह संसार यंत्रविषे बहुरी दुःख न पावे सो ज्ञान कृपा करी तुम उसकों उपदेश करो ॥ हे प्रभो जो शुभ कुलविषे उपजा होवे अरु चाहे मेरा पुत्र मूढ रहे सो एसी बात कवण हे ॥ हे रामजी! जब इस प्रकार देवी नेंकहा तब मुनीश्वरनें कहा इसकों तुम इहां छोड जाहू ॥ तब उह देवी छोडिकरी गमन करत भई अरु बालक पिताके पास रहा ॥ सो बडे जतन करि कें तिनकों ज्ञानकी प्राप्ति भई ॥ नाना प्रकारके उक्त आख्यान इतिहास अरु अपणे दृष्टांत कलपी करी चिरपर्यंत पुत्रकों जगात भया ॥ वेद वेदांतका निश्चय अनुद्वेग हो करी उपदेश कीया विस्तारकरीकें कथाके क्रम जो अनुभव बडे गूढ अर्थ हे सो कहे जो अपणे अनुभव वशतें प्रत्यक्ष हे सो बलकरीकें उपदेश कीया ॥ शृंगार आदिक जो अष्ट कर्म हे तिनतें रहित परमार्थ तत्वका उपदेश कीया ॥ जो अर्थ भये कहणा हे सो महात्मा पुरुषनें इसकों उपदेश कीया तिसकरी जाग्या अरु शांत आत्मा होत भया जेसें मेघके शब्द करी मोर प्रसन्न होता हे ॥ तेसें उह बालक प्रसन्न भया ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थिति प्रकरणे दासुरसुत बोधनं नाम पंचाशत्तमःसर्गः ॥ ५० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! तब मैंभी कैलास वांहिनी गंगाजीके स्नानकों चला जाताथा ॥ अदृष्ट शरीर संयुक्त आकाशकी वीथीमें सप्तर्षिके मंडलतें चलाथा जिस वृक्षपर उह बेठेथे तिसके पाछें में आया तब कछुक शब्द श्रवन कीया वन विषे जो वृछ हे तिसके उपर छिद्रसों शब्द होता हे॥जेसें मुंदे कमलसों भवरेका शब्द होता हे ॥ तेसें वृक्षके अगसों शब्द श्रवन कीया जो कहता हे हे पुत्र बुद्धिवान तुं श्रवन कर ॥ में तुझकों वस्तुके निरूपण निमित्त आश्चर्यख्यान कहता हों ॥ एक राजा होत भया हे सो महापराक्रमी अरु त्रिलोक विषे प्रसिद्ध नाम उसका स्वेतथ बडा लक्ष्मीवान जगतकी रचना क्रम उह करता हे अरु सब मुनी जो जगत्विषे बडे नायक हे सोभी उत्तम चूडामणी करीकें तिसकों शीशविषे धरते हे अरु कर्म जो करता हे सो सहस्र असंख्य हे नाना प्रकारके आश्चर्य व्यवहार करता हे अरु तिस महात्मा पुरुषकों त्रिलोकी विषे कीसीनें वश नही कीया सहस्रही तिसके आरंभ हे सुख अरु दुःखकों देणेहारा हे तिसके आरंभकी संख्या कछु कही नही जाती जेसें समुद्रके कलोल तरंगकी कछु संख्या कही नही जाती तेसें उसके आरंभ हे अरु उसका जो वीर्य पराक्रम हे सो कीसी शस्त्र अस्त्र अग्नि करी छेद्या नही जाता जेसें आकाशकों मुष्टिप्रहार करी तोडी नही सकता तेसें उह हे बडी विस्तृत तिसकी भुजा हे अरु लीला करी आरंभकों रचता हे तिसके आरंभ दूर करनेकों कोउ समर्थ नही ॥ इंद्र विष्णु सदाशिवभी समर्थ नही ॥ हे महाबाहो! तीन उसके देह हे दिशाकों भरी रहे हे ॥ तीन देह करी जगतविषे पसरी रहाहे ॥ उत्तम, अधम, मध्यम करीकें अरु बडे विस्ताररूपी आकाशतें उत्पन्न भया हे ॥ अरु तहां ही शरीरविषे स्थित भया हे जेसें आकाशका पंछी आकाशविषे रहता हे, जेसें पवन आकाशविषे हे, तेसें तिस पुरुषनें तिस परम आकाशविषे बगीचे संयुक्त एक स्थान अपणी क्रीडाका रचा हे ॥ पर्वतके शिखरमें मोतीकी वलीयां रची हे ॥ सप्त बावडीयां करीयां हे तिनकरी स्थान शोभत हे दो दीपक रचे हे जो तेल अरु वातीतें रहित प्रकाशतें हे ॥ सो शीत अरु उष्णरूप हे ॥ कबहुं अधकों कबहुं उर्ध्वकों नगरविषें भ्रमते हे ॥ मूर्ख

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वरांक गण रचे हे कोउ गण उर्ध स्थित हे कोउ मध्य कोउ अधविषे स्थित हे ॥ केइ दीर्घकाल करी नष्ट होते हे केइ शीघ्रही नष्ट हो जाते हे ॥ केइ वस्त्रकरी आछादित हे केइ वस्त्र रहित हे ॥ नव द्वार करी स्थान कीया हे तिसमें निरंतर बहुत दच्छ रोपे हे पंच दीप देखणे निमित्त कीये हे ॥ तीन स्थंभ कीएहे तिनविषे ओर छोटे स्थंभ कीये ॥ मूलमेंके तीन उपर लेपन कीया हे पादतली करी संकुली कीएहे महामायाकरी तिस राजानें उह नगर रचे हे ॥ नगरकी रक्षा निमित्त सेना रची हे एक नीति देखणेवाले जक्ष हे विवरक गण करी उह चलते नाना प्रकारकी क्रीडा करतें हे तिन शरीर करी सब ठोरविषे विचरता हे जक्ष सब ठोरविषे समीप रहता हे ॥ लीलाकरी एक स्थानकों त्यागकरी ओर स्थानविषे जाय चेष्टा करता हे कबहु इछा होती हे तब चंचल चित्तसों भविष्यत पुरकों रची करी तिसविषे स्थित होता हे ॥ भयकरी वेष्टित हुवा तहांतें उठी आता हे॥ वेगकरीकें गंधर्व नगरकों रचता फिरता हे जब इछा करता हे जो में उपजों तब उपज आता हे जब इछा करता हे जो में मरी जाऊं तब मरी जाता हे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग उपजते हे बहुरी लय हो जाते हे इस प्रकार राजा बडे व्यवहारकों करता हे ॥ वारंवार रचना करीकें कबहु आपहि रुदन करने लगता हे ॥ में क्या करों में अज्ञानी हों में दुःखी हों चित्तसों आतुर होता हे ॥ ऐसें विचार करिकें कबहु उदय हो करी बडा स्थूल हो जाता हे ॥ जेसें वर्षाकालकी नदी बढती हे तेसें बढीकरी आपकों सुखी मानता हे विस्तारकों पाय करी चलता फिरता हे बडे प्र काशकरी प्रकाशता हे तिस महीपतीका बडा महिमा हे ॥ उचितरूप हो करी नगरमें स्थित हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठ स्थिति प्रकरणे स्वेतथ वैभववर्णनं एकपंचाशत्तमःसर्गः ॥ ५१ ॥

॥ हे रामजी! जब इस प्रकार दासुरनें कहा ॥ तब दछके अग्रभाग बेठे पुत्रनें प्रश्न कीया ॥ ॥ पुत्रोवाच ॥ हे भगवन्! उह स्वेतथ राजा कवन हे ॥ जगतविषे जिसकी की र्ती प्रसिद्ध हे ॥ अरु नगर तिसनें कवन रच्या हे जो भविष्यत नगरविषे रहता हे रहणा तो वर्तमानविषे होता हे ॥ भविष्यतविषे केसें रहता हे ॥ इह विरुद्ध अर्थ केसें बनता हे? इह बचनकरी मेरी बुद्धि मोहित भइ हे ॥ ॥ दासुरोवाच ॥ हे पुत्र में तुझकों यथार्थ कहता हों तुं श्रवन करु ॥ जिसकें जाणेतें संसार चक्रकों ज्योका त्यों देखेगा ॥ जो इह वस्तुतें क्या हे इह संसार आरंभ असत्य उठा हे बडे विस्तार संयुक्त भासता हे तोभी असत्यरूप हे कछु हुवा नही ॥ जेसें इह संसार स्थित हे तेसें में तुझकों कहता हों इह आख्यान में तुझ कों जगत् निरूपण निमित्त कहा हे ॥ हे पुत्र जो शुद्ध अचैत्य चिन्मात्र चिदाकाश हे तिसतें जो संकल्प उठ्या हे तिस संकल्पका नाम स्वेतथ हे सो आपही उपजता अरु आपही लीन हो जाता हे ॥ सब जगत तिसका रूप हे जो बडे विस्तार संयुक्त भासता हे सो तिसके उपजणे करी जगत् उपजता हे नष्ट होणेकरी नष्ट होता हे ॥ ब्रह्मा विष्णु रुद्र इंद्रादिक सब तिसके अवयव हे जेसें दछके अंग टास होता हे जेसें पर्वतके अंग शिखर होते हे तेसें तिसके अंग हे ॥ शून्य आकाशविषे तिसतें इह जगत्रूपी नगर रचा हे प्रतिभासके अनुसं धानतें उही चित्तकला विरंचि पदकों प्राप्त भइ हे ॥ अरु चतुर्दश स्थान जो कहे हे सो विस्तार संयुक्त चतुर्दश लोक हे वन बगीचे उपवन संयुक्त पर्वत महाचल मंदराचल सुमेरु आदिक क्रीडाके स्थान हे ॥ उष्णशीत जो दो दीपक तेलबाती बिना कहे हे सो सूर्य अरु चंद्रमा हे जगत्रूपी नगर विषे अध ऊर्धकों प्रकाशते हैं ॥ सूर्यकी किरणांका जो प्रकाश हे मानों मोतीके तरंग फुरते हे ॥ अरु इस समुद्र क्षीरजल आदिक जो सप्त समुद्र हे सो बावडीयां हे जीवरूपी किरायती व्यवहार करते लेते देते अध ऊर्धकों जाते हे पुन्य करी स्वा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

र्ग लोकमे जाते हे ॥ पापकरी नरककों चले जाते हे अरु जगत्विषे संकल्प करीकें जो क्रीडाके निमित्त तिसनें विवर गण रचे हे सो देह हे ॥ कोउ देवता हो करी ऊर्ध सर्गविषे रहते हे॥ कोउ मनुष्यहो करी मध्य लोकविषे रहते हे अरु दैत्य नाग आदिक पातालविषे रहते हे पवनरूपी प्रवाह करी समस्त जंत्र चलते फिरते हे ॥ अस्थिरूपी तिनविषे लकडीयां हे ॥ रक्तमांस करी लेपन कीयेहे केइ दीर्घ काल करी नष्ट होते हे केइ शीघ्रही नष्ट हो जाते हे ॥ शीशपर केश हे सो स्याम वस्त्र हे ॥ करन नासिका नेत्र जिव्हा अरु मूत्र पुरीषके स्थान लिंग इंद्रिय गुद इह नव द्वार हे ॥ तिनसों निरंतर पवन चलता हे ॥ शीत उष्णरूपसों पान अपान हे नासिका आदिक तिसके झरोंखे हे भुजारूप गलीयां हे पंचदीपक पंच इंद्रियां हे ॥ हे महाबुद्धिवान इह सर्वसंकल्परूपी मायाकरी रचे हे ॥ अहंकाररूपी तिसविषे जक्ष हे महाभयका स्थान इह अहंकार करी होता हे देहरूपी विवरगण हे सो अहंकाररूपी जक्षसंयुक्त विचरते हे॥हे असत्यरूप परंतु सत्य होकरी इसके साथ क्रीडा करते हे ॥ जेसें भांडविषे बिलाड बेठे जेसें भश्रकाविषे सर्प बेठे जेसें बांसविषे मोती हे तेसें देहविषे अहंकार हे॥ क्षणविषे उदय होता हे क्षणविषे शांत हो जाता हे ॥ दीपकवत् देहरूपी गृहविषे संकल्प उठता हे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग उठते हे अरु भविष्यत नगर जो कहाहे सो सुण अपणा जो कोउ स्वार्थ चितवता हे जो इह कार्य इस प्रकार करोंगा अमके दिन इस देशकों जाऊंगा ॥ जेसें चितवता हे तेसें भासी आता हे तिसविषे जाय प्राप्त होता हे ॥ सो अण होते कों वर्तमान करता हे जबलग दुर्वासना हे तबलग अनेक दुःख होते हे ॥ अरु इह दुष्ट मन अहंकार स्थूल हो जाता हे अरु संकल्पतें रहित हूवे शीघ्रही इसका नाश होता हे ॥ जब तुं संकल्प नाश करेगा तब शीघ्रही कल्याणकों प्राप्त होवेगा अपणा संकल्प उठीकरी आपहीकों दुःखदायक होता हे जेसें बालककों अपणे पछावेविषे बैताल कल्पना होती हे अरु आपही भय पाता हे॥तेसें अपणा संकल्प अनंत दुःख दायक होता हे सुख कोउ नही पाता संपूर्ण जगत् विस्तार संकल्प करी होता हे आत्माकी सत्ताकरी बढता हे बहुरी नष्ट होजाता हे विचार कियेतें नही रहता जब मनविषे विचार उत्पन्न होता तब नष्ट हो जाता हे जेसें सायंकालविषे धूपका अभाव हो जाता हे, जेसें प्रकाश उदय हूवे तमका अभाव हो जाता हे तेसें विचार करीकें संकल्प आपही नष्ट हो जाते हे मन आपहीक्रिया करता हे अरु आपही दुःख पाता हे बहुरी रुदन करनें लगता हे जेसें बानर काष्टके जंत्रकी किलीकों हि लाइकरी फसता हे अरु निकरी नही सकता दुःख पाता हे तेसें अपणाही संकल्प आपकों दुःख दायक होता हे ॥ संकल्प करी जो कल्पित विषयका आनंद हे सो जब जीव कों प्राप्त होता हे तब उंची ग्रीवा करी हर्षवान होता हे जेसें आकाश मात्र किसी वृछके फल उंटके मुखमें आय लगे अरु उह उंची ग्रीवा करीकें विचरे तेसें अज्ञानी जीव विषय की प्राप्तिविषे उंची ग्रीवा करी हर्षवान होते हे ॥ क्षणविषे जीवकों विषयकी प्राप्ति उपजती हे विशेषकरीकें इष्टकी प्राप्तिविषे बढते हें ॥ जब कोउ दुःख होता हे तब उह प्रीतीकी प्रसन्नता उठी जाती हे क्षणविषे विकारी होता हे क्षणविषे प्रसन्न हो बेठता हे वस्तु गुणकी प्राप्तिविषे हर्षवान होता हे॥ शुभ संकल्प करी शुभकों देखता हे अशुभ संकल्पकरी अशुभकों देखता हे शुभ करी निर्मल होता हे अशुभकरी मलीन होता हे॥ जेसें आगें तेरी इछा होवे तेसें कर स्वेतथके में जो तुझकों तीन या शरीर कहेथे उत्तम, मध्यम, अधम सो सात्विक, राजस, तामस यह तीन गुण तीन देहहे ॥ यहि सबका कारन जगत्विषे स्थित हे जब तामसी संकल्प साथ मिलता हे तब नीचरूप पाप चेष्टा कर्म करता हे ॥ महाकृपनताकों प्राप्त

123

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होता हे मृतक होकरी कृमि कीट जन्मकों पाता हे ॥ जब राजसी संकल्प साथ मिलता हैं तब लोक व्यवहार करता हे स्त्री पुत्रादिकके रागसों रंजित होताहे ॥ पापकर्म नही करता तब मृतक होकरी संसारविषे मनुष्य शरीर पाता हे ॥ जब सात्विकी भावविषे स्थित होता हे तब धर्म ज्ञान परायण होता हे ॥ मोक्षपदकी तिसकों अंतर्भावना होती हे धर्मज्ञान पाए करी चक्रवर्ति राजाकी नांई स्थित होता हे जब तिन भावकों त्याग करता हे तब संकल्प भाव नष्ट हो जाता हे अक्षय परमपद शेष रहता हे ॥ तातें संसार दृष्टिकों त्याग करीकें मनकरी मनकों वशकर अंतर बाहिरतें जो द्रश्यका अर्थ चित्तविषे स्थित हे तिस संस्कार अंकुरकों निवृत्तकर जो शांतात्मा होवे ॥ हे पुत्र इस विना ओर उपाय नही जों तूं सहस्रवर्ष दारुन तप करे अथवा लीलावत् आपकों शिलासम चूरन करे अथवा समुद्रविषे प्रवेश करे बडवाग्निविषे प्रवेश करे गरतविषे गिरे खड्गधाराके सन्मुख युद्ध करे, अथवा सदाशिव तुझकों उपदेश करे, ब्रह्मा विष्णु बृहस्पति दया करकें उपदेश करे, अथवा पातालविषे जाय स्थित होवे ॥ पृथ्वीविषे स्वर्गविषे जाय स्थित होवे इत्यादिक अवर स्थानविषे जावे तोभी अवर उपाय कल्याणके निमित्त कोउ नही जेसें संकल्पका उपशम करणा उपाय हे तेसें जो अनादि अविनाशी अविकारी परम पावन सुख हे सो संकल्पके उपशमतें पाता हे तातें जतनसो संकल्पकों उपशम करहू ॥ जेते कछु भाव पदार्थ हे सो सब संकल्परूपी तत्व साथ परोए हुवे हे जब संकल्परूपी तंतु टुट पडता हे तब नही जानता जो पदार्थ कहां गए ॥ सत्य असत्य पदार्थ सब संकल्प मात्रहे जबलग संकल्प हे तबलग इह भासते हे ॥ संकल्पके निवृत्त हूवे असत्य हो जाते हे संकल्प करकें जेसी जेसी चिंतना करता हे क्षणविषे तेसें हो जाता हे ॥ संसार भ्रम संकल्प करी उदय भया हे ॥ संकल्प निवृत्त कीयेतें चित्त अद्वैतके सन्मुख होता हे ॥ सर्व जगत असत्यरूप हे माया करीकें रचा हे जब संकल्पकों त्याग करी यथा प्राप्तविषे विचरेगा तब तुझकों खेद कछु न होवेगा ॥ असत्यरूप जगत्के कार्यविषे दुःखित होना व्यर्थ हे ॥ आप संयुक्त जगत्कों असत्य जानेगा तब दुःखभी न होवेगा ॥ जबलग जगत्का सद्भाव भासता हे तबलग दुःख होता हे जब असत्यजान्या तब दुःखभी नही रहता ॥ बोधवान हे तिनकों दुःखि कोउ नही भासता तातें जो नित्य प्राप्त सत्तारूप हे तिसविषे स्थित होहू ॥ विकल्पके जो बडे समूह हे तिनकों त्याग करहू अरु जो अद्वैत आत्मा पद हे तिसविषे विश्रामसुखकों प्राप्त हो करी सुषुप्तिरूप चित्त वृत्तिकों धारके विचरहू ॥ ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणेसंसारविचारोनाम द्विपंचाशत्तमः सर्गः ॥ ५२ ॥ ॥७॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥

॥ पुत्रोवाच ॥ हे भगवन् ! संकल्प केसा हे ? अरु सो उत्पन्न केसें होता हे ? अरु वृद्ध केसें होता हे ? अरु नाश केसें होता हे ? दासुरोवाच ॥ ॥ हे पुत्र ! अनंत जो आत्मतत्व हे सो सत्ता समान रूप हे सो चैतन सत्ता जब द्वैतके सन्मुख होती हे तब चैतनताका लक्षण जो ज्ञान रूप हे सो संकल्पका अंकुर ज्ञान उही बीजरूपी संवित्त उल्लास मात्र सत्ताकों पाएकरी घन भावकों प्राप्त होता हे ॥ सोइ फुरना करी आकाशकों चेतता हे तिसकरी आकाशकों पूर्ण करता हे ॥ जेसें जलकरी मेघ स्पष्ट होता हे तेसें फूरनेकी दृढता करी आकाश होता हे ॥ अपना स्वरूप इसकों आत्मसत्तातें भिन्न भासते हे ॥ इह भावना चित्तविषे भावित हो जाती हे ॥ जेसें बीज अंकुर भावकों प्राप्त होता हे तेसें चित्त संवित संकल्प भावकों प्राप्त होता हे संकल्पही करी संकल्प उपजता हे आपहि करी स्वतः बढता हे तिसकरी सुखी दुःखी होता हे ॥ जब अचल रूपतें चित्त संवेदन दृश्यकी ओर फुरता हे तब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिस फुरनेका नाम संकल्प होता हे ॥ स्वरूपतें भूली करी जब दृश्यकी ओर फुरता है तब संकल्प बद्ध होता हे ॥ सोइ बद्ध हुवा जगत् जालकों रचता है जेता कछू प्रपंच हे सो संकल्पका रचा संकल्प मात्र हे जेसें समुद्र जल मात्र होता हे जलतें इतर नही तेसें जगतभी संकल्पतें इतर नही अरु आकाश मात्रतें भ्रांति रूप जगत् फुरी आया हे जेसें मृगतृष्णा का जल भासता हे ॥ जेसें आकाशविषे द्वितीय चंद्रमा भासता हे तेसें तुमारा उपजणा अरु बढणा भ्रम मात्र हे ॥ जेसें तमका चमत्कार होता हे तेसें इह जगत् मिथ्या संकल्प करी उदय हुवा तुझकों भासता हे ॥ हे पुत्र तेरा उपजणांभी असत्य हे अरु बढणाभी असत्य हे ॥ जब तूं इसप्रकार जानेगा तब इसकी आस्था लीन हो जावेगी ॥ इह पुरुष हे उह हे में हों इह जो भाव दुःख सुख करी संयुक्त पदार्थ भासते हे सो इह अज्ञान करीकें व्यर्थ भासता हे ॥ इनविषे आस्था करीकें अंतरतें तपता रहता हे ॥ अहंत्वं आदिक दृश्य सब असत्य रूप हे जब इह भावना करेगा तब तूं पृथ्वीविषे कल्यानरूप होकरी विचरेगा ॥ बहुरी संसारकों प्राप्त न होवेगा अहंत्वंतें आदि लेकरी जब सर्व द्रश्यकी भावना रिदेतें जावेगी तब इसका अभाव हो जावेगा ॥ हे पुत्र फलकों तोडी करी मर्दन करनेविषेभी कछु जतन होता हे परंतु आपकरो सिद्ध जो भाव मात्र संकल्पका त्याग करणा तिनविषे जतन कछु नही फूलके ग्रहनविषेभी जतन हे ॥ हस्तका स्पंद होताहे ॥ तातें जो कछु भावरूप हे सो हे नही तो तिसके त्यागणे विषे क्या जतन हे ॥ तातें कछू हे नही ॥ इस दृश्य प्रपंच सबका जो होणा हे तिसका विपर्यय भाव करना जो न मैं हों न जगत हे जिस पुरुषनें इस दृश्य जगत्का सद्भाव संकल्प नाश कीया हे सो शांतरूप होता हे ॥ इह संकल्प तो एक निमेषविषे लीलासों जीती लेता हे भावरूप जो आत्मसत्ता हे तिसविषे जब अपणा आप उपशम करे तब स्वस्तिक होता हे ॥ अपणे मनके संकल्प करी मन संकल्पकों छेदेगा जो आत्मतत्वविषे स्थित होवेगा ॥ इसविषे क्या जतन हे संकल्पके उपशम हुवे जगत् उपशम होता हे अरु सब दुःख संसारके मूलतें नाश हो जाते हे ॥ संकल्प मनबुद्धि जीव अहंकार आदिक सब नाम हे सो भेद कहणे मात्र हे इनके अर्थरूपविषे भेद कछु नही ॥ जेता कछु दृश्य प्रपंच जाल हे सो सब संकल्प मात्र हे॥ संकल्पके अभाव हूवे कछु नही रहता तातें संकल्पकों रिदेतें काट हु ॥आकाशकी नांइं जगत् शून्य हे जेसें आकाशविषे नीलता भ्रांति करी भासती हे तेसें इह जगत असत्य विकल्प करी उठा हे संकल्प अरु जगत दोनों असत्य हे तातें कछू नही॥सब असत्यरूप हे असत्यरूप संकल्पनें सिद्ध किया हैं तिसकी भावनामे आस्था करनी मिथ्या हे ॥ जब एसें जान्या तब इष्टरूप किसकों जानें अरु वासना किसकी करे अरु अनिष्ट कीसकों जाने सब वासना नष्ट हो जाती हे ॥ वासनाके नष्ट हुवे सिद्धताकी प्राप्त होती हे ॥ हे पुत्र जो इह सत्य जगत् होता तो विचार कीयेतेंभी दृष्ट आता सो तो विचार कीयेतें इसका शेष कछु नही रहता ॥ जेसें प्रकाश करी देखेतें तम दृष्ट नही आता तेसें विचार करी देखेतें जगत् सत्य नही भासता तातें अविचारतें सिद्ध हे सो असत्यरूप हे ॥ बुद्धिकी चपलता करीकें भासता हे ॥ जिस पुरुषकों जगत् भावना उठि गइ हे तिसकों जगत्के सुख दुःख स्पर्श नही करते ॥ निर्णय करी जो असत्यरूप जान्या तिसविषे बहुरी आस्था नही उदय होती ॥ जब आस्था गइ तब भाव अभाव बुद्धिभी नही रहती ॥ संसारके सुखदुःख सब मिथ्या मनके फुरने करी रचे हे मनोराजके नगरवत् स्थित भए हे ॥ भूत भविष्य वर्तमान काल जगत् मनकी वासना करी फुरता हे मानसी शक्तिविषे स्थित हे सो मन क्षणविषे बडा दीर्घ आकार करता हे क्षणविषे सूक्ष्म आकारकों धरता हे ग्रहन करीएं तो ग्रहन किया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नही जाता ॥ जेसें समुद्रकी लहरिकों ग्रहण करीये तो पकडी नही जाती तेसें मन हे ॥ यद्यपि बडे आकार संयुक्त जगत् भासता हे तोभी कछु वस्तू नही छिनभंगुर असार हे वास नाकरी जगत भासता हे वासनाके क्षय हुवे शांत हो जाता हे ॥ जब तुझको वासना फुरे तब तिसी कालविषे तिसकों शीघ्रही त्याग कर ॥ इह दृश्य प्रपंच कछु हे नही असत्यरूप हे ॥ एसी भावना करीकें वासना नष्ट हो जावेगी इसविषे संदेह कछू नही ॥ जो इह संकल्परूप जगत होवे तो इसके त्याग करनेविषे जतन होवे इह तो असत्यभूत प्रपंच हे तिसका अनर्थ चिकित्सा कर तुझकों खेद कछु न होवेगा ॥ जो हेइ नांही तिसके त्यागविषे क्या जतन हे जो इह संसार मूल सत्य होता तो इसके नाश निमित्त कोउ न प्रवर्तता ॥ जेसें कोएलेकों स्वेत करणे निमित्त धोणेकों कोउ नही प्रवर्तता एसें सब जगत असत्यरूप हे विचार किएतें कछु नहि पाता तातें असत्य अहंकाररूप दृश्यकों त्यागकरी सत्य आत्माका अं गीकार करहु ॥ जेसें धानसों तुष डार देते हें अरु चावलके अंगीकार करते हे तेसें जतन करीकें सर्व दृश्यकों त्याग आत्मपदविषे प्राप्त होहू इह परम पुरुषार्थ हे ओर क्रिया किस नि मित्त करता हे मलरूप संसारका नाश कर ॥ जेसें तंदुलसों तुष दूर करते हे तब वास्तव आकार तंदुल भासते हे तातें जुक्ति करीकें जान जो संसार असत्य कृत्रिमरूप हे तिसके नाश विषे क्या जतन हे ॥ जेसें तांबेसों मल जुक्ति करीकें दूर करता हे तब निर्मल भासता हे तेसें युक्तिकरी दृश्य मल जब दूर होवे तब बोध स्वरूप प्राप्त होवे तिसकारनतें उद्यमवान होहु ॥ हे पुत्र इह संसार संकल्प विकल्पतें उत्पन्न भया हे विचारकरी अल्प जतनसों निवृत्त हो जाता हे ॥ अरु तूं देख जो इह कबनहे जो सदा स्थिर रहता हे ॥ सब पदार्थ असत्यरूप हे देखते देखते नष्ट हो जाते हे ॥ जेसें दीपकके प्रकाश करी अंधकार अभाव हो जाता हे जेसें भ्रांति दृष्टीकरी आकाशविषे दुसरा चंद्रमा भासता हे स्वछ दृष्टी करी दुसरा अभाव हो जाता हे तेसें विचार करीकें जगत भ्रम नष्ट होता हे ॥ न इह जगत् तेराहे न तूं इसका हे इह भ्रम करी भासता हे ॥ भ्रमकों त्यागकरी देख जो असत्यरूप हे ॥ अपणी गुरुत्वताका बडा ऐश्वर्य प्रकाशका विलास हे सो तेरे रिदे विषे मत होवे ॥ इह मिथ्या भ्रमरूप हे अंतर तें उठे तो आपकोंभी अरु जगत्कोंभी असत्य जान ॥ आत्मतत्व तें इतर कछु नही जब एसें निश्चय करेगा तब जगत् भावना नष्ट हो जावेगी सर्वात्मप्रकाश भासेगा ॥ इतिश्री यो॰ स्थितिप्र॰ दासुरोपाख्याने जगत्चिकित्सा वर्णनंनामत्रिपंचाशत्तमःसर्गः॥५३

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रघुकुलरूपी आकाशके चंद्रमा रामजी जब इस प्रकार पुत्रकों उपदेश कीया तब में उसके पीछें आकाशविषे स्थित था सों कदंव वृक्षके अग्रभागमें जाय स्थित भया ॥ जेसें मेघ वर्षातें रहित तूष्णी हो करी पर्वतके शिखर जाय स्थित होता हे तेसें में जाय स्थित भया ॥ आगें दासुर जो सुरमा अज्ञानरूपी शत्रुका नाश करता हे अरु परम शक्ति करी प्रकाशवान हे अरु तपकरी देह अेसा हो गया हे मानों स्वर्नका चमत्कार हे तिस दासुरनें मुझकों अपणे अग्र देख्या जो वसिष्ठमुनि आया हे ॥ अेसें जाणीकरी उठी अर्घपादकरी पूजन कीया बहुरी हम दोनों वृक्षके पत्र उपर बेठीगए बहुरी पूजन कीया जब पूजन करी रहा तब हम दोनों कथाका प्रसंग चलावणे लगे ॥ तिस चचकि वचन करी तिसके पुत्रकों जगाते भए ॥ संसार समुद्रके पार करणे निमित्त बहुरी में वृक्षकी ओर देखताथा केसा वृछ हे जो महासुंदर फूल फलकरी शोभायमान हे अरु दासुरकी इछा द्वारा मृग अरु पंछी तिसके आश्रय रहते हे ॥ बहुत गुण संयुक्त वृछ में देखत भया अरु तिसके पुत्रकों हम ओर ओर कथा करीकें विज्ञान दृष्टिसों रमणीय दृष्टांत अरु युक्ति सहित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपदेश करत भये ॥ नाना प्रकारके विचित्र इतिहास करी तिस बालककों जगाया रात्रकों सिद्धांत कथाविषे लागे रहे ॥ हमकों एक मुहूर्त्तवत् रात्र वितीत हुई ॥ जब प्रातःकाल भया तब में उठी ठाडा भया दासुर अपणे पुत्र संयुक्त मेरे साथ चला ॥ जहांलग कदंबका आकाशतल था तहांलग आए ॥ तिसके अंतर में बहुत करी तीनकों ठहरावता भया अरु में गंगा जीकि उर चला॥ बहुरी स्नान करीकें सप्तर्षिके मंडलविषे जाय स्थित भया॥ हे रघुनंदन इह दासुरका आख्यान में तुझकों कहा हे ॥ इह जगत् प्रतिबिंब आभासके सदृशहे प्रत्यक्ष भास ताहे तोभी असत्य रूपहे ॥ जगत्के निरूपण निमित्त इह आख्यान श्रवन कराया हे जो इह जगत् असत्यरूप हे कछु वस्तु नही बुद्धिकरी तुझकों राग मत होवे ॥ इस कथाका सिद्धांत रीदेविषे धारीकरी विचरेगा तब संसाररूपी मल तुझकों स्पर्श न करेगा ॥ ॥ इतिश्री यो० स्थितिप्र० दासुरोपाख्यानसमाप्तं नाम चतुष्पंचाशत्तमःसर्गः ॥ ५४ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! इह प्रपंच हे नहि अेसें जानकें सब पदार्थतें निराग होहु ॥ जो वस्तुही न होवे तिसकी आस्था करणी क्या हे॥ इह प्रपंच जो दृष्ट आता हे इसके भासणे न भासणेविषे तुमकों क्या हे ॥ तुम निर्विघ्न हो करी आत्मतत्वविषे स्थित होहु ॥ एसें जाने जगत हे भी अरु नही भी इस निश्चय करीभी तुम असंग होहू ॥ इस चल अचल दृष्टि आनेविषे तुमकों क्या खेद हे ॥हे रामजी इह जगत् न आदि हे अनादि हे केवल खेतथका जो चित्त संवित मन रूप हे तिसके फुरने करीकें इस प्रकार भासता हे वास्तवतें कछु नही ॥ इह जगत कीसी कर्तानें कीया नही न कीसी अकर्तानें किया हे केवल आभासरूप हे आभास विषे कर्ता अकर्ता पदकों प्राप्त भया हे ॥ अकृत्रिमरूप हे किसीका कीया तो नही इस साथ तुजकों संबंध मत होवे ॥ इह भावना रिदेविषे धार जो हे कछू नही काहेतें जो किसी कर्ता करी हुवा नही आत्मा सर्व इंद्रियांतें अतीत हे जडकि नांइ अकर्तारूप हे तिसकों कर्ता केसें कहियें इह कहणा नही बनता ॥ अकस्मात् इह जगत् जाल फुरि आई हे सो आभासरूप हे ॥ जो अकस्मात उपजा तिसविषे आशक्त होणा क्या हे॥ इह असत् भांतिरूप हे इस विषे आस्था मूढ बालके करते हे बुद्धिवान् तो नहि करते ॥ स्वरूपतें जगत् कछु उपजा नही अरु नाशभी कछू नही होता ॥ निरंतर दृष्टिमें आता हे अज्ञान की वारंवार भावना होती हे तोभी जगत् कछु हे नही असत्रूप हे प्रत्यक्ष निरंतर नष्ट होता जाता हे ॥ तुम विचार करिकें देखो जो अवस्था स्थान कहां जाते हे ॥ अरु कहां गए हे ॥ तातें तुम सब इंद्रियांतें अतीत जो आत्मतत्व अकर्ता रूप हे तिसविषे स्थित होकरी विगत ज्वर होहु वास्तवतें जगत् कछु बण्या नही॥ आभाससत्ताविषे बण्या भासता हे ॥तुम आभास सत्ता विषे नित्य दृढ होऊ ॥ जेसें हुवा हे तेसें हे भाव अभाव दुःख दिशा हे ॥ आदर्शरूपीआभासविषे दीर्घरूप दृश्य स्थित भया सो जेसें हुआ हे तेसें हे विपर्यय नही होता ॥ हे रामजी ! दृश्य धर्मविषे अपराजित काल हे सो अनंत हे दृश्य पदार्थका कछु अंत नही अरु जो आत्मविचार करी देखियें तो सुपनवत् हे कछु हे नही ॥ जो वस्तुतें एसें होवे तिसविषे आस्था करिकें जतन करणा व्यर्थ हे ॥ जगत्के पदार्थ नाशरूप हे इनविषे आस्था नही बनती ॥ काहेतें जो आत्मा सत् हे अरु जगत् असत् हे ॥ अन्योन्य विलक्षण सुभाव हे ॥ जड अरु चैतनका संयोग कछु नही बनता ॥जो जगत्के पदार्थ स्थिर मानीये तो रहते नही ॥ इसकारनतें आस्था शोभा नही पाती ॥ जेसें जलके तरंगका आश्रय लेकरी कोउ पार हुवा चाहे तो दुःख पाता हे जेसें जगत्के पदार्थका आश्रय कीयेतें दुःखी होता हे ॥ जगत्की आस्था करणी ही बंधन हे जगत् नाशरूप हे तुम स्थिररूप हो तातें आस्था नही संभवती ॥ क

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हूं जलके तरंगका अरु पर्वतका संबंध भया हे ?॥जो तुम जगत्कों असत्य जान्या अरु आपकों सत्य जान्या तोभी जगत्के पदार्थकी वांछा नही बणती काहेतें जो सत्यकों असत्यकी वांछा नही संभवती ॥ अरु असत्यकों असत्यविषे भावना करनी क्या हे अरु जो आप संयुक्त जगत् सत्य जानते हो तोभी वांछा नही संभवती ॥ काहेतें जो सत्य अद्वैत आत्मा हे तिसके समीप कछू द्वैत वस्तु नही तुमतो एक अद्वैत हो ॥ वांछा कीसकी करते हो तातें तुमकों किसी पदार्थकी इछा अनिछा नही बणती ॥ हेयोपादेयतें रहित केवल स्वस्थ हो करी अपणे आपविषे स्थित होऊ ॥ केसा आत्मतत्व हे जो सबका कर्ता हे अरु सर्वदा अकर्ता हे ॥ कदाचित् कछू कीया नही उदासीनकी नांइ स्थित हे ॥ जेसें दीपक सब पदार्थोंकों प्रकाश करता हे अरु किसीकी इछा द्वारा अर्थके सिद्धि करने निमित्त नही प्रवर्तता स्वभाविकही प्रकाशरूप हे तेसें आत्मतत्व सबका कर्ता हे ॥ तिसका कर्ता कोउ नही जेसें सूर्य स बकी क्रियाकों सिद्ध करता हे अरु आप कीसी क्रियाके आश्रय नही ॥ काहेतें जो आपही प्रकाशरूप हे चलता हे अरु कदाचित् चलायमान नही भया अरु जो सूर्यका प्रतिबिंब च लता भासता हे सो प्रतिबिंबका चलणा सूर्यविषे नही ॥ तेसें तुमारा स्वरूप आत्मा सदा अकर्ता अचल हे तिसविषे स्थित होहु ॥ जेता कछु जगत् भासता हे तिसविषे विचरहू ॥ परंतु भावना करीकें इसविषे बंधायमान मत होउ इह असत्रूप हे ॥ हे रामजी ! यद्यपि प्रत्यक्ष आदिक प्रमाण करी जगत् सत् भासता हे तोभी हे नही ॥ स्वतः चित्त होकरी आ पकों विचार अरु आपविषे स्थित होहु तब जगत् कछू न भासेगा जो प्रत्यक्ष बडे तेज बल अरु वीर्य करी संपन्न भासता हे अरु अंतर्ध्यान हो गया तो सत्य केसें कहीयें ॥ इस वि चार करीकेंभी तुमकों जगत्की भावना नही बनती॥ जेसें चक्रपर आरूढ हूवेतें सब स्थान भमतें दृष्टि आते हे॥जेसें सुपन नगर भमकरीकें भासता हे॥सो किसी कारन कार्य करी नही ही होता ॥ आभासरूप मनके फुरनेकरी उपज आता हे जेसें कोउ जीव अकस्मात् आय निकसता हे सो मित्राइका भागी नही होता ॥ विचार कीएविनां बुद्धिवान तिसविषे रुचि न ही बांधते उह सुहृदताका पात्र नही तेसें भम करिकें जो भास्या जगत् हे सो आस्था करीकें भावना बांधणेजोग नही ॥ जेसें चंद्रमाविषे उष्णता, अरु सूर्यविषे सीतलता, मृगतृष्णा को नदी विषें जल इनकी भावना करणी अयोग्य हे तेसें जगतविषे सत्यभावना अयोग्य हे ॥ इह संकल्पपुर सुपननगर द्वितीय चंद्रमावत् असत्य हे भम करिकें सत्य भासता हे हे रामजी ! अंतरतें भाव पदार्थकी आस्था लक्ष्मीकों त्याग कर अरु बाल्य लीला करते विचरहु॥ अंतरतें अकर्ता पदविषे स्थित होहु अरु सब भावपदार्थविषे स्थित सबतें अतीत हो आत्मा सब पदार्थ विषे सर्वदा कालस्थित हे अरु सबतें अतीत हे ॥ तिसकी सत्ताकरीकें जगत् नितीविषे स्थित हे ॥ जेसें दीपक करी सब पदार्थ प्रकाशवान होते हे अरु दीपक इच्छातें रहित प्रकाशता हे तिसकरी सबकी क्रिया सिद्ध होती हे ॥ अरु जेसें सूर्य आकाशविषे उदय होता हे अरु तिसके प्रकाश करी जगत्का व्यवहार होता हे॥ तेसें अनिच्छित आ त्माकी प्रकाशसत्ता करी सब जगत् प्रकाशता हे ॥ जेसें इछातें रहित रत्नका प्रकाश होता हे अरु स्थानविषे पसरी जाता हे तेसें आत्म देवकी सत्ता करीकें जगत् गण प्रवर्त्तते हे तातें कर्ता हे ॥ सब इंद्रियके विषयतें अतीत हे इस कारणतें अकर्ता अभोक्ता हे अरु सब इंद्रीयोंके अंतर्गत स्थित हे ॥ इस कारन तें कर्ता भोक्ता उही हे ॥ इस प्रकार दोनों आत्मावि षे बनते हे ॥ कर्ता भोक्ताभी संभवता हे अरु अकर्ता अभोक्ताभी संभवता हे ॥ जिसविषे तूं अपणा कल्याण जाने तिसविषे स्थित होहु ॥ हे रामजी इसप्रकार निश्चय करो जो सब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेंही हों ॥ अकर्ता अभोक्ता हों अेसी दृढ भावना करी जगत्के कार्यकों करतेभी कछु बंधन न होवेगा ॥ अरु सब आत्मा कर्तव्य भोक्तव्यतें रहित हे ॥ इस प्रकार निश्चय कीएतें
भोगकी वासना निवृत्त हो जावेगी तब चैतन भोगकी उर बहुरी न आवेगा ॥ जिसकों इह निश्चय हे जो में कदाचित् कछु कीया नही सदा अक्रियरूप हों सो भोगके समूहकी कामना
किस निमित्त करेगा अरु त्याग किसका करेगा ॥ तातें तुम यही निश्चय धरहु जो में नित्य अकर्ता रूप हों ॥ जब इह बुद्धि दृढ होवेगी तब परम अमृत रूप जो समान सत्ता हे सो शेष
रहेगी ॥ अथवा यही निश्चय धरहु जो सबका कर्ता मैंहि हों में महा कर्ता हों ॥ सबके अंतर स्थित हो करी सब कार्य में करता हों ॥ हे रामजी इह दोनों निश्चय तुजकों कहे हैं जिस
विषे तेरी इच्छा होवे तिसविषे स्थित होहु जहां इह निश्चय होता हे जो सबका कर्ता में हों, सब जगत् भ्रमभी में हों तब इन पदार्थके भाव अभावविषे राग दोष न होवेगा ॥ जो सब
आपही भया तो राग दोष किसका करेगा॥उसकों इह निश्चय होता हे जो इस शरीर मेरा दग्ध होता हे वह शरीर सुगंधादिक करी लीला करता हे तिसकों खेद अरु उल्लास किसका होवे॥
तातें तुझको जगतके क्षोभ उल्लास उदय अस्तविषे सुखदुःख मत होवे॥सबका कर्ता में हों तो खेद उल्लासभी में करता हों॥जब आत्मा अरु कर्तव्यकी एकता हुइ तब खेद उल्लास सब आप
ही लय हो जाता हे ॥ सत्तासमान शेष रहता हे सोइ सत्ता भाव पदार्थविषे अनुस्युत हो करी स्थित हे॥ तिसविषे जब चित्तकी इच्छा स्थित होती हे॥तब बहुरी दुःखकों नहि प्राप्त होता॥
हे रामजी सबका कर्ता आपकों जाण जो कर्ता पुरुष में हों अथवा अकर्ता जाणजो में कछु नही करता ॥ अथवा दोनों निश्चय त्याग करी निःसंकल्प निर्मन होहु तब जो तेरा स्वरूप
हे सोइ सत्ता शेष रहेगी अरु इह जगत् हे इह मेंहों इह मेरा हे इस कुत्सित भावनाकों त्याग करहु इस अभिमानविषे स्थित नही होणा॥ इस देहविषे अहंकार कालसुत्र नाम करके न
रककी प्राप्तिका कारन हे ॥ नरककी जाल हे शस्त्रकी वर्षा होती हे जिन दुःखहुतें दुःख स्थान देह अभिमान हे ॥ अर्थ इह जो अंत दुःखदायक हे तातें पुरुष प्रयत्न करिकें इसका
त्याग करहु ॥ इह सबके नाशविषे स्थित हे भावी कल्याण जो श्रेष्ठ पुरुष हे सो इस साथ स्पर्श नही करते ॥ जेसें चंडाली होवे अरु तिसकी गोदविषे श्वानकामांस होवे तिस सा
थ श्रेष्ट पुरुष संग नही करते तेसें देहाभिमान साथ स्पर्श नही करणा ॥ इह महा नीच हे ॥ इह अहंकाररूपी बादल नेत्रके आगें पटल आया हे तिसकरी आत्मा नही भासता ज
ब विचार करी इस पटलकों दूर करेगे तब आत्मसत्ता प्रकाश उदय होवेगा जेसें मेघ घटाके दूर हुवे चंद्रमा प्रकाश आता हे तेसें अहंकारके अभावतें आत्मा प्रकाशता हे ॥ जब
तूं इन निश्चयविषे कोउ निश्चय धरेगा तब सब दुःखतें रहित शांतपदकों प्राप्त होवेगा ॥ इह निर्णय सबतें उत्तम हे इह निश्चयविषे पुरुष उत्तम सदा स्थित हे अब तुमभी विधी अ
थवा निषेध दोनोंविषे कोउ निश्चय धारहु ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे कर्तव्य विचारो नाम पंचपंचाशत्तमः सर्गः ॥ ५५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे ब्राह्मण! जेते कछु तुमनें सुंदर वचन कहे हैं सो सत्य हे ॥ अकर्तारूप, आत्मा, कर्ता, अभोक्ता, सबका भोक्ता, भूतकों धारणे हारा, सबका आश्रय भूत, अरु सर्व
गत, व्यापक, चिन्मात्र, निर्मलपद अनुभव रूप देव सर्वभूतके अंतर स्थित हे ॥ हे प्रभो एसा जो ब्रह्मतत्व हे सो मेरे हृदयविषे रम्य हुवा हे तुमारे वचन करी प्रकाशणें लगा हे ॥ तुमा
रे वचन शीतल शांतरूप तप्तताकों मिटाते हैं ॥ जेसें वर्षाकरी पृथ्वी शीतल होती हे तेसें मेरा रिदा सीतल भयाहे ॥ आत्मा उदासीनकि नांई अनिछित स्थित हे कर्तव्य भोक्तव्यतें रहि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त अरु सब जगत्कों प्रकाशता हे ॥ सब क्रिया तिसकरी सिद्ध होती हे इस कारनतें कर्ताभी उही हे अरु भोक्ताभी उही हे ॥ परंतु कछुक संशय मुझकों हे सो रिदेविषे विस्तारकों प्राप्त भया हे तिसकों अपणी वाणी करी छेदहु ॥ जेसें चंद्रमाका प्रकाश तमकों नाश करता हे तेसें संशय दूर कर जो इह सत्य हे इह असत्य हे यह में हों उह अवर हे ॥ इत्यादिक द्वैत कल्पना एक अद्वैत विस्तृत शांतरूपविषे कहांतें स्थित भइ हे ? निर्मलविषे मल केसें हूआहे ! ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस तेरे प्रश्नका उत्तर में सिद्धांतकालविषे कहोंगा अथवा तूं आपहि जान लेवेगा ॥ मोक्ष उपाय जो इह शास्त्र हे तिसका सिद्धांत जब भली प्रकार तेरे रिदेविषे स्थित होवेगा तब तूं इस प्रश्नका पात्र होवेगा अनर्थ योग्य न होवेगा ॥ तिस अवस्थातें अन्यथा नही होता हे रामजी सुंदर स्त्रीयांकी सुंदरवाणीसों गीत होता हे तिसके अधिकारी कामी जीव जोवनवान पुरुष होते हें तेसें तूं सिद्धांत अवस्थाविषे मेरे बचनका अधिकारी होवेगा ॥ जेसें रागमयी कथा बालकके आगें कहणी व्यर्थ होती हे ॥ तेसें बोधसमय विना उदार कथा कहनी व्यर्थ होती हे जेसें शरत्कालविषे पत्र संयुक्त वृछ शोभता हे ॥ अरु वसंत ऋतुविषे पुष्पकरी शोभता हे तेसेंहि जेसी अवस्था पुरुषकी होती हे तेसा उपदेश कहणा शोभता हे ॥ किसी समय केसा कीसी समय केसा शोभता हे ॥ अरु उपदेशभी तब दृढ लगता हे जब बुद्धि शुद्ध होती हे ॥ मलीन बुद्धिविषे दृढ नही लगता ॥ जेसें निर्मल वस्त्र उपर केसरका रंग शीघ्रही चडी जाता हे ॥ मलीन वस्त्र उपर नही चडता तेसें प्राप्तरूप जो आत्मा हे तिसका विज्ञान उपदेश सिद्धांत अवस्थावालेकों लगता हे जीसकों बोध सत्ता प्राप्त भइहे अरु तेरे प्रश्नका उत्तर में संक्षेपमात्र कहाभी हे विस्तार करी नही कहा ॥ जो तूं नही जानता तोभी प्रत्यक्ष हे ॥ जब तूं आपकरी आपकों प्राप्त होवेगा तब आपहि इस प्रश्नके उत्तरकों जानलेवेगा इसविषे संदेह कछु नहि ॥ जब सिद्धांतकालविषे बोधकों प्राप्त होकरी स्थित होवेगा तब मेभी इस प्रश्नका उत्तर विस्तार करी कहोंगा जब आपकरी अपणा आप निर्मल करेगा तब आपणें आपकों जानलेवेगा ॥ हे रामजी ! जो कर्ता अरु कर्मका विचार में तुझकों कहाहे तिसकों विचार करी वासनाका त्याग करहु ॥ जबलग संसारकी वासना इस रिदेविषे होती हे तबलग बंधमान हे ॥ जब वासना छेद होती हे तब मुक्ति होती हे तातें तूं वासनाका त्याग कर अरु मोक्ष अर्थ जो वासना हे तिसकाभी त्याग करु तब सुखी होवेगा ॥ इस क्रम करिकें वासनाकों त्याग प्रथम शास्त्र विरुद्धतामसी वासनाका त्याग कर बहुरी विषयकी वासनाका त्याग कर ॥ अरु मैत्री करुणा मुदिता उपेक्षा इस निर्मल वासनाकों अंगीकार कर मैत्री अर्थ इह जो सब विषे ब्रह्मभाव करी द्रोह किसिका नही करणा लक्ष्मीवान साथ मित्रभाव होवे ॥ अरु दुःखीपर दया करनी इह करुणा कहियें ॥ अरु धर्मात्मा पुरुषकों देखीकें प्रसन्न होणा इसका नाम मुदिता हे पापीकों देखकें उदासीन रहणा निंदा न करणी इसका नाम उपेक्षा हे ॥ इन चहूं प्रकारकी वासना करी संपन्न होणा अरु अंतरतें इनकाभी त्याग करणा रिदेविषे इनका अभिमानभी न होवे अरु बाह्य इनका व्यवहार होवे बहुरी अंतरतें दृश्यमें गुणकी वासना त्याग करी चिन्मात्र वासना रखनी पाछें इसकोंभी मन बुद्धि साथ मिश्रित जानी त्याग करणा तब जिसकरी वासना त्यागी हे सो शेष रहेगा तिसकोंभी त्याग करना ॥ हे रामजी ! चिन्मात्र तत्वतें कल्पना करीकें देह इंद्रियां प्राण अरु तम प्रकाशवासनादिक भ्रममात्र भासि आएहे ॥ जब मूल संयुक्त इनकों त्याग करेगा मूल कहीयें अहंकार संयुक्त तब आकाशवत् सम स्वच्छ होहिगा ॥ इस प्रकार सबकों त्याग करी पाछें जो तेरा स्वरूप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे सो तूं होहु जो रिदेसों इस प्रकार त्याग करी स्थित होता हे सो पुरुष मुक्तिरूप परमेश्वर होता हे समाधिविषे रहे अथवा कर्म करे अथवा न करे जिसके रिदेतें सब अर्थकी आस्था नष्ट भइहे सो मुक्तहे अरु उत्तम उदार चित्त हे तिस पुरुषकों करणे न करणेविषे कछु लाभ हानि नही होती ॥ न समाधि करणे विषे अर्थ हे न तप करी अर्थ हे काहेतें जो मन तिसका वासनातें रहित भया हे॥ हे रामजी! में चिरकाल पर्यंत अनेक शास्त्र विचारे हे अरु उत्तम पुरुष साथ चर्चा करी हे परस्पर इह निश्चय किया हे जो भली प्रकार वासनाका त्याग करना तातें उत्तम मौन हे ॥ इस विना उत्तमपद पावणे जोग कोउ नही ॥ जो कछु देखणे जोग हे सो में सब देख्याहे अरु दशोदिशा भम्या हों तामें कितनेक जन यथार्थ दर्शी दृष्टी आएहे अरु कितनेक हेयोपादेय संयुक्त मुझकों दृष्टी आएहे यही जतन करते हे इनतें इतर कछु नही करते ॥ किसिकों ग्रहणकी किसिकों त्यागकी इछा होती हे ॥ ना ना प्रकार कियाके आरंभसों सब देहके अर्थ करते हे ॥ आत्माके अर्थ कछु नही करते॥ पाताल स्वर्ग ब्रह्मलोक आदि सब लोक देखे हे तिन विषे केतेक संत मुझकों दृष्ट आए हे जीननें देखणे जोग आत्मतत्वपद देख्या हे ओर ग्रहण त्याग सब असत्य भांति करी उठे हे इह निश्चय जिनका गलित भया हे अेसें ज्ञानवान केइ विरले हे ॥ सब ब्रह्मांडका राज करे अग्निविषे प्रवेश करे जलविषे प्रवेश करे ॥ अेसें ऐश्वर्य शक्ति करी संपन्नभी होवे तोभी आत्मलाभ विना जीवकों शांति नही प्राप्त होती बडे बुद्धिवान संतभी वहीहे ॥ जिननें अपणी इंद्रियांरूपी शत्रु जीते हे सोइ सुरमें हे तिनकों जरा जन्म मृत्युका अभाव हे उह पुरुष उपासना करने जोग हे ॥ हे रामजी! ज्ञानवानकों किसी दृश्य पदार्थविषे प्रीति नही होती ॥ काहेतें जो पृथवी आदिक पंचभूतही सब ठोर पाईतें हे त्रिलोकिविषे इनतें इतर अवर पदार्थ कोउ नही तो प्रीति किस बिध होवे! जुक्ति करीकें ज्ञानवान संसार समुद्रकों गोपदवत् करकें तरी जातें हे अरु जिननें जुक्तिका त्याग कीया हे तिनकों सप्त समुद्रकी नांइं संसार हो जाता हे ॥ अरु जो पुरुष उदारचित्त हे तिनकों इह संपूर्ण जगत् कदंब दृछ के गालवत् हो जाता हे ॥ तिसविषे उह त्याग किसका करे अरु भोग किसका करे ? हेयोपादेयतें रहित पुरुषकों जगत् तुछ जेसा भासता हे इस कारनतें जगत्के पदार्थ निमित्त जतन नही करता अरु जो दुर्बुद्धि जीव होते हे सो तुच्छ ब्रह्मांडरूप पृथ्वीपर जुद्ध करतें हे अनेक जीवकी घात करते हे ममताविषे बंधमान हे अरु इह जगत् केसा हे ॥ संकल्पमात्र विषे नष्ट हो जाता हे अरु क्षणक्षणविषे आस्था करी जतन करणा बडी मूढता हे ॥ सब जगत् आत्माके एक अंशकरी कलपित हे ॥ इसकी उपमा तृणसमानभी नही इस प्रकार तुछरूप त्रिलोकी जगत्कों जान करी आत्मवेत्ता किसी पदार्थके हर्षशोकविषे बंधमान नही होते ग्रहण अरु त्यागतें रहित हे ॥ सदाशिवके लोक आदि पातालपर्यंत जल रस देह जो राजस सात्विक तामस करी संयुक्त जेते कछु जगत्के पदार्थ हे सो ज्ञानवानकों प्रसन्न करी नही सकते उसकी इछा कीसीविषे नही होती ॥ एक अद्वितीयात्म भावकों प्राप्त भया हे आकाशवत् व्यापक बुद्धि होता हे अपणे आपविषे स्थित हे चित्त दृश्यतेंरहित अचेतन चिन्मात्र हे ॥ शरीररूप जाल हे सोइ भयानक कुहीड तिसकरी जगत्रूप कोंटरधूसर हो रहा हे॥ सो तिस पुरुषका शांत हो जाता हे ॥ द्वितीय वस्तुका अभाव भया हे ब्रह्मरूपी बडा समुद्र हे ॥ तिसविषे झगके बोयेवत् कुलाचल पर्वत हे चैतनरूपी सूर्य हे ॥ तिसविषे मृगतृष्णाकी नदीरूप जगत्की लक्ष्मी हे ॥ अरु ब्रह्मरूपी समुद्रविषे जगत्रूपी तरंग उठते अरु लय होते हैं ॥ अेसें जानणे हारा जो ज्ञानवान हे तिसकों इह जगत् आनंददायक केसें होवे ॥ सूर्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चंद्रमा अग्नि जो तुझको प्रकाशरूप भासता हे सोभी घटकाष्ठ आदिकवत् जडरूप हे जिसकरी इह प्रकाशते हे ॥ सो सबको सिद्ध करता आत्मसत्ता हें ओर कोउ नही ॥ देह जो रुधिर मांस अस्थि करी बनी हे इंद्रियां संयुक्त वेष्टित हे तिस देह जगत्रूप डब्बेविषे चैतनजीवरूप रत्न हे तिसकरी बिराजता हे ॥ चैतनबिना जड मुग्धरूप हे ॥ हे रामजी इह जो स्त्री का देह भासता हे सो चर्मकी पूतली बनी हे तिसको देखकें मूढ बालक प्रसन्न होता हे ॥ जो बुद्धिवान हे सो प्रसन्न नही होते ॥ इस प्रकार ज्ञानवानको विषय भोग प्रसन्न नही क रते॥ जेसें वायुके चलणे करी पर्वत चलायमान नही होता तेसें ज्ञानवान संसारके पदार्थ करी प्रसन्न नही होता॥ज्ञानवान् तिस उत्तम पदविषे बिराजता हे॥जिसकी अपेक्षा करी चंद्रमा सूर्य पातालविषे भासते हे अर्थ इह जो इनका बडा प्रकाशभी तुछ जेसा भासता हें ॥ परम उत्तम पदविषे ज्ञानवान बिराजता हे अरु इह संसार मूढ जीव संसारीसमुद्रविषे सर्प की नांइ बहे जाते हे जेसें हमको भासते हे तेसें कहते हे ॥ इस जगत्विषे एसा भाव पदार्थ कोउ नही जो ज्ञानवानको राग करी रंजित करे ॥ जेसें नगरका राजा होवें तिसका यह विषे महासुंदर विचित्र रूप राणीयां होवे तिसको ग्रामकी मूढ नीच स्त्रीयां प्रसन्न करी नही सकती तेसें इह जगतके भाव पदार्थ तत्ववेत्ताके रिदेविषे प्रवेश नही करी सकते ॥ जेसें आकाशविषे मेघ बादर रहते हे परंतु आकाशको स्पर्श नही करी सकते ॥ जेसें सदाशिव महा सुंदर गौरीका नृत्य देखणेहारा हे अरु गौरीसंयुक्त हे तिसको वानरीका नृत्य हर्षदा यक नही होती तेसें ज्ञानवानको जगत्के पदार्थ हर्षदायक नही होते ॥ जेसें जलकरी पूरन कुंभविषे रत्नका प्रतिबिंब होवे तिसको देखकें बुद्धिवानका चित्त ग्रहण नहि करता तेसें ज्ञानवानका चित्त जगत्के पदार्थ नही चाहता ॥ इह संसारचक्र बडा विस्तारूप भासता हे सो असत्यरूप हे तिसको देखकें ज्ञानवान केसें इच्छा करे इह तो चंद्रमाकें प्रतिबिंबवत् हे ॥ शरीरभी असत्य हें इसकी इच्छा मूढ करते हे जेसें सेवालको मत्सर भोजन करते हे राजहंस नही करते तेसें संसारके विषयकी इछा अज्ञानी करते हे ज्ञानी नही करतें ॥ इ

तिश्री योगवासिष्ठे स्थिति प्रकरणे पूर्णस्वरूपवर्णनं नाम षट्पंचाशत्तमःसर्गः ॥ ५६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ! इह सिद्धांत जो पर म उचित वस्तु हे तिसकी गाथा बृहस्पतिका पुत्र जो कच हे तिसनें गाइथी सो परम पावन रूप हे ॥ एक कालमें सुमेरु पर्वतके किसी गहन स्थानविषे देव गुरुका पुत्र कच जाय स्थित भया ॥ अभ्यासके वशतें कदाचित् उसको आत्मतत्वविषे विश्रांति भइ अरु अंतःकरन उसका सम्यक ज्ञानरूपी अमृतकरी पूर्ण भया ॥ अरु पंचभूतक जो मलीन दृश्य हे ति सतें विरक्त भया ब्रह्मभावविषे अस्फुर हो करी रमता भया ॥ निराभास आत्मतत्वतें इतर कछु नही एक अद्वैत भासे एसें देखता हुवा गदगद वाणीसों बोलत भया ॥ मैं क्यों करों अरु कहां जाउ ॥ क्या ग्रहण करों ॥ किसका त्याग करों सब विश्व एक आत्म पूर्ण हो रहा हे ॥ जेसें महा कल्पविषे सब ओरतें जल पूर्ण हो रहता हे तेसें दुःखभी आत्मा हे सुख भी आत्मा हे ॥ आकाश दशो दिशा अहं त्वं आदि सब जगत् आत्माही हे ॥ बडा कष्ट हे जो अपणा आपविषे नष्ट हुआ बंधमान था देहके अंतरभी आत्मा हे बाहिरभी आत्मा हे॥ अध ऊर्ध इत उत सब आत्मा हे आत्मातें इतर कछु नही ॥ सब ओरतें एक आत्माहि स्थित हे अरु सबहि आत्माविषे स्थित हे ॥ इह सबमें हों अपणे आपविषे स्थित हों ॥ अपणे आपविषे में नही समाता अर्थ यह जो आदि अंत तें रहित अनंत आत्मा हों अग्नि में हों, वायु में हों, आकाश जल पृथ्वी में हों ॥ जो पदार्थ में नही सो हे नही जो कछु हे सो स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व विस्तृतरूप मेहीहों ॥ एक पूर्ण परम आकाश भैरव हौं अर्थ यह जो भरी रहा हौं ॥ सब जगत्भी ज्ञानरूप है समुद्रवत् एक पूर्ण स्थित हे सो कल्याण मूर्ती इस प्रकार भावना करता हुआ स्वर्नके पर्वतके कुंजविषे कच स्थित भया ॥ तिसके अनंतर ओंकारका उच्चार बडे सुरसों करने लगा अरु ओंकारकी जो अर्ध कला हे जिसकों अर्ध मात्र कहते हे सो फूलतेंभी कोमल हे ॥ बहुरी तिसविषे स्थित होत भया सो अर्ध मात्र केसी हे ॥ न अंतः स्थित हे न बाह्य हे रिदेविषे भावना करता हुवा तिसविषे स्थित भया ॥ कलनारूपी जो मल था तिसतें रहित निर्मल भया चित्तकी वृत्ति निरंतर लीन हों गई, जेसें मेघके नष्ट भयें शरतकाल आकाश निर्मल होता हे तेसें कलंकित कलनाके दुर हुवेंतें निर्मल भया ॥ जेसें पर्वतकी पूतली अचल रूप होती हे तेसें कच समाधिविषे स्थित अचल भया ॥ ॥ इतिश्री यो० स्थितिप्रकरणे कचगाथावर्ननंनाम सप्तपंचाशत्तमःसर्गः ॥ ५७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी अंगनाके शरीरादिक जो भोग पदार्थ हे सो इनतें इतर तो जगत्विषे सुख कछु नही अरु ज्ञानवानकों इह पदार्थ तुच्छ भासते हे इनविषे आस्था नही करते बहुरी इछा किस पदार्थकी करे ॥ इन भोग ऐश्वर्य पदार्थकरी मूढ असाधु तोष पाते हे ॥ जो ज्ञानवान साधु हे सो इनविषे प्रीती नही करते जो कृपण अज्ञानी हे तिनकों भोगही सरस हे ॥ अरु भोग केसें हे आपातरमणीय आदिअंत मध्यविषे दुःखरूप हे ॥ जो पुरुष इनविषे आस्था करते हे सो गर्दभ नीच पशु हे ॥ हे रामजी स्त्री केसी हे रक्त मांस अरु अस्थि आदि करी पूर्ण हे ॥ जो इसकों पाए करी तोषित होतें हे सो गिदड हे मनुष तो नहीं ॥ अरु जो ज्ञानवान हे सो किसी जगत्के पदार्थविषे प्रीती नही करते ॥ पृथ्वी सर्व मृत्तिकारूप हे वृछ सर्व काष्ठरूप हे देह सर्व मांसरूप हे पर्वत सर्व पाषाणरूप हे पाताल अध हे आकाश उर्ध हे सो दिशा करी व्याप्या हे ॥ सर्व विश्व पंचभूतकरूप हे इसविषे तो अपूर्व सुख कोउ नही जिसविषे ज्ञानवान प्रीती करते हे ॥ इंद्रियके जो पंच विषय हे सो मोहके देणेहारे हे ॥ विवेक मार्गके रोकणेहारेहे जेती कछु जगत्जालकी संपूर्ण विभूति हे वडे ऐश्वर्य पदार्थ सो सब दुःखरूप हे प्रथम इनका प्रकाश भासता हे पाछें कलंककों प्राप्त करते हे ॥ जेसें दीपक प्रथम प्रकाशकों दिखावता हे बहुरी काजल कलंककों देता हे तेसें इंद्रियांके विषय आगमापाइ हे इनकरी शांति प्राप्ति नही होती ॥ अज्ञानीकों स्त्रीयादिक पदार्थ रमणीय भासते हे ॥ ज्ञानवानकी वृति इनकी उर नही फुरती ॥ अज्ञानीकों स्थिररूप भासता हे अरु स्वाद देते हे तुष्ट करते हे॥ ज्ञानवानकों असत्य अरु चलरूप भासता हे ॥ तुष्टताका कारन नही होतें ॥ इह विषय भोगकेसे हे विषकी नांइ हे इह रमण मात्रतेंभी विषवत् मूर्छा करते हे ॥ सत्यविचार भूलि जाता हे ॥ तातें इनकों त्याग करी अपणे सुभावविषे स्थित होहु ॥ अरु ज्ञानवानकी नांइ विचरहू ॥ हे रामजी जब इस जीवकों अनात्मविषे आत्म अभिमान होता हे ॥ तब असंगरूप जगत् जालभी सत्य हो भासता हे ॥ ब्रह्माकोंभी वासनाके वशतें कल्प देहका संयोग होता हे ॥ जेसें स्वर्नका प्रतिबिंब जलविषे पडता हे अरु तिसकी झलक कंध उपर पडती हे सो कंध साथ स्वर्नका संयोग कछू नही तेसें ब्रह्माका संयोग देह साथ वास्तव कछू नही कल्पनामात्र देह हे ॥ रामोवाच ॥ हे महामती ! विरंचिके पदकों प्राप्त हो करी बहुरी इह सघनरूप जगत् केसें रचते हे सो क्रम करीकें कहो ॥ वसिष्ठोवाच॥ ॥हे रामजी जब प्रथम कमलज जो ब्रह्मा उत्पन्न भया हे ॥ तब जेसें बालक गर्भतें उपजता हे तेसें उपजी करी वारंवार इस शब्दका उच्चार किया जो ब्रह्म ब्रह्म इसकारनतें तिसकों ब्रह्मा कहते हे ॥ बहुरी संकल्पजाल हे रूप जिसका एसा क

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिपत आकार मन हो आया तिस मननें आगें संकल्प लक्ष्मी पसारी॥प्रथम संकल्पतें जो माया उपजती हे॥उह तेज अग्निके चक्रवत् फुरने लगी तिसतें बडा आकार हो गया ज्वालाकी नांइ स्वर्नलतारूप बडी जटा करी संयुक्त प्रकाशकों धारे शरीर मन संयुक्त सूर्यरूप हो करी स्थित भया ॥ अपने समान आकार बडे प्रकाश संयुक्त कल्पता भया ॥ ज्वालाका मंडल आकाशके मध्य स्थित भया ॥ अग्निरूप अग्नि ही अंग हे जिसके ॥ हे महा बुद्धिवान रामजी इसप्रकार तो ब्रह्मातें सूर्य भया हे अरु अवरजो तेज कीरण फूरतीयां हे सो आकाशविषे तारागण बिंबपर आरूढ फिरते हे ॥ बहुरी ज्यों ज्यों उह संकल्प करता गया त्यों त्यों तत्कालही आगें सिद्ध होकरी भासणे लगा इसी प्रकार आगें जगत्कों रचता भया ॥ जिस प्रकार इस सृष्टिविषे ब्रह्मा रचता हे तिसी प्रकार अवर सृष्टिविषे रचते हे ॥ प्रथम प्रजापतिकों रचता हे बहुरी काल कलना नक्षत्र तारागण रचे बहुरी देवता दैत्य मनुष नाग गंधर्व यक्ष नदीयां समुद्र पर्वत सर्व इसी प्रकार कल्पत भया ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग कल्पित होते हे तेसें सिद्ध रचे, तिनके कर्म रचे सोभी शुभ संकल्परूप जेसा उह संकल्प करे सोइ सिद्ध हो करी भासणे लगे प्रजापतिनें संकल्प करी सिद्ध उत्पन्न कीए तिनतें आगें ओर बहुरी उत्पन्न कीए॥इसि प्रकार बहुरी भूत तारागण आगें ओर उत्पन्न किये तिनने ओर उत्पन्न कीए॥तब ब्रह्माजी बेदकों उत्पन्न करत भया जीवके नाम आचार कर्म वृत्ति पुण्यक्रिया सब जगत्की मर्यादा करी नितिरूप स्त्रीकों रचता भया सो जगतरूपी यहकी मर्यादाहे॥इस निमित्त उत्पन्न किया ॥ सो इसप्रकार ब्रह्मकी माया ब्रह्मारूप करी बडे शरीरकों धर रहीहे॥आगें सृष्टिका विस्तार हे लोक अरु लोकपालके क्रम कीये हे॥सुमेरु पृथ्वीके मध्य दशो दिशा रचे सुख मृत्यु राग द्वेष प्रगट किये ॥ इस प्रकार संपूर्ण जगत् त्रिगुणरूप ब्रह्माजी रचता भया ॥ जेसें जेसें उसनें रचे हे ॥ सब तेसेंहि स्थित भइ हे ॥अरु हे क्या जो कछु संपूर्ण दृश्य भासता हे सो सब माया मात्र हे ॥ हे रामजी इस प्रकार जगत्का क्रम हुवा हे सो संकल्परूप संसार बडा स्थित होकरी अज्ञान करी भासता हे ॥ इह तो संकल्प करी रचा हे संकल्पके वशतें जगकी क्रिया पसारता हे अरु संकल्प वशतें दैवनीती होकरी स्थित भया हे ॥ सर्व जगत् ब्रह्मातें संकल्पविषे स्थित हे जब तिसका संकल्प निर्वान होता हे तब जगत्भी लय हो जाता हे॥एक समय ब्रह्माजी पद्मासनकों धर बैठे थे अरु चितवत् भये जो इह जगत्जाल मनके संकल्प फुरने मात्र हे मनके फूरने करी उपजी आता हे ॥ बडा विस्ताररूप नाना प्रकारके व्यवहार विकार संयुक्त इंद्र उपेंद्र मनुष दैत समुद्र पर्वत पाताल पृथ्वीतें लेकरी जगत्जाल सर्व माया मात्र हे बडा पसरी रहा हे ॥ अब में इसतें निवृत्त होउँ हे रामजी इसप्रकार चितवीकरी ब्रह्माजी संकल्प अनर्थरूपतें उपरत भया ॥आदि अंत रहित जो अनादि मत परमब्रह्म स्फार आत्मारूप हे तिस आत्मा तत्वविषे मनकों लय करता भया॥आनंदरूप आत्मा हो करी अपणे आपविषे स्थित भया॥निर्मल निरहंकार परम तत्वकों प्राप्त भया जेसें कोउ व्यवहारतें थका हुवा विश्राम करता हे तेसें अपणे आपकरी आत्मतत्वविषे स्थित भया जेसें अक्षोभ समुद्र होता हे तेसें अक्षोभ भया ध्यानविषे जुडी गया ॥ बहुरी ध्यानतें जाग्या जेसें द्रवता करीकें समुद्रतें तरंग फुरि आवे तेसें चित्तके वशतें ब्रह्माजी फुरनरूप हो आया तब जगत्कों देखकें चितवत भया ॥ केसा संसार हे दुःख सुखकरी संयुक्त अनंत फांसि करी बंधमान हे ॥ राग द्वेष भय मोहसों दूषित हे॥हे रामजी इस प्रकार जीवकों देखकें ब्रह्माजीकों दया उपजी॥दया करीकें अध्यात्म ज्ञान करी संपन्न वेद उपनिषद वेदांतकों प्रगट करता भया॥बडे अर्थ संयुक्त नानप्रकारके शास्त्र रचे बहुरी पुरान रचे सब जिवके मुक्ति निमित्त॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिनकों रची करी परम पद जो आपदातें रहित है तिसविषे स्थित भया ॥ जैसें मंदराचल पर्वतके नीकसेतें क्षीरसमुद्र शांत होता है तैसें शांतरूप हो करी स्थित भया बहुरी उसी प्रकार जागी जगत्‌कों देखी मर्यादाविषे जोड्या बहुरी कमलपिठविषे स्थित हो करी आत्मतत्वके ध्यान परायण भया ॥ इसी प्रकार जो कछु अपणे शरीरकी मर्यादा ब्रह्माजीनें करीहे ॥ तिसी प्रकार नितिके संस्कार पर्यंत कीडा करते है ॥ कुलालके चक्रवत् नितिके अनुसार विचरता है॥जैसें ताडना अरु वासनातें रहित चक्र फिरता है तैसें जन्म कारनतें रहित है तिसकों शरीरके रखणे अरु त्यागणेविषे कछु इछा नही ॥न कछु जगत्‌कीस्थिति अस्थितिविष इछा है ॥ किसी इस पदार्थके ग्रहन त्यागकी भावनाविषे आशक्त नही ॥ सर्व पदार्थविषे सम बुद्धि परिपूर्ण समुद्रवत् स्थित है॥कबहु सब संकल्पतें रहित शांतरूप हो रहता है॥कबहु अपणी इछा करी जगत्‌कों रचता है परंतु उसकों जगत्‌के रचणेविष कछु भेद नही सर्व पदार्थकी अवस्थाविषे तुलता है॥हे रामजी इह मैं तुझकों ब्रह्माकी स्थिति कही है इह परम दशा अवरभी किसी देवताकों उपजे तो तिसकों समता जानीयें ॥उह शुद्ध सात्विकरूप है सृष्टिके आदि जो शुद्ध ब्रह्मतत्व विषे चित्तकला फुरि है सो फुरनारूप मनकला ब्रह्मारूप होकरी स्थित भई है॥जब बहुरी जगत्‌के स्थिति क्रमविषे कलना उत्पन्न होती है तब उही ब्रह्मारूप आकाश पवनकों आश्रय ले करी ओषधी पत्रविषे आय प्रवेश करता है ॥ कइ देवता भावकों प्राप्त होता है कइ मनुष भावकों प्राप्त होता है कइ पशु पंछी तिर्यक आदिकको प्राप्त होता है, चंद्रमाकी किरणद्वारा अनादिक औषधीविषे प्राप्त होता है जैसें भावकों लेकरी चित्तकला फुरती है तैसा भाव शीघ्रही उत्पन्न हो आता है॥केइ उपजी करी संसर्ग संसारके वशतें तीसि जन्मके बंधनतें मुक्त हो जाते है॥अपणें सरूपका चमत्कार होता है केइ अनेक जन्म करी मुक्त होते है केइ थोडे जन्मकरीमुक्त होताहे॥हे रामजी इसप्रकार जगत्‌का क्रम है प्रत्यक्ष संकटकर्म बंध मोक्षरूप उपजते है केइ मिटिजाते है ॥इसप्रकार संसार बंधमोक्ष करी पूरण है ॥ जब इह कलना मल नष्ट होत है तब संसारतें मुक्ति होता है ॥ जबलग कलना मल होता है तबलग संसार भासता है ॥ इतिश्री योगवासिठे स्थिति प्रकरणे कमलजा व्यवहारोनाम अष्टपंचाशत्तमः सर्गः ॥ ५८ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे महाबाहो रामजी इस प्रकार ब्रह्माजी निर्मल पदविषे स्थित होकरी सर्ग विस्तारता भया ॥ जो संसाररूपी कूप है तिसविषे जीव भमते हैं ॥ जीवरूपी टीड तृष्णारूपी जेवरी साथ बांधे हूवे कबहु अधकों जाते है कबहु उर्धकों जाते है ॥ जब वासनारूपी जेवरी टूट पडती है तब ब्रह्मतत्वसों उठे सो बहुरी ब्रह्मतत्व साथ एकत्व हो जाता है ॥ ब्रह्मसत्तातें जीव उपजते बहुरी ब्रह्मसत्ताविषे लय होते है ॥ जैसें समुद्रतें मेघ जल कणके धूम्रद्वारा उपजते है बहुरी वर्षा करी तिसीविषे प्रवेश करते है तैसें जब तन्मात्रा मंडल साथ चित्तकला मिलती है तब तिस साथ जीव एकरूप हो जाते है ॥ जैसें मंदार दलके पुष्पकी सुगंध वायुसंग मिश्रित एकरूप हो जाती है तैसें चित्तकला जीव तन्मात्रासों मिलिकरी प्राणनामकों पाती है ॥ इस प्रकार प्राणवायुतें आदि तन्मात्रा जीवकलाकों खेचणें लगता है ॥ जैसें बडे प्रचंड दैत्यके समूह देवताकों खेंचें तैसें खेंचा हुवा जीव तन्मात्रा साथ एकरूप हो जाता है ॥ जैसें गंध अरु वायु तन्मय होतहें उह प्राण तन्मात्रा जीवके शरीरविषे वीर्य स्थानमें जाय प्राप्त होताहे तब जगत्‌विषे उपजी करी प्राण प्रत्यक्ष होते है ॥ ओर केइ धूम्र मार्ग करी देहवानके शरीरविषे प्रवेश करतें हैं ॥ मेघविषे प्रवेश करी बुंद मार्गसों औषधीविषे रसरूप होकरी जाय स्थित होते है ॥ तिसकों भोजन करनेहारेके अंतर वीर्यरूप होकरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थित होते हे ॥ केइ और प्राणवायु द्वारा प्रगट होते हे उह चर स्थावररूप होते हे केइ पवनमार्ग करी धानक्षेत्रविषे चावलरूप स्थित होते हे तिसकों जीव भोजन करते हे तिसकर वीर्यविषे प्राप्त होते हे ॥ नाना प्रकारके रंग भेदकरी प्राणधर्म उपजते हे ॥ केइ उपजणे मात्रतें जीवकी परंपरा तन्मात्रा करी वेष्टित आकाशविषे जाय स्थित होते हे ॥ जबलग चंद्रमा उदय नही भया ॥ जब चंद्रमा उदय होते हैं तब उसका रस जो कीरणा सीतल अरु स्वेत क्षीर समुद्रवत् तिनविषे जाय प्राप्त होते हे तिनके अंतर्गत हो करी पत्र औषधीविषे स्थित होते हे ॥ जेसें कंवलपर भंवरे आये स्थित होते हे ॥ तेसें औषधीविषे जाय करी जीव स्थित होतहे फलविषे स्वादरूप हो करी स्थित होतहे ॥ जेसें घुना रस करी पूरन होता हे ॥ तेसें जीवकरी औषधी फल पूर्ण हो जाते हे ॥ जेसें दूधकरी स्तन पूर्ण होते हे तेसें जीवकरी फल पूर्ण होतें हे ॥ तब उह फल परिपक्व होते हे तिनकों देह धारी भछन करते हे तिसविषे जीव वीर्यरूप जडात्मकरूप होकरी स्थित होते हे ॥ सो सुषुप्ति वासना करी वेष्टित हुवे गर्भ पिंजरविषे जाय पडते हे ॥ हे रामजी! वीर्यविषे सदा जीव रहते हे ॥ जेसें मृत्तिकाविषे सदा घटादिक रहते हे काष्ठविषे सदा अग्नि रहता हे दूधविषे घृत रहता हे तेसें वीर्यविषे जीव रहता हे ॥ इस प्रकार परमात्मा महेशरूप तें जीवकी परंपरा उपजती हे ॥ वायु मार्गकरी, धूम्रमार्ग करी, मेघमार्ग, औषधी मार्गकरी, प्राणमार्ग, चंद्रमाकी किरणामार्ग करी, इत्यादिक अनेक प्रकारकरी जीव उपजते हे ॥ जो उपजणे करीकें आत्मसत्तासों अप्रमादी रहते हे अपणा स्वरूप विस्मरन नही होता सो शुद्ध सात्विकी हे ॥ महा उदार व्यवहारवान होते हे अरु जिनकों उपजणे करी विस्मरण हो जाता हे बहुरी उसी शरीरविषे आत्माका साक्षात्कार होता हे सो सात्विकीरूप हे अरु जो उपजीकरी नाना प्रकारके व्यवहारकों प्राप्त होते हे अरु स्वरूप विस्मरन हो जाता हे जन्मकी परंपरा पायकरी स्वरूपका साक्षात्कार होता हे सो राजस सात्विकी कहाते हे ॥ अरु जिनकों अंतका जन्म आय रहता हे तिनकों जिस प्रकार मोक्ष होता हे सो क्रम अब तुझकों कहता हों ॥ जो सहज सत्ता सात्विक भावकों प्राप्त होते हे अरु मोक्ष होते हे हे रामजी उपजणे मात्रतें जो अप्रमादी हूवे सो शुद्ध सात्विकी हे उह ब्रह्मादिक हे ॥ अरु जो प्रथम जन्म करी बोधवान हुवे सो सात्विकी हे अरु दुर्लभ हे अरु जो कबहु कीसी जन्मकरी मोक्ष हुवे हे सो राजस सात्विकी हे ॥ इनतें इतर हे सो नाना प्रकारके मूक जड अनेक हे तम संयुक्त स्थावरादिक हे जिनकों आत्मपद प्राप्त भया हे तिनकों जो मिलते हे तिनकों अंतका जन्म हे एसें पुरुष विचारतें हे जो में कवन हों इह जगत् क्या हे इस विचारके क्रम करी मोक्षभागी होता हे सो राजसतें सात्विकी होते हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे विचार पुरुष निर्णयोनाम एकोनषष्टितमःसर्गः ॥ ५९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! राजसतें सात्विकी हुवे हे सो पृथ्वीपर महा गुण करी शोभायमान होते हे सदा उदितरूप रहते हे जेसें आकाशविषे चंद्रमा रहता हे तेसें उह पुरुष खेदकों नही प्राप्त होते हे ॥ जेसें आकाशकों मलीनता स्पर्श नही करती तेसें उनकों आपदा स्पर्श नही करती ॥ जेसें रात्रके आएतें स्वर्नके कमल मुंदे नही जाते जो कछू प्रकृत आचार हे तिसके अनुसार चेष्टा करते हे ओर प्रकार नही करते ॥ जेसें सूर्य अपणे आचारविषे विचरता हे ओर आचार नही करता तेसें उह सत्य मार्गविषे विचरते हे अंतरतें पूर्ण शांत रूप हे आपदा करीभी नही त्यागते ॥ जेसें चंद्रमाकी कला क्षीण होती हे तोभी अपणी सीतलताकों नही त्यागती तेसें ज्ञानवान आपदाके प्राप्त हुवेभी मलीनताकों प्राप्त नही होता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वदा काल मैत्री आदिक गुण करी संपन्न रहता हे सदा तिनकरी सोभताहे ॥ समतारूप जो समरस हे तिसकरी पूर्ण शांतरूप हे ॥ निरंतर स्वशुद्ध समुद्रवत् अपणी मर्यादाविषे स्थित रहता हे ॥ हे रामजी ! तुमभी महापुरुषके मार्ग सदा चलहू ॥ जो मार्ग परम पावन आपदातें रहित सात्विकी हे तिसके अनुसार चलहु तब आपदाके समुद्रविषे न डूबोगे ॥ जेसें उह खेदतें रहित जगत्विषे विचरते हे तेसें विचरहू जिस क्रमकरी राजसतें सात्विकी मोक्षभागी होता हे सो सुण प्रथम आर्जव भावकों प्राप्त होणा अर्थ यह जो यथाशास्त्र सत व्यवहार करणा तिसकरी अंतःकरण शुद्ध होता हे ॥ तिस आर्जव पदकों पाय करी संत साथ मिलणा अरु वारंवार सतशास्त्रकों विचारणा अरु जो संसारके अनित्य पदार्थ हे तिनविषे प्रीति न करणी विरक्तता उपजाणी तिनतें निरिछा होणा अरु जो पदार्थके उपजे विनसणे त्रिलोकीविषे सत्यरूप हे वारंवार तिसकी भावना करणी ॥ अवर भावना शीघ्रही मिथ्या जाणीकरी त्यागणी ॥ जो कछु दृश्य जगत् भासताहे सो असम्यक द्रष्टि हे ॥ निष्फल नाशरूप व्यर्थ जाणी करी तिसकी भावना त्यागणी अरु सम्यक् ज्ञानकों स्मरन करना ॥ संतजन अरु सत शास्त्र जो ज्ञानके सहायक हे तिन संग मिलिकें विचार करणा जो में कवन हों जगत क्या हे भली प्रकार प्रयत्न करी विवेक संयुक्त सदा अध्यात्म शास्त्रका विचार करणा ॥ सत्य व्यवहार सात्विकी कर्म करणे ॥ अवज्ञा करीकें मृत्युकों विस्मरण न करणा॥जो मृत्यु विस्मरन करी संसार कार्यविषे लगी जाता हे सो बूडता हे॥तातें स्मरन करीकें सतमार्गविषे लगणा॥जिस पदविषे ज्ञानी पुरुष महा उदार शीतल चित्त स्थित हे तिस पदके मार्ग अरु दर्सनविषे सदा इछा राखणी॥ जेसें मोरकों मेघकी इछा रहती हे हे रामजी अहंकार जो देहविषे स्थित हे इह देह संसारविषे उपजी हे तिनकों भली प्रकार विचार करीकें नाश करहु ॥ इह देह संसार रुधिर मांस मज्जा आदिककी बनावता हे ॥ जेते कछु भूत जाति हे सो सभ चैतनरूपी तागेविषे मोती परोए होवे तेसें हे तिन भूतकों त्याग करी चिन्मात्र तत्वकों देखो चैतन सत्ता सत्य हे नित्य विस्तृतरूप हे शुद्ध हे सर्वगत सर्वभाव तिसविषे हे सो त्रिलोकीका भूषण आश्रयभूत हे ॥ जो चैतन आकाशमें सूर्यविषे हे सोइ चैतन पृथ्वीकें छिद्रमें कीट हे तिसविषे हे ॥ जेसें घटाकाश अरु महाकाशविषे भेद कछु नही तेसें शरीरमें चैतनविषे भेद कछु नही जेसें बोत मिरचा हे तिनविषे तीक्षणता एकै हे तेसें सर्व भूतविषे चैतनता एकही अनुस्यूत हे ॥ अनुभव करी जानता हे तिस एक चिन्मात्रविषे भिन्नता कहांतें होवे एक सत्य सत्ता जो निरंतर चिन्मात्र वस्तुरूप हे तिसविषे जन्म मरन आदिक अज्ञानकरी भासता हे वास्तवतें न कोउ उपजा हे न मरता हे ॥ एक आत्मतत्व सदा ज्योंका त्यों स्थित हे जगत् विकार तिसविषे आभास मात्र हे न सत्य हे न असत्य हे ॥ चित्तके फुरनें करी भासते हे चित्तके शांत हुवे शांत हो जाता हे जो जगत्कों सत्य मानीये तो अनादि हूवा इसकरीभी शोक ाक सीका नही बनता ॥ अरु जो जगत् असत्य मानीये तोभी शोकका स्थान नही बनता तातें दृढ विचार करीकें स्थित होहु शोककों त्यागहू तुमकों न जन्म हे न मरन हे आकाशवत् निर्मल सम शांतरूप होहु ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणे मोक्षविचारो नाम षष्टितमःसर्गः ॥ ६० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जो धैर्यवान पुरुष बुद्धिवान हे सो सतशास्त्रकों विचारे अरु संतजनका संग करे तिनके आचारकों ग्रहण करे जो जो दुःखके नाश कर्ता श्रेष्ठ ज्ञानदृष्टि हे तिसकों जतन करीके अंगीकार करे तब इसकोंभी संतजनता आय प्राप्त होवेगी ॥ संतजन जो विरक्त आत्मा हे तिनसों मिलिकरी सतशास्त्रकों विचारे तब परम पदकों प्राप्त होते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे॥हे रामजी ! जो पुरुष सतशास्त्रके विचारणे हारा हे अरु संतजनका संग वैराग अभ्यास आदर संयुक्त करता हे सो तुमारी नांई विज्ञानका पात्र हे तुमतो उदार आत्मा हो॥ धैर्यवानके जो गुण शुभ आचार हे तिनके समुद्र हो निर्दुःख हो करी स्थित होहु ॥ अब राजस सात्विकी भये हो मननशील भये हो ॥ बहुरी एसें दग्धरूप संसारविषे दुःखके पात्र न होहुगे इह तुमारा अंतका जन्म हे ॥ जो अपणे सुभावकी ओर धावते हो ॥ अंतर्मुख जतन करते हो निर्मल दृष्टि तुमकों प्रगट भइहे यथाभूत जगत वस्तुकों जानत भये हो ॥ जेसें सूर्यके प्र काश करी यथार्थ वस्तुका ज्ञान होता हे अब मेरे वचनकी पंक्ति करी सर्व मल दूर हो जावेगा जेसें अग्निविषे धातुका मल जली जाता हे तेसें तुमारा मल जली जावेगा निर्मलता करी शोभायमान होवेगा जेसें मेघके नष्ट भये शरत्कालका आकाश शोभताहे तेसें संसारकी भावनातें मुक्ति हो करी चिंतातें रहित निर्मल भाव करी शोभोगे ॥ अहं मम आदिक कल्पनातें मुक्त भये हे सो मुक्त हे इसविषे संशय कछु नही ॥ हे रामजी ! तेरा जो इह अनुभव उत्तम व्यवहार हे तिसके अनुसार विचरेगा तो तूं अशोक पदकों प्राप्त होवेगा ॥ अरु अवर कोउ इस व्यवहारविषे वरतेगा सोभी संसार समुद्रकों अनुभवरूपी बेडे करी तरी जावेगा ॥ तुमारे तुल्य जीसकी मति होवेगी सो सम दर्शी जन ज्ञानदृष्टी योग्य हे जेसें सर्व कांतिमान सुंदरताका पात्र पूर्णमासीका चंद्रमा होता हे अरु तुम तो अशोक दशाकों प्राप्त भये हो ॥ यथा प्राप्तविषे वर्तते हो जबलग देह हे तबलग राग दोषतें रहित स्थित बुद्धि रहो यथाशास्त्र जो उचित आचार हे सो बाह्यतें करो अरु अंतरतें सर्व कल्पनातें रहित शीतल चित्त होहू ॥ जेसें पूर्णमासीका चंद्रमा शीतल होता हे॥ हे रामजी ! इन सात्विक अरु राजस सात्विकतें जो इतर जीव हे तामसी तिनका विचार इहां नही करणा उह मूढ गिदड हे मद्यादिकके खाणेहारे हे तिनके विचार साथ क्या प्रयोजन हे ॥ जो मैं तुझकों सात्विकी जन कहे हे तिसके सेवणे करी बुद्धि अंतके जन्मवती होती हे ॥ अरु जो तामसी तिनकों सेवेतो उनकी बुद्धिभी उदार हो जाती हे अरु जिस जिस जातिविषे जीव उपजता हे तिस जातिके गुणकरी शीघ्रही संयुक्त हो जाता हे पूर्वजो कोउ भाव होता हे सो जातिके वशतें उहां जाता रहता हे अरु जिस जातिविषे उह जन्मता हे तिस जातिके गुणकों जीतणेका पुरुषार्थ करता हे तब जतन करी पूर्वके सुभावकों जीती लेता हे ॥ जेसें धीरजवान सूरमा शत्रुकों जीती लेता हे ॥ जो इसका पूर्व संस्कार मलीन हे तो धीरज करीकें मलीन बुद्धिका उधार करे ॥ जेसें मुग्ध पशू गरतविषे फसी जावे अरु तिसकों काढि लेवे तेसें बुद्धिकों मलीन संस्कारतें काढि लेवे हे रामजी जो तामस राजसी जात हे तिनकोंभी जन्म अरु कर्मके संस्कार वशतें सात्विक प्राप्त होताहे अरु उहीभी अपणे विचारद्वारा सात्विक जातिकों प्राप्त होते हे ॥ इस पुरुषके अंतर अनुभवरूपी चिंतामणी हे तिसविषे जो कछु निवेदन करता हे सोइरूप इसका हो जाता हे तातें पुरुषार्थ करीकें अपणे उद्धार करहू पुरुष प्रयत्न करी इह पुरुष वडे गुणकरी संपन्न होता हे अरु मोक्षकों प्राप्त होता हे ॥ अंत का जन्म होता हे आगें जन्म नही पावता ॥ अशुभ जातिके कर्म निवृत्त हो जाते हे अेसा पदार्थ पृथ्वी आकाश देवलोकविषे कोउ नही जो यथाशास्त्र प्रयत्न करी न पाइएं सो अवश्य पाता हे हे रामजी तुमतो बडे गुण करी संपन्न हो धीरजता अरु उत्तम वैराग दृढ बुद्धि संयुक्त हो ॥ अरु तिसके पावणेकों धर्म बुद्धि करी वीत शोकरूप हो ॥ तुमारे कमकों जो कोउ जीव ग्रहण करेगा सो मूढतातें रहित होकरी अशोक पदकों प्राप्त होवेगा ॥ अब तुमारा अंतका जन्म हे बडे विवेक करी संयुक्त हो बुद्धिविषे शांतिके गुण आनि पसरे हे ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नकरी तुम शोभते हो ॥ सात्विक गुण क्रम करी सर्वविषे रमी रहे हो ॥ संसारकी बुद्धि मोह चिंता तुमकों मिथ्या हे तुम अपणे स्वस्थ स्वरूपविषे स्थित होहु ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे महारामायणे स्थितिप्रकरणे मोक्षोपाय वर्णनं नाम एकषष्टितमःसर्गः ॥ ६१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ समाप्तोऽयं योगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणं चतुर्थं ॥

अनुक्रमणिका

सर्गांक	सर्गनाम	पत्रांक	सर्गांक	सर्गनाम	पत्रांक	सर्गांक	सर्गनाम	पत्रांक
१	जगत् निराकरण	२	७	भार्गवसंगम	४	१३	भृगुआश्वासनवर्णन	९
२	स्मृतिबीजोपन्यास	२	८	भार्गवोपाख्याने विविधजन्म	५	१४	भार्गव जन्मांतर	९
३	जगत अन्यवर्णन	३	९	भार्गवकलेवर	५	१५	शुक्र प्रथमजीवन	१०
४	अंकुरवर्णन	३	१०	काल वाक्यं	६	१६	भार्गव जन्मांतर	१०
५	भार्गवसंवित गमन	४	११	संसारावर्त्तवर्णन	७	१७	मनोराजसंमीलन	११
६	भार्गवमनोराज वर्णन	४	१२	उत्पत्ति विस्तार	८	१८	जीव पदवर्णन	११

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्गांक	सर्गनाम	पत्रांक	सर्गांक	सर्गनाम	पत्रांक	सर्गांक	सर्गनाम	पत्रांक
१९	जाग्रत्स्वमसुषुप्ति तुरिया वर्णन	१३	३५	उपशम स्वरूपवर्णन	२५	५१	स्वेतथवैभव वर्णन	३९
२०	भार्गवोपाख्यान समाप्ति	१४	३६	चिदात्म रूपवर्णन	२७	५२	संसारविचार	४०
२१	विज्ञान वाद	१४	३७	शांति उपदेश कारणं	२७	५३	दासुरोपाख्यानेजगच्चिकित्सा	४१
२२	अनुत्तम विश्राम	१५	३८	मोक्षोपदेश	२८	५४	दासुराख्यान समाप्ति	४२
२३	शरीर नगर वर्णन	१६	३९	सर्वैकता प्रतिपादन	२९	५५	कर्त्तव्यविचार	४२
२४	मनस्वी सत्यता प्रति पादन	१७	४०	ब्रह्मप्रतिपादनं	३०	५६	पूर्ण स्वरूपवर्णन	४३
२५	दामव्यालकटोत्पत्ति	१८	४१	अविद्या कथनं	३०	५७	कचगाथावर्णन	४५
२६	दामव्यालकट संग्राम	१८	४२	जीवतत्वदृत्तिवर्णन	३१	५८	कमलजा व्यवहार	४५
२७	दामोपाख्याने ब्रह्मवाक्य	१९	४३	जीव बीजस्थान	३२	५९	विचार संपूर्ण निर्णय	४५
२८	सुरासुर युद्धवर्णन	२०	४४	संसार प्रतिपादनं	३३	६०	मोक्षविचार	४६
२९	दामव्यालकटोपाख्याने असुर मरण	२०	४५	यथार्थोपदेश योग	३४	६१	मोक्षोपाय	४६
३०	दामव्यालकट जन्मांतर	२१	४६	यथाभूतार्थ बोध योग	३५			
३१	निर्वाण उपदेश	२१	४७	जगत् सत्यासत्य वर्णन	३६			
३२	दामव्यालकटोपाख्याने देशाचार	२२	४८	दासुराख्याने वनोपरुदन	३८			
३३	दामव्यालकटोपाख्याने पुरुषार्थजय	२३	४९	दासुराख्याने अवलोकनं	३८			
३४	दामव्यालकटोपाख्यान समाप्ति	२५	५०	दासुरसुत बोध	३९			

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

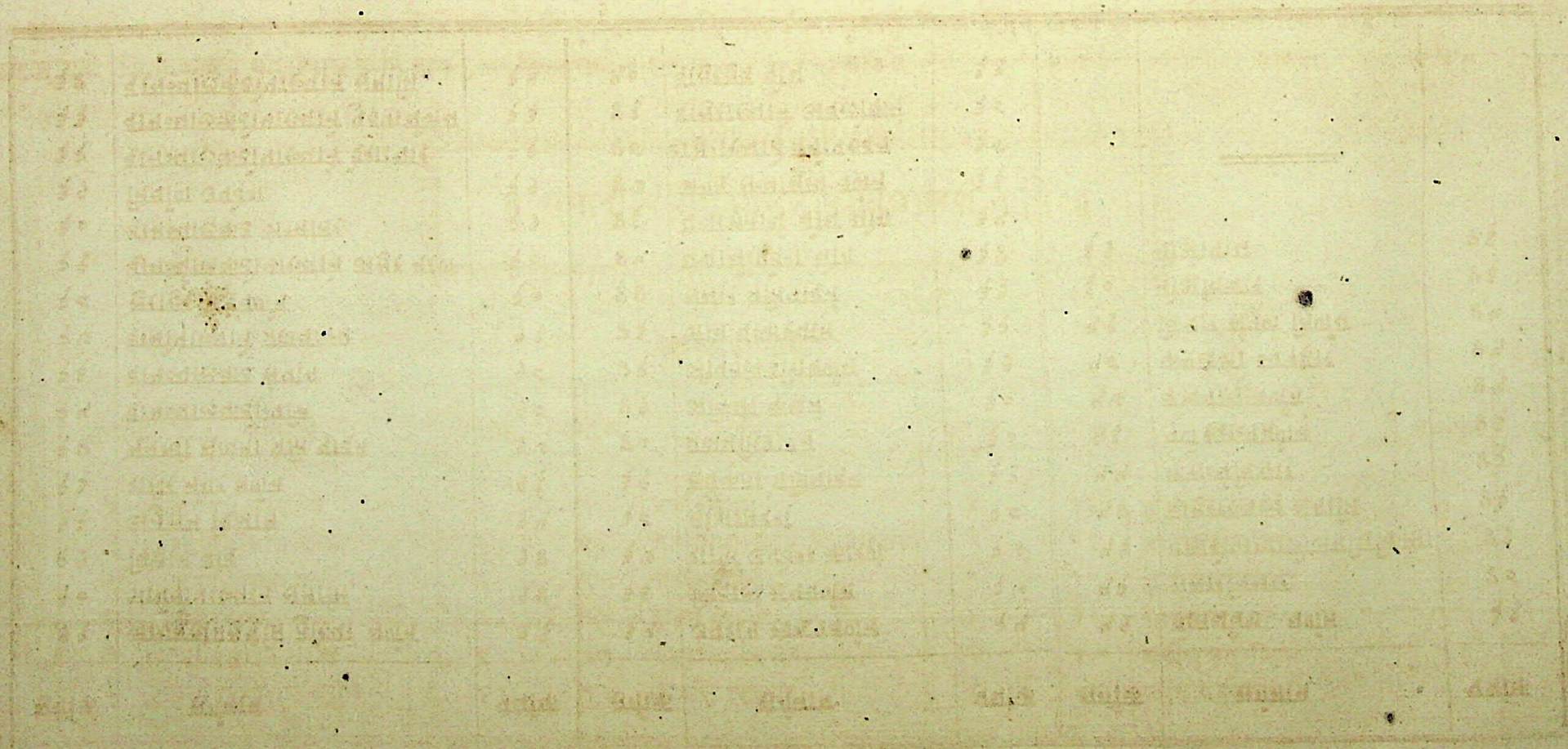

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ इति श्रीयोगवासिष्ठे स्थितिप्रकरणं चतुर्थं समाप्तं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

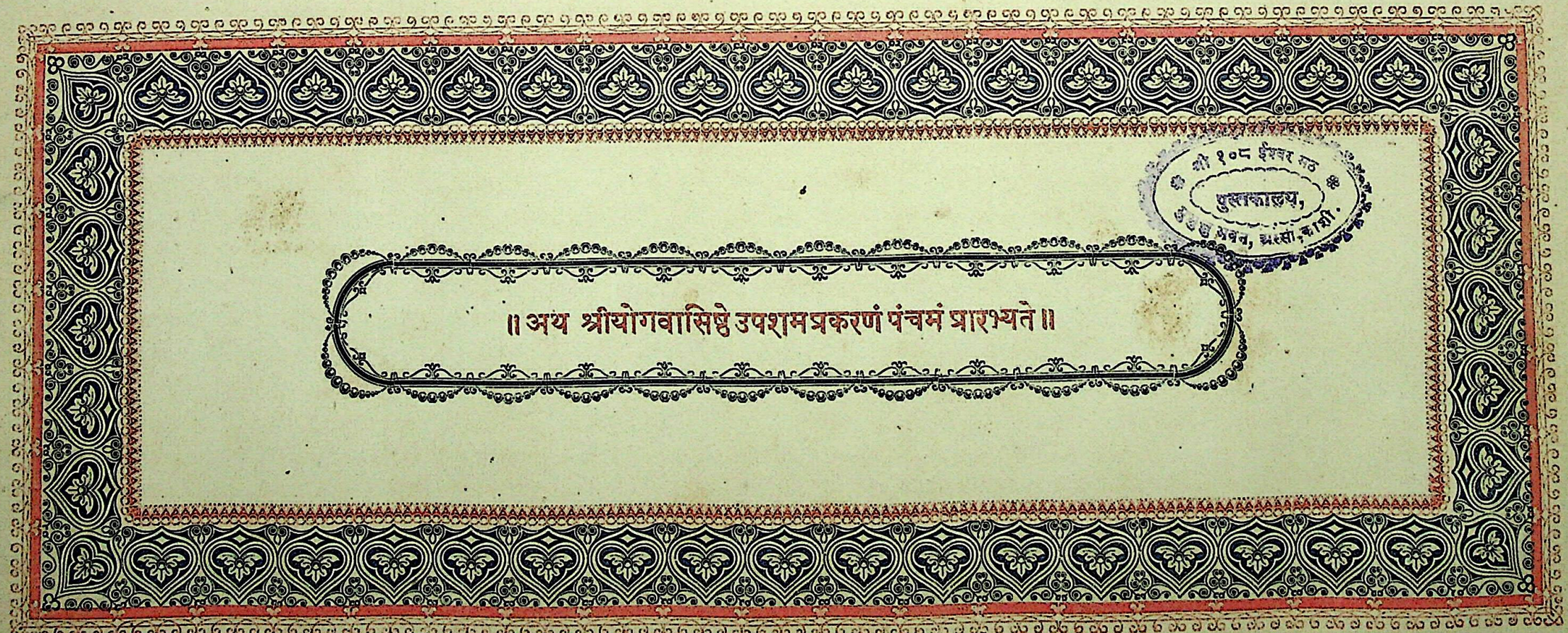

श्री १०८ ईश्वर गंज
पुस्तकालय,
मुमुक्षु भवन, अस्सी, काशी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ उंपरमात्मनेनमः ॥ अथश्री योगवासिष्ठेउपशमप्रकरणं पंचमंप्रारभ्यते ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे साधो ! अब स्थिति प्रकरणके अनंतर उपशम प्रकरण कहताहों ॥ जिसके जानेतें निर्वाणताकों प्राप्त होइगे ॥ जब इस प्रकार वसिष्ठजीनें बचन कहे तब सब सभा शोभित भइ ॥ जेसें शरत्कालके आकाशमें तारागन शोभते हे ॥ अरु वसिष्ठजीके वचन कैसें हे जो परमानंदके कारन हे ॥ एसे पावन बचन श्रवण करकें अर्थ धरकें मौन होगये ॥ जेसें कमलकी पंक्ति कमलकी खानि विषे स्थित होवे, तेसें सभाके लोक अरु राजास्थित भये ॥ अरु स्त्रियां जो झरोखेविषे बेठीयां थीयां ॥ सो तिनके महा विलासकी चंचलता शांत हो गइ ॥ अरु घटियंत्रोके शब्द जो ग्रहविषे होते थे ॥ सोभी शांत होगये ॥ शीशपर चमर कर नेवालेभी मूर्त्तिवत् अचल होगए ॥ राजातें आदिलेकरी जो लोक थे सो कथाके सन्मुख भए ॥ केसी कथा हे जो विज्ञान कथा हे ॥ सर्वही विचारविषे मग्न होगए ॥ रामजी बडे वि काशकों प्राप्त भए ॥ जेसें प्रातःकालविषे कमल विकाशमान होताहे ॥ तेसें तमकों त्यागत भया ॥ प्रकाश आनि उदय भया ॥ जेसें सूर्यके उदय हुए प्रकाश आनी उदय होताहे ॥ अ रु वसिष्ठजीकी कही जो बाणी थी ॥ तिसकरी राजा दशरथ बहुत प्रसन्नताकों प्राप्त भया ॥ जेसें मेघकी वर्षाकरी मोर प्रसन्नताकों प्राप्त होताहे ॥ तेसें गदगद होगए ॥ सर्वके जो मन रूपी चंचल बानर थे ॥ सो विषय भोगतें रहित स्थित भए ॥ मंत्री श्रवण करकें स्थित होरहे ॥ अपने स्वरूपकों जानत भए ॥ जेसें चंद्रमाकी कला प्रकाशतहे ॥ तेसें आत्मकला प्रका शत भइ ॥ लछमन अपने लक्ष स्वरूपकों देखत भया ॥ तीव्र बुद्धि करकें वसिष्ठजीके उपदेशकों जानत भया ॥ अरु शत्रुघ्न जो शत्रुकों दलनहराथा ॥ तिसका चित्त अति आनंदकरी पूर्ण भया ॥ जेसें पूर्नमासीका चंद्रमा स्थित होताहे ॥ तेसें मंत्रीयोंके हृदयविषे मित्रता होतभई ॥ मन सीतल होगया ॥ हृदय प्रफुल्लित होतभया ॥ जेसें सूर्यके उदय हुए कमल तत्काल विकाशमान होताहे ॥ अरु और जो मुनि राजा ब्राह्मण स्थितथे ॥ तीनके चित्तरूपी जो रत्नथे ॥ सो स्वच्छ निर्मल होगए ॥ तब मध्याह्न कालका समय हुआ ॥ तब वाजंत्र वाजणे ला गे ॥ बडे शब्द हुए ॥ जेसें प्रलय काल विषे मेघके शब्द होतेहे ॥ तेसें भेरीके शब्द होणे लागे ॥ तिनके बडे शब्द करी मुनीश्वरोंका शब्द आछादित भया ॥ जेसें मेघके शब्दकरी कोकि लाका शब्द छपत होजाताहे ॥ तब वसिष्ठजी तूष्णी होगए ॥ एक मुहूर्त पर्यंत शब्द होतरहा ॥ बहुरी तूष्णी भया जब घन शब्द शांत हुआ ॥ तब मुनीश्वर रामजी प्रती कहत भया ॥ हे रामजी ! जो कछु में आज कहनाथा सो कही रहाहों ॥ बहुरी काल कहोंगा ॥ तब सर्व सभाके लोक अपने स्थानकों गए ॥ तब वसिष्ठजीनें राजातें लेकरी रामजी आदिकों कहा तुमभी अपने ग्रहकों जावहु ॥ तब सर्वनें चरणवंदना नमस्कार करे ॥ अवर जो नभचारी, वनचारी जलचारी थे सो सबकों विदाय कीये ॥ अप अपने स्थानोकों गए ॥ ब्राह्मणकी सुंदर वाणीकों विचारत भए ॥ अपने अधिकारकी क्रियाकों दिनकों करत भए ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उपशमप्रकरणे पूर्वदिनवर्णनंनामप्रथमःसर्गः ॥ १ ॥ ॥७॥ ॥७॥

॥ वाल्मीकउवाच ॥ हे भारद्वाज ! इसप्रकार अपनें स्थानोंको जायकें बडे सुरमे राजपुत्र महा सुंदर चंद्रमाकी नांइ जीनकी कांतिहे सो अपने स्थानविषे यथा उचित क्रियाकों करत भए ॥ वसिष्ठ, राजा; राघव, मुनि, ब्राह्मणथे ॥ सो अपने स्थानविषे स्नान आदिक क्रियाकों करत भए ॥ तालविषे जो कमलथे ॥ कुमुदनी उत्पल आदिक थे ॥ तहां स्नान करत भए ॥ गौ स्वर्न अन्न पृथ्वी वस्त्र भोजन आदिक ब्राह्मणोकों यथायोग्य दान पात्रोंकों देतभए ॥ स्वर्न रत्नों करी जडे हुऐ जो स्थान थे ॥ तीनविषे आइकरी राजा देवताका पूजन करत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भए ॥ कीसी वीष्णुका कीसी सदाशिवका कीसी अग्निका कीसीनें सूर्य आदिका पूजन कीया ॥ पूजन करीकें पुत्र पौत्र सुहृद मित्र बांधव संजुक्त भोजन करते भए ॥ नाना प्रकारके महा उचित भोजन कीए ॥ दिनका अर्धपोर आय रहा ॥ तव अपने संबंधीयों संयुक्त और क्रिया करत भए ॥ जब सांज काल भया ॥ सूर्य अस्त भया ॥ तव सायंकालकी विधि क रत भए ॥ अघमर्षण गायत्रि आदिक जाप करत भए ॥ पाठ श्रौत्र अरु पुनरपि मनोहर कथा मुनीश्वरोंकी करही ॥ तीसतें उपरांत रात्र भइ ॥ तव जो स्त्रीयां हे ॥ सो रामजी आदीकों की शय्या बिछावत भइयां ॥ तीस उपर बीराजत भए ॥ रामजी विनां सर्वोंकों रात्र एक मुहूर्त व्यतीत भइ ॥ अरु रामजी स्थित होकरी वसिष्ठजीके वचनकी जो पंक्तिथी ॥ तीसकों विचारत भया ॥ केसें वचनहे जो मधुर अरु उचितरूपहे ॥ तीनकों केसें चीतवत भए ॥ जेसें हस्तिका बालक कीसी बनकें स्थानमेंतें कछु भोजन समेटी लेवे ॥ अरु आयकें तीसका स्मरण करे ॥ तेसें विचारत भया ॥ संसारहे नाम जीसका इसविषे भमणेका पात्र कवनहे ॥ अरु नानाप्रकारके जो भूत जातहे ॥ सो कांहांते आतेहे ॥ अरु कांहां जातेहे ॥ अरु मनका स्वरू प क्याहे ? शांति केसें होतीहे इह माया कहातें उठीहे अरु केसें निवत्त होतीहे निवत्त हुए विशेषता क्या होतीहे अरु नष्टता कीसकी होतीहे अनंतरूप जो आत्मा विस्तृत हे सो तिस विषे अहंकार होना केसेंहे अरु मनकें क्षय होनेविषे मुनीश्वरनें क्या कहाहे अरु इंद्रीयोंके जीतणेविषे क्या कहाहे ? आत्माके पावणेविषे क्या जुक्ति वसिष्ठजीनें कहीहे ॥ जीव चित्त मन अरु माया सबही एकरूपहे ॥ विस्तारूप संसार इननेही रचाहे ॥ सो असतरूप हे तीनहुनें संपूर्ण संसार बांध छोडाहे ॥ तिसकरी जीव पडे दुःख पावतेहे ॥ जेसें तंदुएनें हस्तीकों बांध्या था ॥ अरु उह कष्ट पावता था ॥ तेसें जीव कष्ट पावतेहे ॥ तीस दुःखके नाश करने निमित्त कोन औषधहे अरु भोगरूपी जो मेघमालाहे ॥ तीसविषे मोहित हुइ मेरी बुद्धि गलीत होगइहे ॥ तीसकों में कीस प्रकार भिन्न करों ? यह तो भोग साथ तन्मय होगइहे ॥ जेसें जल अरु दुधकों हंस भिन्न करताहे ॥ अरु मुझकों भोगोंके त्यागनेकी समर्थताभी न ही ॥ भोगोंके त्यागने विना वडी आपदा हे ॥ अरु तिसके संहारणेकोंभी समर्थ नही ॥ वडा आश्चर्यहे ॥ हमकों वडा कष्ट प्राप्त भयाहे ॥ आत्मपदकी प्राप्ति मनके जीतणे करी होती हे वेदशास्त्रके कहणेका प्रयोजनभी यहीहे ॥ अरु गुरुके बचन करीकें भम नष्ट होजाताहे ॥ जेसें बालककों पछावेविषे बैताल भासताहे ॥ तिस भमकों जेसें बुद्धिवान दूर करताहे तेसें मनरूपी भमकों गुरु दूर करतेहे ॥ उह कोन समय होवेगा ॥ जो में शांतिकों प्राप्त होवोंगा अरु संसार भम नष्ट हो जावेगा ॥ जेसें जोबनवान स्त्री भर्तारकों प्रायकें सुखसों विश्राम क रतिहे ॥ तेसें मेरी बुद्धि आत्माकों पायकें कब विश्रामवान होवेगी अरु नानाप्रकार संसारके आरंभ कब मेरे शांत होवेंगे कब में आदि अंततें रहित पदविषे विश्रांतवान होऊंगा मन मेरा कब पावनरूप होवेगा ॥ में पूर्नमासीके चंद्रमावत संपूर्न कलाकरी संपन्न कव होउंगा स्वच्छ सीतल प्रकाशरूप पदविषे कब स्थित होउंगा अरु कब जगतकों देखके हसोंगा कब मली न कलनांकों त्यागकें आत्मपदविषे स्थित होउंगा ? कव में मनकों संकल्प विकल्पतें रहित शांतरूप देखोगा जेसें तरंगतें रहित नदी शांतिरूप देखातीहे ॥ तृष्णारूपी तरंग करी व्याकुल जो संसार समुद्र हे ॥ सो माया जल करी पूर्ण हे ॥ अरु राग दोषरूपी मच्छ संयुक्तहे ॥ तीसकों त्यागकें में वीत ज्वर कब होउंगा उपशम सिद्ध पदकों में कब पावोंगा ? जो पद बुद्धि वानोनें मूढताकों त्यागकें पायाहै ॥ अरु में कब निर्दोष समदर्शी होउंगा ॥ अज्ञानरूपी ताप मेरा कब नाश होवेगा ॥ जीसकरी संपूर्ण अंग मेरे पडे तपतेहे ॥ सब धातु क्षोभरूप हो गइ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यांहे ॥ तीसकरी बडा दीर्घ ज्वर हुआहे ॥ तातें कब मेरा चित्त शांतिवान होवेगा ॥ जेसें वायु विना दीपक शांत होताहे ॥ कब भ्रमकों त्यागकें प्रकाशवान होंउगा ॥ अरु में कब लीला करी इंद्रियांकें दुःखोकों तरी जाउंगा ॥ दुर्गंधरूप देहते में कब न्यारा होउंगा ॥ अहं त्वं आदिक मिथ्या भ्रम उठ्या हे तीसकों नाशरूप में कब देखोंगा ॥ जेसें शरत्कालविषे मेघ नष्ट होताहे ॥ अरु जीस पदके आगें इद्रादिकोंका सुख ऐश्वर्य मंदार आदिक वृछोंकी सुगंध अरु नानाप्रकारके भोगजात सो तृणवत भासतेहे ॥ सो आत्मसुख हमकों कब प्राप्त होवेगा ? वीतराग मुनीश्वरनें हमकों निर्मल दृष्टि ज्ञानकी कहीहे ॥ तिसकों पायकें मन विश्रामवान होताहे ॥ अरु इह संसार तो दुःखरूपहे ॥ हे मन तुं कीस पदकों पायकें विश्रामवान भयाहे ॥ माता पिता पुत्रादिक जो संबंधहे ॥ तीसका पात्र में बहुरी नही होता ॥ इनका पात्र भोगी होताहे ॥ बुद्धि तुं मेरी भगिनीहे ॥ तो मेरा शीघ्रही अर्थ भ्रातवत् पूर्ण कर ॥ जो तुम हम दोनों दुःखतें मुक्त होवे ॥ मुनीश्वरकें वचनोंकों विचारीकें हमारी आपदा नाश होवेगी अरु परम पदकों प्राप्त होवहीगे ॥ तुझकों शांति होवेगी ॥ हे मेरी बुद्धि तुं ज्योंका त्यों सुमरण कर ॥ जो वसिष्ठजीनें क्या कहाहे ॥ प्रथम तो वैराग कहाहे ॥ तीसके अनंतर मोक्ष व्यवहार कहाहे ॥ बहुरी उत्पत्ति प्रकरण कहाहे जो संसारकी उत्पत्ति इस क्रम करी हुइहे ॥ बहुरी स्थिति प्रकरण कहाहे ॥ जो ईश्वर करी जगतकी स्थितिहे ॥ नानाप्रकारके दृष्टांतों करी निरूपण कीयाहे ॥ अरु जेते प्रकरण कहेहे सो ज्ञान विज्ञान संयुक्तहे ॥ हे बुद्धि जिस प्रकार वसिष्ठजीनें कहाहे तेसे तुं स्मरण कर ॥ जो अनेक वार विचार कर ॥ अरु बुद्धिविषे निश्चय न होवे ॥ तो उह कीयाभी निष्फल होवे ॥ जेसें शरत्कालका मेघ बडा घनभी दृष्ट आताहे ॥ परंतु वर्षातें रहित निष्फल होताहे ॥ तेसें बुद्धिविषे अनुसंधानतें रहित विचार किया निष्फल होताहे ॥ जो बुद्धिविषे अनुसंधान करीए ॥ सो विचार सफल होताहे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे उपदेशानुसारवर्णनं नाम द्वितीयः सर्गः ॥ २ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे भारद्वाज ! जब इस प्रकार बडे उदार आत्मा रामजी चित संयुक्त रात्रकों व्यतीत करत भए ॥ जेसें सूर्यकी कक्षा कमलतें रात्र वीतावत हे ॥ तेसें रामजी वीतावते भए ॥ कछु तम संयुक्त तारागण आनी रहे ॥ अरु दिशा भासणे लागी ॥ अरु प्रातःकालके नगारे नौबत वाजणे लागे ॥ तब रामजी उठे ॥ जेसें कमलोंकी खानीतें कमल उठे ॥ तेसें रामजी उठी करी भ्रांत संयुक्त प्रातः कालके संध्यादिक कर्म करत भए ॥ बहुरी कछुक मनुष्य संयुक्त वसिष्ठजीके आश्रम आये वसिष्ठजी एकांत समाधिविषे स्थित थे ॥ आत्मपरायण आत्माविषे एकाग्रभूतहे चित्त जीसका एसे वसिष्ठमुनिकों दूरतें देख रामजी नमस्कार सहित चरणवंदना करत भए ॥ प्रणाम करी वसिष्ठजीके सन्मुख हस्त बांधकें ठाढे भए ॥ जब दिशाका तम नष्ट भया तब राजा अरु राजपुत्र ऋषि, ब्राह्मण, सब वसिष्ठजीके आश्रमविषे आवत भए ॥ जेसें ब्रह्मलोकविषे देवता आवे तेसें ॥ तब वसिष्ठजीका आश्रम जनों करी पूर्ण होगया ॥ हस्ति घोडे रथ प्यादाचार प्रकारकी सेना राजा इन करी स्थान शोभित भया ॥ तब तत्काल वसिष्ठजी समाधितें उतरे ॥ सर्व लोक प्रणाम करत भए ॥ तब तिन सबनकों प्रणाम आचार पूर्वक यथायोग्य ग्रहण करत भये ॥ बहुरी उठे विश्वामित्रकों संग लेकरी सबसों आगें हो चले ॥ बाहीर नीकसी करी रथपर आरूढ भए ॥ जेसें कमलजा ब्रह्मा पद्मविषे बेठे तेसें रथपर बेठी करी दशरथके गृहकों चले अरु बडी सेना संग वेष्टितहे ॥ जेसें ब्रह्माजी देवतासें वेष्टित इंद्रपुरीकों आतेहे तेसें वसिष्ठजी दशरथके गृह आवत भए ॥ जो विस्तृत रमणीय सभा थी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीसविषे प्रवेश करत भए ॥ जेसें हंस वेष्टित राजहंस कमलोंविषे जाइ प्रवेश करे ॥ तब राजा दशरथ जो बडे सिंहासन पर बेठा था सो तीसतेंउठी करी आगें आय चरण वंदना करी नम्र भूत होइ करी चरण चुंबे अरु वसिष्ठजी सर्वके अग्र होकरी शोभत भए वसिष्ठजीतें आदि लेकरी मुनिऋषि ब्राह्मण आए अरु दशरथतें लेकरी राजा, सर्व मंत्री, बंदिवान, रामजीतें आदि लेकरी राजपुत्र, मंडलेश्वर, जगतके अधिष्ठाता, अरु मालव आदिक सर्व भृत्य टहलुए आए ॥ सब अपणे जथाजोग आसनपर बेठ गए ॥ सबकी दृष्टि वसिष्ठजीके ओर भइ ॥ बंदीजन जो भटहे सो स्तुति करते थे सर्व लोक शब्द करते थे सो बोलणे तें रहित होगए॥ तब सूर्य उदय हुआ कीरणांनें झुक करी झरोंखेके मार्गांतर प्रवेश कीया तब कमल खिली आए ॥ पुष्प करी स्थान पूर्ण होगए तीनकी महा सुगंध पसरी ॥ अरु झरोंखेविषे स्त्रीयां स्थित भइंयां अरु सो अपनी चंचलताकों त्यागकरी मौन हो बेठीयां ॥ चमर करनेहारी मौन हो करी शीशपर चमर करत भइयां अरु वसिष्ठजीकी जो महा सुदंरवाणी कोमल मधुरहे तीसकों स्मरण कर आपसमें आश्चर्यवान होवे ॥ तब दिशाते पर आकाशतें राजर्षी आए सिद्ध विद्याधर अरु मुनी आए ॥ वसिष्ठजी कों प्रणाम करत भए अरु गंभीरतासों मुखतें बोले नही ॥ अरु प्रणाम करीकें यथायोग्य आसन पर बेठगए ॥ पुष्पकी सुगंध चली अगर चंदनादिधूप चलाए सभाविषे बडी सुगंध पसरीरही ॥ भवरे शब्द करतेफीरे कमलोंकों देखी प्रसन्न होवे ॥ रत्नमणि भूषन जो राजानें अरु राजपुत्रोनें पेरेहे तीसपर सूर्यकी कीरणां पडे तातें बडा प्रकाश चंदोराविषे करही ॥ इतीश्रीयोगवासिष्ठे उपशमप्रकरणे सभास्थान वर्ननं नाम तृतीयःसर्गः॥ ॥ ३ ॥ ॥७॥ ॥ ७ ॥

॥ वाल्मीकोवाच ॥ मेघ जेसे बडे गंभीर बचन बोध सहित सुंदर पद हे जीनविषे एसे प्रमाण वचन राजा दशरथ मुनीविषे श्रेष्ठ वसिष्ठजीकों कहत भया ॥ ॥ दशरथोवाच ॥ हे भगवन् ! कालका जो दिन व्यतीत भया हे तीसविषे तुमनें हमकों कहाथा तीसके श्रमतें रहित होक्यौं ? तुमारा शरीर तपत करी अति कृश जेसा होगया हे ॥ ईस निमित्त तुमकों कहाहे ॥ हे मुनीश्वर तुम आनंद बचन जो कहे हे सो प्रगटरूप हे ॥ तुमारे वचनरूपी अमृतकी वर्षा हे तीसकरी हम आनंदमान भएहैं ॥ तुमारे निर्मल वचन करी हमारे रिदेका तम दूर भया हे सीतल चित भएहे ॥ जेसें चंद्रमाकी कीर्णाकरी तम अरु तपत दोनों निवृत्त होतेहे तेसें तुमारे वचनों करी हम अज्ञानरूपी तम अरु तपततें रहित भएहे ॥ तुमारे वचन अमृतवत् अपूर्व रस आनंद देतेहे ॥ ज्यों ज्यों ग्रहण करीए त्यौं त्यौं विशेष रस आनंद आताहै ॥ शोकरूपी तमकों दूर करणेहारे हे अमृतकी वर्षारूप हे ॥ अरु आत्मारूपी रत्न हे तीसकों दिखाणेहारे परमार्थरूप दीपक हे ॥ एसें आनंदकों देणे हारे तुमारे बचन हे सो संत जनरूपी वृछकी यह वेली हे ॥ दुरिच्छा अरु दुष्ट आचरण नाना प्रकारके जो नीच हे तिसके नाश करणे हारे वचन है॥ जेसें तमकों दूर करणेकों अरु सीतलता करणेकों शांतरूप चंद्रमा हे तेसें संतजनरूपी चंद्रमाहें तीनके वचनरूपी जो कीरणांकरी अज्ञानरूपी तमता नाश होतीहे हे मुनीश्वर ! तृष्णा अरु लोभादिक जो विकार है सो तुमारी वाणीकरी नष्ट होगया है जेसें शरत्कालका पवन मेघकों नष्ट करता है तेसें तुमारे वचन करी हम निष्पाप भएहैं ॥ आत्मदर्शनके निमित्त प्रवर्ततेहैं अरु तुमने हमकों परम अंजन दीयाहै तीस करी हम सचक्षु भएं है ॥ जेसें जन्मका अंध सचक्षु होकें नेत्र करीकें पदार्थोंकों देखे तेसें हम सचक्षु हुएहें अरु संसाररूपी कुहीड निवृत्त हुई है ॥ जेसें शरत्कालविषे कुहीड नष्ट हो जाती हे ॥ अरु जेसें कल्पवृछकी लता अरु अमृतका स्नान आनंद देताहै तेसें उदार बुद्धिकी वाणी आनंद दा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यक होतीहे ॥ वाल्मीकोवाच ॥ एसें वसिष्ठजीको कहीकरी रामजीकी ओर मुख करत भए अरु कहा ॥ ॥ दशरथोवाच ॥ हे राघव ! जो जो काल संतोकी संगतिकरी व्यतीत होताहे॥ सो सो दिन सो सो काल सफल होताहै अरु जो जो दिन सत्संग विना व्यतीत होताहे सो वथा होताहे ॥ हे कमलनयन रामजी ! बहुरी तुम वसिष्ठजीकों जगावहु अर्थ यह जो कछु पुछहु जो बहुरी उपदेश करे यह हमारे कल्याणविषे स्थित है ॥ अर्थ यह जो हमारा कल्याण चाहतेहै ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ जब ईस प्रकार राजा दशरथनें कहा तब रामजीकी ओर मुखकरीकें उदार आत्मा वसिष्ठजी भगवान बोलत भये ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे राघव ! अपणे कुलरूपी आकाशके चंद्रमा में जो वचन कहेथे सो तुमकों स्मरण आवते हे क्यौं ? अरु तिन वाक्योंका अर्थ स्मरण विषे हे क्यौं ? पूर्व अरु अपरका विचार कछु कीया हे क्यौं ? हे महा बोधवान महाबाहो, अज्ञानरूपी शत्रुके नाशकर्ता, सात्विक राजस तामस गुणोंके भेदकी उत्पत्ति विचित्ररूप हे सो में कही हे सो तुमारे चित्तमें हे क्यौं ? सर्वभी उही हे; असर्वभी उहीहे, सत्यभी उहीहे, असत्यभी उहीहे, सदा शांत अद्वैतरूप हे यह परमात्मा देवका विस्तृतरूप स्मरण हे क्यौं ? जेसें विश्व उदय हुआहे ईश्वर तें सो स्मरण हे क्यौं ? यह जो देववाणी हे तिसका पात्र शुद्ध चित्त हे अशुद्ध नहीं ॥ हे सत्यबुद्धि रामजी अविद्या जो विस्तृतरूप भासतीहे तिसका रूप स्मरण हे क्यौं ? अर्थ तें शून्य छिनभंगुर रूप हे सम्यक् दर्शन तें रहित निर्जीव हे यह जों लवणके विचारद्वारा में प्रतिपादन कीयाहे सो भली भांति स्मरण हे क्यौं ? वाक्योंका समूह में तुझकों कहा हे तीनोंकों रात्रविषे विचार करी हृदय विषे धारेहे क्यौं ? जब वारंवार विचारताहे अरु तात्पर्य रीदेविषे धारताहे तब बडा फल प्राप्त होताहे ॥ अरु जो अवज्ञाकरीकें अर्थका विस्मरण करता हे तो फलकों नही पाता ॥ हे रामजी ! तुम तो इन वचनोके पात्र हो ॥ इह जो वचन परम उदार हें सो तिसके रिदेविषे फलीभूत होताहे ॥ जेसें उत्तम बांसविषे मोती फलीभूत होतेहे ॥ अवरविषे नही उपजता तेसें जो विवेकी उदार आत्मचित्त पुरुष हे तिसके रीदेविषे इह वचन फलीभूत होताहे ॥

॥ वाल्मीकोवाच ॥ इस प्रकार जब कमलासन ब्रह्माजीके पुत्र वसिष्ठजीनें कहा तब महाओजवान गंभीर रामजी अवकाश पाईकें बोलत भया ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! सर्वधर्मोंके वेत्ता जो तुम परम उदार वचन कहेहे तीनकरी में बोधवान भया हो अरु जेसें तुम अब कहतेहौ तेसेंही सत्यहे, अन्यथा नही ॥ हे भगवन् में रात्रीकों निद्रातें रहित भयाथा ॥ तुमारे वाक्यके विचारविषे रात्र व्यतीत करीहै ॥ तुम तो रीदेके अज्ञानरूपी तुमकों नाशकर्ता पृथ्वीपर सूर्यरूप विचरते हो ॥ हे भगवन् तुम जो व्यतीत दिनविषे आनंददाय क प्रकाशरूपी वचन कहेथे सो में सर्व अपणे रिदेविषे भली प्रकार धरेहै सो तुमारे वचन केसे है ॥ रमणीय अरु पवित्रहै ॥ अरु नानाप्रकारके विचित्रहै ॥ जेसें समुद्रतें नानाप्रकारके रत्न नीकसतेहै तेसें तुमारे वचन कल्याण कर्ताहै अरु बोधवान है ॥ अर्थ यह जो सर्वके सहायक है ॥ अरु हृदयगम्य आनंदका कारणहै ॥ उह कवन है जो तुमारी आज्ञाकों शिरपर न धरे ॥ जो मुमुक्षु जीव है सो सब तुमारी आज्ञाकों शीसपर धरते है ॥ अपने कल्याणके निमित्त जानते है ॥ हे मुनीश्वर तुमारे वचनकरीकें मेरे संशय निवृत्त भएहै ॥ जेसें शरत्काल विषे मेघ कुहीड नष्ट होजातीहै अरु निर्मल आकाश भासताहै तेसें तुमारी कृपाकरी में संशयतें रहित निर्मलचित्त भयाहौं ॥ इह संसार आपात रमणीय होई भासताहे ॥ जबलग पदार्थोंका अभाव नही होता तबलग सुखदायक भासतेहे अरु जब विषय पदार्थ इंद्रियोंतें दूर होतेहै तब दुःख दायक होजाताहै ॥ अरु तुमारे वचन केसेहै जिनके आदि जतनभी कछु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नही ॥ सुगम मधुर आरंभ हे अरु मध्यविषे सौभाग्य मधुर वचन हे ॥ अर्थ यह जो कल्याण कर्त्ता हे ॥ पाछेंतें अनुत्तम पदकों प्राप्तीकरते हे जिसके समान अवर पद कोउ नही सो अनुत्तम पदकों प्राप्त करते हे यह तुमारे पुण्यरूप वचनका फलहै ॥ अरु तुमारे वचनरूपी पुष्प सदा कमल समान खीले हुएहे निर्मल आनंदकों देणेहारे हे अरु उदित फुलहे तीसका फल हमकों प्राप्त होवेगा ॥ सर्व शास्त्रोंविषे जो पुण्यरूपी जल हे तीसका यह समुद्र हे अब में निष्पाप हुआहों मुजकों उपदेश करहु ॥ इतिश्रीयो० उप० प्र० रा० व० नाम चतुर्थःसर्गः ॥ ४ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे सुंदरमुर्ति रामजी यह उत्तम सिद्धांत जो उपशम प्रकरणहे सो श्रवण कर ॥ तेरे कल्याण निमित्त में कहताहों ॥ इह संसार महा दीर्घरूप हे इसकों राजसी अरु तामसी जीव धरी रहेहे जेसें दृढ थंभके आश्रय गृह होताहे तेसें राजसी जीवोंका आश्रय संसार मायारूप हे ॥ अरु जो तुम सारिखेसात्विकविषे स्थित हे सो सुरमे है ॥ वैराग विवेक आदिक गुणकरी संपन्न हे सो लीलाकरीकें जतन बिना संसारमायाकों त्याग देतेहे ॥ जो बुद्धिवान सात्विक जागे हुए पुरुष हे, अरु राजस ओर सात्विक हे सोभी उत्तम पुरुष हे ॥ उह पुरुष जगत्के पूर्व अपूर्वकों विचारतेहे ॥ संतजन अरु सतशास्त्रोंका संग करताहे ॥ तिनके आचारपूर्वक विचरतेहे ॥ तीसकरी ईश्वर जो परमात्माहे तीसकों देखणेकी बुद्धि उपजती हे ॥ दीपकवत् ज्ञान प्रकाश उपजताहे ॥ हे रामजी जब लग अपणे विचारकरीकें अपणा स्वरूप नही पिछानता तबलग उह ज्ञान प्राप्त नही होता ॥ जो उत्तम कुल निष्पाप सात्विक राजसी जीव हे तीनकों विचार उपजताहे ॥ तीस विचार करी अपणे आपसों आपकों पावता हे सो दीर्घदर्शी हे संसारके जो नानाप्रकारके आरंभ हे तीनकों विचारता हे अरु विचार द्वारा आत्मपदकों पाताहे परमानंद सुखविषे प्राप्त होताहे ॥ तातें तुम ईसी संसारकों विचारहु जो सत्य क्या हे अरु असत क्या हे ॥ एसें विचारकरी असतका त्याग करहु अरु सत्यका आश्रय करहु ॥ जो पदार्थ आदिविषे न होवे अरु अंतविषे न रहे सो मध्यविषेभी असत्य जानीयें जो आदि अंत एकरस हे तीसकों सत्य जानीयें तीसतें इतर कछु नही ॥ जो आदि अंतविषे नाशरूप हे तीसविषे जीसकों प्रीतिहे अरु तीसके रागकरी रंजित हे सो मूढ पशु हे ॥ तीसकों विवेकका रंग नही लगता ॥ मनही उपजता हे मनही बढता हे ॥ सम्यक् ज्ञानके उदय हुए मन निर्वाण हो जाताहे ॥ मनरूप संसारहे अरु आत्मसत्ता ज्योंकी त्यों हे ॥ ॥ रामउवाच ॥ हे ब्राह्मण ! जो कछु तुम कहते हो सो मैं जान्या हे जो इह संसार सर्व भावनाविषे मनरूप हे ॥ जरामरण आदिक विकारका पात्रभी मनही हे ॥ तिसके तरनेका उपाय निश्चयकरी तुम कहो ॥ जीसकरी इसकों तरी जाओं ॥ हम सब रघु वंशीयोंके कुलका अज्ञानरूपी तम रीदेसों दूर करणेकों तुम ज्ञानके सूर्य हो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! प्रथम तो इस जीवकों इह कर्तव्य हे जो विचार पूर्वक वैराग कहाहै, जो संतजनोंका संग अरु सतशास्त्रों करी मनकों निर्मल करना ॥ जब मनकों निर्मल करेगा तब स्वजनता जो आर्जव तीसकरी संपन्न होवेगा ॥ बहुरी इसकौ वैराग आनी उपजेगा ॥ जब वैराग प्राप्त हुआ तब ज्ञानवान जो गुरू है तीनके निकट जावेगा जब उह उपदेश करेगे तब ध्यान अर्चनादिकके क्रमकरी परमपदकों प्राप्त होवेगा ॥ जब इसकों निर्मल विचार आनी उपजता हे तब इह अपणे आपकों आपकरी देखताहे ॥ जेसें पूर्नमासीका चंद्रमा अपणे बिंबकों आपकरी देखता हे तेसें उह देखता हे जबलग विचार रूपी तटका आश्रय नही लीया तबलग संसारविषे तृणवत् भमता हे विचार करीकें वस्तु ज्योंकी त्यों जानताहे तब सब दुःख मनतें नष्ट होजातेहे ॥ जेसें सोमजलके नीचे रेत जाइ रहती हे तेसें आधी पींडा उसकी रही जातीहे बहुरी उत्पन्न नही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होता जेसें स्वर्न अरु राख मीली हुइहे तब लग सोनारा संशयविषे रहताहे जब स्वर्न अरु राख भिन्न होवें ॥ तब संशय रहित स्वर्नकों प्रत्यक्ष देखताहे तब निःसंशय होताहे ॥ तेसें अज्ञा नकरीकें जीवोंकों मोह उत्पन्न भया हे ॥ देह इंद्रिय साथ मील्या हुआ संशयविषे रहताहे ॥ जब विचार करी भिन्नभिन्न जाने तब मोह नष्ट हो जावे ओर तब संशय तें रहित शुद्ध अ विनाशीरूप आत्माकों देखताहे ॥ विचारकीयेंतेंमोहका अवसर नही रहता ॥ जेसें अज्ञात पुरुष चिंतामणिकी किमतकों जान नही सकता, जब उसकों ज्ञान प्राप्त भया तब ज्योंका त्यों जानता हे तब मोह संशय निवृत्त होजाता हे ॥ तेसें जीव जबलग आत्मतत्वकों नही जानता तबलग दुःखका भोगी होताहे अरु जब ज्यौंकात्यौं जानता हे तब शुद्ध शांतिको प्राप्त होताहे ॥ हे रामजी ! देहके संगकरी मिश्रित भासताहे वास्तवतें कछु मिश्रित नही भया ॥ तातें अपणे स्वरूपविषे शीघ्रही स्थित होहु ॥ निर्मल स्वरूप जो आत्माहे तीसकों रंचक मात्रभी देह साथ संबंध नही ॥ जेसें स्वर्न कीचविषे मिश्रित भासताहे तोभी स्वर्नकों कीचका लेप कछु नही लगता निर्लेप रहताहे ॥ तेसें जीवकों देह साथ संबंध कछु नही निर्लेपही रहताहे ॥ आत्मा भिन्न देह भिन्नहे ॥ जेसें जल अरु कमल भिन्न रहतेहे ॥ में उंची भुजा करकें पुकारता हों मेरा कहा कोउ नहीं मानता ॥ संकल्पतें रहित होणा परम कल्याणहे ॥ यही भावना अंतरमें क्यों नही करते ॥ जबलग जड धर्महे अर्थयह जो विषयभोगोंविषे आस्था करताहे अरु आत्मतत्व तें शून्य रहताहे तबलग मूढ टोए जेसा रहताहे ॥ जबलग स्वरूप का प्रमादहे तबलग इसके रिदेसों संसारका तम अवर कीसी प्रकार दूर नही होता ॥ चंद्रमा उदय होवे, अग्निका संमूह होवे द्वादश सूर्य एकठे उदय होवे तोभी रीदेका तम रंचक मा त्रभी दूर नही होता ॥ अरु जब स्वरूपकों जान करी आत्माविषे स्थित होवे ॥ तब रीदेका तम नष्ट होजावेगा ॥ जेसें सूर्यके उदय हुए जगतका अंधकार नष्ट होताहे तेसें जबलग आ त्मपदका बोध नही अरु भोगोंविषे तद्रूप मन हे तबलग संसार समुद्रविषे बही जावेगा अरु दुःखका अंत न आवेगा ॥ जेसें आकाशविषे धुल भासतीहे परंतु आकाशकों धुलका सं बंध कछु नही ॥ जेसें जलविषे कमल भासताहे ॥ परंतु जलसाथ स्पर्श नही करता सदा निर्लेप रहताहे ॥ तेसें आत्मा देहसाथ मिश्रित भासताहे ॥ परंतु देहसाथ आत्माका कछु स्पर्श नही सदा विलक्षण रहताहे ॥ जेसें स्वर्न कीचमलतें अलेप रहताहे देह जडहे ॥ आत्मा तीसतें भिन्नहे ॥ सुख दुःखका अभिमान आत्माविषे भासताहे सो भ्रममात्र असत्यरूपहे ॥ जेसें आ काशविषे दुसरा चंद्रमा असत्यरूपहे जेसें आकाशविषे नीलता भासती हे सो असत्यरूपहे तेसें आत्माविषे सुख दुःखादि असत्यरूपहे सुख दुःख देहकों होताहे सर्वतें अतीत जो आत्मा हे तीसविषे सुख दुःखका अभावहे ॥ यह अज्ञान करीकें कल्पितहे अरु देहके नाश हुए आत्माका नाश नही होता तातें सुख दुःख आत्माविषे कोउ नहीं न कीसीकों कछु सुख हे, ॥ न कीसीकों कछु दुःखहे ॥ सर्व आत्मामय शांतरूपहे अरु जो इह विस्तृतरूप जगत दृष्ट आताहे सो मायामयहे ॥ जेसें जलविषे तरंग अरु आकाशविषे तरवरे भासतेहे तेसें आत्मा विषे जगत भासताहे सो आत्माहीहे ॥ न एक हे न दो हे सर्व आभास मात्रहे ॥ मिथ्या दृष्ट आकार भासताहे ॥ जेसा मणिका प्रकाश मणितें भिन्न नही अरु अपणी छाया दृष्टआती हे ॥ तेसें आत्माका प्रकाशरूप जगत भासताहे सो सब ब्रह्मरूपहे ॥ में ओर हो ॥ यह जगत ओर हे इस भ्रमकों त्याग करहु ॥ विस्तृतरूप जो ब्रह्म घनसत्ताहे तीसविषे ओर कल्पना कोउ नही ॥ जेसें जलविषे तरंग कछु इतर वस्तु नही जलरूपहीहे तेसें सर्वरूप आत्माहे सो एकरूपहे ॥ तीसविषे द्वितीय कल्पना कोउ नही ॥ जेसें अग्निविषे बर्फके कणके नही होते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तसें ब्रह्मविषे दुसरी वस्तु कछु नही तातें अपणे आप स्वरूपकी आपही भावना करहु ॥ जो में चिन्मात्ररूप हों जगत जाल सर्व मेराही स्वरूपहे मेंही विस्तृतरूप हों ॥ जो कछु हे सो देव हीहे ॥ न शोकहे, न मोहहे, न जन्महे, न देहहे, एसें जानकें विगतज्वर होहु ॥ अपणे स्वरूपविषे स्थित होहु ॥ तुमारी स्थिर बुद्धिहे, तुम शांतरूप श्रेष्ठ मणिवत निर्मल होहु ॥ एसें जांनकें विगतज्वर होहु ॥ हे राघव तुम निर्द्वंद्व होहु, नित्य स्वरूपविषे स्थित निर्योग क्षेम आत्मवान विशोक होकरी स्थित होहु ॥ सत्य संकल्प धैर्यवान यथाप्राप्तिविषे वर्तता विगतज्वर होहु ॥ तुम वीतराग निर्यत्न निर्मल वीतकल्मष होहु ॥ न देते हो न लेते हो ॥ ग्रहण त्यागतें रहित शांतरूप होहु विश्वतें अतीत जो पदहे तीसकों प्राप्त होकरी जो पावणे जो ग पदहे तीसकों पाइकरी परिपूर्ण समुद्रवत अक्षोभरूप संतापतें रहित विचरो ॥ हे रामजी ! संकल्प जालतें मुक्त माया मलतें रहित अपणे आपकरी तृप्त विगतज्वर होहु ॥ आत्मवेत्ता का शरीर अनंत हे आदिअंततें रहित पर्वतके शिखरवत् विगतज्वर होहु ॥ हे रामजी ! तुम अपणे आप करी उदार होहु अरु अपणे आपकरी आनंदकरी आनंदी होहु जेसें समुद्र अ पणे आनंदकरी आनंदवान हे, जेसें पूर्नमासीका चंद्रमा अपणे आनंदकरी आनंदवान हे तेसें तुम आनंदवान होहु ॥ यह जो प्रपंच रचना भासती हे सो असत्य हे ॥ जो ज्ञानवान हे सो असत्य जाणीकरी इसकी ओर नही धावते ॥ तुम तो ज्ञानवान हो असत्य कल्पना त्यागकरी दुःखतें रहित होहु नित्य उदित शांतरूप शुभगुण संयुक्त उपदेशद्वारा चक्रवर्ती होक री तुम पृथ्वीका राज करो अरु प्रजाकी पालना करो ॥ समदृष्टिसों विचरो ॥ बाह्य शुभ चेष्टा यथाशास्त्र करो अरु राजकी मर्यादा करनि अंतर निर्लेप रहणा ॥ तुमकों न त्याग साथ कछु प्रयोजन हे, न ग्रहण साथ प्रयोजन हे ॥ ग्रहण त्यागविषे समबुद्धि समभाव करी राज करहु ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उपशमप्रकरणे प्रथम उपदेशो नाम पंचमःसर्गः ॥ ५ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! सर्व कार्यकों कर्ता हुआ रिदेतें वासना नष्ट भइ हे ॥ उह पुरुष कार्य विषे वर्तता हे तोभी मुक्त हे ॥ हमारे मतविषे इसकों बंधनका कारन वास ना हे ॥ जिसकी वासना क्षय हुइ हे सो मुक्त स्वरूप हे ॥ अरु जिसकी वासना पदार्थोविषे सत्य हे सो बंधमें हे ॥ केइ पुरुष अपणे पुरुषार्थकों आश्रय करी कर्तव्यभी करते हे ॥ प्री ति करीके प्रवर्त्ततेहे सो अपणी वासनाकरीके स्वर्गकों प्राप्त होताहे बहुरी स्वर्गकों त्यागकरी दुःख नरक भुगतते हे सो अपणी वासना करी बांधे हुए पशु आदिक स्थावर योनिकों प्राप्त होताहे अरु कोइ आत्मवेत्ता पुण्यपुरुष हे सो मनकी दशाकों विचारता हे अरु तृष्णा रूपी बंधनकों काटी करी निर्मल आत्मपदकों प्राप्त होताहे ॥ अरु कोइ पुरुष पूर्वजन्मकों भोगी करी इस जन्मविषे मुक्त हुए हे सो राजस सात्विकी होताहे ॥ जिनका यह जन्म अंतका होताहे सो क्रमकरीकें परिपूर्ण पदकों प्राप्त होताहे ॥ जेसें शुक्लपक्षका चंद्रमा क्रमकरीकें पूर्ण मासीका होताहे अरु सर्व कालकरी पूर्ण होताहे ॥ जेसें वर्षाकालविषे कटक बृच्छकी मंजरी बढी जातीहे तेसें सौभाग्य लक्ष्मी तिनकी बढती जातीहे ॥ हे रामजी ! जिनका इह जन्म अंतका होताहे तिस विषे निर्मल गुण जो वेदने कहेहे सो आय प्रवेश करतेहे ॥ जेसें उत्तम वांसविषे मोती उपजता हे तेसें राजसी सात्विकी विषे शुभ गुण उपजतेहे ॥ मैत्री, सौम्यता, मुक्तता, ज्ञातव्यता, आर्यता, यह गुण प्रवेश करतेहे ॥ सर्व जीवोंपर दया करणि सो मैत्री अरु रिदेविषे सदा समताभाव अंतःकरनविषे क्षोभ कोउ न उठे ॥ सो मुक्तता; अरु सदा प्रसन्न रहणा सो सौम्यता ॥ यथा शास्त्र आचार करणा ॥ इसका नाम आर्यताहे ॥ ज्ञानका नाम ज्ञातव्यता हे ॥ जेसें राजाके अंतःपुरविषे श्रेष्ठ अंगना आय प्रवेश करतिहे तेसें जीसको अं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तका यही जन्म हे सो राजस सात्विकीहे ॥ तिसके रीदेविषे मैत्री आदिक सर्व गुण आय प्रवेश करताहे ॥ एसा पुरुष सर्व कार्यकों करताहे परंतु तिसके रिदेविषे लाभ अलाभका राग दोष नहि होता ॥ सर्वदाकाल समभाव रहताहे ॥ न तोषवान होताहे न शोकवान होताहे ॥ जेसें सूर्यके उदय हुए तम नष्ट होजाताहे तेसें आत्मभाव करी राग दोष नष्ट होजाताहे ॥ सर्व गुण सिद्धताकों प्राप्त होताहे ॥ जेसें शरत्कालका आकाश शुद्ध होताहे तेसें कोमल सुंदर होताहे अरु मधुर तीसका आचार होताहे ॥ सर्व जीव तीसके आचारकी वांछा करते हे अरु तीसकों देखकें मोहित होजाताहे ॥ जेसें सुंदर वांसरीकी धुनकरी मृग मोहित होताहे तेसें उसकों देखकें विस्मय होताहे ॥ जेसें मेघकी धुनकरी बगले आय प्रवेश करतेहे ॥ तेसें उस पुरुषविषे सब गुण प्रवेश करतेहे ॥ गुणोसों पूर्ण होकरी गुरूकी शरन जाताहे तब उह विवेकका उपदेश करताहे ॥ तीस विवेककरी परम पदविषे स्थित होताहे ॥ हे रामजी ! जो वैराग अरु विचार करी संपन्न चित्त हे सो आत्मा देवकों देखता हे तौसकों दुःख स्पर्शनही करता ॥ यथार्थ एक आत्मरूपकों देखता हे ॥ तुम विचारकें आश्रयकरीकें मनकों जगाओ ॥ केसा मन हे जीसविषे मननही मथन हे ॥ अर्थ यह जो सदा प्रपंच दृश्यका मननभाव करता हे अरु जो अंतके जन्मवान पुरुष हे सो मनरूपी मृगकों जगावता हे ॥ प्रथम तो गुण ग्यान करी जगावताहे बहुरी बडे गुणहु करी जगाता हे फेर जानकें सेवणेका जतन करता हे तीसकरी जगावताहे ॥ निर्मल बुद्धिसाथ चित्तरूपी रत्नोंकों विचार करताहे ॥ तीस विचारकरी जगत्कों आत्मारूप देखताहे ॥ आत्माके प्रकाश विचारसों अविद्यामल नष्ट होजाताहे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे क्रमोपदेशवर्नन नामषष्टःसर्गः ॥ ६ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! यह तुमकों क्रम कहाहे सो सब जीवोंकों समान हे ॥ इसतें जो विशेष हे सो तुम श्रवण करहु ॥ इह जगतका जो आरंभ हे तिसविषे जो देहधारी जीवहे तिन जीवोंका दो प्रकारसें मोक्ष होताहे ॥ एक उत्तम क्रम हे एक समान हे ॥ जो गुरुके निकट जावे उह इसकों उपदेश करे तीस उपदेशके धारणेतें शनैःशनैः एक जन्म करि अथवा अनेक जन्मों करी सिद्धता प्राप्त होतीहे अरु दुसरा क्रम यही हे जो अपणे आपकरी वह उत्पन्न होता हे अर्थ यह जो समुझ लेताहे ॥ जेसें वृक्षतें फल गीरे अरु इसकों आय प्राप्त होवे तेसें इसकों ज्ञान प्राप्त होताहे ॥ इसीपर पूर्वका वृत्तांत में तुजकों कहताहों सो तुं श्रवण कर ॥ सो महापुरुषोंका वृत्तांत हे ॥ शुभ अशुभ गुणोंके समूह जीनके नष्ट भए हे॥ अरु अकस्मात फल जीसकों प्राप्त भया हे तीनका निर्मल क्रम सुण ॥ ॥ इतिश्री यो० उप० प्र० क्रमसूचनावर्नन नाम सप्तमः सर्गः ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! सर्व संपदा जीसकी उदय हुई हे अरु सब आपदा जीसकी नष्ट भइ हे एक एसा उदार बुद्धिविदेह नगरका राजा जनक नाम हुआ हे सो वडा धैर्यवान हुआ जो अर्थि होवे तीनका अर्थ कल्प वृक्षकीनांई पूर्ण करे ॥ अरु मित्ररूपी जो कमल हे तीनकों सूर्यवत् प्रफुल्लित करे ॥ बांधवरूपी पुरुषोकों वसंतऋतु अरु स्त्रीयोंकों कामदेव, ब्रह्मरूपी जो चंद्रमुखी कमल हे तीनकों सीतल चंद्रमा, अरु दुष्टरूपी तमका नाश कर्ता सूर्य स्वजनरूपी रत्नोंका समुद्र पृथ्वीबिषे मानों विष्णु सूर्य आय, स्थित भया हे ॥एसा राजा जनक एक समय लीला करीकें अपणे बागकों गमन करत भया ॥ केसा बाग हे मधुरता करीकें प्रफुल्लित भए हे फल जीसके कोकिला शब्द करतियांहे नाना प्रकार की सुंदरवल्ली हे तीस सुंदर बागविषे राजा जनक प्रवेश करत भया ॥ जेसें नंदन वनविषे इंद्र प्रवेश करे सुंदर वन पुष्पकरी सुगंध पसरी रहीहे तहां राजाके संग जो अनुचर थे तिनकों दूरतें त्याग करी आप एकलाही कुंजोविषे विचरणें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लागा ॥ एक शाल्मलीनामे वृछथा तहांतें शब्द श्रवण कीया जो अदृष्ट सिद्ध हे सो गीता गाताहे ॥ विरक्त चित्त अरु नित्य पर्वतोविषे वीचरणे वाला कमलवत् नेत्र जीसके ॥ सो आत्म गीताकों उच्चार करतेहे ॥ जीसकरी आत्मबोध प्राप्ति होताहे तीस गीताकों राजा श्रवण करत भए ॥प्रथम सिद्धोवाच ॥ इस द्रष्टा जो पुरुषहे अरु द्रश्य जो जगत हे तीस दृष्टा अरु दृश्य के मिलापविषे जो बुद्धिमें निश्चित आनंद होताहे सो इष्टके संयोगका अरु निष्टके वियोगका जो आनंदहे सो चित्तविषे दृढ होताहे ॥ सो आनंद आत्मा तत्वतें उदय होताहे ॥ स्पंदरू प जिस आत्मा आनंदतें लव उठताहे तिसकी हम उपासना करतेहे ॥ ॥ द्वितीय सिद्धोवाच ॥ द्रष्टा दर्शन अरु दृश्य इनकों वासना सहित त्यागकर ॥ जो दर्शनतें प्रथम प्रकाशरूप हे जीसके प्रकाश करी यह तीनो प्रकाशते हे तीस आत्माकी हम उपासना करते हे ॥ ॥ तृतीय सिद्धोवाच ॥ जो निराभास निर्मल रूप हे अरु आभास अरु मननके भावका अभाव हे जीसविषे द्वितीय कल्पनाका अभाव हे ॥ अद्वैतरूप हे तीसकी हम उपासना करतेहे ॥ ॥ चतुर्थसिद्धोवाच ॥ दोनोके जो मध्यविषे हे अस्तिनास्ति दोके पक्षोतें रहित प्रकाशरूप सत्ता हे सब सूर्य आदिककोंभी प्रकाशता हे ॥ तीस आत्माकी हम उपासना करतेहे ॥ ॥ पंचमसिद्धोवाच ॥ जो इश्वर सकार हकार भयाहे अर्थ यह जो सकार जीसके आदिविषे ओर हकार हे जिसके अंतविषे एसे सोहहे ॥ सो अंतते रहित आनंद अनंत जो शिव परमात्मा हे सो अनंत आत्मा सर्व जीवके रिदेविषे स्थित हे ॥ निरंतर जो अहंरूप होकरी उच्चार हो ताहे तीस आत्माकी हम उपासना करते हे॥ ॥ षष्ठमसिद्धोवाच ॥ रिदेविषे स्थित जो इश्वर हे तीसकों त्यागकरी जो ओर ठोरदेवके पावणेकी जतन करते हे सो पुरुष हस्तविषे कौस्तु भमणीकों त्यागकरी ओर रत्नोंकी वांछा करताहे ॥ ॥ सप्तमसिद्धोवाच ॥ जब सर्व आशाकों त्यागता हे तब इसकों फल प्राप्त होताहे जो आशारूपीविषकी वल्लीहे सो मूल संयु क्त नष्ट होजातीहे ॥ अर्थ यह जो जन्म अरु मरन आदिक दुःख नष्ट होजाताहे बहुरी नही उपजते ॥ जो पदार्थोंकों अत्यंत विरसरूप जानता हे अरु बहुरी उसविषे आशा बांधतेहे सो दुर्बुद्धि गर्दभ हे मनुष नही ॥ जहां जहां विषयोंकी ओर द्रष्टि उठती हे तिनकों विवेककरी नष्ट करहु ॥ जेसें इंद्रनें वज्रसाथ पर्वतोंकों नष्ट कीयाथा तेसें नष्ट करहु ॥ जब इस प्र कार शुद्ध आचरनकीया ॥ तब सम भावकों प्राप्ति होवेगा ॥ तीसकरी मन आत्मपद उपशमकों प्राप्त होवेगा ॥ अक्षय अविनाशी पदकों पावेगा ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे सि द्धगीतावर्नननाम अष्टमःसर्गः ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस प्रकार सिद्धोंकी गीता महीपति सुणीकरी जेसें संग्रामविषे कायर विषादकों प्राप्त होताहे तेसें विषादकों प्राप्तभया ॥ बहुरी सेना संयुक्त अपणे गृहविषे आया ॥ टहलुए भृत्यसर्व लोक किनारेविषे स्थानों पर ठाढे हो रहे ॥ तिनकों त्यागकरी उपर चौखंडी झरो खेमें जाय स्थित भया ॥ जेसें तटके वृछोंकों नदीका प्रवाह स्पर्शकरता हे तेसें तीनके मार्गकों स्पर्श करता उपर जाय बेठा ॥ एक मंदिरके उपर जाय स्थित भया ॥ जेसें सूर्य उद याचल पर्वतपर चढता हे तेसें चढीकरी संसारकी चंचल गतिकों इधर उधर देखणे लगा अरु विलाप करने लगा ॥ बडा कष्टहे जो मेंभी संसारविषे लोकोंकी चंचल दिशाहे तासों आ स्था बांधी रहाहों ॥ यह तो जीव सर्व जडरूप हे चैतन्य कोउ नही ॥ जेसें अवर जीव पाषाणरूप हे तेसें मेंभी तिनविषे पाषाण हो रहाहों ॥ काल जो हे सो अंततें रहित अनंत हे ॥ तीसके कलुक अंशविषे मेरा जीना हे ॥ तीस जीणेविषे में आस्था बांधी रहा हों ॥ सो मुजकों धिक्कार हे अरु जो में अधम चैतन हों यह जो केतेक मंत्री मेरे हे सो राज अरु जीणा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्व क्षणभंगुर हे ॥ यह जो सुखहे सो दुःख रूप हे ॥ इनतें रहित में कीस प्रकार स्थित होडुं ॥ जेसें महापुरुष बुद्धिवान स्थित होतेहे आदि अंतविषे तुच्छरूप हे अरु मध्यविषे जीवणा पैलवरूप हे ॥ तिसविषे में क्या मिथ्या आस्था बांधीहे ? ॥ जेसें बालक चित्रके चंद्रमाकों देखकें चंद्रमा मानी करी आस्था बांधे तेसें यह प्रपंच रचना इंद्रजालकी बाजीवत् हे ॥ वडा कष्ट हे जो तिसविषे में क्यौं मोहित भयाहों, ॥ जो वस्तु उंचित, रमणीय, उदार, अरु अकृत्रिम हे सो इस संसारविषे रंचकभी नहि मेरी बुद्धि क्यों नष्ट भई हे ? जो पदार्थ दूर हो वे अरु तिसके पावणेका मेरे मनविषे जतन होवे तो उह निकटही हे यह निर्णय करो ॥ अथवा अर्थाकार जो संसारके पदार्थ हे तिनकी आस्था में त्यागता हों ॥ यह जो लोक हे सो सब आगमापाइ हे ॥ उदय होतेहे अरु मिटजातेहे ॥ जलके तरंगोवत् सब पदार्थ क्षणभंगुर हे ॥ जेते कछु सुख द्रष्ट आतेहे सो दुःख साथ मिश्रितहे ॥ तिनविषे में क्या आस्था बांधीहे सुख कदाचित् दिन पक्ष मास वर्षादिक करी आतेहे अरु दुःख वारंवार आतेहे ॥ में किस सुखकरी जिणेकी आस्था बांधों ॥ जो वडेवडे हुए हे सो नष्ट हो गए हे स्थिर किसीका रहणा नहि ॥ वारंवार विचारी देखता हों तिसकरी में जाण्याहे ॥ जो इह जगत्विषे सत्य पदार्थ कोउ नहि सब नाशरूप हे ॥ एसा कवन पदार्थ हे जो जिसविषे आस्था बांधों जो अब वडे ऐश्वर्यवान विराजते हे सो केतेकदिन पीछें अंधकों गीर पडत हे ॥ हे चित्त बडा खेद हे तुजनें किस वडाइविषे आस्था बांधी हे जो आयुर्बल करी में बांध्या हुआ कीस बिना कलंकित भया हों उंचेपदविषे स्थीतभी में अधकों गिर्या हों ॥ बडा कष्ट हे जो में आत्मा हों अरु नाशकों प्राप्त भयाहों कीस कारनकरी अकस्मात मुजकों मोह आया हे ॥ मेरी बुद्धिकों इसनें उपहत कीनी हे ॥ जेसें सूर्य आगें मेघ आताहे अरु सूर्य नही भासता तेसें आत्मा नही भासता ॥ भोगोंसाथ मेरा क्या हे अरु बांधवों साथ मेरा क्या हे इनविषे में क्यों मोहित भयाहों ? ॥ जेसें बालक पछायेविषे भयकों पावता हे तेसें देह अभिमान करी यह पुरुष आपही बंधायमान होताहे ॥ देहविषे अहंकार जरा मरणादिक विकारका कारण होताहे ॥ तातें इन साथ मेरा क्या प्रयोजन हे ॥ इन अर्थोंकी बडाइ राजविषे में क्यौं धैर्य धारी बेठा हो ॥ इह सब पदार्थ क्षोभका कारन हे ॥ यह ज्यौंके त्यौं रहत हे इनविषे न मुजकों ममता हे न संग हे ॥ इह सर्व असत्यरूप हे ॥ संसारके सुख विषरूप हे इसविषे आस्था करणि मिथ्या हे ॥ जो बडे बडे ऐश्वर्यवान हुएहे वडे पराक्रमी गुणवान हुएहे सो संबपरिवार संयुक्त मृत्युकों प्राप्त भये हें तो वर्तमान विषे क्या धैर्य करनाहे ॥ कहां उह धन अरु राज अरु कहां उस ब्रह्माका जगत् ॥ केइ पुरखानकी पंक्ति वीत गइयां ॥ हमकों तिनविषे क्या विश्वास हे देवताके नायक अनेक इंद्र नष्ट हो गयेहे ॥ जेसें जलविषे बुद्वुदे उपजीकरी नष्ट होंजाताहे तो में क्या इस संसारविषे आस्था बांधी करी जीवों ? संतजन मुजकों हसेंगे ॥ केइ ब्रह्मा होगए हे, केइ पर्वत हो गए हे केइ धुलकी कणिकावत् राजा होगए हे तो मुजकों इस जीवणेविषे क्या धैर्य हे ॥ संसार रूपी रात्र हे तिसविषे देहरूपी शून्य दृष्टि सुपना हे तीस भमरूपविषे जो आस्था बांधी हे तातें मुजकों धिक्कार हे ॥ यह, सो, अरु में, इत्यादिक भम आत्माविषे मिथ्या कल्पना उठी हे अज्ञानीयोंकी नांइ में स्थित भया हों ॥ अहंकाररूपी पिशाचकरीकें क्षणक्षणविषे आयुर्बला व्यतीत होतीहे ॥ देखते हुएभी नही दिखती कालकी सूक्ष्म गती हे ॥ केसा कालहे जो सबकों चरनके नीचे धरे हे ॥ सदाशिव अरु विष्णुकों जीसनें खेलणेका गैंद कीया हे एसा काल जो सबकों भोजन करी जाता हे सो मुजकों जीणेविषे क्या आस्था बांधनी हे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जेते कछु पदार्थ हे सो निरंतर नाश होतेहे ॥ कोउ दीन कोउ पक्ष वर्ष करी नाश होजाताहे अरु जो अविनाशी वस्तुहे सो अबलग नही देखी वर्ष वितीत हो गयेहे जीवोंकी जो चित्तरूपी नदीहे तिसविषे भोगोंकी तृष्णारूपी तरंग उछलतेहे शांत कदाचित् नही होता॥ जेसें वायुकरी नदीविषे तरंग उछलते हे सोमतातें रहित होजाते हे तेसें जीनकों चितविषे भोगोंकी अभिलाषा हे ॥ तिनकों अतुच्छ पद द्रष्ट नही आता ॥ कष्टतें कष्टकों प्राप्ती होते हे ॥ दुःखतें दुःखांतरको प्राप्त होताहे ॥ अबलग में विरक्तताकों प्राप्त नही भया ॥ तातें मुजकों धिक्कार हे ॥ अरु नीच हे अंतःकरण जीसका तानें जीस जीस वस्तुविषे कल्याणरूप जानकें आस्था बांधी हे सो सो नष्ट होती दिखतीहे ॥ यह क्या उत्तमता हे जो जिसविषे में आस्था बांधीहे सो यह शरीर केसाहे अस्थि मांसकरी बन्या हे आदि अंत संयुक्त इसका आकार हे ॥ मध्यविषे कछुक रमणीय भासताहे ॥ परंतु सब अपवित्रपदार्थों करी रचा हे विना शरूप हे स्पर्श करणेकोंभी योग्य नही ॥तीस साथ मुजकों क्या प्रयोजन हे॥जीसजीस पदार्थ साथ लोक आस्था बांधतेहे तीस तीसविषे में दुःखही देखताहों॥ अरु यह जीव एसे जड मूढ हे जो सदा इसविषे लगे रहतेहे ॥ काल यह पदार्थ मुजकों प्राप्त होवेगा ॥ अगले दिन यह प्राप्त होवेगा ॥ दिनदिन पाप करतेहे दिनदिन विषे खेदकों पातेहें तोभी त्याग नहि करते एसे मूढ हें ॥ बालक अग्निविषे पूर्न मूढताकरी वीचरते हे, जोबन अवस्था कामादि विकार करी मिश्रित हे शेष जो वृद्धावस्था हे तीसविषे चित्त करी दुःखी होताहे ॥ इह जड मूर्ख परमार्थ कार्यकों कीसकाल विषे साधेगा ॥ यह जगत्के पदार्थ सब आगमापाइ विरस हे ॥ विषम दिशाकरी दूषित हे॥ अर्थ यह जो एक भावमें नहि रहते ॥ सर्व जगत् असार रूपहे सत्य बुद्धितें रहित असत्यरूप हे ॥ सार पदार्थ इसविषे कोउ नहि ॥ राजसूय अरु अश्वमेध आदि जो यज्ञ करते ह तब महाकल्पके किसी अंशकालमें स्वर्गको पाते हे ॥ अधिक तो नहि भोगते ॥ जो अश्वमेध यज्ञ करता हे ॥ सो इंद्र होताहे ॥ जो एक दिन ब्रह्माका होताहे तिनविषे चतुर्दश इद्र राज भोगीकरी नष्ट हो जाताहे ॥ सहस्र चोकडी जुगोंकी व्यतीत होतीहे तब ब्रह्माका एक दिन होताहे एसें तिस दिनोंका एक मास, द्वादश मासका एक वर्ष, एसे सो वर्ष ब्रह्माकी आयुर्बलाहे ॥ तीस आयुर्बलाकों भोगी करी ब्रह्मा अंतर्ध्यान हो जाताहे तिसका नाम महाप्रलयहे तिस महाप्रलयके अंत्यविषे इसने स्वर्ग भोग कीया तो असार सुखकी क्या आस्था जोग हे ॥ एसा सुख उर्ध स्वर्गमें कोउ नहि न पृथ्वीविषे हे न पातालविषे हे ॥ जो सुख आपदा दुःखसंग मिश्रित न होवे एसा कहांहे ? सर्व लोक आपदा संयुक्त हे अरु सब दुःखोंका मूल चित्तहे ॥ सो शरीररूपी खुरविषे सर्पवत रहताहे ॥ आधिव्याधि बडे दुःखरूपी विषकों देताहे॥ इह कीसी प्रकार निवृत्त होवे तब सुखीहोवे ॥ इस करी जीव नीच प्राकृत हो रहेहे ॥ कोउ वीरला साधु हे जीसके रिदेविषे चित्तरूपी सर्प भोगोकी तृष्णा रूप विष संयुक्त नहि होता सो तो दुर्लभ हे ॥ यह जगत्के पदार्थ केसे हे जो सत्यता हे तिसके मस्तक परी असत्यता हे ॥ जो रमणीय भासताहे तिसके मस्तकपर अरमणीयता स्थित हे ॥ जो सुखरूप हे तिनके मस्तकपर दुःख स्थित हे ॥ किसी एककों में आश्रय करो तो दुःख साथ मिश्रित हे ॥ दुःख तो दुःखसाथ मिश्रित क्या कहीए आपही दुःख हे ॥ जो सुखसंपदा हे सो दुःख आपदा संग मिश्रित हे ॥ बहुरी में कीसका आश्रय करौ ? यह जीव जन्मते हे अरु मरते हे ॥ तीनविषे कोउ वीरला दुःखतें रहित हे ॥ जो सुंदर स्त्रीयां हे नील कमलवत् नेत्र जीनकेहे परम हास्य विलास आदिक भूषणों संयुक्त हे तीनकों देखकें मुजकों हांसी आतीहे ॥ जो यह तो अस्थि मांसकी पुतली हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्षणमात्र इनकी स्थिति हे जीन पुरुषोंके निमेष खोलणे करी जगत् होताहे अरु उन्मेष मुंदणे करी जगतका अभाव हो जाताहे ॥ निमेष अरु उन्मेष जीनकरी जगत् उत्पत्ति प्रलय होता हे इस प्रकार जीनकों भासता हे ॥ एसेभी नष्ट हुए हे ॥ तो हमसरीखेकी क्या गणती हे जो पदार्थ बडे रमणीय भासते हे सो अस्थितरूप हे ॥ अरंमणीय होजातेहे नाश हो जांणां हे ॥ तीन पदार्थोंकी चिंता करणी अरु इछा करणि क्या हे नाना प्रकारकी संपदा प्राप्त होती हे ॥ यह जगत् क्या हे अरु उनविषे जब चित्तकों कोउ आय लगता हे तब सर्व संपदा आपदारूप हो जातीहे ॥ अरु जो बडी आपदा आय प्राप्त होती हे अरु इनके चित्तविषे क्षोभ नही होता शांत रूप हे तब उह आपदा संपदारूप हे तो सिद्ध क्या भया य ही सिद्ध भया जो सर्व मनके फुरने मात्र हे ॥ मनकी वृत्ति क्षणभंगुररूप अकस्मात् जगतकी इनकी स्थित भई हे ॥ अज्ञान करीकें अहं सो इदं कल्पना करीहे ॥ तीसविषे त्याग अरु ग्रहणकी भावना मिथ्या हे अरु क्षीण रूप जो संसार हे तिसमें सुख हे सो आदि अंत संयुक्त हे तीसविषे सुख तो कछु नही अरु जो सुख जाणी करी इसकी उर धावता हे सो सुख बहुरी नष्ट होजाताहे ॥ जेसें पतंग दीपक शिखाकों सुखरूप जान करी इसकी उर धावता हे तो दग्ध होजाताहे तेसें संसारके सुख ग्रहण करने हारे तृष्णा करी दग्ध हुएहे ॥ जेसें नरकका अग्नि दग्ध करताहे सोभी श्रेष्ठ हे परंतु क्षणभंगुर जो संसारके सुख हे सो नीच हे नष्ट हुएभी दुःख दे जाताहे दुःखकी सीमा हे ॥ अर्थ यह जो भोगोंकी तृष्णातें अधिक दुःख अवर कोउ नही ॥ जो इस संसार समुद्रविषे गीरते हे सो सुखकों नही पावते ॥ संसारविषे दुःख सुभाविकहे अरु सुख दुःख साथ मिश्रितहे ॥ मेंभी अज्ञानीकी नांइ काष्ट लोष्ठकी नांइ स्थित होरहाहों ॥ वडा खेदहे अज्ञानीवत शमादिक सुखकों त्यागकरी क्षणभंगुर संसारके सुखके निमित्त जतन करताहों ॥ जेसें बरफतें अग्नि नही उपजता तेसें संसारतें सुख नही उपजता ॥ जेते कछु जीवहे सो जड धर्मात्मकहे संसाररूपी एक वृछहे सहस्र तीसके अंकुर शाखा पत्र फल फुलहे तीनकरी पूर्णहे तीस संसाररूपी वृच्छका मूल मनहे ॥ तीसके संकल्परूपी जलकरी विस्तारकों प्राप्त भयाहे ॥ संकल्पके उपशम हुए नष्ट होजाताहे ॥ तातें जीस प्रकार यह नष्ट होवे सोइ उपाय करोंगा ॥ संसारकेविषे भोग देखणे मात्र सुंदर भासताहे अंतरतें दुःखरूपहे ॥ अरु मन जो हे सो मर्कटवत् चंचलरूपहे तीस करी यह रचना रचीहे जबलग वस्तुतें इसकों जांन्या नही तबलग चंचलहे ॥ जब विचार करी जानताहे तब पदार्थोंकी रमणीयता सहित मनका अभाव होजाताहे ॥ तातें में नाशरूप पदार्थोंविषे नही रमता संसारकी वृत्ति केसीहे ॥ अनेक फांसीयोंसों मिश्रितहे तीसविषे गीरतेहे बहुरी उछलतेहे शांत कदाचित् नही होते ॥ एसी संसारकी वृत्तिकों में चिरकाल पर्यंत भोगीयाहे ॥ अब में भोगतें रहित होकरी ब्रह्मही होताहो ॥ इस संसारविषे वारंवार जन्म मरणा होता हे ॥ शोकही प्राप्त होताहे अब संसारकी वृत्तितें रहित हुआ शोकतें रहित होताहों ॥ अब में प्रबुद्ध भयाहों अरु हर्षवान भयाहों ॥ में अपणा चोर आपही देखेहे ॥ मन हे नाम जीसका इसीकों मारोंगा॥ इस मननें मुजकों चिरपर्यंत माराहे अरु एते कालपर्यंत मेरा मनरूपी जो मोती था सो अबेध रहाथा अब में इसकों बेध्याहे ॥ अर्थ यह जो आत्म विचारतें रहित था ॥ अब तीसकों आत्मविचारविषे जोड्याहे आत्मज्ञानके योग्यहे ॥ मनरूपी एक बरफका कण था सो जडताकों प्राप्त भया था अब विवेकरूपी सूर्य करी गली गयाहे ॥ अब में अक्षय शांतिकों प्राप्त भयाहों ॥ अनेक प्रकारके वचनों करी साधुरूप जो सिद्ध थे तीननें मुजकों जगा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

याहे ॥ में आत्मपदकों प्राप्त भयाहों ॥ परमानंद करीकें अब में चिंतामणि आत्मरूपीकों पाय करि एकांत सुखी होउंगा अरु स्थित होउंगा ॥ जेसें शरतकालका आकाश निर्मल होता हे तेसें होउंगा मनरूपी जो शत्रुहे तिसनें मुजकों भ्रम दिखाया था सो अब विवेक करि नाश कियाहे उपशमकों प्राप्त भयाहों॥ हे विवेक तुजकों नमस्कारहे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे जनकविचारो नाम नवमः सर्गः ॥९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस प्रकार चिंतवता था तब दासी राजाकी निकट आइ जेसें सूर्यके आगें अरुन आय स्थित होताहे तेसें प्रतिहारी जो दासीहे सो कहत भइ ॥ हे देव अब उठो ठाढे होहु ॥ दिनका जो उचित विचार हे स्नान आदिक सो करो ॥ स्नान शालाविषे पुष्प अरु केसर गंगाजल आदिकी गागर लेकरी स्त्रियां ठाढी हो रहीयाहे ॥ कमल पुष्प पडेहे तिनपर भवरे फिरते हे ॥ छत्र चमर पडे हे स्नानका समय हे ॥ हे देव ! पूजनके निमित्त सर्व सामग्री आइ हे रत्न औषधी ले आएहे ॥ हाथोंविषे पवित्रे डारीकरी ब्राह्मण बेठेहे ॥ स्नानकरीकें अघमर्षण जापकरी रहेहे ॥ तुमारे आगमनकी ओर देखतेहे ॥ हाथोंविषे चमर लेकरी सुंदर कांता तुमारे सेवणे निमित्त खडीहे ॥ अरु भोजन शाला विषे भोजन सिद्ध होरहाहे तातें शीघ्र उठो ॥ जो कार्यहे सो करो ॥ जेसा काल होताहे तीसके अनुसार कर्म बडे पुरुष करते हे इसका त्याग नहि करते तातें उठो कालकों वितीत न करो ॥ हे रामजी ! जब इस प्रकार दासीनें कहा तब राजा चित्तवत भया ॥ विचित्र जो स्थिति हे संसारकी सो कितनेक मात्र हे ॥ राजसुख इन साथ मुजकों कछु प्रयोजन नहि यह क्षण भंगुर हे ॥ इस मिथ्या आडंबर संपूर्णकों त्यागकें में एकांत जाय बेठताहों जेसें समुद्र तरंगोतें रहित शांतरूप होताहे तेसें शांतरूप होउंगा ॥ यह जो नाना प्रकारके राजभोग हे अरु क्रिया कर्म हे तिनतें अब में तृप्त भया हों ॥ सर्व कर्मोंकों त्यागकरी केवल सुखविषे स्थित होउंगा ॥ मेरा चित्त जो भोगों करी चंचल था सो भोग तो भ्रमरूप हे ॥ इन विषे शांति नहि होति तृष्णा बढती जाती हे ॥ जेसें जल उपर सेवाल वढती जातीहे अरु जलकों आछादी लेतीहे तेसें तृष्णा आछादी लेतीहे ॥ अब में इसकों त्याग करता हों ॥ हे चित्त तूं जिस जिस दशाविषे गिर्या हे अरु जो जो भोग भोगे हे सो सब मिथ्या हे ॥ तृप्ति तो किसीविषे न भइ ॥ तातें भ्रमरूप भोगोंतें उपरत होउंगा तब परम सुखी होउंगा ॥ बहुत उचित अनुचित भोग वारंवार भोगे हे ॥ परंतु तृप्ति किसी करकें न भइ ॥ तातें हे चित्त इनकों त्याग कर परम पदके आश्रय होहु ॥ जेसें बालक एककों त्यागकरी दुसरेकों अंगीकार करताहे तेसें जतनबिना तुंभी कर ॥ जब इन तुछ भोगोंकों त्यागेगा अरु परम पदकों आश्रय करेगा तब आनंदी तृप्तिकों प्राप्त होवेगा ॥ तिसकों पायकरी बहुरी संसारी न होवेगा ॥ हे रामजी ! इस प्रकार चिंतन करी जनक तूष्णी होरहा ॥ मनकी चपलताकों त्यागकरी सोम आकार करी स्थित भया ॥ जेसें मूर्ति लिखी होतीहे तेसें होगया अरु प्रतिहारीभी भयम्लान होकरी बहुरी कछु न कहीसकी॥ जो कदाचित राजा अप्रसन्न होवे॥ तिसके अनंतर मनकी समता निमित्त बहुरी राजा चीतवत भया जो मुजकों ग्रहण अरु त्याग करणे जोग जतन करीकें कछु नही ॥ किसको में साधों किस वस्तुविषे में धैर्य धारों सर्व पदार्थ नाशरूप हे मुजकों करणे साथ क्या प्रयोजन हे॥ अरु अकरने करी क्या हानि हे॥ ग्रहण त्याग कीसका करों ॥ जो कछु कर्तव्य हे सो शरीर करता हे निर्मल अचलरूप चैतनहे सो न करता हे न भुगतता हे तातें मुजकों कर्तव्य कछु नही ॥ जो त्याग करोंगा तो शरीर करणेतें रहित होवेगा अरु जो करोंगा तोभी शरीर करेगा ॥ मुजकों क्या प्रयोजन हे ॥ तातें करणे अकरणे विषे मुजकों लाभ हानि कछु नही तातें जो कछु प्राप्त भया हे प्रवाह तिसविषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विचरता हों ॥ अप्राप्तकी में वांछा नही करता अरु प्राप्तका में त्याग नही करता अपणे स्वरूपविषे स्थित होकरी स्वस्थ होउंगा ॥ जो कछु प्राप्त कर्म हे सोइ करता हों न कछु मुजकों करणे विषे अर्थ हे न अकरणे विषे दोष हे ॥ जो क्रिया होवे सो होवे, करो अथवा न करो ॥ जुक्त होवे अथवा अजुक्त होवे, मुजकों यहण त्याग करणे जोग कछु नही ॥ तातें जो कछु प्राप्त करणे जोग कर्म हे सोइ करौ कर्मका करणा शरीर प्रकृति करी होताहे ॥ आत्माकोंतो कर्तव्य कछु नही ॥ तातें में इन विषे निःसंग हो रहोंगा ॥ जो निस्पंद चेष्टा होवे तो क्या सिद्ध भया अरु क्या किया जो मनकामनातें रहित स्थित विगतज्वर भया ॥ अर्थ यह जो रिदेविषे राग दोष मलीनता न उपजी तो देहकरी कर्म होवे तोभी इष्ट अनिष्ट विषयकी प्राप्तिविषे तुलना रहेगी ॥ जो देह साथ मिलकरी मन कर्म करता हे तब कर्ता भोक्ता हे इष्ट अनिष्टकी प्राप्ति विषे राग दोषवान होताहे ॥ जब मनका मनन उपशम हुआ तब कर्त्तव्यविषेभी अकर्त्तव्य हे ॥ जेसा निश्चय अंतर दृढ होताहे सोइ रूप पुरुषका होताहे ॥ जिसके रिदेविषे अहंकृति नहि अरु बाह्य कर्म चेष्टा करता हे तोभी उसनें कीया कछु नहि अरु जिसके रिदेविषे अहंकृति अभिमान हे सो बाह्य अकर्ता भासता हे तोभी अनेक कर्म करता हे तातें जेसें निश्चय अंतर दृढ होताहे तेसें फल पुरुषकों होताहे ॥ जो बाह्य कर्ताभी परंतु अंतर कर्तव्यका अभिमान नही तो उह धैर्यवान पुरुष अनामय पदकों प्राप्त होताहे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे जनक निश्चय वर्णनं नामदशमः सर्गः॥ १० ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस प्रकार चितवनां करीकें यथाप्राप्त जो क्रिया हे तिसके करणेकों उठी खडा हुआ ॥ जो इष्ट अनिष्टकी वासना हे सो चित्ततें त्यागत भया अरु यथा प्राप्तविषे करता हुआ ॥ जाग्रतविषे सुषुप्तिकी नांइं ॥ जेसें सुषुप्तिरूप पुरुष होताहे ॥ तेसें उह जाग्रत्विषे होरहा अरु दिनकों तीनके आचारकों करत भया ॥ यथाशास्त्र क्रियाविषे दिनकों विचरे अरु रात्रकों लीला करकें ध्यानविषे स्थित होवे मनकों समरस करत भया ॥ जब रात्री क्षीण भई तब इस प्रकार चित्तकों वोध करत भया ॥ हे चंचल रूप चित्त परमानंद स्वरूप जो आत्मा हे सो तुजकों सुखदायक नही भासता जो यह मिथ्या संसार सुखकी इच्छा करता हे ॥ जब तेरी इच्छा शांत हो जावेगी तब तूं सार सुखं आत्मपदकों प्राप्त होवेगा ॥ ज्यों ज्यों तुं संकल्प लीलाकरीउठावता हे त्यों त्यों संसार जाल विस्तार हो जातीहे इस दुःखरूप संसार साथ तुजकों क्या प्रयोजन हे ॥ हे मूर्ख चित्त ज्यों ज्यों संकल्प इच्छा करता हे त्यों त्यों संसारका दुःख बढता जाताहे॥ जेसें जल सिंचणेकरी वृच्छकी शाखा बढती हे तेसें संसार सुखतें अधिक दुःख प्राप्त होताहे ॥ एसे दुःखरूप भोगोंकी इच्छा क्यों करता हे ॥ यह संसार चित्त जालतें उपजे हे जब तुं इसका त्याग करेगा तब दुःखमिटी जावेगा ॥ फुरणेका नाम दुःख हे इसके मीटेतें दुःखभी कोउ न रहेगा ॥ यह संसार महा चंचलहे देखणेमात्र सुंदर हे वास्तवतें कछु नही ॥ जो कछु तुजकों इसतें सार प्राप्त होवे तब इसका आश्रय कर ॥ सो तो यह क्षणभंगुर हे अरु दुःखकी खाण हे ॥ तातें इसकी आस्था त्याग अरु आत्मतत्वकों आश्रय कर ॥ शुद्ध निर्मल होकरी जगत विषे विचरो ॥ तब तुजकों दुःख स्पर्श न करेगा॥ जगत स्थित होवे अथवा शांत होजावे ॥ इसके उदय अस्तकी वासना करी इसके गुण अवगुणविषे आशक्त मत होहु ॥ जो अविद्यमान असत्यरूप होवे तीसकी आस्था क्या करणिहे॥ यह असत्यरूप हे अरु तूं सत्यरूप हे असत्य अरु सत्यका संबंध केसें होवे मृतक अरु जीतेका कबी संबंध हुआहे जो तुं कहे चैतनतत्व दृश्यरूपहे तो दोनों सत्य स्वरूपहे तो सदा विस्तृतरूप आत्माही हुआ हर्ष विषाद कीसका करताहे तातें तुं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूढ मत होहु ॥ समुद्रकी नांइ अक्षोभरूप अपणे आपविषे स्थित होउ ॥ संसारकी भावना त्याग करी मान मोह मलकों त्याग करहु ॥ संसारकी इच्छा दुःखका कारण हे ॥ इसकों त्यागकरी आत्मतत्वविषे स्थित होवे तब परिपूर्ण पदकों प्राप्त होवेगा ॥ तातें बलकरी तीसकों आश्रयकरीकें चंचलताकों त्याग॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठ उपशम प्रकरणे चित्तानुशासननामएकादशःसर्गः ॥ ॥ ११ ॥ ॥ वसीष्ठोवाच ॥ हे रामजी इसप्रकार वीचारकरीकें राजा सब कार्जकों करतभया ॥ आनंद वृतिविषे मन उसका प्रबोधवान मोहकों न प्राप्तभया ॥ इष्ट विषे हर्षवान न होवे अनिष्टविषे दोषवान न होवे॥केवल सम स्वच्छ अपणे स्वरूप विषे स्थित भया जगतविषे विचरे न कछु त्याग करे न कछु ग्रहण करे, न कछु अंगीकार करे,केवल वीतशोक होकरी संतापतें रहित वर्तमान विषे कार्यकरे ॥ बहुरी उसके रिदेविषे कल्पना कोउ स्पर्श न करे जेसें आकाशकों धूलकी मलीनता स्पर्श नही करति तेसें मलीनतातें रहित अपणे स्वरूपके अनुसंधानतें सम्यक् ज्ञान अनंत प्रकाश विषे मन निश्चलताकों प्राप्त कीया॥ मनकी जो कोउ संकल्प वृत्ति थी सो नष्ट होगइ ॥ महा प्रकाशरूप चैतन आत्मा अनामय रिदेविषे प्रकाशित भया ॥ जेसें आकाशविषे सूर्य प्रकाशता हे तेसें अनंत आत्मा प्रगट भया ॥ संपूर्ण पदार्थ तीसविषे प्रतिबिंबत देखताहे जेसें शुद्ध मणीविषे प्रतिबिंब भासता हे तेसें सर्व पदार्थ अपणे स्वरूप विषे आत्मभूत देखत भया ॥ इंद्रियोंके इष्ट अनिष्ट विषयोंकी प्राप्तिविषे हर्ष खेद मीटी गया सर्वदा समान होकरी प्रकृत व्यवहारकों करी जीवन्मुक्त होकरी इस प्रकार राजा जनक विचरत भया ॥ हे रामजी ! जनककों ज्ञानकी दृढता भइ ॥ तीसकरीकें लोकोंके परावरकों जान करी विदेह नगरका राज करत भया जीवोंकी पालनाविषे राजा जनक हर्ष विषादकों प्राप्त न भया ॥ संतापतें रहित हुआ राजका कोउ अर्थ उदय होवे अथवा अस्त हो जावे परंतु हर्ष शोककों कदाचित प्राप्त न होवे ॥ कार्य करता दृष्ट आवे ॥ परंतु रिदेकरी कछु न करे ॥ हे रामजी ! तेसें तुमभी कार्य सब करो ॥ परंतु निरंतर आत्मस्वरूपविषे स्थित रहो ॥ तुम जीवन्मुक्त वपु हो ॥ राजा जनककी सब पदार्थ भावना अस्त होगईहे, सुषुप्तिवत वृतिभइहे॥ भविष्यतकी इच्छा नहि करता वितीतकों चितवता नही ॥ जो वर्तमानकार्य प्राप्ति होवे तीसकों यथा शास्त्र करताहे अपणे विचारके वशतें कछु पावणे जोग पद था सो पाया ओर इच्छा कछु नहि ॥ हे रामजी ! जबलग इह आत्मपदकों प्राप्त नही होता तबलग इसके रिदेविषे अपणा पुरुषार्थरूपी विचार उपज्या नही॥ जब अपणे आपकरी अपणा विचाररूप पुरुषार्थ जागे तब सब दुःख मीट जावे अरु परम संपदाकों प्राप्त होवे एसा पद शास्त्र अर्थ अरु पुण्यक्रिया करी नहि प्राप्त होता जेसा पद अपणे रिदेविषे विचार कीए प्राप्त होताहे ॥ सो पद निर्मल अरु स्वच्छहे॥ रिदेकी तपतकों निवृत्त करताहे ॥ बुद्धिके विचाररूपी प्रकाश करी रिदेका अज्ञान नष्ट हो जाताहे॥ओर कीसी उपाय करी नष्ट नही होता ॥ जो बडा आपदारूप दुःख तरणेकों कठिनहे सो अपणी बुद्धि करी तरणा सुगम होताहे ॥ जेसें जाज करी समुद्रकों लंघ जाताहे अरु जो बुद्धितें रहित मुर्ख हे तीनकों थोडी आपदाभी बडे दुःखकों देती हे ॥ जेसें थोडा पवनभी तृणकों बहुत भमावतहे अरु जो बुद्धिवानहे तीनकों बडी आपदाभी दुःख नही देती ॥ जेसें बडा वायुभी पर्वतकों चलाय नही सकता इसी कारनतें प्रथम चहीता हे जो यह पुरुष संतोका संग अरु सतशास्त्रोंका विचार करे अरु बुद्धिकों बढावे ॥ जब बुद्धि सत्य मार्गकी ओर बढेगी तब परम बोध इसकों प्राप्त होवेगा ॥ जेसें जलके सिंचणे अरु रखणे करी फुलसों फल प्राप्त होताहे तेसें जब बुद्धि सत्यमार्गकी ओर धावती हे तब इसकों परमानंद प्राप्त होताहे ॥ जेसें शुक्लपक्षका चंद्रमा पूर्नमासी करी प्रकाशकों बहो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त प्राप्त होताहे जेते कछु जीव संसारके निमित्त जतन करते हे उही जतन सत्यमार्गकी ओर करे तो दुःखतें मुक्त होवे अरु परम संपदाके भंडारकों पावे संसार रूपी वृच्छ हे तीसका बीज बुद्धिकी मूढताहे तातें मूढतातें रहित होणा बडा लाभ हे ॥ स्वर्ग पातालका राज आदिक जो कछु पदार्थोंकों प्राप्त होताहे सो अपणे बोधरूपी भंडारतें प्राप्त होताहे ॥ संसाररूपी समुद्र हे तीसके तरणेका अपणी बुद्धिरूपी जहाजहे ओर तप तीर्थ आदिक शुभ आचार करिकें जहाज वही जाताहे ॥ बोधरूपी पुष्पलताहे तीसकों वढावणेकों देवी संपदा जलहे, तीसके वढणे करी सुंदर फल प्राप्त होताहे ॥ जो बोधतें रहित वल ऐश्वर्य करी बडाभीहे तीसकों तुछविषे नाश करी डारताहे ॥ जेसें वलतें रहित सिंहकों गीधड हरणभी जीत लेतेहे तातें जो कछु प्राप्त होता दृष्ट आताहे सो अपणे प्रयत्न करी आताहे ॥ अपणी बोधरूपी चिंतामणी रिदेविषे स्थितहे ॥ तीसतें विवेकरूपी फल पावताहे ॥ जेसें कल्पलतातें जो चीतवनां करीए सोइ पातेहे ॥ तेसें सर्व फल बोधतें पाताहे ॥ जेसें जानणे वाला मलहा समुद्रतें पार करताहे ॥ अजाण नाही उतरी सकता तेसें सम्यक् बोध संसार समुद्रतें पार करताहे असम्यक् बोध जडताविषे डारताहे ॥ जो अल्पभी बुद्धि सत्यमार्गकी ओर होतीहे तव उह वडे संकटकों दूर करतीहे ॥ जेसें छोटी बेडीभी नदीतें उतार देतीहे ॥ हे रामजी ! जो पुरुष बोधवानहे तीसकों संसारके दुःख वेधी नही सकते ॥ जेसें लोह आदिक कवच पेर्या होवे तीसकों बाण वेधी नही सकते बुद्धि करीकें यह पुरुष सर्वात्मपदकों प्राप्त होताहे ॥ जीस पदके पावणेतें हर्ष विषाद संपदा आपदा कोउ नही रहती ॥ अहंकाररूपी मेघहे सो आत्मारूपी सूर्यके आगें आयाहे ॥ माया मलीनता जडरूपहे ॥ तीसकरी आत्मरूप सूर्य नही भासता ॥ बोधरूपी वायुसों जव यह दूर होवे तब ज्योंका त्यों भासताहें ॥ जेसें कृशाण प्रथम हल आदिक करी पृथ्वीकों शुद्ध करताहे तव पाछें वीज वोताहे , जव जल सिंचताहे अरु नाश करनेहारे पदार्थतें रक्षा करताहे, तब फलकों पाताहे ॥ तेसें जव आर्जवादि गुणों करी बुद्धि निर्मल होतीहे वहुरी शास्त्रके उपदेशरूपी वीज मीलताहे, अरु अभ्यास वैराग करीकें करताहे तीस करी परम पदकी प्राप्त होतीहे सो अतुलपद हे ॥ तीसके समान ओर कोउ नही ॥ इतिश्री यो० उप० प्र० प्राज्ञमहिमा वर्णनं नाम द्वादशः सर्गः॥ १२ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार जनककी नांइं अपणे आपकरी आपकों वीचार कर ॥ पाछें जो विदितवेद पुरुषोनें कीयाहे तीसी प्रकार तुमभी निर्विघ्न होडु ॥जो वुधिवान पुरुष हे जिनका यह अंतका जन्म हे सो राजस सात्विकी पुरुष आपही परम पदकों प्राप्त होताहे ॥ जव लग अपणे आपकरी आत्मदेव प्रसन्न नही होवेगा तवलग इंद्रियांरूपी शत्रुकों जीतणेका जतन करो ॥ जब आत्मदेव प्रसन्न होवेगा सर्वगत जो परमात्मा इश्वरोंका इश्वर हे सो आपही स्वयं प्रकाश देखता हे अरु सर्व दोष दृष्टि क्षीण होजाती हे ॥ मोहरूपी विजकी जो मुष्टी भरिभरी वोता था सो नाना प्रकारकी आपदारूप वर्षा करी महामोहकी वेली होतीहे अरु द्रष्ट आतीहे सो सव नष्ट होजातीहे ॥ जब परमात्माका साक्षात्कार होताहे तव भांति दृष्ट नही आती ॥ हे रामजी तुम सदा बोधकरी आत्मपदविषे स्थित होडु ॥ अरु जनकवत् कार्योंका आरंभ करो ॥ ब्रह्म लक्षवान होकरी जगत्विषे विचरो तव तुमकों खेद कछु न होवेगा ॥ जब नित्य आत्मविचार होताहे तव परम देव आपही प्रसन्न होताहे ॥ तीसके साक्षात्कार डुएतें चंचलरूप संसारी जनकों देखी करी जनककी नांइ हसेगा हे रामजी ! संसारके भय करी जो जीव भय भीत डुएहे तिसतें रक्षा करणेकों अपणाही पुरुष प्रयत्न हे और देव करीकें अथवा कर्म करीकें धन बांधव करीकें रक्षा नही होती ॥ जो पुरुष देवकों निश्चय करीके रहे हे अरु शास्त्रविरुध आ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प कर्म करता हे संकल्प विकल्पविषे तत्पर होताहे सो मध्य बुद्धि हे ॥ तीनके मार्गकी ओर तुम नहीं गमन करना ॥ उनकी ओर बुद्धि नाश करति हे ॥ तुम परम विवेककों आश्रय क
रो अरु अपणे आपकों आपकरी देखो वैरागवान शुद्ध बुद्धि करीकें संसार समुद्रकों तरी जाता हे ॥ यह में तुजकोंजनकका वृत्तांत कहा हे जेसें आकाशतें फल गीर पडे तेसें उसकों
सिधोंके विचार करी ज्ञानकी प्राप्ति भइ ॥ यह विचार ज्ञानरूपी वृक्षकी मंजरी हे जेसें अपणे विचार करीकें राजाजनककों आत्मबोध हुआ हे तेसें तुमकोंभी प्राप्त होवेगा ॥ जेसें
सूर्यमुखी कमल सूर्यकों देखी करी प्रसन्न होताहे तेसें इस विचार करी रिदा प्रफुल्लित हो आवेगा ॥ मनका जो मननभाव हे सो शांत हो जावेगा ॥ जेसें बर्फका कणका सूर्य करी
तप्त हो गिल जाता हे ॥ जब अहंत्वं आदिक रात्री विचाररूपी सूर्य करीके क्षीण हो जावेगी तब परमात्माका प्रकाश साक्षात् होवेगा ॥ अरु भेद कल्पना नष्ट हो जावेगी अनंत ब्रह्मांड
विषे जो व्यापक आत्मतत्व हे सो प्रकाश आवेगा ॥ जेसें अपणे विचार करी जनकनें अहंकार वासनाका त्याग कीया हे तेसें तुमभी विचार करीकें अहंकार वासनाका त्याग क
रो ॥ अहंकाररूपी मेघ जब नष्ट होवेगा ॥ अरु चित्ताकाश निर्मल होवेगा तब आत्मरूपी सूर्य प्रकाशेगा ॥ जब लग अहंकाररूपी मेघ आवर्ण हे तब लग आत्मरूपी सूर्य नही भास
ता ॥ विचाररूपी वायुकरी जब अहंकार रूपी मेघ नाश होजावे तब प्रगट भासेगा ॥ हे रामजी एसें धार जो न में हो, न कोउ ओर हे, न नास्ति हे, न अस्ति हे, जब एसी भावना
दृढ होवेगी तब मन शांत होजावेगा ॥ हेयोपादेय बुद्धि जो इष्ट पदार्थोंविषे होतीहे तीसविषे न डुबेगे ॥ इष्ट अनिष्टके ग्रहण त्यागविषे भावना होतीहे यह मनकारूप हे अरु यही बंध
नका कारन हे ॥ इसतें इतर बंधन कोउ नही ॥ तातें तुम इंद्रियोंके इष्ट अनिष्टविषे हेयोपादेय बुद्धि मत करो ॥ दोनोंके त्यागेतें जो शेष रहे तीसविषे स्थित होड्ड ॥ इष्ट अनिष्टकी भा
वना तीसकी जाती हे जीसकों हेयोपादेय बुद्धि नही होती ॥ जबलग हेयोपादेय बुद्धि क्षीण नही होती तबलग समताभाव नही उपजता ॥ जेसें मेघके नष्ट हुए विना चंद्रमाकी
चांदनी नही भासती तेसें जबलग पदार्थोंविषे इष्ट अनिष्ट बुद्धि हे मन लोलुप होताहे तबलग समता उदय नही होती ॥ जबलग जुक्त अजुक्त लाभ अलाभ इछा नही मिटती तबलग
शुद्ध समता अरु निरसता नही उपजती ॥ एक जो ब्रह्मतत्व निरामय रूप नानात्वतें रहित हे तीसविषे युक्त क्या अरु अयुक्त क्या ॥ जबलग इछा अनिछा वांछित अवांछित यह दो
नो बात स्थित हे अर्थ यह जो फुरतेहे क्षोभ करते हे तबलग सोम्यता अचल भाव नही होता ॥ अरु जो हेयोपादेय बुद्धितें रहित ज्ञानवान हे तीस पुरुषकों यह शक्ति आय प्राप्त होती
हे ॥ जेसें राजाके अंतःपुरविषे पट्टरांणी स्थित होती हे तेसें सो कोन शक्ति हे एक तो भोगोंविषे निरसता, देहाभिमानतें रहित नीर्भयता, नित्यता, समता, सब पूर्ण आत्मादृष्टि, ज्ञाननिष्ठा,
सब इछातें रहित, अरु निरहंकारता आपकों सदा अकर्ता जानना, इष्ट अनिष्टकी प्राप्तिविषे सम चित्तता, निर्विकल्पता, सदा आनंद स्वरूप रहणा, धैर्यसों सदा एकरस रहणां, स्वरूपतें इ
तर वृत्ति न फुरे, अरु सर्व जीवों साथ मैत्रीभाव अरु सत्य बुधि निश्चयात्मकरूपकरी तुष्टता, अरु मुदिता, अरु मृदु भाषणा एती शक्ति हेयोपादेयतें रहित पुरुषकों आय प्राप्त होतीहे
हे रामजी ! संसारके पदार्थोंकी ओर जो चित्त धावता हे तीसकों वैरागकरी उलदाय खेंचणा ॥ जेसें पुलकरीकें जलके वेगका निवारण होता हे तेसें जगत् सों निवारी करी मनकों आत्म
पद विषे लगावणा ॥ तीसकरी आत्मभाव प्रकाशताहे तातें अंतरसों सब वासनाकों त्याग करो ॥ अरु बाह्यतें सब कियाविषे रहो ॥ बेगें चलो, स्वास लेड्ड, सर्वदा सर्व प्रकार चेष्टा करो, अरु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वदा सर्व प्रकारकी वासना त्याग करो ॥ संसाररूपी समुद्र हे जिसविषे वासनारूपी जल हे अरु चिंतारूपी सूत्र हे ॥ तीस जलकरीकें तृष्णावानरूपी मछ फसेहे यह विचार जो तुमकों कहा हे तीस विचाररूपी शिलासाथ बुधिकों तीक्ष्ण करो अरु इस जालकों छेदो तब संसारतें मुक्त होडुगे अरु संसाररूपी वृच्छ हे तीसका मूल बीज मन हे ॥ यह वचन जो कहेहे तीसकों रिदेविषे धर कर धैर्यवान होडु ॥ तब आधि व्याधि दुःखोंतें मुक्त होवेगा मन करीकें मनकों छेदडु, जो बीती हे तीसकों स्मरन करो अरु भविष्यतकी चिंता न करो ॥ काहेतें जो असत्यरूप हे अरु वर्तमा नकोभी असत्य जानकें तिसविषे विचरो ॥ जब मनतें संसारका विस्मरण हुआ तब मनविषे बहुरी न फुरेगा ॥ मनविषे असत्य भाव जानकें चलो, बेठो, स्वास लेडु, निस्वास करो, उछलो, सो वडु, एसी चेष्टा होवे परंतु अंतर सब असत्यरूप जाणडु तब खेद न होवेगा ॥ अहं ममरूपी जो मल हे तीसकों त्यागकरी अथवा प्राप्तिविषे विचरो ॥ राज आय प्राप्त होवे तब तीस विषे विचरो परंतु अंतर तें इस विषे आस्था न होवे ॥ जेसें आकाशका सब पदार्थोंविषे अन्वय हे परंतु कीसी साथ स्पर्श नही करता ॥ तेसें बाह्य कार्यकों करो ॥ परंतु मनकरी कीसी साथ बंधायमान न होडु ॥ तुम चैतनरूप अजन्मा महेश्वर पुरुष हो ॥ तुमसों भिन्न कछु नही ॥ सब विषे व्यापी रहाहो ॥ जीस पुरुषोंकों सदा यही निश्चय रहताहे अपणे स्वरूप विषे तीनकों संसार पदार्थ चलायमान करी नही सकते अरु जीनकों संसारविषे आशक्तभावना हे अरु स्वरूपतें भुले हे तीनकों संसारके पदार्थोंतें विकार उपजताहे ॥ हर्ष अरु शोक भय खेंचतेहे तीसकरी बांधे हुएहे अरु जो ज्ञानवान पुरुष राग द्वेषतें रहितहे तीनकों लोह हडका बटा अरु पाषाण स्वर्न एक समानहे ॥ संसार वासनाका त्याग कीया इसीका नाम मुक्तिहे ॥ हे रामजी ! जीस पुरुषकों स्वरूपविषे स्थिति भइहे अरु सुख दुःखविषे समताहे सो जो कछु करताहे भोगताहे, देताहे, लेताहे, इत्यादिक क्रिया करताहे सो करता हुआभी कछु नही करता ॥ यथा प्राप्त कार्यविषे वर्तताहे ॥ अंतःकरनविषे इष्ट अनिष्टकी भावनां नही फुरति ॥ कार्यविषे राग दोषवान होकरी डुबता नही ॥ जीसकों सदा यह निश्चय रहताहे जो सर्व चिदाकाशरूपहे अरु भोगोकें मननतें रहितहे सो समता भावकों प्राप्त होताहे ॥ हे रामजी ! मन जडरूपहे, आत्मा चैतनरूपहे ॥ तीस चैतनकी सत्ता करी पदार्थोंकों ग्रहण करताहे इसकेविषे अपणी सत्यता कछु नही ॥ जेसें सिंहकरी मार्या जो पशुहे तीसकों खानेकों बिल्लीभी जातीहे उनकों अपणा बल कछु नही ॥ तेसें चैतनके बलकरी मन दृश्यकों आश्रय करताहे ॥ मन आप असत्यरूपहे चैतनकी सत्ता पाइ करी जीताहे अरु संसारके चिंतवनकों समर्थ होताहे ॥ प्रमाद करीकें चिंतासों तपायमान होताहे यह वार्ता प्रसिद्धहे जो मन जडहे अरु चैतनरूपी दीपक करी प्रकाशताहे चैतन सत्तातें रहित सब समानहे ॥ आत्मसत्तातें रहित उठणेकोंभी समर्थ नही होता ॥ आत्मसत्ताकों भुलाइ करी जो कछु करताहे तीस फुरणेकों बुद्धिवान कलना कहतेहे ॥ जब उही कलना शुद्ध चैतनरूप आपकों जानतीहे तब आत्मभावकों प्राप्त होतेहे ॥ प्रमादतें रहित आत्मरूपहे ॥ चित्तकला जब चैत्य दृश्यतें स्फुरहोतीहे तीसका नाम तब सनातन ब्रह्म होताहे अरु जब चैत्य साथ मिलतीहे तब तीसका नाम कलना होतीहे स्वरूपतें इतर कछु नही ॥ केवल ब्रह्मतत्व स्थितहे ॥ तीसविषे भ्रांति करीकें मन आदि भासतेहे ॥ जब चैतन सत्ता दृश्यके सन्मुख होतीहे तब उही कलनारूप होतीहे ॥ अपणे स्वरूप विस्मरण कीएतें संकल्पकी ओर धावणेतें कलना कहातीहे ॥ सो आपकों प्रच्छन्न जानतीहे तिसकरी प्रच्छन्न होजातीहे हेयोपादेय धर्मिणी होतीहे ॥ हे रामजी ! चित्तसत्ता अपणेही फुरणे करी जडताकों प्राप्त भइहे ॥ जबलग विचार करीकें जगावे नही तबलग स्वरूपविषे जागती नही ॥ इसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारणतें सत्यत्व शास्त्रोंके विचार अरु वैराग करी इंद्रियोंका निग्रह करी अपणी कलनाकों आप जगाउ ॥ सब जीवकी जो कलनाहे सो विज्ञान अरु सम करीकें जगावणेतें ब्रह्मतत्वकों प्राप्त होतीहे ॥ इसतें इतर मार्ग करी भ्रमता रहताहे ॥ मोहरूपी जो मदिराहे तिसकरी जो पुरुष उन्मत्त हुआहे सो विषयरूपी गिर्तमें गीरतेहे, आत्मबोधतें सोइ हुइ कलना जगावते नही अप्रबोधही रहतेहे ॥ सो चित्त कलना जड रहतीहे जो भासतीहे तोभी असत्यरूपहे ॥ एसा पदार्थ जगतविषे कोउ नही जो संकल्प करी कल्पित न होवे तातें तूं अजड धर्मा हो उ ॥ कलना जड उपलब्धरूपीणीहे, परमार्थ सत्ता करी विकाशमान होतीहे ॥ जेसें सूर्य करी कमल विकाशमान होताहे तेसें ॥ जेसें पाषाणकी मूर्तिकों कहीए तुं नृत्य कर तब उह न ही करति काहेतें जो जडरूपहे ॥ तेसें देहविषे जो कलनाहे सो चैतन कार्य करणेकों समर्थ नही होती ॥ जेसें मूर्त्तिका लिख्या हुआ राजा गुरगुर शब्द करी युद्ध करणेकों समर्थ नही हो ता अरु मूर्तिका चंद्रमा औषधकों पुष्ट करी नही सकता तेसें कलना जडरूपहे कार्य करणेकों समर्थ नही होती ॥ जेसें निरवयव अंगना साथ आलिंगन नही होता ॥ जेसें संकल्पके रचे आकाशके बनकी छाया तले कोउ नही बेठता, मृगतृष्णाके जल साथ कोउ तृप्त नही होता तेसें जडरूप मन क्रिया करणेकों समर्थ नही होता ॥ जेसें सूर्यके धूप करी मृगतृष्णा की नदी भासतीहे तेसें चित कलनाके फुरणे करी जगत भासताहे शरीरविषे जो स्पंद शक्ति भासतीहे सो प्राणशक्ति हे प्राणों करी बोलता चलता बेठताहे ॥ ज्ञानरूप संवित्त जो आलत त्वहे तीसतें इतर कछु नही ॥ जब संकल्प कला फुरतीहे तब अहं त्वं इत्यादिक कलना करी उहीरूप हो जाताहे ॥ जब आत्मा अरु प्राणका फुरना एकठा आया होताहे ॥ अर्थ यह जो प्राणों साथ चैतन संवित मीलता हे तब तीसका नाम जीव होता हे ॥ बुद्धि चित्त मन सब तिसके नाम हे ॥ सब संज्ञा अज्ञान करी कल्पित होती हे अज्ञानीकों जेसें भास्या हे तेसें तिसकों हे अरु परमार्थतें कछु हुआ नही ॥ न मन हे न बुद्धि हे न शरीर हे केवल आत्मा मात्र अपणे आपविषे स्थित हे ॥ अवर द्वैत कछु हुआ नही सब जगत् आत्मरूप हे ॥ कालक्रिया सब आत्मरूप हे आकाशतेंभी निर्मल हे अस्ति नास्ति सर्व उही रूप हे द्वितीय फुरणेतें रहित हे ॥ इस कारनतें हे अरु नांइ एसा स्थित हे अरु सर्व रूपतें सत्य हे ॥ आत्मा सब पदोंतें रहित हे इस कारनतें असत्यकी नांइ हे अनुभवरूप हे तातें सत्य हे सर्व कलनातें रहित केवल अनुभवरूप हे ॥ एसें अनुभवका जहां ज्ञान होता हे तहां मन क्षीण हो जाता हे ॥ जेसें जहां सूर्यका प्रकाश होताहे तहां अंधकार क्षीण हो जाता हे अरु जब आत्मसत्ताविषे संवित करीकें इछा फुरती हे सो संकल्पके सन्मुख हुइ थोडीभी बडे विस्तारकों पावती हे तब चित्त कलाकों आत्मस्वरूप विस्मरण हो जाता हे ॥ जन्मोंकी चेष्टा करी जगत् स्मरण हो आता हे परम पुरुषकों संकल्प साथ तन्मय होणेकरीकें चित्त नाम कहाता हे अरु जब चित्त कला संकल्पतें रहित होती हे तब मोक्षरूप होता हे ॥ चित्त कला फुरनेका नाम चित अरु मन कहते हें अरु दुसरी वस्तु कोउ नही ॥ एकता मात्रही चितका रूप हे संपूर्ण संसारका बीज मन हे संकल्पके सन्मुख हो करीकें चैतन संवितका नाम मन होता हे ॥ निर्विकल्प जो चितसत्ता हे सो जब संकल्प करीकें मलीन होती हे तब तिसकों क लना कहता हे ॥ उही मन घटादिककी नांइं प्रच्छन्न भेदकों प्राप्त होता हे तब क्रिया शक्ति जो प्राण तिस साथ अरु ज्ञानशक्ति साथ मीलती हे॥ तब तिस संयोगका नाम संकल्पविकल्प का कर्ता मन होता हे सोइ जगतका बीज हे ॥ तिसके लीन करणेके दो उपाय हे एक तत्वज्ञान दुसरा प्राणोका रोकणा जब प्राणशक्तिकों निरोध करता हे ॥ तब मनभी लीन हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाता हे अरु सत्य शास्त्रो द्वारा ब्रह्मतत्वका ज्ञान होताहे तोभी लीन हो जाता हे ॥ प्राण कीसका नाम हे अरु मन कीसका नाम हे सो श्रवण कर ॥ हृदयकोशतें निकसता हे अरु बाह्य जाता हे ॥ अरु बहुरी बाह्य सों अंतर आता हे सो प्राण हे शरीर बेठा हे अरु वासनाकरी देशदेशांतरकों भ्रमता हे ॥ तिसका नाम मन होता हे तिसकों वैराग अरु योगाभ्यास करी वासनातें रहित करणा अरु प्राणवायुकों स्थित करणा यह दोनों उपाय हे ॥ हे रामजी! जब तत्व ज्ञान होता हे तब मन स्थिर हो जाता हे काहेतें जो प्राण अरु चित्त कलाका आपसमें वियोग होता हे अरु जब प्राण स्थित होता हे ॥ तब मन स्थित हो जाता हे काहेतें जो प्राण स्थित हुए चैतनकला साथ नही मीलते ॥ तब मनभी स्थित हो जाताहे सो नही रहता ॥ मनकारूप चैतन कला अरु प्राण फुरणविना नही रहता ॥ एसाभी होवे जो पाषाणकों स्वाद लेणेकी शक्ति हो आवे सो पाषाणकों अपणी सत्ता शक्ति कछु नही तेसें मनकोंभी अपणी सत्ता शक्ति कछु नही जो चैतन सत्ता अरु प्राणोविना कछु होवे ॥ स्पंदरूप जो शक्ति हे सो प्राणोंकी हे ॥ सो चलरूप जडात्मक हे आत्मसत्ता चैतनरूप हे सो आपणे आपविषे स्थित हे ॥ चैतन शक्ति अरु स्पंदशक्तिके संबंध होणे करीकें मन उपज्या हे सो मनका उपजणाभी मिथ्या हे ॥ इसीका नाम मिथ्या ज्ञान हे ॥ हे रामजी! में तुझकों अविद्या परम अज्ञानरूप संसाररूपी विषकों देणे हारी कही हे चित्त शक्ति अरु स्पंद शक्तिका संबंध संकल्प करीकें कल्पित हे ॥ जो तूं संकल्प न उठावे तब मन संज्ञा न रहेगी क्षीण हो जावेगी ॥ तातें संसारभ्रमसों भयमान मत होहु अरु जब स्पंदरूप प्राणकों चित्त सत्ता चेतती हे तब चेतणे करी मन चित्तरूपकों प्राप्त होता हे ॥ अपणे फुरणे करी दुःखकों प्राप्त होता हे ॥ जेसें बालक अपणे पछायेविषे बैताल कल्पी करी भयवान होता अखंड मंडलाकार जो चैतनसत्ता हे सो सर्वगत हे ॥ तिसका संबंध किसके साथ होवे ॥ अखंड शक्ति उन्मिद्ररूप आत्माके एकठे करणेकों समर्थ कोउ नही इसी कारनतें संबंधका अभाव हे ॥ जो संबंधही नही तो मीलणा कीस साथ होवे मिलाप न हुआ तो मनकी सिद्धता क्या कहीयें ॥ चित्त अरु स्पंदकी एकताकों मन कहाता हे ओर मन वस्तु नही ॥ जेसें रथ घोडा हस्ति प्यादा इनोंविना सेनाका रूप ओर कछु नही निकसता तेसें चित स्पंदविना मनका रूप ओर कछु नही ॥ तीस कारनतें दुष्टरूप जो मन हे ॥ सो तीनों लोकोंविषे इसके समान कोउ नही ॥ जब सम्यक् ज्ञान होवे तब मृतरूप मन नष्ट हो जाता हे तातें मिथ्या अनर्थका कारन चित्त हे जो तिसकों मत धरो ॥ अर्थ यह जो संकल्पकों त्याग करो ॥ हे रामजी! मनका उपजणा मिथ्या हे, परमार्थतें नही संकल्पका नाम मन हे इस कारण तें कछु हे नही ॥ जेसें मृग तृष्णाकी नदी मिथ्या भासती हे तेसें मन मिथ्या हे रिदारूपी मरूथल हे अरु चैतनरूप सूर्य हे तहां मनरूपी मृगतृष्णा हे तीसका जल भासता हे ॥ जब सम्यक् ज्ञान होताहे तब इसका अभाव होजाताहे ॥ मन जड तातें निःस्वरूप हे सर्वदा मृतक रूप हे तीस मृतकनें सर्व लोकोंकों मृतक कीये हे यह बडा आश्चर्य हे ॥ जो अंगभी कछु नही देहभी नही न आधार हे, न आधेय हे, सो जगत्कों भच्छन करता हे अणहोती जालसों लोकोंकों फसाये हे ॥ जो सामग्रीतें रहित बल तेज विभूती हस्त पदादि रहित लोकोंकों मारताहे ॥ मानों कमलके मारने करी मस्तक फटजाताहे ॥ जो जड मूक अधमहे सो पुरुष एसें मानते हे जो हम बांधेहे ॥ मांनों पूर्णमासीके चंद्रमाकी कीर्णा करी जलतेहे ॥ जो सुर्म होतेहे सो तीसकों हनन करतेहे ॥ जो अविद्यमान मनहे तीसनें मिथ्याही जगतकों हत कीयाह ॥ मिथ्या संकल्प करी उदय अरु स्थित हुआहे ॥ एसा दुष्ट हे जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कीसीनें उसकों देखा नही ॥ मैं तुजकों तीसकी शक्ति कही हे ॥ सो तो बडा आश्चर्यरूप विस्तृतरूप हे ॥ चंचल अस्तरूप चित्तकरी में विस्मित हुआहो ॥ जो मूर्ख हे सो सर्व आपदा का पात्र हे जो मन हे नही तीसकरी एते दुःखकों प्राप्त भयाहे ॥ बडा कष्ट हे जो सृष्टि मूर्खता करीकें चली जातीहे ॥ सर्व मनकरी तपते हे यह में मानता हों जो सर्व जगत् मूढरूप हे ॥ तरंगरूपी शस्त्रकरीकें कणकण होगएहे, पैलवरूप हे ॥ जो कमलकरी वीदारण हुआहे ॥ चंद्रमाकी कीरणांकरी दग्ध होगएहे ॥ दृष्टिरूपी शस्त्रकरी उह पुरुष वेधेहे ॥ संकल्परूपी मनकरी मृतक होगएहे वास्तवतें कछु हे नही ॥ मिथ्या कल्पनानें नीच रूपन करीकें लोककों हनन कीए हे तातें मूर्खहे ॥ मूर्ख हमारे उपदेश जोग नही, उपदेशका अधिकारी जिज्ञासी हे ॥ जीसकों स्वरूपका साक्षात्कार नही भया अरु संसारतें उप्रांत हुआ हे अरु मोक्षकी इछा रखता हे अरु पद पदार्थका ज्ञाता हे सो उपदेश करणे जोग हे ॥ अरु ज्ञानवान जो पूर्ण हे तीसकों उपदेश नही बनताहे ॥ अरु अज्ञानी मूर्खकोंभी नही बनता ॥ मूर्खकेसा हे बीनाकी धुनी सुनी करी भयवान होताहे, अरु बांधव निद्रामें सोया पडा हे तीसकों मृतक जानकें भयवान होताहे ॥ अरु स्वप्नविषे हस्तिकों देखीकरी भय पावता हे भागताहे, तीस मननें अज्ञानीयोंकों वशकीयाहे ॥ भोगोंका जो लव तुच्छ सुखहे तीसके निमित्त जीव अनेक जतन करते हे अरु दुःख पावतेहे ॥ रिदेविषे स्थित जो अपणा स्वरूप हे तीसकों नही देखीसकते ॥ प्रमादकरी अनेक कष्ट पावतेहे अज्ञानी जीव मिथ्याही मोहित होतेहे

इतिश्री योगवासिष्ठे उपशमप्रकरणे मन निर्वाणं वर्ननं नाम त्रयोदशःसर्गः ॥ ॥ १३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! संसाररूपी समुद्र हे तीसविषे राग दोषरूपी बडे कल्लोल उठते हे तीसविषे उह पुरुष वहेहे ॥ जो मनकों मुढ जडरूप नही जाणते तिनकों उदार जो आत्मफल हे सो प्राप्त नही होता ॥ यह विचार विवेककी वाणी मेंनें तुजकों कहीहे सो तुम सरीखेंको जोग हे अरु जीन मुढ जडकों मनके जीतणेविषे समर्थता नही तिनकों नही शोभती इन वचनकों नही ग्रहण करी सकते ॥ तीनकों कहणे करी क्या प्रयोजन हे ॥ जेसें जन्म अंधकों सुंदर मंजरी बन दीखाईए तब वह निष्फल होताहे काहेतें जो वह देखी नही सकता ॥ तेसें विवेक वाणीका उपदेश करणा उनकों निष्फल होता हे जो मनकों जीती नही सकते ॥ इंद्रीयोंकरी लोलुप पुरुष हे तीनकों आत्माबोधका उपदेश करणा कछु कार्य नही करता ॥ जेसें कुष्ट करी जीसका शरीर गिल गया हे ॥ तीसकों नाना प्रकारकी सुगंधका उपचार सुखदायक नही होता ॥ तेसें मुढकों आत्म उपदेशका बोध सुखदायक नही होता ॥ जीसकी इंद्रियां व्याकुल विपर्यय हे अरु मदिरा करी उन्मत्त हे तीसकों धर्मके निर्णय विषे साक्षीकरणा कोउ प्रमाण नही करता ॥ एसा कुबुधि कवन हे जो मसाणविषे शवकी मूर्तिकों पाइकरी तीस साथ चर्चा विचार करे अरु तीससों प्रश्नोत्तर करे ॥ अपणे रिदेरूपी कुदविषे मनरूप मूक जड सर्पवत स्थित हे जो तीसकों नीकासी डारे सो पुरुष हे अरू जो तीसकों जीती नही सकता तीस दुर्बुद्धिकों उपदेश करणा सो व्यर्थ हे ॥ हे रामजी! मन महा तुच्छ हे जो वस्तु कछु नहोवे तीसके जीणेविषे कठिनता होवे ॥ जेसें स्वप्ननगर निकट होता हे अरु चिरपर्यंतभी स्थित हे अरु जागी करी देखीए तो कछु नही पाइता तेसें मनकों जो विचार करी देखीए तो कछु नही पाइता ॥ जीस पुरुषनें अपणे मनकों जीत्या नही सो दुर्बुद्धि हे वह अमृतकों त्यागकरी वीषकों पान करता हे ॥ सो विषकी मुर्छा करी मर जाता हे ॥ अरु जो ज्ञानी हे सो सदा आत्माही देखता हे ॥ इंद्रियां अपणे अपणे धर्मविषे विचरतीयां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे प्रानकी स्पंदशक्ति हे अरु ज्ञानशक्ती परमात्माकी हे॥ इंद्रियांकों अपणी शक्ती हे॥ जीव कीसकरी बंधायमांन होता हे वास्तवतेंसर्व शक्त सर्वात्मा हे॥ तीसतें भिन्न कछु नही ॥ य ह मन कहा हे जीसने सब जगतकों नीच कीया हे॥ हे रामजी मुढोकों देखीकरी में दया करता हों अरु तपता हों जो मुढ क्यों खेद पाते हे ॥ दुःखदायक कवन हे जीसकरी तपते हे॥ जेसें उष्ट्र कंटकके वछोंकी परंपराकों प्राप्त होता हे तेसें मुढ प्रमादकरीकें दुःखोंकी परंपराकों पावताहे ॥ उह दुर्बुद्धि देहकों पाइ करी मरी जाताहे ॥ जेसें समुद्रविषे बुदबुदे उपजी करीमिटी जातेहे तेसें संसार समुद्रविषे उपजी करी नष्ट होजाताहे तीसका शोक करणा क्या हे वह तो तुच्छ पशुतें नीचहे ॥ तुं देख जो दशो दीशाविषे पशु आदिक होतेहे अरु मरते हे॥ तीनका शोक कोण करताहे मछरादिक जीव नष्ट होजाताहे ॥ केइ जलचर जलविषे भछन करतेहे ॥ तीनका विलाप कोन करताहे ॥ छोटे जीवोंकों वडा ज लविषे मछ भच्छन करताहे ॥ आकाशविषे केइ पंछी मृत्यु होताहे तीनका कवन शोक कर्ताहे ॥ अनेक जीव नाश होतेहे तीसका विलाप कछु नही होता ॥ तेसें अबकें जो हे तीसका विलाप करणा नही काहेतें जो स्थिर रहणा कीसीकों नही ॥ सर्व नाशरूप हे अरु तुछ हे ॥ निरंतर नष्ट होताहे सर्वका प्रतियोगी काल हे अनेक जीवों कों भोजन करता हे ॥ जुं आदिककों मक्षिका अरु मछर आदिक खातेहे ॥ मक्षिका अरु मछरादिकों दादुर खातेहे ॥ दादुरकों सर्प, सर्पोंकों नोले, नोलेकों बीछे ॥ बीलेकों कुकर, कुक्करोंकों बीघाड, बीघाडोकों सिंह, सिंहोकों सरभ, सरभकों मेघकी गर्जना नष्ट करता हे ॥ मेघकों वायु, वायुकों पर्वत, पर्वतकों इंद्रका वज्र, इंद्रके वज्रकों सुदर्शन, चक्र जीती लेताहे सो चक्र विष्णुजीका होताहे ॥ सो विष्णुभी अवतारोंकों धरता हे ॥ सुखदुःख जरा मरण संयुक्त होताहे जीवोंकरी वडी देहकों धरता हे विद्यारूप हें तोभी जुंआ ली खां आदिक शरीर साथ लगतीयांहे वह रुधिर पान करतियांहे ॥ इस प्रकार निरंतर भूत जातिकों काल जीर्ण करता हे ॥ अरु परस्पर जीव जीवकों खाते हे अरु निरंतर नाना प्र कारके भूत जात दशो दिशाविषे उपजते हे जेसें जलविषे मच्छ कच्छ आदिक उत्पन्न होते हे ॥ पृथ्वीविषे कीट आदि उपजतेहे अंतरिक्षविषे पंछी आदिक, बनवीथीविषे सिंहादिक मृग उपजतें हे ॥ स्थावरविषे पिपीलिका दर्दुर कीटादि उपजते हे विष्टाविषे कृमि उपजते हे, नांना प्रकारके जीवगण इस प्रकार निरंतर उपजते हे अरु मिटी जाते हे ॥ कोउ हर्षवान कोउ शोकवान होताहे ॥ कोउ रुदन करते हे सुख अरु दुःखमानते हें ॥ पापी पापके दुःख करी निरंतर मरते हे अरु सृष्टिविषे उपजते नाश होते हे जेसें वछसों पत्ता उपजतेहे तेसें भूत उपजी करी नाश होजातेहे तीनकी गणती कछुनही ॥ जो बोधवान पुरुष हे सो अपणे आपकरीकें अपणे आप उपर दया करीकें आपकों संसार समुद्रकों पार करते हे ॥ हे रा मजी ! अवर जेते कछु जीव हे सो पशुवत् हे मूढों अरु पशुविषे भेद कछु नही तीनकों हमारी कथाका उपदेश नही वह पशुधर्मा इस वाणीकों योग्य नही ॥ देखणे मात्र मनुष्य हे परंतु मनुष्यका अर्थ तीनतें सिद्ध कछु नही होता ॥ जेसें उजाड बनविषे ठुंठा वृक्ष होताहे सो छाया फलतें रहित कीसीकों विश्राम दायक नही होता तेसें मूढ जीवोंतें कछु अर्थ सिद्ध नही होता ॥ जेसें जेवरी गलेविषे डारी करी पशुकों जहां खेंचता हे तहां चले जाते हे ॥ तेसें मूढ चित्त करी खेंचते हे ॥ जहां चित्त खेंचता हे तहां चले जाते हे मूढ चित्त पशु विषयरूपी कीचविषे फसेहे ॥ तीसकरी वडी आपदाकों प्राप्त होतेहे ॥ तीन मुढोंकों आपदाविषे देखकें पाषाणभी रुदन करतेहे जीन मूर्खोंनें अपणे चित्तकों नही जीत्या तीनकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुःखोंके समूह प्राप्त होतेहे अरु जीनहुनें चित्तकों बंधनतें नीकास्याहे सो संपदावान है ॥ दुःख तीनकें सब मीट जाताहे संसारविषे बहुरी नही उपजते ॥ तातें अपणे चित्तके जीतेविना दुःख नष्ट नही होता ॥ अरु जो चित्त जीतणा न होता ॥ अरु परम सुख प्राप्त नही होता तो चित्त जीतणेकों बुद्धिवान न प्रवर्तते॥ सो बुद्धिवान प्रवर्ततेहे तातें जाणीए जो चित्तभी वश होताहे ॥ मनरूपी भमके नष्ट हुए आत्मसुख प्राप्त होताहे ॥ हे रामजी! मनभी कछु हे नही ॥ मिथ्या भम करी कल्पतेहे जेसें बालककों अपणे पछावेविषे वेताल बुद्धि होतीहे तीसकरी भयमान होताहे तेसें भमरूप मनकरी नाश मानतेहे ॥ जबलग आत्मसत्ताका विस्मरण होताहे तबलग मूढताहे॥ अरु रिदेविषे मनरूप सर्प विराजताहे ॥ जब अपणा विवेकरूपी गरुड़ उदय होवे तब उह नष्ट होजाताहे ॥ अब तुम जागे हो ज्योंका त्यों जानते हे ॥ हे शत्रु नाशक रामजी! अपणे संकल्प करी चित्त बढताहे ॥ तीस संकल्पकों शीघ्रही त्याग करो ॥ तब चित्त शांत होवेगा ॥ जो तुम दृश्यकों आश्रय करोगे तो बंधन होवेगा ॥ अरु अहंकार आदिक दृश्यकों त्याग करोगे तो अचित्त मोक्षवान होहुगे यह गुणोंका संबंध में तुजकों कहाहे जो दृश्यका आश्रय करणा बंधनहे इसतें रहित होणा मोक्षहे॥ आगें जेसें इच्छा होवे तेसें करहु इस प्रकार ध्यान करहु॥ जो न मेंहो न यह जगत हे केवल अचलरूपहों ॥ एसें निःसंकल्प हुएतें आनंद चिदाकाश रिदेविषे आय प्रकाशेगा ॥ आत्मा अरु जगतविषे जो विभाग कलना आय उदय हुइ हे सो मलहे ॥ इस द्वैत भावकों त्याग कीएतें जो पाछें शेष रहेगा तीस विषे स्थित होहु ॥ आत्मा अरु जगतका अंतर क्याहे ॥ द्रष्टा अरु दृश्यके अंतर जो दर्शनहे अनुभव सत्ता हे सर्वदा तिसीकी भावना करो॥ स्वाद अरु अस्वाद लेणे वालेकों त्याग करो॥ तीनके मध्य जो स्वादरूपहे तीसविषे स्थित होहु सो आत्मतत्व हे तिसविषे तन्मय होहु ॥ अनुभव जो द्रष्टा हे अरु दृश्यहे तीसके मध्यविषे जो निरालंब साक्षीरूप आत्माहे तीसविषे स्थित होहु ॥ हे रामजी भव जो हे संसार सो भाव अभावरूप हे तीसकी भावनाकों त्यागकर भावरूप आत्माकी भावना करो सो अपणा स्वरूप हे ॥ प्रपंच दृश्यकों त्याग कीएतें जो वस्तु अपणा स्वरूप हे सोइ होवेगा ॥ जो परमानंद स्वरूप हे अरु चित्तभावकों प्राप्त होणा अनंत दुःख हे॥ चित्तरूपी संकल्प बंधन हे तीस बंधनकों अपणे स्वरूपके ज्ञानयुक्त बलकरी छेदहु तब मुक्ति होवेगी ॥ अरु जब आत्माकों त्यागकरी जगत्विषे गीरता हे तब नाना प्रकार संकल्प विकल्प दुःखोंविषे प्राप्त होताहे जब तुं आत्माकों व्यतिरेक शब्द करेगा तब मन दुःखके समूह संयुक्त प्रगट होवेगा अरु व्यतिरेक भावना त्यागतें सब मनके दुःख नष्ट हो जावेगें यह सर्व आत्मा हे आत्मातें इतर कछु नही ॥ जब इह ज्ञान उदय हुवा तब चैत्यचित्त चेतना तीनोंका अभाव होजावेगा ॥ में आत्मा नही जीव हों इसका नाम चित्त हे ॥ तीसकरी अनेक दुःखकों प्राप्त होताहे ॥ अरु जब यह निश्चय हुवा जो में आत्मा हों जीव नही सो सत्य हे इतर कछु नही इसीका नाम चित्त उपशम कहताहे ॥ जब यह निश्चय भया जो सब आत्मतत्व हे ॥ आत्मातें इतर कछु नही तब चित्त शांत हो जाताहे ॥ इसविषे संशय कछु नही ॥ इस प्रकार आत्मबोध करीकें मन नष्ट होजाता हे ॥ जेसें सूर्यके उदय हुए तम नष्ट होजाताहे सो मन सब शरीरोंके अंतर स्थित हे ॥ जबलग होताहे तबलग बडा जीवकों भय होताहे ॥ यह जो परमार्थ योग में तुजकों कहाहे ॥ तीसकरी मनकों काटी डारहु ॥ जब मनका त्याग कीया तब भयभी न रहेगा॥ यह चित्तभममात्र उदय हुआहे चित्तरूपी वैतालहे सम्यक ज्ञानरूप मंत्रकरी अभाव होजाताहे ॥ हे बलवानोंविषे श्रेष्ठ निष्पाप रामजी तेरे रिदेरूपी गहमेंतें चित्तरूपी वैताल नीकसी जावेगा॥ तब तुं दुःखोंतें रहित स्थित होवेगा॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भय उद्वेग कछु न व्यापेगा ॥ अब तुं मेरे वचनों करी वैरागी भयाहे मनरूपी जो मनहे तीसकों जीताहे ॥ इस विचार विवेकसों चित्त नष्ट शांत होजाताहे ॥ निर्दुःख आत्मपदकों प्राप्त होताहे ॥ सब इपणाकों त्यागकरी शांतरूप स्थित होउ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे चित्त चैत्यरूप वर्णनं नाम चतुर्दशः सर्गः ॥ १४ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस प्रकार तूं देख जो चित्त आप विचित्ररूप हे ॥ संसाररूपी बीजकी कणिका हे अरु जीवरूपी पंखीकों बंधनका जाल हे ॥ जब चित संवित आत्मसत्ताकों त्यागता हे तब दृश्य भावकों प्राप्त होताहे तब चित्त उपजता हे कलनारूप मलकों धारताहे ॥ सो चित्त बढी करी मोह उपजता हे तिसकरी संसारका कारन होताहे ॥ तब तृष्णारूपी जो विषकी वेली हे सो प्रफुल्लित होतीहे तीसकरी मुर्छित हो जाताहे ॥ आत्मपदकी ओर सावधान नही होता ॥ ज्योंज्यों उदय होतिहे त्योंत्यों मोहकों बढावतीहे तृष्णारूप श्याम रात्र हे अनंत अंधकारकों देतीहे ॥ परमार्थ सत्ताकों आवरन करति हे ॥ प्रलयकालकी अग्निवत् जलावती हे ॥ तीसकों संहारणेकों समर्थ कोउ नही होता सर्वकों व्याकुल करतिहे ॥ तृष्णारूपी तीक्ष्ण खड्गकी धारा हे दृष्टि मात्र कोमल सीतल सुंदर हे स्पर्श कीएतें नाश करी डारती हे ॥ अनेक संकटकों देनी हे ॥ जो बडे असाध्य दुःख हे जीनकी प्राप्ति बडे पापोंकरी होती हे सो तृष्णारूपी फुलका फल हे ॥ तृष्णारूपी कुकरी हे सो दुर्गंधादि करी चित शरीररूपी ग्रहविषे सदा रहती हे क्षण विषे बडे दुखासकों प्राप्त होती हे ॥ क्षणविषे शून्यरूप होजातीहे जो पुरुष बडे ऐश्वर्य संयुक्त हे सो जब तृष्णा उपजी तब दीन होजाताहे ॥ अरु जो देखने करी निर्धन कृपन भासता हे अरु अंतर तृष्णातें रहित हे तब उह बडा ऐश्वर्यवान हे ॥ जीसके रीदेरूपी छिद्रविषे तृष्णारूपी सर्पिणी नही बेठी तीसकें प्राण अरु शरीर स्थित हे ॥ उसका रिदा शांतरूप होताहे ॥ निश्चय करी जाण जो जहां तृष्णारूपी काली रात्रीका अभाव हुआ हे तहां पुण्य आय बढते हे ॥ जेसें शुक्लपक्षका चंद्रमा बढताहे ॥ हे रामजी जो पुरुषरूपी दछका तृष्णारूपी घुनानें भोजन कीया हे तीसकी पुण्यरूपी हरीयावल नही रहती प्रफुलीत नही होती ॥ तृष्णारूपी नदी हे अनंत कल्लोल आवत तीसविषे उठते हे, तृणवत् बहती हे अरु जीवरूपी खेलणेकी पुतली हे तृष्णारूपी जंत्री तीनकों भमावती हे ॥ सब शरीरोंके अंतर तृष्णारूपी तागा हे तीस करी परोए हे ॥ तृष्णा करीकें मोहित हुए कष्ट पातेहें अरु समुझ ते नही जेसें हरे तृण कर आछादी गिर्त होतीहे तीसकों देखी करी हरणका बालक यहण करता हे अरु गिर्तविषे गीर पडते हे हे रामजी ! एसा कोउ अवर इसके कलेजेकों काटी नही शकता जेसें तृष्णारूपी डाकणी इसका उत्साह बलरूपी कलेजा नीकास लेतीहे तीसकरी दीन जेसा हो जाता हे ॥ तृष्णारूप अमंगल इन जीवोंके रिदे विषे स्थित होकरी नीचताकों प्राप्त करति हे ॥ तृष्णा करीकें विष्णु भगवान हे सो भगवानकी नांइ स्थित भया हे ॥ अर्थ यह जो त्रिलोकी नाथ विष्णुजी इंद्रके हेतकरी जब अर्थ रिदेविषे धरा तब अल्प जेसी मूर्तिकों धारीकरी बलके द्वार गए तहां तृष्णाकरी कें जीव भमते हे ॥ जेंसें सूर्य नीतिकों धरीकरी आकाशविषे भमता हे तेसें तृष्णारूपी तागेकरी बांधे जीव भमते हे तृष्णारूपी सर्पिणी महाविष करी पूर्न होतीहे ॥ सर्व जीवोकों दुःख दायक हे ॥ तातें इसकों दूरतें त्याग करो ॥ पवन जो चलताहे सो तृष्णा करी चलता हे, पर्वत तृष्णा करी स्थित हे, पृथ्वी तृष्णाकरी जगतकों धरति हे, तृष्णाकरी त्रिलोकी वेष्टित करी हे ॥ सब लोक तृष्णा करी बांधे हुएहे ॥ जेवरी करी बांधा हुवा छुटता हे परंतु तृष्णा करी बांधा छुटता नही ॥ तृष्णावान् मुक्त कदाचित नही होता तृष्णातें रहित मुक्त होता हे ॥ तीस कारण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तें हे राघव तुम तृष्णाका त्याग करहु ॥ सबजगत मनके संकल्प विषे हे तीस संकल्पतें रहित होहु ॥ मनभी कछु अवर वस्तु नहीं ॥ युक्तिसों निर्णय करी देखो संकल्प प्रमादका नाम मन हे ॥ जबइसका नाशहोवे तब तृष्णा सब नाश होजावे ॥ अहंत्वं इदं इत्यादिक चितवना मत करहु ॥ यह महा मोहमय दृष्टि हे इसकों त्यागकरीकें एक अद्वैत आत्मा की भावना करो ॥ अनात्माविषे जो आत्मभाव हे सोदुःखोंका कारन हे इसके त्यागेतें ज्ञानवानोंविषे प्रसिद्ध होहुगे अहंभावरूप अपवित्र भावना हे तिसकों अपणे स्वरूप सलाकाकी भावनारूप करी काटी डारहु ॥ यह भावना पंचमभूमिका हे तहां संसारका अभाव हे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे तृष्णा वर्णनं नाम पंचदशः सर्गः ॥ १५ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर यह तुमारे वचन गंभीर तोलतें रहित हे ॥ तुम कहतेहो अहंकार तृष्णाकों मत करहु ॥ जो अहंकारकों त्यागेगा तो यह चेष्टा केसें होवेगी ॥ देहकाभी त्याग होजावेगा ॥ जेसें वृच्छ थंभके आश्रय होतेहे थंभहीनें वृच्छकों धरा हे स्थंभनाश हुए वृच्छ नही रहता तेसें देहकों अहंकार धरी रहाहे तीसतें रहित देहभी गीर जावेगी ॥ तातें मे अहंकारकों त्यागकरी केसें जीता रहोंगा ॥ यह अर्थ मुजकों निश्चय करी कहो ॥ तुम कहणेहारे विषे श्रेष्ठ हो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे कमलनेन रामजी सर्व ज्ञानवानोंने वासनाका त्याग किया हे सो दो प्रकारका हे ॥ एकका नाम ध्येय त्याग दुसरेका नाम नेयत्याग हे ॥ में यह हों पदार्थरूप में ईनकरी जीता हों इनविना में कछु जीता नही अरू मे विनां यहभी कछु नही ॥ यह जो अंतर निश्चय हे ॥ तीसकों त्यागकरी विचारत भयाहों ॥ न में पदार्थ हों न मेरे पदार्थ हे एसी भावना करणेहारे जो पुरुषहे तीनका अंतःकरण आत्मप्रकाश करी सीतल होजाताहे जो कछु क्रिया करते हे सो लीलामात्रहे ॥ जीस पुरुषनें निश्चय करी वासनाका त्याग कीयाहे सो पुरुष सर्व क्रिया विषे सर्व आत्मा जाणता हे ॥ उसकों बंधनका कारन नही होता तीसके अंतर सर्व वासनाका त्याग हे ॥ अरु बाह्य इंद्रियों करी चेष्टा करता हे ॥ जो पुरुष जीवन्मुक्त कहाता हे तीसनें वासनाका त्याग कीया हे तीस वासनाका त्याग नाम ध्येय वासनाका त्याग ॥ अरु जीस पुरुषनें मन संयुक्त देहवासनाका त्याग कीया हे अरु तीस वासनाकाभी त्याग कीया हे सो नेयवासनाका त्याग हे ॥ नेयवासनाके त्यागतें विदेहमुक्त कहाता हे ॥ जीस पुरुषनें अंहकार देह अभिमानका त्याग कीया हे ॥ संसारकी वासना लीलासों त्याग करी हे ॥ स्वरुपविषे स्थित हो करी क्रियाभी करता हे सो जीवन्मुक्त कहाता हे ॥ जीसकी सब वासना नाश भइहे ॥ अंतर बाहिरकी चेष्टातें रहित भयाहे अर्थ यह जो अंतर संकल्प बाहिरकी क्रिया त्यागीहे ॥ तीसका नाम नेयत्याग विदेह मुक्त जान ॥ जीसनें ध्येय वासनाका त्याग कीयाहे लीला करीकें कर्त्ता हुआ स्थित हे सो जीवन्मुक्त महात्मा पुरुष जनकवतहे ॥ अरु जीसनें नेय वासनाकों त्यागीहे, उमशमरूप होगया हे सो विदेह मुक्त होकरी परम तत्वविषे स्थितहे ॥ परात्पर जीसकों कहतेहे सोइ होताहे ॥ हे राघव ! यह दोनों त्यागी समपदविषे स्थित हुए ब्रह्मपदकों प्राप्त होताहे ॥ विगतसंताप उत्तम पुरुष दोनों मुक्त स्वरूपहे ॥ निर्मल पदविषे स्थित होतेहे ॥ एककी देह स्फुरनरूप होतीहे दुसरेकी अस्फुर होतीहे ॥ देह युक्त रूप देहविषे स्थित होताहे ॥ क्रियाकों करता संतापतें रहित जीवन्मुक्त सो ज्ञानकों धरताहे ॥ दुसरी देहकों त्यागकें विदेहपदविषे स्थित होताहें ॥ उसके साथ वासना अरु देह दोनों नही भासते ॥ तातें विदेह मुक्त कहाताहे जीवन्मुक्तके अंतर वासनाका त्यागहे बाह्य क्रिया करताहे ॥ जेसें समय करी सुख दुःख आय प्राप्त होताहे तेसें निरंतर राग दोषतें रहित प्रवर्तताहे ॥ सुखविषे हर्ष नहीं दुःखविषे शोक नहीं सो जीवन्मुक्त कहाताहे ॥ जीस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुरुषनें संसारके इष्ट अनिष्ट पदार्थोंकी इछा त्यागीहे सो सब कार्यविषे सुषुप्तिकी नांइ अचल वृत्तिहे सो जीवन्मुक्त कहाताहे ॥ हेयोपादेय में अरु मेरा सब कलना जीसके अंतर क्षीण हो गइ हे सो जीवन्मुक्त कहाताहे तीसकी वृत्ति संपूर्ण पदार्थहुतें सुषुप्तकी नांइ होगइहे ॥ अरु सदा जागृत चित्त जीसकाहे कलना क्रिया संयुक्तभी दृष्ट आताहे परंतु अंतरतें आकाश वत निर्मलहे सो जीवन्मुक्त पुजणे जोगहे ॥ वाल्मीकोवाच ॥ इस प्रकार जब वसिष्ठजीनें कहा तब सूर्य भगवान अस्त भया ॥ सब सभाके लोक स्नानके निमित्त परस्पर नमस्कार करीकें उठे ॥ रात्रकों वितीत करकें सूर्यकी कीरणां साथ परस्पर नमस्कार करीकें यथायोग्य अपणे अपणे आसन परी आय बेठे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे तृष्णा चिकित्सो पदेशो नाम षोडशः सर्गः ॥ १६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जो पुरुष विदेह मुक्तहे सो हमारी वाणीका विषय नही तातें तुं जीवन्मुक्तका लच्छन सुण ॥ जो कछु प्रकृत कर्महे तीसकों करताहे ॥ परंतु तृष्णा अरु अहंकारतें रहितहे ॥ निरहंकार होकरी विचरताहे सो जीवन्मुक्तहे ॥ बाहार जो दृष्ट पदार्थ हे तीसविषे जीसकी दृढ भावनाहे तृष्णा करीकें सदा इच्छता रहताहे ॥ संसारके दृढ बंधन करी सो बंध कहाताहे ॥ अरु जीसनें निश्चय करीकें अंतरतें संकल्पका त्याग कीयाहे अरु बाह्यतें सब व्यवहार करताहे सो पुरुष जीवन्मुक्त कहाताहे ॥ जो बाह्य जगतविषे बडे आरंभ करताहे ॥ इछा संयुक्त दृष्ट आताहे ॥ अरु रिदेविषे सब अर्थोंकी वासना तृष्णातें रहितहे मुक्त कहाताहे ॥ जीस पुरुषकों भोगोंकी तृष्णा मीटी गइहे ॥ वर्तमानविषे निरंतर विचरताहे सो निर्दुःख निष्कलंक कहाताहे ॥ हे महाबुद्धिवान जीसके अंतर इदं अहंका निश्चयहे तीसकों धारी करी संसारकी भावना करताहे तीसकों तृष्णारूप सांकल करी बांधा अरु कलना करी कलंकित जान ॥ तातें तुं में अरु मेरा सत अरु असत्य बुद्धि संसारके पदार्थोंका त्याग कर ॥ जो परम उदार पदहे सर्वदा काल तिसविषे स्थित होहु ॥ बंध मुक्त सत्य असत्यकी कल्पनाकों त्याग करी समुद्रवत अक्षोभचित्त स्थित होहु ॥ न तुम पदार्थ जाल हो न यह तुमारेहे॥ असत्यरूप जानकें इनका विकल्प त्याग ॥ यह जगत भ्रांति मात्रहे ॥ इसकी तृष्णाभी भ्रांति मात्रहे इनतें रहित आकाशकी नांइं सन्मात्र तुं सत्य स्वरूपहे ॥ अरु तृष्णा मिथ्यारूपहे तेरा अरु इसका क्या संगहे ॥ हे रामजी ! चार प्रकारका निश्चय जीवकों होताहे सो बडे विस्तार आकारकों प्राप्त होताहे ॥ चरनोंतें लेकरी मस्तक पर्यंत शरीरविषे आत्म बुद्धिहे ॥ अरु माता पिता करी उत्पन्न भया हे यह निश्चय बंधनरूप हे असम्यक् दर्शन भ्रांति करी होताहे ॥ अरु द्वितीय निश्चय यह हे ॥ जो सबभाव पदार्थोंतें अतीत हों ॥ बालके अग्रतेंभी सूक्ष्म हों साक्षी भूत सूक्ष्मतें अति सूक्ष्म हों ॥ यह निश्चयभी शांतिरूप मोक्षकों उपजाता हे अरु जेता कछु जगत् जाल हे सो सब पदार्थों मेंही हों ॥ आत्मारूप में आविनाशी हों यह तीसरा निश्चय हे सोभी मोक्षदायक हे ॥ अरु चोथा निश्चय यह हे जो मेंभी असत्य अरु जगत्भी असत्य हे ॥ इनतें रहित आकाशकी नांइ सन्मात्र हे ॥ यहभी मोक्षका कारन हे॥ हे रामजी ! यह चार प्रकारका निश्चय में तुजकों कहाहे ॥ तिसविषे प्रथम निश्चय बंधनका कारनहे ओर तीनों मोक्षका कारनहे ॥ सो शुद्ध भावना करी उपजे हे ॥ जो प्रथम निश्चयवान हे सो तृष्णारूप सुगंधकरीकें संसारविषे भ्रमताहे, अरु तीन भावना शुद्ध जीवन्मुक्त विलासी पुरुषकी हे जीसकों यह निश्चयहे॥ जो सर्व जगत में आत्मास्वरूप हों तृष्णा अरु राग द्वेष तीसकों बहुरी दुःख नही देता ॥ अध ऊर्ध मध्य में आत्माही व्याप्याहो ॥ सब में ही हों मुजतें इतर कछु नही ॥ जीसके अंतर यह निश्चयहे सो संसारके पदार्थमें बंधायमान नही होता शून्य प्रकृति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माया ब्रह्मा, शिव, पुरुष, ईश्वर, सब तीसके नामहे ॥ सा विज्ञान स्वरूप एक आत्माहे सदा सर्वदा एक अद्वैत में आत्मा हों ॥ अवर द्वैत भ्रम चित्तमें नही ॥ सदा विद्यमान सत्ता व्यापकरूप हों ब्रह्मातें आदि तृण पर्यंतजेता कछु जगत् जाल हे सो सर्व परिपूर्न आत्मतत्व भरी रहाहों ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग बुद बुदे सर्व जलरूप हे ॥ तेसें सर्व जगत् जाल आत्म स्वरूपहीं हे ॥ सत्यस्वरूप आत्मातें इतर द्वैत कछु वस्तु नही ॥ जेसें समुद्रतें इतर बुदबुदे तरंग कछु नही जेसें स्वर्नतें इतर कछु भूषन नही तेसें आत्मसत्तातें कोउ पदार्थ भिन्न नहीं ॥ द्वैत अरु अद्वैत जो जगत् रचनाविषे भेद हे सो पर महात्मा पुरुषकी फुरणा शक्ति हे सोइ द्वैत अरु अद्वैतरूप होकरी भासता हे यह अपणा हे यह अवरका हे यह भेद सर्वदा सबविषे रहता हे अरु पदार्थोंके उपजणे मिटणेविषे सुख दुःख भासताहे तिनकों मत ग्रहण करो ॥ भावरूप जो अद्वैत आत्म सत्ताहे तिसीका आश्रय करो भ्रम द्वैतकों त्याग करी अद्वैत पूर्ण सत्ता होहु ॥ संसारके जो कछु भेद भासताहे तिनकों मत ग्रहण करो ॥ यह भूमिकाकी भावना जो भेदरूपहे ॥ सो दुःखदाइ जानो ॥ जेसें अंध हस्ति नदीविषे गीरताहे बहुरी उछल ताहे तेसें तुम पदार्थोंविषें मत गिरो ॥ तुम पूर्ण स्वरूप हो महात्मा पुरुषकों राग दोष कछु संभव नहीं होता सर्व गत आत्म एक अद्वैत निरंतर उदयरूप सर्व व्यापक हे ॥ एक अरु द्वैततें रहितभी हे अरु सर्वरूपभी उही हे ॥ निष्किंचन रूपभी उही हे न में हों न यह जगत् हे ॥ सब अविद्यारूप हे एसें चिंतहु अरु इसका त्याग करहु ॥ अथवा एसें चितहु जो ज्ञान स्वरूप सत्यअसत्य सब मेंही हों ॥ तुमारा जो स्वरूप हे सो आनंदरूप सर्वका प्रकाशक अजर अमर निर्विकार निष्क्रीय निराकार परम अमृतरूप हे ॥ बहुरी केसा हे जो निष्कलंक जीव शक्तिका जीवन रूप हे सर्व कलनातें रहित कारनका कारन हे ॥ निरंतर उद्योत ईश्वर विस्तृतरूप हे ॥ अनुभव स्वरूप सब अनुभवका बीज हे ॥ अपणा आप आत्मपद उचित स्वरूप ब्रह्म में अरु मेरा भावतें रहित हे ॥ तातें अहं अरु इदं कलनाकों त्याग करी अपणे अंतर यह निश्चय धरहु अरु यथाप्राप्ती क्रियाकों करहु ॥ तुम अहंकार तें रहित शांतरूप होउ ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठें उपशम प्रकरणे तृष्णाउपदेशो नाम सप्तदशः सर्गः ॥ ॥ १७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जीनका रिदा मुक्त स्वरूप हे एसे जो महात्मा पुरुष हे तीनका यह स्वभाव हे ॥ जो असम्यक् दृष्टि देहाभिमानकरी नही रहते ॥ लीलाकरी जगत् कार्यविषे विचरते हे अरु जीवन्मुक्त शांतस्वरूप हे ॥ जगत्की गति जो हे सो आदि अंत मध्यविषे विरसरूप हे अरु नाशरूप हे ॥ तीसतें शांतरूप हे सब प्रकार जो अपणा कार्य हे सो करता हे ॥ सब वृत्तिविषे स्थित हुए रिदेसों ध्येय वासना त्यागी हे निरालंब तत्वका आश्रय लीयाहे सब विषे उद्वेगतें रहित सर्व अर्थविषे संतुष्टरूप हे विवेकरूपी जो बनहे तीसविषे सदा विचरते हे ॥ बोधरूपी बगीचेविषे स्थित हे ॥ सबतें अतीत पदका अवलंबन कीया हे ॥ पूर्नमासीके चंद्रमावत् अंतःकरण सीतल भयाहे संसारके पदार्थ करी कदाचित उद्वेगवान नही होता ॥ उद्वेग अरु असंतुष्टत्व दोनोंतें रहित हे ॥ सो संसार विषे दुःखी कदाचित नही होता ॥ सब शत्रुओंके मध्यस्थित होकरी जुद्ध करे अथवा दया करता दृष्ट आवे ॥ बडे भयानक कर्म करता दृष्ट आवे तोभी उह जोवन्मुक्त हे संसार विषे दुःखी नही होता सदा सुखी रहताहे ॥ न कीसी पदार्थविषे आनंदमान होताहे न कीसीविषे कष्टमान होताहे ॥ न कीसी पदार्थकी इछा करता हे ॥ न शोक करताहे ॥ मौनविषे स्थित यथाप्राप्त कार्य करताहे ॥ संसारविषे दुःखतें रहित सुखी होताहे जो कोइ पुछता हे तो यथाक्रम ज्योंका त्यों कहता हे अरु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुछेविना मूक जड वृच्छवत् हो रहताहे ॥ इच्छा अनिच्छातें मुक्त संसारविषे दुःखी नही होता ॥ सबकों हितकरी बोलता हे कोमल अरु उचित वाणीकरी कहता हे यज्ञादि कर्मभी करता हे परंतु संसार कार्यविषे डुबतानही॥ हे रामजी! जीवन्मुक्त पुरुष युक्त अयुक्त नानाप्रकारकी उग्र दिशा संयुक्त जगतकी वृत्तिकों जानताहे॥ जेसें हाथविषे बील फल होवे तेसें प्रगट जाणता हे ॥ परंतु परमपदविषे आरूढ होकरी जगत्की गतीकों देखता रहताहे ॥ अपणा अंतःकरण सीतल अरु ओर जीवोंकों तपत देखता हे ॥ स्वरूपतें कछु द्वैत नही देखता हे ॥ परंतु व्यवहारकी अपेक्षाकरी उसका महिमा कहाहे ॥ हे राघव जोनोंनें चित्त जीत्या हे अरु परमात्मा देख्या हे तीन महात्मा पुरुषकी सुभावदृत्ति में तुजकों कहीहे अरु जो मूढ हे जीननें अपणा चित्त नही जीता भोगोंरूपी कीचविषे मग्नहे एसे गर्दभोंके जो लच्छन हे सो हमारे कहणेविषे नही आते तिनकों उन्मत्तकहीए ॥ उन्मत्त इस प्रकार हे महानरककी ज्वाला स्त्री हे अरु उह उष्ण नरक अग्निके इंधन हे तीसकरी जलते हे ॥नाना प्रकारके अर्थों निमित अनर्थ उत्पन्न करते हे ॥ भोगोंकी दीनता अनर्थरूप हे तीसकरी उनके चित्त हत भए हे संसारके आरंभकरी दुःखी होतेहे ॥ जो नाना प्रकारके कर्म करत हे तीनके फल रिदेविषे धारतेहे॥ तीन कर्मके अनुसार सुख दुःख भोगतेहे॥ एसें जो भोगलंपट हे तीनके लच्छन हम कहणेकों समर्थनही ॥ हे रामजी! जो ज्ञानवान पुरुषकी पूर्व दृष्टि कहीहे तीसीका तुम आश्रय करो ॥ रीदेसों ध्येय वासनाकों त्यागडु ॥ जीवन्मुक्त होकरी जगतविषे विचरो ॥ अंतरतें संपुर्न इछाकों त्यागकरी वीतराग निर्वासनिक होडु॥ बाह्य सब आचारवान होकरी लोकोंविषे वीचरडु॥ सर्वदिशा अवस्थाका भली प्रकार विचारकरी तीनविषे अतुच्छ पद होवे तिसकों आश्रय करो अरु लोकोंविषे विचरो ॥ अंतर सर्व पदार्थोंतें निरस अरु बाह्य इछाके सन्मुख होडु॥ अंतर सीतल रहडु बाह्य तपायमान होडु ॥ एसें होकरी लोकोंविषे वीचरो॥ बाह्य सब कार्यका आरंभ करो अरु रिदेकरी सब आरंभतें विवर्जित होडु ॥ बाह्य कार्योंका कर्त्ता अरु अंतरतें सदा अकर्ता एसें होकरी लोकोंविषे विचरडु ॥ हे रामजी! अब तुं ज्ञानवान डुवा हे ॥ सब पदार्थोंकी भावनाका अभाव भयाहे॥ जेसें इच्छा होवे तेसें विचरडु ॥ जो इंद्रियोंका इष्ट पदार्थ हो आवे तब कृत्रिम हर्षवान होणा अरु दुःख आय प्राप्त होवे तब शोक करणा ॥ कृत्रिम क्रियाका आरंभ करना अरु रिदेविषे सारभूत रहणा॥ बाह्य अरु कृत्रिमका अर्थ एक हे॥अंतरत्यागी बाह्य कर्ता एसें होकरी जगतविषे वीचरो ॥ बाह्य क्रीया करडु अंतर अहंकारतें रहित आकाशवत् निर्मल रहो ॥ कार्य कलनातें रहित होकरी जगत् विषे वीचरडु॥ आशारूप फांसीतें मुक्त होकरी इष्ट अनिष्टविषे रिदेमें सम रहणा अरु बाह्य कार्य करते लोकोंविषे वीचरो इस चैतन पुरुषकों न वास्तवतें बंधहे न मोक्ष हे॥ मिथ्या इंद्रजालवत् बंध मोक्षसंसारका वर्तणाहे॥ सब जगत् भ्रांतिमात्र हे॥ प्रमादकरीकें जगत भासताहे॥ जेसें तीक्ष्ण धुपकरीकें मरूथलविषे जल भासताहे तेसें अज्ञान करीकें जगत भासताहे॥ आत्मा अबंध सर्व व्यापकरूपहे॥ तिस सर्वात्माकों बंध केसें होवे जो बंध नही तो मुक्त केसें कहीए॥ आत्म तत्वके अज्ञान करी जगत भासताहे तत्वज्ञान करी लीन होजाताहे॥ जेसें जेवरीके अज्ञान करीकें सर्प भासताहे जेवरीके जानेतें सर्प लीन होजाताहे॥ हे रामजी! तुं तो ज्ञानवान डुआहे अपणी सूक्ष्म बुद्धि करीकें निरंहकार भयाहे॥ अब आकाशकी नांइ निर्मल स्थित होडु॥ जो तुं असत्यरूप हे तो संपूर्ण मित्र भात तेसेंही हे तिनकी ममताकों त्यागकरी जो आप कछु न डुआ तो भावना किसीकी करेगा॥ अरु जो तुं सत्य स्वरूपहे तो अत्यंत सत्य आत्माकी भावना करी दृश्य जगतकी भावनातें रहित हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हु ॥ यह जो अहं मम भोग वासनाहे जगतविषे सो प्रमाद करीकें भासतीहे ॥ अहं मम बांधवोंका कर्म शुभ आदिक जो जगत जाल भासतीहे सो आत्माका संयोग इन साथ कछु नही ॥ इनकरी तुं काहेकों शोकवान होताहे ॥ तुं आत्मतत्वकी एसें भावना कर तेरा संबंध किसी साथ नही ॥ यह प्रपंच भममात्रहे ॥ जो निराकार अजन्मा पुरुष होवे तिसकों बांधव पुत्र दुःख सुखका क्रम केसें होवे ॥ स्वतः अजन्मा निराकार निर्विकारहे॥ तेरा संबंध किसी साथ नहीं॥ इनका शोक तुं काहेकों करताहे ॥ शोक करणेका स्थान उह होताहे जो नाशरूप होवे॥ सो न कोउ जन्मताहे न मरताहे॥ जो जन्म मरनभी मानीए तो आत्मा तिसकों सत्ता देणे हाराहे॥ इस शरीरके आगेंभी अरु शरीरके पाछेंभी होवेगा आगें जो तुमारे बांधव बडे बुद्धिवान सात्विक गुणवान अनेक व्यतीत भयेहे तिनका शोक काहेकों नही करता ॥ जेसें उह थे तेसें यहभी हे ॥ जो प्रथम थे सो अबभी हे तुं शांतरूप हे तातें मोहकों प्राप्त क्यों होताहे ॥ जो सत्यस्वरूप हे तीसका न कोउ शत्रु हे न नाश होताहे ॥ तातें तुं शोक करणेकों योग्य नही ॥ जो तुं एसें मानत हे में अब हों आगें न होउंगा तोभी वृथा शोक क्यों करता हे तेरासंशय नष्ट भया हे कष्ट संयुक्त काहेकों बणता ॥ अपनी प्रकृतिविषे हर्ष शोकतें रहित होकरी विचरहु ॥ संसारके सुखदुःखविषे समभाव रहहु ॥ सर्वत्र परमात्मा व्यापक रूप स्थित हे तीसतें इतर कछु नही ॥ तुं आत्माआनंद स्वच्छ आकाशवत् विस्तृतरूप हे ॥ अरु नित्य शुद्ध प्रकाशरूप हे॥ जगत्के पदार्थों निमित्त क्यों शरीरकों सुकाता हे॥ सर्व पदार्थ जातिविषे एक आत्मा व्यापक होताहे॥ जेसें मोतीकी मालाविषे एक सूत्र तागा व्यापक होताहे॥ तेसें आत्मा अनुस्युत हे॥ज्ञानवानोंकों सदा एसेंही भासता हे अरु अग्यानीकों एसें नही भासता ॥ तातें ज्ञानवान हो करी सुखी होहु॥ अरु यह जो संसरणरूप संसार भासताहे सो प्रमादकरी सारभूत होगयाहे ॥ अरु तुंतो ज्ञानवान शांत बुद्धिहे॥ दृश्य भममात्र संसारका क्या रूपहे॥ भम अरु स्वममात्रतें इतर कछु नही॥ स्वमविषे क्या क्रम अरु क्या वस्तु हे सब मिथ्याहीहे तेसें यह संसारहे॥ सर्व शक्त जो सर्वात्माहे तिसविषे जो भममात्र शक्तिहे तिसकरी यह संसार माया उठीहे सो न सत्यहे ॥ वास्तवतें पुछे तो केवल ज्ञान स्वरूप एक आत्मसत्ताही स्थितहे ॥ जेसें सूर्य प्रकाशताहे तिसकों न किसीकों बेध हे न किसी साथ स्नेहहे॥ सर्वरूप सर्वत्र सर्वदा सर्वका ईश्वरहे॥ तिस सत्ताका आभास संवेदन फुर्तिहे॥ तीसकरी नानारूप जगत भासताहे ॥ केइ भिन्न भिन्नरूप निरंतरही उत्पन्न होतेहे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग उपजतेहे तेसें देहधारी जेसी वासना करताहे तिसके अनुसार जगतविषे विचरते हे, उपजते हे॥ चक्रकी नांइ भमतेहे॥ स्वर्गविषे जो स्थित जीवहे सो नरककों जातेहे अरु जो नरकविषे स्थितहे सो स्वर्गकों जातेहे योनीतें योन्यंतर अरु दीपतें दीपांतरकों जाय प्राप्त होताहे अज्ञान करीकें धैर्यवान कृपनताकों प्राप्त होताहे अरु कृपन धैर्यकों प्राप्त होताहे॥ इस प्रकार भूत उछलतेहें अरु गीरतेहे अज्ञानकरीकें अनेक भमकों प्राप्त होतेहे ॥ आत्मसत्ता एकरूप स्थितहे स्थिर स्वच्छ अपणे आपविषे अचलहे॥ दुःख भम तिसविषे कोउ नही पाता॥ जेसें अग्निविषे बरफका कणका नही पाता ॥ तेसें जो आत्मसत्ताविषे स्थितहे तिनकों दुःख क्लेश कोउ नही होता उनका रीदा सीतल रहताहे सो आत्मसत्ताकी बडाइहे संसारविषे यही अवस्थाहे जो बडे बडे ऐश्वर्य करी संपन्न भगवान दृष्ट आते थे सो कीतनेक दिन पीछे नष्ट होते देखेहे ॥ तुं अरु में इत्यादिक भावना आत्माविषे मिथ्या भमकरीकें भासतीहे॥ जेसें आकाशविषे दुसरा चंद्रमा भासताहे तेसें यह बांधवहे यह अन्यहे यह में हों ॥ इत्यादिक मिथ्या दृष्टिहे सो तेरी अब नष्ट भइहे ॥ संसारकी जो विचार दृष्टिहे जीसकरी जीव नष्ट होतेहे तिसकों मूलतें काटी करी तुम जगतविषे क्रिया करो॥

CC-0, Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जेसें ज्ञानवान जीवन्मुक्त संसारविषे वीचरतेहे तेसें विचरो भारवाहककी नांइ भ्रमविषे नही वर्तणा ॥ जहां नाश करणे हारी वासना उठे ॥ तहां यह विचार करहु ॥ जो यह पदार्थ मि थ्याहे तब वासना शांत होजावेगी ॥ यह बंधहे यह मोक्षहे यह पदार्थ नित्यहे इत्यादिक गिनती लघुचित्तविषे उठतीहे ॥ उदारचित्तविषे नही उठती ॥ उदारचित्त जो ज्ञानवान पुरुषहे तिनके आचरणकों विचारता हुआ देह दृष्टि नष्ट होजावेगी एसें विचार जो जहां में नही सो पदार्थ कोउ नही॥ सब में ही हों एसा पदार्थ कोइ नहीं जो मेरा नही सब मेराही हे॥ एसें विचार करी देह दृष्टि तेरी नष्ट हो जावेगी ॥ एसा जो ज्ञानवान पुरुष हे सो किसी संसारके पदार्थ करी उद्वेगकों प्राप्त नही होता॥अरु किसी पदार्थके अभाव हुए आतुरभी नही होता ॥ उह चिदाकाशरूप सर्वकों सत्य स्थितरूप देखताहे ॥ आकाशकी नांइ आत्माकों व्यापक देखताहे भाइ बांधव भूत जातकों अत्यंत असत्यरूप देखताहे॥नाना प्रकारके अनेक जन्मविषे भ्रम करकें अनेक बांधव होगएहे वास्तवतें त्रिलोक अरु बांधवविषेभी बांधव उहीहे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे जीवन्मुक्त वर्णनं नाम अष्टादशः सर्गः ॥ १८ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! इस प्रसंग उपर एक पुरातन भाइयोंका इतिहास हे॥ बडे भाइनें छोटे भाइकों कहा हे॥ एक मुनीश्वरके दो पुत्र थे ॥ यह बांधव हे यह अन्य हे इ सी प्रसंग उपर एक कथा हे सो बांधव अरु मोक्ष आदिक जो नानाप्रकारकी कलना हे तीसकों दूर करणे हारी हे॥ पवित्र अरु आश्चर्यरूप कथा हे सो तुम श्रवण करो ॥ हे रामजी इसी जंबुद्वीपविषे कीसी स्थानविषे महेंद्र नाम एक पर्वत हे तहां कल्पवृछ हे॥ तीनकी छाया नीचे देवता कीन्नर आय विश्राम करते हे॥ तीस पर्वतके बडे शिखर ऊर्धकों गए हे ॥ ब्र ह्मलोक पर्यंत प्राप्त भए हे तीस उपर देवता सामवेदकी धुन करतेहे अरु गायन करतेहे ॥ कीसी उरतें जलकरी पूर्न बडे मेघ विचरते हे कहुं पुष्पकरी पूर्ण लता हे कहुं जलके झरें वह तेहे कंदरासाथ उछलते हे ॥ मानों समुद्रके तरंग जातेहे ॥ कहुं पंछी शब्द करते हे कहुं कंदराविषे सिंहगर्जतेहे कहुं कल्पवृच्छ कदंबवृच्छ हे कहुं अप्सरा गण विचरतें हें गंगाका प्रवाह चला जाताहे कीसी स्थानविषे महासुंदर रत्नमणि रमणीय वीराजते हे तहांगंगाके तटपर स्नान निमित्त मुनीश्वर विश्राम करत भया ॥ सो केसा तट हें सुंदर वृच्छ अरु स्वर्नके कमलक री शोभता हे ॥ तहां महा तपस्वी ज्ञानवान उदारबुद्धि मुनि दीर्घतपा भयाहे ॥ तपकी मानों मूर्तिस्थित हे सो मुनि स्त्रिसंयुक्त गंगाके तटपर शोभत भया ॥ तीनकों दो पुत्रथे महा सुंदर चंद्रमाकी नांइं तीनका मुख था पुण्य अरु पावन जीसका नाम तिनों संयुक्त तट परी रहणेलगा ॥ जब केताक काल वितीत भया तब पुण्य नामक जोपुत्र था सो ज्ञानवान होत भ या अरु पावन अर्धप्रबुद्ध भया ॥ जेसें संध्याकी पूर्व अवस्थामें कमल अर्द्धोन्मीलित होताहे तेसें ॥ सो पुण्य गुणोंकरी पावनसों अधिक होत भया ॥ अरु पावन लोलुप अवस्थाविषे रहा पुण्य ज्ञानवान भया ॥ जब काल चक्रके फिरते हुए केतेक वर्ष गण वितीत भए तब दीर्घ तपाका शरीर जर्जरीभूतहोगया ॥ शरीरकी क्षण भंगुर अवस्था देखीकरी चित्तकी वृत्ति देहतेंविरक्त करत भया ॥ अर्थ यह जो विदेह होणेकी इच्छा करत भया ॥ तब दीर्घतपाकों पुर्यष्टका कलनारूप शरीरकों त्यागत भई ॥ जेसें सर्प कंचुकीकों त्याग देवे तेसें पर्व तकी कंदराविषे जो आश्रम था तीसविषे शरीरकों उतार दीया ॥ तब कलनातें रहित अचैत्य चिन्मात्र सत्ता स्वरूपविषे स्थित भया ॥ रागद्वेषतें रहित जो पदहे तीसविषे शरीरकों त्या गकरी प्राप्त भया ॥ जेसें धूम्र आकाशविषे जाय स्थित होवे तेसें चिदाकाशविषे स्थित भया ॥ तब मुनीश्वरकी स्त्री भर्त्ताकों शरीर प्राणोंतें रहित देखत भइ ॥ जेसें दंडतें कमल काट्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होवे तेसें चित्तविनां शरीरकों देखत भई ॥ चिर पर्यंत जोग कर्म कीयाथा ॥ तीसकरी अपणे शरीरकों त्यागणे लगी ॥ तब प्राण अरु पवनकों वशकरीकें शरीरकों त्यागत भई ॥ जेसें भंवरा कमलनीकों त्यागे तेसें त्यागकरी भर्ताके पदकों प्राप्त भइ ॥ जेसें आकाशविषे चंद्रमा अस्त होताहे अरु तीसकी प्रभा तीसके पाछें अदृष्ट होवे तेसें दीर्घतपाकी स्त्री दीर्घतपाके पाछें अदृष्ट भई ॥ जब दोंनों विदेहमुक्त भए तब पुण्य जो बडा पुत्र था तीनके देहिक कर्मविषे सावधान होकरी कर्म करणे लगा अरु पावन मातापितातें रहित दुःखकों प्राप्त भया ॥ शोककरीकें चित्त उपहत व्याकुल होगया बनकुंजोविषे भमणे लगा ॥ जब पुण्य माता पिताकी देहादिक क्रिया कर रहा तब जहां पावन शोक करी विलाप करता था तहां आया ॥ अरु शोक संयुक्त भाइकों देखीकरी कहत भया . ॥ पुण्योवाच ॥ हे भाइ! शोकगनकों क्यों प्राप्त भया हे जो वर्षाकालके मेघवत् आंसुका प्रवाह चलाजाता हे ॥ एसा रुदन तुं कर्ताहे ॥ हे बुद्धिवान तुं कीसका शोक करता हे॥ तेरे पिता अरु माता तो आत्मपदकों प्राप्त भये हे जो मोक्षपद हे सोइ सर्व जीवोंका स्थान हे अरु ज्ञानवानका स्वरूप हे यद्यपि सब का अपणा आप स्वरूप एकै हे तोभी ज्ञानवानकों इस प्रकार भासताहे अरु अज्ञानीकों एसे नही भासता ॥ सो तो उह ज्ञानवान थे॥ अपणे स्वरूपकों प्राप्त भये हे ॥ तीसका शोक तुं कीस निमित्त करता हे ॥ यह क्या भावना तुजनें बांधी हे मोक्षदायक जो संसारविषे शोक हे सो तुं करता नही अरु जो शोक करने जोग नही सो करता हे न उह तेरी माता थी न उह तेरा पिता था न तुं उनका पुत्र था अरु केइ तेरे माता पिता होगएहे अरु केइ पुत्र होगए हे ॥ असंख्यवार तुं इनका पुत्र हुआ हे अरु असंख्य पुत्र उननें उत्पन्न कीएहे॥ जेसें नदी अनेक तरंगो उत्पन्न करति तेसें अनेक तेरे पिता माता हुए हे ॥ अरु तुं उनका पुत्र हो करी मर गया हे ॥ जेसें पत्र फुल फल लता वृच्छ साथ लगते हे अरु नष्ट हो जातेहे एसें पुत्र मित्र बांधवके समूह तेरे जन्म जन्मके बीत गए हे जेसें ऋतुऋतु विषे बडे वृच्छोंकी शाखामें फल होते हे अरु नष्ट होजातेहे ॥ तेसें जन्म होतेहे ॥ तुं काहेकों पितामाताके स्नेह करी शोक करता हे ॥ अवर जो तेरे सहस्रही मातापिता होकरी बीतगए हे तीनका शोक काहेकों नही करता ! जो तुं इस जन्मके बांधवोंका शोक करता हे तो उनकाभी शोक करहु ॥ हे महाभाग जों प्रपंच तुजकों द्रष्ट आता हे सो जाग्रत भ्रम हे ॥ परमार्थतें न कोउ जगत् हे न कोउ मित्र हे ॥ न कोउ बांधव हें ॥ जेसें मारुथलविषे बडी नदी भासती हे परंतु तीसविषे जलका एक बुंदभी नही पावता ॥ तेसें वास्तवतें जगत् कछु नही पाता ॥ जो बडे लक्ष्मीवान तुजकों भासते हे ॥ छत्र चामरो संपन्न शोभते हे सो यह लक्ष्मी चंचल स्वरूप हे ॥ केते दिनोंतें अभाव हो जातेहे हे पुत्र तुं परमार्थ दृष्टि करकें वीचार देख न तुं हे न जगत् हे यह दृश्य भांतिरूप हे इसकों अंतरतें त्याग ॥ इस माया दृष्टि करी वारंवार उपजता हे अरु बिनसता हे ॥ यह जगत अपणे संकल्पतें उपजा हे इसविषे सत पदार्थ कोउ नही ॥ अज्ञानरूप मरुथल हे तिसविषे जगतरूपी नदी हे ॥ तीसतें शुभ अशुभरूपी तरंग उपजते हे बहुरी नष्ट होजातेहे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे पावनबोध वर्णनं नाम एकोनविंशतिमः सर्गः ॥ ॥ १९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥७॥

॥ पुण्योवाच ॥ हे भाइ केई माता केई पिता होहोकरी मीटी गए हे ॥ जेसें वायुसों धुलके कणके उडते हे ॥ तेसें बांधव हे ॥ न कोउ मित्र हे न कोउ शत्रु हे ॥ संपुर्न जगत भांतिरूप हे ॥ तीसविषे जेसी भावना फुरति हे ॥ तेसेंहीहो भासती हे ॥ बांधव मित्र पुत्र आदिकोंविषे स्नेह होता हे सो मोहकरी कल्पित हे ॥ अपणे मनकरी मातापितादिक संज्ञा क

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लपी हे प्रपंच विषे जेसी संज्ञा कल्पता हे तेसी हो भासती हे ॥ जाहां बांधवकी भावना होती हे तहां बांधव भासता हे जहां औरकी भावना होती हे तहां और होई भासता हे ॥ अ
रू जो अमृत विषे विषकी भावना होती हे तो अमृतभी विष हो जाता हे कछु अमृतविषे विष नही भावनारूप भासता हे॥ तेसें न कोउ बांधव हे न कोउ शत्रु हे ॥ वियमान सर्वदा
काल एक सर्वगत सर्वात्मा पुरुष स्थित हे ॥ तिसविषे अपने अरु ओरकी कल्पना कोउ नही ॥ अरू जेते कछु देहादि हे सो रक्तमांसादिके समूह करी रचे हे तिनविषे अहं सत्ता सो
कोन हे ॥ अहंकार अरु चित्त बुद्धि मन कोन हे ॥ परमार्थ दृष्टिकरी यह तो कछु नही वीचार कीयेतें न तुं हे न में हो ॥ पुण्य अरु पावन दोनो मिथ्या ज्ञान करी भासता हे ॥ एक अ
नंत चिदाकास आत्मसत्ता सर्वदा हे तीसविषे तेरी माता कोन हे अरु पिता कोन हे सर्व मिथ्या भमकरीकें भासता हे वास्तवतें कछु नही शरीरकरी देखीए तो जेते कछु शरीर हे सो
पंचतत्वोंकर रचे जडरूप हे ॥ तोनविषे जो चैतन हे सो तो एकरूप हे तीसविषें अपणा अरु पराया कोन हे इस भम दृष्टिकों त्यागकरी तत्वका विचार कर ॥ मिथ्या भावना करीकें
माता पिताके निमित्त क्यों शोकवान हुवा हे ॥ जो सम्यक् दृष्टिकों आश्रय करीकें तीस स्नेहका शोक करता हे॥ तो ओर जन्मोंके तेरे बांधव मित्र हे ॥ तीसका शोक क्यों नही करता
अनेक पुष्प लताविषे तुं मृगपुत्र हुआ था ॥ तीस जन्मके तेरे अनेक मित्र बांधव थे तीनका शोक क्यों नही करता ॥ अनेक कमलों संयुक्त तलावमें हस्तो आय विचरेथे तहां तुं ह
स्तिका पुत्र था ॥ तीन हस्ति बांधवोंका शोक क्यों नही करता ॥ बडे बनविषे वृछ हुएथे ॥ तेरे साथ फल पत्र हुए थे ॥ अनेक वृछ तेरे बांधवथे तीनका शोक क्यों नही करता ॥
बहुरी नदी तलावविषे मछ हुए थें तोस मच्छ जोनीके बांधव थे ॥ तीनका शोक क्यों नही करता ॥ बहुरी दसार्णव देशविषे काक बानर हुआ ॥ तुषार्ण देशविषे तुं राजपुत्र हुआ
बहुरी वनकाक हुवा ॥ बंग देशविषे तुं हाथी भया ॥ वीराज देशविषे तुं गर्दभ हुआ सालवदेशविषे सर्प भया अरु वृछ हुआ बंगदेशविषे गृध्र हुआ॥ मालवदेशविषे पर्वतविषे पुष्प ल
ता हुआ ॥ मंदराचल पर्वतविषे गीदड हुआ ॥ कौशलदेश विषे तु ब्राह्मण भया ॥ बंग देशविषे तीतर हुआ ॥ तुषार देशविषे घोडा भया ॥ बहुरी कीट अवस्थाविषे अनेक हस्ति भया
बहुरी एक नीच ग्रामविषे बछरा हुआ ॥ पंचदश मास तहां रहा बहुरी एक बनविषे तडाग था तहां कमल पुष्पविषे भमरा भया ॥ सों तुं मेरा भाइ हे ॥ इत्यादिक अनेक जन्म तुं पा
या हे ॥ जंबुद्वीपविषे तुं अनेक वार उत्पन्न भया हे ॥ हे भाइ इस प्रकार वासना पूर्वक वृत्तांत में कहा हे जेसी वासना हुइ हे तेसें जन्म तुं पाया हे सो सूक्ष्म निर्मल बुद्धि करी दे
खता हों ॥ जो ज्ञान विना तुं अनेक जन्म पाया हे तीन जन्म जानीके कीसकीस बांधवका शोक करेगा अरु कीसका स्नेह करेगा ॥ जेसें उह बांधव थे तेसे यहभी जान ले॥ अरु
मेरेभी अनेक बांधव हुएहे ॥ जीन जीन विषे जन्म पाया हे अरु बीत गए हे तेसे सर्व मेरे स्मरणविषे आतेहे अरु अब मुजकों अद्वैत ज्ञान भया हे ॥ हे भाइ त्रिराग
देशविषे में तोता भया तडागके तटपर हंस भया हों ॥ पंखीविषे काक हुआहों ॥ बहुरी बेल हुआ हों ॥ वंगदेशविषे वृच्छ हुआ ॥ इस बन पर्वत विषे बडा उष्ट्र होकरी विचर्या
हों ॥ पौड्र देशविषे राजा हुआ हों ॥ सह्याचल पर्वतकी कंदराविषे बीघाड हुआहों ॥ सो तुं उहां बडा भाइ भया ॥ जो में मृग होकरी दश वर्ष रहा ॥ बहुरी पंचमास मृग रहा ॥
सो तेरा भ्रात होकरी रहा सो तेरा बडाभ्रांत हौं ॥ ईस प्रकार ज्ञानतें रहित वास्ना कर्मके अनुसार जन्म विषे ममते फीरे हे में तुजको सर्व कहा हे सब मुजकों सुमरन विषे आ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ता हे ॥ ईस प्रकार जगत जालकी स्थिति में तुजकों कही हे॥ तेरे मेरे अनेक जन्मके माता पिता भाई मीत्र भए हे तीनका शोक तुं क्यों नही करता यह संसार दुःख सुख रूप अप्रमाण भमरूप हे इस कारन तें सबकों त्यागकरी अपणे स्वरूप विषे स्थित होहु ॥ सब प्रपंच भांति रुप हे ॥ इसकी वासना त्याग जब अहंकार वासनाकों त्याग करे तब तीस पदकों प्राप्त होवेगा जहां ज्ञानवान प्राप्त होते हे तातें हे भाइ यह जो जीव भाव हे जन्म मरण उर्ध्व जावणा बहुरी गीरणां यह जो व्यवहार हे तीसविषे बुधिवान शोकवान नही होता ॥ दुखके निवृत्ति अर्थ अपणे स्वरुपकों स्मरण करते हे॥ सो स्वरुप भाव अभावतें रहित जरा मरणतें नित्य शुद्ध परमानंद हे॥ तुं तीसको स्मरण कर मूढ मत होहु॥ तुझकों न सुख हे न दुःख हे॥ न जन्म हें न मरण हे न माता हे न पिता हें ॥ तुं एक अद्वैत रुप आत्मा हे ॥ ओर कीसी साथ संबंध नही ॥ काहेतें जो इतर कछु नही ॥ हे साधु यह जो नाना प्रकारका संसारविषय संजुक्त यंत्र हे ॥ अज्ञानरुप नटुआ इसकों ग्रहण करता हे ॥ इष्ट अनिष्ट करी बंधायमान होता हे॥ जो आत्मदर्शी पुरुष हे तीनकों कछु क्रिया स्पर्श नही करति केवल सुखरूप हे॥ अरु जो अज्ञानि हे सोदेह इंद्रियोकें गुणोंविषे तद्रूप होजाता हें ॥ इष्ट अनिष्ट करी सुख दुःखका भोक्ता होता हे ॥ जो ज्ञानवान पुरुष हे सो देखणेहारे साक्षी भूत होते हे कर्ता हुआभी अकर्तारूपहे ॥ जेसें दीपक प्रकाशरूप होकरी रात्रकों सब जगतके अर्थ सिद्ध करताहे अरु अपणी इछातें रहितहे तातें अकर्ताहे तेसें ज्ञानवान देह इंद्रियांके कर्म करताभी अकर्ताहे ॥ इष्ट अनिष्टकी प्राप्तिविषे राग द्वेषतें रहितहे॥ जेसें दर्पणविषे प्रतिबिंब आइ पडताहे परंतु दर्पण भले बुरे रंग करी रंजित नही होता तेसें ज्ञानवान राग द्वेष करीकें रंजित नही होता॥ सब इच्छातें अरु भय कलनातें रहित स्वच्छ आत्मसत्ता सदा प्रफुल्लित रूपहे॥ पुत्र कलत्र बांधवोंके स्नेहतें रहितहे॥ हृदय कमल जिसका सर्व इच्छा अहं ममतें रहित अपणे स्वरूप विषे संतुष्टवान होताहे तातें मिथ्या देहादिकोंकी भावनाकों त्याग करी अपणे नित्य शुद्ध शांत परमानंद स्वरूपविषे तुंभी स्थित होहु तुं परब्रह्मरूपहे अरु अति निर्मलरूपहे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे पावन बोधो नाम विंशतितमः सर्गः ॥ २० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! जब इस प्रकार पुण्यनें पावनकों बोध उपदेश कीया तब पावन बोधकों प्राप्त भया ॥ जेसें प्रातः कालविषे पृथ्वी प्रकाशवान होतीहे अरु तम नष्ट होजाताहे तेसें पावनकों बोध प्राप्त भया ॥ तब दोंनों ज्ञानवानके पारगामी होकरी बनविषे विचरणे लगे ॥ निरिच्छित आंनदित पुरुष चिरकाल पर्यंत विचरत भया ॥ बहुरी दोनों विदेह मुक्त निर्वाण पदकों प्राप्त हुए ॥ जेसें तेलतें रहित दीपक निर्वाण होजाताहे ॥ तेसें प्रारब्ध कर्मके क्षीण हुए दोनों विदेहमुक्त भए ॥ हे रामजी! इस प्रकार तुंभी जान जेसें उह मित्र बांधव धनादिकके स्नेहतें रहित होकरी विचरे तेसें तुमभी स्नेहतें रहित होकरी विचरो ॥ जेसें उनोंनें विचार कीया तेसें तुंभी कर ॥ यह मिथ्यारूप संसारविषे किसकी इच्छा करे ओर किसका त्याग करे एसें विचारकरी अनंत इच्छा अरु तृष्णाका त्याग करणा यह औषधहे ॥ इच्छा तृष्णाकी पालना औषध नही काहेतें जो पालणे करी पूर्ण कदाचित् नही होती ॥ जेता कछु जगतहे सो चित्ततें उत्पन्न भयाहे ॥ चित्तके नष्ट हुए संसार दुःख नष्ट होजाताहे ॥ जेसें काष्ठके पावणेकरी अग्नी बढताजाताहे अरु काष्ठोतें रहित शांत होजाता हे तेसें चित्तकी चीतवना करीकें जगत विस्तारकों पाता हे चितवनातें रहित शांत होजाता हे ॥ हे रामजी! ध्येय वासनावान त्यागरूपी रथ पर आरूढ होकरी होहु ॥ अरु करुणा दया उदारता संयुक्त होकरी लोकोंविषे वीचरहु॥ इष्ट अनिष्टविषे राग दोषतें रहित होहु यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्मस्थिति तुमकों कही ॥ निष्काम निर्दोष स्वस्थरूपकों पाईकरी बहुरी मोहकों प्राप्त नही होता ॥ इसका परम आकाशही रिदामात्र विवेक हे ॥ बुद्धि इसकी सखी हे ॥ जीसके निकट विवेक अरु बुद्धि हे सो परम व्यवहार करतेभी संकटकों प्राप्त नही होते॥ तातें तुं परम विवेक अरु बुद्धिकों संग ले करी जगत्विषे विचरेगा॥तब संकट दुःखकरी मोहित न होवेगा॥ नाना प्रकारके दुःख संकट स्नेह आदिक विकाररूप समुद्र हे तीसके तरणे निमित्त एक अपणा धैर्यरूपी बेडा हे और कोउ उपाय नही ॥ सो धैर्य क्या हे दृश्य जगत्सों वैराग अरु सतशास्त्रका विचार अरु श्रेष्ठ गुण अभ्यास संयुक्त आत्मपदकी प्राप्ति होतीहे सो आत्मपद त्रिलोकीके ऐश्वर्यरूपी रत्नोंका भंडार हे ॥ जो त्रिलोकीके ऐश्वर्य करीभी नही पावता सो वैराग विचार अभ्यास बडे गुणोंकरी चितके धारणेसों पावता हे ॥ तबलग यह पुरुष जगत् कोशविषे उपजताहे ॥ जबलग मन तृष्णारूपी तापतें रहित नही होता तबलग कष्टहे ॥ जब आत्मविवेकसों मन पूर्न होताहे तब सर्व जगत् अमृतरूप भासताहे ॥ जेसें जुतीके पहिरने करी पृथ्वी सर्व चर्मसों वेष्टित होजातीहे ॥ तेसें सो पूर्न पद इच्छा तृष्णाके त्यागणेकरी पाता हे ॥ जेसें शरतकालका आकाश मेघतें रहित निर्मल होताहे तेसें इच्छातें रहित पुरुष निर्मल होताहे ॥ जिन पुरुषोंके रिदेविषे आशा फुरतिहे तीसके वश हुए शून्य चित्त होजाताहे ॥ जेसें अगस्त्यमुनीनें समुद्रकों पानकीया तब समुद्र जलतें रहित शून्य होगया तेसें आत्मजलतें रहित समुद्रवत चित्त शून्य होजाताहे॥ जीस पुरुषके चित्तरूपी वृच्छविषे तृष्णारूपी चंचल मर्कटी रहती हे तीसकों स्थिर होणे नही देती ॥ क्षोभायमान सदा होतीहे अरु जीसका चित्त तृष्णातें रहित हे तीस पुरुषकों तीनों जगत् कमलकी डोडीवत होजाते हे ॥ जो जनोंके समूह गोपदवत् सुगम हो जाते हे ॥ अरु महाकल्प अर्ध निमेषवत् हो जाता हे ॥ हे रामजी एसा सीतल चंद्रमा अरु हिमालय पर्वतभी नही ॥ एसा सीतल केलेका वृछ अरू चंदनभी नही जेसा सीतल चित्त तृष्णातें रहित होताहे॥ पूर्ण मासीका चंद्रमा अरू क्षीरसमुद्रभी एसा सुंदर नही होता अरू लक्ष्मीका मुखभी एसा नही होता जेसा इच्छातें रहित मन शोभायमान होता हे जेसें चंद्रमाकी प्रभाकों मेघ आच्छादी लेता हे अरु जेसें शुद्ध स्थानोंकों अपवित्र लेपन मलीन करता हे तेसें अहंतारूप पिशाचनी पुरुषोंको मलीन करति हे ॥ चित्तरूपी जो वृछ हे तीसके वडे टास-दिशा विदिशा पसरी रही हे सो आशारूप हे ॥ जब विवेकरूपी कुहाडे साथ तिसकों काटे तब अचित पदकी प्राप्ती होवे ॥ अरु जीनकी अनेक शाखा हे तिसकों जब काटे तब एक स्थानरूपी चित्त रहे ॥ अविवेक अधैर्य शाखा तृष्णा संयुक्त हे सो अनेक शाखा बहुरी होवेगी तब आत्मधैर्यकों धरहु ॥ जो चित्त वृद्धताकों न प्राप्त होवे ॥ उत्तम धैर्य करीके चित्त जब नष्ट होजावेगा तब अविनाशी पदकों प्राप्त होवेगा ॥ हे रामजी ! उत्तम रिदेरूपी क्षेत्र हे ॥ तिसविषे जब चित्तकी स्थिति होती हे तब आशारूपी दृश्यकों नही उपजणें देती ब्रह्मरूप शेष रहता हे ॥ जब तुमारा चित्तवृत्तितें रहित अचित्तरूप होवेगा॥ तब मोक्षरूप जो विस्तृत पद हे सो प्राप्त होता हे ॥ अरु चित्तरूपी उलुक पंछी हे तिसकी तृष्णारूपी स्त्री हे एसा पंछी जहां विचरताहे तहां अमंगलकों विस्तारताहे ॥ जहां उलुक पंछी वीचरतेहे तहां उजाड होतीहे ॥ विवेकादि जन तातें रहित होयगयेहें तातें तु चित्तकी वृत्तितें रहित होउ ॥ एसें होकरी विचरेगा तब अचित्तपदकों प्राप्त होवेगा ॥ जेसी जेसी वृत्ति फुरतिहे तेसा तेसा रूप जीवकों हो जाताहे॥ इस कारनतें चित्त उपशमके निमित्त तुम यही वृत्ति धरो जीसकरी आत्मपदकी प्राप्ती होवे॥ हे महात्मा पुरुष जीसकों संसारके पदार्थोंकी इच्छा ईषणा उपशम हुईहे अरु भाव अभावतें मुक्त भयाहे चित्त जी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सका सो उत्तमपदकों पावताहे अरू जीसका चित्त आशारूपी फांसी साथ बांधाहे सो मुक्त केसें होवे ॥ आशा संयुक्त कदाचित मुक्त नही होता अरू सदा बंधायमान रहताहे ॥
इति श्रीयोगवासिष्ठे उपशमप्रकरणे तृष्णा चिकित्सोपदेशोनामएकविंशतितमः सर्गः ॥ २१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो में तुमकों उपदेश कीया हे तीसकों विचारो ॥ हे रघुकुल आकाशके चंद्रमा बलवंत बुद्धिसों मेरे वचनोंकों विचार करी निर्मल ज्ञानकों प्राप्त होहु ॥ रामोवाच हे भगवन् सर्व धर्मोंके वेत्ता तुमारे प्रसादतेंजो कछु जानने जोग था सो जान्या हे ॥ अरु पावणे जोगपद पाया हे ॥ निर्मल पद विषे विश्राम कीया हे ॥ भमरूपी मेघतें रहित शरत्कालके आकाशवत् निर्मल चित्त भया हों मोहरूपी अहंकार नष्ट होगया हे ॥ अमृत करीकें रिदा पुर्नमासीके चंद्रमावत् सीतल भया हे ॥ संशय रूपी मेघ नष्ट होगया हे परंतु तुमारे वचनोंरूपी अमृतकों पान करता तृप्त नही होता ॥ अरू जीस प्रकार बलकों विज्ञानबुद्धि भेद प्राप्त भया हे सो बोधकी वृद्धिके निमित्त मुजकों ज्योंका त्यों कहौ ॥ नम्रभूत शिष्य प्रती कहते हुए बडे खेद नही मानते तातें प्रगट करी कहौ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे राघव बलका जो उत्तम वृतांत हे सो में कहता हों सो तुं श्रवण करे तीसकरी निरंतर बोधकों प्राप्तीहोवेगा ॥ हे रामजी इस जगत्को कीसी एक दिशाविषे पाताल नाम जीसका सो प्रसिद्ध हे ॥ इस लोकके अध पृथ्वीविषे स्थित हे तीस पातालविषे बलराजा रहताथा महाक्षीर समुद्रकी नाईं सुंदर उज्वल स्थान हे कहुं महासुंदर नागकन्या विराजती हे ॥ कहुं विषधर सर्प विराजते हे सहस्र सीस जीनके ॥ कहुं दैत्य पुत्र वीराजते हे कट कट शब्द होते हे ॥ कहुं सुंदर सुखके स्थान हे कहुं जीवोके परंपरा समूह जलते हे नर्कोविषे कहुं दुर्गंधके स्थान हे ॥ सप्त पाताल हे ॥ सबविषे जीव स्थित हे कहुं रत्नोकरीं खचित स्थान हे कहुं देवता अरु दैत जीसके चर्नोंकों सीसपर धरतें हे एसे भगवान कपिलदेव बेठे हे ॥ कहुं रत्नका बाग सुगंधी हे ॥ एसे पातालविषे दोई भुजा करी पालितकरी हे पृथ्वी जीसने ॥ एसा दानवोविषे श्रेष्ट विरोचनका पुत्र राजा बल होत भया सर्वदेवता विद्याधर अरु किनर जीसनें लीलाकरीकें जीते हे अरु त्रिलोकी अपणे वशकरी छोडी हे टहलुएवत होरहे हे ॥ सर्वदेवताका राजा जो हे इंद्र सोतीसके चरण सेवनकी वांछा करता हे अरु त्रिलोकीविषे जो जातिजातिके रत्न हे सो सब तीसके विद्यमान रहते हे ॥ सब शरीरोंकी रक्षा करणे हारा अरु भावनाके धर्मोंको धरणे हारा विष्णुदेव जीसका द्वारपाल हे ॥ अरु ऐरावत हस्ती जीसके गंडस्थलसों मद झरता हे सो इंद्रका हस्ती तीसकी वांणी सुणी भयमान होता हे ॥ जेसें मोरकी वाणी सुणीकरी सर्प भयमान होता हे एसा तीसका तेज जेसें सप्त समुद्रोंका जल कुहीड शोष लेती हे जेसें प्रलयकालके द्वादश सुर्यकरी समुद्र सुकने लगता हे ॥ अरु एसे यज्ञकरे जीसके क्षीर घृतकी आहुतीका धुंवा मेघबादल होकरी पर्वतोपर विराजे अरु जीसकी दृढ दृष्टिसों देखणेकरी कुलाचल पर्वतभी नम्रभूत हो जावे जेसें फलोंकरीपुर्न लता नमती हे तेसें ॥ अरु लीलाकरीकें भुवनकों विस्तार सहित जीत्या हे त्रिलोकीकों जीती करी दसकोटि वर्ष पर्यंत राजा बलराज करत भया ॥ तब एक दिन राजा बल सुमेरुके शिखर जेसें उंचे झरोषेविषे जायस्थित भया ॥ सो राजा बलनें युगोंके समूह वितीत हुए देखे हे ॥ देवता दैत्य उपजते अरु मीटते जीसने अनेक वार देखे हे त्रिलोकी के भोग भोगे हे सो भोगोंतें उद्वेग पाया ॥ तब उंचे झरोखेमें एकलाहीवैठी करी संसारकी स्थितिकों चितवतभया जो इस बडे राज चक्रवर्तीकरी मुजकों क्या प्रयोजन हे ॥ यद्यपि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्रिलोकीका राज बडा हे तोभी क्या आश्चर्य हे इसविषे में चीरकाल भोग भोगता रहाहौं ॥ परंतु शांति प्राप्त न भई ॥ अरु यह भोग आपात रमणीय हे उपजीकरी बहुरी नष्ट होजाताहे ॥ भोगोंकरी शांतिसुख प्राप्त नही भया अरू वारंवार में उही कर्म व्यवहार करताहों ॥ बहुरी दिन बहुरी रात्र बहुरी वही क्रिया करणि तिसविषे लज्जाभी नही आती ॥ अरु वही स्त्री आलिंगन करणि बहुरी भोजन करणा पुष्पोंकी शय्यापर शयन करणा क्रिया करणि यह कर्मों बडेकों लज्जाका कारणहे ॥ तीसी तीसी निरस व्यवहार करणा जो एक वार निरस हुआ अरु उस कालमें तृप्त हुआ बहुरी वारंवार दिन दिन विषे करतेहे ॥ यह में मानताहों जो बुद्धिवानोंकों हसणे जोग लज्जाका कारणहे ॥ जीवोंके चित्तविषे वृथा संकल्प विकल्प उठतेहे ॥ जेसे समुद्रविषे तरंग उपजतेहे अरू मीटतेहे तेसें संकल्प इच्छा जाल उठतेहे अरु मीटतेहे सो उन्मत्तकी न्यांई जीवोंकी चेष्टाहे ॥ यह तो हांसी करणे जोग बालकोंकी लीलाहे ॥ मूर्खताकरी अनर्थोंकों पसारतीहे ईसविषे जो कछु बडा उदार फल होवे सो में नही देखता ॥ इसविषे भोगोंतें इतर कार्य कछु नही पाता ॥ जो कछु इसतें रमणीय अरु अविनाशी होवे तिसकों शीघ्रही चिंतन करौं ॥ एसें विचार करी कहणे लागा ॥ बल जो हे दैत्योंका राजा सो आपणे मनविषे जगतकों नाशवत जान करी तिसी क्षणमें सुमरन करने लगा जो में प्रथम भगवान विरोचनसों पुछा था मेरा पिता विरोचन आत्मतत्वका ज्ञाता था ॥ जीसतें लोकोंका आदि अंत न था अर्थ यह जो सर्व लोकोंविषे गमन कीया था तिसों में प्रश्न कीया था ॥ हे भगवन् महात्मा जहां सर्व दुःखों अरु सर्व सुषोंका अंत हो जाताहे अरु सर्व भ्रम शांत हो जाताहे सो कवन स्थानहे सो मुजको कहो ॥ जहां मनका मोह नाश हो जाताहे अरु सर्व इच्छातें मुक्त होताहे रागदोषतें रहित जिसविषे सर्वदा विश्रामवान होताहे बहुरी क्षोभ नही रहता अरु हे तात उह कवन पदहे जीसके पाएतें अवर पावणा कछु नही रहता अरु जिसका दर्शन देखेते ओर देखणा कछु नही रहता यद्यपि अत्यंत जगत्के भोग पदार्थहे तोभी सुखदायक नही भासताहे ॥ काहेतें जो क्षोभ करताहे अरु जो गेश्वरोंके मनभी मोहित करी गीरपडताहे॥ हे तात जो सुख सुंदर विस्तीर्ण आनंदहे सो तेसा मुजकों कहो॥ तिसविषे स्थित हुआ में सदा विश्राम पाउंगा ॥ इति श्रीयोगवाशिष्ठे उपशम प्रकरणे विरोचन वर्ननंनाम द्वाविंशतितमःसर्गः ॥ २२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ विरोचनोवाच ॥ हे पुत्र एक अतिविस्तीर्ण विपुल देशहे ॥ तिसविषे अनेक सहस्र त्रिलोकीयां भासतीयां हे अरु जहां न समुद्र हे, न जलधारा हे, न पर्वत हे, न बन हे, न तीर्थ हे, न नदीया हे, न तलाव हे, न पृथ्वी हे, न आकाश हे, न नंदन बन हे, न पवन हे, न अग्नि हे, न चंद्रमा हे, न सूर्य हे, न लोक हे, न देस, न देवता, न दैत्य, न यक्ष, न राक्षस हे, न बन कमलोंकी शोभा हे ॥ न काष्ठ तृणभूत हे न चर, न अचर, न जल, न अग्नि, न दिशा हे ॥ न उर्द्ध, न अध, न मध्य, हे न प्रकाश हे, न तम हे, अहं, नही न विष्णु इंद्र रुद्रादिक हे, सो एकही हे अरु महानता नाना प्रकार प्रकाशकों धरणे हारा हे ॥ अरु सर्वका कर्त्ता सर्व व्यापक हे अरु सर्व रूप हे सो तूष्णीभावसों स्थित हे ॥ तीसनें सर्व मंत्रीयों सहित एक मंत्री संकल्प कीया सो मंत्री जो न बने तीसकों शीघ्रही बनायलेता हे ॥ जो बने तीसकों न बनावणेकोंभी समर्थ हे आपतें कछु नही भोगता ॥ अरु जानणेकों समर्थहे केवल राजाकें अर्थ सर्व कार्यका कर्त्ताहे ॥ यद्यपि आप जड अज्ञहे तोभी राजाके बलकरीके तनुतासों ज्ञाता अरु कार्य करता हे ॥ यही सब कार्योंकों करता हे ॥ तीसका महीपती जो राजा हे सो एकताविषे केवल अपणे आपविषे स्थित हे ॥ ॥ बलीरुवाच ॥ हे प्रभु ! आधिव्याधि दुःखतें रहित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो प्रकाशवान हे सो देश कोंन हे ? अरु प्राप्ति कीस साधनसों हे ? अरु आगें कीसनें पाया हे ? अरु एसा मंत्री कोन हे ? अरु महा बली राजा कोन हे ? जो जगत्जाल संयुक्त हमनेंभी नही जीत्या ? ॥ हे देव यह जो अपूर्व आख्यान तुमनें कहाहे सो आगें श्रवणभी नही कीयाथा ॥ मेरे रिदे आकाशविषे संशयरूपी बादर उदे भयाहे सो वचनरूपी पव नकरीकें निवर्त करहु ॥ ॥ विरोचनोवाच ॥ हे पुत्र तीस देशविषे मंत्री भगवान अनेक कल्प देवता अरु असुर गण होकरी छीन एकभी वश नही होता ॥ सहस्रनत्रे जो इंद्र हे तीसके वश नही होता यम कुबेर वशकरी नही सकते ॥ देवता असुरों करीभी जीत्या नही जाता मुसल वज्र चक्र गदादिक षडंग तिस परी चलाये कुंठित होजाता हे ॥ जेसें पाषाणपर चलाया कमल कुंठित होजातेहे सो मंत्री अस्त्र अरु शस्त्र करी वस नही होता ॥ बडे जुद्ध कर्मोंकरी नही पाता ॥ देवता दैत्य सर्वकों तीसनें वश कीयाहे विष्णु पर्यंत देवता हिरण्यकशिपु आदिक असुर डारी दीए हे जेसें प्रलयकालका पवन सुमेरुके कल्पवृच्छकों गीराइ देताहे नारायणतें लेकरी देवताभी वश कीये हे ॥ जेसें आकाशका बटलोईविषे निवास होजाताहे॥ तीसके प्रमादकरी इस त्रिलोकीकों वशकरी चक्रवर्ती राजावत स्थित हे ॥ सुर असुरोंके समूह ती सकरी भासते हे ॥ यद्यपि गुद्यहे गुनहीन हे , दुर्मति अरु दुष्ट अहंकार क्रोध हे सो तीसकरी उदे होताहे ॥ देवता अरु दैत्यके समूह बहुरी बहुरी उपजताहे सो ईसकी क्रीडा हे ॥ एसा मंत्रोंसंयुक्त मंत्री हे ॥ हे पुत्र जब तीसके राजाकों वश करीए तब तीसके मंत्रीकों वशकरना सुगम होताहे ॥ राजाकों वश कीएबिना मंत्री वश नही होता ॥ कबहु अंतर रहता हे ॥ कबहु बाह्य जाताहे ॥ जीस कालमें राजाकी इच्छा होतीहे जो मंत्री अपणेकों जीते तब जतन बिना जीत लेताहे ॥ एसा बली मल्ल हे जीसकरी त्रय जगत उल्लासकों प्राप्त भएहे ॥ केसा मंत्री मानों सूर्यहे तीसके उदयभये त्रिलोकीरूपी कमलोंकी खानी विकाशकों प्राप्ति होतीहे अरु तीसके लय हुएतें जगत्रूपी कमल लय होजाताहे ॥ हे पुत्र जब जीतणेकी तुजकों शक्ति हे तब तुं प्राक्रमवान हे जब मोहतें रहित एकत्र बुद्धि होवे तीसकरी एकके जितणेकों समर्थ होवेगा तब धैर्यवान हे अरु सुंदर वृत्ति तेरी हे काहेतें जो तीसके जितणेंतें जो नही जीता तीसपरी जीत पाताहे अरु जो तीसकों नही जीता अरु अवर लोक सब जीते हे तोभी जीते अजीत होजावेगा ॥ तीस कारणतें जो तुं अनंत सुख चाहता हे जो नित्य अविनाशी हें तो उसके जीतणे निमित्त जतनसों स्थित होहु ॥ अरु बडे कष्ट चेष्टा करीकेंभी तिसकों वश कर ॥ सुर जो हे देवता असुर जो हे दैत अरु यक्ष मनुष्य अरु महासर्प किन्नरों संयुक्त अतिबलीहे तोभी वश सर्व उरतें जतन विना होताहे तातें उसकों वश कर ॥ इतिश्री यो० उपशम प्रकरणे बलवृत्तांतविरोचन गाथा नाम त्रयोंविंशतितमः सर्गः ॥ २३ ॥

बलोवाच ॥ हे भगवन् कीस उपायकरी तीसकों जीतीए अरु एसा महा वीर्यवान मंत्री कोन हे अरु राजा कोन् हे ॥ यह वृत्तांत सब मुजकों शीघ्र कहो जो उपाय करों ॥ विरोचनोवाच ॥ हे पुत्र स्थित हुएकोंभी त्यागणे जोग हे एसा मंत्री जीस उपाय करो जीतीए सोभली प्रकार कहता हों तुं श्रवण कर ॥ तीस युक्ति ग्रहण कीयेतें शीघ्रही वशहोता हे ॥ जुक्तिविना वश नही होता ॥ जेसें बालकों जुक्तिकरी वश करता हे तेसें जो पुरुष जुक्तिकरी मंत्रिकों वश करता हे तीनकों राजाका दर्शन होता हे॥ तीसकरी परम पदकों पाता हे जब राजाका दर्शन होता हे तब मंत्री वश होजाता हे तीस मंत्रीकों वश कियेतें बहुरी राजाका दर्शन होता हे ॥ जब लग राजाकों न देख्या तबलग मंत्री वश नही होता अरु जबलग मंत्री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कों वश नही कीया ॥ तबलग राजाका दर्शन नही होता ॥ राजाकों देखें विना मंत्री जीतना कठिन ह ॥ मंत्रीके जीतेविना राजाकों दखणा कठिन हें ॥ तीस कारनतें दोंनोका ए कठा अभ्यास करी राजाका दर्शन अरु मंत्रीका जीतणा अपणें पुरुष प्रयत्नकरी शनैः शनैः अभ्यासतें होता हे ॥ दोनोंके संपादन करी यह पुरुष शुभताकों प्राप्त होता हें ॥ जब तुं अभ्यास करेगा तब तीस देशकों प्राप्त होवेगा ॥ यह अभ्यासका फल हे हे दैत्यराज जब तोसकों पावेगा तब रंचक शोकभी तुजकों न रहेगा ॥ सब जतनोंतें शांत होजावेगा नित्य प्रफुल्लित प्रसन्न रहेगा ॥ जो साधु जन हे सो सर्वसंशयतें रहित तीस देशविषे स्थित होते हे॥ हे पुत्र सुण उह देश तुजकों प्रगट करी कहता हों ॥ देश नाम मोक्षका हे जहां सर्व दुःख नष्ट होजाते हे अरु राजा तीस देशका आत्मभगवान हे जो सर्व पदोतें अतीत हे ॥ तीस महाराजानें मंत्री मनकों कीया हे ॥ सो मन परीणामकों पाईकरी सर्व उरतें विश्वरूप भया हे ॥ जेसें मृत्तिकाका पिंड घटभावकों प्राप्त भया हे जेसें धूम्र बादरकों धरता हे तेसें मननें विश्वरूप धरा हे तीस मनकों जीतेतें सब सुख विश्वके पर जीत पाता हे मनकों जीतणा कठीन हे परंतु जुक्तिसों वश होता हे॥ बलोवाच ॥ हे भगवन तोस मन वश करणेकी जुक्ति मुजकों कहो जीसकरी दारुण मनकों जीतों ॥ विरोचनोवाच ॥ हे पुत्र शब्द स्पर्श रूप रस अरु गंध जो विषय हे तीनकी प्रतिभा जो रस हे तीसकी सर्वदा सर्व उरतें आस्था त्यागणी ॥ अर्थ यह जो नाशवंत भमरूप जानना यह मनके जीतणेकी परम जुक्ति हे ॥ मन रूपी हस्तिविषय रूपी रस मदसों मस्त हे सोई जुक्ति करी शीघ्र दमन होजाता हे ॥ जुक्ति कठीन हे अति दुःखतें प्राप्त होती हे ॥ परंतु अपने अभ्यासकरी सुखेनसों प्राप्त होति हे ॥ क्रमकरी अभ्यासकीए विषयतें विरक्तता सर्व उरतें प्रगट होतीहे ॥ जेसें रसवान पृथ्वीतें लता उपजती हे तेसें जो शठ जीव हे सो इसकी वांछा करते हे परंतु अभ्यासविना नही प्राप्तहोती ॥ अभ्यासवान्कों यह जुक्ति प्रगट होती हे ॥ तातें अभ्यास सहित जुक्तिका आश्रय करो ॥ जबलग इन वीषयोतें पुरुषकों विरक्तता नही उपजती तबलगी संसाररूपी अटवी के दुःखोविषे भमताहे सो विषयतें विरक्तता अभ्यास विना किसीकों प्राप्त नही होती ॥ जेसें किसी पुरुषकों देशांतरकों जाणा होवे सो जब मार्गविषे चलताहे तब पोंचताहे चलणेके अभ्यास विना नही पहुंचता तेसें जब आत्मा ध्येयकों पुरुष निरंतर धरताहे तब विषयोंविषे अप्रतिती अभ्यासवानकी दृत्ति होतीहे ॥ जेसें जलरूप अभ्यास करीकें वेलीकों सिंचताहे तब लता वृद्ध होतीहे एसें पुरुषार्थ करी सर्व कार्योंकों प्राप्त होताहे इतर नही होता ॥ यह निश्चय कीयाहे ॥ जा क्रिया आपकरी आप करीएं तिसका फल अवश्य प्राप्त होताहे सो लोकोंविषे देव कहाताहे जो अवश्य होणाहे तिसकी जो नितिहे सो दूर नही होती ॥ सोइ देव शब्द कहीए निति कहीए जो अपणे पुरुषार्थका फल पाताहे जेसें मरुथलविषे भमक री जल भासताहे सम्यक् ज्ञानतें भम निवृत्त होजाताहे ॥ तिस देव अरु नितिकों अपणे पुरुषार्थ करी जीतो ॥ जेसा पुरुषार्थ करी संकल्प दृढ करताहे तेसाही भासताहे॥ जेसें आकाश कों निलता ग्रहण करती हे सो नीलता कछु हे नही तेसें सुख दुःख देणे हारा अवर कोउ नही ॥ जेसा संकल्प करता हे तेसा हो भासता हे अरु जेसी नीति होतीहे तेसा संकल्प करता हे॥ सोइ नीति साथ मीली करी कदाचित् कर्म करताहे ॥ तीसकरी इस जगतकोशविषे जीव शरीर धारी करी फीरता हे ॥ जेसें आकाशविषे पवन फीरता हे सो कदाचित् नीतिसों अरु कदाचित नीति तें रहित फिरता हे ॥ तेसें दोंनों सीडीयां मनविषे होती हे ॥ आकाशरूपी मनविषे नीति अनितिरूपी वायु फुरता हे तीस कारन जबलग मन हे तबलग नीति हे अरु दे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व हे ॥ मनतें रहित न नीति हे न देव हे ॥ मनके अस्त भए जो रहता हे सो तेसेंही हे। जीव पुरुषसों पुरुषार्थ करी जेसा संकल्प इस लोक विषे दृढ होताहे सो कदाचित् अन्यथा नही होता॥ हे पुत्र अपणे पुरुषार्थ विना इहां कछु सिद्ध नही होता॥तातें परम पुरुषार्थ करी विषयते विरक्त होउ ॥जबलग विरक्तता नही उपजती तबलग परम सुखके देणेहारी मोक्ष पदवी संसार भयका नाश कर्त्ता नही प्राप्त होती॥जबलग विषयोविषे मोह कारण प्रीतिहे तबलग संसार दशा डोलाय मान करतीहे दुःखदायक होतीहे॥सर्पकी न्यांई विषकों पसारतीहे॥सो अभ्यास कीयेविना निवृत्त नही होती॥ ॥ वलोवाच ॥ हे सर्व असुरोंके ईश्वर भोगोतें विरक्तता चित्तविषे केसें स्थिति होतीहे जो जीवोकों दीर्घ जीणेका कारणहे ॥ विरोचनोवाच ॥ हे पुत्र जेसें शरत्कालमें महालता में फुलसों फल परिपक्व होताहे तेसें आत्मावलोकनहारे पुरुषकों भोगोंतें विरक्तता प्रगट होतीहे ॥ आत्माके देखणेकरी विषयोंकी प्रीत निवृत्त होजातीहे रिदेविषे स्थिति प्राप्त होतीहे ॥ जेसें कमलोके उदरविषे सुंदर शोभा स्थित होतीहे तेसें बीज लक्ष्मी स्थित होतीहे ॥ तातें सूक्ष्म बुद्धिविचार वेत्तानें आत्मदेवकों देखी करी विषयोंकी प्रीती करीहे सो सब ओरतें निवारहु प्रथम दोभाग दिनके भोग कर्म देहके कार्य करहु एक भाग शास्त्रोंका श्रवण विचार करहु ॥ एक भाग गुरुकी सेवा टहल करहु ॥ जब कछु विचार संयुक्त मन होवे तब द्वेभाग वैराग संयुक्त शास्त्रोंकों विचारहु अरु द्वे भाग ध्यान अरु गुरूके पूजनविषे रहो ॥ इस क्रम करी जीव ज्ञानकथाके जोग होताहे ॥ क्रम करी निर्मल भावकों ग्रहण करताहे ॥ शनैः शनैः उत्तमपदकी भावना होतीहे ॥ शास्त्रोंके अर्थविचारविषे चित्तरूपी बालककों परचावहु॥ जब परमात्माविषे ज्ञान प्राप्त होताहे तब कर्म फांसितें छूटजाताहे॥ जेसें चंद्रमाके उदय हुए चंद्रकांत मणी द्रवीभूत होताहे तेसें सीतल हो विराजताहे ॥ बुद्धिकेविचारसों सर्वदा सम आत्म दृष्टि देखणी अरु तृष्णाका बंधन त्यागणा यह परस्पर कारणहे ॥ परमात्माके देखणेकरी तृष्णा दूर होजातीहे अरु तृष्णाके त्यागकरी आत्माका दर्शन होताहे ॥ जेसें नौकाकों मलहा ले जाताहे अरु नौका मलहाकों लेजातीहे तेसें परमात्माका दर्शन होताहे अरु भोगोंका त्यागहोताहे ॥ इसकरी परब्रह्मविषे अनंत विश्रांति नित्य उदय होतीहे सो मोक्षरूप आनंद उदय होताहे तिसका अभाव कदाचित नही होता ॥ सो आनंद जीवोंकों आत्मविश्रांतिविना नही प्राप्त होता ॥ न तपोकरी न दानोंकरी न तीर्थोकरी होताहे ॥ जब आत्म स्वभावका दर्शन होताहे तब भोगोंतें विरक्तता उपजतीहे॥ सो आत्मा स्वभावका दर्शन अपणे प्रयत्नविना ओर कीसी जुक्ति करी नही प्राप्त होताहे ॥ हे पुत्र भोगोंका त्याग करणा अरु परमार्थ दर्शनका जतन करे तब ब्रह्मपदविषे विश्रांत परमानंद मोक्षकों प्राप्त होताहे ॥ ब्रह्मातें आदि काष्ठ पर्यंत इस जगत्विषे एसा आनंद कोई नही पाता जेसा परमात्माविषे स्थित भएतें पाताहे ॥ तातें पुरुष प्रयत्नका आश्रय करो देवकों दुरतें त्यागो इस मार्गकों रोकणेहारे भोगहे तीनकी निंदा बुद्धिवान करतेहे ॥ जब भोगोंकी निंदा दृढ भई तब विचार उपजताहे ॥ जेसें वर्षाकाल गएतें सर्व दिशा शरत्कालकी निर्मल होजातीहे भोगोंकी निंदातें विचार अरु बिचारतें भोगोंकी निंदा यह परस्पर होतेहे ॥ जेसें समुद्र की अग्निसें धुम उदय होताहे सो बादररूप होकरी वर्षणेसों समुद्रकों पूर्ण करताहे ॥ अरु जेसें मित्र आपसों परस्पर कार्यसिद्ध करदेताहे तातें प्रथम तो देवका अनादर करो पुरुष प्रयत्न करी दंतोंसों दंत मरोडी भोगोंकी प्रीत त्यागो ॥ पुरुषार्थ करी प्रथम अविरोध उपजावहु ॥ सो गुणवान अपणे जन्म अरु कल्याणमूर्तिकों अर्पण करहु ॥ भोगोंतें असंग होकरी निंदा करहु तब विचार उपजेगा ॥ शास्त्रज्ञानकों बहुरी संग्रह करो तब परमपदकी प्राप्ति होवेगी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे दैत्यराज समय पाईकरी जब तूंविषयोतें विरक्त चित्त होवेगा तब विचारके वशतें परमपदकों पावेगा ॥ अपण आपविषे जो पावनपदहे तिसविषे भली प्रकार अत्यंत विश्राम पावेगा॥ बहुरी कल्पना दुःखविषे न गीरेगा ॥ अंग देशाचारके कर्म करी अल्प धन उपजावणा बहुरी निंदा करी साधूसंग लगावणा तिनके संगकरी वैराग अरु विचार संयुक्तहुए तुजकों आत्मलाभ होवेगा ॥ इति श्रीयोगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे बलोपाख्याने चित्तचिकित्सोपदेशोनाम चतुर्विंशतितमःसर्गः ॥ २४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

बलोवाच ॥ ईस प्रकार मुजकों पूर्व पितानें कहा था ॥ अब में स्मृति दृष्टि करी प्रसन्नताकों प्राप्त भयाहों ॥ अरु भोगोंतें विरक्तता उपजीहे ॥ जो शांत अरु सम निर्मल अमृतरूपी सीतल सुखविषे स्थित होउं धन एकत्र करताहे तो नाश होजाताहे ॥ बहुरी आशा उपजतीहे बहुरी धनकरी पूर्ण होताहे बहुरी स्त्रीयोंकी वांछा उपजतीहे बहुरी अंगीकार करतेहे ॥ अब में विभूतीकी स्थिति करी खेदवान भयाहों ॥ अहो आश्चर्यहे ॥ इस रमणीय पृथ्वीतें समशीतल चित्त होताहों ॥ दुःख सुखकी दशातें रहित सर्व शांतिकों प्राप्त होताहों ॥ जेसे चंद्रमाके मंडलविषे स्थित हुआ सम शीतल होताहे तेसें अंतरतें हर्षवान शीतल होताहों॥ दुःखरूपी विभूती ऐश्वर्यतें रहित हुआ अक्षोभ होवेगा ॥ इह सब मनरूपी बालककी दिन दिन प्रती कलाहे अंगोंसों अंग, मांससों मांस, प्रथम में स्त्रीसों चीडता था ॥ मोहकरी मेरी प्रीत बढि गई थी जो कछु दृष्ट देखणे जोग था सो में देख्याहे ॥ सो यह शोकहे ॥ जो कछु भोगणेजोग था सो चिरकाल पर्यंत अखंड भोग्याहे ॥ सर्व भूत जातकों वश कर रहाहों तासों क्या शोभनीक हुआ ॥ बहुरी बहुरी तीनविषे उही चेष्टा करी ओर ओर देखे ॥ इसकरीचित्त अपूर्व पदार्थकों नही देखता ॥ उहां उही जगत्के पदार्थ हे तातें अपणी बुधिकरी निश्चय सर्वसो त्यागकरी पूर्ण समुद्रवत अपणे आपकरी आपविषे स्वच्छ स्वस्थ स्थित होहु ॥ पाताल पृथ्विविषे स्वर्गविषे स्त्रियां अरु रतन पन्नगादीक सार हे सोभी तुच्छ हे ॥ समय पाईकरी काल ग्रास लेताहे ॥ एते काल पर्यंत बालक था जो तुच्छ पदार्थ मनके रचे हुएहे तिनकी इच्छासों दुःखकरी देवता साथ दोष करता था ॥ तिनके दुःखोंके त्यागणेकरी क्या महात्माका अनर्थ होवेगा ॥ बडा कष्टहे जो में चिरकाल अनर्थविषे अर्थ बुद्धि करीथी ॥ अज्ञानरूपी मद करी मचताथा ॥ जेसें बालक कुकरोंकों सेवताहे चंचल तृष्णाकरीकें इस जगत्विषे क्या नही कीया ॥ जो कार्य पाछे तापकों बढावतेंहे सो मेंनें कीयेहे ॥ अब पूर्व तुच्छ चिंताकरी क्या मुजकोंहे ॥ वर्तमान चिकित्सा पुरुषार्थ करी सफल होवेगा ॥ जेसे समुद्र मथणेकरी अमृत प्रगट भयाहे तेसे अपरिमितरूप आत्माकी भावना करी अब सर्व उरनें सुखी होवेगा ॥ में कवन हों इस आत्माका दर्शन जुक्ति गुरूतें पुछोंगा अज्ञानके नाश निमित्त शुक्र भगवानका चिंतवन करों जो प्रसन्न होकरी उपदेश करेगा ॥ तिसकरी अनंत विभव अपणे आपविषे आपकरी स्थित होवेगा ॥ निष्काम पुरुषोंका उपदेश मेरे रिदेविषे फलेगा ॥ इ० यो० उप० प्र० बलचिंतासिद्धांतोपदेश नाम पंचविंशः सर्गः ॥ २५ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस प्रकार चित्तवीकरी बल नेत्रोंकों मुंदत भया अरु शुक्रजीका ध्यान कीया ॥ केसा शुक्र आकाशविषे मंदिरहे जीसका सर्वत्र पूर्ण जो चिन्मात्र तत्वहे ॥ सदा तिसके ध्यानविषे स्थितहे ॥ एसें भार्गवका आवाहनरूप ध्यान करत भया ॥ तब शुक्रजी जानत भया जो हमारे शिष्य बलनें हमारा चित्तवन कीया तब चिदात्मस्वरूप भार्गव अपणे देहकों तहां ले आवत भए जहां रत्नके झरोखेविषे बल बेठा था ॥ तब बल उज्वल प्रभारूप गुरुकों देखी करी उठ्या अरु चित्त प्रफुल्लित हो आया ॥ जेसें सूर्य मुखी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कमल सूर्यकों देखी करी प्रफुल्लित होतेहे तेसें ॥ रत्न अर्घ्य पाद पुष्पों करी चरन वंदना करत भया रत्नों करी अर्घ दीया ॥ बडे सिंहासन पर बेठाइ करी कहत भया ॥ बलोवाच ॥ हे भगवन् तुमारी कृपातें मेरे रिदेतें जो प्रतिभा उठतीहे सो स्थिर होकरी मुजकों प्रश्नविषे जोडतीहे ॥ जेसें सूर्यकी प्रतिभा जीवोंकों कार्यविषे जोडतीहें तेसें ॥ अब में भोगोंतें विरक्त भया हों सो केसे भोगहे जो मोहके देणे हाराहे ॥ अरु तत्वज्ञानकी इच्छा करता हों ॥ जीसकरी महा मोह निवृत्त होजाताहे ॥ इस ब्रह्मांडविषे स्थिर वस्तु कोनहे ॥ ओर केताक तिसका प्रमाणहे ॥ इंद्र क्याहे अरु अहं क्याहे ॥ में कवन हों तुम कवन हो ? अरु यह लोक क्याहे ? ॥ इन प्रश्नोंका उत्तर कृपा करी कहो ॥ शुक्रोवाच ॥ हे दैत्यराज ! बहुत कहणे करी क्या हे में आकाशविषे गमन कीया चाहताहों तातें सर्वका सार संक्षेपतें में तुजकों कहता हों सो श्रवण करु ॥ जो चैतन तत्वहे अरु विस्तृतरूपहे ॥ इदं यह सर्व चेतनमात्रहे अरु चैतन ही प्रमाणहे ॥ तुंभी चैतन स्वरूपहे मेंभी चैतन हों यह लोकभी चैतनरूपहे यह सबका सारहे ॥ इस निश्चयकों अंतर दृढ करी धरेगा तब निर्मल निश्चयात्मक बुद्धि करी अपणेकों आप करी देखोंगा ॥ अरु तिसतें विश्रांतिवान होवेगा ॥ हे रामजी ! जब तुं कल्याण मूर्तिहे तब इसी कहणे करी सब सिद्धांतकों प्राप्त होवेगा ॥ सबका सार चिदात्माहे तिसकों पावेगा अरु जो कल्याणमुर्ति नही तो बहुरी कहणाभी निरर्थक होताहे ॥ भस्मविषे आहुतीकी नांई होताहे ॥ चैतनकों जो चैत्यकलाका संबंध हे सोई बंधनहे तीसतें जो मुक्त हे सोई मुक्त हे ॥ अरु आत्मतत्व चैतन स्वरूप चैत्यकलनातें रहित हे यह सर्व सिधांतका संग्रह हे ॥ हे राजन् इस निश्चयकों धारी निर्मल बुधिसों अपणे आप करी आपकों देखो ॥ यह आत्मपदकी प्राप्तिहे अब में आकाशकों जाताहों ॥ सप्त ऋषी साथ कोउ देवताका कार्य हे तीस निमित्त जाताहों ॥ जबलग यह देह हे तब लग मुक्त बुद्धिकों यथाप्राप्त कार्य त्यागणे जोग नही ॥ व सिष्टोवाच ॥ हे रामजी एसें कही करी बडे वेगसाथ आकाशकों शुक्र चल्या ॥ जेसें समुद्रतें तरंग उठी करी लीन होजावे तेसें शुकजीं अंतर्धान होगए ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे बलोपदेशो नाम षड्विंशतितमःसर्गः ॥ २६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! देवता अरु दैत्य करी पुजणे जोग भृगु पुत्र शुक्रहे तिसके गमन कीएतें बलवानों विषे श्रेष्ठ जो हे बल सो मनविषे चित्तवता भया ॥ जो भगवान शुक्रजी क्या कहीगए ॥ त्रिलोकी चिन्मात्र रूपहे मेंभी चैतन हों ॥ दिशाभी चैतनरूपहे ॥ परमार्थतें आदि जो सत्स्वरूपहे चैतन तिसतें भिन्न कछु नही ॥ यह जो सूर्यहे तिसमें चैतन होवे नही तो सूर्यका सूर्यत्व भाव भासे नही अरु यह जो भूमिहे तिसकों चैतन चेते नही तो भूमिविषे भूमित्व भाव कोउ नही पाइता ॥ यह जो दशदिशाहे इनकों चैतन चेते नही तो दिशाविषे दिशात्व भाव कोउ नही रहता ॥ पर्वतविषे पर्वतताभी चैतन बिना नही ॥ यह जगतविषे जगत भाव, आकाशविषे आकाशता शरीर लच्छन कोउ चैतनविना न पाइए ॥ इंद्रियांभी चैतनहे, मनभी चैतनहे, अंतर बाह्य चैतनहे ॥ चिदात्माही अहं त्वंभावरूप हो करी स्थितहे ॥ चैतन में हों सब इंद्रियां संयुक्त विषयोंका स्पर्श में करता हों अरु कदाचित कछु कीया नही ॥ अरु काष्ट लोष्ठ तुल्य शरीर साथ मेरा क्याहे ॥ संपूर्ण जगत में आत्मा चैतन हों ॥ आकाशविषे एक में आत्मा हों सूर्यविषे भी में हों ओर भूतपिंजरविषेभी में चैतन्य आत्मा हों ॥ देवता दैत्यविषेभी में चैतन्य आत्मा हों ॥ स्थावर जंगमका चैतन आत्मा में हों ॥ आत्मा एक अद्वैत चैतनहे ओर द्वैत कलना नही पाइती ॥ जो इस लोकविषे द्वैतका असंभवहे तो शत्रु कोनहे अरु मित्र किसकों कहीए ॥ बलहे नाम जिसका एसा जो शरीरहे तिसका सिस काटा तो आत्माका क्या काटा ॥ जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्व लोकोंविषे आत्मा पूर्नहे जब चित्त दुःखकों चेतताहे तब दुखी होताहे ॥ चेतणेतें रहित दुःखकों नही पाइता ॥ तिस कारनतें जो दुःखदायक भाव अभाव पदार्थ भासतेहे ॥ सो सर्व चैतन आत्मरूपहे॥ चैतन तत्वतें भिन्न कछु हे नही सब ओरतें आत्मा पूर्न हे॥ आत्मातें इतर जगतका कछु व्यवहार नहीं॥ न कौउ दुःखहे, न कौउ रोगहे, न मनहे न मनकी वृत्तिहे, एक शुद्ध चैतन मात्र आत्मा तत्वहे, ओर विकल्प कलना कोउ नही ॥ सब ओरतें चैतन स्वरूप व्यापकहे नित्य आनंद अद्वैतरूप विकल्प कलंना कोउ नही सर्वतें अतीत हों अंशांशीभावतें रहित, चैतन सत्ता हों अरु चैतन आदिक नामतेंभी रहित हों ॥ चैतन आदिक नामभी मेरे व्यवहारके निमित्त कल्पे हे जो चैतन आत्माकी स्फुरंन शक्तिहे सोई विस्तार करी जगत्रूप होकरी भासतीहे ॥ दृष्टा दर्शनतें मुक्त केवल अद्वैतरूप हे ॥ प्रकाश प्रकाशक भावतें रहित निराभास हों द्रष्टा परमेश्वररूप हों ॥ न में कर्ता हों न भोक्ता हों ॥ में केवल द्रष्टा निरामयरूप हों कलनाकलंकतें रहित हों ॥ ईनतें परहों अरु यह स्वरूपभी में हों ॥ यह मेरेविषे आभासमात्र हे ॥ में उदित नित्यरूप हों ॥ आभासतेंभी रहित में एक प्रकाशरूप हों ॥ स्वरूपकरीकें मेरा जो चित्त हे सो द्रश्यके रागतें रहित मुक्तरूप हे ॥ जो प्रत्यक्ष चैतन मेरा स्वरूप हे तीसकों नमस्कार हे ॥ चित्त जो हे दृश्य तिसतें रहितहे ॥ जुक्ति अजुक्ति सर्वका प्रकाश स्वरूप में हों ॥ मुजकों नमस्कारहे चित्ततें रहित में चैतन हों ॥ सब ओर तें शांतरूप हों ॥ फुरनेतें रहित भली प्रकार शांत जो में संवित मात्र विस्ताररूप हों ॥ आकाशकी नांइ में अनंत सूक्ष्म तें सूक्ष्म हों ॥ दुःख सुखतें मुक्त हो ॥ संवेदनतें रहित असंवेदनरूप हो ॥ चैत्यतें रहित चैतन हों जगतके भाव अभाव पदार्थ मुजकों छेद नही सकते ॥ अथवा यह जगतके पदार्थ छेदते हे सोभी मुजतें भिन्न नही ॥ छेद में हो छेदणेहाराभी में हो ॥ जो स्वभावभूत वस्तु करी वस्तु ग्रहण होतीहे अथवा नही होती तोभी किस करी किसका नाश होवे ॥ में सर्वदा सर्व प्रकार सर्व शक्तरूपहे ॥ संकल्प विकल्प करी अब क्याहे ॥ में एक ही चैतन अजडरूप हो करी प्रकाशता हों ॥ जेते कछु जगत जालहे सो सब में ही हों मुजतें इतर कछु नही ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! जब इस प्रकार चित्तवता हुआ राजा बल तत्वका वेत्ता ॥ तब उंकारको अर्धमात्र तुरीयापदकी भावनासों ध्यानविषे स्थित भया ॥ भली प्रकार संकल्प तिसके शांत होगएहे ॥ सब कलना चित्त चैत्यतें रहित निःसंग होकरी स्थित भया ॥ बहुरी केसा भया जो ध्याताहे अहंकार अरु जो ध्यानहे मनकी वृत्ति, अरु जो ध्येयहे जिसकों ध्याता था सो तिनोंतें रहित हुआ ॥ मनतें सर्व वासना नष्ट होगइ ॥ जेसें वायुतें रहित अचलरूप दीपक प्रकाशताहे तेसें बल शांतरूप पदकों प्राप्त भया मन शांत होगया॥ रत्नोके झरोंखेविषे बेठी दीर्घकाल वितगया ॥ जेसें स्थंभविषे पुतली होवे तेसें सर्व इषणातें रहित समाधि, स्थित रहा ॥ सब क्षोभ दुःख विघ्नतें रहित निर्मल चित्त शरत्कालके आकाशवत् होरहा ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे बल विश्रांति वर्णनं नाम सप्तविंशतितमः सर्गः ॥ २७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब इस प्रकार दैत्यराजा समाधिविषे स्थित भया अरु केताकाल व्यतीत भया तब बांधव मित्र टहलुए मंत्री थे सो रत्नोंके झरोंखेविषे देखणे चले जो क्या भया राजा बलकों ॥ एसें विचार करी कींवाडोकों खोली उपर जाय चढे ॥ कुकह अरु देवादि मंत्री अरु मंडलेश्वर राजा ॥ अरु हयग्रीवादिक बांधव सुहृद बालक थे सो उपर चले गए ॥ यक्ष विद्याधर अरु नाग एक ओर हो खडेहे ॥ रंभा अरु तीलोत्तमादिक अप्सरागण हाथोंविषे चमर ले खडीहे ॥ नदीयां समुद्र पर्वत आदिक मूर्तिधारीकरी स्थित भएहे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रत्न आदिक भेटलेकरी सर्व प्रणाम निमित्त खडे भए ॥ त्रिलोकीके उदरवर्त्ती जो कछु थे सो आय स्थित भये ॥ अरु राजा बल ध्यानविषे स्थित था ॥ मानों चित्रकी मूर्ति लिख छोडीहे पर्वतवत् स्थितहे ॥ तिसकों देखीकरी दैत प्रणाम करत भए केई देखकरी शोककों प्राप्त भये ॥ केई आश्चर्यवान भये केइ आनंदवान भए केई भयकों प्राप्त भये ॥ तब देखीकरी मंत्री विचारत भये जो राजाकों क्या दशा प्राप्त भईहे ॥ तब राजाके निमित्त भार्गव शुक्रजीका चितवन करत भया जो गुरू हे सर्वका वेत्ताहे ॥ तब चितवना कीएतें भार्गव जीसका बडा प्रकाशहे ॥ सो झरोंखेविषे आय प्राप्त भया ॥ जेसें गंधर्व नगर देखणेविषे आतेहे तेसे आए तिसकों देखीकरी दैत्यगण सब पूजन करत भए अरु बडे सिंहासन पर गुरुकों आरूढ कीया अरु बलकों ध्यान स्थित देखीकरी शुक्रजी अति प्रसन्न भए ॥ जो पद मेंनें उपदेश कीया था तिसविषे विश्राम पाया देख्या बडा आनंदहे ॥ जो विचार करीकें बलनें परमपद पायाहे ॥ भ्रम इसका अब नष्ट भयाहे ॥ क्षीर समुद्रवत् इसका प्रकाशहे एसें देखीकरी शुक्रजी कहत भए ॥ शुक्रोवाच ॥ बडा आश्चर्यहे जो दैत्यराज अपना विचारकरी निर्मल आत्मप्रकाशकों पायाहे ॥ अब भगवान सिद्ध भयाहे ॥ अपणे स्वरूपविषे विश्रांतिकों पायाहे ॥ जो सब दुःखोंतें रहित पदहे तिसविषे स्थित भया चिताभ्रम इसका क्षीण भयाहे ॥ मोहरूपी कुहीड नष्ट भईहे ॥ अब इसकों मत जगाउ यह आत्मज्ञानकों प्राप्त भयाहे ॥ जतन क्लेश इसका दूर होगयाहे ॥ जेसें सूर्यके उदय हुए अंधकार नष्ट होजाताहे ॥ अब में इसकों जगावता नही सो आपही चिरकालतें जागेगा ॥ काहेतें जो प्रारब्ध अंकुर इसका रहताहे ॥ यह उठीकरी अपना राज कार्य करेगा ॥ दिव्य सहस्र वर्षतें यह जागेगा ॥ अब तुम इसकों मत जगावो अपणे राज कार्यविषे जाय वर्तो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब इस प्रकार शुक्रजीने कहा तब सुणी करी सुके दलकी मंजरी जेसे होगए ॥ तब कही करी शुक्रजी अंतर्धान होगया ॥ अरु दैत्य अपणे राजा विरोचनकी सभाविषे जाईकरी अपणे अपणे व्यवहारविषे जाय वर्ते ॥ ओर जो खेचर भूचर पातालवासी थे ॥ सो अपणे अपणे स्थानकों गए ॥ देवता दिशा पर्वत समुद्र नाग किन्नर गंधर्व सब अपणे अपणे व्यवहारविषे जाय वर्ते ॥ इति श्रीयो० उप०प्र० बलविज्ञानप्राप्तिनामअष्टविंशतितमःसर्गः ॥ २८ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब दिव्य सहस्र वर्ष व्यतीत भये तब दैत्यराजा समाधितें उतर्या ॥ नोबत नगारे बाजणे लागे देवता दैत्य बडे जयजय शब्द करणे लागे ॥ नगरवासी प्रबुद्ध भए देखीकरी बडी प्रसन्नताकों प्राप्त भए ॥ जेसें सूर्यके उदय हुए कमल खीलीआतेहे तेसें खीलीआए ॥ जबलगी दैत्य न आये तबलगी राजा चितवता भया ॥ बडा आश्चर्यहे जो परमपदकी एसी रमणीय पदवी शांतरूप शीतलहे ॥ तिसविषे स्थित होकरी में परम विश्राम पायाहों ॥ तातें बहुरी उसीपदका आश्रय करों तिसीविषे स्थित होडुं ॥ राज विभूती साथ मेरा क्या प्रयोजनहे ॥ एसा आनंद सीतल चंद्रमाके मंडलविषेभी नही पाईता जेसा अनुभवविषे स्थित हुएतें पाईताहे हे रामजी इस प्रकार चितवीकरी बहुरी समाधि करणे लागा जो गलित मन होवे ॥ तब दैत्य सेना मंत्री भृत्य बांधव आय वेष्टित भए ॥ जेसें चंद्रमाकों मेघ घेर लेताहे तेसें घेरकरीकें दैत्य प्रणाम करणे लगे बडे पर्वतोंकी नाइ अचल आकार जो हे बलराज सो मनविषे विचारत भया ॥ सो केसा राजाहे जो क्षीण भएहे संकल्प जिसके सो विचारता भया जो मुजकों त्यागणे जोग क्याहे अरु ग्रहण करणे जोग क्याहे त्याग तिसका करताहे जो अनिष्ट दुःखदायक होवे अरु ग्रहण तिसका करताहो जो आगें न होवे ॥ सो आत्मातें व्यतिरेक कछु नही ॥ तिसविषे ग्रहण त्याग कीसका करों ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरु मोक्षकी इच्छाभी मैं कीस कारणतें करों काहेतें जो बंध होताहे तो तिसतें मोक्षकी इच्छा करताहे सो बंध नही तो मोक्षकी इच्छा केसें होवे यह बंध अरु मोक्ष बालककों क्रीडा कहीहे न बंधहे, न मोक्षहे, यह कल्पनाभी मूढताविषेहे सो मूढता मेरी नष्ट भइहे ॥ अब मुजकों ध्यान विलास साथ क्या प्रयोजनहे ॥ अरु ध्यानकरी क्याहे ॥ अब मुजकों न पर मतत्वकी इच्छाहे न कछु ध्यान साथ प्रयोजनहे ॥ अर्थ यह जो न विदेहमुक्तकी इच्छाहे न जगत्विषे स्थित रहणेकी इच्छाहे न मैं मरताहों न जीताहों न सत्यहों न असत्यहों न सम हों न विषम हों न कोउ मेराहे न कोउ अवरहे अद्वैतरूप मैं एक आत्माहों सो मुजकों नमस्कारहे ॥ इस राजक्रियाविषे मैं स्थितहों तोभी मैं आत्मपदविषे स्थितहों सदा सीतलहों ध्यान दिशाकरी मुजकों सिद्धता नही न राज कार्य विभूती करी कछु सिद्ध होणाहे ॥ जय अजय सो न मैं यह कछुहों न मेरा कछुहे॥ तातें राज कार्य करी मेरा कछु प्रयोजन नही ॥ मैं आका शवत् होइ रहताहों ॥ जो मैं न कछु इच्छा करोंगा न राज करोंगा तोभी मेरा कार्य कछु सिद्ध नही होता ॥ तातें जो कछु प्रकृत आचारहे तिसीकों मैं करों ॥ बंधनका कारन अज्ञानहे सो मेरा अज्ञान नष्ट भयाहे ॥ कोउ क्रिया मुजकों बंधनरूप नही ॥ तातें जो कछु प्रकृत आचारहे तिसकों करों॥ हे रामजी इसी प्रकार निर्णय करीकें बल दैत्योंकी ओर देखता भया तब देवता अरु दैत्य सब सीसकरी प्रणाम करत भए तब दृष्टि करीकें तिनकी प्रणाम वंदना अंगीकार करत भए ॥ जेसें पवन पुष्पोंकी सुगंध लेताहे तव राजा बलनें ध्येयवासनाकों मनते त्याग कीनी अरु राजके कार्य करत भया ॥ ब्राह्मण देवता गुरूका पूजन करतभया ॥ जीस जिसप्रकार सो जीस जीसका पूजन करता था सो यथाजोग कीया ॥ ओर जो कोउ अर्थि थे मित्र बांधव टहलुए तिनका अर्थ पूर्न करतभया ॥ अरु ललना जो स्त्रियां थी तिनकों नाना प्रकारके वस्त्र भूषण देत भये ॥ जो सासन दंड देणेजोग थे दुष्ट तिनकों दंड करते भए ॥ बहुरो यज्ञका आरंभकीया तिस यज्ञविषे स्वर गणोकों पूजत भया ॥ शुक्रजीतें आदिले जो बडे मुख्य देवता यज्ञ करावणे निमित्त बेठेथे सो शुक्रकेसा था जीसनें भोग विलास कों क्षणभंगुर जानेहे सो, अरु सबकों वांछित सिद्धताके निमित्त प्राप्त कीयाहे अपना शरीर एसा जो हे हरि विष्णु, भोगोतें अचाह हे चित्त जीसका तिसनें इंद्रके अर्थ सिद्ध करन निमित्त, केसेहे इंद्र जिसके वह क्रमकरी बडा भयाहे, तिस विष्णु भगवाननें कर्म मात्र छलकों धारा तिसकरी बलराजाकों वंचित करलिया ॥ तब बांधीकरी पातालविषे स्थित कीया ॥ जेसे बानरकों बांधताहे तेसें बांध्या अबलग पातालविषे स्थितहे ॥ बहुरी इंद्र होवेगा ॥ अब जीवन्मुक्त स्वस्थ वपु सदा ध्यान स्थित इषनातें रहित पुरुष पातालविषेहे ॥ हे रामजी जीवन्मुक्त पुरुष जो बल हे सो संपदा आपदाविषे समचित्त विचरता हे ॥ संपदाविषे हर्ष नही आपदाविषे शोक नही ॥ दुःख सुखविषे समचित हे जोसका ॥ जेसें मूर्तिका लीख्या सूर्य उदय अस्ततें रहित होता हे अनेक जीवोंका उपजणा अरु लय होणा बल देखत भया ॥ अरु दश क्रोड वर्ष पर्यंत तीनों लोकोंका कार्य करत भया बडे विषय भोग भोगे अंत भो गोंकों विरस जाणीकरी तीसका मन विरस हुआ ॥ विचारकरी तृष्णा नष्ट होगई ॥ मन उपशम हुआ हेयोपादेयकी चेष्टा नानाप्रकार बलनें देखी पदार्थोंके भाव अभाव विषे मन शांतिकों न प्राप्तभया ॥ अब भोगोंकी अभिलाषा त्याग करी आत्मा रामी भया ॥ नित्य स्वरूपविषे स्थित पाताल कोटरमें वीराजता हे ॥ हे रामजी इस बलकों बहुरी इस जगत्के इंद्रहोणा हे संपूर्न जगत्का कार्यकरना हे ॥ अनेक वर्ष आज्ञा चलावेगा परंतु इंद्र पदको पाइकरी तुष्टवान न होवेगा ॥ अपणे ऐश्वर्य पदके गीरने करी खेदवानभी न होवेगा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्व पदार्थविभूतिके उदय अस्तविषे अमर होवेगा ॥ आकाशकी नांइ दोनोविषे राग दोषतें रहित अचल रहेगा यह बलके विज्ञान प्राप्तिका क्रम वृत्तांत कहाहे ॥ इसी दृष्टिकों आश्रय करी तुमभी स्थित होउ ॥ बलीकी नाइ आपणे विवेककरी नित्य तृप्त आत्मनिश्चयकों धारो जो सर्व मेहों ॥ इस निश्चयकरी निर्द्वंद्व पदकों प्राप्त होवेगा ॥ अपणे पुरुषार्थकरी बलकी नांइ निश्चयकों धारीकरी परमपदकों प्राप्त होवेगा ॥ हे रामजी दशक्रोड वर्ष तीन लोकका राज बल भोगता भया ॥ अंत विरक्तताकों प्राप्त भया तेसें तुंभी भोगोंतें विरक्त होहु यह भोग तुच्छहे इनकों त्यागकरी परमपदविषे प्राप्ति होउ यह जो दृश्य प्रपंच नाना प्रकारके विकारसंयुक्त भासताहे सो न कोउ तेराहे न तुं कीसीकाहे ॥ जेसें पर्वत अरु शिलाविषे बडा भेदहे तेसें जिस पुरुषका मन संसारकी ओर धावताहे सो मनकी वृत्तिविषे डुबताहे ॥ जब तुं मनकों रीदे कोटरविषे धरेगा तब सब जगतका प्रकाश होवेगा तुं आत्मस्वरूपहे तो अपणा क्या अरु पराया क्या यह सब मिथ्या कल्पनाहे ॥ तुं सबका आदिपुरुषोत्तमहे तुंही साकाररूप पदार्थहे तुंही सब ओर पूर्नहे सब जगतविषे चैतनरूपहे ॥ स्थावर जंगम जगत सब तुजकरी परोयाहे ॥ जेसें सूतकरी मणीके परोएहे ॥ नित्य शुद्ध उदित बोध स्वरूपहे भ्रांतिते रहितहे ॥ जन्मआदिक सर्व रोगके नाश निमित्त आत्मा विचार करी बलात्कारसों भोगोंका त्यागी करी सर्वका भोक्ता होहु ॥ तुं केवल स्वरूप जगत्का नाथहे ॥ चैतन्य सूर्य प्रकाशरूप सर्वदा स्थितहे ॥ सर्व जगत् तेरे प्रकाशकरी प्रकाशताहे ॥ सुख दुःखकी कल्पना तेरेविषे कोउ नही ॥ तूं शुद्ध सर्वात्मा सर्व प्रकाशक हे ॥ इष्ट अनिष्टकों त्यागकरी केवल अपणे स्वरूपविषे स्थित होहु ॥ इष्ट अनिष्टके त्यागतें निरंतर सत्यता उदय होतीहे ॥ तिस सत्यताकों रिदेविषे धारीकरी फीर जन्ममरणभी नही आता जिस जिस पदार्थविषे मन लगे तिसतें नीकासी करी आत्मतत्वविषे जोडहु ॥ जब इस प्रकार तुं दृढ अभ्यास करेगा तब मन जो उन्मत्त हस्ति हे सो बांध्या जावेगा ॥ तब सर्व सिद्धांतके परम सारकों तुं प्राप्त होवेगा ॥ हे रामजी तुं मुढोंकी न्यांइ मत होहु ॥ मूढ जीव सब चेष्टा मिथ्याही करताहे ॥ मिथ्या चेष्टाकरी जीनकी बुद्धि नष्ट भइहे अरु अविद्यारूपी धूर्त्ततें बिकेहे तीनके तुल्य न होहु ॥ यह जगत् अणुमात्रभी कछु हे नही ॥ बडा विस्ताररूप जो दृष्ट आता हे सो निरणयकरी देख्या हे जो मूढता करीकें भास्याहे ॥ मूढता परम दुःखरूप हे ॥ इसतें अधिक दुःख कोउ नही ॥आत्मारूपी सूर्यके आगें आवरण कर्ता अज्ञानरूपी मेघहे तीसकों विवेकरूपी पवनकरी नाश करो तब आत्मा का साक्षात्कार होवेगा ॥ वैराग अरु अभ्यासकरी साक्षात्कार होवेगा ॥ आत्मविचारके अभ्यास अरु विषयोंतें वैरागविना आत्माका साक्षात्कार नही होता ॥ वेदरूप वेदांत शास्त्रहे अरु जो दृष्टा तर्कजुक्त हे तीनकरीभी अपणेविचारविना साक्षात्कार नही होता ॥ आत्मविचार करी पुरुषार्थकरी आत्माकी प्रसन्नता होतीहे ॥ अरु बुद्धिकी निर्मलतासों बोधकरी प्राप्त होतीहे ॥ तातें संकल्प विकल्पतें रहित होकरी चैतन तत्वविषे स्थित होहु ॥ विस्तृत व्यापक रूप जो आत्मतत्व हे ॥ तिसकी स्थिति मेरे वचनोंकरी ग्रहण करी सर्व संकल्प तेरे लीन होगएहे॥ संवेदनरूपी भ्रमशांत भयाहे ॥ संसार कौतुकरूपी कुहिड तेरी नष्ट होगइहे ॥ इतिश्री यो० उपशम प्रकरणे बलोपाख्यानसमाप्ति वर्णनं नाम एकोनत्रिंशतितमः सर्गः ॥ २९ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी अब तुं विज्ञान प्राप्तिके कारन ओर क्रम सुण ॥ जेसें दैत्य असुर प्रल्हादकों आत्माकी सिद्धता भइ हे तेसें तुंभी होहु ॥ पाताल कोटर विषे एक हिरण्य कशिपु दैत्य होत भया सो केसा था जीसनें देवताके इंद्र भगाएहे ॥ विष्णुजीके सम जीसका पराक्रम अरु संपुर्ण भुवन भोग जीसनें वशकरी छोडेथे ॥ सर्व देवता दैत्यकों वशकरीकें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जगत्का कार्य करतभया ॥ दैत्योंका इश्वर अरु तीनों भुवनोंका ईश्वर भया ॥ समय पाइकरी पुत्रोंकों उत्पन्न कीया ॥ जेसें वसंतऋतु अंकुरकों उत्पन्न करती हे ॥ बडा ऐश्वर्यवान करी दृढ भया ॥ सर्व दिशाविषे सूर्यको न्यांइ प्रकाश कीया ॥ आकाशको ग्रहण करी चिरकाल पर्यंत प्रकाश आछादी लीया ॥ तीसके पुत्रविषे बडा पुत्र प्रल्हाद होत भया सो प्रल्हाद सबतों अधिक प्रकाशवान भया ॥ तीस पुत्रकरी हिरण्यकश्यपु सोभत भया ॥ जेसें सर्व सुंदर लता करी वसंतऋतु सोभती हे तेसें अपणे बल अरु पुत्रोंकी सुंदरता अरु ईश्वर भंडार तीनोंकरी हिरणकश्यपु सोभतभया ॥ इन लोकोंकों अपणे वश कीया ॥ जेसें प्रलयकालविषे सूर्य सब लोकोंकों तपाता हे तेसें तपाने लागा ॥ दुष्ट क्रीडा करी देवताकों दैत्य दुःख देवे तब सब देवता मीलीकरी विष्णुकी शरन गए अरु विनती करी जो यह हरण्यकशिपु महा दुष्ट हे तीसका नाश करौ अरु हमारी रक्षा करौ ॥ वारंवार दुखावणे करी महा पुरुषभी क्रोधवान होजाताहे ॥ हे रामजी जब इस प्रकार देवतानें प्रार्थना करी तब विष्णुदेवनें कहा अब तुम जाओ में तीसकों पुत्रके हेत करी मारोंगा एसें कहीकरी अंतर्धान होगया ॥ अरु हिरण्यकशिपु अपणे ऐश्वर्यकी शिक्षा प्रल्हादकों देवे परंतु वह ग्रहण न करे ॥ बहुत प्रकार उढ ताडनाभी दे रहा तोभी उसकी शिक्षाका प्रल्हाद न अंगीकार करे ॥ वह ईश्वर विष्णुजीकी आराधनाविषे रहे ॥ इस कारनतें ताडनाका दुःख प्रल्हादकों कछु होवे ॥ तब दैत्य अपणे हाथ खड्ग ले करी कहणे लगा हे दुष्ट तेरा इश्वर कहांहे जिसका तुं आराधन करताहे ॥ अब मुजविना ईश्वर अवर कोनहे ॥ तब प्रल्हादनें कहा ॥ मेरा ईश्वर सर्व व्यापकहे ॥ तब हिरण्यकशिपुनें कहा इस खंभेविषे कहांहे जो हे तो दिखाय दे न दिखावेगा तो तुजकों मारोंगा ॥ तब सर्व व्यापक जो विष्णु सों खंभेसों भासणे लगा बडे शब्द होणे लगे ॥ तिस खंभेकों फोडी करी भुजा अरु बडे नखों जो वज्रकों तोडनें हारे एसें संयुक्त विष्णु प्रगट भया ॥ महा भयानकरूप बडे हस्तिके समान दंत एसें स्थित जेसें विजलीका प्रकाश होवे ॥ अरु अग्निकी नांइ कुंडल प्रकासे ॥ अरु दोइ भुजा मानों ब्रह्मांड खपरके तोडने हारीयां हे ॥ मुखतें स्वास जो निकसताहे सो पर्वतोंके चूर्ण करने हारा हें अरु कोपरूपी अग्नि प्रलयकालकी अग्नितेंभी अधिकहे ॥ अरु बडे सूर्यवत् प्रकाश करे एसें महा भयानक नरसिंह रूप विष्णु देवनें करोकें हिरण्यकशिपुकों नखों साथ विदारण कीया ॥ अरु एसा कोपवानरूप धरा जिस करी दैत्योंके स्थान जलणे लागे अरु दृष्टि करी मानों पर्वत चूर्न होतेहे ॥ अरु नरसिंहरूप वायुकी खभाणी करी दैत्य उडतेहे ॥ अरु दैत्यके समूह केइ मारे केइ भाग गए ॥ दिशाविदिशाकों दोडी गए ॥ जेसें वायुके मारे मच्छर उड जातेहे ॥ पाताल छिद्रमें कछु नाश होगया ॥ प्रलयकालवत शून्य स्थान होगए मानों अकाल प्रलय आयाहे दैत्य नाश होगए ॥ दैत्योंका नाश करी बहुरी विष्णु देव अंतर्धान होगए ॥ कछुक दैत्य बांधव टहलुए रहे थे सो प्रल्हादके निकट आए मुख कुमलाय गए ॥ जेसें जलतें रहित कमल होताहे ॥ भाइ बांधव मिली करी प्रल्हादकों समुझावणे लगे ॥ प्रल्हादनें मिली करी पिताकी परि देवना करी ॥ बहुरी उठी करी सब कर्म कीए संशय करी दैत्यभी बेठे अरु विचार करी अरु शोकवान होवे सब दैत्य सुकी करी चित्रकी पुतली होगए ॥ जेसें दग्ध वृक्ष सुकी जाताहे अरु रसतें रहित होजाताहे तेसें हिरण्यकशिपु विना दैत्य शोकवान महा दुःखी भए ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे हिरण्यकशिपु वधो नाम त्रिंशतितमः सर्गः ॥ ३० ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब हिरण्यकशिपुके मारणेकरी दैत्य बहुत दुःखी भए तब प्रल्हाद मौनवान होकरी चीतवता भया ॥ पाताल कोटरविषे सब दैत्य मीलीकरी चिंता संयु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्त बेठे ॥ तीसकों प्रल्हाद कहत भया जो अब अपणी रक्षाके निमित्त कोन उपाय करीए ॥ हमारे दैत्यके नाश करणे हारा विष्णु तो बडा बली हे ॥ जीसके नख तीक्ष्ण षड्गकी धारा वत् हे ॥ जेसें सिंह मृगोंकों मारता हे तेसें हमकों मारता हे ॥ पाताल कोटरविषे दैत्य शांतिवान कदाचित नही होतेहे ॥ जब दैत्य वर्धमान होतेहे तब विष्णुआयनाश करताहे ॥ जेसें कमलोंपर पर्वत आयपडे तेसें चूर्न करता हे ॥ वडे आकाश गौरव शब्द करने हारे दैत्य उपजी उपजी नष्ट होजातेहे ॥ जेसें जल विषे तरंग उपजी उपजी नष्ट होजाते हे तेसें ॥ अंतर वाहिर हमकों कष्ट देताहे ॥ हमारा शत्रु बडा दृढ हे बडा अपूर्व तम आय वढ्याहे ॥ हमारा रिदा तमकरी पूर्न होगयाहे ॥ संपदा नष्ट होगइ हे ॥ जो हमारे पिताकरी देवता चूर्न भए थे तीसका बल हमतें अधिक होगयाहे ॥ हमारी स्त्रीयांकों वशकरी लेगएहे ॥ जेसें मृगकों व्याधले जाता हे अरु धन लक्ष्मी हमारा सब लेगएहे ॥ हम दीन हो रहेहे ॥ जेसें जलबि ना कमल कुमलाइ जाताहे तेसें हम बांधव विना भएहे ॥ हमारे घरोंविषे धुलीउडती हे ॥ जो बडे स्थान मिलीकरी खचित कीए थे सो शून्य होकरी गए ॥ जो हमारे स्थान बडे क ल्पवृच्छ लागेथे सो उखाडीकरी नंदनवनविषे जाय लगाय हे ॥ नरसिंहजीकी सहायताकरी एसा बल देवता पाये हे ॥ हमारे वृच्छ स्थांन नरसिंहजीनें जलायदीएहे ॥ जो देवताकी स्त्रीयांके मुख दैत्य देखते थे सो अब दैत्योंकी स्त्रीयांके मुख देवता देखतेहे ॥ कल्प मंदार वृछोंके समूह दैत्योंके स्थांनविषे थे अरु सुमेरु पर्वतविषे विराजे थे सो स्थान अब शून्य होगए धुली उडती हे ॥ सुमेरु दुर्लभ होगए हे ॥ जो दैत्योंकी स्त्रीयां अपणे स्थानविषे बेठी थीयां सो अब देवांगनांके सिरपर चमर करतियांहे ॥ अरु उह हासविलास करतियां हे ॥ यह बडा कष्टहे हमकों आपदानें दीन कीये हे ॥ हे दैत्यों हमकों ओर उपाय कोइ दृष्ट नही आता जब उसही विष्णुकी शरनकों जावें तब सुखी होवें वह केसा पुरुष हे जीसके दो भुजारूपी वृछकी छायाविषे देवता विश्राम करते हे ॥ विष्णुके प्रतापकरी तपायमानभी नही होता ॥ जेसें हिमालय पर्वत कदाचित तपायमान नही होता तेसें जो पुरुष विष्णुकी शरन जाताहे सो तपायमान नही होता ॥ तातें हमभी उसीकी शरनकों प्राप्त होवे ॥ तुम देखते हो जो देवांगना असुरोंकी स्त्रीयांकी पूजन करतियां थीयां सो अब अपणेकों पूजावणे ल गीयांहे ॥ हम दैत्योंकी स्त्रीयांके मुख कुमलाय गये हे ॥ जेसें वरफकी वर्षा करी कमल सुक जाताहे तेसें हमारे मंडप टुट गएहे ॥ नील मणीके खंभे थे सो गीर पडे हे ॥ दैत्य सेना जो आपदाके समुद्रविषे डुबती थी ॥ तीसके रक्षा करणेकों बडा समर्थ था डुबणे न देता था ॥ जेसें क्षीर समुद्रविषे मंदराचलकों कच्छरूपनें डुबणे न दीया तेसें हमारे पितादि जो बडे बडे बली रक्षा करणे हारे थे तीनकों विष्णुजीनें मारी चूर्ण कीये ॥ जेसें प्रलय कालका पवन पर्वतोंकों चूर्न करता हे उनका मित्र सुहृद होता हे एसें मधुसूदनकी गति अतिविषम हे दैत्योंकी भुजारूपी दंड हे तीनके काटणे हारा कुठार हे तीनकी साक्षता करी इंद्रादिक देवता दैत्यसेनाकों जीतणे मारणे लागे हे ॥ जेसें बालककों बानर मारे यह पुंडरीकाक्षविष्णु कों जीतणा कठिणहे ॥ जो यह शस्त्रोंविना होवे तोभी हमारे शस्त्र इनकों छेदी नही सकते वज्रभी छेदी नही सकता महा परक्रमी हे ॥ जुद्धका इसनें बडा अभ्यास कीया हे यह पर्वतोंसा थ जुद्ध करता रहता हे जो हमारा पिता बडा बली था जीसनें त्रिलोकीके राज अरु सब देवता वस कीएथे ॥ तीसकों इसनें मारडार्याता हमकों मारनेविषे क्या जतन हे ॥ यह महाब ली हे इसकों जीतणा नही होता ॥ तातें एक उपाय में तुमकों कहतहों ॥ तीसकरी विष्णु प्रगट वस आवेगा सो यह उपाय हे जो विष्णु सर्वात्मा हे सर्वका प्रकाशक हे अरु सबका कारण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे तीसकी हम शरन हे ॥ ओर हमारी गति आश्रय कोउ नही ॥ हे दैत्यौ उसतें अधिक इस त्रिलोकिविषे कोउ नही ॥ जगत उत्पत्ती स्थिति प्रलयकर्ता वही देवता हें उसके ध्यानविषे लागो ॥ एक निमेषभी तीसके ध्यानतें उतरो नही ॥ मेंभी उसके ध्यान विषे लगता हौं सो नारायन अजन्मा पुरूष हे ॥ में सदा तिसके परायण हों ॥ सब प्रकार नारायण मैं हों ओंनमोनारायणाय यह मंत्र सब अर्थोंका सिद्धकर्ता हे इस मंत्रके ध्यान जाप करतेहुए हमारे रिदे विषे आय स्फुरनरूप होवेगा सो केसा हरीहे ॥ सबका आत्मा हरि हे पृथ्वीभी हरि हे ॥ यह सब जगत हरी हे ॥ मेंभी हरिहों ॥ आकाशभी हरिहे ॥ सबका आत्माभी हरि हे ॥ अविष्णु जो होकरी विष्णुका पूजन करते हे सो पूजणेका फल नही पावता अरु जो विष्णु होकरी विष्णुका पूजन करताहे सो परम उत्तम फलकों पावतेहे ॥ तातें में विष्णुरूप होकरी स्थित होताहों ॥ में अनंत आत्मा आकाश हों ॥ गरूड पर आरुढ हो अरु स्वर्नके भूषण पहिरे हे ॥ मेरे हस्तरूप वृच्छ करी जीवरूप सब पंछी विश्राम पावतेहे ॥ यह मेरी चतुर्भुजा हे भुजाविषे बहुरी पटेहरेहे ॥ जब में क्षीर समुद्र मथन कीयाथा तबके यह परस्पर घसाएहे ॥ अरु इस मेरे पारसद स्थितहे ॥ सुंदर चमर हस्तविषे हे इसकों क्षीर संमुद्रतें उपजायहे ॥ अरु त्रिलोकीरूपी वृच्छकी यह सुंदर मंजरी हे महा धवल मनकों हरन हारी हे ॥ यह मेरे पारशदविषें मायाहे जीसनें अनंत जगत जाल निरंतर उत्पत्ति प्रलय कीनी हे ॥ अरु इंद्रजालकी विलासिनी हे यह मेरे पारशदविषे जो शक्ति हे जिसनें लीलाक रीकें त्रिलोकी खंड वश कियाहे ॥ जेसें कल्प वृच्छ लता फुलतीहे तेसें मेरे पारशदविषे फुलतीहे ॥ सीत उष्ण यह दोइ मेरे नेत्रहें संपूर्ण जगतकों प्रकाशतेहे ॥ चंद्रमा अरु सूर्य तीनके ना महे ॥ यह मेरा नील कमलवत देहहे महा सुंदर स्याम मेघवतहे ॥ महा प्रकाशरूपहे यह मेरे हस्तविषे पांचजन्यशंखहे जिसकी फुरनरूप धुनिहे सो क्षीर समुद्रतें निकस्याहे ॥ यह नाभि कमलहे जिसतें ब्रह्मा उत्पन्न भयाहे ॥ अरु इसविषे निवास करताहे जेसें भमरा कमलविषे निवास करताहे तेसें यह मेरे हस्तविषे कुमोदकी गदाहे ॥ सुमेरुके शिखरवत् रत्नोंकी बणी हुइहे ॥ दैत्य दानवोंके नाश करणें हारिहे ॥ ज्वालाके पुंजवत जिसका तेजहे यह मेरे हाथोंविषें महा प्रकाशरूप सुदर्शन चक्र साधुकों सुख देणे हाराहे ॥ यह मेरे हाथोंविषे अग्निके समु हवाला कुठारहे सो दैत्यरूपी वृछोकों काटणे हाराहे अरु साधुकों आनंद दायकहे ॥ यह मेरे हाथविषे सारंग धनुष हे ॥ महाप्रकाशवत् जीसकी धुनि हे ॥ यह मेरे पीत वर्न वस्त्रहे यह वैजयंती मालाहे कौस्तुभमणी मेरे कंठविषे हे ॥ एसा में विष्णु देव हों अनंत जगत उत्पत्ति लय होगइहे सर्वोंकें धारन हारा में हों ॥ केइ बीत गयेहे केइ होवेगा ॥ यह पृथ्वी मेरे चरनहे आकाश मेरा सिसहे ॥ तिनों लोक मेरा वपुहे ॥ दशोदिशा मेरे वक्ष स्थलहे ॥ में साक्षात विष्णु हों निल मेघवत मेरी कांतिहे गरुड पर आरुढ शंख चक्र गदा पद्मके धारणेहारा में हो ॥ दुष्ट हे चित्त जिसका सो हमकों देखी करी भागी जातेहे ॥ यह सुंदर सीतल चंद्रमावत् मेरी कांतिहे ॥ पीत वस्त्र साम वदन गदाधारी हे ॥ लछमी मेरे वक्षस्थलविषे हे ॥ अच्युतरूपी विष्णुमें हों ॥ उह कवन हे जो मेरे साथ विरोध करणेकों समर्थ होवे ? ॥ में त्रिलोकीको जलावणेकों समर्थ हो ॥ जो मेरे साथ जुद्ध करणेकों सन्मुख होवे तीसकों अपणे नाशका कारन हे ॥ जेसें अग्निविषे पतंग जली मरते हे ॥ तेसें मेरा एसा तेज हे जीसकी द्रष्टि संहारणेकों कोउ समर्थ नही हे ॥ में विष्णु ईश्वर हों ॥ ब्रह्मा इंद्र जमादिक नित्य मेरी स्तुति करते हे ॥ अरु तृण काष्ठ स्थावर जंगम जेता कछु जाल हे सबके अंतर व्यापक रूप हों ॥ त्रिलोकीविषे में प्रकाशरूप हों अ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जन्मा हों॥ भयकों नाशकर्ता हों एसा जो मेरा स्वरूप हे तीसकों मेरा नमस्कार हे ॥ ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे प्रल्हादविज्ञान नामएकत्रिंशत्तमःसर्गः ॥ ॥ ३१ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस प्रकार प्रल्हाद नारायण स्वरूप अपणा करीकें चितवता भया ॥ बहुरी पूजनके निमित्त वैष्णवनकों चितवता भया ॥ मनविषे दुसरी मूर्ति विष्णु की करी प्राण पवनकरी संपन्न अरु गरुडपर आरूढ धर्म अर्थ काम मोक्ष चार शक्ति करी संपन्न अरु शंख चक्र गदा पद्म हस्तविषे स्याम अंग चतुर्भुजा चंद्रमा अरु सूर्य जिसके नेत्र एसा लक्ष्मीधर महा सुंदर आनंदके देणेहारे विलास नेत्रहे जिसके, सारंग धनुख हस्तविषे बडा प्रकाशरूपहे, एसी मूर्ति विष्णुकी पूजता भया ॥ परिवारसंयुक्त भली प्रकार पूजन की या ॥ बडे रत्नों संयुक्त प्रल्हाद मनकरी पूजत भया ॥ माधव कमलाधरकों रत्नोंका अर्घ्य दीया अरु चंदनका लेपन धूप दिप विचित्र नाना प्रकारके भूषणों करी अरु मंदार कल्प वृच्छों के कमलों करी रत्न मणीके गुच्छे नाना प्रकारके पुष्पों करी, अरु पीस्ता खजुरी बदाम आदिक मेवाकरी भक्ष भोज्य चोष्य लेह्य चतुर प्रकारके भोजन ॥ नाना प्रकारके स्वाद अरु वस्त्र भूषन करी पूजन किया ॥ बहुरी अपणा आप विष्णुकों अर्पण किया ॥ परम भक्तिकों प्राप्त भया अरु जिस प्रकार मन करी पूजन किया तिसी प्रकार अंतःपुरविषे विष्णुकी मूर्ति देखी करी पूजत भया ॥ इस प्रकार दिन दिन प्रति विष्णुका पूजन करत भया ॥ जिस प्रकार प्रल्हाद मनकी चितवना करी पूजा करे तिस प्रकार ओरभी दैत्य मानसी पूजा करत भये ॥ तिनकों प्रल्हादनें सिखाया ॥ तिस पुरविषे सब दैत्य वैष्णव होरहे ॥ कल्याण मूर्ति विष्णुभक्त होगये॥ जेसा राजा होताहे तेसी तिसकी प्रजा होतीहे इसविषे कछु आश्चर्य नही ॥ तब इस वार्ता देवलोकविषे प्रगट भइ जो दैत्योनें विष्णुका दोष त्याग कियाहे अरु भक्त हुएहे ॥ तब देवता आश्चर्यकों प्राप्त भये ॥ इंद्रादिक अमरगण चितवत भया जो यह क्या हुआ दैत्योंनें विष्णु भक्ति ग्रहण करीहे ॥ इनकों प्राप्त कैसें भइहे एसें आश्चर्यवान होकरी विष्णुके निकट क्षीर समुद्रकों गए ॥ दैत्योंकी वार्ता कहणे निमित्त ॥ यह तो अपूर्व वार्ता हुइहे ॥ दैत्य कहां अरु विष्णुभक्ति कहां ॥ विष्णुके निकटजाय कहत भये ॥ देवाऊचुः ॥ हे भगवन् यह तुमनें क्या माया पसारी हे जो दैत्य सर्वदा विरोध करतेथे सो तुमारे साथ तन्मय रूप होरहे हे? ॥ कहां उह दुर्वृत्ति पर्वतकों चूरन करनेहारे दैत्य अरु कहां तुमारी भक्ती ॥ जो अनेक जन्मोंकरीभी दुर्लभ हे ॥ हे जनार्दन तेरी भक्ति कहां अरु उनकी वृति कहां ॥ यह तो अपूर्व वार्ता भईहे ॥ जेसें समय विना पुष्पोंकी माला नही सोभती तेसे पात्रविना तुमारी भक्ति नही सोभती ॥ यह हमकों सुखदायक नही भासती ॥ जेसाजेसा कोउ होता हे तेसे तेसे स्थानविषे सोभताहे जेसें काचविषे महामणी नही सोभती तेसें दैत्योंविषे तुमारी भक्ति नही सोभती ॥ जेसा गुण कीसी विषे होताहे सो तेसी पंक्तीविषे सोभता हे अवरविषे स्थित हुआ नहीसोभता हे ॥ जो सदेश नही होता तो दुःखदायक होताहे ॥ जेसें अंगोंविषे वज्र दुःखदायक होताहे ॥ तेसें पदार्थ क्रमकरी प्राप्त होताहे ॥ सो जेसा गुणवान होवे तेसा प्राप्त होताहे वह सोभा पावताहे ॥ विपर्यय होयतब सोभा नही पावता ॥ जेसें कमलनी जलविषे सोभती हे मरुस्थलविषे नही सोभती ॥ तेसे कहां उह अधम नीच जन भयानक कर्म करणेहारे अरु कहां तेरी आश्चर्य भक्ति ॥ जेसें कमलनी पृथ्वीपर नही सोभती तेसें तेरी भक्ति दैत्योंबिषे नही सोभती ॥ तेसें भक्ति हमकों उनविषे सुखदायक नही भासती॥ इति श्री उपशमप्रकरणे प्रल्हादोपाख्याने विविध व्यतिरेकोनाम द्वात्रिंशत्तमःसर्गः ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब इस प्रकार बडे सब्द करी देवता कहणे लगे तब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माधव आय करी बोले जेसें मेघ मोरकों कहे तेसें गंभिर वाणी करी बोलत भया ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ हे देवगण तुमें शोक मत करो प्रल्हाद मेरा भक्त हे ॥ शंबुकों नाशकर्त्ता यह प्रल्हादका अंतका जन्म हे ॥ अब मोक्षकों प्राप्त होकरी बहुरी जन्म न पावेगा ॥ जेसें भुना बीज बहुरी अंकुर नही लेता तेसें इसकों बहुरी जन्म नही होवेगा ॥ हे देवगण जोगुण वान होवे अरु गुणोकों त्यागकरी दोष ग्रहण करे तव इह कर्म अनर्थरूप होताहे ॥ अरु जो प्रथम गुणोंतें रहित निर्गुण होवे बहुरो तिनकों त्यागी करी गुणग्रहण करे, शास्त्रमार्गविषे विचरे तो यह सुखदायक होताहे ॥ प्रल्हादकी विचित्र चेष्टा तुमकों सुखदायक होवेगी ॥ अब तुम अपणे स्थानोंकोंजाओ॥ प्रल्हाद मेरा भक्तहे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार कही करी भगवान क्षीर समुद्रविषे अंतर्धान होगए ॥ देवता नमस्कार करकें अपणे स्थानकों गए अरु प्रल्हाद साथ दोष भावनाकों त्याग करतभये अरु बडेके चित्तसों दोष त्यागणेतें अवरोंके मनभी विश्रामकों पावत हे ॥ प्रल्हाद दिनदिन विषे अपनें घरप्रति जनार्दनकी मनसा वाचा कर्मणा भक्ति करत भया ॥ समय आइकरी दैत्यविषे भक्ति बडी हो गइ ॥ परम विवेककों प्राप्तभया अरु विषय भोगतें वैरागवान भए ॥ देखीकरीआनंदी न होवे जेसें सुके वृच्छविषे टास होताहे तीसविषे पंछी प्रीती नही करते ॥ तेसें उह विषयों साथ प्रिती न करे सुंदर स्त्रीयां साथ न रमही ॥ जेसें मृगतृष्णाकी नदीकों जानणेहारे मृग रमणीय देखीकरी प्रसन्न नही होते तेसें शास्त्रार्थ कथनविना ओर दृश्यविषे तिनकों प्रीति न उपजे ॥ यह भोग रोगरूप हे तीनविषे उनका चित्त विश्रामवान न होवे राग न करे परंतु मुक्तकर्त्ता जो आत्मबोध हे सो प्राप्त नही भया ॥ मुक्त फलकें तुल्य आयस्थित भयेहे ॥ भोगोंकी अभिलाषकों त्यागकरी निर्मल होरहे हे ॥ परम समाधिकों नही प्राप्त भय चित्त मध्य अवस्थाविषे डोलायमान रहे ॥ भोगोंतें वैराग अरु ईश्वरकी भक्तिविषे स्थित भये ॥ तव स्याम मूर्ति जो विष्णुदेव हे सो प्रल्हादकी वृत्तीकों वीचारीकरी पातालविषे प्रल्हादके यह पूजा स्थानविषे महाप्रकाश सुंदररूप प्रगटे तिसकों देखीकरी प्रल्हाद विशेष पूजाकों करतभया ॥ प्रल्हाद प्रेमकरी गदगद होगया ॥ चरनवंदना करी पूजन बहुत कीया बहुरी एसें कहत भए ॥ प्रल्हादोवाच ॥ हे ईश्वर त्रिलोकीविषे सुंदरमूर्ति सबके धारणेहारे अरु सबकलंक हरणेहारे प्रकाशस्वरूप अशरनोंके शरन अजन्मा अच्युत में तेरे शरनहों ॥ हे नीलोत्पल कमलोके पर्वत शरत्कालके निरुपम स्यामरूप असंग चित्तकरीकें धरणेहारे में तेरी शरन हों ॥ हे निर्मलरूप केलेवत् कोमल अंग स्वेत कमलकी नांइं स्वेत शंख हस्तविषेहे अरु नाभिकमलविषे भंवरेरूप ब्रह्मा स्थित हे, वेदका उच्चार रूपी गुरगुर शब्द कर्ताहे ॥ अरु रिदे कमलविषे विराजणेहारे जलके ईश्वररूप में तेरी शरन हों॥ स्वेत नख तारागणवत प्रकाशरूप हे हसना मुखचंद्रमाके मंडलवत हे ॥ रिदेरूपी मणि सबका प्रकाशक हे शरत्कालके आकासवत निर्मल विस्तृतरूप में तेरी शरनहों हे त्रिभुवनरूपी कमलनीयोंके प्रकाशनेहारा चंद्रमा, मोहरूपी अंधकारके नाशकर्त्तासूर्य हे अजड चिदात्मा संपुर्न जगतके कष्ट हरनेहारे में तेरी शरन हों ॥ हे नुतन विकसितरूप कमल पुष्पोंकरी भूषित अंग अरु स्वर्नवत् पीतांबरधारी महासुंदर स्वरूप में तेरी शरन हों ॥ हे ईश्वर लीलाकरीकें सृष्टीके उत्पत्तिस्थिति नाश करणेहारे परमशक्ति शंकर जोगवत दृढदेह में तेरी शरन हों ॥ अरु दामनीवत् प्रकाशरूप सवकों संहारकरी जलविषे वालकरूप धारी वटके नीचे शयन करनेहारे में तेरी शरन हों ॥ देवतारूप कमलोंकें प्रकाश करने हारे सूर्यमंडल दैत्यपुत्ररूपी कमलनीयोंके तुषाररूपी वरफ जलावणेहारे अरु रिदेरूप कमलोंके आश्रयभूत में तेरी शरनहों ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस प्रकार अनेक गुणोंकरी अष्टश्लोक प्रल्हादनें कहे तव नीलोत्पल कमलवत् देह हे जीसका एसा परमात्मा पुरुष प्रसन्न होकरी प्रल्हादकों कहतभए॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे प्रल्हादाष्टकानंतर नारायणागमनं नाम त्रयस्त्रिंशतितमः सर्गः ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ हे गुणनिधि दैतकुलके सिरोमणी जो तुजकों वांछित फल हे सो माग ॥ बहुरी जन्मदुःखके शांति निमित्त जीसकरी तुजकों जन्मदुःख न होवे सो माग ॥ प्रल्हादोवाच ॥ हे सर्व संकल्पके फलदायक सर्व लोकोंविषे व्यापकरूप जो वस्तु दुर्लभतरहे॥ सो शीघ्रही मुजकों कहो अरु देहु ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ हे पुत्र सब भ्रमके नाश करणे हारा अरु परम फलरूप ब्रह्मतें विश्रांति होतीहे सो आत्मविवेककी समताकरी प्राप्ति होतीहे सो आत्मविवेक तुजकों होवेगा ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार दैत्येंद्रकों कहीकरी विष्णु अंतर्धान होगए ॥ तरंग समुद्रतें गुरगुर शब्दकरीकें उठे अरु गुप्त होजावे तेसें विष्णुजीकों देखीकरी प्रल्हादनें पुष्पांजली दीनी ॥ पुजाकरीकें श्रेष्ट आसन बीछाया ॥ तीसीपरी आप पद्मासन धरी बेठे उत्तम शास्त्रोंका पाठविधि संयुक्त करणे लगा ॥ पाठकरी चिंतना करी जो विष्णुनें मुजकों क्या कहा हे यह कहाथा जो तुजकों विवेक होवेगा ॥ सो संसारके समुद्र तरणे निमित्त शीघ्रही विचार करों इस संसार आडंबरविषे में कवन हों ॥ जो बोलता हों, स्थित हों ॥ इस जंत तो में नही ॥ यह असत्य उपजा हे जडरूप पवनकरी स्फुरनरूप होताहे सो में केसें होउ ॥ यह देहभी में नही क्षणक्षणविषे कालकरी लीन होताहे ॥ यह जडरूप हे सो में नही ॥ यह श्रवणरूपी जड हे सो में नही अरु शब्द सुणते हे सोशब्द शून्यतें उपज्या हे सोभी में नही ॥ अरु त्वचा इंद्रियभी में नही ॥ इसका क्षणक्षणविषे विनाश स्वभाव हे प्राप्त हुआ न हुआ यह इष्ट हे यह अनिष्ट हे यह आप जड हे इसके जानणेहारा चैतनतत्व हे चैतनके प्रमादं करी यह विषय उपलब्ध होतेहे ॥ तातें न में त्वचा इंद्रिय हों नस्पर्शविषय हे यह जडात्मक हे अरु यह जो चंचलरूपी जिव्हा इंद्रिय तुच्छ हे अल्प जल अणु जीसके अग्रविषे स्थित हे ॥ सो रसकों ग्रहण कर्ता हे ॥ उह रसभी आत्मसत्ता करीकें लब्धरूप होताहे ॥ आप जड हे तातें यह जडरूप जिव्हा अरु रस में नही ॥अरु यह जो दृश्यके दर्शनविषे लीन हे ॥ विनाशरूप नेत्र सो में नही अरु न् में इनका विषयरूप हों॥ यह जड है अरु यह जो नासिका पृथ्वीका अंश हे सो केवल आत्माके आधार हे अरु आप जडहे इसके जानणे हारा चैतन हे ॥ सो न में नासिका हों न गंध हो में अहं ममतें रहित हों ॥ मनके मननतें रहित शांतरूप हों ॥ अरु यह पंच इंद्रियां मेरेविषे नही में शुद्ध चैतनरूप हों ॥ कलना कलंकतें रहित हों में चित्ततें रहित चिन्मात्र हों ॥ सर्वका प्रकाशक सबके अंतर बाहिर व्यापकरूप हों ॥ निःसंकल्प निर्मल शांतरूप हों ॥आश्चर्यहे अब मुजकों अपना स्वरूप सुमरन आताहे ॥ प्रकाशरूप चैतन अनुभव अद्वैत मेरे अनुभव चैतन करीकें स्थित हों ॥ सूर्य घट पटादिक सब पदार्थमें प्रकाशताहे जेसें उत्तम तेज दिपक करी भासे तेसें चैतन अनुभव करी इंद्रियांकी वृत्ति स्फुरनरूप होतिहे ॥ जेसें तेज करी चिनगारे स्फुरनरूप होतेहे तेसें सर्वज्ञ अनुभव सत्ता करीकें मनकी मननरूप शक्ति फुरति हे ॥ जेसें सूर्यके तेजकरी मरूस्थल विषे मृग तृष्णाकी नदी फुर्तिहे तेसें अनुभव सत्ता करीके पदार्थों भासतेहे ॥ जेसें दिपकमें शुक्लादि रंग भासतेहे तेसें इह पदार्थोंविषे अहं आदिक पदार्थ भासतेहे ॥ जागृतवत सब पदार्थोंका प्रकाशकहे ॥ सबकों अनुभव करीकें भासताहे ॥ सबके अंतर आत्मभाव करिकें स्थित हों ॥ जेसें बीजविषे अंकुर स्थित होताहे तेसें चैतनरूप दीपकके प्रकाशकरी विकल्परूपी पदार्थोंकी शक्तिभासती हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उष्णरूप सूर्य हे अरु सीतलरूप चंद्रमा हे ॥ घनरूप पर्वतहे द्रवतारूप जल हे इस प्रकार अनुभव सत्तातें पदार्थ प्रगट होतेहे ॥ जेसें सूर्यके प्रकाशकरी घटपटादिक होतेहे ब्रह्मा विष्णु इंद्र इन सर्वके कारनरूप जगतविषे स्थित हे अरु इनका कारण अनुभव तत्व हे ॥ आदि अंततें रहित हे अरु सब कारणोंका कारण हे ॥ जेसें बरफतें सीतलता उपजती हे तेसें अनुभवतें जगत् उदय होताहे चित्त चैत्य दृश्य दर्शन कलनातें रहित सत्ता प्रकाशरूप आत्मा मेरा मुजकों नमस्कार हे ॥ इस विषे सर्व भूत उत्पत्ति स्थिति होकरी बहुरी लय होतेहे ॥ सो निर्विकल्प चैतन सर्वका आश्रयभूत आत्मा हे जो इस चित्तकरी अंतर कल्पितरूप होजाताहे ॥ सोइ होताहे ॥ आलातें रहित सत्यभी असत्य होजाताहे ॥ जो चैतन संवितविषे कल्पित रूप होताहे सो पदार्थ अपणे स्वरूपकों पाता हे ॥ जो यह ऐसें हे अरु जो चित्त संवित विषे कल्पितरूप नही होता सो सत्यभी असत्यरूप होजाताहे ॥ यह जो घटपटादि पदार्थके समूह भासता हे सो विस्तृतरूप चिदाकाश दर्पणविषे प्रतिबिंबित होताहे ॥ सो अनुभव सत्ता सर्वभूतोंका आदर्शरूप हे ॥ जीसका चित्त नष्ट होजाताहे तीन संत पुरुषोकों एसें दृढ भाव प्राप्त हे ॥ परम आकाशरूप आत्माविषे अभ्यासकरी तन्मय होजाताहे ॥ सो अनुभव सत्ता पदार्थोंके वृद्ध होणेकरी वृद्ध नही होती अरु नष्ट होणे करी नष्ट नही होती ॥ पदार्थोंके भाव अभावविषे सत्ता सामान्य ज्योंकी त्यौं हे ॥ जेसें सूर्यके प्रतिबिंबविषे घट सत्य होवे अथवा असत्य होवे ॥ सूर्य ज्योंकात्यौं हे ॥ संसाररूप नानाप्रकारकी विचित्र रचना हे सो अेसें आत्माविषे स्थित हे ॥ जेसें विचित्र गुच्छे संयुक्त वृच्छोंकी पंक्तिकी विचित्र रचना पर्वत उपर स्थित होतीहे ॥ तेसें संसाररूप दृश्य नाना प्रकारकी मंजरीकों धरणे हारा आत्मसत्ता वृच्छ हे जेते कछु भूतगण त्रिलोकी उदर विषे वर्तते हे सो आत्मा साथ अभिन्नरूप हे ब्रह्मातें आदितृण पर्यंत सर्वका प्रकाशक आत्मा हे सो अनुभवसत्ता आदि अंततें रहित हे ॥ सर्वरूप जीसका आकार हे स्थावर जंगम सर्व जगत्भूत जात अंतर अनुभवरूप स्थित हे सो एक अनुभव आत्मा में हौं दृष्टा दर्शन दृश्य सर्वरूप आत्मा में हो ॥ सहस्रनेत्र सहस्र हस्त मेरे हें ॥ में चिदाकासरूप हों ॥ सूर्यदेहकरी आकाशविषे वीचरता हौं ॥ पवन देहकरी में वहता हौं ॥ वायु वाहन पर आरूढ हों अरु मे विष्णुरूप शंख चक्र गदा पद्मके धारणहारा हों ॥ सर्व सौभाग्य देखणेहारा हों ॥ सर्व दैत्योंकों भगावता नाश कर्त्ता मेंही हौ ॥ में नाभिकमलतें उत्पन्न हुआ पद्मासनकरी निर्विकल्प समाधि स्थितरूप ब्रह्मा हौं ॥ अरु मन वृतिरूपकों प्राप्तभया ॥ मेंही त्रिनेत्र आकार लीयाहे ॥ गौरी मेरी अर्धांगना हे ॥ सृष्टिके अंगविषे सर्वकों संहार करता हौं ॥ जेसें कोउ अपणे अंगोंकों संकोच लेवे तेसें में संहार करता हौ त्रिलोकी रूपी मढी हे इंद्ररूप होकरी में तीसकी पालना करताहौं ॥ कर्मोंके अनुसार जेसा कोउ तप करे तेसा फल देताहौं ॥ तृण वल्लिविषे गुच्छे रस होकरी स्थित हों मेंही उत्पत्ति कर्ता हो मेंही चैतनरूप हो जगत आडंबर लीलाके निमित्त विस्ताररूप मेंही कीयाहे ॥ जेसें मृत्तिकाके खिलोने बालक रची लेताहे तेसें ॥ अरु मेरे विषे सर्व कर्म अर्पण करी सर्व शांतकों प्राप्त होतीहे ॥ मुजतें रहित कछु वस्तु नही सत्ता स्वरूप में आदर्श हौं सब पदार्थ मेरे विषे प्रतिबिंबित होताहे तब इह असत्यरूपभी सत्यताकों प्राप्तहोताहे ॥ तातें मुजते भिन्न कछु नही पुष्पोंविषे सुगंध में हौं पत्रोंविषे सुंदरताछवि में हौं ॥ पुरूषविषे अनुभव में हो स्थावर जंगमरूप जो जगत् दृष्ट आताहे सो सबमें हौं ॥ सब संकल्पतें रहित परम चैतन्य हौं ॥ अहं त्वं आदिकतें पर हौं ॥ जलविषे रसशक्ति में हौं ॥ अग्निविषे उष्णता बरफविषे सीतलता में हौं ॥ जेसें काष्टविषे अग्नि तेसें सर्वविषे स्थित हौं ॥ सब पदार्थोंविषे में परमात्मा व्यापक हों ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सबकों अपणी इच्छाकरी उपजाता हों ॥ जैसें दुधविषे घृत शक्ति जलविषे रसशक्ति सूर्यविषे प्रकाश शक्ति हे तेसें चैतन स्वरूप में सब पदार्थोंविषे स्थित हौं ॥ त्रिकालका जगत् सब मेरे विषे स्थित हे ॥ सो में चितके उपचार फुरनेतें रहित शुद्ध स्वरूप हौं॥ सर्वकों भरन पोषनहारा हौं मेंही वैराट राज होकरी स्थित भयाहौं॥ त्रिलोकीका राज मुजकों अपूर्व प्राप्त भया हे ॥ केसा राज हे शस्त्रों विनादेवके दलविना निरिच्छित विस्तृत राज प्राप्तिहे ॥ बडा आश्चर्यहे में बडा विस्तृत रूप हौं में अपणे आपविषे समाता नहीं ॥ जेसें कल्पांतरके वायु करी उछल्या समुद्र आपविषे नही समाता तेसें में अनंतरूप आत्मा अपणी इछाकरी आप प्रकाशताहौं ॥ जेसें क्षीर समुद्र अपणी उजलता करी शोभता हे तेसें मैं अपणे आपकरी सो भता हौं ॥ यह जगत्रूपी मटकी महा अल्परूप हे जेसे बीलविषे हस्ति नही समाता तेसें में अपणें आपविषे विस्तृतरूपकरी जगत्विषे नही समाता ॥ कोटि ब्रह्मांडविषे व्यापक हों ब्रह्मलोकतें पर जो तत्वोंका अंत आता हे तीसतेंभी पर में अनंतरूप हों ॥ यह में हों यह में नहो यह मेरेविषे नीर्बलता थी सो तुच्छरूप हे में तो आदि अंततें रहित चैतन आकाश हों मेरे विषे प्रच्छन्नता मिथ्या भासति थी ॥ में तुं यह उह आदिक मिथ्या भम हे ॥ देह क्या अरु पर क्या अपर क्या में तो सर्व व्यापक चैतन हों तत्व हों मेरे पितामह बडे नीच बुद्धि हीन थे ॥ जो एसे ऐश्वर्यकों त्याग करी तुच्छ ऐश्वर्यविषे खचित भए ॥कहां यह महा दृष्टि सर्वका कर्त्ता ब्रह्म वपु अरु कहां उह संसार भमका राज दुःखदायक अनित्यरूप सुखभो गा ॥ अनंत सुख परम उपशम स्वभाव शुद्ध चैतन दृष्टि अब मेरेविषे भइ हे ॥ सब भाव पदार्थोंविषे चैत्यतें रहित में चैतन आत्मा स्थित हों ॥ अब मुजकों नमस्कार हे मेरी जय हुइ हे ॥ जीर्णरूप संसार भमतें नीकस्याहों तातें जीत पाइ हे ॥ पावणेजोग आत्मपद पाया हे जीवित सार्थक भया हे ॥ एसा उत्तम सम राज जो चक्रवर्ती हे तीसवीषे नही रमता ॥ निरंतर बोधकों त्यागकरी दुःखरूपी काजोविषे रमते हे काष्ट जल मृत्तिका करी संयुक्त जो पृथ्वी हे तीसकोंपाइकरी जो भुलायमान भए हे तीनकों धिक्कार हे ॥ वह कीट हे यहद्र व्य ऐश्वर्य अविद्यारूप हे अरु अविद्याकरी उपजा हे अरु अविद्यारूप इसका बढणा हे ॥ इस विषे गुण क्या हे ॥ जीस निमित्त जतन करत हे इस जगतरूपी मढीविषे केतेक वर्ष विषे हिरण्यकश्यपु राजसुख भोगत भए ॥ परंतु उपशम जो शांति सुख हे तीनकों प्राप्त कछु न भये ॥ इसनें जगत् एकका राज कीया हे ॥ परंतु जो सो जगतोंका राजसुख होवे तोभी अनास्वाद हे ॥ वह जो समतारूप आत्मानंद हे सो नही प्राप्तहोता॥ जब तीस आत्मानंदके स्वादका जतन होवे तब प्राप्तहोवे अन्यथा नही होता ॥ जीस पुरुषकों बडे ऐश्वर्य इंद्रियोंके सुख प्राप्तभए हे अरु सम ता सुखतें रहित हे ॥ जब जानीए जो तीसकों कछु ऐश्वर्य सुख नही प्राप्त भया अरु जीनकों कछु ऐश्वर्य सुख नही प्राप्त भया अरु समता सुख संयुक्त हे तब उसकों सब कछु प्राप्त भया जानीए॥ यह परम अमृतकरी संपंन हे॥ अखंडित सुख जो आत्माहे तीस परम सुखकों प्राप्त भयाहे सो आनंदरूप हे॥ अरु जो अखंड पदकों त्यागकरी प्रच्छन्नताकों प्राप्त हे सो मूढ हे ॥ अरु जो पंडित ज्ञानवान हे सो प्रच्छन्नताविषे नही प्रीति करता ॥ जेसें उंट दुसरे पदार्थोंकों त्यागकरी कंटकोपास धावताहे ओर पशु नही जाता ॥ मूढ विना एसा कवन अज्ञा नी हे जो आत्मसुखकों त्यागकरी जलेहुए राजसुखविषे रमता हे॥ अमृतकों त्यागकरी कंटक नीमका पान करे॥ मेरे पितामह जो बडे थे सो सब मूढ भए॥ इस परम अमृत रूप दृष्टिकों त्यागकरी राज कंटकविषे प्रीतिवान भएहे॥ कहां फुल फलादिककरी संयुक्त नंदन बनकी भूमिका अरु कहां जले हुए मरुस्थलकी भूमिका॥ तेसें कहां यह बोध दृष्टि शांतरूप अरु क

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हां भोगोंविषे आत्मबुधि॥ तातें एसा पदार्थ त्रिलोकीविषे कोउ नही जीसकी में इछा करों॥ सबचैतन स्वरूप हे अनुभव कर्ता चैतन तत्व स्वच्छ समभाव निर्विकार हे सर्वदा सर्वविषे सर्व ओरतें स्थित हे॥ जेसें हे तेसा पाइता हे ज्ञानवानकों प्रत्यक्ष हे॥ सुर्यविषे प्रकाशशक्ति हे॥ चंद्रमाविषे अमृत स्रवणकी शक्ति हे ॥ ब्रह्माविषे महत्शक्ति इंद्रविषे त्रिलोकपालनकी शक्तिहे॥ सब ओरतें पूर्ण लक्ष्मीशक्ति विष्णुजीकी हे॥ शीघ्रमनकर्त्ता शक्ति मनकी हे ॥ बलवान शक्ति पवनविषे हे॥ दाहक शक्ति अग्निविषे हे॥ जलविषे रस शक्तिहे॥ अरु मौन करीकें महा तप की सिद्धता शक्तिअरु विद्या शक्तिबृहस्पतिविषे हे॥ देवताविषे विमानों परी आरुढ होकरी आकाशमार्ग गमन करनेकी शक्तिहे॥ पर्वतों विषे स्थिरता शक्ति ॥ वसंतऋतुविषे पुष्पशक्ति ॥ सर्व काल वीषे मेघोकी शांत शक्ति ॥ जक्षोंविषे ममत्वशक्ति ॥ आकाशविषे निर्लेपता शक्ति ॥ बरफविषे सीतलता शक्ति ॥ जेठ आषाढविषे तप्त शक्तिहे ॥ इत्यादीक देश काल क्रिया रूप नाना प्रकारके आकार विकार त्रिकालके उदरविषे स्थित हे ॥ सो सर्व शक्ति स्वच्छ निर्विकार चैतनकी हे ॥ कलनारूप कलंकतें रहित हे ॥ सो इस प्रकार हो भासताहे ॥ सोई आत्म तत्व सम पदार्थ जातिविषे व्यापक भयाहे ॥ जेसें सूर्यके प्रकाश सर्व उरतें समान उदय होताहे ॥ तेसें सर्व देश पदार्थोंका भंडार सर्वका आश्रय भूत हे ॥ त्रिकाल तिसविषे कल्पितरूप हौतेहे ॥ जेसा अनुभव तिसविषे होताहे तेसा तत्काल हो भासता हे ॥ जेसें जेसें चैतन तत्वविषे देशकाल क्रिया द्रव्यका फुरना होताहे ॥ तेसा तेसा भासताहे ॥ अरु आत्माविषे त्रिकालोंकी सम प्रतिभा फुरी हे ॥ तीसविषे बहुरी अनंत कालकी प्रतिभा हुईहे ॥ शुद्ध चैतन तत्वविषे सर्व उरतें पूर्णहे ॥ त्रिकालके समरणविषे द्रश्य संयुक्त भासता हे ॥ तो चैतन तत्व शेषरहता हे अरु इसकों त्रिकालका ज्ञान होताहे ॥ मधुर कटुक आदिक भिन भिन्नसों एक समता भासती हे जेसें मधुरता पान करने हारेजो जीव हे तीसकों मधुरता भासती हे अवरकों नही भासती॥ तेसें सर्व जो संकल्प कलना हे सबकों भोगता हे सूक्ष्म चैतन हे ॥ सत्तास्वरूप सर्व पदार्थोंका अधिष्ठान हे ॥ तीससाथ अनागत होकरी द्वैत जगत् भासताहे ॥ नाना प्रकारकी जो पदार्थ लक्ष्मीहे अत्यंत दुःखकों प्राप्त करती हे ॥ जब त्रिकालका अनुभव होताहे तब सबही सम भासताहे ॥ भाव पदार्थोंविषे जो पदार्थ हे सो ईश्वरका हे ॥ तीन भाव पदार्थोंकों त्यागकरी अभावकी भावना करणि तीसकरी दुःख सब नष्ट होजाते हे ॥ संतुष्टता प्राप्त होतीहे तातें त्रिकालकों मत देखहु यह बंधनरूप हे ॥ त्रिकालतें रहित जो चेतन तत्व हे तीसकों देखणेकरी विभाग कल्पना कालका अभाव होजाता हे ॥ एक सम आत्मा शेष रहता हे तीसकों वाणीवश करी नही सकती असत्यकी नांइं जो निरंतर स्थित हे तीसकी प्राप्ति होतीहे ॥ अनामय सिद्धांत हे जो शून्यवादीकी न्यांइ स्थित होताहे ॥ निष्किंचन आत्मा ब्रह्म होताहे ॥ अथवा सर्वरूप परम उपशमविषे लीन होताहे अरु जीसका अंतःकरण मलीन हे संकल्पकरीकें असम्यक्दर्शी हे तीसकों ज्योंकात्यौं नही भासता जगत् भासता हे ॥ अरु जीसकी इच्छा नष्ट भई हे परम पदका अभ्यास करते हे तीनकों आत्मतत्व भासताहे ॥ अरु जो कीसी जगत्के पदार्थकी वांछा करते हे कीसीकों त्याग कीया चाहतें हे ॥ हेयोपादेय फांसी साथ वांधेहे सो परम पद उपायके पावणेकों समर्थ नही होता जेसें पेटकरी वांध्या पंछी आकाश मार्गविषे उडणेकों समर्थ नही होता तेसें ॥ जो पुरुष संकल्प कलना संयुक्त हे सो मोहरूपी जालविषे गीरपडते हे ॥ जेसें नेत्रोंबिन गीर पडताहे तेसें संकल्प कलना जालकरी जीसकाचित्त वेष्टित हे सो वीषयरूपी गर्त्तविषे गीऱ्याहे॥ अच्युत पदवीकों प्राप्त नही होता अरु मेरे पितामह केतेक दिन पृथ्वीविषे फुरीफुरी लीन होगएहे सो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बालक नीच थे ॥ जेसें गर्त विषे मच्छर लीन होजाते हे तेसें अज्ञानकरी परम तत्वकों न जानत भये भोगोंकी वांछा जो दुःखरूप हे सो अज्ञानी करते हैं ॥ तीसतें भाव अभावरूप गर्त अंध कूपविषे नष्ट होते हे ॥ इच्छा अरु दोषकरी जो उठ्या हे सो राग दोष करी बंधमान भए हे जेसें पृथ्वीविषे कीट मग्न होते हे वह जीव तीनके तुल्य हे ॥ अरु मृगतृष्णारूप जगत्के पदार्थोंविषे ग्रहण त्यागकी बुद्धि जीनकी शांत भइ हे सो पुरुष जीते हे ॥ अवर सब नीच मृतकरूप हे ॥ निर्मल अविछिन्नरूप चैतन चंद्रमावत सीतलता कहां अरु उष्ण काल कलंक संयुक्त चित्तकी अवस्था कहां ॥ अब मेरे आत्माकों नमस्कार हे ॥ केसा आत्मा हे जो अविछिन्न प्रकाश हे ॥ प्रकाश अरु तम दोनोंका प्रकाशरूप हे ॥ हे चिदात्मा देव मुजकों तूं चिरकाल करी प्राप्तभया हे ॥ परमानंद भया जो विकल्परूपी समुद्रतें मेरा उद्धार कीया हे ॥ जो तुं हे सो में हो ओर में हों सो तुं हे तुजकों नमस्कार हे॥ अनंतशिव आत्मतत्व का चंद्रमा संकल्प विकल्प कलनाके नष्ट हुए सो निर्मल सदा उदित रूप हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे प्रल्हादोपदेशो नाम चतुस्त्रिंशतितमः सर्गः ॥ ॥ ३४ ॥

॥ प्रल्हादोवाच ॥ ओं जीसका नाम हे सो ब्रह्म में हों विकारतें रहित हों ॥ जो कछु जगत् हे सो सब आत्मस्वरूप हे ॥ सत्य असत्यतें अतीत हे ॥ चैतन स्वरूप हे सब जीवोंके अंतर हे सूर्यादिक प्रकाश दीप हे, अग्नि आदिककों उष्णकर्ता इही हे अरु चंद्रमाविषे सीत कर्ता अमृतका स्रवणा आत्मातेंही हे ॥ इंद्रियोंके भोगोंका भोक्ता अनुभवरूप यही हे ॥ राजाकी न्यांइं ठाढा हों तो में कबहु नही ठाढा ॥ बेठा होंतो में कबहु नही बेठा चलता हों तो कबहु नही चलता ॥ व्यवहार करता हों सदा शांतरूप हो ॥ कर्ता हों तो कीसीकरी ले पायमान नही होता त्रिकालोविषे समरूप हों ॥ सर्वदा सर्व अवस्थाविषे पदार्थोंके उपजणे विषे अरु मीटणेविषे सदा ज्योंकात्यों हों ॥ ब्रह्मातें आदि तृण पर्यंत सब जगत् आदत आत्मतत्व स्थित हे ॥ पवन जो स्पंदरूप हे तीसतेंभी में अतिसूक्ष्म स्पंदरूप हों ॥ पर्वत स्थान जो हे अचल पदार्थ तीनतेंभी में अचल हों ॥ आकाशतेंभी अति निर्लेप हों अरु मनकोंभी आत्मा चलाता हे जेसें पत्रोंकों पवन चलाता हे इंद्रियोंको आत्मा फेरता हे॥ जेसें घोडेकों सवार चलाताहे ॥ अरु समर्थ चक्रवर्ती राजाकी न्यांई भोग भोगता हों॥ अरु अपणे ऐश्वर्य करी आप सोभता हों ॥ संसार समुद्रविषे जरा मरणरूपी जल हे तीसकें पार करणेहारा आत्माहे सो सबतें सुलभ हे ॥ अपणे आपकरी जाणीता हे ॥ बांधवकी न्यांइं प्राप्त होताहे ॥ शरीररूपी कमलोंके छिद्र हे तीस सर्वोंका भंवरा हे ॥ खेंचे बुलाएबीना सुलभ प्राप्त होताहे ॥ अल्पभी इसकों बुलाता हे तब तीसी छीन बिषे सन्मुख होताहे ॥ इसविषे कोउ संशय विकल्प नही निष्कलंक परम संपदावान हे सदा स्वस्थरूप हे ॥ रसदायक पदार्थोंविषे जेसें रस स्वाद हे जेसें पुष्पविषे सुगंध हे जेसें तीलोंवेषें तेल हे तेसें देव परमात्मा देहोंविषे स्थित हे तोभी अविचारके वशतें जान्या नही जाता जेसें चिरकाल करी आया बांधव अपणे अप आनी स्थित होता हे तीसकों नही पीछानी सकता तेसें जब विचार उदे होताहे तब एसे आत्मा परमेश्वरकों जाणी लेता हे ॥ जेसें कीसी प्रीतम बांधवके पाएतें आनंद उदे होता हे तेसें आत्मा देवके साक्षात्कार हुए परम आनंद उदे होता हे ॥ सब बंधन नष्ट होजाता हे जेती कछु दुष्ट चेष्टा हे सो अभाव होजाती हे ॥ सब ओरतें बंधन फांसी टुट जाती हे ॥ सब शत्रु क्षय होजाते हे ॥ आशा बहुरी नही फुरति जेसें पर्वतकों चुवा तोडी नही सकता तेसें ॥एसें देवके देखेतें सब कछु देख्या होता हे अरु सुणेतें सब कछु सुन्या होता हे ॥ तीसके स्पर्श कीएतें सब जगत्का स्पर्श होता हे॥ इसकी स्थिति करी सर्व जगत् स्थित भा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सता हे ॥ यह जाग्रत हे सो संसारकी ओरतें सुपन हे ॥ तीसी जाग्रतकरी अज्ञान नष्ट होजाता हे ॥ जेती कछु आपदा हे तीसका कष्ट दुर होता हे ॥ आत्माके प्राप्त हुए आत्मामय होजाता हे ॥ सो विस्तृतरूप आत्मा दीपकवत साक्षीभूत होता हे ॥ जगत्की स्थितिविषे भोगोंतें राग उठा हे ॥ सब उरतें आत्मतत्व आपणां प्रकाश भासता हे ॥ अंतर शांतरूप सबकों अनुभव करनेहारे सब देहोंविषे में स्थित हों ॥ जेसें मिरचे विषे तीक्ष्णता स्थित हे तेसें सब जगत्के अंतर वाहिर व्यापी रहा हों ॥ जेते कछु जगत्के पदार्थ भासता हे सो सबविषे ईश्वररूप सत्ता सामान्य स्थित हे ॥ आकाशविषे शून्यतारूप वायुविषे स्पंदतारूप तेजविषे प्रकाश जलविषे रस पृथ्वीविषे कठोरता, चंद्रमाविषे सीतलता हे तेसें सब जगत् अनुस्यूत एक आत्म तत्वही व्याप्ती रहाहे ॥ जेसें बर्फविषे स्वेतता पुष्पोंविषे गंध होतीहे तेसें सब देहोंविषे आत्मा व्यापक हे ॥ जेसें सर्व गतकाल हे सर्व व्यापक आकाश हे तेसें सब जगत् आत्मा व्यापक हे ॥ जेसें राजाकी प्रभुता सबविषे होतीहे मुजतें भिन्न ओर कलना कोउ नही जेसें धुलीके कणके आकाशकों स्पर्श नही कर सकते अरु कमलोंकों जल स्पर्श नही करता ॥ जेसें पाषानकों स्फुरन भ्रम स्पर्श नही करता तेसें मेरे साथ कीसीका संबंध नही स्पर्श करता ॥ सुख दुःखका संबंध देहकों होता हे जो देह चिरकाल रहे अथवा अब ही नष्ट होवे तो मुजकों लाभ हानि कछु नही ॥ जेसें दिपककी प्रभा लोकविषे रज्जु साथ बांधी नही जाती ॥ तेसें आत्मा किसी साथ आछाद्या नही जाता॥ सब पदार्थों ग्रहणविषे अबंधरूपहे॥ जेसें आकाश किसी करी बांध्या नही जाता अरु मन किसी करी रोक्या नही जाता तेसें परमात्माकों देह इंद्रियका संबंध वास्तवतें नही होता ॥ जो शरीरसों टुकडे होजावे तोभी आत्माका नाश नही होता ॥ जेसें घट फुटेतें दुध आदिक पदार्थ नही रहता ॥ परंतु आकाश कहुं नही जाता ॥ ज्योंका त्यों रहताहे ॥ तेसें देहके नाशभ ए प्राणकला निकसी जातीहे ॥ आत्माका कछु नाश नही होता ॥ अरु पिसाचकी नांइ उदेहो करी भासताहे ॥ मनहे नाम जिसका ॥ तिस मनतें जगत भास्याहे ॥ तिसविषे जड शरीर के नाशकों निश्चय भयाहे॥ हमारा क्या नाश होताहे॥ दुःख सुखतें वासना जिसके मनतें नाश होतीहे॥सो भोगोते विदत्ती सुख संपन होताहे॥ ग्रहण कर्ते भोगते इंद्रिके अज्ञान करी मुढ दुःख पावतेहे ॥ तिस करी दुःख संकट पावतेहे ॥ यह वडा आश्चर्यहे ॥ आत्माके अज्ञान करी दुःख मूढ पावतेहे ॥ अब में आत्मतत्वकों देख्याहे ॥ तिस करी मेरा भ्रम शांत होगयाहे ॥ कछुभी किसी करी मुजकों क्षोभ नही ॥ न कछु भोगोंके ग्रहण करणेकी इच्छा हे, न त्यागकी वांछाहे ॥ जो जावे सो जावे, जो प्राप्त होवे सो होवे ॥ न मुजकों देहादिक सुखकी अपेच्छा हे न दुःखकी निवृत्तिकी अपेच्छा हे ॥ सुख दुःख आवे अरु जावे भें एकरस चिदानंद स्वरूप हों ॥ देहविषे वासना करणेतें नाना प्रकारकी वासना उपजती हे सो देह भ्रम मेरा नष्ट होगयाहे ॥ यह वासना नही फुरति ॥ एते काल पर्यंत मुजकों अज्ञानरूपी शत्रुनें नाश कियाथा अब में आपकों जान्याहे ॥ अब इसकों में चूर्ण करताहों ॥ इस शरीरूपी वृच्छविषे अहंकाररूपी पिशाच था सो में परम बोधरूपी मंत्र करी दुर कियाहे ॥ इस शरीररूपी वृच्छसों अग्यानरूपी पिशाच नष्ट भयाहे ॥ तातें पवित्र हुआ हों ॥ प्रफुल्लित वृच्छवत सोभता हों ॥ मोहरूपी दृष्टि मेरी शांत भइहे ॥ दुःख सब नष्ट भएहे विवेकरूपी धन मुजकों प्राप्त भयाहे ॥ अब में परम ईश्वररूप हो करी स्थित भया हों ॥ जो कछु जानणे जोग था सो जान्याहे अरु जो कछु देखणे जोग था सो देख्याहे ॥ में तिस पदकों प्राप्त भया हों जिसके पायेतें कछु पावणे जोग नही रहे ॥ आत्म तत्वकों देख्याहे अनेक रस विषय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूपी सर्प मुजकों त्याग गयाहे ॥ मोहरूपी कुहीड़ नष्ट होगइहे ॥ इच्छारूपी मृगतृष्णा शांत होगइहे ॥ राग दोषरूपी धुरीतें रहित सब ओरतें निर्मल भया हों ॥ उपशमरूपी वृच्छ करी सीतल भया हों ॥ सब ओरतें विस्तृतरूपकों प्राप्त भया हों ॥ सबतें उचित परमातम देव परमार्थकों उस तत्व करीकें परिणाम करीकें ज्ञान विचार करीकें पाया हों ॥ अब प्रगट देख्या हे ॥ अधोगतिका कारण जो अहंकार तिसकों दुरतें त्याग्याहे ॥ अपणा स्वभावरूप जो हे आत्म भगवान सनातन ब्रह्म सो अहंकारके वशतें विस्मरण भया था ॥ अब चिरकाल करीकें देख्याहे ॥ इंद्रियांरूपी गर्तविषे में गीऱ्या था राग दोषरूपी सर्प होंकरी दुःख पाया था अरु मृत्युकों प्राप्त भया था ॥ मृत्युकी भूमिकाटोएविषे तृष्णारूपी करजुएकी कुंजोविषे रहा ॥ कामरूपीकोयलके जहां शब्द होते थे ॥ जन्मरूपी कूपविषे दुःख पावता था ॥ सुखकों पावणेकी दिशाविषे डुबा ॥ वासनारूपी जालविषे फस्या ॥ दुःखरूपी दावाग्निविषे जल्या॥ आशारूपी फांसी साथ बांध्या हुआ केइ बार जन्म मरणकों प्राप्त भया था अहंकारके वश हुए जन्म मृत्युकों प्राप्त होताहे ॥ जेसें रात्रविषे पिशाच दिखाइ देवे अरु अधीरताकों प्राप्त करे ॥ तेसें मुजकों अहंकारनें किया था ॥ सो अब हे परमात्मरूप मुजकों तुमनें प्रेरणाकरी अपणी शक्ति विष्णुरूप धारी करी विवेक उपदेश कियाहे अरु जगायाहे ॥ हे देव ईश्वर तुमारे बोध करी अहंकाररूपी राक्षस नष्ट भयाहे ॥ हे विभु तिसकों में नही देखता ॥ जेसें दिप करी तम नही भासता तेसें ॥ अहंकाररूपी जक्ष था अरु मनविषे वासना थी सो सब नष्ट भयाहे ॥ अब में जाणता नही जो कहां गये ॥ जेसें दिपक निर्वाण होताहे तब नही जाणता जो प्रकाश कहां गया ॥ हे ईश्वर तुमारे दर्शन करी मेरा अहंभाव नष्ट भयाहे ॥ जेसें सूर्यके उदे हुए चोर भय मीट जाताहे तेसें देहरूपी रात्रविषे अहंकाररूपी पिसाच उठा था सो अब नष्ट भयाहे ॥ अब में परम स्वस्थ भया हों ॥ जेसें बानरोंतें रहित वृच्छ स्वस्थ होताहे तेसें में परम निर्वाणकों प्राप्त भया हों ॥ सम शांत बोधविषे में जाग्या हों ॥ चिर पर्यंत चोरोंतें अब छुटा हों अंतर मेरा सीतल भयाहे आशारूपी मृगतृष्णा शांत होगइहे, जेसें जलतें पर्वत की तप्तता मीटे अरु वर्षा करी सितलताकों प्राप्त होवे तेसें विवेकरूपी विचार करी अहंकाररूपी तप्तता दूर होगइहे ॥ अब मोह कहां अरु दुःख कहां ॥आशारूपी स्वर्ग कहां अरु नरक कहां ॥ बंध अरु मुक्त कहां ॥ अहंकारके होणे करी पदार्थ भासतेहे ॥ अहंकारके गये इसका अभाव होजाताहे॥ जेसें कंध उपर मूर्ति लिखी जातीहे आकाश उपर नही लिखी जाती॥ तेसें अहंकार संयुक्त जो चैतनहे सो नही सोभता ॥ सुख दुःखादिकका पात्र होताहे ॥ जेसें मलीन वस्त्रपर केसरका रंग नही सोभता तेसें उसविषे ज्ञान नहीं सोभता॥ जब अहंकाररूपी मेघका अभाव होवे तब तृष्णारूपी कुहीडभी नही रहती ॥ शरत्कालके आकाशवत स्वच्छ चित्त रहताहे ॥ निरहंकाररूपी जलहे जिसविषे एसा जो में आनंदमय सरोवर हों सो प्रसन्नतारूपी कमलों करी सोभताहे ॥ हे आत्मा तुजकों नमस्कार हे ॥ इंद्रियांरूपी जिसविषे तंदुए अरु चित्तरूपी वडवाग्नि हे ॥ दोनों जिसतें नष्ट भयेहे एसा आत्मारूपी समुद्रहे ॥ तिस मुज आत्माकों नमस्कारहे ॥ जिसतें दूर भयाहे अहंकार मेघ अरु शांत भइहे दावाग्नि एसा जो आत्मानंद रूपी पर्वतहे तिस आनंदके आश्रय में विश्राम पाया हों ॥ हे देव तुजकों नमस्कारहे प्रफुल्लितहे आनंदरूपी कमल जिसविषे अरु शांत भयेहे चित्तरूपी तरंग जिसतें ॥अेसा मान सरोवर में आत्मा हों तिसकों नमस्कारहे ॥ आत्मारूपी हंस संवितरूपी पंख जिसके अरु रिदेरूपी कमलों करी पूर्ण मान सरोवर पर विश्राम करन हारे तिसकों नमस्कारहे॥ कालरूपी कलनातें रहित निष्कलंक सदा उदितरूप सब ओरतें पूर्ण शांत आत्मा तुजकों नम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्कारहे ॥ सदा उदित सितल रिदेका तम दूर कर्ता सर्व व्यापक हों ॥ परंतु अज्ञान करी अदृष्ट भया था सो चैतन सूर्यकों नमस्कारहे ॥ मनके मन करी जो उपजे थे सो अब शांत भयेहे ॥ मनकों मन करी अहंकों अहंकरी छेदतें जो शेष रहे सो मेरी जयहे ॥ भावरूप जो दृश्य पदार्थहे तिनकों आत्म भाव करी छेदतें अरु तृष्णाकों अतृष्णा करी छेदतें अनात्माकों आत्म विचार करी नष्ट कियेतें ज्ञान करी ज्ञेयकों जाणेतें में अबकें निरहंकार पदकों प्राप्त भया हों ॥ भाव अभाव क्रिया नष्ट होगइहे ॥ में अब केवल स्वस्थित हों निर्भय निरहंकार निर्मन निस्पंद सुधात्मा हों ॥ मेरा शरीर जिवकी नांइ स्थितहे ॥ लीला करीकें मननें अहंकारकों जित्याहे ॥ परम उपशमकों प्राप्त भया हों ॥ परम शांति मुजकों प्राप्त भइहे, मोहरूपी वेताल शांत भयाहे अहंकाररूपी राक्षस नष्ट भयाहे ॥ वासनारूपी कुत्सित भूमिकातें मुक्त विगत ज्वर हुआ हों ॥ तृष्णारूपी जेवरी गंठी करी हुआ देह पिंजरा था तिसविषे अहंकाररूपी पंछी फस्या था सो तृष्णारूपी जेवरी विवेकरूपी कांतरसाथ काटीहे अब जान्या नही जाता जो शरीररूपी पिंजरते अहंकाररूपी पंछी कहां निकस गया ? अग्यानरूपी वृछविषे अहंकाररूपी पंछी रहता था तिसके जानणे करी जांन्या नही जाता जो कहां गया ? दुराशारूपी दुर्मतिनें धूसर किया था ॥ भोगरूपी भस्मनें शुद्ध दृष्टि दूर करी थी ॥ अरु वासना करी हंमप्रतक हो गयेथे ॥ एताकाल हम चित्तकी भूमिकाविषे मिथ्या अहंकारकों प्राप्त भयाथा ॥ अब में उपज्या हों अरु आजही मेरी बडी शोभा बढी हे अहंकाररूपी महा मेघ था सो नष्ट भयाहे तिस विषे तृष्णारूपी सामता थी सो नष्ट भईहे ॥ निर्मल आकाशवत सोभता हों ॥ अब में आत्मा भगवान देख्या हे अपणे स्वरूपकों प्राप्त भयाहों ॥ अनुभवरूप सदा प्राप्तहे प्रभुताके समूहके आगें अज्ञान अल्परूप हे ॥ केसाहे निस्पंदगति मननरूपी इच्छातें रहित निरिच्छित निरहंकार अरु दुरीदुरी भया हे रजनीरूपी राग जीसतें अरु विगतज्वर कौतुकतें रहित अरु शांत भयाहे मन जीसतें अरु महा आपदा दीर्घ दुःख देणेहारी क्षय भईहे जीसतें एसा अद्वैत महेश्वर चित्ततें रहित हे ॥ इतिश्री यो० उ०प्र० आत्मलाभचिंतनं नाम पंचत्रिंशतितमः सर्गः ॥ ३५ ॥

प्रल्हादोवाच ॥ हे महात्मा पुरुष तुजकों नमस्कार हे तुं आत्मा हे सर्वपदतें अतीत चिरकालतें मुजकों सरण आया हे ॥ कल्याण भया हे जो अब तुंजकों पाया ॥ हे भगवान तुम कों देखीकरी सब ओरतें नमस्कार करता हों ॥ अंतरतें तुमकों आलिंगन करोगा ॥ त्रिलोकीविषे तुजतें अन्य एसा बांधव कोउ नही ॥ तुं सबतें सुखदायक हे ॥ अरु सबका तुंही संहार करता हे ॥ सबकी रक्षाभी तुंही करता हे देणे लेणेहारा सबतुंही हे ॥ अब तुं क्या करेगा अरु कहां जावेगा ? ॥ अपणी सत्ताकरी विश्वकों पूर्न कीया हे ॥ अरु विश्वरूपभी उंही हे ॥ अब सब ओरतें तुजकों देखता हों ॥ तुंही नित्यरूप सर्वत्र हे तेरे अरु मेरेविषे अनेक जनमोका अंतर पडाथा अब कल्याण हुवा जो तुजकों देख्या हे ॥ तुं अत्यंत निकट हे अरु परम बांधवरूप हे ॥ तुजकों नमस्कार हे ॥ कृतकृत स्वरूप सबका कर्ता हर्ता हे संसार तेरी नृत्य हे ॥ नित्य निर्मल स्वरूप तुजकों नमस्कार हे ॥ शंख चक्र गदा पद्मके धारणे हारे तुजकों नमस्कार हे ॥ अर्ध चंद्रमाके धारणहारा सदा शिवरूप तुजकों नमस्कार हे ॥ सहस्रनेत्र इंद्र तुजकों नमस्कार हे ॥ पद्म जन्म ब्रह्मा सब देव विद्याका संबंध तुंही हे ॥ तेरे विषे भेद कछु नही तो तुमारे हमारेविषे भेद केसें होवे ॥ जेसें समुद्र अरु तरंगोंका संजोग अभेद हे तेसें तेरा अरु मेरा संजोग अभेद हे ॥ तुंही अनंत विचित्ररूप हे ॥ भाव अभावरूप जगत्के धरणे हारी नीति हे ॥ जगतकी मर्यादाकों करति हे ॥ हे द्रष्टा रूप तुजकों नमस्कार हे ॥ हे सर्वज्ञ सर्व स्वभावरूप आत्मा देव जन्म जन्म प्रती में बहुत दुःखमार्गविषे विचरा हो ॥ तेरी माया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करी चिरकाल दग्ध भया हों ॥ हे देवेश देश लोक में अंनत देखे हे ॥ द्रष्टांत दृष्टाभी अनेक देख्याहे ॥ परंतु कौसीकरी तृप्त नभया॥ जगतकों जीसी और देखों तीसी औरतें काष्ट पाषा
ण जलमृत्तिका आकाश द्रष्ट आताथा ॥ अब तुजविना कछु ओर द्रष्ट नही आता ॥ वांछा किसीकी करों॥ अब तुजकों देख्या हे॥ उपलब्ध स्वरूपकों प्राप्त भया हों तुजकों नमस्कार हे
नेत्रोकी शामताविषे जो पुतलीयांरूप स्थित हे अरु रूपकों देखता हे साक्षीभूत सो अंतर केसें नही देखता ॥ जो त्वचाविषे स्पर्श करता हे ॥ सीत उष्णादिककों जानता हे एसा सर्व
अंगोविषे व्यापक अनुभव कर्त्ता हे ॥ जेसें तिलोंविषेतेल व्यापक होता हे तीसकों अनुभव कोउ नही करता जो शब्द श्रवण इंद्रियके अंतर ग्रहण करता हे तीस शब्द शक्तिकों जो
जानणेहारी सत्ता हे जीसविषे शब्द शक्तिका विचार होता हे ॥ जीसकरी रोम खडे होइ आते हे सो सत्ता दूर केसें होवे॥ जो जीव्हाके अग्रविषे रस स्वादकों ग्रहण करता हे तीस रसका
अनुभव करनेहारी जो सत्ता हे सो दुर केसें होवे ॥ नासाविषे जो ग्रहण शक्ति हे ॥ जीसकें गंध आती हे तीसकों अनुभव करनेहारी अलेपसत्ता हे ॥ सो सन्मुख केसें न होवे ॥ वे
द वेदांत सम्र सिद्धांत पुरान गीता करी जो ज्ञेय जानणेजोग आत्मां हे तीसकों जब जान्या तब विश्राम केसें न होवे॥ परावर परमात्मा पुरुष हे, जीन भोगोंकी में तृष्णा करताथा सो भोग
रमणीय विद्यमान आनहोता हे तोभी तेरे दर्शनकरी रस नही देते ॥ हे स्वच्छरूप निर्मल प्रकाश तुं सूर्यभाव होकरी प्रगट भया हे ॥ अरु तेरी सत्ताकरी चंद्रमा सीतल भया हे ॥ तेरी स
त्ताकरी पृथ्वी स्थित हे॥ तेरीसत्ताकरी देवता आकाशमार्गमें विचरते हे॥ तेरी सत्ताकी करी आकासविषे आकाशभाव हे मेरी अहंता तेरेविषे तत्वकों प्राप्त भइ हे॥ तेरे अरु मेरे में भेद कछु
नही ॥ तेरेकों मेरेकों नमस्कार हे ॥ में सम स्वछ साक्षीरूप निर्विकार देश काल पदार्थके छेदतें रहित हों मन जब क्षोभकों प्राप्त होता हे तब इंद्रियांकी वृत्ति स्फुरण रूप होती हे ॥ प्रा
ण अपानशक्ति जब उल्लासकों प्राप्त होती हे तब देहरूपी जंत्र वहता हे ॥ केसा जंत्र हे चर्म अस्थि आदिक जीस साथ लकडीयां अरु जेवरी हे इद्रीयांरूपी घोडे हे ॥ मनरूपी सा
रथी चलावणेहारा हे तीस देहरूपी रथविषे में चैतनरूप स्थित हों ॥ परंतु में कीसीविषे आस्था नही करता ॥ देह रहे अथवा गीरे मुजकों इच्छा कछु नही ॥ में अब आत्मलाभकों प्राप्त
भया हों ॥ चिरकालतें उपशमकों प्राप्त भया हों ॥ जेसें कल्पके अंत विषे जगत् शांतिकों प्राप्त होता ॥ तेसें दीर्घ संसार मार्गविषे चिरकाल भमता भमता अब विश्राम पाया हों ॥
जेसें कल्पके अंतविषे वायु चलता चलता रही जाता हे ॥ हे सबरूप आत्मां तुजकों नमस्कार हे ॥ जो तुजकों अरु मुजकों इसप्रकार जांनते हे ॥ हे देव संपूर्न जगत्जाल जो विस्तृत
रूप हे तीसकों तुम कदाचित स्पर्श नही कीया ॥ तुमारी जय हे ॥ जेसें पुष्पोविषे गंध होती हे तिलोविषे तेल रहता हे तेसें तुम सब देहोविषे रहते हो ॥ तुं सर्व जगत्का प्रकाशक दीप
हे उत्पत्ति प्रलयकर्त्ता अरु सदा अकर्तारूप तेरी जय हे ॥ तेरे परमाणु चिदअणु हे तिनविषे यह विस्तारूप जगत् स्थित हे सो जेसें बट बीजविषे वृक्ष होताहे बहुरी अवरविषे
अवर होता हे ॥ तेसें चिदअणुविषे जगत् हे ॥ जेसें आकाशविषे एक बादरके अनेक आकार दृष्ट आतेहे तेसें चित्तकला फुरनेकरी अनेक पदार्थ भमरूप भासते हे ॥ इस संसारके जो
छीनभंगुर रूप पदार्थ हे तीनकी अभावनां कीएतें अब भाव अभावतें रहित भावकों देखता हों यह निश्चय भया हे ॥ मान मद क्रोध अरु कलुषता कठोरता आदिकविकारों विषे म
हापुरुष नही डुबते ॥ अरु प्रकृति नीच जन इन दोषो गुणोंविषे डुबते हे ॥ पूर्व जो मेरी महा दुरात्मा नीच अवस्था थी तीसकों सुमरन करीकें हसता हों॥ जो में कवन था अरु क्या जान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताथा हे मेरे आत्मा मे तीन पदकों प्राप्त भया था जाहां चिंतारूपी अग्निकी ज्वाला थी ॥ जांहां दग्ध हुए जीर्ण संसारके आरंभ थे ॥ अब देहरूपी नगरविषे स्फाररूप मनोरथकी जयहे अब दुःख ग्रहणकरी नही सकते ॥ जाहां दुष्ट इंद्रियांरूपी घोडे जातेथें अरु मनरूपी हस्तिजाता था सो अब भोगरूपी शत्रुकों चारो ओरतें भच्छन कीया हे ॥ अरु निष्कंटक राजा चक्रवर्ती भयाहों ॥ तुं पर म सूर्य हे परम आकाशविषे तेरा मार्ग हे ॥ उदे अस्ततें रहित तुं नित्य प्रकाशरूप हे ॥ सबके अंतर बाहिर तुं प्रकाशता हे ॥ अब भोगोकों लीलारूप देखता हों जेसेंकामी कामनीकों देखे परंतु इछा तें रहित होवे हे ॥ तेसें तुं ग्रहण करता हे ॥ नेत्ररूपी झरोंखेविषे बैठीकरी तुं रूपविषयकों ग्रहण करता हे ॥ अपणी शक्तीकरी इसी प्रकार सब इद्रियांविषे बहीरूप धारीकरी तुं शब्द स्पर्श रूप रस गंधविषयकों ग्रहण करता हे ॥ ब्रह्म कोटरविषे जो देश हें तीनविषे प्रान अपान शक्तिकरी तुंही विचरता हे ॥ आता हे जाता हे ॥ ब्रह्मपुरीविषे जाता हे छिनविषे बहुरी आता हे ॥ सब जगत् देहोंविषे तुं विचरता हे ॥ देहरूपी पुष्पोंविषे तुं सुगंध हे ॥ देहरूपी चंद्रमाविषे तुं अमृत हे देहरूपी वृच्छविषे तुं रस हे ॥ देहरूपी बर्फ विषे तुं सीतलता हे चिन्म य स्वरूप हे ॥ दुधविषे तुं घृत हे ॥ काष्टविषे तुं अग्नि हे ॥ उत्तम स्वादोंविषे तुं स्वाद हे तेजविषे तुं प्रकाश हे ॥ सर्व असर्व अर्थ कर्ता पूर्न तुंही हे ॥ सर्व जगत्का प्रकाशक तुंही हे ॥ वायुविषे स्पंद तुंही हे ॥ मनविषे मुदित तुंही हे ॥ बूद्धिरूप अग्निविषे तेज सिद्धता तुंही हे ॥ प्रकाशविषे तुं प्रकाश हे सब पदार्थोंकों सिद्ध कर्ता तुं दीपक हे ॥ लीन भएतें जान्या नही जा ता जो कहां गए ॥ केइ ओर ठोर जाय प्रकाशते हे ॥ जेते कछु संसारके विषे पदार्थ अरु अहंत्वं आदिक शब्द हे सो एसे हे जेसें सुवर्णबिषे भूषण होते हे सो अपणी लीलाके निमित्त कीएहे ॥ आपही तुं प्रसन्न होताहे जेसें मंदवायु करी खंड खंड हुए वादरके हस्ति आदिक आकार होभासता हे तेसें तुं भूतिक दृष्टि करीकें भिन्नभिन्न रूप भासता हे ॥ हे देव ब्रह्मांड रूपी मोती हे तीनविषे तु निरिच्छित व्यापक हे अरु भूतोंरूपी जो अन्न हे तीनका तुं खेत हे ॥ चैतनरूपी रसकरी बढावणेहारा हे ॥ अरु तुं अस्तकी नांइ स्थित हे ॥ अर्थ यह इंद्रियांके विषयतें रहित अव्यक्तरूप हे ॥ अरु सब पदार्थोंका प्रकाशक हे ॥ जो पदार्थ शोभा संयुक्त विद्यमान होता हे अरु तेरी अवस्था उसविषे नही होती तब उह अस्त होता हे ॥ जेसें सुंदर स्त्री भुषनोंसहित अंधेके आगें स्थित होवे तो वह अस्तभूत होती हे॥ तेसें विद्यमान पदार्थ होवे ॥ अरु तूं न कल्पे तो अस्त होजाता हे ॥जेसें दर्पणविषे मुखका प्रतिबिंब होता हे तिसकों देखीकरी अपणी सुंदरताविना प्रसन्न कोइ नही होता ॥ हे आत्मा तेरे संकल्प विनादेह त्रुटित हो जाती हे ॥ काष्ट लोष्टवत् होती हे जब पुर्यष्टक शरीरतें अदृष्ट होती हे तब सुख दुःख आ दिक क्रमनष्ट होजाता हे ॥ कीसीका ज्ञान नही होता ॥ जेसें तमविषे कोउ पदार्थ द्रष्ट नही आता ॥ तेरे देखणेंकरी सुख दुःख आदिक स्थित होते हे ॥ जेसें सूर्यकी द्रष्टी करी प्रातः काल शुक्लवर्ण करी प्रकाश आता हे ॥ जब अपणे स्वरूपकों प्राप्त होताहे तब अज्ञानरूप सब विकार नष्ट हो जाताहें ॥ जेसें प्रकाशकरी अंधकार नष्ट होताहे तब पदार्थ ज्योंका त्यों भासता हे तेसें अज्ञानके नष्ट भएतें आत्मा ज्योंकात्यों भासता हे ॥ यह जो मनरूप तुं हे तेरे उपजणे करी सुख दुःखकी लछमी उपज आतीहे ॥ तेरे अभाव हुएतें सर्व नष्ट हो जाताहे ॥ स्वरूप तें तुं अनामयरूप हे छीनभंगुर देहविषे जो मननें आस्था करी हे सो महा सूक्ष्म अणु निमेषके लक्षभाग जेसा सूक्ष्म हे सुख दुःखादिककी भावना करीकें अनी श्वरताकों प्राप्ती भया हे ॥ तेरे प्रमादकरी फुरनरूप होताहे अरु तेरे देखणेकरी सर्व लीन होजाताहे यह जो पुर्यष्टका तेरा रूप हे तीसके देखणे करी छीनविषे पदार्थ जात भासी आ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ते हे ॥ जेसें नेत्रोके खोलणे करी रूप भासी आता हे अरू अंतर्ध्यान मनके मरनेकरी सर्व नष्ट होजाताहे ॥ बहुरी कीसी करी ग्रहण नही होता ॥ जो वस्तु छीनभंगुर हे तीसतें कछु कार्य सिद्ध नही होता ॥ जेसें वीजलीके प्रकाशकरी कोउ कार्यसिद्ध नही होता तेसें अंतर्धान होणे करी देहतें कछु अर्थ सिद्धि नही होता ॥ जो उपजीकरी तत्काल नष्ट होजाता हे ॥ तीसतें कार्य क्या सिद्ध होवे ॥ देहादिक जड नाशवंत हे ॥ अरु जो सबकों प्रकाशताहे सदा निर्विकार सच्चिदानंदरूप हे ॥ सुख दुःख आदिक अज्ञानीके चित्तकों स्पर्श करताहे ॥ अरु जीसका समचित्त हे तीसकों स्पर्श नही करते ॥ हे देव यह जो सुख दुःख आदिक विवेकके आश्रय हे सो अविवेक नष्ट होगयाहे ॥ तुं निरीह निरंश निराकार हे ॥ सत असत्य तें परभैरवरूप परमात्मा तेरी सदा जय हे ॥ तुं सर्व शास्त्रोंका असिपद हे तुं जात अजातरूप सदा जय हे ॥ तेरे नाशरूपकी तेरे अविनाशरूपकी जय हे ॥ तेरे भावरूपकी तेरे अभाव रूपकी जय हे जीतणेजोग तेरी अजीतणे जोग तेरी जय हे ॥ माया हुलासकों प्राप्त हुआ हे अरु उपशांतिकों प्राप्त हुआहे तुजकों नमस्कार हे॥ हे निर्दोष तेरेविषे स्थित होणे करी मेरे राग दोष मीटी गए हे अब बंध कहां अरु मोक्ष कहां अरु आपदा कहां संपदा कहां भाव अभाव कहां सर्व विकार शांत भए हे सम समाधिविषे स्थित भया हों ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे प्रल्हादोपाख्याने संस्तवन नाम षट्त्रिंशतितमः सर्गः ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार चीतवी करी महा धैर्यवान प्रल्हाद निर्विकार निरानंद समाधिविषे स्थित भया ॥ जेसें मूर्तिका पर्वत होवे तेसें अपणे पदविषे स्थित भया ॥ जब बहुत काल अपणे गृहरूपी भुवनविषे सुमेरुवत् एसी समाधिविषे स्थित भया तब दैत ईश्वर तीसकों जगानेलगे परंतु प्रल्हाद न जाग्या ॥ जेसें समेविना बीज अंकुर नही लेता तेसें पंच सहस्रवर्ष समाधिविषे वितीत भए अरु शरीर उसी प्रकार पुष्ट रहा ॥ दैत्योंके नगरविषे शांति होगई ॥ परमानंद आत्माकों प्राप्त भया ॥ निरानंद जो प्रकाश हे सो प्रकाशमात्र रहीगया ॥ ओर कलना सब मीटिगई ॥ एता काल जब वितीत भया तब रसातल मंडलविषे राजभय दूर होगया ॥ छोटेकों बडा भच्छन करीलेवे ॥ हिरण्यकशिपु मृत्युभया तीसका पुत्र समाधिविषे स्थित भया ॥ अवर कोउ राजा न हुआ ॥ दैत मंडलीकी विपर्ययदशा भइ ॥ निर्बलकों बलवान मारी लुटीलेवे ॥ तब अनेक मल्ल मीली करी प्रल्हादकों जगाय रहे तोभी न जाग्या ॥ जेसें सूर्यमुखी कमलकों रात्रविषे भवरे गुंजारव करे तोभी प्रफुल्लित नही होता मुंदा रहताहे ॥ तेसें प्रल्हाद नजाग्या ॥ संवित कला जो चित धातु हे सो तीसके अंतर फुर्ति न भासे ॥ जेसें मूर्तिका लीख्या सूर्य प्रकाशतें रहित होताहे तेसें देखीकरी दैत्य उद्वेगवान भए ॥ जहां कीसीकों सुखदायक देश स्थान भास्या ॥ तहां जाई रहे ॥ पाताल मंडल कों राजतें हीन देखतें भए ॥ मरजादा सब दूर होगई मत्सर आयप्रवर्त्या ॥ जो बलवान होवे सो निर्बलकों ग्रास लेवे ॥ मर्जादाका क्रम नष्ट होगया ॥ अपणे अपणे वांछित देशकों चले जावे पुरुष स्त्रीयां रुदन करे सोकवान होवें केई मारे जावे केई लुटे जावे ॥ व्यर्थ अनर्थ कदर्थ करनेवाले होगए ॥ दैत्यता परायण हुए बांधव नष्ट होगए ॥ उपद्रव्य उत्पत्ति होणे लागे ॥ दिशाके मुख अग्निरूप होगए देवता आनी दीखाइ देवें ॥ दैत निर्बलकों बांधी लेजावे ॥ दैत मूल भूमितें रहित निर्लछमी उजाड जेसें होगए ॥ दैत्य पुरविषे अनीति अकांड उपद्रव आनी हुआ ॥ जेसें कल्पके अंतविषे जीव दुःख पातेहे तेसें दैत दुःख पावणे लगे ॥ इतिश्री यो० उ० प्र० दैत्य पुरी प्रभंजन वर्णनं नाम सप्तत्रिंशत्तमः सर्गः ॥ ३७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस प्रकार जब दैत्यपुरीकी दशा भइ तब संपूर्न जगत जालका क्रम पालने हारा जो विष्णु देवहे क्षीर समुद्रविषे शेष नागकी शय्यापर सैन करने हारा सो चतुर्मास वर्षाकालकी निद्रातें जाग्या ॥ बुद्धिके नेत्रों करी जगतकी मर्यादाकों विचारत भया ॥ तब देख्या जो पातालविषे प्रल्हाद दैत्य समाधिविषे पद्मासन बांधी करी स्थित भयाहे ॥ तब शंख चक्र गदा पद्म हस्तविषे धरणे हारा अरु सर्व देहोंविषे व्यापक हे एसा विष्णु देव पद्मासन बांधी करी विचार करत भया जो प्रल्हाद आत्मपदविषे स्थित हुआ पुत लीवत होगयाहे ॥ बडा कष्ट हे जो सृष्टि दैत्यतें रहित भइ ॥ तब देवता जितणेकी इच्छातें रहित हो करी आत्मपदविषे स्थित हों जावेंगे ॥ जब देवता दैत्योंका विरोध रहताहे तब जित णेके निमित्त जाचना करतेहे ॥ जो दैत्य नष्ट होवे तब सब देवता निर्द्वंद्वरूप होकरी परमपदकों प्राप्त होवेंगे ॥ जेसें रसतें रहित वल्ली सुकी जातीहे तेसें अभिमान इच्छातें रहित देवता जगतकी ओरतें सुकी करी आत्मपदकों प्राप्त होवेंगे ॥ जब देवताके समूह शांतिकों प्राप्त भये तब पृथ्वीविषे यज्ञ तप आदिक जो उत्तम क्रियाहे सो सब निष्फल हो जावेगी ॥ न कोउ करेगा न किसीकों प्राप्त होवेगा ॥ जब पृथ्वीलोकतें शुभ क्रिया नष्ट भइ तब लोकभी नष्ट हो जावेंगा ॥ अकांड प्रलय प्रसंग होवेगा ॥ सब मर्यादा क्रम जगतका नष्ट हो जावेगा ॥ जेसें धूप करी बर्फ नष्ट होताहे तेसें जगत क्रम सब नष्ट होवेगा ॥ इसकों नष्ट हुएभी मुजकों कछु नहि परंतु में अपणी लीला रचीहे सो सब नष्ट हो जावेगी ॥ तब मैंभी इस शरीरकों त्याग करी परम पदविषे स्थित होउंगा ॥ अकांडही जगत उपसमकों प्राप्त होवेगा ॥ तातें इसविषे कल्याण नही देखता ॥ जो दैत्योंके उद्वेगतें रहित देवताभी शांत हो जावेगा ॥ तप क्रि या नष्ट हो जावेगी ॥ जीव दुःखी होकरी नष्ट हो जावेगा ॥ में तातें जगत कर्मकों स्थापन करों जो परमेश्वरकी निति इसी प्रकारहे ॥ अब रसातलकों जाउ ॥ अरु जगतकी मर्यादा ज्योंकी त्यों स्थापन करों जो प्रल्हादतें इतर पातालका में राजा करों तो वह देवताका शत्रु होवेगा॥ तातें एसें न करों॥ प्रल्हादकी जो देह हे सो अंतका जन्महे परम पावन देहहे ॥ अरु कल्प पर्यंत रहेगी ॥ यह ईश्वरकी नितिहे सो ज्योंकी त्यों हे ॥ ताते में जाइ करी दैत्येंद्र प्रल्हादकों जगाउं जो जागी करी जीवन्मुक्त हुआ दैत्योंका राज करे ॥ जेसें मणि मलतें र हित प्रतिबिंबकों ग्रहण करतिहे तेसें प्रल्हादभी इच्छातें रहित हो करी प्रवर्तें ॥ इस प्रकार सृष्टि देवता दैत्यों संयुक्त रहेगी ॥ अरु परस्पर इनका द्वैध न होवेगा मेरी क्रीडा लीला इच्छा होवेगी ॥ यद्यपि सृष्टिका होणा न होणा मुजकों तुल्यहे ॥ तोभी कछु जो नितिहे सो जेसें स्थितहे तेसें ही रहे ॥ जो वस्तु भावविषे तुल्य होवे नाशविषे अरु स्थितविषे तिसका प्रयत्न करणा कुबुद्धिहे ॥ सो जेसें आकाशके हननका जतन करी ऐ तेसें हे ॥ तातें में पातालकों जाउ अरु प्रल्हादकों जगाउ ॥ जगतकी मरजादा स्थापन करों ॥ जो नितिहे तिसकों अपणी लीलाकरी प्रतिपादन करों ॥ दैत्यपुरीविषे प्राप्त हो करी तिसकों जगाउ अरु उसीकों अपणे प्रकृती आचारविषे जोडी आवों॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे भगवान चित्तविवेको नाम अष्टात्रिंशत्तमः सर्गः ॥ ३८ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस प्रकार चित्तविकारी सर्वात्मा जो विष्णु देवहे अपणे परिवार सहित क्षीर समुद्रतें चले ॥ जेसें मेघ घटा एकत्र होकरी चले तेसें आइकरी प्रल्हादके नगरकों प्राप्त भए ॥ केसा नगर हें मानों दुसरा इंद्र लोक हे ॥ मंदिरविषे प्रल्हादकों विष्णुजी देखत भया ॥ अरु जो निकट दैत्य थे सो विष्णुजीकों दूरतें देखीकरी भाजगए ॥ जेसें सूर्यतें उलुकादिक भाज जावही तब जो मुख्य दैत्य थे तिस साथ दैत्यपुरीविषे विष्णुजी प्रवेश करत भये ॥ जेसें तारा सं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

युक्त चंद्रमा आकाशविषे प्रवेश करताहे तेसें विष्णुजी गरुडपर आरूढ हुआ लछमी साथ चमर करती ओर ऋषी देव अनेक आत भये ॥ विष्णुजी प्रल्हादके यह आत भया ॥ अरु आतेही विष्णुजी कहत भये हे महात्मा पुरुष जाग जाग ॥ एसें कही करी पांचजन्य शंखकों बजावत भये ॥ महा शब्द भया बहुरी प्रल्हादके श्रवणों साथ लगाया ॥ केसा शब्दहे जो विष्णुजीके प्राणोंतें जिसका फुरणाहे ॥ जेसें प्रलयकालविषे एकठा मेघका शब्द होवे तेसें बडे शब्दकों सुणी करी दैत्य पृथ्वीपर गिर गिर पडे ॥ भयभीत होकरी अरु शनैः शनैः दैत्येंद्रकों जगाया ॥ जेसें कटकमंजरी मेघ करी प्रफुल्लित होतीहे तेसें विष्णुजीनें जगाया ॥ प्राण शक्ति जो ब्रह्मरंध्रविषे थी तहांतें विष्णुजीनें उठाइ ॥ तब शरीरविषे प्रवेश कर गइ ॥ जेसें सूर्यके उदे हुए सूर्यकी प्रभा बनविषे प्रबेश कर जातीहे तेसें नवद्वारोंविषे प्रवेश करत भइ ॥ तब प्राणरूपी दर्पणविषे चित्त संवित प्रतिबिंबित हो करी चैतन्य मुखत्व हुइ अरु मन भावकों प्राप्त भइ ॥ जेसें प्रातःकालविषे कमल खिली आतेहे तेसें नेत्र प्रफुल्लित हो आए ॥ प्रान अरु अपान नाडीविषे छिद्रोंके मार्ग विचरने लगे ॥ जेसें वायुकरी कमल स्फुरन लगते हे तेसें मन अरु प्राणशक्ति करकें अंग फुरने लगे ॥ अरु जागजाग शब्द जो भगवान कहतेथे तब जाग्या ॥ अरु जानत भया जो मुजकों विष्णु भगवाननें जगाया हे ॥ जेसें मेघका शब्द सुणीकरी मोर प्रसन्न होता हे तेसें प्रसन्न भया ॥ मन विषे दृढ स्मृति होआइ तब त्रिलोकीका इश्वर विष्णुदेव कहत भया ॥ जेसें पूर्व कमलोद्भव ब्रह्माकों कहाथा तेसें प्रल्हादकों कहत भया ॥ हे साधु तुं महालक्ष्मी अपणीकों सुमरन कर जो तुं कवन हे॥ समयविना देहके त्यागणेकी इच्छा काहेकों करीथी ॥ गृहण त्यागके संकल्पतें रहित पुरुष हे ॥ तीनकों भाव अभावके होणेविषे क्या प्रयोजन हे ॥ उठीकरी अपणे आचारविषे सावधान होहु ॥ यह तेरा शरीर कल्पपर्यंत रहेंगा नष्ट नही होवेगा यह नीतिकों ज्योंकीत्यों जानते हे ॥ हे आनंदित तुं जीवन्मुक्त हुआ राजविषे स्थित होहु ॥ क्षीणमन गतउद्वेग कल्पपर्यंत तेरा देह रहेगा ॥ बहुरी कल्पके अंतविषे तुं शरीर त्यागेगा ॥ त्यागकरी अपणी महिमाविषे स्थित होवेगा ॥ जेसें घटके फुटेतें घटाकाश महाकाशकों प्राप्त होता हे ॥ अब तुं निर्मल दृष्टिकों प्राप्तभया हे ॥ अरु लोकोंका तुजनें परावर देख्या हे ॥ अब तुं जीवन्मुक्त विलासी भया हे ॥ हे साधु द्वादश सूर्य तो उदे नही भए हे ॥ जो प्रलयकालविषे तपते हे ॥ अब तुं क्यों शरीर त्यागता हे ॥ उन्मत्त पवन तो चल्या नही जो त्रिलोकीकी भस्मकों उडावनेहारा हे ॥ अरु देवताके विमान तीनकेरी गीरे नही ॥ तुं क्यों व्यर्थ शरीरकों त्यागता हे ॥ सब लोकोंके शरीर सुके वृच्छकी मंजरिवत् नही सुके ॥ पुष्कर मेघ अरु उह बीजली फुरने लगीनही ॥ जगत्विषे तुं क्यों व्यर्थ शरीर त्यागता हे ॥ पर्वत तो जुद्धकरी परस्पर टहकणे लागेनही ॥ अबलग में भुतोंकों खेंचणे लगा नही अब लोकोंविषे विचरताहों यह अर्थ हे यह में हों यह पर्वत हे यह भूत प्राणी हे ॥ यह जगत् हे यह आकाश हे ॥ तुं देहकों मत त्याग देहकों धारे रहो ॥ हे साधो जो जीव अज्ञान योगकरी शिथिल भया हे अर्थ यह जो देहविषे आत्म अभिमान हे जो में अरु मम तीसकरी व्याकुल रहता हे ॥ दुःखोंकरी जीर्ण होता हे ॥ तीसकों मरणा सोभता हे ॥ जो में कृश हों दुःखी मूढ हों ॥ अनात्मा अभिमानका दृढ निश्चय हे ॥ यह भावना जीसके अंतर हे तीसकों मरण श्रेष्ठ हे ॥ जीसकों तृष्णा जलावती हे ॥ रिदेविषे संसार भावना जीर्ण करती हे ॥ जेसें पुरातन महकों चुवा जीर्ण करता हे जीसके मनरूपी बनविषे चित्तरूपी लता जो दुःख सुखरूपी पुष्पोंकरी प्रफुल्लित हे अरु उदे होतीहे ॥ तीसकों मरण श्रेष्ठ हे ॥ जो पुरुष अपणे देहविषे आधि व्याधि दुःखोंकरी जलता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे अरु काम क्रोधरूपी सर्प जीसके अंतर फुरते हे ॥ देहरूपी सुका वृच्छ निष्फल हे अरु चित्त चंचल हे यह देह त्यागणेकों लोकविषे मरणा कहते हे ॥ स्वरूपकरी नाश कीसीका न ही होता ॥ ज्ञानीका क्या अज्ञानीका क्या ? ॥ हे साधु जीसकी बुद्धि आत्मतत्वके अवलोकनतें उपरांत नही होती एसा जो यथार्थदर्शी ज्ञानवान हे जीसका अंतर सीतल रागद्वेषतें रहित हुआ हे अरु दृश्य वर्गकों साक्षीभूत हो करी देखताहे तिसका जीणा श्रेष्ठहे ॥ जो पुरुष सम्यक् ज्ञान करी हेयोपादेयतें रहितहे ॥ चैतन तत्वविषे तद्रूप चित्त भयाहे अरु संकल्प मलतें रहित चित्तकों आत्मपदविषे जोड्याहे॥जिस पुरुषकों जगतके पदार्थ इष्ट अनिष्ट समान भासतेहे शांत चित्त हुआ लीलावत जगतके कार्यकों करताहे एसा जो वासनातें रहित पुरुषहे॥ अरु इष्ट अनिष्टकी प्राप्तिविषे राग द्वेष नही करता अरु ग्रहण त्यागकी बुद्धि उदय नही होती अरु जिसके श्रवणकीये अरु दर्शन कियेतें ओरोंकों आनंद उपजताहे तिसका जीवना सोभताहे ॥ जिसके उदय हुएतें जीवोंके रिदे कलस प्रफुल्लित होताहे तिसका चिरजीवणा प्रकाशवान सोभताहे ॥ उह पूर्णमासीके चंद्रमावत सफल प्रकाशता हे ॥ ओर नीच नही सोभते ॥ इतिश्री योगवासिष्ठ उपशमप्रकरणे प्रल्हादोपाख्याने नारायणवनोपन्यासयोगोनाम एकोनचत्वारिंशतितमःसर्गः ॥ ३९ ॥ ॥ ७ ॥

श्रीभगवानोवाच ॥ हे साधो यह जो देहसंग दृष्ट आती हे तीसका नाम जीणाकहते हे अरु इस देहका त्यागकरी अवर देहविषे प्राप्त होणा तीसका नाम मरणा कहते हे॥ हे बुद्धीवान इन दोनों पक्षोतें अब तुं मुक्त हे॥तुजकों मरणा क्या अरु जीना क्या दोनों भ्रममात्र हे॥ इस अर्थके दिखावणे निमित्त में तुजकों मरणा अरु जीवणा कहा हे॥जो गुणवानोंका जीणां श्रेष्ठ हे अरु मुढोंका मरणा श्रेष्ठ हे ॥ अरु तुं न जीता हे न मरेगा ॥ देहके होतेभी तुं विदेह हे ॥ आकाशकी न्यांइ अंग हे जेसें आकाशविषे वायु नित्य चलता हे ॥ परंतु आकश तीसतें निर्लेप रहता हे तेसें तुं देहविषे निर्लेप रहेगा ॥ देह इंद्रियां मन आदिककी क्रिया सब तुजकरी होती हे ॥ सबका कर्त्ता सत्ता देणेहारा तुंही हे अरु स्वरुपकरी सदा अकर्ता हे ॥ जेसें वृच्छकी उंचाइका कारन आकाश हे तेसें तेरेविषे कर्तव्य हे ॥ तुं अब जाग्या हे वस्तुकों ज्योंकीत्यों जानी हे ॥ तुं अस्ति नास्ति सर्वका आत्मा हे ॥ यह प्रच्छन्नरूप जो देह हे सो अग्यानीका निश्चय हे ॥ यह केवल दुःखोंका कारण हे ॥ अरु तुं सर्वप्रकार सर्वात्मा चैतन प्रकाश हे ॥ तेरी बुद्धि आत्मपरायण हे ॥ तुजकों देह अदेह क्या ग्रहण क्या अरु त्यागक्या तत्वदर्शी जो पुरुष हे तीनका भाव पदार्थ उदे होवे अथवा लीन होवे ॥ प्रलयकालका पवन चले तोभी चलाय नही सकता ॥ भावआभावतें जीसका मन रहित हे जो पर्वत उपर पर्वत पेड अरु चूर्न होवे अरु कल्पके अग्निविषे जलणे लागे तोभी ज्ञानवान अपणे आपविषे स्थित हे ॥ चलायमान नही होता॥ सब भूत स्थित होवे अथवा एकठे नष्ट होजावे अथवा वृद्ध होवे उह सदा अपणे आपविषे स्थित हे॥ अरु इस देहके नष्ट भए नाश नही होता॥ विरोधी हुए नहि प्राप्त होता॥ इस देहविषे जो स्थित परमेश्वर आत्मा हे सो में हों॥ अरु अनात्मा भ्रम नष्ट होगया हे॥ ग्रहण त्याग यह मिथ्या कल्पना उदे नही होती ॥ जो विवेकी तत्ववेत्ता हे ॥ तीसका संकल्प भ्रम नष्ट होजाता हे ॥ जो यह में हों यह करोगा ॥ यह त्याग कीया हे यह ग्रहण कीया हे इत्यादिक भ्रम नष्ट होजाताहे ॥ जो प्रबुद्ध पुरुष हे ॥ सो सब क्रिया करताभी अकर्ता पदकों प्राप्त होताहे ॥ सर्व अर्थोंविषे अकर्ता अभोक्ता रहता हे ॥ कीसी जगतके पदार्थकी इच्छा नही करता ॥ जब कतृत्व भोक्तृत्व शांत भया तब आत्मपद सेष रहताहे यह निश्चय करी दृढताकों बुद्धिवान मुक्त कहते हे ॥ प्रबुद्ध पुरुष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो हे सो चिन्मात्र स्वरूप हे ॥ सर्वकों अपणे वस करिकें स्थित हे ॥ ग्रहण कीसका करे त्याग कीसका करे ॥ ग्राह्य अरु ग्राहक शब्दभाव अविद्या हे ॥ देह इंद्रियांकरी होता हे ॥ सो ग्रहण करणा क्या अरु त्याग करणा क्या जब ग्राह्य ग्राहकभाव रिदेतें दुर हुवा ॥ इसीका नाम मुक्त हे तीसकों एसी स्थिति आनी उदे होतीहे जो परमार्थ सत्ताविषे सदा स्थित रहता हे सो पुरुषोविषे पुरुषोत्तम सुषुप्तीकी नांइं स्थित हे ॥ उसके अंगोंकी चेष्टा करता बोधकों प्राप्त भई हे परम विश्रांतिवान निर्वासनिक पुरुषोकी वासनाभी जगत्विषे स्थित दृष्ट आती हे अर्ध सुषुप्तिकी नांई चेष्टा करता हे ॥ सब जगतविषे आत्मा देखता हे ॥ आत्माविषयिणि बुद्धि करी सुखविषे हर्षवांन नही होता दुःखविषे शोकवान नही होता ॥ एकरस आत्मपदविषे स्थित रहता हे नित्य प्रबुद्ध पुरुष कार्यभावकों ग्रहण करता हे ॥ जेसें इछातें रहित दर्पण प्रतिबिंबकों ग्रहण करता हे तेसें भली बुरी भावना तीसकों स्पर्श नही करति ॥ तीनकों आत्मपदविषे जाग्रत हे अरु संसारकी ओरतें सोएहे सो पुरुष सुषुप्तिरूप हे॥ जेसें बालक पालनेविषे सोया हुआ स्वभाविक अंगकों हलाता हे॥ तेसें उनका रिदा सुषुप्तिरूप हे ॥ अरु व्यवहार करते हे ॥ हे पुत्र! तुं अजात परम पदकों प्राप्त भया हे ॥ गुणवान हुआ तुं एक दिन ब्रह्माका इस देहकों भोगेगा इस राज लछमीकों भोगीकरी बहुरी अच्युत परम पदकों प्राप्त होवेगा ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे प्रल्हाद बोधो नाम चत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जगत्रूपी रत्नोंका डबा, अद्भुत दर्शन हे जीसका, सो विष्णु देवनें सीतल बाणी करी जब इस प्रकार कहा तब प्रल्हाद नेत्रों खोली करी धैर्य सहित कोमल वचन मननभावकों ग्रहण करी देख्या हे अरु चर्मदृष्टि करी बाह्य देख्या हे बडा कल्याण हुआ हे परमेश्वर अपणा आप स्वरूप अनंत आत्मा हे सर्व संकल्पतें रहित आकाशवत निर्मल हे अब मुजकों न शोक हे न मोह हे न वैराग करी देह त्यागकी चिंता हे ॥ जो कछु कार्य भयदायक होताहे सो एक आत्माके विद्यमान सोक कहां अरु नास कहां ? देहरूप संसार कहां संसारकी स्थिति कहां अरु भय कहां ? अरु अभयता कहां ? मैं यथा इच्छित अपणे आपकरी आपविषे स्थित हों ॥ इस प्रकार में निर्मल सब विस्तृतरूप केवल पावन विषे स्थित हों ॥ संसार बंधनकों त्याग करी विरक्त भयाहों ॥ जो अप्रबुध मूढ हे तीनकी बुद्धिविषे हर्ष शोक चिंता विकार सदा रहता हे ॥ अरु देहके भावविषे सुख मानताहे अभावबिषे दुःखी होताहे ॥ यह चिंतारूपी विषकी पंक्ति मूढोंकों लेपायमान होती हे यह इष्ट हे यह अनिष्ट हे यह ग्रहण करणे जोग हे यह त्यागणे जोग हे इस प्रकार मूर्खोंके चित्त की अवस्था डोलायमान होती हे पंडितोंकी नही होती मैं भिन्न हों उह भिन्न हे यह अज्ञान करीकें अंध वासना हे शुद्ध बुद्धिके विद्यमान नही रहती ॥ जेसें सूर्यकी कीर्णोतें रात्र दूर रहती हे तेसें यह वासना दुर रहती हे ॥ यह त्याग करीए यह ग्रहण करीए सो मिथ्या चित्तका भ्रम हे ॥ सो उन्मत्त अज्ञानीके अंतर होता हे ॥ ज्ञानवानके अंतर यह भ्रम उदे नही होता ॥ हे कमलनेन जो सर्व तुंही हे विस्तृत आत्मरूपहे ॥ हेयोपादेय द्वैत भाव कल्पना कहांहे ॥ यह संपूर्ण जगतविज्ञान रूप सत्ताका आभास हे ॥ सत्य असत्यरूप जगत्विषे ग्रहण त्याग कीसीका करीए ॥ केवल अपणे स्वभावकरी द्रष्टा अरु दृश्यका विचार कीया हे॥ तीसविषे मैं प्रथम क्षीण विश्रांतिवान हुआथा॥ अब भाव अभाव जगत्के पदार्थों तें मुक्त भया हों ॥ हेयोपादेयतें रहित आत्मतत्व मुजकों भासताहे समभावकों प्राप्त भया हों अब मुजकों संशय कछु नही रहा॥ जो कछु करता हों सो आत्मा करी करता हों ॥ त्रिलोकीविषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब लग तुं पूजणे जोग हे जबलग यह उन्मत्त नही भया॥ तातें पूजन करताहों आदर संयुक्त तुम ग्रहण करो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी इसप्रकार दैत्य राजकही करी क्षीरसमुद्रविषे शयन करने हारे विष्णुकों श्रेष्ठ सुमेरुकी मणीसों पुजत भया ॥ बहुरी शंख चक्र गदा पद्म आदिक शस्त्रका पूजन करत भया॥ बहुरी गरुडकी पुजा करत भया॥ बहुरी देवता विद्याधरका पुजा करी ॥ इस प्रकार भगवानकों परिकार संयुक्त पूजत भया॥ अंतर आत्मस्वरूपकी अरु बाहिर विष्णु देवकी मूर्तिका पूजन कीया॥ तब लक्ष्मीपति कहत भए ॥ ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ हे दैत्येश्वर तुं ऊठी करी सिंहासन पर बेठ ॥ में तुजकों अपणे हस्तसों अभिषेक करताहों ॥ पांचजन्य शंख बजावता हों ॥ तीसका शब्द सुणीकरी सब सिद्ध देवता आयकरी तेरा मंगल करेंगे ॥वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी ! इस प्रकार कही करी विष्णुजीनें दैत्यकों सिंहासनपर बेठाया॥जेसें सुमेरुपर मेघ आय बेठे तेसें बेठाईकरी क्षीर समुद्रादिकका अरु गंगादिकका तीर्थोंका जल मगाया॥ बहुरी पांचजन्य शंख बजाया तीसके शब्दकरी सब सिद्धगण ऋषि ब्राह्मण विद्याधर देवता मुनीके समूह आए॥ सर्वात्म पुरुष दैत्यराजके निमित्त सबकों खेंची लेआये पवन गण देवगण सब स्तुति करत भए प्रल्हादकों इस प्रकार अभीषेक देकरी मधुसुदन कहत भया॥ ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ हे निष्पाप जब लग सुमेरुके धरणे हारी पृथ्वी हे अरु सूर्य चंद्रमा का मंडल हे तबलग तुं अखंडित गुणवान राजकरी इष्ट अनिष्टविषे समबुद्धि वीतराग क्रोधतें रहित होईकरी भोग अरु राजकी पालना करियो ॥ तुजकों पुर्न भूमिका प्राप्त भइ हे तिसविषे स्थित हुए जो राजगणोंका प्रवाह जेसें प्राप्त होवे तेसें हर्ष शोकतें रहित होकरी विचरो ॥ स्वर्ग प्राप्त होवे अथवा नरक प्राप्त होवे ॥ तुं उद्वेगतें रहित होकरी भोगडु देशकाल क्रिया कार्य जेसें प्राप्त होवे तेसें होवे तेसेंही स्थित होऊ हेयोपादेयतें रहित हुआ तुं बंधमांन न होवेगा ॥ संसारकी स्थिति तुजनें सब देखी हे अरु सबकों जानता हे ॥ अवर में तुजकों क्या उपदेश करों ॥ तुं राग दोषतें रहित होकरी राज भोग अब दैत्योका रुधिर धरनीपर न पडेगा॥ अर्थ यह जो देवतासाथ विरोध न होवेगा॥ आजतें लेकरी देवता अरु दैत्योंका संग्राम गया जेसें मंदराचलतें रहित क्षीर समुद्र शांतिवान भया तेसें सब जगत् स्वस्थ रहेगा मोहरूपी जो तम हे सो तेरे रिदेतें दूरी भया हे सदा प्रकाश स्वरूपकी लक्ष्मी हुइ हे अनंत विलासकों राज लक्ष्मीकरी भोगता आत्मपदविषे स्थित रहे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे प्रल्हादाभिषेको नाम एकचत्वारिंशत्तमः सर्गः॥ ४१ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार कही करी पुंडरीकाक्ष विष्णुपरिवार संयुक्त चले ॥ मानों दुसरी संसारकी रचना दैत्य मंदिरतें चलीहे ॥ ता पाछें प्रल्हादनें पुष्पांजली दीनी ॥ क्रम करीकें क्षीर समुद्रकों प्राप्त भए ॥ देवताकों विदा करीकें आप शेषनागके आसन परी स्थित भए ॥ जेसें स्वेत कमलपर भंवरा बेठे तेसें बेठी करी इंद्रकों सब देवता संयुक्त सब विषे स्थित कीए ॥ अरु पाताललोकविषे दैत्येश्वरकों बेठाया ॥ तब आप विगतज्वर हुवा जो सृष्टिके स्थिति विषे जो चिंतना थी सो दूर होगई ॥ देवता अरु दैत्यका विरोध रहता था सो नष्ट भया सब शांतिकों प्राप्त भये ॥ हे रामजी यह द्रष्टि संपूर्न मल अज्ञानके नाश करणेहारीहे ॥ जो प्रल्हादके बोधकी प्राप्तिकी अवस्था में तुजकों कहीहे सो केसी अवस्था हे चंद्रमाके मंडलवत् सीतल हे ॥ जो मनुष लोकविषे बडा पापीहोवे अरु ईसकों वीचारे तब उहभी शीघ्रही परम पदकों प्राप्त होवे ॥ अवर जो पापोंतें रहित हे तीसकी क्या वार्ता कही ए ॥ सम्यकविचार करीकें पाप नष्ट होजाताहे ॥ जो इन वाक्योंके विचार करी सो कबनहे जो परम पदकों प्राप्त न होवे ॥ हे रामजी अज्ञानरूप जो पापहे सो इसके विचारणे क

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

री नष्ट हो जाताहे ॥ पापोंका कारण जो अज्ञानहे तिसका नाश करणे हारा यह विचारहे ॥ तातें विचारका त्याग कदाचित न करो ॥ यह जो प्रल्हादकी सिद्धता कहीहे इसकों जो म नुष विचारे तिसके अनेक जन्मोंके पाप नष्ट होजावे ॥ इसविषे संशय कछु नही ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन! प्रल्हादका मन तो परमपदविषे प्रणमी गया था ॥ पांचजन्य शब्द करीकें तिसकों केसें जगाया? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे निष्पाप रामजी! लोकविषे मुक्ति दो प्रकारकीहे एक सदेह अरु एक विदेह॥तिनका भिन्न भिन्न विभाग सुण ॥ जिस पुरुषकी बुद्धि देहादि कोतें असंशक्तिहे ग्रहण त्यागकी जिसकेविषे इषणा नही ॥ निरहंकार हुआ चेष्टा करताहे तिसकों तुं सदेह मुक्ति जाण ॥ अरु देहादिक सब नष्ट होजावे बहुरी जन्मकों धरे नही तिस कों विदेह मुक्ति जाण ॥ तिस पदकों प्राप्त होताहे जो अदृश्यरूपहे अरु अज्ञानीकी वासना कच्चे बिजकी नांइहे ॥ जन्मरूपी अंकुरकों प्राप्त करतिहे ॥ अरु ज्ञानवान मुक्तकी वासना भु ने बिजकी नांइ जन्मरूपी अंकुरतें रहित होतीहे ॥ अरु विदेहमुक्तकी वासनाका अंकुर दृष्ट नही आता ॥ जीवनमुक्त पुरुषके रिदेविषे शुद्ध वासना होतीहे ॥ पावनरूप परम उदारता स त्तामात्र नित्य आत्मध्यानमें हे ॥ अरु संसारकी ओरतें सुषुप्तकी नांइ शांतरूपहे ॥ सहस्र वर्षका अंत होजावे अरु सुद्ध वासनाका बीज रिदेविषे होवे तो उह पुरुष समाधितें जागेगा सो जीवनमुक्त हे ॥ तातें प्रल्हादके अंतर शुद्ध वासना थी तिस करी पांचजन्य शंखके शब्दसों जागी आया ॥ अरु विष्णु सब भूतोंका आत्माहे जेसें तिसकी इच्छा फुरतीहे तेसेंही तत् काल होताहे सर्वज्ञ सबका कारनहे ॥ जब विष्णु चिंतना करे तब प्रल्हाद जाग्या आप अकारणहे ॥ कोउ इसका कारण नही यह सब भूतोंका कारनहे ॥ सृष्टिकी स्थिति निमित्त आ त्मा पुरुषनें यह विष्णु वपु धार्याहे ॥ आत्माके देखणे करी माधव विष्णुका दर्शन होताहे ॥ अरु विष्णुकी आराधना करी शीघ्रही आत्माका दर्शन होताहे ॥ आत्माके देखणे निमित्त तुम भी इसी दृष्टिकों आश्रय करो ॥ तुं विराटरूपहे इसी दृष्टी करी शीघ्रही आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी॥ जो निरंतर आत्मपदहे यह वर्षाकालकी नदीवत् संसार असार बादरहे सो विचाररूपी सूर्यके देखे विना जडताकों दिखावताहे ॥ विष्णुरूप जो आत्माहे तिसकी प्रसन्नतातें बुद्धिवानकों यह भास्वर रूप माया नही वेधती ॥ जेसें यक्ष माया यक्षमंत्रवालेकों नही वेधी सकती तेसें ॥ आत्माकी इच्छातें यह संसार माया घनताकों प्राप्त होतीहे अरु आत्माकी इच्छा करी निवृत्त होतीहे॥ यह संसार माया ईश्वरकी इच्छा साथ दृद्ध होतीहे ॥ जेसें अग्निकी ज्वाला वायु करी दृद्ध होतीहे अरु वायुही करी नष्ट होतीहे ॥ इतिश्री यो० उप० प्र० प्रल्हाद व्यवस्था वर्णनं नाम द्विचत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ ४२ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन! सब धर्मोंके वेत्ता तुमारे वचन परम शुद्ध कल्याण स्वरूपहे॥तिनकों श्रवण करी में आनंदमान भयाहों॥ जेसें चंद्रमाकी कीरणो करी औषधी पुष्ट होतीहे तुमारे वचन श्रवणकी जिसकों वांछाहे सो पुरुष जेसें पुष्पोकी माला करी सुंदर छाती शोभतीहे तेसें शोभताहे ॥ केसें वचनहे परम पावन अरु कोमलहे॥ हे गुरु तुम कहते हो सब कार्य अपणे पुरुष प्रयत्न करी सिद्ध होताहे जो एसें हे तो प्रल्हाद माधवकें वर विना क्यों जागत भया ॥ जब विष्णुनें वर दिया तब ज्ञान जानत भया ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे राघव! जो कछु प्रल्हादकों प्राप्त भयाहे सो महात्मा पुरुषोकों अपणे पुरुषार्थ करी प्राप्त भयाहे ॥ पुरुषार्थ विना कछु नही प्राप्त होता ॥ काहेतें जो आत्मा अरु विष्णुभगवानविषे जेसें तिलों अरु तेलविषे भेद कछु नही तेसें आत्मा अरु विष्णुविषे भेद कछु नही ॥ ॥ जो विष्णुहे सो आत्माहे अरु आत्माहे सो विष्णु हे ॥ विष्णु अरु आत्मा दोनों एक वस्तुके नामहै ॥ जेसें विटप अरु पादप दोनों एक वृच्छके नामहे तेसें ॥ प्रल्हादनें प्रथम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपणे आप करी अपणी प्रेमशक्तिकों विष्णुभक्तिविषें जोडीसो आत्मशक्तिकरी जोडीहुइ आत्मातें आपही वर पातभया॥अरु आपही विचारकरी अपणे मनकों जीत्या॥ यह कदाचित आत्मा विषे आपही अपणी शक्तिकरी जागता हे अथवा विष्णु भक्तिकरी जागता हे ॥ हे रामजी चिर पर्यंत आराधना करता प्रतापवांन हुवा ॥ तांतें विचारतें रहितकों विष्णुभी ज्ञान देणेकों समर्थ न भया ॥ आत्माके साक्षातकार विषे मुख्य कारण अपणे पुरुषार्थतें उपज्या विचार हे अरु गौण कारन वर आदिक हे ॥ तातें तुं मुख्य कारणकों आश्रय कर ॥ प्रथम पांच इंद्रियांकों वशकर चित्तकों आत्म विचारविषे जोड ॥ यह अभ्यासकर प्रथम पांच इद्रियांकों वश कर जो कछु कोसी कदाचित् प्राप्त होता हे सो अपणे पुरुषार्थ करी होता हे पुरुषार्थबिना नही होता ॥ अपणे पुरुषार्थ प्रयत्नकरी इंद्रियांरूपी जो पर्वत हे तीनतें उल्लंघन होवे बहुरी संसार समुद्रकों तरी जावे तब परमपदकी प्राप्तिहोवे जो पुरुष प्रयत्न विना जनार्दन दिखता होवे ॥ तो मृग पंछी गणोंकों क्यौं दर्शन देकरी उद्धार करी नही जाता ॥ जो गुरु अपणे पुरुषार्थ विना उद्धार करते होवे तो अज्ञानी अविचारी उंट बेल आदिक पशुकों क्यो नही करी जाते ॥ तातें न विष्णुकरी न गुरु करी, नकीसी अवर करी पावणेकी इच्छा बुद्धिवान करते हे ॥ अपणे मनके स्वस्थ कीएविना परम सिद्धताकी प्राप्ति महात्मा पुरुष नही जानते ॥ वैराग अरु अभ्यास करी जीननें इंद्रियांरूपी शत्रु वश कीये हे सो अपणे आपकरी तीसकों प्राते हे ॥ अवर कीसीकरी नही पाता ॥ हे रामजी आपकरी अपणी आराधना करहु आपकरी अपणी अर्चना करहु आपकरी आपकों देखहु आपकरी आपविषे स्थित होहु ॥ शास्त्रबिचारतें रहित मूढ अवर जो हे तीनके निमित्त वैष्णव भक्तिकल्पी हे ॥ सो प्रवृत्तिकी स्थिति निमित्त ॥ प्रथमसुख जो अभ्यास जतनका कहा हे ॥ तीसतें जो रहित पुरुष हे तीनकों गौण पुजाका क्रम कहा है ॥ काहेतें जो इद्रियांकों वश नहीकीया ॥ अरु जीननें इद्रियोंकों वश कीया तीनकों भेद पुजा साथ क्या प्रयोजन हे ॥ विचार उपशम विना विष्णुभक्ति सिद्ध नही होती ॥ अरु जब विचार उपशम संयुक्त भया तब कमल पाषाण साथ क्या प्रयोजन हे ॥ तातें विचार संयुक्त होकरी आत्माका आराधन करहु ॥ तीसकी सिद्धतातें तुं सिद्ध होवेगा ॥ तीसकों सिद्ध नही कीया तो वनका गर्दभ हे ॥ जो प्राणी विष्णुके आगें प्रार्थना करते हे सो अपणे चित्तके आगें क्यौं नही करते॥ सब जीवोंके अंतर विष्णुजी स्थित हे ॥ तीसकों त्यागीकरी जो बाह्य विष्णु परायण हो जाते हे सो बुद्धिवान नही॥ रिदे गुफाविषे जो चैतन तत्व स्थित हे सो ईश्वरका मुख्य सनातन वपु हे ॥ शंख चक्र गदा पद्म जीसके हस्तविषे हे सो आत्माका गौणवपु हे ॥ जो मुख्यकों त्यागकरी गौणकी ओर धावते हे सो विद्यमान अमृतकों त्यागकरी जो साधन करी सीद्ध होवे तीसकी प्राप्ति निमित्त जतन करते हे॥ हेरामजी मनरूपी हस्तिकों जीस पुरुषनें आत्मविवेक साथ वश नही कीया तीस अविवेकी चितकों रागदोष ठहरणे नही देते ॥ शंख चक्र गदा पद्म जीसके हाथविषे हे तीस ईश्वरकी जो अर्चना करते हे सो कष्ट तपस्या करी पूजन करते हे तीनका चित समय पाइकरी निर्मल भाव अभ्यास वैरागकों प्राप्त होता हे ॥अरु नित्य अभ्यास करीभी चित्त निर्मल होता हे तब आत्मफलकों प्राप्त होताहे ॥ चित्त निर्मल विना आत्मा फलकों प्राप्त नही होता ॥ जब चित्त निर्मल हुवा तब वैराग अभ्यासवान होकरी आत्मफलका भोगी होता हे ॥ जेसें बीज बोया समयकरी फल देता हे तेसें क्रमकरी फल होता हे ॥ हे रामजीविष्णु पूजाका जो क्रम हे सोभी निमित्तमात्र मधुसूदननें वर कहे हे॥ अरु अमित प्रकाश हे जीसका तीस आत्मतत्वतें अभ्यासरूपी शाखाकरी फल प्राप्त होता हे॥अरु सबतें उत्तम जो परम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संपदाका अर्थ हे सो अपणे मनके निग्रह करी सीद्ध होता हे ॥ अपणे मनका निग्रह करणा बीज हे सो चैतनरूपी क्षेत्रतें प्रफुल्लीत होकरी फलदायक होता हे ॥ संपूर्न पृथ्वीकी निध अरु संपूर्न शिला बडी बडी मणिकी होवही तोभी मनके निग्रह समान नही जेसा दुःखका नाश कर्त्ता बडा पदार्थ मनका निग्रह हे तेसा अवर कोउ नही॥ तबलग यह जीव अनेक जन्म पाता हे जब लग उपशमकों नही प्राप्त भया ॥ मनरूपी मत्स संसार समुद्रविषे भ्रमाताहे॥ हे रामजी ब्रह्मा विष्णु महेशकों चिरकाल पर्यंत पूजत रहे ॥ अरु मन उपशम विचार संयुक्त न भया॥ तो जो देवता कु पालहोवे तोभी इसकों संसार समुद्रतें तराइ नही सकते ॥ यह जो भासर आकार जगत्के पदार्थ भासते हे तीनकों इंद्रियोंकरी त्याग करीए तब जन्मके अभावका कारन जाणीए ॥ विष योंकी चिंतवनातें रहित होकरी निरामय सब दुःखोतें रहित आत्मा सुख हे तीसबिषेस्थित होइ ॥जो सत्तामात्र तत्व हे अरु सबका साररूप हे तीसका स्वाद लेकरी मनरूपीनदीके पारकों प्राप्त होइ ॥ ॥ इतिश्रि योगवासिष्ट उपशम प्रकरणेप्रल्हादविश्रांति वर्णनं नाम त्रिचत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ ४३ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! यह जो संसाररूप नाम्नी मा याहे सो अनंतहे ॥ ओर किसी प्रकार इसका अंत नही आता ॥जब चित्त वश होवे तब यह निवृत्त होजातीहे ॥ अन्यथा नही निवृत्त होती जेता कछु जगत देखणे सुनणेविषे आताहे सो सब माया मात्रहे सो मायारूप जगतके भ्रमकरी भासताहे ॥ इसपर पूर्व इतिहास इुआहे सो तुं सुन ॥ हे रामजी! इस पृथ्वीपर एक कोसल नाम देशहे सो केसाहे जो रत्नों करी पूर्नहे ॥ जेसें सुमेरु पर्वत रत्नों करी पूर्नहे तेसें उह रत्नों करी पूर्नहे ॥ जाती जातीविषे जो उत्तम पदार्थहे सो सब तिस देशविषे पाइते थे ॥ तहां एक गाधि नाम ब्राह्मण होत भया सो के सा था वेदविदविषे प्रवीन मानों वेदकी मूर्ति था ॥ अरु बालक अवस्थातें ले करी वैराग आदिक गुणों सहित सोभत भया ॥जेसें प्रकाश करी भुवन सोभताहे तेसें सोभत भया ॥ एक कालमें कछु कार्य मनविषे धारी तप करने निमित्त वनकों गया ॥ एक वनविषे कमलों करी पूर्न ताल देखत भया ॥ तिसविषे कंठ पर्यंत जलमें स्थित हो करी तप करने लागा ॥ अपणा कार्य मनविषे धारी करी विष्णुके ध्यानमें खडा हो रहा॥अष्ट मास पर्यंत दिन रात्री जलमें खडा रहा तिसके दृढ तपकों देखी करी जब विष्णु प्रसन्न इुए तब जहां ब्राह्मण तप कर ता था तहां आनी प्राप्त भया ॥ जेसें जेठ आषाढकी तपी पृथ्वीपर मेघ आताहे तेसें आइ करी विष्णु कहत भया॥हे ब्राह्मण जलतें बाहिर निकसी आवइु॥अरु जो कछु वांछित फलहे सो माग ॥ तब गाधिनें कहा ॥ हे भगवन्! असंख्य जीवोका हृदय कमल हे तिसके छिद्रविषे तुम भंवरे हो अरु त्रिलोकीरूपी कमलोंके तुम तलाव हो ॥ एसे ईश्वर जो तुम हो सो मेरा तुमकों नमस्कारहे ॥ हे भगवन! यही इच्छा मुजकों हे जो तुमारी आश्चर्य रूप मायाहे जिस करी यह जगत रच्याहे किसी प्रकार में तिसकों देखों ॥ हे रामजी! जब इस प्रकार गाधी ब्राह्मणनें कहा तब विष्णुनें कहा हे ब्राह्मण तुं मायाकों देखेगा अरु देखी करी बहुरी त्यागभी देवेगा ॥ एसें कही करी विष्णु अंतर्धान होगया ॥ तब ब्राह्मण वरकों पाइ करी आनंदवान इुआ अरु जलतें निकस्या ॥ जेसें निर्धन पुरुष धनकों पाइ करी आनंदमान होताहे तेसें ब्राह्मण वरकों पाइ करी आनंदमान भया ॥ अरु चलतें बेठतें उसकी सुरत विष्णुके वरकी ओर लागी रहे ॥ जो में माया कब देखोंगा ॥ तब एक कालमें तिसी तलावपर स्नान करने लागा अरु डुबकी दिनी ॥ मनविषे अघमर्षण मंत्रकों जपणे लगा अघमर्षण कहीएपापोंकों ना श कर्ता ॥ तिस मंत्रकों जपते तिसका चित्त विपर्यय हो करी निकसी गया तब उसकों कृष्ण मंत्र भुल गया ॥ अरु आपकों बहुरी अपणे गृहविषे स्थित देखत भया ॥ बहुरी आपकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मृतक हुआ देख्या ॥ जो में मृत्यु पाया हों अरु सब कुटुंबके लोक रुदन करतहे शरीरकी कांति जात रहीहे ॥ जेसें टुटे कमलोंकी सोभा जात रहतीहे तेसें ॥ प्राण निकसी गया ॥ जैसें पवनके ठहरेतें वृच्छ अचल हो जाताहे तेसें अंग अचल हो गया ॥ अरु होठ फाटी विरस हो गये मानों अपणे जिवणेकों हसतेहें ॥ माता गाधीकों पंकडी वेठीहे सब परिवार एकठे हु एहे ॥ जेसें वृछपर पंछी एकठे आन होतेहे ॥ जेसें पुलके टुटे जल चलताहे तेसें रुदन करतेहे ॥ तब बांधव लोक कहत भये ॥ अब यह अमंगलरूपहे इसकों जलाइएं ॥ एसें कही करी जलावणेकों लेचले ॥ चितामे डारकें जलायदिया ॥ बहुरी अपणे गृहमें आइ करी क्रिया कर्म करत भये ॥ हे रामजी ! तिसतें उपरांत ब्राह्मण एक देशविषे चंडाल भया ॥ उन देशविषे एक चंडालोंका ग्राम था तहां आपकों एक चंडालीकें गर्भविषे देखत भया जो में इहां आन पडा हों ॥ जेसें स्वानकी विष्टाविषे कृमि होताहे तेसें आपकों प्रवेश किया देखत भया ॥ तब समय पाइ करी गर्भतें बाहार निकस्या ॥ जेसें पक्का फल वृच्छतें गीरताहे ॥ तेसें स्याम मूर्ति चंडालीतें निकस्या ॥ अरु बहुत सुंदर बालक जनम्या, चंडालीकी इस साथ प्रीतिभइ ॥ बढता जावे ॥ जेसें छोटा वृच्छ बढजाता हे तेसें ॥ द्वादश वर्षका भया बहुरी षोडश वर्षका भया ॥ तब स्वान साथ लेकरी वनमें जावे, मृगोंकों मारे ॥ इस प्रकार बहुत स्थानोंमें विचरे बहुरी विवाह भया ॥ जोबन अवस्थाकों जोबनविषे व्यतीत करत भया ॥ बहुत बडा कुटुंबी भया, पुत्र कलत्र बहुत भये बहुरी वृद्ध भया शरीर जर्जरी भाव हुआ ॥ तृणोंकी कूटी ब नाय करी बाहिर जाय रहा ॥ जेसें मुनीश्वर रहतेहे ॥ उहां दुर्भिक्ष पडी ॥ इसके बांधव क्षुधा करी मरणे लगे ॥ तब उहांतें एकलाही निकस्या ॥ बहुतेरे स्थानोंकों लंघता गया ॥ एक क्रांत देशहे तहां जाइ प्राप्त भया ॥ सो सुंदर देशका राजा मृतक भया ॥ अरु यह राज मार्गकों चला जाताथा ॥ सो उस राजाका एक बडा हस्ति था ॥ तिसकों मंत्रीयोंनें छोड्या था जो जो कोउ पुरुष इसके मुखकों लागे तिसकों राजा करीए ॥ तब वह हस्ति चला आवे ॥ इसनें तिसकों देख्या ॥ बहुत सुंदर चरनो करी चला आवे मानों सुमेरुपर्वतचरनो करी चला आताहे ॥ जब निकट आया तब इसकों सीसपर चडाय लीया ॥ जेसें सूर्यकों सुमेरु सीसपर बेठा लेवे तेसें हस्तिनें इस चंडालकों बेठाय लीया ॥ तब नगारे तुरीया बाजणे लगा अरु बडे शब्द होणे लागे ॥ मानों प्रलयकालके मेघ गर्जतेहे ॥ अरु भट आदिक आनी स्तुति करणे लगे ॥ अरु इसके मुखकी सोभा हस्तिपर बेठतें ओर होगइ तब सेना सहित राजा सोभत भया ॥ जेसें ताराविषे चंद्रमा सोभताहे तेसें सोभता चल्या ॥ अंतःपुरविषे जाय राणीयोंमें स्थित भया॥ सब राणीयां सहेलीयां इसके निकट आय स्थित भइयां ॥ अरु इसकों मिलनें लगीयां ॥ स्नान कराइकें नाना प्रकारके हीरे मोती भूषण अरु सुंदर वस्त्र पहिराये ॥ तिस करी सोभायमान भया राजा हो करी राज करत भया ॥ सब स्थान अरु सब देशोविषे इस की आग्या चलणे लगी ॥ सब लोक इसतें भय पावे बडे तेज अरु बडी लछमी करी संपन्न हुआ ॥ अरु तेजवान हो करी विचरणे लगा ॥ जेसें बनविषे सिंग विचरताहे इस प्रकार चिर पर्यंत राज करत भया ॥ हस्ती पर चढी करी सीकार खेले॥ गवल नाम राजा होकरी सब देशपर आग्या करत भया ॥ इतिश्री यो०उप० प्र० गा० उपा० चं० नाम चतु०सर्गः ॥ ४४ ॥

वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार लछमीकों पाइकरी आनंदवान हुआ ॥ जेसें पूर्णमासीका चंद्रमा सोभता हे तेसें सोभतभया ॥ अरु आठ वर्ष पर्यंत राज करतभया ॥ तब एक समय भूषण वस्त्रोंकों पहरी बेठा हे अरु मनविषे संकल्प आनी फुर्या जो मुजकों वस्त्र भुषणके पहिरनेकरी क्या ? अरु इनकी सुंदरता क्या हे में तो राजाधिराज अपणे तेजकरी तेजस्वी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शोभायमान हों ॥ हे रामजी एसें विचारीकरी भूषण वस्त्र उतारीडारे ॥ शुद्ध स्याममूर्ति होकरी स्थित भया ॥ जेसें प्रातःकालविषे तारागणतें रहित स्याम आकाश होता हे तेसें होकरी बहुरी अपणी चंडाल अवस्थाके वस्त्र पहिरे ॥ एकलाही नीकसीकरी बाहिर देवडीविषे जायकरी स्थित भया ॥ जेसें सूर्य आकाश मार्गकों एकला चलता हे तेसें एकला होकरी राज मार्गकी देवडीविषे जाय खडा हुआ ॥ तब उन देशके चंडाल जो दुर्भिक्ष करी यह छोडी आयाथा ॥ तामेंतें बडे चंडाल उसमार्गमें आय नीकसे ॥ तिनविषे एक चंडाल तंद्री हाथविषे लेकरी आताथा तीसनें राजाकों देखीकरी पिछान्या॥ तब राजाके सनमुख आया मानों स्याम पर्वत चला आता हे अरु कहत भया॥ हे भाइ एता काल तुं कहांथा हमकों छोडीकरी इहां आइकरी सुख भोगणे लगा हे ॥ हे भाइ इहांके राजानें तुजकों सुखी कीया होवेगा ॥ काहेतें जो तुं गाता भला हे ॥ राजाकों राग प्यारा होता हे अरु तुं कोकिलाकी न्यांइ गाता हे इस कारनतें प्रसन्न होकरी बहुत धन दीया होवेगा ॥ अथवा कीसी ओर धनीनें तुजकों प्रसन होकरी मंदिर धन दीया होवेगा ॥ हे रामजी इस प्रकार उह चंडाल मुखतें कहता अरु भुजा पसारता इसके संनमुख चला आवे अरु यह नेत्रों हाथों साथ उसकों जनावे जो तूष्णी होउ ॥ मुखतें कछु न कहहु ॥ परंतु वे चंडाल समुझे कछु नही ॥ संनमुखहोकरी चला आवे ॥ ज्यों ज्यों उह चल्या आवे त्यों त्यों राजाकी कांति घटती जावे ॥ जेसें गडे करीमारे हुए कमलोंकी कांति घटी जाती हे अरु उपर झरोंखेविषे सहेलीयादेखत भइयां ॥ उनोंनें देखीकरी विचार कीया जो राजा चंडाल हे एसें विचारकरी महा शोककों प्राप्त भइयां ॥ कहत भइयां जों हमकों बडा पाप प्राप्त भया हे जो इसके साथ हमनें स्पर्श कीया हे अरु भोजन कीया हे ॥ चिर पर्यंत विचरे हे ॥ एसें शोकवान होकरी सबकी कांति नष्ट होगइ ॥ जेसें बर्फ पडनेकरी कमल पंक्तिकी कांति जाती रहती हे जेसें बनकों अग्नि लगणे करी वृच्छोंकी कांति जातरहती हे तेसें उनकी कांति जात रही ॥ शोकवान होकरी कष्ट पाइयां ॥ अरु सब नगरवासीभी सुणीकरी सोकवान भए अरु हाय हाय शब्द करणे लगे ॥ तब उह चंडाल राजा अपणे अंतःपुरविषे आया ॥ जेते कछु अंतर लोक थे सो तीनकों देखी करकें भागे निकट कोउ न आवे ॥ जेसें पर्वतकों अग्नि लागे उहांतें मृग पंछी भाग जावे तेसें चंडाल राजाके निकट कोउ न आवे ॥ मंत्री टहलुए स्त्रीयां सब दूरतें भाग जावे तब तीस देशविषे जो पंडित बुद्धिवान थे तीनोंनें विचार कीया जो बडा अनर्थ भया हे ॥ एताकाल हम चंडाल राजाकरीकें जीवे हे ॥ हमकों बडा पाप लगा हे इस पापका ओर पुरश्चरण कोउ नही ॥ हम सबही चिताबनाय अग्निविषे प्रवेश करीजलीमरेंगें तब यह पाप निवृत्त होवेगा ॥ हे रामजी जब यह विचार ब्राह्मण क्षत्रिय लोकोंनें कीया तब तीसके अनंतर चिता बनाइकरी जलणे लगे पुत्र कलत्र बांधवोंकों छोडी करी प्रवेशकरे जेसें दीपक विषे पतंग प्रवेस करे तेसें जले अरु जेसें आकाशविषे तारे दृष्ट आवे तेसें अनेक चिताका चमत्कार दृष्ट आवे ॥ अरु धूम्र करी अंधकार होरहा ॥ केइ मनुष धर्मात्मा आपणी इच्छा करी जले अरु जो अपणी इच्छा करी न जले तीनकों अवरले जलावे ॥ तब चंडाल राजा विचारत भया जो में एकके निमित्त एते नगर वासी जलते हे ॥ जीनाभी तीसका श्रेष्ठ हे जीसतें सोभा उत्पत्ति होवे ॥ जीसके जीणेकरी पाप उत्पत्ति होवे तीसकों मरणा श्रेष्ठ हे ॥ हे रामजी एसें विचारकरी उस राजानेंभी चिता बनाइ अरु जेसें दीपक विषे पतंग प्रवेश करता हे तेसें राजा प्रवेश करत भया ॥ अरु अग्निका तेज शरीरकों लगा ॥ तब गाधीका शरीर जो तलावविषे डुबकीलगाया था सो कंपायमान हुआ ॥ तब जलतें बाहर सीस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नीकास्या ॥ परंतु सावधान न भया ॥ वाल्मीकोवाच ॥ इसप्रकार जब वसिष्ठजीनें कहा तब सूर्य अस्त भया ॥ सब सभा परस्पर नमस्कार करीकें स्नानकों गये बहुरी रात्र नष्ट भए आंनी स्थित भए ॥ इतिश्रीयोगवसिष्टे उपशम प्रकरणे राज ध्वंस वर्णनं नामपंचचत्वारिंशत्तमःसर्गः ॥ ४५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी एता भ्रम उसनें दो मुहूर्तविषे देख्या॥ अर्ध घटि पर्यंत बोध कछु न हुआ ॥ तीसतें उप्रांत बोधवान भया अरु उस संसार भ्रमतें रहित हुआ जेसें मद्यपा नका केफ क्षीणभए बोधवान होवे तेसा बोधवान हुआ ॥ वाहार निकसकरी विचारने लगा ॥ जो मुजकों कछु भ्रम जेसा हुआ ॥ कहां था उह मेरा गृहविषे मरणा बहुरी चंडालके गृहविषे जन्म लेणा बहुरी कटुंवविषे रहणा बहुरी राज करणा बडा भ्रम मुजकों भयाहे॥ हे रामजी एसें विचारकरी बहुरी संध्यादिक कर्म करतभया ॥ इस भ्रमकों बहुरी बहुरी सुमरण करीकें आश्चर्य वान होवे ॥ अरु एसें न जानसके जो भगवानका वर पाईकरी मैंनें माया देखी ॥ जब केताकाल व्यतीत भया तब एक ब्राह्मण दुर्बल जेसा क्षुधार्थी अरु थका हुआ इसके आश्रम परआया ॥ मानों ब्रह्माके आश्रम पर दुर्वासा ऋषि आया हे॥ तब गाधीनें उस ब्राह्मणकों आदर संयुक्त बेठाया॥ अरु फल फूल एकठे करकें तीसके आगें आनी रखे ॥ जेसें वसंतऋतु करीकें फल फूल साथ वृच्छ पूर्न होताहे तेसें उसकों पूर्न कीया ॥ अरु केतेक दिन उहां रहा संध्यादिक कर्म मंत्र जाप एकठे करे ॥ रात्रकों पत्रोंकी शय्या बनाई करी शयन करे तब एक रात्रके समय शय्या परबेठे चर्चा वार्त्ता करते थे ॥ तब प्रसंग पाईकरी गाधीनें पुछा जो हे ब्राह्मण तेरा शरीर कृश जेसा अरु थका हुआहे सो क्या कारन हे ॥ हे रामजी जब इस प्रकार गाधीनें ब्राह्मणकों पुछा तब उसनें कहा ॥ हे साध जो कछु तेनें पुछाहे सो में कहताहों ॥ हम सतवादी हे जेसें वृत्तांत हुआहे सो तुं सुण ॥ एक कालमें देशांतर फीरता फीरता उत्तर दिशाकी ओर गया तहांक्रांत देशविषे जाय प्राप्त भया ॥ उहां रहणे लगा॥ उहांके गृहस्थ भली प्रकार टहल करे तिनके भले भोजन वस्त्र करीकें प्रसंन होउं ॥ रस स्वाद करीकें मेरा चित्त मोह गया ॥ तब एक दिन मेरे मुखतें यह शब्द निकस्या जो इहांके लोक बहुत सरदावान दयावानहे ॥ तब पास जो लोक बेठे थे सो कहणे लागे ॥ हे साधु आगें इहां दया धर्म बहुत था अब कछु घटी गयाहे ॥ तब मेनें पुछा जो क्यौं करी घट्याहे सो वृत्तांत कहो ॥ तब उनहुनें कहा जो इस देशका राजा मृतक हुआ था बहुरी राजा एक चंडाल हुआ था॥ प्रथम किसीनें न जान्या अष्ट वर्ष पर्यंत राज करत भया॥ जब उसकी वार्ता प्रगट भइ जो यह चंडालहे तब देशके रहणे वाले ब्राह्मण छत्री थे सो चिता बणाइ करीकें जलमरे ॥ अनेक जीव इस प्रकार ब्राह्मण आदिक जलमरे ॥ बहुरी राजाभी जली मरा॥ एसा पाप इस देशविषे हुआहे इस कारनतें दया धर्म कछु घटी गयाहे॥ हे ब्राह्मण जब इस प्रकार नगरवासीयोंतें सुण्या तब में बहुत सोकवान हुआ अरु उहातें चला जो हाय हाय में बडे पापी देशविषे रहाहों॥ एसें विचार करी में प्रयागादि तीर्थोंपर चल्या ॥ तीर्थकरीकें कृछ्र अरु चांद्रायण वृत्त राखे ॥ कृष्ण पक्षविषे एक एक ग्रास घटावता गया॥ जब अमावास्या आवे तब निराहार रहा ॥ बहुरी जब शुक्लपक्ष आवे तब एक ग्रास बढा तागया पूर्न मासीका चंद्रमाकी कलाकरी बढावणा अरु कला साथ घटावणा इस प्रकार में तिन कृछ्र चांद्रायण कियेहे ॥ उहातें चल्या तेरे आश्रमपर वृत्त खोल्याहे ॥ हे साधु! इस निमित्त मेरा सरीर कृश अरु निर्बल हुआहे॥ हे रामजी! जब इस प्रकार ब्राह्मणनें कहा तब गाधी विस्मयकों प्राप्त भया जो में जानता था मुजकों भ्रम जेसा हो गया सो इसनें प्रत्यच्छ वार्ता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कही सुनाइ ॥ एसें विचार करी बहुरी पुछा ॥ बहुरी उसनें एसें कहा तब सुनी करी आश्चर्यवान हुवा ॥ जब रात्र व्यतीत भइ अरु सूर्य उदय भया तब संध्या आदिक कर्म करत भ
या ॥ उह अतीत रमता रहा तब एकला हो करी विचारत भया जो मेनें केसा भ्रम देख्याहे ॥ अरु ब्राह्मणनें सत्य करी देख्या सो केसें हो गया ॥ तातें अब तिस देशकों चली करी
देखों ॥ जहां मुजकों चंडालका शरीर भयाहे ॥ हे रामजी! इस प्रकार विचार करी मनोराजके भ्रमकों देखणे गाधी ब्राह्मण चला ॥ चलता चलता उन देशविषे जाय प्राप्त भया ॥
जेसें उंट कंटकोंकों ढुंढता कंटकोंके बनविषे जाताहे तेसें यह चंडालके स्थानोंकों प्राप्त भया तब चंडालके स्थान देखत भया जहां अपणा स्थान था तिसकों देख्या ॥ अपणे खेती
लगावणेका स्थान देखत भया ॥ वाडी कछु खडीहे कछु गीर गइहे अरु पशुके हाड चर्म जो अपणे हाथसों डारे थे सो प्रत्यक्ष देखत भया ॥ देखी करी आश्चर्यवान भया ॥ हे देव
यह क्या आश्चर्य हे चित्तका भ्रम मेनें प्रत्यक्ष देख्याहे ॥ जो बालक अवस्थाविषे क्रीडा करणेके स्थान थे सो देखे ॥ अरु भोजनके स्थान मद्यपानके स्थान अरु पात्र थे इत्यादिक
जो खानपानके भोगके स्थान थे सो प्रत्यक्ष देखत भया ॥ अरु महा वैरागकों प्राप्त भया ॥ अरु ग्रामवासी मनुषकोंभी पुछत भया ॥ जो कदाचित्त केसें कहेंगे ॥ हे साधो इहां एक चं
डाल हुआ था ॥ बडे स्याम शरीरवाला तुमकोंभी कछु स्मरणहे ? हे रामजी ! जब इस प्रकार ब्राह्मणनें पुछा तब ग्रामवासी कहत भये ॥ हे ब्राह्मण इहां एक कटजल नाम चंडाल होत
भया ॥ कम करीकें बडा हुआ ॥ बहुरी उसका विवाह हुआ ॥ बेटा बेटी परिवार सहित बडा कुटुंबी हुआ ॥ वृद्ध भया ॥ सो दैव संयोग करी एकलाही निकस्या ॥ जाता जाता कांत
देशविषे गया ॥ उहांका राजा मृत्यु पाया था उननें राज इसकों दीया तहां आठ वर्ष पर्यंत राज करत भया ॥ तब नगरवासीयोंनें सुण्या जो यह चंडालहे तब बहुत शोकवान भये ॥
अरु चिता बनाइकरी जली जली मरे ॥ इस प्रकार सुणीकरी गाधी बहुत आश्चर्यवान हुआ ॥ एकसों सुणीकरी अवरसों पुछा उहभी इस प्रकार कहे ॥ एसें वारंवार लोकोंसों पुछत रहे ॥
एक मास उह रहा बहुरी आगें चल्या ॥ नदीयां पहाड देश हिमालयपर्वतकी उत्तरदिशाविषे क्रांतदेशमें जाय प्राप्तभया ॥ जेता कछु स्थानोंका वृत्तांत था सो सबही देखत भया ॥ जहां
सुंदर स्त्रीयां थीयां ॥ जहां चमर झुलते थे तीनकों प्रत्यच्छ देख्या बहुरी नगरवासीयोंतें पुछत भया ॥ जो इहां कोइ चंडाल राजाभी हुआ हे ॥ तुमकों कछु सुमरन हे तो मुजकों कहो ॥ हे
रामजी तब नगरवासी कहत भए ॥ हे साध इहांका राजा मृत्यु पायाथा ॥ अरु मंत्रीयोंनें हस्ति छोड्याथा ॥ जो कोउ मनुष हस्तिके सनमुख आवे तीसकों राजा करना ॥ जब हस्तिचला तब
तीसके सनमुख चंडाल आइ नीकस्या ॥ तब हस्तिनें चंडालकों सीसपर चडाइ लीया ॥ बहुरी ओर विचार कीसीनें न कीया उसकों राजतिलक दीया ॥ अष्ट वर्षपर्यंत राज करत भया ॥
पाछें जब उसके बांधव आए अरु तीससाथ चर्चा करने लगे तब सहेलीयोनें उपरसों देख्या जो यह चंडाल हे ॥ एसें देखी उनहुभें उनका त्याग कीया ॥ बहुरी लोक विचारवान जो उस
साथ चेष्टा करतेथे भाइ जाणी करी सो जली मरे अरु उह राजाभी आपकों धिःकार करी जलीमरा अष्ट वर्ष पर्यंत उह राज करतभया ॥ अरु उसकों द्वादश वर्ष मृत्यु पाए व्यतीत भये
हे रामजी इसप्रकार श्रवण करीकें गाधि ब्राह्मण आश्चर्यकों प्राप्तभया ॥ जो कहां में जलविषे स्थित था अरु कहां एती अवस्थाकों देखत भया ॥ एसें विचार करता था इतनेमें पूर्वका
वृत्तांत समरन आया जो यह आश्चर्य भगवानकी माया हे ॥ में वर माग्या था इस माया करी एता भ्रम देख्याहे ॥ यह आश्चर्यहे जो इहां दो मुहूर्तहे अरु उहातें एताकाल मुजकों भा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्याहे ॥ स्वप्न भ्रमकी नांइ अरु सत करी स्थित भयाहे ॥ सो बडा आश्चर्य हे॥तातें संशय निवृत्ति करने निमित्त बहुरी विष्णुजीका ध्यान करों॥जिसकी माया करी मेनें एता भ्रम देख्याहे
ओर कोइ इस संशय निवारणेकों समर्थ नही ॥ हे रामजी! इस प्रकार विचार करी गाधी ब्राह्मण बहुरी पाहाडकी कंदराविषे जाय तप करने लगा ॥ एक अंजुली जलपान करे
ओर भोजन कछु न करे ॥ इस प्रकार देढ वर्ष पर्यंत तप किया ॥ तब त्रिलोकीका नाथ विष्णु भगवान प्रसन्न हो करी निकट आइ करी प्राप्त भए॥अरु कहा हे ब्राह्मण मेरी मायाकों दे
खी जो जगत जालकों रचनेंहारीहे ?॥ अब ओर क्या इच्छा करताहे ॥ हे रामजी! जब विष्णु भगवाननें एसें कहा तब ब्राह्मण कहत भया ॥ जेसें मेघकों देखी करी पपैया बोलताहे
तेसें ब्राह्मण बोलत भया ॥ गाधीउवाच ॥ हे भगवन तेरी माया तो मेनें देखी परंतु एक संशय मुजकोंहे जो यह स्वप्न भ्रमकी न्यांइ मेनें देख्या इसविषे कालकी विषमता केसें हु
इ ॥ जो इहां दो मुहूर्त वितीत भएहे अरु उहां चिरकाल पर्यंत भ्रमता रहा हों ॥ अरु तीन जुठ पदार्थोंकों जाग्रतविषे प्रत्यक्ष केसें देखे ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ हे ब्राह्मण ओर कछु
नही तेरे चित्तहीका भ्रमहे ॥ जिसके चित्तविषे तत्वकी अदृष्टताहे तिसकों यह चित्त भ्रम होताहे ॥ अरु उह क्या भ्रम था ॥ जेता कछु जगत प्रत्यक्ष देखताहे सोभी तेरे मनविषे स्थित
हे ॥ बाहिर पृथ्वी आदिक तत्व कोउ नही ॥ सब तेरे अंतर स्थितहे ॥ जेसें बीजके अंतर फुल फल पत्रहे तेसें पृथ्वी जल तेज वायु आकाश जेता कछु पांचभौतिकहे सो सब विस्तार
चित्तविषे स्थितहे ॥ जेसें वृछका विस्तार बीजविषे दृष्ट नही आता ॥ जब बोया हुआ उगताहे तब विस्तार दृष्ट आताहे ॥ तेसें जब चित्त ज्ञानविषे लीन होताहे तब जगत नही भासता॥
अरु जब स्पंदरूप होताहे तब बडे विस्तार संयुक्त जगत भासताहे ॥ हे ब्राह्मण जेता कछु जगत देखताहे सो सब चित्तका भ्रम हे ॥ जेसें एक कुलाल घटादिक वासन उत्पत्ति करताहे॥
तेसें एकही चित्त अनेक भ्रमरूपपदार्थकों उत्पन्न करताहे॥अरु जो चित्त वासनातें रहितहे तिसतें भ्रमरूप पदार्थ कोउ नही उपजता॥तातें चित्तकों स्थित करो॥ हे ब्राह्मण इस चित्तविषे को
टि ब्रह्मांड स्थितहे ॥ जो तुजकों चंडाल अवस्थाका अनुभव हुआ हे तो इसविषे क्या आश्चर्य हुवा ॥ अरु तुं कहताहे जो में बडी आश्चर्य रूप माया देखीहे ॥ सो उसकों ही माया क
हताहे ॥ अब जो तुजकों विद्यमान भासताहे सो सबही मायाहे ॥ जो तुजकों अपणे गृहविषे अनुभव भया था अरु चंडालके गृहविषे जन्म लीया कुटुंबी हुआ अरु राज किया॥बहु
री चितांविषे जल्या॥ बहुरी अतिथ ब्राह्मणकों मिल्या ॥ बहुरी जाइ करी सबही स्थान देखे सोभी माया थी ॥ जेसें एता भ्रम तुजनें माया करी देख्या तेसें इह पसाराभी सब मायाहे ॥
हे साधु जेसें सुपनेविषे नाना प्रकारके पदार्थ भासताहे ॥ अरु जेसें मदिरा पान करने वालेकों सब पदार्थ भ्रमताहे ॥ तेसें इह जगतभी भ्रमतें भासताहे॥ अरु जेसें नौकापर बेठेकों तटके
वृछ भ्रमते भासतेहे तेसें यह जगतभी भ्रममात्र भासताहे ॥ अरु चित्तके स्थित किएतें जगत भ्रम नष्ट हो जावेगा ॥ अन्यथा भ्रम निवृत्त न होवेगा ॥ जेसें पत्र फुल फल टास काटणे
करी वृछ नाश नही होता ॥ जब मूलतें काटीयें तब वृछ नाश हो जाताहे ॥ तेसें जब जगत भ्रमका मूल चित्तही नष्ट हो जावेगा ॥ तब संपूर्ण भ्रम निवृत्त हो
जावे ॥ सो चित्तका नाश होणा क्या हे ॥ जो चित्तकी चैत्यता दृश्यकी ओर धावतीहे सोइ जगतका बीजहे ॥ जब यही चैत्यता दृश्यकी ओर फुरनेंतें रहित होवे तब जगत भ्रमभी
मीटीजावे ॥ अरु जगत्की ओर फुरणा तब मीटे जब जगतकों मायामात्र जाने ॥ हे साध यह सब जगत् मायामात्र हे ॥ कोउ पदार्थ सत्य नही ॥ जेसें उह भ्रम तुजकों मायामात्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भास्या हे तैसें यहभी सब मायामात्र जाण ॥ तातें इस भमकों त्यागकरी अपणा जो ब्राह्मणका कर्म हे तीसविषे जायस्थित होहु ॥ हे रामजी इस प्रकार कहीकरी विष्णुदेव उठी खडे
हुए ॥ तब गाधि अरु अवर ऋषीश्वर जो उहां थे सो विष्णुकी पूजा करत भए ॥ पूजा लेकरी विष्णुक्षीर समुद्रकों गमन करतभए ॥ तब उह ब्राह्मण बहुरी उसी भमकों देखणे च
ल्या ॥ क्रांत देशविषेगया तीनकों देखीकरी आश्चर्यवान होवे ॥ अरु केसें विष्णु हे मायामय कहाते हे ॥ यह जो प्रत्यक्ष में देखता हों जो कछु भमविषे देख्याथा सोइ प्रत्यक्ष देख
ता हों ॥ एसें विचारकरी बहुरी कहत भया ॥ जो इस संशयकों दुर करणेकों ओर कोउ समर्थ नही तातें बहुरी विष्णुका आराधन करत भया॥ हे रामजी इस प्रकार विचारकरी गा
धी बहुरी पाहाडकी कंदराविषे जाय तपकरने लगा ॥ तब थोडेकालमें विष्णु भगवान प्रसन्न होकरी आए ॥ जेसें मेघ मोरकों कहे तेसें ब्राह्मणकों भगवान कहत भए ॥ हे ब्राह्मण अ
ब क्या चाहता हे तब गाधीनें कहा हे भगवान् तुम कहते हो सब भ्रम मात्र हे अरु यह तो प्रत्यछ भासता हे जो भम होता हे सो प्रत्यछ अनुभव नही होता ॥ अरु में बहुरी उह
स्थान देखे हे अरु थोडे कालकरी बहुत काल देखणेका मुजकों संशय हे सो दूरी करो ॥ हे रामजी जब इस प्रकार गाधीनें कहा तब भगवान कहत भए ॥ हे ब्राह्मण जो कछु तु
जकों यह भासता हे सो सब मायामात्र हे ॥ अरु जीस प्रकार तुजकों यह भासता हे सो सब मायामात्र हे ॥ अरु जीस प्रकार तुजकों यह अनुभव भया हे सो श्रवण कर ॥ हे ब्रा
ह्मण उह कंटजल नाम चंडाल एक चंडालके यहविषे उत्पन्न भयाथा ॥ बहुरी क्रमकरी बडा हुआथा अरु कुटुंबी हुआ ॥ बहुरी उहां दुर्भिक्ष पडी ॥ तब उस देशकों त्यागकरी जाइ
क्रांत देसका राजा हुआ ॥ बहुरी लोकोंनें सुण्या तब सबही अग्निविषे जले ॥ बहुरी उहां चंडाल आपभी अग्निविषे जले ॥ सो कंटजल चंडाल ओर था ॥ यह अवस्था तीसकों भइथी
सोइ प्रतिभा तुजकों आन फुरी हे ॥ जेसी अवस्था तीसकों हुइ थी सो तेरे चितविषे आन फुरी इस कारनतें तुं जानत भया जो यह अवस्था मेनें देखी हे ॥ हे साधु अकस्मात
एसेंभी होता हे जो ओरकी प्रतिभा ओरकुं फुरी आती हे ॥ कहुं अन्यथाभी होती हे कहुं एक जेसीभी होती हे ॥ इस भमका अंतलेणा नही आता॥ यह चित्तके फुरणकरीकें होता
हे ॥ जब चित आत्मपदविषे स्थित होता हे तब जगत् भम निवृत होजाता हे ॥ अरु कालकी विषमताभी होती हे जेसें जाग्रतकी दो घडीविषे अनेक वर्षोंका स्वप्न देखता हे तेसें यह
जाण सब चितका भम हे तुं इस भमकों न देख चित्तकों स्थिर करकें अपणें ब्राह्मणका आचार कर ॥ हे रामजी एसें कहीकरी विष्णु गुप्त होगए॥परंतु ब्राह्मणका संशय दूर न भया ॥
उह एसें मनविषे विचारे जो ओरकी प्रतिभा मुजकों केसें भइ हे ॥ यह तो मेनें प्रत्यछ भोगी हे ॥ अरु जाइ करी देखी हे ॥ यह ओरकी वार्ता केसें होवे॥ जो आंखोसों देखी नही
होती तीसका अनुभव नही होता अरु में तो प्रत्यछ अनुभव कीया हे ॥ एसें एसें विचार करी बहुरी उही स्थान देखे अरु आश्चर्यमान होवे बहुरी विचार करत भया जो यह
मुजकों बडा संशय हे इसकों दूर करणेका उपाय भगवानसों पुछों ॥ हे रामजी एसें चितवी करी बहुरी तप करने लगा ॥ जब केताक काल पहाड कंदराविषे तप करते वीत्या ॥
तब बहुरी विष्णुनें आइकरी कहा हे ब्राह्मण अब तेरी क्या इच्छा हे एसें जब विष्णुनें कहा तब ब्राह्मण गाधी कहत भया ॥ हे भगवन् तुम कहतेहो यह ओरकी प्रतिभा तुजकों फुरी
आइ हे अरु मुजकों अपणी होकरी भासती हे अरु कालकी विषमता भासती हे यह संशय जीस प्रकार मेरे चित्ततें दूर होवे सो उपाय कहो ॥ ओर प्रयोजन मेरा कछु नही ॥ यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भम निवृत्त करो ॥ ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ हे ब्राह्मण यह जगत् सब मेरी माया करी रच्याहे ॥ तीसविषे में तुजकों सत्य क्या कहों अरु असत्य क्या कहों ॥ जो कछु तुजकों भास ताहे सो सब माया मात्र हे ॥ सो चितके भमकरी भासताहे अरु उस चंडालकी अवस्था भइ हे सो तेरे चित्तविषे भासी आई हे ॥ जेसें एक जेवरी विषे कीसीकों सर्प भासे इसी प्र कार ओरोंकोंभी जेवरीविषे सर्प भासताहे तेसेंही प्रतिभा तुजकों भासी आई हे ॥ अरु काल जो हे तीसका रूप आकार कछु नही ॥ अरु कालभी तुजकों एक पदार्थकी नांइ फुरी आयाहे चितविषे पदार्थ कालकरी भासतेहे अरु काल पदार्थों करी भासताहे अन्योन्य घट वध जो भासताहे सो स्वमकी न्यांइ हे ॥ जेसें जाग्रतके एक मुहूर्तविषे स्वमका अनंत कालका अनुभव होताहे यह चितका फुरना जेसें जेसें फुरता हे तेसें तेसें होभासताहे ॥ रोगीकों थोडा कालभी बहुत होभासताहे अरु भोगीकों बहुत कालभी थोडा भासताहे ॥ हे साध जो नही भोग्या होता तीसकाभी अनुभव होताहे ॥ जेसें त्रिकाल दर्शीकों भविष्य वृत्तांतभी वर्तमानकी नांई भासता हे ॥ तेसें तुजकोंभी अनुभव भया हे ॥ अरु एक एसेंभी होताहे ॥ जो प्रत्यच्छ अनुभव कीया विस्मरण होजाताहे यह सब मायारूप चितका भम हे ॥ जबलग चित आत्मपदविषे स्थित नही भया तवलग अनेक भम भासते हे ॥ जब चित स्थित होताहे ॥ तब भम मीटी जाताहे ॥ केवल एक अद्वैत आत्मतत्वही भासताहे ॥ जेसें सम्यक् मंत्रका पाठकरी गडेका मेघ नष्ट होजाताहे असम्यक् मंत्रकरी नाश नही होता तेसें तेरा चित अबलग वस नही भया ॥ चितकों आत्मपदसों जोडेतें सब भम निवृत्त होजावे ॥ अरु अहंत्वं आदिक जेते कछु शब्द हे सो अग्यानीके चितविषे दृढ होते हे ॥ ज्ञानवान इनविषे नही फसता ॥ हे साध जेता कछु जगत् हे सो अज्ञान करीकें भासताहे आत्मज्ञान हुएतें नाश होजाताहे ॥ जेसें जलविषे तुंबी नही डुबती तेसें अहंत्वं आदिक शब्दोंविषे ज्ञा नवान नही डुबता ॥ सब शब्द चितविषे वर्ततेहे ॥ सो ज्ञानीका चित अचितपदकों प्राप्त भयाहे ॥ तातें तुं दश वर्ष पर्यंत तपविषे स्थित होउ तब तेरा रिदा सुद्ध होवेगा ॥ जब तेरा रि दा शुद्ध हुआ तब सब संकल्पतें रहित आत्मपद तुजकों प्राप्त होवेगा जब आत्मपद प्राप्त हुआ तब सब संशय जगत् भम मीटी जावेगा ॥ हे रामजी एसें कहीकरी त्रिलोकीका नाथ विष्णु अंतर्धान होगए ॥ तब गाधी ब्राह्मण एसें मनविषे धारीकरी जाय तप करने लगा ॥ जो कछु मनका संसरना हे तीसकों स्थित करत भया ॥ दश वर्षपर्यंत समाधिविषे चित्तकों स्थित कीया ॥ जब एसें परम तप कीया तब शुद्ध चिदानंद आत्माका साक्षात्कार बहुरी तीसकों भया ॥ बहुरी शांतिवान होकरी विचरत भया ॥ जेते कछु राग दोष आ दिक विकार हे तीनतें रहित शांतीकों प्राप्त भया ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे गाधीबोध प्राप्ति वर्णनंनाम षट्चत्वारिंशतितमःसर्ग ॥ ४६ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इह गाधीका आख्यान तुजकों मायाकी विषमता जतावणे निमित कहा हे ॥ जो परमात्माकी एसी माया हे सो मोहकों देणेहारी हे ॥ विस्तृतरूप दु र्गम हे ॥ जो आत्मतत्वतें भुला हे तीसकों आश्चर्यरूप भम दीखाती हे ॥ तुं देख जो दो मूहूर्त कहां अरु एता काल कहां ॥ अरु जो चंडाल अरु राजभमकों वर्षो पर्यंत देखत रहा बहुरी भम करी भाषणां अरु प्रत्यछ देखणा यह सब मायाकी विषमता हे सो अस्तरूप भम हे ॥ सो दृढ होकरी प्रसिद्ध भास्या ॥ तातें आश्चर्यरूप परमात्माकी माया हे जबलग बोध नही होता तवलग अनेक भमकों दीखाती हे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! यह माया संसार चक्र हे तीसका बडा तीच्छन वेगहे ॥ अरु सब अंगोकों छेदणेंहारा हे जीस क

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

री इस चक्रका रोधनां होवे अरु इस भमतें छुटीए सोइ उपाय कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह जो मायामय संसार चक्र हे तीसका नाभिस्थान चित्त हे ॥ जब चित वश होवे तव संसार चक्र वेग रोक्या जावे ओर कीसी प्रकाररोक्या नही जाता ॥ हे रामजी यह वार्ताकों तु भली प्रकार जानता हे ॥ हे निष्पाप जव चक्रकी नाभि रोकता हे तब चक्र स्थित होजाताहे रोकणे विना स्थित नही होता ॥ संसार रूपी चक्रकी चित्तरूपी नाभिकों रोकता हे तब चक्र स्थित होजाताहे ॥ रोकेविना स्थित नही होता जब चित्तकों स्थित करेगा तब जगत् भम निवृत्त होजावेगा ॥ अरु जब चित्त स्थित होताहे तब परम ब्रह्म प्राप्त होताहे ॥ अरु जो कछु करणाथा सो कीया होताहे कृतकृत होता हे ॥ अरु जो कछु प्राप्त होणाथा सो प्राप्त होताहे बहुरी पाछें पावणा कछु नहीं रहता ॥ तातें जेते कछु तप ध्यान तीर्थ दान आदिक उपाय हे तीस सबनकों त्यागकरी चितके स्थित करनेका उपाय करो ॥ संतोंका संग अरु ब्रह्मविद्या शास्त्रका विचार इस उपाय करी चित्त आत्मपदविषे स्थित होवेगा ॥ जो कछु संतो अरु शास्त्रोंनें कीया हे तीसका वारंवार अभ्यास करणा ॥ संसार मृग तृष्णाके जल अरु स्वप्नवत् जाणीकरी ईसतें वैराग करणा ॥ इन दोंनों उपायों करी चित्त स्थित होवेगा आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी ॥ ओर कीसी उपाय करी आत्मपदकी प्राप्ति न होवेगी ॥ हे रामजी बोलणे चालणेका वर्जन नही ॥ बोलीएं, दान करीएं, अथवा लेइएं, परंतु अंतर चित्तकों मत लगावहु ॥ इनका साक्षी जानणेवाला जो अनुभव आकाश हे ॥ तीस की ओर वृत्ति होवे युद्ध करना होवे तोभी करीएं ॥ परंतु वृत्ति साक्षीकी ओर होवे तीसकों अपणा रूप जानीएं अरु स्थित होइएं ॥ शब्द स्पर्श रूप रस गंध यह जो पांचविषय इंद्रियांके हे इनकों अंगीकार करीएं ॥ परंतु ईनके जानणे वाले साक्षी विषे स्थित होहु ॥ तेरा अपणा स्वरूप उही चिदाकाश हे ॥ जब तीसका अभ्यास वारंवार करीएं तब चित्त स्थित होवे ॥ अरु आत्मपदकी प्राप्ति होवे ॥ हे रामजी जबलग चित्त आत्मपदविषे स्थित नही होता तबलग जगत् भम निवृत्त नही होता ॥ ईस चित्तके संयोगतें चैतनका नाम जीव है ॥ ॥ जेसें घटके संयोगतें आकाशकों घटाकाश कहते हे ॥ जब घट टुट जावे तव महाकाशही रहेगा ॥ तेसें जब चित्तका नाश होवेगा तब यह जीव चिदाकाशही होवेगा ॥ अरु यह जगत्भी चित्तविषे स्थित हे ॥ चित्तके अभाव हुए जगत् भम शांत होजावेगा ॥ हे रामजी जबलग चित्त हे तबलग संसारभी हे ॥ जेसें जबलग मेघ हे तबलग बुंदांभी हे जब मेघ नष्ट होजावे तब बुंदांभी नही रहती अरु जेसें जबलग चंद्रमाकी कीरणां सीतल हे तबलग चंद्रमाके मंडलविषे तुषार हे ॥ तेसें जबलग चित्त हे तबलग संसार भम हे ॥ जेसें मांसका स्थान मसान होताहे तहां पंछीभी होताहे ओर ठोर एकठे नही होता तेसें जहां चित्त हे तहां राग दोष आदिक विकारभी होताहे ॥ अरु जहां चित्तका अभाव हे तहां विकारका अभाव हे ॥ हे रामजी जेसें पिशाच आदिककी चेष्टा रात्रविषे होतीहे दिनविषे नही होती ॥ तेसें राग दोष भय इच्छा आदिक विकार होताहे ॥ चित्तविषे जहां चित्तभी नही तहां विकारभी नही ॥ जेसें अग्नि विन उष्णता नही होती अरु बरफ सीतलता विना नही होता सूर्य विना प्रकाश नही होता जलविना तरंग नही होता तेसें चित्तविना जगत भम नही होता ॥ हे रामजी! शांतिभी इसीका नामहे ॥ अरु शिवताभी उहीहे सर्वज्ञताभी उहीहे जो चित्त नष्ट होवे ॥ आत्माभी उही हे तृप्तताभी उही हे ॥ अरु चित नष्ट नही भया तहां एते पदो विषे कोउ नही ॥ हे रामजी चितनें रहित चैतन हे सो चैतन कहाता हे ॥ अरु अमन शक्ति हे अरु सबकलनातें रहित हे ॥ जबलग इसकों बोध नही तबलग नाना प्रकारके पदार्थ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भासतां ह ॥ जब वस्तुका बोध हुआ तब एक अद्वैत एक आत्मसत्ता भासती है ॥ हे रामजी ज्ञान संवितकी ओर वृत्तिकों रखणा जगत्की ओर नही रखणा ॥ जाग्रतकी ओर नही जाणां ॥ जाग्रतके जाननेवालेकी ओरजाणा ॥ स्वप्न अरु सुषुप्तिकी ओर नही जाणां ॥ जो अंतरके जाननेवाला साक्षी सता हे तीसकी ओर वृत्ति रखणी ॥ यह चितकों स्थित करणेका परम उपाय हे ॥ जो संतोका संग अरु शास्त्रोंकरी निर्णय कीया अर्थ हे ॥ जब इसका अभ्यास होवे तब चित नष्ट होजावे ॥ अरु जो अभ्यास न होवे तोभी संतोंका संग अरु सत शास्त्रोंका श्रवणकरी बल करीएं तबसहजहि चमत्कार होआवेगा ॥ मनकों मनसाथ मथीएं तीसतें ज्ञानरूपी अग्नि नीकसेगी ॥ सो आशारूपी सब फांसीकों जलाइ डारेगी ॥ अरु जबलग चित आत्मपदतें विमुख हे तबलग संसार भ्रमकों देखता हे जब आत्मपदविषे स्थित होता हे तब सब क्षोभ मीट जाता हे ॥ जब तुजकों आत्म पदका साक्षातकार होवेगा तब कालकूट विषभी अमृत समान होजावेगा ॥ विषका जो विषभाव मारना हे सो न रहेगा ॥ अरु यह जब अपणे स्वभावविषे स्थित होता हे तब संसारका कारण मोह मीट जाताहे ॥ अरु जब निर्मल निरंश आत्म संवितते गीरता हे तब संसारका कारन मोह आनीप्राप्त होता हे ॥ अरु जब निरंश निर्मल आत्म संवितविषे स्थित होता हे तब संसार समुद्रकों तरी जाताहे ॥ अरु जेते तेज इश्वर बलवान हे तीन भवनतें तत्ववेता उत्तम हे ॥ उसके आगें सब लघु होजाता हे ॥ तीस पुरुषकों कीसी संसारके पदार्थकी अपेच्छानही ॥ उसका चित सत्यपदकों प्राप्त हुआ हे ॥ तातें चितकों स्थित करो तब वर्तमान कालभी भविष्यत कालकी न्यांइं होजावेगा ॥ जेसें भविष्यत कालका राग दोष नही स्पर्श कर्त्ता ॥ तेसें वर्त्तमान कालका राग दोष स्पर्श न करेगा ॥ हेरामजी आत्मा परम आनंदरूप हे तीसके पाएतें अमृतभी विष समान हो जाताहे ॥ अर्थ यह जो अमृतरूप होकरी चितकों खेंचता सो नही खेचता ॥ जीस पुरुषकों आत्मपदविषे स्थित भइ हे सो सबतें उत्तम हे ॥ जेसें मेरू पर्वतके निकट हस्तितुच्छ भासता हे तेसें तीसके निकट त्रिलोकीके पदार्थ सब तुच्छभासते हे ॥ अरु उह बडे दिव्य तेजकों प्राप्तहोता हे ॥ जीसकों सूर्य नही प्रकाश करी सकता परम प्रकाशरूप सब कलनातें रहित अद्वैत तत्व हे ॥ हेरामजी तीस आत्मतत्वविषे स्थित होउ ॥ जो पुरुष एसे स्वरूपकों पाया हे सो सब कछु पाया हे ॥ अरु जो एसे स्वरूपकों नही पाया सो कछु नही पाया ॥ हमकों ज्ञानकी वार्ता करते ज्ञानवानकों देखीकरी लज्जा कछु नही आवती ॥ अरु जो तीसज्ञान स्वरूपकी वार्तातें विमुख हे यद्यपि महा बाहो होवे तोभी गर्दभवत् हे ॥ जो बडे ऐश्वर्य करी संपन्न हे अरु आत्म पदतें विमुख हे तीनकों तुं विष्टाके कीठतेंभी नीच जाण ॥ अरु जीणा तीनका श्रेष्ट हे जो आत्मपदके निमित्त जतन करते हे ॥ अरु जीवना तीनका वृथा हे जो संसारके निमित जतन करते हे ॥ देखणे मात्र तो चैतन हे ॥ परंतु शवकी न्यांई हे ॥ अरु जो तत्ववेत्ता भए हे सो अपणे प्रकाश करी प्रकाशता हे ॥ अरु जीनकों शरीरविषे अभिमान हे सो मृतक समान हे ॥ हे रामजी इस जीवकों चिंतनें दिन कीया हे ॥ ज्यों ज्यों चित वडा होता हे त्यों त्यों इसकों दुःख होता हे ॥ अरु जीसका चित छीन भया हे तीसकों कल्याण हुआ हे ॥ जब आत्मभाव अनात्मविषे दृढ होता हे अरु भोगोंकी तृष्णाहोती हे तब चित वडा होजाता हे ॥ अरु आत्म पदतें दूर पडता हे ॥ जेसें वडे मेघके आवरन करी सूर्य नही भासता तेसें अनात्मा अभीमानकरी आत्मा नही भासता ॥ अरु जब भोगोंकी तृष्णा निवृत होजाती हे तब चित क्षीण होजाता हे ॥ जेसें वसंत ऋतुके गएतें पत्र कृश हो जाते हे तेसें भोग वासनाके अभावतें चित कृश होजाता हे ॥ हे रामजी चितरूपी सर्प हे सो दुर्वासनारूपी दु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गंध अव भोगरूपी वायु करी अरु शरीरविषे दृढ आस्थारूपी मृत्तिका स्थान करी बडा हो जाताहे ॥ तिनों पदार्थों करी जब बडा भया तब मोहरूपी विषकरी इसकों मारताहे ॥ हे रामजी! एसें दुष्ट चित्तरूपी सर्पकों जब मारे तब कल्याण होवे ॥ देहविषे जो आत्म अभिमान होइ गयाहे अरु भोगोंकी तृष्णा फुरतिहे अरु मोहरूपी विषचडी गयाहे ॥ जब विचाररूपी गरुड मंत्रकों चिंतवता रहे तब विष उतरी जावे॥ ओर उपाय विष उतारणेकों कोइ नही ॥ हे रामजी! अनात्माविषे आत्माभिमान अरु पुत्र दारा आदिकविषे ममत्व, इस करी चित्त बडा हो जाताहे ॥ अहंकाररूपी विकार करी अरु ममतारूपी क्रीडा करी अरु यह मेरा इस भावना करी चित्त कठिन हो जाताहै ॥ अरु चित्तरूपी विषका वछहे अरु देहरूपी भूमिपर लगाहे संकल्प विकल्प इसके टासहे ॥ दुर्वासनारूपी पत्रहे ॥ अरु सुख दुःख आधि व्याधि मृत्युरूपी इसके फलहे ॥ अहंकाररूपी जो कर्महे सो जलहे तिसके सीचणे करी वढताहे ॥ काम भोग रूपी पुष्पहे सो जलहे चिंतारूपी बडी वल्लीहे ॥ जब विचार अरु वैरागरूपी कुठार करी इसकों काटे तब शांतिकों प्राप्त होवे ॥ अन्यथा शांतिकों प्राप्त न होवेगा ॥ हे रामजी! चित्तरूपी एक हस्तिहे ॥ अरु शरीररूपी तलावविषे आनी स्थित भयाहे ॥ शुभ वासनारूपी जलकों मलीन करी डाराहे अरु धर्म संतोष वैरागरूपी कमलकों तोर डाराहे ॥ भोगों की तृष्णारूपी सुंढ करीकें ॥ तिसकों तुं आत्म विचाररूपी नेत्रो करी नखो करी छेद ॥ हे रामजी! चित्तरूपी कौआ हे जेसें कौवा अपवित्र पदार्थोंकों भोजन करताहे अरु सर्वदा कां कां कर्ताहे तेसें चित्त देहरूपी अपवित्रविषे बेठताहे अरु सर्वदा भोगोंकी उर धावताहे ॥ तीनके रसकों ग्रहण करताहे ॥ मौन कबहु न कर्ता ॥ अरु दुर्वासना करके काककी नांइ कृष्णरूपहे ॥ जेसें काकका एकही नेत्र होताहे तेसें चित्त एक विषयोंकों धावताहे ॥ एसें अमंगलरूपी कौवाकों विचाररूपी धनुष्य साथ मारहु ॥ तब सुखी होवेगा अरु चित्तरूपी इल पंखेरू हे भोगरूपी मांसके निमित्त सर्व ओरकों भमताहे ॥ अरु जहां अमंगलरूपी चील आताहे तहांतें विभूतीका अभाव हो जाताहे ॥ अरु मांसकी उर उंचा हो करी देखताहे नम्र भाव नही होता ॥ तेसें चित्तरूपी इल शरीररूपी स्थानविषे बेठताहे ॥ आत्मज्ञानरूपी विभुतीका अभाव हो जाताहे ॥ अरु भोगरूपी मांसकों देखी करी गीरताहे ॥ अरु अभिमानरूपी ग्रीवाकों उंची राखताहे ॥ एसा जो चित्त अमंगलरूप इलहे तिसकों जब नाश करे तब शांतिवान होवेगा ॥ अरु जेसें पिशाच आय जिसकों लागताहे सो खेदवान होताहे अरु शब्द करताहे ॥ तेसें चितरूपी इसकों पिशाच लगाहे अरु तृष्णारूपी पिसाचनी साथ शब्द कर्ताहे तिसकों काढहु ॥ आत्मातें इतर जो अभिमान करताहे ॥ एसा चित्तरूपी पिशाचहे तिसकों वैरागरूपी मंत्र करी दूर करहु ॥ तब स्वभाव सत्ताकों प्राप्त होवेगा॥ अरु इह चित्तरूपी वानर हे सो महा चंचलहे सदा भटकता रहता हे स्थिर कबहु नही रहता ॥ कबहु किसी पदार्थविषे धावता हे जेसें वानर जीस वछ पर बेठताहे तिसकों ठहरणे नही देता ॥ हे रामजी! चितरूपी जेवरीहे तिस साथ संपूर्न जगत बांधाहे कर्ता कर्म क्रियारूपी गांठी करीकें जेसें एक सांकली साथ अनेक बंधवान बंधतेहे अरु एक तागे साथ अनेक मणके परोतेहे ॥ तेसें एकचित्त साथ सब देहधारी बांधेहे ॥ तिस जेवरीकों असंग शस्त्र करी काटे तब सुखी होवे ॥ हे रामजी! चित्तरूपी अजगर सर्पहे अरु भोगोंकी तृष्णारूपी विषकरी पूर्न हे ॥ तिस सर्पनें फुत्कारे साथ बडे बडे लोक जलाएहे ॥ सम दम धैर्यरूपी जो कमलहे सो सब जल गएहे ॥ इस दुष्टके मारनेकों ओर समर्थ कोउ नही॥ एक विचाररूपी गरुडहे जब विचाररूपी गरुड उपजे तब इसकों नष्ट करे ॥ जब चित्तरूपी सर्प नष्ट हुआ॥ तब आत्मरूपी निध प्राप्त होवेगी॥ हे रामजी यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चित्त शस्त्रों करी काट्या नही जाता ॥ अरु अग्नि करी जलता नही ॥ न ओर किस उपाय करी नाश होताहे ॥ एक साधु संग अरु सत शास्त्रोंके विचार अभ्यास करी नाश हो जाता हे ॥ ओर किसी उपाय करी नष्ट नही होता ॥ हे रामजी ! यह चित्तरूपी गडेका मेघहे सो वडा दुःख दायकहे ॥ अरु भोगोंकी तृष्णारूपी विजली इसविषे चमकतीहे अरु जहां वर्षा होतीहे तहां बोधरूपी क्षेत्र अरु सम दमरूपी कमल नाश होताहे ॥ जब विचाररूपी मंत्र होवे तब शांत होजावे॥ हे रामजी चित्तकी जो चपलताहे तिसकों असंकल्प करीकें त्यागडु॥ हे जेसें ब्रह्मास्त्र करीकें ब्रह्मास्त्रकों छेदताहे॥ तेसें मन साथ मनकों छेदडु॥ अर्थ यह जो अंतर्मुखी करी स्थित करडु॥ जब तेरा चित्तरूपी वानर स्थित होवे तब शरीररूपी वृक्ष क्षोभतें रहित होवेगा॥ रामजी शुद्ध बोध करीकें मनकों जीतो॥ यह जगत तृणतेंभी तुच्छहे॥ तिसके पारकों प्राप्त होवडु ॥ इतिश्री यो० उपशम प्रकरणे राघव, सेवन वर्णनं नाम सप्तचत्वारिंशतितमः सर्गः ॥ ४७ ॥

॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी यह जो मनकी वृत्तिहे सो इष्ट अनिष्टकों ग्रहण करतिहे अरु खड्गकी धारावत् तीक्ष्ण हे ॥ ईसविषे तुं प्रीति मत कर इसकों मिथ्या जानीकरी त्याग कर ॥ हे रामजी बोधरूपी वल्ली शुभ क्षेत्र अरु शुभ काल करकें प्राप्त भईहे ॥ तीसकों विवेकरूपी जलकरी सिंचीएं तब परम पदकी प्राप्ति होवे ॥ हे रामजी जबलग शरीर मलीनता कों प्राप्त भयाहे नही अरु जबलग पृथ्वी पर नही गीर्या तबलग बुधिकों उदारकरी संसारते मुक्त होडु ॥ में तुजकों वचन कहे तीनकों तेंनें जानेहे ॥ ईनका दृढ अभ्यास करे तब द्रश्य भम निवृत्त होजावेगा ॥ हे रामजी यह पंचभूतका शरीर जो तुजकों भासता हे सो तेरा रूप नही ॥ तुं शुद्ध चैतनरूप हे शुद्ध बोध विचारकरीकें अनात्मा पंचभूतके अभिमानकों त्याग डु ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् कीस क्रम अरु कीस प्रकार इनका अभिमान त्यागकरी उद्दालक सुखी भयाहे ? ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी पूर्व जेसें उद्दालक भुतोके समूहकों विचारकरीकें परम पदकों प्राप्त भया हे सो तुं श्रवण कर ॥ हे रामजी जगत रूपी जीर्ण घर हे तीसके वायव्यकोणविषे एक देशहे ॥ तहां बडुत पर्वत अरु तमालादिक वृच्छ हे ॥ अरु महा मणिके स्थानहे ॥ एसे गंधमादन पर्वत एक स्थलथा ॥ तीस स्थानविषे एक उद्दालक नाम ब्राह्मण था ॥ सो बुधिवान मान करने जोग विद्वान था परंतु अर्ध प्रबुद्धथा ॥ का हेतें परम पदकों तीसनें पाया न था ॥ एसा जो ब्राह्मण सो जोबन अवस्थाके पूर्वही शुभेच्छा करीकें यम नियम तपकों शास्त्रोंयुक्त साधत भया ॥ तब तीसके चित्तविषे यह विचार उत्पन्न डुआ जो जीसके पाएतें बडुरी कलु पावणे जोग न रहे अरु जीसपदविषे विश्राम पाएतें बडुरी शोक न होवे अरु जीसके पाएतें बडुरी जन्मसाथ बंधन न होवे हे देव एसा पद मुजकों कब प्राप्त होवेगा अरु कब में मनके मननभावकों त्यागकरी विश्रांतिवान होउंगा ? जेसें मेघ भमणेकों त्यागकरी पहाडके शिखरमें विश्रांति करता हे ॥ अरु चित्तकी द्रश्यरूप वासना मेरी कब मीट जावेगी ॥ जेसें तरंगतें रहित समुद्र शांतिवान होताहे तेसें मनके संकल्प विकल्पतें रहित शांतिवान होवेगा ॥ अरू तृष्णारूपी नदी हे सो बोधरूपी बेडी सतसंग अरु सतशास्त्ररूपी मलाह करीके कब तरी जाउंगा ? अरु चित्तरूपी हस्ति जो अभिमानरूपी मदकरी उनमत्त हे तीसकों विवेकरूपी सींगकरी कब मारूंगा ? अरु ज्ञानरूपी सूर्यकरी अज्ञानरूपी अंधकारकों कब नष्ट करोंगा ॥ जीसकरी चित्तरूपी घुघु जगततें अंध होवे हे देव सब आरंभोंकों त्यागकरी अलेप अकर्ता कब होउंगा ॥ जेसें जलविषे कमल अलेप रहता हे तेसें मुजकों कर्म स्पर्श न करे ॥ अरु परमार्थरूपी भासर वपु मेरा कब उदे होवेगा ॥ जीस करी में जगतकी गतिकों हसोंगा अरु अंतर तोषकों पाउंगा ॥ वैराट आत्मा पूर्न बोधकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न्यांइ होउं उह समय कब होवेगा॥ जो में जन्मोंके अंधकों ज्ञानरूपी नेत्र कब प्राप्ति होवेगा॥ जीसकरी में परम बोध पदकों देखुंगा॥ अरु उह समय कब होवेगा जो मेरा चित्तरूपी मेघ वासनारूपी वायुतें रहित आत्मरूपी सुमेरु पर्वतविषे स्थित होकरी शांतिवान होउंगा ॥ अज्ञानदशा कब जावेगी ज्ञान दशा कब प्राप्त होवेगी अब उह समय कब होवेगा जो मन का या प्रकृतीयांकों देखीकरी में हसोंगा ॥ अरु उह समय कब होवेगा जो जगतके कर्म बालककी चेष्टावत मिथ्या जानोंगा अरु जगत मुजकों सुषुप्तिकी न्यांइ होजावेगा ॥ अरु उह समय कब होवेगा जो पथरकी शिलावत मुजकों निर्विकल्प समाधि लगेगी ॥ अरु शरीररूपी वृच्छविषे पंछी आलय करेगे ॥ निःसंग होकरी छातीपरी आन बैठेगे ॥ हे देव उह समय कब होवेगा जो इष्ट अनिष्ट विषयकी प्राप्तितें मेरे चित्तकी वृत्ति चलायमान न होवेगी अरु वैराटकी न्यांइ सर्वात्मा होउंगा ॥ अरु उह समय कब आवेगा जो मेरा सम असम आकार शांत होजावेगा ॥ सब अर्थोंतें निरिछितरूप में हो जाउंगा अरु कब में उपशमकों प्राप्त होउंगा ॥ जेसें मंदराचलतें रहित क्षीर समुद्र शांतिवान होता हे ॥ कब में अपणा चैतन वपुपाइ करी शरीरकों अशरीरवत् देखोंगा ॥ अरु कब मेरीपुर्न चिन्मात्र वृतिहोवेगी ॥ अरु कब मेरी बाहर अंतर सब कलना शांत होजावेगी ॥ अरु संपूर्न चिन्मात्रही मेरे तांई भांन होवेगा अरु में इहता अरु ग्रहण त्यागतें रहित कब संतोषकों प्राप्त होडुंगा ॥ अपणे स्वप्रकाशविषे स्थित होकरी संसाररूपी नदीके जरा मरण रूपी तरंगोतें रहित कब होउंगा ॥ अरु अपणे स्वभावविषे स्थित कब होउंगा ॥ हे रामजी एसें विचारकरी उदालकचितकों ध्यानविषे जोडने लागा ॥ परंतु चित्त रूपी बानर दृश्यकी ओर नीकसी जावे स्थित न होवे ॥ बहुरी ध्या नविषे जोडे बहुरी भोगोंकी ओर नीकसी जावे ॥ जेसें बानर ठेरता नही तेसें चित ठहरे नही ॥ जो बाहिर विषयोंकों त्यागकरी चित्तकों अंतरमुख कीया तव अंतर जो दृष्टि आइ तोभी विषयोंकों चितवणे लगा ॥ निर्विकल्प होवे नही जब रोकी रखे तब सुषुप्तिविषे लीन होजावे ॥ सुषुप्ती अरु लय जो निद्रा हे तीसहीविषे चित्त रहता हे ॥ तब उहांते उठीकरी ओर स्थानकों चला ॥ जेसें सूर्य सुमेरुकी प्रदच्छनाकों चलता हे तव गंधमादन पर्वतकी एक कंदराविषे स्थित भया॥ केसा पर्वत जो फुलों संयुक्त सुंदर अरु पशु पंछी मृगोंतें रहित एसा एकांत स्थान हे ॥ जो देवताकोंभी देखणा कठिन हे अरु तहां अत्यंत प्रकाशभी नही ॥ अरु अत्यंत तमभी नही॥न अत्यंत उष्ण हे न सीत हे ॥ जेसें मधुर कार्तिक होता हे ॥ निर्भय एकांत स्थान जेसें मोक्षपदवी निर्भय एकांतरूप होती हे तेसें तीस पर्वतविषे कुटी बणाइ डुइ ॥ बनदेवका स्थान अथवा सीद्धकाभी होवे ॥ परंतु ओरकी गम नही ॥ तीस कुटीविषे तमालपत्र अरु कमलोंका आसनकरीकें उपर मृगछाला बीछाइ ॥ तीस उपर बेठीकरी सब कामनाकात्यागकीया ॥ जेसें ब्रह्माजी जगत्कों उपजाइकरी छांडी बेठे तेसें सब कलनाकों त्यागकरी पद्मासन बांध्या ॥ अरु विचार करनेलगा अरे मूर्ख मन तुं कहां जाता हे यह संसार मायामात्र हे ॥ एताकाल तुं जगत्विषे भटकता रहताहे ॥ कछु तुजकों शांतिप्राप्त न भइ ॥ काहे तें जो वृथा धावता हे ॥ हे मूर्ख मन उपशमकों त्यागकरी भोगोंकी ओर धावता हे सो अमृतकों त्यागकरी विषका बीज बोवता हे ॥ यह सब तेरी चेष्टा दुःखोंके नि मित्त हे ॥ जेसें घुराण अपणा घर बनाइकरी आपहीकों बंधन करति हे ॥ तेसें तुं आपकों आप संकल्प उठाइकरी बंधन करता हे ॥ अब तुं संकल्पके संसर्गकों त्याग करी आत्मपद विषे स्थित होड्ड ॥ जो तुजकों शांति प्राप्त होवे ॥ हे मन जीव्हा साथ मीलीकरी जो तुं शब्द करता हे॥सो दर्दुरके शब्दवत व्यर्थ हे ॥ जब श्रवणोंसाथ

CC-0, Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मीलीकरी श्रवण करता हे ॥ तब शुभ शुभ वाक्य ग्रहण करीकें मृगकी न्यांई तुं नष्ट होता हे ॥ अरु तुचा साथमीली करी जो तुं स्पर्शकी इछा करता हे सो हस्तिकी न्यांई नाश होता हे ॥ अरु रसनाके स्वादकी जो इच्छा करताहे सो मच्छीकी न्यांइ नाश होताहे ॥ अरु गंधलेणेकी तुं इच्छा करता हे सो भंवरेकी न्यांइ नाश होजावेगा ॥ जेसें भंवरा सुगंधके निमित्त फुलविषे फसी मरता हे तेसें तुं फसी मरेगा ॥ अरु सुंदर स्त्रीयांकी वांछा करता हे सो पतंगकी न्यांइ जली मरेगा ॥ हे मूर्ख मन जो एक एक इंद्रियका स्वादलेते हे सोभी नाश पाता हे ॥ तुं तो पंच विषयके सेवणेवाला हे नाशक्यों न होवेगा ॥ तातें तुं इनकी इछा त्याग जो तुजकों शांति प्राप्त होवे ॥ जो इन भोगोंकी इच्छा न त्यागेगा तो मेही तुजकों त्याग छोडोंगा ॥ तुं तो मिथ्या असत्यरूप हे तुज साथमेरा क्या प्रयोजन हे ॥ विचारकरी में तेरा त्याग करता हों ॥ मूर्ख मन जो तुं देहविषे अहं अहं करता हे सो तेरा अहं कीस पदार्थ विषे हे अंगुष्ठतें लेकरी मस्तक पर्यंत अहं वस्तु कछु नही ॥ यह शरीर तो अस्थिमांस रक्तका थेलाहे ॥ यह तो अहंरूप हे नही ॥ अरु स्वास जो हे सो वायुरूप हे अरु पोल आकाशरूप हे यह पंच तत्वोंका जो शरीर वन्या हे तिसविषे अहंरूप वस्तु तो कछु नही हे ॥ मूर्ख मन तुं अहं अहं क्यों करता हें ॥ यह जो तुं कहताहे ॥ में देखता हों, में सुनता हों, में सुंघता हों, में स्पर्श करता हों, में स्वाद लेता हों ॥ इनके इष्ट अनिष्ट विषे रागदोषकरी जलता हे सो वृथा कष्ट पाताहे ॥ रूपकों नेत्र ग्रहण करता हे सो नेत्र रूपतें उत्पन्न भया हे ॥ तेजका अंशनेत्र विषे स्थित हे सो अपणे विषयकों ग्रहण करता हे ॥ इनके साथ मीलीकरी तुं क्यों तपाय मान होताहे ॥ अरु शब्द आकाशतें उत्पन्न हुआहे ॥ आकाशका अंश श्रवण विषे स्थित हे ॥ सो अपणे गुणशब्दकों ग्रहण करता हे ॥ इसके साथ मीलीकरी तुं क्यों रागदोषवान तपाय मान होताहे ॥ अरु स्पर्श इंद्रिय वायुतें उत्पन्न भयाहे वायुका अंश तुचाविषे स्थित हे ॥ उही स्पर्शकों ग्रहण करताहे ॥ तीस साथ मीली करी तुं क्यों रागदोष करी तपायमान होताहे ॥ अरु रसना इंद्रिय जलतें उत्पन्न भइ हे जलका अंश जिव्हाहे अग्रभागविषे स्थित हे ॥ सोइ रसकों ग्रहण करता हे इस साथ मीली तुं क्यों वृथा तपाय मान होताहे ॥ अरु प्राण इंद्रिय गंधतें उपजी हे सो पृथ्वीका अंशघ्राणविषे स्थित हे ॥ उही गंधकों ग्रहण करतिहे ॥ तीससों मीलीकरी तुं क्यों वृथा राग दोषवान होताहे ॥ हे मूर्ख मन इंद्रियां तो अपणे अपणे विषयकों ग्रहण करतियां हे॥तुं इनविषे क्यों अभिमान करता हे॥ जो में देखता हों में सुणता हों, में सुंघता हों, स्पर्श करता हों, रसलेताहों, यह तो इंद्रियां सब आत्मभर हे ॥ अर्थ यह जो अपणे विषयकों ग्रहण करतिहे ॥ ओरके विषयकों ग्रहण नही करतियां ॥ जो नेत्र देखते हे श्रवण नही कर्ते, अरु कर्न श्रवन कर्तेहे देखते नही, इत्यादिक सर्व इंद्रियांअपणा धर्म कीसीकों देतीयांभी नही अरु लेतीयांभी नही ॥ अपणे धर्मविषे स्थित हे ॥ अरु विषयकों ग्रहणकरी इनकों राग दोष कछु नही होता ॥ अरु इनकों ग्रहण करणेकी वासनाभी कछु नही ॥ अरु तुं एसा मूर्ख हे ओरोंके धर्म आपविषे मानीकरी राग दोषसों जलताहे ॥ जो तुंभी रागदोषतें रहित होकरी चेष्टा करे तो तुजकों दुःख कछु न होवे ॥ जो वासना सहित कर्म करता हे सोइ बंधनका कारन होताहे ॥ वासनाविंना दुःख कछु नहि ॥ अरु तुं मूर्ख हे जो विचारकरी नही देखता ॥ तातें में तुजकों त्याग करता हों ॥ तेरे साथ मीलीकें में बडे खेदकों पाताहों ॥ जेसें विघाडके बालककों सिंह चूर्न करताहे तेसें तेनें मुजकों चूर्न कीयाहे ॥ तेरे साथ मीलीकरी में तुच्छ हुआहों ॥ अब तेरे साथ मेरा प्रयोजन कछु नही ॥ में तो निर्विकल्प शुद्ध चिदानंद हों ॥ जेसें महाकाश घट साथ मीली करी !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घटाकाश होताहे तेसें तेरे साथ मीलीकरी मैं तुच्छ होगया हौं॥ इस कारनतें मैं तेरा संग त्यागकरी परम चिदाकाशकों प्राप्त होउंगा ॥ मैं निर्विकार हौं ॥ अहं त्वंकी कल्पनातें रहित हों तुं क्यों अहंत्वं करताहे ॥ शरीरविषे व्यर्थ अहं करनेवाला ओर कोउ नही ॥ तुंही चोर हे अब मैं तुजकों पकडी करी तेरा त्याग कीयाहे ॥ तुं तो अज्ञानते उपजा मिथ्या असत्यरूप हे ॥ जेसें बालक अपणे पछावेविषे वेताल जाणीकरी आपही भयकों पावताहे ॥ तेसें तुजनें सर्वकों दुःखी कीयाहे अब नाश होवेगा ॥ तब आनंद होवेगा ॥ तेरे उपजणेकरी महा दुःख हे ॥ जेसें कोई उंचे पर्वततें गीरीकें कूपविषे जाय पडे ॥ अरु कष्टवान होवे तेसें तेरे संगकरी मैं आत्मपदतें गीर्या देह अभिमानरूपी गिर्तविषें राग दोषरूपी दुःख पायाथा ॥ अब तुज कों त्यागकरी मैं निरहंकार पदकों प्राप्त भयाहों ॥ सो केसा पद हे न प्रकाश हे न तम हे न एक हे नदोहे ॥ न बडा हे न छोटा हे ॥ अहं त्वं आदिकतें रहित अचैत्य चिन्मात्र हे ॥ ज रा मृत्यु राग दोष भय सब तेरे संयोगतें होताहे ॥ अब तेरे वियोगतें मैं निर्विकार शुद्ध पदकों प्राप्त होताहों ॥ हे मन तेरा होणा दुःखका कारन हे ॥ जब तुं निर्वाण हो जावेगा तब मैं ब्रह्मरूप होऊंगा ॥ तेरे संगकरी मैं तुच्छ हुआ हों जब तुं निवृत्त हुआ ॥ तब मैं शुद्ध हुआ ॥ जेसें मेघआकाश कुहीडके होणेकरी मलीन आकाश भासताहे ॥ जब वर्षा गइ तब शु द्ध निर्मल आकाश होरहताहे ॥ तेसें तेरे निवृत्त हुए आत्मा निर्लेप अपणा आप भासता हे ॥ हे चित्त यह जो देह इंद्रियादिक पदार्थ हे सो भिन्न हे ॥ इन विषे अहं वस्तु कछु नही ॥ इनकों एक तुजनेही एकठा कीआहे जेसें एक तागा अनेक मनीकेकों एकठा करता हे ॥ तेसें सबकों एकठा करीकें तुं अहं अहं करता हे ॥ अरु तुं मिथ्या राग दोष करता हे ॥ तातें तुं शीघ्रही सब इंद्रियाकों लेकरी निर्वाण होहु ॥ जो तेरी जय होवे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे उद्दालक विचारो नाम अष्टचत्वारिंशतितमः सर्गः ॥ ४८॥ ॥७॥

उद्दालकोवाच ॥ आत्मा सूक्ष्मतें सूक्ष्म हे ॥ अरु स्थूलतें स्थूल हे ॥ शुद्ध निर्विकार शांतरूप हे सो मैं हौं ॥ अचैत्य चिन्मात्र हौं ॥ मेरे विषे विकार कोउ नही ॥ जेते कछु जन्म मरन आदिक विकार भासते हे सो आत्माविषे चितके कल्पे हे आत्माकों कोउ नही॥ जन्म तीसकों कहता हे जो पहिले न होवे ओर पाछें उपजे ॥ आत्मा तो आगेंही सिद्ध हे बहुरी जन्म केसें कहिए ॥ अरु मृत्यु तिसकों कहता हे जो पाछें न होवे पहिलें अभाव हो जावे ॥ आत्मा तो जगत्विषे अंतभी सिद्धहे तातें सब विकारोंतें रहित हे बहुरी मृत्यु प्रध्वंसा भाव केसें कहीए ॥ देहके आदि मध्य अंत तीनों काल सिद्ध हे तातें सब विकारोंतें रहित हे सो चित्तके संयोगतें विकारों सहित भासता हे ॥ हे चित्त तेरे सं योग करी मैं एते भ्रमकों प्राप्त भयाथा ॥ अरु शरीरविषे व्यर्थ अहं अहं होताहे ॥ सो जान्या नही जाता जो कोन हे ॥ शरीरतो रक्त मांसका पिंड हे इंद्रियां मन आदिक सब जड हे ॥ अहं करने वाला कोन हे जब अहं होता हे तब भाव अभाव पदार्थकों ग्रहण करता हे ॥ जहां अहंका अभाव हे तहां भाव अभाव केसें होवे ॥ अहंकार जुठ हे इंद्रियां अ पणे अपणे विषयकों ग्रहण करतियां हे ॥ अरु मनादिक विषेभी अपणे स्वभावविषे स्थित हे ॥ यह अहं करनेवाला नही पाईता जो कौन हे ॥ अहंका रूप कछु नही पाईता तातें नि श्चय भया जो सब पदार्थ जुठ हे ॥ अहंकार पदार्थके ग्रहण करनेवाला भी जुठ हे ॥ जेते कछु पदार्थ हे सो अहंकारकरी होते हे ॥ में क्यों इस साथ मीली करी देह ईंद्रियांके इष्ट अ निष्टविषे राग दोष करों ॥ ईसका अरु मेरा संयोग तो कछु नही ॥ में तो आत्मा निर्लेप अद्वैत हौं ॥ संयोग कीस साथ होवे ॥ भावरूप वस्तु ब्रह्म हे सो मैं हौं ॥ मेरा संयोग कीस साथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होवे ॥ यह तो हे नही सब असत्यरूप हे ॥ अरु जो कहीए देहादिक हे तोभी संयोग नही बनता ॥ जेसें लोहे अरु बटेका संजोग नही होता यह बडा आश्चर्य हे जो सबका अहं करने वाला कोन था यह मिथ्या अहंकार अज्ञान करीकें दुःख दायक था ॥ जेसें अज्ञान करीकें बालककों वेताल भासीकरी दुःख देता हे तेसें अविचार करीकें दुःख होता हे ॥ जेसें पहाड पर बादल स्थित होता हे सो पहाड बादल नही होता॥ अरु बादल पहाड नही होता तेसें आत्मा अनात्मा नही होता अरु अनात्मा आत्म नही होता॥ जेसें सूर्यकी कीरणांविषे जल भास ताहे॥ जेसें जेवरी विषे सर्प भासता हे तेसें आत्माविषे अहंकार भासता हे॥ विचार कीएतें अहंकार कछु नही नीकसता ॥ जहां अहंकार होता हे तहां दुःखभी आय स्थित होते हे॥ जे सें जहां मेघ होता हे तहां वीजलीभी होती हे तेसें जहां अहंकार होता हे तहां शरीर रूपी वृच्छकी मंजरी बढती हे॥ जेसें गरुडके विद्यमान सर्प नही रहता तेसें आत्मा वीचारके विद्यमा न अहंकार नही रहता ॥ तातें चित्तादिक सब जुठ हे अज्ञानकरी भासता हे ॥ इनकरी रच्या हुआ जगत् सत्य केसें होवे ॥ यह जगत अकारण हे तातें मिथ्या भमकरीके भासता हे ॥ जेसें भांतिकरीके आकाशविषें दुसरा चंद्रमा भासता हे ॥ जेसें नौकाविषे बैठेतें तट वृच्छ चलतें हे ॥ जेसें गंधर्व नगर भासता हे ॥ जब चित्त नष्ट होवे तब सब भ्रमका अभाव होजा ता हे ॥ देहविषे जो अभिमान हे सो दुःखोंका कारण हे ॥ जबलग विचार नही उपजता तबलग भासता हे जेसें बरफकी पुतली तबलग होती हे जबलग सूर्यका तेज नही लगा ॥ ज व सूर्यका तेज लगा तब बरफकी पुतली गिलजाती हे ॥ जेसें बालककों भमणेकरी पृथ्वी भमती भासती हे तेसें चित्तके भ्रमकरी यह जगत भासता हे ॥ अरु विचारके उपजेतें अहंकार गली जाता हे ॥ हे मन तेरे साथ मीलणे करी बडा दुःख होता हे अरु तुजतें रहित में आपकों देख्या हे ॥ अब तुं सब इद्रियों सहित निर्वाण होड्ड ॥ आत्मविचार करी आत्मअग्निविषे स्थित होड्ड ॥ जो सब मल तेरा जल अरु शुद्धताकों प्राप्त होवे अरु इस देह साथ तेरा मीलापहे सो दुःखके निमित्तहे ॥ मन अरु देहके अंतरतें आपसमें शत्रु भावहे ॥ अरु बाहिरतें स्नेह भासताहे॥ अंतर परस्पर नाश करनेकी इच्छा करतेहे॥ जो दुःख होताहे तो मन इसके नाशकी इच्छा करताहे अरु देह कहतीहे मन नाश होवे तो मेरेविषे दुःख कोउ नही॥ इसका मीलनाही दुःखका कारनहे ॥ हे मूर्ख मन देहकों तेरे संग करी दुःख होताहे आपतें इसविषेभी कोउ नही मनविषे देहका अभिमान न होवे तोभी दुःख कोउ नही ॥ इनके संजोग करी दुःख होताहे ॥ अरु वीछुरने करी दुःख कछु नही ॥ तेसें मन अरु देहविषे विजोग कछु नही ॥ जेसें जहां अंगारेकी वर्षा होतीहे तहां बुद्धिवान नही रहते ॥ तेसें इनविषे मीलाप हमकों रहणा जोग नही ॥ हे मूर्ख मन जेता कछु दुःख तुजकों होताहे सो देहके मिलापतें होताहे ॥ इसके साथ तुं किस निमित्त मीलताहे अरु आपकों सुख जानताहे इसके मिलणे करी तु जकों दुःखही होता हे परंतु एसा मुर्ख हे जो वारंवार देहकी ओरही दोडता हे ॥ तुं सुख जानता हे अरु तेरा नाश होता हे॥ जेसें पंतग दीपकों सुखरूप जानीकरी मीलणेकी इच्छा करता हे ॥अरु जल मरते हे जेसें मच्छी मांसकी इच्छाकरति हे सो कंडीविषे फस मरति हे॥ तेसें तुं देहकी इच्छा करता हे अरु नाशकों प्राप्त होता हे ॥ तातें इसका अभिमान त्याग जो तुजकों शांति प्राप्त होवे ॥ अरु देह कछु वस्तु नही मनही का विकारहे ॥ पंच तत्वोंकी देह बणी हुइहे सोभी कछु वस्तु नही सब मनके फुरने करी रचेहे ॥ तातें फुरनेंकों त्यागकरी आत्मपदविषे स्थित होउ जो तुजकों शांति प्राप्त होवे ॥ अरु में तो सबतें अतीत शुद्ध चिदानंद स्वरूप हों ॥ मेरे पास न कोउ मनहे न इंद्रियांहे ॥ में अद्वैतरूप हों ॥ जेसें राजाके समीप पेंदोइ नही होता तेसें मेरे निकट मन इंद्रियां कोउ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नही ॥ मैं शुद्ध आत्मतत्व हौं ॥ भोगोंसाथ मेरा क्या प्रयोजनहै जौ इस साथ मिली करी दीनताकों प्राप्त होउं ॥ मुजकों इनके साथ कछु प्रयोजन नही ॥ चिरपर्यंत रहें अथवा अबही नष्ट होजावे ॥ इनके नाश होणे करी मेरा नाश नही होता अरु ठहरणेविषे प्रयोजन नही होता ॥ इनतें आपकों भिन्न जान्याहे ॥ जेसें तिलोंतें तेल निकासी लीया तब बहुरी नही मिलता ॥ अरु दुधतें माखण निकास लीया तब बहुरी नही मिलता॥ तेसें बिचार करीकें आपणा आप काढलीया तब बहुरी इनके साथ नही मिलता ॥ मैं शुद्ध चिदानंद आत्मा हौं ॥ सब जगत मेरे आश्रयहे ॥ सबविषे मैं एकही अनुस्यूत व्याप्या हौं अब तिस स्वरूपविषे स्थित होउं ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! एसें विचारकरी उद्दालक ब्राह्मण वृत्तिकों विषयोंतें निवृत्त करीकें पद्मासंन धारा अरु प्रणव अर्ध मात्र अकार उकार मकार क्रम करीकें तिसकी उपासना करने लागा ॥ प्राणायाम करीकें मात्राका ध्यान करत भया ॥ अकार ब्रह्मा उकार विष्णु मकार शिव अर्धमात्र तुरीया इनकों क्रम सहित करने लगा ॥ प्रथम रेचक प्राणायाम करने लगा॥ अकारकी धुनि साथ रेचक करत भया॥ तिसकरी सब प्राणवायु अंतरतें निकसे ॥ तब अंतर शून्य अरु शुद्ध हुआ ॥ जेसें अगस्तमुनीने समुद्रकों शून्य कीयाथा तेसें अरु आकाशकरी एसी धुनी उचरी जो ब्रह्मा विष्णु रुद्र पर्यंत चलीगइ अरु देह अभिमानकों त्याग करी पुर्यष्टकाकों सुषुमनाके मार्गविषे प्राप्त कीया ॥ जेसें पंछी आलयकों त्यागकरी आकाशमार्गकों उडता हे तेसे उद्दालकनें पुर्यष्टाकाकों ब्रह्मरंध्रविषे स्थित कीया ॥ जबलग चित्त सुखेन रहा तबलग स्थित रहा ॥ काहेतें जो हठ करनेसों दुःख होताहे ॥ इसी कारन तें जबलग सुखेन रहा तबलग स्थित रहा ॥ जब थका तब पुर्यष्टकाका वायु अधतें आया तब उकार विष्णुरूपकी धुनी अरु ध्यान साथ कुंभक कीया ॥ सब प्राण वायुकों आधार चक्रविषें रोक्या ॥ न तलेकों गमन करे न उपरकों गमन करे ॥ तीसकरी प्राण स्थित संघट भए ॥ तीसतें अग्निनीकसी ॥ तीस अग्नि करी इसका पाप पुण्यरूपी शरीर जलगया ॥ तीसविषे जब लग सुखेन रहा तबलग स्थित भया ॥ काहेतें जो हठ योग दुःखदायक हे ॥ इस कारनतें जबलग सुखेन रहा तबलग स्थित भया ॥ बहुरी मकारकी धुनीसों रुद्रका ध्यान करीकें पूरक प्राणायाम करत भया ॥ पूरक प्राणायाम करीकें सब स्थान वायुसों पूर्न कीए ॥ ऊर्धकों चित्तकला प्राप्त भइ अरु जीसका स्पर्श महा सीतल हे जेसा चंद्रमाका मंडल सीतल हे ॥ तीसतें अमृतकी वर्षा होताहे तीसकरी यह ओरकों पवित्र करने हारा हुआ हे ॥ जेसें धुंआ आकाशकों जाताहे अरु जलकों पाइकरी ओरोंकों सीतल करने हारा होताहे तेसें इसका शरीर ओरोंकों पवित्र करने हारा हुआ ॥ जेसें मंदराचल करीकें मथ्या क्षीर समुद्र तीसतें कल्पवच्छ नीकस्या तेसें इसके शरीरविषे प्राणवायु स्थित भया ॥ पद्मासन बांधीकरी इंद्रियाकों रोकत भया ॥ जेसें हस्तिबंधनों साथ बंधता हे तेसें इंद्रियाकों रोकत भया ॥ अर्ध मात्रा जो हे तुरीया पद तीसके दर्शन निमित्त जतन करने लागा ॥ नेत्रोंकों अर्ध मुंदत भया ॥ अरु बाह्य विषयोंको त्याग कीया ॥ इंद्रियोंकोंभी त्यागकरी प्राण अपान कों मूलचक्रविषे रोकत भया तिसकरी नवही द्वारे रोके गए ॥ जेसें बालकके खेलणेका पाणीचोर होताहे तीसके मुंदणे करी चलता पाणी सबछिद्रोंतें रोक्याजाताहे ॥ तेसें मुल चक्रके रोकणे करी नवही द्वार रोकेगए ॥ इस प्रकार चित्तकों रोकत भया जब मनरूपी चंचल मृग दोडे तब वैराग अरु अभ्यासके बलकरी बहुरी ले आवे ॥ जेसें पुलकरी जलका वेग रोकता हे तेसें चित्तकोंस्थित कीया ॥ तब अंतःकरणकी जो सात्विकी वृत्तिहे तीसकों त्यागकरी स्थित भया ॥ तब मनकी वृत्ति जो हे निद्रारूप जडता तीसविषे मन मूर्छित होगया ॥ जेसें सूर्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बादलोंविषे होवे तेसें निद्राविषे लीन होगया ॥ तब राजस तामसका प्रवाह बहुरी फुरणे लगा ॥ तीसकों आत्म विवेककरी निवृत्त कीया ॥ जेसें प्रकाशकरी तमकों निवृत्त करता हे तेसें यह विकल्परूपी तमकों निवृत्त करत भया ॥ विवेकके बलकरी चित्त कलाविषे लगाया ॥ तीसकों चित्तकी वृत्तिसाथ साक्षातकार कीया ॥ महा प्रकाशवान अरु शांतिरूप तीसविषे एक छिन चित्त स्थित रहा ॥ बहुरी बाह्य नीकसीगया ॥ जेसे पुलकों तोडीकरी जल नीकसी जाताहे ॥ तेसें नीकसी गया ॥ बहुरी अभ्यासके बलकरी आत्मकलाविषे लगाया ॥ तब तो स परम पद शांत आत्मपदविषें चित्तकी वृत्ति स्थित भई ॥ तहां परम आनंद अमृतविषे मग्न भई ॥ जो अशब्द आनंद परिणामतें रहित हे तीसविषे स्थित हुआ ॥ जीस पदविषे देवता ऋषीश्वर स्थित हे जीस पदविषे ब्रह्मा विष्णु रुद्र स्थित हे ॥ तीसपदविषे उद्दालक स्थित भया ॥ हे रामजी जो एक छीनभी तिस पदविषे स्थित भया हे ॥ अरु जो वर्ष पर्यंत स्थित भया हे सो दोनों तुल्य हे ॥ जोसकों तीस पदका अनुभव भया हे सो भोगोंकी इच्छा नही करता ॥ जेसें जीसनें स्वर्गका नंदन वन देख्या हे सो करजुएके वन देखनेकी इच्छा नही करता ॥ तेसें ज्ञानवान भोगोंकी वांछा नही करता अरु शोक कदाचित् नहीं उपजता ॥ जेसें जीसकों राज प्राप्त भया हे सो दीनताकों प्राप्त नही होता तेसें जीसनें आत्मपदविषे स्थित पाइ हे तीसकों विषयोंकी तृष्णा अरु शोक नही उपजता ॥ हे रामजी इस प्रकार उद्दालक स्थित था ॥ तब सिद्ध गंधर्व विद्याधरोंके गण समूह तीसके निकट आय प्राप्त भए ॥ बडे तेजवान अरु चंद्रमाकी न्यांई मुख जिनके सो आइकरी इसकों नमस्कार करतभए अरु कहा हे भगवन् स्वर्गकों चलो अरु दिव्य भोग भोगो ॥ तुम बडी तपसा करी हे धर्म अर्थ पुण्यका सार काम हे अरु कामका सार जो स्त्रीयां हे सो तुमारे भोगणे निमित्त हे ॥ सो केसी स्त्रीयां हे विद्याधरीया महा दैवमूर्ति स्वर्गभी इनों करी सोभता हे ॥ जेसें वसंतऋतुकी मंजरीयां पुष्पों करी पृथ्वी सोभती हे तातें तुम विमानोपर आरुढ होकरी स्वर्गकों चलो अरु बहुत काल पर्यंत भोग भोगो ॥ हे रामजी जब सिद्धोंनें इस प्रकार बहुत कहा तब उद्दालकनें तीनका अतिथ जाणीकरी निरादर न कीया ॥ जथाजोग पुजाकरीकें हसत भया हे सिद्धों तुमकों नमस्कार हे तुम जाओ ॥ तीसकी सिद्धताविषे आशंक न भया ॥ काहेतें जो परमानंदविषे स्थित रहा ॥ विषयोंके सुख तुच्छ जानत भया ॥ जेसें अमृत खाणेवाला विषकी इच्छा नही करता ॥ तेसें उद्दालक विषे सुखकों न चाहत भया ॥ तब कछुक दीन रही सिध पुजत भये बहुरी उठी गए ॥ यह परम पदविषे स्थित भया ॥ तीसपदविषे स्थित हो अपणे प्रकृत व्यवहारकों करत भया ॥ मेरू पर्वत मंदराचल पर्वतविषे वीचर्या कंदराविषे ध्यानकर बेठे ॥ कछु एक दिन बेठे रहे कछु वर्षोंके समूह बीत जावे इस प्रकार समाधिकरीकें उतर्या तब समाधि होगइ ॥ हे रामजी चित्ततत्वज्ञ अभ्यासकरीकें महाचैतन तत्वकों प्राप्त होता हे ॥ अरु दिशाविषे जेसें चित्रका सूर्य होता हे ॥ तेसें उदय अस्तते रहितहुआ उपशम परमपदकों पाया ॥ अरुचित्त भली प्रकार शांत होगया ॥ अरु जन्मरूपी फांसीकों तोडत भया ॥ अरु देहरूपी भ्रम क्षिण होगया ॥ शरत्कालके आकाशवत निर्मल भया ॥ अरु विस्तृत उत्कृष्ट प्रकाशरूप उद्दालकका वपु होगया ॥ अरु सत्ता सामान्य विषे स्थित होकरी विचरणे लगा ॥ परम शांतिकोंप्राप्त भया ॥ इतिश्री यो० उपशम प्रकरणे उद्दालकविश्रांति वर्नन नाम एकोनपंचाशत्तमःसर्गः ॥ ४९ ॥ ॥ ७ ॥

रामोवाच ॥ हे आत्मरूप ज्ञानदिनके प्रकाशकर्ता सूर्य हें संशयरूपी तृणोके जलावणेहारे अग्नि हे अज्ञानरूपीतापोंके शांतकर्त्ता चंद्रमा हे ईश्वर वसिष्टजी सत्ता सामान्यका रूप क्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जगतके अत्यंत अभावकि भावना करीके जब चित क्षिण होजावे तिसतें शेष जो रहे सो सत्ता सामान्य हे ॥ जब चित्ततें रहित आत्मसत्ता होवे जीस विषे चित्त लीन होजावे ॥ तब सत्ता सामान्य उदय होआवे ॥ जो असत्यकी न्यांई स्थित हे सो सत्ता सामान्य हे ॥ हे रामजी जब सब इंद्रियां प्रपंच शांत होजावे ॥ अरु शुद्ध बोध रहे अंतर बाहिरका व्यवधान मीट जावे ॥ सब जगत एकरूप होजावे ॥ समाधि अरु उत्थान एक जेसा होजावे ॥ एसी दशाकी जो प्राप्ति हे सो सत्ता सामान्य हे ॥ सो देहके होतेही विदेहरूप हे ॥ तीसकों तुरीयातीत पद कहतें हे ॥ समाधिविषे स्थित होवे तोभी केवल रूप हे ॥ उत्थान होवे तोभी केवल रूप हे ॥ अरु अज्ञानी जो हे तीसकों समाधि उत्थान तुल्य नहा होता ॥ काहेतें जो ज्ञानतें उपजी समाधि तीसकों नही प्राप्तभइ ॥ जो जीवनमुक्त पुरुष हे ॥ हमतें आदिलेकरी जीनकों ज्ञानदृष्टि प्राप्त भइ हे नारद देवर्षी ब्रह्माविष्णु रुद्र आदिक ओरभी ज्ञानवान पुरुष हे ॥ सो सत्ता सामान्यविषे स्थित हे ॥ तीनकों समाधि अरु उत्थानविषे तुल्यता हे ॥ जेसें आकाशविषे पवनका चलणा अरु ठहरणा समान हे जेसें पृथ्वीविषे जल स्थित हे अरु अग्निविषे उष्णता स्थित हे तेसें सत्तासामान्यविषे स्थित हे ॥ तिसपदविषे स्थित होकरी उद्दालक विचार करता था ॥ जबलग जगत कोटरविषे विचारणेकी इच्छाथी तबलग एसेंविचारता रहा ॥ जब विदेहमुक्त होणेकी इच्छा भइ तब पाहाडकी कंदराविषे पत्रोंका आसन बनाइकरी पद्मासन बांधा ॥ बाह्यइंद्रियोंकें विषयोंका त्याग कीया ॥ दंतो साथ दंतों मीलायकरी सब संकल्पका त्याग कीया ॥ प्राणवायुकों मूल आधार चक्रकरीकें नवही द्वार खेचरी मुद्राकरी रोकतभया॥ न अंतर न बाहिर न अध न ऊर्ध सर्व भाव अभाव विकल्पकों त्यागकरी आत्मतत्वविषे चित्तकी वृत्तिकों जोडत भया॥ तब शुद्ध चिन्मात्रविषे चित्तकी वृति जायप्राप्त भइ रोम खडे होआए तिस व्युत्थानकोंभी त्याग कीया तब सत्तासामान्य विश्वंभर पदकों प्राप्तभया ॥ परम विश्रांत अनादि आनंद सुंदररूप हे तीसपदकों प्राप्त हुआ ॥ चिरकाल करीकें क्षीणमनभया ॥ तब पुतलीकी न्यांई शरीर होगया जेसें शरत्कालका आकाश निर्मल होता हे तेसें निर्मल पदकों प्राप्तभया॥ जीसतें चित्त उपजा था तीसविषे जा यलीन भया ॥ जेसें सूर्यकी कीर्णाद्वारा,वृच्छ विषे रस होता हे अरु सूर्यही खेंची लेता हे जेसें समुद्रविषे तरंग उपजी करी तीसहीविषे लीन होता हे ॥ तेसें चित्त लीन होगया अरु संकल्प संपुर्न उपाधिविलासतें रहित भया ॥ तीस आनंदपदकों प्राप्त भया जीसविषे इंद्रादिकोंका आनंद तुच्छ भासता हे ॥ एसा विश्वंभर आनंद जो उत्तम पुरुषों करी सेवणेजोग हे तीसकों उद्दालक प्राप्तभया ॥ अद्वैत अशब्द सत्ता सामान्य पदविषे स्थित भया ॥ परमशांतिरूप होतभया ॥ तब केतेक काल पीछे तीसका शरीर गीरपडा ॥ जेसें रस सुकेतें वृच्छ गीरपडता हे सूर्यकी कीर्णाकरी सुका हुआ शरीर बीनाकी न्यांई होत भया॥ जेसें बीणा बाजती हे अरु तीसका शब्द प्रगट होता हे तेसें जब वायु चले तब तीस शरीरविषे प्रवेशकरी नीकसेते शब्द प्रगट होता हे ॥ केतेक कालपिछेंते देवताकी स्त्रीयां अरु अश्विनीकुमारकी शक्ति आदिक आइयां ॥महा अग्निकीन्यांई जीनका प्रकाश हे ॥ अरु देवदेवी हे सब देवताकरी पूज्य सों सखियों सहित आइकरीके गलेविषे सुंदर पुस्पोंकी माला पहिराइ॥ अरु मोरके पिच्छवत सुंदरकरीकें तीसके आगें पूजाकरी नृत्य करने लगीयां अरु लीला करीके शोभत भइयां ॥ हे रामजी उद्दालकके चित्तकी वृत्तिमें कलनातें रहित विवेकरूपी वल्लीप्रगट भइ तीसकों आत्मानंद रूपी फल भया ओर जीसके रिदेविषे एसे फुलोंकी सुगंध स्थित होवे सोभी सब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भ्रमकों तरी जावे ॥ जीसकों एसाविवेक प्राप्त होवे सो सब भ्रमतें मुक्त होवे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे उद्दालकनिर्वाणवर्णनं नामपंचाशत्तमःसर्गः ॥ ५० ॥

वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार उद्दालक ऋषीश्वर आत्मपदकों प्राप्तभया हे ॥ तेसें क्रमकरीकें अपणे आपकों विचारकरीकें तुं आत्मपदकों प्राप्त होइ ॥ हे कमलनेन कर्तव्य यही हे जो गुरू अरु शास्त्रोकें वचनोंकों धारीकरी जगत भ्रमतें मुक्त होइ अरु आत्म अभ्यासकरी शांत पदकों प्राप्त होणा ॥ प्रथम गुरू अरु शास्त्रोंके वाक्योंकों समजीएं तीसकरी जो विषयभूत अर्थ हे तीसके अभ्यासविषे बुधिकों लगाईए ॥ इस प्रकार जब दृढता होवे तब परम पदकी प्राप्ति होवे ॥ अथवा एक बुद्धिविषे तीक्ष्ण अभ्यास होवे ॥ कलंक कलनातें रहित एसा बोध होवे अरु साधनादि सामग्रीतें सहित होवे अथवा वैरागादिक सामग्रीतें रहित होवे तोभी अविनाशी पदकों प्राप्त होवे ॥ रामोवाच ॥ हे भूतभविष्यके इश्वर एकज्ञानवान पुरुष समाधिविषे स्थित होताहे ॥ बहुरी जगत व्यवहारविषे विचरतेहे ॥ अरु एक समाधिविषे स्थित हे ॥ जगतका व्यवहार नही करते ॥ तीन दोनोंविषे श्रेष्ट कोन हे ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी प्रथम समाधिका लच्छन सुन जो समाधि कीसकों कहतेहें अरु व्युत्थान कीसकों कहतेहें सो सुन यह गुणोंका समूह अहंकारतें लेकरी तत्वगुणात्मक हे ॥ जो इनकों अनात्मरूप देखता हे अरु आपकों केवल इनका साक्षीचैतन जानताहे अरु स्वाभाविक जीसका चित्त सीतल हे तीसकों समाधि कहतेहे ॥ जो मैत्री करुणा अमान्यता आदिक गुणकरी स्थित हुआहे मन आत्मविषय करी शांतिकों प्राप्त होताहे ॥ तीसकों समाधि कहतेहे ॥ हे रामजी ॥ जीसकों एसा निश्चय होताहे जो में शुद्ध चिदानंद स्वरूप हों अरु दृश्यके संबंधतें रहित हो एसें निश्चय करी जीसका अंतः करन सीतल होताहे सो कोउ बनविषे अथवा गृहविषे रहे सो दोनों स्थान उनकों तुल्य हे ॥ अरु उह दोनों पुरुष तुल्य हे ॥ जो अंतःकरन सीतल होवे सो बडे तपोंका फल अनंत हे ॥ हे रामजी जो इंद्रियोंकों समनकरीकें बेठाहे अरु मनकरी जगतके पदार्थकी चीतवना करता हे तीसकी समाधि मिथ्याहे ॥ उह उन्मत्तकी न्यांइचृत्य करता हे ॥ अरु जीसकों वासना कोउ नही मन विषे अरु व्यवहार करता हे ॥ तीसकों बुधिवानकी समाधिके तुल्य जाण ॥ कोउ ज्ञानी व्यवहार करताहे कोउ ज्ञानवान व्यवहारकों त्यागकरी बनविषे समाधिविषे स्थित हो बेठाहे सो दोनों निश्चय करी परम पदकों प्राप्त होते हे ॥ इसविषे संशय नही करना ॥ ज्ञानवान निर्वाह पुरुषार्थ करताभी द्रष्ट आताहे तोभी अकर्ता हे अरु जो अज्ञानी कर्ताभी नही परंतु वासनाकरीकें कर्तव्य भावकों प्राप्त होताहे ॥ जेसें कोइ पुरुष कथा श्रवन करने बेठाहे अरु मन कीसी और ठोर नीकसी गया हे तो सुनता बेठाभी नही सुनता तेसें ज्ञानवानका चित्त आत्मपदकी ओर लगाहे तातें उस कर्त्ताभी नही कर्ता ॥ उसकों कर्तृत्वका अभिमान नही कछु होता ॥ अरु घन वासना सहित जो अज्ञानी सब इंद्रियांकों स्थित करीकें सोइ गया हे तीसकों स्वप्न आया सो पर्वततें टोएविषे आपकों गीर्या देषताहे अरु कष्टवान होताहे ॥ तातें जहां वासना हे तहां क्षोभभीहे ॥ जहां वासना कछु नही तहां शांतिहे ॥ हे रामजी जीसविषे कर्तृत्वका अभिमान नही अरु निश्चयकरी आपकों अकर्ता जानता हे तीसकों केवलीभावतें समाधि स्थित जाण ॥ अरु जीसविषे कर्तृत्व अभिमान हे अरु समाधिकरी बेठा हे तोभी तीसकों व्युत्थान जाण ॥ हे रामजी चित्तकों चलावणेका कारन स्मृति हे ॥ जो स्मृति जगतकी लेकरी समाधि लगाय बेठता हे तोभी चित्त वासनाकरीकें विस्तारकों पावताहे ॥ जेसें बीजसों अंकुर उपजताहे अरु विस्तारकों पावताहे तेसें मनविषे जो स्मृति वासनाकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होतीहे तीसकरी चित्त विस्तारकों पावताहे अरु जो जगतकी वासना मनतें जाती रही अर्थ यह जो जगतका सतत भाव निवृत्त होवे तब चित्त अचल होजाताहे ॥ हे रामजी जीस चित्तसों वासना नष्ट होतीहे ॥ तीसकों अचल स्थिति कहते हे ॥ सो ध्यानविषे केवलीभावविषे स्थित होताहे ॥ अरु जीसके चित्तविषे सदा वासना फुरतिहे ॥ तीसकों सदा क्षोभ होताहे तातें निर्वासनिक होकरी परम पदकों प्राप्त होहु ॥ हे रामजी जीस चित्तविषे वासना गंध होतीहे तहां कर्तृत्वका अभिमान फुरता हे तीसकरी सदा दुःखी होताहे ॥ वासनाके क्षीण हुएतें मुक्त होताहे जिस पुरुषके चित्तसों जगतकी आस्था निवृत्त भइहे अरु वीतशोक भयाहे सो स्वस्थ आत्माहे तिनकों समाधि कहताहे ॥ हे रामजी! जिसके अंतरतें संसार का राग दोष मीटी गयाहे अरु शांतिकों प्राप्त भयाहे तिसकों सदिव्य समाधि कहतेहे ॥ तातें चित्तविषे जो पदार्थ भावनाहे तिसकों त्याग करी अपणे स्वभावविषे स्थित होहु तब गृहविषे रहहु अथवा वनविषे जावहु ॥ दोनो तुजकों तुल्यहे ॥ हे रामजी! गृहविषे स्थितहे अरु चित्त तिसका समाहतहे अहंकारके दोषतें रहितहे तिनकों कुटुंब अरु जनोंके समूहभी वनकी नांइ हे ॥ जेसें उसकों वनहे तेसें ज्ञानवानकों गृह वन तुल्यहे ॥ अरु देह अभिमानी जो अज्ञानीहे सो वनविषे जाय समाधि लगाय बेठताहे अरु चित्तकी वृत्तिविषयोंकी ओर रहतीहे तब उह जगतके समूहकों देखताहे ॥ अथवा सुषुप्तिविषे जडभूत हो जाताहे ॥ हे रामजी! चित्त उत्थानविषे स्वरूपतें गीर्या हुआ जगत भ्रमकों दिखाताहे ॥ अरु जो चित्त निर्वाण पद आत्माविषे स्थित होताहे तब उपशम होताहे ॥ हे रामजी! जो पुरुष भाव पदार्थों सर्वोंतें आत्माकों अतीत जाणताहे सो समाहत चित्त कहाताहे ॥ अरु जिसकों जाग्रत जगत स्वप्नवत भासताहे सो समाहत चित्त कहाताहे ॥ उह पुरुष जनके समूहविषे रहताहे तोभी उसका संबंध किसी साथ नही ॥ जेसें कोउ पुरुष राजमार्गविषे चला जाताहे तहां किसी मार्गके पदार्थ साथ संबंध नही होता तेसें उस पुरुषका अभिमान किसीविषे नही फुरता ॥ जिस पुरुषका चित्त अंतर्मुख हुआहे सो सोवे अथवा बेठे अथवा चले देखे ॥ नगर ग्राम सब उसकों महाबनरूप भासताहे सब जगत उसकों आकाशरूप भासताहे ॥ जिस पुरुषकों आत्माविषे प्रीत भइहे तिसकों अंतर्मुखी कहताहे ॥ जिसका अंतर आत्मज्ञान करी सितल भयाहे तिसकों सब जगत सितलरूप भासताहे ॥ जबलग जिताहे तबलग विगत ज्वर होकरी जिताहे ॥ अरु जिसका अंतर तृष्णा करी जलताहे तिसकों सब जगत दावाग्नि साथ तपता भासताहे ॥ हे रामजी! यह सब जगत इसके चित्तविषे स्थितहे ॥ जेसी भावना चित्तविषे होतीहे तिसके अनुसार जगत भासताहे ॥ स्वर्ग पृथ्वी लोक पाताल वायु नदीया आकाश देशकाल जेता कछु जगतहे सो सब चित्त अतःकरनविषेहे ॥ उही बाहिर विस्तार हो करी भासताहे ॥ जेसें बटके बिजविषे बटका विस्तार होताहे तेसें चित्तविषे जगतका विस्तार होताहे ॥ अरु बाहिर जो सूर्य आदिक भासताहे सोभी चित्तके अंतर स्थितहे ॥ जेसें फुल खीलताहे तिसके अंतरकी सुगंध बाहिर भासतीहे अरु वस्तुतें न कछु अंतरहे न बाहिरहे ॥ जेसा किंचन होताहे तेसाही चैत्यता करी फुरताहे ॥ तेसें उही सत्ता जगतरूप होकरी भासतीहे ॥ जगत सब आत्मरूप हे ॥ और न कोउ सत्यहे न असत्यहे ॥ एक आत्मसत्ता ज्योंकी त्यों स्थितहे ॥ जो ज्ञानवान पुरुषहे तिनकों सदा एसेंही भासताहे ॥ हे रामजी! जिसके अंतर शांतिहे तिसकों सब जगत शांतिरूपहे ॥ अरु जिसका अंतर देहाभिमानविषे स्थितहे सो नाशरूप होताहे अरु भयकों प्राप्त होताहे ॥ किसी ओरतें शांति उसकों प्राप्त नही होती ॥ स्वर्ग पृथ्वी लोक पाताल वायु आकाश पर्वत नदीयां देशकाल सबकों प्रलयकालकी अग्निवत जलता देखताहे ॥ जिसके अंतर ताप होताहे तिसकों सब जगत तपता भासताहे ॥ आत्मज्ञानीकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शांतरूप भासताहै ॥ जैसें अंधकों सब जगत तमरूप भासताहे अरु नेत्रोंवालेकों सब जगत प्रकाशरूप भासताहे ॥ हे रामजी ! जिस पुरुषकों आत्मपदविषे प्रतीति भइहे अरु इंद्रियों साथ कर्मभी करताहे परंतु हर्ष शोकके वश नही होता ॥ सो समाहतचित्त कहाताहें ॥ जो पुरुष सबकों आत्मा देखताहें चित्तकों चित्तवता नही अरु भविष्यतकी इच्छा नहीं करता ॥ वर्तमानविषे राग दोषतें रहित होकरी बिचरताहे सो समाहित चित्त कहाताहे॥हे रामजी! जो पुरुष जगतकी पूर्वापर गतिकों देखी करी हसताहे अरु समपदविषे स्थित होताहे॥किसीविषे ममता नही करता ॥ सो समाहित चित्त कहाताहे॥ अरु जो पुरुष अहं ममतातें रहितहे ॥ अरु जगतकी विभाग कलनातें रहितहे ॥ चतन अचैतन भाव जिसकों नही फुरता सो पुरुष स त्यहे॥ अरु आकाशकी नांइ स्वच्छ निर्मलहे ॥ राग दोष क्रोध विकारोंतें काष्ट लोष्ट समान हो रहताहे॥ अरु सब भूतोंकों अपणे समान देखताहे अरु ओरके द्रव्यकों देखी करी दृष्टि नही करता ॥ स्वभावही करी नही चाहता कछु द्वंद्वके भय करी नही त्यागता ॥ एसें जो देखताहे अरु अहंकारतें रहित होताहे ॥ जगतके न सत्य भावकों देखताहे न असत्य भावकों देखता हे न ज्ञानकों देखताहे न अज्ञानकों देखताहे ॥ न जड देखताहे न चैतन देखताहे केवल अद्वैत तत्व देखताहे ॥ सो महा शांत पदविषे स्थितहे सो उठी खडा होवे अथवा बेठा रहे उदे होवे अथवा अस्त होवे ॥ बडे भोगोंविषे रहे अथवा वनविषे जाय बेठे ॥ अथवा मद्यपान करी उन्मत्त होवे अरु नृत्य करे ॥ अरु गयादिक तीर्थोंविषे निवास करे ॥ अथवा कंदराविषे जाइ निवास करे शरीरकों अगर चंदनका लेपन करे अथवा चीकड साथ लपेटे॥ अथवा देह अवही गीरे अथवा कल्प पर्यंत रहे॥ कछु कदाचित्भी तीस पुरुषकों कलंक नही लगता॥ जेसें स्वर्नकों चीकडका मिलापका दोष नही लगता ॥ तेसें ज्ञानवानकों कर्तृत्वका दोष नही लगता॥ हे रामजी ! इस संवितकों अहंताही कलंकहे सो महा पुरुष अहंकारतें रहितहे ॥ ता तें स्पर्श नही होता ॥ जेसें सीपीकों रूपेका आभास नही स्पर्श कर्ता ॥ तेसें ज्ञानवानकों क्रिया स्पर्श नही करति ॥ हे रामजी ! अहंताही करीकें यह दीन होताहे ॥ जब अहंता इसकों फुरतिहे तब अनेक प्रकारके दुःख सुख देखताहे ॥ परंपरा जन्मोंकों देखताहे अरु भयकों प्राप्त होताहे ॥ जेसें किसीकों जेवरीविषे सर्प भासताहे अरु भय पावताहे ॥ जब भली प्रकार दीपकके प्रकाश करी देखताहे तब सर्प भय निवृत्त होताहें ॥ तेसें अहंता करी यह दुःख पावता हे ॥ अहंताके शांत हुए शांतिवान होता हे ॥ हे रामजी ! ज्ञानवान जो कछु कर्म कर ताहे खाता पीता लेता देता हवन कर्ताहे तिसविषे अहंताका अभिमान नहीं करता ॥ तातें करनेविषे तिसका कछु अर्थ सिद्ध नही होता अरु जो नही करता तिसविषे कछु अभिमा न नही ॥ तातें करणेते उसकी हानि कछु नही होती ॥ अपणे स्वभावविषे स्थितिहे ॥ जगतकों द्वैत भावकरी नही देखता ॥ सर्व आत्मभाव करी देखताहे ॥ तातें कर्म स्पर्श नही करता ॥

इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे ध्यानविचारो नाम एकपंचाशत्तमः सर्गः ॥ ५१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी चित्त आदिक जो जगत् हे सो वास्तव आत्मातें भिन्न कछु नही आत्मारूपी मीरच हे तीसविषे चित अहंता रूपी देशकाल तीक्ष्णता भिन्न नही ॥ जेसें इ क्षुतें मधुरता भिन्न नही तेसें आत्मातें जगत् भिन्न नही ॥ जेसें पथरविषे कठोरता हे तेसें आत्माविषे जगत हे ॥ जेसें पर्वतविषे जडता होती हे तेसें आत्माविषे अहंता होती हे ॥ जेसें ज लविषे द्रवता होती हे तेसें आत्माविषे अहंता आदिकहोती हे ॥ जेसें फुल फल टास दछतें भिन्न नही होते तेसें आत्माविषे अहंता आदिक अभेद होत हे ॥ जेसें तीक्ष्णता मिरचते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भिन्न नही तेसें चित अहंतारूपी देशकाल आत्मातें भिन्न नही ॥ जेसें अग्निविषे उष्णता होती हे बरफविषे सीतलता होती हे ॥ सूर्यविषे प्रकाश होता हें गुडविषे मधुरता हे तेसें आत्मा विषे जगत होता हे ॥ जेसें अमृतविषे स्वादवेदना होती हे ॥ तेसें आत्माविषे देशकाल वेदना होती हे हे रामजी जेसें मणिविषे प्रकाश होता हे तेसें आत्माविषे अहंता होती हे ॥ जेसें जलतें तरंग भिन्न नही होता तेसें आत्मातें अहंता आदिक भिन्न नही होतें ॥ जेता कछु जगत भासता हे सो आत्मतत्वका प्रकाश हे ॥ सो आत्मा अनंत हे सबविषे पूर्न हे ॥ एकही ईश्वर भावविषे स्थित हे ॥ महा घन शिलाकी न्यांई स्थित हे तीसतें भिन्न कछु नही ॥ जेसें आकाश अपणे भावविषे स्थित हे ॥ तेसें सत्य केवल आत्माविषे स्थित हे ॥ अपणे आप करी नि र्वेद हे अरु वेदनाभी तीसतें भिन्न कछु नही ॥ जेसें जलही तरंगरूप हो भासताहे तेसें आत्मा वेदनरूप हो भासता हे ॥ जेसें जलविषे द्रवता भासती हे अरु पवनविषे चलना भासता हे तेसें ज्ञानरूप आत्माविषे अहंतारूप देशकाल जगत् भासता हे ॥ हे रामजी जीवोंका जीवणा ज्ञानकरी होता हे अरु ज्ञानसत्ताका जीवणा चैतनकरी होता हे ॥ तेसें चिन्मात्र अरु जी वोंविषे रंचकमात्रभी कछु भेद नही ॥ जेसें ज्ञान चैतनसत्ता अरु जीवविषे भेद नही तेसें ज्ञाता अरु जगतविषे भेद कछु नही ॥ एकही अखंडसत्ता ज्योंकी त्यों स्थित हे ॥ हे रामजी स र्वसत्ता एक अज अनादि अरु आदि अंत मध्यतें रहित प्रकाशरूपहे ॥ चिनमात्र अद्वैत तत्व अपणे आपविषे स्थित हे ॥ अशब्द हे तिसविषे वाणी प्रवेश नही करी सकती अरु जेते कछु वाक्य हे सो तीसके जतावणे निमित्त कहे हे ॥ वास्तवतें द्वैत वस्तु कछु नही ॥ एक आत्मतत्वकों अपणे रिदेविषे धारीकरी स्थित होहु ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे भेद निराशा वर्णनं नाम द्विपंचाशत्तमःसर्गः ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ७ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी एक आगें पुरातन इतिहास हुआ हे तीसकों ऋषीश्वर कहते हे सो तुं सुन ॥ कांत देशका राजा सुरघ होत भया हे तीसका एक वृत्तांत हे सो विस्मयके उपजावणे हारा हे ॥ हे रामजी उत्तर दिशाविषे पृथ्वी हे तहां सुंदर सुगंधताहे ॥ मानों कपुर करी लिपी हुइ हे ॥ मानों सदाशिवके हंस आय स्थित हुए हे ॥ हिमालयके शिखरउपर कैलास पर्वत हे सो सब पर्वतोतें उत्तम हे अरु उज्वल स्वेत हे सो रुद्रके रहणेका स्थान हे ॥ तहां कल्पवृच्छ अ रु गंगाका प्रवाह चलता हे ओरभी वडी नदी चलती हे ॥ अरु कमलों सहित ताल बहुत महा सुंदर स्थित हे जो मृग पंछी बहुत हे तीस हिमालयके तले स्वर्नवत् जटावाले क्रांत रहते हे ॥ जेसें वृच्छके मूलविषे पिपीलिका रहती हे तेसें पर्वतके आश्रय क्रांत देशके जीव रहते हे ॥ तीस क्रांत देशका राजा सुरघ होतभया हे ॥ केसा राजा मानों प्रत्यच्छ लक्ष्मीमूर्तिधा री भुजाविषे हे ॥ वेगवान एसा मानों पवनकी मूर्ति हे ॥ अरु वैराग्यवान एसा मानों जनेंद्र हे ॥ अरु बुद्धिवान एसा मानों वृहस्पती अरु कवी एसा मानों शुक्र हे ॥ अरु राजा एसा मानों इंद्र हे ॥ अरु धनी एसा मानों कुबेर एसा राजा होकरी राज करत भया ॥ भली प्रकार प्रजाकी पालना करे ॥ जो भले मार्गविषे वर्तै तीनकी रक्षा करे अरु जो पापकर्म चोरी आदिक करे तीनकों दंड देवे ॥ जेसा कर्म आन प्राप्त होवे तीसविषे रागदोषतें रहित होकरी व्यतीतकरे एक कालमें अपणे स्थानविषे बेठा हे जो चित्तविषे विचार आंन उपजा ॥ संशयरूपी वायु करीकें तीसकी बुद्धिरूपी पंछनी डोलायमान भइ हे ॥ बडा अनर्थ हे जो में जीवोकों कष्ट देता हो ॥ तातें इसकों धनदेहुं अरु कष्ट नदेउं जेसें तिलोंकों तेली पीलताहे तें सें में पापीयोंकों कष्ट देता हो ॥ अरु दुष्टोंकों कष्ट दीएविनाराज नही चलता ॥ जेसें जलविना नदीका प्रवाह नही चलता तेसें दुष्टोंकों कष्ट दीएबिना राज नही चलता ॥ अरु जब दंड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देता हों तब दुःख पावतें हें ॥ मैं क्या करों दोनों बातोंविषे कष्ट हे ॥ हे रामजी एसें विचारविषे राजा भमत रहे ॥ तब एक दिन तीसके यहविषे मांडव मुनी आन प्राप्त भया ॥ जेसें इंद्रके यहविषे नारद आवे तेसें आया ॥ तब राजा भली प्रकार तीसका पूजन करत भया अरु संदेहवान होकरी पुछत भया ॥ संशयरूपी कुत्सित वृच्छके नाशकरता कुहाडे सर्ववेत्तासों ॥ सुरथोवाच ॥ हे भगवन् सर्व धर्मगत तुमारे आवणेकरी में बडे आनंदकों प्राप्त भया हो ॥ जेसें बसंतऋतु करी पृथ्वी प्रफुल्लित होती हे तेसें प्रफुलित भया हो ॥ मेंभी अब आपकों पुण्यवान जानत भया हों ॥ जो मेंभी पुण्यवानोंविषे प्रसिद्ध होडुंगा ॥ काहेतें जो तुम मेरे यहविषे आये हो ॥ जेसें सूर्यके उदे हुए प्रकाश हो आता हे तेसें मैं तुमारे दर्शनकरी प्रसन्न भया हों ॥ हे भगवान मुजकों संशय हे ॥ तिसके निवारणेकों जोग हो ॥ जेसें सूर्यके उदे हुए अंधकार नष्ट होजाता हे तेसें तुमकरी मेरा संशय निवृत्त होवेगा ॥ जो कोउ महा पुरुषोका संग करता हे तीसका संशय अवश्य निवृत्त होता हे ॥ अरु संशय परम दुःखोंका कारन हे ॥ तातें मेरे संशयकों तुम दुर करो ॥ सो यह मुजे संशय हे जो कोउ दुष्ट कर्म करता हे तीसकों में दंड देता हों अरु जब उसकों दुःखी देखता हों तब मुजकों दया उपजती हे ॥ जेसें सिहके नख हस्तीकों खेंचता हे ॥ तेसें यह संशय मुजकों खेंचता हे ॥ तातें यही उपाय कहो जीसकरी मुजकों समता प्राप्त होवे ॥ जेसें सूर्यकी कीर्णां सब ठोरविषे संम होतीयां हे ॥ तेसें इष्ट अनिष्टविषे में सम होउं ॥ कृपाकरी मुजकों कहो ॥ मांडवो वाच ॥ हे राजन् यह तो बहुत सुगम हे अरु अपणे आधीन हे ॥ आपही करी सिद्ध होता हे ॥ अरु अपणेही यहविषे हे ॥ हे राजन् सब उपाधि मनविषे उठती हे सो मन तुच्छ हे ॥ विचार किएतें निवृत्त होजाता हे ॥ जेसें उष्णताकरी वरफ जलमय होजाता हे तेसें विचार कीएतें मनभाव लीन होजाता हे ॥ तब तापभी निवृत्त होजाता हे ॥ जेसें शरत्कालके आएतें कुहीड नष्ट होजाती हे तेसें विचार कीएतें मनभाव नष्ट होजाता हे ॥ सो विचार इस प्रकार जो में कोन हों अरु इंद्रियां क्या हे अरु जगत् क्या हे ॥ जन्म मरण कीसकों कहतें हे॥ इस विचारकरी जब तुं अपणे स्वभावविषे स्थित होवेगा तब तुजकों हर्ष शोक अरु क्रोध राग दोष चलायमान न कर सकेगा॥ जेसें वायुकरी पर्वत चलायमान नही होता तेसें तुं अचल रहेगा ॥ हे राजन जब आत्मबोध होवेगा तब मन अपने मनभावकों त्याग देवेगा ॥ तुं संतापतें रहित अपणे स्वरूपकों प्राप्त होवेगा जेसें तरंगभाव मिटणेकरी जल निर्मल होताहे तेसें तुं अचल होवेगा ॥ मन धर्मभी रहेगा परंतु मध्यसों अज्ञान नष्ट होजावेगा ॥ आत्मसत्ता भाव होवेगा जेसें काल उही रहता हे परंतु ऋतु ओर होजातीहे तेसें मन उही होवेगा॥ परंतु स्वभाव ओर हो जावेगा॥ अरु तेरे टहलुए प्रजाभी साधु होजावेंगे॥ तेरी आग्यामें वर्तेंगे॥ अरु देखी तुजकों प्रसन्न होवेगा॥ हेराजन् जब तुजकों विवेकरूपी दीपक साथ आत्मा रूपी मणी पावेगा तब तेरी बडाइ सुमेर अरु समुद्र अरु आकाशतेंभी अधिक होवेगी॥ जब तुजकों विवेकसों आत्म महत्वताका प्रकाश होवेगा तब तुं संसारकी तुच्छ वृत्तिविषे न डुबेगा ॥ जेसेगोपद के जलविषे हस्ति नही डुबता तेसें तुं रागदोषविषें न डुबेगा ॥ जीसकों देहविषे अभिमान हे अरु चित्तविषे वासना हे सो तुच्छ संसारकी वृत्तिविषे डुबते हे॥तातें जेता कछु अनात्मभाव दृश्य हे तीसका त्याग करी पाछें जो शेष रहे सो परम तत्व आत्मा हे ॥ हे राजन् जो कछु सत्य वस्तु हे॥ तीसकों रिदे विषे धर अरु जो असत्य हे तीसकों त्याग कर॥ जेसें तबलग कलर करी सोनारा धोता हे जबलग स्वर्न नही नीकसता ॥ जब सुवर्ण नीकसताहे तब धोणेका त्याग करता हे ॥ तेसें तबलग आत्मविचार कर्तव्य हे जबलग आत्माका साक्षात्कार नही भया ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब आत्मतत्वका साक्षात्कार होता हे तब विचार साथ प्रयोजन नही रहता ॥ हे राजन् सर्वविषे सब प्रकार सब काल सब आत्माकी भावनाकर ॥ अथवा जेता कछु दृश्यभाव हे सो सब त्यागकरी जो शेष रहेगा सो तुझकों भासी आवेगा ॥ जबलग सर्व द्रश्यका त्याग न करेगा तबलग आत्मपदका लाभ न होवेगा सर्व दृश्यके त्यागतें आत्मपद भासेगा ॥ हे राजन् कीसी वस्तुके पावणेका जतन करता हे ॥ तो ओरका त्यागकरी उसका जतन करीए तो प्राप्तिहोता हे ॥ तो आत्मतत्व अनन्य होकरी चित्तविना केसें प्राप्त होवेगा ॥ जब संपूर्न अपणा जतन एकही उर लगाता हे तब तिसपदकी प्राप्ति होती हे ॥ तातें आत्मपद पावणे निमित्त सब दृश्यकों त्यागकर ॥ सबके त्याग कियेतें जो शेष रहे सो परमपद हे ॥ हे राजन् सबके त्याग कीएतें पाछें जो सत्ता अधिष्ठान रहेगा सो तुजकों आत्मभावकरी प्राप्त होवेगा ॥ इतिश्रीयोगवसिष्ठे उपशमप्रकरणे सुरघवृत्तांतमांडवोपदेशोनाम त्रिपंचाशत्तमःसर्गः॥ ५३ ॥

वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार कहीकरी मांडव मुनी अपणे स्थानकों गया ॥ तब सुरघ राजा एकांत बेठीकरी विचार करने लगा ॥ जो में कोन हों ॥ न में सुमेरु हों न मेरा सुमेरु हे न में जगत हों न मेरा जगत हे ॥ न में पृथ्वी हों न मेरी पृथ्वी हे ॥ न में क्रांत मंडल हो न मेरा क्रांत मंडल हे ॥ काहेतें जो यह अपणे भावविषे स्थित हे ॥ मेरे भाव करी तो यह स्थित नही॥ जो में न होउं तोभी यह ज्यौंके त्यौं स्थित हे तो मेरे केसें होवे॥ अरु में इनका केसें होउ॥ न में नगर हों न मेरा नगर हे॥ हस्तिघोडा मंदिर धन स्त्री पुत्रादिक जेते कछु पदार्थ हे सो न मेरे हे न में इनका हों ॥ इनविषे आसक्ति होणा वृथा हे ॥ इनविषे संबंध मेरा कछु नही ॥ जेते कछु भोगोंके समूह हे न में हों न यह मेरे हे॥ टहलुए भृत्य कलत्र सब अपणेभाव करी सिद्ध हे ॥ मेरा इन साथ संबंध कछु नही ॥ न में राजा हों न मेरा राज हे ॥ में एकाएकी शरीरमात्र हों इनविषे में ममत्व करता हों सो वृथाहे ॥ अरु शरीरविषे जो में अहंकर्ता हों सोभी व्यर्थ हे ॥ काहेतें जोहाथ पाव आदिकका स्वरूप हे सो भिन्न हे ॥ न यह में हों न यह मेरे हे ॥ इनविषे मेरा शब्द कछु नही ॥ रक्त मांस हाड आदिकरूप हे सो में नही ॥ यह जड हे में चैतन हों ॥ इनके साथ मेरा केसें संबंध होवे ॥ जेसें जलका स्पर्श कमलकों कछु नही तेसें इनका स्पर्श मुजकों नही ॥ न में कर्म इंद्रियां हों न मेरी कर्म इंद्रियां हे ॥ यह जड हे में चैतन्य हों ॥ न में ज्ञानइंद्रियां हों न मेरी ज्ञानेंद्रियां हे ॥ इनतें पर मन हे सोभी में नही ॥ यह जड हे मन बुद्धि चित्त अहंकार यह सब अनात्मारूप हे ॥ मेरा इनके साथ अविद्याकरी संबंध हे ॥ भ्रांतिकरीकें में इनकों अपणा स्वरूप जानता था ॥ इह सब भूतोंका कार्यहे ॥ इनके पाछें चैतनजीवहे सो चैतन दृश्यकों चैतणेवाला हे ॥ सो चैतन चैतना में नही ॥ इस सर्वतें शेष अचैत्य चिनमात्र हे सो सत्ता मेरा स्वरूप हे ॥ बडा कल्याण भया जो में अपणा आप पायाहे ॥ अब में जाग्या हों अपणा स्वरूप पायाहे ॥ बडा आश्चर्य हे जो में वृथा देहादिककों आप जाणी शोक मोहकों प्राप्त होताथा ॥ में तो एक निर्विकल्प चैतन हों अरु अनंत आत्मा हों ॥ सब विषे व्यापी रहाहों ब्रह्मरूप आत्मा हों इंद्रियातें आदि जेते भूत गण हे सो सबका आत्मा हों ॥ यह भगवान आत्मा सबके अंतर व्याप्याहे जेसें सबके अंतर तत्व होते हे तेसें यह चैतनरूप सर्वभावकों भरी रहाहे ॥ अरु सर्व भावोंविषे व्यापी रहाहे ॥ भैरव अरु उदे अस्त भाव आदिविकारोतें रहित हे ॥ ब्रह्मातें आदितृण पर्यंत सबका आत्मा यहीहे ॥ सब प्रकाशोंका दीपक प्रकाशनेहारा हे अरु संसारूपी मोतीयोंके परोवणेहारा तागा यहीहे ॥ सबका कारन कार्य यहीहे अरु साकारतें रहित हे ॥ शरीर आदिक सब इसकी सत्ताकरी उपलब्ध होतेहे ॥ शरीररूपी रथ इसी कर चल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ता हे अरु वास्तवतें शरीरादिक कछु वस्तु नही यह जगत चित्तरूपी नटकी नृत्य लीलारूप हे॥ चित्तविषे जगत फुरता हे वास्तव और वस्तु कछु नहीं॥ बडा कष्ट हे मैं वृथा संग्रह असंग्रहकी चिंता करताथा ॥ यह गुणोंका प्रवाह हे इस विषे मैं क्यों शोकवान होताथा ॥ बडा आश्चर्य हे जो असत्य भ्रम सत्य हो मुजकों दिखताथा॥ अब मैं निश्चयकरीकें सम प्रबोध हुआहों दुर्दृष्टि मेरी दूरभई दृष्टीकी जो अलख दृष्टि हे सो मैंनें देखी हे ॥ अरु जो कछु पावणे जोग था सो मैं पायाहों ॥ अचैत्य चिन्मात्र तत्वकों प्राप्त भयाहों ॥ जेता कछु दृश्य हे तीस कों मैं स्वरूपतें देखा हे अरु अहं मम दुःख मेरा नष्ट भया हे ॥ मैं चिदानंद पूर्न आत्मा हो ॥ नित्य शुद्ध अनंत आत्मा अपणे आपविषे स्थित हों ॥ अरु ग्रहण क्या अरु त्याग क्या य ह क्लेश कोउ नही ॥ न कोउ दुःख हे न सुख हे ॥ सर्व ब्रह्म हे ओर दुसरी वस्तु कछु नही राग कीसका करों ? अरु दोष कीसका करों ? मैं मिथ्या मूढताकों प्राप्त होकरी दुःखी होता था ॥ अब कल्याण हुआ मैं अमूढ होकरी अपणे आप स्वभावविषे स्थित भयाहों एसें आत्माके साक्षातकार बिना दुःखी था ॥ इसके देखेतें अब कीसका शोक करों अरु केसें मोह कों प्राप्त होउं॥ अब मैं क्या देखों अरु क्या करों॥ कहां स्थित होउं ॥ यह सब जगत आत्माके प्रकाश करीहे अरु सब आत्मारूपहे ॥ हे अतत्वरूप अर्थ यह जो जिसविषे तत्वोंकी उ पाधि कछु नही तेरी दृष्टि निष्कलंकहे ॥ मैं अब सम्यक ज्ञानवान हुआ हों ॥ मेरा मुजहीकों नमस्कारहे ॥ मैं अनंत आत्मा हों अनुभवरूप हों ॥ भ्रमतें रहित निष्कलंक सब इ च्छातें रहित सुषुप्तिकी नांइ शांतरूप हों ॥ अचैत्य चिन्मात्र हों सदा अपणे आपविषे स्थित हों ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे सुरघवृत्तांतवर्णनंनाम चतुष्पंचाशत्तमः सर्गः ॥ ५४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! क्रांत जो स्वर्नरूप देशहे तिनका राजा परमानंदकों प्राप्त भया इस प्रकार विचार अभ्यास करी ब्रह्मरूप हुआ ॥ जेसें गाधीका पुत्र विश्वामित्र तपसा करीकें उसी शरीर साथ छत्रीतें ब्राह्मण हुआ ॥ तेसें राजा सुरघ अभ्यास करीकें ब्रह्मरूप ब्रह्मबोध हुआ ॥ अनेक राजके कार्योंकों करत भया ॥ जेसें सूर्य इष्ट अनिष्टविषे समहे ॥ विगतज्वर हो करी दिनोंकों व्यतीत करताहे॥ तेसें राग दोषतें रहित राजका कार्य करत भया॥ जेसें जल उंची नीची ठोरविषे गमन करताहे ॥ अपना जल भाव नही त्यागता सम रहताहे ॥ तेसें राजा हर्ष शोकतें रहित हो करी राज कार्य करत भया ॥ अरु स्वभावकों न त्यागत भया ॥ आत्मविचारकों धार सुषुप्तिकी नांइ वृत्ति होगइ ॥ संसार भावका फुरणा कछु नफुरे॥ जेसें वायुतें रहित दीपक प्रकाशताहे तेसें शुद्ध प्रकाशकों धारत भया ॥ हे रामजी! दया करताभी दृष्ट आवे परंतु उसकी दृष्टिविषे कछु दया नही ॥ अरु दयातें रहितभी ओरोंकों दृष्ट आवे परंतु उसकी दृष्टिविषे निर्दयता नही॥ न कछु सुख न दुःख अर्थ न अनर्थ न सब पदार्थोंविषे सम एक भाव आत्मा देखे॥ अरु अंत रतें पूर्नमासीके चंद्रमावत सीतल रहे ॥ अरु आत्माका किंचनरूप जगतकों जानत भया ॥ सुख दुःखका भाव शांत होगया ॥ जेसें सूर्यके उदे हुए अंधकार नष्ट हो जाताहे तेसें सुख दुःख नष्ट होगए ॥ अरु शोक विलास कर्ता मत्त होता स्थित होता चलता स्वास लेता अरु पांचों विषयोंकों ग्रहण कर्ता राग दोषकों प्राप्त न भया ॥ जेसें पथ्थरविषे फुरना कछु नही फुरता ॥ तेसें उसकों कर्तृत्वभोक्तृत्वका अभिमान कछु न फुर्या॥ सब कर्तव्यकों कर्ताभी निःसंग रहा जेसें जलविषे कमल अलेप रहताहे तेसें राजविषे निर्लेप हो करी जिवन्मुक्त हुआ॥ बहुत काल वीतावता भया ॥ तिसके अनंतर शरीरकों त्याग किया ॥ जेसें बरफका कणका सूर्यके तेजकरी जलमय होजाताहे तेसें शरीर अपणे भावकों त्यागकरी आत्मतत्वविषे लीन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होगया॥ जेसें नदी समुद्रविषे लीन होतीहे बहुरी इतर नही भासती तेसें सुरघ अपणे भावकों त्यागकरी उज्वल भावकों प्राप्त भया ॥ कलनारूपी मलकों त्यागकरी निर्मल ब्रह्म होत भया ॥ जेसें शरतकालका आकाश निर्मल होताहे तेसें निर्मल चिदानंद ज्योतीभावकों प्राप्त भया॥ जेसें घट फुटेतें घटाकाश महाकाश होजाताहे तेसें पूर्नब्रह्म चिदानंद तत्व होतभया॥
इतिश्रीयोगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे सुरघदृत्तांतसमाप्तिनाम पंचपंचाशत्तमःसर्गः ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी तुमभी इसी दृष्टिकों आश्रय करीकें वीचरो तब सब भय मीट जावेगा ॥ जेसें घोर तमविषे बालक भयकों पावता हे सो जब दीपकका प्रकाश होताहे ॥ तब निर्भय होताहे तेसें संसाररूपी घोर तमविषे आया पुरुष दुःख पाताहे जब ज्ञानरूपी दीपका उदे होवे तब निर्भय होजाताहे ॥ हे रामजी जब आत्मविचारविषे कछुभी चित्त विश्राम पावताहे ॥ तब तीस विश्रामकों आश्रयकरी संसार समुद्रतें नीकसी जाता हे ॥ जेसें टोएविषे गीरेताकों तृणका बुटा हाथ लगे तोभी तीसके आश्रय करी नीकसी आताहे ॥ हे राम यह पावन दृष्टि में तुजकों कही हे॥ इसकों चित्तविषे विचार॥ परस्पर मीलीकरी उदाहरण साथ अभ्यास करी नित्य एक समाधिविषे स्थित होउ॥ अरु पृथ्वीका भूषण होकरी लोकों विषे विचरो ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे मुनिश्वर एक समाधि कीसकों कहीए अरु केसें होतीहे सो कहो॥ ओर जो मेरा चित्त फुरता हे सो स्थित होवे ॥ जेसें वायुकरी मोरका पुच्छ हलता हे तेसें चंचलरूप चित्त सदा फुरता हे ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब सुरघ प्रबुद्ध हुआ था तब तीसका संवाद पर्णादि राजा ऋषीसों हुआथा ॥ महा अद्भुत समाधि हे तीसकों सुणी करी विचारे तो तुं एक समाधिवान होवेगा ॥ जो इननें मीलीकरी परस्पर चर्चा करी हे सो सुण ॥ हे रामजी पारस देशका राजा महा वीर्यवान था अरु परघ तीसका नामथा ॥ सो सुरघका मित्र था ॥ जेसें नंदनबनविषे कामदेव अरु वसंत ऋतुका मित्रभाव होताहे तेसें सुरघ अरु परघका मित्र भाव होत भया ॥ एक कालमें परघके देशविषे प्रलय कालविना प्रलय कालको न्याइ होत भया ॥ तीसकरी सब जीव दुःख पावणे लगे ॥ प्रजाके जीवोंकी जो पापबुद्धि थी तीसीका फल आनी लगा महा दुर्भक्ष पडा ॥ केइ क्षुधा करी मृतक भए केइ अग्निकरी जली मरे ॥ केइ झगडा करी मृतक भए ॥ प्रजाके लोक बहुत दुःखकों प्राप्त भए ॥ अरु राजाकों दुःख कछु न प्राप्त भया ॥ जब प्रजा बहुत दुःख पाइ तब राजा प्रजाकों दुःखी देखत भया ॥ अरु प्रजाके दुःखनिवारणकों समर्थ न भया ॥ तीसकरी प्रजा अरु कुटुंबकों त्याग गया ॥ जेसें बनकों अग्नि लगेतें पंछी त्याग जातेहे ॥ जेसें गामकों अग्नि लगे तो पेंढाइ त्याग जातेहे तब एक पहाडकी कंदराविषे तप करने लगा ॥ एसा तप करने लगा जेसा जिनेंद्रनें तप कीयाथा ॥ तीस कंदराविषे फल न पावे सुके पान ले खावे ॥ जेसें अग्नि सुके पातकों भच्छन करति हे तेसें सुके पात खावे ॥ तीसकरी तीसका नाम पर्णाद होत भया ॥ वह तो एकांत जाइकरी तप करने लागा ॥ परंतु द्वीपविषे तिनका नाम पर्णाद प्रसिद्ध भया.॥ अरु तप यही जो चित्तकी वृत्तिकों आत्मपदविषे जोडता भया ॥ सहस्र वर्षपर्यंत तप कीया तब अभ्यास करी चित्त स्थित भयेतें केवल ज्ञानस्वरूप आत्मतत्व रिदेकी निर्मलता करी प्रकास आया ॥ तब सब तप्तता मीट गइ ॥ राग दोषतें रहित निष्क्रिय आत्मदर्शी जीवन्मुक्त होकरी विचरणे लागा ॥ राग दोषतें रहित हुआ त्रिलोकीरूपी मढीविषे वीचरे ॥ सिद्धोंके स्थानोंविषे जावे जेसें सरोवरोंविषे कमलोंके निकट भवरा हंसों साथ जाय मिलता हे तेसें सिद्धोंसाथ राजा जाय मिले ॥ एसें फीरता फीरता कांत देशविषे सुरघ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के स्थानोकों जाय प्राप्त भया॥ तब सुरघ पूर्व मित्रकों देखी करी उठी खडा भया॥ परस्पर कंठ लगाइ करी मीले अरु परस्पर भावकरीकें एक आसनपर चंद्रमा अरु सूर्य जेसे बेठीगए॥ अरु आपसमें कुसल पुछणे लगा प्रथम परघ बोलत भया॥ ॥ परघोवाच ॥ हे मित्र तेरे दर्शन तें परमानंदकों प्राप्त भयाहों ॥ जेसें कोइ चंद्रमाके मंडलविषे जाय आनंदमान होवे तेसें आनंदमान हुआ हों ॥ बहुतकालका जो विजोग होताहे तब बहुत प्रीति बढती हे॥ जेसें वृच्छकों उपरतें काटे तें बहुरी बढताहे तेसें प्रीति बढतीहे॥ हे साध अब मेंभी ज्ञानवान हुआ अ रु तुंभी मांडव मुनी अरु आत्माके प्रसादकरी ज्ञानकों प्राप्त भया हे ॥ हे राजन् मेरा अभीष्ट प्रश्न हे जो अब दुःखोंतें मुक्त भया हे क्यौं अरु विश्रांमकों प्राप्त भया हे क्यौं ? अरु आ त्मपद पावणेकी बडाइ मेरु आदिकतेंभी उंचीहे तीसकों तुं प्राप्त भया हे क्यौ ? परम कल्याणवान आत्मारामी हुआ हे क्यौं अरु तुं राग द्वेष मलतें रहित हुआहे क्यौं ॥ जेसें शरत् कालका आकाश निर्मल होताहे तेसें निर्मल हुआ हे क्यों ? अरु सब कार्योंकों कर्ता समभावविषे रहताहे क्यों ॥ अरु आधि व्याधि तापो तेरे दूर भया हे क्यों ? अरु तेरी प्रजाभी विगतज्वर भइ हे क्यों ? अरु धन राज मालविषेभी कुशल हे क्यों ? जेसें चंद्रमाकी कोर्णीकरी सीतलता पसरी रही हे तेसें तेरा जस दशोंदिशामें पसरी रहाहे क्यों ? अरु तेरा जस ग्रामवासी क्षेत्रोंविषे अरु कुडीयां गावतीयां हे क्यों ? हे राजन प्रजा टहलुए पुत्र कलत्र सब आधि व्याधिंतें रहित हुएहे क्यों ? अरु आपात रमणीय जो विषय पदार्थ हे तीनविषे अब तेरी प्रीति नही हे क्यों ? अरु तृष्णारूपी सर्पिणी तुजकों अब तो दसती नही क्यों ॥ हे राजन् तुमारी हमारी मित्राइ हुइथी सो समे पाईकरी तुम कहां रहे हम कहां रहे ॥ अब बहुरी एकठे आनी हुएहे ॥ बडा आश्चर्य हे ॥ इश्वरकी नीति जानी नहीं जाती ॥ सुखतें दुःख होजाता हे अरु दुःख गएतें सुख होजाता हें ॥ संसारकी दिशा आगमापाइ हे ॥ संजो गका विजोग होता हे विजोगका संजोग होता हे ॥ तेसें तुमारा हमारा संजोगका विजोग होगयाथा ॥ बहुरी विजोगका संजोग आनी हुआ हे ॥ बडा आश्चर्य हे इश्वरकी नीति अ द्भुतरूप हे ॥ सुरघोवाच ॥ हे देव परमात्मादेवकी नीतिकों जानी नही सकते सो महा गंभीर विस्मयकों देणेहारी अरु दुर्ज्ञात हे ॥ तुमारा हमारा विजोग हुआ तब दुरते दुर जाय पडे ॥ तुम कहां अरु हम कहां ॥ बहुरी एकठे आन भए हें ॥ जो देवकी नीती आश्चर्य रूप हे ॥ तुम जो मुजकों कुशल पुछा सो तुमारा आवणाही जो पुण्य हे तीसकरी मैं परम पावन हु आ हों ॥ तुमारे दर्शनकरी पाप सब नष्ट होजाता हे ॥ आज हमारे पुण्यका फल लगा हे जो तुमारा दर्शन भया हे ॥ अरु जेता कछु यश संपदा हे सो सब आज प्राप्त भया हे ॥ हे भगवन् संतोका जो आवणा हे सो मधुर अमृतकी न्यांई हे॥ जेसें अमृत झरनेतें निकसता हे तेसें तुमारे दर्शनतें अरु वचनोंकरी परमार्थरूपी अमृत श्रवता हे॥ जीसकों पाइकरी जीव निर्भ यताकों प्राप्त होता हे॥ संतोंका मीलना परमपदके तुल्य हे॥ सो हम परम शुद्धताकों प्राप्त भए हें॥ इतिश्री योगवसिष्ठे उपशम प्रकरणे सुरघ परघ समागमवर्णनंनामषट्पंचाशत्तमः सर्गः॥५६॥

वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब इस प्रकार पूर्ववृत्तांत करी रहे तब बहुरी परघ बोलत भया ॥ परघोवाच ॥ हे राजन जो जो समाहित चित्त इस जगत जालविषे कर्म करता हे सो सुखरूप होताहे ॥ अब संकल्पतें रहित जो परम विश्राम अरु परम उपशम समाधि हे ॥ तिसविषे स्थित हुआहे क्यौं ॥ सुरघोवाच ॥ हे भगवन तुमही कहो जो सब संकल्पतें रहित परम उपशम समाधि कीसकों कहतेहे ॥ अरु जो तुम मुजतें पुछो तो श्रवण करो ॥ जो ज्ञानवान महात्मा पुरुष हे सो तूष्णीं रहें अथवा व्यवहार करे ॥ उह असमाहित चित्त क

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दाचित् नही होता ॥ हे साधु नित्य प्रबुद्ध जीनका चित्त हे अरु जगतके कार्यभी करतेहे ॥ अरु आत्मतत्वविषे स्थित हे ॥ तो उह सर्वदा समाधिविषे स्थित हैं ॥ अरु पद्मासन बांधीक
री बेठता हे ॥ ब्रह्म अंजली हाथविषे रखता हे ॥ अरु चित आत्मपदविषे स्थित नही होता अरु विश्रांतिकों नही पावता उसकों समाधि कहां ॥ वह समाधि नही कहाती ॥ हे भग
वन परमार्थ तत्वबोध हे सो सब आशारूपी तृणोंकों जलावणेहारी अग्नि हे ॥ एसी निरास रूप जो समाधि हे सोइ समाधि हे ॥ तूष्णी होणेका नाम समाधि नही ॥ हे साध जीस
का चित्त समाहित अरु नित्यतृप्त हे सदा शांतरूप हे अरु यथाभूतार्थ हे ॥ अर्थ यह जो यथार्थ ज्योकात्यौं ज्ञान हुआ हे ॥ अरु तीसीविषे निश्चय हे सो समाधि कहाती हे ॥ तूष्णी होणे
का नाम समाधि नही जीसके रिदेविषे संसाररूप सत्यताका क्षोभ नही निरहंकार हे अरु अनउदेही उदे हे ॥ सो पुरुष समाधिविषें कहाता हे ॥ एसा जो बुद्धिवान हे सो मेरूतेंभी अधिक
स्थित हे ॥ हे साधु जो पुरुष निश्चित्त हे ग्रहण त्याग जीसकी बुद्धि निवृत्त भइ हे ॥ अरु पूर्नः आत्मतत्वही भासता हे अरु व्यवहारभी करता दृष्ट आता हे ॥ तोभी तीसकों समाधि कही हे
जीसका चित्त एक छीनभी आत्मतत्वविषे स्थित होता हे तीसकी अत्यंत समाधि होजाती हे ॥ छीन छीन बढती जाती हे निवृत्त नही होती जेसें अमृतके पान कीएतें अमृतकी तृष्णा ब
ढती जाती हे तेसें एक छीनकी समाधि बढती जाती हे ॥ जेसें सूर्यके उदे हुए सब कीसीकों दिन भासता हे तेसें ज्ञानवानकों सब आत्मतत्व भासता हे इतर कदाचित नही भासता हे ॥ जेसें
नदीका प्रवाह कीसीतें रोक्या नही जाता तेसें ज्ञानवानकी आत्म दृष्टि कीसीतें रोकी नही जाती ॥ जेसें कालकी गति कालकों एक छीनभी विस्मरन नही होती तेसें ज्ञानवानकों आत्म
दृष्टि विस्मरन नही होती ॥ जेसें पवन चलतें ठहरतेकों अपना पवन भाव विस्मरन नही होता तेसें ज्ञानवानकों चिनमात्र तत्वका विस्मरन नही होता ॥ जेसें सत शब्द विना कोउ प
दार्थ सिद्ध नही होता तेसें ज्ञानवानकों आत्मविना कोउ पदार्थ नही भासता ॥ जीस ओर ज्ञानवानकी दृष्टि जाती हे तहां अपणा आप भासता हे ॥ जेसें दर्पणोंके मंदिरविषे सर्व ओर
अपणा मुख भासता हे तेसें ज्ञानवानकों सर्व उर अपणा आपही भासता हे ॥ जेसें उष्णताविना अग्नि नही सीतलता विना बर्फ नही सामताविना काजर नही पाइता तेसें आ
त्माविना जगत् नही पाइता ॥ हे साध जीसकों आत्मातें भिन्न पदार्थ कोउ नही भासता ॥ तीसकों उत्थान केसें होवे ॥ सर्वदा में बोधरूप हों अरु सर्वदा निर्मल हों सर्वदा सर्वात्मा
समाहित चित्त हों तातें उत्थान मुजकों कदाचित नही ॥ आत्मातें भिन्न मुजकों कोउ नही भासता ॥ सर्व प्रकार आत्मतत्व मुजकों भासता हे ॥ हे साध आत्मतत्व सर्वदा जानणेजोग
हे सर्वदा ओर सर्व प्रकार आत्मास्थित हे ॥ बहुरी समाधि अरु उत्थान केसें होवे ॥ जीसकों कार्य कारणविषे विभाग कलना नही फुरति अरु आत्मतत्वविषे स्थित हे तीसकों समा
हित असमाहित क्या कहीए समाधि अरु उत्थानका वास्तव कछु भेद नही मिथ्या हे ॥ आत्मतत्व सदा अपणे आपविषे स्थित हे द्वैतभेद कछु नही ॥ तो समाहित असमाहित क्या क
हीएं ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे समाधिनिश्चय वर्नन नाम सप्तपंचाशत्तमःसर्गः ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ सुरधोवाच ॥ हे राजन् निश्चय करीकें अब तुं जा
ग्याहे अरु परम पदकों प्राप्त भयाहे ॥ अरु पुर्नमासीके चंद्रमावत सीतल अंतःकरण भयाहे ॥ अरु परम शोभाकरी मुख सोभित भयाहे ॥ अरु ब्रह्म लछमीकरी संपन्न परमानंदसों
पूर्न भया हे ॥ सीतल अरु स्निग्ध तेरा रिदाकमल विराजमान हे ॥ निर्मल विस्तृत गंभीरता तेरी मुजकों प्रगट भासती हे ॥ अरु निर्मल शरतकालके आकाशवत तेरा रिदा भासता हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अहंकाररूपी मेघ तेरा नष्ट भया हे ॥ हे राजन अब तुजकों सर्वत्र स्वस्थ अरु सर्वथा संतुष्टता हे ॥ अरु कीसीविषे राग नही ॥ वीतराग होकरी विराजता हे ॥ सार असारकों तुजनें भली प्रकार जान्या हे ॥ अरु जानीकरी असार संसाररूपी समुद्रतें पारकों प्राप्त भया हे ॥ अरु महा बोधकों ज्योंकात्यों जानीकरी अखंड स्थित पाइ हे ॥ भाव अभाव पदार्थ दोनोंकों तुं जानत भया हे ॥ सम असम जो जगतके पदार्थ हे तीनतें मुक्त भया हे ॥ मुदिता शांति आशय हुआ हे ॥ इष्ट अनिष्ट ग्रहण त्याग तेरा निवृत्त भया हे ॥ राग दोष तृष्णा रूपी मेघ वदलोंतें रहित निर्मल आकाशवत तुं सोभता हे ॥ अरु अपणे आपकरी तृप्त भया हे ॥ कछु इच्छा तुजकों नही ॥ सुरघोवाच ॥ हे मुनीश्वर इस जगत् विषे ग्रहण करनेजोग वस्तु को उ नही जेते कछु दृश्य पदार्थ हे सो सब आभासरूप हे तो कीसकों ग्रहण करीए ॥ अरु जो कहीए ग्रहण करने जोग नही तो त्याग करीएं ॥ सो आभासरूप पदार्थोंका त्याग क्या करीएं अरु ग्रहण क्या करीएं ॥ काहेतें जो हे नही सब तुच्छ अतुच्छ पदार्थ हे जेसें सूर्यकी कीरणांविषे जल भासता हे सो जल भासका कोंन अंग ग्रहण करीएं अरु कोंन अंग त्याग करीएं ॥ तेसें यह जगतभी हे ॥ हे मुनीश्वर जगत्के तुच्छ पदार्थ हे एक अतुच्छ हे ॥ जो थोडे कालविषे नष्ट होजाता हे सो तुच्छ हे अरु चिरकाल पर्यंत रहते हे सो अतुच्छ हे ॥ परंतु दोनों कालतें उपजे हे अब में अकाल स्वरूपकों देखा हे तब दोनों तुल्य होगए हे ॥ बहुरी इच्छा कीसकी करों जो हे कछु नही ॥ हे मुनीश्वर जो रमणीय पदार्थ जाणतें हैं ॥ तीसकी इच्छा करते हैं ॥ सो त्रिलोकीविषे रमणीय पदार्थ कोउ नही ॥ सब तुच्छ नाशरूप हे ॥ अरु जीवोंकों जो बडे पदार्थ भासते हे ॥ सो अविचार करी भासते हे ॥ शब्द स्पर्श रूप रस गंध जेते इंद्रियोंके विषय हे सो सब असाररूप हे ॥ स्त्रीकों बडा पदार्थ जानते हे सो देखणेमात्र सुंदर हे ॥ अंतरतें रक्त मांस विष्टा मूत्रका थेला वण्या हुआ हे इसविषे सार कछु नही ॥ अरु पर्वत बडे पदार्थ हे सो पथर बंटे हे ॥ अरु समुद्र हे सो जल हे ॥ वनस्पती काष्ट पत्र हे इनतें आदि जो कछु पदार्थ हे सो आपात रमणीय हे ॥ सो विचार विना सुंदर भासतें हे ॥ इनकी जो इच्छा करते हे सो अपणे नाशके निमित्त करते हे ॥ जेसें पतंग दीपककी इच्छा करता हे सो अपणे नाशके निमित्त करता हे ॥ जेसें हरण श्रवण नादकी इच्छा करता हैं सो नाशकों प्राप्त होता हे ॥ तेसें जो विषयोंकी तृष्णा करता हे सो अपणे नाशकों करते हे तातें विचारतें रहित जो अज्ञानी हे सो पदार्थकों रमणीय जानीकरी इच्छा करता हे ॥ अपणे नाशके निमित्त ॥ अरु जो समदर्शी ज्ञानवान हे सो अरमणीय जानीकरी कीसी जगत्के पदार्थकी इच्छा नही करते ॥ जेसें सूर्य उदे हुए अंधकारका अभाव होता हे ॥ तातें जब पदार्थोंका राग उठी गया तब तृष्णा कीसविषे रहे ॥ हे साध राग दोष इच्छा ग्रहण त्याग जेते कछु विकार हे तीन सवतें रहित शुद्ध आत्मतत्वविषे स्थित होउ ॥ बहुत कहणे करी क्या हे जीस पुरुषके मनतें वासना नष्ट होगइ हे सो उपशमवान कल्यानमूर्ति परम पदकों प्राप्त हुआ हे ॥ अरु संसार समुद्रकों तरी गया हे ॥ इतिश्रीयोग वासिष्ठे उपशम प्रकरणे सुरघ परघ निश्चय वर्ननं नाम अष्टपंचाशत्तमःसर्गः ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! इस प्रकार सुरघ अरु परघ जगतकों भ्रमरूप विचारत भये ॥ विचार करीकें परस्पर गुरु जाणी करी पूजते भये ॥ बहुरी परघ चलता रहा ॥ हे रामजी! इन का परस्पर संवाद तुजकों श्रवण कराया हे सो परम बोधका कारण हे ॥ इस विचारके क्रम करी बोधकी प्राप्ती होती हे तीक्ष्ण बोध करीकें जब विचार करेगा तब अहंकाररूपी बादलका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभाव हो जावेगा ॥ अरु शुद्ध रिदेरूपी आकाशविषे आत्मरूपी सूर्य प्रकाश हो जावेगा ॥ तातें परम पदके लाभके निमित्त अहंकाररूपी बादलके अभावका जतन करो ॥ सो आत्मा सत्यहे सब आनंदकी संपदाहे चिदाकाश हे तीसविषे स्थिति पावेगा ॥ हे रामजी ! जो पुरुष नित्य अंतर्मुखी अध्यात्ममयहे अरु नित्य चिदानंदविषे चित्तकों जोडताहे सो सदा सुखीहे तीसकों शोक कदाचित् नही होता ॥ जो पुरुष आत्मपदविषे स्थित हुआहे सो बडे व्यवहार करे अरु राग दोष सहित दृष्ट आवे ॥ तोभी तीसकों कछु कलंक प्राप्त नही होता ॥ जेसें कमलजलविषे दृष्ट आताहे तोभी उंचा रहताहे ॥ जल उसकों स्पर्श नही करता ॥ तेसें ज्ञानवानकों व्यवहारका राग द्वेष अंतर स्पर्श नही करता ॥ हे रामजी ! जिसका अंतर मन शांत हुआहे तीसकों संसारके इष्ट अनिष्ट पदार्थ चलाय नही सकते ॥ जेसें सींगकों मृग दुःख दे नही सक्ते तेसें ज्ञानवानकों जगतके पदार्थ दुःख नही दे सकते ॥ जिस पुरुषकों आत्मानंद प्राप्त भयाहे तींसकों विषयोंकी तृष्णा नही रहती ॥ विषयों निमित्त दीन कदाचित् नही होता ॥ जेसें जो पुरुष नंदनवनविषे स्थित भयाहे सो कंकरेके वृछकी इच्छा नही करता तेसें ज्ञानवान जगतके पदार्थकी इच्छा नही करता ॥ हे रामजी ! जीस जीस पुरुषनें जगतकों अविद्यारूप जानी करी त्याग कियाहे तीसके चित्तकों जगतके पदार्थ दुःख दे नही सकते ॥ जेसें विरक्त चित्त पुरुषकी स्त्री मरी जावे तब उसकों दुःख नही होता सो ज्ञानवानके चित्तविषे भोगोंकी दीनता नही उपजती ॥ जेसें नंदनबनविषे कंकरका वृछ नही उपजता ॥ जीस पुरुषकों आत्मबोध हुआहे अरु संसारका कारन मोह निवृत्त भयाहे सो जगतके कार्य कर्ता दृष्ट आता हे ॥ परंतु उसकों स्पर्श नही करता ॥ जेसें आकाशविषे अंधकार दृष्ट आताहे परंतु आकाशकों स्पर्श नही करता ॥ हे रामजी ! अविद्याके निवृत्तिका कारण विद्याहे ओर किसी उपायतें निवृत्त नही होती ॥ जेसें प्रकाश बिना तम निवृत्त नही होता तेसें विचारविना अविद्या निवृत्त नही होती ॥ अविचारका नाम अविद्याहे अरु विचारका नाम विद्याहे ॥ जब अविद्या नष्ट होवेगी तबविषय भोग स्वाद न देवेगे ॥ आत्मानंद करी संतुष्टमान रहेगा ॥ हे रामजी, ज्ञानवानकों विचारतें इंद्रियोंके व्यवहार अंध करी नही सकते ॥ जेसें जलविषे मच्छी रहतीहे तीसकों जल अंध करी नही सकता ओर अंध हो जाताहे तेसें ज्ञानवान व्यवहारविषेभी अंध नही होता ओर जीव अंध हो जाताहे ॥ जब ज्ञानरूपी सूर्य उदे होताहे तब अज्ञानरूपी रात्र निवृत्त हो जातीहे अरु चित्त परमानंदकों प्राप्त होताहे ॥ अरु राग दोषरूपी निशाचर नष्ट हो जाताहे तब बहुरी मोहकों प्राप्त नही होता ॥ जिसके रिदे आकाशविषे आत्मज्ञानरूपी सूर्य उदे हुआहे ॥ तिसका जन्म अरु कुल सफल होताहे ॥ जेसें पूर्नमासीका चंद्रमा अपने अमृतकों पाइ करी अपणेविषे सीतल होताहे तेसें जो पुरुष आत्मचितनाविषे अभ्यास करताहे सो शांतिकों प्राप्त होताहे ॥ हे रामजी ! बुद्धिभी वहीहे श्रेष्ठ दिनभी उही अरु मृत्युभी उहीहे ॥ अरु शास्त्रभी वहीहे ॥ जिसकरी संसारतें वैराग उपजे अरु आत्मतत्वकी चिंतना उपजे ॥ जब आत्मपदकों पावताहे तब इसका सब क्लेश मीटी जाताहे अरु जिनकों आत्मचिंतनाविषे रुचि नही सो महा अभागीहे ॥ चिर पर्यंत कष्ट पावेगा ॥ जन्मरूपी जंगलके वृछ होवेगा ॥ हे रामजी जीवरूपी बलधहे अरु अनेक आशारूपी फांसीयों करी बांधाहे अरु जरा अवस्थारूपी पथरोंकें मार्ग करीकें जर्जरीभाव होताहे ॥ भोगरूपी तलावडी गिरतविषे गिर्याहे कर्मरूपी भारकों लीये जन्मरूपी जंगलविषे भटकता हुआ कर्म चीकडविषे फस्या हुआ राग दोषरूपी मच्छरो करी दुःखी होताहे ॥ सनेहरूपी रथकों पकडी खेंचताहे ॥ अरु पुत्र स्त्रीयादिककी ममतारूपी चिकडविषे गोते खाताहे ॥ अरु मोह संसाररूपी मार्गविषे कर्मरू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पी रथके साथ जोडताहे ॥ अरु उपरतें अज्ञानरूपी तप्तता करी जलताहे ॥ संतजन अरु सत शास्त्ररूपी वृच्छकी छायाकों नही पावता ॥ हे रामजी ! जिवरूपी बलध एसाहे सो निक सनेका जतन करे ॥ जब तत्वका अवलोकन करे तब चित्त भ्रम नष्ट होजावे ॥ हे रामजी ! संसाररूपी समुद्रहे तिसके तरणेका उपाय सुन ॥ महा पुरुष संतजनहे ॥ मलाहहे ॥ सो अरु ति नकी जुक्तिरूपी जहाज होवे तिसकरी संसाररूपी समुद्रकों तरी जावेगा ॥ ओर उपाय कोइ नही यह परम उपायहे ॥ जीस देशविषे संतजनरूपी वृछ नही जिनकी फलोंसहित सीतल छायाहे नही ॥ तीस निर्जन देश मरुस्थलविषे एक दिनभी न रहीए ॥ हे रामजी ! संतजनरूपी केसें वृछहे, स्निध अरु सीतल वचनरूपी जिनके पत्रहे अरु उनका प्रसन्न होणा सुंदर फुल हे ॥ अरु उनका निश्चय उपदेशरूपी फलहे ॥ जब यह पुरुष तिनके निकट जावे तब महा मोहरूपी तप्ततातें छुटेगा अरु शांतिकों प्राप्त होवेगा ॥ अरु तिनकों पाइ करी तृप्त होवेगा ॥ अरु तीन फलोंकों पाइ करी अघावेगा ॥ सब दुःखोंतें मुक्त होवेगा ॥ हे रामजी ! अपणा आपही मित्रहे अरु अपणा आपही शत्रुहे ॥ अपणे आपकों जन्मरूपी चिकडविषे न डारे ॥ जो देहविषे अहंभावना करी विषयोंकी तृष्णा करताहे ॥ सो अपणा आपही नाश करताहे ॥ अरु जो देहभावकों त्याग करी आत्म अभ्यास करताहे तब अपणा आप उद्धार करता हे ॥ सो अपणा आपही मित्रहे अरु जो आपकों संसार समुद्रविषे डारताहे सो अपणा आपही शत्रुहे ॥ हे रामजी ! प्रथम विचार यह करी देखे जो जगत क्याहे अरु केसें उत्पत्ति भयाहे ॥ अरु केसें निवृत्त होवेगा अरु में कौन हों अरु सत्य क्याहे अरु असत्य क्याहे ॥ एसें विचार करी जो सत्यहे तिसकों अंगीकार करे अरु जो असत्यहे तिसका त्याग करे ॥ हे रामजी ! न इसका धन कल्याण करताहे न मित्र बांधव के न शास्त्र कल्याण करतेहे अपणा उद्धार आपही करताहे ॥ तातें अपणे मन साथ मित्राइ करो ॥ दृढ वैराग अरु अभ्यास करे तब संसार कष्टतें छुटे ॥ जब वैराग अभ्यास करी तत्वके अवलोकन रूपी वेडी करे तब संसार समुद्रतें तरी जाताहे ॥ हे रामजी ! जिवरूपी हस्तिहे अरु जन्मरूपी गर्तविषे गीर्या हुआहे ॥ अरु तृष्णा अहंकाररूपी जंजीरे साथ बांध्याहे ॥ अरु कामनारूपी मद करी उन्मत्तहे जब तिनोंतें छुटे तब मुक्त होवे ॥ हे रामजी ! रिदेरूपी नेत्रोंविषे अनात्मा अभिमानरूपी मल रक्त हो गयाहे ॥ जब विचाररूपी औषधी करी तिसकों दूर करीए तब आत्मरूपी सूर्यका दर्शन होवे ॥ हे रामजी ! ओर उपाय कोउ न करे तो एक उपाय करे जो देहकों काष्ट लोष्टवत जा नी करी इसका अभिमान त्याग ॥ जब अहं अभिमानरूपी बादल नष्ट होवेगा तब आपही आत्मारूपी सूर्य प्रकाश आवेगा ॥ जब अहंकाररूपी बादल लय होवेगा तब आत्मतत्वरूपी सूर्य भासेगा ॥ सो परमानंद स्वरूपहे ॥ सुषुप्तितें मौन अंकुरहे केवल अद्वैत तत्वहे ॥ वाणी करी कह्या नही जाता अनुभव करीकें आपही जानीताहे ॥ हे रामजी ! सब जगत अनंत आ त्माहे ॥ जब चित्तका दृढ परिणाम उसविषे होवे तब स्थावर जंगमरूप जगतविषे उही दिव्य देव भासेगा ॥ ओर वासना सब निवृत्त हो जावेगी ॥ केवल परमानंद आत्मतत्व अनुभव क री दीखाइ देवेगा ॥ सो स्वरूप पूर्ण अद्वैतहे ओर सब जगतका त्याग करी तिसके पावणेका जतन करो ॥ इतिश्री योगवा० उ० प्र० कारणोपदेशो नाम एकोनषष्टितमः सर्गः ॥ ५९ ॥

वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी मनकरी मनकों छेदो अरु अहं ममभावकों त्यागो जबलग मन नष्ट नही होता तबलग जगतके दुःख निवृत्त नही होता ॥ जेसें मूर्तिका सूर्य मूर्तिके न ष्ट हुएविना अस्त नही होता ॥ जब मूर्ति नष्ट होवे तब सूर्यका आकार दूर होजावे ॥ तेसें जब मन नष्ट होवे तब संसारके दुःख नष्ट होजावेंगे ॥ अन्यथा नष्ट नही होते ॥ हे रामजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जेसें प्रलयकालविषे अनंत दुःख होताहे तेसें मनके होणेकरी अनंत दुःख होतेहे ॥ जेसें मेघके वर्षणेकरी नदी बढती जाती हे तेसें मनके जागेतें आपदा बढती जातीहे इसही पर पुरातन इतिहास मुनीश्वर कहतेहे सो परस्पर सुहृदोंका हे तुं श्रवण कर ॥ हे रामजी सह्याचल पर्वतोंविषे बडा पर्वत हे तीस उपर फुलोंके समूह हे अरु नाना प्रकारके वृच्छ हे अरु जलके झरने चलतेहे ॥ मोतियोंके स्थान अरु स्वर्नके शिखर हे ॥ कडु देवताके स्थान हे पंछी शब्द करतेहे अरु तले क्रांत रहतेहे ॥ उपर सिद्ध देवता विद्याधर रहतेहे ॥ पीठविषे मनुष रहता हे नीचे नाग रहते हे ॥ मानों संपूर्न जगतका गृह इहीहे ॥ तीसके उत्तर दिशा सुंदर तलाव हे वृच्छ फलोंकरी पूर्न हे ॥ महासुंदर रचना स्वर्ग जेसी उपमा तीनकी ॥ तहां अत्रि नाम ऋषीश्वर रहताथा साधोंके श्रम दूर करनेहारा था ॥ तीसके आश्रमपास दो तपसी आनी रहे जेसें आकाशविषे बृहस्पति अरु शुक्र आय रहेहे तेसें यह दोनों रहे ॥ तीन दोनोंके यहविषे दो पुत्र महासुंदर उत्पन्न भए ॥ जेसें कमल उत्पन्न होवे तेसें उत्पन्न भए ॥ एकका नाम भास एकका नाम विलास भया दोनों क्रमकरी बडे हुए ॥ जेसें अंगुरीके दोनों पत्रहे सो वढते हे तेसें वढता जावे ॥ अरु परस्पर तीनकी प्रीत बहुत बढी अरु एकठेही रहे ॥ जेसें तील अरु तेल एकठेही रहे जेसें फुल अरु सुगंध एकठे रहते हे जेसें स्त्री अरु पुरुषकी प्रीति आपसमें होतीहे तेसें उनकी प्रीति बढी ॥ अरु देखणेमात्र तो दो मूर्ति दृष्ट आवे परंतु मानों एकही हे ॥ स्नान आदिक क्रियाभी तीनकी एकसमान, मानसी क्रियाभी एक समान, अरु महा सुंदर प्रकाशवान जेसे चंद्रमा अरु सूर्य हे तेसे जब केताक काल व्यत्तीत भया तब तीनके माता पिता शरीरकों त्यागकरी स्वर्गकों गये ॥ तीनके विजोगते दोनों शोकवान भए ॥ जेसें कमलकी कांति जलविना जाती रहे तेसें उनके मुखकी कांति कुमलाइ गइ ॥ फेर इनके मरनेकी क्रिया सब करत भए ॥ पाछें उनके गुन सुमरनकरीकें विलाप करे महाशोकवान होवे महा पुरुषभी लोक मर्यादा लंघते नही ॥ हे रामजी इस प्रकार शोककरी उनका शरीर कृश होगया ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे भासविलासवृत्तांत वर्णनं नाम षष्टितमः सर्गः ॥ ६० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जेसें उजाड बनका वृच्छ जलविना सुकी जाता हे तेसें उनका शरीर सुक गया तब दोनों विरक्तज्वर हो करी विचरने लगा ॥ जेसें यूथ समूहसों बिछुर्या हरण शोकवान होताहे ॥ तेसें आपसमें बीछुर गए अरु शोककों प्राप्त भए ॥ एक एकले फीरने लगे ॥ निर्मल ज्ञान तिनकों प्राप्त न था सो जब केताक काल व्यतीत भया तब बहुरी आय मीले ॥ अरु विलास कहत भया ॥ हे भाई मेरेरिदेकों आनंद देणेहारे अमृतके समुद्र जीवणेरूपी जो वृच्छ हे तीसका फल सुख हे ॥ सो तुं एताकाल सुखसों रहाहे क्यौं ? अरु तेरा मेरा विजोग होगया तब तुं केसी क्रिया करत भया ॥ तुजनें कछु निर्मल चित्त कीया हे क्यौं ? तुजनें अब आत्मपद पाया हे क्यौं ॥ अरु तेरी बुद्धि शोकतें रहित हे क्यौं अब विद्या तुजकों फलीहे क्यौं ॥ तुं अब कुशलरूप हुआहे क्यौं ! ॥ भासोवाच ॥ हे साध अब हमकों कुशल भया हे जो तेरा दर्शन भया हे ॥ अरु जो जगतविषे कहो तो कुशल कहांहे ॥ इस संसारविषे स्थित हुए हमकों सुख अरु कुशल कहांहे ॥ हे साध ! जबलग ज्ञेय परमात्म तत्वकों नही पाया अरु जबलग चित्त भूमिका क्षीण नही भइ अरु जबलग संसार समुद्रकों नही तरे तबलग कुशल कहांहे ॥ जबलग चित्तसों दुःख निवृत्त नही होता तबलग चित्तकी भूमिका नष्ट नही होती ॥ जबलग संसार समुद्रतें पारकों प्राप्त नही भया तबलग हमकों सुख कहांहे ॥ जबलग चित्तरूपी क्षेत्रविषे आशारूपी कंटकोंकी बल्ली बढतीजातीहे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सो आत्म विचाररूपी दात्री साथ नही काटी तबलग हमकों कुसल कहां ॥ जबलग आत्मज्ञान उदे नही भया ॥ तबलग हमकों कुसल कहांहै ॥ हे साध संसाररूपी विसूचिका रोगहै आत्मरूपी औषधविना दूर नही होता ॥ सब जीव नित्य उही क्रिया करताहै जिसकरी दुःखकी प्राप्त होवेहै सुखकों नही प्राप्त होते ॥ देहरूपी एक दछहै तिसविषे बाल अवस्थारूपी पत्रहै जोबन अवस्थारूपी फलहै वृद्ध अवस्थारूपी फलहै सो मृत्युके मुखमें जाय पडताहै ॥ उपजताहै बहुरी नष्ट होताहै ॥ यह सुख जो लवाकारहै अरु दुःख जिसका स्थावर दीर्घते दीर्घहै ॥ एसें जो सुभ अशुभ आरंभहै तिनविषे इनकों दिनराच व्यतीत होतेहै ॥ हे साध! चित्तरूपी हस्तिहै सो वैरागरूपी सांकरविना दूरतें दूर तृष्णारूपी हस्तनीके पाछें चला जाता है ॥ जेसें इल पंछी मांसकी ओर चला जाताहै तेसें चित्त विषयोंकी ओर धावताहै ॥ आत्मारूपी जो चितामणिहै तिसको ओर नही जाता ॥ अहंकाररूपी जो इल है सो देहादिकरूपी मांसकों धावता है ॥ अरु सुखरूपी जो कमलहै अपमानरूपी धुलकर भुसर हो जाताहै अरु जोगरूपी बर्फ करी नष्ट हो जाताहै ॥ हे साध! देहरूपी कूपविषे गीर्याहै ॥ भोगरूपी तीसविषे सर्प है अरु आशारूपी कंटक है तृष्णारूपी जल है ॥ तिसविषे यह दुःख पावताहै ॥ हे साध नाना प्रकारके रंग रंजनारूपी जिसविषे रंगहै अरु ज़िसविषे तृष्णारूपी चंचलता है ॥ एसें चैत्य दृश्यविषे मग्नहै ॥ चित्तरूपी एक धुजाहै सो कालरूपी वायु करी भासतीहै ॥ चित्तरूपी समुद्रहै अरु चिंतारूपी तिसविषे घुमर घेरहै ॥ जीवरूपी तृण तिसविषे आय कष्ट पावताहै अरु बुद्धिरूपी पंछिनीहै वासनारूपी जालविषे कष्ट पावतीहै यह मैंनें कियाहै यह करताहों यह करोंगा ॥ इसी वासनारूपी जलविषे बुद्धिरूपी पंछिनी कष्ट पावतीहै एक छीनभी विश्रामवान नही होती ॥ हे भाइ यह चित्तरूपी कमलहै इसकों राग दोषरूपी हस्ति चूर्न करताहै ॥ जो यह मेरा सुहृदहै यह मेरा शत्रुहै ॥ अहं मम इसकों मारता हैं शुद्ध आत्मरूपकों त्याग करी देहादिक अनात्मारूपविषे अहंभाव करताहै ॥ अरु दीनताकों प्राप्त होताहै ॥ जेसें राजतें रहित राजा कष्ट पाताहै तेसें आत्मभावतें रहित कष्ट पावताहै ॥ देहाभिमान करीकें जनन मरनके दुःखोंकों देखताहै ॥ जब देहाभिमानकों त्याग करे तब कुशल होवे॥अन्यथा कुशल नही होता॥ इतिश्री यो उ०प्र०अ०प्र०नाम एकषष्टितमःसर्गः ॥६१॥

वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार उननें परस्पर कुशलका प्रश्नकीया ॥ जबकेताक काल व्यतीतभया तब अभ्यासद्वारा उनकों निर्मल ज्ञान प्राप्त भया ॥ अरु मोक्ष पदकों प्राप्त हुआ तातें हे रामजी ज्ञानतें ओर मार्ग कल्याण निमित्त कोउनहीं ॥ जीसका चित्त आशारूपी फांसीसाथ बांध्या हुआ हे सो संसार समुद्रके पार होणेकों समर्थ नही होता ॥ तातें जीव संसार समुद्रविषे गोते खाता हे ॥ अरु ज्ञानवान शीघ्रही तरी जाता हे ॥ जेसें गोपद लंघणेविषे सुगम होता हे ॥ अरु जीस पंछीके पंख टुटे हे सो समुद्रकों नही तरी सकता बिचमेंही गीरकें गोते खाता हे॥ अरु पंखोसाथ गरूड शीघ्रही लंघी जाता हे॥ तेसें जीन पुरुषोंके वैराग अरु अभ्यासरूपी पंख टुटे हे॥ सो संसार समुद्रतें पार नही होसकता॥ अरु जीन पुरुषोंकों वराग अभ्यासरूपी पंख हे एसा ज्ञानवान शीघ्रही तरी जाता हे ॥ हे रामजी जो देहतें अतीत महात्मा पुरुष चिन्माधतत्व विषे स्थित हुए हे ॥ सो उंचे होकरी देखते हे अरु अपणे देहकों देखी हसते हे ॥ जेसें सूर्य जनताकों देखी हसता हे ॥ अर्थ यह जो जगत्की कियातें निर्लेप रहता हे ॥ जेसें रथके टुटेते रथ वायुकों खेद कछु नही ॥ तेसें देहके दुःख करी ज्ञानवानकों खेद कदाचित् नही होता ॥ अरु मनके क्षोभ करीभी आत्मतत्वविषे कछु क्षोभ नही होता ॥ जेसें तरंग उपर धुली परती हे तीसकरी समुद्रकों कछु लेप नहीहोता तेसें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनके दुःखकरी आत्माकों क्षोभ नही होता ॥ हे रामजी देह अरु आत्माका संजोग कछु नही ॥ जेसें जल अरु हंसका संजोग कछु नही ॥ जेसें जल अरु बेडीका संबंध कछु नही तेसें देह अरु आत्माका संबंध कछु नही जेसें पाहाड समुद्रका संबंध कछु नही जेसें जल अरु पथर अरु काष्ठ एक ठोर रहते हे॥ परंतु संबंध कछु नही ॥ जेसें जल अरु बेडी संघट्ट होता हे तो जल कणके उटतेहे ॥ तेसें देह अरु आत्माके संजोगतें चितवृत्ति फुरति हे ॥ हे रामजी इसकों दुःख जो होता हे सो संगकरी होता हे ॥ जहां अहंमम अभिमान होता हे ॥ तहां दुःखभी होता हे ॥ अरु अ हंममका अभिमान नही तहां दुःखभी कछु नही ॥ अरु मच्छीकों जल विषे ममत्व होता हे तीसके विजोग करी कष्ट पावती हे तेसें जीस पुरुषकों देहविषे अहंममभाव हे सो बडा कष्ट पावता हे ॥ अरु जीसकों देहविषे अभिमान नही तीसकों दुःखभी कछु नही ॥ हे रामजी ज्योंज्यों मनतें संसर्गता निवृत्त होती हे ॥ त्योंत्यों भोग प्रवाह कष्ट नही देता जेसें जल अरु पथ्थरकों कष्ट नही होता ॥ जेसें दर्पण विषे पर्वतका प्रतिबिंब होता हे ॥ सो दर्पणकों प्रतिबिंबका संग नही होता अरु कष्टभी नही होता तेसें जब देहविषे संसर्गभाव उठी जावे तब कष्ट कोउ नही होता ॥ जेसें दर्पणकों कछु कष्ट नही होता तेसें आत्मा अरु जगत्की क्रिया हे ॥ हे रामजी सर्वथा संवित मात्र आत्मतत्व स्थित हे सो शुद्ध हे ॥ द्वैत शब्दके फुरणेतें रहित ह ॥ जो तीसविषे स्थित हे तीसकों द्वैत शब्द नही फुरता ॥ अरु जो अज्ञानी हे तीसकों द्वैत कलना उठती हे ॥ हे रामजी यह सब जीव अदुःखरूप हे ॥ परंतु अज्ञान भ्रम करी आपकों दुःखी जानता हे ॥ जेसें स्थाणुविषे चोर भावना अविचार करी होती हे ॥ तैसें आत्माविषे दुःखकी भावना अविचार करी होती हे ॥ यह पुरुष अशब्दरूप हे ॥ परंतु कलनाके वशतें आपकों संबंधी जानता हे ॥ जेसें सुपनेविषे अंगना बंधन करति हे ॥ जेसें स्थानविषे बेताल भासता हे ॥ अरु भयकों प्राप्त करता हे ॥ तेसें अपणी कल्पना करी बंधमान होता हे ॥ हे रामजी देह अरु आत्माका सं बंध असत्य हे॥ जेसें जल अरु बेडीका संबंध असत्य हे॥जब जलका अभाव होवे तब बेडीकों चिंता कछु नही होती॥अरु बेडीका अभाव हो जावे तो जलकों कछु चिंता नही होती ता तें असत्य संबंध हे तेसें आत्मा अरु देहका संबंध असत्य हे ॥ जब एसें जाणीकरी अंतर संगतें रहित होवे तब देहका दुःख कछु नही लगता ॥ देहके दुःखविषे आपकों दुःखी मानना देहविषे अहंभावना करी आत्मा दुःखी होता हे ॥ जब देहविषे अभिमानकों त्यागदेवे तब सुखी होवे ॥ एसें बुद्धीश्वर कहते हे ॥ जेसें जल अरु पथ्थर एकठे रहते हे परंतु अंतर सं गका अभावहे तातें दुःख कछु नही लगता ॥ तेसें अंतरतें संगरहित होवे ॥ तब देह इंद्रियोंके होतेभी दुःखका स्पर्श कछु न होवे ॥ निर्दुःख पदविषे प्राप्त होवे ॥ हे रामजी ! जिसकों देह विषे आत्माभिमानहे तिनकों जन्म मरन दुःखरूप संसारहे ॥ जेसें बीजतें वृछ उत्पन्न होताहे ॥ तेसें देहाभिमानतें सुख दुःखरूप संसार उत्पन्न होताहे ॥ अरु संसार समुद्रविषे डुबताहे ॥ अरु जो अंतर संगतें रहित होताहे सो संसार समुद्रके पारकों प्राप्त होताहे ॥ हे रामजी ! जिसके अंतर देहाभिमान हे तिसके चित्तरूपी वृछविषे अनेकमोहरूपी शाखा उत्पन्न होतीहे ॥ अरु जो अंतर संगतेंरहितहे तिसका मोह लीन होजाताहे ॥ उसकों चित्त लीन कहताहे ॥ जिसका चित्त देहादिकोंविषे बंधमानहे तिसकों नाना प्रकारका भ्रमरूप जगत भासताहे ॥ अरु जिसका चित्त देहादिकों विषे बंधमान नही सो एक आत्मभावकों देखताहे ॥ जेसें टुटी आरसीविषे अनेक प्रतिबिंब भासतेहे अरु सारी एकही प्रतिबिंबकों ग्रहण करति हे ॥ तेसें संशयित चित्तविषे नाना प्रकारका जगत् भासता हे ॥ अरु शुद्ध चित्तविषे एक आत्मा भासता हे ॥ हे रामजी जो पुरुष व्यवहार करता हे अरु संगतें रहित हे एसें जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निर्मल पुरुष हे सो संसारतें मुक्त हे ॥ अरु जो सर्व व्यवहारकों त्याग बेठा हे अरु तपभी करता हे अरु अंतर चित्त आशक्ति हे सो बंधनमें हे ॥ अरु जो अंतर संगतें रहित हे सो मुक्त हे ॥ अरु अंतर चित्त कीसी पदार्थविषे बंध हे सो बंध हे ॥ बंध अरु मुक्तीका एताही भेद हे ॥ अंतर असंग हे सो सर्व कार्यकर्ताभी अकर्ता हे ॥ जेसें नट सर्व स्वांगकों धरताभी अलेप हे तेसें वह पुरुष अलेप हे ॥ अरु जो अंतर अभिमान सहित हे सो कछु नही करता हे तोभी करता हे ॥ जेसें सर्व व्यवहार त्यागकरी शयन करता हे ॥ अरु सुपनेविषे अनेक सुख दुःख भोगते हे तेसें उह सब कछु कर्त्ता हे चित्तके करने करी करता हे चित्तके अकरने करी अकर्ता हे ॥ शरीरकरी करना सो करना नही अरु शरीर करी अकरना सो अकरना नही ॥ जो ब्रह्महत्या करता हे तो असंसक्त पुरुषकों कछु पाप नही लगता ॥ अरु जो अश्वमेधजज्ञ करे तो कछु पुण्य नही होता जीसके चित्ततें सर्व आशक्तता दूर भइ हे सो पुरुष मुक्त स्वरूप हे ॥ अरु धन्यधन्य हे ॥ अरु जीसका चित्त आशक्त हे सो बंध अरु दुःखी हे ॥ जो पुरुष आशक्ततातें रहित हे सो आकाशकी न्यांई निर्मल हे ॥ समभाव एक अद्वैत आत्मतत्वविषे स्थित हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे अंतर असंगविचारोनाम द्विषष्टितमः सर्गः ॥ ६२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! संग कीसकों कहते हे ॥ अरु बंधरूप संग कीसकों कहते हे अरु मोक्षरूप संग कीसकों कहतेहे अरु संग बंधनोतें मुक्त कीसकों कहते हे ॥ अरु कीस उपाय करी मुक्त होताहे सोकहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी देह अरु देहीका जो विभाग हे तीसका त्याग कर ॥ अरु तीस साथ जो मीलीकरी करता हे ॥ अरु देहमात्र विषे अपणा विश्वास करता हे जो एताही मात्र में हो इसीकों संग अरु बंध कहतेहे ॥ हे रामजी आत्मतत्व अनंत हे अरु देहमात्रविषे अहंभावना करी आपकों एता मान पुरुष जानता हे ॥ तीसविषे अभिमान कर्ता हे अरु सुखकी इच्छा करता हे इसका नाम बंध अरु संग कहतेहे ॥ अरु जीसकों यह निश्चय हुआ हे जो सर्व आत्माही हे ॥ कीसकी इच्छा करों अरु कीसका त्याग करों ॥ इस असंगकरी जीवन्मुक्त कहाताहे अथवा न में हों न यह जगत् हे॥ सर्वभाव अभावकों त्यागकरी अद्वैत सत्ताविषे स्थित होताहे ॥ इसका नाम जीवन्मुक्त हे ॥ न कर्मोंके त्यागकी इछा हे न करनेकी इच्छा हे अरु अंतरतें कर्तृत्व भाव नही इस संगकाजीसनें त्याग कीया हे सो असंग कहाता हे ॥ हे रामजी जीसकों आत्मतत्वविषे निश्चय हे अरु रागदोष हर्ष शोकके वश नही होता सो असंसर्ग कहाता हे अरु सर्व कर्मोंका फल जीसनें त्याग कीया हे जो में कछु नही करता ॥ एसा जो मनकरीं त्यागीहे ॥ सो असंसर्ग कहाता हे ॥ तीसकों कोउ कर्म बंधन नही करी सकता सर्व संपदा तीसकों होती हे ॥ अरु जो संशक्त पुरुष कर्तृत्व भोक्तृत्वका अभिमान सहित हे तीसकों अनंत दुःख उत्पत्ति होतेहे ॥ जेसें कोउ गिरतविषे गीर पडे तीसविषे कंटकोंके वृछ होवे तीसकरी कष्ट पावता हे तेसें संशक्त पुरुष कष्ट पावताहे॥ हे रामजी संगके वशतें विस्तृत दुःखकी परंपरा उत्पन्न होतीहे ॥ जेसें टोएके वृच्छ साथ कंटक उत्पन्न होवे ॥ हे रामजी जेसें नासिकाविषे रसडी पाइकरी उंट बेल गंर्धव भार उठाइ फरते हे अरु मार खाते हे॥ तेसें संशक्त पुरुष आशारूपी फांसीसाथ बांधेहुए दुःख पावते हे ॥ उही संशक्तका फल उंटादिक भोगते हे जलविषे रहते हे ॥ सीत उष्णकरी कष्टमान होताहे ॥ अरु कुहाडेसाथ काटते हे इस प्रकार संशक्ततांका फल वृच्छ भोगते हे ॥ पृथ्वीके छिद्रविषे कीट होतेहे अरु अंगपीडा करी कष्ट पातेहे सो संशक्तताका फल पावताहे ॥ ओर जो क्रियादिक अन्नादिक उगते हे अरु दात्री साथ काटते हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सो अंतर दुःख पावते हे॥ बहुरी बोता हे बहुरी काटते हे सो संशक्तताका फल भोगताहे॥ इस प्रकार योनिकों पावतेहे अरु कष्टमान होताहे सो संशक्त हे॥ हरे तृणोंकों हरण खातेहे अरु वधक इसकों वाणकरी मारताहे अरु कष्टमान होताहे ॥ जो जीव तुजकों दृष्ट आते हे सो इस प्रकार संशक्तता करी बांधे हुएहे ॥ सो संशक्तताभी दो प्रकारकीहे॥ एक बंधहे एक बंध न करणे जोग हे ॥ जो मूढ जीव हे अरु जो तत्ववेत्ता हे सो वंदना करने जोग हे ॥ हे रामजी आत्मतत्वतें जो गीर्या हे ॥ अरु देहादिकविषे अभिमानी हुआ हे सो मूढ हे ॥ संसार विषे जन्ममरणकों प्राप्त होताहे ॥ अरु जीसकों आत्मतत्वका ज्ञान हुआ हे अरु निष्ठा हे सो वंदना करनेजोग हे ॥ तीसकों बहुरी जन्म मरण संसार नही होता ॥ शंख चक्र गदा पद्म जीसके हाथविषे हे अरु आत्मतत्वविषे निश्चय हे ॥ आत्मतत्वविषे संशक्त हे ॥ अरु तीन लोककी पालना करता हे सो वंदना करने जोग हे ॥ अरु जो निरालंब सूर्य आकासविषे वि चरता हे अरु सदा स्वरूप निष्ठा हे सो वंदना करने जोग हे ॥ अरु जो महाप्रलय पर्यंत जगत्कों उत्पत्ति करता हे ॥ अरु सदाशिव स्वरूपविषे संशक्त हे ॥ ब्रह्मारूप होकरी विराजता हे ॥ सो वंदना करणे जोग हे ॥ अरु जो लीलाकरी स्त्रीकों अर्धांग रखता हे ॥ उसके प्रेमरूपी बंधनसाथ बांध्या हे अरु भभुतीकों लगावता हे सदा स्वरूपविषे संशक्त हे ॥ शंकर वपु कों धारीकरी स्थित हे सो वंदना करने जोग हे ॥ इसतें आदिलेंकरी सिद्ध देवता विद्याधर लोकपाल जीनकी संशक्ति स्वरूपविषे हे सो मुक्त स्वरूप हे अरु वंदना करने जोग हे ॥ अरु जो देहादिकोंविषे संशक्ति हे सो बंध हे जन्म जरा मृत्युकों पावता हे अरु कष्टमान होता हे॥ हे रामजी जीनकों शरीरविषे अभिमान हे अरु बाहिरतें उदारभी दृष्ट आता हे ॥ परंतु जब भोगोकों देखता हे तब इस प्रकार गीरता हे ॥ जेसें मांसकों देखी करी आकाशतें इल पंखेरु गीरतेहे तेसें उही गीरतेहे ॥ अरु वृथा जतन करतेहे ॥ हे रामजी संशक्त जो जीवहे सो बांधे हुए केइ देवनारूप धारी स्वर्गविषे रहते हे ॥ केइ मनुषलोकविषे रहते हे ॥ केइसर्प आदिक पातालविषे रहते हे ॥ तीनों लोकोंविषे भटकते फिरतेहे ॥ जेसें गुल्लरविषे मछर रहतेहे तेसें ब्र ह्मांडविषे संशक्त जीव रहते हे अरु मीट जाते हे ॥ कालरूपी बालकका जीवरूपी गेंद हे ॥ कब अधकों उछालताहे ॥ कब उर्धकों उछालताहे॥ हे रामजी जेता कछु जगत् हे सो सब असत्यरूप हे ॥ मनरूपी चीतेरेने संगरूपी रंगसाथ शून्य आकाशविषे देहादिक जगत् लीख्यो हे सो सब असत्य रूप हे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग उपजते अरु मीटजाते हे तेसें जीव ब्रह्मांडविषे उपजते रहते हे ॥ जीसका मन देहादिकविषे संसक्त हे ॥ सो तृष्णारूपी अग्निकरी तृणोंकी न्यांई जलते हे ॥ हे रामजी जो संशक्त पुरुष हे ॥ तीसकें शरीर पावणेकी कछु संख्या नही ॥ मेरूके शिखरते लेकरी चरनो पर्यंत गंगाका प्रवाह चले तरंगो सहित तीसके मोतीयोंवत् जो लव कणकेहे॥ तीसके गिननेकी सख्या होवे परंतु संशक्त जीवके शरीर गिनने की संख्या नही ॥ अरु जेती कछु आपदा हे सो तीनकों प्राप्त होती हे ॥ जेसें समुद्रविषे सब नदीयां आय प्राप्त होतीहे ॥ तेसें सब आपदा तीसकों प्राप्त होतीहे ॥ हे रामजी जो देह अभी मानी सदाविषयोंकी सेवना करता हे॥ सो रौरव कालसूत्र आदिक जो नरक हे॥ सो नरक अग्निकी लकडीयां होवेंगे जलेंगे कष्ट पावेंगे ॥ ओर जेते कछु दुःखके स्थानहे सो सब संशक्त जीवकों प्राप्त होवेगा ॥ अरु जो असंग संगती चित्तहे तिन पुरुषोकों सब विभूती पदार्थ प्राप्त होवेगा ॥ जेसें वर्षाकालविषे नदीयां जलकरी पूर्न होतीयां हे ॥ जेसें मानसरोवरविषे सब हंस आन स्थित होताहे तेसें असंशक्त चित्त पुरुषकों सब संपदा प्राप्त होतीहे ॥ अरु जीस पुरुषका देहाभिमान बढजाताहे सो विषकी न्यांई जान॥ अरु जीसका देहाभिमान घट जाताहे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीसकों अमृत रूप जाण॥विष ज्योंज्यों बढती हे त्यों त्यों मारती हे॥अरु अमृत ज्योंज्यों बढताहे त्यों त्यों अमर होता हे ॥ यह हे रामजी जो पुरुष देहाभिमानका त्यागकरी स्वरूपविषे संशक्त होताहे सो सुखी होताहे ॥ अरु जीसकों अंतर दृश्यका संगहे तीसकों यह संशक्त रूपी अंगार अंगोकों जलावेगा ॥ अरु जीसके अंतर संग नही उह असंगरूपीअमृतकरी सुखीहोवेगा अरु चंद्रमाकी नांई सीतल मुक्त रूप हे ॥ अविद्यारूपी विसूचिका रोग तिसका नष्ट हो जाताहे ॥ शांतरूप होताहे॥ इतिश्री उप०प्र० संशक्तविचारो नाम त्रिषष्टितमः सर्गः॥ ६३॥

वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह जो मैंनें तुजकों उपदेश कीयाहे तीसकों विचार करीकें अभ्यास कर ॥ जो सर्वदा काल सर्व स्थान सर्व कर्मोंकों कर्त्ता चित्तकों देहादिक विषे संशक्ति मत कर ॥ केवल आत्म चैतनविषे स्थित होड ॥ हे रामजी न संशक्तविषे चित्त होवै न चेष्टाविषे चित्त होवे ॥ न कीसी वस्तुविषे सत्य जानी चित्त होवे न आकाशविषे, न अधविषे, न उर्ध न दिशाविषे, न बाहिर न अंतर चित्त होवे, ॥ न प्राणोंविषे न उर विषे न मुर्धनी तालुविषे ॥ न भ्रोंहके मध्यविषे न नासिकाविषे न जाग्रत सुपन सुषुप्तिविषे ॥ न तम न प्रकाशविषे न श्याम वर्न, रक्त पीत स्वेतविषे न स्थिरविषे न चलविषे ॥ न आदि न अंतविषे न मध्यविषे ॥ न दूर न निकटविषे ॥ कीसी पदार्थविषे न चित्तादि अंतःकरणविषे न शब्द स्पर्शरूप रस गंधविषे ॥ न कलना अकलनाविषे चित्तकों लगावड ॥ सर्व ओरतें चित्तकों वर्जिकरी चैतनतत्वविषे विश्राम कर ॥ कछुक द्वैतकों लेकरी चैतन तत्वका आश्रय न कर ॥ हे रामजी जब सर्वतें निरास हुआ अरु आत्मतत्वविषे स्थित हुआ तब विगतसंग होवेगा ॥ जीवका जीव तत्व चलता रहेगा ॥ केवल चिदात्मा होकरी स्थित होवेगा ॥ सर्व व्यवहार करे अथवा न करे ॥ करतेभी अकर्ता होवेगा ॥ अथवा इसकाभी त्याग करी केवल चिदानंद शांतरूप जो तत्वहे तिसविषे स्थित होउ ॥ अद्वैत रूप तत्व स्वाभाविक भासेगा ॥ जेसें बदलोंकें दूर भये सूर्य स्वाभाविक भासी आवेगा तेसें फुर्णेतें रहित चैतन तत्व भासी आवेगा ॥ जेसें चिंतामणि प्रकाशरूप स्वाभाविक भासी आतीहे तेसें आत्मा प्रकाश स्वाभाविक भासी आवेगा ॥ बहुरी जो कछु क्रिया करेगा सो फलदायक न होवेगी ॥ जेसें कमलकों जल नही स्पर्श करता तेसें तुझकों क्रिया स्पर्श न करेगी ॥ अरु चित्त आत्मगत निर्वाणरूप होवेगा ॥ क्रिया कर्त्ताभी अकर्ता रहेगा ॥ इतिश्री यो०उप०प्र० शांतसमाचारयोगोपदेशो नाम चतुःषष्टितमः सर्गः ॥ ६४ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! असंशक्त पुरुषहे सो ध्यान करे अथवा व्यवहार करे॥ सदा ध्यानविषे स्थितहे अरु शोकतें रहितहे ॥ जेसें बाह्य क्षोभमान दृष्ट आताहे परंतु अंतर सर्व कलनातें रहितहे ॥ उह संपूर्ण लक्ष्मी करी शोभताहे ॥ हे रामजी ! जिस पुरुषका चित्त चैत्यतें रहित अचल चित्तहे सो विगतज्वरहे॥तिसकों कछु दुःख स्पर्श नही करता॥जेसें जल कमलोंकों स्पर्श नही करता अरु ओरोंकोंभी निर्मल वह करताहे ॥ जेसें निर्मली मलीन जलकों निर्मल करतीहे ॥ तेसें उह जनताकों निर्मल करताहे अरु जो आत्मतत्वविषे लीनहे सो क्षोभमानभी दृष्ट आताहे परंतु क्षोभ कदाचित नही ॥ जेसें सूर्यका प्रतिविब क्षोभमान दृष्ट आताहे ॥ परंतु सूर्यकों क्षोभ कदाचित्त नही तेसें ज्ञानवानका चित्त क्षोभायमान दृष्ट आताहे तोभी क्षोभ कदाचित् नही॥ हे रामजी ! आत्मारामी जो पुरुषहे सो बाह्य मोरके पुच्छवत् चंचलभी दृष्ट आताहे परंतु अंतर सुमेरु पर्वतकी नांइ अचलहे ॥ जिनका चित्त आत्मपदविषे स्थित भयाहे तिनकों सुख दुःख अपणे वश नही करी सकतें ॥ जेसें फाटककों प्रतिविबका रंग नही चडता तेसें ज्ञानवानकों सुख दुःखका रंग नही चढता ॥ जिस पुरुषकों परावर ब्रह्मका साक्षात्कार हुआहे तिनका चित्त राग दोष करी रंजित नही होता ॥ जेसें आकाशविषे बादल दृष्ट आताहे परंतु आकाश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कों स्पर्श नही करता तेसें ज्ञानवानके चित्तकों राग दोष स्पर्श नही करता ॥ जो आलब्यानीहे जिसकों परम बोधका साक्षात्कार भयाहे अरु कलना मलतें मुक्त हुआहे ॥ सो पुरुष असंशक्त कहाताहे ॥ हे रामजी ! जो आत्मारामी पुरुषहे ॥ तिसकों आत्मज्ञानके अभ्यास करी संशक्तता निवृत्त हो जातीहे अन्यथा संशक्त भाव निवृत्त नही होता ॥ जब चित्त परिणाम आत्माकी ओर होवेगा जेसें चंद्रमा प्रणामके वशतें अमावसकों सूर्यरूप हो जाताहे ॥ तेसें चित्त दृढ प्रणामके वशतें आत्मारूप हो जाताहे ॥ जब चित्त चैत्यभावतें हीन होताहे तब क्षीण चित्त कहाताहे अरु शांत कलना कहाताहे ॥ तब जाग्रत इसकों सुषुप्तिरूप हो जाताहे ॥ तिस अवस्थाविषे जो कछु क्रिया करताहे सो फलका आरंभ नही होती ॥ काहेतें जो निरहंकार हो जाताहे॥ जेसें जंत्रीकी पुतली अहंकारतें रहित चेष्टा करतिहे अरु संवेदनतें रहितहे॥ तिसकों कोंउ दुःख नही होता॥ तेसें निरहंकार निःसंवेदन पुरुष निर्दुःख अरु निर्लेप कहाताहे ॥ हे रामजी ! इष्ट अनिष्ट भाव अभावरूपी जगत् चित्तविषे होताहे ॥ जब चित्त आत्मभावकों प्राप्त हुआ तब किसकरी किसकों किसका बंधन होवे ॥ सर्व आत्मतत्व होताहे जेसें नट सर्व स्वांगकों धारताहे अरु अपणा अभिमान किसीविषे नही होता ॥ तेसें सुषुप्ति बोध पुरुष जगतकी क्रिया करताहे ॥ अरु बंधमान नही होता ॥ जीवन्मुक्त हो करी स्थित होताहे ॥ हे रामजी ! सुषुप्ति बोधकों आश्रय करीकें जगतकी क्रिया करो ॥ क्रिया कर्म करता त्रिपुटीकी भावनातें रहित होइ तब तुमकों दुःख कछु न होवेगा ॥ न आदानविषे न त्याग विषे अभिमान होवेगा ॥ यथा प्राप्तविषे स्थित होवेगा ॥ सुषुप्ति बोधविषे स्थितहे ॥ सो कर्त्ता हुआभी कछु नही करता ॥ एसें निश्चयकों धारी करीकें जेसें इच्छा होवे तेसें करो ॥ हे रामजी ! ज्ञानवानकी चेष्टा बालकवत होतीहे ॥ जेसें बालक अभिमानतें रहित पिंगुडेविषे अंगोंकों हिलाताहे ॥ तेसें ज्ञानवान अभिमानतें रहित कर्म करताहे फलका स्पर्श नही होता ॥ जब चित्त अचित्तरूप हो जाताहे तब जाग्रत जगत सुषुप्तिरूप हो जाताहे ॥ अरु जो कछु क्रिया करताहे सो स्पर्श नही करति॥ हे रामजी ! इसकों जब जगततें सुषुप्ति दशा प्राप्त भइ ॥ तब इसका अंतर शितल हो जाताहे राग दोष कछु नही फुरते॥ आत्मानंद करी पूर्न होताहे॥ जेसें पूर्नमासीका चंद्रमा सोभताहे तेसें उह सोभताहे॥ जो सुषुप्ति बोधविषे स्थित हे सो महा तेजवान महा घुर्म होताहे॥ आत्मानंद करी पूर्न चंद्रमाकी नांइ हो जाताहे॥ हे रामजी ! जो पुरुष सुषुप्ति अवस्थाविषे स्थितहे॥ सो किसी संसारके क्षोभ करी चलायमान नही होता॥ जेसें पर्वत सर्वदा कालविषे क्षोभायमान नही होता॥ जेसें भूकंपविषे सब वृच्छादिक चलायमान होताहे॥ अरु अस्ताचलपर्वत कंपायमान नही होता॥ तेसें ज्ञानवान चलायमान नही होता॥ जेसें पर्वत सर्व कालविषे सम रहताहे अरु तरु उगकें गिर पडताहे ॥ पर्वत ज्योंका त्यों रहताहे ॥ तेसें ज्ञानवान अनेक प्रकारको क्रियाविषे सम रहताहे ॥ हे रामजी ! एसी सुषुप्ति दशा अभ्यास जोग करी प्राप्त होतीहे ॥ जब यह दशा प्राप्त होतीहे तब इसकों तत्ववेत्ता तुरीयापद कहतेहे सो परमानंद रूपहे ॥ तिसविषे सर्व दुःख नाश हो जाताहे ॥ असंशक्त हो जाताहे मनका मनन भाव निवृत्त हो जाताहे ॥ तब ज्ञानवानकों परम सुख उदे होताहे ॥ तिसकरी परमानंद घुर्म हो जाताहे ॥ इस संसार रचनाकों लीलारूप देखताहे ॥ सर्व शोकतें रहित निर्भय होताहे ॥ संसार भ्रम दूर हो जाताहे ॥ जब तुरीया पदविषे प्राप्त हुआहे ॥ तब संसारविषे बहुरी नही गीरता ॥ जो जतनवान पुरुष परमपावन पदविषे स्थित हुएहे सो संसारकी अवस्थाकों देखी करी हसतेहे ॥ जेसें पहाड उपर बेठा पुरुष नगरकों जलता देखी करी हसताहे तेसें ज्ञानवान आत्मानंदकों पाइ करी संसारके कार्योंमें दुःख जाणी करी हसताहे ॥ हे रामजी ! तुरीया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वस्थाविष स्थितहे सो अविनाशी होताहे ॥ अरु आनंदरूप आनंद कलनातें आनंद कलनाहे ॥ जब एसें तुरीयातीत पदकों प्राप्त होताहे ॥ तब जन्ममरणके बंधनतें मुक्त होताहे ॥ अभिमान आदिक कलनातें रहित परम ज्योतीविषे लीन होताहे ॥ जेसें लुनकी गोली समुद्रविषे जलरूप हो जातीहे तेसें आत्मरूप उह हो जाताहे ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठ उपशम प्रकरणे संशक्तचिकित्सानाम पंचषष्टितमः सर्गः ॥ ६५ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जबलग तुरीयापद विषे स्थित होताहे तबलग केवल जीवन्मुक्त होताहे ॥ इसतें उपरांत विदेहमुक्त तुरीयातीत हे सो वाणीका विषय नही ॥ जेसें आकाशकों भुजाकरी कोइ पकडी नही सकता तेसें तुरीयातीत वाणीका विषय नही ॥ तुरीयातीत पदतें विश्रांतिभी दूर हे विदेहमुक्त कर पाईता हे अब तुम कछुक काल एसी सुषुप्ति अवस्थाविषे स्थित होइ पाछें परमानंद पद विषे स्थित होणा ॥ हे रामजी ! तुरीयावस्थाविषे जों स्थित हुआ हे सो निर्द्वंद्व भावकों प्राप्त हुआहे जब तुं सुषुप्ति अवस्थाविषे स्थित होवेगा तब जगत्के कार्यभी करता रहेगा अरु सदा पूर्न रहेगा ॥ उदे अस्तके भावकों कदाचित प्राप्त न होवेगा ॥ जेसें मुर्तिका चंद्रमा लीख्या उदे अस्तकों नही प्राप्त होताहे तेसें तुं उदे अस्त भावकों प्राप्त न होवेगा ॥ हे रामजी ! इस शरीरकों आप जाणी करी राग दोषविषे जलताहे ॥ जिस पदार्थका सन्निवेश होताहे तिसके नष्ट हुए नष्ट हो जाताहे ॥ जेसें मृत्तिकाका अन्वय घटविषे होताहे घटके नाश हुए मृत्तिकाका नाश न होवे तेसें भ्रमकों मत अंगीकार करही ॥ तुं सदा ज्योंका त्यों हे ॥ तेरा सन्निवेश तो इसविषे कछु न हुआ ॥ तातें ज्ञानवान देहके नाश हुए शोकवान नही होता ॥ अरु देहके स्थित हुए सुखीभी नही होता ॥ काहेतें जो देहके साथ सबंध कछु नही जो तत्वदर्शि पुरुषहे सो यथा प्राप्तविषे निर्दोष हो करी विचरताहे ॥ अभिमानादिक विकारोंतें रहित निर्मल आकाशवतहे ॥ जेसें शरत्कालकी रात्रविषे चंद्रमाकरी आकाश निर्मल होताहे तेसें मनकी वृत्ति विकारोंतें रहित करी आत्मपदविषे स्थित होताहे संसारकी ओर नही गीरता ॥ जेसें जोग मंत्र तप सिद्धि करी संपन्न आकाशविषे उडता जाताहे ॥ सो पुरुष पृथ्वीपर नही गीरता ॥ हे रामजी ! तुंभी अपणे प्रकृतिभावविषे स्थित होकरी यथा प्राप्त क्रियाकों कर्त्ता निर्द्वंद्व होउ ॥ अरु तुंभी अब स्वरूपका ज्ञाता हुआहे ॥ अरु परम पदविषे जाग्याहे अपणे स्वरूपकों प्राप्त हुआहे ॥ पृथ्वीविष विशोकवान हुआ विचरो ॥ इच्छा अनिच्छाकों त्याग करी सीतल प्रकाश अंधकार तपत अरु मेघतें रहित शरत्कालके आकाशवत् निर्मल सोभेगा ॥ हे रामजी ! यह जगत चिदानंद स्वरूपहे अरु आदिअंततें रहितहे ॥ अहं त्वं आदिक भ्रमतें रहित तिसविषे स्थित होउ ॥ आत्मा केवल अव्यक्त चिंतनातें रहितहे तिसका शरीर साथ संबंध केसें होवे ॥ आत्मा आदिक नामभी उपदेश व्यवहारके निमित कल्पे हे ॥ नाम रूप भेद भयतें रहित अशब्द पद हे ॥ सोइ जगतरूप हो करी स्थित भयाहे ॥ जगत कछु भिन्न वस्तु नही जेसें जल तरंगरूप हो भासताहे सो जलतें कछु भिन्न वस्तु तरंग नही तेसें आत्मातें भिन्न जगत कछु नही ॥ जेसें समुद्र सब जलरूप हे जलतें इतर कछु भिन्न नही ॥ तेसें सब जगत आत्मरूपहे ॥ भिन्न कछु नही ॥ जेसें जल अरु तरंगविषे भेद नही पट अरु तंतुविषे भेद नही तेसें ब्रह्म अरु जगतविषे भेद नही ॥ हे रामजी ! ओर द्वैत कछु वस्तुहे नही ॥ परंतु में तेरे उपदेशके निमित्त द्वैतकों अंगीकार करी कहताहों यह जो शरीरहे तिसके साथ तेरा संबंध कछु नही ॥ जेसें धुप अरु छायाका संबंध नही होता प्रकाश अरु तम एकठे नही होता तेसें आत्मा अरु देहका संबंध नही ॥ देह जड अरु मलीनहे अरु दृश्य असत्यहे ॥ आत्मा निर्मल चैतनहे अरु सत्यहे ॥ तिसका देह साथ संबंध केसें होवे ॥ जेसें सीत अरु उष्णका परस्पर विरोधहे तेसें आत्मा अरु देहका संबंध न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही ॥ जेसें वनकों अग्नि लागेतें जंत जलतेहे तेसें भ्रम दृश्यरूप देहविषे अहंभाव करीकें जलतेहे ॥ हे रामजी ! जेसें दावाग्निविषे कुबुद्धि जलबुद्धि करे तेसें अज्ञानी देहविषे आत्मबुद्धि करतेहे ॥ जेसें मरुथलविषे सूर्यकी कीर्णामें जल भासताहे तेसें आत्माविषे देहभाव रखतेहे ॥ हे रामजी ! चिदात्मा निर्मल अरु नित्य स्वयंप्रकाशहे अरु देह मलिनहे ॥ अस्थि मांस रक्तमयहे ॥ इसके साथ आत्माका संबंध केसें होवे आत्माविषे देहका अभाव हे ॥ केवल एक अद्वैत तत्व अपणे आपविषे स्थित हे ॥ तीसविषे द्वैत भ्रम केसें होवे ॥ हे रामजी स्वरूपतें न कोउ बंध हे न कोउ मुक्त हे ॥ सर्व सत्ता एक आत्मतत्व स्थित हे ॥ अंतर बाहिर सर्व उही हे में सुखी हों में दुःखी हों मुढ हों ॥ ईसी मिथ्या द्रष्टिकों दूरतें त्याग ॥ आपकों केवल आत्मरूप जाणीकरी स्थित होहु यह जो द्रश्य हे सो परम दुख देणेहाराहे ॥ इसकरी दुख प्राप्त होवेगा ॥ जेसें तृण अरु पहाडकी एकता नही होती, पट अरु पथरकी एकता नही होती तेसें आत्मा अरु शरीरकी एकता नही होती ॥ जेसें तम अरु प्रकाशका संजोग नही होता तेसें देह अरु आत्माका संजोग नही होता अरु दोनों तुल्यभी नही होते ॥ जेसें सीत अरु उष्णकी एकता नही होती, जेसें जड अरु चैतनकी एकता नही होती तेसें शरीर अरु आत्माकी एकता नही होती ॥ हे रामजी शरीर जो बोलता हे सो वायुके बलकरी चलता बोलताहे ॥ आठ स्थानोविषे वायुके बलकरी अच्छरोंका उच्चार होताहे ॥ उर, कंठ, शिर, जिव्हामूल, दंत नासिका, होठ तालु, यही अष्ट स्थान हे ॥ क, ख ग घ इन चारोंका उच्चार कंठविषे होता हें ॥ च छ ज झ चारोंका तालु स्थानविषे उच्चार होता ॥ ट ठ ड ढ इन वर्गोंका मूर्धनी शिरविषे उच्चार होता हे ॥ त थ द ध इनका दंतोंविषे उच्चार होता हे ॥ प फ ब भ म इन पांचोंका होठोविषे उच्चार होता हे ॥ ङञनण इनका नासिकाविषे उच्चार होता हे ॥ जीव्हा मुलविषे जिव्हाका उच्चार होता हे ॥ जीस पदके आदि हकार होवे सो हृदयविषे उच्चार होता हे ॥ आठों स्थानोंविषे इन वर्गोंका वायुकरी उच्चार होता हे ॥ अरु नव स्वर सुच्छमका उच्चार होता हे ॥ आत्मा इनतें निर्लेप होता हे ॥ जेसें बांसरी वायुकरी शब्द करति हे ॥ तेसें यह पांचतत्वोंकरी शब्द होता हे ॥ इनविषे आत्माभिमान करना जो में कर्त्ता हों ॥ सो महा मूर्खता हे ॥ अरु नेत्रादिकभी इंद्रिया वायुकरी चेष्टा करतियां हे ॥ तातें इस भ्रमकों त्यागकरी आत्मपदविषे स्थित होउ ॥ आत्मा आकाशवत सर्वविषे पूर्न हे ॥ जेसें आकाश सब ठोरविषे पूर्न हे ॥ परंतु जहां आदर्श होता हे तहां प्रतिबिंब होकरी भासता हे तेसें आत्मा सब ठोरविषे पूर्न हे ॥ परंतु जहां चित्त होता हे तहां भासता हे ॥ हे रामजी जहां वासनाकरी चित्तरूपी पंछी जाता हे तहां आत्माकों अनुभव होता भासता हे जो में इहां हों ॥ जेसें जहां पुष्प होता हे तहां सुगंधभी होती हे तेसें जहां चित्त होता हे तहां अहंभावभीहोता हे ॥ जेसें आकास सर्व ठोरविषे हे परंतु जहां प्रतिबिंब होता हे तहां भासता हे ॥ जेसें जल सर्व पृथ्वी विषे हे ॥ परंतु भासता तहां हे जहां खोदता हे ॥ तेसें आत्मा सब ठोर पूर्न हे ॥ परंतु भासता तहां हे जहां चित्त हे ॥ जेसें सूर्यका प्रतिबिंब सब ठोर हे परंतु जहां आदर्सअथवा जल हें तहां भासता हे तेसें आत्मा जहां तहां पूर्न हे परंतु चित्तके अहंभाव करी भासता हे आत्माका प्रतिबिंब चित्तहीविषे भासता हे ॥ सो चित आत्माकी सत्ताकरी जगत् रचनाकों पसारता हे ॥ जेसें सूर्यकी कीर्णां धुपकों पसारती हे ॥ हे रामजी भूतोका कारण अंतःकरणही हे ॥ अरु आत्मा तत्व तो अतीतही हे आदि कारण नही हे ॥ अरु वास्तवतें अकारण हे ॥ जगत् जो सत भासता हें सो अविचार करी भासता हे ॥ तीसीके निवृत्तिका उपाय आत्मज्ञान हे ॥ हे रामजी संसारका कारण अंतःकरण हे ॥ असम्यक ज्ञानकरीकें सत्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूप भासता हे ॥ जेसें मरुस्थलविषे असम्यक् ज्ञानकरीकें जल भासता हे ॥ जब यथार्थ ज्ञान होता हे तब जगत्का कारण चित्त नष्ट होजावे ॥ जेसें दीपकके प्रकास करी अंधकार नष्ट होजाता हे ॥ तेसें आत्मज्ञान करी चित्त नष्ट होजाता हे ॥ संसारका कारण अपणा चित्तही हे ॥ इसका नाम जीव अंतःकरण चित्त मन हे ॥ रामोवाच हे महा आनंदके देणेहारे एती संज्ञा चित्तकी केसें हुइ हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी सर्व भावरूप एक परमात्मा तत्व हे ॥ जेसें समुद्र नदीयां तरंग आदि संज्ञा एक जलही धरता हे तेसें चित्तादिक अनेक संज्ञाकों आत्मा धारता हे अरु सदा एक रूप हे ॥ संवेदन फुरनेकरी अनेकरूप धरता हे ॥ जेसें एक जलकों अनेक तरंग, कइं बुदबुदे, कइं जल, कइं चक्र, कइं स्थिर एती संज्ञाकों धारता हे परंतु सबही जलरूप हे तेसें सर्वशक्ति आत्मा सर्व शरीरोंविषे सर्वरूप होता हे ॥ जब स्पंदकलना दूरहोती हे ॥ तब शुद्ध स्वरूप हो भासता हे ॥ अरु जहां अज्ञान संसर्नेकों अंगीकार करता हे ॥ तहां उही अनंत आत्मा जीव कहाता हे ॥ जेसें केसरी सिंग पिंजरेविषे फसता हे तेसें यह जीवरूप होता हे ॥ हे रामजी जहां अहंभाव फुर्ता हे तहां जीव कहाता हे ॥ अरु जो निश्चयवृत्तिकरी फुरता हे तीसकों बुद्धि कहते हे ॥ संकल्प विकल्प करी मन कहाता हे ॥ चिंता कर्णेतें चित्त कहाता हे ॥ प्रकृत भावकरी प्रकृति कहाता हे ॥ हे रामजी प्रकृतिरूप जो पदार्थ हे ॥ सो जड कहाता हे ॥ अरु चैतन हे सो जीव कहाता हे ॥ अरु जड जो दृश्य भावकरी संवित भाग हे ॥ अजड जो जीव अहं सो द्रष्टाभाव करी सिद्ध होता हे ॥ इनके जो मध्य हे सो परमात्मा तत्व हे ॥ सो नानारूप हो भासता हे ॥ यह रूप जीवका बृहदारन उपनिषदविषे बहुत प्रकारकरीकें ओर वेदांत शास्त्रोविषे कहाहे ॥ इसतें इतर संज्ञा शास्त्रकारनें कल्पीकरी कही हे सो वृथा कल्पना कहीहे ॥ जबलग अहंभाव करीकें चित्त संसरता हे तबलग जगत् भ्रम होताहे ॥ जेसें जबलग सूर्यहे तबलग प्रकाश होताहे ॥ जब सूर्य अस्त होताहे तब प्रकास जाता रहताहे ॥ तेसें जब चित्तका अभाव हुआ तब जगत्भ्रम जाता रहताहे॥देहविषे आत्मा बुद्धि करनि सो महा मूर्खताहे॥काहेतें यह अधोर्ध संजोगहे॥जो आत्माका एसें संजोग होवे तो देहके नास हुए आत्माभी नास होजावे॥देहके नास हुए आत्माका नास नही होता॥जेसें वृच्छके पात नास हुए वृच्छका नास नही होता॥तेसें शरीरके नास हुए आत्माका नास नही होता॥ जेसें घटके नास हुए आकास नास नही होता तेसें शरीरके नास हुए आत्माका नास नहीं होता॥ जेसें पुरातन वस्त्रकों त्यागकरी पुरुष नौतन वस्त्र पहिरता हे ॥ तेसें आत्मा पुरातन सरीरकों त्यागी करी नौतन सरीरकों अंगीकार करताहे इसका नाम मूर्ख मृत्यु कहतेहे॥सरीरके नास हुए आत्माका नास तो कछु नहीं होता ॥ हे रामजी जीसका चित्त निर्वासनिक हुआहे॥उसका शरीर जब छुटताहे तब उसका चित्तचिदाकास विषे लीन होजाताहे ॥अरु जीसका चित्त वासना सहितहे॥सो एक शरीरकों त्यागकरी ओर सरीरकों पावताहे॥तोभी सरीरके नास हुए आत्माका नास नही होता ॥ जो देहके नास हुए आपकों नास मानता हे सो मुर्ख हे ॥ जेसे स्थाणुविषे अग्यानकरीकें वेताल भासताहे ॥ जेसें माताके स्थानोविषे मुर्ख बालककों वेताल भासताहे ॥ तेसें अज्ञानकरी आत्माविषे मृत्यु भासताहे ॥ अरु जो इसका आत्मत्व नास होवे अर्थ यह जो चित्त नास होजावे बहुरी फुरे नही सो तो आनंद हुआ ॥ अरु जो शरीरके नास हुए आत्माका नास कहतेहे सो मूढहे ॥ मिथ्या कहतेहे ॥ जेसें कोउ देसते देसांतरको जाता हे तो उसका अभाव नही होता तेसें सरीरकों त्यागकरी ओर सरीरकों प्राप्त होताहे ॥ आत्माका नास नही होता जेसें जलविषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तरंग फुर्ताहे बहुरी लीन होकरी ओर ठोरविषे जाय फुर्त्ताहे ॥ तेसें आत्मा एक सरीरकों त्यागकरी औरकों धारताहे ॥ जेसें पंछी उडता उडता दूर जाता हे तब द्रष्ट नही आता परंतु नास नहीहोता ॥ तेसें सरीरके नास हुए आत्मा और ठोर प्रगट होताहे नास नही होता ॥ हे रामजी वासनाके वसतें यह जीव एक सरीरकों त्यागकरी ओर सरीरकों जाय प्राप्त होताहे ॥ इसी प्रकार वासनाके अनुसार जीव फीरताहे॥वासनारूपी जेवरी साथ बांध्या जीवरूपी वानर सरीररूपी स्थानोविषे भटकताहे॥हे रामजी जीव वासनारूपी रसडी साथ बांध्या हुआ कबहु उर्ध लोक कबहु मनुष लोकविषे घटि जंत्रकी न्यांई भ्रमताहे॥हे रामजी जीवकों रिदेविषे जो वासना होतीहे॥तीसकरी जरा मृत्यु जन्म आदिक दुःखोंकों पावताहे॥ अरु कर्मोरूपी भार कों उठाइ फीरताहे ॥ कबहु स्वर्गकों जाताहे कबहु पातालकों जाताहे ॥ कबहु मध्यस्थानविषे जाताहे ॥ शांतिकों प्राप्त कदाचित् नही होता ॥ तातें हे रामजी ! अविद्यारूपी जो संसारहे ॥ इसकों भ्रमरूप जाणीकरी ईसकी वासनाका त्याग करी अपणे स्वरूपविषे स्थित होउ ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ इस प्रकार जब वसिष्ठजीनें कहा तब सूर्य अस्त हुआ ॥ स ब सभा स्नानके निमित्त उठी ॥ परस्पर नमस्कार करकें अपअपने स्थानकों गए ॥ रात वीताय सूर्यकी कीर्णों साथ आइ बेठे ॥ ॥ इतिश्री योगीवासिष्ठे उपशम प्रकरणे संसार जोगोपदेसो नाम षटषष्टितमः सर्गः ॥ ६६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! आत्मा देहके उपजेतें उपजता नही अरु नाश हुएतें नाश नही होता सो तुं निष्कलंक आत्मा हे ॥ तुजकों देह साथ संबंध कदाचित नही ॥ जेसें कुंजविषे फुल फल होता ॥ जेसें घटविषे घट आकाश होताहे सो परस्पर भिन्नरूप होताहे ॥ एकके नाश हुए दुसरेका नाश नही होता ॥ तेसें देहके नाश हुए आत्माका नाश नही होता ॥ अरु जो देहके नाशविषे अपणा नाश मानताहे सो मूर्ख जडहे तिस अर्थ चैतनाकों धिक्कारहे ॥ हे रामजी जेसें रथ अरु रसडीयां अरु घोडाका स्नेहतें रहित संजोग होताहे ॥ तेसें शरीर अरु चित्त अरु इंद्रियांका संजोगहे ॥ हे रामजी ! रथ टुटेतें रथ वायुकी हानि तो नही होती ॥ तेसें देह इं द्रियांके नाश हुए आत्माका नाश नही होता जेसें पृथ्वी पहाड उपर जलके प्रवाहका संजोग होताहे अरु विजोगभी होताहे ॥ सो एकके नाश हुएतें दुसरेका नाश नही होताहे तेसें देह इंद्रियका संजोग हे ॥ इनके नास हुए आत्मका नास नही होता ॥ जेसें स्थाणुविषे वेताल भासताहे ॥ अरु भयमान होताहे ॥ तेसें देहविषे अहंभाव करी राग द्वेष सुख दुःख पावता हे ॥ जेसें एक काष्ठकी अनेक पुतली होतीयाहे सो काष्ठतें इतर कछु नही तेसें जेते कछु सरीर हे सो पंचभूतोंकाहे ॥ पंचभूतोंतें इतर कछु वस्तु नही ॥ बहुरी यह पंचभूतों का शरीर पंचभूतोविषे लीन होता हे ॥ तीसकों मृतक हुआ कहते हे यह आश्चर्यहे॥ जो प्रत्यच्छ पंचभूतोंका शरीरहे तिसविषे आत्मभावना स्वान करतेहे ॥ बहुरी हर्ष कर सोककों प्राप्त होताहे इसीतें मूर्खहे॥ हे रामजी ! न कोउ पुरुषहे न कोउ स्त्रीहे॥अरु इनके निमित्त मूढ रुदन करतेहे॥जेसें मृत्तिकाके खीलोने हस्ति घोडा आदिक विचित्र रचना होतीहे तिसकी प्राप्ति अप्राप्तिविषे अग्यानी बालक तुष्टिवान अरु खेदवान होताहे ॥ तेसें अज्ञानी पंचभूतक रचना देखी करी प्राप्तिविषे राग दोष करताहे ॥ ज्ञानवानकों सब भूत भ्रांति मात्र भासताहे ॥ जेसें माटीके पुरुष आपसमें मीलही तब उनकों राग दोष कछु नही होताहे तेसें बुद्धि इंद्रियां मन आत्माका मिलापहे ॥तिसविषे तुजकों राग दोष कछु नही होता॥जेसें पाषाणकी पुतलीयां मीलतीयांहे उनकों स्नेह बंधन कछु नही होता॥ तेसें देह इंद्रियां प्राण आत्माका आपसमें स्नेह बुद्धितें रहितहे॥तातें तुं स्नेहतें रहित होउ ॥ सोक काहेकों करताहे ॥जेसें तृण अरु जलके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तरंगका संजोग होता हे ॥ तृण इधर उधर जाता हे जलकों कछु हर्ष सोक नही होताहे तेसें देह भूत आत्माका जोगहे ॥ इनकों मिलाप अरु विछुरेका दुःख सुख कछु नही होता ॥ आत्मा अरु अनात्मा देह इंद्रियां प्राण मन बुद्धि आदिक विलक्षण भावहे ॥ परस्पर इनके क्षय अरु उदयविषे हर्ष सोक कछु नही ॥ परंतु चित्तके उदे करके अनात्मा धर्म आत्माविषे प्रतिबिंबित भासताहे ॥ तातें तुम तत्वबोधका विचार करीके चित्तकों त्याग अपणे स्वरूपविषे स्थित होउ ॥ जेसें जल तरंगभावकों त्याग करी अपणे स्थिर स्वभावकों प्राप्त होताहे ॥ तेसें तुं अपणे अक्षोभ भावकों प्राप्त होवेगा ॥ तव भूतिक देहतें आपकों भिन्न जाणेगा ॥ जेसें वायु मंडलकों प्राप्त हुआ देहादिक जीव पृथ्वी मंडलकों देखताहे तेसें तुं आत्म पदकों स्थित हुआ देहादिक भूतोंकों देखेगा ॥ हे रामजी ! तुं देहादि भूतोंकों देखी त्याग करी अतीत अजन्मा पुरुष होइ रहो॥ तव तुम प्रकाश परमको पावेगा॥ जेसें सूर्यकांतमणि सूर्य के उदे हुए परम प्रकासकों प्राप्त होताहे ॥ तेसें जब बोध करीकें द्रष्टा दर्सन दृश्य भाव तेरा जाता रहेगा ॥ तव तुं अपणे भावकों ज्योंका त्यों जाणेगा ॥ जेसें मद्य करी क्षीबा हो जाता हे मद्यके उतरेते आपकों ज्योंका त्यों जाणताहे ॥ अरु मद्य भावकों सुमरण करताहे ॥ तेसें सुमरण करेगा ॥ आत्म तत्वका जो स्पंद फुर्ना हुआहे तिसका नाम चित्तहे ॥ सो अवस्तुरूप हे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग भाव उदे होताहे सो कछु वस्तु नही ॥ तेसें चित्तादिक कछु वस्तु नही शांतिरूपहे ॥ इस प्रकार जाणी करी महा बुद्धिवान वीतराग निष्पापरूपी जीवन्मुक्त हुए हे ॥ महा सांतपदकी प्राप्तिमें विचरतेहे ॥ जेसें रत्न मणिकी किंचन नाना प्रकारकी लहरीं होतीहे ॥ सो मनन कलनातें रहित चमत्कारहे ॥ तेसें मनुषोंविषे जो ज्ञानवान उत्तम पुरुषहे ॥ तिनका व्यवहार कलनातें रहित होताहे ॥ जेसें कूपविषे प्रतिबिंब पडताहे ॥ जेसें आकाशविषे धुलीउडती भासतीहे॥आकास मल भावकों प्राप्त नही होता तेसें ज्ञानवान पुरुष अपणे व्यवहारविषे कर्तृत्वके अभिमानकों नही प्राप्त होता ॥ जेसें मेघके आवणे जावणे करी समुद्रकों राग दोष नही होता ॥ तेसें आत्मा ज्ञेय पुरुष कों भोगोंके आणे जाणेविषे राग दोष नही होता ॥ हे रामजी ! जीस मनविषे जगतके किसी पदर्थाकी मनन वासना नही फुरती ॥ तिस चित्तविषे जो कछु फुरणाभी भासता हे ॥ सो विलास स्वरूप जाण ॥ उसकों वंधनका कारण कछु नही होता ॥ अरु जीस चित्तविषे अहंत्वं आदिक जगतकी भावना हे ॥ परंतु अंतरतें तीसकों सत्यता बुद्धिहे तीसकरी उ ह द्रश्य द्रष्टा अरु दर्शन संवंध तीनों कालों संयुक्त जगतकों वीस्तारेगा ॥ जो कछु द्रश्य हे सो अस्त रूप हे ॥ अरु जो सत्य हे सो एक अव्यक्त रूप हे ॥ तीसकों आश्रय करीकें अले प होइ ॥ तव हर्ष शोककी दिशा कहां हे ॥ जेता कछु दृश्य जगत भासता हे सो सब अस्तरूप हे ॥ जो सत्यहे सो सदा ज्योंकात्यों हे ॥ अस्तरूप दृश्यके निमित्त तूं क्यों वथा मोहकों प्राप्त होताहे ॥ असम्यक दर्सनकों त्यागकरी सम्यकदर्शी होउ ॥ हे सुलोचन रामजी जो सम्यकदर्शी हे ॥ सो मोहकों प्राप्त नही होता॥ दृश्यजो विषय अरु दर्शन कहीएं इंद्रियां ॥ तीन केविषे संबंध मीलणेविषे जो आत्म सुखहे अनुभवरूप सो परब्रह्म कहाताहे ॥ अरु अनुत्तम सुखसो तिस संवितविषे स्थितहे सो ज्ञानवानहे तिसकों मोक्ष प्राप्तिहे ॥ अरु जो दृश्य दर्सन विषे स्थित होताहे तिस अज्ञानीकों उह संवित संसार भ्रम दिखावतीहे ॥ अरु दृश्य दर्सनविषे जो अनुभव सत्ताहे सो सुख आत्मारूपहे॥ जो दृश्य साथ लगाहे सो बंधहे अरु जो दृश्यतें मुक्त होइ संवितविषे स्थितहे सो मुक्त कहाताहे ॥ हे रामजी ! दृश्य दर्सनके संबंधविषे मध्य जो संवितहे सो अनुभव गोचरहे ॥ तिस संवितकों आश्रय करीकें दृश्य दर्शनतें जो मुक्तहे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सो संसार समुद्रकों तरेगा ॥ यह सुषुप्तिरूप अवस्थाहे इसकों प्राप्त हुआ परम प्रकाशकों प्राप्त होताहे ॥ इसीकों मुक्त कहतेहे ॥ जो दृश्य दर्शनतें मुक्त बुद्धिहे सो मुक्त कहाताहे ॥ अरु जो दृश्य दर्शन साथ बांध्याहे सो बंधहे ॥ अन्य सर्वोंका अनुभव करने हारा आत्माहे सो न स्थूलहे न अणुहे न प्रत्यक्षहे न अप्रत्यक्षहे ॥ न चैतनहे न जडहे ॥ न सत्यहे न असत्य हे न अहं हे न त्वं हे॥न एक हे न अनेक हे ननिकट हे न दूर हे॥न अस्ति हे न नास्ति हे॥न प्राप्ति हे न अप्राप्ति हे॥न सर्व हे न असर्व हे न पदार्थ हे न अपदार्थ हे॥न पंचभौतिक हे न अपंचभौतिक हे॥ जेती कछु दृश्य जातिहे सो मन सहित षट इंद्रियां करी भावकों प्राप्त होताहे ॥ जो इनतें अतीतहे सो इनकाविषय नही ॥ सो वीषय केसें होवे॥निष्कि वनरूपहे॥ अरु यहभी सब उही रूपहे ॥ ज्योंका त्यों जाणेतें सब आत्मरूपहे ॥ जगत अनात्मारूप कछु नही ॥ सम्यक ज्ञान करी एसें भासताहे यह जो कठिन रूप पृथ्वी भासतीहे ॥ द्रवतारूप जल भासताहे॥ स्पंदरूप वायु उष्णतारूप अग्नि अवकासरूप आकास भासताहे सो सब आत्मरूपहे ॥ जो कछु वस्तु अवस्तुरूप जगत भासताहे सो आत्म सत्तातें इतर कछु नही ॥ आत्मातें इतर जगतकों मानणा उन्मत्त चेष्टाहे मूर्ख मानतेहे ॥ महात्मा पुरुषकों काल कलनारूप जगत सब आत्मरूपहे ॥ कल्पतें आदिले करी अंतपर्यंत सब आत्माका चमत्कारहे इतर कछु नही ॥ एसें जाणी करी तुम अपणे स्वरूपविषे स्थित होहु ॥ अरु संसार समुद्र तरी जावहु ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे मोक्षस्वरूपोपदेसो नाम सप्तषष्टितमः सर्गः ॥ ६७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! यह जो मैं तुजकों द्वैतके त्यागकि विचार दृष्टि कही हे ॥ इस विचार करीकें अपणा जो आत्मसुभाव हे सो प्राप्त हे ॥ जेसें बुद्धिवानकों उपासना अभ्यास करीके चिंतामणी प्राप्त होतीहे ॥ अरु इसके उपरांत ओरभी परम द्रष्टि सुण ॥ जीस द्रष्टि करीकें अचल आत्मरूपकों देखताहे जो मेंही आकास हों मेंही दिसा हों ॥ मेंही सूर्य हों अधउर्ध मेंही हों ॥ देवता दैत मेंही हो ॥ प्रकास तम अरु मेघ पर्वत मेंही हों ॥ पृथ्वी समुद्र पवन धूली अग्नि आदिक थावर जंगम जगत् मेंही हों ॥ हे रामजी सर्व जगत् आत्माही ह ॥ तो अहं अरु त्वतें भिन्न ओर अनेक अरु एक केसें होंवे ॥ एसा निश्चय जीसके अंतर होताहे तीसकों सब जगत् आत्मरूप भासता हे ॥ सो पुरुष हर्ष सोककों नही प्राप्त होता ॥ जो सब जगत् मनोमात्र हे तो अपणा अरु पराया काकहीए ॥ ज्ञानवानकों आत्मातें ईतर नही भासता ॥ तातें हर्ष विषादकों नही प्राप्त होता ॥ हे रामजी ! अहंकार भी तीन प्रकारके हे ॥ दो प्रकार सात्विक निर्मल हे तत्वज्ञान करी प्रवर्तता हे अरु मोक्षदायक परमार्थरूप हे अरु तीसरा संसारकों दिखावता हे ॥ एक अहं हे जो तुजकों कहा हे सर्व मेंही हों मुजतें अन्य कछु नही ॥ अरु दुसरा यह जो परम अणु जो सूक्ष्मतें अति सूक्ष्म हे ॥ साक्षीभूत अव्यक्तरूप हों ॥ यह दोनो मोक्षदायक हे ॥ अरु तीसरा यह जो आपकों नख सीस पर्यंत देहरूप जानना ॥ सो दुःखदायक संसारका कारण हे ॥ शांति सुखका कारण नही ॥ अथवा इन तीनोंका त्यागकरी स्थित होउ ॥ यह सर्व सिद्धांतका कारण हे ॥ जेसें तेरी इच्छा होवे तेसें कर आत्मा सर्वतें अतीत हे अरु सर्वतें पर हे ॥ तोभी अपणी सत्ताकरीकें जगत् पूर्ण करी रहा हे ॥ अरु सर्वका प्रकाशकरूप उही हे ॥ अपणे अनुभव करी सदा वस्तु उदेरूप हे अरु कीसी प्रमानका विषय नही ॥ अनुमान आदिक अरु सत्यवाद ईनतें पर रहित हे ॥ अरु सर्व काल सर्वकों अपणे प्रकासकरी प्रकासते हे ॥ अरु यह जो दृश्य जगत् हे सो सब आत्मा भगवान हे ॥ अरु दृश्य दर्शन सत असत सूक्ष्म स्थूल सबतें आत्मा रहित हे ॥ अरु उही सर्व रूप हे ॥ सर्वकी वाणी कहणेविषेभी उही आताहे ॥ अरु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कीसीके कहणे विषेभी नही आता ॥ जो नानात्व भासताहे सोभी तीसतें अन्य कछु नही ॥ आत्मा आदिक संज्ञाभी शास्त्रोनें उपदेशके निमित्त कल्पी हे ॥ सर्व शक्ति तिसविषे कल्पी हे ॥ सर्वत्र तीनों कालोंविषे स्थित हे ॥ अरु प्रकासरूप हे सूक्ष्मभाव करीभी उही हे स्थूलरूप भाव करीभी उही हे ॥ सो सर्व ठोर व्यापक हे अरु अपणें फुरणे करी जीवरूप हो भासताहे ॥ जब चित्त संवित फुर्नेरूप होतीहे तब जीव आदिकरूप हो भासताहे ॥ फुर्नेतें रहित द्वैत कलना मीटी जातीहे ॥ जेसें आकासविषे जब पवन फुर्ता हे तब उष्ण सीत हो भासता हे ॥ तेसें फुर्नेकरी जीवादिक भासताहे ॥ अरु आत्मा चैतन सर्वत्र व्यापकरूप हे अरुकबहु कीसी भावकों प्राप्त नही भया ॥ जेसें पदार्थ अपणे अपणे भावविषे स्थित हे तेसें परम स्वर आत्मा अपणे स्वभावविषे स्थित हे ॥ परंतु तीसका भासणा पुर्यष्टकाविषे होता हे ॥ जेसें वायुविना धुली उडती नही जेसें अंधकारविषे प्रकासविना पदार्थ भासता नही ॥ तेसें पुर्यष्टकाविना आत्मा भासता नही ॥ पुर्यष्टकाविषे प्रतिबिंब भासता हे ॥ जेसें सूर्यके उदे हुए सर्व जीवोका व्यवहार होता हे ॥ अरु सूर्यकें अस्त हुएतें लीन होजाता ह अरु सूर्य दोनोविषे अलेप हे ॥ तेसें आत्मा सर्वका प्रकासक अरु निर्लेप हे ॥ सरीरोंके व्यवहार होणेविषे अरु इष्टताविषे ज्योंका त्यों हे ॥ न उपजता हे न विनसता हे ॥ न वांछता हे न त्यागता हे ॥ न मुक्त हे न बंध हे ॥ सर्वदा सर्व प्रकार आत्मा ज्योंका त्यों एकरूप हे ॥ तीसके अज्ञानकरी जीव अनात्म भावकों प्राप्त होता हे ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प भासता हे अरु केवल दुःखोंका कारण होता हे ॥ आत्मा आदि अंततें रहित अज अविनासी हे ॥ अपणे आपतें इतर कछु नही हुआ ॥ इसतें वांछा त्याग देस काल वस्तुके प्रछेदतें रहित हे ॥ तातें बध नही जो बंध नही तो मुक्ति केसें होवे ॥ सर्व कलनातें रहित अेसा आत्मा सर्वका अपणा आप हे ॥ अविचार करकें मूढ रुदन करतें हे ॥ तातें में जो तुजकों उपदेस कीया हे तीसकों आदितें लेंकरी अंत पर्यंत भली प्रकार विचार देख इस जुक्तिकरीके सोकका त्याग कर ॥ मूर्खोवत् लोकोंविषे सोककों मत प्राप्त होहु ॥ हे सुमते बंध मोक्षकी कल्पनाका त्यागकर न बंधके त्यागकी इछा कर न मोक्षके प्राप्तिकी इछा कर ॥ जंत्रीकी पुतलीवत् अभिमानतें रहित चेष्टा कर ॥ इसका नाम आत्मा मौन हे ॥ हे रामजी मोक्षका नाम कोउ पदार्थ आकाशविषे स्थित नही ॥ न कोउ पातालविषे स्थित हे न भूमिलोकविषे स्थित हे ॥ चित्तका निर्मल होणा मोक्ष हे ॥ जो अनात्मा साथ आपकों मिलावणा तिसविषे आत्म अभिमान करना यह मेल हे ॥ इसका त्याग करना अरु शुद्ध आत्माविषे चित्तकों लगावणा ॥ इसका नाम मोक्ष हे ॥ जब चित्तसों गुणोंमें दृत्तिका त्याग होवे अरु सम्यक आत्म ज्ञान होवे ॥ तीसकों तत्वदर्शी मोक्ष कहते हें ॥ हे रामजी जबलग आत्म बोध नही होता तबलग यह दीन दुःखी होता हे ॥ जब आत्माका निर्मल बोध होता हे तब दुःखोंतें मुक्त हो ता हे ॥ तातें ओर उपायोंकों त्याग भक्ति करीकें मोक्षकी वांछा कर ॥ अरु चिरकाल करकें जब इस बोधकों साध्य चित्त विस्तृत पदकों प्राप्त हुआ ॥ तब दश मोक्षकी वांछा नही करता एक मोक्ष क्या हे हे रामजी जीवकों ओर उपाय मोक्षका कोंउ नही ॥ आत्म बोधकों पाइकरी सुखी होवेगा ॥ जब चित्त अचिंत्त होता हे तब सब जगत् भ्रम मीटी जाता हे ॥ अरु जगत् कछु दुसरी वस्तु नही ॥ अद्वैत आत्मतत्व हे ॥ जो उही हे तो बंध कीसकों कहीए अरु मोक्ष कीसकों कहीए ॥ बंध मोक्षकी कल्पना तुच्छ हे ॥ तीसका त्यागकरी चक्रवर्ती हो पृथ्वीकी पालना कर ॥ तुजकों कर्तृत्वकास्पर्शकछु न होवेगा ॥ इतिश्री योगवासिष्टे उपसम प्रकरणे आत्मविचारो नाम अष्टषष्टितमः सर्गः ॥ ६८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इसके संकल्पतें जगत् उपजा हे ॥ अज्ञान करीकें आपकों सरीर जानता हे ॥ अपणे संकल्पकों उपजाइके अपणां स्वरूप जानता हे जेसें कोउ सुंदर पुरुष होवे तीसकों देखेविना कुरूप जाणे ॥ तेसें आत्माके साक्षात्कारविना देहरूप आत्माकों जानता हे ॥ जो में देह हो ज्यों ज्यों आत्मका प्रमाद होता हे त्यों त्यों देहविषे अधिक अभिमान होता हे ॥ जेसें ज्यों ज्यों मद्यपान करताहे त्यों त्यों उन्मत्त होताहे ॥ हे रामजी यह जो नाना प्रकारका दृश्य जो भासताहे सो अज्ञान करी भासता हे ॥ जेसें सुर्यकी कीर्णी करीकें मरुस्थलविषे जल भासता हे तेसें असम्यक् ज्ञान करीकें आत्माविषे जगत् भासता हें एक कलनाकें फुर्नेकरी मन बुद्धि चित्त अहंकार इंद्रिया देह भासता हे ॥ सो एक फुरने की एती संज्ञा हे ॥ जेसें एक जलकी अनेक संज्ञा होती हे ॥ तेसें एक फुरनेकी अनेक संज्ञा हुई हे ॥ जोचित्त हे सो अहंकार हे जो अहंकार हे सोई मन हे ॥ जो मन हे सोई बुधि हे ॥ ईनविषे भेद कछु नही ॥ जेसें वर्फ अरु शुछता अरु सीतलताविषे भेद कछु नही ॥ तेसें मन बुधि आदिकविषे कछु भेद नही ॥ एकके नास हुए दोनो नास होजाता हे ॥ तातें मन विषे जो कछु कलना हे तीसका त्याग करी मोक्षकी ईछाकाभी त्याग करी बंधन वृत्तिकोंभी त्यागकर ॥ हे रामजी वैराग अरु विवेक अभ्यासकरीकें मनकों निर्मल करौ जब मन नि र्मल हुआ तब मनका मननभाव नष्ट होजावेगा ॥ जब यह फुर्नी फुर्ता हे जो में मुक्त होउं तबभी मन जागी आताहे ॥ अरु मनके जागेतें मननभी हो आताहे ॥ मनन हुआ तब अ पणे साथ शरीरभी भासी आताहे ॥ अरु अनेक दुःखभी भासी आताहे ॥ हे रामजीआत्मतत्व सबते अतीतहे ॥ अरु सर्वरूपभी उही ह॥ तब कोन बंध हे अरु कोन मोक्ष हे ॥ जब मन का मनन निवृत्त हुआ तब न कोउ बंध हे न कोउ मुक्त हे आत्मा सर्वक्रियातें अतीत हे अरु क्रियाभी ईस प्रकार होतीहे ॥ जेसें वायुके हिलणे करी वृछके पत्र फुल हलते हे तेसें प्रा णोके फुरणेकरीहाथ पांव आदिक इंद्रियांचेष्टा करति हे ॥ हे रामजी चित्तशक्ति हे सो सर्व व्यापी सुक्ष्महे अरु अचल हे ॥ न आपही चलती हे न ओर कीसीकी प्रेरी हुई चलतीहे सदा स्थितरूप हे ॥ जेसें मेरु पर्वत न आपही चलता हे न वायुकरी चलाया चलता हे ॥ तेसें चित्तशक्ति अचल हे हे रामजी जेते कछु पदार्थ भासते हे सो आत्मारुपी दर्पणविषे प्र तिबिंवित भासताहे ॥ जेसें सर्व पदार्थोंकों दीपक प्रकाशसताहे तेसें सब पदार्थोंकों आत्मा प्रकास करताहे ॥ अरु सब पदार्थोंविषे एक आत्मा अनुस्युत प्रकासताहे अहं त्वं आदिक क लनाते रहितहे ॥ जहां अहं त्वं आदिक कलना नही फुरति तहां सुख दुःखभी नही फुर्ता ॥ जेसें वृछो अरु पहाडोंतें अहं त्वं सब्द नही फुर्ता तेसें आत्माविषे नही फुर्ते॥तातें ज्ञान वानविषे कर्तृत्व भोक्तृत्व नही फुरते ॥ हे रामजी आत्मा निरहंकार अरु निराकारहे ॥ तीसविषे कर्तृत्व भोक्तृत्व केसें होवे ॥ कर्तृत्व भोक्तृत्व आत्माविषे अज्ञानकरी भासताहे ॥ जेसें मरुस्थलविषे जल भासताहे ॥ हे रामजी अज्ञानरुपी मदिरापान करीकें मनरुपी मृग मन हुआहे॥तीसकरी सत असतका विचार नही करी सकता ॥ जेसें मृगतृष्णांकी नदी असतही सत भासतीहे मृग तीसकों सत जाणी करी पान करनेकेनिमित्त दोडताहे तेसें यह जीव अरुप संसारकों रुप जाणीकरी दोडताहे जब आत्मसत्ताका सम्यक्बोध होताहे तब यह अविद्या नास होजातीहै॥ जेसें ब्राह्मणोंके मध्य चंडाली आन बेठे ॥ जब उन ब्राह्मणोंनें उसकों पिछानी जो यह चंडालीहे तब छुप जातीहे ॥तेसें जब अविद्याकों जानी जो यह अविद्याहे तब नष्ट होजातीहे ॥हे रामजी जब अविद्याकों ज्योंकीत्यों जानी तब अविद्यारूप जगत् मनकों खेंची नही सकती ॥ जेसें मृगतृष्णाकी नदीकों जब जानी तब तृषा होवे तोभी मनकों जल खेंची नहीसकता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे रामजी जब परमार्थसत्ताका बोध हुआ तब मुलतें वासनानष्ट होजातीहे ॥ जेसें दीपके उदेतें अंधकार नष्ट होजाताहे तेसें आत्मज्ञान करी अविद्या वासनासहित नष्ट होजातीहे॥हे रामजी अविद्या अविचारतें सिद्धहे ॥ जब सतसास्त्रोंकी जुक्तिकरी विचार ईसकों प्राप्त होताहे ॥ तब अविद्या नास होजातीहे॥जेसें बरफका कणका धूपकरी गिल जाताहे ॥ अरु जलमय होजाताहे॥तेसें वीचारकरी अज्ञान नष्ट होजाताहे॥हे रामजी देहजडहे॥आत्मा सदा चैतनरूपहे ॥बहुरीदेह जडके निमित्त भोगोंकी वांछा कारनि यह बडी मूर्खताहे ॥ जो ज्ञानवान पुरुषहे सो ईस बंधनको तोडी डारतेहे ॥ हे रामजी आसारूपी फांसीकों रिदेतें काटो ॥ जब आसारूपी आवरन दूर भया ॥ तब पूर्नमासीके चंद्रमावत् अंतर सीतलहो जावेगा ॥ तेसें यह पुरुषभी तीन तापोंतें मुक्त सीतल होजाताहे ॥ जेसें पर्वत होकरी अग्री लागे तीसके उपरजलकी महद वर्षा होवे तब तमतातें मुक्त हुआ सांतिवान होताहे ॥ हे रामजी जेसें केसरीसिंह पीजरेको तोडी करी नीकसताहे तेसें ज्ञानवान पुरुष भोगवासनाके बंधनको तोडीडार ताहे ॥ हे रामजी आत्माके साक्षात्कार हुए परमानंदकों प्राप्त होताहे ॥ जेसें रंककों त्रिलोकीके राज मीलेकरी आनंदकी प्राप्ति होवै ॥ तेस ज्ञानवानकों आनंद प्राप्त होताहे ॥ परमनिर्मल लछमी करी सोभता हे ॥ जब इसके रुदेसों आसारूपी मेल जाताहे तब जेसें सरत्कालका आकास निर्मल सोभताहे तेसें सोभताहे ॥ हे रामजी ! ज्ञानवान पुरुष अपणे आपविषे नही समावताहे॥ जेसें महा कल्पका समुद्र नही समावता ॥ अरु जेसें मेघजलकों त्याग करी मौन हो जाताहे ॥ तेसें ज्ञानवान आसाकों त्याग करी आत्म मौन हो जाताहे ॥ जेसें अग्नि लकडीकों जलाइ करी धुंवातें रहित अपणे आपविषे स्थित हो जाताहे॥ तेसें चित्तकी वृत्तितें रहित हुआ आत्म पदविषे निर्वाण हो जाताहे॥ जेसें दीपक निर्वाण हो जाताहे ॥ तेसें चित्त निर्वाण हुआ परमानंदकों प्राप्त होताहे ॥ जेसें अम्रतकों पान करी पुरुष आनंदवान होताहे ॥ तेसें परमानंद करी पूर्न अपणे आपविषे प्रकासताहे ॥ जेसें वायुतें रहित दीपक स्थानविषे प्रकासताहे ॥ जेसें सुद्ध मणी अपणे प्रकास करी प्रकासतीहे तेसें ज्ञानवान अपणे आप करी प्रकासताहे ॥ में सर्वात्मा हों सर्वगत हों इश्वर हों सर्वाकार हों निराकार हों ॥ केवल चिदानंद आत्मा हों॥सदा अपणे आपविषे स्थित हों॥हे रामजी ! एसें ज्ञानी अपणे आपकों जाणताहे अरु पूर्व दीन वितीत होगयहे तिनकों हसताहे॥में तों अनंत आत्मा हों॥मायाके भम करी आपकों कर्त्ता भोक्ता मानता था ॥ हे रामजी ! एसें जाणी करी राग दोषतें रहित परम सांतिकों प्राप्त होताहे॥उसकें ताप सवनिवृत्त हो जाताहे अरु सदा आत्मांविषे प्रीती रहतीहे ॥ चित्त सर्व उरतें पूर्न हो जाताहे ॥ अरु सबकों पवित्र करने हारा होताहे ॥ कामरूपी चक्रतें मुक्त होताहे ॥ जन्मोंके बंधन काटी डारताहे ॥ राग दोष आदिक द्वंद्व अरु सर्व भयतें मुक्त होता हे ॥अविद्यारूपी संसार समुद्रकों तरी जाताहे ॥ उत्तम लछमीकों प्राप्त होताहे ॥ अर्थ यह जो परम पदकों प्राप्त होताहे॥बहुरी संसारके जन्म मरनकों नही प्राप्त होता॥अरु कर्मोंका अंत होजाताहे ॥ हे रामजी ! ज्ञानवानकी क्रियाकों देखीकरी और वांछा सब करते हे ॥ परंतु औरोंकी क्रियाकों देखीकरी ज्ञानवान कीसीकी वांछा नहीं करता अरु सबकों आनंदवान कर ताहे ॥ अरु आप कीसीकरी आनंदवान नही होता ॥ न कीसीकों देता हे न लेता हे ॥ न कीसीकी स्तुति न निदा करता हे ॥ न कीसी उत्तम पदार्थोंकों पाईकरी उदे होताहे न अनिष्टकों पाईकरी नष्ट होताहे ॥ हर्ष सोकतें रहित हे अरु सर्व फलका त्याग कीयाहे ॥ सर्व उपाधितें रहित हे ॥ कर्तृत्व भोतृत्व आपकों न्यारा मानता हे ॥ एसा जो पुरुषहे सो जीवनमुक्त हे ॥ हे रामजी ! जब तुं सर्व इच्छा त्यगकरी मौन करेहे तब निर्विशेत भावकों प्राप्त होवे ॥ जेसें मेंघ जलका त्यागकरी मौनभावकों प्राप्त होताहे ॥ तेसें तुं मोक्षभावकों प्राप्त होवेगा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ हे रामजी जेसें कामी पुरुष स्त्रीकों कंठ लगायकरी आनंदवान होताहे॥ तीसकों एसा आनंद नही होता॥ जेसा आनंद निर्वासनिक पुरुषकों होताहे ॥ अरु फुल गुछेकरी एसी वसंतऋतु नही सोभती॥ जे सें उदार बुधि आत्म मौनवान सोभताहे॥ अरु हिमालय पर्वत विषे प्राप्तहुआभी एसा सीतल नही होता॥ जेसा निर्वासनिक पुरुषका मन सीतल होताहे॥ मोतियोंकी माला करी अरु केलेके वनकों प्राप्त हुआ एसे सुखकों नही पावता॥ अरु चंदनोंके पानकरने हारा एसा सीतल नही होता॥ जेसा सीतल निर्वासनिक मन होताहे॥ अरु चंद्रमाकों स्पर्शकरी एसा सीतल न ही होता॥ जेसा निर्वासनिक पुरुष सीतल होताहे॥ चंद्रमा बाहिरकी तप्तता मीटावताहे॥ परंतु अंतर तपत निवृत्त नही करता॥ अरु निरासता करीकें अंतरकी तप्तता मीटजातीहे ॥ परम सांतिकों प्राप्त होताहे ॥ जेसी सीतलता निर्वासनिक पुरुषके संगकरी होतीहे ॥ तेसी ओर कीसी उपायतें नही प्राप्त होती ॥ हे रामजी एसा सुख स्वर्गविषे नही प्राप्त होता अरु सुंदर स्त्रीयांके स्पर्शकरीभी एसा सुख नही प्राप्त होता ॥ जेसा सुख निर्वासनिक कों प्राप्त होताहे ॥ निर्वासनिक पुरुष तीस सुखकों प्राप्त होताहे जीस सुखविषे त्रिलोकीके सुख तृणवत् भासते हे ॥ हे रामजी! आसारूपी एक कर्जुएका वृच्छ हे ॥ तीसके काटणेकों उपसमरूपी कुहाडा हे ॥ जो पुरुष निर्वासनिक हुआ हे ॥ तीसकों सब पृथ्वी गौपदके समान तुच्छ भासतीहे ॥ अरु मेरु पर्वत एक टुटे वृछ समान भासताहे ॥ अरु दिशा डब्बीके समान भासतीयां हे ॥ काहेतें जो उत्तम पदकों प्राप्त हुआहे ॥ त्रिलोकीकी विभूती तृणकी न्याईं तुच्छ देखताहे ॥ जो पुरुष निर्वासनिक हुआहे सो जगतकों देखीकरी हसताहे ॥ अरु कदाचित जगतके पदार्थोंकी कलपनानही फुर्ति ॥ तृणवत जाणीकरि जगतकों त्याग दीयाहे ॥ अरु सदा आत्मतत्वविषे स्थितहे ॥ तीसकों उपमा कोसकी दीजें? तीस पुरुषकी उदे अस्त अहं त्वं आदिक कलना नष्ट होगइहे ॥ केवल आत्मस्वभावकों प्राप्त हुआ हे ॥ तीस ईश्वर आत्माकों तोली कोन सके? जब दुसरा उसके समान होवे तब तोले ॥ हे रामजी उह पुरुष सब संकटोंके अंतकों प्राप्त भयाहे ॥ हे रामजी यह जगत मिथ्या भमरूप हे ॥ जेसें आकाशविषे दुसरा चंद्रमा भम करी भासताहे ॥ जेसें भम करी मरुस्थलविषे नदी भासतीहे ॥ जेसें मद्यपान करी नग भमता भासताहे तेसें यह मिथ्या जगत भम करीकें भासताहे ॥इसकी आसा मत कर तुं बुद्धिवान पंडितहे ॥ मूर्खोंकी न्यांइ मोहकों प्राप्त क्यों होताहे ॥ यह में यह मेरा अज्ञान करीकें भासताहे ॥ इस कलनाकों चित्ततें दूर कर यह वास्तव कछु नही ॥ सब जगत आत्मारूपहे नानात्व कछुहे नही जो सम्यक दर्शी पुरुषहे सो जगत एकरूप जाणी करी धैर्यवान रहताहे ॥ खेदकों कदाचित् प्राप्त नही होता ॥ हे रामजी! जो पुरुष निर्वासनिक हुआहे अरु आत्मा विचार करी आत्मपदकों प्राप्त हुआहे तिसकों देखी करी मोहणेवारी मायाभी भागी जातीहे निकट नही आती॥ जेसें सिंहके निकट मृग नही आता॥ तेसें ज्ञानवान के निकट माया नही आवती सुंदर स्त्रीयां अरु मणी कंचन आदिक धन अरु पथर काष्ठ तिसकों तुल्य भासताहे ॥ भोगों करी उसकों सुख नही होता अरु आपदा करी खेद नही होता ॥ सदा ज्यौंका त्यौं रहताहे ॥ जेसें पर्वत वायु करी चलायमान नही होता ॥ तेसें उह पुरुष सुख दुःख करी चलायमान नही होता ॥ सुंदर बाल स्त्री उसके चित्तकों खेंची नही सकती ॥ अरु काम देवके बाण चलाये उस उपर टुक टुक हो जाताहे ॥ राग दोष उसकों खेंची नही सकता ॥ सदा आपकों निराकार अद्वैत निष्क्रिय निर्गुण जाणताहे ॥ अरु सुंदर बगीचे ताल वल्ली शय्या इंद्रियोंके विषय भोग अरु दुःख देणेहारे उसकों तुल्यहे ॥ राग दोषकों नही प्राप्त करते ॥ जेसें पर्वतविषे ऋतु अनुसार करी मीठे कटु फुल होताहे ॥ सो उसकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किसीविषे राग दोष नही होता ॥ अकस्मात् जो भोग आय प्राप्त होताहै तिसकों भोगताहे ॥ परंतु हर्ष सोकवान नही होता ॥ हे रामजी ! यथार्थ दर्शी इष्ट अनिष्टविष चला यमान नही होता ॥ जेसें वसंत ऋतुके आवणे जाणेविषे पर्वत सुख दुःखकों नही प्राप्त होता ॥ कर्म इंद्रियां करी कर्म करताहे ॥ परंतु तिसविषे आशक्त नही होताहे ॥ बाह्य दृष्टिसों आशक्त भासताहे परंतु अंतर आशक्त नही होता ॥ अरु जो बाह्य आशक्त दृष्ट नही आता ॥ परंतु अंतर देहविषे चित्त आशक्तहे सो मग्न हो डुबताहे ॥ जेसें शुद्ध मणी चिकडविषे दृष्ट आतीहे तोभी तिसकों कलंक कछु नही ॥ अरु जो वोचर्ते खोटीहे बाह्य उज्वलभी भासतीहे तोभी सकलंकहे ॥ तेसें जो चित्त करी आशक्तहे सो आशक्तहे अरु जो चित्त भाव करी आशक्त नही सो आशक्त नही ॥ हे रामजी ! आत्मसत्ता सदा प्रकाशरूपहे ॥ अरु नित्य शुद्ध परम आनंद स्वरूपहे ॥ जीस पुरुषकों अपणे शुद्ध स्वरूपका ज्ञानहे तिसकों विस्मरण नही होता ॥ हे रामजी ! शरीरसों अहंभाव जिसका उठी गयाहे इंद्रियों करी कर्म करताहे तो करताभी नही करता ॥ अरु जो देहविषे अहंभावहे सो नही करताभी करताहे ॥ जेसें किसीकों बांधव चिरकालतें मिल्या बहुरी विस्मरण नही होता तेसें अपणा स्वरूप जीननें जाण्याहे तिसकों विस्मरण नही होता ॥ हे रामजी ! जिनकों शुद्ध स्वरूपका सम्यक ज्ञान होताहे ॥ तिसकों भांतिरूप जगत नहीं भासता ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प भासताहे जब भ्रम निवृत्त हुआ तब ज्यौंकी त्यौं जेवरी भासती हे ॥ सर्प नही भासता ॥ जेसें मरूस्थलविषे जलबुद्धि निवृत्त भइ बहुरी जलबुद्धि नही होती ॥ तेसें आत्माके जाणेंतें देहभाव नही होता ॥ जेसें पाहाडतें नदी उतरती हे सो बहुरी पहाड पर नही चढती ॥ जेसें स्वर्नका खोट अग्निकरी जल्या हुआ बहुरी खोटा नही होता ॥ चीकडविषे डारीए तोभी खोटा नही होता ॥ तेसें जब ह्रदेकी चिदग्रंथि टुटी तब गुर्णोके व्यवहारविषेभी गांठ नही पडती ॥ अर्थ यह जो बंध मान नही होता ॥ जेसें वृक्षतें टुटा फल बहुरी नही लागता ॥ तेसें जीसका देहाभिमान टुटा हे सो बहुरी नही होता हे ॥ अरु स्वरूपविषेही अभिमान होता हे ॥ जेसें लोहके हथोडेसाथ परका चुर्न कीया ॥ तब बहुरी नही फुरता जीस पुरुषनें अविद्याकों जाणी हे सो बहुरी उसकी संगती नही करता॥ जेसें जीस ब्राह्मणने चंडालोकी सभा जाणी तब बहुरी उनकी संगती नही करता ॥ तेसें जब आत्मविचारकरी मनकों चूर्न कीया तब बहुरी नही फुरता ॥ जेसें जीस पुरुष अविद्यारूप जगत्कों जाणा हे सो बहुरी जगत्के पदार्थोंविषे आसक्त नही होता ॥ हे रामजी विष जो मधुर जलसाथ मीला होवे ॥ सो जब लगजाण्या नही तबलग तीसकों पान करता हे ॥ अरु जब उसकों जांन्या तब बहुरी नही पान करता ॥ तेसें जबलग इस संसारकों ज्यौंकात्यौं नही जाण्या तबलग इसके पदार्थोंकी इच्छा करता हे ॥ जब जाण्या जो मायामात्र हे तब इसकी इच्छा नही करता ॥ हे रामजी सुंदर स्त्रीयां जो नानाप्रकारके वस्त्रों भुषण सहित दृष्ट आतीयां हे ॥ इनकों जाणता हे जो यह असत् मांस रूधिर आदिककी पुतलीयां वणी हे ओर कछु नही ॥ एसें जाणीकरी जो तीसकी इच्छा त्यागता हे सो निवृत्त होजाता हे ॥ जेसें मूर्तिउपर रंग नील पीत साम लीखे होते हे ॥ तेसें उसके वस्त्र अरु केस हे ॥ हे रामजी जीस पुरुषकों आत्माका साक्षातकार होता हे ॥ तीसकों अवस्तुविषें वस्तु बुद्धि नही होती ॥ अवस्तुविषे वस्तु बुद्धि तब होती हे जब वस्तुका विस्मरण होता हे ॥ सो तो ज्ञान वानकों सदा स्वरूपका सुमरण हे ॥ तीसकों अवस्तुविषे वस्तु बुद्धि केसें होवे ॥ जीसकों आत्मबुद्धि हुइ हे उसकों विस्मरण नही होता ॥ जेसें कीस पुरुषनें गुड कीसी पास रख्या होवे अरु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उह खाय जावे ॥ तो उसकों दंड आदिक कर्म करी सकेगा ॥ परंतु उसका रस दूर करनेकों समर्थ नही ॥ तेसें जीसकों आत्माका अनुभव हुआ हे तीसकों दूर कर्नेकों कोउ समर्थ नही ॥ हे रामजी जेसें परव्यसनी नारी होती हे कीसी पुरुष साथ उसका चित्त लगता हे तव यहका कार्यभी करती हे ॥ परंतु चित्त तीसका सदा उसविषे रहता हे ॥ तेसें ज्ञानवान क्रिया करता हे ॥ परंतु तीसका चित्त सदा आत्मपदविषे रहता हे ॥ जेसें परव्यसनी नारीकों अपना भर्ता दंडभी करता हे ॥ तोभी सपर्शका सुख उसके रूदेते दूर नही करी सकता ॥ तेसें जीसकों आत्म अनुभव हुआ हे ॥ तीसके दूर करनेकों कोइ समर्थ नही ॥ देवता दैत दूर नही करी सकते ॥ तो ओरकी क्या वार्ता हे ॥ जो बडे सुख अथवा दुःखका अनुभव प्र वाह आनी पडे तोभी तीसकों खंडन नही करी सकता ॥ कर्ता हुआभी अकर्ता हुआ हे ॥ जेसें परव्यसनी नारी परपुरुषके संजोग करी दुःख पावती हे ॥ परंतु इसकों स्पर्शके सुखका अनुभव हुआ हे ॥ तीसकें संकल्पकरी अनुभव अखंड करति हे तीसकरी उसकों दुःख नही भासता ॥ तेसें जीसकों आत्मसुख प्राप्तभया हे ॥ तीसकों दुःख सुख अवर कछु नही भास ता ॥ हे रामजी सम्यक ज्ञानकरी जीसकी अविद्या नष्ट भइ हे सो दुःखोंकों नही देखता जो उसके अंग काटे तोभी दुःख नही होता ॥ सरीरके नष्ट हुए नष्ट नही होता सुख दुःख उसके नष्ट होगए हे ॥ सदा आत्मपदविषे निश्चय रहता हे ॥ सकंटवानभी दृष्ट आता हे परंतु तिसकों संकट कोउ नही ॥ वनविषे हे अथवा गृहविषे रहे ॥ व्यवहार करे अथवा समाधि करे ॥ उह सदा ज्योंकात्यों रहता हे ॥ उसको खेद कष्ट कीसी प्रकार नही होता ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे नीरास्पद मौन विचारोनामएकोनषष्टितमःसर्गः ॥ ६९ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी राजा जनक राज व्यवहार करतारहा परंतु आत्मापदविषे स्थित था ॥ तीसकरी उसकों कलंक न भया ॥ सदा विगतज्वरही रहा ॥ अरु तेरा पितामह जो राजा दिलीप था सोभी सर्व आरंभोंकों करता रहा ॥ परंतु अंतर राग दोषकों न प्राप्तभया ॥ जीवन्मुक्त होके चिर पर्यंत पृथ्वीका राज राजा करतभया ॥ अरु राजा अज नाना प्रकारके जुद्ध राज व्यवहारको पालना करत भया ॥ अरु सदा जीवनमुक्त सुभावविषे स्थितभया राजा मानधाता नाना प्रकारकी जुध चेष्टा करता रहा ॥ परंतु सदा परम पदविषे निश्चय रहा ॥ कदाचित् मोहकों प्राप्त न भया ॥ अरु राजा बल पातालविषे स्थित हुआ ॥ महा त्यागी राजा व्यवहारकों करताभी द्रष्ट आया ॥ परंतु स्वरूपके ज्ञान करी सदा शांत रूप जीवनमुक्त होकरी विचरता भया ॥ अरु नभचर दैत्योंका राजा सदा नाना जुध आदिक क्रियाविषे रहा ॥ देवतासाथ सदा विरोध हे परंतु रीदेविषे कछु ताप न भया ॥ अरु इंद्र के जुधविषे वृत्रासुर दैत्य मार्या ॥ परंतु सदा सीतल कदाचित् क्षोभकों प्राप्त न भया ॥ अरु दैत्योंका राजा प्रल्हाद पातालविषे राज करतारहा ॥ परंतु रीदेविषे कछु क्षोभ न भया ॥ हे रामजी शंबर नामक दैत अपणी सृष्टिके रचणेकों उदे भया ॥ सो तीस रचणेविषे बंधमान न भया सदा सांबरी माया परायण भया ॥ अरु माया साथ एक मायावीरूप होकरी स्थित हु आ ॥ हे रामजी यह संसार जो सांबरीमायारूप हे ॥ तीसकों सांबरी त्याग करी अपणे स्वरूपविषे स्थित रहो ॥ अरु विष्णुभगवान सदा दैत्योंकों मारता हे जुध करता रहता हे ॥ अरु रिदेविषे अलेप बुधि हे ॥ तीसकरी सदा सुषी जीवनमुक्त हे ॥ अरु मुसल नाम दैत विष्णुसाथ जुधकरी सरीरकों छांडत भया ॥ परंतु अंतर देहसाथ संबंध कछु न था तीसकरी जीवन मुक्त सुखी रहा पिंडकों न प्राप्त भया ॥ हे रामजी सर्व देवताका मुख अग्नि हे सो यज्ञ लछमीकों चिरकाल पर्यंत भोगताहै ॥ परंतु ज्ञानवान हे ईसकरी क्षोभवान नही हाता सदा सी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तल रहताहै ॥ अरु देवता सदा चंद्रमांकी कीर्णातें अमृतपान करता हे ॥ परंतु चंद्रमांकों कछु क्षोभ नही होता ॥ अरु देवताका गुरु बृहसपति स्त्री उपर चंद्रमा साथ जुध करता भया अरु देवताके निमित्त नाना प्रकारके कर्म करता है ॥ अरु राग दोषकों नही प्राप्त होता तातें जीवनमुक्त है ॥ हे रामजी दैत्योंका गुरु शुक्रजी सो दैतोंके निमित्त सदा जतन करता रहताहै ॥ अरु लोभीकी न्याई अर्थकों चित्तवताहै परंतु जीवनमुक्त हे ॥ जो अंतर सदा सीतल रहता हे ॥ कदाचित् खेदकों प्राप्त नही होता ॥ अरु पवन प्राणीयोंके अंगोंकों चिरकाल फेरताहे चेष्टा करता हे अरु खेदकों प्राप्त नही होता तातें जीवनमुक्तहे ॥ अरु ब्रह्मा सदा लोकोंकों उत्पन्न करताहे अरु प्रलय पर्यंत ईसकी क्रिया विषे रहताहै परंतु स्वरूपका साक्षात्कारहे तातें जीवनमुक्त हे ॥ अरु विष्णु भगवान युधादिक द्वंद्वोंविषे रहताहे ॥ जरा मृत्यु आदिक भावकों प्राप्त होताहे परंतु सदा मुक्तस्वरूप हे ॥ अरु सदाशिव त्रिनेत्र हे अर्धांगधारी रहा है ॥ परंतु रीदेविषे संशक्त नही तातें जीवनमुक्त हे ॥ अरु गौरी मोतियोंको माला कंठविषे पावतीहे ॥ अरु त्रिनेत्रकों सदा मालावत् कंठ साथ रखतीहे ॥ परंतु अंतरतें सीतल रहती हे तातें जीवनमुक्त हे ॥ अरु स्वामि कार्तिक दैत साथ जुध करता रहा परंतु ज्ञानरूपी रतनोंका समुद्र था ॥ अंतरतें सीतल रहा ॥ अरु सदाशिवका शृंगीगण अपणा रक्त मांस माताकों देत भया ॥ परंतु धैर्यविषे रहा खेदकों न प्राप्त भया ॥ नाना प्रकारकी क्रिया करता भया परंतु जीवनमुक्त हे तातें सदा सुषीहे ॥ अरु नारद मुनी सदा मुक्त स्वभावहे ॥ सदा जगत् की क्रिया जालविषे रहताहे ॥ परंतु क्षोभकों नही प्राप्त भया तातें जीवनमुक्त हे अरु जीवनमुक्त मनमौन जो विस्वामित्र हे सो वेदोक्त कर्म कर्ताहे अरु फीरता रहताहे तातें जीवनमुक्त हे अरु सूर्य भगवान दिनकों प्रकाश करता हे अरु फीरता रहताहे ॥ परंतु जीवनमुक्त हे ॥ सदा सुखी रहताहे ॥ अरु जम सदा जीवोंको दंड करता रहताहे ॥ अरु क्षोभविषे रहताहे परंतु जीवनमुक्त हे ॥ इंद्र कुबेरतें आदि लेकरी त्रिलोकीविषे जीवनमुक्त हे व्यवहारविषे सीतल हे ॥ केई मूढ सिलावत् होरहेहे ॥ केई परमबोधवान वनविषे जाय स्थित भयेहे ॥ जेसें भृगु, भारद्वाज, विश्वामित्र जाय स्थित भयेहे ॥ अरु केइ चिरकाल पर्यंत राज पालना करते रहतेहे जेसें जनक मानधाता आदिक करतेहे ॥ केई आकासविषे वडी कांति धारीकरी बृहस्पति चंद्रमा, सुक्र, सप्तर्षी आदिक जाय स्थित भयेहे ॥ केईस्वर्गविषे अग्नि वायु कुबेर जम नारदादिक जाय स्थित भयेहे ॥ जीवनमुक्त केइ पातालविषे प्रल्हादादिक जाय स्थित भयहे ॥ केइ देवतारूप धारीकरी आकासविषे स्थित हे ॥ केई मनुषरूप धारीकरी मनुषलोकविषे स्थित हे ॥ केई तिर्यक जोनीविषे स्थित हे ॥ उनकों सर्वथा सर्व प्रकार सर्वविषे सर्वात्मारूप भासताहे ईतर कछु नही ॥ नाना प्रकारका व्यवहार हे सोभी अद्वैतकरी कीया हे ॥ हे रामजी दिव्यविष्णु अरु धाता अरु सर्व इश्वर अरु सिव आदिक सब आत्माके नामहे॥ अरु वस्तुरूपविषे जो अवस्तु हे ॥ अरु अवस्तुविषे जो वस्तु हे ॥ सो अवस्तुसों वस्तु तव नीकसती हे जब जुक्ति होतीहे ॥ अरु वस्तुसो अवस्तुभी जुक्तिकरी दूर होतीहे ॥ जेसें अवस्तु रूपरेतहे तीससों स्वर्न जुक्ति करी नीकसताहे ॥ अरु वस्तुरूपी सोनेसों मेल जुक्तिकरी दूर होताहे ॥ तेसें अवस्तुरूप देहादिकोंविषे वस्तुरूप आत्मा सास्त्रोंकी जुक्तिकरी पाईताहे ॥ अरु वस्तुरूप जो आत्मासों दृश्यरूप अवस्तुभी शास्त्रोंकी जुक्तिकरी दूर होतीहे ॥ हे रामजी जो पापतें भय करता हे ॥ सो जब धर्मविषे प्रवर्तता हे तब निर्भय होताहे ॥ तेसें दुखोंकें भयकरीकें जीव आत्मपदकी ओर प्रवर्तताहे ॥ तब भावनाके वसतें असतसों सतकों पावता हे ॥ ध्यान अरु जोगभी शून्य हे परंतु जतनके बलकरी तीससों सत पावताहे ॥ अरु जो असत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे सो उदे होकरी सत भासतीहे ॥ जेसें बाजीगरकी बाजीसों सशके सींग भासी आताहे ॥ तेसें आत्माविषे असद्रूप जो जगत् सो अज्ञानकरी दृढ हो भासताहे ॥ परंतु कल्पके अंतविषे यहभी नष्ट होजाताहे ॥ हे रामजी यह जो सूर्य चंद्रमा इंद्रादिक हे ॥ तीनके नाम भिन्न रहेगे ॥ अरु बडे सुमेरु आदिक पर्वत अरु समुद्र आदिक सब नाश होजावेंगे ॥ जेते कछु भाव पदार्थ तुजकों भासताहे उत्तम मध्यम कनिष्ट सो सब नाश होजावेगे सब मायामात्र हे कोउ नही रहेगा ॥ एसें विचार करीके इनकें भाव अभावविषे हर्ष सोक मत कर ॥ अरु समता भावकों प्राप्त होड्ड ॥ हे रामजी जो असतहे सो सत्यकी न्यांइ भासताहे अरु जो सत हे सो असतकी न्यांइ भासता हे तातें यथार्थ विचार करी सतरूप आत्मपदविषे स्थित होड्ड ॥ अरु असतरूप जगत्की आस्थाकों त्याग समताभावकों ग्रहण कर॥ इस लोकविषे जो अविवेक मार्गविषे विचरता हे सो मुक्त नही होता ॥ इस प्रकार कोटि जीव संसार समुद्रविषे डुबतेहे ॥ अरु जो विवेकविषे प्रवर्ततताहे सो मुक्त होताहे ॥ हे रामजी जीसका मन क्षय डुआ हे तीसकों मुक्तरूप जाण ॥ अरु जीसका मन क्षय नही भया सो बंधनविषे हे ॥ तातें जोसकों सर्व डुःखोंतें मुक्तिकी इच्छा होवे सो आत्मविचार करे ॥ तीसकरी सर्व डुःख नास होजावेगें ॥ हे रामजी डुःखोंका मुल चित्त हे ॥ जबलग चित्त हे तबलग डुःख हे ॥ जब चित्त नष्ट हो जाता हे तब डुःख सब मिटी जाते हे ॥ हे रामजी जब आत्मज्ञान होता हे तब चित्तका अभाव होजाताहे ॥ अरु डुःख सब मीटी जाताहे ॥ अरु राग इच्छा सब भय मीटी जाताहे ॥ केवल सांतरूप होताहे जनक आदिक जो जीवनमुक्त डुए हे सो निराग निसंदेह होकरी महा बोधवान व्यवहारभी करतेरहे ॥ परंतु सदा सीतल चित्त रहेहे ॥ तातें तूंभी विवेक करी चित्तकों लीन कर ॥ हलोहर बंटा पथर अरु स्वर्न सम जीवनमुक्त होकरी विचर ॥ हे रामजी मुक्तिभी दो प्रकारकी हे ॥ एक जीवनमुक्ति हे ॥ एक विदेहमुक्ति हे ॥ जो पुरुष सर्व पदार्थोंविषे असंशक्त हे अरु मन शांत भावकों प्राप्त डुआ हे सो मुक्त कहाताहे ॥ अरु जीस पुरुषका सर्व पदार्थोंका ज्ञानकरि स्नेह नष्ट भयाहे ॥ अरु व्यवहार कर तादृष्ट आताहे तोभी सीतल चित्त हे सो जीवनमुक्त कहाताहे ॥ जो पुरुष सर्व भाव अभाव पदार्थोंकों त्याग करी केवल अद्वैत तत्वकों प्राप्त डुआ हे ॥ अरु सरीर आदिक्रिया कोउ दृष्ट नही आती सो विदेहमुक्त कहाताहे ॥ अरु जो तीसराहे जीसका स्नेह पदार्थोंतें दूर डुआ नही सो बंध कहाताहे ॥ मुक्ति अर्थभी जतन करताहे ॥ जब जुक्तिपूर्वक जतन करता हे ॥ तब डुसतरभी सुगम होजाताहे अरु जो जुक्तितें रहित जतन करताहे तीसको गौपदभी समुद्र होजाताहे ॥ हे रामजी जीनडुंनें आत्मकरी आत्माविचार कीयाहे तीसकों विस्तृत जगत् समुद्र गौपद होजाताहे ॥ अरु अज्ञानीकों गौपदभी डुस्तर होगयाहे ॥ कोउ इष्ट अनिष्ट अलपभी आन प्राप्तिहोताहे ॥ तीसविषे डुबी जाताहे नीकसी नही सकता तीसकों गौपदभी समुद्र हे ॥ अरु ज्ञानीकों अत्यंत बिभुति ऐश्वर्य आन प्राप्त होवे अथवा विपर्यय तीसका अभाव होजावे ॥ तोभी तीसविषे राग दोष करी नहीं डुबता ॥ हे रामजी जीसकों कछु प्राप्ति होवे सो अपणे प्रयत्नके बलकरी होताहे ॥ जो कोउ प्रधान डुआ हे सो प्रयत्नरूपी वच्छके फलकरी डुवाहे ॥ आत्मपदकी प्राप्तिभी प्रयत्नरूपी वच्छका फलहे ॥ तातें ओर उपाय त्यागकरी आत्मपदकी प्राप्तिका प्रयत्नकर ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपसम प्रकरणे मुक्तामुक्तविचारो नाम सप्ततितमः सर्गः ॥ ७० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जेती कछु जगत जाल हे सो सब आत्मा ब्रह्मका आभासरूप हे ॥ अज्ञानकरी स्थिरताकों प्राप्त डुवा हे ॥ विवेककरी सांति होजाति हे ॥ ब्रह्मरूपी समुद्रवि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

षे जगतरूपी आवर्त्त फुरते हे ॥ तीनकी संख्या करणेकों कोउ समर्थ नही ॥ आत्मरूपी सूर्यके जगत रूपी त्रिसरेणु हे ॥ हे रामजी असम्यक दर्सन जगतकी स्थितिका कारण हे अरु सं
म्यक दर्सन करी सांत होजाताहे ॥ जेसें मरूस्थलविषे असम्यक दर्सन करी जल भासताहे सम्यकदृष्टिकरी अभाव होजाताहे ॥ हे रामजी संसाररूपी समुद्र अपार घोररूपहे ॥ सो सास्त्र
जुक्ति अरु आत्मअभ्यासबिना तरणा कठिनहे ॥ मोहरूपी जलकरी पुर्नहे अरु मरणरूपी आवर्त्तहे अरु पुण्यरूपी जगहे ॥ अरु वडवाग्नी इसके अंगोंविषे नरक समानहे अरु तृष्णारूपी
घुमरघेर हे ॥ अरुइंद्रियां मनरूपी तंदुए मच्छ हे क्रोधरूपी सर्प हे तिसविषे जीवरूपी नदीयां हे सो प्रवेस कर्तियां हे ॥ जन्म मरणरूपी वृत्त चक्रहे ॥ तीसकों जो तरी जाता हे सो पुरुष
हे ॥ अरु स्त्रीयां जो सुंदर लगतीयां हे सो महा वलवंत हे नेत्र जीनके ॥ पाहाडके खेंचणेविषे समर्थ हे कमलकी न्यांई ॥ अरु दंतमोतीयोंकी न्यांइ हे होठ तरीयावत हे ॥ इत्यादिक जो
सुंदर अंग हे ॥ सो महा दुःखके देणेहारा हे वडवाग्नीकी न्यांई हे ॥ जो इनकों तरी जाता हे सोइ पुरुष हे ॥ हे रामजी जो जहाज अरु मलाह होते हे तोभी इनकों नही तरता
तिसको धिकार हे ॥ जहाज अरु मलाह कोन हे सो श्रवण कर ॥ मनुष्य सरीरविषे कछु विचार सहित बुद्धि हे सो जहाज हे ॥ अरु संतरूपी मलाह हे ॥ इनकों पाइकरी जो संसार
समुद्रकों नही तर्ते तीनकों धिकार हे ॥ एसें संसार समुद्रकों ग्रहणकरी जो तरी गयाहे तीसकों पुरुष कहतेहे ॥ हे रामजी जीस पुरुषनें आत्मविचारविषे बुद्धिकों लगाइ हें सो तरी जाता
हे अन्यथा तरी नही सकता ॥ जीसकों आत्म अभ्यास दृढ भया हे सो तर्णेकों समर्थ होता हे ॥ हे रामजी प्रथम आर्जव सो ज्ञानवान पुरुषोंसाथ विचार अरु बुद्धिकरी संसार समुद्र
कों देखो ॥ जब तेंनें इसकों ज्योंकात्यों जाण्या तव तुं विलास क्रीडा करणे जोग होवेगा ॥ हे रामजी तुं तो भगवान हे ॥ परंतु बोधके विचारकरी संसार समुद्रकों तरी जाउ ॥ तुं
तो जुवान हे ॥ तेरे पाछे ओर तेरे स्वभावकों विचार करी संसार समुद्रकों तरी जावेगे ॥ अरु जो इससुभ मार्गकों त्यागकरी विषय मार्गकों धारते हे सो संसार समुद्रविषे डुवे हे ॥ हे
रामजी यह जो विषय भोग हे सो विषरूप हे ॥ जो इनकों सेवेगा सो नष्ट होवेगा ॥ परंतु जीसकों ज्ञान प्राप्त हुआ हे तीसकों यह जेसें गरूड मंत्र पढनेवालेकों सर्प दुःख नही दे सक
ते तेसें दुःखदे नही सकते ॥ जीसका प्रणाम सुद्ध हुआ हे सो विभुतिवान हे ॥ वल वीर्य तेज यह तीनों तत्वके साक्षातकार करी चढी आवते हे ॥ जेसे वसंतऋतुके आएतें रस फूल
फल सव सुंदर हो आते हे हे रामजी जो ज्ञानकी धर्म लछमी प्राप्त भइ सो पूर्न अमृत तुल्य हे ॥ सीतल सुद्ध सम प्रकासरूप हे ॥ लछमीकों पाइकरी विदित वेद स्थित होरहते हे ॥ इ
तिश्री योगवासिष्ठे उपसम प्रकरणे संसार सागर योगोपदेसो नाम एकसप्ततितमः सर्गः ॥ ॥ ७१ ॥ रामोवाच ॥ हे मुनश्वर संक्षेपतें तत्व वेत्ताके लच्छन वहुरी कहो
॥ जीनकों तत्वका चमत्कार हुआ हे तीनकी उदार वाणी करी वृत्तिकहो ॥ एसे कवन हे जो तुमारे वचन सुनते तृप्त होवे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! जीवनमुक्तके लच्छन में
तुजकों वहुत प्रकार आगें कहेहे वहुरीभी सुण ॥ हे महावाहो संसारकों ज्ञानवान सुषुप्तकी न्यांई जाणताहे ॥ अरु सब इषणा तीसकी नष्ट होगइहे ॥ अरु सव जंगतकों आत्मारूप
देखताहे ॥ कैवल भावकों प्राप्त होताहे अरु संसार सुषुप्तिरूप होजाताहे ॥ आत्मानंदविषे घुर्म रहताहे, देताहे परंतु अपणे जानणे करी कीसीकों नही देता अरु लोकदृष्टिकरी प्रत्य
च्छ हाथोहाथ ग्रहण कर्ताहे ॥ परंतु अपणी दृष्टिकरी कछु नही लेता ॥ एसा जो आत्मदर्शी ज्ञानवान उदार आत्मा हे सो जंत्रीकी पुतलीवत् चेष्टा करताहे ॥ जेसे जंत्रीकी पुतली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभिमानतें रहित चेष्टा करतिहे ॥ तेसें ज्ञानवान अभिमानतें रहित चेष्टा करताहे ॥ देखताहे हसता हे लेता हे देता हे परंतु अंतरतें सदा सीतल बुद्धि रहताहे ॥ भविष्यका कछु विचार न हीकरता ॥ अरु भूतका चीतवन नही करता अरु वर्तमानविषे स्थिति नही कर्ता ॥ सर्वकार्योंविषे अकर्ताहे ॥ संसारकी उरतें सोइ रहा हे आत्माकी उरतें जागृत हे अंतरतें सर्वका त्याग कीयाहे बाह्य सर्व कार्यों करताहे अंतर कीसी पदार्थकी इच्छा नही ॥ अरु बाह्य जेसे प्रकृत आचार आन प्राप्त होताहे ॥ अभिमानतें रहित तेसें करताहे ॥ दोष कोसीविषे नही करता ॥ सुख दुःखविषे पवन की न्याइ होताहे ॥ भ्रमकों त्यागकरी सर्व कार्य कर्मोंकों करता हे उदासीकी न्याइ ॥ न कीसीकी वांछा हे न कीसीविषे खेदवान हे ॥ बाह्यतें सब कछु कर्ता द्रष्ट आवे अंतरते सदा असंग हे ॥ हे रामजी भोक्ताविषे भोक्ता हे ॥ अभोक्ताविषे अभोक्ताहे मूर्खोंविषे मूर्खवत स्थित हे ॥ बालकोंविषे बालकवत स्थित हे ॥ दृढ्विषे दृढ्वत धैर्यवानविषे धैर्यवान स्थित हे ॥ सुखविषे सुखी हे दुःखविषे धैर्यवान हे ॥ अरु सदा पुण्यकर्त्ता बुद्धिवान हे ॥ सदा प्रसन्न मधुर वाणी संयुक्त हे ॥ अरु अंतरतें सदा तृप्तहे ॥ दीनता तीसकी निवृत्त भइहे सर्वथा कोमल भाव हे ॥ चंद्रमाकी न्याइ सीतल हे पूर्न ॥ सुभ कर्म करणेविषे कछु अर्थ नही ॥ असुभविषे कछु पापनही ॥ ग्रहणविषे ग्रहण नही न त्यागविषे त्याग हे ॥ न बंध हे न मुक्त हे न आकास विषे कार्य हे न पातालविषे कार्य हे ॥ यथावस्तु यथाद्रष्ट आत्माकों देखताहे ॥ द्वैतभाव तीसकों कछु नही फुर्ता अरु बंध मुक्तके निमित्त कछु कर्तव्य नही ॥ सर्व संदेह सम्यकज्ञानकरी जली गए ॥ जेसें पेटीतें मुक्त हुआ पंछी आकासमें उडताहे ॥ तेसें संकातें रहित चित्त उनका आत्म आकासकों प्राप्त हुआहे ॥ हे रामजी जीसका मन संसार भ्रमतें मुक्त हुआहे अरु समरस आत्मभावविषे स्थित भयाहे तीसकों इष्ट अनिष्टविषे कछु राग दोष नही होता ॥ आकासकी न्यांइ सबविषे सम रहता हे ॥ जेसें पींगुडेविषे बालक अभिमानतें रहित अंगोंकों हिलाताहे तेसें ज्ञानीकी चेष्टा अभिमानतें रहित होतीहे ॥ जेसें मद्यपान करनेवाला उनमत्त होजाताहे ॥ तेसें आत्मानंदविषे ज्ञानी घुर्म होजाताहे ॥ द्वैतकी संभाल तीसकों कछु नही ॥ हेयोपादेय बुद्धितें रहित होताहे ॥ हे रामजी सर्वको सर्व प्रकार ग्रहण कर्ताहे अरु त्यागभी कर्ताहे ॥ परंतु अंतरतें ग्रहण त्याग कछु नही कर्ता ॥ जेसें बालकोंकों ग्रहण त्याग की बुद्धि नही होती तेसें ज्ञानीको नही होती ॥ उसकों सर्व कार्योंविषे राग दोषनही फुर्ता ॥ जगत्के पदार्थोंकों न सत जांणीकरी ग्रहण कर्ताहे न असत जाणीकरी त्याग करताहे ॥ सर्वविषे एक अनुस्यूत आत्मतत्व देखताहे ॥ न इष्टविषे सुखबुद्धि करता हे न अनिष्टविषे दोषबुद्धि करताहे ॥ हे रामजी जो सूर्य सीतल होजावे अरु चंद्रमा उष्ण होजावे अग्नि अधोकों धावे तोभी ज्ञानीकों कछु आश्चर्य नही भासता ॥ उह जाणताहे सब चिदात्मांकी शक्ति फुरतीहे ॥ न कीसी पर दया करता हे न अदया हे न लज्जा कर्ताहे न अलज्जा कर्ताहे ॥ न दीन होताहे न उदार होताहे ॥ न सुखी होताहे न दुःखी होताहे ॥ न हर्ष हे न उद्वेगहे सर्वविकारोंतें रहित सुद्ध अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जेसें सरतकालका आकास निर्मल होताहे तेसें निर्मल भावविषे स्थित हे ॥ जेसें आकासविषे अंकुर नही उदे होता तेसें उसको राग दोष नही उदे होता ॥ हे रामजी एसा पुरुष सुख दुःखकों केसे ग्रहण करे ॥ उसकों जगत् जाल एसें भासताहे जेसें जलविषे तरंग होताहे ॥ एसें जाणीकरी तुंभी अपणे स्वभावविषे स्थित होउ ॥ हे रामजी स्वप्नविषे एक निमेषकरी सुपन सृष्टि फुरी आतीहे ॥ अरु क्षणविषे नष्ट होजातीहे ॥ तेसें जागृतविषे सृष्टि उपजी आतीहे अरु लीन होजातीहे जेती कछु इच्छा अनिच्छा दुःख सुख सोक मोह आदिक विकार हे सो सब मनविषे फुरते हे ॥ जहां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मन होताहे तहांविकारभी होताहे ॥ जेसें जहां समुद्र होताहे तहां तरंगभी होताहे तेसें जहां मन होताहे तहां विकारभी होताहे ॥ जहां चित्तका अभाव हे तहां विकारोंकाभी अभाव हे जबलग चित्त फुरता हे तबलग जगत् भम होताहे ॥ जब विचाररूपी सूर्यके तेजकरी मनरूपी बरफका पुतला गलगया तब आनंद हुआ तब सुख दुःखकी दशा शांत होजातीहे ॥ जब सुख दुःखका अभाव हुवा तब ग्रहण त्याग मीट जाताहे ॥ इष्ट अनिष्ट वांछित नष्ट होजाते हे ॥ जब यह नष्ट होजातेहे तब सुभ असुभभी नही रहता ॥ जब सुभ न रहे तब रमणीय अरमणीयभी नष्ट हो जाताहे ॥ अरु भोगोंकी इच्छाभी नष्ट होजातीहे ॥ जब भोगोंकी इच्छा नष्ट होजातीहे तब मनभी निराशपदविषे लीन होजाताहे हे रामजी जब मूल सहित मन नष्ट भया ॥ तब मनविषे जो संसारके संकल्प सो कहां रहही ॥ जेसें तिलोंके जलैतें तेल नही रहता तेसें मनविषे संकल्प विकल्प नही रहते ॥ तब केवल सांत आत्मा सेष रहताहे ॥ जेसें मंदराचलके क्षोभ मीटेतें क्षीर समुद्र सांतिवान होताहे तेसें चित्त सांति होताहे ॥ हे रामजी तातें भावविषे अभावकी भावना दृढ करहु अरु स्वरूपका अभ्यास करहु ॥ जेसें सरतकालका आकास निर्मल होताहे तेसें कलनांकों त्यागकरी महात्मा पुरुषनिर्मल होजाताहे ॥ इतिश्री योग० उपसम प्रकरणे जीवनमुक्त वर्नन नाम द्विसप्ततितमः सर्गः ॥ ७२ ॥

वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जेसें जलविषे द्रवता करीकें चक्र आवृत्त होते हे सो असत्तही सत होकरी भासता हे ॥ तेसें चित्तके फुरने करी असत जगत् सत हो भासता हे ॥ जेसें नेत्रोंके दुखणे करी आकासविषे तरवरे मोरके पुच्छवत मुक्तमाला हो भासते हे सो असतही सत भासते हे तेसें चित्तके फुरणे करी जगत् भासता हे ॥ जेसें बदलोंके चलणेकरी चंद्रमा धावता दृष्ट आता हे ॥ तेसें चित्तके फुर्णे करी जगत् भासता हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् जीसकरी चित्त फुरता हे अरु जीसकरी अफुर होता हे सो प्रकार कहो ॥ जो तीसका उपाय करों ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जेसें बर्फ विषे सीतलता होती हे अरु तिलोंविषे तेल होता हे अरु फुलोविषे सुगंध होती हे ॥ अग्निविषे उष्णता होती हे तेसें चित्तविषे फुरना होता हे॥ चित्त अरु फुरना दोनों एक वस्तु अभेद हे दोनोंविषे जब एक नष्ट होवे तब दोनों नष्ट होजावे ॥ जेसें सीतल अरु स्वेतताके नष्ट हुए बर्फ नष्ट होजाताहे तेसें एकके नास हुए दोनों नास होइजाते हे ॥ सो चित्तके नासके दो क्रम हे ॥ जोग अरु ज्ञान ॥ जोग कहीए चित्तकी वृत्तिका निरोध करणा अरु ज्ञान कहीए सम्यक वीचारणा ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् वृत्तिका निरोध कीस जुक्ति करी होता हे प्रान अपानका पवनका रोकणा केसें होता हे ॥ जीस जोगकरी अनंत सुख संपदा प्राप्त होती हे ?॥वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस देहविषे जो नाडी हे तीनविषे प्राण वायु फीरता हे ॥ जेसें पृथ्वी उपर नदीयांका जल फीर्ता हे सो प्राणवायु एक हे स्पंदके वसतें नानाप्रकारकी विचित्र क्रियाकों प्राप्त होता हे ॥ तीसकरी अपान आदिक संज्ञाकों पावता हे ॥ जोगेसर कल्पते हे जेसें पुष्पविषे सुगंध अभेदरूप हे अरु बर्फविषे स्वेतता अभेद हे ॥ आधार आधेय एकरूप हे तेसें प्राण अरु चित्त अभेदरूप हे ॥ जब अंतर प्राणवायु फुरति हे तब चित्तकला फुरति हे ॥ फुरी करी संकल्पके सनमुख होती हे तीसका नाम चित्त कहाता हे ॥ जेसें जल द्रवीभूत होता हे तिसविषे लहरी चक्र फुरी आते हे ॥ तेसें प्राणोंकरी चित्त फुरी आता हे चित्तके फुरनेका कारन प्राणवायु हे ॥ जब प्राणवायुका निरोध होता हे तब निश्चयकरी मनभी सांत होता हे ॥ सो मनके लीन हुए संसारभी लीन हो जाताहे ॥ जेसें सूर्य प्रकासके अभाव हुए रात्रविषे मनुषोंका व्यवहार सांत हो जाताहे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन्! यह जो दिन अरु रात्र निरंतर आगमन करतेहे ॥ देहरूपी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यहविषे प्राण वायुका रोकणा किस प्रकार होताहे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! संत जनोंका संग अरु सतसास्त्रका विचार अरु विषयतें वैराग तिसकरी जोग अभ्यास होताहे ॥ प्रथम जगतविषे असत बुद्धि करणि ॥ अरु वांछित जो अपनां इष्ट देवहे तिसका ध्यान करणा ॥ जब चिरकाल ध्यान करताहे तब एक तत्वका अभ्यास होताहे तिसकरी प्राणोंका स्पंद रोक्या जाताहे॥ रेचक पूरक कुंभक जो प्राणायामहे जब अखेद चित्त होकरी अभ्यास दृढ करताहे अरु एक ध्यान संयुक्त होताहे ॥ तिस करीभी प्राणोका स्पंद रोक्या जाताहे ॥ ऊकारका उच्चार करणा ऊर्ध तिसकी जो सूक्ष्म धुनी होतीहे ॥ प्रथम शब्द वडी धुनीसों होताहे ॥ सूक्ष्म धुनी सेष रहतीहे॥ तिसविषे चित्तकी वृत्तिकों लगावणी तब सुषुप्तिरूप अवस्थाविषें वृत्ति तद्रूप हो जातीहे तब प्राण स्पंद रोक्या जाताहे ॥अरु रेचक प्राणायाम जो करताहे तिसके अभ्यास करी विस्तृत प्राण वायुसों शून्यभाव आकासविषे जाय लीन होताहे तब प्राण स्पंद रोक्या जाताहे ॥ अरु कुंभक करी जो प्राण वायुकों अभ्यासके बल स्थित करणा तब प्राण वायु रोक्या जाताहे ॥ अरु तालु मूल साथ जतनसों जिव्हाकों ताल घंटा साथ लगानी ॥ इस खेचरी मुद्रा करी वायु ऊर्ध रंध्रको जातीहे ऊर्ध रंध्रविषे गयाभी प्राण वायुका स्पंद रोक्या जाताहे ॥ अरु जो द्वादस अंगुल पर्यंत नासिकाके अग्रविषे अपानरूपी चंद्रमाका निर्मल स्थान आकासमें हे ॥ तिसका देखणा ज्योंका त्यों होवे तोभी प्राण स्पंद रोक्या जाताहे॥ तालुके द्वादस अंगुल ऊर्ध रंध्रका अभ्यास होवे तिसके अंतविषे जब प्राणोंकों लगावे॥ तब तिस संवितविषे प्राणोंका फुरणा नष्ट हो जाताहे ॥ अरु जो भवमध्य चिपुटीविषे ओर प्रकासकों त्याग करी तिसविषे चैतनकला रहतीहे ॥ तहां वृत्तिकों जोडे वृत्तिके जोडतें प्राणकला रोकी जातीहे अरु जो सर्व वासनाकों त्याग करी रिदे आकासविषे चैतन संवितका ध्यान करे ॥तोभी चिरकालके अभ्यास करी एसें प्राण स्पंद रोक्या जाताहे॥ रामोवाच ॥हे भगवन् जगत्के भूतोंका रिदा किसकों कहाताहे ॥ जीस महा आदर्सविषे सर्व पदार्थ प्रतिबिंबित हो जाताहे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! जगतके भूतके दो रिदेहे एक ग्रहण करणे जोगहे एक त्यागणे जोगहे तिसका भेद सुण॥ नाभितें जो देहविषे दस अंगुल ऊर्धहे सो त्यागणे जोगहे ॥ प्रछंन भाव करीकें देहके एक स्थानविषे स्थितहे ॥ अरु तिसविषे जो संवित मात्र ज्ञान स्वरूप अनुभव करी प्रकासताहे सो मनुष्यकों ग्रहण करने जोगहे ॥ जो अंतर बाहिर व्यापी रहाहे अरु वास्तव अंतर बाहिरतेंभी रहितहे सो प्रधान रिदाहे॥ अरु सर्व पदार्थोंका प्रतिबिंब धरणे हारा आदर्स हे ॥ सर्व संपदाका भंडारहे ॥ सो सर्व जीवोंका संवित रिदाहे ॥ एक अंगका नाम रिदा नही ॥ जेसें जलविषे एक पथर पुरातन पडा होवे सो जल नही होजाता ॥ तेसें संवितमात्रके निकट संवितमात्र तो नही होता यह जडरूपहे ॥ आत्मा चैतन आकास हे सो यह प्रधान रिदाहे तातें बलकरीकें संबितमात्रकी उर चित्तकों लगावहु तब प्राण स्पंद भी रोक्या जावेगा ॥ हे रामजी! यह प्राणोंका रोकणा मेंनें तुजकों कहाहे ओरभी शास्त्रोंविषे अनेक प्रकार करी कहाहे ॥ जीस जीस प्रकार गुरुके मुखतें श्रवण कीयाहे तिसीप्रकार अभ्यास करे ॥ तब प्राणोंका निरोध होताहे ॥ गुरुके उपदेसतें अन्यथा सिद्ध नही होता ॥ जिसकों अभ्यास करीकें निरोध सिद्ध भयाहे सो कल्याण मूर्तिहे ॥ ओर कल्याण मूर्ति नही होता ॥ हे रामजी! अभ्यास करीकें प्राणायाम होताहे ॥ अरु वैरागकी दृढता करीकें वासनायाम होताहे ॥ अर्थ यह जो वासना रोकी जातीहे ॥ जब दृढ अभ्यास करे तब चित्त अचित्त हो जाताहे ॥ हे रामजी! भृकुटीके दस अंगुल पर्यंत जो वायु जाताहे ॥ तिसका वारंवार जब अभ्यास करताहे तब क्षीण हो जाताहे ॥ अरु खेचरी मुद्रातें तालु साथ जिव्हा लगाइ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करीकें जो अभ्यास करे तौभी प्राण रोके जाताहे ॥ इसके अभ्यास करी चित्तकी व्याकुलता जाती रहतीहे ॥ परम उपसमकों प्राप्त होताहे ॥ यह पुरुष आत्मारामी होताहे ॥ सब सो
क दूरी हो जाताहे ॥ अंतर आनंदकी प्राप्ति होताहे ॥ तातें तुंभी अभ्यास कर तब प्राण स्पंद मीट जाताहे ॥ तब चित्तभी स्थित हो जाताहे ॥ तिसकें पाछें जो पदहे सो निर्वाणरूप हे ॥
हे रामजी ! जब प्राण स्पंद मीटी जातेहे तब चित्तभी स्थित हो जाताहे ॥ जब चित्त स्थित हुआ तब वासना नष्ट हो जातीहे ॥ जब वासना नष्ट हो जातीहे तब मोक्षकी प्राप्ति होतीहे ॥
जबलग चित्त वासना करी लपेट्याहे तबलग जन्म मरणकों देखताहे ॥ जब मन वासनातें रहित होताहे तब मोक्ष होताहे ॥ हे रामजी प्राणवायुकों रोकीकरी वासनातें रहित हुआ जहां
तेरी इच्छा होवे तहां विचर ॥ तुजकों बंधन न होवेगा ॥ जब प्राण फुरता हे तब मन उदे होताहे ॥ जब मन उदे हुआ तब संसार भ्रम होताहे ॥ जब मन क्षीण होताहे तब
संसार भ्रम नष्ट होजाताहे हे रामजी जब मनसों संसारकी वासना कलना मीटी जाती हें ॥ तब असव्द पद प्राप्त होता हे ॥ तीसतें यह सर्व हे अरु जो यह सर्व हे अरु जीसतें न
सर्व हे अरु जो न सर्व हे अरु जो न सर्वविषे हे ॥ जीसविषे न यह सर्व हे ॥ एसा जो निर्गुण तत्व हे सो सर्व कलनाके त्यागेतें प्राप्त होता हे ॥ तीसकों उपमाकीसकी दीजें आत्मा
अविनासी निर्विकल्प निर्गुण हे यह जगत नासरूप संकल्पके रचित गुणरूप तीसकों कीसी पदार्थसाथ दृष्टांत दीजें अर्थ यह जो दुसरा कछु नही ॥ जेते कछु स्वाद तीनकों
स्वादकर्ता उही हे ॥ अरु जेते प्रकास हे तीनकों प्रकासकर्त्ता उही हे ॥ सर्व कलनाका कलनारूप उही हे ॥ जेतें कछु पदार्थ हे तीन सवनकों अधिष्ठानरूप उही हे ॥
सो चित्त अरु आवरणके दूर हुए प्राप्त होता हे ॥ अरु सर्व पदार्थोंकी सीमा उही हे ॥ एसा जो आत्मारूप चंद्रमा सीतल हे ॥ जब तीसवीषे बुद्धिवान स्थित होता हे तब जीवनमुक्त
कहाता हे ॥ अरु सर्व इच्छा आश्चर्य नष्ट होजाता हे ॥ अहं त्वं आदिक कल्पना मीटोजाती हे ॥ सर्व व्यवहार विस्मरण होता हे ॥ एसा जो मुक्त मन हे सो पुरुषोत्तम होता हे ॥
इतिश्री योगवासिष्ठे उपसम प्रकरणे जीवनमुक्त ज्ञान बंधो नाम त्रिसप्ततितमःसर्गः ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे प्रभो जोगीकी जुगत तुमने कही जीसकरी चित्त उपसम होता
हे ॥ अब सम्यकज्ञानका लच्छनभी कृपा करी कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह निश्चय हे जो आत्मा आनंदरूप आदि अंततें रहित प्रकासरूप सर्व परमात्मा तत्व हे ॥ इस निश्चय
कों सम्यक ज्ञान बुधीश्वर कहतें हे ॥ अरु यह जो घट पटादिक अनेक पदार्थ शक्ति हे सो सब आत्मा परमानंदरूप हे तीसतें इतर नही ॥ एसा जो देखणा हे सो सम्यक देखणा हे
सर्वात्मा हे नित्य सुद्ध हे ॥ परमानंद स्वरूप हे सदा अपणे आपविषे स्थित हे ॥ एसा निश्चय सम्यकज्ञान हे अरु जो इसतें इतर होवे सो असम्यक ज्ञान हे हे रामजी सम्यक दर्शीकों
मोक्ष हे असम्यकदर्शीकों बंध हे ॥ तीसकों आत्मा जगतरूप भासता हे ॥ सम्यकदर्शीकों केवल आत्मा भासता हे ॥ जेसें जेवरी विषे असम्यकदर्शीकों सर्प भासता हे ॥ सम्यकद
र्शीकों जेवरी भासती हे ॥ सर्व संवेदन संकल्पतें रहित सुद्ध संवित परमात्मा हे ॥ तीसकों जो जानता हे सो परमात्माके जानणेवाला बुधीश्वर हे ॥ इसतें इतर हे सो अविद्या हे ॥
हे रामजी आत्म तत्व सदा अपणे आपविषे स्थित हे तीसविषे द्वैत कलना कोउ नही ॥ एसा जो यथार्थदर्शी हे ॥ सोइ सम्यकदर्शी हे ॥ सर्व आत्मा पूर्न हे भाव अभाव बंधमोक्ष
कोउ नही ॥ न एक हे न द्वैत हे ब्रह्मही अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जो सर्व चिदाकास हे तो बंध कोनकों कहीए अरु मोक्ष कोनकों कहीए ॥ एसा जीनकों ज्ञान हे तीसकों काष्ठ पा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

षाण ब्रह्मातें चेंटी पर्यंत सब सम भासता हे अल्पमात्र भेदभी नही भासता कल्पनाके सन्मुख केसें होवे ॥ हे रामजी वस्तुकें आदि अंत जो अन्वय व्यतिरेक करीकें आत्मा सिद्ध होता हे ॥ अर्थ यह जो पदार्थ हे सो हे तोभी आत्म सत्ताकरी सिद्ध होता हे ॥ अरु जो पदार्थका अभाव होजाता हे तोभी आत्मसत्ता सेष रहती हे तुं तीस परायण होउ ॥जो अविनासी अनुभव धरी तीसके विषे स्थित होउ उही अनुभवसत्ता जगतरूप होकरी भासती हे ॥ जरा मरण आदिक जोनाना प्रकारकें विकार वस्तुरूप भासते हे सो वस्तु अपणे आपविषे फुरती हे ॥ जेसें जल विषे द्रवताकरीके नाना प्रकारके तरंग बुदबुद होतें हे सो जलरूप हे इतर कछु नही ॥ तेसें चित्तके फुरणे करीके नानाप्रकारकें पदार्थ भासते हे सो आत्मरूप हे इतर कछु नही ॥ आत्म तत्वही अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जब तिसविषे स्थित होता हे तब बहुरी दीन नही होता ॥ जो पुरुष दृढविचारवान हे सो भोगोंकरी चलायमान नही होता ॥ जेसें मंद पवन करीके मेरू पर्वत चलायमान नही होता अरु जो अज्ञानी हे ॥ विचारतें रहित मूढ हे तीनकों भोगों ग्रास लेता हे ॥ जेसें जलतें रहित मच्छीकों बगला ग्रास लेता हे अरु जीसकों सर्व आत्माही भासता हे सो सम्यकदर्शी पुरुष कहाता हे उही मुक्तरूप हे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपसम प्रकरणे सम्यकज्ञान वर्ननं नाम चतुःसप्ततितमःसर्गः ॥ ॥ ७४ ॥ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो विवेकी पुरुष भोगोंके निकट आय प्राप्त होताहे तोभी इच्छा नही करता ॥ काहेतें जो अर्थ बुद्धिहि तिसविषे कछु नही ॥ जेसें सुंदर कमलनी चित्रकीलिखी हुइके नीकट भवरा आन प्राप्त होताहे तोभी इच्छा नही करता ॥ तेसें विवेकी भोगोंविषे अर्थ बुद्धि नही करता ॥ हे रामजी सुख दुःखकी प्राप्ति अरु निवृत्तिविषे इच्छा तवलग होतीहे जवलग देहाभिमान होताहे ॥ जब देहाभिमान निवृत्त हुआ तब कछु इछा नही होती ॥ हे रामजी ममता करीके दुःख होताहे जब रूपकों नेत्र देखतोहे ॥ तीसकों इष्ट मानीकरी प्रसन्न होताहे अरु अनिष्ट मानीकरी दोष करता हे ॥ जेसें बलद भारवाहक चेष्टा करता हे ॥ तीसकों लाभ टोटा कछु नही होता ॥ जीसकों उसविषे ममत्व होताहे उह लाभ टोटेका हर्ष सोक करता हे ॥ तेसें यह ममत्वकरी इंद्रियोंके विषयोमें हर्षसोकवान होताहे ॥ जेसें गर्दभ चीकडविषे डुबे अरु राजा सोक करता हे जो मेरे नगरका गर्दभ डुबाहे ॥ तेसें यह ममत्वकरीकें इंद्रियोंके विषयोंमें दुःख पावता हे नही तो गर्दभ चीकडविषे डुबे राजाका क्या नष्ट होताहे ॥ हे रामजी यह इंद्रियां तो आपणे विषयोकों ग्रहण करतियां हे ॥ इन विषे जीव तपायमान होताहे सो आश्चर्यहे ॥ अरु इनविषयोंकी यह चेष्टा इच्छा करते हे सो क्षण क्षणविषे नष्ट होजाते हे ॥ हे रामजी जो मार्गविषे कीसी साथ स्नेह होजाताहे तो ममत्वप्यार करी दुःख होताहे ॥ तव जो देहविषे ममत्व करेगा तीसकों दुःख क्यों नही होवेगा ॥ भावे तेसा बुद्धिवान होवे सुरमा होवे तोभी संगकरी बंधमान होताहे ॥ अर्थ यह जो इंद्रियोंके विषयोंका अहंभाव करी ग्रहण करेगा तो तीनके नास होणेकरी इहभी नास होवेगा ॥ जीन नेत्रोंका विषयरूप हे सो नेत्र साक्षी होकरी रूपकों ग्रहण करताहे ॥ अरु एसा मूर्ख हे जो औरोके धर्म आपविषे मान लेताहे ॥ अरु तीनविषे तपायमान होताहे ॥ जेसें भ्रम दृष्टिकरीकें आकासविषे मोर पुच्छवत् तर्वरे भासते हे अरु दुसरा चंद्रमा भासताहे ॥ तेसें मूर्खता करीकें इंद्रियोंके धर्म अपणेविषे मान लेताहे ॥ जेसें इंद्रियां साक्षी होकरी विषयोंकों ग्रहण करताहे तेसें चित्तभी अभिमानतें रहित साक्षीहोकरी ग्रहण करे तो रागदोष करी तपायमान न होवे ॥ जेसें जलविषे चक्र तरंग फुर्ते दृष्ट आतेहे तेसें यह इंद्रियोंके रूप विषे अरु इंद्रियां फुरी अतीयांहे आधार आधेयकरी इनका संबंध होताहे ॥ अरुचित्त इन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के साथ मिली व्याकुल होताहे ॥ रूप इंद्रिय अरु मन इसका परस्पर असंग भाव हे ॥ जेसें मुख अरु दर्पण अरु प्रतिबिंब भिन्न भिन्न असंग हे तेसें यह भिन्न भिन्न असंग हे परंतु अ
ज्ञानकरी मीले हुए भासतेहे ॥ जेसें लाखकरीकें सोनेरूपे चीनीका संजोग होताहे ॥ तेसें अज्ञानकरीकें रूप अवलोक मन संस्कारका संजोग होताहे ॥ जब ज्ञान अग्निकरी अज्ञानरूपी
लाख जली जावे ॥ तब परस्पर भिन्न भिन्न होजातेहे ॥ बहुरी कीसीका दुःख सुख कीसीकों नही लगता ॥ जेसें दो लकडीका संजोग लाख करी होताहे ॥ तेसें अज्ञानकरी विषय
इंद्रियां मनका संजोग होता हे ॥ ज्ञानरूपी अग्निकरी जब बिछुरी जाते हे ॥ तब बहुरी नही मीलते ॥ जेसें भिनभिन मणके सूत्रके तागेकरी एकठे होते हे तेसें देह इंद्रियां विषे अज्ञान
करी एकठे होते ॥ जब विचारकरीके तागा टुटपडे तब भिन्नभिन्न होजावे बहुरी मीले नही ॥ हे रामजी जीन पुरुषोंकों आत्मविचार भया हे सो एसें विचारता हे जो हमकों दुःख
देणेहारा चित्त था चित्तके नष्ट हुए आनंद भया हे ॥ जेसें मंदिरविषे दुःख देणेहारा पिसाच रहता हे तब दुःख होता हे ॥ नही तो मंदिर दुःख नही देता पिसाच दुःख देताहे ॥ तेसें श
रीररूपी मंदिरविषे दुःख देणेहारा चित्त हे ॥ हे चित्त तुजनें मिथ्या मुजकों दुःख दीया था अब में आपकों जान्याहे ॥ तुं आदिभी तुच्छ हे अंतभी तुच्छ हे वर्तमानमेंभी तुं मिथ्या जीव
कों दुःख देताहे ॥ जेसें मिथ्या पलावा बालककों वेताल होकरी दुःख देताहे बडा आश्चर्यहे ॥ हे चित्त तुं तबलग दुःख देताहे जबलग आत्म स्वरूपकों नही जान्या जब आत्म स्वरूपका
ज्ञान भया तब तुं कहुं दृष्ट न आवेगा तुं तो मायामात्रहे ॥ अब तरुं अथवा जाउं ॥ में अब तुजसों मोहित नही होता ॥ तुं तो मूर्ख जड हे अरु मृतक हे ॥ तेरा आकार अविचार
तें सिद्ध हे ॥ अब में पूर्वका स्वरूप पायाहे ॥ तुं तत्व नही भ्रांतिमात्र हे जो मूढ हे सो तुजकरी मोहित होताहे ॥ विचारवान मोहित नही होता ॥ जेसें दीपककरी
अंधकार दृष्ट नही आता ॥ तेसें ज्ञानकरी तुं दृष्ट नही आता ॥ हे मूर्ख चित्त तुं बहुत काल इस देहरूपी गृहविषे रहाहे ॥ अरु तुं वेतालरूप हे ॥ जेसें अपवि
त्र स्थानविषे वेताल रहता हे ॥ जहां मसांण आदिक स्थान होते हे ॥ तेसें सतसंगतें रहित देहरूपी गृह सो मसाणके समान सदा अपवित्र हे ॥ तहां तेरे रहणेका स्थान हे ॥ अरु जहां
संतोका निवास होता हे तहां तुज सारखे ठोर नही पावते हे ॥ सो मेरे देहरूपी गृहविषे सत विचार संतोषादिक संतजन आन स्थित हुए हे तेरे वसणेका ठोर नही ॥ हे चित्त पि
साच तु पूर्वरूपी तृष्णा पिसाचनी अरु काम क्रोधादिक गुह्यक अपणे साथ लेकरी चिर पर्यंत विचर्याथा ॥ अब विवेकरूपी मंत्रकरी में तुजकों निकाश्या हे तब कल्याण हुआ ॥ हे
चित्त पिसाचरूप तुं प्रमादरूपी मद्य पानकरी मत्त हुआथा ॥ अरु चिर पर्यंत नृत्य करताथा ॥ विवेकरूपी मंत्रकरी तुजकों काढया ॥ अब देहरूपी कंदरा सुद्ध भइ हे अरु सुद्धभाव
पुरुषोनें निवास कीया हे ॥ जेसें सींग कंदरासों नीकसी जाता हे तब मुनीश्वर आनी नीवास करता हे ॥ तेसें इहां शुद्धभावद्वुनें प्रवेस कीया हे ॥ हे चित्त में तुजकों विवेकरूपी मित्र
करीकें वस कियाहे ॥ अब तेरा क्या पराक्रमहे तुं तबलग दुःख देता था जबलग विचाररूपी मित्र पाया न था ॥ अब तेरा वल कछु नही चलता ॥ अब में महा केवल भावविषे स्थित
हों ॥ आगेभी में तुजकों जगावता था आपतें तुं सब रूपहे ॥ जेसें कच्चे मंत्रवाला सींगकों जगावताहे अरु आप कष्ट पावताहे तेसें मैं तुजकों जगाइ करी कष्ट पावता था ॥ अब में आ
त्मविचार करी परीपक्व मंत्र करी वस कीयाहे तब सांतिवान हुवा हों ॥ ममता मान मेरे कछु नही मोह अहंकार सब नष्ट होगयाहे ॥ इनका कलत्रभी नष्ट होगयाहे ॥ में निर्मल चैत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न आत्मा हों मेरा मुजकों नमस्कार हे॥ न मेरेविषे कोउ आशाहे न कर्महे न संसार हे न कर्तृत्व हे न मनहे न भोक्तृत्व हे न देह हे एसा जो निर्गुणरूप आत्मा हे॥ मेरा मुजकों नमस्कार हे॥ न कोउ आत्मा हे न अनात्मा हे न अहंहे न त्वं हे॥ कीसी सव्दका प्रवेस नही एसा निरास हे न रूप हों प्रकासरूप हों अरु निर्मल आत्मा हों अपणे आपविषे स्थित हों॥ एसा जो में आत्मा हों मेरा मुजकों नमस्कार हे॥ न विकार हों नित्य हों॥ निरास हों सर्व कार्योंविषे अनुस्यूत हों॥ अंशाशी भावतेंरहित हों॥ एसा सर्वात्मा जो मेंहो सो मेरा मुजकों नमस्कार हे॥ सम हों सर्वगत हों सूक्ष्म हों॥ अपणे स्वभावविषे स्थित हों पृथ्वी पर्वत समुद्र आकास आदिक जगत् में नही॥ अरु मेंही सर्वपदार्थ होकरी भासता हों॥ एसा में सर्वात्मा हों॥ अब में सर्व भावकों प्राप्त भया हों अरु मनभाव मुजतें दूर भया हे॥ मेरें प्रकास करी विश्व भासता हे॥ अजर अमर अनंत हों॥ गुणातीत अद्वैत हों॥ मनन जिसतें दूरभया हे एसा जो में सुंदर रूप हों॥ केसा हों जिसविषे विश्व प्रगट हे अरु स्वरूपतें अविनाशी हों॥ अनंत अजर अमर गुणातीत ईश्वररूपकों नमस्कारहे॥ इ०यो०उप०चित्त उप०नाम पंचसप्ततितमःसर्गः॥ ७५

॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी इस प्रकार विचारकरी तत्ववेत्ता आत्माकों सम्यक करी जानतेहे॥ तुंभी आत्मविचारकों आश्रय करीके आत्मपदकों आश्रय होउ॥ यह जगत् सब आत्मरूप हे एसें जाणीकरी चित्तसों जगत्की सत्यताकों त्यागकर जब एसें विचार करे तब चित्त कहां हे बडा आश्चर्यहे जो चित्त वस्तुरूप दीखाइ देताथा॥ सो चित्त अविदित मायामात्र अस्तरूप था॥ जेसें आकासके फुल कहणेमात्र हे॥ तेसें चित्त कहणे मात्र हे अविचार करी दिखाइ देता हे॥ विचारवानकों चित्त असत भासता हे काहेतें जो अविचारतें सिद्ध हे॥ जेसें नौकापरी बेठे बालककों तटके वृच्छ चलते भासते हे बुद्धिवानकों चलणेविषे सदभाव नही होता॥ तेसें मुर्खकों चित्त सता भासती हे॥ अरु विचारवानका चित्त नष्ट होजाता हे॥ जब मुर्खतारूप भ्रम सांत हुआ॥ तब चित्त कछु नही पाइता॥ जेसें बालक चक्रपर चडा हुआ फीरता हे॥ तो पर्वत आदिक पदार्थ तीसकों भ्रमते भासते हे॥ जब चक्र ठहरी जाता हे तब चक्र आदिपदार्थ अचल भासता हे॥ तेसें चित्तके ठहरणे तें द्वैत कछु नही भासता॥ आगे मुजकों द्वैत भासता था॥ सो चितके फुरणेकरी नाना प्रकारकी तृष्णा इच्छा उटतीथी॥ अब चित्तके नष्ट हुए इन पदार्थोंकी भावना नष्ट भइहे॥ संशय सोक सब मेरें नष्ट होगएहे॥ अब विगतज्वर स्थित हों॥ जो में स्थित हों तेसें हों इषणा कोउ नही॥ जब चितका चैत्यभाव नष्ट हुआ तब इच्छा आदिक गुन कहां रहे जेसें प्रकास नष्ट हुए वर्न ज्ञान कछु नही रहता हे तेसें चित्तके नास हुए इच्छा आदिक नही रहते॥ अब चित्त नष्ट हुआ तृष्णा नष्ट होगइ॥ मोहकापींजरा टुट पडा॥ अब में निरहंकार हों बोधवान हों॥ सब जगत् सांतरूप आत्मा हों॥ ओर नानात्व कछु नही में निराभास आदि अंततें रहित आनंद पदकों प्राप्त हुआ हों सर्वगत सूक्ष्म आत्मतत्व अपणा आप हे तिसविषे में स्थित हों निरंतर॥ इन विचारो साथ अब क्या प्रयोजन हे॥ जबलग आपकों में देह जाणताथा तबलग यह विचार मूर्ख अवस्थाविषे थे॥ अब में अमीत निराकारकों प्राप्त हुआ हों॥ केवल परमानंद सच्चिदानंदकों प्राप्त हुआ कीसपदका विचार करों॥आगे में चित्तरूपी वैतालकों आपही जगावता था अरु आपही दुःखी होता था॥ अब विचाररूपी मंत्र करी में इसकों नष्ट कियाहे॥ अरु निर्णय करी अपणे स्वरूपकों प्राप्त भया हों॥ सांत आत्मा अपणे आपविषे स्थित हों॥ हे रामजी! जिसकुं यह निश्चय प्राप्त हुआहे सो निर्द्वंद्व राग द्वेषतें रहित होकरी स्थित होताहे प्रकृत कर्म करताहे॥ मान मदतें रहित आनंद करकें पूर्न होताहे॥ जेसें सरत्कालकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राञ्चिकों पूर्नमासीका चंद्रमा अमृत करी पूर्न होताहे॥तेसें प्रकृत आचार कार्य कर्ता ज्ञानवानकों सांत पूर्न आत्माहे॥ इतिश्री यो०उ०प्र० चितसांतिप्रतिपादनं नाम षट्सप्ततितमःसर्गः॥ ७६॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! यह विचार वेदविदोनें कहा हे ॥ पूर्व मुजकों ब्रह्मानें विंध्याचल पर्वतविषे कहाथा ॥ इसविचार करीकें उह परम पदविषे स्थित हुआहे ॥ इसी दृष्टिकों आश्रय करीकें आत्मविचार होकरी तमरूपी संसार समुद्रकों तरी जावहु ॥ हे रामजी! इस उपर एक ओर परम दृष्टि सुण ॥ सो दृष्टि परम पदकों प्राप्त करनेहारीहे ॥ जिस प्रकार वीतव मुनीश्वर विचार करीकें निःसंक स्थित हुआहे सो सुण ॥ वीतव मुनीश्वर महा तेजवान था सो संसार आधि व्याधितें वैराग करत भया ॥ अरु नागादि होकें पर्वतोकी कंदरा विषे विचरने लगा ॥ जेसें सूर्य सुमेरु पर्वतके चौफेर फिताहे तेसें विचरने लगा ॥ अरु संसारकी क्रियाकों दुःखरूप विचारता भया ॥ जो यह बडे भमके देणे हारीहे ॥ एसें जाणी करी उद्वेगवान हुआ ॥ निर्बिकल्प समाधिकी इच्छा करत भया ॥ अपणा जो कछु व्यवहार था तिसकों त्यागत भया ॥ अरु गौर जो अपणी कूटी थी तिसकों त्याग करीकें ओर केलेके पत्रोंकी वणाइ करी बेठा ॥ जेसें भवरा कमलहुकों त्यागकरी नील कमल पर जाय बेठताहे ॥ तेसें गौर कूटीकों त्यागकरी सामकुटीविषे जाय बेठा ॥ नीचे कुस बिछाइ तीस उपर मृग छाला वीछाइकरी पद्मासन बीछाइ बेठे ॥ जेसें मेघजलकों त्यागकरी सुद्ध मौन स्थित होताहे ॥ तेसें और क्रियाकों त्यागकरी सांतिके निमित्त सांतरूप स्थित हे ॥ हाथोंकों तले कीया मुखकों उपर कीया ग्रीवाकों सुधाकरीकें स्थित करतभया ॥ इंद्रियांकी वृत्तिकों रोकत भया ॥ वहुरीमनकी वृत्तिकोंभी रोक दीया ॥ जेसें सुमेरुकी कंदराविषे सूर्यका प्रकास बाह्यतें मीटजाताहे॥ तेसें इंद्रियांकी वृत्तिरोकी बाहिरतें मीट जातीहे॥अरु अंतरतेंभी विषयोंकी चीतवनाका त्याग कीया इस प्रकार उह क्रम करीकें स्थित करत भया ॥ जब मन नीकरी जावे तब कहे बडा आश्चर्यहे ॥ मन महा चंचलहे जों में स्थित करता हों तो वहुरी नीकसी जाताहे॥जेसें सुका पात तरंगविषे पाया ठेरता नही तेसें मन एक छीनभी ठेरता नही ॥ सर्वदा इंद्रियांकरी विषयोंकीउर धावताहे॥ जेसें गेंदकों ज्यौं ज्यौं ताडना कर्ताहे॥ त्यों त्यों उछलताहे तेसें इस मूर्ख मनकों जीस उरतें खेंचताहे तीसी उर वहुरी धावताहे॥उनमत्त हस्तीकी न्याइ ॥ जो घटकी उरतें खेंचताहे तो रसकी उर नीकसी जाताहे ॥ अरु जो रसकी उर खेंचताहे तो गंधकी उरधावताहे स्थिर कदाचित् नही होता॥जेसें बानर कबहु कीसी टासपर कबहु कीसी टासपर जाय बेठताहे इस प्रकार मूर्ख मन शब्द स्पर्श गंध रूप रसकी उर धावताहे स्थिर नही होता इसके ग्रहण करणेकों पंचस्थान हे ॥ जीस मार्गकरी विषयोकों ग्रहण करता हे सो पंच ज्ञानइंद्रियां हे अरे मूर्ख मन तुं किस निमित्त विषयोंकी उर धावताहे ॥ यह तो आप जड असतरूप भांतिमात्रहे॥ तुं इनकरी सांतिकों केसें प्राप्त होवेगा॥ इनविषे चपलता करी इछा करना अनर्थका कारनहे ॥ ज्यौं ज्यौं इनके अर्थोंकों ग्रहण करेगा त्यों त्यों दुःखके समूहकों प्राप्त होवेगा ॥ यहविषयभी जड असतरूप हे तुंभी जड हे ॥ जेसें मृगतृष्णाकी नदी असतहोती हे तेसें यह असतरूप हे ॥ हे मुनी यह तो सब असाररूप हे ॥ अरु तुंभी इंद्रियां सहित जडरूप हे तुं कर्तृत्वका अभिमान क्यौं करता हे ॥ सबका कर्त्ता चिदानंद आत्मा भगवान हे ॥ अरु सदा साक्षीभूत हे ॥ हे मुनी आत्मा साक्षीभूत हे तुं क्यो वृथा तपायमान होताहे ॥ जेसें सूर्य सबकी क्रियाकों करावता साक्षीभूत हे ॥ तेसें आत्मा साक्षीभूत हे ॥ अरु जगत् सब भांतिमात्र हे ॥ जेसें अज्ञानकरी जेवरीविषे सर्प भासता हे तेसें अज्ञानकरीके आत्माविषे जगत् भासताहे ॥ जेसें आकास अरु पातालका संबंध कछु नही होता ॥ जेसें ब्राह्मण अरु चंडालका संजोग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं होता जेसें सूर्य अरु तमका संबंध नहीं होता ॥ तेसें आत्मा अरु चित्त इंद्रियांका संबंध कछु नही होता ॥ आत्मा सत्तामात्र हे यह जड असतरूप हे ॥ इनका संबंध केसें हो वे ॥ आत्मान्यारा साक्षीभूत हे ॥ जेसें सूर्य सब जनोंतें न्यारा रहता हे ॥ तेसें आत्मान्यारा साक्षीभूत हे ॥ हे चित्त तुं तो मूर्ख हे विषयरूपी चबेणेविषे तूं रहे ॥ सर्व उरतें भच्छन क र्त्ता तुं तृप्त कदाचित् नही होता ॥ अरु विचारमिथ्या कुकरकी न्याइ चेष्टा कर्ताहे ॥ तेरे साथ हमकों कछु प्रयोजन नही ॥ हे मूरख तुं तो मिथ्या अहं अहं करता हे ॥ अरु तेरी वासना अत्यंत असतरूप हे ॥ अरु जीस पदार्थोंकी तुं वासना करता हे सोभी असतरूप हे ॥ तेरा अरु आत्माका संबंध केसें होवे ॥ आत्मा चेतनरूप हे अरु तुं मिथ्या जडरूप हे ॥ अरु यह में जांन्या हे जो जन्म मरन आदिक विकार अरु जीवत्व भावकों तुजनें मुजकों प्राप्त कीयाथा में तो केवल चेतन परब्रह्म हों ॥ मिथ्या अहंकार करीकें जीवत्वभावकों प्राप्त की याथा अरु देहमात्र आपकों जाणता था ॥ में तो संवितमात्र नित सुद्ध हों आदि अंततें रहित परमानंद चिदाकास अनंत आत्माहों अब में स्वरूपविषे आप जाग्या हों ॥ ओर सदभा व मुजकों कछु नही दृष्ट आता ॥ हे मूरख मन जीन भोगोंकों तुं सुखरूप जाणीकरी धावता हे ॥ सो अविचार करकें प्रथम तो अमृतकी न्यांइं भासता हे ॥ अरु पाछें विषकी न्यांइं होजाताहे ॥ वि जोगकरीकें जलावतें हे अरु आपकों तुं कर्त्ता भोक्ताभी मिथ्या मानता हे तुंभी कर्त्ता भोक्ता नही ॥ अरु इंद्रियांभी कर्त्ता भोक्ता नही काहेतें जो जड हे ॥ ज़ो तुम जड हुए तो तुमारे साथ मित्रभा व केसें होवे ॥ अरु जो तुं जड असतरूप हे तो कर्ता भोक्ता केसें होवे ॥ अरु जो चेतन सतरूप हे तोभी तेरे विषे कर्तृत्व भोक्तत्व नही संभवता ॥ तुं मिथ्या हे में प्रत्यक्ष चेतन हों ॥ तुं कर्तृत्व भोक्तृत्व मिथ्या अपणेविषे स्थापन करताहे ॥ तुं मिथ्या हे जब में तुजकों सिद्धकरता हों तब तुं होताहे ॥ तुं निश्चय करी जड हे ॥ तुजकों कर्तृत्व भोक्तृत्व केसें होवे ॥ जेसें पथरकी शिला कृत्य करनेकों समर्थ नही होती तेसें तुजकों कर्तृत्वकी समर्थता नहीं ॥ तेरेविषे कर्तृत्व जो हे सो मेरी शक्ति हे ॥ जेसें दात्री घास तृण आदिककों काटतीहे सो केवल आपतें नही काटती ॥ पुरुषकी सक्ति तें काटतीहे अरु खडग करी जो हनन क्रिया होतीहे सोभी आपतें नही होती पुरुषकी सक्तिहे ॥ तेसें तुमारेविषे कर्तृत्व भोक्तृत्व मेरी सक्ति करी होतीहे ॥ जेसें पात्र करी जल पान कर ताहे सो पात्र नही करता पान पुरुष करताहे ॥ पात्र करीकें पान करताहे ॥ तेसें तुमारेविषे कर्तृत्व भोक्तृत्व मेरी शक्ति करतिहे ॥ मेरी सत्ता पाइ करी तुम अपणी चेष्टाविषे विचरतेहो ॥ जे सें सूर्यका प्रकास पाइ करी लोक अपणी अपणी चेष्टा करताहे तेसें मेरी सक्ति पाइकरी तुमारी चेष्टा होतीहे ॥ अज्ञान करीकें तुम जड जीवतें रहतेहो ॥ ज्ञानकरीकें लीन होजा ते हो ॥ जेसें सूर्यके तेज करी बर्फका पुतला गिल जाताहे ॥ तातें हे चित्त अब में निश्चय कीयाहे जो तुं मृतकरूप मूढहे परमार्थतें न तुं हे न इंद्रियांहे ॥ जेसें इंद्र जालके बाजीके पदा र्थ भासतेहे सो सब मिथ्याहे ॥ केवल विज्ञानस्वरूप में अपणे आपविषे स्थित निरामय अजर अमर नित्य सुद्ध बोध परमानंदरूप हों ॥ अरु मेंही नानारूप होकरी भासताहों परंतु कदा चित् द्वैतभावकों प्राप्त न हुआ सदा अपणे आपविषे स्थित हों ॥ जेसें जलविषे तरंग बुदबुदे दृष्ट आवतेहे सो जलरूपहे तेसें सर्व पदार्थ मेरेविषे भासतेहे सो इतर कछु नही ॥ हे चित्त तुं भी चिन्मात्र भावकों प्राप्त हुआ ॥ जब तुं चिन्मात्र भावकों प्राप्त होवेगा ॥ तब तेरा भिन्नभाव कछु न रहेगा अरु सोकतें रहित होवेगा ॥ आत्म तत्व सर्व भावविषे स्थित सर्वरूपहे ॥ जब ति सकों तुं प्राप्त होवेगा तब सब कछु तुजकों प्राप्त होवेगा ॥ न कोउ देहहे नं जगत हे सर्व ब्रह्महीहे ॥ ब्रह्मही एसें भासताहे वास्तव अहं त्वं कल्पना कोउ नही ॥ हे चित्त जो आत्मा चैतन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूपहे सो सर्वगत आत्माहे ॥ आत्मातें इतर कछु नही ॥ तोभी तुझकों संताप नही ॥ अरु जो अनात्मा जड असतरूपहे तोभी तुं न रहा ॥ जो कछु प्रच्छन्न जेसा तुं बणताहे सो मिथ्या भ्रमहे ॥ आत्मतत्व सर्व व्यापकरूपहे द्वैत कछु नही ॥ सर्व उहीहे तो भिन्न अहं त्वंकी कल्पना केसें होवे ॥ अरु असतसों कार्यकी सिद्धता कछु नही होती॥सशेके सींग जेसें असतहे॥ तिनसों कछु मारणेका कार्य सिद्ध नही होता तेसें तुम असत हो॥ तुमसों कर्तृत्व भोक्तृत्व कार्य केसें होवे ॥ अरु जो तुं कहे में सत असत चैतन जडके मध्यभाव हों॥ जेसें तम अरु प्रकासका मध्यभाव छायाहे तेसें सूर्य रूप परमात्मा निरंजनके विद्यमान मंदभावी छाया केसें रहतीहे॥तातें कर्तृत्व भोक्तृत्व तुजकों नही होता काहेतें जो तुं जडहे जेसें दात्री पडी होवे तीसको पास काटणेका कार्य आपतें नही होता ॥ जब पुरुसकी हाथसक्ति होती हे तब कार्य होता हे ॥ तेसें तुमसों कार्य कछु नही होता ॥ जब आत्मसत्ता तुमसों मिलती हे तब तुमसों कार्य होता हे ॥ तुम क्यों अहंकार करीकें वृथा तपायमान होतेहो ॥अरु हे चित्त जो तुं कहे ईश्वरका उपकारहे ॥ तो इश्वर जो परमात्माहे तीसकों करणे अकरणे विषे कछु प्रयोजन नही अरु सबका कर्ताभी उहीहे अरु अकर्ता हे॥ जेसें आकास पोलकरीकें सबकों दृढता देणे हारा हे परंतु स्पर्श कीसी साथ नही करता तेसेंपरमात्मा सबकों सत्ता देणेहारा हे अरु अलेप हे॥ हेमुर्ख मन तुं क्यों भोगोंकी वांछा करता हे॥तुंतो जड असतरूप हे अरु देहभी जड असतरूप हे भोग केसें भोगेंगे॥अरु जो परमात्माके निमित्त इच्छा करता हे तो परमात्मा सदा तृप्त हे॥अरु इच्छातें रहित हे सर्वविषे उही पुर्न हे ॥ दुसरे तें रहित एक अद्वैत प्रकासरूप अपणे आपविषे स्थित हे॥ तुजकों कीसकी चिंता हे तातें वृथा कल्पनाकों त्यागकरी आत्मपदविषे स्थित होउ ॥ जहां सर्व क्लेस सांत होजाता हे अरु जो तुं कहे जो परमात्मा साथ मेरा कर्तृत्व भोक्तृत्वका सबंध हे तो नही बणता ॥ जेसें फुल अरु पथ्थरका संबंध नहीं होता तेसें परमात्मा साथ तेरा संबंध नही होता ॥ समान अधिकरण द्रव्यका संबंध होता हे जेसें जल मृत्तिकाका संबंध होता हे ॥ जेसें ओषधीविषे चंद्रमाकी सत्ता प्राप्त होती हे ॥ जेसें सूर्यकी तपतकरी सीला तपी जाती हे ॥ जेसें बीज अंकुरका संबंध होता हे ॥ जेसें पिता अरु पुत्रका संबंध होता हे ॥ सो द्रव्य अरु गुणका संबंध होता हे ॥ जो आकार सहित वस्तु हे तीसका केसें द्रु संबंध बणता हे अरु जो निराकार निर्गुण वस्तु हे तीसका केसें संबंध होवे ॥ समानकरी संबंध नही ॥ जो परमात्मा चैतन हे तुं जड हे ॥ उह प्रकासरूप हे तुं तमरूप हे ॥ उह सतरूप हे तुं असतरूप हे ॥ संबंध तो कीसी साथ नही बनता तुं क्यों वृथा जलता हे ॥ तुं मननरूप हे परमात्मा सर्व कलनातें रहित हे ॥ तेजकी एकता तेजकरी होती हे ॥ अरु जलकी एकता जलसाथ होती हे तुं कलंकरूप हे ॥ परमात्मा निष्कलंकरूप हे तेरी एकता तीस साथ केसें होवे ॥ जीसका अंग कछु होता हे तीसका संबंधभी होता हे सो संबंध तीन प्रकारका हे ॥ सम अर्ध सम अरु विलक्षण इनका संबंध होता हे ॥ जेसें जल साथ जलकी अेकता होती हे तेज साथ तेजकी एकता होती हे ॥ यह सम हे जो तेरा आत्मासाथ सम संबंध नही ॥ एक अर्ध सम हे ॥ जेसें स्त्री अरु पुरुषके अंग समान होते हे परंतु विलक्षणरूप हे सो अर्ध समभी तेरा अरु आत्माका संबंध नही ॥ अरु कछुक अन्यकी न्यांइभी तेरा संबंध नही ॥ जेसें जल अरु दुधका संबंध होता हे तेसें तेराभी नही ॥ अरु अत्यंत जो विलक्षण हे तीनकी न्यांइभी तेरा नही ॥ जेसें काष्ट अरु लाखका अरु पुरुष अरु हाथीघोडा आदिक संबंध नही अरु आधार आधेयवत्भी तेरा संबंध नही ॥ जेसें बीज अंकुर पिता पुत्र आदिक जो संबंध हे तेसेंभी तेरा अरु आत्माका संबंध कोउ नही ॥ काहेतें जो संबंध तीसका हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ता हे जीस साथ कछुभी अंग मीलता हे ॥ जीसका अंग कोउ नहीं मीलता परस्पर विरोध होवै तीसका संबंध कैसें कहीए ॥ जेसें कहीए ससके सिंग उपर अमृतका चंद्रमा बेठा हे तम अरु प्रकास एकठे हे जेसें यह नही बणता तेसें आत्मसाथ देह मन इंद्रियोंका संबंध नही बणता ॥ काहेतें जो आत्मा सर्व कलनातें अतीत नित्य शुद्ध अद्वैत प्रकासरूप हे ॥ अरु मनादिक जड असत मिथ्या तमरूप हे इनका संबंध नही ॥ जो परस्पर विरोध होवे तीनका संबंध केसें होवे ॥ तुम तो परमात्माके अज्ञानकरी मन इंद्रियां देहादिक उदे हुएहो ॥ आत्माके ज्ञानकरी अभाव होजातें हे ॥ बहुरी संबंध केसें होवे ॥ हे मन जेते कछु जगत् हे सो सब ब्रह्मस्वरूप हे ॥ तीसतें इतर द्वैत कछु नही अहं त्वंकी कल्पना कोउ नही ॥ ब्रह्मसत्ता अपणें आपविषे स्थित हे ॥ सब कलना तेरेविषे थी ॥ अरु तुं तबलग था जबलग स्वरूपका अज्ञान था ॥ जब स्वरूपका ज्ञान भया अरु अज्ञान नष्ट भया तब तुं कहां हे ॥ जेसें रात्र के अभावतें निशाचरोंका अभाव होजाता हे तेसें अज्ञानके नास हुवे तेरा अभाव होजाता हे ॥ इतिश्री यो० उप० प्र० वितवोपाख्याने चित्तानुसासन नाम सप्तसप्ततितमःसर्गः ॥ ७७ ॥

वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार वीतव मुनीश्वर वंध्याचल पर्वतकी कंदराविषे विचार करतभया ॥ तीछन बुद्धि साथ ॥ ओरभी जो कछु कहाहे सो सुण ॥ अनात्मा जो देह इंद्रियां मनादिक सो संकल्पतें उपजेहे ॥ जब ज्ञान उदे हुआ तब इनका अभाव होजाताहे ॥ हे मन जेसें सूर्यके उदे हुए तम नष्ट होजाताहे ॥ तेसें नित्य उदितरूप परमात्मा अनुभव स्वरूपके उदे हुए तुमारा अभाव होजाताहे ॥ वासना करीकें तीसका आवरन था जब वासनाका अभाव होजाताहे तब आवरणकाभी अभाव होजाताहे ॥ जेसें मेघके नष्ट हुए सूर्य प्रकासताहे तेसें वासनाके अभाव हुए आत्मातत्व प्रकासताहे ॥ वासनाका मूल अज्ञान हे जब अज्ञान सहित वासना नष्ट भइ तब चिदानंद ब्रह्म प्रकासताहे वासनाहीका नाम बंधहे ॥ वासनाके निवृत्तिका नाम मोक्षहे ॥ जब वासनारूपी जेवरी काटेगा तब परमात्माका साक्षात्कार होवेगा॥जेसें प्रकासबिना अंधकार नास नही होता तेसें मन इंद्रियां देहादिक आत्माविचारविना नास नही होता ॥ जब विचार करीकें आत्मपद प्राप्त होवे तब मन सहित षट्इंद्रियांका अभाव होजाताहे॥ अर्थ यह जो इनका अभिमान नष्ट होताहे॥ इनके धर्म अपनेविषे नही भासते ॥ जबलग देह इंद्रियां साथ आवर्याहे तबलग आत्मपदकों पाइ नही सकता तातें आत्मपद पावणेका कल्याणके निमित्त अभ्यास कर जबलग मन इंद्रियांके गुणो साथ आपकों मील्या जाणता हे तबलग इसकों अपणे स्वरूपकी विभुता अरु सिद्धता नही भासती ॥ जब आत्माका साक्षात्कार होजावेगा तब राग द्वेषादिविकार नष्ट होवेगा ॥ जेसें सूर्यके उदे हुए निसाचरोंका अभाव होजाताहे ॥ तेसें आत्माके साक्षात्कार हुए विकारोंका अभाव होताहे ॥ जीसके देखेतें इनका अभाव होजाताहे तीनका आत्मा साथ संबंध केसेंहोवे जेसें प्रकास अरु तमका संबंध नही होता तेसें सत असतका संबंध नही होता ॥ जेसें जीवते अरु मृतकका संबंध नही होता तेसें आत्मा अनात्माका संबंध नही होता ॥ आत्मा सर्व कल्पनातें रहित हे ॥ मन आदिक सर्व कल्पनारूप हे ॥ कहां यह मूक जड अनात्मारूप अरु कहां नित्य चैतन प्रकास निराकार आत्मरूप ॥ इनका परस्पर विरोधरूप हे ॥ संबंध केसें कहीए ॥ यह तो निश्चयकरी अनर्थका कारण हे ॥ जबलग इनका अभिमान हे तबलग जगत् दुःखरूप हे जब इनका विजोग होवे तब जगत् परमात्मारूप होता हे ॥ जबलग इसकों आत्माका अज्ञान हे ॥ तबलग आपकों इनमें मीला देखता हे दुःख पावता हे ॥ जब आत्माका ज्ञान हुआ तब अपणे साथ इनका संजोग नही देखता हे ॥ अरु यह में निश्चय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करी जाण्या हे ॥ जो इंद्रियां अरु मनके संजोगतें जगत् भासता हे जब इंद्रियोंका याम नष्ट होजाता हें तब जगत् परमात्मारूप होजाता हे ॥ अरु में जो आत्मा अरु मन इंद्रियांकों एकठा जाणताथा सो प्रमादरूपी मद्यकेपान करी मत्त हुआ मनकरी जाणता था ॥ अब आत्मविचार करीकें मन नष्ट भया तब सुखी भया ॥ जो विषकों पानकरी मूर्छित होवे सो तो बणता हे परंतु पान कीयेविना मूर्छित होवे सो आश्चर्य हे ॥ तातें जब अनात्माका इस साथ संजोग होता तब सुख दुःख करीकें राग द्वेषवान होणाभी बणता हे ॥ आत्मा तो सुख दुःखका साक्षीभूत हे ॥ सुख दुःखका संजोगही जीस साथ नही अरु राग द्वेषकरी जलता हे तो महामूर्खता हे ॥ आत्मा तो सुख दुःखका साक्षीभूत हे ॥ जेसा तीसके आगें अभ्यास होता हे तेसाही भासता हे ॥ कदाचित विपर्यय भावकों प्राप्त नही होता ॥ सुख दुःखविषे मूर्खमनादिक राग द्वेषवान होता हे ॥ आत्मा तो सदा साक्षीभूत क्षीणवृत्ति हें ॥ तीससाथ इंद्रियांका संजोग केसें होवे ॥ जो संजोगका अभावसिद्ध हुआ तो आत्माविषे कर्तृत्व भोक्तृत्व केसें कहीए ॥ जहां चित्तकलना होती हे ॥ तहां कर्तृत्व भोक्तृत्व होता हे ॥ जहां चित्त कलनाका अभाव हे तहां कर्तृत्व भोक्तृत्वका अभाव हे ॥ एसा निष्कलंक आत्मा तत्व में हों ॥ जो न कर्त्ता हों न भोक्ता हों ॥ न मेरेविषे बंधहे न मोक्ष हे ॥ न हंता हे न अहंता हे ॥ में सर्वात्मा अलेपरूप हों ॥ हे मन तुंभी में हों अरु पृथ्वी अप तेज वायु आकास पांचों तत्व में हों ॥ इस प्रकार निर्नय करी जीसनें धारा हे सो मोहकों प्राप्त नही होता ॥ जो अहं अभिमान करनेवाला आत्मातें भिन्न आपकों जाणता हे तब दुखी होता हे ॥ जब अपणें स्वभावविषे स्थित होता हे तब परमसुखी होता हे ॥ तातें जीसकों कल्याणकी इच्छा होवे तीसकों एक आत्म परमात्मपरायण होणा जोग हे ॥ जब स्वरूपका त्याग करी संकल्पके उर धावता हे ॥ तब दुःखोकें समूहकों प्राप्त होता हे ॥ हे चित्त जो तुं अपणेविषे कर्तृत्व देखता था ॥ सो तुं इंद्रियां सहित जडरूप पथ्थरके समान हे जेसें आकासविषे पवन नही लगता तेसें तुमसों कर्तृत्व नही होता ॥ जब इसकों स्वरूपका प्रमाद होता हे ॥ तब चित्त आदिक साथ आपकों मीला जाणता हे ॥ अरु चित्तादिक आत्माकी सत्ता पाइकरी चैतन होता हे ॥ जेसें अग्निकी सत्ता पाइकरी लोह जलावणेकों समर्थ होता हे ॥ तेसें तुम आत्माकी सत्ता पाइकरी कर्तृत्व भोक्तृत्वविषे समर्थ होते हो ॥ जब आत्मविचार करीकें स्वरूपका साक्षात्कार होता हे अरु अज्ञान वृत्ति निवृत्त होजाती हे ॥ मनादिकका विजोग होता हे सर्व कलनातें रहित हुआ तब केवल मोक्षरूप आत्मा होता हे ॥ कर्तृत्व भोक्तृत्वका अभाव होजाता हे ॥ जेसें आकासविषे लालीका अभाव हे तेसें आत्माविषे कर्तृत्वका अभाव हे ॥ सब जगत् आत्मा स्वरूप भासता हे ॥ जेसें समुद्र तरंग आदिक नाना प्रकार होता हे सो सब जलरूप हे इतर कछु नही ॥ तेसें सर्व जगत् आत्मरूप हे आत्मातें इतर कछु नही ॥ सो सच्चिदानंद आत्मा में सदा अपणे आपविषे स्थित हों ॥ ओर द्वैत कलना मेरेविषे कोउ नही ॥ जेसें समुद्र उष्णतातें रहित हे तेसें परमात्मा सर्व कलनातें रहित हे ॥ जेसें आकास विषे बन नही होता ॥ तेसें परमात्मा विषे कलना नही होती ॥ संवेदनतें रहित संवितमात्र सर्वात्मा हे जब तीसका साक्षात्कार होता हे तब अहं त्वं आदिक कलनाका अभाव होजाता हे ॥ सो अनादि अरूप सर्वगत हे ॥ सदा अपणे आपविषे स्थित हे ॥ एसा जो अद्वैत तत्व हे तीसकों द्वैत कलना आरोपणेकों समर्थ कोन होता हे ॥ सो एसा कोन हे जो आकासविषे ऋग्वेदकों लिखे ॥ नित्यउद्योत सर्वका सार अद्वैत आत्मा हे ॥ तीसविषे द्वैत कलनाका अभाव हे ॥ सर्वविषे पूर्न निर्मल नित आनंदरूप हे ॥ एसा आत्माकों अब में प्राप्त हुआ हों ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जगत्का सुख दुःख अब नष्ट भया हे ॥ सम सांतरूप हुआ हौं ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे वीतवोपाख्याने अनुशासना योगोपदेशो नाम अष्टसप्ततितमः सर्गः ॥ ७८ ॥

बसिष्ठोवाच ॥ हे रामजो इस प्रकार वीतव मुनी श्रेष्ठ विचार करता भया ॥ बहुरी जो कछु निर्मल बुद्धि साथ वीचारणे लगा सो सुण ॥ हे इंद्रियरूप मन तुम क्यौं अपने अर्थों की उर धावतेहो ॥ तुमकों विषयोंकरी सांति प्राप्त नही होती ॥ जेसें मृग मरुस्थलको नदी देखी करी दौडताहे अरु सांतिवान नही होता ॥ तातें तुम विषयोंकी उर तृष्णाकरी सांतिवान न होहुगे ॥ ॥ इनकी इच्छा त्यागकरी जो सत्य हे परमात्म तत्व अविनासी सर्व अवस्थाविषे एकरस हे तीसकों ग्रहण करो ॥ तब सर्व दुःख तुमारे मीट जावेंगे ॥ तुमारे साथ में मील्या था तब मेंभी दुःख पाया था ॥ तुम अज्ञान करीकें उत्पत्ति भएहो ॥ जो तुमारे साथ मीलता हे तीसकोंभी दुःख प्राप्त होताहे ॥ जेसें तपी हुइ लाख जीसके सरीरसाथ स्पर्श क रति हे तीसकों जलावती हे ॥ तेसें जीसकों तुमारा संग भयाहे सो दुःखकों प्राप्त होताहे ॥ हे मन यह जीव जो मरता हे सो कालके मुखमें जाय प्रवेस करता हे सो तुमारे संगकरी जा य पडताहे ॥ जेसें नदी जलसहित होतीहे तब समुद्रकी उर चली जातीहे ॥ जलतें रहित होवे तो क्यों जावे तेसें तुमारे संग करी कालके मुखमें जाय पडताहे ॥ तुमारा संग न होवे तो काहेकों पडे ॥ जेसें मेघ कुहीड करी सूर्यकों आछादी लेताहे तेसें मनरूपी मेघ तुं इच्छारूपी कुहीड करी आत्मारूपी सूर्यकों आछादी लेताहे ॥ अरु परंपरा दुःखोंकी वर्षा करनेहारा हे ॥ हे मन तेरेविषे चिंता उठतीहे ॥ सो तुं मर्कटको न्यांइहे ॥ जेसें मर्कट वृच्छकों ठहरणे नहीं देता पडा हिलावता हे तेसें चित्त देहकों ठहरणे नही देता ॥ अरु चित्तरूपी पंखेरू हे लो भ लज्जा तीसकी दो पांख हे अरु राग द्वेषरूपी चुंच हे ॥ तीसकरी सरीररूपी वृछपर बेठी सुभ गुणोंकों काटी काटी खाताहे ॥ अरु चित्तरूपी कुकर महा नीचहे ॥ भोग भावनारू पी जो महा अपवित्र पदार्थहे तीनकों रिदेरूपी स्थानविषे एकठा करता हे ॥ एसी चेष्टातें कदाचित् रहित नही होता ॥ अरु चित्तरूपी उलूकहे ॥ अज्ञानरूपी रात्रविषे आई वीचर ताहे ॥ चेष्टाकरी प्रसन्न होताहे अरु सब्द करता हे ॥ जेसें मसाणविषे वेताल सब्द करताहे जब अज्ञानरूपी रात्र नष्ट होवे तब चित्तरूपी उलुकका अभाव होवे ॥ अरु संपदा आनि प्रवेस करे जेसें सूर्यके उदे हुए सूर्यमुखी कमल उदे होताहे ॥ तेसें संपदा प्रफुल्लित होतीहे ॥ जहां मोहरूपी कुहीड अरु इच्छारूपी धुली रिदेरूपी आकाससों निवृत्त होतीहे तब निर्मल आकास प्रगट होताहे ॥ हे चित्त जबलग तुं नष्ट नही होता तबलग सांति नही होती ॥ अरु जेसें अकस्मात् मेघ आवे अरु गडेकी वर्षाकरे तीसकरी मार्ग चलणेवाले पेंदोईकष्ट पावते हे ॥ तेसें स्वस्थ बेठे हुए जो चिंता आनी प्राप्त होतीहे सो तेरे संजोग करी होतीहे ॥ संकल्प विकल्परूपी गडेकी वर्षाकरी सत मार्ग चलणेवाला दुःख पावताहे ॥ अरु जहां चित्त नष्ट होताहे तहां सर्व आनंद होताहे ॥ सीतलता अरु मित्रता करी पावन होताहे ॥ जेसें सरत्कालका आकास निर्मल होताहे मेघके नष्ट हुए सूर्य प्रकासताहे तेसें अज्ञानके नष्ट हुए आत्मा प्रकासता हे ॥ तब प्रसन्नता, गंभीरता, महत्वता अरु समता होतीहे ॥ जेसें वायु अरु मंद्राचल पर्वततें रहित क्षीर समुद्र सांतिवान भया अरु जेसें पूर्नमासीका चंद्रमा सोभता हे तेसें अज्ञानके नास हुए आत्मानंद पाईकरी यह सोभताहे ॥ हे चित्त यह स्थावर जंगम जगत् संवितरूप आकासविषे हे ॥ तीस महत् ब्रह्मकों तुंभी प्राप्त होउ ॥ जो पुरुष आ शारूपी फांसीकों तोडीकरी आत्मपदविषे प्राप्त हुआ हे अरु संसारका सद्भाव निवृत्त कीयाहे सो जन्म मरनके बंधनमें नही पडता ॥ जेसें जल्या पत्र बहुरी हरा नही होता ॥ तेसें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चित्त नष्ट हुआ जन्म मरणकों नही पावता ॥ हे चित्त सर्वकों भच्छन करनेहारा जो तुं संसारकों सत मानीकरी तीसकी उर धावेगा तब तेरा कल्याण न होवेगा ॥ अरु जो आत्मा की उर आवेगा तब तेरा परम कल्याण होवेगा ॥ जब तुं अपणा अभावकरी आत्मपदविषे स्थित होवेगा तब कल्याणरूप होवेगा ॥ अरु जब तुं अपणा सदभाव करेगा जो आकार कों न त्यागेगा तब दुःखी होवेगा ॥ जो तेरा जीवणाहे सो मृत्यु समानहे ॥ अरु जो मृत्युहे सो जीवणे समान हे ॥ दोनों पक्षविषे जो तेरी इच्छाहे सो अंगीकार कर ॥ जो तुं अबही आपकों आत्मपदविषे निर्वाण करेगा तब परम पदकों प्राप्त होवेगा ॥ अरु परम सुखी होवेगा ॥ अरु जो न करेगा तो परम दुःखी होवेगा ॥ जो आत्मपदका त्याग करेगा सो मूढ हे ॥ तेरा निर्वाण होणा आत्मपदविषे जीवणे निमित्त हे ॥ अरु आत्मातें इतर जो तुं जीवणेकी इच्छा करताहे सो तेरा जीवणा मिथ्या हे अर्थ यह जो तुं आदिभी मिथ्या हे अवभी विचारविना भममात्र हे ॥ विचार कीएतें नास होजावेगा ॥ जेसें सूर्यके प्रकासविना अंधकार होताहे प्रकास करी नास होजाताहे ॥ तेसें विचारविना चित्तहे ॥ विचारकरी नास होजा ताहे ॥ एता काल में अविवेक करी नास होजाता था जेसें बालकोंकों अपणे पछावेविषे वेताल कल्पना होतीहे विचारविना भयकों पावताहे विचार कीएतें निर्भय होताहे ॥ तेसें अब में तेरे संगतें छुटा अपणे पूर्व स्वरूपकों प्राप्त हुआ हों ॥ विवेक करी तेरा अभाव हुआहे ॥ तातें विवेककों नमस्कारहे ॥ हे चित्त अविवेक करी तुं मेरा मित्र था अब बोधकरीकें तेरा चित्त भाव नष्ट होगया तुं परमेस्वररूप हे ॥ अब वासना नष्ट भइ हे ॥ आगें तेरेविषे नाना प्रकारकी वासना थी तिस करी तुं मलीन दुःखरूप था अब वासना नष्ट भइहे ॥ तो परमेस्व रूप भयाहे ॥ चित्त स्वभाव तेरेविषे अज्ञान करी उपजा दुःखोंका कारण था ॥ सो विवेक करी लीन भयाहे ॥ जेसें रात्रके पदार्थ सूर्यके उदे हुए लीन हो जाताहे तेसें विवेक करी चित्त भाव नष्ट भयाहे ॥ सो सिद्धांतका कारणहे ॥ तेरे संग करी में तुच्छ जेसा होगया था ॥ अब शास्त्रोंकी जुक्ति करी निर्णय कियाहे जो न तुं आगें था न अब हे न बहुरी होवेगा ॥ जबलग में आपकों जाणा न था तबलग तेरा सदभावथा ॥ अब में आपकों जाण्याहे अरु अपणें आपविषे स्थित भया हों॥अब में परम निर्वाण सांतरूप हों॥सब ताप मेरे नष्ट भयाहे नित सुद्ध विदानंद परब्रह्म स्वरूप हों॥ जगत्की सत्य असत्य कलना मेरी नष्ट भइहे ॥काहेतें जो कलना सब चित्तविषे थी जब चित्त निर्वाण हो गया तब कलना कहां रही ॥ में केवल सुद्ध आत्मा हों प्रतियोगी कोउ नही न विवच्छेद हे ॥ काहेतें जो दुसरा कोउ नही ॥ चित्तकी चेतना फुरतिथी सो निर्वाण होगइ हे ॥ अब में स्वस्थ भया हों जेसें तरंगोंतें रहित समुद्र अचल हो ताहे ॥ तेसें में सर्व कलनातें रहित वितराग हों ॥ संवेदनतें रहित समसत्तामात्र अपणे आपविषे स्थित हों ॥ इतिश्री यो०उप० प्र० वीतवोपाख्याने चित्तोपदेसो नाम एकोनाशीतितमःसर्गः॥७९॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! इसप्रकार वीतवने निर्वासनिक हो करी निर्नय किया ॥ विंध्याचल पर्वतकी कंदराविषे समाधि करता भया॥ आकासवत् निर्मल चित्त इंद्रियांकी वृत्ति वाह्यतें खेंची करी अचल करत भया ॥ सिर अरु ग्रीवाकों सम करीकें चित्तकी वृत्ति अनंत आत्मा साक्षी भूतविषे स्थित करी ॥ जेसें लकडीयांकों जलाइ करी अग्निकी ज्वाला सांत हो जातीहे तेसें प्राण अरु मनकी वृत्तिका स्पंद मीटगया ॥ जेसें सीलाविषे उकरी पुतली होतीहे जेसें मूर्तिकी लिखी पुतली होतीहे तेसें स्थित होगया॥ तिनसो वर्ष समाधिविषे रहा ॥ जेसें एक घडी होतीहे तेसें समाधि लगे हुए विती॰त होगया ॥ मेघोंकी वर्षा सीर उपर होवे अरु मंडलेस्वर आनी सीकार खेले अरु बडे शब्द होवे रीछ बानरोंके शब्द होवे सींगके हाथीयोंके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शब्द होवे ॥ वनकों अग्नि लागे ॥ गडेकी वर्षा होवे वायु चले धूप पडे तोभी समाधितें न जागे ॥ जेसें पहाडविषे सीला दबी होतीहे तेसें शरीर दब्या गया ॥ जब तीनसे वर्ष वितीत भ
या तब चित्त आनी फुर्या ॥ जो सरीर मेरे साथ हे परंतु प्राण नही फुरे तब चित्तके फुरनेविषे आपकों कैलास पर्वत उपर देखत भया ॥ कदंब वृच्छके नीचे देखत भया सो वर्ष पर्यंत
मौन होकरी जीवन्मुक्त निर्मल आत्माकरी विचरा ॥ बहुरी विद्याधरोंविषे विद्याधर होकरी विचरा सो वर्ष पर्यंत ॥ तीसके अनंतर ओर पंच जुग होकरी इंद्र हुआ ॥ देवता नमस्कार क
रेहे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन देस काल अरु मन आदिक प्रतिभा अनियत अनियम उसकों केसें भास्या ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी चित्त सर्व आत्मारूप हे ॥ जेसा जेसा तिस
विषे फुरणा होताहे तेसा हो भासताहे ॥ जेसें जेसें देस कालका फुरणा होताहे तेसेंही अनुभव होताहे ॥ हे रामजी जेता कछु प्रपंच हे सो मनोमात्र हे ॥ जेसा फुरणा तीव्र होताहे ॥
तेसें अनुभव सत्ताविषे भासताहे ॥ तहां स्थित होताहे जब ओर भमविषे गया तो नियमके जेसा होताजाताहे तेसेंही जोअज्ञानी होताहे तीसकों वासनाकरी नाना प्रकारका जगत
भासताहे अरु जो ज्ञानवान होताहे सो सब आत्माकों देखताहे तीसका फुरणाभी अफुरणाहे ॥ अरु वासनाभी अवासना हे ॥ वीतव मुनीश्वर जो देखता भया सो चित्तके फुर्णेकरी दे
खताभया ॥ परंतु स्वस्थरूप था उसकी वासनाभी अवासना थी जेसें भुना बीज नही उगता तेसें वासना अवासना थी भ्रांतिका कारण न था ॥ कल्प पर्यंत चंद्रधारी सदासिवका गण
होकरी विचरा ॥ समस्तविद्याका ज्ञाता सर्वज्ञ त्रिकालदर्शी जीवन्मुक्त होकरी वीचर्या ॥ हे रामजी जेसा कीसीका संस्कार दृढ होताहे तेसा तीसकों अनुभव होताहे ॥ जेसें वीतव चित्त
कों स्पंद करके जीवन्मुक्तका अनुभव करत भया ॥ रामोवाच ॥ हे भगवान जो एसें हे तो जीवन्मुक्तके मत विषे बंध मोक्ष हुआ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जीनन्मुक्तकों सब
ब्रह्मस्वरूप भासताहे ॥ बंध मोक्ष अवस्था तीसविषे कहां हे ॥ ज्ञानमात्र आकास विषे जेसा फुरणा होताहे तेसा हो भासताहे ॥ हे अंग यह सब चिन्मात्र स्वरूप हे ॥ अरु जगत जो ना
ना प्रकार भासताहे ॥ सो मन करी भासताहे ॥ वास्तवतें न जगतहे न अजगत हे ॥ केवल ब्रह्मसत्ता स्थितहे ॥ जगतके भूत भविष्य केवल ब्रह्म सत्ता भासतीहे ॥ चिन्मात्रतें इतर जो क
छु जगत भासताहे सो मनके फुरणे करी भासताहे ॥ जीनकों एसा ज्ञान नही तिनकों जगत वज्रसारतें दृढ हो भासताहे ॥ अरु ज्ञानवानकों आकाशवत भासताहे ॥ हे रामजी ! अज्ञान
करीकें मन उपज्याहे तिस करी संपूर्न जगत हुआहे वास्तवतें ओर कछु नही ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग हुल्लास होताहे तेसें चिदाकासविषे आकार भासतेहे जब चित्त अचित्त हो जाताहे
तब द्वैत कछु नही भासता ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपसम प्रकरणे वीतव मनोयज्ञ वर्नंनं नाम अशीतितमः सर्गः ॥ ८० ॥ ॥ ७ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् वीतव मुनीश्वरका जो सरीर विंध्याचल पर्वतविषे फस्याथा बहुरी तीसकी क्या अवस्था भइ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी तीसके अनंतर आत्मवेत्ता वीतव
मुनीस्वर जो तेजवान था ॥ सो एक कालविषे सरीर गणोंकों मनकरी विचारत भया ॥ केइ नष्ट होगए हे केइ अनष्ट हे ॥ तीन अनष्टोविषे पृथ्वीके मध्य जो स्थित था तीसकों देखत
भया॥ जो कंदराविषे धुरी पडीथी वर्षाकरीकें क्षुभी गयाहे ॥ चीकडविषे फस्या उपर तृणजाल जमी गयाहे तीसकों देखीकरी कहणे लागा॥ जो इसविषे प्रवेसकरों॥ बहुरी विचार कीया
जो यह तो जड गुंग हे अरु फस्या हुआ हे ॥ इसके नीकासणेकों में समर्थ नही ॥ तातें सूर्य मंडलकों जाउ जो सूर्यका सारथी अरुणपंगु हे सो इसकों नीकासेगा ॥ अथवा इसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साथ मेरा क्या प्रयोजन हे ॥ यह नास होजावे अथवा रहे ॥ एता जतन में कीसनिमित्त करों ॥ में अपणे निर्गुण स्वरूपविषे स्थित होउ ॥ देहसाथ मेरा क्या हे ॥ इस प्रकार वीतव तू ष्णी होगया हे ॥ एक छीनके अनंतर बहुरी चितवनी भइ जो पृथ्वीविषे देहकरी न कछु त्यागणे जोग हे न कछु ग्रहण करणे जोग हे ॥ तातें देहका त्यागणा रखणा समान हे ॥ यह सरीर कीस निमित्त दव्या रहे ॥ अरु कछुक काल इसका प्रारब्धवेग हे आकासविषे सूर्य स्थित हे ॥ तीसविषे प्रवेस करों ॥ जेसें आदर्सविषे प्रतिबिंब प्रवेस करता हे तेसें करों ॥ अरु सरीरकों सूर्यके सारथि करी नीकासों ॥ हे रामजी एसें विचार करी मुनीस्वर पुर्यष्टकारूपसों आकास मार्ग चडों ॥ सूर्यके अंतर वायुरूप प्रणामकरीकें प्रवेस कीया ॥ जेसें सस्पिंडविषे अग्नि प्रवेस करति हें ॥ तब सूर्य जानत भया जो वीतव मुनीस्वरनें प्रवेस कीया हे सो कीस निमित्त आया हे सर्वज्ञ था तीसकरी जानत भया जो पृथ्वीविषे इसका सरीर चिकड अरु तृणों करी अछाद्या हुआ हे ॥ तीसके निकासणे निमित्त आया हे एसें विचारी अपणे सारथीकों कहत भया ॥ हे सारथी वंध्याचल पर्वतकी कंदराविषे वीतव मुनीस्वरका सरीर दव्या पडा हे तीसकों तु जाइ करी नीकासी देही ॥ तव अरुण नामक जो सार्थि जीसका सरीर हस्तिवत् हे सो विंध्याचल पर्वतविषे आइ करीकें नखों साथ सरीरकों नीकासत भया ॥ सो केसें नख जीन साथ पहाड उखारी दारे हे ॥ उन नखों साथ धराकोंटरविषे गाडे हुए सरीरकों काढत भया ॥ जेसें समुद्रके तीर धीहका तंतुकाडी पाइतें हें ॥ तेसें पर्वतकी कंदरातें सरीरकों नीकासी डारा ॥ तब मुनीस्वरनें पूर्यष्टका करीके सरीरविषे प्रवेस कीया ॥ जेसें पंछी आकास मार्गतें उडता आलयविषे आइ प्रवेस करे तेसें सरीरविषे आइ प्रवेस कीया ॥ अरु सावधान होकरी अरुणकों नमस्कार करत भया ॥ अरुण वीतवकों नमस्कार करत भया ॥ परस्पर नमस्कार करीकें अपणे कार्यकी उर हुए ॥ अरुण आकासमार्गकों गया अरु मुनीस्वर तलावकी उर गया ॥ चीकडसाथ भर्‍या हुआ सरीर सो मुनीश्वर तीस तलावविषे डुबकी मारतभया ॥ जेसें हस्ति मल धोता हे तेसें स्नानकरीकें संध्यादिक कर्म करतभया ॥ सूर्य भगवानका पुजन कीया जेसें प्रथम तपकरी सरीर सोभता था तेसें भूखित किया ॥ मैत्री समता सत मुदिता आदिक गुणोंकरी संपन भया ब्रह्म लछमी करी सोभत भया ॥ अरु सबके संगतें रहित भ या ॥ जो इन गुणोंकोंभी स्वरूपविषे स्पर्श न करे आपकों सुद्ध स्वरूप जाणे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपसम प्रकरणे वीतव समाधि जोगोपदेसो नाम एकाशीतितमःसर्गः ॥ ८१ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस प्रकार जव केतेक दिन वितीत भए तव समाधिके निमित्त मुनीस्वरका मन उदे हुआ ॥ तब जाइ करी वंध्याचल पर्वतकी कंदराविषे स्थित भया ॥ पूर्व जो विचार अभ्यास किया था अरु परावर परमात्मा दृष्टि भइ थी तिस करी बहुरी चित्तकों कहत भया ॥ हे चित्त इंद्रियों में तुमारा पूर्व ही प्रहार करी छोड्याहे अव तुमारे अचित्त विषे अनर्थ अर्थ कोउ नही ॥ काहेते जो अस्ति नास्तिकलना मेरी नष्ट भइहे ॥ अस्ति नास्तिके पाछें जो सेष रहताहे तिसविषे स्थित हों जेसें पहाडका सींग अचल होताहे तेसें अचल हों अरु सदा उदेरूप असतकी न्यांइ स्थित हों ॥ उदे स्वरूप इस करी जो सदा ज्ञानस्वरूप प्रकासवान हों ॥ अरु असतकी न्यांइ इस प्रकार जो सदा अक्षयरूप हों ॥ अरु असतरूप उदेकी न्याइ स्थित हों ॥ असत इस कारनतें जो मन इंद्रियांका विषय नही ॥ अरु उदेकी न्यांइ इस कारनतें जो सबका साक्षीभूत हो ॥ अरु सदा समरस प्रकासरूप अपणे आपविषे स्थित हों ॥ बहुरी केसा हों प्रबुद्ध हों अरु सुषुप्तिविषे स्थित हो ॥ प्रबुद्ध इस कारनतें जो इंद्रियांकों विषयकी उपलब्धि करता हों ॥ अरु सुषुप्त इस कारनतें जो हर्ष सोक इष्ट अनिष्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सों रहित हों ॥ अरु जगतकी उरतें सुषुप्ति समाधिविषे हौं ॥ तहां जाग्रत हुवा तुरीयापद आत्मतत्वविषे स्थित हौं ॥ जैसें स्थाणु खंभ स्थित होताहे तेसें स्थितरूप हौं नित्य सुद्ध समांत सत्ता आत्मापद तहां में निरामय स्थित हों ॥ हे रामजी इस प्रकार चितवता हुआ मुनीश्वर ध्यानविषे जुड्या ॥ षट् दिन पर्यंत ध्यानविषे रहा उपरांत जाग्या ॥ तव एक छीनके समा न जानत भया ॥ जेसें सोया हुआ छीनविषे जागे इसी प्रकार वीतव सुद्ध पदकों प्राप्त भया ॥ जीवन्मुक्त होकरी चिरकाल पर्यंत विचरत भया ॥ न कोउ वस्तु हर्ष देवे न सोक देवे ॥ चलता हुआभी स्थिर रहे ॥ इंद्रियांका व्यवहार करता इष्ट अनिष्ट प्राप्तिविषे सम रहे ॥ कदाचित् कीसीविषे चलायमान न होवे ॥ चलता बेठता मन इंद्रियांकों कहे ॥ रे इंद्रिया मरहु हे मन तुं सम वान अव हुआहे ॥ आत्माकों पाइकरी अव देख तुजकों क्या सुख हे ॥ जीस सुखके पाएतें ओर पावणे जोग कछु न रहता निराग सुख हे ॥ एसा जो परम सांतरूप अचल सुख हे तीसकों आश्रय करीकें चंचलताकों त्याग अरु हे इंद्रियों तुमारा वास्तवतें स्वरूप कछु नही ॥ अरु आत्मपदविषे तुम दृष्ट नही आतीयां ॥ अपणे स्वरूपके जाणे बिना तुम मुजकों दुःख देतीयां थी ॥ अब में अपणे स्वरूपकों प्राप्त भया हो ॥ मेरेकों वस करणेकी समर्थता तुमकों नही ॥ काहेतें जो तुम अवस्तुरूप हो ॥ आत्माके प्रमादकरी तुमारा भा न होताहे ॥ जेसें जेवरी विषे सर्प भासता हे तेसें आत्माविषे अनात्मा भावना अरु अनात्माविषे आत्मभावना होतीहे ॥ सो अविचारकरी होतीहे अरु विचार करीकें नही होती ॥ अब विचार करीकें यह भ्रम निवृत्त भया हे ॥ तुम इंद्रियांगन ओर हो, अहंकार औरहे, ब्रह्म और हे, कर्तृत्व ओर हे, भोक्तृत्व ओर हे, ओरका दुःख आपविषे मानणा यही मूर्खता हे ॥ जे सें बनकी लकडी ओर हे, बास ओर हे चर्म ओर हे, जीस करीके रथ वणता हे अरु लोहा ओर पीतल ओर वडे ओर जीसकरी रथ जड्याहे ॥ बेल ओर जो रथकों चलावते हे ॥ तीन सब करीकें रथ वणता हे ॥ जेसें यहका आकार होताहे तेसें रथ हे ॥ तीसविषे बेठणेवाले पुरुष ओर होताहे ॥ रथकी सामग्री परस्पर ओर होतीहे ॥ तीस विषे बेठणेवाले कहे जो में रथ हों तो नही बणता ॥ तेसें सरीररूपी रथ हे अज्ञानकरीकें मिल्या हे इंद्रियां ओर हे मनादिक ओर हे ॥ तीसविषे पुरुष हे सो जीव हे ॥ जीव कहे में सरीर हों ॥ बडी मुर्खता हे ॥ तीस सरीरके सुख दुःख मुर्खताकरीकें आपकों मानते हे ॥ जो विचार करीकें देखें तो राग द्वेषके क्षोभतें मुक्त होवे ॥ में अविचाररूपी विस्मृति स्वरूपकों दूरतें त्यागीहे ॥ अरु स्वरू पकी स्मृति स्पष्ट करीहे ॥ जो आत्मातत्व सत हे तीसकों सत जाण्या हे ॥ अरु अनात्मा असत हें तीसकों असत जाण्या हे ॥ जो सत हे सो स्थित हे जो असत हे सो क्षीण होजाता हे ॥ हे रामजी ! इस प्रकार वीतव मुनी विचार करीकें जीवन्मुक्त हुआ ॥ अपणे स्वरूपविषे बहुत वर्षोंको वितीत किया ॥ अपणा जो निर्भयपदहे जीसविषे चित्तादिक भ्रम सब नष्ट हो जातेहे ॥ एसें शुद्ध पदकों प्राप्त हुआ यथा भूतार्थ आत्मध्यानविषे स्थित भया ॥ ग्रहण अरु त्यागणेकी भावना कछु नही रही परिपूर्न आत्मपदकों प्राप्त भया ॥ अगस्तमुनिका पुत्र वीतव मुनी तिस पदकों पाइ करी निर्वासनिक हुआ ॥ बहुरी जीस कालविषे जिस प्रकार विदेहमुक्त हुआहे सो सुण ॥ वीस हजार अरु सातसें वर्ष जीवन्मुक्त हो करी रहा बहुरी विदेह मुक्त भया ॥ जो इच्छा अनिछातें रहित पदहे जन्म मरनका जिसविषे अंतहे राग दोषते रहित पदकों प्राप्त हुआहे॥हे रामजी हिमालयपर्वतकी कंदरा थी तिसविषे प्रवेस किया॥पद्मासन धारी करीहाथ जोडीकरी अवहिकहत भया ॥ हे राग तुं निरागताकों प्राप्त होउ ॥ अरु तुं निर्दोषताकों प्राप्त होउ ॥ तुमारे साथ में चिर पर्यंत क्रीडा करी हे॥परंतु विवेकतें रहित करी हे ॥ तुम अब जाओ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरा तुमकों नमस्कार हे॥ अरु हे भोग तुमारी लालसा करी मुजकों परमपदका विस्मरन होगयाथा॥ जेसें माता सुखके निमित्त पुत्रकी लालसा करति हे॥ तेसें में सुख जाणीकरी तुमारी लालसा करताथा अब जाओ॥ तुमकों मेरा नमस्कार हे॥ अब निर्वाण पदकों प्राप्त होता हो॥ हे दुःख तुजकोंभी नमस्कार हे॥ तेरे उपदेस करी में आत्मपदकों प्राप्त हुआ हों॥ काहेतें जो में सदा भोग सुखकों चाहताथा॥ जब सुख प्राप्त होताथा तब तुजकोंभी साथ ले आवताथा॥ सुखतें तेरी उत्पति होती हे॥ सुखकी लालसा विषे तो में अनेक जन्म पावता रहा॥ अरु जब सुख आवे तब तुजकोंभी साथ ले आवे॥ तुजकों देखीकरी मुजकों आत्मपदकी इच्छा उपजी॥ तेरे प्रसाद करी में परम सीतल पदवीकों प्राप्त हुआ हों॥ हे दुःख तुं तो दुःखथा परंतु मुजकों सुख प्राप्त कीया तातें तेरा कल्याण होवे तुं अब जाइ॥ हे मित्र संसारविषे जीवणा असार हे जीसका संजोग होता हे तीसका विजोगभी होता हे॥ अरु तुजनें मेरे साथ बडा उपकार कीया हे जो अपणा नास कीया हे॥ अरु मुजकों सुख प्राप्त कीया हे॥ जो तुं मुजकों प्राप्त न था तो में आत्मपदके निमित्त कब जतन करता तुजनें अपणा नास करणा मान्या परंतु मुजकों सुख प्राप्त कीया॥ हे मित्र तुं बांधवोकी न्यांइ चिरकाल पर्यंत मेरे साथ रह्या॥ तुं कदाचित् मुजतें दूर न भया में तेरा नास नही कीया॥ तुजनें अपणा नास आपही कीया हे॥ तुं मुजकों जब प्राप्त हुआथा तब मुजकों विवेक उत्पत्ति भया॥ तीस विवेकनें तेरा नास कीया हे॥ तातें तुजकों मेरा नमस्कार हे अरु हे माता तृष्णा तुजकों नमस्कार हे॥ तुं सदा मेरे साथ होइ रही हे॥ कदाचित् त्याग नही कीया॥ जेसें अयानें बालकका त्याग माता नही करति॥ तेसें तुजनें मेरा त्याग नही कीया अब तुं जा॥ हे कामदेव तुजनें आपही विपर्यय होकरी अपना नास कीया हे॥ जब तुं बहिर्मुख था तब जीवता था॥ जब अंतर्मुख हुआ तब तुं मीट गया तुजकों नमस्कार हे॥ अरु हे सुकृतों तुमकों नमस्कार हे॥ तुमनेंभी बडा उपकारकीयाथा जों नर्कोसों नीकासी करी सर्गोविषे प्राप्त कीयाथा॥ परंतु अंत सभका विजोग होणा हे॥ तातें तुमभी जाउ हे दुष्कृतों तुमभी जाउ॥ विकर्म रूपी तुमारा क्षेत्रहे अरु जुवा अवस्था बीजहे॥ तिसतें नरक दुःख फल होताहे॥ सो तुमारे साथभी संजोग हुआ था॥ तातें तुमकोंभी नमस्कारहे तुमभी जाउ॥ हे मोह तुजकोंभी नमस्कारहे तुज करी चिरकाल में बांध्या था॥ अरु नाना प्रकारके स्थानकों प्राप्त होता था अरु भय तुं दिखावता था॥ तिस करी में भयकों प्राप्त होता था॥ तातें तुजकों नमस्कारहे अब तुं जाउ॥ हे गिरि कंदरा तुजकोंभी नमस्कारहे॥ तुजविषे में चिरकाल तप कियाहे॥ हे बुद्धिहे विवेक तुमकोंभी नमस्कारहे॥ तुम मेरे साथ उपकार कियाहे॥ जो संसार बंधनतें मुक्त कियाहे॥ तुमभी जाओ हे दंड अरु तुंबा तुमकोंभी नमस्कारहे तुमभी जाओ बहुत काल तुमभी मेरे संबंधी रहे हो॥ हे देह रक्त मांसका पिंजर होइ करी तुं मेरे साथ बहुत काल रहीहे अरु तुजनें उपकार कियाहे जो विवेक उपजावणेका स्थान तुंहीहे॥ तेरे संजोग करी में परम पद पायाहे॥ तुंभी अब जा तुजकों नमस्कारहे॥ हे संसारके व्यवहारों तुमकोंभी नमस्कारहे॥ तुमारेविषे में बहुत क्रिया करीहे. स्थान देस क्रिया कर्म कियाहे॥ एसा पदार्थ जगत्विषे कोइ नही जो दीया लीया न होवेगा॥ अरु एसा कर्म कोइ नही मेरेविषे जो किया न होवेगा॥ अरु एसा देस कोउ नही जो देखा न होवेगा॥ अब सबकों नमस्कारहे॥ हे इंद्रियों प्राण मन आदिक तुमकों नमस्कारहे॥ तुमारा हमारा चिरकाल संजोग था॥ अब विजोग हुआ काहेतें जो जिसका संजोग होताहे तिसका विजोगभी होताहे॥ तातें तुमारा हमाराभी विजोग होताहे॥ नेत्रोंकी जो जोती सूर्य मंडलविषे जाय लीन होवेगी घ्राणों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की गंध पृथ्वीविषे जाय लीन होवेगी ॥ प्राण तुचा पवनविषे जाय लीन होवेगी ॥ श्रवण आकासविषे लीन होवेगा ॥ मन चंद्रमाविषे लीन होवेगा ॥ जिव्हा रसविषे लीन होवेगी ॥ इसी प्रकार सब अपणेअपणे अंसविषे जाय लीन होवेगे ॥ जेसें लकडीयांके जलेतें अग्नि सांत होजाती हे जेसें सरत्कालविषे मेघसांत होजाता हे जेसें तेलतें रहित दीपक निर्वाण होजाता हे ॥ जेसें सूर्यके अस्त हुए प्रकास सांत होजाता हे ॥ तेसें मनादिक सांत होजावेगा ॥ हे रामजी एसें विचार करते करते मन सर्व कार्योंतें रहित प्रणवके ध्यानविषे लगा ॥ सर्व दृश्य तें सांत हो गया मोहरूपी मलकों त्यागकरी चित्त प्रणवके विचारमें लगा ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपसमप्रकरणे वीतवोपाख्याने इंद्रियनिर्वाण नाम द्व्यशीतितमःसर्गः ॥ ॥ ८२ ॥ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! इस प्रकार शब्द ब्रह्म प्रणवका उच्चार करत भया ॥ पंचमभूमिका जो चित्तकी अवस्थाहे तिसकों प्राप्त भयाहे ॥ अंतर बाह्यके जो स्थूल सूक्ष्म पदार्थ हे अरु त्रिलोकीके संकल्प सर्व त्याग करी अक्षोभरूप स्थित भया ॥ जेसें चिंतामणी अपणे प्रकासविषे स्थित होतीहे जेसें पूर्न काल करी चंद्रमा अपणे आपविषे स्थित भयाहे अरु जेसें मंदराचलके नीकसे क्षीर समुद्र स्थित भयाहे ॥ जेसें मंथणेतें रहित मंदराचल स्थित भयाहे ॥ जेसें कुंभारका चक्र फीरता फीरता ठहरी जाताहे जेसें सूर्यके अस्त हुए व्यवहार क्रिया जीवोंकी ठहरी जातीहे ॥ अरु जेसें मेघतें रहित सरत्कालका आकास निर्मल होताहे ॥ जेसें प्रकास तमतें रहित आकास होताहे ॥ तेसें फुरनतें रहित मन सांतिकों प्राप्त भया ॥ प्रणवके ध्यान करीकें बहुरी तीस वृत्तिके अंतकों प्राप्त भया ॥ मंत्रकोंभी त्यागत भया जेसें महा पुरुष क्रोधकों त्यागताहे तेसें वृत्तिकों त्यागत भया ॥ बहुरी तेज प्रकास उदे हुआ ॥ तीसकोंभी निमेषविषे त्यागत भया ॥ आगें न तेज हे न तम हे ॥ तीसविषे अभाव वृत्ति रहतीहे ॥ तीसकोंभी निमेषविषे त्यागत भया ॥ तब जेसें नौतन बालक जन्मकों पदार्थ ज्ञानतें रहित अवस्था होतीहे तेसें अवस्था प्राप्त भई ॥ तब जो सत्तामात्र आत्मतत्व सुषुप्तपद हे तीसका आश्रय कीया ॥ महा अचल जो सुमेरुकी न्यांइ स्थिर अवस्था हे तीसकों प्राप्त हुआ ॥ बहुरी केवल अचेतन चिन्मात्र पद तुरीया निरानंद आनंद हे जिसविषे स्वरूपतें इतर और आनंद नही एसें आनंदकों प्राप्त हुआ ॥ जो असत् सतरूप हे सर्व कियातें अतीत हे इस कारनतें असत हे ॥ अनुभवरूप हे इस कारनतें सत्यस्वरूप हे ॥ एसें असब्द पदकों प्राप्त हुआ ॥ जो परम सुद्ध पावन पद हे अरु सर्व भावके अंतर प्राप्त हे ॥ अरु सर्व भाव सब्दतें रहित हे जीसकों शून्यवादी शून्य कहतें हे ॥ ब्रह्मवादी ब्रह्म कहतें हे विज्ञानवादी जीसकों विज्ञान कहते हे ॥ सांख्य मतवाले जीसकों पुरुष कहते हे ॥ जोगवाले जीसकों इश्वर कहते हे ॥ शैवी जीसकों शिव कहते हे ॥ वैष्णव जीसकों विष्णु कहतें हे ॥ शाक्त जीसकों परम शक्ति कहते हे ॥ कालवादी जीसकों काल कहते हे ॥ आत्मवादी जीसकों आत्मा कहते हे ॥ अरु माध्यमिक जीसकों माध्यम कहते हे ॥ इत्यादिक जो शास्त्रोंवाले कहते हे ॥ सो एक परब्रह्म कहते हे ॥ काहेतें जो सर्वदा सर्वकाल सर्व प्रकार सर्वविषे सर्वरूप उहीहे ॥ एसे सर्वात्माको वीतव मुनीश्वर प्राप्त भया ॥ जीस आनंद समुद्रके बलकरी सर्वकों आनंद होताहे ॥ एसे आत्मतत्व अनुभवरूप अपणे आनंदको प्राप्त हुया उहीरूप होत भया ॥ जो अन्य हे निरन्य हे ॥ निरंजन हे सर्व हे असर्वहे ॥ अजर हे अमर हे ॥ सबकी आदि हे सकलंक हे अरु निष्कलंक हे एसा जो आकासतें निर्मल पद हे तीसकोंवीतव मुनीश्वर प्राप्त हुआ ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे उपसम प्रकरणे वीतव निर्वाण जोगोपदेसो नाम व्यशीतितमःसर्गः ॥ ८३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ वसिष्ठोवाच हे रामजी दुःखरूप संसार समुद्रके पार वीतव मुनीश्वर परम पदकों प्राप्त हुआ ॥ जीस पदके प्राप्त हुए जन्म मरणकों बहुरी नही पावता ॥ जीस पदविषे स्थित हु
आ परम सांत उपसम आनंदकों प्राप्त भया ॥ जेसें समुद्रविषे बुंद पडी हुइ समुद्र हो जातीहे ॥ तेसें ब्रह्म समुद्रविषे ब्रह्म होत भया ॥ अरु शरीर जो वीतवका था सो विरस होकरी गीर
पडा ॥ जेसें सीतकालविषे वृछोंकें सुके पत्र गीर पडतेहे ॥ तेसे शरीर गीर पडा ॥ शरीररूपी वृछ था तिसविषे रिदेरूपी आलय था ॥ तिसविषे प्राणरूपी पंछी रहता था सो चिदाकासवि
षे प्राप्त हुआ ॥ जेसें खंभांणी करी पथ्थर धावताहे तेसें जाय प्राप्त भया ॥ अपणे स्वरूपविषे स्थित हुआ ॥ हे रामजी यह में वीतवकी कथा तुजकों सुनाइहे सो अनंत विचारकरी जु
क्त हे ॥ इस प्रकार विचारकरी वीतव विश्रामवान हुआ हे ॥ तुमभी उसकों विचारकरी सिद्धता सारकों प्राप्त होउ ॥ ओर दृश्यकी चिंतवनाकों त्यांग सावधान होउ ॥ हे रामजी जो कछु
में तुजकों पूर्व कहाहे जो जीस पद विषे प्राप्त हुआ बहुरी पावणे जोग कछु नही रहता ॥ अरु अब जो कछु कहताहों अरु जो कछु पाछे कहोंगा तीसकों विचार ॥ जो मुक्ति ज्ञान
ही करी होतीहे ॥ अरु ज्ञानही करी सब दुःख नास होताहे ॥ ज्ञानही करी अज्ञान निवृत्त होताहे अरु ज्ञानही करी परम सिद्धताकों प्राप्त होताहे ॥ पावणे जोग यही वस्तुहे दुःखोंके ना
स करणेकों ओर कोइ समर्थ नही यह निश्चयहे जो ज्ञान करी सब फांसि काटे जातेहे ॥ ज्ञानही करी वीतवनें मनकों चूर्न किया ॥ हे रामजी वीतवकी संवित जगतके अतीत होत भ
इ ॥ जेता कछु दुःखहे सो मन करी होताहे ॥ मनके उपसम हुए सब जगत् अनुभवरूप हो जाताहे वीतवभी मनोमात्र था ॥ मेंभी मनोमात्र हों तुंभी मनोमात्रहे ॥ पृथ्वी आदि जगत
सर्व मनोंमात्रहे मनतें इतर कछु नहीं ॥ जहां मन होताहे तहां जगत होताहे ॥ मनही जगतरूपहे ॥ अरु जगतही मनरूपहे ॥ जो ज्ञानवान पुरुषहे सो मनकी दिशाकों त्याग करीकें के
वल चिदानंद आत्मातत्वविषे स्थित होताहे ॥ राग दोष विकार आदि तिनके मीट जातेहे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपसम प्रकरणे वीतव विश्रांति समाप्ति नाम चतुराशीतितमःसर्गः॥ ८४ ॥

वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी वीतवकी न्यांइ विदितवेद होकरी राग दोषतें रहित स्थित होउ ॥ जेसें तीस सहस्र वर्ष वीतव वीतसोक जीवन्मुक्त होकरी विचर्या हे तेसें तुंभी वीचर ओ
रभी बोधवान राजा अरु मुनीश्वर हुए हे ॥ जेसें प्रात हुए राजादिक व्यवहार विषे रहे हे ॥ तेसें तुंभी जीवन् मुक्त होकरी रहहु ॥ हे रामजी सुख दुःख कर्म आत्माकों स्पर्श नही करते ॥
आत्मा सर्वज्ञ हे ॥ तुं कोस निमित्त सोक करता हे ॥ बहुत विदितवेद पृथ्वीविषे विचरते हे ॥ परंतु सोककों कदाचित् नही प्राप्त होते ॥ जेसें तुम नही अब सोक करतेहे ॥ हे रामजी तुं
अब स्वस्थ हे उदार हे सम सर्वज्ञ हे ॥ आत्मा हे तुजकों बहुरी जन्म नही ॥ जीवन्मुक्त पुरुष जो अपणे स्वरूपविषे स्थित हे सो हर्ष सोककों नही प्राप्त होता हे ॥ जेसें सिंह वानर गी
दड आदिकके वस नही होता ॥ तेसें जीवन्मुक्त विकारोंतें रहित होता हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवान् इस प्रसंगविषे मुजकों संदेह हुआ हे तीसकों निवृत्त करो ॥ जेसें सरत्काल करी मेघ
नष्ट होजाता हे तेसें नास करो ॥ हे तत्ववेत्ता विषे श्रेष्ठ जीवनमुक्तके सरीरविषे शक्ती क्यों नही दृष्ट आती ॥ जो आकासविषे उडता फीरे अरु सूक्ष्मरूप करी ओर सरीरविषे प्रवेसकरी
जावे ॥ इत्यादिक सरीरविषे नही देखतें ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी आकासगमनादि जो सिद्धि हे सो तपादिक कर्मोंकी शक्ति हे ॥ जेते कछु जगत् विचित्र हे देखाइदेणा बहुरी गुप्त
हो जाणा ॥ इत्यादिक वस्तु द्रव्यके स्वभाव हे आत्माके ज्ञानकें नही ॥ हे रामजी कोउ द्रव्य क्रिया कालकों यथाक्रम साधता हे तीसकों शक्ति प्राप्त होती हे ॥ ज्ञानी साधे अथवा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अज्ञानी साधे शक्ति प्राप्त होती हे ॥ परंतु शक्ति आत्मज्ञानका फल नही ॥ आत्मज्ञानीकों आत्मज्ञानकी सिद्धता होती हे ॥ उह आत्माकरी आपविषे तृप्त होता हे ॥ सीद्धि जो अवि
द्यारूप हे तीसकी उर नही धावता ॥ जेता कछु जगत् हे सो तीसनें अविद्यारूप जाणा हे ॥ एसें जाणीकरी पदार्थोंविषे नही डुबता ॥ जो अज्ञानी हे सो सिद्धताके निमित्त इन पदार्थों
कों साधता हे अरु जो ज्ञानवान हे सो इन पदार्थों वास्ते जतन नही करता ॥ अरु जो जतन करे तो ज्ञानी होवे अथवा अज्ञानी होवे ॥ इंद्रादिकोंके ऐश्वर्यकों पावता हे ॥ अरु ज्ञा
नकी सक्ति नही द्रव्यकी सक्ति हे सो अविद्यारूप हे ॥ अज्ञानी इनकी उर धावते हे ॥ ज्ञानवान नही धावते उह सर्वतें अतीत हे ॥ सर्व इच्छाका जीसने त्याग कीया हे ॥ अरु आत्मपद
विषे संतोष पाया हे उह इनकी इच्छा नही करता ॥ इनकी इच्छा भोगों अथवा बडाइके निमित्त होती हे ॥ अथवा मान अरु जीवणेके निमित्त सिद्धिके निमित्त इच्छा होती हे ॥
आत्मज्ञानीकों नभोगोंकी इच्छा होती हे नसिद्धता न मानकी इच्छा होती हे ॥ काहेतें जो सब अनात्मा धर्म हे ॥ उह नित्य तृप्त परम सांतरूप हे ॥ वीतराग निर्वासनिक पुरुष हे ॥
अरु आकासकी न्यांइ सदा अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जेसें सुख सुभाविक आता हे तेसें दुख स्वाभाविक आता हे ॥ सरीरके सुखदुःखकी अवस्था विषे चलायमान नही होता ॥
नित्य तृप्त असंग होता हे ॥ जीवन मरणकी वृत्तिउसकों नही फुरति सर्वविषे सम रहता हे ॥ समुद्रविषे नदीयां प्रवेस करतियां हे अरु समुद्र अपणी मर्यादाविषे स्थित हे तेसें ज्ञानवान
कों क्षोभ नही प्राप्त होता ॥ हे रामजी जो कछु ज्ञानवानकों प्राप्त होता हे सो आत्माविषे अर्चन करते हे ॥ तीसकों करणेविषे कछु अर्थ नही ॥ अकरनेविषे कछु प्रत्यवाय नही हो
ता ॥ अरु तीसकों कीसका आश्रय नही ॥ सदा अपणे स्वरूपविषे स्थित हे ॥ अरु यह जो सिद्धि हे सो मंत्र काल कर्मकरी होती हे ॥ एक जोग क्रिया एसी होती हे तीसके साधणे
करी उडणेकी शक्ति होआती हे ॥ एक मंत्रोंकरी शक्ति होती हे ॥ एक गुटका मुखमें रखणेकरी उडणेकी शक्ति होती हे ॥ इत्यादिक शक्तिकी प्रथमही नीति हो रहती हे तीसते अ
न्यथा नही होती ॥ हे रामजी जेसी शक्ति जीस साधन करी नीती हुइ हे तीसके अन्यथा करणेंकों सदासिवभी समर्थ नही ॥ काहेतें जो स्वभाविक स्वतःसिद्ध हे ॥ जेसें चंद्रमांविषे
आदि सीतलता हे अरु अग्निविषे उष्णता हे इत्यादिक पदार्थोंविषे आदिनीतिकरी जो स्वयंभाव हुआ हे तीसके दूर करनेकों समर्थ कोउ नही ॥ सर्वज्ञ जो विष्णु भगवान हे सोभी
अन्यथा करणेकों समर्थ नही होता ॥ हे रामजी जीस द्रव्यविषे मारणेकी सत्ता हे सो मारता हे ॥ मद्यविषे मत्त करणेकी शक्ति हे ॥ तेसें द्रव्य जोग काल आदिक विषे सिद्धता शक्ति
नीति हुइ हे ॥ जेसें एक औषधीमें क्लेश करणेकी शक्ति हे तीसके पायेतें क्लेश होता हे ॥ जेसें इनविषे अपणी अपणी शक्ति हे ॥ जो इनकों साधता हे तीसकों यह प्राप्त होती हे ॥
जो आत्मज्ञानी इसका साधन करे ॥ वह कर्तविषेभी अकर्त्ता हे ॥ अरु आत्मज्ञानके पावणेविषे सिद्धि कछु उपकार नही करी सकतीयां ॥ परंतु जो इनकी वांछा करे तो जतन करीके
पावता हे जतनविना नही पावता ॥ आत्मज्ञानीकों इच्छाभी नही होती आत्म परायणही होता हे ॥ आत्मालाभ करी सर्व इच्छा तीसकी सांत होजाती हे ॥ हे रामजी जेते लाभ हे तीनतें
परम आत्मालाभहे ॥ आत्माकों पाइ करी बहुरी इच्छा किसकी नही होती ॥ जेसें अमृतके पान कीए ओर जलकी इच्छा नही करता ॥ तेसें आत्माके लाभ करी ओर इच्छा नही होती ॥
एसें आत्मलाभ जीननें पायाहे तिनकों इनकी इच्छा केसें होवे ॥ जेसो जेसी किसीकों इच्छा होतीहे तिसकों तेसाही प्राप्त होताहे ॥ ज्ञानी होवे अथवा ज्ञानतें रहित होवे ॥ इच्छा प्रय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लके अनुसार प्राप्त होताहे यह जो वीतव था तिसकों इच्छा कछु न रही थी ॥ अरु प्रथम जो सूर्यपास गमनकी शक्ति इसविषे दृष्ट आइ थी सो जो क्रियाके साधन करीकें थी पा
लें जब ज्ञान उपजा तब इच्छा कछु न रही ॥ हे रामजी ! जो कछु किसीकों फल प्राप्त होताहे सो अपणे प्रयत्न करी होताहे ॥ जो ज्ञानवान हे सो सदा तृप्त रहताहे ॥ तिसकों इष्ट अ
निष्टकी इच्छा कछु नही फुरति ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ! एता काल जो वीतव तीनसों वर्ष समाधिविषे रहा ॥ तब तीसका सरीर पृथ्वीसाथ पृथ्वी क्यौं न होगया ? अरु सींग बघा
डादिक उसकों क्यौं भौजन न करीगए ? अरु पालें विहदेमुक्त हुआ प्रथम क्यौं न हुआ ? जो पृथ्वीविषे दबे हुएकों नीकासणे निमित्त बडा जतन कीया ॥ इस संशयकों निवारण करो
॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो संवित वासना साथ बांधी हुइहे सो सुख दुःखकों भोगतीहे ॥ अरु मलीन भावकरी आवरी हुइहे ॥ अरु जो वासनातें रहित हे सो शुद्ध समता
रूप हे ॥ सुख दुःखके भोगतें रहित हे ॥ कोसी कारण करी छेदी नही जाती ॥ हे रामजी जीस जीस पदार्थविषे चित्त लगता हे सोइ सोइ पदार्थ स्वरूपविषे भासताहे यह पदार्थकी
शक्ति हे जेसी पदार्थोंविषे शक्ति होतीहे तेसी भासतीहे इस कारनतें बहुत वर्ष वितीत होतेहे ॥ तोभी समाधिके बलकरी तीसका सरीर ज्योंकात्यौं रहताहे ॥ काहेतें जो चित्त जीस पदा
र्थविषे लगता हे तीसका रूप होजाताहे ॥ जेसें मित्रकों मित्रभाव करी देखता हे स्वाभाविकही प्रसन्नहोताहे ॥ अरु सत्रुकों देखीकरी चित्तविषे स्वाभाविकही अप्रसन्नता फुरी आतीहे ॥
मिष्ट वस्तुकों देखीकरी चित्त स्वाभाविक लोलुप होजाताहे कटुकविषे विरसताकों प्राप्त होताहे ॥ जेसें मार्ग चलणेवालेका चित्त मार्गके पर्वत वृच्छोंके रागकरी बंधायमान नही हो
ता ॥ अरु जेसें चंद्रमाके निकट गएतें सीतलता होतीहे सूर्यके निकट उष्णता प्राप्त होतीहे ॥ सो पदार्थकी शक्ति हे ॥ जीस पदार्थसाथ वृत्तिका स्पर्श होताहे तीसका स्वाभाविक आ
रंभ विफलप्राप्त होताहे ॥ तेसें जब जोगी देह इंद्रियोंकी वासना ममत्व भावकों त्यागकरे समभावविषे प्राप्त होताहे ॥ तब तीसकों समभावका अनुभव होताहे ॥ अर्थ यह जो सर्वबि
षे एकही भासताहे ॥ इस कारनतें सरीरकों सींगादी कछु कोउ छेदी सकते नही ॥ जो जीव उसके घात करनेकों आवतेहे सो हिंसाभावकों त्याग देताहे ॥ अहिंसक होजाताहे ॥ इस
कारनतें निकट आय सांत होजातेहे ॥ वीतवका सरीर छेदकों न प्राप्त भया ॥ न पृथ्वीविषे पृथ्वी होगया ॥ सर्वत्र समता आकास एकही स्थित हे ॥ काष्ठ लोष्ठ पथ्थर ब्रह्मादि तृणपर्यं
त सर्वविषे एक अनुस्युत हे ॥ अरु जहां पुर्यष्टका होतीहे तहां भासताहे ॥ जहां पुर्यष्टका नही होती तहां नही भासती ॥ जेसें सूर्यका प्रतिबिंब सब ठोरविषे पूर्नहे ॥ परंतु जहां स्वच्छ ठो
र दर्पण जलतें आदि लेकरी होतेहे सो भासतेहे जहां उजल ठोर नही होता तहां प्रतिबिंब नही भासता ॥ तेसें जहां पुर्यष्टका हे तहां संवित भासतीहे अन्यथा नही भासती ॥ इस का
रनतें जो वीतवकी संवित समभावविषे स्थित हे ॥ उसकों कीसी तत्वका अरु जीवका क्षोभ नही होता अरु पंचतत्वोंका क्षोभ तब होताहे जब प्राण फुरतेहे ॥ जब प्राण फुरनेतें रहित
होताहे तब तत्वोंका क्षोभ नही होता ॥ सो वीतवकी बाह्य अरु अंतर स्पंदकला प्राणोंकी सांति होगईथी ॥ प्राण अरु चित्तकला दोनों फुरनेतें रहित थीयां ॥ इसका रिदाभी क्षोभ न
भया ॥ हे रामजी देहरूपी गृहविषे चित्त अरु वायुका स्पंद सांत हो जाताहे ॥ जब इनका फुरणा सांत होताहे तब शरीर नाश हो जाताहे ॥ तब सब सुमेरुकी न्यांइ स्थित हो जाता
हे ॥ किसीकी समर्थता नही जो तिसकों क्षोभ करे अरु नाश करे ॥ जोगेस्वरका चित्त अरु प्राण निस्पंद हो जाताहे ॥ सो इनकों वस करीकें जुडताहे तब उसकों न तत्वोंका क्षोभ हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताहे न वात पित्त कफका क्षोभ होताहे ॥ न ओर कछु क्षोभ होताहे ॥ इस करीकें जोगीका शरीर सहस्र वर्ष पर्यंतभी ज्योंका त्यों रहताहे नष्ट नही होताहे ॥ जेसें वज्रकों कोउ चूर्न नही करी सकता तेसें तिसके शरीरकों कोउ नाश नही करी सकता ॥ सबकी शक्ति तिस उपर कुंठित हो जातीहे ॥ इस कारनतें वीतवका शरीर ज्योंका त्यों रहा ॥ अरु तब क्यों न वि देहमुक्त हुआ सो सुण ॥ हे रामजी! तत्वग्य विदित वेद वीतराग महा बुद्धिहे जिनकी अभिमानरूपी गांठी टुट पडीहे सो पुरुष स्वतंत्र स्थित होताहे ॥ तिनकों न कोउ प्रारब्ध कर्महे न संचित्त कर्महे न वर्तमानका कर्महे ॥ सवतें मुक्त तत्ववेत्ता स्वतंत्र स्थित होतेहे ॥ अरु स्वेच्छ वीचरतेहे ॥ जेसी इच्छा करे तेसी शीघ्र होतीहे ॥ हे रामजी! वीतवकों आकासमात्रतें जी वणेका स्पंद फुर आया ॥ तब केताक काल जीवता रहा ॥ जब उसकी संवितविषे विदेहमुक्त होणेका स्पंद फुर्या तब विदेहमुक्त होगया ॥ उनकी स्थिति स्वाभाविक स्वतंत्र होतीहे ॥ जिसकी वांछा करताहे सो तत्काल हो जाताहे॥ मन आत्मपदविषे स्थित होताहे उनकों कछु कृत्य कर्तव्य नही॥ इ०यो०उप०प्र०सिद्धी लाभविचारो नाम चतुराशीतितमःसर्गः॥ ८४॥

रामोवाच ॥ हे भगवन् जब विचार करी वीतवका चित्त सांत होगया तब उसकों मैत्री करुणा आदिक गुण आनी प्राप्त हुआ ॥ यह तुमनें कहा परंतु जब विवेक करकें चित्त उसका नष्ट होगया ॥ बहुरी मैत्री आदिक गुण कहां आन प्राप्त भए ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी चित्तका नास दो प्रकारका हे ॥ जीवन्मुक्तका चित्त अचित्तरूप होइ जाता हे ॥ अरु विदेह मुक्तका चित्त स्वरूपतें नष्ट होजाता हे ॥ जेसें भुना दाणा होता हे तेसें जीवन्मुक्तका चित्त देखणेकरी चित्तरूप हे॥ सो बीचतें सब्दभाव नही ॥ अरु जेसें दाणा नष्ट होजावे तेसें विदेह मुक्तका चित्त हे सो देखणे मात्रभी नही रहता ॥ हे रामजी जो चित्तकी सत्यता हे सों दुःखोंका कारण हे ॥अरु चित्तकी असत्यता सो सुखोंका कारण हे ॥ चित्तविषे विषयोंकी वासना फुरति हे सो चित्त जन्मोंके देणेहारा हे ॥ अरु दुःखोंका कारण हे ॥ गुणोंके संगकरी अहंमम भावविषे रहताहे ॥ अरु चित्तकी सत्यता करी जीव कहाता हे ॥ हे रामजी जबलग चित्त विद्यमान हे तबलग अनंत दुःख होताहे दुःखरूपी वृच्छका बीज चित्त हे ॥ जब चित्त नष्ट हुआ तब कल्याण हुआ ॥ रामोवाच ॥ हे ब्राह्मण मन कीसका नाम हुआ ॥ अरु केसें नष्ट होता हे अरु अस्त केसें होता हे सो कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे प्रश्नवेत्ताविषे श्रेष्ठ चित्तसत्ताका लच्छन में तेरे तांइं कहा हे ॥ अब चित्त मृतकका लच्छन सब सुण सुख अरु दुःखकी दिसा जीसकी धैर्यकों स्वरूपकों चलाय नही सकती ॥ जेसें सुमेरुकों पवन चलाय नही सकता ॥ तेसें जीसके चित्तकों दुःख चलाय नही सकता तीसका मृत्यु जाण ॥ अर्थ यह जो उह चित्त सतपदकों प्राप्त भया हे ॥ उस चित्ततें चिंता नास होगइ हे ॥ जेसें भुने दाणेतें अंकुर नास होजाता हे तेसें उसका चित्त नास होजाता हे ॥ आत्मातें इतर जीसकों कछु नही फुरता सो चित्त मृतक हुआ हे ॥ हे रामजी अहं इच्छा द्वेषादिक विकार जीसके चित्तकों तुछ करी सके नही ॥ तीसका चित्त मृतक जाण ॥ अरु जीसकों इंद्रियोंके विषय इ ष्ट अनिष्ट प्राप्त होवे ॥ अरु राग द्वेषकरी ग्रहण त्यागकी द्वैतभावना न उपजे ॥ ज्योंकात्यों रहे तीस पुरुषका चित्त मृतक जाण जीसका चित्त नास हुआहे ॥ सो जीवनमुक्त जाण अरु जीसकों संसारके इष्ट पदार्थोंविषे राग होता हे तीसकरी ग्रहणकी इच्छा करता हे ॥ अरु अनिष्टकी प्राप्ति विषे दोषकरीकें त्यागणेकी इच्छा करता हे ॥ अहं ममभाव संयुक्त देह विषे अभिमान हे तीसकरी आपकों सुखी दुःखी मानता हे ॥ अपणेविषे अनुभव होता हे सो चित्त जीवता हे यह चित्त सत्यता हे अरु जब चित्त संसारतें विरक्त होवे अरु जब चित्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सतसंग करे सतसास्त्रोंका श्रवण मनन करे ॥ अरु स्वरूपका अभ्यास करे तब चित्त अचित्त होजाता हे ॥ अरु परमानंदकी प्राप्ती होती हे ॥ तब जीवनमुक्त होकरी विचरता हे ॥ अरु मैत्री आदिक गुण जीस प्रकार जीवनमुक्त विषे होतें हे सो सुण ॥ हे रामजी चित्तविषे जो संसारकी सत्यता रूपी मेल हे यही चित्त भाव हे ॥ सो आत्मज्ञानकरी नष्ट होजाता हे ॥ तब मैत्री आदिक गुण आनी प्राप्त होता हे ॥ जेसें सूर्यके उदे हुए तम नष्ट होजाता हे अरु प्रकास उदे होता हे अरु जेसें भुने दाणेका अंकुर जली जाता हे ॥ तेसें ज्ञानकरी चित्तका चित्तत्व भाव नष्ट होजाता हे ॥ अरु मैत्री आदिक गुण उदे होते हे ॥ देखणे मात्र चित्त देखता हे ॥ अज्ञानीकी न्यांइं जतन करता भासता हे परंतु अज्ञानीका चित्त जन्मका कारण हे ॥ ज्ञानीका चित्त जन्मका कारण नही ॥ जेसें कच्चा दाणा उगता हे भुना नही उगता ॥ तेसें अज्ञानी जन्मता हे ज्ञानी जन्मता नही ॥ जेसें चंद्रमां राहुतें छुटता हे तब चित्तविषे मैत्री करुणा आदिक गुण आनी उदे होता हे ॥ जेसें बसंतऋतुके आए वलीयां सब प्रफुल्लित होआतीयां हे तेसें चित्तभाव मीटेतें मैत्री आदिक गुण स्वाभावीक आनी फुरतें हे ॥ अरु जो विदहमुक्त होता हे तीसका चित्त स्वरूपतेंभी नष्ट होजाता हे ॥ उहां गुण कोइ नही रहता ॥ उह अवस्था ओर कोइ नही जाणता विदेहमुक्त जाणता हे ॥ तीसविषे द्वैत कल्पना कछु नही फुरति ॥ निर्मल पावन पद हे ॥ हे रामजी जीवन्मुक्तका चित्त स्वरूपविषे अचित होकरी रहता हे ॥ अरु विदेहमुक्तविषे चित्त स्वरूपतें नष्ट होजाता हे ॥ इस कारनतें जीवन्मुक्त विषे मैत्री आदिक गुण पाइता हे ॥ विदेहमुक्तविषे आत्मा निर्मल निष्कलंक हे ॥ सो चित्तके नष्ट हुए विदेहमुक्तविषे रहता हे ॥ गुणोंकी कल्पना तीसविषे कोइ नही फुरति परम पावन निर्मलपद विषे स्थित होता हे ॥ अरु सांतिआदिक गुणभी नष्ट होजाता हे ॥ काहेतें जो चित्त स्वरूपतें नष्ट होजाता हे ॥ चित्तके नष्ट हुए चित्तकी अवस्था कहां रहे ॥ न कोउ गुण रहता हे न अवगुण रहता हे ॥ न उह गुणोंतें उत्पति भया सार कहाता हे ॥ न अवगुणोतें उत्पति भया असार कहाता हे॥ न लोलुप हे न लछमी हे न अलछमी हे न उदे हे न अस्त हे न हर्ष हे न सोक हे न तेज हे न तम हे न दिन हे न रात्र हे न संध्या हे न दिशा हे न आकास हे न अर्थ हे न अनर्थ हे ॥ न वासना हे न अवासना हे न अंजन हे न निरंजन हे न सत्य हे असत्य हे न चंद्रमा हे न तारे हे ॥ न सूर्य हे एसा जो सर्व कलनातें रहित पद हे सरतकालके आकासकी न्यांइ निर्मल हे अरु बुद्धितें पर पद हे तीसविषे ओरकी गम नही ॥ जेसें आकास के स्थानको पवन जाणता हे तेसें उसकी अवस्थाकों उही जाणे ॥ तहां स्थित हुए सर्व दुःख सांत होजाता हे ॥ ब्रह्मानंदविषे लीन होजाता हे ॥ ज्ञानवान आकासकी न्यांइ निर्मल पदकों प्राप्त होता हे ॥ जीसके पाएतें ओर पावणा कछु नही रहता ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपसम प्रकरणे ज्ञानविचारो पंचाशीतितमः सर्गः ॥ ८५ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन! परमाकासके कोसविषे एक पहाडहे तिस उपर एक जगतरूपी वृछहे तारे तिसके फुलहे अरु मेदुपत्रहे सूर्य चंद्रमा स्कंधहे ॥ देवता दैत मनुष्यादिक जीव सब तिस उपर पंखेरू रहतेहे ॥ सप्त समुद्र तिसके पास बावडीयांहे ॥ अनंत नदीयां तिसविषे प्रवेस करतियाहे चतुर्दस प्रकारके भूत जात उत्पति होतेहे ॥ सुख दुःख रूपी फलोंकरी पूर्नहे मोहरूपी जल करी सींताहे ॥ सो दृढ हो करो स्थित हुआहे ॥ तिसका बीज कवनहे ॥ यह ज्ञानरूपी सारबोधकी वृद्धिके निमित्त मुजकों संक्षेपतें कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! इस संसारका बीज बडा शरीरहे जिसके अंतर आरंभकी घनताहै ॥ जब सुभ असुभका आरंभ शरीरका अंकुर होताहे तब सुभ असुभ करताहे ॥ तातें संसारका बीज शरीर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे तिस शरीरका बीज चित्तहे ॥ राजस सात्विक तामस वृत्ति जिसके टासहे ॥ अरु जन्म मरनका भंडारहै ॥ अरु सुख दुःखरूपी रत्नका डबाहै ॥ एसा जो चित्तहै सो इस शरीरका कारणहे ॥ हे रामजी ! जेता कछु जगत जाल दृष्ट आताहे सो सब असतरूपहे ॥ चित्तके फुरणे करी नाना प्रकारके आडंबर भासतेहे ॥ जेसें गंधर्व नगर नाना प्रकारके आरंभ सहित भ्रम करीकें भासतेहे ॥ जेसें संकल्प पुर भासताहे सो असतहे ॥ तेसें यह जगत असतहे ॥ जेसें मृतिकाविषे घट भाव होताहे तेसें चित्तविषे जगतका सद्भाव होताहे ॥ चित्तरूपी अंकुरके वृत्तिरूपी दो टास होताहे ॥ एक प्राणोंका फुरणा दुसरा दृढ भावना ॥ जब प्राण स्पंद होतीहे रिदे गात्र जो हे एकोतेरसो नाडीहे जब तिनकी उर संवेदनरूप चित्त उदे होताहे ॥ तब प्राण स्पंद तिनकी उर नही फुरता जब प्राण फुरताहे तब सुद्ध सात्विक चित्त आनी उपजताहे ॥ तिसविषे जगत भासताहे जेसें आकासविषे नीलता भासतीहे तेसें प्राणविषे नीलता भासतीहे ॥ जब प्राण स्पंद होताहे तब चित्त संवित उछलतीहे ॥ जेसें हाथ करी ताडना किया गेंद उछलताहे ॥ जेसें प्राण स्पंदविषे सर्वगत संवित उपलब्धरूप होतीहे तहां प्रतिबिंबित रूप हो करी सात्विक भागविषे स्थित होतीहे महा सूक्ष्मतें सूक्ष्महे ॥ जेसें वायुविषे गंध रहतीहे ॥ सोइ संवितरूपकों त्याग करी बहिर्मुख धावतीहे ॥ तिस करी नाना प्रकारके जगत भासताहे ॥ अरु नाना प्रकारकी वासना उठतीहे ॥ तिस करीकें अनेक दुःखोंकों प्राप्त होताहे ॥ तातें हे रामजी ! संवितकों अंतर्मुख रोकणा कल्याणका कारनहे ॥ जब संवित स्वरूपविषे स्थित होतीहे तब क्षोभ मीट जाताहे ॥ जब सुद्ध संवितविषे अहं उल्लेख फुरताहे तब वेदनरूप होतीहे सो चित्तहे ॥ चित्त करी अनेक दुःख होताहे चित्तका होणा अनर्थका कारनहे ॥ जब चित्त न उपजे तब सांति हो जातीहे ॥ अरु चित्त तब निवृत्त होताहे जब प्राणस्पंद रोकीए अथवा वासना नष्ट होवें ॥ सो ध्यान अरु प्राणायाम करी जोगेस्वर प्राणोंकों रोकताहे ॥ तब चित्त स्थित हो जाताहे ॥ यह जोग करी अनुभव करताहें ॥ अरु ज्ञानकरीभी अनुभव सुण ॥ हे रामजी चित्त वासना करीकें उत्पत्ति होताहे ॥ सो वासना विचारतें रहित फुरतिहे ॥ जेसें बालकोंकों जनमतेंही स्तनोंते दुध चुगणेकी वृत्ति फुरतिहे ॥ तेसें अकस्मातें भावनाकी दृढतासों वासना फुरी आतीहे ॥ हे रामजी जीसविषे पुरुषकी तीव्र भावना होतीहे सोइ रूप पुरुषका होताहे ॥ स्वरूपके प्रमाद करीकें भास्याहे तिसविषे दृढ प्रतीत हो गइहे तिसकी भावना करताहे ॥ जगतकी वासना करी मोहकों प्राप्त भयाहे ॥ जो स्वतःसिद्ध अनुभवरूप आत्माहे तिसकों जाणा नही सकता ॥ अरु वासनाकी प्रबलता करी स्वरूपका त्याग कियाहे ॥ अरु भांतिरूप जगतकों सत्य देखताहे ॥ जेसें मद्य करी मत्तकों पदार्थ विपर्यय हुआ ओरके ओर भासतेहे ॥ तेसें मूर्खोंको वासनाके बल करी जगतके पदार्थ सत्य भासतेहे ॥ हे रामजी असम्यक ज्ञान करी जीव दुःखी होताहे ॥ सांतिकों नही प्राप्त होते ॥ मनकी चिंता करी जलतेहे ॥ मन किसका नामहे सो श्रवण कर ॥ जो असम्यक ज्ञान करी अनात्माविषे आत्मभावना होवे अरु वस्तु आत्माविषे अवस्तु अनात्म भावना होवे तिसका नाम मनहे ॥ सो मन केसें उत्पत्ति होताहे ॥ चैतन संवितविषे जो पदार्थोंकी चिंतवना होतीहे बहुरी तीव्र पदार्थकी दृढ भावना होतीहे तब उही चैतन संवित चित्तरूप हो जातीहे ॥ तिस चित्तविषे बहुरी जन्म मरन आदिक विकार उपजतेहे ॥ बहुरी किसीका ग्रहण किसीका त्याग करताहे ॥ जब ग्रहण अरु त्यागका संकल्प अंतरतें निवृत्त होवे ॥ तब चित्तभी मृतक होजावे ॥ जब वासना नष्ट हो जातीहे तब मन अमन पदकों प्राप्त होताहे ॥ मनका अमन होणा परम उपसमका कारणहे ॥ हे रामजी जेते कछु जगतके पदार्थहे तिसकी अभावना करीए अरु सब जगत अवस्तु भू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त करी त्यागीए ॥ तब रिदे आकासविषे चित्त सांत होजावे ॥ हे रामजी चित्तका स्वरूप एतामात्रहे ॥ जब पदार्थोंतें रस उठी जावे तब चित्त बहुरी नही उपजता ॥ जबलग पदार्थोंका रस फुरताहे तबलग स्थूल होजाताहे ॥ असम्यक ज्ञान करी जो अनात्माविषे आत्मभावनाहे ज्यों ज्यों यह दृढ होतीहे त्यों त्यों चित्तरूपी दृढ अनर्थके निमित्त बढता जाताहे ॥ अरु ज्यों ज्यों अनात्मासों आत्म बुद्धि निवृत्त होजातीहे ॥ जो अवस्तुविषे वस्तु बुद्धि न होवे त्यों त्यों चित्तरूपी दृढ छीन हो जाताहे सो कल्याणके निमित्तहे ॥ जब चित्त यथाभूत यथार्थ कों देखताहे तब चित्त अचित्त हो जाताहे ॥ अरु सर्व आशा निवृत्त हो जाताहे ॥ परम सांति सीतलता रिदेविषे स्थिति होतीहे ॥ तब पदार्थोंकों ग्रहणभी करताहे परंतु अंतरतें राग संयुक्त वासना निवृत्त भइहे ॥ तिस करी चित्त सांतिकों प्राप्त होताहे ॥ हे रामजी जीवन्मुक्तविषेभी चेष्टा दृष्ट आतीहे ॥ परंतु जन्मका कारन नही होती काहेतें जो मनविषे मनका सद्भाव नही ॥ जेसें नटुआ अभिमानतें रहित अनेक प्रकारके स्वांग धारताहे तेसें उह अभिमानतें रहित चेष्टा करताहे ॥ जेसें कुंभारका चक्र भ्रमता ताडनातें रहित हुआ सने सने स्थिर हो जाताहे ॥ तेसें ज्ञानवानका चित्त चेष्टा करता दृष्टभी आताहे परंतु जन्मका कारण नही ॥ जब प्रारब्ध भोग वेग पूर्न होवेगा तब स्वाभाविक ठहरी जाताहे ॥ जेसें भुना बीज नही उगता तेसें रागतें रहित ज्ञानीकी चेष्टाहे ॥ जन्मका कारन नही होता ॥ देखणे मात्र ज्ञानीकी चेष्टा तुल्य होतीहे जेसें भुना अरु काचा बीज एक समान भासताहे॥परंतु कचा उगताहे भुना नही उगता ॥ तेसें ज्ञानीकी चेष्टा जन्मका कारन नही होती॥काहेतें जो चित्त सांत हो जाताहे॥ हे रामजी जिसकी चेष्टा अभिमानतें रहितहे सो जीवन्मुक्त कहाताहे ॥ तिसका चित्त केवल चिन्मात्रकों प्राप्त हुआहे ॥ जब शरीरकों त्यागताहे तब अचित्तरूप चिदाकास होताहे ॥ हे रामजी चित्तके दो बीजहे ॥ एक प्राणोंका फुरना दुसरा वासनाका फुरणा ॥ दोनोंविषे जब एकका अभाव हो जाताहे तब दोनों नास हो जाताहे ॥ यह परस्पर कारणरूपहे ॥ जेसें तालतें मेघ जलपान कर जाताहे बहुरी वर्षा करी ताल पुष्ट होताहे सो परस्पर कारणरूपहे तेसें प्राण स्पंद अरु वासना परस्पर कारणरूपहे ॥ जेसें बीजतें अंकुर होतेहे अरु अंकुरतें बीज होतेहे॥तेसें प्राण स्पंदतें वासना होतीहे॥अरु वासनातें प्राण स्पंद होताहे॥यह दोनों चित्त का कारनहे ॥ जेसें फुलविना सुगंध नही होता सुगंध विना फुल नही होता तेसें वासना विना प्राण नही होते ॥ प्राण विना वासना नही होती ॥ हे रामजी जब वासना फुरतिहे तब संवितविषे क्षोभ होताहे ॥ उह प्राणोंकों जगावतीहे तीस करी जगत उपजताहे ॥ जब रिदेविषे प्राण स्पंदके धर्म होतेहे तब संवित क्षोभ होताहे ॥ अरु चित्तरूपी बालक उपजताहे इस प्रकार वासना अरु प्राण दोनों चित्तका कारणहे ॥ दोनोंविषे एकका नाश होवे तब दोनों नास होजावे ॥ अरु चित्तकाभी नाश होजावे हे रामजी चित्तरूपी एक वृछहे सुख दुःखरूपी तिसके स्कंधहे चिंतारूपी फलहे कार्यरूपी पत्रहे वृत्तिरूपी वल्ली साथ वेष्टित हुआहे अरु राग दोषरूपी दोनों बगले उपर आन बैठेहें ॥ अरु तृष्णारूपी काली सर्पिणी करी वेष्टित किया हे ॥ अरु इंद्रियांरूपी पंछी तिसपर आनी स्थित होताहे ॥ इच्छादिक रोगों करी पुष्ट होताहे ॥ अज्ञान इसका मूलहे ॥ अवासनारूपी षड्ग करी शीघ्रही काटा जाताहे ॥ संसारकी अभावना अरु स्वरूपकी भावना करी शीघ्रही नास हो जाताहे ॥ जेसें तीछन पवन करी पाका फल वृछसों शीघ्रही गीर पडताहे ॥ तेसें आत्मभाव करी फल गीर पडताहे ॥ हे रामजी चित्तरूपी आधीहे सर्व दिशा तिसनें मलीन करीहे प्रकासकों आछादी लियाहे ॥ अरु तृष्णारूपी तृण तिसविषे पडे उछलतेहे ॥ अरु शरीररूपी स्थंभाकार अज्ञानरूपी कुंडेते उपजा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुआ वायु वीरोला बडे क्षोभकों प्राप्त करताहे ॥ जब अंतर प्रकास होवे तब तम दूर करे ॥ जब स्पंद रोकीए तब धुरी सांत हो जातीहे ॥ आत्मविचारतें जब वासनातें रहित होवे तब स
रीररूपी धुरी सांत होजावे ॥ हे रामजी प्राणोंके रोकणे करी सांति होतीहे अरु वासनाके अनउदेतें चित्त स्थिर हो जाताहे ॥ प्राण स्पंद अरु वासनाका बीज संवेदनहे जब सुद्ध संवित
मात्रविषे संवेदनका त्याग करे तब वासना अरु प्राण दोनों न फुरे ॥जेसें वृच्छका बीज मुल काटीए तब बहुरी नही होता ॥तेसें इनका मूल हे संवेदन, जब संवेदनका अभाव होवे तब दोनों नही व
णते ॥ संवेदनका बीज आत्मसत्ता हे संवित सत्ताते संवेदन प्रगट भयाहे तीसतें इतर नही ॥ जेसें तीलोविना तेल नही पाइता अंतर बाह्य ओर कछु नही ॥ सब संवितसत्ताविना अंतर नही पाइता॥
वही संकल्प द्वारा संवेदनकों देखतीहे ॥ जेसें सुपनेविषे अपणे मृत्युकों देखताहे देस देसांतरकों प्राप्त होतेहे ॥ तेसें सब सत्ता संवेदनकों देखतीहे ॥ संवित चिन्मात्रविषे संवेदनका उत्थान होताहे
जो अहं अस्मि तब संवेदन जगत् जाल दीखावती हे अपणी संवेदन उठीकरी आपकों भ्रम दीखावती हे ॥ जेसें बालककों अपणे संकल्पतें उपजा वेताल सत्य भासता हे ॥ जेसें स्था
णुविषे पुरुष भासता हे ॥ तेसें संवितविषे संवेदन भासती हे ॥ हे रामजी असम्यक ज्ञानकरीकें संवेदन रूप होजाती हे ॥ तीसविषे आत्मबुद्धि होती हे ॥ अरु सम्यक ज्ञानकरकें लीन
होजाती हे ॥ जेसें जेवरी विषे असम्यक ज्ञानकरी सर्प भासता हे ॥ तेसें आत्माविषे संवेदन भास्ती हे ॥ तीनों जगत् ब्रह्म संवितरूप हे ॥ संवेदनभी कछु भिन्न नही ॥ यह निश्चय जी
सकों द्रढ होवे इसकों बुद्धीश्वर सम्यकज्ञान कहतें हे ॥ जो प्रत्यछ अप्रत्यछ जगत् हे तीससों वास्तव बुद्धि त्याग करणि ॥ इस करीभी संसारके पारकों प्राप्त होवेगा॥ अरु जो अव
स्तु बुद्धि करी न त्यागेगा तो जगत् बडेविस्तारकों पावेगा ॥ हे रामजी संवेदनका जो उत्थान होता हे सो बडे दुःखोंकों देणेहारा हे ॥ अरु संवेदन जो जडवत अजडहे सो परम सुख सं
पदका कारण हे ॥ सो आनंद उत्थानतें रहित आनंद स्वरूप हे ॥ जीसकों सवेदन उत्थानतें रहित असंवेदन संवित आत्मकी बुद्धि हुइ हे सो संसार समुद्रके पारकों प्राप्त होता हे ॥
रामावोच ॥ हे प्रभो जडतातें रहित असंवेदन केसें होता हे ॥ अरु असंवेदन करीकें जडता केसें निवृत्त होती हे ? वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो सर्व ठोरविषे आसक्त नही होता अरु
कछु चित्तकी वृत्ति नही लगाता अरु जीवतत्वका ज्ञान कछु न रहे सो असंवेदन जडतातें रहित हे ॥ संवेदन जो हे स्पंदरूप जोसकरी दृस्य भासता हे ॥ सो दृस्यकी उरतें जड हे अरु
स्वरूपविषे चैतन हे ॥ सो अजड कहाता हे ॥ हे रामजी हृदयाकास जो चैतन संवित हे तीस साथ संवेदनका स्पर्श कछु न होवे एसा संवित अजड हे ॥ देवताभी उही हे नाग दैत अरु
राक्षस हस्ति मनुष आदिक स्थावर जंगमरूप सब उही धार रहती हे ॥ हे रामजी अपणी चेष्टाकरीके संवित आपकों आपही बंधावती हे ॥ जेसें धुराण आपही आपकों गहविषे बं
धावती हे तेसें संवित आपकों बंधावता हे ॥ जब आपणी उर आतीहे तब आपही आपकों प्राप्त होतीहे ॥ हे रामजी जगत् जाग्रतरूपी समुद्र हे संवितरूपी तीसविषे जलहे तीसकरी
सब स्थान पूर्न हो गया हे ॥ अंतरीक्ष पृथ्वी आकास पर्वत नदीयादिक सब संवितरूपी जलकी लहरीहे ॥ तातें सर्व जगत् संवित मात्र हे ॥ तीसविषे द्वैत कलनाका अभाव हे॥ यह
सम्यक् ज्ञान हे इस संवितका बीज सनमात्र हे तीसविषे द्वैत कलनाका अभावहे ॥ यह सम्यक् ज्ञान हे यह संवितका बीज सनमात्र हे सनमात्र सत्तातें संवितका उदे होणा हुआ हे ॥
जेसें प्रकासतें जोती उदे होतीहे अरु ईस सत्ताके दो रूप हे ॥ एक रूप नानाकार हो भासतहे दुतीय एकही रूप हे ॥ घट पट तत्वं आदिक एक सत्ताके नाना प्रकारके विभाग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थित हे ॥ अरु विभागतें रहित एक सत्तास्थित हे ॥ सा सत्ता सामान अद्वैत रूप परमार्थ सत्ता हे ॥ हे रामजी विषयकों त्यागकरी जो सनमात्र हे सो अलेप एकरूप हे सो महा स
त्ताहे तीसकों ज्ञानवान परमसत्ता कहते हे अरु नाना आकारभी सत्ता कबहु नही धारती ॥ यह संवेदन करके हुए हे इस कारन तें अवस्तुरूप हे ॥ एकरूप जो परमसत्ता निर्मल अ
विनासी हे ॥ नकबहु नास होताहे न विस्मरण होतीहे ॥ काहेतें अनुभवरूप हे ॥ हे रामजी एक कालसत्ता, एक आकाससत्ता हे सो यह सत्ता अवस्तुरूप हे ॥ इस विभागसत्ताकों त्या
गकरी सनमात्रसत्ता जो हे ॥ तीसी परायण होउ कालसत्ता आकाससत्ता यद्यपि उत्तम हे परंतुवास्तवनही ॥ जहां नानाविभाग कलना आकार अरु नाना कारण हे सो पवित्रक
र्त्ता पावन नही ॥ इसीतें कहा हे जो आकास काल आदिकसत्ता वास्तव नही अरु सत्ता सामान जो संवित मात्र हे सो सर्वका बीज हे ॥ तीसतें सबकी प्रवृत्ति होतीहे ॥ हे रामजी
जेते कछु पदार्थ हे तीसकी कलना सत्तासामान पर्यंत हे ॥ जो तीस परमपद अनंत अनादि बीजरूपका बीज ओर कोइ नही ॥ जब तीसका भान होवे तब यह निर्विकार होकरी स्थि
त होवे ॥ तीसकों जीवन्मुक्त कहते हे ॥ जब दृश्यकी भावना कछु न फुरे ॥ जेसें बालकमुक गुंगा होताहे ॥ अभिमानतें रहित होताहे तेसें ज्ञानकरीकें यह निर्वासनिक होवे तब जडतातें
मुक्त होताहे ॥ अरु सर्व आत्मभावकों प्राप्त होताहे ॥ अरु जीस संवितविषे दृश्यका स्पर्श होताहे सो संवित जड हे ॥ काहेतें जो सुद्ध स्वरूपविषे मलनका स्पर्श होताहे इसीतें जड
हे ॥ अरु जो संवित द्वैत फुरणेतें रहित हे सो सुद्ध हे अरु अजड हे ॥ अरु जो द्वैत भावकों ग्रहण करतीहे सो स्वरूपकी उरतें जड हे ॥ हे रामजी जोसकों स्वरूपकी उर स्थितिभइहे अरु दृश्यभावका
लेप नही होता सो सर्व वासनाकों त्यागकरी निर्विकल्प समाधिविषे जुडताहे ॥ जेसें आकासविषे नीलता स्वाभाविक वर्ततीहे तेसें जोगी आनंदविषे वर्तताहे ॥ अरु निःसंवेदन संवितविषे नष्ट
होताहे उहीरूप होजाता हे ॥ मनकी वृत्ति तहांस्थिर होजातीहे ॥ बेठतें चलते स्पर्श करते सुगंध लेते देषते सुणते सब इंद्रियोंकी क्रिया करतेभी मनस्थिर रहताहे दृश्यका अभिमान नही फुरता सो
अजड कहाताहे ॥ संवेदनतें रहित सुखी होताहे ॥ हे रामजी एसी दृष्टि प्रथम तो कष्टरूप भासती हे ॥ परंतु सब दुःखोका नासकर्ता होतीहे ॥ तातें इसी दृष्टिकों आश्रय करकें दुःखरूप जो संसार
समुद्रकों तरी जाउ ॥ केसा संसार हे जेसें बटका बीज सूक्ष्म हे विस्तारकों पाइकरी आकासकों स्पर्श करणे लगताहे ॥ तेसें सूक्ष्म संवेदनतें जब संकल्प पसरता हे ॥ तब उही बडे जग
तके विस्तारकों धारतिहे ॥ अरु जन्मके जालकों प्राप्त होतीहे ॥ बीजरूप करी आपही जन्मोविषे डारताहे ॥ बहुरी बहुरी मोहविषे गेरताहे ॥ जब संवित आपणी उर होतीहे तब मोक्ष
कों प्राप्त होताहे ॥ जेसी भावना स्वरूपविषे द्रढ होतीहे सोइ सिद्ध होतीहे ॥ जेसें नटुआ अनेक स्वांगकों धार्ताहे ॥ तेसें संबित अनेक आकारोंकों धारतीहे जब नट भूमिकाकों त्या
गताहे तब अपणे स्वरूपविषे प्राप्त होतीहे ॥ हे रामजी संवितरूपी नटनीहे अरु जगतरूप धारीकरी नृत्य करति हे अरु जो दुःखरूप संसार समुद्रविषे गीरे नही सो सत्ता सब कारणो
का कारण हे तीसका कारण कोउ नही अरु सर्व सारोंका सारहे तीसका सार कोउ नही ॥ तीस चैतनरूपी बडे दर्पणविषे सम सत जगत् भासताहे प्रतिबिंबित होताहे जेसे तालविषे की
नारेके वृच्छ प्रतिबिंबित होते हे तेसें सब वस्तु चिद दर्पणविषे प्रतिबिंबित होतीहे ॥ हे रामजी जेते कछु पदार्थ हे सो आत्मसत्ताकरी सिद्ध होते हे ॥ उसी अनुभवविषे सबका अनुभव
होताहे ॥ जेसे षटरसोंका स्वाद जिव्हाकरी सिद्ध होताहे ॥ तेसें सब पदार्थ चिदाकासके आश्रय सिद्ध होताहे ॥ सब जगत् गण तीसीतें उपजेहे तीसीविषे वर्ततेहे बढते हे ॥ तीसीविषे स्थि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त दिखते हे ॥ तीसविषे लीन होते हे ॥ सबका अधिष्ठान उही सत्ताहे ॥ बहुरी केसी हे गुरूका गुरू उही हे ॥ लघुकी लघुता उहीहे ॥ स्थूलकी स्थूलता उहीहे सूक्ष्मकी सूक्ष्मता उही हे ॥ द्रव्योंका द्रव्य उहीहे कष्टोविषे कष्टता उहीहे ॥ बडेविषे बडाइ उहीहे ॥ तेजोंका तेज उहीहे तमका तम उहीहे, वस्तुकी वस्तुहे द्रव्यका द्रव्य उहीहे द्रष्टाका द्रष्टा उहीहे किंचनवि षे किंचन उहीहे, निष्किंचनविषे निष्किंचन उहीहे ॥ तत्वोंका तत्व उहीहे असत्यका असंत्य उहीहे, सत्यका सत्यभी उहीहे, आश्रमविषे आश्रम उहीहे ॥ अनाश्रमविषे अनाश्रम उही हे हे रामजी एसें जो परमपावन सत्ताहे ॥ तीसविषे प्रयत्न करकें स्थित होउ ॥ बहुरी जेसें इच्छा होवे तेसें करहु ॥ सो आत्मतत्व निर्मल हे अजर हे अमर हे सांतरूप हे; चित्तके क्षो भतें रहित हे ॥ भव संसारतें मुक्तिके निमित्त तीसविषे स्थित होउ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपशम प्रकरणे स्थिति बीज विचारो नाम षडशीतितमःसर्गः ॥ ८६ ॥ ॥ ७ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे महानंदके देणेहारे यह जो बीजोंका बीज तुमनें कहाहे ॥ सो कीस प्रकार प्राप्त होवे ॥ जीस प्रकार उस पदको शीघ्र प्राप्ति होवे सो उपाय कहो ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी इन सबके बीजका जो उत्तर दीयाहे तीस तीस उपाय करी परम पदकी प्राप्ति होतीहे ॥ अब ओरभी जो तेंनें पुछा हे सो सुण ॥ सत्ता सामानविषे स्थित होणे निमित्त जतन कर्तव्य हे ॥ जेती कछु संसारकी वासना हे बलकरी तीसकों त्याग करीए ॥ अरु सुद्ध आत्माविषे तीव्र अभ्यास करीए ॥ तव सीघ्रही अविघ्न आत्मस्वरूपकी प्राप्ति होवे ॥ हे तत्ववेत्ता उस पदविषे छीनभी स्थित होइगे तब अक्षय भावकों प्राप्त होइगे ॥ हे रामजी सत्ता सामान संवित मात्र तत्वहे तिसविषे स्थित होउ जो इच्छा होवे सो करो ॥ तीसविना कछु अवर सिद्ध न होवेगा ॥ सब उही भासेगा एसा जो अनुभव तत्व हे सो तेरा स्वरूप हे ॥ तीसके ध्यानविषे स्थित हुए तुजकों खेद कछु न होवेगा ॥ एसा संवेदन साथ ध्यान नही होता अरु उंचा पद हे ॥ पुरुष प्रयत्न करी तीस पदकों प्राप्त होइ ॥ हे रामजी केवल संवेदन साथ ध्यान नही होता ॥ काहेतें जो सर्वत्र संभव संवित तत्व हे ॥ संवित सर्वदा सर्वकाल सहा यक होतीहे अरु सब साथ मोली हुइहे ॥ जो कछु चीतवे जहां इच्छित होवे जो कछु करे सो सब संवितकरी सिद्ध होताहे ॥ हे रामजी आत्मतत्व प्रत्यच्छ हे तीसका भान नही हो ता ॥ और कछु भासताहे यही अविद्या आवरनहे ॥ सो इसकों दुःख होताहे जो स्वरूपके प्रमादकरी दृश्यकी वासना करताहे तीसको दृढता करी अंतःकरण दुःख पावताहे ॥ जब जतन करीकें वासनाका त्याग करीये तब मन अरु सरीरके दुःख सब नास होजावेंगे ॥ अरु पूर्व जो इसकों मोह दृढ हो रहा हे जेसें मेरूकों मूलतें उखाडना कठिन हे तेसें वासनाका त्याग कठिन होरहाहे ॥ सो वासना मनतें होतीहे ॥ जबलग मन क्षय नही होता ॥ तब लग वासनाभी क्षय नही होती ॥ अरु तत्वज्ञान विना मन नास नही होता ॥ जब वासना अरु मनका आवरण दूर होताहे यह परस्पर कारण रूप हे ॥ तातें हे रामजी तुं पुरुष प्रयत्न करके मनके संकल्प विकल्पकों निवृत्त करो ॥ अभ्यास अरु विचार करीकें विवेककों उपाय करी भोगोंकी वासना दूरतें त्याग इसकरी तुं सांतिवान होवेगा ॥ इन तीनोंका सम अभ्यास करी तत्वज्ञान मनो नास अरु वासना क्षयका वारंवार अभ्यास कर ॥ जबलग इनकों न साधेगा तबलग अनेक उपायोकरी सांतिकों न प्राप्त होवे ॥ जो हे रामजी वासना क्षय होवे अरु मनोनास तत्वज्ञानका अभ्यास न करे तो कार्य सिद्ध नही होता ॥ अरु जो मनोना स करे अरु तत्वज्ञान करी वासना क्षय न करे तबभी कल्यण न होवेगा अरु तत्वज्ञानका विचार करे अरु वासना क्षय न होवे तोभी कुशल न होवेगा ॥ जब तीनोंका सम अभ्यास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होवे तब फलकी प्राप्ति होवे ॥ हे रामजी एकके सेवनेतें सिद्धता नही प्राप्त होती ॥ जेसें मंत्रोंकों कोउ प्रतिबंध लय करे तब फलदायक नही होता ॥ अर्थ यह जो मंत्र संपूर्न हुआ फलदायक होताहे ॥ एक एक चरन पढे तो फलदायक नही होता ॥ जबलग सब मंत्र संध्यादिक एक ठोर नही पढता तबलग मंत्र नही फुरतें ॥ तेसें एकला कोसीकरी कार्य सिद्ध नही होता जब चिरकाल इनका एकठाहो सेवणा होवे तब कार्य होवे ॥ जेसें बडे सत्रु सेन संयुक्त होवे तीसकों मारणेकों एक सुरमा जावे तब सत्रुकों मारी न सके ॥ जब एकठे सेना उपर जाय पडे तब उसकों जीत लेवे ॥ तेसें संसाररूपी सत्रु हे ॥ जब तत्व ज्ञान मनोनास वासना क्षयका एकठा अभ्यास होवे जब संसारूपी सत्रु नास होवे ॥ हे रामजी जब तीनोंका अभ्यास करेगा तब रिदेकी अहंमम ग्रंथी टुट पडतीहे ॥ जेसें अनेक जन्मोंकी संसार सत्यता जो इसके हृदेविषे स्थित होरहीहे ॥ सो अभ्यास जोगकरी टुट पडेगी नास हो जावेगी ॥ तातें चलतें बेठते खातें पीते सुणते सुंघते स्पर्श करते जागते इन तीनोंका अभ्यास करो ॥ हे रामजी वासनाके त्यागेतें प्राणस्पंद रोक्या जाताहे ॥ जब प्राणोका स्पंद रोक्या तब चित्त अचित्त होजाता हे ॥ एक प्राणोंके रोकेतें वासना क्षय हो जाती हे ॥ तबभी चित्त अचित्त हो जाता हे ॥ आत्मयोगकरी अथवा वासना त्यागकरी आत्मतत्व प्रकासेगा ॥ इनविषे जो तेरी इच्छा होवे सोइ कर ॥ प्राणोंका रोकणा जोग करी भावे वासनाका त्याग कर ॥ प्राणायाम तब होता हे जब गुरूकी दीनी जुक्ति स्थित होती हे ॥ आसन अरु आहारके संयम करी प्राणोंका स्पंद रोक्या जाता हे ॥ अरु संम्यक ज्ञानकरीकें जगत्कों अवास्तव जाणता हे तब वासना नही प्रवर्तती ॥ जो जगत्की आदिभी अरु अंतभी स्थित हे तीसविषे मन जब स्थित होता हे तब वासना नही उपजती ॥ हे रामजी जब व्यवहार विषे निःसंग हुआ अरु संसारकी भावनातें विवर्जित हुआ अरु सरीरविषे नासवंत बुद्धि भइ तब वासना नही प्रवर्तती ॥ जब विचारकरीकें वासना क्षय होवे ॥ तब चित्तभी नष्ट होजावेगा॥जेसें वायुके ठहरेतें धुली नही उडती ॥ तेसें वासनाके क्षय हुए चित्त नही उपजता जो प्राणस्पंद हे सोइ चित्त स्पंद हे ॥ जब वासना फुरति हे तब जगत् भ्रम उपजता हे ॥ जेसें अरुडतें धुली उपजती हे तेसें चित्ततें वासना उपजती हे ॥ जब प्राणस्पंद ठहरता हे तब चित्तभी ठहरी जाता हे ॥ तातें जतन करी प्राण स्पंद अथवा वासनाके जीतणेका अभ्यास करो तब सांतीवान होवेगा ॥ अरु जो यह उपाय न करेगा अरु ओरकों चित्त वस करणेका उपाय करेगा तो बहुत कालतें पावेगा ॥ हे रामजी मनके जीतणेका अन्य उपाय इन जुगतिविना ओर कोउ नही ॥ जेसें मतवाले हस्तिकों अंकुशविना वस करणेका उपाय ओर कोउ नही तेसें मन जुक्तिविना वस नही होता सो जुक्ति कोन हे ॥ संतोंकी संगति सतसास्त्रोंका विचार करणा ॥ जो इस उपायकरी तत्वज्ञान अरु वासना क्षय अरु प्राणोंका स्पंद रोकणा ॥ यह चित्त वस करणेकों परम जुक्ति हे ॥ इस करी चित्त शीघ्रही जीत्या जाता हे ॥ अरु जो इन उपायोंका त्याग करी हठसों मन वस कीया चाहते हे सो क्या करते हे ॥ जेसें तमके नास करणेकों दीपक जगावे तो नास होजाता हे ॥ अरु सस्त्रों करी तमकों काटे तो तम नास न होवेगा ॥ तेसें ओर उपायोंकरी चित्त वस न होवेगा ॥ इसविना ओर उपाय करतें हे सो मुर्ख हे ॥ जेसें मतवाले हस्तिकों भेहकी तंतु साथ बांध्या नही जाता ॥ जो कोउ इसकरी बांधणे लागे तो महा मुर्ख हे ॥ तेसें मनके जीतणेकों ओर प्रकार जो हठ करते हे सो महामूढ हे ॥ ओर उपाय करें क्लेस प्राप्त होवेगा ॥ आत्म सुख न प्राप्त होवेगा ॥ जेसें दुर्भागी जीवोंकों कहुं सुख

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नही होता हे ॥ हे रामजी तीर्थ दान तप देवताकी पुजा यह चारों साधन जीननें कीए हे ॥ अरु मन जीतणेका उपाय नही कीया सो मृगकी न्यांइ हुए भ्रमते फीरते हे ॥ पहाडोंकी कं दराविषे फल पत्र खाते फीरते हे मनका नास कीया नही तातें आत्मपदकों नही पाया ॥ सो ओर पशुओंके समान हे ॥ जेसें ओर पसु मृग पहाडोंविषे होता हे तेसें उहभी हे ॥ हे राम जी जीस पुरुषनें मनको वस नही कीया ॥ तीसकों सांति प्राप्त नही होती ॥ जेसें कोमल अंग मृग ग्रामविषे गया सांतिकों प्राप्त नही होता॥जेसें जल विषे आया तृण नदीके वेगकरी भटकता फीरता हे कष्टमान होता हे तेसें उह पुरुष कर्म करता हे ॥ मनकों स्थित कीएविना कष्ट पावता हे ॥ कबहुं दुःख साथ जलता हे कबहुं कर्मोंके वसतें स्वर्गकों प्राप्त होता हे सोभी नास होजाते हे ॥ जेसें जलविषे तरंग उछलता हे कबहुं अधको जाता हे॥ तेसें कर्मोंके वसतें जीव स्वर्ग नरकविषे मध्यविषे भ्रमते हे ॥ तातें एसी दृष्टीका त्याग करी सुद्ध संवित मात्रकों आश्रयकर ॥ अरु वीतराग होकरी स्थित होउ ॥ हे रामजी जगतविषे ज्ञानवान सुखी हे अरु जीताभी उही हे ॥ ओर सब दुःखी हे अरु मृतक समान हे ॥ अरु बलीभी ज्ञानवा नहे ॥ सो मोहरूपी सत्रुकों मारीकरी संसार समुद्रके पारकों प्राप्त होता हे ओर सब निर्बल हे तातें तुमभी ज्ञानवान होहु संवेदन रहित जों संवीत मात्र तत्व हे सो एक हे अरु सर्वकी आदि हे ॥ सवतें उत्तम कलनातें रहित सर्व विषे स्थित हे॥ तीसविषे स्थित होहु ॥ तब कर्त्ता हुआभी अकर्त्ता होवेगा ॥ अरु परम ब्रह्म उदे होवेगा ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे उपसम प्रकरणे संशय निराकरणोपदेसो नाम अष्टाशीतितमः सर्गः ॥ ८८ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७. ॥

॥वसिष्ठोवाच हे रामजी जीस पुरुषनें आत्मविचारकरी अल्पभी चित्त अपणा नियह कीया हे सो संपूर्न फलकों प्राप्त होवेगा ॥ अरु तीसका जन्म सुफल हुआ हे॥ हे रामजी जीस चित्तविषे विचाररूपी कणका उदे हुआ हे सो अभ्यास करीकें बडे विस्तारकों पावेगा ॥ नीराग पूर्वक जीसके रिदेविषे विचार उपजा हे सो बढता जाता हे ॥ अरु अविद्यारूपी गु णोंके फलकों काटी डारेगा ॥ अरु सब सुभ गुन आन आश्रय करेगे ॥ जेसें जलकरी पूर्न हुआ तालका सब पंछी आन आश्रय करते हे ॥ हे रामजी जीसकों सम्यक ज्ञान प्राप्त हुआ हे ॥ अरु निर्मल बोधकरी यथा दर्सन हुआ हे तीसकों इंद्रियोंके विषे चलाइ नही सकते ॥ जबलग स्वरूपका प्रमाद होता हे तबलग आधी दुःख इसकों होता हे ॥ अरु जब स्वरूपविषें स्थित होता हे ॥ तब सरीर अरु मनके दुःख इसकों वस नही करी सकते ॥ जेसें बीजुरीकों ग्रहण कोउ नही करता ॥ जेसें पुष्टिकरी मेघोंकों मुष्टिविषे कोउ पकडी नही सकता जेसें आ कासके चंद्रमाकों मुष्टिविषे कोउ नही पकडी सकता ॥ जेसें मूढस्त्री चंद्रमाकों मोहणेकों समर्थ नही होती ॥ तेसें ज्ञानवानकों दुःख कोउ वसकरी नही सकता॥ हे रामजी जो हस्ति मद करी मत्त हे अरु मद मस्तकतें करीझरता हे अरु भवरे तीसके आगें शब्द करते हे ॥ मच्छरोंके प्रहार अरु स्त्रीयोंके स्वास तीसकों नही छेदीसकते॥तेसें ज्ञानवानकों विषयोंके राग दोष च लाय नही सकते ॥ अरु जीस हस्तिके मस्तकसों मोती नीकसते हे एसे बलवान हस्तिकों नखों साथ विदारणे हारा जो सिंह हे॥जेसें उस सिंहकों हरण मारी नही सकता तेसें ज्ञानवानकों दुःख चलाय नही सकता ॥ अरु जीसके फुत्कारे साथ बनके वृच्छ जली जाते हे एसा जो सर्प हे जेसें उह सर्पकों दर्दुर त्रास नही सकते तेसें ज्ञानवानकों राग दोष चलाय नही सकते अरु जेसें कोउ राजा सिंहासनपर बेठेकों तसकर दुःख दे नही सकते तेसें जो ज्ञानी स्वरूपविषे स्थित हे तीसकों इंद्रियोंके विषय दुःख दे नही सकते॥ अरु जो विचारतें रहित देह अभि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मानी हे ॥ आत्मतत्वकों नही प्राप्त हुए तीनकों विषय उडाइ लेजाता हे ॥ जेसें सुके पत्रकों पवन उडाइ ले जाता हे अरु ज्ञानवानकों चलाय नही सकते ॥ अरु जेसें पर्वत मंद पवनकरी चलायमान नही होता ॥ तेसें ज्ञानवान सुख दुःखविषे चलायमान नही होता ॥ अरु जो विचारतें रहित हे सो देसके प्रणाम भाव विषे स्थित मानता हे ॥ अरु जगत भाव हे संसार भाव पदार्थोविषे मनुष जन्मविषे गुरु शास्त्रका मार्ग तीसकी उरतें सोइ रहा हे अरु मूढ हो रहा हे ॥ खावणे पीवणे विषे सावधान हे ॥ अरु विचारतें शून्य हे ॥ सो मृतक समान हे मृतक कहाता हे ॥ यह विचार इसकों कर्तव्य हे ॥ जो में कोन हों अरु यह जगत क्या हे ॥ केसें उत्पत्ति हुआ हे अरु केसें निवृत्त होवेगा इस प्रकार संतोंका संग अरु अध्यात्म शास्त्र करी विचार करी जो पुरुष द्रश्य भावकों त्याग करी आत्मतत्वविषे स्थित होताहे सो परम पदकों पावताहे ॥ जेसें दीपके प्रकासकरी पदार्थकों पाइताहे तेसें विचार करी आत्मतत्व पाइताहे ॥ हे रामजी जो शास्त्रविचार करी आत्मतत्वका बोध होताहे सो ज्ञान कहाता हे सो ज्ञान ज्ञेयके साथ अभिन्नरूप हे अध्यात्म विद्याके विचार करीकें आत्मज्ञान प्राप्त होता हे ॥ जेसें दूधसों मथी करी मांखण काढता हे तेसें विचारकरी आत्मज्ञान प्राप्त होता हे ॥ ज्ञेय इसके अंतर होता हे सो ज्ञेय परमब्रह्म स्वरूप हे सत्य हे असतकी न्यांइ होकरी स्थित हे ॥ ज्ञानवान तीसकों पाइकरी तृप्त होता हे ॥ अरु जीवन्मुक्त होकरी अपणे आपविषे प्रकासता हे जेसें चक्र वर्ती राजविषे आनंदकरी तृप्त होता हे ॥ तेसें ज्ञानवान ब्रह्मानंदविषे इंद्रियोकी इच्छातें रहित सोभता हे ॥ सब्द स्पर्श रूप रस गंध पांचों इंद्रियोंमें आशक्त नही होता ॥ सुंदर राग तंद्रीके शब्द विषे स्त्रीयोंके गावणेविषे ओरभी जो कोकिला पंछी हे अरु गंधर्व गंधर्वी विषे लेकरी गायन हे ॥ तीन कीसीविषे आसक्ति नही होता ॥ अरु जेते कछु स्पर्श हे ॥ सुंदर फुल अग्र चंदन मंदार कल्प वृच्छोंके फुलोंकी सुगंध अरु सुंदर स्त्रीयोंका स्पर्श करना अप्सरा नाग कन्या अरु स्वर्नके द्रवतकी न्यांइ जीनके अंग हे ॥ तीनका स्पर्श करना अरु हीरा मणी भुषण नाना प्रकारके वस्त्र हे तीनविषे बंधमान नही होता ॥ जेसें चंद्रमा सुंदर अरु सीतल हे परंतु सूर्य मुखी कमलोंकों विकास नही करी सकता तेसें सुंदर स्पर्श ज्ञानीके चित्तकों हर्षवान नही करते ॥ जेसें मरुस्थलविषे हंस प्रसन्न नही होता तेसें ज्ञानवान स्पर्श विषे नही प्रसन्न होतें ॥ अरु ज्ञानवान रसादिकविषेभी बंधमान नही होता ॥ दुध दही घृतादिक जो रस हे अरु भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य चार प्रकारके भोजन हें अरु कटु तीच्छन मीठा खारा जीतना रस हे तीनकी इच्छा ज्ञानवान नही करते ॥ कीसीविषे बंधमान नही होते ॥ आकास बोध करी नित्य तृप्त हे ॥ कीसी भोगकी इच्छा नही करते ॥ जेसें ब्राह्मण कुकरका मांस खाणेकी इच्छा नही करते तेसें ज्ञानवान उर्वसी रंभा मेनका आदिक अप्सराकी इच्छा नही करता ॥ अरु गंधकी इच्छाभी नही करता ॥ चंदन अगर कस्तुरी मंदारवृच्छोंके फुल सुगंधकी इच्छा नही करते ॥ जेसें मछी मरुस्थलकी इच्छा नही करति ॥ तेसें ज्ञानवान सुगंधकी इच्छा नही करता अरु रूपकी इच्छाभी नही करते ॥ सुंदर स्त्रीयांबाग तलाव नदीयां इत्यादिक जो रूपवंत पदार्थ हे तीनकी इच्छा नही करता ॥ जेसें चंद्रमा बदलोंकी इच्छा नही करते ॥ तेसें ज्ञानवान रूपकी इच्छा नही करते औरकी क्या बात हे ॥ इंद्र यम विष्णु रुद्र ब्रह्मा समुद्र कैलास मंदराचल रत्न मणी कंचन यह जो बडे बडे पदार्थ हे ॥ तीनकी इच्छा नही करता ॥ जेसें राजा नीच पदार्थोंकी इच्छा नही करता ॥ तेसें ज्ञानवान पदार्थोंकी इच्छा नही करता ॥ समुद्रके गर्जणे सीगके गर्जणेतें वीजलीके गर्जणेतें आदि भयानक शब्द हे ॥ तीसकों सुणीकरी भयमान नही हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ता ॥ जेसें सुरमा धनुषका शब्द सुणीकरी भयमान नही होता ॥ जेसें ज्ञानवान मतवाले हस्ति अरु वेताल पिसाचके शब्द सुणी अरु इंद्रके वज्रके सब्द सुणता देखता हुआ कंपायमान नही होता ॥ सत स्वरूपकी स्थितितें चलायमान कदाचित्त नही होता अरु जो आरे साथ सरीरकों काटीए अरु खडग साथ कणकण करीए बाणों साथ वेध्या जावे तोभी कंपायमान नही होता ॥ उसकों राग दोष कीसी विषे नही होता ॥ सरीर पर एक उर जलता अंगार राखीए अरु एक उर फुलोंका स्पर्श राखीए तोभी ह र्ष सोकवान नही होता ॥ अरु एक उर खडग धारावत् तीच्छन स्थान होवे ॥ अरु एक उर पुष्प शय्या होवे तीसकों दोनों तुल्य हैं ॥ एक उर सीतल स्थान होवे एक उर तपत सिला होवे दोनों उसकों तुल्य हे ॥ एक उर मारणे वाला विष होवे दुसरी उर जीवणे वाला अमृत होवे ॥ सो दोनों तुल्य उसकों ॥ हे रामजी संपदा प्राप्त होवे भावे आपदा प्राप्त होवे ॥ भा वे मृत्यु प्राप्त होवे भावे उत्साह होवे ॥ इनविषे व्यवहार करताभी दृष्ट आताहै परंतु अंतरतें हर्ष सोक नही ॥ उसका मन अंतरतें मुक्त हे ॥ सदा सम रहताहे हे रामजी लोहके जंबुरा साथ उसका मांस तोडीए अरु नरकविषे डारीए अरु उपर सस्त्रोंकी वर्षा होवे तोभी ज्ञानवान पुरुष भयकों न पावेगा ॥ अरु न उद्वेगवान व्याकुल होवेगा ॥ न दीन होवेगा ज्ञानवा न इनविषे सदा सम मन रहता हे ॥ पहाडकी न्यांइ धैर्जवान स्थित रहता हे हे रामजी ज्ञानवान राग दोषतें रहित हे ॥ देह अभिमानतें मुक्त जो हुआ हे तीसका सरीर अग्निविषे पडे अथवा खाइविषे गीरे ॥ अथवा स्वर्गविषे होवे ॥ उसकों दोनों तुल्य हे ॥ हर्ष सोकतें रहित हे हे रामजी जीसकों स्वरूपविषे दृढ स्थित भइ हे ॥ सो चलायमान नही होता ॥ जेसें मेरु स्थित हे उसकों पवित्र पदार्थ होवे अथवा अपवित्र होवे, पंथ होवे अथवा कुपंथ होवे; विष होवे अथवा अमृत होवे मीठा खटा सलोना कडवा दुध दही घृत रस रक्त मांस मद्य अस्थि तृण आदिक जो भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य भोजन हे सो सम हे ॥ न इष्टविषे रागवान होताहे न अनिष्टविषे दोषवांन होताहे ॥ जो प्राणोंके नीकासणेकों सन्मुख आवे अरु दुसरा प्राणोंकी रक्षानिमित्त आवे तो दोनोंकों आत्मा स्वरूप सांतमन मधुर रूप देखताहे ॥ राग दोषतें रहित हे रमणीय अरमणीय पदार्थोंकों सम देखताहे ॥ संसारकी आस्था त्याग दीनीहे बोध स्वरूपविषे निश्चय भयाहे ॥ चित्त नीराग पदकों प्राप्त भया हे सब जगत् उसकों आत्मास्वरूप भासताहे सब्द स्पर्श रूप रस गंध पंचविषयोंके भोग अवसर अपणा नही पावते ॥ जे सें दर्पणकों देखणे लागे प्रतिबिंब भासताहे दर्पणको सुरती नही रहती ॥ तेसें विषयोंविषे आत्मा देखता हे ॥ विषयोंकी सुरती नही रहती ॥ अरु जो अज्ञानी हे तीसकों इंद्रियां ग्रास लेती यांहे ॥ जेसें तृणोंकों मृग ग्रास लेताहे ॥ अरु जीसनें आत्म पदविषे विश्रांति पाइ हे तीसकों इंद्रियां ग्रास नही सकती ॥ हे रामजी अज्ञानरूपी समुद्रविषे जो पडाहे अरु वासनारूपी लहरी साथ मीली करी उछलता हे अरु गीरताहे तीसकों आसारूपी तंदुआ ग्रास लेताहे ॥ हाय हाय करता हे ॥ सांतिकों प्राप्त नही होताहे ॥ अरु जो विचार करीकें आत्मपदकों प्राप्त भयाहे सो विश्रांतिकों पाइ चलायमान नही होता ॥ जेसें सुमेरु पर्वत जलके समूह करी चलाय मान नही होता तेसें उह संकल्पविकल्पविषे चलायमान नही होता ॥ सर्व सकल्पकी सीमा आत्मपदविषे विश्रांति जीसकों भइहे सो उत्कृष्टताकों प्राप्त भयाहे ॥ हे रामजी तीसकों यह जगत् ज्ञानमात्र भासताहे ॥ संबित मात्र जांणीकरी विचार करताहे ॥ न कीसीका ग्रहण त्याग करताहे ॥ तातें भांतीकों त्यागकरी संबितमात्रही तेरा स्वरूपहे ॥ किसका त्याग करताहे किसका ग्रहण करताहे ॥ जो आदिविषेभी न होवे अंतविषेभी न रहे मध्यविषे कछु भासे सो भ्रममात्र जाणीए ॥ इ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स प्रकार जाणी करी भाव अभावकी बुद्धिकों त्याग करी निःसंवेदनरूप हो करी संसार समुद्रकों तरी जावहु ॥ मन बुद्धि इंद्रियां करीके कर्म करो भावे न करो ॥ निःसंग होइगे तब तुमकों लेप न लगेगा ॥ हे रामजी जीसका मन अभिमानतें रहित हुआहे सो कर्म करताभी लेपायमान नही होता ॥ जेसें मन ओर ठोर गया होताहे तो विद्यमान शब्द अथवा रूप पदार्थोंकों होतेभी नही जाणता ॥ तेसें जिसका मन आत्मपदविषे स्थित हुआहे तिसकों सुख दुःख कर्म नही लागता ॥ जो पुरुष अभिमानतें रहितहे सो कर्मोंविषे सुख दुःखकों भोगता दृष्ट आताहे ॥ परंतु उसकों स्पर्श नही करते ॥ देखो तो यह बालकभी जानतेहे जो मन ओर ठोर जाताहे तो सुणताभी नही सुणता तेसें उह पुरुष करताभी नही करता ॥ हे राम जी जिसका मन असंग हुआहे सो देखता हे परंतु नही देखता सुणता हे परंतु नही सुणता स्पर्श कर्ता हे परंतु नही करता हे ॥ सुंघता हे रस लेता हे परंतु नही लेता ॥ इत्यादिक जो कछु चेष्टा हे सो कर्त्ताभी अकर्त्ता हे ॥ उसका चित्त आत्मपदविषे लीन भयाहे ॥ जेसें कोउ पुरुष देसांतरकों जाताहे सो उस देसविष व्यवहार कर्म करता हे ॥ परंतु उसका चित्त यह विषे रहता हे ॥ तेसें ज्ञानवानका चित्त आत्मपदविषे रहता हे यह बात मूर्खभी जाणता हे जो जेसा वेग मनविषे तीव्र होता हे तीसकी सिद्धता होती हे सोइ भासता हे ओर नही भासता ॥ हे रामजी सर्व अनर्थोंका कारण संग हे संसारके संगकरी जन्म मरणके बंधनकों प्राप्त होता हे ॥ तातें सब अनर्थोंका संसारका कारण संग हे ॥ सब इच्छाका कारण संग हे ॥ अरु सब आपदाका कारण संग हे ॥ संग त्याग करी मोक्षरूप अजन्मा होता हे ॥ तातें संगकों त्यागकरी जीवन मुक्त होकरी वीचरु ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् सर्व संशयरूपी कुहोडके नासकरता सरत्कालका पवन ॥ संग कीसकों कहते हे संक्षेपतें मुजकों कहो ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी भाव अभाव जो पदार्थ हे सो हर्ष सोककों देणेहारे हे ॥ जीस मलीन वासनाकरी यह प्राप्त होती हे सो वासना संग कहाता हे ॥ हे रामजी जो देहविषे अहंबुद्धि होती हे अरु संसारकी सत्य प्रतीती होती हे तीस संसार के इष्ट अनिष्टकों राग दोष संहित ग्रहण करता हे ॥ एसी जो मलीन वासना संग कहाता हे ॥ अरु जीवन मुक्तकी वासना हर्ष सोकतें रहित सुद्ध होती हे ॥ सो निःसंग कहाता हे ॥ तीसकी वासना जन्म मरण नही होती ॥ हे रामजी जीस पुरुषकों देहविषे अभिमान नही होता ॥ अरु स्वरूपविषे स्थित हे सरीरके इष्ट अनिष्टविषे राग दोष नही करता ॥ उसकी सुद्ध वासना हे उह जो कर्त्ता हे सो बंधनका कारन नही होंता ॥ जेसें भुना बीज नही उगता तेसें ज्ञानवानकी वासना जन्म मरणका कारण नही होती ॥ अरु जीसकी वृत्ति जगत्के पदार्थ विषे स्थित हे अरु राग दोषकरी ग्रहण त्याग करता हे ॥ एसी जो मलिन वासना हे ॥ सो जन्मोंका कारण हे ॥ इस वासनाकों त्यागकरी जब तुं स्थित होवेगा तब तुं कर्ता हुआभी निर्लेप रहेगा ॥ हर्षसोकादि विकारोंतें जब तुं रहित होवेगा तब वीतराग भय क्रोधतें असंग होवेगा ॥ हे रामजी जीसका मन असंग हुआ सो जीवनमुक्त हुए हे ॥ तातें तुंभी वितराग होकरी आत्मतत्वविषे स्थित होवहु ॥ जीवनमुक्त पुरुष इंद्रियोंके ग्रामकों निग्रह करीकें स्थित होता हे ॥ अरु मान मद वैरकों त्यागकरी संतापतें रहित स्थित होता हे ॥ जो कछु कर्म करते हे सो सब आत्मा जाणी करते हे ॥ परंतु व्यवहार बुद्धितें रहित असंग होकरी कर्म करते हे ॥ सो करतेभी अकरते हे ॥ तीसकों आपदा अथवा संपदा प्राप्त होवे ॥ अपणे स्वभावकों नही त्यागते ॥ जेसें क्षीर समुद्रकों मंदराचल पर्वत पाइकरी सुछताकों न त्यागत भया तेसें जीवनमुक्त अपणे स्वभावकों नही त्यागते ॥ हे रामजी आपदा प्राप्त होवे अथवा चक्रवर्ती राज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राप्त होवे ॥ अथवा सर्पका सरीर प्राप्त होवे ॥ अथवा इंद्रका सरीर प्राप्त होवे ॥ इन सब विषे सम आत्मभाव स्थित होते हे ॥ हर्ष सोककों नही प्राप्त होते हे ॥ अरु सर्व आरंभकों त्यागकरी नानात्व भावतें रहित स्थित होते हे ॥ विचार करीकें जीननें आत्म तत्व पाया हे ॥ जेसें स्थित होवे तेसें स्थित होवे ॥ तुंभभी इसीदृष्टिकों पाइकरी आत्मतत्वकों देखो तब वित ज्वर होवेगा ॥ आत्मपदकों पाइकरी बहुरी जन्ममरणके बंधनमें न आवहिगा ॥ इतिश्री यो० उपसम प्रकरणे आर्षे देवदूतोक्त महारामायणं मोक्षोपाय नाम नवतितमः सर्गः ॥ ९० ॥

॥ समाप्तोऽयं श्रीयोगवासिष्ठे उपशम प्रकरणं पंचमं ॥

अनुक्रमणिका

सर्गांक	सर्गनाम	पत्रांक	सर्गांक	सर्गनाम	पत्रांक	सर्गांक	सर्गनाम	पत्रांक	सर्गांक	सर्गनाम	पत्रांक
१	पूर्वदिनवर्णन	२	७	क्रमसूचना वर्णन	६	१३	मननिर्वाण	१०	१९	पावनबोध वर्णन	१७
२	उपदेशानुसार वर्णन	२	८	सिद्धगीता वर्णन	६	१४	चित्त चैत्यरूप वर्णन	१२	२०	पावनबोध वर्णन	१७
३	सभास्थान वर्णन	३	९	जनक विचार	६	१५	तृष्णा वर्णन	१४	२१	तृष्णाचिकित्सोपदेश	१८
४	राघव प्रश्न	३	१०	जनक निश्चय	८	१६	तृष्णाचिकित्सोपदेश	१४	२२	विरोचन वर्णन	१९
५	प्रथमोपदेश	४	११	चित्तानुशासन	९	१७	तृष्णा उपदेश	१५	२३	बळवृत्तांत विरोचनगाथा	२०
६	क्रमोपदेश	५	१२	प्राज्ञमहिमा	९	१८	जीवन्मुक्ति वर्णन	१५	२४	बळोपाख्याने चिकित्सोपदेश	२०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्गांक	सर्वनाम	पत्रांक	सर्गांक	सर्गनाम	पत्रांक	सर्गांक	सर्गनाम	पत्रांक	सर्गांक	सर्गनाम	पत्रांक
२५	बळचितसिद्धांतोपदेश	२२	४१	प्रल्हादाभिषेक	३४	५७	समाधि निश्चय	५०	७३	जीवन्मुक्तिज्ञान बंध	६४
२६	बळोपदेश	२२	४२	प्रल्हादअवस्था वर्णन	३५	५८	सुरघपरिघ निश्चय	५०	७४	सम्यकज्ञान वर्णन	६५
२७	बळविश्रांति वर्णन	२२	४३	प्रहादविश्रांति	३५	५९	कारणोपदेश	५१	७५	उपसमयोग	६५
२८	बळविज्ञान प्राप्ति	२३	४४	गाधी आख्याने चांडा०	३६	६०	भासविलास वृत्तांत	५२	७७	चित्तशांति प्रतिपादन	६६
२९	बळोपाख्यान समाप्ति	२३	४५	राजप्रध्वंस	३७	६१	अनित्यता प्रतिपादन	५२	७८	वीतवोपाख्यानें चित्ता०	६८
३०	हिरण्यकशिपु वध	२४	४६	गाधीबोध प्राप्ति	३८	६२	अंतर असंगविचार	५३	७९	वीतवोपाख्यानें अनुशा०	६८
३१	प्रल्हाद विज्ञान	२५	४७	राघव सेवन	४०	६३	सशक्त विचार	५४	८०	चित्तोपदेश	६९
३२	प्रल्हादोपाख्याने विवि०	२६	४८	उद्दालकविचार	४२	६४	शांतिसमाचार योगोपदेश	५५	८१	मनोयज्ञ वर्णन	७०
३३	प्रल्हादाकाष्ठनंतर नारायणागमन	२६	४९	उद्दालकविश्रांति	४३	६५	संशक्तचिकित्सा	५५	८२	समाधियोगो प०	७०
३४	प्रल्हादोपदेश	२७	५०	उद्दालकनिर्वाण	४५	६६	सारयोगो पदेश	५६	८३	इंद्रियनिर्वाण	७१
३५	प्रल्हादात्मलाभ चिंतन	२९	५१	ध्यानविचार	४६	६७	मोक्षस्वरूपोपदेश	५७	८४	वीतव निर्वाण योगोपदेश	७२
३६	प्रहादोपाख्याने संस्तवन	३१	५२	भेदनिराशा	४७	६८	आत्मविचार	५८	८५	वीतवोपाख्यान समाप्ति	७३
३७	दैत्यपुरी प्रभंजन	३२	५३	सुरघवृत्तांत मांडवोपदेश	४७	६९	नीरास्पद मौनविचार	५९	८६	सिद्धिलाभ विचार	७३
३८	भगवानचित्तविवेक	३३	५४	सुरघवृत्तांत वर्णन	४८	७०	मुक्तामुक्तविचार	६१	८७	ज्ञानविचार	७४
३९	नारायण वचनोपन्यास	३३	५५	सुरघवृत्तांत समाप्ति	४९	७१	संसारसागर योगो पदेश	६२	८८	स्मृतिबीजविचार	७५
४०	प्रल्हादबोध वर्णन	३४	५६	सुरघपरिघसमागम	४९	७२	जीवन्मुक्त वर्णन	६३	८९	स्मृति बीजनिराकरण	७७
										मोक्षोपाय	७८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ इति श्रीयोगवासिष्ठे उपशमप्रकरणं पंचमं समाप्तं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री १०८ ईश्वर मठ, पुस्तकालय, मुमुक्षु भवन, अस्सी, काशी.

श्री १०८ ईश्वर मठ, पुस्तकालय, मुमुक्षु भवन, अस्सी, काशी.

॥ अथ श्रीयोगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणं षष्ठं प्रारभ्यते ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीपरमात्मनेनमः ॥ अथश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणंषष्ठं प्रारभ्यते ॥ वाल्मीकोवाच ॥ ॥ हे भारद्वाज उपसम प्रकरणके अनंतर तूं निर्वाण प्रकरण सुण ॥ जिसके जानने करी तूं निर्वाण पदकों प्राप्त होवेगा ॥ बडे उत्तम बचन मुनिनायकनें रामजी प्रति कहे हे सो रामजी कैसें हे जो मुनीश्वरनें वाक्य अर्थ कह्याहे तिसविषे सब ओरतें मनकों खेंचिकरी जिसनें स्थापित किया हे अरु ओरभी जो राजालोक हे सो सब निस्पंद हो रहे हे मानों कागद उपर मूरतां लिख छोडियां हे ॥ अेसें हो करि वसिष्ठजीके वचनोकों विचारते हे अरु जेते राजकुमार हे सो विचारते हे अरु कंठोकों हिलावते हे ॥ शिर अरु भुजाकों फेरते हे अरु विस्मयकों प्राप्त हुवे हे ॥ तिसकरी प्रसन्नताकों प्राप्त हुवे हे इह जगत सत्य जानकरी विचरतेथे सो हेही नही अेसें आश्चर्यविषे आश्चर्यकों प्राप्त हुवे हे ॥ तब दिनका चतुर्थभाग अंत रह्या अरु सूरज अस्त हुआ मानों वसिष्ठजीके वचन सुण करी इसकों फल लगा हे सब तेज क्षीण हो गयाहे ॥ अरु सीतलता आनी प्राप्त भइ हे ॥ अरु स्वर्गतें जो सिद्ध देवता आयेथे ॥ तिनके गलेविषे मंदार आदिक वृछोंके फुलथे ॥ पवनके चलणे करी सब स्थान सुगंधित होत भये ॥ अरु भमरे फुलोंपर गुंजारव शब्द करेहे ॥ अरु झरोंखेके मार्ग सों सूरजकी किरणां आवे हे तिनकरी कमल फूल सूरजमुखी राजा अरु देवताके शीस उपरथे ॥ सो सुककें चलणे लगे जेसें मनसों जगतकी सत्ता निवर्त्त होवे अरु वृत्ति सकुचती जाती हे ॥ तेसें सुकते जाते हे अरु बालक जो सभाविषे बेठेथे ॥ अरु पिंजरोविषे पंछी बेठेथे खेलणेकूं ॥ तिसके भोजनका समा हुआ ॥ बालकोंके भोजन निमित्त माता उठियां ॥ अरु चोथे पहर राजाकी नोबत नगारे भेरी शरनाइ बाजणे लागियां ॥ वसिष्ठजी जो बडे उंचे सुरसाथ कथा करतांथा ॥ तिसका शब्द नगारे वाजंत्रो करी आछाद गया ॥ जेसें बरखा कालका मेघ गर्जता हे अरु मोर तूष्णी हो जाते हे ॥ तेसें वसिष्ठजी तूष्णी हो गये ॥ अेसा शब्द हुआ जिसकरी आकाश पृथ्वी सब दिशा भर रही ॥ पिंजरेविषे पंछी भडभड शब्द करणे लगे ॥ पंखोकों पसार करी जेसें भूकंप हुएतें लोक कंपते शब्द करते हे ॥ तेसें पंछी भडकणे लागे ॥ बालक थे सो माताकी तुचा साथ मिल गये ॥ बडा शब्द हुआ ॥ तिसके अनंतर मुनि सार्दूल वसिष्ठजी बोले सबके मध्यविषे ॥ हे निःपाप रघुनाथ में तेरे चित्तरूपी पंछीके फसावणे निमित्त अपणे वाक्रूपी जाल पसारी हे तिसतें अपणे चित्तकों वस करीकें आत्मपदविषे जोड ॥ हे रामजी! इह जो में तुझकों उपदेश कीया हे ॥ तिसका जो सार हे ॥ तिसविषे दुर्बुद्धिकों त्याग करी चित्तकों लगाव ॥ जेसें हंस जलकों त्याग करी दूधकों पान करता हे ॥ तेसें सब उपदेश आदितें लेकरी अंत पर्यंत वारंवार विचार करी सारकों अंगीकार कर इस प्रकार संसार समुद्रतें उतर करी परम पदकों प्राप्त होवेगा ॥ अन्यथा न होवेगा ॥ हे रामजी! जो इन वचनोंकों अंगीकार करेगा ॥ तब संसार समुद्रकों तर जावेगा ॥ अरु जो अंगीकार न करेगा ॥ तब नीचगतीकों प्राप्त होवेगा ॥ जेसें विंध्याचल पर्वतकी खातविषे हस्ती गिर्यां कष्ट पावता हे ॥ तेसें संसारविषे कष्ट पावेगा ॥ हे रामजी! इह जो मेरे वचन हे ॥ इनकों ग्रहण न करेगा तब अधःकों गिरेगा जेसें पंथी हाथविषे दीपक त्याग करी रात्रकेविषे टोहेपर गिरता हे तेसें गिरेगा ॥ अरु जो असंग हो करी व्यवहारविषे विचरेगा ॥ तब आत्मसिद्धताकों प्राप्त होवेगा ॥ इह जो में तुझकों तत्वज्ञान अरु मनोनाश अरु वासना क्षय कही हे ॥ इह अभ्यास करी सिद्धताकों प्राप्त होवेगा ॥ इह शास्त्रका सिद्धांत हे ॥ हे सभा हे महारा जो राम लछमन भूपति जो कछु मेनें तुमकों कहा हे ॥ तिसकों तुम विचारो ॥ अरु ओर जो कछु कहणा हे ॥ सो प्रातःकालकों कहोंगा ॥ वाल्मीकोवाच ॥ ॥ हे साधो इस प्रकार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब मुनीश्वरनें कह्या ॥ तब सब सभा उठ खडी हुइ ॥ अरु वसिष्ठके वचनोंकों पाइ करी सब खिल आये॥ जेसें सूरजकों पाइ करी कमल खिल आता हे॥ तेसें सभ खिल आये॥ अरु वसिष्ठ विश्वामित्र दोनों एकठे उठे॥ वसिष्ठजी विश्वामित्रकों अपणे आश्रमकों ले गये॥ अरु आकाशचारी जो देवताथे॥ अरु सिद्धथे सो वसिष्ठजीकों नमस्कार करीकें अपणे अपणे स्थानोकों गये॥ राजा दशरथ अर्घपाद करी वसिष्ठजीकों पूजत भया॥ पूजाकरी अपणे अंतःपुरविषे गया॥ ओर श्रोताभी आज्ञा ले करी वसिष्ठजीकों पूजत भ ये॥ पूजाकरी अपणे अंतःपुरविषे गया॥ ओर श्रोताभी आज्ञा ले करी अपणे अपणे स्थानोकों गये॥ राज कुमार अपणे मंडलकों गये॥ मुनीश्वर वनकों गये॥ राम लछमन शत्रुघ्न वसिष्ठजीके आश्रमकों गये॥ पूजा करीके बहुरी अपणे गृहमें आये॥ तब श्रोता अपणे अपणे स्थानकों जाइ करी स्नानसंध्यादिक कर्म करते भये॥ बहुरी पितर देवताकों पूजते भये॥ बहुरी ब्राह्मणतें ले करी भृत्य परजंत सबकों भोजन कराइ करी अपनें मित्र भाइ साथ भोजन किया॥ बहुरी जथा शक्ति अपणे वर्णाश्रमके धर्मकों साधते भये॥ तब सूरज भगवान अस्त हुए॥ दि नकी क्रिया निवर्त्त हो गइ रात्र आन प्राप्त भइ निसाचर आय विचरणे लगे॥ तब भूचर अरु राजऋषि ब्रह्मऋषि राजपुत्र जेते कछु श्रोतेथे सो रात्रकों एकांत बेठ करी अपनि सिजा विछाइ करी विचारते भये॥ राज कुमार राजा अपणे स्थानोंपर बेठे॥ ब्राह्मण तपस्वी सो कुशादिक विछाइ करी विचारते भये॥ जो संसारके तरणेका उपाय क्या कहे हे॥ वसिष्ठजी ने वचन कहे हे॥ तिनविषे भले प्रकार चित्तकों एकाग्र करते भये॥ एक प्रहर भले प्रकार विचार करी निद्राकों प्राप्त भये॥ जेसें सूरज उदय हुए पदमनीयां मूंदियां जातियां हे॥ तेसें सुषुप्तिकों प्राप्त भये॥ अरु राम लछमन शत्रुघ्न तीन प्रहर वसिष्ठजीके उपदेशकों विचारते रहे॥ अर्ध प्रहर सोए॥ बहुरी उठे॥ इस प्रकार सब विचार पूर्वक रात्रकों चितायुक्त भये प्रातःकाल होणेपर आया॥ सूर्यके प्रकाश करी चंद्रमाकी कांति जाति रही॥ चंद्रमुखी कमल मूंदे गये॥ ॥इतिश्री यो॰निर्वाणप्र॰दिवसरात्री व्यापार वर्णनं नाम प्रथमःसर्गः॥ १॥

॥ वाल्मीकोवाच॥ हे साधो इस प्रकार रात्र व्यतीत भइ॥ तमका पटल निवर्त्त हुआ॥ तब राम लछमन शत्रुघ्न उठकरी स्नान करते भये॥ संध्यादिक कर्म किये॥ बहुरी वसिष्ठ जीके आश्रमकों गये॥ तहां जाइ स्थित भये॥ बहुरी वसिष्ठजी संध्यादिक करीकें अग्निहोत्र करणे लगे॥ जब करी चुके तब रामादिक वसिष्ठजीकों अर्घपाद करी पूजत भये॥ चरनो पर भले प्रकार मस्तक राखा॥ जब रामजी गयेथे॥ तब वसिष्ठजीके द्वारेपर मौनथा॥ एक घडीविषे केइ अनेक सहस्र जीव आन प्राप्त भये॥ राज कुमार ब्राह्मण मुनीश्वर हस्ती घो डा रथ बहुत सेना आय प्राप्त भइ॥ तब वसिष्ठजी रामादिककों साथ ले करी राजा दशरथके गृहविषे आये॥ तब राजा दशरथ ताकुं सहाय लेणेकूं आगें आया॥ अरु वसिष्ठजीका आदर साथ पूजन करत भया॥ ओर लोकोनेंभी बहुत पूजन किया॥ इस प्रकार सभाविषे आय प्राप्त हुए॥ तब नभचर अरु भूचर जेते कछु श्रोताथे सो सब आय प्राप्त हुए॥ स भाविषे आइ करी नमस्कार करीके बेठ गये॥ जेते कछु सभाके लोकथे सो निस्पंद एकाग्र होइ करी स्थित भये॥ जेसें निस्पंद वायु करी कमलोंकी पंक्ति अचल होती हे तेसें स्थित भये भाटजन जो स्तुति करणे वालेथे सो एक ओर स्थित भये॥ तब सूरजकी किरणां झरोंखेके मार्ग आय प्राप्त भइयां॥ मानों किरणांभी वसिष्ठजीके वचन श्रवण करणे आइयां हे॥ तब वसिष्ठजीकी ओर रामजी देखते भये॥ जेसें स्वामिकार्त्तिक शंकरकी ओर देखे जेसें कच बृहस्पतीकी ओर देखे॥ जेसें प्रल्हाद शुक्रकी ओर देखे॥ तेसें वसिष्ठकी ओर रामजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखते भये ॥ जेसें भमरा भमता भमंता आकाश मार्गतें कमलपर आय बेठता हें ॥ तेसें रामजीकी दृष्टि ओरोंकों देखते देखतें वसिष्ठजीपर आय स्थित भइ ॥ अरु वसिष्ठजी रामजीकी ओर देखत भये ॥ देखकरी बोलत भये ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रघुनंदन मैं जो तुमकों उपदेश किया हें सो तुम कछु स्मरण किया जो इह वचन कहे हे ॥ केसें कहे हे ॥ जो परमार्थ बोधका कारण आनंदरूप महा गंभीर कहे हे ॥ अब ओरभी बोधका कारण अरु अज्ञानरूप शत्रुके नाश करता इंदुप्रमाण वचन हे ॥ तिनकों सुन ॥ आत्म सिद्धांत निरंतर शास्त्र तुझकों कहता हों ॥ हे रामजी वैराग अरु अभ्यास अरु तत्वका विचार इस करीकें संसार समुद्रकों तरता हे ॥ सम्यक् तत्वके बोध करी दुर्बोध निवर्त्त हो जाता हे ॥ तब वासनाका आवेश नष्ट हो जाता हे ॥ अरु निर्दुःख पदकों प्राप्त हो जाता हे केसा पद हे ॥ देशकाल वस्तुके परीछेदतें रहित हे ॥ सोइ ब्रह्म जगत्रूप होइ करी स्थित भया हे ॥ अरु भ्रम करीकें द्वैतकी न्यांइं भासता हे ॥ जो सब भावकरीकें अविछिन हे ॥ सर्वत्र ब्रह्म हे ॥ इस प्रकार महत्स्वरूप जाण करी शांतिवान् होहु ॥ हे रामजी केवल ब्रह्मतत्व अपणे आपविषे स्थित हे ॥ न कछु चित्त हे ॥ न अविद्या हे नमन हे न जीव हे ॥ इह सब कलना ब्रह्मविषे भ्रम करीकें पडि फुरती हे ॥ जो स्पंद फुरणा दृश्य हे ॥ अरु चित्त हे सो कलना रूप संभ्रम हे ॥ ब्रह्मतें इतर पदार्थ कोउ नही ॥ हे रामजी स्वर्ग पाताल भूमिविषे सदाशिवतें आदि अरु तृणपर्यंत जो कछु दृश्य हे ॥ सो सब परब्रह्म हे ॥ चिद्रूपतें अन्य कछु नही ॥ उदासीन अरु मित्र वा धव आदितें लेकरी सब ब्रह्म हे ॥ जबलग अज्ञान कलना करी जगतविषे स्थित बुद्धि हे ॥ अरु ब्रह्मभाव नानात्व हे ॥ तबलग चित्तादि कलना होती हे ॥ अरु जबलग देहविषे अहंभाव हे ॥ अरु अनात्म दृश्यविषे ममत्व हे ॥ तबलग चित्त आदिक भ्रम होता हे ॥ जबलग संतजन अरु सत्शास्त्रो करी उंचे पदकों नही प्राप्त भया ॥ अरु मूर्खता क्षीण नही भइ ॥ तबलग चित्तादिक भ्रम होता हे ॥ हे रामजी जबलग देहाभिमान सिथलताकों नही प्राप्त भया ॥ अरु संसारकी भावना नही मिटी ॥ अरु सम्यक् ज्ञान करीकें स्थिति नही पाइ ॥ जबलग चित्तादिक प्रकट हे ॥ जबलग अज्ञानकरीकें अंध हे ॥ जबलग विषयोंकी आसाके आवेश करी मूरछित हे ॥ जबलग मोहमूर्छातें उठ्या नही ॥ तबलग चित्तादिक कलना होती हे ॥ हे रामजी जबलग आशारूपी विषकी गंध रिदे रूपी वनविषे होती हे ॥ तबलग विचाररूपी चकोर तहां नही प्राप्त होता ॥ भोग वासना नही मिटती हे ॥ जब भोगोंकी आशा मिट जावे ॥ अरु सत्य सीतलता संतुष्टता रिदेविषे आय प्राप्त होवे ॥ तब चित्तरूपी भ्रम निवर्त्त हो जाता हे ॥ जब मोह अरु तृष्णा निवर्त्त करीये ॥ अरु नित्य संवित होवे ॥ तब चित्त शांत भूमिकाकों प्राप्त होता हे ॥ हे रामजी जिस पुरुषकी स्थिति स्वरूपविषे भइ हे ॥ सो आपकों देहतें दूर देखता हे ॥ तिस सम्यक् दरसीके चित्तकी भूमिका कहीहे ॥ जब अनंत चैतन्य तत्वकी भावना होती हे ॥ अरु दृश्यकों त्याग करी आत्मस्वरूपविषे प्राप्त होता हे ॥ तब उह पुरुष सब जगतकों अपणा अंगहि देखता हे ॥ अर्थ यह जो सब अपणा स्वरूप देखता हे ॥ अेसें जो आत्मरूप देखता हे ॥ तिसकों जीवत्वादिक भ्रम कहा हे ॥ जब अज्ञान भ्रम निवर्त्त होता हे ॥ तब परम अद्वैत पद उदे होताहे ॥ जेसें रात्रिके क्षीण हुए सूरज उदे होताहे तेसें मोहके निवर्त्त हुए आत्मतत्वका साक्षात्कार होता ह ॥ जब स्वरूपका साक्षात्कार होता हे ॥ तब चित्त नष्ट हो जाता हे ॥ जेसें सूका पत्र अग्निविषे दग्ध हो जाता हे ॥ तेसें ज्ञानवानका चित्त नष्ट हो जाता हे ॥ हे रामजी जीवन्मुक्त जो महात्मा पुरुष हे ॥ अरु परावर दर्शी हे ॥ सर्वत्र ब्रह्म जिसकों दृष्ट आया हे ॥ तिसका चित्त सत्य पदकों प्राप्त होता हे ॥ सो चित्त सत्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहाता हे अरु तिसविषे वासनाभी दृष्ट नही आती हैं ॥ सो चैतन मनहे ॥ उह चित्त सत्य पदकों प्राप्त भयाहे ॥ इह जगत ज्ञानवानकों लीला मात्र भासता हे ॥ अरु अंतरतें शांतरूप हे ॥ नित्य तृप्त हे ॥ सर्वदा उसकों आत्मजोत भासती हे ॥ विवेक करीकें उसके चित्तसों जगतकी सत्ता निवर्त्त हो गइ हे अरु स्वरूपविषे स्थिति पाइ हे ॥ सो चित्त सत्ता कहिता हे ॥ बहुरी उह कर्म चेष्टा करताभी दृष्ट आता हे ॥ अरु मोहकों नही प्राप्त होता ॥ जेसें भून्या बीज उगता नही ॥ तेसें ज्ञानीकों चेष्टा जन्मका कारण नही ॥ अरु जो अज्ञानी हे ॥ तिसकी वासना मोह संयुक्त हे ॥ जेसें कच्चा बीज उगता हे ॥ तेसें अज्ञानी वासना करीकें बहुरी बहुरी जन्म लेता हे ॥ अरु जिस चित्तसों आसक्ति निवर्त्त भइ हे ॥ सो तिसकी वासना जन्मका कारण नही ॥ उह चित्त सत्ता कहिता हे ॥ हे रामजी जिन पुरुषोंनें पावणे योग पद पाया हे ॥अरु ज्ञानाग्नि करीकें चित्तकों दग्ध किया हे ॥ सो बहुरी जन्म नही लेता ॥ जेता कछु जगत हे ॥ सो तिसकों सब ब्रह्मरूप हे ॥ जेसें विरछ अरु तरु नाम मात्र हे ॥ वस्तुतें एकही हे ॥ तेसें ब्रह्म अरु जगत् नाम मात्र दोनो हे वस्तुतें एकही हे ॥ जेसें जलविषे तरंग अरु बुद्बुदे जलरूप हे ॥ तेसें ब्रह्मविषे जगत ब्रह्मरूप हे ॥ चैतन आत्मारूपी मीरच हे ॥ अरु जगत्रूपी तीछनता हे ॥ हे रामजी अेसा ब्रह्म तूं हे ॥ अरु जो तूं कहे में चित्त नही ॥ तो कछु माना जाता हे ॥ क्योंजो तूं कहे में जड हों ॥ तो तूं आकाशवत् हुआ तेरेविषे कलनाका उल्लेख केसें होवे अरु जो चैतन हे तो शोक किसका करता हे अरु जो चिन्मय हे तो निरायास आदि अंततें रहित हुआ ॥ सब तुंही हे ॥ अपणे स्वरूपकों स्मरण करो ॥ तब शांतिकों प्राप्त होवेगा जो सब भावविषे स्थित हे ॥ अरु सबकों उदे करणे हारा हे सो तूंही हे शांतरूप हे ॥ तूं चैतन्य ब्रह्मरूप हे ॥ हे रामजी अेसी जो चैतनरूपी सिला हे तिसके उदरविषे वासनारूपी फुरणा कहां होवे ॥ उह तो महाघनरूप हे ॥ हे रामजी जो तुं हे सो सोइ हे ॥ उस अरु तेरेविषे भेद कछु नही ॥ सोइ सत् अरु असत्रूप होइ करी भासता हे ॥ सब पदार्थ जिसके अंतर हे ॥ अरु नानात्व जिसविषे कछु नही ॥ अहंत्वं अज्ञ ताज्ञ जिसविषे कलना कछु नही ॥ अेसा जो सत्यरूप चिद्घन आत्मा हे ॥ तिसकों नमस्कार है ॥ हे रामजी तेरी जय होवे केसा हे तुं ॥ आदि अरु अंततें रहित विसाल हे ॥ अरु शिलाके अंतर्वत् चिद्घन स्वरूप हे ॥ आकाशवत् निर्मल हे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग हे ॥ तेसें तेरेविषे जगत् हे ॥ सो लीलामात्र हे ॥ तूं अपणे घनस्वरूपविषे स्थित होहु ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे विश्रामदृढीकरणं नाम द्वितीयःसर्गः ॥ २ ॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे निःपाप रामजी ! जिस चैतनरूपी समुद्रविषे जगत्रूपी तरंग फुरतें हे ॥ अरु लीन हो जाते हे ॥ अेसा अनंत आत्मा हे ॥ सो तुं भवकी भावनातें मुक्त हे ॥ अरु भाव अभावतें रहित हे ॥ अेसा जो चिदात्मा तेरा स्वरूप हे ॥ सो सर्व जगत उही रूप हे ॥ तब वासनादिक आवर्न कहां हे ॥ जीव अरु वासना सब आत्माका किंचन हे ॥ दुसरी वस्तु कछु नही ॥ तब अवर कथा प्रसंग केसें होवे ॥ हे रामजी महासरल गंभीर प्रकाशरूप जो चैतन्य समुद्र हे ॥ सो तेरा रूप हे ॥ अरु रामरूपी एक तरंग फुरी आया हे ॥ सो समुद्र तूं हे ॥ अेसा जो आत्मतत्व हे ॥ सोइ जगत्रूप हो करी व्यापारी भासता हे ॥ जेसें अग्नीतें उष्णता भिन्न नही ॥ अरु जेसें फुलतें सुगंध भिन्न नही ॥ जेसें कज्जलतें कृष्णता भिन्न नही अरु बरफतें शुक्लता भिन्न नही ॥ जेसें गुडतें मधुरता भिन्न नही जेसें सूर्यतें प्रकाश भिन्न नही ॥ तेसें ब्रह्मतें अनुभव भिन्न नही ॥ नित्यरूप हे अनुभवते अहं भिन्न नही ॥ अहंतें जीव भिन्न नही ॥ जीवतें मन भिन्न नही मनतें इंद्रीय भिन्न नही ॥ इंद्रियातें देह भिन्न नही ॥ देहतें जगत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भिन्न नही ॥ इस प्रकार महाचक्र प्रवर्त्तकी नांइं हुआ हे ॥ सो कछु प्रवर्त्त नही ॥ न शीघ्र प्रवर्त्या हे न चिर कालका प्रवर्त्या हे ॥ नकोउ ऊन हे न अधिक हे ॥ सर्वदा एक अखंड सत्ता परमात्म तत्व हे ॥ जेसें आकाशविषे आकाश स्थित हे ॥ तेसें ब्रह्म सत्ता अपणें आपविषे स्थित हे ॥ उही सत्ता वज्र भूत होकरी स्थित हे ॥ उही पूर्ण हो करी स्थित हे ॥ इतर द्वैत कल्पना कछू नही ॥ अेसें अपणे स्वरूपविषे जो पुरुषस्थित हे सो जीवन्मुक्त हे ॥ अेसा जो ज्ञानवान् हे ॥ सो मन इंद्रियां शरीरकी चेष्टाभी कर्त्ता हे ॥ अरु उसकों करतव्यका लेप कछू नही लागता ॥ हे रामजी ज्ञानवानकों न कछू त्यागणे जोग रहता हे ॥ न ग्रहण करणे जोग रहता हे ॥ सर्व पदार्थतें निर्लेप रहता हे ॥ जब लग इसकों ग्रहण त्यागकी बुद्धि होती हे ॥ तब लग संसारके सुख दुःखका भागी होता हे ॥ इस हेयोपादेयका जिसकों अभाव हे ॥ सो सुख दुःखका भागी नही होता ॥ हे रामजी जेता कछु जगत हे ॥ सो एक अद्वैत आत्म तत्व हे ॥ अन्यत् कछू नहि ॥ जैसे घट मठकी उपाधि करि आकाश नाना प्रकार भासता हे ॥ जेसें समुद्र तरंग करि अनेक रूप भासता हे ॥ अरु नानात्व भावकों प्राप्त नहि होता ॥ तेसें आत्माविषे नाना प्रकारका जगत् भासता हे ॥ अरु नानात्वकों नहि प्राप्ति होता ॥ अेसें स्वरूपकों जाणि करि ॥ तिसविषे स्थत होइ ॥ हे रामजी अंतर प्रकाशकी नांइं निर्मल स्थित होइ अरु बाह्य तें आपणें वर्णाश्रमका व्यवहार करो ॥ काष्ठ पथरकी नांइं अंतर हर्ष शोकतें रहित स्थित होइ ॥ संवित् मात्र आत्माकों जो अपणारूप देखता हे ॥ सोइ सम्यक्दर्शी हे ॥ तिसका अज्ञान अरु मोह नष्ट होजाता हे ॥ जेसे नदीका वेग मूल सहित तटके वृक्षकों काटता हे तेसें आत्मज्ञान मोह सहित अज्ञानकों काटता हे ॥ मित्रता वैर हर्ष शोक रोग दोष आदिक जो विकार हे सो चित्तविषे रहते हे ॥ सो चित्त उसका नष्ट होजाता हे ॥ हे रामजी ज्ञानी सोताभी दृष्टि आता हे ॥ अरु सोता कदाचित् नहि जिसका अनात्मविषे अहंभाव निवृत्त भया हे ॥ अरु बुद्धि जिसकी लेपायमान नहि होती ॥ सो पुरुष इस लोककों मारे तोभी उसनें कोउ नही मार्या ॥ अरु न उह बंधायमान होता हे ॥ हे रामजी जो वस्तु होवे नही अरु भासे तिसकों माया मात्र जाणियें ॥ उसकों जाणेतें नष्ट हो जावेगी ॥ जेसें तेलविना दीपक शांत हो जाता हे ॥ तेसें ज्ञान करी वासना क्षय होजाती हे ॥ चित्त अचित्त होजाता हे ॥ जिसकों सुखदुःखविषे ग्रहण त्याग नही सो जिवन्मुक्त आत्मस्थित हे ॥ ॥ इ० नि० ब्रह्मैक प्रतिपादनं नाम तृतीयःसर्गः ॥ ३ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी मन बुद्धि अहंकार इंद्रियादिक जो दृश्य हे सो सब अचित्य चिन्मात्र हे ॥ जीवभी अभिन्नरूप हे ॥ जेसें स्वर्न अरु भूषणविषे भेद कछू नही तेसें चिन्मात्र अरु जीवादिक अभिन्न हे ॥ जबलग चित्त अज्ञानमें होताहे ॥ तबलग जगत्का कारण होताहे ॥ जब अज्ञान नष्ट होताहे तबचित्तादिकका अभाव हो जाताहे ॥ अध्यात्म विद्या जो वेदांत शास्त्रहे ॥ तिसके अभ्यास करी नष्ट हो जाता हे जेसें अग्निके तेज करी सीतका अभाव हो जाता हे ॥ तेसें अध्यात्म विद्याके अभ्यास विचारतें अज्ञान नष्ट हो जाताहे ॥ जबलग अज्ञानका कारण तृष्णा उपशमकों प्राप्त नही भइ ॥ तबलग अज्ञान हे ॥ जब तृष्णा नाश होवे तब जाणिये जो अज्ञानका अभाव भया हे ॥ हे रामजी तृष्णारूपी विषूचिका रोग हे तिसके नाश करणेका मंत्र अध्यात्मशास्त्र हे ॥ तिसके अभ्यास करी तृष्णा क्षीण होजाती हे ॥ जेसें शरत्कालविषे कुहिड नष्ट होजाती हे तेसें आत्म अभ्यास करी चित्त शांत होजाता हे ॥ जेसें शरत्कालविषे मेघ नष्ट होजाता हे तेसें विचार करी मूर्खता नष्ट होजाती हे ॥ जब चित्तअचित्तताकों प्राप्त होता हे ॥ तब वासना भ्रम क्षीण हो जाताहे ॥ जेसें तागे साथ मोती परोये होते हे तागेके टूटेतें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मोती भिन्न भिन्न हो जाते हे॥तेसें अज्ञानके नष्ट हुवे मनादिक सब नष्ट हो जाते हे॥अरु जो पुरुष अध्यात्म शास्त्रके अर्थकों नही धारते अरु प्रीति नही करते सो पापी कीटादिक नीच योनीकों प्राप्त होवेगे॥हे कमलनेन तेरेविषे जो कछु मूर्खता चंचलताथी सो नष्ट हो गइहे॥जेसें पवनके ठहरेतें जल अचल होता हे तेसें तूं स्थिरताकों प्राप्त भया हे ॥ भाव अभाव रहित परम आकाशवत् निर्मल पदकों प्राप्त भया हे ॥ हे रामजी एसें में मानता हों जो मेरे वचनोकरी तूं बोधकों प्राप्त हुआ हे ॥ अरु विस्तृत अज्ञानरूपी निद्रातें जाग्या हे ॥ समान जीवभी हमारी वाणी करी जागी आते हे ॥ तूं तो अति उदार बुद्धि हे ॥ तेरे जागणेविषे क्या आश्चर्य हे॥हे रामजी जब गुरुभी दृढ होता हे ॥ अरु शिष्यभी शुद्ध पात्र होता हे तब गुरुके वचन उसके अंतर प्रवेश करते हे ॥ सो में गुरुभी समर्थ हों जो मुझकों अपणा स्वरूप सदा प्रत्यक्ष हे ॥ अरु सतशास्त्रके अनुसार में वचन कहे हे ॥ अरु तेरा रिदाभी शुद्ध हे तिसविषे प्रवेश करी गये हे ॥ जेसें तप्त पृथ्वीके क्षेत्रविषे जल प्रवेश करी जाता हे तेसें तेरेविषे वचनोनें प्रवेश किया हे ॥ हे राघव हम महानुभाव रघुवंश कुलके बडे गुरुके गुरु हे ॥ हमारे वचन तुमकों धारणे आते हे ॥ अरु खेदतें रहित हो करी अपणे प्रकृत आचारकों करो ॥ वाल्मीकोवाच ॥ ॥ इस प्रकार मुनीश्वरनें जब कह्या तब सूर्य अस्त होणे लागा सर्व सभा परस्पर नमस्कार करीकें अपणे स्थानकों गइ ॥ रात्रके वितीत हुवे सूर्यकी किरणां साथ बहुरी आये बैठे ॥ ॥ इतिश्री यो० निर्वाणप्रकरणे चित्तभावाभाववर्णनं नाम चतुर्थःसर्गः ॥ ४ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर में परम स्वस्थताकों प्राप्त भया हों अब अपणे आपविषे स्थित हों ॥ अरु तुमारे वचनोंकी भावना करी जगत्जाल स्थित हुवेभी मुझकों शांत हो गइ हे ॥ अरु आत्मानंदकरी तृप्त भया हों ॥ जेसें बडी वर्षाकरी पृथ्वी तृप्त होती हे ॥ तेसें में तृप्त सम शीतल भया हों ॥ अरु प्रसन्नताकों पाय करी स्थित हों ॥ अरु सर्व उरतें केवल आत्मरूप मुझकों भासता हे ॥ नानात्वका अभाव भया हे जेसें कुहिडतें रहित दिशा अरु आकाश निर्मल भासता हे तेसें सम्यक् ज्ञान करी मुझकों शुद्ध आत्मा भासता हे अरु मोह निवृत्त हो गया हे ॥ मोहरूपी जंगलविषे तृष्णारूपी मृग था अरु रागद्वेष आदिक धुर कुहिडथी सो सब निवृत्त हो गये हे॥ज्ञानरूपी वर्षाकरी सब शांत हो गये हे ॥ अब में आत्मानंदकों प्राप्त भया हों ॥ जो आदि अंततें रहित हे अरु अमृत हे ॥ अमृतका स्वादभी तिसके आगें तुछ भासता हे ॥ अेसें आनंद अपणे सुभावकों प्राप्त भया हों ॥ में राम हों अर्थ यह जो सबविषे रमणे हाराहों ॥ मेरा मुझकों नमस्कार हे अब में सर्व संदेहतें रहित हों ॥ सब संशय अरु विकार मेरे नष्ट भये हे ॥ जेसें प्रातःकाल करी निशाचर वैताल आदिक निवृत्त हो जाते हे तेसें मेरे रागद्वेषादिक विकारका अभाव भया हे ॥ निर्मल विस्तीर्ण हिमकी नांइं रिदे कमलविषे स्थित हों ॥ जेसें भवरा फिरता फिरता कमलविषे आय स्थित होता हे तेसें में आत्मरूपी सार विषे स्थित हों ॥ अविद्यारूपी कलंक आत्माकों कहांथा ॥ मेतो निश्चयकरी निर्मलताकों प्राप्त भया हों ॥ जेसें सूर्यकें उदय हुवे तमका अभाव हो जाता हे तेसें मेरे संशय अरु अविद्या नाश भइ हे ॥ सर्व आत्मा भासता हे ॥ अरु कलना कोउ नही भावित आकार अपणे स्वरूपकों प्राप्त भया हों ॥ पूर्व प्रकृतिकों देखकें हसता हों ॥ जो क्या जानताथा अरु क्या करताथा ॥ मेंतो नित्य शुद्ध ज्योंका त्यों आदिअंततें रहित हों ॥ हे मुनीश्वर तेरे वचनरूपी अमृतके समुद्रविषे में स्नान कीया हे ॥ तिसकरी अजर अमर आनंद पदकों प्राप्त भया हों अरु सूर्यतेंभी उंचे पदकों प्राप्त भया हों ॥ अरु वीतशोक होकरी परम शुद्धता समता सीतलता अनुभव अद्वैतकों प्राप्त भया हों ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे राघवविश्रांति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्णनं नाम पंचमःसर्गः ॥ ५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे महाबाहो बहुरीभी मेरे परम वचन सुण तेरे हितकी कामना करीकें मैं कहता हौं ॥ अब आत्मपद
कों तूं प्राप्त भया हे ॥ परंतु बोधकी दृढ्किे निमित्त बहुरी सुणं ॥ जिसके श्रवण करी अल्पबुद्धिभी आनंद पदकों प्राप्त होवे ॥ हे रामजी जिसकों अनात्मविषे आत्म अभिमान हे अरु
आत्मज्ञान नही ॥ तिसकों इंद्रियारूपी शत्रु दुःख देते हे ॥ जेसें निर्बल पुरुषकों चोर दुःख देते हे ॥ तेसें अज्ञानीकों इंद्रियां दुःख देतियांहे ॥ अरु जिसकों आत्मपदविषे स्थिति भइ हे
तिसकों इंद्रियां नही दुःख देतियां जेसें दृढ राजाके शत्रुभी मित्र हो जाते हे तेसें ज्ञानवानके इंद्रियगण मित्र होते हे ॥ अरु जिस पुरुषकों देहविषे स्थित बुद्धिहे ॥ अरु इंद्रियांके वि
षयकी सेवना करते हे तिसकों बडे दुःख प्राप्त होते हे ॥ हे रामजी आत्मा अरु शरीरका संबंध कछु नही ॥ यह परस्पर विलक्षण सुभाव हे ॥ जेसें तम अरु प्रकाश विलक्षण
सुभाव हे ॥ तेसें आत्मा अरु देहका परस्पर विलक्षण सुभाव हे ॥ आत्मा सर्व विकारतें रहित नित्य मुक्त हे ॥ अरु उदय अस्तें रहित सभसों निर्लेप हे ॥ सदा ज्योंकात्यों
प्रकाश रूप भगवान आत्मा सतरूप हे तिसका संबंध किस साथ होवे ॥ देह जड अरु असत्य अज्ञानरूप तुछ विनाशी अकृतज्ञ हे ॥ तिसका संयोग किस भांति होवे॥ आत्मा चैतन ज्ञा
न सत् प्रकाशरूप हे तिसका देहसाथ केसें संजोग होवे ॥ अज्ञानकरीकें देह अरु आत्माका संयोग भासता हे ॥ सम्यक् ज्ञान करीकें संयोगका अभाव भासताहे ॥ हे रामजी यह मैं नि
पुण वचन कहे हे ॥ तिनका वारंवार अभ्यास करेतें संसार मोहका अभाव हो जावेगा ॥ जब संसारका कारण मोह निवृत्त हुआ तब बहुरी सदभाव न होवेगा ॥ जबलग अज्ञान रूपी
निद्रातें दृढ होकरी नही जागता तबलग बहुरी आवरन हो जाता हे ॥ जेसें निद्राके जागेतें बहुरी निद्राघेरी लेते हे जब दृढकरी जागे तब बहुरी नही घेरती तेसें दृढ अभ्यासकरी अज्ञान
निवृत्त हुआ बहुरी आवरण न होवेगा तातें मोह दुःख निवृत्तिके अर्थ दृढ अभ्यास करहु ॥ हे रामजी आत्मा देहके गुणकों अंगीकार नही करता ॥ जब देहके गुण अंगीकार करे तब
आत्माभी जड होजावे सोतो सदाज्ञान रूप हे अरु जो देह आत्माका गुण परमार्थतें अंगीकार करे तो देहभी चैतन होजावे ॥ सोतो जड रूपहे इसकों अपणा ग्यान कछू न
हि ॥ जब ज्योंकात्यों इसका ज्ञान होवे तब शरीर तुच्छ जड भासे ॥ हे रामजी देह अरु आत्माका संयोग संबंध कछू नहि अरु समवाय संबंधभी नही ॥ बहुरी इस साथ मिलि करि द
था दुःखकों ग्रहण करणा इसतें अवर मूरखता क्याहे ॥ यहि मूर्खताहे ॥ जब कछूभी इसका समान लछन होवे तब संबंधभी होवे ॥ जिनका समान लछन कछू न होवे तिनका सं
बंध केसें होवे ॥ आत्मा चैतन हे देह जड हे आत्मा सत्रूप हे देह असत्रूप हे ॥ आत्मा प्रकाशरूप हे देह तम रूप हे ॥ आत्मा निराकार हे देह साकार हे आत्मा सूक्ष्म हे देह स्थूल
हे ॥ बहुरी आत्मा अरु देहका संबंध केसें होवे ॥ जब संयोग नही तब दुःख किसका होवे ॥ जेसें सूक्ष्म अरु स्थूलका संयोग नही होता ॥ जेसें दिन अरु रात्रका संयोग नही होता ॥
जेसें ज्ञान अरु अज्ञानका संयोग नही होता ॥ जेसें धूप अरु छायाका मिलाप नही होता ॥जेसें सत अरु असतका संयोग नही होता ॥ तेसें आत्मा अरु देहका संयोग नही होता ॥
अज्ञान करिकें तत्वरूप मिले हुए भासते हे परंतु संबंध कछू नही जेसें वायु अरु आकाशका संयोग नही होता तेसें इनका संयोग नही होता देहके सुख दुःखकरी आत्माकों सुखी
दुःखी जानना मिथ्या भम हे ॥ जरा मरण सुखदुःख भाव अभाव आत्माविषे रंचकमात्रभी नही ॥ जब देहविषे अभिमान होता हे तब उंच नीच जन्मकों पावता हे ॥ वास्तवतें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कछू नही ॥ केवल ब्रह्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे तिसविषे विकार कोऊ नही ॥ जैसें सूर्यका प्रतिबिंब जलविषे होता हे अरु जलके हलणे करी प्रतिबिंब चलता भासता हे॥ तेसें देहके सुखदुःखकरी आत्मविषे सुखदुःख विकार मूर्ख देखते हे॥आत्मा सदा निर्लेप हे अरु जब सम्यक यथा भूत आत्म ज्ञान होवे तब देहविषे स्थितभी भ्रमकों न प्राप्त होवे॥हे रामजी जब यथा भूत ज्ञान होता हे तब सत्‌कों सत् जाणता हे अरु असतकों असत जाणता हे जेसें दीपक हाथ विषे होता हे तब सत असत पदार्थ भासते हे ॥ तेसें ज्ञान करी सत असत यथार्थ जाणता हे ॥ अरु अज्ञान करी मोहविषे भ्रमता हे जेसें वायु करी पत्र भ्रमता हे तेसें मोहरूपी वायु करी अज्ञानी जीव भ्रमता हे ॥ स्वस्थ कदाचित् नही होता॥ जेसें जंत्रीकी पूतली तागे करीकें चेष्टा करती हे तेसें अज्ञानी जीव प्राणो रूपी तागे करी चेष्टा करते हे ॥ जेसें नटुआ अनेक स्वांगकों धारता हे तेसें कर्म करी जीव अनेक शरीरकों धारता हे ॥ जेसें पेषणकी पूतली तृण काष्ठ फूलादिककों लेती त्यागती हे अरु नृत्य करती हे तेसे यह प्राणी चेष्टा करते हे॥ शब्द स्पर्श रूप रस गंधका ग्रहण करते हे॥ जेसें पूतलीयां जड हे तेसें यह जड हे॥अरु जब कहिये इनविषे प्राण हे तब जेसें लुहारकी खाल होती हे॥उह स्वासकों लेती त्यागती हे तेसें यह जीवभी चेष्टा करते हे ॥हे रामजी अपणा वास्तव स्वरूप हे सो ब्रह्म हे॥तिसके प्रमादकरीके मोह कृपणताकों प्राप्त होते हे॥जेसें लुहारकी खाल वृथा श्वांसकों लेती हे॥तेसें इनकी चेष्टा व्यर्थ हे ॥ इनकी चेष्टा अरु बोलणा अनर्थके निमित्त हे जेसें धनुषतें जो बाण निकसता हे सो हिंसाके निमित्त हे ओर कछु कार्यसिद्धि नही होता॥तेसें अज्ञानीकी चेष्टा अरु बोलणा अनर्थ दुःखके निमित्त हे॥सुखके निमित्त नही॥तिसकी संगतीभी कल्याणके निमित्त नही॥जेसें जंगलका ठुंठादछ होताहे तिसके छाया अरु फलकी इछा करणी व्यर्थ हे तिसतें कछू फल नही प्राप्त होता॥अरु विश्रामके निमित्त छायाभी नही प्राप्त होती॥ तेसें अज्ञानी जीवकी संगतीतें सुख नही प्राप्त होता तिनकों देणाभी व्यर्थ हे॥जेसें चीकडविषे घृत पाया व्यर्थ होताहे ॥ तेसें मूर्खकों दान दिया व्यर्थ होताहे ॥ अरु तिनके साथ बोलणाभी व्यर्थ हे जेसें यज्ञविषे श्वानकों बुलावणा निष्फल हे ॥ तेसें उनके साथ बोलणा निष्फल हे ॥ हे रामजी जो अज्ञानी जीव हे सो संसारविषे आते जाते जन्मते मरते हे ॥ शरीरविषे आस्था करते हे॥अरु पुत्र दारा बांधव धनादिक विषे ममत्वबुद्धि करते हे ॥ इस मिथ्या दृष्टि करीकें दुःख पावते हे॥मुक्ती कदाचित् नही होती ॥ काहेतें जो अनात्मा विषेआत्म बुद्धिकों त्याग नही करते अरु ममता बुद्धिविषे दृढ रहते हे ॥ इसीते मुक्ती नही होती हे रामजी जो अज्ञानी हे सो असत्‌पदार्थकों देखते हे॥ अरु वस्तुरूपकी ओरतें अंधहे ॥ इसकरी परमार्थ धनतें विमुख रहते हे ॥ नर्कका सार जो स्त्रियादिक हे तिसविषे प्रीति करते हे॥ अरु तिनकों देखी करी प्रसन्न होते हे ॥ जो नर्कका साधन हे जेसें मेघकों देखी करी मोर प्रसन्न होता हे तेसें स्त्रीयादिककों देखी करी मूर्ख प्रसंन्न होता हे ॥ हे रामजी मूरखके मारणे निमित्त स्त्री रूपी विषकी वल्ली हे अरु नेत्र रूप तिसके फूल हे ॥ होठ रूपी पत्रहे ॥ स्तन रूपी तिनके गुछे हे ॥ अरु अज्ञानी रूपी भंवरे तहां बिराजमान होते हे ॥ अरु नासकों पावते हे ॥ अरु मति रूपी तलाव हे ॥ अरु हर्ष रूपी तिसविषे कमल हे ॥ चित्तरूपी भवरा तहां सदा रहता हे ॥ अरु अज्ञान रूपी नदी हे ॥ दुःख रूपी तिसविषे लहरी हे अरु तृष्णा रूपी बुद बुदे हे ॥ एसी जो नदी हे ॥ सो मरण रूपी बडवाग्निविषे जाय पडेगी ॥ हे रामजी जब जन्म लेता हे ॥ तब महागर्भ अग्निते जलता हुआ निकसता हे ॥ सो महामूर्ख अवस्था निरस कर दुखी होता हे ॥ अरु जब जोबन अवस्थाकों प्राप्त होता हे ॥ तब विषयकों सेवता हे सोभी दुःखका कारण होते हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुरी वृद्ध अवस्थाकों प्राप्त होता हे ॥ तब शरीर अशक्त होता हे ॥ अरु अंतरतें तृष्णा पडी जलावती हे ॥ इस प्रकार जन्म मरण अवस्थाविषे पडे भटकते हे ॥ हे रामजी संसार रूपी कुप हे ॥ तिसविषे मोहरूपी घटमाला हे ॥ अरु तृष्णा वासनारूपी रसडी साथ बांधे हुये जीवरूपी टीड भमते हे ॥ अरु ज्ञानवानकों संसार कोउ दुःख नही देता ॥ गोपदकी नांइं तुछ हो जाता हे ॥ अरु अज्ञानीकों समुद्रवत् तरणा कठिन होता हे ॥ अपणे अंतरहि भमकों देखता हे ॥ निकसी नही सकता ॥ थोडाभी उसकों बहुत हो जाता हे ॥ जेसें पंछीकों पिंजरे विषे बडा मार्ग होता हे ॥ अरु जेसें कोलुके बेलकों घरहिविषे बडा मार्ग होता हे ॥ तेसें अज्ञानीकों तुछ संसार बडा हो भासता हे ॥ हे रामजी जिस जगतकों रमणीय जाणी करी पदार्थकी इछा करता हे ॥ सो सब पंचभूतिक पदार्थ हे ॥ मोहकरीकें तिनकों सुंदर जानता हे ॥ अरु तिनविषे प्रीति करता हे स्थिर जाणता हे ॥ सो अनर्थके निमित्त होते हे ॥ हे रामजी अज्ञानरूपी चंद्रमा उदे हुआ हे ॥ तिसकरी भोगरूपी वछ पुष्ट होते हे ॥ जन्मकी परंपरा रसकों पावते ॥ अरु कर्मरूपी जलकरी सिंचते हे ॥ पुण्य अरु पापरूपी मंजरी होती हे ॥ अरु अज्ञानरूपी चंद्रमा हे ॥ अरु वासनारूपी अमृत हे ॥ आसारूपी चकोर तिसकों देखि करी प्रसन्न होता हे ॥ अरु आसारूपी कमलनी हे॥ अज्ञानीरूपी भवरा तिसपर वेठी करी प्रसन्न होता हे ॥ तातें सब जगत् अज्ञानकरीकें रमणीक भासता हे ॥ हे रामजी इह जगत अज्ञानकरीकें स्थित हे ॥ तिस अज्ञानका प्रवाह सुण ॥ अज्ञानरूपी चंद्रमा पूर्ण हो करी स्थित होता हे ॥ तब कामनारूपी खीरसमुद्र उछलता हे ॥ अरु अनेक तरंगकों पसारता हे ॥ तिसके रस करी तृष्णारूपी मंजरी पुष्ट होती हे ॥ अरु काम कोध लोभ मोह रूपी चकोर तिसकों देखि प्रसन्न होते हे ॥ अरु देह अभिमानरूपी रात्रके निवृत्त हुए अरु विवेकरूपी सूरजके उदे हुए अज्ञानरूपी चंद्रमाका प्रकाश निवृत्त हो जाता हे ॥ हे रामजी अज्ञान करीकें इह जीव भ्रमते हे ॥ अरु चेष्टा इनकी विपर्यय हो गइ हे ॥ जो तुछ नीच दुःखरूप पदार्थ ह ॥ तिनकों देखि करी सुखदायक रमणीय जाणते हे ॥ स्त्रीकों देखि प्रसन्न होते हे ॥ कवीश्वर कहते हे ॥ इसके कपोल कमलवत् हे ॥ अरु नेत्र भवरेवत् हे ॥ होठ हसणेवाले हे ॥ अरु वल्लीकी नांइं इसकी भुजा हे ॥ अरु कंचनके कमलवत् स्तन हे ॥ उदर वक्षस्थल बहुत सुंदर हे ॥ ओर जंघस्थल केलेके थंभवत् ॥ इत्यादिक जिसकी स्तुति करते हे ॥ सो स्त्री रक्तमांसकी पूतली हे ॥ कपोलभी रक्तमांस हे ॥ होठभी रक्तमांस हे ॥ भुजा विषके वछके टासवत हे ॥ स्तनभी रक्तमांस हे ॥ ओरभी संपूर्ण शरीर रक्तमांस अस्थि करी पूर्ण एक बुत बणि हे ॥ इसकों जो रमणीक जाणते हे ॥ सो मूर्ख मोहकरी मोहित भये हे ॥ अपणे नासके निमित्त इसकी इछा करते हे ॥ जेसें सर्पणी साथ कोउ हित करेगा ॥ सो नाशकों प्राप्त होवेगा तेसें इस साथ हित किये नाश होवेगा जेसें कदली वनका हस्ती महाबली काम करी नीच गतीकों पावता हे ॥ अरु संकटमें पडतें हे ॥ अंकुसकों सहता हे ॥ अपमानकों प्राप्त होता हे ॥ सो एक हस्तनीकें हित करी अेसी गतीकों प्राप्त होता हे ॥ तेसें इह जीव स्त्रीकी इच्छा करिके अनेक दुःखकों प्राप्त होते हे ॥ जेसें दीपककों रमणीय जाणी करी ॥ तिसविषे पतंग प्रवेश करता ॥ अरु नासकों प्राप्त होता हे ॥ तेसें इह जीव स्त्रीकी इच्छा करता हे तिसके संग करी नासकों प्राप्त होता हे ॥ अरु लक्ष्मीकों आश्रे करीकें जो सुखकी इच्छा करता हे सोभी सुखी न होवेगा ॥ जेसें पहाड दूरतें देखणे मात्र सुंदर भासता हे ॥ तेसेंभी देखणे मात्र सुंदर लगती हे ॥ ओर लक्ष्मीकों आश्रय करिकें सुखकी इच्छा करेसो न होवेगा ॥ अंत दुखकों प्राप्त होवेगा ॥ जब लक्ष्मी प्राप्त होती हे ॥ तब अनर्थ पापकों करणे लाग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ता हे॥अरु दुःखका पात्र होता हे॥जब जाती हे तब दुःखकों दे जाती हे॥तिसकरी जलता रहता हे॥ हे रामजी जगतविषे जो सुखकी इछा करे सो न होवेगा॥ प्रथम जन्म लता हे॥ तबभी दुःखसाथ जन्म लेता हे॥बहुरी जनमी करी मूर्ख नीच बालक अवस्थाकों प्राप्त होता हे॥तिसविषे विचार कछु नहि होता॥तिसकरी दुःख पाताहे॥जब जोबन अवस्थारूपी रात्र आवती हे ॥ तब तिसविषे काम क्रोध लोभ मोहरूपी निशाचर आय विचरते हे ॥ अरु तृष्णारूपी पिशाचनि आय विचरती हे ॥ विवेकरूप चंद्रमाउदे नही होता॥तब अंधकारविषे सब क्रीडा करते हे ॥ हे रामजो जोबन अवस्थारूपी वर्षा काल हे॥तिसविषे बुद्धि आदिक नदियां मलिन भावकों प्राप्त होती हे॥अरु कामरूपी मेघ गर्जता हे॥तृष्णारूपी मोरणी तिसकों देखी करी प्रसन्न होती हे ॥ अरु नृत्य करती हे ॥ अरु लोभरूपी दुजाग आवते हे अरु शब्द करते हे ॥ इत्यादिक अनर्थका बीज होता हे ॥ बहुरी जोबन अवस्थारूपी चुहेकों जरारूपी बिली भोजन करी लेती हे ॥ अंग महा जर्जरी भूत होजाते हे ॥ शरीर असक्त हो जाता हे ॥ तृष्णाबढती जाती हे॥ अंतरतें पडा जलता हे॥ बहुरी मृत्युरूपी सिंघ जरारूपी हर्णकों भोजन करी लेता हे॥इसप्रकार उपजता अरु मरता हे॥आशारूपी रसडी साथ बांध्या हुआ घटी जंत्रकी नांइ पडा भटकता हे॥शांतिकों कदाचित् नही प्राप्त होता॥ हे रामजी ब्रह्मांडरूपी एक वृछ हे ॥ अरु जीवरूपी तिसकों पत्र लागे हे॥ सो कर्मरूपी वायु करी हलते हे॥ अरु अज्ञानरूपी तिसविषे जडता हे॥अरु चित्तरूपी उंचा वृछ हे॥ तिस उपरलोभादिक घुघु आय बेठते हें ॥अरु जगतरूपी ताल हे ॥ तिसविषे शरीररूपी कमल हे ॥ तिनविषे जीवरूपी भवरे आय बेठते हे॥ अरु कालरूपी हस्ती आय करीतिसकों भोजन करि जाता हे ॥ हे रामजी जनतारूपी जीर्ण पंछी हे ॥ आशारूपी फांसीसाथ बांधे हुए वासनारूपी शिक्षा विषे पडे रहे हे ॥ राग दोषरूपी अग्निविषे पडे हुए कालरूपी पुरुष के मुखमें प्रवेश करते हे ॥ अरु जनरूपी पंछी उडते फिरते हे ॥ सो कोउ दिन तिसकों जब कालरूपी ब्याध जाल पसारेगा तब फसाय लेवेगा ॥ हे रामजी संसाररूपी ताल हे ॥ अरु जीवरूपी तिसविषे मछीयां हे ॥कालरूपी बगला तिनकों भोजन पडा करता हे ॥अरु काल रूपी कुंभार हे ॥ जनरूपी मृत्तिकाके बासन करता हे बहुरी सिघही फुटि जाते हे ॥ अरु जीवरूपी नदी हे ॥ कर्मरूपी तरंगकों पसारती हे ॥ सो कालरूपी बडवाग्निमें जाइ पडती हे ॥ अरु जगत्रूपी हस्ती हे॥ जीवरूपी मोतीतिसके मस्तकविषे हे ॥ तिस हस्तिकों कालरूपी सिंघ भोजन करि जाता हे ॥ सो कालरूपी भच्छक हे ॥जिसनें ब्रह्माहूकों भोजन किया हे॥ अरु करता हे त्रिपतनहि होता ॥ जेसें घृतकी आहुती करी अग्नि तृप्त नहीहोता ॥ तेसेंकाल जीवके भोजन करी तृप्त कदाचित् नही होता ॥ हे रामजी एक निमेषविषें जगत उपजते हे ॥ अरु उनमेषविषे लीन हो जाता हे॥ सबके अभाव हुए जो शेष रहता हे सो रुद्र हे॥बहुरी निवृत्त होजाता हे ॥ सबके पाछें इक परम तत्व ब्रह्मसत्ता रहती हे ॥ हे रामजी जेता कछु जगत् हे सो अज्ञान करीके भासता हे ॥ जन्म मरण बालक जोबन वृद्धादिक विकार अज्ञान करी भासते हे ॥ अज्ञानके नष्ट हुए सब नष्ट होजाते हे ॥ अरु जबलग आत्मविचार नही उपजा तबलग अज्ञान रहता हे ॥ जब आत्मविचार उपजता हे ॥ तब अज्ञानरूपी रात्र निवृत्त होजाती हे॥ केवल ब्रह्मपद भासता हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे अज्ञान महात्म वर्णनं नाम षष्ठः सर्गः ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इह संसाररूपी जोबन हे सो चेतनरूपी पर्वतके सिंगउपर स्थित हे ॥ तिसविषे अविद्यारूपी वल्ली बढी हे ॥ अरु विकासकों प्राप्त भइ हे ॥ अरु सुखदुः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खं भाव अभाव अज्ञान इसके पत्र फूल फल हैं ॥ जहां अविद्या सुखरूप होकरी स्थित होती हे ॥ तहां उंचे सुखकों भोगावती हे ॥ तिसके सत्ता भावकों प्राप्त होती हे ॥ अरु सुखरूप होकरी स्थित होती हे ॥ तहां दुःखरूप भासती हे ॥ सोइ सुखदुःख इसके फल गुंछे हे ॥ दिनरूपी फूल हे अरु रात्ररूपी भवरे हे ॥ जन्मरूपी अंकुर हे ॥ अरु भोगरूपी रस करी पूरन हे ॥ जब विचाररूपी घुणा अविद्यारूपी वल्लकों खाणें लागता हे ॥ तब नष्ट हो जाती हे ॥ जबलग विचाररूपी घुणा नही लागा ॥ तबलग दिनदिन बढती जाती हे अरु दृढ होजाती हे ॥ हे रामजी अविद्यारूपी वल्ली हे अरु मूल इसका संवित फुर्णा हे ॥तिस करी पसरी हे ॥ तारागण इसके किसी ओर फूल हे ॥ चंद्रमा सूर्य इसका प्रकाश हे ॥ अरु दुष्कृत कर्मरूपी नर्कस्थान कंटक हे ॥ अरु शुभकर्मरूपी स्वर्ग इसके फूल प्रकासे हे ॥ अरु सुख दुःखरूपी फल लागते हे ॥ जीवरूपी इसके पत्र हे ॥ अरु कालरूपी बायु करी हलते हे ॥केइ जीर्ण हो करी गिर पडते हे ॥ पृथ्वीरूपी तुचा हे ॥ परवत घोडे हे ॥ मरणरूपी इसविषे छिद्र हे॥जन्मरूपी अंकुर हे ॥ मोहरूपी कलियां हे ॥ महा सुंदर गौर अंग हे ॥ तिसकरी जीव मोहित हो ते हे ॥-जेसें स्त्रीकों देखी करी मोहित होते हे ॥ अरु सप्त समुद्रके जलकरी सिंचेती हे ॥ तिसकरी पुष्ट होती हे ॥ तिस वल्लीविषे एक विषकी भरी सर्पणी रहती हे ॥ जो कोउ उसके निकट जाता हे ॥ तिसकों काटती हे ॥ तब उह मूर्छा करी गिर पडता हे ॥ संसार रूपी मूर्छाकों देणे हारि तृष्णारूपी सर्पणी हे ॥ सो वल्ली अन्यथा नष्ट नहि होती ॥ जब विचार रूपी घुणा इसकों लागे ॥ तब नष्ट हो जाती हे ॥ हे रामजी जेता कछु प्रपंच तुजकों भासता हे सो अविद्या रूप हे ॥ कहुं अविद्या जलरूप हुइ हे ॥ कहुं पहाड, कहुं नाग, कहुं देवता, कहुं दैत्य॥कहुं पृथ्वी हूइ हे॥ कहुं चंद्रमा, कहुं सूर्य, कहुं तारे, कहुं तम, कहुं प्रकाश॥कहुं तेज तमतें रहित, कहुं पाप, कहुं पुण्य, कहुं स्थावर मूढरूप कहुं अज्ञानकरी दीन होती हे॥कहुं ज्ञान करी आपही क्षीण हो जाती हे ॥ कहुं तप दान आदिक करी क्षीण होती हे ॥ पापादिक करी वृद्ध होती हे कहुं सूर्यरूप हो करी प्रकाशती हे ॥ कहुं स्थानरूप होती हे ॥ कहुं नर कविषे लीन हे ॥ कहुं स्वर्ग निवासी हे ॥ कहुं देवता होती हे ॥ कहुं कृमि होती हे ॥ कहुं विष्णरूप हो करी स्थित भइ हे ॥ कहुं ब्रह्मा होकरी स्थित भइहे ॥ कहुं रुद्र हे कहुं अग्निरूप कहुं पृथ्वीरूप भइ हे कहुं आकाशकों काल भूत भविष्य वर्तमान भइ हे ॥ हे रामजी जो कछु देखणेमें आता हे सो बहु महिमा इसका हे ॥ ईश्वरतें आदि तृणपर्यंत सब अविद्यारूप हे॥ जो इस दृश्य जालतें अतीत हे तिसकों आत्मलाभ जाण॥ ॥इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे अविद्यालता वर्णनं नामसप्तमः सर्गः॥७॥ ॥७॥ ॥ रामो वाच ॥ हे ब्राह्मण हरि विष्णु अरु हर आदिक तो शुद्ध आकार आकाश जाति हे ॥ इनकों अविद्या तुम केसें कहतेहो ॥ इह सुणी करी मुझकों संशय उत्पन्न हुआ हे ॥ वसिष्ठोवाच हे रामजी प्रथम अविद्या अरु तत्व श्रवण करजो किसकों कहते हे ॥ जो अविद्यमान होवे अरु विद्यमान भासे सो अविद्या हे ॥ अरु जो सदा विद्यमान हे तिसकों तत्व कहते हे ॥ हे रामजी शुद्ध संवित कलनातें रहित चिन्मात्र आत्म सत्ता हे सो तत्व हे तिसविषे जो अहं उल्लेख करी संवेदन कलना पूर्णरूप फुरी हे ॥ सो चिन्मात्र संवितका आभास हे ॥ सोइ फुरी करी सूक्ष्म स्थूल मध्य भावकों प्राप्त भइ हे ॥ स्थान भेद करी बहुरी उही दृढ स्पंद करी मन भावकों प्राप्त भइ हे ॥ अरु सात्विक राजस तामस तीनों उसके आकार हुए हे ॥ सो अविद्या त्रिगुण प्राकृत धर्मणी होत भइ हे ॥ अरु तीन गुण जो तुझकों कहे हे सोभी एक एक गुण तीन प्रकार हुआ हे ॥ अविद्याके गुण नव प्रकारके भेदकों प्राप्त भये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे ॥ जेता कछू तुझकों दृश्य भासता हे ॥ सो अविद्याके नव गुण विषे हे ॥ ऋषिश्वर मुनीश्वर सिद्ध नाग विद्याधर देवता जो हे सो अविद्याका सात्विक भाग हे ॥ तिस सात्विकके वि
भागविषे नाग सात्विक तामस हे ॥ अरु विद्याधर सिद्ध देवता मुनीश्वर यह अविद्याके सात्विक भागविषे सात्विक राजस हे ॥ अरु हरिहरादिक सात्विक सात्विक हे ॥ हे रामजी
सात्विक जो प्रकृत भाग हे ॥ तिसकरी तत्वज्ञ जो हुए हे ॥ सो मोहकों नही प्राप्त होवे ॥ मुक्तिरूप होते हे ॥ सो हरिहरादिक शुद्ध सात्विक हे ॥ सदा मुक्तिरूप हो करी जगत्विषे
स्थित हे ॥ जबलग जगत्विषे हे तबलग जीवन्मुक्त हे ॥ जब विदेह मुक्त हुवे तब परमेश्वरकों प्राप्त होते हे ॥ हे रामजी एक अविद्याके दोरूप हे ॥ एक अविद्यारूप बहुरी उही वि
द्यारूप होती हे ॥ जेसें बीज फलकों प्राप्त होता हे ॥ अरु फल बीज भावकों प्राप्त होता हे ॥ जेसें जलविषे बुदबुदा उठता हे ॥ तेसें अविद्यातें विद्या उपजती हे ॥ अरु विद्या करी अ
विद्या लीन होती हे ॥ जेसें काष्टतें अग्नि उपजी करी काष्टकों दग्ध करती हे ॥ तेसें विद्या अविद्यातें उपजी करी अविद्याकों नाश करती हे ॥ अरु वास्तवतें सब चिदाकाश हे ॥ जेसें
जलविषे तरंग कलना मात्र हे तेसें विद्या अविद्या भावना मात्र इसकों त्याग करी शेष आत्मसत्ता रहती हे ॥ अविद्या अरु विद्या आपसमें प्रतियोगी हे ॥ जेसें तम अरु प्रकाश होता
हे॥ तातें इन दोनोंकों त्याग करी आत्मसत्ताविषे स्थित होहु ॥ विद्या अरु अविद्या कल्पनामात्र हे ॥ विद्याके अभावका नाम अविद्या हे ॥ अरु अविद्याके अभावका नाम विद्या हे
इह प्रतियोगी कलपना मिथ्या उठी हे ॥ जब विद्या उपजती हे तब अविद्याकों भास करती हे ॥ पाछें आपभी लीन होजाती हे ॥ जेसें काष्टतें उपजी अग्नि काष्टकों जलाय करी
आपभी शांत होजाती हे ॥ तेसें अविद्याकों नाश करिकें विद्या आपभी लीन होजाती हे ॥ तिसतें शेष रहता हे सो अशब्द पद सर्व व्यापी हे ॥ जेसें बटबीजविषे पत्र टास फू
ल फल पाते हे तेसें सर्वविषे एक अनुस्युत सत्ता व्यापी हे ॥ सो ब्रह्मतत्व सर्व शक्त हे ॥ सर्व शक्तिका संपद हे अरु आकाशतें भी शून्य हे ॥ जेसें सूर्यकांतविषे अग्नि होती हे जेसें
दूधविषे घृत होता हे ॥ तेसें सब जगतविषे ब्रह्म व्यापि रहा हे ॥ जेसें दधिके मथेविना घृत नही निकसता ॥ तेसें बिचारबिना आत्मा नहि भासता ॥ जेसें अग्नितें चिणगारे निक
सतें हे ॥ अरु सूर्यतें किरणा निकसतियां हे ॥ तेसें इह जगत् आत्माका किंचनरूप हे ॥ जेसें घटके नाश हुवे घटाकाश अविनाशी हे ॥ तेसें जगत्के अभावतेंभी आत्मा अविनाशी
हे ॥ हे रामजी जेसें चुंबक पथरकी सत्ता करिकें जड लोह चेष्टा करता हे ॥ परंतु चुंबक सदा अकर्ता ही हे ॥ तेसें आत्माकी सत्ता करिकें जगत् देहादिक चेष्टा करते हे ॥ चैतन्य
होते हे ॥ परंतु आत्मा सदा अकर्ता हे ॥ इस जगत्का बीज चैतन आत्मसत्ता हे ॥ तिसविषे संवित संवेदन आदिक शब्दभी कल्पना मात्र हे ॥ जेसें जलकों कहिये बहुत सुंदर चंच
ल हे ॥ सो जलही जल हे ॥ तेसें संवेदन आदिक सब चेतनरूप हे ॥ जहां न किंचन हे न अकिंचन हे ॥ सो तेरा स्वरूप हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे अवि
द्या निराकरणं नाम अष्टमः सर्गः ॥ ८ ॥ ॥ ७ ॥ ॥७॥ ॥ ७ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी स्थावरजंगम जेता कछु जगत् तुझकों भासता हे ॥ सो अधिभूतकताकों
नही प्राप्त भया सब चिदाकाश रूप हे ॥ तिसविषे कछु भाव अभावकी कलपना नहि ॥ अरु जीवादिक भेदभी नही हमकों तो भेद कल्पना कछु नही भासती ॥ जेसें जेवरीविषे
सर्पका अभाव हे तेसें ब्रह्मविषे भेद कल्पनाका अभाव हे हे रामजी आत्माके अज्ञान करीके भेद कल्पना भासती हे॥ आत्माके जाणेतें भेद कल्पना मिटिजाती हे ॥ सो सर्व संपदाका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंत हे ॥ अरु जब शुद्ध चैतनविषे चित्तका संबंध होताहे ॥ तब इसीका नाम अविद्या हे ॥ जो पुरुष चित्तकी उपाधितें रहित चिन्मात्र हे ॥ सो शरीरके नाश हुए नाश नहि होता
अरु शरीरके उपजेतें नहि उपजता ॥ शरीरके उपजणें अरु बिनसणेंविषे सदा एकरस ज्योंकात्यों स्थित हे जेसें घटके उपजणे अरु बिनसणेविषे घटाकाश ज्योंकात्यों होता हे ॥
तेसें शरीरके भावअभावविषे आत्मा ज्योंका त्यों हे ॥ जेसें बालक दउडता हे ॥ तिसकों सूर्यभी दउडता भासता हे ॥ अरु स्थित होणेविषे स्थित भासता हे ॥ परंतु सूर्य ज्योंका त्यों
हे ॥ तेसें चित्तकी चंचलता करीकें मूर्ख आत्माकों व्याकुल देखते हे ॥ अरु चित्तके अचलताविषे अचल देखते हे॥ अरु चित्तके उपजणेविषे उपजता देखते हे ॥ परंतु आत्मा स
दा ज्योंका त्यों हे ॥ जेसें बबोहा अपणी तंतु करी आपही वेष्टीत होता हे ॥ निकसी नही सकता ॥ तेसें इह जीव अपणी वासना करी आपहि बंधमान होते हे ॥ रामोवाच ॥ हे भग
वन् अत्यंत मूर्खताकों प्राप्त हो करी जो स्थावर आदिक तनकों पाइ करी घन स्थित हुएहे ॥ तिनकी वासना केसें होती हे ॥ सो कृपा करिकें कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी
जो स्थावर जीव हे सो अमन सत्ताकों नहि प्राप्त हुए अरु केवल मन अवस्थाविषेभी तिष्टत नही ॥ मध्य अवस्थाविषे हे ॥ उनकी पूर्यष्टका सुषुप्तिरूप हे ॥ सो केवल दुःखका
कारण हे ॥ उनका मन नही नष्ट हुआ ॥ सुषुप्ति अवस्थाविषे जडरूप स्थित हे ॥ सो काल करी जागहिंगे ॥ अब उनकी सत्ता मूक जड हो करी स्थित हे सत्ता मात्र स्थित हे ॥ रा
मोवाच ॥ हे देवदेवताविषे श्रेष्ट जब उनकी सत्ता अद्वैतरूप होकरी स्थावरविषे स्थित हे ॥ तब मुक्ति अवस्था तिनके निकट भइ ॥ इह सिद्ध हुआ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी मुक्ति
केसें निकट होती हे ॥ मुक्ति तब होती हे ॥ जब बुद्धिपूर्वक वस्तुकों विचारे हे ॥ तब यथाभूत अर्थ दृष्टी आवे ॥ जब सत्ता समानका बोध होवे तब केवल आत्मपदकों प्राप्त होवे ॥ हे
रामजी जब ज्योंका त्यों पदार्थ जाणी करी वासनाकों त्याग करे ॥ सो उत्तम हे तब सत्तासमान पद प्राप्त होवे ॥ प्रथम अध्यात्म शास्त्रकों विचारे ॥ तिसविषे जो सार हे तिसकी वारं
वार भावना करे ॥ तिसकरी जो प्राप्त होवे सो सत्तासमान परम ब्रह्म कहता हे ॥ स्थावरके अंतर वासना हे ॥ परंतु बाह्य दृष्टी नही आती ॥ काहे तें जो उनकी सुषुप्त वासना हे जे
सें बीजविषें अंकूर होता हे ॥ बहुरी उगता हे ॥ तेसें उनकों जन्म होवेगे अरु वासना जागेगी ॥ जो उनके अंतर जगत्की सत्यता हे ॥ अरु बाह्य नही दृष्टी आती ॥ सो सुषुप्तवत्
जड धर्म हे ॥ बहुरी अनंत जन्मके दुःख पावेंगे ॥ हे रामजी स्थावर जो अब जडधर्मा सुषुप्त पदविषे स्थित हे ॥ सो वारंवार जन्मकों पावहिंगे ॥ जेसें बीजविषे पत्र टास फुल फल
स्थित होते हे ॥ जेसें मृतिकाविषे घट शक्ति स्थित होती हे ॥ तेसें स्थावरविषे वासना स्थित हे ॥ जहां वासनारूपी बीज हे सो सुषुप्तरूप कहता हे ॥सो सिद्धता जो मुक्ति हे तिसकों
नहि प्राप्त करती ॥ अरु जहां निरबीज वासना हे ॥ सो तुरीया पद हे ॥ सिद्धताकों प्राप्त करती हे ॥ हे रामजी जब चित्तशक्ती वासना साथ मिली होती हे ॥ तब स्थावर होती हे ॥
सो बहुरी जागती हे ॥ जेसें कोउ कर्म करता सोय जाता हे ॥ सुषुप्तितें उठी करी बहुरी उहि कर्म करणे लागता हे ॥ कर्मरूपी वासना तिसके अंतर रहती हे ॥ तेसें स्थावर वासना क
रिकें बहुरी जन्मकों पावेंगे ॥ जब उह वासना अंतरतें दग्ध होजावे ॥ तब जन्मका कारण नही होती ॥ अरु आत्मसत्ता समान करीकें घटपट आदिक सर्व पदार्थविषे स्थित हे ॥ जेसें
वर्षाकालका मेघ एकहि नानारूप होकरी स्थित होता हे ॥ तेसें आत्मसत्ता एकही सर्व पदार्थविषे स्थिति होती हे ॥ तातें सर्व आत्माहि व्यापि रहा हे ॥ अेसी दृष्टितें जो रहित हे तिस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कों विपर्यय दृष्टि भयदायक होती हे ॥ जब आत्मदृष्टि प्राप्त होती हे तब सर्व दुःखनाश होजाते हे ॥ हे रामजी असम्यक् दृष्टीका नाम अविद्यावुद्धीश्वर कहते हे ॥ सो अविद्या जग
त्का कारण हे ॥ तिसिकरी सब पसारा होता हे ॥ तिसतें रहित जब अपणा स्वरूप भासे तब अविद्या नष्ट होती हे ॥ जेसें बरफकी कणिका धूप करीनाश होजाती हे ॥ तेसें शुद्धस्वरूपके
अभ्यास करी अविद्या नष्ट होजाती हे ॥ जेसें सुपनेंतें रहित जब अपणा स्वरूप देखता हे ॥ तब बहुरी सुपनेकी उर नही जाता हे ॥ तेसें शुद्ध स्वरूपके अभ्यास करी संपूर्ण भ्रम निवृत्त
होजाता हे ॥ हे रामजी जब वस्तुकों वस्तु जाणता हे ॥ तब अविद्या नष्ट होजाती हे ॥ जेसें प्रकाश करी अंधकार नष्ट होजाता हे ॥ दीपककों हाथ लेकरी देखीये तब अंधकार
की मूर्त्ति कछू दृष्ट नहि आती ॥ जेसें उष्णता करीकें घृतका पीन उडा गलिजाता हे ॥ तेसें आत्माके दर्शन हुए अविद्या नही रहती ॥ अरु वास्तवतें अविद्या कछू वस्तु नही ॥ अवि
चारतें सिद्ध हे ॥ विचार कियेतें लीन होजाती हे ॥ जेसें प्रकाश करी तम लीन होजाता हे तेसें विचार करी अविद्या लीन होजाती हे ॥ अज्ञान करी अविद्याकी प्रतीत होती हे ॥ जवल
ग आत्मातत्वकों नही देखा ॥ तवलग अविद्याकी प्रतीत होती हे ॥ जब आत्माकों देखा तब अभाव होजाता हे ॥ प्रथम इह विचार करे जो रक्त मांस अस्थिका जंत्र शरीर हे ॥ ति
सविषे मैं क्या वस्तु हों ॥ सत्य क्या हे ॥ अरु असत्य क्या हे ॥ तिसविषे जिसका अभाव होता हे सो असत्य हे अरु जिसका अभाव नहीं होता सो सत्य हे ॥ बहुरी अन्वयव्यतिरे
क करी विचारे ॥ जो कार्य कल्पितके होतेभी होवे ॥ अरु तिसके अभावविषेभी होवे ॥ सो अन्वय सत्य हे ॥ जो देहादिके भावविषेभी आत्मा अधिष्ठान हे ॥ अरु इनके अभावविषे
भी निरुपाधि सिद्ध हे सो सत्य हे ॥ अरु देहादिक व्यतिरेक असत्य हे ॥ ऐसें विचार करी आत्मतत्वका अभ्यास करे ॥ अरु असत देहादिकतें वैराग करे ॥ तब निश्चय करी कें अविद्या
लीन हो जाती हे ॥ काहेतें जो वास्तव नहि असत्यरूप हे ॥ तिसके नष्ट हुए जो शेष रहे सो निष्किंचन किंचनरूप हे ॥ सो सत्य हे ॥ ब्रह्म निरंतर हे ॥ सो तत्वतस्तु उपादेय करणे जोग
हे ॥ हे रामजी ! ऐसें विचार करीके अविद्या नष्ट हो जाती हे॥जेसें गनेका रस जिव्हा साथ लागता हे तब अवश्य स्वादभी आता हे॥तेसें आत्मविचार करी अविद्या अवश्य नष्ट हो जा
तीहे ॥ अरु जब वास्तवतें कहे तब अविद्याभी कछु भिन्न वस्तू नही ॥ सर्व एक अखंडित ब्रह्मतत्व हे ॥ घट पट रथ आदिक जेतें कछू पदार्थ हे ॥ जिसकों भिन्न भिन्न भासतें हे तिसकों
अविद्या जान अरु जिसकों सर्वविषे एक ब्रह्मभावना हे तिसकों विद्या जान ॥ इस विद्याकरी अविद्या नष्ट हो जावेगी ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे अविद्याचिकित्सा
वर्णनंनाम नवमःसर्गः ॥ ९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी बोधके निमित्त मैं तुझकों वारंवार सार कहताहों ॥ जो आत्मसाक्षात्कार भावना अभ्यास
विना न होवेगा ॥ इह जो अज्ञान अविद्या हे सो अनंत जन्मका दृढ भया हे ॥ सो अंतर बाहिर करीकें देखाइ देताहे ॥ आत्मा सर्व इंद्रियतें अगोचर हे ॥ जब मन सहित षट् इंद्रिय
का अभाव हो जावे ॥ तब केवल शांतिकों प्राप्त होता हे ॥ हे रामजी ! जेती कछू वृत्ति बहिर्मुख फुरती हे सो अविद्या हे ॥ काहेतें जो आत्मतत्वतें इतर जाणि करी फुरती हे ॥ अरु
जो अंतर्मुख आत्माकी उर फुरती हे सो विद्या हे ॥ सो विद्या अविद्याकों नाश करेगी ॥ अविद्याके दो रूप हे ॥ एक प्रधान रूप हे एक निकृष्ट रूप हे ॥ तिस अविद्यातें विद्या उपजी
करी अविद्याकों नाश करती हे ॥ बहुरी आपभी नाश हो जाती हे ॥ जेसें बांसतें अग्नि उपजती हे अरु बांसकों जलायकरी आपभी शांत हो जाती हे तेसें जो अंतर्मुख हे सो प्रधा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न रूप विद्या हे ॥ अरु जो बहिर्मुख हे सो अविद्या निकृष्ट रूप हे ॥ तातें अविद्या भागकों नाश करहु॥ हे रामजी अभ्यास विना कछू सिद्ध नही होता ॥ जो कछू किसिकों प्राप्त होता
हे सो अभ्यासरूपी वृक्षका फल हे ॥ चिरकाल जो अविद्याका दृढ अभ्यास हुआ हे ॥ तब अविद्या दृढ भइ हे ॥ जब आत्मज्ञानके निमित्त जतन करीकें दृढ अभ्यास करेगा ॥ तब अ
विद्या नाश हो जावेगी ॥ हे रामजी रिदेरूपी वृक्ष हे ॥ तिससाथ अविद्यारूपी बुरी लता दृढ हो रहीहे ॥ तिसकों ज्ञानरूपी खड्ग करीकें काटहु ॥ अरु जो कछू अपणा प्रकृत आचार हे
तिसकों करहु ॥ तब तुझकों दुःख कोउ न होवेगा ॥ जेसें जनक राजा ज्ञातज्ञेय हो करी व्यवहारकों करत भया हे ॥ तेसें आत्मज्ञानका दृढ अभ्यास करी तूंभी विचर ॥ हे रामजी
जेसें पवन निश्चयकों धारि करी कार्याकार्यविषे विचरता हे ॥ अरु जेसें निश्चय विष्णुजीकों स्वरूपविषे हे सब कार्य करता हे ॥ अरु जेसें निश्चय सदाशिवकों हे जो गौरी अर्धांगमें
रहती हे ॥ अरु कदाचित् क्षोभकों नही प्राप्त होता सदा शांतरूप हे॥ अरु जेसें निश्चय ब्रह्माकों हे ॥ जो बाह्य रागरोष दृष्टि आता हे ॥ अरु अंतर रागदोष कछू नही ॥ जेसें निश्चयबृह
स्पति देवताके गुरूका हे ॥ अरु जेसें निश्चय चंद्रमा अरु अग्निका हे॥जेसें निश्चय नारद पुलह पुलस्य अंगिरा भृगु शुक देवका हे ॥ ओरभी ऋषीश्वर मुनीश्वर ब्राह्मणका हे ॥क्षत्रियादिक
का ज्ञान ज्ञेयका निश्चय हे सो तुझकों प्राप्त होवे ॥ रामोवाच ॥ हे ब्राह्मण जिस निश्चय करीकें बुद्धिवान विशोक होकरी स्थित भये हे सो मुझकों कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे राम
जी जेसें संपूर्ण ज्ञानवानका निश्चय हे अरु व्यवहारविषे सम रहे हे सो सुण ॥ विस्ताररूप जेता कछू जगत्जाल तुझकों भासता हे ॥ सो निर्मल ब्रह्मसत्ता अपणे महिमाविषे स्थित हे ॥
जेसें तरंग समुद्रविषे स्थित होते हे ॥ अरु नाना प्रकार उत्पत्ति होते हे ॥ सो एक जलरूप हे जलतें इतर कछू नही ॥ तेसें जे ते कछू पदार्थ जाल भासतें हे ॥ सो सब ब्रह्मरूप हे जो
ग्रहण करणेवाला हे साभी ब्रह्म हे ॥ अरु जिसकों भोजन करता हे सोभी ब्रह्म हे ॥ मित्रभी ब्रह्म हे शत्रुभी ब्रह्म हे ॥ ब्रह्मही अपणे आपविषे स्थित हे ॥ इह निश्चय ज्ञानवानकों सदा
रहता हे ॥ बहुरी केसा हे ब्रह्मकोंब्रह्म स्पर्श करता हे तब किसकों स्पर्श किया ॥ हे रामजी जिनकों सदा यही निश्चय रहता हे तिसकों राग द्वेष कछू दुःख नही देसकते ॥ ब्रह्मही ब्र
ह्मविषे फुरता हे ॥ भावरूपभी ब्रह्म हे अभावरूपभी ब्रह्म हे इतर कछू नही ॥ बहुरी रागद्वेष कलना केसें होवे ॥ ब्रह्मही ब्रह्मकों चेतता हे ॥ ब्रह्मही ब्रह्मविषे स्थित हे ॥ ब्रह्मही अहंअस्मि
हे ॥ ब्रह्मही सम हे ब्रह्मही अंतर आत्मा हे घटभी ब्रह्महे पटभी ब्रह्म हे ब्रह्मही विस्तारकों प्राप्त भया हे ॥ हे रामजी ! जब सर्वत्र ब्रह्मही हे तब राग विराग कलना केसें होवे ॥ मृत्युभी
ब्रह्महे शरीरभी ब्रह्महे मरताभी ब्रह्महे मारताभी ब्रह्महे ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प भ्रम करीकें भासता हे तेसें आत्माविषे सुखदुःख मिथ्या हे ॥ भोगभी ब्रह्महे भोगणेवालाभी ब्रह्महे ॥ भोक्ता
देहभी ब्रह्महे ॥ सर्वत्र ब्रह्मही हे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग उपजते अरु मिटि जाते हे सो जलतें इतर कछू नही तेसें शरीर उपजते अरु मिट जाते हे ॥ सो ब्रह्मही ब्रह्मविषे स्थित हे ॥ हे
रामजी जलके तरंग जो मृत्युकों प्राप्त होतें हे सो क्या हुआ उह तो जलही हे ॥ तेसें मृतक ब्रह्मनें जो देहमृतक ब्रह्मकों मार्या तब कवन मुआ अरु किसनें मार्या ॥ जेसें एक
तरंग जलतें उपजा अरु दुसरे तरंग साथ मिलि गया दोनो एकठे होकरी मिटि गये सो जलही जल हे ॥ तहां में तुं दुसरा कछू नही ॥ तेसें आत्माविषे जगत् हे ॥ सो आत्माहि अपणे
आपविषे स्थित हे ॥ तेरा मेरा भिन्न कछू नही जेसें स्वर्नविषे भूषण होते हे ॥ जलविषे तरंग होते हे सो अभेदरूप हे तेसें ब्रह्म अरु जगत्विषे भेद कछु नही ॥ हे रामजी जो पुरुष य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थार्थदर्शी हे ॥ तिनकों सदा यहि निश्चय रहता हे ॥ अरु जिनकों सम्यक् ज्ञान नही प्राप्त भया ॥ तिनकों विपर्ययरूप अवरका अवर भासता हे ॥ वास्तवतें सदा एक रूप हे ॥ परंतु ज्ञान अरु अज्ञानका भेद हे जेसें जेवरी एक होती हे परंतु जिसकों सम्यक् ज्ञान होता हे तिसकों जेवरीभी भासती हे ॥ अरु जिसकों सम्यक् ज्ञान नही होता तिसकों सर्प हो भासता हे ॥ तेसें जो ज्ञानवान पुरुष हे तिसकों सब ब्रह्मसत्ता भासती हे ॥ अरु जो अज्ञानी हे तिसकों जगत्रूप भासता हे ॥ तिसकों नाना प्रकारका जगत दुःखदायक होता हे ॥ अरु ज्ञान वानकों सुखरूप हे ॥ जेसें अंधकों सर्व उर अंधकार भासता हे ॥ अरु चक्षुवानकों प्रकाशरूप होता हे ॥ तेसें सर्व जगत् आत्मरूप हे ॥ परंतु ज्ञानीकों आत्मसत्ता सुखरूप भासती हे ॥ अज्ञानीकों दुःखदायक हे ॥ जेसें बालककों अपणे पछावेविषे वैताल बुद्धि होती हे तिसकरी भयमान होता हे अरु बुद्धिवान निर्भय होता हे तेसें अज्ञानीकों जगत् दुःखदायक हे ॥ ज्ञा नीकों सुखरूप हे ॥ अरु जब मेरा निश्चय पुछे तब अेसें हे॥ में सर्व ब्रह्महों नित्य शुद्ध सर्वविषे स्थित हों ॥ न कोउ विनसता हे न उपजता हे ॥ जेसें जलविषे तरंग हे सो न कछू उप जा हे न विनसता हे जलहि जल हे ॥ तेसें भूतभी आत्माविषे हे ॥ जगत्भी आत्मरूप हे ॥ आत्म ब्रह्मही अपणे आपविषे स्थित हे ॥ शरीरके नाश हुए आत्माका नाश नही होता ॥ मृतरूपभी ब्रह्महे शरीरभी ब्रह्म हे ब्रह्मही अनेकरूप हो करी भासता हे ॥ ब्रह्मतें भिन्न कछू शरीरादिक सिद्ध नही होते ॥ जेसें तरंग फेन बुद्बुदे जलरूप हे ॥ तेसें देह कलना इंद्रियां इछा दैवतादिक सब ब्रह्मरूप हे ॥ जेसें स्वर्नतें भिन्न भूषण नही होता स्वर्नही भूषण रूप होता हे तेसें ब्रह्मतें व्यतिरेक जगत् नही होता ॥ ब्रह्मही जगत्रूप हे ॥ जो मूढ हे तिनकों द्वैत कलना भासती हे ॥ हे रामजी! मन बुद्धि अहंकार तन्मात्रा इंद्रियां सब ब्रह्महीके नाम हे ॥ अवर सुखदुःख कछू नही ॥ अहं अेसें जो शब्द हे तिसविषे भिन्न भिन्न भावना करणी सो व्यर्थ हे ॥ अपणा अनुभवहि अन्यकी नांइं हो भासता हे जेसें पहाडविषे शब्द करता हे तिसकरी प्रतिशब्दका भास होता हे ॥ सो अपणाही शब्द हे ॥ तिसविषे अवरकी कल्पना मि थ्या हे ॥ जेसें सुपनेविषे अपणा सिर काटया देखता हे सो व्यर्थ हे ॥ सोइ भासी आता हे ॥ जिसकों असम्यक् ज्ञान होता हे तिसकों एसें हे ॥ हे रामजी ब्रह्म सर्वशक्त हे तिसविषे जेसी भावना होती हे सोइ भासी आता हे ॥ जिसकों सम्यक्ज्ञान होता हे सो निरहंकार सुप्रकाश सर्वशक्त देखता हे ॥ कर्ता कारण कर्म संप्रदान उपादान अधिकरण इह जो षट्कारक बुद्धि हे सो सब सर्वत्र ब्रह्महि देखता हे ॥ ब्रह्मअर्पण ब्रह्महवि ब्रह्म अग्नि ब्रह्महोत्र ब्रह्महुतणेवालां ब्रह्मही फल देता हे ॥ अेसें जानणे वालेका नाम ज्ञानी हे ॥ अेसें न जा णे तें अज्ञानी हे ॥ जानणेवालाका नाम ब्रह्मवेता हे ॥ हे रामजी जब चिरकालका बांधव होवे अरु उसकों देखियें तब जाणिये जो बांधव हे ॥ अरु जो देखणेमें न आया उ सका अभ्यास दूर हो गया ॥ तब बांधवभी अबांधवकी नांइ हो जाता हे ॥ तेसें अपणाआप ब्रह्मस्वरूप हे ॥ जब भावना होती हे ॥ तब अेसें भासि आवता हे जो में ब्रह्महों अ रु द्वैत कल्पनाभी लीन होजाती हे ॥ सर्व ब्रह्मही भासता हे जेसें जिसनें अमृतपान किया हे ॥ सो अमृतमय होता हे ॥ अरु जिसनें नहि पान कीया सो अमृतमय नहि होता ॥ तेसें जिसनें जान्या जो में ब्रह्म हों ॥ सो ब्रह्महि होता हे ॥ जिसनें नही जान्या तिसकों नानात्व कल्पना जन्म मरन भासता हे ॥ अरु ब्रह्म अप्राप्तकी न्याइ भासता हे ॥ हे रामजी जिसकों ब्रह्मभावनाका अभ्यास जाग्या हे ॥ सो अभ्यासके बलकरी सिद्धही ब्रह्म होता हे ॥ ब्रह्मरूपी बडे दर्पणविषे जेसी कोउ भावना करता हे ॥ तेसा रूप हो भासता हे ॥ मन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावना मात्र हे ॥ दुर्वासना करिकें इसका स्वरूप आवरण भया हे ॥ जब वासना नष्ट होती हे तब निष्कलंक आत्मतत्व भासता हे ॥ जेसें शुद्ध वस्त्रउपर केसरका रंग सिघ्रही चढी जाता हे ॥ तेसें वासनातें रहित चित्तविषे ब्रह्मस्वरूप भासि आता हे ॥ हे रामजी आत्मा सर्व कलनातें रहित हे ॥ अरु तीनों कालविषे नित्य शुद्ध सम शांत रूप हे ॥ जिसकों ज्ञान होता हे सो अेसें जाणता हे जो में ब्रह्म हों ॥ सदा काल सर्वविषे सर्व प्रकार सर्व घटपटादिक जो जगत्जाल हे सो मेंहि ब्रह्म आकाशवत् सर्वविषे व्यापि रहाहों ॥ न कोउ मुझकों दुःख हे न कर्म हे ॥ न किसीका त्याग करता हों न वांछा करता हो ॥ सर्व कलनातें रहित निरामय हों ॥ मे हि रक्त हों ॥ मेंहि पीत हों ॥ मेंहि स्वेत हों ॥ मे हि श्याम हों ॥ रक्त मांस अस्थिका वपुभी मेंहि हों ॥ घट पटादिक जगत्भी मेंहि हों ॥ तृण वल्ली फूल गुछे टास गेंही हों ॥ बन पर्वत समुद्र नदीआं मेंही हों ग्रहण करणा त्याग करणा संकुचणा भूत शक्ति सब मेंही हों विस्तारकों प्राप्त मेंहि भया हों ॥ वृच्छ वल्ली फुल गुछे जिसके आश्रय फुरते हे ॥ सो चिदात्मा मेंहि हों ॥ सवविषे रसरूप मेंही हों ॥ जिसविषे इह सर्व हे ॥ जिसतें यह सर्व हे ॥ जो सर्व हे जिसकों सर्व हे ॥ अेसा चिदात्मा ब्रह्म हे सो मेंही हों ॥ चैतन आत्मा ब्रह्मसत्य अद्वत ज्ञानरूप इत्यादिक जिसके नाम हे ॥ एसा सर्व शक्त चिन्मात्र चैत्यतें रहित में हों ॥ प्रकाश मात्र निर्मल सर्व भूत प्रकाशक मेंही हों ॥ मन बुद्धि इंद्रियांका स्वामी मे हों ॥ जेती कछू भेदकलना हे सो इननें करी थी ॥ अब इनकी कलनाकों त्याग करि अपणे प्रकाशविषे स्थित हों ॥ चैतन ब्रह्म निर्दोष हों ॥ शब्द स्पर्शरूप रस गंध सब जगत्का कारण हे ॥ तिन सबका चैतन आत्मारूप ब्रह्म निरामय मेंही हों अविनाशी हों ॥ निरंतर स्वच्छ आत्मा प्रकाशरूप मनके उथानतें रहित मौनरूप मे हों ॥ परम अद्वत निरंतर सर्वभूतके सत्तारूप करिकें मेंही स्थित हों ॥ सदा अलेपक साक्षी सुषुप्तकी नांइं हों ॥ द्वैत कलनातें रहित अक्षोभरूपानुभव मेंही हों ॥ शांतरूप सब जगत्विषे मेंही पसरी रहाहों ॥ सर्व वासनातें रहित अक्षोभरूप अनुभव मेंही हों ॥ सब स्वादका जिसकरी अनुभव होता हे ॥ सो चेतन ब्रह्म आत्मा मेंही हों ॥ स्त्रीविषे आसक्त हे चित्त जिसका अरु चंद्रमाकी कांति करीमुदिता अधिक हे जिसकों ॥ स्त्रीका स्पर्श अरु मुदिताका जिसकरी अनुभव होता हे ॥ अेसा चैतन ब्रह्म मेंही हों ॥ पृथ्वी विषे स्थित जो पुरुष हे ॥ तिसकी दृष्टि चंद्रमाके मंडलमें जाय लगती हे ॥ तिसका अनुभव जिसविषे होता हे सो मेंही हों ॥ सुखदुःखकी कलनातें रहित अमन सत्ता अनुभवरूप जो आत्मा हे ॥ सो चैतनरूप आत्मा ब्रह्म मेंही हों ॥ खजूर अरु निंब आदिकविषे स्वादरूप मेंही हों ॥ खेद अरु आनंद लाभ अलाभ मुझकों तुल्य हे ॥ जाग्रत सुपनसुषुप्ति साक्षी तुरीयारूप आदि अंततें रहित चैतन ब्रह्म निरामय मे हों ॥ जेसें खेत्रके गनेडुंविषे एकहि रस होती हे ॥ तेसें अनेक मूर्तिविषे एक ब्रह्मसत्ता स्थित हे ॥ सो सत्य शुद्ध सम शांतरूप सर्वज्ञ हे ॥ प्रकृत जो सूक्ष्म तिसका प्रकाशक हे ॥ सूर्यकी नांइ सो प्रकाशरूप ब्रह्म मेंही हों ॥ सब शरीरविषे व्यापी रहा हों ॥ जेसें मोतिविषे तंतु गुप्त होता हे ॥ जिसविषे मोती परोये हे ॥ तेसें मोती रूपी शरीरविषे तंतुरूप गुप्त मेंही हों ॥ अरु जगत्रूपी दूधविषे ब्रह्मरूपी घृत मेंही व्यापी रहा हों ॥ हे रामजी जेसें स्वर्नविषे नाना प्रकारके भूषण बनते हे ॥ सो स्वर्नतें इतर कछू नही ॥ तेसें सब पदार्थ आत्माविषे स्थित हे ॥ आत्मातें इतर कछू नही ॥ पर्वत समुद्र नदीविषे सत्तारूप आत्माहि हे ॥ सर्व संकल्पका फलदाता अरु सर्व पदार्थका प्रकाशक आत्माही हे ॥ अरु सर्व पावणेजोग पदार्थका अंत हे ॥ तिस आत्माकी उपासना हम करतें हें ॥ घट पट तट कंथ विषे स्थित हे ॥ अरु जाग्रतविषे सुषुप्तरूप स्थित हे ॥ जिसविषे फुर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

णा कोउ नही ॥ अेसें चैतनरूप आत्माकी उपासना हम करतें हे ॥ मधुरविषे जो मधुरता हे अरु तीक्ष्णविषे तीक्ष्णता हे ॥ अरु जगत्विषे चलणा शक्ति हे ॥ तिस चैतन आत्माकी हम उपासना करते हे ॥जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरीया तुरीयातीतविषे जो समतत्व हे ॥ तिसकी हम उपासना करते हे॥त्रिलोकीके देहरूपी जो मोती हे ॥ तिनविषे जो तंतुकी न्यांइं अनुस्यूत हे॥ अरु पसारणे संकोचणेका कारण हे ॥ तिस चैतनरूप आत्माकी हम उपासना करतें हे ॥ जो षोडश कलासंयुक्त अरु षोडश कलातें रहित हे ॥ अरु अकिंचन किंचनरूप हे ॥ तिस चैतन आत्माकी हम उपासना करतें हे ॥ चैतनरूप अमृत हे जो क्षीरसमुद्रतें निकस्या हे ॥ चंद्रमाके मंडलविषे रहता हे ॥ अेसा जो स्वतः सिद्ध अमृत हे जिसकों पाइकरी कदाचित् मृतक न होवे तिस चैतन अमृतकी हम उपासना करतें हे ॥ जो अखंड प्रकाश हे अरु सर्वभूतकों सुंदर करता हे तिस चिदात्माकों हम उपासतें हे ॥ शब्द स्पर्श रूप रस गंध जिसकरी प्रकाशते हे अरु आप इनतें रहित हे तिस चैतन आत्माकी हम उपासना करतें हे ॥ सर्व में हों अरु सर्व में नही ओरभी कोउ नही ॥ इस प्रकार विदित जाणीकरी अपणे अद्वैतरूप विषे विगतज्वर हो करी स्थित होते हे यहि निश्चय ज्ञानवानका हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे जीवन्मुक्तिनिश्चयोपदेशोनाम दशमःसर्गः ॥ १० ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! जो निष्पाप पुरुष हे तिनकों यहि निश्चय रहता हे जो सत्यरूप आत्मतत्व हे ॥ इह पूर्ण बोधवानका निश्चय हे ॥ तिनकों न किसीविषे राग होता हे न दोष होता हे ॥ जीणा मरणा उसकों सुख दुःख नही देता ॥ इक समान रहता हे सो विष्णु नारायणका अंग हे अर्थ यह जो अभेद हे ॥ सदा अचल हे ॥ जेसें सुमेरु पर्वत वायु करी नही चलायमान होता तेसें उह दुःखकरी नही चलायमान होता ॥ अेसें जो ज्ञानवान पुरुष हे सो बनविषे विचरते हे ॥ नगरद्वीप नाना प्रकारके स्थानविषे फिरते हे परंतु दुःखकों नही प्राप्त होते ॥ स्वर्गविषे फूलके बन बगीचे विषे फिरते हे ॥ केइ पर्वतकी कंदराविषे रहते हे ॥ केइ राज्य करते हे ॥ शत्रूकों मारि करि सिरउपर झुलावते हे ॥ केइ श्रुति स्मृति अनुसार कर्म करते हे ॥ केइ भोग भोगते हे केइ विरक्त होकरि स्थित हे ॥ दान यज्ञादिक कर्म करते हे ॥ केइ स्त्रीसाथ लीला करते हे ॥ कइं गीत सुणते हे ॥ कइं नंदन बनविषे गंधर्व गायन करते हे ॥ केइ ग्रहविषे स्थित हे ॥ केइ तीर्थ यज्ञ करते हे ॥ केइ नोबत नगारे तुरियां सुणते हे ॥ इत्यादिक नाना प्रकार केइ स्थानविषे रहते हे ॥ परंतु आशक्त कोऊ नही होते ॥ जेसें सुमेरु पर्वत तालविषे नही डुबता तेंसें ज्ञानवान् किसी पदार्थविषे बंधमान नही होते ॥ इष्टकों पाय करी हर्षवान नही होते ॥ अनिष्टकों पाय करीदुःखी नही होते ॥ आपदा संपदाविषे तुल्य रहते हे ॥ प्रकृत आचार कर्मकों करतेहे ॥ परंतु अंतर सर्व आरंभतें रहित हे ॥ हे राघव इसि दृष्टिकों आश्रय करिकें तुमभी विचरो ॥ इह दृष्टि सर्व पापका नाश करती हे ॥ अहंकारतें रहित हो करी जो इछा होवे सो करो ॥ जब यथाभूतदर्शी हुए तब निर्बंध हुए ॥ जो कछू पतीत प्रवाहकरी आय प्राप्त होवे तिसविषे सुमेरुकी नांइं तुम अचल रहोगे ॥ हे रामजी इह सब जगत् चिन्मात्र हे ॥ न कछू सत्य हे न असत्य हे ॥ उही इस प्रकार हो करी भासता हे ॥ इस दृष्टिकों आश्रय करीकें अवर तुछ दृष्टिकों त्यागहु ॥ हे रामजी असंशक्त बुद्धि होकरी सर्वभाव अभावविषे स्थित होकरी रागद्वेषतें चलायमान नही होवेगा ॥ अब सावधान होहु ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् बडा आश्चर्य हे ॥ में तुमारे प्रसादकरी जानणे जोग पद जाण्या हे अरु प्रबुद्ध हुआहों ॥ जेसें सूर्यकी किरणांकरी कमल प्रफुल्लित होते हे तेसें प्रफुल्लित हुआहों ॥ जेसें शरत्कालविषे कुहिड नष्ट होजाती हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेसें तुमारे वचन करी मेरा संदेह नष्ट हुआहे ॥ मान मोह मद मत्सर सब नष्ट हो गये हे ॥ में अब सर्व क्षोभतेंरहित शांतिकों प्राप्त भया हो ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे जीवन्मुक्तिनिश्चयवर्णनंनाम एकादशःसर्गः ॥ ११ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् सम्यक् ज्ञान विलास करी वासना उदय होती हे सो जीवन्मुक्ति पदविषे किस प्रकार विश्रांति पाइये सो कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी संसार तरणेकी जुक्ति हे सो जोगनाम्नी हे सो जुक्ति दो प्रकारकी हे ॥ एक सम्यक् ज्ञानकरीकें अरु दुसरी प्राणके रोकणेकरीके ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् इन दोनोविषे सुगम कवन हे जिसकरी दुःखभी न प्राप्त होवे अरु बहुरी क्षोभभी न होवे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥हे रामजी दोनों प्रकार जोग शब्द करी कहाता हे ॥ तोभी जोग नाम प्राणके रोकणेका हे ॥ संसारके तरणेके जोग अरु ज्ञान दोनों उपाय हे ॥ इन दोनोंका फल एकहि सदाशिवनें कहा हे ॥ हे रामजी किसीकों जोग करणा कठन हे अरु ज्ञानका निश्चय सुगम हे॥ किसीकों ज्ञानका निश्चय कठिन हे ॥ अरु जोग करणा सुगम हे ॥ अरु जो मुझतें पुछे तो दोनोंविषे ज्ञान सुगम हे ॥ इस विषे जतन कष्ट थोडा हे ॥ जानणे जोग पदार्थकों जाणेतें बहुरी सुपनेविषेभी भ्रम नही होता हे ॥ साक्षीभूत हो करी दृष्ट देखता हे ॥ अरु जो बुद्धिवान जोगेश्वर हे तिनकोंभी जतन कछू नही सुभाविक चले जाते हे ॥ तिनकी एक जुक्ति समझी करी चित्त शांत हो जाता हे ॥ हे रामजी दोनोंकी सिद्धता अभ्यास जतन करी होती हे ॥ अभ्यासविना कछू प्राप्त नही होती ॥ सो ज्ञान तो में तुझकों कहा हे ॥ जो रिदेविषे विराजमान ज्ञेय हे तिसकों जानणा ज्ञान हे ॥ अरु जो प्रान अपानके रथ उपर आरूढ हे रिदेरूपी गुहाविषे स्थित हे ॥ हे रामजी तिस जोगकाभी क्रम सुण ॥ परम सिद्धताके निमित्त हे ॥ प्राण बायु जो नासिका अरु मुखके मार्ग पडी आती जाती हे ॥ तिसके रोकणेका क्रम कहता हों ॥ तिसकरी चित्त उपशम हो जाता हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे ज्ञानज्ञेयविचारोनाम द्वादशःसर्गः ॥ १२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ब्रह्मरूपी आकाश हे तिसके किसी कोणविषे इह जगत्रूपी स्पंद आभास फुरीया हे ॥ जेसें मरुथलविषे सूर्यकी किरणां करी मृगतृष्णाका जल फुरी आता हे ॥ तेसें जगत् ब्रह्मतें फुरी आया हे ॥ तिस जगत्के कारण भावकों सोइ प्राप्त हुआ हे ॥ अरु ब्रह्मके नाभिकमलतें उत्पत्ति हे जिसकी अरु पितामह नाम करी कहाता हे ॥ तिसका मानसी पुत्र श्रेष्ठ आचार हे जिसका अेसा जो में वसिष्ठ हों ॥ अरु नछत्र तारा चक्रविषे मेरा निवास हे ॥ जुग जुग प्रति में तहां रहता हों ॥ सो में जब नछत्र चक्रतें उठ्या॥ तब इंद्रकी सभाविषे आया तहां ऋषीश्वर मुनीश्वर बैठे थे ॥ जब नारद आदिकविषे चिरंजीविका कथा प्रसंग चल्या तब तहां शातातप नाम एक ऋषीश्वर था ॥ सो केसाथा मन जो मान करणेकों जोग बुद्धिवान था सो कहत भया जो हे साधो सबविषे चिरंजीवि हे सो एक हे ॥ सुमेरु पर्बतकी जो कंदरा हे तिसकी कोण पद्मराग नाम्नी हे कंदरा तिसके सिखरपर एक कल्पवछ हे ॥ सो महा सुंदर अपणी शोभा करी पूर्ण हे ॥ तिस वछके दक्षिण दिशा टास हे ॥ तहां पंछी रहते हे तिन पंछीविषे महा श्रीमान एक कउआ रहता हे भूखंड तिसका नाम हे सो केसा हे वीतराग अरु बुद्धिमान उह उहां रहता हे ॥ उसका आलय कल्पवछके टास उपर बन्या हुआ हे ॥ जेसें ब्रह्मा नाभिकमलविषे रहता हे ॥ तेसें उह आलयविषे रहता हे ॥ जेसें उह जीया हे तेसें न कोउ जीया हे न जीवेगा ॥ उसकी बडी आयुर्बला हे ॥ अरु श्रीमान महा बुद्धिवान् विश्रांतिवान् शांतरूप अरु कालका वेत्ता अेसा उह हे ॥ हे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साधो बहुत जीणाभी तिसका सफल हे ॥ अरु पुण्यवानभी उही हे जिसकों आत्मपदविषे विश्रांति भइ हे ॥ अरु संसारकी आस्था जाती रही हे ॥ अेसा जो पुरुष हे सो उह हे ॥ अेसें
गुण करी संपन्न तिसका नाम काकभूखंड हे ॥ इस प्रकार जब उस देवताके देवनें कहा संपूर्ण सभाविषे तब ऋषीश्वरनें दुसरी वार पूछा जो उसका वृत्तांत बहुरी कहो ॥ तब उसनें बहु
री वर्णन किया तिस कालमें सब आश्चर्यकों प्राप्त हुए ॥ जब अेसें कथा वार्ता होए चुकी ॥ तब सबही सभा उठी खडी हुइ ॥ अपणे अपणे आश्रमकों गये ॥अरु में आश्चर्यमान हुआ
जो अेसें पंछीकों किसी प्रकार देखिये ॥ अेसें विचार करीकें में सुमेरु पर्वतकी कंदराके सन्मुख हुआ अरु चल्या ॥ तब एक क्षणविषे जाय प्राप्त भया ॥ क्या देखा जो महा प्रकाशरूप
कंदराका सिखर हे ॥ रत्नमणी करी पूर्ण हे ॥ अरु गेरीकी न्यांइं रंग हे ॥ जेसें अग्निकी ज्वाला होती हे तेसें प्रकाशरूप हे ॥ मानों प्रलय कालमें अग्निकी ज्वाला पडी जागती हे ॥ अेसें
मणी अरु रत्नका प्रकाश हे ॥ अरु बीच जो नील मणी हे सो धूम्रके समान हे ॥ मानों धुआं पडा निकसता हे ॥ अरु सर्व रंगकी खाण हे ॥ अरु जेते कछु संध्याके बदल लाल होते
सो मानो एकठे आनि हुए हे ॥ मानो जोगेश्वरके ब्रह्म रंध्रतें अग्नि निकसी एकठी आय भइ हे ॥ जठराग्नि एकठी हुइ हे ॥ मानों वडवाग्नि समुद्रतें निकसी करी मेघकों ग्रहण करणेनि
मित्त आनि स्थित भइ हे ॥ महा सुंदर रचना बणी हूइ हे ॥ फल अरु रत्नमणी संयुक्त प्रकाशमान हे ॥ उपर गंगाका प्रवाह चल्या जाता हे ॥ सो यज्ञोपवीत रूप हुआ हे ॥ गंधर्वगीत
गाते हे ॥ देवीके रहणेके स्थान हे ॥ हर्ष उपजावणेकों महा सुंदर लीलाका स्थान विधातानें रच्या हे ॥ तिसकों में देखत भया ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे भूषंडोपा
ख्याने सुमेरु शिखरलीलावर्णनंनाम त्रयोदशःसर्गः ॥ १३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी अेसें शिखर उपर कल्पवृच्छकों में देखत भया ॥
जो महा सुंदर फूल करी पूर्ण रत्न अरु मणीके गुछे लागे ॥ स्वर्नकी वल्ली लागी हुइहे ॥ अरु तारेसों हुणे फूल दृष्टि आते हे ॥ अरु मेघके बदलतें हुणे पत्र दृष्टि आते हे ॥ अरु सूर्यकी
किरणांतें हुणे त्रिवर्ग भासते हे ॥ वीजलीकी न्यांइं चमत्कार हे ॥ अरु पत्रपर देवता किंनर अरु विद्याधर देवी आये बेठतें हे ॥ अप्सरा आय नृत्य करतियां हे अरु गायन करतियां हे ॥
जेसें भंवरे गुंजारव करते फिरते हे ॥ हे रामजी तहां रत्नके गुछे नीरंध्र अरु कलियां फूलभी निरंध्र पत्र फलभी निरंध्र मणीके गुछे नीरंध्र सब निरंध्रहि दृष्टि आवे ॥ अरु सब स्थान फूल
फल गुछे करी पूर्ण ॥ अरु षट्ऋतुके फूल फल तहां पावत हे ॥ महा विचित्र रचना बणी हुइ हे ॥ तिसके एक टासपर पंछी बेठे हे ॥ सिंह बेठे खाते हे ॥ कइं फूल फलादिक खाते
हे ॥ कइं ब्रह्माजीके हंस बेठे हे ॥ कइं अग्निके वाहन तोते बेठे हे ॥ अरु कइं अश्वनी कुमार अरु भगवतीके मोर सिखावाले हे ॥ कइं बगले कइं कबूतर कइं गरुड बेठे हे ॥ अरु अेसें
शब्द करते हे ॥ मानो ब्रह्मकमलतें उपजा हुआ ओंकारका उच्चार करता हे ॥ केइ अेसें पंछी जो हे तिनकी दोदो चूंच हे तहां में देखि करी आगें दखणको कोणकों गया ॥ जहां उस
टलका टासथा तहां कउए अनेक बेठे हे ॥ जेसें महा प्रलयविषे मेघ लोकालोक पर्वतपर आय बेठते हे ॥ तेसें उहां कउए अचल आकार बेठे हे ॥ सोम सूर्य इंद्र वरुण कुबेर इनकी
यज्ञकी रक्षा उहांते लेणेहारे हे ॥ अरु पुण्यवान स्त्रीयांकों प्रसन्नतादेणेहारे भर्ताके संदेसें पहुंचावणेवाले हे सो उहां बेठे हे॥तिनकों में देखतभया तिनके मध्य महाश्रीमान भूखंड बेठाहे
उंची ग्रीवा किये हुए अरु वडी कांती हे ॥ जेसें नील मणी चमकती हे तेसें उसकी ग्रीवा चमकती हे अरु पूर्ण मन अरु मानी अर्थ यह जो मान करणे जोग हे ॥ अरु स्याम सब अंग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुंदर अरु प्राण स्पंदकों जीतणेहारा नित्य अंतर्मुख अरु नितही सुखी चिरंजीवी पुरुष तहां बेठा हे ॥ जगत्विषे दीर्घ आयु जगत्की आगमा पाइ जिसनें देखते देखते बहुत कल्पका स्मरन किया हे अरु इंद्रकी केइ परंपरा देखियां हे ॥ लोकपाल वरुण कुबेर जमादिकके केइ जन्म देखे हे ॥ देवता सिद्धके अनेक जन्म इस पुरुषनें देखे हे ॥ प्रसन्न अरु गंभीर अंतःकरण जिसका अरु सुंदर हे बाणी जिसकी अरु वक्रतातें रहित निर्मम अरु निरहंकार सबकों सुहृद मित्र हे बडी कोंटर हलवेकी न्यांइं हे ॥ जो पिता समान हे तिनकों पुत्रकी न्यांइं हे ॥ अरु जो पुत्रके समान हे तिनकों उपदेश करणे निमित्त पिता अरु गुरुकी न्यांइं समर्थ होता हे ॥ अरु सर्वथा सर्व प्रकार सर्वकाल सबविषे समर्थ हे ॥ अरु प्रसन्न महामति हृदय पुंडरीक व्यवहारका वेत्ता हे ॥ गंभीर अरु शांतरूप महाज्ञातज्ञेय हे ॥ अेसें पुरुषकों में देखत भया ॥ ॥ इतिश्री यो०नि०प्र० भुषंडी दर्शनंनाम चतुर्दशःसर्गः ॥ १४ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! तिसके अनंतर में आकाश मार्गतें उहां आया ॥ महा तेजवान दीपकवत् प्रकाशवान मेरा शरीर ॥ जब में उतर्या तब जेते कछू पंछी बेठे थे सो जेसें वायु करी कमलकी पंक्ति क्षोभकों प्राप्त होती हे ॥ जेसें भूकंपकरी समुद्र क्षोभकों प्राप्त होता हे तेसें क्षोभकों प्राप्त हुए ॥ तिनके मध्य जो भूखंडी था सो मुझकों देखत भया ॥ सो में केसा था जो अकस्मात् गया था तोभी उसनें मुझकों जान्या जो यह वसिष्ठ हे ॥ अेसें देखि करी उठी खडा हुआ अरु कहत भया हे मुनीश्वर स्वस्थ हो क्यों अरु कुशल हे क्यों ? ॥ हे रामजी अेसें कहि करी संकल्पके हाथ रचे तिनसाथ मेरा अर्घ्यपाद किया भाव संयुक्त पूजन करत भया ॥ अरु टहलुएकों दूर करीकें आपहि टहलके बडे पत्र लिये तिनका आसन रचि करी मुझकों बेठाया अरु कहत भया ॥ भूषंडोवाच ॥ अहो आश्चर्य हे हे भगवन् तुम बडी कृपा करी दर्शन दिया हे ॥ चिरपर्यंत दर्शनरूपी अमृत करी हम टहलसहित पूर्ण हो रहे हे ॥ हे भगवन् मेरे पुण्य जो एकठे हुएथे सो एकठे होकरी तुमकों प्रसन्नताके निमित्त प्रेरि ले आये हे॥ हे मुनीश्वर देवता पूजणे जोग हे तिनकेभी तुम पूज्य हो ॥ सो तुमारा आवणा किस निमित्त हुआ हे ॥ इस मोहरूप संसारतें तुमही रहे हो अरु अखंड सत्ता समानविषे तुम स्थित हो॥सदा पावन हो अभीष्ट प्रश्न यह हे जो तुमारा आवणा किस निमित्त हुआ हे इह मुझकों कहो ॥ आपका मनोरथ क्या हे ? ॥अर्थ इह जो क्या इछा हे अरु तुमारे चरनके दर्शन करीकें मेंतो सब कछू जान्या हे ॥ जिन निमित्त तुमारा आवणा हुआ हे स्वर्गकी सभाविषे चिरंजीवीका प्रसंग चल्या था ॥ तब में शरनविषे आयाथा तिसकरी तुम मुझकों पवित्र करणे आए हो ॥ इह तुमारे चरनके प्रताप करीकें में जाण्या हे ॥ परंतु प्रभुके वचन रूपी अमृतके स्वादकी मुझकों इछा हे ॥ इस निमित्त में प्रभुके मुखतें श्रवण करों ॥ हे रामजी इस प्रकार चिरंजीवी भूखंडनाम पंछीनें मुझकों कहा तब में कहत भया ॥वसिष्ठोवाच ॥ हे पंछीके महाराजा जो कछू तुमनें कहा हे सो सत कहा हे ॥ में अभ्यागत तेरे आश्रम इस निमित्त आया हों जो चिरंजीवीकी कथा चलीथी ॥ सो तुं मुझकों सीतल चित्त दृष्टि आता हे अरु कुशल मूर्ति हे ॥ अरु संसाररूपी जालतें निकस्या हुआ दृष्ट आता हे ॥ तातें मेरे संशयकों दुर करु जो किसकालविषे तूं जन्म्या हे अरु ज्ञातज्ञेय केसें हुआ हे ॥अरु तेरी आयु केतीक हे ॥ अरु कवन कवन वृत्तांत तुझनें देख्या हुआ स्मरन हे अरु किस कारन इहां निवास किया हे ॥ भुखंडोवाच ॥ ॥हे मुनीश्वर जो कछू तुमनें पूछा हे सो सर्वही कहता हों शनैशनै तुम श्रवण करो ॥ तुम जो होसो साक्षात् प्रभु त्रिलोकीके पूज्य हो अरु त्रिकाल दर्शीहो ॥ परंतु जो कछू तुम आज्ञा करी हे सो मानणी जोग हे॥तुम सारखे जो महात्मा पुरुष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मानणी जोग हे ॥ तुम सारखे जो महात्मा पुरुष हैं तिनके विद्यमान कहे हुएभी अपणेविषे जो कछु तमता होती हे सो निवृत्त हो जाती हे ॥ जेसें मेघके आगें आये हुए सूर्यकी तमता मिटि जाती हे तेसें तुमारे आगें कहने करी तमता निवृत्त हो जाती हे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे भूषंडी समागमनाम पंचदशः सर्गः ॥ १५ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी अेसें कही करी भूसंडी मुझकों कहत भया केसा भूसंड हे सर्वज्ञ अरु सुंदर अरु समता संयुक्त हे ॥सो स्निग्ध अरु गंभीर वाणी करी कहत भया ॥ जिसनें ताकडीविषे ब्रह्मांड तोलि छोड्या हे ॥ अरु जगत जिसकों तृणकी नांइ तुछ भासता हे ॥ काहेतें जो लोककी उत्पत्ति अरु प्रलय उसनें बहुत देखी हे ॥ अरु चित्तको वृत्ति किसीविषे लगाइ नही ॥ जेसें क्षीरसमुद्रतें निकस्या मंदराचल परिपूर्ण सम शुद्ध हे ॥तेसें उसका मन शुद्ध हे जेसे क्षीरसमुद्र उज्वल हे॥ तेसें उह आत्मपदविषे विश्राम पाय करी आनंदसों पूर्ण हे ॥ अरु जगत्के उत्पत्ति बिनाश जिसनें देखे हे ॥ अेसा जोगेश्वर मुझकों मधुर अरु उचित्त अगम वाणी कहत भया ॥ भूसंडोवाच ॥ हे मुनीश्वर इस जगतविषे जो बडा हे ॥ सो सदासिव सबका नायक देवताविषे देवताका देव हे ॥ अरु अर्धांगा भगवती गौरीकों शरीर विषेधारी हे ॥ महा सुंदर मूर्ती त्रिनेत्र हे ॥ अरु बडी जटा हे ॥ अरु मस्तकपर चंद्रमा हे अम्रत जिस तें स्रवता हे ॥ अरु गंगा जिसकी जटाके चउंफेर चलती हे ॥ जेसें फूल माला कंठविषे होती हे ॥ तेसें चलती हे ॥ अरु नीलकंठ हे ॥ कालकूटविषके पान करी उह विषभूषण हो गया हे ॥ अरु कंठविषे रुंडकी माला हे ॥ अरु सर्व उरते भस्मलगी हुइ हे ॥ अरु दिशा जिसके वस्त्र हे ॥ अरु मसाणविषे जिसका गृह हे ॥ अरु महाशांत रूप विचरता हे ॥ अरु साथ जो सेना हे ॥ तिसके महाभयानक आकार हे ॥ किसीकों तो रुद्रकी नांइ तीन नेत्र हे ॥ अरु किसीका तोतेकीनांइ मुख हे ॥ किसीका उंटका मुख हे ॥ किसीका गर्दभका मुख हे ॥ किसीकों बेलका मुख हे भूत विचरणेहारे हे ॥ केइ जीवके अंतर प्रवेश करि जाणेहारे हे ॥ रक्तमांसके भोजन करणेवाले जिसके साथ फिरते हे ॥ केइ पहाडविषे रहते हे ॥ केइ बनविषे केइ कंदरांविषे मसाणविषे ॥ इत्यादि स्थानविषे उनका निवास होता हे ॥ अरु साथ देवीयांभी अेसीआं हे ॥ जिनकी महाभयानक चेष्टा आचार हे ॥ तिन देवीविषे जो मुख्य देवियां हे तिनका जिस जिस दिशाविषे निवास हे सो सुणो॥ जया अरु विजया अरु जित अरु अपराजित वामदशाकी ओर, ॥ तुंबर रुद्रके आश्रित हे ॥ सिद्ध अरु सु खका अरु रक्तका अरु उतला भैरव रुद्रके आश्रित हे ॥ सो सर्व देवीके मध्य यह अष्टनायका ॥ अवर शतसहस्र देवीयां हे ॥ रुद्राणी, वैष्णवी, अरु ब्रह्माणी, वाराही, वायवी अरु कौमारी, वासवी अरु सौरी॥ इत्यादिक सतसहस्र देवियां हे ॥ इनकुं साथ मिलि हुइ आकाशविषे उत्तम देव किन्नर गंधर्व पुरुषासुर संभवतियां हे ॥ तिनहुं साथ मिलियां हुइयां ॥ भूचर पृथ्वीविषे कोट हे ॥ नानाप्रकाररूप नामधारणे हारियां पृथ्वीविषे जीवकों भोजन करतियां हे ॥ किनके वाहन उंट हे ॥ किनके गर्दभ हे, किनके काक किनके बानर हे ॥ किनके वाहन तोते ॥ इत्यादिक वाहन तिनके तिनों जगत्विषे रहते हे ॥ तिन देवीविषे केइ पशुधर्मिणी हे ॥ जो क्षुद्रकर्मविषे स्थित हे ॥ अरु केइ विदितवेद जीवन्मुक्त पदविषे स्थित हे ॥ तिनके मध्यनायक अलंबसा देवी हे ॥ जेसें विष्णुका वाहन गरुड हे ॥ तेसें देवीका वाहन काक हे ॥ सो देवी अष्टसिद्धिके ऐश्वर्यसंयुक्त हे ॥ सो देवीयां एक कालमें स मागम करत भइयां ॥ अरु विचार करत भइयां ॥ जगत्के पूज्य तुंबर अरु भैरवकों पूजत भइयां ॥ अरु विचार किया जो सदासिव हमारे साथ भावसंयुक्त नही बोलता ॥ अरु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमकों तुछ जाणता हे ॥ हम इसकों कछू अपणा भाव दिखावे ॥ प्रभाव दिखाये विना कोउ किसीके नही जाणता ॥ अेसें विचार करीकें उमाकों वश करी डुराय ले गइयां ॥ अरु उहां उत्साह किया ॥ मद्यमांसादिक भोजन करत भइयां ॥ अरु मायाके छल करीकें पार्वतीकों मारी करी चावलकी नांइं रांधी ॥ अरु नृत्य करणे लागियां ॥ कछूक अंग उसके रांधे डुए सदाशिवकों आनि दिये ॥ तब सदाशिवनें जान्या जो मेरी प्यारी पार्वती इननें मारी हे ॥ अेसें निश्चय करीके कोपणे लागा ॥ तब उन देवीनें अपणे अपणे अंगतें उसके अंग नि कासे ॥ सौरीनें नेत्र निकासे कौमारीनें नासा निकासी ॥ इह प्रकार अपणे अपणे अंग निकासी करी तेसीही पार्वतीकी मूर्ति ल्यायदीनी अरु नुतन विवाह करी दिया तब सदाशिव प्र सन्न भया सर्व ठउर उत्साह आनंद किया ॥ तब सर्व देवीयां अपणे अपणे स्थानकों गइआं ॥ अरु चंदनाम काक जो अलंबसा देवीका वाहन था सो ब्रह्माणीकी हंसणी साथ की डा करत भया ॥ क्रम करीकें सब साथ रमण क्रीडा करी ॥ तब उन सबकों गर्भ प्राप्त भये ॥ अरु हंसणीयां ब्रह्माणीकें पास गइयां ॥ तब ब्रह्माणीनें कहा अब तुमकों मेरे उठावणेकी शक्ति नही ॥ तुम गर्भवति भइयां हो ॥ जहां तुमारी इछा होवे तहां जावडु॥ बहुरी फिरी आवणा॥हे मुनीश्वर अेसें कहि करी ब्रह्माणी निर्विकल्प समाधिविषे स्थित भइ ॥अरु नाभिसरो वर जो ब्रह्माजीका उत्पत्ति स्थान हे तहां जाय स्थित भइ तिस तालके कमलपत्र उपर आय निवास किया॥जब तहां केताक काल वितीत भया तब उन हंसणीनें तीन तीन अंडदिये॥ जेसें वल्लीतें अंकुर उत्पत्ति होता तेसें उनतें एकविंशति अंडक्रम करी उत्पत्ति भये॥ तिनकों फोडत भइयां ॥ जेसें ब्रह्मांड खपरकों फोडिये तिन अंडतें हमारे अंग उत्पत्ति भये हे ॥ क्रम करीकें हम बडे उडणे जोग डुए ॥ तब माता हमकों ब्रह्माणी पास ले गइयां तिसके आगें हम मस्तक टेके ॥ तब ब्रह्माणी समाधितें उतरीथी ॥ तब उसनें देखि करी हमकों कृपाकी दृत्ति धारी हमारे सीसपर हाथ रखा ॥ उसके हाथ राखणे साथ हमारी अविद्या नष्ट हो गइ ॥ अरु हमारा मन तूम शांतरूप हो गया जीवन्मुक्तपदविषे हम स्थित भये॥तब हमकों यह दृत्ति फुरी आइ॥जो किसी प्रकार एकांत ध्यानविषे स्थित होवे ॥ देवीनें आज्ञा करी अब तुम जावडु ॥ तब देवीजीकी आज्ञाकरी हम पितापास आये पितानें हमकों कंठ लगाया अरु मस्तक चुंब्या ॥ तब हम अलंबसा देवीकी पूजा करत भये तब पितानें हमकों कहा हे पुत्रो तुम संसाररूपी जालविषे तो नही फसे ॥ अरु जो तुम निकसे नही फसे हो तब में भगवती देवीजी की प्रार्थना करता हों ॥ उह भृत्यपर दयालहे ॥ जेसें तुम प्राप्त होउगे ॥ तेसें तुमकों प्राप्त करेगी ॥ हे मुनीश्वर तब हमनें कहा हे पिता हम तो ज्ञातज्ञेय डुएहे ॥ जो कछू जानणे जोग हे सो जाण्या हे ॥ अरु जो पावणे जोग हे सो हम पाया हे ॥ ब्रह्माणी देवीजीके प्रसाद करीके अब हमकों एकांत स्थानकी इछा हे ॥ जहां एकांत होवे तहां जाय स्थित होवें ॥ तब चंदपितानें कहा हे पुत्रो एकांत स्थान सुण निर्दोष महा पान सुंदर आलय बन्या डुआ हे ॥ निर्भय निर्मोह सर्व क्षोभतें रहित जहां कोउ डुःख नही ॥ अेसा एकांत स्थान हे ॥ अरु सर्व रत्नकी खाण हे अरु सर्व देवताका आश्रय रूप हे ॥ सुमेरु जो पर्वत हे सूर्य चंद्रमा उसके दीपक हे ॥ चउं फर फिरते हे ॥ ब्रह्मांडरूपी मंडपका उह थंभा हे अरु स्वर्नका हे ॥ चंद्रसूर्य तिसके नेत्र हे ॥ अरु ताराकी कंठविषे माला हे ॥ दशोंदिशा तिसके वस्त्र रत्नमणीका भूषण हे ॥ वल्लवल्ली तिसके रोमावली हे ॥ त्रिलोकीविषे तिसकी पूजा हे ॥ षोडशसहस्र जोजन पातालविषे हे ॥ तहां नाग दैत्य इसकी पूजा करते हे ॥ अरु चउरासी सहस्र जोजन उर्धको हे ॥ तहां गंधर्व देवता किन्नर राक्षस मनुस इसकी पूजा करते हे ॥ अेसा पर्वत जंबुद्वीपके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक स्थानविषे स्थित हे ॥ चतुर्दश प्रकारके भूतजात उसके आश्रय रहते हे ॥ बडा उंचा पर्वत हे तिसका पद्मराग नाम एक शिखर हे ॥ मानों सूर्य आय उदे हुआ हे अेसा प्रकाशरूप हे ॥ तिस शिखर उपर एक बडा कल्पवृछ हे ॥ मानों जगत्रूपी शिखरका प्रतिबिंब आय पडा हे ॥ तिस कल्पवृछके दक्षण दिशाकी ओर जो टास हे तिसके महारत्नके गुछे हे अरु स्वर्नके पत्र हे ॥ चंद्रमाके बिंबवत् जिसके फूल हे अरु सघन रमणीय गुछे लागे हे तहां एक आलय बन्या हुआ हे ॥ उहां मेंभी आगें रहआया हों ॥ जब देवीजी समाधिविषे स्थित भइथी तब में उहां आलणा बणाय करी स्थित भयाथा ॥ चिंतामणीकी उसकों सलाका लागी हे ॥ महा रत्न साथ बन्या हे स्वर्नवत् कुटीर बणी हे तहां तुम जाय निवास करो ॥ आगें भी उहां कउवेके पुत्र रहते हे उनका अंतर आत्मज्ञान करी सीतल हे ॥ अरु बाह्यतें फूल फल करी सीतल हे ॥ तहां तुमभी जाय करी स्थित होहु ॥ तुमकों उहां भोगभीहे अरु मोक्ष भी हे ॥ खेदतें रहित तहां जाय स्थित होहु ॥ हे वसिष्ठजी जब इसप्रकार पितामहनें हमकों कहा ॥ तब सबहि पिताके चरन लागे पितानें हमारा मस्तक चुंबन किया॥ तब हम विध्याचल पर्वततें उडे आकास मारगकों मेघके स्थान लंघे ॥ नछत्र चक्र लंघे ॥ लोकांतरके स्थान लंघ करि ब्रह्मलोकविषे जाय प्राप्त हुए ॥ देवीजीकों प्रणाम करत भए ॥ भली प्रकार उसनें हमारे उपरी कृपादृष्टी करी दया अरु स्नेह सहित कंठ लगाय मस्तक चुंब्या ॥ हमभी मस्तक टेकी करि सुमेरकों चले ॥ सूरज चंद्रमाके लोककों लंघ गये ॥ तारागण लोकपाल देवताके लोक स्थानकों लंघ गये ॥ मेघपवनके स्थानकों लंघ करी सुमेरु पर्वतके कल्पवृछपर आनि स्थित भये ॥ हे मुनीश्वर जिस प्रकार हम उपजे हे अरु जिस करी ज्ञानकों प्राप्त भए हे ॥ जिस प्रकार इहां आय स्थित भये हे ॥ सो तुमारे आगे अखंडित कहा हे ॥ आगें तुमकों जो कछू संशय होए सो पुछो ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे भूषंडोपाख्याने अस्ताचललाभोनाम षोडशःसर्गः ॥ १६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ भुषंडोवाज ॥ हे मुनीश्वर इह चिरकालकी वार्ता तुमकों कही हे ॥ बहुत कल्प बितीत भए हे ॥ उह सृष्टि इस सृष्टितें दूरी हे बहुत जुग बितीत भये हे ॥ परंतु में तुमकों वर्तमान की नांइ सुणाया हे अभ्यासके बलतें ॥ हे मुनीश्वर मेरा कोउ पुण्यथा सो फल्या हे जो तुमारा निर्विघ्न दर्शन हुआ हे ॥ यह जो आलय अरु साखा हे अरु वृच्छ हे सो आज पावन ताकों प्राप्त हुवा हे॥ जो तुमारा दर्शन हुआ हे ॥ अब जो कछु संशय रहता हे सो पुछो में कहों ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इसप्रकार कहिकरी उसनें मेरा भली प्रकार अर्घपाद्यक रि पूजन किया आदर सहित ॥ तब में उसकों कहा हे पंछीके ईश्वर तेरे उह भाइ कहां हे ॥ जो तेरे समान तत्ववेत्ता थे सो तो दृष्टी नहि आते ॥ एकला तुंही दृष्टी आता हे ॥ भुषंडोवाच ॥ हे मुनीश्वर इहां मुझकों बहुत काल वितीत भया हे जुगकी पंक्ति वितीत भइ हे ॥ जेसें सूर्यकों केइ दिनरात्र बितीत हो जाते हे ॥ तेसें मुझकों जुग बितीत भये हे ॥ केताक काल उहभी रहे थे समय पाय करी उननें शरीर त्याग दिये॥ तृणकी नांइ त्याग करि शिव आत्मपदकों प्राप्त हुये ॥ हे मुनीश्वर बडी आयुर्बला होवे अथवा सिद्ध महंत होवे ॥ बली होवे अथवा ऐश्वर्यवान होवे काल सबकों पासि लेता हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे साधो जब प्रलय कालका समय आता हे ॥ तब सूर्य चंद्रमा वायु मेघ यह अपणी मर्यादा त्यागि देते हे ॥ तब बडा क्षोभ होता हे ॥ ॥ तुझकों खेद किस कारणतें नही होता ॥ सूर्यकी तपत करी अस्ताचल उदयाचलादिक पर्वत भस्म हो जाते हे ॥ तिस क्षाभविषे तूं खेदवान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किसकरी नही होता॥ भूषंडोवाच ॥ हे मुनीश्वर एक जीव जगत्विषे आधार करी रहते हे ॥ एक निराधार रहते हे ॥ जिनकों ऐश्वर्य सेनादिक पदार्थ होते हे ॥ सो आधार सहित हे अरु जो इन पदार्थतें रहित हे सो निराधार हे ॥ सो दोनोंकों हम तुच्छ देखते हे ॥ सत कोउ नही ॥ बडे बडे ऐश्वर्यवान वलीभी हे परंतु सत्य कोउ नही ॥ तिनविषे पंछीकी जात महातुछ हे ॥ उजाड बनविषे उनका निवास हे ॥ उहांही इनका दाणापाणी हे ॥ यह निरालंब हे इनकी जीविका दैवनें एसें बणाइ हे ॥ हे भगवन् में तो सदा सुखी हों ॥ अपणे आपविषे स्थित हों ॥ आत्मसंतोषकरी में तृप्त हों ॥ कदाचित् इस जगतके क्षोभ करी में नही खेदकों प्राप्त होता ॥ सुभाव मात्रविषे संतुष्ट हों कष्टचेष्टातें मुक्त हों ॥ हे ब्राह्मण अब हम केवल कालकों बितीत करते हे ॥ अवर जगत्के इष्ट अनिष्ट हमकों चलाय नहि सकते ॥न मरणेकी हमकों इछा हे ॥ न जीवणेकी इछा हे काहेतें जो जीणा मरणा शरीरकी अवस्था हे आत्माकी अवस्था नही ॥ हमकों जीवणे विषे राग नही मरणेविषे दोष नही ॥ जेसें अवस्था आनि प्राप्त होवे ॥ तिसीविषे संतुष्ट हे ॥ हे मुनीश्वर अेसें अेसें देखें हे ॥ सो बहुरी भस्म हो गये हे ॥ तिनकी अवस्थाकों देखी करी हमारे मनकी चपलता जाती रही हे ॥ अरु हम इस कल्पटछपर बेठे हे ॥ केसा कल्पटछ हे रत्नकी वल्ली जिसकों लागी हे ॥ तिसपर बेठी करी में प्रान अपानकी गतीकों देखता हों ॥ इनकी कलाकी जो सूक्ष्म गतिहे तिसका में ज्ञाता हों ॥ अरु दिनरात्रका मुझकों ज्ञान कछू नही ॥ सत बुद्धि करिकें में कालकों जानता हों ॥ अरु सार असारकों भले प्रकार जानता हों ॥ हे मुनीश्वर जेता कछु विस्तार भासता हे ॥ सो सब जूठे हे ॥ सत कछू नहि॥ इसी कारणतें हमकों किसी दृश्य पदार्थकी इछा नही परम उपशम पदविषे स्थित हों ॥ सब जगत्भी हमकों शांतरूप हे ॥ जो कोउ इस जगत् जालकों आश्रय करता हे सो सुखी नही होता ॥ इह जगत् सब चंचलरूप हे स्थिर कदाचित् नही होता इसकी अवस्थाविषे हम पथरवत अचल हों ॥ न किसीका हमकों राग फुरता हे न दोष फुरता हे किसीकी इछा करे सब जगत् हमकों तुछ भासता हे इह सब भूत रूपी नदियां कालरूपी समुद्रविषे जाय पडतीयां हे ॥ अरु हम काठेपर खडे हे ॥ कदाचित नही डूबतें अवर जेते कछू जीवभूत हे सो पडेडूबते हे ॥ केइ एक तुम सारखे निकसे हुए हे ॥ अरु तुमारी कृपाकरीकें हमभी निर्विकार पदकों प्राप्त हुए हे ॥ हे मुनीश्वर में निर्विकार हों ॥ सब जगत्के क्षोभतें रहित हों ॥ आत्मपदकों पाय करी उपशम रूप हों॥ हे मुनीश्वर तुमारे दर्शन करीकें में अब पूर्ण आनंदकों प्राप्त हुआ हों ॥ संतकी संगती चंद्रमाकी चांदनीवत् सीतल हे ॥ अमृतकी न्यांइं आनंदकों देणेहारी हे अेसा कवन हे जो संतके संग करी आनंदकों प्राप्त न होवे ॥ सब आनंदकों प्राप्त होते हे यह अर्थ हे ॥ हे मुनीश्वर संतका संग चंद्रमाके अमृततेंभी अधिक हे ॥ काहेतें जो उह सीतल गौण हे अंतरकी तप्त नही मिटावती अरु संतका संग अंतरकी तप्त मिटावता हे ॥ उह अमृत क्षीर समुद्रके मथनतें क्षोभ साथ निकस्याहे ॥ अरु संतका संग सुखेन प्राप्त होता हे ॥ आत्मानंदकों प्राप्ति करता हे॥तातें यह परम उत्तम हे ॥ में तोइसतें पर अवर उत्तम नही मानता ॥ संतका संग सबतें उत्तम हे अरु संतभी उही हे जिनकी सर्व इछा आपातरमणीय निवृत्त भइ हे ॥ अर्थ यह जो विचार विना दृश्य पदार्थ सुंदर भासता हे अरु नाशवंत हे जिनकों अेसें पदार्थ सब तुछ भासते हे अरु सदा आत्मानंद करी तृप्त हे अरु अद्वैत निष्ठा हे द्वैत कलना जिनकों अभाव भया हे ॥ सदा आत्मानंदविषे स्थित हे ॥ अेसें पुरुष संत कहीते हे ॥ तिन संतकी संगती अेसी हे ॥ जेसें चिंतामणी होती हे ॥ जिसके पायेतें सर्व दुःखनाश होते हे ॥ हे मुनीश्वर त्रिलो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कीरूपी कमलके भवरे एक तुमहि द्रष्ट आते हो ॥ सब ज्ञानवानतें उत्तम दृष्ट आये हो ॥ तुमारे वचन स्निग्ध अरु कोमल अरु आत्मरस करी पूर्ण अरु हृदयगम्य अरु उचित हे ॥ अरु रिदा महागंभीर अरु उदार धीरजवान सदा आत्मानंद करी तृप्त हे ॥ तातें तुम सभतें उत्तम मुझकों द्रष्टि आये हो ॥ तुमारे दर्शन करी मेरे दुःख नष्ट भये हे ॥ आज मेरा जन्म सुफल भया हे ॥ तुम सारखे संतका संग आत्मपदकों प्राप्त करता हे ॥ अरु दुःख भयकों नष्ट करीकें निर्भयताकों प्राप्त करता हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे संतामहात्म्य वर्णनंनाम सप्तदशःसर्गः ॥ १७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ भुषंडोवाच ॥ हे मुनीश्वर तुमनें पुछाथा जो सूर्य वायु जलका क्षोभ होता हे तब तूं खेदवान किसकरी नही होता ॥ तिसका उत्तर श्रवण करहु ॥ जब जगतकों क्षोभ होता हे ॥ तब मेरा कल्प वछ इह स्थिर रहता हे ॥ क्षोभकों यह नही प्राप्त होता ॥ हे मुनीश्वर यह मेरा वछ सब लोककों अगम हे ॥ भूत नष्ट होते हे तबभी में इसकरी सुखी रहता हों ॥ जब हिरण्य कश्यपु दीप सहित पृथ्वीकों समेटि करी पाताल ले गयाथा ॥ तबभी मेरा वछ कंपायमान नही भया ॥ जब देवता अरु दैतका जुद्ध हुआ तब अवर पर्वत सब चलायमान भये ॥ अरु मेरा वछ स्थिर रहा ॥ अरु जब क्षीरसमुद्रके मथणे निमित्त विष्णुजी सुमेरुकों भुजा साथ उखाडनें लागे तबभी मेरा वछ कंपायमान न भया ॥ बहुरी मंद्राचलकों ले गये॥तब क्षीरसमुद्रकों मथणे लागे॥ प्रलयकालका पवन अरु मेघका क्षोभ हुआ हे॥ तबभी मेरा वछ कंपायमान नही भया ॥ बहुरी एक दैत सुमेरकों आय पटकणे लागा उसनें कछूक उखाड्या ॥ परंतु मेरा वछ कंपायमान नही भया ॥ हे मुनीश्वर इत्यादिक बडे बडे उपद्रव आनि हुए हे प्रलयकालके मेघ अरु पवन अरु सूर्य तपें हे ॥ तबभी मेरा वछ स्थिर रहाहे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे साधो जब प्रलयकालके वायु अरु मेघ आय क्षोभते हे॥ तब तूं विगतज्वर केसें रहता हे॥ ॥ भूषंडोवाच ॥ हे साधो जब प्रलयकालके वायु मेघादिक क्षोभ करते हे ॥ तब में कृतघ्नकी न्यांइ अपणे आलणेकों त्यागि जाता हों ॥ सब क्षोभतें रहित आकाशविषे जाय स्थित होता हों ॥ अरु सब अंगकों संकुचाय लेता हों ॥ जेसें वासनाकों रोकेतें मन सकुचि जाता हे ॥ तेसें में अंगकों सुकचाए लेता हों ॥ हे मुनीश्वर जब प्रलयकालका सूर्य तपता था तब में ज़लकी धारना करी जलरूप हो जाताथा ॥ अरु जब वायु चलताथा तब पर्वतकी धारना बांधि करी स्थित हो जाताथा ॥ जब बहुत तत्वका क्षोभ होताथा तब सबकों त्याग करी ब्रह्मांड खपरके पार जो निर्मल परमपद हे ॥ तहां में जाय स्थित होता हों ॥ सुषुप्तिवत् अचल गंभीर हो जाता हों ॥ जब ब्रह्मा उपजिकरी बहुरी सृष्टिकों रचता हे तब में सुमेरुके वछ उपर इसी आलणे विषे स्थित होता हों ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे पंछी इश्वर जेसें तुम अखंड स्थित होते हो ॥ तेसें अवर जोगेश्वर स्थित क्यों नही होते ? ॥ भूषंडोवाच ॥ हे मुनीश्वर यह परमात्माकी नीति हे॥सो किसीसों लंघी नही जाती॥ उन जोगेश्वरकी नीती इसप्रकार हुइ हे ॥ अरु मेरा होणा इसी प्रकार हुआ हे॥इश्वरकी नीति अतुल हे ॥ उनविषे तुल्यता किसीसों करी नही जाती ॥ जहां जेसी नीति हुइहे ॥ तहां तेसेंही हे ॥ अन्यथा किसीसों नही होती ॥ इसी प्रकार हमकों भइहे जो कल्प कल्पविषे इसी पर्वतके वछ उपर आलणा होताहे॥ हम आय निवास करते हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे पंछीके नायक तुमारी अत्यंत दीर्घ आयु ॥ ज्ञान विज्ञान करी संपन्न हो ॥ अरु जोगेश्वर हो ॥ तुम अनेक आश्चर्य देखे हे॥ तिनविषे जो स्मरनमें आता हे सो कहो ॥ भूषंडोवाच ॥ हे मुनीश्वर एक वार अेसें स्मरन आता हे ॥ जो पृथ्वीपर तृण अरु वछही थे अवर कछू नथा ॥ बहुरी एक वार एकादश सहस्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्ष पर्यंत भस्महि दृष्ट आवे ॥ जो वछ तृण जलिगये ॥ एक वार एसी सृष्टि हुइ जो तिसविषे चंद्र सूर्य न उपजे ॥ दिन अरु रात्रको गति कछू जाणिये नही ॥ कछू कछू सुमेरुके रत्नोंका प्रकाश होवे ॥ अेक कल्प अेसें हुआ हे जो देवता अरु दैतका युद्ध हुआ ॥ दैतकी जीत भइ सब देवता तिननें मनुषकी नांइं हत किये ॥ ब्रह्मा विष्णु रुद्र तीनोहि देवता रहे अवर सब सृष्टि इननें जीति ॥ वीस जुग पर्यंत तिनहीकी आज्ञा वर्त्ती बहुरी अेक वार अेसें चित्त आता हे जो दो युग पर्यंत पृथ्वीपर वछहि रहे ॥ अवर सृष्टि कछू न भासे ॥ बहुरी अेक वार दो जुग पर्यंत पृथ्वी उपर पर्वतहि सघन हो रहे अवर कछू न भासे ॥ अरु अेक वार अेसें हुआ जो सब जलहि हो गया अवर कछू न भासे ॥ एक सुमेरु पर्वत थंभेकी नांइं भासे ॥ अरु अेक वार अगस्तमुनि दक्षिण दिशातें आया अरु विध्याचल पर्वत बढ्या सब ब्रह्मांड चूर्ण करी दिया ॥ यह स्मरण आता हे ॥ हे मुनीश्वर बहुत कछु स्मरण आता हे ॥ परंतु संक्षे पतें सुणो ॥ एक कालकों सृष्टिविषे देवताहि मनुष दैतादिक कछू न भासे ॥ अेक वार अेसी सृष्टि हुइ जो ब्राह्मण मद्यपान करहि ॥ अरु शूद्र बडे हो बैठे अरु जीवविषे विपर्ययहि धर्म होवे ॥ अरु अेक वार अेसी सृष्टि स्मरणमें आती हे जो पृथ्वीविषे पर्वत कोउ दृष्टि न आवे बडा उजाडही हो रहा ॥ एक वार सृष्टि अेसी हुइ जो सूर्य चंद्रमा नक्षत्र लोकपाल कोउ न उपजा ॥ एक सृष्टि अेसी हुइ जो सबहि उपजे ॥ एक सृष्टि अेसी हुइ जो तिसविषे स्वामि कार्त्तिक न उपजा दैत वधि गये ॥ दैतहीका राज हो गया ॥ इत्यादिक मुझकों ब हुत स्मरण हे केताक कहों ॥ सूर्य चंद्रमा नक्षत्र इंद्र उपेंद्र लोकपाल इनके बहुत जन्म मुझकों स्मरण आते हे ॥ जब हिरण्यकशिपुकों हरिनें मार्या हे सोभि चिति हे ॥ जो वेदकों चु राए ले आया हे अरु क्षीरसमुद्र मथे हे ॥ सोभी बहुत स्मरणमें आते हे ॥ एसी सृष्टिभी देखी हे जो विष्णुजीका वाहन गरुड हुआ नही ॥ अरु ब्रह्माजी हंसवाहन विना हुआ हे ॥ अरु रुद्र बेलवाहन विना हुआ हे ॥ इसते आदि लेकरी बहुत कछू देखा हे क्या क्या तुमारे आगें वर्णन करों ? ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे भुषंडोपाख्याने जीवित व त्तांत वर्णनंनाम अष्टादशःसर्गः ॥ १८ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ भुषंडोवाच ॥ हे मुनीश्वर जब बहुरी सृष्टि उत्पन्न भई ॥ तब तुम उत्पत्ति हुए भारद्वाज पुलस्त्य नारद इंद्र मरीच उद्दालक क्रित भृगु अंगिरा सनत्कुमार भृगेश आदिक उपजे ॥ बहुरी सुमेरु मंद्राचल कैलास हिमाला आदिक पर्वत उपजे अत्रि व्यासदेव वाल्मीक इत्या दिक यह तो अल्पकालके उपजे हे ॥ हे मुनीश्वर तुम ब्रह्माके पुत्र हो तुमारे आठ जन्म मुझकों स्मरण आते हे कबी तुम आकाशतें उपजे हो कबहुं जलतें उपजे हो कबहुं पहाडतें कबहुं पवनतें कबहुं अग्नितें उपजे हो ॥ हे मुनीश्वर मंद्राचल पर्वत क्षीरसमुद्रविषे पाए करी जब मथणे लागे हे ॥ तब देवता अरु दैत क्षोभवान हुए मंद्राचल अधकों चला जाता हे ॥ तब विष्णुजी कछुवाका रूप धारी पर्वतकों ठहरावत भये ॥ अरु अमृतकों निकास्या सो मुझकों द्वादश वार स्मरणमें आता हे ॥ अरु तिनवार हिरण्यकशिपु पृथ्वीकों समेटी ले गया हे पातालविषे ॥ अरु षष्ठवार परशुराम रेणुका माताका पुत्र हुआ हे ॥ बहुत सृष्टिके पाछे हुआ हे ॥ जब दैत छत्रीके गृहविषे उपजणे लागे तिस निमित्त विष्णुजी परशुरामका अवतार लेत भया ॥ बहुतकाल जुगके बितीत हो गए हे ॥ हे मुनीश्वर एक सृष्टि अेसी भइ हे जो अगलेते विपर्यय रूप शास्त्र अरु पुराणके अर्थ अवर अवर प्रकारके अरु एक कल्पविषे अवर हि पाठ अवरहि जुगती अवरही अर्थ ॥ काहेतें जो जुग जुग प्रति अवरहि पुराण होते हे ॥ केइ देवता करते हे ॥ केइ ऋषीश्वर मुनीश्वर कहते हे ॥ अवर कथा इतिहास बहुत स्मरण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में आते हे ॥ वाल्मीकनें द्वादश वार रामायण किनी हे ॥ सो विस्मरण हो गया हे जगत्विषे दो वार महा भारत व्यासनें किया हे ॥ अरु यह जो व्यास नामा जीव हे तिसनें सप्तवार किया हे ॥ हे मुनीश्वर इस प्रकार आख्यान कथा इतिहास शास्त्र जो जो हुएहे सो मुझकों बहुत स्मरणमें आते हे ॥ हे साधु दैतके मारणे निमित्त विष्णुजीनें अवतार धरे हे ॥ जुगजुग प्रति एकादश वार मुझकों रामजी स्मरणमें आता हे ॥ अरु वसुदेवके गृहविषे पृथ्वीके भार उतारणे निमित्त कृष्णजीनें सोलहवार अवतार लिए हे सो मुझकों स्मरण हे तीनवार नरसिंह अवतार धारि करी हिरण्यकशिपुकों मारा हे ॥ हे मुनीश्वर इस प्रकार मुझकों अनेक सृष्टि स्मरण आती हे परंतु सबहि भ्रम मात्र हे कछु उपजी नही जब आत्मतत्वविषे देखता हों तब सृष्टि कछू नही भासतियां ॥ सब सत्तामात्र हे जेसें जलविषे बुद्बुदे उपजी करी लीन हो जाते हे तेसें आत्माविषे मनके फुरणे करी केइ सृष्टि उपजतियां हे अरु लीन हो जातियां हे ॥ तिस फुरणे करी केइ सृष्टि देखिआ हे ॥ केइ सदृशहि उपजतियां हे ॥ केइ अर्ध सदृश केइ विपर्यय रूप उपजतियां हे ॥ हे मुनीश्वर केइ सृष्टिविषे उनही जेसें आकार अरु उनही जेसें कर्म आचार होते हे ॥ केइ मन्वंतर मन्वंतर प्रति अवरहि अवर सृष्टि होतियां हे ॥ किसीविषे अेसें होता हे पुत्र पिता हो जाता हे ॥ शत्रु मित्र हो जाता हे ॥ बांधव अबांधव अरु अबांधव बांधव हो जाता हे ॥ इस प्रकार विपर्यय होते द्रष्ट आये हे ॥ हेम लतावान कबहु इसहि कल्पवृछपर हमारा आलय होता हे ॥ कबहुं मंदराचलविषे कबहुं हिमालय पर्वत विषे कबहुं मालव पर्वतविषे हमारा आलय होता हे ॥ इसी प्रकार बनवृछ वल्ली उपर हो जाता हे ॥ कबहुं इसी कल्पवृछ उपर हो जाता हे ॥ अब तो बहुत काल हुवा हे जो इसी कल्पवृछपर होता हे ॥ अरु इसी आलयविषे हमारा निवास होता हे ॥ जब सृष्टि नाश हो जाती हे तबभी मेरा यही शरीर रहता हे ॥ में आसन लगाए करी अपणी पुर्यष्टकको ब्रह्म सत्ताविषे स्थित करता हों इसी कारणतें मुझकों बहुरी यहि शरीर प्राप्त होता हे ॥ हे मुनीश्वर यह जगत सब संकल्प मात्र हे ॥ जेसा संकल्प फुरता हे तेसा आगें जगत् हो भासता हे ॥ यह जगत् सत्यभी नही असत्यभी नही केवल भ्रमरूप हे तिस जगत् भ्रमविषे अनेक आश्चर्य द्रष्ट आते हे ॥ पिता पुत्र हो जाता हे मित्र शत्रु हो जाता हे ॥ स्त्री पुरुष हो जाती हे ॥ पुरुष स्त्री हो जाता हे ॥ अनेक वार अेसें होते हे ॥ कबहुं कलिजुगविषे सतजुग वर्त्तणे लागता हे ॥ सतजुगविषे कलिजुग वर्त्तणे लागता हे ॥ द्वापरविषे त्रेता त्रेताविषे द्वापर वर्त्तणे लागता हे ॥ अद्रश्यहि वेद विद्याके अर्थ होते हे नाना प्रकारके आश्चर्य भासते हे ॥ हे मुनीश्वर सहस्र चोकडी जुगकी बितीत होती हे तब ब्रह्माजीका एक दिन होता हे ॥ सो दो दिन ब्रह्मा समाधिविषे जुडी रहा सृष्टि शून्यहि रहि यहभी स्मरण आता हे ॥ अवरभी केइ देश क्रिया विचित्ररूप चित्त आते हे ॥ क्या क्या कहों ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे चिर अतीत वर्णनंनाम एकोनविंशतितमःसर्गः ॥ १९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥७॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी! इस प्रकार जब भूषंडनें कहा ॥ तब में बहुरी जिज्ञासाके अर्थ पुछत भया ॥ जो हे पंछीके इश्वर तुं चिरपर्यंत जगत्विषे व्यवहार करता रहा हे तेरे शरीरकों मृत्युनें किस निमित्त ग्रास न किया?॥ भुषंडोवाच॥ ॥ हे मुनीश्वर तूं सर्व जाणता हे परंतु ब्रह्म जिज्ञासा करिकें पूछता हे ॥ तातें जेसें भृत्य टहलुआ वेदार्थ पढी करि बहुरी गुरुके आगें कहतें हे ॥ तेसें में आज्ञा मानि करि कहता हों ॥ हे मुनीश्वर मृत्यु जिसकों मारता हे अरु जिसकों नही मारता सो श्रवण करहु ॥ दुःखरूपी जो मोती हे ॥ सो वासनारूपी तंतुसाथ परोएहे ॥ इह माला जिसके रिंदरूपी गलेविषे पडी हुइ हे ॥

CC-0, Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिसकों मृत्यु मारता हे अरु जिसके कंठविषे इह माल पडी नहि तिसकों मृत्यु नही मारता ॥ शरीररूपी वृछ हे अरु चित्तरूपी सर्प तिसविषे वेठाहे ॥ आशारूपी अग्नि जि स वृच्छकों नहि जलावता सो मृत्युके बश नहि होता अरु राग दोषरूपी विषसों पूर्ण जो चित्तरूपी सर्प हे ॥ अरु तृष्णा करी चूर्ण होता हे लोभरूपी व्याध करी नष्ट होता हे ॥ तिसकों मृत्यु मारता हे ॥ अरु ग्रासिलेता हे ॥ जिसकों इनका दुःख नहि स्पर्श करता ॥ तिसकों मृत्युभी नही नाश करता ॥ हे मुनीश्वर शरीररूपी समुद्र हे ॥ क्रोधरूपी वडवाग्नि करी जलता हे ॥ जिसकों क्रोधरूपी अग्नि नही जलावता ॥ तिसकों मृत्युभी नही मारता ॥ जिसका मन परम पावन निर्मल पदविषे दृढ विश्रांत स्थित हुआ हे ॥ तिसकों मृत्यु ना श नहीं करता हे ॥ हे मुनीश्वर काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, तृष्णा, चिंता, चंचलता, अभिमान प्रमाद इत्यादिक दुःख जिसविषे होते हे तिसकों मृत्यु मारता हे ॥ अरु जिसकों काम क्रोध लोभादिक रोग संसार बंधनका कारण बांध नही सकते ॥ अरु जो इनकरी लेपायमान नही होता तिसकों, आधि व्याधि रूपी मल जिसकों स्पर्श नही करती तिसकों, अरु जो लेता हे देता हे सब कार्य करता हे अरु चित्तविषे अनात्म अभिमान स्पर्श नही करता तिसकों, अरु जो पुरुष इष्टकी वांछा नही करता अनिष्टविषे दोष नही करता ॥ दोनोंकी प्राप्ति विषे सम रहता हे तिसकों समाहत चित्त कहते हे ॥ हे मुनीश्वर जेते कछु ऐश्वर्यवान सुंदर पदार्थ हे सो सब असत्‌रूप हे चक्रवर्त्ती राजा अरु स्वर्गविषे गंधर्व विद्याधर किन्नर देवता तिनकी स्त्रीगण अरु सुरकी सेना आदिक सब नाशरूप हे ॥ मनुष दैत देवता असुर पहाड ताल समुद्र नदियां जेते कछू बडे पदार्थ हे सो सबहि नाशरूप हे ॥ स्वर्गलोक पृथ्वीलोक पा तालोक जेता कछू जगत हे भोग हे सो सब असत्‌रूप हे अरु अशुभ हे कोउ पदार्थ श्रेष्ठ नही न पृथ्वीका राज श्रेष्ठ हे न देवताका रूप श्रेष्ठ हे न नागका पाताल लोक श्रेष्ठ हे ॥ न कछू शास्त्रका विचारणा श्रेष्ठ हे न काव्यका जानणा श्रेष्ठ हे ॥ न पुरातन कथाके क्रम वर्णन करणे श्रेष्ठ हे॥ न बहुत जीणा श्रेष्ठ हे न मूढता करी मर जाणा श्रेष्ठ हे न नरकविषे पडना श्रेष्ठ हे न इस त्रिलोकीविषे अवर कोउ पदार्थ श्रेष्ठ हे ॥ जहां संतका मन स्थित हे सोइ श्रेष्ठ हे ॥ यह नाना प्रकारका जगत् क्रम चलरूप हे ॥ जो ज्ञानवान पुरुष हे सो मूढ होकरी चल पदार्थविषे नही रमते ॥ उह बहुत जीणेकी इछाभी नही करते ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे भूषंडोपाख्याने संकल्प निराकरणंनाम विंशतितमःसर्गः ॥ २० ॥ ॥ ७ ॥

॥ भूषंडोवाच ॥ हे मुनीश्वर केवल एक आत्मदृष्टि सबतें श्रेष्ठ हे ॥ जिसके पायेतें सर्व दुःखनाश होते हे अरु परमपदकों प्राप्त होते हे ॥ सो आत्म चिंतवन सर्व दुःखका नाश करता हे ॥ चिरकालके तीन ताप करी तप्या जो जीव हे अरु जन्मके मार्ग करी थका हुआ हे ॥ तिसके श्रमकों दूर करती हे ॥ अरु तप्त मिटावती हे ॥ समस्त दुःखकों जो अविद्या सत्ता अ नर्थ प्राप्त करणे हारी हे ॥ तिसकों नाश करती हे ॥ जेसें अंधकारकों प्रकाश नाश करता हे ॥ तेसें इसके अंतर सीतल प्रकाश उपजाती हे ॥ हे भगवन् अेसी जो आत्म चिंतवना हे सो सब संकल्पतें रहित हे सो तुम सारखेकों सुगम प्राप्त हे ॥ अरु हम सारखेकों कठिन हे ॥ काहेतें जो सम सत कलनातें अतीत हे ॥ हे मुनीश्वर तिस आत्मा चिंतनकी सखी अवरभी कोउ इसकों प्राप्त होवे तो इसका ताप मिटि जावे ॥ अरु महा सीतल होवे तिनविषे मुझकों एक सखी प्राप्त भइ हे ॥ सब दुःखका नाश करती हे ॥ सब सोभाग देणे हारी अरु जीणे का मूल हे अेसी प्राण चिंता मुझकों प्राप्त भइ हे ॥ हे रामजी जब इस प्रकार मुझकों काक भुषंडने कहा तब में जाणता हुआभी क्रीडाके निमित्त बहुरी पूछा ॥ जो हे सर्व संशयके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छेदणेहारे चिरंजीवी पुरुष सत कहो प्राण चिंता किसकों कहते हैं ॥ ॥ भुषंडोवाच ॥ हे सर्व वेदांतके वेत्ता सर्व संशयके नाश कर्ता मुझकों उपहासके निमित्त पूछता हे ॥ तुं तो सभ कछु जाणता हे ॥ परंतु तुमतें शिक्षा में कहता हों ॥ गुरुके आगें कहणाभी कल्याणके निमित्त हे ॥ भुषंडकों जीवणेका कारण अरु भुषंडकों आत्मलाभ देणेंहारी प्राणचिंता कहाती हे ॥ हे भगवन् इसी दृष्टिकों आश्रय करिकें में परम पदकों प्राप्त भया हों ॥ बंधन मुझकों कछु नहि होता ॥ बेठतें चलते जागते सोते सब ठोर सब अवस्थाविषे मेरा चित्त सावधान रहता हे ॥ इस कारणतें बंधन कोउ नहि होता ॥ हे मुनीश्वर पान अरु अपानके संसरणेकी गतिमें पाइ हे ॥ तिस जुक्ती करी मुझकों आत्मबोध हुआ हे ॥ तिस बोधकरी मेरे मद मोहादिक विकार नष्ट होगये हें ॥ अरु सांतरूप होकरि स्थित भया हों ॥ हे मुनीश्वर जिसकों प्रान अपानकी गति प्राप्त भइ ॥ सो सब आरंभ कर्मकों करे अथवा सब आरंभका त्याग करे परंतु सदा शांतरूप हे ॥ सुख साथ तिसका काल वितीत होताहे हे मुनीश्वर प्राण जो उपजता हे सो रिदे कोटतें उपजता हे उपजीकरी द्वादश अंगुल पर्यंत बाहिर जाता हे ॥ तहां जायकरि स्थित होता हे ॥ तिस ठोरतें अपानरूप होकरि उदय होता हे ॥ सो अंतर आता हे रिदेविषे आइकरी स्थित होता हे ॥ हे मुनीश्वर बाह्य आकाशके सन्मुख जो प्राण जाता हे सो अग्नि मुखवत उष्ण होता हे ॥ अरु जो हृदयाकाशके सन्मुख आता हे सो सीतल नदीके प्रवाहवत् आता हे ॥ अपान चंद्रमारूप हे अरु बाहिरतें अंतर आता हें अरु जो अंतरतें बाहिर जाता हे सो प्रान हें ॥ अग्नि उष्ण सूर्य रूप हे ॥ प्राणवायु हृदयाकासकों तपाता हें अरु अन्नकों पचावत हे ॥ अरु अपान रिदेकों सीतल करता हे चंद्रमाकी न्यांइं हे ॥ हे मुनीश्वर अपानरूपी चंद्रमा जब प्रानरूपी सूर्यविषे लीन होता हे ॥ तहां साठ तत्व हे तिसविषे मन स्थित हुआ बहुरी सोकको नही प्राप्त होता अरु प्रानरूपी सूर्य जब अपानरूपी चंद्रमाकें घरविषे जाय लीन होता हे ॥ तिस अवस्थाविषे मन स्थित हुआ बहुरी जन्मका भागी नही होता ॥ हे मुनीश्वर सूर्यरूप जो प्रान हे उसनें अपणें सूर्यभावकों त्याग्या अरु अपानरूप चंद्रमाकों जबलग नही प्राप्त भया ॥ तिस अवस्थाके देस कालकों विचारे तब बहुरी सोकको नही प्राप्त होता ॥ सभ भ्रमनाश हो जाते हें ॥ अरु द्वादश अंगुल पर्यंत जो आकाश हे तिसतें अपानरूपी चंद्रमा उपजीकरि रिदेविषे प्रानरूपी सूर्यमें लीन होता हे ॥ अरु सूर्य भावकों जबलग नही प्राप्त होता तिसके मध्यभाव अवस्थाविषे जिसका मन लागा हे सो परम पदकों प्राप्त होता हे ॥ रिदेविषे चंद्रमा अरु सूर्यके अस्तभाव अरु उदय भावका यह ज्ञाता हुआ ॥ अरु इसका आधार भूत जो आत्मा हे तिसकों जान्या ॥ तब मन बहुरी नही उपजता ॥ हे मुनीश्वर प्रान अपानरूपी जो रिदे आकाशविषे सूर्य चंद्रमा उदय अरु अस्त होते हें ॥ तिनका जो प्रकाशकरी रिदेविषे भास्कर देव हे ॥ तिसकों जो देखता सोइ देखता हे ॥ अरु बाहार जो सूर्य प्रकाशता हे ॥ कबहुं अंधकार होता हे तब प्रकाशके उदे हुए अरु तमके क्षीण हुए कछु सिद्धता नही होती ॥ परंतु जब रिदेका तम दूर होता हे तब परम सिद्धतांकों प्राप्त होता हे ॥ बाहारके तम नष्ट हुए लोककों प्रकाश होता हे ॥ अरु रिदेके तम नष्ट हुए आत्मप्रकाश उदय होता हे ॥ अरु अज्ञान अंधकारका अभाव हो जाता हे परम पदकों जाणिकरि मुक्त होता हे ॥ प्रान अपानकी जुक्तिजाणे तें तम नष्ट हो जाता हे ॥ हे मुनीश्वर प्रान अपानरूपी जो चंद्रमा अरु सूर्य हे सो जतनबिना उदय अरु अस्त होते हें ॥ जब प्राणरूपी सूर्य रिदे कोटतें उपजीकरि बाहरकों गमन करता हे तब उसी क्षण अपानरूपी चंद्रमा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषे जाय लीन होता हे ॥ अपानरूपी चंद्रमा उदय हो आता हे ॥ अरु जब अपानरूपी चंद्रमा रिदे कोटविषे प्राण वायु रूपी सूर्यविषे आनि स्थित होता हे ॥ तब उसी क्षणविषे प्राणरूपी सूर्य उदय होता हे ॥ प्रानके अस्त हुए अपान उदय होता हे ॥ अरु अपानके अस्त हुए प्रान उदय होता हे॥जेसें छायाके अस्त हुए धूप उदय होता हे अरु धूपके अस्त हुए छाया उदय होती हे तेसें प्रान अपानकी गति हे ॥ हे मुनीश्वर जब रिदे कोटतें प्रान उदय होता हे॥ तब प्राणका रेचक होणे लागता हे अरु अपानका पूरक होणे लागता हे॥जब जाण करि अपानविषे स्थित हुआ तब अपानका कुंभक होता हे ॥ तिस कुंभकविषे जब यह स्थित होता हे तब बहुरी तीन ताप करी नही तपता ॥ जब अपानका रेचक होता हे ॥ तब प्राणका पूरक होणे लागता हे ॥ जब अपान जाय स्थित होता हे तब प्राणका कुंभक होता हे ॥ तिसविषे जब स्थित होता हे तब बहुरी तीनताप करी तपाय मान नही होता ॥ हे मुनीश्वर प्रान अपानके अंतर जो शांतरूप आत्मतत्व हे तिसविषे जब स्थित होता हे तब तपायमान नही होता ॥ जब अपान आय स्थित होता हे अरु प्रान उदे नही भया तिस अवस्थाविषे जो साक्षीभूत सत्ता हे सो आत्मतत्व हे ॥ तिसविषे जब स्थित होता हे तब बहुरी सो कठीन नही होता ॥ जब अपानके स्थानविषे प्रान जाय स्थित होता हे ॥ अरु अपान जब लग उदे नही भया तहां जो देश काल अवस्था हे तिसविषे मन स्थित होता हे ॥ तब मनका मनत्वभाव जाता हे बहुरी नही उपजता ॥ हे मुनीश्वर प्रान जो स्थित होता हे ॥ अपानविषे अरु अपान उदे नही भया उह कुंभक हे ॥ अरु अपान आनि प्रानविषे स्थित भया हे ॥ प्रान जब लग उदे नही भया उह जो कुंभक हे तिसविषे जो शांत तत्व हे सो आत्माका स्वरूप हे सो शुद्ध हे ॥ परम चैतन्य हे जो तिसकों प्राप्त होता हे सो बहुरी सोकवान नही होता ॥ जेसें पुष्पविषे गंध साथ प्रयोजन होता हे तेसें प्रान अपानके अंतर जो अनुभव तत्व स्थित हे तिससाथ प्रयोजन हे ॥ सो न प्रान हे न अपान हे तिस अनुभव आत्मतत्वकी हम उपासना करतें हे ॥ प्रान क्षयकों प्राप्त होता हे अपान कोटविषे, अरु अपान क्षय होता हे प्रान कोटविषे तिस प्रान अपानके मध्यविषे चिदात्मा हे ॥ तिसकी हम उपासना करतें हे ॥ हे मुनीश्वर प्रानका जो प्रान हे अरु अपानका जो अपान हे जीवका जीव हे अरु देहका आधार भूत हे अेसा चिदात्मा हे तिसकी हम उपासना करतें हे ॥ जिसविषे सर्व हे जिसतें यह सर्व हे अरु जो यह सर्व हे अेसा जो चिदात्मा हे ॥ तिसकी हम उपासना करतें हे ॥ जो सर्व प्रकाशका प्रकाश हे ॥ अरु सर्व पावनका पावन हे अरु सर्व भाव अभाव पदार्थका आपका अपणा आप हे तिस चिदात्माकी हम उपासना करतें हे जो पवन परस्पर रिदेविषे संपुट रूप हे तिसविषे स्थित जो साक्षीरूप हे अरु अंतर बाहिर सब ठोर उही हे ॥ तिस चिदात्माकी हम उपासना करतें हे ॥ जब अपान अस्त होता हे अरु प्रान उपजा नही तिस क्षणविषे कलंकतें रहित हे तिस चैतनतत्वकी हम उपासना करतें हे ॥ जब प्रान अस्त होता हे अरु अपान उपजा नही ॥ अेसा जो नासिकाके अग्रविषे शुद्ध आकाश हे तिसविषे जो सत्यता हे ॥ तिस चिदसत्यताकी हम उपासना करतें हे ॥ जो प्रान अपानके उत्पत्तिका स्थान हे ॥ अंतर बाहिर सर्व उरतें व्याप्या हे ॥ सब जोग कलाका आधार भूत हे तिस चिदतत्वकी हम उपासना करतें हे ॥ जो प्रान अपानके रथपर आरूढ हे ॥ अरु शक्तिका शक्तिरूप हे तिस चिदतत्वकी हम उपासना करतें हे ॥ हे मुनी जो संपूर्ण कला कलंक तें रहित अरु सर्वकला जिसके आश्रय हे ॥ अेसा जो अनुभव तत्व हे सर्व देवता जिसकी शरणकों प्राप्त होते हैं तिस आत्मतत्वकी हम उपासना करतें हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे भुषंडोपाख्याने प्रान अपान समाधि वर्ननं नाम एकविंशतितमःसर्गः ॥ २१ ॥

॥ भुषंडोवाच ॥ हे मुनीश्वर इस प्रकार में प्रान समाधिकों प्राप्त हुआ हों ॥ इस क्रम करीकें में आत्मपदकों प्राप्त हुआ हों ॥ इस निर्मल दृष्टीकों आश्रय करीकें स्थित हों ॥ एक निमेषभी चलायमान नही होता ॥ सुमेरुपर्वतकी नाइं स्थित हों ॥ चलता हुवाभी स्थिर हों ॥ जाग्रतविषेभी सुषुप्त हों ॥ स्वप्नविषेभी स्थित हों ॥ सर्वदा आत्म समाधिविषे लगा रहता हों ॥ विक्षेप कदाचित् नही होता ॥ हे मुनीश्वर नित्य अनित्य भाव करी जो जगत् स्थित हे ॥ तिसकों त्याग करी में अंतर्मुख अपणे आपविषे स्थित हों अरु प्रान अपानकी कला जो तुमारे विद्यमान कही हे सो तिसका सदा अेसेंहि प्रवाह चल्या जाता हे तिसविषे अयत्न समाधि हे इस करी में सदा सुखी रहता हों ॥ कष्ट कछू नही होता ॥ अरु जिसकों यह कला नहीं प्राप्त भइ सो कष्ट पाता हे ॥ हे मुनीश्वर अज्ञानी जो जीव हे महा प्रलय पर्यंत संसार समुद्रविषे डुबते हे ॥ निकसी बहुरी डुबते इसी प्रकार पडे गोते खाते हे ॥ अरु जिन पुरुषनें पुरुषार्थ करी आत्मपद पाया हे सो सुख साथ विचरते हे ॥ हे मुनीश्वर भूत कालकी मुझकों चिंता नही अरु भविष्यकालकी इछा नही ॥ वर्त्तमानविषे यथा प्राप्त राग दोषतें रहित हो करी विचरता हों ॥ सुषुप्तकी न्यांइं स्थित हों तातें केवल स्वरूपविषे स्थित हों भाव अभाव पदार्थतें रहित अपणे आपविषे स्थित हों ॥ इस कारणतें चिरंजीवता हों अरु दुःखतें रहित हों प्रान अपानकी कलाकों सम करीकें स्वरूपविषे स्थित हों इस कारणते निर्दुःख जीवता हों आज यह कछू पाया हे ॥ अरु यह काल पाउंगा यह चिंता दूर हो गइ हे ॥ इस कारणते निर्दुःख जीवता हों ॥ न किसीकी उत्पत्ति करता हों न कदाचित् निंदा करता हों ॥ अरु सर्व आत्म स्वरूप देखता हों इस कारणतें सुखी जीवता हों ॥ इष्टकी प्राप्तिविषे में हर्षवान नही होता ॥ अनिष्टकी प्राप्तिविषे शोकवान नही होता ॥ इस कारणते निर्दुःख चिरंजीवता हों ॥ में परम त्याग कीया हे सर्व आत्मभाव देखता हों ॥ जीवभाव दूरि हों गया हे इस कारणतें अदुःख जीता हों हे मुनीश्वर मनकी चपलता मिटि गइ हे ॥ अरु राग दोष दूर हो गएहे ॥ मन शांतिकों प्राप्त भया हे ॥ इस कारणतें अरोग जीता हों ॥ काष्ट अरु सुंदर स्त्री अरु पहाड तृण अग्नि स्वर्न सर्वत्र समभाव देखता हों ॥ तातें निर्दुःख जीता हों अब ॥ हे मुनीश्वर जरा मरणके दुःखविषे अरु राजलाभके सुखविषे सोक हर्षतें रहित समभावविषे स्थित हों तातें निर्दुःख जीता हों ॥ यह मेरे बांधव हे यह अन्य हे ॥ यह में हों यह मेरा हे यह कलना मुझकों कछू नही तातें सुखी जीता हों ॥ आहार व्यवहार करता हों बेठता चलता सुंघता स्पर्श करता स्वास लेता हों ॥ परंतु यह जो अभिमान हे ॥ में देह हों इस अभिमानतें रहित सुखी जीता हों ॥ इस संसारकी उरतें सुषुप्तरूप हों ॥ अरु इस संसारकी गतिकों देखी करी हसता हों जो हे नही यह आश्चर्य हे ॥ इस कारणतें निर्दुःख जीता हों ॥ हे मुनीश्वर सर्वदा काल सर्व प्रकार सर्व पदार्थविषे सम बुद्धी हों ॥ विषमता मुझकों कछू नही भासती ॥ न किसिकरी सुखी होता हों न दुःखी होता हों ॥ जेसें हाथ पसारीयें तोभी शरीर हे अरु संकोचियें तोभी शरीर हे ॥ इस प्रकार में सर्वात्मा आपकों जान्या हे ॥ तातें मुझकों दुःख कोउ नही ॥ मेरी बोली अरु निश्चय स्निग्ध अरु कोमल सबकों हृदय गम्य हे ॥ सर्वत्र जो अेसें देखता हों इस कारणतें निर्दुःख जीता हों ॥ चरनतें आदि मस्तक पर्यंत देहविषे मुझकों ममता नही ॥ अहंकाररूपी चीकडसों निकस्या हों ॥ इस कारणतें अरोग जीता हों ॥ कार्य करता अरु भोजन करताभी दृष्ट आता हों ॥ परंतु मेरे मनविषे निष्कर्मता दृढ हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस कारणतें निर्दुःख जीवता हों ॥ हे मुनीश्वर समर्थता करिकें कार्य करों तोभी मुझकों अभिमान नही अरु दरद्री होउं ॥ तोभी संपत सुखकी इछा नही ॥ किसीविषे आशक्त नही होता इस कारणतें अदुःख जीता हों ॥ इस असत्यरूप शरीरके नाश हुए अभिमान नाश नही होता अरु भूतका समूह सब असत्यरूप हे ॥ आत्मा सत्यरूप हे अेसें जाणिकरि में स्थित हों ॥ इस कारणतें सुखसों जीता हों ॥ आशारूपी फांसीतें मुक्त चित्तकी वृत्ति समाहत हुइ हे ॥ अनात्मविषे आत्म अभिमानकी वृत्ति नही फुरती ॥ इस कारणतें सुखी जीता हों॥ हे मुनीश्वर में जगत्कों असत्य जान्या हे ॥ अरु आत्माकों सत्यहाथविषे बीलफलवत् प्रत्यक्ष जान्या हे ॥ इस जगत्विषे सुषुप्त प्रबुद्ध हों तिस कारणतें निर्दुःख जीता हों ॥ सुखकों पाय करि सुखी नही होता दुःखकों पाय करी दुःखी नही होता ॥ सर्वका परममित्र हों इस कारणतें में निर्दुःख जीता हों आपदाविषे अचल चित्त हों संपदाविषे सब जगत्का मित्र हों॥ भाव अभाव करी ज्योंका त्यों हों इस कारणतें सदा सुखी जीता हों न प्रछन्न अहं मे हों न कोउ अन्य हे न कोउ मेरा हे न में किसीका हौं ॥ इह भावना मेरे चित्तविषे दृढ हे तिस कारणतें सुखी जीता हों ॥ बड्डरी केसा हों मेंही जगत् हों ॥ मेंही आकाश हों ॥ देश काल क्रिया सब मेंही हों ॥ इह निश्चय मुझकों दृढ हे तातें अरोग जीता हों ॥ घटभी चैतन हे पटभी चैतन रथभी चेतन हे इह सब चेतन तत्व हे ॥ यह निश्चय मुझकों दृढ हे ॥ इस कारणतें अदुःख जीता हों ॥ हे मुनी शार्दुल यह सब में तुझकों कहा हे ॥ भुषंड नाम काक त्रिलोकीरूपी कमलका भंवरा हे तिसनें कहा ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे भूषंडोपाख्याने चिरंजीविहेतु कथनंनाम द्वाविंशतितमःसर्गः ॥ २२ ॥ ॥७॥ ॥७॥

॥ भुषंडोवाच ॥ हे मुनीश्वर जेसा में हों तेसा तुमारे आगें कहा हे ॥ सो तुमारे आज्ञाके सिद्धि अर्थ कहा हे ॥ नही तो गुरुके आगें कहणाभी ढिठाइहे ॥ तुम ज्ञानके पारगामी हो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे भगवन् आश्चर्य हे ॥ आश्चर्यतें आश्चर्य हे ॥ तुमनें श्रवणका भूषण कहा हे ॥ आत्म उदीतरूप वचन जो तुम कहे हे सो परम विस्मयका कारण हे ॥ हें भगवन् तुम धन्य हो तुम महात्मा पुरुष हो ॥ चिरंजीविके मंध्य तुम मुझकों साक्षात् दूसरे ब्रह्मा भासते हो ॥ आज हमभी धन हे जो तुमारे सारखे महापुरुषके मुखतें आत्म उदित इस प्रकार सुन्या हे ॥ जेसें में पूछा तेसें तुमनें कहा ॥ हे साधु में सब भुमिलोक देख्या हे अरु दिशा गण देखे हे ॥ आकाशलोक देख्या हे ॥ पातालोक देखा हे त्रिलोकी देखी हे ॥ तुम सारखा कोउ विरला हे ॥ जेसें बांस बहुत हे मोतीवाला विरला होता हे तेसें तुम सारखे विरले हे ॥ हे साधु आज हम पुण्यरूप हुएहे ॥ हमारी देह आज पवित्र हुइहे ॥ जो तुम सारखे मुक्त आत्मा का दर्शन हुआ हे ॥ हे रामजी इस प्रकार कही करी बहुरी कहा ॥ हे साध अब हम जाते हे ॥ हमारे मध्यान्हका समा हुआ हे ॥ सप्तर्षिके मध्य जाते हे ॥ जब में अेसें कहा तब क ल्पलतातें उठी खडा हुआ ॥ अरु संकल्पके हाथ करीकें उसनें स्वर्नका पात्र रचि करी मोती रत्न साथ भर्या ॥ मुझकों अर्घपाद किया पूजन करत भया जेसें त्रिनेत्र सदाशिवकी पूजा करता हे ॥ तेसें चरनतें लेकरी मस्तक पर्यंत मेरा पूजन किया ॥ अरु बहुत नम्र हो करी प्रनाम किया ॥ अरु में उसकों प्रनाम किया ॥ इस प्रकार परस्पर नमस्कार करीकें में उहांते उठ खडा हुआ ॥ अरु आकाशमार्गकों चला ॥ जेसें पंछी उडता हे तेसें में उडा ॥ उहभी मेरे साथ उडा ॥ परस्पर हम दोनों हाथ ग्रहण किये ॥ एक जोजन पर्यंत चले गये ॥ तब में उसकों कहा हे साधु तुम अब इहांहीतें फिरो वारंवार कहि करि उसकों स्थित किया में चल्या गया ॥ जबलग में उसकों दृष्ट आता रहा तबलग उह देखता रहा जब में दृष्ट आणे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तें रहा तब उह अपणें स्थानमें जाय बेठा में सप्तर्षिके मंडलविषे आय स्थित भया अरुंधती करी पूजित हुआ ॥ हे रामजी यह भुषंडके बचन में तुझकों आश्चर्यरूप सुणाये हे अबभी सुमेरके शृंग ऊपर उस कल्पवृक्षकी लताविषे कल्याणरूप सम स्थित हे ॥ अरु शांतिरूप हे मानकरणेकों जोग हे ॥ अरु सदा समाधि वान हे ॥ अेसा पुरुष अवलग उहां ही स्थित हे ॥ हे रामजी इह हमारा अरु उसका समागम जब सतजुगके दोसो बरष बितीत हुए थे तब हुआ था ॥ अब सतजुग क्षीण हुआ हे त्रेताजुग वरत्या हे तिसविषे तुम उपजे हो हे रामजी अबभी अष्टवर्ष बितीत हुए हे जो हमारा उसका मिलाप हुआथा तिसी वछलता ऊपर हे॥हे रामजी इह में तुझकों इतिहास कहा हे सो परम उत्तम हे इसकों विचारेगा तब संसार भ्रम निवृत्त हो जावेगा ॥ अब इह मुनी वसिष्ठ अरु भुषंडकी कथा हे ॥ जो निर्मल बुद्धि साथ विचारेगा सो भवरूप संसारके भयतें तरेगा ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे भुषंडोपाख्यानसमाप्तिनाम त्रयोविंशतितमःसर्गः ॥ २३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे अनघ इह में तुझकों भुषंडका वृत्तांत सब कहा हे ॥ इस बोधकरीकें भुषंड महा संकटकों तर्या हे ॥ इस दशाकों तुमभी आश्रय करिकें प्राणकी जुक्तिका अभ्यास करो ॥ तब तुमभी भुषंडकी न्यांइ भव समुद्रके पारकों प्राप्त होडुगे ॥ जेसें भुषंड ज्ञान जोग करी पावणे जोग पद पाया हे तेसें तुमभी पावडु ॥ जेसें प्रान अपानके अभ्यास करीकें भुषंड परम तत्वकों प्राप्त भया हे तेसें तुमभी अभ्यास करिकें प्राप्त होडु ॥ विज्ञान दृष्टि जो तुझनें श्रवण करी हे तिसकी ओर चित्तकों लगाय करि आत्मपदकों पावडु ॥ बहुरी जेसें इच्छा होवे तेसें करो॥रामोवाच॥ हे भगवन् पृथ्वीविषे तुमारे ज्ञानरूपी सूर्यकी किरणांके प्रकाश करी मेरे रिदेसों अज्ञानरूपी तम दूर होगया हे ॥ अब प्रबुद्ध हुआ हों अपणे आनंदरूप विषे स्थित भया हों अरु जानणें जोग पदकों जानत भया हों ॥ मानों दूसरा वसिष्ठ भया हों॥ हे भगवन् इह जो भुषंडका चरित्र तुमनें कहा हे सो परम विस्मयका कारण परमार्थ बोधके निमित्त कहा हे ॥ तिसविषे शरीररूपी गृह रक्त मांस अस्थिका किसनें रचाहे अरु कहां तें उपजा हे॥अरु केसें स्थित हुआ हे ॥ अरु कवन इसविषे स्थित हे?॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी परमार्थ तत्वके बोध निमित्त अरु दुःखके निवृत्ति अर्थ यह मेरे वचन हे सो सुण॥अस्थि इस शरीररूपी गृहका थंभा हे॥अरु नव इसके द्वारे हे॥अरु रक्तमांस साथ इह लेपन किया हे सो किसीनें बणाया नही आभास मात्र हे मिथ्या भ्रम करीकें भासता हे ॥ जेसें आकाशविषे दूसरा चंद्रमा भ्रम करीकें भासता हे तेसें असत्यरूप शरीर भ्रम करीके भासता हे ॥हे रामजी जवलग अज्ञान हे तबलग देह सत्य भासता हे ॥ जब ज्ञान होता हे तब देह असत्यरूप भासता हे ॥ जेसें स्वमकालविषे स्वपनेके पदार्थ सत्य भासते हे ॥ अरु जाग्रतकालविषे सुपना असत्य भासता हे ॥ तेसें अज्ञानकालविषे अज्ञानके पदार्थ देहादिक सत्य भासते हे॥अरु ज्ञानकालविषे असत्य हो जाते हे ॥ जेसें बुदबुदा जलविषे जलके अज्ञान करीकें सत्य भासता हे जलके जाणेतें बुदबुदा असत्य भासता हे॥जेसें सूर्यकी किरणांविषे मरुथलकी नदी भासती हे तेसें आत्माविषे देह भासती हे ॥ हे रामजी जेता कछू जगत् भासता हे सो सब आभास मात्र अज्ञान करीके भासता हे ॥ अहं त्वं आदिक कल्पना सब मनन मात्र मनविषे फुरती हे ॥ तुं कहता हे देह अस्थि मांसका गृह रचा हे सो अस्थि मांस करी नही रचा संकल्प मात्र हे संकल्प करी भासता हे॥ संकल्पके अभाव हुए देह नही पाता ॥ हे रामजी स्वमविषे जो देह धारी करी दिसा तट पर्वत तुं देखता फिरता हे ॥ जाग्रतविषे उह तेरा देह कहां जाता हे जब कछू देह सत्य होता तब जाग्रतविषेभी रहता ॥ अरु मनोराज करीकें स्वर्गकों जाता हे ॥ अरु सुमेरुविषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भमता हे ॥ भूमिलोकविषे फिरता हे तब इह देह तेरा कहां होता हे ॥ हे रामजी इन स्थानविषे जेसें मनका फुरणा देह हो करी भासता हे सो असत्य रूपहे ॥ तेसें यह शरीर मनके फुरणे मात्र हे तातें असत्य जाणहु ॥ यह मेरा धन हे यह मेरा देह हे यह मेरा देस हे ॥ इत्यादिक कल्पना मनकी रची हूइ हे ॥ सबका बीज चित्त हे ॥ हे रामजी इस जगत्कों दीर्घका लका सुपना जाण अथवा दीर्घ चित्तका भ्रम जाण ॥ अथवा दीर्घ मनोराज जाण अवर वास्तवतें जगत कछू नही ॥ जब अपणे वास्तव परमात्म स्वरूपकों अभ्यास करी जानता हे तब जगत् असत्य रूप भासता हे ॥ हे रामजी में पूर्वभी तुझकों ब्रह्माजीके वचनों करी कहा हे ॥ जो जगत् सब मनका रचा हुआ हे ॥ तातें संकल्प मात्र हे ॥ चिरकालका जो अभ्यास हो रहा हे तिसकरी सत भासता हे ॥ जब दृढ पुरुष प्रयत्न करी आत्म अभ्यास होवे तब असत्य भासे ॥ हे रामजी जो भावना इसके रिदेविषे दृढ होती हे ॥ तीसका अभावभी सुगम नही होता ॥ जब उसकी विपर्यय भावनाका अभ्यास करीए तब उसका अभाव हो जाता हे ॥ जो यह में हों यह अवर हे ॥ इत्यादिक कलना रिदेविषे दृढ हो रही हे ॥ जब इसकी विपर्यय भावना होवे अरु आत्मभावना करीयें तब उह मिटि जावे सर्व आत्माहि भासे ॥ हे रामजी जिसकी तीव्र भावना होती हे ॥ उही रूप फल उसका हो जाता हे ॥ जेसें कामी पुरुषकों सुंदर स्त्रीकी कामना रहती हे तेसें इसकों आत्मपदकी चिंता रहे तब उहीरूप होता हे ॥ जेसें कीट भृंगी हो जाता हे ॥ जेसें दिनविषे व्यापारका अभ्यास होता हे ॥ रात्रकों स्वप्नेविषेभी उहि देखता हे ॥ तेसें जिसका इसकों दृढ अभ्यास होता हे सोइ अनुभव होता हे ॥ जैसें आकाशविषे सूर्य तपता हे अरु मरुथलविषे जल हो करी भासता हे सो जलका अभाव हे ॥ तेसें पृथ्वी आदिक पदार्थ भ्रम करीकें भावतें रहित भावरूप भासते हे ॥ जेसें नेत्र दुःखणेकरीकें आकाशविषे तरवरे मोर पूंछवत् भासते हे तेसें अज्ञान करीकें जगत्जाल भासते हे ॥ हे रामजी यह जगत् सब आभास रूप हे स्वरूपके प्रमाद करीके भय अरु दुःखकों प्राप्त होता हे ॥ जब स्वरूपकों जानता हे ॥ तब भ्रम भय दुःखतें रहित होता हे ॥ जेसें स्वप्नपुरविषे चित्तके भ्रम करीकें सिंघनते भय पाता हे ॥ जब जाग्रत स्वरूप चित्त आता हे ॥ तब सिंघका भय निवृत्त हो जाता हे ॥ तेसें आत्मज्ञान करीकें निर्भय होता हे ॥ जब वैराग अभ्यास करीकें निर्मल शुद्ध आत्मपदकों प्राप्त होता हे ॥ तब बहुरी क्षोभकों नही प्राप्त होता राग दोषरूपी मल इसकों नही स्पर्श करता ॥ जेसें तांबा पारसके परस्पर करीके स्वर्न होता हे तब तांबे भावकों नही ग्रहण करता॥तेसें बहुरो मलिन नही होता॥अहं त्वं आदिक जेता कछू जगत् भासता हे सो सब आभास मात्रही हे॥ हे रामजी प्रथम सत्य असतकों जाणे॥असत्यका निरादर करे अरु सतका अभ्यास करे॥तब चित्त सर्व कलनातें रहित होता हे॥अरु शांतपदकों प्राप्त होता हे॥जो तत्व ज्ञानकरी सम्यक् दर्शी हुआ हे ॥ तिसकों जगत्के इष्ट पदार्थ पायेतें हर्ष नही होता॥अरु अनिष्टके पाएतें सोक नही होता॥ न किसीकी स्तुती करता हे न किसीकी निंदा करता हे ॥ अंतरतें सीतल शांतरूप हो जाता हे॥जब कोउ बांधव मृतक हो गया हे ॥ तब तिसकरी तपायमान क्यों होणा ॥ सो तो मरणेकाही था जब अपणा मृत्यु आवे तब अवस्य शरीर छूटणा हे ॥ वृथा क्यों तपायमान होणा ॥ जब संपदा आनि प्राप्त होवे तब उसकरी हर्षवान नही होता ॥ काहेतें जो कछू भोगणाथा हर्ष किसकरी होणा ॥ अरु दुःख आनि प्राप्त होवे तब क्यों शोक करणा ॥ शरीरका व्यवहार सुख दुःख आता जाता हे यह अमिट हे ॥ जब अपणा किया कर्म उत्पन्न होता हे तबभी शोक क्यों करणा ॥ हे रामजी जो सत्य हे सो असत्य नही ॥ जो असत्य हे सो सत्य नही ॥ बहुरी राग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोष किस निमित्त करणा ॥ जिसकों अेसा निश्चय हुआ हे ॥ जो न में हों न जगत् हे न पृथ्वी हे तोभी शोक किसका करणा ॥ अरु जब देहतें अन्य हों ॥ चैतन हों चैतनका तो नाश नही ॥ तब शोक किसनिमित्त करणा ॥ हे रामजी दुःख तो किसी प्रकार नही ॥ जबलग विचार नही तबलग दुःख होता हे ॥ विचार कियेतें दुःख कोउ नही ॥ सम्यक् दर्शी जो मुनीश्वर हे ॥ सो सत्यकों सत्य जानता हे ॥ असत्यकों असत्य जाणता हे ॥ इस कारणतें दुःख नही पाता अरु जो असम्यक् दर्शी हे सो अज्ञान करीकें दुःख पावता हे ॥ जेसें दिनके अंतविषे मंडल सीतल हो जाता हे ॥ तेसें सम्यक् दर्शीका अंतर सीतल होता हे ॥ जिसकों कर्तव्यविषे कर्तृत्वका अभिमान नही ॥ सो सम्यक् दर्शी हे ॥ हे रामजी जेते कछू जगत्के पदार्थ हे तिनकों अंतरतें आभास मात्र जाण ॥ अरु बाहर जेसें आचार होवे तेसें करु ॥ अथवा तिसकाभी त्याग करु निराभास हो करी स्थित होहु में चिदाकाश हों नित्य हों सर्वज्ञ हों अरु सर्वतें रहित हों ॥ अेसें अभ्यास करी एकांत निर्मल आपकों देखेगा ॥ अथवा अेसें धार जो न में हों न इह भोगहे ॥ न अर्थ रूप जगत् आडंबर हे ॥ अथवा अेसें धार जो सर्व मेंही हों ॥ नित्य शुद्ध चिदात्मा हों ॥ आकाशरूप हों ॥ मेरेतें इतर कछू नही ॥ मेंहि अपणे आपविषे स्थित हों ॥ इन दोनों पक्षविषे जो इछा होवे सो धर ॥ तुझकों सिद्धताका कारण होवेगा ॥ अरु जगत्कों आभास मात्र जाण ॥ परंतु यहभी कलंक रूप हे ॥ इस चिंतनाकोंभी त्याग करी निराभास होहु ॥ तुं चिदाकाश नित्य हे ॥ सर्व व्यापी हे ॥ अरु सर्वतें रहित हे आभासकों त्याग करी निर्मल अद्वैत होय रहहु ॥ अथवा विधि निषेध दोनों दृष्टिकों आश्रय कर ॥ हे रामजी क्रियाकों करहु परंतु राग दोषतें रहित होहु ॥ जब राग दोषतें रहित होवेगा ॥ तब उत्तम पदार्थ ब्रह्मानंदकों प्राप्त होवेगा ॥ जो सर्वका अधिष्ठान हे ॥ तिसकों पावेगा ॥ हे रामजी जिसका रिदा राग दोषरूपी अग्नि करी जलता हे ॥ तिसकों संतोष वैराग आदिक गुण नही प्राप्त होते ॥ जेसें दग्ध भूतलके बनविषे हरण नही प्रवेश करते ॥ तेसें राग दोषादिक वाले रिदेविषे संतोषादिक नही प्रवेश करते ॥ हे रामजी रिदेरूपी कल्पतरु हे ॥ जो अेसा वृछ राग दोषादिक सर्पडुंते रहित हे ॥ तिसतें कवन पदार्थ हे जो न प्राप्त होवे ॥ शुद्ध रिदेतें सब कछू प्राप्त होता हे यह अर्थ हें ॥ हे रामजी जो बुद्धिवानभी हे अरु शास्त्रका ज्ञाताभी हे ॥ परंतु राग दोष संयुक्त हे सो गिदडकी न्यांइं नीचे हे तिसकों धिक्कार हे ॥ जिन पदार्थके पावणे निमित्त यह जतन करते हे सो तो आते जाते हे ॥ धनकों इकठा कोउ करता हे ॥ कोउ अवर ले जाता हे ॥ भोक्ता कोउ अवर हे ॥ तब राग दोष किसका करियें ॥ जो कछू प्रारब्ध हे सो अवश्य होता हे ॥ धनका व्यर्थ क्या जतन करि यें ॥ बांधव अरु वस्त्र आते हे वहुरी जातेभी हे ॥ जेसें समुद्रविषे झषका आश्रय बुद्धिवान नही लेते तेसें जगत्के पदार्थका आश्रय ज्ञानवान नही लेते ॥ भाव अभावरूप परमेश्वरकी माया हे ॥ संसारकी रचना स्वमकी न्यांइं हे ॥ तिसविषे जो अशक्त होते हे तिनकों सर्पनीवत्दंसती हे ॥ धन बांधव जगत वास्तव तें मिथ्याहि अज्ञान करिकें सत्य भासते हे ॥ हे रामजी जो आदि न होवे अंतभी न रहे ॥ अरु मध्यविषे भासे तिसकोंभी असत्य जांणियें ॥ जेसें आकाशविषे फूल असत्य हे ॥ तेसें संसार रचना असत्य हे जेसें संकल्प रचना असत्य हे ॥ जेसें गंधर्व नगर सुंदर भासते हे ॥ अरु नाश हो जाता हे ॥ जेसें स्वम पुर दीर्घ कालका भासता हे सो भमरूप हे ॥ तेसें इह जगत् असत्यरूप भम मात्र हे ॥ संकल्परूप अभ्यासके वसतें दृढताकों प्राप्त भया हे कंध जो आकारवान भासता हे ॥ सो आकार तें रहित आकाशरूप हे ॥ अरु आत्मपद सुषुप्तकी न्यांइं अद्वैतरूप हे ॥ तिस सुषुप्त रूप पदतें जब गिरता हे तब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ २० ॥

दीर्घरूप स्वप्नकों देखता हे ॥हे रामजी अज्ञानरूपी निद्रा करि अपणे सुभावतें जो गिर्या हे ॥ सो संसाररूपी स्वप्न भ्रमकों देखता हे ॥ जब अज्ञानरूपी निद्राका अभाव होवे तब अपणे आत्मराज पदकों प्राप्त होता हे ॥ अरु निर्विकल्प मुदिता आत्मपदकों प्राप्त होता हे ॥ जेसें सूर्यकों देखी करी कमल प्रफुल्लित होते हे ॥ तेसें ज्ञानकरी शुभ गुण फूलतें हे आत्मरूपी सूर्य केसा हे ॥ सर्व दुःखतें रहित हे ॥ जो पुरुष निद्राविषे होता हे सो सूक्ष्म वचन करी नही जागता ॥ बडे शब्द अरु जल डारणे करी जागता हे ॥ सो में तुमकों मेघकी नांइं गर्जी करी वचन रूपी जलकी वर्षा करी हे ॥ ज्ञानरूपी सीतलता सहित वचन हे ॥ तिन वचनों करीकें अब तुं ज्ञानरूपी जाग्रत बोधकों प्राप्त भया हे ॥ अेसें ज्ञानरूपी जगत्कों भ्रमरूप देखेगा ॥ हे रामजी तुझकों न जन्म हे न मृत्यु हे ॥ न कोउ दुःख हे कोउ भ्रम हे ॥ सर्व संकल्पतें रहित आत्म पुरुष अपणे आपविषे स्थित हे ॥ समहे शांत हे ॥ सुषुप्तकी न्यांइं तेरी वृत्ति हे ॥ अति विस्तृत सम शुद्ध अपणे स्वरूपविषे स्थित हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे परमार्थयोगोपदेशोनाम चतुर्विंशतितमःसर्गः ॥ २४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वाल्मीकोवाच ॥ इस प्रकार जब वसिष्ठजीनें वचन कहे तब रामजी सम शांत चैतन तत्वविषे विश्रामकों पावत भया ॥ अरु परमानंदकों प्राप्त भया ॥ अरु अवर सभा जो बेठीथी सोभी वसिष्ठजीके वचन श्रवण करिकें सम आत्म समाधिविषे स्थित हो रहे ॥ बोलणेका व्यवहार शांत हो गया ॥ पिंजरेमें पंछी बोलते थे सोभी शांत होगए वनके जो वानर थे सो भी वचन सुणी करी स्थिर हो रहे ॥ सर्व उरतें शांति हो रही ॥ जेसें अर्धरात्रके समे भूमि लोक शांतरूप हो जाता हे ॥ तेसें सभाके लोक तूष्णी हो रहे ॥ अरु वचनोकों विचारणे लागे जो क्या उपदेश मुनीश्वरनें किया हे एक घडी पर्यंत शांति हो रही तिसके अनंतर बहुरी वसिष्ठजी बोले ॥ हे रामजी अब तूं सम्यक् प्रबुद्ध हुआ हे ॥ अरु अपणे आपविषे स्थित भया हे ॥ जो कछु जाण्या हे ॥ तिसके अभ्यासका त्याग नही करणा इसीविषे दृढ रहणा ॥ हे रामजी संसाररूपी चक्र हे तिसका नाभि स्थान चित्त हे ॥ तिस चित्त नाभिके स्थिर हुए संसार चक्रभी स्थिर हो जाता हे ॥ इसी संसाररूपी चक्रका तीक्ष्ण वेग हे ॥ यद्यपि रोकता हे तोभी फुरणे लागता हे ॥ तातें दृढ प्रयत्न बल करिकें इसकों रोकिए ॥ संतके संग अरु सत शास्त्रके बचन जुक्ति बुद्धि करि रोकता हे ॥ हे रामजी अज्ञान करी जो दैव कल्प्या हे ॥ तिसका त्याग करी अपणे पुरुषार्थकों आश्रय करहु ॥ इस करी परम शांत पद प्राप्त होता हे ॥ ब्रह्मातें आदि लेकरि चेंटी पर्यंत सब अज्ञान रूपी संसार चक्र हे सो असत्य रूप हे भ्रम करिकें सत्यकी न्यांइं भासता हे ॥ तिसका त्याग करहु हे रामजी असत्य रूप पदार्थविषे जो राग दोष करते हे सो मूर्ख हे तिनतें चित्रका पुरुषभी श्रेष्ठ हे ॥ जब इष्ट विषय प्राप्त होता हे ॥ तब हर्ष करी प्रफुल्लित होते हे ॥ अरु अनिष्ट प्राप्त होता हे तब दोष करते हे ॥ अरु चित्रके पुरुषकों राग दोष किसीविषे नही ॥ इस कारणतें में कहता हों ॥ जो चित्तका पुरुषभी इनतें श्रेष्ठ हे ॥ अरु यह आधि व्याधि करी पडे जलते हे ॥ उह सदा ज्योंका त्यों हे ॥ अरु चित्रका पुरुष तब नाश होवे जब आधार भूतकों नाश करिए ॥ अधिष्ठानके नाशविना नाश नही होता ॥ अरु यह पुरुष अविनाशके आधार हे तिसका नाश होता नही ॥ अरु मूर्खता करिकें आपकों नाश होता मानते हें ॥ राग दोष करी संयुक्त हे ॥ तातें चित्रके पुरुषतेंबी तुछ हे ॥ अरु मनोराज संकल्परूप देह इस देहतें श्रेष्ठ हे ॥ जेते कछू दुःख इसकों होते हे सो बडे काल पर्यंत रहते हे ॥ अरु मनोराजका दुःख हुआ बहुरी अवर संकल्पके आयेतें उसका अभाव हो जाता हे ॥ तातें थोडा दुःख हे ॥ संकल्प देह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेंभी स्थुल देह तुछ हे ॥ हे रामजी जो थोडे कालतें देह हुइ हे ॥ तिस विषे दुःखभी थोडा हे ॥ अरु जो दीर्घ संकल्परूपी देह हे सो दीर्घ दुःखकों ग्रहण करती हे ॥ तातें महा नीच हे ॥ हे रामजी यह देह भी संकल्प मात्र हे सो न सत्य हे न असत्य हे तिसके भोग निमित्त मूर्ख जतन करते हे ॥ अरु क्लेश पावते हे ॥ अरु देह अभिमान करिकें इसके सुखसाथ सुखी होते हे दुःख साथ दुःखी होते हे ॥ इसके नष्ट हुए आपकों नष्ट हुआ मानते हे ॥ परंतु देहके नष्ट हुए पुरुषका नाश तो नही होता ॥ जेसें मनोराजके नाश हुए पुरुषका नाश नही होता ॥ जेसें दुसरे चंद्रमाके नाश हुए चंद्रमाका नाश नही होता ॥ तेसें इस देहके नाश हुए देही पुरुषका नाश नही होता ॥ जेसें संकल्प पुरुषके नाश हुए पुरुषका नाश नही होता ॥ जेसें सुपनभ्रमके नाश हुए पुरुषका नाश नही होता ॥ तेसें देहके नाश हुए आत्माका नाश नही होता ॥ जेसें घन धूपकरिकें रणविषे जल भासते हे ॥ अरु भली प्रकार जाय देखिये तब जलका अभाव हो जाता हे ॥ परंतु देखणे वालेका अभाव नही होता ॥ तेसें संकल्प करी रचा विनाश रूप जो देह हे ॥ तिसके नाश हुए तुमारा नाशतो नही होता ॥ हे रामजी दीर्घकालका रचा जो स्वममय देह हे ॥ तिसके दुःख अरु नाश करि आत्माकों दुःख अरु नाश नही होता ॥ चैतन अत्मसत्ता नाश नहि होती ॥ अरु स्वरूपतें चलायमानभी नही होती ॥ न विकारकों प्राप्त होती हे ॥ सर्वदा शुद्ध अच्युतरूप अपणे आपविषे स्थित हे ॥ देहके नाश हुए तिसका नाश नही होता ॥ अज्ञानका दृढ अभ्यास हुआ हे ॥ तब देहके धर्म अपणेविषे भासणे लगे हे ॥ जब आत्माका दृढ अभ्यास होवे तब देहाभिमान अरु देहके धर्म अभाव हो जावे ॥ जेसें चक्र ऊपर कोउ चडता हे अरु भ्रमता हे ॥ जब उतरता हे तब केताक काल भ्रमता भासता हे ॥ जब चिरकाल बि तीत होता हे तब स्थित हो जाता हे ॥ देहरूपी चक्र इसकों प्राप्त भया हे अज्ञान करिकें भ्रम्या हुआ आपकों भ्रमता देखता हे ॥ जब अज्ञानका बेग निवृत्त होता हे तबभी कोइ काल देहभ्रम भासता हे ॥ तिस करि जानता हे मेरा नाश होता हे ॥ मुझकों दुःख होता हे इत्यादिक कल्पना अज्ञान करि भासती हे तिस भ्रम दृष्टिकों धैर्य करिकें निवृत्त करता हे तब अभाव हो जाता हे ॥ हे रामजी जेसें भ्रम करिकें जेवरीविषे सर्प भासता हे ॥ तेसें आत्मविषे देह भासती असत्य हे जड हे ॥ न कर्मकों करती हे न मुक्त होणे इछा करती हे ॥ अरु देव परमात्माभी कछू करता नही उह सदा शुद्ध द्रष्टा प्रकाशक हे ॥ जेसें निर्वात दीप अपणे आपविषे स्थित हे ॥ तेसें तुं शुद्ध स्वरूप अपणे आपविषे स्थित होहु ॥ जेसें सूर्य आकाशविषे स्थित होता हे ॥ अरु सर्व जगत्कों प्रकाश करता हे ॥ तिसके आश्रय लोक चेष्टा करते हे ॥ परंतु सूर्य कछू नही करता सबका साक्षीभूत हे तेसें आत्माके आश्रे देहादिककी चेष्टा होती हे ॥ परंतु आत्मा साक्षी रूप हे ॥ पापपुण्यतें रहित हे ॥ हे रामजी इह देहरूपी शून्य गृह हे तिसविषे अहंकाररूपी पिशाच कल्पित हे ॥ जेसें बालक पछावेविषे वैताल कल्पता हे अरु भयकों पावता हे ॥ तेसें अहंकार रूपी पिशाच कल्पि करी भयकों पावता हे ॥ सो अहंकार रूपी पिशाच महा नीच हे सर्व संतजनकरी निंद्य हे ॥ जब अहंकार रूपी वैताल निकसे तब आनंद होवे देहरूपी शून्य गृहविषे इसका निवास हे ॥ जो पुरुष इसका टहलुआ हो रहाहे तिसकों इह नरकविषे जाता हे ॥ तातें तुम उसका टहलुआ नही होणा ॥ इसके नाशका उपाय करोगे तब आनंदकों प्राप्त होउगे ॥ हे रामजी इह चित्तरूपी उन्मत्त बैताल हे ॥ जिसकों स्पर्श करता हे तिसकों अशुद्ध करता हे ॥ अर्थ इह जो तिसका धैर्य अरु निश्चय विपर्यय करि देता हे ॥ तिस करी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुःखकों प्राप्त करता हे ॥ अपणें स्वरूपतें गिराय देता हे ॥ जो वडे वडे साधु महंत हे सो भि इसके भय करिकें समाधि विषे स्थित होते हे ॥ जो किसी प्रकार अहंकार अभाव होवे ॥ हे रामजी अहंकार रूपी पिशाच जिसकों स्पर्श कर्ता हे तिसकों आप जेसा करि लेता हे ॥ जेसा आप तुछ करता हे ॥ तेसा अवरकों तुछ करता हे अरु उजाडविषे रहता हे॥ जहां संतसंग अरु सत शास्त्रका विचार नही अरु आत्मज्ञानका निवास नही तहां शून्य उजाड रूपी देह मंदिरविषे रहता हे ॥ जो कोउ अेसें स्थानविषे प्रवेश करता हे तिसकों प्रवेश करि जाता हे ॥ हे रामजी जिसकों अहंकार रूपी पिशाच लागा हे ॥ तिसका धनकरी कल्याण नही होता ॥ न बांधव मित्र करी कल्याण होता हे ॥ अरु अहंकार पिशाच साथ मिल्या हुआ जेती कछू क्रियाकर्म करता हे सो अपणे नाशके निमित्त करता हे ॥ विषकी वल्लीकों उपजावता अरु बढावता हे ॥ हे रामजी जो पुरुष विवेक अरु धैर्यतें रहित हे ॥ तिसकों अहंकाररूपी पिशाच शीघ्रहि खाइ जाता हे ॥ सो केसा हे सबरूप हे ॥ जिसकों स्पर्श करता हे तिसकों शव करि छांडता हे ॥ अरु जिसकों अहंकार रूपी पिशाच लागा हे ॥ सो नरक रूपी अग्निविषे काष्टकी न्यांइं जलेगा ॥ अरु अहंकार रूपी सर्प हे जिस देहरूपी वृछके छिद्रविषे विषकों धारे वेठा हे ॥ तिसके निकट जो जावेगा तिसकों मृतक करेगा ॥ जो अहंममभावकों प्राप्त होवेगा ॥ सो मृतक समान होवेगा जन्म मरणकों पावेगा अहंकार रूपी पिशाच जिसकों लागा हे ॥ तिसकों मलिन करता हे ॥ स्वरूपतें गिराय करी संसार रूपी गरत विषे डारता हे ॥ अरु वडी आपदाकों प्राप्त करता हे ॥ जेती आपदाकों अहंकार प्राप्त करता हे ॥ सो वहुत वर्षपर्यंत करता रहे ॥ तोभी आपदाका वर्णन करी न सकोंगा ॥ हे रामजी यह जो अभिमान हे जो में हों ॥ में मरता हों ॥ में दग्ध होता हों ॥ में दुःखीहों मनुष हों इत्यादि कल्पना जो मलीन उठती हे ॥ सो अहंकार रूपी पिशाचकी शक्ति हे ॥ आत्मस्वरूप नित्य शुद्ध चिदाकाश सर्वगत सच्चिदानंद हे ॥ सो सवका अपणा आप हे अहंकारके वसतें आपकों प्रछन्न अलेप दुःखी मानता हे ॥ जेसें आकाश सर्वगत अलेप हे ॥ तेसें आत्मा सर्वविषे अलेप हे ॥ अरु सर्व साथ असंबंध हे अहंकारके संबंधतें रहित हे ॥ हे रामजी ग्रहण त्याग चलणा वेठणा इत्यादिक जेती कछु क्रिया होती हे सो देहरूपी जंत्र अरु वायुरूपी रसडी करी अहंकार रूपी जंत्री करावता हे ॥ आत्मा सदा निर्लेप हे सवका अधिष्ठान रूप हे ॥ कारण कार्यभावतें रहित हे ॥ जेसें वृछकी उंचाइका कारण आकाश हे अरु निर्लेप हे ॥ तेसें आत्मा सर्व चेष्टाका कारण अधिष्ठान हे अरु निर्लेप हे ॥ जेसें आकाश अरु पृथ्वीका संबंध नही तेसें आत्मा अरु अहंकारका संबंध नही ॥ चित्तकों जो आप जाणते हे सो महा मूर्ख हे आत्मा प्रकाश रूप हे नित्य सर्वगत हे विभू हे ॥ चित्त मूर्ख हे जड हे आवरण करता हे ॥ हे रामजी आत्मा सर्वज्ञ हे चैतन रूप हे चित्त मूढ हे॥ अरु पथ्थरवत् जड हे इसकों दूर करहु ॥ इसका अरु तेरा संबंध कछू नही तुम मोहकों तरहु ॥ देह रूपी शून्य गृहविषे चित्तरूपी वैतालका निवास हे ॥ जिसकों अपणे वश करता हे तिसकों बांधवभी नही छुडाय सकते ॥ अरु शास्त्रभी नही छुडाय सकते अरु जिसका देहाभिमान क्षीण होगया हे ॥ तिसकों गुरुशास्त्रभी छुडावणेकों समर्थ होते हे ॥ जेसें अल्प चीकडतें हरणकों काढि लेता हे तेसें गुरुशास्त्र निकासी लेते हे ॥ हे रामजी जेते देहरूपी शून्य मंदिर हे ॥ तिन सबविषे अहंकार रूपी पिशाच रहता हे ॥ कोउ देहरूपी गृह अहंकार पिशाच बिनाभी हे ॥ अवर भय साथ मिल्या हुआ हे॥ जेसें पिशाच अपवित्र स्थानविषे रहता हे पवित्रस्थानविषे नही रहता॥ तेसें जहां संतोष विचार अभ्यास सतसंगतें रहित देह हे॥ तिस स्थानविषे अहंकार निवास करता हे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरु जहां संतोष विचार अभ्यास सत्संग होता हे तहांतें अभाव हो जाता हे ॥ जेते कछू शरीर रूपी मशाण हे सो चित्तरूपी वैताल करी पूर्ण हे ॥ अरु अपरिमित मोहरूपी वैताल हे ॥ जगतरूपी महावनविषे मोहकों प्राप्त होते हैं ॥ जेसें बालक मोह पावता हे ॥ हे रामजी तुं आपकरी अपणा उद्धार करु ॥ सत्य विचारकरीकें धैर्यकों प्राप्त होइ ॥ इह जगतरूपी पुरा तन वन हे ॥ तिसविषे जीवरूपी मृग विचरते हे ॥ अरु भोगरूपी तृणकों आश्रय करते हे ॥ सो भोगरूपी तृण केसे हे देखणेमात्र सुंदर भासते हे ॥ परंतु तिनके नीचे गरत हे ॥ जेसें गर त उपर हरियावल तृण आछादन होते हे ॥ तिसकों देषिकरी मृगके बालक भोजन करणे लगते हे ॥ अरु गरतविषे गिर पडते हे ॥ तेसें जीवरूपी मृगकों रमणीय जाणिकरी भोगणे लग ते हे तिनकी तृष्णा करी नर्क आदिक जन्मविषे गिरते हे ॥ अग्नीकी नांइं जलते हे ॥ हे रामजी तुम अेसें नही होणा ॥ जो कोउ भोगकी तृष्णा करेगा सो नर्करूपी गरतविषे गिरेगा ॥ तातें तुम मृग मतिकों त्यागकरी सिंघदृतिकों धारहु ॥ मोहरूपी हस्तिकों सिंघ होकरी अपणे नषहुं साथ विदारहु ॥ भोगकी तृष्णातें रहित होणा यह अर्थ हे ॥ भोगकी तृष्णावाले जीव जंबूद्वीप रूपी जंगलविषे मृगकी नांइं भटकते हे ॥ तिनहुंकी नांइं तुम नही विचरणा ॥ हे रामजी स्त्री जो रमणीय भासती हे तिनका स्पर्श अल्प कालविषे सीतल सुखदायक भासता हे ॥ परंतु चिकडकी नांइ हे ॥ जेसे चिकडका लेपभी सीतल भासता हे परंतु तुछ हे ॥ जेसें संढा चिकड दलदलविषे फस्या हुआ निकसि नही सकता ॥ तेसें इह भोगरूपी दलद लविषे फस्या हुआ निकसि न सकता तातें तुं संतकी वृत्तिकों ग्रहण करे ॥ सो ग्रहण करणा किसकों कहते हे ॥ अरु त्याग करणा किसकों कहते हे ॥ अेसें विचारकरी असत वृ त्तिकों त्यागकरो अरु आत्मतत्वकों आश्रय करो हे रामजी यह देह अपवित्र हे अस्थि मांस रुधिर करी पूर्ण हे अरु तुछ हे ॥ अरु दुष्ट इसका आचार हे ॥ देहके निमित्त भोगकी इछा करणी इसकरी परमार्थ कछू सिद्ध नही होता ॥ देह अवरनें रची हे ॥ अवर करी चेष्टा करती हे ॥ अवरनें इसविषे प्रवेश किया हे ॥ दुःखकों अवर ग्रहण करता हे ॥ जो दुःखका भागि होता हे संकल्पनें देह रची हे ॥ अरु प्रान करी चेष्टा करता हे ॥ अहंकार पिशाचनें इसविषे प्रवेश किया हे अरु गर्जता हे ॥ मनकी वृत्ति सुख दुःखकों ग्रहण करती हे ॥ अरु दुःखी जीव होता हे ॥ तातें आश्चर्य हे ॥ हे रामजी परमार्थ सत्ता एक हे ॥ अरु सर्व समान हे ॥ इतर सत्ता तिसविषे कोउ नही ॥ जेसें प थर घन जड होता हे तिसविषे अवर कछू नही फुरता ॥ तेसें सत्तामात्रतें इतर अवर द्वैत सत्ता किसी पदार्थकी नही ॥ जेसें पथर घनरूप हे ॥ तेसें परमात्मा घनरूप हे ॥ अवर जड चैतन भिन्न कोउ नही ॥ यह मिथ्या संकल्पकी रचना हे ॥ जेसें बालककों पछावेविषे वैताल भासता हे ॥ तेसें सब कल्पना मनकी हे ॥ जेसें एक गनेके रसकरी गुड हो जाता हे कहुं सकर खंड होती हे ॥ तेसें एक परम तम सत्ता समान सर्व हे तिसविषे जड चैतनकी कल्पना मिथ्या हे ॥ जबलग सम्यक् दृष्टि नही प्राप्त भइ तबलग जड चैतनकी दृष्टि होती हे ॥ जब यथा र्थ दृष्टि प्राप्त होती हे ॥ तब भेद कल्पना सब मिटि जाती हे ॥ जेसें सीपीविषे रूपा भासता हे सो न सत्य होता हे न असत्य होता हे ॥ तेसें आत्माविषे जड चैतन सत्य असत्य विल क्षण कल्पना हे ॥ हे रामजी जो सत्य हे सो असत्य नही होता ॥ अरु जो असत्य हे सो सत्य नही होता ॥ आत्मा सदा सत्य रूप हे ॥ अरु अपणे आपविषे स्थित हे ॥ तिसविषे द्वैत एकका अभाव हे ॥ जेसें पथरविषे अन्य सत्ताका अभाव हे ॥ तेसें आत्माविषे द्वैत सत्ताका अभाव हे ॥ नाना रूप भासता हे तोभी द्वैत कछू नही सदा अनुभवरूप हे ॥ विभाग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कल्पना तिसविषे कछू नही सदा अद्वैत रूप हे ॥ जेती कछू भेद कल्पना भासती हे सो चित्तकरी भासती हे ॥ जब चित्तका अभाव होता हे तब जड चैतनकी कल्पना मिटि जाती हे ॥ जेसें बंध्याके पुत्रका अभाव हे जेसें आकाशविषे दलका अभाव हे ॥ तेसें आत्माविषे कल्पनाका अभाव हे ॥ हे रामजी यह जो कल्पना हे जो यह चैतन हे यह जड हे ॥ यह उपजता हे यह मिटि जाता हे ॥ इत्यादिक सब कल्पना मिथ्या हे ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प मिथ्या हे ॥ तेसें केवल निर्विकल्प चिन्मात्र आत्माविषे कल्पना मिथ्या हे ॥ अरु गुरुशास्त्रभी जो आत्माकों चैतन कहते हे ॥ अनात्माकों जड कहते हे सोभी बोधके निमित्त कहते हे ॥ दृष्टांत जुगति करी दृश्यकों आत्मस्वरूपविषे स्थित करते हे ॥ जब स्वरूपविषे दृढ स्थित होवेगी॥ तब जड चैतनकी भेद कल्पना जाती रहेगी ॥ केवल अचैत्य चिन्मात्र सत्ता भासेगी जो तत्व हे ॥ इस प्रकार गुरुभी जड चैतनके विभागका उपदेश करते हे ॥ तोभी मूर्ख नही ग्रहण करी सकते ॥ तो जब प्रथमही अचैत चिन्मात्र अवाचपदका उपदेश करे तब केसें ग्रहण करे ॥ हे रामजी ओर आश्चर्य देख ॥ जो चित्त ओर हे इंद्रिय ओर हे ॥ देह ओर हे देहका कर्ता कोउ दृष्टि नही आता ॥ अरु अहंकार करीके वेष्टित करी हे ॥ इह जीव अेसें मूर्ख हे ॥ जो देहकों आपणा आप जाणते हे ॥ अरु दुःखकों प्राप्त होते हे ॥ अरु जो विचारवान पुरुष हे ॥ आत्मपदविषे स्थित हुए हे ॥ तिन महानुभावकों कोउ क्रिया दुःख बंधन करी नही सकती ॥ जेसें मंत्र जानणेवालेकों सर्प दुःख दे नही सकता ॥ तेसें ज्ञानवानकों कर्म बंधन नही करता ॥ हे रामजी न तुं सीस हे न नेत्र हे न रक्त हे न मांस, हे न अस्थि आदिक हे ॥ न मन हे न तुं भूत जात हे ॥ तुं चित्ततें रहित चैतन केवल चिन्मात्र साक्षी रूप हे ॥ सरीरसों ममता त्यागिकरी नित्य शुद्ध सर्वगत आत्मस्वरूपविषे स्थित होहु ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे देहसत्ताविचारोनाम पंचविंशतितमःसर्गः ॥ २५ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इसी दृष्टिकों आश्रय करु ॥ अरु भेद कष्ट दृष्टिका त्याग कर नाश कर जब कष्ट दृष्टि नष्ट होवेगी तब आत्मानंद प्रगट होवेगा ॥ जिस आनंदके पायेतें अष्टसिद्धिका ऐश्वर्यभी अनिष्ट जाणि करी त्यागेगा ॥ अब अवर दृष्टि सुण केसी दृष्टि हे जो महा मोहका नाश करती हे ॥ अरु जो आत्मपद पावणा कठिण हे सो सुखेन प्राप्त होवेगा बहुरी केसी दृष्टि हे ॥ जिसका नाश कदाचित् नही होता अरु दुःखतें रहित आनंदरूप में शिवजीतें श्रवण करी हे ॥ पूर्व कैलासकी कंदराविषे संसार दुःखकी शांति अर्थ चंद्रधार सदा शिवनें मुझकों कहीथी ॥ हे रामजी महा चंद्रमाकी न्यांइं सीतल अरु प्रकाश हे जिसका ॥ अेसा जो हे हिमालय पर्वत तिसकी कंदरा कैलास पर्वत तहां गौरीके रमणीय स्थान मंदिर हे तहां गंगाका प्रवाह झरणेतें चला जाता हे ॥ अरु पंछी शब्द करतें हे ॥ अरु मंद मंद पवन सुखदायक चलता हे ॥ अरु कुबेरके मोर बिचरते हे ॥ कल्पवृछ लगे हुए हे ॥ महा उज्वल सीतल सुंदर कंदरा हे ॥ मंदारवृछ तमाल वृक्ष लगे हुए हे ॥ तिनके साथ फूल अेसें हे मानो स्वेत मेघ हे ॥ गंधर्व किन्नर आये गान करते हे ॥ देवताके रमणीय सुंदर थानक हे ॥ तिस पर्वत उपर सदाशिव बिराजते हे ॥ त्रिनेत्र हे अरु हाथविषे त्रिसूल हे ॥ गणकरी वेष्टित हे ॥ अरु भगवती अर्धांगविषे बिराजती हे ॥ अेसा जो सर्वलोकका कारण इश्वर हे सो तहां बिराजता हे ॥ बहुरी केसा हे कामदेवका गर्वनास किया हे ॥ अरु षट् मुख सहित स्वामि कार्तिक पास प्राप्त हे ॥ अरु महा भयानक शून्य मसाणोंविषे तिसका निवास हे॥तिस देवकों में पूजत भया ॥ तिस पर्वत उपर एक कालमें में तप करणें लगाथा ॥ महा पुण्यवान एक कुटी बणाइ ॥ तिसविषें जथाशास्त्र पुण्यक्रिया करी में तप करणें लगा ॥ एक कमं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डल पास राख्या ॥ दलके फूल माला पूजणे निमित्त रखे जलपान करौं फलभोजन करौं ॥ बहुरी विद्यार्थी शिष्य साथ रहहिं तिनकों पढावों ॥ शास्त्रका अर्थ विचारों ॥ ब्रह्मविद्याके पुस्तकका समूह पडा हुआ आगें ॥ मृग अरु मृगके बालक विचरहिं ॥ इस प्रकार हम कालकों बीतावहिं ॥ वेदका पढना ब्रह्मविद्याकों विचारना अरु शास्त्र अनुसार तप करणा ॥ इन गुनडुं संयुक्त कैलास बन कुंजविषे हम विश्राम करहिं ॥ तिसके अनंतर एक कालमें एक दिन श्रावण विद अष्टमी अर्धरात्र वितीत भइ हे ॥ तिस कालमें समाधितें उतरी करी देखता भया दशोदिशा काष्ठ मौनवत् शांतरूप हे ॥ अरु अेसा तम हे जो शस्त्रडुं करी छेदणेवाला हे ॥ अरु मंदमंद पवन चलता हे उसके कणका गिरते हे ॥ मानों पवन हांसी करता हे ॥ तिसी समे चंद्रमा आनि उदे हुआ महासीतल अमृतरूप किरणांकों प्रकाशता भया ॥ औषधिकों रस साथ पुष्ट करता भया ॥ चंद्रमुखी कमल खिली आये ॥ चकोर अमृतकी किरणांकों पान करणे लगे मानों चंद्रमारूप हो गये हे ॥ प्रातःविषे मणी तारेकी न्यांइं उपर आनि पडनें लागियां ॥ अरु सप्तर्षि सिरपर आनि स्थित भये ॥ मानों मेरे तपकों देखणे आये हे ॥ सप्तर्षिविषे पीछले जो तीन तारे हे ॥ तिनके मध्यविषे मेरा मंदिर हे ॥ तहां में सदा विराजता हों तब चंद्रमाकरी सीतल स्थान हो गये ॥ पवनकरी फूल गिरे हे ॥ अरु चंद्रमाका प्रकाश महासीतल हे ॥ तिस करी स्थान सीतल हो गये ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे वसिष्ठआश्रमवर्णनंनाम षड्विंशतितमःसर्गः ॥ २६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी अर्ध रात्रके समे जो में समाधितें उतर्या ॥ तब मुझकों तेज प्रकाश दृष्ट आणे लागा ॥ जेसें मंदराचल पर्वतके पायेतें क्षीरसमुद्र उछले आता हे ॥ मानों हिमालय पर्वत मूर्ति धारी करी स्थित हे ॥ मानों मांषनका पहाड पिंड आनि स्थित हुआ हे ॥ मानों सब संखकी स्पष्टता आनि स्थित भइ हे ॥ मानों मोतीका समूह एकठा हो करी उडणे लगाहे ॥ महा तीक्ष्ण प्रकाश दृष्टि आवे ॥ मानों गंगाका प्रबाह उछलणे लगाहे ॥ परंतु तिस प्रकाशकी सीतलतानें सब दिशा तट पूर्ण करी लिये हे ॥ तब में देखिकरी आश्चर्य मान हुआ ॥ अकाल प्रलय होणे लागी हे ॥ तब बोधदृष्टि करी विचारणे लागा जो यह क्या हे तब में देख्या ॥ जो देवताके गुरु ईश्वर सदाशिव चले आते हे ॥ चंद्र कलाकों धारे हुए अरु गौरी भगवतीके साथ हाथ ग्रहण किया हे ॥ अरु गणोंके समूह करी वेष्टित हे ॥ कानोंविषे सर्प पडे हुए हे ॥ कंठविषे रुंढकी माला हे ॥ सीसपर जटा हे ॥ तिसपर कदंब दल हे ॥ अरु तमाल दलके फूल पडे हुए हे ॥ अेसें सदाशिव जो सबकों फल देणेंहारा हे तिनकों मन करीकें मे देखत भया ॥ अरु मनही करी मंदारदलके पुष्प लेकरी अर्घपाद करत भया ॥ अरु मनही करी प्रणाम करत भया ॥ अरु मनही करी प्रदक्षणा देत भया ॥ अेसें करीके में अपणे आसनतें उठी खडा हुआ ॥ अपणे शिष्यकों जगावत भया ॥ जगाए करी अर्घपाद ले चला ॥ जाय करी त्रिनेत्र शिवकों पुष्प अंजली दिया देकरी प्रदक्षणा करी प्रणाम किया ॥ तब मुझकों चंद्रधारी कृपादृष्टि करी देखत भया ॥ अरु सुंदर मधुर वाणीकरी कहत भया ॥ रिदेका तम नष्ट कर्ता शरन पडेकों परम शांति पद प्राप्त कर्ता ॥ एसा सदाशिवजी मुझकों देखि करी कहत भया ॥ ईश्वरोवाच ॥ हे ब्राह्मण ले आउ अर्घपाद हम तेरे आश्रम विषे अतिथि आए हे ॥ हे निष्पाप तुझकों कल्याण तो हे क्यों ॥ तुं मुझकों महा शांतरूप भासता हे ॥ अरु महा सुंदर उज्वल तपकी लक्ष्मी करी तुं सोभताहे ॥ चलो हम तुमारे आश्रमकों चलें हे ॥ हे रामजी फूलके स्थानविषे सदाशिव बेठेथे सो अेसें कहि करी उठि खडे हुए ॥ तब एकठे अपणे आश्रम परी कूटीविषे आनि स्थित हुए ॥ तहां में बहुरी पुष्प अर्घकरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चरनोंकी पूजा करी ॥ बहुरी हाथकी पूजा करी इसी प्रकार चरनोंतें लेकरी सीस पर्यंत सर्व अंगकी पूजा करी ॥ बहुरी गौरी भगवतीकों तेसें पूजन किया सखियांका पूजन किया बहुरी गणोंका पूजन किया ॥ हे रामजी इस प्रकार भक्ति पूर्वक जब में पार्वतीपरमेश्वरका पूजन करी चूका ॥ तब ससकला धारी सीतलवाणी करी मुझकों कहत भया ॥ हे ब्राह्मण नाना प्रकारकी चिंतवणे हारी जो चित्तकी वृत्ति हे सो तेरे स्वरूपविषे विश्रांतिकों प्राप्त भइ हे क्यों ॥ अरु संवित तेरी आत्मपदविषे स्थित भइ हे क्यों ॥ अरु तुमारे शिष्यकों कल्याण तो हे क्यों? ॥ अरु तुमारे पास जो हरण विचरते हे ॥ यहभी सुख साथ हे क्यों अरु मंदारवृछ तुमकों पूजाके निमित्त फूल फल भली प्रकार देते हे क्यों ॥ अरु मंदाकिनी जो गंगा हे सो तुमकों भली प्रकार स्नान कराती हे क्यों ॥ अरु देहके इष्ट अनिष्टकी प्राप्तिविषे तुम खेदवान नही होते क्यों ॥ अरु इस पर्वतविषे कुबेरके अनुचर जक्ष राक्षस रहते हे ॥ सो तुमकों दुःख तो नही देते क्यों ॥ अरु मेरे गण जो चक्षु निशाचर हे उहभी तुमकों कष्टतो नही देते क्यों हे रघुनंदन इस प्रकार जब देवेशनें मुझकों वांछित प्रश्न कहे तब में उनकों कहत भया ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे महेश्वर जो कल्याणरूप तुझकों सदा स्मरते हे ॥ तिनकों इस लोकविषे अेसा पदार्थ कोउ नही जो पावणा कठिण होवे ॥ अरु भयभी किसीका नही ॥ जिनका चित्त तुमारे स्मरण करी आनंदसों सर्व उरतें पूर्ण भया हे ॥ सो जगत्विषे दीन नही होते ॥ तेइ देस तेइ जनोके चरण अरु दशा पर्वत वंदणा करणे जोग हे ॥ जहां एकांत बुद्धि बेठी करी तुमारा स्मरण करते हे ॥ हे प्रभो तुमारा स्मरन पूर्व पुण्यरूपी वृछका फल हे ॥ अरु वर्त्तमान कर्मोंकरी सिंचता हे ॥ तुम मनके परम मित्र हो सर्व आपदाका हरणहारा तुमारा स्मरण हे ॥ सर्व संपदा रूपी लताके वढावणे हारा तुमारा स्मरण वसंतऋतु हे ॥ हे प्रभो वडा महिमा अरु वडेतें वडे कर्मोंके कारणका कारण तुमारा स्मरण हे ॥ हे प्रभो विवेक रूपी समुद्रविषे परमार्थ रूपी रत्न हे ॥ अरु ज्ञानरूपी तमका नाश कर्ता सूर्यका समूह तुमारा स्मरण हे ॥ ज्ञान अमृतका कलश अरु धीरजरूपी चांदनीका चंद्रमा अरु मोक्षका द्वार तुमारा शरण हे ॥ हे प्रभो तुमारा स्मरण अपूर्व रूपी दीपक उत्तम हे ॥ चित्तका मंडप जो हे संसार तिस सर्वकों प्रकाशता हे ॥ हे प्रभो तुमारा स्मरण उदार चिंतामणीकी नांइं सर्व आपदाकों छेदणेहारा हे ॥ अरु वडे उत्तम पदकों देणे हारा हे ॥ हे प्रभो तुमारा स्मरण एक क्षणभी चित्तविषे स्थित होवे ॥ तब सर्व दुःख अरु भयकों नास करता हे अरु वरदायक हे ॥ तिसकरी तुमारे नांइ सुखसों वसताहों ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ ॥ इस प्रकार जब मुनीश्वरनें कहा तब दिनका अंत हुआ ॥ सर्व सभा उठी परस्पर नमस्कार करिकें अपणे स्थानोंकों गये ॥ सूर्यकी किरणांसाथ बहुरी अपणे अपणे आसनपर आयवेठे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे रुद्र वसिष्ठ समागमो नाम सप्तविंशतितमःसर्गः ॥ २७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी इस प्रकारे में कहा तब गौरी भगवती जगत् माता मुजकों जेसें माता पुत्रकों कहे तेसें कहत भइ ॥ गौरी भगवती उवाच ॥ हे वसिष्ठजी पतिव्रता जो अरुंधती हे सो कहां हे ॥ जो पतिव्रताविषे मुख्य हे तिसकों ले आउ ॥ जो उह मेरी प्यारी सखी हे ॥ तिस साथ में कथा शब्द चरचा करोंगी ॥ हे रामजी इस प्रकार जब मुजकों पार्वतीनें कहा ॥ तब में सीघ्रही जायकरी अरुंधतीकों लेआया ॥ उह दोनों परस्पर कथा चर्चा वार्ता संवादविषे परचियां ॥ अरु में विचारता भया जो मुजकों ईश्वर प्राप्त भया हे ॥ अरु पुछणेका अवसर पाया हे ॥ तातें सर्व ज्ञानके समुद्रकों पूछों ॥ संदेहकों दूरि करों हे रामजी अेसें विचार करिकें गौरीशकों पूछत भया ॥ जो कछु चंद्रकलाधारीनें मुजकों कहा हे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सो तुझकों कहता हो ॥ जो हे सो सुण ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे भगवन् भूत भविष्य वर्तमान तीनों कालके ईश्वर ॥ अरु सर्व कारणकें कारण तुमारे प्रसाद करीके में कछु पूछणेकों सम
र्थ हुआ हों ॥ हे महादेव जो कछु में पूछता हों सो प्रसन्न बुद्धि हो करी तत्वतें शीघ्रही उद्वेगकों त्याग करी कहो ॥ हे सर्व पापके नाश करणे हारे अरु सर्व कल्याणके वृद्ध करणे हारे
देव अर्चनका विधान मुझकों कहों ॥ ईश्वरोवाच ॥ हे ब्राह्मण उत्तम जो देव अर्चन हे जिसके कियेतें संसार समुद्रकों तरी जाइयें सो सुण ॥ हे ब्राह्मणविषे श्रेष्ठ पुंडरीकाक्ष जो
विष्णु हे सो देव नही ॥ अरु त्रिलोचन जो शिव हे सोभी देव नही ॥ कमलतें उपजा ब्रह्मा हे सोभी देव नही ॥ अरु सहस्रनेत्र इंद्रभी देव नही ॥ न देव पवन हे न सूर्य हे न अ
ग्नि हे न चंद्रमा हे न ब्राह्मण हे न छत्री हे ॥ न तुं न में हों न देह न चित्त हे न कलनारूप हे ॥ अक्रम अनादि अनंत संवितरूप देव कहाता हे ॥ अवर आकारादिक प्रछन्नरूप हे सो
वास्तवतें कछू नही ॥ एक अक्रतम अनादि अनंत चैतनरूप देव हे ॥ सो देव शब्द करी कहाता हे ॥ तिसका जो पूजन हे सोइ पूजन हे ॥ तिस देवकों सर्वत्र जानणा जिसतें यह सर्व
हुआ हे ॥ जो सत्ता शांत आत्मरूप हे ॥ सर्व ठोरविषे तिसकों देखणा यहि उसका पूजन हे ॥ अरु जो तिससंवित तत्वकों नही जाणते तिनकों आकारकी अर्चणा कही हे ॥ जेसें जो
पुरुष जोजन पर्यंत नही चलि सकता ॥ तिसकों एक कोसका दो कोसका चलणाभी भला हे ॥ तेसें जो पुरुष अक्रतम देवकी पूजा नही करी सकता तिसकों आकारका पूजणाभी
भला हे ॥ हे ब्राह्मण जिसकी भावना कोउ करता हे तिसके फलकों तिसी अनुसार भोगता हे ॥ जो प्रछन्नकी उपासना करता हे तिसकों फलभी प्रछन्न प्राप्त होता हे ॥ अरु जो अ
क्रतम आनंद अनंत देवकी उपासना करता हे तिसकों उहि परमात्मरूपी फल प्राप्त होता हे ॥ हे साधु अक्रतम फलकों त्याग करी क्रतमकों चाहते हे ॥ सो क्या करते हे ॥ जेसें कोउ
मंदारवृछके बनकों त्याग करी करजुएके बनकों प्राप्त होवे तेसें उह करते हे ॥ सो देव केसा हे अरु उसकी पूजा क्या हे अरु क्यों करी होती हे सो सुण ॥ तीन फूल हे तिन फूलहुं
साथ तिसकी पूजा होती हे ॥ एक बोध१ एक साम्य २एक सम३ ए तीनों पुष्प हे ॥ बोध नाम सम्यक् ज्ञानका जो आत्मतत्वकों ज्योंकात्यों जानणा॥ अरु साम्य नाम हे जो सर्वविषे
पूर्ण देखणा ॥ समका अर्थ यह जो चिंत्तकों निवृत्त करणा ॥ आत्मतत्वतें इतर कछू न फुरे इन तीनों फूल साथ शिव चिन्मात्र सुद्ध देवकी पूजा होती हे ॥ हे मुनीश्वर बोध साम्य सम
इन पुष्प करी आत्मा देवकी पूजा करत हे ॥ एहि देवकी पूजा हे ॥ आकार अर्चन करी अर्चा नही होती ॥ जो आत्म संवित चिन्मात्र हे ॥ तिसकों त्यागकरी अवर जडकी जो अर्चना
करते हे ॥ सो चिर पर्यंत क्लेसके भागी होते हे ॥ हे ब्राह्मण जो ज्ञान ज्ञेय पुरुष हे ॥ सो आत्म ध्यानतें इतर पूजन अर्चन बालककी क्रीडावत मानते हे ॥ आत्मा भगवान एक देव हे ॥
सो सिव हे परम कारण रूप हे ॥ तिसकों सर्वदाहि ग्यान अर्चन करी पूजन हे ॥ अवर पूजा कोउ नही ॥ चैतन आकाश अवयव सुभाव एक आत्मदेवकों तुं जाण ॥ अवर पूज्य पूजक
पूजा त्रिपूटी करी आत्मदेवकी पूजा नही होति ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे भगवन् चैतन आकाशमात्र आत्माकों जेसें यह जगत् हे ॥ अरु चैतनकों जीव कहते हे सो कहो ॥
॥ ईश्वरोवाच हे मुनीश्वर चेतन आकाश प्रसिद्ध हे ॥ सर्व प्रकृतितें रहित हे ॥ जो महाकल्पविषे सेष रहता हे सो आपहि किंचनरूप होता हे ॥ तिस किंचनकरी यह जगत् होता हे ॥
जेसें सुपनेविषे चिदात्माहि सर्वगत जगतरूप होकरी भासता हे ॥ तेसें जाग्रत जगत्भी चिदाकाशरूप हे ॥ आदि सर्गतें लेकरी इस काल पर्यंत आत्मातें इतरका अभाव हे ॥ जेसें सुप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नविषे जो जगत् भासता हे सो सब चिदाकाशरूप हे अवर इतर कल्पना कोउ नही चिन्मात्रही पहाडरूप हे ॥ चिन्मात्रहि जगत् हे ॥ चिन्मात्रही आकाश हे ॥ चिन्मात्रहि सब जीव हे ॥ चिन्मात्रहि सब भूत हे ॥ चिन्मात्रतें इतर कछू नही ॥ सृष्टिके आदि अरु अंतपर्यंत अवर जो कछु द्वैत कल्पना भासती हे सो भममात्र हे ॥ जेसें सुपनेविषे किसीके अंग काटे सो किसीके काटे तो नही निद्रा दोषकरी एसें भासते हे ॥ तेसें इह जाग्रत् जगत्भी भममात्र हे ॥ हे मुनीश्वर आकाश परमाकाश ब्रह्माकाश तीनों एकहीके पर्याय हे ॥ जेसें सुपनेविषे संकल्पकरी मायामेंतें अनुभव होता हे सो सब चिदाकाश हे ॥ तेसें इह जाग्रत् जगत् चिदाकाशरूप हे ॥ जेसें सुपनपूरविषे आकाशतें इतर कछू नही होता ॥ तेसें जाग्रत् सुपनभी आत्मतत्व होकरि भासता हे ॥ आत्मातें इतर दुजी वस्तु कछू नहि हे मुनीश्वर जेसें सुपनेविषे चिदाकाशहि घट पट आदिक होकरी भासता हे ॥ तेसें स्थित प्रलयादि जगत् चिदात्मातें इतर कछू नही आत्माहि अेसें भासता हे ॥ जेसें शुद्ध संवित मात्रतें इतर सुपनविषे नगर नहि पाइता ॥ तेसें जाग्रतविषे अनुभवतें इतर कछू नही पाइता ॥ हे मुनीश्वर भाव अभावरूप पदार्थ तीनों काल जगत् भासता हे सो सब चिदाकाशरूप हे आत्मातें इतर कछू नही ॥ हे मुनीश्वर इह देव में तुजकों कहा हे सो परमार्थतें कहा हे ॥ तुं में अरु सब भूत जाति जगत् सर्वका जो देव हे सो चिदाकाश परमात्मा हे ॥ तिसतें इतर कछू नही ॥ जेसे संकल्पपूरविषे चिदाकाशहि शरिररूप हो भासता हे ॥ इतर कछू नही बन्या ॥ तेसें इह सब चिदाकाशरूप हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे ईश्वरोपाख्याने जगत परमात्मरूप वर्णनं नाम अष्टाविंशतितमःसर्गः ॥ २८ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ ईश्वरोवाच ॥ ॥ हे ब्राह्मण इस प्रकार यह सर्व विश्व केवल परमात्मारूप हे ॥ परमात्माकाश ब्रह्मही एक देव करी कहाता हे तिसहीका पूजन सार हे ॥ तिसहिते सर्व फल प्राप्त होतें हे सो देव सर्वज्ञ हे अरु सर्व तिसविषे स्थित हे ॥ अकृतम देव अज परमानंद अखंडरूप हे ॥ तिसकों साधना करीकें पावणा हे ॥ तिसकरी परम सुखकों प्राप्त होताहे ॥ हे मुनीश्वर तुं जाग्याद्रुआ हे ॥ तिसकारणतें इस प्रकारकी देव अर्चना में तुझकों कहीहे ॥ अरु जो असम्यक दर्शी बालक हे जिनकों निश्चयात्मक बुद्धि प्राप्ती नहि भइ पेलव चित्त हे ॥ तिनकों धुप दीप पुष्प कर्म आदिक अर्चना कहीहे ॥ आकार करिकें कल्पित देवकी मिथ्या कल्पना करी हे ॥ हे मुनीश्वर अपणें संकल्प करी जो देव बणावते हे ॥ तिसकों पुष्प धूप दीपादिक करि पूजते हें सो भावना मात्र हे ॥ तिसकरी तिनकों संकल्प रचित फलकी प्राप्ति होती हे ॥ सो बालक बुद्धिकी अर्चना हे ॥ जो तुम सारखे हे तिनकों यहि पुजा हे जो तुमको सर्व आत्मभावना करी कही हे ॥ हे मुनीश्वर हमारे मतविषे तो अवर देव कोउनहि ॥ एकहि परमात्मा देव हे ॥ तीनों भुवन विषे तिसतें अवर देव कोउ नहि सो शिव हे अरु सर्व पदतें अतीत हे ॥ सर्व संकल्पतें उल्लंघन वर्तता हे ॥ अरु सर्व संकल्पका अधिष्ठान उही हे अरु देशकाल वस्तुके प्रछेदतें रहित हे ॥ सर्व प्रकार शांतरूप हे ॥ एक चिन्मात्र निर्मल स्वरूप हे ॥ तिसकों देव करी कहता हे ॥ हे मुनीश्वर जो संवित सत्ता पंचभुतकलातें अतीत हे ॥ अरु सर्व भावके अंतर उही स्थित हे ॥ अरु सर्वकों सत्ता देणें हारा देव हे अरु सर्वकी सत्ता हरणें हाराभी उही हे ॥ हे ब्राह्मण जो ब्रह्म सत्य असत्यके मध्य अरु सत्य असत्यके पर कहाता हे ॥ सो देव परमात्मा हे ॥ परम स्वतः सत्ता सुभाव करिके सभकों प्राप्त भया हे ॥ अरु महा चित्तकरिकें कहाता हे॥ सो परमात्म देव सत्ता हे ॥ अेसें सर्वविषें स्थित हे ॥ जेसें सर्व वृछकी लताके अंतर रस जल स्थित हे ॥ तेसें सत्ता स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मानरूप करिकें परम चैतन आत्मा सर्वउर स्थित हे ॥ जो चैतन तत्व अरुंधतीका हे ॥ अरु जो चैतन तत्व तुझ निष्पापका हे ॥ अरु जो चैतन तत्व पार्वतीका हे सोइ चैतन तत्व मेरा हे ॥ सोइ चैतन तत्व जगत् त्रिलोकीका हे सो देव हे ॥ अवर देव कोउ नहि ॥ अरु जो अवर हस्त पाद संयुक्त देव कल्पते हे सोभी चिन्मात्र सार कछू नहि ॥ चिन्मात्रहि सर्व जगत का सारभूत हे सोइ अर्चना करणें जोगहे ॥ तिसीतें सब फलकी प्राप्ति होती हे ॥ सो देव कहुं दूर स्थित नहि ॥ अरु किसी प्रकार किसीकों प्राप्त होनाभी कठिण नहि ॥ सर्वकी देहविषें स्थित हे ॥ अरु सर्वका आत्मा हे सो दूर केसें होवे अरु कठिनतासों प्राप्त केसें होवे ॥ सब क्रिया उही करता हे ॥ भोजनभी उहि करताहे भरण पोषणभी उहि करता हे ॥ उहि स्वास लेता हे ॥ सबका ज्ञाता उहीहे ॥ पुर्यष्टकाविषे प्रतिबिंबित होकरि प्रकाशता उही हे ॥ जेसें पर्वत ऊपर चर अचरकी चेष्टा होतीहे ॥ चलते बेठते स्थित होते हे ॥ सो सबका आधारभूत पर्वत हे ॥ तेसें मन सहित षट् इंद्रियांकी चेष्टा आत्माके आश्रय होतीहे ॥ तिस देवकी संज्ञा व्यवहारके निमित्त तत्ववेत्तानें कल्पी हे सो एक देव चिन्मात्र हे सूक्ष्महे सर्व व्यापी हे निरंजन हे आत्मा हे ब्रह्म हे ॥ इत्यादिक नाम ज्ञानवाननें शास्त्र बुद्धि उपदेश व्यवहारके निमित्त राखेहे ॥ हे मुनीश्वर जेता कछू विस्तार सहित जगत् भासता हे ॥ सो सबका प्रकाश उही हे अरु सर्वतें रहित हे ॥ सो नित्य शुद्ध अद्वैत रूप हे ॥ सब जगत्विषे अनुस्यूत हे ॥ जेसें वसंतऋतुविषे नाना प्रकारके फूल दछ भासते हे ॥ अरु सर्वविषे एकहि रस व्यापार हे उहि अनेक रूप हो भासता हे तेसे एकहि आत्मसत्ता अनेक रूप हो करी भासती हे ॥ हे मुनीश्वर जेता कछू जगत् हे सो आत्माका चमत्कार भासता हे ॥ आत्मतत्वविषे स्थित हे ॥ कहुं आकाशरूप होकरी स्थित हे कहुं जीवरूप होकरी स्थित हे ॥ कहुं चित्तरूप कहुं अहंकाररूप होकरी स्थित हे ॥ कहुं दिशारूप कहुं द्रव्यरूप कहुं भाव विकाररूप कहुं तम कहुं प्रकाशरूप होकरी स्थित हे ॥ कहुं सूर्य कहुं पृथ्वी कहुं जल कहुं अग्नि वायु आदिक स्थावर जंगमरूप होकरी उहि स्थित हे जेसें समुद्र विषे तरंग बुदबुदे होते हे तेसें एक परमात्मा देव विषे त्रिलोकीयां हे ॥ हे मुनीश्वर देवता दैत मनुष आदिक सब एक देवविषे पडे वहते हे ॥ जेसें जलविषें तृण बहते हे ॥ तेसें परमात्मा विषे जीव बहते हे॥उहि चैतन तत्व चतुर्भुज होकरी दैत्यकों नाश करता हे ॥ जेसें जल मेघरूप होकरी धूपकों रोकता हे ॥ उहि चैतन तत्व त्रिनेत्र मस्तक पर चंद्रधार वृषभ ऊपर आरूढ पार्वती रूपी कमलनीके मुखका भवरा रुद्र होकरी स्थित होता हे ॥ अरु उहि चैतन विष्णुरूप सता हे ॥ तिसके नाभि कमलतें उत्पन्न हुआ ॥ ब्रह्मा त्रिलोकी वेद त्रयरूप कमलनीकी तलावडी हो करी स्थित भया हे ॥ हे मुनीश्वर इस प्रकार एकहि चैतन तत्व अनेक रूप होकरी स्थित भया हे ॥ अरु जेसें एकहि रस अनेक रूप हो करी स्थित होता हे ॥ अरु जेसें एकहि स्वर्न अनेक भूषण रूप होकरी स्थित होता हे ॥ तेसें एकहि चैतन अनेक रूप होकरी स्थित होता हे ॥ तातें सर्व देह एक चैतन तत्वके हे ॥ जेसें एक वछके अनेक पत्र होते हे ॥ तेसें एकही चैतनके सर्व देह हे ॥ उही चैतन मस्तकपर चूडामणी धारणहारा त्रिलोकपति इंद्र हो करी स्थित भया हे ॥ देवतारूप हो करीभी उही स्थित भया हे ॥ अरु दैत्यरूप हो करीभी उही स्थित भया हे ॥ मरण उपजणेका रूपभी उही धारता हे ॥ जेसें एक समुद्रविषे तरंगके समूह उपजते अरु मिट जाते हे सो जलही जलरूप हे ॥ तेसें उपजणा अरु बिनसणा चैतनविषे होता हे ॥ सो चैतनरूप परमात्मा एकही वस्तु हे ॥ हे मुनीश्वर चैतनरूपी आदर्श हे ॥ तिसविषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जगत्रूपी प्रतिबिंब होता हे ॥ अपणी रची हुइ वस्तुकों आपहि ग्रहण करीकें अपणेविषे धारता हे ॥ जेसें गर्भणी स्त्री अपणे गर्भकों धारती हे ॥ तेसें चैतनतत्व जगत् प्रतिबिंबकों धारता हे ॥ हे मुनीश्वर सर्व क्रिया उसी देवकरी सिद्धि होती हे ॥ देणा लेणा बोलणा चलणा सब उसीकरी सिद्धि होता हे ॥ सूर्यादिक प्रकाशरूपी उसी करी प्रकाशते हे ॥ अरु उसी करी प्रफुल्लित होते हे ॥ जेसें नील कमल अरु रक्त कमल सूर्य करी प्रफुल्लित होते हे तेसें आत्माकरी अंधकार अरु प्रकाश दोनों सिद्ध होते हे ॥ हे मुनीश्वर त्रिलोकीरूपी धूड चैतन रूपी वायु करी उडती हे ॥ जेते कछू जगत्के आरंभ हे तिन सर्वकों चैतनरूपी दीपक प्रकाश करता हे ॥ जेसें जलके सिंचणे करी वल्ली प्रफुल्लित होती हे ॥ अरु फूल फलकों प्रगट करती हे तेसें चैतन सत्ता सर्व पदार्थकों प्रगट करती हे ॥ सबकों सत्ता दे करी सिद्धि करती हे ॥ हे मुनीश्वर चैतनहि करी जडकी सिद्धता होती हे ॥ अरु चैतनहि करी जडका अभाव होते हे ॥ जेसें प्रकाशहि करी अंधकार सिद्ध होता हे ॥ अरु प्रकाशहि करी अंधकारका अभाव होता हे ॥ तेसें सर्व देह चैतनकरी सिद्ध होते हे ॥ अरु चैतनहि करी देहोंका अभाव होता हे ॥ चैतनभी उसी करी होता हे ॥ शिवभी उसी करी होता हे ॥ हे मुनीश्वर अेसा पदार्थ कोउ नही जो चैतन विना सिद्ध होवे ॥ जो कोउ पदार्थ हे सो आत्माहि करी सिद्धि होता हे ॥ हे मुनीश्वर शरीररूपी वृछ सुंदर हे बडे उंचे टास सहित हे ॥ परंतु चैतनरूपी मंजरी विना नही सोभता ॥ जेसें रसविना वृछ नही सोभता तेसें चैतनविना शरीर नही सोभता॥ बढणा घटणा आदिक जो विकार हे सोभी एक आत्मा करी सिद्ध होते हे ॥ यह जगत् सब चैतनरूप हे ॥ चैतनमात्रहि अपणे आपविषे स्थित हे ॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी जब इस प्रकार अमृतरूपी वाणी करी त्रिनेत्रनें मुझकों कहा ॥ तब में अमृतरूपी भली प्रकार वाणी करी पूछत भया ॥ हे देव जब सर्व गत चैतन देव व्यापक रूप स्थित हे ॥ अरु चैतनहि बडे विस्तारकों प्राप्त भया हे ॥ तब यह प्रथम चैतन था अब यह चैतनतातें रहित हे ॥ यह कल्पनाका सब लोकविषे प्रत्यच्छ अनुभव केसें होता हे ? ॥ ईश्वरोवाच ॥ ॥ हे ब्रह्मवेत्ताविषे श्रेष्ठ महा प्रश्न यह तुझनें किया हे तिसका उत्तर सुण ॥ हे ब्राह्मण इस शरीरविषे दो चैतन स्थित हे ॥ एक चैतन्योन्मुखत्व रूप हे एक निर्विकल्प आत्मा हे ॥ जो चैतन्योन्मुखत्व दृश्य साथ मिल्या हुआ हे सो जीव हे ॥ संकल्पके फुरणे करी अन्यकी न्यांइं हो गया हे ॥ अरु वास्तवतें अवर कछू नही हुआ ॥ परंतु दृश्य संकल्पके अनुभवकों ग्रहण किया हे ॥ तिसकरी जीवरूप हुआ हे जेसें स्त्री अपणे सील धर्मकों त्यागकरी दुराचरणी होती हे ॥ तब सीलता उसकी जाती रहती हे ॥ परंतु स्त्रीका स्वरूप नही जाता ॥ तेसें चैतन्योन्मुखत्व करीकें अनुभव रूपी जीवरूप हो जाता हे ॥ परंतु चैतन स्वरूपका त्याग नही करता जेसें पुरुष संकल्पके वशतें एक क्षणविषे अवर रूप हो जाता हे ॥ तेसें चित्तसत्ता फुरणे भाव करीकें अन्यरूप हुइ हे ॥ जेसें जल दृढ जडता करीके पथ्थरवत् हो जाता हे तेसें चैतनकला जीवरूप भइहे ॥ हे मुनीश्वर आदि जो चित्त स्पंद चित्कलाविषे हुआ हे ॥ तब शब्दके चैतणेतें आकाश हुआ ॥ बहुरी स्पर्श तन्मात्राका चेतणा हुआ तब वायु प्रगट भये ॥ इसी प्रकार पंच तन्मात्राके फुरणे करी पंच तत्व हुए ॥ बहुरी देश आदिकका विभाग हुआ ॥ तिस विषे जीव प्रतिबिंबित भया ॥ बहुरी निश्चय वृत्ति हुइ तिसका नाम बुद्धी हुआ॥ बहुरी अहंवृत्ति फुरी तिसका नाम अहंकार हुआ ॥ बहुरी संकल्प विकल्प वृति फुरी तिसका नाम मन हुआ ॥ चिंतवना करिकें चित्त हुआ ॥ बहुरी संसारकी भावना हुइ तब संसारका अनुभव हुआ ॥ अभ्यासके वशतें संसार भासणे लागा ॥ जेसें विपर्यय भावना करिकें ब्राह्मण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपकों चंडाल जाने ॥ तेसें भावनाके विपर्यय करी आपकों जीव मानणे लागा हे ॥ संकल्पकी जडता करिकें चेतन रूपी जीवकों ग्रहन करी संकल्प विषे वर्तता हे ॥ अनंत संकल्पतें जडता तीव्रताकों प्राप्त हो करि जडभावकों ग्रहण करी देहभावकों प्राप्त होता हे ॥ जेसें जल दृढ जडताकरिकें बरफरूप हो जाता हे ॥ तेसें चैतन अनंत संकल्प करिकें जड देह भावकों प्राप्त होता हे ॥ तब चित्त मन मोहित हुआ जडताकों आश्रय करिकें संसार विषे जन्म लेता हे ॥ मोहकों प्राप्त हुआ तृष्णा करिकें पीडित होता हे ॥ काम क्रोध संयुक्त भाव अभावविषे प्राप्त होता हे ॥ अपणी अनंतताकों त्यागी करी प्रछन्न व्यवहार विषे वर्तता हे ॥ दुःखदायक अग्नि करि तप्त हुआ शून्य भावकों प्राप्त होता हे ॥ भेद भावकों ग्रहण करिकें महादीन हो रहता हे ॥ हे मुनीश्वर मोहरूपी जो गरत हे तिसविषे जीवरूपी हस्ति फस्या हे ॥ भाव अभाव करि सदा डोलायमान होता हे ॥ जेसें जलविषे तृण भमता हे ॥ तेसें असाररूप संसारविषे विकार संयुक्त राग द्वेष करी तपता रहता हे ॥ शांतिकों कदाचित् नही प्राप्त होता ॥ जेसें जूथतें बिछुरा एक मृग कष्टवान होता हे ॥ तेसें आवरण भाव जन्म मरण करि कष्टवान होता हे अपणे संकल्प करि आपहि भय पावता हे ॥ जेसें बालक अपणे पछावे विषे वैताल कल्पि करि आपही भय पावता हे ॥ तेसें जीव अपणे संकल्प करि आपही भयभीत होता हे ॥ अरु संकटकों पावता हे ॥ आशारूपी फांसी करी बांधा हुआ कष्टतें कष्टकों पावता हे कर्म करिकें तपायमान हुआ अनेक जन्म पावता हे अरु भयविषे रहता हे॥ बालक होता हे तब महादीन परवश होता हे बहुरी जोबन अवस्थाविषे कामादिकके वश हुआ स्त्रीविषे चित्त रहता हे अरु वृद्ध अवस्था विषे चिंताकरी मग्न होता हे ॥ दुःख कष्टपडा पावता हे ॥ जब मृतक होता हे तब कर्मोंके वश चल्या जाता हे ॥ बहुरी जन्मता हे ॥ गर्भविषे दुःख पावता हे ॥ बहुरी बालक जोवन वृद्ध अरु मृतक अवस्थाकों पावता हे इसी प्रकार भटकता हे स्वरूपतें गिर्या हुआ स्थिर कदाचित् नही होता ॥ हे मुनीश्वर एक चित्त सत्ता स्पंदभाव करिकें अनेक भावकों प्राप्त होती हे ॥ कइं दुःख करी रुदन करती हे ॥ कइं दुःख भोगती हे ॥ कइं स्वर्गविषे देवांगना होती हे ॥ पातालविषे नागनी होती हे असुरविषे असुरी राक्षस विषे राक्षसी होती हे ॥ बन कोट बांनरी सिंघइं विषे सिंघी किंनरइं विषे किंनरी हरणों विषे हरणी होती हे ॥ विद्याधरी गंधर्वी देवता विषे देवी इत्यादिक जो रूप धारती हे सो चैत्योन्मुखत्व जीव कला रूप धारती हे ॥ क्षीर समुद्र विषे विष्णुरूप हो करि स्थित होती हे ॥ ब्रह्मपुरीविषे ब्रह्मारूप हो करी स्थित होती हे ॥ पंचमुख हो करी रुद्र रूप स्थित होती हे ॥ स्वर्गविषे इंद्ररूप हो करी स्थित होती हे ॥ तीक्ष्ण कला करी सूर्य रूप दिनका करता होती हे ॥ क्षण दिन मास वर्षकों करती हे ॥ चंद्रमा हो करी रात्रिकों करती हे ॥ काल हो करी नछत्रकों फेरती हे ॥ कइं प्रकाश कइं तम होती हे ॥ कइं बीज कइं पाषाण कइं मनरूप होती हे ॥ कइं नदी हो करी वहती हे कइं फूल हो करी फूलती हे ॥ कइं भंवर हो करी सुगंध लेती हे ॥ कइं फल हो करी दिखावती हे ॥ कइं वायु हो करी चलती हे ॥ कइं अग्नी हो करी जलावती हे कइं बरफ होती हे कइं आकाश हो करी दिखावती हे ॥ हे मुनीश्वर इस प्रकार सर्वात्मा सर्व गत सर्व शक्तता करिकें एकहि रूप चित्त शक्ति आकाशतेंभी निर्मल हे ॥ जेसें चेत्या तेसें हो करी स्थिति भइ हे जेसी जेसी भावना करती हे शीघ्रही तेसा रूप हो जाती हे ॥ परंतु स्वरूपतें इतर कछू नही होती ॥ जेसें समुद्र विषे फेन तरंग हो करी भासता हे परंतु जलतें इतर कछू नही होता जलहि जल हे ॥ तेसें चित्त शक्ति अनेक रूप धारती हे परंतु चैतनतें कछू इतर नही होती ॥ कइं हंस कइं काक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कडुं शूकर मखी चिडी इत्यादिक रूप धारि करी संसार विषे प्रवर्तती हे ॥ जेसें जलविषे आया तृण भमता हे तेसें भमती हे ॥ अरु अपणे संकल्पतें आपही भय पावती हे ॥ जेसें गधेडा अपणे शब्द करी आपही पडा दउडता हे ॥ अरु भय पावता हे तेसें जीव अपणे संकल्प करिकें आपहि भय पावता हे ॥ हे मुनीश्वर जीव शक्तिका आचार मैंनें तुझकों कहा हे इस आचारकों ग्रहण करिकें बुद्धि नीच पशु धर्मणी हुइ हे ॥ स्वरूपके प्रमाद करिकें जेसा जेसा संकल्प करती हे तेसी तेसी कर्म गतिकों प्राप्त होती हे॥अरु सोकवान होती हे अनंत दुःखकों प्राप्त होती हे ॥ अपणी चैत्यता करिकें मलिन होती हे ॥ जेसें चावलका स्वरूप तुष करी आवर्या जाता हे ॥ अरु बडे संतापकों प्राप्त होता हे बहुरी बहुरी बोता हे बहुरी उगता काटता हे तेसें स्वरूपके आवरण करिकें जीवकला दुर्भागता जन्म मरण दुःखकों प्राप्त होती हे ॥ जेसें भर्त्तारतें रहित स्त्री सोकवान होती हे ॥ तेसें इह कष्टकों पावती हे ॥ हे मुनीश्वर जड जो हे दृश्य अनात्म रूप तिस साथ प्रीति करणे करी अरु निज स्वरूपके विस्मरण करि आशारूपी फांसी साथ बांधा हुआ चित्त जीवकों नीच योनीविषे प्राप्त करता हे ॥ जेसें घटी जंत्रके टींद कबहु अधकों जाते हे ॥ कबहु ऊर्धकों जाते हे तेसें जीव आशाके वस हुआ कबहुं पाताल कबहुं आकाशकों जाता हे ॥

॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे वसिष्ठेश्वरसंवादे चैतन्योन्मुखत्व विचारोनाम एकोनत्रिंशत्तमःसर्गः ॥ २९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ ईश्वरोवाच ॥ हे मुनीश्वर स्वरूपके विस्मरण करिकें इस प्रकार होता हे ॥ जो मैं हंता हों मैं दुःखी हों सो अनात्माविषे अहं प्रतीति करिकें दुःखका अनुभव करता हे ॥ जेसें सुपन विषे पुरुष आपकों पर्वततें गिरता देखता हे दुःखी होता हे अरु मृतक हुआ आपकों देखता हे ॥ तेसें स्वरूपके प्रमाद करिकें अनात्मविषे आत्मअभिमान करिकें दुःखी आपकों देखता हे ॥ हे मुनीश्वर शुद्ध चैतन तत्वविषे जो चित्तभाव हुआ हे ॥ सो चित्तकला फुरणे करी जगत्का कारण हुआ हे ॥ तिस करि जगत होता गया हे परंतु वास्तव स्वरूपतें इतर कछू नही भया ॥ जेसें जेसें चेतती गइ हे तेसें तेसें जगत होता गया हे ॥ उह चित्तका कारण रूपभी नही भया जब कारणहि नही भया तब कार्य किसकों कहियें ॥ हे मुनीश्वर न उह चित्त हे न चैतन हे ॥ न चेतणेवाली हे ॥ न द्रष्टा हे न दृश्य हे न दर्शन हे ॥ जेसें पथ्थरविषे तेल नही होता सो न कारण हे न कर्म हे ॥ न करण इंद्रियां हे ॥ जेसें चंद्रमाविषे सामता नही होती न मन हे न मानणेजोग दृश्य वस्तु हे ॥ जेसें आकाशविषे अंकुर नही होता ॥ न अहंता हे न तुं हे न दृश्य हे जेसें शंखकों सामता नही होती ॥ हे मुनीश्वर न नाना हे न अनाना हे ॥ जेसें अणुविषे सुमेर नही होता ॥ न शब्द हे न शब्दका अर्थ हे ॥ जेसें मारुथलविषे वल्ली नही होती ॥ न वस्तु हे न अवस्तु हे जेसें बरफविषे उष्णता नही होती ॥ न शून्य हे न अशून्य हे ॥ न जड हे न चैतन हे ॥ जेसें सूर्यमंडलविषे अंधकार नही होता ॥ हे मुनीश्वर इत्यादिक शब्द अरु अर्थकी कल्पना उसविषे कछू नही ॥ जेसें अग्निविषे सीतलता नही होती ॥ केवल केवलीभाव अद्वैत चिन्मात्र तत्व हे ॥ स्वरूपतें किसीकों कछूभी दुःख नही ॥ हे मुनीश्वर जगत्कों असत जाणि करी अभावना करणी ॥ अरु आत्मकों सत जाणीकरी भावना करणी ॥ इस भावना करी सर्व अनर्थ निवृत्त हो जाते हे ॥ सो अवर किसीकरि प्राप्त नही होता अपणे आपहि करी प्राप्त होता हे ॥ अरु अनादिहि सिद्ध हे ॥ जब तिसकी उर भावना होती हे तब भ्रम सब मिटि जाता हे ॥ जब अनात्मभावना होती हे तब पावणा कठिण होता हे ॥ जतन विना उह केसें पावे ॥ जो जतन साथ हे सो जतन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विना नही पाया जाता ॥ आत्मा केसा हे निर्विकल्प हे अद्वैत हे सर्वतें अतीत हे सो अभ्यास विना केसें पाइयें ॥ आत्मतत्व परम हे ॥ एक हे स्वछ हे ॥ तेजकाभी प्रकाशक हे ॥ सर्वगत निर्मल नित्य हे ॥ सदा उदित निर्मन शक्ति रूप हे ॥ निर्विकार निरंजन हे ॥ सो घटपट बट वछ विषे गादीविषे बांनर विषे दैत देवता समुद्रविषे हस्ति विषे ॥ इत्यादिक स्थावर जंगम रूप जेता कछू जगत् हे ॥ सो सर्व विषे एक आत्मतत्व साक्षी रूप हो करी स्थित हे ॥ दीपकवत् सर्वकों प्रकाशता हे ॥ अरु सर्व कियातें अतीत हे ॥ अरु तिसीकरी सर्व कार्य सिद्धि होती हे सर्व क्रिया संयुक्त भासता हे ॥ अरु सर्व विकल्पतें रहित जडवत्भी भासता हे ॥ परंतु परम चैतन हे ॥ सर्व चैतनका सार चैतन हे ॥ निर्विकल्प परम सूक्ष्म हे ॥ अरु अपणे आपविषे किंचन हो भासता हे ॥ अरु अपणे प्रमाद करिकें रूप अवलोक मनस्कार त्रिपुटी भासती हे ॥ जब बोध होता हे तब ज्योंका त्यों आत्मा भासता हे ॥ नित्य शुद्ध निर्मल परमानंदरूप हे ॥ तिसके प्रमाद करिकें चित्त भावकों प्राप्त होता हे ॥ जेसें साधभी दुर्जनके संग करी असाध हो जाते हे ॥ तेसें अनात्माके संगकरी यह नीचताकों प्राप्त होता हे जेसें सोना धातुकी मिलवनी करी खोटा हो जाता हे॥जब सोधना करता हे तब शुद्धताकों प्राप्त होता हे॥तेसें अनात्मके संग करी यह जीव दुःखी होता हे॥जब अभ्यास जतन करिकें अपणे शुद्ध रूपकों पावता हे॥तब उही रूप होए जाता हे॥जेसें मुखके स्वास करी दर्पण मलीन हो जाता हे॥तब उसविषे मुख नही भासता ॥ जब मलिनता निवृत्त होती हे ॥ तब शुद्ध होता हे तिसविषे मुख स्पष्ट भासता हे ॥ तेसें चित्त संवेदनके प्रमादतें फुरणे करी जगत् भ्रम भासणे लागता हे ॥ अरु आत्मा स्वरूप नही भासता॥जब यह जगत् सत्ता फुरणे सहित दूर होवेगी तब आत्मतत्व भासेगा ॥ जगत्की असत्यता भासेगी ॥ हे मुनीश्वर जब शुद्ध संवितविषे चैतनताका फुरणा विवृत्त होता हे ॥ तब अहंता भावकों प्राप्त होता हे ॥ जब अहंकार कों प्राप्त भया तब अविनाशी रूपकों विनाशी जाणता हे ॥ हे मुनीश्वर स्वरूपतें कछूभी उत्थान होता हे ॥ तिसकरि स्वरूपतें गिरकें कष्ट पावता हे ॥ जेसें पहाडतें गिर्या अथचला जाता हे अरु चूरण होता हे ॥ तेसें स्वरूपतें उत्थान हुआ अरु अनात्माविषे अभिमान अहं प्रतीत हुई तब अनेक दुःखहूकों प्राप्त होता हे ॥ हे मुनीश्वर सर्व पदार्थका सत्ता रूप आत्मा हे ॥ तिसके अज्ञान करिकें दैवत्व भावकों प्राप्त हुआ हे ॥ जब तिसका बोध होवे तब दैवत भाव निवृत्त हो जावेगा ॥ सो आत्मा शुद्ध चिन्मात्र स्वरूप हे तिसकी सत्ता करिकें देह इंद्रियादिकभी चैतन होते हे ॥ अरु अपणे अपणे विषयकों ग्रहण करते हे ॥ जेसें सूर्यके प्रकाश करी सब जगत्का व्यवहार होता हे ॥ प्रकाशबिना व्यवहार नही होता ॥ तेसें आत्माकी सत्ता करिकें देह इंद्रियादिकका व्यवहार होता हे ॥ अपणे अपणे विषयकों ग्रहण कर लिया हे ॥ हे मुनीश्वर प्राणवायुकों लिये जो नेत्रहुं विषे सुख श्यामता हे ॥ सो अपणे आपविषे रूपकों ग्रहण करती हे ॥ तिसका बाह्य विषय साथ संजोग होता हे ॥ तिस रूपका जिसविषे अनुभव होता सो परम चैतन सत्ता हे ॥ त्वचा इंद्रिया अरु स्पर्शविषे जब संजोग होता हे ॥ इन जडहुंका जिस करी अनुभव होता हे सो साक्षीभूत परम चैतन सत्ता हे ॥ अरु नासिका इंद्रियका जब गंध तन्मात्रा साथ संजोग होता हे॥तिसके संजोगविषे जो अनुभव सत्ता हे सो परम चैतन हे ॥ इसी प्रकार शब्द स्पर्श रूप रस गंध यह जो पांचो विषय हे ॥ अरु श्रोत्र नेत्र त्वचा रसना नासिका पांचोंइंद्रिय साथ मिलि करि इनके जानणे वाला साक्षीभूत परम चैतन आत्मतत्व हे ॥ सो सुख संवित परम चैतन कहाता हे ॥ अरु जो बहिरमुख फुरि करि दृश्य साथ मिल्या हे सो मलीन चित्त कहाता हे ॥ अरु जब उहि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मलीन रूप अपणे शुद्ध स्वरूपविषे स्थित होता हे तव शुद्ध होता हे ॥ हे मुनीश्वर इह जगत् सब आत्मा स्वरूप हे ॥ शिला घनकी न्यांइं अद्वैत सर्व विकारतें रहित हे ॥ न उदे होता न अस्त होता हे संकल्पके वसतें जीव भावकों प्राप्त होता हे ॥ संकल्पके निवृत्त हुए परमात्म रूप हो जाता हे ॥ हे मुनीश्वर आदि जो चित्त कला फुरी हे सो जीवरूपी रथ पर आरूढ हुए हे ॥ अरु जीव अहंकार रूपी रथपर आरूढ हुआ हे॥ अहंकार बुद्धी रूपी रथपर आरूढ हे॥अरु बुद्धी मन रूपी रथपर आरूढ हे॥मन प्रान रूपी रथपर चढ्या हे॥अरु प्राण इंद्रिया रूपी रथपर चडे हे ॥ इंद्रियका रथ देह हे ॥ अरु देहका रथ पदार्थ हे ॥ जो कर्म करती हे कर्मद्वं करी जरा मरण रूपी संसार पिंजरे विषे भमती हे॥इस प्रकार चक्र वर्त्तता हे॥तिसविषे जीव प्रमाद करिकें पडा भटकता हे॥हे मुनीश्वर यह चक्र आत्माका आभास विरूप हे॥जेसें सुपन पुरविषे नाना प्रकारके पदार्थ भासते हे॥सो वास्तव कछू नही ॥तेसें इह जगत् वास्तव कछू नही ॥ जेसें मृगतृष्णाकी नदी भ्रम करिकें भासती हे ॥ तेसें इह जगत् भ्रम करिकें भासता हे ॥ हे मुनीश्वर मनका रथ प्राण हे ॥ जब प्राणकला फुरणेतें रहित होती हे ॥ तब मनभी स्थित हो जाता हे ॥ प्राणके स्थित हुए मनका मनन शांत हो जाता हे॥ अरु जब प्राणकला फुरती हे तब मनका मननभी फुरता हे ॥ प्राणकला स्थित भइ तब मनन निवृत्त हो जाता हे ॥ जेसें प्रकाश बिना पदार्थ नही भासते ॥ जेसें वायुके शांत हुए धूड उडणेतें रहि जातीहे तेसें प्राणके फुरणेतें रहित मन शांत होता हे ॥ जेसें जहां पुष्प होते हे तहां गंधभी होती हे जहां अग्नी हे तहां उष्णताभी होती हे ॥ तेसें जहां प्राणस्पंद होता हे तहां मनभी होता हे ॥ रिदेविषे जो नाडी हे तिसविषे प्राण स्वतः फुरते हे ॥ तिस करी मनन होता हे ॥ संवित जो हे स्वछरूप सो जड अजड सर्वत्र भासती हे ॥ अरु संवेदन प्राणकलाविषे फुरती हे ॥ हे मुनीश्वर आत्मसत्ता सर्वत्र अनुस्यूत हे ॥ परंतु जहां प्राणकला होती हे तहां भासती हे जहां प्राणकला नही तहां नही भासती ॥ जेसें सूर्यका प्रकाश सर्व ठोरविषे होता हे ॥ परंतु जहां उज्वल स्थांन जल अथवा दर्पण होता हे ॥ तहां प्रतिबिंब भासता हे ॥ अवर ठोर नही भासता ॥ तेसें आत्मसत्ता सर्वत्र हे ॥ परंतु जहां प्राणकला पुर्यष्टक होती हे ॥ तहां भासती हे ॥ अवर ठोर नही भासती ॥ जेसें दर्पणविषे मुखका प्रतिबिंब भासता हे ॥ शिलाविषे नही भासता ॥ तेसें पुर्यष्टका जो मन रूप हे सर्वका कारण हे॥अहंकार बुद्धी इंद्रियां सो तिसीके भेदहे जो आपहि करि कल्पित हे ॥ सर्व दृश्य जाल तिसहि करी उद होते हे अवर वस्तु कोउ नही यह भली प्रकार अनुभव किया हे तातें मनही देहादिककों प्रवर्त्तताहे ॥ सो परमतत्व वस्तु तिसहिविषे भासता हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे ईश्वरो पाख्याने मनप्राणोक्त प्रतिपादनं नाम त्रिंशत्तमःसर्गः ॥ ३० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ईश्वरोवाच ॥ हे मुनीश्वर आत्मसत्ताविना जीव कंधवत् होता हे ॥ अरु आत्मसत्ताते चैतन हो करी चेष्टा करता हे ॥ जेसें चुंबक पाषाणकी सत्तातें जड लोहा चेष्टा करते हे तेसें सर्वगत आत्माकी सत्ता करी जीव फुरता हे ॥ अरु आत्मसत्ताभी जीव क लाविषे भासता हे ॥ अवर ठोर नही भासता ॥ जेसें मुखका प्रतिबिंब दर्पणविषे भासता हे ॥ अवर ठोर नही भासता ॥ तेसें परमात्मा सर्वगत सर्व शक्तभी हे परंतु भासता जीव कलाहि विषे हे ॥ हे मुनीश्वर शुद्ध वास्तव स्वरूपतें जो इस जीवकलाका उत्थान हुआ हे ॥ अरु दृश्यकी उर वही हे ॥ तिसकरी चित्त भावकों प्राप्त भइहे ॥ जेसें शूद्रहूंकी संगति करीकें ब्राह्मणभी आपकों शूद्रमानणे लगता हे॥ तेसें स्वरूपके प्रमाद करीकें जीवकला आपकों चित्त दृश्यभाव जानणे लागी हे ॥ अज्ञान करीकें आछाद्या जीव महादीन भावकों प्राप्त हुआ हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जड देहके अध्यास करी कष्ट पावता हे ॥ काम क्रोधादिक वातपित्तादिक करी जलता हे ॥ जेसी जेसी भावना होती हे तेसा तेसा कर्म करता हे ॥ तिन कर्मकी भावना साथ मिल्या हुआ भटकता हे ॥ जेसें खंभाणी करी चलाया पथ्थर चला जाता हे ॥ तेसें कर्म वासनाका प्रेर्या जीव भमता हे जेसें रथपर आरूढ होकरी रथी चलता हे ॥ तेसें आत्मा मन अरु प्राण कर्मकों दृढ करीकें चलता हे ॥ हे मुनीश्वर चैतनही जड दृश्यकों अंगीकार करीकें जीवत्व भावकों प्राप्त होता हे ॥ मन प्राणरूपी रथपर चडी करी पदार्थकी भावनातें नाना प्रकारके भेदकों प्राप्त हुएकी नांइं स्थित होता हे ॥ जेसें जलहि तरंग भावकों प्राप्त होता हे ॥ तेसें चैतन नाना प्रकार हो करी स्थित होता हे ॥ सो यह जीव कला आत्माकी सत्ताकों पाय करी वृत्तिविषे फुरण रूप होती हे ॥ जेसें सूर्यकी सत्ताकों पाय करी नेत्र रूपकों ग्रहण करते हे ॥ तेसें परमात्माकी सत्ता पाय करी जीव वृत्तिविषे फुरता हे ॥ परमात्म चिदतत्वविषे जो स्थित हे तिसकरी फुरण रूप जीवता हे ॥ जेसें घरविषे दीपक होता हे तब प्रकाश होता हे ॥ दीपकबिना प्रकाश नही होता ॥ अपणे स्वरूपकों भुलाय करी जो जीव दृश्यकी उर लगा हे इस कारणतें आधिव्याधि करी दुःखी होता हे ॥ जेसें कमल डोडी साथ लगता हे ॥ तब भमरे आनि स्थित होता हे ॥ तेसें जब जीव दृश्यकी उर लगता हे ॥ तब दुःख आनि स्थित होते हे ॥ तिसकरी जीव दीन हो जाता हे जेसें जल तरंग भावकों प्राप्त होता हे ॥ जेसें घुराण अपणि क्रिया करी आप बंधायमान होती हे ॥ जेसें बालक अपणे पछावेकों देखी करी आपहि अविचारतें भय पावता हे ॥ तेसें अपणे सरूपके प्रमादकरीकें आपहि दुःख पावता हे ॥ अरु दीनताकों प्राप्त होता हे ॥ हे मुनीश्वर चिदशक्ति सर्वगत अपणा आप हे तिसकी अभावना करीकें दीनताकों प्राप्त हुआ हे जेसें सूर्य बदलकरी अछाद्या जाता हे ॥ तेसें मूढताकरीकें आत्माका आवरण हुआ हे ॥ जब प्राणोंका अभ्यासकरे तब जडता निवृत्त होवे ॥ अपणा आप आत्मा स्मरन होवे ॥ जिनकि वासना निर्मल भइ हे रिदेतें दूर नही होती॥सो स्थिर हूइ एक रूप हो जाती हे॥तब जीव जीवन्मुक्त हो करी चिर पर्यंत जीवता हे॥ रिदे कमलविषे प्राणोकों रोकीकरी शांतिकों प्राप्त होता हे ॥ जेसें काष्ट लोष्ट होता हे ॥ तेसें देह गिर पडती हे ॥ तब पुर्यष्टका आकाशविषे लीन हो जाती हे ॥ जेसें आकाशविषे पवन लीन होता हे ॥ तेसें तिसका मन पुर्यष्टका तहांही लीन हो जाती हे ॥ हे मुनीश्वर जिनकी वासना शुद्ध नही भइ ॥ सो मृत्युकालविषे तिनकी पुर्यष्टका आकाशविषे स्थित होती हे ॥ तिसके अनंतर बहुरी फुरी आती हे ॥ वासनाके अनुसार स्वर्गनरककों देखणे लागता हे ॥ जब शरीर मन पवनतें रहित हुआ तब शून्यरूप हो जाता हे ॥ जेसें पुरुष घरकों त्याग करी दुर जाय रहता हे ॥ तेसें शरीरकों त्याग करी मन अरु प्रान अवर ठोर जाय रहते हे ॥ तब शरीर शून्य हो जाता हे ॥ हे मुनीश्वर चिदसत्ता सर्वत्र हे ॥ परंतु जहां जीव पुर्यष्टका होती हे तहां भासती हे ॥ चैतनताका अनुभव होता हे ॥ अवर ठोर नही होता ॥ हे मुनीश्वर जब यह जीव शरीरकों त्यागता हे ॥ तब पंच तन्मात्राकों ग्रहण करिकें संग लेजाता हे ॥ जहां इसकी वासना होती हे तहां जाय प्राप्त होता हे ॥ तब प्रथम इसका अंतवाहक शरीर होता हे ॥ बहुरी दृश्यके दृढ अभ्यास करी स्थूल भावकों प्राप्त हो जाता हे ॥ अंतवाहकता विस्मरण हो जाती हे ॥ जेसें सुपनेविषे भम करी स्थूल आकार देखता हे ॥ तेसें मोहकरीकें मरता हे तब अपणे साथ स्थूल आकार देखता हे ॥ बहुरी स्थूल देहविषे अहंप्रतीत करता हे ॥ तिस साथ मिलि करी क्रिया करता हे ॥ तब असत्यकों सत्य जाणता हे ॥ अरु सत्यकों असत्य जाणता हे ॥ इस प्रकार भमकों प्राप्त होता हे ॥ जब सर्वगत चिदंश करी जीव मन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होता हे ॥ तब जगत् भावकों प्राप्त होता हे ॥ जब देहसों पुर्यष्टका निकसती हे ॥ तब आकाशविषे जाय लीन होती हे ॥ तब देह फुरनेतें रहित होती हे ॥ तिसकों मृतक कहते हे ॥ अपणे स्वरूप शक्तिकों विस्मरण करीकें जर्जरी भावकों प्राप्त होता हे ॥ जब जीव शक्ति रिदे कमलविषे मूर्छित होती हे ॥ प्राण रोके जाते हे ॥ तब यह मृतक होता हे बहुरी जन्म ले जाता हे ॥ बहुरी मरी जाता हे ॥ हे मुनीश्वर जेसें वृछ साथ पत्र लगते हे ॥ काल पाय करी नष्ट हो जाते हे बहुरी नौतन लगते हे ॥ तेसें यह जीव शरीरकों धारता हे ॥ उह नष्ट हो जाता हे बहुरी अवर शरीर धारता हे ॥ उहभी नष्ट हो जाता हे ॥ जो वृछके पत्रडुंकी नांइं उपजते अरु नष्ट होते हे तिनका शोक करणा व्यर्थ हे ॥ हे मुनीश्वर चैतन रूपी समुद्रविषे शरीररूपी तरंग बुदबुदे अनेक उपजते हे अरु नष्ट होते हे ॥ तिनका शोक करणा व्यर्थ हें ॥ जेसें दर्पणविषे अनेक पदार्थका प्रतिबिंब होता हे ॥ सो दर्पणतें इतर कछू नही ॥ तेसें चैतन विषे अनेक पदार्थ भासते हे॥ सो चैतत निर्मल आकाशकी नांइं विस्तीर्ण रूप हे तिसविषे जो पदार्थ फुरते हे सो अनन्यरूप हे विधि शरीरभी उहि रूप हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे ईश्वरोपाख्याने देहपातविचारोनाम एकत्रिंशत्तमःसर्गः ॥ ३१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे अर्धचंद्रधारी जो चैतन तत्व परमात्मा पुरुष हे सो अनंत एकरूप हे ॥ तिसकों यह द्वैत कहांतें प्राप्त भया हे अरु भूतभविष्यत काल कहांतें दृढ हो रहाहे ? ॥ एकविषे अनेकता कहांते प्राप्त भइ हे अरु बुद्धिवान दुःखकों केसें निवृत्त करते हे ॥ अरु केसें निवृत्त होता हे? ॥ ईश्वरोवाच ॥ हे ब्राह्मण ब्रह्म चैतन सर्व शक्त हे ॥ जब उह एकहि अद्वैत होता हे तब निर्मलताकों प्राप्त होता हे ॥ एकके भाव करी द्वैत कहाता हे ॥ द्वैतकी अपेक्षा करी एक कहाता हे ॥ सो दोनों कल्पना मात्र हे ॥ जब चित्त फुरता हे तब एक अरु दोनोकी कल्पना होती हे ॥ चित्त स्पंदके अभाव हुए अरु दोनोकी कल्पना मिटि जाती हे ॥ अरु कारण करी जो कार्य भासता हे सोभी एकरूप हे जेसें बीजतें लेकरी फल पर्यंत वृछका विस्तार हे सो एकरूप हे अरु बढणा घटणा उसविषे कल्पना होती हे ॥ तेसें चैतनविषे चित्त कल्पना होती हे तब जगत्रूप हो भासता हे परंतु तिस कालविषेभी उहि रूप हे ॥ हे मुनीश्वर वृछके समेभी वस्तु बीज एकरूप हे ॥ कछू अवर नही हुआ परंतु बीज फुरता हे तब वृछ हो भासता हे ॥ तेसें जब शुद्ध चैतनविषे चैतनकलना फुरती हे तब जगत्रूप हो भासता हे ॥ हे मुनीश्वर यह जो कारण कार्य विकार रूप जगत् भासता हे सो असम्यक् दृष्टि करी भासता हे जेसें जलविषे तरंग भासते हे सो जलरूप हे ॥ जलतें इतर कछू नही ॥ जेसें ससेके सिंग असत हे ॥ जेसें जलविषे द्वैत तरंग कलना असत हे अज्ञानकरीकें भासते हे ॥ तेसें आत्माविषे अज्ञान करीके जगत् भासता हे ॥ जेसें द्रवता करीकें जलहि तरंग रूप हो भासता हे ॥ तेसें फुरणे करी आत्मतत्व जगत् रूप हो भासता हे ॥ अवर द्वैत कछू नही ॥ चैतनरूपी वल्ली पसरी हे ॥ तिसविषे पत्र फूल फल एकहि रूप हे ॥ जेसें एक वल्ली अनेक रूप हो भासती हे ॥ तेसें एकहि चैतन अहं त्वं देसकाल आदिक विकार हो करी भासता हे ॥ सो उहि रूप हे ॥ हे मुनीश्वर जब सवहि चैतन हे तब तेरे प्रश्नका अवसर कहां होवे देशकाल क्रिया नीति आदिक जो शक्ति पदार्थ हे सो एकहि चिदात्मा हे ॥ जेसें जलविषे जब द्रवता होती हे तब तरंग रूप हो भासता हे ॥ तिसका नाम तरंग होता हे ॥ तेसें ब्रह्मविषे जगत् फुरता हे ॥ तब अहं त्वं आदिक नाना प्रकारके नाम होते हे ॥ परम ब्रह्म शिव परमात्माचैतन सत्ता द्वैत अद्वैत आदिक नामभी फुरणे करीके कहते हे ॥ जो इन नामतें अतीत हे सो वाणीकाविषय नही ॥ ऐसा निर्विकल्प

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निर्विषय तत्व हे सो सदा अपणे आपविषे स्थित हे ॥ इह जगत् जो कछू भासता हे ॥ सोभी उहि चतनतत्व हे ॥ जेसें वल्ली फूल पत्र हो करी पसरती हे ॥ तेसें चैतन सर्व रूप हो करी पसरता हे सो उही रूप हे ॥ हे मुनीश्वर महा चैतनविषे जब किंचन होता हे तब जीवरूप हो करी स्थित होता हे ॥ आगें द्वैत कलनाकों देखता हे ॥ जेसें सुपनेविषे अपणा स्वरूप त्याग करी अवर प्रछन्न वपुकों धारता हे ॥ अरु आगें द्वैतरूप जगंद्कों देखता हे ॥ जब जागता हे तब अपणे अद्वैत रूपकों देखता हे ॥ परंतु जागे बिनाभी द्वैत कछू हुआ नही ॥ तेसें इह जाग्रत जगत्भी कछू हुआ नही भम करी भासता हे ॥ जब इह जीव अपणे वास्तव स्वरूपकी उर सावधान होता हे ॥ तब तिसके अभ्यास करी उहि रूप हो जाता हे ॥ हे मुनीश्वर इस जीवका जो आदि वपु हे सो अंतवाहक हे ॥ संकल्पहि तिसका रूप होता हे ॥ जब तिसविषे अहंभावना तीव्र होती हे ॥ तब उहि अधिभूतक हो करी भासता हे ॥ तिस विषे सत्यता दृढ हो जाती हे ॥ तिसकी सत्यता करी राग द्वेषसों क्षोभायमान होता हे ॥ जब काक तालीयवत् अकस्मात्तें रिदेविषे विचार आनि उपजता हे ॥ तब संकल्परूपी आवरण दुर हो जाता हे ॥ अरु अपणे वास्तव स्वरूपकों प्राप्त होता हे ॥ जेसें बालक अपणे पछावेविषे वैताल कल्पि करी भयकों पावता हे ॥ तेसें इह जीव अपणे संकल्प करीकें आपहि भय पावता हे ॥ हे मुनीश्वर इह जेता कछू जगत् भासता हे ॥ सो सब संकल्प मात्र हे ॥ जेसा संकल्प इसके रिदेविषे दृढ होता हे ॥ तेसाहि भासणे लागता हे ॥ प्रत्यक्ष देख जो पुरुष कछू कार्य करता हे तब सो कर्तृत्व भाव तिसके रिदेविषे दृढ होता हे ॥ बहुरी कहता हे यह कार्य में न करों ॥ जब यहि संकल्प दृढ होता हे तब उस कार्यतें आपकों अकर्ता जाणता हे तेसें दृश्यकी भावना करी जगत् सत्य दृढ होगया हे जब दृश्यका संकल्प निवृत्त करता हे अरु आत्मभावनाविषे जुडता हे तब जगत् भ्रम निवृत्त हो जाता हे ॥ आत्माहि भासता हे ॥ हे मुनीश्वर परमार्थतें कछू द्वैत हें ही नही सब संकल्प रचना हे संकल्प करी रचा जो दृश्य सो संकल्पके अभावतें अभाव हो जाता हे ॥ जेसें मनोराज गंधर्व नगर मनकरी रचित होता हे ॥ बहुरी संकल्पके अभाव हुएतें अभाव होता हे ॥ तब क्लेश कछू नही रहता ॥ हे मुनीश्वर इह जगत संकल्पकी पुष्टता करीकें जीव दुःखका भागी होता हे ॥ जेसें सुपनेविषे संकल्पकरीकें दुःखी होता हे ॥ इस संकल्पमात्रकी इछा त्यागणेविषे क्या कृपणता हे अरु सुपनेविषे जो सुख भोगता हे सो सुखभी कछू वस्तु नही भममात्र हे ॥ तेसें इह सुख भ्रम मात्र हे ॥ हे मुनीश्वर संकल्प विकल्पनें इसकों दीन किया हे ॥ जब संकल्प विकल्पकों त्याग करता हे ॥ तब चित्त अचित्त हो जाता हे ॥ अरु परम उंच पदविषे बिराजमान होता हे॥ जिस पुरुषनें विवेकरूपी वायुकरी संकल्परूपी मेघकों दूर किया हे ॥ सो परम निर्मलताकों प्राप्त होता हे ॥ जेसें शरत्कालका आकाश निर्मल होता हे ॥ तेसें संकल्प विकल्परूपी मलतें रहित उज्वलभावकों प्राप्त होता हे ॥ संकल्पके त्यागेतें जो पाछें सेष रहता हे ॥ सो सत्तामात्र परमानंद तेरा स्वरुप हे ॥ हे मुनीश्वर आत्मा सर्वशक्तिरूप हे जेसी भावना होती हे ॥ तेसाहि अपणी भावनाकरी देखता हे तातें सब संकल्प मात्र हे भम करिकें उदे हुआ हे संकल्पके लीन हुए सब लीन हो जाता हे ॥ हे मुनीश्वर संकल्प रूपी लकडी अरु तृष्णा रूपी घृत करिकें जन्मरूपी अग्निकों इह जीव बढावता हे॥ तिसकरी अंत कदाचित् नही होता॥जब असंकल्प रूपी वायु करी अरु जल करी इसका अभाव करे तब शांति हो जाती हे॥ जेसें दीपक निर्वाण हो जाता हे तेसें जन्मरूपी अग्निका अभाव हो जाता हे ॥ अरु संकल्प रूपी वायु करी तृणकी न्यांइं भमता हे ॥ हे मुनीश्वर तृष्णा रूपी करजुएकी वल्ली हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिसकों संकल्प रूपी जल करी पडा सिंचता हैं ॥ जब असंकल्प रूपी सोषता अरु विचार रूपी खड्ग करी काटे तब तिसका अभाव हो जावे ॥ जो आभास मात्र हे ॥ सो आभासके क्षय हुए अभाव हो जाता हे जेसें गंधर्व नगर होता हे ॥ तेसें इह जगत् असम्यक् ज्ञानकरी भासता हे ॥ सम्यक् ज्ञानकरी लीन हो जाता हे ॥ जेसें कोउ राजा होवे अरु सुपने विषे रंक हो जावे ॥ पूर्वका स्वरूप विस्मरण हो जावे अरु दीनताकों प्राप्त होवे ॥ जब पूर्वका स्वरूप स्मरण आवे ॥ तब आपकों राजा जाणे ॥ अरु दुःख मिटी जावे ॥ निरदुःख पदकों प्राप्त होवें ॥ तेसें इस जीवकों अपणा वास्तव पूर्वका स्वरूप विस्मरण हो गया हे ॥ तिसकरी आपकों प्रछन्न दीन दुःखी जाणता हे ॥ जब स्वरूपका ज्ञान होवे ॥ तब सब दुःखका अभाव हो जावे ॥ जेसें शरब कालका आकाश निर्मल होता हे ॥ तेसें निर्मल हो जावे ॥ जेसें वर्षा कालका मल गयेतें आकाश निर्मल होता हे ॥ तेसें अज्ञान रूपी मलतें रहित जीव निर्मल होता हे शुद्ध पदकों प्राप्त होता हे ॥ जो अेसें जुक्ति करी भावना करता हे ॥ में आत्मा हों एक हों द्वैततें रहीत हों ॥ जब अेसी भावना करेगा ॥ तब सोइ होवेगा ॥ द्वैतका अभाव हो जावेगा ॥ उत्तम पद ब्रह्म देव पुज्य पूजक पूजा किंचित निष्किंचनकी नाइ चित्तएकरूप हो जावेगा ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे ईश्वरोपाख्याने देव प्रतिपादनं नाम द्वात्रिंशत्तमः सर्गः ॥ ३२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ईश्वरोवाच ॥ हे मुनीश्वर देव निरंतर स्थित हे ॥ द्वैत अरु एक पदतें रहित हे ॥ अरु द्वैत एक संयुक्त भी उही हे ॥ संकल्प साथ मिलिकरि चैतनरूप संसारकों प्राप्त भयाहे ॥ अरु जो संकल्प मलतें रहित हे ॥ सो संसारतें रहित हे ॥ जब एसें जाणता हे जो में हो ॥ तब इसी संकल्प करी बंधमान होता हे ॥ जब इसके भावतें मुक्त होता हे ॥ तब सुख दुःखका अभाव हो जाता हे ॥ शुद्ध निरंजन एक सत्ता सर्वात्मा आकाशवत् होता हे ॥ इसीका नाम मुक्ति हे ॥ आकाशवत् व्यापक ब्रह्म होता हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे प्रभो जब मन विषे मन क्षीण होता हे ॥ अरु इंद्रिया मन विषे लीन होतियां हे ॥ द्वितीय अरु तृतीय पद किसकी न्यांइं सेष रहता हे जो महासत्ता आत्मसत्ता सर्वका लीन करता हे सो किसकी न्यांइं हे ? ॥ इश्वरोवाच ॥ हे मुनीश्वर मनकरि जब मन छेदना हे इंद्रियां जिसके अंग हे विचार करिकें अथवा अवर उपासना करिकें जब आत्मबोध इसकों प्राप्त होता हे ॥ तब द्वैत एककी कल्पना नष्ट हो जाती हे जगत जालकीसत्यता नष्ट होजाती हे ॥ तिसके पाछे जो सेष रहता हे सो आत्मतत्व प्रकाशाहे जेसें भूने बीजतें अंकुर नहि उपजता ॥ तेसें जब मन उपसम होता हे तब तिसविषे जगत् सत्ताका अभाव होजाता हे ॥ चैतनसत्ता जो हे सो चित्तसत्ता कों भछन करिलेती हे ॥ जब मनरूपी मेघकी सत्ता नष्ट होती हे ॥ तब शरत् कालके आकाशवत् निर्मल आत्मसत्ता भासती हे ॥ चित्तकी चपलता मिटि जाती हे ॥ तब परम निर्मल पावन चिन्मात्र तत्व प्राप्त होता हे ॥ अवर द्वैत एक भाव अभावरूपी संसार कल्पना मिटि जाती हे ॥ सत्यसत्ता रूप तत्व जो सर्व व्यापक हे अरु संसार समुद्रतें पार करणेंहारा हे सो प्राप्त होता हे ॥ सुषुप्तकी न्यांइं बोधनिर्भय हो जाता हे ॥ शांतिरूप आत्माकों पाइकरी शांतरूप हो जाता हे ॥ हे मुनीश्वर मनकी क्षीणताका प्रथम पद यह तुझकों कहाहे अब दुतीय पद सुण ॥ हे मुनीश्वर जब यह चित्तशक्ती मनके मननतें मुक्ति होती हे ॥ केसी मनन वृत्ति हे जो अनेक उरकों धावती हे ॥ तिसतें जब मुक्ती होता हे तब चंद्रमाके प्रकाशवत् सीतल हो जाता हे ॥ अरु आकाशवत् विस्तृतरूप अपणा आप भासता हे ॥ अरु घन सुषुप्त रूप हो जाता हे ॥ जेसें पथ्थरकी सीला पोलतें रहित होती हे ॥ तेसें दृश्यतें रहित घन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुषुम्न इसका रूप होता हे ॥ लोणवत् रसमय ब्रह्म हो जाता हे ॥ जेसें आकाशविषे शब्द लीन हो जाता हे ॥ तेसें इसका चित्त आत्माविषे लीन हो जाता हे ॥ जेसें वायु चलणेतें रहित अचल होता हे तेसें चित्त अचल हो जाता हे ॥ जेसें गंध पुष्पविषे स्थित होती हे ॥ तेसें चित्त वृत्ति आत्मतत्वविषे विश्रामकों पाती हे ॥ सो आत्मसत्ता केसी हे ॥ न जड हे न चैतन हे ॥ सर्व कलनातें रहित अचैत्य चिन्मात्र हे अंकुर रूप सर्व सत्ताके धारणे हारी देश कालके प्रछेदतें रहित हे ॥ जिसकों उह प्राप्त होती हे ॥ तिसकों तुरियापदभी कहते हे ॥ सर्व दुःख कलंकतें रहित पद हे ॥ तिस सत्ताकों पाइ करी साक्षीकी नांइं स्थित होता हे ॥ सर्वत्र सर्वदा काल सम स्थित हे सर्व प्रकाश उही हे अरु शांतिरूप हे ॥ तिस आत्म सत्ताका जिसकों आत्मतत्व करी अनुभव होता हे ॥ तिसकों दुतीयपद प्राप्त होता हे ॥ हे मुनीश्वर यह दुतीय पद तुझकों कहा हे ॥ अब तृतीय पद श्रवन कर जब वृत्तिका अत्यंत प्रणाम आत्म तत्वविषे होता ॥ तब ब्रह्म आत्मा आदिक नामकीभी तहां निवृत्ति हो जाती हे ॥ भाव अभावकी कलना कोउ नही फुरती ॥ स्थाणुकी नांइं अचल वृत्ति हो जाती हे ॥ परम शांत निष्कलंक तुरियातीत सबतें जो उलंघित पद हे ॥ तिसकों प्राप्त होता हे सो सर्वका अंत अरु सर्व आधार रूप हे ॥ एक अद्वैत नित्य चिन्मात्र तत्व हे ॥ तुरियातेंभी आगें पद हे जिसविषे वाणीकी गम नही ॥ तिस पदकों प्राप्त होता हे ॥ हे मुनीश्वर सर्व कलनातें रहित अतीत पद में तुझकों कहा हे ॥ तिसविषे स्थित होइ सोइ सनातन देव हे अरु विश्वभी उही रूप हे ॥ उही तत्व संवेदनके वसतें अेसें रूप होकरी भासता हे ॥ अरु वास्तवतें न कछु प्रवृत्त हे न कछु निवृत्त हे ॥ समसत्ता प्रकाशरूप अद्वैत तत्व अपणे आपविषे स्थित हे ॥ आकाशवत् निर्मल हे तिसविषे द्वैत एक भ्रमका अभाव हे एक चिद्घन सत्ता पाषाणवत् अपणे आपविषे स्थित हे ॥ तिसविषे अरु जगत्विषे भेद रंचकभी नही ॥ जेसें जल अरु तरंगविषे भेद कछू नही तेसें ब्रह्म अरु जगत्विषे भेद कछू नही ॥ सम सत्यसत्ता शिव शांतिरूप हे अरु सर्व वाणीके विलासतें अतित हे ॥ इसकी चतुर्मात्रा हे तुरिया शांत परम हे ॥ वाल्मीकोवाच ॥ ॥ हे भारद्वाज इस प्रकार जब ईश्वरनें कहा अरु परम शांतिरूप आत्मतत्वका प्रसंग वसिष्ठजीनें श्रवण किया ॥ तब दोनोंकी वृत्ति आत्मतत्वविषे स्थित हो गइ ॥ अरु तूष्णी हो रहे ॥ मानों सूरत लिखि छोडियां हे ॥ एक मूहूर्त पर्यंत चित्तकी वृत्ति अेसें रही बहुरी ईश्वर जाग्या ॥ इतिश्री यो० निर्वाणप्रकरणे ईश्वरोपाख्यानेपरमेश्वरोपदेशोनाम त्रयस्त्रिंशत्तमःसर्गः ॥ ३३ ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ एक मूहूर्त उप्रांत सदाशिवजी तीनों नेंत्रकों खोलत भया ॥ जेसें पृथ्वीरूपी डबेतें सूर्य निकसे तेसें नेत्र निकसे ॥ जेसें द्वादश सूर्यका प्रकाश एकठा होवे तेसें नेत्र का प्रकाश हुआ अरु देखत भया जो वसिष्ठजीके नेत्र मुंदे हुए तब कहा हे मुनीश्वर जागो ॥ अब नेत्र काहेकों मुंदि छोडे हे ॥ जो कछू देखणा था सो तो देख्या हे ॥ अब समाधिविषे जुडनेका श्रम किस निमित्त करते हो ॥ तुम सारखे तत्ववेत्ताकों हेयोपादेय किसीविषे नही होता ॥ तुं जेसा बुद्धिवान हे तेसाही हे तुं आत्म दर्शी हे ॥ जो कछू पावणे जोग था सो पाया हे ॥ जानणे जोग था सो जाण्या हे ॥ अरु बालकके बोध निमित्त जो तुम मुझतें पूछा सो में कहा हे ॥ अब तुमकों तूष्णी साथ क्या प्रयोजन हे ॥ हे रामजी इस प्रकार कही करी मेरे अंतर प्रवेश करीकें चित्तकी वृत्ति साथ जगाया जब में जाग्या तब बहुरी ईश्वर कहत भया ॥ हे वसिष्ठजी इस शरीरकी क्रियाका कारण प्राण स्पंद हे प्राणोकरी शरीरकी चेष्टा होती हे तिसविषे आत्मा उदासीनकी न्यांइं स्थित हे ॥ न कछू करता हे न भोगता हे जब इस जीवकों अपणें स्वरूपका प्रमाद होता हे ॥ तब देहविषे अभिमान होता हे ॥ कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

या करता आपकों मानता हे बहुरी भोगता मानता हे इस करी दुःख पावता हे ॥ इस लोक परलोकविषे भटकता हे ॥ अरु जब आत्मविचार उपजता हे तब आत्माका अभ्यास होता हे ॥ देह अभिमान मिटि जाता हे ॥ दुःखतें मुक्त होता हे ॥ शरीरके नष्ट हुए आत्माका नाश नही होता ॥ अरु शरीर जो चैतन होकरी फुरता हे सो प्राणोंकरी फुरता हे ॥ जब बीचतें प्राण निकसी जाते हे तब शरीर मूक जडरूप हो जाता हे ॥ अरु जो चलावणे हारी अरु पवित्र करणे हारी संवित शक्ति हे सो आकाशतेंभी सूक्ष्म हे ॥ उह शरीरके नाश हुए नाश नही होती ॥ जब नाश नही होती तो नाशका भ्रम केसें होवे ॥ हे मुनीश्वर आत्मतत्व ब्रह्मसत्ता सर्वत्र हे ॥ परंतु भासती तहां हे जहां सात्विक गुणका अंस मन होता हे अरु प्राण होते हे ॥ मन अरु प्राणो सहित देहविषे भासती हे ॥ जेसें निर्मल दर्पणविषे मुखका प्रतिबिंब भासता हे ॥ अरु आदर्श मलीन होता हे ॥ तब मुखविद्यमानभी होता हे ॥ परंतु नही भासता हे ॥ तेसें मन अरु प्राण जब देहविषे होते हे ॥ तब आत्मा भासता हे ॥ जब मन अरु प्राण निकसि जाते हे ॥ तब मलीन शरीरविषे आत्मसत्ता नही भासती ॥ हे मुनीश्वर आत्मसत्ता सब ठोर पूर्ण हे परंतु भासती नही ॥ जब तिसका अभ्यास होवे तब सर्वात्म रूप हो करी भासती हे ॥ सर्व कलनातें रहित शुद्ध शिवरूप सर्वकी सत्तारूप उही हे ॥ विष्णुभी उही हे शिवभी उही हे ॥ ब्रह्माभी उही हे ॥ देवता जातभी उही हे ॥ अग्नि वायु चंद्रमा सूर्यादिक सब जगत्का आदि वपु उही हे ॥ सो एक देव हे ॥ शुद्ध चैतन रूप हे सर्व देवहूंका देव हे ॥ अवर सब तिसके टहलुअे हे ॥ अरु सब तिसके चित्त उल्लास हे ॥ हे मुनीश्वर हम जो इस जगत्विषे बडे ब्रह्मा विष्णु रुद्र हे ॥ सो उसहि तत्वतें प्रगट भएहे ॥ जेसें अग्निते चिणगारे उपजतें हे जेसें समुद्रतें तरंग प्रगट होते हे ॥ तेसें हम तिसतें प्रगट भये हे ॥ यह अविद्याभी तिसतें प्रगट भइहे ॥ अरु अनेक शाखाकों प्राप्त भइहे ॥ देव अदेव वेद अरु वेदके अर्थ अरु जीव सब उस अविद्याकी जटा हे ॥ अरु अनंत भावकों प्राप्त भइहे ॥ बहुरी बहुरी उपजती अरु मिटती हे ॥ देश काल पृथिव्यादिक सब उसि करी संपन्न हे ॥ परंतु सर्वकी सत्ता रूप उही आत्मा देव हे ॥ ब्रह्मा विष्णु रुद्र हम जो हे सो हमारा परम पिता आत्मा हे ॥ सर्वका मूल बीज उही देव हे ॥ सब तिसतें उपजे हे ॥ जेसें वृक्षतें पत्र उपजते हे ॥ तेसें सब महादेवतें उपजते हे ॥ सर्वका अनुभव कर्ता उही हे ॥ सर्वकों सत्ता देणें हारा उही हे ॥ सर्व प्रकाशका प्रकाश उही हे ॥ सो तत्ववेत्ता करी पूजणे जोग हे ॥ सर्वविषे प्रत्यक्ष हे ॥ सर्वदा सर्व प्रकार सर्वविषे उदित आकार चैतन अनुभव रूप हे ॥ तिसके आवाहनविषे मंत्र आसन आदिक सामग्री नही चहीती ॥ काहेतें जो सर्वदा अनुभवरूप करीकें प्रत्यछ हे ॥ अरु सर्व प्रकार सर्व ठोरविषे विद्यमान हे ॥ जहां जहां तिसके पावणेका जतन करियें तहां आगेंही विद्यमान हे उह शिवतत्व आदिहि सिद्ध हे मन वाणीविषे तीनों रूप उही हो भासता हे ॥ सबकी आदि हे अरु पूजणे जोग हे ॥ अरु नमस्कार करणे जोगभी उही हे ॥ अरु जानणे जोगभी उही हे ॥ हे मुनीश्वर अेसा जो आत्मतत्व हे ॥ सो जरा मृत्यु शोक भयके काटणे हारा हे ॥ तिसकों आपकरी आपहि देखता हे ॥ तिसके साक्षात्कार हुए चित्त भूनें बीजकी नांइं हो जाता हे ॥ बहुरी नही उगता सो शिवतत्व जीवका जीव हे ॥ सर्व पदका पद उही हे ॥ अनुभव रूप हे आत्मा हे परम पद हे इतर दृष्टिका त्याग करो ॥ ॥ इतिश्री यो० निर्वाणप्रकरणे ईश्वरोपाख्याने देवनिर्णयोनाम चतुस्त्रिंशतितमःसर्गः ॥ ३४ ॥ ॥ ७ ॥

॥ ईश्वरोवाच ॥ हे मुनीश्वर सो चिदरूप तत्व सर्वके अंतर स्थित हे ॥ अरु अनुभवमय शुद्ध देव ईश्वर हे ॥ सब बीजका बीज उही हे ॥ सर्व सारका सार उही हे कर्मका कर्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धर्मका धर्म उही हे ॥ सो चैतन धातु निर्मल रूप सब कारणका कारण उही हे ॥ अरु आप अपणा कारण हे ॥ सर्व भाव अभावका प्रकाशक उही हे ॥ सर्व चैतनका चैतन उही हे परम प्रकाश रूप हे ॥ भौतिक प्रकाशतें रहित हे ॥ अलौकिक प्रकाशक हे ॥ सर्व जीवका जीव उही हे ॥ चैतन घन निर्मल आत्मा अस्ति सन्मयरूप हे सत असततें रहित महा सतरूप हे सर्व सत्ताकी सत्ता उही हे ॥ सो चिन्मात्र तत्व हे सोइ नाना रूप हो रहाहे ॥ जेसें एकहि आत्मसत्ता सुपनेविषे आकाश कंध पहाड आदिक होकरी भासती हे ॥ तेसें नाना रंग रंज ना उही हो करी भासता हे ॥ जेसें सूर्यकि किरणांविषे मारुथलकी नदी हो भासती हे ॥ अनेक कोट किरणांतें अनेक तरंग हो भासते हे तेसें यह जगत् तिसविषे भासता हे ॥ हे मुनीश्वर उसी आत्मतत्वका यह आभास प्रकाश हे ॥ तिसतें इतर कछू नही ॥ जेसें अग्नितें उष्णता भिन्न नही उही रूप हे ॥ तेसें आत्मातें जगत् कछू भिन्न नही उही स्वरूप हे ॥ अरु सुमेरुभी तिसके आगें परमाणुरूप हे ॥ अरु संपूर्णकाल तिसका निमेषरूप हे कल्पकी निमेष उन्मेषवत् उदे अरु ले होते हे॥अरु सप्त समुद्र संयुक्त पृथ्वी तिसके रोमके अग्रवत् तुछ हे ॥, अेसा उह देव हे ॥ बहुरी केसा हे संसार रचनाकों करता नही अरु कर्तृत्व भावकों प्राप्त होता हे ॥ बडे कर्मोंकों करता भासता हे ॥ तोभी कछू नही करता ॥ द्रव्यरूप दृष्टि आता हे ॥ तोभी द्रव्यते रहित हे ॥ निर्द्रव्य हे तोभी द्रव्यवान हे ॥ देहवान नही तोभी देहवान हे ॥ अरु बडा देहवान हे तोभी अदेह हे ॥ सर्वका सत्तारूप उही देव हे ॥ हंढी, भोलि, घले मतचुल, पिंढली, मागले, बेली, घिलिमला, लोबलाग, युगुल, सभस इत्यादि वाक्य निरर्थक हे॥ इनका अर्थ कछू नही सोभी देव करी सिद्धि होते हे॥ अेसा कछू नही जो देवविषे असत नही ॥ अरु अेसाभी कछू नही जो देव करी सत नही ॥ हे मुनीश्वर जिसतें यह सर्व हे अरु जो यह सर्व हे ॥ जो सर्वमें नित्य हे ॥ तिस सर्वात्माकों मेरा नमस्कार हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे महेश्वर वर्णनं नाम पंचत्रिंशत्तमःसर्गः ॥ ३५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ईश्वरोवाच ॥ हे मुनीश्वर इत्यादिक शब्दकी सत्तारूप उही हे ॥ सर्वसत्ता रूप रत्नका डब्बा उही हे ॥ उही तत्व चमत्कार करीकें फुरता हे ॥ जेसें जल तरंग फेन बुदबुदा आदिक आकार करीके फुरता हे ॥ तेसें देव नाना प्रकारके आकार हो करी फुरता हे उही फुल गुछे रूप हो करी स्थित होता हे ॥ आपहि तिसविषे सुगंध हो करी स्थित होता हे ॥ घ्राण इंद्रियविषे स्थित होकरी आपहि सुंघता हे ॥ आपहि तुचा इंद्रिय होता हे ॥ आपहि पवन हो करी चलता हे ॥ आपहि स्पर्श करी ग्रहण करता हे ॥ आपहि जलरूप होता हे ॥ आपहि वायु हो करी सुकावता हे ॥ आपहि श्रवणेंद्रिय हो करी आपहि शब्द हो करी आपहि ग्रहण करता हे ॥ इसी प्रकार जिव्हात्वचा नाशिका कर्ण नेत्र हो करी आपहि स्पर्शरूप रस गंध शब्दकों ग्रहण करता हे ॥ उसीने पदार्थ रचे हे ॥ उसीने नीति रची हे ॥ ब्रह्मा विष्णु रुद्र शिव पंचम ईश्वर सदाशिव तिस पर्यंत उही देव इस प्रकार हुआ हे॥ आपहि साक्षीवत् स्थित होता हे ॥ जेसें दीपकके प्रकाश करी मंदिरकी सर्व क्रिया हो ती हे ॥ तेसें संसाररूपी मंडपकी सब क्रिया साक्षी करी होती हे ॥ तिसविषे उसकी शक्ति नृत्य करती हे ॥ अरु आप साक्षी रूप हो करी देखता हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे जगत्नाथ शिवकी शक्ती क्या हे ॥ अरु केसें स्थित हे ॥ अरु देवकों साक्षात केसें हें ॥ अरु तिसकी नृत्य केसें होती हे ? ॥ ईश्वरोवाच ॥ हे मुनीश्वर आत्मतत्व सुभावतें अचलहे ॥ अरु शांतरूप हे शिव परमात्मा निर्मल चिन्मात्ररूप निराकार हे॥ तिसकी आसक्ती इछाशक्ति हे ॥ कालशक्ती हे नीतिशक्ती हे ॥ मोहशक्ती हे ॥ ज्ञानशक्ती हे ॥ क्रियाशक्ती हे कर्ताशक्ती हे॥ परंतु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वरूपतें सदा अकर्ता हे ॥ इत्यादीक आत्माकी शक्ती हे ॥ तिन शक्तीका अंत नही अनंतरुप चिन्मात्र देव हे ॥ यह जो मैं तुझकों शक्ती कही हे सोभी शिवरुप हे भिन नहि ॥ जो कर्तृत्व भोक्तृत्व साक्षीता आदिक भावनातें शक्ती विविधरुप धार्या हे ॥ शिव अरु शक्ती एक रुप हे अरु बहुत भासती हे ॥ पदार्थविषे अर्थशक्ती हे ॥ आत्माविषे साक्षिशक्ती कल्पित हे ॥ तेसें काल शक्ति हे ॥ नृत्यकी नांइं ब्रह्मांड रूपी नृत्य मंडलविषे नृत्य कर्ती हे ॥ क्रिया शक्ति कर्तृत्व करी नृत्य करती हे ॥ इत्यादिक शक्ति कहाती हे ॥ जेंसें आदि नीति हुईहें ब्रह्मातें ले करी तृणपर्यंत तेसेंहि स्थित हे ॥ अन्यथा नही होती ॥ हे मुनीश्वर यह संपूर्ण जगत् नृत्य करता हे ॥ संसाररूपी नटणी हे तिसके प्रेरणे हारी नीति हे ॥ अरु परमेश्वर परमात्मा हे सो साक्षीरूप हे सदा उदित प्रकाश रूप हे ॥ एकरस देव स्थित हे अरु नीति आदिक शक्तिभी तिसतें भिन्न नहीं उहि रूप हे ॥ तातें देवही जाण ॥ अवर द्वैत कछू नही ॥ ॥ इ

तिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे ईश्वरोपाख्याने नीति नृत्य वर्णनं नाम षट्त्रिंशत्तमःसर्गः ॥ ३६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ ईश्वरोवाच ॥ हे मुनीश्वर जो एक देव परमात्मा हे सो संतकरी पुजणे जोग हे ॥ चिन्मात्र अनुभव आत्मा सर्व हे ॥ घट पट गादी कंद बांतर आदिक सर्वविषे उह स्थित हे ॥ ब्रह्मा इंद्रादिक देवता अवर जीव सभके अंतर बाहेर उही स्थित हे ॥ सर्वात्मा शांतरूप देवका पुजन दो प्रकार होता हे सो सुण ॥ इष्ठ देवका पुजन ध्यान हे ॥ अरु ध्यान हे सो पुजन हे त्रिभुवनका आधारभूत आत्मा हे तिसकी ध्यान करी पूजा करो ॥ जहां जहां मन जावे तहां तहां छल चिद्रूप आत्मकों करो॥ सबका प्रकाशक आत्माही हे सो चिद्रूप अनुभव करिकें अंतर स्थित हे अहंता करिकें सिद्धि हे सो सबका साररूप हे अरु सबका आश्रय रूप हे ॥ तिसका जो विराटरूप हे सो सुण तिसकों जाणिकरी पूजन करो ॥ बाह्य केसा हे अनंत हे पारावारतें रहित हे ॥ परमाकाश हे सो उसकी ग्रीवा हे अरु अनंत पाताल उसके चरण हे ॥ अनंत दिशा तिसकी भुजा हे सर्व प्रकाश उसके शस्त्र हे रिदेकोश कोणविषे स्थित हे ब्रह्मांड समुहोंकों परंपरा प्रकाशता हे ॥ परमाकाश पार अपार रूप हे ब्रह्मा विष्णु रुद्रादि देवता जीव उसके रोमावल हे त्रिलोकीविषे जो देह रूपी जंत्र हे तिनविषे इछादिक शक्ति रूप सूत्र व्याप्या हे ॥ तिसकरी सब चेष्टा करते हे ॥ सो देव एकही हे अरु अनंत हे अरु सत्तामात्र स्वरूप हे ॥ सब जगत् जाल तिसका विस्तृत हे॥ अरु काल तिसका द्वारपाल हे पर्वतादिक ब्रह्मांड जगत् तिसके देहविषे किसि कोणमें स्थिति हे ॥ तिस देवकी चिंतवना करो ॥ बहुरी केसा देव हे सहस्र जिसके चरण हे ॥ अरु सहस्र नेत्र सहस्र जिसके सीस हे ॥ अरु सहस्र भुजा हे ॥ अरु सहस्र भुजा विषे भुषण हे ॥ सर्वत्र जिसकी नासिका इंद्रिय हे ॥ सर्वत्र जिसकी रसना इंद्रिय हे ॥ सर्वत्र श्रवण इंद्रिय हे सर्व उर जिसका मन हे ॥ अरु सर्व मनन कलातें अतीत हे ॥ सर्व उर उंही शिव रूप हे सर्वदा सर्वका कर्ता हे सर्व संकल्पके अर्थका फल दायक हे सर्व भूतके अंतर स्थित हे ॥ अरु सर्व साधनका सिद्धि करता हे ॥ ॥ ३१॥ अेसा जो देव हे सो सर्वविषे सर्व प्रकार सर्वदा काल स्थित हे तिस देवकी चिंतवना करो अेसे देवके ध्यानविषे सावधान रहो ॥ सदा तिनहिका आकार रहणा इह उस देवका पूजन हे ॥ अब अंतरका पूजन श्रवण करो ॥ हे ब्रह्म वेत्ता विषे श्रेष्ठ संवित मात्र जो देव हे सो सदा अनुभव करी प्रकाशता हे ॥ तिसका पूजन दीपक करी नही होता न धूप करी होता हे ॥ न पुष्प करी होता हे ॥ न दान करी न लेप केसर करी तिसका पूजन होता हे ॥ अर्घ पादादिक जो पूजाकी सामग्री हे ॥ तिस करी देवका पूजन नही होता तिसका पूजन क्लेश विना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नितहि होता हे ॥ हे मुनीश्वर एक अद्भत रूपी जो बोध हे ॥ तिस देवका सजातीय प्रतीत ध्यान करणा सो तिसका परम पूजन हे ॥ हे मुनीश्वर शुद्ध चिन्मात्र जो देव हे सो अनुभव रूप हे तिसका सर्वदा काल सर्व प्रकार पूजन करो ॥ देखता हे स्पर्श करता हे सुंघता हे श्रवण करता हे बोलता हे देता हे लेता हे चलता हे बेठता हे ॥ इसतें लेकरी जो कछू क्रिया करता हे सो सब प्रत्यक्ष चैतन साक्षी विषे अर्पण करो तिसी परायण होइ इस प्रकार आत्म देवका पूजन करो ॥ हे मुनीश्वर आत्म देवका जो ध्यान करणा यही धूप दीप हे अरु सर्व सामग्री पूजनकि यही हे ॥ ध्यानही देवकों प्रसन्न करता हे तिस करी परमानंद प्राप्त होता हे ॥ अवर करी देवकी प्राप्ति नही होती ॥ हे मुनीश्वर मूढ होवें अरु इस प्रकार ध्यान करी ईश्वरंकी पूजा करे ॥ तव त्रयोदश निमेष जगत् उदान फलकों पावता हे ॥ अरु सत निमेषके ध्यान करी प्रभुकों पूजे ॥ तव मनुष अश्वमेध जज्ञके फलकों पावे ॥ अरु ध्यानके बल करी आत्माका घडी पर्यंत पूजन करे ॥ तब उह पुरुष राजस यज्ञकीएके फलकों पावे ॥ जो दो प्रहर पर्यंत ध्यान करे तव लक्ष राजस यज्ञके फलकों पावे ॥ जो दिन पर्यंत ध्यान करे सो असंख्य फलकों पावे हे मुनीश्वर यह परम जोग हे अरु यही परम क्रिया हे यही परम प्रयोजन हे ॥हे मुनीश्वर दोनों पूजा में तुझकों कही हे॥ जिसकों यह परम पूजा प्राप्त होती हे ॥ सो परम पदकों प्राप्त होता हे ॥ सर्व देवता तिसकों नमस्कार करते हे ॥ सर्व करिकें उह पुरुष मेरुवत् पूजणे जोग होता हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे ईश्वरोपाख्याने अंतर्बाह्य पूजा बर्ननं नाम सप्तत्रिंशतितमःसर्गः ॥ ३७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ईश्वरोवाच ॥ हे मुनीश्वर अब अभ्यंतरका पूजन तुं श्रवण कर ॥ जो सर्वत्र पवित्र करणेहारेकोंभी पवित्र करता हे ॥ अरु सर्व तम अज्ञानका नाश करता हे॥ सो आत्म पूजन में तुझकों कहता हों केसा पूजन हे जो सर्व प्रकार करीकें सर्वदा कालविषे तिस देवका पूजन होता हे ॥ व्यवधान कबहुं नही पडता ॥ चलते बेठते जागते सोवते सर्व व्यवहारविषे नित्य ध्यानमें रहता हे ॥ हे मुनीश्वर इस संसारविषे नित्य स्थित संवितरूप चिन्मात्र हे तिसका पूजन करो ॥ जो सर्व प्रत्ययका कर्ता हे सदा अनुभव करी प्रकाशता हे ॥ तिसका आपकरी आप पूजन कर सो तुं हे ॥ उठता चलता खाता पीता जेते कछू बाह्य अर्थ हे त्याग करता ग्रहण करता भोगकों भोगता तिन सबकों करताभी देवकी पूजा कर ॥ हे मुनीश्वर शरीरविषे जो शिव लिंग हे चिह्नते रहित लिंग जो बोधरूप चिह्न हे सो देव हे ॥ यथा प्राप्तविषे सम रहणा सो तिस देवका पूजन हे ॥ यथा प्राप्तके सम भावविषे स्नान करीकें शुद्ध हो करी बोधरूप लिंगका पूजन करहु जो कछू आन प्राप्त होवे तिस विषे राग दोषतें रहित होणा ॥ सर्वदा साक्षीरूप अनुभवविषे स्थित रहणा यहि तिसका पूजन हे ॥ हे मुनीश्वर सूर्यके भुवन आकाशविषे उही सूर्य हो करी प्रकाशता हे ॥ चंद्रमाके भुवनविषे उही चंद्रमा हो करी स्थित होता हे ॥ इनतें आदि ले करी जो पदार्थके समूह हे ॥ जेसी जेसी भावना करी फुरणा हुआ हे सोइ रूप हो करी देव स्थित हे ॥ हे मुनीश्वर नित्य शुद्ध बोधरूप अद्वैत हे तिसकों देखणा ॥ अवरविषे वृत्तिकों न लगावणी ॥ यही देवका पूजन हे ॥ प्राण अपानरूपी रथपर आरुढ हुआ अंतर गुहाविषे जो स्थित हे ॥ तिसका जो ज्ञान हे अरु जेते कछू कर्म हे तिन सबका कर्ता उही हे ॥ सर्व भोगका भोक्ता उही हे ॥ अरु सर्व शब्दका स्मरण करणे हारा उही हे ॥ अरु भागवत रूप हे सबकी भावना करणे हारा परम प्रकाश रूप हे ॥ अेसा जो संवित तत्व हे ॥ तिसकों सर्वज्ञ जाणी करी चिंतवना करणी सो तिसका पूजन हे ॥ बहुरी केसा हे देव ॥ सकलभी उही हे निष्कलभी उही हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देहविषे स्थित हे तोभी आकाशवत् निर्मल हे ॥ जाताभी हे अरु नही जाताभी उही हे प्राणरूपी आलय विषे प्रकाशता हे ॥ रिदे कंठ तालु जिव्हा नासिका पीठविषे व्यापक हे ॥ शब्द आदिक विषयकों कर्ता मनकों प्रेरता हे ॥ जेसें तिलविषे तेल आश्रय भूत हे ॥ तेसें आत्मा सर्वविषे आश्रय भूत हे ॥ कलना रूपी कलंकतें रहित हे ॥ अरु कलना गण करी संयुक्तभी उही हे ॥ संपूर्ण देहोंविषे एकहि देव व्यापि रहा हे ॥ परंतु प्रत्यक्ष रिदेविषे होता हे सो निर्मल चिन्मात्र प्रकाश रूप हे ॥ कलना रूपी कलंकतें रहित सदा प्रत्यक्ष हे ॥ अपणे आपहि करी अनुभव होता हे ॥ सर्वदा पदार्थका प्रकाश प्रत्यक्ष चैतन आत्मतत्व आपणे आप विषे स्थित हे सो अपणे फुरणे करिकें शीघ्रही द्वैतकी न्यांइं हो जाता हे ॥ हे मुनीश्वर जेता कछु साकार रूप जगत् दृष्ट आता हे ॥ सो सब विराट आत्मा हे तातें आपकों विराटकी भावना करु हस्त पाद नख केस यह संपूर्ण ब्रह्मांड मेरा देह हे ॥ मेंही प्रकाशरूप एक देव हों ॥ अरु नीति इछादिक मेरी शक्ति हें ॥ सब मेरी उपासना करतियां हे ॥ जेसें स्त्री श्रेष्ठभर्तारकी सेवा करती हे॥ तेसें शक्ति मेरी उपासना करतियां हे ॥ बहुरी केसा हों मन मेरा द्वारपाल हे त्रिलोकीका निवेदन करणे हारा हे अरु चिंतवना मेरी आणे जाणे वाली प्रति हारी हे नाना प्रकारके ज्ञान मेरे अंगके भूषण हे ॥ कर्म इंद्रियां मेरे द्वार हे ॥ ज्ञान इंद्रियां मेरे गण हे अेसा में एक अनंत आत्मा अखंड रूप हों व्यवछेद भेदतें रहित अपणे आप विषे स्थित हों ॥ सर्वविषे परीपूर्ण एक मेंही हों हे मुनीश्वर इसी भावना करिकें जो एक देवकी पूजा करता हे ॥ सो परमात्म देवकों प्राप्त होता हे तब दीनता आदिक क्लेश सब नष्ट हो जाते हे ॥ अनिष्टकी प्राप्ति विषे सोक नही उपजता ॥ इष्टकी प्राप्तिविषे हर्ष नही उपजता ॥ न तोषवान होता हे ॥ न कोपवान होता हे ॥ विषयकी प्राप्त करी न तृप्ति मानता हे॥ इनके वियोग करी न खेद मानता हे न अप्राप्तकी वांछा करता हे॥न प्राप्तके त्यागकी इछा करता हे सर्व पदार्थवीषे समभाव रहता हे अेसा जो पुरुष हे सो देवका परमउपासक हे ॥ ग्रहण त्यागतें रहित सवविषे तुल्य हे भेद भावकों नही प्राप्त होता सो देव अर्चन उत्तम हे ॥ हे मुनीश्वर चैतनतत्व देव में तुझकों कहा हे जो इसी देहविषे स्थित हे ॥ जो प्राप्त वस्तु होवे तिसीकों अर्चन करणी सब तिसीके आगें रखणी सबका साक्षी आत्माकों देखणा ॥ किसीतें खेदवान न होणा अहं प्रतित तिसीविषे रखणी इतर दृश्यकी भावना नहीं करणी यही देवकी अर्चन हे॥हे मुनीश्वर जो कछू आनि प्राप्त होवे तिसविषे जतन विना तुल्य रहणा ॥ जो भक्ष भोजन लेह्य चोष्य आनि प्राप्त होवे सो देवके आगे रखणा ॥ ग्रहण त्यागकी बुद्धि तिसविषे न करणी सो देवका पूजन हे ॥ सर्व पदार्थकी प्राप्तविषे देवकी पूजा करणी इस करी अनिष्टभी इष्ट हो जाता हे ॥ मृत्यु आवे तो देवकी पूजा जीवणा आवे तब देवकी पूजा ॥ दारिद्र आवे तव देवकी पूजा ॥ राज प्राप्त होवेभी देवकी पूजा ॥ विचित्र नाना प्रकारकी चेष्टा करणी सो सब देवके आगें पुष्प हे ॥ राग दोषविषे सम रहणा सो समता करी देवकी पूजा हे ॥ संतके रिदेकी रहणे हारी जो हे मैत्री जो संपूर्ण विश्वका मित्र होणा ॥ तिस मित्रता करिकें देवका पूजन हे ॥ भोग कर त्याग कर राग कर जो कछू आनि प्राप्त होवे तिसकरी देवका पूजन करु ॥ हंता होउ अहंता होउ जुक्ति करु अजुक्ति करु ॥ हे योपादेयतें रहित हो करी तिस देव का पूजन करु ॥ जो नष्ट हुआ सो हुआ ॥ जो प्राप्त हुआ सो हुआ ॥ दोनोंविषे निर्विकार रहणा इस करी देवका अर्चन करु ॥ यह भोग आपातरमणीय हे होतेभी हें॥नष्टभी होजाते भी हे ॥ इनकी इछा न करणी सदा संतुष्ट रहणा ॥ जेसें आनि प्राप्त होवे तिसविषे राग द्वेषते रहित होणा ॥ सो देवका अर्चन हे ॥ हे मुनीश्वर जो कछु प्रारब्ध करीके आनि प्राप्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होवे तिसकरी आत्माका अर्चन करो ॥ इछा अनिछाकों त्याग करी जो प्राप्त होवे तिसकरी देवका अर्चन करो ॥ हे मुनीश्वर ज्ञानवान न किसीकी इछा करता हे न त्याग करता हे ॥ जो अनिछित आनि प्राप्त होवे तिसकों भोगता हे ॥ जेसें समुद्रविषे नदी जाय प्राप्त होती हे ॥ तिनकरी न कछू हर्ष कर्ता हे न शोक करता हे तेसें ज्ञानवान इष्ट अनिष्टकी प्राप्ति विषे राग दोषतें रहित यथा प्राप्तकों भोगता हे ॥ सो देवका पूजन हे ॥ देश काल क्रिया सुभ अथवा असुभ प्राप्त होवे ॥ तिसविषे संसरण विकारकों प्राप्त न होणा सो देवकी अर्चना हे ॥ जब द्रव्य अनर्थ रूप होवे तबभी समरस साथ मिल्या हुआ अमृत हो जाता हे ॥ जेसें षट्रस स्वाद हे सो खंड साथ मिले हुए मधुर हो जाते हे ॥ तेसें अनर्थ रूपी रस समरस साथ मिले हुए अमृत हो जाता हे ॥ खेद नही करते अनंत रूप हो जाते हे ॥ चंद्रमाकी न्यांइं सब भावना अमृत मय हो जाती हे ॥ जेसें आकाश निर्लेप हे ॥ तेसें समताभाव करिकें चित्त राग दोषतें रहित निर्मल हो जाता हे ॥ द्रष्टांकों दृश्य साथ मिल्या नं देखणा साक्षी रूप रहणा सो देवकी अर्चना हे जेसें पथरकी सिला निस्पंद होती हे ॥ तेसें विकल्पतें रहित चित्त अचल होता हे सो देवकी अर्चना हे ॥ हे मुनीश्वर अंतरतें आकाशवत् असंग रहणा अरु बाह्य प्रकृत आचार विषे रहणा किसीका संग अंतर स्पर्श न करे ॥ सदा समभाव विज्ञान करी पूर्ण रहणा सो देवका उपासक होता हे ॥ जिसके रिदेरूपी आकाशतें अज्ञानरूपी मेघ नष्ट हो गया हे ॥ तिसकों सुपने विषेभी विकार नही प्राप्त होता ॥ अरु जिसके रिदे रूपी आकाशतें अहंता रूपी कुहिड शांत हो गइ हे सो शरत्कालके आकाशवत उज्वल होता हे ॥ हे मुनीश्वर जिसकों समभाव प्राप्त भया हे तिसकरी देवकों पाया हे सो पुरुष अेसा हो जाता हे जेसा नूतन बालक राग दोषतें रहित होता हे ॥ जीव रूपी चैतनाकों उल्लंघी करी परम चैतन तत्वकों प्राप्त होता हे ॥ सकल इछा भमतें रहित सुख दुःख भमतें मुक्ती शरिर का नायक तिष्ठत होता हे सो देव अर्चना हे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे देव अर्चना विधानं नाम अष्टात्रिंशत्तमःसर्गः ॥ ३८ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ ईश्वरोवाच ॥ ॥ हे मुनीश्वर जेसी कामना होवे जो कछू आरंभ करे अथवा न करे ॥ सो अपणे आपकरी चिन्मात्र संवित तत्वकी अर्चना कर ॥ इस करि देव प्रसन्न होता हे ॥ जब देव प्रसन्न हुआ तब प्रगट होता हे ॥ जब उसकों पाया अरु स्थित भया तब राग दोषादिक शब्दका अर्थ नही पाइता ॥ जेसें अग्निविषे बर्फका कणका नही पाइता तेसें इसविषे राग दोषादिक नही पाइता ॥ तातें तिस देवकी अर्चना करणी जोग हे ॥ जो राज आनि प्राप्त होवे अथवा दारिद्र आनि प्राप्त होवे ॥ सुख दुःख आनि प्राप्त होवे तिसविषे सम रहणा सो देव अर्चना करणी ॥ हे मुनीश्वर शुद्ध चिन्मात्र सो प्रमादी न होणा इसीका नाम अर्चना हे ॥ जेता कछू घटपट आदिक जगत् भासता हे ॥ सो सब आत्मरूप हे ॥ तिसतें इतर कछू नही सो आत्मा सिव शांतिरूप अनाभास हे ॥ एकहि प्रकाश रूप हे ॥ संपूर्ण जगत् प्रतित मात्र हे ॥ आत्मातें इतर कछू द्वैत वस्तु आभास नही ॥ सर्वात्मारूप अद्वैत तत्व जब भासे तब तिसविषे हुआ जाणता हे जो बडा आश्चर्य हे ॥ घट पट आदिक सब उही रूप हे अवर तो कछू नही ॥ हे मुनीश्वर यह सर्वात्मा अनंत रूप शिव तत्व हे ॥ जिसकों अेसें निश्चय प्राप्त भया हे ॥ तिसनें देवकी पूजा जाणीहे ॥ घट पट आदिक जो पदार्थ हे पूज्य पूजा पूजक भाव सो सब ब्रह्मरूप हे निर्मल देव आत्माविषे कछू भेद भाव नही ॥ हे मुनीश्वर आत्मदेव सर्व शक्त अनंतरूप हे तिनों जगतविषे तिसतें भिन्न कछू नही निर्मल प्रकाश संवित रूप आत्मा स्थित हे ॥ हमकों तो ईश्वर देवतें इतर कछू नही भासता ॥ सर्वत्र सर्व प्रकार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वात्मा संपूर्ण दृष्ट आता हे ॥ अरु जिनकों देश कालके प्रछेद सहित ईश्वर भासता है ॥ सो हमारे उपदेशके पात्र नही ॥ उह ज्ञानबंध नीच हे ॥ तिनकी दृष्टिकों त्याग करी मेरी दृष्टि का आश्रय लेहु ॥ जो में तुझकों कही हे ॥ तिसकरी स्वस्थ वीतराग निरामय होहु ॥ यथा प्रारब्ध जो कछु सुख दुःख आनी प्राप्त होवे ॥ खेदतें रहित हो करी तिस देवका अर्चन करु ॥ तब शांतिकों प्राप्त होवे ॥ हे मुनीश्वर तिस देवकी सर्व प्रकार सर्वात्मा करीकें भावना करु यही तिसका पूजन हे ॥ जो वृत्ति सदा अनुभव रूपविषे स्थित रहे ॥ अरु जथा प्राप्त विषे खेदते रहित विचरणा यही देवकी अर्चना हे ॥ जेसें स्फाटिकके मंदिरविषे प्रतिबिंब भासते हे सो कछू नही निष्कलंक स्फाटिक हे तेसें सर्व उरतें रहित जन्मादिक दुःखतें रहित निष्कलंक आत्मा हे ॥ तिसकी प्राप्तितें तेरेविषे कलंक जन्मादिक दुःख कछू न रहेगे ॥ ॥ इतिश्री यो०नि०ईश्वरोपाख्याने देवपूजा विचारोनाम एकोनचत्वारिंशत्तमःसर्गः ॥ ३९ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे देव शिव किसकों कहते हे ॥ अरु ब्रह्म किसकों कहते हे आत्मा किसकों कहते हे ॥ अरु परमात्मा किसकों कहते हे ॥ तत् सत् किसकों कहते हे ॥ निष्किंचन शून्य विज्ञान किसकों कहते हे ॥ इत्यादिक भेद संज्ञा किस निमित्त हुइहे सो कृपा करीकें कहो ॥ ईश्वरोवाच ॥ हे मुनीश्वर जब सबका अभाव होता हे ॥ तब अनादि अनंत अनाभास सत्तामात्र शेष रहता हे ॥ जो इंद्रियांकाविषय नही तिसकों निष्किंचन कहते हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे ईश्वर जो इंद्रियांबुद्धि आदिकका विषय नही तिसका पावणा किसकरी होता हे ॥ ईश्वरोवाच ॥ हे मुनीश्वर जो मुमुक्षु हे अरु वेद आश्रय करी संयुक्त सात्विकी वृत्ति जिसकों प्राप्त हुइहे ॥ तिसकों सात्विकी रूप जो गुरु शास्त्र नाम्नी विद्या प्राप्त होती हे ॥ तिसकरी अविद्याका भाग नष्ट हो जाता हे ॥ अरु आत्मतत्व प्रकाशि आता हे ॥ जेसें साबु करीके धोबी वस्त्रका मेल उतारता हे ॥ तेसें गुरु शास्त्र अविद्याका सात्विकी भाग अविद्याकों दुर करते हे ॥ जब केते कालतें अविद्या नाश होती हे तब अपणा आपहि करी देखता हे ॥ जेसें वायु करी बादल दुर होते हे ॥ अरु नेत्रकरी सूर्य देखता हे ॥ जेसें किसीके हाथकों शाइ लगे सो मृतिका जल करी धोये दुर हो जाती हे ॥ सो मेल करी मेल दुर होता हे ॥ तेसें अविद्याका सात्विकी भाग गुरु शास्त्र सो अविद्याके आवरणकों नष्ट करतें हे ॥ हे मुनीश्वर जब गुरुशास्त्रकों मिलि करी विचार प्राप्त होता हे ॥ तब विचार करी स्वरूपकी प्राप्ति होती हे ॥ अरु द्वैत भ्रम मिटि जाता हे ॥ सर्व आत्माही प्रकाशता हे ॥ जब विचार द्वारा आत्मतत्व निश्चय हुआ जो सर्व आत्मा हे इतर कछू नही ॥ एसा निश्चय जहां होता हे तहांतें अविद्या जाती रहति हे ॥ हे मुनीश्वर आत्माकी प्राप्तिविषे गुरु शास्त्र प्रत्यक्ष कारण नही ॥ काहेतें जो वस्तु जिनके क्षय हुएतें पाइएं सो तिनके विद्यमान हुए केसें पाइये ॥ इंद्रियके समूहका नाम गुरु हे ॥ अरु ब्रह्म सर्व इंद्रियतें अतीत हे ॥ इन करी केसें पाइये ॥ अकारण हे ॥ परंतु कारणभी हे ॥ काहेतें जो गुरुशास्त्रके क्रम करीकें अज्ञानकी सिद्धता होती हे ॥ गुरुशास्त्र बिना बोधकी सिद्धता नही होती ॥ आत्मा निर्देश हे ॥ अरु अदृश्य हे तोभी गुरुशास्त्र करी पाता हे ॥ अरु न गुरु करी न शास्त्र करी पाता हे ॥ अपणे आपहि करी आत्मतत्वकी प्राप्ति होती हे ॥ जेसें अंधकारविषे पदार्थ होवे अरु दीपक प्रकाश करी देवें ॥ सो दीपक करी नही पाया अपणे आपकरि पाया हे ॥ तेसें गुरुशास्त्रभी हे ॥ जब दीपक होवे अरु नेत्र न होवे तब केसें पाइये ॥ नेत्र होवे अरु दीपक न होवे तोभी नही पाता जब दोनों होवे तब पदार्थ पाता हे ॥ तेसें गुरुशास्त्रभी होवे अरु अपणा पुरुषार्थ तीक्ष्ण बुद्धिभी होवे ॥ तब आत्म तत्व पाता हे अन्यथा नही पाता हे ॥ गुरुशास्त्र अरु शुद्ध बुद्धि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिष्यकी तीनों एकठे मिलते हे ॥ तब संसारके सुख दुःख दुर होते हे ॥ अरु आत्मपदकी प्राप्ति होती हे ॥ गुरुशास्त्र आवरण दुर करी देते हे ॥ तब आपकरी आपहि पावता हे ॥ जेसें वायु बदलकों दुर करंती हे ॥ तब नेत्र करी सूर्य दिखता हे ॥ अब नामके भेद सुण ॥ हे मुनीश्वर जब बोधके वसतें कर्म इंद्रियां बुद्धि इंद्रियां क्षय होय जातीयां हे ॥ तिसके पाछे जो सेष रहता हे ॥ तिसका नाम संवित तत्व आत्मसत्ता आदिक नाम करी कहाता हे ॥ जहां यह संपूर्ण नही इनकी वृत्तिभी नही तिसके पाछे जो शेष सत्ता रहती हे सो आकाशतेभी सूक्ष्म अरु निर्मल हे अनंत हे परम शून्य रूप हे ॥ जहां शून्यकाभी अभाव हे ॥ हे मुनीश्वर अब शांतरूप जो हे मुमुक्षु अरु मनन कलना करी संयुक्त हे ॥ तिनकों जीवन्मुक्ती पदके बोध निमित्त शास्त्र मोक्ष उपाय रचे हे ॥ ब्रह्मा विष्णु रुद्र इंद्र लोकपाल पंडित पुराण वेद शास्त्र सिद्धांत रचे हे ॥ तिनविषे यह नाम तिन में कहे हे ॥ चैतन ब्रह्म शिव आत्मा परमात्मा ईश्वर सत् चित् आनंद आदिक संज्ञा अनेक कही हे ॥ शिव आत्मा ब्रह्म परमात्मा आदिक भिन्न भिन्न नाम शास्त्रकारनें कल्पे हे अरु ज्ञानीकों कछू भेद नही ॥ हे मुनीश्वर अेसा जो देव हे तिसका ज्ञानवान इस प्रकार अर्चन करते हे जिस पदके हम आदिक टहलुए हे ॥ तिस परमपदकों प्राप्त होते हे ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे भगवन् यह जगत् सब अविद्यमान हे ॥ अरु विद्यमानकी न्यांइं स्थित हे सो केसें हुआ हे ॥ सम सत कहणेकों तुमहि जोग हो ॥ ईश्वरोवाच ॥ ॥ हे मुनीश्वर जो ब्रह्म आदिक नाम करी कहाता हे सो शुद्ध केवल संवित मात्र हे ॥ आकाशतेंभी सूक्ष्म हे ॥ जिसके आगें आकाशभी एसा स्थूल हे जेसा अणुके आगें सुमेर स्थूल होता हे ॥ तिस विषे जब वेदना शक्ति आभास हो करी फुरी तब तिसका नाम चैतन हुआ ॥ बहुरी अहंता भावकों प्राप्त हुआ जो अहं अस्मि जेसें सुपने विषे पुरुष आपकों हस्ति देखणे लागे तेसें आपकों अहं मानणे लगा बहुरी देश काल आकाश आदिक देखणे लगा ॥ तब चैतन कला जीव अवस्थाकों प्राप्त भइ अरु वासना करणे हारी भइ ॥ जब जीव भाव हुआ तब बुद्धि निश्चयात्मक होकरी स्थित भइ ॥ शब्द अरु क्रिया ज्ञान संयुक्त भइ ॥ एक एक साथ मिली करी सीघ्रही कल्पित भइ ॥ तब मन हुआ सो मन संकल्प रूपी माषाका बीज हे ॥ तब अंतवाहक शरीर विषे आत्मस्वरूप हो करी ब्रह्मसत्ता स्थित भइ ॥ इस प्रकार यह उत्पत्ति भइ हे ॥ बहुरी वायु सत्ता स्पंद हुइ ॥ तिसतें स्पर्श सत्ता त्वचा प्रगट भइ ॥ बहुरी तेज सत्ता हुइ तिसतें प्रकाश सत्ता हुइ प्रकाशतें नेत्र सत्ता प्रगट भइ ॥ बहुरी जल सत्ता जलतें स्वाद सत्ता स्वादतें रस सत्तातें जिव्हा प्रगट भइ ॥ बहुरी गंध सत्ता गंधतें भूमि सत्ता भूमितें घ्राण सत्ता पिंड सत्ता प्रगट भइ ॥ देश सत्ता काल सत्ता सर्व सत्ता हुइ इनकों एकठा करिकें फुरी जेसें बीज पत्र फूल फलादिकका आश्रय होता हे ॥ तेसें यह पुर्यष्टका जाण यही अंत वाहक देह हे तिसका आश्रय भइ ॥ वास्तवतें कछु उपजा नही केवल परमात्म सत्ता अपणे आपविषे फुरती हे जेसें जलविषे जल फुरता हे ॥ तेसें आत्म सत्ता अपणे आपविषे फुरती हे ॥ हे मुनीश्वर संवित विषे जो संवेदन पृथक्रूप हो करी फुरे ॥ सो निस्पंद करिकें जब स्वरूपकों जाण्या तब नष्ट हो जाती हे ॥ जेसें संकल्पका रचानगर संकल्पके अभाव हुए अभाव हो जाता हे ॥ तेसें आत्माके ज्ञानतें संवेदनका अभाव हो जाता हे ॥ हे मुनीश्वर संवेदन तबलग भासता हे जब लग इसकों जान्या नही ॥ जब जाणता हे तब संवेदनका अभाव हो जाता हे ॥ संवित विषे लीन हो जाती हे ॥ भिन सत्ता इसकी कछु नही रहति ॥ हे मुनीश्वर जो प्रथम अणु तन्मात्राथी सो भावनाके वसतें स्थूल देहकों प्राप्त भइ स्थूल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देह हो करी भासणे लागी ॥ आगें जेसें जेसें देश काल पदार्थकी भावना होती गइ तेसें तेसें भासणे लागे ॥ जेसें गंधर्व नगर भासता हे ॥ जेसें सुपनपुर भासता हे ॥ तेसें भावनाके वसतें यह पदार्थ भासणे लागे हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे भगवन् गंधर्व नगर अरु सुपन पुरके समान इसकों केसें कहते हो ॥ यह जगत् तो प्रत्यक्ष देखाता हे ॥ ईश्वरोवाच ॥ हे मुनीश्वर संसार दुःख इसकों वासनाके वसतें दिखता हे ॥ जो अविद्यमानविषे स्वरूपके प्रमाद करिकें विद्यमान बुद्धि हुइ हे ॥ जगत्के पदार्थकों सत जाणी करी जो वासना फुरती हे तिस वासना करी दुःख होता हे ॥ हे मुनीश्वर यह जगत् अविद्यमान हे ॥ जेसें मृग तृष्णाका जल असत्य होता हे ॥ तेसें यह जगत् असत्य हे ॥ तिसविषे वासना अरु वासक वासना करणे जोग तीनो वृथा हे ॥ जेसें मृगतृष्णाका जल पानकरी तृप्त कोउ नही होता ॥ काहे तें जो जलहि असत हे ॥ तेसें यह जगत्ही असत हे ॥ इनके पदार्थकि वासना करणी वृथा हे ॥ ब्रह्मातें आदि क्रम पर्यंत सब जगत् मिथ्यारूप हे ॥ वासना वासक वासना करणे जोग पदार्थ तीनोके अभाव हुए केवल आत्मतत्व रहता हे सब भ्रम शांत हो जाता हे ॥ हे मुनीश्वर यह जगत् भममात्र हे वास्तवतें कछू नही ॥ जेसें बालककों अज्ञान करी अपणे पछावे विषे वैताल भासता ॥ जब विचार करी देखे तब वैतालका अभाव हो जाता हे ॥ तेसें अज्ञान करी यह जगत् भासता हे आत्म विचारकरी इसका अभाव हो जाता हे ॥ जेसें मृगतृष्णाकी नदी भासती हे ॥ जेसें आकाशविषे नीलता अरु दूसरा चंद्रमा भासता हे ॥ तेसें आत्माविषे अज्ञान करिकें देह भासता हे ॥ जिसकी देहादिक विषे थिर बुद्धि हे ॥ सो हमारे उपदेशके जोग नही हे ॥ हे मुनीश्वर जो विचारवान हे तिसकों उपदेश करणा जोग हे ॥ अरु जो मूर्ख भमी हे अरु असतवादी सतकर्मतें रहित अनार्जव हे ॥ तिसकों ज्ञानवान उपदेश करे ॥ जिसविषे विचार अरु वैराग होवे कोमलता अरु शुभ आचार होवे तिसकों उपदेश करणा जोग हे ॥ अरु जो इन गुणतें रहित विपर्यय हे ॥ तिसकों उपदेश करणा अेसें होता हे ॥ जेसें महा सुंदर स्वर्नवत् कांति अेसी कन्या किसीकी होवे ॥ अरु सुपन कल्पित पुरुषकों विवाहि देणेकी इछा करे ॥ तेसेंहि अपात्रकों उपदेश करणा मूरखता हे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे जगत् मिथ्यात्व प्रतिपादनं नाम चत्वारिंशत्तमःसर्गः ॥ ४० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे भगवन् उह जीव जो आदि सर्गतें उत्पत्ति भया अरु देह भम अपणे साथ देखता भया ॥ तिसके अनंतर केसें स्थित हुआ ॥ ॥ ईश्वरोवाच ॥ हे मुनीश्वर परमाकाशतें उपजा जेसें तुमकों कहा हे ॥ सो अपणे साथ शरीर देखत भया सुपन नरकी न्यांइं सर्वगत चिद्घन आत्माके आश्रय उपजि करी जीव अपणे शरीरकों देखत भया ॥ हे मुनीश्वर आदि जो जीव फुर्या हे अरु प्रमादकों प्राप्त न भया अपणे स्वरूपहीविषे अहं प्रत्यय रहा इस कारणतें ईश्वर हो करी स्थित भया तिसकों यह निश्चय रहा जो में सनातन हों नित्य हों शुद्ध परमानंद स्वरूप हों अव्यक्तरूप परम पुरुष हों इस प्रकार आदि जीवका निश्चय रहा आत्माकी अपेक्षा करिकें तिसकों जीव कहा हे अरु सृष्टी जगत्की अपेक्षा करिकें उसकों ईश्वर कहा हे हे मुनीश्वर उह जो आदि जीव हे ॥ सो कोउ विष्णुरूप हो करी ब्रह्माकों नाभिकमलतें उत्पत्ति किया हे ॥ किसी सृष्टिविषे प्रथम ब्रह्मा हुआ हे ॥ विष्णु रुद्र तिसतें हुए हे ॥ किसी सृष्टिविषे प्रथम रुद्र हुआ हे ॥ विष्णु ब्रह्मा तिसतें हुए हे ॥ चैतन आकाशविषे जेसा जेसा संकल्प फुर्या हे तेसा हो करी स्थित भया हे ॥ आदि जीव उपजी करी जिस जिस प्रकारका संकल्प किया हे तेसा हो करी स्थित भया हे ॥ वास्तवतें सब असतरूप हे अज्ञान भ्रम करिकें हुआ हे ॥ जेसें पछावे बिषे वैताल होता हे ॥ तेसें अज्ञान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करिकें सतरूप हो भासता हे ॥ आदि पुरुषतें लेकरी जो सृष्टि हे सो परमाकाशके एक निमेषतें हुइहे अरु उन्मेषविषे लय हो जाती हे ॥ एक निमेषके प्रमाद करी कल्पके समूह विती त हो जाते हे ॥ अरु परमाण परमाणविषे सृष्टि फुरतीयां हे ॥ कल्प अरु महाकल्प तिनविषे भासते हे ॥ केइ सृष्टि परस्पर देखतियां हे ॥ केइ अन्योअन्य अदृश्यरूप हे ॥ इसी प्रकार सृष्टि तिसके स्पंदकलाविषे फुरियां हे ॥ चमत्कार होता हे ॥ अरु जब स्पंदकला स्वरूपकी उर आती हे तब लीन हो जाती हे ॥ जेसें सुपनेका पर्वत जागतें लीन हो जाता हे ॥ तेसें जाग्रतकी सृष्टि अफुर हुए लीन हो जाती हे ॥ हे मुनीश्वर जीव जीव प्रति अपणी अपणी सृष्टि हे तिन सृष्टिकों कोउ देशकाल रोकी नही सकता ॥ काहेतें जो अपणे अपणे संकल्प विषे स्थित हे अरु आत्माका चमत्कार हे ॥ जेसा फुरणा फुरता हे तेसा चमत्कार हो भासता हे ॥ हे मुनीश्वर नं कछू उपजा हे न कछू नाश होता हे स्वतः चैतन तत्व अपणे आपविषे चमकता हे ॥ जेसें सुपन नगंर उपजी करी नष्ट हो जाते हे ॥ जेसें संकल्पका पहाड उपजी करी मिटि जाता हे ॥ तेसें जगत् उपजी करी नष्ट हो जाता हे जेसें सुपन अरु संकल्प पहा डकों कोउ रोकी नही सकता तेसें अपणि अपणी सृष्टिकों देश काल रोकी नही सकता ॥ काहेतें जो अवर ठोरविषे इनका सद्भाव नही तातें यह जगत् अपणे अपणे कालविषे सतरूप हे ॥ आत्माविषे सद्भाव नही संकल्प रूप हे ॥ हे मुनीश्वर जेसें आदि तत्वतें जीव ईश्वर फुरे हे तेसें कर्म फुरे हे ॥ रुद्रतें लेकरी बृछ पर्यंत सब एक क्षणविषे उसि तत्वतें फुरी आये हे ॥ सुमेरादिकभी अपणे स्थितिविषे रोकते हे अन्य अणुकों नही रोकि सकते काहेतें जो उहां हेही नही तातें आत्माविषे सृष्टि आभासरूप हे ॥ हे मुनीश्वर इस प्रकार सब जगत् मायामात्र हे॥भावना करी भासता हे जब आत्माका अभ्यास होता हे तब भेदकल्पना मिटि जाती हे॥ केवल उपसमरूप शिव तत्व भासता हे॥ हे मुनीश्वर निमेषका जो सम भाग हे॥तिसके अर्ध भाग प्रमाद होणे करी नाना प्रकारका जगत् हो भासता हे॥ सत असत रूप जगत् मनरूपी विश्वकर्मा बनावता हे॥आत्मतत्व न दुर हे न निकट हे न अध हे न उर्ध हे न पूर्व हे न पछम हे सत असतके मध्य अनुभव रूप सर्वका ज्ञाता हे ॥ प्रत्यक्ष आदिक प्रमाण तिसकेविषे नही करी सकते॥जेसें जलविषे अग्नि नही निकसती हे ॥ हे मुनीश्वर जो कछू तुझनें पूछाथा सो में कहाहे ॥ तिसविषे चित्तकों लगावणा तेरा कल्याण होवे ॥ अब हम अपणे वांछित स्थानकों जाते हें ॥ चलो पार्वती अपणे स्थानकों जावे ॥ हे रामजी इस प्रकार ईश्वरनें जब कहा॥ तब में अर्घ पादकरी पूजन किया॥पार्वती अरु गणकों लेकरी ईश्वर आकाश मार्गकों चलते रहे॥जबलग मुझकों दृष्टि आवते रहे तबलग उनकी उर में देखता रहा बहुरी में अपणे कुशके स्थानपर आनि बेठा ॥ जो कछू ईश्वरनें उपदेश किया था सो में अपणी सुध बुध साथ विचारणे लागा ॥ ॥ इतिश्री यो० निर्वाणप्र परमार्थ विचारोनाम एकचत्वारिंशत्तमःसर्गः॥४१॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो कछू ईश्वरनें तुझकों कहा सो में आपभी जाणता था ॥ अरु तुंभी जाणता हे ॥ यह जगत्भी असत हे ॥ देखणे वालाभी असत हे ॥ तिस मायारूप जगत्विषे में तुझकों सत क्या कहों अरु असत क्या कहों ॥ जेसें जलविषे द्रवता होती हे तेसें आत्माविषे जगत् हे ॥ जेसें पवनविषे स्पंद होता हे ॥ जेसें आकाशविषे शून्यता होती हे ॥ तेसें आत्माविषे जगत् हे ॥ हे रामजी जो कछू पतीत प्रवाह करी आनि प्राप्त होता हे ॥ तिसी करी में देव अर्चन करता हों ॥ इस क्रम करीकें में निर्वासनिक हों ॥ जगत्की क्रियाविषेभी में निर्दुःख हो करी चेष्टा करता हों ॥ व्यवहार करता दृष्टि आता हों तोभी सदा शांतिरूप हों यथा प्राप्त आचाररूपी फुल करी में आत्म देवकी अर्चना करता हों ॥ छेदभेद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुझकों कोउ नही होता हे ॥ हे रामजी विषय अरु इंद्रियांका संबंध सर्व जीवकों तुल्य हे अरु जो ज्ञानवान पुरुष हे सो सावधान रहते हे ॥ जो कछू देखते सुणते बोलते खाते सुंघते स्पर्श करते हे सो आत्मतत्वविषे अर्चन करते हे ॥ आत्मातें इतर नही जाणते इस प्रकार सावधान रहते हे ॥ अरु ज्ञानी हे तिनकों कर्तृत्व भोक्तृत्वका अभिमान होता हि तिसकरी दुःखी होते हे ॥ हे रामजी तुमभी एसी दृष्टिकों आश्रय करीकें संसाररूपी वनविषे विचरो निःसंग हो करी तुमकों खेद कछू न प्राप्त होवेगा ॥ जिसकी वृत्ति इस प्रकार समान हो गइहे तिसकों बडा कष्ट आनि प्राप्त होवे धन बांधवका विजोग होवे ॥ तोभी तिसकों खेद नही होता ॥ इह जो द्रष्टि में तुझे कही हे तिसकों आश्रय करेगा तब तुझकों दुःख कोउ न होवेगा ॥ हे रामजी सुख दुःख धन बांधवका विजोग यह सब पदार्थ अनित्य हे ॥ यह आतेभी हे जातेभी हे इनकों आगमापाइ जाणी करी विचरो ॥ यह संसार विषम रूप हे एकरस कदा चित् नही रहता ॥ इसकों स्थित जाणी करी दुःखी नही होणा ॥ हे रामजी पदार्थ काल जेसें जावे तेसें जावे ॥ अरु जेसें सुख दुःख आवे तेसें आवे ॥ यह सब आगमापाइ पदार्थ हे ॥ आतेभी हे जातेभी हे इष्टकी प्राप्ति अनिष्टकी निवृत्तिविषे हर्षवान नही होणा ॥ अरु अनिष्टकी प्राप्ति इष्टके विजोग करी खेदवान नही होणा ॥ जेसें आवे तेसें जावे ॥ जेसें जावे तेसें आवे ॥ जिस आवणा हे सो आवेगा ॥ जिस जाणा हे सो जावेगा ॥ इह सुख दुःख प्रवाहरूप हे इनविषे आस्था करी तपायमान नही होणा ॥ हे रामजी यह सब जगत् तुंहीहे ॥ अरु तुंहि जगत्रूप हे ॥ अरु चिन्मात्र विस्तृत आकार तुं हे ॥ जब तुंही हे ॥ तब बहुरी हर्ष शोक किस निमित्त करता हे ॥ इसी द्रष्टिकों आश्रय करीकें जगत्विषे सुषुप्तकी न्यांइं विचरु ॥ बहुरी तुरियातीत अवस्थाकों प्राप्त होवेगा जो सम प्रकाश रूप हे ॥ हे रामजी जो कछू में तुझकों कहणा था सो कहा हे ॥ आगें जो तेरी इछा होवे सो करु ॥ अरु पाछें तुझनें पूछा था जो ब्रह्म अनंत रूपविषे में कलंक केसें प्राप्त भया हे ॥ सो अब बहुरी प्रश्न करु जो में उत्तर कहों ॥ रामोवाच ॥ हे ब्राह्मण अब मुझकों संशय कछू नही रहा सब संशय नष्ट हो गया हे ॥ जो कछू जानणा था सो में जाण्या हे ॥ अब में परम अकृतिम तृप्तताकों प्राप्त भया हों ॥ हे मुनीश्वर आत्माविषे न मेल हे न द्वैत हे न एक हे कोउ कल्पना नही ॥ पूर्व मुझकों अज्ञान था तब में पूछाथा ॥ अब तुमारे बचनों करी मेरा अज्ञान नष्ट भया हे कलंक कछू नही भासता ॥ आत्माविषे न जन्म हे न मृत्यु हे ॥ सर्व ब्रह्महि हे ॥ हे मुनीश्वर प्रश्न संशय करी उपजता हे सो संशय मेरा नष्ट हो गयाहे ॥ जेसें जंत्रीकी पूतली हिलावणेतें रहित अचल होती हे ॥ तेसें में संशयतें रहित अचलचित्त स्थित हों ॥ सर्व सारोंका सार मुझकों प्राप्त भया हे ॥ जेसें सुमेरु अचल होता हे तेसें अचल हों कोउ क्षोभ मुझकों नही॥ अेसा कोउ पदार्थ नही जो मुझकों त्यागणे जोग होवे॥ अरु अेसाभी कोउ नही जो ग्रहण करणे जोग होवे ॥ न किसी पदार्थकी मुझकों इछा हे ॥ न अनिछा हे शांतरूपविषे स्थित हों ॥ न स्वर्गकी मुझकों इछा हे न नर्कविषे द्वेष हे ॥ सर्व ब्रह्मरूप मुझकों भासता हे ॥ मंद्राचल पर्वतकी न्यांइं आत्मतत्वविषे स्थित हों ॥ हे मुनीश्वर जिसकों अवस्तुविषे वस्तु बुद्धि होती हे ॥ अरु कलना काल रिदेविषे स्थित होती हे ॥ सो किसीकों ग्रहण करता हे ॥ किसीकों त्याग करता हे ॥ अरु दीनताकों प्राप्त होता हे ॥ हे मुनीश्वर यह संसार महासमुद्र रूप हे ॥ राग द्वेषरूपी तिसविषे कल्लोल हे ॥ अरु शुभ अशुभरूपी तिसविषे मछ रहते हे ॥ अेसें भयानक संसार समुद्रतें अब में तुमारे प्रसाद करीकें तरी गया हों ॥ सब संपदाके अंतकों प्राप्त भया हों॥सब दुःख नष्ट हो गये हे ॥ सर्वके सारकों प्राप्त भया हों पूर्ण आत्मा हों ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अदीन पदकों प्राप्त भया हों अरु परम शांत अभेद सत्ताकों प्राप्त भया हों ॥ आशारूपी हस्तीकों मैंने सिंघ हो करी मार्‍या हे ॥ आत्मातें इतर मुझकों कछू नही भासता ॥ सब विकल्पके जाल गलत हो गये हे ॥ इछादिक विकार नष्ट हो गये हे ॥ दीनता जाती रहती हे तीनों जगत्‌विषे मेरी जे हे ॥ सदा उदित रूप हों ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे विश्रांति आगमनंनाम द्विचत्वारिंशत्तमः ॥ ४२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी देह इंद्रिया करी जो केवल करता हे अरु मनविषे असंगता हे ॥ तब जो कछु उह कर्ता हे ॥ सोभी कछू नही कर्त्ता ॥ जो कछू इंद्रिया करी इष्ट प्राप्त होता हे सो एक क्षणमात्र सुख प्राप्त होता ॥ तिस क्षण प्रसन्नताविषे जो बंधमान होता हे सो बालकवत् मूरख हे ॥ जो ज्ञानवान हे सो तिसविषे बंधमान नही होता ॥ हे रामजी वांछाहि इसकों दुःखी करती हे ॥ जो सुंदर विषयकी वांछा करता हे ॥ जब जतन करी तिनकी प्राप्ति होती हे ॥ तब मध्य क्षण सुख होता हे ॥ बहुरी विजोग होता हे तब इसकों दुःख दे जाते हे ॥ तिस कारणतें इनकी वांछा त्यागणी जोग हे ॥ इनकी वांछा तब होती हे जब स्वरूपका अज्ञान होता हे ॥ अरु देहादिकविषे भाव होता हे ॥ जब देहादिकविषे अहंभाव होता हे ॥ तब अनेक अनर्थकी प्राप्ति होती हे ॥ तातें हे रामजी ज्ञानरूपी पहाड परि चडे रहणा ॥ अहंतारूपी गरतविषे नही गिरना ॥ हे रामजी आत्मज्ञान रूपी सुमेरु पर्वत हे ॥ तिसपर चडी बहुरी अहंता अभिमान करीकें गरतविषे बास लेणा सो बडी मूर्खता हे ॥ तातें गरतविषे नही गिरना ॥ जब दृश्यभावकों त्यागेगा तब अपणे सुभाव सत्ताकों प्राप्त होवेगा ॥ जो सम शांतरूप हे ॥ अरु विकल्प जाल सब मिटि जावेगी समुद्रवत् पूर्ण होवेगा द्वैत रूप फुरणा कोउ न फुरेगा ॥ हे रामजी जब अंतरतें विषयकों विष जानें तब मनभी निरस हो जाता हे चित्त निःसंग होता हे वस्तुतें देखे तो सबविषे सत्ता समानरूप ब्रह्म चिद्घन स्थित हे तिसतें जो कछू इतर द्वैत भासता हे ॥ सो स्वरूपके प्रमाद करी भासता हे ॥ हे रामजी आत्माका अज्ञानहि बंधन रूप हे आत्माका बोधहि मुक्त रूप हे ॥ तातें बल करीकें आपकों आपहि जगावहु तब इस बंधनतें मुक्त होहुगे ॥ हे रामजी जिसविषे विषयका स्वाद नही अरु जिसविषे इनका अनुभव होता हे सो तत्व आकाशवत् निर्मल सत्ता वासनातें रहित हे जो वासनातें रहित हो करी पुरुष कछु क्रिया करता हे सो विकारकों नही प्राप्त होता ॥ यद्यपि अनेक क्षोभ आनि प्राप्त होवे तोभी उसकों विकार कछू नही प्राप्त होता ॥ ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय ए तीनों आत्मरूप भासते हे ॥ जब अैसें जाण्या तब भय किसीका नही रहता ॥ चित्तके फुरणे करी जगत् उत्पत्ति होता हे ॥ चित्तके अफुर हुए लीन हो जाता हे जब वासना सहित प्राण उदे होते हे तब जगत् उदे होता हे जब वासना सहित प्राण लीन होते हें तब जगत् लीन होता हे अभ्यास करिकें वासना अरु प्राणोंकों स्थित करो ॥ जब मूर्खता उदे होती हे तब कर्म उदे होते हे ॥ अरु मूर्खताके लीन हुए कर्मभी लीन होते हे ॥ तातें सतसंग अरु सतशास्त्रोंके विचार करी मूर्खताकों क्षय करो जेसें वायुके संगकरी धूड उडीकें बदल आकार होती हे ॥ तेसें चित्तके फुरणे करी जगत् स्थित होताहे ॥ हे रामजी जब चित्त फुरताहे तब नानाप्रकारका जगत् फुरि आवताहे अरु चित्तके अफुर हुए जगत् लीन हो जाताहे हे रामजी वासना शांत होवे अथवा प्राणोका निरोध होवे तब चित्त अचित्त हो जाता हे ॥ सो वासनाके क्षय हुए अथवा प्राणोंके रोकेतें चित्त अचित्त होताहे ॥ जब चित्त अचित्त हुआ तब परमपदकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राप्त होताहे ॥ हे रामजी दृश्य दर्शन संबंधके मध्यविषे जो सुख हे सो परमात्मसुख हे ॥ जो एकांतका सुख हे सो संवित ब्रह्मरूप हे ॥ तिसके साक्षात्कार हुए मन क्षय होताहे ॥ जहां चित्त नही उपजता सो चित्ततें रहित अकृत्रिम सुख हे ॥ अेसा सुख स्वर्ग विषेभी नही ॥ जेसें मरुथलविषे वृक्ष नही होता तेसें चित्त सहित विषयके सुख नही होता॥चित्तके उपशमविषे जो सुख हे सो अवाच हे वाणी करी कह्या नही जाता ॥ तिसके समान अवर सुख कोउ नही ॥ ओर तिसतें अतिसे सुखभी नही ॥ अवर सुख नाश हो जाताहे ॥ आत्म सुख नाश नही होता अविनाशी हे ॥ उपजणे विनसणें दोनोंतें रहित हे ॥ हे रामजी अबोध करीकें चित्त उदे होता हे॥ अरु आत्मबोध करीकें शांत होजाताहे ॥जेसें मोहकरीकें बालककों वैताल दिखाइ देताहे ॥ मोहके नष्ट हुए वैताल नष्ट होजाताहे ॥ तेसें अज्ञान करी चित्त उदे होताहे ॥ अज्ञानके नष्ट हुए चित्त नष्ट होजाताहे ॥ जब विद्यमानभी चित्त भासताहे ॥ तब भी बोधकरी निर्बीज होताहे ॥ जेसें त्रांबा पारस साथ मिलिकरी स्वर्न होताहे ॥ आकार तो उहि दृष्टी आताहे ॥ परंतु तांबेभावका अभाव हो जाताहे ॥ तेसें अज्ञान करी जगत् भासताहे अरु ज्ञानकरी चित्त अचित्त होजाताहे ॥ अरु जड जगत् नही भासता ॥ उही ब्रह्म सत्ता होकरी भासताहे ॥ सत पदकों प्राप्त होताहे ॥ परंतु नाम रूप तेसेहि भासताहे॥ हे रामजी ज्ञानीका चित्तभी क्रिया करता दृष्ट आवताहे ॥ परंतु चित्त अचित्त होजाताहे ॥ जो अज्ञानकरीके भासताहे ॥ सो ज्ञानकरीके शून्य होजाताहे ॥ जेता कछु जगत् अबोध करीके भासताथा सो बोध करीके शांत होजाताहे ॥ बहुरी नही उपजता ॥ उह चित्त शांत पदकों प्राप्त होताहे ॥ कोउ काल तो उहभी तुरिया अवस्थाविषे स्थित हुआ विचरताहे ॥ बहुरी तुरियातीत पदकों प्राप्त होताहे ॥ अध उर्ध मध्य सर्व ब्रह्महि सम इस प्रकार अनेक हो करी स्थित भयाहे अनेक भ्रमकरीकेभी एकहिहे ॥ सर्वात्माही हे अवर चित्तादिक कछू नही ॥

॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे चित्तसत्तासूचनं नाम त्रिचत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ ४३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी अब तुं संक्षेपतें एक अपूर्व आश्चर्यरूप बोधका कारण अज्ञान सुण ॥ एक बीलफल हे अरु अनंत जोजन पर्यंत तिसका विस्तारहे ॥ अरु अनंत जुग वितीत होगयेहे उह जर्जरी भावकों कदाचित् नही प्राप्त होता अरु अनादिहे तिसविषे अविनाशी रसहे ॥ कबहूं नाश नही होता ॥ रस करी पूर्ण हे अरु चंद्रमाकी न्यांइं सुंदर हे बहुरी केसा हे जो सुमेरुआदिक बडे पहाड हे ॥ तिनकों महा प्रलयका पवन तृणोंकी न्यांइं उडावताहे ॥ सो पवनभी तिसकों हिलाए नही सकता ॥ हे रामजी जोजनके अनंत कोट कोटान करीके तिसकी संख्या नही करी जाती ॥ एसा उह बीलफल हे ॥ बहुरी केसाहे बहूत बडा हे ॥ जेसें सुमेरके निकट राइका दाणा सूक्ष्म तुछ भासताहे॥ तेसें तिस बीलफलके आगें ब्रह्मांड सूक्ष्म तुछ भासताहे ॥ सो बीलरसकरी पूर्णहे गिरता कबहु नही अरु पुरातन हे ॥ तिसका आदि अंत मध्य ब्रह्मा विष्णु रुद्र इंद्रादिकभी नही जाणि शकते ॥ न उसके मूलकों कोइ जाणि शकताहे ॥ न मधकों कोइ जाणि शकताहे ॥ अदृष्ट उसका आकारहे ॥ अरु अदृष्ट फल हे अपणे प्रकाश करी प्रकाशताहे ॥ बहुरी केसाहे एक घन हे आकार जिसका ॥ अरु सदा अचलहे ॥ किसी विकारकों नही प्राप्त होता ॥ सतहे निर्मल निर्विकार निरंतर रूप हे नीरंध्रहे अरु चंद्रमाकी न्यांइं शीतल सुंदर हे अरु अज्ञान संवितरूपी तिसविषे रस हे ॥ सो आपणा रस आपहि लेताहे ॥ अरु सर्वकों रस देणेहाराभी उहीहे सबकों प्रकाश करताभी उही हे तिसविषे अनेक चित्र रेषा न निवास किया हे परंतु अपणे सरूपकों त्यागतानही॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनेक रूप होकरी भासता हे तिसविषे स्पंदरूपी रस फुरताहे ॥ तत्वं इदं देश काल क्रिया नीति राग दोष हेयोपादेय भूत भविष्यत काल प्रकाश तम विद्या अविद्या इत्यादि कलना जा ल रसके फुरणे करीकें फुरतेहे ॥ सो विल आत्मरूप हे अनुभवरूपी तिसविषे रस हे ॥ सो सदा अपणे आपविषे स्थित हे नित शांत रूप हे ॥ तिसकों जाणीकरी पुरुष कृतकृत होताहे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे विलोपाख्यानं नाम चतुश्चत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ ४४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् सर्व धर्मके वेत्ता तुम इह विलरूपी महा चिद्घन सत्ता कहि ॥ सो अेसें मेरे निश्चय भया जो चैतन मज्जारूप अहंतादिक जगत् हे ॥ इसविषे भेद रंचकभी नही ॥ द्वैत एक कलना सर्व उहीहे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जेसें ब्रह्मांडकी मज्जा सुमेरादिक पृथ्वी हे तेसें चैतन विलकी मज्जा यह ब्रह्मांड हे ॥ सब जगत् चैतन विलरूप हे इतर कछू नही ॥ तिस सर्वजगत् चैतनका विनास संभवता नही ॥ हे रामजी चैतनरूपी मिरच बीज हे तिसविषे जगत्रूपी चमत्कार तीक्ष्णता हे ॥ सो सुषुम्नवत् निर्मल हे सिलाके अंतरवत् अमिश्रित हे ॥ हे रामजी अब अवर आश्चर्यरूप आख्यान सुण ॥ चंद्रमावत् महा सुंदर प्रकाश अरु स्निग्ध सीतल स्पर्श हे ॥ अरु विस्तृतरूप सिला हे सो महा निरंध्र हे घनरूप हे ॥ तिसविषे कमल उपजते हे ॥ उर्ध तिसकी वल्ली हे अरु अध मूल हे अरु अनेक तिसकी शिखा हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् सत्य कहते हों ॥ इह सीला मेंभी देखी हे ॥ जो विष्णुकी मूरत नदीविषे शालगराम हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी अेसें तुं जाणता हे अरु देखाभी हे ॥ परंतु तेसी तिसके सब अंतर हे॥जो सिला में कहता हों सो अपूर्व सिला हे तिसके अंतर ब्रह्मांडके समूह हे और कछूभी नही ॥ हे रामजी चैतनरूपी सिला में तुझकों कही हे तिसविषे संपूर्ण ब्रह्मांड हे सो घन चैतनता करीकें सिला वर्णन करी हे अनंत घन अरु निरंध्र हे सो परमब्रह्म आकाशवत् सिला हे आकाश पृथ्वी पर्वत देश नदियां समुद्र इत्यादिक सबहि विश्व तिस सिलाके अंतर स्थित हे॥अरु कछू हे नही॥जेसें सिलाके उपर कमल लिखे होते हे सो सिलारूप हे॥सिलातें इतर कछू नही॥ तेसें यह जगत् आत्मरूपी सिलाविषे हे आत्मातें भिन्न कछू नही॥हे रामजी भूत भविष्य वर्तमान जो तीनों काल हे सो उस सिलाकी पूतलियां हे॥जेसें सिल्पी पूतलियां कल्पता हे जो एती पूतलियां इस सिलातें निकसे तेसें यह जगत् आत्माविषे हे उपजा नही ॥ काहेतें जो मनरूपी सिल्पी कल्पताहे तिसकरी नाना प्रकारका जगत् भासता हे॥आत्माविषे कछू उपजा नही जेसें सुषुम्नरूप सिलाके पर कमल रेखा लिखी होती हे॥सो सिलातें इतर कछू नही तेसें यह जगत् आत्माविषे हे सो आत्मातें भिन्न नही॥जेसें सिलाविषे पूतली होती हे सो न उदे न अस्त होती हे ज्योंकी त्यों सिला हे ॥ तेसें आत्माविषे जगत् न उदे न अस्त होता हे ॥ काहेतें जो वास्तव कछू नही ॥ अरु आत्मातें इतर जो कछू द्वैत कल्पना होती हे॥सो अज्ञानकरीके भासतीहे॥जब बोधहुआ तब शांत होजातीहे॥जेसें जलकी बूंद समुद्रविषे डारी समुद्ररूप होजातीहे॥ तेसे बोधकरी कल्पना आत्माविषे लीन होजातीहे॥हे रामजी चैतन आत्मा अनंत हे तिसविषे विकार कल्पना कोउ नही अज्ञान करी कल्पना भासतीहे ज्ञान करीके लीन होजातीहे॥विकारभी आत्माके आश्रय भासतेहे॥अरु आत्मा विकारतें रहित हे ब्रह्मतें विकार उत्पत्ति होतेहे॥अरु ब्रह्महिविषे स्थितहे॥अरु वास्तवतें कछू हुए नही ॥ सब आभास मात्र हे ॥ जेसें किर्णाविषे जलाभास होताहे ॥ तेसें ब्रह्मविषे जगत् विकार आभास होताहे ॥ जेसें बीजविषे वृक्ष होताहे ॥ पत्र टास फूल फलका विस्तार एकहि बीजके अंतर होताहे ॥ अरु बीज सत्ता सबविषे अनुस्यूत होतीहे ॥ बीजतें इतर कछू नही होता॥ तेसें चिद्घन आत्माके अंतर जगत् विस्तार हे ॥ सो चिद्घन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मा तें इतर कछू नही उही अपणेआपविषे स्थित हे ॥अरु जगत्भी उही रूप हे ॥ जब एक मानिये तब द्वैतभी होताहे ॥ जब एक कहणाभी नही तब द्वैत कहां होवे जगत् अरु आ त्माविषे भेद कछू नही आत्माहि अद्वैत अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जेसें सिलाविषे मूरत लिखी होतीहे ॥ सो सिला रूप हे ॥ तेसें जगत् आत्मारूप हे ॥ जेसें सिलाविषे भिन्न भिन्न वि षमरूप मूरतां होतियांहे ॥ अरु आधाररूप सिला अभेद हे ॥ तेसें आत्माविषे जगत् मुरतां भिन भिन विषमरूप भासतियां हे ॥ अरु आधार चैतनरूप अभेद हे ॥ ब्रह्मसत्ता समान सुषुप्तवत् समस्थित हे बडे विकारभी तिसविषे द्रष्ट आवते हें ॥ परंतु वास्तव सुषुप्तवत् विकारतें रहित स्थित हे ॥ फूरणेतें रहित चैतन सिला स्थित हे ॥ तिस नित्य शांत चिद्घन रूप सत्ताविषे यह जगत् कलपित हे ॥ अधिष्ठान सत्तासदा सर्वदा शांतरूप हे भेदकों प्राप्त कदाचित नही होती जेसें जलविषे तरंग अभेदरूप हे ॥ जेसें स्वर्नविषे भूषण अभिनरूप हे ॥ तेसें आत्माविषे जगत् अभिनरूप हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे सिलाकोसउपदेसो नाम पंचचत्वारिंशत्तमःसर्गः ॥ ४५॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जेसें बीजके अंतर फूल फल व्रछ संपूर्ण होताहे ॥ सो आदिभी बीज हे अरु अंतभी बीज हे ॥ जब फल परिपक्व होताहे तब बीजहि होताहे ॥ तेसें आत्माभी जगतविषे हे परंतु सदा अच्युत हे अरु समहे ॥ कदाचित् भेद विकार परिणामकों नहि प्राप्तभया ॥ अपणी सत्ताकरीस्थित हे॥ जगतके आदिभी उही हे॥मधभी उहीहे अंतभी उहीहे ॥ कछू अवर भावकों प्राप्त नहि भया ॥ देश काल कर्म आदिक जेती कछू कलना भासतीहे सो उही रूप हे॥ जेते कछू शब्द अरु अर्थ हे सो आत्मातें भिन नहि पाइते ॥जेसें व्रछके आदिभी बीजहे अरु अंतभी बीज हे ॥ मध जो कछू विस्तार भासता हे ॥ सोभी उहीरुप हे भिन कछू नहि ॥ तेसें जगत्के आदिभी आत्मसत्ता हे अंतभी आत्मसत्ता हे॥ मध जो कछू भासता हे सोभी उहीरूप हे ॥ हे रामजी चैतनरूपी महा आदर्श हे ॥ तिसविष संपूर्न जगत् प्रतिबिंब होताहे ॥ अरु संपूर्न जगत संकलपमात्र हे जेसा जेसा किसीविषे फुरण दृढहो ताहे तेसाहि आत्मसत्ताके आश्रित होकरी भासताहे ॥ जेसें चिंतामणीविषे जेसा कोउ संकल्प धारताहे ॥ तेसाहि प्रगट होआताहे ॥सो संकल्पहि मात्र होताहे ॥ तेसें जेसी जेसी भावना कोउकरताहे ॥ तेसी तेसी आत्माके आश्रित होकरी भासतीहे ॥ अनंत जगत् आत्मरूपी मणीके आश्रित स्थित होतेहें जेसी कोउ भावना करता हे तेसी तिसकों हो भासतीहे ॥ हे राम जी आत्मरूपी डबा हे तिससों जगतरूपी रतन मोती पडेनिकसतेहें ॥ जेसा फूरणा होताहे तेसा जगत् भासि आताहे ॥ जेसें सिलाके अंतर रेषा होतीयांहे ॥ सो नाना प्रकार चित्र भा सतियां हे सो अनन्यरूप हे तेसें आत्माविषे जगत् अनन्यरूप हे ॥ जेसें सिलाके अंतर संखचक्रादिक रेषा भासती हे तेसें यह जगत् आत्माविषे भासताहे सो आत्मारूपहे ॥ आत्मरूपी सिला निरंध्र हे तिसविषे छिद्र कोउनहि ॥ जेसें जलविषे तरंग जलरूप होतेहें ॥ तेसें ब्रह्मविषे जगत ब्रह्मरूप हें ॥ सो केसा ब्रह्म हे सम सांतरूप सुषुप्तवत् स्थितहे ॥ तिसविषे जगत कछु फुर्‍या नहि सिलाकी रेषावत् हे ॥ जेसें विलके अंतर मज्जा स्थित होतीहे ॥ तेसें ब्रह्मविषे जगत् स्थितहे ॥ जेसें आकाशविषे शून्यता होतीहे ॥ जेसें जलविषे द्रवता होतीहे ॥ जेसें वायुविषे स्पंदता होतीहे तेसें ब्रह्मविषे जगत् हे ब्रह्म अरु जगत्विषे भेद कछू नहि ॥ जेसें तरु अरु व्रछविषे भेद कछू नहि तेसें ब्रह्म अरु जगत्विषे भेद कछू नहि ॥ ब्रह्महि जगत् हे जगतहि ब्रह्म हे ॥ हे रामजी भाव अभाव भेद कल्पना कोउ नहि ॥ ब्रह्मसत्ताहि प्रकाशती हे ॥ ब्रह्महि जगतरूप हो करी भासता हे ॥ जेसें मरुथलविषे सूर्यकि किर्णां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जलरूप होकरी भासतीयां हे तेसें ब्रह्म जगत्रूप होकरी भासता हे ॥ हे रामजी सुमेरादिक पर्वत अरु तृण बन अरु चित्त जगत् परिणामतें लेकरी भूतको विचारि देखियें तो परम सत्ताहि भासतीहें सम पदार्थविषे स्थूल अरु सूक्ष्म भावकरी उही सत्ता व्यापीहे ॥ जेसें जलका रस वनस्पतिविषे व्याप्या हुआहे तेसें सभ जगत् विषे सूक्ष्मता करिकें आत्मसत्ता व्यापी हूइहे जेसें एकहि रस सत्ता दछ त्रण गुछे विषे व्यापी हूइहे ॥ अरु एकहि अनेक रूप होकरि भासतीहे तेसे एकहि ब्रह्मसत्ता अनेक रूप होकरि भासतीहे ॥ हे रामजी जेसें मोरके अंडविषे अनेक रंग होतेहें ॥ जब अंड फूटताहे॥तब सनेसने अनेक रंग तिसतें प्रगट होतेहें ॥ सो एकहि रस अनेकरूप हो भासताहे ॥ तेसें एकहि आत्मा अनेक रूप जगत् आकार होकरि भासताहे ॥ जेसें मोरके अंडविषे एकहि रस होताहे परंतु जो दीर्घसूत्री अज्ञानी हे तिनकों भविषत अनेक रंग उसविषे भासतेहें ॥ सो अनउपजेहि उपजे भासतेहें तेसें यह जगत् अनउपजाहि नानात्व अज्ञानीके रिदेविषेस्थित होताहे अरु जो ज्ञानवान हे तिनकों एकरस ब्रह्मसत्ता भासतीहे ॥ जेसें मोरका रस परिणामकों नहि प्राप्त भया एकरस हे अरु जब परिणामकों प्राप्त होकरि नानारूप भया तबभी एकरस हे ॥ तेसें यह जगत् परमात्माविषे गुझहे तोभी परमात्माही हे ॥ अरु जब नाना रूप होकरी भासताहे तोभी उहीहे ॥ परिणामकों नहि प्राप्त भया ॥ परंतु अज्ञानीकों नानात्व भासताहे ॥ ज्ञानवानकों एक सत्ता भासतीहे ॥ अथवा इस दृष्टांतका दूसरा अर्थ हे ॥ जेसें मोरके अंडविषे नानात्व कछू हूइ नहि जिसकों दिव्य द्रष्टि हे तिसकों उसविषे अनउपजी नानात्व भासतीहे अरु जिसकों दिव्य द्रष्टि नहि तिसकों बीजहि भासताहे नानात्व नहि भासती ॥ तेसें जिनकों अज्ञानरूपी दिव्य द्रष्टि हे तिनकों अनउपजा जगत् नानात्व होभासता हे अरु जो अज्ञान द्रष्टितें रहित हे ॥ तिनकों एकहि ब्रह्म भासताहे अवर कछू नहि भासता ॥ हे रामजी नानात्व भासती हे तोभी कछू नानात्व हे नही जेसें मोरके अंडेविषे नानारंग भासतेहें ॥ तोभी एकरूप हे ॥ तेसें यह जगत् भिन भिन पदार्थ भासतेहें ॥ तोभी एक ब्रह्म सत्ताहे द्वैत कछू नही॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे सत्ता उपदेशो नाम षट्चत्वारिंशत्तमःसर्गः ॥४६॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी जेसें अनउपजी कांति रंग मयूरके अंडविषे होतेहें सो बीजतें इतर कछू नही तेसें अहं त्वं आदिक जगत् आत्माविषे अनउदेही उदेरूप भासताहे जेसें बीजविषे उन रंगहूंकी उदेभी अनउदेरूप हे ॥ तेसें आत्माविषे जगत्की उदेभी अनउदेरूप हे ॥ अरु आत्मसत्ता अशब्दपद हे वाणीकरी कछू कहा नही जाता ॥ अेसा सुखस्वर्गविषे नही पाइता हें॥ अरु अवरभी किसी स्थानविषे अेसा सुख नही पाता जेसा सुख आत्माविषे स्थित हुए पाइताहे हे रामजी आत्मसुख विषे विश्रांति पावणे निमित्त मुनीश्वर देवता गण अरु सिद्ध महाऋषि द्रश्य दर्शन संबंध फुरणेकों त्यागकरी स्थित होतेहें तातें उत्तम सुख हे संवितविषे जो संवेदनका फुरणा हे सो जिनका निवृत्त हुआहे तिसका जिननें त्याग कियाहे तिन पुरुषकों दृश्यभावना कोउ नही फुरती न कोउ तिनकों कर्म स्पर्श करताहे ॥ अरु प्राणभि तिनके निसपंद होतेहें चित्त चैतनके संबंधतें रहित चित्रकी मूर्तिवत् स्थित होतेहें ॥ अरु शांतरूप स्थित होतेहें ॥ हे रामजी जब चित्त कला फुरतीहे तब इसकों संसार भ्रम प्राप्त होताहे ॥ अरु जब चित्तका फुरणामिटी जाताहे तब इह सांतरूप अद्वैत स्थित होताहे ॥ जेसें राजाकी सेना जुद्ध करती हे अरु जीत हार राजाकी होतीहे ॥ तेसें चित्तके फुर्णद्वारा आत्माविषे बंध मोक्ष होताहे ॥ यद्यपि आत्म सतरूप अच्युत हे॥ परंतु मन बुद्धि अंतःकरण द्वारा आत्माविषे बंध मोक्ष भासताहे ॥ आत्मा सभका प्रकाशक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे जेसें चंद्रमाकी चांदनी वछादिककों प्रकासतीहे तेसें आत्मा सर्वपदार्थकों प्रकासताहे ॥ सो केसा हे न द्रश्य हे न उपदेशका विषयहे न विस्तारूप हे न दूर हे ॥ केवल अनुभव चैतनरूप आत्माकरि सिद्धहे न देह हे न इंद्रिय गण हे न चित्त हे ॥ न वासना हे नजीव हे ॥ नस्पंद हे ॥ न अवरकों स्पर्श करताहे न आकाश हे न सत हे न असत हे न मध्यहे न शून्यहे न अशून्यहे ॥ न देस काल वस्तु हें ॥ न अहं हे न इतरहे ॥ इत्यादिक सर्व सब्दते रहित रिदे स्थानविषे प्रकासत हे ॥ अनुभवरूप हे ॥ तिसका न आदि हे न अंतहें ॥ न शस्त्र काटतें हे न अग्नी जलाय सकती हे ॥ न जल गिलाय सकता हे ॥ न यह हे ॥ न उह हे न वायु सोख सकती हे अवर किसीकी समर्थता नही ॥ सो चित्तरूप आत्मतत्व हे ॥ न जनमता हे न मरता हे अरु देहरूपी घट केइवार उपजते हे ॥ केइवार नष्ट होते हें अरु आत्मरूपी आकास सभके अंतर वाहिर अखंड अविनासी हे ॥ जेसें अनेक घटविषे एकहि आकास स्थित होता हे तेसें अनेक पदार्थविषे एकहि ब्रह्मसत्ता आत्मरूप करिकें स्थित हे ॥ हे रामजी जेता कछू स्थावर जंगम जगत् द्रष्टि आवता हे सो सभ ब्रह्मरूप हे ॥ केसा ब्रह्म हे निरधर्म निरगुण हे निरवयव निराकार हे निर्मल निर्विकार हे ॥ आदि अंततें रहित सम सांतरूप हे ॥ एसी द्रष्टिकों आश्रयकरिकें स्थित होड्ड ॥ हे रामजी इस द्रष्टिकों आश्रयकरोगे तव वडे आरंभ कार्यभी तुमकों स्पर्श न करगे ॥ जेसें आकाशकों वदल स्पर्श नही करते हे तेसें तुमकों कर्मस्पर्श न करेंगे काल क्रिया कारण कार्य जनम स्थिति संहार आदिक जो संसरणारूप संसार हे ॥ सो सव ब्रह्मरूप हे इसी द्रष्टिकों आश्रय करिकें विचरो ॥ ॥ इतिश्री यो० निर्वाणप्र० ब्रह्म एकताप्रतिपादनं नाम सप्तचत्वारिंशत्तमःसर्गः ॥४७॥ ॥७॥

रामोवाच ॥ हे भगवन् जव प्रत्यक ब्रह्मविषे कोउ विकार नही ॥ तव भाव अभावरूप जगत् किसकरी भासताहे?॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी विकार किसकों कहतेहे प्रथम तो यह सुण ॥ जो वस्तु अपणे पूर्वरूपकों त्यागकरी विपर्ययरूपकों प्राप्त होवे अरु वहुरी पूर्वके स्वरूपकों प्राप्त न होवे ॥ तिसकों विकार कहताहे ॥ जेसें दूधतें दहि होताहे वहुरी दूध नही होता अरु जेसें वालक अवस्था वीति जाती हे वहुरी नही आवती ॥ अरु जुवाअवस्था गइ हुइ वहुरी नही आवती तिसका नाम विकार हे ॥ अरु ब्रह्म निर्मल हे आदिभी निर्विकार हे अंतभी निर्विकार हे ॥ मध जो तिसविषे कछू विकार मल भासता हे सो अज्ञान करी भासताहे ॥ मध्यविषेभी ब्रह्म अविकारी ज्योंकात्यों हे ॥ हे रामजी जो पदार्थ विपर्ययरूप होजाता है ॥ सो वहुरी अपणे स्वरूपकों नही प्राप्त होता ॥ अरु ब्रह्मसत्ता सदा ज्योंकी त्यों अद्वैतरूप आत्म अनुभवकरीके प्रकाशती हे ॥ जो कवहू अन्यथा रूपकों प्राप्त न होवे तिसकों विकार केसें कहियें ॥ हे रामजी जो वस्तु विचार ज्ञानकरीके निवृत्त होजावे तिसकों भ्रम मात्र जाणिये ॥ वास्तव कछू नही ॥ जेते कछू विकार हे सो अज्ञान करीके भासते हे जव आत्म बोध होताहे तव निवृत्त होजातेहे ॥ जिसके बोधकरीके विकार नष्ट होजावे हे तिसविषे विकार केसें करीयें ॥ जो ब्रह्म शब्दकरीकें कहाताहे सो निर्वेदरूप आत्माहे ॥ जो आदिअंतविषे सत होवे सो मधविषेभी जाणियें जो सत हे ॥ इसतें इतर होवे सो अज्ञान करी जाणियें ॥ आत्मरूप सदासर्वदा समरूप हे ॥ आकाश पवनभी अन्यभावकों प्राप्त होजातेहे ॥ परंतु आत्मतत्व कदाचित् अन्यभावकों प्राप्त नही होता ॥ प्रकाशरूप हे अरु एकहे नित्यहे ॥ निर्विकार ईश्वर हे ॥ भाव अभाव विकारकों कदाचित् नही प्राप्त होताहे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् विद्यमान एक तत्व हे सो ब्रह्म सदासर्वदा, निर्मलरूप हे ॥ तिस संचित ब्रह्मविषे यह अविद्या कहांते आइहे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह सर्व ब्रह्म हे आगेभी ब्रह्म सदा नि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मलरूप हे ॥ तिस संवित ब्रह्मविषे यह अविद्या कहांते आइहे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह सर्व ब्रह्म हे आगेंभी ब्रह्म था अरु पाछेभी ब्रह्म होवेगा ॥ तिस निर्विकार आदिअंत मध्यतें रहित ब्रह्मविषे अविद्या कोउ नही यह निश्चय हे ॥ जिसकों वाच्य वाचक कर्म करी उपदेश निमित्त ब्रह्म कहताहे ॥ तिसविषे अविद्या कहांहे ॥ हे रामजी अहंत्वं आदिक जग तभ्रम अग्नि वायु आदिक सर्व ब्रह्मसत्ता हे ॥ अवर अविद्या रंचकमात्रभी नही ॥ जिसका नामहि अविद्या हे सो भममात्र असत जाण ॥ जो विद्यमान हे नही तिसका नाम क्या क हियें ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् उपसम प्रकरणविषे तुम क्यों कहा जो अविद्या हे ॥ अब इस प्रकार केसें कहतेहो जो विद्यमान हे नही ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी एते काल पर्यंत तूं अबोध था तिस निमित्त में कल्प करी तुजकों जुक्ति कहीथी सो तेरे जगावणे निमित्त कहीथी अरु अब तुं प्रबुद्ध हुआहे ॥ तव में कहा अविद्या अविद्यमान हे ॥ हे रामजी अविद्या अरु जीव जगत् आदिकका क्रम अप्रबोधकों जगावणे निमित्त वेदवादीनें बर्नन कियाहे ॥ जवलग अप्रबोध मन होताहे तवलग इसकों अविद्याभ्रम हे ॥ सो जुक्तिबिना अने क उपायकरीभी बोधवान कदाचित् नही होता ॥ अरु जब बोधवान होताहे तब सिद्धांत उपदेशकों जुक्तिविनाभी पाय लेताहे अरु अबोध मन जुक्तिविना पाय नही शकता ॥ हे रा मजी जो कार्य युक्ति करी सिद्ध होताहे अवर जतनकरी साध्या नही जाता ॥ जेसें अंधकार जुक्तिरूपी दीपककरी दूर होताहे ॥ अवर बल जतनकरी निवृत्त नही होता ॥ तेसें जुक्ति बिना अवर जतनकरी अज्ञान निद्रा निवृत्त नही होती ॥ जो अप्रबोधकों सर्व ब्रह्म सिद्धांतका उपदेश करीयें तब उह उपदेश व्यर्थ होताहे ॥ जेसें कोउ दुःखी अपणा दुःख स्थाणुके आगें जाय कहे तब उसका कहा वह सुणता नही ॥ उसका कहणाभी वृथा होताहे ॥ तेसें अप्रबुद्धकों सर्व ब्रह्मका उपदेश व्यर्थ होताहे ॥ तातें मूढकों जुक्तिकरी जगावताहे अरु बोधवानकों प्रत्यछ तत्वका उपदेश करता हे हे रामजी एताकाल तुं अप्रबोध था इस कारणतें में तुझकों नाना प्रकारकी जुक्ति उपदेशकरी जगाया हे ॥ अब तुं जाग्या हे तब में तुजकों प्रत्यछ तत्वका उपदेस किया हे ॥ हे रामजी अब तुं अेसे धार जो में ब्रह्महों यह तीनो जगतभी ब्रह्म हे अहं त्वं आदिक सब ब्रह्म हे द्वैत कल्पना कछू नही ॥ अेसें धारिकरी जो तेरी इछा होय सो कर ॥ दृश्य संवेदन फुरे नही सदा आत्माविषे स्थित रहे ॥ इस प्रकार अनेक कार्यविषेभी लेप न होवेगा ॥ हे रामजी जो चैतन वपु परमात्मा प्रकाशरूप हे सो सदा अहंभाव करीकें फुर्ता हे ॥ अेसा जो अनुभवरूप हे चलते बेठते खाते पीते चेष्टा करते तिसीविषे स्थित रहु तव अहं ममभाव तेरा निवृत्त हो जावेगा अवेदन जो शांतरूप ब्रह्म सर्वभूतविषे स्थित हे ॥ तिसकों तुं प्राप्त होवेगा तव आदि अंततें रहित प्रकाशरूप आपकों देखेगा ॥ सुद्ध संवित मात्र आत्माकों देखेगा जेसें मृत्तिकाके पात्र टिंद दोली घट आदिक सब मृतिकाका अपणा आप हे ॥ तेसें तुं सर्वभूत आत्माकों देखेगा ॥ जेसें मृतिकातें घट भिन्न नही तेसें आत्मातें जगत् भिन्न नही ॥ जेसें वायु अरु स्पंद भिन्न नही अरु जलतें तरंग भिन्न नही ॥ तेसें आत्मातें प्रकृति भिन्न नही जेसें जल अरु तरंग शब्दमात्र दो हे ॥ तेसें आत्मा अरु प्रकृति शब्दमात्र दो हे ॥ भेदभाव कछू नही ॥ अज्ञान करीकें भेद भासता हे ॥ ज्ञान करीकें भेद नष्ट होजाता हे ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प भासता हे ॥ तेसें आत्माविषे प्रकृति हे हे रामजी चित्तरूपी वृछ हे अरु कल्पनारूपी बीज हे ॥ जब कल्पनारूपी बीज बोता हे ॥ तव चित्तरूपी अंकुर उत्पन्न होता हे ॥ तिसतें भावरूप संसार उत्पन्न होता हे ॥ जब आत्मज्ञानकरीकें कल्पनारूपी बीज दग्ध होता हे ॥ तब चित्तरूपी अंकुर नष्ट होजाता हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हें रामजी चित्तरूपी अंकुरतें सुख दुःखरूपी वछ उत्पन्न होता हे ॥ जब चित्तरूपी अंकुर नष्ट होजावे ॥ तब सुख दुःखरूपी वछ कहां उपजे ॥ हे रामजी जेता कछु द्वैत भ्रम हे ॥ सो अबोधकरी उपजता हे बोधकरी नष्ट होजाता हे आत्मा जो परमार्थ सार हे तिसकी भावना करु ॥ संसार भ्रमतें मुक्त होवेगा ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे स्मृतिविचार जोगो नाम अष्टचत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ ४८ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर जो कछु जानणे जोग था सो में जाणा हे अरु जो कछु देखणे जोग था सो देख्या हे अब में परम पदविषे पूर्ण आत्मा हुआहों तुमारे ज्ञानरूपी अमृतके सिंचणे करीकें हे मुनीश्वर पूर्णनें सब विश्व पूर्ण करी हे ॥ पूर्णतें पूर्ण प्रतीतकरी हे ॥ पूर्णविषे पूर्णहि स्थित हे अवर द्वैत कछू नही यह मुझकों अब अनुभव भया हे ॥ हे मुनीश्वर एसे में जाणिकरी लीलाके निमित्त अरु बोधकी वृद्धिके निमित्त तुमसों पूछताहों ज्यों बालक पिता सों पूछता हे ॥ तब पिता उद्वेग नही करता तेसें तुम उद्वेगवान नही होणा हे मुनीश्वर श्रवण नेत्र त्वचा रसना घ्राण पांचों इंद्रिय प्रत्यक्ष दृष्ट आतियां हे ॥ जब यह मरी जाता हे तब तिस कालविष विषयकों ग्रहण क्यों नही करतियां ॥ अरु जीवते केसें ग्रहण करतियां हे अरु मुए क्यों नही ग्रहण करतीयां हे अरु घटादिककी न्यांइं जड बाह्यस्थित हे अंतर इनका अनुभव केसें होता हे ॥ लोहेकी सलाकावत् यह भिन्न भिन्न हे इनका एकठा होणा केसें हुआ हे ॥ परस्पर जो एक आत्मकरी अनुभव होता हे में देखता हों में सुणता हों ॥ इत्यादिक एकठी वृत्ति क्यों करी हुइ हे ॥ में समानकरीके जाणताभी हों ॥ परंतु विशेषकरी तुमसों पूछता हों ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इंद्रियां अरू चित्त अरु घट पट आदिक पदार्थ हे ॥ सो निर्मल चैतनरूप आत्मातें भिन्न नही आत्मतत्व आकाशतेंभी सूक्ष्म स्वछ हे ॥ हे रामजी जब चैतन तत्वतें चैत्यता पुर्यष्टकाकी भावना फुरी हे ॥ तब आगें इंद्रियगणहूं सहित देखती भइ तब चित्तके आगें इंद्रियगण हुए हे ॥ इनकी घनताकरीके चैतनतत्व पुर्यष्टका भावकों प्राप्त हुआ हे ॥ तिसविषे सब घटादिक पदार्थ प्रतिबिंबित हुए हे ॥ पुर्यष्टकाविषे भासे हे ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर अनंत जगत् जो रचे हे अरु महा आदर्शविषे प्रतिबिंबित हे तिस पुर्यष्टकाका रूप क्या हे अरु केसें हुइ हे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी आदिअंततें रहित जो जगत्का बीजरूप अनादि ब्रह्म हे ॥ सो निरामय हे अरु प्रकाशरूप हे कल्पनातें रहित जो जगत्का बीजरूप अनादि ब्रह्म हे ॥ कलनातें रहित सुद्ध चिन्मात्र अचेतन हे ॥ सो जब कलनाके सन्मुख हुआ तब तिसका नाम जीव कहा ॥ सो जीव देहकों चेतता भया ॥ जब अहंभाव फुऱ्या तब अहंकार हुआ ॥ जब मनन करणे लगा तब मन हुआ ॥ जब निश्चय करणे लागा तब बुद्धि हुइ अरु परमात्मके देखणेवाली इंद्रियांकी भावना हुइ तब इंद्रियां भई ॥ जब देहकी भावना करणे लगा तब देह हुइ ॥ घट पटकी भावना हुइ तब घटपट हुअे ॥ इसी प्रकार जेसी जेसी भावना होती गइ तेसेंहि पदार्थ होते गये ॥ हे रामजी यहि सुभाव जिसका हे तिसकों पुर्यष्टका कहते हे ॥ सरूपतें विपर्ययरूप जो दृश्यकी ओर भावना भइ हे ॥ अरु कर्तृत्व भोक्तृत्व सुख दुःख आदिककी भावना कलना अभिमान जो चित्त कलाविषे हुआ ॥ इस करी तिसकों जीव कहते हे ॥ जेसी जेसी भाव नाका आकार हुआ तेसी तेसी वासना करत भया ॥ जेसें जलकरी सिंच्या हुआ बीज टास पत्र फूल फल भावकों प्राप्त होता हे ॥ तेसें वासनाकरी सिंच्या हुआ स्वरूपके प्रमादकरी म हा भमजाल विषे गिरता हे ॥ अेसें जाणता हे जो में मनुष्यदेह सहित हों अथवा देवता हों स्थावर हों ॥ इत्यादिक देहकों पाएकरी देहसाथ मिल्या हुआ जाणता हे अेसें नही जाणता जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

303

मैं चिदात्मा हौं ॥ देहसाथ मिल्या हुआ प्रछंन तुछ रूप आपकों देखता हे इस मिथ्या ज्ञानकरीकै डुबता हे देहविषे अभिमान करीकै वासनाके वस हुआ चिरपर्यंत अध उर्ध मधविषे यह जीव भमता हे ॥ जेसें समुद्रविषे आया हुआ काष्ट तरंगकरी उछलता हे अध उर्धकों जाता हे ॥ अरु जेसें घटीजंत्रके टिंड अध उर्धकों जाते हे ॥ तेसें जीव वासनाके वसतें अध उर्धकों भमता हे ॥ अरु जब विचार अभ्यासकरीके आत्मबोधकों प्राप्त होता हे तब संसार बंधनतें मुक्त होता हे आदिअंततें रहित जो आत्मपद हे तिसकों प्राप्त होता हे ॥ बहुत काल योनीकों भोगकें आत्मज्ञानकें वसतें परम पदकों प्राप्त होता हे ॥ हे रामजी सरूपतें गिरे हुए जीव इस प्रकार भमते हे अरु शरीरकों पावते हे अब यह सुण जो इंद्रियां मृतक हुए विषयकों किस निमित्त ग्रहण नही करतियां ॥ हे रामजी जब सुद्धतत्वविषे चित्तकलना फुरती हे तब उह जीवरूप होती हे ॥ बहुरी मनसहित षट् इंद्रियांकों लेकरी देहरूपी यह विषे स्थित होती हे ॥ तब बाह्य विषयकों ग्रहण करती हे ॥ मनसहित षट् इंद्रियके संबंधकरी विषयका ग्रहण होता हे ॥ इनतें रहित विषयकों कदाचित् नही ग्रहण करती इस प्रकार इनविषे स्थित होकरी जीवकला विषयकों ग्रहण करती हे ॥ यद्यपि इंद्रियां भिन्न भिन्न हे तोभी इनकों एकता करी लेती हे इनका एकठा होणा अहंकाररूपी तागेकरी होता हे ॥ देह इंद्रियां माणिक्यकी न्यांइं हे ॥ इनकों एकठा करीके जीव कहता हे में देखता हों में सुंघता हों सुणता हों में बोलता हों ॥ इत्यादिक इनके अभिमान करीकें विषयकों ग्रहण करता हे॥हे रामजी देह इंद्रियां मन आदिक जड हे ॥ परंतु आत्माकी सत्ता पायकरी अपणे अपणे विषयकों ग्रहण करती हे ॥ जबलग पुर्यष्टका देहविषे होती हे ॥ तबलग इंद्रियां विषयकों ग्रहण करतियां हे ॥ जब पुर्यष्टका देहसों निकसी जाती हे तब इंद्रियां नही विषयकों ग्रहण करतीयां ॥ हे रामजी यह जो प्रत्यछ नेत्र नासिका कान जिव्हा त्वचा भासतीयां हे सो यह इंद्रियां नही ॥ इंद्रियां सूक्ष्म तन्मात्रा हे यह तिनके रहणेके स्थान हे ॥ जेसें ग्रहविषे झरोखे होते हे तेसें यह स्थान हे अरु जीवका रूप सुण ॥ हे रामजी आत्मतत्व सब ठोर पूर्ण हे ॥ परंतु तिसका प्रतिबिंब तहां भासता हे ॥ जहां निर्मल ठोर होती हे ॥ जेसें जल निर्मलविषे प्रतिबिंब होता हे अरु जेसें दो कुंडे होवे॥एक जलकरी पूर्ण होवे ॥ दूसरा जलतें रहित होवे ॥ तब सूर्यका प्रकाश दोनोंविषे तुल होता हे ॥ परंतु जिसविषे जल हे प्रतिबिंब तहांही होता हे जलके डोलणेकरी प्रतिबिंबभी हलता दृष्ट आवता हे ॥ अरु जहां जल नही तहां प्रतिबिंबभी नही ॥ तेसें जहां सात्विक अंश अंतःकरण होता हे ॥ तहां आत्माका प्रतिबिंब जीवभी होता हे सो जबलग शरीरविषे होता हे तबलग शरीर चैतन भासता हे जब उह जीव कला पुर्यष्टकारूप शरीरकों त्याग जाती हे ॥ तब शरीर जड भासता हे ॥ जेसें कुंडेतें जल निकसी जावे तब कुंड सूर्यके प्रतिबिंबतें हीण भासता हे ॥ तेसें अंतःकरण अरु तन्मात्रा पुर्यष्टकाविषे आत्माका प्रतिबिंब होता हे जब पुर्यष्टका शरीरकों त्याग जाती हे ॥ तब शरीर जड भासता हे ॥ हे रामजी जेसें झरोखे आगें कोउ पदार्थ राखियें तब झरोंखेकों पदार्थका ज्ञान नही होता जब उसका स्वामी आनि देखता हे तब पदार्थकों ग्रहण करता हे ॥ तेसें इंद्रियांके स्थानविषे सूक्ष्म तन्मात्रा ग्रहण करणेवाली होती हे ॥ तब विषयकों ग्रहण करती हे जब तन्मात्रा नही होती तब इंद्रिया नही ग्रहण करी सकतियां ॥ हे रामजी प्रत्यछ देख जो कोउ कथाका श्रोता पुरुष कथाविषे बेठा होता हे ॥ अरु चित्त उसका अवर ठोर निकसी जाता हे ॥ तब प्रत्यक्ष बेठा हे परंतु सुणता कछू नहीं काहेतें जो श्रवण इंद्रियमनके साथ गईहे ॥ जेसें जब पुर्यष्टका निकसी जाती हे ॥ तब मृतक होता हे इंद्रियां विषयकों ग्रहण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नही करतियां ॥ हे रामजी अहं ममतें आदि लेकरी जो दृश्य हे सोभी सर्गके आदिविषे आत्मरूपी समुद्रतें तरंगवत् फुरी हे तिसकरी आगें दृश्य कलना हुइ हे ॥ सो न देश हे न काल हे न क्रिया हे ॥ यह सब असतरूप हे ॥ वास्तवतें कछू नही ॥ अेसें जाणीकरी असंग विचरु ॥ संसारके सुख दुःख हर्ष सोक राग दोषतें रहित होकरी विचरु ॥ तब तुं मायाकों तरी जावेगा ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे संवेदन विचारो नाम एकोनपंचाशत्तमःसर्गः ॥ ४९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी वास्तवतें इंद्रियादिक गण कछू उपजे नही ॥ जेसें आदि कमलजा ब्रह्माकी उत्पत्ति में तुझकों कही हे सो सब तुझनें सुणी हे ॥ जेसें आदि जीव पुर्यष्टका रूप ब्रह्मा उपजा हे तेसें अवरभी उपजे हे ॥ हे रामजी जीव पुर्यष्टकाविषे स्थित हो करी जेसी जेसी भावना करता गया हे ॥ तेसें तेसें भासणे लागा हे ॥ बहुरी तिसकी सत्ता पायकरी अपणे अपणे विषयकों ग्रहण करणे लागे हे ॥ अरु वास्तवतें इंद्रियांभी कछू वस्तु नही ॥ सब आत्माके आभासकरी फुरतीयां हे ॥ इंद्रियां अरु इंद्रियके अर्थ यह संवेदनतें उपजे हे ॥ जेसें उपजे हे तेसें तुझकों कहे हे ॥ हे रामजी सुद्ध संवित सत्ता मात्रविषे जो अहं उल्लेख हुआहे ॥ सो संवेदन हुइ हे ॥ उहि संवेदन जीवरूप पुर्यष्टका भावकों प्राप्त होकरि बुद्धि मन अरु पंच तन्मात्राकों उपजाये करी जीवकला आंपहि तिनविषे प्रवेसकरी स्थित भइ हे तिसकों पुर्यष्टका कहते हें परंतु यह उपजीभी स्पंद विषे हे ॥ आत्मा विषे उपजणा कछू नही सो आत्मा न एक हे न अनेक हे ॥ परमात्म तत्व अस्ति अनामयहे ॥ अरु वेदनाभी तिसविषे अनन्यरूप हे ॥ हे रामजी तिसविषे न कोउ द्वैत कलना हे न कछू मनशक्ति हे ॥ केवल शांतसत्ता हे तिसकों परमात्मा कहते हे ॥ सो मन सहित षट् इंद्रियांतें अतीत हे अचैत चिन्मात्र हे ॥ तिसतें जीव उत्पत्ति हुआ हे यहभी उपदेसके निमित्त कहता हों ॥ वास्तवतें कछू उपजा नही केवल भ्रममात्र हे जहां जीव उपजा हे तहां तिसकों अहंभाव विपर्यय हुआ हे यही अविद्या हे ॥ सो उपदेसकरी उपदेसकों पाए लीन होजाती हे ॥ जेसें निर्मली करी जलकी मलिनता लीन होजाती हे तेसें गुरु अरु शास्त्र उपदेसके पाय करी अविद्या लीन होजाती हे ॥ तब भ्रम रूप आकार सांत होजाते हे ॥ ज्ञानरूप आत्मा सेष रहता हे ॥ जिस विषे आकासभी स्थूल हे ॥ जेसें परमाणुके आगें सुमेरु स्थूल होता हे ॥ तेसें आत्माके आगें आकास स्थूल हे ॥ हे रामजी आत्माके आगें जो स्थूलता भासती हे सो भ्रम मात्र हे ॥ जो वडे उदार आरंभ भासते हे सो असतहे तब अवर पदार्थकी क्या बात हे॥हे रामजी आत्माविषे जगत् कछु नही पाइता काहेतें जो वस्तु असम्यक ज्ञानकरिके भासती हे सो सम्यक् ज्ञान करि नही पाइति ॥ जेते कछू जगत् जाल भासते हे सो सब मायामात्र हे अर्थ कछू सिद्धि नही होता ॥ जेसें मृगतृष्णाका जल तनक पान किया नही जाता तेसें जगत्के पदार्थकरी कछू परमार्थ सिद्ध नही होता ॥ सब अज्ञान करिकें भासते हे॥हे रामजी जो वस्तु सम्यक् ज्ञानकरि पाइयें सो सत जाणिये ॥ जो सम्यक् ज्ञान करी न रहे सो भ्रममात्र जाणिए यह जीव पुर्यष्टका अविद्धक भ्रमहे ॥ असत्हि सत हो भासता हे ॥ जब गुरु अरु शास्त्रोंका विचार होता हे ॥ तब जगत् भ्रम मिटि जाता हे ॥ अरु पुर्यष्टकाविषे स्थित होकरी जेसी भावना करता हे ॥ तेसी सिद्धि होती हे ॥ जेसें बालक आपणे पछावेविषे वैताल कलपता हे तेसें जीव कला अपणे आपविषे देसकाल तत्व आदिक कलपती हे ॥ भावना के अनुसार तिसकों भासते हे ॥ जेसें बीजतें पत्र टास फूल फलादिक विस्तार होता हे तेसें तन्मात्रा तें अवर भूत जात सब अंतर बाहिर देस काल क्रिया कर्म हुआ हे ॥ आदि जी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व फुरी करि जेसा संकल्प धारता भया हे तेसें होभास्या हे सो यह संवेदनभी आत्मा साथ अनन्यरूप हे ॥ जेसें मिर्च अरु तीक्ष्णता अनन्यरूप हे जेसें आकाशविषे शून्यता अन न्यरूप हे तेसें आत्माविषे संवेदन अनन्यरूप हे ॥ तिस संवेदननें उपजी करी निश्चय धारा जो यह पदार्थ अेसें हे ॥ यह अेसें होवे सो तेसेंहि स्थित हे अन्यथा कदाचित् नही होते ॥ आदि जीव फुरिकरी जेसा निश्चयधाऱ्या हे ॥ तिसीका नाम निति हे॥ अरु सरूपतें सर्व आत्मसत्ता हे॥आत्मसत्ताहि रूपधारि करि स्थित भइ हे ॥ जेसें एकहि गनेका रस सकर खंडादि क आकारकों पावता हे ॥ जेसें एक मृतिका घट मट टिंडादिक आकारकों धारती हे ॥ तेसें आत्मसत्ता सर्व ज्ञानकों पावती हे ॥ जेसें एकहि जलका रस पत्र टास फूल फला दिक होकरी भासता हे ॥ तेसें एकहि आत्मसत्ता घटपट कंध आदिक आकार हो भासती हे ॥ हे रामजी जेसें आदि जीव निश्चय किया हे तेसेंहि स्थित हे ॥ अन्यथा कदाचित् नही होता परंतु जगत् कालविषे अेसें हे ॥ वास्तवतें न बिंब हे न प्रतिबिंब हे यह द्वैतविषे होते हे ॥ सो द्वैत कछू नही ॥ केवल चिदानंद ब्रह्म आत्मतत्व अपणे आपविषे स्थित हे ॥ देहा दिकभी सब चिन्मात्र हे ॥ हे रामजी जेता कछू जगत् भासता हे सो आत्माका किंचनरूप हे ॥ जेसें जेवरी सर्परूप भासती हे ॥ तेसें आत्मा जगत्रूप हो भासता हे ॥ जेसें स्वर्न भुषण हो भासता हे तेसें आत्मा द्रश्यरूप हो भासता हे ॥ जेसें स्वर्नविषे भूषण कछू वास्तव नही ॥ तेसें आत्माविषे दृश्य वास्तव नही ॥ जेसें सुपन पतन असतहि सत हो भासता हे ॥ तेसें जीवकों देह अवर भासती हे ॥ हे रामजी आत्मसत्ता ज्योंकी त्यों हे परंतु फुरणेकरी अनेक रूप धारती हे ॥ जेसें एक नटवा अनेक स्वांग धारता हे ॥ तेसें आत्मसत्ता देहादिक अनेक आकारकों धारती हे ॥ जेसें सुपनेविषे एकहि अनेकरूप धारी चेष्टा करता हे॥तेसें जगत्विषे नानारूपकों धारता हे॥हे रामजी आत्मा नित्य सुद्ध सर्वका अपणा आप हे ॥ अपणे स्वरू पके प्रमादकरी आपकरी आपका जन्ममरण जाणता हे ॥ सो जन्ममरण असतरूप हे ॥ जेसें कोउ पुरुष आपकों सुपनेविषे स्वानरूप देखे ॥ तेसें यह आपकों जन्मता मरता देखता हे ॥ जेसें जेसें इसकों पूर्व भावना हे भ्रम करिकें असतकों सत जाणता हे ॥ जेसें सुपनेविषे वस्तुकों अवस्तु अरु अवस्तुकों वस्तु देखता हे तेसें जाग्रतविषे विपर्यय देखता हे ॥ जेसें जाग्रत के ज्ञानतें सुपन भ्रम निवर्त होजाताहे तेसें आत्मा अधिष्ठानके ज्ञानतें जगत् भ्रम निवृत्त हो जाता हे ज़ेसें पूर्वका दुष्कृत कर्म कीया होवे अरु तिसके पाछें सुकृत कर्म करे तब उह आछाद्या जाता हे ॥ तेसें पूर्व संस्कार जब नीच वासना होती हे अरु पाछें आत्मतत्वका अभ्यास करे तब पुरुष प्रयत्न करिकें मलिन वासना नष्ट हो जाती हे ॥ जबलग वासना मलिन होती हे तबलग उपजता बिनसता गोता खाता हे॥जब संतकें संग अरु सतशास्त्रहूंके विचारकरी आत्मज्ञान उपजता हे तब संसार बंधनतें छूटता हे अन्यथा नही छूटता॥हे रामजी चित्त वासनारूपी कलंक करी जीव आवर्या हे ॥ देहरूपी मंदिरविषे बेठी करी अनेक भ्रमकों देखता हे॥आदि जीवकों फुर्या हे सो अपणें स्वरूपकों त्यागकरी अनात्म भ्रमकों देखता भया हे॥ जेसें बालक पछावेविषे भूत कलपे तेसें कलपकरी जेसी भावनाकरी तेसा भासणे लागा ॥ आदि जीव पूर्यष्टकाविषे स्थित हुआ हे ॥ पुर्यष्टका कहियें बुद्धी मन अहंकार अरु तन्मात्रा इनका नाम पुर्यष्टका हे ॥ अरु अंतवाहक देह हे ॥ चैतन्य आत्मा अमूर्त हे ॥ आकासभी तिसके निकट स्थूल हे ॥ प्राणवायु गुछेके समान हे ॥ देह सुमेरके समान हे॥अेसा सूक्ष्म जीव हे ॥ सुषुप्त जडरूप अरु सुपन भ्रम दोनों अवस्थाविषे स्थावर जंगमरूपी जीव भटकते हे ॥ कबहुं सुषुप्तिविषे स्थित होते हे ॥ कबहुं सुपनेविषे स्थित होते हे ॥ इस प्रकार दोनों अवस्था

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषे जीव भटकते है ॥ हे रामजी सर्वका देह अंतवाहक हे॥तिसी देहकरी चेष्टा करते हे ॥ कबहुं स्थावरविषे जाते हे तब वृछ पथरादिक जोनीकों पावते हे ॥ जब सुपनविषे होते हे तब जंगम जोनीकों पावते हे ॥ सोभी कर्म वासनाके अनुसार पावते हे ॥ जब तामसी वासना घन होती हे ॥ तब कल्पवृछ चिंतामण्यादिक स्वरूपकों प्राप्त होते हे॥ जब केवल तामसी घन मोहरूप होती हे तब अवर वृछ पथरादिक जोनीकों पावते हे॥इसका नाम सुषुप्ति हे सो लयघन मोहरूप हे॥ अरु इसतें इतर विक्षेपरूप सुपन अवस्था हे कबहुं तिसविषे होता हे कबहुं सुषुप्तिरूप स्थावर होता हे ॥ हे रामजी सुषुप्ति अवस्थाविषे वासना सुषुप्तिरूप होती हे ॥ सो बहुरी उगती हे इस करीकें मोहरूप हे ॥ अरु तिस सुषुप्तितें जब उतरता हे ॥ तब विक्षेपरूप सुपन होता हे ॥ जब बोध होवे तब जाग्रत अवस्थाकों पावे सो जाग्रत दो प्रकारकी हे सोइ जाग्रत हे जो लय अरू विक्षेपतातें रहित चैतन अवस्था हे तिसतें रहित अवर मनोराज सब सुपनरूप हे ॥ एक जीवन्मुक्ति जाग्रत हे ॥ दूसरी विदेहमुक्ति हे जीवन्मुक्ति तुरियारूप हे विदेहमुक्ति तुरियातीत हे ॥ यह अवस्था जीवकों बोधकरी प्राप्त होती हे ॥ अरु बोधपुरुष प्रयत्नकरी होता हे अन्यथा नही होता ॥ हे रामजी जीवका फुरणा ज्ञानरूप हे जब दृश्यकी उर लागता हे ॥ तब उहिरूप हो जाता हे ॥ अरु जो सतकी उर लगता हे तब सतरूप हो जाता हे जब दृश्यके सन्मुख होता हे ॥ तब दीर्घभ्रमकों देखता हे ॥ जीवके अंतर जो सृष्टिरूप हो फुरता हे सोभी आत्मसत्तातें इतर कछू वस्तु नही ॥ जेसें वटलोहीविषे दाणेवत् जल उछलता हे॥ सो जलतें इतर कछू वस्तु नही तेसें आत्माविना जीवके अंतर कछू अवर वस्तु नही॥अवर सृष्टि जो भासती हे सो मायामात्र हे॥हे रामजी जीवकों स्वरूपके प्रमादकरी कें सृष्टि भासती हे जो सतवत् होगइ हे तिसकरी नाना प्रकारकी विश्व भासती हे अरु नाना प्रकारकी वासना फुरती हे तिसकरी बंधमान हुआ हे ॥ जब वासनाक्षय होवे तब मुक्ति रूप हे ॥ हे रामजी घन वासना मोहरूपका नाम सुषुप्ति जड अवस्था हे ॥ अरु क्षीणसुपनरूप हे ॥ जब स्वरूपका प्रमाद होता हे तब दृश्यविषे सतबुद्धि होती हे ॥ तिसविषे प्रतीत होती हे ॥ तब नानाप्रकारकी वासना उदे होती हे अरु जब स्वरूपका साक्षात्कार होता हे ॥ तब संसारसत्यता नाश हो जाती हे ॥ बहुरी वासना नही फुरती ॥ हे रामजी घनवासना तब लग फुरती हे ॥ जबलग दृश्यकी सतबुद्धि होती हे जब जगत्का अत्यंत अभाव हुआ ॥ तब वासनाभी नही रहती ॥ जेसें भूषण गालीकरी स्वर्न किया तब भूषण बुद्धि नही रहती ॥ जो अज्ञानकरी वस्तु उपजी हे सो ज्ञानकरी लीन हो जाती हे॥सो वासना भ्रम अबोधकरी उपजा हे बोधतें लीन हो जाता हे ॥ हे रामजी घन वासनाकरी सुषुप्त जड अवस्था होती हे अरु तन वासनाकरी सुपन देखता हे घन वासना मोहकरी जीव स्थावर अवस्थाकों प्राप्त होता हे ॥ अरु मध्य वासनाकरी तिर्यक् योनी पशु पंछी सर्पादिककों प्राप्त होती हे ॥ अरु तन वासनाकरी मनुष्यादिक शरीरकों पावता हे ॥ अरु नष्ट वासनाकरी मोक्षकों पावता हे॥हे रामजी यह जगत् सब संकल्पकरी रचा हे॥जो बाह्य घटपट आदिक देखता हे॥अरु यह ण करता हे ॥ सो एक अंतर देहविषे स्थित होकरी उहि बाह्य घटपट आदिक हो करी स्थित होता हे ॥ तिनकों ग्रहण करता हे ॥ ग्राह्यग्राहकका संबंध देखता हे ॥ यह में ग्रहण कि या हे यह में लीया हे ॥ अरु जो ज्ञानवान हे सो न ग्रहण करणेका अभिमान करता हे न कछू त्यागणेका अभिमान करता हे तिसकों अंतर बाहिर सब चिदाकाश भासता हे ॥ चै तन सत्ताका यह चमत्कार हे तीनों जगत्रूप हो करी उहि प्रकाशता हे ॥ रंचकमात्रभी कछू अन्य नही केवल आत्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग बुदबुदे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो करी भासते हे ॥ परंतु जलही जल हे ॥ जलतें इतर कछू नही ॥ तेसें आत्मा जगत्रूप होकरी भासता हे अवर द्वैतवस्तु कछू नही ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे यथार्थोप देशोनाम पंचाशत्तमःसर्गः ॥ ५० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जिस जीवकों सुपनेविषे संसार उदे होता हे ॥ सो कल्पना मात्र होता हे ॥ न सत असत हे जीवकों एक फुरणेकरी भ्रम भासता हे ॥ तेसें यह जाग्रत अवस्था भ्रममात्र हे सुपन अरु जाग्रत एक रूप हे ॥ जेसें सुपनेविषे जाग्रतका एक क्षण भी दीर्घकाल होता हे ॥ तेसें स्वरूपके प्रमादकरी जाग्रतभी दीर्घकाल भ्रम हुआ हे ॥ सतकों असत जाणता हे अरु असतकों सत जाणता हे ॥ जडकों चैतन जाणता हे अरु चैतनकों जड जाणता हे ॥ विपर्यय ज्ञानकरीके इस प्रकार जाणता हे ॥ जेसें सुपनेविषे एकहि जीव अनेकताकों प्राप्त होता हे ॥ तेसें आदि जीव एकतें अनेक हो करी भासता हे ॥ जेसें स्थाणुविषे चोर भ्रम भासता हे ॥ तेसें आत्माविषे तीनों जगत् भ्रम भासता हे जेसें सुषुप्त तें सुपन भ्रम उदे होता हे ॥ तेसें अद्वैत तत्व आत्मविषे जगत् भ्रम होताहे ॥ आत्मा अनंत सर्वगत हे जीवका बीजरूप हे ॥ जेसा तिसके आश्रय फुरणा होता हे तेसा सिद्ध होकरी भासता हे ॥ हे रामजी जिन पुरुषकों स्वरूपको स्थिति भइ हे सो सदा निसंग हो करी विचर ते हे जेसें पुंडरीकाक्ष विष्णुजी निःसंगता उपदेस करेगा ॥ तिसकों पायकरी अर्जुन मुक्ति हो करी विचरेगा ॥ तेसें हे महाबाहो तुमभी विचरो हे रामजी पांडवका पुत्र अर्जुन नाम जेसें सुखसाथ जीवणा वितीत करेगा सर्व व्यवहारविषेभी सुखी स्वस्थ रहेगा तेसें तुंभी निसंग होकरी विचरु ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे ब्राह्मण पांडवका पुत्र अर्जुन कब होवेगा अरु केसें विष्णुजी तिसकों निःसंग उपदेस करेगा ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी अस्ति सन्मात्र जो तत्व हे जिसविषे आत्मादिक संज्ञा कल्पि करी कही हे ॥ सो आत्मसत्ता अपणें आपविषे स्थित हे आदि अंततें रहित हे ॥ जेसें आकाशविषे आकाश स्थित हे ॥ तेसें निर्मल तत्व अपणें आपविषे स्थित हे तिसविषे जगत् भ्रम मात्र फुरता हे ॥ जेसें स्वर्नविषे भूषण फुरते हे जेसें समुद्रविषे तरंग फुरते हे तेसें आत्माविषे चउदस प्रकारके भूत जात फुरते हे ॥ इस संसारजालविषे भूत प्राणी भ्रमते हे जेसें पंछी जालविषे भ्रमते हे तेसें जगत् विषे जीव भ्रमते हे चंद्रमा सूर्य लोकपाल होकरी स्थित हे पंच भूतका कर्म तिन रचा हे ॥ जो यह पुण्य ग्रहण करणे जोग हे यह पाप त्यागणे जोग हे ॥ पुण्यकरी स्वर्गादिक सुख प्राप्त होताहे ॥ पापकरी नर्क प्राप्त होंताहे ॥ यह मर्यादा लोकपालनें स्थापन करी हे इसप्रकार संसाररूपी नदीविषे वहते हे ॥ केसी संसाररूपी नदी वहती हे ॥ अवछिन्नरूप भासती हे ॥ अरु नाशरूप क्षण क्षणविषे नष्ट होतीहे ॥ जेसें नदीका वेग समान प्रवाह करिकें उहि भासता हे ॥ परंतु होता अबर हे क्षण क्षणविषे उह प्रथम जाता रहता हे ॥ तेसें संसार अपणे कालविषे अवछिन्नरूप सत भासता हे अरु आत्माकी अपेक्षाकरीके नाशरूप हे क्षण क्षणविषे नष्ट होता हे तिस जगत्विषे वैवस्वत सूर्यका पुत्र जमराज लोकपाल बडा प्रतापवान स्थित हे ॥ सो बडा तेजवान हे अरु सब जीवकों मारता हे ॥ अेसें नेमकों धारिकरी प्रजाविषे स्थित हे ॥ आदि प्रवाह इस प्रकार हुआ हे ॥ तिस प्रत प्रवाह कार्यके कर्मविषे स्थित हे ॥ जीवकों मारणा अरु दंड करणा यहि उसका नेम हे ॥ अरु चित्तविषे पहाडकी न्यांइं स्थित हे ॥ सो जमराज चहुं चहुं जुगहुं प्रति एक नेमकों धारता हे ॥ जो किसी जीवकों मारणा नही ॥ कबहुं अष्ट वर्ष कबहुं बारह वर्षका नेम धारता हे ॥ कबहुं सप्त वर्ष कबहुं षोडस वर्ष नेम धारता हे ॥ तब उदासीनकी न्यांइं स्थित होता हे किसीकों नही मारता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब पृथ्वीविषे निरंध्रभूत हो जाता हे ॥ चलणेकों मार्ग नही रहता ॥ तब केइ दुष्ट जीव होते हे जो जीवकों दुःख देते हे ॥ तिसकरी पृथ्वी भारी होती हे अरु दुःखी होती हे ॥ तिस पृथ्वीके भार उतारणे निमित्त बिष्णुजी अवतार धारिकरी दुष्ट जीवकों नास करता हे ॥ अरु धर्ममार्गकों दृढ करता हे ॥ हे रामजी इस प्रकार नेमकों धारणे हारे जम अनंत जुग अपणे व्यवहारकों करते बितीत होगये हे ॥ भूत अरु जगत् अनेक होगये हे ॥ इस सृष्टिका जो अब वैवस्वत जम हे सो आगे नेम करेगा द्वादश वर्ष पर्यंत किसीकों न मारेगा अेसा नेम करेगा ॥ तब जीव क्रूर कर्मोंकों करणे लागेगे पृथ्वी भूतों साथ निरंध्र हो जावेगी ॥ जेसें दृढ साथ गुढे संघट हो जाते हे ॥ तेसें पृथ्वी प्राणीसाथ संघट हो जावेगी तब पृथ्वी भार साथ दुःखीत होकरी विष्णुजीकी सरन जावेगी जेसें चोरतें डरीकरी स्त्री भर्ताकी शरन जावे तेसें पृथ्वी विष्णुकी सरन जावेगी ॥ तब विष्णु दो देहकों धारीकरी पृथ्वीका भार उतारेगा ॥ अरु सत्मार्ग स्थापन करेगा ॥ अरु सब देवता अवतार धारीकरी साथ आवेगे ॥ नरोविषे नायक भावकों प्राप्त होवेगा ॥ एक देहकरी वसुदेवके गृहविषे पुत्ररूप कृष्णनाम होवेगा ॥ अरु दुसरी देहकरी पांडवके गृह अर्जुन नाम होवेगा ॥ युधिष्ठिर नाम धर्मका पुत्र होवेगा ॥ समुद्र जिसकी मेखला हे ॥ अेसी जो पृथ्वी हे तिसका राज करेगा ॥ पांडवका पुत्र धर्मका वेत्ता तिसके चाचेका पुत्र दुर्योधन नाम होवेगा ॥ तिसका अरु भीमका बडा जुद्ध होवेगा ॥ दोनों उर संग्रामकी लालसा होवेगी अठारह क्षोणी सेना एकठी होवेगी तिसविषे बडे भयानक जुद्ध होवेगे ॥ तिनके बलकरी हरी पृथ्वीका भार उतारेगा ॥ हे रामजी तिस सेनाके जुद्धविषे विष्णुका जो अर्जुन नाम देह होवेगा ॥ सो गांडीव धनुष धरेगा सो प्रकृत सुभावविषे स्थित होवेगा ॥ हर्ष सोकादिक विकारसंयुक्त निरधर्मा होवेगा ॥ सो जुद्धविषे अपणे बांधव संबंधीकों देखीकरी मूर्छित होवेगा ॥ मोह कायरता करी तिसके हाथतें धनुष गिर पडेगा अरु आतुर होवेगा ॥ तब बोध देहकरी तिसकों हरी उपदेस करेगा ॥ दोनों सेनाके मधविषे जब अर्जुन मोहित होकरी गिरेगा ॥ तब हरी कहेगा हे राजसिंह अर्जुन तुं मनुष भावकों क्यों प्राप्त हुआ हे ॥ अरु मोहित क्यों हुआ हे ॥ इस कायरताकों त्याग करु तुं परम प्रकाश आत्मतत्व हे ॥ सर्वका आत्मा तुं आनंद अविनासी हे ॥ आदिअंत मध्यतें रहित हे ॥ तथा कायरताकों प्राप्त क्यों हुआ हे सर्व व्यापी परम अंकुररूप हे अरु निर्मल हे ॥ दुःखके स्पर्शतें रहित हे नित सुद्ध निरामय हे ॥ हे अर्जुन आत्मा न जनमता हे न मरता हे होए करी बहुरी कछू अवर नही होता ॥ काहेतें जो अज हे नित हे निरंतर पुरातन हे सर्वकी आदि हे ॥ तिसका शरीरके नास हुए नास नही होता ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे नारायणावतारोनाम एकपंचाशत्तमःसर्गः ॥ ५१ ॥ ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ हे अर्जुन जो इस आत्माकों हंता मानते हे के हनन क्रिया कर्ता हे ॥ अरु इस आत्माकों हत होता मानते हे सो आत्मकों नही जाणते ॥ न यह आत्मा मरता हे न मरता हे काहेतें मारता मरता नही जो अक्षय रूप हे अरु निराकार ॥ आकाशतेंभी सूक्ष्म हे तिस आत्मा परमेश्वरकों कवन किस प्रकार मारे ॥ हे अर्जुन तुं अहंकाररूप नही इस अनात्म अभिमानरूपी मलकों त्याग करु तुं जन्ममरणतें रहित मुक्तिरूप हे ॥ जिस पुरुषकों अनात्मविषे अहंभाव नही अरु बुद्धि जिसकी कर्तृत्व भोक्तृत्वविषे लेपायमान नही होती ॥ सो पुरुष सब विश्वकों मारे तोभी उसकों नही मारता ॥ बबंधमान होता हे ॥ हे अर्जुन जिसकों जेसा दृढ निश्चय होता हे तेसाहि तिसकों अनुभव होता हे ॥ तातें यह में मेरा जो मलिन संवित निश्चय होता हे तिसकों त्यागकरी स्वरूपविषे स्थित होउ ॥ जो अेसी भावना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषे स्थित नही होते ॥ अरु आपकों नष्ट होता मानते हे सो सुख दुःखकरीकें राग दोषविषे जलते हे हे अर्जुन अपणे गुणोके असंख्य कर्मोंविषे वरतते हे ॥ शब्द स्पर्श रूप रस गंध इनते पांचो तत्व आकाश वायु अग्नि जल पृथ्वी उपजे हे ॥ तिन भूतोंके अंश श्रवण त्वचा नेत्र जिव्हा नासिका विषयविषे स्थित हे ॥ उह अपणे विषेकों ग्रहण करते हे नेत्ररूपकों ग्रहण करते हे त्वचा स्पर्शकों जिव्हा रसकों नासिका गंधकों श्रवण शब्दकों ग्रहण करते हे तिसविषे अहंकार करी जो मूढ हुआ हे सो आपकों कर्ता मानता हे ॥ में देखता हों में सुण ता हों स्पर्श करता हों स्वाद लेता हों गंध लेता हों ॥ हे अर्जुन यह सब कर्म कलनाकरीकें रचेहे सो इंद्रियकरी कर्म होते हे ॥ अहंभावकरी यह वृथा क्लेसका भागी होता हे ॥ बहुत मिलिकरी कर्म किया अरु तिसविषे एकहि अभिमानी होकरी दुःख पावता हे ॥ सो वडा आश्चर्य हे देह इंद्रियकरी कर्म होते हे अरु अभिमानी होकरी सुख दुःखविषे राग दोष होकरी जीव जलता हे ॥ तातें इनका संग अभिमान त्यागकरी अपणे स्वरूपविषे स्थित होउ ॥ मनकरी बुद्धिकरी केवल इंद्रियांकरी जोगी कर्म करता हे ॥ अरु तिनविषे अभिमान वृत्ति नही कर्ता निसंग होकरी कर्ता हे ॥ तिसकी आत्मपदकी सिद्धताका कारण होते हे ॥ हे अर्जुन इस जीवकों अहंकारहि दुःखदायक हे अनात्मविषे आत्म अभिमान करता हे ॥ तिस अभिमान सहित जो कछू कर्म करता हे ॥ सो सब दुःखदायक होते हे ॥ अरु जो अभिमानरूपी विषके चूरण तें रहित हो करी चेष्टा करता हे ॥ लेता हे देताहे सो दुःखका कारण नही होता सदा सुखरूप हे ॥हे अर्जुन सुंदर सरीर होवे अरु विष्टा मल साथ मलिन किया होवे ॥ तव तिसकी सोभा जाती रहती हे तेसें बुद्धिवानभी होवे ॥अरु शास्त्रका वेत्ता होवे ॥ इत्यादि क गुणोंकरी संपन होवे ॥ अरु अनात्मविषे आत्म अभिमान होवे तिसकी सोभा जाती रहती हे अरु जो निर्मम निरहंकार अरु सुख दुःखविषे समहे ॥ अेसा क्षमावान हे सो सुभ कर्म करे अथवा असुभ करे ॥ तिसकों किसी कर्मका स्पर्श नही होता ॥ हे अर्जुन अेसें निश्चयवान होकरी कर्मकों करो ॥ तातें हे पांडव पुत्र यह जुद्ध कर्म तेरा धर्म हे सो कर ॥ अपणा कर्म अती क्रुरभी होवे परंतु कल्याण करता हे ॥ अरु पराया धर्म उत्तमभी होवे तोभी दुःखदायक हे अपणा धर्म अमृतकी न्यांइ अल्पभी सुखदायक हे ॥ हे अर्जुन भावे तेसा कर्म करु जब तेरे विषे अहंभाव न होवेगा ॥ तव तुझकों स्पर्श न करेगा संग अभिमानकों त्यागकरी जोगविषे स्थित होकरी कर्म करु ॥ जो निःसंग पुरुष हे ॥ तिसकों कोउ कर्म आनि प्राप्त होवे तिसकों करता हुआ बंधमान नही होता तातें ब्रह्मरूप होकरी ब्रह्ममयकर्मकों करु ॥ तब सीघ्रहि ब्रह्मरूप हो जावेगा जो कछू आचार कर्म होवे सो ब्रह्मविषे अर्पण करु हे अर्जुन सर्व कर्म ईश्वरविषे समर्पण करु सो ईश्वर आत्मा हे ॥ निर्मल कहिये निर्दुख कहियें भावना करी भावित हुआ इश्वर आत्मा होकरी पृथ्वीका भूषण होकरी विचरु ॥ संन्यास योग जुक्ती होकरी कर्मों करता मुक्तीरूप होवेगा सर्वसंकल्प तें संन्यास सम शांत होकरी विचरु ॥ अर्जुनोवाच ॥ ॥ हे भगवान संगत्याग किसकों कहते हे अरु ब्रह्मअर्पण किस कों कहते हे ईश्वरअर्पण किसकों कहते हे ॥ अरु संन्यास किसकों कहते हे ॥ जोग किसकों कहते हे ॥ इनकों विभाग करीकें कहो मोहके निवृत्ति अर्थ ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ हे अर्जुन प्रथम तुं ब्रह्म सुण जो किसकों कहते हे ॥ जहां सर्व संकल्प शांति हे एक घन वेदना हे अवर कछू भावनाका उत्थान नही अचेत चिन्मात्र सत्ता हे ॥ तिसकों परब्रह्म कहते हे तिसकों जाणीकरी अेसें पावणेका उद्यम करणा जिस विचार साथ तिसकों पाइये तिसका नाम ज्ञान हे अरु तिसविषे स्थित होणा तिसका नाम जोग हे अरु यह सर्व ब्रह्म हे में ब्रह्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हों ॥ सर्व जगत् मेंही हों ब्रह्मतें इतर कछू भावना न करणी इसका नाम ब्रह्मअर्पण हे अरु जो नाना प्रकारका जगत् भासता हे सो क्या हे ॥ अंतरभी शून्य बाहरभी शून्य जिसकों सिलाकी उपमा हे अेसा जो आकाशवत् सत्तारूप हे ॥ सो नशून्य हे न सिलावत हे ॥ तिसके आश्रय स्पंदकलना फुरेकी न्याइ कछू होकरी अन्यवत् भासती हे॥ सो जगत्रूप होकरी स्थित भइहे परंतु केसी हे आकासकी न्याइ शून्य हे ॥ तिसविषे जो विभाग कलना हूइ हे सों कोट कोट अंश जीव कलां होती गइ हे ॥ एकहि अपृथक अनेक भूत पृथक पृथक हो करी स्थित भइ हे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग बुदबुदे अनेकरूप होकरी स्थित होते हे ॥ सो जलहीं हे ॥ अवर कछू नही ॥ एकहि जल अनेक रूप भासता हे तेसें एकहि वस्तु सत्ता घट पट आदिक आकार होकरी भासती हे ॥ संवित सारमें आत्माविषे भेद कलना कछू नही ॥ अज्ञान करि कें अनेक रूप भेद कलना विकल्प जाल भासते हे ॥ अरु अनेक भावकों एक देखणाभी अज्ञान हे अरु एककों अनेक देखणाभी अज्ञान हे ॥ सो एक अनेक देखणा क्याहे ॥ अरु अनेक एक देखणा क्याहे ॥ जो एक आत्मा हे तिसकों अनेक नाम रूप दे खणासो अज्ञान हे ॥ अरु भिन्न भिन्न देह इंद्रियां प्राण मन बुध्यादिक अनेक हे तिनविषे अहंप्रतीत करी एकत्र भाव देखणा सोभी अज्ञान करी यह कलना हूइ हे अरु ज्ञान करी कें नष्ट होजाती हे ॥ हे अर्जुन जेते कछू संकल्प जाल हे तिनकों त्याग करणा ॥ इसका नाम असंग संगतें रहित कहते हें ॥ अरु सब कलना जालकों ईश्वरसाथ इतर भाव नही क र्णा इस भावना करी द्वैतभाव गलित हो जावेगा ॥ इसका नाम इश्वर समर्पण कहते हे ॥ हे अर्जुन जब अेसी अभेद भावना होती हे तब आत्मबोध प्राप्त होताहे ॥ अरु बोधकरी स ब शब्द अर्थ एकरूप भासते हे ॥ सर्व शब्दोंका एकहि शब्द भासताहे ॥ अरु एकहि अर्थ सर्व शब्दोंविषे भासता हे ॥ हे अर्जुन सर्व जगत् में हो मेंही दिशाहो मेंही आकाश हो ॥ मेंही कर्म हो मेंही काल हो ॥ द्वैतभी मेंही हों अद्वैतभी मेंहो ॥ अेसा जो सर्वात्मा मेंहों सो तुं मेरे विषे मनकों लगाये मेरी भक्ति करु ॥ अरु मेराही भजन करु ॥ अरु मुजहीकों नम स्कार करु ॥ तब तुं मुजहीकों प्राप्त होवेगा हे अर्जुन में आत्मा हो तुं मेरेहि परायण होड्ड ॥ अर्जुनोवाच ॥ ॥ हे देव अेसें तेरे दो रूप हे एकपर रूप हे एक अपररूप हे तिन दोनो रूपविषे में किसका आश्रय करो ॥ जिसकरी में परमसिद्धांतकों प्राप्त होउ ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ ॥ हे अनघ एक समानरूप हे ॥ अरु एक परमरूप हे ॥ यह् जो संख चक्र गदा दिक संयुक्त हे सो मेरा समानरूप हे ॥ अरु परमरूप मेरा आदि अंततें रहित एक अनामय हे ॥ सो ब्रह्म आत्म परमात्मा आदिक सबदोंकरी कहता हे ॥ जबलग तुं अप्रबोध हे अ नात्म देहादिकविषे तुजकों आत्म अभिमान हे तबलग मेरे चतुर्भुज अकारकी पूजा परायण होउ अरु कर्मोंकों करु ॥ जब प्रबोध होवेगा तब मेरे परमरूपकों प्राप्त होवेगा ॥ आदि अंत मध्य तें रहित मेरा रूप हे तिसकों पायकरी बहुरी जन्म मरनविषे न आवेगा जब तुं सचुकों नास करता हुआ ज्ञानवान भया तब आत्माकरी आत्मासों मेरा पूजन करु ॥ में सर्व का आत्मा हों यह में हो अेसें जो में कहता हों सो आत्मतत्व बहुरी बहुरी कहता हों ॥ हे अर्जुन में मानता हों जो तुं अब प्रबोध हुआ हे अरु आत्मपदविषे विश्रामवान हुआहे अरु संकल्प कलनातें रहित मुक्ति हुआहे ॥ एक आत्मसत्ता विषे स्थित हुआहे ॥ अेसें जोगकरी सर्वभूतोंविषे स्थित आत्माकों देखेगा ॥ अरु सर्व भूत आत्माविषे स्थित देखेगा अरु सर्वत्र विषे तुजकों सम बुद्धि होवेगी ॥ तब स्वरूपविषे तुजकों दृढ स्थित होवेगी ॥ हे अर्जुन जो सर्वभूतोंविषे स्थित आत्माकों देखताहे ॥ अरु एकत्व भावकरी भजन करता हे ॥ आत्मातें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतर जिसकों अवर भावना नही फुरती एसें एकत्व भाव विषे जो स्थित हे सो सर्व प्रकार वर्त मानभी हे ॥ तोभी बहुरी जन्म मरनविषे नही आवता ॥ हे अर्जुन जिसविषे सर्व श ब्दोंका अर्थ हे ॥ अरु सर्व शब्दोंविषे जो एक अर्थरूप हे ॥ अेसी जो आत्मसत्ता हे सो न सत हे न असत हे ॥ सत असत तें जो रहित सत्ता हे सो आत्मसत्ता हे ॥ सो सर्वलोकके चित्तविषे प्रकाशरूप करिकें स्थित हेसो आत्मा हे ॥ हे भारत जेसें सर्व दूधविषे घृत स्थित होता हे ॥ अरु जलविषे रस स्थित होता हे ॥ तेसें में सर्व लोकके अंतर तत्वरूप स्थित हो ॥ सर्वशरीरविषे जो चेतन हे ॥ ति सचैतन मुक्ति जो सूक्ष्म अनुभव सत्ता हे सो में हों सर्वगत आत्मा स्थित हों ॥ जेसें सर्व दूधविषे घृत स्थित हे तेसें सर्व पदार्थ के अंतर मे आत्मा स्थित हों ॥ जेसें रत्नके अंतर बाहेर प्रकास होता हे ॥ तेसें में सर्व पदार्थके अंतर बाहेर स्थित हों ॥ जेसें अनेक घटके अंतर बाहेर एकहि आकाश स्थित हे तेसें में अनेक देहोके अंतर बाहेर अव्यक्त स्वरूप स्थित हों ॥ हे अर्जुन ब्रह्मातें आदि तृण पर्यंत सर्व पदार्थ विषे सत्ता समान करिकें में स्थित हों अरु नित्य अजन्मा हों मेरे विषे जो चित्त संवेदन फुरी हे सो ब्रह्मसत्ताकी न्यांइं होत भइ हे ॥ अरु फुरणेकरीकें जगतरूप हो भासता हे ॥ अहंता ममता आदिककों प्राप्त भइ हे अरु आत्मतत्व अपणे आपविषे स्थित हे अवर द्वैत कछू नही ॥ हे अर्जुन आ त्मा सबका साक्षी रूप हे तिसकों जगत्का सुख दुःख स्पर्श नही करता जेसें दर्पण प्रतिंबबको ग्रहण करता हे परंतु सबविषे सम हे ॥ किसी करी खेदवान नही होता ॥ तेसें सब पदार्थ अवस्थाका साक्षी भूत आत्मा हे ॥ परंतु किसीकों स्पर्श नही करता ॥ अरु शरीरके नासविषे तिसका नाश नही होता जो एसें देखता हे सो जथार्थ देखता हे ॥ हे अर्जुन पृथ्वीविषे गंध में हो ॥ अरु जलविषे रस में हों ॥ पवन विषे स्पर्श अरु स्पंदसक्ति में हों ॥ अग्निविषे प्रकास सक्ति आकासविषे सब्द सक्ति में हों ॥ अवर तुजकों क्या कहों जो यह में हों ॥ सर्वा त्म सर्वका आत्मा में हों मुजतें इतर कछू नही ॥ हें पांडव यह जो सृष्टी प्रवर्तती हे ॥ उत्पत्ति अरु प्रलय होता दृष्ट आती हे ॥ सो मेरेविषे अेसे हे जेसें समुद्रविषे तरंग उपजते अरु लीन होते हें जेसें पहाड पथररूप हे अरु वृछ काष्ठरूप हे तरंग जलरूप हे तेसें सर्व पदार्थ विषे में आत्मरूप हों ॥ जो सर्वभूतों कों आत्मा विषे देषता हे सो आत्माकों अकर्ता देषता हे ॥ जेसें समुद्रविषे नाना प्रकारके तरंग भासते हे ॥ स्वर्नविषे भूषण भासते हें ॥ तेसें नाना आकार यह आत्माविषे भासते हें ॥ हे अर्जुन यह नानाप्रकारके पदार्थ ब्रह्मरूप हें ब्रह्मतें भिन्न कछू नही ॥ तब अवर क्या कहियें भाव विकार क्या कहियें ॥ जगत् द्वैत क्या कहियें जो उही हे तब वृथा मोहित क्यों होता हे ॥ इस प्रकार बुधिवांन सुणीकरी समुजसों अंतर भावना निश्चित हो करी जीवन्मुक्ती इस लोकविषे समरस चित्त विचरते हें ॥ हे अर्जुन तिस पदकों तुं क्यों नही प्राप्त होता ॥ जो पुरुष निर्मान अरु निर्मोह हुए हें ॥ अरु अभिला षादोष जिनका निवृत्त भया हे सर्व कामनातें रहित हुए हें ॥ सो अव्यय पदकों प्राप्त हुए हें ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे अर्जुनोपदेसो नाम द्विपंचाशत्तमःसर्गः ॥ ५२ ॥

॥ श्रीभगवानोवाच ॥ हे महाबाहो बहुरी मेरे परम वचन सुण ॥ में तेरी प्रसंनताके निमित्त कहता हों जो तेरा हितकारी हों ॥ यह जो उष्ण सीत विषय हे सो इंद्रियकों स्पर्श होते हे अरु आगमापाइ हे आते हे बहुरी निवृत्त होजाते हे तातें अनित्य हे तिनकों तुं सहि रहू आत्मकों स्पर्श नहि करते तुं तो आत्मा हे एक हे ॥ आदि अंत मध्यतें रहित हे निराकार अखंड पूर्ण हे तुझकों सीतउष्ण सुख दुःख खंडित नही करी शकते यह कलना करी रचे हुए हे ॥ जेसें स्वर्नविषे भूषणका निवास हे तेसें आत्माविषे इनका असत निवास हे ॥ हे भारत जिसकों

302

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इंद्रियाके भोग स्पर्श भमरूप चलायमान नही करी शकते अरु सुख दुःख जीवकों सम हे ॥ तिस पुरुषकों मोक्षकी प्राप्ति होती हे ॥ हे अर्जुन आत्मा नित्य शुद्ध सर्वरूप हे अरु इंद्रियांके स्पर्श असतरूप हे सो असतरूपविषे सतरूप आत्माकों मोह नही शकते यह अल्पमात्र तुछ हे कछू वस्तु नही ॥ अरु बोधरूप आत्मतत्व सर्वगत शुद्धरूप हे ॥ तिसकों इनका स्पर्श केसें होवे ॥ सतकों असत स्पर्श नही करी शकता ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प आभास होता हे सो जवरीकों स्पर्श नही करी शकता अरु जेसें मूरतकी अग्नि कागदकों जलाय नही शकती ॥ अरु जेसें सुपनेके क्षोभ जाग्रत पुरुषकों स्पर्श नही करी शकते ॥ तेसें इंद्रियां अरु तिनके विषय आत्माकों स्पर्श नही करी शकते ॥ हे अर्जुन जो सत हे सो असत नही होता अरु जो असत हे सो सत नही होता ॥ सुखदुःखादिक असतरूप हे ॥ कछू हे नही अरु परमात्मा सतरूप हे ॥ जगत्के सत वस्तु घटादिक अरु आकाशके असत फुलादिक तिन दोनोंके त्यागतें पाछे जो निष्किंचन महा सतपद हे तिसविषे स्थित होउ ॥ हे अर्जुन ज्ञानवान पुरुष इष्ट अनिष्टविषे चलायमान नही होता इष्ट सुखकरी हर्षवान नही होता अनिष्ट दुःखकरी शोकवान नही होना ॥ अरु चैतन पाषाणवत् शरीरविषे स्थित होता हे ॥ हे साधु यह चित्तभी जड हे अरु देह इंद्रियादिकभी जड हे अरु आत्मा चेतन हे ॥ इनके साथ मिल्या हुआ आपकों देह क्यों देखता हे ॥ चित्त अरु देहभी आपसमें भिन्न भिन्न हे ॥ देहके नष्ट हुए चित्त नष्ट नही होता ॥ अरु चित्तके नष्ट हुए देह नष्ट नही होता ॥ इनके नष्ट हुए जो आपकों नष्ट होता मानता हे ॥ अरु इनके सुख दुःख साथ सुखी दुःखी होता हे ॥ सो महा मूर्ख हे ॥ हे अर्जुन स्वरूपके प्रमाद करीके देहादिकविषे अहं प्रतीत करता हे ॥ अरु कर्ता भोक्ता आपकों मानता हे ॥ जब आत्माका बोध होता हे तब आपकों अकर्ता अभोक्ता अद्वैत देखता हे ॥ जेसे जेवरीके अज्ञानकरी सर्प भासता हे अरु जेवरीके बोधकरी सर्पका अभाव होता हे ॥ तेसें आत्माके अज्ञानकरी देह इंद्रियांके सुख दुःख भासते हे ॥ अरु आत्मज्ञानकरी सुख दुःखका अभाव हो जाता हे ॥ हे अर्जुन यह विश्व एक अज ब्रह्मस्वरूप हे ॥ न कोउ जनमता हे ॥ न मरता हे ॥ यह सत उपदेश हे ॥ प्रबोध करी अेसें जाणता हे ॥ हे अर्जुन ब्रह्मरूपी समुद्रविषे तुं एक तरंग फुर्या हे ॥ केताक काल रहिकें बहुरी तिसीविषे लीन हो जावेगा ॥ तातें तेंरा सरूप निरामय ब्रह्म हे ॥ सब जगत् ब्रह्मका स्पंद हे ॥ समयपायकरी दृष्टि आता हे ॥ तातें मान मद शोक सुख दुःख सब असतरूप हे तुं शांतिवान होइ ॥ हे अर्जुन प्रथम तो तुं ब्रह्ममय जुद्ध करु जेती कछू अक्षोहणी सेना हे सो सब अनुभव करी नास कर ॥ जो यह द्वैत कछू नही ॥ एकहि सर्वदा परब्रह्मरूप स्थित हे ॥ यह ब्रह्ममय जुद्ध करु ॥ अरु सुख दुःख लाभ अलाभ अरु जय अजय ब्रह्म जुद्धविषे इनकों एकता करु ॥ जो कछू ब्रह्मातें लेकरी तृण पर्यंत जगत् भासता हे ॥ सो सब ब्रह्मही हे ॥ ब्रह्मतें इतर कछू नही अेसें जाणीके लाभ अलाभविषे सम होकरी स्थित होउ ॥ अवर चिंतवना कछू न करु ॥ हे अर्जुन जड शरीर साथ कर्म सुभाविक होते हे ॥ जेसें वायुका फुरणा सुभाविक होता हे तेसें शरीरकरी कर्म सुभाविक होते हे ॥ हे अर्जुन जो कछू कार्य करे अरु भोजन करे जो कछू यजन करे दान करे सो आत्माहिविषे अर्षण कर ॥ अरु सदा आत्मसत्ताविषे स्थित रहु ॥ अरु सबकों आत्मरूप देख हे अर्जुन जो किसीके अंतर दृढ निश्चय होता हे सोइ रूप उसकों भासता हे ॥ जब तूं इस प्रकार अभ्यास करेगा तब ब्रह्मरूप हो जावेगा इसविषे संशय कछू नही ॥ हे अर्जुन जो कर्मोविषे आत्माकों अकर्ता देखता हे ॥ अरु अकर्ता जो हे अकर्णा अभिमान सहित तिसकों करता देखता हे ॥ सो मनुषविषे बुद्धिवान हे ॥ अरु संपूर्ण कर्मोका कर्ताभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे ॥ कर्त्तव्य कछू न रहे यह अर्थ हे ॥ हे अर्जुन कर्मोंके फलकी इछाभी न होवे ॥ अरु कर्मोंविषे विरसताभी न होवे जो मैं न करों ॥ जोगविषे स्थित होकरी कर्मकों कर ॥ हे धनंजय कर्तृत्व अभिमान अरु फलकी वांछाकों त्यागकरी कर्म करु जो कर्मोंके फल अरु संगकों त्याग करी नित तृप्त हुआ हे सो कर्ता हुआभी कछू नही करता ॥ कार्य अकार्यकों कर्ताभी नही कर्ता ॥ हे अर्जुन जिसनें सर्व आरंभोविषे कामना संकल्पका त्याग किया हे ॥ ज्ञानअग्निकरी कर्म जलाए हे ॥ तिसकों बुद्धिवान पंडित कहते हे जो सम आत्माविषे स्थित हे ॥ सर्व अर्थविषे निस्पृह हे ॥ निर्द्वंद्व सत्ता स्थित यथा प्राप्त वर्तता हे सो पृथ्वीका भूषण हे ॥ समुद्रकी न्यांइं अचल हे ॥ अरु अपणे आपविषे तृप्त हे ॥ जेसें समुद्रविषे अनिछित जल प्रवेश करता हे तेसें ज्ञानवानविषे सुख प्रवेश करते हे ॥ सो शांतरूप सर्व कामनातें रहित हे ॥ इतिश्री यो० निर्वाणप्र० अर्जुनोपदेशे सर्व ब्रह्मप्रतिपादनंनाम त्रिपंचाशत्तमःसर्गः ॥ ५३ ॥

॥ श्रीभगवानोवाच ॥ हे अर्जुन तुं आत्मा हे सो केसा आत्मा हे ॥ जो देशकाल वस्तुके प्रछेदतें रहित हे ॥ अविनाशी हे अरु अजर हे ॥ अजर कहियें परिणामतें रहित ॥ हे अर्जुन तुं शोक मत कर यह जो तुझकों जगत् भासता हे सो अज्ञानकरीकें भासता हे ॥ अज्ञान कहियें अपणा प्रमाद अरु प्रमाद कहियें अनात्मविषे आत्म अभिमान ॥ इसका नाम अज्ञान हे ॥ हे अर्जुन यह जो संसाररूप तेरा देह हे इसविषे अभिमान मत कर यह मिथ्या हे ॥ इसकरी दुःख होता हे अरु तुं असंग हे अविनासी हे तेरा नास कदाचित् नही होता॥हे अर्जुन जो विनाशरूप हे तिसका होणा कदाचित् नही ॥ अरु जो सत्य हे तिसका अभाव होणा कदाचित् नही ॥ तत्ववेत्तानें इन दोनोंका निर्णय किया हे ॥ हे अर्जुन तिसकों तुं अविनासी जाण जिसकरी यह सर्व प्रकाशता हे ॥ तिसके विनास करणेकों कोउ समर्थ नही ॥ हे अर्जुन सो तुं एसा हे ॥ अरु यह आत्मा सर्वका अपणा आप हे ॥ तिसका विनास केसें होवे ॥ अरु अज्ञानी मनुष तिसका विनास होता मानते हे ॥ अर्जुनोवाच ॥ हे भगवान तुम कहते हो आत्मा अविनासी हे अरु सबका अपणा आप हे ॥ तब उनका क्यों करी नास होता हे ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ हे अर्जुन तुं सत्य कहता हे परमार्थतें किसीका नास नही होता ॥ परंतु अज्ञान करीके उनका नास होता हे ॥ तिनकों मृत्यु ग्रासी लेता हे ॥ हे अर्जुन तुं आत्मवेत्ता होउ सो आत्मा एक हे अरु अद्वैत हे ॥ जिसविषे एक कहणाभी नही संभवता तब द्वैत कहां होवे ॥ अर्जुनोवाच ॥ हे भगवान तुम कहते हो आत्मा एक हे तब मृत्युभी दुतीय न भया अरु लोक मरते हे मरीकें नरक स्वर्ग भोगता हे जब मृत्यु नही तब लोक मरते क्यों हे अरु पाप पुण्य भोगते क्यों हे ? ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ ॥ हे अर्जुन न कोउ मरता हे न जनमता हे यह सुपनेकी न्याइ मिथ्या कल्पना हे ॥ जेसें निद्रा दोषकरी जनमणा अरु मरणा भासता हे तेसें संसारविषे यह जन्म मरण भासता हे सो अज्ञानकरिकें भासता हे ॥ अज्ञान नाम फुरणेका हे तिस फुरणेही करी नरक अरु स्वर्ग कलप्या हे हे अर्जुन जेसें यह जीव भोगता हे सो तुं श्रवण कर ॥ अपणे स्वरूपके प्रमाद होणे करी आगें संकल्पके शरीर रचे हें पूर्यष्टका कहियें सो क्या हे पृथ्वी जल अग्नी वायु आकाश मन बुद्धि अहंकार तिसविषे जीव प्रवेस करता हे तिस साथ मिलीकरी जेसी वासना करता हे ॥ तेसीहि आगें भोगता हे ॥ सो वासना तीन प्रकारकी हे एक सात्विकी एक राजसी एक तामसी हे ॥ जेसी वासना होती हे तेसा स्वर्ग नरक बनि जाता हे ॥ सात्विकी वासनातें स्वर्ग बनि जाता हे इतर तें नर्कादिक बनि जाते हें ॥ स्वर्ग नर्क केवल वासना मात्र हे ॥ वास्तवतें न कोउ स्वर्ग हे न कोउ नर्क हे ॥ न कोउ मरता हे ॥ न जन्मता हे ॥ केवल एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्माहि ज्योंकात्यों स्थित हे ॥ परंतु यह जगत् भास भमकरिकें भासता हे अज्ञानकरिकें चिरकाल वासनाका अभ्यास किया हे ॥ तिसकरी भमकों देखता हे ॥ ॥ अर्जुनउवाच ॥ हे जगत्के पति नर्क स्वर्गादिक जोनीकों जगत्विषे यह जीव देखता हे ॥ तिस नाना प्रकारके देखणेविषे कारण कवन हे ? ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ ॥ हे अर्जुन अज्ञान करिकें जो अनात्माविषे आत्म अभिमान हुआ हे तिसकरी जगत्कों सत जानणे लागा हे सत जाणीकरी वासना करणे लागा हे ॥ बहुरी जेसें जेसें जगत्कों सत जाणीकरी वासना करता हे तेसें जगत् भमकों देखता हे ॥ जब इसकों आत्मविचार उपजंता हे तब जगत्कों सुपनेकी न्याइ देखता हे अरु वासनाभी क्षय हो जाती हे ॥ जब वासना क्षय होती हे तब कल्याणकों प्राप्त होता हे ॥ अर्जुनोवाच ॥ हे भगवान चिर अभ्यास करी जो जो संसार भम दृढ हो रहाहें सो किस प्रकार उपजा हे ॥ अरु किस प्रकार लीन होवेगा ? ॥ ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ ॥ हे अर्जुन मूर्खता अज्ञता करिकें जो अनात्म देहादिकविषे आत्म भावना होती हे ॥ तिसकरी जगत्कों सत जाणी वासना करता हे ॥ तिस वासनाके अनुसार जगत् भमकों देखता हे ॥ जब स्वरूपका अभ्यास कर्ता हे तब वासना नष्ट हो जाती हे तातें हे अर्जुन तुं स्वरूपका अभ्यास कर ॥ अहं मम आदिक वासनाकों त्याग करी केवल आत्माकी भावना करु ॥ हे अर्जुन यह देह वासना रूप हे ॥ जब वासना निवृत्त होवेगी तब देहभी लीन हो जावेगी ॥ जब देह लीन भइ तब देस काल क्रिया जन्म मरणभी न रहेंगे यह अपणेहि संकल्प करी उठेहे भमरूप हें तिनकी वासनाकरी वेष्टीत हुआ जीव भटकता हे ॥ जब आत्मबोध होता हे तब वासनातें मुक्ती होता हे ॥ निरालंब असंकल्प अविनासी आत्मतत्वकों पावता हे ॥ तिसीकों मोक्ष कहते हें जिसकी वासना क्षय हूइ हे हे अर्जुन जब जीवकों तत्वबोध होता हे ॥ तब वासनारूपी जालतें मुक्त होता हे ॥ जो वासना तें मुक्त हुआ सो मुक्त हुवा जो पुरुष सर्व धर्म परायणभी हे अरु सर्वज्ञ हे शास्त्रोंका वेत्ताभी हे परंतु वासनातें मुक्त नही हुआ सो सर्व उरतें बंध हे जेसें दृष्टिके दोष करी निर्मल आकाशविषे तरवरे मोरके पुंछवत् भासते हे ॥ तेसें मूर्खकों शुद्ध आत्माविषे वासनारूपी मल जगत् भासता हे ॥ जेसें पिंजरेविषे पंछी बांध्या होता हे तेसें उह बंध होता हे ॥ जिसके अंतर वासना हे सो बंध हे अरु जिसके अंतर वासना नही तिसकों मोक्ष जाण ॥ हे अर्जुन जिसके अंतर जगत्की वासना हे अरु बडी प्रभुता संयुक्त द्रष्टी आवता हे तोभी दरिद्री हे ॥ अरु दुःखका भागी हे ॥ अरु जिसकी वासना नष्ट भइहे अरु प्रभुतातें रहित द्रष्ट आता हे ॥ तौभी वडा प्रभुतावान हे ॥ इतिश्री यो०निर्वाणप्रकरणे जीव निर्णयोनामचतुष्पंचाशत्तमःसर्गः ॥ ५४ ॥ ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ हे अर्जुन इस प्रकार तुं निरवासनिक जीवन्मुक्त हो करी विचर ॥ तब तेरा अंतःकरण सीतल हो जावेगा ॥ अरु जरामरणतें मुक्त निःसंग आकाशवत् होवेगा ॥ इष्ट अनिष्टकों त्यागि वीतराग हो करी स्थित होवेगा ॥ हे अर्जुन पतित प्रवाह जो कार्य आनि प्राप्त होवे तिसकों करु ॥ जुद्धविषे कायरता मत कर आत्मा अविनाशी हे अरु देह नाशवंत हे ॥ देहके नास हुए आत्मा नास नही होता ॥ हे अर्जुन जो जीवन्मुक्त पुरुष हे सो राग द्वेषतें रहित हो करी प्रवाह पतित कार्यकों करते हे ॥ तुंभी जीवन्मुक्त सुभाव हो करी विचरु ॥ अरु यह में करों यह न करों ॥ इस ग्रहण त्यागके संकल्पकों त्याग ॥ इसी करी ज्ञानवान बंधमान नही होते ॥ अरु मूर्ख हे सो इसविषे बंधमान होते हे ॥ जो जीवन्मुक्त पुरुष हे ॥ सुषुप्तवत् स्थित हो करी प्रवाह पतितकार्यकों करते हे॥अरु प्रबुद्धकी न्यांइं वासनातें रहित हुए कार्य करते हे जेसें कच्छप अपणे अंग खेचि लेता हे तेसें ज्ञानवान वासनाकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुकचाए लेता हे ॥ अरु आपकों चिन्मात्ररूप जाणता हे अरु जगत् मेरेविषे मणकेकी नांइं परोया हुआ हें ॥ अरु सब जगत् मेरे अंग हे ॥ जेसें अपणे हाथ पसारे अरु खेचे ॥ जेसें जेसें समुद्रतें तरंग उठते अरु लीन होते हे विश्व आत्मातें उपजता अरु लीन होते हे भिन्न कछू नही ॥ हे अर्जुन जेसें चंदोए उपर नाना प्रकारके चित्र लिखे होते हे ॥ परंतु उह रंग व स्रतें भिन्न नही होते ॥ तेसें आत्माविषे मनरूपी चितेरेने जगत् रचा हे अरु अन उपजा हो करी भासता हे ॥ जेसें थंभविषे चितेरा कल्पता हे जो एती पूतलियां निकसेगियां ॥ सो आकाशरूपी पुतलियां तिसके मनविषे फुरतीयां हे ॥ तेसें यह तीनों जगत् काल संयुक्त चित्तविषे फुरते हें ॥ चितेराभी मूरतां तब लिखता हे जब भीत होती हे ॥ यह आश्चर्य हे जो आकाशविषे मन मूरतांकों कल्पता हे ॥ हे अर्जुन यह मूरतां स्पष्ट भासतीयां तोभी आकाशरूप हे॥ जेसें सुपनसृष्टि आकाशरूप होती हे तेसें यहभी हे आकास अरु कंधविषे भेद नही परंतु आश्चर्य हे जो भेद भासता हे ॥ जेसें मनोराज सुपनपुरविषे जगत् मनकें फुरणे करी भासता हे अरु अफुर हुए लय हो जाता हे सो मनोमात्र हे तेसें यह जगत् मनोमात्र हे आकासतेंभी शून्यरूप हे जेसें सुपनपुर अरु मनोराजविषे एक क्षणमें वडे कालका अनुभव होता हे पूर्वरूपके विस्मरण करी सत हो भासता हे ॥ तेसें यह जगत् सत हो भासता हे ॥ जबलग प्रमाद होता हे तबलग भासता हे ॥ जब इस क्रम करिके आत्माकों देखता हे ॥ तब जगत् भ्रम निवृत्त हो जाता हे प्रगट देखिता हे परंतु लीन हो जाता हे ॥ सरत्काल के आकाशवत् निर्मल भासता हे ॥ जेसें चित्तेरेके मनविषे चित्र फुरते हे सो आकाशरूप हे तेसें यह जगत् आकाशरूप हे ॥ हे अर्जुन भाव अभाव वृत्तिकों त्यागकरी स्वरूपविषे स्थित होहु ॥ तब आकाशवत् निर्मल हो जावेगा ॥ जेसें मेघकी प्रवृत्तिविषेभी आकाश निर्मल होता हे ॥ अरु निवृत्तिविषेभी निर्मल होता हे ॥ तेसें तुं पदार्थके भाव अभावविषे निर्मल हे ॥ जेते कछू पदार्थ भासते हे सो सब आकाशरूप हे ॥ जेसें चितेरेके मनविषे पूतलियां भासती हे ॥ तेसें यह जगत् आकाशरूप हे जेसें एक क्षणविषे मनके फुरणे करी नानाप्रका रके पदार्थ भासि आते हे अफुर हुए लीन हो जाते हें तेसें प्रमादकरीकें जगत् भासता हे आत्माके जाननेतें लीन हो जाता हे ॥ अरु आत्माविषे निर्वाणरूप हे आत्माविषे एक निमेषके फुरणेकरी प्रमादतें वज्रसारकी न्याइ दृढ हो भासता हे अरु चित्तके फुरणे करी यह सत भासता हे ॥ सब जगत् आकाशरूप हे द्वैत कछू हुआ नही बडा आश्चर्य हे जो आकाशपर मूरतां लिखीयां हे अरु नानारूप रमणीय होकरी भासतीयां हे अरु मनकों मोहतियां हे ॥ हे अर्जुन यहि आश्चर्य हे जो कछू हे नही अरु नाना प्रकारके रंग भासते हे ॥ आकाशरूपी निला ताल हे चंद्रमा तारे आदिक तिसविषे फुल खिले हे ॥ अरु मेघरूपी तिनकों पत्र लगे हे ॥ हे अर्जुन ओर आश्चर्य देख चित्रभी तब होता हे जब प्रथम तिसका आधार भीत अ थवा वस्त्र होता हे ॥ अरु इहां चित्र प्रथम उत्पन्न होते हे आधारभूत कंध पाछे बणती हे प्रथम यह मूरतां चित्र बने हे अरु पाछें भीत हुइहे यह आश्चर्य हे ॥ हे अर्जुन यह मायाकी प्रधानता हे जो वास्तव आकाशरूप चितेरेनें आकाशविषे आकाशरूप पूतलि रची हे आकाशविषे आकाशरूप पूतलियां उपजियां हे ॥ अरु आकाशविषे लीन होतियां हे आकाशही कों भोजन करतियां हे अरु आकाशहीकों आकाश देखता हे ॥ आकाशहि यह सृष्टी हे आकाशहि रूप आकाश आत्माविषे आकाशरूप स्थित हे ॥ हे अर्जुन वास्तवतें आत्मा अेसें हे तिस अेसें अद्वैत रूप आत्माविषे जो उत्थान हुआ हे तिस उत्थान करी उसकों स्वरूपका प्रमाद हुआ हे ॥ तिसकरी आगें दृश्य भ्रमकों देखता हे अरु अनेक वासना होती हे वास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नारूपी जेवरी साथ बांधा हुआ भटकता हे वासना करी आवर्या हुआ अहं त्वं आदिक शब्दोकों जानणे लागता हे ॥ अरु नाना प्रकारकें भमकों देखता हे तोभी स्वरूप ज्योंका त्यों हे जेसें दर्पणविषे प्रतिबिंब पडता हे अरु दर्पण ज्योंका त्यों रहता हे ॥ तेसें आत्माविषे जगत् प्रतिबिंबित होता हें ॥ अरु आत्मा छेद भेदतें रहित हे ब्रह्महि ब्रह्मविषे स्थित हे ॥ जब सर्व उही हे तब छेद भेद किसका होवे जेसें जलविषे तरंग बुदबुदे होते हे सो जलरूप हे ॥ तेसें यह सब ब्रह्महि करी पूर्ण हे तिसविषे द्वैत कछू नही ॥ जेसें आकाशविषे आकाश स्थित हे ॥ तेसें आत्माविषे आत्मा स्थित हे ॥ तिसविषे वास वासक कल्पना कोउ नही ॥ परंतु स्वरूपके प्रमाद करी वास वासक भेद होता हे ॥ जब स्वरूपका ज्ञान होता हे तब वासना नष्ट हो जाती हे ॥ हे अर्जुन जो वासनातें मुक्त हे सोइ मुक्त हे अरु वासना साथ बांधा हुआ हे सोइ बंध हे जो सर्व शास्त्रोंका वेत्ताभी हे अरु सर्व धर्मो करी पूर्ण हे ॥ जब वासनातें मुक्त नही हुआ तब बंधही हे ॥ जेसें पिंजरेविषे पंछी बांधा होता हे तेसें उह वासना करी बांधा हुआ हे ॥ हे अर्जुन जिसके अंतर वासनाका बीज रहाहे अरु बाह्य दृष्टि नही आता ॥ सो बीजभी बडे विस्तारकों पावेगा ॥ जेसें बटका बीज बडे विस्तारकों पावता हे ॥ तेसें उह वासना विस्तारकों पावेगी ॥ अरु जिस पुरुषनें आत्माका अभ्यास किया हे तिसकरी ज्ञानरूपी अग्नि उपजाइहे उसकरी वासनारूपी बीज जलाया हे ॥ तिसकों बहुरी संसार भम उदे नही होता अरु वस्तु बुद्धि करी पदार्थकों ग्रहण नही करता ॥ अरु सुख दुःख आदिकविषे नही डूबता ॥ सदा निर्लेप रहता हे ॥ जेसें तुंबा जलके उपरहि रहता हे तेसें उह सुख दुःखके उपर रहता हे ॥ हे अर्जुन तुं शांत आत्मा हे ॥ तेरा भम अब दुर भया हे ॥ अरु आत्मपदकों तुं प्राप्त भया हे मन मोह तेरा निर्वाण हो गयाहे तुं सम्यक ज्ञानी हुआ हे ॥ व्यवहार अरु तूष्णी तुझकों तुल्य भइहे ॥ शांतरूप निःशंक पदकों प्राप्त भया हे यह में जाणताहों ॥

॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे श्रीकृष्णसंवादे अर्जुन विश्रांति वर्णनं नाम पंचपंचाशत्तमःसर्गः ॥ ५५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ अर्जुनोवाच ॥ हे अच्युत मेरा मोह अब नष्ट भया हे अरु आत्मा स्वतिकों में प्राप्त भया हों ॥ तेरे प्रसादतें में अब निःसंदेह होकरी स्थित भया हों ॥ अब जो कछू तुम कहो सो में करता हों ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ हे अर्जुन मनकी जो पांच वृत्ति हे ॥ प्रमाण १ विपर्यय २ विकल्प ३ अभाव ४ स्मृति ५ ॥ जब यह पांचों रिदेसों निवृत्त होजावे तब चित्त शांत होवे तिसके पाछे जो शेष रहता हे चैत्यतें रहित चेतन तिसकों प्रत्यक चैतन कहते हे सो वस्तुरूप हे सर्व उपाधितें रहित सर्व हे अरु सर्व रूप हे ॥ जो तिस पदकों प्राप्त हुआ हे तिसकों आधि व्याधि आदिक दुःख बांधी नही शकते ॥ जेसें जालतें निकसी करी पछी आकाश मार्गकों उडता हे ॥ तेसें उह देह अभिमानतें मुक्ति होकरी आत्मपदकों प्राप्त होता हे तिसकों दुःख नही बांध शकते ॥ हे अर्जुन प्रत्यक जो चैतनसत्ता हे सो परम प्रकाशरूप शुद्ध हे ॥ संकल्प विकल्पतें रहित हे इंद्रियकेविषय में नही आता इंद्रियातें अतीत हे ॥ जो पुरुष सर्वतें अतीत पदकों प्राप्त हुआ हे तिसकों वासना नही स्पर्श करी शकती ॥ तिसके प्राप्त हुए इह घटपट आदिक पदार्थ सब शून्य होजाते हे तहां तुछ वासनाका बल कछू नही चलता ॥ जेसें अग्नि समूहके निकट बरफ गलिजाती हे तिसकी सीतलता नही रहती ॥ तेसें शुद्ध पदके साक्षात्कार हुए चित्तवृत्ति नष्ट हो जाती हे ॥ अरु वासनाकाभी अभाव हो जाता हे ॥ हे अर्जुन वासना तबलग फुरती हे जबलग संसारकों सत्य जाणता हे ॥ जब आत्मपदकी प्राप्ति होती हे तब संसार अरु वासनाका अभाव हो जाता हे ॥ इस कारणतें विरक्त पुरुषकों सत्य जा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ननें तें कछू वासना नही रहती ॥तबलग नाना प्रकारके आकार विकार संयुक्त विश्वा फुरती हे ॥ जबलग सुद्ध आत्माकों अपणे आपकरी नही जाण्या सुद्ध आत्माकों प्राप्त हुए जगत् भ्रम सब नष्ट होजाता हे ॥ आत्म तत्व स्वछ पदविषे स्थित होता हे ॥ आकाशवत् निर्मल भावकों प्राप्त होता हे ॥ अरु अपणे आपकरी सबकों पूर्ण देखता हे ॥ सोइ आत्मसत्ता सर्व आकाररूप हे अरु सब आकाररूपतें रहित हे ॥ हे अर्जुन जो शब्दतें अतीत परम वस्तु हे ॥ तिसकों किसकी उपमा दीजें जो वासनारूपी विसूचिकाकों त्यागकरी अपणे आत्मसुभाव विषे स्थित हुआ पृथ्वीमें विचरता हे सो त्रिलोकीका नाथ हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब इस प्रकार त्रिलोकीका नाथ कहेगा ॥ तब अर्जुन एक क्षण मौनविषे स्थित होजावेगा तिसके उप्रांत कहेगा ॥ अर्जुनउवाच ॥ हे भगवान सब शोक मेरे नष्ट होगये हे ॥ तुमारे वचनोंकरी बोध उदे हुआ हे जेसें सूर्यके उदे हुए कमल खिली आते हे तेसें तुमारे वचनोंकरी मेरा बोध खिली आया हे अब जो कछू तुमारी आज्ञा होवे सो में करोंगा ॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी इस प्रकार कहीकरी अर्जुन गांडीव धनुषकों ग्रहण करेगा ॥ भगवानकों सारथी करीकें निःसंदेह निःसंक होकरी रणलीला करेगा ॥ केसा जुद्ध करेगा जो हस्ती घोडा मनुष मारेगा लोहीके प्रवाह चलेगे ॥ तोभी आत्म तत्वविषे स्थित रहेगा ॥ स्वरूपतें चलायमान न होवेगा ॥ सुरकों नष्ट करी देवेगा, परंतु ज्योंका त्यों रहेगा ॥ जेसें पवन मेघकों अभाव करी देताहे ॥ तेसें जोधेका नास करेगा परंतु स्वरूपतें चलायमान न होवेगा ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे श्रीकृष्णअर्जुन संवादे भविष्यत गीता नामोपाख्यान समाप्तिर्नाम षट्पंचाशत्तमः सर्गः ॥ ५६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी अेसी दृष्टिकों आश्रयकरीके निःसंग संन्यास होइ ॥ केसी दृष्टि हे दुःखका नास करती हे ॥ जो कछू कर्म चेष्टा होवे सो ब्रह्मअर्पण करु॥ जिसविषे यह सर्व हे ॥ अरु जिसतें यह सर्व हे ॥ अेसी जो सत्ता हे तिसकों तुं परमात्मा जाण ॥ अनुभवरूप आत्मा हे तिसकी भावनाकरी तिसिकों प्राप्त होता हे ॥ इसविषे संशय नही ॥ जो सत्ता संवेदन फुरणेतें रहित हे ॥ चैतनतें रहित जो चैतन प्रकाशता हे तिसीकों तुं परमपद जाण ॥ सो सबका परम द्रष्टारूप हे अरु सबका प्रकाशक हे ॥ सो महा उत्तम परम गुरुका गुरु हे ॥ सो आत्मरूप हे ॥ शून्यवादी जिसकों शून्य कहते हे ॥ विज्ञानवादी जिसकों विज्ञान कहते हे ॥ ब्रह्मवादी जिसकों ब्रह्म कहते हे सो परम सार रूप हे सो शिवरूप हे शांतरूप अपणे आपविषे स्थित हे ॥ सो आत्मा इस जगत्रूपी मंदिरकों प्रकाश करणे हारा दीपक हे ॥ अरु जगत् रूपी वृक्षका रस हे अरु जगत्रूपी पशूका पालणे हारा गोपाल हे अरु जीवभूत रूपी मोतीकों एकत्र करणे हारा आत्मातागा हे ॥ अरु रिदे आकाशविषे स्थित हे अरु भूत रूपी मिरचविषे आत्मरूपी तीक्ष्णता हे अरु सर्व पदार्थविषे पदार्थ रूप सत्ता उही हे ॥ सत्यविषे सत्यत्ता उही हे असत्यविषे असत्यता उही हे जगत्रूपी गृहविषे पदार्थका प्रकाशणे हारा दीपक उही हे ॥ तिसी करी सब सिद्धी होते हे ॥ अरु चंद्रमा सूर्य तारे आदिक जो प्रकाशरूप दिखते हे तिनका प्रकाशक उही हे ॥ यह जड प्रकाश हे उह चैतन प्रकाश हे तिसकरी इह सिद्ध होते हे ॥ तिसीतें सब प्रकाश प्रगट भये हे ॥ सो आत्म संवित अपणे विचार करी पाता हे ॥ हे रामजी जेते कछु भाव अभाव पदार्थ भासते हे सो असत हे ॥ वास्तव कछु हुए नही प्रमाद दोष करीकें नाना रूप भासते हे॥ जब विचार उपजता हे तब यह नष्ट हो जाते हे ॥ हे रामजी अहंभाव जिसके अंतर हे अेसा जो जगत् जाल हे सो मिथ्या भ्रम करी भासता हे॥ तिसकों उपजा क्या कहिये अरु सत्य क्या कहिये किसकी आस्था करीयें इह जगत् कछू वस्तु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नही ॥ आदि अंत मध्यकी कल्पनातें रहित जो देव हे सो ब्रह्मसत्ता समान अपणे आपविषे स्थित ह ॥ अंवर द्वैत कछु वन्या नही ॥ जब यह निश्चय तुझकों दृढ होवेगा तब तुं व्यवहार करताभी अंतरतें निःसंग शांतरूप होवेगा ॥ हे रामजी जिस पुरुषकों तिस समान सत्ताविषे स्थिति भइहे सो इष्ट अनिष्टकी प्राप्तविषे राग दोषतें रहित अंतरतें सदा शांतरूप रहता है ॥ उह न उदे होता हे न अस्त होता हे सदा समता भावविषे स्थित रहता हे ॥ स्वस्थरूप अद्वैत तत्वविषे स्थित होता हे ॥ जगत्की उरतें सुषुप्तवत् हो जाता हे ॥ व्यवहारभी करता हे परंतु क्षोभवान् नही होता दर्पणकी न्यांइ ॥ जेसें मणि सब प्रतिबिंबकों ग्रहण करती हे परंतु तिसकों अंतर संग नही होता ॥ तेसें ज्ञानवान पुरुष कदाचित कलना कलंककों नही प्राप्त होता॥ तिसका चित्त व्यवहारविषेभी सदा निर्मल रहता हे ॥ ज्ञानवानकों जगत् आत्माका चमत्कार भासता हे ॥ न एक हे न अनेक हे ॥ आत्मतत्व सदा अपणे आपविषे स्थित हे चित्तविषे जो यह चैतनभाव भासता हे तिस चित्त फुरणेका नाम संसार हे अरु फुरणेतें रहित अफुरका नाम परम पद हे ॥ हे रामजी महा चैतनविषे जो निजका अभाव हे के में नही आत्माकों जाणता इसीका नाम चित्त स्पंद संसारका कारण हे ॥ जब यह भावना क्षय होवे तब चित्त अफुर हो जावे ॥ हे रामजी जहां निजभाव होता हे तहां पदार्थका अभाव होताहे ॥ सो निज सब ठोर अपणे अर्थकों सिद्ध करती हे ॥ परंतु आत्माविषे प्रवर्ति नही सकती ॥ जब यह कहता हे में आत्माकों नही जाणता तबभी आत्माका अभाव नही होता अभावकों जा णे वालाभी आत्माही हे ॥ जो आत्मतत्व न होवे तब अभाव क्यों न कहे सो आत्मा परम शून्य हे परंतु केसा शून्य हे जो अजडरूप परम चैतन हे ॥ हे रामजी सो निजका अर्थ तुं आत्माविषे कर ॥ जो आत्माकों निजकी भावना नही होती अर्थ यह जो आत्माका अभाव न मानो अरु अनात्मविषे जो निजका भाव हे तिसका अभाव करु ॥ अर्थ यह जो अ नात्मकों अभावरूप मान जब इस प्रकार दृढ भावना करेगा तब संसार भ्रम निवृत्त हो जावेगा केवल आत्मा भाव शेष रहेगा ॥ हे रामजी चित्तके फुरणेका नाम संसार हे चित्तके फुर णे करी संसार चक्र वर्तता हे मात्र मान मेय त्रिपुटी रूप चित्तही होता हे ॥ जेसें स्वर्नतें भूषन प्रगट होते हे ॥ तेसें चित्तकरी त्रिपुटी होती हे ॥ अरु चित्तस्पंदभी कछू भिन्न वस्तु नही ॥ आत्माका आभास रूप हे ॥ अज्ञानकरीकें चित्त स्पंद होता हे ॥ ज्ञानकरीकें लीन हो जाता हे ॥ जेसें स्वर्नके भूषणकों गालेतें भूषण बुद्धि नही रहती तेसें चित्त अचल हुए चित्त संज्ञा जाती रहती हे ॥ जेसें भूषणके अभाव हुए स्वर्नहि रहता हे तेसें बोध करी चित्त जगत्के लीन हुए शुद्ध चैतन सत्ता सेष रहती हे ॥ बहुरी भागकी तृष्णा लीन हो जाती हे ॥ जब भोग भावना निवृत्त भइ तब ज्ञानका परम लच्छन सिद्ध होता हे॥ हे रामजी जो ज्ञानवान पुरुष हे॥ जिसने सतस्वरूपकों जाण्या हे तिसकों भोगकी इछा नही रहती॥ जेसें जो पुरुष अमृत पान करी अघाय रहता हे ॥ तिसकों खल आदिक तुछ भोजनकी इछा नही रहती तेसें आत्मज्ञान करी जो संतुष्ट भया हे तिसकों विषयकी तृष्णा नही रहती यह निश्चय करी जाण ॥ जब चित्त फुरता हे तब जगत् भ्रम हो भासता हे ॥ अरु सत्य जाणी करी भोगकी इछा होती हे जब बोध होता हे तब जगत् भ्रम लीन हो जाता हे बहुरी तृष्णा किसकी करे ॥ अरु जब इंद्रियके विषय आनि प्राप्त होवे अरु हठकरी तिनकों न भोगे तब उह मूर्ख हे मानों शस्त्र करी आकाशकों छेदता हे ॥ हे रामजी मन जो वश होता हे सो गुरु शास्त्रोंकी जुक्ति करी होता हे ॥ उनकी जुक्ति बिना सुद्धता नही प्राप्त होती जब कोउ अपणे अंगहीकों काटे अरु तिसकरी चित्तकों स्थित किया चाहे ॥ तोभी चित्त स्थिर नही होता अरु संसार भ्रम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नही मिटता ॥ जबलग चित्त कोटिविषे स्थित हे तबलग जगत् भ्रमकों देखता हे ॥ जब गुरु शास्त्रोंकी जुक्तिकों ग्रहण करीकें चित्तका अभाव करता हे तब चित्त नष्ट होता हे ॥ चित्त अचल हो जाता हे ॥ जेसें बालककों अंधःकारविषे पिशाच भासता हे अरु दीपक जगाये देखतें अंधकार निवृत्त हुए पिशाच भ्रम नष्ट हो जाता हे तब बालक निर्भय होता हे ॥ तेसें आत्मज्ञान जुक्ति करी अज्ञान निवृत्त होता हे असम्यक् बुद्धि करीकें जगत् भ्रम हुआ हे ॥ सम्यक बोध करी निवृत्त हो जाता हे ॥ बहुरी जाण्या नही जाता जो अज्ञानका जगत् भ्रम कहां गया ॥ जेसें दीपकके निर्वाण हुए नही जानता जो प्रकाश कहां गया ॥ तेसें अज्ञान नष्ट हुए नही जाणता जो जगत् कहां गया ॥ चित्तके फुरणे करी बंध होता हे ॥ अरु अफुरण हुए मोक्ष होता हे परंतु आत्मातें भिन्न कछू नही ॥ आत्म सत्ता ज्योंकी त्यों हे तिसविषे न बंध हे न मोक्ष हे ॥ हे रामजी जब इसकों मोक्षकी इछा होती हे तबभी इसकी पूर्णताका क्षय होता हे ॥ अरु निःसंवेदन हुए कल्याण होताहे ॥ जो अनाभास अजड रूप परमपद हे सो चैतन्योन्मुखत्वतें रहित हे ॥ हे रामजी बंध मोक्ष आदिकभी कलनाविषे होतें हे ॥ जब कलनातें रहित बोध होताहे तब बंध मोक्ष दोनों नही रहते ॥ जबलग विचार करी नही देख्या तबलग बंध अरु मोक्ष भासता हे ॥ विचार कियेतें दोनोंका अभाव हो जाता हे ॥ जब अहं त्वं इदं आदिक भावनाका अभाव हुआ तब कवन किसकों बंध कहे ॥ अरु कवन किसकों मोक्ष कहे ॥ सब कलना चित्तके फुरणे करी होती हे ॥ जब चित्तका फुरणा नष्ट होता हे ॥ तब सब कलनाका अभाव हो जाता हे ॥ तब शांतिवान होता हे अन्यथा नही होता तातें चित्तकों आत्मपदविषे लीन कर जिसके आश्रय यह जगत् उपजता हे अरु लीन होताहे ॥ अेसा जो ज्ञानरूप आत्मा हे तिसी अनुभवरूप प्रत्यक् आत्म प्रकाशविषे स्थित होउ ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे प्रत्यकआत्मबोधवर्णनंनाम सप्तपंचाशत्तमःसर्गः ॥ ५७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी परमतत्व जो परमात्मपद हे सो हमकों सदा प्रत्यक्ष हे वस्तुरूप उही हे तिसतें इतर कछू नही यह प्रत्यक् आत्मा हे सर्व सत्ताका दर्पण हे सर्व सत्ता इसीतें प्रगट होती हे ॥ जेसें बीजतें वृछकी सत्ता प्रगट होती हे ॥ तेसें आत्मातें जगत् सत्ता प्रगट होती हे ॥ हे रामजी मन बुद्धि चित्त अहंकार जडात्मक हे ॥ इनतें रहित हे सो परमपद हे ॥ ब्रह्मा विष्णु रुद्रादिक सब तिसविषे स्थित हे तिस सत्ताकों पायकरी बडी उंची प्रभुता करी सोभते हे ॥ जेसें चक्रवर्ती राजा निर्धनतें उंचा सोभताहे तेसें यह सर्व लोकतें उंचे सोभते हे ॥ तिस आत्माकों जो प्राप्त होना हे सो मृत्युकों नही प्राप्त होता अरु शोकवान कदाचित् नही होता अरु क्षीण नही होता एक क्षणमात्रभी जो अप्रमादी हो करी आत्माकां ज्योंका त्यों जाणता हे सो संसार कलनाकों त्याग करी मुक्त होता हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् मन बुद्धि चित्त अहंकारके अभाव हुए सत्ता सामान्य सेष रहती हे सो तिसका भान केसें होवे ?॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो सर्व देहोंविषे स्थित हो करी भोजन करता हे जलपान करता हे ॥ देखता सुणता बोलता इत्यादिक क्रिया करता दृष्ट आता हे ॥ सो आदि अंततें रहित संवित सत्ता हे सर्वगत अपणे आपविषे स्थित हे अरु सर्व विश्व उहि रूप हे ॥ आकाशविषे आकाशरूप उही हे ॥ सब्दविषे सब्दरूप उही हे ॥ स्पर्शविषे स्पर्श नासिकाविषे गंधरूप उही हे ॥ शून्यविषे शून्य रूपविषे रूप नेत्रोंविषे नेत्रो उही हे पृथ्वीविषे पृथ्वी जलविषे जल तेजविषे तेज वृछविषे रस उही हे ॥ मनविषे मन बुद्धिविषे बुद्धि अहंकारविषे अहंकार रूप उही हे ॥ अग्निविषे अग्नि उष्णताविषे उष्णता घटविषे घट पटविषे पटरूप उही हे ॥ बटविषे बट स्था

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वरविषे स्थावर जंगमविषे जंगम रूप चैतन विषे चैतन जडविषे जडरूप उही हे ॥ कालविषे काल नाशविषे नाश उत्पति हो करी स्थित होता हे ॥ बालकविषे बालक जोबनविषे जोवन वृद्धविषे वृद्ध मृत्युविषे मृत्यु हो करी उही परमेश्वर स्थित हे ॥ हे रामजी इस प्रकार सर्व पदार्थविषे अभिन्न रूप स्थित हे ॥ नानात्व दृष्टिभि आती हे ॥ परंतु अनाना हे ॥ भ्रम करीकें नानात्व भासती हे ॥ जेसें पछावेविषे भ्रम करीकें वैताल भासता हे तेसें आत्माविषे नानात्व भासती हे सर्वविषे सर्व ठोर सर्व प्रकार सर्व आत्माहि स्थित हे अेसा जो आत्मदेव सत्ता समान हे तिसविषे स्थित होउ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ इस प्रकार जब वसिष्ठजीने कहा तब दिन अस्त हुआ ॥ सर्व सभा परस्पर नमस्कार करीकें स्नानकों गये ॥ बहुरी दिनकों अपणें अपणे आसन पर आनि बेठे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे विभूतियोगोपदेशोनाम अष्टपंचाशत्तमःसर्गः ॥ ५८ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् जेसें हमारे सुपनेविषे पुर नगर मंडल होते हे ॥ तेसें ब्रह्मादिकनें देवकों ग्रहण किया हे ॥ उनकों असतमें प्रतीत हे ॥ हमकों दृढ प्रतीत केसें उपजी हे ? ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी प्रथम ब्रह्माकों सर्ग असतवत् भासता हे वास्तव नही भासता सर्व गत चैतन संवितकों संसारके दर्शन करी जब सम्यक् दर्शनका अभाव भया सुपनरूप विषे आपतें अहं प्रतीत उपजी तब दृढ हो करी देखणे लागा जेसें अपणे सुपनेविषे जगत् दृढ भासता हे सुपना नही जाणता तेसें ब्रह्माका जगत्भी दृढ भासता हे ॥ सुपना नही भासता ॥ जो सुपन पुरुषतें उपजा हे सो सुपनरूप हे ॥ हे रामजी अेसा जो सर्ग हे सो जीव जीव प्रति उदे हुआ हे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग फुरते हे तेसें चैतन तत्वका आभास जगत् फुरते हे ॥ जेसें सुपन पुरविषे अवास्तव पदार्थ होते हे ॥ तेसें यह पदार्थभी अवास्तव हे ॥ भ्रम मात्रहि मनके संकल्प करी भासते हे ॥ हे रामजी एसा पदार्थ कोउ नही जो इस जगत्विषे सिद्ध नही होता अरु अवर का अवर नही भासता अरु मर्यादाकों नही त्यागता काहेतें जो मनके संकल्प मात्र उपजे हे ॥ तुं देख जलविषे अग्नि स्थित हे ॥ जेसें समुद्रविषे वडवाग्नि हे सो विपर्यय हे क्यों ॥ इसी कारणतें में कहता हों जो मनोमात्र हे ॥ अरु देख जो आकाशविषे नगर वसते हे विमान प्रत्यछ चलते हे ॥ अरु सिला जो हे चिंतामणी आदिक तिनतें कमल उपजते हे ॥ जेसें हिमालय पर्वतविषे बरफ उपजती हे ॥ अरु सर्व ऋतुके फूल एकही समे उपजते हे ॥ जेसें संकल्प दृढतें पथ्थर निकसी आते हे रत्नोंके गुछे जो लागते हे ॥ सिलाविषे जल निकसता हे जेसें चंद्रकांतासों अमृत द्रवता हे ॥ एक निमेषविषे घट पट हो जाते हे ॥ अरु पट घट हो जाते हे स्वरूपके विस्मरण हुए सतकों असत देखता हे ॥ जेसें सुपनेविषे अपणा मरणा देखता हे ॥ जल उर्धकों चलता देखता हे ॥ मेघ हो करी स्वर्गका चंदोआ हो करी गंगा वहती हे ॥ पथ्थर उडते हे जेसें पंख हुंसहित पहाड उडतेथे ॥ चिंतामणी सिला रूपतें सब पदार्थ उपजते हे ॥ इत्यादिक भ्रम करी नानात्व विपर्यय रूप होए फुरते हे तातें तुं देख जो मनोमात्र हे अवरका अवर हो जाते हे ॥ हे रामजी यह इंद्रजाल गंधर्व नगर सांबर मायावत् हे ॥ असत ही भ्रम करीकें सत हो भासते हे ॥ अेसा पदार्थ कोउ नही जो सत नही अरु असतभी नही मनविषे फुरते हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे जाग्रत सुपन विचारो नाम एकोनषष्टितमःसर्गः ॥ ५९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह संसार मिथ्या हे जो पुरुष इसकों सत्य जाणताहे सो महा मूर्ख हे ॥ अरु भ्रमविषे भ्रमकों देखता हे अरु महा मोहकों प्राप्त होता हे ॥ जेसें कोउ मृग टोएविषे गिर पडता हे तब महा दुःखी होताहे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुरी उसतेंभी बडे टोएविषे गिरता हे तब अति दुःखकों प्राप्त होता हे ॥ तेसें जो मूर्ख पुरुष हे आत्माके अज्ञान करीकें संसाररूपी टोयेविषे गिरता हे ॥ तिसविषे अवर अवर भम कों देखता हे ॥ सुपनेतें सुपनांतरकों देखता हे ॥ इसीतें एक इतिहास कहता हों ॥ हे रामजी तुं श्रवण करु ॥ एक संन्यासी था सो मननसीलवान था जोगका अष्टवा अंग समाधि हे ॥ तिसविषे स्थित था ॥ अरु रिदा उसका समाधि करते करते सुद्ध हुआथा समाधि करी दिनकों वितीत करे जब समाधितें उतरे तब आसन बनाय करी बहुरी समाधिविषे जुडे ॥ इसी प्रकार जब बहुत काल वितीत भया तब एक समे समाधितें उतरे हुए यह चिंतना करणे लगा ॥ जो जेसें प्रकृत पुरुष विचरते हे अरु चेष्टा करते हे ॥ तेसें मेंभी कछू चेष्टा रचों अेसें बिचार करीकें मनके संकल्पतें विश्व कल्पी तिसविषे एक आपभी बण्या तिसका नाम झींवट भया मद्यपान करे अरु ब्राह्मणकी सेवाभी करे तिस झींवट सरीरविषे वरतणें लागा ॥ चेष्टा करते हुएसोय गया तब सुपना पाया सुपनेविषे ब्राह्मणका सरीर तिसकों भान हुआ जो में ब्राह्मण हों तब ब्राह्मणके शरीरविषे वेदका अध्ययन करणे लागा ॥ तब पाठ बहुत करे एसी चेष्टाकरी चिरकाल वितीत भया तब सोए हुए सुपना पाया तहां आपकों राजा देखत भया जो में राजा हों वडी सेना संयुक्त राजा होकरी विचरणे लगा केताक काल इसी प्रकार वितीत भया तब सोए हुए बहुरी सुपना पाया तिस सुपनेविषे आपकों चक्रवर्ती राजा देखत भया ॥ जो में चक्रवर्ती राजा हों तब चक्रवर्ती होकरी सारी पृथ्वीपर आज्ञा चलावणें लगा जब केताक काल वितीत भया ॥ तब सुपना पाया ॥ सुपनेविषे आपकों देवांगना देखत भया जो में देवताकी स्त्रीहों ॥ तब देवताकी स्त्री होकरी देवताके साथ बागविषे विचरे ॥ जेसें वल्लि वृछके साथ सोभा पावती हे ॥ तेसें देवताके साथ सोभा पावणे लागा ॥ इसी प्रकार कोइ काल देवताके साथ वितीत भया ॥ तब बहुरी सुपना पाया तिस सुपनेविषे आपकों हरनी देखत भया जो में हरनी हों हरनी होकरी बनविषे विचरणे लागा ॥ कोइ काल अेसें वितीत भया ॥ बहुरी सुपना पाया तब आपकों वल्ली देखत भया जो वल्ली हों देवताके बनकी जब अेसें कोइ काल वितीत भया तब सुपना पाया सुपनेविषे आपकों भंवरी देखत भया जो में भंवरी हों भंवरी होकरी सुगंधकों ग्रहण करनें लागा ॥ तिसके अनंतर बहुरी सुपना पाया तब देखत भया जो में कमलनी हों ॥ कमलनी हुइ तहां एक दिन हस्ति आएकरी वल्लीकों खाएगया ॥ जेसें कोउ मुर्ख बाल भली वस्तुकोंभी तोडी डारता हे ॥ तेसें मुर्ख हस्ती वल्लीकों तोडीकरी खाय गया ॥ तिसके उप्रांत तिस वल्लीनें हस्तीका शरीर पाय बडा दुःखभी पाया टोएविषे गिर्या ॥ केताक काल वितीत भया तब हस्तीकों सुपना आया बहुरी भंवरी होकरी कमलविषे विचरणे लगा केताक काल वितीत भया तब बहुरी वल्ली हुआ उस वल्लीके निकट एक हस्ती आया हस्तीके पादकरी उह वल्ली चूर्ण भइ ॥ तब उस वल्लीकों एक हंसनें खाया ॥ उह वल्ली हंस भइ हंस होकरी वडे मानससरोवरविषे विचरणे लागा ॥ बहुरी हंसके मनविषे आया जो ब्रह्मका हंस होउं तब संकल्प करीकें ब्रह्माका हंस बनिगया ॥ जेसें जलका तरंग बनि जावे ॥ तेसें उह हंस ब्रह्माका बनि गया ॥ तब ब्रह्माके उपदेश करी हंसकों आत्मज्ञान प्राप्त भया ॥ हे रामजी अज्ञान करीकें अेसें भमकों प्राप्त भया ॥ सो ज्ञानकरीकें शांतभया ॥ बहुरी विदेहमुक्त होवेगा ॥ उह हंस सुमेरु पर्वतविषे उड्या जाताथा ॥ बहुरी उसके मनविषे आया जो में रुद्र होउं तब सत संकल्प करीकें रुद्र होगया ॥ जेसें सुद्ध दर्पणविषे प्रतिबिंब सीघ्रही पडता हे ॥ तेसें सुद्ध अंतःकरणके संकल्पकरी रुद्र भया ॥ रुद्र कहीयें जिसकों अनुत्तर ज्ञान हे अनुत्तर ज्ञान कहियें जिसके जाणेतें अ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर जानणा कछू न रहे ॥ सर्वतें श्रेष्ठ ज्ञान सो रुद्रकौं अनुत्तर ज्ञान हे तिस अनुत्तर ज्ञानकरी शोभत रुद्र होकरी अपणी चेष्टा करत भया ॥ अरु अपणें गुणकों देखत भया ॥ रुद्रके मनविषे विचार हुआ जो बडा आश्चर्य हे ॥ में अज्ञान करीकें एते बडे भमकों प्राप्त हुआथा ॥ अेसी आश्चर्य माया ॥ में तो एक रुखं पडा हों ॥ अरु यह विश्व मेरा स्वरूप हे ॥ अपणे जो मेरे शरीर हे तिनकों जाय करी जगावों ॥ तब रुद्र उठी खडा हुआ अपणें स्थानोंकों चला प्रथम जो सन्यासीका शरीर था तिसकों आयकरी देखा ॥ देखिकरी तिसकों चित्त शक्तिसों जगाया ॥ तव सन्यासीके शरीरविषे ज्ञान हुआ जो सर्व मेंही खडा हों ॥ परंतु सन्यासीनें जाण्या जो मेरे तांइं रुद्रनें जगाया हे तब जानत भया जो इतने शरीर मेरे अउरभी हे ॥ तब उहांतें रुद्र अरु संन्यासी दोनों चले झीवटके स्थानमें आये ॥ देख्या जो झीवट सवकी न्यांइं पडा हे ॥ अरु मदिराके वासन पडे हे ॥ अरु चैतना उहांहि पडी भमती हे ॥ नाना प्रकारके स्थानोंकों देखती हे ॥ जेसें झरणेके छिद्रविषे कीडी भमती हे ॥ तब झीवटकों चित्तशक्ति करी जगाया उह उठी खडा हुआ ॥ तिसकों अेसें सुमरण हुआ जो मेरे तो इनहुनें जगाया ॥ तब झीवटके मनविषे विचार हुआ जो इनतें शरीर मेरे ओर हे ॥ तब रुद्र सन्यासी अरु झीवट तीनों चले ॥ बहुरी इननें विचार किया जो हम एते शरीर क्यों करी पाये ॥ जो आदि एक परमात्माविषे चैत्योन्मुखत्व करीके में सन्यासी भया ॥ बहुरी सन्यासीतें झीवट हुआ मद्यपान करणे लागा बहुरी ब्राह्मण हुआ तहां वेदका पाठ करणे लागा ॥ तिस वेदके पाठ करणेका पुण्य करी राजाका शरीर धार्‍या ॥ तिसके आगें जो बडा पुण्य प्राप्त भया चक्रवर्ती राजा हुआ जब चक्रवर्ती राजाके शरीरविषे काम बहुत हुआ ॥ तिसके होणे करी देवताकी स्त्री भया ॥ तब स्त्री शरीरमें बहुत प्रीति नेत्रोंविषे थी तिसतें हरनी भया ॥ बहुरी भंवरी भया तिसतें आगें वल्ली भया इसतें लेकरी जो शरीर धारे सो मेनें मिथ्या धारे हे ॥ अरु अज्ञान करीकें में बहुत काल भटकता रहाहों ॥ अनेक वर्ष अरु सहस्रही जुग वितीत हो गये हे ॥ सन्यासीतें आदि रुद्र पर्यंत वासना करीकें जन्म पाये हे ॥ एते जन्म पाय करीभी ब्रह्माका हंस जाय हुआ तहां ज्ञानकी प्राप्ति भइ ॥ काहेतें जो पूर्व अभ्यास कियाथा तिसकरी अकस्माततें सत संग आनि प्राप्त भया ॥ अेसें विचार करते उहांतें चले तव चैतन आकाशविषे उडे ब्राह्मण वेद पाठ करणे वालेकीसृष्टिविषे गये तव उसकों देखा जो सोया पडा हे ॥ चित्तशक्ति करीकें उसकों जगाया तव रुद्र सन्यासी झीवट मद्यपान करणेवाला अरु ब्राह्मण चारो उहांतें चले ॥ चित्ताकाशविषे उडे राजाकी सृष्टिविषे गये तब देखत भये जो राजाकी सृष्टी चेष्टा करती हे अरु राजा अपणे मंदिरविषे शय्यापर सोया हे अरु राणीभी साथ सोइ हे ॥ सोराजाकी देह स्वर्नकी न्यांइं सोभायमान हे ॥ तेसीही राणीकी देह हे ॥ दोनों सोए पडे हे तिसपर सहेलियां चमर करतियां हे ॥ तव राजाकों चित्तशक्ती करी जगाया ॥ तब राजा देखत भया जो सर्व विश्व मेराही स्वरूप हे अरु देखत भया जो एते शरीर मेंनें अज्ञान करीकें धारे हे आश्चर्य माया हे ॥ राजा स्वरूपविषे जाग्या ॥ तव रुद्र सन्यासी झीवट मद्यपान करणेवाला ब्राह्मण अरु राजा उहांतें चले अरु हस्तीतें आदि ले करी जो शरीर धारे थे सो सब जगाये ॥ वह शरीर धारे थे सो सब जगाये तिनविषे यहि निश्चय भया ॥ जो हम चिन्मात्र रूप हे अरु आवर्नतें रहित हे ॥ आवर्न कहिये अज्ञानका फुरना तिसतें रहित हे ॥ हे रामजी तब उनके शरीर देखणेविषे सब दृष्ट आवहि ॥ परंतु चेष्टासवकी एक जेसी अरु निश्चयभी एक जेसा॥उनका नाम सत रुद्र भया उह सतरुद्र हुए॥तातें हे रामजी विश्व संपूर्ण अज्ञानरूप फुरणे करीके होती हे अरु ज्ञान करीके देखिये तब कछू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुआ नही अेसेंहि उनकी संवेदन अरु निश्चय एक जेसा हुआ एक देखे तो सर्वहि मेरा रूप हे ॥ जब दुसरा देखे तब मेराहि रूप हे ॥ इसी प्रकार सर्वहि देखत भये जो सब अपणाहि स्वरूप हे ॥ तिसविषे यह दृष्टांत हे ॥ जेसें समुद्रतें तरंग होते हे ॥ आकार उनकों भिन्न भिन्न होते हे अरु स्वरूप उनका एक जेसा होता हे ॥ तेसें ज्ञानवान सर्व विश्वकों अपणाहि स्वरूप देखते हे ॥ अरु अज्ञानी उनकों भिन्न भिन्न जाणते हे ॥ अरु आपकों भिन्न जाणते हे ॥ एककों दुसरा नही जाणता ॥ दुसरेकों प्रथम नही जाणता ॥ सो क्या नही जाणते जो अपणा स्वरूप हे तिसकों नही जानते ॥ जेसें पथरके वटे दो पडे होवे तब न आपकों जानते हे न दुसरेकों जानते हे जो मेरा स्वरूप हे तेसें अज्ञानी न आपकों जानते हे न अवरकों अपणा स्वरूप जाणते हे॥ हे रामजी यह विश्व अपणाहि स्वरूप हे अरु अज्ञान करीकें भिन्न भासती हे॥अज्ञान कहियें जो चिन्मात्रविषे फुरणा॥ तिस फुरणेविषे संसार हे अरु अफुरणे विषे आत्महि स्वरूप हे ॥ ताते हे रामजी फुरणेका त्यागकरु अवर कछू नही ॥ जिस प्रकार शत्रु मरे तिस प्रकार मारिये यहि जतन करहु ॥ अरु में तेरे तांइं अेसा उपाय कहता हों ॥ जिसविषे जतनभी कछू नही अरु शत्रुभी मार्या जावे सो उपाय यही हे जो चिंतवना कछू न करीयें ॥ इसविषे जतन कछू नही सुगम उपाय हे ॥ हे रामजी यह चिंतवनाहि दुःख हे अरु चिंतवनातें रहित होणाहि सुख हे ॥ आगें जो तेरी इच्छा होवे सो करु इस चित्तके फुरणेकरी संसार हे ॥ अरु निवृत्त होणेतें स्वरूपही हे ॥ जेसें पथरविषे पूतलियां पुरुष कल्पता हे तब पथरतें भिन्न पूतलियांका अभाव हे ॥ तेसें चित्तनें विश्व कल्पी हे ॥ जब चित्त निवृत्त होवे तब विश्व अपणा स्वरूप हे अवर भिन्न कछू नही ॥ अरु चित्तसाथ जहां जावे तहां तहां पंचभूतहि दृष्टी आवते हे ॥ आत्मा दृष्टी नही आवता अरु चित्ततें रहित ज्ञानी जहां जावे तहां आत्महि दृष्टी आवते हे ॥ जब चित्तकी वृत्ति बहिर्मुख होती हे ॥ तब संसार होता हे पंचभूतहि द्रष्ट आवते हे ॥ अरु जब चित्तकी वृत्ति अंतर्मुख होती हे तब ज्ञानरूप अपणा आपहि भासता हे जेते कछू पदार्थ हे सो ज्ञानरूप आत्मा विना सिद्ध नही होते ॥ प्रथम आपकों जाणता हे तब पाछे अवर पदार्थ जाणते हे इसीतें ज्ञानवान सर्व अपणा आप जाणता हे ॥ हे रामजी यह जेते कछू पदार्थ हे सो फुरनेंकरी कल्पते हे ॥ अरु जेते जीव हे तिनकी संवेदन भिन्न भिन्न हे ॥ अरु संवेदनविषे अपणी अपणी सृष्टि हे जेसें कोउ पुरुष सोता हे तिसकों अपणे सुपनेकी सृष्टि भासती हे ॥ अरु अवर तिसके पास बेठा होता हे ॥ उसकों नही भासती ॥ उसकी विश्व सुपनेंकों नही जाणती ॥ अरु जो ज्ञानी हे तिसकों अपणा आपहि भासता हे यह जगत् सब अपणारूप जानता हे ॥ अरु ज्ञानी जिसी उर देखता हे तिसकों पंचभूतिक दृष्टि आवते हे ॥ जेसें पृथ्वी के खोदे हुए आकाशहि दृष्ट आता हे तेसें ज्ञानी चित्त सहित जहां देखता हे तहां पंचभूतहि दृष्ट आते हे तातें हे रामजी तुं फुरणेतें रहित होहु फुरणेहि करीकें बंध हे ॥ अफुरणे करीकें मोक्ष हे ॥ आगें जेसें तेरी इछा हे तेसें कर ॥ हे रामजी जो अफुरणेकरीकें अस्त हो जावे तिसके नामविषे कृपणता करणी क्या हे अरु जो अफुरणेकरीकें प्राप्त होवें तिसकों प्राप्त रूप जाण ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर यह झीवट ब्राह्मणतें आदि लेकरी सन्यासीके रूप सुपनेविषे हुए ॥ तिसतें उप्रांत बहुरी क्या हुआ ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ब्राह्मणतें आदि जेते शरीर थे सो रुद्रकरी जगाये हुए सुखि भये ॥ जब सबहि एकठे भये तब रुद्रनें तिनकों कहा ॥ हे साधो तुम अपणे अपणे स्थानकों जाहु ॥ अरु कोउ काल अपणे कलत्रविषे भोग भोगहु॥ बहुरी तुम मेरे गण होकरी मुझकों प्राप्त होउगे॥ महाकल्पविषे हम सबही विदेहमुक्ती होवेगे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे रामजी जब अेसें रुद्रनें कहा तब सब अपणे अपणे स्थानोंकों गये ॥ अरु रुद्रजीभी अंतर्धान होगये ॥ सो अबभी तारेका आकार धारे हुए कबी कबी मुझकों आकाशविषे दृष्ट आते हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् तुमनें कहा सन्यासीनें झीवटतें आदि सब शरीर धारे ॥ सो सत् केसें हुए ॥ अरु तिनकी सृष्टि केसें सत हुइ सो कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी आत्मा सबका अपणा आप हे ॥ शुद्ध हे अरु चैतन आकाश हे अरु अनुभव रूप हे. ॥ तिस अपणे आपविषे जेसें देशकाल वस्तुका निश्चय होता हे तेसेंहि आगें बनि जाता हे ॥ जेसें जेसें फुरता हे तेसेंहि आगें हो जाता हे ॥ जिसका मन शुद्ध होता हे तिसका सत संकल्प होता हे ॥ जेसा संकल्प करता हे तेसाहि होता हे ॥ अरु जब तुं कहे सन्यासीका अंतःकरण शुद्ध था तिस नीच उंच जन्म केसें पाये ॥ नीच कहिये मद्यपान करणेवाला अरु भंवरी वल्लीतें आदि ले करी अरु उंच कहिये ब्राह्मण राजातें आदि ले करी शुद्ध अंतःकरणविषे अेसें जन्म न चाह्या तिसका उत्तर यह हे जो संवेदनविषे जेसा फुरणा होता हे तेसाही हो भासता हे जेसें एक पुरुषका अंतःकरण शुद्ध होवे तिसकों मनविषे फुरे जो एक शरीर मेरा विद्याधर होवे अरु एक शरीर मेरा भेडका होवे तिसके हो जाते हे दोनों भलाभी अरु बुराभी ॥ अरु जब तुं कहे बुरा क्यों बण्या भलाही बनता तिसका उत्तर सुण ॥ जेसें भले पंडितके घर पुत्र होवे अरु संस्कार करीकें चोर हो जावे ॥ संस्कार क्या जो वासना मलिन होवे तब तिसकों दुःख होता हे ॥ तातें हे रामजी सर्व फुरणेहि करी उंच नीच होते हे ॥ जब अभ्यास अरु परम जोग होता हे तब शुद्ध होता हे ॥ अभ्यास कहियें मंत्र जाप अरु जोग कहियें चित्तका स्थित करणा ॥ इस करिकें जेसी जेसी चिंतना होती हे तेसीहि सिद्धि होती हे अरु अज्ञानीकी नही होती ॥ जेसें वस्तु निकट पडी हे भावना नही तब दुर हे ॥ तेसें अज्ञानीकी भावना नही तब न दुर वाली प्राप्त होती हे ॥ न निकटवाली प्राप्त होती हे ॥ क्यों नही सिद्धि होती जो उसकी भावना दृढ नही ॥ अरु रिदा शुद्ध नही संकल्पभी तब सिद्ध होता हे ॥ जब रिदा शुद्ध होता हे शुद्ध रिदेवाला जिसकी चिंतवना करता हे दुर हे सोभी सिद्धि होता हे अरु जो निकट हे सोभी सिद्धि होता हे ॥ अरु जब तुं कहे सन्यासी तो एक था बहुत सरीर केसें चैतन हुए तिसका उत्तर सुण जो कोइ जोगेसर हे ॥ अरु जोगणी देवीयां हे तिनका संकल्प सत्य हे जेसा संकल्प फुरता हे तेसाहि होता हे ॥ अेसें सत संकल्पवाले अनेक में आगें देखे हे ॥ एक सहस्र बाहु अर्जुन राजा था ॥ सो घरविषें बेठा हुआ सिरपर छत्र पडा झुलता हे अरु चमर पडा होते हे ॥ तिसके मनविषे संकल्प हुआ जो में मेघ हो करी बरसों ॥ तिस संकल्प करणे करी एक शरीर तो राजाका रहा ॥ अरु एक शरीर मेघ हो करी बरसणे लागा अरु विष्णु भगवान एक शरीर करिकें क्षीर समुद्र विषे शेन करता हे अरु प्रजाकी रक्षा निमित्त अवर शरीरभी धारिलेता हे ॥ अरु यज्ञ देवियां अपणे स्थानोविषें होतियां हे बडे ऐश्वर्यकरी देषे विशेभी विचरतियां हे ॥ अरु इंद्रभी एक शरीर करी स्वर्गविषे रहता हे अरु अवर शरीर करिके जगत् विषेभी बेठा रहता हे ॥ इत्यादिक जो जोगेसर हे तिनका जेसा संकल्प होता हे ॥ तेसाहि सिद्धी होता हे ॥ अरु जो अज्ञानी मुर्ख हे तिनका मन बडे भमकों प्राप्त होता हे ॥ अरु बडे मोहकों प्राप्त होता हे मोहतें आगें मोहकरी नीचगतीकों प्राप्त होते हे ॥ जेसें बडे पर्वतके ऊपरतें बटा गिरता हे सो नीचे स्थानकों प्राप्त होता हे ॥ तेसें मुर्ख आत्मपदतें गिरने करिकें संसाररूपी टोयेविषे पडते हे ॥ अरु बडे दुःखकों प्राप्त होते हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् तुम कहा जो संसार सुपनेमात्र हे सो में जाण्या हे जो अनंत मोहरूपी विषमता हे ॥ अरु आत्मचैतनरूप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आनंदके प्रमाद करिके आपकों जड दुःखी जाणता हे बडा आश्चर्य हे ॥ अरु हे भगवन् यह जो तुम संन्यासी कहा तिस जेसा कोउ अवरभी हे अथवा नही सो कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी संसाररूपी मढी हे तिसविषे में रात्रके समे समाधि करिकें देखोंगा॥ अरु दिनकों तेरे तांइ जेसें होवेगा तेसे कहोंगा ॥वालमीकोवाच॥ हे राजा एसे जब वसिष्ठजीनें कहा तब मध्यान्हका समा हुआ अरु नोबत नगारे वाजणे लागे बडा शब्द हुआ ॥ जेसें प्रलयकालका मेघ गर्जता हे तेसें शब्द होणे लगा ॥ तब वसिष्ठजीके चरनोंपर राजा अरु देवताने फुल चडाये सभनें वडी पूजा करी ॥ जेसें बडा पवन चलता हे अरु वेगकरिकें बाग वछोके फुल पृथीवी पर गिर पडते हे तेसें बहुत फुलोकी वर्षाकरी जब बहुत पूजा हो रही तब वसिष्ठजी कों नमस्कार करिके उठि खडे हुए ॥ बहुरी आपविषे नमस्कार करी बहुरी राजा दसरथते आदि लेकरी राजा अरु ऋषि सभ उठे जेसें मंद्राचल पर्वततें सूर्य उदे होता हे तेसें वसिष्ठजीत आदिलेकरी ऋषि अरु राजा दसरथतें आदि सभ उठे ॥ तब पृथ्वीके राजा अरु प्रजा पृथ्वीकों चले आकासके सिद्ध अरु देवता जो थे सो आकासकों चले ॥ सभ अपणे अपणे कर्म विषे जाय लागे ॥ जेसें शास्त्र उक्ति व्यवहार हे तिसविषे स्थित भये ॥ अरु जब रात्र हुइ तब आपहि आप विचार करतभये ॥ जो वसिष्ठजीनें केसें ज्ञान उपदेश किया ॥ तिस विचार विषे रात्र एक क्षणकि न्याइं बितीत भइ अरु वसिष्ठजीके मिलणेकी वांछाविषे रात्र कल्पके समान बीते ॥ तब सूर्यकी किरणां उदे होणेसों आनि स्थित भये अरु राम लछमणजीतें आदि लेकरी सभ स्थित भये अरु सभने आपसविषे नमस्कार किये ॥ अरु अपणे अपणे आसनपर बेठीगये ॥ सांतरूप होकरी स्थितभये जेसें पवनतें रहित कमल स्थित होते हे ॥ तेसें हि फुरणेतें रहित शांतरूप स्थितभये ॥ तब वसिष्ठजी अनुग्रह करीकें आपहि कहत भये ॥ हे रामजी तेरी प्रीतिके निमित्त में संसाररूपी मढीकों बहुत खोज किया ॥ आकाश अरु पाताल सप्तद्वीप सब खोजे हें ॥ परंतु एसा सन्यासी कोउ द्रष्ट न आया ॥ जेसें अन्यका संकल्प नही भासता ॥ जब पीछला प्रहर रात्री रहि तब में बहुरी ढुंढकरी उत्तर दिसाविषे चिन्ना चीन नगरमें एक स्थान हे ॥ तहां एक मढी देखी तिसके दरवाजे चडे हुए देखे ॥ तिसविषे पके केसवाला सन्यासी बेठा हे ॥ अरु बाहिर उसके चेले बेठे हे उह दरवाजे खोलते नही जो मत हमारे गुरकी समाधि खुली जावे ॥ तिस स्थानविषे बेठा हे मानों दुसरा ब्रह्मा बेठा हे ॥ अरु जिस देसविषे बेठा हे तिसके बेठे दिन एकीस भए हे ॥ समाधिविषे स्थित हुए ॥ अरु उसकों समाधिविषे सहस्र वर्षका अनुभव भया हे ॥ अरु बहुत जन्मभी पाये हे केसें जन्म जो प्रत्यछ देखत भया अरु सृष्टिभी प्रत्यछ देखी तिसविषे विचरा ॥ हे रामजी इस जेसा एक अवरभी पूर्व कल्पविषे था यह तीनही थे ॥ सो एककों बहुत देखी रहा हों कोउ द्रष्ट नही आता ॥ तब राजा दशरथनें कहा हे महामुनी जब तुम आज्ञाकरो तब में अपणा अनुचर चिनमाचीन नगर उतरवाले भेजों ॥ तहां जायकरी तिस सन्यासीकों जगावों ॥ तब वसिष्ठजीनें कहा हे राजन् उह सन्यासी अब ब्रह्माका हंस होकरी ब्रह्माके उपदेशसों जीवन्मुक्त हुआ हे ॥ अरु यह जो शरीर उसका हे सो अब मृतक हुआ हे इसविषे अब पुर्यष्टका जो हे जीव सो नही तिसकों क्या जगावणा हे ॥ अरु एक महिने पीछें उसका दरवाजा सिष्य खोलेंगे ॥ तब लोक उस नगरके देखेगे जो मृतक पडा हे ॥ तातें हे रामजी यह विश्व संकल्पमात्रही हे ॥ अरु जब तूं कहे एक जेसें क्यों करी हुए तब सुण ॥ जेसें यह मुनीश्वर ऋषि राजा अरु अबर जो संसारविषे लोक हे सो केइवार एक जेसा शरीर धारते हे अरु केइमध्य धारते हे ॥ केइ कछू थोडा धारते हे अरु केइ विलक्षण धारते हे सो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रवण कर ॥ यह जो नारद हे ॥ सो इस जेसा अवरभी नारद होवेगा ॥ तिसकी चेष्टाभी एसी होवेगी अरु शरीरभी एसा होवेगा ॥ अरु व्यासजी अरु सुकदेव भृगु अरु भृगुका पिता अरु जनक अरु करकरी अरु अत्रिऋषीश्वर जेसा अब हे ॥ अरु अत्रिकी स्त्रीभी जेसी अब संढ हे ॥ अेसाहि अत्रि अरु अेसीही स्त्री होवेगी ॥ इनते आदि लेकरी बहुरी होवेगे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग एक जेसेंभी होते हे अरु वध घटभी होते हे ॥ हे रामजी तेसें यह संसार ब्रह्मातें आदिलेकरी पाताल पर्यंत सब मनका रचा हुआ हे ॥ सो सब मिथ्या हे जब यह चित्त कला बहिर्मूर्ख होती हे तब संसार देशकाल होता हे ॥ जब अंतर्मुख होती हे तब आत्मपद प्राप्त होता हे अरु जबलग बहिर्मुख होती हे तबलग दुःखकों पावता हे ॥ अपणा स्वरूप आनंदरूप हे तिसविषे चित्तकला जाती हे ॥ जो मैं सदा दुःखी हों देह अरु इंद्रियां साथ मिलिकरी दुःखी होता हे ॥ तातें हे रामजी इस अज्ञानरूप फुरणेतें तुं रहित होउ फुरणेकरी यह अवस्था प्राप्त होती हे जेसें चंद्रमा अमृतकरीकें पूर्ण हे तिसविषे चर्मदृष्टिकरीकें कलंकता भासती हे ॥ तेसें आत्मा अमृतरूपी चंद्रमाविषें अज्ञानदृष्टि करीकें जन्ममरण सोक दुःख भय कलंक देखता हे ॥ महा आश्चर्य माया हे जेसें चंद्रमा एक हे नेत्रदोष करीकें बहुत भासते हे ॥ तेसें एक अद्वैत आत्माविषे विश्व नानात्व अज्ञान करी भान होता हे ॥ यही माया हे ॥ हे रामजी तुं एकरूप आत्मा हे तिसविषे फुरणेनें विश्व कल्पी हे ॥ तातें फुरणेतें रहित होउ ॥ फुरणेंतें रहित हुए विना आत्माका दर्शन नही होता ॥ जेसें सूर्यउदें हुआभी बदल के होते सुद्ध नही भासता ॥ तेसें फुरणरूपी बदलके दूर हुए आत्मारूपी सूर्य सुद्ध भासता हे ॥ अरु दृश्य दर्शन दृष्टा फुरणेतें कल्पे हे॥ हे रामजी इस संसारका सार जो आत्मा हे॥ तिस विषे सुषुप्तकी न्यांइं मौन होउ ॥ रामोवाच॥ हे भगवन् तीन मौन में जाणता हों सो कवन हे ॥ एक वाणीमोन चुपकरी रहणा ॥ अरु एक इंद्रियकी मौन अरु एक कष्ट मौन ॥कष्ट मौन कहियें जो हठकरीकें मन इंद्रियांकों वसकरणा ॥ यह तीनों मौन में जाणता हों अरु सुषुप्त मौन तुम कहो जो क्या हे ॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी तीन मौन कष्ट तपसीकी हे॥ अरु सुषुप्त मौन ज्ञानी जीवन्मुक्तकी ॥ अरु तीनों मौन अज्ञानी तपसीकी बहुरी श्रवण कर ॥ एक मौन वाणीकी जो बोलणा नही ॥ अरु एक मौन समाधि जो नेत्रोंकों मुंदि लेणा देखणा कछू नही ॥ एक हठकरी स्थित होणा इंद्रियां अरु मनकों स्थित करणां अरु एक मौन इंद्रियांकी चेष्टातें रहित होणा ॥ यह तीनों मौन कष्ट तपसीकी हे ॥ अरु सुषुप्त मौन ज्ञानी की सुण ॥ सुषुप्त मौन कहियें जो वाणीकरीकें अरु इंद्रियांकरीकें चेष्टाभी होवे अरु आत्मातें इतर अवर नभासे यह उत्तम मौन हे ॥ अथवा अेसें होवे जो न में हो न जगत् हे ॥ अेसे निश्चयविषे स्थित होणा यह महा उत्तम मौन हे॥ अथवा अेसें होवे जो सर्व मेंही हों॥ अेसें निश्चयविषे स्थित होणा यह बडी उत्तम मौन हे॥हे रामजी विधि करीकेंभी आत्माकी सिद्धी होती हे ॥ अरु निषेध करीकेंभी आत्माकी सिद्धी होती हे ॥ तिस आत्माविषे स्थित होणा यह बडी मौन हे ॥ हे रामजी यह जो में सुषुप्त मौन कही हे सो क्या हे तुं सुण संसार द्वैत रूपके फुरणेतें सुषुप्त होणा अरु आत्माविषे जागणा यहि सुषुप्त मौन हे ॥ द्वैतके फुरणेतें रहित होणा यहि सुषुप्ति हे ॥ अरु आत्मविषे जागणा यही तेरे तांइ कहा हे॥ अरु अेसें देखणा जो न मेरेविषे जाग्रत हे न सुपन हे न सुषुप्ति हे॥इस निश्चयविषे स्थित होणा यह तुरियातीत सो पंचम मौन हे एसा जो तुरियातीत पद हे सो अनादि हे अनंत हे अरु जरातें रहित हे॥ सुद्ध हे अरु निर्दोष हे ॥ इस निश्चयविषे स्थित होणा यह उत्तम मौन हे ॥ हे रामजी ज्ञानी इंद्रियांकें रोकणेकी इछाभी नही करता अरु न विचरणेकी इछा करता हे ॥ जेसें सुभा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विक होती हे तिसिविषे स्थित होता हे ॥ यह परम मौन हे ॥ अरु ज्ञानीकों सुखकी इछाभी नही दुःखका त्रासभी नही ॥ हेयोपादयतें रहित होणा यह परम मौन हे ॥ हे रामजी तुम रघुवंश कुलविषे चंद्रमा हो ॥ अपणे सुभावविषे स्थित होणा परम मौन हे ॥ हे रामजी संसार भ्रम मनके फुरणे करीकें होता हे सो मिथ्या हे वास्तव कछू नही न सरीर सत्य हे न माया सत्य हे ॥ हे रामजी तेरा स्वरूप ओंकार हे ओंकारकों अंगीकार करीकें स्थित होणा ॥ यह परम उत्तम मौन हे ॥ रामोवाच हे भगवन् यह जो सब रुद्र तुम कहा सो रुद्र थे अथवा रुद्र गण थे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जिसकों रुद्र कहते हे तिसीकों गण कहते हे यह सबहिं रुद्र हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् यह जो तुम कहा सब रुद्र हुअे ॥ सो यह तो एक चित्त था सब क्यों करी हुआ ॥ जेसें दीपकतें दीपक होता हे इसी भांति हुए क्यों ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी एक सावरन हे ॥ एक निरावरन हे जहां सुद्ध अंतःकरण हे सो निरावर्ण हे ॥ अरु जहां मलिन अंतःकरण हे सो सावरण हे ॥ सुद्ध अंतःकरणविषे जेसा निश्चय होता हे ॥ तेसा तत्काल आगें सिद्ध होता हे ॥ अरु मलिन अंतःकरणका फुरणा सिद्ध नहि होता ॥ ताते सुद्ध जो निरावरण रुद्र हे सो आत्मा हे अरु सर्व व्यापी हे ॥ जेसा उनका निश्चय होता हे सो सत्य हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् रुद्र सदासिवकी चेष्टा तो मलिन हे ॥ जो रुंढोकी माला गलेविषे धारता हे अरु भभुत लगाइ हुइ हे ॥ अरु मसाणविषे विहरता हे ॥ अरु स्त्री डाबे अंग रहती हे ॥ तिसकों तुम केसें कहते हों जो सुद्ध अंतःकरण हे ॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी यह सुद्ध असुद्ध अज्ञानीकों कहते हे जो सुद्धविषे वरते असुद्धविषे न वरते ॥ अरु नागें हिंडता हे अरु जो ज्ञानी हे सो क्रियाकों अपणेविषे नहि देखता तिसकों सुद्ध असुद्ध मलिन करि राग दोष कछु नहि होता अेसा जो सदासिव हे तिसकों न ग्रहण करणा हे न त्याग करणा हे ॥ जो सुभाविक चेष्टा होती हे सो होवे ॥सो केसें होती हे श्रवण करु॥आदि परमात्मविषे विष्णु भगवानका फुरणा हुआ जो चार भुजा धारे संसारकी रछा करणी सुद्ध चेष्टा राखणी अरु अवतार धारण धर्मकी रक्षा करणी अरु पापीकों मारणे यह आदि फुर्णा हुआ हे ॥ हे रामजी यह क्रिया सुभाविकहि जो आनि प्राप्त हुइ हे॥इस क्रियाका इनकों राग दोष करिकें हेयोपादय कछू नही ॥ अरु क्रियाका इनकों अभिमानही नही जो हम कर्ते हे ॥ इसीतें क्रिया इनकों बंध नही करती ॥ तातें इह संसार फुरणे मात्र हे ॥ जब तुं फुरणेतें रहित होवेगा ॥ तब तेरे तांइं त्रिपुटी न भासेगी ॥ आत्मातें इतर कछू न भासेगा तातें तुं अज्ञानरूप फुरणेतें रहित होहु ॥ जब तुमकों आत्मपदका साक्षात्कार होवेगा ॥ तब तुं जाणेगा जो मेरेविषे फुर दृश्य अदृश्य कछू नही अरु आत्म पद हे जिसविषे एक कहणाभी नही तब द्वैत कहांतें होवे ॥ हे रामजी दृश्य अदृश्य फुरणा अफुरणा अरु विद्या अविद्या यह सब जतावणेके निमित्त कहते हे ॥ अरु आत्माविषे कहणा कछू नही ॥ आत्मा एक हे जिसविषे द्वैतका अभाव हे ॥ जब चित्त परिणाम बहिर्मुख होते हे ॥ तब विश्वका भान होता हे ॥ अरु जब चित्त अंतर्मुख परिणाम पावता हे तब अहंता ममताका नाश होता हे ॥ अरु चैतनमय सेष रहता हे ॥ अरु जब अतिशय अंतर्मुख परिणाम पावता हे तब चैतन कहणाभी नही रहता ॥ अरु जब इसतेंभी अतिशय परिणाम पावता हे तब हे नही कहणाभी नही रहता ॥ हे रामजी अेसा आत्मा तेरा अपणा आपस्वरूप हे अरु शांतपद हे जिसविषे वाणीकी गम नही जो अेसा कहियें अरु तेसा कहियें ॥ अेसा कहियें इंद्रियांका विषय हे अरु तेसा कहियें इंद्रियांतें पर हे जब तुं अपणेविषे स्थित होवेगा तब जाणेगा जो मेरेविषे अहं फुरणा कछू नही आत्मरूपी सूर्यके साक्षात्कार हुएते दृश्यरूपी अंधकारका अ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाव हो जावेगा काहेतें जो आत्मा तेरा अपणा आप हे केवल शांतरूप हे अरु निर्मल हे ॥ जेसें गंभीर समुद्र वायुतें रहित होता हे तेसें आत्मारूपी समुद्र संकल्परूपी वायुतें रहित
गंभीर सुद्ध होता हे ॥ अरु यह संसार चित्तका चमत्कार हे सो चित्त निरंश हे ॥ तिसविषे अंशांशी भाव नही अद्वैत हे ॥ हे रामजी जब एसें बोधविषे स्थित होवेगा तब इस विश्वकोंभी
आत्मरूप देखेगा ॥ अरु बोध विना देखेगा ॥ तब विश्वका भान होवेगा ॥ तातें हे रामजी बोधविषे स्थित होहु ॥ इ०योगवा०नि०प्र०ब्रह्मैकताप्रतिपादनं नाम षष्टितमःसर्गः ॥ ६० ॥
॥वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी सदासिवका आदि फुरणा हुआ हे॥जो त्रिनेत्र अरु विश्वका संघार करणा ॥अरु सिर की माला धारणी॥अरु ब्रह्माके चार मुख अरु चारो वेद हाथविषे अरु
संसारकी उत्पत्ति करणी अेसें फुरणा हुआ हे ॥ हे रामजी ब्रह्मा विष्णु रुद्र यह तीनो एक रूप हे॥ अरु चेष्टा इनकी सुभाविक यही बनि पडी हे॥न राग करिके अंगीकार कियाहे न द्वेष
करिके त्याग करते हे ॥ अरु यह संज्ञाभी लोकके देखणे मात्र हे अपणें ज्ञानविषे कछू नहि करते जो बोधविषेही जाग्रत हे॥बोधविषे जाग्रत क्या कहियें॥ अरु केसें होता हे सो श्रवण
करु एक सांख्य मार्ग करी होता हे अरु एक जोग मार्ग करी होता हे ॥ सांख्य कहियें तत्व अरु मिथ्याका विचारणा तत्वकहियें में आत्मा हों सत हों अरु चैतन हों ॥ अरु मिथ्या सर्व
द्रश्य जड असत हे मेरेविषे अज्ञान करी कलपित हे॥में आत्मा अद्वैत हो मेरेविषे अज्ञान अरु द्रश्य दोनों नहि ॥ एसें निश्चयविषे स्थित होणा सो सांख्य विचार हे॥अरु जोग कहिये प्राणों
का स्थित करणा ॥ जब प्राण स्थित होते हे तब मनभी स्थित होजाता हे ॥ अरु जब मन स्थित हों जाताहे॥तब प्राणभी स्थित होते हे इनका परस्पर संबंध हे॥रामोवाच॥ हे भगवन् जब
प्राण स्थित हुए मुक्त होता हे तब मृतक पुरुषके प्राण नहि रहते निवृत्त हो जाते हे ॥ तब सभ मुक्ति हुए चहिये ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी प्रथम तो वर्णाश्रम करु जो क्या हे ॥
यह जीव पुर्यष्टका विषे स्थित हो करी जेसी वासना करता हे ॥ बहुरी शरीरकों त्यागकरी आकास विषे स्थित होता हे इसका नाम पर्णा हे ॥ तिस वासनारूप प्राणकरिके बहुरी इस
कों संसार भान होता हे अरु जब प्राणकी वासना क्षय होता हे तब मुक्त होता हे ॥ ज्ञानी की वासना क्षय हो जाती हे तातें जन्म मरणसों रहित होता हे ॥ जेसें भुना बीज बहुरी
नहि उगता ॥ तेसे ज्ञानीकों वासनाके अभावते जन्म मरण नहि होता ॥ हे रामजी जन्म मरण दोनों मार्ग करी निवृत्त होता हे ॥ अरु दोनोंका फल कहा हे ॥ हे रामजी ज्ञान करिकें
चित्त सत्य पदकों प्राप्त होता हे अरु जोग करिके प्राणवायु स्थित होती हे ॥ तब वासना क्षय हो जाती हे ॥ जब स्वरूपकी प्राप्ति होती हे तब संसारके पदार्थका अभाव हो जाता हे ॥
जेसे रसायण करी तांबा सोना भया तब तांबा भाव नहि रहता ॥ तेसे विश्वरूपी तांबेकि संज्ञा नहि रहती जेसें तांबा भाव जाता रहता हे ॥ तेसें ज्ञानकरी जब चित्त सत्यरूप हुआ
फिरि संसारी नहि होता ॥ अरु आत्माविषे न बंध हे न मुक्त हे एक परमात्मा अद्वैत हे॥ तब बंध कहां अरु मुक्त कहां ॥ बंध अरु मुक्त चित्तके कल्पे हुए हे अरु चित्त सांतकरणेको जो
उपाय हे सो कहा हे तिसकरी सांत होता हे इसीकों मुक्त कहते हे अवर बंध मुक्ति कोउ नहि ॥ चित्तके उदे होणेका नाम बंध हे ॥ चित्तका सांत होणा यहि मुक्ती हे ॥ हे रामजी
जब मन अपणे वस होता हे तब आत्मपद प्राप्त होता हे ॥ अथवा प्राण स्थित होते हे तब आत्मपद प्राप्त होता हे ॥ अरु यह संसार मृग तृष्णाके जलवत मिथ्या हे ॥ जब वासना नि
वृत्त होती हे ॥ तब आत्मपदविषे स्थित होती हे जेसे मेघजल संयुक्त होते हे तब गर्जते हे अरु वर्षा करते हे ॥ जब वर्षाकरी रहित होते हे तब सांत होजाते हे ॥ तेसें जब वासना क्षय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होती हे तब चित्त सांत हो जाता हे जेसें सरतकालविषे बदल अरु कुहीड निवृत्त हो जाते हे ॥ अरु सुद्ध निर्मल आकासहि रहता हे ॥ तेसें वासनारूपी बदल अरु कुहीडके निवृत्त हुए तें आत्मा सुद्ध केवल चैतनहि भासता हे एक मुहूर्तभी चित्त विना स्थित होवे तब तेरे तांइ आत्मपदकी प्राप्ति होवे जबलग चित्तकी वासना क्षय नहि होती तबलग बडे भ्रमकों देखता हे ॥ हे रामजी यह संसार मृग तृष्णाका जल रूप हे ॥ असत हे आभासमात्र पडा फुरता हे तिसपर एक आख्यान आगें हुआ हे सो कहता हुं तुं श्रवण कर ॥ मंद्राचल पर्वत दक्षण दिसा विषे हे ॥ तिसकी अटवि विषे एक वैताल रहताथा ॥ महा भयानक तिसका आकारथा ॥ अरु मनुष्यकों आहार करताथा ॥ तिसके मनविषे विचार उपजा जो किसी नगरकों भोजन करों ॥अरु वैताल एक समे साधुका संगभी करताथा जो कछु तिस साधु तिस वैतालकों भोजन करावताथा॥तब साधु संगके प्रसाद करी वैतालके मनविषे यह उपजी जो मेरी कवन गति होवेगी मेरा आहार मनुष हो रहे हे अरु में जो मनुषकों भोजन करता हो सो बडी हत्या हे ॥ तातें में एक वृत्तिकरों जो मुर्ख अज्ञानी मनुष हे तिनकों भोजन करों ॥ अरु जो उत्तम पुरुष हे तिनका आहार न करों ॥ हे रामजी अेसा वृत्त तिस वैतालनें किया ॥ यद्यपि क्षुधाकरी आतुरभी होवे अरु भले मनुष्य आय प्राप्त होवे तोभी उनकों आहार न करे ॥ अेसें होते एक समे क्षुधा करी बहुत व्याकुल भया ॥ अरु रात्रके समे घरतें बाहेर निकस्या ॥ तब उस नगरका राजा वीर जात्राकों रात्रके समे निकसाथा॥ तिस राजाकों देखिकरी वेतालने कहा ॥ हे राजा तुं मेरे तांइं अब आय प्राप्त हुआ हे में तुझकों भोजन करता हों तुं कहां जावेगा ॥ तब राजानें कहां हे रात्रके विचरणेहारे वैताल ॥ जब तुं मेरे निकट अन्यायकरी आवेगा ॥ तब तेरा सीस सहस्र टुकडे होवेगा ॥ अरु तुं गिरेगा ॥ तब बैतालने कहा हे राजा में तुझतें डरता नहि ॥ हे आत्महत्यारे में तेरे तांइं भोजन करोंगा ॥ भावे तेसा बलि तुं होवे में डरता नहि ॥ परंतु एक प्रतिज्ञा मेरी हे अज्ञानीकों भोजन करता हों॥अरु ज्ञानीकों नहि मारता ॥ जब तुं ज्ञानी हे तब न मारोंगा ॥ जब तुं अज्ञानी हे तब मारोंगा ॥ जेसें बाज चिडीकों मारता हे तेसें तुझकों मारोंगा ॥ जब तुं ज्ञानी हे तब मेरे प्रश्नका उत्तर देहि ॥ एक प्रश्न यह हे जिसविषे ब्रह्मांडरूपी अणु हे सो सूर्य कवन हे अरु दुसरा प्रश्न यह हे जिस पवनविषे आकाश रूपी अणु उडते हे सो पवन कोण हे अरु तीसरा प्रश्न यह जो केलेके दलवत् जिसविषे अवर कछु नहि निकसता जेसें केलेकी छिलते अवर कछु नहि निकसता सो कवन दल हे ॥ अरु चउथा प्रश्न यह हे वह पुरुष कवन हे जो सुपनेतें सुपना बहुरी तिसविषे अवर सुपना देखता हे ॥ अरु एक रहता हे परिणामकों नहि प्राप्त होता ॥ इन प्रश्नकों उत्तर कहु जो प्रश्नका उत्तर न दिया तो तेरे तांइं आहार करोंगा ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे वैताल प्रश्नोक्ति नाम एक षष्टितमःसर्गः ॥ ६१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥७॥ ॥राजोवाच॥ हे वैताल इन प्रश्नका उत्तर सुण ब्रह्मांडरूपी एक मिरच बीज हे ॥ अरु तिसविषे तीक्ष्णता आत्मा चैतन सतपद हे ॥ अरु अेसें मिरच एक टास साथ केइ सहस्र लगे हुए हे ॥ अरु अेसें टास एक दल साथ केइ सहस्र लगे हुए हे अरु अेसें दल एक बनविषे केइ सहस्र हे ॥ अरु अेसें केइ सहस्र बन एक सिखरपर स्थित हे ॥ अरु अेसें केइ सहस्र सिखर एक पर्वतपर स्थित हे अरु अेसे केइ सहस्र पर्वत एक नगरविषे हे ॥ अरु अेसें केइ सहस्र नगर एक दीपविषे हे अरु अेसें सहस्र दीप एक भव पृथ्वीविषे हे ॥ अरु अेसें केइ सहस्र पृथ्वी भव एक अंडविषे हे अरु अेसें केइ सहस्र अंड एक समुद्रविषे लहरी हे ॥ अरु अेसें केइ सहस्र समुद्र एक समुद्रकी लहरी हे ॥ अेसें केइ सहस्र समुद्र एक पुरुषके उदरविषे हे ॥ अरु अेसें केइ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुरुष एक पुरुषके गलेविषे माला परोइ हुइ हे ॥ अेसें केइ लाख कोट सूर्यके अणु हे जिस सूर्यकरी सर्व प्रकाशमान हे सो सूर्य आत्मा हे ॥ जिसविषे अनंत सृष्टि स्थित हे ॥ हे वैताल जेसें यह सृष्टि भासती हे इदं करीकें तेसें सर्व सृष्टि जाण ॥ जब यह सृष्टि सत्य हे तो सब सृष्टि सत जाणा॥जब यह सृष्टि सुपन हे तब सर्व सृष्टि सुपन जाण ॥ अरु आत्मा अेसा सूर्य हे जिसतें इतर अवर अणुभी कछू नही ॥ अरु सदा अपणे आपविषे स्थित हे ॥ इसतें अवर क्या पूछता हें॥अेसें आत्माविषे स्थित होउ जो आत्मसत्ता मात्र पद हे॥जिस सत्तामात्र पदतें काल सत्ता हुइ हे ॥ तिसीतें आकाश सत्ता हुइ हे ॥ तिस एसें सतपदतें सर्व सत्ता प्रगट हुइ हे ॥ सो सब संकल्पतें उदे हुए हे अरु संकल्पकेलय हुए सब लय हो जाता हे ॥ अरु तेनें जो प्रश्न कियाथा वह कवन सूर्य हे ॥ जिसतें ब्रह्मांडरूपी अणु होते हे सो उह ब्रह्म सूर्य हे ॥ जिसतें इतर अवर कछू नही ॥ अरु केलेका दृष्ठ जो तेनें पूछाथा सो केलेकी न्यांइं अंतर बाहिर विश्वके आत्मा स्थित हे ॥ जेसें केलेके अंतर फोलेतें शून्य आकाशहि निकसता हे ॥ तेसें विश्वके अंतर बाहिर आत्मातें इतर अवर सार कछू नही निकसता॥जो अद्वैत हे ॥तिसतें इतर द्वैत कछू नही ॥ अरु उह पवन ब्रह्म हे ॥ जिस पवनविषे ब्रह्मांडके समूह उडते हे ॥ अरु उह पुरुष सुपनेतें सुपना आगें अवर सुपना देखता हे ॥ अरु एक अपणे स्वतःविषे स्थित हे ॥ सुपना कहियें जो चित्तकला फुरती हे तब अनंत ब्रह्मांड भान होते हे ॥ तबभी इतर कछू हुआ नही एकहि रूप नटवत् रहता हे ॥ यह सब उसकी आज्ञासों बरतते हे ॥ अरु सूक्ष्मतें सूक्ष्म हे स्थूलतें स्थूल हे ॥ अरु जिसविषे मंद्राचल पर्वतभी अणु हे ॥ अेसा स्थूल हे ॥ अरु जिसविषे वाणीकी गम नही ॥ अपणे आपहिविषे स्थित हे ॥ इंद्रियांतें अगोचर इस करी सूक्ष्मतें सूक्ष्म हे अरु पूर्णता करीके स्थूलतें स्थूल हे ॥ हे मूर्ख वैताल तुं आहार किसकों करता हे ॥ अरु क्षुधाकरी व्याकुल क्यों भया हे तुं तो आत्मा अद्वैत रूप हे अरु आनंद रूप हे ॥ तुं अपणे स्वतःविषे स्थित होउ ॥ जब अेसें प्रश्नका उत्तर देकरी राजानें उपदेश किया ॥ तब वैताल उहांतें चल्या जो एकांत स्थानविषे स्थित होउ ॥ अेसें झुठ संसार मृगतृष्णाके जलविषे मेरे तांइं क्या प्रयोजन हे ॥ तब एकांत स्थानविषे जायकरी स्थित हुआ अरु ध्यान लगाय बैठा ध्यान कहियें जो एक धारा प्रवाहक प्रवाह स्थित हुआ ॥ धारा प्रवाह प्रवाहक कहियें आत्माका अभ्यास दृढ किया ॥ आत्मातें इतर कछू फुरे नही ॥ एक रस स्थित हुआ ॥ अेसें ध्यानविषे स्थित होकरी वैताल सत आत्मा पदकों प्राप्त हुआ ॥ हे रामजी यह राजा अरु वैतालका आख्यान तुझकों श्रवण कराया ॥ सो आत्मा केसा हे जिसविषे ब्रह्मांड अणुकी न्यांइं स्थित हे तातें निर्विकल्प आत्माविषे स्थित होउ अरु इंद्रियाकों बाहिरतें संकोचकरी स्थित करु ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे राजा वैताल संवादे वैताल ब्रह्मपद प्राप्ति नाम द्विषष्टितमःसर्गः ॥ ६२ ॥ ॥७॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी एक आख्यान आगें हुआ हे सो श्रवण करु ॥ एक भागीरथ नाम राजा था उसकी मूढता गइ हे ॥ अरु स्वस्थ चित्त होकरी आत्मपदविषे स्थित हुआ अपणे प्रत प्रवाहविषे विचरा हे अरु अपणे पुरुषार्थ करी स्वर्ग लोकतें गंगा मध लोकविषे लेआया हे तेसें तुं विचरु ॥ सो केसा था जो अर्थी कोइ आताथा तिसका अर्थ पूर्ण कर्ता था ॥ जिस पदार्थका कोइ संकल्प करी आवे सो राजा उसका पूर्ण करे ॥ अरु जो राजासों मित्रभाव हे तिनकों चंद्रमा रूप होवे ॥ जेसें चंद्रमाकों देखीकरी चंद्रमणी अमृतकों स्रवती हे ॥ तेसें मित्रभावकों राजा था ॥ अरु जो राजासों शत्रुभाव हे तिनकों नाश करनेहारा था ॥ जेसें सूर्यके उदे हुए अंधकार नास हो जाता हे ॥ तेसेंहि शत्रुकों नास करणे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हारा था जेसें अग्नितें अनेक चिणगारें उठते हे ॥ तेसें शत्रुकों सस्त्रोंकीभीवर्षा करता था ॥ अरु प्रत प्रवाहविषे स्थित रहता था भले बुरे सुख दुःखविषे एक समान रहता था ॥ रामो वाच ॥ हे भगवन् अेसा जो राजा भगीरथ था तिसके मनविषे क्या आइ जो गंगाकों लेआया ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी एक समे अपणे नगरकों देखत भया ॥ जो लोक भले मार्गकों त्यागकरी बुरे मार्ग पापकर्मविषे सब लागे हे ॥ अरु लोक मूर्ख हुए हे ॥ तब लोकके उपकार निमित्त तप करणे लागा ब्रह्मा रुद्र अरु यज्ञऋषि तिनका तप करीकें आ राधन किया ॥ अरु गंगाके ल्यावणे निमित्त मंत्र जपणे लागा सो गंगा केसी हे जिसका एक प्रवाह स्वर्गविषे चलता हे अरु एक प्रवाह पातालविषे चलता हे ॥ अरु एक प्रवाह राजा भगीरथने मध लोकविषे चलाया हे ॥ अरु भगीरथ राजेनें गंगाके आणने करी समुद्र परिभी उपकार किया हे ॥ केसा समुद्र जो अगस्त मुनिकरी सुकाया हे ॥ तिस गंगाके आवणे करी समुद्रका दारिद्रभी निवृत्त हुआ ॥एसा जो राजा हे तिसके मनविषे विचार उपजा संसारकों देखीकरी कहणे लगा जो एकहि वारंवार कर्णा यह बडी मूर्खता हे नित उहि भोगणा उहि खाणा इत्यादिक कर्म बहुरी करणे अरु जिस कर्म कियेतें पाछे सुख निकसे तिसके करणेका कछू दूषण नही अेसें वैराग करीके विचार उपजा जो संसार क्या हे ॥ सो राजा जोबन अवस्था था ॥ जेसें मारुथलविषे कमल उपजणा आश्चर्य हे ॥ तेसें जोबन अवस्थाविषे विचार उपजणा आश्चर्य हे ॥ हे रामजी जब राजाकों अेसें विचार उपजा तब घरतें निकस्या ॥ अरु त्रितल ऋषीश्वर जो गुरु था तिसके निकट जायकरी प्रश्न करत भया ॥ राजोवाच ॥ हे भगवन् वह कवन सुख हे जिसके पायेतें जरा मृत्युके दुःख निवृत्त होते हे ॥ अरु यह संसारके सुख अंतरतें शून्य हे ॥ इनके परिणामविषे दुःख हे ॥ त्रितल ऋषिरुवाच॥ हे राजा एक ज्ञेय हे जानणे जोग जिसके जाणेतें शांतपद प्राप्त होता हे सो आत्म ज्ञान हे ॥ सो आत्म सुख केसा हे ॥ न उदे होता हे न अस्त होता हे ॥ जोंका त्यों अपणे आपविषे हे ॥ हे राजा यह जरा मृत्यु तबलग भासता हे जबलग अज्ञान हे ॥ जब ज्ञानरूपी सूर्य उदे होवेगा तब अज्ञानरूपी अंधकार निवृत्त हो जावेगा ॥ केवल शांतपदविषे स्थित होवेगा अरु आत्मानंद सर्वज्ञ हे ॥ जिसके जाणेतें चित्जड़ ग्रंथी टुटी जाती हे चित्जड मं थी कहियें अनात्मदेह इंद्रियादिकविषे आत्म अभिमान करना ॥ सो निवृत्त हो जाती हे ॥ अरु सब कर्मभी निवृत्त होते हे ॥ संशय सब नष्ट हो जाते हे ॥ एसें शुद्ध स्वरूपकों पाय करी ज्ञानी स्थित होते हे सो सत्ता सर्व हे ॥ सर्व गत नित्य स्थित हे उदे अस्तें रहित हे ॥ राजोवाच ॥ हें भगवन् अेसें में जाणता हों जो आत्मा चिन्मात्र सत्ता हे अरु देहादिक मिथ्या हे अरु आत्मा सर्वज्ञ हे ॥ अरु शांतरूप हे ॥ निर्मल अच्युतरूप हे ॥ अेसें जाणताभी हों परंतु शांति मेरे तांइं नही प्राप्त भइ ॥ जो आत्मा चिन्मात्र मेरे तांइं नही भासता अरु स्थित नही भइ सो कृपाकरी कहो जो में स्थित होउ ॥ ऋषिरुवाच ॥ हे राजा ज्ञान तेरे तांइं कहता हों जिसके जाणेतें बहुरी दुःख कोइ न रहेगा ॥ तिस ज्ञानकरी ज्ञेयविषे तेरे तांइं निष्ठा होवेगा तब तुं सर्वात्मरूप होकरी स्थित होवेगा ॥ जीवभाव तेरा नष्ट हो जावेगा ॥ श्लोक ॥अशक्तिरनभिष्वंग ॥ पुत्रदारगृहादिषु ॥ नित्यंचसमचित्तत्व ॥ मिष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥ आशक्त न होवेगा ॥ अरु अनभिष्वंग होवेगा ॥ आशक्त न होणा कहियें देह इंद्रियादिक विषे आत्म अभिमान न करणा ॥ इनकों आप न जानणा ॥ अरु अनभिष्वंग कहियें पुत्र स्त्री कुटुंबके दुःख करी आपकों दुःखी न जानणा ॥ अरु नितहि सम चित्त रहणा ॥ इष्ट अनिष्टकी प्राप्तिविषे एक रस रहणा अरु चित्तकों आत्मपदविषे जोडणा ॥ आत्मातें इतर चि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्तकी वृत्ति न जावे अरु एकांत देशविषे स्थित होणा ॥ अरु अज्ञानीका संग न करणा अरु ब्रह्मविद्याका सदा विचार करणा ॥ तत्वज्ञानके दर्शन निमित्त यह तेरे तांइ ज्ञानके लछण कहे हे ॥ अरु इसतें विपरीत हे सो अज्ञान हे ॥ हे राजा यह ज्ञेय जानणे जोग हे ॥ इसके जाणेतें केवल शांतपदकों प्राप्त होवेगा ॥ अरु देहका अहंकारभी निवृत्त होवेगा ॥ हे राजा पहिलें अहं होता हे तब पाछे मम होती हे ॥ तातें तुं अहं ममका त्याग करु ॥ जब अहं ममका त्याग करेगा तब आत्मपद अहं प्रत्यय करी भासेगा ॥ सो आत्मा सर्वज्ञ हे अरु सर्वभी आप हे स्वतः प्रकाश हे अरु आनंदरूप हे ॥ केसा आनंदरूप हे जो संसारके आनंदतें रहित हे ॥ जब अेसें गुरुनें कहा तब राजा बोलत भया ॥ राजोवाच ॥ हे भगवन् यह अहं कार तो चिरकालका देहविषे रहता हे ॥ अरु अभिमानी हे ॥ जेसें पर्वत चिरकालका दृढ स्थित होता हे ॥ अरु तिसका नाम प्रसिद्ध होता हे तेसेंहि अहंकार चिरकालका देहविषे अ भिमानी हे तिसका त्याग केसें करों सो कहो ॥ऋषिरुवाच॥ हे राजा अहंकार पुरुष प्रयत्न करीके निवृत्त होता हे ॥ सो श्रवण कर प्रथम भोगविषे दोष दृष्टि करणी भोगकी वासना न करनी अरु वारंवार अपणे स्वरूपकी भावना करणी विचार करणा इस करीकें जीव अहंकार तेरा निवृत्त हो जावेगा ॥ हे राजा जब तेरा अहंकार निवृत्त होवेगा ॥ तब तेरे तांइं सर्वात्मा ही भासेगा अरु दुःखतें रहित शांतरूप सुप्रकाश होवेगा ॥ हे राजन् यह लज्जारूप फांसी जबलग निवृत्त नही होती ॥ तबलग आत्मपदकी प्राप्ति नही होती ॥ लज्जा कहियें में हों अरु मेरा हे ॥ तृष्णा अरु सोक दुःख अरु भला कहावणेकी इछा इत्यादिक जो मोहके स्थान हे सो लज्जा हे ॥ तातें तुं अहं ममतें रहित होउ ॥ अरु तेरे शत्रु जो तेरे राज लेणेकी इछा करते हे तिनकों अपणा राज देहि ॥ अरु क्षोभतें रहित होकरी पुत्र स्त्री बांधव इनकें मोहतें रहित होउ अरु मेरे मोहतेंभी रहित होउ ॥ अरु राजका त्याग करीकें एकांत देशविषे स्थित होउ ॥ अरु तिन शत्रुके घरतें भिक्षा मांग जो तेरे तांइं भला कहणेकी इछा न रहे तातें उठि खडा होउ ॥ ॥ इ०यो० नि०प्र०भगीरथोपदेशो नाम त्रिषष्टितमः सर्गः ॥ ६३ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार जब त्रितल ऋषीश्वरने उपदेस किया तब राजा उठि खडा हुआ घरकों गमन किया ॥ गुरुका उपदेस रिदेविषे धारि करि आपणे राजवि षे आनि स्थित हुआ अरु राज करणे लागा मनविषे विचारभी करे ॥ जब केता काल बीत्या तब राजाने अग्निष्टोम यज्ञका आरंभ किया अग्निष्टोम यज्ञ कहिये धनका त्याग करणा ॥ सो राजा धनका त्याग लागा करणे ॥ दिन त्रय विषे धनका त्याग किया ॥ हस्ती घोडे रथ भूषण वस्त्र इत्यादिक जो ऐश्वर्यथा सो लोककों दिया ब्राह्मणो अरु अर्थी अरु पुत्र स्त्री कों अरु अपणे जो शत्रु थे तिनकों पृथ्वीका राज दिया जब इस प्रकार राज दिया तब राजा जो थे शत्रु तिननें देख्या जो अब राजा भगीरथविषे पराक्रम कछू नहि रहा ॥ तब उन शत्रुने आयकरी इसका देश लिया ॥ हवेलीपर आनी स्थित हुए ॥ जेते राजाके स्थान थे सो रोकी लिये ॥ राजा धोती अंगोछा साथ रहि गया ॥ अवर सब शत्रुनें लिया ॥ तब राजा उहांते निकस्या ॥ हे रामजी इस प्रकार जब राजा निकस्या तब बनकों गया ॥ बनतें अवर बनविषे विचरता रहे अरु शांतपद आत्माविषे स्थित हुआ अनिछित विचरे ॥ जब केता काल वितीत भया तब राजा भगीरथ अपणे देसविषे आया जो शत्रु थे राजाके तिनके ग्रहतें भिक्षा मागणें लागा तब शत्रु अरु लोकनें देख्या बहुत पूजाकरी अरु कहा हे भगवन् तुम राजकों ग्रहण करो तब राजग्रहण न किया ॥ जेसें पृथ्वीपर पडा तृण तुछ बुद्धि करिकें नहि ग्रहण करता ॥ तेसें राजका ग्रहण न किया ॥ केता काल उहां रही करि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वहुरी चल्या ॥ तब त्रितल ऋषि जो अपणा गुरु था अनिछित तहां गया ॥ तब गुरुनेभी आत्मत्व करिकें ग्रहण किया अरु सिष्यनेभी गुरुकों आत्मत्व करिकें ग्रहण किया ॥ गुरु अरु सिष्यकी भावनातें दोनों रहित हुए फुरे कछू नहि ॥ केताक काल एक स्थानविषे रहे बहुरी बनविषे एकठे विचरणे लागे ॥ अरु शांत आत्मपदविषे दोनों स्थित रहे अरु राग दोषतें रहित केवल एक रस स्थित रही हे ॥ तिनकों न देह त्यागणेकी इछा न देह रखणेकी इछा अनिच्छा प्रारब्धविषे स्थित रहहि तब स्वर्गलोकके जो सिद्ध थे तिननें आनि पूजा करी॥ अरु वडे ऐश्वर्य पदार्थ चढाये ॥ अरु वहुत अपसरा आइ जेते ऐश्वर्य भोग पदार्थ थे सो आनि स्थित हुए तिनको उनने तुछ जाण्या जो आत्मसुख करि तृप्त थे ॥ अरु केवल आकासवत् निर्मल थे ॥ प्रकासरूप अरु समचित्त रहहि कलंकतारूपी मलतें रहित ॥ हे रामजी जेसें राजा भगीरथ स्थित हुआ हे तेसें तुमभी स्थित होऊ ॥ ॥ इतिश्री योगवाशिष्ठे निर्वाण प्रकरणे निर्वाणवर्णनंनाम चतुःषष्टितमःसर्गः ॥ ६४ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी केताक काल बीत्या तब भगीरथ उहांतें चल्या एक देसका राजा मृतक हुआथा तिसकी जो लछमी थी सो राजाकी याचना करतीथी तिस कालमें अनिछित राजा भगीरथ भिक्षा मागता आया तब उस राजाके मंत्रीनें राजा भगीरथकों देख्या ॥ तब क्या देखे जो जेते कछू गुण राजाविषे होतेहे तेतेही इसविषे हे तब राजा भगीरथकों कहा हे भगवन् तुम इस राजकों अंगीकार करो काहेतें जो तुमकों अनिछित आय प्राप्त हुआ हे ॥ तब राजाने राजका ग्रहण किया अरु न कछू भला जांण्या न बुरा अेसें ग्रहण किया ॥ तब राजा हस्ति पर आरूढ हुआ अरु सेनाकरी सोभत भया ॥ देस अरु स्थान सेनाकरी पूर्ण भये हे ॥ जेसें मेघकरी ताल पूर्ण होतेहे ॥ तेसेंहि देश अरु स्थान सेनाकरी पूर्ण करत्त भया ॥ जब नगारे अरु साज बाजणे लागे तब राजा महविषे गया ॥ सब महलस्त्रिया आय विद्यमान भइ ॥ तब उह देश जो राजा भगीरथका पहिला था तिस देसतें लोक आये ॥ तब मंत्री अरु प्रजानें आनि करी कहा ॥ हे भगवन् जिन शत्रुकों तुमनें राज दियाथा ॥ तिनकों मृत्युनें भोगकरि लिया हे जेसें मछी कोमल मांस ग्रासी लेती हे तेसें उनकों मृत्युनें ग्रसी लिया हे ॥ तातें तुम राज करो यद्यपि तुमकों इछा नही तोभी राज करो ॥ काहेतें जो वस्तु अनिछित आय प्राप्त होवे तिसका त्याग करणाश्रेष्ठ नही तातें तुम राज करो ॥ तब राजानें उस राजकाभी अंगीकार किया अरु राज करणे लागा ॥ तब पीछला वृत्तांत राजानें श्रवण किया ॥ जो मेरे पित्र कपील मुनीके श्रापतें भस्म हूएहे अरु कूपविषे पडे हे ॥ तब राजाने चिंतवना करी जो में तिनका उद्धार करों ॥ तब राजा अपणे मंत्रीकों राज देकरी एकला बनकों चला अरु वृत्त किया जो तप करों ॥ तब राजा एक स्थानविषे स्थित होकरी तपकरणे लागा ॥ ब्रह्मा रुद्र अरु जगत् ऋषिका गंगाके ल्यावणे निमित्त आराधन किया ॥ सहस्र वरष पर्यंत तप किया तब गंगा मध्यमंडलविषे आइ ॥ सो केसी गंगा हे जो विष्णुभगवानके चरनोंतें प्रगट भइहे ॥ तिस गंगाके प्रवाहकों पित्रोंके उद्धार निमित्त राजा ले आया बहुरी राजा भगीरथ समचित्त अरु सांतपदविषे स्थित हो करी विचरणे लागा ॥ जिसविषे न कोउ क्षोभ हे न भय हे न कोउ इछा हे ॥ केवल सांत आत्मपद हे तिसविषे स्थित भया हे ॥ जेसें पवनतें रहित समुद्र अचल होता हे ॥ तेसेंहि संकल्प विकल्पतें रहित होकरी स्थित भया ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे भगीरथोपाख्यान समाप्तिनाम पंचषष्टितमःसर्गः ॥ ६५ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी यह जो भगीरथकी द्रष्टि तेरे तांइ कही हे तिसकों आश्रय करिकें विचरो केसी यह द्रष्टि हे जो सर्व दुःखका नास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करती हैं ॥ अरु एक आख्यान अेसा आगेंभी वितीत भया हे ॥ अेसाहि सिखर ध्वज राजा होत भया ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् उह सिखरध्वज कवन था अरु किस प्रकार चेष्टा करत भया सो कृपा करिकें कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी राजा सिखरध्वज आगें था अरु बहुरीभि होवेगा सप्तमन्वंतर वितीत भये थे अरु चउकडी चतुर द्वापार जुगकी थी तिस कालविषे हुआ हे सो केसा राजाथा जो संपूर्ण पृथ्वीका तिलक था अरु जेते सूरवीर हे तिनतें उत्तम था अरु जेता ऐश्वर्य हे तिस करी संपन्न था अरु तिसविषे वंधमान न होत भया ॥ अरु जेते भोग हे तिनके भोगणेकों समर्थथा ॥ अरु बडे ओजकरी संपन्न था उदार अरु धीरजवान था किसीपर जोर जुलम न करताथा समचित्त अरु सांतपद विषे स्थित था संपूर्न दुःखतें रहित अरु जो कोइ अर्थी होवे तिसका अर्थपूर्न कर्ताथा ॥ अेसा था अरु बहुरीभी होवेगा ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् अेसा जो ज्ञानवान राजा था सो बहुरी जन्म किस निमित्त पावेगा ज्ञानी तो बहुरी नही जन्म पावता उह केसें पावेगा ॥ वसिष्ठोवाच ? ॥ हे रामजी जेसें एक समुद्रविषे केइ तरंग समान उठते हें ॥ केइ अर्ध सम केइ विलक्षण भाव करी फुरते हे तेसें आत्म समुद्रविषे केइ आकार एक जेसा फुरते हें ॥ केइ अर्धभाव करी फुरते हें केइ विलक्षण भाव फुरते हें ॥ जो समान फुरते हें ॥ तिनकी चेष्टा अरु आकार एक जेसें द्रष्टआवते हे तातें जानता हे उही हे ॥ तेसें सिखरध्वजकी आगें एसी प्रतिभा होवेगी ॥ हे रामजी इस सर्गविषे सप्त मन्वंतर वितीतभये ॥ अरु चतुर च उकडी द्वापार जुगकी बीती तब जंबुद्वीप मालव देसविषे श्रीमान सिखरध्वज राजा होत भया ॥ परंतु उस जेसा सिखरध्वज अवर होवेगा उह न होवेगा ॥ जब आयुष्य षोडस वरसकी राज कुमारथा ॥ तब एक समे राजा सिकारकों निकस्या अरु वसंत ऋतुका समा था ॥ तब राजा अपणे बागमें जाय स्थित भया ॥ तहां फूलके अचंभा स्थान बणे हुएथे तहां कमल निया मानो स्त्रियां हे अरु धूडके कणके तिनके भूषण हे अरु पुष्प तिनके समीप वृछ हे ॥ इसी प्रकार भंवरी भंवरेकी सुंदर लीला देखत भया ॥ तब राजाकों चिंतवना भइ जो मेरे तांइं स्त्री प्राप्त होवे ॥ तब में चेष्टाकरों अरु अधिक चिंतना भइ जो कब मेरे तांइं स्त्री प्राप्त होवे अरु कब फूलकी सिजापर सेन करोंगा ॥ इत्यादि जो भोगकी वृत्ति हे सो राजा चिं तना करणे लागा तब मंत्रीनें देख्या जो हमारे राजाका मन स्त्रीपर हे ॥ अेसें होवे जो राजाका विवाह करियें ॥ सो मंत्री राजाके त्रिकाल ज्ञान रषतेथे सरीरकी अवस्था जानतेथे इसीतें जानत भये ॥ तब एक राजा था तिसकी कन्या बहुत सुंदर अरु वर प्राप्त चाहतीथी ॥ तिस राजाकी पुत्री साथ राजा सिखरध्वजका विवाह कीया शास्त्रकी विधि सहित तब राजा बहुत प्रसंन होकरी अपणे ग्रहविष आया अरु तिस स्त्रीका नाम चुडाला था अरु बहुत सुंदरथी तिसविषे राजाका हेत बहुत हुआ ॥ अरु स्त्रीका हेत राजाविषे बहुत हुआ ॥ जो कछू राजाके मनविषे चिंतवना होवे सो राणी आगें सिद्ध करी देवे इस प्रकार परस्पर प्रीति आपसविषे बढी जेसी भंवरे अरु भंवरीकी प्रीती आपसविषे होती हे ॥ तब एक समे राजा मंत्रीयांकों राज देकरी बनकों गया बनविषे नानाप्रकारकी चेष्टा करत भया अरु वनविषे विचरे जेसें सदासिव अरु पार्वती जेसें विष्णु भगवान अरु लक्ष्मी विचरहिं ॥ तेसें रा जा अरु राणी विचरणे लगे ॥ बहुरी जोग कला सीखणे लागे ॥ तब राणी राजाकों जोग कला सिखावे संपूर्ण कला करी संपन्न हुए ॥ परंतु चुडालाकी बुद्धि राजाकी बुद्धितें तीक्ष्ण सी घ्रही जाणि लेवे अरु राजाकों सिखावे ॥ इसी प्रकार बहुत चेष्टा करी अरु विचरे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे सिखरध्वज चुडाला प्राप्तिनाम षट्षष्टितमः सर्गः ॥ ६६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इसी प्रकार राजा अरु राणीनें अनंत भोग भोगे ॥ जेसें छिद्रकरी कुंभतें सनै सनै जल निकसता हे ॥ तेसें सनै सनै जोबनके गये वृद्ध अवस्था आय प्राप्त भइ ॥ तब राजा अरु राणीकों वैरागका कणका आनि उत्पत्ति भया ॥ तब वैराग करिकें यह विचरणे लागे जो यह संसार मिथ्या अरु विनासी हे एक जेसा नहि रहता ॥ अरु यह विषे भोगभी मिथ्या हे जो एता काल हम भोगते रहे ॥ तब तृष्णा पुर्न न भइ वधती गइ ॥ हे रामजी इस प्रकार राजा अरु राणी वैरागकरीके विचारत भये जो यह भोग मिथ्या हे ॥ अरु हमारी जोबन अवस्थाभी बितीत होगइ हे ॥ जेसें वीजलीका चमत्कार क्षणमात्र हो करी बीति जाता हे ॥ तेसें जोबन बितीत होगया अरु मृत्यु निकट आया ॥ जेसें नदीका वेग तलेकों चला जाता हे तेसें आयुर्वला बितीत हो जाती हे ॥ जेसें हाथ ऊपर जल पाया वहि जाता हे तेसें जोबन अवस्था निवृत्त हो गइ हे ॥ अरु यह सरीर केसा हे जेसें जलविषे तरंग बुद्बुदे उपजीकरी लीन हो जाते हे ॥ तेसेंही सरीर क्षणभंगुर हे ॥ अरु जहां चित्त जाता हे तहां दुःखभी इसके साथ चले जाते हे निवृत्त नहि होते ॥ जेसें मांसके तुकडे पाछें इल पंछी चला जाता हे ॥ तेसें जहां अज्ञान हे तहां दुःखभी पाछे जाते हे ॥ अरु इस शरीरभी निवृत्त हो जाणा हे ॥ जेसें अंबका फल पका वृछ साथ नहि रहता गिर पडता हे ॥ तेसें शरी रभी नष्ट हो जाता हे ॥ जिस सरीर अवस्य गिरता हे तिसका आसरा करणा क्या हे ॥ जेसें सूका पात वृछतें गिर पडता हे तेसें इस सरीरगिर पडता हे ॥ तातें हम अेसा कछू करे जो सं साररूपी विसूचिका निवृत्त होवे ॥ सो संसाररूपी विसूचिका ब्रह्मविद्याके मंत्रकरी निवृत्त होती हे ॥ ब्रह्मविद्याकरी ज्ञान उपजता हे ॥ अरु आत्म ज्ञानकरी सर्व दुःख निवृत्त हो जाते हे॥ इसतें अवर उपाय कोउ नहि तातें आत्म ज्ञानके निमित्त हम संतपास जावे हे रामजी अेसें विचारकरीके राजा अरु चुडाला संत जो हे आत्मज्ञानी तिनके पास चले ॥ अरु आत्मज्ञान की वार्ता करही आत्मज्ञानविषे तिनका चित्त अरु भावना आपसमें विचार अरु चर्चा करणी ॥ आत्म परायण हो करी संतपास गये ॥ सो केसें संत हे जो संसार समुद्रते तरावणेवाले हे अरु आत्मवेत्ता हे ॥ तिनपास जाएकरी पूजा करत भया अरु उनसों प्रश्न किया ॥ तब राजा अरु राणी उनसों ब्रह्मविद्या श्रवण करनें लागे ॥ आत्मा सुद्ध हे अरु आनंदरूप हे ॥ ज़िसके पायेतें दुःख निवृत्त हो जाते हे ॥ चैतन हे अरु एक हे इस प्रकार सुणते भये॥हे रामजी तब राणी चूडाला विचारविषे लागी ॥ जब राजाकों कोउ टहल करे परंतु उसके चित्त की वृत्ति विचारविषे रहे ॥ सो विचार यह जो में क्या हों अरु यह संसार क्या हे ॥ अरु संसारकी उत्पत्ति किसतें हे ॥ अेसें विचार करी जानणे लागी जो यह पंचतत्वका शरीर हे सोभी में नही ॥ काहेतें जो शरीर जड हे ॥ अरु यह कर्म इंद्रियाभी जड हे ॥ जेसा शरीर हे तेसें शरीरकें अंग हे ॥ यह जो चेष्टा करते हे सो ज्ञान इंद्रियांकरिकें करते हे ॥ सो ज्ञान इंद्रियाभी में नहि काहेतें जो यहभी जड हे ॥ मनकरी मनकी चेष्टा होती हे ॥ सो मनभी जड हे ॥ तिसविषे संकल्प विकल्प चेतना हे सो बुद्धी करी हे ॥ अरु बुद्धिभी जड हे जो तिसविषे निश्चय चेतना हे सो अहंकार करिके होता हे ॥ अरु अहंकारभी जड हे ॥ जो तिस विषे अहं चेतनाकरिके होती हे सो चेतनताभी जीव करीके होती हे सो जीवभी में नहि ॥ काहेतें जो यह जीवत्व फुरन रूप हे ॥ अरु मेरा स्वरूप अफुर हे सदा उदेरूप हे अरु सनमात्र हे ॥ वडा कल्याण हे जो चिरकाल करीके में अपणे स्वरूपकों पाया हे ॥ सो केसा पद हे अविनासी हे अनंत हे अरु आत्मा हे जेसें सरत्कालका आकास निर्मल होता हे तेसें में निर्मल हों अरु विगतज्वर हों रागदोष रूपी तापतें रहित हों॥ अरु चिन्मात्र पद हों अरु अहंत्वतें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहित हों मेरे विषे फुरणा कोऊ नहि इसीतें सांतरूप हों ॥ जेसें क्षार समुद्र मंद्राचल पर्वततें रहित सांतरूप हे ॥ तेसें चित्ततें रहित अचल हों अरु अद्वैत हों ॥ कदाचित सरूपतें परिणाम कों नहि प्राप्त भया अेसा जो तन्मात्र पद हे तिसकी ब्रह्मवेत्तानें संज्ञा कही हे जो ब्रह्म हे चैतन्य हें ॥ अरु परमात्मा हे इत्यादिक नाम आचार्यनें राखे हे ॥ अरु यह आत्माहि मन बुद्धि आदिक अरु द्रश्य संसाररूप हो करी पसर्या हे अरु स्वरूपतें अच्युत हे गिर्या कदाचित नहि ॥ अरु फुरणे करीकें आकार भासतें हे तोभी आत्मातें इतर कछू नहि ॥ जेसें बडा पर्वत होता हे तिसके पथरवटे होते हे तोभी पर्वततें इतर कछूनहि ॥ तेसें यह द्रश्य आत्मातें इतर कछू नहि अरु यह आकार केसें हे जेसें गंधर्व नगर नाना आकार हो भासता हे तेसें यह संसार हे ॥ ज्ञानवानकों एकरस हे अरु अज्ञानीकों भेदभावना हे ॥ जेसें बालक मृत्तिकाके खिलोने कल्पता हे हस्ति घोडा राजा प्रजातें आदि लेकरी नाम राखता हे अरु जिसकों मृत्तिकाका ज्ञान हे तिसकों मृत्तिकाहि भासती हे इतर कछू नहि भासता तेसें अज्ञान करीके नाना रंग भासते हे अब में जाण्या हे जो एक रस हों हे रामजी इस प्रकार चुडाला आपकों जाणती भइ ॥ जो में सन्मात्र हों अरु अछेद हों अदाह हों स्वछ हों अरु अक्षर हों निर्मल हों ॥ मेरे विषे अहं त्वं एक अरु द्वैत शब्द कोइ नहि ॥ अरु जन्म मृत्युभी कोऊ नहि यह संसार चित्तकरी भासता हे अरु आत्मा स्वरूप हे देवता जक्ष अरु राक्षस स्थावर जंगम आदिक सर्व आत्मरूप हे ॥ जेसें तरंग बुदबुदा समुद्रसों भिन कछू नहि तेसें आत्मातें भिन कछू वस्तु नहि ॥ द्रश्य द्रष्टा दर्शन यहभी आत्माकी सत्ता करी चैतन हे ॥ इनकों आपतें सत्ता कछू नहि ॥ अरु मेरेविषे अहंका उत्थान कदाचित् नहि अपणे आपविषे स्थित हों अब इसी पदकों आश्रयकरीके चिरकाल इस संसारविषे विचरोंगी ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे चुडाला प्रबोध नाम सप्तषष्टितमः सर्गः ॥ ६७ ॥ ॥७॥ ॥७॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार चुडाला विचार करत भइ ॥ सो केसी चुडाला हे ॥ जो तृष्णा निवर्त्त भइ हे जिसकी दुःख भय अरु भोगवासना सब निवृत्त भइ हे केवल शांत आत्मपदकों पायकरी शोभत भइ हे जो पावणे जोग पद हे तिसकों पाय करी जाणत भइ जो एता काल में अपणे स्वरूपतें गिरी रही हों अब मेरे तांइं शांति हुइ हे ॥ अरु दुःख सब मिटि गये हे ॥ अब मेरे तांइं ग्रहण त्याग कछू नही ॥ हे रामजी अपणे आत्म सुभावविषे स्थित भइ ॥ अरु एकांत बेठीकरी समाधिविषे लागी जेसें वृद्ध गो पर्वतकी केंदराकों पाय करी बहुत तृण घासकरी प्रसंन्न होती हे तेसें अपणे आनंदरूपकों पाएकरी चूडाला स्थित भइ ॥ हे रामजी अेसें आनंदको प्राप्त भइ जिसकों वाणी करी कही न सकता तब राजा सिखरध्वज आय राणीकों देखीकरी आश्चर्यकों प्राप्त भया अरु कहा हे अंगना अब तुं बहुरी जोवन अवस्थाकों प्राप्त भइ हे ॥ तेरे तांइं कोउ बडा आनंद प्राप्त भया हे कदाचित् तेनें अमृतका सार पान किया हे तातें अमर भइ हे ॥ अथवा तेरे तांइं किसी जोगेश्वरनें कलाकों प्राप्त करी हे ॥ अथवा त्रिलोकीका ऐश्वर्य तुझे प्राप्त भया हे ॥ हे अंगना तेरे तांइं कवन वस्तु प्राप्त भइ हे ॥ तेरे चित्तकी वृत्ति में अेसें जानता हों जो अमृतका सार तेनें पान किया हे ॥ अरु त्रिलोकीके राजतेंभी तेनें कोउ अधिक पदार्थ पाया हे ॥ तुं बडे आनंदकों प्राप्त भइ हे तिस आनंदका आदिअंत कोउ नही द्विखिता ॥ अरु तेरेविषे भोग वासनाभी नही दिखती शांत हो गइ हे ॥ जेसें शरत्कालका आकाश निर्मल होता हे तेसें तेरेविषे निर्मलता द्विखती हे ॥ अरु तेरे स्वेत वालभी बडे सुंदर द्रष्ट आते हे ॥ सो कहहु तेरे तांइं क्या वस्तु प्राप्त भइ हे ॥ चुडालोवाच ॥ हे राजन् यह जो कछू देखता हे सो किंचित् हे ॥ अरु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसतें जो रहित निष्किचित् पद हे तिसकों में पाइ हों ॥ तिसका आकार निष्किचित् हे अरु दुसरेका अभाव हे ॥तिसीकों पाय करी मैं श्रीमान् भइ हों ॥ अरु जेते कछू भोग हे तिनतें रहित अभोगकों भोग्या हे तिस भोगकरी तृप्त भइ हों ॥ अभोग कहियें आत्मज्ञान तिसकों में पाया हे आत्माविषे विश्राम पाया हे ॥ सदा शांतरूप श्रीमान् हों ॥ हे राजन् जेते यह राज भोग सुख हे तिनकों त्यागकरी परम सुखकों भोगती हों ॥ राग दोषतें रहित होकरी में केसी हों जो में नही अरु मेंहि स्थित हों ॥ अरु जेता कछू नेत्रोंकरी दिखता हे ॥ अरु इंद्रियांकरी जाणता हे ॥ अरु मनकरी चिंतवना करता हे ॥ सो सब मिथ्या हे सुपनवत् ॥ अरु में तहां स्थित भइ हों ॥ जहां इंद्रियां अरु मनकी गम नही ॥ अरु अहंकारका उत्थान भी जिसविषे नही तिसपदकों में पाइ हों ॥ जो सर्वका आधार हे अरु सर्वका आत्मा हे ॥ अरु सर्व जो अमृत हे तिनका सार अमृत में पान किया हे ॥ तातें मेरा नास कदाचित् नही अरु भयभी कदाचित् नही ॥ हे रामजी इस प्रकार राणीनें जब कहा ॥ तब राजा सिखरध्वज तिसके वचनोंकों न जानत भया ॥ हांसीकरी अरु कहा हे मूर्ख स्त्री यह तुं क्या कहती हे ॥ जो प्रत्यक्ष वस्तुकों झुठ कहती हे ॥ अरु कहती हे में नही देखती ॥ अरु जो असत हे दिखता नही तिसकों सत्य कहती हे में देखती हों ॥ यह वचन तेरे कवन मानेगा ॥ इन वचनों वाला शोभा नही पावता ॥ अरु कहती हे जो ऐश्वर्यकों त्यागकरी श्रीमान् भइ हों ॥ निषकिंचनकों पायकरी इन वचनों वाला शोभा नही पावता ॥ अरु कहती हे इन भोगका त्याग किया हे अरु इनतें जो रहित अभोग हे ॥ तिसकों में भोगती हों तातें तुं मूर्ख हे ॥ अरु कहती हे में कछू नही बहुरी कहती हे में इश्वर हों ॥ इसतें महा मूर्ख दृष्ट आती हे अरु जब इसीविषे तेरा चित्त प्रसंन हे तब त्यों विचरु परंतु यह वात सुणीकरी सत कोउ न मानेगा ॥ जेसें तेरी इछा हे तेसें विचरु परंतु तेरे तांइं यह सोभा नही ॥ हे रामजी अेसें कहिकरी राजा उठि खडा हुआ मध्यांनका समा था स्नानके निमित्त गया॥तब राणी मनविषे बहुत शोकवान भइ अरु विचार किया जो बडा कष्ट हे॥ राजानें आत्मपदविषे स्थिति न पाइ॥ अरु मेरे वचनोंकों जानत न भया राणी अेसें मनविषे धारीकरी अपणे आचारविषे प्रवर्तणे लागी ॥ बहुरी अपणा निश्चय राजाकों न दिखाया ॥ जेसें अज्ञान कालविषे चेष्टा करती थी तेसेंहि ज्ञानकों करी चेष्टा करणे लागी॥तद एक समे राणीके मनविषे आया जो में प्राणोंकों उपर चडाउं॥अरु उर्धकों ल्यावों अपणे वसकरों उदान अरु अपानकों किसनिमित जो आकासकोंभी उडों अधकोंभी गमन करों एसें चिंतवना करीके राणी जोगविषे स्थित भइ प्राणायाम करणे लागी ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् यह संसार संकल्पतें उत्पन्न भया हे स्थावर जंगमरूप संसार वल हे अरु संकल्प इसका बीज हे ॥ तब वह कवन प्राणायाम पवन हे जिसकरी आकाशकों उडते हे ॥ अरु फिरी तलेकों आते हे ॥ अरु अज्ञानी पुरुष जतन करीके सिद्धि करते हे॥अरु ज्ञानवान केसें लीलाकरी विचरते हे इसका उत्तर कहो ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी तीन प्रकार सिद्धि होती हे सो श्रवण करु ॥ एक तो उपादेय हे जो यह वस्तु मेरे तांइं प्राप्त होवे ॥ तिस निमित्त अज्ञानी जतन करतें हे ॥ अरु एक यह जो यह दुःख मेरा निवृत्त होवे में सुखी होउं महा अज्ञानीकों यह चिंता रहती हे ॥ अरु एक यह हे जो में कर्म करता हों तिसका फल मेरे तांइं सिद्धी होवे ॥ यहभी अज्ञानी हे काहेतें जो आपकों करता मानते हे ॥ अरु ज्ञानवान इनतें उल्लंघित वर्तता हे कदाचित् ज्ञानवान इसविषे वर्तता हे तोभी तिसके निश्चयविषे यह जो न में कर्ता हों न भोगता हों ॥ अरु जोग करीकें इस प्रकार सिद्ध होते हे ॥ जो देश काल वस्तु क्रिया तिनके आधीन हो जाते हे ॥ क्रिया क

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हियें मुखविषे गुटका राखणा तिसकरी जहां चाहे तिसि ठोरविषे जाय प्राप्त होवे ॥ अरु अंजन नेत्रोविषें पांवणा जिसकों देख्या चाहे तिसकों देखी लेवें अरु खड्ग हाथविषे धारीकरी संपूर्ण पृथ्वीकों वशकरी लेणा यह तो क्रिया पदार्थ हे ॥ अरु देश यह जो सर्व पर्वत हे तिनविषे केती पीठ हे अरु वडा उत्तम हे ॥ अरु जिस प्रकार यह सिद्ध होते हे सो श्रवण कर एक कुंडलनी शक्ती हे आधार चक्रविषे ॥ नाभिके तले सर्पणीकी न्यांइं तिसविषे कुंडल हे ॥ कुंडलकों मारि बेठी हे अरु वासनाहि तिसविषे विष हे ॥ अरु जेती नाडी हे तिनकी सम ष्टि नही हे ॥ तिस कुंडलनीविषे जब मनन होता हे तब मन होकरी प्रगट होता हे॥ अरु जब निश्चय होता हे तब बुद्धी प्रगट होती हे॥ जब अहंभाव होता हे तब अहंकार प्रगट होता हे ॥ जब स्मरन होता हे तब चित्त प्रगट होता हे ॥ अरु जब तिसविषे स्पर्शकी इछा होती हे तब पवन प्रगट होता हे ॥ इसी प्रकार पंच तन्मात्रा अरु चारों अंतःकरण प्रगट होते हे ॥ अरु जेती नाडी हे सो सर्व कुंडलनीतें प्रगट होती हे ॥ अरु आत्माका प्रगट होणाभी तिसीतें जाणता हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् आत्माका प्रगट होणा तिसतें केसें जाणता हे ॥ आत्मा तो देश काल वस्तूके प्रछेदतें रहित हे ॥ सर्व देस सर्व काल सर्व वस्तु करी पूर्ण हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जेसें सूर्यका प्रतिबिंब जलविषे देखता हे ॥ अरु धूप सर्व ठोर देखता हे ॥ तेसें ब्रह्म सत्ता सर्वत्र समान हे ॥ अरु प्रगट सात्विक गुणविषे देखता हे ॥ जेती कछू नाडी अरु इंद्रिया हे तिनका उदे होणा कुंडलनी शक्तिसों हे ॥ अरु जब यह जीव कुंडलनी शक्तिविषे स्थित होकरी पवनकों स्थिर करता हे ॥ तब जेती कछू अंतर प्राणवायु हे ॥ सो सर्व इसके वस होती हे ॥ जेसें सर्व सेना राजाके वस होती हे ॥ तिसी प्रकार सर्व इंद्रियां इसके वस होतीयां हे ॥ अरु जो इसके वस प्राणवायु नही होती ॥ तो इसकों आधिव्याधि रोग उपजते हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् आधिव्याधि केसें होती हे सो कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी आधि नाम हे मनकी पीडाका अरु व्याधि नाम हे देहके दुःखका ॥ आधि तब होती हे जब इसकों संकल्प होता हे ॥ जो यह सुख मेरे तांइं प्राप्त होवे अरु उह वस्तु इसकों नही प्राप्त होती तब चिंता करीकें दुःख पावता हे ॥ अरु व्याधि तब होती हे जब वात पित्त कफका विकार शरीरविषे होता हे अरु दुःख पावता हे ॥ जब मन अरु शरीरका दुःख एकठा होता हे ॥ तब आधिव्याधि दुःख एकठे होते हे ॥ जब भिन्न भिन्न होते हे ॥ तब दुःखभी भिन्न भिन्न होते हे अज्ञानीकों ॥ अरु ज्ञानवानकों न आधि होती हे न व्याधि होती हे अरु यह जोगकी कला में विस्तार करी नही कहि ॥ काहेतें जो पूर्वके ज्ञान क्रमका प्रसंग रही जाता हे ॥ अरु जेती कला हे तिन सर्वकों में जानता हों ॥ परंतु यह कला ज्ञान मार्गकों रोकणेहारी हे ॥ इसीतें विस्तार करीकें नही कहता ॥ अरु वासना चार प्रकारकी हे सो श्रवण कर ॥ एक वासना सुषुप्ति हे अरु एक वासना सुपन हे ॥ अरु एक वासना जाग्रत हे अरु एक क्षीण वासना हे ॥ स्थावर योनिकों सुषुप्त वासना हे सो आगें फुरेगी ॥ अरु तिर्यक योनिकों सुपन वासना ह जो उनकों वासनाका ज्ञान भी नही अरु जंगम जो हे मनुष अरु देवता आदिक तिनकों जाग्रत वासना हे ॥ जो वासनाहिविषे लागे हे यह तीन वासना अज्ञानीकों हे ॥ अरु क्षीण वासना ज्ञानीकी हे जो वास नाकी सत्यता नष्ट भइ हे ॥ तिसकों वासना कोउ नही ॥ जब इस प्रकार वासना निवर्त्त भइ तब आगें संसारभी नही रहता ॥ अरु जब कुंडलनी शक्तितें वासना फुरती हे तब पंच त न्मात्रा द्वारा संसार भान होता हे ॥ संसार रूपी वृछका बीज वासनाही हे ॥ दशो दिशा संसार वृछके पत्र हे अरु शुभ अशुभ कर्म तिसके फूल हे ॥ अरु स्थावर जंगम तिसके फल हे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जेसी जेसी वासना पुर्यष्टका साथ मिली करी जीव करता हे तेसाहि आगें फल होता हे॥हे रामजी तातें वासनाका त्याग करं वासनाहिं संसार रूपी वृक्षका बीज हे यही पुरुष प्रयत्न हें जो निर्वासनिक होणा तब विश्व कदाचित् न भासेगी जेसें सूर्यके उदे हुए अंधकाररूपी रात्र नही रहती तेसें ज्ञानरूपी सूर्यके उदे हुए संसाररूपी अंधकार निवृत्त हो जाता हे॥हे रामजी आधि व्याधि बडे रोग हे सो मनकरी होते हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् आधि रोग तो मनकरी होता हे ॥ अरु व्याधि तो सरीरका रोग हे मनकरि केसें होता हे सो कहो ॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी व्याधि दो प्रकारकी हे ॥ एक लघु हे एक दीर्घ हे लघु कहियें जो सरीरकों कोउ दुःख आनि प्राप्त होवे ॥ सो पुंण्यकरी अथवा स्नानकरी अथवा जपकरी निवृत्त हो जावे॥ यह लघुकही हे ॥ अरु दिर्घ व्याधि सो कहियें जो जन्ममरनका रोग हे सो वडा रोग हे ॥ मनके सांत हुए विना निवृत्त नहि होता ॥ इसिते आधि व्याधि दाउ मन करी होते हे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् व्याधि मन करि केसें होती हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब चित्त शांत होता हे तब रोग कोउ नहिरहता अरु जबलग चित्त सांत नहि होता तबलग आधि व्याधि होती हे सो श्रवण कर जो केसें होती हे ॥ जो कछु बाहिर अग्निकरि परिपक्व होताहे तिसकों पुरुष भोजन करते हे ॥ तब अंतर कुंडलनी जो हे पुर्यष्टका साथ मिली हुइ जीव कला अरु प्राणोकी समष्टता॥ सो उदान पवन ऊर्धमुख हो फुरती हे अरु अपान पवन तिसतें अधकों फुरताहे उदान अरु अपानका आपसविषे विरोधहे तिनके क्षोभतें अग्नि उठतें हे॥ सो रिदे कमलविषे आनि स्थित होते हे ॥ तब बहिर अग्निका पक्का भोजन हृदयकी अग्नितें बहुरी पक्व होते हे ॥ अरु सर्व नाडी अपणे अपणे भाग रसकों लेजाते हे ॥ तब बीरजवाली नाडी बीरजकरिकें राखत हे अरु रुधिरवाली नाडी रुधिरकरी राखत हे॥अरु जब राग अरु द्वेषकरीकें चित्त कुंडलनी शक्तिविषे क्षोभ होता हे॥तब नाडी अपणे स्थानोंकों छोडी देती हे अंनभी अंतर पक्व नांहि होत ॥ तिस कच्चे रसकरी रोग उठत हे॥जेसे राजाकों क्षोभ होता हे तब सेनाकोंभी क्षोभ होता हे॥अरु जब राजाकों शांति होती हे॥तब सेनाकोंभी शांति होत हे॥तेसेंहि जब मन विषे क्षोभ होत हे तब रोग होत हे ॥ अरु जब मनविषे शांत होति हे तब नाडी अपणे अपणे स्थानोंविषे स्थित होत हे ॥ रोग कोउ नहि होंत ॥ तातें हे रामजी आधि व्याधि तब होत हे जब पुरुषका चित्त निर्वासना नहि होत ॥ जब चित्त शांत होत हे तब रोग कोउ नहि रहता तातें निर्वासना पदविषे स्थित होहु ॥ तब रामजीने कहा हे भगवन् पीछे तुमने कहा जु मंत्रोकरीभी रोग निवर्त्त होत हे ॥ सो केसें निवर्त्त होत हे यह कहो ॥ तब वसिष्ठने कहा ॥ हे रामजी प्रथम पुरुषकों सरधा होत हे ॥ जु इस मंत्रकरी रोग निवर्त्त होवेगा ॥ अरु पुण्यक्रिया जो दान आदिक हे ॥ अरु संतजनकी संगति होत हे ॥ अरु यरलव आदिक जो अक्षर हे ॥ इनके जापकरीके अरु जेते कछू जाप अरु मंत्र हे सो इन अक्षरोंकरी सिद्ध होत हे ॥ जब इनकों जाप करता हे भावना सहित तब व्याधि रोग निवर्त्त होजाता हे ॥ अरु जोगेस्वरका क्रम जो हे अणु अरु स्थूल सो श्रवण करु ॥ जब इह प्राण अरु अपान कुंडलनी सक्तिविषे स्थिति होत हे ॥ अरु इनकों वसकरीके योगी गंभीर होत हे ॥ जेसें मिसकविषे पवन होवे ॥ इसी प्रकार पवनकों स्थित करीके कुंडलनी सुषुमनाविषे प्रवेस करत हे ॥ तब ब्रह्मरंध्रविषे जाय स्थित होती हे ॥ एक मुहुर्त पर्यंत तहां स्थित होवे ॥ तब आकासविषे सिद्धिकों देखत हे ॥ जिसी प्रकार कम हे तेसें तुझकों कहता हों॥ हे रामजी सुषुमनाके अंतर जो ब्रह्मरंध्र हे ॥ पूरक करी तिसविषें कुंडलनी सक्ती जब जाय स्थित होते हे ॥ तहां अथवा रेचक प्राणवायुके प्रयोगतें द्वादस अंगुल पर्यंत मुखसों बा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स अथवा अंतर ऊर्धभूत मुहूर्त्त एक लगे स्थित होती हे ॥ तब आकासविषे सिद्धोंका दर्सन होता हे ॥ रामउवाच ॥ हे ब्राह्मण जब ब्रह्मरंध्र जीव कला जाय स्थित होती हे ॥ तब तहां सिद्धोंका दर्सन केसें होता हे ॥ दर्सन तो नेत्रोंकरी होता हे ॥ सो नेत्र आदिक इंद्रियांउहां कोउ नहि होती ॥ नेत्रोंबिना दर्शन केसें होता हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे महाबाहु रामजी भूचर जो हे पृथ्वीविषे विचरणेवाले इंद्रियगण तिनकों नभस्चर जो हे आकासविषे विचरणे वाले तिनका दर्शन नहि होत ॥ परंतु दिव्य दृष्टिकरी दृष्ट आती हे चर्म दृष्टी साथ नहि दृष्ट आते ॥ विज्ञानके निकट जो निर्मल बुद्धि नेत्र होते हे ॥ तिन साथ दर्शन होता हे जेसें सुपनेविषे चर्मनेत्रों विनाभी सर्व पदार्थ द्रष्ट आते हे तेसें सिद्धोंका दर्शन होता हे ॥ परंतु एती विशेषता हे ॥ जो सुपनेके पदार्थ जायत विषे नहि भासते ॥ अर्थ सिद्ध नहि होता ॥ अरु सिद्धोंके समागमकी चेष्टा जायतविषेभी स्थिर प्रतीत होती हे ॥ मुखके बाह्य जो द्वादस अंगुल पर्यंत अपानका स्थान हे ॥ जो रेचक प्राणायामका अभ्यास होता हे ॥ अरु चिरपर्यंत प्राण स्थिर भूत होता हे ॥ तब ओर पुरियां अरु दिसाके स्थानमें प्राप्त होणेकां सामर्थ होता हे ॥ रामउवाच ॥ हे ब्राह्मण जो पदार्थ चंचल रूप हे तिसका स्थिर होणा केसें होता हे वक्ता जो गुरु हे सो कृपा करो कहते हे ॥ दुष्ट प्रश्न जो तर्करूप हे तिसकरीकेभी खेदवान नहि होते ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जेसी जेसी वस्तु हे तेसी तिसकी शक्ति स्वभाविक होती हे ॥ इह आदि जगत्के फुरणेकरी निती भइ हे ॥ तेसें अवलग आत्माविषे स्वभाव शक्तिका फुरणा होता हे ॥ इह जो अविद्या हे सो अस्तरूप हे ॥ जो कछु वस्तु रूप हो करीभी भासती हे सो जेसें वसंतऋतुविषेभी सरत्कालके फुल दृष्ट आवते हे ॥ अरु वसंतऋतुके सरत्कालविषे भासते हे ॥ अरु यहभी एक नीति हे ॥ जो इस करीके इह द्रव्यकी सक्ति अेसें हो जावे ॥ परंतु स्वरूपते सब ब्रह्मरूप हे ओर द्वैत नानात्व कछू नहि ॥ केवल ब्रह्मतत्व अपणे आपविषे स्थित हे व्यवहारके निमित्त नानात्वकी कल्पना हुइ हे वास्तवतें द्वैत कछू नहि ॥ रामउवाच ॥ हे भगवन् सूक्ष्म रंध्रते स्थूल रूप केसें निकसि जाती हे ॥ अरु अणु सूक्ष्म रूप हो करी बहुरी स्थूल भावकों केसें प्राप्त होती हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जेसें आरे साथ काष्ट काटता हे ॥ अरु उसके दो टुकडे हुए तिनकों सीघ्रहि घर्षनकरीये ॥ तब तिनसों सुभाविक अग्नि प्रगट होती हे तेसें मांसमय जो कमल हे उदरविषे तिसके मध्यरिदा कमल हे ॥ तिसविषे सूर्य अरु चंद्रमाकी स्थिति हे तिस कमलके अंतर दो कमल हे ॥ एक अधः दुसरा उरध सो अधः चंद्रमाकी स्थिति हे अरु उरध सूरजकी स्थिति हे ॥ तिनके मधविषे कुंडलनी लक्ष्मी स्थित हे ॥ जेसे पद्मराग मणीका डबा होवे ॥ जेसें मोतीयोंका भंडार होवे ॥ तेसें उसका महा उजलरूप हे ॥ जेसें आवर्त फेनके मिलनेंते शलशल शब्द प्रगट होता हे तेसें उसतें शब्द निकसता हे ॥ जेसें डंड साथ हलायेंतें सर्पणी शब्द करती हे ॥ तेसें उस कुंडलनीसों प्रणव शब्द उदे होता हे ॥ हे रामजी आकास अरु पृथ्वी जो हे उर्ध अरु अधः रूप दो कमल तिनके मध्यविषे कुंडलनी शक्ति स्पंद रूपणी स्थित हे ॥ जीवकला पूर्यष्टक अनुभव रूप अति प्रकास सूर्यकी न्यांइं रिदेरूप कमलकी भमरी हे सो सबनका अधिष्टान आदिशक्ति हे रिदे कमलविषे बिराजमान हे ॥ तिस रिदे आकासविषे कुंडलनी शक्ति सो सुभाविक वायु निकसती हे सो कोमल मृदुरूप हे ॥ उहि पवन निकसीकरी दो रूप होता हे एक प्राण अरु दुसरा अपान सो अन्योन्य मिलकरी स्फुरण रूप होता हे ॥ जेसें वृछके पत्र हलाते हे ॥ तिसकरी सीघ्रहि अग्नि प्रगट होत हे ॥ अरु बांसोके घर्षणेतें अग्नि प्रगट होता हे तेसें प्रान अपानतें अग्नि प्रगट होकरी आकासविषे उदे होती हे ॥ तब सर्व ओरते अंतर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकास होता हे ॥ जेसें सूर्यके उदे हुए सर्व ओरतें भुवन प्रकासरूप होता हे ॥तेसें सर्व ओरतें प्रकास होता हे ॥ सूर्यरूप तारा अग्निवत तेज आकार हे रिदे कमलका स्वर्नरूप भम
रा हे ॥ तिसके चिंतवते जोगी तद्गत होते हे ॥ सो प्रकास ज्ञानरूप हे ॥ तिस तेज साथ जोगीकि वृत्ति तद्गत होती हे ॥ अर्थ यह एकत्व भावकों प्राप्त होती हे ॥ तब लक्ष जोजन पर्यंत
जो पदार्थ होवे ॥ तिनका ज्ञान हो आता हे प्रत्यक्ष द्रष्ट पडे आते हे ॥ तिस अग्निका रिदारूपी ताल स्थान हे जेसें बडवाग्नि समुद्रविषे रहती हे ॥ अरु जलही ताके इंधन हे ॥ जो
जलकों दग्ध करत हे ॥ तेसे रिदेरूपी तालविषे तिसका निवास हे ॥ अरु रस सीतलता जलरूपकों पचावत हे ॥ तिस रिदे कमलतें जो अपानरूप सीतल वायु उदे होता हे ॥ तिसका ना
म चंद्रमा हे अरु प्राणरूप उष्ण पवन उदे होता हे सो सूर्यरूप हे ॥ सोइ उष्ण अरु सीतल सूरज चंद्रमा नामकरी देहमें स्थित हे ॥ आदि प्राणवायु रूप सूर्यतें अपानरूप चंद्रमातें सूर्य
रूप होकरी स्थित होता हे ॥ सूर्य उष्ण अरु चंद्रमा सीतल हे इन दोनों करी जगत् हुआ हे ॥ विद्या अविद्या सत्य असत्य रूप जगत् दोनोंकरी जुगति हे॥सत चित प्रकास विद्या उत्तराय
ण सूर्य अग्नि आदिक नाम सो बुद्धिवान निर्मल भाव कहतें हे ॥ अरु असत् जड अविद्या तम दक्षणायन आदिक मार्ग इह चंद्रमा रूप मलिन भाव कहते हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगव
न् अग्नि सूर्य रूप जो प्राणवायु हे ॥ तिसतें सीतल जल रूप चंद्रमा अपानरूप केसें उत्पत्ति होता हे अरु अपानजल चंद्रमा रूपतें सूर्य केसें उत्पत्ति होत हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे राम
जी सूर्य चंद्रमा जो हे अग्निसोम सो परस्पर कार्य कारण रूप हे ॥ जेसें बीजतें अंकुर अरु अंकुर दलतें बीज होता हे ॥ जेसें दिनसों रात्रि अरु रात्रसों दिन होता हे ॥ छायासों धुप
अरु धूपसों छाया होती हे ॥ तेसें सूर्य चंद्रमा परस्पर कार्य कारण होते हे ॥ कबहुं इनकी एकठीभी उपलब्धि होती हे जेसें सूर्यके उदे हुए धूप अरु छाया दोनों एकठे हो आवते हे ॥
अरु कारज कारणभी दो प्रकारका हे॥एक कार्य सत्यरूप परिणाम करीके होता हे॥एक विनासरूप परिणाम करीकें होता हे॥एकतें जो दुसरा होता हे ॥ जेसें बीज नष्ट हो गया तिसतें
अंकुर होता हे ॥ सो विनासरूप परिणाम होता हे ॥ अरु जेसें मृत्तिकातें घट उपजता हे ॥ सो सत्यरूप परिणाम कहता हे॥जो कारण कार्यके भावविषेभी इंद्रियोंकरी प्रत्यक्ष पाइयें ॥
तिसका नाम सत्य रूप परिणाम हे ॥ अरु जो कार्यविषे इंद्रियोंकरी प्रत्यक्ष नहि पाइता ॥ दिनविषे रात्री अरु रात्रीविषे दिनकी न्यांइं सो विनासरूप परिणाम कहाता हे ॥ जेसें प्रत्यक्ष
प्रमाण हे ॥ तेसें अभावभी प्रमाण हे ॥ तातें एक विनासभावभी कारणरूप हे जो कहेते हे अपना संवितविषे कर्तव्य नहि बनता ॥ इत्यादिक युक्तिवादी कहते हे ॥ सो इस अर्थ
की अवज्ञा करते हे अपणे अनुभवकों नहि जाणते हे ॥ अनुभवकी जुक्ति उनकों नहि आवती ॥ इह अभाव प्रमाणभी प्रत्यछ प्रगट होती हे अरु शीतलता प्रमाण हे ॥ जेसें अग्निके अ
भावतें सीतलताके अभावविषे उष्णता पाइती हे॥ दिनके अभावविषे रात्री छायाके अभावविषे धूप इत्यादिकका नाम अभाव प्रमाण कारण हे ॥ अरु अग्नितें धुम्र भाग निकसता हे सो
मेघ जाय होता हे ॥ इस प्रकार सत्वरूप प्रमाणकरी सोम जो हे चंद्रमा तिसका कारण अग्नि होता हे ॥ अरु अग्नि नास होकरी सीतल भावकों प्राप्त होती हे ॥ तब इसका नामविनास
प्रमाण करी अग्नि सोम चंद्रमाका कारण होता हे ॥ सप्त समुद्रोंका जल पानकरीकें बडवाग्नि धूम्रकों उदगीर्ण करता हे ॥ सो धूम्र मेघकों प्राप्त होकरी अत्यर्थ जलका कारण होता हे
अरु सूर्य जो सो विनासके अर्थ चंद्रमाकों पान करता हे ॥ अमावास्या पर्यंत वारंवार भक्षण कर्ता हे॥ बहुरी शुक्ल पक्षविषे उदगीर्ण करता हे ॥ जेसें सारस पक्षी मेहकों भक्षण करीकें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उदगीर्ण करी डारता हैं ॥ हे रामजी अमृतके समान सीतल जो अपानवायु चंद्रमारूप है ॥ सो मुखके अग्रविषे रहते हे ॥ उह जल कणकारूप जब सरीरविषे जाता है ॥ तब उह जल का अणु अपानरूप सूर्यरूप प्राणी फुरणाकों प्राप्त होता हे ॥ इस प्रकार सत्य रूप परिणामसों जल अग्निका कणका होता हैं ॥ अरु जब जलका नास होजाता हे ॥ तब उह उष्णभाव अग्निकों प्राप्त होता हे ॥ इनका नाम विनास परिणाम हे ॥ इस प्रकार जल अग्निका कारण कहाता हे ॥ अग्निके नास हुए चंद्रमा उत्पत्ति होता हे इसका नाम विनास परिणाम हे ॥ अरु चंद्रमाके अभाव हुए अग्निका होणा होता हे ॥ इसका नामभी विनास परिणाम हे जेसें तमके अभावतें प्रकास उदे होता हे ॥ अरु प्रकासके अभावतें तम होता हे ॥ दिनके अभावतें रात्री अरु रात्रके अभावतें दिन होता हे ॥ इसके मध्यविषे जो विलक्षणरूप हे ॥ सो बुद्धिवानो करीभी नहि पाइता तम अरु प्रकास दोनोंरूपों करी जुक्त हे ॥ इनके मध्यविषे जो संधि हे सो आत्मरूप हे ॥ तिसविषे स्थित होउ चैतन अरु जड दोनों रूपों करीकें भुत फुरण होते हे ॥ जेसें दिन अरु रात्री तम अरु प्रकास करीकें पृथ्वीविषे चेष्टा करते हे ॥ चेतन अरु जडरूप सूर्य अरु चंद्रमा दोनों रूप करीकें जुगत हे ॥ निर्मल रूप जो प्रकास चिदरूप हे तिसका नाम सूर्य हे ॥ अरु जडात्मक तम रूप हे ॥ सो चंद्रमाका सरीर हे ॥ जब निर्मल चैतनरूप सूर्य आत्माका दर्शन होता हे तब संसारके दुःखरूप जो तम हे सो नष्ट होजाते हे ॥ जेसें बाह्य आकासविषे सूर्य उदे हुएतें स्याम रात्रीका तम नष्ट होजाता हे ॥ अरु जड चंद्रमारूप जो देह हे ॥ जब तिसकों देखता हे तब चैतनरूप सूर्य नही भासता ॥ असत्यकी नांइ होजाता हे ॥ अरु चैतनकी ओर देखता हे तब देह नही भासता केवल लक्षविषे दुसरे की उपलब्धि नही होती ॥ केवल चैतनपदकों प्राप्त हुएतें द्वैततें रहित निर्वाण भाव होता हे ॥ अरु जड भावकों प्राप्त हुए चैतन नही भासता ॥ तातें संसारके दर्शनका कारण दोनों हे ॥ सूर्य चैतनकरी चंद्रमा जडकी उपलब्ध होती हे ॥ अरु जड चंद्रमाकरी सूर्य चैतन्यकी उपलब्धि होती हे ॥ जेसें दीपक अग्निका अंधकार विना प्रकास नही होता ॥ तेसें इन दोनों विना आत्माकी उपलब्धि नही होती ॥ अरु प्रकासविना केवल जडकी उपलब्धिभी नही होती ॥ जेसें सूर्यका प्रतिबिंब कंध उपर प्रकासता हे सो कंध प्रकासकरी भासता हे ॥ अरु प्रकास कंधकरी भासता हे ॥ तेसें चित्त फुरता हे तब चैतनकों जगत भासता हे ॥ अरु फुरणा जगत्करी होता हे फुरणेतें रहित अचैत चिन्मात्र निर्वाण होता हे ॥ तातें हे रामजी जगत् कों अग्नि अरु सोम जाणो ॥ देह देह विषे हे संबंध हे ॥ परंतु जिसकी अतिसय होवे तिसकी जय होती हे ॥ प्राण अग्नि उष्णरूप हे अरु अपान सीतल चंद्रमारूप हे ॥ प्रकास अरु छायारूप हे ॥ इनकों जानणा सुखका मार्ग हे ॥ हे रामजी जब बाह्यसों सीतलरूप अपान अंतरकों आवता हे ॥ तब उष्णरूप प्राणविषे जाय स्थित होता हे ॥ अरु जो रिदे स्थानसों निकसी करी प्राण उष्णरूप बाह्यकों द्वादस अंगुल पर्यंत जाता हे ॥ तब अपान जो हे चंद्रमाका मंडल तिसकों प्राप्त होता हे ॥ सो अपान प्राण रूप होकरी उदे होता हे ॥ अरु प्राण अपान रूप हो करी उदे होता हे ॥ जेसें दर्पणविषे प्रतिबिंब पडता हे तेसें इनका परस्पर आपसमें प्रतिबिंब पडता हे ॥ जहां षोडसकला चंद्रमाकों सूर्य ग्रास लेता हे ॥ तिस मध्यभाव विषे स्थित होउ ॥ जब अपान प्राणोंके स्थानविषे आनि स्थित होता हे ॥ अरु प्राण रूप हो करी उदे नही भया ॥ सो शांतिरूप भाव हे ॥ तिसविषे स्थित होउं ॥ अरु प्राण निकसी करी मुखसों द्वादश अंगुल पर्यंत जब बाह्य स्थित होता हे ॥ अरु जबलग अपान भावकों प्राप्त हो करी उदे नही भया ॥ उह जो मध्यभाव हे ॥ तिसीविषे स्थित होउं ॥ अरु मेष आदिक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो द्वादश राश हे ॥ तिस एककों त्याग करी दुसरी राशिकों संक्रांति नही प्राप्त भइ तिसका नाम संक्रांति हे तिनके मध्यविषे जो संधि तिसका नाम पुण्य काल हे सो पुण्यसम अंतर अरु बाह्य प्राण अपानकी संधिके समेमें तृणवत् हे ॥ अरु तिन संक्रातिविषे जो दृषवती संक्रांति हे वैशाखकी ॥ जो शिवरात्री चैत्रकी संक्रांति त्रयोदश दिन होत हे ॥ अरु आस्तकी संक्रांति त्रयोदश दिन इनका नाम वर्षवती हे॥ जहांदिन अरु रात्री सम होत हे ॥ दक्षणायन अरु उत्तरायणकी जो संधि होत हे ॥ इनकेअंतर अरु बाह्य भेदकों जाणे तब जन्मतें रहित परम बोधकों प्राप्त होवे ॥ हे रामजी उत्तरायण मार्ग जोगेश्वरोंका हे ॥ सो कम करी मुक्त होत हे अरु दक्षणायन मार्ग कर्म करणे वालोका हे ॥ तिसकरी बहुरी संसारभागी होत हे ॥ तिनके मध्यविषे जो संधि हे ॥ तिसविषे स्थित हुएतें परम उत्तम पदकों प्राप्त होत हे ॥ ॥ इतिश्री यो०नि०प्र० अग्निसोमविचार योगोनाम अष्टषष्टितमःसर्गः ॥ ६८ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह सर्व कला जोगकी विस्तार करिकें कही हे ॥ अरु उत्तम प्रभाव तामें वर्णन भया हे ॥ अरु प्रयोजन यही हे ॥ जु निर्वाण पदमें स्थित होवे ॥ आत्मा ब्रह्मकी एकता होवे ॥ जो बहुरी जन्मादिकोंका दुःख न होवे ॥ ब्रह्म चित्त सत आनंद सुभाव मात्र हे ॥ जो एक वारतामें तदभाव जो हे ॥ एकत्व भावसों होता हे ॥ तब सदिव्य उही भाव रहत हे ॥ अरु धनी शक्तिका होत हे ॥ अविद्या नास हो जाति हे ॥ इस प्रकार वही चूडाला राणी जोगके अभ्यास अरु ज्ञानके अभ्याससों पूर्ण होत भइ ॥ तब सर्व शक्तिसों संयुक्त होइ करी अरु अणिमा आदि सिद्धोकी प्राप्ति होत भइ ॥ तब मध्य आकाशकों उडी एक निशामें राजा सेन करी रहाथा ॥ अरु तामें अवकाश पाया अरु मध्य आकाशके बहुत स्थानोमें विचरत भइ ॥ अरु मध्य देवलोकके काली रूप अरु अविद्यत विलोचन अति चंचल धारिकें गमन करत भइ ॥ अरु मध्य दिशाके जात भइ अरु मध्य देव लोक अरु मध्य दैतोंके अरु मध्य राक्षसोंके अरु मध्य विद्याधरोंके अरु मध्य सिद्धोंके अरु मध्य सुर्यलोकके अरु मध्य चंद्रमा लोकके मध्य तारा मंडलके मध्य मेघ मंडलके अरु मध्य इंद्रलोकके गमन करत भइ ॥ तहांका कौतुक देखी करी बहुरी अधलोकमें आइ अरु मध्य समुद्रके प्रवेश करिके बहुरी मध्य अग्निके प्रवेश करत भइ ॥ अरु मध्य पवनके पवन रूप होत भइ अरु मध्य नागलोकके कन्याविषे क्रीडा करत भइ ॥ मध्य बनोंके मध्य पर्वतोंके अरु मध्य भूतोंके अरु मध्य अपछराके अरु मध्य त्रिलोकीके विचरती भइ ॥ लीला करिकें एक क्षणमें तिसी स्थान आवत भइ ॥ जहां राजा सेन करी रहाथा समीप राजाके सेन करी रही ॥ जेसें भंवरी भंवरा कमलनीके मध्य सेन करते हे ॥ अरु राजा तिसकों न जानत भया जो रांणी गइथी अथवा न गइथी बहुरी रात्र बितीत भइ प्रातःकाल हुआ अरु राजा स्नान शालामें जाय करी स्नान करत भया ॥ अरु प्रवाह कर्म वेदोक्त हे सो करत भया ॥ अरु राणीभी प्रवाह कर्म करत भइ ॥ अरु राजाकों सनेसने उपदेस तत्वका किया ॥ जेसें पिता पुत्रकों मिष्ट वाणी करी उपदेस करता हे अरु पंडितोकों कहत भइ जो राजाकों तुमभी उपदेस करो ॥ जो यह जगत् सुपनवत भ्रम हे अरु दीर्घ रोग हे दुःखका कारण हे सो आत्मज्ञान औषधतें नास होता हे अवर इसका औषध कोउ नही ॥ इसी प्रकार आपभी राजाकों उपदेस करे ॥ अरु पंडितोंभी उपदेस करे ॥ परंतु राजा तिस ज्ञानकों पावत न भया ॥ अरु विछेपताविषे रहा उत्तम पदमें विश्राम पावत न भया जो अपणा आप हे अरु केवल चित्रूप प्रत्यक् आत्मा हे ॥ रामोवाच ॥ हे महा मुनीजी वह राणी तो सर्व शक्ति संपन्न भइ थी ॥ जोग कलाविषेभी अति चतुर अरु ज्ञानकलाविषेभी तद्रूप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भइ थी ॥ अरु राजाभी अति मूढ न था ॥ तिसकों उसका उपदेश दृढ क्यों न होत भया ॥ अरु राणीभी तिसकों प्रीति करी उपदेश करती थी ॥ उह कारन क्या था जो अपणे पदविषे स्थिति पावत न भया ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जेसें अछिद्र मोतीविषे तागा प्रवेश नही करता ॥ तेसें चुडालाका उपदेश राजाकों न वेधत भया ॥ सो जबलग आप विचार न करे अरु तिसविषे दृढ अभ्यास न होवे तबलग ब्रह्मा उपदेश करे तबभी तिसकों न वेधे ॥ काहेतें जो आत्मा आपही करी जाण्या जाता हे ॥ अरु इंद्रियका विषय नही ॥ जो अधिष्ठानरूप हे ॥ अरु सुभावमात्र हे ॥ अरु आपहि आपकों देखता हे ॥ अरु किसी मन इंद्रियका विषे नही अरु सर्वका आपणा आप हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् जब अपणे आपकरी देखता हे तब गुरु अरु शास्त्र उपदेश किस निमित्त करते हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी गुरु अरु शास्त्र जताय देते हे ॥ जो तेरा स्वरूप आत्मा हे ॥ परंतु इदं करीके नही दिखावते अरु विचार नेत्रसों आपकों आपही देखता हे ॥ विचारतें रहित तिसकों नही देखी सकता ॥ जेसें किसी पुरुषकों चंद्रमा कोउ सचक्षु दिखावता हे ॥ जो अमके स्थानमें देख उदे हे जब वह सचक्षु होता हे तो देखता हे अरु मंद दृष्टि होता हे ॥ तब नही देखता ॥ तेसें गुरु अरु शास्त्र आत्माका रूप वर्नन करते हे अरु लखावते हे जब उह वि चार नेत्रसों देखत हे तब कहता हे जो में देख्या ॥ अरु अवरके दिखावणेकों जोग होता हे ॥ हे रामजी आत्मा किसी इंद्रियका विषय नही ॥ जो अपणा आप मूलरूपहे ॥अरु इंद्रिय कल्पित हे ॥ अरु जब तुं कहेके तुमभी उपदेश इंद्रियकरी करते हो ॥ तो सर्व इंद्रियांको विस्मरण करु जो मूल अपणा तुझे भासे ॥ अरु अभावरूप इंद्रियां किसीकों तेरा अभाव न होवेगा हे रामजी इसी पर एक इतिहास क्रांतका हे सो श्रवण करु ॥ अेक क्रांत था उस पास धन अनाजभी बहुत था ॥ परंतु कृपण था किसीकों देता कछू न था अरु अवर धनकी तृष्णा करता रहे ॥ जो किसी प्रकार चिंतामणी मेरे तांइं प्राप्त होवे ॥ सदा इही वांछा करे इसी वांछाकरी एक समे घरते बाहिर निकसा अरु पृथ्वीकी उर देखता जावे ॥ तब एक स्थान था तहां घास अरु भुस पडा था ॥ तिसविषे एक कवडी दृष्ट पडी तब कउडीकों उठाय लिया ॥ बहुरी देखणे लागा जो कछू अवरभी निकसे ॥ तब दुसरी कउडी निकसी इसी प्रकार ढुंढते हुए त्रयदिन वितीत भये ॥ तब चार कउडी निकसी बहुरी अष्ट निकसी ॥ जब त्रयदिन अवर वितीत भये ढूंढते तब चिंतामणी चंद्रमाकी न्यांइं प्रगट देखी॥ तब मणि लेकरी अपणे घर आया अरु बडे हर्षकों प्राप्त भया ॥ हे रामजी तेसें गुरु अरु शास्त्रों करी तत्वमसी अहंब्रह्मास्मीका पावणा सो कउडीयाका खोजणा हे ॥ अरु आत्मा चिंतामणीरूप हे ॥ परंतु जेसें कउडीयाके खोजते चिंतामणि विना खोजे न पाइ ॥ तेसें गुरु अरु शास्त्रोंकरी आत्मपद पाइता हे ॥ गुरु शास्त्रों विना नही पाइता ॥ धनकरी तप करी कर्मकरी आत्मा नही पाइता केवल अपणे आपकरी पाइता हे ॥ हे रामजी राजा सिखरध्वज चूडालाके पासते उठिकरी स्नानकों गया ॥ तब राजाके मनविषे वैराग उपजा जो यह संसार मिथ्या हे ॥ बहुत भोग हम भोगे हे तोभी रिदेकों शांति न भइ ॥ अरु इन भोगका परिणाम दुःखदायक हे ॥ जब मनविषे अेसा विचार उपजा ॥ तब राजानें गौ पृथ्वी स्वर्न मंदिर अरु अवर सा मग्री बहुत दान करी ॥ जेते कछू ऐस्वर्यके पदार्थ हे सो दान किये ॥ ब्राह्मणोंकों दिये ॥ अवर गरीब अतिथिकों दिया ॥ जेसें जेसें किसीका अधिकार देख्या तेसें दिया ॥ अरु राणीनें भी ब्राह्मणों मंत्रीयेंकों कहा जो राजाकों तुम यही उपदेस किया करो ॥ जो यह भोग मिथ्या हे इनविषे सुख कछू नही ॥ अरु आत्म सुख बडा सुख हे ॥ जिसके पायेतें जन्ममृत्यु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सों मुक्त होता हे ॥ इसी प्रकार राजा ब्राह्मणोंतें श्रवण करै अरु अपणे मनविषेभी वैराग उपजा था तब राजा कहत भया ॥ जो इस संसार दुःखतें मैं रहित होउं ॥ यह संसार बडा दुःख हे ॥ इसविषे सदा जन्म मरण हे ॥ तब राजाके मनविषे हुआ जो मैं तीरथोकों जाउ अरु स्नान करों ॥ बहुरी राजा तीर्थोंकों चला तब स्नानभी करे दानभी करे ॥ इस प्रकार देवता अरु तीरथों अरु सिद्धोंके दर्शन किये ॥ स्नानकरी बहुरी गृहकों आया ॥ तब आय करी रात्रके समे राणीसाथ सेन किया अरु राणीकों कहा जो हे अंगना अब मैं बनकों जाता हों तप करणेके निमित्त जो यह भोग मेरे तांइं दुःखदायक भासते हे अरु राजभी बनकी न्यांइं उजाड भासता हे ॥ तातें मैं तपके निमित्त बनकों जाता हों ॥ अरु यह भोग बहुत काल पर्यंत हम भोगते रहे तोभी इनविषे सुख दृष्ट न आया तातें मेरे तांइं अटकावणा नही मैं बनकों जाता हों तब राणीनें कहा॥ हे राजन् अब तेरी कवन अवस्था हे जो तुं बन कों जाता हे ॥ अब तो हम राज भोगही ॥ जेसें वसंतविषे फूल शोभा पावते हे अरु सरत्कालविषे नही शोभते तेसें हमभी वृद्ध होवेंगे ॥ तब बनकों जावेंगे अरु बनहीविषे शोभा पावेंगे ॥ जेसें बनके फूल स्वेत होवे तेसें हमारे केस स्वेत होवेंगे तब शोभा पावेंगे अब तो राज करो ॥ हे रामजी इस प्रकार जब राणीनें कहा तब राजाका चित्त वैरागही विषे रहा ॥ राणी का कहणा चित्तविषे न ल्यावता भया ॥ जो तीरथोंके स्नान अरु दानकरी राजसुखतें राजाकों वैराग उपजा परंतु शांति न पाइ ॥ जेसें चंद्रमाविना कमलनी शांति नही पावती ॥ तेसें ज्ञान बिना राजाकों शांति न प्राप्त भइ ॥ परंतु वैराग करीकें कहणे लागा हे राणी अब मेरे तांइं अटकावणा नही ॥ अब राज मुझकों फीका लागा हे ॥ मैं बनकों जाता हों ॥ जो ठहराव मेरा इहां नही होता ॥ जो तुं कहे हम इहां तेरी टहल करतेथे पाछे कवन करेगा ॥ तब पृथ्वीहि हमारी टहल करेगी ॥ अरु बनकी बीथीयांभी स्त्रीयां होवेंगियां अरु मृगके बालकही पुत्र हे आकाश हमारे वस्त्र हे ॥ फूलके गुछे भूषण हे ॥ अेसें राजानें कहा तब आगें रात्रका समा हुआ अरु राजा उहांतें चला ॥ तब उहांतें राणी अरु नगरतें सेनाभी पाछे चली ॥ बडी भयानक रात्रविषे चले ॥ कोटके बीचही जाय स्थित भये ॥ तब राजा अरु राणी सोए जेसें भंवरा भंवरी सोवते हे ॥ सेना अरु सहेलियां सब सोए गये ॥ कर्मनिद्रा करी जड होगये जेसें पथरकी सिला जड होती हे ॥ जब अर्धरात्र बितीत भइ तब राजा जाग्या अरु देख्या जो सब सोए गये हे ॥ तब सिजातें उठ्या राणीके वस्त्र एक उर करीकें हाथ विषे खड्ग लेकरी निकस्या ॥ जेसें क्षीरसमुद्रतें विष्णु भगवान लक्ष्मीसों उठता हे ॥ तेसें उठ्या अरु सब लोक लंघता जब दरवाजे कोटके पर आया ॥ तब अर्ध मनुष जागेथे अरु अर्ध सोएथे उननें राजाकों देख्या तब राजानें कहा द्वारपालो तुम इहांही बेठे रहो ॥ मैं एकलाही बीर जात्राकों जाता हों ॥ तब राजा तीक्षण बेगकरी चल्या गया अरु बाहिर निकसी करी कहा ॥ हे राजलक्ष्मी तुझकों नमस्कार हे ॥ अब मैं बनकों चला हों ॥ तब एक बनविषे आया ॥ जहां सिंघ अरु सर्प अवर भयानक जीव हे तिनके शब्द सुणता आगें चल्या गया ॥ तिसतें आगे अवर बेला आया तिसकोंभी लंघ गया ॥ जब आठ प्रहर राजा चलागया तब एक ठोर जाय स्थित भया जब सूर्य उदे हुआ तब राजानें स्नान करीकें संध्यादिक कर्म किये अरु वृछके फल लेकरी भोजन किये बहुरी आगें चला जो कोइ पाछेतें आये करी मेरे तांइं कोइ अटकावता होवे इस निमित्त तीक्ष्ण चला ॥ बडे पहाड अरु नदियां बेले राजा उलंघ करी दिन द्वादस पर्यंत चलागया जब मंद्राचल पर्वतके निकट गया तब एक बनविषे जाय स्थित भया ॥ अरु स्नान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करीके कलू भोजन किया ॥ अरु पत्र लेकरी झुपडी वणाइ मेघकी रक्षा अरु छायाके निमित्त तहा स्थित भया ॥ अरु वासनभी वनाए तिनविषे फूल फल राखे ॥ जव प्रातःकाल होवे तब स्नानकरीकें प्रहर पर्यंत जाप करे ॥ बहुरि देवताके पूजन निमित्त फूल चुणे ॥ अरु दुतिये स्नान करीके प्रहर एसें वितीत करे ॥ जव तीसरा पहर होवे तव फल भोजन करें ॥ चउथा पहर बहुरि संध्या जाप करे ॥ इसी प्रकार दिन अरु रात्र वितीत करे ॥ कलूक काल रात्रकों सेन करे अवर जापविषे वितीत करे इसी प्रकार कालकों वितीत करे ॥ हे रामजी राजाकी तो यह अवस्था भइ अब राणीकी अवस्था श्रवण करु ॥ जव अर्धरात्रतें पाछें राणी जागी तव क्या देखे जो राजा इहां नही वनकों गयाहे अरु सिजा खाली पडी हे ॥ तव राणीने सहेलीयांकों जगाइ अरु कहणे लगी बडा कष्ट हे ॥ राजा बनकों निकसी गया हे ॥ अरु बडे भयानक बन विषे जावेगा ॥ अेसें कहीकरी मनविषे विचार किया जो राजाकों देखा चाहियें ॥ तब जोगविषे स्थित होकरी आकासकों उडी आकासकी न्याइ देहकों अंतर्धान करीके जेसें जोगेसरी भवानी उडती हे तेसें उडी अरु आकासविषे स्थित होकरी देषा जो राजा चला जाता हे ॥ तव राणीके मनबिषे आया जो इसका मार्ग रोकों ॥ बहुरी एक क्षणमात्र स्थित होकरी भविषतकों विचारणे लागी ॥ जो राजा अरु मेरा संजोग नीतिविषे केसें रचा हे ॥ तब देखत भइ जो राजा अरु मेरा मिलाप होणेविषे बहुत काल रहता हे॥अरु अवश्य मिलाप होणा हे ॥ मेरे उसकों उपदेस करी जगावणा हे ॥ परंतु केतेक काल उप्रांत अब इसीके कषाय परिपक्व नही तातें अब राजाका मार्ग नही रोकणा तव राणी बहुरी अपणे घर आइ अरु सिजा पर सेन किया अरु बडी प्रसंनताकों प्राप्त भइ ॥ जव रात्र वितीत भइ तब मंत्रीकों कहणे लगी ॥ जो राजा एक तीर्थपर्सणे गया हे दर्शन करीके बहुरी आवेगा ॥ अेसे मंत्री अरु प्रजाकों कहा बहुरी मंत्रीकों आज्ञा करी जो तुम अपणे कार्यविषे वर तो तब मंत्री अपणी चेष्टाविषे वर्तणे लागे ॥ इसी प्रकार राणीने अष्ट वर्ष पर्यंत राज कीया अरु प्रजाकों सुख दिया ॥ जेसें बागवान कमलोंके क्याराकों सुखी पालता हे ॥ तेसें राणीने प्रजाकों सुख दिया ॥ अरु उंहां राजाकों अष्ट वर्ष तप करते बितीत भये हे अरु राजाके अंग दुर्बल होगये अरु उहां राणीनें राजकिया जेसें भंवरा अवर ठोर होवे तेसें इनकों बितीत भया ओर ओर ठोरविषे तव राणीनें विचार किया जो राजा अव मेरे वचनोंका अधिकारी भया हे ॥ अंतःकरण राजाका तपकरीकें सुद्ध हुआ हे अब राजाकों देखियें तव राणी उडी आकासकों गइ ॥ अरु नंदन बन इंद्रका हे सो देख्या उहांके जो दिव्य पवन हे तिनका स्पर्स हुआ तब राणीके चित्तविषे आया जो मेरे तांइं भर्ता कब मिलेगा ॥ बहुरी कहणे लागी जो बडा आश्चर्य हे ॥ में तो सत पदकों प्राप्त भइथी ॥ तोभी मेरा मन चलायमान भया हे ॥ तातें इतर जीवकी क्या कहणी हे ॥ तब उहांतें चली आगें कमल फुल देखे देखी करी क हणे लागी जो मेरे तांइं यह भरता कब मिलेगा ॥ जिसकरी भरताकों पाइता हे ॥ में कामातुर भइहों ॥ बहुरी मनकों कहणे लागी ॥ हे दुष्ट मन तुं तो सतपदकों प्राप्त भयाथा तेरा भ र्ता आत्मा हे अब तुं मिथ्या पदार्थोंकी अभिलाष काहेकों करता हे बहुरी कहणे लागी जबलग देह हे तबलग देहके सुभावभी साथ रहते हे जो मेरे तांइं यह अवस्था प्राप्त भइ हे तोभी मन चलायमान होता हे तातें इतर जीवकी क्या वारता करणी हे ॥ तब राणी मेघके स्थानोंकों लंघी अरु महा बीजलीके स्थान लंघे ॥ बडे पर्वत अरु नदियांकों लंघी समुद्र भ यानक स्थानोंकों लंघी अरु मंदराचल पर्वतके पास बनविषे आनि स्थित भइ अरु कहणे लागी जो मेरा भरता कहां हे बहुरी समाधिविषे स्थित होकरी देख्या जो अमके स्थानमें बेठा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे ॥ तप करीकें अंग महादुर्बल होगये हे अरु अेसें स्थानविषे प्राप्त भया हे जहां अवर जीवकी गम नही अरु महाबैतालकी न्याईं रात्रीकों चला आया हे ॥ तातें अज्ञान महा दुष्ट हे ॥ जो अेसा राजा तपकों लगा हे सरूपके प्रमादकरीके जड हे ॥ अब अेसें होवे जो किसी प्रकार अपणे स्वरूपकों प्राप्त होवे ॥ परंतु मेरे इस सरीर करीकें ज्ञान इसकों न उपजेगा काहेतें जो राजाकों प्रथम यह अभिमान होवेगा ॥ जो मेरी स्त्री हे अरु बछुरी कहेगा में इनहीके निमित्त राज छोडा हे बछुरी मेरे तांइ दुःख देणेकों आइ हे ॥ तातें अवर सरीर ब्रह्मचारीका धारों अेसें विचारकरीकें सीघ्रहि ब्रह्मचारीका शरीर धारत भइ ॥ जेसें जलका तरंग एक स्वरूपकों छोडता हे अरु अवर होजाता हे ॥ तेसें महासुंदर शरीरकों धारिकरी एक पिंठ पृथ्वीतें ऊपर चलणे लागी अरु हाथविषे रुद्राक्षकी माला अरु कमंडलुकों धारे अरु मृगछालाकों धारे अरु मस्तकपर बभूत लगाइ जेसें सदासिवके मस्तकपर चंद्रमा बिराजता हे तेसें सुंदर बभूतकों लगाया अरु स्वेतहि यज्ञोपवीतकों पाया ॥ अेसा चिन्ह धारीकरी चली ॥ तब राजा देखीकरी आगेंतें उठी खडा हुआ अरु नमस्कार किया फूल चरनों पर चडाये अरु अपणे स्थानपर बेठाया अरु कहणे लागा हे देवपुत्र आज मेरे बडे भाग हे जो तुमारा दर्शन भया॥ हे देवपुत्र तुमारा आवणा केसें हुआ ? ॥ देवपुत्रोवाच ॥ हे राजन् हम बडे बडे पर्वत देखते आये हे अरु तीर्थ करते आये हे परंतु जेसी भावना तेरेविषे देखी हे तेसी किसीविषे नही देखी॥हे राजन् तुजनें बडा तप किया हे ॥ अरु तुं इंद्रियजित द्रष्टी आवता हे॥ अरु में जानता हों जो तेरा तप खड्गकी धारा जेसा तीक्ष्ण हे ॥ तातें तुं धन्य हे तेरे ताइ नमस्कार हे ॥ परंतु हे राजन आत्मा जोगके निमित्तभी कछू तप किया हे अथवा नही किया सो कहु ॥ तब राजानें जो फुलकी माला देव पुजनके निमित्त रखीथी सो देवपुत्रके गले पाइ अरु पुजाकरी बछुरी कहा हे देवपुत्र तुम सारखेका दर्शन दुर्लभ हे॥ अरु अतिथिका पुजन देवतातेंभी अधिक हे ॥ हे देवपुत्र तेरे अंग बहुत सुंदर द्रष्टी आवते हे ॥ अेसेंहि मेरी स्त्रीके अंग थे नख सिख पर्यंत तेरे उही अंग द्रष्टी आते हे॥ परंतु तुं तो तपसी हे तेरी मुरत शांतिके लिये हुइ हे में केंसें कहों जो उही हे ॥ तातें हे देव पुत्र कहू जो तुं पुत्र किसका हे अरु इहां किस निमित्त आया हे अरु आगें कहां जावेगा यह संशय मेरा निवृत्त करो ॥ तब देवपुत्रने कहा हे राजन एक समे नारद मुनि सुमेर पर्वतकी कंदराविषे आयाथा॥ सो महा सुंदर कंदरा हे ॥ जहां आश्चर्यके वछ अरु मंजरियां फुल फल साथ सभ पूरन हे ॥ ब्राह्मणोंकी कुटी तहां बणि हुइ हे ॥ तिस स्थानकों देखीकरी ब्रह्मवेत्ता नारद मुनि समाधि लगाय बेठा ॥ अरु गंगाका प्रवाह चलता हे ॥ जहां सिद्धोंकी गम हे ॥ अवर जीवोंकी गम नही ॥ तब केताकाल समाधिविषे स्थित रहा ॥ जब समाधितें उतऱ्या ॥ तब भूषणका शब्द हुआ ॥ तब नारदजीके मनविषे महा आश्चर्य हुआ ॥ जो इहां तो आवणेकी गम किसीकी नही यह भूषणोंका शब्द कहांतें आया ॥ तब उठीकरी देखणे लागा जो गंगाका प्रवाह चला आवता हे तहां उर्वसी आदिक अपछरा स्नान करतियां हे ॥ वस्त्रोंकों उतारे हुए महासुंदर हे ॥ जब उनकों देख्या तब नारदजीका विवेक आवरन भया ॥ अरु वीर्य चल्या तिसके पास सुंदर वल्लीथी तिसके पत्रपर जाय स्थित भया ॥ चंद्रमाकी न्यांइं उज्वल इस प्रकार सुणी करी सिखरध्वज कहत भया हे देवपुत्र अेसा ब्रह्मवेत्ता नारद मुनि सर्वज्ञ अरु बडा मननसील ॥ तिसका वीर्य किस निमित्त चल्या ॥ तब देवपुत्रनें कहा हे राजन् जबलग शरीर हे तबलग अज्ञानीका अरु ज्ञानीकाभी शरीर सुभाव निवृत्त नही होता ॥ परंतु एक भेद हे जब ज्ञानवानकों दुःख आय प्राप्त होता हे तब दुःख नही मानता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरु जब सुख आय प्राप्त होता हे तब सुख नही मानता हर्षवाननहि होता ॥ अरु जब अज्ञानीकों दुःख सुख आय प्राप्त होता हे तब हर्षशोक करता हे ॥ जेसें स्वेत वस्त्रपर केसरका रंग सीघ्रहि चडि जाता हे तेसें अज्ञानीकों दुःख सुखका रंग सीघ्रही चडि जाता हे अरु जेसें मोमके वस्त्रकों जलका स्पर्श नही होता हे तेसेंहि ज्ञानवानकों दुःख सुखका स्पर्श नही होता अरु जिसके अंतःकरणरूपी वस्त्रकों ज्ञानरूपी मोम नही चडी तिसकों दुःखसुख रूपी जल स्पर्श करी जाता हे ॥ अरु ज्ञानवान मेणवत् हे उनके अंतःकरणकों दुःख सुख नही होता अज्ञानीकों होता हे ॥ जो दुःखकी नाडी भिन्न हे अरु सुखकी नाडी भिन्न हे ॥ जब सुखकी नाडीविषे स्थित होता हे तब दुःख कोउ नही देखता जब दुःखकी नाडीविषे स्थित होता हे तब सुख नहि देखता ॥ अज्ञानीकों कोउ दुःखका कोउ सुखका स्थान हे ॥ अरु ज्ञानिकों एक आभासमात्र दिखाइ देता हे ॥ बंधमान नहि होता ॥ जबलग इसकों ज्ञानका संबंध हे तबलग दुःख निवृत्त नही होता तब राजाने कहा वीर्य जो गिरता हे सो वीर्य केसें निवृत्त होता हे तब देवपुत्रने कहा हे राजन् जब इसका चित्त वासना करीकें क्षोभवान होता हे तब नाडीभी क्षोभ करतियां हे अरु अपणे स्थानोंकों त्यागणे लगतियां हे तब वीर्यवाली नाडीतें सुभाविकही वीर्य नीचेंकों चला आवता हे ॥ बहुरी राजाने कहा हे देवपुत्र सुभाविक क्या कहिये ॥ देवपुत्रनें कहा हे राजन् आदि परमात्म सुद्ध चैतनविषे जो फुरणा हुआ हे ॥ तिस क्षणमात्र शक्तिके उत्थान करी आगें प्रपंच बनि गया हे ॥ तिसविषे आदि नीति हुइ हे जो यह घट हे यह पट हे ॥ यह अग्नि हे इसविषे उष्णता हे ॥ यह जल हे इसविषे सीतलता हे तेसेंहि नीति हे जो वीर्य उपरतें नीचेकों आवता हे ॥ जेसें पर्वततें पथर गिरता हे सो नीचेकों चला आता हे ॥ तेसें वीर्यभी नीचेकों आता हे ॥ तब राजाने प्रश्न किया हे देवपुत्र इसकों दुःख केसें होता हे ॥ अरु सुख केसें होता हे ॥ अरु दुःख सुखका अभाव केसें होता हे ॥ तब देवपुत्रनें कहा हे राजन् जब यह जीव कुंडलनी शक्तिविषे स्थित होता हे अरु द्रश्य जो हे चार अंतःकरण अरु इंद्रियां देह तिनविषे अभिमान करीकें दुःखी सुखी होता हे ॥ इनके दुःख साथ दुःखी होता हे अरु इनके सुख साथ सुखी होता हे ॥ जेसा जेसा आगें प्रतिबिंब होता हे तेसा तेसा दुःख सुख भासता हे ॥ जेसें सुद्ध मणीविषे प्रतिबिंब पडता हे ॥ सो अज्ञान करीकें भासता हे ज्ञानकरीकें इनका अभाव हो जाता हे अरु जब तिसकों ज्ञानरूपका आवरण करकें आगें पडल होत हे तब प्रतिबिंब नही पडता ज्ञान कहियें जो देहादिकके अभिमानतें रहित होणा ॥ जो न देहादिक हे अरु न में इनकरी कछू करता हों जब अेसें निश्चय होवे तब दुःख सुखका भान नही होता ॥ काहेतें जो संसारका दुःख सुख इसकी भावनाविषे होत हे जब वासनातें रहित हुआ तब दुःख सुखभी सब नष्ट हो जाते हे ॥ जेसें जब वृछही जलि जाता हे तब पत्र फूल फल कहां रहे ॥ तेसें अज्ञानरूप वासनाके दग्ध हुए दुःख सुख कहां रहे ॥ बहुरी राजाने कहा हे भगवन् तुमारे वचन श्रवण करते हुए में तृप्त नही होता जेसें मेघका शब्द सुणते मोर तृप्त नही होता तातें कहो जो तुमारी उत्पत्ति केसें भइ ॥ तब देवपुत्रनें कहा हे राजन जो कोउ प्रश्न करता हे तब बडे तिसका निरादर नही करते ॥ तातें तुं जो पूछता हे सो में कहता हों ॥ हे राजर्षि उह वीर्य था सो नारदमुनिनें एक मटकीविषे पाया ॥ अरु उह केसी मटकी थी स्वर्नवत् जिसका उज्वल चमत्कार तिसविषे वीर्य पाय करी तिसके उपर दूध पाया ॥ अरु उपर उसके दूध पाया मटकीकों पूरन किया अरु वीर्यकों एक कोंणकी उर किया बहुरी मंत्रोंका उच्चार किया अरु आहुति किये भली प्रकार पूजन किया जब एक मास बितीत भया तब मटकीतें बालकप्रगट हुं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आ ॥ सो केसा बालक जेसा चंद्रमा क्षीरसमुद्रतें निकसा हे तिस बालककों लैकरी नारद आकाशकों उडता भया ॥ तब नारदका जो पिता हे ब्रह्माजी तिसके पास ले आया ॥ अरु आय करी नमस्कार किया ॥ तब बालककों पितामहनें गोदविषे बेठाया अरु आसिर्वाद किया ॥ जो तुं सर्वज्ञ होवेगा ॥ अरु सीघ्रही अपणे स्वरूपकों प्राप्त होवेगा ॥ अरु कुंभतें जो उपंजा बालक हे तिसका नाम भी कुंभ राखा ॥ सो कुंभ सर्वज्ञ में हों नारदजीका पुत्र अरु ब्रह्माजीका पोत्रा हों ॥ सरस्वती मेरी माता हे गायत्री मेरी मासी हे ॥ मेरे तांइं सर्व ज्ञान हे ॥ तब राजानें कहा हे देवपुत्र तुम सर्वज्ञ द्रष्ट आते हो ॥ तुमारे वचनोंकरी मे जानता हों ॥ तब देवपुत्रनें कहा हे राजन् जो तुम पूछा सो में कहा अब कछु जो तुं कवन हे ॥ अरु इहां कर्म क्या करता हे ॥ अरु इहां किस निमित्त आया हे तब राजानें कहा हे देवपुत्र आज मेरे बडे भाग उदे हुए हे जो तुमारा दर्शन भया हे ॥ तुमारा दर्शन बडे भागसों प्राप्त होता हे ॥ यज्ञ अरु तपतें तुमारा दर्शन श्रेष्ठ हे ॥ तब देवपुत्रनें कहा हे राजन् अपना वृत्तांत कछु जो तुं कवन हे ॥ राजानें कहा हे देवपुत्र मे राजा हों ॥ अरु सिखरध्वज मेरा नाम हे ॥ अरु राजका मेंनें त्याग किया हे ॥ जो मेरे तांइं संसार दुःखदायक भास्या तिसके भयकरी त्याग किया॥वारंवार जन्म अरु मृत्यु संसारविषे द्रष्ट आता हे ॥ तातें राजका त्याग करी इहां तप करणे लागा हों॥तुम त्रिकालज्ञ हो अरु जानते हो तथापि तुमारे पूछणेकरी कछू कहाचहिये में त्रिकाल संध्या करता हों॥अरुजाप करताहो तउभी मेरे तांइं शांति नही प्राप्त भइ॥तातें जिसकरी मेरे दुःख निवृत्त होवे सोइ उपाय कहो ॥ हे देवपुत्र में तीर्थ बहुत फिर्या हों ॥ बहुत देश स्थान फिर्या हों ॥ अब इसी बनविषे आनी बेठा हों तोभी मेरे तांइ शांति नही प्राप्त भइ ॥ तातें जिसकरी मेरे दुःख निवृत्त होवे ॥ अरु शांति प्राप्त होवे सो कहो ॥ तब देवपुत्रने कहा हे राजर्षि तेनें राजका त्याग किया ॥ अरु बहुरी तपरूपी टोयेविषे आयपडा हे यह तेनें क्या किया हे ॥ जेसें पृथ्वीका क्रम बहुरी पृथ्वीविषे रहता हे तेसें तुं एक टोयेकों त्याग करी बहुरी दुसरे टोयेविषे आइ पडा हे अरु जिस निमित्त राजत्याग किया तिसकों न जानत भया ॥ अरु इहां आयकरी एक लाठी अरु मृगछाला अरु फूल राखे ॥ इन करी तो शांति नही प्राप्त होती तातें अपने स्वरूपविषे जाग ॥ जब स्वरूपविषे जागेगा तब दुःख सब निवृत्त होवेगे ॥ इसी पर एकसमे ब्रह्माजीसों मेनें प्रश्न किया था जो हे पितामहजी कर्म श्रेष्ठ हे अथवा ज्ञान श्रेष्ठ हे ॥ दोनोंविषे क्या श्रेष्ठ हे जो मुझकों कर्तव्य हे सो कहो तब पितामहनें कहा ज्ञानके पायेंतें दुःख कोउ नही रहता ॥ सर्व आनंदका आनंद ज्ञान हे तिसतें आगें आनंद कोउ नही ॥ अरु अज्ञानीकों कर्म श्रेष्ठ हे ॥ क्यों जो पापकर्म करेगे तब नरककों प्राप्त होवेगे ॥ तातें तप दान करणेतें स्वरूपकी प्राप्ति नही होती ॥ तोभी अज्ञानीकों श्रेष्ठ हे जो नरक भोगणेतें स्वर्ग विशेष हे ॥ जेसें कंबलतें पटका वस्त्र श्रेष्ठ हे परंतु पटका न पाइयें तब कंबलभी भला हे ॥ तेसें ज्ञान पटकी न्याइं हे ॥ अरु तपकर्म कंबलकी न्याइ हे कर्मकरी शांति नही प्राप्त होती तातें हेराजन् तुं काहेकों इस टोएविषे पडा हे ॥ आगे राज वासी था अब वनवासी भया ॥ तातें यह क्या किया हे जो अज्ञानविषे पडा रहा हे ॥ मूर्खताके वस पडा हे ॥ जबलग तेरे तांइं क्रियाज्ञान होता हे जो में यह करों तबलग प्रमाद हे इसकरी दुःखनिवृत्त न होवेगे ॥ तातें निर्वासनिक होकरी अपणे स्वरूपविषे जाग निर्वासनिक होणाही मुक्ति हे ॥ अरु वासना सहितही बंधन हे ॥ पुरुष प्रयत्न यही हे जो निर्वासनिक होणा ॥ जबलग वासना सहित हे तबलग अज्ञानी हे ॥ जब निर्वासनिक होवे तब ज्ञेयरूप हे ॥ निर्वासनिक कहियें सदा ज्ञेयकी भावना करणी अरु ज्ञेय कहियें आत्मस्वरूप तिसकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाणीकरी बहुरी इछा कोउ न रहे ॥ केवल चिन्मात्र पदविषे स्थित होणा इसीका नाम ज्ञेय हे ॥ जो जानणे जोग हे सो जाण्या तब अवर वासना नही रहती ॥ केवल स्वछ आपहि होता हे ॥ हे राजन तेनें अपणे स्वरूपकों जानणा था तुं अवर जंजालविषे किस निमित्त पडा हे आत्मज्ञान विना अवर अनेक जतन करे तोभी शांति न प्राप्त होवेगी ॥ जेसें पवनतें रहित दछ शांतरूप होता हे ॥ जब पवन होता हे तब छोभकों प्राप्त होता हे ॥ तेसें जब वासना निवृत्त होवेगी तब शांत पद प्राप्त होवेगा अरु छोभ कोउ न रहेगा ॥ जब अेसें देवपुत्रनें कहा तब राजा कहत भया ॥ हे भगवन् तुम मेरे पिता हो अरु तुमहि गुरु हो अरु तुमही कृतार्थकरणे हारे हो ॥ में वासना करीकें बडा दुःख पाया हे ॥ जेसें किसी वृछके पत्र टास फूल फल सूकि जावे अरु एकला डुंद रहि जावे तेसें ज्ञानविना मेंभी ठुंठेसा हो रहा हों ॥ तातें कृपा करी मेरे तांइ शांतिकों प्राप्त करो ॥ तब देवपुत्रनें कहा हे राजन् तेनें त्याग करीकें संतका संग करणा था ॥ अरु यह प्रश्न करणा था जो हे भगवन् बंध क्या हे अरु मोक्ष क्या हे अरु में क्या हों यह संसार क्या हे ॥ अरु संसारकी उत्पत्ति किस करी होती हे ॥ अरु लीन केसें होता हे ॥ तेनें यह क्या किया हे जो संतविना ठुंठ बनका आयकरी सेवन किया हे ॥ अब तुं संतजनकों प्राप्त हो करी निर्वासनिक होउ ॥ अेसें ब्रह्मादिकनेभी कहा हे जो जब निर्वासनिक होता हे तब सुखी होता हे बहुरी राजानें कहा हे भगवन् तुमही संत हो अरु तुमही मेरे गुरु हो अरु तुमही मेरे पिता हो ॥ जिस प्रकार मेरे तांइं शांति प्राप्त होवे सो कहो तब कुंभनें कहा हे राजन् मे तेरे तांइं उपदेश करता हों तुं रिदेविषे धारि लेहु ॥ अरु जोतुं रिदेविषे धारे नही तो मेरे कहणे करी क्या होता हे ॥ जेसें टासपर कउआ होवे अरु शब्दभी श्रवण करे ॥ तउभी अपणे कउए सुभावकों नही छांडता ॥ तेसें जो तुंभी कउएकी न्यांइं होवे तो मेरे कहणेका क्या प्रयोजन हे ॥ अरु जेसें तोते पंछीकों जो कहता हे सो ग्रहण करता हे ॥ तातें तोते पंछीकी न्यांइं होउ ॥ तब सिखरध्वजने कहा हे भगवन् जो तुम आज्ञा करोगे सो में करोंगा ॥ जेसें शास्त्र वेदके कहे कर्म करता हों तेसेंहि तुमारा कहणा करोंगा यह मेरा नेम हे जो तुम आज्ञा करो सो में करोंगा ॥ तब देवपुत्रने कहा हे राजन् प्रथम तो तुं अेसें निश्चय कर जो मेरा कल्याण इन वचनोंसों होवेगा अरु अेसें जाण जो पिता पुत्रकों कहता हे सो सुभहि कहता हे तेसें में जो तेरे तांइं कहोंगा सो सुभहि कहोंगा ॥अरु तेरा कल्याण होवेगा तातें निश्चय जाण जो इन वचनोंकरी मेरा कल्याण होवेगा तातें एक आख्यान आगे वितीत भया हे सो श्रवण करु ॥ एक पंडित था सो धन अरु गुणकरी संपन्न था ॥ अरु सर्वदा चिंतामणी पावणेकी इछा करता था ॥ जेसें शास्त्रकरी उपाय कहे तेसेंहि उपाय करता था ॥ जब केताककाल वितीत भया तब जेसें चंद्रमाका प्रकाश होता हे तेसें प्रकाशवान चिंतामणी आय प्राप्त भइ अेसें निकट जाना जो हाथ करी उठाइ लीजें जेसें उदयाचल पर्वतके निकट चंद्रमा उदे होता हे तेसें चिंतामणी निकट आय प्राप्त भइ तब पंडितके मनविषे विचार हुआ जो यह चिंतामणी हे अथवा कंछू ओर हे॥जो चिंतामणी होवे तो उठाइ लेहुं जो चिंतामणी न होवे तो किस निमित्त पकडों॥बहुरी कहे पकडी लेताहों मणिही होवेगी तब मणी न होवे क्या पकडों॥यह मणी नही काहेतें जो मणी बडे जतन करी प्राप्त होती हे॥मेरे तांइं सुखेन क्या प्राप्त होणी हे॥इसतें जाणिता हे जो चिंतामणी नही॥जो सुखेन प्राप्त होती होवे तो सब लोक धनी हो जावे ॥परंतु सुखेन नही पाइती तातें यह चिंतामणी नही ॥ जब अेसें संकल्प विकल्प करी पंडित विचार करणे लागा ॥ अरु इसी करी तिसका चित्त आवरन भया तब मणी छपन होगइ॥काहेतें जो सिद्धी हे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिनका मान आदर न करीयें तो उलटा सराप देति हे ॥ जिस वस्तुका आवाहन करता हे तिसका पूजन न करियें तो त्याग जातीं हे अरु सराप देती हे ॥ जब उह चिंतामणी अंतर्धान होगइ ॥ तब उह बडे दुःखकों प्राप्त भया जो चिंतामणी मेरे पासतें निवृत्त होगइ ॥ अरु बहुरी जतन करने लागा जब बहुरी उपाय किया तब काचकी मणी किसी हांसीकरी तिसके आगें दोडी गइ सो तिसके पास आय पडी ॥ उसकों देखत भया देखीकरी कहणे लागा जो इह चिंतामणी हे तब उसकों उठाय लीनी ॥ लेकरी अपणे घर आया अबोधके वसतें उसकों चिंतामणी जानत भया ॥ जेसें मोहकरी असतकों सत जानता हे अरु रज्जुकों सर्प जानता हे अरु जेसें दो चंद्रमा अरु शत्रुकों मित्र अरु विषकों अमृतरूप जानता हे ॥ तेसें उह काचकों चिंतामणी जानत भया अरु जेता कछू अपणा धन था सो लुटाय दिया अरु कुटुंबका त्याग किया कहणे लागा जो मेरे तांइं चिंतामणी प्राप्त भइ हे अब कुटुंब साथ क्या प्रयोजन हे ॥ अरु घरतें निकसिकरी बनकों गया बनविषे जाय बडे दुःखकों प्राप्त भया ॥ जो काचकी मणी साथ कछू प्रयोजन सिद्धी न हुआ ॥ तेसें हे राजन् जो विद्यमान वस्तु हो वे तिसकों मूर्ख त्यागते हे ॥ तिसका महात्म्य नही जाणते अरु नही पावते ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे चिंतामणी वृत्तांत वर्णनं नाम नवषष्टितमः सर्गः ॥ ६९ ॥ ॥ ७ ॥

॥ देवपुत्रोवाच ॥ हे राजन् इसी पर एक अवर आख्यान कहताहों सो श्रवण करु मंदराचल पर्वतके बनविषे एक हस्ति रहताथा सो सर्व हस्तिका राजा था ॥ केसा था सो मानों मंदराचल पर्वत हे जिसकों अगस्त मुनिनें रोक्याथा ॥ एसा जो मंदराचल पर्वत हे तिसविषे रहता था ॥ अरु जिसके बडे दंत हे इंद्रके वज्रकी न्यांइं तीक्षण हे ॥ बडा बलवान अरु प्रकासवान ॥ जेसें प्रलय कालकी बडवाग्नि होती हे अेसा प्रकासवान अरु बलवान अेसा जो सुमेर पर्वतकों दंतसाथ उठावे तिस हस्तिकों महावतनें बल छल करीकें बांधा ॥ जेसें बल राजाकों विष्णु भगवानने बांधा तेसें लोहकी संकरसों हस्तिकों पाय अरु आप महावत जो निकट वछ था तिसपर चडि बेठा किस निमित्त बेठा था जो कुंदकरी हस्तिके ऊपर चडि बेठो ॥ अरु हस्ति संकर करी महा कष्टकों प्राप्त भया केसें दुःखकों प्राप्त भया जो वाणीकरी कह्या नही जाता जब अेसा दुःख पाया तब हस्तिके मनविषे विचार उपजा ॥ जो अब में बलसाथ संकर न तोडोगा तो कब छूटोगा ॥ तिन संकरकों बलकरीकें तोडि दिया ॥ अरु वछपर जो महावत बेठाथा सो गिर्या सो हस्तिके चरनों आगे आयपडा अरु भयकों प्राप्त भया ॥ जेसें फल पवनकरी गिर पडता हे तेसें महावत भयकरी गिर पडा जब इस प्रकार महावत गिर्या तब हस्तिने विचार किया जो यह मृतक समान हे तातें मुएकों क्या मारणा हे यद्यपि मेरा सत्रु हे तोभी में नहि मारता ॥ इसके मारणेकरी मेरा क्या पुरुषार्थ सिद्ध होता हे तातें में नही मारता ॥ हे राजन जब अेसें दयाकरी हस्तिनें महावतकों न मारा ॥ जो पसु जोनिविषेभी दया मुख्य हे तब महावतकों छांडीकरी हस्ति बनविषे चला जेसें बंधकों पाणी तोडीकरी बेग साथ चलताहे तेसें संकरकों तोडी करी हस्तिबनकों गया ॥ जेसें स्वर्गके द्वारे तोडी करी दैत जाय प्रवेस करते हें ॥ तेसें संकरकों तोडी करी हस्ति बनविषे जाय प्रवेस किया ॥ अरु हस्तिकों गया देखि महावत जो पडा था सो उठी बेठा अरु अपणे सुभावविषे स्थित भया बहुरी हस्तिके पाछें चला अरु हस्तिकों खोजलिया ॥ जेसें चंद्रमाकों राहु खोजि लेता हे ॥ तेसें बनविषे हस्तीकों खोजी लिया देखा जो वछके तले सोया पडा हे ॥ जेसें संग्रामकों सुरमा जीतिकरी निश्चिंत होता हे ॥ तेसें हस्तीकों निश्चिंत सोया पडा देखा ॥ जो संकरकों तोडिकरी आय सोया हे ॥ तब महावतनें विचार किया जो इसकों वस करीयें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरु यहि उपाय करत भया जो बेलेके चउफेर खाइ करी ॥ जेसें ब्रह्माने विश्वकों उत्पति करीकें पृथ्वीकै चउफेर समुद्र चक्र किया हे तेसें बेलेके चउफेर खाइका चक्र करी लिया ॥ अरु खाइके पर कछु तृण घासपाया॥जेसें सरत् कालके आकासविषे बदल देखणेमात्र होता हे तेसें तृण घास खाइ ऊपर देखणे मात्र दृष्ट आवे अरु बीच खाइ करी॥तब एक समे ह स्ती उठी करी चल्या अरु षाइके बीच गिरपडा ॥ जब गिरपडा तब महावत हस्तिके निकट आया अरु संकरों साथ बांधा ॥ जेसें दैत छलकरीकें देवताकों वस करते हे ॥ जेसें अगस्त मुनिनें छल करीकें मंदराचलकों रोकि छोडाथा तेसें हस्तीकों महावतने वश किया अरु हस्ति गिरपडा जेसें सूके समुद्रविषे पर्वत गिरपडता हे तेसें षाइविषे हस्ती गिरपडा ॥ अरु बडे दुःखकों प्राप्त हुआ जो अब तप बनविषे पडा दुःख पावता हे काहेतें जो भविष्यतका विचार न किया अज्ञानीकों भविषतका विचार नही इसीतें दुःख पावता हे ॥ वर्तमान कालविषे विचार नही करता जो आगें क्या होणा हे ॥ इसीतें अज्ञानी हस्ती दुःखकों प्राप्त भया ॥ हे राजन् यह जो आख्यान तेरे तांइं में श्रवण कराये हे ॥ एक मणका एक हस्तीका तिनकों जब तुं समझेगा ॥ तब आगें में उपदेस करोंगा ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे हस्ति आख्यान वर्णनं नाम सप्ततितमः सर्गः ॥ ७० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब देवपुत्रनें अेसेंकहा तब राजा कहत भया ॥ हे देव पुत्र यह दो आख्यान तुमनें कहे हे सो तुम जानते हो ॥ मैं तो कछू नही समझा तातें खोलि करी तुमहि कहो ॥ तब देवपुत्रनें कहा हे राजन् तुं सास्त्रके अर्थविषे तो बहुत चतुर हे सब अर्थका ज्ञाता हे परंतु स्वरूपविषे तेरे तांइं स्थितिनही ॥ जेसें आकासविषे पर्वत नही ठहरता तातें जो वचन में कहताहों सो बुद्धि करी ग्रहण करु ॥ जो हस्तिक्या हे अरु चिंतामणी क्या हे ॥ प्रथम जो सर्व त्याग तेनें किया था सो चिंतामणी थी ॥ तिसके निकट तुं प्राप्त होकरी सुखी भया जब तिसकों तुं अपणे पास राखता तब दुःख सभ निवृत्त हो जाते सो मणीकों तेनें निरादर किया जो तिसकों त्याग्या ॥ अरु काचकी मणी तप क्रियाकों प्राप्त भया सो दारिद्रीही रहा ॥ हे राजन् सर्व त्यागरूपी चिंतामणी थी अरु यह क्रियाका आरंभ काचकी मणी हे सो तेनें ग्रहण करी॥ तिसतें दारिद्रकी निवृत्ति नही होती दुःखीहि रहता त्यागरूपी चिंतामणीका आवाहन था अरु क्रियारंभ तिसका अनादर हे ॥ हे राजन् सर्व त्याग तेनें नही किया ॥ कियाभी था परंतु कछुक रहताथा ॥ तिसके रहणेतें बहुरी विस्तारकों प्राप्तभया॥ जेसें बडा बदल वायुकरी क्षीण होता हे ॥ अरु सूक्ष्म रहि जाता हे ॥ अरु पवनके रहेते बहुरी विस्तारकों पावता हे ॥ अरु सूर्यकों छिपाय लेता हे सो बदल क्या हे अरु सूर्य क्या हे ॥ अरु थोडा रहणा क्या हे सो सुण ॥ स्त्रियां अरु कुंटबतें आदि त्याग किया अरु अहंकार इनविषे कर्णा सो बडा बदल हे ॥ अरु वैरागरूपी पवनकरी राज अरु कुंटुबका अहंकार रूपी बडा बदल निवर्त हुआ ॥ अरु देहादिकविषे जो अहंकार रहा सो सूक्ष्मबदल रहा सो बहुरी वृद्ध हो गया जो अनात्म अभिमान करिकें क्रियाका आरंभ किया ॥ इस करिकें आ त्मारूपी सूर्य जो अपणा आप हे सो अहंकाररूपी बदलकरी आछाद्या गया ॥ ज्ञानरूपी चिंतामणी ज्ञानरूपी काचकी मणी करिकें जेसें छपन भइ ॥ जब ज्ञान करिकें आत्माकों जा णेगा तब आत्मा प्रकासेगा अन्यथा न भासेगा जेसें कोउ पुरुष घोडे पर चडिकें दउडावता हे तिसकी दृत्ति घोडेविषे होती हे ॥ तेसें जिस पुरुषका आत्माविषे दृढनिश्चय होता हे तिस कों आत्मातें भिन्न कछू नही भासता हे राजन आत्माका पावणा सुगम हे जो सुखेनही पाइता हे अरु बडे आनंदकी प्राप्ति होती हे ॥ अरु तपादिक क्रिया जो हे तिसकों कष्टकरी सि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्धि होता हे ॥ अरु स्वरूप सुखकी प्राप्ति नही होती ॥ हे राजन् मैं जानता हों तुं मुरख नही शास्त्रोंका ज्ञाता है अरु बहुत चतुर है ॥ तथापि तेरे तांई स्वरूपविषे स्थिति नही ॥ जेसें आ
कासविषे पथर नही ठहरता ॥ तातें मे उपदेस करताहों तिसकों ग्रहण करु ॥ तेरे दुःख निवर्त हो जावेंगे अरु पाछें जो राजकों त्याग आया हे ॥ जेसें ब्रह्माकी रात्रविषे संसारका अ
भाव हो जाता हे तेसें त्याग कियाथा ॥ हे राजन् यह सर्वतें श्रेष्ठ ज्ञान कहा है ॥ अरु कहताहों तेनें जो तप कियाका आरंभ किया हे ॥ अरु तिसका जो फल जाण्या हे ॥ तिस ज्ञा
नतें श्रेष्ठ ज्ञान कहा हे अरु कहता हों जो तेरा भ्रम निवृत्त होजावेगा ॥ हे राजन् चिंतामणीका तात्पर्य संपूर्ण तेरे तांइं कहा ॥ अब हस्तीका वृत्तांत जो आश्चर्यरूप हे सो श्रवण करु ॥
जिसके समुझणे करी अज्ञान निवृत्त हो जावेगा ॥ मंद्राचलका हस्ती सो तुं हे अरु महावत तेरे तांइं अज्ञानता हे ॥ इस अज्ञानरूपी महावतनें तेरेकों बांधा हे ॥ अरु हस्ती जो संकलडुं
साथ बांधा था सो आसारूपी संकलोंकरी बांधाथा ॥ अरु संकलतेंभी तुं अधिक बांधा हे जो संकल तो घसतेभी हे अरु आसारूपी फांसी घटती नही दिन दिन बढती जाती हे ॥ हे
राजन् आसारूपी फांसी करिके तुं महादुःखी हे ॥ अरु जो हस्तिके बडे दंत थे जिसकरी संकलोकों तोडाथा ॥ सो तेरे दंत विवेक अरु वैराग हे जो तेंनें विचार किया में बलकरिकें
छूटों ॥ अरु राज कुटुंब पृथ्वीका त्यागकरी आया अरु फांसीकों काट्या ॥ तव आसारूपी रसे काटे अज्ञानरूपी महावत भयकों प्राप्त भया ॥ अरु तेरे चरनोंके तले आय पडा ॥ जेसें
वृछ ऊपर वैताल रहता हे अरु कोउ वृछकों काटणे आवता हे तब वैताल भयकों प्राप्त होता हे ॥ तेसेंहि तेनें वैराग अरु बिवेकरूपी दंतडुं करिकें आसाके फांस काठे ॥ तब अज्ञानरू
पी महावत गिर्या अरु तेनें एक घाउ लगाया परंतु मारि न डारा तब महावत तुझतें भागिगया ॥ जेसें वृछ पर वैताल रहता हे वृछकों कोउ काटणे लागता हे तब वैताल भागि जाता
हे ॥ हे राजन् तेसें वृछकों तेनें काट्या वैरागरूपी सस्त्र करिकें ॥ तब अज्ञानरूपी वैताल भागा ॥ अरु मुर्खता करिकें तिसकों तेनें न मारा तिसकों छांडी करी तुं बनविषे गया जब तुं
वनविषे आया तब अज्ञानरूपी महावत तेरे पाछें चला आया ॥ आए करी तेरे चउफेर खाइकरी जो तपादिक क्रियाका आरंभ किया तिस खाइविषे तुं गिरपडा॥अरु महा दुःखकों तुं
प्राप्त भया तब तेरेकों संकलडुं साथ बहुरी बांधा अरु लागा दखणे जो अबतक दुःख पावता हे ॥ अरु तुं केसी खाइविषे गिर्या हे॥जो अनात्मा अभिमान करिकें इहां तपादिक क्रिया
का आरंभ किया हे ॥ जो में कहाताहों अेसी खाइविषे तुं पडा हे ॥ हे राजन् तुं जाणिकरी खाइविषे नही पडा ॥ खाइके उपर घास तृण पडाथा छलकरिके तुं गिर पडा हे ॥ सो छल
अरु तृण कवन हे तुं श्रवण करु ॥ प्रथम जो अज्ञानरूपी शत्रुकों न मारा अरु संकलोके भयकरिकें तुं भागा॥ जो वन मेरा कल्याण करेगा॥ संत अरु शास्त्रके वचनोंकों न जान्या जो
तेरे दुःखकों निवृत्त करहि अरु उन वचनरूपी खाइ पर तृणादिक था मुर्खता करिके तुं गिर्या जेसें वल राजा पातालविषे छल करिकें बांधा हुआ हे ॥तेसें भविषतका विचार किया नही
जो अज्ञान शत्रु रहा हुआ मेरा नास करेगा तिस विचार विना तुं बहुरी दुःखी हुआ सर्व त्याग तो किया परंतु अेसें न जाना जो में अक्रिय हों इह क्रियाका आरंभ काहेकों करता
हों ॥ इसीतें तुं बहुरी फांसी साथ बांधा हे ॥ हे राजन् जो पुरुष इस फांसीतें मुक्त भया सो मुक्त हे ॥ अरु जिसका चित्त अनात्म अभिमान करी बांधा हे ॥ जो यह मेरेकों प्राप्त होवे
तिसकरी दुःखकों पावता हे जिस पुरुषने वैराग विवेकरूपी दंतों करी आशारूपी जंजीरकों नही काटा ॥ सो कदाचित् सुख नही पावता ॥ विवेकतें वैराग उत्पत्ति होता हे अरु वैरागतें

927

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विवेक होता हैं ॥ विवेक कहिये सत्यकों जानणा अरु असत देहादिकको असत्य जानणा ॥ जब अेसें जाण्या तब असतकी उर भावना नही जाती सो वैराग हुआ ॥ अरु वैरागतें वि
वेक उपजता हे विवेकतें वैराग उपजता हे इन विवेक अरु वैरागरूपी दंतकरी आशारूपी संकलको तोड॥हे राजन् यह हस्तीका वृत्तांत जो तुझकों कहा हे इसके विचार कियेतें मोह
तेरा निवृत्त हो जावेगा ॥ हे राजन् हस्ती बडा बली था ॥ अरु महावंत छोटा बली था तिस अज्ञानरूपी महावतकों मूर्खता करीकें न मारा ॥ तिस करीकें दुःख पावता हे ॥ तातें तुं
वैराग विवेकरूपी दंतकरी आशारूपी फांसीकों तोड तब दुःख सब मिटि जावेगे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे हस्तीवृत्तांत वर्णनं नाम एकसप्ततितमःसर्गः ॥ ७१ ॥ ॥ ७ ॥
॥ देवपुत्रोवाच ॥ हे राजन् अेसी जो तेरी स्त्री चूडाला ब्रह्मवेत्ता थी ॥ अरु सर्व ज्ञान श्रेष्ठ साक्षात् ब्रह्मस्वरूप. अरु सतवादी तिसनें तेरे तांइं उपदेश किया ॥ अरु तेनें तिसके वच
नोंका निरादर किस निमित्त किया में तो सर्व जाणता हों जो त्रिकालज्ञ हों ॥ तौभी तुं अपणे मुखतें कछु जो तिसका उपदेश अंगीकार क्यों न किया ॥ एक तो यह मूर्खता करी जो
उपदेश न अंगीकार किया अरु दुसरी यह मूर्खता हे जो सर्व त्याग न करीकें बहुरी बन अंगीकार किया जो सर्वत्याग करता तो सर्व दुःख मिटि जाते ॥ जब अेसे देवपुत्रनें कहा तब
राजा कहत भया हे देवपुत्र में तो सर्व त्याग किया हे स्त्री पृथ्वी मंदिर हस्ती इत्यादिक जो ऐश्वर्य अरु कुटुंब हे सो सर्व त्याग किया हे ॥ तुम केसें कहते हो जो त्याग नही किया तब
देवपुत्रने कहा हे राजन् तेनें क्या त्यागा हे ॥ राजविषे तेरा क्या था जेसें ऐश्वर्य आगें था तेसें अबभी हे ॥ अरु स्त्रियांभी जेसें अवर मनुष थे तेसें स्त्रियां थीं तिनविषे तेरा क्या था जो
त्याग किया ॥ पृथ्वी मंदिर अरु हस्ती जेसें आगेंथे तेसें अवभी हे ॥ तिनविषे तेरा क्या था जो त्याग कियां॥हे राजन् सर्व त्याग तेनें अबभी नही किया ॥ जो तेरा होवे तिसका तुं त्याग
कर जो निर्दुःख पदकों प्राप्त होवे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब इस प्रकार देवपुत्रने कहा तब सूरवीर जो इंद्रजित राजा था सो मनविषे विचारत भया जो यह बन मेरा हे ॥
अरु वृछ फूल फल मेरे हे इनका त्याग करों ॥ अरु कहत भया हे देवपुत्र बन अरु वृछ फूल फल टास जो मेरें थे तिनका में त्याग किया अब तो सर्व त्याग हुआ क्यों ॥ तब देवपुत्रने
कहा हे राजन् अबभी सर्व त्याग नही भया ॥ जो बन अरु वृछ फूल फल तुझतें आगेंभी थे इनविषे तेरा क्या हे ॥ जो तेरा हे तिसकों त्याग तब सुखी होवे॥ हे रामजी जब इस प्रकार
देवपुत्रने कहा तब राजा मनविषे विचारत भया ॥ जो मेरी बावलीहे जलपानकि अरु मेरें बगीचे हे इनका त्याग करों जो सर्व त्याग सिद्धि होवे ॥ अरु कहा हे भगवन् मेरी यह बाव
ली अरु बगीचे हे तिनका त्याग किया ॥ अब तो मेरा सर्व त्याग सिद्धि हुआ क्यों ॥ तब देवपुत्रने कहा हे राजन् सर्व त्याग अबभी नही भया ॥ जो तेरा हे तिसकों त्यागेगा तब शांत
पदकों प्राप्त होवेगा ॥ हे रामजी जब इस प्रकार देवपुत्रने कहा तब राजा विचारणे लागा ॥ जो अब मेरी मृगछाला अरु कुटी हे तिसका त्याग करों ॥ अरु कहा हे देवपुत्र मेरे पास
एक मृगछाला अरु एक कुटी हे तिसका त्याग किया अब सर्व त्यागी भयाक्यों ? ॥ तब देवपुत्रने कहा हे राजन् मृगछाला विषे तेरा क्या हे ॥ यह तो मृगकी त्वचा हे अरु कुटीविषे
तेरा क्या हे कुटी तो माटी अरु सिलाकी हे ॥ इस करी तो सर्व त्याग सिद्ध नही होता ॥ जो कछू तेरा हे तिसकों त्यागे तब सर्व त्याग होवे ॥ अरु तुं सर्व दुःखतें रहित होवे हे रामजी
जब अेसें कुंभने कहा तब राजाने मनविषे विचार किया जो अब मेरा एक कमंडलु हे अरु एक माला एक लाठी हे इसका त्याग करों ॥ अेसें विचार करी राजा शांतिकें लिये बो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लत भया ॥ हे देवपुत्र मेरी लाठी अरु कमंडलु अरु एक माला हे तिसकाभी त्याग किया अब में सर्व त्यागी भया क्यों तब देवपुत्रनें कहा हे राजन् कमंडलुविषे तेरा क्या हे ॥ कमंडलु तो बनका तुंवा हे तिसविषे तेरा कछू नही ॥ अरु लाठीभी बनके वासकी हे ॥ अरु मालाभी काष्टकी हे तिनविषे तेरा क्याहे जो कछू तेरा हे तिसका त्याग कर ॥ जब तिसका त्याग करेगा तब दुःखतें रहित होवेगा ॥ हे रामजी जब इस प्रकार कुंभने कहा तब राजा सिखरध्वज मनविषे विचारत भया जो अब मेरा क्या रहता हे ॥ तब देखा जो एक आसन रहता हे अरु वासन हे जिसविषे फुल फल राखते हे अब इनका त्याग करों ॥ तब राजानें कहा हे भगवान् आसन अरु बासन यह मेरे पास रहते हे इनकाभी त्याग किया अब तो सर्व त्यागी भया क्यों ॥ तब कुंभने कहा हे राजन् अबभी सर्व त्याग नही भया आसन तो भेडकी उनका हे ॥ अरु बासन मृतिकाके हे ॥ इन विषे तेरा कछू नही जो कछू तेरा हे तिसका त्याग कर ॥ जो सर्व त्याग होवे अरु दुःख निवर्त होजावे ॥ हे रामजी जब इस प्रकार कुंभनें कहा तब राजा उठी खडा हुआ ॥ अरु बनकी लकडी एकठीयां करी अरु अग्नी लगाइ ॥ जब बडी अग्नी लागी तब लाठीकों हाथविषे लेकरी कहणे लागा ॥ हे लाठी में तेरे साथ बहुत देसोंका रटन किया हे परंतु मेरे साथ उपकार कछू न किया ॥ अब में कुंभ मुनिकी कृपातें तरोंगा तेरे नमस्कार हे ॥ अेसें कहिकरी लाठीकों अग्निविषे डारिदिया ॥ बहुरी मृगछालाकों हाथविषे लेकरी कहा ॥ हे मृगकीत्वचा बहुत काल में तेरे ऊपर आस किया हे ॥ परंतु तुझने उपकार कछू न किया ॥ अब कुंभ मुनिकी कृपासों में तरोंगा ॥ तेरे तांइं नमस्कार हे ॥ अेसें कहिकरी मृगछालाकों अग्निविषे डारि दिनी ॥ बहुरी कमंडलुकों लेकरी कहणे लागा ॥ हे कमंडल धन्य हे में तेरे तांइं धारा ॥ अरु तुझने मेरे जलकों धारा ॥ तेंनें तुझ साथ गुण गोप नही किया ॥ तोभी कमंडलुकी जेसें प्रकृति त्यागणी हे तेसें निवृतिकी कल्पनाभी त्यागणी हे ॥ ताते तेरेकों नमस्कार हे तुम जावहु ॥ अेसें कहिकरी कमंडलुभी अग्निविषे जलाय दिया ॥ बहुरी मालाकों हाथविषे लेकरी कहणे लागा ॥ हे माला तेरे मणके जो में फरे हे ॥ सो मानों अपणे मेंने जन्म गने हे ॥ तेरे संबंध करी जाप किया हे ॥ अरु दिसा विदिसा गयाहों ॥ अब तेरेकों नमस्कार हे ॥ अेसें कहिकरी मालाकोंभी अग्निविषे डारि दिनी ॥ इसी प्रकार फल फुल कूटी आसन सब जलाय दिये ॥ बडी अग्नि जागी अरु बडा प्रकास भया ॥ जेसें सुमेर पर्वतके पास सूर्यचडे अरु मणिकाभी चमत्कार होवे तो बडा प्रकास होता हे ॥ तेसें बडि अग्नि लागी अरु राजाने संपूर्न सामग्रीका त्याग किया ॥ जेसे पके फलकों वृछ त्यागता हे जेसें पवन चलणेतें ठेरता हे तब धूडतें रहित होता हे ॥ तेसें राजा सर्व सामग्रीकों त्यागी निर्विघ्न हुआ ॥ अरु सर्व सामग्री अग्निविषे डारी अरु अग्निरूप होत भइ जेसें न दियां समुद्रविषे जाय समुद्ररूप होतियां हे ॥ तेसें सब सामग्री अग्निरूप होत भइ ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे सिखरध्वज सर्वत्याग वर्णनं नाम द्विसप्ततितमः सर्गः ॥ ७२ ॥ ॥७॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब संपूर्ण सामग्री जलाइ अरु भस्म होगइ ॥ जेसें सदासिवके गणनें दक्ष प्रजापतिके यज्ञकों स्वाहा करी दिया था ॥ तेसें जेती कछू सामग्री थी सो सब स्वाहा होगइ ॥ अरु बन बडा प्रज्वलित भया ॥ जेते कछू वृछके रहणेवाले पंछी थे सो भाज गये ॥ अरु मृग पसु केइ आहार करते कइ जुगली करतेथे सब भाज गये ॥ जेसे पुरकों आग लागेतें पुरवासी भाज जावे तेसें भाज गये ॥ तब राजा मनविषे विचारत भया जो अब कुंभकी कृपातें में बडे आनंदकों प्राप्त भया ॥ अब दुःख मेरे मिटि गये हे ॥ जेती कछू वस्तु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनके संकल्प करी रची थी जो मेरी हे सो जलाय दीइ तिसका न मेरे तांइ हर्ष हे न सोकहे जैते कछू दुःख होते हे सो ममत्व करी होते हे सो मेरा ममत्व अब किसी साथ नही रह ता ॥ तातें दुःखभी कोउ नही अब में ज्ञानवान भया हों ॥ अब मेरी जय हे अब निर्मल भया हों अरु सर्व त्याग किया हे अेसें विचार करीकें राजा उठी खडा हुआ हाथ जोडी कहत भया हे देवपुत्र अब में सर्व त्याग किया हे क्यों ॥ जो आकाशही मेरे वस्त्र हैं अरु पृथ्वी मेरी सिज्या हे ॥ जब राजाने अेसें कहा तब कुंभ मुनिने कहा हे राजन् अबभी सर्व त्याग नही किया ॥ जो तेरा हे तिसका त्याग करु तब दुःख तेरे निवत्त होजावही ॥ बहुरी राजाने कहा हैं भगवन् अब तो अवर मेरे पास कछू नही रहता ॥ नागा हो करी तुमारे आगें खडा हों ॥ अब एक रक्त मांसका देह हे इंद्रियांकों धारण हरा ॥ जो कहो तो इसकाभी त्याग करों पर्वत उपर जायकरी डारी देउं ॥ अेसें कही करी राजा पर्वतकों दोडया जो देहकों डारी देउं ॥ तब कुंभमुनिने कहा हे राजा अेसें पुण्य देहकों क्यों त्यागता हे ॥ इसके त्यागेतें सर्व त्याग नही होता ॥ जिसके त्यागणेतें सर्व त्याग होवे इसका त्याग करु ॥ इस देहविषे क्या दुषण हे॥ जेसें वछसाथ फूल फल होते हे जब वायु चलता हे तब फूल फल गिरते हे ॥ सो फूल फल गिरनेका कारण वायु हे वछविषे दुषण कछू नही ॥ तेसें देहविषे दूषण कछू नही ॥ जो देहके पालणे हारा अभिमान हे त्याग तिसका करु ॥ जो सर्व त्याग सिद्धि होवे ॥ अरु देह तो गुन हे जो कछू इसकों देता हे सोइ लेता हे आगेते बोलता नही जड हे इसके त्यागतें क्या सिद्धि होता हे ॥ जेसें पवनकरी वछ हीलता हे अरु भुकंपकरी पर्वतकंपते हे ॥ तेसें देह आप कछू नही करती अवरकी प्रेरी चेष्टा करती हे ॥ जेसें पवनकरी समुद्रविषे तरंग होते हे ॥ अरु तृणकों जहां जल ले जाता हे तहां चले जाते हे ॥ तेसें देह आपतें कछू नही करती इसका जो प्रेरनेवाला हे तिसकरी चेष्टा करती हे ॥ ताते देहके प्रेरनेवालेका त्याग करु जो सुखी होवे हे राजा जिसकरी सर्व हे जरु जिसविषे सर्व शब्द हे अरु जो सर्व उरतें त्यागणे जोग हे तिसका त्याग कर जो तेरे सर्व दुःख मिटि जावे ॥ तब राजाने कहा हे भगवन उह कवन हे जो सर्व हे अरु जिसविषे सर्व शब्द हे ॥ अरु जो सर्व उरतें त्यागणे जोग हे ॥ हे तत्ववेत्ताविषेश्रेष्ठ जिसके त्यागेतें जरामृत्यु नष्ट हो जावे सो कहो ॥ तब कुंभने कहा हे राजा जिसका नाम चित्त हे अरु प्राण हे अरु देह हे॥अेसा जो चित्त हे तिसका त्याग कर अरु बाहर जो नाना प्रकारके आकार दृष्ट आते हे सो चित्तही करी दृष्ट आते हे॥ताते चित्तका त्याग करु हे राजा जेसें सरप खुदविषे बेठा होवे तो खुदका दूषण कछू नही विष सर्पविषे हे जिसकरी डसता हे॥तिसके नास करणेका उपाय करु ॥ अरु सर्व शब्दभी इस चित्तविषे हे अरु आत्मा हे जो मात्रपद हे ॥ जिसविषे न एक कहणा हे न द्वैत कहणा हे अरु सर्व उरतें इसी चित्तका त्याग करणा जोग हे ॥ जब इस चित्तका त्याग करेगा तब त्यागरूपी अमृतकरी अमर हो जावेंगा ॥ अरु जरामृततें रहित होवेगा ॥ अरु जब चित्तका त्याग न करेगा तो बहुरी देहकों धारेगा अरु दुःख भोगेगा अरु जेसें एक क्षेत्रतें अनेक दाणे उत्पत्ति होते हे ॥ अरु जब क्षेत्रहि जली जाता हे तब अन्न नही उपजता तेसें यह जो देह हे अरु जरामृत्यु दुःख संसार इनका बीज चित्त हे ॥ जेसें अनेकका कारण क्षेत्र हे तेसें दुःख संसारका कारण चित्त हे तातें हे राजा चित्तका त्याग करु जब इसका त्याग करेगा तब सुखी होवेगा ॥ हे राजा जिसने सर्व त्याग किया हे सो सुखी हुआ हे ॥ जेसें आकाश सर्व पदार्थतें रहित हे किसीका स्पर्श नही करता अरु सर्वते बडा हे अरु सुखरूप हे ॥ अरु सर्व पदार्थ नष्ट हो जाते हे तोभी ज्योंका त्यों रहता हे ॥ जो आकाश सर्व त्याग किया हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे राजा तुंभी सर्व त्यागि होउ ॥ राज अरु देह अरु कुटुंब गृहस्थ आदिकं जो आश्रम हे सो सर्व चित्तने कल्पे हे अरु जो एकका त्याग नही होता तो कछू नही त्यागा ॥ जब चित्त का त्याग करे तब सर्व त्याग होवे हे राजा यह धर्म अरु वैराग अरु ऐश्वर्य तिनों चित्तके कल्पे हुए हे जब चित्त पुण्य कियासों लागता हे तब पुण्यहि प्राप्त होता हे ॥ जब पाप क्रियासों लागता हे तब पापहि प्राप्त होता हे ॥ अधर्म अरु अवैराग अरु दारिद्र होता हे ॥ जब पुण्यका फल उदे होता हे तब सुख प्राप्त होता हे ॥ अरु जब पापका फल उदे होता हे तब दुःख प्राप्त होता हे ॥ तातें जन्ममृत्यु दुःख नही मिटते जब चित्तका त्याग होता हे तब सर्व दुःख नष्ट हो जाते हे॥ हे राजा जो कोउ पुरुष किसी वस्तुकों नही चाहता जो में नही लेता तब तिसकी पूजा बहुत होती हे ॥ अरु कोउ कहता हे जो में इस वस्तुकों लेउ मेरेकों यह देवे तब उसकों देता कोउ नही तातें सर्व त्याग करु जो सुखी होवे ॥ अरु सर्व त्याग कियेतें सर्व तुंहि होवेगा ॥ सर्वात्मा होवेगा अरु संपूर्ण ब्रह्मांड अपणेविषे देखेगा ॥ जेसें मालाके मणकेविषे तागा होता हे अरु मणकेभी सूत्रके आधार होते हे तिनविषे अवर कछू नही होता॥ तेसें देखेगा जो सर्व मेंही हों अरु एक रस हों ॥ मेरेहीविषे ब्रह्मांड स्थित हे अरु मेंहि हों मुझतें इतर कछू नही हे राजा जिसने सर्व त्याग किया हे सो सुखी हे अरु समुद्रकी न्यांइं स्थित हे उसकों दुःख कोउ नही तातें तुं चित्तका त्याग करु जो राज दोष मिटि जावे ॥ अरु इस चित्तके एते नाम हे चित्त मन अहंकार जीव अरु माया ॥ यह सर्व चित्तहिके नाम हे हे राजन् त्यागणे अरु अवरकी भिक्षा लेणेतें तो चित्त वस नही होता ॥ चित्त तबहि वस होता हे जब पुरुष निर्वासनिक होताहे जबलग चित्त फुरता हे तबलग सर्व त्याग नही होता ॥ जब यहि फुरना निवृत्त होता हे तब चित्तका त्याग होता हे ॥ अरु चित्तकों त्यागकरीभी त्यागके अभिमानतें रहित होणा एसा शून्य पाछें जब तुं रहेगा तब सर्वात्मा होवेगा ॥ जब चित्तकों त्यागेगा तब तिस पदकों प्राप्त होवेगा ॥ जो जेते ऐश्वर्य सुख हे तिनका आश्रय हे ॥ अरु जेते दुःख हे तिनका नास करणे हारा हे अरु जिसके जाणेतें किसी पदार्थकी इछा न रहेगी काहेतें न रहेगी जो सर्व आनंदके धारणे हारा तेरा स्वरूप हे ॥ बहुरी इछा किसकी रहे ॥ जेसें आकाशके आश्रय देवलोकतें आदि सर्व विश्व रहती हे ॥ अरु आकाशकों इछा कछू नही जो इछा नही करता तोभी सर्व आकाशहिविषे हे अरु सर्वका धारणे हारा हे ॥ हे राजन् जब तुंभी इछा किसकी न करेगा तब निर्वासनिक होकरी अपणे स्वरूपविषे स्थित होवेगा अरु जाणेगा जो सर्वका आत्मा मेंहि हों ॥ सर्वकों धारि रहा हों ॥ अरु भूत भविष वर्त्तमान तीनों कालभी मेरे आश्रय हे ॥ जेसें समुद्रके आश्रय तरंग हे तेसें मेरे आश्रय काल हे ॥ अरु चित्तका संबंध तेरे तांइं प्रमाद करिकें हे॥अरु प्रमाद यहि हे जो चिन्मात्र पदविषे चित्त होकरी फुरता हे अरु चित्त केसाहे जो जडभी हे अरु चैतनभी हे॥ इसीका नाम चिदजड ग्रंथि हे ॥ जब इह ग्रंथि खुलि जावेगी तब अपणे आपकों वासुदेवरूप जाणेगा ॥ जब निर्वासनीक होवेगा तब संसार रूपी वृछ नष्ट हो जावेगा ॥ जेसें बीजविषे वृछ होता हे तेसें चित्तविषे संसार हे ॥ जेसें बीजके जलणेते वृछभी जलि जाता हे ॥ तेसें वासनाके दग्ध हुएतें संसारभी दग्ध होता हे ॥ हे राजा जेसें एक डब्बेविषे रत्न होते हे तो रत्नोंके नाश हुए डब्बा नाश नही होता ॥ अरु डब्बेके नष्ट हुए रत्न नष्ट होते हे ॥ सो डब्बा क्या हे अरु रत्न क्या हे श्रवण करु डब्बा चित्त हे अरु रत्न देह हे ॥ तातें चित्त नष्ट होणेका उपाय करहु ॥ जब चित्त नष्ट होवेगा तब देहतें रहित होवेगा ॥ देहके नष्ट हुए चित्त नष्ट नही होता ॥ अरु चित्तके नष्ट हुए देह नष्ट हो जाती हे ॥ जब चित्तरूपी धूडतें रहित होवेगा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब केवल शुद्ध आकाश होवेगा ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे चित्त त्याग वर्णनं नाम त्रिसप्ततितमःसर्गः ॥ ७३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब इस प्रकार कुंभने कहा ॥ जो चित्तका त्यागणाहि सर्व त्याग हे ॥ तब सिखरध्वजनें कहा हे भगवन् में चित्तकों स्थित केसें करों ॥ संसाररूपी आकाशकी चित्तरूपी धुड हे अरु संसाररूपी वृछ का चित्तरूपी वांनर हे जो कबहुं स्थित नही होता ॥ तातें अेसें चित्तकों में केसें स्थित करो तब कुंभनें कहा हे राजन् चित्तका रोकणा तो सुगम हे ॥ नेत्रोंके खोलणें अरु मुंदणेविषेभी कछू जतन हे ॥ परंतु चित्तके रोकणेविषे कछू जतन नही ॥ परंतु सुगम किसकों हे जो दीर्घ दर्शी हे ॥ अरु अज्ञानीकों चित्तका रोकणा कठिण हे ॥ जेसें चंडालकों पृथ्वीका राजा होणा कठिण हे ॥ अरु जेसें तृणकों सुमेरु होणा कठिण हे ॥ तेसें अज्ञानीकों चित्तका रोकणा कठिण हें ॥ राजोवाच ॥ हे देवपुत्र चित्तका तोडना कठिन हे तोभी टुटी जाता हे ॥ परंतु मनका रोकणा अति कठिन हे ॥ जेसें वडे मछकों बालक रोकी नही सकता ॥ तेसें में चित्तकों रोकी नही सकता ॥ हे देवपुत्र तुम कहते हो जो मनका रोकणा सुगम हे अरु मु झकों अेसें कठिण भासता हे ॥ जेसें मुरत लिखी हुइ अंध पुरुषकों नेत्रोंसों नही दृष्ट आवती तो वें हाथविषे केसे लेवे ॥ तेसें तिनकों वस करणा मेरे तांइं कठिन भासता हे ॥ प्रथम चि त्तका रूप मेरे तांइं कहो जो क्या हे ॥ कुंभोवाच ॥ हे राजन् इस चित्तका रूप वासना हे ॥ जब वासना नष्ट होवे तब चित्त नष्ट होजावे ॥ तातें चित्तका बीज तुं नष्ट कर तब चित्त रूपी वृछभी नष्ट होवे ॥ न कोउ टास रहे न कोउ फुल फल रहे अरु जब टासकों काटेगा तब बहुरी होवेगा ॥ टासके काटणे वृक्ष नष्ट नही होता ॥ बहुरी केइ टास होता हे जब बी जकों नष्ट करे तब वृछभी नष्ट होजावे ॥ राजोवाच ॥ हे भगवन् संसाररूपी सुगंध हे ॥ तिसका चित्तरूपी फुल हे अरु संसाररूपी तंतु हे तिसका चित्तरूपी जिह हे ॥ अरु देहरूपी तृण हे तिसके उठावणे उडावणेवाला चित्तरूपी पवन हे ॥ अरु जरा मृत्यु अध्यात्मक अधिभूतक तेल हे तिनका यह तिल हे ॥ जिसतें तेल उपजता हे अरु संसाररूपी अंधेरी हे तिस का यह चित्तरूपी आकास हे ॥ जो आकासविषे केइ अंधेरी होतियां हे ॥ अरु रिदेरूपी कमलका चित्तरूपी भवरा हे तिस बीजभी कहो अरु टासभी कहो जो क्या हे ॥ अरु टासका काटणा क्या हे अरु वृछ क्या है अरु फुल फल क्या हे सो कृपा करी कहो ॥ कुंभोवाच ॥ हे राजन् चैतनरूपी क्षेत्र स्वछ निर्मल हे ॥ तिसविषे अहंभाव बीज हे ॥ इसीकों अहंका र कहते हे अरु इसीकों चित्त कहते हे ॥ इसीकों मन कहते हे अरु इसीकों जड कहते हे ॥ इसीकों मिथ्या कहते हें ॥ तिस अहंविषे जो संवेदन हे सोइ देह इंद्रियां हो पसरी हे ॥ ति सविषे जो निश्चय हे सो बुद्धि हे ॥ तिस बुद्धिविषे जो निश्चय हे यह में हो यह संसार हे ॥ सोइ जीव अहंकार हे ॥ अहंकार इस वृक्षका बीज हे ॥ अरु वासना इस चित्तरूपी वृछके टास हे ॥ अरु सुख दुःख इस चित्तरूपी वृछके फल हे हे राजन् इसका जो काटणा हे सो सुण ॥ एकांत बेठीकरी चिंतवनातें रहित होणा एक आश्रयकों त्यागकरी दुसरेका अंगीकार करणा इस प्रकार स्थित होणा जो में अेसा त्यागी हों ॥ इसका चिंतवणा यहि टासको काटणा हे ॥ हे राजन् इस टासकें काटेतें वृछ नष्ट नही होता ॥ काहेते जो अेसा होकरी स्थित होणा जो में हो अरु वासना त्याग करे कछु फुरे नही ॥ जब अहंरूपी बीज नष्ट होजाता हे तब चित्तरूपी वृछ नष्ट होजाता हे ॥ काहेतें जो इसका बीज अहं हे जब अहंभाव बीज नष्ट हुआ तब वृछभी नष्ट होजाता हे ॥ तातें चित्तका बीज तुं नष्ट कर ॥ राजोवाच ॥ हे देवपुत्र तुमारा निश्चय में इहां जाण्या हे जो चित्तके त्यागेतें चित्तका बीज नष्ट करणा श्रेष्ठ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे ॥ हे भगवन् एता काल मैं दास काटता रहाहौं ॥ इसीतैं दुःख मेरे नष्ट नही भये ॥ अरु तुमनैं कहा जो अहंहि दुःखदाइ है ॥ सो अहंका उत्पन्न होणा केसें होता हे?॥ कुंभोवाच ॥ हे राजन् सुद्ध चैतनविषे जो चैत्योन्मुखत्व अहंका फुरणा हुआ जो में हौं सो दृश्यरूप हुआ हे मिथ्या संवेदन करिकें हुआ हे ॥ जेसें सांत समुद्रविषे पवनकरिके लहरी तरंग होते हे तेसें सुद्ध आत्माविषे अहं फुर्णा हे तिस करिके संसार हुआ हे तातें अहंभावकों नष्ट करु जो शांतिपदविषे स्थित होवे ॥ जो दुःखदायक वस्तु हे तिसकों नष्ट करेसों सांत होवे ॥ राजोवाच ॥ हे भगवन् उह कवन वस्तु हे जो जलावणे जोग हे अरु उह कवन अग्नि हे जिसविषे जलती हे ॥ कुंभोवाच ॥ हे त्यागवानविषे श्रेष्ठ राजा तेरा जो अपणा स्वरूप हे तिसका विचार कर ॥ जो में क्या हौं यह संसार क्या हे ॥ इसका दृढ विचार करणा सोइ अग्नि हे ॥ अरु मिथ्या अनात्मा जो देह इंद्रियादिक विषे अहंभाव हे ॥ तिसकों वास्तवरूप विचार अग्निकरि जलावहु ॥ जब विचार अग्नि करिकें अहंकार बीजकों जलावेगा ॥ तब केवल चिन्मात्र होवेगा ॥ हे राजा मेरे उपदेस करिके तुं आपकों क्या जानत भया हे सो मेरे तांइं कह तब राजनें कहा मे राजाभी नही अरु पृथ्वीभी में नही ॥ अरु पर्वतभी में नही अरु आकासभी में नही ॥ अरु दसौं दिसाभी नही ॥ अरु में रुधिर मांसकी देहभी नही अरु कर्म इंद्रियां ज्ञान इंद्रियाभी नही ॥ अरु मन बुद्धिभी में नही अरु में अहंकारभी नही ॥ इनतें रहित सुद्ध आत्मा हौं ॥ परंतु हे भगवन् अहंरूपी कलंकता मेरे तांइं कहांतें लागी हे ॥ तिस कलंकके दूरकरणेंकों में समर्थ नही ॥ तब कुंभनें कहा हे राजा इसी अहंका त्याग करु जो में त्याग किया हे यह फुरणाभी न फुरे शून्य होरहु ॥ जब इसका त्याग करेगा तब चैतन आकास होवेगा ॥ हे राजा तुं अपणे स्वरूपविषे जाणि करी देख जो कवन हे तब राजानें कहा हे भगवन् में यह जानताहौं जो मेरा स्वरूप आत्मा हे ॥ सो सर्वका आत्मा हे ॥ अरु में आनंदरूप हो सर्व मेरा प्रकास हे ॥ परंतु यह नही जानता जो अहंभाव कलना कहांतें लागी हे ॥ इसके नास करणेकों में समर्थ नही ॥ अरु इह में जाण्या जो संसारका बीज चित्त हे ॥ अरु चित्तका बीज अहंकार हे तुमारी कृपातें में जाण्या हे जो मेरा स्वरूप आत्मा हे ॥ अहंत्वं मेरेविषे कोउ नही ॥ तुंभी इस अहंरूप कलंकताकों दूर करी रहेहो मेरे तें दूर नही होता बहुरी बहुरी आय फुरता हे जो मे सिखरध्वज हा ॥ इस अहं करिके में संसारी हौं॥इसके नास करणेका उपाय तुम कहो ॥ कुंभोवाच ॥ हे राजा कारणबिना कार्य नही होता अरु जो कारण बिना कार्य भासे तो जाणिये जो भ्रममात्र हे अरु मिथ्या हे ॥ अरु जिसका कारण पाइये सो जाणिये जो सत्य हे तातें तुं कह इस अहंकारका कारण क्या हे तब में उत्तर कहोंगा ॥ राजोवाच ॥ हे भगवन् अहंकारका कारण सुद्ध आत्मा हे ॥ सुद्ध आत्माविषे जो जानना हुआ हे ॥ जानणेमात्र विषे जानणेका उत्थान हुआ हे जो दृश्यकी उर लागा हे ॥ सो जानणा संवेदनहि अहंका कारण हे ॥ कुंभोवाच ॥ हे राजा इस जानणेका कारण क्या हे ॥ प्रथम तुं यह कहु पाछें दूर करणेका उपाय में कहोंगा ॥ हे राजा जिसका कारण सत होता हे तो कार्यभी सत होता हे अरु जो कारण झूठ होता हे तो कार्यभी झूठ होता हे ॥ जेसें भ्रम द्रष्टि करिके दुसरा चंद्रमा आकासविषे देखता हे ॥ सो कारण तिसका भ्रम हे ॥ तातें इस जानणे संवेदनका कारण कहु जो क्या हे ॥ जो जानना संवेदन द्रष्ट अरु दृश्यरूप हो करी स्थित भइ हे ॥ अरु दृश्य द्रष्टरूप हो करी स्थित भइ हे ॥ ॥ राजोवाच ॥ हे देवपुत्र जानणेका कारण देहादिक दृश्य हे ॥ काहेतें जो जानणा तब होता हे ॥ जब जानणे जोग वस्तु आगें होती हे ॥ जो आगें वस्तु नही होती हे तो तिसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जानणाभी नही होता ॥ तातें जानणेका कारण देहादिक हुए ॥ कुंभोवाच ॥ हे राजन् यह देहादिक मिथ्या हे भ्रम करिकें हुए हे ॥ इनका कारण तो कोउ नही ॥ राजोवाच ॥ हे देवपुत्र देहका कारण तो प्रत्यक्ष हे ॥ खाता पिता हे अरु पितातें इसकी उत्पत्ति भइ हे ॥ अरु प्रत्यक्ष कार्य करता दृष्ट आता हे ॥ तुम केसें कहते हो जो कारण विना हे अरु मिथ्या हे ॥ कुंभोवाच ॥ हे राजा पिताका कारण कवन हे पिताभी मिथ्या हे ॥ जेसें सुपनेविषे पिता अरु पुत्र देखिये सो दोनों मिथ्या हे ॥ तातें कछु पिताका कारण क्या हे ॥ राजोवाच ॥ हे भगवन् पुत्रका कारण पिता ॥ अरु पिताका कारण पितामह हे ॥ इसी प्रकार परंपरा करिकें सर्वका कारण ब्रह्मा प्रत्यक्ष जानता हे ॥ जो सर्वकी उत्पत्ति ब्रह्माजीतें भइ हे ॥ कुंभोवाच ॥ हे राजन् ब्रह्मातें आदि काष्ट पर्यंत सर्व सृष्टि संकल्पकी रची हे ॥ अरु देहभी भ्रम करीकें भासता हे ॥ जेसें मृग तृष्णाका जल भासता हे जेसें सीपीविषे रूप भासता हे तेसें आत्माविषे देह भासता हे ॥ जेसें आकाशविषे दो चंद्रमा भ्रम करीकें देखिते हे ॥ तेसें आत्माविषे यह संसार भ्रम करीकें भासता हे अरु जो तुं कहे क्रिया केसें दृष्ट आते हे तो सुण ॥ जेसें कोउ कहे वंध्याके पुत्रकों भूषण पहराये हे ॥ जो वंध्याके पुत्रही नही तो भूषण कीसनें पहिरें सो भ्रम करीकें भासता हे ॥ जेसें सुपनविषे सब क्रिया होती हे सो भ्रम मात्र हे ॥ तेसें यह संसार तेरे भ्रमविषे हे ॥ जब भ्रम निवृत्त होवेगा तब केवल आत्माहि भासेगा ॥ हे राजन् जेसें तुं अपणा देह जानता हे ॥ तेसें ब्रह्माकाभी जाण ॥ ब्रह्माका कारण कवन हे ॥ तातें इस भ्रमतें जाग जो तेरा भ्रम नष्ट हो जावे ॥ राजोवाच ॥ हे भगवन् में जाग्याहों अब मेरा भ्रम नष्ट भया हे ॥ अरु मेंने यह संसार मिथ्या जाण्या हे जो केवल संकल्पमात्र हे ॥ जो कछु द्रश्य हे सो मिथ्या हे ॥ अरु एक आत्माही मेरे निश्चयविषे सत भया हे ॥ हे भगवन् ब्रह्माका कारणभी ब्रह्म हे अरु अद्वैत हे अविनासी हे अरु सर्वात्मा हे ॥ ब्रह्माका कारण यह हुआ ॥ कुंभोवाच ॥ हे राजन् कारण अरु कार्य द्वैतविषे होते हे सो असत हे ॥ जो तिस कारणका देसतेभी अंत होता हे ॥ वस्तुतेभी अरु कालतेंभी अंत हो जाता हे ॥ अरु परिणामी होता हे जो वस्तु परिणामी होवे सो मिथ्या हे ॥ हे राजा आत्मा अद्वैत हे जिसविषे न एक कहणा हे न द्वैत कहणा हे ॥ न भोगता हे न भोग हे न कर्म हे ॥ अद्वैत हे जो स्वरूपतें प्रणामकों नही प्राप्त भया अरु सर्वात्मा हे जो सर्व देस हे अरु सर्वकालभी हे ॥ जो सर्व वस्तुविषे पूर्ण हे अरु अद्वैत हे ॥ जो अद्वैत हे तो कारण कार्य किसका होवे कारण कार्यका संबंध द्वैत विषे होता हे ॥ अरु प्रणामी होता हे अरु जिसविषे देस कालका अंत हे सो आत्मा अद्वैत हे॥ तिसविषे न कोउ देस हे न काल हे न कोउ वस्तु हे चिन्मात्रपद हे॥ हे राजा में जानताहों जो तुं जाग्रत होवेगा भ्रम तेरा नष्ट हो जाता हे ॥ जेसें वरफकी पूतली सूर्यकि किर्णासों क्षीण होजाती हे तेसें तेरा अज्ञान नष्ट हो जाता हे ॥ अज्ञानके नष्ट हुएतें तूं आत्माहि होवेगा ॥ तुं अपणे प्रत्यक चैतनस्वरूप विषे स्थित होहु ॥ अरु देख जो ब्रह्मा आदिक सर्व परमात्माका किंचन हे ॥ परमात्माहि अेसें होकरी स्थित भया हे ॥ अरु जो द्रष्टि पडता हे तिस सर्वका अपणा आप आत्मा हे ॥ जो जाग तो जाणे जागे विना नही जाणता ॥ राजोवाच ॥ हे भगवन् तुमारी कृपातें में जाग्याहों अरु जानताहों जो मेरा सरूप आत्मा हे अरु में निर्मल हों ॥ अब मेरा मुझकों नमस्कार हे एक मेंही हों मेरेतें इतर कछू नही ॥ अरु में आपकों जान्या हे ॥ इ०यो०नि०राजविश्रांतिवर्णनंनाम चतुःसप्ततितमःसर्गः॥७४॥ ॥ राजोवाच ॥ हे भगवन् तुम केसें कहते हो जो ब्रह्माका कारण कोउ नही ॥ आत्मा एसा ईश्वर हे जो अनंत हे अरु अच्युत अव्यक्त अरु अद्वैत हे ॥ परमाणुका विषय नही ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरु परम ब्रह्म हे सोइ ब्रह्माका कारण हे ॥ कुंभोवाच ॥ हे राजा तुंही कहता हे जो आत्मा अनंत हे ॥ जो अनंत हे तिसकों देश काल वस्तुका प्रछेद नही ॥ सर्व देश सर्व काल सर्व वस्तु पूर्ण हे ॥ सो कारण कार्य किसका होवे ॥ कारण तब होवे जब प्रथम द्वैत होवे सो आत्मा अद्वैत हे॥अरु कारण तिसकों कहते हे जो कार्यतें पूर्व होवे अरु पाछेभी उही होवे॥जेसें घटकें आदि मृत्तिका हे अंतभी मृत्तिका होती हे ॥ तिसकों कारण कहता हे ॥ सो आत्माविषे न आदि हे न अंत हे आत्मा अनंत हे ॥ अरु कारण तब होता हे जब परिणाम होता हे ॥ सो आत्मा अच्युत हे अपणे स्वरूपतें कदाचित् नही गिर्या अरु भोक्ताभी द्वैतविषे होता हे ॥ सो आत्मा अद्वैत हे भोग भोक्ता दोनों नही ॥ अरु आत्माविषे कर्मभी नही जो आत्मातें आदि कवन हे जिसकरी आत्मा सिद्धि होवे ॥ अरु किसीका कार्यभी नही ॥ काहेतें जो कार्य होता हे सो इंद्रियांका विषय होता हे ॥ सो आत्मा अव्यक्त हे ॥ अरु जो कार्य होता हे तिसका कारणभी होता हे ॥ सो आत्मा सर्वकी आदि हे तिसका कारण कवन होवे जो सर्वात्मा हे अरु स्वछ हे आकाशवत् निर्मल हे ॥ सो तेरा स्वरूप हे ॥ राजोवाच ॥ हे भगवन् बडा आश्चर्य हे में जाण्या हे जो आत्मा अद्वैत हे ॥ सो न किसीका कारण हे न कार्य हे अरु अनुभव रूप हे सो में हों अरु निर्मल हों विद्या अविद्याके कार्यतें रहित हों अरु निर्वाण पद हों ॥ अरु निर्विकल्प हों मेरेविषे फुरणा कोउ नही ॥ बहुरी केसा हों जो में नही अरु मेंही हों ॥ अेसा जो सर्वात्मा हों मेरा मुझकों नमस्कार हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे सिखरध्वज विश्रांति वर्णनंनाम पंचसप्ततितमःसर्गः ॥ ७५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी राजा सिखरध्वज कुंभमुनिकों प्रबोध हुआ अेसे वचन कहीकरी केवल निर्वाणपदविषे स्थित भया ॥ जब निर्विकल्प फुरणेतें रहित एक मुहूर्तपर्यंत स्थित रहा ॥ जेसें दीपक वायुतें रहित स्थित होता हे ॥ तब कुंभनें जगाय करी कहा हे राजन् तेरा समाधि साथ क्या हे अरु उत्थान साथ क्या हे॥ तुं तो केवल आत्ममात्र हे अरु में जानता हों जो तुं परम ज्ञानकरी शोभत भया हे ॥ जेसें डब्वेविषे रत्न होता हे॥ तिसका प्रकाश बाहिर द्रष्ट नही आता ॥ अरु जब डब्बेसों निकासी करी देखिये तब बडा प्रकाश भासता हे तेसें अविद्यारूपी डब्बेसों तुं निकस्या हे अरु परमज्ञान करीकें शोभत भया हे ॥ हे राजा तेरेविषे न कोउ क्षोभ हे न कोउ उपाधि हे संसारके राग दोषतें तुं रहित भया हे शांतरूप जीवन्मुक्त होकरी विचरु तेरे तांइं उपाधि कोउ न लगेगी ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब इस प्रकार कुंभमुनिनें कहा तब राजा शांतरूप होगया अरु कहा हे भगवन् जो कछु तुमनें आज्ञा करी सो सर्व भली प्रकार में जाण्या हे ॥ अब एक प्रश्न अवर हे तिसका उत्तर कृपाकरी कहो जो में दृढ स्थित होउं हे भगवन् आत्मा तो एक हे अरु सुद्ध हे केवल आकाशरूप हे चैतन्मात्र हे तिसविषे द्रष्टा दर्शन द्रश्य त्रिपुटी कहांतें उपजी हे सो कहो ॥ कुंभोवाच ॥ हे राजा जो कछू स्थावर जंगम संसार हे सो महाप्रलय पर्यंत हे ॥ जब महा प्रलय होती हे तब केवल आत्माही शेष रहता हे ॥ अरु स्वछ निर्मल होता हे ॥ तहां न तेज होता हे न अंधकार होना हे केवल अपणे आप सुभावविषे स्थित होता हे अरु जेता कछू आनंद हे तिसका अधिष्ठान आत्मा हे ॥ अरु सत असततें रहित हे सत कहियें जिसकों बुद्धि इदं करी कहते हे अरु असत कहियें जिसकों नही कहते हे तिस सत असततें रहित अरु सर्व लक्ष्मी करी संयुक्त हे ॥ जो अपणा सुभावमात्र हे जिसविषे उपाधि कोउ नही अरु सर्वदा प्रकाशवान हे अरु सर्वदा उदेरूप हे तिस परमात्माका यह संसार चमत्कार हे ॥ जेसें रत्नका चम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्कार लाट होती हे तेसें ब्रह्मका चमत्कार यह संसार हे तातें ब्रह्मरूप हे इतर कछू नही हुआ केवल ब्रह्मरूप हे अरु ब्रह्मतें इतर करीकें हे सो मिथ्याहि भ्रम जानणा जो कछू आकार भासते हे सो असत हे ॥ हे राजा जो सर्व आकार मिथ्या हे ॥ तो तेरी संवेदनभी मिथ्या हे आत्माविषे अहं त्वंका उत्थान कोउ नही केवल ज्ञान मात्र हें ॥ अरु केवल सतरूप हे अरु आनंदरूप हे ॥ अरु अविद्या तमतें रहित प्रकाशरूप हे ॥ अरु प्रमाणोंकरी नही जाणता जो इंद्रियांका विषय नही अरु मनकी चिंतवनातें रहित हे काहेतें जो सर्वका द्रष्टा हे ॥ अरु सर्वका अपणा आप अनुभवरूप हे हे राजा तिसविषे स्थित होहु ॥ बहुरी आत्मा केसा हे जो बडेतें बडा हे ॥ अरु सूक्ष्मतें सूक्ष्म हे ॥ अरु स्थूलतें स्थूल हे जिसविषे आकाशभी किसी उर अणुजेसा पाइता हे अरु ब्रह्मांडभी तिसविषे तृणसमान पाइते हे अरु अपणे आपकरी पूर्ण हे अरु अपणे आपकरी घुर्म हे ॥ अरु किंचितभी तिसतें उत्पत्ति नही भया ॥ अरु नाना प्रकार करीकें स्थित भया हे ॥ फुरणें करीकें जगत् भासता हे ॥ फुरणेकें निवर्त हुए केवल सुद्ध आत्मा हे ॥ राजोवाच ॥ हे भगवन् तुम कहते हौं जो संसार फुरणेमात्र हे अरु आत्मा सुद्ध शांतिरूप हे ॥ अरु निर्विकल्प हे तो तिसविषे संवेदन फुरणा कहांतें आया हे ॥ कुंभोवाच ॥ हे राजन् फुरणाभी आत्माका चमत्कार हे ॥ जेसें पवनविषे सपंद फुरणा शक्तीभी हे ॥ अरु निस्पंद ठहरणा शक्तिभी हे ॥ जब फुरता हे तब स्पर्श चलणा प्रगट होता हे जब ठहरी जाता हे तब प्रगट नही होता॥ तेसें संवेदन जब फुरता हे तब नाना प्रकार होते हे ॥ अरु जगत् भासता हे जब फुरणा मिट जाता हे तब केवल सुद्ध आत्मा भासता हे ॥ हे राजन् आत्म सत्ता मात्र हे अरु संसारभी सन्मात्र आत्माही हे जो सम्यक् दृष्टी करी देखियें तो आत्माही भासता हे अरु असम्यक् दृष्टि करीकें दुःखदायक जगत् भासता हे ॥ जिसकें मनविषे संसार भावना हे ॥ तिसकों दुःखदायक भासता हे ॥ अरु जिसके रिदेविषे आत्मभावना होती हे तिसकों आत्माही भासता हे ॥ अरु सुखरूप होता हें ॥ काहेतें जो आत्मा नाम अपणे आपका हे ॥ जिसनें जगत्कों अपणा आप जाण्या तिसकों दुःख कहां होवे हे राजन् यह संसार भावना मात्र हें ॥ जेसी भावना होती हे तेसेंहि भासता हें ॥ जिसकी भावना विषविषे अमृतकी होती हे तो विषभी अमृत हो जाती हे ॥ अरु जिसकी भावना अमृतविषे विषकी होती हे तब अमृतभी विष हो जाता हे ॥ काहेतें जो संसार भावनामात्र हे जेसी भावना दृढ करता हे यद्यपि आगें उह वस्तु न होवे तोभी हो जाती हे ॥ तातें संसार भावना मात्र मिथ्या हे ज्ञानवानकों दुःख कदाचित् नही देता ॥ अरु अज्ञानीकों सुख कदाचित् नही देता ॥ हे राजन अहंता अरु संवेदन चित्त अरु चैत यहभी आत्माकी संज्ञा हे जेसें आकाश कहियें शून्य कहियें नभ कहियें इह सर्व संज्ञा आकाशहिकी हे तेसें सर्व संज्ञा आत्माकी हे आत्मातें इतर कछू नही अहं त्वं सर्व आत्माके आश्रय हे ॥ जेसें भूषण स्वर्नके आश्रय होते हे ॥ परंतु स्वर्न प्रणमीकरी भूषण होता हे ॥ जो पूर्वरूपकों त्यागता हे आत्मा तेसेंभी नही केवल एकरस हे अरु अपणे आपविषे स्थित हे ॥ कदाचित् प्रणामकों नही प्राप्त भया ॥ यह संवेदन आत्माका चमत्कार हे ॥ अरु सत असततें आत्मा पर हे ॥ जेती कछू दृश्य हे सो आत्माविषे नही चित्त करीकें रची हे इसीतें पर हे ॥ हे राजन् सो कारण कार्य किसका होवे ॥ कारण कार्य तब होता हे जब दृश्य होती हे सो आत्मा किसीका विषय नही कारण कार्य किसीका होवे ॥ अरु विश्वकी आदिभी आत्मा हे अंतभी आत्मा हे अरु मध्यविषेभी आत्माही हे ॥ जो कछू अवर भासता हे सो भममात्र हे ॥ जेसें आकाशविषे घर मंडल पुर दृष्ट आते हे तिसकी आदिभी आकाश हे अंतभी आकाश हे अरु म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ध्यभी आकाश हे ॥ जो घर मंडल पुर भासते सो मिथ्या हे ॥ जेसें अग्नि नाना प्रकार दृष्ट आती हे सो मिथ्या आकार हे एक अग्निही हे ॥ तेसें सर्वकी आदि मध अंत एक आत्माही सार हे ॥ हे राजन् जेसें जलविषेभी देशकाल होता हे ॥ काहेतें जो दृश्य हे सो इंद्रियांका विषय हे ॥ यह तरंग अमके स्थानतें उठा हे अरु अमके स्थानविषे जाय लीन भया ॥ तो स्थान देश हुआ अरु उपजीकरी एताकाल रहा सो काल हुआ ॥ अरु जिसकों इंद्रियविषे करी न सकही ॥ तिसविषे देशकाल केसें होवे ॥ राजोवाच ॥ हे भगवन् में भलीप्रकार जाण्या हे जो आत्मा चिन्मात्र हे ॥ ज्ञानइंद्रियां कर्मइंद्रियांतें पर हे ॥ अरु देशकाल इंद्रियां मन करी जाणता हे ॥ जो अमका देश हे अमका काल हे ॥ जहां इंद्रियां अरु मनही न होवे तहां देशकाल कहां हे ॥ कुंभोवाच ॥ हे राजन् जो तेनें एसें जाण्या तो तुं जाग्या हे ॥ आत्माविषे देशकाल कोउ नही इह मन इंद्रियां करी जाणता हैं ॥ जो यह देश हे अरु यह काल हे ॥ जो इनतें रहित होकरी देखे तो आत्माही भासे ॥ अरु जो इन सहित देखे तो संसारहि दृष्ट आवेगा ॥ हे राजन इनतें रहित होकरी देख जो संसार तेरेविषे कछू न रहे ॥ जो अमका प्रश्न किया ॥ अब अमका प्रश्न करों ॥ संसार तबलग होता हे जबलग इनका संयोग अपणे साथ होता हे ॥ हे राजन् ब्रह्मकरी ब्रह्मकों देख अरु पूरनकों देख जो तुंभी पूरन होवेही ॥ जब पूर्ण होवेगा तब सर्व उर आपकों जाणेगा ॥ अरु सर्व संज्ञा तेरीहि होवेगी ॥ अरु निर्वाच पदकों प्राप्त होवेगा जहां इंद्रियांकी गमनहि केवल आकाशरूप हे जेसें आकाश अपणी शून्यताकरी पूर्ण हे ॥ तेसें तुं अपणे चैतन सुभावकरी आप पूर्ण होवेगा ॥ जब मन सहित षट् इंद्रियांतें रहित होकरी देखेगा अपणे आपकों बहुरी इनसहित देखेगा तोभी तेरे तांइं चैतन आत्माहि भासेगा ॥ संसारका शब्द अर्थ तेरे रिदेतें उठि जावेगा ॥ शब्द यह जो संसार हे अरु तिसकों सत जानणा यह अर्थ हे ॥ सो भावना निवृत्त हों जावेगी केवल आकाशरूप आत्माहि भासेगा ॥ अरु संसार संवेदन मात्र हे संवेदन कहियें चित्तशक्तिका चमत्कार हे यही चित्तशक्ति ब्रह्मा होकरी स्थित भइ हे अरु संसारकों देखणे लागी हे जब अंतर्मुख होती हे तब आत्माहि दृष्ट आता हे आत्मा सदा एकरस हे ॥ जब बहिर्मुख होती हे तब संसार दृष्ट आता हे जेसी यह भावना करता हे तेसेंहि आगें दृष्ट आता हे ॥ जब संसारकी भावना होती हे तब संसारही भासता हे ॥ जब आत्माकी भावना होती हे तब आत्माही भासता हे आत्मा सदा एकरस हे अरु असंसारी हे ॥ तातें हे राजन् तुं आत्माकी भावना करु जो तेरेतांइं आत्माही भासे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे सिखरध्वज बोधनं नाम षट्सप्ततितमः सर्गः ॥ ७६ ॥ ॥७॥ ॥७॥

॥ कुंभोवाच ॥ हे राजन् यह संसार जो तेरेतांइं भासता हे सो आत्माविषे नही केवल सुद्ध आत्माविषे जो अहं उत्थान हे सोइ संसार हे सो अहंका चमत्कार न सत हे न असत हे न अंतर न बाहिर हे॥न शून्य हे न अशून्य हे॥केवल अपणे आपविषे स्थित हे॥अरु संसारका प्रध्वंसाभावभी नही प्रध्वंसाभाव कहिये जो पहिले होवे पाछें नाश हो जावे ॥ सो संसारका उदे अरु अस्त होणा आत्माविषे नही केवल अपणे आपविषे स्थित हे तिसतें इतर कछू नही ॥ यह कहणाभी आत्मा विषे नही जो केवल अपणे आपविषे सुभाविक स्थित हे तिसविषे वाणीकी गम नही ॥ वाणी तिसकों कहते हे जहां दुसरा होता हे ॥ जहां दुसरा न होवे तहां वाणी क्या कहे ॥ यह कहणाभी तेरे उपदेश निमित्त कहा हे ॥ आत्माविषे किसी शब्दकी प्रवृत्ति नही ॥ हे राजा अेसा आत्माका कारण कार्य किसका होवे ॥ आत्मा सुद्ध हे निर्विकार हे अरु प्रमाणोतें रहित हे ॥ जो किसी लछनकरी प्रमाण किया नही जाता ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सो आकार होकरी स्थित भया हे अरु शांतरूप हे ॥ हे राजा अेसा आत्मा हे कारण कार्य किसका होवै कारण कार्य तब होता हे जब प्रथम प्रणामकों प्राप्त होता हे ॥ अरु क्षोभ कों प्राप्त होता हे सो आत्मा शांतरूप हे ॥ अरु कारण तब होवे जब क्रिया करीकें कार्यकों उत्पत्ति करे सो आत्मा अक्रिय हे क्रियातें रहित हे ॥ अरु कारणकों कार्यतें जाणता हे सो आत्मा चिन्हतें रहित हे अरु प्रमाणोंका विषे नही तातें कारण कार्य आत्मा किसीका नही ॥ अरु आत्माकों कारण कार्य मानणा मेरे तांइं आश्चर्य आता हे ॥ हे राजन् जो वस्तु उपजती हे सो नष्टभी होती हे अरु जो नष्ट होती हे सो उपजतीभी हे ॥ सो आत्मा सर्वकि आदि हे अरु अजन्मा हे अरु निर्विकार हे ॥ तिसविषे स्थित होउ जो तेरा संसार निवृत्त हो जावे ॥ यह संसार अज्ञानकरीकें भासता हे ॥ जब तुं स्वरूपविषे स्थित होकरी देखेगा तब संसार न भासेगा अरु अेसेंभी न भासेगा जो संसार आगें था अब निवृत्त हुआ हे ॥ एकरस आत्माही भासेगा केवल शून्य आकाश हो जावेगा शून्य कहियें संसारतें रहित हो जावेगा ॥ स्वरूप चैतन नाना करीकेंभी उही हे अरु एकभी उही हे ॥ शून्य हे अरु शून्यतें रहित हे ॥ द्वैतरूपभी उही हे अद्वैतरूपभी उही हे अेसा भासेगा ॥ ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे सिखरध्वज प्रथमबोध नाम सप्तसप्ततितमः सर्गः ॥ ७७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ कुंभोवाच ॥ हे राजा जो कछु देखता हे सो चैतन घन हे तिसविषे अहं त्वं सब्द कोउ नही ॥ अरु अहं त्वं सब्द प्रमाद करी होते हे ॥ जब आत्माविषें स्थित होकरी देखगो तब आत्मातें इतर कछू न भासेगा ॥ तो अहं त्वं सब्द कहां भासे हे राजन् यह नाना प्रकारकि संज्ञा चित्तनें कलपी हे ॥ जब चित्ततें रहित होवेगा तब नाना अरु एक संज्ञा कोउ न रहेगी हे राजन् सर्व ब्रह्म हे यह वाक्य वेदका सार हे ॥ जब इस वाक्यविषे दृढ भावना बुद्धि होवेगा तब एकरस आत्माहि द्रष्ट आवेगा ॥ अरु चित्त नष्ट हो जावेगा जब चित्त नष्ट हुआ तब केवल महा सुद्ध आकासकी न्यांइं स्थित होवेगा ॥ निर्दुःख पदकों प्राप्त होवेगा जो पद सर्वकी आदि हे ॥ अरु सर्वदा मुक्तिरूप हे ॥ राजोवाच ॥ हे भगवन् तुम कहा जो चित्तके नष्ट हुएतें दुःख कोउ न रहेगा ॥ सो चित्त नष्टका उपाय तुम कहाहे ॥ परंतु में दृढ करी नही समझा ॥ ताते मेरे दृढ होणेके निमित्त कृपा करिकें बहुरी कहो जो चित्त नष्ट केसें होता हे ॥ कुंभोवाच ॥ हे राजन् यह चित्त न किसी कालका हे अरु न किसीकों हे न यह देखता हे ॥ चित्त हेही नही तो में तेरे तांइ क्या कहों ॥ अरु जो चित्त तुझकों द्रष्ट आता हे तो तुं आत्माहि जाण आत्मातें इतर वस्तु कछू नही हे राजन् महा सर्गके आदि अरु अंत सृष्टि कोउ नही केवल आत्मा हे ॥ अरु यह कहणाभी आत्माविषे नही में तेरे जतावणेके निमित्त कही हे ॥ अरु मध्य जो कछु द्रष्ट आता हे सो अज्ञानीकी द्रष्टिविषे हे आत्माविषे सृष्टि कोउ नही आत्मा किसीका उपादान कारण अरु निमित्त कारण नही ॥ काहेतें जो अच्युत हे प्रणामकों नही प्राप्त भया ॥ अरु उपादानभी परिणाम करी होता हे ॥ आत्मा सुद्ध हे अरु निराकार हे आकासरूप हे सो कारण कार्य किसका होवे ॥ अरु चित्तभी वासनारूप हे वासना तब होती हे जब वास होती हे ॥ वास कहियें वासना करणे जोग ॥ जो आगें सृष्टिभी नही तो वासना किसकी फुरे ॥ अरु चित्तविषे संसारकी स्थिति केसें होवे ॥ तातें चित्त कछू नही ॥ यह विश्व आत्माका चमत्कार हे अरु सृष्टि आत्माविषे कोउ नही निरालंब केवल अपणे आपविषे स्थित हे ॥ हे राजन् संसारभी नही भया अरु चित्तभी नही भया तो अहं त्वं आदिक शब्दभी आत्माविषे कोउ नही ॥ यह शब्द तब होते हे जब चित्त होता हे अरु चित्त तबलग हे जबलग वासना हे जब निर्वासनिक पदकों प्राप्त भया ॥ तब कल्पना कोउ नही रहती ॥ हे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजन् यह संसार महाप्रलयविषे नष्ट हो जावेगा ॥ सत असत संसार कछू न रहेगा एक आत्माहि सेष रहेगा जो निराकार अरु शुद्ध हे ॥ जबलग महाप्रलय नही भया तबलग संसार हे ॥ सो महाप्रलय क्या हे श्रवण करु ॥ एक क्षण आत्माका साक्षात्कार होणा तिसकरी स्रष्टिका सेषभी न रहेगा ॥ सो ज्ञानहि महाप्रलय हे ॥ अरु अब जो दृष्टि आता हे सो मिथ्या हे ॥ यह क्रियाभी मिथ्या हे अरु इसका भान होणाभी मिथ्या हे ॥ जेसें सुपनेकी क्रियाभी मिथ्या हे तिसका भान होणाभी मिथ्या हे ॥ तेसें जाग्रत संसार सुपन मात्र हे कारण बिना हि भासता हे ॥ जो कारणविना हे सो मिथ्या हे ॥ इसका कारण अज्ञानहि हे जो अपणा न जानणा जब अपकों जाण्या तब आपणा आपहि भासेगा ॥ जेसें सुपनेविषे अपणे न जानणेंकरी भिन्न आकार भासते हे जब जाग्या तब अपणा आपहि जाणता हे जो मेंहि था ॥ हे राजन् मेरे तांइ तो एक आत्माहि दृष्ट आता हे ॥ आत्माहि हे,आत्मातें इतर संसार कोउ नही ॥ अरु इस संसारकों स्थित मानणा मूर्खता हे सदा चल रूप हे ॥ वेदशास्त्र अरु लोकभी कहता हे जो संसार मिथ्या हे अरु आपभी जाणता हे जो नष्ट हो जाता हे द्रष्टि आता हे तिसविषे आस्था करणी मूर्खता हे ॥ आत्माविषे संसार नाना अनाना कोउ नही आत्मा सर्वदा अपणे आपविषे स्थित हे॥ सुद्ध हे अरु अच्युत ज्यों कात्यों हे॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे शिखरध्वज बोधनाम अंष्टसप्ततितमः सर्गः ॥ ७८ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ सिखरध्वजोवाच ॥ हे भगवन् अब मेरा मोह नष्ट भया हे ॥ अरु अपणा आप मैंनें जाण्या हे तुमारी कृपातें मेरा संसार निवृत्त भया हे सोक समुद्रकों अब तर्‍याहों अरु सांत पदकों प्राप्त भयाहों ॥ अहं त्वं शब्द मेरेविषे कोउ नही निर्वाण पदकों प्राप्त भया हों ॥ अच्युत हों चिन्मात्र हों केवल हों अरु शून्य हों ॥ कुंभोवाच ॥ हे राजन् आत्मा सुद्ध आकासकी न्यांइं निर्मल हे ॥ आकासतेंभी सो अति निर्मल हे तिसविषे अहं मल हे सो अहं मोहतें उपजी हे मोह कहियें अविचार जब विचार होता हे तब अहंकों नही पाइता ॥ यह विश्व संवेदनविषे हे संवेदन सर्वके आदि होकरी स्थित भइ हे जब संवेदन अंतमुंख होती हे तब सर्व विश्व लीन होजाती हे ॥ संवेदनहि विषे बंध अरु मुक्ति हे ॥ जब बहिर्मुख होती हे तब बंध हे जब अंतर्मुख होती हे तब मोक्ष हे ॥ जिसनें मन अरु इंद्रियांतें रहित होकरी अपणा आप देख्या हे तिसकों ज्योंकात्यों द्रष्ट आता हे ॥ अरु जो मोह संयुक्त देखता हे तिसकों विपर्यय भासता हे ॥ जेसें सम्यक द्रष्टिकरिके भूषणविषे स्वर्न भासता हे ॥ जब भूषणके आकार जाते हे तबभी स्वर्नही हे अरु मूर्खकों सोनेविषे भूषण द्रष्टि आते हे चिरकालके अभ्यास करिकें जो बुद्धि इनविषे फुरती हे तोभी प्रारब्धके वेग पर्यंत चेष्टा होती हे ॥ तब चेष्टाविषेभी आत्माहि द्रष्टि आता हे ॥ तातें केवल आत्माहिका किंचन होता हे ॥ जेसें सोनेविषे भूषण अरु आकासविषे नीलता अरु वायुविषे स्पंद हे ॥ तेसें आत्माविषे स्रष्टि हे ॥ जेसें आकासविषे नीलता देखणेमात्र हे वास्तव कछू नही ॥ तेसें आत्माविषे स्रष्टि वास्तव कछू नही भांतमात्रहि हे ॥ जब भांति निवृत्त होवेगी ॥ तब जगत्का शब्द अर्थ सर्व उरतें सांत होवेगा अरु शब्द अर्थकी भावनातें जो चेष्टा होती हे तिसतें जब अभिलाष निवृत्त होजाती हे तब दुःख कोउ नही होती इसीकों मुनीश्वर निर्वाण कहते हे ॥ जब ऐसा निश्चय निर्वाण पदका हुआ तब सांतरूप शून्य पदकों पायकरी स्थित होता हे ॥ हे राजन् अहंका उत्थान होणा यही बंधन हे अरु अहंका निर्वाण होणा यहि मुक्ति हे ॥ अरु अहंके होणेकरी संसार दुःख हे जबलग अहंका उत्थान हें तबलग संसार हे ॥ अरु जबलग संसार हे तबलग अहंका उत्थान हे ॥ जब संसारकी सत्ता जाती रहे तब अहंफुर्णाभी नष्ट हो जावेगा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब फुर्णा नष्ट भया तब अहंभी नष्ट होजावेगा ॥ जब अहं नष्ट भया तब केवल सुद्ध आत्माहि शेष रहेगा अरु अनामय एकहि एक निर्दुःखहि भान होवेगा ॥ अहं ब्रह्मका उत्थान भी सांत होजावेगा अरु चैतन मात्रहि रहेगा ॥ हे राजन् जिसकों सर्व ब्रह्मकी बुद्धि भइ हे तिसकों संसारकी बुद्धि नही ॥ अरु जिसकों संसार बुद्धि हे तिसकों ब्रह्म बुद्धि नही ॥ जेसी जेसी भावना दृढ होती हे तेसाहि आगें भासता हे ॥ जिसकों ब्रह्मभावना दृढ होती हे सो ब्रह्मरूप हो जाता हे ॥ अरु जिसकों जगत्की भावना दृढ होती हे तिसकों जगत् भासता हे ॥ हे राजन् तुं अब जाग्या हे अरु ब्रह्मस्वरूप हुआ हे जो सुद्ध निर्मल हे अरु प्रत्यक हे जो किसी शब्द अरु लक्षणका विषय नही अरु इंद्रियांका विषय नही ॥ हे राजन् ऐसा आत्मा कारण कार्य जिसका होवे जो केवल अद्वैत हे अरु विश्व आत्माका चमत्कार हे जेसें समुद्रविषे नाना प्रकारके तरंग पवन करी उपजते हे तोभी समुद्रतें इतर कछू नही ॥ तेसें आत्माविषे नाना प्रकारकी विश्व संवेदन फुरणे करिकें उपजती हे ॥ तोभी आत्मातें इतर कछू नही फुरणे मात्र हे ॥ जेसें थंभेविषे मनोराज करी कोउ पुरुष पूतलियां कल्पता हे ॥ अरु नाना प्रकारकी चेष्टा करता हे ॥ इनकी चेष्टा तवलग हे जबलग संकल्प हे ॥ जब संकल्प निवृत्त हुआ तब शून्य थंभाहि रहता हे ॥ जेसा आगेंभी शून्य था अरु तिसकी संवेदन विषे सृष्टि थी तेसें यह संसार संकल्प मात्र हे जब संकल्प अंतर्मुख भया तब संसारकी सत्ता जाती रहती हे ॥ हे राजन् संसार सत्ता जाती तब हे जो आगेंहि असत हे ॥ अरु जो वस्तु सत होती हे तिसका नाश कदाचित् नही होता ॥ तातें केवल संवेदन कल्पी हे ॥ जेसें एक सिलाविषे पुरुष पूतलियां कल्पता हे ॥ तो सिलाविषे तो पूतलि कोउ नही ज्योंकी त्यों सिलाही हे ॥ तेसें फुरणे करीकें आकार दृष्ट आतें हे ॥ जब चित्त फुरणेतें रहित होवेगा तब आत्माकों अपणा आप जाणेगा ॥ अरु अशब्द पदकों प्राप्त होवेगा ॥ जो शांतिपद हे अरु शुद्ध आकाश रूप हे ॥ हे राजन् सर्व शब्द अरु सर्व अर्थकी अभावना यह ब्रह्म अर्थ हे जहां कोउ कल्पना नही जब सम्यक् दृष्टि होती हे ॥ तब सेष आत्माहि भासता हे ॥ अरु यह भावनाभी उठी जाती हे ॥ जो यह संसार हे यह ब्रह्म हे ॥ केवल ज्ञेय मात्रहि होय रहता हे ॥ केसा ज्ञेय मात्र हे जो सिलाकी न्यांइं ज्ञान हे ॥ ऐसा शेष रहता हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे सिखरध्वजबोध वर्णनंनाम नवसप्ततितमःसर्गः ॥ ७९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ राजोवाच ॥ हे भगवन् जेसें तुम कहते हो सो सत्य हे ॥ अरु में ऐसें जाणता हौं जो संसार आत्माका कार्य हे अरु आत्मा कारण हे ॥ जो आत्माका कार्य हुआ तो आत्मस्वरूप हुआ आत्मातें इतर नही ॥ कुंभोवाच ॥ हे राजन् आत्मा चैतन मात्र हे कारण कार्य किसीका नही ॥ जो आत्मा अप्रत्यक हे अरु अक्रिय हे अच्युत हे निरस हे ॥ जो अशब्द पद हे सो कारण कार्य किसका होवे ॥ अरु कारणकों कार्यद्वारा जाणता हे ॥ अरु आत्मा किसी प्रमाणका विषय नही जो अप्रत्यक हे अरूप हे ॥ अरु कारण तब होता हे जो क्रिया होती हे ॥ न किसीका कारण कार्य हे न कर्म हे ॥ केवल ज्योंका त्यों अपणें आपविषे स्थित हे ॥ चैतनमात्र हे सिवरूप हे सुद्ध हे यह विश्वभी चैतनमात्र हे ॥ जेसें आकाशविषे आकाश स्थित हे तेसें आत्माविषे विश्व आत्मरूप करी स्थित हे ॥ ऐसी विश्व चैतनमात्र हे तिसविषे असम्यक्दर्शी अज्ञान करी नाना प्रकार कल्पता हे ॥ अज्ञान कहियें वस्तुका न जानणा जो वस्तु परमात्मा हे तिसके प्रमाद करीकें वासनारूप चित्तसों विश्वकों कल्पता हे ॥ सो विश्व शब्दमात्र हे अर्थ कछू नही ॥ जेसें दुसरा चंद्रमा आकाशविषे जेसें तरंग समुद्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषे जेसें जल मृगतृष्णाविषे जेसें वैताल पछावेविषे ॥ तेसें असम्यक दृष्टि आत्माविषें विश्व कल्पता हे अरु सम्यक दर्शी ऐसें जाणता है जो आत्मा सुद्ध हे अजन्मा हे अविनासी हे
परम निरंजन हे ॥ हे राजन् जब तुं सम्यक दृष्टि करी देखेगा तब संसारका प्रध्वंसाभावभी न देखेगा काहेतें जो चित्तका कल्प्या हुआ हे ॥ अरु चित्त अज्ञान करीकें उपजा हे स्वरूप
विषे न चित्त हे न अज्ञान हे न संसार हे केवल अद्वैत मात्र हे ॥ तहां एक कहां अरु द्वैत कहां केवल मात्र पद हे जब अज्ञान नष्ट हुआ तब अहं त्वं चित्त फुरणा सब नष्ट हो जावे
गा ॥ बहुरी भ्रम दृष्ट न आवेगा ॥ हे राजन् आत्मातें इतर जो कछू भासता हे सो अज्ञान करीकें हे ॥ विचार कियेतें नही रहता ॥ राजोवाच ॥ हे भगवन् अज्ञान क्या हे अरु नास
केसें होवे सो कहो ॥ कुंभोवाच ॥ हे राजन् एक ज्ञान हे अरु एक अज्ञान हे ज्ञान यह जो पदार्थकों प्रत्यक्ष जानणा ॥ अरु अज्ञान यह जो पदार्थकों न जानणा ॥ अरु एक ज्ञा
नभी अज्ञान हे सो श्रवण करु ॥ मृगतृष्णाका जल देखीकरी आस्था करणी जो हे अरु जेवरीविषे सर्प सिपीविषे रुपा देखणा अरु तिसकों सत्य जानणा ॥ यह ज्ञानभी अज्ञान हे
काहेतें जो सम्यक दर्शी होकरी नही देखता ॥ यह दृष्टांत हे अरु द्राष्टांत यह हे जो सुद्ध आत्मा निराकार अच्युत हे॥ तिसविषे में हों अरु मेरा अमका वर्णाश्रम हे ॥ अरु नाना प्रका
र विश्व जानणी यह ज्ञानभी अज्ञान हे अरु मूर्खता हे ॥ हे राजन न कोउ जन्मता हे न कोउ मृत होता हे ॥ ज्योंका त्यों आत्माही स्थित हे ॥ तिसविषे जन्म मरण आदिक विकार
देखणा अेसा जो ज्ञान हे सो अज्ञान हे ॥ हे राजन जेसें कोउ ब्राह्मण होवे अरु उंची बाहुकरी कहे में शूद्र हों मेरेतांइं वेदका अधिकार नही अरु जेसें कोउ पुरुष कहे में मुआ हों
तिसकों में जाणता हों ॥ तेसें आपकों कछू वर्णाश्रमका अभिमान लेकरी कहणा सो मूर्खता हे ॥ काहेतें जो असम्यक दर्शन हे जब ज्योंका त्यों जाणे तब दुःखी न होवे हे राजन् अे
सा ज्ञान जो सम्यक दर्शन करी नष्ट हो जावें सो अज्ञान हे ॥ जेसें सूर्यकी किर्णाविषे जल बुद्धि होती हे ॥ किरणके ज्ञानतें जलका ज्ञान नष्ट हो जाता हे सो जलका जानणा अज्ञा
न था ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प जानणा सो सर्पका ज्ञान जेवरीके ज्ञानतें नष्ट हो जाता हे यह अज्ञान हे सम्यक दर्शन करीकें नष्ट होता हे ॥ जब अेसा सम्यक दर्शी होवेगा तब अ
ध्यात्मक ताप निवृत्त हो जावेगा अरु सुद्ध होवेगा ॥ जो आत्मा हे अज हे अरु शांतरूप हे ॥ सत असत सर्व आत्मा हे तिसतें इतर कछू नही ॥ अरु प्रकाशरूप हे सो अेसा तूं हे ॥
हे राजन् अज्ञानभी अवर कोउ नही इस चित्तके उदे होणेका नाम अज्ञान हे अज्ञानका कारण चित्त हे ॥ अरु जो पदार्थ चित्तकरीकें उदे हुआ हे सो नष्टभी चित्तकरीकें होता हे ॥
तातें तुं चित्तकरीकें चित्तकों नास कर ॥ जेसें अग्नी पवन करीकें उपजती हे अरु पवनही करी शांत होती हे ॥ तेसें चित्तकरी चित्तकों नष्ट करु ॥ हे राजन् न तुं हे न में हों न इंद्रिय
हे न संसार हे न यह जगत् हे ॥ केवल सुद्ध आत्मा हे॥ हे राजन जो चित्तहि नही तो चित्तका कार्य विश्व कहां होवे॥यह अज्ञानीकों भासता हे जो चित्त हे अरु विश्व हे केवल अपणे
आपविषे आत्मा स्थित हे ॥ हे राजन् चित्तका उदे होणा अज्ञानतें हे ॥ जब अज्ञान नष्ट हुआ तब चित्त अरु अहं त्वं सर्व नष्ट हो जातें हे ॥ हे राजन् तुं सुद्ध आत्मा हे एक हे अरु
प्रकाशरूप हे अच्युत हे अरु निरंतर हे अरु देह इंद्रियादिक रूप होकरीभी तुंहि स्थित भया हे इछा अनिछाभी तुंही हे जेसें चंद्रमाकी किर्णा चंद्रमातें भिन्न नही तेसें तुं हे अरु निर्वि
कल्प हे कछू फुरणा तेरेविषे नही तुं केवल ज्योंका त्यों स्थित हे ॥ इतिश्री यो० नि०प्र० परमार्थ उपदेशो नाम अशीतितमः सर्गः ॥ ८० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अेसें कुंभमुनिनें कहा तब सिखरध्वज श्रवण करीकें शांतिकों प्राप्त भया नेत्र मुंदिकें सब अंगकी चेष्टातें रहित हुआ ॥ जेसें सिला उपर पुतली लिखी होवे तेसे स्थित हुआ ॥ एक मुहूर्त पर्यंत निर्विकल्प स्थित रहा अरु बहुरी उठ्या ॥ तब कुंभनें कहा हे राजन् आत्मा जो निर्विकल्प हे तिस निर्विकल्प सिलाविषे तेनें सेन किया ॥ अरु ज्ञेय जो जानणे जोग हे सो तेनें जाण्या हे क्यों ॥अब अज्ञान तेरा नष्ट भया अथवा नही भया॥अरु शांतिकों प्राप्त भया अथवा नही भया सो कहु ॥ राजोवाच ॥ हे भगवन् तुमारी कृपातें में उत्तम पदकों प्राप्त भया हों॥ हे भगवन तत्ववेत्ताके संगतें जो अमृत पावता हे सो क्षिरसमुद्रतेंभी नही पाइता॥अरु देवताविषेभी नही पावता ॥ तुमारी कृपातें में अेसें अमृतकों पाया हे॥जिसका आदिअंत कोउ नही अनंत हे अरु अमृतसार हे॥ अब मेरे दुःख सर्व नष्ट होगये हे अब में जाण्या हों अरु अपणे आपकों जाण्या हे॥मैं आत्मा हों मेरे साथ चित्त कोउ नही में केवल अपणे आपविषे स्थित हों॥ अब इछा मेरे तांइ कोउ नही अपणे सुभावकों पाया हे ॥अरु सर्वके आदिपदकों प्राप्त भया हों॥जिसविषे क्षोभ कोउ नही अेसें निर्विकल्प पदकों प्राप्त हुआ हों॥ हे भगवन अेसा मेरा अपणा आप हे जिसकरी सर्व प्रकाशते हे ॥ तिसके जाणेबिना कोटि जन्म पायेथे अब दुःख मेरे नाश भय हे ॥तुमारी कृपातें एक क्षणविषे जाण्या हे ॥ आगें श्रवणभी करता सो कारण कवन था जो आगें न जाण्या अरु अब जाण्या हे॥ कुंभोवाच॥ हे राजन् तेरे कषाय अब परिपक्व हुए हे॥जेसें फल परिपक्व होता हे॥ तब जतनविना वृछतें गिर पडता हे॥ तेसें तेरा अंतःकरण सुद्ध भया हे ॥ अब अज्ञान तेरा नष्ट हो गया हे ॥ जब अंतःकरण मलिन होता है तब संतके वचन नही लागते॥ अरु जब अंतःकरण सुद्ध होता हे तब संतके वचन लागते हे ॥ जेसें कोमल भिहकों बाण लागे तब सीघ्रही वेध्या जाता हे ॥ तेसें सुद्ध अंतःकरणविषे सीघ्रही उपदेश प्रवेस करता हे ॥ हे राजन् अब भोगकी तेरी वासना नष्ट भइ हे ॥ अरु स्वरूप जाननेकी तेरी इछा भइ हे तातें तूं जाग्या हे ॥ हे राजन में उपदेस तब किया हे जो तेरा अंतःकरण सुद्ध भया हे ॥ अरु प्रतिबिंबभी तहां पडता हे जहां निर्मल ठोर होता हे ॥ जेसें स्वेत वस्त्र ऊपर केसरका रंग सीघ्रही चडि जाता हे ॥ अरु रंगभी उज्वल होता हे ॥ तेसें सुद्ध अंतःकरणविषे संतके वचन सीघ्रही प्रवेस करते हे अरु सोभा पावते हे ॥ हे राजन् जबलग अंतःकरण मलिन होता हे भावे जेता उपदेश करिये तोउ स्थित नही होता ॥ जब भोगतें वैराग होता हे तब वासना कोउ नही रहती ॥ केवल आत्मपदकी इछा होती हे ॥ तब स्वरूपका साक्षात्कार होता हे ॥ हे राजन् अब तेरा सर्व त्याग सिद्धि हुए हे ॥ अरु अज्ञान नष्ट भया हे जो अवर उपाधि कोउ नही चित्तहि बडी उपाधि हे ॥ जब चित्त नष्ट हुआ तब दुःख कोउ नही रहता अब तुं सुखेन विचरु ॥ तुझकों दुःख कोउ नही शोक अरु भय कोउ नही ॥ तुं शांतिपदकों प्राप्त भया हे ॥ राजोवाच ॥ हे भगवन अज्ञानीकों चित्तका संबंध हे ॥ अरु ज्ञानवानकों चित्तका संबंध नही होता ॥ जो स्वरूपविषे स्थित हे तो चित्त विना जीवन्मुक्ति क्रियाविषे केसें वर्त्तता हे ॥ कुंभोवाच ॥ हे राजन् तुं सत कहता हे जो ज्ञानीकों चित्तका संबंध नही जेसें पथरकी सिलाविषे अंगुरी नही होती ॥ तेसें ज्ञानीकों चित्तका संबंध नही होता ॥ हे राजन् चित्त वासनारूप हे सो वासना जन्म मरणका कारण हे॥ अरु जीवन्मुक्तकी वासना नही रहती ॥ ज्ञानवानका चित्त सत्य पदकों प्राप्त हे ॥ अरु अज्ञानी चित्तविषे बंधमान हे तिस करिकें जन्मताभी हे अरु मरताभी हे ॥ अरु जो ज्ञानीका चित्त शांतिविषे स्थित हे तिसकों न बंध हे न मोक्ष हे ॥ प्रारब्ध अनुसार भोग भोगता हे अरु सर्वात्माहि देखता हे ॥ यद्यपि इंद्रियां करी चेष्टाभी करता हे तोभी सर्व ब्रह्महि देखता हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरु क्रिया करणेविषे अभिमानतें रहित होता हे जो में करताहों अरु भोगताहों अरु अज्ञानी आपकों करता मानता हे॥ तिसकों संसार सत्य भासता हे सत्य जाणीकरी संकल्प विकल्प करता हे अरु ज्ञानवानकों संसारकी सत्यता नही भासती ॥ आपकों अकर्ता अभोक्ता देखता हे ॥ अरु अभिलाषतें रहित चेष्टा करता हे ॥ हे राजन संसारकों सत्य जानणा अरु अपणे विषे क्रिया देखणी तबलग होती हे जबलग चित्तका संबंध होता हे ॥ जब चित्तहि नष्ट होगया तब संसार अरु फुरणा कहां रहे ॥ हे राजन अब चित्तका तेंनें त्याग किया हे ॥ तातें सर्व त्यागी भया हे अरु आगें सर्व त्याग न था किया जो अज्ञान नष्ट न था भया ॥ अब अहंभाव तेरा दूर भया हे ॥ जो अज्ञानका कार्य थां ॥ जब अज्ञान नष्ट भया तब अहंभाव न रहा ॥ अहंके त्याग करणेतें सर्व त्याग सिद्धि हुआ ॥ अरु आगें तेंनें राजका त्याग कियाथा सो राजविषे तेरा कछू न था ॥ बहुरी तमका त्याग किया बहुरी बनतें आदि सर्व सामग्री का त्याग किया ॥ अब तिसका त्याग किया जो त्यागणे जोग अहंभाव हे ॥ तातें सर्व त्याग भया अरु जो कछु जानणे जोग हे सो जाण्या हे अरु सांतपदकों प्राप्त भया हे ॥ हे राज न तुं आत्मा हे सर्व दुःखतें रहित हे ॥ जेसें मंदराचल पर्वततें रहित क्षीरसमुद्र सांतपदकों प्राप्त भया हे ॥ तेसें तुं अज्ञानतें रहित सांतपदकों प्राप्त भया हे ॥ अब तुं जाग्या हे अरु चित्त का त्याग किया हे तातें सर्व आत्मा अद्वैत भया हे ॥ हे राजन् जब दो अक्षर होते हे तब तिनकी संज्ञा नाना प्रकार होती हे जो अमृत विष अरु सुख दुःख अरु धर्म अधर्म यह होते हे जब एकाएकी अक्षर होता हे तब सर्वका आत्मा हे ॥ तेसें हुसरा अज्ञान नष्ट भया हे ॥ अरु सत्य पदकों प्राप्त भया हे अरु सुद्ध निर्मल हे ॥ हे राजन् जो ज्ञानवान हे सम्यक दृष्टी करिके तिस चित्तका त्याग किया हे ॥ बहुरी तिसकों दुःख कोउ नही होता ॥ सो तुं तिस पदकों प्राप्त भया हे जिसविषे दुःख कोउ नही ॥ अरु तिसपदकों प्राप्त भया हे जहां स्वर्गादि क सुख तुछ हे ॥ स्वर्गविषेभी क्षय अतिसें होती हे अतिसे कहियें जो बडे पुण्यवाला आपसों उंचा देखता हे तब चाहता हे जो मेंभी इसी जेसा होउं॥ अरु क्षय कहियें मत इन सुखसों गिरों ॥ दोनों प्रकार दुःख होता हे ॥ सो पुण्य पाप दोनोंका तेनें त्याग किया हे तातें तुं सर्व त्यागी हे ॥ अरु अज्ञानी जो पापी जीव हे तिनकों स्वर्गभी भला हे ॥ जेसें स्वर्नका पात्र न पाइयें तो पीतलकाभी भला हे तेसें स्वर्नका पात्र जो ज्ञान हे जब लग प्राप्त न होवे तबलग पीतलका पात्र जो स्वर्गादिक हे सो नर्कतें भला हे ॥ अरु तुम सारखेकों कछू नही ॥ जो आत्माविषे सर्व पदार्थकी पुरनता हे अरु सर्वकी उत्पत्ति आत्मातें हे ॥ हे राजन् वर्णाश्रमविषे क्या आस्था करणी हें जहांतें इनकी उत्पत्ति हे अरु जहां लीन होते हे॥ अरु मधविषे जि सके अज्ञानतें दृष्ट आते हे तिसविषे स्थित होइये ॥ जिसके ज्ञानतें सर्व लीन हो जाते हे ॥ हे राजन् संकल्प विकल्प जो उठते हे तिनविषे स्थित मत होहु जिसविषे उत्पत्ति अरु लीन होते हे तिसविषे स्थित होहु ॥ अरु तपादिक क्रियाकरी क्या सिद्धि होता हे ॥ जिसकरी तपादिक सिद्धि होते हे तिसविषे स्थित होहु बूंदविषे क्या स्थित होणा हे ॥ जिस मेघतें बुंद उ त्पत्ति होती हे तिसविषे स्थित होइयें ॥ हे राजन् जेसें स्त्री होवे अरु भर्तातें कोउ पदार्थचाहे अरु आप न कहे ॥ तेसें तपादिक क्रियाकरी क्या सिद्धि होता हे ॥ जो तिनकरी आत्मपद की इछा करे तो इनकरी प्राप्त नही होता अपणे आपकरी पावता हे ॥ हे राजन् आत्मा तेरा अपणा आप हे ॥ तिसकरी सर्व सिद्धि होती हे ॥ जो वस्तु पाछें त्याग करणी होवे ति सकों ज्ञानवान प्रथमहि अंगीकार नही करता ॥ अरु जेता कछू तपादिक धंधा हे तिनकों चित्तकरी क्या रचता हे अपणे आपकों देख जो अनुभवरूप हे ॥ अरु सर्वदा निरंतर अपणे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपविषे स्थित हैं ॥ जब तुं अपणे आप करी आपकों देखेगा तब तपादिक क्रियाकों दुर करके सोभा पावेगा जेसें बदलके दूर भये चंद्रमा प्रकासवान सोभा पावता हे ॥ तेसें तुंभी भोगकी चपलताकों त्यागकरी सोभा पावेगा ॥ जब इंद्रियांकों जीतेगा अरु किसी पदार्थविषे आसक्त न होवेगा ॥ अरु सर्व वासनाका त्याग करेगा तब ज्ञानवान होवेगा ॥ अरु जिसनें सर्व वासनाका त्याग कियाहे तिसकों विष्णु जानणा॥जो सर्व राज्यका स्वामी हे जिसनें मन जीत्या हे सो चेष्टा विषेभी ज्योंकात्यों रहता हे अरु समाधिविषेभी ज्योंकात्यों हे जेसें पवन चलणे अरु ठहरणेविषे तुल्य हे ॥ तेसें ज्ञानवानकों कछु खेद नही होता ॥ राजोवाच ॥ हे सर्व संशयके छेदणेहारे स्पंद अरु निस्पंदविषे ज्ञानी ज्योंकात्यों केसें रहता हे ॥ सो कृपा करी कहो ॥ कुंभोवाच ॥ हे राजन् चैतन आकास हे सो आकाससेंभी निर्मल हे ॥ जब तिसका साक्षातकार हुआ तब जहां देखे तहां चैतनही भासता हे जेसें समुद्रके जाणेतें तरंग बुदबुदे सर्व जलही भासता हे तेसें चित्तबिना आत्माके देखे हुए फुरणेविषेभी आत्माहि दृष्टी आता हे अरु जिसने आत्माकों नही जाण्या तिसकों नाना प्रकारका जगत्ही भासता हे ॥ जेसें जलके जाणेबिना तरंग बुदबुदे भिनभिन दृष्टी आते हे ॥ अरु जलके जानिवेतें तरंगभी जलमय भासते हे ॥ हे राजन् सम्यकदर्सीकों जगत् आत्मा स्वरूप हे असम्यकदर्सीकों जगत् हे ॥ तातें तुं सम्यक् दर्सी हो करी देख जो जगत्भी आत्मरूप हे ॥ अरु सम्यक दर्शन जेसें प्राप्त होता हे सो श्रवण करु ॥ संतका संग करणा अरु सतशास्त्रका विचारणा जब दृढ भावना करियें तब केते कालतें स्वरूपका साक्षात्कार होता हे ॥ कालकी अपेक्षा दृढ विचारके निमित्त कहीहे ॥ जब दृढ विचार होता हे तब साक्षात्कार होता हे ॥ जब स्वरूपका साक्षात्कार हुआ ॥ तब स्पंद निस्पंदविषे एक समान होता हे ॥ हे राजन् जिसके समीप माखी होवे सो माखीके निमित्त पर्वत क्यों खोजे अरु दउडे ? ॥ तेसें तेरे घरविषे ब्रह्मवेत्ता चूडाला थी ॥ तिसका त्याग करी तेनें बनविषे आय तपका आरंभ किया ॥ तातें कष्ट बडा पाया ॥ परंतु अब तुं जाग्या हे अरु दुःख तेरे नष्ट भये हे ॥ अब तुं शांतिपदकों प्राप्त भया हे ॥ जेसें जेवरीके न जानणे करी सर्प भासता हे ॥ अरु भली प्रकार जाणेतें जेवरीहि भासती हे तेसें जिननें भली प्रकार निस्पंद हो करी अपणा आप देख्या हे तिसकों फुरणेविषेभी आत्माहि भासता हे ॥ जब मनकी चपलता मिटती हे तब तुरियातीत पदकों प्राप्त होता हे ॥ जिस पदकों वाणीविषय करी नही सकती ॥ हे राजा तुंभी तिसी पदकों प्राप्त भया हे जो मन अरु वाणीतें रहित हे ॥ अरु तुरियातीत पद हे जहां क्षोभ कोउ नही शांतिपद हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे सिखरध्वजबोधवर्णनंनाम एकाशितीतमःसर्गः ॥ ८१ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब राजाकों कुंभमुनिनें अेसें उपदेश किया ॥ तिसतें उपरांत कहा हे राजा अब हम जाते हे ॥ स्वर्गकों ब्रह्माजीके पास जो नारदमुनि आया हे देवता की सभाविषे जब मेरे तांइं न देखेगा तब क्रोध करेगा हे राजा जो कल्याण कृत पुरुष हे सो बडाकी प्रसंनता लेते हे तातें में जाता हों अरु उपदेश जो तेरे तांइ किया हे तिसकों भली प्रकार विचारणा ॥ अरु सर्व शास्त्रोंका सार यही हे सो संपूर्ण वासनाका त्याग करणा ॥ किसीविषे चित्तकों बंधमान नही करणा ॥ मेरे आवणे पर्यंत स्वरूपविषे स्थित रहणा ॥ अवर किसी चेष्टाविषे नही लागणा ॥ अरु स्वरूपकों भली प्रकार जाणिकरी भावे तेसें विचरहु ॥ अेसें कहीकरी कुंभमुनि उठी खडा हुआ ॥ तब राजानें अर्घ अरु फुल चडावणेके निमित्त हाथविषे लिये ॥ सो जल फुल हाथविषे रहे जो कुंभमुनि अंतर्धान होगया ॥ जब राजा कुंभमुनिकों अपणे आगें न देखत भया ॥ तब विचार करणे लागा ॥ देखो ईश्वरकी नीति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाणी नही जाती ॥ जो नारदमुनि कहां था अरु तिसका पुत्र कुंभमुनि कहां अरु में राजा सिखरध्वज कहां ॥ नीतिहीनें कुंभमुनिका रूप धारीकरी मुझकों आय जगाया हे ॥ अरु कुंभ बडा मुनि दृष्ट आया जिसनें मेरेतें उपदेश करी जगाया हे ॥ अब में अज्ञानरूपी गरतसों निकस्या हों ॥ अरु स्वरूपकों प्राप्त भया हों संपूर्ण संशय मेरे नष्ट भये हे ॥ अरु निर्दुःख पदविषे स्थित भया हों ॥ अरु अज्ञान निद्रातें जाग्या हों बडा आश्चर्य हे ॥ हे रामजी अेसें कही करी राजा सिखरध्वजनें संपूर्ण इंद्रियां अरु प्राण मन स्थित किया अरु चेष्टातें रहित भया ॥ जेसें सिलाके उपर पूतली लिखी होते हे जेसें पर्वतका सिखर स्थित होता हे ॥ तेसें स्थित भया ॥ अरु उहां चूडाला कुंभरूप शरीरका त्यागकरी अरु चूडालाका सुंदररूप धारीकरी उडी आकाशकों लंघकरी अपणे नगरविषे आवत भइ॥ अरु अंतःपुर जहां स्त्री रहतीथी तहां प्रवेश किया अरु मंत्रीकों आज्ञा करी जो तुम अपणे अपणे स्थानविषे स्थित होउ॥ अरु राणी राजाके स्थानविषे स्थित भइ ॥ भली प्रकार प्रजाकी खबर लीनी ॥ तीन दिन रहीकरी बहुरी उडी जहां राजा बनविषे था तहां आय प्राप्त भइ अरु कुंभका रूप धारीकरी देखा जो राजा समाधिविषे स्थित हे ॥ देखीकरी बहुत प्रसन्न भइ ॥ हे रामजी अेसें प्रसन्न होकरी चूडाला विचारत भइ ॥बडा सुख कार्य हुआ जो राजानें स्वरूपविषे स्थिति पाइ अरु शांतिकों प्राप्त भया बहुरी विचार किया जो इसकों जगावों तब सिंघकी न्यांइं गरजी अरु बडा शब्द किया ॥ तिस शब्द करीकें जेते बनके पशु पंछी थे सो सर्व भयकों प्राप्त भये परंतु राजा न जाग्या ॥ बहुरी हाथ करीकें हिलावती भइ तोभी राजा न जाग्या ॥ जेसें मेघके शब्द करी पर्वतका सिखर चलायमान नही होता ॥ तेसें राजा चलायमान न भया काष्ट अरु पाषाणकी न्यांइं स्थित रहा ॥ तब राणीनें विचार किया जो राजा शरीरकों त्याग न देवे तो भला अरु जो राजानें शरीरका त्याग किया होवे तो मेंभी त्यागोंगी ॥ हे रामजी चूडा लाने शरीर न त्यागा परंतु आरंभ करणे लागी ॥ जो राजा अरु में एकठा शरीर त्यागणा हे ॥ बहुरी विचार करणे लागी जो इसकी भविष्यत क्या होणी हे तब राजाके नेत्रपर हाथ लगाया अरु देह साथ देहका स्पर्श किया ॥ तब देखा जो प्राण राजाके शरीरविषे हे ॥ अरु भविषतकाभी विचार किया जो इसकी सत्वसेष रहती हे ॥ जीवन्मुक्ति होकरी राजमें विचरणा हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् तुमने कहा जो राजा काष्ट अरु पाषाणकी न्यांइं स्थित भया ॥ बहुरी कहा जो हाथ लगायकरी देख्या जो इसविषे प्राण हे जीवता हे ॥ तो कुंभनें क्यों करी जाण्या यह मुझकों संशय हे सो दूर करो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जिस शरीरविषे पुर्यष्टका होती हे तिसविषे हरीयावलता होती हे ॥ हे रामजी अज्ञानीका चित्त रहता हे अरु ज्ञानीका सत्व रहता हे जो प्रारब्ध वेगकरीकें फुरता हे अरु ब्रह्माकार वृत्ति होती हे ॥ अरु अज्ञानीका चित्त फुरणे करीकें बहुरी शरीर पावता हे ॥ अरु ज्ञानी इष्ट अनिष्टविषे एक समान रहता हे ॥ अरु अज्ञानी एक समान नही रहता ॥ इष्टविषे प्रसन्न अरु अनिष्टकी प्राप्तिविषे शोकवान होता हे ॥ हे रामजी ज्ञानी जब शरीरकों त्यागता हे तब ब्रह्मसमुद्रविषे स्थित होता हे ॥ अरु जबलग सत्व शेष हे तबलग फुरता हे अरु अज्ञानी शरीरकों त्यागता हे तब तिसविषे सूक्ष्म संसार होता हे ॥ जेसें बीजविषे वृछ फूल फल सूक्ष्मता करीकें स्थित होता हे ॥ सो काल पायकरी बहुरी निकसता हे तिसी प्रकार राजाका सत्व शेष रहता था तिसकरीकें बहुरी फुरेगा ॥ तब कुंभरूप चूडालाने विचार किया जो इसके अंतर प्रवेश करीकें जगावों जो में न जगावोंगी तोभी नीति करीकें इसकों जागणा हे तातें मेहि जगावों ॥ अेसें विचार करीकें अपणे शरीरका त्याग किया ॥ चैतनताविषे स्थित होकरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरु फुरणेकों लेकरी उसविषे जाय प्रवेश किया प्रवेशकरी उसकी जो चैतनता सत्व शेष था उसकों फोडत भइ बडा क्षोभ किया ॥ जब राजा उहांतें हिल्या तब आप निकसि आइ अरु अपणे शरीरविषे प्रवेश किया ॥ जेसें पंखेरु आकाशविषे उडता हे बहुरी आलयविषें आय प्रवेश करता हे तेसें अपणें शरीरविषे आनि स्थित भइ अरु सामवेदका गायन करणे लागी ॥ महा सुंदर स्वर साथ ॥ तब राजाने श्रवण किया अरु जाणत भया जो कोउ सामवेद गावता हे अेसें श्रवण करी जाग्या अरु देखा जो कुंभमुनि बेठा हे देखी करी बहुत प्रसन्न भया ॥ तब फूल जलं चडाया ॥ अरु कहा हे भगवन् मेरे बडे भाग हे देखी करी बहुत प्रसन्न भया जो तुमारा दर्शन हुआ॥ हे भगवन् कूलरूपी जो कुलाचल पर्वत हे तिसविषे जो देह रूपी वृछ हे सो अब फूल्या हे तुमनें हमकों पावन किया हे हे भगवन् किसीकी समर्थता नही जो तुम सारखेके चित्तविषे प्रवेश करे जिसविषे सर्वदा आत्माका निवास हे ॥ तिस चित्तविषे मेरी स्मृति हुइ हे जो दर्शन किया हे तातें मेरे बडे भाग हे॥हे भगवन् अमृतरूपी वचनोंकरी तुम प्रथम मेरे तांइं पवित्र कियाथा अरु अब जो चित्त किया हे सो मेरे तांइं पावन किया हे ॥कुंभोवाच॥ हे राजन् तेरा दर्शन करीकें मेंभी बहुत प्रसन्न हुआ हों अरु तुम जेसी प्रीति में आगें किसीकी नही देखी हे राजन् तेरे निमित्त में स्वर्गतें आयाहों॥ स्वर्गके सुख मेरे तांइं भले न लागे अरु तुं मेरे तांइं बहुत प्रीतम हे इसी निमित्त में आया हों अब स्वर्गविषेभी नही जाता तेरेहि पास रहोंगा ॥ राजोवाच॥ हे भगवन् जिस उपर तुम सारखेकी कृपा होतीहे तिसकों स्वर्ग आदिक सुख भले नही लागते ॥ तो तुम सारखेकी वात क्या कहणी हे ॥ यह बन हे यह झुपडी हे इसविषे विश्राम करो ॥ मेरे बडे भाग हे जो तुमारा चित्त इहां रहणेकों भया हे ॥ कुंभोवाच ॥ हे राजन् अब मेरे तांइं शांति प्राप्त भइ हे अरु संकल्प बीज नष्ट भया हे जेसें नदीके किनारेपर वली होती हे अरु जलके प्रवाहकरी मूल समेत गिरती हे तेसें तेरे संकल्प बीज नष्ट भया हे ॥ अब तुं जथा प्राप्तविषे संतुष्ट हुआ हे के नही हुआ ॥ हेयोपादेयतें रहित हुआ हे के नही हुआ ॥ अरु जो पावणे जोग पद हे सो पाया हे के नही पाया अपणा अनुभव कहहु ॥ राजोवाच हे भगवन् तुमारी कृपातें सर्वसों श्रेष्ठ पद में पाया हे ॥ जहां संसार सीमाका अंत हे ॥ अरु अब मेरे तांइं उपदेशका अधिकार नही रहा जो संपूर्ण संशय मेरे नष्ट भए हे ॥ हेयोपादेयतें रहित हों इस करी सुखी विचरता हों अरु जो कछू जानणा जोग था सो में जाण्या हे अब दुःख मेरेविषे कोउ नही ॥ सर्व ठोर में तृप्त हों अनित प्राप्तरूप हों अरु आत्मा हों निर्मल हों अरु अपणे सुभावविषे स्थित हों अरु सर्वात्मा हो ॥ निर्विकल्प हों मेरेविषे फुरणा कोउ नही ॥ में शांतरूप हों अरु चिर पर्यंत सुखी हों ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार राजा अरु कुंभका तीन मुहुर्त संवाद हुआ॥तिसतें उपरांत दोनों उठी खडे हुए अरु चले निकट एक तलाव था जहां बहुत कमलनी थी तहां आएकरी दोनों स्नान करत भये अरु गायत्री संध्या करी ॥ पूजा करीकें बहुरी उहांतें चले वन कुंजोविषे आये॥तब कुंभनें कहा चलियें राजा कहा भली वातां चलियें ॥ तब चले बहुत नगर देश ग्राम अरु तीर्थ देखे अरु नाना प्रकारके बनविषे विचरे जो फूल फल संयुक्त थे ॥ तिनविषे विचरे अरु मरुथलविषे विचरे॥ हे रामजी अेसें राजसी सात्विकी तामसी स्थानोंविषे विचरे तीर्थादिक सात्विकी स्थान हे अरु सुंदर बन आदिक राजसी स्थान हे ॥ अरु मरुथल आदिक तामसी स्थान हे तिनविषे विचरे तोभी हर्ष शोककों न प्राप्त भये समताविषे रहे ॥ हे रामजी कुंभका प्रयोजन फिरणेकाभी यह था ॥ जो राजा शुभ अशुभ स्थानोंको देखिकरी हर्ष शोक करेगा अथवा न करेगा तोभी राजा हर्ष शोककों न प्राप्त भया बहु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

री बडे पर्वतकी कंदरा देखियां अरु बन कुंज बडे कष्टके स्थान देखे अरु एक बनविषे जाये स्थित भए॥केते कालविषे राजा अरु कुंभ एक जेसें होगए एकठेहि स्नान कर हि अरु एक जेसी मूरतां अरु एक जेसें जाप जपहि ॥ एक जेसी पूजा करहि॥अरु एक जेसे दोनों सुहृद भये॥जो उपकारकी अपेछा विना उपकारी भये किसी ठोर माटी शरीरकों लगावे॥किसी ठोर चंदनका लेप करे ॥ किसी ठोर शरीरकों भस्म लगावे ॥ किसी ठोर दिव्य वस्त्र पहिरे किसी ठोरकेले पत्र उपर सोवे ॥ किसी ठोर फूलकी शय्या होवे ॥ किसी ठोर कूर स्थानोंविषे सेन करे॥हे रामजी अेसें शुभ अशुभ ठोरविषेभी दोनों ज्योंके त्यों रहे जो हर्ष शोककों न प्राप्त भये॥केवल सत्व सुद्धविषे स्थित रहे ॥आत्माबिना अवर कछू न फुर्या ॥ एक बनविषे जाय स्थित भये तब राणीकें मनविषे विचार हुआ जो यह मेरा भर्त्ता हे में इसकों भोगों हमारी अवस्था हे जो भले कुलकी स्त्री हे सो भर्ताकों प्रसन्न राखती हे ॥ अरु राजाका शरीरभी देवता जेसा हुआ हे अरु स्थानभी शुभ हे ॥ जबलग शरीर हे तबलग शरीरके सुभावभी साथ हे ॥ अरु बहुरी विचार किया जो राजाकी परिक्षाभी करों जो क्या कहेगा ॥ तब कुंभनें कहा हे राजन् अब हम स्वर्गकों जाते हे ॥ जों चैत्र शुद्ध एकमकों ब्रह्माजोनें सृष्टि उत्पत्ति करी हे ॥ इसी दिन वर्षके वर्ष उछव होता हे अरु नारदमुनीभी आवेगा तातें हम जाते हे ॥ अरु आजहि फिरि आवेंगे मेरे आवणे पर्यंत तुम ध्यानविषे रहणा ॥ अरु ध्यानतें उतरो तब फूलकों देखणा ॥ अेसें कहिकरी फूलोंकी मंजरी राजाकों दीनी ॥ अरु राजानेंभी कुंभकों फूलकी मंजरी दीनी ॥ जेसें नंदन वनविषे स्त्री भर्त्तारके हाथ देवे अरु भर्त्ता स्त्रीके हाथ देवे तेसें दोनों परस्पर देते भए ॥ बहुरी कुंभ आकाशकों उड्या अरु पाछें राजा देखता रहा ॥ जेसें मेघकों मोर देखता हे तेसें राजा देखता रहा ॥ जेते पर्यंत राजाकी दृष्टि पडती थी तबलग कुंभका शरीर राख्या ॥ जब दृष्टिसों अगोचर भया आकाशविषे तब फूलकी माला जो गरेविषे थी सो तोडिकरी राजाके उपर डारी दीनी अरु चूडालाका शरीर धारि आकाशकों लंघकरी अपणा अंतःपुर जो था स्त्रीका स्थान तहां आय प्राप्त भइ अरु राजाके स्थान पर बेठीकरी मंत्रीकों बुलाया अपणे अपणे स्थानोंविषे स्थित किये अरु प्रजाकी खबर लीनी बहुरी उडी सूर्यकी किर्णोंके मार्ग मेघमंडलकों लंघती आइ जहां राजाका स्थान था तहां आयकरी देखा जो राजा विछुरेकरी शोकवान हे अरु कुंभभी दलगीर जेसा राजाके आगें आय स्थित भया ॥ तब राजानें कहा हे भगवन् शोक तुमारे तांइं केसें प्राप्त भया हे अेसा कष्टमार्गविषे तुमारे तांइं कवन हुआ हे ॥ अरु सर्व दुःखका नष्ट करणे हारा ज्ञान हे ॥ सो तुम सारखे ज्ञानवानकों शोक होवे तो अवरकी क्या बात कहणी हे ॥ हे मुनि तुमारे तांइं दुःखका कारण कोउ नही तुम क्यों शोकवान होते हो अरु तुमारे तांइं कवन अनिष्ट प्राप्त भया हे? ॥ तब कुंभने कहा हे राजन् मेरेतांइं एक दुःख हे सो कहता हों॥ जो मित्र पुछे तो सत कहा चाहियें ॥ अरु दुःखभी नष्ट होता हे ॥ जेसें मेघ जड अरु स्यामभी होता हे अरु उसका सज्जन जो हे क्षेत्र अरु पृथ्वी तिस ऊपर वर्षा करता हे तिसकी जडता अरु स्यामता नष्ट होती हे ॥ तातें में तेरे तांइ कहता हों ॥ हे राजन् जब स्वर्गविषे सभा स्थित थी तब में नारदके पास था जब सभा उठी तब नारद मुनिभी उठ्या ॥ अरु मुझकों कहा जहां तेरी इछा होवे तहां जाहु अरु मेंभी जाता हों ॥ काहे तें जो नारद एकहि ठोरविषे नही ठहरता विश्वविषे सैल करता फिरता हे ॥ इसीतें मेरे तांइ कहा जो तुंभी जाहु तब में आकासतें चला एक ठोर सूर्य साथ मिलाप हुआ बहुरी आगें कों चला मेघके मार्ग तीक्षण वेगकरी चला आया हों ॥ जेसें नदी पर्वततें तीक्षण वेगकरी आती हे तेसें में तीक्ष्ण वेगकरी चला आताथा ॥ तब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुर्वासा ऋषीश्वर उडता आता हे ॥ महा मेघकी न्यांइं स्याम वस्त्र पहिरे हुए अरु भुषणसंयुक्त ॥ जेसें वीजलीका चमत्कार होता हे तेसें भूषणोंका चमत्कार देखिकरी में दंडवत करीके कहा॥ हे मुनीश्वर तुम क्या रूप धार्‍या हे जो स्त्रीकी न्यांइं भासता हे तव दुर्वासानें मेरे तांइं कहा हे ब्रह्माके पोत्रे तुं केसा वचन कहता हे अेसा वचन मुनीश्वर प्रति कहणा उचित नही हम क्षेत्र हे जेसा बीज क्षेत्रविषे बोइये तेसा उगता हे तातें मेरे तांइं स्त्री तेनें कहा हे तुंभी स्त्री होवेगा अरु रात्रकों तेरे अंग सब स्त्रीके होवेगे ॥ हे मुनीश्वर जो कल्याणकृत ज्ञानवान पुरुष हे तिनकों नम्रता होती हे ॥ जेसें फल संयुक्त वछ नम्र होता हे ॥ तेसें ज्ञानीभी नम्र होता हे ॥ अेसा वचन तेरे तांइं कहणा न चाइयें ॥ हे राजा अेसें श्रवण करिकें में तेरे पास चल्या आया हों ॥ अरु मेरे तांइं लज्जा आती हे जो स्त्रीका शरीर धारे देवताविषे केसें विचरोंगा यहि मुझकों शोक हे तव राजानें कहा क्या हुआ ॥ जो दुर्वासानें कहा अरु स्त्रीका शरीर भया तुम तो शरीर नही आत्मा निर्लेप हे किसी साथ लेप नही ॥ हे मुनीश्वर तुम अपणी समताविषे स्थित रहते हो ॥ अरु ज्ञानवान पुरुषकों हेयोपादय किसीका नही रहता ॥ अपणी समताविषे स्थित रहता हे तव कुंभने कहा ॥ हे राजन् तुं सत्य कहता हे मेरे तांइं क्या दुःख हे जो शरीरका प्रारब्ध हे सो होता हे तिस साथ हमारा क्या प्रयोजन हे ॥ यह ईश्वरकी नीति हे जवलग शरीर होता हे तवलग शरीरके सुभावभी रहते हे ॥ अरु शरीरका सुभाव त्याग करणाभी मूर्खता हे ॥ जिस स्थानविषे ज्ञानकी प्राप्ति होवे तिसी चेष्टाविषे विचरिये अरु यहभी मूर्खता हे जो इंद्रियांकों रोकणा अरु मन करी विषयकी चिंतना करणी तातें इंद्रियां अरु देहकी चेष्टा ज्ञानवानभी करते हे ॥ परंतु तिसविषे बंधमान नही होते इंद्रियां विषयविषे वरततियां हे ॥ आदि नीति ईश्वरकी इसी प्रकार हे॥हे राजन् नीतिका त्याग किसीतें किया नही जाता तातें नीतिका त्याग क्यों करियें यह नीति हे जो जवलग शरीर हे तवलग शरीरके सुभावभी होते हे ॥ जेसें जवलग तिल हे तवलग तेलभी होते हे ॥ तेसें जवलग शरीर हे तवलग शरीरके सुभावभी होते हे ॥ जो ज्ञानवान पुरुष हे सो देह इंद्रियांकरी चेष्टाभी करते हे परंतु बंधायमान नही होते ॥ अरु अज्ञानी बंधायमान होते हे ॥ अरु चेष्टा ज्ञानी करते हे अज्ञानीभी करते हे ॥ जेसें ब्रह्मा विष्णु रुद्रतें आदि लेकरी ज्ञानवान हे ॥ सर्व चेष्टाभी करते हे परंतु बंधायमान किसी करी नही होते ॥ हे राजा तेसें जो अनिछित आय प्राप्त होवे अरु जिसकों शास्त्र प्रमाण करे तिसके भोगणेविषे दूषण कछू नही ॥ राजोवाच ॥ हे भगवन् ज्ञानवानकों दूषण कछू नही ॥ जो सत्ता सामानविषे स्थित हे ॥ तिस करीकें दूषण कछू नहीं होता ॥ अरु अज्ञानी शरीरके दुःख अपणेविषे देखता हे तिसकरी दुःखी होता हे ॥ अरु ज्ञानवान शरीरके दुःख अपणेविषे नही देखता ॥ हे रामजी अेसें कहते सूर्य अस्त हुआ ॥ तव राजा अरु कुंभ दोनों सायंकालविषे संध्याकरी अरु जाप किया ॥ जव रात्र हुइ तव तारागण निकसें ॥ अरु सूर्यमुखी कमलोके मुख मुंदे गए तव कुंभने कहा हे राजन् देख जो मेरे सिरके वाल वढते जाते हे ॥ अरु वस्त्रभी गिटे पर्यंत हो गये हे ॥ अरु स्तनभी स्त्रीकी न्यांइं भए हे ॥ इत्यादिक वस्त्र भूषण जेती कछू चेष्टा हे सो स्त्रीकी हुइ ॥ तव राजाकोंभी शोक प्राप्त भया अरु महासुंदर स्त्री लक्ष्मीकी न्यांइं चूडाला हो गइ ॥ तिसकों देखी करी राजाकों एक मुहूर्त शोक रहा ॥ तिसतें उप्रांत सावधान हुआ अरु कहत भया ॥ हे मुनि क्या हुआ जो शरीर स्त्रीका हुआ तुम तो शरीर नही तुम आत्मा हो तातें शोक क्यों करीयें ॥ तुम अपणी सत्ता समानविषे स्थित होहु तव रात्र हुइ अरु राणी महासुंदर रूप धारे फुलोंकी सिजा बिछाइ तिसपर दोनों एकठे सोए ॥ हे रामजी अेसें रात्र वितीत भइ कोउ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फुरणा न फुऱ्या ॥ सत्ता समानविषे दोनों स्थित रहे अरु मुखतें कछू न बोले सोइ गए ॥ जब प्रातःकाल हुआ तब बहुरी कुंभका शरीर धारा स्नान किया अरु गायत्रीतें आदि जो कर्म हे सो किये ॥ इसी प्रकार रात्रकों स्त्री बणि जावे अरु दिनकों कुंभ पुरुषका शरीर धारे ॥ जब कछू काल ऐसें वीतित भया तब उहांतें चले ॥ अरु सुमेरु पर्वत उपर गए मंदराच ल अरु अस्ताचलतें आदि सर्व सुख स्थानोंकों देखते भये ॥ हे रामजी एक दृष्टिकों लिये रहे ॥ न कोउ हर्षवान हुए न शोकवान हुए ज्योंका त्यों रहे जेसें पवन करी सुमेरु पर्वत च लायमान नही होता ॥ तेसेंहि सुभ असुभ स्थानोंविषे समान रहे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे सिखरध्वज स्त्रीप्राप्तिर्नाम द्व्यशीतितमःसर्गः ॥ ८२ ॥ ॥ ७॥ ॥७॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार विचरते विचरते मंदराचलकी कंदराविषे जाय स्थित भए ॥ तब कुंभरूप चूडाला राजाकों परीक्षाके निमित्त कहत भइ ॥ हे राजन् में राज्ञ कों स्त्री होती हों ॥ तब मेरे तांइ भर्ताके भोगणेकी इछा होती हे काहेतें जो इश्वरकी निति एसेंही हे जो स्त्रीकों अवस्यमेव पुरुष चहिता हे ॥ अरु जो उत्तम कुलका पुरुष होता हे ति सकों कन्या विवाह करिकें पिता देता हे ॥ अथवा जिसकों स्त्री चाहे तिसकों आप देखि लेवे ॥ ताते हे राजन् मेरे तांइ तुझतें अधिक कोउ नही दृष्ट आता ॥ तुंही मेरा भर्ता हे अरु में तेरी स्त्री हों ॥ तुं अपणो भार्या जाणीकरी जो कछू स्त्री पुरुष चेष्टा करते हें सो किया कर ॥ मेरी अवस्थाभी जोबन हे अरु तुंभी सुंदर हे ज्ञानवान अनिछित प्राप्त हुएका त्याग नही करते यद्यपी तुझकों इछा न होवे तोभी इश्वरकी नीति इसी प्रकार हे ॥ तिसकों उल्लंघणे करी क्या सिद्धि होता हे ॥ जो अपणे स्वरूप सत्ताविषे स्थित हे तिसकों ग्रहण त्यागकी कछू इछा नही परंतु जो नीति हे सो करी चाहियें ॥ राजोवाच ॥ हे साध जो तेरी इछा हे सो करियें मुझकों तो तीनों जगत् आकासरूप भासते हे ॥ प्राप्त होणेंकरी मेरे तांइ सुख कछू नही अप्राप्तविषे दुःख नही ॥ न कोउ मेरे हर्ष हे न सोक हे जो तेरी इछा होए सो करियें ॥ कुंभोवाच ॥ हे राजन् आजही पूर्ण मासीका भला दिन हे ॥ अरु यह मेनें आगें लग्नभी गिन छोडा हे ॥ तातें मंद्रलाचलपर्वतकी कंदराविषे वेठ करी विवाह करीयें ॥ अब सामग्री एकठी करियें ॥ तब राजा अरु कुंभ दोनों उठे जो कछू सामग्री शास्त्रकी हे सो एकठी करी अरु दोनों गंगापर स्नान किया अरु वेहली पूजन करी अरु वस्त्र फूल फलतें आदि लेकरी जो विवाहकी सामग्री हे सो कल्प वछसों लीनी बहुरी फलकों भोजन किया तब सूर्य अस्त भया दोनों संध्या उपासना करी बहुरी राजाकों दिव्य वस्त्र भूषण पहिराए ॥ अरु सिरपर मुकुट पहिराया बहुरी कुंभका शरीर त्याग किया अरु स्त्रीका शरीर होत भया ॥ तब स्त्रीनें कहा हे राजन् अब तुं मेरे तांइं भूषण पहिराए तब राजाने संपूरण भूषण फूल अरु वस्त्र पहिराए ॥ अरु पार्वतीकी न्यांइ सुंदर बणी ॥ तब चूडालानें कहा हे राजा में अब तेरी स्त्री हों ॥ अरु नाम मेरा मदनिका हे ॥ अरु तुं मेरा भर्ता हे ॥ कामदेवतेंभी तुं सुंदर भासता हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इसी प्रकार चूडालानें बहुत कछू कहा ॥ तोभी राजाका चित्त हर्षकों न प्राप्त भया ॥ अरु वैरागकरी सोकवानभी न भया ज्योंकात्यों रहा तिसतें उप्रांत विवाहका आरंभ किया ॥ चंदोआ आदिया अरु वस्त्र कल्पवछतें लिये अरु पास स्वर्नके कल स राखे देवताका पूजन किया इत्यादिक जो शास्त्रकी विधि थी सो संपूर्ण करी ॥ लावांलिया अरु मंगल किया ॥ बहुरी संकल्प यह दिया जो संपूर्ण ज्ञाननिष्ठा तेरे तांइ दिनी ॥ अरु राजाभी संकल्प किया जो संपूर्ण ज्ञाननिष्ठा तेरे तांइ दिनी जब रात्र एक प्रहर रही तब राजा अरु राणी फूलोंकी सिजा विछाइ॥ सेन करिकें आपसविषे चरचाहि करते रहे ॥ अरु मैथुन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कछू न किया ॥ जब प्रातःकाल हुआ तब स्त्रीका शरीर त्यागकरी कुंभका शरीर धारा अरु स्नानकिया संध्यादिक कर्म किये ॥ हे रामजी इसी प्रकार एक मास पर्यंत मंद्राचलपर्वत वि
षे रहे ॥ जो रात्रकों स्त्रीका शरीर अरु दिनकों कुंभका शरीर करे ॥ जब तीसरा दिन होवे तब राजाकों सेन करायके राजकी सुद्ध आय लेवे बहुरी राजाके पास जाय सेन करे ॥
॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे विवाहलीला वर्णनं नाम व्यशीतितमः सर्गः ॥ ८३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥
॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब उहांसों चले अस्ताचल पर्वतविषे रहे ॥ उद्याचल अरु सुमेर कैलासपर्वत इत्यादिक जो पर्वत अरु कंदरा बनोंविषे रहे ॥ कहुं एक मास कहुं दसमास
कहुं पांच दिन कहुं सप्त दिन रहे ॥ जब एक बनविषे आये तब राणीनें विचार किया ॥ जो एते स्थान राजाकों दिखाए हे ॥ तोभी इसका चित्त किसीविषे बंधमान नही भया ॥ तातें
अब अवर परीक्षा लेउ ॥ अेसें विचारकरी अपणी माया पसारी ॥ तब इंद्र तेतीस कोटि देवता संयुक्त किन्नर गंधर्व सिद्ध अरु अपछरा आगें नृत्य करती आतियां हे ॥ अवरभी जो कछु
इंद्रकी सामग्री हे तिस संयुक्त इंद्रकों देखिकरी राजा उठ्या ॥ बहुत प्रीती संयुक्त इंद्रकी पूजा करी ॥ अरु कहा हे त्रैलोकके पति तुमारा आवणा इस बनविषे केसें हुआ हे सो क
हो ॥ तब इंद्रनें कहा हे राजन् जेसें पंछी होता हे अरु उर्धकों उडता हे ॥ तिसको पेटी तागा होता हे तिसकरी उडता हुआभी नीचे आता हे ॥ तेसें हम उर्धके वासी तेरा गुणरूपी जो
तागा हे तप अरु सुभ लछण ॥ तिसकों श्रवण करिकें हम स्वर्गतें खेंचे चले आते हे इस बनविषे इस प्रकार हमारा आवणा हुआ हे ॥ तातें राजा तुं स्वर्गकों चल अरु स्वर्गविषे स्थित
हो करी दिव्य भोगकों भोगहु ऐरावत हस्ती हे तिस पर आरूढ होहु ॥ अथवा यह उच्चैःश्रवा घोडा हे जो क्षीर समुद्रकेमथनतें निकसा हे इस पर आरूढ होकरी चल ॥ अरु सिद्धीभी
हे एक तो यह सिद्धि हे जिस पर पांउं राखिये तो जहां चाहिये तहां पहुचावे ॥ अरु एक खड्ग सिद्धि हे खड्गकों हाथमें धारिकरी जहां इछा होए तहां चला जावे एक गुटिका हे जो मुख
में राखिकरी जहां इछा होए तहां इछाचारी चला जाइये ॥ इसतें लेकरी अष्टसिद्धि भी विद्यमान हे ॥ जो इछा होए सो लेहु अरु स्वर्गविषे चलो ॥ हे राजन् तुम तत्ववेत्ता हो तुमकों
ग्रहण त्याग करणा कछू नही रहा परंतु जो अनिछित आनि प्राप्त होवे तिसका त्याग करणा जोग नही ॥ तातें स्वर्गविषे चलो ॥ राजोवाच ॥ हे देवराज जाणा तहां होता हे जहां
आगें नही होता ॥ अरु जहां आगें होइये तहां केसें जाइये ॥ हे देवराज हमकों सर्व स्वर्गहि दृष्टी आता हे ॥ जो उहां स्वर्ग होवे इहां न होवे तो जाइएभी परंतु जहां हम बेठे हे तहां
ही स्वर्ग भासता हे तातें हम कहां जावें ॥ हमकों तीनों लोक स्वर्ग दृष्ट आते हे ॥ अरु सदा स्वर्गरूप जो आत्मा हे हम तिसीविषे स्थित हे हमारे तांइ सर्वथा स्वर्ग भासता हे हम सदा तृप्त
आनंदरूप हे ॥ तातें हम कहां जावे ॥ इंद्रोवाच ॥ हे राजन् जो विदित वेद पूर्ण बोध हे सोभी जथा प्राप्त भोगकों सेवते हे तुम क्यों नही सेवते ॥ अेसें जब इंद्रनें कहा तब राजा
त्योंहि कही करी चूप करी गया ॥ बहुरी इंद्रनें कहा भला जो तुम नही आते तो हम जाते हे ॥ तेरा अरु कुंभका कल्याण होवे ॥ हे रामजी अेसें कहिकरी इंद्र उठी खडा हुआ अरु
चल्या ॥ जबलग दृष्टि आता था तबलग देवताभी साथ दृष्टि आते हे ॥ बहुरी दृष्टि अगोचर भए तब अंतर्धान होगए ॥ जेसें समुद्रतें तरंग उठीकरी बहुरी लीन हो जाता हे अरु नही
जाणता जो कहां गया ॥ तेसें इंद्र अंतर्धान हो गया ॥ सो इंद्र कुंभरूप चूडालाके संकल्पते उठ्याथा जब संकल्प लीन भया तब अंतर्धान होगया ॥ तब चूडालानें देखा जो अेसें ऐश्वर्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरु सिद्धि अरु अप्सराके प्राप्त भएभी राजाका चित्त समताविषे रहा अरु किसी पदार्थविषे बंधमान न हुआ ॥ इ० यो० नि० मायाशक्तागमन वर्णनं नाम चतुरशीतिमः सर्गः ॥ ८४ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब चूडाला इंद्रका छल करी रही तब विचार किया जो ऐसा चरित्र राजाके मोहणे निमित्त किया ॥ तोभी राजा किसीविषे बंधायमान न भया ज्यों का त्योंहि रहा बडा कल्याण हुआ जो राजा सत्ता सामानविषे स्थित रहा तातें बडा आनंद हुआ ॥ अब अवर चरित्र करीयें जो क्रोध होवे जिसविषे बडा खेद होवे ॥ ऐसें विचार करी चरित्र किया राजाकी परीक्षाके निमित्त ॥ जब सायंकालका समा हुआ ॥ तब गंगाके किनारे राजा संध्या करणे लागा ॥ अरु कुंभ बनविषे रहा ॥ तब वनविषे संकल्पका मंदिर रचा ॥ जेसें देवताकी रचना होती हे तेसें मंदिरके पास फूलकी वाडी पाइ अरु कल्पवछतें आदि नाना प्रकारके फूल फल संयुक्त वछ रचे ऐसें बनके स्थानविषे एक संकल्पकी शय्या रची अरु एक संकल्पका महा सुंदर पुरुष रचा तिस साथ सोए रही अंगसों अंग लगाय करी ॥ अरु गलेविषे फूलोंकी माला डारी अरु कामचेष्टा करणे लागी ॥ तब राजा संध्याकरी उठ्या अरु राणीकों देखणे लगा दृष्ट न आइ ॥ ढूंढते ढूंढते तिस मंदिरके निकट आया ॥ तब क्या देखे जो कामी पुरुषके साथ मदनिका सोइ हुइ हे ॥ अरु कामचेष्टा करते हे तब राजानें कहा भले आराम साथ सोए पडे हे सोए रहे इनके आनंदविषे विघ्न क्यों करियें ॥ हे रामजी इस प्रकार राजानें अपणी स्त्रीकों देखी तोभी शोकमान न हुआ अरु क्रोधभी न किया ॥ ज्योंका त्यों शांतपदविषे स्थित रहा क्षोभकों न प्राप्त भया ॥ अरु मंदिरके बाहिर निकसे तहां एक स्वर्नकी शिला पडीथी तिस उपर बेठि रहा ॥ अरु समाधिविषे स्थित भया ॥ परंतु उन्मीलित लोचन ॥ तब दो घडी उप्रांत मदनिका कामी पुरुषकों त्यागकरी वाहिर आइ ॥ अरु राजाके निकट आए करी अंगोंकों नग्न किया बहुरी वस्त्रों साथ ढांपे ॥ जेसें अवर स्त्रीयां कामकरी व्याकुल होतीयां हे ॥ तेसें चूडालाकों देखिकरी राजानें कहा ॥ हे मदनिका तुं ऐसें सुखकों त्यागकरी क्यों आइ हे ॥ तुं तो बडे आनंद करी मग्न थी अब तहांहि फिरि जाहु मेरे तांइं तो हर्ष शोक कछू नही मैं ज्योंका त्यों हों परंतु तेरी अरु कामी पुरुषकी प्रीति परस्पर देखी हे ॥ परस्पर प्रीति जगत्विषे नही होती अरु तुमारी देखी हे ॥ तातें तुं उसकों सुख देहु ॥ उह तेरेतांइं सुख देवे अब जाही ॥ तब मंदनिका लज्जासों सिरकों नीचे करीकें बोली ॥ हे भगवन् तुम क्षमा करो मेरे उपर क्रोध न करो मुझतें अवज्ञा बडी हूइ हे परंतु मैं जाणि न करी ॥ जेसें वृत्तांत हे सो श्रवण करो ॥ जब तुम संध्या करणे लागे तब मैं वनविषे आइ थी ॥ तहां एक कामी पुरुषका मिलाप भया ॥ मैं निर्बल थी उह बली था तिसनें मेरे तें पकडि लीनी ॥ अरु जो पतिव्रता स्त्रीकी मर्यादा हे सोभी मैं करी ॥ जो उसपर क्रोध किया अरु निरादर किया अरु पुकारभी करी ॥ यह तीनों पतिव्रताकी मर्यादा हे सो मैं करी अरु तुम दूर थे उह बलि था मेरेतांइं पकडी लीनी ॥ अरु गोदविषे बेठाइ जो कछू उसकी भावनाथी सोकरी ॥ हे भगवन् मुझविषे दूषण कछू नही तातें तुम क्षमा करो क्रोध न करो ॥

॥ राजोवाच ॥ हे मदनिका मेरेतांइं क्रोध कदाचित् नही होता ॥ आत्माही दृष्ट आता हे तो क्रोध किसपर करों ॥ मेरे तांइं न कछू गृहण हे न कछू त्याग करणा हे ॥ तथापि यह कर्म साधोंकरी निंदित हे तातें अब तेरा त्याग किया हे ॥ सुखे विचरोंगा ॥ अरु जो हमारा गुरु कुंभ हे सो हमारे पासही हे ॥ उह अरु हम सदा निरागरूप हे ॥ अरु तुं तो दुर्वासाके श्राप तें उपजी हे तेरे साथ हमारा क्या प्रयोजन हे ॥ तुं अब उसी पास जाहि ॥ ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे मायापिंजरवर्णनं नाम पंचाशीतितमः सर्गः ॥ ८५ ॥ ॥ ७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी तब मदनिका नाम जो चूडाला हे तिसनें विचार किया ॥ बडा कार्य हुआ जो राजा आत्मपदविषे प्राप्त भया ॥ ऐसें सिद्धी अरु ऐश्वर्य देखे अरु क्रूर स्थानभी दिखाए तोभी राजा शुभ अशुभविषे ज्योंका त्यों रहा ॥ तातें बडा कल्याण हुआ जो राजाकों शांति प्राप्त भइ अरु रागदोषतें रहित भया अब पूर्वलारूप चूडालाका हे सो दिखावों ॥ अरु संपूर्ण वृत्तांत राजाकों जतावों ॥ ऐसें विचार करी मदनिका शरीरतें चूडालारूप होकरी प्रगट भइ ॥ भूषणों अरु वस्त्रोंकरी सहित ॥ तब राजा देखिकरी महा आश्चर्य कों प्राप्त भया अरु ध्यानविषे स्थित हुआ अरु देखा जो यह चूडाला कहांतें आइ हे ॥ बहुरी पूछा हे देवी तुं कहांतें आइ हे तेरे तांइं देखिकरी में आश्चर्यकों प्राप्त भया हों ॥ जो एसी मेरी स्त्री चूडाला थी अरु तुं इहां किस निमित्त आइ हे अरु कबकी आइ हे ॥ चूडालाउवाच ॥ हे भगवन् में तेरी स्त्री चूडाला हों ॥ अरु तुं मेरा स्वामी हे ॥ हे राजन् कुंभतें आदि अरु यह चूडाला शरीर पर्यंत सर्व चरित्र तेरे जगावणेके निमित्त मेंहि किये हे ॥ तुं ध्यानविषे स्थित होकरि देख जो यह चरित्र किसनें किये हे ॥ अरु में अब पूर्वका शरीर चूडालाका धारा हे ॥ हे रामजी जब ऐसें चूडालानें कहा तब राजा ध्यानविषे स्थित होकरी देखणे लगा ॥ एक मुहूर्त पर्यंत वृत्तांत सब देखि लिया ॥ तिसतें उपांत राजा आश्चर्यकों प्राप्त होकरी नेत्र खोले अरु राणीके गले साथ कंठ लगाय करी मिल्या अरु दोनों हर्षकों प्राप्त भए ॥ जो सहस्र वर्षपर्यंत शेष नाग उस सुखकों वर्णन करे तोभी कही न सकेगा ॥ ऐसें सत्ता स मानविषे स्थित हुए अरु शांतिकों प्राप्त भए ॥ जिसविषे क्षोभ कदाचित् नही ॥ राजा अरु राणी जुगल कंठ लगाए मिलेथे ॥ तिसतें अंगोविषे उष्णता उपजी तब सने सने करी खोल्या ॥ हर्षमान होंकरी राजाके रोमावलि खडे हो आए अरु नेत्रतें जल चलणे लागा ऐसी अवस्था साथ राजा बोल्या ॥ हे देवी मेरेउपर तेनें बडा अनुग्रह किया हे ॥ तेरी स्तुति करणेकों में समर्थ नही केसें स्तुति करों ॥ जेते कछू संसारके पदार्थ हे सो सभ माया मय हे अरु मिथ्या हे ॥ अरु तेनें मेरे तांइ सत पदकों प्राप्त किया हे तातें में तेरी उपमा क्या करों ॥ हे देवी मेंनें जाण्या हे जो जब में राजका त्याग किया हे अरु इस चूडालाके सरीर पर्यंत सभ तेरे चरित्र हे अरु मेरे वासते बडे कष्टतेनें सहन किये हे अरु बडे जतन किये हे ॥ आणा अरु जाणा स रीरका स्वांग धारणा अरु उडणा इत्यादिक बडा तेनें कष्ट पाया हे ॥ अरु बडे जतनकरी मेरे तांइ संसार समुद्रतें पार किया हे ॥ अरु बडा उपकार किया हे तुं धन्य हे अरु जेती कछू देवि यां हे तिनसों तेनें श्रेष्ट कार्य किया हे तातें तुं सभतें अधिक हे ॥ सो कवन देवियां हें जिनतें तुं अधिक हे ॥ अरुंधती अरु ब्रह्माणी अरु इंद्राणी अरु पार्वती सरस्वती ॥ इत्यादिक देवियां कों तेनें तिरस्कार किया हे हे देवी जो श्रेष्ठ कुलकी कन्या हे ॥ अरु पतिव्रता हे सो जिस पुरुषकों प्राप्त होती हे तिसका सर्व कार्य सिद्धि होता हे ॥ सो कवन कवन श्रेष्ट स्त्रियां हे श्र वन कर बुद्धि अरु शांति अरु दया अरु सक्ति अरु कोमलता मैत्री इत्यादिक जो सुभ लक्षण हे सो पतिव्रता स्त्रीकरी प्राप्त होते हे ॥ हे देवी में तेरे प्रसाद करी सांतपदकों प्राप्त भयाहों अब मेरे तांइ क्षोभ कोउ नही अेसा पद शास्त्रोंकरीभी नही पाइता अरु तपकरी नही पाइता जो पतिव्रता स्त्री करी पाइता हे ॥ चूडालाउवाच ॥ हे राजन् तुं काहेकों मेरी स्तुती करता हे में तो आपणा कार्य किया हे ॥ हे राजा जब तुं राजका त्याग करी वनविषे आया तब तुं मोहकों साथहि लिये आया मोह कहिये अज्ञान तिस अज्ञानकरी नीच स्थानविषे पडा ॥ ॥ जेसें कोउ गंगाजलका त्यागकरी चिकडके जलका अंगीकार करे तेसें तेनें आत्मज्ञान अक्षय पदका त्याग करी तपका अंगीकार किया ॥ हे राजा में देखा जो तुं चिकडविषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गिर्या हे तातें में तेरे निकासणे निमित्त एते जतन किये हे ॥ हे राजा मैं अपना कार्य किया हे ॥ राजोवाच ॥ हे देवी मेरा यही आशिरवाद हे ॥ जो कोउ पतिव्रता स्त्री होवे सो सभ
अेसें कार्य करे जेसें तुमनें किया हे ॥ जो पतिव्रता स्त्रीतें कार्य होता हे सो अवरतें नही होता ॥ हे देवी जेती अरुंधतीतें आदि पतिव्रता स्त्रियां हे तिनतें तुं प्रथम गिनायगी ॥ अरु में
जानता हों ब्रह्माजीनें तेरे तांइ क्रोधकरी इस निमित्त उपजाइ हे ॥ जो अरुंधतीतें आदि देवियां हें तिनो आपसविषे गर्व किया होवेगा ॥ तिस गर्वकों सुणीकरी तिनके गर्व निवारणे
निमित्त तुझकों अधिक उत्पत्ति किया हे ॥ तातें हे देवी तुं धन्य हे जो तेनें मेरे ऊपर वडा उपकार किया हे ॥ हे देवी तुं बहुरी मेरे अंग लाग जो तेनें वडा उपकार मेरे साथ किया हे
॥ हे रामजी एसें कहिकरी राजानें राणीकों बहुरी गले कंठ लगाइ जेसें नोल अरु नोली मिले॥अरु मूर्तिकी न्यांइ लिखि हे एसें भासे ॥ चूडालाउवाच ॥ हे भगवन् एक तो मेरे तांइ
यह कहूं जो ज्ञानरूप आत्माके एक अंसविषे जगत् लीन हो जाते हे ॥ अेसा जो तुं हे सो आपकों अब क्या जानता हे अरु अब तुं कहां स्थित हे ॥ अरु राज तेरे तांइ कछू दिखाइ
देता हे अथवा नही देता ॥ अब तेरे तांइ इछा क्या हे ? ॥ शिखरध्वजोवाच ॥ हे देवी जो स्वरूप तेनें ज्ञानकरिकें निश्चय किया हे सोइ में आपकों जानता हों अरु सांतरूप हों इछा
अनिछा मेरे तांइ कोउ नही रहि ॥ केवल सांतरूप हों ॥ हे देवी जिसपदकी अपेछा करिकें ब्रह्मा विष्णु रुद्रकी मूरतांभी सोक संयुक्त भासतियां हे ॥ तिस पदकों में प्राप्त भया हों जहां
उत्थान कोउ नही ॥ अरु निष्किंचित हे ॥ जिस विषे किंचित् मात्रभी जगत् नही ॥ अरु में जो था सोइ भया हों ॥ इसतें इतर क्या कहों ॥ हे देवी तेनें संसार समुद्रतें मेरे तांइ पार कि
या हे तातें तुं मेरा गुरु हे ॥ अेसें कहि करी चूडालाके चरनों पर राजा गिरपडा ॥ अरु कहा अज्ञान मेरे तांइ कदाचित् स्पर्श न करेगा ॥ जेसें तांबा पारसके संगकरी स्वर्न हुआ बहुरी
तांबा नही होता ॥ तेसें में मोहरूपी चीकडतें तेरे संगकरी निकसा हों बहुरी कदाचित् न गिरोंगा ॥ अरु अब इस जगत्के सुख दुःख करी न तुष्ट होता हों ॥ ज्योंकात्यों स्थित हों ॥ राग
दोषके उठावणेवाला जो चित्त हे सो मेरा नष्ट हो गया हे ॥ अब में प्रकासरूप अपणे आपविषे स्थित हों ॥ जेसें जलविषे सूर्यका प्रतिबिंब पडता हे अरु जलके नष्ट हुए प्रतिबिंबभी
सूर्यरूप होता हे ॥ तेसें मेरा चित्तभी आत्मरूप भया हे ॥ अब में निर्वाण पदकों प्राप्त भया हों ॥ अरु सर्वतें अतीत भया हों अरु सर्वविषे स्थित हों ॥ जेसें आकास सर्व पदार्थ विषे
स्थित हे अरु सर्व पदार्थ तें अतीत हे ॥ तेसें मेंभी हों अहं त्वं आदिक शब्द मेरे नष्ट भये हे ॥ अरु शांतिकों प्राप्त भया हों अब मेरे विषे अेसा तेसा शब्द कोउ नही ॥ में अद्वैत हों अरु
चिन्मात्र हों ॥ न सूक्ष्म हों न स्थूल हों ॥ चूडालाउवाच ॥ हे राजन् जो तूं अेसें स्थित हुआ हे तो तुं अब क्या करेगा ॥ अब तेरे तांइ क्या इछा हे ॥ राजोवाच ॥ हे देवी न मे
रे कछू अंगीकार करणेकी इछा हे न त्याग करणेकी इछा हे ॥ जो कछू तुं कहेगी सो करोंगा तेरे कहणेका अंगीकार करोंगा ॥ जेसें मणी प्रतिबिंबकों यहण करती हे ॥ तेसें में तेरे वच
नकों यहण करोंगा ॥ चूडालाउवाच ॥ हे प्राणपति हृदेके प्रीतम राजा अब तुं विष्णु हुआ हे ॥ अरु भला कार्य हुआ जो तेरी इछा नष्ट भइ हे ॥ हे राजन् अब तुं अरु में मोहतें र
हित होकरी अपने प्रकृत आचारविषे विचरें ॥ अखेद जीवन्मुक्ति हुए अपणे प्रकृत आचारकों हम क्यों त्यागें ॥ हे राजा जो अपणे आचारकों त्यागेंगे तो अवर किसीका यहण
करेगें ॥ तातें हम अपणेहि आचारविषे विचरें ॥ अरु भोग मोक्ष दोनोंकों भोग हे ॥ हे रामजी अेसें परस्पर विचार करते दिन बितीत भया ॥ अरु सायंकालकी संध्या राजा करत भया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुरी सिजाका आरंभ किया तिसउपर दोनों सेन करत भए अरु रात्रकों परस्पर चर्चाहि करते रहे ॥ एक क्षणकी न्यांइं रात्रकों वितीत करी ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्र
करणे चूडालाप्राकट्यंनाम षडशीतितमःसर्गः ॥ ८६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब ऐसें रात्र विती
अरु सूर्यकि किर्णा पसरियां ॥ अरु सूर्यमूखी कमल खिली आए ॥ तब राजाने स्नानका आरंभ किया ॥ चूडाला मनके संकल्प करिकें रत्नोंको मटकी रची अरु हाथपरधारी तिसविषे
गंगा आदिक संपूर्ण तीर्थोंका जल पाया अरु राजाकों स्नान कराया शुद्ध किया अरु संध्यादिक सर्व कर्म किए तब चूडालानें कहा हे राजन् मोहकों नाश करिकें सुखेनही अपणे रा
जकार्यकों करें अरु आनंद साथ भोग भोगें ॥ राजोवाच ॥ हे देवी जो सुख भोगणेकी तेरे तांइं इछा हे तो स्वर्गविषेभी हमारा राज हे अरु सिद्धविषेभी हमारा हे ॥ तातें स्वर्गहिविषे
विचरे ॥ चूडालोवाच ॥ हे राजन् हमकों न सुख भोगणेकी इछा हे ॥ न त्यागणेकी इछा हे हम ज्योंकें त्यों हे ॥ हे राजन् इछा अनिछा तब होती हे जब आगें कछू पदार्थ भासता
हे हमकों तो केवल आकाश आत्मा द्रष्ट आता हे स्वर्ग कहां अरु नर्क कहां हम सर्वदा एक रस स्थित हे ॥ हे राजा जद्यपि हमकों कछू नही ॥ तोभी जबलग शरीरका प्रारब्ध हे तब
लग शरीर रहता हे ॥ तो चेष्टाभी हुइ चहिएं अवर चेष्टा करणेतें अपणे प्रकृत आचारकों क्यों न करियें जो राग दोषतें रहित हो करी अपणे राजकों भोगे तातें अब ऊठ अष्ट वसुके
तेजकों धारि करी राज करणेकों सावधान होहु ॥ हे रामजी जब ऐसें चूडालानें कहा तब राजा कहत भया एसेंहि होवे ॥ अरु अष्ट वसुके तेज संयुक्त होत भया ॥ जब एसा तेज रा
जाकों प्राप्त भया तब कहा हे देवी तुं मेरी पट्टराणी हे अरु में तेरा भर्ता हों ॥ तोभी एक तुं हे एक में हों अवर कोउ नही ॥ अरु राज तब होता हे जब सेनाभी होवे तातें तुं सेना रच
तब चूडाला संपूर्ण सेनाकों रचती भइ ॥ हस्ती घोडे रथ नउबत नगारे निशान इत्यादिक जो राजकी सामग्री हे सो रची ॥ अरु प्रत्यक्ष आगें आनि स्थित भइ ॥ नउबत नगारे तुरि
यां सरनाइ बाजणे लागे जो कछू राजकी सामग्री हे सो अपणे अपणे स्थानविषे स्थित भइ ॥ राजाके शिर ऊपर छत्र फिरणे लागा अरु बेरक खडी हुइ ॥ तब राजा अरु राणी हस्ती
पर आरूढ हो करी चले ॥ मंद्राचल पर्वतके उपर आगें पाछें सब सेना भइ ॥ अरु राजा जिस जिस ठोर तप करत भया था सो राणीकों दिखावता जावे जो इस स्थानविषे में एता
काल रहाहों ॥ इसविषे एता रहाहों जब राजका त्याग किया था अेसें दिखावता जावे अरु तीक्ष्ण वेग करी चले ॥ तब आगें जो मंत्री अरु पुरवासी अवर नगरवासी थे सो राजाकों
लेणे आय ॥ अरु बडे आदर संयुक्त पूजन किया ॥ अरु अपणे मंदिरविषे आनि स्थित भए ॥ अष्टदिन पर्यंत राजाकों मिलणे निमित्त लोकपाल मंडलेश्वर आते रहे ॥ तिसतें उप्रांत रा
जा सिंघासनपर आय बेठा अरु राज करणे लागा एक सम दृष्टिकों लिए दस सहस्र वर्ष पर्यंत राज किया चूडाला संयुक्त जीवन्मुक्त हो करी विचरत भए बहुरी विदेहमुक्त भए ॥ हे
रामजी दस सहस्र वर्ष पर्यंत राजा अरु चूडालानें राज किया ॥ अरु सत्ता समानविषे स्थित रहे किसी पदार्थविषे रागवान न भए अरु दोषभी न किया ॥ ज्योंकेत्यों शांत पदविषे स्थि
त रहे जेती कछू राजकी चेष्टा हे सो करते रहे ॥ परंतु अंतःकरण करी किसिविषे बंधमान न भए ॥ केवल आत्मपदविषे अचल रहे ॥ बहुरी राजा अरु चूडाला विदेह मुक्तिकों प्राप्त
भए जेसें आपकों जानतेथे तिसी केवल परमाकास अक्षोभ पदविषे जाय स्थित भए ॥ जेसें तेल बिना दीपक निर्वाण होता हे ॥ तेसें प्रारब्ध वेगके क्षय हुए निर्वाण पदविषे प्राप्त भए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे रामजी जेसें सिखरध्वज अरु चूडाला जीवन मुक्ती होकरी भोगकों भोगते विचरे हे ॥ तेसें तुमभी रागदोषतें रहित होकरी विचरो ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे सिखरध्वज चूडालाख्यान समाप्तिनाम सप्ताशीतितमः सर्गः ॥ ८७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥७॥ ॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी सिखरध्वजका वृत्तांत में संपूर्ण तुझकों कहा ॥ एसी दृष्टिकों आश्रय करो केसी दृष्टि हे जो पापका नास करती हे तिस दृष्टिकों आश्रय करी जिस मार्ग सिखरध्वज तत्पदकों प्राप्त भया हे ॥ अरु जीवन्मुक्ती होकरी राज व्यवहार किया हे तेसें तुमभी तत्पदकों आश्रय करो अरु तिसी परायण होउ आत्मापदकों पायकरी भोग मोक्ष दोनोंकों भोगो अरु तिसी प्रकार बृहस्पतिका पुत्र कचभी बोधवान हुआ हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् जिस प्रकार बृहस्पतिका पुत्र कच बोधवान हुआ हे ॥ सो प्रकार सभहि संक्षेपतें मुखकरी मुझकों कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी अेसा कच था जो बालक अवस्था अज्ञात हे तिसकों त्याग करी पद पदार्थकों जानणे लागे ॥ जब अेसा हुआ तब पिता बृहस्पतिसों प्रश्न किया जो हे पिता इस संसार पिंजरतें में केसें निकसों जेता संसार हे सो जीवित करी बांधा हुआ हे जीवित कहिये अनात्म देहादिकों विषे मिथ्या अभिमान करणा इसी करी बांधा हुआ हे ॥ जो अहं त्वं मानता हे तिस संसारतें मुक्ति केसें होउं ?॥ बृहस्पतीरुवाच ॥ हे तात इस अनर्थरूप संसारतें तब मुक्त होता हे जब सर्व त्याग करता हे ॥ सर्व त्याग किये बिना मुक्ती नही होती ॥ तातें तुं सर्व त्याग करु जो मुक्त होवे॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब इस प्रकार बृहस्पतिनें कहा तब कच अेसें पावन वचनोंकों श्रवणकरी ऐश्वर्यका त्याग करी बनकों गया ॥ बनविषे जायकरी एक कंदरामें स्थित भया तप करणे लागा ॥ हे रामजी बृहस्पतिका पुत्र कच तिसके जाणे करी उसकों खेद कछू न भया जो ज्ञानवान पुरुषकों संजोग विजोग विषे समभाव रहता हे ॥ हर्ष सोककों कदाचित् नही प्राप्त होता ज्योंकात्यों रहता हे ॥ जब अष्ट वर्ष पर्यंत तप किया तब बृहस्पति आया ॥ अरु देखा जो कच एक कंदराविषे बेठा हे॥ तहां कचके पास आनि स्थित भया॥ अरु कचनें पिताका पूजन गुरोंकी न्यांइ किया अरु बृहस्पतिनें कचकों कंठ लगाया॥ तब दुःख करी गदगद वाणी सहित कचनें प्रश्न किया हे पिता अष्ट वर्ष बीते हे जो में सर्व त्याग किया हे तोभी सांतिकों नही प्राप्त भया ॥ जिस करी मेरे तांइ सांति प्राप्त होवे सो कहो ॥ तब बृहस्पतिनें कहा हे तात सर्व त्याग करु जो तेरे तांइ सांति होवे ॥ अेसें कहि करी बृहस्पति उठी खडा हुआ अरु आकासकों चलागया ॥ हे रामजी जब अेसें बृहस्पति कहिकरी चलागया तब कच आसन अरु मृगछाला अरु बनकों त्याग करी आगें बनकों चला ॥ एक कंदराविषे जायकरी स्थित भया॥तब तीन वर्ष उहां बितीत भए बहुरी बृहस्पति आय प्राप्त भया देखा जो कच स्थित हे॥तब कचनें भली प्रकार गुरोंकी न्यांइ पूजन किया॥अरु बृहस्पतिनें कचकों कंठ लगाया ॥ तब कचनें कहा हे पिता अबलग मेरे तांइ सांति नही प्राप्त भइ ॥ अरु में सर्व त्यागभी किया ॥ जो अपणे पास कछू नही राख्या तातें जिसकरी मेरा कल्याण होवे सोइ कहो ॥ तब बृहस्पतिनें कहा हे तात अबभी सर्व त्याग नही ॥ तातें सर्व पद चित्तका नाम हे ॥ जब चित्तका त्याग करेगा तब सर्व त्याग होवेगा तातें चित्तका त्याग करु ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी अेसें कहिकरी बृहस्पति आकासकों चलागया ॥ तब कचविचारणे लागा जो पितानें सर्व पद चित्तकों कहा हे सो चित्त क्या हे ॥ प्रथम बनके पदार्थोंकों देखिकरी विचारत भया जो यह चित्त हे ॥ तब देखा जो यह भिन्न भिन्न हे तातें यह चित्त नही॥अरु नेत्रभी चित्त नही ॥ जो नेत्र श्रवण नही श्रवण नेत्रहुतें भिन्न हे ॥ अरु श्रवणभी चित्त नही इसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकार सर्व इंद्रियां चिंत्त नही जो एकविषे दुसरेका अभाव है ॥ तातें चिंत्त क्या है जिसकों जाणीकरी त्यागकरों बहुरी विचार किया जो पिताके पास स्वर्ग विषे जाउ है रामजी ऐसें
विचार करी उठि खडा हुआ दिगंबर आकार आकासकों चला जब पित्राके पास जाय प्राप्त भया तब पिताका पूजन किया ॥ अरु कहा है तेतीस कोटि देवताके गुरु चित्तका रूप
क्या है ॥ तिसका रूप कहो जो में तिसका त्यागकरों ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ हे पुत्र चित्त अहंकारका नाम है सो अज्ञानतें उपजा है अरु आत्म ज्ञान करिके इसका नास होता है जे
सें रसडीके आज्ञानतें सर्प भासता है ॥ अरु रसडीके जानणेतें सर्प भ्रम नष्ट हो जाता है ॥ तातें अहंभावका त्याग कर अरु स्वरूपविषे स्थित होउ ॥ कचोवाच ॥ हे पिता अहंभाव
का त्याग केसें करों अहं तो में हों बहुरी अपणा त्याग करिके स्थित केसें होउ ? इसका त्याग करणा महा कठिण है ॥ बृहस्पतीरुवाच ॥ हे तात अहंकारका त्याग करणा तो महा
सुगम है ॥ फूलके मिलणेविषेभी कछू जतन है अरु नेत्रोके खोलणे अरु मिटणे विषेभी कछू जतन है ॥ परंतु अहंकारके त्यागणेविषे जतन कछू नही ॥ हे पुत्र अहंकार वस्तु कछू नही
भ्रमकरिकें उठ्या है जेसें मूर्ख बालक अपणे पछावेविषे वैताल कलपता है ॥ अरु जेवरीविषे सर्प भासता है अरु मारुथलविषे जल कल्पता है ॥ अरु आकासविषे भ्रम करी दो चंद्रमा
भासते है ॥ तेसें प्रछन्न अहंकार अपणे प्रमाद करी उपजा है ॥ अरु आत्मा शुद्ध है आकाशतेंभी निर्मल है ॥ अरु देश काल वस्तुके प्रछेदतें रहित सत्ता सामान चिन्मात्र है ॥ तिसविषे
स्थित होहु जो तेरा स्वरूप है अरु तुं आत्मा है तेरेविषे अहंकार कदाचित् नही ॥ हे साधु आत्मा सर्वदा सर्व प्रकार सर्वविषे स्थित है ॥ तिसविषे अहंभाव अेसें है जेसें घूड समुद्रविषे
कदाचित् नही तेसें तिसविषे अहंकार कदाचित् नही केसा है आत्मा जिसविषे न एक कहणा है न दो कहणा है केवल अपणे आपविषे स्थित है ॥ अरु जो आकार दृष्ट आते है सो
चित्तके फुरणे करिकें है ॥ चित्तके नष्ट हुए आत्माहि सेष रहता है ॥ तातें अपणे स्वरूपविषे स्थित होहु जो तेरा दुःख नष्ट हो जावे अरु जो कछू यह दृष्ट आता है तिसविषेभी आत्मा
है ॥ जेसें पत्र फूल फल सर्व बीजतें उत्पत्ति होते है ॥ तेसें सर्व आत्माका चमत्कार है ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे बृहस्पति बोधनंनाम अष्टाशीतितमःसर्गः ॥ ८८ ॥
॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब इस प्रकार बृहस्पतिनें उत्तम उपदेश किया ॥ तब कच श्रवण करीकें स्वरूपविषे स्थित भया ॥ जोग जो है आत्मा अरु प्रछंन अहंकारकी एकता
तिसकों प्राप्त भया अरु आत्मा स्वरूप हुआ ॥ अरु जीवन्मुक्त होकरी विचरत भया है रामजी जेसें कच जीवन्मुक्त होकरी विचरा है निरहंकार हुआ ॥ तेसें तुंभी निरास होकरी विच
रु ॥ केवल अद्वैत पदकों प्राप्त होहु॥ जो निर्मल अरु सुद्ध है ॥ जिसविषे एक अरु दो कहणा नही ॥ तुं तिसपदविषे स्थित होहु॥ तेरेविषे दुःख कोउ नही तुं आत्मा है॥ अरु तेरेविषे अहं
कार नही तुं ग्रहण त्याग किसका करे जो पदार्थ होवे नही तिसका ग्रहण त्याग क्या कहियें ॥ हे रामजी जेसें आकाशके बनविषे फूल है नही ॥ तिसका ग्रहण क्या अरु त्याग क्या ॥
तेसें आत्माविषे अहंकार नही ॥ जो ज्ञानवान पुरुष है सो अहंकारका ग्रहण त्याग नही करते अरु मुर्खकों एक आत्माविषे नाना आकार भासते है ॥ किसीका शोक करणा कहुं हर्ष
करणा ॥ अरु तुं केसें दुःखका नाश चाहता है ॥ दुःख तेरेविषे है नही ॥ तुं केसें नास करणेंकों समर्थ हुआ है ॥ अरु जेते कछू आकार भासते है सो मिथ्या है ॥ तिनविषे जो अ
धिष्ठान है सो सत है अरु मूर्ख मिथ्या करीकें सतकी रक्षा करते है जो मेरे दुःख नास होवे ॥ राजोवाच ॥ हे भगवन् तुमारे प्रसाद करीकें में तृप्त हुआ हों ॥ तुमारे वचनरूपी अम्रत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करी अघाया हौं ॥ जैसें पपीहा एक बुंदकों चाहता हे अरु कृपा करीकें मेघ तिसपर वर्षा करता हे अरु अघाय रहता हे ॥ तेसें मैं तुमारी शरणकों प्राप्त हुआ था ॥ अरु तुमारे दर्शन की इछा बूंदकी न्यांइं करता था अरु तुमनें कृपा करी कें ज्ञानरूपी अमृतकी वर्षा करी ॥ तिस वर्षा करीकें मैं अघाया रहा हौं ॥ अब मैं शांतपदकों प्राप्त हुआ हौं ॥ तीनों ताप मेरे मिटि गये हे कोउ फुरणा मेरेविषे नही रहा अरु तुमारे अमृत वचनोंकों श्रवण करता तृप्त नही होतां ॥ जेसें चकोर चंद्रमाकों देखिकरी किरणातें तृप्त नही होता ॥ तेसें तुमारे अमृतरूपी वचनोंकरी मैं तृप्त नही होता तातें प्रश्न करता हौं तिसका उत्तर कृपाकरी कहो ॥ हे भगवन् मिथ्या क्या हे अरु सत् क्या हे जिसकी रक्षा करते हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस उपर एक आख्यान हे सो कहता हौं जिसके सुणेतें हांसी आवे॥एक आकाशविषे शून्य बन हे॥ तिसविषे एक मूर्ख बालक हे जो आप मिथ्या हे ॥ अरु सत्तके राखणेकी इछा करता हे ॥ जो में इसकी रक्षा करोंगा अधिष्ठान जो सत्य हे तिसकों नही जाणता ॥ अरु मूर्खता करीकें दुःख पावता हे॥ क्या जाणता हे सो श्रवण करु॥यह आकाश हे मेंभी आकाश हौं ॥ मेरा आकाश हे में आकाशकी रक्षा करोंगा ॥ अेसें विचार करी एक गृह बनाया गृहविषे जो आकाश हे तिसकी रक्षा करोंगा जो इसका नास न होवे इस निमित्त गृह बनाया ॥हे रामजी अेसें विचार करीकें गृहकी बणावत बहुत करी॥जब किसी ठोरतें टूटे तब बहुरी बणाय लेवै॥ जब केता काल इस प्रकार बितीत भया तब काल करी गृह गिर पडा॥तब रुदन करणे लागा ॥ हाय हाय मेरा आकाश नष्ट होगया ॥ जेसें एक ऋतु बितीत होवे अरु दुसरी आवे ॥ तेसें कालकरी गृह गिरि गया तिसतें उप्रांत एक कुआ बनाया अरु कहणे लागा जो यह आकाश न जावेगा ॥ जो इसकी भली प्रकार रक्षा करोंगा ॥ हे रामजी इस प्रकार कुएकों बणाय करी सुख मान्या ॥ जब केता काल बितीया तब जेसें सूका पात वृछतें गिरता हे ॥ तेसें कुआभी गिरपडा तब बडे शोककों प्राप्त भया ॥ जो मेरा आकाश गिर पडा नष्ट होगया में क्या करोंगा ॥ अेसें शोकसंयुक्त केता काल बीत्या तब एक कुटी बणाइ ॥ जेसें अनाज राखणेके निमित्त बनाते हे ॥ तेसें बणायकरी कहणे लागा जो अब मेरा आकाश कहां जावेगा में अब इसकी भली प्रकार रक्षा करोंगा ॥ अेसी कुटी करीकें बहुत सुख मान्या जब केता काल बितीत भया तब उह कूटीभी तूट पडी ॥ जो उपजी वस्तुका बिनास होणा अवस्य हे ॥ बहुरी रुदन करणे लागा जो मेरा आकाश नष्ट होगया ॥ जब केता काल शोकसंयुक्त बीत्या तब एक घट बनाया ॥ अरु घटाकाशकी रक्षा करणे लागा तब केते काल करी घटभी नष्ट हो गया ॥ बहुरी एक कुंड बनाया ॥ अरु कुंडाकाशकी रक्षा करणे लागा केताकाल करी कुंडभी नष्ट होगया तब शोकवान हुआ ॥ बहुरी एक हवेली बनाइ अरु कहणे लागा अब मेरा आकाश कहां जावेगा ॥ में इसकी भली प्रकार रक्षा करोंगा ॥ अरु बडे हर्षकों प्राप्त हुआ ॥ जब केता काल बितीत भया तब उह हवेलीभी गिर पडी बहुरी दुःखकों प्राप्त भया जो हाय हाय मेरा आकाश नष्ट हो गया ॥ मेरे तांइं बडा कष्ट आनि प्राप्त भया हे ॥ हे रामजी इसी प्रकार आत्मज्ञान बिना अरु आकाशके जाणेबिना मूर्ख बालक दुःख पावता रहा जो आपकोंभी यथार्थ जाणता अरु आकाशकोंभी ज्योंका त्यों जाणता ॥ तो यह कष्ट काहेकों पावता ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे मिथ्या पुरुषाकाश रक्षाकरणं नाम एकोननवतितितमः सर्गः ॥ ८९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् मिथ्या पुरुष कवन था ॥ अरु जिसकी रक्षा करता था सो आकाश क्या था ॥ अरु जो गृह कूप आदिक बणावता था सो क्या था?॥ यह प्रगट करि कहो ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी मिथ्या पुरुष जो संवेदन फुरणेतें उपजा अहंकार हे ॥ अरु आकाश चिदाकाश हे तिसतें उपजा बहुरी जाणता हे जो में आकाशकी रक्षा करों ॥ अरु आकाश गृह घटादिक जो कहा सो देह हे ॥ तिसविषे जो आत्मा अधिष्ठान हे तिस आत्माकी रक्षा करणेकी इछा मूर्खता करिकें करता हे आपकों नही जाणता जो मेरा स्वरूप क्या हे ॥ तिस अपणे स्वरूपकों न जानणे करी दुःख पावता हे॥आप हे मिथ्या अरु मिथ्या हो करी आगें आकाशकों कल्पिकरी राखणेकी इछा करता हे ॥ जो देहकरिकें देहीके राखणेकी इछा करता हे जो में जीता रहों ॥ अरु देह तो कालकरी उपजाहे बहुरी देहके नष्ट होणेकरी सोकवान होता हे॥अरु अपणे वास्तव स्वरूप वस्तुकों नही जाणता॥तिसका नाश कदाचित् नही होता॥अेसें विचारतें रहित क्लेश पावता हे ॥ हे रामजी जिसविषे भ्रम उपजता हे॥तिसका अधिष्ठान सत्ता नहीं होता सर्वका अपणा आप आत्मा हे सो कदाचित् नाश नही होता॥तिस विषे मूर्खता करीकें अहंरूप संसारकों कल्पता हे ॥ अरु अेते इसके नाम हे ॥ अहंकार मन, जीव, बुद्धी, चित्त, माया, प्रकृती, दृश्य, यह सर्व इसके नाम हे सो मिथ्या हे अरु इसका अत्यंत अभाव हे ॥ अण होता उदे हुआ हे जो में हों क्षत्री ब्राह्मण वर्णआश्रम अरु मनुष देवता दैत इत्यादिक कल्पना करता हे ॥ हे रामजी यह कदाचित् हुआ नही अरु न होवेगा न किसी काल न किसीकों हे ॥ अविचार सिद्ध हे विचार कीयेतें कछू नही ॥ जेसें जेवरीके अज्ञानतें सर्प कल्पता हे अरु जानणेतें नष्ट हो जाता हे तेसें स्वरूपके प्रमादकरी अहंकार उदे हुआ हे सो तेरा स्वरूप केसा हे श्रवण करु ॥ आत्मा हे अरु प्रकाशरूप हे निर्मल हे जो विद्या अविद्याके कार्यतें रहित चैतन मात्र हे ॥ अरु निर्विकल्प हे ज्योंका त्यों स्थित हे अद्वैत हे अरु प्रमाणकों कदाचित् नही प्राप्त होता आत्मत्व मात्र हे तिसविषे संसार केसें होवे अरु अहंकार केसें होवे ॥ सम्यक दर्शीकों आत्मातें इतर नही भासता ॥ अरु असम्यक् दर्शीकों संसार भासता हे पदार्थकों सत जाणता हे अरु संसारकों वास्तव जाणता हे जो अपणे वास्तव स्वरूपकों नही जाणता हे जो में कवण हों जाणेतें अहंकार नष्ट हो जाता हे ॥ अरु जेती कछू आपदा हे तिसकी खाण अहंकार हे ॥ सर्व ताप अहंकारतें उत्पत्ति होते हे ॥ इसके नष्ट हुए अपणे स्वरूपविषे स्थित होता हे ॥ अरु विश्वभी आत्माका चमत्कार हे इतर नही जेसें समुद्रविषे पवन करी नाना प्रकारके तरंग भासते हे अरु स्वर्नविषे नाना प्रकारके भूषण भासते हे ॥ सो उही रूप हे भिन्न कछू नही ॥ तेसें आत्मातें विश्व भिन्न कछू नही अरु स्वर्नभी परिणाम करी भूषण होता हे अरु समुद्रभी परिणामकरी तरंग होता हे॥अरु आत्मा अच्युत हे परिणामकों नही प्राप्त भया तातें समुद्र अरु स्वर्नतें विलक्षण हे॥ आत्मा विषे संवेदन करी चमत्कार मात्र विश्व हे सो आत्मा मात्र स्वरूप हे सो न कदाचित् जन्म्या हे न मृत्युकों प्राप्त होता हे॥ न किसी कालविषे न किसीसों मृत हे ज्योंका त्यों आत्मा स्थित हे ॥ अरु जंन्म मृत्यु तब होवे जब दुसरा होवे आत्मा तो अद्वैत हे जिसविषे एक कहणाभी नही तो दुसरा कहां होवे तातें प्रत्यक आत्मा अपणा अनुभवरूप हे ॥ तिसविषे स्थित होड्ड तब दुःख ताप सब नष्ट हो जावे ॥ सो आत्मा शुद्ध हे अरु निराकार हे ॥ हे रामजी जो निराकार शुद्ध हे सो किसकरी ग्रहण करियें अरु रक्षा केसें करियें कवन समर्थ हे जो रक्षा करे ॥ जेसें घटके नष्ट हुए घटाकाश नष्ट नही होता तेसें देहके नष्ट हुए देहि आत्माका नास नही होता ॥ आत्म सत्ता ज्योंकी त्यों हे अरु जन्ममरण पुर्यष्टका करीकें भासते हे ॥ जब पुर्यष्टका देहतें निकसी जाती हे तब मृतक भासता हे जब पुर्यष्टका संयुक्त हे तब जीवत भासता हे ॥ अरु आत्मा सूक्ष्मतें सूक्ष्म हे ॥ अरु स्थूलतें स्थूल हे तिसका ग्रहण केसें होवे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरु रक्षा केसें करियें ॥ अरु स्थूलभी उपदेश जतावणेके निमित्त कहता हे ॥ आत्मा वाचातें अगोचर हे ॥ अरु भाव अभावरूप संसारतें रहित हे ॥ सर्वका अनुभवरूप हे तिसविषे स्थित होकरी अहंकारका त्याग कर अपणे स्वरूप प्रत्यक आत्माविषे स्थित होहु ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे मिथ्यापुरुषोपाख्यान समाप्तिर्नामनवतितमः सर्गः ॥ ९० ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह संसार आत्मरूप हे जेसें इनकी उत्पत्ति भइ हे सो सुण ॥ शुद्ध आत्मा निर्विकल्पविषे विवर्त्त चैतन लक्षण मनकरी स्थित भया हे ॥ अरु आगें तिसनें जगत् कल्पना करी हे ॥ सो मन केसा हे जेसें समुद्रविषे तरंग अरु स्वर्नविषे भूषण जेवरीविषे सर्प सूर्यकी किर्णांविषे जलाभास तेसें आत्माविषे विवर्त्त मन हे सो आत्मातें इतर कछू नही ॥ जिसकों तरंगका ज्ञान हे ॥ तिसकों समुद्र बुद्धि नही होती ॥ अरु तरंगकों अवर जाणता हे ॥ जिसकों भूषणका ज्ञान हे सो स्वर्नकों नही जाणता ॥ अरु सर्पके ज्ञान करी जेवरीकों नही जाणता ॥ अरु जलके ज्ञानकरी किरणोंकों नही जाणता ॥ तेसें नाना प्रकार विश्वके ज्ञानकरी परमात्माकों नही जाणता ॥ जेसें जिस पुरुषनें समुद्रकों जाण्या हे जो जल हे तिसकों तरंग बुदबुदेभी जलहि भासते हे ॥ भिन्न कछू नही भासता ॥ सो पुरुष निर्विकल्प हे ॥ अरु जिसकों जेवरीका ज्ञान हुआ॥तिसकों सर्प बुद्धि नही होती सो पुरुष निर्विकल्प हे ॥ अरु जिसकों स्वर्नका ज्ञान हुआ हे तिसकों भूषण बुद्धि नही होती ॥ अेसा पुरुष हे सो निर्विकल्प हे ॥ जिसकों किरणोंका ज्ञान हुआ हे तिसकों जलबुद्धि नही होती ॥ तेसें जिस पुरुषकों निर्विकल्प आत्माका ज्ञान हुआ हे तिसकों संसार भावना नही होती तिसकों ब्रह्महि भासता हे ॥ अेसा जो मुनीश्वर हे सो ज्ञानवान हे ॥ हे रामजी मनभी आत्मातें इतर कछू नही आदि जो परमात्मातें मन होकरी फुर्या हे ॥ सो अहं त्वं आदिक होकरी फुर्या ॥ मात्र पदविषे जो अहंभाव होणा सो उत्थान हे बहिर्मुख होणेकरी अपणे निर्विकल्प चिन्मात्र आत्मा स्वरूपका प्रमाद हुआ हे ॥ तिस प्रमाद होणेकरी आगें विश्व हुइ हे ॥ अरु मनभी केसा हे जो कदाचित् उदे नही भया अरु आत्मा स्वरूप हे सो उदे हुएकी न्यांइं भासता हे॥मन अरु संसार सतभी नही असतभी नही॥ जो दुसरी वस्तु होवे तो सत अथवा असत कहियें आत्मा अद्वैत ज्योंका त्यों स्थित हे॥तिसका विवर्त मन होकरी फुर्या हे ॥सोइ मन कीट हे सोइ मन ब्रह्मा हे ॥ बहुरी ब्रह्मानें मनोराज करीकें स्थावर जंगम सृष्टि कल्पी हे ॥ सो न सत्य हे न असत्य हे ॥ हे रामजी सर्व प्रपंच मननें कल्प्या हे ॥ तिसीनें नाना प्रकारके विकार रचे हे॥मन बुद्धि चित्त अहंकार जीव सर्व मनके नाम हे ॥ जब मन नष्ट हो जावे तब न संसार हे न कोउ विकार हे ॥ अरु जबलग मन दृश्य साथ मिलिकरी कहे जो में संसारका अंत लेउं ॥ तो कदाचित् अंत न आवेगा काहेतें जो संसरनाहि संसार हे ॥ संसरणे संयुक्त संसारका अंत कहां आवे ॥ अंत लेणे वारा बणीकरी आगें फुरी करी देखता हे तो अंत कहांतें आवें ॥ जेसें कोउ पुरुष दोडता जावे अरु कहे में अपणे पछावेका अंत लेउ जो कहां लग जाता हे ॥ हे रामजी जबलग पुरुष चलाजावे तबलग पछावेका अंत नही आता ॥ अरु जब ठहरी जावे तब पछावेका अंत हो जाता हे ॥ तेसें जबलग फुरणा हे तबलग संसारका अंत नही आता ॥ जब फुरणा नष्ट हो जावे तब संसारकाभी अंत होवे ॥ आत्माहि दृष्ट आवे ॥ अरु संसारका अत्यंत अभाव हो जावे ॥ अरु जो फुरने संयुक्त देखेगा तो संसारहि भासेगा ॥ हे रामजी जिस पदार्थकों यह देखता हे सो पदार्थ पूर्व कोऊ नही चित्तके फुरणे करी उदे होता हे जब चित्त फुर्या जो यह पदार्थ हे ॥ तब आगें पदार्थ हुआ ॥ अरु फुरणेतें रहित होकरी देखें तो पदार्थ कोउ नही भासता केवल सांतपद हे ॥ हे रामजी यह जो नाना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकारकी कल्पना हे तिसतें रहितनिरविकल्प ब्रह्मपदविषे अहंकारका त्याग करी स्थित होडु ॥ अहंकार जो हे नाम रूप देह वर्न आश्रम विषे माया करी कल्पित जब तिसतें रहित हो करी देखेगा तब केवल सत्‌चिदानंद आत्मपद सेष रहेगा ॥ जब तिस पदकों अपणा आप जाणेगा तब तुंहि सर्वात्मा होकरी विचरेगा ॥ दुःख तेरे तांइ कोउ न रहेगा॥हे रामजी मनही संसार हे मनहि ब्रह्मा हे अरु मनहि कीटी हे मनहि सुमेर हे मनहि तृण हे मनहि सर्व विश्वरूप होकरी स्थित भया हे॥सो मन केसा हे जो आत्मातें इतर कछू नही॥ जेसें फलहिविषे संपूर्ण वृक्ष हे तेसें मन आत्मा स्वरूप हे ॥ आत्मातें इतर मन कछू वस्तु नही ॥ अेसें जाणिकरी आत्मस्वरूप होवेगा॥ यह जो संज्ञा हे बंध अरु मोक्ष तिसकों त्याग करु॥न बंधकी वांछा करु न मोक्षकी इछा करु ॥ इस कल्पनातें रहित होडु ॥ अरु अेसें न होवे जो मुक्त हों अरु यह अवर बंध हे ॥ केवल सत्ता समान आत्मपदविषे स्थित होडु यही भावना कर जो तेरे सर्व दुःख नष्ट हो जावे अेसा जो पुरुष हे तिसका चित्त भाव नही रहता सर्व आत्मा तिसकों भासता हे ॥ जेसें जिस पुरुषनें सूर्यकों जाण्या हे तिसकों किर्णांभी सूर्यहि दृष्ट आता हे ॥ तसें जिसकों आत्माका साक्षात्कार हुआ हे तिसकों जगत्‌भी आत्मस्वरूप भासता हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे परमार्थ जोगोपदेसो नाम एकनवतितमःसर्गः ॥९१॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी महा करता होडु अरु महा भोक्ता अरु त्यागी होडु ॥ सर्व संकाकों त्यागकरी निरंतर धैर्यधारी करी स्थित होडु ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् महा कर्ता क्या कहियें ॥ महा भोक्ता अरु महा त्यागी क्या कहियें कृपाकरिकें कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी तेरे प्रश्न ऊपर एक आख्यान हे सो श्रवण करु ॥ एक समे सुमेर पर्वतकी उत्तर दिसाके शिखरतें सदासिवजी आय प्राप्त भया ॥ सो केसा हे सदासिव चंद्रमाकों मस्तक विषे धर्या हे ॥ अरु गण संयुक्त अरु गौरी डाबै अंगविषे धारे हे ॥ सुमेर पर्वतके शिखर पर आनि स्थित भया॥तब भृंगी गण जो हे सदाशिवका तिसनें हाथ जोडकरी प्रश्न किया॥केसा हे भृंगी गण महा तेजवान अरु आत्म जिज्ञासा जिसकों उपजी हे तिसनें प्रश्न किया के हे भगवन् देवके देव यह संसार मिथ्या भ्रम हे तिसविषे मैं सत्य पदार्थ कोउ नही देखता ॥ सदा चलरूप भासता हे ॥ अरु जो सत पदार्थ हे तिसकों में नही जाणता ॥ मेरे ताप नष्ट नही भए में सांतिकों नही प्राप्त भया ॥ तातें आपकों दुःखी देखता हों ॥ जिसकरी सांति प्राप्त होवे सो कृपा करी कहो अरु खेदतें रहित होकरी चेष्टाविषे विचरों ॥ सो खेदतें रहित तब होता हे जब कोउ आसरा होता हे ॥ अरु जेता कछू संसार हे सो मिथ्या हे में किसका आसरा करों ॥ तातें सोइ मेरे तांइ कहो जिसकों आश्रय किये दुःख मेरे नष्ट होवे ॥ ईस्वरोवाच ॥ हे भृंगी तुं महाकर्ता होडु अरु महा भोक्ता होडु ॥ अरु महा त्यागी होडु सर्व संकाकों त्यागकरी निरंतर धैर्यकों आश्रय करिके तेरे दुःख नष्ट होवेगे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी अेसा जो हे भृंगी गण जिसकों सदाशिवनें पुत्रकरी रखा हे ॥ तिसनें श्रवणकरीकें प्रश्न किया हे परमेश्वर महाकर्ता क्या कहियें ॥ महा भोक्ता महा त्यागी क्या कहिये सो कृपा करी ज्योंकात्यों मेरे तांइ कहो ॥ ईश्वरोवाच ॥ हे पुत्र सर्वात्मा जो अनुभव रूप हे तिसकों आश्रय करिकें विचरु जो दुःखतें रहित होवे ॥ अरु इन तीनो वृत्तिकरी दुःख तेरे नष्ट हो जावेगे ॥ जो कछू सुभ क्रिया आय प्राप्त होवे ॥ तिसकों संका त्यागकें करे अेसा पुरुष महा कर्ता हे ॥ धर्म अधर्म क्रिया अनिछित आनि प्राप्त होवे तिसकों राग दोषतें रहित होकरि करे अेसा पुरुष महा कर्ता हे ॥ जो पुरुष मौनी निरहंकार निर्मान हे मत्सरतें रहित होकरी अेसा पुरुष महा कर्ता हे ॥ अनिछित प्राप्त हुएका त्याग न करे॥ अरु जो नही प्राप्त हुआ तिस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की वांछा न करे ॥ एसा पुरुष महा कर्ता हे ॥ अरु पुन्य पाप क्रिया जो अनिछित आय प्राप्त होवे ॥ तिसकों अहंकारतें रहित होकरी करे ॥ पुण्य क्रिया करणेंतें आपकों पुण्यवान नही मानता अरु पापकियेतें पापी नही मानता ॥ सदा आपकों अकर्ता जाणता हे अेसा पुरुष महा कर्ता हे ॥ अरु जो सर्वत्रविषे विगतस्नेह हे सत्यवत् स्थित हे ॥ निरिछा वर्तता हे कार्यविषे सो महा कर्ता हे ॥ जो दुःखके प्राप्त हुए सोक नही करता अरु सुखके प्राप्त हुएतें हर्षवान नही होता सुभाविक चित्त समताकों देखता हे कदाचित् विषमताकों प्राप्त नही होता॥ जो सुखकी भिन्नभिन्न विषमता हे तिसतें रहित हे सो पुरुष महा कर्ता हे अरु जिस पुरुषनें सुख दुःखका त्याग किया हे जो सुख दुःखकी भावना नही फुरती यहि त्याग हे जो अवर कछू नही फुरता हे अेसा पुरुष महा कर्ता हे ॥ हे शृंगी जो पुरुष प्राप्त हुइ वस्तूकों राग दोषतें रहित होकरी भोगता हे सो महा भोक्ता हे अरु जो बडा कष्ट आय प्राप्त होवे तिस विषे दोष नही रहता अरु बडे सुखकी प्राप्तिविषे हर्षवान नही होता सो पुरुष महा भोक्ता हे अरु जो बडे राजके सुख भोगणेविषे आपकों सुखी नही मानता ॥ राजके अभाव होणे अरु भिक्षा मागणेविषे आपकों दुःखी नही मानता सदा स्वरूपविषे स्थित हे सो महा भोक्ता हे अरु जो मान अहंकार अरु चिंतनातें रहित हे केवल समताविषे स्थित हे सो महा भोक्ता हे ॥ अरु जो कोउ कछू देवे तउ आपकों लेणेवाला नही मानता अरु सुभ क्रियाविषे भोक्ता हुआ आपकों कर्तृत्व भोक्तृत्व नही मानता ॥ सो पुरुष महा भोक्ता हे ॥ अरु जो मीठा खाटा तीक्ष्ण सलोणा कटु यह रस प्राप्त होते हे ॥ तिनके भोगणेविषे सम चित्त रहता हे अरु सम जाणता हे सो महा भोक्ता हे जो रसवान पदार्थ प्राप्त हुएतें हर्षवान नही होता ॥ अरु विरसके प्राप्त हुएतें दोषवान नही होता ज्योंकात्यों रहता हे जेसा आय प्राप्त होवे भला बुरा तिसकों दुःखतें रहित होकरी भोगता हे ॥ अेसा पुरुष हे सो महा भोक्ता हे ॥ अरु जेती कछू क्रिया हे सुभ असुभ भाव अभाव ॥ तिसके सुख दुःखतें चलायमान नही होता सो पुरुष महा भोक्ता हे अरु जिसकों मृत्युका भय नही अरु जीणेकी आस्था नही उदे अस्त विषे समान हे सो महा भोक्ता हे ॥ बडे सुख प्राप्तविषे हरखवान नही होता अरु दुःखकी प्राप्तिविषे सोकवान नही होता ॥ ज्योंकात्यों रहता हे सो महा भोक्ता हे ॥ जो कछू अनिछित आय प्राप्त होवे तिसकों कर्ता हुआ अहंकारतें रहित हे ॥ सो पुरुष महा भोक्ता हे ॥ जो पुरुष सत्रु मित्र सुहृदविषे समबुद्धि रहता हे ॥ विषमताकों कदाचित् नही प्राप्त होता सो पुरुष महा भोक्ता हे जेता कछू सुभ असुभ दुःख सुख आय प्राप्त होवे तिसकों धारि लेता हे कदाचित् विषमताकों नही प्राप्त होता जेसें समुद्रविषे नदियां आय प्राप्त होतियां हे ॥ तिनकों धारिकरी सम रहता हे तेसें ज्ञानवान सुभ असुभकों धारिकरी सम रहता हे ॥ जो संसार अरु देह इंद्रियां अरु अहंकारकी सत्ताकों त्यागकरी स्थित हुआ हे ॥ अरु जानता हे न मैं देह हों न मेरी देह हे इनका साक्षी हों ॥ इस वृत्तिकों धारी हे सो महा त्यागी हे ॥ अरु जो सर्व चेष्टा करता हे राग दोषतें रहित होकरी सो महा त्यागी हे अरु सुभ असुभ प्राप्त हुएकों अहंकारतें रहित होकरी करता हे सो महा त्यागी हे अरु जो मन इंद्रियां देहकरी इछातें रहित हुआ सर्व चेष्टाभी करता हे सो महात्यागी हे अरु जो पुरुष सम चित्त इंद्रियजीत हे अरु क्षमावान हे जो सो महात्यागी हे ॥ हे रामजी जिस पुरुषनें धर्म अधर्मकी देह संसारकी मद मान मननकी इत्यादिक कल्पनाका त्याग किया हे सो महा त्यागी हे ॥ हे रामजी इस प्रकार शृंगी गणकों सदाशिवनें उपदेश किया सो केसा सदाशिव हे खपरकों हाथविषे धारे अरु वाघंबरकों लिए हुए मस्तकविषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चंद्रमाकों धारे तिसनें सुमेरुके सिखर उपर उपदेश किया ॥ हे रामजी तुंभी इसी वृत्तिकों धारिकरी विचरु ॥ तेरे सर्व दुःखनष्ट हो जावेगें ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे महाकर्तादि उपदेशो नाम द्विनवतितमः सर्गः ॥ ९२ ॥ ॥७॥ ॥ ७ ॥ ॥७॥ ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर जो तुमनें उपदेश किया सो में जान्या हे अरु तुमनें आगें उपसम प्रकरणविषे उपदेश कियाथा जो आत्मा अनंत हे अरु शुद्ध हे ॥ तब में प्रश्न कियाथा जो आत्मा अनंत हे अरु शुद्ध हे ॥ तो यह कलना केसें उपजी हे ॥ जेसें समुद्र निर्मल हे तिसविषे धूड केसें होवे बहुरी तुमनें कहा इस प्रश्नका उत्तर सिद्धांत कालविषे कहेंगे सो में अब सिद्धांतका पात्र हों मेरे तांइं कहो जेसें स्त्री भर्तासों प्रश्न करती हे अरु भर्ता कृपा करिकें उपदेश करता हे ॥ तेसें में तुमारी सरन हों कृपा करिकें मुझकों उत्तर कहो ॥ जो आसा अरु तृष्णाके फांस मेरे टूटे हे ॥ अरु आशारूपी जालतें निकसाहों अरु संसे रूपी धूड मेरे रिदेविषे उठी हे तिसकों वचन रूपी वर्षा करी शांत करो ॥ अरु संसेरूपी मेरे रिदेविषे अंधकार हे ॥ वचनरूपी क्रीडा करी तुम निवर्त्त करो ॥ तुमारे वचनरूपी अमृत करी में तृप्त नही होता हे भगवन् अपणे विचार ज्ञान करी यह गुरुके उपदेश किये बिना नही शोभता ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो पुरुष शांतिवान अरु क्षमावान हे अरु इंद्रिय जित हे ॥ अरु मनकी क्रिया संकल्प विकल्पकों जीता हे सो सिद्धांतका पात्र हे ॥ हे रामजी तुं अब सिद्धांतका पात्र हे तातें उपदेश करता हों अरु जो पुरुष राग दोष सहित क्रियाविषे स्थित हे अरु इंद्रियाके सुख करी जिसकों आराम हे सो सिद्धांतके वाक्य अहंब्रह्म अस्मि सर्व ब्रह्म तिनकों श्रवण करी भोगविषे स्थित होताहे॥अरु अधोगतिकों पावता हे काहेतें जो उसकों निश्चय नही होता रिदे तिसका मलीन हे ॥ तातें इंद्रियांके सुखकरी आपकों सुखी मानता हे ॥ इसी नीच स्थानोंकों प्राप्त होता हे ॥ अरु जो पुरुष क्षमा आदिक साधन करी पवित्र हुआ हे तिसकों अहंब्रह्म अस्मि सर्व ब्रह्मके श्रवण करी सीघ्रही भावनातें आत्म पदकी प्राप्ति होती हे अरु तुम सारखे जो पुरुष हे क्षमा आदिक साधन करी पवित्र हुए हे ॥ तिनकों स्वरूपकी प्राप्ति सुगम होती हे ॥ अरु जिनका अंतःकरण मलिन हे तिनकों प्राप्त होणा कठिन हे ॥ जेसें भूना बीज कलरकी पृथ्वीविषे बोइए तब उसकी अंगुरी नही होती तेसें इंद्रियारामी पुरुषकों आत्माकी प्राप्ति नही होती ॥ अरु तुम सारखे जिनका रिदा शुद्ध हे तिनकों ज्ञानकी प्राप्ति होती हे॥ अरु इन वचनोंकों पाय करी सोभते हे जेसें वर्षाकालविषे धान पृथ्वीमें सोभा पावते हे वर्षा करिकें ॥ तेसें सिद्धांत वचनोंकों पाय करी ज्ञानरूपी दीपकसों प्रकाशतें हे ॥ अरु जो ज्ञानवान पुरुष उंची बाहो करी कहते हे अरु सर्व शास्त्रभी कहते हे ॥ सो सर्व शास्त्रोंके सिद्धांतकों अरु तिनके द्रष्टांतोंको मे जाणता हों ॥ तातें सर्व सिद्धांतोंका सार कहता हों तुं श्रवण करु॥ जो तेरा स्वरूप हे तिसकों जाणेगा ॥ हे रामजी जिसकों अभ्यास करिकें एक क्षणभी साक्षात्कार हुआ हे ॥ सो बहुरी गर्भविषे नही आता अरु सत असतविषे भेद कछू नही उसकी संवेदनविषे भेद हे ॥ जेसें जाग्रतका सूर्य अरु सुपनका सूर्य प्रकाश दोनोंका समान हे ॥ जाग्रतविषे जाग्रत सूर्यका प्रकाश अर्थाकार होता हे ॥ अरु सुपनविषे सुपनका सूर्य अर्थाकार होता हे ॥ प्रकाश दोनोंका सम हे अरु संवित भिन्न हे सुपनकों मिथ्या जानता हे अरु जाग्रतकों सत्य जानता हे संवेदनतें भेद हुआ स्वरूपतें भेद कछू न हुआ ॥ जेसें एक बडा पर्वत मन करिकें रचियेतो संकल्प करी देखता हे अरु एक पर्वत बाहिर प्रत्यक्ष करि देखता हे तो संवित करीकें भेद हुआ स्वरूप दोनोंका तुल हे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग हे स्वरूपविषे जल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तरंगोका भेद कछू नही जिसकों जलका ज्ञान नही सो तरंगहि जानता हे ॥ तातैं संवितविषे भेद हे तेसें स्वरूपविषे सत् असत तुल्य हे वास्तव कछू नही ॥ केवल शांतरूप आत्मा हे ॥ अरु शब्द अर्थ संवेदनविषे हे शब्द कहिये नाम अर्थ कहियें नामी सो संवेदन फुरणे करिकें हे ॥ जब फुरणा नष्ट हो जावे तब सर्व अर्थभी आत्मा हे अेसें भासेगा ॥ जगत्की सत्ता तबलग हे जबलग आत्माका प्रमाद हे ॥ अरु प्रमाद तबलग हे जबलग अहंभाव हे ॥ जब अहंभाव नष्ट हो जावे तब केवल आत्मा शेष रहे ॥ सो आत्मा शुद्ध हे विद्या अविद्याके कार्यतें रहित हे कदाचित् स्पर्श नही किया ॥ हे रामजी अविद्याकी दो शक्ति हे एक आवरण एक विक्षेप ॥ आवरण कहियें आत्माका न जानणा ॥ विक्षप कहियें अवर कछ जानणा ॥ सो आत्मा सदा ज्ञानरूप हे ॥ तिसकों आवरण कदाचित् नही ॥ आत्मा अद्वैत हे तिसतें इतर कछू नही वण्या ॥ इसीतें आत्मा शुद्ध हे केवल ज्ञानमात्र हे ॥ हे रामजी तिसविषे कलना रूपी घूड कहां होवे ॥ जो आत्ममात्र हे चिन्मात्र जिसविषे अहंका उत्थान हे नही केवल निर्वाण पद हे ॥ जहां एक अरु द्वैत कहणाभी नही केवल अपणे आपविषे स्थित हे ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् जो सर्व ब्रह्म हे तो मन बुद्धि आदिक यह कवन हे ॥ जिसकरी तुम इह सास्त्र उपदेस करते हो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी शास्त्रके व्यवहारके अर्थ शब्द यह हे परमार्थतें कल्पना हे नही ॥ यह मन बुद्धि आदिक कछू वस्तु नही ॥ ब्रह्मसत्ताहि अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जेसें तरंग जलतें इतर कछू वस्तु नही तेसें मनादिक हे ॥ आत्मा तत्व केसा हे नित्य हे सुद्ध हे सन्मात्र हे नाहिकी न्यांइ स्थित हे ॥ हे रामजी अेसें आत्माविषे संसार अविद्याका नाम आदिक केसें होवे आत्मा ब्रह्म हे जिसतें इतर कछू नही सर्व अधिष्ठान हे अरु अविनासी हे ॥ देस काल वस्तुके प्रछेदतें रहित हे इसीतें ब्रह्म हे ॥ हे रामजी एसा जो अपणा आप आत्मा हे तिसीविषे स्थित होहु ॥ अरु यह जगत् जो दृष्ट आता हे सो सर्व चिदाकास हे इतर कछू नहीं ॥ जेसें सुपनविषे विश्व देखता हे सो अनुभव मात्र हे ॥ तेसें जाग्रत् विश्व आत्मरूप हे ॥ अेसा जो तेरा सुद्ध अरु नित्य उदित अविनासी रूप हे ॥ तिस विषे जब स्थित होवेगा ॥ तब कलना जो तेरे तांइ भासती हे सो नष्ट होजावेगी ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे कलनानिषेधोनाम त्रिनवतितमःसर्गः ॥ ९३ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी संसारका वीज अहंकार हे ॥ जब अहंभाव होता हे तब संसार होता हे ॥ सो अहंकार कछू वस्तु नही भमकरिकें सिद्ध हुआ हे ॥ जेसें मूर्ख बालक पछावेविषे पिसाच कल्पता हे ॥ सो पिसाच कछू वस्तु नही ॥ उसके भ्रमविषे होता हे तेसें अहंकार कछू वस्तु नही स्वरूपके भ्रमविषे होता हे ॥ हे रामजी जो वास्तव कछू वस्तु न होवे ॥ तिसके त्यागणेविषे जतन कछू नही ॥ तेरेविषे अहंकार वास्तव नही तुं केवल सांतरूप चैतनमात्र हे ॥ तिसविषे अहंभाव होणा उपाधि हे ॥ तिसतें सुमेरु पर्वत आदिक जगत् बनि जाता हे सो संवेदनरूप हे चित्तरूपी पुरुष चैतनके आश्रयतें फुरता हे अरु विश्व कल्पता हे जेसें जेवरीके आश्रयतें सर्प फुरता हे तेसें चैतनके आश्रय विश्व अरु चित्त फुरते हे ॥ सो आत्मातें इतर नही अरु अहंकार हुएकी न्यांइ हुआ हे ॥ जो में हों अेसा जो अहंभाव हे सो दुःखकी खाण हे ॥ सर्व आपदा अहंकारतें होती हे जब अहंकार नष्ट होवेगा तब सर्व दुःख नष्ट होवेगे ॥ हे रामजी जेसें सूर्यके आग बदल होते हे तो प्रकास नही होता ॥ जब बदल दूर होते हे तब प्रकासवान भासता हे ॥ अरु सूर्यके प्रकासकरी कमल प्रफुल्लित होते हे तेसें आत्मारूपी सूर्यकों अहंकार रूपी बदलका आवरन हुआ अहंकार कहियें किसी मायाके गुणसाथ मिलिकरी कछू आपकों मानणा ॥ जब अहंकाररूपी बदल नष्ट होवेगा ॥ तब आत्मरूपी सूर्यका प्रकास होवेगा ॥ अरु ज्ञानवानरूपी कमल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिस प्रकासकों पायकरी बडे आनंदकों प्राप्त होते हे ॥ हें रामजी तातें अहंकारक नासका उपाय करो जो तुमारे दुःख नष्ट होजावे उह कवन पदार्थ हे जो उपाय किये सिद्धि नही होता ॥ जो अहंकारके नासका उपाय करिये तो नष्ट हो जाता हे ॥ जिस प्रकार अहंकार नष्ट होवे सो श्रवण करु ॥ सत शास्त्र जो ब्रह्मविद्या हे ॥ तिसका वारंवार अभ्यासकरी संतके संग जो कथा परस्पर चर्चा करणी तिसकरी अहंकार नष्ट हो जाता हे ॥ जेसें पाणी भरणेकी जेवरी करी पथरकी सिलाकों घासि पडी जाती हे तेसें ब्रह्मविद्याका अभ्यास करी अहंकार नष्ट होता हे ॥ अरु सिलाके घसणेविषे कछू जतन हे अहंकारके त्यागणेविषें जतन कछू नही ॥ हे रामजी सदा अनुभवरूप आत्मा हे तिसका विचार करो जो में कवन हों अरु इंद्रियां क्या हे गुण क्या हे अरु संसार क्या हे ॥ जो अेसें विचारकरी इनका साक्षीभूत होड्ड जो मेरेविषे अहं त्वं कोउ नही ॥ इसकरी अहंकारका नास करो ॥ अरु तुं सुद्ध हे मेरा भी आसिर्वाद हे जो तुं सुखी होवें ॥ जब अहंकार नष्ट होवेगा तब कलना कोउ न फुरेंगी केवल सुषुप्तकी न्यांइ स्थित होवेगा ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् जो अहंकार तुमारा नष्ट हुआ हे तो प्रत्यक्ष उपदेश करते केसें देखते हे अरु जो अहंकार नही तो सर्व शास्त्र ब्रह्मविद्या कहांतें उपजे हे अरु उपदेश केसें होता हे ॥ उपदेश विषे चारों सिद्ध होते हे अंतःकरण जो प्रथम उपदेस करणेकी इछा होती हे ॥ तब अहंकार सिद्ध होता हे ॥ अरु जब स्मरण होता हे जो उपदेश करों तब चित्तभी चैत्यकरी सिद्ध होता हें ॥ बहुरी यह उपदेश करिये यह नही करिये अेसें संकल्प किये मनकी सिद्धता होती हे बहुरी निश्चय किया यह उपदेश करिए तब बुद्धिकी सिद्धता होती हे तातें चारों अंतःकरण सिद्धि होते हे तुमकेसें कहते हो जो अहंकार नष्ट हो जाता हे अरु सर्व चेष्टा होती हे? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी आत्मस्वरूपविषे अहंकार आदिक अंतःकरण अरु इंद्रियां कल्पित हे वास्तव कछू नही ॥ अरु शास्ता शास्त्र उपदेशभी कल्पना हें ॥ आत्मा केवल आत्मत्व मात्र हे ॥ तिसविषे संवेदन करिकें अहंकारादिक दृश्य फुरे हे तिसके निवृत्त करणेकों प्रवर्त्तते हे ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प भासता हे तब भयकरी दुःख पावता हे जबकिसनें कहा जो यह जेवरी हे तुं भय मत करु इसकों भली प्रकार देख यह सर्प नही ॥ तिसके उपदेशकरी उह भली प्रकार देखता हे ॥ तब भयसो क तिसका निवृत्त हो जाता हे ॥ जो भमकरिकें उसकों सर्पभान हुआ था सोभी मिथ्या हे ॥ अरु उसकों उपदेश करणा जेवरीका सोभी मिथ्या हे ॥ काहेतें जो जेवरी तो आगें सिद्ध हे उपदेसकरी सिद्ध नही होती ॥ तेसें जेवरीकी न्यांइ आत्मा हे तिसका विवृत्त जो चैतन लक्षण तिसकों अहंभाव हे ॥ तिस अहंकारके निवृत्त करणेकों शास्त्र हुए हे जो आत्मारूपी जेवरीके प्रमादकरी अहंकार रूपी सर्प फुर्या हे ॥ तिसके निवृत्त करणेकों शास्त्रके उपदेश हुए हे ॥ आत्माकों जताय देतें हें ॥ जब भली प्रकार जेवरीकी न्यांइ आत्माकों जाण्या तब सर्पकी न्यांइ जो प्रछंन अहंकार हे सो नष्ट हो जाता हे जेसें नेत्रविषे मेल होता हे अरु अंजनके पावणेकरी नष्ट हो जाता हे ॥ तब ज्योंकात्यों निर्मल नेत्र होते हे ॥ तेसें अज्ञानरूपी जो मेल हे सो गुरु शास्त्रके उपदेश रूपी सुरमेकरी नष्ट होजाती हे वास्तव न कोउ अहंकार हे न शास्त्र हे ॥ काहेतें जो आत्मा सर्वदाकाल उदेरूप हे ॥ परंतु तोभी गुरु शास्त्रकरी जाणता हे ॥ हे रामजी ज्ञानवानके साथ चारों अंतःकरण अरु इंद्रियांभी दृष्ट आते हे ॥ सो तिनविषे सत्यता नही होती ॥ जेसें भूना बीज दृष्ट आता हे परंतु उगणेकी सत्यता नही राखता ॥ जेसें जल्या वस्त्र होता हे सो देखणे मात्र हे सत्यता उसविषे कछू नही तेसें ज्ञानवानकों अभिलाष रूप अहंकार नही होता ॥ तिसकरी कष्ट नही पावता ॥ जेसें सूर्यकी किर्णोंकरी म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रुथलविषे जलाभास होता हे तिसकों देखिकरी जलपान करणे निमित्त मृग दौडता हे अरु दुःखी होता हे ॥ तेसें दृश्यरूपी मरुथलविषे पदार्थरूपी जलाभास हे ॥ तिसकों देखिकरी
अज्ञानी रूपी मृग दोडते हे अरु दुःख पावते हे ॥ जब ज्ञानरूपी वर्षाकरी आत्मारूपी जल चडा तब चित्तरूपी मृग कहां दोडे ॥ जब ज्ञानरूपी बर्षा होती हे अरु अनुभवरूपी जल चड
ता हे तब चित्तरूपी मृग तिसबिषे जतनरूपी जो फुरना था सो नष्ट हो जाता हे ॥ हे रामजी अहंकार अविचारतें सिद्ध हे ॥ विचारतें क्षीण हो जाता हे जेसें बरफकी पूतली सूर्यकी कि
रणां करी क्षीण होती हे जब अधिक तेज होता हे तब जलरूप हो जाता हे बरफकी संज्ञा नही रहती ॥ तेसें अहंकाररूपी बरफ विचाररूपी किर्णोंकरी क्षीण हो जाती हे ॥ जब दृड
विचार होता हे तब अहंकार संज्ञाही जाती हे केवल आत्मा हो रहता हे ॥ रामोवाच ॥ हे सर्वतत्वज्ञ भगवन् जिसका अहंकार नष्ट हुआ हे तिसका लक्षण क्या हे सो कहो ॥
॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी अज्ञानरूपी टोया संसार हे तिसविषे पदार्थकी भावनाकरी नही गिरता अरु क्षमा सांति आदिक सुभ गुण तिसकों सुभाविक आय प्राप्त होते हे ॥ जेसें
समुद्रविषे नदियां सुभाविक आय प्राप्त होतीयां हे अरु क्रोधभी तिसका नष्ट हो जाता हे देखणेमात्र भासता हे तोभी अर्थाकार नही होता ॥ जो विषमता करिके भिन भावना अंतरतें
नही फुरती केवल सत्ता समानविषे स्थित होता हे जेसें सरत्कालका मेघ गर्जता हे अरु बर्षातें रहित होता हे तेसें इंद्रियांकी चेष्टा अभिमानतें रहित हो करी करता हे जेसें बर्षा ऋतुके
जाणेकरी कुहिड नही रहती तेसें अभिमान चेष्टा तिसकी नष्ट हो जाती हे ॥ अरु लोभभी तिसके मनतें जाता रहता हे ॥ जेसें बनकों अग्नि लगती हे अरु मृगपंछी तिस बनकों त्याग
जाते हे ॥ तेसें लोभ रूपी मृग तिसकों त्याग जाते हे तिसके मनविषे कामना कोउ नही रहती जेसें दिनविषे उलूक पिसाच नही विचरते ॥ जहां ज्ञानरूपी सूर्य उदे होता हें ॥ तहां संपूर
न कामनारूपी तम नष्ट होजाता हे ॥ सांतरूप आत्माविषे स्थित रहता हे ॥ जेसें पैंदोइ दो पोठकों जेठ अषाडकी धूपविषे उठावता हे ॥ अरु गरमी होती हे थकताभी हे ॥ तिसकों डा
रीकरी दलके नीचे सुखसों स्थित होता हे ॥ तेसें वासनारूपी पोट हे ॥ अज्ञानरूपी धूप हे तिसकरी दुःखी होता हे ॥ ज्ञानरूपी बलकरी वासना रूपी पोटकों डारिकें सुखसों स्थित
होता हे ॥ हे रामजी भोग भावना तिस पुरुषकी नष्ट हो जाती हे ॥ बहुरी दुःख नही देती जेसें गरुडकों देखी करी सर्प भागता हे ॥ बहुरी निकट नही आवता ॥ तेसें ज्ञानरूपी
गरुडकों देखिकरी भोगरूपी सर्प भागते हे बहुरी निकट नही आते ॥ आत्मपदकों पायकरी शांतिरूपी दीपकवत् प्रकासवान होता हे ॥ भाव अभाव पदार्थ तिसकों स्पर्श
नही करते संसार भ्रम निवृत्त हो जाता हे ॥ सो ज्ञान समुझणे मात्र हे कछू जतन नही ॥ संतपास जायकरी प्रश्न करणा में कवन हों जगत क्या हे परमात्मा क्या
हे अरु भोग क्या हे इनकों तरिकरी केसें परमपदकों प्राप्त होवे ॥ बहुरी जो ज्ञानवान उपदेस करे तिसके अभ्यासकरी आत्मपदकों प्राप्त होवेगा अन्यथा न होवे ॥
इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे संतलक्षणमहात्म्यवर्णनं नाम चतुर्नवतितमः सर्गः ॥ ९४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥
॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी जिस प्रकार तुमारा वडा इक्ष्वाकु नामक राजा जीवन्मुक्त होकरी विचर्या हे ॥ तेसें तुमभी विचरो तुमभी तिस कुलतें उपजे हो ॥ हे रामजी इक्ष्वाकु
राजा सूर्यवंसी होत भया हे ॥ सो मनुका पुत्र अरु सूर्यका पौत्र सब राजातें श्रेष्ठ था ॥ जेसें पितरोंका राजा धर्म हे ॥ अरु बर्फकी न्यांइं तिसका सीतल सुभाव था जेसें सूर्यकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखिकरी मणीतें तेज प्रगट होता हे तेसें तिसकों देखिकरी शत्रू तपायमान होवे अेसा परंतप था ॥ साधु अरु मित्र प्रजाकों रमणीय भासे तिसकों देखिकरी सब शांतिवान होवे ॥ जेसें चंद्रमाकों देखिकरी चंद्रमुखी कमल प्रसन्न होते हे तेसें उसकों देखिकरी प्रसन्न होवे ॥ अरु पापरूपी वृछोंके काटणे हारा कुहाडा अरु मित्रका सुखदायक जेसें मोरोंका मेघ सुखदायक हे अरु सुंदर अेसा जिसकों देखिकरी लक्ष्मी स्थित होरही हे॥ दरिद्री कदाचित् न होवे॥तिसके जस करी संपूर्ण पृथ्वी पूरि रहीथी ॥ जेसें चंद्रमाकी चांदनी करी रात्र पूर्ण होती हे ॥ अेसा राजा भली प्रकार प्रजाको पालना करत भया एक काल तिसके मनविषे विचार उपजा जो जरा मरण आदिक संसार विषे बडा क्षोभ हे ॥ इस संसार दुःखके तरणेका उपाय कवन हे ॥ अेसें विचारता था जो एक समे संभु मुनि ब्रह्म लोकतें आया ॥ तिसका भली प्रकार पूजन किया अरु कहत भया ॥ ॥ इक्ष्वाकुरुवाच ॥ ॥ हे भगवन् तुमारी कृपाका जो पराक्रम हे सो मेरे रिदेविषे बेठीकरी प्रश्न करणेकों प्रेरता हे ॥ तातें में प्रश्न करता हों॥ हे भगवन् मेरे रिदेविषे संसार फुरता हे जेसें समुद्रकों वडवाग्नि जलावती हे तेसें मुझकों संसार जलावता हे तातें सोइ उपाय कहो जिसकरी मुझकों शांति प्राप्त होवे ॥ हे भगवन् यह संसार कहांतें उपजा हे ॥ अरु दृश्यका स्वरूप क्या हे ॥ अरु केसें निवृत्त होता हे ॥ जेसें जाल सों पंछी निकसी जाता हे तेसें जन्म मरण संसार महाजाल हे तिसतें निकसणेका उपाय मुझकों कहो ॥ जेसें वरुण सब स्थान समुद्रके जानता हे ॥ तेसें तुम जगत्के सब व्यवहारकों जानते हो अरु संशयरूपी वृछके काटणेहारे तुम कुहाडे हो ॥ अरु अज्ञानरूपी तमके नास कर्ता तुम सूर्य हा ॥ तुमारे अमृतरूपी वचनों करी में शांतिकों प्राप्त होउंगा ॥ मुनिरुवाच ॥ हे साधू में चिरकाल पर्यंत जगत्विषे विचरता रहता हों ॥ परंतु अेसा प्रश्न किसीनें नही किया तुझनें परमसार प्रश्न किया हे सर्व अनर्थके नाशकरणेहारा प्रश्न हे ॥ तेरी बुद्धि विवेक करी विकासमान हुइ दृष्ट आवती हे ॥ हे राजन् जो कछू जगत् तुझकों भासता हे सो सब असत् हे॥ जेसें जेवरीविषे सर्प, जेसें गंधर्व नगर, जेसें मरुथलविषे जल, जेसें सीपिविषे रूपा, जेसें आकाशविषे नीलता, दूसरा चंद्रमा भ्रमकरी भासता हे॥तेसें यह जगत् असत्यरूप हे जेसें जलविषे चक्र तरंग असतरूप हे॥तेसें जगत् असतरूप हे अरु जो मन सहित षट्इंद्रियांतें अतीत हे अरु शून्यभी नही ॥ सो सत अविनाशी आत्मा कहाता हे सो निर्मल परम ब्रह्म सर्व उरतें पूर्ण अनंत हे ॥ तिसविषे जगत् कल्पित हे ॥ हे राजन् जेसें सर्व वृछोंविषे एकहि रस व्यापक हे तेसें सर्व पदार्थोंविषे एक चिन्मात्र सत्ता व्यापक हे जेसें समुद्र अचलविषे द्रवता करिकें तरंग फुरते हे ॥ तेसें परमात्मा विषे जगत् फुरते हे ॥ तिस महा दर्पणविषे सर्व वस्तु जात प्रतिबिंब होते हे ॥ जेसें समुद्रविषे कोउ तरंगरूप कोउ बुदबुदे चक्रादिक होते हे ॥ तेसें आत्मविषे जीवादिक आभास होते हे प्रथम फुरणरूप होते हे पाछें कारण कार्यरूप हो ते हे सो चित्तशक्ति अपणे संकल्पतें भूतादिक देह रचीकरी तिस विषे स्वरूपके प्रमादकरी आत्मअभिमान करता हे जेसें घुराणकों अपणी क्रिया अपणे बंधनके निमित्त होती हे ॥ तेसें इसकों अपणा संकल्प बंधनका कारण होता हे ॥ हे राजन् जीव कलाकों स्वरूपका अज्ञान हुआ हे सो जेसें बालककों अपणा पछावा जक्षरूप होकरी भय देता हे ॥ तेसें यह नानाप्रकारके आरंभकों प्राप्त हुआ हे ॥ अकारणहि ब्रह्मशक्ति फुरणे करिकें कारण भावकों प्राप्त हुआ हे ॥ तिसकरी बंध अरु मोक्ष भासते हें ॥ वास्तवतें न बंध हे न माक्ष हे निरामय ब्रह्महि अपणे आपविषे स्थित हे ॥ तिसविषे एक अरु अनेक कहणा कछू नही ॥ तातें बंध मोक्षकी कल्पनाकों त्यागकरी अपणे सुभावविषे स्थित होहु ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निर्वाण प्रकरणे इक्ष्वाकुप्रत्यक्षोपदेसो नाम पंचनवतितमःसर्गः ॥ ९५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७॥ ॥ ७ ॥ ॥ मुनिरुवाच ॥ हे राजन् जेसें द्रवता करिकें जलहि तरंग भावकों प्राप्त होता हे तेसें चिन्मात्रहि संकल्पके फुरणे करी जीव होता हे सो जीव संसार विषे कर्मोंके वसतें भ्रमता हुआ आपकों कर्ता देखता हे ॥ अरु सर्वात्मा परम ब्रह्म करता हुआभी कछू नही करता जेसें सूर्यकरी सब चेष्टा होती हे ॥ अरु सूर्य अकर्ता हे तेसें आत्माकी शक्ति करी जगत् चेष्टा करता हे जेसें चुंबक पथरके निकट लोहा चेष्टा करता हे ॥ तेसें आत्माकी चैतनताकरी सब देहादिक चेष्टा करता हे ॥ अरु आत्मा सदा अकर्ता हे ॥ जेसें जलविषें तरंग फुरतें हे तेसें आत्माविषे देहादिक फुरते हे ॥ जेसें स्वर्नविषे भूषन कल्पना होति हे तेसें आत्माविषे मोहकरी दुःख सुख कल्पते हे ॥ आत्माविषे कल्पना कछू नही सुद्ध आत्माविषे मूढनें सुख दुःखकी कल्पना करी हे ॥ अरु जो ज्ञानवान हे तिनकों मन चित्त सुख दुःख सब आकाश रूप हे ॥ उंह देहतें रहित केवल चिदाकाश भावकों प्राप्त होते हे ॥ जरा मरणकों नही प्राप्त होते सब कार्यकों करते दृष्ट आते हैं ॥ अरु अंतरतें सदा अकर्ता रूप हे जेसें जल अरु दर्पणविषे पर्वतका प्रतिबिंब पडता हे परंतु स्पर्श नही करता तेसें ज्ञानवानकों क्रिया स्पर्श नही करती ॥ सरीरके व्यवहारविषेभी उह सदा निर्मल भाव हे ॥ हे राजन् आत्मा सदा स्थित रूप हे परंतु भ्रम करिकें चंचल भासता हे ॥ जेसें जलकी चंचलता करिकें पर्वतका प्रतिबिंबभी चंचल होता हे तेसें देहादिक करी आत्मा चलता भासता हे ॥ सो आत्मा नित्य शुद्ध अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जेसें घटके नाश हुए घट नाश नही होता तेसें देहके नाश हुए आत्माका नाश नही होता ॥ जेसें शुद्ध मणीविषे नाना प्रकारके प्रतिबिंब होते हे तिनकरी रंजित नही होती ॥ तेसें आत्माविषे मन इंद्रियां देह दृष्ट आवते हे सो स्पर्श नही करते ॥ जेसें मिष्ट पदार्थविषे मिठाइ एकही व्यापी हे॥ तेसें सब पदार्थविषे एक आत्मसत्ता व्यापी हे ॥ हे राजन् आत्मा सदा अचलरूप हे परंतु अज्ञान करिकें चलरूप भासता हे ॥ जेसें बालक दोडतेकों सूर्य दोडता भासता हे तेसें आत्मा देहके संगतें अज्ञानकरी विकारवान भासता हे ॥ जेसें प्रतिबिंबका विकार आदर्शकों नही स्पर्श करता ॥ तेसें देहका विकार आत्माकों स्पर्श नही करता जेसें अग्निविषे स्वर्नडारियें तव भैल दग्ध हो जाता हे ॥ स्वर्नका नाश नही होता तेसें देहके नाश हुए आत्माका नाश नही होता॥ सो आत्मा नित्य शुद्ध अवाक् अचिंत्यरूप हे॥ हे राजन् चितवणेविषे नही आता परंतु चैतन वृत्ति करी देखता हे जेसें राहु अदृष्ट हे परंतु चंद्रमाके संजोगकरी दृष्ट आता हे ॥ तेसें आत्मा अदृष्ट हे परंतु चैतन वृत्तिकरी जाणता हे जेसें शुद्ध दरपणविषे प्रतिबिंब होता हे ॥ तेसें बुद्धि निर्मलविषे आत्मा साक्षात् भासता हे सो संकल्पतें रहित अपणे आपविषे स्थित हे जब बुद्धि निर्मल होती हे तव अपणे आपविषे तिसकों पावती हे ॥ हे राजन् शास्त्रों करी परमेश्वर नही पाइता ॥ अरु गुरु करीभी नही पाइता ॥ जबलग अपनी बुद्धि निर्मल न होवे ॥ जब अपनी बुद्धि सत्यदविषे निर्मल होवे तव अपणे आप करी देखता हे ॥ सो बुद्धि केसें निर्मल होती हे ॥ जब संसारकी सत्यता रिदेतें दूर होवे अरु आत्माका अभ्यास होवे तव बुद्धि निर्मल होती हे ॥ हे राजन् सर्व भाव अभावरूप जो देहादिक पदार्थ हे सो असत हे केवल भ्रम मात्र हे ॥ तिनकी आस्थाका त्याग करु जेसें कोउ मार्ग में चलता हे अरु मार्गविषे अनेक मिलते हे॥परंतु तिनविषे राग दोष कछू नही होता ॥ तेसें देह इंद्रियां साथ स्नेहतें रहित आत्म तत्व सदा अपणे आपविषे स्थित हे तिसविषे देहादिक इंद्रजालकी न्यांइं मिथ्या हे ॥ तिनकी भावना दूरतें त्यागकरी नित आत्मा सीतल चित्तविषे स्थित होहु ॥ हे राजन् अपणा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मित्र आपहि हे अरु शत्रुभी अपणा आपही हे काहेतें जो आत्मा विषे अवरकी ठोर नही ॥ आत्माविषे आत्माका भाव हे अवर द्वैत कछू नही इस कारणतें अपणा आपहि शत्रु हे आपहि अपणा मित्र हे जो दृश्य पदार्थकी उरतें अनात्म धर्मविषयसों खेचिकरी चित्तकों अपणे आपविषे स्थित कर्ता हे सो अपणा आपहि मित्र हे ॥ अरु जो अनात्म धर्मविषे पदार्थकी उर चित्तकों लगाता हे ॥ सो अपणा आपहि शत्रु हे अरु वास्तवतें जेता कछू दृश्य जाल हे सोभी आत्मारूप हे ॥ आत्मातें भिन्न कछू वस्तु नही जेसें समुद्र जलतें इतर कछू वस्तु नही जलहि जल हे ॥ तेसें आत्मातें इतर जगत् कछू वस्तु नही सवविषे अनुस्यूत एक आत्मसत्ताहि स्थित हे ॥ जेसें अनेक घटके जलविषे एकहि सूर्यका प्रकाश प्रतिबिंब होता हे ॥ तेसें अनेक देहोंविषे एकहि आत्मा व्याप रहा हे ॥ सो न अस्त होता हे न उदे होता हे सदा एकरस अविनासी पुरुष ज्योंका त्यों स्थित हे ॥ तिसविषे अहंभावना करीकें संसार भासता हे ॥ जेसें सीपीविषे रूपेकी बुद्धि होती हे तेसें आत्माविषे अहंबुद्धि संसारका कारण हे ॥ इस बुद्धि करी सर्व दुःखका भागी होता हे ॥ जेसें वर्षा कालकरी सब नदियां समुद्र विषे आय प्रवेश करतियां हे ॥ तेसें अनात्म अभिमानकरीकें सब आपदा आनि प्राप्त होती हे ॥ वास्तवतें चिन्मात्र अरु जीवविषे रंचकभी भेद नही एकहि रूप हे ॥ अेसी जो बुद्धि हे सो बंधनतें मुक्तिका कारण हे ॥ आत्मा सर्वविषे अनुस्यूत व्याप्या हे ॥ जेसें सूर्यका प्रकाश सर्व ठोरविषे होता हे ॥ परंतु जहां शुद्ध जल हे तहां भासता हे तेसें आत्मा सब ठोर पूर्ण हे ॥ परंतु शुद्ध बुद्धीविषे भासता हे जेसें तरंग बुदबुदेविषे जलहि व्यापि रहा हे तेसें आत्मा अविनासी दृश्य कलनातें रहित सर्वत्र व्याप्या हे ॥ जेसें स्वर्नविषे भूषण नही तेसें आत्माविषे जगत्का अभाव हे हे राजन् यह संसार आत्माविषे नही केवल आत्माहि हे ॥ जो एक वस्तु पात्रकी न्यांइं होती हे तिसविषे दुसरी वस्तु होती हे ॥ आत्मा तो अद्वैत हे दुसरी वस्तु संसार कहां होवे अरु स्वर्नविषे भूषण जेसें चित्तकरी कल्पित हे वास्तव कछू नही तेसें आत्माविषे संसार अज्ञानकरी कल्पित हे वास्तव कछू नही केवल चिदाकाश हे ॥ जेसें नदिया अरु समुद्र नाम मात्र हे ॥ सो जलही हे तेसें केवल चिदाकाशविषे विश्व नाम मात्र हे ॥ अरु जेते आकार भासते हे तिनकों काल भक्षन करता हे ॥ जेसें नदियांकों समुद्र भक्षन करीकें अघाता नही तेसें पदार्थ समूहकों काल भक्षन करता अघाता नही ॥ हे राजन् अेसें पदार्थविषे अभिलाषा करणी क्या हे ॥ केइ कोटि सृष्टि तपती होतियां हे तिनकों काल भक्षन अवलग करता हे ॥ कोउ पदार्थ कालतें मुक्त नही होता जेसें समुद्रविषे तरंग बुदबुदे केइ उपजते हे अरु नष्ट हो जाते हे ॥ तातें तुं कालतें अतीत पदकी भावना करु जो कालकोंभी भक्षण करे ॥ केसें भावना करियें अरु केसें भक्षण करियें सो श्रवण करु जेसें मंदराचलनें अगस्त मुनिके आणेकी भावना करी हे ॥ तेसें तुं अपणे स्वरूपकी भावना करु तब कालकों भक्षण करेगा जेसें अगस्त मुनिनें समुद्रकों भक्षण किया था तेसें आत्मारूपी अगस्त कालरूपी समुद्रकों भक्षण करेगा ॥ हे राजन् जन्ममरणादिक जो विकार हे सो भ्रम करीकें हे आत्माके प्रमाद करी भासते हे ॥ जब आत्माको निश्चय करी जाणेगा तब विकार कोउ न भासेगा काहेतें जो अज्ञान करी रचे हे आकाशविषे कोउ नही ॥ जेसें जेवरीविषे विषे भ्रम संयुक्त सर्प भासता हे सो तबलग हे जबलग जेवरीकों नही जाण्या ॥ जब जेवरीकों जाणी तब सर्प भ्रम निवृत्त हो जाता हे तेसें जन्ममरण आदिक विकार आत्माविषे तबलग भासता हे ॥ जबलग आत्माकों नही जाण्या जब आत्माकों जाणेगा तब सर्व विकार नष्ट हो जावेगे ॥ हे राजन् अेसा आत्मा विकारतें रहित तेरा स्वरूप हे ॥ तिसकी भावना करु जो तेरे दुःख नष्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होजावे ॥ अरु आत्मपदकों कछु खोजणे नहि जाणा अरु किसी वस्तुकों जायकरी ग्रहण नही करणा जो यह आत्मा हे ॥ अरु किसी कालकी अपेक्षाभी नही जो इस कालकरी पावे
गा ॥ आत्मा तेरा अपणा स्वरूप हे अरु सर्वदा अनुभवरूप हे तुझतें इतर कछु वस्तु नही तुं आपकों ज्योंकात्यों जाण आत्माके न जानणेकरी आपकों दुःखी जानता हे जो में मरों दरि
द्री हों में दास हों ॥ इत्यादिक दुःख तवलग होते हे जबलग आत्माकों नही जाण्या जब आत्माकों जाणेगा तब आनंदरूप होजावेगा ॥ जेसें किसी स्त्रीकों गोदविषे पुत्र होवे अरु सुप
नविषे देखत भइ जो बालक मेरे पास नही ॥ तब बडे दुःखकों प्राप्त भइ अरु रुदन करणे लागी जब सुपनतें जागे तब देखा जो बालक मेरे गोदविषे हे अरु एता दुःख में भमकरिकें
पाया हे ॥ बडे आनंदकों प्राप्त भइ अरु दुःख सोक नष्ट होगए हे राजन् तिसी प्रकार आत्मा तेरा अपणा आप हे ॥ अरु सदा अनुभवरूप हे ॥ तिसके प्रमादकरी तुं आपकों दुःखी
जाणता हे ॥ जब अज्ञानरूपीनिद्राते तुं जागेगा तब आपकों जाणेगा ॥ अरु दुःख सोक तेरे नष्ट हो जावेगे ॥ सो अज्ञानरूपी निद्रा क्या हे श्रवण करु ॥ देह इंद्रियादिक जो दृश्य हे
तिस साथ मिलिकरी आपकों जानणा जो में हों ॥ यह अज्ञान निद्रा हे इसतें रहित होकरी देख जो आनंदकों प्राप्त होवे ॥ अरु जेते यह पदार्थ भासते हे सो मिथ्या हे जेसें बालक
मृत्तिकाविषे राजा अरु सेना अरु हस्ती घोडा कल्पता हे ॥ सो न कोउ राजा हे न सेना हे न कोउ हस्ती घोडा हे एक मृत्तिका ही हे ॥ तेसें चित्तरूपी बालकनें आत्मरूपी मृत्तिका
विषे राजा अरु सेना आदिक संपूर्ण विश्व कल्पी हे सो मिथ्या हे ॥ हे राजन् एक उपाय तेरेकों कहता हों सो करु जो दुःख तेरे नष्ट होजावे एक वस्तुका त्याग करु सो कवन हे अहं
अभिलाष सहित जो फुरना हे तिसका त्यागकरी जहांइछा हे तहां विचरु तेरेकों दुःखका स्पर्श न होवेगा संकल्पहि उपाधि हे अवर उपाधि कोउ नही ॥ जेसें मणी तृणकरी अछादी
होती हे ॥ जब तृण दूर करियें तब मणी प्रगट हो आती हे ॥ तेसें आत्मरूपी मणी वासनारूपी तृण करी आछादी हे जब वासनारूपी तृण दूर करिए तब आत्मरूपी मणी प्रगट हो आवे
हे राजन् जाग्रत सुपन सुषुप्तितें रहित जो आत्मपद हे जब तिसकों प्राप्त होवेगा तब जाणेगा जो में मुक्त हों सो तेरा स्वरूप हे तिसपदविषे स्थित होहु जो केवल आत्मरूप हे अरु अज
न्मा हे नित्य हे अरु चैतनमात्र हे सर्वका अपणा आप हे तिसके प्रमादकरी दुःख होता हे जेसें बालक मृत्तिकाके खिलोने बनाते हे हस्ती घोडा नाम कल्पते हे अभिमान करता हे जो
मेरे हे ॥ अरु तिनके नास होणे करी दुःखी होता हे ॥ तेसें अज्ञानी जो हे बालकरूप सो स्वरूपके प्रमादकरी अभिमान करता हे ॥ यह मेरे हे में इनका हों तिनके नास होणे करी
दुःखी होता हे ॥ अेसें नही जानता जो सतका नास नही होता ॥ असतके नास होणे करी सतका नास मानता हे जेसें घटके नास होणे करी घटाकास नास मानियें ॥ तेसें मूर्खता करी
कें दुःख पावता हे हे राजन् तुं आपकों आत्मा जाण अरु आत्मादिक संज्ञाभी शास्त्रोंने कल्पी हे जतावणेके निमित्त ॥ नही तो आत्मा निर्वाच पद हे ॥ जिस विषे वाणीकी गम नही ॥
अरु इनही करी जाणता हे काहेते जो मन वाणीविषेभी आत्मसत्ता हे ॥ तिसी करी आत्मादिक संज्ञा सिद्धि होती हे जेसें जेते कछू सुपनके पदार्थ हे तिनविषे अनुभव सत्ता हे तिसिक
री पदार्थ सिद्ध होते हे ॥ तेसें जेती कछू अर्थ संज्ञा हे सो सब आत्माकरी सिद्ध होती हे ॥ अेसा जो तेरा स्वरूप हे तिसविषे स्थित होहु जो तेरे जरा मृतादिक दुःख नष्ट हो जावे हे
राजन् जब निस्पंद होकरी देखेगा तब स्पंदविषेभी उहि भासेगा ॥ स्पंदनिस्पंद तुल्य होकरी भासेंगे जो समाधिविषे होवेगा अथवा अेसेंहि चेष्टा करेगा तोभी तुल्य होवेगी न समाधिविषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सांति भासेगी न चेष्टाविषे दुःख भासेगा ॥ दोनों विषे एक रस रहेगा विषमता कछू न भासेगी ॥ हे राजन् जो कछू प्रकृत आचार आय प्राप्त होवे ॥ देणा अथवा लेणा यज्ञ दान आदि क क्रिया हे तिसकों मर्यादा सहित अरु सास्त्रकी विधि संयुक्त करु अरु निश्चय आत्मास्वरूपविषे होवे ॥ जेसें नट स्वांगकों धारि संपूर्न चेष्टा कर्ता हे अरु निश्चयतिसविषे नटत्वहीका राखता हे तेसें तुम सर्व चेष्टा करो ॥ तिसके अभिमान अरु संकल्पतें रहित होडु ॥ ग्रहण अथवा त्याग जो कछू सुभाविक आए प्राप्त होवे तिसविषे ज्योंकेत्यों रहो ॥ जब निर्विकल्प हो करी अपणे स्वरूपकों देखेगा तब उत्थान कालविषेभी तेरे तांइ आत्माहि भासेगा ॥ जेसें जलके जाणेतें तरंग फेन बुदबुदा सर्व जलहि भासते हे ॥ तेसें जब तुं आत्माकों जाणेगा तब तुझकों संसारभी आत्मरूप भासेगा अरु जो आत्माकों नही जाणता तिसकों जगत्हि दृष्ट आता हे ॥ तिसकरी दुःख पावता हे ॥ तातें तुं अंतर्मुख होडु संकल्पकों त्यागकरी परम निर्वाण अच्युत पदविषे स्थित होडु ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे राजाइक्ष्वाकु प्रत्यक्षापदेशोनाम षण्नवतितमःसर्गः ॥ ९६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ मनुरुवाच ॥ ॥ हे राजन् यह जो संकल्प पुरुष हे सो संकल्प करीकें आप बंधाता हे अरु आपहि मुक्त होता हे ॥ जब संकल्प करी दृश्यकी भावना करता हे तब जन्म मृत्युकों पावता हे अरु दुःखी होता हे आपहि संकल्प करता हे आपहि बंधनकों प्राप्त होता हे ॥ जेसें घुराण कीट आपहि गुंफा बनाती हे अरु आपहि तिसकों मुंदीकरी फसती हे ॥ तेसें अ पणे संकल्प करी आपहि दुःख पावता हे ॥ अरु जब संकल्पकों अंतर्मुख करता हे तब मुक्त होता हे अरु मुक्तिहि मानता हे ॥ तातें हे राजन् संकल्पकों त्याग करी आत्मा जो सर्वका अपणा आप हे तिसकी भावना करु जो तूं सुखी होवे ॥ हे राजा आत्माके प्रमाद करी देह आस्थाकी भावना हूइ हे ॥ तिसकरी दुःख पावता हे ॥ तातें आत्मास्वरूपकी भावना करु जो तुं आत्मा हे चिद्रूप हे ॥ महा आश्चर्य माया हे जिसनें संसारकों मोह लिया हे आत्मा सर्वदा अनुभवरूप हे ॥ अरु अंगअंग व्यापी हे ॥ तिसकों नही जाणते यही आश्चर्य हे ॥ हे राजन् आत्मा सदा अनुभवरूप हे तिसविषे स्थित होडु अरु संसार आत्माके प्रमाद करी फुरणेतें हुआ हे सो सतभी नही अरु असतभी नही जो आत्मातें भिन्न करि देखियें तो मिथ्या हे तातें सत नही ॥ अरु आत्मा विना दूसरा हे नही सर्वात्मा हे ॥ तातें असतभी नही तुं आत्माकी भावना करु जो कछू पदार्थ भासते हे सो आत्मातें भिन्न न जाण सर्वात्माही हे ॥ जो आत्मा विना अवर भावना हे तिसका त्याग करु ॥ हे राजन् जेसें जलविषे तरंग बुदबुदे होते हे ॥ सो जलतें इतर नही जलहि अेसें भासता हे ॥ तेसें जगत् जो दृष्ट आता हे सो आत्मा हे अेसें भासता हे ॥ जेसें सूर्य अरु किर्णा विषे भेद कछू नही ॥ तेसें आत्मा अरु जगत्विषे भेद नही आत्माहि जगत्रूप हे अरु भिन्नभिन्न जो आकार भासते हे सो चित्त शक्ति करकें हे इतर नही आत्मसत्ता हे जेसें लोहा तप्त हुआ वस्त्रादिककों जलावता हे सो लोहेकों अपणी सत्ता नही अग्नीकी हे ॥ तेसें चैतनकी सत्ता जगत्रूप होकरी स्थित भइ हे ॥ अरु आत्मा सदा केवलरूप हे जिस विषे प्रकाश अरु तम दोनों नही ॥ न सत हे न असत हे न कोउ देश हे न काल हे न कोउ पदार्थ हे ॥ केवल चैतन मात्र गुणातीत हे ॥ न कोउ गुण हे न माया हे केवल शांतरूप आत्मा हे ॥ हे राजन् न शास्त्रोंकरी पाइता न गुरोंकें वचन करी पाइता हे न तपकरी पाइता हे ॥ केवल अपणे आप करी जाण्या जाता हे ॥ शास्त्रादिक लखाय देते हे ॥ परंतु इदं करी नही जणावते जो द्रष्टा पुरुष अपणे आप करी जाणता हे ॥ जेसें सूर्यकी जोति नेत्रविषे हे सोइ सूर्यकों देखती हे तेसें आत्माहि आत्माकों देखता हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंतर्मुख होकरी संकल्पतें रहित हुआ अपणे आपकों देखता हे जब संकल्प बहिर्मुख होता हे तब वही दृढ होकरी स्थित होता हे ॥ बहुरी तिसकी भावना होती हे ॥ जब संकल्परूप जगत् दृढता करी स्थित होता हे तब दुःखदाइ होता हे ॥ हे राजन् अवर दुःखदाइ तिसका कोउ नही अपणेहि संकल्प करिकें असम्यक् दर्सी दुःखी होता हे अरु सम्यक् दर्सीकों जगत् दृष्टभी आता हे तोभी दुःखदाइ नही होता ॥ जेसें जेवरी विषे सर्पकी भावना होती हे तब भयकों प्राप्त होता हे ॥ जब जेवरीके जाणेतें सर्पभावना दूर भइ तब भयभी जाता रह ता हे तेसें जिस पुरुषकों संसारकी भावना होती हे सो दुःखदाइ हे तातें आत्माकी भावना करु जो तेरे सर्व दुःख नष्ट हो जावे ॥ हे राजन् तुं सर्वदा आनंदरूप हे अरु अद्वैत हे ॥ तेरे विषे कल्पना कोउ नही तुं आत्मास्वरूप हे अरु आत्मा षट्विकारतें रहित हे ॥विकार मिथ्या देहके हे आत्मा शुद्ध हे आत्माके प्रमाद करिकें विकार भासते हें॥जब तुं आत्माकों जाणेगा तब विकार कोउ न दृष्ट आवेगा काहेतें जो आत्मा अद्वैत हे ॥राजोवाच॥ हे भगवन् तुम कहते हो आत्मा अद्वैत हे ॥ जो इस प्रकार हे तो पर्वत आदिक विश्व केसें भान होती हे ॥ पथररूप महा बडे आकार बनके कहातें उपजे हे ॥ इसका रूप क्या हे सो कृपा करिकें कहो ॥ ॥ मुनिरुवाच ॥ ॥ हे राजन् आत्मा विषे संसार कोउ नही सदा शांतरूप हे अरु निराकार हे ॥ तिसविषे स्पंदनिस्पंद दोनों शक्ति हे॥जब निस्पंद शक्ति होती हे ॥ तब केवल अद्वैत भासता हे जब स्पंद शक्ति फुरती हे तब जगत् नाना प्रकारके आकार भासते हें वास्तवतें आत्माही हे इतर कछू नही ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग कछू अवर नही उहि रूप हे ॥ पवनके संजोगतें फुरते हे तो भिन्नभिन्न दृष्ट आवते हे तेसें फुरन शक्ति करी अहंकार भिन्नभिन्न भासते हें वास्तवतें आत्मास्वरूप हे इतर कछू नही जेसें वटका बीज होता हे अरु तिसविषे पत्र टास फूल फल अनेक दृष्ट आते हे ॥ तेसें आत्मासत्ता नाना प्रकारके आकार धारे यद्यपि दृष्ट आते हे तोभी बन्या कछू नही ॥ केवल आत्मा अद्वैत ज्योंका त्यों स्थित हे ॥ अरु सूक्ष्म तेंभी अति सूक्ष्म हे॥अरु पर्वत आदिक जो विस्व भासता हे सो आत्माका चमत्कार हे ॥ जेसें स्वप्नविषे पर्वत वृछादिक नाना प्रकारके आकार भान होता हे ॥ तोभी अनुभवरूप हे ॥ तिसतें इतर कछू नही ॥ तेसें जाग्रत विश्वभी आत्मा अनुभवरूप हे आत्मातें इतर कछू नही ॥ ॥ इक्ष्वाकुउवाच ॥ ॥ हे भगवन् जो आत्मा सूक्ष्म हे तो पर्वतादिक स्थूल असतरूप सत होकरी केसें भासता हे सो कृपाकरिकें कहो ॥ मुनिरुवाच ॥ हे राजन् आत्मा अनंत शक्ति हे सो शक्ति आत्मातें भिन्न नहीं उहि रूप हे ॥ जेसें सूर्यकी किर्णा सूर्यतें भिन्न नही तेसें आत्माकी शक्ति आत्मातें भिन्न नही ॥ जेसें पवनविषे दो शक्ति हे स्पंद अरु निस्पंद सो उहि रूप हे ॥ स्पंद शक्ति करी प्रगट भासता हे अरु निस्पंद करी प्रगट नही भासता ॥ तेसें आत्माविषे स्पंद निस्पंद दो शक्ति हे ॥ जब स्पंद शक्ति फुरती हे तब अहंभाव प्रगट होता हे ॥ जब अहंभाव हुआ तब चित्त उदे होता हे अहंही चित्त हे ॥ जब चित्त हुआ तब आकाशकी भावनातें आकाश बणि जाता हे ॥ जब स्पर्शकी भावना हुइ तब पवन उत्पत्ति होता हे ॥ जब रूपकी भावना करी तब अग्नि बणि गइ ॥ जब रसकी भावना हुइ तब जल उत्पत्ति हुआ ॥ इसी प्रकार चित्तकी कल्पना करी तत्व उपजे हे ॥ जब चारों तत्व का समष्टि भया तब एक अंड हुआ ॥ जब दृढ संकल्प किया तब संभु मन हुआ ॥ जब अंड फुले तब तीनलोक हुए स्वर्गमध्य अरु पाताल ॥ सो तीनों लोक तीनों गुण राजस सात्विक तामस हुए बहुरी पर्वत आदिक दृश्य पदार्थ सर्व हुए ॥ हे राजन् केवल संकल्पमात्रहि सब हुए हे जब स्पंद शक्ति फुरती हे ॥ तब इस प्रकार आत्माविषे भासते हे ॥ परंतु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बण्या कछू नही ॥ जेसें समुद्रविषे फेन बुद्बुदे फुरते हे सो जलरूप हे जल तें इतर कछू नही ॥ तेसें आत्मातें इतर कछू वस्तु नही॥अरु आदिमन जो संभु हे तिस संकल्प करी आगे मन कल्पे हे ॥ त्रिगुणमय सृष्टि इसप्रकार उत्पत्ति होती हे सो केवल संकल्पमात्र हे जवलग चित्त हे तबलग विश्व हे ॥जवचित्त फुरणेतें रहित हुआ तव निस्पंद शक्ति होती हे॥ जब निस्पंद हुइ तव बहुरी जगत् नही देखाय देता ॥ हे राजन् इह विश्व मनके फुरणेविषे हे अरु सत्यकी न्यांइं स्थित हुइ हे सो श्रवण करु ॥ सत जो हे सर्व देश सर्व काल सर्व वस्तु पाइता हे सो नही भासता ॥ अरु जो असत हे सो सत्तकी न्यांइं भासता हे ॥ सत केसें असतकी न्यांइं हुआ हे ॥ अरु असत केसें सतकी न्यांइं हुआ हे सो सुण ॥ सत जो हे सर्व देश सर्व काल सर्व वस्तु पाइता हे सो नही भासता ॥ अरु असत जो हे प्रछन्नरूप देश काल वस्तु प्रछेद संयुक्त हे सो सतकी न्यांइं हुआ हे ॥ जहां देखियें तहां दृश्यहि गुणमय संसार भान होता हे महा आश्चर्य रूप माया हे जिसनें सत्यकों असत्यकी न्यांइं किया हे ॥ अरु असतकों सतकी न्यांइं स्थित किया हे ॥ सो चित्तके संबंध करी संसार भासता हे ॥ आत्माविषे संसार कोउ नही ॥ जब चित्तकों स्थित करि देखेगा तव तेरे तांइं संसार न भासेगा जेसें गंभीर जल होता हे तो चलता नही भासता जो कहां जाता हे ॥ तेसें गंभीर जो आत्मा हे तिसविषे संसारनहि जाणता जो कहां फुरता हे॥अरु संसारभी आत्मातें भिन्न कछू वस्तु नही आत्मास्वरूपहि हे जेसें अग्निके चिणगारे अग्नितें भिन्न नही अरु जलके तरंग जलतें भिन्न नही॥अरु मणिका प्रकाश मणितें भिन्न नही तेसें आत्मातें संसार भिन्न नही केवल आत्मास्वरूप हे ॥ अेसें आत्माकों जाणि करी शांतिवान होहु ॥ जो तेरे दुःख नष्ट होजावे ॥ केवल सांतपद आत्मा हे ॥ सो तेरा अपणा आप हे ॥ अपणे स्वरूपकों भूलकें दुःखी हुआ हे ॥ जब आत्माकों जाणेगा ॥ तब संसारभी आत्मारूप भासेगा ॥ काहेतें जो आत्मास्वरूप हे आत्मातें इतर वस्तु कछू नही ॥ अेसा आत्मा तेरा स्वरूप हे तिसविषे स्थित होहु ॥ हे राजन् यह सर्वजगत् चिदाकाशरूप हे यहि भावना दृढ करु ॥ अेसी भावना जिसकी दृढ हे अरु सब इछा शांत होगइ हे तिस पुरुषकों दुःख कोउ नही लागता ॥ उसनें निरिछारूपी कवच पहिऱ्या हे ॥ हे राजन् अहं अर्थतें रहित जो पुरुष हे ॥ सर्व जिसकों शून्य होगया हे निरालंवका आसरा कीया हे सो पुरुष मुक्तिरूप हे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे मनु इक्ष्वाकुआख्याने सर्वब्रह्मप्रतिपादनं नाम सप्तनवतितमःसर्गः ॥ ९७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ मनुरुवाच ॥ हे राजा यह संसार आत्मातें भिन्न कछू वस्तु नही ॥ जेसें जल अरु तरंग भिन्न नही ॥ जेसें सूर्य अरु किर्णा भिन्न नही ॥ जेसें अग्नि अरु चिणगारे भिन्न नही ॥ तेसें आत्मा अरु संसार भिन्न नही आत्मा स्वरूपही हे जेसें इंद्रियांके विषय इंद्रियांविषे रहते हे तेसें आत्माविषे संसार हे ॥ जेसें पवनविषे स्पंद निस्पंदशक्ति हे सो पवनतें भिन्न नही तेसें आत्मातें भिन्न नही आत्मास्वरूप हे ॥ हे राजन् विषयकी सत्यताकों त्यागकरी केवल आत्माकी भावना करु जो तेरे संशयमिटि जावे ॥ तुं आत्मस्वरूप हे अरु निर्गुण हे तुझकों गुणोंका स्पर्श नही होता तुं सर्वतें पर हे ॥ जेसें आकासविषे धूड अरु धूवा अरु मेघ वादल विकार भासते हे ॥ आकासकों लेप कछू नही करते केवल आकास अद्वैतरूप हे ॥ तेसें ज्ञानवान पुरुष जिनकों आत्मज्ञान भया हे तिसकों सुख दुःख राजस तामस सात्विक गुण लेप नही करते ॥ तिनविषे दृष्टभी आते हे लोक दृश्यकरी तोभी अपणेविषे नही देखते ॥ जेसें समुद्रविषे अनेक तरंग जलरूप होता हे ॥ जेसें सुद्ध मणिविषे नील पीत आदिक प्रतिबिंब पडते हे ॥ सो देखणेमात्र हे मणीकों स्पर्श नही करते ॥ तेसें जिस पुरुषके रिदेतें वासना मल दूर भइ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे ॥ तिसके शरीरकों संबंध करिकें राजस सात्विक तामस गुणोंके कार्य सुख दुःख देखणे मात्र होते हे परंतु स्पर्श नही करते ॥ केवल सत्ता सामान पदका निश्चय तिसविषे होता हे ॥ अवर रंग उसकों स्पर्श नही कर्ता ॥ जेसें आकासकों धूडका लेप नही होता ॥ तेसें आत्माकों गुणोंका संबंध नही होता ॥ जो पुरुष अेसें जाणता हे तिसकों ज्ञानी कहते हे ॥ जब निस्पंद होता हे तब आत्मा होता हे ॥ जब स्पंद होता हे तब संसारी होता हे ॥ जब चित्त फुरता हे तब अनेक सृष्टि भासतीया हे ॥ जब चित्त फुरनेतें रहित हुआ तब संसारका अत्यंत अभाव होता हे ॥ प्रध्वंसा भावभी नही भासता जो पूर्व सृष्टि थी अब लीन होगइ हे ॥ संसारभी केवल आत्मरूप हो जाता हे ॥ तातें हे राजा वासनाकों त्याग चित्तकों स्थिर करु ॥ यह वासनाहि मल हे ॥ जब वासनाका त्याग हुआ तब केवल आकाशकी न्यांइं आपकों स्वछ जाणेगा॥सो आत्मा वाणीका विषय नही केवल आत्मत्व मात्र हे॥अरु अपणे आपविषे स्थित हे सर्वदा उदेरूप हे ॥ अरु विश्वभी आत्माका चमत्कार हे भिन्न वस्तू कछू नही जेसें जलतें तरंग भिन्न नही तेसें आत्मातें विश्व भिन्न नही आत्मारूप हे ॥ द्रष्टा दर्शन दृश्य जो त्रिपुटी हे सो अज्ञान करीकें भासती हे ॥ आत्मा सर्वदा एकरूप हे ॥ अरु त्रिपुटीतें रहित हे ॥ फुरणे करिकें आत्माहि त्रिपुटी रूप हो करी स्थित हुआ हे ॥ जेसें सुपनेविषे एक अनुभव रूप होता हे ॥ अरु चैतनता करीकें काल विषमता रूप हो भासता हे ॥ सो दुसरी वस्तु कोउ नही तेसें आत्माहि त्रिपुटी रूप भासता हे ॥ तातें चित्तकों स्थिर करी देख आत्मातें भिन्न कछू वस्तु नही ॥ अरु फुरणेविषे संसार हे जब फुरणा मिटिगया तब संसारभी मिटि जाता हे ॥ सो फुरणा केसें मिटता हे अरु स्वरूपकी प्राप्ति केसें होती हे सो श्रवण करु ॥ सप्त भूमिका कहता हों जब प्रथम जिज्ञासु होता हे तब चाहता हे जो संतजनका संग करणा अरु ब्रह्मविद्या शास्त्रकों देखणा अरु श्रवण करणा सो प्रथम भूमिका हे ॥ भूमिका कहिये चित्तके ठहरावणेकी ठोर ॥ बहुरी जब संतोके संग अरु शास्त्रोंकरी बुद्धि बढी तब संतो अरु शास्त्रोके कहणेकों विचारत भया ॥ जो में कवण हों अरु संसार क्या हे सो यह दूसरी भूमिका हे तिसके उप्रांत विचार्या जो में आत्मा हों अरु संसार मिथ्या हे मेरेविषे संसार कोउ नही अेसी भावना वारंवार करणी सो तीसरी भूमिका हे ॥ जब आत्म भावकी दृढतातें आत्माका साक्षात्कार हुआ तब वासना संपूर्न मिटि जाती हे जब स्वरूपतें उतरि करी देखता हे तब संसार भासता हे परंतु सुपनकी न्यांइ जाणता हे तातें वासना नही फुरती ॥ अेसे जो अवलोकन हे सो चतुर्थ भूमिका हे जब अवलोक हुआ तब आनंद प्रगट होता हे ॥ अेसें महा आनंदका प्रगट होणा सो पंचम भूमिका हे ॥ अरु जब आनंद प्रगट हुआ अरु तिसविषे स्थित होणा अपणे बलतें सुषुप्तवत् इसका नाम पंचम भूमिका हे॥अरु तुरियापद छठी भूमिका हे॥चित्तके दृढताका नाम तुरिया हे जब तुरियातीत पदकों प्राप्त होता हे तब परमनिर्वाण होता हे ॥ तिसकों सप्तम भूमिका कहता हे ॥ तिस परमनिर्वाण पदकी जीवन् मुक्तिकों गम नही काहेतें जो तुरियातीत पद हे तिसकों वाणीकरी कहि नही सकता प्रथम तीन भूमिका जो कही हे सो जाग्रत अवस्था हे ॥ तिसविषे श्रवण मनन निदध्यासन करता हे अरु संसारकी सत्ताभी दूर नही होती इसीतें जाग्रत अवस्था कही हे ॥ अरु चतुर्थ भूमिका सुपनवत् हे संसारकी सत्ता नही होती अरु पंचम भूमिका सुषुप्ति अवस्था हे काहेतें जो आनंदघनविषे स्थित होता हे ॥ अरु छठी भूमिका तुरिया पद हे जो जाग्रत सुपन सुषुप्ति तीनोंका साक्षी हे केवल ब्रह्महि प्रकासता हे अरु निर्वाण पद विषे चित्तकी लय हो जाती हे सो तुरियापद विषे जीवन्मुक्त विचरतें हे अरु सप्तम भूमिका तुरियातीत पद हे सो परमनिर्वाण पद हे तु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रियाविषे ब्रह्माकार वृत्ति रहती हे अरु ब्रह्माकार वृत्तिभी लीन हो जाती हे ॥ जहां वाणीकी गम नही तहां चित्त नष्ट हो जाता हे ॥ केवल आत्मत्वमात्र हे चैतनका मात्र तहां अपणा अहंभाव होणाभी नही ॥ सांत अरु परम निर्वाण अेसा जो निर्वाण हे सो तेरा स्वरूप हे सर्व विश्व उही रूप हे इतर कछू नही जेसें स्वर्नहि भूषण हे अरु स्वर्णविषे भूषण कलपता हे अरु भूषणभी परिणाम करी होता हे आत्मा सदा अच्युतरूप हे ॥ कदाचित् परिणामकों नही प्राप्त भया केवल एकरस हे ॥ तिसविषे चित्त फुरणेतें विश्व कलपी हे विकार संयुक्त भासता हे तोभी आत्मातें इतर कछू नही केवल अपणे आपविषे स्थित हे ॥ हे राजा अेसा आत्मा तेरा स्वरूप हे तिसविषे स्थित हो करी अपणे प्रकृत आचारविषे निरहंकार हुआ विचरु अरु अहंकारके त्यागका अभिमानभी त्याग करी केवल आत्मरूप हो रहु ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे परम निर्वाण वरननं नाम अष्टनवतितमः सर्गः ॥ ९८ ॥ ॥ ७ ॥

॥ मनुरुवाच ॥ हे राजन् सर्व चिदाकास सत्ता आदि मध्य अंततें रहित अनाभास ज्योकात्यों स्थित हे ॥ अरु आगेंभी उहि स्थित रहेगा ॥ तिसविषे न उर्ध हे न अध हे न तम हे न प्रकास हे ॥ न तिसतें इतर हे सर्वकी सत्ता हे सो चिन्मात्र परम सार हे सो आपहि संकल्पकरी चैतनता भया तब जगत हुआ अरु क्यों करी हुआ क्या रूप हे सो श्रवण कर ॥ हे राजन यह विश्व आत्मातें भिन्न कछू नही आत्मस्वरूपही हे ॥ जेसें जलविषे तरंग हे अरु मिरचविषे तीक्ष्णता हे ॥ खांडविषे मधुरता हे ॥ अग्निविषे उष्णता हे अरु वरफविषे सीतलता हे सूर्यविषे प्रकास हे ॥ तेसें आत्माविषे विश्व हे ॥ सो आत्मस्वरूप हे ॥ जेसें आकासविषे शून्यता हे जेसें वायुविषे स्पंद हे ॥ तेसें आत्माविषे विश्व हे सो आत्मस्वरूप हे इतर कछू नही ॥ हे राजन् जो आत्मस्वरूप हे तो सोक अरु मोह किसका करता हे ॥ अभिमानतें रहित होकरि विचरु जेसें नीतिका प्रवाह आनि प्राप्त होवे तिसविषे विचर ॥ जेसें काष्टकी पुतली जंत्री के तागेकरी अनिछित चेष्टा करती हे तेसें नीतीरूपी तागेसों अभिमानतें रहित होकरी विचर जो न में कछू करताहों ॥ न करावताहों किसीविषे राग दोष न करणा ॥ जेसें सिला ऊपर मूरति लिखी होती हे तिसीकों न किसीका राग हे न दोष हे ॥ तेसें सिलाकी मूरतकी न्यांइ विचरु आत्मातें इतर कछू फुरे नही अेसा निरहंकार होहु ॥ भावे व्यवहारी गृहस्थ होहु भावे सन्यासी होहु ॥ भावे देहधारी भावे देहत्यागी होहु॥भावे विक्षेपी होहु भावे ध्यानी होहु तेरे तांइ दुःख कोउ न होवेगा ज्योंकात्योंहि रहेगा॥फुरनाहि संसार हे फुरनेतें रहित असंसार हे॥ जब फुरता हे तब संसारी होता हे जब फुरना मिटि जावे तब केवल आकासरूप भासता हे॥हे राजन यह जगत सब आत्मरूप हे॥आत्माहि अपणे आपविषे स्थित हे॥जो सर्वात्माहि हे तो सोक अरु मोह किस्का करिये ॥ हे राजन आत्मा सर्वदा एकरस हे अरु विश्व आत्माका चमत्कार हे॥अरु नाना विकार जन्म मरणतें आदि जो भासते हे सो आत्माके अज्ञानकरिकें भासतें हे ॥ जब आत्माका ज्ञान हुआ तब आत्मरूपही एकरस विषमता कछू न भासेगी जेसें जलके न जानणे करी तरंग बुद्बुदेका ज्ञान होता हे ॥ जब जलकों जाण्या तब तरंग बुद बुदेकी विषमता कछू नही सर्वजलरूप हे ॥ तेसें आत्माके अज्ञानकरी विकार भासते हे ॥ जब आत्माका ज्ञान हुआ तब एकरस सर्वात्माहि भासता हे अरु संवेदन करिकें आकार भास ते हे ॥ संवेदन कहिये अहंकार वासनाका संबंध अहंकार चित्त दोनों पर्याय हे ॥हे राजन् अहंकार साथ इसका होणा दुःखदाइ हे केवल चिन्मात्रविषे अहंभाव मिथ्या हे॥ जबलग सं वेदन दृश्यकी उर फुरती हे तबलग दृश्यका अंत नही आता अरु नाना प्रकारके विकार भासते हे ॥ जब संवेदन आत्मा अधिष्ठानकी उर आवती हे ॥ तब आत्मा शुद्ध अपणा आप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होकरी भासता हे अरु संवेदनभी आत्माका आभास कल्पित हे ॥ आभासके आश्रय विश्व कल्पी हे अरु आत्मा ज्योंकात्यों हे फुरणेविषेभी अफुरणे विषेभी ॥ परंतु फुरणेविषे विषमता भासती हे अफुरविषे ज्योंकात्यों भासता हे ॥ जेसें जेवरीके अज्ञानकरी सर्प भासता हे ॥ जब जेवरीका ज्ञान भया तब सर्पकी विषमता जाती रहती हे ॥ ज्योंकीत्यों जेवरी भासती हे सो सर्प भासणे काल विषेभी जेवरी ज्योंकीत्यों थी जेवरी विषे कछू हुआ नही जानणे न जानणेविषे एक समान हे ॥ तेसें आत्माभी फुरणे कालविषे जगत् भासता हे फुरणेके निवृत्त हुए आत्माहि भासताहे आत्मा दोनों कालविषे एक समान हे ॥ जेसें सूर्यकी किर्णा सूर्यतें भिन्न नही अरु अग्नितें उष्णता भिन्न नही॥ तेसें आत्मातें विश्व भिन्न नही आत्माहि स्वरूप हे॥ हे राजन् अहंकारकों त्याग करी सत्ता समान अपणे स्वरूपविषे स्थित होहु ॥ तब तेरे सर्व दुःख निवृत्त हो जावे ॥ एक कवच तेरे तांइं कहताहों तिसकों धारि करी विचरु यद्यपि अनेक शस्त्रोंकी वर्षा होवे तोभी छेदकों प्राप्त न होवे सो श्रवण करु ॥ जो कछू देखता सुणता हे सो सर्व ब्रह्म जाण वारंवार यही भावना करु जो ब्रह्मतें इतर कछू न भासे ॥ जब अेसी भाव ना दृढ करहि तब शस्त्र कोउ छेदी न सकेगा ॥ इह ब्रह्म भावनाहि कवच हे जब इसकों तुं धारेगा तब सुखी होवेगा ॥ वाल्मीकोवाच ॥ इस प्रकार वसिष्ठजीनें रामजीकों मनु अरु इक्ष्वाकुका संवाद सुणाया ॥ तब सायंकाल हुआ सूर्य अस्त भया ॥ अरु संपूर्ण सभा स्नानकों उठी वसिष्ठजीभी उठे ॥ बहुरी सूर्यकि किरणां साथ आय प्राप्त भये ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे मोक्षरूपवर्णनं नाम नवनवतितमःसर्गः ॥ ९९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ मनुरुवाच ॥ ॥ हे राजन् जिसका कारणहि मिथ्या हे तो तिसका कार्य केसें सत होवे ॥ यह आभास जो संवेदन हे सो विश्वका कारण हे ॥ जो आभास मिथ्या हे तो विश्व केसें सत्य होवे ॥ जो विश्वही असत हे तो भय किस का करता हे अरु शोक किसका करता हे ॥ हे राजन् न कोउ जन्मता हे न कोउ मरता हे न सुख हे न दुःख हे ॥ ज्योंका त्यों आत्मा स्थित हे तिसविषे संवेदन विश्व कल्पी हे ॥ तातें संवेदनका त्याग करु जो न में हो न यह हे ॥ जब तेरे तांइं अेसा निश्चय दृढ होवेगा तब पाछें आत्माहि सेष रहेगा ॥ अरु अहंकार निवृत्त हो जावेगा ॥ काहेतें जो आत्माके अज्ञानतें हुआ हे ॥ आत्म ज्ञानतें नष्ट हो जाता हे ॥ हे राजन् जो वस्तु भ्रम करिकें सिद्ध होवे अरु सत दृष्ट आवे ॥ तिसकों विचारियें जो विचार कियेतें रहे तो सत्य जाणीये अरु आत्मा जा णिये ॥ अरु जो विचार कियेतें नष्ट हो जावे तिसकों मिथ्या जाणिये ॥ जेसें हीराभी स्वेत हे अरु बरफका मणकाभी स्वेत होता हे एक समान दोनों भासते हे ॥ तिनकी परीक्षाके किये सूर्यके सन्मुख दोनों राखिये ॥ जो धुप करी गलि जावे सो झूठा जाणिये अरु ज्यों कात्यों रहे तिसकों सत जाणिये ॥ तेसें विचाररूपी सूर्यके सन्मुख करिये तो अहंकार बरफकी न्यांइ नष्ट हो जाता हे काहेतें जो अहंकार अनात्म अभिमानविषे होता हे सो तुछ हे सर्व व्यापी नही ॥ अरु इंद्रियांकी क्रिया अपणेविषे मानता हे ॥ जो परधर्म अपणेविषे कल्पता हे सो तुछ है ॥ अरु आपकों भिन्न जाणता हे आपतें अवर पदार्थ भिन्न जाणता हे ॥ तातें विचार कियेतें बरफके हीरेकी न्यांइं मिथ्या होता हे ॥ अविचार सिद्ध हे जब विचार किया तब नष्ट हो जाता हे ॥ अरु आत्मा सर्वका साक्षी ज्योंका त्यों रहता हे ॥ अहंकारकाभी अरु इंद्रियांकाभी साक्षी हे अरु सर्व व्यापी हे ॥ हे राजा जो सत वस्तु हे तिसकी भावना करु अरु सम्यक दर्शी होहु सम्यक दर्शीकों दुःख कोउ नही ॥ जेसें जेवरी मार्गविषें पडी हे तिसकों जेवरी जाणियें तो दुःख कोउ नही ॥ अरु जो सर्प जाणियें तो भयमान होता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे ॥ तातें सम्यक दर्शी होड्ड ॥ असम्यक दर्शी मत होड्ड ॥ हे राजन् जो कछू दृश्य पदार्थ हे सो सुखदाइ नही दुःखदाइ है ॥ जबलग इनका संयोग हे तबलग सुख भासता हे ॥ जब विजोग हुआ तब दुःखकों प्राप्त करते हैं ॥ तातें तुं उदासीन होउ ॥ किसी दृश्य पदार्थकों सुखदाइ न जाण ॥ अरु दुःखदाइभी न जाण सुख अरु दुःख दोनों मिथ्या हे इनविषे आस्था मत करु अहंकारतें रहित जो तेरा स्वरूप हे तिसविषे स्थित होउ ॥ जब अहंकार नष्ट होवेगा तब आपकों जन्ममरण विकारोंतें रहित आत्मा जाणेगा जो में निरहंकार हों अरु ब्रह्म हों चिन्मात्र हों ॥ अेसें अहंभावतें रहित होणा अपणा होणाभी न रहेगा केवल चिन्मात्र रहेगा आनंदरूप होवेगा अरु सांतरूप राग दोषके क्षोभतें रहित होवेगा ॥ जब अेसा आपकों जाण्या तब शोक किसका करेगा हे राजा इस दृसकों त्यागकरी अपणे स्वरूपविषे स्थित होड्ड ॥ अरु इस मेरे उपदेशकों विचार जो में सत्य कहता हों अथवा असत्य कहता हों ॥ अरु विचारेतें जो संसार सत्य होवे तो संसारकी भावना करु अरु जो आत्मा सत्य होवे तो आत्माकी भावना करु हे राजन् तुं सम्यक दर्शी होड्ड सतकों सत जाण अरु असतकों अ सत जाण अरु जो असम्यक दर्शी हे सो सतकों असत्य मानता हे अरु असत्यकों सत्य मानता हे॥ असत वस्तु तो स्थिर नही रहती अेसें न जानणे करी अज्ञानी दुःख पावता हे ॥ जेसें कोउ पुरुष कुटीकों रचीकरी चितवणे लागा जो आकाशकी में रक्षा करी हे जब कुटी नष्ट भइ तब शोक करता हे जो आकाश नष्ट हो गया काहेतें जो आकाशकों कुटीके आश्रय जानता था ॥ तेसें अज्ञानी पुरुष आत्माकों देहके आश्रय जाणी करी देहके नष्ट हुए आत्माका नाश मानता हे अरु दुःखी होता हे ॥ जेसें स्वर्नविषे भूषण कल्पित हे सो भूषणोंके नष्ट हुए मूर्ख स्वर्नकों नष्ट मानता हे ॥ तेसें अज्ञानी देहके नष्ट हुए आपकों नष्ट जानता हे अरु जिसकों स्वर्नका ज्ञान हे सो भूषणोंके नासतेंभी स्वर्नकों देखता हे अरु भूषण संज्ञा कल्पित जानता हे ॥ तेसें जो ज्ञानवान हे सो आत्माकों अविनासी जानता हे ॥ अरु देह इंद्रियांकों असत जानता हे ॥ हे राजन् तुं देह इंद्रियांके अभिमानतें रहित होड्ड ॥ जब अभि मानतें रहित इंद्रियांकी चेष्टा करेगा तब सुभ अशुभ क्रिया बांध न सकेगी अरु जो अभिमान सहित करेगा तब शुभ अशुभ फलकों भोगेगा ॥ हे राजन् जो मूर्ख अज्ञानी हे सो अेसी क्रियाका आरंभ करते हैं ॥ जिसका कल्पपर्यंत नास न होवे अरु देह इंद्रियांके अभिमानका प्रतिबिंब आपविषे मानते हे ॥ में कर्ता हों में भोगता हों अेसें मानने करी अनेक जन्म पावते हे तिनके कर्मोंका नास नही कब होता ॥ अरु जो तत्ववेत्ता ज्ञानवान पुरुष हे सो आपकों देह इंद्रिया गुणतें रहित जानते हे तिनके कर्म संचित अरु क्रियमान नष्ट हो जाते हे संचित कर्म दक्षकी न्यांइं हे अरु क्रियमान फूल फलकी न्यांइं हे ॥ जेसें रुइसों लपेटी करी अग्निकों लगायेतें दल फूल फल सूके तृणवत् दग्ध होते हे ॥ तेसें ज्ञानरूपी अग्निकरी सं चित अरु क्रियमान कर्म दग्ध हो जाते हे ॥ तातें हे राजा जो कछू चेष्टा फुरणे वासनातें रहित होकरी करेगा तिसविषे बंधन कोउ नही ॥ जेसें बालकके अंग सुभाविक भली बुरी प्रकार हिलते हे ॥ परंतु उसके रिदेविषे अभिमान फुरता नही तातें उसकों बंधन नही करता ॥ तेसें तुंभी इछातें रहित होकरी चेष्टा करु तब तेरे तांइं बंधन कोउ न होवेगा यद्यपि सब चेष्टा तेरेविषे भासेगी तोभी वासनातें रहित होवेगा बहुरी अवर जन्म न पावेगा ॥ जेसें भूना बीज दखणे मात्र होता हे अरु उगता नही तेसें तेरेविषे सर्व क्रिया दृष्ट आवेगी ॥ परंतु ज न्मका कारण न होवेगा ॥ पुण्य क्रियाका फल सुख न भोगेगा अरु पाप क्रिया करी दुःख न भोगेगा ॥ तेरे तांइं पाप पुण्यका स्पर्श न होवेगा जेसें जलविषे कमल स्थित होता हे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरु जल तिसकों स्पर्श नही करता ॥ तेसें पाप पुण्यका स्पर्श तेरे तांइ न होवेगा ॥ तातें अभिलाषतें रहित होकरी जो कछू अपणा प्रकृत आचार हे सो करु ॥ हे राजा जेसें आकाश विषे जल साथ पूरणमेघ भासते हे परंतु आकासकों लेप नही करते ॥ तेसें तुझकों कोउ क्रिया बंधन न करेगा ॥ जेसें जो विषके खाणेवाला हे तिसकों विष नही मारी सकती तेसें ज्ञानीकों क्रिया नही बांध सकती ॥ ज्ञानवान क्रिया करणेविषेभी आपकों अकर्ता जानता हे ॥ अरु अज्ञानी न करणेविषेभी अभिमान करी कर्ता होता हे॥ जो देह इंद्रियांके न करते आपकों करता मानता हे ॥ अरु जो देह इंद्रियां करी करता हे तिसके अभिमानतें रहित हे सो करणेविषेभी अकर्ता हे ॥ अरु जो पुरुष कर्मतें इंद्रियांकों संयम करी बेठता हे ॥ अरु मनविषे विषयके भोगकी तृष्णा राखता हे ॥ अंतःकरण जिसका राग दोष करी मूढ हे ॥ बडी क्रियाकों उठावता हे अरु दुःखी होता हे सो मिथ्याचारी हे ॥ जो पुरुष मनकरी इंद्रियाके राग दोषतें रहित हे ॥ अरु कर्म इंद्रियांकरी चेष्टा करता हे सो विशेष हे अपणे जाणेविषे कछू नही करता मोक्षकों पावता हे ॥ हे राजा अज्ञानरूप वासनातें रहित होकरी विचरु अेसें होकरी विचरेगा ॥ तव आपकों ज्योंका त्यों आत्मा जाणेगा ॥ अरु सदा उदेरूप सर्वका प्रकाशक आपकों जाणेगा ॥ जन्ममरण बंध मुक्ति विकारतें रहित ज्योंका त्यों आत्मा भासेगा ॥ हे राजन् तिस पदकों पायकरी शांतिवान होवेगा ॥ अरु अवर सर्व कला अभ्यास विशेष विना नष्ट होती हे ॥ जेसें रसविना वृछ होता हे यद्यपि फेलाववाला होता हे तोभी उगता नही ॥ अरु ज्ञानकला अभ्यास विना नही उपजती हे उपजी हुइ नास नही होती जेसें धान बोते हे अरु दिन दिन प्रति बढणे लागते हे ॥ तेसें ज्ञानकला प्राप्त हुइ दिन दिन प्रति वढती हे ॥ हे राजन् ज्ञान उपजे हुए अेसें जाणता हे जो में न मरता हों न जन्मता हों निरहंकार निष्किंचन रूप हों सर्वका प्रकाशक हों अजर हों अमर हों ॥ हे राजा अेसी ज्ञान कलाकों पाय करी मोहकों नही प्राप्त होता ॥ जेसें दूधतें दहि हुआ बहुरी दूध नही होता ॥ तेसें ज्ञान प्राप्त हुए मोहकों नही प्राप्त होता ॥ जेसें दूधकों मथीकरी घृत काढी लिया बहुरी नही मिलता ॥ तेसें जिसकों ज्ञान कला उदे हुए बहुरी मोहका स्पर्श नही होता ॥ हे राजन् पुरुष प्रयत्न यही हे जो अपणे स्वरूपविषे स्थित होणा अरु अवर उपायका त्याग करणा ॥ जिस पुरुषकों आत्माकी भावना हुइ हे ॥ सो संसार समुद्रके पारकों प्राप्त भया हे ॥ अरु जिसकों संसारकी भावना हे सो संसारी जरा मृत्यु दुःखकों प्राप्त होता हे ॥

॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे परमार्थउपदेशो नाम शततमः सर्गः ॥ १०० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ मनुरुवाच ॥ ॥ हे राजन् वडा आश्चर्य जो शुद्ध आत्मा चिन्मात्रविषे माया करिकें नाना प्रकारके देह इंद्रियां दृश्य भासी आइ हे ॥ हे राजा दृश्यका कारण अज्ञान हे जिस आत्माके अज्ञान करी दृश्य भासती हे तिसीके ज्ञानकरी लीन होजाता हे ॥ तातें इस संवेदनकों त्यागकरी आत्माकी भावना करु ॥ यह में हों यह मेरे हे सो मिथ्याहि फुरते हे ॥ हे राजन प्रथम जो कारणरूपतें एक जीव उपजा हे तिस आदि जीवतें अनेक जीवगण होतभये हे ॥ जेसें अग्निके चिणगारे निकसते हे तेसें तिस जीवनें आगें अनेकरूप धारे हे ॥ कोउ गंधर्व को विद्याधरकोउ मनुष्यकोउ राक्षस इत्यादिक बहुरी जेसें जेसें संकल्प होते गये हे तेसें रूप होते गये ॥ वास्तवतें क्या हे जेसें जलविषे तरंग स्वरूपके प्रमादकरी अनेक भावकों प्राप्त होते है ॥ अपणे संकल्प आपहि कों बंधनरूप होते गये हे तातें संकल्प नानात्व कलना मिथ्या हे॥हे राजन् इस भावनाकों त्यागकरी आत्मपदकी सरनकों प्राप्त होहु जो आत्म अनं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त हे ॥ कोउ विश्वभान अवर प्रकारकी होती हे ॥ जेसें समुद्र सम हे तिसविषे कोउ आवर्त उठते हे कोउ बुद्बुदे उठते हें सो जलतें भिन्न नही तेसें आत्माविषे अनेक प्रकारकी विश्व फुरती हे ॥ सो आत्मातें भिन्न कछू नही आत्मस्वरूपही हे ॥ तातें आत्माकी भावना करु ॥ कहुं ब्रह्म सत संकल्प होकरी फुरता हे तहां जानता हे में ब्रह्म हों अरु शुद्धरूप हों ॥ सदा मुक्तरूप हों में इस संसार समुद्रके पारकों प्राप्त भया हों अरु जहां चैतनता शक्ति हे तहां आपकों जीवता मानता हे अरु दुःखीभी जानता हे ॥ सो जीवका लक्षण श्रवण करु ॥ अंतःकरण साथ मिली करी भोगकी भावना करणी अरु सदा विषयकी तृष्णा करणी सो जीवात्मा कहिये ॥ अरु जहां वासना क्षय हुइ हे ॥ अरु शुद्ध आत्माविषे आत्मप्रत्यय हे ॥ तहां जीव संज्ञा नष्ट होजाती हे केवल शुद्ध आत्मा प्रकाशता हे ॥ हे राजन् जब चैतन अंतःकरण साथ मिलीकरी बहिर्मुख फुरता हे तब संसारी हुआ जरा मरण करिकें दुःखी होता हे ॥ जहां चैतन शक्ति अंतर्मुख होती हे ॥ तब जन्ममरणकी भावनाकों त्यागकरी स्वरूपकी भावना करता हे ॥ सर्व दुःखकी निवृत्ति होती हे ॥ जब इसकी भावना स्वरूपकी उर लगती हे तब दुःख कोउ नही रहता ॥ जब स्वरूपका प्रमाद भया तब दुःख पावता हे ॥ जब स्वरूपका ज्ञान हुआ तब आनंदरूप मुक्त होता हे॥ हे राजन् संसाररूपी कुपकी टिंड नही होणा जब टिडरसी साथ बांधिता हे कबहुं उर्धकों जाता हे कबहुं अधकों जाता हे॥जब रसीटुटी पडती हे तब न उर्धकों जाता हे न अर्धकों जाता हे दुःख पावता हे ॥ सो कूप क्या हे अरु अध क्या हे उर्ध क्या हे सो श्रवण करु ॥ हे राजन् संसाररूपी कूप हे स्वर्ग लोक उर्ध अरु पाताल नर्क अध हे ॥ पुण्य कर्म करि स्वर्गकों जाता हे पाप कर्मकरी नरककों जाता हे ॥ सो आशारूपी रसडी साथ बांध्या हुआ जन्म मरणरूपी चक्रविषे फिरता हे ॥ स्वर्ग नरकके फेरणेका कारण आसा हे ॥ जब आशा निवृत्त होती हे तब न कोउ नरक हे न स्वर्ग हे ॥ जबलग देहविषे अभिमान हे तबलग नीचतें नीच गतिकों प्राप्त होता हे ॥ जेसें पथरकी सिला समुद्रविषे डारियें तो नीचेतें नीचे चली जाती हे ॥ तेसें नीच स्थानोकों देखिकरी देह अभिमानी नीचेकों चला जाता हे अरु जब इंद्रियादिकका अभिमान त्याग किया तब जेसें क्षीर समुद्रतें निकसी करी चंद्रमा उर्धतें उर्धकों चला जाता हे तेसें उर्धकों जाता हे ॥ हे राजा जब आत्माकी भावना करेगा तब आत्माहि होवेगा तातें आशारूपी फांसीकों तोडी करी शांतपदकों प्राप्त होइ ॥ आत्मा चिंतामणीकी न्यांइं हे जेसी भावना करिये तेसी सिद्धि होवे ॥ जब तुं आत्मभावना करेगा तब संपूर्ण विश्व अपणेविषे देखेगा जेसें पर्वत सिला पथर सर्व अपणेविषे देखता हे ॥ तेसें तुं सर्व आत्माविषे जाणेगा ॥ हे राजा जेती कछू दृष्टि हे सो सर्व आत्माके आश्रय हे ॥ शास्त्र अरु शास्त्र दृष्टि सब आत्माके आश्रय हे ॥ राजा आत्माके आश्रय हे सो सर्व सत्य हे आत्मा चिंतामणी कल्पवृक्ष हे जेसी कोउ भावना करता हे तेसी सिद्धि होती हे हे राजन फुरणे विषे यह दृष्टि सर्व सत्य हे ॥ जब फुरणा नष्ट भया तब न कोउ शास्त्र हे न कोउ दृष्टि हे ॥ केवल अद्वैत आत्मा हे ॥ तब निषेध किसका करियें अरु अंगीकार किसका करीयें ॥ जो पुरुष अहंकारतें रहित हुआ हे सो सर्व शास्त्र दृष्टि ऊपर बिराजता हे ॥सर्व आत्मा होता हे जैन उसीकों हे ॥जैन कहते हे॥कालवालें उसीकों काल कहते हे ॥ सर्वका आसरा आत्मा हे ॥ जो पुरुष देह अभिमानी हे सो मूर्ख हे ॥ स्वरूपके अज्ञान करी अध उर्ध लोककों गमन आगमन करता हे अरु पशु पंछी स्थावर जंगम जोनीकों पावता हे ॥ अरु आशारूपी फांसी साथ बांध्या हुआ दुःखकों प्राप्त होता हे ॥ अरु जो पुरुष सम्यक्दर्शी हे ॥ शुद्ध चेष्टा जिसकी हे तिसकों विकार कोउ दृष्ट न आता हे ॥ आका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सकी न्यांइ सदा निर्मल भासता हे ॥ अरु संपूर्ण विश्व तिसकों आत्मस्वरूप भासता हे ॥ अरु जेती कछू चेष्टा ब्रह्माविष्णु इंद्रादिक करते हे तिसका कर्ताभी आपकों जानता हे ॥ तिसकों सर्व दुःखका अंत होता हे दुःखतें रहित आत्मा पदकों प्राप्त होता हे ॥ अरु सर्व सुखकी सीमा तिनकों प्राप्त होती हे ॥ हे राजन् जब अेसें सुखकों तुं प्राप्त होवेगा ॥ तब तृष्णा तेरे तांइ कोउ न रहेगी ॥ जेसें नदी तब लग चलती हे जबलग समुद्रकों नहीं प्राप्त भइ ॥ जब समुद्रकों प्राप्त भइ तब चलणेतें रहित होती हे ॥ तेसें जब तुं आत्मापदकों प्राप्त होवेगा तब इछा तेरे तांइ कोउ न रहेगी ॥ हे राजन् तुं अहंकारका त्याग कर अथवा अेसें जाण जो सर्व मेंही हों ॥ अरु जरा मरण आदिक दुःख तबलग हे जबलग आत्मबोध नहो प्राप्त भया जब आत्मबोध भया तब दुःख कोउ नही रहता ॥ अरु दोनोंहि दुःख भारी हे जन्म अरु मृत्युसों मिटि जाते हे ॥ इंद्रके वज्र समानभी दुःख होवे तोभी ज्ञानवानकों स्पर्श नही करता ॥ हे राजन् जेसें बूटा होता हे जब तिसकों फल पडता हे तब सुकी करी गिरता हे तिसी प्रकार जब ज्ञानरूपी फल प्राप्त होता हे ॥ तब मन बुद्धि अहंकार बुटेकी न्यांइ गिर पडते हे ॥ जबलग मनकी चपलता हे तबलग दुःख पावता हे ॥ जब मनकी चपलता निवृत्त भइ तब क्षोभ कोउ नही रहता ॥ सांतपदकों प्राप्त होता हे ॥ अरु सांति तब होती हे जब प्रकृतिका विजोग होता हे अरु प्रकृतिके संजोगतें संसारी होता हे अरु दुःख पावता हे ॥ तातें प्रकृति कहियें अहंकार तिसका त्याग करु ॥ अहंकारतें रहित होकरी चेष्टा करु ॥ जब तुं अहंकारतें रहित हुआ तब तिस पदकों प्राप्त होवेगा ॥ जो न जड हे न चैतन हे न शून्य हे ॥ न अशून्य हे ॥ न केवल हे न अकेवल हे न आत्मा कहिये न अनात्मा कहिये ॥न एक कहिये न दो कहिये ॥ जेते कछू नाम हे सो प्रतियोगी साथ मिले हुए हे ॥ प्रतियोगी हुआ सो द्वैत हुआ ॥ अरु आत्मा अद्वैत मात्र हे जिसविषे वाणीकी गम नही जो अवाच्य पद हे तिसकों केसें कहियें ॥ जेती कछू नाम संज्ञा हे सो उपदेशमात्र हे आत्मा अनिर्वाच्य पद हे तातें संकल्पका त्याग करु॥अरु आत्माकी भावना करु जब आत्मभावना करेगा तब केवल आत्माहि प्रकासेगा ॥ जेसें फूलका अंग सुगंधतें रहित कोउ नही ॥ तेसें आत्मातें इतर कछू नही ॥ हे राजन् जब अहंकारका त्याग करेगा तब अपणे आपकरी सोभायमान होवेगा ॥ आकासकी न्यांइ निर्मल आत्माविषे स्थित होवेगा ॥ अहंकारकों त्यागकरी तिस पदकों प्राप्त होवेगा जहां शास्त्र अरु शास्त्रोंके अर्थ नही प्राप्त होते ॥ अरु संपूर्न इंद्रियांके रस तहां लीन हो जाते हे ॥ अरु सर्व दुःख तहां नष्ट होजाते हे ॥ केवल मोक्ष पदकों प्राप्त होवेगा हे राजा मोक्ष किसी देसविषे नही जो तहां जायकरी पावेगा ॥ अरु मोक्ष किसी कालविषे नही जो अमका काल आवेगा तब मुक्त होवेगा अरु मोक्ष कोउ पदार्थ नही जो तिसकों ग्रहण करेगा ॥ हे राजन् प्रकृत जो हे अहंकार तिसीतें मोक्ष होणा हे ॥ जब अहंकारका तुं त्याग करे तबहि मोक्ष हे ॥ जब इस अनात्म अभिमानकों त्यागेगा तब अपणें आपकरी सोभायमान होवेगा ॥ जेसें धुमतें रहित अग्नि प्रकासमान होती हे तेसें अहंकारतें रहित तुं प्रकासेगा ॥ जेसें बडे पर्वत उपर तलाव निर्मल अरु गंभीर सोभता हे तेसें तुं सोभेगा हे राजा तुं अपणे स्वरूपविषे स्थित होहु ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे समाधान वर्णनंनाम एकाधिकशततमःसर्गः ॥ १०१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ मनुरुवाच ॥ हे राजा तुं आत्मारामी होहु अरु शुद्ध होहु राग दोषतें रहित नित अंतर्मुख होहु ॥ हे राजन् जब तुं आत्मारामी हुआ तब तेरी व्याकुलता नष्ट हो जावेगी ॥ अरु अंतर सीतल सोम चंद्रमा पूर्णवत् होजावेगा ॥ अेसा होकरी अपणे प्रकृत आचारविषे विचरु ॥ अरु किसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फलकी वांछा न करु जो पुरुष वांछातें रहित होकरी कर्म करता हे ॥ सो सदा अकर्ता हे अरु महा सोभा पावता है हे राजा ऐसी अवस्थाविषे स्थित होकरी जो भोजन आवे ॥ तिसें कों भक्षण करुअरु जो अनिछित वस्त्र आवे तिसकों पहिरु ॥ जहां नींद आव तहां सेन करु अरु राग दोषतें रहित होहु॥ जब तुं अेसा होवेगा तब तुं सास्त्र अरु सास्त्रोंके अर्थतें उल्लंघित वरतेगा जो अेसा पुरुष हे सो परम रसकों पायकरी मतवाला होता हे ॥ तिसकों संसारकी इछा कछू नही रहती ॥ हे राजन् ज्ञानवान् कासीविषे देह त्यागे अथवा चंडालके गृहविषे त्यागे ॥ जहां तहां मुक्ति हे उह सदा आत्मस्वरूप विषे स्थित हे ॥ अरु वर्तमानकालविषे देहकों नही त्यागता ॥ काहेतें जो जिस कालविषे उसकों ज्ञान हुआ हे तिसी कालविषे देहका अभाव भया हे ॥ ज्ञानकरी देह दग्ध हो जाता हे ॥ हे राजन् ज्ञानवान सदा मुक्तरूप हे ॥ न किसीकी स्तुति करता हे न निंदा करता हे ॥ काहेतें जो चित्तकी कलना तिसकी मिटि गई हे ॥ यद्यपि राग दोष ज्ञानवानविषे दृष्टभी आता हे ॥ अरु हसता रोताभी दृष्ट आता हे परंतु अंतःकरण अपणे जानणे करी न राग हे न दोष हे न हस्ता हे न रोता हे ज्योंकात्यों हे॥जेसें आकास शून्य रूप हे अरु मेघ बदलभी दृष्टि आते हे परंतु आकासकों लेप नही करते॥तेसें ज्ञानवानकों कोउ क्रिया बंधन नही करती अज्ञानी जाणते हे जो ज्ञानवान क्रिया करता हे हे राजन् ज्ञानवान सर्वदा नमस्कार करणेकों जोग हे अरु पूजणे जोग हे ॥ जिस स्थान ज्ञानवान बेठता हे तिस स्थानकोंभी नमस्कार हे जिस साथ बोलता हे तिसकोंभी नमस्कार हे ॥ जिस ऊपर ज्ञानवान दृष्टि करता हे तिसकोंभी नमस्कार हे सो सबका आश्रयभूत हे ॥ हे राजन् जेसा ज्ञानवानकी दृष्टीतें आनंद पाइता हे सो तप करीकें नही पाइता ॥ दान करी नही पाइता ॥ अरु यज्ञकर्मोंकरीभी नही पाइता ॥ अेसीदृष्टि किसी करी नही पाइती जेसी संतकी दृष्टि हे ॥ अेसें आनंदकों पाइता हे जिस पदकों वाणीकी गम नही ॥ अरु जो पुरुष संत कीदृष्टिकों पायकरि केसा होता हे ॥ जिसतें लोक दुःख नही पावते अरु लोकतें उह दुःख नही पावता ॥ न किसीका भयकरता हे न किसीका हर्ष करता हे ॥ हे राजन् सिद्धी पावणेका सुख अल्प हे क्या हे जो उडणेकी सिद्धी पाइ ॥ तो पंछी अनेक उडते फिरते हे ॥ इसी करी आत्मज्ञान तो नही पाइता ॥ अरु आत्मज्ञान विना सांति नही होती ॥ जब आत्मज्ञान प्राप्त हुआ तब जरा मृत्युआदिक दुःखतें मुक्त होता हे दुःख इसविषे कोउ नही रहता॥ जेसें सिंघ पिंजरेते छूटा बहुरी पिंजरेके बंधनविषे नही पडता॥तेसें उह पुरुष अज्ञानरूपी पिंजरेविषे नही फसता ॥ हे राजन् तातें तुं आत्माकी भावना करु जो तेरे दुःख नष्ट होजावे ॥ अज्ञानकरीकें तेरे तांइ दुःख भासते हे अज्ञानतें रहित तुं सदा आनंदरूप हे आत्मा अनुभवरूप हे तिस अनुभवरूप प्रत्यक आत्माविषे स्थित होहु ॥ जब तुं आत्माविषे स्थित होवेगा॥तब चेष्टा तेरेविषे दृष्टभी आवेगी परंतु स्पर्श न करेगी ॥ जेसें सुद्ध मणीके निकट जेसा रंग राखियें स्वेत रक्त पित श्याम तिसके प्रतिबिंबकों ग्रहण करती हे तोभी रंग कोउ स्पर्श नही करता ॥ उसविषे कल्पित जेसें भासते हे ॥ तेसें तुं प्रकृत आचारकों अंगीकार करता हुआ तेरे तांइं पाप पुण्यका स्पर्श न होवेगा ॥

॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे मनुइक्ष्वाकुसंवाद समाप्तिनाम द्व्यधिकशततमःसर्गः ॥ १०२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार मनु उपदेश करिकें तुष्णी हो गया ॥ तब राजानें भली प्रकार मनुका पूजन किया ॥ बहुरी मनुभी आकाशकों उडी ब्रह्मलोकविषे जाय प्राप्त भया ॥ अरु राजा इक्ष्वाकु राज करणे लागा ॥ हे रामजी जेसें राजा इक्ष्वाकुनें जीवन्मुक्त हो करी राज किया हे ॥ तेसें तुंभी इस दृष्टीकों आश्रय करिकें विचरु ॥ रामोवाच ॥ हे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवन् तुम कहा जेसें राजा इक्ष्वाकु ज्ञानकों पाय करी राज चेष्टा करत भया हे तेसें तुं करु तिसविषे मेरा प्रश्न हे ॥ जो अपूर्व अतिसे होवे तिसका पावणा विसेष हे ॥ अरु जो पूर्व
केइनें पाया हे ॥ तिसका पावणा अपूर्व अतिसें नही ॥ तातें मेरे तांइं सो कहो जो अपूर्व अतिसे सर्वतें विसेष हे ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ज्ञानवान सदा शांत रूप हे
अरु राग दोषतें रहित हे ॥ अरु अपूर्व अतिसेकों पावता हे जेती कछू अवर अतिसे हे सो पूर्व अतिसे हे ॥ अरु ज्ञानवान अपूर्व अतिसेकों पावता हे ॥ सो ज्ञानीतें अन्य कोउ नही पा
वता ॥ आत्मज्ञानकों ज्ञानीही पावता हें सो ज्ञान एकहि हे ॥ हे रामजी जो दूसरा नही पावता तो अपूर्व अतिसे हुआ क्यों ॥ हे रामजी अपूर्व अतिसेकों पायकरी ज्ञानवान् प्रकृत
आचार सर्व चेष्टाभी करता हे ॥ तोभी निश्चय सर्वदा आत्माविषे रखता हे ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् ज्ञानवान अेसा जो सर्व चेष्टा करता हे अज्ञानीकी न्यांइं तों उसकों क्या
लक्षणोंकरी तत्ववेता जाणिये ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी एक स्वसंवेद लक्षण हे अरु एक परसंवेद लक्षण हे स्वसंवेद कहिए जो आपहि आपकों जाणता अवर नही जाण
ता ॥ अरु परसंवेद कहिए जिसकों अवरभी जाणते हे ॥ हे रामजी परसंवेद लक्षण हे सो में कहो हों ॥ जो तप दान यज्ञ व्रत करणे सो परसंवेद हे ॥ अरु दुःख सुखकी प्राप्तिविषे धीर्य
करी रहणा सो समान साधुके लक्षण हे ॥ अरु महा कर्ता महा भोक्ता महा त्यागी क्षमा दया यह लक्षण साधके हे ज्ञानवानके नही अरु जेती कछू अणिमातें आदि सिद्धि हे ॥ उडणा
छुपि जावणा यहभी समान लक्षण हे ॥ परंतु यह सुभाविक तिसविषे आनी फुरते हे ॥ सो अवर करीभी जाणे जाते हे ॥ अरु जो ज्ञानीके लक्षण हे सो स्वसंवेद हे अवर कोउ इसतें
इतर उसके सिरविषे सिंग नही जो तिसकरी जाणिये ॥ जेसें अवर व्यवहार हे तेसें सिद्धि ज्ञानीकों समान हे ॥ यहभी ज्ञानवानका लक्षण नही ॥ अरु पुण्य पापादिक क्रिया परसंवेद हे
सो मायाके कल्पे हे ज्ञानीके नही ॥ जेते कछु लछण देखणेविषे आवेंगे सो मिथ्या हे मायाके कल्पे हे ॥ अरु स्वसंवेद ज्ञानीका लक्षण जो सर्वदा आत्माविषे स्थित हे ॥ अरु अपणे
आपकरी संतुष्ट हे ॥ न किसीका हर्ष हे न सोक हे ॥ अरु देहके जीवित मृत्युविषे समान हे ॥ अरु काम क्रोध लोभ मोह सर्वकों जानता हे ॥ इसका लछण इंद्रियांकाविषय नही ॥
काहेतें जो निर्वाच्य पदकों प्राप्त भया हे ॥ हे रामजी जिसकों ज्ञान प्राप्त हुआ हे तिसका चित्त सुभाविक विषयतें विरस होता हे अरु इंद्रियजित होता हे॥ भोगकी इछा तिसकी नि
वृत्त हो जाती हे ॥ सुभाविकहि तिसके विषय निवृत होते हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे ज्ञानीलछण विचारोनामध्यधिकशततमःसर्गः ॥ १०२ ॥ ॥ ७ ॥
॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी मायाजालका काटणा महा कठिन हे ॥ यह आदि कलना जीवकों भइ हे ॥ जो कोउ इसविषे सत बुद्धि करता हे सो पंखेरुकी न्यांइं जालविषे फस्या
हुआ निकसी नही सकता हे ॥ तेसें अनात्म अभिमानतें निकसी नही सकता ॥ हे रामजी बहुरी मेरे वचन सुण जो मेरे वचन तुझकों प्रीतम लागते हे ॥ जेसें मेघका शब्द मोरकों प्री
तम लागता हे ॥ अरु मैंभी तेरे हितके निमित्त कहता हों उपदेश करता हों ॥ अरु अेसा गुरु रघुकुलका कोउ नही हुआ जो शिष्यका संशय निवर्त न करे ॥ हे रामजी मेरा शिष्यभी
अेसा कोउ नही हुआ जो मेरे उपदेश करी न जाग्या होवे सब जागे हुए हे ॥ इस निमित्त में तप ध्यान आदिककोंभी त्याग कर तेरे तांइं जगावोंगा ॥ तातें में तुझकों उपदेश करता
हों श्रवण करु ॥ हे रामजी शुद्ध आत्माविषे जो अहंभाव हुआ हे जो कछू अहंकार करी भासता हे सो मिथ्या हे इसविषे सत कछू नही ॥ अरु जो इसका साक्षीभूत ज्ञानरूप हे सो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सत्य हे ॥ तिसका नास कदाचित् नही होता ॥ अरु जो जो वस्तु फुर्णेकरी उपजी हे सो सर्व नासवंत हे ॥ यह बात बालकभी जानते हे जो सत्य हे सो असत्य नही होता ॥ अरु जो वस्तु असत हे सो सत नही होती ॥ जेसें रेततें घृत निकसणा असत हे कदाचित् नही निकसता ॥ जेसें दर्दुरकों नीका चुर्नभी करिये ॥ एक दर्दुरके लाख कणका करियें अथवा सिला ऊपर घसाइयें ॥ जब तिस ऊपर वर्षा हुइ तब सर्व कणके दर्दुर हो जाता हे ॥ हे रामजी सो दर्दुर तब उत्पत्ति हुए जब उनविषे सत्यता थी ॥ तातें सत्यका नास कदाचित् नही होता ॥ अरु असत्यका सद्भाव कदाचित् नही होता ॥ हे रामजी सत जो हे ब्रह्म तिसकी भावना कर ॥ जो ब्रह्मकी भावना करता हे सो ब्रह्महि होता हे ॥ जेसें घृतविषे घृत एक हो जाता हे ॥ अरु दूधविषें दूध मिलता जलविषे जल मिलि जाता हे ॥ तेसें यह जीव भावना करीकैं चिद्घन ब्रह्म साथ एक हो जाता हे ॥ जीव संज्ञा इसकी निवृत्त हो जाती हे ॥ जेसें अम्रतके पान कियेतें अमर होता हे तेसें ब्रह्मकी भावना करणेतें ब्रह्म होता हे ॥ अरु जो अनात्माकी भावना करता हे तो पराधीन होकरी दुःख पावता हे ॥ जेसें विषके पान कियेतें अवश्य मरता हे ॥ तेसें अनात्मकी भावनातें अवश्य दुःख पावता हे ॥ तिसका नास होता हे ॥ तातें आत्मभावना करु ॥ हे रामजी जो वस्तु संकल्प करी उदे होती हे तिसका रहणाभी थोडा काल होता हे ॥ जो चल वस्तु हे सो अवश्य नास होती हे ॥ यह दृश्य आत्माविषे भ्रम करीकें सिद्धि हे ॥ जेसें मृगतृष्णाका जल अरु सीपीविषे रूपा भ्रम करीकें सिद्धि हे ॥ अरु आकाशविषे दुसरा चंद्रमा भ्रम करी सिद्धि हे वास्तव नही तेसें अहंकार देह इंद्रियांकरी सुख भासता हे सो सब मिथ्या हे तातें दृश्यकी भावना त्याग करी अपणे अनुभव स्वरूपविषे स्थित होहु ॥ जब आत्माविषे स्थित होवेगा तब मोहकों प्राप्त न होवेगा ॥ जेसें पारसके स्पर्श करी तांबा स्वर्न हुआ बहुरी तांबा नही होता ॥ तेसें तुं जब आत्मपदकों जाणेगा तब बहुरी मोहकों प्राप्त न होवेगा ॥ जो में हों यह मेरा हे अहं त्वं भाव तेरा निवृत्त हो जावेगा ॥ यह भावना न रहेगी ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् मछर अरु जुंआदिक जो प्रत्यक्ष दृतें उत्पत्ति होते हे ॥ सो सब कर्म करीकें उत्पत्ति होते हे देवता मनुष्यादिक जो उत्पत्ति होते हे ॥ सो कर्मों करी यह सब उत्पत्ति होते हे ॥ अथवा कर्मों बिनाभी कछू होते हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी आदि परमात्मातें जब उत्पत्ति भइ हे ॥ सो चार प्रकारके जीव हे ॥ एक कर्मों करी उत्पत्ति हुए हे ॥ एक कर्मोंविना हुए हे ॥ एक आगे होणे हे एक अबभी उत्पत्ति होते हे ॥ रामोवाच ॥ हे संशयरूपी रुदेके अंधकार निवृत्त करणेहारे सूर्य ॥ अरु संशयरूपी बदलोके निवृत्तिकों पवन ! कृपा करीकें कहो जो कर्मोंविना केसें उत्पत्ति होते हें अरु कर्मोंकरी केसें उत्पत्ति होते हे केसें केसें हुए हे ॥ केसें होते हे अरु केसें आगें होणें हे सो कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी आत्मा चिदाकाश हे अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जेसें अग्नि अपणी उष्णताविषे स्थित हे तेसें आत्मा अपणे सुभावविषे स्थित हे अनंत हे अरु अविनासी हे ॥ तिसविषे फुरणाशक्ति सुभाविक स्थित हे ॥ जेसें पवनविषे स्पंदशक्ति सुभाविक हे ॥ जेसें फूलविषे सुगंध सुभाविक रहती हे ॥ तेसें आत्माविषे फुरणाशक्ति हे ॥ हे रामजी फुरणाशक्ति जेसें आद्य फुरी हे ॥ तिस शब्दकी अपेक्षा करी तब आकाश हुआ ॥ जब स्पर्शकी अपेक्षा करी तब पवन प्रगट भया ॥ इसी प्रकार पंच तन्मात्रा हो आइ ॥ सो शुद्ध संवितविषे जो आदि फुरणा हुआ प्रथम अंतवाहक शरीर हुए तिनका निश्चय आत्मा विषे रहा जो हम आत्मा हे संपूर्ण विस्व हमारा संकल्प हे ॥ हे रामजी केइ इस प्रकार उत्पत्ति होकरी अंतवाहकतें बहुरी विदेहमुक्तिकों प्राप्त भये ॥ जेसें जलसों बरफ होकरी सूर्यके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेजतें सीघ्रहि जल हो जाती हे ॥ तेसें सीघ्रही विदेहमुक्त हुए ॥ अरु केइ अंतवाहक शरीरविषे स्थित भये ॥ उनका निश्चय आत्माविषे रहा ॥ अरु केइ अंतवाहकतें अधिभूतक हो गए जबलग अंतवाहकविषे स्मरण रहा तबलग अंतवाहक रहे ॥ जब स्वरूपका प्रमाद भया अरु संकल्पकरी जो भूत रचे थे तिनविषे दृढ निश्चय भया ॥ अरु जानत भए इह हम हे तब अधिभूतक होगए ॥ जेसें ब्राह्मण शूद्रोंके कर्म करणे लागे उसके निश्चयविषे हो जावे जो मेरा यहि कर्म हे अरु जेसें सीत करीकें जलतें बर्फ हो जाती हे तेसें संवितविषे दृढ संकल्प हुआ तब आपकों अधिभूतक जानत भया ॥ हे रामजी आदि परमात्मातें जो फुरे हे ॥ सो कर्मबिना उत्पत्ति हुए हे तिनका कर्म कोउ नही ॥ जो अंतवाहकविषे रहे ॥ तिनकी ईश्वर संज्ञा भइ ॥ बहुरी उनके संकल्पकरी जीव उपजे ॥ तिनका कारण ईश्वर हुआ अरु आगें जीव कलना करी उनका फुरणा कर्म हुए ॥ आगें जेसें कर्म करते हे संकल्प करी तेसें शरीर धारते हे ॥ हे रामजी आत्मातें जो जीव उपजे हे ॥ सो आदि अकारण होते हे जो आज उपजे हे तोभी अरु जो चिरकाल उपजे हे तोभी ॥ उह पाछें कारण भावकों प्राप्त हुए हे कर्मके वसतें ॥ हे रामजी जो आदि फुरणा हुआ हे ॥ अरु स्वरूपविषे जिनका दृढ निश्चय रहा तिनकी संज्ञा पुण्य हे ॥ अरु जो स्वरूपकों विस्मरण करी अधिभूतकविषे निश्चय करत भये ॥ तिनकी धन संज्ञा हे ॥ हे रामजी पुण्यतें धन होणा सुगम हे ॥ अरु धनतें पुण्य होणा कठिन हे ॥ कोउ भागवान पुरुष होता हे जो जतन करीकें धनतें पुण्यवान होता हे ॥ जेसें पर्वततें पथर गिरना सुगम हे ॥ तेसें पुण्यतें धन होणा सुगम हे ॥ अरु जेसें पथरकों पर्वतपर चडावणा कठिन हे तेसें धनतें पुण्य होणा कठिण हे ॥ केइ चिरकाल धनविषे वहते हे ॥ केइ जतन करी सीघ्रही पुण्यवान होते हे ॥ हे रामजी जो सदा अंतवाहक रहते हे ॥तिनकी संज्ञा ईश्वर हे॥ अरु अंतवाहककों त्यागकरी अधिभूतक होते हे सो जीव कहाते हे अरु पर तंत्र हे ॥ जेसें कर्म करते हे तेसें आगें शरीर धारते हे ॥ अरु जो धनतें पुण्य होते हे सो ज्ञानवान हे ॥ तिनकों बहुरी जन्म नही होता ॥ अबभी जो उत्पत्ति होते हे सो प्रथम कर्मबिना होते हे ॥ जब अपणे स्वरूपतें गिरते हे तब जेसा संकल्प करते हे संकल्पही कर्म हे तेसें आगें शरीर धारते हे ॥ हे रामजी यह विश्व संकल्पमात्र हे तातें संकल्पका त्याग करो इसै दृश्यकी आस्था न करु ॥ हे रामजी खाणा पीणा चेष्टा करो परंतु तिसविषे अहंभाव न होवे अहंकार अज्ञान करी सिद्धि हुआ हे सो दृश्य मिथ्या हे ॥ अहंभावके होणेकरी दुःखी होता हे ॥ तातें अहंकारतें रहित चेष्टा करो ॥ हे रामजी बंध अरु मोक्षका लछण श्रवण करु ग्राह्य ग्राहक जो हे विषय अरु इंद्रियांका संयोग ॥ तिनके इष्टविषे राग करणा अनिष्टविषे दोष करणा यहि बंधन हे ॥ जेसें जलविषे पंछी बंधायमान होता हे ॥ अरु ग्राह्य ग्राहक इंद्रियां अरु विषयका संबंध तिनके इष्ट अनिष्ट होणा हे ॥ जिसविषे इंद्रियांका संयोग होता हे तिसविषे समबुद्धि रहे इनके धर्म अपणेविषे न देखे ॥ इनके जानणेवाला जो अनुभवरूप आत्मा हे तिसीविषे साक्षीरूप होकरी स्थित रहे इस प्रकार जो इनका ग्रहण करता हे सो सदा मुक्तिरूप हे ॥ इसतें इतर हे सो मूर्ख जीव बंध हे ॥ तुम इस ग्राह्य ग्राहक संबंधविषे सावधान रहो ॥ इनका संबंध धन हे इनतें रहित होणा मुक्ति हे ॥ अरु राग दोष करणेवाला मन हे इस मनका त्याग करो ॥ मनही दुःखदाइ हे ॥ जेसें कुंभारका चक्र फिरतां हे तिसतें बासन उत्पत्ति होते हे ॥ तेसें मनरूप चक्रतें पदार्थरूपी वासन उत्पत्ति होते हे ॥ मनके फुरणे करी संसार सत्य होता हे ॥ जब फुरणा निवृत्त हुआ तब दुःख कोउ न रहेगा ॥ हे रामजी फुरणे अफुरणेविषे समान होवेगा ॥ तब राग दोषतें रहित होकरी विचरेगा ॥ यह होवे यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न होवे इसतें रहित होकरी चेष्टा कर ॥ अभिलाष पूर्वक संसारविषे न फुरे ॥ हे रामजी पूर्व जो ज्ञानवान हुए हे तिसकों वितीकी चिंतवना नही अरु आगें होणेंकी आशा नही वर्त्त मानकालविषे शास्त्र अनुसार राग दोषतें रहित चेष्टा करणी ॥ तातें तुंभी संकल्पकों त्याग करी स्वरूपविषे स्थित होहु हे रामजी ब्रह्मातें आदि तृणपर्यंत किसी पदार्थविषे राग हुआ तो बंधन हे अरु मेरा यहि आशिर्वाद हे जो ब्रह्मातें आदि तृणपर्यंत करी तेरी रुचि मत होवे ॥ अपणें आपहिविषे रुचि होवे ॥ हे रामजी यह संसार मिथ्या हे ॥ इसविषे पदार्थ कोउ सत नही सर्व मनके रचे हुए हे ॥ तातें मनकों स्थित करो ॥ जेसें धोबी साबू मीलायकें वस्त्रकी मेल दूर करता हे ॥ तेसें मनकरी मनकों स्थिर करो ॥ जब मनकों स्वरूपविषे स्थिर करेगा ॥ तब मन अपणे संकल्पकों आपहि नास करेगा ॥ जेसें कोउ दुष्ट पुरुष धनकरी वृद्ध होता हे ॥ तब भाइ आदिककों नास करणेका उपाय करता हे ॥ तेसें मन जब आत्मपदविषे स्थित होता हे तब अपणे संकल्पकों नास करता हे ॥ जब मन तेरा स्वरूपविषे स्थित हुआ तब तुं अमन होवेगा ॥ अरु दुःख तेरे सब नष्ट हो जावेगा ॥ अरु मनके नासविना सुख कोउ नही हे रामजी यह मन अेसा दुष्ट हे जो जिसतें उपजता हे तिसीके नास निमित्त होता हे ॥ जेसें बांसते अग्नि उपजती हे बहुरी तिसीकों जलावती हे ॥ तेसें आत्मातें उपजी करी यह मन आत्मा हिकों तुछ करता हे ॥ जेसें राजाका टहलुआ राजाकी सत्ता पाय करी राजाकों मारीकरी आप राजा होता हे ॥ तेसें मन आत्माकी सत्ता पाय करी तिसकों आछादि आपहि कर्त्ता भोक्ता हो बेठा हे ॥ तातें मनकों मनही करी नास कर ॥ जेसें लोहा तपायकरी लोहेकों काटता हे तेसें मन साथ मनहीकों शुद्ध करु ॥ हे रामजी वृछ वल्ली फूल फल पशू पंछी देवता जक्ष नाग जेते कछू स्थावर जंगम पदार्थ हे सो प्रथम कर्मोंविना उत्पत्ति हुए हे ॥ अरु पाछें जब स्वरूपतें गिरे अरु धन पदकों प्राप्त हुए ॥ तब शरीर कर्मोंकरी होते हे ॥ अरु कर्मोंका बीज अहंकार हे अहंकारविषे शरीर हे ॥ जेसें बीजविषे वृछ होता हे समे पायकरी फूल फल प्रगट होते हे ॥ तेसें अहंकारतें शरीर प्रगट होते हे ॥ जब अहंकार नष्ट हुआ तब शरीर कोउ नही ॥ केवल आत्मपद हे अहंकार हे नही ॥ अरु प्रत्यक्ष देखाइ देता हे ॥ अरु आत्मा अच्युत हे गिरेकी न्यांइं भासता हे ॥ निरालंब हे अरु आलंबकी न्यांइं दृष्ट आता हे ॥ आत्मा निराकार हे अरु आकार सहित भासता हे निराभास हे ॥ अरु आभास सहित दिखाइ देता हे ॥ तातें केवल चिन्मात्र आत्माविषे स्थित होउ ॥ यह सब चिन्मात्रहि रूप हे ॥ हे रामजी जब एसी भावना होती हे तब चित्त अचित्त हो जाता हे ॥ जब चित्त अचित्त हुआ तब जगत् कलना मिटि जाती हे ॥ केवल आत्मतत्वहि भासता हे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे कर्माकर्म विचारो नाम शताधिकचतुर्थः सर्गः ॥ १०४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस जीवके तीन स्वरूप हे ॥ एक स्वरूप सुद्धात्मा हे चिदानंद ब्रह्म जिसकरी सर्व प्रकासते हे ॥ अरु दुसरा अंतवाहक पुण्यनाम हे आत्माके प्रमादकरिकें हुआ हे ॥ जो मात्रपदतें उत्थान हुआ हे तोभी प्रमाद नही जो आत्माका स्मरन रहा हे ॥ जब आत्माका स्मरन भूला तब तीसरा अधिभूतक हुआ ॥ पंचतत्वकों अपणा आप जानणे लागा हे ॥ हे रामजी यह तीन स्वरूप जीवके हे ॥ आत्माके प्रमादकरी जीव संज्ञा पावता हे ॥ अरु दुःखी होता हे अरु परतंत्र हुआ हे ॥ तातें पंचभूतक अरु अंतवाहककों त्यागकरी वास्तव स्वरूपविषे स्थित होहु हे रामजी यह जो दो शरीर हे स्थूल अरु सूक्ष्म विचार करी नष्ट हो जाता हे ॥ अरु तीसरा जो स्वस्वरूप हे सो सत्य हे तुं तिसविषे स्थित होहु ॥ रामो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वांच ॥ हे भगवन् यह तीन रूप जो तुमनें जीवके कहे तिनके मध्यविषे नासरूप कवन हे अरु सतरूप कवन हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी हाथ पाव करी जो देह संयुक्त हे भोग साथ बलगत करी हुइ सो देह स्थूलरूप हे॥अरु जीव अपणेहि संकल्प करिकें सदा पसार रचता हे॥अवर चित्तरूपी देह इस फुरणे रूपसों अंतवाहक हे॥सो सदा प्राणवायुके रथ ऊपर स्थित रहता हे ॥ देह होवे भावे न होवे हे रामजी यह दोनों शरीर उपजतेभी अरु नष्टभी होते हे ॥ अरु आदि अंततें रहित चिन्मात्र निर्विकल्प हे सो जीवका परम रूप जाण ॥ तुरिया पद हे उसीतें जाग्रतादिक उपजते हे अरु लीन होते हे ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् में तीनकों जानता हों एक जाग्रत हे निद्रातें रहित. जिसविषे इंद्रियां अरु चार अंतःकरण अपणें अपणे विषयकों ग्रहण करते हे ॥ अरु दूसरा स्वप्ना हे तहांभी विषयकों जाग्रतकी न्यांइं संकल्पकरी ग्रहण करते हे विषयबिना ॥ अरु तीसरा तहां इंद्रिय अपणे विषयतें रहित होतियां हे अरु जडता आती हे भासता कछू नही ॥ सिलाकी न्यांइ जडता तमोगुण आता हे सो सुषुप्ति हे यह तीनोंकों में जानताहों तुरिया अरु तुरियातीत सो कृपा करी तुम कहो जो किस कों कहतें हे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी अपणा होणा अनहोणा दोनोंकों त्यागकरी पाछें केवल तुरीयापद रहता हे ॥ सो सांतपद हे अरु निर्मल हे ॥ हे रामजी तुरिया जाग्रत न ही काहेतें जो जाग्रत संकल्प जाल हे ॥ इंद्रियां करिकें रागदोष होता हे अरु तुरिया सुपन अवस्थाभी नही काहेतें जो सुपन भ्रमरूप होता हे ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प भासता हे सो अ वरका अवर संकल्प होता हे ॥ अरु तुरिया सुषुप्तिभी नही काहेतें जो अत्यंत जडता हे ॥ अरु तुरिया चैतनरूप हे ॥ उदासीन हे अरु सुद्ध हे ॥ जाग्रत सुप्त सुषुप्तितें रहित हे ॥ जीवन्मु क्त तुरिया पदविषे स्थित रहता हे ॥ हे रामजी जो तुरिया पदविषे स्थित हे तिसकों यह स्थितभी हे ॥ जगत्सोंभी सांतरूप हों जाता हे ॥ अरु अज्ञानीकों वज्रसारवत् दृढ हे ॥ अरु ज्ञा नी सदा सांतरूप हे जो तीनों अवस्थाका साक्षी हे ॥ न उसके राग हे न दोष हे उदासीनकी न्यांइ हे ॥ अरु तुरियातीत पदकों वाणीकी गम नही ॥ जीवन्मुक्त पुरुष जब विदेहमुक्त होता हे तब उसी पदकों प्राप्त होता हे जहां वाणीकी गम नही ॥ जबलग जीवन्मुक्त हे तबलग तुरिया पदविषे स्थित होता हे ॥ अरु राग दोषतें रहित होता हे ॥ इंद्रियांभी अपणे विषयविषे सुभाविक वर्ततीयां हे ॥ परंतु राग दोषतें रहित होकरी अरु जिस पुरुषकों राग दोष उत्पत्ति होता हे सो तुरियापदकों नही प्राप्त भया अरु चित्त सहित हे ॥ अरु जिस पुरुष कों राग दोष उत्पत्ति नही होंता ॥ तिसका चित्त सतपदकों प्राप्त भया हे ॥ जिसका चित्त सतपदकों प्राप्त हुआ हे तिसकों संसारकी सत्यता नही भासती सुपनवत् जगत्कों देखता हे ॥ तातें तुं सत्पदविषे स्थित होकरी साक्षीरूप हो रहु ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे तुरीयापदविचारोनाम शताधिकपंचमः सर्गः ॥ १०५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी कर्ता कारण कर्म यहतीनों पडे होवे तुं इनका साक्षी होहु ॥ इनका कर्तृत्व अभिमान तेरे तांइ मत होवे जो में यह कर्ताहों अथवा इसका में त्याग किया हे ॥ यह अभिमानभी नही करणा ॥ तुं उदासीनकी न्यांइ हो रहु अरु इसी पर एक आख्यान कहता हों सो श्रवणकर ॥ तुं आगेंभी प्रबुद्ध हे तोभी दृढ बोधके निमित्त सुण हे रामजी एक वनविषे काष्टमौनि था ॥ अरु एक बेधक मृगकों बाण चलावते हुए मृगके पाछें दउडता जाता था अरु आगें गये तो मृग बेधककी दृष्टीतें अगोचर होगया बेधकने देखा जो एक तपसी बेठा हे तिसीतें पूछत भया ॥ हे मुनीश्वर इहां एक मृग आया था सो किस उरकों गया ॥ तुम देखा हे तो मेरे तांइं कहो ॥ काष्टमौनोवाच ॥ हे बेधक हमारे तांइं सुधि कछू नही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काहेतें जो हम निरहंकार हे॥हमारे साथ चित्त अहंकार दोनों नही तातें निरहंकार हे॥अरु जो तुं कहे इंद्रियांकी चेष्टा केसें होती हे तो सुण॥जेसें सूर्यके आश्रय लोककी चेष्टा होती हे॥ अरु दीपक मणीके आश्रय चेष्टा होती हे ॥ अरु सूर्य दीपक मणी प्रकासके साक्षीभूत हे ॥ तेसें हम इंद्रियांके साक्षीभूत इनकी चेष्टा सुभाविक होती हे ॥ हमारे तो इन साथ प्रयोजन कछू नही ॥ हे बेधक अहंभाव करणे वाला अहंकार होता हे ॥ जेसें तागेके आश्रय मणके पोते हे सो मणके भिन्नभिन्न होते हे ॥ अरु तागा सर्वविषे एक होता हे तब माला होती हे ॥ जब तागा टूटि पडे तब मणके भिन्नभिन्न हो जाते हे ॥ तेसें इंद्रियांरूपी मणके हे अरु अहंकाररूपी तागा हे ॥ तिस अहंकाररूपी तागेके टूटणेसों इंद्रियां भिन्नभिन्न हो गइया हे ॥ जेसें राजाके नाश हुए सेना भिन्नभिन्न होजाती हे ॥ जेसें गोपालके नष्ट हुए गौआं भिन्नभिन्न हो जातियां हे ॥ अरु जेसें पिताके नष्ट हुए बालक व्याकुल हो जाते हे ॥ तेसें अहं कारबिना इंद्रियां व्याकुल हुइयां हे ॥ इनका अभिमान मेरे तांइं कछू नही ॥ इनका अभिमानी अहंकार था सो मेरा नष्ट हो गया हे इंद्रियां अपणे अपणे विषयविषे विचरतियां हे ॥ मुझकों इनका न राग हे न दोष हे ॥ हे साधु मेरे तांइं न जाग्रत भासता हे न सुपन न सुषुप्ति ॥ इन तीनोंतें रहित हम तुरियापदविषे स्थित हे ॥ जिसविषे अहं त्वंका अभाव हे ॥ जो अहं त्वं हमारा मिटिगया तो हम साख किसकी देवें ॥ जो मृग डावे गयाके दाहनें गया ॥ जो नेत्र इंद्रियां देखणे वाली हे तिसकों बोलणेकी शक्ति नही ॥ यह अपणे अपणे वि षयकों ग्रहण करतियां हे ॥ एक इंद्रियकों दूसरेकी शक्ति नही बहुरी तेरे तांइं कवण कहे ॥ इन सभके धारणे वाला अहंकार था जो सभकों अपणा आप जानता था ॥ मे देखता हों मे बोलता हों सो अहंकार हमारा नष्ट हो गया हे ॥ जेसें सरत्कालविषे मेघ नष्ट होते हे ॥ तेसें अहंकारके नष्ट होणे करी हम स्वछ निर्मल शांत तुरियापदविषे स्थित हे ॥ अरु इंद्रियां का जीव अहंकार मृतक हो गया हे ॥ अरु इंद्रियांभी मृतक हो गइयांहे देखणे मात्र दृष्टी आतीयां हे ॥ जेसें भीत ऊपर पूतलियां लिखियां होवे अरु कार्य तिनके कछू न होवे ॥ तेसें हमारी इंद्रियांतें कार्य कछू नही होता तो तेरे तांइ कवन कहे ?॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामचंद्र जब इस प्रकार मुनीश्वरनें कहा ॥ तब बेधक समुझी करी अपणी इछाचारी उठीगया ॥ हे रामजी तुरिया पद सांतरूप हे ॥ जहां जाग्रत सुपन सुषुप्ति तीनोंका अभाव हे केवल अद्वैत पद हे यह जो संज्ञा हे ब्रह्म आत्मा चिदानंदतें आदि लेकरी सो तुरिया पदविषे हे अरु तुरियातीत पदविषे सब्दकी गम नही असब्द पद हे ॥ विदेहमुक्त पुरुष तिसी पदकों प्राप्त होता हे अरु जीवन्मुक्त तुरिया पदकों साक्षात् करिकें तुरियावस्थाविषे विचरतें हे ॥ जहां जाग्र त जो दीर्घ दुःख सुखका भान हे सो नही ॥ अरु सुपन जो राग दोषकों लिये अल्पकाल हे सोभी नही ॥ अरु जडता तामस अवस्थाभी नही ॥ इन तीनोंतें रहित हे सो तुरिया पद हे अरु सांत जिसविषे क्षोभ कोउ नही ॥ अरु यह जगत् तिसका आभास हे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग वास्तव कछू नही जलही हे ॥ तेसें केवल तुरिया स्वरूप सत्तासमान तेरा स्वरूप हे तिसविषे स्थित होउ अरु तिसविषे जो स्थित हुए हे सो श्रवण करु ॥ ब्रह्मा विष्णु रुद्र सिद्ध ज्ञानी इत्यादिक जो ज्ञानवान हे सो तिसी पद विषे स्थित हे ॥ अरु काष्टमौन बेधककों उपदेस करणेवालाभी तुरिया पदविषे स्थित हे ॥ विसेष कलना तिसकी निवृत्त हुइथी जो भिन्न भिन्न नाम रूपकों देखणेवाली केवल सत्ता समानविषे स्थित था ॥ तातें कलनाकों त्यागकरी तुमभी तुरियापदविषे स्थित होहु ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे काष्टमौनवृत्तांतवर्ननं नाम शताधिकषष्ठः सर्गः ॥ १०६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ वसिष्ठोवाच ॥. हे रामजी यह विश्व केवल आकासरूप है ॥ आत्मातें इतर कछू नही आत्माका चमत्कार है ॥ जैसें मेघविषे वीजलीका चमत्कार होता है ॥ तैसें यह विश्वरूप चि
त्तकला आत्माका चमत्कार है ॥ हे रामजी वास्तव ब्रह्महि है इतर कछू नही ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् यह विश्व जो तुम ब्रह्मरूप कहि ॥ मेघविषे वीजलीकी न्यांइ क्षणमें उपजती
है क्षणविषे लीन होती है ॥ सो मेघविषे बीजुली दृष्ट आती है जहां मेघ होता है तहां वीजलीभी होती है ताते मेघतें वीजली उत्पत्ति भइ तिसका कारण मेघ है ॥ हे मुनीश्वर इस चि
त्त स्पंद कलाके कारणकी उत्पत्ति ब्रह्मतें कैसें हुइ है सो कृपा करिकें मुझकों समुझाय कहो ब्रह्मही इसका कारण हुआ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह जो वितंडक होकरी तर्क कर
ता है सो कछू नही ॥ इस नासवुद्धिकों त्यांग ॥ यह तो बालकभी जाणतें है जो वीजली छनभंगुर रूप है सत्य कछू नही अवर तेरा क्या प्रयोजन है सो कहु ॥ यह तर्क कारण कार्य
रूपका केसा करता है ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् यह स्पंदकला सत्य है के असत्य है ॥ इसका कारण कवन है जिसकरी यह फुरति है ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी सर्व प्रकारकरी
सर्वात्माहि स्थित है ॥ अवर चित्त अरु चित्त स्पंद इह भेद कल्पना वास्तव कछू नही ॥ ब्रह्महि अपणे स्वरूपविषे आप स्थित हैं ॥ अवर जो कछू उसतें इतर भासता है सो भमकरि
भासता है ॥ जेसें भ्रम दृष्टिकरी आकासविषे मरती भासतें है ॥ जेसें नेत्र मुंदिकरी खोलते है तव तरवरे आकार भासतें है ॥ तेसें इह जगत् भ्रम करिकें भासता है ॥ हे रामजी हम इस
संसार समुद्रके पारकों प्राप्त हुए है ॥ हमतें आदि लेकरी जो ज्ञानवान है सो तिनके यथार्थ वचन सुणीकरी रिदेविषे धारे तो सीघ्रही आत्मपदकी प्राप्ति होवे ॥ अरु जो मूर्खता करिकें
मेरे वचनोंकों न धारेगा जो यह क्या कहतें है॥ तव तेरे दुःख नष्ट न होवेगा वृक्षतृण वल्ली आदिक जोनिकों पावेगा हे रामजी आकास अरु काल आदिक पदार्थ है सो सव कलनाकरी
सिद्ध हुए है आत्माविषे कोउ नही ॥ हे रामजी वायुतें रहित जो समुद्रका चमत्कार है ॥ तिस चमत्कारका कारण कवन है ॥ अरु दीपकका जो प्रकाश है अरु अग्निविषे उष्णता है ॥
तिस प्रकाश अरु उष्णताका कारण कवन है ॥ अरु वायु जो निस्पंद है जव उहि स्पंद हुइ ॥ स्पंदका कारण कवन है ॥ जेसें इनका कारण कोउ नही ॥ जो वायुका रूप स्पंद निस्पंद
है अरु अग्निका रूप उष्णता है ॥ अरु दीपकका रूप प्रकाश है ॥ तेसें कलनाभी आत्मा स्वरूप है इतर कछू नही ॥ हे रामजी यह कलना जो तुझकों भासती है तिसकों त्याग करी
जव अपणे आपकों देखें तव संशय सव मिटि जावे ॥ जेसें प्रलय कालका जल चडता है ॥ तव सर्व जलमय हो जाती है इतर कछू नही होता ॥ तसें अपणे स्वरूपकों जव तुं देखेगा
तव तेरे तांइं सर्व आत्माही भासेगा आत्मातें इतर कछू दृष्ट न आवेगा ॥ हे रामजी आत्मा एक रस है सम्यक दर्शन करी ज्योंकात्यों भासेगा अरु असम्यक दर्शन करी अवरका अवर
भासेगा ॥ जेसें जेवरी एक होती है तिसकों जथार्थ न देखियें तो सर्प भ्रम होता है अरु देखी करी भयमान होता है जव ज्योंकी त्यों जेवरी जानी तव सर्प भ्रम निवृत्त होता है ॥ तेसें
आत्माके न जाणेतें संसारी होता है अरु भयमान होताहे ॥ आपकों जन्मता मरता मानता है॥ सर्व विकार देहके आत्माविषे जानता है ॥ जव आत्माकों जानता है तव सर्व भ्रम निवृत्त
हो जाते है ॥ जेसें नेत्र करी तारे देखता है ॥ जव नेत्र मुंदिलेवे तोभी उनका आकार अंतःकरणविषे भासता है ॥ काहेतें जो तिनकी सत्यता रिदेविषे होती है ॥ अरु जव रिदेतें सत्यता
उनकी उठी जावे तव बहुरी नही भासते तेसें संसार चित्तके भ्रम करी हुआ है इसकों मिथ्या जाण ॥ हे रामजी फुरणेविषे जो दृढ भावना हुइ है सो सत्य हो करी संसार स्थित हुआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे ॥ जब चित्तका त्याग करेगा तब संसारकी सत्यता जाती रहेगी ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् तुम कहा जो यह विश्व कल्पना मात्र हे ॥ सो मैं जान्या इस प्रकार हे कछू सत्य नहीं ॥ जेसें लवण राजा अरु इंद्र ब्राह्मणके पुत्र अरु सुक्र इनकी कलना फुरणेविषे दृढ भइ ॥ तब फुरणरूप विश्व सत्य हो करी स्थित भये अरु भासणे लागा ॥ हे भगवन् यह मैं जानता हौं जो विश्व फुरणे मात्र हे ॥ जब फुरणा मिटि जाता हे तिसके पाछें जो शांतिरूप सेष रहता हे सो कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी अब तुं सम्यक बोधवान हुआ हे ॥ जो जानणे जोग हे सो तेनें जाण्या हे ॥ हे रामजी यह अध्यात्म शास्त्रका सिद्धांत हे ॥ जो अवर सब दृश्यका असंभव हे एक चिद्घन ब्रह्म अपणे आपविषें स्थित हे ॥ हे रामजी आत्मा शुद्ध हे अरु निर्मल हे विद्या अविद्यातें रहित हे संसारका तिसविषे अत्यंत अभाव हे ॥ जेती कछू शुद्ध आदिक संज्ञा कहता हे सोभी फुरणेविषे हे आत्मा निर्वाच्य पद हे सो सेष रहता हे ति सकी संज्ञा शास्त्रकारोंनें कहीहे सो श्रवण करु ॥ एक शून्यवादी उसीकौं शून्य कहते हे ॥ विज्ञानवादी विज्ञानरूप कहते हे ॥ केइ उपासनावान उसीकों ईश्वर कहते हे ॥ केइ कहते हे आत्मा सर्वका कारण हे वहि सेष रहता हे ॥ अरु एक आत्माकों सर्व शक्त कहते हे ॥ अरु एक कहते हे आत्मा निःशक्त हे साक्षी आत्माकों अरु शक्तिकों भिन्न मानते हे ॥ हे रामजी जेते वाद हे सो सर्वहि कलना करी हुए हे ॥ कलनाकों मान करी वाद उठावते हे वास्तव वाद कोउ नही ॥ आत्मा निर्वाच्य पद हे अरु मेरा जो सिद्धांत हे सोभि श्रवण करु जेती कछु कलना हे आत्मा तिसतें अतीत हे ॥ जेसें पवन स्पंद शक्ति करी फुरता हे ॥ निस्पंद करी ठहरी जाता हे जो स्पंदभी पवन हे निस्पंदभी पवन हे इतर कछू नही ॥ तेसें आत्मा जो शुद्ध अद्वैत रूप हे अरु कलनाभी आत्माके आश्रय फुरती हे ॥ आत्मातें इतर कछू नही अरु जो इतर प्रतीत होती हे तिसकों मिथ्या जाणि त्याग ॥ अपणे निर्विकार स्वरूपविषे स्थित होहु ॥ जब तुं आत्मस्वरूपविषे स्थित होवेगा ॥ तब जेते कछू शास्त्रोंके भिन्न भिन्न मत वाद हे सो कोउ न रहेगा ॥ केवल अपणा आप स्वछ आत्माहि भासेगा ॥ हे रामजी तिस निर्विकल्प पदकों पायकरी सांतिवान हुए हे ॥ अरु असतकी न्यांइ स्थित भए हे ॥ जो द्वैत कलना तिनकी कछू नही फुरती ॥ हे रामजी आत्मा ब्रह्म आदिक शब्दभी उपदेस निमित्त कहे हे ॥ आत्म शब्दतें अतीत हे अरु सर्व जगतभी आत्मस्वरूप हे ॥ अरु संसाररूप विकार आत्माविषे असम्यक दर्शन करी भासते हे ॥ जेसें शून्य आकासविषे तरवरे मोतीवत् भासते हे सो अविदित हे ॥ तेसें आत्माविषे जगत् द्वैत अविदित भासता हे ॥ तातें जगत् द्वैतकी भावना त्याग करी निर्विकल्प आत्मस्वरूपविषे स्थित होहु ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे अविद्यानासरूपवर्णनं नाम शताधिकसप्तमः सर्गः ॥ १०७ ॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् देह इंद्रियां अरु कलनाविषे सार वस्तु क्या हे सो कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो कछू यह जगत् दृश्य हे ॥ अहं त्वंतें लेकरी सो सभ चिन्मात्र हे ॥ जेसें समुद्र जलही मात्र हे तेसें जगत् हे ॥ अरु मन सहित षट् इंद्रियां करी जो कछू दृश्य भासती हे सो भ्रम मात्र हे ॥ हे रामजी देह इंद्रियां सभ मिथ्या हे आत्माविषे कोउ नही ॥ चित्तके कलपे हुए हे अरु चित्तही इनकों देखता हे ॥ जेसें मारुथलविषे मृगकों जल बुद्धि होती हे ॥ देखिकरी जलके निमित्त दउडता हे अरु दुःख पावता हे ॥ तेसें चित्तरूपी मृग आत्मारूपी मारुथलविषे देह इंद्रियां विषय रूपी जल कलपि करी दउडता हे अरु दुःख पावता हे ॥ सो देह इंद्रियांविषे भ्रमकरिकें भासतें हे ॥ जेसें मूर्खबालक पछावेविषे वैताल कलपता हे ॥ तेसें मूर्ख चित्तनें देह इंद्रियादिक कल्पना करी हे ॥ हे रामजी आ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ला शुद्ध निर्विकार हे तिसविषे चित्तनें भ्रमकरिकें विकार आरोपण किये हे जेसें भ्रांति दृष्टिकरिकें आकासविषे दो चंद्रमा भासता हे ॥ तेसें चित्तनें देह इंद्रियां कलपियां हे अरु चित्त भी आपतें कछू नही आत्माकी सत्ता लेकरी चेष्टा करता हे ॥ जेसें चुंबककी सत्ता लेकरी लोहा चेष्टा करता हे ॥ तेसें निर्विकार आत्माकी सत्ता लेकरी चित्त नाना प्रकारके विकार कल्पता हे ॥ तातें चित्तका त्याग कर जो विकार जाल तेरा मिटि जावे ॥ हे रामजी देह इंद्रियांविषे सार क्या हे सो सुण ॥ जेता कछू संसार हे तिसविषे सार देह हे जो सब देहके संबंधी हे जब देह मिटि जावे तब संबंधीभी नही रहते ॥ अरु देहविषे सार इंद्रियां हे अरु इंद्रियांविषे सार प्राण हे ॥ प्राणोविषे सार मन हे अरु मनका सार बुद्धि हे ॥ बुद्धिका सार अहंकार हे अरु अहंकारका सार जीव हे ॥ जीवका सार चिदावली हे चिदावली कहिये वासना संयुक्त चेतना जिसकरी इसका संबंध हे अरु चिदावलीका सार चिततें रहित शुद्ध चैतन हे ॥ जिसविषे सर्व विकल्पकी लय हे शुद्ध अरु निर्मल हे ॥ चिन्मात्र ब्रह्म आत्मा हे जिसविषे उत्थान कोउ नही ॥ हे रामजी चिदावली पर्यंत सर्वकों त्याग करी इनका जो सार चैतन मात्र आत्मा हे तिसविषे स्थित होहु विश्व कलनामात्र हे आत्माविषे कछू नही ॥ संकल्पकी दृढता करिकें सतकी न्यांइ भासती हे ॥ अरु आगेंभी सुक्र अरु लवणराजा अरु इंद्रके पुत्रों का वृत्तांत कहा हे ॥ जो संकल्पकी भावनातें दृढ होकरी भासि आयाथा सो वास्तव कछू नही ॥ तेसें यह विश्वभी चित्तके फुरणेविषे स्थित हे ॥ असम्यक् दृष्टि करिकें अद्वैत आत्मा विषे दृश्य भासी हे ॥ जेसें सूर्यकी किरणाविषे जल भासता हे तेसें आत्माविषे अहंकारआदिक अज्ञानकरी दृश्य भासी हे तातें इनकों त्यागकरी अपणे वास्तव स्वरूपविषे स्थित होहु ॥ हे रामजी एक गड तेरे तांइ कहता हों जिसविषे किसी सत्रुकी गम नही तिसविषे स्थित होहु ॥ हमभी तिसी गडविषे स्थित हे जेते ज्ञानवान हे सोभी तिसीविषे स्थित होते हे ॥ हे रामजी काम क्रोध लोभ अभिमानादिक विकार आत्माविषे नही पाइते ॥ जेसें रात्रबिषे दिन नही पाइता तेसें विकार रूपी दिन गडरूपी रात्रविषे नही पाइता ॥ तातें अचिंत्यरूप गड हे जहां फुरणा कोउ नही केवल सांतरूप हे तिसविषे अहंभाव त्यागकरी स्थित होवे तब अहं त्वं भाव निवृत्त होजावे ॥ जब स्वरूपका साक्षात्कार होता हे तब ज्ञानी फुरणे अफुरणे विषे स्वरूपकों तुल्य देखता हे ॥ संपूर्न जगत् तिसकों आत्मरूप भासता हे ॥ तातें चिदावलीतें आदि देह पर्यंत जो अनात्म हे तिसकों क्रमकरिकें त्याग ॥ प्रथम देहकों त्याग बहुरी इंद्रियांके अभिमानकों त्याग इसी क्रमकरी सर्वकों त्यागिके अपणे वास्तव स्वरूप विषे स्थित होहु ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे जीवत्वअभावप्रतिपादनं नाम शताधिकाष्टमः सर्गः ॥१०८॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह संसार चैतन मात्र हे ॥ आत्मातें इतर कछू नहि ॥ आत्माहि विश्वरूप होकरी स्थित हुआ हे॥जेसें सूर्यकी किर्णांहि जलाभास होता हे॥ तेसें आत्माका चमत्कार दृश्यरूप होकरी स्थित हुआ हे ॥ जेसें संकल्प अरु संकल्प कर्ता भिन्न नही ॥ जेसें आकाशहि मोतीकी माला होकरी भासता हे ॥ तेसें आत्माही दृश्यरूप होकरी भासता हे ॥ जेसें बीजहि वृक्ष फूल फल होता हे ॥ तेसें आत्माहि दृश्यरूप होकरी स्थित हुआ हे ॥ जेसें जलके तरंग जलहि हे तेसें विश्व आत्माही हे ॥ हे रामजी चिदावलीभी आत्माही हे ॥ जीवभी आत्माहि हे अहंकार बुद्धी प्राण इंद्रियां देह विस्व आकास काल दिसा पदार्थ सर्व आत्माहि हे आत्मातें इतर कछू नही ॥ तातें विस्वकों अपणा स्वरूप जाण ॥ जेसें सूर्यका प्रकाश सूर्यही हे तेसें तुं जाण सर्व में हों जो अेसें न जाणी सके तो अेसें जाण॥ जो देहभी जड हे इंद्रियां करी पालित हे सो में नही ॥ अरु इंद्रियांभी में नही ॥ जो प्राण इंद्रियांका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सार हे ॥ जो प्राण न होवे तो इंद्रियां किसी काम नही ॥ अरु प्राणभी में नही प्राणका सार मन हे॥जो मन मूर्छा होता हे प्राण आते जातेभी हे तोभी किसी काम नही ॥ अरु मनभी
में नही जो मनके प्रेरणेवाली बुद्धी हे ॥ जो निश्चय बुद्धी करती हे मनभी तहां जाता हे सोभी में नही॥जो बुद्धीका प्रेरक अहंकार हे अहंकारभी में नही ॥अहंकारका सार जीव हे जीव
बिना अहंकार किसी काम नही अरु जीवभी में नही जीवका सार चिदावली हे चिदावली कहिये सुद्ध चिद विषे चैतन्योन्मुखत्व होणा ॥ जीव संज्ञातें प्रथम ईश्वर भाव चिदावली
भी में नही जो चिदावलीका सार चिन्मात्र हे ॥ सो अद्वितीय निर्विकल्प स्वरूप हे ॥ इह सर्व अनात्म भ्रमकरी सिद्ध हुए हे ॥ में केवल सांतरूप आत्मा हो ॥ हे रामजी तेरा वास्तव
स्वरूप हे सोइ होहु ॥ तिसतें इतर अनात्मविषे अहं प्रतीतका त्याग कर तुं देहतें रहित निर्विकार हे ॥ तेरेविषे जन्म मृतादि विकार कोउ नही अरु सांतरूप ज्योंका त्यों स्थित हे ॥ तुं क
दाचित् स्वरूपतें अवर नही हुआ ॥ तिसि स्वरूप विषे स्थित होउ॥ ॥इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे सार प्रबोधनं नाम शताधिक नवम सर्गः॥ १०९॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी आत्मा चिन्मात्रतें सार अवर कछू नही ॥ तिसीविषे स्थित होउ जो तापमिटि जावे ॥ हे रामजी सर्व आत्माहि स्थित हे जेसें बीजहि फल फूल होकरी
स्थित होता हे ॥ तेसें सर्व आत्माही स्थित हे ॥ तो निषेध अरु त्याग किसका करिये ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे शिष्य अेसें वसिष्टजीके वचन श्रवण करिकें रामजी प्रसंन हुआ जेसें क
मल सूर्यकों देखिकरी खिल आता हे तेसें रामजीकी बुद्धि वसिष्ठजीके वचनोंरूपी सूर्यकरी खिली आइ अरु बोलत भया ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् सर्व धर्मज्ञ तुमारी कृपातें अ
ब में जाग्या हों ॥ अरु बडा आश्चर्य हे जो आत्मा सर्वदा अनुभव रूप हे ॥ अरु अपणा आप हे ॥ तिसके प्रमादकरी में एताकाल दुःख पाया हे जो अहंता ममता रूपी बडा बोझा
सिर उपर था तिसकरि में दुःखी था ॥ जेसें किसीके सिर उपर पथरकी सीला होवे ॥ अरु जेठ असाढका सूर्य तपे अरु पैंदे चले तब दुःख पावता हे ॥ अरु जो उसके सिरतें कोउ
उतारिलेवे बलसों अरु छायाविषे बेठावे तो बडे सुखकों प्राप्त होता हे ॥ तेसें अज्ञानरूपी पैंदे अरु धूप तिसविषे अहंता ममता रूपी सिला करी दुःखी था ॥ तुम वचनरूपी बलकरी
उतारी लीनी हे अरु आत्मरूपी वृछकी छायाविषे विश्राम कराया हे ॥ हे भगवन् अब मेरेतांइ सांत पद प्राप्त हुआ हे ॥ अरु तीनों ताप मिटि गए हे अब जो सुमेरु पर्वतका भार आ
नि प्राप्त होवे तोभी मेरेतांइ कष्ट कोउ नही अब मेरे सर्व संशय निवर्त हुए हे ॥ जेसें सरत्कालका आकास निर्मल स्वछरूप होता हे ॥ तेसें राग दोषरूपी द्वंद्व मेरा नष्ट भया हे॥ अब
में अपणें सुभाव विषे स्थित हुआ हों ॥ परंतु एक प्रश्न हे उत्तर कृपा करी कहो ॥ जो महा पुरुष वारंवार प्रश्न करणे विषे खेद नही मानते ॥ हे भगवन् तुम कहते हो सर्व ब्रह्मही हे ॥
तो शास्त्रका विधिनिषेध उपदेश किसकों हे जो यह कर्म कर्तव्य हे यह कर्म कर्तव्य नहि ॥ सो इह उपदेश किसकों हे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी आत्मातें इतर कछू नही विश्वभी
तिसका चमत्कार हे॥ जेसें समुद्रविषे पवन करीकें नाना प्रकारके तरंग फुरते हे अरु जलतें इतर कछू नही॥ तेसें आत्मा चैतन मात्र हे तिसतें चेत्योन्मुखत्व अहंभावकों लेकरी फुऱ्या हे
तिसकरी देसकाल वस्तु बनी गए हे अरु शास्त्र फुरे हे बहुरी फुरणेने दोरूप धारे हे एक विद्या एक अविद्या तिसविषे जो विद्यारूप जीव हुए हें सो ईश्वर कहाते हे अरु अविद्यारूप हुए
हे सो इतर जीव हे ॥ जिनकों अपणे स्वरूपविषे अहं प्रत्यय वास्तवकी रही हे सो ईश्वर हे ॥ अरु जिनकों स्वरूपका प्रमाद हुआ अरु संकल्प विकल्पविषे वहते हे सो जीव दुःखी हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे रामजी एती संज्ञा फुरणेविषे हुइ हे तोभी आत्मातें इतर कछू नही जेसें एकही रस फूल फल वृक्ष हुआ हे रसतें इतर कछू नही अरु आत्मा रसकी न्याईभी प्रमाणकों नही प्राप्त भया फुरणे करीं ईश्वर जीव विद्या अविद्या हुइ हे आत्माविषे कछू नही॥हे रामजी जिसका संकल्प अधिभूतकविषे दृढ नही हुआ सो जीव सीघ्रही आत्मपदकों प्राप्त होता हे तिसकों आत्मा का साक्षात्कार सीघ्रही होता हे ॥ अरु जिनका संस्कार अधिभूतकविषे दृढ हुआ हे सो चिरकाल करी प्राप्त होते हे॥आत्म पदकी प्राप्तिविना दुःख पावते हे॥ अरु जिनकों आत्मपदकी प्राप्ति होती हे सो सुखी होते हे ॥ हे रामजी ज्ञानी अरु अज्ञानीके स्वरूपविषे भेद कछू नही ॥ सम्यक् अरु असम्यक् दर्शनका भेद हे॥हे रामजी विद्याभी दो प्रकारकी हे एक इश्वरवाद एक अनीश्वरवाद हे ॥ जो इश्वरवादी हे सो तुरत पदकों प्राप्ति होते हे ॥ जो अनीश्वरवादी हे तिनकों जब इश्वरकी भावना होती हे तब शास्त्र गुरु करीकें इश्वरकी प्राप्ति होती हे अरु इश्वरवादभी दो प्रकार हे ॥ एक यह हे जो अवर वासना त्याग करी इश्वरपरायण होते हे ॥ तो सीघ्रही इश्वरकों प्राप्त होते हें सो आत्माही इश्वर हे जों सर्वका अपणा आप हे ॥ अरु एक इश्वरकों मानते हे ॥ वासना संसारकी उर होती हे तो चिरकालकरी प्राप्त होते हे ॥ अरु अनीश्वरवादीभी दो प्रकारके हे एक कहते हे जो कछू होवेगा तिनकों होतें होतेकी भावनातें शास्त्र गुरुकरी आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी ॥ अरु एक कहते हे कछू नही तिनकों चिरकाल करी जब आस्तिक भावना होवेगी तब आत्मपदकों प्राप्त होवेगे ॥ हे रामजी तिन के निमित्त विधि अरु निषेध कही हे जो इस शुभ कर्मकों अंगीकार करो अरु अशुभ कर्म त्यागो तिसकरी जब अंतःकरण शुद्ध होवेगा तब आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी इस निमित्त वि धिनिषेध कही हे जो विधिनिषेध शास्त्र न कहे तो बडा छोंढेकों भोजन करी लेवे ॥ इन निमित्त शास्त्रका दंड हे ॥ हे रामजी स्वरूपतें किसीकों उपदेश नही भ्रमविषे उपदेश हे जिस पुरुषका भ्रम निवृत्त हुआ हे सो मोहविषे बहुरी नही डुबता ॥ जेसें जलविषे तुंबा नही डुबता तेसें ज्ञानवान संसार अज्ञानविषे नही डुबता अरु जिसका चित्त वासनाकरी आवर्या हु आ संसरता हे ॥ तिसकों इस संसारतें निकसणा कठिन हे ॥ जेसें उजाडका कूआ होता हे ॥ तिसविषे कोउ गिरे तो निकसणा कठिन होता हे ॥ तेसें चित्त साथ मिलीकरी संसारतें नि कसणा कठिन होता हे॥ हे रामजी इस चित्तकों स्थिर कर जो दुःख तेरे मिटि जावे अरु सत्ता समान पदकों प्राप्त होवे॥ हे रामजी जिसकों आत्माका साक्षात्कार हुआ हे अरु अनात्म विषे अहं प्रत्यय निवृत्त भया हे सो पुरुष जो कछू करता हे तिसकरी बंधायमान नही होता सदा अकर्ता आपकों देखता हे अरु जिसकी अहं प्रत्यय अनात्मविषे हे सो पुरुष करे तोभी करता हे अरु जो न करे तोभी करता हे॥हे रामजी जो ज्ञानी शुभ कर्म करता हे तो शुभ कर्म करता हुआ स्वर्गकों प्राप्त होता हे अरु अशुभ कर्म करणेसों नर्ककों प्राप्त होता हे ॥ अरु जो शुभ कर्मकों त्यागता हे तोभी नरककों प्राप्त होता हे काहेतें जो अनात्मविषे आत्म अभिमान हे ॥ तातें बुद्धि इंद्रियांकों मनकरी निग्रह करु॥अरु कर्म इंद्रियांकरी चेष्टा करु॥देखणे सुनणे सुंघणतें में तुझकों वर्जन नही कर्ता ॥ यही कहता हों जो अनात्मविषे अभिमानकों त्याग ॥जब अनात्म अभिमानकों त्यागेगा तब शांतपदकों प्राप्त होवेगा॥जहां तेरा चित्त फुरेगा तहां आत्माहि भासेगा आत्मातें इतर कछू न भासेगा ॥ तातें चित्तकों त्याग चित्त कहियें अहंभाव ॥ अहंभावकों त्यागकरी आत्मपदविषे स्थित होहु ॥ अरु जेसें विश्वकी उत्पत्ति भइ हे सो सुण ॥ शुद्ध चैतनमात्र स्वरूपविषे चिदावलीरूप अहं तरंग फुर्या हे अरु तिस चिदावलीरूपी समुद्रविषे जीवरूपी तरंग उपजता हे अरु जीवरूपी समुद्रविषे अहंकाररूपी तरंग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भास्या हे ॥ अरु अहंकाररूपी समुद्रविषे बुद्धिरूपी तरंग उपजा हे ॥ तिस बुद्धिरूपी समुद्रविषे चित्तरूपी तरंग भास्या ॥ अरु चित्तरूपी समुद्रविषे संकल्परूपी तरंग उपजा हे ॥ तिस संकल्परूपी समुद्रविषे जगतरूपी तरंग उपजा हे ॥ अरु जगतरूपी समुद्रविषे देहरूपी तरंग भास्या हे तिसके संयोगतें दृश्यका ज्ञान हुआ हे ॥ जो यह पदार्थ हे यह नही यह अेसें हे ॥ तिसविषे देश काल दिशा सर्व हुए हे ॥ हे रामजी संकल्पकरी होए गए हे सो आत्मातें इतर कछू नही केवल शांतरूप एक रस आत्मा हे ॥ तिसविषे नाना प्रकारके आचार रचे हे ॥ आत्मातें इतर कछू नही ॥ जेसें सुपनकी सृष्टि नाना प्रकार हो भासती हे ॥ सो अपणाहि अनुभव होता हे तेसें यह जगत्भी जाण ॥ आत्मा सर्वदा एकरस अद्वैत हे शुद्ध हे परम निर्वाण हे सर्वदा अपणे आपविषे स्थित हे फुरणे करीकें नाना प्रकारकी कलना उदे भइ हे ॥ हे रामजी शुद्ध आत्माविषे जो चिदेव हुइ हे ॥ चिदेव पंचभूतानि चिदेव भुवन त्रयं ॥ सो चिदेव संज्ञाभी संकल्पविषे हुइ हे आत्मविषे चिदेव संज्ञाभी नही ॥ आत्मा निर्वाच पद हे ॥ तिसविषे वाणीकी गम नही ॥ शुद्ध शांतरूप हे ॥ तिसविषे चिदेव जो फुरी हे तिस फुरणेविषे संसार हुएकी न्यांइं स्थित हे॥ जेसें एकही बीजनें वल्ल फूल फल आदिक संज्ञा पाइ हे सो बीजतें इतर कछू नही अरु आत्मा बीजकी न्यांइंभी प्रणम्या नही संकल्पतेंही नाना संज्ञा कल्पी हे अरु जगत् स्थित हुआ हे ॥ तोभी आत्मातें इतर कछू नही ॥ जेसें वायु चलती हे तोभी वायु हे ठहरती हे तोभी वायु हे ॥ तेसें आत्माविषे नानात्व कछू नही केवल शुद्ध अद्वैत आत्मा हे आत्मरूपी समुद्रविषे नाना प्रकार विश्वरूपी तरंग स्थित हे ॥ हे रामजी आकारभी आत्मातें इतर कछू नही ॥ जो आत्मातें इतर भासे सो मिथ्या जाण ॥ मृगतृष्णाके जलकी न्यांइं जाणी करी तिसकी भावना त्याग ॥ अरु स्वरूपकी भावना करु ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे ब्रह्मैकत्वप्रतिपादनं नाम शताधिकदशमः सर्गः ॥ ११० ॥ ॥७॥

॥वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी मेरे वचनोंकों धारि अरु रिदेविषे आस्तिक भावना करु जो यह सत्य कहते हे॥अरु सर्व त्याग करु जब सर्व त्याग करेगा तब चित्त क्षीण हो जावेगा॥जब क्षीण चित्त हुआ तब शांति होवेगी ॥ हे रामजी काष्ठ मौन होकरी अंतरतें सर्व त्याग करु ॥ अरु बाह्य कर्मोंकों करु अभिमानतें रहित होकरी अंतर्मुखी होहु अंतर्मुख कहिये आत्मा विषे स्थित होणा जब आत्मा विषे स्थित होवेगा तब विद्यमान दृश्यभी तेरे तांइ न भासेगा ॥ काहेतें जो सर्व आत्माहि भासेगा अरु जो तेरे पास भेरीके शब्द होवेंगे तोभी न भासेगा अरु जो सुगंध लेवेगा तोभी नही लीनी जो कछू क्रिया करेगा॥सो तेरे तांइ स्पर्श न करेगी आकाशकी न्यांइं सर्वतें असंग रहेगा॥हे रामजी कछू देखे सो स्वरूपतें इतर न देखे अरु जो बोले सोभी आत्मातें इतर न फुरे अंध अरु गुंगेकी न्यांइं अरु पथरकी सिलावत् मौन हो रहु॥संकल्पतें रहित अरु चेष्टा तेरी जंत्रकी पूतलीवत् खडी होवेगी ॥ जेसें जंत्रकी पूतली तागेकी सत्ताकरी चेष्टा करती हे तेसें नीतिशक्ती करी प्राणोकी चेष्टा तेरी होवेगी सुभाविक जो कछू क्रिया हे सो अभिमानतें रहित होकरी स्थित होणा अरु जो अभिमान सहित चेष्टा करता हे सो मूर्ख असम्यक दर्शी हे अरु जो सम्यक दर्शी हे तिसकों अनात्मविषे अभिमान नही होता ॥ हे रामजी जिसकों अनात्म अभिमान नही अरु चित्त जिसका लेपायमान नही होता ॥ सो सारी सृष्टिकों संघार करे अथवा उत्पत्ति करे तो उसकों बंधन कछू नही होता॥जो सर्व कर्म अभिलाषतें रहित होकरी करता हे ॥ हे रामजी समाधिविषे स्थित होहु अरु जाग्रतकी न्यांइं सब कर्म करु तेरेविषे दृष्टिभी आवे तोभी तिनतें सुषुप्तकी न्यांइं फुरणा कोउ न फुरे अपणे स्वरूपकी समाधि रहे ॥ अरु समाधिभी तब कहीए जो कोउ दुसरा होवे जो इसविषे स्थित होइयें

॥ ९७॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसका त्याग करिये ॥ हे रामजी जहां एक शब्द अरु दो शब्द कहणाभी नही अद्वीतीयात्मा परमार्थ सत्ता हे ॥ तिसविषे चित्तनें नाना प्रकारके विकार कल्पे हे ॥ ज्ञानीकों एकरस भासता
हे अरु ज्ञानीकों ज्ञानी जानता हे ॥ जेसें सर्पके खोजकों सर्प जानता हे ॥तेसें ज्ञानीकों एकरस आत्माही भासता हे सो ज्ञानीही जानता हे अरु मूर्खकों संकल्पकरी नाना प्रकार जगत्
भासता हे ॥ तातें संकल्पकों त्याग करी अपणे प्रकृत आचारविषे विचरु ॥ जेसें उन्मत्तकी चेष्टा सुभाविक होती हे ॥ जेसें बालककी चेष्टा सुभाविक होती हे अंग हलतें हे तेसें अभिमानतें
रहित होकरी चेष्टा करु जेसें पथरकी सिला जड होती हे ॥ तेसें दृश्यकी भावनातें रहित होडु जो फुरे कछू नही जडकी न्यांइं जब अेसा होवेगा तब शांतपदकों प्राप्त होवेगा ॥हे रामजी चि
त्तके संबंध करी क्षोभ उत्पत्ति होता हे ॥ जेसें वसंतऋतुविषे फुल उत्पत्ति होते हे ॥ तेसें चित्तरूपी वसंतऋतुविषे दुःखरूपी फूल उत्पत्ति होते हे ॥ जब तुं चित्तकों शांत करेगा तब पर
मपदकों प्राप्त होवेगा सो पद केसा हे सूक्ष्मतें सूक्ष्म हे अरु स्थूलतें स्थूल हे ॥ तातें तुं असंग होडु ॥ जब तूं स्थूलतें स्थूल होवेगा तबभी असंग रहेगा ॥ अेसें पदकों पायकरी काष्ठ पथ
रकी न्यांइ मौन होडु॥हे रामजी दृश्य पदार्थकों त्यागकरी जो दृष्टा हे जानणेवाला तिसविषे स्थित होडु॥हे रामजी इंद्रियां अपणे अपणे विषयकों ग्रहण करतियां हे तिनकी उर तुं भाव
ना मत करु जो यह सुंदररूप हे इसकी प्राप्ति होवे भलेविषे प्राप्त होणेकी भावना तुं मत करहि इनके जानणेवाला जो आत्मा हे तिसविषे स्थित होडु॥ जो पुरुष द्रष्टाविषे स्थित होता
हे सो गौपदकी न्यांइ संसार समुद्रकों लंघि जाता हे ॥ हे रामजी जो पदार्थ दृष्ट आते हे ॥ तिनविषे अपणी अपणी सृष्टि हे केसी सृष्टि हे जो संकल्पमात्रहि हे ॥ अपणे अपणे
संकल्पविषे स्थित हे अरु सर्व संकल्प आत्माके आश्रय हे ॥ जेसें सभ पदार्थ आकासविषे स्थित हे तेसें सर्व संकल्पकी सृष्टि आत्माके आश्रय हे ॥ अरु एकके संकल्पकों दूसरा नही
जानता सृष्टि अपणी अपणी हे ॥ जेसें समुद्रविषे जेते बुदबुदे हे तिनकों जलकरी एकता हे ॥ अरु आकार करी एकता नही तेसें स्वरूपकरी सभकी एकता हे अरु संकल्प सृष्टि अपणी
अपणी हे ॥ अरु जो पुरुष अेसें चिंतवता हे जो में उसको सृष्टिकों जाणों तब जानता हे ॥ हे रामजी आत्मा कल्पवृक्ष हे जेसी कोउ भावना करता हे तेसीसिद्ध होती हे ॥ जब अेसी
ही भावना करिकें स्वरूपविषे जुडता हे ॥ जो सभ सृष्टि मेरे तांइ भासे तो भावनाकरिकें भासी आती हे ॥ अरु ज्ञानी अेसी भावना नही करता काहेतें जो आत्मातें इतर कोउ पदार्थ
नही जानता ॥ अरु जानता हे जो स्वरूपतें सभकी एकता हे अरु संकल्परूपकरी एकता नही होती ॥ जेसें तरंगोंकी एकता नही अरु जलकी एकता हे ॥ अरु जो एक तरंग दूसरे सा
थ मिलि जाता हे ॥ तो उस साथ एकता होती हे ॥ तेसें एकका संकल्प भावना करी दूसरे साथ मिलता हे तातें ज्ञानी जानता हे संकल्परूप आकार नही मिलते ॥अरु स्वरूपकरी सभ
की एकता हे ॥ अरु जिसकी भावना होती हे जो में इसकी सृष्टिकों देखों तब उसके संकल्प साथ अपणा संकल्प मिलाय करि देखता हे ॥ तब उसकी सृष्टिकों जानता हे जेसें दो
मणी होवे तिनका प्रकास भिन्न भिन्न होता हे ॥ जब दोनों एकठी राखीये एकही ठोरविषे तब दोनोंका प्रकासभी एकठा हो जाता हे तेसें संकल्पकी एकता भावना करी होती हे ॥ अ
रु ज्ञानीकों प्रथम संकल्प हुआ होवे जो में उसकी सृष्टिकों देखों ॥ तो संकल्पकरी देखता हे अरु ज्ञानके उपजेतें वांछा नही रहती ॥ हे रामजी इछा चित्तका धर्म हे ॥ जब चित्त
हि नष्ट होगया ॥ तब इछा किसकी रहे ॥ जब स्वरूपका प्रमाद होता हे तब चित्तरूपी दैत प्रसंन होता हे ॥ जो यह मेरा आहार हुआ में इसकों भोजन करोंगा ॥ हे रामजी जो पुरुष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चित्तकी उर हुआ अरु स्वरूपकी भावना न भइ तब चित्तरूपी दैत जन्मरूपी बनविषे लिये फिरता हे ॥ अरु तिसकों भोजन करता रहता हे ॥ जो उसका पुरुषार्थ नास करता हे ॥ अरु आत्मभावना वाली बुद्धि उत्पत्ति होणें नही देता जेसें दलकों अग्नि लागे तब बहुरी उसविषे फल नही पडते ॥ तेसें पुरुषार्थरूपी दलकों भोगरूपी अग्नि लागी तब शुद्ध बुद्धिरूपी फल उत्पत्ति नही होता ॥ हे रामजी चित्त आत्माविषे जोड॥विषयकी उर जाणे न देवहु ॥ यह चित्त दुष्ट हे जब इसकों स्थिति करोगे तब परम अमृत करी सोभायमान होहुगे॥जेसें पूर्न मासीका चंद्रमा अमृतकरी सोभता हे ॥ तेसें ब्रह्म लक्ष्मीकरी सोभोगे अरु परम निर्वाण पदकों प्राप्त होहुगे ॥ इ० यो० निर्वाणप्रकरणे निर्वाणवर्ननंनाम शताधिकैकादशः सर्गः ॥ ११ १॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी सप्त भूमिका ज्ञानकी हे इन करी ज्ञान उत्पत्ति होता हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् जिस भूमिकाविषे जिज्ञासी प्राप्त होता हे ॥ तिसका लक्षण क्या हे ॥ यह सप्त भूमिका क्या है ॥ अरु प्राप्त केसें होतीयां हे सो कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह सप्त भूमिका तुझकों कहता हों जिस प्रकार प्राप्त होतीयां हे अरु जिस प्रकार भूमिकातें ज्ञान प्राप्त होता हे ॥ सो श्रवण करु हे रामजी जब बालक माताके गर्भविषे होता हे अरु बाह्य निकसता हे तब इसकों दृढ सुषुप्ति जड अवस्था होती हे जेसें ज्ञानीकी होती हे परंतु बालकविषे संस्कार रहता हे ॥ तिसकरी संस्कारकी सत्यता आगें होणी हे ॥ जेसें बीजविषे अंकुर होता हे तिसतें आगें दल होणा हे तेसें बालककी भावी होणी हे ॥ अरु ज्ञानी की भावी नही होणी ॥ जेसें दग्धबीज विषे अंकुर नही होता तेसें ज्ञानीकी भावी नही होणी ॥ संसारतें सुषुप्त हे अरु स्वरूपविषे नही इसीतें भावी तिसविषे नही होणी जब बालककों बाह्य निकसेतें कोउ काल बितीत होता हे तब दृढ जडता निवर्त होती हे अरु सुषुप्ति रहती हे केते कालतें उपांत सुषुप्तभी लय होती हे अरु चेतनता होती हे तब जानता हे जो यह में हों यह मेरे पिता माता हे॥ तब कुलवाले तिसकों सिखावते हे जो यह मीठा हे यहकडवा हे॥ यह तेरी माता हे यह पिता हे यह तेरा कुल हे॥इस करी पाप होता हे इस करी पुण्य होता हे इस करी स्वर्ग पावता हे इस करी नरक पावता हे॥इस प्रकार यज्ञ होता हे इस प्रकार तप होता हे इस प्रकार दान करता हे ॥ हे रामजी इस प्रकार कुलके उपदेस करी अरु शास्त्रके भयकरी धर्मविषे विचरता हे ॥ अरु पापका त्याग करता हे अेसा जो शास्त्र अनुसार विचरणेवाला पुरुष सो धर्मात्मा कहता हे॥ सो धर्मात्मा पुरुषभी दो प्रकारके हे ॥ एक प्रवृत्तिकी उर हे एक निवृत्तिकी उर हे ॥ जो प्रवृत्तिकी उर हे सो पुण्यकर्मोंकरी स्वर्ग फल भोगता हे ॥ उह मोक्षकों उत्तम नही जानता ॥ इसतें संसारविषे भ्रमता हे जलके तृणवत् ॥ कबि चिरकालतें इस क्रमविषे आयकरी मुक्त होता हे ॥ अरु जो निवृत्तिकी उर होता हे तिसकों विषय भोगतें वैराग उपजता हे ॥ अरु कहता हे जो यह संसार मिथ्या हे में इसकों तरों ॥ अरु तिस पदकों प्राप्त होउं जहां क्षय अरु अतिसे न होवे यह संसार सर्वदा चलरूप हे अरु दुःखदाइ हे॥हे रामजी तिस पुरुषकों इस क्रमकरिकें ज्ञान विज्ञान उत्पत्ति होता हे ॥ अरु जो पसु धर्मा मनुष्य हे तिनकों ज्ञान प्राप्त होणा कठिन हे पसुधर्मा कहिये जो शास्त्रके अर्थकों नही जानते जो सुभ क्या हे अरु असुभ क्या हे ॥ अपणी इछाविषे वर्त्तणा असुभवकों ग्रहण करणा विचारतें रहित होणां ॥ अरु मनुष्यभी दो प्रकारके हे॥एक प्रवृत्तिका लक्षण एक निवृत्तिका लक्षण हे ॥ प्रवृत्ति कहियें जिसकों शास्त्र शुभ कहे तिसकों ग्रहण करणा अशुभका त्याग करणा ॥ कामना धारिकें यज्ञादिक शुभ कर्म करणे फलके निमित्त ॥ जो स्वर्ग धन पुत्रादिक मेरे तांइं प्राप्त होवेगे तिन प्रार्थना धारी करी शुभ कर्म करणे इस प्रकार संसार समुद्रविषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वहते हे अरु चिरकाल करी निवृत्तिकी उरमी आते हे तब स्वरूपकों पावते हें॥सो निवृत्ति क्या है जो निःकाम हो करी शुभ कर्म करणे तिनकरी अंतःकरण शुद्ध होता हे तब तिसकों वैराग उप
जता हे अरु कहता हे मेरे तांइं कर्मों साथ क्या हे अरु फलोंकरी क्या हे में किसी प्रकार आत्मपदकों प्राप्त होउं॥अरु संसारतें कब मुक्त होउंगा यह संसार मिथ्या हे॥अरु भोगकरी मेरे तांइं क्या
हे॥यह भोग सर्प हे॥हे रामजी इस प्रकार भोगकी निंदा करता हे अरु उपरत होता हे॥अरु सम दम आदिक जो ज्ञानके साधन हे तिसविषे विचरता हे॥ अरु देशकाल पदार्थकों शुभ अशुभ वि
चारता हे अरु मर्यादा साथ बोलता हे॥अरु संतजनका संग करता हे॥सतशास्त्र ब्रह्मविद्याकों वारंवार विचारता हे॥इस प्रकार उसकी बुद्धि बढती जाती हे॥अरु संतजनका संग करता हे॥जेसें शु
क्लपक्षके चंद्रमाकी कला दिन दिन प्रति बढती हे॥तेसें उसकी बुद्धि बढती हे॥अरु विषयतें उपरत होती हे॥तीर्थ ठाकुरद्वारे सुभ स्थान पुजता हे॥अरु देह इंद्रियांकरी संतकी टहल करता हे॥ अरु
सर्व साथ मित्र भाव दया सत्य कोमलता करी विचरता हें ऐसा वचन बोलता हे जिसकरी सभ कोउ प्रसंन होवे अरु जथा शास्त्र होवे॥अरु इतर किसीकों नही कहणा अरु अज्ञानी
का संग त्यागणा॥ अरु स्वर्ग आदिक सुखकी भावना न करणी केवल आत्म परायण होणा संत अरु शास्त्रोंकी दृढ भावना करणी॥ तिनके अर्थोंविषे सुरती लगावणी अवर किसी
उर चित्त न लगावणा॥ जेसें कदर्य दरिद्री सर्वदा धनकी चिंतवना करता हे तेसें उह सदा आत्माकी चिंतवना करता हे॥ जो पुरुष एते गुण संयुक्त हे तिसकों प्रथम भूमिका प्राप्त भई
हे अरु पापरूपी सर्पकों मोर समान सिरनी करिकें नास करता हे संतजन सतशास्त्र अरु धर्मरूपी मेघकों गर्दन उचीकरी देखता हे अरु प्रसंन होता हे॥ इसका नाम सुभेछा हे॥ तिस
कों बहुरी दूसरी भूमिका आय प्राप्त होती हे॥ जेसें शुक्लपक्षके चंद्रमाकी कला बढती जाती हे॥ तेसें उसकी बुद्धि बढती जाती हें॥ तिसके यह लक्षण हे जो सतशास्त्र ब्रह्मविद्याकों
विचारणा अरु दृढ भावना लगावणी तिस विचारका कवच गलेविषे पावता हे॥ तिसकरी शस्त्रोंका घाउ कोउ नही लागता॥ जो इंद्रियांरूपी चोर हे इछारूपी तिनके हाथविषे बरछी
हे सो विचाररूपी कवच पहिरणे वालेकों नहीं लागती॥ हे रामजी इंद्रियांरूपी सर्प हे तृष्णा तिनविषे विष हें तिसकरी मूर्खकों मारतियां हे॥ अरु विचारवान जो पुरुष हे सो इंद्रियां
के विषयकों नाश करी छोडता हे॥ अरु सर्व उरतें उदासीन रहता हे॥ दुर्जनकी संगतीका बल करिकें त्याग करता हे जेसें गधा तृणकों त्यागता हें तेसें मूर्खकी संगति देहतें लेकरी त्या
गता हे अरु सर्व इछाका त्याग किया हें॥ परंतु एक इछा तिसविषेभी रहती हे सो दया सर्व पर करता हे॥ अरु संतोषवान रहता हे॥ अरु निषेध गुण सुभाविक जाते रहते हे दंभ गर्व
मोह लोभ आदिक तिसके सुभाविक नष्ट हो जाता हे॥ जेसें सर्प कंचुकीकों त्याग करी सोभायमान होता हे तेसें विचारवान बाह्य इंद्रियांकों त्याग करिकें सोभता हे॥ अरु जो को
धभी तिसविषे दृष्ट आता हे॥ तो क्षणमात्र होता हे रिदेविषे स्थित नही हो सकता हे॥ अरु खाणा पीणा लेणा देणा जो कछु क्रिया हे सो विचार पूर्वक करता हे॥ अरु सर्वदा सुधमा
र्गविषे विचरता हे॥ संतजनोंका संग करणा अरु सतशास्त्रोंके अर्थ विचारणे बोधकों बढावणा तपकरणा तीर्थोंका स्नान करणा इस प्रकार कालकों बितीत करता हे॥ हे रामजी यह
दूसरी भूमिका हे॥ जब तीसरी भूमिका आती हे तब श्रुति जो हे वेद अरु स्मृति जो हे धर्मशास्त्र तिनके अर्थ रिदेविषे स्थित होते हे॥ जेसें कमलपर भंवरा आनि स्थित होता हे तेसें
तिस पुरुषके रिदेविषे सुभगुण स्थित होते हे॥ फूलोंकी सिजाभी सुखदाइ नही भासती बन अरु कंदरा सुखदायक भासता हे॥ जो वैराग तिसका दिनदिन बढता जाता हें॥ अरु तला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व बावलियां नदियांविषे स्नान करणा अरु सुभस्थानोविषे रहणा पथरकि सिलापर सेन करणा अरु देहकों तपकरि क्षीण करणा अरु धारणा करी चित्तकों किसी ठौरविषे न लगावणा ॥ अरु आत्मभावना ध्यान करणा अरु भोगतें सर्वदा उप्रांत होणा ॥ भोगकों अंतवंत विचारणा जो यह स्थिर नही रहते ॥ अरु देहके अहंकारकों उपाधी जाणीकरी त्यागता हे ॥ रक्त मांस पुरीषादिकतें पूरन जाणीकरी इसविषे अहंकारकों त्यागता हे अरु निंदा करता हे सूकेतृणको न्यांइ तुछ जाणी करी त्यागता हे जेसें तृण विष्टाकरी संयुक्त होवे अरु तिसकों त्यागता हे तेसें देहके अहंकारकों त्यागता हे अरु कंदराविषे विचरणा फूल फलका आहार करणा अरु संतजनोंकी टहल करणी इस प्रकार आयुर्बलाकों वीतावता हे ॥ सदा असंग रहता हे यह तीसरी भूमिका हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे प्रथम द्वितीय तृतीयभूमिकालक्षणविचारोनाम शताधिकद्वादशः सर्गः ॥ ११२ ॥ ॥७॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह ज्ञानका साधन हे ब्रह्म विद्याकों विचारणा वारंवार उसके अर्थकी भावना करनी अरु पुण्यक्रियाविषे विचरणा इसतें इतर ज्ञानका साधन नही इस करी ज्ञानकी प्राप्ति होती हे जिस पुरुषकों अेसीभावना हुइ हे ॥ तिसकों नाना प्रकारकी सुगंध अगर चंदन चोएतें आदि ले करी अरु अपछरा अनिछित आय प्राप्त होवे तब तिनका निरादर करता हे अरु जो स्त्रीकों देखता हे तोभी माता समान जाणता हे अरु पराए धनकों पथरे वट्टे समान देखीकरी वांछा न करता हे ॥ अरु सर्व भूतकों देखीकरी दयाहि कर्ता हे ॥ जेसें आपकों सुखकरी प्रसंन दुःखकरी अनिष्ट जानता हे ॥ तेसें उह अवरकोंभी आप जाणीकरी सुख देता हे अरु दुःख किसीकों नही देता इस प्रकार पुण्य क्रियाविषे वि चरता हे ॥ अरु सतशास्त्रके अर्थका अभ्यास करता हे सर्वदा असंग रहता हे अरु असंगताभी दो प्रकारकी हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् असंग संगका लक्षण क्या हे तिनका भेद तो तुमकों होवेगा ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी असंग दो प्रकारका हे एक समान हे ॥ एकविसेष हे तिनका लक्षण श्रवण कर ॥ प्रथम समान यह हे ॥ जो उह कहता हे में कछू नही करता न में किसीकों देताहों न मेरे तांइ कोउ देता हे सर्व ईश्वरकी आज्ञा वर्ती हे जिसकों धन देणेंकी इछा होती हे तिसकों धन देता हे ॥ जिससों लेणा होता हे तिससों लेता हे इस के आधीन कछू नही अरु जो कछू दान तप जज्ञादि करता हे सो ईश्वरार्पण करता हे अपणा अभिमान कछू नही कर्ता अरु कहता हे सभ ईश्वरकी सक्ति करी होता हे इस प्रकार निरभिमान होकरी धर्म चेष्टाविषे सुभाविक विचरता हे अरु जो कछू इंद्रियांके भोगकी संपदा हे तिसकों आपदा जानता हे ॥ भोगकों महा आपदारूप मानता हे संपदा आपदारूप हे संजोग विजोगरूप हे जेते पदार्थ हे सो सभ संनिपातरूप हे विचारकरी नष्ट हो जाते हे सभकों नासरूप जानता हे संजोगवियोगविषे दुःखदाइ हे परस्त्रीकों विषकी वल्ली समान रसतें रहित जानता हे अरु सर्व पदार्थोंकों प्रणामी जाणी करी इछा किसीकी नही करता हे॥अरु संपूर्ण विश्वका जो ईश्वर हे जिसकों सुख देणा हे तिसकों सुख देता हे जिसकों दुःख देणा हे तिसकों दुःख देता हे ॥ इसके हाथ कछू नही करणे करावणेवाला ईश्वर हे ॥ न में करता हों न में भोक्ता हों न में वक्ता हों जो कछू होता हे सो सब ईश्वरकी सत्ता हो करी होता हे अेसें निरभिमान होकरी पुण्यक्रियाकों कर्ता हे सो समान असंग हे तिसके वचन सुनणेंतें श्रवणकों अमृतकी प्राप्ति होती हे इस प्रकार संतके मिलणें करी भूमिकातें जिसकी बुद्धी बढी हे अरु निरभिमान हे तिसके उपदेसविषे अनुभव करी तवलग अभ्यास करे जबलग हाथपर आंवलेकी न्यांइं आत्माका अनुभव साक्षात्कार प्रत्यक्ष होवे ॥ अरु यह जो कहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था इश्वर सभ कर्ता हे सो समान असंग हे अरु विसेष असंगवाला कहता हे ॥ जो न में कछू करता हौं न करावता हौं केवल आकाशरूप आत्मा हौं ॥ न मेरेविषे करणा हे न करावणा हे ॥ न कोउ अवर हे न मेरा हे ॥ केवल आकाशरूप अद्वैत आत्मा हौं ॥ हे रामजी उह पुरुष न अंतर न बाहिर देखता हे ॥ न पदार्थ न अपदार्थ न जड न चैतन न आकाश न पातालकों देखता हे ॥ न देशकों न पृथ्वीकों न में मेरेकों देखता हे ॥ निर्वास अज अविनासी सर्व शब्द अर्थोंतें रहित केवल शून्य आकाशविषे स्थित हे ॥ चित्ततें रहित चैतनविषे जो प्रस्थित हे तिसकों असंग श्रेष्ट कहिता हे ॥ बाह्य उसकी चेष्टा दृष्टभी आती हे तोभी अंतर पदार्थकी भावनाका अभाव हे ॥ जेसें जलविषें कमल दृष्टीभी आता हे परंतु उंचाही रहता हे तेसें क्रियाविषे विचरता दृष्टभी आता हे परंतु असंग रहता हे कामना उसकों कोउ नही रहती जो यह होवे अरु यह न होवे ॥ काहेतें जो उसकों संसारका अभाव निश्चय भया हे सर्व कलनातें रहित हे ॥ आत्मातें इतर किसी पदार्थकी सत्ता नही फुरति ॥ सो श्रेष्ठ असंग कहाता हे ॥ अरु करणे करी उसका अर्थ कछू सिद्ध नही होता अकरणेविषे प्रतिबंध नही होती ॥ उह सर्वदा असंग हे संसारविषे डूबता कदाचित् नही ॥ संसार समुद्रके पारकों प्राप्त हुआ हे ॥ अरु अनात्मविषे आत्म भावना तिस पुरुषनें त्यागी हे अहंभावका त्याग किया हे जेते पदार्थ हे इष्ट अनिष्ट रूप तिनके सुख दुःखकी वेदना नही फुरती सदा मौनरूप हे ॥ पैसा पथर समान हे सो श्रेष्ठ असंग कहाता हे ॥ हे रामजी एक कमल हे सो अज्ञानरूपी की चर्सों निकसी करी आत्मारूपी जलविषे विराजता हे संसारकी अभावना उसका बीज हे ॥ अरु तृष्णारूपी उंस जलविषे मछिया हे ॥ कमलके चउंफेर फिरतियां हे ॥ अरु कुकर्म दुःख रूपी तिस साथ कांटे हे अज्ञानरूपी रात्र करी मुख मुंदि रहता हे ॥ अरु विचार रूपी सूर्यके उदे हुएतें खिलता हे अरु सोभता हे सुगंध तिसविषे संतोष हे सो हृदेबीच लागता हे फल तिसका असंग हे तीसरी भूमिका विषे यह उगता हे हे रामजी संतकी संगति अरु सतशास्त्रोंका विचारणा सारकों प्राप्त कर्ता हे ॥ इन करिके अमृत मोक्षकों प्राप्त होता हे बडा कष्ट हे जो एसें स्वरूपकों विस्मरण करीकें जीव दुःखी होते हे ॥ इसका स्वरूप दुःखोंका नास करता हे जिसविषे दुःख कोउ नही आनंदरूप हे इन भूमिका द्वारा प्राप्त होता हे ॥ बहुरी बंधमान नही होता ॥ हे रामजी यह तिसरी भूमिका ज्ञानके निकट वरती हे ॥ अरु विचारवान इन भूमिकाविषे स्थित होकरी बुद्धिकों बढावते हे ॥ जब इस प्रकार बोधकों बढावता हे अरु शास्त्र युक्तिसाथ रक्षा कर्ता हे तब क्रमकरिके यह तिसरी भूमिकाकों प्राप्त होता हे ॥ तहां इसकों असंगता प्राप्त होती हे ॥ जेसें किरसांणी खेतीकी रक्षा करता हे बढावता हे तेसें विचाररूपी जलकरी बुद्धिकों बढावता हे जब बुद्धिरूपी वल्ली बढती हे ॥ तब चतुर्थभूमिका प्राप्त होती हे ॥ अरु अहंकार मोहादिक शत्रुतें रक्षा करता हे ॥ हे रामजी इस भूमिकाकों प्राप्त होकरी यह ज्ञानवान होता हे सो यह भूमिका क्रम करीकें प्राप्त होती हे ॥ के बडे पुण्य कर्म किये होवें तिनकरी आनि फुरती हे ॥ अथवा अकस्मात आनि फुरती हे ॥ जेसें नदीके तटपर कोउ आय बेठा होवे अरु नदीके वेगकरी बीच जाय पडे ॥ तेसें जब पहिली भूमिका प्राप्त होती हे तब फेरी बुद्धिकों बढावता हे ॥ जब बुद्धिरूपी वल्ली बढती हे तब ज्ञानरूपी फल लागता हे ॥ जब ज्ञान उपजा तब प्रत्यक्ष क्रिया तिसविषे दृष्टीभी आवे तोभी इसका अभिमान नही रहता ॥ जेसें सुद्ध मणी प्रतिबिंबकों ग्रहणभी करती हे परंतु रंग कोउ नही चढता ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे तृतीय भूमिका विचारो नाम शताधिकत्रयोदशः सर्गः ११३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

962

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ रामोवाच॥ हे भगवन् तुमनें भूमिका वर्णन करी तिसविषे मेरेतांई यह संशय हे जो भूमिकातें रहित हे अरु प्रकृतिके सन्मुख हे तिनकोंभी कदाचित् ज्ञान उपजेगा अथवा न उपजेगा ॥ अरु जिसनें एक भूमिका पाइ होवे के दो भूमिका पाइ होवे अथवा तीसरी भूमिका पाइ होवे ओर शरीर तिसका छूटिगया अरु आत्मापदका साक्षात्कार न भया ॥ अरु स्वर्गादिकी उसकों कामनाभी नही ॥ तब उह किस गतीकों प्राप्त होता हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी उह पुरुष जो विषयी हे तिनकों ज्ञान प्राप्त होणा कठिन हे ॥ उह वासना करीकें घटीजंत्रकी न्यांइं फिरते हे ॥ कबहुं स्वर्ग कबहुं पाताल जाते हे अरु दुःख पावते हे॥ कदाचित् अकस्मात् काकतालीन्यायकी न्यांइं उसकों संतका संग अरु सतशास्त्रोंका श्रवण करणा यह वासना आय फुरती हे अरु जेसें मरुथलविषे वल्ली लागणी कठिन हे तेसें जिस पुरुषकों आत्माका प्रमाद हे अरु भोगकी भावना हे तिसकों ज्ञान प्राप्त होणा कठिन हे परंतु जब अकस्मात् संतके संगतें तिसकों वैराग उपजता हे ॥ अरु बुद्धि उसकी निवृत्तिकी उर आती हे ॥ तब भूमिकाद्वारा ज्ञान तिसकों प्राप्त होता हे तब मुक्त होता हे ॥ हे रामजी यह भावना अकस्मात् उपजेबिना जोनीविषे भ्रमता हे ॥ अरु जिसकों एक अथवा दो भूमिका प्राप्त भइ हे अरु शरीर तिसका छूटिगया तब अवर जन्म पायकरी ज्ञानकों प्राप्त होता हे ॥ पीछला संस्कार जागि आता हे ॥ अरु दिन दिन बढता जाता हे ॥ जेसें बीजतें वृक्षका अंकुर होता हे ॥ बहुरी टास फूल फल करी बढता जाता हे ॥ तेसें उसकों अभ्यासका संस्कार बढता जाता हे अरु ज्ञान प्राप्त होता हे ॥ जेसें पहिलवान खेलता हे अरु रात्रकों सोय जाता हे बहुरी दिन हुए उठता हे ॥ तब पहिलवानहीका अभ्यास आय फुरता हे जेसें कोउ मार्ग चलता चलता सोय जावे अरु जागिकरी चलणे लागे ॥ तेसें उह फेरी पूर्वले अभ्यासकों लागता हे ॥ हे रामजी जिसकों भावना होती हे जो मेरेतांइ विशेषता प्राप्त होवे तिसकरी जन्मकों पावता हे ब्रह्मा आदि चीटीपर्यंत जिसकों विशेष होणेकी कामना हे सो जन्म पावता हे ॥ अरु ज्ञानीकों भोगकी इछा अरु विशेष प्राप्त होणेकी इछा नही होती ॥ जिनकों भोगकी इछा होती हे सो भोगकरि आपकों विशेष जानता हे अरु अनिष्टके निवृत्तिकी इछा करते हे अरु ज्ञानीकों वासना कोउ नही होती जो यह विशेषता मेरेतांइं प्राप्त होवे ॥ इसीतें बहुरी जन्म नही पावता ॥ जेसें भूना बीज नहि उगता तेसें वासनातें रहित ज्ञानी जन्म नहि पावता ॥ हे रामजी जन्मका कारण वासना हे॥जेसी जेसी वासना होती हे तेसी अवस्थाकों प्राप्त होता हे ॥ सो नाना प्रकारकी वासना हे ॥ जब शरीर छूटणेका समा आवता हे तब जो वासना दृढ होती हें जिसका सर्वदा अभ्यास होता हें ॥ अंतकालविषे उह सर्व वासना दिखाइ देती हे ॥ पाठकी अरु तपकी कर्मकी देवताकी इत्यादिक वासना आगें आनि स्थित होती हे ॥ तिस समे सबकों मर्दन करीकें उही भासती हे ॥ हे रामजी तिस समे अयगत पदार्थ होते हे सोभी नही भासते ॥ पांचो इंद्रियके विषय विद्यमान होवे तोभी नही भासते उही पदार्थ भासता हे जिसका दृढ अभ्यास किया होता हे वासना तो अनेक होती हे परंतु जेसी वासना दृढ होती हे तिसीके अनुसार शरीर धारता हे ॥ जब देह छूटता हे तब मुहूर्त पर्यंत जडता रहती हे सुषुप्तिकी न्यांइ ॥ तिसके उप्रांत चैतनता होती हे तब वासनाकें अनुसार शरीरकों देखता हे अरु जानता हे यह मेरा शरीर हे में उत्पत्ति हुआ हों ॥ एक इसी प्रकार होते हे अरु एक अेसें होते हे जो तहां तिसी क्षणविषे जुगका अनुभव करते हे ॥ बहुरी एक अेसें होते हे जो चिरकाल पर्यंत जडि रहते हे ॥ चिरकालतें उनकों चैतनता फुरती हे ॥ तिसके अनुसार संसार भ्रमकों देखते हे ॥ अरु एक सं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्कार वान होते हैं ॥ तिनकों सीघ्रही एक क्षणतें चैतनता होती है अरु जानता है जो मैं उस ठौरतें मुआ हौं अरु इस ठौर आय जन्म्या हौं ॥ यह मेरी माता है यह मेरा पिता है यह मेरा कुल है ॥ इस प्रकार एक मुहूर्त विषे जागिकरी देखता है ॥ अरु बडे कुलकों देखता है इसी प्रकार परलोककों देखता है अरु जम राजाके दूतकों देखता है अरु जानता है यह मेरे तांइं लिये जाते है ॥ अरु देखता है जो मेरे पुत्रोंनें मेरे पिंड कीये है तिनकरी मेरा शरीर हुआ है अरु मरेतांइं दूत लेचले हैं ॥ तब आगें धर्म राजाको देखता है तिसके निकट जाय खडा होता है अरु पुण्य पाप दोनों मूरती धारी करी इसके आगें आनि स्थित होते हैं ॥ तब धर्मराज अंतरजामीसों पूछता है जो इसनें क्या कर्म किये है ॥ जब पुण्यवान होता है तब स्वर्ग भोग भोगाय करी बहुरी जोनी विषे डारि देते है ॥ जो पापी होता है तो नर्क विषे डारी देते है इस प्रकार जनमोंकों धारता है ॥ सर्पकी जोनिमें कहता है में सर्प हों बलद बांनर तीतर मछ बगला गरधव वली वृछ इत्यादिक जोनीकों पावता है अरु जानता है मैं यही हों ॥ अकस्मात् काकताली जोगकी न्यांइं कदाचित् मनुष्य शरीर पावता है अरु माताके गर्भविषे जानता है जो इहां में जन्म लिया है ॥ यह मेरी माता है में पितातें उत्पत्ति भया हों यह मेरा कुल है बहुरी बाहिर निकसता है बालक होता है अरु जानता है जो में बालक हौं बहुरी जोबन अवस्था होती है तब जानता है में ज्वान हौं ॥ बहुरी वृद्ध होता है तब जानता है में वृद्ध हौं ॥ इस प्रकार कालकों बीतावता है बहुरी मृत्युकों पावता है ॥ अरु सर्प तोता तीतर बांनर मछ कछ वृछ पशु पंछी देवता इत्यादिक जन्म धरता है ॥ है रामजी संसारविषें घटीयंत्रकी न्यांइं फिरता है कबहु उर्धकों क बहु अधकों जाता है स्वरूपके प्रमादकरी दुःख पावता है ॥ हे रामजी एता बिस्तार जो तुमकों कहा है सो वन्या कछू नही केवल अद्वैत आत्मा है चित्तके संजोग करि एते भ्रमकों दे खता है ॥ वासना द्वारा विमानोंकों देखता है तहां आकासमें जाता है जेसें पवन गंधकों लेजाता है तेसें पुर्यष्टकाकों लेजाता है अरु शरीरकों देखता है ॥ हे रामजी आत्मातें इतर कछु नही परंतु चित्तके संजोगकरि एते भ्रमकों देखता है तातें चित्तकों स्थित करो तब भ्रम मिटि जावेगा अरु आत्म तत्व मात्रहि सेष रहेगा सो सुद्ध है अरु आनंदरूप है तिसविषे स्थित होउ॥

॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे विश्ववासना रूप वर्ननं नाम शताधिक चतुर्दशः सर्गः ॥ ११४ ॥ ॥ ७ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी पुर्व तुझकों प्रवृत्तिवालेका क्रम कहा है ॥ अब निवृतिका क्रम सुण ॥ जिसकों भूमिका प्राप्त भइ है अरु आत्मापद नही प्राप्त भया तिसके पाप तो सभ दग्ध होजाते है ॥ जब उसका शरीर छूटता है तब वासनाके अनुसार शून्याकार हुआ बहुरी अपणें साथ शरीर देखता है बहुरी बडे परलोककों देखता है तहां स्वर्गके सुख भोगता है विमान पर चढता है लोकपालके पुरोंविषे विचरता है ॥ जहां मंद मंद पवन चलता है सुंदर वृछोंकी सुगंध है पांचो इंद्रियांके रमणीय विषय है तिन स्थानोंविषे विचरता है ॥ देवताबिषे क्रीडा करता है भोगकों भोगीकरी संसारविषे उपजता है बहुरी भूमिका क्रमकों प्राप्त होता है जेसें मार्ग चलता कोउ सोए जावे जागिकरि बहुरी चलता है तेसें शरीर पाय करी बहुरी भूमिकाके क्रमकों प्राप्त होता है ॥ जेसी जेसी भावना दृढ होती है तेसें हो भासता है यह सभ जगत् संकल्प मात्र है संकलपके अनुसारहि भासता है वासनाके अनुसार परलोक भ्रम सुख दुःख देखता है तहांतें भोगीकरी बहुरी संसारविषे आनि पडता है ॥ इसीप्रकार संकलपकरी भटकता है ॥ जब आत्माकी उर आता है तब संसार भ्रम मिटि जाता है ॥ जबलग आत्माकी उर नही आता तब लग अपणे संकलपकरी संसारकों देख

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ता है ॥ जीव जीव प्रति अपणि अपणी सृष्टि भासती है देवता दैत भूमिलोक स्वर्ग सब संकल्पके रचे हुए है जैता कछू संसार भासता है ब्रह्मा विष्णु रुद्रतें आदि लेकरी सभ जगत् मनो मात्र है मनके संकल्पतें उदे हुआ है असतरूप है ॥ जेसें मनोराज गंधर्व नगर सुपन सृष्टि भमरूप हैं तेसें यह जगत् भमरूप है सब जीवकी अपणी अपणी सृष्टि है परसपर अदृष्ट है ॥ उसकी सृष्टि उह नही जाणता कहुं उदे होती भासती है कहुं लय होजाती है जेसें मुरख अवर देसकों जाता है तेसें देहकों त्यागकरि परलोक जाता है ॥ अरु स्वरूपविषे आणा जाणा अहं त्वं कल्पना कोंउ नही केवल सत्तामात्र अपणें आपविषे स्थित है जगत्भी उही है ॥ हे रामजी यह विश्व आत्मा स्वरूप है जेसें मणीका चमतकार होता है तेसें विश्व आत्माका चमत्कार है ॥ अरु जो कछू तेरे तांई भासता है सो आत्माहीहै आत्मा विना आभास नहि होता ॥ जेसें इखविषे मधुरता होती है अरु मिरचविषे तीक्ष्णता होती है ॥ तेसें आत्माविषे विश्व है जो कछू देखता है श्रवण करता है जो स्पर्श करे सुगंध लेवे सो सर्व आत्माहि जाण अथवा जो इनके जानणेवाला है अनुभव रूप तिसविषे स्थित होहु ॥ इंद्रियां अरु विषयकों त्याग करी अनुभव रूपविषे स्थित होहु ॥ हे रामजी यह विश्व संवित रूप है ॥ अरु संवितहि विश्वरूप है जब संवित बहिर्मुख हो करी रस लेती है ॥ तब जाग्रतकों देखती है अरु जब अंतर्मुख हो करी रस लेती है तब सुपन होता है ॥ जब शांत हो जाती है तब सुषुप्ति होती है संसारकों सत्य जाणी करी जो रस लेती है तब जाग्रत सुप्त अरु सुषुप्ति अवस्था होती है ॥ अरु जब संविततें रसकी सत्यता जाणी रहे तब तुरियापद होता है ॥ जो इसकों जानणा फुरता है यह पदार्थ है यह नही जब यह नष्ट होवे तब तुरियापद है ॥ हे रामजी यह विश्व फुरणे मात्र है जब फुरणा नष्ट होवे तब विश्व देखी नही जाती ॥ जैसें सुपनके देशकाल पदार्थ जागेतें मिथ्या होते है तेसें यह जाग्रत जगत्भी मिथ्या है ॥ अरु जीव जीव प्रति जो अपणी अपणी सृष्टि होती है तिसविषे आपभी कछू बनि पडता है ॥ तातें दुःखी होता है जब इस अहंकारकों त्याग करी अपणे स्वरूपविषे स्थित होवे तब विश्व कहुं नही ॥ ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे सृष्टि निर्वाणएकता प्रतिपादनं नाम शताधिकपंचदशःसर्गः ॥ ११५ ॥ ॥ॐ॥ ॥ ॐ॥ ॥ॐ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह सृष्टिका स्वरूप संकल्पमात्र है ॥अरु संकल्पभी आकाशरूप है आकाश अरु स्वर्गविषे कछू भेद नही ॥ जेसें पवन अरु स्पंदविषे भेद नही केसी सृष्टि है जो अनेक पदार्थ है परंतु परस्पर रोकती नही ॥ अरु वास्तवतें विश्वभी आत्माका चमत्कार है अरु आत्म रूप है॥जो आत्मरूप है तो राग किसविषे करिए अरु दोष किसविषे करियें चैतन धातुविषे कोटि ब्रह्मांड स्थित है ॥ अरु यह आश्चर्य है जो आत्मातें इतर हुआ कछू नही अरु भिन्न भिन्न संवेदन दृष्ट आती है ॥ अरु नाना प्रकारके पदार्थ भासतें है ॥ हे राम जी जीव जीव प्रति अपणी अपणी सृष्टि है एक सृष्टि अेसी है जो तिनका संकल्प एक दृष्ट आता है ॥ परंतु सृष्टि अपणी अपणी है ॥ अरु एक अेसें है जो भिन्न भिन्न है परंतु समान ता करिकें एकहि दृष्ट आती है ॥ जेसें जलकी बुंदां एकठी होतियां है जेसें धूडके कणके भिन भिन होते है परंतु एकहि धूड भासती है ॥ जेसें नदीविषे नदी पडती है तो एकहि जल हो जाता है तेसें समान अधिकरण करिकें एकहि भासते है एक एकके साथ मिलते है अरु नहीभी मिलते ॥ जेसें क्षीर समुद्रविषे घृत डारीयें तो नही मिलता तेसें एक संकल्प अेसें है जो अवर साथ नही मिलते ॥ जेसें एक सूर्यका प्रकाश होवे अरु एक दीपकका प्रकाश होवे अरु एक मणीका प्रकाश होवे ॥ तब उहां भिन भिन दृष्ट आते है अरु एक जेसे होते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे ॥ तेसें केइ सृष्टि एकहि भासतीयां हे ॥ अरु भिन भिन होतियां हे अरु केइ एकठी होतियां हे ॥ अरु भिन भिन दृष्ट आतीयां हे ॥ हे रामजी एती सृष्टि जो में तेरे तांइं कही हे सो
सब अधिष्ठानविषे फुरणे करिकें केइ कोटि उत्पति होती हे ॥ अरु केइ कोटी लीन हो जातियां हे ॥ जेसें जलविषे तरंग बुदबुदे उपजी करी लीन हो जाते हे ॥ तेसें सृष्टि उत्पत्ति अरु
लीन होतियां हे ॥ अधिष्ठान ज्योंका त्यों हे काहेतें जो तिसतें इतर कछू नही अरु ब्रह्म आत्मा आदिक जो सर्व हे सोभी फुरणेविषे हुएहे॥जबलग शब्द अर्थकी भावना हे तबलग भासते
हे जब भावना निवृत्त हुइ तब शब्द अर्थ कोउ नही भासेगा केवल शुद्ध चैतन मात्रहि सेष रहेगा ॥ बहुरी संसारका भाव किसी ठोर न होवेगा जेसें पवन जबलग चलता हे तबल
ग जाणता हे जो पवन हे ॥ अरु गंधभी पवन करीकें जाणती हे सुगंध आइ अथवा दुर्गंध आइ अरु जब पवन चलणेतें रहित होता हे तब नही भासता अरु गंधभी नही भासती॥ तेसें
जब फुरणा निवर्त्त हुआ तब संसार अरु संसारका अर्थ दोनों नही भासते॥अरु फुरणेविषे जीवजीव प्रति ज्यों ज्यों अपणी अपणी सृष्टी हे तिस सृष्टिविषे सत्ता समान ब्रह्म स्थित हे अरु सर्व
का अपणा आप हे द्वैत भावकों कदाचित् नही प्राप्त भया ॥ हे रामजी तातें अेसें जाण जो आकासभी आत्मा हे पृथ्वीभी आत्मा हे जलभी आत्मा हे अग्निआदिक सर्व पदार्थ आत्मा
हि हे अथवा अेसे जाण जो सर्व मिथ्या हे इनका साक्षीभूत सत ब्रह्महि अपणें आपविषे स्थित हें इतर कछू नही उसी ब्रह्मविषे अंसतें अनेक सुमेर अरु मंद्राचल आदिक स्थित हे ॥
अरु अंशांशी भावभी आत्माविषे स्थूलताके निमित्त कहे हे ॥ वास्तव नही जतावणे निमित्त कहे हे आत्मा एकरस हे ॥ हे रामजी एसा पदार्थ कोउ नही जो आत्मसत्ताविना होवे जि
सकों सत्य जाणता हें सोभी आत्मा हे अरु जिसकों असत्य जानता हे सोभी आत्मा हे ॥ आत्माविषे जेसें सत्यका फुरणा हे तेसें असत्यका फुरणा हे ॥ फुर्णा दोनोंका तुल्य हे जेसें
सुपनेंविषे एक सत्य जाणता हे एक असत्य जाणता हे ॥ तेसें जो इंद्रियांके विषय होते हे तिनकों सत जाणता हे अरु आकासके फूल ससेके सिंगकों असत कहता हे ॥ सो सर्व अ
नुभवकरी फुरे हे तातें अनुभवरूप हे ॥ अरु अेसा पदार्थ कोउ नही जो आत्माविषे असत नही जो कछू भासते हे सो सर्व फुरणेंविषे हुए हे सत्य क्या अरु असत्य क्या सभ मिथ्या
हे सुपनेके सत अरु असतकी न्यांइं हे जो अनुभव करिकें सिध हे सो सर्व सत्य हे ॥ अरु सत्य अनुभवतें इतर हे सो सभ असत्य हे ॥ हे रामजी गुणातीत परमात्म स्वरूपविषे स्थित हो
हु ॥हे रामजी भूत भविष्य वर्तमान तीनोंकालविषे ज्ञानवान पुरुष सम हे॥ अरु दसोदिसा आकास जल अग्नि आदिक पदार्थ तिसकों सर्व आत्माहि दृष्ट आता हे ॥ आत्मातें इतर कछू
नही भासता सूर्य चंद्रमा तारे सर्व आत्मा हे यह विस्व आकासरूप हे ॥ अरु सुध निर्मल हे ॥ आकासविषे आकास स्थित हे इतर कछु नही अरु जो तेरेतांइं इतर भासे सो मिथ्या जा
ण भमकरीकें सिद्ध हुआ हे सत कछु नही ॥ अरु जो परमार्थ करी देखे तो सर्व आत्मा हे ॥ इतिश्री यो०नि०प्र० विश्वआकास एकता प्रतिपादनं नाम शताधिक षोडशः सर्गः॥ ११६ ॥
॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह विश्व सुपन समान हे ॥ जेसें सुपनेकी सेना नाना प्रकार दिखती हे शस्त्र चलते हे इत्यादिक भासतें हे अरु आत्माविषे इनका रूप देखणा अरु मान
णा शब्द अर्थ कोउ नही जगततें रहित हे अरु जगत्रूप भान होता हे ॥ अहं त्वं मेरा तेरा जेता कछू भासता हे सो सभ सुपनवत् हें भमकरीकें सिद्धि हुआ हे सर्वका अधिष्टान हे
सो सत्य हे सर्व तिसीविषे कल्पित हे अरु जो अनुभव करी देखिये तो सर्व आत्मास्वरूप हे इतर देखिये तो कछू नही जेसें सुपनके देसकाल पदार्थ सभ अर्थाकारभी भासते तोभी मि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थ्या हे तेसें यह विश्वभ्रम करीकें फुरती हे ॥ उनकी अपेक्षा करी उह तुं हे उसकी अपेक्षा करी उह अहं हे वास्तवतें दोनों नही जो हे सो आत्माही हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् तुम कहा जो त्वं आदिक अहं पर्यंत अरु अहं आदिक त्वं पर्यंत सर्व सुप्त सेनाकी न्यांइं मिथ्या हे अरु अनुभव करी देखिये तो आत्मरूप हे हम सुपन सेनाविषे हे अथवा हमारा अहं आत्मा हे सो कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो अनात्म देहादिक विषे अहंभावना करणि में हों तो सुप्त सेनाके तुल हे ॥ अरु जो अधिष्ठान चिन्मात्र विषे दृश्यतें अरु अहंकारतें रहित अहंभावना करणी सो आत्मरूप हें ॥ हे रामजी तुं आत्मरूप हे अरु यह विश्व सतभी नही असतभी नही ॥ जो अधिष्ठान रूप करी देखिये सो आत्मरूप हे ॥ अरु जो अधिष्ठानतें रहित देखिये तो मिथ्या हे सो अधिष्ठान शुद्ध हे आनंदरूप हे चित्ततें रहित चिन्मात्र परम ब्रह्म हे तिसविषे अज्ञानकरी दृश्य दिखती हे ॥ जेसें असम्यक् दृष्टिकरीके सीपिविषे रूपाभासता हे ॥ तेसें आत्माविषे अज्ञानी दृश्य कल्पते हे ॥ हे रामजी दृश्य अविचारतें सिद्ध हे विचार कियेतें कछू वस्तु नही होती जिसके आश्रय कल्पित हे सो अधिष्ठान सत्य हे जेसें सीपीके जाणेतें रूपेकी बुद्धि जाती रहती हे तेसें आत्मा विचारतें विश्व बुद्धि जाती रहती हे जेसें समुद्रविषे पवन करी चक्र तरंग फुरते हे अरु प्रत्यक्ष भासते हे विचार कियेतें चक्र विषेभी जल बुद्धि होती हे तेसें आत्मरूपी समुद्रविषे मनके फुरणेकरी विश्वरूपी चक्र उठते हे ॥ विचार कियेतें तुझकों मनके फुरणेविषेभी आत्मरूप भासेगा ॥ विश्वरूपी चक्र न भासेंगे भ्रम निवृत्त हो जावेगा जो वस्तु फुरणेविषे उपजी हे सो अफुर करिकें निवृत्त हो जाती हे ॥ यह विश्व अज्ञानकरि उपजी हे अरु ज्ञानकरिकें लीन हो जावेंगी तातें विश्व भ्रममात्र जाण ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् तुम कहा जो ब्रह्मा रुद्र आदि अरु उत्पत्ति संघार करणे पर्यंत सभ विश्व भ्रममात्र हे ऐसें जानणेकरी क्या सिद्धि होता हे ॥ यह तो प्रत्यक्ष दुःखदायक भासती हे यों दिखती हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो कछू तुं देखता हे सो सर्व आत्मरूप हे इतर कछू नही सम्यक दृष्टि करिकें ॥ अरु असम्यक् दृष्टि करिकें विश्व हे तो दृष्टीका भेद हे सम्यक् असम्यक् देखणेका अधिष्ठान ज्योंकात्यों हे ॥ जेसें एक जेवरी पडी होवे अंधकारकी उपाधिकरी सर्प हो भासे अरु भयदायक होवे॥ जो प्रकास करी देखिए तो जेवरीहि भासती हे तेसें जिसनें आत्माकों जाण्या हे तिसकों दृश्यभी आत्मारूप हे॥ अज्ञानीकों विश्व भासती हे अरु दुःख पावता हे ॥ जेसें मूर्ख बालक अपणे पछावे विषे वैताल कल्पिकरी भयमान होता हे ॥ अपणे न जानणे करी दुःख पावता हे जो जाणे तो भय किस निमित्त पावे ॥ हे रामजी अपणेहि संकल्प करी आप बंधायमान होता हे ॥ जेसें घुराण कीट अपणे बेठणेका स्थान बनावती हे आपहि फसी मरती हे तेसें अनात्मविषे अहं प्रतीत करिकें आपहि दुःख पावता हे हे रामजी आपहि संसारी होता हे आपहि ब्रह्म होता हे ॥ जब दृश्यकी उर फुरता हे तब संसारी होता हे ॥ जब स्वरूपकी उर आता हे तब ब्रह्म आत्मा होता हे ॥ तातें जो तेरी इछा होवे सो करु जो संसारी होवणेकी इछा होवे तो संसारी होउ ॥ अरु जो ब्रह्म होणेकी इछा होवे तों ब्रह्म होउ ॥ अरु जो मेरेसों पुछे तो दृश्य अहंकारकों त्यागकरी आत्माविषे स्थित होउ विश्व भ्रममात्र हे वास्तव कछू नही ॥ यहि पुरुषार्थ हे जो संकल्प साथ संकल्पकों काटहू जब कालतें अंतरमुख हुआ तब ब्रह्महि भासेगा ॥ दृश्यकी कल्पना मिटि जावेगि काहेतें जो आगेभी नही ॥ हे रामजी जो सत वस्तु आत्मा हे अनेक जतन करीये तों नास नही होता अरु जो असत्य अनात्मा हे तिसके निमित्त जतन करीये तो सत नही होता ॥ जो सत वस्तू हे तिसका अभाव कदाचित् नही अरु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो असत हे तिसका भाव नही होता असत वस्तु तबलग भासती हे जबलग तिसकों भली प्रकार नही जाण्या ॥ जब विचार करी देखिये तब नाश होजाती हे ॥ अविद्यक पदार्थ विद्या करी नष्ट होजाता हे जेसें सुपनेंका सुमेर पर्वत सत्य होवे तो जाग्रतविषेभी भासे ॥ तातें हे नही जो जाग्रततें नष्ट होजाता हे ॥ तेसें यह संसार जो तुझकों भासता हे सो स्वरूप के ज्ञानतें नष्ट होजावेगा ॥ अरु जो हमतें पुछे तो हमकों आत्मातें इतर कछू नही भासता सर्व आत्माहि हे यहभी नही जो यह जीव अज्ञानी हे किसी प्रकार मोक्ष होवे ॥ न हमारे तांइं ज्ञान साथ प्रयोजन हे न मोक्ष होणेसाथ प्रयोजन हे ॥ काहेतें जो हमकों सर्व आत्माहि भासता हे ॥ हे रामजी जबलग चैतन हे तबलग मरता अरु जन्मभी पावता हे ॥ जब जड होता हे तब शांतिकों प्राप्त होता हे ॥ अरु मुक्त होता हे चैतन कहिये दृश्यकी उर फुरणा इसी करी जन्म मरणके बंधनमें आवता हे जब दृश्यके फुरणेतें जड होजावे तब मुक्त होवे ॥ इसका होणाहि दुःख हे न होणा मुक्ति हे ॥ अहंकारका होणा बंधन हे अहंकारका न होणा मुक्ति हे ॥ तातें पुरुष प्रयत्न यही हे जो अहंकारका त्याग करणा ॥ अरु चैतन ब्रह्म घन अपणें आपविषे स्थित होणा ॥ जिसकों संसारकी सत भावना हे तिसकों संसारही हे ब्रह्म नही ॥ अरु जिसकों ब्रह्म भावना हूइ हे तिसकों ब्रह्महि भासता हे ॥ हे रामजी जो पाताल जावें अथवा संपूर्ण पृथ्वीफिरे दशोदिसा फिरे आकासविषे देवताके स्थान फिरे॥तोउ सुखकों न पावेगा अरु आत्माका दर्शन न होवेगा काहेतें जो अनात्माविषे अहंकार कियेतें सुख नही अरु जो आत्मदर्शी होकरी देखे तो सर्व आत्माहि भासेगा ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे विश्व विलयोनाम शताधिकसप्तदशः सर्गः॥ ११७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह संसार संकल्पमात्र हे अरु तुछ हे ॥ पर्वत नदीयां देश काल सर्व भ्रमकरी सिद्ध हे जेसें सुपनेविषे पर्वत नदीयां देशकाल भासते हे ॥ निद्रा दोष करीके अरु हुआ कछू नही ॥ तेसें अज्ञान निद्राकरी यह संसार भासता हे ॥ हे रामजी जागीकरी देखे तो संसार हे नही इसका तरणा महा सुगम हे ॥ अरु सुमेरु पर्वतादिक जो भासते हे सो कमलकी न्यांइं कोमल हे ॥ जेसें कमलके मुदणेंविषे जतन कछू नही तेसें यह कोमल निवृत्त होते हे ॥ अरु आकार जो भासते हे भूत प्राणी सो इनकी स्थूल दृष्टि हे आकारकों देखी रहे हे ॥ जेसें पवनका चलणा जाण्या जाता हें अरु जब चलणेंतें रहित होता हे तब मूर्खकी गम नही जो निराकारकों जाणे ॥ तेसें भूत प्राणी आकारकों जानते हे इस विषे जो निराकार स्थित हे तिसकों नही जानते ॥ जेसें पवन चलता हे तोभी पवन हे जो ठहरता हे तोभी पवन हे ॥ तेसें विस्व फुरती हे सोभी आत्मा हे अफुरविषेभी उही हे तातें विस्वभी आत्मरूप हे इतर कछू नही जो सम्यक्दर्सी हे तिसकों फुरणें अफुरणें विषे आत्माहि भासता हे ॥ जेसें स्पंद निस्पंदरूप पवनही हे तेसें ज्ञानीकों सर्वदा एकरस हे ॥ अरु अज्ञानीकों द्वैत भासता हे जेसें वृक्षविषे पिसाच बुद्धी बालक करता हे तेसें आत्माविषे जगत् बुद्धि अज्ञानी करता हे जेसें नेत्र दोषकरी आकासविषे तरवरे भासते हे ॥ तेसें मनकें फुरणेंकरी जगत् भासता हे ॥ हे रामजी जेसें वायुका रूप कदाचित् नही तेसें जगत्कारूप अत्यंत अभाव हे जेसें मरुथलविषे जलका अभाव हे तेसें आत्माविषे जगतका अभाव हे ॥ हे रामजी सुमेर पर्वत आकास पाताल देवता जक्ष राक्षस इत्यादिक ऐसें अनेक ब्रह्मांड एकठे करी विचाररूपी कांटेविषे पाए ॥ अरु पाछे अर्धरती पाइ तोभी पुरी नही होते ॥ काहेतें जो हे नही अविचारसिद्ध हे ॥ सुपनेंके पर्वत जागे हुए चावल प्रमाण नही रहतें काहेतें जो हे नही भममात्र हे ॥ हे रामजी इस संसारकी भावना मूर्ख करते हे ॥ ऐसें जो अनात्मदर्शी पु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रुष हे तिनकों अेसें जाण ॥ जेसें लुहारकी खलोतें पवन निकसता हे ॥ तेसें तिन पुरुषके स्वास वृथा आते जाते हे जेसें आकासविषे अंधेरी व्यर्थ उठती हे ॥ तेसें तिन पुरुषका जीवणा अरु चेष्टा सर्व व्यर्थ हे ॥ अरु यह आत्मघाती हे अपणा आप नास करते हे उनकी चेष्टा दुःखके निमित्त हे ॥ हे रामजी यह आपणे आधीन हे जो दृश्यकी उर होता हे तो संसार हो ता हे अरु जो अंतरमुख होता हे तो सर्व आत्माहि होता हे ॥ अरु यह संसार मिथ्या हे न सत कहिये न असत कहिये भममात्र करी हुआ हे ॥ पूर्वकाल भविषत काल वर्तमान काल विषे बंध होता हे अरु अग्नि सीतल होवे ॥ अरु आकाश पातालविषे होवे अरु पाताल आकासविषे होता हे॥अरु तारे पृथ्वी उपर हे पृथ्वी आकास उपरभी होती हे ॥ अरु बादरबिना मेघ वरषा कर्ता हे ॥ अेसें कौतुक मैं देखताहों आकासविषे हल फिरते देखता हों हे रामजी इसविषे आश्चर्य कछू नही मन करीकें सभ कछू होता हैं॥जेसा मनोराज किया तेसा आगें स्थित होता हे अरु सिद्धि होती हे पर्वत भिक्षा मागते फिरते हे पुरविषे भिक्षुककी न्यांइं अरु ब्रह्मांड उडते फिरते हे बालुतें तेल निकसता हे अरु मृतक जुद्ध करते हे ॥ मृग गाते हे अरु बन नृत्य करते हे ॥ हे रामजी मनोराज करिके सभ कछू वणता हे चंद्रमाकी किरणा साथ पर्वत भस्म होतेभी मानते हे इसविषेक्या आश्चर्य हे॥तेसें यह संसारभी मनोराज हे अरु तीव्र संवेग हे तातें इसकों सत मानता हे ॥ अरु आगें जो बालुतें तेलादिक कहे तिनकों सतनहि जानता ॥ काहेतें जो उसविषे मृदु हे अरु हे दोनों तुल्य ॥ हे रामजी जिनकों सत अरु असत्त कहता हे सो आत्माविषे दोनों नही ॥ अरु यह जो तेरे तांइ पदार्थ सत भासते हे तो अग्नि आदिक सीतलभी सत्य हे ॥ अरु जो यह मिथ्या भासते हे तो उहभी मिथ्या हें तीव्र अरु मृदु संवेगका भेद हे तीव्र संवेग जब दूर हुआ तब सब मिथ्या मानते हे ॥ जेसें सुपनेतें जाग्या तब सुपनकों मिथ्या कहता हे अरु जाग्रतकों सत्त कहता हे दोनों मनोराज हे ॥ हे रामजी जेते कछू आकार दृष्ट आवते हे सो सभ मिथ्या जाण ॥ न तुं हे न में हों न यह जगत् हे परमार्थ सत्ता ज्योंकीत्यों हे तिसविषे अहं त्वंकाउत्थान कोउ नही केवल शां तरूप हे ॥ आकासरूप अरु निराकास रूप हे जिसविषे द्वैत कछू नही केवल अपणे आपविषे स्थित हे जेसें बालक मृत्तिकाके हस्ती घोडे मनुष्य बनावता हे अरु नाम कल्पता हे यह राजा हे यह हस्ती हे यह घोडा हे सो मृत्तिकातें इतर कछू नही ॥ अरु बालकके मनविषे उनके नाम भिन्न भिन्न दृढ होते हैं ॥ तेसें मनरूपी बालक नाना प्रकारकी संज्ञा कल्पता हे ॥ अरु आत्मातें इतर कछू नही तातें भय किसका करता हे तुं निरभय होउ तेरा स्वरूप सुद्ध हे अरु निरभय हे अविद्याके कारण कार्यतें रहित हे तिसविषे स्थित होउ ॥ यह संसार तेरे फुरणेविषे हुआ हे आत्मा न सत्य कहियें न असत्यकहिये न जड कहिये न चैतन कहिये न प्रकास हे न तम हे न शून्य हे न अशून्य हे अरु सास्त्रनें जो विभाग कहे हे यह जड हे चैतन हे सो इस जीवके जगावणे निमित्त कहे हे आत्माविषे वास्तव संज्ञा कोउ नही केवल आत्मत्वमात्र हे ॥ तातें दृश्यकी कलना त्यागकरी आत्मविषे स्थित होउ ॥ ब्रह्मातें आदि स्थावर पर्यंत सर्व कलनामात्र हे ॥ इसविषे क्या आस्था करणी संसारके भाव दोनों तुल्य हे ॥ फुरणा जेसा भावका हे तेसा अभावका हे स्वरूपविषे दोनोंकी तुल्यता हे अरु व्यवहार कालविषे जेसा हे तेसाही हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे विश्वप्रणाम वर्णनं नाम शताधिकअष्टादशः सर्गः ॥ ११८ ॥ ॥ ७ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् भूमिकाका प्रसंग इहां चल्याथा तिसविषे सार तुम कहा सो में जाण्या ॥ अब भूमिकाका विस्तार कहो अरु जोगीका सरीर जब छूटता हे अरु स्वर्गके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भोगकों भोगीकरी गिरता हे तब फिरी उसकी क्या अवस्था होती हे सो कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जिस जोगीकों भोगकी वांछा होती हे ॥ तब स्वर्गकों प्राप्त होता हे अरु
भोगकों भोगता हे ॥ जब उसकों अवरभी भोगणेकी इछा होती हे ॥ तब पवित्र स्थान अरु धनवानके गृहविषे आय जन्म लेता हे मध मंडल मनुष लोकविषे प्राप्त होता हे ॥ जो भो
गकी वांछा तिनकों अवर नही होती तों ज्ञानवानके गृहविषे जन्म लेता हे ॥ केते काल उप्रांत तिसकों पिछला संस्कार आय फुरता हे ॥ तिस सुमरन करिकें आत्माकी उर आगें होता
जाता हे॥जेसें कोउ पुरुष लिखता हुआ सोय जाता हे जब जागता हे तब उस लिखेकों देखीकरी बहुरी आगें लिखता हे तेसें उह जोगी पूर्वकें अभ्यासकों पायकरी दिन दिन बढावता
जाता हे अरु अज्ञानका संग नही करता जो भोगके सन्मुख हे ॥ अरु आत्ममार्गतें बहिर्मुख हे अरु जो चुगली करणेंवाले तिनका संग नही करता सर्व अवगुण तिसकों त्याग जाते
हे ॥ दंभ गर्व अरु राग दोष भोगकी तृष्णा यह सुभाविक तिसकें छूटि जातें हे ॥ अरु सांतिकों प्राप्त होता हे कोमलता दयातें आदि सुभ गुण तिसकों सुभाविक आय प्राप्त होते हे ॥
हे रामजी इस निश्चयकों पायकरी वर्न आश्रमके धर्म जथासास्त्र करता हुआ संसार समुद्रके पारकों निकट जाय प्राप्त होता हे पार नहो भया यह भेद हे सो तीसरी भूमिका हे व
हुरी मोहकों नही प्राप्त होता ॥ जेसें चंद्रमाकि किरणां कदाचित् तपतकों नही प्राप्त होतियां ॥ तेसें तीसरी भूमिकावाला संसाररूपी गरतविषे नही गिरता ॥ हे रामजी यह सप्तभूमिका
ब्रह्मरूप हे एताहि भेद हे जो तीन भूमिका जाग्रत अवस्था हे ॥ चतुर्थ स्वप्न अरु पंचम सुषुप्ति हे ॥ षष्ठ तुरीया सप्तम तुरीयातीत हे ॥ हे रामजी प्रथम तीन भूमिकाविषे संसारकी सत्य
ता भासती हे ॥ तातें जाग्रत कहीहे अरु अवर चारोंविषें संसारका अभाव हे तातें जाग्रततें विलक्षण हे जाग्रतविषे घट पट आदिक सत भासते हे॥ घट घटही हे पट पटही हे अन्यथा
नही ॥ अपणा अपणा कार्य सिद्धि करते हे ॥ तातें अपणे कालविषे ज्योंकेत्यों हे इसी प्रकार सर्व पदार्थ हे स्थावर जंगमकों जानता हे नामरूप करी ग्रहण करता हे ॥ अरु रिदेविषे
राग दोष नही धारता जो विचार करीकें तुछ जाणे हे ॥ सो संसारका अत्यंत अभाव नही जाण्या अरु ब्रह्म स्वरूपभी नही जानता ॥ काहेतें जो तिसकों स्वरूपका साक्षात्कार नही भ
या जब स्वरूपकों जाणे तब संसारका अत्यंत अभाव हो जावे इन तीनों भूमिका करी संसारकी तुछता होती हे नष्टता नही होती ॥ इनकों पाय करी जब शरीर छुटता हे ॥
तब अवर जन्मविषे उसकों ज्ञान प्राप्त होता हे ॥ अरु दिन दिनविषे ज्ञान परायण होता हे ॥ जब दृढ बुद्धि हुइ तब ज्ञान उपजता हे ॥ जेसें बीजके प्रथम अंकुर होता हे बहुरी
टास फूल फल निकसते हे ॥ तेसें प्रथम भूमिका ज्ञानका बीज हे दुसरी अंकुर हे तिसरी टास हे ॥ चतुर्थ ज्ञानकी प्राप्ति होती हे सो फल हे ॥ प्रथम तीन भूमिकावाला
धर्मात्मा होता हे पुरुषोविषे श्रेष्ठ हे तिसका लक्षण यह जो निरहंकार अरु असंगी धीर्य होता हे ॥ जिसकी बुद्धितें विषयकी तृष्णा निवर्त भइ हे ॥ अरु आत्मपदकी इछा हे सो पुरुष
श्रेष्ठ कहाता हे ॥ अरु प्रकृत आचारविषे जथासास्त्र विचरता हे ॥ सास्त्र मार्गतें उल्लंघित कदाचित् नही बर्तता ॥ सास्त्रमार्गकी मर्यादा साथ अपणे प्रकृत आचारविषे विचरता सो पुरुष
श्रेष्ठ हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् पाछें तुमनें कहा जो जब उह पुरुष शरीर छोडता हे तब एक मुहूर्तविषे उसकों जुग बितीत होता हे जन्मतें आदि मृत्युपर्यंत जेसी किसीकों भावना
होती हे तेसा आगें भासता हे सो एक मुहूर्तविषे जुग केसें भासता हे यह कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह जगत् जो तीनों काल भासता हे सो ब्रह्मस्वरूप हे इतर कछू नही भा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सता समानही हे ॥ जेसें इक्षुविषे मधुरता हे तेसें ब्रह्मविषे जगत् हे ॥ जेसें तिलोंविषे तेल हे अरु मरचविषे तीक्ष्णता हे तेसें आत्माविषे जगत् हे जेसें तिलोंविषे तेल होता हे ॥ तेसें ब्रह्मा
विषे जगत कछु सत कछु असत, कछु जड, कछु चैतन कछु सुभ, कछु असुभ, कछु नरक, कछु मृतक, कछु जीवत; ब्रह्माआदिकाष्ठ पर्यंत भाव अभावरूप होता हे सो सत असततें विलक्षण
हें आत्मसत्तातें सर्व सत्य हे अरु भिनकरी देखिये तो असत्य हे ॥ हे रामजी जिनकों सत्य असत्य जाणताहे जो पृथ्वी आदिक पदार्थ सत्य भासताहे अरु आकासके फूलादिक असत्य
भासते हे सो दोनों तुल्य हे जो विद्यमान पदार्थ सत्य मानिए तो आकासके फूलभी सत मानिये जेसें सुपनें विषे केइ पदार्थ सत भासते हे केइ असत भासते हे॥तेसें जाग्रतविषे भासते हे
फुरणा दोनोंका समान हे जेसें सत्य पदार्थोंका फूरणा हुआ तेसा असतका फूर्णा हुआ फुरणेतें रहित सत असत दोनोंका अभाव होजाता हे तातें यह विश्वभ्रम करीके सिद्ध हुइ हे॥जेसें
जलविषे पवन करीके चक्र आवर्त उठते हे तेसें आत्माविषे फुरणे करिके संसार भासता हे इसकी भावना त्यागकरी स्वरूपविषे स्थित होउ ॥ अरु पाछें तुजने प्रश्न किया जो एक मु
हूर्तविषे जुग केसें भासता हे तिसका उत्तर सुण जेसें किसी पुरुषकों सुपना आताहे तो एक क्षणविषें बडा काल वीत्या भासता हे अवरका अवर भासताहे आश्चर्य तो कछू नहि मोहतें
सभ्र कछू उत्पत्ति होताहे भ्रम करिकें दृष्ट आता हे ॥ हे रामजी पुरुष सोया हे तो एक आपहि होताहे ॥ तिसविषे नाना प्रकारका जगत् भ्रम करिके भासताहे ॥ तेसें स्वरूपके प्रमादक
री केइ भ्रम देखताहे स्वरूपके जाणेविनां भ्रमका अंत नहि होता तातें तुं अवर प्रश्न किस निमित्त करताहे एक चित्तकों स्थिर करि देख ॥ न कोउ संसार भासेगा न कोउ जन्म मृ
त्यु भासेगा ॥ न कोउ बंध मोक्ष भासेगा केवल आत्माहि भासेगा ॥ जब संकल्प फुरता हे तब आपकों बंध जानता हे संकलपतें रहित मुक्त जानता हे सो अविद्या करी बंध जानता
हे विद्याकरी मुक्त जानता हे अरु आत्मा स्वरूप ज्योंकात्यों हे ॥ न बंध हे न मुक्त हे न विद्या हे न अविद्या हे केवल शांतरूप हे तातें सर्वदा सर्व प्रकार सर्व उरतें ब्रह्मही हे दूसरा
कछु नही ॥ हे रामजी जब स्वरूपकी भावना हुइ तब संसारकी भावना जाती रहती हे यह सर्वशब्द कलनाविषे हे यह पदार्थ हे यह नही आत्माविषे कोउ नही जेसें पवन चलणें
ठहरणेंविषे एकहि हे तेसें विस्व चित्तका चमत्कार हे ब्रह्मादि चीटि पर्यंत ब्रह्मसत्ताहि अपणें आपविषे स्थित हे अरु आत्माहिके आश्रय सर्व शब्द फुरते हे आत्मा फुरणें अफुरणे विषे
सम हे ॥ काहेतें जो दूसरा कोउ नही हे रामजी जो ब्रह्मसत्ताही हे यह प्रश्न क्या हे ॥ आकास क्या हे पृथ्वी क्या हे में क्या हों यह जगत् क्या हे यह प्रश्न बणतेहि नही एक मन
कों स्थिर करी देख ॥ जो ब्रह्मा आदि चीटी पर्यंत कछूभी पदार्थ भासे तो प्रश्न करीये तातें यह पदार्थ भ्रम करिकें भासते हे ॥ जेसें दूसरा चंद्रमा भासता हे तेसें जगत् भ्रमकरीकें
भासता हे ॥ रूप अवलोक मनस्कार इनके शब्दकलनाविषे फुरे हे ॥ रूप कहिये दृश्य, अवलोक कहिये इंद्रियां, मनस्कार कहिये मनका फुरणा, सो सर्व मिथ्या हे आत्माविषे कोउ
नही ॥ हे रामजी अकास आदिक जो पदार्थ हे सो भावनाविषे स्थित हुए हे ॥ जेसी भावना करती हे तेसें पदार्थ सिद्ध होता हे अरु भासता हे ॥ जब संसारकी भावना उठी जावे
तब पदार्थ कोउ न भासे ॥ हे रामजी सुषुप्तिविषेभी इसका अभाव होजाता हे तो तुरियाविषे केसें भान होवे जब स्वरूपतें गिरता हे तब इसकों संसार भासता हे अरु संसारविषे वास
ना करीके घटीजंत्रकी न्यांइं फिरता हे प्रमादकरिकें अबलग वहता जाता हे ॥ प्रमाद कहियें स्वरूपतें उतरी करी अनात्मविषे अभिमान करणा जो में हों सो अज्ञान हे तिस करिके दुः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ख पावता हे ॥ जब अज्ञान नष्ट होवे तब संसारके शब्द अर्थका अभाव हो जावे अहंकारतें संसार होता हे संसारका बीज अहंकार हे अहंकार कहियें अनात्मा विषे आत्म अभिमा न करणा ॥ हे रामजी आत्मा सुद्ध हे अहंके उत्थानतें रहित हे केवल शांतरूप हे अरु विश्वभी उहिरूप हे इसकी भावनाविषे दुःख हे यह संवित शक्ति आत्माके आश्रय फुरती हे ॥ जेसें तेलकी बुंद जलविषे डारिये तो चक्रकी न्यांइं फिरती हे ॥ तेसें संवेदन शक्ति आत्माके आश्रित फुरती हे अरु ब्रह्म एकत्वरूप हे तिसका सुभाव अेसें हे जेसें मोरका अंडा अरु तीसका वीर्य एकरूप हे ॥ अपणे सुभाव करीके वीर्यहि नाना प्रकारके रंगकों धारता हे तोभी मोरतें इतर कछू नही ॥ तेसें आत्माके संवेदन सुभाव करीकें नाना प्रकारकी विश्व भास ती हे ॥ परंतु आत्मातें इतर कछू नही आत्मारूप हे सम्यक् दर्शीकों नाना प्रकारविषे एक आत्माहि भासता हे ॥ अरु अज्ञानीकों नाना प्रकारका जगत् भासता हे ॥ हे रामजी ब्रह्म रूपी एक सिला हे तिसविषे त्रिलोकी रूपी अनेक पूतलियां कल्पित हे ॥ जेसें एक सिलाविषे खुरपी पूतलियां कल्पता हे ॥ जो इसविषे एती पूतलीयां हे ॥ सो उसके चित्तविषे हे जो सिलाविषे हुआ कछू नही तेसें आत्मारूपी सिलाविषे चित्तरूपी खुरपी नाना प्रकारके पदार्थ रूपी पूतलियां कल्पता हे सो सर्व आत्मरूप हे तातें पदार्थकी भावना त्यागकरी आत्माविषे स्थित होऊ अरु यह संसारभी निर्वाच्य हे ॥ काहेतें जो ब्रह्मही हे ब्रह्मतें इतर कछू नही न कोउ उपजता हे न कोउ बिनसता हे कदाचित्भी ज्योंकात्यों आत्माहि स्थित हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे जगत्अभाव प्रतिपादनं नाम शताधिकैकोनविंशतितमः सर्गः ॥११९॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् इस संसारका बीज अहंकार हुआ इसका पिता अहंकार हे ॥ तो मिथ्या संसार अविद्यमान जो विद्यमान भासता हे सो भमरूप हुआ जो भ्रमरूप हे तो लोक शास्त्र श्रुति स्मृति कहते हे जो इसका शरीर पिंड करीके होता हे जो पिंड करी होता हे तो तुम केसें भ्रम कहते हो ॥ अरु जो ब्रह्म हे तो लोक शास्त्र श्रुति स्मृति क्यों पिंड करी कहते हे ॥ इस मेरे संसेकों निवर्त करो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी मेरा कहणा सत हे तेसेंही हे ॥ अरु ब्रह्मविषे ब्रह्मतत्व सुभाव हे ॥ अरु जगत्विषे जगत्का लक्षणभी उही हे ॥ हे रामजी आदि जो किंचन हुआ हे चित्त शक्ति फुरी हे सो ब्रह्मरूप हुआ हे तिसविषे पदार्थका मनोराज हुआ हे ॥ यह आकास हे यह पवन आदी हे यह कर्तव्य हे यह अकर्तव्य यह सत्य हे यह झूट हे इत्यादि करी जबलग मनोराज हे तबलग सर्व मर्यादा एसेंहि हे बहुरी ब्रह्माविषे अेसें हुआ जो जगत्की मर्यादाकें निमित्त वेद कहता हे जो यह पदार्थ सुभ हे यह असुभ हे ॥ हे रामजी आत्माविषे द्वैत कछू नही मायारूप जगत्विषे मर्यादा हे जो न होवे तो अध उर्ध नीच उंच कवण कहे यह मर्यादाभी वेदविषे नेति निश्चय हुआ हे जो यह शुभ कर्म हे इनके कियेतें स्वर्ग सुख भोगते हे अरु यह असुभ कर्म हे इनके कियेतें नर्क दुःख भोगते हे ॥ हे रामजी जेसें वेदविषे निश्चय किया हे तेसें यह पुरुष अपणी वासनाके अनुसार भोगता हे ॥ हे रामजी यह चित्त शक्ति नेति होकरी ब्रह्मादिक विषे फुरी हे परंतु उनकों सदा स्वरूप विषे निश्चय हे तातें उह बंधायमान नही होते ॥ अरु ब्रह्मा विष्णु रुद्र नें यह वेदमाला धारी हे ॥ जो जेसा कोउ कर्म करे तेसा फल देते हे यह वेद सर्वकी नेती हे॥ हे रामजी जिन पुरुषकों संसारकी सतता दृढ भइ हें सो जेसा कर्म सुभ अथवा असुभ कर ते हे तेसे शरीरकों धारते हे ॥ इसविषे संशय नही जो शास्त्र मर्यादातें उल्लंघित वरतते हे अपणी इछा करी सो शरीर त्यागकरी कोउकाल मूर्छीत होजाते हे मुहूर्तविषे जागीकरी बडे नर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कौंकों चले जाते हैं आत्मा ज्ञान बिना अरु जिनकों शुन्यभावना भई हे जो आगें नर्क स्वर्ग कोउ नही ॥ लोक परलोककें भयकों त्यागकरी शास्त्र वास्त्र वरतते हे तो मरीकरी पंथरे वृछादिक जड जोनीकों पावते हे ॥ चिरकालतें उनकी वासना प्रणमती हे फेरी दुःख भागी होते हे ॥ अरु जिनकों आत्मभावना हुइ हे संसारकी भावना निवर्त्त भइ हे तो शास्त्र विहित करे अथवा अविहित करे तिनकों बंधन कोउ नही॥ हे रामजी चित्तरूपी भूमि हे इसविषे निश्चयरूपी जेसा बीज बोता हे तेसाहि काल करी उगवता हे ॥ यह निःसंशय हे तातें तुम आत्मभावना रूपी बीज बोहु जो सर्व आत्मा हे एसी भावना करहु तब सीद्धही आत्मा भासेगा ॥ अरु जिनकों संसारका निश्चय हुआ हे तिनकों संसार हे ॥ हे रामजी जो पुरुष धर्मात्मा हे तिनकों उसी वासनाके अनुसार भासता हे सो धर्मात्माभी दो प्रकारके हे एक सकामी एक निष्कामी जो धर्म करते हे अरु पापरूपी कामना सहित हे ॥ तो स्वर्गभोग भोगी करी बहुरी गिरते हे अरु जो निष्काम हे इश्वरार्पण कर्म कर्ते हे तिनका अंतःकरण शुद्ध होता हे बहुरी ज्ञानकी प्राप्ति होती हे यहभी संसारविषे मर्यादा हे जेसा किसीकों निश्चय होता हे तेसाहि संसारकों देखता हे पिंड करिकेंभी शरीर होता हे काहेतें जो यहभी आदिनेतिविषे निश्चय हुआ हे सो जेसें आदी नेतिविषे निश्चय हुआ हे तेसें होता हे जो पवन हे सो पवनही हे जो अग्नी हे सो अग्निही हे इसी प्रकार कल्प पर्यंत जेसें मनोराज हुआ हे तेसेंहि स्थित हे जेसें जल नीचेंहीकों जाता हे उंचे नही जाता तेसें जो आदि किंचनविषे निश्चय हुआ हे कल्प पर्यंत सोइ हे ॥ हे रामजी जगत् व्यवहारविषे तो अेसें हे अरु परमार्थतें दूसरा कछु हुआ नही ॥ इस जीवनें आकाशविषे मिथ्या देह रची हे ॥ परमार्थतें केवल निराकार अद्वैत आत्मा हे शरीर इसके साथ हे नही तातें जगत् केसें होवे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे पिंड निरने नाम शताधिकविंशतितमः सर्गः ॥ १२० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी तेरे प्रश्न उपर एक इतिहास हे बृहस्पत्ति अरु वलराजाका सो श्रवण कर॥ जब छ कल्प वितीत हुएथे दूसरे परार्धके तिस दिनके जुगविषे राजा बल हो तभया सो केसा था प्राक्रमकी मूरतथा तिस राजा वलनें संपूर्ण दैतों अरु राखसोंकों जीति करी अपणे वस कीया अपणो आज्ञा तिन पर चलाइ अरु राजा हुआ अरु इंद्रकोंभि जीति करी आपणे वसकिया पुरन ऐश्वर्य तिसका एक नगरकी न्यांइं ले लियाथा ॥ देवता किंनरपर तिसकी आग्या चली अरु भूलोकभी लिया जब सभकों ले रहा तब धर्म आचारकौं ग्रहण किया जेसें धर्मात्मका आचार हे सो ग्रहण किया एक समें सर्व सभा बेठीथी अरु यह कथा चली जो जनम केसें होता हे अरु मृत्यु केसें होता हे तब राजा वली बृहस्पति देव गुरुसों प्रश्न करत भया हे ब्राह्मण इह पुरुष जब मृतक होता हे तब शरीर तो भस्म होजाता हे ॥ बहुरी कर्मोंके फल केसें भोगता हे अरु शरीर विना आता जाता केसें हे सो कहो ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ हे राजन् इस जीवकों देह हे नही ॥ जेसें मरुथलविषे जल भासता हे अरु हे नही तेसें इस साथ शरीर भासता हे अरु हे नही ॥ यह जीव न जन्मता हे न मर्ता हे न भस्म होता हे न जलिकें दुःखी होता हे तत्वतें तत्व यह सदा अच्युतरूप हे स्वरूपके प्रमादतें आपकों दुःखी जानता हे ॥ जो में इनकों भोगताहों अरु जन्म्या हो एताकाल हुआ हे यह मेरी माता हे यह पिता हे में इनतें उपाजाहो बहुरी आपकों मृतक हुआ जानता हे ॥ हे राजन् भमकरि एसें देखता हे ॥ जेसें निद्रा भमकरी सुपने विषे देखता हे ॥ तेसें अज्ञान करीकें यह जीव आपकों मानता हे ॥ जब मृतक होता हे तब जानता हे जो मेरा शरीर पिंड करी हुआ हे अब में दुःख सुखकों भोगोंगा जेसें सुपनेविषे आकाश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होता हे तहां वासना करी अपणे साथ शरीर देखता हे अरु सुख दुःखकों भोगता हे तेसें मरी करी अपणे साथ शरीर देखता हे अरु दुःख सुखका भागी होता हे ॥ अरु परमार्थतें इ
सके साथ शरीरही नही तो जन्म मृत्यु केसें होवे स्वरूपतें प्रमाद करी देह धारीकी न्यांइं स्थित हुआ हे तिसदेह साथ मिली करी जेसी जेसी भावना करता हे तेसाहि फल भोगता हे ॥
वासनाके अनुसार जेसी इसकों भावना होती हे तेसा आगें शरीर देखता हे अरु पंच भूतक संसारकों देखता हे ॥ इस प्रकार भमता हे अरु जन्मता मरता आपकों देखता हे ॥ जेसें
समुद्रतें तरंग उठता हे अरु मिटि जाता हे तेसें शरीर उपजता अरु नष्ट होता हे ॥ शरीरके संबंध करी उपजता अरु विनसता भासता हे ॥ यह आश्चर्य हे जो आत्मा ज्योंकात्यों सु
भाव करी स्थित हे तिसविषे वासनाके अनुसार विश्वकों देखता हे ॥ हे राजन् विश्व इसके अंतर स्थित हे भावनाके अनुसार आगें देखता हे इस जीवविषे विश्व हे अरु विश्वविषे जीव
नही जेसें तिलविषे तेल हे अरु तेलविषे तिल नही ॥ जेसें स्वर्नविषे भूषण कल्पित हे भूषणविषे स्वर्न कल्पित नही तेसें जीवविषे विश्व कल्पित हे इसके आश्रें फुरती हे ॥ सो विश्व सत
भी नही अरु असतभी नही सत इस कारण नही जो चलरूप हे स्थित नही ॥ अरु असत इसतें नही जो विद्यमान भासती हे तातें इसकी भावना त्याग यह दृश्य मिथ्या हे इसका अनु
भव मिथ्या हे अरु इसके जानणे वाला अहंकार जीवभी मिथ्या हे ॥ जेसें मरुथलविषे जल मिथ्या हे तेसें आत्माविषे अहंकार जीव मिथ्या हे ॥ हे रामजी जबलग शास्त्रके अर्थविषे
चपलता हे अरु स्थितितें रहित हे तबलग संसारकी निवृत्ति नही होती जब दृश्यके फुरणे अरु अहंकारतें जड हो जावें तब इसकों आत्मपदकी प्राप्ति होवे जबलग दृश्यकी उर फुरता हे
चैतन सावधान हे तबलग संसारविषे भमता हे ॥ हे राजन् आत्मा न कछु जाता हे न आता हे न जन्मता हे न मरता हे ॥ जब चैत अरु चित्तका संबंध मिटि जावे तब आनंदरूपहि
हे चैत कहियें दृश्य अरु चित्त कहियें अहंकार संवित जब दोनोंका संबंध आपसमें मिटि जावेगा तब सेष आत्माहि रहेगा ॥ सो ब्रह्म हे आत्मा हे अरु शिवपद हे जिसविषे वाणीकी
गम नही सोइ शेष रहेगा ॥ सो अनुभव निर्वाच्य पद हे तिसविषे स्थित होहु ॥ हे रामजी जिस युक्ती करी इसकी इछा अनिछा निवृत्त होवे सो युक्ती श्रेष्ठ हे ॥ जबलग इसकों फुरणा
उठता हे जो यह भाव हे यह अभाव हे तबलग इसकों जीव कहता हे ॥ जब भाव अभावका फुरणा मिटि जावे तब जीव संज्ञाभी चलती रहे तब शिव पद आत्माकों प्राप्त होवे तहां
वाणीकी गम नही ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे बृहस्पति बलसंवाद वर्णनं नाम शताधिकैकविंशतितमःसर्गः ॥ १२१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार बृहस्पतिनें बल राजाकों कहा सो तेरे प्रश्नके उत्तर निमित्त में कहा हे॥ हे रामजी जबलग इसके रिदेविषे संसारकी सत्यता हे तबलग जेसें कर्म
करेगा तेसा शरीर धारेगा ॥ हे रामजी जिस वस्तुकों चित्त देखता हे तिसकी उर अवस्य जाता हे ॥ तिसके देखणेका संस्कार इसके अंतर होता हे ॥ जिस पदार्थकों इसनें सत् जाण्या
हे तिस पदार्थका संस्कार स्थित हो जाता हे ॥ अरु समेकरी उह संस्कार प्रगट होता हे॥ जेसें मोरके अंडविषे शक्ती होती हे जब समा आया तब नाना प्रकारके रंग तिसविषे प्रगट भा
सते हे तेसें चित्तका संस्कारभी समे पायकरी जागता हे ॥ हें रामजी सो चित्त अज्ञानतें उपजा हे बहुरी बृहस्पतिनें कहा हे राजन् बीज पृथ्वीपर उगता हे आकाशविषे नही उगता
जेसा बीज पृथ्वीविषे बोता हे तेसाहि फल होता हे सो इहां अहंरूप जो हे अपणा होणा सो पृथ्वी हे जेसी जेसी भावना करी कर्म करता हे तेसा तेसा चित्तरूपी पृथ्वीपर उत्पत्ति होता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे बहुरी फल होता हे जो उन कर्मोंके अनुसार धारता हे ॥ अरु सुख दुःखकों भोगता हे ॥ अरु ज्ञानवान जो हे सो आकाशरूप हे सो आकाशविषे बीज केसें उपजे बीज भावनाकरी
अज्ञानीरूपी पृथ्वीविषे उगता हे ॥ बलोवाच ॥ हे देव गुरु जीव जीवता होवे अथवा मृतक होवे ॥ इसकों जो अनुभव होता हे सो अपणी भावनाहितें होता हे ॥ तातें जब यह मृत
क हुआ अरु इसकी पिंडादिकविषे भावना न हुइ तो फेर इसका शरीर केसें होता हे सुख दुःख भोगणेवाला ॥ जो हुआ तो अकृतम देह हुआ ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ हे राजन् पिंड
दान आदिक क्रीया न होवे अरु इसके अंतर भावना हे अरु तिसी समे किसी न किया तोभी उह जो अंतर भावना हे सोइ कर्मरूप हे उसीकरी भासि आता हे अरु जो उसके अं
तर भावना नही अरु किसी बांधवनें इसके निमित्त पिंड दान किया तोभी इसकों भासी आता हे ॥ काहेतें जो उहभी इसकी वासनाविषे स्पंद हे ॥ हे राजन् जो अज्ञानी जीव हे जिस
कों अनात्मविषे आत्मबुद्धि हे तिनके कर्म कहां गये हे॥जो उह कर्म करते हे सोइ उनके चित्तरूपी भूमिविषे पडे उगते हे उनके शरीरकी क्या संख्या हे अनेक वासनारूपी शरीर धारते
हे ज्ञानबिना सुपनवत् ॥ बलोवाच॥ हे देव गुरु यह निश्चेकरी में जान्या हे जो जिसकों निष्किचनकी भावना होती हे सो निष्किचिन पदकों प्राप्त होता हे अरु संसारकी उरतें सिला
की न्यांइ हो जाता हे ॥ जेसी इसकी भावना होती हे तेसा स्वरूप हो जाता हे ॥ जब संसारतें पथरवत् होवे तब मुक्त होवे ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ हे राजन् निष्किचिनकों जब जानता
हे तब संसारकी उरतें जड होता हे ॥ राग दोष संसारका नही फुरता इसीका नाम जड हे ॥ अरु केवल सार पदविषे स्थित होता हे जब गुण इसकों चलाय नही सके तब जाणिये
जो निष्किचन पदकों प्राप्त हुआ हे सोइ निःसंदेह मुक्ति हे ॥ हे राजन् जबलग संसारकी सत्यता चित्तविषे स्थित हे तबलग इसकों वासना हे ॥ जबलग वासना हे तबलग संसार हे
अरु संसारके अभावबिना इसकों शांति नही प्राप्त होती सो स्वरूपके प्रमादकरी चित्त हुआ हे ॥ चित्ततें वासना हुइ हे अरु वासनातें संसार हुआ हे ॥ तातें इस वासनाकों त्यागकरी
कोउ फुरणा न फुरे निष्किंचन भाव हो जावे तब शांत भागी होवे हे राजन् जिस जुक्ती साथ जिस क्रम साथ यह निष्किचन रूप होवे सोइ करे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ! इस
प्रकार सुरपुरविषे असुर नायककों सुरगुरुनें कहाथा ॥ सो में तेरे आगें पिंड दानादिकका क्रम कहा हे॥ इ०यो०नि० बृहस्पतिबल संवादोनाम शताधिकद्वाविंशतितमःसर्गः॥ १२२॥
॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी भावे जीवता होवे भावे मृतक होवे ॥ जो कछू इसके चित्त साथ स्पर्श हुआ होवेगा तिसका अनुभव अवश्य करेगा ॥ जेसें मोरके अंडेविषे रस होता हे
उह समे करी विस्तारकों पावता हे तेसें इसके अंतर जो वासनाका बीज हे ॥ जो उह प्रगट नही भासता तोभी समे करी विस्तारवान होता हे जबलग चित्त हे तबलग संसार हे जब
चित्त नष्ट होवे तब सब भ्रम मिटि जावे ॥ हे रामजी सो चित्तभी असत हे तो विश्वभी असत्य हे जेसें आकाशविषे नीलता भ्रम करी भासती हे तेसें आत्माविषे विश्व भ्रम हे॥हे रामजी
हमकों न चित्त भासता हे न विश्व भासता हे मेंभी आकास हों तुंभी आकाशरूप हे ॥ यह चित्त स्वरूपके प्रमादकरीके उपजता हे ॥ जेसें जहां काजल होता हे तहां स्यामता होती हे
॥ तेसें जहां चित्त होता हे तहां वासना होती हे ॥ जब ज्ञानरूपी अग्नी करी वासना दग्ध होवे ॥ तब चित्त सतपदकों प्राप्त होता हे ॥ अरु जीवत संज्ञा निवर्त होती हे ॥ हे रामजी चित्त
के उपसमका उपाय मुझतें श्रवण करु ॥ तिसकरी चित्तनिर्वाण हो जावेगा ॥ जो सप्त भूमिका ज्ञानकी हे तिनकरी चित्त नष्ट हो जावेगा ॥ तिनविषे तीन भूमिका तेरे तांइं कही हे क्रम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करिकें ॥ अरु चार कहणि रहती हे ॥ हे रामजी प्रथम तीन भूमिकाविषें जिसकों एकभी प्राप्त भइ हें ॥ तिसकौं महापुरुष जाण ॥ सो संसारतें केसा हो जाता है सो श्रवण करु ॥ मान मोह तिसके निवर्त हो जाते हे ॥ अरु संग दोष तिसकों नही लागता अरु उसविषे विचार स्थित होता हे ॥ कामना सर्व नष्ट हो जाती हे ॥ अरु राग दोष तिसकों नही रहता सुख दुःख विषे सम रहता हे अेसा अमूढ पुरुष अव्यय पदकों प्राप्त होता हे ॥ जेते गुण तीसरी भूमिकाविषे प्राप्त हुए पाइते हे अरु चित्त नष्ट हो जाता हे तब संसारकों नही पाइता ॥ जेसें दीपक साथ देखिये तो अंधकारकों नही पाइता ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे चित्तअभावप्रतिपादनं नाम शताधिक त्रयोविंशतितमःसर्गः ॥ १२३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥७॥

वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब तीसरी भूमिका दृढ पूरन होती हे अरु दृढ अभ्यास करी चउथी उदे होती हे तब अज्ञान नष्ट हो जाता हे ॥ अरु सम्यक ज्ञान चित्तविषे उदे होता हे ॥ तब पूर्नमासीके चंद्रमावत् सोभा पावता हे ॥ अरु आदि अंततें रहित निरविभाग चैतनतत्वविषे जोगीका चित्त स्थित होता हे ॥ अरु सर्वकों सम देखता हे ॥ जिस जोगीकों चतुर्थ भूमिका प्राप्त होति हे तिसके नाना प्रकार भेद भाव निवर्त होजाते हे अरु अभेद सर्व आत्मभाव उदे होता हे ॥ जगत् तिसकों सुपनकी न्यांइं भासता हे अरु इंद्रियांका व्यवहार सुपनवत् हो जाता हे ॥ जेसें अर्धसुषुप्ति जिसकों होती हे तिस कालविषे खाणा पीणा रसतें रहित हो जाता हे तेसें चतुर्थ भूमिकावालेका व्यवहार रसतें रहित होता हे जेसें सूर्य अपणे प्रकाश करी प्रकासता हे तेसें तिसकों आत्माका प्रकाश उदे होता हे ॥ अरु सर्व कल्पना तिसकी नास होजाती हे न किसी पदार्थविषे राग रहता हे न किसीविषे दोष रहता हे ॥ संसार समुद्रविषे डुबावणेवाले राग अरु दोष हे ॥ इष्ट पदार्थविषे राग होता हे अनिष्टविषे दोष होता हे सो राग दोष दोनोंका तिसकों अभाव होजाता हे ॥ तातें संसार समुद्रविषे गोते नही खाता तीसके चित्तकों कोउ मोहित नही करी सकता॥ हे रामजी जबलग तृतीय भूमिका होती हे तबलग उसकों जाग्रत अवस्था होती हे ॥ जब चतुर्थ भूमिका प्राप्त भइ तब जगत् सुपनवत् होजाता हे सर्व जगतकों क्षणभंगुर नासवंत देखता हे ॥ द्रष्टा दर्शन दृश्य भावनाका अभाव होजाता हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् जाग्रत सुपन सुषुप्तिका लछण मुझकों ज्योंकात्यों कहो ॥ तुरिया अरु तुरियातीतभी कहो ॥ बडे जो हे सो सिषकों कहते खेदवान नही होते ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो तत्वका विस्मरण हे अरु पदार्थकी भावना हे नासवंत पदार्थकों सतकी न्यांइं जाणना सो जाग्रत हे ॥ जो पदार्थविषे भाव अभावकी सत्यता होती हे अरु जगत्कों मिथ्या भावना मात्र जानणा सो सुपना कहते हे ॥ जाग्रत अरु सुप्र जिसविषे ले हो जावे सो सुषुप्ति हे ॥ जो ज्ञानभाव करिकें भेदकी शांति हो जावे जाग्रत सुपन सुषुप्ति तीनोका अभाव होवे ॥ अेसी जो निर्मल स्थिती हे सो तुरिया हे ॥ हे रामजी अज्ञानी जीव संसारकों वर्षा कालके मेघकी न्यांइं देखतें हे ॥ जो तिनकों दृढ होकरी भासता हे ॥ अरु जिसकों चतुर्थ भूमिका प्राप्त भइ हे सो सरत्कालके मेघकी न्यांइं संसारकों देखता हे अरु जिसकों पंचम भूमिका प्राप्त भइ हे सो सरतकालके मेघ नष्ट हुएकी न्यांइं देखता हे ॥ जेसें निर्मल आकाश होता हे तेसें उसकों निर्मल भासता हे सो तीनों का वृत्तांत सुण अज्ञानी जगत्कों जाग्रतकी न्यांइं देखता हे ॥ अरु दृढ सत्यता जगत्की तिसकों भासती हे तिसकरी राग दोष उपजता हे अरु चतुर्थ भूमिका वाला अेसें देखता हे ॥ जेसें सरत्कालका मेघ वर्षातें रहित होता हे अरु जेसें सुपनेंकी सृष्टि होती हे ॥ तेसें तिसकों सत्यता जगत्की नही भासती काहेतें जो स्मृति तिसकों सुपनेकी होती हे ॥ सुपनवत्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखता हे तातें उसकों राग दोष नही उपजता है ॥ अरु पंचम भूमिका प्राप्तिवाला जगत्‌कों सुषुप्तिकी न्यांइं देखता हे ॥ जेसें सरतकालका मेघ नष्ट हुआ बहुरी नही दिखता ॥ तेसें उसकों संसारका भान नही होता ॥ अरु चेष्टा उसकी सुभाविक पडी होती हे॥जेसें कमल सुभाविकही खुलता अरु मुंदी जाता हे तेसें तिसकों जतन कछू नही चेष्टाविषे जेसा प्रतिजोगी तिसकों सुभाविक आय प्राप्त हुआ सो करता हे ॥ जेसें कमलके खुलणेका प्रतिजोगी सूर्य हुआ तब खुलि गया ॥ अब जब मुंदणेका प्रतियोगी रात्र भइ तब मुंदि जाता हे ॥ उसकों खेद कछू नही तेसें तिस पुरुषकी अहंममतातें रहित सुभाविक चेष्टा होती हे ॥ हे रामजी अहंता ममतारूपी जाग्रततें उह पुरुष सुषुप्त हो जाता हे ॥ अरु संपूर्ण भावरूप जो शब्द अरु अर्थ हे तिनका तिसकों अभाव हो जाता हे ॥ अशेष सेषका मनन नष्ट हो जाता पसु पंछी मनुष्य देवता भला बुरा इत्यादिक भिन भिन पदार्थकी भावना तिसकों नही रहती ॥ द्वैत कलना नष्ट हो जाती हे ॥ एक ब्रह्मसत्ताहि भासती हे तिसकों संसार नही भासता ॥ हे रामजी अहंतारूपी तिलतें संसाररूपी तेल उपजता हे अरु अहंतारूपी फूलतें संसाररूपी गंध उपजती हे संसारका कारण अहंता हे सो अहंता जिस पुरुषकी नष्ट हो जाती हे उह पुरुष इंद्रियांके इष्टकों पायकरी हरखवान नही होता ॥ अरु अनिष्टके प्राप्त हुए दोष नही करता ॥ अैसें आपकों नही जानता जो मैं खडा हों अरु इहां बैठा हों अरु चलता हो ॥ आपकों सर्वदा आकाशरूप जानता हे ॥ न अंतर देखता हे न बाहिर देखता हे ॥ न आकासकों देखता हे न पृथ्वीकों देखता हे ॥ सर्व ब्रह्महि देखता हे तिसकों इतर कछू नही भासता ॥ अरु द्रष्टा दर्शन दृश्य तीनोका साक्षी रहता हे ॥ अहंकारकाभी साक्षी इंद्रियांका भी साक्षी अरु विश्वकाभी हे ॥ इनके साथ स्पर्श कदाचित् नहीं करता ॥ जेसें ब्राह्मण चंडाल साथ स्पर्श नही करता ॥ अरु जेसें बीजतें अंकुरी होती हे ॥ बहुरी अंकुरीतें टास होतें हे इस प्रकार पदार्थ परिणाम हे ॥ अरु आकाश तिनविषे ज्योंकात्यों रहता हे॥ काहेतें जो उनके साथ स्पर्श नही करता तेसें उहपुरुष द्रष्टा दर्शन दृश्यतें अतीत रहता हे ॥ जेसें मरुथल विषे जल असत हे ॥ तेसें उस पुरुषकों त्रिपुटी असत्य हे त्रिपुटी अहंता तिस पुरुषकी नष्ट भइ हे तातें भेद बुद्धिभी नही रहति तिसीतें शांत हे अरु निर्मल हे संसारतें सुषुप्त हे अरु चैतन घनता करीके पुर्ण हे सर्वदा शांतरूप हे ॥ जिन नेत्रकरी संसार जानता है सो तिनतें अंध हुआ हे॥ अर्थ यह जिस मन करी फुरणा होता हे तिस मनकों नाश किया हे॥ अरु भय क्रोध अहंकार मोह तिस पुरुषविषे दिखतें हे तोभी उसके रिदेविषे कछू स्पर्श नही करते ॥ जेसें पंछी आकाशविषे आलणाभी करता हे ॥ परंतु आकाशकों स्पर्श नही करी सकता तेसें उस पुरुषकों विकार कोउ स्पर्श नही करता ॥ हे रामजी तिस पुरुषके संपूर्ण संशय नष्ट हो गये हे ॥ सर्वदा स्वरूपविषे स्थित हे अरु शांतरूप हे ॥ आत्मातें इतर किसी सुखकी वांछा नही करता ॥ अरु सर्व संकल्प तिसके नष्ट हुए हे अरु आत्मातें इतर कछू नही भासता ॥ जाग्रतकी न्यांइं दृष्ट आता हे ॥ अरु सर्वदा जाग्रततें सुषुप्त हे ॥

॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे पंचमभूमिका वर्णनं नाम शताधिकचतुर्विंशतितमःसर्गः ॥१२४॥ ॥ ७॥ ॥ ७ ॥ ॥७॥ ॥७॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी तीसरी भूमिका पर्यंत जाग्रत हे अरु चतुर्थ भूमिकाविषे जाग्रत अवस्था सुपनवत् देखता हे ॥ अरु पंचम भूमिकावाला संसारतें सुषुप्त होता हे ॥ अरु छठी भूमिकावाला तुरियापदविषे स्थित होता हे अरु सर्वदा अक्रिय हे किसी क्रियाविषे बंधमान नही होता ॥ सर्वकाल आनंदरूप हे अरु भिन्न होकरी आनंदकों भोगता नही आपही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आनंद हे ॥ केवल अपणे आप स्वतः स्थित हे अरु सर्वदा निर्वाण हे ॥हे रामजी सर्व क्रियाविषे जथाशास्त्र विचरता दृष्ट आता हे ॥ परंतु अंतरतें शून्य हे उसकों किसी साथ स्पर्श नही
जेसें आकासविषे सर्व पदार्थ भासता हे ॥ अरु आकासका स्पर्श किसी साथ नही ॥ तेसेंहि सर्व क्रिया तिसविषे विद्यमान दृष्टभी आती हे ॥ तोभी अंतरतें किसी साथ स्पर्श नही करता
॥ काहेतें जो क्रियाविषे बंधमान करणेहारा अहंकार था ॥ सो तिसका नष्ट होगया हे ॥ केवल सांतरूप हे अहंका फुरणा चिन्मात्रविषेतें निवर्त भया हे ॥ चिन्मात्रतें उत्थान अहंभा
वका सोइ अज्ञान हे अरु दुःखदाइ हे ॥ जब अहंभाव निवर्त भया तब कोउ कर्म स्पर्श नही कर्ता ॥ यद्यपि विस्व तिसकों दृष्टभी आती हे तोभी वास्तव करी नही देखता ॥ तिसकों सर्व
ब्रह्मही भासता हे खाता हे अरु नही खाता हे देताभी हे अरु कदाचित् नही दिया ॥ लेता हे तोभी कदाचित् किसीतें कछू नही लिया हे ॥ चलता हे परंतु कदाचित् नही चल्या ॥ हे रा
मजी जेते कछू देस काल वस्तु पदार्थ हे तिसकों सर्वविषे आत्मभाव होता हे जद्यपि प्रत्यक्ष चेष्टा उसविषे दिखती हे तोभी तिसके रिदेविषे कछू नही जेसें सुपनेंविषे खाता पीता लेता
देना आपकों भासता हे ॥ अरु जागेतें सर्वका अभाव हो जाता हे ॥ तेसें जो पुरुष परमार्थ सत्ताविषे जाग्या हे तिसकों गुणकी क्रिया अपणेविषे कोउ नही भासती अरु जो करता
हे तिसविषे अभिलाषा नही तिसकी चेष्टा सुभाविक होती हे अपणे निमित्त कर्तव्य कछू नही ऐसें भगवाननेंभी कहा हे ॥ अरु सर्व आत्माहि देखता हे ॥ आकाश पृथ्वी सूर्य ब्राह्मण
हस्ती स्वान चंडाल आदिक सर्वविषे आत्मभाव देखता हे ॥ अरु आकारकों मृगतृष्णाके जलवत् देखता हे ॥ जो अत्यंत अभाव हे अरु द्रष्टा दर्शन दृश्यभी उसकों आकाशवत भासते
हे ॥ अरु निर्मल अकाशवत् शांतरूप हे ॥ अहंभावनें रहित केवल चिन्मात्रविषे स्थित हे ग्रहण त्यागतें अतीत अरु सर्व कलनातें रहित निर्वाण पद हे ॥ केवल स्वछ निर्मल आकाशरूप
स्थित हे ॥ अहं मम आदिक चिद ग्रंथि तिसकी भेदी हे ॥ चिदजड कहियें अनात्मविषे अहं अभिमान सो तिसका नष्ट भया हे केवल शांतरूप हो रहता हे ॥ जेसें क्षीरसमुद्रतें मंद्राचल
पर्वत निकस्या अरु शांतरूप हुआ ॥ तेसें राग दोषरूपी क्षोभकरणेवाले इसके अंतःकरणरूपी पर्वत निकसी गया ॥ तब शांतरूप अक्षोभ हुआ परम सोभाकरी सोभता हे जेसें विश्वक
र्मानें सूर्यका मंडल रचा हे॥अरु प्रकास करिकें सोभा पावता हे तेसें ज्ञानरूपी प्रकाशकरी प्रकाशता हे ॥जेसें चक्रि फिरता फिरता रहि जाता हे अरु सांतिकों प्राप्त होता हे॥तेसें अज्ञान
करी फिरता फिरता ठहर्या हुआ तिस करी सदा शांतिकों प्राप्त भया हे अरु अपणे आपकरी प्रकाशता हे ॥ जेसें पवनतें रहित दीपक प्रकाशता हे ॥ तेसें कलनारूपी पवनतें रहित पुरुष
अपणे आपकरी प्रकाशता हे अरु सर्वदा निर्मल हे एकरस हे ॥ जेसें घटके अंतरभी शून्य हे अरु बाहिरभी शून्य हे तेसें देहके अंतर बाहिर आत्मा हे जेसें जलविषे घट राखिये तिसके
अंतर बाहिर जल होता हे तेसें उह पुरुष अपणे आपकरी अंतर बाहिर पूरन हो रहा हे ॥ अरु एकरस हे द्वैत कलनाकों नही प्राप्त होता अरु तिस पदकों पायकरी आनंदमान हे ॥ जे
सें कोउ मारणेके निमित्त पकड्या हुआ तिसकी रक्षा होवे ॥ तो बडे आनंदकों प्राप्त होता हे ॥ तेसें उह पुरुष आनंदकों प्राप्त हुआ हे ॥ जेसें कोउ आधि व्याधितें छूटा आनंदकों प्रा
प्त होता हे तेसें उह ज्ञानवान आनंदकों प्राप्त हुआ हे ॥ जेसें कोउ पेंढेकरी थका हुआ सिजापर आय विश्राम करे अरु आनंदकों प्राप्त होता हे तेसें ज्ञानवानकों आनंद हे ॥ जेसें पू
र्नमासीका चंद्रमा अमृतकरी आनंदवान होता हे तेसें उह पुरुष अपणे आनंद करी घुरम हे ॥ जेसें काष्टके जलेतें स्वछ अग्नी धुंएतें रहित प्रकाशती हे ॥ तेसें ज्ञानवान अज्ञानरूपी धुंए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तें रहित सोभता हे ॥ हे रामजी जब संसारकी उर देखता हे तब अग्निकरी जलता हुआ आपतें जुदा देखता हे ॥ ज्ञानरूपी पर्वत ऊपर स्थित होकरी जलता देखता हे ॥ हे रामजी यह जो कहा हे संसारकों जलता देखता हे सो अेसेंभी नही फुरता जो में ज्ञानी हों यह संसार हे ॥ स्वरूपकी अपेक्षा करी यह कहा हे जो संसार उसकों दुःखदाइ भासता हे आनंदतें रहित उह परमानंदकों प्राप्त भया हे बहुरी केसा हे जो सत असततें रहित अपणा आप हे तिसविषे स्थित हे जेसें पर्वत अंतर बाहिर अपणे आपविषे स्थित हे अरु एक रस हे तेसें उह पुरुष एक रस हे अरु संसारविषे जाग्रत हो करी चेष्टा करता हे ॥ अरु अंतर संसारकी भावनातें रहित हे ॥ अरु तिस पदकों वाणीकी गम नही परंतु कछू कहता हों श्रवण कर केइ ब्रह्म कहते हे ॥ ॥ केइ चैतन कहतें हे ॥ आत्मा कहते हे साक्षी कहते हे ॥ अरु कालवाले उसीकों काल कहते हे ॥ ईश्वरवादी ईश्वर कहते हे ॥ सांख्यवाला प्रकृति कहते हे ॥ इत्यादिक जो संज्ञा हे ॥ सर्व उसीके नाम हे तिसतें इतर नही तिस पदकों संत जन जाणते हे ॥ हे रामजी अेसें पदकों पायके अपणे आप करी सोभता हे॥ जेसें मणीके अंतर बाहिर प्रकाश होता हे तेसें उह पुरुष अंतर बाहिर सोभता हे ॥ अपणे स्वरूप करी सदा घुर्म रहता हे ॥ जो पुरुष छट्टी भूमिकाविषे स्थित हे तिसके यह लक्षण होते हे ॥ संसारतें सुषुप्त हो जाता हे अरु स्वरूपविषे चैतन होता हें जीवत्वभाव तिसका चलता रहता हे ॥ जीवत कहियें प्रछनता जेसें घटकी उपाधि करी घटाकास प्रछंन भासता हे ॥ जब घट भग्न हुआ तब घटाकाश महाकाश एक हो जाता हे ॥ तेसें अहंकाररूपी घटके भग्न हुए आत्माहि भासता हे ॥ ॥ इतिश्री यो०नि०प्रकरणे छट्टीभूमिकाउपदेशो नाम शताधिकपंचविंशतितमः सर्गः ॥ १२५ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इसतें अनंतर जब सप्तम भूमिका पुरुषकों प्राप्त होती हे तब आपकों आत्माहि जानता हे ॥ अरु भूतका ज्ञान जाता रहता हे केवल आत्मत्वमात्र होता हे दृश्यका ज्ञान नही रहता अरु यहभी ज्ञान नही रहता जो विश्व मेरे आश्रय फुरती हे॥ देह सहित होवे अथवा विदेह होवे उसकों आत्मातें उत्थान कदाचित् नही होता जेसें आकाश अपणी शून्यताविषे स्थित हे ॥ तेसें आत्मस्वरूपविषे स्थित हे ॥ अरु चेष्टाभी सुभाविक होती हे ॥ जेसें बालक पिंघूडेविषे होता हे तिसके अंग सुभाविक हलते हे तेसें उसकी चेष्टा खान पान आदिक सुभाविक होती हे ॥ जेसें काष्टकी पूतली तागेकरिकें चेष्टा करती हे॥तेसें प्रारब्ध वेगके तागे करी उसकी चेष्टा पडी होती हे ॥ अपणी इछा उसकों कछू नही रहती ॥ हे रामजी जेसी अवस्थाकों सप्तम भूमिकावाला प्राप्त हुआ हे सो आपहि जानता हे इतर कोउ जाणी नही सकता ॥ जिसका चित्त साथ हे अरु जिसका चित्त सतपदकों प्राप्त हुआ हे सोभी नही जाणी सकता जिसकों उह पद प्राप्त हुआ हे सोइ जाणे ॥हे रामजी जीवन्मुक्तका चित्त सतपदकों प्राप्त हुआ हे अरु तुरिया पदविषे स्थित हे इसका चित्त निर्वाण हो गया हे तुरियातीतपदकों प्राप्त भया हे ॥ अरु विदेह मुक्त हे तिसकों अहंभावका उत्थान कदाचित् नही होता॥सत रूप हे अरु असतकी न्यांइं स्थित हे ॥ हे रामजी उह पुरुष तिस पदकों प्राप्त हुआ हे जिसकों वाणीकी गम नही परंतु कछू कहता हों ॥ सो पद सुद्ध हे अरु निर्मल हे अद्वैत हे अरु चैतन ब्रह्म हे कालकाभी काल भछन करणेहारा केवल चिन मात्र हे ॥ अरु ज्योंकात्यों अच्युत पद हे तिस पदकों पायकरी अेसें होता हे जेसें वस्त्र ऊपर मूर्ती लिखी हे तेसें उत्थानतें रहित हे ॥ अहं ब्रह्माका उत्थानभी नही रहता ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे सप्तम भूमिका लक्षन विचारो नाम शताधिक षड्विंशतितमःसर्गः ॥ १२६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी

नि.६.१२७

संसरनाभाव०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह सप्त भूमिका तेरे तांइ कही हे ॥ जो ज्ञानकी प्राप्ति इनही करी होती हे॥ अन्य साधनकरी ज्ञानकी प्राप्ति नही होती॥ हे रामजी पुरुष ज्ञानवान हुआ तब जाणिये जब तिसकी वृत्ति प्रथम भूमिकाविषे स्थित हुइ हे ॥ तातें तुम भूमिकाकी उर चित्तरूप चरन राखो तब तुमकों स्वरूपकी प्राप्ति होवे ॥ हे रामजी तीसरी भूमिका पर्यंत सर्व कामना निवर्त होती हे एक आत्मपदकी कामना रहती हे जब तिस अवस्थाविषे शरीर छूटि जावै तब अवर जन्म पाय करी ज्ञानकों प्राप्त होता हे अरु जब चतुर्थ भूमिकाविषे प्राप्त हुए शरीर छूटे तब बहुरी जन्म नही पावता काहेतें जो आत्मपदकी प्राप्ति हुइ बहुरी कछू पावणेकी इछा नही रहती जन्मका कारण इछा हे ॥ जब इछा कछू न रही तब जन्मभी न रहा ॥ जिसकों चतुर्थ भूमिका प्राप्त भइ हे ॥ तिसकों स्वरूपकी प्राप्ति भइ हे ॥ बहुरी इछा केसें होवे ॥ जेसें भूना बीज नही उगता तेसें उसका चित्त ज्ञान अग्नीकरीकें दग्ध हुआ हे ॥ जो सत पदकों प्राप्त हुआ हे इसीतें जन्म नही लेता अरु मरताभी नही ॥ संसारकों सुपनवत् देखता हे ॥ अरु पंचम भूमिका वाला सुषुप्तकी न्यांइं होता हे ॥ अरु छठी भूमिका साक्षीरूप तुरिया पद हे सप्तम तुरियातीत निर्वाच्य पद हे ॥ हे रामजी मेरे एते कहणेका प्रयोजन यही हे जो वासनाका त्याग करु अरु अचित्त पदकों प्राप्त होउ ॥ सो वासना क्या हे इसका अभिमान होणाहि वासना हे ॥ जब इसका अभिमान निवर्त भया तबहि सांति हुइ ॥ इस प्रछंन अहंकार रहणा नही आत्माके अज्ञानतें हुआ हे॥ अरु आत्म ज्ञानतें लीन हो जाता हे॥हे रामजी संसाररूपी एक नदी हे तिसविषे आधि व्याधि उपाधि रोग तरंग हे अरु राग दोषरूपी छोटे मछ हे ॥ अरु तृष्णारूपी बडे मछ हे ॥ तिसविषे तिसकरी जीव दुःख पावतें हे ॥ जेसें जल नीचेकों चलाजाता हे तेसें मृत्युके मुखमें संसार चला जाता हे ॥ अरु अज्ञानरूपी जल हे ॥ हे रामजी तृष्णाकरी पुरुष बांधे हे ॥ तातें तुम तृष्णारूपी संगलकों काटो ॥ हस्तीकी न्यांइं वैराग अभ्यासरूपी दंतकरी तृष्णारूपी जंजीर काटहू ॥ हे रामजी यह तृष्णारूपी सर्पणी हे ॥ विषयरूपी फुत्कारेकरी विचाररूपी वल्लीकों जलावती हे तिसकरी जीवरूपी किरसाण दुःख पावता हे ॥ तातें वैरागरूपी अग्निकरी सर्पणीकों जलावहु ॥ हे रामजी तृष्णा दुःखदाइ हे जबलग तृष्णा हे तबलग संतके वचन इसके रिदेविषे स्थित नहि होते ॥ जेसें दर्पण उपर मोती नहि ठहरता तेसें तृष्णावानके रिदेविषे संतके वचन नहि ठहरते सो तृष्णाके एते नाम हे तृष्णा, अभिलाषा, इछा, फुरणा, संसरना, इत्यादिक सर्व इसीके नाम हे सो इछारूपी मेघ हे तिसनें ज्ञानरूपी सूर्य आछाद्या हे ॥ तिसकरी भासता नहि जब विचाररूपी पवन चले तब इछारूपी मेघ नष्ट होजावे ॥ अरु आत्मरूपी सूर्यका साक्षात्कार होवे हे रामजी यह जीव आकाश का पक्षी हे तिसका कर्मविषे इछारूपी तागाहे ॥ तिसकरी उडी नहि सकता॥ अरु परमात्म पदकों प्राप्त नहि होता॥अरु इछाहि करी दीन हे जब इछा नष्ट होवे तब आत्मस्वरूप हे॥तातें इछाकों नासकरी आत्म परायण होहु ॥ आत्म परायण कहियें विषय संसारतें वैराग अरु आत्म अभ्यास करो ॥ हे रामजी यह जो में तेरे तांइ भूमिका क्रम कहा हे ॥ जब इसविषे आवे तब ज्ञानकी प्राप्ति होवे सो इनकों तब प्राप्त होताहे जो एक हाथणीकों जीतता हे एक बनविषे रहती हे दो उसके पुत्र महामत्तरूप हे ॥ उह अनेक जीवकों मारीकरी अनर्थकों प्राप्त करती हे तिसके जीतेतें सर्व जगत जीत्या जाता हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् अेसी हस्तनी मत्तरूप सो कवन हे ॥ अरु कहां रहती हे ॥ कवन उसके दंत अरु पुत्र हे ॥ केसें उह मारती हे अरु केसें उसकों रचा हे अरु कवन बन हे यह सब मुझकों कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इछारूपी हस्तनी हे ॥ शरीररूपी बन हे मनरूपी गुंफाविषे रहती हे इंद्रि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यांरूपी बालक हे संकल्प विकल्परूपी दंत हे तिनसाथ छेदती हे ॥ हे रामजी एक नदी हे तिसका प्रवाह सदा चलाजाता हे तिसविषे दो मछ रहते हे जो नास नहि होते ॥ यह संसार नाहि नदी हे अरु राग दोष तिसविषे मछ रहते हे सो नास नहि होते ॥ हे रामजी मछ तब नास होवे जब संसरनरूपी जल नष्ट होवे ॥ तिसके सुकृत दुष्कृतरूपी किनारे हे चिंतारूपी ग्राह हे कर्मरूपी लहरी हे तिनविषे आया जीवरूपी तृण भटकताहे अरु तृष्णारूपी विषकी वल्लीकों नास करो ॥ हे रामजी तृष्णारूपी अंकुरका बढावणा घटावणा अपणे आधीन हे ॥ जो अंकुरकों जल देइए तो बढता जाता हे अरु जो न देइए तो जलि जाताहे ॥ सो फुरणेरूपी जल देणेकरी तृष्णारूपी अंकुर बढता जाता हे ॥ अरु न देणेकरी जलि जाता हे स्वरूप के अभ्यासकरी ॥ हे रामजी तृष्णारूपी बडा मछ हे धैर्य आदिक मांसकों भछन करणेवाला हे ॥ तिसकों वैरागरूपी कुंडी अरु अभ्यासरूपी दंतीकरी नास करो ॥ हे रामजी इछाका नाम बंधन हे निरिछाका नाम मुक्ति हे ॥ हे रामजी एक सुगम उपाय कहताहों जिसकरी तृष्णा नष्ट होजावे ॥ सो निज अर्थकी भावना करु ॥ जब निज अर्थकी भावना करी तब शीघ्रही आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी ॥ अरु तेरी जे होवेगी ॥ सर्वतें उत्तम पदकों प्राप्त होवेगा अरु वासना तेरी कोउ न रहेगी ॥ शरीरकी चेष्टा सुभाविक होवेगी ॥ संकल्प सर्व नष्ट होजावेंगे ॥

॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे संसरनाभावप्रतिपादनं नाम शताधिकसप्तविंशतितमः सर्गः ॥ १२७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् तुम कहते हों निज अर्थकी भावना करु ॥ वासना नष्ट हो जावेगी अरु सीघ्रही आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी ॥ सो वासना तो चिरकालकी चित्तविषे स्थित हे एकहि वार केसें नष्ट होवेगी ? अरु तुम कहते हो वासनाके नष्ट हुए जीवन्मुक्त होता हे ॥ जिसकी वासना नष्ट हुइ तिसका शरीर केसें रहेगा ? ॥ अरु वासना विन चेष्टा क्यों करी होवेगी ? ॥ तातें जीवन्मुक्त पद केसें बणे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी मेरे वचन प्रीति साथ सुण ॥ केसें वचन हे श्रवणोंके भूषण हे जिनके सुनेतें दारीद्र न रहेगी ॥ निज अर्थके धारणे तें संशय नष्ट हो जावेगे ॥ अरु आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी सो निज अक्षरके तीन अर्थ हे॥एक तो अंन्यके अर्थ हे जो पंचभूतक शरीरतें तेरा स्वरूप अंन्य विलक्षण हे ॥ अरु दुसरा अर्थ यह जो विरुद्ध हे ॥ शरीर जड हे तमरूप हे अरु तेरा स्वरूप आदित्य वर्ण हे तमतें परे हे ॥ हे रामजी जब तेनें अेसें धारा जो में आत्मा हों अरु यह देहादिक अनात्मा हे ॥ तब देह साथ मिली करी अभिलाषा केसें रहेगी अर्थ यह जो न करेगा जबलग जाण्या नही तबलग अभिलाषा हे॥ अरु तीसरा अर्थ निजका यह जो अभाव हे जो न में हों न कोउ जगत् हे अेसें जाण्या तब इछा किसकी रहेगी अर्थ यह जो न रहेगी ॥ अथवा जो तुं आपकों आत्मा जाणेगा देहतें विलक्षण तोभी अविद्यक तम रूप शरीरकी अभिलाषा न रहेगी ॥ देह तम रूप हे तुं आदित्य वर्ण हे ॥ आदित्य वर्ण कहिये जो तुं प्रकाश रूप हे तेरा अरु इसका संजोग कहां होवे ॥ जेसें सूर्यके मंडलविषे रात्र नही देखती तेसें जब तुं आपकों प्रकाश रूप जाणेगा तब तमरूप संसार न देखेगा शरीरकी चेष्टा सुभाविक होवेगी ॥ अरु तेरेविषे चेष्टा कछू न होवेगी ॥ जेसें अर्ध निद्रावालेकी चेष्टा होती हे अरु जानतीभी नही ॥ तेसें चेष्टा होवेगी अरु बालककी न्यांइं तुझकों अभिमान न होवेगा ॥ जेसें बालककी उन्मत्त चेष्टा होती हे ॥ तेसें तेरी चेष्टाभी सुभाविक होवेगी ॥ हे रामजी जो तुं इछा करे जो यह सुख होवे अरु यह दुःख न होवे तो कदाचित् न होवेगा ॥ जो कछू शरीरकी प्रारब्ध हे सो अवस्य होती हे परंतु ज्ञानवानके रिदेतें संसारकी सततताजाती रहती हे ॥ अरु चेष्टा सुभाविक होती हे ॥ इ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छा नही रहती॥हे रामजी जेसें किसी पुरुषकों मजल पेंडा करणा होता हे ॥ पेंडा बडा होवे अरु पहुंचणेका समा थोडा होवे तो उह पुरुष मार्गके स्थान देखताभी जाता हे ॥ परंतु बंध मान किसीविषे नही होता तेसें चित्तकों आत्मपदविषे ल्यावहु जो किसी प्रकार पहुंचणा हे अेसा शरीर पायकरी आत्मपद न पाइए तो कब पावणा हे ॥ जो आत्मपदतें विमुख हे सो इछादिक जन्मोंको पावेगा ॥ तातें हे रामजी चित्त आत्मपदविषे राख अरु सुभाविक इछा बिना चेष्टा होवे ॥ इछाहि दुःखदायक हे ॥ जब इछा नष्ट हुइ तब इसीकों ज्ञानवान तुरिया पद कहते हे ॥ जहां जाग्रत सुपन सुषुप्तिका अभाव होवे सो तुरिया पद हे ॥ हे रामजी यह जाग्रत सुपन सुषुप्ति अवस्था जहां न पाइयें सो तुरियापद हे ॥ जब संवेदन फुरणा अहंकारका अभाव हो जावे तब तुरियापद प्राप्त होवे ॥ हे रामजी अहंकारका होणा दुःखदायक हे ॥ जब इसका नास हुआ तबहि आनंद हे ॥ आत्मपदतें इतर जो मायाकी रचना हे तिस साथ मिलीकरी आपकों जानता हे में हो यहि अनर्थ हे तातें अहंकारका त्याग करो ॥ जिसकों देखीकरी फुरता हे ॥ तिसकों निज अर्थकी भावनाकरी नास करु ॥ जो आत्मपदतें इतर भासता हे सो मिथ्या जाणो यहि निज अक्षरका अर्थ हे ॥ जेता कछू संसार भासता हे तिसकों सुपन मात्र जाणो ॥ सत जाणीकरी इसविषे इछा करणी यहि अनर्थ हे अरु मिथ्या जाणीकरी इछा न करणी यहि कल्याण हे ॥ हे रामजी में उंची बाहुकरी पुकारता हों मेरे वचन सुणता कोउ नही ॥ जो इछाहि संसारका कारण हे अरु इछातें रहित होणा परम कल्याण हे ॥ जब इछातें रहित हुआ तब शांतपदकों प्राप्त होता हे ॥ निरिछित हुए आत्मा भासता हे जो आनंदरूप हे सम हे अद्वैत हे तिसविषे जगत्का अभाव हे ॥ हे रामजी मोहका बडा महात्म हे ॥ रिदेविषे जो आत्मरूपी चिंतामणी स्थित हे तिसकों मूर्ख विस्मरन करिकें अहंकाररूपी काचकों ग्रहण कर्तें हे ॥ हे रामजी तुम निरभिमान होकरी चेष्टा करो ॥ जेसें जंत्रीकी पूतलीविषे अभिमान कछू नही अरु चेष्टा तिसकी होती हे ॥ तेसें प्रारब्ध बेगकरी तुमारी चेष्टा होवेगी ॥ यंह अभिमान तुम न करो जु अेसें होवे अरु अेसें न होवे ॥ जब अेसा होवेगा तब सांतपदकों प्राप्त होवेगा जहां वाणीकी गम नही अेसें आनंदकों प्राप्त होवेगा ॥ जबलग इंद्रियांके अर्थकी तृष्णा हे तबलग जन्म मृत्युके बंधनमें हे तातें पुरुष प्रयत्न यही हे जो तृष्णाकों नास करो कर्मके फलकी तृष्णा तेरे तांइं न होवे ॥ अरु कर्मके करणे विषेभी तेरे तांइं इछा न होवे ॥ इन दोनोंकों त्यागकरी स्वरूपविषे स्थित होहु अरु अेसाभी निश्चे न होवे जो में त्याग किया हे ॥ हे रामजी जिस पुरुषनें कर्मका त्याग किया हे अरु अहंकार साथ हे तो पुण्य अरु पाप तिसनें सभ कछू किया हे ॥ अरु जिसविषे अहंभाव नही सो भावे तेसें कर्म करे तोभी कछू नही किया॥सो बंधनकों नही प्राप्त होता जो कर्म विषे आपकों अकर्ता जानता हे अरु अकरणेविषे अभिमान सहित हे तिसकों करता देखते हे सो बंधवान हे ॥ हे रामजी अेसें आत्माकों जाणीकरी अहंममका त्याग करो एसे संवेदनके त्यागणेविषे जतन कछू नही स्मृति तिसकी होती हे जिसका अनुभव होता हे ॥ जिसका अनुभव न होवे तिसका त्याग करणा सुगम हे ॥ अनुभव कहिए प्रत्यक्ष देखणा विश्व तेरे स्वरूपविषे हे नही तो अनुभव क्या होवे यह पदार्थ जो तेरे तांइ भासते हे तिनके कारणकों जाण इनका कारण अनुभव हे जो अनुभवहि इनका मिथ्या हे तो स्मृति सत केसें होवे! जेवरीविषे सर्पका अनुभव हुआ बहुरी स्मरन किया जो उहां सर्प देखा था॥जो सर्पका अनुभवहि मिथ्या हे बहुरी उसका स्मरण सत केसें होवे तातें जो वस्तु मिथ्या हे तिसके त्यागणेविषे क्या जतन हे जब प्रपंचकों मिथ्या जान्या तब तुमकों कोउ क्रिया बंधन न होवेगी चेष्टा सुभाविक होवेगी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरु राग दोष चलता रहेगा ॥ जेसें सरत्कालकी वल्ली सूकी जाती हे अरु आकार उसका दृष्ट आता हे ॥ तेसें तुमारा चित्त देखणेमें आवेगा अरु चित्तका धर्म जो राग दोष हे सो चल
ता रहेगा उह चित्त सतपदकों प्राप्त होवेगा ॥ जब सर्व विस्मरन होवेगा तिसकों शिवपद कहते हे सो परमपद हे अरु ब्रह्म हे शब्द अर्थतें रहित केवल चिन्मात्र अद्वैत पद हे ॥ अहंमम
का त्याग करिकें तिसविषे स्थित होहु ॥ अरु संसार इसीका नाम हे जो अहं हों अरु यह मेरा हे इसकों त्यागकरी अपणे स्वरूपविषे स्थित होहु ॥ हे रामजी जबलग अहंमम यह संवे
दन हे तबलग दुःख नही मिटते जब यह संवेदन मिटी तब आनंदहे आगें जो इछा हे सो करो ॥ ॥ इ० यो० नि० इछाचिकित्सोपदेशो नाम शताधिकअष्टाविंशतितमः सर्गः ॥ १२८ ॥
॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी आत्मा अद्वैत हे जिसविषे एक दो कहणा नही अपणे आप सुभावविषे स्थित हे अंतःकरण चतुष्टय अरु बाह्य पदार्थ सर्व चेतन मात्र हे ॥ इतर कछू नही
रूप इंद्रियां अरु मनका फुरणा देस काल सर्व आत्मारूपही हे॥ जेसें बालक माटीकी सेना बनाता हे अरु हस्ती घोडे राजा प्रजा नाम कल्पता हे॥सो सर्व माटीही हे इतर कछू नही तेसें
अहंमम आदिकभी सर्व आत्मरूप हे इतर कछू नही जेसें माटीविषे हस्ती घोडा आदिक नाम कल्पता हे ॥ तेसें आत्माविषे जगत् जीव कल्पता हे आत्मातें इतर कछू नही ॥ इस अहं
कारका त्याग करु आत्मपदतें इतर कछु फुरे नही ॥ हे रामजी रूप अवलोक मनस्कार यह सभ शिवरूपी मृत्तिकाके नाम हे ॥ मान मेय प्रमाण आदिक यह सब उही रूप हुए तो कि
सकरी किसकों संचित कहिये॥यह अहंमम आदिकभी चिदाकाशतें इतर कछू वस्तु नही॥इनकों अेसें जाणीकरी अफुर सिलावत निसंग होय रहु ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् तुमनें कहा
जो अहंमम फुरणेका त्याग करु यह मिथ्या हे अहंमम असत हे ज्ञानी एसी भावना करते हे इनकी सत्ता कछू नही अरु असंग होउ ॥ सो असंग निष्कर्मकरी होता हे अथवा सकर्म क
री होता हे यह कहो ! ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह तुंहि कहु जो कर्म क्या हे निष्कर्म क्या अरु इनका कारण कवन हे ? अरु इनका नाश केसें होवे अरु नास होणे करी सिद्धि
क्या होवेगी ? जो तूं जानता हे तो कहु ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् जेसें तुमतें श्रवण किया हे अरु समुझा हे सो में कहता हों ॥ जो वस्तु नाश करणी होवे तिसकों निश्चयकरी
मूलतें नास करीये तबहि तिसका नास होता हे॥ शाखा पत्र काटतें उसका नाश नही होता ॥ तातें इनका क्रम सुणो यह संसाररूपी बनविषे देहरूपी वृक्ष हे तिसका बीज कर्म हे अरु
पाणि पाद आदिक उसके पत्र हे ॥ अरु रुधिर श्वास वासना इसविषे रस हे अरु सुख दुःख इसके फूल हे अरु जाग्रत कर्म वासना रूपी वसंतऋतु हे तिसकरी प्रफूल्लित होते हे अरु
सुषुप्ति पाप कर्मरूपी इसकों सरत्काल हे ॥ तिसकरी सुकी जाता हे अेसा शरीर रूपी वृक्ष हे ॥ बहुरी केसा हे तरनापनरूपी कली हे क्षणका क्षण सुंदर हे जरारूपी फूल इसकों हसते
हे अरु राग दोष रूपी वानर क्षणक्षणविषे क्षोभतें हे ॥ जाग्रतरूपी इसकों वसंतऋतु हे अरु सुषुप्तिरूपी हिम करति हे अरु वासनारूपी रस करी बढता हे अरु पुत्र कलत्र आदिक यह
तृण घास हे ॥ अरु इंद्रियांके गढरूपी तिसका मुख हे ॥ इन करी शरीरकी चेष्टा होती हे ॥ ज्ञान इंद्रियां इसके पंच थंभ हे इनकरी वृछ धारा हे ॥ अरु इछा इसविषे बेले हे जो अ
पणे अपणेविषेकों चाहती हे अरु बडा थंभ इसका मन हे जो सर्वकों धारता हे अरु पंच प्राण इसकेरस हे प्रत्यक्ष उन मांस शब्द इनकरी सर्वकों ग्रहण कर्ता हे आगें इनका बीज
जीव हे जीव कहिये चैत्योन्मुखत्व चैतन ॥ अरु जीवका बीज संवित हे जो मात्रपदतें उत्थान हुआ हे ॥ तिस संवितका बीज ब्रह्म हे ॥ तिसके बीज आगें कोउ नही ॥ हे भगवन् सब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का मूल संवितका फुरणा हे जब इसका अभाव हुआ तब शेष आत्माहि रहा हे ॥ हे भगवन् यह तो में जानता हों आगें कछू कृपा करी तुम कहो॥हे भगवन् जबलग चित्तसाथ संबंध हे तबलग संसारविषे जन्म मृत्यु पावता हे ॥ जब चितत्तें रहित हुआ तब परमब्रह्म हे॥ सो शिवपद हे अनिछित हे सांत हे अनंतरूप हे॥ चिन्मात्रविषे जो अहंका उत्थान हे सोइ कर्मरूपी वृक्षका कारण हे ॥ जबलग अनात्मा साथ मिलिकरी कहता हे में हों अेसें जानता हे सो संसारका कारण हे यह तुमारे वचनकरी समुझा हे सो प्रार्थना करी हे ॥ आगें कछू कृपा करी तुम कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इसी प्रकार कर्मका बीज सूक्ष्म संवित हे ॥ जबलग संवित हे तबलग करमोंका बीज नास नही होते ॥ अरु यह सब संज्ञा इसकी हे ॥ कर्मों का बीज कहियें इछा कहियें तृष्णा कहियें अज्ञान कहियें चित्त कहियें इत्यादिक बहुत संज्ञा हे अवर क्या किसीविषे हेयोपादेय बुद्धि करे ॥ हे रामजी जबलग अज्ञान हे तबलग इछा नाश नही होती अरु कर्मभी नाश नही होते ॥ नास दोनोंका नही होता परंतु भेद हे ॥ अज्ञानीकों भासता हे जो इछा हे यह कर्म हे ॥ अरु ज्ञानवानकों सर्व ब्रह्महि भासता हे ॥ तातें सुखी रहता हे अरु अज्ञानीकों कर्मविषे कर्म भासता हे तातें बंधमान होता हे ॥ अरु इसीका नाम त्याग हे जो कर्मतें कर्म बुद्धि जावे ॥ अरु इसका नाम त्याग नही जो क्रियाका त्याग करणा हे ॥ हे रामजी बडी उपाधि अहंकार हे ॥ जिसका अहंकार नष्ट हुआ हे उह पुरुष कर्म करता हे तोभी उसनें कबहु कछू नही किया अरु जो अहंकार सहित हे उह पुरुष जो तूष्णी हो बेठा हे तोभी सब कर्मकरता हे ॥ इस अहंके त्यागका नाम सर्व त्याग हे ॥ अवर क्रियाके त्यागका नाम सर्व त्याग नही ॥ पुरुष प्रयत्न यही हे जो सर्व कर्मोंका बीज अहंकारका त्यागणा अरु परम शांतिकों प्राप्त होणा ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे कर्मबीजदाहोपदेशो नाम शताधिकनवविंशतितमः सर्गः ॥ १२९ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस संवेदनका होणाहि अनर्थ हे जो आपकों कछू जानता हे ॥ जब इह निवर्त्त होवे तबहि इसकों आनंद हे ॥ हे रामजी ज्ञानीकी चेष्टा अहंकारतें रहित सुभाविक होती हे ॥ जेसें अर्ध निद्रित पुरुष होता हे तेसें ज्ञानी अपणे स्वरूपविषे घुर्म हे॥ जेसें हस्ती मदकरी उनमत होता हे तेसें ज्ञानवान स्वयंब्रह्म लक्ष्मीकरी घुर्म हे॥ अरु ज्ञान अेसा व्यसन हे जेसा कामीकों काम व्यसन होता हे ॥ तेसें यह सुखरूपी स्त्रीकों पायकरी घुर्म रहता हे ॥ काहेतें जो निरहंकार हे ॥ सर्व दुःखका बीज अहंकार हे जब अहंकार नष्ट हुआ तब आनंद भया ॥ हे रामजी संसाररूपी विषकी वल्ली हे तिसका बीज अहंकार हे ॥ जब अहंकारका अभाव होवे तब संसारका अभाव होता हे ॥ हे रामजी अहंकार दुःखका मूल हे ॥ इस संवेदनका विस्मरन करणा बडा कल्याण हे ॥ जो कछू अनात्म साथ मिलिकरी आपकों मानणा यहि अनर्थ हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् जो वस्तु असत्य हे तिसका होणा नही होता अरु जो सत्य हे तिसका अभाव नही होता तुम केसें कहते हो जो अहं संवेदनका नाश करो ॥ ए तो सत भासती हे संवेदन अवेदन केसें होवे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी तुं सत्य कहता हे जो वस्तु असत्य हे तिसका होणा नही ॥ अरु जो सत हे तिसका नाश नही होता हे ॥ हे रामजी यह जो अहंकार दृश्य तुझकों भासता हे ॥ सो इसका होणा कदाचित् नही मिथ्या कल्पित हे ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प होता हे तेसें आत्माविषे अहंकार हे ॥ जेसें सूर्यकी किरणाविषे जलाभास होता हे तेसें आत्माविषे अहंकार शब्द अर्थ फुरता हे ॥ यह शब्द अरु अर्थ मिथ्या हे तिसका लक्षण यह जो में हों सो कल्पित हे आत्मा केवल सुद्ध स्वरूप हे तिसविषे अहं त्वंका शब्द अर्थ कोउ नही ॥ यह अबोधकरी भासतें हे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोधकरी लीन हो जाते हे ॥ अरु वेदनाका जो बोध हे सो अनर्थका कारण हे अबोधतम हे ॥ जब यह निर्वाण होवे तब कर्मका बीज मूलतें काट्या ॥ हे रामजी जो कर्मोंकों त्यागकरी एकांत जाय बेठता हे ॥ जो में कर्म नही करता हों अेसें मानता हे सो कहनाही हे ॥ जो अहंकार साथ हे तो फलकों भोगताही हे ॥ काहेतें जो अहंकार सहित मे बहुरी करेगा आत्मज्ञान बिना अनात्म साथ मिलिकरी आपकों मानता हे ॥ अरु जो पुरुष कर्म इंद्रियां साथ चेष्टा करता हे अरु आत्माकों लेप नही जानता हे सो अकर्ताही हे ॥ तिसकों करणेविषे कछू अर्थ सिद्ध नही होते अकरणे करीभी नही होता ॥ अेसा पुरुष परम निर्वाण पदकों प्राप्त होता हे ॥ जिसकों वाणीकी गम नही ॥ हे रामजी उसविषे फुरणा कोउ नही चमत्कार हे चमत्कार कहिए हुआ कछू नही अरु भासता हे जैसें बिलकी मजा होती हे उह बिलतें इतर कछू वस्तु नही तेसें जगत् हे जेसें सोनेतें भूषण भिन्न नही तेसें निज शब्दका अर्थ हे सो यह भिन्नभिन्न शब्द अर्थ तबलग भासता हे ॥ जबलग अहंवेदनाकार हे ॥ हे रामजी आत्मपद सदा अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जेसें पथर अपणी जडता विषे स्थित हे ॥ तेसें आत्मा अपणी चैतन घनताविषे स्थित हे तिसकों मुनीश्वर चैतनसार कहते हे ॥ तिस अपणे स्वरूपके प्रमादकरी दुःख पावता हे ॥ हे रामजी जो पुरुष गृहस्थविषे स्थित हे अरु अहंकारते रहित हे ॥ तिसकों बनबासी जाण सदा एकांत हे ॥ अरु जो बनवासी हे अरु अहंकार सहित हे सो सदा ज नोंविषे स्थित हे प्रथम एक गरत विषे था तिसकों त्यागकरी दूसरी गरतमें पडा हे जो भेषधारी हे अरु बनवास लिया हे ॥ तिसकों इश्वर चाहे तो निकसे नही तो बडे कूपविषे पडा हे ॥ हे रामजी जो पुरुष अर्ध त्याग करता हे एक अंग कर त्याग किया अरु दुसरेका अंगीकार किया ॥ अेसा पुरुष आपकों निष्कामी मानता हे तिसकों उह त्याग रूपी पिशाचनी भोगती हे ॥ हे रामजी निष्कर्म यह तबहि होता हे जब इसकी अहं वेदना नष्ट होती हे अन्यथा नही होता ॥ तातें कर्मकों मुलतें उखाडहु ॥ जेसें सुरदंड बल बुटेकों मुलतें काटता हे तेसें काटहु ॥ अहं वेदनाहि मुल हे तिसका मुल काटणा हे ॥ हे रामजी पुरुष प्रयत्न इसीका नाम हे ॥ जो अपणे आपका नाश करणा अरु आपहि रहणा ॥ देह साथ मिल्या हुआ आपकों जानता हे तिसका नाश करणा अरु शिवपदकों प्राप्त होणा जो सर्वदा सतस्वरूप हे अरु अद्वैत हे तिसविषे स्थित होहु ॥ यह विश्वभी तिसका चमत्कार हे ॥ जेसें बिलविषे ग री होती हे तिसके बहुत नाम राखतें हे सो बिलतें इतर कछू नही तेसें संसार आत्मातें इतर कछू नही ॥ जेसें थंभविषे काष्टतें इतर कछू नही तेसें यह संसार हे ॥ नानात्व जो भासती हे सोभी चैतनघन आत्माहि हे ॥ अरु निज अक्षरका अर्थ जो तेरे तांइ कहा हे सोभी उही हे ॥ विधि निषेध किसका करियें सर्व परमात्मा तत्व हे दुसरा किंचित् मात्रभी नही ॥ हे रामजी अेसें आत्माकों जाणी करी सुखेन विचरो सुभाविक चेष्टा होवेगी जेसें अर्ध निद्रितकी होती हे ॥ अरु जेसें बालक पिंघुडेविषे होता हे अंग उसके सुभाविक हलते हे तेसें तुमा री चेष्टा होवेगी अपणा अभिमान तुम न करो ॥ हे रामजी जेते कछू भाव अभाव पदार्थ भिन्न भिन्न भासतें हे सो आत्माके साक्षात्कार हुएतें परमात्म तत्वहि भासेगें ॥ जब अहंकार उत्थान निवर्त होवेगा॥ हे रामजी एक अवर जुक्ति सुण जिसकरी आत्मज्ञान होवे ॥ यह जो अहं अहं क्षण क्षणविषे फुरती हे सो जब फुरे तबहि तिस क्षणविषे जाण जो में नही॥ जब अेसें दृढ हुआ तब अहंकार रूपी पिशाच नाश हो जावेगा अरु आत्म तत्वका साक्षात्कार होवेगा जब अहंकार नाश होवे तब आत्मा भासे तातें अहंकारके नाशका जतन करु जो न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में हौं न जगत् है ॥ हे रामजी ज्ञान इसीका नाम है जो अहंमम न रहे ॥ तिसकों मुनीश्वर परम ब्रह्म कहते हे अरु सम्यक् पद कहते हे ॥ अरु जहां अहंमम है तहां अविद्या रूपी तम खडा हे ॥ हे रामजी अज्ञानीके रिदेविषे सर्व पदार्थका भाव स्थित हे ॥ देश काल घर नगर मनुष्य पशु पंछी आदिक त्रिगुण संसार तिसकों भासता हे जब इनका अभाव हो जावे तब शांतपदकी प्राप्ति होवे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे अहंकार नाश विचारो नाम शताधिकत्रिंशतितमःसर्गः ॥ १३० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जिसके मनतें में मेरेका अभिमान गया हे तिसकों शांति प्राप्त भइ हे ॥ अरु जिसके रिदेविषे में देह मेरे संबंधी यह आदिक अभिमान हे तिसकों शांति कदाचित् नही ॥ अरु शांति बिना सुख नही॥हे रामजी प्रथम आप बनता हे तब जगत् हे जो आप होता न बने तो जगत् कहां होवे इसका होणाहि अनर्थका कारण हे जिस पुरुषनें अहंकारका त्याग किया हे सो सर्व त्यागी भया ॥ अरु जिसनें अहंकारका त्याग नही किया तिसनें कछू नही त्याग्या अरु जिसनें क्रियाका त्याग किया हे अरु आपकों सर्व त्यागी मानता हे सो मिथ्या हे ॥ जेसें वृक्षके टास काटीएं तो फिरी उगता हे नाश नही होता तेसें क्रियाके त्याग किये त्याग नही होता ॥ त्यागणे जोग अहंकार जो नष्ट नही होता तो क्रिया बहुरी उपजती हे तातें अहंकारका त्याग करे तब सर्व त्यागी होवे इसका नाम महा त्याग हे तिसकों सुपनविषेभी संसार न भासेगा जाग्रतकी क्या कहणी हे ॥ तिसकों संसारका भान कदाचित् नही होता ॥ हे रामजी संसारका बीज अहंभाव हे तिसकरी स्थावर जंगम जगत् भासता हे ॥ जब इसका नाश हुआ तब जगत् भ्रम मिटि जाता हे ॥ तातें इसके अभावकी भावना करु जब तेरे तांइं अहंभाव फुरे तब तुं जाण जो में नही ॥ जब इस प्रकार अहंका अभाव हुआ तब पाछें जो शेष रहेगा सो आत्मपद हे ॥ हे रामजी सब अनर्थका कारण अहंभाव हे तिसीका त्याग करु॥हे रामजी शस्त्रका प्रहार जीव सहि रहता हे ॥ अवर व्याधिरोगकों सहि रहता हे ॥ इस अहंके त्यागणेविषे क्या कदर्थना हे ॥ हे रामजी संसारका बीज अहंका सद्भाव हे तिसका नास करना संसारका मूल संजुक्त नास हे ॥ तातें इसके नासका उपाय करो ॥ जिसका अहंभाव नष्ट हुआ हे तिसकों सब ठोर आकाशरूप हे ॥ उसके रिदेविषे संसारकी सत्ता कछू नहि फुरती ॥ यद्यपि गृहस्थविषे होवे तोभी प्रपंच यह शून्य बनकी अटवी तिसकों भासती हे अरु जो अहंकार सहित हे बनविषे जाय बेठे ॥ तोभी जनके समूहविषे बेठाहे॥ काहेतें जो तिसका अज्ञान नास नहि भया अरु जिसनें मनसहित षट्इंद्रियांकों वस नहि किया तिसकों मेरी कथा श्रवणका अधिकार नहि उह पशु हे ॥ अरु जिस पुरुषनें मनकों जीत्या हे अथवा जीतणेकी इछा करता हे दिनदिन प्रती सो पुरुष हे ॥ अरु जो इंद्रियां करी विश्रामी हे काम क्रोध लोभ मोह करी संपन्न हे सो पशू हे महा अंधतमकों प्राप्त होता हे ॥ हे रामजी जो पुरुष ज्ञानवान हे अरु इछा कर्मकी तिसविषे दृष्टि आवती हे ॥ तोभी इछा तिसकी अनिछाहि हे अरु कर्म अकर्मही हे ॥ जेसें भुन्या दाणा बहुरी नहि उगता अरु आकार तिसका भासता हे ॥ तेसें ज्ञानवानकी चेष्टा दृष्ट आती हे सो देखणे मात्र हे ॥ उसके रिदेविषे कछू नहि ॥ हे रामजी पुरुष कर्मेंद्रियां साथ चेष्टा करता हे अरु जगत्की सतता रिदेविषे नहि तब बंधन कोउ नहि होता ॥ अरु जो जगत्कों सत मानीकरी थोडा कर्म करता हे तोभी पसरी जाता हे जेसें थोडा अग्नी जागी करी बहुत होजाता हे तेसें थोडा कर्मभी उसकों जन्म मरण दुःख देता हे ॥ अरु ज्ञानीकों नहि होता उसकी प्रारब्ध सेष हे ॥ सोभी रिदेविषे नहि मानता ॥ जानता हे जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शरीरकी हे आत्माकी नहि॥ सोभी बेग उतरता जाता हे ॥ जेसें कुंभारका चक्र होता हे अरु चरन चलाबणेतें रही जाता हे ॥ तो सने सने बेग उतरता जाता हे तेसें प्रारब्ध बेग उसका उतरता जाता हे बहुरी जन्म नहि होता काहेतें जो तिसकों अहंकाररूपी चर्ण नहि लागता ॥ तातें अहंकारका नास करु जब अहंकार नास हुआ तब सर्वके आदि पदकों प्राप्त होवेगा ॥ सो परम निर्वाण पद हे तिसविषे निर्वाणभी निर्वाण होजाता हे ॥ हे रामजी जब वर्षाकाल होता हे तब बदल होते हे ॥ जब शरत्काल आता हे तब बदल चलते रहते हे ॥ हे रामजी जबलग अज्ञानरूपी वर्षाकाल हे तबलग अहंकाररूपी वर्षा हे ॥ जब विचाररूपी सरत्काल आवेगा तब अहंकाररूपी मेघ चलते रहेंगे ॥ अरु आत्मरूपी आकाश निर्मल भासेगा हे रामजी जेसें मलिन आदर्श होताहे तब मुखका प्रतिबिंब उज्वल नहि भासता ॥ जब मेल निवर्त्त होवे तब मुखका प्रतिबिंब प्रत्यक्ष भासे ॥ तेसें अहंकाररूपी मेल करी जीव आछाद्या हे तिसकरी आत्मा नहि भासता ॥ जब अहंकाररूपी मेल निवृत्त होवे तब आत्मा ज्योंकात्यों भासे ॥ जेसें समुद्रविषे नानाप्रकारके तरंग उठते हे अरु सम्यक्दर्सीकों सब जलमय दृष्टी आते हे ॥ अरु भूषणविषे स्वर्नहि भासता हे तेसें नाना प्रकारके प्रपंच तिस समदर्शीकों चेतनघन आत्माहि दृष्ट आता हे ॥ आत्मातें इतर कछू नहि देखता अवर उरतें पथरकी शिलावत् होजाता हे ॥ काहेतें जो अहंकार उसका नष्ट होगया हे अरु जो अहंकार साथ हे क्रियाका त्याग करताहे अरु त्यागंकरी आपकों सुखी मानता हे सो मूर्ख हे ॥ जेसें कोउ लकडी लेकरी आकासकों नास किया चाहे तो नहि होता तेसें क्रियाके त्याग करी दुःख नष्ट नहि होता ॥ जब संपूर्ण संसार क्रियाका बीज अहंकार नास होवे तब अक्रिय आत्मस्वरूपकों प्राप्त होता हे ॥ जेसें तांबा अपणे तांबा भावकों त्यागता हे तब स्वर्न होता हे ॥ तेसें जब जीव अपणा जीवत्वभाव त्यागे तब आत्मा होता हे ॥ अरु जेसें तेलकी बुंद जलविषे पाइती हे अरु पसरी जाती हे ॥ नाना प्रकारके रंग जलविषे भासता हे ॥ जेसें ब्रह्मरूपी जलविषे अहंतारूपी तेलकी बुंद नाना प्रकारकी कलना दिखाइ देती हे ॥ आत्मा ब्रह्म निराकार निरंजन इत्यादिक नामभी अहंकार करिकें शुद्धविषे कलपे हे सो अफुर केवल सत्तामात्र हे ॥ हे सत अरु असतकी न्यांइं स्थित हे ॥ हे रामजी संसाररूपी मिरचका बूंटा हे ॥ अरु संसाररूपी फूल हे अहंतारूपी तिसविषे सुगंध हे ॥ हे रामजी जब अहंता उदे हुइ तब संसार उदे होता हे ॥ अरु अहंताके नास हुए संसार नास हो जाता हे ॥ क्षणविषे उदे होता हे अरु क्षणविषे नास होता हे सो अहंताका होणाहि उदे होणेका क्षण हे ॥ अरु अहंताका लीन होणा सो नासका क्षण हे ॥ हे रामजी जेसें मृत्तिकाकों जलका संजोग होता हे तिसकरी घट बणता हे ॥ तब मृत्तिका घट संज्ञाकों पावती हे ॥ तेसें पुरुषकों जब अहंकारका संग होता हे तब संसारी होता हे अरु जीव संज्ञाकों पावता हे देसकाल पृथ्वी पर्वत आदिक दृश्यकों प्रत्यक्ष देखता हे ॥ जब अहंता नास होवे तब सुखी होता हे ॥ जेता कछू मान रूप हे अरु तिसका अर्थ हे सो अहंताकरी भासता हे जब अहंताकों त्यागें तब शांतरूप आत्माहि शेष रहेगा जेसें पवनतें रहित दीपक प्रकासता हे तेसें अहंकाररूपी पवनतें रहित अपणे सुभावविषे स्थित होता हे अरु आनंदपदकों प्राप्त होता हे ॥ अरु अनादि पद अपणेकों प्राप्त होता हे ॥ अरु सर्वका अपणा आप होता हे देशकाल वस्तु अपणे विषे देखता हे ॥ हे रामजी जबलग अहंताका नाश नही होता तबलग मेरे वचन रिदेविषे स्थित न होवेगे ॥ हे रामजी जिस पुरुषनें अपणा सुभाव नही जान्या तिसकों ब्रह्म पावणा कठिन हे ॥ जेसें रेतविषे तेल निकसणा कठिन हे तेसें उसकों ब्रह्मका पावणा कठिन हे अरु अपणा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुभाव जानणा अति सुगम हे ॥ जब अहंताका त्याग करे जो न मैं हौं न जगत् हे तब कल्याण हुआ तब अहंताका नाश होता हे तब भ्रम कोउ नही रहता जेसें जेवरीके जाणे सर्प भ्रम निवर्त हो जाता हे जबलग अहंता फुरती हे तबलग उपदेश इसकों नही लागता ॥ जेसें आरसी ऊपर मोती नही ठहरता तेसें उसके रिदेविषे मेरे वचन नही ठहरते अरु जिसका रिदा सुद्ध हे तिसकों मेरे वचन लागते हे ॥ जेसें तेलकी बुंद जलविषे विस्तारकों पावती हे ॥ तेसें उसकों थोडा वचनभी बहुत हो लागता हे ॥ हे रामजी इसीपर एक पुरातन इतिहास मुनीश्वर कहते हे सो तुं श्रवण कर मेरा अरु कागभुसंडका संवाद हे ॥ एक समे सुमेर पर्वतके शिखर पर मैं गया था तहां भुसंड बेठा था तिससों मैं प्रश्न किया ॥ जो हे अंग अेसाभी कोउ पुरुष हे जिसकी आयुर्बला बडी होवे अरु ज्ञानतें शून्य रहा हे जो उनकों देखा होवे तो कहु ॥ भुसंडोवाच ॥ हे भगवन् एक विद्याधर देवता होत भया हे तिसकी बडी अरब ला थी अरु विद्या बहुत अध्ययन करी थी सत्कर्मों विषे विचरता था अरु भोगभी तिसनें बडे भोगेथे अरु सत्कर्मोंकों करे परंतु केवल सकाम॥ चतुर जुग पर्यंत सकाम कर्म करता रहा॥ जप तप नेम आदिक कर्म करत भया ॥ जब चतुर्थ जुगका अंत हुआ तब उसकों विचार आनि उपजा ॥ जेते भोग सुखरूप जाणी करी भोगता था तिन भोगतें उसकों वैराग उपजत भया तब भोगकों त्यागकरी लोकालोक पर्वतपर गया तहां जाय करी विचारत भया जो यह संसार असाररूप हे किसी प्रकार इसतें छूटों वारंवार जन्म हे वारंवार मृत्यु हे ॥ पदार्थ सत्य कोउ नही किसका अश्रय करों ॥ अेसें विचार करिकें उह विकृत आत्मा पुरुष सुमेरु पर्वत ऊपर मेरे पास आय प्राप्त भया अरु शीर नीचाकरी मेरे तांइ दंडवत् करे अरु मेंभी बहुत आदर किया ॥ तब हाथ जोडीकरी तिसनें कहा ॥ विद्याधरोवाच ॥ हे भगवन् एते काल पर्यंत विषयकों भोगता रहाहों परंतु सांति मेरे तांइ प्राप्त नही भइ तिसतें मैं दुःखी रहा हों तुम कृपा करी सांतिका उपाय कहो ॥ हे भगवन् चित्ररथका जो बाग बना हुआ हे तिसविषे सदाशिवजी रहता हे अरु कल्पवृछभी बहुत हे तिसविषे मैं चिरकाल रहाहों बहुरो विद्याधरके स्वर्गविषे रहाहों ॥ अरु इंद्रके नंदन वनविषे रहाहों अरु स्वर्नकी कंदराविषे रहाहों ॥ अरु सुंदर अपछरा साथ स्पर्श किया अरु विमानपर आरूढ बहुत रहाहों ॥ हे भगवन् इत्यादिक बहुत स्थान मैं देखे हे अरु तपभी बहुत किया हे दान यज्ञ व्रतभी बहुत किया हे अरु सहस्र वर्ष सुंदररूप देखता रहाहों ॥ जिनकी सुंदरता कहणेविषे नही आती ॥ तोभी नेत्रकों तृप्ति न भइ अरु बहुत सुगंधकरी नासिकाकों तृप्ति न भइ अरु रसनाकरी भोजन बहुत प्रकारके खाए हे तोभी शांति न भइ तृष्णा बढति गइ अरु श्रोत्रकरी शब्द राग बहुत प्रकार सुणे हे अरु त्वचाकरी स्पर्श बहुत किये हे तोभी शांति न प्राप्त भइ ॥ हे भगवन् मैं जिस उर सुख जाणीकरी प्रवेस करों तिसी उर दुःख प्राप्ती होवे जेसें मृग क्षुधा निवारणे अर्थ घास खाणे आता हे अरु राग सुणी मूर्छित्त हो जाता हे ॥ अरु बेधक उसकों पकडि लेता हे तब मृग दुःख पावता हे ॥ तेसें मैं सुख जाणीकरी विषयकों ग्रहण करता था ॥ अरु बंडे दुःखकों प्राप्त भया ॥ हे भगवन् मैं चिरकाल तक दिव्य भोग भोगे हे पांचो इंद्रियछठे मन सहित कछू कहणे विषे नही आते अेसें शब्द स्पर्श रूप रस गंध भोगे परंतु मेरे तांइ सांति न प्राप्त भइ अरु न इंद्रिय तृप्त भइ जेसें घृतकरी अग्नि तृप्त नही होती तेसें दिनदिन प्रति तृष्णा वृद्ध होती जाती हे अरु अंतर पडी जलाती हे जो पुरुष इन भोगके निमित्त जतन करता हे जो मैं इनकरी सुखी होउंगा सो मूर्ख हे तिसको धिःकार हे उह समुद्रविषे तरंगका आश्रा करता हे अरु यह सुखरूप तबलग भासते हे जबलग इंद्रियां अरु विषयका संयोग हे ॥ जब इं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पत्र हे तारागण तिसके कली फूल हे अरु सप्त समुद्र तिसका रस हे अरु जन्म मरण तिस साथ वल्ली हे अरु सुख दुःख तिसके फल हे अरु आकाश दिसा पातालकों धारिकें स्थित हुआ हे अरु अहंकाररूपी पृथ्वी पर उत्पत्ति हुआ हे अहंकार तिसका बीज हे अरु दृश्य मिथ्या भममात्र उत्पत्ति हुआ हे ॥ असत अरु सतकी न्यांइं स्थित हुआ हे ॥ तातें अहंकार बीजका नास करो निरहंकाररूपी अग्निकरी इसकों जलावहु ॥ तब अत्यंत अभाव होजावेगा ॥ यह भमकरिकें भयकों देता हे ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प भम भयकों देताहे ॥तातें निरहंकाररूपी अग्नी करी इसका नासकरो ॥ ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठेनिर्वाणप्रकरणे संसाररूपीवृछ वर्णनं नाम शताधिद्वात्रिंशतितमःसर्गः ॥ १३२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ शुसंडोवाच ॥ हे विद्याधर यह ज्ञान जेसें उत्पन्न होता हे सो श्रवण करु ॥ ब्रह्मविद्या शास्त्र तिसकों श्रवण करणा॥ अरु आत्मविचार करणा तिसकरी ज्ञान उपजता हे॥तिस आत्मज्ञानरूपी अग्निकरी संसाररूपी वृछकों जलावहु अरु आगेंभी हे नहि अनहोता उदे हुआ हे ॥ मनके संकल्पकरी हुएकी न्यांइं स्थित हे जेसें पथरविषे शिल्पी कल्पता हे जो एती पूतलियां निकसेंगियां सो हुइयां कछू नहि तेसें मनरूपी सिलपी यह विश्वरूपी पूतलियां कल्पता हे जब मनका नास करोगे तब संसार भम मिटि जावेगा आत्मविचार करिकें परमपदकों प्राप्त होउगे अपणा आप परमात्मरूप प्रत्यक्ष भासेगा ॥ तातें अहंताकों त्यागकरी अपणे स्वरूपविषे स्थित होहु ॥ हे विद्याधर यह जो संसाररूपी वृछ हे सो अहंतारूपी बीज तें उपजा हे ॥ तिसकों जब ज्ञानरूपी अग्निकरी जलाइए तब फिरि यह जगत् नहि उपजता जब इसकों विचार करी देखिये तब अहं त्वंकों नहि पाइता ॥ हे विद्याधर यह अहं त्वं मिथ्या हे ॥ इनके अभावकी भावना करु यही उत्तम ज्ञान हे ॥ हे साध जब गुरुके वचन सुणिकरी तिनके अनुसार इसनें पुरुषार्थ किया ॥ तब यह परम उचे पदकों प्राप्त होता हे इसकी जे होती हे ॥ हे विद्यारूपी कंदराके धारणे हारे पर्वत अरु विद्यारूपी पृथ्वीके धारणेहारे यह संसाररूपी एक आडंबर हे तिसके सुमेरु जेसें केइ थंभेहे अरु रत्नोंकी पंक्तिसाथ जडे हुएहे अरु वन दिशा पहाड वृक्ष कंदरा वैताल देवता पाताल आकाश इत्यादिक जो ब्रह्मांड हे सो तिसके उपर स्थित हे अरु रात्र दिन भूत प्राणी अरु इनके जो घर हे सो चउपडके खाने हे ॥ कोउ जेसा कर्म करता हे तिसके अनुसार दुःख सुख भोगता हे सो खेले हे ऐसेंहि संपूर्ण प्रपंच क्रिया संयुक्त दिखाइ देताहे सो भमकरी सिद्ध हे तातें मिथ्या हे ॥ जेसें सुपनकी सृष्टि संकल्पकरी भासती हे तेसें यह सृष्टिभी भमकरी भासती हे अज्ञानकरी रची हुइ हे आत्माके अज्ञानकरी भासती हे सो आत्माके ज्ञानकरी लीन होजाती हे ॥ जब सृष्टि हे तबभी परमात्म तत्वही हे अरु जब सृष्टि होवेगी तबभी परमात्मतत्वही होवेगा आगेंभी उही था ॥ अरु जो कछू प्रपंच तेरे तांइं दृष्टि आता हे सो शून्य आकासही हे ॥ त्रिगुणमय प्रपंच गुणोंका रचा हुआ हे अपणे स्वरूपके प्रमादकरी स्थित भया हे ॥ अरु आत्मज्ञानकरी शून्य होजावेगा जब प्रपंचही शून्य हुआ तब आत्मा अरु अनात्माका कहणाभी न रहेगा ॥ पाछें जो शेष रहेगा सो केवल शुद्ध परमतत्व हे सो तेरा अपणा आप हे तिसविषे स्थित होहु अरु दृश्यका त्याग करु जो हे नहि न मैं हों न जगत् हे जब तुं अेसा होवेगा तब तेरी जे होवेगी आत्मपद सबतें उत्तम हे जब तुं आत्मपदविषे स्थित हुआ तब तुं सबतें उत्तम हुआ अरु तेरी जे होवेगी ॥ तातें आत्मपदविषे स्थित होहु॥ ॥ इतिश्रीयो० नि० संसारआडंबरउ०ना०शताधिकत्रयःत्रिंशतितमःसर्गः ॥ १३३ ॥ ॥ शुसंडोवाच ॥ हे विद्याधर यह प्रपंचभी आत्मका चमत्कार हे अरु आत्मा शुद्ध चैतन हे जिसविषे जड अरु चैतन स्थित हे ॥ अरु सबका अधिष्ठान हे सो सत्तामात्र तेरा अपणा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप हे अहं त्वं शब्द अर्थतें रहित हे ॥ अरु आत्मत्वमात्र हे अरु सत्य स्वरूपही असतकी न्यांइं स्थित हे ॥ हे विद्याधर तुं इस जड अरु चैतनतें अबोधमान होड्ड ॥ जब तुं अबोध ड्डआ तब तुं शांत चिद्घन होवेगा ॥ अरु यह जो जड चैतन हे सो दोनों जड परमार्थ चैतन आगें इन दोनोंका अंतर रहता हे ॥ यद्यपि अदृश्य हे तोभी इनके अंतरहि रहता हे जेसें समुद्रके अंतर बडवाग्नि रहती हे ॥ अरु इन जड चैतनका जो कारणरूप हे सो उही हे उत्पत्तिभी उसीतें होती हे अरु नासभी उहि करता हे जेसें पवन करी अग्नि उपजती हे अरु पवनहि करी लीन होती हे ॥ हे विद्याधर जब अेसें जाण्या जो में चैतनरूपभी नहि अरु जडभी नहि जब अेसी भावना ड्डइ तब पाछे जो रहेगा सो तेरा स्वरूप हे जब तेरे अंतर इन जड चैतन दोनोंका स्पर्श ड्डआ नहि तब सर्वके अंतर जो चैतन हे उह ब्रह्म तेरे तांइं भासेगा अरु विश्वभी आत्माविषे कछू ड्डइ नहि ॥ जेसें सूर्यकि किर्णोका चमत्कार जलाभास होता हे ॥ तेसें शुद्ध चैतनका चमत्कार विश्व हो भासता हे ॥ हे अंग जेसें भीत उपर पूतलियां लिखी होतियां हे सो भीततें इतर कछू वस्तु नहि ॥ चितेरेनें पूतलियां लिखियां हे तेसें सून्य आकाशविषे चित्तरूपी चितेरेनें विश्वरूपी पूतलियां कलपी हे ॥ सो आत्मरूपी भीततें इतर कछू नहि ॥ जेसें स्वर्नविषे भूषण कल्पित हे सो स्वर्नतें इतर कछू नहि ॥ तेसें आत्माविषे अज्ञानी विश्व देखते हे सो आत्मातें इतर कछू नहि ॥ सब आत्मस्वरूपकी संज्ञा हे जगत्का, ब्रह्म, आत्मा, आकाश, देश, काल, सब उसी तत्वकी संज्ञा हे उहि शुद्ध चैतन आकाश हे जिसका चमत्कार अेसें स्थित हे ॥ तिसी तत्वविषे स्थित होड्ड यह जगत् अेसें हे जेसें दूर दृष्टीकरी आकाशविषे बदल हाथीकी सुंड भासते हे तेसें यह जगत् हे ॥ यह जो अहं त्वं रूप जगत् हे सो अबोध करिके भासता हे ॥ अरु बोधकरीकें लीन होजाता हे ॥ जेसें मरुथलविषे सूर्यकी किरणांकरी जल भासता हे ॥ जेसें गंधर्व नगर हे तेसें यह जगत् हे ॥ तातें इसका त्याग करड्ड॥

इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे चित्तचमत्कारो नाम शताधिक चतुस्त्रिंशतितमःसर्गः ॥ १३४ ॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ भुसंडोवाच ॥ हे विद्याधर यह जगत् स्थावर जंगम सब आत्मातें उत्पन्न ड्डआ हे ॥ आत्माहिविषे स्थित हे अरु आत्माहि विश्वविषे स्थित हे॥ जेसें सुपनेकी विश्व सुपनेवाले विषे स्थित हे इतर कछू नहि ॥ अरु आत्मा कीसीका कारण नहि ॥ काहेतें जो अद्वैत हे जिसविषे दूसरा फुरणा नहि ॥ हे अंग जब तुं तिस पद पावणेकी इछा करता हे ॥ तब तुं अेसें निश्चय करु जो न में हो न इह जगत् हे जब तुं अेसा ड्डआ तब आत्मपदकी प्राप्ती होवेगी ॥ जो देश काल वस्तुके प्रछेदतें रहित हे अरु सर्व उहि परमात्मतत्व स्थित हे अरु जगत्का कर्ता संकल्पही हे काहेतें जो संकल्पकरी उत्पत्ति होता हे बहुरी संकल्पही करी नास होता हे ॥ जेसें पवनकरी अग्नि उत्पत्ति होती हे अरु पवनहि करी दीपक निर्वाण होता हे ॥ तेसें जब संकल्प बहिर्मुख फुरता हे तब संसार उदे होभासता हे ॥ जब संकल्प अंतर्मुख होता हे तब आत्मपद प्राप्त होता हे अरु प्रपंच ले होजाता हे तातें संसारकी नाना प्रकार संज्ञा फुरणेकरी होती हे ॥ स्वरूपविषे कछू नहि न सत्य हे न असत्य हे ॥ न स्वतः हे न अन्य हे यह सब कल्पनामात्र हे सत असत अरु स्वतः अन्यका अभाव ड्डआ तहां अहं त्वं कहां पाइयें ॥ हे नही सो भ्रम मात्र हे बालकके जक्षवत् ॥ हे साध जहां अहं त्वं नष्ट होगए तहां जो सत्ता हे सो परमपद हे अरु जहां जगत् हे तहां विचार करी लीन होजाता हे अरु वास्तव पूछे तो ब्रह्म अरु जगतविषे भेद कछू नहि नाममात्र दो हे जेसें घट अरु कुंभ हे परंतु भ्रमकरी नानात्व भासता हे ॥ जेसें समुद्रविषे आवर्त तरंग उठते हे ॥ सो जलतें इतर कछू नहि अरु पवनके संयोगतें आकार भासते हे तेसें आत्माविषे जगत् इतर कछू न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हि परंतु संकल्पके फुरणेकरी नाना प्रकारका जगत् भासता हे॥ हे अंग यह संकल्पके साथ मिलिकरी चित्तशक्ति जेसी भावना करता हे तेसा रूप अपणा देखता हे ॥ स्वरूपतें इतर क छू नहि परंतु भावनाकरी अवरका अवर देखता हे ॥ जेसें शुद्ध मणीके निकट कोउ रंग राखिये तेसा रूप भासता हे ॥ अरु मणीविषे कछु रंग हुआ नहि तेसें चित्तशक्तिविषे कछु हु आ नहि अरु हुएकी न्यांई स्थित हे ॥ तातें अपणे स्वरूपकी भावना करु अरु जड चैतनकों छांडीकरी शुद्ध चैतनविषे स्थित होहु ॥ जब अेसें जाणीकरी अपणे स्वरूपविषे स्थित होवे गा ॥ तब तेरेतांई उत्थान विषेभी विश्व अपणा स्वरूप भासेगा ॥ हे विद्याधर यह जगत्भी आत्मातें भासता हे ॥ जेसें स्थिर समुद्रविषे तरंग फुरते हे सो कारणरूप जल विना तो नहि ॥ ते सें ब्रह्म कारणरूप बिना जगत् नहि परंतु केसें हे ब्रह्मसत्ता जो अकर्तारूप हे अद्वैत हे अच्युत हे इसीतें कहा हे जो अकर्ता हे अरु जगत् अकारणरूप हे जो जगत् अकारणरूप हे तो न उपजता हे न नास होता हे मरुथलके जलवत् हे इसीतें कहा हे जो जगत् कछु वस्तु नहि ॥ केवल अज अच्युत शांतरूप आत्मतत्वही अखंडित स्थित हे सिलाकोसवत् अचैत चिन् मात्र हे जिसकों चिन्मात्रकी अंतरभावना नहि तिस मूरख साथ हमारा क्या हे ॥ हे साध परमार्थतें कछु बन्या नहि अरु जहां जहां यह मन हे तहांतहां अनेक जगत् हे ॥ तृण सुमेरु आदिक जो हे तिन सर्वविषे जगत हे जो विचार करि देखिये तो उहिरूप हे अवर कछु नहि जेसें स्वनेंके जाणेतें भूषणभी स्वर्न भासते हे तेसें केवल सत्ता समानपद एक अद्वैत हे इतर कछू नहि भिन्न भिन्न संज्ञाभी उही हे ॥ ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठेनिर्वाणप्रकरणे सर्गउपसर्गोपदेशो नामशताधिकपंचत्रिंशतितमःसर्गः ॥ १३५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ भुसंडोवाच ॥ हे विद्याधर जब यह आत्मपदकों प्राप्त होता हे तब इसकी अवस्था अेसी होती हे जो नगन शरीर होवे अरु तिसपर बहुत शस्त्रोंकी बर्षा होवे तिसकरी दुःखी नहि होता अरु सुंदर अ प्सरा कंठ साथ मिले तो तिनकरी हर्षवान नहि होता ॥ दोनोंहिविषे तुल्य रहता हे ॥ हे विद्याधर तबलग यह पुरुष आत्मपदका अभ्यास करे ॥ जबलग संसारतें सुषुम्नकी न्यांइं नहि हो ता अभ्यासहि करी आत्मपदकों प्राप्त होवेगा ॥ जब आत्मपदकी प्राप्ति भइ तब पंचभूतक शरीरके ज्वर स्पर्श न करेंगे यद्यपि शरीरविषे प्राप्तिभी होवे तोभी तिसके अंतर प्रवेश नहि क रते ॥ केवल शांतपदविषे स्थित रहता हे ॥ विद्यमानभी लागते हे तोभी स्पर्श नही कर सकते ॥ जेसें जलविषे कमलकों स्पर्श नहि होता ॥ हे देवपुत्र जबलग देहादिकविषे अध्यास हे॥ तबलग इसकों सुख दुःख स्पर्श करते हे आत्माके प्रमादकरी जब आत्माका साक्षात्कार हुआ तब सर्व प्रपंचभी आत्मरूप भासेगा॥ हे विद्याधर जेसें कोउ पुरुष विषपान करता हे तब उसकों जलनता अरु खांसी होती हे॥यह अवस्था विषकी हे सो विषतें इतर कछू नहि ॥परंतु नाम संज्ञा हुइ हे न विष जनमती हे न मरती हे ॥ अरु धूष खांसी उसविषे दृष्ट आइ हे ॥ तेसें आत्मा न जनमता हे न मरता हे अरु गुणोंके साथ मिलिकरी अवस्थाकों प्राप्त हुआ दृष्ट आता हे आत्मा जन्म मरनतें रहित हे ॥ अरु गुणों संकल्प साथ मिलणेकरी जनमता मरता भासता हे अंतःकरण अरु देह इंद्रियादिक भिन्न भिन्न भासते हे ॥ हे साध इह जगत् भ्रमकरी भासता हे ॥ जो ज्ञानवान पुरुष हे सो इस जगत्कों गौपदकी न्यांइं लंघि जाते हे अपणे पुरुषार्थ करि अरु जो अज्ञानी हे तिनकों अल्पभी समुद्र समान होजाता हे ॥ तातें आत्मपद पावणेका जतन करो ॥ जिसके जाणेतें संसार समुद्र तुछ हो जावे ॥ सो आत्मतत्व केसा हे जो सर्वविषे अनुस्यूत व्याप्या हे अरु सर्वतें अतीत हे बहुरी केसा हे जिसके जाणेतें अंतर सीतल होजाता हे सब ताप नष्ट होजाते हे ॥ हे साध फिरि तिसका त्याग करणा अविद्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे अरु बडी मूर्खता हे ॥ हे साध यह पदार्थजात सब ब्रह्मस्वरूपही हे ॥ जो ब्रह्मस्वरूप हुए तो मन अहंकार आदिक कलंक केसा सब उही हे ॥ किसी करी किसीकों कछु दुःख सुख नहि॥ हे विद्याधर जब आत्मपदकों जाण्या तब अंतःकरणभी ब्रह्मस्वरूप भासेंगे जो संकल्पकरी भिन्न भिन्न जाणते हे सो संकल्पके होतेभी ब्रह्मस्वरूप भासेंगे ॥ तातें निःसंकल्प होकरी स्थित होहु जो न में हो न इह जगत् हे न इदं हे ॥ इन शब्दों अरु अर्थोंतें रहित होकरी स्थित होहु जो संशे सब मिटि जावे ॥ हे विद्याधर जब तूं अेसें निरहंकार होवेगा अरु निःसंकल्प होवेगा तब उत्थानकालविषेभी सर्व आत्मा भासेगा बुद्धि बोध लज्जा लछमी स्मृति जस कीरति इत्यादिक जो शुभ अशुभ अवस्था हे सो सर्व आत्मबुद्धि रहेगी ॥ इनके प्राप्त हुए भी केवल परमार्थ सत्तातें इतर न भासेगा ॥ जेसें अंधःकारविषे सर्पके पैरका खोज नहि भासता काहेतें जो हे नहि ॥ तेसें तेरे तांइ सर्व अवस्था न भासेगी सर्व आत्माहि भासेगा॥जेते कछु भावरूप पदार्थ स्थित हे सो अभाव होजावेंगे ॥ हे अंग जिस पुरुषनें विचार करि आत्मपद पावणेका जतन किया हे सो पावेगा अरु जिसनें कहा जो में मुक्त होरहोंगा मेरेतांइ दया करेगे ॥ तिस पुरुष कदाचित् नहि मुक्त होणा आत्मस्वरूपविषे स्थित होणेकों पुरुष प्रयत्नविना कदाचित् मुक्त न होवेगा ॥ आत्मस्वरूपविषे न कोउ दुःख हे न किसी गुण साथ मिल्या हुआ सुख हे केवल शांतरूप हे ॥ किसीकरी किसीकों कछु सुख दुःख नही न सुख हे न दुःख हे न कोउ करता हे न भोगता हे केवल ब्रह्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥

॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे यथाभूतार्थ भावरूपजोगोपदेशो नाम शताधिकषट्त्रिंशतितमःसर्गः ॥ १३६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ भुसंडोवाच ॥ हे विद्याधर जेसें कोउ कलना करे जो आकास विषे अवर आकास स्थित हे तो मिथ्या प्रतीति हे ॥ तेसें आत्माविषे जो अहंकार फुरणा हे सो मिथ्या हे जेसें आकासविषे अवर आकास कछू वस्तु नही परमार्थ तत्व एसा सूक्ष्म हे जिसविषे आकासभी स्थूल हे॥ केवल आत्मत्वमात्र हे अरु स्थूल अेसा हे जिसविषे सुमेरादिकभी सूक्ष्म अणुरूप हे ॥ द्वैतनें रहित चैतन केवल सांतरूप हे गुण अरु तत्व क्षोभतें रहित हे ॥ हे देवपुत्र अपणा अनुभव रूपी चंद्रमा हे अरु अमृतके श्रवणेहारा हे ॥ हे अंग जेते कछू दृश्य पदार्थ भासते हे सो हुए कछू नही हे अंग आत्मरूप अमृतकी भावना करु जो तुं जन्म मृत्युके बंधनतें मुक्त होवे ॥ जेसें आकासविषे दूसरे आकासकी कल्पना मिथ्या हे ॥ तेसें निराकार चिदात्मा विषे अहं मिथ्या हे जेसें आकाश अपणे आपविषे स्थित हे तेसें आत्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे अहं त्वं आदिकतें रहित हे ॥ जब अहंका उत्थान तिसविषे होता हे तब जगत् विस्तार होता हे जेसें जलविषे द्रवताकरी तरंग पसरते हे तेसें अहंकरी जगत् पसरता हे ॥ अरु जेसें वायु फुरणेतेंरहित हुइ आकासरूप हो जाती हे ॥ तेसें संवित उत्थान अहंतें रहित हुइ तब आत्मरूप हो जाती हे ॥ जगत् भ्रम मिटि जाता हे फुरणेकरी जगत् फुरि आया हे वास्तव कछू नही ॥ ज्ञानवानकों आत्माहि भासता हे ॥ देस काल बुद्धि लज्जा लक्ष्मी स्मृति कीर्ति सब आकासरूप हे ॥ ब्रह्मरूपी चंद्रमाके प्रकासकरि प्रकासते हे ॥ जेसें बदलोंके संयोग करि आकास धुम्रभावकों प्राप्त होता हे ॥ तेसें प्रमादकरिकें संवित दृश्य भावकों प्राप्त होती हे परंतु अवर कछू नही होती ॥ जेसें तरंग करिकें जल अवर कछू नही होता ॥ जेसें काष्ठ छेदेतें अवर कछू नही होता ॥ तेसें द्रष्टातें दृश्य भिन्न नही होती जेसें केलेके थंभविषे पत्र बिना अवर कछू नही निकसता पत्र शून्यरूप हे ॥ तेसें क्रूररूप जगत् भासता हे परंतु आत्मातें भिन्न कछू नही शून्यरूप हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सीस भुजा नेत्र चरन आदिक नाना प्रकार भिन्न भिन्न भासते हे परंतु सभ शून्यरूप केलेके पत्रोंकी न्यांइ भासते हे सभ असाररूप हे ॥ हे विद्याधर चित्तविषे रागरूपी मलीनता हे ॥ जब वैरागरूपी झाडु करी झाडियें तब इसका चित्त निर्मल होवे जेसें कंध उपर चित्र लिखे होते हे तेसें आत्माविषे जगत् भासता हे देवता मनुष्य नाग दैत आदिक सभ जगत् संकल्प रूपी चितेरेनें मूरतां लिखियां हे स्वरूपके विचार करी निवर्त हो जातीयां हे जब स्नेहरूप संकल्प फुरता हे तब भाव अभावरूप जगत् विस्तारकों पावता हे ॥ जेसें जलविषे तेलकी बुंद विस्तारकों पावती हे जेसें वांसतें अग्नि निकसी करी वांसकों दग्ध करती हे ॥ तेसें स्नेह इसतें उपजी करी इसीकों खाते हे ॥ आत्माविषे जो देस काल पदार्थ भासते हे यहि अविद्या हे पुरुषार्थ करी इसकों अभाव करो ॥ दो भाग साधसंग अरु कथा श्रवणविषे बितीत करो ॥ तृतीय भाग शास्त्रका विचार करो ॥ चतुर्थ भाग आत्मज्ञानका आपहि अभ्यास करो ॥ इस उपाय करी अविद्या नष्ट हो जावेगी ॥ अरु अशब्द अरूप पदकी प्राप्ति होवेगी ॥ विद्याधरोवाच ॥ हे मुनीश्वर चार भाग जो उपाय करी अशब्द पद प्राप्त होता हे ॥ सो सभ काल क्या हे नाम अर्थके अभाव हुए शेष क्या रहता हे ? ॥ भुसंडोवाच ॥ हे विद्याधर संसार समुद्रके तरणेकों ज्ञानवानका संग करणा ॥ जो विकृत निर्वैर पुरुष हे तिनकी भली प्रकार टहल करणी तिसकरी अर्धभाग अविद्याका नष्ट होवेगा उनकी संगति करिकें अरु तीसरा भाग मनन करिकें चतुर्थ भाग अभ्यासकरिकें नष्ट होवेगा अरु जो यह उपाय न करी सके तो यह युक्ति कर जिसविषे चित्त अभिलासकरिकें आसक्त होवे तिसीका त्याग करु ॥ एक भाग अविद्या इस प्रकार नष्ट होवेगी ॥ तीन भाग सनेसने करी नष्ट होवेगी साधसंग अरु सतशास्त्र विचार अरु अपणा जतन होवे तब एकहिवार अविद्या नष्ट हो जावेगी यह समकाल कहियें ॥ अरु एक एकके सेवेतें एक एक भाग निवर्त होता हे ॥ पाछें जो शेष रह ता हे तिसविषे नाम अर्थ सभ असतरूप हे ॥ अजर अनंत एकरूप हे ॥ संकल्पके उपजेतें पदार्थ भासते हे संकल्पके लीन हुए लीन हो जाते हे ॥ हे विद्याधर यह जगत् संकल्पकरी रचा हे जेसें आकासविषे सूर्य निराधार स्थित होता हे तेसें देसकालकी अपेक्षातें रहित यह मननमात्र स्थित हे ॥ तीनों जगत् मनके फुरणे करिकें फुरि आते हे मनके ले हुए ले हो जाते हे ॥ जेसे सुपनेके पदार्थ जागेतें अभाव हो जाते हे ॥ हे विद्याधर ब्रह्मरूपी वनविषे एक कल्पवृक्ष हे तिसकी अनेक साखा हे तिसकी एक साखा साथ जगत्रूपी पुरलका फल हे ॥ तिसविषे देवता दैत मनुष्य पसु आदिक मछर हे वासनारूपी रस करी पूरन मज्जा पहाड हे ॥ पंचभूत मुख द्वारा तिसका खुला निकसणेका मार्ग हे इत्यादिक सुंदर रचना बणी हे ॥ तिसविषे त्रिलोकीका इश्वर इंद्र एक होत भया ॥ गुरुके उपदेस करी तिसका आवरण नष्ट हो गया ॥ बहुरी इंद्र अरु दैतका जुद्ध होणे लागा ॥ इंद्र अपणी सेनाकों ले चला तब इंद्र की हीणता भइ इंद्र भागा दशोदिशाविषे भमता रहा ॥ जहां जावे तहां दैत चले आवे ॥ जेसें पापी परलोकविषे सोभा नही पावता तेसें इंद्र सांतिकों न पाया ॥ तब अंतबाहकरूप करीकें सूर्यकी त्रिसरेणुविषे प्रवेश करी गया जेसें कमलविषे भवरा प्रवेश करे तेसें प्रवेश किया ॥ वहां जुद्धका वृत्तांत इसकों विस्मरण हो गया ॥ तब एक मंदिरविषे बेठा आपकों दे खत भया ॥ जेसें निद्राकरी सुपन सृष्टि भासि आवे तहां रत्न मणी साथ संवित नगर देखा तिसविषे प्रवेश करत भया ॥ तहां पृथ्वी पहाड नदियां चंद्र सूर्य त्रिलोकी इसकों भासणे ला गी ॥ तिस जगत्का इंद्र आपकों देखत भया जो दिव्य भोग ऐश्वर्य करी संपन्न में इंद्र स्थित हों सो इंद्र केतेक काल उप्रांत शरीरकों त्यागकें निर्वाण हुआ जेसें तेलतें रहित दीपक नि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्ण होता हे तब कुंदनाम पुत्र उसका इंद्र हुआ राज करणे लागा बहुरी तिसका एक पुत्र भया ॥ तब कुंद इंद्र शरीरकों त्याग करी परम पदकों प्राप्त हुआ॥तिसका पुत्र राज करणे लागा बहुरी तिसका पुत्र हुआ इसी प्रकार सहस्र पुत्रही हो करी राज करते रहे उनके कुलविषे यह हमारा इंद्र राज करता हे ॥ तातें यह जगत् संकल्प मात्र हे तिस त्रिसरेणुविषे यह सृष्टि हे तातें इस जगत्कों संकल्प मात्र जाणी करी इसकी आस्था त्यागु॥ ॥ इतिश्री यो०नि०प्र०इंद्रोपाख्यानेत्रिसरेणुजगत्वर्णनंनामशताधिकसप्तत्रिंशततितमःसर्गः ॥१३७॥ ॥७॥

॥ भुसंडोवाच ॥ हे विद्याधर बहुरी उनके कुलविषे एक इंद्र हुआ बडा श्रीमान त्रिलोकीका राज करत भया॥बहुरी उह निर्वाण हुआ तिसके पुत्र रहा तिसकों बृहस्पतिके बचनकरी ज्ञानरूप प्रतिभा उदे भइ तब यह विदितवेद होकरी स्थित भया॥अरु जथाप्राप्तविषे इंद्र होकरी राज करे दैतोंकों जीते तब एक कालविषे किसी कार्यके निमित्त झिहकी तंतुविषे प्रवेस किया तहां तिसकों नाना प्रकारका जगत् भासणे लगा तहां इसकों अपणी इंद्रकी प्रतिभा भइ तब इच्छा उपजी जो में ब्रह्म तत्वकों प्राप्त होउं॥ दृश्य पदार्थको न्यांइ प्रत्यक्ष देखों एकांत बेठी करी समाधिविषे स्थित हुआ॥तिसकों अंतर बाहिर ब्रह्म साक्षात्कार हुआ तिस प्रतिभाके उदे होणे करी एक निश्चे भया॥जो सर्व ब्रह्मही हे अरु सर्व उर पूजणे जोग हे॥ सर्व पूजतेभी इसीकों हे अरु सर्व हे अरु सर्व शब्दतें रहित हे रूप अवलोकतें रहित हे अरु मननतेंभी रहित हे॥ केवल शुद्ध आत्मपद हे अरु सर्व उरतें प्राणपद उसीके हे॥ सर्व सीस अरु मुख उसीके हे अरु सर्व उरतें तिसीके श्रवण हे ॥ अरु सर्व उरतें तिसीके नेत्र हे अरु सर्वकों आत्मत्वकरिकें स्थित हो रहा हे ॥ सर्व इंद्रियां अरु सर्व विषयकों प्रकासता हे ॥ अरु सर्व इंद्रियांतें रहित हे अरु असक्त हुआभी सर्वकों धारि रहा हे निर्गुण हे अरु इंद्रियां साथ मिलीकरी गुणोंका भोक्ता हे अरु सर्व भूतके अंतर बाहिर व्यापि रहा हे अरु सूक्ष्म हे॥तातें दुरविज्ञेय हे इंद्रियांका विषय नही अरु अज्ञानीकों अज्ञानकरिकें दूर हे अरु ज्ञानीकों ज्ञानकरिकें निकट हे आत्मत्वकरिकें अरु अनंत हे सर्व व्यापी हे अरु केवल सांतरूप हे जिसविषे दूसरा कोउ नही ॥ घट पट कंध गाए आवा बरा नरा सभविषे उहि तत्वभासता हे पर्वत पृथ्वी चंद्र सूर्य देसकाल वस्तु सर्व ब्रह्मही हे ॥ ब्रह्मतें इतर कछू नही ॥ हे विद्याधर इस प्रकार इंद्रकों ज्ञान हुआ अरु जीवन्मुक्त भया जो कछू चेष्टा होवे सो सब करे परंतु अंतःकरणविषे बंधमान न होवे ॥ जब केताकाल बीत्या तब इंद्र निर्वाण पदकों प्राप्त हुआ आकाशभी जिसविषे स्थूल हे तिस पदकों प्राप्त भया बहुरी इंद्रका एक पुत्र सो बडा सुरवीर था ॥ तिसनें सर्व दैतकों जीत्या बहुरी देवताका अरु त्रिलोकीका राज करणे लागा तिसकोंभी ज्ञान उत्पत्ति भया सत शास्त्र अरु गुरुके बचनकरी केताकाल बीत्या तब उहभी निर्वाण हुआ उसका जो पुत्र रहा उह राज करणे लागा इसी प्रकार केइ इंद्र हुए अरु तिसविषे राज करत भये अरु नाना प्रकारके व्यवहारकों देखते भये ॥ तब तिसके कुलविषे इसका कोउ पुत्र था तिसकों यह हमारी सृष्टी भासी आइ उहभी ब्रह्मध्यानी होत भया तब उह आयकरी इस त्रिलोकीका राज करणे लागा अबलग विस्वका इंद्र उही हे ॥ हे विद्याधर इस प्रकार विस्वकी उत्पत्ति हे सो संकल्पमात्र हे सभ में तेरे तांइ कही हे उसकों पहिले त्रिसरेणुविषे सृष्टि भासी॥ बहुरी तिस सृष्टिके एक झिहकी तंतुविषे उसकों भासी बहुरी तिसविषे केइ वृत्तांत जो संकल्पमात्र थे उनकों तुरत देखे अणुविषे अनेक अवस्था देखियां ॥ हे विद्याधर वास्तव कछू हुइ नही जेसें आकासविषे नीलता भासती हे अरु हे नही ॥ तेसें यह विश्व हे आत्माविषे विश्वका अत्यंत अभाव हे ॥ यह विश्व अहंभावतें उपजा हे ॥ जब अहंभाव फुरता हे तब आगें सृष्टि बनती हे॥ज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ब अहंका अभाव हुआ तब विश्व कोउ नही इस विश्वका बीज अहं हे ॥ तातें तुं अेसी भावना करु जो न मैं हौं न जगत् हे जब अेसी भावनाकरी तब आत्माहि शेष रहेगा ॥ जो प्रत्यक्ष ज्ञानरूप अपणा आप हे ज्योंकात्यों भासेगा ॥ हे विद्याधर इस मेरे उपदेशकों अंगीकार करु ॥ इ० यो० नि० संकल्पासंकल्पैकता प्रतिपादनंनाम शताधिकअष्टत्रिंशतितमःसर्गः॥१३८॥

॥ भुसंडोवाच ॥ हे विद्याधर जब अहंका उत्थान होता हे तब आगें सृष्टि बनि भासती हे जब अहंका अभाव हुआ तब विश्व कछू नही भासती केवल सुद्ध आत्माहि भासता हे ॥ हे विद्याधर इंद्रनें कहा जो में हों उसकों सूर्यकि किरणोके अणुविषे अेसें अहं हुआ तब उसविषे देखा अरु कष्ट पाया ॥ जब उसकों अहं न होता तब दुःखकों न पावता॥ दुःखरूपी वृछका अहंरूपी बीज हे ॥ अरु आत्मविचारतें अहंका नास होता हे ॥ जब अहंका नास होता हे तब आत्मपदका साक्षात्कार होता हे ॥ अरु आत्मपदके साक्षात्कार हुए प्रछन्न अहंका नास होता हे ॥ हे विद्याधर आत्मरूपी एक पर्वत हे तिस ऊपर आकासरूपी बन हे तिसविषे संसाररूपी वृक्ष लागा हे ॥ वासनारूपी तिसविषे रस हे ॥ अज्ञानरूपी भूमितें उत्पत्ति हुआ हे ॥ अरु नदियां समुद्र इसकी नाडी हे अरु चंद्रमा तारे इसके फूल हें वासनारूपी जल साथ बढता हे अरु अहंकाररूपी वृक्षका बीज सुख दुःखरूपी इसके फल हे ॥ रस विषे अनात्मपद हे अरु टास इसके आकास हे अरु जडां इसकी पाताल हे तुम इस वृक्षकों ज्ञानरूपी अग्निकरी जलावहु ॥ अहंरूपी जो वृक्षका बीज हे तिसीका नास करो॥हे विद्याधर एक खाइ हे तिसके जन्म मरणरूपी दोनों किनारे हे अनात्मरूपी तिसविषे जल हे अरु वासनारूपी तिसविषे तरंग हें अरु विश्वरूपी तिसविषे बुद्बुदे होतेभी हे अरु मिटिभी जाते हे अरु शरीर रूपी तिसविषे झग हे अहंकार रूपी वायु हे जब वायु हुइ तब तरंग बुद्बुदे सब होता हे ॥ जब वायु मिटि गइ तब केवल स्वछ निर्मलहि भासता हे ॥ हे विद्याधर जो वायु हुइ तो जलतें इतर कछू न हुआ ॥ अरु जो न हुइ तोभी जलतें इतर कछू नही जलही हे ॥ तेसें अज्ञानके होतेभी अरु निवर्त हुएभी आत्मपद ज्योंकात्यों हे ॥ परंतु सम्यक् दर्सन करिकें आत्मपद भासता हे अरु अज्ञान करिकें जगत् भासता हे सो अहंका होणांही अज्ञान हे ॥ जब अहं हुआ तब ममभी होता हे ॥ सो अहंममभी नाम संसारका हे ॥ जब अहं मम मिटिगया तब जगत्का अभाव होता हे ॥ अहंके होते दृश्य भासती हे अरु दृश्यविषे अहं होती हे तातें संवेदनकों त्यागकरी निर्वाण पदकों प्राप्त होहु ॥ भुसंडोवाच ॥ हे वसिष्ठजी इस प्रकार जब में विद्याधरकों उपदेश किया ॥ तब समाधिविषे स्थित हुआ अरु परमनिर्वाण पदकों प्राप्त भया ॥ जेसें दीपक निर्वाण हो जाता हे तेसें उसका चित्त क्षोभतें रहित सांतिकों प्राप्त भया ॥ हे ब्राह्मण उसका रिदा सुद्ध था मेरे वचनों सीघ्रहि उसके रिदेविषे प्रवेस किया ॥ जब समाधि स्थित भया तब में उसकों जगाय रहा वारंवार परंतु न जाग्या ॥ जेसें कोउ जलता जलता सीतल समुद्रविषे जाय बैठे॥ अरु उसकों कहियें तुं निकस तो नही निकसता तेसें संसार तापकरी जलता जो था अरु आत्म समुद्रकों उह प्राप्त हुआ तब अज्ञानरूपी संसारके प्रवाहकों नही देखता ॥ हे वसिष्ठजी जिसका अंतःकरण सुद्ध होता हे तिसकों थोडेवचनभी बहुत हो लागता हे जेसें तेलकी एक बुंद जलविषे पाइ वडे विस्तारकों पावती हे तेसें जिसका अंतःकरण सुद्ध होता हे तिसकों थोडा वचनभी बहुत होकरी लागता हे ॥ अरु जिसका अंतःकरण मलिन होता हे ॥ तिसकों वचन नही लागता ॥ जेसें आरसी ऊपर मोती नही ठहरता तेसें गुरु शास्त्रके वचन उसकों नही लागते ॥ जब विषयते वैराग उपजे तब जाणिये जो हृदा सुद्ध हुआ हे ॥ हे वसिष्ठजी जब में विद्याधरकों उपदेश किया तब उह सीघ्रही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मपदकों प्राप्त भया ॥ काहेतें जो उसका चित्त निर्मल था हे मुनीश्वर जो तुमनें मुझतें पूछाथा सो कहा जो ज्ञानतें रहित चिरकाल जीता देखा ॥वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी ऐसें मैं का
क भुसंडकों पूछा था सो मुझसों कहा ॥ अरु कही करी तुष्णी हो गया ॥ जेसें मेघ वर्षाकरी तुष्णी होवे तेसें उह तुष्णी भया ॥ अरु मैं नमस्कार करिकें उठी आकास मार्गतें अपणे घर
आया ॥ हे रामजी अब एकादस चउकडी जुग बीते हे मेरे अरु काग भुसंडके संवादकों ॥ हे रामजी कालका नेम नही जो थोडे कालकरी ज्ञान उपजता हे अथवा बहुत कालकरी
उपजता हे ॥ यह रिदे सुद्धकी बात हे जिसका रिदा सुद्ध होता हे तिसकों गुरु शास्त्रोंका वचन सीघ्रही लागता हे ॥ जेसें जल नीचेकों सुभाविक जाता हे तेसें शुद्ध रिदेविषे उपदेश सो
घ्रही प्रवेस करता हे ॥ हे रामजी एता उपदेश क्रमकरिकें तुझकों किया हे तिसका तात्पर्य यह जो फुरणेका त्याग करु ॥ जो न मैं हों न कोउ जगत् हे तब पाछें निर्विकल्प केवल आ
त्मपद रहेगा जो सर्वका अपणा आप हे तिसका साक्षात्कार तुझकों होवेगा ॥ जेसें दर्पण मलिनविषे मुख नही दिखता तेसें आत्मरूपी दर्पण अहंरूपी मलकरी आछाद्या हे ॥ जब इस
का त्याग करो तब आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी ॥ अरु जगत्भी अपणा आप भासेगा जो आत्मातें इतर कछू नही ॥ काहेतें जो इतर कछू नही केवल आत्मत्वमात्र हे अरु अवर
जो कछू भासता हे सो मृग तृष्णाके जलवत् जाण अरु वंध्याके पुत्रवत् जाण यह जगत् आत्माके प्रमादकरी भासता हे ॥ जेसें आकासमें नीलता भासती हे अरु हे नही तेसें जगत्
प्रत्यक्ष भासता हे अरु हे नही जेसें जेवरीविषे सर्प मिथ्या हे तेसें आत्माविषे जगत् मिथ्या हे जब आत्माका ज्ञान हुआ तब जगत्का अत्यंत अभाव होवेगा केवल आत्मत्वमात्र अपणा
आप भासेगा ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे भुसंडविद्याधरोपाख्यानसमाप्तिर्नाम शताधिकनवत्रिंशततमः सर्गः ॥ १३९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी तुं
अहं वेदनातें रहित होड्ड संसाररूपी वृक्षका बीज अहंही हे वासना करिकें सुभ असुभरूप कर्मका सुख दुःख फल हे अरु वासनाहि करी प्रफुल्लित होता हे तातें अहंभावकों निवृत्त करो
जब अहं फुरता हे तब आगें जगत् भासता हे ॥ जब अहंतातें रहित होवेगा तब जगत् भ्रम मिटि जावेगा ॥ सो अहंता आत्मबोध करी नष्ट होती हे॥ आत्मबोधरूपी खंभाणी करी उडा
या अहंतारूपी पाषाण जाणेगा नही जो कहां गया ॥ अरु स्वर्न पाषाण तुझकों तुल हो जावेगा ॥ अरु शरीररूपी पत्र उपर अहंतारूपी अणु स्थित हे जब बोधरूपी वायु चलेगी तब
न जानेगा जो कहां गया ॥ अरु शरीररूप पत्र उपर अहंतारूपी बरफका कणका स्थित हे ॥ बोधरूपी सूर्यके उदे हुए न जानेगा जो कहां गया ॥ बोधविना अहंता नष्ट नही होती ॥
भावे चिकडविषे गमन होवे भावे पहाडविषे जाय रहे ॥ भावे घरहिविषे रहे भावे आकाशविषे उड भावे जलविषे रहे भावे थलविषे रहे ॥ भावे स्थूल होवे भावे सूक्ष्म होवे भावे निरा
कार होवे भावे रूपांतरकों प्राप्त होवे भावे भस्म होवे भावे मृतक हो जावे भावे दुर होवे अथवा निकट होवे ॥ जहां रहेगा तहांही अहंता इसके साथ हे ॥ हे रामजी संसाररूपी बट हे
तिसका बीज अहंता हे ॥ तिसतें सभ साखा पसरति हे सभ अनर्थका कारण अहंता हे जबलग अहंता हे तबलग दुःख नही मिटता ॥ जब अहंभाव नष्ट होवे तब परम सिद्धताकी प्राप्ति
होवेगी ॥ हे रामजी जो कछू मैं उपदेश किया हे तिसकों भली प्रकार विचारकरी तिसका अभ्यास करु ॥ तब संसाररूपी वृछका बीज जलि जावेगा अरु आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी
॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे अहंकारअस्तयोगोपदेसो नाम शताधिकचत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ १४० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी संसार संकल्पमात्र सिद्ध हे भ्रमकरीकैं उदे हुआ हे आत्मस्वरूपविषे सृष्टि वस्तियां हे केइ लीन होतियां हे, केइ उत्पत्ति होतियां हे, केइ उडतीयां हे, कइं एकठीयां जाय होतियां हे कइं भिन्न भिन्न उडतियां हे सो मुझकों प्रत्यक्ष भासतियां हे उह उडतीयां जातीयां हे तुमभी देखो अरु आकाशरूप हे अरु आकाशहिसों मिलतियां हे ॥ जेसें केलेका वृक्ष देखणेमात्र सुंदर होता हे ॥ अरु तिसविषे सार कछू नहि होता तेसें विश्व देखणेमात्र सुंदर हे अरु आकाशरूप हे॥ बहुरी केसी हे जेसें जलविषे पहाडका प्रतिबिंब पड ताहे अरु हलता भासता हे तेसें यह जगत् हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् तुम कहते हो प्रत्यक्ष सृष्टि उडतियां मुझकों भासतीयां हे तुंभी देखु ॥ यह तो मैं कछु नहि समुझा क्या कहते हो ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी अनेक सृष्टि उडतीयां हे सो श्रवण करु ॥ पंचभूतक शरीरविषे प्राण स्थित हे अरु प्राणविषे चित्त स्थित हे ॥ तिस चित्तविषे अपणी अपणी सृष्टि हे॥ जब यह पुरुष शरीरका त्याग करता हे तब लिंगशरीर जो वासना अरु प्राणवायु हे सो उडते हैं ॥ तिस लिंग शरीरविषे विश्व हे उह सूक्ष्म दृष्टीकरी मुझकों भासती हे ॥ हे रामजी आ कासकी जो वायु हे जिसका रूप रंग कछु नहि॥उहि वायु प्राणोंसाथ मिली मेरेतांइ प्रत्यक्ष देखाइ देती हे॥इसीका नाम जीव हे स्वरूपतें न कोउ आया हे न जाता हे परंतु लिंग शरीरके संयोगकरी आपकों आता जाता देखता हे अरु जनमता मरता देखता हे ॥ अपणी वासनाके अनुसार आत्माविषे विश्व देखता हे अवर बन्या कछू नहि यह वासनामात्र सृष्टि हे ॥जेसी वासना होती हे तेसी विश्व भासती हे॥हे रामजी यह पुरुष आत्मस्वरूप हे परंतु लिंग शरीरके मिलणेकरी इसका नाम जीव हुआ हे अरु आपकों प्रछंन जानता हे वास्तवतें ब्रह्मस्वरूप हे देशकाल वस्तुके प्रछेदतें रहित सो ब्रह्म हे तिसके प्रमादकरी आपकों कछु मानते हे इसीका नाम लिंग शरीर हे ॥ जेसें घटाकाशभी महाकाश हे परंतु घटके खपरकरी प्रछंन हुआ हे तेसें यह पुरुषभी आत्मस्वरूप हे ॥ अहंकारके संयोगकरिके जीव प्रछंन हुआ हे जेसें घटकों एक देसतें उठाए देशांतरविषे लेजाय राखा ॥ तो क्या ले गया आकाश तो न कहुं ग या हे न आया हे ॥ खपरकरि आता जाता भासता हे तेसें आत्म अखंडरूप हे परंतु प्राण चित्तकरी चलता भासता हे ॥ जब अहंकाररूप चित्त नष्ट होवे तब अखंडरूप होवे ॥ जबलग अहंकाररूपी खपर नहि फूटता तबलग जगत भ्रम देखता हे अरु वासना करिकें भटकता फिरता हे वासनाकी सृष्टि अपणे अपणे चित्तविषे स्थित हे ॥ जब शरीरका त्याग करता हे तब आकाशविषे उडता हे ॥ प्राणवायु उडीकरी जो आकाशविषे शून्यरूप वायु हे तिसविषे जाय मिलती हे तहां इसकों अपणी वासनाके अनुसार सृष्टि भासि आती हे अपणी सृष्टि कों लेकरी इस प्रकार उडते हे ॥ जेसें वायु गंधकों लेजाती हे तेसें यह वासनारूप सृष्टिकों लेजाते हे सो उडते मेरेतांइ सूक्ष्म दृष्टि करिकें भासते हे ॥ हे रामजी स्थूल दृष्टि करिकें लिंग शरीर नहि भासता सूक्ष्म दृष्टि करि देखता हे ॥ जिस पुरुषकों सूक्ष्म दृष्टि लिंग शरीर देखणेकी हे अरु ज्ञानतें रहित हे सोउ मेरे मतविषे मूरख पशु हे हे रामजी जब यह पुरुष वासनाका त्याग करता हे वासना कहिये अहंकार जो में हो इस होणेका त्याग करता हे तब आगें विश्व नहि दिखाइ देती केवल निर्विकल्प ब्रह्म भासता हे उसके प्राण नहि उडते तहांही लीन होजाते हे काहेतें जो उसका चित्त अचित्त होजाता हे इस करी नहि उडते जबलग अहंकारका संयोग हे तबलग विश्व इसके चित्तविषे स्थित हे जेसें बीजविषे वृक्ष स्थित होता हे ॥ जेसें तिलोंविषे तेल स्थित होता हे तेसें इसके रिंदेविषे विश्व स्थित हे जेसें मृत्तिकाविषे वासन बडे छोटे होवे जेसें लोहेविषे सुइ खडग होवे जेसें बीजविषे वृक्षभाव चेतन अथवा जड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होवे ॥ हे रामजी तेसें यह संकल्प कलनाविषे भेद हे स्वरूपतें कछु नहि तेसें यह जगत हे ॥ हे रामजी विश्व संकल्पमात्र हे काहेतें जो दूसरी अवस्थाविषे नास होजाती हे ॥ यह जाग्रत जो तुझकों भासती हे सब मिथ्या हे ॥ जब सुपना आया तब जाग्रत नहि रहती ॥ अरु जाग्रत आइ तब सुपना नास होजाता हे ॥ जब मृत्यु आती हे तब सृष्टिका अत्यंत अभाव हो जाता हे ॥ अरु देशकाल पदार्थ सहित वासनाके अनुसार अवर सृष्टि भासती हे॥ हे रामजी यह विश्व केसीहे जेसें सुपन नगर होवे तेसें हे॥ जेसें संकल्प पुर होवे तेसें यह सब संकल्प उडते फिरते हे ॥ सृष्टि केइ परस्पर मिलतियां हे केइ नहि मिलतियां परंतु सब संकल्परूप भ्रमकरिके अवरका अवर भासता हे जेसें कोउ पुरुष बडा होता हे अरु छोटा भासता हे अरु छोटेकों बडा भासता हे जेसें हस्तीके निकट अवर पशु तुछ भासते हे अरु चिटीके निकट अवर बडे भासते हे ॥ तेसें जो ज्ञानवान पुरुष हे तिसकों बडे पदार्थ देशकाल संयुक्त विश्व तुछ भासती हे असत जानता हे अरु जो अज्ञानी हे तिनकों संकल्प सृष्टि बडि होकरी भासती हे ॥ जेसें पहाड बडाभी होता हे परंतु जिसकी दृष्टितें दूर हे तिसकों महा लघु तुछ जेसा भासता हे अरु चिटीके निकट तुछ मृत्तिकाकी टेल राखी पहाडके समान हे तेसें ज्ञानीकी दृष्टितें यह जगत् रहित हे इसकरी बडा जगत्भी उसकों तुछरूप भासता हे ॥ अरु अज्ञानीकों तुछरूपभी बडा भासता हे ॥ हे रामजी यह विश्व भ्रमकरिकें सिद्ध हुइ हे जेसें भ्रमकरिकें सीपीविषे रूपा भासता हे ॥ अरु जेवरीविषे सर्प भासता हे तेसें आत्माके प्रमादकरी विश्व भासती हे ॥ अरु आत्मातें भिन्न कछू नहि ॥ जेसें निद्रा दोष करिकें पुरुष अपणे अंग भूलि जाते हे ॥ अरु जागे हुए सब अंग अपणे भासते हे ॥ तेसें अविद्यारूपी निद्रा करिकें पुरुष सोया हुआ जब जागता हे तब सब विश्व अपणा आप दिखाइ देती हे ॥ जेसें सुपनेतें जाग्या हुआ सुपनेकी विश्वकों अपणा आपहि देखता हे ॥ तेसें यह विश्व अपणा आपहि भासेगा ॥ हे रामजी जब यह पुरुष निद्रामें सोया होता हे तब शुभ अशुभ विश्वविषे राग दोष कछू नहि होता॥ अरु जागता हे तब इष्टविषे राग होता हे अनिष्टविषे दोष होता हे ॥ सो जबलग इसकों विश्व विषे हेयोपादेय बुद्धि हे जो सर्वज्ञ हे तोभी मूर्ख हे ॥ हे रामजी जब यह पुरुष जड होजावे तब कल्याण होवे सो जड होणा यही हे जो दृश्यतें रहित आत्माविषे स्थित होवे सो आत्मा चिन्मात्र हे ॥ आत्मातें इतर जो कछू करता हे सत अथवा असत जानता हे तबलग स्वरूप की प्राप्ति नहि होती जब संवित फुरणेतें रहित होवे तब स्वरूपका साक्षात्कार होवे ॥ तातें फुरणेका त्याग करु अरु यह स्थावर जंगम जगत् जो तुझकों भासता हे सो सर्व ब्रह्मस्वरूप हे ॥ जब तुं अेसें निश्चे करेगा तब सर्व विवर्तका अभाव होजावेगा आत्मपदहि शेष रहेगा ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् यह जीव जो तुम कहा सो जीवका स्वरूप क्या हे अरु जीव आकारकों यहण केसें करता हे अरु इसका अधिष्ठान परमात्मा केसें हे ॥ अरु इसके रहणेकास्थान कबन हे सो कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी शुद्ध जो परमात्म तत्व निर्विकल्प चिन्मात्र पद हे तिसविषे चैत्योन्मुखत्व हुआ जो में हो अेसें जो चित्तकला ज्ञानरूप फुरी अरु तिसकों चित्तका संबंध हुआ जो चित्तका संयोग भया तिसका नाम जीव हे ॥ सो जीव न सूक्ष्म हे न स्थूल हे न शून्य हे न अशून्य हे न थोडा हे न बहुत हे केवल आत्मत्वमात्र हे अरु शुद्ध हे न अणुरूप हे न स्थूल हे अनंत चैतन आकाशरूप हे तिसकों जीव करी कहते हें स्थूलका स्थूल उहि हे सूक्ष्मका सूक्ष्म उही हे ॥ अनुभव चैतन सर्वगतरूप सो जीव हे ॥ तिसविषे वास्तव शब्द कोउ नहि ॥ जो कोउ शब्द हे सो प्रतियोगी साथ मिलिकरी हुआ हे अ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रु जीव अद्वैत हे जो अद्वैत हे तिसका प्रतियोगी केसें होवे यह जीवका स्वरूप हे ॥ चैतके संयोगकरी जीव हुआ हे अरु जीवका अधिष्ठान परमात्मतत्व हे चैतन आकाश हे निर्विकल्प हे चैततें रहित शुद्ध चैतन हे तिसविषे जो संवित फुरी हे तिसका नाम जीव हे ॥ सो सूक्ष्मतें सूक्ष्म हे स्थूलतें स्थूल हे सर्वका बीज हे ॥ इसीका नाम वैराट कहते हे अरु शरीर तिसका मनोमय हे ॥ आदि जो परमात्म तत्वतें फुर्या हे अरु अवर अवस्थाकों नही प्राप्त भया ॥ अवर अवस्था कहिये प्रछंनताकों नही प्राप्त हुआ आपकों सर्व आत्मा जानता हे इसका नाम विराट हे प्रथम शरीर उसका मनोमात्र अरु शुद्ध प्रकाशरूप हे राग दोषरूपी मलतें रहित हे ॥ अरु अनंत आत्मा हे सर्व मन अरु कर्मों अरु देहोंका बीज हे अरु सबविषे व्यापि रहा हे ॥ सब जीवका अधिष्टाता हे ॥ तिसीके संकल्प करी यह जीव रचे हे पंचज्ञान इंद्रियां अरु अहंकार मन अरु संकल्प इन आठोंके आकार धारे हे ॥ अरु आपहि ग्रहण किए हे परमार्थरूपकों त्यागि फुरणेतें जो आकार उत्पत्ति हुए हे ॥ तिनकों ग्रहण किया इसका नाम पुर्यष्टका हे ॥ बहुरी इन इंद्रियांके छिद्र रचता भया स्थूलरूप रचीकरी तिनविषे आत्म प्रतीति करत भया ॥ जेसें पुरुष सेन करता हे अरु जाग्रत शरीरका त्याग करी सुपन शरीरका अंगीकार करता हे ॥ तेसें शुद्ध चिन्मात्र निर्विकार अद्वैत स्वरूपकों त्याग करी वासनामय शरीरका अंगीकार किया हे ॥ अरु वास्तव स्वरूपका कछू त्याग नही किया स्वरूपतें उह गिर्या नही ॥ सुद्ध निर्विकल्प भावकों त्याग करी विराट भाव होत भया हे ॥ इसी प्रकार आगें तिस पुरुषनें चारों वेद ज्ञान करीकें रचे अरु नीतिकों निश्चय किया ॥ नेति कहियें जो यह पदार्थ अेसें होवे अरु एताकाल रहे यह रचना रची जो जो संकल्प करत भया सो सो देशकाल पदार्थ दिसा ब्रह्मांड सब आगें होत भए ॥ तिस पुरुषके एते नाम हे ईश्वर वैराट आत्मा परमेश्वर इत्यादिक जीवके नाम हे सो इस जीवका स्वरूप वासनारूप कछू झुठ नही ॥ वासनाके शरीर ग्रहण करणे करी वासनारूप कहा हे अरु वास्तवरूप शुद्ध हे निर्विकार अद्वैत हे ॥ कदाचित् स्वरूपतें अन्य अवस्थाकों नही प्राप्त भया सदाज्ञानरूप हे अद्वैत परम शुद्ध हे ॥ तिसकों अपणे चैतन सुभाव करी चैतका संयोग हुआ हे तिस करी कहा हे जो उसका वपु वासनारूप हे ॥ तिस आदि जीवतें ब्रह्मा विष्णु रुद्रतें आदि लेकरी देवता दैत आकाश मध पाताल त्रिलोकी उत्पत्ति हुइ हे जेसें दीपकतें दीपक होता हे अरु जलतें जल होता हे तेसें सब विराट स्वरूप हे ॥ सो विराट केसाहे महा आकाश जिसका उदर हे ॥ अरु समुद्र तिसका रुधिर हे ॥ अरु नदियां जिसकी नाडी हे ॥ अरु दिसा जिसके वपु हे ॥ अरु जिसके उदरविषे केइ ब्रह्मांड सुमेरु पर्वत सहित समाए रहते हे ॥ अरु पवन जिसके मुंड हे ॥ अरु उनचास पवन जिसके प्राणवायु हे मांस जिसका पृथ्वी हे हस्त जिसके सुमेरादिक पर्वत हे ॥ तारे जिसकी रोमावलि हे अेसा विराट हे सहस्र जिसके सीस हे अरु सहस्र मस्तक हे सहस्रहि नेत्र हे अरु अनंत हे अनादि हे ॥ अरु चंद्रमा जिसकी कफ हे जिसतें अमृत श्रवता हे भूत उपजते हे ॥ अरु सूर्य पित्त हे अरु सर्वका उत्पत्ति कर्ता हे ॥ सर्व मन अरु सर्व कर्म अरु सर्व शरीरका बीज आदि विराट हे ॥ हे रामजी इस चित्तके संबंध करीकें तुछ हुआ हे वास्तवतें परमात्म स्वरूप हे जेसें महाकाश घटके संयोग करी घटाकाश होता हे तेसें विराट जो परमात्मा हे तिसनें फुरणे करी सृष्टि रची हे अरु तिसविषे अहं प्रत्यय करी हे इसतें तुछ हुआ हे सो इसकों मिथ्या भम हुआ हे जेसें सुपनेविषे अपना मरणा देखता हे तेसें आपकों दृश्य देखता हे सो लघुताभी इसकों आत्माकी अपेक्षा करीकें हे दृश्यविषे विराट हे अरु आत्माविषे इसका अनुभव हे ॥ हे रामजी इसी प्रकार इसनें उपजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करी सृष्टि रची हे ॥ जेसें एक विराट पुरुषने आदि निश्चा किया हे तेसेंहि अबलग हे सो यह आपहि उपजा हे अरु आपहि लीन हो जाता हे ॥ हे रामजी जिस प्रकार विराटकी आ
लातें उत्पत्ति हुइ हे ॥ तेसेंहि सब जीवकी हे यह सब विराट रूप हे ॥ परंतु जो स्वरूपतें उपजी करी दृश्य साथ तद्रूप हुए अरु वास्तव स्वरूप जिनकों भूलि गया सेा जीव तुछरूप भये
अरु स्वरूपसों फुरि करी स्वरूपतें न गिरे अरु आगें अपणाहि संकल्परूप विश्व देखी प्रमाद न हुआ तिसका नाम विराट आत्मा हे ॥ हे रामजी जीव चैतनरूप हे अरु निराकाररूप
हे इसकों जो शरीरका संयोग हुआ हे सो कलनाकरी हुआ हे ॥ जब आपकों दृश्य संयुक्त देखता हे तब महा आपदाकों प्राप्त होता हे ॥ जब द्वैततें रहित निर्विकल्प होकरी देखे
तब शुद्ध चैतन घन आत्मपदकों प्राप्त होता हे ॥ हे रामजी यह विराट केसा हे सबका उत्पत्ति करता हे ॥ सो अेसें केइ विराट आत्मपदतें उदे हुए हे अरु केइ मिटि गये हे अरु केइ
आगें होवेगे ॥ जेसें समुद्रतें केइ तरंग बुदबुदे उठते हे अरु लीन होते हे ॥ तेसें आत्मरूपी समुद्रतें केइ उठते हे केइ लीन होते हे केइ उपजेगे एसा परमात्मा सबका अधिष्टान हे सबके
अंतर बाहिर पूर्ण ज्ञान स्वरूप हे ॥ अेसा तेरा अपणा आप अनुभवरूप हे ॥ हे रामजी इस संवेदनकों त्याग करी देख उहि परमात्म स्वरूप हे यह जो कछू तुझकों भासता हे तिसकों
विचार करी त्याग जब तुं इसका त्याग करेगा तब चिन्मात्र जो परम शुद्ध तेरा स्वरूप हे सो प्रकाश तुझकों भासेगा तिसके आगें चैतनताहि आवरन रूप हे ॥ जेसें सूर्यके आगें बदलों
का आवरन होता हे ॥ जबलग बदल होते हे तबलग सूर्यका प्रकाश ज्योंका त्यों नही भासता ॥ जब बदल दूर होवे तब प्रकाश स्वछ भासता हे ॥ तेसें जब फुरणा निवृत्त होवेगा तब
शुद्ध आत्माहि प्रकाशेगा ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे विराट आत्मा वर्णनं नाम शताधिकैकचत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ १४१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

382

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह परमात्मा पुरुष फुरणे करिकें जीव संज्ञाकों प्राप्त हुआ हे ॥ फुरणे विषेभी उही हे अरु अपणे स्वरूपकों नही जानता इसीतें दुःख पावता हे ॥ जेसें
पवन चलता हे तोभी उहीरूप हे ॥ जब ठहरता हे तोभी उहीरूप हे दोनोंविषे तुल्य हे तेसें आत्मा सर्वदा एकरस हे कदाचित् प्रणामकों नहीं प्राप्त भया अरु यह जीव प्रमादकरिकें दृ
श्यकों कलपता हे दृश्यकों आप जानता हे इसीतें दुःख पावता हे ॥ अरु जो इसकों अपणा स्वरूप स्मरण रहे तो दृश्यविषेभी अपणा रूप भासे अरु जो निःसंकल्प होवे तोभी विश्व अ
पणा रूप भासे॥विश्वभी इसीका रूप हे परंतु अविचारतें भिन्न भिन्न भासती हे जेसें सुपनेकी विश्व सुपने वालेका रूप हे परंतु निद्रा दोषकरी नही जानता॥ जब जागता हे तब जानता
हे जो मेंही था तेसें यह प्रपंच सभ तेरा स्वरूप हे ॥ तुं अपणे स्वरूपविषे निरहंकार स्थित होकरी देख तो बन्या कछू नही अरु जो आत्मातें इतर प्रछंन कछू तुं बणेगा तो प्रपंच विश्व
भासेगा जो आत्मस्वरूपविषे स्थित होवे तो अपणा आप भासेगा प्रपंचका अभाव हो जावेगा ॥ हे रामजी शून्या शून्य जड चैतन किंचिन् निष्किंचित् सत असत सभ आत्माहि पूरन
हे ॥ निषेध किसका करियें सभ उही रूप हे ॥ हे रामजी अेसा अनुभवरूप हे जिसकरी सर्व पदार्थ सिद्धि होते हे ॥ अरु अेसे आत्माकों मूर्ख नही जानते जेसें जन्मका अंध
मार्गकों नहि जानता तेसें अज्ञानी महा अंध जागति जोति आत्माकों नहि जानते जेसें उलुकादिक सूर्य उदे हुएकों नहि जानते॥ तेसें वासनाकरी आवरे हुए आपकों जाणी नहि सक
ते ॥ जेसें जालविषे पंछी आवर्या होता हे ॥ तेसें जीव आवरे हुए हे इसीका नाम बंधन हे॥ जब वासनाका वियोग हुआ तब इसीका नाम मुक्ति हे॥हे रामजी विषमता करिकें इसकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीव संज्ञा हुइ हे ॥ जब सम हुआ तब ब्रह्म हे सो ब्रह्म अहंकारकों त्यागकरी होता हे ॥ जेसें खपरके संयोगकरी घटाकाश कहाता हे जब खपर टूटा तब महाकाश होजाता हे तेसें जब अहंकार नष्ट हुआ तब आत्मस्वरूप हे ॥ हे रामजी अज्ञान करिकें एक देसी जीव हुआ हे जब प्रछंनताका विजोग हुआ तब आत्मस्वरूप हे ॥ हे रामजी अपणा वास्तव स्वरूप जो निर्गुण हे तिसविषे गुणका संयोग उपाधि करिकें भासता हे ॥ सो अनर्थरूप हे ॥ जब निर्गुण अरु सगुणकी गांठ टूटी तब केवल अद्वैत तत्व अपणा आप भासेगा सो केसा स्वरूप हे जो अनामय हे दुःखतें रहित हे अरु सत असततें पर हे ज्ञानरूप आदि अंततें रहित हे ॥ जिसके पायेतें बहुरी पावणा कछू नही रहता अरु जिसके जाणेतें अवर जानणा कछू नही रहता अेसा जो उत्तम पद हे तिसकों आत्मत्व करिकें प्राप्त होवेगा ॥ हे रामजी यह जो ज्ञान तेरे तांइं कहा हे तिसकों आश्रे करिकें तुम ज्ञानवान होणा ज्ञानबंध नही होणा ज्ञानबंध तें अज्ञानी भला हे ॥ काहेतें जो अज्ञानीभी साधसंग अरु सतशास्त्र श्रवणकरी ज्ञानवान होता हे अरु ज्ञानबंध मुक्त नही होता ॥ जेसें रोगी होवे अरु कहे मुझकों रोग कोउ नही में अरोग हों ॥ तब वैदका औषध नही खाता काहेतें जो आपकों अरोगी जानता हे ॥ तेसें जो ज्ञानबंध हे तिसतें संतका संगभी नही होता अरु सतशास्त्रोंका श्रवणभी नही होता तातें अंधतमकों प्राप्त होता हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ज्ञानका लक्षण क्या हे अरु ज्ञानबंधका लक्षण क्या हे अरु ज्ञानबंधका फल क्या हे सो कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जिस पुरुषनें आत्माके विसेषण शास्त्रोतें श्रवण किये हे ॥ जो आत्मा नित हे सुद्ध हे अरु ज्ञानस्वरूप हे ॥ अरु तीनों शरीरतें भिन्न हे एसें सुणी करी आपकों मानता हे ॥ अरु विषय भोगणे की सदा तृष्णा रहती हे जो किसी प्रकार इंद्रियाके विषय मेरे तांइ प्राप्त होवे अेसा जो पुरुष हे सो ज्ञानबंध हे ॥ उह बोध सीलपी हे बहुरी केसा हे जो कर्मफलके विचारतें रहित हे भला बुरा विचार करी नही करता तिसविषें विचरता हे अरु मुखतें सुभ असुभ निरूपण करता हे सो शास्त्र सिलपी हे अरु फलके अर्थ कर्म करता हे एक एक अेसें हे जो शास्त्र उक्त आपकों उत्तमकरी मानता हे ॥ अरु शास्त्रोंके अर्थ बहुत प्रकारभी कहता हे ॥ पढताभी हे पढावताभी हे अरु विषयसों बंधमान हे ॥ सदा विषयकी चिंतवना करता हे ॥ एसा पुरुष हे सो ज्ञानबंध कहाता हे ॥ तिस निमित्त अर्थ शिल्पी कहता हे ॥ चितेरा करणेकों समर्थ हे अरु धारणेकों समर्थ नही ॥ हे रामजी एक प्रवृत्ति मार्ग हे एक निवृत्ति मार्ग हे प्रवृत्ति संसार मार्ग हे निवृत्ति आत्मज्ञान मार्ग हे ॥ अरु जिस पुरुषनें निवृत्ति मार्ग धारा हे अरु प्रवृत्ति मार्गविषे वर्तता हे ॥ प्रवृत्ति कहिये जो बहिर्मुख विषयकी उर वर्तता हे अरु इंद्रियांके विषयकी वांछा करता हे ॥ विषयतें उप्रांत नही होता तिनकरी तुष्टमान होता हे अरु स्वरूपका अभ्यास नही करता अेसा पुरुष ज्ञानबंध कहाता हे ॥ हे रामजी श्रुति उक्त सुभ कर्म करता हे रिदेविषे उनके फलकों धारिकरी ॥ उह पुरुष ज्ञानके निकटवर्ती हे तोभी ज्ञानबंध हे ॥ अरु जिसकों आत्माविषे प्रीतभी हे विषयकों चिंतवता हे अरु आपकों उत्तम मानता हे सो ज्ञानबंध कहाता हे अरु जो आत्मतत्वका निरूपण जथार्थ करता हे अरु स्थिति नही उह ज्ञान आभास हे ज्ञानका फल तिसकों प्रत्यक्ष साक्षात्कार नही ॥ अरु जिस पुरुषनें सिद्धता पाइ हे अरु ऐश्वर्य पाया हे तिसकरी आपकों बडा जानता हे अरु आत्मज्ञानतें रहित हे सो ज्ञानबंध कहाता हे ॥ हे रामजी निदध्यास करिकें जो ज्ञानकी प्राप्ति होती हे तिसकरी सांतिका प्रकास होता हे ॥ जबलग सांति नही प्राप्त होती तबलग आपकों बडा न माने ॥ हे रामजी बडा जो होता हे सो ज्ञानकरी होता हे जबलग ज्ञान नही उपजा तबलग आत्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परायण होवे अभ्यास जतन करे छांडि न देवे अरु चेष्टाभी सुभ करे ॥ सुभ व्यवहार करी उपजीविका उत्पत्ति करणी प्राणोंकी रक्षाके निमित्त अरु प्राणोंकों ब्रह्मजिज्ञासाके अर्थ धारे॥ अरु ब्रह्मजिज्ञासा इस निमित्त हे जो संसारसमुद्र दुःखरूपतें मुक्त होवे ॥ बहुरी संसारी न होवे यह इसी निमित्त आत्मपरायण होवे ॥ जब आत्मपरायण होवेगा तब दुःख सभ मिटि जावेगे ॥ जेसें सूर्यके उदे हुए अंधकार नष्ट हो जाते हे तेसें आत्मपदके प्राप्त हुए दुःख सभ नष्ट हो जाता हे तिसपदकों प्राप्त होणेका उपाय इह हे ॥ जो सत शास्त्रोंतें आत्माके विशेषण सुणे हे ॥ तिनकों समुझी करी वारंवार अभ्यास करणा ॥ अरु अनात्मदृश्यतें उप्रांत होणा तिनकों मिथ्या जाणी वैराग करणा ॥ इसकरी आत्मपदकी प्राप्ति होती हे ॥

॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे ज्ञानबंधजोगोनाम शताधिकद्विचत्वारिंशतितमःसर्गः ॥ १४२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जिज्ञासी होकरी ज्ञाननिष्ठ होणा जो कछू गुरुशास्त्रोंतें आत्म विशेषण श्रवण किये हे तिनविषे अहंप्रत्यय करणी स्थित होणा इसीका नाम ज्ञाननिष्ठा हे तिस ज्ञाननिष्टा करी परम उंच पदकों प्राप्त होता हे जो सभका अधिष्टानपद हे तिस पदकों पावता हे ॥ जब तिसपदविषे स्थित हुआ तब कर्मोंके फलका ज्ञान नही रहता ॥ काहेतें जो सुभ कर्मोंविषे फलका राग नही रहता अरु असुभ कर्मोंके फलविषे दोष नही रहता ॥ एसा जो पुरुष हे सो ज्ञानी कहाता हे सीतलचित्त रहता हे अकृत्रिम शांतिकों प्राप्त होता हे किसीविषयके संबंध करिकें नही फसता अरु वासनाकी गांठ टूटी जाती हे अेसा जो पुरुष हे तिसकों ज्ञानी कहाता हे ॥ हे रामजी बोध सोइ हे जिसके पाएतें बहुरी जन्म न पावे जन्ममरनतें रहित होवे तिसकों ज्ञानी कहता हे जब संसारतें विमुख हुआ ॥ जो संसारकी सत्यता न भासे तब जाणियें जो बहुरी जन्म न पावेगा ॥ काहेतें जो संसारकी वासना नष्ट होगइ हे ॥ हे रामजी जिसकरी ज्ञानीकी वासना नष्ट होती हे सो श्रवण कर यह जो संसार हे तिसका कारण नही देखता ॥ जो पदार्थ कारणतें उत्पत्ति नही भया सो सत्य नही होता तातें संसार मिथ्या हे ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प भासता हे तिसका कारण कोउ नही भ्रमकरी सिद्ध हुआ हे ॥ तेसें यह विश्व कारण बिना दृष्ट आती हे तातें मिथ्या हे ॥ जो मिथ्या हे तो इसकी वासना केसें होवे ॥ हे रामजी जो प्रवाहपतित कार्य आनि प्राप्त होवे तिसविषे ज्ञानी विचरता हे संकल्पतें रहित हो करी अपणा अभिमान कछू नही करता॥जो इस प्रकार होवे इस प्रकार न होवे ॥ अरु रिदेकरी आकाशकी न्यांइं संसारतें न्यारा रहता हे अरु फुरणेतें शून्य हे अेसा जो पुरुष हे सो पंडित कहाता हे ॥ हे रामजी यह जीव परमात्मरूप हे जब अचेतन होवे तब आत्मपदकों प्राप्त होवे ॥ अचेतन कहिए संसारके फुरणेतें रहित होवे जब जड हुंआ तब आत्मा हे ॥ जेसें अंबका वृक्ष फलतें रहित हे तोभी नाम तिसका अंब हे परंतु निष्फल हे तेसें यह जीव आत्मस्वरूप हे परंतु चित्तके संबंधकरी इसका नाम जीव हे ॥ जब चित्तका त्याग करे तब आत्मा होवे ॥ जेसें अंबकों फल लगा तब शोभता हे अरु सफल कहाता हे ॥ तेसें जब यह जीव आत्मपदकों प्राप्त होता हे तब महाशोभा करी बिराजता हे ॥ हे रामजी ज्ञानवान पुरुष कर्मके फलकी स्तुति नही करता ॥ फल कहियें इंद्रियांके विषय इष्टकी वांछा नही करता जेसें जिस पुरुषनें अमृतपान किया होवे सो मद्यपान करणेकी इछा नही करता ॥ तेसें जिसकों आत्मसुख प्राप्त भया हे सो विषयके सुखकी वांछा नही करता ॥ अरु जो किसी पदार्थकों पायकरी सुख मानते हे सो मूढ हे ॥ जेसे कोउ पुरुष कहे वंध्याके पुत्रके कांधेपर आरूढ होकरी नदीकों पार उतरता हे अेसा पुरुष महा मूढ हे काहेतें जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वंध्याका पुत्र हे नही तो तिसके कांधेपर केसें आरूढ होवेगा ॥ तेसें जो पुरुष कहे संसारके किसी पदार्थकों लेकरी मुक्त होउंगा सो महा मूढ हे ॥ हे रामजी अेसा पुरुष ज्ञानतें शून्य हे तिसकी इंद्रिय स्थित नही होती ॥ अरु जो शास्त्रोंके अर्थ प्रगटभी करता हे परमात्मा ज्ञानतें रहित हे ॥ तिसकों इंद्रिय बलकरी गिराय देती हे विषयविषे जेसें इल पक्षी आकाश विषे उडताभी मांसकों देखीकरी पृथ्वी उपर गिर पडता हे ॥ तेसें अज्ञानी विषयकों देखीकरी उर्धतें गिर पडता हे ॥ तातें इन इंद्रियांकों मनसंयुक्त वस करो ॥ अरु जुक्तिकरी तत्परायण होइ अंतर्मुख होइ ॥ यह जो संवेदन फुरती हे तिसका त्याग करो जब फुरणा निवृत्त हुआ तब परमात्माका साक्षात्कार होवेगा ॥ जब परमात्माका साक्षात्कार हुआ तब रूप अवलोक मनस्कार जो त्रिपुटी हे तिसके सब अर्थकी भावना जाती रहेगी केवल आत्मतत्वहि प्रत्यक्ष भासेगा ॥ अरु संसारका अत्यंत अभाव हो जावेगा ॥ हे रामजी संसारकी आद्य परमात्मत त्व हे अरु अंतभी वही हे ॥ जेसें स्वर्न गालीए तोभी स्वर्न हे जो न गालिए तोभी स्वर्न हे ॥ तेसें जब सृष्टिका अभाव होता हे तोभी शेष आत्माहि रहता हे ॥ अरु जब उपजी न थी तबभी आत्माही था अरु मध्यभी उही हे परंतु सम्यकदर्शीकों भासता हे ॥ अरु असम्यकदर्शीकों आत्मसत्ता नही भासती ॥ हे रामजी विश्व आत्माका परिणाम नही चमत्कार हे ॥ जेसें स्वर्न गलता हे तब रेणी संज्ञा उसकी होती हे अथवा सलाका कहता हे ॥ जद्यपि भूषण तिसविषे हुए नही तोभी चमत्कार उसका अेसाहि होता हे जो भूषण उसतें उपजीक री ले हो जाता हे ॥ तेसें विश्व आत्माका चमत्कार हे बन्या कछू नही ज्योंकी त्यों आत्मसत्ता हे तिसका चमत्कार विश्व होकरी स्थित हुआ हे ॥ जेसें सूर्यकि किरणा जलाभास हो भा सती हे ॥ हे रामजी जब तुम अेसें जाण्या जो केवल आत्मसत्ता हे तद वासना क्षय हो जावेगी अरु चेष्टा सुभाविक होवेगी ॥ जेसें वृक्षके पत्र हलते हे पवन करीकें तेसें शरीरकी चेष्टा होवेगी प्रारब्ध वेगकरीकें ॥ हे रामजी देखणे मात्र तुमारेविषे क्रिया होवेगी अरु अंतरतें मनकरी शून्य भासेगी जेसें जंत्रीकी पूतली संवेदन बिना तागेकरी चेष्टा करती हे तेसें शरीरकी चेष्टा प्रारब्ध करी सुभाविक होवेगी अरु तुझकों अभिमान न होवेगा ॥ जेसें कोउ पुरुष दूधके निमित्त गुजर पास वासन लेगया तिसकों दूध चोवणेविषे कछूक विलंब हे तब उसनें कहा जो वासन इहां रहे जो में ग्रहतें कोउ कार्य सीघ्रही करी आउं ॥ जब वह ग्रहका कार्य करणे लागा तब उसका मन दूधकी उर रहा जो सीघ्रही जाउं मत आगें चोवता होवे ॥ ग्रहका कार्य किया परंतु मन उसका दूधकी उर रहा ॥ तेसें तुमारी क्रिया प्रारब्ध वेगकरी होवेगी परंतु मन आत्मतत्वविषे रहेगा जब अहंकारतें रहित होवेगा ॥ जबलग अहंकार फु रता हे तबलग प्रसन्न जीव हे प्रसन्न कहीए तुछ हे तिसकों शरीरमात्रका ज्ञान होता हे ॥ अंतःकरणविषे जो प्रतिबिंब हे जीव तिसकों नख सिख पर्यंत शरीरका ज्ञान होता हे ॥ अरु इसीविषे आत्म अभिमान होता हे अवर ज्ञान नही होता तातें जीव हे ॥ अरु विराट जो आगें तुझकों कहा हे सो ईश्वर हे सर्व शरीर अरु अंतःकरणका ज्ञाता हे अरु सर्व लिंगशरीर का अभिमानी हे ॥ सर्वकों अपणा आप जानता हे तातें ईश्वर हे ॥ हे रामजी यद्यपि विस्वरूप हे तोभी अहंकार करीकें तुछसा भया हे जेसें मेघतें भिन्न हुआ एक बादर कहाता हे॥ अरु घटकरी घटाकाश कहाता हे सो बादरभी मेघ हे अरु घटाकाशभी महाकाश हे तेसें अहं फुरणे करी प्रसन्न हुआ हे॥ सो फुरणा दृश्यविषे हुआ हे अरु दृश्य फुरणेविषे हुइ हे ॥ जे सें फूलविषे गंध हे अरु तिलोविषे तेल हे ॥ तेसें फुरणेविषे दृश्य हे ॥ हे रामजी आत्माविषे बुद्धि आदिक फुरणा हे जो में हों जब अेसें फुरता हे तब आगें दृश्य होती हे ॥ जब अहंकार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होता हे तब आगें देह इंद्रियांदिक विश्वकों रचता हे तातें फुरणेविषे दृश्य हुइ अरु फुरणा दृश्यविषे हुआ जो देह इंद्रिया मन आदिक दृश्य है तिसविषे अहं प्रत्यय करिकें फुरणा हुआ इसी कारणतें इसकी जीव संज्ञा हुइ हे ॥ जब फुरणा नष्ट हो जावे तब आत्माका साक्षात्कार होवे ॥ अरु यह जन्म मरण आणा जाणा आदिक विकार संयुक्त प्रपंच भासता हे॥तोभी मिथ्या हे काहेतें जो विचार कियेतें कछू नही रहता ॥ जेसें केलेके थंभविषे सार कछू नही तेसें विचार कियेतें प्रपंचकों नही पाइना ॥ जेसें सुपनेविषे जन्म मरण आणा जाणा देखता हे परंतु मिथ्या हे॥ तेसें जागृत क्रियाभी सर्व मिथ्या हे ॥ हे रामजी जो परावर दर्शी हे सो एती अवस्थाविषे निर्विकल्प हे ॥जन्मताभी हे परंतु नही जन्मता सर्व क्रिया करताभी हे परंतु नही करता सुपनवत् हे स्वरूपतें कदाचित् कछू नही हुआ ॥ हे रामजी ज्ञानी जागृतविषेभी अेसेंहि देखता हे ॥ जब यह आत्मपदविषे जागता हे तब सर्व विकारका अभाव हो जाता हे ॥ कोउ विकार नही भासता ॥ हे रामजी जो पुरुष इंद्रियांके विषयकी चिंतवना करता रहता हे सो बंध हे काहेतें जो अभिलाषहि दुःखदायक हे ॥ जद्यपि राजा हे अरु अंतर अभिलाष हे तो दारिद्री जाण ॥ अरु जिस पुरुषकों छादन भोजन सैन कष्ट साथ देखता हे ॥ जो भोजन भिछा करी होता हे ॥ अथवा किसी अबर जतन करी होता हे ॥ अरु छादन भी निर्गुणसा पहिरता हे ॥ अरु सैन करणेकों स्थानभी जेसा केसा होता हे अरु ज्ञानकरी संपन्न हे तो उसकों चक्रवर्ती जाण ॥ दोहा ॥ सात गांठ गोपीनकी, साध न माने संक ॥ राम अमल माता फिरे, गिने इंद्रकों रंक ॥ १ ॥ हे रामजी तिसकों चक्रवर्तीतेंभी अधिक जाण यद्यपि आरंभ क्रिया करताभी दृष्ट आता हे ॥ अरु संकल्पतें रहित हे तो कछू करता नही करना अकरना क्रियाका दोनों उसकों तुल्य हे ॥ काहेतें जो निरभिमान हे शुभ कर्म करणेतें स्वर्ग नही भोगता अशुभ कर्म करी नर्क नही भोगता तिसकों दोनों एक समान हे ॥ हे रामजी ज्ञानी अज्ञानीकी चेष्टा समान हे परंतु अज्ञानी अहंकार सहित करता हे इसकरी दुःख पावता हे ॥ तातें तुम अहंकारका त्याग करो अरु अपणा स्वरूप जो हे चैततें रहित चैतन तिसविषे स्थित होहु ॥ जो संशे सर्व मिटि जावे अरू जेते कछू जीव तुमकों भासते हे सो सर्व संवितरूप हे संवित कहियें ज्ञानरूप हे ॥ परंतु बहिर्मुख जो फुरते हे तिसकरी भ्रम कों प्राप्त हुए हे ॥ जब अंतर्मुख होवे तब केवल शांतरूप हे ॥ जहां गुणो अरु तत्वोंका क्षोभ नही तिसकों शांतपद कहता हे ॥ हे रामजी जेसें विराटका मन चंद्रमा हे तेसें सर्व जीव का हे अर्थ इह जो सब विराटरूप हे ॥ परंतु प्रमादकरी वास्तव स्वरूप नही भासता ॥ हे रामजी यह जीव संपूर्ण देहविषे व्यापक हे अरु भासता रिदेकोसविषे हे जेसें गुलाबकी संपूर्ण बुंटीविषे सुगंध व्यापक हे परंतु भासती फुलहिविषे हे तेसें चैतन सत्ता सर्व शरीरविषे व्यापक हे परंतु भासती रिदेविषे हे ॥ जो त्रिकोणरूप निर्मल चक्र हे तहांही अहंब्रह्मका उत्थान होता हे ॥ तहांतें वृत्ति पसरी करी पंच इंद्रियांके छिद्रतें निकसी करी विषयकों ग्रहण करती हे तिन इंद्रियाके इष्ट अनिष्ट प्राप्तिविषे राग दोष मानता हे तातें हे रामजी एता कष्ट प्रमाद करीकें हे जब बोध होवे तब संसारभ्रम मिटि जावे ॥ हे रामजी वासनारूप जो संसार हे तिसका बीज अहंभाव हे ॥ प्रत्यक्ष संसारविषे फुरता हे ॥ जब इसकी अंचितवना होवे अरु स्वरूपविषे अहंप्रत्यय होवे ॥ तब संसार भ्रम मिटि जावे अरु अहंभावके शांत हुए ज्ञानवान जंत्रिकी पूतलीवत् चेष्टा करता हे ॥ हे रामजी जो पदार्थ सत हे तिसका अभाव कदाचित् नही होता ॥ अरु जो असत हे सो सत नही होता ॥ यद्यपि होणेकी भावना करीयें तोभी उसका होणा नही जेसें अग्नीकों जाणिकरी स्पर्श करियें तोभी जलावती हे अरु अजाणी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्पर्श करीयें तोभी जलाती हे काहेतें जो सत हे ॥ अरु जेसें मृगजलकी भावनाकरी मरुथलविषे धावता हे परंतु जल नही पावता काहेते जो असत्य हे तेसें हे रामजी अहंकार जो फुरता हे सो असत्य हे भ्रमकरी सिद्ध हे विचार करी नष्ट हो जावेगा ॥ हे रामजी यह अहंकाररूपी कलंक उठा हे ॥ जब निरहंकार होकरी देखे तब मुक्तरूप हे ॥ अरु जब अहंकार संयुक्त हे तब बंध हे ॥ तातें निरहंकार होकरी परम निर्वाणकों प्राप्त होहु ॥ इह मेरा सिद्धांत हे परम भूमिका यही हे जेसें पूर्णमासीका चंद्रमा शोभता हे तेसें तुम ब्राह्मी लक्ष्मी करी सोभहुगे ॥ हे रामजी ज्ञानवानका चित्त सतपदकों प्राप्त होता हे तातें अहंकार नही रहता ॥ तिसके चित्तकी चेष्टा फलदायक नही होती ॥ जेसें भूना बीज नही उगता तेसें उसकों जन्मफल नही होता ॥ अरु अज्ञानीका चित्त जन्ममरणका कारण होता हे जेसें कच्चा बीज उगता हे तेसें अज्ञानीकी चेष्टा जन्मफल देती हे ॥ हे रामजी जेते कछू पदार्थ हे तिन सबतें निरास हो रहु ॥ जो रिदेविषे अभिलाषा किसकी न फुरे ॥ अरु न किसीका सद्भाव फुरे ॥ पाषाणकी न्यांइं तुमारा रिदा होवे ॥ हे रामजी जिसका रिदा कोमल हे स्नेह संयुक्त सो अज्ञानी हे अरु जिसका रिदा पाषाण समान हे स्नेहतें रहित सो ज्ञानीका हे तातें निर्मनन निरहंकार रूप होकरी स्थित होहु इह भोग मिथ्या हे इनकी इछाविषे सुख नही ॥ हे रामजी जब संसारतें उपांत होवेगा अरु अंतर्मुख आत्मपरायण होवेगा तब अहंकार निवृत्त हो जावेगा अरु आत्मा भासेगा ॥ जेसें वसंत ऋतु आती हे अरु वृछ प्रफुल्लित होते हे तब पुरातन पत्र त्याग होते हे अरु नौतन हो आते हे॥तेसें जब तुम अंतर्मुख होहुगे तब अहंकार निवृत्त हो जावेगा॥अरु विभुताकों प्राप्त होउगे तुछ जो हे अहं प्रत्यय सो जाती रहेगी परम निर्वाण पद पाओगे ॥ तातें एक अहंकार संवेदनका त्याग करो अवर जतन कोउ न करो ॥ तुमकों यहि हमारा उपदेश हे ॥ इ०यो०नि०सुखेनजोगो०शताधिकत्रिचत्वारिंशत्तमःसर्गः ॥१४३॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह जो वासनारूप संसार हे तिसकों तुम तरी जाहु ॥ जेसें मंकीरीख तऱ्या हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् मंकीरिख किस प्रकार तऱ्या हे सो कृपा करी कहो ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी मंकीरिखका वृत्तांत श्रवण कर ॥ तिसनें महा तीक्ष्ण तप कियेथे ॥ एक समे तुमारा जो पितामा हे राजा अज तिसनें मेरा आवाहन किया ॥ में अपणे गृहविषे था आकाशमें तब में राजा अजके निमित्त आकाशतें उतऱ्या मार्गविषे एक अटवी देखी तिसविषे अनेक वनके समूह हे ॥ सो महा भयानक में शून्य देखे तहां न कोउ मनुष दृष्ट आवे न कोउ पशु दृष्ट आवे ॥ शून्य मानों एकांत ब्रह्म स्थान हे ॥ केतेक जोजन पर्यंत मरुथलहि दृष्ट आवे अरु मध्यानका समा था अति तीक्ष्ण धूप पडे ॥ रेत उरु पर्यंत तपी हुइ तिसविषे में प्रवेश किया ॥ केइ वृछ तहां दग्ध हुए दृष्ट आये ॥ हे रामजी तिस शून्य स्थलविषे एक पैदोइ अति दुःखित आता मुझकों दृष्ट आया ॥ तिसनें यह वाक्य मुखतें निकास्या जो हाय हाय महा कष्ट पाया हे ! जेसें किसीकों दुष्ट जन दुःख देते हे अरु दया नही करते तेसें मुझकों धूप अरु पैंदेनें जलाया हे में अति दुःखकों प्राप्त भया हों ॥ हे रामजी अेसें वचन कहता हुआ मेरे पासतें चल्या जावे केता मारग आगें गया तब एक धीवरका गांउ तिसकों दृष्ट पडा ॥ तहां गृह पांच अथवा सात थे तिसकों देखिकरी सीघ्र चला ॥ जो इहां मुझकों शांति प्राप्त होवेगी में जलपान करों अरु छाया तले वेठोंगा ॥ हे रामजी तिसकों देखि करी मुझकों दया उपजी ॥ तब में कहा जो हे मार्गके मीत तुं कहां धावता हे ॥ जिनकों सुखदाइ जाणि करी तुं धावता हे सो तो दुःखदायक हे ॥ जेसें मृग मरुथलकों नदी जाणी करी जलपानके निमित्त धावता हे ॥ जो शांति पाउं सो अति दुःख

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पावता हे तेसें जिस स्थानकों तुं सुखरूप जानता हे सो दुःखरूप हे ॥ हे अंग यह जो इस गांवके वासी हे तिनका संग कदाचित् नही करणा ॥ इनका संग दुःखरूप हैं ॥ जो पुरुष वि
चार पूर्वक चेष्टा करता हे तिसकों दुःख नही होता ॥ अरु जो विचार विना चेष्टा करता हे सो दुःख पावता हे ॥ यह जो नगरवासी हे सो आप जलते हे तो तुझकों सुख केसें देवेंगे
जेसें कोउ पुरुष अग्नि कुंडविषे जलता होवे तिसकों कहियें तुं मेरी तपत शांत करु तो कहणेवाला मूढ होता हे ॥ वह आप जलता हे अवरकी तप्त केसें शांत करेगा तेसें वह आप इं
द्रियांके विषयकी तृष्णारूपी अग्निविषे जलते हे सो तुझकों शांत केसें करेगे ? ॥ हे मार्गके मित एते कष्ट होहि तो अंगीकार करीएं परंतु अज्ञानीका संग न करियें सो कवन दुःख होहि
जो पृथ्वीके छिद्रविषे सर्प हो रहणा, अरु मरुथलका टुंटा मृग हो रहणा, अरु पाषाणकी सिलाविषे कीट हो रहणा॥ एते कष्ट अंगीकार करियें परंतु अज्ञानीका संग न करियें ॥ जिनकों
इंद्रियांके सुखकी तृष्णा रहती हे सो इंद्रियांके सुख केसें हे जो आपातरमणीय हे अर्थ यह जो जबलग इंद्रियांके विषय साथ संजोग हे तबलग सुख हे जब विजोग हुआ तब दुःख
होता हे विषयी जनोंकी प्रीतभी विषवत् हे ॥ अरु विचारवती बुद्धिरूपी कमलनीके नास करणे हारी बरफ हे ॥ बहुरी इनकी संगति केसी हे जिनके वचनरूपी पवन करी राख उडती
पास बेठणेहारेकोंभी अंध करी डारती हे ॥ तातें इन गांउवासी अज्ञानीका संग नही करणा बहुरी केसें हे विचारवती बुद्धिरूपी सूर्यके आवरन करणे हारे बदल हे जेसें वल्ली उपर अ
ग्नि डारियें तो जलावती हे तेसें वैरागकों ग्रहण करणेहारी बुद्धी हे तिसके नास करणेहारी इनकी संगती हे तातें इनका संग नही करणा ॥ हे साध तिसका संग कर जिसके संगकरी तेरा
ताप मिटे ॥ इनके संगकरी सांति न पावेगा ॥ हे रामजी इस प्रकार जब में कहा तब वह मेरे निकट आए करी बोलत भया ॥ मंकीरिषोवाच ॥ हे भगवन् तुंम कवन हो अरु तुमारा
नाम क्या हे तुमारे वचन सुणकर में सांतिकों प्राप्त भया हों ॥ तुम शून्य जेसें दृष्ट आते हो अरु सर्व करिकें पूरन हो अरु तुमारा दिव्य प्रकास मुझकों भासता हे ॥ तुम आदि पुरुष वि
राट हो के कवन हो तुम सुंदर दृष्ट आते हो ॥ हे भगवन् जो सुंदर होता हे तिसकों देखिकरी राग उपजता हे अरु चित्त क्षोभकोंभी प्राप्त होता हे ॥ अरु तुम अेसे सुंदर हो जो तुमारे
दर्सन करी मुझकों सांति आती जाती हे तुम दिव्य तेजकों धारे हुए दृष्ट आते हो ॥ जेते कछू तेजवान हे देखणें नही देते तिनका तिरस्कार करते हो अर्थ यह जो अवर सुंदरता तुमारे
समान किसीकी नही अरु तुमारा तेज रिदेकों सांति उपजाता हे सीतल प्रकास हे ॥ हे भगवन् तुम उन्मत्तवत् घुर्मसे दृष्ट आते हो सो केसी सांतिकों लेकरी एकांतविषे स्थित हो अरु अ
पणे स्वरूप प्रकासकी दया करते दृष्ट आते हो अरु पृथ्वीपर स्थितभी दृष्ट आते हो परंतु त्रिलोकीके उपर विराजमान भासते हो अरु एकाएकी द्रष्टि आते हो परंतु सर्वात्मा हो ॥ अरु
किंचित् अकिंचित् तुमहि हो सर्व भाव पदार्थतें शून्य दृष्ट आते हो अरु सर्व पदार्थ तुमारी सत्ताकरी प्रकासते हे ॥ सर्व पदार्थके अधिष्टान हो तुमारे नेत्रोंके खोलणे करी उत्पत्ति होती
हे अरु मुंदणेंकरी ले हो जाती हे ॥ तातें ईश्वर हो अरु सकलंक दृष्ट आते हो परंतु निष्कलंक हो अर्थ यह जो फुरणा तुमारे विषे दृष्ट आता हे परंतु अंतरतें शून्य हो ॥ अरु किसी अ
मृतकों पानकरी तुम आए हो अरु बडे ऐश्वर्य करी संपंन दृष्ट आते हो ॥ तातें हे भगवन् तुम कवन हो अरु जो मुझतें पूछो तुं कवन हे तो में मांडव ऋषिके कुलविषे हों अरु मेरा नाम
मंकी हे में ब्राह्मण हों तीर्थ जात्राके निमित्त निकसा था अरु सर्व दिसा भम्या हों ॥ अति भयानक स्थानोंविषे जो तीरथ हे तहांभी गमन किया हे परंतु सांति मुझकों प्राप्त न भइ अे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सी सांति कछु न पाइ जो इंद्रियांकी जलनतें रहित होइए अब में गृहकों चल्या हों हे भगवन् अब गृहतेंभी चित्त विरक्त भया हे ॥ जो यह संसारहि मिथ्या हे तो गृह किसका हे ॥ संसारविषे सुख कछु नही अरु यह प्रान अेसे हे जेसा दामनीका चमत्कार होता हे तेसें यह संसार नष्ट होता दृष्ट आता हे शरीर उपजतेभी हे अरु मिटिभी जाते हे दृष्टि मात्र हे ॥ जेसें रात्र आती हे बहुरी नही जाणते जो कहां गइ ॥ हे भगवन् इस संसारकों असार जाणीकरी में उदासीन भया हों जो अनेक जन्म पाये हे सो नष्ट हो गये हे ॥ इसी प्रकार भ्रमता फिऱ्या हों अब तुमारी सरनागत हों ॥ अरु जानता हों जो तुमसों मेरा कल्याण होवेगा अरु तुम कल्याणरूप दृष्ट आते हो तातें कृपा करी कहो जो कवन हो ? ॥वसिष्ठोवाच॥ हे मंकीरिष में वसिष्ठ ब्राह्मण हों अरु मेरा गृह आकाश विषे हे ॥ मुजकों राजा अजनें स्मरण कीया हे ॥ तिस निमित्त में इस मार्ग गमन करता हों ॥अब तुम संसे मत करो जो ज्ञानमार्गकों पाया हे ॥ हे रामजी जब में अेसें कहा तब उह मेरे चरनोंपर गिरिपडा अरु नेत्रोंतें जलचलणे लागा जो महा आनंदकों प्राप्त भया तब में कहा जो हे ऋषि तुं संसे मत करु में तुझकों अकृतम सांतिकों प्राप्त करिकें गमन करोंगा जो कछू पूछा चाहता हे सो पूछ में तुझकों उपदेश करों अरु में जानता हों तुं कल्याणकृत हे ॥ जो कछू में कहोंगा सो तुं धारेगा अब तुं कछू प्रश्न कर जो तेरे कषाय परिपक्व भये हे ॥ तुं मेरे वचनोंका अधिकारी हे तुझकों में उपदेश करोंगा अब तुं संसारके तटकों आय प्राप्त भया हे ॥ अब तुझकों निकासणेका विलंब हे॥जो वैरागकरी पूरन हे सो संसारका तट वैराग हे तातें संशय मत करु ॥ ॥ इ०यो० नि०मंकिरिषपरमवैरागनिरूपणं नाम शताधिकचतुश्चत्वारिंशत्तमःसर्गः ॥१४४॥ ॥७॥

॥ मंकीउवाच ॥ हे भगवन् अब में जानता हों जो मेरा कार्य सिद्ध हुआ हे मुझकों अज्ञानकरी मोह था तिसके नास करणेकों तुम समर्थ दृष्ट आते हो॥ मेरे रिदेके तम नास करणेकों तुम सूर्य उदे भए हो ॥ हे भगवन् यह संसार असार हे ॥ अरु लोककी बुद्धी विषयकी उरहि धावती हे जहां दुःखही होता हे ॥ जेसें जल नीचे स्थानकों चला जाता हे तेसें हमारी बुद्धी नीच स्थानोंविषे धावती हे उही चाहती हे ॥ हे भगवन् जेते कछू भोग हे तिनकों में भोग्या हे परंतु शांति न पाइ उलटी तृष्णा वढती गइ॥ जेसें तृषा लागे अरु खारा जलपान करियें तो तृषा नही मिटती बढती जाती हे तेसें विषयके भोगणेकरी शांति नही प्राप्त होती ॥ तृष्णा बढती जाती हे॥ हे मुनीराय देह जर्जरी भाव हो जाती हे अरु दंत गिरि पडते हे ॥ अति क्षोभ होता हे तोभी तृष्णा नही मिटती ॥ तातें अब में दुःखकों चाहता हों सुख कोउ नही चाहता ॥ काहेतें जो संसारके जेतें सुख हे तिनका परिणाम दुःख हे ॥ जो प्रथम दुःख हे तिनका परिणाम सुख हे ॥ इसीतें दुःख चाहता हों संसारके सुख नही चाहता ॥ हे भगवन अपणी वासनाहि दुःखदायक हे जेसें घुरायण गुफा वणाय करी तिसविषे आपहि फसी मरती हे ॥ तेसें अपणी वासनाकरी आपहि वंधमान होता हे ॥ हे मुनी उह काल कब हुआ हे जो अज्ञानरूपी हस्तीनें मुझकों वस किया हे अरु तिसका नास करणेहारा ज्ञानरूपी सिद्ध कब प्रगट होवेगा ॥ अरु कर्मरूपी तृणोंका नास कर्ता विवेकरूपी वसंत कब प्रगटेगा ॥ अरु वासनारूपी अंधेरी रात्रका नास कर्ता ज्ञानरूपी सूर्य कब उदे होवेगा ॥ हे भगवन वैताल तबलग भासता हे जबलग निसा हे जब सूर्य उदे होवेगा तब निसा जाती रहेगी बहुरी वैताल न भासेगा ॥ सो अहंकाररूपी वैताल तबलग हे जबलग अज्ञानरूपी रात्र दूर नही भइ ॥ हे भगवन् जब संतजनके उपदेशतें आत्मज्ञानरूपी सूर्य प्रगटे तब अहंकाररूपी वैताल तहां नही विचरता संतजनका संग अरु सतशास्त्रोंका देखणा चांदनी रात्रवत् हे ॥ तिनक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

री जब स्वरूपका साक्षात्कार होवे तब दिन हुआ जबलग संतजनका संग अरु सतशास्त्रोंका देखणा न होवे तबलग अंधेरी रात्र हे ॥ हे भगवान् जिसकों सतशास्त्रका श्रवणभी होवें बहुरी विषयकी उरभी गिरे तो बडा अभागी जाणीए सो में हों ॥ परंतु अब में तुमारी सरणकों प्राप्त भया हों ॥ मेरे रिदेरूपी आकाशविषे जो अज्ञानरूपी कुहिड हे सो तुमारे वचनरूपी सरतकाल करीकें नष्ट हो जावेगी रिदाकाश निर्मल होवेगा॥ हे भगवन् में त्रिदंड साधे हे मनकरीभी शरीरकरीभी वाणीकरीभी यह तीन तप किये हे दीर्घकाल पर्यंत परंतु आत्म प्रकाश नही हुआ अब में तुमारी शरणागत हुआ तरोंगा तातें कृपा करीकें उपदेश करो जो मेरे रिदेका तम दूर होवे ॥ इ०यो०नि० मंकीवैरागजोगो नामशताधिकपंचचत्वारिंशत्तमःसर्गः॥ १४५॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे तात संवेदन भावना वासना कलना यह चारों अनर्थके कारण हें ॥ जब इनका अभाव हो जावे तब कल्याण होवे ॥ शुद्ध चिन्मात्र पद प्रत्यक्ष चैतन अपणे आपविषे जो अहंकार उत्थान हे सो संवेदन हे ॥ अरु भावना यह जो कछू वण्या बहुरी चेत्या अरु अपणा आप चित्त स्मरण भया तब भम मिटि जाता हे ॥ अरु जो कछू वन्या हे ॥ तिसकी भावना हुइ जो में यह हों तब भावना करी संसार दृढ हुआ बहुरी तेसेंहि वासना दृढ होती हे अपणे शरीरके अनुसार नाना प्रकारकी कलना होती हे बहुरी संसारके संकल्प विकल्प उठतें हे ॥ हे ब्राह्मण यह चतुर अनर्थके कारण हे ॥ जब इनका अभाव हो जावे तब कल्याण होवे अरु जेते कछू शब्द अर्थ हे ॥ तिनका अधिष्टान प्रत्यक् चैतन हे सर्व शब्द उसीके आश्रित हे अरु सर्व उही हे ॥ जब तुं अेसें जाणेगा तब वासना क्षय हो जावेगी ॥ जब अहं संवेदन इसकों फुरतो हे तब आगें संसार भासता हे ॥ जेसें वसंतऋतु आती हे तब वल्ली प्रफुल्लित होतियां हे ॥ तेसें जब संवेदन फुरती हे तब आगें संसार सिद्ध होता हे ॥ जब संसार हुआ तब नाना प्रकारकी वासना फुरती हे ॥ अरु संसार नही मिटता ॥ हे अंग संसार इसका नाम हे जो संसरता हे ॥ जब संसरना मिटि जावे तब आत्मपदहि शेष रहे सो तेरा अपणा आप हे ॥ तातें इस फुरणेकों त्याग करी अपणे आपविषे स्थित होइ सर्व तेरा हि रूप हे ॥ जबलग वासना फुरती हे तबलग संसार दृढ हो जाता हे ॥ जेसें रुक्षकों जल दीजिये तब बढता जाता हे ॥ तेसें वासनारूपी जल देणेकरी संसाररूपी वृछ वृद्ध हो जाता हे ॥ तातें वासनाका नाश करो करणा यह जो संवेदन न फुरे ॥ जब वृक्ष जलतें रहित भया तब आपहि जलि जाता हे ॥ हे पुत्र आत्माविषे जगत् कछू हुआ नही केवल परमार्थ स त्ता हे ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प कछू वस्तु नही जेवरीके अज्ञानतें सर्प भासता हे ॥ तेसें आत्माके अज्ञानतें संसार भासता हे ॥ जब तुं आत्मपदकों जाणेगा तब परमार्थ सत्ताहि भासेगी जेसें बालक अपणे पछावेविषे भूत कल्पि करी भय पावता हे जब विचार करी देखा तब भूत कोउ नही भय दुर हो जाता हे तेसें आत्माके अज्ञान करी संसारके राग दोष जलावते हे अरु ज्ञानवानकों वासना संयुक्त संसारका अभाव हो जाता हे केवल अद्वैत आत्मसत्ताहि भासती हे ॥ जेसें सुपनतें जाग्या सुपनका प्रपंच वासना संयुक्त अभाव हो जाता हे ॥ तेसें जब आत्माका साक्षात्कार हुआ तब वासना संयुक्त संसारका अभाव हो जाता हे ॥ काहेतें जो हे नही जेसें घटादिकविषे मृत्तिकातें इतर कछू नही तेसें सर्व प्रपंच चिन्मात्र स्वरूप हे॥ इतर कछू नही जेते कछू शब्द अर्थ हे सर्व आत्माहि हे ॥ हे मित्र जो कछु आत्मातें इतर भासता हे तिसकों भम मात्र जाण जेसें आकाशविषे नीलता भासती हे सो भममात्र हे तेसें विश्व असम्यक दृष्टी करिकें भासती हे ॥ सम्यक् दृष्टी करी सर्व प्रपंच आत्म स्वरूप हे अरु द्रष्टा दर्शन दृश्य जो त्रिपुटी भासती हे सोभी बोध स्वरूप हे बोधहि त्रिपुटीरूप हो करी स्थि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न होता हे ॥ जेसें सुपनेविषे एकहि अनुभव त्रिपुटी रूप हो भासता हे ॥ तेसें यह जाग्रतकी त्रिपुटीभी आत्म स्वरूप हे ॥ हे अंग जेते कछू स्थावर जंगम पदार्थ हे सो सर्व आत्म स्वरूप हे ॥ जो परमात्म स्वरूप न होवे तो भासे नही द्रष्टारूप जो अनुभव करता हे सो एक अद्वैत रूप हे ॥ तिस स्वरूपके प्रमाद करी भिन्न भिन्न त्रिपुटी भासती हे तोभी इतर कछू नही जेसें सुपनविषे त्रिपुटी अपणे अनुभव करी भासती हे ॥ जो अनुभव न होवे तो काहेतें भासे ॥ तेसें यह त्रिपुटी अनुभव आत्माकरी भासती हे ॥ तातें सर्व परमात्म स्वरूप हे भिन्न कछू नही ॥ जो नही तो हे नही काहेतें जो सर्वकी एकता परमार्थ स्वरूपविषे होती हे ॥ हे ऋषीश्वर सजातीय वस्तु मिली जाती हे ॥ जेसें जलविषे जलकी बुंद डारीए तो मिलि जाती हे काहेतें जो एकरूप हे ॥ तेसें बोधकरीकें सर्व पदार्थकी एकता भासती हे ॥ काहेतें जो द्वैत सत्ता हे नही जेसें स्पंद निस्पंद दोनों पवनही हे ॥ जेसें जल अरु तरंग अभेद रूप हे तेसें विश्व परमार्थ स्वरूप हे तातें अेसें निश्चय करो जो सर्व ब्रह्म स्वरूप हे ॥ अथवा आपकों उठाय देवडु जो में नही ॥ जब तुंही न डुआ तब विश्व कहांते होवे ॥ हे मंकीरिष प्रथम जो अहं होता हे तो पाछें ममत्व होता हे ॥ जो अहंही न रहेगा तो ममत्व कहां रहेगा ॥ इस अहंका होणाहि बंधन हे इसके अभावका नाम मुक्ती हे ॥ हे मित्र इस युक्तिविषे क्या जतन हे ॥ यह तो अपणे आधीन हे जो में नही॥ जब अहंकारकों निवृत्त किया तब शेष वहि रहेगा जो सर्वका परमार्थरूप हे तिसीकों ब्रह्म कहते हे॥हे मुनीश्वर जब अहंकार फुरता हे तब नाना प्रकारकी वासना होती हे ॥ तिस वासनाके अनुसार अनेक जन्मकों पावते हे ॥ जो वर्णन किये नही जाता हे ॥ जेसें पवन करी तृण भटकते फिरते हे तेसें वासना करीकें जीव भटकते फिरते हे॥ जब पर्वततें कंकर गिरता हे तब चोटां खाता नीचेकों चला जाता हे तेसें स्वरूपके प्रमादकरी जन्म जन्मांतर पावते चले जाते हे॥घटी जंत्रकी न्यांइ कबडु उर्ध कबडु अधकों जाते हे अपणी वासनाके अनुसार ॥ जेसें खेनु हाथ करी ताडना किया कबडु उर्ध कबडु अधकों जाता हे ॥ हे अंग इस संसारका बीज वासना हे जब वासना निवृत्त होवे तब सर्वकी एकता हो जाती हे ॥ जबलग संसारकी वासना दृढ हे तबलग एकता नही होती ॥ जेसें दूध अरु जल मिलता हे उनका संयोग हो जाता हे तेसेंभी आत्मा अरु विश्वका संयोग नही ॥ आत्मा केवल अद्वैत हे अरु सर्वका अपणा आप हे जेसें मृत्तिकाही घटादिक रूप हो भासती हे ॥ तेसें आत्मसत्ताही जगत्रूप हो भासती हे तातें आत्मातें इतर कछू वस्तु नही हे साधु आत्मा अरु दृश्यका संयोग कछू नही ॥ काष्ठ अरु लाखवत् अथवा घट अरु आकाशवत् संयोग कछू नही काहेतें जो आत्मा अद्वैत हे सर्व दृश्य बोध मात्र हे ॥ हे साधू जो जड हे सो चेतन नही होता अरु चैतन जड नही होता ॥ तातें न कोउ जड हे न चैतन हे चैतन आत्माही भावना करी जड दृश्य हो भासता हे तिसके बोध करी एक अद्वैतरूप हो जाता हे ॥ तो जाणता हे जो सर्व वही हे इतर कछू नही हे मित्र अज्ञानकरी नाना प्रकारकी विश्व भासती हे ॥ जेसें मेघकी वर्षाकरी नाना प्रकारके बीज प्रफुल्लित हो आते हे ॥ तेसें अहंरूपी बीजतें संसाररूपी वृछ वासना मुखकरी प्रफुल्लित होता हे ॥ जब अहंकाररूपी बीज नष्ट हो जावे तब संसाररूपी वृछ नष्ट हो जावेगा ॥ हे अंग जेसें वानर चपलता करता हे तेसें आत्मतत्वतें विमुख अहंकाररूपी वानर वासना करी चपलता करता हे ॥ जेसें खेनु हस्तके प्रहार करी अध उर्धकों उछलता हे तेसें जीव वासनाके प्रहार करी जन्मांतरविषे भटकता फिरता हे ॥ कबडु स्वर्ग कबडु पाताल कबडु भूलोकविषे आता हे स्थिर कदाचित् नही होता तातें वासनाका त्याग करो अरु आत्मपदविषे स्थित होडु हे तात इह संसार राज्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का पेंडा हे देखते नष्ट हो जाता हे ॥ इसकों देखी इसविषे प्रीत करणी अरु सत जानणा यहि अनर्थ हे तातें संसारकों त्याग करी आत्मपदविषे स्थित होडु ॥ चित्तकी वृत्ति जो संसरती हे इसीका नाम संसार हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे मंकीरिषप्रबोधोनाम शताधिकषट्चत्वारिंशत्तमःसर्गः ॥ १४६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे तात यह संसारका मार्ग गहन हे इसविषे जीव भटकते हे ॥ यह चैतन वृत्ति जो संसरती हे यहि संसार हे जब यह संसरना मिटे तब स्वछ अपणा आपही स्वरूप भासे ॥ चेतना वृत्ति जो बहिर्मुख फुरती हे इसीका नाम बंधन हे अवर बंधन कोउ नही ॥ हे साध यह जगत् वासना करी बांधा हे जेसें वसंतऋतु करी रस पसरता हे तेसें वासनाकरी जगत् पसरता हे बडा आश्चर्य हे जो मिथ्या वासनाकरी जीव भटकते फिरते हे ॥ दुःखकों भोगते हे अरु वारंवार जनम मृत्यु पावता हे बडा आश्चर्य हे जो वासना विषमरूप हे इसतें जीव वस हुए अविद्यमान जगत्कों भ्रमकरी सत जानते हे ॥ हे साध जो इस वासनारूप संसारकों तरी गए हे सो धन्य हे॥वह प्रत्यक्ष चंद्रमाकी न्यांइ हे जेसें चंद्रमा अमृतरूप सीतल प्रकासवान प्रसन्न करता हे ॥ तेसें ज्ञानी पुरुष हे तातें तुं धन्य हे॥जिसकों आत्मापदकी इछा हुइ हे ॥ हे अंग यह संसार तृष्णा करी जलता हे जिनकी चेष्टा तृष्णा संयुक्त हे तिनकों तुं बिल्ला जाणे॥जेसें बिल्ला तृष्णा करी चूहेकों ग्रहण करता हे तेसें यह जीवभी अपणी तृष्णा संयुक्त चेष्टा करते हे ॥अरु इस मनुष शरीरविषे यहि विसेषता हे जो किसी प्रकार आत्मपदकों प्राप्त होवे अरु जो नरदेह पायकरीभी आत्मपद पावणेकी इछा न करे तो पसु समान हेजेसें पसु तेसें मनुष ॥हे मित्र मूढ जीव अेसी चेष्टा करते हे जो प्राणोंके अंत पर्यंतभी तृष्णा करते रहते हे ॥ हे अंग ब्रह्मलोकतें आदि काष्ठ पर्यंत जेते कछू इंद्रियांके विषय हे ॥ तिनके भोगणेकरी सांति नही प्राप्त होती ॥ काहेतें जो आपातरमणीय हे इन विषे सुख कदाचित् नही जो ज्ञानवान पुरुष हे तिनकों सांति अेसी हे जेसें चंद्रमाविषे हे अरु सूर्यकी न्यांइ प्रकासते हे अरु विषयकी तृष्णा कदाचित् नही करते जेसें कोउ पुरुष अमृतपान करी तृप्त हुआ हो वे तब वह खल खाणेकी इछा नही करता तेसें जिस पुरुषकों आनंद प्राप्त हुआ हे सो विषय भोगणेकी इछा नही करता तातें इसी वासनाका त्याग करु ॥ अरु वासनाका बीज अहं कार हे तिसकों निवृत्त करु ॥ जो में नही काहेतें जो तेरा होणाहि अनर्थ हे ॥ हे साध शुद्ध चिन्मात्र निरहंकार पदविषे जो कछू तुं आपकों प्रसन्न जाणता हे जो में ब्राह्मण हों ॥ अथवा किसी प्रकृति साथ मिलिकरी आपकों मानता हे जो में यह हों यहि अनर्थ हे ॥ हे ऋषि तेरे नेत्रोंके खोलणे करी संसार उत्पत्ति होता हे ॥ अरु नेत्रोंके मुंदणे करी नष्ट हो जाता हे ॥ सो नेत्र क्या हे अहंकारका फुरणा इसी करी आगें विश्व सिद्धि होती हे॥ तातें तेरा होणाहि अनर्थ हे ॥ हे अंग जेसें जेवरीविषे सर्प भ्रममात्र उदे होता हे तेसें आत्माविषे अहंकार उदे हुआ हे इसीके अभावतें भय शांत होती हे जब अहंकार हुआ तब आगें स्त्री कुटुंब धन होते हे॥ सो इसकों बंधन हे॥इनका चमत्कार अेसें हे जेसें दामनीका चमत्कार क्षणविषे उदे होकरी नष्ट हो जाता हे ॥ तातें इनविषे बंधमान नही होणा ॥ हे अंग जब तुं कछु बन्या तब सब आपदा तुझे आय प्राप्त होवेगी ॥अरु जब तुं अपणा अभाव जाणे तब पाछें आत्मपद हि शेष रहेगा ॥ सो परम शांतरूप हे जिसकी अपेक्षा करी चंद्रमाभी अग्नीवत् जाणता हे सो परम शून्य हे अरु सर्व पदार्थोंकी सत्ता वही हे सो आकाशरूप हे ॥ हे मित्र इन मेरे वचनोंकों धार जो मोह तेरा नष्ट हो जावे॥यह विश्व कछू हुइ नही जेसें आकाशविषे दुसरा चंद्रमा भासता हे सो हे नही॥ तेसें विश्व नही आत्माके प्रमादकरी भासती हे ॥ हे ऋषी तुं तिसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कौं जाण जिसके अज्ञान करी विश्व भासती हे अरु जिसक ज्ञान करी ले हो जाती हे॥ ह मंकी शून्यमात्र जेसें आकाश हे स्पंद मात्र जेसें पवन हे जलमात्र जेसें तरंग हे तेसें संवितमात्र जगत् हे ॥ तिस संवित आकाशतें जो इतर भासता हे ॥ सो भममात्र जाण जेसें असम्यक् दृष्टि करीकें जल पहाडरूप भासे ॥ तेसें असम्यक् दृष्टि करी जगत् भासता हे ॥ अरु सम्यक् अवलोकनकरी परमार्थ सत्ताहि भासती हे जिसके अज्ञान करी जो विश्व भासती हे तिसकोंभी ज्ञानवान ब्रह्म शब्द करी कहते हे॥ तिस ब्रह्मपदके अहंकारहि व्यवधान हे सो ज्ञानवान का नष्ट भया हे तातें सर्वका अधिष्टान वही परमार्थ स्वरूप एक देखते हे ॥ तिसीविषे तुं एकत्र होउ ॥ जेसें आकाश अनेक घटके संजोग करी भिन्न भिन्न भासता हे ॥ जो घटकों फोडिये तो सर्व एकहि हो जाता हे तेसें अहंकाररूपी घट फोडिये तो सर्व पदार्थ एकत्र हो जाते हे ॥ हे अंग सर्वकी परमार्थ सत्ता एक ब्रह्मपद हे सो केसा हे अजन्मा हे अच्युत हे ॥ आनंद हे शांतरूप हे निर्विकल्प अद्वैत हे सर्वका अधिष्टान हे तिसीविषे स्थित होड्ड ॥ जो सिलावत् आत्मसत्तातें इतर कछू न फुरे तातें निर्बोध बोध हो जावड्ड हे मंकी ऋषी यह जो पदार्थ भासते हे दुःखके देणेहारे अेसें जो शब्द अर्थ हे सो आकाश फूल हे तातें शोक मत् करु जो सर्व परमार्थ सत्ताहि हे ॥ जेसें पुरुष निराकार हे तिसकी भावना करी अंगका संयोग होता हे ॥ तेसें विश्वभी इसकी भावना करी होती हे ॥ जेसी जेसी संसारकी भावना दृढ होती हे तेसा रूप आगें दृष्ट आता हे जो विश्व उपादान करी हुइ नही ॥ तो आरंभ परिणाम करी बन्या कछू नही ॥ जेसें यह विना उपादान हे तेसें श्रवण कर ॥ हे मित्र शुद्ध परमात्माका जो पावणा हे सों साधन हे ॥ अरु विश्व उपादान हे सो शब्द हे अरु आत्मा अद्वैत हे सो इनका हेतु हे अरु अचित्त हे इसीते विश्व निरुपादान हे सुपनवत् ॥ जेसें सुपन सृष्टि निरुपादान होती हे तेसें जाग्रत सृष्टिभी हे ॥ अरु उपादान मृत्तिकाकरी जेसें घट कार्य बनता हे आत्मा विश्वका उपादान अेसेंभी नही ॥ काहेतें जो मृत्तिका परिणाम करी घटाकार होती हे अरु आत्मा अच्युत हे जेसें भीत विना चित्र होवे सो हेही नही तातें यह विश्व आकाशविषे चित्र हे ॥ जेसें सुपनविषे नाना प्रकारकी विश्व आधार भीत विना चित्र होता हे ॥ तेसें यह विश्वभी आकाशविषे चित्र हुइ हे ॥ इसीतें आत्मा अकर्ता हे ॥ अरु विश्व जो दृष्ट आती हे सो निरुपादान हे ॥ तिसका शोक क्या करिये अरु हरख क्या करियें ॥ यह प्रपंच सर्व आत्मरूप हे प्रमादकरिकें नही जाणता ॥ हे साध संवेदन करीकें जो अहंकार फुरता हे तब विश्व भासती हे ॥ जेसें सुपनविषे जो कछू बनता हे सो अपणे स्वरूपतें भिन्न देखता हे अरु तिसविषे राग दोष भासते हे ॥ अरु जागे हुए अवर कछू नही सब अपणाहि अनुभव था तेसें जब संवेदन उठ गइ तब सब विश्व अपणा आप हो जाती हे ॥ यह अहंकार होणाहि विश्व हे ॥ जब अहंकार नास होवे तब सर्व शब्द अर्थ जो में दुःखी हों में सुखी हों यह नर्क हे यह स्वर्ग हे ॥ इत्यादिक सब परमार्थ सत्ताहि विषे फुरते हे ॥ सर्वका अधिष्टान आत्मा हे तातें सर्व आत्मस्वरूप हे सो केसा हे दृश्यतें रहित द्रष्टा हे ज्ञेयतें रहित ज्ञाता हे अरु निर्बोध बोध हे इछातें रहित इछा हे अद्वैत हे अरु नानात्वभी वही हे निराकार हे आकारभी वही हे ॥ अकिंचन हे किंचनभी वही हे अक्रिय हे अरु सर्व क्रिया वही करता हे ॥ एसें आत्मज्ञानकों पाय करी आत्मवेत्ता विचरते हे ॥ अरु जगत्का भान तिनकों किंचितभी नही ॥ जेसें स्वर्नके भूषण जलके तरंग होते हे तेसें सर्व विश्व तिसकों आत्मस्वरूप भासती हे अेसें जाणी करी सर्व चेष्टा करते हे जेसें जंत्रोकी पूतलीविषे संवेदन नही फुरती ॥ तेसें उनकों जगत् सत्यता नही फुरती काहेतें जो निरहंकार भये हे ॥ हे मंकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऋषी जेसें स्वर्नविषे भूषण बनि आए हे ॥ तेसें आत्माविषे विश्व फुरि आइ हे ॥ सो अहंकार फुऱ्या हे तातें इसके अभावकी भावना करु निरहंकार हो करी चेष्टा करु जेसें पिघुडेविषे बालकके अंग सुभाविक हलते हे ॥ तेसें ज्ञानीकी निर्वेदन चेष्टा होती हे ॥ हे ऋषी जब तुं इस मेरे उपदेशकों धारेगा ॥ तब सुखेनही आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी ॥ यह विश्वभी आत्म स्वरूपहि भासेगी ॥ जो कछु विश्व भासता हे सो सब आत्मरूपहि हे ॥ हे रामजी जब में इस प्रकार कहा तब मंकी ऋषी परम निर्वाण पदकों प्राप्त भया परम समाधिविषे स्थित हो गया ॥ सो वरस पर्यंत सपाधि स्थित रहा ॥ सो केसी समाधि जो सिलावत् फुरे कछू नही ॥ हे रामजी जेसें मंकी ऋषी स्वरूपकों प्राप्त भया हे ॥ तेसें तुमभी स्थित होहु ॥

॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे मंकीऋषी निर्वाणप्राप्तिर्नाम शताधिकसप्तचत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ १४७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह विश्व आत्माका चमत्कार हे ॥ सर्व उहि चिन्मात्र स्वरूप हे ॥ हे रामजी मेरा आशिर्वाद हे जो तुम चिन्मात्र स्वरूपकों प्राप्त होहु ॥ जो तुमारा अप णा आप हे तिसकों अपणा आप जाणे तुमारे दुःख नष्ट हो जावे ॥ हे रामजी तुम निर्वाण सांत आत्मा होहु अरु जथा लाभविषे संतुष्ट रहो अरु सत हुआ असतकी न्यांइ स्थित होहु राग दोषका रंग तुमकों स्पर्स न करे फटिक मणीकी न्यांइ ॥ हे रामजी यह सर्व जगत् एकहि स्थित हे ॥ अरु वास्तवतें एकविषे कछू स्थित नही ॥ आदि अंततें रहित एक चिदाकास अपणे आपविषे स्थित हे सो शरीरादिकके नासविषेभी अखंडरूप हे ॥ तिसका यह जगत् चमत्कार हे ॥ उपजी उपजी करी लय हो जाता हे जल तरंगवत् ॥ हे रामजी ध्याता ध्यान धेय त्रिपुटी भांतिमात्र सिद्ध हुइ हे ॥ अरु वास्तवतें द्रष्टा दर्शन दृश्य सर्व उहिरूप हे तिसतें इतर कछू नही सभ आत्मस्वरूप हे ॥ अरु सदा एकरस हे कदाचित् क्षोभकों नही प्राप्त हो ता ॥ यद्यपि यह दसा होवे जो अमावसका चंद्रमा दृष्ट आवे ॥ अरु प्रलयकाल बिना प्रलयकाल वायु चले तोभी आत्माकों क्षोभ नही होता ॥ आत्मपद सदा ज्योंकात्यों हे ॥ हे राम जी अेसें आत्माके प्रमाद करी जीव दुःख पावते हे ॥ जब आत्माका प्रमाद होता हे तब इसकों प्रत्यक्ष देह इंद्रिय अपणे विषे भासती हे तोभी हे नही ॥ जेसें वालुसों तेल नही निकस ता अरु आकासविषे वन नही होता चंद्रमाके मंडलविषे तप्त नही होती तेसें आत्माविषे देह इंद्रिय कदाचित् नही ॥ हे रामजी यह जीव सर्व आत्मरूप हे तातें इनकों देह इंद्रियांका सं बंध कछू नही ॥ परंतु इनकी क्रिया विषे जो अभिमान करता हे इसीतें बंधमान होता हे ॥ हे रामजी जेसें बेडीपर पुरुष बेठता हे तिसकों भ्रांति करी नदी तटके वछ चलते भासते हे तेसें मनके भ्रमकरी आत्माविषे चित्त देह इंद्रियां भासते हे ॥ अरु वास्तवतें चित्त देह इंद्रियां कछू भिन्न वस्तु नही ॥ यहभी आत्मस्वरूप हे ॥ तो निषेध किसका करियें ॥ हे रामजी यह मन इंद्रियादिककों अपणी सत्ता कछू नही भ्रांतिकरिकें भासती हे ॥ जेसें पर्वत ऊपर उज्वल मेघ होता हे ॥ तिसविषे वस्त्र बुद्धि निष्फल होती हे ॥ तेसें देहादिक विषे अहंबुद्धि निष्फ ल हे ॥ तातें हे रामजी एक अखंड आत्मतत्व हे अवर द्वैत कछू नही जब तेनें एसें धारा तब तुं निरंजन स्वरूप हे ॥ हे रामजी यह सर्व शरीर चित्तके फुरणेविषे स्थित हे ॥ जेसें चित्तके फुरणे विषे शरीर हे तेसें जीवविषे चित्त हे तेसें परमात्माविषे जीव हे ॥ हे रामजी इस प्रकार फुरणे मात्र दृश्य हुइ तो द्वैत तो कछू न हुआ क्यों ? इस प्रकार विचार पूर्वक दृश्य भ्रमकों त्यागकरी स्वरूपविषे स्थित होहु ॥ हे रामजी अेसें धारीकरी सुखेन विचरहु ॥ जो कछू चेष्टा नेति करी आय प्राप्त होवे तिसकों करो परंतु अपणा अभिमान न होवे ॥ जब अपणा अहं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by,eGangotri

भाव दूर भया तब स्पंद होवे अथवा निस्पंद होवे ॥ समाधि स्थित होवे अथवा राज करे स्थिति क्षोभ तुमकों दोनों तुल्य हो जावेगे ॥ जब अपणी अभिलाषा दूर भइ तब जैसी चेष्टा
आय प्राप्त होवे तेसीहि होवे उह फुरणाभी अफुर हे॥जेसें जलके ज्ञानतें तरंग बुदबुदे जलहि भासता हे तेसें तुमकों स्पंद निस्पंद दोनों तुल्य होवेंगे ॥ एक अद्वैत सत्ताहि भान होवेगी ॥
जेसें सम्यक् दर्शीकों तरंग अरु सोमजल एक भासता हे तेसें तुमकोंभी एकहि भासेगा जीवन्मुक्त होडु अथवा विदेहमुक्त होडु ॥ समाधि होवे अथवा राज होवे॥ तुमकों दोनों तुल्य हे॥
हे रघुकुल आकासके चंद्रमा रामजी इसकों अपणी अभिलाषाहि बंधन करती हे ॥ जब अभिलाषा मिटी तब कर्म करो अथवा न करो बंधन कछू नही ॥ काहेतें जो करणेविषेभी आ
त्माकों अक्रिय देखता हे अरु अकरणेविषेभी तेसें देखता हे ॥ द्वैत भावना तिसकी निवर्त्त हो जाती हे॥तातें तिसकों चित्त देह इंद्रियादिक सर्व पदार्थ आत्मरूपहि भासते हे ॥ हे रामजी
में जानता हों जो तुमारे रिदेका मोह निवृत्त भया हे अब तुम जागे हो ॥ अरु जो कछू तुमकों संसे रहा होवे तो बहुरी प्रश्न करो जो में उत्तर देउं ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वा
णप्रकरणे सुखेनयोगोपदेशो नामशताधिकअष्टचत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥१४८॥ ॥ॐ॥ ॥ॐ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् एक संशय मुझकों हे तिसकों तुम निवृत्त करो ए
क कहते हे जो बीजतें अंकुर होता हे अरु एक कहते हे अंकुरतें बीज होता हे ॥ अरु एक कहते हे जो कछू कर्ता हे सो दैवहि कर्ता हे अरु एक कहते हे कर्म करते हे तब जन्म पाव
ते हे ॥ कर्महीं करी सभ कछू होता हे अवर किसीके आधीन नही ॥ अरु एक कहते हे जब देह होती हे तब कर्म करते हे एक कहते हे कर्मतें देह होती हे ॥ एक कहते हे देहतें कर्म
होते हे इह अर्थ हे ॥ एक पुरुष प्रयत्न मानते हे सो जेसें हे तेसें तुम कहो ॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी एक एक में तुमकों क्या कहों ॥ कर्मतें आदि दैव पर्यंत अरु घटतें आदि आका
स पर्यंत जेती कछू क्रिया कर्म द्रव्य हे सो यह विकल्प जाल सब भ्रांतिमात्र हे केवल आत्मस्वरूप अपणे आपविषे स्थित हे ॥ द्वैत कछू हुआ नही ॥ हे रामजी जब संवेदन फुरती हे
तब सभ कछू भासता हे अरु निःसंवेदन हुए कछू नही ॥ कर्म पुरुष प्रयत्न सभ दैव समेत आत्माके पर्याय हे ॥ जेसें सीत स्वेत आदिक बरफके पर्याय हे ॥ तेसें यह सर्व आत्माके पर्या
य हे ॥ दैव पुरुष हे अरु पुरुष दैव हे ॥ कर्म देह हे अरु देह कर्म हे बीज अंकुर हे अरु अंकुर बीज हे॥दैव कर्म हे अरु कर्म दैव हे॥सो पुरुष प्रयत्न हे॥जो इनविषे भेद मानते हे सो पं
डितविषे पशु हे ॥ काहेतें जो इनका बीज अहंकार हे ॥ जब अहंकार हुआ तब सब कछू सिद्धि हुआ ॥ जेसें बीजतें वृक्ष होता हे ॥ फूल फल टास सर्व बीजतें होते हे ॥ अरु जो
बीजही न होवे तो वृक्ष केसें उपजे हे रामजी इनका बीज संवेदन हे ॥ अहंकार संकल्प संवेदन तीनों पर्याय हे जब फुरणा हुआ तब कर्म देह देव सर्व सिद्ध होते हे ॥ जब फुर्णा मिटि
गया तब कछू नही भासता इसीकों ज्ञान अग्नीकरी जलावडु जो फूल फलटास जलि जावे यह जो संवेदन फुरती हे जो में हों यहि संसारका बीज हे ॥ ज्ञानरूपी अग्नी करी जलावडु
॥ जब अहंकार नष्ट भया तब द्वैत कछू न भासेगा हे रामजी यह जो प्रपंच भासता हे तिसका बीज संवेदन हे अरु संवेदनका बीज सुद्ध संवितत्व हे तिसका बीज अवर कोउ नही ॥
दैव कर्म पुरुष प्रयत्न क्या हे सो श्रवण करु ॥ आदि जो स्पंद संवेदन फुरणा हुआ हे तिसका नाम दैव हे काहेतें जो कर्मतें आदिहि फुरता हे बहुरी जो आगें क्रिया करती हे सो कर्म हे
इसीका नाम पुरुष प्रयत्न हे अरु उह जो कर्मतें आदि दैवरूप फुर्या हे सो क्यारूप हे ॥ इसीका जो प्रकृति कर्म हुआ हे तिसीका नाम दैव करी कहते हे ॥ इन सर्वका बीज संवेदन हे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ हे रामजी जो स्वतः पुरुष चिन्मात्र पद एकहि था ॥ जब तिसतें विकार संयुक्त उत्थान हुआ तब आगें प्रपंच भासणे लागा ॥ बहुरी जब उत्थानका अभाव होवे तब प्रपंचकाभी अभाव हो जावे ॥ हे रामजी जब यह कछू बणता हे तब सर्व आपदा इसकों प्राप्त होती हे ॥ जेसें सुइ वस्त्रविषे प्रवेश करती हे तिसके पाछें तागाभी चला जाता हे ॥ अरु जो सुइ प्रवेश न करे तो तागा कहांतें जावे ॥ तेसें जब अहंकार प्रवेश करता हे तब सभ आपदा आती हे ॥ जब अहंकार निवृत्त भया तब सभ विश्व आनंदरूप अपणा आप भासती हे तातें अहंकारका अभाव करो ॥ काहेतें जो विश्व भांतिकरी सिद्ध हे आगें कछू हुइ नही सर्व आत्मा स्वरूप हे ॥ हे रामजी वासनामात्र विश्व हे ॥ जब वासना नष्ट होवे तब परम कल्याण हे जिस प्रकार इसकी वासना क्षे होवे सोइ जुक्ति श्रेष्ठ हे जब जुक्तिकरी वासना क्षय होवेगी तब चेष्टाभी होवेगी परंतु बहुरी जन्मकों न देवेगी ॥ हे रामजी ज्ञानी अज्ञानीकी चेष्टा तुल्य दृष्ट आती हे परंतु ज्ञानीका संकल्प दग्ध बीजवत् हे बहुरी जन्मकों नही देता अरु अज्ञानीका संकल्प कच्चे बीजवत् हे बहुरी जन्म देता हे अरु वास्तव देखियें तो न कोउ जन्महि पावता हे न कोउ मृत होता हे केवल अपणे आप भावविषे स्थित हे ॥ भांति करिकें भिन्न भिन्न भासतें हे स्वरूपतें सर्व अपणाहि आप हे ॥ द्वैत कछू हुआ नही अरु जो भासता हे सो मिथ्या हे ॥ जेसें केलेके थंभविषे सार कछू नही होता तेसें प्रपंच सर्व मिथ्या हे ॥ इस विषे सार कछू नही तातें इसकी वासना त्यागकरी अपणे अपविषे स्थित होहु॥ हे रामजी जिस प्रकार तुमारी वासना निर्मूल होवे सोइ जतन करी निर्मूल करो ॥ तब सेष परम सिवपदहि रहेगा ॥ हे रामजी पुरुष प्रयत्न करी जब निरहंकार होवहुगे ॥ तब वासना आपहि क्षय हो जावेगी ॥ वासना क्षयका उपाय अपणे पुरुष प्रयत्न विना कोउ नही ॥ तातें हे रामजी पुरुषार्थ करिकें इसी एक देव परायण होहु कर्म दैव आदिक वहि पुरुष होकरी भासता हे ॥ अरु कछू हुआ नही जेसें एकहि पुरुष देवनका स्वांग धारे ॥ हे रामजी इस प्रकार विचार पूर्वक सभ ईषणाकों त्यागकरी स्वरूप विषे स्थित होहु ॥

॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे निरासयोगोपदेशो नाम शताधिकनवचत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ १४९ ॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥

909

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ज्ञानवानकी बुद्धि निर्मल हो जाती हे रिदेविषे सीतलता होती हे ॥ चैतन रसकरी बुद्धि पूर्ण होती हे ॥ दुसरा भान उठी जाता हे तातें नित अंतर्मुखी होहु ॥ अरु वीतराग निर्वासी होहु चिन्मात्र निर्मल शांतरूप सर्व ब्रह्मकी भावना करु ॥ ब्रह्मपदकों पाय करी नेतिके अनुसार चेष्टा कर ॥ जो हर्षका स्थान होवे तिसविषे हर्ष करु ॥ जो सोकका स्थान होवे तहां सोक करु ॥ जेसें अज्ञानी करते हे तेसें कर अरु रिदेविषे आकाशकी न्यांइं रहु ॥ हे रामजी जब इष्टकी प्राप्ती होवे तिस साथ स्पर्श करहु परंतु रिदेविषे तृष्णा न होवे ॥ जब जुद्ध आए प्राप्त होवे तब सूरमा होकरी जुद्ध करहु ॥ अरु जहां दीन होवे तहां दया करहु ॥ जो राज आय प्राप्त होवे तिसकों भोगहु ॥ जो कोउ कष्ट आय प्राप्त होवे तिसकोंभी भोगहु ॥ हे रामजी सब चेष्टा अज्ञानीकी न्यांइं करहु अपणे रिदेकों कोउ जानि न सके अरु रिदेविषे सदा समता रहे ॥ इतर कछू फुरे नहीं राग दोषतें रहित सदा निर्मल होहु॥ जब तुं अेसें निश्चयकों धारेगा तब तुझकों खेद कछू न होवेगा ॥ यद्यपि बडा दुःख इंद्रका वज्र पडे तोभी तुझकों स्पर्श न करेगा॥ हे रामजी तेरा रूप केसा हे जो शस्त्र करी छेद्या नही जाता अरु अग्नि करी जलता नही जलकरी गलता नही ॥ पवन करी सुकता नही केवल निराकार अजर अमर हे सर्वका अपणा आप हे ॥ हे रामजी कष्ट तब होता हे जब विलक्षण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वस्तु होती हे अग्नि तब जलाती हे जब भिन्न काष्ट आदिक वस्तु होतीं हैं ॥ अग्निकों अग्नि तो जलाती नहीं ॥ जलकों जल तो गालता नहीं ॥ तातें तुं अपणे आपविषे स्थित होड्ड ॥ हे रामजी संवित रूप आलयवत स्थिर स्थान हे तिसविषे स्थित होड्ड ॥ जेसें पंछी सर्व उरतें संकल्पकों त्याग करी आलयविषे स्थित होता हे ॥ तब सुख पावता हे तेसें जब तुं सर्व कल्पनाकों त्याग करी अंतर्मुख संवितविषे स्थित होवेगा ॥ तब राग दोष रूपी धुंध कोउ न रहेगा ॥ हे रामजी संसाररूपी समुद्र बडा प्रवाह हे तिसतें निकसणा तब होवे जब आश्रय होवे ॥ सो आश्रय तुझकों कहता हों अनुभव रूप आत्माकों आश्रय करी संसार समुद्रके पारकों प्राप्त होड्ड ॥ तातें विलंब न करड्ड अपणे आपविषे स्थित होड्ड ॥ हे रामजी संसार रूपी वृछ का अंत लिया चाहे तो नहीं पाइता ॥ अरु में तुझकों अेसा उपाय कहता हों जो सर्वका अंत कहियें सुगंधकों ग्रहण किये ॥ संसाररूपी एक वृछ हे तिसविषे चैतनमात्र सुगंधता हे ॥ सो तेरा अपणा आप हे तिसकों ग्रहण करु जो सर्वका अधिष्टान हे ॥ जब तिसकों ग्रहण किया तब सर्वकों ग्रहण किया हे ॥ हे रामजी जेता कछू प्रपंच तुमकों भासता हे सो सब आत्मरूप हे तिसकी भावना करु ॥ अरु जाग्रतविषे सुषुप्त होड्ड सुषुप्तिविषे जाग्रत होड्ड॥ संसारकी सत्ता जो जाग्रत हे तिसकी उरतें सुषुप्त होड्ड॥सुषुप्त कहियें फुरणेतें रहित हो करी तुरिया पदविषे स्थित होड्ड ॥ जहां गुणका क्षोभ कोउ नहीं अरु निर्मल शांति रूप हे ॥ जहां एक अरु दोकी कलना कोउ नहीं तिसविषे स्थित होड्ड ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् अेसें जो शांत रूप तुरिया पदविषे स्थित होणा तुमनें कहा ॥ सो तुमारेविषे यह नहीं फुरता जो में वसिष्ठ हों तिसका रूप क्या हे जो अहं प्रतीत तुमकों न होती हे ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे भारद्वाज जब इस प्रकार रामजीनें प्रश्न किया तब वसिष्ठजी तुष्णी हो गये अरु सर्व सभा संशयके समुद्रविषे मग्न भइ ॥ तब रामजी बोले ॥ हे भगवन् तूष्णी होणा तुमारा अजोग हे तुम साक्षात् विश्व गुरु हो ब्रह्मवेत्ता हो ॥ अेसी कवन बात हे जो तुमकों न आवे ॥ अथवा मुझकों समर्थ नहीं देखते सो कहो जब एसें रामजीनें कहा तब वसिष्ठजी एक घडी उपरांत बोले ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी असमर्थता करिकें में तूष्णी नहीं भया ॥ परंतु जेसा तेरे प्रश्नका उत्तर हे सोइ दिखाया ॥ जो तेरे प्रश्नका तूष्णीहि उत्तर हे ॥ जो प्रश्न करणेवाला अज्ञान होवे तो उसकों अज्ञान लेकरी उत्तर कहियें ॥ अरु जो तज्ज्ञ होवे तिसकों ज्ञानकरी उत्तर दीजियें ॥ आगें तुं अज्ञानी था तब सविकल्प उत्तर में देता था ॥ अब तुं ज्ञानवान हे ॥ तेरे प्रश्नका उत्तर तुष्णीहि हे ॥ हे रामजी जो कछू कहणा हे सो प्रतिजोगी साथ मिल्या हुआ हे प्रतिजोगी बिना शब्द में केसें कहों ॥ आगें तुं सविकल्प शब्दका अधिकारी था अरु अब तुझकों निर्विकल्पका उपदेश किया हे ॥ हे रामजी शब्द चार प्रकारके हे एक सूक्ष्म अर्थका दूसरा परमार्थका एक अल्प हे एक दीर्घ हे ॥ सो तीन कलंक इनविषे रहतें हे एक संशय एक प्रतिजोग एक भेद यह तीनों कलंक शब्दविषे रहते हे ॥ जेसें सूर्यकी किरणाविषे त्रिसरेणु रहतें हे ॥ तेसें शब्दविषे कलंक रहतें हे ॥ अरु जो पद मन अरु वाणीतें अतीत हे तो कलंकित शब्द केसें तिसकों ग्रहण करे ॥ हे रामजी काष्ठमौन तिसकों कहते हे जहां न इंद्रियां फुरहि न मन फुरे कोउ फुरणा न फुरे सो कहियें काष्ठमौन ॥ अेसें पदकों में वाणीकरी केसें कहों ॥ जेता कछू बोलणा होता हे सो सविकल्प होता हे ॥ उस तेरे प्रश्नका उत्तर तूष्णी हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् तुम कहते हो बोलणा सविकल्प अरु प्रतियोगी सहित होता हे॥ जो कछू ब्रह्मविषे दूषण हे तिसका निषेध करिकें कहो में प्रतियोगीकों न विचारोंगा ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी में चिदाकाशस्वरूप हों चैततें रहित चिन्मात्र हों अरु सांतरूप हों सम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हौं सर्व कलनातें रहित केवल आत्मत्वमात्र हौं ॥ अरु तुं भी चिदाकास हे ॥ सर्व जगत्भी चिदाकास हे अरु अहं त्वं कोउ नही कहणा ॥ काहेतें जो दूसरी सत्ता कोउ नही सब चिदाकास हे अहं संवेदनतें रहित शुद्ध हे जो सापेछक अहं अहं फुरती हे ॥ अरु मोछकीभी इछा होवे तो सिद्धि नही होती ॥ काहेतें जो कछू आपकों भानीकरी फुरती हे ॥ तो एक अहंकारके केइ अहंकार होजाते हे ॥ यह अहं इसके गलेमें फांसी पडती हे ॥ जब अहंतातें रहित होवे तब आत्मपदकों प्राप्त होवे ॥ हे रामजी जब यह सबकी न्यांइ हो जावे कछू अपणी अहंता अभिमान न फुरे ॥ तब संसार समुद्रके पारकों प्राप्त होवे ॥ अरु जब द्वैतसों मिल्या हुआ जीवता हे तबलग जनम मरनके बंधनमें हे कदाचित् मुक्त नही होता ॥ जेसें जनमका अंध चित्रकी पूतलीकों देखि नही सकता ॥ तेसें अहंता संजुक्त मुक्तीकों नही प्राप्त होता ॥ जब अहंताका अभाव होवे तब कल्याण होवे स्वरूपके आगें अहंताहि आवरण हे ॥ हे रामजी जब यह चैतन हुआ फुऱ्या तब इसकों बंधन पडा ॥ अरु जब जड अफुर हो जावे तब कल्याण हुआ ॥ जब चैतन्योन्मुखत्व होता हे तब इसका नाम पशु होता हे ॥ पशुका शरीर पाया जब चैततें रहित शुद्ध चैतन प्रत्यक् आत्माविषे स्थित होता हे तब मनुष जन्म सफल होता हे ॥ यह मनुष जन्म पाय जो कछू पावणा था सो पाया ॥ हे रामजी जब मनुष जन्मकों पाय करी न जाणेगा तब अवर जन्मविषे जानणा कहा हे ॥ यह संसार चित्तके फुरणे करी उत्पत्ति हुआ हे ॥ जब चित्त संसरनेतें रहित होवे तब केवल केवलीभाव स्वरूप भासे ज्ञानवानकी दृष्टीविषे अबभी कछू नही हुआ केवल आत्म स्वरूपहि भासता हे ॥ फुरणा अफुरणा दोनों तिसकों तुल्य दिखाइ देते हे अंतःकरण चतुष्टय आत्म स्वरूप हे अरु अज्ञानीकों भिन्न भिन्न भासते हे ॥ इसीतें चित्त आदिक जड हे अरु मिथ्या हे अरु आत्मस्वरूप करिकें सब आत्मस्वरूप हे ॥ आत्मा देश काल वस्तुके प्रछेदतें रहित हे ज्ञानीकों सर्व आत्माहि भासता हे भावे केसी चेष्टा करे उह लोक धन पुत्र सर्व ईषणातें रहित हे ॥ न लोककी इछा करता हे ॥ जो लोक मुझकों कछू भला कहे ॥ अरु न पुत्र धन पावणेकी इछा करता हे केवल आत्म अनुभवरूपविषे स्थित हे अरु सबकों अपणा आप जानता हे ॥ हे रामजी जिस पदकों उह प्राप्त होता हे तिस पदकों मेरी वाणी कहि नही सकती ॥ अनिर्वाच्य पद हे अरु जो पुरुष अहं ब्रह्म अस्मि कहता हे जो मैं ब्रह्म हों अरु यह जगत् हे तब जाणियें जो तिसकों ज्ञान नही उपजा तिसकों शास्त्र श्रवणका अधिकार हे ॥ जेसें कोउ कहे मेरे हाथविषे दीपक हे अरु अंधकारभी मुझकों दृष्ट आता हे ॥ तब जाणिये जो इसके हाथविषे दीपक नही तेसें जबलग जगत् भासता हे तबलग ग्यान उपजा नही इस जीव निर्वाण हो जाणा हे ॥ जब प्रत्यक् चैतनविषे स्थित हुआ तब जड हो जावेगा ॥ संसारकी भास कछू न रहेगी इसीभी दृष्ट न रहेगी जो मैं सम्यक्दर्शी हों केवल निर्वाण हो जावेगा ॥ हे रामजी अबभी निर्वाण पद हे इतर हुआ कछू नही ॥ किस करिकें किसकों कवन उपदेश करे ॥ केवल एक रस शून्य हे शून्य अरु आत्माविषे भेद कछू नही ॥ अरु जो कछू भेद हे तिसकों ज्ञानवान जानते हे ॥ अरु वाणीकी गम नही तिसविषे जो अनंत संवेदन फुरती हे तिसकरी संसार फुरता हे अरु संवेदनही करी लीन होता हे ॥ जेसें पवन करी अग्नि प्रज्वलित होती हे अरु पवनहि करी लीन होता हे ॥ तेसें संवेदन बहिर्मुख फुरती हे तब संसार भासता हे ॥ अरु जब अंतर्मुख होती हे तब जगत् लीन हो जाता हे ॥ तातें संसार फुरणेमात्र हे ॥ जेसें आकाशविषे नीलता भ्रम करी भासती हे तेसें आत्माविषे जगत् प्रमाद करिकें भासता हे ॥ जगत् कछू बन्या नही केवल ब्रह्मसत्ता ज्योंकी त्यों हे ॥ तिसविषे स्थित होहु ॥ जब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थित होवेगा तब अशेष विशेष भाव मिटि जावेगा ॥ हे रामजी ग्राह्य अरु ग्राहक संबंधभी जाता रहेगा ॥ केवल जो परमात्म तत्व सुद्ध हे अजर अमर हे खाते पीते चलते सोवते दृत्ति तहांहि रखणी ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे भावनाप्रतिपादनोपदेशो नाम शताधिकपंचाशत्तमः सर्गः ॥ १५० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जिस प्रकार आत्मपदकों प्राप्त होता हे सो सुण ॥ जब निरहंकार होता हे पुरुष तब आत्मपदकों प्राप्त होता हे जो सर्वात्मा हे तिसकों आवरन करणे हारी अविद्या हे जेसें सूर्यमंडलके आगें बदल आय अछादि लेता हे तेसें अविद्या आत्माविषे आवरण करती हे ॥ तिस अविद्या करी उन्मत्तकी न्यांइं मूर्ख चेष्टा करते हे ॥ अरु जो अहंतातें रहित ज्ञानवान पुरुष हे तिसकों दुःख कोउ नही ॥ स्पर्श कर्ता संदेहभी निर्दुःख होता हे ॥ जेसें भींत उपर मूरतां जुद्धकी सेना लिखी होती हे सो देखणेमात्र क्षोभ दृष्ट आता हे ॥ परंतु उह शांतरूप हे ॥ तेसें ज्ञानवानकी चेष्टाविषेभी क्षोभ दृष्ट आता हे ॥ परंतु सदा अक्षोभ निर्वाणरूप हे ॥ वासना सहित दृष्ट आता हे अरु सदा निर्वासी हे ॥ जेसें जलविषे लहरी चक्र क्षोभ दृष्ट आता हे परंतु जलतें इतर कछू नही ॥ तेसें ज्ञानवानकों ब्रह्मतें इतर कछू नही भासता ॥ जिसके अंतरतें दृश्यभाव शांत हो गया हे ॥ बाहर क्षोभवान दृष्ट आता हे तोभी मुक्तीरूप हे जेसें धुंएके बदल आकाशविषे हस्ती घोडा पहाडरूप दृष्ट आते हे परंतु हे कछू नही ॥ तेसें जगत् दृष्ट आता हे परंतु हे कछू नही अहंकार करी जगत् भासता हे अहंकारतें रहित निर्विकार शांतरूप होता जाता हे ॥ अेसा जो निरहंकार आत्मपद हे तिसकों पायकरी ज्ञानवान शोभता हे अेसा सरत्कालका आकाश नही शोभता अरु क्षीरसमुद्रभी अेसा नही शोभता अरु पूर्णमासीका चंद्रमाभी अेसा नही शोभता जेसा ज्ञानवान पुरुष शोभता हे ॥ हे रामजी अहंताहि इस पुरुषकों मल हे ॥ जब अहंता नास होवे तब स्वरूपकी प्राप्ति होवे ॥ अरु संसारके पदार्थकी जो भावना थी सो निवृत्त हो जाती हे काहेतें जो भ्रम करीकें उपजी थी जो वस्तु भ्रम करीकें उपजी होती हे सो भ्रमके अभाव हुए तिसकाभी अभाव हो जाता हे ॥ जेसें आकाशविषे धुंएका बदल नाना प्रकारके आकार हो भासता हे अरु हे नही तेसें यह विश्व अन होती भासती हे विचार कियेतें रहती नही हे रामजी जबलग इसकों संसारकी वासना हे तबलग बंध हे ॥ जब वासना निवृत्त हो जावे तब आत्मपदकी प्राप्ती होवे अरु संपूर्ण कलना मिटि जावे इंद्रियांके इष्ट अनिष्टविषे तुल्य हो जावे जद्यपि व्यवहार कर्ता हे तोभी शांतरूप हे जेसें शब्दकों राग दोष नही फुरता तेसें ज्ञानी निर्वाणपदकों प्राप्त होता हे ॥ जिस निर्वाणविषे सत असत शब्द कोउ नही केवल ब्रह्मस्वरूप हे ॥ ब्रह्म कहणाभी उहां नही रहता केवल आत्मत्व मात्र हे अरु अद्वैत हे ॥ हे रामजी विश्वभी उही रूप हे चैतन आकाश हे जेसी जेसी भावना होती हे तेसा तेसा चैतन होंकरी भासता हे ॥ जब जगत्की भावना होती हे तब नाना प्रकारके आकार दृष्ट आते हे ॥ अरु जब ब्रह्मकी भावना होती हे तब ब्रह्म भासता हे ॥ जेसें विषविषे अमृतकी भावना होती हे अरु विधी संयुक्त खाते हे ॥ तब विषभी अमृत हो जाती हे अरु जो विधिविना खाइंए तो मृतक होता हे ॥ तेसें जब इस संसारकों विधि संयुक्त देखियें अर्थ इह जो विचार करी देखियें तो ब्रह्मस्वरूप भासता हे ॥ अरु जो विचार विना देखिये तो जगत्रूप भासता हे ॥ सो विचार तब होता हे जब अहंकार निवर्त होता हे ॥ अरु अहंकार आकाशविषे उपजा हे अरु आकाश शून्यताविषे उपजा हे ॥ अरु शून्यता आत्माके प्रमाद करी उपजी हे ॥ बहुरी अहंकारतें जगत् हुआ हे ॥ अरु अहंकार मिथ्या हे ॥ हे रामजी शरीर आदिक चित्त पर्यंत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विचार देखीये तो द्रष्ट कछु नही आते ॥ इनविषे जो अहं प्रत्यय हे सो भ्रांतिमात्र हे जब तुं विचार देखेगा तब मरीचिकाके जलवत् भासेगा ॥ हे रामजी इस प्रपंचके त्यागणेविषे जतन कछू नही ॥ जेसें सुपनेके पर्वतका त्यागणा जतन कछू नही ॥ तेसें मिथ्या संसारके त्यागणेविषे जतन कछू नही ॥ बहुरी इसका निरने क्या करियें जो हेही नही ॥ जेसें वंध्याके पुत्रकी वाणी विचारियें जो सत्य कहता हे अथवा असत कहता हे ॥ सो मिथ्या कल्पना हे वंध्याका पुत्र हे नही तो तिसका विचार क्या करियें तेसें प्रपंच हे नही इसका निर्णय क्या करियें ॥ तातें तुम अेसें करो जेसें में कहता हों तब आत्मपदकी प्राप्ति होवे ॥ हे रामजी एसी भावना करु जो न में हों न जगत् हे ॥ जब अहंकार न रहा तब कलना कहां होवे इसका होणाही अनर्थ हे ॥ जब अेसें विचार उत्पत्ति होता हे तब भोगकी वासना क्षय हो जाती हे अरु संतकी संगति होती हे ॥ अन्यथा भोगकी वासना नष्ट नही होती ॥ हे रामजी जब लग इसकों अहंता उठती हे अर्थ यह जो दृश्य प्रकृति साथ मिलाप हे तवलग द्वैत भ्रम नही मिटता ॥ जब अहंकार उत्थान मिटि जावे तब सुद्ध चिन्मात्र आत्मसत्ताही रहे ॥

॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे हंससंन्यासयोगोनाम शताधिकएकपंचाशत्तमःसर्गः ॥ १५१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब अहंताका उत्थान होता हे तब स्वरूपका आवरण होता हे अरु जब अहंता मिटि जावे तब स्वरूपकी प्राप्ति होती हे ॥ इस संसारका बीज अहंताही हे सो अहंकारहि मिथ्या हे तिसका कार्य सत्य केसें होवे ॥ जो प्रपंच मिथ्या हुआ तो पदार्थ कहांतें सत होवे ॥ हे रामजी अेसा जो ब्रह्म हे तिसकी जुगति क्या हे जो संकल्प पुरुषभी असत्य हे अरु तिसका संशयभी मिथ्या हे अरु जिस प्रति प्रश्न करता हे सोभी मिथ्या हे ॥ जेसें सुपनेविषे द्वैत कलना होती हे सो असत हे ॥ तेसें इह जगत् द्वैतभी असत्य हे ॥ हे राम जी इह सब जगत् इसके अंतर स्थित हे अरु प्रमादकरी बाहिर भासता हे इह अपनाही सुपना द्रष्ट आता हे जो अंतरकी बाह्य सृष्टि भासती हे ॥ तातें इह जगत् सब चिद्रूप हे ॥ इतर कछू नही सो चैतन सत्ता आकाशतेंभी अति सूक्ष्म हे अरु स्वछ हे ॥ हे रामजी इह जगत् चित्तकरी चेत्या हे तातें कछु हुआ नही ॥ न किसीका नास होता हे न उत्पत्ति होता हे ॥ न किसी कछु जन्म हे न मृत्यु हे सर्व ब्रह्मही हे ॥ हे रामजी जगत्के नास हुए कछू नास नही होता ॥ काहेतें जो हुआ कछू नही जेसें सुपनेके पहाड नष्ट हुए जेसें संकल्प पुर नष्ट हुअे क्या नष्ट हुआ जो कछू उपजे नही तो तेसें इह जगत् हे कछू हुआ नही ॥ इह विचार करी देख्या हे ॥ जो वस्तु अविचारतें उपजी होवे सो विचार करी केसें रहे ॥ जेसें जो पदार्थ तमतें उपजा होवे सो प्रकाश हुए केसें रहे तेसें यह जगत् हे ॥ अविचार करी भासता हे विचार करेतें नास हो जाता हे ॥ हे रामजी जगत् यह संकल्पहि मात्र हे ॥ जेसें संकल्प नगर होता हे तेसें यह संसार हे इसविषे कोउ पदार्थ सत्य नही ॥ तातें रूप अरु इंद्रियां अरु मनके अभावकी चिंतवना करणी इह संसार अेसा हे जेसें समुद्रविषे चक्र हे नही जलही हे तिसविषे प्रीति भावना करणी अज्ञान हे ॥ हे रामजी एक एसें हे जो बाह्यतें शांतरूप द्रष्ट आते हे अरु अंतर उनके क्षोभ होता हे अरु एक अेसें हे जो अंतरतें सीतल हे बाह्य नाना प्रकारकी चेष्टा करते हे ॥ जिनके दोनों मिटि जाते हे सो मोक्षके भागी होते हे तिनके अंतर बाहिर एकता होती हे ॥ जेसें समुद्रविषे घट भरी राखीयें तिसके अंतर बाहिर जल होता हे ॥ हे रामजी जिस पुरुषने ज्योंका त्यों जाण्या हे आत्माकों तिसकों न भय होता हे न सोक होता हे न मोह होता हे ॥ केवल स्वछरूप शांत आत्माविषे स्थित हे ॥ भय तब होता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं जब दुसरा भासता हे ॥ सो सर्व द्वैतका तिसके अभाव हो जाता हे अरु शांतरूप होता हे ॥ हे रामजी सम्यक्दर्शीकों जगत् दुःख नही देता ॥ अरु असम्यक्दर्शीकों दुःख देता हे जै
सें जेवरी होती हे जो जानता हे तिसकों जेवरी भासती हे ॥ अरु जो नही जानता तिसकों सर्प भासता हे अरु भयकों प्राप्त होता हे ॥ तेसें जिसकों आत्माका साक्षात्कार हे तिसकों
जगत् कल्पना कोउ नही भासती चिदानंद ब्रह्म अधिष्ठानरूप भासता हे अरु जिसकों अधिष्ठानका अज्ञान हे तिसकों जगत् द्वैतरूप होकरी भासता हे अरु राग दौषविषे जलता हे ॥
हे रामजी अवर जगत् कोउ नही इसके अनुभवविषे जगत् कल्पना होती हे अज्ञान करीकें द्वैतरूप हो भासता हे जब अपणे सुभाव सत्ताविषे जागता हे तब सब अपणा आप भासता
हे ॥ जेसें सुपनेविषे अपणा आपहि द्वैतरूप हो भासता हे अरु राग दोष उपजता हे ॥ जब जागता हे तब सब आत्मरूप हो भासता हे तेसें यह जगत् हे ॥ न इस जगत्का कोउ निमि
त्त कारण हे न कोउ उपादान कारण हे जो पदार्थ कारण बिना भासे सो असत जाणिए वास्तव उपज्या नही भ्रम करी सिद्ध हुआ हे जेसें सुपन सृष्टी अकारण हे तेसें यह जगत् अ
कारण हे भ्रम करीकें भासता हे ॥ हे रामजी शास्त्रकी जुक्ती साथ विचार करीकें देख जो द्वैत भ्रम मिटि जावे रंचक मात्रभी कछु वन्या नही ॥ जेसें आकाशविषे नीलता कंछू बनी
नही अरु मरुथलकी नदी भासती हे तेसें यह जगत्भी जाण आत्मा शुद्ध हे अद्वैत हे ॥ तिसविषे अहंकृतका फुरणाहि दुःख हे अरु दुःखका कारण हे ॥ अरु जो स्वरूपका प्रमाद न
होवे तो अहंकृतभी दुःखका कारण नहीं ॥ अरु जो स्वरूप भूला हे तो अहंकृतादिक दृश्य विषकी वल्ली वढती जाती हे अरु नाना प्रकारके आकारकों धारती हे अरु वासना दृढ होती
हे ॥ जवलग वासना होती हे तवलग बंध हे ॥ जब वासना निवृत्त होवे तबही कल्याण होता हे ॥ हे रामजी जिस दृश्यकी भावना करता हे सो दृश्यभी कछू भिन्न नही ॥ जेसें समुद्र
विषे तरंग चक्र होते हे सो इतर कछू नही ॥ तेसें अहंकार आदिक जो दृश्य हे सो हे नही ॥ जो हे नही तिसकी इछा करणी यही मूर्खता हे ॥ अरु ज्ञानवानकी वासना क्षय हो जा
ती हे ॥ जेसें महा अणु होता हे तब आकाशकों ग्रहण करता हे जो आकाशवत् वहुत सूक्ष्म होता हे तेसें ज्ञानवानकी वासना सूक्ष्म होती हे ॥ उह वासना उसका बंधनका कारण
नही होती ॥ काहेतें जो संसारकी सतता रिदेविषे नही रहति ॥ अरु सतता इस करी नही रहती जो आत्माका साक्षात्कार हुआ हे ॥ अरु जब आत्माका प्रमाद हे तब अहंता उदे होती
हे ॥ अरु दृश्य भासती हे॥जेसें नेत्रके खोलणे करी दृश्यका ग्रहण करता हे जब नेत्र मुंदि लिये तब दृश्यरूपका अभाव हो जाता हे॥ तेसें जब अहंता उदे होती हे तब दृश्यभी होती हे
जब अहंता नष्ट भइ तब संसारका अभाव हो जाता हे ॥ हे रामजी अज्ञान किसका नाम हे सो सुण॥अहंताका उदे होणा इसीका नाम अज्ञान हे अहंता करीकें बंध हे अहंतातें रहित
मोक्ष हे आगें जो इछा होवे सो करहु ॥ हे रामजी देह इंद्रियादिक मृगतृष्णाके जलवत् हे ॥ इनविषे अहंता करणी मूर्खता हे अरु ज्ञानवान अहंताकों त्याग करी आत्मपदविषे स्थित
होता हे॥संसारके इष्ट अनिष्टविषे हर्ष शोक नही करता ॥ जेसें आकाशविषे वदल हुए तोभी ज्योंका त्यों हे तेसें ज्ञानी ज्योंकात्यों हे ॥इनविषे अहंकार नहीं तातें सुखरूप हे॥हे रामजी
रूप दृश्य अरु इंद्रियां अरु मन उसके जाते रहते हे ॥ जेसें वंध्याके पुत्रकी नृत्य नही होती तेसें ज्ञानीके रूप अवलोक मनस्कार नष्ट होगये हे ॥ काहेतें जो सर्व ब्रह्म तिसकों भासता
हे द्वैत भावना नष्ट हो गइ हे अरु संसारका बीज अहंता ज्ञानीविषे दृढ हे ॥ हे रामजी अहंता करीकें इसकी बुद्धी बुरी हो गइ हे ॥अर्थ यह जो स्थूल हो गइ हे तातें दुःख पावता हे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस दुःखके नासका उपाय कहता हौं तुं सुण ॥जो संतजनके वचनोंविषे भावना करणी अरु विचार करीकें रिदेविषे धारणी ॥ इस करी अहंतारूपी दुःख नष्ट हो जाता हे॥अरु संतके वचनोंके निषेध करणा इसकों मुक्त फलके नास करणेहारा हे अरु अहंतारूपी वैतालके उपजावणे हारा हे तातें संतकी सरनकों प्राप्त होइ अहंताकों दूर करइ इसविषे खेद कछू नही॥ यह अपणे आधीन हे अपणा अभाव चिंतवना इसविषे क्या खेद हे ॥ हे रामजी संतकी संगति द्वारा इसकों बहुत सुगम होता हे ॥ जो ज्ञानवान होवे इनकी पृथक् पृथक् सेवा करणी अरु बुद्धीकों बढावणी ॥ तिनके वाक्य श्रवण करीकें वचनोंकों एकठा करणा ॥ अरु विचार करीकें बुद्धीकों तीक्ष्ण करणी बुद्धी जब तीक्ष्ण होवेगी तब अहंतारूपी विषकी वल्लीका नास करेगी ॥ यह विचार करियें जो में कवन हौं यह जगत् क्या हे जब अेसा विचार करेगा संत अरु शास्त्रोंके वचनों करी निर्णय कियेतें सत हे सो सत होता हे अरु असत हे सो असत हो जाता हे सत्र जाणी करी आत्माकी भावना करणी अरु असत्य जगत् मृगतृष्णाके जलवत् जाणी करी भावना त्यागणी ॥ जिनकों सुख जाणी करी भावना पावणेकी करता था सो दुःखदाइ भासते हे जेसें मरुथलविषे जाणी करी मृग दौडता हे तो दुःख पावता हे ॥ अधिष्ठानके अज्ञान करीकें तेसें अधिष्ठान सबका आत्मतत्व हे सो शुद्धरूप परम शांत परमानंद स्वरूप हे ॥ जिसकों पाय करी बहुरी दुःखी न होवे ॥ हे रामजी इसकों बंधनका कारण भोगकी वासना हे ॥ सो भोग करी शांति नही होती जब संतकी संगति होती हे तब इसका कल्याण होता हे ॥ अनात्मविषे अहंभाव छूटि जाता हे ॥ अवर प्रकार शांति नही होती ॥ हे रामजी बालककी न्यांइं हमारे वचन नही हमारा कहणा जथार्थ हे ॥ काहेतें जो स्वरूपका भान हमकों स्पष्ट हे ॥ जब इसकी अहंता मिटि जावे तब सुखी होवे ॥ तातें अहंताका नास करइ ॥ अहंता नास हुइ तब जाणियें जो चैतकी भावना मिटि जाती हे ॥ हे रामजी जब ज्ञानरूपी सूर्य उदे होता हे तब अहंतारूपी अंधकार नष्ट हो जाता हे ॥ अरु ज्ञान तब होता हे जब संतका विचार प्राप्त होवे ॥ विषयतें वैराग होवे अरु स्वरूपका अभ्यास करे ॥ इस करी स्वरूपकी प्राप्ती होती हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे निर्वाणयुक्त्युपदेशो नाम शताधिकद्विपंचाशत्तमः सर्गः ॥ १५२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

392

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जिन पुरुषनें अपणा अज्ञान नास नही किया ज्ञानकरिकें तिननें कछू करणे जोग नही किया ॥ अज्ञान करिकें इसकों अहंभावना होती हे तब आगें जगत् भासता हे अरु लोक परलोककी भावना करता हे ॥ इसी वासना करी जन्म मरणकों पावता हे ॥ हे रामजी जबलग संसारका शब्द अर्थ इसके रिदेमें दृढ हे तबलग शब्द अर्थके अभावकी चिंतवना करे ॥ जहां इसकों जगत् भासता हे तहां ब्रह्मकी भावना करे ॥ जब ब्रह्म भावना करेगा तब संसारके शब्द अर्थतें रहित होवेगा ॥ अरु आत्मपद भासेगा ॥ हे रामजी इस संसारविषे दो पदार्थ हे एक इह लोक दूसरा परलोक॥अज्ञानी इस लोकका उद्यम करते हे परलोकका नही करते॥तातें दुःख पावते हे अरु तृष्णा मिटती नही अरु जो विचारवान पुरुष हे सो परलोकका उद्यम करते हे सो इहांही सोभा पावते हे अरु परलोकविषेभी सुख दुःख पावते हे अरु दोनों लोकके कष्ट तिनके मिटि जाते हे ॥ अरु जो इसी लोकका उद्यम करते हे तिनकों दोनोंहि दुःखदायक होते हे इहां तृष्णा नही मिटती अरु आगें जायकरी नरक भोगते हे अरु जिन पुरुषनें आत्म परकोकका जतन किया हे तिनकों उहि सिद्ध होता हे अरु सुखी होते हे अरु जिनने नही जतन किया सो दुःखी होते हे तातें अहंकारसों रहित होणा यहि आत्मपदकी प्राप्ति हे जबलग इसकों प्रछंन अहंकार उपजता हे तबलग दुः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खी होता हे अरु नाम इसका जीव हे जो कछू फुरता हे तिसकरी विश्वकी उत्पत्ति होती हे जेसें नेत्रके खोलणे करी रूप भासता हे अरु नेत्रके मुंदणेकरी रूपका अभाव हो जाता हे तेसें जब अहंता फुरती हे तब दृश्य भासती हे अरु जब अहंताका अभाव होवे तब दृश्यका अभाव हो जाता हे सो अहंता अज्ञानकरी सिद्ध होती हे ज्ञानके उपजेतें निवृत्त हो जाती हे ॥ हे रामजी जब यह पुरुष अपणा प्रयत्न करे अरु साथहि सतसंग करे ॥ इस करी संसार समुद्र उतरी जावेगा इतर नही तरता ॥ हे रामजी जुक्तिकरिकें जेसें विषभी अमृत हो जाती हे ॥ तेसें पुरुषार्थ करी सिद्धता प्राप्ति होती हे ॥ हे रामजी इस जीवकों दो व्याधि रोग हे इस लोकका परलोकका ॥ तिसकरी जीव दुःख पावते हे ॥ जिन पुरुषनें संतसाथ मिलाप करी इसका औषध किया हे सो मुक्तरूप हे ॥ अरु जिनने औषध नहीं किया सो पुरुष पंडित हे तोभी दुःख पावते हे ॥ सो औषध क्या हे सम दम करणा अरु सतसंग करणा इन साधनकरी जतन करी जिननें आत्मपद पाया हे सो कल्याण मूरत हे ॥ हे रामजी चिकित्साका औषधभी यही हे जिननें किया तिननें किया॥ अरु जिननें न किया भोगविषे लंपट रहे उह मूर्ख तहां पडेंगे जहां फेर कीसी औषधकों न पावेंगे ॥ तातें हे रामजी इन भोगका त्याग करहु अरु आत्मविचारविषे सावधान होवहु यहि औषध हे॥ हे रामजी जिस पुरुषनें मन नही जीत्या सो मूढ हे भोगरूपी चीकडविषे मग्न हे उह आपदाका पात्र हे ॥ जेसें समुद्रविषे नदीयां प्रवेश करतियां हे तेसें आपदा तिसकों प्राप्त होती हे अरु जिसकी तृष्णा भोगतें निवृत्त भइ हे अरु वैराग उपजा हे सो मुक्ति जोगकों प्राप्त होता हे जेसें जीणेकी आदि बालक अवस्था हे ॥ तेसें निर्वाण पदकी आदि वैराग हे॥ हे रामजी यह संसार मिथ्या हे भमकरी भासता हे ॥ जेसें दूसरा चंद्रमा भमकरी भासता हे अरु संकल्प नगर भममात्र होता हे ॥ अरु मृगतृष्णाका जल भमकरी भासता हे तेसें यह जगत् भमकरी भासता हे संसारका बीज अहंता हे ॥ जब अहंता उदे हुइ तब रूप अवलोक भासते हे तातें यहि चिंतवना कर जो में नही ॥ जब यहि भावना करेगा तब शेष जो रहेगा सो तेरा सांतरूप हे जिसविषे आकाशभी शून्य हे केवल आत्मत्वमात्र हे अहंके उत्थानतें रहित हे ॥ अरु जड अजड हे ॥ अरु जडताका अभाव हे तातें अजड हे ॥ केवल ज्ञानमात्र हे अरु विश्व तिसविषे अेसें हे जेसें जलविषे तरंग होते हे अरु जेसें पवनविषे स्पंद होता हे ॥ अरु आकाशविषे जेसें शून्यता हे तेसें आत्माविषे जगत् हे सो आत्मातें इतर कछू नही ॥ जो कछू आत्मातें इतर होता तो प्रलेविषे नास हो जाता सो प्रलेकालविषेभी रहता हे जेसें सूर्यकी किरणविषे जलाभास सदा रहता हे ॥ तेसें आत्माविषे विश्वका चमत्कार रहता हे ॥ जेसें सुपन सृष्टि अनुभवरूप होती हे तेसें यह जाग्रत सृष्टिभी अनुभवरूप हे ॥ सो आत्मा अंतर बाहिरतें रहित हे अरु सुद्ध हे ॥ अद्वैत हे अजर हे अमर हे चैततें रहित चैतन हे॥ अरु सर्व शब्द अर्थका अधिष्ठान उही हे ॥ फुरणे करिकें दूसरा भासता हे ॥ अरु फुरणा अफुरणा उही हे ॥ जेसें चलणा ठहरणा दोनों पवनके रूप हे ॥ जब चलता हे तब भासता हे॥ जब ठहरता हे तब नही भासता॥ तेसें जब चित्त सक्ती फुरती हे तब विश्वरूप होकरी भासती हे ॥ जब अफुर होती हे तब केवल मात्र पद रहता हे सो निराभास हे ॥ अविनासी अरु निर्विकल्प हे अरु सभका अपणा आप हे ॥ अरु सत असत जड चैतन आदिक शब्द अर्थ सभ उसी अधिष्टान सत्ताविषे फुरते हे इतर कछू नही ॥ तातें उसी अपणे स्वरूपविषे स्थित होहु ॥ जो परमार्थ सत्ता आत्मतत्व अपणे सुभाव विषे स्थित हे अहं त्वंतें रहित केवल आकासरूप सभका अधिष्टान हे तिसीविषे स्थित होहु ॥ इ० यो० नि० सांतिस्थितियोगोपदेशो नाम शताधिकत्रिपंचाशत्तमःसर्गः॥ १५३॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जिनकों दुःख सुख चलावतें हे इंद्रियके इष्टविषे सुखी होते हे अरु अनिष्टविषे दुःखी होते हे ॥ राग दोषके आधीन वर्तते हे तिनकों अेसें जाण जो नष्ट हुए हे ॥ जिनका पुरुष प्रयत्न नष्ट हुआ हे सो वारंवार जन्मकों पावेंगे ॥ अरु जिनकों सुख दुःख नही चलावते तिनकों अविनाशी जाण वह जन्म मरणके फांसेतें मुक्त हुए हे ॥ तिनकों शास्त्रका उपदेश नही हे ॥ हे रामजी राग दोष तब फुरता हे जब मनविषे इछा होती हे अरु इछा तब होती हे जब संसारकी सत्यता दृढ होती हे ॥ जिसकों असत्य जाणता हे तिसकों बुद्धि नही ग्रहण करती अरु इछाभी नही होती ॥ अरु जिसकों सत्य जाणता हे तिसविषे बुद्धि दोडती हे ॥ हे रामजी अज्ञानीकों संसार सत्य भासता हे तिसकरी दुःख पावता हे॥ जब शांतपदका जतन करे तब दुःखतें मुक्त होवे ॥ शांतपद केसा हे जिसविषे अहं त्वं अरु जगत् ब्रह्म इह शब्द कोउ नही ॥ केवल चिन्मात्र आकाश रूप हे तिसविषे अहं त्वं जगत् ब्रह्म शब्द केसें होवे ॥ यह शब्द सब विचारके निमित्त कहे हे वास्तवतें शब्द कोउ नही अद्वैत चैततें रहित चिन्मात्र हे ॥ जब सर्व शब्दका बोध किया तब शेष शांतपद रहता हे ॥ अभावतें नही इसीतें आत्मत्व मात्र कहा हे ॥ अरु जगत् फुरणे करी उसीविषे भासता हे ॥ तिस जगत्विषे जहां ज्ञप्ति जाती हे ॥ तिसका ज्ञान इसकों होता हे ॥ हे रामजी एक अधिष्ठान ज्ञान हे अरु एक ज्ञप्ति ज्ञान हे अधिष्ठान ज्ञान सर्वज्ञ हे सो ईश्वरकों हे ॥ अरु ज्ञप्ति ज्ञान जीवकों हे एक लिंग शरीरका जिसकों अभिमान हे सो जीव हे अरु सर्व लिंग शरीरका अभिमानी ईश्वर हे ॥ जहां इस जीवकी ज्ञप्ति पहुंचती हे तिसकों जानता हे जेसें एक शिज्जा पर दो पुरुष सोय होवे ॥ एककों सुपना आया तिसविषे मेघ गरजतें हे ॥ अरु दुसरा आया हे तिसकों मेघका शब्द सुणता नही ॥ काहेतें जो ज्ञप्ति उसकेविषे नही आइ ॥ परंतु मेघ तो उसके सुपनेमें हे ॥ जेसें सिद्ध विचरते हें अरु इसकों दृष्ट नही आते ॥ काहेतें जो इसकी ज्ञप्ति नही जाती अरु सब सृष्टी वसती हे तिसका ज्ञान ईश्वरकों हे सो सृष्टिभी संकल्प मात्र हे कछू बनी नही भ्रम करीकें भासती हे जेसें बदलविषे हस्ती घोडा मनुष आदिक विकार भासते हे सो भ्रांति मात्र हे ॥ तेसें आत्माके अज्ञान करी यह सृष्टि भासती हे नाना प्रकारकी ॥ हे रामजी यह आश्चर्य हे जो आत्माविषे अहंका उत्थान होता हे ॥ जो में हों अेसें जानता हे ॥ अरु वर्णाश्रम अपणेकों मानता हे अरु विचार करी देखियें तो अहं कछू वस्तु नही सिद्ध होती अरु अहं अहं फुरती हे यह आश्चर्य हे जो भूत कहांतें उठ्या हे ॥ शुद्ध आत्म ब्रह्मविषे यह केसें हुआ हे अन होते अहंकारनें तुमकों मोहित किया हे इसके त्यागणेविषे तो जतन कछू नही इसका त्याग करहु ॥ हे रामजी मिथ्या यह संकल्प उठा हे ॥ जब अहंकारका उत्थान होता हे तब जगत् होता हे जब अहंता मिटि जावे तब जगत्काभी अभाव हो जाता हे काहेतें जो बन्या कछू नही भ्रममात्र हे ॥ जेसें संकल्प नगर भ्रममात्र हे अरु सुपन सृष्टि भ्रममात्र हे तेसें यह विश्वभी भ्रममात्र हे कछू बनी नही अरु आत्मत्व रूप हे इतर कछू नही ॥ जेसें पवनके दो रूप हे चलता हे तोभी पवन हे ठहरता हे तोभी पवन हे तेसें विश्वभी आत्मस्वरूप हे ॥ जेसें पवन चलता हे तब भासता हे अरु ठहरि जाता हे तब नही भासता तेसें चित्त चैतशक्तीका चमत्कार हे जब फुरता हे ॥ तब विश्व भासती हे तोभी चिद्घन हे जब ठहरि जाता हे तब विश्व नही भासती परंतु आत्मा सदा एक रस हे जेसें जलविषे तरंग होते हे जेसें सुवर्णविषे भूषण होते हे सो इतर कछू हुआ नही तेसें आत्माविषे विश्व इतर कछू हुइ नही आत्म स्वरूप हे ज्ञप्तिभी ब्रह्म हे अरु ज्ञप्तिविषे फुरी विश्वभी ब्रह्म हे ॥ विधि निषेध अरु हर्ष सोक किसका करियें सर्व उही हे ॥ हे रामजी संकल्पकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थित करिकै देख ॥ जो सब तेराहि स्वरूप हे जेसें पुरुष शोन करता हे उसकों सुपन सृष्टि भासती हे जब जागता हे तब देखता हे सब मेराहीं स्वरूप हे ॥ तेसें जाग्रत विश्वभी तेरा स्व
रूप हे ॥ जैसें समुद्रविषे तरंग उठतें हे सो जलरूप हे तेसें विश्व आत्मस्वरूप हे ॥ जेसें चितेरा काष्टविषे कल्पता हे जो एती पूतलियां निकसेंगिया अरु जेसें मृत्तिकाविषे कुंभार घटादि
क कल्पता हे जो एते पात्र बनेंगे काष्ठ मृत्तिकाविषे तो कछू नही ज्योंकात्यों काष्ठ हे अरु ज्योंकात्यों मृत्तिका हे ॥ परंतु उनके मनविषे आकारकी कल्पना हे तेसें आत्मविषे संसार
रूपी पूतलियां मन कल्पता हे ॥ जब मनका संकल्प निवृत्त हो जावे तब ज्योंकात्यों आत्मपद भासे ॥ जेसें तरंग जलरूप हे जिसकों जलका ज्ञान हे सो तरंगभी जलरूप जानता हे
अरु जिसकों जलका ज्ञान नही सो भिन्न भिन्न तरंगके आकार देखता हे तेसें जब निःसंकल्प होकरी स्वरूपकों देखे तब फुरणेविषेभी आत्मसत्ता भासेगी॥ अहं त्वं आदिक सब जगत्
ब्रह्मस्वरूपही हे ॥ तो भ्रम केसें होवे अरु किसकों होवे सब विश्व आत्मस्वरूप हे सो आत्मा निरालंब हे ॥ आलंबरूप जो चैत हे अहंकार तिसतें रहित हे केवल आकासरूप हे ॥ जब
तुं तिसविषे स्थित होवेगा तब नाना प्रकारकी भावना मिटि जावेगी नाना प्रकारकी भावना जगत्विषे फुरती हे अरु जगत्का बीज अहंता हे ॥ जब अहंता नास होवे तब जगत्काभी
अभाव हो जावेगा ॥ हे रामजी अहंताका फुर्णाही बंधन हे अरु निरहंकार होणा मोक्ष हे ॥ एक चित्तबोध हे अरु एक ब्रह्मबोध हे ॥ चित्तबोध जगत् हे अरु ब्रह्मबोध मोक्ष हे ॥ चि
त्तबोध अहंताका नाम हे जबलग चित्तबोध फुरता हे तबलग संसार हे ॥ अरु जब चित्तका अभाव होवे तब मुक्त होवे ॥ इस चित्तके अभावका नाम ब्रह्मबोध हे ॥ हे रामजी जेसें
पवन फुरता हे तेसें ब्रह्मविषे चित्तबोध हे अरु जेसें पवन ठहरि जाता हे तेसें चित्तका ठहरणा ब्रह्मबोध हे ॥ जेसें फुर अफुर दोनों पवनहि हे ॥ तेसें चित्तबोध ब्रह्मबोध ब्रह्मही हे इतर
कछू नही ॥ हमकों तो ब्रह्मही भासता हे चैतन मात्र शांतरूप हे अरु अपणे सुभावविषे स्थित हे जिसकों अधिष्ठानका ज्ञान होता हे तिसकों विवृत्तभी उही रूप भासता हे ॥ अरु जि
सकों अधिष्ठानका ज्ञान नही तिसका भिन्न भिन्न जगत् भासता हे ॥ जेसें एक बीजविषे पत्र टास फूल फल भासता हे अरु जिसकों बीजका ज्ञान नही तिसकों भिन्न भिन्न भासते हे
हे रामजी हमकों अधिष्ठान आत्मतत्वका ज्ञान हे तातें सब विश्व आत्म स्वरूप भासती हे अरु अज्ञानीकों नाना प्रकारकी विश्व भासती हे जन्म अरु मृत्यु भासते हे ॥ हे रामजी सब श
ब्द आत्मतत्वविषे फुरते हे ॥ सर्वका अधिष्ठान आत्मा हे निराकार निर्विकार हे अरु शुद्ध हे सबका अपणा आप हे ॥ तातें सब विश्व आकाश रूप हे ॥ इतर कछू हुइ नही जेसें तरंग
जलरूप हे तेसें विश्व आत्म स्वरूप हे अरु चित्त जो फुरता हे तिसके अनुभव करणेहारी चैतनसत्ता हे सो ब्रह्म हे ॥ अरु तेरा स्वरूपभी उही हे तातें अहं त्वं आदिक जगत् सब ब्रह्मरूप
हे ॥ संशयकों त्याग करी अपणे स्वरूपविषे स्थित होहु ॥ अरु पाछें तुमकों कहा हे द्वैत अद्वैत सब उपदेश मात्र हे ॥ एक चित्तकी वृत्तिकों स्थित करिकें देख ॥ सब ब्रह्म हे इतर कछू
नही निषेध किसका करियें ॥ हे रामजी चित्तकी दो वृत्ति ज्ञानवान कहते हे ॥ एक मोक्ष रूप हे एक बंधरूप हे जो वृत्ति स्वरूपकी उर फुरती हे सो मोक्षरूप हे ॥ जो दृश्यकी उर फु
रती हे सो बंधरूप हे जो तुमकों शुद्ध भासती हे सोइ करहु अरु जो दृष्टा हे सो दृश्य नही होता अरु जो दृश्य हे सो दृष्टा नही होता आत्मा तो अद्वैत हे तातें दृष्टाविषे दृश्य पदार्थ
कोउ नही तुम क्यों दृश्यकी उर फुरते हो अन होती दृश्यकों ग्रहण क्यों करते हो अरु दृष्टाभि तेरा नाम दृश्यकरी होता हे ॥ जब दृश्यका अभाव जाण्या तब अवाच्य पद हे तिसकों वा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

णीकरी कछू कह्या नही जाता ॥ हे रामजी जेसें अंगी अरु अंगवालेविषे भेद कछू नही जेसें आकाश अरु शून्यताविषे भेद कछू नही ॥ जेसें जल अरु द्रवताविषे भेद कछू नहीं बरफ अरु सीतलता विषे भेद कछू नही ॥ तेसें ब्रह्म अरु जगत्विषे भेद कछू नही कोउ जगत् कहे अथवा ब्रह्म कहे एकहि पर्याय हे जगत्हि ब्रह्म हे ब्रह्महीं जगत् हे तातें आत्मपदविषे स्थित होहु भ्रमकरिकें आपकों कछू अवर मानते हे तिसकों त्याग करी ब्रह्महीकी भावना करहु ॥ अरु आपकों मनुष कदाचित् नही जानणा ॥ जो आपकों मनुष जाणेगा तो यह निश्चय अधोगतीकों प्राप्त करणे हारा हे तातें अधोगतीकों मत प्राप्त होहु अपणे स्वरूपविषे स्थित होहु ॥ इ०यो०नि०परमार्थयोगोपदेसोनाम शताधिकचतुःपंचाशत्तमःसर्गः ॥१५४॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी देशतें देशांतरकों वृत्ति जब जाती हे तिसके मध्य जो संवित तत्व हे तिसकों जो अनुभव करता हे सो तेरा स्वरूप हे तिसविषे स्थित होहु अरु जेसी चेष्टा आवे तेसी करहु देख, सुण, स्पर्श कर, गंधले, बोल, चाल, हसहु, सब क्रिया करहु परंतु इनके जानणेवाली जो अनुभव सत्ता हे तिसविषे स्थित होउ यह जाग्रतविषे सुषुप्ति हे चेष्टा शुभ करहु अरु अंतरतें पथरकी सिलावत् होहु फुरणेतें रहित ॥ हे रामजी तेरा स्वरूप निराभास हे ॥ भास जो दृश्य हे तिसतें रहित हे अरु निर्मल शांतरूप हे तिसविषे स्थित होहु जेसें सुमेरु पर्वत स्थित हे तेसें होहु यह दृश्य अज्ञान करीकें भासती हे तमरूप हे अरु आत्मा सदा प्रकाशरूप हे तिस प्रकाशविषे अज्ञानीको तम भासती हे ॥ जेसें सूर्य सदा प्रकाशरूप हे अरु उलूककों नही भासता हे ॥ अज्ञान करीकें तमहि भासती हे तेसें अज्ञानीकों अविद्यारूप जगत् भासता हे ॥ सो अविचारतें सिद्ध हे अविद्या करीकें इसकी विपर्यय दृष्टि हुइ हे ॥ इसका वास्तव स्वरूप निर्विकार हे ॥ जो जायते अस्ति वर्धते परिणमते विपक्षीयते नश्यते इन षट् विकारतें रहित हे तातें निर्विकार हे तिसकों विकारी जानता हे आत्मा निर्विकार निराकार हे तिसकों साकार जानता हे ॥ आत्मा आनंदरूप हे तिसकों दुःखी जानता हे आत्मा शांतरूप हे तिसकों अशांत जानता हे ॥ आत्मा महत् हे तिसकों लघु जानता हे आत्मा पुरातन हे तिसकों उपजा मानता हे आत्मा सर्व व्यापक हे तिसकों प्रछन्न मानता हे आत्मा नित्य हे तिसकों अनित्य देखता हे आत्मा चैतनें रहित शुद्ध चिन्मात्र हे यह चैत संयुक्त देखता हे आत्मा चैतन हे यह जड देखता हे आत्मा अहंतें रहित सदा अपणे सुभावविषे स्थित हे यह अनात्म अहंकारविषे अहं प्रतीत करता हे ॥ आत्माविषे अनात्म भावना करता हे ॥ अरु अनात्मविषे आत्म भावना करता हे आत्मा निरवयव हे तिसकों अवयवी देखता हे आत्मा अक्रिय हे तिसकों सक्रिय देखता हे आत्मा निरंश हे तिसकों अंशाशी भाव करी देखता हे आत्मा निरामय हे तिसकों रोगी देखता हे आत्मा निष्कलंक हे ॥ तिसकों कलंक सहित देखता हे ॥ आत्मा सदा प्रत्यक्ष हे तिसकों परोक्ष जानता हे ॥ अरु जो परोक्ष हे तिसकों प्रत्यक्ष जानता हे ॥ हे रामजी इत्यादिक जो विकार हे सो आत्माविषे अज्ञान करीकें देखता हे आत्मा शुद्ध हे अरु सूक्ष्मतें सूक्ष्म हे अरु स्थूलतें स्थूल हे ॥ अरु बडेतें बडा हे ॥ लघुतें लघुभी हे सर्व शब्द अरु अर्थका अधिष्ठान हे ॥ हे रामजी ब्रह्मरूपी एक डब्बा हे तिसविषे जगत्रूपी रत्न हे ॥ पर्वत अरु वन सहितभी जगत् दृष्ट आता हे परंतु आत्माके निकट रुइके लोम जेसा लघू हे ॥ आत्मरूपी वन हे तिसविषे संसाररूपी मंजरी उपजी हे सो केसी मंजरी हे पांचो तत्व पृथ्वी अप तेज वायु आकाश इसके पत्र हे तिन करीकें शोभती हे सो अहंताके उदे हुए उदे होती हे अरु अहंताके नास हुए नास होती हे अरु आत्मरूपी समुद्र हे तिसविषे जगत्रूपी तरंग हे सो उठतेभी हे अरु लीनभी हो जाते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे अरु आत्माकाशविषे संसार भ्रम मात्र हे आकाश दृक्षकी न्यांइ हे आत्माके प्रमाद करी भासता हे ॥ हे रामजी मायारूपी चंद्रमा हे तिसकी किरणां जगत् हे ॥ अरु नेति शक्ति नृत्य करणे हारी हे सो तीनों अविचार सिद्ध हे विचार कियेतें शांत हो जाते हे ॥ जेसें दीपक हाथविषे लेकरी अंधकार देखियें तो दृष्ट नही आता तेसें विचार करी देखीयें तो जगत्का अ भाव हो जाता हे ॥ केवल शुद्ध आत्माहि प्रत्यक्ष भासता हे ॥ हे रामजी जगत् कछू बन्या नही जेसें किसीनें बरफ कहि किसीनें शीतलता कहि तिसविषे भेद नही ॥ तेसें आत्मा अरु जगत्विषे भेद कछू नही ॥ अरु भेद जो भासता हे सो भ्रम मात्र हे ॥ जेसें तंतु अरु पटविषे भेद कछू नही तेसें आत्मा अरु जगत् हे ॥ हे रामजी आत्मरूपी रंगविषे जगतरूपी चित्र पूतलियां हे अरु आत्मरूपी समुद्रविषे जगत्रूपी तरंग हे सो जलरूप हे तेसें आत्मा अरु जगत्विषे भेद कछू नही आत्मरूपही हे ॥ आत्मातें इतर कछू बन्या यही ॥ जिसकरी सर्व प दार्थ सिद्ध होते हे ॥ अरु जिस करी सर्व क्रिया सिद्ध होती हे जो अनुभवरूप सदा अप्रौढ हे तिसकों प्रौढ जानणा यहि मूर्खता हे ॥ हे रामजी यह विश्व तेराही स्वरूप हे तुं जागि करी देखे तुंहि खडा हे ॥ अरु स्वछ आकाश सूक्ष्म प्रत्यक जोति अपणे आपविषे स्थित हे ॥ इतिश्री यो० निर्वाणप्रकरणे परमार्थयोगोपदेशोनाम शताधिकपंचपंचाशतमःसर्गः ॥ १५५ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी रूप अवलोक मनस्कार यह तीनों संसार हे सो ज्ञानवानकों भ्रम मात्र भासते हे वास्तव कछू नही मिथ्या हे ॥ जेसें जलविषे लहरी तरंग उठते हे सो जलरूप हे तेसें आत्माविषे रूप अवलोक मनस्कार फुरते हे सो सब आत्मरूप हे इतर कछू नही ॥ हे रामजी यह शुद्ध परमात्मका चमत्कार हे अरु आत्मा दृश्यतें रहित हे शुद्ध हे चि न्मात्र हे निर्मल हे अद्वैत हे ॥ तिसविषे जगत् कछू बन्या नही हमकों तो सदा उही भासता हे जगत् कछू नही भासता जेसें कोउ आकाशविषे नगर कल्पता अरु सब रचना तिसविषे देखता हे सो उसके रिदेविषे दृढ हो जाती हे ॥ अरु जो संकल्पकी सृष्टिकों मिथ्या जानता हे तिसकों शून्याकाशहि भासता हे तेसें यह विश्व मूर्खके रिदेविषे दृढ भइ हे ॥ अरु ज्ञानवा नकों आत्मस्वरूपही भासता हे ॥ जेसें माटीके खीलोनें सेना होती हे हस्ती घोडा आदिक दृष्ट आते हे तिसविषे उह राग दोष नही करता जिसकों माटीका ज्ञान हे अरु बालक माटीके ज्ञानतें रहित हे तिसविषे राग दोष करते हे ॥ तेसें ज्ञानवान इस जगत्विषे राग दोष नही करते अरु अज्ञानी राग दोष करते हे ॥ जेसें खिलोनेविषे सारभूत मृत्तिका होती हे ॥ तेसें इस जगत्विषे सारभूत चैतन आत्मा हे ॥ जो कछू पदार्थ भासते हे सो आत्माका विवर्त्त हे मिथ्याहि भ्रमकरी सिद्ध हुए हे ॥ जो वस्तु मिथ्या भ्रममात्र होवे तिसविषे सुखके निमित्त इछाकरणी यही मूर्खता हे ॥ हे रामजी हमकों तो इछा कछू नही काहेतें जो हमकों जगत् मृगतृष्णाके जलवत् भासता हे तातें इछा किसकी करें ॥ जिसविषे सत्य प्रतीत होती हे तिसविषे इछाभी होती हे ॥ जो सत्यही न भासे तो इछा केसें करी होवे ॥ हे रामजी इछाही बंधन हे अरु इछातें रहित होणा इसीका नाम मुक्ति हे ॥ तातें ज्ञानवानकों इछा कछू नही रहती अनिछित हि चेष्ठा होती हे ॥ जेसें सूका बांस होता हे तिसके अंतर बाहिर शून्य होती हे ॥ संवेदन उसकों कछू नही फुरती ॥ तेसें ज्ञानवानके अंतःकरणविषे अरु बाह्यकरणविषेभी शांति होती हे ॥ अंतःकरणविषे संकल्प कोउ नही उठता अरु बाह्यविषेभी उपाधि कोउ नही निःसंकल्प निरुपाधि चेष्टा उसकी होती हे ॥ हे रामजी जिस पुरुषके अंतरतें संसारका रस सूकी ग या हे सो संसार समुद्रतें पार हुआ हे अेसें जाण ॥ अरु जिसका रस नही सूकी गया तिसकों राग दोष फुरते हे इष्ट अनिष्ट करीकें तब संसार बंधनविषे जाण ॥ हे रामजी में तुझकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अेसी समाधि कहता हों जो सुखेनही प्राप्त होवे ॥ अरु जिसकरी मुक्त होवे सो श्रवण करु ॥ सर्व इछातें रहित होणा यही परम समाधि हे ॥ जिस पुरुषकों इछा फुरती हे तिसकों उप
देशभी नही लागता ॥ जेसें आरसी उपर मोती नही ठहरता ॥ तेसें उसके रिदेपर उपदेश नही ठहरता ॥ अरु इसकों इछाहि दीन करती हे अरु इछातें रहित हुआ तब शांतरूप होता हे
बहुरी इसकों शांतिके निमित्त कर्तव्य कछू नही रहता ॥ हे रामजी हम तो निरिछित हे हमकों अंतर बाहिर शांति हे ॥ हमकों कर्तव्य करणे जोग कछू नही ॥ जो कछू प्रारब्ध तिस
करी चेष्टा होती हे राग दोषतें रहित ॥ बोलते हे परंतु बांसरीकी न्यांइ जेसें बांसरी बोलती हे अहंकारतें रहित तेसें ज्ञानवान अहंकारतें रहित हे अरु स्वादकों ग्रहण करें हे परंतु
कडछीकी न्यांइ ॥ जेसें कडछीकों सर्व विंजनविषे पाइता हे ॥ अरु तीसी द्वारा सब निकास पाइते हे परंतु उसकों राग दोष कछू नही फुरता जो यह होवे यह न होवे तेसें ज्ञानवान
स्वादकों लेता हे अनिछितहि ॥ अरु गंधभी लेता हे पवनकी न्यांइ ॥ जेसें पवन भली बुरी गंधकों लेता हे परंतु राग दोषतें रहित हे ॥ तेसें ज्ञानवान राग दोषकी संवेदनतें रहित गंधकों
लेता हे इसी प्रकार सर्व इंद्रियांकी चेष्टा करता हे परंतु इछातें रहित होता हे इसीतें परम सुखरूप हे अरु जिसकी चेष्टा इछा सहित हे सो परम दुःखी हे ॥ हे रामजी जिस पुरुषकों
भोग रस नही देते सो सुखी हे अरु जिसकों रस देतें हे राग करी तृष्णा बढती जाती हे तिसकों अेसें जाण जेसें किसीके मस्तक उपर अग्नि लागे तिस उपर तृण डारे बुझावणे निमित्त
तब उह बूझती नही बढती जाती हे तेसें विषयकी इछा भोगणे करी तृप्त नही होणेकी सो इछाही बंधन हे इछाके निवृत्तिका नाम मोक्ष हे ॥ हे रामजी संसाररूपी विषका वृक्ष हे ति
सका बीज इछा हे जिसकी इछा बढती जाती हे तिसका संसार बढता जाता हे ॥ तिसकरी वारंवार जन्म अरु मृतक होता हे ॥ हे रामजी एसा सुख ब्रह्माके लोकविषेभी नही जेसा
सुख इछाकी निवृत्तिविषे हे ॥ अरु अेसा दुःख नरकविषेभी नही जेसा दुःख इछाके उपजावणेविषे हे ॥ इछाके नासका नाम मोक्ष हे अरु इछाके उपजणेका नाम बंधन हे जिस पु
रुषकों इछा उत्पत्ति होती हे सो दुःखकों पावता हे ॥ संसाररूपी गरत खातविषे पडता हे ॥ अरु इछारूपी विषकी वल्ली हे तिसकों समतारूपी अग्नीकरी जलावहु ॥ सम्यकदर्शनकरी
जलाए विना बडे दुःखकों प्राप्त करेगी अरु बढी जावेगी ॥ हे रामजी जिस पुरुषनें इछा दूर करणेका उपाय नही किया तिसनें अंधेकूपविषे प्रवेश किया हे ॥ शास्त्रका श्रवणभी इसी
निमित्त हे जो किसी प्रकार इछा निवृत्त होवे अरु तप दान जज्ञभी इसी निमित्त हे जो किसी प्रकार इछा निवृत्त होवे जो एकही वार निवृत्त करी न सकियें तो क्षणे क्षणे निवृत्त
करीयें ॥ हे रामजी यह विषकी वल्ली बढी हुइ दुःख देती हे जो पुरुष शास्त्रोंकों पढताभी हे अरु इछाकों बढावताभी हे सो दिपक हाथ लेकरी कूपविषे गिरता हे ॥ अरु इछारूपी
कंटीआरीका वुंटा हे जिसकों सर्वदा कंटक लागे रहते हे तिसविषे सुख कदाचित् नही जो पुरुष कांटेकी सिज्या पर सैन करे अरु सुखी हुआ चाहे तो नही होता ॥ तेसें असार करी
कोउ सुख पाया चाहे तो कदाचित् नही होवेगा ॥ जिसकरी इछा निवृत्त होवे सोइ उपाय किया चहियें ॥ इछाके निवृत्त होणेविषे सुख हे अरु इछाके उत्पत्ति होणेविषे बडा दुःख
हे ॥ हे रामजी जो अनिछित पदविषे स्थित हुआ हे तिसकों जब यह क्षणभी इछा उपजती हे तब रुदन करता हे ॥ जेसें चोरतें लुंटा रुदन करता हे तेसें उह रुदन अरु पश्चाताप करता
हे अरु तिसके नास करणेका उपाय करता हे ॥ हे रामजी इछारूपी क्षेत्र हे अरु राग दोषरूपी तिसविषे विषकी वल्ली हे ॥ जो पुरुष तिसके दूर करणेका उपाय नही करता सो मनुष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषैं पशू हे ॥ यह इछारूपी विषका वृक्ष बढ्या हुआ नासका कारण हे॥ तातें तुम इसका नास करहु॥ इ० यो० नि० इछानिषेधयोगोपदेशोनाम शताधिकषट्पंचाशत्तमःसर्गः॥१५६॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इछारूपी विषके नाश करणेका उपाय तुमकों आगेंभी कहा हे अब बहुरी स्पष्ट करी कहता हों तुं श्रवण करु ॥ इछाके त्याग करणे जोग संसार हे सो मिथ्या हें आत्म सत्ता भिन्न करीयें तो मिथ्या हे जो मिथ्या हुआ तो तिसविषे इछा करणी क्या हे अरु जो आत्माकी उर देखिये तो सर्व आत्माही हे॥ जब सर्व आत्माहि हुआ तो इछा करणी क्या हे इछा दुसरेविषे होती हे सो दुसरा कछू हे नही इछा किसकी करियें ॥ हे रामजी द्रष्टा दृश्यभी मिथ्या हे दृष्टी कहियें इंद्रियां दृश्य कहियें विषय सो ग्राहक इंद्रियां हे ॥ अरु ग्राह्य विषय हे अविचार सिद्ध हे भ्रम करिकें भासते हे आत्माविषे कोउ नही जेसें सुपनेविषे भ्रम करिकें रूप भासते हे तेसें यह ग्राह्य ग्राहक भ्रम करिकें भासते हे ॥ अरु सुख दुःखभी इनही करी होता हे आत्माविषे कोउ नही भ्रम करी भासता हे ॥ हे रामजी द्रष्टा दर्शन दृश्य तीनों ब्रह्मविषे कल्पित हे ॥ वास्तवतें ब्रह्मही हे चिरकाल हम खोजी रहे हे ॥ परंतु द्वैत हमकों कछू दृष्ट नही आता ॥ एक ब्रह्मसत्ताही ज्योंकी त्यों भासती हे अरु निराभास हे फुरणेतें रहित ज्ञान रूप हे ॥ आकाशतेंभी सूक्ष्म हे ॥ अरु सर्व जगत्भी उही हे ॥ सो मैं हों ॥ हे रामजी जेसें जलविषे तरंग होता हे अरु आकाशविषे शून्यता हे अरु जेसें पवनविषे चलना हे ॥ अग्निविषे उष्णता हे सो सबहि अनन्य रूप हे तेसें आत्माविषे जगत् अनन्य रूप हे ॥ आत्माहि विश्व आकार हो करी भासता हे अवर कछू हुआ नही ॥ हे रामजी जो उही हे तो इछा किसकी करता हे यह जो में तुझकों मोक्ष उपाय कहता हों तुं आपकों क्यों बंधन करता हे ॥ बडा बंधन इछाही हे ॥ जिस पुरुषकों इछा बढती जाती हे सो जगत् रूपी बनका मृग हे ॥तिस मृग अरु पशुका संग कदाचित् नही करणा मूर्खका संग बुद्धिकों विपर्यय करी डारता हे ॥ तातें विपर्यय बुद्धिकों त्याग करि आत्मपदविषे स्थित होहु ॥ अरु विश्वभी सब तेरा अनुभव रूप हे ॥ अरु इसका सुख दुःख विद्यमानभी देखता हे ॥ परंतु आत्माविषे भ्रममात्र भासता हे कछू हे नही ॥ विश्वभी आनंद रूप शिवही हे तुं विचार देख दुसरा तो कछू हे नही जेसें मृत्तिकाविषे नाना प्रकारकी सेना हस्ती घोडा आदिक होती हे परंतु मृत्तिकातें इतर कछू नही तेसें सब विश्व आत्म रूप हे इतर कछू नही तिसविषे कारण कार्य भाव देखणाभी मूर्खता हे ॥ जो दुसरी वस्तुही नही तो कारण कार्य किसका होवे ॥ बहुरी इछा किसकी करता हे ॥ जिस संसारकी इछा करता हे सो हे नही जेसें सूर्यकी किरणाविषे जलाभास होता हे ॥ अरु सीपिविषे रूपा भासता हे सो दुसरी कछू वस्तू नही अधिष्ठान किरणा अरु सीपि हे तेसें अधिष्ठान रूप परमार्थ सत्ताही हे ॥ न सुख हे न दुःख हे केवल यह जगत् शिवरूप हे तिस शिव चिन्मात्रतें अन्य कछू नही मृत्तिकाकी सेनावत् तो इछा केसें उदे होवे ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर जो सर्व ब्रह्मही हे तो इछा अनिछाभी भिन्न नही ॥ इछा उदे होवे भावे न होवे बहुरी तुम केसें कहतें हो जो इछाका त्याग करहु ? ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जिस पुरुषकी ज्ञप्ति जागी हे ॥ अर्थ यह जो ज्ञानरूप आत्माविषे जाग्या हे तिसकों सर्व ब्रह्महि हे ॥ इछा अनिछा दोनों तुल्य हे ॥ इछाभी ब्रह्म हे अनिछाभी ब्रह्म हे ॥ हे रामजी ज्योंज्यों ज्ञानसंवित होती हे त्योंत्यों वासनाक्षय होती हे ॥ जेसें सूर्यके उदे भए रात्र नष्ट हो जाती हे तेसें ज्ञानके उपजेतें वासना नही रहती ॥ हे रामजी ज्ञानवानकों ग्रहण त्यागकी कर्तव्य नही इछा अनिछा तिसकों तुल्य हे ॥ यद्यपी अेसेंहि हे परंतु सुभाविकहि वासना तिसकों नही रहती ॥ जेसें सूर्यके उदे हुए अंधकार नही रहता तेसें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्माके साक्षात्कार हुए द्वैत वासना नही रहती ज्योंज्यों ज्ञानकला जागती हे त्योंत्यों द्वैत नास होता जाता हे ॥ द्वैतके निवृत्त होणेकरी वासनाभी निवृत्त हो जाती हे ॥ हे रामजी ज्यों ज्यों स्वरूपानंद इसकों प्राप्त होता हे ॥ त्योंत्यों संसार विरस होता जाता हे ॥ जब संसार विरस होगया तब वासना किसकी करे ॥ हे रामजी अमृतविषे इसकों विषकी भावना भइथी तब अमृत विष भासता था जब विषकी भावनाका त्याग किया तब अमृत तो आगेंही था सोइ हो जाता हे ॥ तेसें जो कछू तुझकों भासता हे सो सब ब्रह्मरूपी अमृतहि हे ॥ जब ति स ब्रह्मरूपी अमृतविषे अज्ञान करिकें जगत्‌रूपी विषकी भावना हुइ तब दुःखकों पावता हे अरु जब संसारकी भावना त्यागी तब आनंद रूपही हे तिसकों करणा अकरणा दोनों तुल्य हे ॥ यद्यपि ज्ञानवानविषे इछा दृष्ट आती हे तोभी उसके निश्चेविषे नही ॥ उसकी इछाभी अनिछाही हे ॥ काहेतें जो संसारकी भावना उसके रिदेविषे नही तो इछा किसकी रहे ॥ हे रामजी यह संसार हे नही हमकों तो आकाशरूप भासता हे ॥ जेसें अवरके मनोराजका संकल्प तिसविषे आणें जाणेका खेद कछू नही होता तेसें यह जगत् हमकों अवरकी चि तवनावत् हे जेसें किसी पुरुषनें मनोराज करिकें मार्गविषे कोउ स्थान रच्या होवे अरु तिसविषे किवाड लगाए होवे अरु नाना प्रकारका प्रपंच रच्या होवे अरु जो कोउ अवर पुरुष आता हे तिसकों अटकावता कोउ नही किवाडविषे ॥ अरु न कोउ किवाड हे न कोउ पदार्थ हे उसका शून्य मार्गका निश्चा होता हे तेसें हमकों सब प्रपंच शून्यही भासता हे ॥ अज्ञा नीके रिदेविषे हमारी चेष्टा हे ॥ अरु हमकों ब्रह्मतें इतर कछू नही भासता ॥ हे रामजी जिसकों जगत्‌ही न भासे तिसकों इछा किसकी होवे जिसके रिदेविषे संसारकी सत्यता हे तिस कों इछाभी फुरती हे अरु राग दोषभी उठता हे ॥ जिसकों राग दोष उठता हे तब जाणियें जो संसार सत्ता रिदेविषे स्थित हे ॥ अरु जिसकों नाना पदार्थ सहित संसार सत्य भासता हे सो मूर्ख हे अज्ञान निद्राविषे सोया हुआ हे जेसें निद्रादोष करिकें सुपनेंविषे पुरुष अपणा मृत्यु देखता हे तेसें जिसकों यह जगत् सत भासता हे सो निद्राविषे सोया हे॥ हे रामजी बहुत प्रकारके स्थान में देखे हे ॥ तिनविषे रोग औषधभी नाना प्रकारके देखे हे ॥ परंतु इछारूपी छुरीके घावका औषध अवर नही दृष्ट आया ॥ न जाप करी न तप करी न पाठकरी न जज्ञ दान तीर्थकरी निवृत्त होता हे जेते कछू संसारके पदार्थ हे तिन करिकें इछारूपी रोग नास नही होता जब आत्मरूपी औषधकी उर आवे तबहि नास होता हे ॥ अन्यथा किसी प्र कार यह रोग नही जाता ॥ हे रामजी जिस पुरुषकों ज्ञान प्राप्त हुआ हे तिसकी इछा सुभाविकही निवृत्त हो जाती हे ॥ अरु आत्मज्ञान बिना अनेक जतनकरी न जावेगी जेसें सुपने की वासना जागे विना नही जाती अवर अनेक उपाय करीयें तोभी दूर नही होती ॥ हे रामजी ज्योंज्यों वासना क्षीण होती हे त्योंत्यों सुखकी प्राप्ति होती हे ॥ अरु ज्योंज्यों वासनाकी अधिकता हे त्योंत्यों दुःख अधिक हे अरु यह आश्चर्य हे जो मिथ्या संसार सत्य हो भासता हे॥ जेसें बालककों दृछविषे बैताल हो भासता हे तिसकरी भय पावता हे सो हेही नही तेसें मूर्खता करिकें आत्माविषे संसार कल्पता हे तिसकरी दुःखी होता हे ॥ हे रामजी स्थावर जंगम जेता कछू जगत् भासता हे सो सब ब्रह्मरूप हे ब्रह्मतें इतर बन्या कछू नही ॥ भमकरिकें भिन्न भिन्न होय भासता हे जेसें अकाशविषे शून्यता हे जलविषे द्रवता हे ॥ सततविषे सततही हे तेसें आत्माविषे जगत् हे सो न सत हे न असत हे अनिर्वाच्य हे ॥ हे रामजी दूसरा कछू बन्या नही तो क्या कहियें केवल ब्रह्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे॥ सो सर्वका अपणा आप वास्तवरूप हे जब तिसका साक्षात्कार होता हे तब अहंरूप भम मिटि जाता हे जेसें

396

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूर्यके उदे हुए अंधकारका अभाव हो जाता हे ॥ तेसें आत्माके साक्षात्कार हुए अनात्म अभिमानरूपी अंधकारका अभाव हो जाता हे अरु परम निर्वाण भासता हे तिसविषे तहां न एक कहणा हे न दो कहणा हे केवल सांतरूप परम शिव हे ॥ जेसें आकाशविषे नीलता भासती हे तेसें आत्माविषे जगत् भासता हे ॥ हे रामजी जिननें अेसें निश्चय किया हे तिनकों इछा अनिछा दोनों तुल्य हे ॥ तोभी मेरे निश्चेविषे यह हे जो इछाके त्यागविषे सुख हे जिसकी इछा दिनदिन घटती जावे अरु आत्माकी उर आवे तिसकों ज्ञानवान मोक्षभागी कहतें हे काहेतें जो संसार भमकरिकें सिद्ध हे ॥ इसहीकी कल्पना जगत्रूप होकरी भासती हे ॥ विचार कियेतें निकसता कछू नही संसारके उदे होणेकरी आत्माकों कछू आनंद नही अरु नास होणेकरी कछू खेद नही होता काहेतें जो भिन्न कछू नही ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग उपजते विनसते हे तो जलकों हर्ष शोक कछू नही होता ॥ काहेतें जो जलतें इतर नही तेसें संपूर्न जगत् ब्रह्मस्वरूप हे तो इछा क्या अरु अनिछा क्या हे रामजी आदि जो परमात्मातें चित्तशक्ती फुरी हे तिसविषे जब अहं अेसें हुआ तब स्वरूपका प्रमाद हुआ तब यह चित्तशक्ती मनरूप हुइ बहुरी आगें देह इंद्रियां हुइ अज्ञान करिकें मिथ्या भम उदे हुआ हे इसी प्रकार अपणे साथ मिथ्या शरीरकों देखता हे जेसें जल दृढ जडता करिकें बरफरूप हो जाता हे तेसें चित्त संवित प्रमादकी दृढता करिकें मन इंद्रियां देहरूप होती हे ॥ जेसें कोउ सुपनेविषे अपणे मरणेकों देखता हे तेसें अपणे साथ शरीरकों देखता हे जब चिदशक्ती नष्ट होती हे तब शरीर कहां अरु मन कहां यह कोउ नही भासता जेसें सुपनेविषे भ्रम करिकें शरीरादिक भासते हे ॥ तेसें यह जाग्रतभी जाण जो मिथ्या भम करिकें उदे हुए हे ॥ जब अपणे स्वरूपकी उर आवे तब सबहि भ्रम मिटि जावे ॥ हे रामजी जेसें भ्रम करिकें आकाशविषे नीलता भासती हे ॥ तेसें विश्वभी अनहोती भम करी भासती हे ॥ आत्माविषे कछू आरंभ परिणाम करिकें नही बन्या उही स्वरूप हे ॥ जेसें आकाश अरु शून्यताविषे भेद नही ॥ जेसें पवन अरु स्पंदविषे भेद नही तेसें आत्मा अरु जगत्विषे भेद नही ॥ जेसें सुपनकी सृष्टि अनुभव रूप हे इतर कछू नही ॥ तेसें जगत् आत्मा अनुभवतें इतर कछू नही ॥ हे रामजी चैतन आकाश परम शांतरूप हे तिसविषे देह इंद्रियां भम करिकें भासती हे ॥ अरु क्रियाकाल पदार्थ सब भ्रम मात्र हे ॥ जब आत्मा स्वरूपविषे जागी करी देखेगा तब द्वैत भम निवृत्त हो जावेगा कैवल्य अद्वैत आत्माहि भासेगा दृश्यका अभाव हो जावेगा ॥ यह पृथ्वी आदिक तत्व जो भासते हे सो अविद्यमान हे इनकी प्रतिभा मिथ्या उदे हुइ हे ॥ जेसें सुपनेविषे अन होते पृथ्वी आदिक तत्व भासते हे परंतु हे नही तेसें आत्माविषे यह जगत् भासता हे ॥ हे रामजी पृथ्वीभी आकाश रूप हे ॥ अरु कंध कोटभी आकाश रूप हे ॥ अरु पर्वतभी आकाश रूप हे सब प्रपंच आकाश रूप हे जो सर्व आकाश रूप हे तो यहण त्याग किसका होवे अरु आकाश रूप दिवार उपर संकल्पनें मूरतां रचियां हे ॥ अरु रंग तहां आत्म चैतन्यता हे तातें विश्व संकल्प मात्र हे ॥ जेसा जेसा निश्चय होता हे तेसी तेसी सृष्टि भासती हे ॥ जो कछू बन्या होता तो अवरका अवर भासता तातें बन्या कछू नही जेसा संकल्प होता हे तेसा आगें रूप हा भासता हे ॥ हे रामजी सिद्ध पास एक चूरन होता हे तिसकरी जो चाहते हे सो करते हे ॥ पर्वतकों आकाश करते हे अरु आकाशकों पर्वत करते हे तेसें में तुझकों चूरन कहता हों ॥ जब चित्तरूपी सिद्ध संकल्परूपी चूरण करी फुरता हे तब आत्मरूपी आकासविषे पर्वत हो भासते हे ॥ अरु जब चित्तरूपी सिद्धका संकल्प उलटता हे तब पर्वतभी आकाशरूप हो भासता हे जेसें सुपनेविषे संकल्प फुर्ता हे तब अनुभवविषे पर्वत आदि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क पदार्थ भासि आते हे ॥ अरु जब संकल्पतें जागता हे तब सुपनेंके पर्वत आकाशरूप हो जाता हे ॥ आकाशहि पर्वतरूप हुआ अरु पर्वत आकाशरूप होता हे ॥ हे रामजी तेसें य
ह सृष्टि संकल्पमात्र हे कछू बन्या नही जेसा संकल्प होता हे तेसा भासता हे अरु जब विश्वके अत्यंत अभावका संकल्प किया तब तेसेंही भासता हे ॥ जेसें विश्वका अभ्यास किया
हे अरु विश्व भासी हे ॥ तेसें आत्माका अभ्यास करियें तो क्यों न भासें उह तो आपणा आप हे ॥ जब आत्माका अभ्यास करियें तब आत्माहि भासता हे विश्वका अभाव हो जाता हे
अनेक सृष्टि अपणे अपणे संकल्पकरी आकाशविषे भासतीयां हे ॥ जेसा किसीका संकल्प होता हे तेसी सृष्टि उसकों भासती हे जेसें चिंतामणी अरु कल्पवृछविषे दृढ संकल्प करता
हे ॥ तब जथा इछित पदार्थ निकसि आते हे सो कछू बने नही ॥ अरु चिंतामणीभी परिणामकों प्राप्त भइ ज्योंकी त्यों पडी हे संकल्पकी दृढता करी भासि आते हे तेसें यह प्रपंचभी आ
काशरूप हे ॥ जेसें आकाशविषे शून्यता हे तेसें आत्माविषे जगत् हे ॥ हे रामजी सिद्धके जो वचन फुरते हे सोही संकल्पकी तीव्रता होती हे जो चित्त सुद्ध होता हे तो दूसरी सृष्टीकों
भी जानता हे ॥ जो पुरुष वचन सिद्ध होणेके निमित्त वासना सूक्ष्म करता हे अर्थ यह जो वासनाकों रोकता हे सो तिसकरी वचन सिद्धताकों पावता हे जेसा संकल्प करता हे तेसा
सिद्ध होता हे ॥ हे रामजी जेता यह दृश्यकी उरतें उप्रांत होकरी अंतर्मुख होता हे तेता वचन सिद्धता होती जाती हे ॥ भावे वर देवे भावे श्राप देवे उह सिद्ध होता हे ॥ हे रामजी एक
प्रमाणज्ञान हे जो यह पदार्थ इस प्रकार हे तिसका जो नामरूप हे सो सभ आकाशरूप भममात्र हे आत्माविषे अवर कछू नही अरु आत्मरूपी समुद्रविषे जगत्रूपी तरंग उठते हे सो
आत्मरूपही हे जिनकों अेसा ज्ञान हुआ हे तिनकों इछा अरु अनिछाका ज्ञान नही रहता तिनकों सभ आकाशरूप भासता हे ॥ हे रामजी आत्मरूपी फूल हे तिसविषे जगत्रूपी गंध
हे ॥ जेसें पवन अरु स्पंदविषे भेद नही तेसें आत्मा अरु जगत्विषे भेद नही ॥ जेसें पथर ऊपर लकीर काढियें सो पथरतें भिन्न नही तेसें ब्रह्मतें जगत् भिन्न नही ॥ हे रामजी देश काल
पृथ्वी आदिक तत्व अरु में मेरा सभ आत्मरूप हे अरु अविनासी हे काहेतें जो अजनमा हे जिनकों अेसें निश्चे हुआ तिनकों राग दोष नही रहता सभ आत्मरूपही भासता हे ॥

॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे जगतउपदेशो नाम शताधिकसप्तपंचाशत्तमः सर्गः ॥ १५७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी शुद्ध आत्म तत्वविषे जो संवेदन फुरी हे तिस संवेदन करी आगें जगत् भास्या हे ॥ जेसें किसीके नेत्रविषे एक अंजन डारी करी आकाशविषे पर्वत उडते
दिखावते हे ॥ तेसें अन होता जगत् फुरणे करी भासता हे ॥ हे रामजी ब्रह्म स्वर्गविषे अरु चित्त स्वर्गविषे भेद कछू नही परमार्थतें एकही हे ॥ दृष्टि सृष्टि अरु वस्तु पर्याय हे अरु नाना
तत्वभी इसकी भावना करी भासते हे आत्माविषे दुसरा कछु नही बन्या ॥ चित्त अरु चैत आत्मातें इतर नही चित्तही चैत होकरी भासता हे ज्ञान करीकें इनकी एकता होती हे ॥ इसी
तें दृश्यभी द्रष्टारूप हे ॥ जेसें सुपनेंविषे शुद्ध संवितही दृश्यरूप होकरी स्थित होती हे अरु जागेतें एक हो जाती हे ॥ सो एकताभी तब होती हे जब उही रूप हे ॥ तातें तुं अबभी उही
जाण ॥ दृश्य दर्शन द्रष्टा त्रिपुटी सब उही रूप हे ॥ हे रामजी जो सजात हे तिसकी एकता होती हे विजातकी एकता नही होती ॥ जेसें जलविषे जलकी एकता होती हे ॥ तेसें बोधक
री सबकी एकता होती हे तातें दृश्यभी उही रूप हे जो एकता हो जाती हे ॥ जो दृश्य कछू आत्मातें भिन्न होती तो एकता न होती ॥ हे रामजी आकाश आदिक तत्वभी आत्मरूप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं जिसतें यह सर्व है अरु जो उह सर्व हैं ॥ तिस सर्वात्माकों नमस्कार है ॥ बहुरी कैसा है आत्मा सर्व व्यापी है अरु सर्व गत है ॥ सर्वकों धारी रहा है अरु सर्व उही है ॥ ऐसें सर्वात्माकों मेरा नमस्कार है ॥ जो कछू भासता है सर्व उही है ॥ जेसें जलविषे गलावणेकी शक्ति है अरु काष्टविषे नही तेसें ब्रह्मविषे भावना सुभाव है अवरविषे नही ॥ जो ब्रह्मभावनातें सर्व ब्रह्मही भासता है ॥ हे रामजी जड पदार्थ जो भासते सोभी ब्रह्म है काहेतें जो भासता है सो ब्रह्मही है जो जड होवे तो भासे नही जडभी चैतनता शुद्ध संवितविषे है ॥ उसविषे शब्द चैतन है इतर कछू नही भासता है ॥ जेसें शुद्ध संवितविषे सुपना फुरता है तिसविषे जडभी अरु चैतनभी भासते है परंतु जो जड भासते है उस संवितविषे उहभी चैतन है जब चैतन है तब फुरते है ॥ जिनकों शुद्ध संवितविषे अहं प्रयत्न नही सो जाणी नही शकता अज्ञानी है परंतु सब ब्रह्म है जेसें समुद्रविषे जल होता है सो उंचे आवे तोभी जल है अरु नीचेकों जावे तोभी जल है ॥ जेसें जो कछू देखता है अरु भासता है सो सब ब्रह्मस्वरूप है इतर कछू नही ॥ अरु इंद्रियका ग्राम जो भासता है सोभी आत्मा है ॥ अरु पृथ्वी आदिक तत्व जो फुरे है सो प्रथम आकाश फुऱ्या है बहुरी वायु फुरी है बहुरी अग्नि फुरी है ॥ तिसतें अनंतर जल फुऱ्या है बहुरी पृथ्वी फुरी है सो अनिछित फुरे है चमत्कारकी न्यांइं तातें सब आत्मरूप है ॥ जेसें वटबीजविषे वृक्ष होता है तेसें आत्मरूपी बीजविषे जगत् होता है अरु नाना प्रकार भासते है ॥ हे रामजो एक बीजही नाना प्रकारके रूप धारता है परंतु बीजतें इतर कछू नही ॥ तेसें आत्मा सत्ता नाना प्रकार हो भासतो है ॥ परंतु बीजकी न्यांइभी आत्मा प्रणम्या नही ॥ विश्व आत्माका चमत्कार है तातें उही रूप है ॥ जेसें स्वर्नविषे अनेक भूषण होते है सो स्वर्नतें इतर कछू नही ॥ तेसें विश्व आत्मस्वरूप है द्वैत कछू नही ॥ जो आत्मातें इतर होवे तो भासे नही ॥ तातें भासती जो है सो चैतनरूप है ॥ इसतें दृश्य अरु द्रष्टातें एकही रूप है द्रष्टा दृश्यकी न्यांइ हो भासता है ॥ हे रामजी जेसें कोउ पुरुष तुमारे निकट सोया होवे अरु उसकों सुपना आवे तिसविषे मेघ गरजते है अरु नाना प्रकारकी चेष्टा होती है सो उसकों भासती है अरु तुमकों नही भासती ॥ तेसें यह दृश्य तुमारी भावनाविषे स्थित है अरु हमकों आकाशरूप है ॥ हे रामजी चैतन आकाश शांतरूप है तिसविषे सृष्टि कछू बनी नही जो कछू उपजा नही तो नष्टभी नही होता केवल शांतरूप है भ्रम करीकें जगत् भासता है जेसें कोउ बालक मनोराज करीकें आकाशविषे पुतलियां रचे सो आकाशविषे कछू बण्या नही परंतु उसके संकल्पविषे है ॥ तेसें यह विश्व मनरूपी बालकनें रची है ॥ तिसकी रची हुइ विषेभी ज्ञानवानकों शून्यता भासती है ॥ हे रामजी संकल्पमात्रहि सृष्टि हुइ क्यौं जब इसका संकल्प नष्ट होता है तब शांतपद शेष रहता है सो केसा पद है निरहंकार सत्ता मात्र पद है अरु असतकी न्यांइ स्थित है बहुरी तिस चिन्मात्र अद्वैतविषे अहंता करीकें जगत् भासी आते है ॥ जब अहंता फुरती है तब जगत् भासता है ॥ अरु जब स्वरूपका साक्षात्कार होता है तब अहंतारूप भ्रम मिटि जाता है ॥ जब अहंतारूप भ्रम मिट्या तब जगत्काभी अभाव होता है अरु इछाकाभी अभाव हो जाता है ॥ तातें ज्ञानीकों इछा वासना कोउ नही रहती जब प्रसन्नरूप अहंता नष्ट हुइ तब तिस पदकों प्राप्ती होता है ॥ जिस पदविषे अणिमा आदिक सिद्धीभी सूके तृणकी न्यांइ भासती है ॥ ऐसा आनंदरूप है जिसविषे ब्रह्मादिकका सुखभी तृण समान भासते है ॥ हे रामजी जिसकों ऐसा ब्रह्मानंद पद प्राप्त हुआ है ॥ तिसकों बहुरी इछा किसीकी नही रहती ॥ अरु तिसकों मारणेहारे विषयादिक पदार्थ मृतक नही करते अरु जीवावणेहारे पदार्थ अमृत आदिक जीवावते नही ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केवल निर्वाणपदविषे तिसकी स्थिति हे ॥ हे रामजी जिस पुरुषकों संपूर्ण संसारतें वैराग हुआ हे ॥ तिसकों संसारके पदार्थ सुखदायक नही भासते मिथ्या भासते हे सो संसार समुद्र के पारकों प्राप्त भया हे ॥ जिसकों संसारकी वासना अरु अहंता नष्ट भइ हे तिसकी मुरती देखणे मात्र भासती हे सो निर्वासी ज्ञानवान शांतरूप हे ॥ हे रामजी इछाहि बंधन हे जब इछाका अभाव हुआ तब आनंद हुआ ॥ अरु इछाभी तब फुरती हे जब संसारकों सत्य जाणता हे ॥ अरु संसारकी सत्यता अहंता करी भासती हे॥ जब अहंतारूपी बीज नष्ट हो जावे तब निर्वाण पदकी प्राप्ति होवे ॥ हे रामजी संसार कछू वन्या तही भ्रमकरी सिद्ध हुआ हे ॥ सर्वही ब्रह्म हे तिस परमात्माविषे जो प्रछन्न अहंता फुरी सोइ उपाधि हे ॥ हे रामजी बुद्धितें आदि लेकरी जेती यह दृश्य हे जिसकों अपणेविषे स्वाद नही देती आकाशकी न्यांइं रहता हे तिसकों संत मुक्तरूप कहते हे ॥ हे रामजी इह अहं अविचारतें सत भासती हे विचार कि येतें असत्य हो जाती हे अनहोती अहंतानें दुःख दिया हे तातें तुम निरहंकार हो करी चेष्टा करहु ॥ जेसें जंत्रोकी पूतलि अभिमानतें रहित चेष्टा करती हे ॥ तेसें तुम निरहंकार होकरी चेष्टा करहु अरु अपणे स्वरूपविषे स्थित होहु तब व्यवहार अरु अव्यवहार तुझकों तुल्य हो जावेगा ॥ जेसें पवनकों स्पंद निस्पंद दोनों तुल्य होते हे तेसें तुमकों हो जावेगा ॥ अरु अहं कारतें रहित तेरी चेष्टा होवेगी॥अहंताहि दुःख हे जब अहंताका नाश हुआ तब शांतपदकों प्राप्त होवेगा अरु निर्मल अनामय पदकों प्राप्त होवेगा जो सर्व पदार्थका अधिष्ठान हे ॥ अरु सबका अपणा आप हे तिसविषे न कोउ सुख हे न दुःख हे॥न कोउ इंद्रियांकाविषे हे परम शांतरूप हे ॥ इ०यो०नि०परमनिर्वाणयोगोपदेशोनाम शताधिकअष्टपंचाशत्तमःसर्गः॥ १५८॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो ज्ञानवान पुरुष हे सो निरावरण हे दोनों आवरणतें रहित हे॥एक असत्यत्वापादक आवरण हे एक अभानापादक आवरण हे जो आत्म ब्रह्मकी सत्यता रिदे विषे न भासे ॥ सो असत्यत्वापादक हे तिसकों कहता हे जो हे नही अरु जो सत्यता आत्माकी रिदेविषे भासे परंतु दृढ प्रत्यक्ष न भासे सो अभानापादक आवरण हे असत्यत्वापाद क आवरण अज्ञानीकों भासता हे ॥ अरु अभानापादक आवरण जिज्ञासीकों होता हे॥ज्ञानवानकों यह दोनों आवरण नही रहते ॥ तातें उह निरावरण सांतरूप होता हे ॥ आकासवत् निर्मल अरु निरालंब हे सो किसी गुणतत्वके आश्रे नही होता ॥ अरु एक द्वैत भ्रम तिसका नष्ट हो जाता हे ॥ तिसनें आत्मरूपी तीर्थका स्नान किया हे ॥ सो आत्मरूपी तीर्थ केसा हे जो अपवित्रकोंभी पवित्र करता हे ॥ जिन पुरुषनें शरीरविषे आत्माका दर्शन किया हे तिनका शरीरभी पवित्र भया हे ॥ अेसें पुरुषकों शरीरकी सत्यता नही रहती ॥ अरु संसारभी न ही रहता आत्माके साक्षात्कार हुए सब इछा नष्ट हो जाती हे ॥ अरु सर्व ब्रह्महि तिसकों भासता हे द्वैत कछू नही भासता ॥ सर्व आत्मस्वरूप हे तिसविषे संकल्प करी नाना प्रकार सृष्टि भासती हे ॥ हे रामजी तुम संकल्पकी उर मत जावहु काहेतें जो चित्तकी वृत्ति क्षण क्षणविषे प्रणमती हे अनंत जोजन पर्यंत चली जाती हे जो तिसके अनुभव करनेवाली सत्ता मध विषे हे जिसके आश्रय उह जाती हे सो चिन्मात्र तेरा स्वरूप हे॥ जब तिसविषे स्थित होकरी देखेगा तब फुरणेविषेभी ब्रह्मसत्ता भासेगी॥ हे रामजी यह संवित सदा प्रकाशरूप हे चित्त के क्षोभतें रहित हे ॥ द्वैतरूप विकारतें रहित सुद्ध हे अरु जेते कछू प्रकास हे तिनके विरोधीभी हे ॥ दीपकका विरोधी पवन हे निर्वाणकरी लेता हे ॥ अरु सूर्यका विरोधी राहु केतु हे जो आछादि लेता हे ॥ अरु महा प्रलयविषे सर्व प्रकाश तमरूप हो जाते हे ॥ अरु आत्म प्रकाश तत्व सिद्ध हे तमकोंभी प्रकाशता हे ॥ अरु सदा ज्ञानरूप एक रस हे ॥ तिसकों त्याग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करी अवर कछू नहीं तुम लगणा ॥ हे रामजी यह दृश्य सब मिथ्या हे ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प अरु सीपीविषे रूपा कल्पित हे तेसें आत्माविषे विश्व कल्पित हे ॥ जब तुं जागी करी देखेगा तब सबका अभाव हो जावेगा ॥ जेसें वंध्याके पुत्रके रूपका अभाव हे तेसें सब विश्व मिथ्या भासेगी काहेतें जो हे नही भ्रम मात्र सुपनकी न्यांइं अविचार सिद्ध हे विचार कियेतें आत्माहि हे इतर कछू नही ॥ जेसें सुपनेकी सृष्टि अनुभवतें इतर कछू नही तेसें यह विश्वभी आत्म स्वरूप ज्ञान मात्र हे ॥ अहंमम देह इंद्रियादिक सब ज्ञान मात्र हे ॥ दृश्यहि दुसरी कछू वस्तु नही ॥ जब एसें निश्चयकों धारेगा तब निःशोक होवेगा ॥ अरु मोहतेंभी रहित होवेगा परमार्थ सत्ता ज्योंकी त्यों भासेगी ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग उठतें हे तेसें आत्माविषे दृश्य उठति हे ॥ सो उही रूप हे अरु जो इतर भासे सो मिथ्या हे ॥ अरु सब सृष्टि इसके अंतर स्थित हे अज्ञान करिकें बाह्य भासती हे जेसें सुपनेकी सृष्टि सब इसके अंतर होती हे अरु अपणा स्वरूप होता हे ॥ निद्रा दोष करिकें बाह्य भासती हे ॥ जब जागता हे तब अपणाहि स्वरूप भासता हे ॥ तेसें जाग्रत सृष्टिभी विचार कियेतें अपणे अनुभवविषे भासती हे॥ तातें स्थित हो करी देख जो सर्वदा जागती जोत हे तिसकों त्याग करी अवर जतन करणा व्यर्थ हे ॥ हे रामजी अपणे अनुभवविषे स्थित होणा क्या कष्ट हे अरु जो कठिन जानते हे सो मूढ हे तिनकों मेरी धिक्कार हे ॥ काहेतें जो गउके पगकों समुद्रवत् जानतें हे ॥ तिनोंते अवर मूर्ख कवन हे ॥ अनुभवविषे स्थित होणा गउपगकी न्यांइंही तरणा सुगम हे ॥ अरु जो अवर पदार्थ हे जिनके पावणेकी इछा करेगा तिनविषे व्यवधान हे ॥ अरु आत्माविषे व्यवधान कछू नही काहेतें जो अपणा आप हे ॥ हे रामजी जिन पुरुषनें आत्माविषे स्थिति पाइ हे तिनकों मोक्षकी इछाभी नही तो स्वर्गादिककी इछा केसें होवें ॥ मोक्ष अरु स्वर्ग आत्माविषे जेवरीके सर्पवत् मिथ्या भासते हे ॥ तिनकों केवल अद्वैत आत्मा निश्चय होता हे ॥ हे रामजी सुपनविषे सुषुप्ति नही अरु सुषुप्तिविषे सुपना नही इनके अनुभव करणेवाली शुद्ध सत्ता हे॥इह दोनों मिथ्या हे निर्वाण अरु जीणा तिनकों दोनों तुल्य हे अेसें जाणी करी इछा किसीकी नही करते प्रपंच उनकों सशेके सिंग अरु बंध्याके पुत्रवत् भासते हे ॥ हे रामजी हमकों तो सदा आकाशरूप भासता हे ॥ अरु जो तुं कहे उपदेश क्यों करते हो तो हमकों भास कछू नही ॥ तेरी इछाहि तुझकों वसिष्ठरूप होकरी उपदेश करती हे ॥ हमकों विश्व सदा शून्यरूप भासता हे ॥ अरु हमकों चेष्टा करताभी अज्ञानी जानते हे ॥ हमारे निश्चेविषे चेष्टाभी नही ॥ अरु हमारी चेष्टा अर्थाकारभी कछू नही अरु अज्ञानीकी चेष्टा अर्थाकार होती हे ॥ हमकों चेष्टा सत नही भासती तातें अर्थाकार नही होती ॥ जेसें ढोलका शब्द होता हे परंतु अर्थ उसका नही होता जो क्या कहता हे अरु वाणीकरी शब्द बोलता हें तिसका अर्थ होता हे ॥ तेसें हमारी चेष्टा अर्थाकार नही अर्थ यह जो जनमकों नही देती ॥ अरु अज्ञानकी चेष्टा जन्मकों देती हे ॥ अरु हमकों संसार अेसें भासता हे ॥ जेसें अवयवी सर्व अवयवकों अपणा स्वरूपहि देखता हे हस्त पाद सीस आदिक सब अपणेहि अंग देखता हे ॥ तेसें हमकों जगत् अपणा स्वरूपहि भासता हे ॥ हे रामजी जगत्विषे एक अेसें जीव दृष्ट आते हे ॥ जो तिनकों हम सुपनेके जीव भासते हे ॥ अरु हमकों उह शून्य आकाशवत् दृष्ट आते हे ॥ अरु उनके रिदेविषे हम नाना प्रकारकी चेष्टा करते अवरकी न्यांइ भासते हे ॥ अरु हमकों तो जगत् अेसें भासता हे जेसें समुद्रविषे तरंग होते हे ॥ तेसें आत्माविषे जगत् हे मेंभी ब्रह्म हों तुंभी ब्रह्म हे जगत्भी ब्रह्म हे ॥ रूप अवलोक मनस्कार सब ब्रह्मरूप हे ॥ तातें तुंभी ब्रह्मकी भावना करु ॥ जो अपणे सुभावविषे स्थित होणा परम कल्याण हे ॥ अरु पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुभावविषे स्थित होणा दुःख हे ॥ हे रामजी अपणा सुभाव साधणा इसीका नाम मोक्ष हे अरु न साधणा इसीका नाम बंधन हे ॥ हे रामजी अवर पदार्थ इस ऊपर उपकार कोउ क री नही सकता ॥ न धन न कोउ मित्र न कोउ क्रिया एक अपणा पुरुषार्थ उपकार करता हे ॥ सो पुरुषार्थ यही हे जो अपणा चैतन सुभाव हे तिसीविषे स्थित होणा ॥ परंतु सुभाव का त्याग करणा अरु जब अपणे सुभावविषे स्थित होवेगा तब सब अपणा स्वरूपहि भासेगा ॥ अरु जो तुं स्वरूपतें इतर करी देखे तो न में हों न तुं हे न जगत् हे ॥ सब भममात्र हे मृगतृष्णाके जलवत् भासता हे ॥ अथवा अेसें जाण जो मेंभी ब्रह्म हों तुंभी ब्रह्म हे जगत्भी ब्रह्म हे ॥ अथवा अेसें जाण न तुं हे न में हों न जगत् हे ॥ पाछें जो शेष रहेगा सो तेरा स्व रूप हे ॥ हे रामजी जिन पुरुषकों अेसें निश्चे हुआ हे जो में तुं जगत् सब ब्रह्म हे अथवा में तुं जगत् सब मिथ्या हे ॥ तिनकों बहुरी इछा कोउ नही रहती ॥ अरु जिनकों इछा उठती हे तो जाणिए जो ब्रह्म आत्माका साक्षात्कार नही भया जब भोगकी वासना निवृत्त होवे अरु संसार विरस हो जावे तब जाणिए जो यह संसारके पारकों प्राप्त भया अथवा होवेगा ॥ हे रामजी यह निश्चेकरिकें जाण जो जिसकों भोगकी वासना क्षीण होती हे तिसकों सुभावरूपी सूर्य उदे होता हे अरु भोगकी तृष्णारूपी रात्र नष्ट होती हे यद्यपि तिसविषे प्रत्यक्ष भोगकी तृष्णा दृष्ट आती हे तोभी उसकी भास जाती रहती हे अरु ब्रह्मसत्ता भासती हे अरु संसारकी उरतें सुषुप्ति हो जाता हे मृतककी न्यांइ होता हे अरु अपणे स्वरूपविषे सदा जा गृत हे ॥ अपणे सुभावरूपी अमृतविषे मग्न होता हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे वसिष्ठगीताउपदेशोनाम शताधिकैकोनषतिष्टमः सर्गः ॥ १५९ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी रूप अवलोक मनस्कार यह पर सुभाव हे तिनकों ब्रह्मरूप जाण ॥ परसुभाव क्या अरु ब्रह्मरूप क्या हे ॥ हे रामजी तेरा स्वरूप शुद्ध आकास हे तिसविषे जो रूप अवलोक मनस्कार फुरे हे सो सो प्रकृतिकी मायाकरी फुरे हे सो माया सुभाव करीकें परसुभाव हे परंतु अधिष्ठान इनका आत्मसत्ता हे तातें आत्मस्वरूप हे आत्माके जाणेतें इनका अभाव हो जाता हे ॥ हे रामजी जब इसकों ज्ञान उपजता हे तब संसार सुपनवत् हो जाता हे ॥ संसारकी सत्ता कछू नही भासती अरु जब दृढता हुइ तब सुषुप्ति हो जाता हे इनका भावभी नही रहता तुरियाविषे स्थित होता हे ॥ अरु जब तुरियातीत होता हे तब अभावकाभी अभाव हो जाता हे ॥ परम कल्याणरूप सत्ता समान पदकों प्राप्त होता हे सो आदि अंततें रहित परमपद हे अेसा ब्रह्मस्वरूप में हों अरु परम शांतरूप हों अरु निर्दोष हों ॥ अरु जगत्भी सब ब्रह्मरूप हे हमकों सदा यही निश्चय रहता हे अरु अेसा उत्थान नही होता जो में वसिष्ठ हों सदा आत्मस्वरूपका निश्चे रहता हे ॥ प्रछन्न अहंकार हमारा नष्ट हो गया हे तातें निरहंकार पदविषे हम स्थित हे ॥ जब तुं अेसें होकरी स्थित होवेगा तब परम निर्मल स्वरूप हो जावेगा ॥ जेसें सरत्कालका आकाश निर्मल शोभता हे तेसें तुं शोभेगा ॥ हे रामजी अेसें पुरुषकों बंधन हे सो श्रवण कर जिस बंधन करी आत्मपदकों नही प्राप्त होता प्रथम धन मणीका बंधन हे ॥ भोगकी तृष्णा अरु बांधवका बंधन हे ॥ जिसकों इन तीनोंकी वासना रहती हे तिसकों मेरी धिक्कार हे ॥ बडे अनर्थके देणेहारी यह वासना हे यह भोग हे सो महा रोग हे अरु बांधव दृढ बंधनरूप हे ॥ अरु अर्थकी प्राप्ति अनर्थका कारण हे ॥ तातें इस वासनाकों त्याग करी आत्मपदविषे स्थित होहु ॥ यह संसार भ्रम मात्र हे इसकी वासना करणी व्यर्थ हे ॥ इसकों सत नही जानणा अरु यह जो तुझकों संग मिलाप भासता हे सो केसा हे जेसें बैठे हुए स्मरण आवे जो में अमके साथ मिल्या था तब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उह प्रतिभा प्रत्यक्ष रिदैविषे भासती हे अरु जेसें संकल्प करी नगर रची लिया तिसविषे मूरता मनुष्यादिक भासणे लागे तेसें यह जगत्भी जाणं ॥ हे रामजी तुं में अरु यह जगत् भ्रम मात्र संकल्प नगरके समान हे ॥ जेसें भविष्यत नगरकी रचना हे तेसें यह जगत् हे अरु कर्ता क्रिया कर्म जो भासते हे सोभी भ्रममात्र हे केवल आत्मसत्ताहि अपणे आपविषे स्थित हे आत्मरूपी आकाशविषे यह जगतरूपी पूतलियां हे अरु संकल्प मात्र प्रत्यक्ष हुआ हे ॥ वास्तवतें केवल शांतरूप आत्मतत्व हे ॥ हे रामजी जो पुरुष सुभावनिष्ठ हे तिनकों आत्मतत्वहि भासता हे अरु जिनकों आत्मतत्वका प्रमाद हे तिनकों नाना प्रकारका जगत् भासता हे ॥ अरु आत्माविषे यह जगत् कछू आरंभ परिणाम करीकें बन्या नही जेसें सूर्यकी किरणांविषे अज्ञान करीकें जलाभास भासते हे ॥ तेसें आत्माविषे अज्ञान करीकें जगत्की प्रतीत होती हे जब आत्माका सम्यक ज्ञान होवे तब जगत् भ्रम निवृत्त हो जाता हे ॥ जेसें सूर्यकी किरणां जाणेतें जल भ्रम निवृत्त हो जाता हे ॥ अरु जेसें सुपनेतें जागे हुए सुपन सृष्टि अपणा आपहि भासती हे तेसें अविद्याके नास हुए सब अपणा आपहि भासता हे ॥

॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे वसिष्ठगीतासंसारोपदेशो नाम शताधिकषष्टितमः सर्गः ॥ १६० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ७ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी रूप अवलोक मनस्कार सब ब्रह्मरूप हे ॥ जिसकों ज्ञान प्राप्त होता हे तिसकों सब ब्रह्म स्वरूप भासता हे ॥ यही ज्ञानका लक्षण हे अरु ज्योंज्यों ज्ञानकला उदे होती हे त्यों त्यों भोगवासना क्षीण होती जाती हे ॥ जब पूर्ण बोधकी प्राप्ति होती हे तब इछा किसीकी नही रहती ॥ जेसें ज्योंज्यों सूर्य प्रकासता हे त्योंत्यों अंधकार नष्ट होता जाता हे जब पूर्ण प्रकास हुआ तब रात्रका अभाव हो जाता हे॥ तेसें जिसकों ज्ञान उत्पत्ति हुआ हे तिसकों भोगकी वासना नही रहती॥अरु संसार तिसकों जले वस्त्रकी न्यांइ भासता हे अरु अज्ञानीकों सत्य भासता हे ॥ जेसें सुपनेविषे सुषुप्ति नही होती अरु सुषुप्ति विषे सुपना नही होता ॥ सुपनका पुरुष सुषुप्तिकों नही जानता ॥ अरु सुषुप्तिवाला सुपनेवालेकों नहीं जानता तेसें जिनकों तुरिया पदकी प्राप्ति होती हे ॥ तिसकों संसारका अभाव हो जाता हे अरु अपनें सुभाव विषे स्थित होता हे ॥ अरु संसारकों सत जानते हे सो सुपननर हे सुषुप्तकों नही जानते ॥ हे रामजी तेरा स्वरूप जो तुरियापद हे तिसकों अज्ञानी जाणी नही सकते अरु जो जाने तो प्रबंन अहंकार तिसका नष्ट हो जावे ॥ जब अहंकार नष्ट हुआ तब सर्व आत्मा हुआ ॥ हे रामजी इसकों अहंताने तुछ किया हे ॥ तातें अहंतारूप दृश्यका तुम त्याग करहु अरु अपणे सुभावविषे स्थित होहु अरु संसाररूपी एक पूतली हे सो भ्रमकरी उठी हे ॥ तिसका सीस उर्ध ब्रह्मलोंक हे पाद अरु गिटे इसके पाताल लोक हे ॥ अरु दशोंदिशा इसके वक्षस्थल हे॥ अरु चंद्रमा सूर्य इसके नेत्र हे ॥ तारा गण इसके रोम हे आकाश इसके वस्त्र हे अरु सुख दुःखरूपी सुभाव हे ॥ अरु पवन इसका प्राणवायु हे बगीचे इसके भूषण हे ॥ दीप अरु समुद्र इसके कंकन हे लोकालोक पर्वत इसके मेखला हे ॥ हे रामजी ऐसी जो पूतली हे सो नृत्य करती हे सो क्या हे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग उपजते अरु नास होते हे परंतु जलही हे तेसें जलकी न्यांइ सर्व ब्रह्मरूप हे अरु भ्रम करीकें विकार दृष्ट आते हे ॥ हे रामजी कर्ता क्रिया कर्मभी सब आत्मस्वरूप हे ॥ जब तुं आत्माकी भावना करेगा तब तेरा रिदा आकाशवत् शून्य हो जावेगा ॥ जेसे पथरकी सिला जड होती हे तेसें तेरा रिदा जगत्तें जड शून्य हो जावेगा॥ हे रामजी आत्मपद शांतरूप हे अरु आकाशवत् निर्मल हे॥ जेसें आकाशविषे आकाश स्थित हे तेसें आत्माविषे जगत् हे॥न उदे होता हे न अस्त होता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे केवल शांतरूप हे ॥ अरु उदे अस्तभी तव होती हे जब कछू दुसरी वस्तु होती हे सो जगत् कछू भिन्न नही आत्मास्वरूपही हे ॥ द्वैत अरु एक कल्पनातें रहित आत्मा अपणे आप विषे स्थित हे ॥ ॥इतिश्रीयोगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे जगत्उपसमयोगोपदेशोनाम शताधिकएकषष्टितमः सर्गः ॥ १६१ ॥ ॥७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह विश्व आत्माका चमत्कार हे ॥ जेसें मृत्तिकाकी पूतली मृतिकारूप होती हे॥ जेसें कागदकी पूतली कागदरूप होती हे तेसें विश्व आत्मरूप हे॥ जेसें मृत्तिका दीपक देखणे मात्र होता हे प्रकाशका कार्य नही करता ॥ तेसें यह जगत् देखणे मात्र हे विचार कियेतें आत्मा विना इतर सत्ता कछू नही ॥ तातें जगत्की सत्यता आत्मातें भिन्न कछू नहीं जगत्की आस्था आत्माके आश्रित हो ती हे ॥ जेसें जलविषे तरंग अरु आकाशविषे शून्यता अरु पवनविषे फुरना हे तेसें आत्माविषे जगत् अभिन्नरूप हे ॥ जेसें वायु चलती हे तबभी पवन हे उसकों वायुका निश्चे हे तेसें चैतनविषे निश्चे हे जो जगत् उही स्वरूप हे तातें चैतन हे ज्ञानवान सो जाणता हे जो जगत् मेराही स्वरूप हे॥हे रामजी यह आश्चर्य देख जो जगत् कछू दुसरी वस्तु नही ॥ अरु भ्रम करीकें भिन्न भासता हे ॥ जेसें कथाविषे कथाके पुरुष विद्यमान भासते हे जो शुद्ध करते हे इत्यादिक अवर क्रिया करते हे तेसें यह जगत्भी मनोमात्र जाण ॥ हे रामजी जो विद्यमा न हे सो अविद्यमान हो जाता हे अरु जो अविद्यमान हे सो विद्यमान हो जाता हे ॥ जेसें सुपनेविषे जगत् अनुभवस्वरूप हे इतर कछू नही तेसें जाग्रत जगत् विचार करी देखेगा तब ब्रह्मस्वरूपही भासेगा ॥ जेसें जो पुरुष सोया होता हे अरु सुपन जगत् तिसहिका रूप हे ॥ परंतु जबलग निद्रा दोष हे तबलग भिन्न भासता हे ॥ अरु जब जाग्या तब सब अपणाहि आप भासता हे तेसें जब यह पुरुष अपणे स्वरूपविषे स्थित होकरी देखता हे तब सब अपणा आपही भासता हे ॥ हे रामजी रूप अवलोक मनस्कारभी ब्रह्मस्वरूप हे ॥ अरु आत्मा इं द्रियांकाविषे नही निराकार हे अरु मनके चिंतवणेतें रहित हे संकल्प करी आपहि रूप अवलोक मनस्कार करी स्थित हुआ हे इतर नही सर्व उही हे अरु तिसीकों केइ शिव कहते हे केइ ब्रह्म कहते हे केइ आत्मा कहते हे केइ शून्य कहते हे ॥ इत्यादिक नाम तिसीके शास्त्रकारनें कहे हे सो संकल्पविषे कहे हे अरु आत्मा केवल चिन्मात्र हे वाणीका विषे नही शांतरूप हे अरु चैत जो हे दृश्य तिसतें रहित हे ॥ सर्व शब्दअर्थका अधिष्ठान हे अरु जगत् उसका चमत्कार हे ॥ हे रामजी आत्माविषे एक अरु द्वैत कल्पना कोउ नही ॥ काहेतें जो आत्मत्व मात्र हे अरु जगत्भी आत्मरूप हे ॥ जेसें आकाश अरु शून्यताविषे भेद कछू नही तेसें आत्माविषे अरु जगत्विषे भेद कछू नही ॥ हे रामजी अेसेंभी किसी देश अथवा किसी कालविषे होवे जो स्वर्न अरु भूषणविषे कछु भेद होवे स्वर्न भिन्न होवे अरु भूषण भिन्न होवे ॥ परंतु आत्मा अरु जगत्विषे कछू भेद वही ॥ अेसेंहि आत्मा प्रकाशता हे अ रु अपणे सुभावविषे स्थित हे अवर दुसरी वस्तु कछू नही ॥ जेसें मृत्तिकाकी सेना नाना प्रकारकी संज्ञाकों धारती हे परंतु मृत्तिकातें इतर कछू दुसरी वस्तु नही तेसें फुरणे करीकें ना ना प्रकारकी संज्ञा दृष्टभी आती हे परंतु आत्मातें भिन्न कछू नही उही रूप हे ॥ हे रामजी जो पदार्थ भासते हे सो अनुभव करीकें भासते हे पदार्थकी सत्ता अनुभवतें इतर कछू नही जब तुं अनुभवविषे स्थित होकरी देखेगा तब अनुभवरूप अपणा आपहि भासेगा अपणा सुभाव ज्ञान मात्र हे तिसके जानणेका नाम ज्ञान हे ॥ हे रामजी ज्ञान विना जो तप जज्ञ दान आदिक क्रिया हे सो सब व्यर्थ हे ॥ सब क्रियाकी सिद्धता ज्ञान करी होती हे ॥ जेसें उलूककी क्रिया रात्रविषे होती हे सो दिन हुएतें मिथ्या हो जाती हे ॥ तेसें तप दान आ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिक क्रिया ज्ञानके उदे विना व्यर्थ होती हे ॥ हे रामजी जो कछू क्रिया ज्ञानके निमित्त करीयें सो पुरुष प्रयत्न श्रेष्ठ हे अरु इसतें अन्यथा हे सो व्यर्थ हे अरु धनके उपजावणेविषे भी अनर्थ होता हे अरु राखणेविषेभी कष्ट हे परंतु जो ज्ञानके साधन निमित्त इसकों राखिये अरु दिजियें तब यह अमृत हो जाता हे ॥ हे रामजी यह जगत् भ्रम मात्र हे ॥ जेसें मलिन नेत्रवालेकों रूप विपर्यय भासता हे ॥ जेसें सुपन सृष्टि होती हे तिसविषे अज्ञ तज्ज्ञभी भासते हे ॥ परंतु असतरूप हे तेसें यह जगत् जो विद्यमान भासता हे सो अविद्यमान हे अरु आत्मा सदा विद्यमान हे ॥ हे रामजी जो विद्यमान देव विष्णु हे तिसकों त्याग करी अवर देवका पूजन कर्तें हे तिनकी पूजा सफल नही होती ॥ अरु विष्णु तिसपर कोपमानभी होता हे ॥ सो विष्णु देव विद्यमान केसें हे श्रवण कर ॥ हे रामजी आत्मा अनुभवरूप सो विद्यमान देखे हे ॥ तिसकों त्याग कर जो अवरका पूजन करते हे सो जन्म मरनके बंधनतें मुक्त नही होते मूढताविषे रहते हे ॥ अरु आत्म देवकी पूजा श्रवण कर ॥ जो कछू अनिछित आवे सो तिसकों अर्पण करियें ॥ अरु एसी पूजाविषेभी स्थित नही होणा ॥ जो इसके जानणेवाला हे तिसविषे अहं प्रत्यय करणी यह बडी पूजा हे ॥ हे रामजी इस आत्म देवतें इतर जो सूर्य चंद्रमा आदिक भेद पूजा हे सो तूछ हे जब तुं आत्म पूजाविषे स्थित होवे तब अवर पूजा तुझकों सूके तृणकी न्यांइं भासेगी अरु दानभी आत्म देवकों करणा हे सो किस करिकें करणे जोग हे बोध करिकें करणे जोग हे ॥ अरु केसें उत्पत्ति होता हे प्रथम वैराग अरु धीर्य बोधका कारण हे अरु संतोष होवे जथा लाभविषे संतुष्ट रहणा अरु ब्रह्मविद्याका विचार करणा अरु संतका संग करणा इन साधन करी जब बोधरूपी सूर्य उदे होवेगा ॥ तब द्वैतरूपी अंधकार नष्ट हो जावेगा ज्ञानरूपहि भासेंगा ॥ बहुरी जो ज्ञान उपजा हे सोभी शांत हो जावेगा ॥ तातें उसी देवकी पूजा करु जिस करिकें आत्मपदकी प्राप्ति होवे अरु आत्म देवकी पूजाके निमित्त फूलभी चहिअें सो आत्म विचार करणा अरु सम जो हे चित्तकी वृत्ति अंतर्मुख करणी ॥ अरु जथालाभविषे संतुष्ट रहणा संतकी संगत करणी इन फूल करिकें नैवेदन करणा ॥ यह पूजाभी तब होती हे जब अंतःकरण शुद्ध होता हे अरु तिसकरी ज्ञान उत्पत्ति होता हे जब ज्ञान उपज्या तब आत्म देवका साक्षात्कार होता हे सो ज्ञान का लक्षण श्रवण करु गुरु अरु शास्त्रतें जो वस्तु सुणी हे तिसविषें स्थित होती हे ॥ अरु संसारकी वासना क्षीण हो जाती हे तब ज्ञानी कहाता हे ॥ जब इस ज्ञानकी पूरनता होती हे तब जगत् उसकों ब्रह्मस्वरूपहि भासता हे उसकों शस्त्र काटि नही सकते अरु सिंघ सर्पका भेद नही होता अग्नि अरु विषका भेभी नही होता ॥ हे रामजी यह विश्व सब आत्मरूप हे जेसी भावना करती हे तेसाहि आगें हो भासता हे॥जब शस्त्रविषे शस्त्रके अर्थकी भावना होती हे तब शस्त्र हो भासते हे सर्प अग्निविषे सब अपणे अपणे अर्थाकार भासते हे अरु जो सर्व आत्मभावना करती हे तब सर्व आत्माहि भासता हे दूसरी वस्तु कछू बनी नही तो दिखाइ केसें देवें अरु जो पुरुष कृतकृत नही भया अरु आपकों कृतार्थ मानता हे अरु दुःख निवृत्तका उपाय नही कर्ता तो दुःखके आयेतें दुःखहि देवेगा अरु दुःख इसकों चलाय लेजावेगा ॥ अरु सुख जब आवेगा तब सुखभी इसकों चलाये ले जावेगा ॥ हे रामजी जो पुरुष सर्व ब्रह्म कहता हे वाणि करिकें अरु निश्चेतें रहित हे अरु शास्त्रभी बहुत देखता हे तब उह महा मूर्ख हे ॥ जेसें जन्मका अंध होता हे अरु सूर्यकों नही जानता हे तेसें उह आत्म अनुभवतें रहित हे ॥ जब आत्मपदका साक्षात्कार होवेगा तब अेसें आनंदकों प्राप्त होवेगा ॥ जिसके पाएतें अवर पदार्थ रसतें रहित भासेंगे॥ ब्रह्मातें आदिक काष्ट पर्यंत सब पदार्थ विरस हो जा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेगे तातें आत्म परायण होहु सदा आत्मपदकी भावना करहु ॥ हे रामजी जैसी भावना होती है तैसा जगत् भासता है ॥ जैसें शुद्ध मणीके निकट जैसि वस्तु राखियें तैसा प्रतिबिंब हो ता है तैसेंहि जैसी भावना करता है तैसा रूप जगत् भासता है तातें जगत् ब्रह्मस्वरूप जाण अवर दूसरा भासे सो भ्रममात्र जाण जैसें पथरकी सिला ऊषर पुतलियां लिखते है सो सि लारूपही है ॥ तैसें यह जगत् सब आत्मस्वरूप है जब आत्मपदकी तुझकों प्राप्ति होवेगी तब सब पदार्थ विरस होवेंगे ॥ हे रामजी यह जगत् मिथ्या है ॥ जो पुरुष इस जगत्कों पदार्थ करी जाणतें है अरु कहते है हम मुक्त होवेंगे ॥ सो ऐसें है जैसें अंध कूपविषे जनमका अंध गिरे अरु कहे अंधकारके साथ में सचक्षु होउंगा सो मूर्ख है ॥ तैसें आत्मज्ञान विना मुक्त नही होता ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे पुनर्निर्वाणउपदेशोनाम शताधिकद्विषष्टितमः सर्गः ॥ १६२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी अहंतातें आदि लेकरी जो जगत् भासता है सो मिथ्या भ्रमकरिकें उदे हुआ है इसकों त्यागकरी अपणे अनुभव स्वरूपविषे स्थित होहु इस मिथ्या जगत्वि षे आस्था करणेकी मूर्खता है अरु जो ज्ञानवान है तिसकों जगत् भ्रमका अभाव है ॥अब ज्ञानी अरु अज्ञानी दोनोंका लक्षण श्रवण कर॥ हे रामजी जेसें किसी पुरुषकों ताप चढता है तिसका रिदा जलता है अरु तृषा बहुत होती है अरु जिसका ताप नष्ट होगया तिसका रिदा सीतल होता है अरु जलकी तृषाभी नही होती ॥ तैसें जिस पुरुषकों अज्ञानरूपी ताप चढ्या हुआ है तिसका रिदा जलता है अरु भोगरूपी जलकी तृष्णा बहुत होती है अरु जिसके रिदेंतें अज्ञानरूपी ताप मिटि गया है तिसका रिदा शीतल होता है अरु भोगरूपी जलकी तृ ष्णा मिट जाती है ॥ अब ताप निवृत्त करणेका उपाय श्रवण कर शास्त्रके अर्थवाद करी बुद्धिभ्रम हो जाती है अरु में तुझकों सुगम उपाय कहता हों जो निरहंकार होणा यहि सुगम उपाय है ॥ न में हों न यह जगत् है जब तुं एसें निश्चयकों धारेगा तब सब जगत् तुझकों ब्रह्मस्वरूप भासेगा ॥ अरु किसी पदार्थकी वांछा न रहेगी जब सब पदार्थकों मिथ्या जाणी करी अपणाभी अभाव करेगा तब पाछें प्रत्यक् चैतन परमानंदस्वरूप सबका अधिष्ठान शेष रहेगा ॥ हे रामजी यह अहंतारूपी जक्ष जो उठ्या है सो मिथ्या है ॥ अरु इसमिथ्या पुरुषनें नाना प्रकारका जगत् कल्प्या है सो अहंकारभी मिथ्या है ॥ अरु जगतभी मिथ्या है ॥ जब तुं अपणे स्वरूपविषे स्थित होवेगा तब जगत् भ्रम मिटि जावेगा जेसें सुपनेविषे जगत् भास ता है अरु सुंदर पदार्थ भासतें है तिनकी इछा करता है ॥ जबलग जाग्या नही तबलग जाणता है जो सदैव यह पदार्थ है नास कदाचित् नही होणा ॥ अरु कहता है जो अमका रूप देखियें अमका भोजन करीयें इत्यादिक इछा करत्ता है जब जागी उठ्या तब जाणता है जो मेराही संकल्प था बहुरी उह पदार्थ सुंदर स्मरणभी होते है अथवा भासते है तोभी उनकों मिथ्या जाणता है ॥ तैसें जब आत्मस्थितिविषे जागता है तब सर्व ब्रह्मही भासता है ॥ हे रामजी इस जगत्का बीज अहंता है ॥ जेसें दुःखका बीज पाप होता है तैसें जगत्का बीज अहंता है ॥ तातें तुम निरहंकार पदविषे स्थित होहु यह सब तेराहि स्वरूप है भ्रम करीकें जगत् भासता है ॥ हे रामजी जगत्का अत्यंत अभाव है ॥ जेसें जेवरीविषे सर्पका अत्यंत अ भाव है अरु भ्रम दृष्टि करीकें सर्प भासता है ॥ जब विचाररूपी दीपक साथ देखता है तब सर्पका अभाव हो जाता है तैसें आत्माविषे यह जगत् भ्रम करीकें भासता है ॥ ॥ जब वि चार करीकें जगत्का अभाव निश्चय करेगा तब आत्मपद ज्योंकात्यों भासेगा जेसें वसंतऋतु आती है तब सब फूल फल घास दृष्टि आते है ॥ सो एकहि रस एती संज्ञाकों धारता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेसें तुं जब आत्मपदविषे स्थित होवेगा तब तुजकों सब आत्मरूपही भासेगा ॥ अरु सर्व नामभी आत्माहि भासेगा ॥ हे रामजी आदिभी आत्माही हे अरु अंतभी आत्माही होवेगा ॥ मध जो जगत्के पदार्थ भासते हे तिनकी उर मत जावहु जो इनके जानणे वाला हे जिसकरी सब पदार्थ प्रकाशते हे तिसविषे स्थित होहु अरु यह मनुष्य सब मृगकी न्यांइ हे जेसें मरुथलविषे जल जाणी करी दउडते हे तेसें जगत्रूपी मरुथलकी भूमिका शून्य हे ॥ अरु तीनों लोक मृगतृष्णाका जल हे तिसविषे मनुषरूपी मरुथलकी भूमिका शून्य हे ॥ अरु तीनों लोक मृगतृष्णाका जल हे तिसविषे मनुषरूपी मृग दउडते हे ॥ अरु दउडते दउडते हारी पडते हे शांतिकों प्राप्त कदाचित् नही होते ॥ काहेतें जो जगत्के पदार्थ सब असत्य हे ॥ हे रामजी रूप अवलोक मनस्कार सब मृगतृष्णाका जल हे इनकों जो सत्य जाणता हे सो मूर्ख हे अरु यह जगत् गंधर्व नगरकी न्यांइ हे ॥ तुं जागि करी देख इसकों सत्य जाणी करी काहेकों तृष्णा करता हे ॥ इसकों सत्य जाणी करी तृष्णा करणी यही बंधन हे ॥ हे रामजी तुं आत्मा हे इसकी इछा करी बंधमान क्यों होता हे ॥ जेसें सिंघ पिंजरेविषे आया दीन होता हे ॥ अरु बलकरी जब पिंजरेकों तोडी डारता हे तब बडे वनविषे जाय निवास करता हे अरु निर्भय होता हे ॥ तेसें तुंभी वासनारूपी पिंजरेकों तोडि करी आत्मपदविषे स्थित होहु ॥ जो आत्मा सर्वका अधिष्ठान हे अरु सर्वतें उत्कृष्ट हे ॥ तिस पदकों तुं प्राप्त होवेगा॥जब इस संसारकी वासना नष्ट होवेगी तब आनंद होवेगा अरु तुं निर्वाणपदकों प्राप्त होवेगा अरु अफुर होवेगा ॥ परम उपसम ज्ञेय पदकों प्राप्त होवेगा ॥ अरु द्वैत भास मिटि जावेगा केवल परमार्थ सत्ता भासेगी इसीका नाम निर्वाण हे ॥ अरु यह चारों भूमिका शांतिके स्थान हे॥ जेसें कोउ पेढकरी तपता आवे अरु तिसकों शीतल स्थान प्राप्त होवे तब शांतिकों पावता हे॥ तेसें यह चारों शांतिका स्थान हे॥ निर्वाणता अरु निरहंकारता अरु वासनाका त्याग अरु परम उपसम इन करीकें ज्ञेयविषे स्थित होणा यह शांतिका स्थान हे ॥ जब तुं स्थित होवेगा तब दृष्टा दर्शन दृश्य त्रिपुटीका अभाव हो जावेगा केवल दृष्टाही रहेगा ॥ हे रामजी द्रष्टाभी उपदेश जतावणेके निमित्त कहा हे ॥ जब दृश्यका अभाव हुआ तब द्रष्टा किसका होवे केवल अपणे आपविषे स्थित हे ॥ द्वैत जो हे चैत तिसतें रहित अद्वैत चैतन हे शुद्ध हे॥तिसविषे स्थित हो करी जगत्का त्याग करु ॥ यह जगत् वुद्धि जन्मके देणेहारी हे ॥जो जगत्के पदार्थ सुख दाइ भासते हे सो दुःखके देणेहारे हे ॥इनकों विष जाणीकरी त्याग कर जेसें आकाशविषे तरवरे भासते हे तेसें यह जगत् अणहोता भासता हे ॥ आत्माविषे दृश्य अवर कछू नही ॥ एकहि पदार्थविषे दो दृष्टी हे ॥ ज्ञानी उसकों आत्मा जाणते हे अरु अज्ञानी जगत् जाणते हे ॥ दोहा ॥ सब भूतनकी राञ्र सो, संतनका दिन होय ॥ जो लोकन दिन मानिया, संत रहे तब सोय ॥ १ ॥ ज्ञानी परमार्थ तत्वविषे जागे हे अरु संसारकी उरतें सोए रहे हे ॥ अरु अज्ञानी परमार्थ तत्वतें सोए हुए हे अरु संसारकी उर सावधान हे ॥ हे रामजी यह जगत् मनतें फुऱ्या हे ॥ अरु ज्ञानीका मन सत पदकों प्राप्त भया हे ॥ इस करीकें जगत्की भावना नही फुरती ॥ जेसें बालककों संसारके पदार्थका ज्ञान नही होता तेसें ज्ञानीके निश्चयविषे जगत् कछू वस्तु नही ॥ हे रामजी जब ज्ञान उपजता हे तब जगत् कछू भिन्न वस्तु नही भासता ॥ जेसें जलकी बुंद जलविषे डारियें तो भिन्न नही भासती ॥ तेसें ज्ञानीकों जगत् भिन्न नही भासता ॥ जेसें बीजविषे वृक्ष होता हे तेसें मनविषे जगत् स्थित होता हे जेसें वृछ बीजरूप हे तेसें जगत् मनरूप हे ॥ जब जगत् नष्ट होवे तब मनभी नष्ट हो जावेगा अरु मन नष्ट होवे तब दृश्यभी नष्ट होवेगी एकके अभाव हुए दोनोंका अभाव हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाता है ॥ अरु मन नष्ट होवे तो फुरनाभी नष्ट होवे ॥ अरु फुरना नष्ट होवे तो मनभी नष्ट होता है ॥ हे रामजी यह जगत्के अंतर बाहिर जो भासता हे सोइ मन हे तातें मनकों स्थित करी देखेगा तब जगत्की सतता नही भासेगी ॥ अज्ञानीके रिदेविषे जगत् दृढ स्थित हे तातें दुःख पावता है ॥ जेसें बालककों अपणे पछावेविषे भूत भासता हे अरु दुःख पावता हे ॥ अरु अवर कोउ निकट खडा हे तिसकों नही भासता उह दुःख नही पावता ॥ हे रामजी यह जगत् कछू सत वस्तु होती तो ज्ञानवानकोंभी भासता ॥ सो ज्ञानीकों नही भासता ॥ तातें जगत् कछू वस्तु नही जेसें एकही स्थानविषे दो पुरुष बेठे हे अरु एककों निद्रा आइ हे तिसकों सुपन जगत् भासता हे अरु नाना प्रकारकी चेष्टा होती हे ॥ अरु दुसरा जो जाग ता बेठा हे तिसकों उसका जगत् नही भासता ॥ तेसें जो पुरुष परमार्थ सत्ताविषे जाग्रत हे ॥ तिसकों जगत् शून्य भासता हे ॥ हे रामजी इह जगत् मिथ्या हे तिसकी तृष्णा तुं काहेकों करता हे ॥ अपणे सुभावविषे स्थित होहु यह जगत् परसुभाव हे अेसें जाणीकरी भावे जेसी चेष्टा करु तुझकों बंधन न करेगो अरु पूर्व पदकी प्राप्ति होवेगी॥ जेसें सुके तृण अग्निके जले हुएकों पवन उडाय ले जाता हे तब नही जाणता जो कहां गया तेसें ज्ञानरूपी अग्नी करी जलाया अरु निरहंकारता रूपी पवन करी उडाया संसाररूपी तृण न जानेगा जो कहां गया ॥ जेसें लाख जोजन पर्यंत चल्या जावे तोभी आकाशहि दृष्ट आता हे सब सृष्टिकों धार रहा हे ॥ तेसें सब दृश्य जगत्कों आत्मा धारता हे ॥ संसारका शब्द अर्थ आत्माविषे को उ नही इसकों छोडि करी देख जो सर्व शब्द अर्थका अधिष्ठान आत्माही हे ॥ हे रामजी रूप अवलोक मनस्कार मिथ्या उदे हुए हे ॥ तातें इनका त्याग करु जेसें मरुथलविषे जला भास मिथ्या हे तेसें आत्माविषे जगत् मिथ्या भ्रममात्र हे ॥ इसके संबंध करिकें दुःखी होता हे जेसें जेवरीविषे सर्प अरु सीपिविषे रूपा मिथ्या हे ॥ तेसें आत्माविषे जगत् हे ॥ तुं आत्मा ब्रह्म हे अरु दुःखतें रहित हे अपणे सुभावविषे स्थित होहु अरु आत्म दृष्टि करिकें देख जो सर्व आत्मा हे ॥ अथवा जगत्कों मिथ्या जाण तोभी शेष आत्मपद रहेगा जेसें जाग्रत सुपन सुषुप्तिके अभाव हुए सांतपद शेष रहता हे ॥ तेसें जगत्के अभाव किएतें आत्मपद शेष भासेगा ॥ यह जगत् अत्यंत अभाव हे अरु जो दृष्टि आता हे सो भ्रममात्र हे ॥ एक कालविषे होता हे अरु दूसरे कालविषे नष्ट हो जाता हे सुपनविषे जाग्रतका अभाव हो जाता हे अरु जाग्रतविषे सुपनका अभाव हो जाता हे अरु सुषुप्तिविषे दोनोंका अभाव हो जाता हे तातें भ्रममात्र हे अरु विश्व आत्माका चमत्कार हे जेसें समुद्रविषे तरंग होते हे आत्माविषे जगत् हे अहंता करिकें उदे होता हे ॥ अहंताके अभावतें अभाव हो जाता हे ॥ जिनकों अहंताका अभाव हुआ हे उही संत हे अरु उत्तम पुरुष हे ॥ तिन महानुभाव पुरुषोंका अभिमान नष्ट होगया हे ॥ अरु भोगकी आसा नष्ट हो जाती हे ॥ उह निर्भीतिरूप नितहि समाधिरूप होते हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे ब्रह्मैकताप्रतिपादनंनाम शताधिकत्रिषष्टितमः सर्गः ॥ १६२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् यह मनरूपी मृग भटकता हे अरु वनविषे जलता हे ॥ उह कवन वृछ हे समाधानरूप जिसके नीचे आया सांतपदकों प्राप्त होवे ॥ उसके फूल फल लता केसें होते हे अरु वृछ कहां होता हे सो कृपा करी कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जिस प्रकार समाधानरूप वृछ उत्पत्ति होता हे सो श्रवण कर ॥ क्रम करिकें इसके पत्र पुष्प लतातें आदि सब समाधानरूप इस वृछका हे ॥ हे रामजी यह वृछ सब जीवकों साधणे जोग हे कल्याणके निमित्त सो अब तुं इसका क्रम सुण बल करिकें उत्पत्ति होता हे अरु संत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जनोंके वनविषे यह ध्यानरूपी वृछ उपजता हे अरु चित्तरूपी पृथ्वीविषे लागता हे अरु वैरागरूपी इसका बीज हे सो वैराग दो प्रकार होता हे जो कोउ दुःख कष्ट प्राप्त होवे तिसकरी भी वैराग उपजी आता हे ॥ अथवा शुद्ध रिदा निष्काम होता हे तोभी वैराग उपजता हे ॥ तिस वैरागरूपी बीजकों चित्तरूपी भूमिकाविषे पाइता हे अरु जब वासनारूपी हल फेरता हे ॥ संतकी संगति अरु सतशास्त्ररूपी जलकरी सिंचता हे मनरूपी क्यारी विषे ॥ सो जल निर्मल हे सीतल हे अरु हृदयगम्य हे ॥ तिस कोमलता अरु दयारूपी जलकरी बीजकों सिंच ता हे तब वढणेकी आसा होती हे ॥ अरु सब क्रियारूपी जाड करिकें असुभरूपी कुडेकों दूर करता हे ॥ अरु वहुत जलतेंभी रक्षा करता हे ॥ सो आत्म विचाररूपी सूर्यकी किरणकरी सुकाता हे ॥ अरु तिसके चउंफेर धैर्यरूपी वाडी करियें ॥ अरु तप दान तीर्थ स्नानरूपी थडे ऊपर रख वेठणा जो वीज जलि न जावे अरु आसारूपी पंछीते रक्षा करणी जो वैरागरू पी बीजकों काढि न लेजावे ॥ अरु अभिलाषा रूपी बुढे वेलतें रक्षा करणी जो क्षेत्रविषे प्रवेश करिकें इसकों मर्दन न करे ॥ तिसके निमित्त संतोष अरु संतोषकी स्त्री मुदिता दोनों वेठा य रखणे ॥ अरु इस बीजका नास करता जो मेघतें उपजता हे गडा तिसतेंभी रक्षा करणी ॥ सो गडा क्या हे संपदा धनकी प्राप्ति होणी अरु सुंदर स्त्रियांकी प्राप्ति होणी सो वैरागरूपी बीजका नास कर्ता गडा हे ॥ एक इसकी रक्षाका समान उपाय हे अरु एक विसेष उपाय हे ॥ जो तप करणा अरु इंद्रियांकों सुकचावणा अरु दुःखी पर दया करणी अरु संतोषमा त्र पाठ जाप करणा इत्यादिक सुभ क्रिया करणी ॥ यह सुभ क्रियारूपी पुतली जंत्रि इसके विद्यमान राखियें तो दूर हो जाता हे अरु दूसरा परम उपाय यह हे जो संतकी संगति कर णी अरु सत शास्त्रका श्रवण करणा अरु प्रणव जो उंकार हे तिसका ध्यान जप करणा ॥ अरु तिसके अर्थकों विचारणा यहि जो हे त्रिसूलरूप तिसका त्रिसूल करणा॥ सो गडेके नास का परम उपाय हे जब एते शत्रूतें रक्षा करे तब वीजकी उत्पत्ति होवे तिसकों संतके संग अरु सत शास्त्रके विचाररूपी वर्षाकालके जल करी सिंचिये तब अंकुर निकसती हे अरु वडा प्रकास होता हे ॥ जेसें दुतियाका चंद्रमा होता हे अरु सब कोउ तिसकों प्रणाम करता हे तेसें संतोष दया अरु जसरूपी अंकुर निकसता हे ॥ तिसके दो पत्र निकसते हे एक वैराग दू सरा विचार सो दिनदिन प्रति वढता हे अरु शास्त्रतें जो श्रवण किया हे जो आत्मा सत्य हे अरु जगत् मिथ्या हे तिसका वारंवार अभ्यास करणा ॥ इस जलके सिचणेकरी अंकुर दिन दिन प्रति वढता जावेगा अरु तिसके थंभ वडे होवेंगे ॥ हे रामजी जव टास वडे होते हे तव वानर उसपर चडीकरी तोडि डारते हे ॥ सो राग दोष रूपी वानर हे तातें इस वृछकों दृढ वै राग अरु संतोष अभ्यासरूपी रसकरी पुष्ट करणा ॥ जेसें सुमेर पर्वत होता हे तेसें संतोष करी पुष्ट करणी॥ जव अेसें हुआ तव सुंदर पत्र अरु टास लागेंगे॥ अरु फूल मंजरी इसके साथ लागेंगे ॥ अरु वडे मार्ग पर्यंत इसकी छाया होवेगी॥ सांति सीतलता शुद्धता अरु कोमलता दया जस किरती इत्यादिक गुण आनि प्रगट होवेंगे तिसके नीचे मनरूपी मृग विश्राम पावता हे अरु सीतल होता हे अध्यात्मक अधिभूतक अधिदैवक ताप मिटि जाते हे अरु परम सांतिकों प्राप्त होता हे ॥ हे रामजी यह में तुझकों ध्यानरूपी वृछ कहा हे ॥ जहां यह वृछ उत्प त्ति होता हे तिस स्थानकी सोभा कही नही जाती जो इस वृछकी सरनकों प्राप्त होता हे तिसके ताप मिटि जाते हे अरु सांतिवान होता हे अरु यह वृछ जो वढता हे सो ब्रह्मरूपी आ कासके आश्रय वढता हे अरु इसविषे वैरागरूपी रस हे अरु संतोषरूपी इसकी छिल हे तिसकरी पुष्ट होता हे जो पुरुष इसकों आश्रा लेवेगा सो सांतिकों प्राप्त होवेगा ॥ हे रामजी ज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वलग गमनरूपी मृग इस ध्यानरूपी वृछका आश्रा नही लेता तबलग भटकता फिरता हे अरु सांतिकों नही प्राप्त होता हे ॥ जेसें मृग वनविषे भटकता हे तेसें भटकता हे॥तिसकों द्वैत अ
ज्ञान प्रमादरूपी बेधक मारणे लागता हे तिसकरी दुःख पावता हे तिसके भयकरी गांबके निकट आता हे ॥ तब उह आपो आप इसकों पकडि करी खेद देते हे तिसकरी बडे कष्टकों
पावता हे ॥ सो गांववासी इंद्रियां हे जब इनकी उर आता हे तब अपणे अपणे विषयकी उर बंधमान करतियां हे इनकें भेकरी बहुरी बनकों जाता हे तहां बनकी तपत करी दुःखी हो
ता हे ॥ सो विषयकी अप्राप्तिरूपी तपत हे तिसकों त्यागकरी रसरूप स्थानकों दउडता हे सांतिके निमित्त ॥ जब उहां जाता हे तब कामरूपी स्वान इसके मारनेंकों दउडता हे ॥ तिसके
भेकरी बहुरी बनकी उर धावता हे तब क्रोधरूपी अग्नि जलावती हे अरु वासनारूपी मछर दुःख देते हे अरु लोभ मोह रूपी अंधेरी चलती हे तिसकरी अंध हो जाता हे ॥ हरे हरे तृण
कों देखी करी ग्रहण करता हे तब टोयेविषे गिरपडता हे उह टोया तृण करी आछाद्या हे सो तृण कवन हे पुत्र धन तिनकों सुंदर देखिकरी ग्रहण करती हे ॥ तब ममताविषे गिर पडता
हे ॥ इस प्रकार दुःख पावता हे ॥ हे रामजी जब यह मन झुठ बोलता हे तब मृत्तिकाविषे लोटता हे अेसी चेष्टा करता हे अरु जब मनरूपी बघाड आता हे तब इसकों भछन करी जा
ता हे जब ध्यानरूपी वृछतें बिमुख होता हे तब एते कष्टकों पावता हे ॥जब मनरूपी बिघाडतें छूटता हे तब आसारूपी जंजीरविषे बंधमान होता हे ॥ जबलग इस वृक्षके निकट नही
आता तबलग बडे कष्ट स्थानोंकों जाता हे ॥ तमाल वृछादिकके तलेभी जाता हे अरु कंटकके वृछों तलेभी जाता हे परंतु सांतिवान किसी स्थानविषे नही होता बडे कष्टकों पावता हे॥
॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे हरनोपाख्यानेवृत्तांतजोगोपदेशोनाम शंताधिकचतुषष्टितमः सर्गः ॥ १६४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार मूढ बुद्धि मनरूपी हरण भटकता हे ॥ तातें मेरा यहि आशिर्वाद हे जो तुमकों उस वृछका संग होवे ॥ जब उस वृछके निकट आता हे तब शां
ति प्राप्त होती हे ॥ अरु जब इसके नीचे आय बेठता हे तब तीनों ताप अंतःकरणतें मिटि जाता हे अवर जेते कछू वृक्ष हे तिनके निकट गया मनरूपी मृग शांतिकों नही पावता सो अ
वर वृक्ष कवन हे ॥ विषयरूपी वृक्षके निकट गया शांतिवान नही होता ॥ जब ध्यानरूपी वृक्षके निकट आता हे तब शांतिकों पाता हे ॥ अरु बुद्धि प्रकाशी आती हे ॥ जेसें सूर्यमुखी
कमल सूर्यकों देखी करी खिली आता हे ॥ बहुरी उसके अनुभव रूपी फल हे अरु शास्त्रके विचार रूपी पत्र फूल हे तिनकों देखी करी बडे आनंदकों प्राप्त होता हे ॥ अरु वृक्ष उपर
चडी जाता हे चडीकरी पृथ्वी भूमिका त्याग करता हे ॥ जेसें सर्प अपणी कंचुकीका त्याग करता हे ॥ अरु नौतन सुंदर शरीर करी सोभता हे ॥ अरु जब उस वृछपर चडता हे तब गिर
ता नही पत्र उसके बहुत बली हे तिनके आश्रय ठहरता हे ॥ सो कवन पत्र हे ध्यानरूपी वृछके सत शास्त्र रूपी पत्र हे ॥ जब ध्यानरूपी वृक्षतें उतरता हे तब शास्त्रके अर्थविषे ठहरता
हे अरु जेतेविषय पदार्थ देखता हे सो क्षारवत् दृष्ट आते हे अरु अपणी पीछली चेष्टाकों स्मरन करीकें पछताता हे ॥ जेसें किसीनें मद्यपान किया होवे अरु तिसबिषें नीच चेष्टा
करे जब मद उतरता हे तब पसताया करता हे ॥ तेसें मनरूपी मृग अपणी पीछली चेष्टाकों धिक्कार करता हे ॥ अरु कहता हे जो बडा आश्चर्य हे में एताकाल इस वृक्षतें बिमुख हुआ
भटकता फिरता हों ॥ अब मुझकों शांति प्राप्त हुइ हे जेसें दिनकी तपत अभाव हुए चंद्रमुखी कमलनीकों शांति प्राप्त होती हे तेसें मनरूपी मृगकों शांति प्राप्त होती हे ॥ हे रामजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुत्र धन स्त्रियादिक जो दिखते हे तिनकों संकल्प पुरकी न्यांइ अरु सुपनवत् देखता हे जेसें सुपनेतें जागे हुए सुपनपुरकों स्मरण करता हे परंतु तिसविषे अभिमान नही होता ॥ तैसें इनविषेभी अभिमान नही होता ॥ जब अनुभवरूपी फलकों पान करता हे तब बडे आनंदकों पावता हे जिसविषे वाणी नही प्रवृत्त शकती परम शांत अरु निर्मल पदकों प्राप्त होता हे ॥ अरु निरतिशय पदकों प्राप्त होता हे जो मनका विषे होवे सो सातिशय पद हे अरु जो मनका विषय नही सो निरतशय पद हे ॥ अरु जो इंद्रियांका विषय हे तिसका नासभी होता हे अरु जो इंद्रियां अरु मनकाविषय नही तिसका नास नही होता॥ सो अविनासी पदकों पावता हे॥अरु जेसें किसीकों बाण लागता हे अरु तिसका विरोधी बूटी उसके सन्मुख राखिये तो निकसी आता हे ॥ तेसें अनुभवरूपी बूंटीके सन्मुख हुए मोह बंधनरूपी सर खुलि पडते हे अरु परमपदकों पावता हे ॥ हे रामजी ज्ञानवान जगत्तें मृतक हो जाता हे ॥ उसकों संसारका लेप कछू नही लागता ॥ जेसें लकडी बिना अग्नि शांत हो जाती हे तेसें वासनातें रहित ज्ञानवानकी चेष्टा शांत हो जाती हे ॥ अर्थ यह जो संसारकी सत्यतातें रहित चेष्टा होती हे बहुरी संसाररूपी अग्नि उदे नही होती अरु द्वैत एक कल्पनाभी मिटि जाती हे अरु उन्मत्तकी न्यांइ अपणे स्वरूपविषे घुर्म रहता हे ॥ जेसें मरुथलकी धूपकी इछा पें दोइ नही करता ॥ तेसें ज्ञानी विषयकी तृष्णा नही करता जिसनें आत्म अनुभवरूपी अमृतपान किया हे ॥ तिसकों विषरूपी कांजिकी इछा नही रहती ॥ उह पुरुष सदा निर्वासी हे जब यह पुरुष निर्वासी होता हे तब चंचल जो मनकी वृत्ति हे सो सब लीन हो जाती हे ॥ केवल आत्मत्वमात्र पद रहता हे ॥ अरु में मेरा यह भावना नष्ट हो जाती हे जबलग चित्तका संबंध होता हे तबलग में मेरा भासता हे ॥ जब चित्तका संबंध मिट्या तब एकाकार हो जाता हे ॥ जेसें एक सूका काष्ठ अरु एक गिल्ला काष्ठ होता हे सो सूका शुद्ध कहाता हे अरु गिल्ला उपाधिक कहिता हे ॥ जब जल सूकी गया तब शुद्ध होता हे ॥ तेसें जब मनकी उपाधि नष्ट भइ तब शुद्ध आत्माहि रहता हे अरु एकरस भासता हे ॥ हे रामजी संसार दुतीय भ्रम करीकें भासता हे जेसें पथरकी शिलाविषे पूतली अनउपजी भासती हे सो न सत हे न असत हे जब पथरतें भिन्न करी देखिये तब सत नही जो शिलाकरी देखिये तब उही रूप हे तेसें जगत् आत्मातें भिन्न सत्य नही आत्म सत्तातें आत्मरूप हे ॥ जेसें छोटे बालकके रिदेविषे जगत्का शब्द अर्थ नही होता तेसें ज्ञानीकी चेष्टाभी प्रारब्ध वेगकरीकें होती हे ॥ परंतु उसके रिदेविषे जगत्के शब्द अर्थका अभाव हे ॥ हे रामजी जो कछू प्रारब्ध होती हे सो अवस्य उसकोंभी आनि प्राप्त होती हे मिटती नही सुभ अथवा अशुभ ॥ जेसें मेघतें बुंदां गिरती हुइ नष्ट नही होतीयां मेघ मंत्रशक्ति करीकें नष्ट होता हे तेसें प्रारब्ध कर्म नष्ट नही होता अवर नष्ट होते हे परंतु उह तिनविषे बंधायमान नही होता ॥ अज्ञानीके रिदेविषे संसार सत्य भासता हे अरु भिन्न भिन्न पदार्थ भासते हे पदार्थका ज्ञान हे अरु ज्ञानीके रिदेविषे आत्माका ज्ञान हे संसारकी सत्यता तिसकों नही भासती ॥ हे रामजी यह जो समाधानरूपी वृक्ष में तुझकों कहा हे सो विधिसंयुक्त तिसकी सेवना करियें तो अनुभवरूपी फल प्राप्त होता हे अरु बोधतें रहित होकरी करता हे तो अनेक जतन करीभी फलकी प्राप्ति नही होती काहेतें जो अेसी भावना उसकों नही प्राप्त होती जो आत्म शुद्ध हे अरु सत चित्त आनंद हे अरु जिनकों यह भावना प्राप्त होती हे तिनकों भोगकी इछा नही रहती जेसें किसीनें अमृतपान किया होता हे तब अवर अमल अरु कटुक फलकी वांछा नही करता तेसें ज्ञानी इछा नही करता ॥ जेसें रुइके पोवेकों अग्नि लागी अरु उपरतें तीक्ष्ण पवन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चला तो नही जाणता जो कहां जाय पडा ॥ तेसें जगत्रूपी रुइका पोवा ज्ञान अग्नीकरी दग्ध किया हुआ अरु वैरागरूपी पवन करी उडायाँ नही जाणता जो कहां जायपडा आ
काशही आकाश भासता हे जगत् सत नही भासता तो फिर तृष्णा किसकी करे तृष्णातें रहित स्थित होता हे ॥ हे रामजी दुःखका मूल तृष्णा हे तृष्णाकरी भटकता हे ॥ जेसें पर्वतके
पंखथे तबलग उडते थे पंख विना उडणेतें रहित भये गंभीर स्थिर हो रहे ॥ तेसें जब मनतें वासना नष्ट हुइ तब मन स्थिर हो जाता हे ॥ हे रामजी पैंदोइ वांछित देसकों तब जाय
प्राप्त होता हे ॥ जब इतर देशका त्याग करता हे तेसें आत्मा शुद्ध स्वरूप परमानंद अपणा आप तब प्राप्त होता हे जब धन लोक पुत्र इषणाका त्याग करे जब आत्माकी प्राप्ति भइ
तब निर्विकल्प समाधि करी निर्विकल्प चैतनका साक्षात्कार होता हे ॥ जब समाधिविषे साक्षात्कार हुआ तब उत्थानकालविषेभी समाधि स्थित होता हे ॥ अरु परम निर्वाणपदकों
प्राप्त होता हे अरु चित्तरूपी वल्ली दूर हो जाती हे ॥ जेसें रसडीकों वल होती हे तिसकों खेचि करी बहुरी छोडता हे तब उह सुधी हो जाती हे ॥ तेसें जिसकों समाधिविषे साक्षात्कार
हुआ तब उसकों उत्थानकालविषेभी उही भासता हे अरु जिसकों उसका प्रमाद हे तिनकों जगत् भासता हे ॥ हे रामजी वस्तु एक हे परंतु तिसविषे दो दृष्टि हे ॥ जेसें जेवरी एक हे
सम्यक्दर्शीकों जेवरी भासती हे अरु असम्यक्दर्शीकों सर्प हो भासता हे ॥ तेसें ज्ञानवानकों आत्मा भासता हे अरु अज्ञानीकों जगत् भासता हे ॥ जिस पुरुषनें ज्ञानकरी जगत्कों
असत नही जाण्या ॥ तिसकों अेसें जाण जो चित्रकी अग्नी हे ॥ तिस करीकें कोउ कार्य सिद्ध नही होता न सीतही दूर होती हे ॥ अरु जिसकों स्वरूपकी इछा हे अरु तृष्णाके नास क
रणेका प्रयत्न करता हे अरु जगत्कों मिथ्या विचारता हे सो विचार कियेतें आत्मपदकों प्राप्त होवेगा ॥ अरु तृष्णाभी तिसकी निवृत्त हो जावेगी ॥ हे रामजी ज्ञानवानकी तृष्णा सु
भाविक मिट जाती हे जेसें सूर्यके उदे भये अंधकार मिट जाता हे तेसें वस्तुकी सत्ता करी तिसकी तृष्णा नष्ट हो जाती हे ॥ अरु परमपदविषे स्थित होता हे ॥ हे रामजी जिसकों दृश्य
विषे निरसता हे सो उत्तम पुरुष हे सो मनुष शरीरकों पायकरी ब्रह्म होता हे तिसकों मेरा नमस्कार हे उह मेरा गुरु हे ॥ हे रामजी जब इसकी बुद्धी विषयतें विरस हुइ तब कल्याण
हुआ ॥ वैराग करीकें बोध होता हे अरु बोध करीकें वैराग होता हे परस्पर दोनों संबंधी हे जब एक आता हे तब दुसराभी आता हे ॥ जब यह आते हे तब तीनों इषणा निवृत्त हो
जातीयां हे ॥ जब तीनों इषणा गइ तब अमृतकी प्राप्ति होती हे ॥ सो केसें प्राप्त होती हे श्रवण कर ॥ संतका संग करणा अरु सतशास्त्रका श्रवण करणा तिसकरी अपणे स्वरूपका
अभ्यास करणा ॥ इसकरी आत्मपदकी प्राप्ति होती हे ॥ यह तीनों श्रेष्ठ परस्परहि एक हे ॥ जेसें अष्ट चर्न वाला कीट होता हे जो प्रथम चर्णकों राखिकरी अवर चर्णकों रावता हे
तब सुखेन चल्या जाता हे ॥ तेसें संतके संग अरु सतशास्त्रके श्रवण करी आत्मपदका अभ्यास करता हे तब सीघ्रहि आत्मपदकों प्राप्त होता हे अरु जगत्का अभाव हो जाता हे ॥
हे रामजी जगत्कें भाव अरु अभावकों ज्ञानी जाणता हे ॥ जेसें जाग्रत सुपन सुषुप्तिकों तुरियावाला जाणता हे तेसें जगत्के भाव अभावकों ज्ञानी जानता हे जेसें अग्निविषे सूका
तृण डार्या दृष्ट नही आता तेसें ज्ञानवानकों जगत् दृष्ट नही आता ॥ हे रामजी ज्ञानवानकों सर्वदा समाधि हे उत्थान कदाचित् नही होता जबलग उस पदकों प्राप्त नही भया तबलग
साधनाविषे जुडता रहे ॥ जब उस पदकों प्राप्त भया तब फिरि जतन कोउ नही रहता ॥ हे रामजी इस चित्तके दो प्रवाह हे ॥ एक जगत्की उर जाता हे अरु एक स्वरूपकी उर जाता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे ॥ जो जगत्की उर जाता हे सो उपाधिक हे ॥ अरु जो स्वरूपकी उर जाता हे सो उपाधिकों दूर करणेंहारा हे जेसें एक लकडी गिलि होती हे अरु एक सूकी होती हे ॥ जो गिली हे तिसविषे उपाधि जल हे तिस करी विस्तारकों पावती हे ॥ जब जल नष्ट हो जाता हे तब शुद्ध होती हे बहुरी प्रफुल्लित नही होती ॥ तेसें संसारकी सत्यता करी चित्त दृढ हो ता हे ॥ जब संसारकी वासना नष्ट होती हे तब शुद्ध पदकों पावता हे ॥ हे रामजी वाद जो करते हे सो दो प्रकारके हे ॥ जो एक वाद किसीकों दुःख देवें सो मूर्ख करते हे अरु जो परस्पर निरूपणतत्वका मित्रभाव करीकें करणा सो ज्ञानवान करते हे ॥ जेसा वाद करता हे तिसका दृढ अभ्यास करता हे तेसाहि रूप हो जाता हे ॥ जो कष्ट झगडा करता हे तिसका उही रूप हो जाता हे ॥ अरु जब स्वरूपका वाद मित्रता करीकें करता हे तब उही रूप होता हे ॥ उस पदकों पायकरी परम शांतिकों प्राप्त होता हे ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे मनसृगोपाख्यानजोगोपदेशोनाम शताधिकपंचषष्टितमः सर्गः ॥ १६५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ समाप्तोऽयं श्रीयोगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे पूर्वार्द्धं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ श्रीपरमात्मनेनमः ॥ अथश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे उत्तरार्द्धं प्रारभ्यते ॥ वसिष्ठोवाच हे रामजी जिस पुरुषनें समाधानरूपी वृछके फलकों जानी करी पान किया हे अरु तिसकों पचाया हे उसकों परम स्थिति प्राप्त होती हे जेसें पंख टुटेतें पर्वत स्थित होरहे हैं तेसें यह स्थित होजाता हे तृष्णारूपी पंखके टुटेतें ॥ हे रामजी जब उसकों फल प्राप्त होता हे तब चित्तभी आत्मरूप होजाता हे ॥ जेसें दीपक निर्वान होता हे तब जाण्या नही जाता ॥ जो कहां गया तेसें आत्मपदके प्राप्त हुए चित्त भिन्न होकरी दिखाइ नही देता ॥ हे रामजी जबलग उह अकृतम आनंद प्राप्त नही भया अरु तिस पदविषे विश्रांत नही पाइ तबलग सांति प्राप्त नही होती केसा पद हे जो निर्गुण हे अरु सुध हे स्वछ हे परमसांत हे ॥ जब तिस पदविषे स्थिती होती हे तब परम समाधि होजाती हे॥ अेसा त्रिलोकीविषे कोउ नही जो तिसकों उतारे ॥ जेसें चित्रकी मुर्ति होती हे तेसें उसकी अवस्था होती हे ॥ चेष्टाभी सब होती हे परंतु इच्छातें रहित हे ॥ जेसें पंखतें रहित पर्वत स्थित होता हे तेसें मन अमन होजाता हे ॥ अरु सांत पदकों प्राप्त होता हे ॥ हे रामजी जीसके मनविषे संसारका अभाव हुआहे सो सांतपदकों प्राप्त होता हे ॥ अरु जो वासना संयुक्त हे तब मन हे ॥ जिस क्रम करीके अरु जिस जुक्ती करिके इसकी वासना क्षय होवे सो इसकों करतव्य हे ॥ हे रामजी जब वासना क्षय होती हे तब बोधरूप सेष रहता हे जिस क्रमकरी उह प्राप्त होवे सोइ किया चहियें तिस पदके प्राप्त हुए बिना सांति कदाचित् न होवेगी ॥ जब चित्त तिस पदकी उर आवे तब सांत होवे अरु दुःखतें रहित होवे अरु अविनासी होवे ॥ काहेतें जो सर्व आत्म निरविभाग हे ॥ अरु अंत हैं परमसांतरूप हे ॥ सबकों कर्मका फल देणे हारा हे ॥ हे रामजी जब अेसें पदकों प्राप्त होता हे तब तिसकों उत्थान कालविषे आत्माहि भासता हे ॥ उसकों द्वैत नही भासता तब समाधितें उत्थान केसें होवे ॥ अेसा कोउ समर्थ नही जो तिसकों समाधितें उतारे ॥ जब अेसा पद प्राप्त होताहे तब संसार विरस होजाताहे ॥ हे रामजी जब लग यह पुरुष मूर्तिवत् पूतली नहि हुआ तबलग विषयका त्याग करे ॥ अरु जब अेसी दसा हुइ तब कर्तव्य कछु नही रहता ॥ जो त्याग करे अथवा न करे अरु यह मेरे निश्चय हे जब ज्ञान इसकों उपजेगा तब विषयतें विरक्त होजावेगा ब्रह्मातें आदि काष्ठ पर्यंत जेते कछु पदार्थ हे सो तिसकों विरस होजातेहैं ॥ अेसा जो पुरुष हे तिसकों सदा समाधि हे ॥ हे रामजी जिसकों समाधिका सुख आयाहे सो सुभाविक समाधिकी उर आताहे ॥ जेसें वर्षाकालकी नदी सुभाविक समुद्रकों जातीहे ॥ तेसें उह पुरुष समाधिकी उर लगा रहताहे ॥ जो पुरुष विषयतें अचाह हुआ हे अरु आत्मारामी भयाहे तिसकों वज्रसारकी न्याइ स्थित होती हे ॥ जेसें पंखतें रहित पर्वत स्थित हुएहैं तेसें जिस पुरुषनें संसारकों विरस जाणी करी त्याग किया हे अरु आत्माविषे क्रीडा आत्माकरी तृप्त हुआ हे तिसका ध्यान चलायमान नही होता ॥ हे रामजी जिस पुरुषकी चेष्टाभी होती हे ॥ अरु संकल्प विकल्पतें रहित हे सो सदा मुक्तिरूप हे ॥ तिसकों कोउ क्रिया बंधमान नही करती क्रिया अरु साधनाका अभाव होजाता हे ॥ जिस पुरुषकों विषय जगत् विरस हो गयाहे ॥ तिसकों विषयहूंकी तृष्णा कसें होवे जब तृष्णा न रही तब दुःख केसें होवे ॥ दुःख तबलग होताहे जबलग विषयकी तृष्णा होतीहे ॥ विषयकी तृष्णा तब होतीहे जब अपणे सुभावकों त्यागताहे ॥ हे रामजी जब अपणे सुभावविषे स्थित होवे तब पर सुभाव जो हे इंद्रियके विषय सो रस संयुक्त केसें भासे दुःख अरु तृष्णा केसें होवे ॥ हे रामजी जब अपणे सुभावकों जानता हे तब परम निर्वाण पदकों प्राप्त होताहे जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदि अरु अंततें रहित पद हे तिसकों पावताहे सो तिसका उपाय श्रवणकर ॥ वेदका अध्ययन करणा अरु प्रणवका जप करणा ॥ जब इनतें थके तब समाधि जो हे चित्तकी वृत्तिका रोकणा सो रोके जब बहुरी थके तब उही जाय पाठ करे ॥ जब अेसें दृढ अभ्यास होवे तब तिस पदकों प्राप्त होवेगा ॥ जो संसारके पार गवनका मार्ग हे जब तिसकों पाया तब परम सांतिकों प्राप्त होवेगा ॥ अरु स्वछ निर्मल अपणे सुभावविषे स्थित होवेगा ॥ इतिश्री योगवासिष्ठ निर्वाण प्रकरणे सुभाव सत्ता योगो पदेशोनाम शताधिक पंचषष्टितमःसर्गः ॥ १६५ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह संसार बडा गंभीरहे ॥ जो तरणा कठिन हे जिसकों तरणेकी इच्छा होवे तिसकों यह करतव्य हे जो वेदका अध्ययन अरु प्रणवका जाप अरु चित्तकों स्थित करणा जब अेसें उपाय करे तब ईश्वर इस पर प्रसंन होवेगा ॥ तब इसके रिदेविषे विवेकका कणका उतपन्न होवेगा ॥ तिस करिकें संसार असत भासेगा अरु संत जनोंका संग प्राप्त होवेगा सो संत जन केसें हे सुभ आचार हे जिनका अरु परम सीतलहे ॥ अरु गंभीर उंचे अनुभवरूपी फल संयुक्त वृछ हे ॥ अरु जस कीरती सुभ आचाररूपी फूल अरु पत्रों सहित हे ॥ अेसें संतजनकी संगति जब प्राप्त होतीहे तब जगतके राग दोषरूपी तम मिटि जाताहे जेसें पेंडोइकें सिस उपर भार होवे अरु तप्त करी दुःखी होवे अरु सीतल छाया वृछकी तिसकों प्राप्त होवे तब सीतल होताहे अरु फलके भछणे करी तृप्त होताहे ॥ तब थकेका कष्ट दूर होजाताहे तेसें संतके संग करी सुखकों प्राप्त होताहे ॥ जेसें चंद्रमाकी अमृत कोरणां करी सीतल होताहे तेसें संतजनके वचनोंकरी सांति होतीहे ॥ हे रामजी संतजनके दर्शन कियेतें पाप दगध हो जातहे ॥ अरु जो पुरुष तप यज्ञ व्रत सकाम करते हे तिनकी संगति न करियें ॥ उह केसें हे जेसें जज्ञका थंभा होताहे सो पवित्रभी होताहे परंतु उसकी छाया कछु नही तातें उसकें नीचें सुख कोउ नही पावता ॥ हे रामजी जेते कछु सकाम कर्म हे सो जन्म मर्नकों देणेहारे हे ॥ यद्यपि यज्ञ व्रत तप जिज्ञासीभी करते हे तोभी उनहूतें विशेष हे ॥ काहेतें जो निष्काम हे ॥ अरु विषयविषे तिनकों विरस भावना हे अरु तिनका सुभ आचार हे ॥ हे रामजी अेसें जिज्ञासीकी संगति विशेष हे जिसकी चेष्टाको सबकोउ स्तुति करता हे ॥ अरु सबकों सुखदायक भासता हे अरु नवनीत कोमल सुंदर अरु स्निग्ध होता हे एसा जिज्ञासी होता हे तिसकों संतकी संगति प्राप्त होती हे ॥ हे रामजी फूलके बगीचे अरु सुंदर फूलकी सिजा आदिक विषयते अेसा निर्भय सुख प्राप्त न हि होता जेसा निर्भय सुख संतकी संगति करी प्राप्त होता हे ॥ अरु तिनका सदा आत्मविषे निश्चय रहता हे हे रामजी अेसें ज्ञानवानकी संगति करिके इसकों आत्मतत्वकी प्राप्ति होती हे ॥ परंतु जब रिदा सुद्ध होता हे जबलग रिदा मलिन हे तबलग नही प्राप्त होती जेसें उज्वल आरसी प्रतिबिंबकों ग्रहण करती हे अरु लोहेकी सिला प्रतिबिंबकों ग्रहण नही करती ॥ तेसें जब इसका रिदा उज्वल होता हे ॥ तब संतके वचन इसके रिदेविषे ठहरते हे ॥ जेसें वर्षाकालका बादल थोडेतें बहुत हो जाता हे ॥ जब इसका रिदा सुद्ध होता हे तब बुद्धि बढती जाती हे जेसें वनविषे केलेका वृछ बढता जाता हे तेसें बुद्धि बढती जाती हे ॥ जब आत्मविषयिणि बुद्धि होती हे तब उही रूप हो जाती हे ॥ बुद्धिकी भिन्न संज्ञा का अभाव हो जाता हे ॥ जेसें लोहेकों पारसका परस होता हे तब सुवर्ण होजाता हे बहुरी लोहेकि संज्ञा नही रहती तेसें आत्मपदकी प्राप्ति हुए बुद्धिकी संज्ञा नही रहती ॥ अरु विषय भोगकी तृष्णाभी नही रहती ॥ हे रामजी इसकों दोन जो किया हे सो विषयकी तृष्णाअभिलाषाने किया हे ॥ जब तृष्णाका त्याग किया तब परम निर्मलताकों प्राप्त होता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे ॥ जेसें हस्ती सिरपर मृतिका डारता हे तबलग मलिन हे अरु जब नदीविषे प्रवेश किया ॥ तब निर्मल होजाता हे ॥ तेसें जब तृष्णारूपी राषका त्याग किया अरु आत्माविषे स्थि
ति भइ तब निर्मल होता हे ॥ हे रामजी जब भोगकी इच्छा त्यागी तब बडी शोभाकों धारता हे जेसें सुवर्ण अग्निविषे पाया तब मेल जलिजाती हे अरु उज्वल रूपकों धारता हे ॥ हे
रामजी भोगरूपी बडा विष हे तिसकों दिनदिनविषे त्याग करना विशेष हे ॥ जब तृष्णाका त्याग करता हे तब मुखभी बडी शोभा करी शोभता हे ॥ जेसें राहु दैततें रहित हुआ चंद्रमा
का मुख शोभा पावता हे तेसें तृष्णाके वियोग हुए पुरुषका मुखशोभता हे ॥ हे रामजी जब इसकों भोगतें वैराग होता हे तब दो पदार्थ की प्राप्ति होतीहे ॥ जेसें नुतन अंकुरके दो प
त्र होते हे तेसें एक संतकी संगति अरु एक सतशास्त्रका विचार प्राप्त होता हे अरु तिनविषे दृढ भावना होती हे तब अभ्यास करिकें उहि रूप होता हे अरु परमानंदरूप होता हे जि
सकों वाणीकी गम नही तब भोगकी इच्छातें मुक्त होता हे अरु परम सांत सुखकों पावता हे ॥ जेसें पिंजरसों निकसी करी पंछी सुखी होता हे ॥ तेसें सुखी होता हे ॥ हे रामजी इ
सकों भोगकी इच्छानें दीन कियाहे ॥ जब इच्छा निवर्त होती हे तब गौपदको न्यांइ संसार समुद्रकों लंघी जाता हें अरु तीनों जगत् सूके तृणकी न्यांइ भासतें हे ॥ हे रामजी जब
भोगकी इच्छा त्यागी तब यह इश्वर हुआ ॥ जिस पुरुषकों आत्म सुख प्राप्त हुआ हे सो भोगकी इच्छा कदाचित् नही करता ॥ जब आनि प्राप्त होते हे तबभी उसकों विरस भासते
हे अरु मिथ्या भासते हे ताते भोगकों नही चाहता जेसें जालतें निकस्या हुआ पंछी बहुरी जालकों नही चाहता ॥ तेसें उह पुरुष भोगकों नही चाहता ॥ जब विषयकी तृष्णा निव
त्त होतीहे तब परम सोभाकों धारता हे ॥ संतका वचन उसकों सीघ्रही प्रवेस करता हें ॥ हे रामजी मोक्षरूपी स्त्री हे अरु तिसके कानके भूषण संतकी संगति हे ॥ जब साधुकी संगति
होती हे तब असुभ क्रियाका त्याग होजाता हे ॥ अरु विराने धनकी इच्छा नही रहति अरु जो कछु अपणा होता हे तिसकेभी त्यागणेकी इच्छा करता हे अरु भले भोग जो पावणे
निमित्त आते हें तिनकों विभाग दे करी खाता हे जो कछु होता हे तिसविषेभी देकरी खाता हे बडे उत्तम भोगतें लेकरी साग पर्यंत देकरी खाता हे यथाशक्त प्रमाण जब यह अेसें हु
आ तब फेर अेसें होजाता हे ॥ जब कोउ सरीर मागे तब सरीरभी देता हे ॥ काहेतें जो देणेका अभ्यास होजाता हे अरु लोकतें साग मागणेंकी इच्छाभी नही रखता ॥ तिसकरी संतो
ष साथ यथाप्राप्त चेष्टा करता हे ॥ तप करता हे दान करता हे यज्ञ व्रत ध्यान करी पवित्र रहता हे अरु तृष्णाका त्याग किया हे हे रामजी अेसा दुःख क्रूर नर्कविषेभी नही जेसा दुःख
तृष्णाकरीकें होता हे ॥ अरु जो धनवान हे तिनकों धनकी चिंता बहुत रहती हे उपजावणेकी चिंता हे अरु राखणेकी चिंता हे ॥ उठते बेठते खाते पीते चलते सोते सदा धनकी चिंता र
हती हे ॥ इसहि चिंताविषे मचि मचि मरिजाते हें बहुरी जन्मते हें ॥ हे रामजी निर्धनकोंभी चिंता रहती हे परंतु थोडी होती हे जबलग चिंता रहती हे तबलग दुःखी रहता हे ॥ जब
चिंता नष्ट हुइ तब परम सुखी होता हे ॥ हे रामजी यद्यपी धनी होवे अरु संतोष नहि तब परम दारिद्रि हे ॥ अरु जब धनतें हीण हे परंतु संतोष हे तब परम इश्वर हे जिसकों सं
तोष हे ॥ तिसकों विषे बंध नहि करी सकते ॥ हे रामजी जबलग धनकी इच्छा नहि करी तबलग इसकों भोगरूपीविष नही लगता ॥ जब धनकी इच्छा उपजी तब परम विष इस
कों परस करी जाती हे इसकों विपरीत भावनाविषे दुःख होता हे ॥ जो दुःखदायक पदार्थ हे तिनकों सुखदायक जानता हे ॥ हे रामजी जो कछू अर्थ हे सोइ अनर्थ हे ॥ जिसकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसनें संपदा जानि हे सो आपदा हे जिनकों इसनें भोग जान्या हे सो सभ रोगरूप हे इनकों संपदा जाणि करी विचरता हे इसकरी वडा दुःखी होता हे ॥ हे रामजी रसायन सब दुःखका नाश करता हे ॥ परंतु यह देवताके पास होती हे ॥ अरु जब इसकों अमृत चहियें तब संतोष परम रसायण हे जब विषयविषे दोषदृष्टि हुइ अरु संतोषकों धारा तब मूर्खता इंसतें दूर हो जाती हे ॥ अरु गौपादकी न्यांइ संसार समुद्रकों सीघ्रहि तरी जाता हे ॥ जेसें गौपदकों सुगमहि लंघ्या जाता हे ॥ तेसें संसार समुद्रकों सुगम तरि जाता हे ॥ हे राम जी जिसकों संतोष प्राप्त होता हे तिसकों परम शांति होती हे ॥ अरु वसंत ऋतुभी सुखकास्थान हे ॥ नंदन वनभी सुखका स्थान हे ॥ उर्वसी आदिक अप्सरा होवे चंद्रमा विद्यमान बे ठा होवे कामधेनु विद्यमान होवे जो यह सभ इंद्रियाके सुख हे सो सब विद्यमान होवे॥ तोभी शांति न होवेगी परंतु एक संतोष करी शांति होवेगी ॥ तिसकों यह विषय चलाय नही सकते ॥ हे रामजी जेसें अरघ भरि भरि पाये तें तलाव भर्या नही जाता ॥ अरु जब मेघ जलकी वर्षा होवे तब सीघ्रहि भर्या जाता हे ॥ तेसें विषयके भोग करी शांति नहि हो ती ॥ अरु संतोष करी पूर्ण आनंदकी प्राप्ति होवेगी ॥ अरु संतोष करी इसकों ओज प्राप्त होवेगा ॥ केसा ओज प्राप्त होवेगा जो गंभीर अरु निर्मल अरु सीतल अरु हृदयगम्य अरु सबका हितकारी ऐसा ओज संतोषी पुरुषकों आय प्राप्त होता हे और जो ओज हे सो सात्विकी राजसी तामसी होते हैं अरु यह जो हे सो शुद्ध सात्विकी हे जिस पुरुषको संतोष हुआ है सो अेसें सोभता हे जेसें वसंत ऋतुका वृच्छ फूल फल पत्रों करी शोभा पावता हे अरु जिसकों तृष्णा हे सो केसा हे ॥ जेसें चरनके नीचे आयाकीट मर्दन होता हे॥ हे रामजी जिसकों तृष्णा हे तिसकों संतोष शांति कदाचित् नहि ॥ जेसें जलविषे तृणोंका पुला पाया अरु उपर तीक्ष्ण पवन चल्या तब बडे क्षोभकों प्राप्त होता हे ॥ तेसें तृष्णावान पुरुषकों क्षोभहोता हे ॥ हे रामजी जो पुरुष अर्थके निमित्त सदा इच्छा करता हे सो अग्निविषे प्रवेश कर्ता हे अर्थ यह जो सर्वदा काल तपता रहता हे ॥ जेसें गर्दभ विष्टाके स्थानविषे प्रवेश करता हे तेसें तृष्णावान विषयरूपी स्थानविषे प्रवेश करता हे सो गर्दभ हे ॥ जेसें गर्दभसाथ स्पर्श करणाजोग नहि तेसें तृष्णावान गर्दभ साथ स्पर्श करणा जोग नहि हे रामजी यह संसार मिथ्या हे इस संसारके पदार्थकों चाहते हे सोभी मूर्ख हे अरु इस जगत्का अधिष्टान हे सो इसकों तब प्राप्त होता हे जब निर्वासनिक होता हे ॥ जब निर्वासनिक हुआ तब संतोषकों प्राप्त होता हे तब अेसा होता हे जेसा तारेविषे चंद्रमा शोभा पावता हे ॥ तातें इच्छा नास करणेका उपाय करो ॥ हे रामजी जब इच्छा नष्ट होगइ अरु संतोषरूपी गंभीरता प्राप्त भइ अरु द्वैत कलना मिट गइ तब इसीकों परम पद पंडित कहते हे ॥ सो यह पदकेसें प्राप्त होता हे श्रवण करु ॥ हे रामजी जब इसकों संसारते वैराग होवे अरु संतकी संगति अरु सतशास्त्रोंके अर्थ हे इनविषे दृढ भावना होवे जब आत्माविषे दृढ भावना भइ तब जगत विरस हो जाता हे ॥ अर्थ यह जो जगत् असत भासता हे अरु रिदेविषे शांति होती हे अरु स्वाभाविक आपकों ब्रह्म जानणे लागता हे प्रच्छन्नता मिटि जाती हे ॥ जबलग आपकों प्रच्छन्न जानताथा तबलग सबदुःखका अनुभव करताथा जब संतकी संगति अरु सतशास्त्र करी जगत विरस हुआ तब परम पदकों प्राप्त होता हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वान प्रकरणे मोक्षोपदेसो नाम शताधिक षट्षष्टितमःसर्गः ॥ १६६ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह जो क्रम हे सो जब संसारतें वैराग होताहे तब संतकी संगति होतीहे ॥ बहुरी शास्त्रका श्रवण होताहे तब संपूर्न जगत् विरस होजाता हे ॥ जब ज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गत् विरस हुआ अरु आत्माविषे दृढ अभ्यास हुआ तब अपणी स्वभाव सत्ता प्रकासी आतीहे जब उसी स्वभावसत्ताविषे स्थित हुआ तब परमानंदकी प्राप्ति होतीहे जिसविषे वांणीकी गम नही ॥ हे रामजी जब यह अवस्था प्राप्त हुइ तब मन अमन होजाता हे ॥ अरु अर्थकी तृष्णा नही रहती अरु जो अपणे पास होता हे तिसकों राखणेकी इच्छा नही करता सह ज त्याग होजाता हे ॥ अरु पुत्र धन स्त्रीयादिक सब विरस होजाते हे ॥ यद्यपि इनके बीचभी रहताहे तोभी इनविषे अहं मम अभिमान नही करता ॥ जेसें पैदोइ किसी मार्गविषे आ नि उतरता हे ॥ अरु मार्ग वालें साथ कछु संबंध नही राखता ॥ तेसें किसीविषय साथ नही राखता ॥ अरु जो अनिछित इंद्रियके सुख आनि प्राप्त होतेहे तिनविषें राग दोष नही क रता ॥ जेसें किसी पथरकी सिलापर जल चल्या जाता हे तिसकों राग दोष कछु नही होता तेसें ज्ञानवानकों राग दोष किसीविषे नही होता ॥ हे रामजी उसके शरीरकी यह स्वभावि क अवस्था हो जातीहे ॥ जो एकांतकों चाहताहे अरु वन कंदराविषे रहणेकी इच्छा करताहे ॥ अरु अज्ञानके जो स्थान हे ॥ स्त्री अरु भोगके स्थान अरु राग दोषके स्थान इष्ट अनिष्ट सो दैव संयोगतें मुमोक्षकों आनि प्राप्तभी होतेहे ॥ तोभी सीघ्रहीं तिसकों त्याग देताहे ॥ हे रामजी जब बीज क्षेत्रविषे पावणा होताहे॥ तब तिसके आगे जो बूंटा कंटा होताहे ॥सो खहि साथ काटि दूर करताहे ॥ तब खेत आछा सुंदर फलताहे॥ तेसे जिस पुरुषकों मनरूपी क्षेत्रविषे अनुभवरूपी फल देखणा होवे सो इच्छारूपी कंटकों बुटेकों अनिछारूपी खहि साथ का टे अरु संतोषरूपी बीजकों बोवे तब क्षेत्रभी सुंदर फलेगाहे रामजी जब अनुभव रूपी फल इसकों प्राप्त भया तब यह पुरुष सूक्ष्मतें सूक्ष्म होजाता हे अरु स्थूलतेंभी स्थूल होजाताहे ॥ अरु सर्व आत्मा होकरि स्थित होताहे ॥ हे रामजी जब चित्त अदृश्य होताहे तब द्वैतभावना मिटि जातीहे जब द्वैतभावना मिटी तब चित्त अदृश्यकों प्राप्त होताहे ॥तिस चित्तकों जो उ पसमका सुख होताहे सो वाणी करी कहा नही जाता तिसका नाम निर्वाण पद तब प्राप्त होताहे ॥ जब इश्वरकी भक्ति करताहे ॥ अरु जब दिन रात्र चिरकाल पर्यंत भक्ति करता रहता हे तब इश्वर प्रसंन होताहे अरु इसकों निर्वाण पदकी प्राप्ति होती हे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवत् सर्व तत्ववेत्ताविषे श्रेष्ट उह कवन इश्वर हे ॥ अरु उसकी भक्ति क्या हे ॥ जिसकरी प्रसंन होताहे अरु निर्वाण पदकों प्राप्त करता हे सो तत्व कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इश्वर दूर नही अरु उसविषे भेदभी कछु नही ॥ अरु दुर्लभभी नही का हेतें जो अनुभव जोति हे अरु परम बोधस्वरूप हे ॥ बहुरी केसा हे सर्व जिसके वस हे अरु जो सर्व हे अरु जिसतें सर्व हे ॥ तिस सर्वात्माको मेरा नमस्कार हे ॥ हे रामजी जो कोउ पूजताहे ॥ जाप मंत्र तप दान होम जो कछु कोउ करता हे सो सर्व ही उसकों पूजते हे ॥ देवता दैत मानुष जो कछु स्थावर जंगम जगत् हे सो सभ उसीकों पूजते हे अरु सर्वकों फल देणें हारा उहीहे ॥ उतपति अरु प्रलयविषे जो कछु पदार्थ भासते हे सो सभ उसीकरी सिद्ध होते हें अेसा इश्वर हे जब तिस इश्वरकी प्रसंनता होतीहे तब अपणा एक दूत भेज ताहे सो केसा दूत हे जो सुभ क्रिया सभ उसीविषे पाइती हे अरु अति पवित्र हे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् इश्वर जो अद्वैत आत्मा हे अरु शुद्ध ब्रह्म हे तिसका दूत कवन हे अरु केसें आता हे सो मुझे कहो ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इश्वर जो परम देव हे तिसका दूत विवेक हे अरु रिदेरूपी गुफाविषे आनि उदे होताहे ॥ जब उदे होताहे तब परम सोभाकों प्राप्त करता हे ॥ जेसें चंद्रमाके उदे हुए आकास सोभा पावता हे तेसें उह पुरुष सोभा पावता हे ॥ हे रामजी जब विवेकरूपी दूत आता हे तब इसकों संसारतें प

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वित्र करता हे ॥ पवित्र करिकें देवके निकट लेजाता हे ॥ प्रथम वासनारूपी मेल साथ भर्याथा अरु चिंतारूपी सत्रूनें बांध्याथा ॥ जब विवेकरूपी दूत आता हे तब चित्तरूपी शत्रूकों मारता हे ॥ अरु वासनारूपी मेलकों नास करिकें देवके निकट लेजाता हे ॥ जब इसकों तिस देवका दर्सन होताहे तब परमानंदकों प्राप्त होताहे बडा सुख पावताहे ॥ हे रामजी सं सारूपी समुद्र हे तिसविषे मृत्युरूपी घुमरघेर हे ॥ अरु तृष्णारूपी लहरी तरंगहे अज्ञानरूपी जल हे अरु इंद्रियांरूपी तंदुएहे तिस समुद्रविषे यह जीव पडे हे ॥ जब विवेकरूपी नौका अकस्मात् इसकों प्राप्त होतीहे तब यह संसार समुद्रतें पार होताहे ॥ हे रामजी यह जीव प्रमादकरिकें जडताकों प्राप्त हुएहे ॥ जेसें जल सीतलता करिकें गडेकी संज्ञाकों पावताहे ॥ ते सें प्रमादकरिकें यह जीवत संज्ञाकों पावता हे अरु वासनाके साथ आवर्या गया हे जब अंतर मूख होताहे तब उस देवके सनमुख होताहे तब उह देव प्रसंन होताहे सो केसा देव हे सहस्र सीस हे जिसके अरु सहस्र जिसके पाद हे अरु सहस्र भुजा हे अरु सहस्र नेत्र हे अरु सहस्र कर्न हे अरु सर्व चेष्टाका उही करता हे देखता सुणता बोलता चलता उही हे ॥ अरु अपणे सुभाव सत्ताकरी प्रकासता हे ॥ जेसें सभ घटविषे चलणा सक्ति पवनकी हे तेसें प्रकास सक्ति देवकी हे ॥ जब तिसके सनमुख अंतर्मुख होता हे तब विवेकरूपी दूत भेज ताहे तब इसकों संतकी संगति होतीहे ॥ अरु सतसास्त्रका श्रवण होताहे तिनके अर्थविषे दृढ भावना होतीहे ॥ तब विवेकरूपी दूत इसकों अदृश्यताविषे प्राप्त करताहे अरु शून्य हो जाता हे बहुरी शून्यकोंभी त्यागकरी बोधमात्रविषें स्थित होताहे ॥ तब पूर्ण आनंद इसकों प्राप्त होताहे ॥ हे रामजी यह पुरुष आनंदसरूप हे अरु यह विस्वभी अपणा आप हे परंतु अज्ञान करिकें भिन पडीभासती हें जेसें अकासविषे दूसरा चंद्रमा भासताहे अरु मारुथलविषे जल भासताहे अरु आकासविषे तरवरे भासते हे भांति करिकें ॥ तेसें भांति करिकें ज गत भासताहे अरु भूतकें अंतर बाहिर अध उर्ध सब ब्रह्मदेवहि व्यापि रहाहे ॥ स्थावर जंगम जेता कछु जगत भासताहे सो सभ उसी आत्मतत्वके आश्रय फुरता हे तातें उही स्व रूप हे अरु सर्वकों उही धारी रहाहे जेसें सर्व भूषणों सुवर्न धारी रहाहे ॥ तेसें सर्व सबद अर्थकों उही धारी रहाहे उही इश्वर ब्रह्महे ॥ गंभीर साक्षी आत्मा ओंकार प्रणव सभ उसी के नाम हे ॥ जब अेसें इश्वरकी कृपा होतीहे तब अंतर्मुख होताहे ॥ अरु सुद्ध निर्मल होताहे ॥ हे रामजी जब इसका रिदा शुद्ध होताहे तब आत्मपदकी उर इसकी भावना होतीहे जो सर्व आत्माहे जब यह भावना होतीहे सो यही भक्ती हे ॥ तब उह इश्वर कृपा करिकें विबेकरूपी दूत भेजताहे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरेण विवेक दूत वर्नन नाम शताधिक सप्त षष्टितमःसर्गः ॥ १६७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब इसकों विवेककी दृढता हुइ ॥ तब परम पदकों प्राप्त होताहे ॥ जो चेततें रहित चेतनघन हे ॥ अरु चेतका संबंध टूटि जाता हे ॥ जब चेतका संबंध टूटा तब विश्वका क्षय हो जाताहे ॥ जब विश्व क्षय भया तब वासनाभी नही रहती ॥ हे रामजी यह जगतभी इस फुरणविषे हे ॥ जब शुद्ध चेतनविषे चैत्योनमुखत्व भया तब इसका मनोमात्र सरीर होताहे ॥ जिसकों अंतवाहक कहता हे अरु जब वासनाकी दृढता भइ तब अधिभूतक भासणे लागताहे ॥ जेसें सपनेविषे अपणा सरीर भासताहे ॥ तेसें अपणें विषे सरीर देखणे लागताहे ॥ हे रामजी इसकों उत्थानाहि अनर्थका कारण हे ज व यह चेतन होताहे ॥ तब इसकों अनर्थकी प्राप्ति होतीहे ॥ मैं मेरा इत्यादिक जगत भासि आता हे ॥ जब यह होवे नही तब जगतभी न होवे इसके होणें करी जगत भासताहे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तातें मेरा यही आसिर्वाद हे जो तुं चैतनतातें शून्य होवे अहंतारूपी चैतनतातें रहित अपणें बोधविषे स्थित रहें ॥ हे रामजी इस मननैं जगत हुआ हे सो मन अरु जगत दोनों मिथ्या हे॥ रूप अवलोक नमस्कार तीनोंका नाम जगत हे॥ सो मृग तृष्णाके जलवत मिथ्या शून्य हे ॥ जब इनका अभाव हुआ तब शून्यभी नही रहता केवल बोध मात्र चेतन होताहे॥हे रामजी दृश्य दर्सन द्रष्टा यह तीनों भावनामात्र हे ॥ जब यह होते हे तब जगत भासताहे ॥ अरु जब अहंताका अभाव हुआ तब आत्मपद शेष रहता हे ॥ जेसें स्वर्नविषे भूषण होतेहे तेसें आत्माविषे जगत हे ॥ दूसरी वस्तु कछु बनी नही वासना करिकें दृश्य भासती हे ॥ सो वासना मननें फुरी हे अरु मन अज्ञान करिकें हुआ हे॥ जब मन अमन पदकों प्राप्त होताहे तब दृश्य सब एकहिं रूप होजाती हे ॥ जबलग वासना उठती हे तबलग मनविषे सांति नही होती ॥ जेसें कोउ पुरुष भवरी लेताहे तब वल चडते जाते हे ॥ अरु जब ठहरताहे तब उह वल उतरी जाताहे ॥ तेसें जबलग चित्तवासना करिकें भमता हे ॥ तब लग जन्मरूपी वल चढते जाते हें ॥ अरु जब चित्त ठहरता हे तब जन्मका अभाव हो जाता हे ॥ हे रामजी जबलग चित्तका दृश्य साथ संबध हे तबलग कर्मतें नही छुटता ॥ जब चित्तका द्रश्यतें संबंध टूटे तब शुद्ध अद्वैत पदकों प्राप्त होता हे हे रामजी जब शुद्धचिन्मात्रविषे उत्थान होता हे तब तिसका नाम चैत्यौनमुखत्व होता हे उहि अहंता द्रश्यको उर फुरती जाती हे ॥ तब प्रमाद हो जाता हे ॥ अरु जडता होती हे॥जेसें जल गडा हो जाता हे तेसें चित्शक्ति प्रमाद करिके जड हो जाती हे जब दृढ वासनाकों ग्रहण करती हे तब अंतवाहकतें अधिभूतक शरीर अपणा दृष्टी आता हे ॥ बहुरी प्रथ्वी आदिक भूत भासणे लागते हे ॥ ज्यों ज्यों चित्तशक्ती बहीर्मुख फिरती जाती हे त्यों त्यों संसार होता जाता हे ॥ जब फुरणेतें रहित हो करी अपणे स्वरूपकी उर आती हे ॥ तब अपणा आपहीं भासता हे अरु द्वैत मिटि जाता हे ॥ तब परमानंद अद्वैत पद भासता हे ॥ जब पूरन बोध हुआ तब द्वैत अरु एक संज्ञाभी जाती रहती हे ॥ केवल आत्म मात्र शुद्ध चैतन्य रहता हे ॥ तब इश्वर साथ एकता होती हे जगतकी भास चलती रहती हे ॥ जब तीस पदकी प्राप्ति होती हे तब दृश्यका अभाव हो जाता हे ॥ काहेतें जो जगत भावना मात्र हे ॥ जेसें भविश्य कालका दृच्छ अकाशविषे होवे तेसें यह जगत् इसका अत्यंत अभाव हे ॥ कछू बन्या नही भांति करिकें भासता हे ॥ हे रामजी मेरे वचनोंका अनुभव तब होवेगा जब स्वरूपका ज्ञान होवेगा तब यह वचन रिदेविषे आनि फुरेगे ॥ जेसें कथावालेके रिदेविषे कथाके अर्थ आनि फुरते हे तेसें यह वचन आनि फुरेंगे ॥ हे रामजी ॥ जबलग यह मन फुरताहे तबलग जगतका अभाव नहि होता जब मन उपसम होवे तब जगतका अभाव होताहे ॥ जेसें सुपनेंकों सुपना जानता हे तब बहुरी सुपनेंके पदार्थकी इछा नहि करता॥ जबलग सत्य जानता हे तबलग इछा करताहे ॥ हे रामजी यह जीव वासनाके आवरे हुएहें ॥ जब वासना क्षय होवे तब इसीका नाम ज्ञान हे ॥ अज्ञानरूपी भूत इनकों लगाहे ॥ तिसकरी उन्मत्त होणेकरी जगत भासताहे अरु जगतके भासणेकरी नाना प्रकारकी वासना दृढ होगईहे ॥ तिसकरी दुःख पावताहे ॥ जब यह चित्त उलटीकरी अंर्तमुख होवे ॥ अरु दृढभावना आत्माविषेकरे ॥ जब ज्ञानरूपी मंत्र इसकों प्राप्त होताहे ॥ तब अज्ञानरूपी भूत चलता रहता हे ॥ हे रामजी अनुभवरूपी कल्प दृच्छ हे जेसी भावना इसविषे होती हे तेसा भान होता हे ॥ हे रामजी प्रथम इसका शरीर अंतवाहक था अरु अपणा स्वरूप भूला न था आपकों आत्मा ही जानताथा ॥ अरु जगत अपणां संकल्प मात्र भासताथा तिसका नाम अंतवाहक हे ॥ जब उस संकल्पविषे दृढ भावना हुइ तब अधि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूत भासने लगा ॥ जब तिसविषे दृढ भावना हुइ तब देह इंद्रियां सब अपणेविषे भासणे लागे ॥ जब अपणेविषे भासे तब इनके सुख दुःखकों जानणे लगा जब जगतके सुख दुःख इसकों भासे तब सर्व आपदा इसकों आय प्राप्त हुइ ॥ वास्तवतें न कोउ सुख दुःख हे न जगत हे केवल भावना मात्र हे ॥ जेसी चित्तकी भावना होती हे तेसेंहि आगें भासता हे हे रामजी जब यह भावना उलटी करी अंतर्मुख आत्माकी उर परिणाम होवे तब एकींह बोधका भान होवे जब एक बोधका भान इसकों हुआ तब द्वैत सब मिटि जाता हे हे राम जी आत्माविषे अंत वाहकभी नही यह जो संभु ब्रह्मा हे सोभी बोधस्वरूप हे ॥ जब बोधतें इतर अंतवाहक कछू होता तब भासता ॥ सो बोधतें इतर कछू पाइता नही अंतवाहकभी तिसी करी हे ॥ अंतवाहक कहिये जो शुद्ध चिन्मात्रविषे चैत्योन्मुख हुआहे अरु चित्त सक्ति फुरी हे॥ तब तिसकों पंच तनमात्राका संबंध हुआ यही जड चैतन ग्रंथि हे चैतन हे चित्त शक्ति अरु जड हे पंचतन्मात्रा इनका एकठा होणा इसका नाम अंतवाहक शरीर हे जब यहभी आत्माविषे कछु हुआ होता तब यह वचन न होते ॥ तातें चिन्मात्र हे बन्या कछु नहि ॥ काहेतें जो आत्मा अद्वैत हे हे रामजी दूसरा कछु बन्या नहि भ्रम करिकें द्वैत भासताहे ॥ जेसें कोइ पुरुष शयन करताहे अरु सुपन भ्रम करिकें तिसकों द्वैत भासताहे ॥ तेसें यह जाग्रतभी भांति करिकें भासताहे कछुहे नहि॥ हे रामजी जड हे नहिं तब इछा किसकी करता हे ॥ एता सुख इंद्रियांके इष्ट भोगतें नहि होता जेता कछु सुख इनके त्यागणेतें होताहे॥ हे रामजी एक यज्ञ हे जिसके कियेतें पुरुष परमपदकों प्राप्त होताहे ॥ सो यज्ञ तब होताहे जब एक थंभा गाडता हे ॥ तिसके नीचें बल करता हे जब यज्ञ करी रहता हे तब सर्व त्याग करता हे तब इसकों फलकी प्राप्ति होती हे इस क्रम कीये विना यज्ञ सफल नहि होता ॥ सो थंभा क्या हे अरु बल क्या हे अरु यज्ञ क्या हे अरु त्याग क्या हे अरु फल क्या हे सो श्रवण करु ॥ हे रामजी ध्यानरूपी थंभा करे जो आत्मपदका सदा अभ्यास होवे ॥ अरु तृष्णारूपी तिसके आगे बलकरे अरु ज्ञानरूपी यज्ञ करे जो आत्माके विशेषण वेदशास्त्रविषे कहा हे ॥ नित वेद शुद्ध हे बोधरूप हे अद्वैत हे निर्विकल्प हे ॥ देह इंद्रियां प्राण आदिकतें रहित हे ॥ अेसें जानणेका नाम ज्ञान हे सो यहि यज्ञ हे ॥ ध्यानरूपी थंभे करिके अरु तृष्णारूपी बल करिकें अरु मनरूपी दृश्यकों जातीकरि यह जज्ञ पूरन होता हे ॥ जब अेसा जज्ञ हुआ तब तिसके पाछे दक्षणाभी करिये तब यज्ञ फल होवे ॥ जो सर्व देणा यह दक्षणा हे सो क्या सर्वश हे ॥ अहंकार त्याग करणा सर्वश त्याग हे ॥ जब सर्वस त्याग किया तब जज्ञ सफल होता हे ॥ इसका नाम विश्वजित जज्ञ हे ॥ जब इस प्रकार जज्ञ हुआ तब इस का फलभी होता हे सो फल क्या हे यद्यपि अंगारकी वर्षा होवे अरु प्रलेकालका पवन चले अरु पृथ्वी आदिक तत्व नाश होवे॥ तब एसे क्षोभविषेभी चलायमान नहि होता यह फल इसकों प्राप्त होता हे ॥ जो कदाचित् स्वरूपतें नही गिरता यह शत्रु नाश वज्र ध्यान हे ॥ हे रामजी अहंताका त्याग करणा यह सर्वतें श्रेष्ट त्याग हे ॥ जो कार्य अहंताके त्याग कियेतें होता हे सो अवर उपाय करी नही होता ॥ तप दान जज्ञ दमन उपदेश इन उपाधि हुतेंभी अहंताका त्याग करणा बडा साधन हे ॥ सर्व साधन इसके अंतर्भूत होते हे ॥ हे रामजी जब तूं अहंताका त्याग करेगा तब अंतर बाहिर तुझकों ब्रह्म सत्ताही भासेगी द्वैत भ्रम संपूर्ण मिटि जावेगा हे रामजी मनके सर्व अर्थरूपी तृणोंकों ज्ञानरूपी अग्नि लगाइयें ॥ अरु वैराग रूपी वायु करी जगाइयें तब इन तृणोंको भस्म करी डारे॥ तब तूं परम शांतिकों प्राप्त होवेगा ॥ मनके जलावणे करी परम संपदा प्राप्त होतीहे ॥इसतें इतर सब आपदा हे मन उपसमवि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

षे कल्यान हे ॥ यह जो अंतर बाहिर पदार्थ भासते हे नानाप्रकारके ॥ सो मनके मोहते उत्पत्ति हुएहे जब मन उपसमकों प्राप्त होवे तब नानाप्रकार जो भूतकी संज्ञा हे मनुष पसु पंछी देवता पृथ्वी आदिक सो सब आकाशरूप हो जाते हे ॥ हे रामजी यह सर्व ब्रह्म हे ज्ञानीकों एक सत्ता भासता हे ॥ दूसरा कछू अवर बन्या नहि भ्रम करीकें जगत भासता हे ॥ अरु तिसविषे नानाप्रकारकी वासना हुइ हे ॥ अपणी अपणी वासनाके अनुसार जगत्कों देखते हे ॥ तातें तुम जागहु अरु वासनाके पिंजरेकों काटि करी आत्मपदकों प्राप्त होहु हे रामजी अज्ञान करिकें जो आत्मपदतें सोये पडे हे अरु वासनाके पिंजरेविषे पडे हे तीन अज्ञानीकी न्यांइ तुम नहि होणा ॥ अज्ञान करिकें जीवका नाश होता हे जो कछु जगत् देखता हे सो भ्रम मात्र हे ॥ अरु इनका बोलणाभी अेसें जाण जेसें वांसुरी विषे पवनका सवद होता हे ॥ तेसें यह प्राण वायु करि बोलते दृष्ट आवते जाण ॥ तातें जगत् भ्रम मात्र हे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वानप्रकरणे सर्व सत्ता उपदेशो नाम शताधिकअष्टषष्टितमः सर्गः ॥ १६८ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

वसिष्ठोवाच हे रामजी जो जीव हे देसदेस विषे मानुष देवता नाग किंनर पसु मंछी॥अरु पर्वत कंदरा स्थावर जंगम जेता कछु जगत् हे सो सप्त प्रकारकी सृष्टि हे अरु सप्त प्रकारके जीव हे तिनकों भिन्नभिन्न श्रवण कर ॥ एक सुपन जागृत हे दूसरे संकल्प जागृत हे तीसरे केवल जागृत हे अरु चउथे चिर जागृत हे ॥ पंचम दृढ जागृत हे षष्टम जागृत सुपन हे सप्तमं क्षीण जागृत हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् तुम जो यह जीव सप्त प्रकारके सृष्टि कही हें सो बोधकें निमित्त मुजकों खोलीकरी कहो ॥ यह एसे हे जेसें नदीयांके जलका समुद्र विषे भेद होवे अरु इनोंका पुछणाभी अेसें हे जेसें एक जलतें फेन बुदबुदे तरंग वायु करी होतें हें सो विस्तार करीके कहो ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी एक तो यह हे जो किसी जीवकों किसी कल्प अपणी जागृतविषे सुषुप्ति हुइ ॥ तिसविषे जो सुपना हुआ तिस सुपनेविषे उसकों हमारी जागृतका जगत् भासी आया ॥ शब्द अर्थ संयुक्त तिसकों सत जाणी करी यहण करनें लागा ॥ उसकें लेखे हम सुपन नर हे परंतु उसके निश्चेविषे नही उह अपणी जागृत मानता हे ॥ हमारा अरु उसका कल्प एक होगया हे इसीतें उहभी जागृत जानता हे अरु पूरवकल्पविषेभी उसका सरीर चेतन फुरता हे ॥ परंतु सोया पडा हे ॥ रामोवाच हे भगवन् जब उह पुरुष अपणे कल्पविषे जाग्या तब यह उसकों क्या भासे ॥ अरु जब उन जागे अरु उहां कल्पका प्रलय होजावे तब उसके शरीरकी क्या अवस्था होवे ॥ अरु जब इहां ज्ञानकी प्राप्त होवे तब उस सरीरकी क्या अवस्था होवे सो क्रम करिकें कहो ? ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी जब उह पुरुष अपणे कल्पमिषे जागे तब यह जागृत उसकों सुपना भासें ॥ जब उहां न जागे अरु उस कल्पकी प्रलय होवे ॥ तब उह जीव उहां चेष्टा करे ॥ अरु जब ज्ञानकी प्राप्ति होवे तब उस सरीर अरु इस सरीरकी वासना एकठी होकरी निर्वाणकों प्राप्त होवे ॥ अरु जब ज्ञान न प्राप्त होवे तब उही जीवकों इस सरीरकों त्यागकरी अवर जगत् भ्रम भासि आवे आपकों पुर्वहि वत जाणे भावे न जाणें परंतु जगत् भ्रम नही मिटता बिनाज्ञान ॥ हे रामजी यह अरु उह दोनों तुल्य हे ब्रह्म सत्ता सर्व ठोर समान प्रकासती हे ॥ हे रामजी जेसें गुलरविषे मछर होता हे तेसें यह जीवभी भ्रमकरिके फुरते हें ॥ सो यह जागृत कहि हे जो सुपनविषे जागृत हे सुपन जागृत इसका नाम हे अरु यह पुरुष वेठा हे अरु चित्तकी वृत्ति ठहरी गइ हे ॥ १ ॥ अरु निद्रा नही आइ तिसविषे मनोराज हुआ तिस मनोराजविषे जगत् हुआ तिसविषे दृढ वासना होगइ अरु पुर्वकी वासना विस्मन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भइ अरु यह सतभासी ॥ अरु मनोराजका शरीर रचा उहि अधिभूतकता दृढ होगइ ॥ तिसका नाम संकल्प जाग्रत हे ॥ २ ॥ आदि परमात्म तत्वतें फुऱ्या अरु निश्चयात्मपदविषे रहा अरु जगत् जो भास्या तिसको संकल्प मात्र जाण्या ॥ तिसका नाम केवल जाग्रत हे ॥ ३ ॥ आदि परमात्म तत्वतें फुरणा हुआ ॥ तिसविषे सृष्टि हुइ ॥ तिसको सत जाणी करी ग्रहण किया अरु स्वरूपका प्रमाद हुआ अरु आगें जन्मांतरकों प्राप्त हुआ तिसका नाम चिर जाग्रत हे ॥ ४ ॥ जब इसविषे दृढ घन भूत वासना हुइ अरु पापकर्म करनें लागा ॥ तिसके वसतें स्थावर जोनीकों पाया तब तिसका नाम घन जाग्रत हे तिसीका नाम सुषुप्त जाग्रत हे ॥ ५ अरु जब इसविषे संतकी संगति अरु सतशास्त्रोंके विचार करी बोधकों प्राप्त हुआ ॥ तब यह जाग्रत उसकों सुपन हो जाती हे तिसका नाम सुपन जाग्रत हे ॥ ६ ॥ अरु जब बोधविषे दृढ स्थिति भइ तब इसकों तुरिया पद कहते हैं इसका नाम क्षीण जाग्रत हे ॥ ७ ॥ जब इस पदकों प्राप्त हुआ तब परमानंदकी प्राप्ति होती हे ॥ हे रामजी इह सप्त प्रकारके जीव अरु सृष्टि सबही मैं तुझकों कही हे तिसकों विचार करिकें देख जो तेरा भ्रम निवृत्त हो जावे ॥ अरु यहभी क्या कहणा हे जो यह जीव हे यह सृष्टि हे ॥ सर्व ब्रह्म सत्ता हे दुसरा कछु हुआ नहि मनके फुरणे करि दृश्य भासती हे मनकों स्थिर करी देख जो सब शून्य हो जावेगी अरु शून्यभी न रहेगा शून्यका कहणाभी न रहेगा इस गणतीकोंभी स्मरण करु॥ इतिश्री यो० नि० सप्तप्रकार जीव सृष्टि वर्णनं नाम शताधिकनवषष्टितमः सर्गः॥१६९॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् तुम जो केवल जाग्रतकी उत्पत्ति अकारण अकर्मक बोध मात्रविषे कहीसो असंभव हे जेसें आकाशविषे वृक्ष नही संभवता ॥ तेसें आत्माविषे सृष्टि नही संभवती काहे तें जो आत्मा निराकार हे अरु निष्क्रिय हे ॥ न सम वाय कारन हे न निमित्त कारन हे ॥ जेसें मृतिका घट आदिकका कारन होता हे॥ तेसें आत्मा सृष्टिका समवाय कारण भी नही ॥ काहेतें जो अद्वैत हे ॥ अरु जेसें कुलाल घटादिकका निमित्त कारन होता हे ॥ तेसें आत्मा सृष्ठिका निमित्त कारणभी नहि काहेतें जो अक्रिय हे॥ तिस अकारणक अकर्मकविषे सृष्टि केसें संभवे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी तुं धन्य हे अब तुं जाग्या हे ॥ आत्माविषे सृष्ठिका अत्यंत अभाव हे ॥ काहेतें जो निर्विकार हे निष्क्र हे ॥ न अंतर हे न वाहेर हे ॥ न उर्धहे न अधहे केवल बोध मात्रहे ॥ तिसविषे न कोउ आरंभहे न परिणाम हे ॥ केवल बोध मात्र अपणे आपविषे स्थितहे॥ जेसें सूर्यकी किरणविषे जल कल्पित हे ॥तेसे आत्माविषे जगत् मिथ्या हे ॥ हे महा बुद्धिवान् आत्मा अकारण रूप जगत् हे तिसते कार्यरूप जगत केसें होवे॥तिसतें केवल जगत् कछु उत्पत्ति नहि भया ॥ तिसके अभावतें सबका अभाव हे॥न कछू उपजा हे न भास होता हे ॥ उपदेस अरु तिसका अर्थ आरोपित हे अरु कछु हेही नही ॥ अरु आरोपित सब्दभी जिज्ञासीके जतावणे निमित्त कहा हे ॥ हे कछु नही ॥ आत्मा सदा अद्वैतरूप हे ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् जब आत्माविषे सृष्ठिही नही तो पिंडाकार केसें भासते हे ॥ उनकों किसनें रचा हे ॥ अरु मन बुद्धि इंद्रियांका भान क्या होता हे ॥ चैतन कों किसनें मोहित किया हे ॥ भूतकों स्नेह रागके बंधन करी अरु आत्माविषे आवरन केसें होता हे सो समुझा ए करी कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी न कोउ पिंड हे न किसी नें इनकों किया हे ॥ न कोउ भूत हे न किसी इनकों मोहित किया हे ॥ अरु न किसीकों आवरन किया हे भ्रांति करिकें आवरण भासता हे ॥ जब आत्माकों आवरण होता तब किसी प्रकार नष्ट होता परंतु आवरणही नही तब नष्ट केसें होवे ॥ हे रामजी जिसकों आवरण होता हे तिसका स्वरूप एक अवस्थाकों त्याग करी दुसरी अवस्थाकों गृहन करता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे सो आत्मातो सदा ज्ञानस्वरूप हे अन्य अवस्थाकों कदाचित् नही प्राप्त भया सदा ज्योंका त्यों हे ॥ तिसविषे मन बुद्धि अदिक कछू बने नही तव मोह कहां अरु आवरण कहां स
दा एक रस आत्म तत्व हे ॥ ज्ञानीकों अेसें भासता हे अरु अज्ञानीकों नाना प्रकारका जगत भासता हे ॥ आत्मज्ञान कालविषेभी एक रस हे अज्ञान कालविषेभी एक रस हे तिसविषे
दो दृष्टि होती यां हे ज्ञान दृष्टि करी सर्व आत्मा हे अज्ञान दृष्टि करी नानाप्रकारका जगत भासता हे ॥ हे रामजी जेसें एक समुद्रविषे तरंग बुदबुदे उठते हे अरु लीन होते हे सो उनका
उत्पत्ति अरु लीन होणाभी जलविषे हे जलतें इतर कछू नहि ॥ तेसें जेते कछु विचार अरु इच्छा भासते हे ॥ सो सब आत्माविषे होते हे अवर दुसरी वस्तु कछू नहि ॥ विकार अविकार
सब परमात्म तत्व हे ॥ अरु समुद्रविषे लहरी बुदबुदे परिणामकरी होतेहे आत्मा सदा ज्योंकात्यों हे नाना प्रकारके आकार भासतेहे सोभी उही रूपहे ॥ जेसें स्वर्नविषे नाना प्रकारके
भूषण होतेहे सो सब स्वर्नही हे दूसरी वस्तु कछू बनी नहि ॥ भ्रांति करिकें नाना प्रकारकी संज्ञा होतीहे जेसें कोउ पुरुष जाग्रत बेठा होवे अरु निंद आएतें सुपन सृष्टि भास आवे सो
जाग्रतके अज्ञानकरी सुपन सृष्टि भासीहे ॥ जब निद्रा निवृतभइ तब जाग्रत भासतीहे ॥ सो जाग्रतभी परमात्म तत्वके अज्ञानकरी भासतीहे ॥ जब तिस पदविषे जागेगा तब जाग्रत भ
म निवर्त हो जावेगा हे रामजी यह संसार अपने फुरणे करिकें हुआहे ॥ जब फुरना दृढ भया तब दुःख पावणे लागा ॥ जेसें बालक अपणे पछावेविषे वैताल कल्पिकरी आपहि दुःख
पावताहे तेसें यह जीव अपने फुरणेकरी आपहि दुःख पावताहे ॥ जब आत्मबोध होताहे तब संसार भ्रम निवृत्त होजाताहे ॥ हे रामजी यह संसार जो रस संयुक्त भासताहे सो भावना
मात्र हे जब यही भावना उलटीकरी आत्माकी उर आवे तब जगत भ्रम मिटि जावेगा अरु देह इंद्रियादिक जो आत्माके अज्ञान करिकें फुरेहे ॥ अरु तिनविषे अहंकार हुआहे सो आ
त्मभावना करी निवर्त होजावेगा ॥ जेसें वर्षाकालविषे घट्ट मेघ होतेहे जब सरतकाल आया तब मेघ नष्ट होजातेहे ॥ तेसें जब बोधरूपी सरतकाल आताहे तब अनात्मविषे आत्म अभि
मानरूपी मेघ नष्ट हो जाताहे ॥ अरु परम स्वछता प्रगट होतीहे ॥ हे रामजी जेता कछु जगत पिंडरूप हो करी भासताहे सो जब आत्माका साक्षात्कार होवेगा तब पिंड बुद्धि जाती रहे
गी ॥ जगत सब आकासरूप हो जावेगा ॥ जेसें सरत्कालविषे मेघकी घनता जाती रहतीहे ॥ अरु आकासरूप हो जाताहे ॥ हे रामजी यह भ्रांतिकी कठिनता तबलग भासतीहे जबलग
स्वरूपतें सुषुप्तिवत हे ॥ जब जागेगा तबजगत सब आकासरूप हो जावेगा ॥ जेसें सुपनेतें जागे हुए सुपन जगत आकासरूप हो जाताहे ॥ हे रामजी जेते कछु विकारअरु क्षोभ अरु
नानात्व भासते हे सो प्रमाद करि भासते हे जब आत्मबोध होताहे ॥ तब सब क्षोभ विकार मिटि जातेहे सर्व प्रपंच एकताकों प्राप्त होताहे द्वैतभाव मिटि जाताहे ॥ जेसें प्रज्वलित अग्नि
विषे घृत अथवा इंधन अरु मिष्टांन जो कछू पाइये सो एकरूप हो जाताहे ॥ तेसें जब बोधकी प्राप्ति होतीहे तब सब जगत एकरूप हो जाताहे ॥ जेसें नाना प्रकारके भूषण अग्निवि
षे डारीयें तब एक स्वर्नही हो जाताहे ॥ अरु भूषणकी संज्ञा नही रहती तेसें मनकों जब आत्मबोधविषे स्थित कीया तब जगत संज्ञा नहि रहती केवल परमात्म तत्व हो जाताहे ॥ हे रा
मजी इंद्रियां जगत तबलग भासताहे जबलग सरुपतें सोया पडा हे ॥ जब जागेगा तब संसारकी सत्यता मिटि जावेगी ॥ अरु इछाभी कोउ न रहेगी ॥ जेसें कीसी पुरुषकों सुपना आ
वताहे अरु तिस सुपनेतें जागता हे तब सुपनेकें स्वर्नकी इछा नही करता जो मुक्तकों प्राप्त होवे ॥ काहेतें जो उसकी सत्यता नही भासती तो इछा केसें करे ॥ तेसें जबलग स्वरूपतें सो

910

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

या पडा हे तवलग संसारके पदार्थकों मिथ्या नही जानता तव इछा करताहे ॥ अरु जव जागेगा तव सव पदार्थ विरस हो जावेंगे ॥ जव ज्ञान करीकें जगतकों मिथ्या सुपनवत जाणे गा तव इछाभी न करेगा ॥ हे रामजी जीवन्मुक्तीकी चेष्टा सव दृष्टि आवती हे ॥ परंतु उसके रिदेविषे जगत्की सत्यता नही ॥ काहेतें जो आत्मानुभव उसकों हुआ हे जेसें सूर्यकी किर्णांविषे जल भासता हे ॥ जिसने सूर्यकी किरणां जानि तिसकों जल नही भासता किरणां भासती हे ॥ अरु जिसनें किरणां नही जाणी तिसकों जल भासता हे ॥ अरु भासता दो नोंकों तुल्य हे ॥ परंतु ज्ञानवानके निश्चयविषे जगत जलवत नही ॥ अरु अज्ञानीकों जगत जलवत दृढ भासता हे ॥ हे रामजी मनरूपी दीपक प्रज्वलित हे ॥ तिसविषे ज्ञानरूपी जल पाइए तव निवारण हो जावे ॥ जव मन निर्वाण हुआ तव तिस पदकों प्राप्त होवेगा ॥ जहांजगत्का अभाव हे अरु अहंकारकाभी अभाव हे न शून्य हे न अशून्य हे ॥ केवल अकेवल उदे अस्त दोनों नही ॥ हे रामजी जो पुरुष अेसें पदकों प्राप्त हुआ हे ॥ सो कृतकृत्य होता हे अरु राग दोषतें रहित परम शांत पदकों प्राप्त होता हे ॥ अहंकार निर्वाण हो जाता हे केवल निर्वाच पदकों प्राप्त होता हे ॥ जहांउत्थान कोउ नही ॥ हे रामजी आत्माविषे जगत पदार्थ कोउ नही परंतु मनके संकल्प करी भासते हैं ॥ जेसें थंभेविषे चितेरा कल्पता हे जो एती पुतलीयां इस थंभेविषे हे सो उसके निश्चयविषे हे ॥ थंभेविषे पुतलीयांका अभाव हे तेसें मनके निश्चयविषे जगत हे आत्मा विषे वन्या कछू नही ॥ जिस पुरुषका मन सूक्ष्म हो गया हे ॥ तिसकों जगत सुपनवत भासता हे जव सुपनवत जान्या तव इच्छा कीसकी करे अरु त्याग किसका करे ॥ हे रामजी जगत तवलग भासता हे जवलग स्वरूपका साक्षात कार नही भया ॥ तव आत्मानुभव होवेगा जव जगत रस संयुक्त कदाचित नही भासेगा ॥ जेसें धूप अरु छाया एकठी नही होती तेसें ज्ञान अरु जगत एकठे नही होते ॥ आत्मज्ञा न हूए जगतका अभाव होजाता हे ॥ जेसें पूर्वकाल वर्तमानकालविषे नही होता हे ॥ तेसें आत्माविषे जगत नहि होता ॥ हे रामजी यह जगत भ्रम करीके भासता हे ॥ विचार कियेतें इसका अभाव हो जाता हे ॥ अरु द्रष्टा दर्शन द्रश्य जो त्रिपुटी भासती हे सो मिथ्या हे ॥ जेसें निद्रा दोष करीकें सुपनेंविषे तीनों भासते हे अरु जागेतें अभाव हो जाते हे ॥ तेसें अज्ञान करीकें यह भासते हे ॥ अरु ज्ञान करीकें त्रिपुटीका अभाव होजाता हे ॥ हे रामजी जेसें मनोराज करीकें मनविषे जगत स्थित होता हे ॥ तेसें यह पर्वत नदीयां देस काल जगतभी जाण ॥ तातें इस भ्रमका त्याग करी अपणे स्वभावविषे स्थित होहु ॥ यह जगत भ्रम करीकें उदे हुआ हे ॥ विचार कियेतें नष्ट होजावेगा अरु परम शांति तुझकों प्राप्त होवे गी ॥ हे रामजी जिसका मन उपसम भावकों प्राप्त हुआ हे सो पुरुष मौनी हे ॥ उह निरोध पदकों प्राप्त हुआ हे ॥ उह संसार समुद्रकों तर्या हे ॥ अरु कर्मोंकें अंतकों प्राप्त हुआ हे ॥ तिसकों संपूर्ण जगत पहाड नदियां संयुक्त लीन हो जाता हे ॥ अज्ञानके नष्ट हुए विद्यमान जगतभी उह शांत अंतःकरण हे परम शांतिरूपी अमृत करी तृप्त हे ॥ उह ज्ञानवान नि रावरण हो करी स्थित होता हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे सर्व शांतिउपदेशो नाम शताधिक सप्ततितमः सर्गः ॥ १७० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवान् जीस क्रम करी वोध आत्मा जगत्रूप हो भासता हे ॥ सो क्रम भेदके निवृत्ति अर्थ वहुरी मुझकों कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जेता कछू जग त दृष्ट आताहे सो चित्तविषे निश्चय होताहे ॥ ज्ञानवानकोंभी चित्त करि भासताहे ॥ अरु अज्ञानीकोंभी चित्त करि भासताहे ॥ परंतु एता भेद हे जो अज्ञानी जगतकों देखता हे तव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सत मानता हे ॥ अरु ज्ञानवान शास्त्र जुक्ति करि देखता हे ॥ पूर्व अपर अर्थके विचार करी भ्रांति मात्र जाणताहे ॥ अरु अविद्या करिकें भासताहे सो अविद्याभी कछु वस्तु नही ॥ जेसें सूर्यकी किरणांविषे जल भासताहे सो कछु हे नही तेसें अविद्या कछु वस्तु नही ॥ जेता कछु स्थावर जंगम जगत भासताहे सो कल्पके अंतविषे नष्ट हो जाताहे ॥ जेसें समुद्रतें एक बुं द निकासीयें तव नष्ट हो जातीहे काहेतें जो विभागरूप हे तेसें माया अविद्या सत असत आदिक सर्व संबंधका अभाव हो जाताहे ॥ काहेतें जो सव शब्द जगतविषे हे॥ जब जगत लीन भया तव शब्द कहां रहे ॥ अरु वास्तवतें न कछु उपजा हे न लीन होताहे एकहि चिदाकास हे॥अरु जब तूं कहे देह उपजी तो हे सो देह अरु तत्व सुपनवत तूं जाण॥ अरु जो तूं कहे जगत प्रलयविषे लीन होताहे तो कछु हे क्यों ॥ तव नास उही होताहे जो असत्य होताहे ॥ अरु जो तूं कहे असत्य हे तो बहुरी क्यों उपजता हे ॥ तव उपजी वस्तुभी सत नही हो ती ॥ अरु जो तूं कहे महा प्रलयविषे चिदाकासही रहता हे सोइ जगतरूप हो भासताहे ॥ तो जगत कछु इतर वस्तु नही भया बोधमात्रही इस प्रकार हो भासताहे जेसें बीज अरु वृछविषे कछू भेद नहि तेसें जिसतें जगत भासता हे सो उही रूप हे अवर कछू उपजा नही जो उपज्या नही तो विकार अरु भेद केसें होवे ॥ तातें बोध मात्रहि आपणे आपविषे स्थित हे ॥ कारण कारजतें रहित परम शांतरूप आत्मसत्ता स्थित हे ॥ उही जगतरूप हो करी भासता हे ॥ देश काल पदार्थ सब महा प्रलयरूप हे ॥ जब महा प्रलय होता हे तव ब्रह्म देव पर्यंत सव पदार्थ नष्ट हो जाते हे ॥ आकाश वायु अग्नि जल पृथ्वीका नामभी नही रहता अर्थभी नही रहता ॥ केवल बोध मात्र बोधतेंभी रहित शेष रहताहे ॥ परम शांतरूप हे तिस विषे वा णी अरु मनकी गम नही केवल अचेत चिन्मात्र सत्ता रहती हे तिसकों तत्त्ववेत्ते अनुभव कहते हैं अवर कोउ जाणी नही सकता ॥ हे रामजी जो पुरुष अविद्यारूपी निद्रातें जाग्या हे सो निराभास होताहे ॥ अर्थ यह जो चित्ततें चैतका संबंध तुटि जाताहे ॥ अरु परम प्रकासरूप आत्मपद तिसकों प्राप्त होताहे अरु सुभावविषे स्थित होताहे परभाव जो प्रकृतिहे तिस का अभाव होजाताहे ॥ हे रामजी जेता कछु जगत् परभाव करीकें भिनभिन भासताथा सो सव एकरूप होजाताहे ॥ जेसें सुपनें विषे पदार्थ भिनभिन भासतेहे ॥ अरु जागेतें सब एकरूप होजातेहे अपणा आपही भासताहे ॥ तेसें जव इसकों आत्माका अनुभव हूआ तब जगत् अपणा आपही भासताहे ॥ हे रामजी एकरूप तब होभासताहे जव अवर कछु नही वन्या ॥ जेसें स्वर्नके भूषण अग्निविषे डारीए तव अनेक भूषणका एकपिंड होजाताहे ॥ अरु एकहि आकार भासताहे ॥ तेसें जव बोधका अनुभव हूआ तब सर्व एकरूप होजा ताहे ॥ हे रामजी भूषणोंके होतेभी स्वर्नही था इसीतें एकरूप होगया ॥ तेसें जब बोधका अनुभव हूआ तव सर्व एकरूप हो भासताहे ॥ तातें जगतके होतेभी जगत आत्मरूप हे ॥ ज गत हे नही अरु हूएकी न्यांई भासताहे ॥ अरु भिन्न भिन्न दृष्टि आताहे ॥ जेसें सोमजलविषे तरंगहे नही अरु भासतेहे ॥ तोभी जलरूप हे असम्यक दृष्टि करीकेंभिन्न भिन्न भासतेहे ॥ हे रामजी ज्ञानीकों जीवन्मुक्ति अरु विदेहमुक्ति तुल्यहे ॥ जेसें भूषणके होतेभी स्वर्न हे ॥ अरु भुषणके अभाव हूएभी स्वर्न हे ॥ तेसें ज्ञानवानकों देहके होतेभी ब्रह्म हे॥ अरु देहके अभा व हूएभी ब्रह्म हे ॥ अरु जो अज्ञानी हे तिसकों नाना प्रकारका जगत फुरताहे ॥ सो अज्ञानी कवन हे जिसकों मनका संबंध हे ॥ हे रामजी यह जगत भिन्न भिन्न फूरता हे ॥ जेसें काष्टके थंभेविषे चितेरा पूतलीयां कल्पता हे सो अवरकों नही भासती उसीकें मनविषे होतीयां हे ॥ तेसें भिन्नभिन्न पदार्थरूपी पूतलीयां अज्ञानीके मनविषे फूरतीयाहे ॥ अरु ज्ञान

911

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वानकों नही भासतीयां हे ॥ अरु जब काष्ठका आकार होता हे तब चितेरा पूतलीयां कल्पता हे अरु यह आश्चर्य देख जो मनरूपी अेसा चितेरा हे आकाशविषे पदार्थरूपी पूतलीयां कल्पता हे ॥ खोदेविना भासते हे ॥ हे रामजी अवर दूसरा कछू नहीं बन्या ॥ जेसें किसी पुरुषनें कागदउपर पुतली लिखी होय ॥ सो कागदरूप हे अवर कछु नही बनी ॥ तेसें उह जगत्भी उही स्वरूप हे ॥ हे रामजी जब तुजकों आत्मपदका अनुभव होवेगा ॥ तब जेते कछु जगतके शब्द अर्थ हे सो सब उसीविषे भासेंगे जेसें जीननें स्वर्नकों जाण्या तिसकों भूषणके शब्द अर्थ स्वर्न ही भासते हे ॥ तेसें जब आत्मपदकों जाणेगा ॥ तब तुझकों जगतके शब्द अर्थ आत्माहिविषे दृष्टि आवेगें ॥ हे रामजी यह जीव महा सुक्ष्मरूप हे ॥ इनजीवविषे अपणी हे ॥ सो जबलग फुरना हे तबलग सृष्टि हे जब सृष्टि फुरना अपणी उर आवताहे तब सब सृष्टि एक आत्मरूप हो जाती हे आकाश कालदिसा पदार्थ सब आत्मा हे आत्मातें इतर कछू नही ॥ अपणे आपविषे स्थित हे अद्वैत चिन्मात्र पद हे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वान प्रकरणे ब्रह्मस्वरूप प्रतिपादनं नाम शताधिकैकसप्ततितमःसर्गः ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् सर्व तत्ववेत्ताविषे श्रेष्ठ ॥ द्रग अरु द्रश्य का संबंध केसें हुआ हे ॥ अरु कालविषे कालत्व केसें फुऱ्याहे अरु आकाशविषे शून्यता केसें हूइ हे वायुविषे वायुता केसें हुइ हे जडविषे जडता अरु भूतविषे भूतता अरु संकल्पविषे स्पंद अरु सृष्टिविषे सृष्टिता केसें हूए हे ॥ मूर्तिविषे मूर्तिता भिन्नविषे भिन्नता दृश्यविषे दृश्यता किसते हूए हे सो मुझकों कहो ॥ काहेतें जो अर्धप्रबुद्धकों बोधके निमित्त कहणाजोग हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी ब्रह्मा विष्णु रुद्र इश्वर तें आदिक जो सर्व पदार्थ हे सो प्रलय कालविषे जिसमें लीन होते हे तिसका नाम प्रलय हे ॥ तिसका सब्द यह हे ॥ जो प्रलय शब्दहे अरु सब निर्वाण हो जाते हे यह अर्थ हे ॥ हे रामजी एसा जो अनंत आकाश हे सो सम हे ॥ अरु सुद्ध हे ॥ आदिअंततें रहित हे अरु मध्यतेंभी रहित चैतन घन अद्वैत हे ॥ जहां एक अरु दोसब्द भी नही ॥ जिसविषे आकाशभी पहाडवत स्थूल हे अेसा सूक्ष्म हे ॥ अरु हे नही ॥ दोनों सब्दतें रहित अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जेसें पाशाणका सिलाकोश होता हे तेसें चित्तके फुरणेंते रहित हे अेसे परमात्म तत्व अकारणतें सृष्टिका उपजणा केसें कहीये ॥ जेसें आकाश अपणे आपविषे स्थित हे ॥ तेसें ब्रह्म अपणे आपविषे स्थित हे ॥ हे रामजी एक निमिषके फुरणे करी जो अनेक जोजन पर्यंत दृत्ति जाती हे ॥ तिसके मध्य जो अनुभव करनेवाली सत्ता हे तिसविषे तुं स्थित होकरी देख जो जगत कहां हे ॥ अरु जगतकी उत्पत्ति कहां हे ॥ हे रामजी उत्पत्ति जो होती हे सो समवाय कारणकरी अरु निमित्त कारण होती हे ॥ सो आत्मा निराकार अद्वैत सनमात्र हे ॥ न समवाय कारन हे न निमित्त कारण हे तातें आत्मा अच्युत हे ॥ सो स्वरूपतें कदाचित नही गिर्या तो समवाय कारण केसें होवे अरु निमित्त कारणभी नहीं जो निराकार हे तातें आत्माविषे जगत कोउ नही भांति मात्र भासता हे ॥ अरु अविद्या करिके भासता हे ॥ सो अविद्या किसका नाम हे ॥ जो वस्तु होवे नही अरु प्रत्यक्ष भासे सो अविद्या करी जाणीए ॥ हे रामजी ब्रह्मसत्ता सदा अपणे आपविषे स्थित हे अरु तिसविषे तरंग आवर्त उठते हे सो जलरूप हे जलतें इतर कछू नही ॥ जब तूं अपणे आपविषे स्थित होवेगा ॥ तब जगतका सब्द अर्थ इतर न भासेगा काहेतें जो दुसरी वस्तु कछू हे नही ॥ हे रामजी ब्रह्म अमूर्त हे तिसविषे यह मूरतां केसें उत्पत्ति होवे तातें यह भांति मात्र हे ॥ जो वस्तु कारणतें उपजी होवे सो सत होती हे अरु जो कारणबिना दृष्टि आवे सो भम मात्र जाणीए ॥ जेसें आकाशविषे दूसरा चंद्रमा भासता हे तिसका कोउ कारण नही ॥ तातें मिथ्या भम करीके भासता हे ॥ तेसें यह जगत मिथ्या मात्र हे विचार किएतें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नही रहता ॥ हे रामजी आकाश काल आदिक जो पदार्थ हे सो सब सून्य हे ॥ आत्माविषे न उदे हुएहें न अस्त होते हे ॥ ज्योंका त्यों आत्माहि स्थित हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे निर्वाणवर्णनंनाम शताधिकद्विसप्ततितम सर्गः ॥ १७२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी जेसें आकाश अपणी शून्यताविषे स्थित हे ॥ तेसें ब्रह्मरूपी आकाश अपणे आपविषे स्थित हे ॥ सो केसें किसीका कारण होवे कारण कार्य तब होताहे ॥ जब द्वैत होताहे ॥ अरु आरंभ परिणाम होताहे सो आत्मा अद्वैत हे अच्युत हे अरु निर्गुण हे तिसविषे आरंभ केसें होवे ॥ हे रामजी जेता कछु जगत् तुझकों भासता हे सो सभ काष्ट मौन हे काष्ट मौन कहीए जहां मनका फुरणा शून्य हे ॥ हे रामजी जो कछु द्वैत भासता हे सो भममात्र हे ॥ अरु जो कछु हुआ होता तो ज्ञानीकोंभी प्रत्यच्छ होता ॥ सो ज्ञानकालविषे नही भासता तातें भम मात्र हे ॥ हे रामजी पृथ्वी जलतें आदि लेकरी जो पदार्थ हे सो इनका फुरणा सुपनकी न्यांइ हे ॥ जेसें सुपनेविषे चेष्टा होतीहे सो पास बेठकों नही भासती तातें हे नही ॥ तेसें सृष्टि अकारण संकल्पमात्र हे ॥ हे रामजी जेसें ससेके सिंगका कारण कोउ नही तेसें जगतका कारण कोउ नही ॥ जो कछु होवे तो कारणभी होवे जो होवे नही तो कीसका कारण कवन कहीए ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवान बटका बीज होताहे तिसविषे वच्छका भाव होताहे काल पायकरी बीजतें वछ हो आताहे ॥ तेसें इस जगतका कारण परमाणु क्यों न होवे ? ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी सूक्ष्मविषे जो स्थूल होताहे ॥ सो संकल्प मात्र होताहे मेंभी कहताहों सूक्ष्मविषे स्थूल होता हे ॥ परंतु संकल्पमात्र होताहे कछु सत नही होता ॥ जो कहीए सत्य होताहे तो नही संभवता ॥ जेसें राइके कणके विषे सुमेरु पर्वतका होणा नही संभवता ॥ तेसें सूक्ष्म परमाणुतें जगतका उत्पत्ति होणा असंभव हे ॥ हे रामजी सूक्ष्म परमाणुका कार्यभी जगत तब कहीए ॥ जब सूक्षम अणुभी आत्माविषे पाय जावे ॥ आत्मा तो अद्वैत हे तिस विषे एक अरु दो कहणेका अभाव हे ॥ आत्माविषे जानणाभी नही केवल आत्मतत्व मात्र हे ॥ आधार आधेयतें रहित हे बीजभी तब प्रणमताहे जब उसकों जल देताहे अरु रक्षाकर्णेका स्थान होताहे ॥ अरु आधार आधेयतें रहितहे केवल अपणें भावविषे स्थित हे ॥ अद्वैत सत्तामात्र हे ॥ जेसें वंध्याके पुत्रकों कारण कोउ नही ॥ तेसें जगत्का कारण कोउ नही ॥ जो वंध्याका पुत्रही नही तो तिसका कारण कवन होवे ॥ तेसें जगत्हे नही तो ब्रह्म इसका कारण केसें होवे ॥ अरु जिसका तुं दृश्य कहता हे ॥ सो दृष्टाहि दृश्यरूप होकरी स्थित भयाहे ॥ जेसें सुपनेंविषे द्रष्टाहि दृश्यरूप होताहे ॥ तेसें यह जाग्रत दृश्यरूप होकरी आत्माही स्थित हे ॥ हे रामजी जेसें सूर्यकी कीर्णां जलाभास होकरी स्थित होतीयां हे तेसें ब्रह्म ही जगत आकार होकरी दृष्टी आता हे ॥ दृश्यभी कछु दूसरी वस्तु नही ॥ जेसें समुद्र ही तरंग आवर्तरूप होकरी भासताहे ॥ तेसें अनंत सक्ति होकरी परमात्मसत्ता स्थित हे ॥ हे रामजी में अरु तुं यह जगतको पदार्थ सभ फुरणे मात्र हे ॥ जेसें संकल्प नगर होताहे जो मनकरी रचा हे ॥ तेसें यह जगत आत्माविषे कछु बन्या नही ॥ केवल अपणे आपविषे ब्रह्म स्थित हे ॥ हमकों तो सदा उही भासता हे ॥ हे रामजी आत्माविषे यह जगत न उदे हुआ हे न अस्त होताहे ॥ सदा ज्योंकात्यों निर्मल सांतपद हे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे द्वैत एकतामतिपादनं नाम शताधिकत्रिसप्ततितमः सर्गः ॥ १७३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी जगतका भाव अभाव जड चेतन स्थावर जंगम सूक्ष्म स्थूल सुभ असुभ कछु हुआ नही ॥ तोउ में तुझकों क्या कहों जो यह कार्य हे ॥ अरु इस कों यह कारन हे यह हूआ नही बहुरी कारन कार्य केसेंहोवे ॥ जो सर्व देस सर्व काल सर्व वस्तु होवे सो कारण कार्य केसें होवें ॥ केवल अपणे आपविषे स्थित हे जो हे अरु नहि की न्यांइ स्थित हुआहे ॥ तिसविषे संवेदन हे जो जानणा तिसके फुरणे करीकें जगत भासताहे ॥ सो फुरणा चैतनमात्र का विवर्त हे तिस विवर्त करीकें जगत भम हूआहे ॥ जब यही फुरणा उलटीकरी अपणी उर आवताहे तब जगत भम मिटि जाताहे ॥ अरु जब फूरताहे तब ध्यान धाता ध्येयरूप होकरी स्थित होताहे इसहिका नाम जगत हे ॥ इसी विषे बंधभी होताहे अरु मुक्तभी होताहे ॥ आत्माविषें न बंध हे न मोक्ष हे ॥ हे रामजी जब तरंग घनभूत होकरी बहतहे तब एक नदी होकरी चलतीहे ॥ तेसें जब वासना दृढ होतीहे तब जगत रूप होकरी स्थित होताहे अरु भासताहे जब ऐसी वासना दृढ हूइ तब राग दोष संकल्प करी बंधमान होताहे ॥ अरु जब वासना क्षय होतीहे तब जगतका अभाव होजाताहे ॥ स्वच्छ आत्मा भासताहे जेसें सरत्कालका आकास स्वच्छ होताहे ॥ तिसतेंभी निर्मल भासताहे ॥ हे रामजी यह जीव जो मर जाताहे सो मरता नही मुआ तब कहीये जो अत्यंत अभावकों प्राप्त होवे ॥ अरु जीणेंकों न प्राप्त होवे बहुरी जगत् न भासे ॥ तातें यह मरना नही काहेतें जो बहुरी जगत् भासताहे ॥ यह मरना सुषुप्तकी न्यांइ भया जेसें सुषुप्तितें जागें हुए जगत् भासताहे अरु उहि चेष्टा करने लागता हे ॥ जेसें सुपना अरु जाग्रत होताहे ॥ तेसें मृत्यु अरु जन्मभी हे तातें मरना अरु जन्म हुआ ॥ जब मरनेंका सोक उपजे तब तिसविषे जीवणेंका सुख आरोपिए ॥ अरु जब जीवणेका हर्ष उपजे तब तिसविषे मरनेंका सोक आरोपितहे तब दोनों अवस्था सरीरकी सम रची हे ॥ जब यह अवस्था सरीरकि जाणी तब तेरा अंतर सीतल होजावेगा ॥ जब संवेदन फुरनेका अत्यंत अभाव हुआ तब परम सांत हुए ध्यान ध्याता ध्येय तीनोंका अभाव होजावेगा अरु अज्ञानभी न रहेगा जब अेसा अभाव हुआ तब पाछे स्वच्छ निर्मल पद रहेगा ॥ हे रामजी अवधी निर्मल पद हे परंतु भम करीकें पदार्थ सत्ता भासती हे जेसें निद्रा दोषकरीकें केवल अनुभवविषे पदार्थ सत्ता होकरी भासती हे अरु जागेतें कहता हे केवल भममात्रही थे तेसें यह जगत्भी भ्रममात्र जाण परमार्थ स्वरूपके प्रमाद करीकें यह जगत् भासता हे अरु स्वरूपविषे जागेतें इस का अभाव होजाताहे ॥ हे रामजी सुपनेंविषे अणहोतें राज देखता हे तेसें तुं यह जगत जाण इसका फुरणाहि इसकों बंधनका कारण हे ॥ जेसें घुराण आपही स्थान बनावती हे अरु आपही फसी मरती हे ॥ अरु जेसें मद्यपान करनेवाला मद्यपान करीकें मुखतें अवरका अवर बोलता हे अरु तिसकरिकें बंधमान होताहे ॥ तेसें अपणे संकल्पही करीकें बंधताहे ॥ जब संकल्प मिटे तब परमानंदकों प्राप्त होवे ॥ अरु परम स्वछ सांत उदे होवे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे परम सांति निर्वाणवर्नन नाम शताधिक चतुःसप्ततितमःसर्गः ॥ १७४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्टोवाच ॥ ॥ हे रामजी जहां आकास होताहे तहां शून्यताभी होतीहे ॥ अरु जहां अवकास होता हे तहां आकासभी होताहे अरु जहां आकास हे तहां पदार्थभी होते हे ॥ तेसें जहां चेतन सत्ता हे तहां सृष्टिभी भासती हे परंतु केसें भासतीहे जो बनी कछु नही अरु सदा रहतीहे ॥ जेसें सूर्यकि किरणाविषे जल कदाचित नही उत्पत्ति भया ॥ अरु जलभास सदा रहता हे काहेतें जो उसीका विवर्त हे ॥ तेसें सृष्टि आत्माका विवर्त हे जहां चेतनसत्ता हे तहां सृष्टा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी हे ॥ इसी पर एक इतिहास तुझकों कहता हों ॥ सो केसा इतिहास हे जिसके सुणेते अरु समुझेतें जरामृत्युतें रहित होवे ॥ परम सुंदर इतिहास हे अरु चित्तकों मोहणे हारा आश्चर्य रूप हे अरु प्रकृतरूप हे अरु मेरा देख्या हुआ हे ॥ हे रामजी एक कालमें मेरा चित्त जगततें उपरत हुआ जो कीसी एकांत स्थान विषे जायकरी समाधान करो ॥ जगत केसा हे जो मोहरूप व्यवहार करीकें दृढ हुआ हे ॥ अरु जेता कछू जानणे जोगहे तिसकों में जानणे हारा हों ॥ परंतु व्यवहार करीकेंभी सांतरूप होउं ॥ अेसें में विचारत भया जो निर्विकल्प समाधि करों ॥ अरु परम सांतिकों प्राप्त होउं ॥ जो आदि अंत मध्यतें रहित परमानंद स्वरूप हे अरु अविनासी पद हे तिसविषे विश्राम करों ॥ हे रामजी तब मेंभी ज्ञान वृत्तिवान परमात्मस्वरूपही था परंतु चित्तकी वृति जब जगत भावतें उपरत भइ ॥ तिस कारनतें व्यवहार विषेभी एकांत समाधिकी इछा करी ॥ जहां क्षोभ कोउ न होवे तहां स्थित होवे ॥ अेसें विचार करीकें में आकासविषे उडा एक देवताका पर्वत था तहां जाय बेठा ॥ उहां बहुत प्रकार इंद्रियांके विषय देखे अंगना गायन करतीयां हे अरु चमर सिरपर होतेहे ॥ अरु मंदमंद पवन चलता हे उह विषेभी मुझकों आपात रमणीय भासे ॥ किसी कालविषे किसीकों सुखदायक नही समाधिवालेके यह सत्रुहे ॥ तिनकों विरस जाणीकरी बहुरी में उडा ॥ एक अवर पर्वतकी कंदराथी अरु बहुत सुंदर थी तहां आय प्राप्त भया सुंदर वन हे अरु सुंदर पवन चलताहे ॥ एसें स्थानकों में देख्या अरु मुझकों सत्रुवत भास्या काहेतें जो पंछीके सबद होतेहें ॥ अरु पवनका स्पर्स होताहे ॥ इत्यादिक अवरभी विषेहे तिनकों देखिकरि में आगें चल्या ॥ नागके देस देखे अरु सुंदर नागकंन्या देखीयां ॥ अरु बहुत सुंदर इंद्रियांके विषयभी देखे सो विषयभी मुझकों सर्पवत भासे ॥ जेसें सर्पके स्पर्श कीयेतें विषकरी अनर्थकों प्राप्त होताहें ॥ तेसें मुझकों विषय भासे बहुरी आगें चल्या ॥ हे रामजी जेतें कछु इंद्रियांके विषय हे सो सब अनर्थका कारन हे ॥ तिनविषे प्रीति मुढ अज्ञानी करतेहें बहुरी समुद्रके किनारे गया तिसके पास जो पुष्पके स्थान हे तिनविषे विचर्‍या कंदरा अरु वनकों देखत भया पर्वत पाताल दसो दिसा देखता फिर्या परंतु एकांत स्थान मुझकों कोउ दृष्ट न आया ॥ तब में बहुरी आकासकों उडा ॥ आकासविषे पवन अरु मेघके स्थान लंघता गया ॥ अरु देवगण विद्याधर अरु सिद्धके स्थान लंघता गया ॥ आगें देखों तो केइ ब्रह्मांड भुतके उडते हे ॥ अपूर्व भूत देखे अरु नाना प्रकारके स्थान देखे ॥ अरु गरुडके स्थानकों लंघता गया ॥ कछु सूर्यका प्रकास होताहे तिसकोंभी लंघता गया कछु अेसें देख्या जो सूर्यका प्रकासहि नहि बहुरी चंद्रमाके मंडलकों लंघ्या ॥ आगें एक अग्नीका स्थान था तिसकों में लंघकरी महा आकास विषे गया ॥ जहांइंद्रियांकों रोकणाभी न रहे काहेतें जो इंद्रियांके विषय कोउ दृष्ट न आवे ॥ एक आकासहि आकास दृष्ट आवे ॥ अरु वायु अग्नि जल पृथ्वी चारोंका अभाव हे हे रामजी तिस स्थानविषे में गया ॥ जहां भूत सुपनेवतभी दृष्ट न आवे ॥ अरु सिद्धकी गमभी नही तहां जायकरी में एक कुटी रची संकल्पकी अरु तिसके साथ कल्पवृछ फुल पत्रों करी पूर्न रचे ॥ तिस सुंदर कुटीकों एक ओर छिद्र रखा ॥ मेरा जो सूक्ष्म संकल्प था सो प्रत्यछ आनि हूआ ॥ तिस कुटीकों रचीकरी तिसविषे प्रवेस कीया अरु संकल्प किया जो सो वरस पर्यंत में समाधिविषे रहोंगा ॥ उसतें उप्रांत समाधितें उतरोंगा ॥ अेसें विचार करी में पद्मासन बांध्या अरु समाधिविषे स्थित भया ॥ अरु परम शांतविषे स्थित भया ॥ अरु जहां कोंउ क्षोभ नही तिस निर्विकल्प समाधिविषे सो वरस जब बितीत भया ॥ तब उह जो भावीथी समाधिके उतरणेकी सो संकल्प आनि फुर्‍या ॥ जेसें पृथ्वीविषे बीज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोया हुआ काल पायकरी अंकुर लेता हे ॥ तेसें संकल्प आणिफुऱ्या ॥ प्रथम प्रान आनि फुरे जेसें सुका वृछ वसंत ऋतुविषे फुरि आता हे तेसें प्रान फुरिआए तब ज्ञान इंद्रिय प्रगटी आइ ॥ जेसें वसंत ऋतुविषे फुल खिली आवते हे ॥ तेसें ज्ञान इंद्रिय खिली आइयां ॥ बहुरी स्पंद जो हे अहंकाररूपी पिसाच सो आनि फुऱ्या जो में वसिष्ठ हो अेसा जो अहंकार रूपी पिसाच अरु इछारूपी तिसकी स्त्री सो आनि फुरे ॥ हे रामजी सो वर्षा मुझकों अेसें वितीत हुआ जेसें निमेषका खोलणा होताहे ॥ कालभी बहुत प्रकार करी वितीत होता हे कि सीकों थोडा होजाताहे अरु किसीकों बहुत होजाताहे ॥ सुखी होताहे तब बहुत कालभी थोडा हो भासताहे ॥ अरु दुःखीकों थोडा कालभी बहुत होजाताहे ॥ हे रामजी इस समाधिका जो में वर्णन कीया ॥ सो यह सक्ति सभ जीवविषेहे परंतु सिद्ध नही होती ॥ काहेतें जो नाना प्रकारकी वासनासाथ अंतःकरण मलीनहे ॥ जब अंतःकरण इनका सुद्ध होवे तब जेसा संकल्प करे तेसा सिद्ध होवे ॥ अरु मलीन अंतःकरण वालेका संकल्प सिद्ध नही होता ॥ इतिश्री यो० नि० प्र० आकास कूटीवसिष्ट समाधिवर्ननं नाम श० पंचसप्ततितमः सर्गः ॥ १७५ ॥

॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् तुम निर्वाण स्वरूप हो तुमकों अहंकाररूपि पिसाच केसें फुऱ्या ॥ यह संसा मेरा दूर करो ॥ ॥ वसिष्ठवाच ॥ ॥ हे रामजी ज्ञानी होवे अथ वा अज्ञानी होवे ॥ जबलग सरीरका संबंध हे तबलग अहंकार दूर नही होता काहेतें जो जहां आधार होता हे तहां आधेयभी होता हे अरु जहां आधेय होता हे तहां आधारभी होता हे ॥ तेसें जहां देह होतीहे तहां अहंकारभी होता ॥ अरु जहां अहंकार होताहे तहां देहभी होतीहे ॥ हे रामजी अहंकार बिना सरीर नही रहता ॥ सो अहंकार अज्ञानरूपी वाल कनें कलप्या हे अरु ज्ञानीविषे जो विशेषता हे सो श्रवण करु ॥ तिसके जाणेतें अहंकार नष्ट होजाताहे ॥ हे रामजी यह अहंकार अविद्या करी कलप्या हे ॥ सो अविद्या किसका नाम हे जो वस्तुतें मिथ्या होवे अरु भासे सो अविद्या हे ॥ अरु जो अविद्याहि मिथ्या हे तो तिसका कार्य अहंकार केसें सत होवे ॥ यह मिथ्या भमकरीकें उदे हुआ हे ॥ जेसें भ्रम करीकें वैताल वृछविषे भासता हे ॥ तेसें भमकरीकें अहंकाररूपी वैताल उदे हुआ हे ॥ अरु इसका कारन अविचार सिद्ध हे ॥ विचार कीएतें इसका अभाव होजाता हे ॥ जहां जहां विचार होता हे तहां तहां अविद्या नही रहती ॥ जेसें जहां दीपक होताहे तहां अंधकार नही रहता ॥ दीपकके जागेतें अंधकारका अभाव होजाता हे तेसें विचारके उदे हुए अविद्याका अभाव होजाता हे ॥ जो वस्तु विचार किएतें न रहे सो मिथ्या जाणीए ॥ जो आपहि मिथ्या हे तिसका कार्य केसें सत्य होवे ॥ तातें अहंकारकों मिथ्या जाण ॥ हे रामजी जेसें आकासके वृछका कारन कोउ नही तेसें अहंकारका कारन कोउ नही मन सहित जो षट् इंद्रिय हे सुद्ध आत्मा तिनका विषय नही काहेतें जो सो साकार हे अरु दृश्य हे साकारका कारन निराकार आत्मा केसें होवे जो कछु आकार हे सो सभ मिथ्या हे जो बीज होताहे तिसतें अंकुर उत्पत्ति होताहे तब जाणता हे जो बीजतें अंकुर उत्पन्न हुआ हे परंतु बीजही न होवे तो तिसका कार्य अंकुर केसें उत्पन्न होवे ॥ तेसें जगतका कारण संवेदनही न होवे तो जगत् केसें होवे जेसें आकासविषे दूसरा चंद्रमा होवे तो तिसका कारनभी मानीए जो दूसरा चंद्रमाही न होवे तो तिसका कारन केसें मानीए ॥ हे रामजी ब्रह्म आकास अद्वैत हे अरु सुद्ध हे फुरनेंतें रहित हे ॥ अरु अच्युत हे अविनासी हे सो कारन कार्य केसें होवे ॥ हे रामजी पृथ्वी आदिक तत्व जो भासते हे सो अविद्यमान हे भम करीकें भासते हे ॥ केवल शुद्ध आत्मा अपणे आपविषे स्थित हे ॥ अरु जो तूं कहे अविमान हे तो भासते क्यों हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिसका उत्तर यह हे जेसें सुपनेविषे अणहोती सृष्टी भासती हे ॥ तेसें यह जगतभी अण होता भासता हे ॥ जेसें भ्रम करीकें आकाशविषे दृढ भासते हे अण होते इसविषे आश्च र्य कछू नही ॥ जेसें संकल्प नगर रचि लीजें तब उसविषे चेष्टाभी होती हे ॥ परंतु इसका स्वरूप संकल्प मात्र हे वास्तव अर्थाकार कछू नही होता परंतु अपणे कालविषे सत भासता हे ॥ जब संकल्पका लय होता तब उसकाभी अभाव होजाता हे तब आकासके दृढकी न्यांइ हूआ क्यों ॥ जो,आकासके दृढ भावना करी भासते हे ॥ तेसें यह जगत संकल्प मात्र हे स्वरूपतें कछू नही ॥ जो विचार करी देखीए तो इसका अभाव होजाता हे ॥ हे रामजी शुद्ध आत्मा तत्व अपणे आपविषे स्थित हे ॥ सोइ जगतका आकार हो भासता हे दूसरी वस्तु कछू नही ॥ जेसें सुपनेविषे जेते पदार्थ भासतेहे सो सब अनुभवरूप हे तेसें जगतभी ब्रह्मस्वरूप हे हे रामजी हमकों सदा उही भासता हे तो अहंकार कहा होवे ॥ न मैं अहंकार न मेरा अहंकार हे ॥ केवल आकाशविषे अहंकार कहां होवे ॥ हे रामजी न मैं हो न मेरेविषे कछू फुरना हे ॥ अथवा सर्व आत्मसत्ता मेही हों तोभी अहंकार न हूआ ॥ हे रामजी हमारा अहंकार अेसा हे जेसें अग्निकी मूर्ति लिखि होती हे ॥ तिसतें अर्थ सिद्ध कछु नही होता दृष्टि मात्र हुइहे ॥ तेसें ज्ञानीका अहंकार देखणे मात्र हे ॥ कर्तृत्व भोक्तृत्वका नही होता अपणे स्वभावविषे स्थित हे ॥ सर्व ज्ञानवानका एकही निश्चय हे ॥ जो ब्रह्मही भासता हे अरु अहंकारका अभाव हे ॥ न आगेथा न अब हे न बहुरी होवेगा ॥ भ्रमकरके अहंकार सब्द जाणता हे ॥ हे रामजी जब अेसें जाणेगा तब अहंकार नष्ट होजावेगा ॥ जेसें शरत्कालविषे मेघ देखणे मात्र होता हे वर्षातें रहित ॥ तेसें ज्ञानीका अहंकार देखणे मात्र होता हे ॥ अवरकी बुद्धिविषे भासता हे ॥ परंतु ज्ञानीकें निश्चयविषे असंभव हे ॥ उसका अहंप्रत्यय आत्माविषे रहता हे प्रच्छन्न अहंकारका अभाव होजाता हे ॥ जब अहंकार नाश हुआ तब अविद्याकाभी नाश हुआ ॥ अरु यही अज्ञानका नाश हे ॥ ए तीनों पर्याय हे ॥ हे रामजी अपणे स्वभाविषे स्थित होकरी प्रकृत आचारकों करने अरु अंतरतें सिलाकोसवत् हो रहु अरु बाह्य इंद्रियांकी क्रिया सब रहे ॥ अरु अपणे निश्चयकों गुप्त राखीये ॥ अरु सर्व इंद्रियाकों इसप्रकार धारहु ॥ जेसें आकाश सबकों धारी रहा हे ॥ अंतरतें सीलाके जठरवत् रहो ॥ देखणे मात्र तुमारेविषेभी अहंकार दृष्ट आवेगा जेसें अग्नीकी मूर्त्ति लिखी दृष्ट आतीहें ॥ तेसे तुमारे विषे अहंकार दृष्ट आवेगा परंतु अर्थ कारण होवेगा ॥ केवल ब्रह्मसत्ताही भासेगी अवर कछु न भासेगा ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे विदित वेद अहंकार वर्णनं नाम शताधिक षट् सप्ततितम सर्गः ॥ १७६ ॥ ॥ ७ ॥

914

॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन बडा आश्चर्य जो तुमनें अहंकारके त्यागेतें परम सात्विकी प्राप्तिका उपदेस कीआहे सो यह परम दसा हे जो राग दोष मलतें रहित निर्मल हे परम उत्तम हे ॥ अरु अविनासी हे आदि अंततें रहित हे यह दसा तुमनें परम विभुताके अर्थ कही हे ॥ हे भगवन् सर्वदा काल अरु सर्व प्रकार सर्व वस्तु उही ब्रह्मसत्ता हे ॥ समरूप सत्ता के अनुभवतें परम निर्मल हे ॥ तो सिलाख्यान किसनिमित्त कहाहे सो कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी सर्व विषे सर्वदा काल अरु सर्वतें रहित हे ॥ तिसके बोध अर्थ में तुझकों दृष्टां त सिलाख्यान कहाहे ॥ हे रामजी अेसा स्थान कोउ नही जहां सृष्टि नही ॥ सर्व स्थानविषे सृष्टि भासतीया हे ॥ अरु आदितें कछू बन्या नही अरु सर्वदाकाल वसती हे सिलाके कोसविषें अनेक सृष्टि वसतीयां हे ॥ जेसें आकाशविषे शून्यता हे तेसें सिलाकोस विषे सृष्टि वसतीया हे ॥ ॥ श्रीरामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् जो सर्वविषे सृष्टि वसतीया हे ॥ कुद आ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिक विषे यह तुमनें कहा तो आकासरूप क्यों न होवे ॥ ॥ वसिष्टोवाच ॥ ॥ हे रामजी यही मैंभी तेरे तांइ कहता हों ॥ जो कछू सृष्टि हे सो सभ आकासरूप हे ॥ स्वरूपतें सृष्टि तो उपजी नहीं ॥ सर्वदा आत्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे आकासकी वारता क्या कहणी हे जो सिलाकोंसविषे सृष्टि वसतीयां हे ॥ जो आकासरूप हे सो वसतीयां हे अर्थ यह जो डुइयां कछू नही ॥ हे रामजी पृथ्वीविषे ऐसा अणु कोउ नही जिसविषे सृष्टि न होवे ॥ अणु अणुविषे सृष्टि हे अरु सर्व उरतें वसतीयां हे ॥ अरु परमार्थतें कछू बन्या नही केवल आत्मरूप हे सर्व सृष्टि सब्दमात्र हे जेसें यह सृष्टि भासती हे तेसें उहभी हे जब यह सब्दमात्र हे तब उहभी सब्दमात्र हे ॥ अरु जो यह सत भासती हे तो उहभी सत भासतीयां हे ॥ हे रामजी अेसा कोउ जलका कणका नही जिसविषे सृष्टि नही वह सर्वविषे सृष्टि हे अरु यह आश्चर्य देख जो इस विना कछू नही ॥ अरु अेसा कोउ अग्निका अरु वायुका कणका नही जिसविषे सृष्टि न होवे सर्व विषे सृष्टि हे अरु आकासरूप हे कछू बन्या नही ब्रह्मसत्ता अपणे आपविषे सदा ज्योंकीत्यों स्थित हे ॥ हे रामजी आकासविषे ऐसा अणु कोउ नही जिसविषे सृष्टि न होवे सब विषे सृष्टि हे परंतु कछू उपजीयां नही अैसा ब्रह्म अणु कोउ नही जहां सृष्टि न होवे सभ विषे हे ॥ परंतु स्वरूपतें कछू डुइ नही ॥ ब्रह्मसत्ता अपणे आपविषे सदा स्थित हे ॥ हे रामजी अैसा अणु कोउ नही जिसी विषे ब्रह्मसत्ता नही ॥ अरु अैसा कोउ चिदअणु नही जिसविषे सृष्टि नहि सो सृष्टि केसे हे जेसें किसीनें अग्नि की ही कीसीने उष्णता कही तिसविषे भेद कोउ नही तेसें कोउ ब्रह्म कहें कोउ जगत् कहे ॥ शब्द दोहे परंतु वस्तु एकही हे जगत् हीं ब्रह्म हे ब्रह्मही जगत् हे भेद कछू नही जेसें वहतें जल का सब्द होते हे ॥ तिसविषे अर्थ सिद्ध कछू नही होता ॥ तेसें जगत् मुझकों कछू पदार्थ नही भासता हे काहेतें जो दुसरी वस्तु कछू बनी नही ॥ में तू अरु यह जगत् सुमेरूतें आदी लेकरी जो पर्वत हे देवता किन्नर अरु दैत नाग इत्यादिक जो जगत् हे ॥ सो सभ निर्वाण स्वरूप हे ॥ आत्मतत्वविषे कछू बन्या नही यह बोलतें चालतें जो भासते हे सो सुपनकी न्यांइ जाण ॥ जेसें कोउ पुरुष सोया हे अरु सुपनविषे नांना प्रकारके जुद्ध होते हे बाजत्र बाजते हे अरु अवर चेष्टा होती हे ॥ अरु जो उसके निकट जागृत पुरुष बेठा हे तिसकों कछू नहीं भासता काहेतें जो बन्या कछू नहीं अरु उसकों सभ कछू भासता हे ॥ तेसें ज्ञानीके रीदेविषे जगत् शून्य हे ॥ अरु अज्ञानीकों जगत् नाना प्रकारका भासता हे भ्रम करकें ॥ तातें हे रामजी सुपनवत इस जगतको जाणकरी प्रकृत आचार करु अरु अंतर तें सिलाकी न्याइ होडु जो फुरे कछू नही ॥ ब्रह्म अरु जगत विषे रंचकभी भेद नही ब्रह्मही जगत् हे जगत् ब्रह्म हे ॥ जगत्का स्पष्ट अर्थ ब्रह्मते भिन्न नही ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ट निर्वाण प्रकरणे ब्रह्म जगत् एकता प्रतिपादनं नाम शताधिक सप्ततितमःसर्गः ॥ १७७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन आकाशकोसविषे जो कूटीबनाय करी समाधि लगाइ ॥ अरु सो वरसतें उपांत उतरी तिसके अनंतर जो वृत्तांत डुआ सो कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब समाधितें में उतऱ्या तब आकाशविषे में एक सब्द सुण्या सो केसा सब्द डुआ जो कोमल रिदे अरु सुंदर तुत्तरीको तारवत अंगनाका सब्द डुआ तब में विंचार कीआ जो यह सब्द कहांतें आयाहें ॥ में तो बहुत उर्धकों आया हो जहां सिद्धकोभी गम नही ॥ सिद्धतेंभी तीन लाख जोजन उंचा आया हों ॥ यह सब्द कहांतें आया अेसें विचार मे देखणे लागा॥ दसो दिसा आकाशही सर्व उर देखे हे ॥ परंतु सृष्टिका कर्ता कोउ दृष्ट न आवे ॥ एक आकाशही भासे अवर कछू न भासें तब में विचार किया जो सृष्ठि आकाशविषे होती हे ॥ तातें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

म आकाशही हो जाउं अरु यह सब्दकों पावों जो किसका सब्द हे ॥आकाशकोंभी त्यागी करी चिदाकाश हो जाउं॥जहां भूताकाशभी कूटिवत्भासताहे तब इसकाभी अंत भासेगा अरु जाणे लेवेगा जो इह सब्द होता हे अेसें विचारी करी में निश्चय किया जो यह शरीरही इहां रहे नेत्र मूदे रहे॥तब पद्मासन बांधिकरी बाह्यकी इंद्रियाकोंभी रोकिया॥अरु जो इंद्रियां की वृत्ति शब्द आदिककों ग्रहण करती थी तिसकों रोकी लिया ॥ अंतर बाहेरकी वृत्ति सब त्यागी सर्व अहंवृत्तिकों त्याग करी में आकाशरूप होगया॥ जेसें इस ब्रह्मांडविषे आकाशकों अंत नही पाइता ॥ तेसें में इसकों त्याग कर चित्ताकाशरूप हो गया में चित्ताकाशविषे आया ॥ सो चिताकाश केसा हे जो संकल्पही जिसका रूप हे ॥ तिसकोंभी में त्याग करी बुद्धि आकाशविषे आया बहुरी तीसकोंभी त्याग करकें चिदाकाशविषे आया ॥ तिस शब्द देखणेके संकल्प करी चिदाकाश रूप हो गया ॥ जेसें जलकी बुंदमें समुद्र मिली समुद्ररूप हो जाती हे ॥ तेसें में चिदाकाश होगया ॥ सो चिदाकाश निराकार निराधार हे ॥ अरु सबकों धारी रहा हे परमानंद स्वरूप हे शांत हे अरु अनंत हे ॥ जिसविषे सर्व ब्रह्मांड प्रतिबिंवित होते हे आत्मा आदर्श हे तिसविषे में स्थित हुआ तब मुझकों अनंत सृष्टि आपणे आपविषे भासणे लागीयां ॥ जेसें सूर्यकी कीर्णविषे त्रसरेणु होते हे तेसें ब्रह्मविषे सृष्टि हे ॥ परंतु जीवकी अपणी अपणी सृष्टि हे ॥ उसकी सृष्टिकों उह न जाणे उसकी सृष्टिकों उह न जाणे ॥ जेसें मनुष सोए होवे अरु अपनी अपनी सुपन सृष्टिकों देखे तिसविषे आकाश अरु काल अपणा आप देखे ॥ उसकी सृष्टिकों उह नही जाणता ॥ उसकी सृष्टि कों उह नही जाणता ॥ परंतु ज्ञानी सर्व सृष्टि देखता हे ॥ तेसें मुझकों सर्व सृष्टि चिदाकाश विषे भासे ॥ अरु जीवकों अपणी अपणी सृष्टि भासे अवरकी सृष्टि अवरकों दृष्टि न आवे ॥ हे रामजी एक सृष्टि एसें भासे जो आवरण कोउ नही आवरण कहीए जेसें पृथ्वीके चउफेर समुद्र होते हे सो उहां आवरण कोउ नथा ॥ अरु कहूं कहूं एकही भूतका आवरण हे अरु कहूं अैसी सृष्टि आवे जीनकों पांचही तत्वका आवरण हे॥ प्रथम पृथ्वीका आवरण दूसरा जलका तीसरा अग्निका चतुर्थ वायुका पंचम आकाशका आवरण हे ॥ कहूं ऐसी सृष्टि देखे आवे जीनकों चार तत्वका आवरण हे ॥ कहूं अैसी देखी जिनकों षट आवरण॥ कहूं दस आवरण दृष्टि आवे ॥ कहुं ऐसी सृष्टि दृष्ट आवे जिसकों षोडश आवरण हे ॥ अरु कहूं अेसी दृष्ट आवे जिनकों चउतीस आवरण हे ॥ कहूं छत्तीस आवरण तत्वके संयुक्त सृष्टि देखीयां ॥ हे रामजी इस प्रकार में अनंत सृष्टि देखता भया चिदाकाशविषे ॥ परंतु केसी हे जो आकाश रूप हे सो आत्मातें इतर वस्तु कछू नही ॥ मनके फुरणेतें मुझकों सृष्टि दृष्टि आवही॥ काहेतें जो संकल्प मात्र हीहे अवर कछू वन्या नही ॥ जेसें कंधउपर मूरतां लिखी होवे तेसें आत्मरूपी कंधउपर मूरतां दृष्टि आवे ॥ अपणे अपणे व्यवहारविषे मग्न रहे हे ॥ हे रामजी ऐसी अनंत सृष्टि देखी एककी सृष्टिकों दूसरा न जाणे सब अपणि सृष्टिकों जाणे ॥ जेसें अनेक पुरुष सेन करे एकही कालविषे अरु सुपन सृष्टि अपणी अपणी देखे॥ तोउ सृष्टिकों उह नही जाणता॥ हे रामजी कछू अैसी सृष्टि देखी जहां सूर्यका प्रकाश नही ॥ अरु न चंद्रमाका प्रकाश हे न अग्निका प्रकाश हे ॥ अरु चेष्टा उनकी सब बडी होती हे ॥ कहूं अेसी देखी जहां सूर्य चंद्रमा हे ॥ अरु कहूं अेसी देखी जो उनकों कालका ज्ञानभी नही जो कवन काल हे ॥ न उहां कोउ दीन हे न रात्रही हे ॥ सदा एक समान रहते हे कहुं महा शून्यरूप तमही दृष्ट आवे कहूं अेसें दृष्ट आवे जो देवतेहि रहते हे ॥ कहूं मनुषही रहते हे कहूं तिर्यकही रहते हे कहूं दैतही दृष्ट आवे कहूं जलही दृष्ट आवे अवर तत्व कोउ न दृष्ट आवे ॥ अरु कहूं अेसी सृष्टि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दृष्ट आवे जहां शास्त्रका विचारही नही ॥ कहूं शास्त्र पुरान विपर्यय रूप हे कहूं समान हे ॥कहूं प्रले होती दृष्ट आवे कहूं उत्पत्ति होती दृष्ट आवे ॥ हे रामजी इत्यादिक अनंत सृष्टि में देखीयां परंतु जब स्वरूपकी उर देखों तब केवल ब्रह्मरूपही भासे अवर कछू बन्या दृष्ट न आवे ॥ अरु जब संकल्प करके देखीए तब अनंत सृष्टि दृष्ट आवे॥कहूं ऐसी सृष्टि दृष्ट आवे जहां बालककों वृद्ध जोबन अवस्थाकी मर्यादाही नही जेसें जन्म तेसेंही रहे ॥ कहुं ऐसी सृष्टि हे जो चंद्रमा सूर्यका प्रकास नही अरु अग्निके प्रकास साथ उनकी चेष्टा होतीहे ॥ कहूं ऐसें देखे जो उर्ध्वकों चले जावे ॥ कहूं निचे चले जावे ॥ कहूं ऐसे देखे जो शास्त्रकी मयार्दासाथ चेष्टा करे ॥ कहूं कृमिही वसते हें अवर कोउ नही ॥ हे रामजी चैतनरूपी बनविषे में अनंत सृष्टिरूपी वृछ देखें परंतु दूसरा कछू बन्या दृष्ट न आया सब चैतनका आभासही दृष्ट आया ॥ जेसें सूर्यकी किरणांविषे जलाभास होता हे ॥ अरु बन्या कछू नही तेसें सृष्टि बनी कछू नही अरु दृष्ट आवे जेसें आकाश विषे नीलता भासती हे अरु दुसरा चंद्रमा भासता हे तेसें अन होती सृष्टि भासे ॥ जेसें मारूथलविषे जल भासताहे ॥ अरु गंधर्व नगरकी सृष्टि भासतीहे तेसें संपूर्न सृष्टि भासीहे ॥ हे रामजी ब्रह्मरूपी आकाश हे तिसविषे चित्तरूपी गंधर्वनें सृष्टि रचीयां हे स्वरूपतें इतर कछू उपजा नही सब अकारण हे ॥ जोतिमती कारण समवाय कारण विना सृष्टि भासे सो भममात्र जाणीए ॥ जेसें सुपन सृष्टि कारण विना होतीहे अरु अर्थाकार हो भासतीहे तोभी अजात जात हे ॥ अर्थ यह जो उपजेविना उपजी भासती हे ॥ तेसें संपूर्ण सृष्टि आभासमात्र हे ॥ हे रामजी आभासविषेभी अधिष्ठान सत्ता होतीहे ॥ जिसके आश्रय आभास फुरताहे सो सांत चिदांनद ब्रह्म सभका अधिष्ठान हे ॥ अरु सर्व आत्मता करके स्थित हे ब्रह्म सत्तातें इतर कछु नही चेतता करके नानात्व भासताहे परंतु नानात्व हुआ कछु नही आत्माही सर्वदा आपणे आपविषे स्थित हे जेसें क्षीर समुद्रविषे वायु करके नाना प्रकारके तरंग उपजत भासते हे ॥ तोभी क्षीरतें इतर कछु नही ॥ ऐसा क्षीर समुद्रका तरंग कोउ नही जिसविषे घृत न होवे ॥ सभविषे घृत व्यापी रहा हे ॥ तेसें जो कछू पदार्थ हे तिन सबविषे ब्रह्मसत्ता अनुस्यूत हे ॥ अरु जेसें क्षीरके मथन कीएतें घृत निकसता हे ॥ तेसें विचार कीएतें जगत ब्रह्मस्वरूप भासताहे ॥ इतर कछु नही काहेतें जो कारण द्वारा कछु नही उपजा परमार्थतें केवल आत्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे फुरणेरूपी भमकरके कछु हुआ दृष्टि आवताहे ॥ जब फुरणेरूपी भम निवृत्त हुआ तब ब्रह्माही भासताहे ॥ तातें अविद्यारूप फुरणेकों त्याग करी अपणे निर्विकल्प स्वरूपविषे स्थित होहु तब जगत भम निवृत्त हो जावेगा ॥ ॥इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे जगत जाल समूह वर्ननं शताधिकाष्टसप्ततितमः सर्गः ॥ १७८ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी जब इस प्रकार में सृष्टि देखी तब बहुरी विचार आनि हुआ जो उह सब्द करनेहारा कवन था तिसकों देखों तब में देखणे लगा ॥ देखते देखते तीतरीकी न्यांइ सब्द सुण्या परंतु उसकों न देख्या ॥ तब फेरी देख्या देखते देखते सब्दका अर्थ भासणे लागा ॥ बहुरी देख्या तब अंगना दृष्टि आइ॥सो केसी हे स्वर्नवत् जिसका सरीर हे बहूत सुंदर वस्त्र पहिरे हुएहे ॥ अरु सर्व अंग भूषणों करी पूर्न हे ॥ लछमीकी न्यांइ तिसकों उपमा दीजीए अरु भवानीकी उपमा दीजीए ऐसी सुंदर हे ॥ जब में उसकों देखी तब उह मेरे निकट आय प्राप्त भइ अरु कहणे लागी हे मुनीश्वर अवर संसार में देखा हे ॥ परंतु समानधर्मा मुझकों दृष्ट आया हे ॥ अरु तुम उत्तम धर्मा भासते हो संसार समुद्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के पार हुए दृष्ट आतेहो ॥ अरु संसार समुद्र पारके तुम दृढ हो ॥ जो कोउ तुमारी उर आता हे तिसके आश्रय भूत हो अरु निकासिभी लेते हो ॥ अवर जो जीव हे सो संसार समुद्र विषे वहे जाते हे ॥ अरु तुम पारकों प्राप्त हुए हो तातें तुमकों नमस्कार हे ॥ हे रामजी जब इस प्रकार अंगनानें कहा तब में आश्चर्यकों प्राप्त हुआ ॥ जो इसनें मेरेताइ कदाचित् दे खाभी नही अरु सुण्याभी नही बहुरी इसनें क्यों करी जाण्या तब में अेसे विचार किया जो यह मायाका कोउ चरित्र हे ॥ अरु जो ब्रह्मांड मुझकों दृष्ट आए हे सो इस कर्के दृष्ट आए हे ॥ हे रामजी अेसें विचार कीया तब उसंकों त्यागकरी में बहुरी आकासकों उड्या ॥ तब अवर सृष्टि भासणे लागीया ॥ जेसें सुपनेकी सृष्टि होती हे अरु संकल्पकी सृष्टि होतीहे॥ अरु गंधर्व नगरकी सृष्टि होतीहे तेसें यह सृष्टि हे ॥ वास्तव कछू बन्या नही ॥ जेसें सुपनादिक सृष्टि अनहोती भासती हे तेसें यह जगत् हे ॥ केवल बोधमात्र आत्मा अपणे आपविषे स्थित हे ॥ हे रामजी जब में बोधविषे स्थित होकरी देखों तब मुझकों आत्माही भासे अरु जब संकलप करकें देखो तब नाना प्रकारका जगत् भासे ॥ कइुं नष्ट होते भासे कइुं नष्ट होकरी उत्पत्ति होती भासे ॥ जेसें पीपलकें पात पडते हे अरु बहुरी तेसें ही उपजते हे तेसें उपजते भासही ॥ कइुं अर्ध सुभाव तेसा होवे कइुं एसे दृष्ट आवे जो नास होकरी अवरके अवर उत्प त्ति होवे ॥ कइुं उत्पत्ति होते ही दृष्ट आवे ॥ कइुं भिन्न भिन्न सृष्टि अरु भिन्न भिन्न सास्त्र दृष्टि आवे ॥ कइुं सूर्य चंद्रमा अरु तारोंका चक्र अैसें ही फीरता दृष्ट आवे ॥ अरु कइुं अवर प्रकार दृष्ट आवे ॥ कइुं नर्ककी सृष्टि दृष्ट आवे ॥ कइुं स्वर्गके स्थान दृष्ट आवे इसी प्रकार अनंतही सृष्टि देखी अरु अनंतही रुद्र देखे अनंतही ब्रह्म देखे अनंतही विष्णु देखे ॥ कइुं प्रलयके मेघ गरजते हे ॥ कइुं सुमेरादिक पर्वत उडते दृष्ट आवे ॥ कइुं ब्रह्मांड जलते दृष्ट आवे ॥ अरु द्वादस सूर्य तपते दृष्ट आवे ॥ कइुं एसे स्थान दृष्ट आवे जो जनमतेहि पुष्ट हो जावे ॥ कइुं अैसी सृष्टि दृष्ट आवे जो एक सृष्टिविषे मूआ दूसरी सृष्टिविषे आवे अरु दूसरी सृष्टिविषे मूआ उसी सृष्टिविषे आवे ॥ कइुं प्रलय होती दृष्ट आवे ॥ कइुं ज्योंकीत्यों रहती सृष्टि दृष्ट आवे ॥ उनकी निकट उनकों कष्ट कछू न होवे ॥ जेसें दो पुरुष एकही सिजा परी सोए होवे अरु दोनोंकों सुपना आवे एककी सृष्टिविषे प्रलय होती हे अरु दुसरे को ज्योंकीत्यों रहे इस विषे कछू आश्चर्य नही ॥ हे रामजी इस प्रकार में अनंत सृष्टि देखीयां परंतु तिनविषे सार ब्रह्मसत्ता में देखी ॥ अवर सभ सुपद्मवत् स्थान दृष्ट आए ॥ जेसें के लके दृढविषे सार कछू नही निकसता तेसें स्थानविषे सार कछू न देखा ॥ हे रामजी क्रिया काल सभ विश्व ब्रह्मस्वरूप हे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग बुद बुदे सभ जलरूप हे ॥ तेसें जग त् सभ ब्रह्मस्वरूप हे इतर कछू नही ॥ जेसें क्षीर समुद्रविषे तरंग आदत्त क्षीरतें भिन्न कछू नही होते ॥ तेसें तुं अरु में जगत सभ ब्रह्मही हे ॥ जब बोधकी उर में देखो तब सर्व ब्रह्मही दृष्ट आवे॥जब संकल्पकी उर देखों तब नाना प्रकारका जगत दृष्ट आवे इस प्रकार में अनंत सृष्टि देखत भया॥कइुं अैसी सृष्टि देखी जो अधहीहे॥कइुं गुणकी सृष्टि देखी अरु कइुं अैसी सृष्टि देखी जो धर्म अधर्मकों जानतेही नही ॥ हे रामजी एकसों पंचास सृष्टि त्रेतायुगकी देखी अरु जो भिंन्न भिन्न सृष्टि हे॥अरु भिन्न भिन्न जगत तिनविषे ब्रह्माके पुत्र वसिष्ठ भिन्न भिन्न देखें ॥ जिनकों मेरे समान ज्ञान हे अरु मेरेही समान मूर्त्ति हे ॥ बहुरी मुझतें उत्तमभी हे अरु तुं सुण जो तीन एकसे पंचास सृष्टिविषे तितनें वसिष्ठ देखे ॥ तिन सभके आगें उपदे स लेणेके निमित्त रामजी बैठेहे ॥ अरु त्रेताजुग विषे अनेक युग अरु अनेक द्वापर अनेक त्रेता अनेक सतजुग देखे सो सभ चैतन आकासके आश्रय देखे ॥ हे रामजी हुए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिना सभ दृष्ट आवे ॥ जेसें मरूथलविषे जल भासता हे ॥जेसें आकासविषे अनहोती नीलता भासती ॥जेसें जेवरीविषे अनहोता सर्प भासता हे तेसें ब्रह्म करकें अनहोता जगत भासता हे ॥ हे रामजी मनके फुरणेकरी जगत् भासता हे ॥ अरु फुरणेके मिटेतें सभ ब्रह्मही भासता हे ॥ हे रामजी अनंत सृष्टि में देखीयां ॥ जेसें सूर्यकी किरणविषे अनंत त्रसेरणु दृष्ट आवे तेसें सृष्टि अनंत देखीयां एक चैतनतें अनेक चैतन दृष्ट आवे ॥ जेसें वृछते फल प्रगट होते हे ॥ तेसें संकल्परूपी वृछतें सृष्टि रूपी फल दृष्ट आवे ॥ जेसें एक गुलरके फलविषे अनंत मछर होते हे तेसें एक आत्मसत्ताके आश्रय अनंत सृष्टि संकल्पके फुरणेकरी मुझकों दृष्ट आइयां ॥ कहुं महाप्रलयके क्षोभ होते हे अरु समुद्र उछलतें हे तिनके तरंग देवलोककों गिरावतेहे ॥ कहूं स्यामरूप चंद्रमा उष्ण दृष्ट आवे कहुं सूर्य सीतल दृष्ट आवे ॥ कहूं अैसी सृष्टि दृष्टि आवे जो दिनकों अंध होजावे ॥ अरु रात्रकों चेष्टा करे उलूकादिककी न्यांइ अरु कहुं अेसी सृष्टि देखी जो उनकों रात्र अरु दिनका ज्ञान कछू नही ॥ अरु कालका ज्ञानभी नही धर्म अधर्मका ज्ञानभी नही जेसी अपणी इछा होवे तेसें करते ॥ कहुं अैसी सृष्टि देखी जो पुण्यकरने हारे नरककों प्राप्त होते हे ॥ अरु पाप कर्त्ता स्वर्गको जावे कहुं ऐसी सृष्टि देखी जो वालूतें तेल निकसता हे अरु विषपान कीएतें अमर होतेहे ॥ अरु अमृत के पान कीएतें मरी जावे ॥ हे रामजी जेसें कीसीका निश्चय होताहे तेसाही आगें भासता हे यह जगत् संकल्पमात्र हे ॥ जेसें भावना होती हे तेसा आगें होकरी भासता हे कहुं पथरविषे कमल उपजते दृष्ट आए हे ॥ अरु कछू वृछही साथ रत्नहीरे दृष्ट आए हे ॥ अरु बडे प्रकास संयुक्त आकासविषे वृछके वन दृष्ट आए हे ॥ कहूं अेसी सृष्टि देखी जो मेघके बादलही तिनके वस्त्र हे ॥ वस्त्रोकी न्यांइ बादलोकों पकरी लेवे ॥ कहुं सीसके भार लेतें दृष्ट आवे अरु सभ चेष्टाभी करे ॥ अंधे काणे दोरे इत्यादिक नानाप्रकारकी सृष्टि देखी हे ॥ हे रामजी जब में स्वरूपकी उर देखों तब सब सृष्टि शून्य रूप दृष्टि आवे ॥ अरु जब संकल्पकी उर देखों तब नाना प्रकारका जगत् भासे ॥ कहुं अेसेहि दृष्ट आवे जो चंद्रमा सूर्यकों जानतेही नही ॥ कहुं एक पृथ्वीकी सृष्टि देखि पृथ्वीविषे ॥ अरु अग्निकी सृष्टि देखी अग्निविषे जलकी सृष्टि जलविषे देखी ॥ कहुं पांचभूतकी सृष्टि देखी जेसें यह विद्यमान हे ॥ कहुं काष्टको पुतलीवत् सृष्टि चेष्टा करती देखी जेसें यह विद्यमान हे ॥ भोजन करतीहे कहुं कहुं प्राणहुं विना चेष्टा करते हे जंत्रीकी पूतलीयांवत् ॥ हे रामजी जब अैसे सृष्टिकों देखता देखता महा आकासविषे अनंत जोजन पर्यंत चल्या गया ॥ परंतु एक आकासही दृष्ट आवे अवर तत्व कोउ दृष्ट न आवे ॥ बहुरी अैसी सृष्टि देखी जो खाणा पीणा सभ चेष्टा करे परंतु दृष्ट न आवहि वैतालको न्याइ ॥ जेसें वैताल सभ चेष्टा करते हे अरु दृष्ट न आवे तेसें उह दृष्ट आवे ॥ अरु कहुं एसी सृष्टी देषी जो मे अरु तुं कल्पनाभी नही ॥ केवल निश्चित पद रहे ॥ अरु कहूं अेसी सृष्टि देखी जोउनका मनहीनही ॥ कहूं निरहंकार सृष्टि देखी कहूं अेसी सृष्टि देखी जो सभविषे आत्मभावना करते करतेहें ॥ कहूं सभ अपणा आपहि जाणे भेद भावना किसीके नही ॥ कहुं ऐसी सृष्टि देखी जो सभ मोक्षकी लक्ष्मी करी सोभतेहे कहुं एसी सृष्टि देखी जो उपजी करी नास होजावे सिघ्रही ॥ जेसें नख अरु केस उपजते हे ॥ कहुं अेसे देखे जो चिरकालपर्यंत रहे ॥ हे रामजी इस प्रकार अनंत सृष्टि देखीयां सो केसी सृष्टि हे जो अन होती फुरतीयां हे अरु संकल्प मात्रहे ॥ जब संकल्प लय हो जावे तब जगत भ्रम निवृत्त हो जावे ॥ चित्तके स्पंदविषे सब जगत जाल देखे वस्तुतें क्या दृष्टि आवे सो सुण ॥ मैं उर्ध गया अर्ध गया दसो दिशा गया परंतु मेरे तो चैतनरूपी समुद्रके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बुदबुदे भासे हे अवर कछु न भासे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे जगतजाल वर्णनं नाम शताधिकनवसप्ततितमःसर्गः ॥ १७९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ब्रह्म चिदाकास अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जेसें जल अपणे जलभावविषे स्थित हे ॥ अरु तिसविषे जो चैत्योन्मुखत्व हुआहे तिसकों मुनीश्वर चित्ताकास कहतेहें ॥ तिस मन विषे संकल्प विकल्प फुरणेकरी अनंत कोटि ब्रह्मांड बनि गएहें ॥ तिसका नाम भूताकास हे जो मनतें उपजाहे ॥ इस कारनतें इसका नाम भूताकास हे ॥ सो संकल्पमात्र हे आत्मातें इतर कछू नही ॥ ॥ श्रीरामोवाच ॥ हे भगवन् यह जो कल्प हे ॥ ब्रह्माका दिन अरु रात्र जो दिनविषे भूत उत्पत्ति होतेहे अरु रात्रविषे प्रलय होजाते हे ॥ अरु जब महा प्रलय होताहे ॥ तब भूत कोउ नही रहता सब ब्रह्मसत्ताविषे लीन होजाते हे सब जीवन्मुक्त होजातेहे ॥ सूक्ष्म ब्रह्महीं शेष रहताहे तिस सूक्ष्म ब्रह्मतें बहुरी केसें उत्पत्ति होतीहे सो कृपा करकें कहो ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब महाप्रलय होताहे तब सब भूत नष्ट होजातेहे ॥ अरु ब्रह्मसत्ता सेष रहतीहे तिसकोंभी मानताहे ॥ तुजनेंभी कहां जो पाछें ब्रह्म सत्ता सेष रहती हे ॥ जब तुजनें मान्या जो सभका कारन ब्रह्म सेष रहताहे ॥ सो ब्रह्मसत्ता शुद्ध स्वरूप हे आकासतेंभी सूक्ष्म हे ॥ जो आकासका एक अणु होवें अरु तिसका सहस्रभाग करीए जेसें उह अणुका भाग सूक्ष्म होताहे तिसतेंभी ब्रह्मसत्ता अति सूक्ष्म हें ॥ हे रामजी ऐसें सूक्ष्म ब्रह्मतें जगत्की उत्पत्ति केसें कहों ॥ अरु जो उत्पत्तिही नही भइ तो तिसकी प्रलय केसें होवे ॥ अरु यह जगत् जो दृष्ट आताहे सो ब्रह्मका रीदा हें ॥ अपणी जो सुभाव सत्ता हे तिसका नाम रीदा हें सो यह जगत ब्रह्मका वपु हें ॥ जेसें सुपन विषे अपणी संवितही देस काल पर्वत आदिकरूप होती हें ॥ तेसें यह जगत संवितरूप हें ॥ अरु अपणें स्वरूपके अग्यान करीकें हुएकी न्यांइ दुःखदायक भासताहे जेसें अपणे पछा विषे अग्यानकरीके भूतकल्पताहें अरु भयकों प्राप्त होताहें ॥ जब विचार करी देखताहे तब भय निवृत्त होजाताहें ॥ तेसें यह जगत कछू उपजा नही ॥ हे रामजी चेतन संवितही जगत आकार होकरी भासती हें अवर वस्तु कछू नही ॥ जो सब उही हुआ तो आदि सर्गका होणा अरु प्रलय सब उसीके अंग हे इतर कछु नही ॥ अस्ति नास्ति उदे अस्तें आदि जो सब्द हें ॥ सो सब आकासरूप हें ॥ अरु सबका अधिष्टान आत्मसत्ता हें ॥ अरु सर्व सब्द ब्रह्महीविषे होतेहे ॥ अरु ब्रह्म सर्व सब्दतें रहितभी हें ॥ जो सर्व सब्दते रहित हुआ तो जगतकी उत्पत्ति प्रलय क्यों करी कहि जावे ॥ आत्मा अछेद अरु अदाह अरु अछेद्य हे अद्रश्य हें ॥ इंद्रियांका विषय नही ॥ असब्द पद केवल आत्मा हे अरु परमदेव हे ॥ अरु जगत्भी अविनासी हें काहेतें जो उपजाहो नही ॥ हे रामजी जगत्भी आत्मातें इतर नही आत्मरूप हे जो आत्मरूप हे तो विकार कहां होवें ॥ सर्व सब्द अरु अर्थका अधिष्ठान आत्मसत्ता हे तातें जगत् ब्रह्मस्वरूप हे ॥ जेसें अंगवाला सर्व अंग अपणे जानता हे ॥ तेसें सब जगत् ब्रह्मके अंग हें ॥ अरु सबकों जानताहें वास्तवतें सुखछ आकासवत् हे अदेस काल वस्तु सुख दुःख जनम मरन साकार निराकार केवल अकेवल नासी अविनासी इत्यादिक सर्व सब्द अरु अर्थ सब ब्रह्महीके नाम हें॥जेसें अवयव अवयवी पुरुषके हे जो पसारे तोभी अपणे स्वरूपहे ॥ जो संकोचे तोभी अपणें अवयव हें ॥ तेसें उत्पत्ति प्रलय सब ब्रह्महीके अवयव हें ॥ इतर कछू नहि परंतु इतरकी न्याइ जगत् हूआ भासताहें ॥ जेसें सूर्य किरणां विषें जल कछू हूआ नही परंतु हूएकि न्यांइ दृष्ट आताहें किर्णाही जल होकरी भासतीहें ॥ तेसें आत्मा जगत् आकार होकरि भासताहे सो आत्मा स्वरूपही हें ॥ हे रामजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शुद्ध चिन्मात्र ब्रह्मरूपी एक वृक्ष हैं ॥ तिसविषे सो संवित फुरणा हूआहैं सो दृढ मूल हे ॥ अरु चित्त शरीररूपी तिसके थंभ हैं अरु लोकपाल तिसके दास हैं अरु साखा तिसकी जगत् अरु फल तिसका प्रकास हैं ॥ जिस करी जगत प्रकासता हे अरु अंधकार तिसवृछविषे स्यामताहे ॥ अरु वृक्षविषे जो पोल होतीहे सो आकास हे अरु फुलके गुछेहे सो प्रलय हे ॥ अरु गुछेके हिलावणे हारे जो भवरे होतेहे सो विष्णु रुद्रादिक हैं अरु जडता तिसकी तुचाहे ॥ इस प्रकार सम सत आत्मब्रह्महे ब्रह्म त्वभावतेंभी नही कछू नही सर्वदा अपणे सुभावविषे स्थितहे ॥ हे रामजीजगत्का भाव अभाव उत्पत्ति प्रलयादिक सर्व सुभाव अनुभवरूप ब्रह्म स्थितहे॥अरु विकार तिसविषें कोइ नही केवल सुध निरंजन आत्मा आकास निर्मल हे ॥ जेसें चंद्रमाके मंडल विषे विषकी वल्ली नही होती ॥ तेसें आत्माविषे विकार कोऊ नही निर्मल आकासरूप हैं ॥ अरु आदिअंत मध्यकी कलनातें रहितहे तो लोकपाल भ्रम केसें होवे अरु जेते कछू विकार भासतेहे सो आत्माके अज्ञानकरी भासतोहैं जब तुं एकाग्र चित्त विकार करके देखेगा ॥ तब जगत भ्रम सांत होजावेगा॥ यह जगतभ्रम फुरणेकरी भास्या हैं ॥ जब फुरणा उलटीकरी आत्माकी उर आवेंगा तब यह जगत भ्रम मीटी जावेगा ॥ जेसें पवनकरी दीपक जागताहे अरु पवनही करी लीन होजाताहैं ॥ तेसें चित्तके फुर्णेकरी जगत भास ताहैं ॥ अरु चित्तका फुरणा जब अंतर्मुख होताहैं तब जगत भ्रम मिटि जाताहैं ॥ हे रामजी जब ज्ञान कर्के देखेगा तब अज्ञानरूप फुरणेका त्रिकाल अभाव होजावेगा॥बंध मुक्ती आ त्माविषे कोउ न भासेगी इसविषे संशय कछू नही यह जगत जाल जो भासताहैं सो आत्माविषे कछू उपजा नही अज्ञान कर्के भासताहैं जब विचार कर्के देखेंगा तब अष्ट सिद्धिका ऐश्वर्य तृणवत भासेगा ॥ ॥ इतिश्री योगवसिष्ठे निर्वाण प्रकरणें बोधजगतएकता प्रतिपादनं नाम शताधिकाशीतितमः सर्गः ॥ १८० ॥ ॥ ७ ॥ ॥७ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन यह जो जगत जाल तुमनें देखी चिद्रूप होकरी सो एक स्थान विषें बेठि करी देखी अथवा सृष्टिविषे जायकरी देखी सो कहो? ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी में अनंत आत्मा हों सर्वसक्ति संपन्न सर्वव्यापी चिदाकास हों ॥ मेरेविषें आवणा जाणा केसें होवें ॥ न एक स्थांन विषें बेठिकरि देखी हैं ॥ अरु न सृष्टि विषे जायकरी देखीहैं ॥ हे रामजी में चिदाकास हों चिदाकासविषे देखि हे ॥हे रामजी जेसें तुं अपणे अंगकों सिखातें लेकरी नख पर्यंत देखता हे तेसें मैं ज्ञाननेत्रकरी अपणे आपही विषे जगतकों देखत भया हों ॥ सो केसें जगतकों देख्याहैं जो निराकार निरवयव आकासरूप निर्मल देखेहैं अरु सावयव जो द्रष्ट आएहे सो फुरणेकरी द्रष्ट आएहैं वास्तव कछू नही केवल आकासरूप हैं॥ जेसें सुपनेविषे सृष्टिका अनुभव होवें परंतु संवितरूप हैं अवर कछू नही ॥ जेसें वृच्छके पत्र टास फूल फल सब अपणे अंग होतेहैं॥ तेसें ज्ञाननेत्रकरी जगतकों मैं देखता भयाहों॥ हे राम जी जेसें समुद्र सब तरंग फेन बुदबुदें अरु जल तरंगकों अपणे आपहीविषे देखताहैं ॥ तेसें मैं अपणे आपविषे जगतकों देखत भयाहों ॥अरु अबभी में इस देहविषे स्थित हूआ पर्वत विषे सृष्टि ओं ज्ञान कर्के देखताहों ॥ जेसें कूटीके अंतर बाहीर आकास एकरूप हे तेसें मुझकों आगेंभी अरु अबभी जगत आकासरूप अपणें आपविषे भासतेहैं ॥ जेसें जल अपणे रसकों जानताहैं जेसें बरफ अपणी सीतलताकों जानताहैं ॥ जेसें पवन अपणे स्पंदताकों जानताहैं तेसें मैं ज्ञानकरी सृष्टि अपणे विषे देखत भयाहों ॥ जिस ज्ञानवान पुरुषकों शुद्ध बुद्ध विषे एकता भइ हैं ॥ सो अेसें देखताहे जो सर्वात्मा आकासवत अपणा आप हे ॥ जिसकों आत्मस्थिति भइ हे सो वेदनकोंभी अवेदन देखताहैं जो कदाचित उपजा नही जेसे दे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वता अपणे अपणे स्थानविषे बेठा हूआ दिव्य नेत्रकरी कोटि जोजन पर्यंत अपणे विद्यमान देखतेहे ॥ तेसें जगतोंकों मे सर्वात्म होकरी देखत भयाहों ॥ जेसें पृथ्वीविषे निधी होतीहे ॥ अरु ओषधीरस सहित पदार्थ होतेहें ॥ सो पृथ्वी अपणे विषेही देखतीहे तेसें में जगतकों अपणे विषेही देखत भयाहों ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् उह जो कमलनेनी कांता थी आर्या छंदके पाठ करनेहारी सो बहुरी क्या करत भइ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी आकास वपुकों धारकें मेरे निकट आनि स्थित भइ ॥ जेसें भवानी आकासविषे आनि स्थित होवे तेसें आनिस्थित भइ ॥ जेसें में आकाश वपुथा तेसे उसकों में आकाश वपु देखत भया आकाशविषे प्रथम इस कारणतें न देखत भया जो मेरा अधिभूतक शरीर था॥ जब चित्तपद होकरी में स्थित भया तब कांताकों देखी ॥ में आकाशरूप हों अरु उह सुंदरीभी आकाशरूप हे ॥ अरु जगत जाल जो देखी सोभी आकाशरूप हे ॥ श्रीरामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् तुमभी आकाशरूप थे अरु उहभी आकाशरूप थी अरु वचन विलास तब होता हे जब शरीर होता हे ॥ अरु तिसविषे बोलणेका स्थान कंठ तालू नासिका दंत होठ आदिक होते हे ॥ अरु प्राण अंतर प्रेरने हारे होते हे तब अक्षरका उच्चार होताहे तुम तो दोनों निराकार थे तुमारा देखणा बोलणा किसप्रकार भया ॥ अरु बोलणा अवलोकन रूप मनस्कार करी होता हे ॥ रूप कहीए दृश्य, अवलोक कहीए इंद्रीयां, मनस्कार कहीयें मनका फुरणा, इन तीनोंविना तुमारा बोलणा केसें हुआ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी जेसें सुपनेविषे रूप अवलोक मनस्कार अरु सब्द पाठ परस्पर वचन होते हे ॥ सो आकाशरूप होते हे ॥ तेसें हमारा देखणा बोलणा आपसविषे परस्पर संवाद हुआ हे ॥ जेसें सुपनेविषे देखते हे रूप अवलोक मनस्कार आकाशरूप होते हे ॥ अरु प्रत्यक्ष भासते हे ॥ तेसें हमारा देखणा अरु बोलणा हुआ यह प्रश्न तुमारा नही बनता जो देखणा बोलणा केसें हुआ ॥ अरु जेसें आकाशविषे में सृष्टि देखीआं हे तेसें यह सृष्टिभी हे जेसें उनके शरीर थे तेसें उनके अरु हमारे शरीर जेसे यह जगत हे तेसें उह जगत हे ॥ हे रामजी यह आश्चर्य हे जो सत वस्तु नही भासती हे अरु जो असत वस्तु हे सो भासती हे जेसें सुपनविषे पृथ्वी पर्वत समुद्र अरु जगत व्यवहार हे नही सो प्रत्यक्ष भासता हे अरु सत वस्तु अनुभवरूप नही भासती ॥ तेसें हम तुम जगत सब आकाशरूप हे ॥ जेसें सुपनविषे युद्ध होते भासते हे अरु शब्द होते हे अरु आवणा जावणा हो भासता हे सब आकाशरूप हे अरु हुआ कछू नही तेसें यह जगतभी हे ॥ हे रामजी सुपन सृष्टि मिथ्या हे बनी कछू नही ॥ अरु कछु हें सो अनुभवरूप हे इतर कछू नही अरु तुं कहे सुपना क्या हे अरु केसें होते हें सो सुण ॥आदि परमात्मतत्वविषे सुपन वचन हुआ हे सो विराट आत्मा हे ॥ बहुरी तीसतें यह जीव हुएहे सो आकाशरूप हे ॥ काहेते जो विराट आकाशस्वरूप हे यह सब आकाशरूप हे॥ अरु सुपन दृष्टांतभी में तेरे बोधके निमित्त कहा हे ॥ काहेतें जो सुपनाभी कछू हुआ नही केवल आत्म मात्र हे ब्रह्मही अपणे आपविषे स्थितहे ॥ हे रामजी उह कांता में देखी तब उसतें पूछत भया काहेतें जो संकल्प मेरा अरु उसका एक हुआ ॥ जेसें सुपनविषे सुपन जनका होता हे तेसें हमारा हुआ ॥ हे रामजी जेसें सुपन सृष्टि आकाशरूप होती हे तेसें हम तुम सब जगत आकाशरूप हे कछू हुआ नही सुपन जगत अरु जाग्रत जगत एक रूप हे ॥ परंतु जाग्रत दीर्घ कालका सुपन हे तातें इसविषे दृढ व्यवहार उत्पत्ति प्रलय होते भासते हे ॥ हे रामजी सुपनविषे भोग होते भासते हे सोभ्रांतिमात्र हें ॥ निर्मल आकासरूप आत्मातें इतर कछू बण्या नही ॥ तेसे यह द्रश्य अरु द्रष्टा सुंपनेकी न्याइ अणहोते भासतेहे ॥ जो हम तुम आदिक द्रश्यकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनरूपी द्रष्टा सत्य मानताहे सो दोनों अज्ञान करके भममात्र उद्दे हूएहे ॥ अरु जो शुद्ध द्रष्टा हे सो द्रश्यतें रहितहे ॥ अरु जेसें द्रष्टा आकासरूप हे ॥ तेसें द्रस्यभी आकासरूप हे ॥ जेसें सुपनसृष्टि अनुभवतें इतर कछू नही तेसे यह जाग्रतभी अनुभवरूप हें ॥ हे रामजी चिदाकास जो अनंत आत्मा हें सो इस जगतका कारण केसें होवें जेसें सुपन सृष्टिका कारनकोउ नही तेसें इस जाग्रत जगतका कारनभी कोऊ नही काहेतें जो हुआ कछू नही ॥ अरु जो कछू हे सो अनुभवरूप हे तातें यह जगत अकारण हे ॥ हे रामजी यह जीव साकाररूप हे अरू इनके सुपनेका सृष्टि नाना प्रकारकीहोतीहें ॥ सोभी आकासरूप हे कछू आकार नही अरु जो निराकार अद्वैत आत्मसता हें ॥ तिसविषे आदि आभासरूप जगत फुर्याहें सो आकासरूप क्यों न होवे साकार क्या अरु निराकार क्या सो सुण ॥ एक चित्तहे एक चेत्यहें चित्त नाम हें शुद्ध चिनमात्रका अरु चैत्यनाम हे द्रश्यफुरनेका अरु जिस चित्तकों द्रश्यका संबंध हे तीसका नाम जाव हें ॥ जिस चित्तकों अज्ञान करकें द्वेतका संबंध हे अरु अनात्मविषे आत्म अभिमान हें अेसा जो जीव हे सो साकाररूप हें तिसके सुपनेकी सृष्टि आकासरूप हें सो अचैत्यचिनमात्र निराकार सत्ताहें ॥ तिसका सुपन आभासरूप जगत आकासरूप क्यों न होवे ॥ हे रामजी यह जगत निरुपादानरूप हे अर्थ यह जो बन्या कछु नही चिदाकास निराकाररूप हे ॥ जेसें सुपने विषे जगत अकृतम होताहे तेसें यह जगत हे ॥ न इसकों कोऊ निमित्त कारनहे न समवाय कारनहे आत्मा अच्युत हे ॥ अरु अद्वैत हे सो दृश्यका कारन केसें कहीए हे रामजी न कोऊ कर्त्ता हे न भाक्ताहे न कोऊ जगत हे ॥ हे अरु नाही यहभी कहणा नही बनता ॥ ऐसा जो ज्ञानवान हे सो पाषाणवत मौन स्थित होताहें ॥ अरु जब प्रकृत आचार आनी पडताहे तब तिसकों भी कर्त्ता हे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे जगत एकता प्रतिपादनं नाम शताधिकएकाशीतितमःसर्गः ॥१८१॥

॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् उह जो तुमारे निकट आकासरूप कांता आइ थी ॥ सो अनेक कचरतादिक अछर केसें बोली सरीरविना अरु जो तुम सुपनेकी न्यांइं कहो तव सुपने विषेभी केवल आकास होताहें ॥ तहां वरलव आदिक केसें बोलताहे ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी सुपनेविषे जो सरीर होताहे सो आकासरूप हे ॥ तिसविषे कचटतादिक अछर कदाचित् उद्देस नही हुए ॥ जेसें मृतक कदाचित् नही बोलता ॥ तेसें आकासरूप आत्माविषे सब्द कदाचित नही हुआ ॥ अरु जो तुं कहे सुपनेविषे जो यरलवादिक अछर प्रवृत्त होते हे तिसका उत्तर यह हे ॥ जो कछू सबद उहां सत हुए होते तो निकट बेठेकोंभी सुनते ॥ हे रामजी निकट बेठे जगतकों नही सुणी तो एसें में कहताहों जो आकासरूप हे हुआ कछू नही हुआ भासता हे सो भांतिमात्र हे केवल चिन्मात्र आकासका किंचन हे सो आकासविषे आकासहि स्थित हे ॥ तेसें यह जगतभी हुआ कछू नही ॥ हे रामजी जेसें चंद्रमाविषे स्यामता हे अरु आकासविषे वृच्छ होता हे ॥ अरु जेसें पथरविषे पुतलीयां नृत्य करती भासे सो मिथ्या हे ॥ तेसें यह जगतका होणा मिथ्या हे ॥ हे रामजी सुपनेविषे जो जगत भासता हे सो चिदाकासका किंचन हे सो किंचनभी आकासरूप हे इतर कछू नही जेसें सुपनका जगत आकासरूप हे तेसें यह जगतभी आकासरूप हे जेसें यह जगत हे तेसें उह जगत थे ॥ अरु यह जो आकास हे सो आत्मा आकासविषे अनाकास हे जेसें सुपनेकी सृष्टि भमकरके प्रवृत्त भासती हे ॥ तेसें जगतभी भम करके प्रत्यक्ष भासता ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् जो यह जगत सुपना हे तो जाग्रत क्यों भासता हे ॥ अरु जो असत हे तो सतकी न्यांइ क्यों भासता हे ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी एक मृदु संवेग हे एक मध्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संवेग हे एक तीव्र संवेग हे ॥ संवेग कहीए संकल्पका प्रणाम सो त्रिविध हे ॥ जेसें कोउ पुरुष अपणे स्थानविषे बेठा हुआ मनोराज करें किसी व्यवहारकों रचता हे सो तिसकों जाणता हे जो संकल्पमात्र हे ॥ अरु जेसें नट स्वांग धारताहे तब उह जाणता हे जो मेरा स्वांग हे ॥ अरु न मेरा यह स्वांग सत्य हे अपणे स्वरूपकों सत जाणता हे ॥ इसका नाम मृदु संवेग हे काहेतें जो अपणा स्वरूप नही भूला ॥ अरु मध्य संवेग यह हे जेसें कीसी पुरुषकों सुपना आवता हे तिसविषे सुपन सृष्टि भासती हे अरु एक सरीर अपणा भासताहे ॥ तब अपणे सरीरकों सत जाणता हे अरु जगतकोभी सत जानता हे काहेतें जो स्वरूपका प्रमाद हे ॥ सुपनकालविषे सृष्टिकों सत जानता हे अरु आगें हुए तिसकों असत्य जानता हे ॥ तिसका नाम मध्य संवेग हे काहेतें जो सोया हुआ सीघ्रही जागी उठता हे अरु जो सोया अरु जागे नही तिसका नाम तीव्र संवेग हे॥ हे रामजी आदि संकल्प सुपन विषयरूप भासते हे ॥ तिसविषे नाना प्रकारकी सृष्टि होकरी स्थित हे ॥ जिनकों आदि स्वरूपका प्रमाद नही हुआ तिनकों यह जगत मृदु संवेग हे काहेतें सो अपणी लीलामात्र असत्य जाणतें हे ॥ अरु जिनकों आदि स्वरूपका प्रमाद हुआ हे ॥ अरु बहुरी सीघ्रही जागी उठतें हे स्वरूपविषे तब तीनकों यह जगत असत्य भासता हे ॥ उनकी इस जगतविषे सत्य प्रतीत नही होती ॥ अरु जिनकों प्रमाद हुआ हे बहुरी जागे नही तीनकों यह जगत सत हो भासता हे ॥ काहेतें जो चित्तकी वृत्तिका प्रमाण तीव्र होगया हे ॥ इस कारणतें अज्ञानीकों यह जगत सुपनरूप जाग्रत हो भासता हे ॥ जेसें सुपनकालविषे सुपनेकी सृष्टि सत्य हो भासती हे ॥ हे रामजी चित्तके फुरणेका नाम जगत हे ॥ जब चित्त बहिर्मुख होताहे तब जगत हो भासता हे अरु स्वरूपका अज्ञान होता हे ॥ जब अज्ञान हुआ तब जगत भ्रम दृढ होता जाता हे ॥ तातें इस जगतका कारण अज्ञान हे ॥ हे रामजी आत्माके अज्ञान करकें जगत भासता हे ॥ जब आत्मज्ञान होवेगा तब जगत भ्रम निवृत्त हे जावेगा ॥ सो आत्मा अपणा आप हे तातें आत्मापदविषे स्थित होहु ॥ तब जगत भ्रम निवृत्त हो जावेगा ॥ हे रामजी अज्ञान करकें इस जगतकी सत प्रतित होतीहे ॥ तिसविषे जेसी जेसी भावना होतीहे तेसेंही जगत हो भासता हे ॥ हे रामजी जिस प्रकार जगत भ्रम सत्य हो भासता हे सो सुण ॥ जो अज्ञानी जीव हे जब मृतक होता हे तब मुक्त नही होता अज्ञानके वसतें जड पथरवत होताहे ॥ काहेतें जो चेतनरूप हे ॥ हे रामजी जब मुत्यु होताहे तब आकासरूप चित्तविषेही जगत फुरी आता हे अरु अपणी वासनाके अनुसार नाना प्रकारका जगत हो भासता हे ॥ अरु नाना प्रकारके व्यवहार रचना क्रिया सहित होकरी भासतीहे ॥ अरु कल्प पर्यंत सब क्रिया जीवकी अंतवाहक होतीहे जेसी हमारी हे ॥ हे रामजी तुं देख उह जगत क्यारूप हे ॥ कीसी कारनतें तो नही उपजा जेसें उह जगत कलना मात्र सत हो भासताहे तेसें यह जग तभी जाण॥ हे रामजी येह जो तेरेतांइं सुपना आवताहे तीसविषे जो पुरुष पदार्थ हे सोभी सत हे काहेतें जो ब्रह्मसत्ता सर्वात्मक हे ॥ हे रामजी प्रबोध हूएभी सुपनेंके पदार्थ विद्यमान भासताहे ॥ इसीतें कहाहे जो सुपन संकल्प ब्रह्म अरु जाग्रत तुल्य हे जेसें आगें उदाहरन कहे हे ॥ शुक्रका अरु इंद्र ब्राह्मणके पुत्रका लवण अरु गाधीका इनको मनोराज भ्रम प्रत्यक्ष हुआहे आगे कहेंगे दीर्घ तपाकों सुपन प्रत्यक्ष हुआ हे इसीतें कहा हे जो सभ तुल्य हे ॥ अरु जीव जीव प्रती अपणी अपणी सृष्टि हे ॥ काहेतें जो संकल्प अपणा अपणा हे तातें सृष्टि भिन्न भिन्न हे ॥ अरु सभका अधिष्ठान आत्मसत्ता हे ॥ अरु सर्व सृष्टिका प्रतिबिंब आत्मरूपी आदर्सविषे होता हे ॥ अरु सर्व सृष्टि आत्माका अनुभव हे ॥ जेसें बीजतें वृक्ष उत्प

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न होता हे अरु तिस वछतें अवर वछ होते हे तोहु विचारकरी देख जो बीज तौ एक था अरु सभ वक्ष आदि बीजतें उपजे हे ॥ तेसें एक आत्मातें अनेक सृष्टि प्रकासतीयां हे ॥ परंतु स्वरूपतें इतर कछू नही जेसें एक पुरुष सोया हे अरु तिसकों सुपनकी सृष्टि भासी आती हे ॥ वहुरी सुपनेविषे जो वहुत जीव भासते हे ॥ तिसकोंभी अपणे अपणे सुपनेकी सृष्टि भासती हे ॥ हे रामजी जिसतें आदि सुपन सृष्टि भासती हे ॥ सो पुरुष एकही हे तिस एकहीविषे अनंत सृष्टि चित्तके फुरणे करी होतीयां हे ॥ तेसें आत्मसत्ताके आश्रय अनंत सृष्टि फुरतीयां हे ॥ परंतु स्वरूपतें कछू हुआ नही सभ आकासरूप हे ॥ अरु जीवकों अपणी अपणी सृष्टि अज्ञान करीकें भासती हे ॥ हे रामजी जीवकों अवरकी सृष्टिका ज्ञान नही होता ॥ अपणीही सृष्टिकों जानतें हे ॥ काहेतें जो संकल्प भिन्न भिन्न हे ॥ एककों हम सुपनेके नर हे अरु एक हमकों सुपनेके नर हें ॥ उह अवर सृष्टिविषे सोएहे अरु हमारी सृष्टि उनकों सुपनेविषे भासती हे तिनकों हम सुपनेके नर हे ॥ अरु जो हमारी सृष्टिविषे सोएहे तिनकों सुपनेविषे अवर सृष्टि भासिआइ हे सो हमारे सुपनेके नर हे ॥ हे रामजी इस प्रकार आत्मतत्वके आश्रय अनंत सृष्टि भासतीयां हे ॥ अरु सृष्टिकों सत जाणीकरी जीव विचरते हे सो मोक्ष मार्गतें शून्य हे ॥ जेसें यह पुरुष शयन करताहे तिसकों सुपनेविषे प्रणाम हुआ तिसविषे जो जीव हुए तिनको वहुरो सुपन हुआ तव अपणी अपणी सृष्टि उनकों भासती हे ॥ अरु वहुरी तिसकों अपणी अपणी सृष्टि भासी आइ तो अनंत सृष्टि अनुभवतें आश्रय होतीयां हे तेसें एक आत्माके आश्रय असंख्य सृष्टि फुरतीयां हे ॥ सो सृष्टि केसीयां हे केइ समान हे केइ अर्ध समान हे केइ विलक्षण भासते हे ॥ अपणी अपणी सृष्टिकों जीव जाणते हे ॥ जेसें एक मंदिरविषे दस पुरुष सोएहे ॥ अरु तिनकों अपणा अपणा सुपना आया तव उसकी सृष्टिकों उह नही जाणता उसकी सृष्टिकों उह न जाणता ॥ तेसें यह सृष्टिभी अवरकों अज्ञान हे काहेतें जों संकल्प अपणा अपणा हे ॥ जेसें पथरकों पथर नही जाणता अरु जो अंतवाहक सरीर जोगेश्वर हे ॥ तिनकी सृष्टिका ज्ञान होता हे ॥ हे रामजी वास्तवतें सृष्टिभी निराकार आकासरूप हे ॥ जेसें सूर्यकी कीरणांविषे जलाभास होताहे तेसें आत्माविषे सृष्टि हे ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प भासता हे तेसें आत्माविषे सृष्टि भासती हे ॥ हे रामजी वास्तवतें कछू हुआ नही सर्वदा काल सर्व प्रकार आत्माही अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जिनकों आत्माका प्रमाद हुआ तिनकों जगत् भासता हे वास्तवतें जगत् कीसी कारणकरी नही उपजा आभासरूप हे ॥ सम्यक् ज्ञानके हुएतें ब्रह्म अद्वैत भासताहे ॥ अरु असम्यक ज्ञानतें द्वैतरूप जगत हो भासता हे ॥ जेसें जेवरीके सम्यक ज्ञानतें जेवरी ही भासती हे ॥ अरु असम्यक् ज्ञान करी सर्प भासता हे तेसें आत्माके असम्यक् ज्ञान करी जगत् भान होता हे ॥ हे रामजो में उस देवीसों प्रश्नकीया जो हे देवी तुं कहांतें आइ हे ॥ अरु तेरा स्थान कवन हे ॥ अरु तुं कवन हे अरु इहां कीस निमित्त आइ हे तव देवी बोली ॥ ॥ देवीउवाच ॥ ॥ हे मुनीश्वर ब्रह्मरूपी जो महाआकास हे तिसका जो अणु हे वहुरी तिस अणुकाभी जो अणु हे ॥ तिसका जो छिद्र हे तिस छिद्र विषेभी जो छिद्र हे तिसविषे जो तुम रहते हो तुमारा यह जगतभी उसीविषे हे ॥ तुमारी सृष्टिका जो ब्रह्मा हे तिसकी संवेदनरूपी कन्या हे ॥ तिसनें यह जगत् रचा हे तिस तुमारे जगतविषे पृथ्वी हे ॥ तिसके उपर समुद्र हे तिनकरी पृथ्वी आछादी हुइ हे ॥ तिसके पर दुना अवर द्वीप हे ॥ तिस द्वीपके पर दुणा समुद्र हे ॥ इस प्रकार पृथ्वीकों लंघि जाता हे तव आगें स्वर्नकी पृथ्वी आती हे सो दस सहस्र जोजन पर्यंत महा सुंदर प्रकासरूप हे ॥ तिसनें सूर्य चंद्रमाके प्रकासकोंभी लज्जित कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

याहें ॥ तिसके पर अवर लोकालोक पर्वत हे सो सभ ठोर प्रसिद्ध हे ॥ तिसविषे बहुत नगर वसते हे ॥ अरु कहूं अेसें स्थान हे जहां सदा प्रकासही रहताहे ॥ जेसें ज्ञानीके रीदेविषे सदा प्रकास रहता हे ॥ अरु कहूं अेसें स्थान हे जहां सर्वदा अंधकारही रहताहे ॥ जेसें अज्ञानीकें रिदेविषे अंधकार रहताहे ॥ कहूं एसेइ स्थान हे जहां प्रत्यक्ष पदार्थ पाइतेहे ॥ जेसें पंडित के रीदेविषे अर्थ प्रत्यक्ष होते हें ॥ कहुं अेसे स्थान हें जहां पदार्थ नही पाइतें ॥ जेसें मूर्षके रीदेविषें श्रुतिका अर्थ नही होता ॥कहू एसें स्थानहे जिनके देखणे करी रीदा प्रसन्न होताहे॥ जेसें संतके दर्सनकरी रिदा प्रसंन होताहे ॥ कहुं एसे स्थान हें ॥ जिनविषें सदा दुःखही रहताहे ॥ जेसें अज्ञानीकी संगतिविषे सदा दुःख रहता हे ॥ कहुं एसे स्थान हें जहां सूर्य उदे नही होता ॥ कहूं सूर्य चंद्रमा दोनो उदे होते हे कहुं पशुही रहताहे कहूं मनुषही रहतेहे ॥ कहूं दैतही रहतेहे कहूं देवताही रहतेहें॥ कहूं जट कीरसाणही रहतेहे ॥ कहूं धर्मका व्यव हार होतेहे कहूं विद्याधरही रहते हे कहूं उन्मत्त हस्ति रहतेहे ॥ कहूं वडे नंदन बागहे कहूं एसें प्रस्थान हें जहां शास्त्रका विचार नही कहूं शास्त्रके विचारवान रहतेहे ॥ कहूं राजही कर्त्तेहे कहूं वडी वसतीयां हें कहूं उजाड वन हे कहूं पवन चलता हे कहुं बडे खात छिद्र हे ॥ कहुं उर्ध सिखर हे तहां विद्याधर देवता रहतेहे॥ कहुं जक्ष राक्षस मत्त रहते हे ॥ कहुं विद्याधरी देवीयां महा मत्त रहतीयांहे ॥ इस प्रकार अनंत देस स्थानकी वस्तीयांहे ॥ तिस लोकालोक के सिखर उपर सत जोजनका तलाव हे ॥ तिसविषें कमल फुल लागे हे अरु सब कल्पवृक्ष हे सब पथर चिंतामणी हे तिसविषे उत्तर दिसा एक सिला पडी हे स्वर्नकी तिसकें सिखर उपर ब्रह्मा विष्णु रुद्र आनी बेठतेहे अरु विलास करतेहे ॥ तिसके उपर सिला हे तिसविषे मे रहती हों ॥ अरु मेरा भर्त्ताभीरहताहे ॥ संपूरन परिवारभी उहां रहताहे ॥ हे मुनीश्वर तिसविषे एक ब्राह्मण रहताहे ॥ सो वृद्ध अवस्था अबलग जीवताहे ॥ सो ब्राह्मण एकांत जाय बेठा हे अरु सदा वेदका अध्ययन करताहे ॥ तिसनें मुझकों अपणें विवाहके निमित्त अपणें मनतें उपजाइहे ॥ अरु अब मेंभी बडी हुइहों ॥ जेसें वसंतऋतुकी मंजरी होतीहे ॥ अरु मेरे मनका विवाह नही करता जबका उपजा हे तबका ब्रह्मचारीही रहताहे ॥ अरु वेदका अध्ययन करी विरक्त चित्त हुआहे ॥ हे मुनीश्वर उस ब्राह्मणनें मुझकों विवाहके निमित्त उ पजाइहे ॥ अरु वस्त्रभूषण संयुक्त में उत्पन्न भइ हों ॥ अरु चंद्रमाकी न्यांइ सुंदर हों सम अंग मेरे सुंदर हे ॥ सब जीवकों मोहणहारी हे ॥ मुझकों देखकरी कामदेवभी मुर्छित होजा ताहे ॥ अरु फुलकी न्यांइमेरा हसणाहे अरु सब गुण मेरे विषे हे अरु महालक्ष्मीकी मैं सखी हों ॥ मेरा त्यागकरी ब्राह्मण एकांत जाय बेठाहे ॥ अरु सदा वेदका अध्ययन करताहें ॥ अरु बडा दीर्घसूत्री हे ॥ जब में उत्पन्न भइथी तब कहताथा जो में तुजको विवाहोंगा ॥ जब में जोबन अवस्थाकों प्राप्त भइ हों तब त्यागकरी एकांत जाय बेठाहे ॥ हे मुनीश्वर स्त्रीकों सदा भर्त्ता चहिता हे ॥ अब में जोबन अवस्थाकरी परी जलतीहो ॥ अरु जो बडे तलाव कमल सहित दृष्टि आते हे सो भरताके वियोगकरी अग्निके अंगारे भासते हें ॥ अरु बडे बाग नंदन वन आदिक मुझकों मारुथलकी न्यांइ भासतें हे ॥ इनकों देखीकरी रुदन करती हों ॥ नेत्रतें जल चल्या जाताहें ॥ जेसें वर्षाकालका मेघ वरषताहे ॥ तेसें मेरें नेत्रतें जल चलताहे ॥ जब में मुख आदिक अपणें अंगकों देखतीहों तब नेत्रके जलकरी निकटकलमनी डूबी जाती हे ॥ अरु जब कल्पतरु तमाल वृछके फुल पत्र सीजापरी बिछायकरी सेन करती हों तब अंगके स्पर्श करी फुल जलावतें हे जिस कमल साथ मेरा स्पर्श होताहे सों जलिजाता हे ॥ हे भगवन् भर्तीके वियोगकरी में तपी हुइ हों ॥ जब बरफके पर्वत उपरी जाय

120

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बठतीहों तब उही अग्निवत होजाताहे अरु में नाना प्रकारके फूलकों गलेविषे डारतीहों तबभी तप्तता निवृत्त नही होती ॥ सुंदर हों अरु भर्ताकों सुख देणेहारीहो अरु मेरें भर्ताकी देह त्रिलोकी हे तीसके चर्नोविषें सदा मेरी प्रीती रहती हे ॥ अरु ग्रहकें सब आचार करती हों ॥ सब गुणों करकें संपन्न हों अरु सर्वको धारी रहीहों ॥ अरु सर्वकी प्रतिपालक हों अरु ज्ञेय की सदा मुझकों इछा रहती हे ॥ हे मुनीश्वर में पतिव्रता हों ॥ जो पुरुष पतिव्रता स्त्री साथ स्पर्श करता हे सो बहुत सुख पावताहें ॥ तीनों तापतें रहित होताहे ॥ अरु सब गुण जिसविषें पाइतेहें सदा भर्ताविषे प्रीती करतीहे ॥ अरु भर्ताकी प्रीती उसिविषें रहें अेसी मेंहों ॥ तिसकों त्यागकरी ब्राह्मण एकांत जाय बेठाहें ॥ अरु सर्व काल बेदका अध्ययन अरु विचार कर्त्ता रहता हे ॥ अरु सर्व कामनाका जिसनें त्याग कीया हे कोउ इछा तिसकों नही रही ॥ अरु में उसके वियोगकरी जलती हों ॥ हे भगवन् उह स्त्रीभी भली हे जिसका भर्ताविवाह करी मरी गया हे अरु जिसका भर्ता नही प्राप्त भया सोभी भली हे जो सदा कुंवारी हे ॥ अरु जो भर्ताके संयोगतें प्रथमही मरी जातीहे सोभी श्रेष्ठ हे अरु जिसकों भरता प्राप्त भया हे परंतु तिसकों स्पर्श नही करता तब उसकों बडा दुःख होताहे ॥ हे मुनीश्वर जो पुरुष परमात्माकी भावनाके संस्कारतें रहित उत्पन्न हुआ हे सो निष्फल हे जेसें पात्रविना अंन निष्फल होता हे अर्थ यह जो संतजन तीर्थ आदिकतें रहित पापस्थानोंविषे डाया हुआ धन निष्फल होताहे ॥ जेसें सम दृष्टि वीना बोध निष्फल होताहे ॥ जेसें वेस्याकी लज्जा निष्फल हे ॥ तेसें मे पतीविना निष्फल हों ॥ हे भगवन् जब शय्या बिछायकरी सेन करती हों तब फुलभी जली जातेहें जेसें समुद्रकों बडवाग्नी जलावती हे तेसें कमलोकों मेरे अंग जलावते हे ॥ हे मुनीश्वर जो सुखके स्थान हे सो मुझकों दुःखदायक भासते हे ॥ अरु जो मध्य स्थान हे सो न सुख देते हे न दुःख देते हे ॥ अरु जो सुखके स्थान हे सो भर्ताकें वियोग कर्कें दुःख की न्याइ हे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे विद्याधरी विशोक वर्णनं नाम शताधिक द्वयशीतितमःसर्गः॥ १८२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ विद्याधरीउवाच ॥ ॥ हे मुनीश्वर इस प्रकार में तपकरती फिरती हों ॥ अब मुझकोंभी भर्ताके विजोग करी वैराग उपजाहे ॥ भर्ताका वैरागरूपी गडा मेरी तृष्णारूपी कमलनी उपर पडा हे तिसकरी जलि गइ हों ॥ तातें जगत मुझकों विरस भासता हे ॥ हे मुनीश्वर यह जगत असार हे इसविषे स्थिर वस्तु कोउ नही इस कारण तें मुझकोंभी वैराग उपजा हे ॥ अरु मेरा भर्ता जो स्वभूत हे ॥ सो संसारतें विरक्त हो करी एकांत जाय बेठा हे ॥ वेदकों विचारता रहता हे ॥ परंतु आत्मपदकों नही प्राप्त भया ॥ मनके स्थिर करनेका उपाय करता हे ॥ परंतु अबलग मन स्थिर नही भया ॥ सर्व इषणांतें रहित हो करी शास्त्रकों विचारता रहता हे अरु आत्माका साक्षात्कार नही हुआ अरु मुझकोंभी वैराग उपजा हे ॥ अब दोनोवैराग करी संपन्न हुए हे ॥ अरु परम पद पावणेकी मुझकों इच्छा भइहें ॥ अरु शरीर हमकों विरस हो गया हे ॥ जेसें शरत्कालकी वल्ली विरस होती हे इस कारणतें में जोगकी धारना करने लागी हों ॥ यह शक्ति मुझकों उत्पन्न भइ हे आकाश मार्गकों आउं जाउं जोग धारणा करी आकाशउपर उडणेकी शक्ती हुइ हे ॥ बहुरी सिद्ध मार्गकी धारणा करी सिद्धोंके मार्गभी आउं जाउं ॥ परंतु अर्थ कछू सिद्ध न हुआ पावणे जोग जो आत्मपद हे सो प्राप्त न हुआ जिसके पायेतें दुःख कोउ न रहे अब मुझकों निर्वानकी इच्छा भइ हे ॥ अरु सिद्धोकें गणभी में देखे हे देवता अरु विद्याधर देखे हे ॥ ज्ञानीके स्थानभी देखे हे ॥ इत्यादिक बहुत स्थान देखे हे ॥ परंतु जाहां जाउं तहां तुमारी स्तुती करही वसिष्ठमुनी अैसें हे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो वचन द्वारा वलकरी अज्ञानकों निवत्त करते हे ॥ जेसें बडा मेघ वरषता हे परंतु जब वायु चलता हे तब मेघकों दूर करता हे ॥ तेसें तुमारे वचन अज्ञानकों दूर करते हे ॥ जब ऐसें मैं तुमारी स्तुति सुणी तब में इस सृष्टिविषे आवणेका अभ्यास कीया ॥ तब धारणाके अभ्यासतें तुमारी सृष्टिविषे आइहों ॥ तातें हे मुनीश्वर मेरे अरु मेरे भर्ताकों शांति अर्थ आत्मज्ञा नका उपदेश करो ॥ मेरा भरता जो मनके स्थित कर्णेकों जतन करता हे ॥ तिसकों तुम ऐसा उपदेश करो जो सिघ्रही स्थित होवे अरु आत्मपदकों प्राप्त होवे अरु मुझकोंभी आत्मज्ञा नका उपदेश करो हे भगवन् तुम मायातें पार मुझकों दृष्टि आते हों ॥ इस कारणतें मैं तुमारी शरन आइहों अरु मैं स्त्री बुद्धि करकें तुमारे निकट नही आइ शिष्य भावकों लेकरी आइ हों ॥ अरु में जाणती हों जो मेरा अर्थ सिद्धी हों रहाहे ॥ काहेतें जो कोई महा पुरुषकी शरन आय प्राप्त होता हे सोभी निष्फल नही जाता ॥ सब अर्थ संपूर्ण होता हे जेसा किस का अर्थ होता हे सो महा पुरुष सीद्धि करी देते हे ॥ जेसें कल्पवृच्छके निकट कोउ जाता हे तिसका अर्थ पूर्ण होता हे तेसें मे अर्थ सफल हो जावेगा ॥ तातें कृपा करकें मुझकों उप देश करो ॥ हे मुनीश्वर तुम दयाके मानों समुद्र हो सबके अर्थ संपूर्ण करनेंकों समर्थ हो अरु सुहृद हो अर्थ यह जो उपकारकी अपेक्षाविना उपकार करते हों॥ ताते में अनाथ तुमारी शरनकों आनी प्राप्त भइ हों मुझकों आत्मपदकी प्राप्ति करो ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वान प्रकरणे विद्याधरी वेग वर्ननं नाम शताधिक त्र्यशीतितमः सर्गः ॥ १८३ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी जब इस प्रकार विद्याधरीनें मुजकों कहां ॥ तब तिस कालमें आकासविषे संकल्पका आसन मेनें रचा तीस पर बेठा ॥ अरु एक आधारभूतका आसन संकल्प करी तिसकों बेठाइ ॥ काहेतें जो हमारा शुद्ध संकल्प हे जो कछू चित्तवना करीए सो होए जाता हे ॥ तब में कहा हे देवी तूं केसें कहती हे जो गीटीविषे हमारी सृ ष्टि हे ॥ गीटीविषे तुमारी सृष्टि केसें वसती हे सो कहो ॥ विद्याधरीउवाच ॥ ॥ हे भगवन् तुमारी सृष्टिविषे जो लोका लोक पर्वत हे सो प्रसिद्ध हे ॥ तिसके उत्तर दिसा सिखरपर सि ला हे तिस स्वर्नकी गीटीविषे हमारी सृष्टि हे जेसें तुमारी सृष्टि हे तेसें उस गीटीविषे सृष्टि वसतीहे ॥ तिस सृष्टिका ब्रह्मा मेरा भर्ता हे में तिसकी स्त्री हों ॥ अरु त्रिलोकी इस प्रकार वसती हे ॥ उर्ध लोक देवता रहते हे पातलविषे दैत अरु नाग रहतेहे मध्य मंडलविषे मनुष अरु पसु पंछी रहते हे समुद्रभी हे पर्वतभी हे पृथ्वी जल तेज वायु आकास हे समुद्रनें गंभीरता अं गीकार करी हे जीवद्रुनें प्रान अंगीकार कीएहें ॥ पवननें आकासविषे चलणा अंगीकार कीयाहे ॥ आकाशनें पोल अंगीकार कीयाहे ॥ पृथ्वीनें धैर्य अंगीकार कीयाहे ॥ विद्याधरनें ज्ञा न अंगीकार कीयाहे अग्नीनें उष्णता सूर्यनें प्रकाश अंगीकार कीयाहे ॥ दैतद्रुनें क्रूरता विष्णुनें अवतार अंगीकार कीएहे जगतको रक्षाके निमित्त॥ नदीनें चलणां पर्वतनें स्थिरता अंगीका र करी हे ॥ इस प्रकार सब नीति परमात्माके आश्रय रची द्रुइहे कल्प पर्यंत ज्योंकीत्यों मर्यादा रहती हे ॥ इस प्रकार जीव जन्मते मरते हे ॥ देवता विमानपर आरूढ फिरते हे ॥ दिनका स्वामी सूर्य हे रात्रका स्वामी चंद्रमा हे ॥ नछत्र तारेका चक्र पवनकरीकें फिरताहें ॥ अरु दो ध्रुवहें ॥ काल इस चक्रकों फेरताहें ॥ फेरता फेरता नासरूप जो कालहे ॥ सो कल्पके अं तविषे काल चक्रके मुखमें जाय रहताहें ॥ हे मुनीश्वर परमात्मा अनंत हे अंत कोऊ नही जाणी सकता जब संवेदन फुरती हे तब जाणताहे जो यह जगत ईश्वरकी सत्ता करीकें हे ॥ जब फुरणेतें रहित होताहे तब जाण्यानही जाता जो जगत कहां गया ॥ हे मुनीश्वर तुम चलो हमारी सृष्टिका विलास देखो ॥ तुम तो जगतके बिलासतें पारकों प्राप्त द्रुएहे ॥ यद्यपि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुमकों इछा नही तोभी कृपाकरीकें सिलाविषे हमारी सृष्टिकों देखो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार कहीकरी आकासमार्गमें लेचली ॥ जेसें गंधकों वायु लेजाताहै तेसे मुझकों लेगइ ॥ तब दोनों आकासमार्गमें उडे भुताकासविषे हम चिरकाल उडतें गए तब हमकों लोकालोक पर्वत दृष्ट आया ॥ तिसके निकट जायकरी तिसके सिखर देखे ॥ जो महा उर्धकों गएहे अरु मेघ पडे विचरतेहे ॥ अरु शिखर अेसे सुंदर हे मानों क्षीरसमुद्रतें चंद्रमा निकस्याहे ॥ अेसें सुंदर सिखरकों हम देखते भए ॥ तहां जायकरी सिला देखी ॥ केसी सिला हे जो स्वर्नकी जो महा सुंदर सिला हे तिसके निकट हम गए ॥ तब मेनें कहा हे देवी यह तो सिला पडी हे तुमारी सृष्टि कहां हे इसविषे पृथ्वी कहां हे ॥ दीपकी मर्यादा कहां हे समुद्र कहां हे ॥ जिनका आवरण होताहे चक्रुंफेर ॥ अरु तिनके पर दससहस्र जोजन पर्यंत स्वर्नकी पृथ्वी होतीहे सो कहां हे ॥ पर्वत कहां हे सप्तलोक कहांहे ॥ आकास कहांहे ॥ दसो दिसा कहांहे तारा मंडल कहांहे ॥ सूर्य चंद्रमा कहां हे ॥ जो रात्र दिनके प्रकासक हे अरु भूतका संचार कहां होताहे ॥ देव गण कहां विद्याधर सिद्ध गंधर्व कहाहे ॥ जोगेस्वर कहांहे ॥ वरुण कुबेर कहां हे ॥ जगतकी उत्पत्ति प्रलयका संचार कहांहे ॥ पातालकी भूमिका कहांहे ॥ अरु मंडलेस्वर कहां हे न्यायकरने हारे ॥ अरु मारुथलकी भूमिका कहां हे ॥ अरु नंदन वनादिक कहा हे ॥ देवता द्वैतकेविरोध संचार कहा हे ॥ यह तो सिला दृष्ट आवती हे ॥ हे रामजी आश्चर्यकों प्राप्त होकरी जब मैं अेसें कहां ॥ तव विद्याधरी बोली ॥ हे भगवन् तुमकों तो प्रत्यक्ष इस सिलाविषे अपणी सृष्टि भासती हे जेसें शुद्ध आदर्शविषे अपणा मुख भासता हे तेसें मुझकों अपणी सृष्ट भासता हे ॥ जेसी मर्यादा देशदेशांतरकी मुझकों भासती हे ॥ इसका संस्कार पूर्वका मेरे रिदेविषे हे ॥ इसीतें मुझकों प्रत्यक्ष भासती हे ॥ अरु तुमारे रिदेविषे इसका संस्कार नही ॥ इसीतें तुमकों नही भासती ॥ तुमारी सृष्टिको अपेक्षा करीकें यह सिला पडी हे ॥ तुमकों सिलाका निश्चय हे ॥ इस कारनतें तुमकों इसविषे जगत नही भासता ॥ हे भगवन् जिसका अभ्यास होता हे सो पदार्थ अवश्य प्राप्त होता हे ॥ अरु सोइ भासता हे ॥ हे मुनीश्वर गुरु शिष्यकों उपदेश करता हे ॥ जो कछू इसकी वांच्छा होती हे सो उपदेश मात्रतें इष्टकी प्राप्ति नही होती ॥ जब तिसका अभ्यास करे तब इष्टकी प्राप्ति होति हे ॥ हे मुनीश्वर एसा शास्त्र कोउ नही जो अभ्यास कीएते न पाइए ॥ अेसा न्याय अरु अेसी सिद्धतता कोउ नही जो अभ्यास कीएतें न पाइए ॥ अेसी कला कोउ नही जो अभ्यास कीएतें न पाइए ॥ अेसा पदार्थ कोउ नही जो अभ्यासकी प्रवलताकरी सिद्ध न होवें अवश्य सिद्ध होतेहें जो थकी करी फीरे नही ॥ हे मुनीश्वर जो कछू सिद्धी होता दृष्ट आताहे सो सब अभ्यासके वसते होताहे ॥ प्रथम जो मैं तेरे साथ आइहों तव मुजकोंभी सृष्टि न भासीथी सिलाविषें काहेते जो सृष्टि अंतवाहक सरीरविषें स्थित हे ॥ सो तुमारे साथ द्वैतरूपी कथाके करणेतें अंतवाहक सरीर मुजकों विस्मरण होगयाथा ॥ जो विश्वकी चर्चा अरु तुमारी सृष्टिकी चर्चा करीकें मुजकों स्पष्ट नही भासती ॥ जेसें मलीन आदर्स विषे मुख नही भासता ॥ तेसें तुमारी सृष्टीके संकल्प करी मुझकोंभी सृष्टि भासती नही ॥ परंतु चिरकाल जो अभ्यास कीयाहे तातें बहुरी भासती हे काहेतें जो कछु दृष्टि अभ्यास होताहे तिसकी जय होतीहे ॥ हे मुनीश्वर चिन्मात्र पदविषे फुरणें करी आदी जीवकें सरीर अंतवाहक हुएहें ॥ अर्थ यह जो आकासरूप सरीर थे ॥ जब उस विषे दृढ अभ्यास हुआ प्रमादकरकें ॥ तब अधिभूतक होकरी भासणें लागे ॥ जब भावना उलटीकरी बहुरी जोगकी धारना करकें अभ्यास करताहें ॥ तब अधिभूतकता क्षीण होजातीहें ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरु अंतवाहक प्रगट होताहे ॥ तिसकरी आकासविषे उडता फीरताहे पंछीकी न्यांइ ॥ तातें तुम देखो जो अभ्यासके वलकरी सब कछू सिद्ध होताहे॥ हे मुनीश्वर अज्ञानकरकै जगत अहंकाररूपी पिशाच लगाहें सो दृढ स्थित हुआह ॥ बहुरी जब शास्त्रके वचनोंविषे द्रढ अभ्यास होताहे तब क्षीण होजाताहे ॥ हे मुनीश्वर तुम देखो जिस कोसीकों सृष्टिकी प्राप्ति होतीहे सो अभ्यासके वल करकै होतीहे जो अज्ञानी होताहे अरु ब्रह्म अभ्यास करताहे तो ज्ञानी होताहे अरु पर्वत बडाहे परंतु जब अभ्यास करी चूरन कीया चाहे तो चूर्न होताहे॥अरु संपूर्ण वलकों भोजन करना कठिन हे परंतु अभ्यासकरकें सनेसने घुणा खाय जाताहे॥आप तो छोटाहे परंतु जो वस्तु पावणी कठिन होवें सो अभ्यासकरी सुगमहोजातीहे ॥ जेसें चिंतामणी अरु कल्पतरुके निकट जायकरी जिस पदार्थकी वांछाकरताहे सो सिद्ध होताहे ॥ तेसें आत्मरूपी चिंतामणी कल्पतरु हे ॥ तिसविषे जिस पदार्थका अभ्यास करताहे सो सिद्ध होताहें ॥ अभ्यासरूपी भू मिका फल देतीहे जो बालक अवस्थातें अभ्यास होताहे सो वृद्ध अवस्था पर्यंत होताहे ॥ हे मुनीश्वर जो पुरुष बांधव नही होता अरु निकट आय रहताहे तब निकटके अभ्यास तें बांधव होजाताहे परंतु विदेस रहताहे तो अबांधव होजाताहे अभ्यासकी क्षीणतातें॥ हे मुनीश्वर विष होतीहे अरु तिसविषें अमृतकीभावना करताहे॥ तो अभ्यासकरी अमृत होजाता हे ॥ जोमिष्टान्नविषे कटुक भावना होतीहें तो कटुभासताहे ॥ अरु कटुविषे मिष्टान्नकी भावना करीए तो मिष्टान्न हो भासताहे ॥ जेसें कीसीकों निंब प्रीतमहे ॥ कीसीकों मिष्टान्न प्री तम हे ॥ हे मुनीश्वर जो कछू सिद्ध होताहे सो अभ्यासके वलकरी सिद्ध होताहे ॥ पुण्य कीया होताहे सो पापकें अभ्यासकरी नास होजाताहे अरु पाप पुंन्यके अभ्यासकरी नास हो ताहे अरु माताभी अमाता होजातीहे॥कीसी अर्थके अनर्थ हो जातेहे॥अरु मित्रभी अमित्र होजाताहे भाग अभागरूप होजाताहे इत्यादिक पदार्थ सब चल होजातेहें परंतु अभ्यासका नास कदाचित् नही होता ॥ हे मुनीश्वर जो पदार्थ निकट पडा होताहे अरु इंद्रिया साधकभी विद्यमान हे तोभी अभ्यासविना प्राप्तिनही होती ॥ जहां अभ्यासरूपी सूर्यउदे होताहे ॥ तहां द्रष्टिरूप पदार्थकी प्राप्ति होतीहें ॥ अज्ञानरूपी विसूचका रोग हे ब्रह्म चर्चाके अभ्यासकरी नास होजाताहें हे मुनीश्वर संसाररूपी समुद्र हे आदि अंततें रहित हे ॥ आत्म अभ्या सरूपी नोकाकरी तिसकों तरी जाताहें॥जब अभ्यासकों न त्यागेगा तब अवस्य तरेगा हे मुनीश्वर जो पदार्थ उदे होवे तिसके अभावकी भावना करीयें ॥ तो अस्त होजाताहे अरु जो अस्त होवे तिसके उदें होणेंकी भावना करीये तब उदे होताहे ॥ जेसें सिद्धके आपकरी उदे पदार्थकी नष्टता होतीहे अरु वरतें अप्राप्त पदार्थकी प्राप्ति होतीहे ॥ हे मुनीश्वर जो पुरुष शास्त्रतें इष्ट पदार्थको श्रवण करताहे अरु तिसका अभ्यास नही करता सो मनुषविषे निच जानणा इष्ट पदार्थकी प्राप्ति तिसकों कदाचित् नही होती ॥ जेसें वंध्याका पुत्र नही होता तेसें उसकों इष्ट पदार्थ सिद्ध नही होता हे मुनीश्वर जो आत्मरूपी इष्टकों त्याग करी अवर कीसी पदार्थकी वांछा करताहे ॥ सो अनिष्टतें अनिष्टकों पावताहे नर्कीतें नर्कीतकों भोग ता हे ॥ हे मुनीश्वर जिसकों अभ्यासकाभी अभ्यास प्राप्त भयाहे ॥ तिसकों सीघ्रही आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी ॥ अभ्यासके बलकरी इष्टकों पावताहे जेसें प्रकास करी पदार्थ देखी ये जो उह पडाहे तिसका नाम अभ्यास हे अरु देखकरी जो तिसके निमित्त जतन करणा तिसका नाम अभ्यासका अभ्यास हे ॥ जब जतन अरु अभ्यास करता हे तब पदार्थकों पावता हे ॥ वारंवार चितवणेका नाम अभ्यास हे ॥ जब अेसा अभ्यास होवें तब इष्ट पदार्थको प्राप्ति होतीहे अन्यथा नही होती ॥ हे मुनीश्वर चौदसप्रकारके भूत जात हे ॥ जेसा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जेसा किसकों अभ्यास हे तिसके बलकरी तेसा तेसा सिद्ध होताहे अभ्यासरूपी सूर्य हे तिसकें प्रकासकरी अपणें इष्टरूपी पदार्थकों पावताहे ॥ अभ्यासके वलकरी भय निवृत्त होता हे॥ पृथ्वी पर्वत वन कंदराविषें निर्भय होकरी विचरता हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणेविद्याधरीअभ्यासवर्ननं नाम शतधिक चतुराशीतितमः सर्गः ॥ १८४ ॥

॥ विद्याधरीउवाच ॥ ॥ हे मुनीश्वर जो कोऊ पदार्थ सिद्धि होता हे सो निरंतर अभ्यास करी सिद्ध होता हे ॥ तुमारा सिलाविषे दृढ निश्चय होता हे तातें तुमकों सीला भासती हे अरु मुझकों इसविषे सृष्टि भासती हे ॥ जब तुमारा संकल्पभी मेरे संकल्प साथ मिले तब तुमकोंभी जगत् भासे ॥ यह जगत् जो स्थित हे सो मेरे अंतवाहक विषे हे ॥ अरु आदि वपु सभका अंतवाहक हे सो अंतवाहकविषे सभकी एकता हे ॥ जेसें समुद्रविषे सभ तरंगकी एकता होती हे ॥ हे मुनीस्वर जब तुम धारणाका अभ्यास करकें सुद्ध बुद्धिविषे प्राप्त होइगे ॥ तब तुमकों सीलाविषे सृष्टि भासेगी ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी जब इस प्रकार मुझकों सुद्ध जुक्ती कही तब में पद्मासन बांधीकरी विषयतें त्याग कीया ॥ अरु विषय जो कथाका क्षोभ था तिसकोंभी त्याग कीया अपणे अधिभूतकाभी त्याग कीया अरु निरंतर सुद्ध बोधका अभ्यास कीआ ॥ तिस अभ्यास केवल करी मुझकों बोधका अनुभव उदे हुआ॥जेसें मेघके अभावतें शरत्कालका आकाश निर्मल होता हे तेसें कलनातें रहित मुझकों शुद्ध बोधका अनुभव उदे हुआ॥सो केसा बोध हे जो उदे अरु अस्तें रहित परम शांतरूप हे तिसविषे सीला मुझकों आकाशरूप दृष्टि आइ ॥ अरु सिला तत्व कर्कैभी दृष्ट आइ केवल बोध मात्र दृष्ट आइ हे ॥ पृथ्वी आदिक तत्व मुझकों कोउ दृष्ट न आवे ॥ केवल अद्वैत आकाश आत्मतत्व मात्र अपणा आपही दृष्ट आवे॥ जब बोध मात्रतें स्पंद फुर्या अंतवाहकरूप होकरी तब अंतवाहक करकें सिलाविषे सृष्टि भासणे लागी ॥ जेसें मनोराजकी सृष्टि होती हे अरु बोधतें भिन्न भिन्न नही होती तेसें सृष्टि मुझकों दृष्ट आइ ॥ अरु सीला क्या रूप भासी जेसें सुपनेके गृहविषे सीला दृष्ट आवे सो अनुभवही सीला अरु गृहरूप होकरी भासता हे इतर कछू नही होता ॥ तेसें उह सिला दृष्ट आइ ॥ हे रामजी जेसें आकाशरूप उह सिला देखी तेसें सब जगत चिदाकाशरूप हे कछू द्वैत बना नही सर्वदा काल आत्मसत्ताही अपणे आपविषे स्थित हे ॥ अरु जो कछू द्वैत भासता हे सो आत्माके अज्ञान करकें भासता हे ॥ जेसें कोउ पुरुष सुपनेविषे अपणा सिर काट्या देखता हे अरु रुदन करता हे ॥ बहुरी जागी उठ्या तब आपकों ज्योंका त्यों आनंद देखता हे ॥ तेसें जबलग अज्ञान निद्राविषे सोता पडा हे तबलग जग भ्रम मिटता नही जब स्वरूपविषे जागी करी देखेगा तब सब भ्रम मिटि जावेगा ॥ केवल अपणाही आप भासेगा ॥ हे रामजी यह आश्चर्य देख जो वस्तु सतरूप हे सो असतकी नाइ भासती हे ॥ आत्मा सदा सत रूप हे सो ज्ञान करकें भासता नही ॥ अरु जो असतरूप हे सो सतकी न्यांइं हो भासती हे ॥ शरीरादिक दृश्य असतरूप हे सो सतवत हो करी भासती हे ॥ हे रामचंद्र आत्मा सदा प्रत्यक्ष हे ॥ अरु शरीरादिक परोक्ष हे अज्ञान करकें शरीरादिक प्रत्यक्ष भासता हे ॥ अरु आत्मपद परोक्ष भासता हे ॥ हे रामजी आत्मा सदा प्रत्यक्ष हे ॥ जो कछू इस लोक अथवा परलोककी क्रिया सिद्धी होती हे ॥ सो आत्म सत्ता करकें सिद्धी होती हे ॥ अरु जो कछू प्रत्यक्ष प्रमाण करी जगत भासता हे ॥ सो आत्मसत्ता करके भासता हे ॥ आदिं प्रत्यक्ष आत्मा ही हे अवर सब कछू आत्माके पाछें जाणता हे ॥ जो पुरुष कहते हे आत्मा जोग करी प्रत्यक्ष होता हे अरु मनकरी प्रत्यक्ष होता हे सो मूर्ख हे ॥ आत्मा सदा प्रत्यक्ष हे ॥ अरु प्रत्यक्ष आदिक प्रमाणभी आत्मा करी सिद्ध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होते हे यही माया हे ॥ जो सदा अपरोक्ष वस्तु आत्मा हे तिसकों परोक्ष जानणा ॥ अरु जो शरीरादिक असत हे तिनकों सत मानणा ॥ हे रामजी जेते कछू जीव तिनका वास्तव रूप ब्रह्मही हे ॥ तिसविषे आदि फुरणा अंतवाहक रूप हुआ हे ॥ तिसके अनंतर अधिभूतक भासणे लागा हे ॥ भ्रम करके अधिभूतककों अपणा आप जाणते हे ॥ अरु जो सदा निर्विकार निराकार निर्गुण स्वरूप हे ॥ अपणा आप अनुभवरूप हे तिसकों कोउ नही जाणते आदि शरीर सर्व जीवका अंतवाहक हे सो शुद्ध आत्माका किंचन हे केवल आकाशरूप हे कछू बन्या नहीं ॥ संकल्प करके अधिभूतकता दृढ हुइहे ॥ सो मिथ्या भांतिकरी भासतीहे ॥ जेसें सुपनेविषे अधिभूतक शरीर भासता हे ॥ तेसें जाग्रतविषे अधिभूतक शरीर भासता हे ॥ अरु अंतवाहक अविनासी हे इस लोक परलोकविषे इसका नाश नहीं होता वास्तव बोधस्वरूपतें इतर कछू नही भ्रम करके अधिभूतक दृष्ट आता हे ॥ जेसें सूर्यकी किरणांविषे जल भासता हे ॥ जेसें सीपीविषे रूपा भासता हे जेसें जेवरीविषे सर्प भासताहे जेसें आकाशविषे दूसरा चंद्रमा भासता हे ॥ तेसें भ्रमतें अपणेविषे अधिभूतक शरीर भासता हे ॥ हे रामजी यह आश्चर्य हे जो सत वस्तु हे सो असत हो भासती हे अरु जो असतवस्तु हे सो सत हो करी भासता हे ॥ सो अविचारतें जीवकों भासती हे ॥ यह मोहका महात्म हे ॥ जो सभके आदि प्रत्यक्ष आत्मा हे तिसकों अप्रत्यक्ष जाणते हे ॥ अप्रत्यक्ष जगत्कों प्रत्यक्ष जाणतें हे ॥ हे रामजी जेता कछू जगत हे सो भ्रम करके भासता हे सुपनेकी न्यांइ मिथ्या हे ॥ जिनविषे पदार्थकों सुखरूप मानता हे सो सबका कारन हे ॥ काहेतें जो परिणाम इनका दुःख होता हे ॥ जो प्रथम क्षीण सुख भासता हे बहुरी तिनके वियोगतें दुःख होता हे ॥ इसी कारणतें इनका नाम आपातरमणीय कहाता हे ॥ इनकों पाइ करी शांतिवान कोउ नहीं होता जेसें मृग तृष्णाके क्षीण सुख भासताहे बहुरी तिनके वियोगतें दुःख होताहे ॥ जलकों पाइ करी कोउ तृप्त नही होता ॥ तेसें विषयके सुख करी तृप्त कोउ नही होता तिनविषे लगते हे सो मूर्ख हे ॥ जो अनुत्तम सुख हे अनुभव करके प्रकाशता हे तिसकों त्याग करी विषयके सुखविषे लगते हे सो मूर्ख हे ॥ शुद्ध आकाशरूप अंतवाहकविषे जगत देखते हे ॥ हे रामजी हूआकी न्यांइ भासता हे ॥ तोभी हुआ कछू नही जेसें स्थाणुविषे पुरुष भासताहे ॥ तोभी हुआ नही ॥ जेसें सुवर्णविषे भूषण भासते हे ॥ तोभी हुआ नही ॥ तेसें यह जगत प्रत्यक्ष भासता हे तोभी हुआ कछू नही हे रामजी प्रत्यक्ष प्रमाणभी हे नही असत्य हे तो अनुमानादिक प्रमाण कहांतें सत्य होवें ॥ जेसें जिस नदीविषे हस्ति वहे जातेहे तो रुइके वहणें विषे क्या आश्चर्य हे ॥ तेसे सब प्रत्यक्ष प्रमाण जगतकों असत जाण्या तो अनुमान प्रमाणकरी क्या सत होणाहे ॥ हे रामजी केवल बोधमात्रविषे जगत कछु बन्या नही ॥ हमकों तो सदा अेसेंही भासताहे ॥ अरु अज्ञानीकों जगत भासताहे जेसें कीसी पुरुषकों सुपनेविषे पर्वत दृष्ट आतेहे ॥ अरु जाग्रत पुरुषकों नही भासते तेसें अज्ञानीकों यह जगत भसाताहे ॥ हमकों आकास समुद्र पर्वत सब केवल बोधमात्र भासताहे ॥ जेसें कथाके अर्थ श्रोतेके रीदेविषे होतेहे ॥ अरु जीसने नही सुणी तिसके रीदेवीषे नही होते तेसें मेरे सिधांतकों ज्ञानवान जानतेहे अवर अज्ञानी जाणी नही सकते ॥ हे रामजी जेता कछु अधिभूतक जगत भासताहे सो अप्रत्यक्ष हे ॥ अरु आत्मा सदा प्रत्यक्ष हे ॥ जो इस लोक अथवा परलोकका अर्थ हे सो अनुभवकरी सिद्ध होताहे ॥ काहेतें जो सबके आदि अनुभव प्रत्यक्ष हे ॥ तिसकों त्यागकर जो जो देहादिक दृश्यकों अपणा आप जानताहे ॥ अरु इनहीकों प्रत्यक्ष जाणतेहे सो मूर्ख पशु पथरवतहे ॥ सूके तृणकी न्यांइं तुछ हे ॥ जेसें भ्रमतेकों पर्वत आ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिक पदार्थ भ्रमते भासतेहे ॥ तेसें अज्ञानीकों अधिभूतक भासताहे ॥ हे रामजी यह जगत सब परोक्ष हे काहेतें जो इंद्रिया करी प्रत्यक्ष होताहे ॥ जो नेत्र होतेहे तो रूप भासतेहे जो ने त्र न होवे तो न भासे ॥ इस प्रकार सब इंद्रियांके विषय हे ॥ जो होवे तो भासे नही तो न भासें ॥ अरु आत्मा सदा प्रत्यक्ष हे उसके देखणे विषे कीसकी अपेक्षा नही चहीती ॥ हे रामजी जो इंद्रिया करी सीद्ध होवे सो असत हुआ क्यों ॥ जगही असत हुआ तिसके पदार्थ सत केसें होवे ॥ तातें इस जगतकी सत्यता त्याग करी शुद्ध बोधविषे स्थित होहु ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे प्रत्यक्ष प्रमाणजगत निराकरणंनाम शताधिकपंचाशीतितमः सर्गः ॥ १८५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७

॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी में उस सिलाकों देखत भया जब बोध दृष्टिकरी देखों तब मुझकों ब्रह्मरूप भासें ॥ अरु जब संकल्प दृष्टि करी देखों तब जगत दृष्ट आवे ॥ पृथ्वी दीप समुद्र पर्वत लोक अरु लोकपाल सूर्य चंद्रमा तारागण पाताल जगत सब द्रष्ट आवे जेसें दर्पणविषे प्रतिबिंब भासताहे तेसें जगत भासे आत्मरूपी आदर्सविषे ॥ तब देवीनें सिला विषे प्रवेस कीया मेंनेंभी संकल्परुपी सरीरकरी प्रवेस कीया ॥ दोनों जगतके व्यवहारकों लंघते गए ॥ जहां परमेष्ठी ब्रह्माका स्थानथा तहां हम जाय बेठे ॥ तब देवीने कहा हे भगवन तुम एसे कहणा जो मुझकों यह ले आइहें ॥ इसके तांइ तुम विवाह निमित्त उपेजाइ बहुरी क्यों इसका त्याग कीया यह तुम पुछणा ॥ हे मुनीश्वर उसने मेरेतांइ विवाहके अर्थ उत्पत्ति करीथी ॥ जब में बडी हुइ तब उसनें मेरा त्याग कीयाहे ॥ तिसकों वेराग उपजाहे ॥ तिसकों देखकरी अब मेरेतांइभी वैराग उपजाहे ॥ इसीतें हम परम पदकी इछा राखतेहे ॥ जहां न द्रष्टाहे नद्रश्य हे न शून्य हे केवल सांतरूप हैं जो सर्गकें आदि अरु महा कल्पके अंतविषे रहताहे तिसविषे स्थित होणेकी इच्छा हे॥ जिसविषे स्थित हूए पहा डवत समाधि होजावे ॥ अेसे परम पदका उपदेस करों ॥ हे रामंजी इस प्रकार कहीकरी भरताकों जगावणेके निमित्त निकट जाइकरी कहत भइ ॥ हे नाथ तुम जागो तुमारे ग्रहविषे अवर सृष्टिके ब्रह्माका पुत्र वसिष्ठ मुनी आयाहे ॥ तुम उठीकरी इसका अर्घपाद पूजन करों ॥ काहेतें जो हमारे ग्रहविषे अतिथि आएहे ॥ अरु महापुरुष पूजाकरी प्रसन्न होते हे ॥ हे रामजी जब इस प्रकार देवीनें कहा तब ब्रह्माजी समाधितें उतऱ्या प्रान आनी देहनाडी विषे स्थित हुए जेसें वसंत ऋतुकरी सब दछोविषे रस हो आवताहे ॥ तेसे दस इंद्रिया चतुष्टय अंतःकरणविषे सनेसने करी प्रान आनि स्थित हूए ॥ सब इंद्रियां खिलीआईयां तब मुझकों अरु देवीकों अपणे सनमुख देखत भया॥ अरु ज्ञान करीकें ओंकारका उचार करी ब्रह्माजी सिंघासन पर बेठा ॥ ब्रह्माजीके जागणेकरी बडा शब्द होवणे लागा ॥ विद्याधर गंधर्व ऋषि मुनी आय करी प्रणाम करत भए स्तुति करणेलागे ॥ देवंकी धुनी करी पाठ करणे लागे तब मुनीकों कहत भये ॥ अन्यसृष्टिब्रह्मोवाच ॥ हे ऋषि तुमारे कुसलताहे क्यों बडे मार्ग करी तुम आएहो ॥ अरु सार असारकों जानणेहारे हो॥ जेसें हाथविषे बिलकाफल होताहे तेसें तुमकों ज्ञान हे ॥ अरु ज्ञानरूपी समुद्र हो अेसें कहीकरी अपणें निकट आसन कोया अरु नेत्र साथ आज्ञा करी जो इस आश्रम परविश्राम करों ॥ हे रामजी जब इस प्रकार मुझकों कहा तब में प्रणाम करीकें निकटजाय बेठा ॥ एक मुहूर्त पर्यंत देवता सिद्ध ऋषिकें प्रणाम होते रहे ॥ तिसके अनंतर विद्याधर अरु देवता सब गये तब में कहत भया ॥ हे भूत भविष्य वर्तमान तीनों कालके ज्ञाता इश्वर परमेटी उंचे आसन पर विराजमान हो ॥ अरू साक्षात ब्रह्मज्ञानकें समुद्र हो ॥ अरु यह जो तुमारी शक्ति देवी हे जिसकों तुम भार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाके निमित्त उत्पत्ति कीनीहे बहुरी विरस जाणी करी त्याग किया हे ॥ तुमारे वैराग करणें करी इसकोंभी वैराग उपजा हे ॥ इस निमित्त मुझकों लें आइ हे ॥ जो परमात्म तत्वकी वा
णी करी हमकों उपदेश करहु ॥ सो इसका अभिप्राय क्या हे ॥ अन्यसृष्टिब्रह्मोवाच ॥ ॥ हे मुनीश्वर में शांत हों अजर अमररूप हों ॥ अरु मेरेविषे उदेअस्त कदाचित् नही ॥ में परम
आकाशरूप हे ॥ अरु अपणे आपविषे स्थित हो ॥ न मेरी कोउ स्त्री हे न मेनें किसकी उत्पत्ति कीनीहे॥तथापि जेसें वृत्तांत हुआ हे तेसें में कहता हों काहेतें जो महा पुरुषके विद्यमान
कहणा ज्योंका त्यो जोग हे॥हे मुनीश्वर आदि शुद्ध चिदात्मा चिन्मात्र पद हे॥तिसका वचन अहं होकरी फुर्या हे जो मेंहो ॥ तिसका नाम आदिब्रह्मा हे सो में हों केसा ब्रह्मा हे जेसा भविष्यत
सृष्टिका होवे ॥ अर्थ यह जो संकल्परूप दृष्टा अरु संकल्प रूप में हो ॥ अरु वास्तवतें क्या हे आकासरूप हों सदा निरावरण हों॥ अरु अपणे आपही विषे मेरी अहं प्रतीति हे तिसविषे
आदि जो संकल्पका फुरणा हुआ हे ॥ तिसकरी जगत भ्रम रचा हे ॥ तिस जगत् भ्रमविषे मर्यादा हूइ हे अरु संकल्पका जो अधिष्टाता यह ब्रह्म शक्ति हे सोभी शुध हे ॥ हे मुनीश्वर
तिस मर्यादाकों सहस्र चउकडी जुगकी बीतीहे ॥ अब कली जुगहे कल्पकोभी अरु महाकल्पकीभी मर्यादा पुरी भइ हे ॥ तिस करी मुझकों परम चिदाकास विषे स्थित होणेकी इछा
भइ हे ॥ तातें इसकों विरस जाणीकरी त्याग कीया हे ॥ जब इसका त्यागकरों तब निर्वाण पदकों प्राप्त होवे ॥ काहे तें जो यह मेरी इछा वासनारूप हे ॥ जो वासनाका त्या
गहोवे तो निर्वाणपद प्राप्त होवे अरु यह जो चित्तकला सुद्ध हे इसनें धारणा अभ्यास कीया था तीसकरी अंतवाहक सक्ति इसकों प्राप्त भइ हे ॥ अंतवाहक सक्ति करी
आकास विषे फुर्या हे अरु संसारते विरक्त भइ हे ॥ आकास मार्गविषे इसकों तुमारी सृष्टि भासी आइ ॥ अरु परम पद पावणेकी जो इछा हूइ थी तीस वासना करी इसकों
तुमारी संगति प्राप्त भइ परम पद पावणेकी इछा इसकों हुइ हे ॥ तातें तुमारी सरनकों प्राप्त भइ हे अरु तुमकों ले आइ हे ॥ जो श्रेष्ट हे तो बडेकी सरन जाते हे अपणे कल्याणके
निमित्त तुमकों ले आइ हे ॥ हे मुनीश्वर यह मेरी वासना शक्ति हे ॥ मूरतीरूप आगें में इसकों उत्पत्ति करी थी तव इस जगत् जालकों रचीथी अब मुझकों निर्विकल्प निर्वाण पदकी
इछा भइ हे ॥ तिस करकें में इसका त्याग कीया हे अब इसकोंभी वैराग उपजा हे इसकारणतें तुम बोधस्वरूपकी सरनकों प्राप्त भइ हे ॥ हे मुनीश्वर यह जगत विलास संकल्प
विषे हुआ हे वास्तवतें कछू हूआ नही परमात्म तत्व ज्योंकात्यों अपणे आपविषे स्थित हे ॥ अरु में तुं मेरा तेरा इत्यादिक सब्द समुद्रके तरंगकी न्यांइ हे जेसें समुद्रविषे तरंग उपजी
करी सब्द करते हे बहुरी लीन हो जाते हे ॥ तेसें हमारा तुमारा बोलणा मिलाप होता हे ॥ हे मुनीश्वर वास्तवतें न कोउ उपजा हे न कीसी लीन होणा हे॥जेसें तरंग जलरूप हे
भिन्न कछू नही॥तेसें सब जगत ब्रह्म स्वरूप हे भिन्न कछू नही इंद्रियां मन बुद्धि आदिकसभ उहरूप हे ॥ हे मुनीश्वर में चिदाकास हों अरु चिदाकासविषे स्थित हों ॥ अरु यह ब्राह्मी
शक्ति हे जिसनें जगत् कोया हे सो यहभी अजर अमर हे ॥ न कदाचित् उपजी हे न नास होवेगा ॥ सुद्ध आत्मा किंचन द्वारा जगत् हो भासता हे ॥ जेसें सूर्यकी किरणां जल हो
भासतीयां हे परंतु जल कछू हूआ नही तेसें आत्माही हे विश्व कछू हूइ नही ॥ हे मुनीश्वर जगत् जाल होकरी आत्मा भासता हे जगतके उदे अस्त होणे करी आत्माविषे कछु
क्षोभ नही होता ज्योंका त्यों एक रस स्थित हे ॥ जेसें समुद्रविषें तरंग उपजते अरु लीन होते हे परंतु समुद्र ज्योंकात्यो रहताहे न तरंग उपजेहे न लीन होत हे तेसें जगत्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कछू उपजा नही संकल्प करी उपजेकी नांइ भासता हे ॥ जेसें दृढता करके जल गडा हो जाता हे ॥ तेसें चिन्मात्रविषे चैतता करके पिंडाकार भासता हे ॥ परंतु उपजे कछू नही हे मुनीश्वर यह जो सिला हे जिसविषे हमारी सृष्टि हे सो सिला केवल चित्घनरूप हे तुमारी सृष्टिविषे यह सिला हे ॥ अरु हम चैतनघन हे ॥ आकाश चैतन आत्मा सिला हो करी भासता हे जेसें सुपनेविषे पत्तन सृष्टि सब जाग्रत भासती हे सो बोधरूप हे बोधही जगत करी भासता हे ॥ तेसें यह जगत अरु सिलारूप होकरी बोधही भासता हे ॥ हे मुनीश्वर जेसें सुपनेविषे गृहका चक्र फिरता दृष्टि आतें हे॥सूर्य चंद्रमा पर्वत नदी वरुण कुबेर आदिक जगत भ्रम करके दृष्ट आवता हे सो बन्या कछू नही चैतनका किंचनही अेसें भासत हे ॥ तेसें यह जगत शुद्ध आकाशका किंचन हे ॥ जेसें सूर्यकी किरणविषे किंचन जलाभास होता हे ॥ तेसें जहां आत्मसत्ता हे तहां जगत् भासताहे ॥ अरु जो पदार्थ हे सो आत्म सत्ता करी भासते हे ॥ ब्रह्मसत्ता सर्वविषे अनुस्यूत हे ॥ तातें सब उरविषे सृष्टि वसतीयां हे ॥ जेसें अेक सिलाविषे हमारी सृष्टिविषे जो कछु पदार्थ भासते हे तिनविषे सृष्टि वसतीयां हे ॥ सो प्रछन्न दृष्ट करो नही भासतीयां हे ॥ जब अंतवाहक दृष्ट करी देखीए तब सृष्टि भासतीयां हे ॥ घटोविषे सृष्टि हे गरतोविषे सृष्टि हे पृथ्वीविषे सृष्टि हे जल अग्नि पवन आकाश विषे सृष्टि हे ॥ सब ठोरविषे सृष्टि हे अरु बन्या कछू नही ॥ जेसें जहां समुद्र हे तहां तरंगभी होते हे॥ परंतु समुद्रतें भिन्न कछू तरंग हूए भी नही उही रूप हे ॥ तेसें यह जगत कछू उपजता नही न मिटणा हे ॥ ज्योंका त्यों आत्म समुद्र अपणे आपविषे स्थित हे ॥ अरु जगत जो फुरंता हे सो संकल्प शक्ति करी फुरता हे ॥ संकल्प शक्ति अहंरूपी किंचन मात्र उदे हुए हे ॥ अरु जेसें कमलतें सुगंध ले करी तरीयां निकसतीया हे तेसें मुलतें देवी जगतरूपी सुगंधकों ले करी उदे भइ हे परंतु वास्तव जगत कछू बन्या नही संकल्प शक्ति करी बनेंकी नांइ भासता हे ॥ हे मुनीश्वर वास्तवतें न कोउ संकल्प हे न प्रलय हे ज्योंका त्यों ब्रह्म अपणे स्वभावविषे स्थित हे ॥ जेसें आकाशविषे आकाश स्थित हे ॥ जेसें समुद्रविषे समुद्र स्थित हे ॥ तेसें ब्रह्मविषे ब्रह्म स्थित हे हे मुनीश्वर यह जगत न सत हे न असत हे आत्माविषे न उदे हुआ न अस्त होवेगा ॥ जेसें आकाशविषे नीलता न सत हे न असत हे तेसें ब्रह्मविषे जगत न सत हे न असत हे अरु में तिस ब्रह्मका किंचन ब्रह्मा हों यह जगत मेरे संकल्पविषे उत्पन्न हुआ हे ॥ अब में संकल्पकों निर्वाण करता हों ॥ जब संकल्प निर्वाण हुआ तब जगतका आभास हो जावेगा जेसें कमलके नाश हूए सुगंधका अभाव होता हे ॥ तेसें मेरेविषे इच्छा फुरीथी तीसविषे वासना हे वासनाविषे जगत हे ॥ अब में इसकों निर्वाण करता हों ॥ जब इच्छा निर्वाण हुइ तब जगतकाभी स्वाभाविक अभाव हो जावेगा ॥ अरु तुमारा जो शरीर भासता हे सो इस संकल्पविषे भासता हे तातें तुम अपणी सृष्टिविषे गमन करो मत तुमारा शरीरभी इहां निर्वाण हो जावे ॥ हे रामजी इसप्रकार मुझकों कही करी बहुरी देवीकों कहत भया ॥हे देवी अब तूं निर्वाण होंहु आत्मपदविषे अरु बोध आदिककोंभी लीन कर आपणेविषे ॥ इतिश्री योगावसिष्ठे निर्वाण प्रकरणे सिलांतर वसिष्ठब्रह्मसंवाद वर्णनंनाम शताधिक षडशीतितमःसर्गः ॥ १८६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार ब्रह्मा कहीकरी पद्मासन कीया अवरभी सभजन संजुक्त तब अकार उकार मकारकों छोडिकरी अर्धमात्रविषे स्थित भया ॥ तब ब्रह्मा जीको मूर्ति अेसी दृष्ट आव ॥ जेसी कागद उपर मूरती लीखी होतीहे अरु निर्वेदना हूआ जेता कछू जगत जालका ज्ञान था तिसकों विस्मरण कीया ॥ अरु देवीभी उसी प्रकार पद्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सन कीया ब्रह्माजीके निश्चयविषे लीन हो जाणे लागी ॥ जब ब्रह्माजी निर्वेदना ब्रह्माविषे लीन होणें लागा ॥ तब जेते कछू उपद्रव थे सो अति उदे हूए मनुष पाप करनें लागें ॥ स्त्री यां दुराचारणीयां होत भइयां सब जीवनें धर्मका त्याग कीया कामी पुरुष बहुत भए परस्त्रीयां साथ संग करे ॥ पुरुष स्त्रीयां संका किसकी न करे ॥ काम क्रोध लोभ मोह राग दोष बढि गए शास्त्रकी मर्यादाकों त्यागत भए अनीश्वरवादी होत भए वर्षा होणेतें रहीगइ कुहीड परने लागी अरु काल पडा ॥ दुष्ट जन धन पात्र होणे लागें ॥ धर्मात्मा आपदा भोगनें लागें ॥ चोर चोरनें लागे राजा मद्यपान करणें लागें ॥ जीवहूकों बडे दुःख प्राप्त होणे लागें तीनो तापहू करी जलतें रहही ॥ राजा न्यायकों त्यागत भए इत्यादिक जो पाप आचार थे सो उदे भए धर्म छपन होगया अज्ञानी राज करे पंडित ज्ञानी टहल करे दुर्जनोंकी मानपूजा होवें ॥ सत पंडितका निरादर होवे ॥ तब समूह जीवके एकठे भए पृथ्वी उपर पृथ्वी अपणी सत्ताकों त्यागत भइ ॥ काहेतें जो पृथ्वी ब्रह्माके संकल्पविषै पडीथी ॥ जब उसनें अपणा संकल्प खेंचा तब निर्जीव होगइ चैतन्यता निकसी गइ ॥ जो स्थान भूतके विचरणेका होवे सो खाइकी न्यांइ होजावें भूत नास होजावे पृथ्वीभी नास होणें लागी पर्वत कंपणे लागे ॥ भूचाल हाहाकार सब्द होणें लागें जेसें सरत्कालविषे वल्ली सुकी जातीहें जर्जरी भाव होतीहे ॥ तेसें पृथ्वी जर्जरी भावकों प्राप्त भइ ॥ काहेतें जो चैतनता सरीर सर्व जगत ब्रह्माहें ॥ ज्यों ज्यों संकल्परूपी चैतनता क्षीण होतीजावें ॥ त्यों त्यों पृथ्वी जर्जरीभूत होवें ॥ जेसें कीसी पुरुषका अर्ध गमरी जाताहे तब उह अंग सब जेसा होजाताहे ॥ फुरणा तिसविषे नही रहता ॥ तेसें ब्रह्मके संकल्परुप चैतनता पृथ्वीसों निकसती जावें ॥ इस कारनतें पृथ्वी निघरीनिघरी जावें ॥ घुड उडे नगर नष्ट होवे इस प्रकार उपद्रव उदे हूए काहेतें जो पृथ्वीके नासका समा निकट आया ॥ अरु समुद्र जो अपणी मर्यादाविषे स्थित थें सोभी अपणी मर्यादाकों त्यागत भए ॥ जेसें कामी पुरुष मद्यपान कीएतें अपणी मर्यादाकों त्यागताहे ॥ तेसें समुद्र उछले किनारें गिराय दीए पर्वत कंदरासों निकसी जावे पृथ्वीकों नास करते भये राजा अरु नगरवासी भागते जावे ॥ पाछें तीक्ष्ण वेगकरी जल चला जावे ॥ बडे पर्वत गिरने लागे अरु चक्रकी न्यांइ फिरणें लागें ॥ समुद्रके तरंग साथ पर्वत गिरे अरु उडे ॥ अरु तरंग उछलीकरी पातालकों गए पातालका नास होणें लगा ॥ अरु वडे रत्नके पर्वत गिरे ॥ तब रतनका अेसा चमत्कार होवे जेसा तारा मंडलका होताहे ॥ इसी प्रकार बडा क्षोभ होणे लगा ॥ अरु तरंग उछली करी सूर्य चंद्रमाके मंडलकों जावे ॥ अरु प्रकास भूसल होगया ॥ बडवाग्नि उदे भइ तब वरुण कुबेर जम इनके जो वाहन थे सो भयकों प्राप्त भए ॥ जलके वेगकरी पर्वत नृत्यकरणे लगें ॥ मानों पर्वतोंकों पंख लगिहे ॥ स्वर्ग विषे जो कल्पतरु थें सो समुद्रविषे आनि पडे ॥ चिंतामणी अरु सिद्ध गंधर्व सब गिरने लागे समुद्र एकठे होएए ॥ जेसें गंगा जमुना सरस्वती एकत्र होतीहें तेसें समुद्र मिलीकरी सब्द करनें लागें ॥ अरु अेसें मछ निकसे जिनकें पुछ लगणे करी पर्वत उडते जावे ॥ अरु कंदराविषें जो हस्तिथे सो पुकार करे ॥ सूर्य चंद्रमा तारागण क्षोभकों प्राप्त भए समुद्रविषे गिरने लागे ॥ हे रामजी इस प्रकार प्रलयके क्षोभकरी जेते कछू लोकपाल थे सो सब समुद्रके मुखमें आनी पडे ॥ उह मछ उसकों भछन करते भए ॥ अरु तरंग आपसमें जुध करे ॥ जेसें मतवारे हस्ती सब्द करतेहे तेसें जुद्ध करेही ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे अन्यजगत्प्रलय वर्णनं नाम शताधिकसप्ताशीतितमः सर्गः ॥ १८७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी उह विराट रूप जो ब्रह्माथा जिसका देह संपूर्न जगत् था ॥ सो अपणें प्राणकों खेंचत भया ॥ तब छत्र चक्रके फेरणेहारा जो वायु हे सो अपणी मर्यादा त्यागकर क्षोभ करणे लागा ॥ तब उह चक्र नास होणे लागें ॥ काहेतें जो ब्रह्माके संकल्पविषे थे कीसीकी समर्थता नही जो उनकों रखे ॥ अरु तेजमें जो देवता थे सो पवनके आधारथे उह पवनके निकसणे करी निराधार भए तब समुद्रविषे गिरने लागे ॥ जेसें वृछसों फल गिरते हे तेसें गिरतें भए ॥ जेसें संकल्पकें नास हूए संकल्पका वृछ गिरता हे ॥ जेसें पक्व फल समयकरी गिरता हे तैसें सभ गिरते भए ॥ सुमेरकी कंदरा गिरत भइ ॥ पवनका बडा क्षोभ हूंआ अरु सब्द हूआ अपणी सांतिके निमित्त पवनकों क्षोभ हूआ ॥ जैसें पवनविषे तृण फिरता हे ॥ तेसें आकासविषे पवन फिरणे लागा ॥ देवताके रहणेवाला जो सुमेरु पर्वतथा सो गिरत भया ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् संकल्परूप जो ब्रह्मा था सो विराट आत्मा हे सभ जगत उसका देह हे ॥ भूमंडल उसका कवन अंग हे पाताल कवन अंग हे, स्वर्गलोक कवन अंगहे ? अरु संकल्परूप केसें अंग होते हे ॥ संकल्प तो आकाशरूप होते हे ॥ अरु जगत प्रत्यक्ष पिंडाकार दृष्ट आवे ॥ जो जिसतें उपजता हे सो तिसही जेसा होताहे ॥ तो यह जगत ब्रह्माके अंग केसें हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी इस जगततें पूर्व केवल चिनमात्र था तिसविषे जगत न सत था न असत था केवल आत्मत्व मात्र अपणे आपविषे स्थित था ॥ जेसें आकास अपणे आपविषे स्थितहे ॥ एक अरु दो सब्दतें रहित हे तिस केवल चिनमात्रका किंचन अहं होकरी स्थित भया हे ॥ तिस अहंकारका चैत जो द्रश्य हे तिस साथ संबंध हूआ ॥ तिस द्रश्यके अनुभव ग्रहण करी निश्चय हूआ तिसका नाम बुद्धि हे ॥ बहुरी सो व्यतीत हुआ तिसका नाम मन हे ॥ तिस मनके फुरणे करि जगत दृष्ट हुआ हे रामजी सुद्ध चिनमात्रविषे जो चैत हे सोइ ब्रह्मारूप करी कहाता हे ॥ तिसविषे फुरणेविषे आगें जगत् हो खडा भया हे ॥ तिस संकल्परूप जगतका उह विराट हे ॥ परंतु क्या हे आकासरूप हे अवर बन्या तो कछू नही अरु यह जो आकार सहित जगत भासता हे सो ब्रह्मकरी भासता है ॥ सभ संकल्प आकासरूप हे ॥ जेसें सुपनेविषे जगत भासता हे सो सभ आकासरूप होता हे ॥ परंतु निद्रा दोष करकें पिंडाकार भासता हे ॥ अरु आत्मसत्ता सदा केवल आकास ज्योंकात्यों अपणे आपविषे स्थित हे ॥ हे रामजी अहं जो फुर्‍या हे सो मिथ्या हे अज्ञान करकें दृढ स्थित हुआ हे ॥ असम्यक् दर्शीकों दृग भासता हे सो केवल संकल्पमात्र हे अवर कछू नही बन्या ॥ तातें जेता कछू जगत भासता हे सो सभ चिदाकास हे एक अरु द्वैत कलनातें रहित हे सर्व सब्दतें रहित आत्मा मात्र हे ॥ में अरु तुं सब्द कोउ नही यह जगत् तिसका किंचन हे ॥ जेसें सूर्यकी कीर्णोविषे जलाभास होता हे तेसें आत्माका आभास जगत हे ॥ संकल्पकी दृढता करीकें द्रश्य भासता हे अरु हे नही जेसें संकल्परूप गंधर्व नगर होता हे ॥ जेसें सुपनपुर होता हे तेसें यह जगत हे ॥ हे रामजी जिस प्रकार में जगत वर्णन कीया हे जो पुरुष मेरे कहणेकों ज्योंकात्यों धारे तब उसकी वासना नष्ट होजावे अरु पूर्ववत् आत्मा ज्योंकात्यों भासेगा ॥ जेसें जगत्के आदि आत्मत्वमात्र था तेसेंही भासेगा काहे तें अवर कछू हुआ नही केवल आत्मत्व मात्र ज्योंकात्यों स्थित हे ॥ जो आत्माही हे तो समवाय कारण अरु निमित्त कारण केसें होवे ॥ जगतका उदे होणा अरु नास होणा असत हे ॥ अद्वैत अनंत कहणाभी कोउ नही ॥ जब सर्व सब्दका अभाव हुआ तब परम चिदाकास अनुभव सत्ताही शेष रहेगी ॥ इसीका नाम मोक्ष हे ॥ हे रामजी हमकों तो अबभी संवितसत्ताही भासती हे ॥ केसा हों में सुद्ध हों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्व कल्पनातें रहित हों ॥ चिदाकास हों अरु मेरेविषे जो वसिष्ट अहं फुऱ्या हे सो फुऱ्या नही फुरेकी न्यांइ भासता हे ॥ एकभी आत्माका किंचन हे हुआ कछू नहीं ॥ तातें तुमभी इसी प्रकार जाणीकरी निर्वासनिक होहु ॥ अरु अपणे प्रकृत आचारकों करहु अथवा नकरहु ॥ जो इछा हे सो करहु परंतु करनें अकर्नेका संकल्प न करहु ॥ परम मौनविषे स्थित होहु ॥ ज्ञानवानकों यह अनुभव होताहे तातें तुमभी अेसें धारहु ॥ ॥इतिश्री योगवसिष्ठे निर्वाणप्रकरणे निर्वान वरनंनाम शताधिकाष्टाशीतितमः सर्गः ॥ १८८ ॥ ॥ ७ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् बंध मोक्ष जगत बुद्धि न सत हें न असत हे ॥ उदेभी नही हुआ असतभी नहि होता केवल ज्योंकात्यों आत्मा स्थित हे ॥ एसे तुमनें मुजकों उपदेस की याहे सो में जान्याहें ॥ आत्माविषें जगत् न उपजताहे न मिटताहे तुमारे अमृतरूपी वचनोंसों उपदेस कीयाहे सो में जान्याहे सुणता में तृप्त नही होता अमृतको न्यांइ पान करताहों ॥ अरु जगत् सत असततें रहित सन्मात्र हें तिसकों में जान्याहे ॥ बहुरी कहो जो संसार भ्रम उपजताहे केसें अरु अनुभव केसें होताहे ? ॥ ॥ वसिष्टोवाच ॥ ॥ हे रामजी जो कछू तुझकों दृष्ट आवताहे ॥ स्थावर जंगम जगत् सर्व प्रकार देसकाल संयुक्त तिसके नासका नाम महाप्रलय हे ॥ तिसविषे ब्रह्मा विष्णु रुद्र इंद्रभी लीन होजाते हें ॥ तिसके पाछें जो सेष रहताहे सो स्वछ हे, अज हे अनादि हे केवल आत्मत्वमात्र हें तिसविषे वाणीकी गम नही केसें कहीयें केवल अपणें आपविषे स्थित हें परम सूक्ष्महे जिसविषे आकासभी सूक्ष्महे ॥ जेसें सुमेर पर्वतके निकट राइका दाणा सूक्ष्महे ॥ तेसें आकासतें आत्मा सूक्ष्म हे केसी सूक्ष्मता हे जो संवेदनतें रहित चिन्मात्र हे ॥ तिसविषे अहंकिंचन होकरी फुर्याहे अरु आत्मा सदा निर्विकल्प हे ॥ सात समुद्र हे देस कालकें भ्रमतें रहित हे ॥ केवल चैतन घन अपणें आपविषे स्थित हे जेसें सुपनें विषे अपनें भावकों लेकरी स्थित होताहे ॥ तेसें आत्मा अपणे भावकों लेकरी चैतन किंचन होताहे तिसका नाम ब्रह्माहे सोभी चिदरूप हे ॥ हे रामजी चिदअणु जो अपणें भावकों लेकरी उदे हूआहे सो चैत्यनाम दृश्यकों देखत भयाहे ॥ तब उसका अनुभव मिथ्या हूवाक्यों ! ॥ जेसें सुपनेविषे अपना मरण देखताहे सो अनुभव मिथ्याहे ॥ तेसी चिदअणु दृष्टि करी दृश्यकों देखता हे सो मिथ्या दृष्टि हे जब चिदअणु अपने स्वरूपकों देखत भया सो केवल निराकाररूप हे ॥ परंतु अहं जो अेसें बीज दृढ होता हे तिसकरी अपने आपसों निकसी दृश्यकों संकल्प करी देखता हे ॥ जेसें बीजते अंकुर निकसता हे तेसें संकल्पके फुरणे करी देसकाल द्रव्य द्रष्टा दर्सन दृश्य होताहे ॥ वास्तवतें हूआ कछू नही आत्मा सदा अपणे सुभावविषे स्थित हे ॥ परंतु संकल्पकरी हूएकी न्यांइ भासताहे ॥ सो देस हे जहां चिदअणु भासे अरु जिस समे भासे सो काल हे अरु जो भान हुआ सो क्रिया हुआ भानका ग्रहण हुआ सो द्रव्य हें देखणेकों जो वृत्ति दउडती हे सो नेत्रहोकरी स्थित हुए हे अरु देखणे लागेतें जिसकों देखते हें सोभी शून्य हे देखणे हारे शून्य हे सब अस्त हे कछू बन्या नही ॥ जेसें आकासविषे आकास स्थित हे तेसें आत्मा अपणें आपविषे स्थित हे संकल्पद्वारा सब कछू बनता जाताहे चिदअणु जो भास्याहे सो दृश्यरूप होकरी स्थित भयाहे ॥ जब चिद अणुविषे रूपको वृत्ति फुरतीहे तब चक्षु इंद्रिय होकरी स्थित होतीहें ॥ जब श्रवणकी वृत्ति फुरताहे तब श्रोत्रहोकरी स्थित होतेहें ॥ जब स्पर्शकी वृत्ति फुरतीहे तब त्वचा इंद्रिय होकरी स्थित होतीहें ॥ जब सुगंध लेणेकी वृत्ति फुरती हे तब नासिका इंद्रिय होकरी स्थित होतीहे जब रस लेणेकी इछा होतीहे तब जिव्हा इंद्रिय होतीहे अरु स्वाद लेती हें ॥ हे रामजी प्रथम यह चिदअणु नामतें रहित फुऱ्याहे अरु संपूरन जगत्भी तद्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पही था ॥ अबभी उही केवल आकासरूपहे अरु संकल्पकरी अपणे विषें पिंड घनकों देख्या हे ॥ बहुरी सरीरकों देख्या बहुरी इंद्रियांको देखी ॥ अनादि सतस्वरूप चिदअणु इंद्रियांके संयोगतें पदार्थोंकों ग्रहण करताहे ॥ स्पंदरूप जो वृत्ति फुरी हे तिसका नाम मन हुआ जब निश्चयात्मक बुद्धि होकरी स्थित भइ ॥ तब चिदअणुविषे यह निश्चय हुआ जो में द्रष्टा हों यह अहंकार हुआ ॥ जब अहंकार साथ चिदअणुका संयोग हुआ तब देसकालका प्रछेद अपणें विषें देखत भया ॥ आगें द्रश्यकों देखत भया पूर्व उत्तरकाल देखत भया ॥ आपकों अेसें देखते हे इस देसविषे बेठा हों इह में कर्म कीया हे यह विषम अहंकार हुआ देसकाल क्रिया द्रव्यके अर्थकों भिन भिन करी ग्रहण करताहे ॥ आकास होकरी आकासकों ग्रहण करताहे ॥ हे रामजी आदिफुरणें करी चिदणुविषे अंतवाहक सरीर हूआहे ॥ बहुरी संकल्पके दृढ अभ्यासकरी अधिभूतक भासणे लागाहे ॥ सो क्या रूप हे जेसें आकासविषे अवर आकास होवे तेसें यह आकास हे अणहोते भ्रमकरीके उदे हुएहें ॥ अरु सतकी न्यांइ भासतेहे ॥ जेसें मारुथलविषे भ्रमकर्के नदी भासती हे तेसें अविचार करके संकल्पकी दृढता हे पंचभूतक आकार भासते हे ॥ तिन विषे अहं प्रत्यय हूआहे ॥ तिसकरी देखता हे ॥ यह मेरा सीर हे यह मेरे चरन हे यह मेरे अमका देस हे ॥ इत्यादिक सब्द अर्थकों ग्रहण करताहे ॥ नाना प्रकारका जगत सब्द अरु अर्थ सहित ग्रहण करताहे ॥ भाव अभावकों ग्रहण करताहे इस प्रकार कहताहे ॥ जो यह देस हे यह काल हे यह क्रिया हे यह पदार्थ हे ॥ हे रामजी जब इस प्रकार जगत्के पदार्थ का ज्ञान होताहे ॥ तब चित्त विषयकी उर उडताहे अरु राग दोषकों ग्रहण करताहे जो कछू देहादिक भूत फुरनेकरी भासतेहे सो केवल संकल्प मात्र हे ॥ संकल्पकी दृढता करकें दृढ हूएहें हे रामजी इस प्रकार ब्रह्मा उत्पत्ति हूआ हे ॥ इसी प्रकार विष्णु रुद्र हूएहे इसी प्रकार कीट उत्पत्ति भएहे ॥ परंतु प्रमाद अप्रमादका भेद हे ॥ जो अप्रमादी हे सो सदा आनंदरूप हे ॥ ईश्वर हे स्वतंत्र हे ॥ तिसकों यह जगत् अरु उह जगत् अपणा आपरूप हे अरु जो प्रमादी हे सो तुछ हे सदा दुःख हे ॥ अरु वास्तवतें परमात्म तत्वतें इतर कछू हूआ नही ॥ अपणे आप सुभावविषे स्थित हे जेसें आकास अपणी शून्यताविषे स्थित हे तेसें आत्मसत्ता अपणें आपविषे स्थित हें ॥ अरु सर्वका बीज हे ॥ अरु त्रिलोकरूप बुंदका मेघ हे कारणका कारण उही हे ॥ कालविषे नीति उही आत्मा हे क्रियाविषे क्रिया उही हे आदिविराट पुरुषका शरीरभी नही अरु हम तुमभी नही केवल चिदाकाशरूप अबभी इनका शरीर आकाशरूप हे ॥ आत्मसत्ता इतर अवर अवस्थाकों नही प्राप्त भए ॥ केवल आकाशरूप जेसें सुपनेविषे युद्ध होते हे अरु मेघ गरजते दृष्टि आते हे इत्यादिक शब्द अर्थ भासते हे सो केवल आकाशरूपहे वन्या कछू नही ॥ परंतु निद्रा दोषकरी भासतेहे जब जागता हे ॥ तब जाणताहे जो हुआ कछु नथा आकासरूप हे तेसें जो पुरुष अनादि अविद्यातें जाग्या हे तिसकों जगत् आकासरूप भासता हे ॥ हे रामजी बहुत जोजन पर्यंत विराट पुरुषका देह हे तोभी ब्रह्म आकासके सूक्ष्म अणुविषे स्थित हे यह त्रिलोकी एक चिदणुविषे स्थित हे ॥ विराट पुरुष इसका एसा हे जिसका आदि अंत मध नहीं भासता ॥ एसा स्थूल देह इसका हे तोभी एक चावलके समान नही ॥ हे रामचंद्र यह जगत् अरु जगतके भाग विस्तीर्ण दृष्ट आते हे ॥ तोभी एक कणके समान नही ॥ जेसें सुपनेके पवर्त जागतके एक अणु के समान नही ॥ तेसें विचाररूपी तराजू कर्के तोलीये तो परमार्थ सत्ताविषे कछू सत्यता इनकी नही पाइती ॥ दृष्टभी आते हे परंतु आत्मसत्तातें इतर कछू हुआ नही आत्मसत्ताही इस प्रकार भासती हे ॥ इसीका नाम स्वयंभू मुनी कहते हें इसीकों विराट कहते हे इसीकों जगत कहते हे ॥ जगत् अरु विराटविषे भेद कछू नहीं वास्तवतें आकासरूप हे ॥ सनातनभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसीकों कहते हे ॥ रुद्र इंद्र उपेंद्र पवन मेघ पर्वत जल जेते कछू भूत हे सो तिसका वपु हे ॥ हे रामजी आदि वपु जो इनका चिन्मात्र रूप हे ॥ तिसविषे चैतता करैं अपणा अणु जे सा वपु देखता हे ॥ जेसें तेजका कणका होता हे तिस तेज अणुतें चैतता करैं क्रम करी अपणा बडा शरीर जगत रूप देखत भया जेसें सुपनेविषे कोउ पुरुष आपकों पर्वत देखे तेसें आपकों विराटरूप देखत भया हे ॥ जेसें पवनके दो रूप हे चलता हे तोभी पवनहे नही चलता तोभी पवन हे तेसें जब चित्त फुरताहे तबभी ब्रह्मसत्ता ज्योंका त्यों हे ॥ अरु जब चित्त नही फुरता तबभी ज्योंका त्यों हे ॥ परंतु जब स्पंद फुरता हे तब विराटरूप हो करी स्थित होता हे जब चित्त अफुर होता हे तब अद्वैत सत्ता भासती हे ॥ अरु सदा अद्वैतही विराट स्वरू प केसा हे हे रामजी इस दृष्टि करी उसके सिर पाद नही भासतें हे ॥ अरु जेती कछू ब्रह्मांडकी पृथ्वी हे सो तिसका मांस हे ॥ अरु सब समुद्र तिसका रुधिर हे नदी तिसकी नाडी हे ॥ अरु दसोदिसा तिसके वक्षस्थल हे अरु तारागण रोमावली हे ॥ सुमेरु आदिक तिसकी अंगुलीया हे ॥ अरु सूर्यादिक तेज तिसके पित्त अरु चंद्रमा कफ हे अरु पवन तिसका प्राण वायु हे ॥ संपूर्ण जगत जाल उसका शरीर हे ब्रह्मा तिसका रिदा हे सो आकासरूप हे ॥ संकल्प करैं नाना रूप हो भासता हे स्वरुपतें कछू बन्या नही ॥ आकाश आदिक जगत सब चिदाकाशरूप हे ॥ अरु अपणे आपहीविषे स्थित हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे विराटआत्मा वर्णनं नाम शताधिकनवाशीतितमः सर्गः ॥ १८९ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी आदि जो विराट हे सो ब्रह्म हे तिसका तो आदिअंत कछू नही ॥ अरु यह जगत् उसका छोटा वपु हे तिस चैतन वपुका किंचन ब्रह्मा रूप हूआहे ॥ तिसके विस्तारका क्रम सुण अंगका ॥ तिस ब्रह्मानें संकल्पकरी एक अंड रचाहें ॥ केसा ब्रह्मा हे जिसका संकल्पही वपु हे ॥ तिस अंडकों फोडता भया तब अंडेका जो उर्ध भाग था सो उर्धकों गया अरु जो अधभागथा सो अधकों गया ॥ सो पाताल ब्रह्माका चरन हूआ अरु उर्धसिर हूआ अरु मध्य जो अवकास हे सो ब्रह्माका उदर हुआ दसोदिसा वक्षस्थल हुए अरु हाथ सुमेरादिक पर्वत हुए अरु मांस पृथ्वी हुइ अरु समुद्र आद्रा हुए ॥ सब नदीयां तिसकी नाडी भइयां ॥ तिसविषे जल हे सो रुधिर हुआ ॥ प्राण अपान वायुपवन हुआ ॥ हिमालय पर्वत तिसका कफ हे सर्व तेज उसके पित्त हें ॥ चंद्रमा सूर्य तिसके नेत्र हे अरु तारागण स्थूल लार हे ॥ अरु लार प्राणके बलकरी निकसती हे ॥ जेसें तारा चक्रकों पव न फेरता हे अरु उर्धलोक तिसकी सिखा हे मनुष पसु पंछी उसके रोम हे ॥ अरु सब भूतकी चेष्टा उसका व्यवहार हे ॥ पर्वत उसके अस्थि हे ॥ ब्रह्मलोक उसका मुख हे ॥ सब ज गत विराटका वपु हे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् यह जो तुमनें संकल्परूप ब्रह्मा कहा अरु जगत तिसका वपु कहा सो में मानताहो ॥ परंतु यह जगत् तो तीसीका सरिर हू आ ॥ बहुरी ब्रह्मलोक विषे ब्रह्मा केसें बेठता हे अपणे सरीरही विषे भिन होकरी केसें स्थित होता हे ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस विषे क्या आश्चर्य हे ॥ जो तुं ध्यानलगाइ करी बेठे अरु अपणी मूर्ति अपणे अंतर रची करी स्थित होवे तोभी होताहे ॥ अरु जेसें पुरुषकों सुपना आताहे तिसविषे जगत् भासताहे सो सब अपणा सूरूप हे ॥ परंतु अपणी मु क्ति धारी करी अवरकों देखत भया ॥ तेसें ब्रह्माका एक सरीर ब्रह्मलोकविषेभी होताहे ॥ ब्रह्मा अरु जीवविषे एता भेद हे जो जीवभी अपणी सुपन सृष्टिका विराट हे परंतु उसकों भा सती नही प्रमाद करैं ॥ अरु ब्रह्मा सदा अप्रमादी हे तीसकों सब जगत अपणा सरीर भासताहे ॥ हे रामजी देवता सिद्ध ऋषीश्वर विद्याधर सो विराट पुरुषकी ग्रीवाविषे स्थित हे ॥ अरु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूत प्रेत पिसाच सब वैराट पुरुषके मलतें उपजे कीटकी न्यांइं उदर विषे स्थित हे ॥ स्थावर जंगम जगत सब संकल्प करी रचा हूआ विराटविषे स्थित हे सब तीसीके अंग हे जो जगत हे तो विराटभी हे ॥ अरु जगत नही तो विराटभी नही ॥ जगत कहीए ब्रह्म कहीए विराट कहीए तीनों पर्याय हे ॥ तातें संपूर्ण जगत विराटका वपु हे ॥ निराकार क्या अरु आकार क्या अंतर बाहिर सब विराटका वपु हे जेसें अंतर बाहिर आकासविषे भेद नही ॥ तेसें विराट आत्मविषे भेद नही ॥ जेसें पवनके चलणे ठहरणे विषे भेद नही तेसें विराट अरु आत्मा विषे भेद नही जेसें चलणा ठहरणा दोनों रूप पवनके हे ॥ तेसें साकार निराकार सब विराटका सरीर हे ॥ हे रामजी इस प्रकार जगत हुआहे सो कछु उपजा नही संकल्प करीकें उपजेकी न्यांइ भासताहे ॥ जेसें सूर्यकी कीरणांविषे जल हुआ कछु नही अरु हुएकी न्यांइं भासताहे तेसें ब्रह्मसत्ताविषे जगत उपजेकी न्यांइ भासताहे ॥ अरु उपजा कछू नही केवल अपणे आपविषे स्थित हे ॥ सिला जठरकी न्यांइ स्थित हे ॥ अर्थ यह जो संकल्प विकल्पतें रहित चैतनरूप चैततें रहित चिनमात्र तेरा स्वरूप हे ॥ तातें कलनाकों त्यागकरी अपणे सुभावविषे स्थित होहु ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे विराट सरीर वर्णनं नाम शताधिकनवतितमःसर्गः ॥ ॥ १९० ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी प्रथम प्रलयका प्रसंग बहुरी श्रवण करु में ब्रह्मपुरीविषे ब्रह्माके पास बेठा था ॥ जब नेत्र खोलि करी देखा तब मध्यानका समा हे ॥ जो दुसरा सूर्य पछम दिसाविषे आनि उदे हुआ हे तिसका बडा प्रकास देखा मानों संपूरन तेज एकठा हुआ हे ॥ अरु बडा अग्निकी न्यांइ प्रकास हुआ अरु बिजुरीकी न्यांइ स्थित हुआ ॥ तिसकों देखी करी मे आश्चर्य मान हुआ अेसें देखता था तो एक अवर सूर्य उदे हुआ बहुरी उतर दिसाकी उर अवर सूर्य उदे हुआ इसी प्रकार दस सूर्य आकासविषे प्रगट हुए अरु एक प्रथम था एकादस सुर्य उदे हो करी तपावणे लागे ॥ द्वादसम वडवाग्नि समुद्रतें उदे भइ ॥ तिसतें एक सूर्य निकस्या द्वादस एकठे होकरी विस्वकों तपावणे लागे ॥ हे रामजी प्रलयके तीन नेत्र आनी उदे हूए ॥ एक नेत्र सूर्य दूसरा नेत्र वाडवाग्नि तीसरा अग्नि बीजुरी भइ ॥ तीनो नेत्र विस्वकों जलावणे लागे दिसा सभ रक्त भइ ॥ अट अट सब्द होणे लगे ॥ नगर बन कंदरा संपूर्न जलणे लगे ॥ पृथ्वी क्षुब्ध जलणे लागी ॥ देवताके स्थान जली जली डिगणे लागे ॥ पर्वत जली करी स्याम होगए ॥ ज्वालाके कणके निकसी करी पातालकों गए पाताल लगा जलणे ॥ समुद्र जलिकरी सूकी गए चिकड हो रहा ॥ हीमालय पर्वत बरफका जल होकरी जलणे लगा जेसें दुर्जनोंके संगकरी साधुका रिदातम होता हे ॥ जब इसी प्रकार बडी अग्नि प्रज्वलित भइ तब मुझकोंभी तपत आनी लागी ॥ तब में उहांसों दउडि करी अध जाय स्थित भया ॥ तहा में देखत भया जो अस्ताचल पर्वत जलता हुआ उदयाचल पर्वतके पास आय पडा ॥ मंदराचल पर्वत जलीकरी गीरने लागा ॥ सुमेरु गीरने लागा ॥ अग्नीकी ज्वाला उर्धकों जावे भडभड सब्द करे ॥ हे रामजी इस प्रकार संपूर्न विस्वजलणे लगा ॥ बडा क्षोभ आनि उदे हूआ जहां कछू रस था सो सभ विरसताकों प्राप्त भया ॥ हे रामजी जिसकों अज्ञानी रस कहतें हे सो सभ विरस हे ॥ परंतु अपणे अपणे कालविषे रस संयुक्त दृष्ट आते हे ॥ तिस कालविषे मुझकों अेसें भासे जेसें जली हुइ वल्ली होती हे तेसें सभ विरस दृष्ट आवे ॥ हे रामजी इस प्रकार सभ विश्व जलती देखी ॥ परतुं ज्ञानकरी जिसका अज्ञान नष्ट हूआ हे सो सुखी दृष्ट आवे ॥ अवर सभ अग्निविषे जलतें दृष्ट आए अरु बडे भयानक सब्द होवे अरु सदासिवका जो कैलास पर्वत हे तिसके निकट अग्नी आतीथी ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब सदासिवने अपणे नेत्रसो अग्नी प्रगट करी तिसकरी बडा क्षोभ हूआ ब्रह्मांड जलणे लागा ॥ तब महापवन आनी चल्या बडे बडे जो पर्वत थे सो उडणे लगे ॥ जेसे तृण उडतें हे अरु जो थान जले थे तिनकी अंधेरी होकरी पूरीयांके स्थानभी उडते जावे बडा क्षोभ आनी उदे भया अरु इंद्रादिक देवता अपणे स्थानकों त्यागकरी ब्रह्मलोक चले जावे अरु बडे मेघ जलकरी जो पूर्न थे सो सुकी करी जलणे लागे जलकों त्यागतें भए अरु जलणे लागे ॥ अरु कल्पद्रूपी जो पुतली थी सो नृत्य करणे लागी ॥ जले स्थानोंतें जो धुम्र निकसताहे सो तिसके केस हे ॥अरु प्रलय सब्द उसका बोलणा हे ॥ बडा पवन चला पर्वत जलोकरी उडणे लागे सुमेरादिक पर्वत तृणोंकी न्यांइ उडते जावे ॥ जीवकों बडा कष्ट प्राप्त हूआ अैसा दुःख कहणे विषे नही आता ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे जगत ब्रह्म प्रलय वर्णंन नाम शताधिक एकनवतितमः सर्गः ॥ १९१॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी अग्नि करी स्थान सभ जली गए ॥ तिसके उप्रांत पुष्कल मेघ प्रलयके गर्जणे लागा अरु वर्षणे लागे ॥ प्रथम मुसलकी न्यांइ फेरी थंभकी न्यांइ धारा बरषे बहुरी नदीकी वर्षा करणे लागे ॥ बहूरी महानद वर्षणे लागे जिनकी गंगा जमना नदी लहरी हे ॥ सभ स्थान सीतल होगए ॥ जेसें अज्ञानी तीन तापकरी जल्या हूआ संतके संग करी सीतल होता हे तेसें सीतल भए हे रामजी अैसा जल चडया जिसकरी सुमेर आदिक पर्वत नृत्य करे ॥ जेसें समुद्र विषे झग होती हे तेसें हो गए ॥ बहुरी केसें लागे जेसें जल चर होते हे तेसें पर्वत वहते जावे ॥ हे रामजी अेसें जल चडे जो कहणेविषे नही आते ॥ बडे बडे स्थान वहते जावे देवता सिद्ध गंधर्व वहते जावे ॥ जिनकों अज्ञानी परमार्थ जाणीकरी सेवना करते हे सोभी बहुत दृष्ट आए ॥ जेसें कोउ पुरुष कंटके अंधेकूप विषे गिरते दुःख पावे तेसें दृष्ट आवे ॥ अरु मुझकों सभ ब्रह्म दृष्ट आवे जब संकल्पकी उर देखों तब महा प्रलय दृष्ट आवे ॥ मेघ गर्ज ते जटा होकरी दृष्ट आवे ॥ अरु ब्रह्म लोक पर्यंत जल चडी गया में देखी करी आश्चर्यकों प्राप्त भया ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे ब्रह्म जल मय वर्णनं नाम शताधिक द्विनवतितमःसर्गः ॥ १९२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥हे रामजी ब्रह्माका जगत में देखों तोभी जल मय हो गया ॥ जलतें इतर कछू न भासे सभ शून्य ही भासे ॥ दिशा कोउ न भासे न उर्ध न अधों न मध्य भासे न कोउ तत्व भासे न कोउ पर्वत भासे संपूर्न जलही भासें ॥ न कोउ देवता न पशु पंछी भासें ॥ तब में ब्रह्मपुरीकों देखत भया जो क्या दशा हे ॥ जेसें प्रांतःकालका सूर्य अपणी प्रतिभाकों पसारताहे ॥ तेसें ब्रह्मपुरीकों दृष्टिपसारीकें देखत भया॥ तब ब्रह्माजी मुझकों परम समाधिविषे दृष्ट आया ॥ अरु अवर जो जीवन्मुक्त ब्रह्माका परिवार था ॥ सब पद्मासन करी परम समाधि लगाइ बेठे जेसें पथर ऊपर मूर्ति होवें तेसेंही सब परम समाधिविषे अचल बेठे देखे जो संवेदन फुरणे तें रहित स्थित हे सो किंचन कवन हे ॥ चारों वेद मूरतीधारी स्थित हे ॥सुक अरु बृहस्पत्ति अरु वरुण कुबेर इंद्र जम चंद्रमा अग्निदेवता इत्यादी ऋषीश्वर मुनीश्वर जीवन्मुक्तजो थे तिन सबकों में ध्यानविषे स्थित देखत भया ॥ द्वादस सूर्य जो विश्वकों तपावतेथे सो पद्मासन बांधकरी समाधिविषे स्थित हूएहें ॥ एक मुहुर्तपर्यंत में इसी प्रकार देखत भया ॥ जब एक मुहुर्त बीत्या तब सूर्य बिना सब अंतर्ध्यान होगए ॥ जेसें सुपनेकी सृष्टि अपणे विद्यमान होती हे अरु जागेते अभावना होजातीहे तेसें सब अंतर ध्यान होगए ॥ मेरे देखते देखते ब्रह्मपुरी शून्य बनकी न्यांइ होगइ ॥ जेसें पत्तन राजमार्ग प्रलय होजाते हे तेसें प्रलय होगइ ॥ हे रामजी जेसें सुपनेविषे मेघ गरजतें दृष्ट आतेहे अरु

128

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जागते अभाव होजातेहे ॥ यह दृष्टांत तो बालकभी जानेहे जो प्रत्यक्ष अनुभवकों छिपावतेहे सो मूर्ख हे में अनुभव करीभी जानताहों अरु स्मृतिभी होतीहे अरु सुण्याभी हे ॥ जब लग निद्राहें तबलग सुपनेकी सृष्टि भासतीहे ॥ जागेतें सुपन सृष्टिका अभाव होताहे ॥ तसें जबलग ब्राह्मीकी वासनाथी तबलग सृष्टिथी ॥ जब वासना क्षय हुई तब सृष्टिकहां रहे जब वासना नष्ट भई तब अंतवाहक अधिभूतक सरीर नही रहते ॥ हे रामजी जब शुद्ध मात्र पदतें चित्तसत्ती फुरतीहे तब पिंडाकार हा भासतीहे जबलग उह सरीरहे तबलग संसार उप जताभीहे ॥ नष्टभी होताहे तेसें ब्रह्माकी सुषुप्तिविषे जगत लीन होजाताहे अरु जाग्रतविषे उत्पत्ति होताहे ॥ काहेतें जो ब्रह्माका सरीर सुषुप्तिविषे लीन होणा इसीका नाम प्रलयहे ॥ अरु जो कहीयें इस सरीरके नासका नाम महा प्रलय होवे तो अेसें नही ॥ काहेतें जो मृतक हूए सरीरका नास होताहे अरु बहुरी लोक भासताहे तातें इसका नाम महा प्रलय नही अरु जो कहीए उह परलोक भ्रम मात्र हे तेसें यहभी भ्रांतिमात्र हे ॥ अरु जो कहीए परलोक भ्रांति मात्रहे इसीका नाम महाप्रलयहे तो एसे नही काहेतें जो श्रुति स्मृति पुरान सभ कहतेहे जो महा प्रलयविषे रहता कछू नही ॥ आत्मसत्ताही रहतीहे अरु जो कहीए परलोक भ्रांति मात्र हे इसका नाम होणा क्याहे ॥ तो श्रुती शास्त्रका कहणा व्यर्थ होताहे अरु जो इनका कहणा व्यर्थ होवे तो इनके कहणे करी ब्रह्माकार वृत्ति कीसकों उत्पत्ति न होवें ॥ अरु जो तूं कहे जेसें अंगवाला अंगकों सुकचाए लेताहे तेसे स्थूलभूत सुकचि करी अपणें सूक्ष्म कारणविषे जाय लीन होतेहे इसीका नाम महा प्रलयहे ॥ तो एसेभी नही काहेतें जो सूक्ष्मभूतकें रहतें महाप्रलय नही होता अरु जोतूं कहे संवेदन जो अज्ञान हे जिस विषे अहं फुरताहे तिस अज्ञानका नाम महाप्रलय हे तो यहभी नही काहतें जो मूर्छाविषे इसका अज्ञान होताहे परंतु बहुरी सृष्टिभासतीहें ॥ अरु मृतक होतीहे सो बडी मूर्छाहें तिस विषेभी बहुरी पंचभूतक सरीर भासताहे ॥ अरु आगें जगत् भासताहे तातें इसका नामभी महाप्रलय नही ॥ अरु जोतुं कहे जब लग यह पंचभूतक सरीर हे तबलग जगत् हे इसका अभाव होवे तब महा प्रलय हे ॥ तो यहभी नही काहे तें जो सरीरकों त्यागताहे ॥ अरु उसकी क्रिया नही होती तो पिसाच जाय होताहे ॥ इसका सरीर नीरूप होताहे ॥ अरु मनुष तब सब होजाताहे अरु क्षत्रिय ब्राह्मणकी संज्ञा नही रहती ॥ तातें तूं देख जो इस देहका नामभी महाप्रलय नही ॥ अरु प्रमादकरीकें विपर्ययका नामभी महाप्रलय नही ॥ महाप्रलय तिसकों कहतेहे जो सर्वका अभाव होजावें ॥ अरु सर्वका अभाव तब होताहे जब वासना क्षय होजातीहे ॥ तातें वासना क्षयका नाम ज्ञानी निर्वाण कहतेहे जेसें जबलग निद्राहे तब लग सुपनका जगत् भासताहे ॥ जब जाग्या तब सुपन जगत्का अभाव होजाताहे ॥ तेसें जबलग वासनाहे तबलग जगत् हे ॥ जब वासनाका क्षय हुआ तब जगत्का अभाव होताहे हे रामजी वासनाभी फुरी नही आभासमात्रहे ॥ अरु तुं जो कहे भासता क्यों तो जो कछू भासताहे सो उही अपणें आप भावविषे स्थितहे ॥ हे रामजी भावतें उत्थान होनेका नाम बंध न हे अरु उत्थान मिटणेका नाम मोक्ष हे ॥ हे रामजी नेत्रके खोलणे अरु मुंदणेविषेभी कछू जतन हें अरु मुक्त होणेविषे जतन कछू नही ॥ जो वृत्तिबहिर्मुख हुइ तो बंधन हुआ अरु वृत्ति अंतर्मुख भइ तो मुक्तभया ॥ इसविषे क्या जतन हें ॥ तातें निर्वासनिकसुषुप्तकी न्यांइस्थित होहु ॥ जब अहं संवेदन फुरताहे तब मिथ्या जगत् सत होभासताहे ॥ आगे जो इछाहे सो करहु ॥ जब अहं उत्थानतें रहित होवेगा तब परम निर्वाण पदकों प्राप्तहोवेगा ॥ जहां एक अरु दोकल्पना कोउ नही परम सांत निर्विकल्प पदकों प्राप्त होवेगा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे वासना क्षय प्रतिपादनं नाम शताधिक त्रिनवतितमः सर्गः ॥ १९३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी उह ब्रह्माजो अंतर्धान हो गया जेसें तेलविना दीपक निर्वाण हो जावे ॥ जब ब्रह्माजी ब्रह्मपदविषे निर्वाण हुआ तब द्वादस सूर्य बहुरी ब्रह्म पुरीकों जलावणे लागे ॥ जब संपूर्न ब्रह्मपुरी जलीगइ तब उह सूर्यभी ब्रह्माकी न्यांइ पद्मासन करीके स्थिर भए ॥ जेसें तेलबिना दीपक निर्वाण होता हे ॥ तेसें द्वादस सूर्यभी निर्वाण हो गए ॥ हे रामजी जब द्वादस सूर्य निर्वाण हुए ॥ तब समुद्र उछले ब्रह्मपुरीकों आछादि लीआ ॥ जेसें रात्रविषे अंधकार नगरकों आछादि लेता हे ॥ तेसें ब्रह्मपुरीकों आछादि लीआ ॥ बडे तरंग उछले पुष्कर मेघभी तरंग करी छेदे गए ॥ जलरूप हो गए ॥ हे रामजी तब एक पुरुष आकासतें निकस्या सो मुझकों दृष्ट आया ॥ महा भयानक स्यामरूप उग्र आकास कोंभी तिसनें अछादी लीया कृष्ण मूर्त्ति मानों रात कल्प पर्यंत एकठी होकरी तिसकारूप आनी स्थित हुआ हे ॥ अरु मुखतें ज्वाला निकसती हे ॥ अरु सरीरका बडा प्रकास मानो कोटि सूर्य स्थिर हे विजलीका प्रकास एकठा हुआ हे ॥ अरु तिसका पंच मुख हे दस भुजा हे अरु तीन नेत्र हे मानो तीनों सूर्य चमत्कार करते हे ॥ अरु हाथविषे त्रिसुल हे ॥ अरु आकासकी न्यांइ मूर्त्ति धारी हे ॥ जेसें क्षीर समुद्रके मथणेकों भुजा बडीकरी विष्णुनें सरीर धाराथा अरु क्षीर समुद्रकों क्षोभायाथा ॥ तेसें नासिकाके पवनकरी समुद्रकों क्षोभाव त भया जेसा आकास बडा वपु हे तेसाहि स्वरूप धारा ॥ मानो प्रलय कालके समुद्र मूर्त्ति धारीकें स्थित हुए हे ॥ मानों सर्व अहंकारकी समष्टता स्थित भइ हे ॥ मानों महा प्रलयकी बडवाग्नी मुरत धारीकें आन स्थित भइ हे ॥ मानों प्रलय कालके मेघ मूर्त्ति धारीकें स्थित भये हे ॥ हे रामजी में जानत भया जो यह महारुद्र हे जिसके हाथ विषे त्रिसूल हे ॥ अरु तिन नेत्र हे पंच मूख हे ॥ तातें रुद्र हे एसे जाण करी में प्रणाम कीया ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन उसका भयानक रूप क्या था ? ॥ अरु रुद्र कीसकों कहीए ? अरु बडा आ कार क्या था ? ॥ दस भुजा अरु पंचमुख क्या था तीन नेत्र क्या थे ? ॥ हाथ विषे त्रिसूल क्या था ? ॥ अरु किसका भेजा आया था ? क्या करता भया अरु कहां गया ? अरु एक ला था अथवा अवरभी कोउ साथ था ? अरु स्याम मूरत क्यों था ? ॥ ॥ वसिष्टोवाच ॥ ॥ हे रामजी विषम विष प्रछंन जो अहंकार हे सो त्यागणे जोगहे ॥ अरु समष्टि अहं कार सेवणे जोगहे ॥ सर्व आत्मा प्रतीतका नाम समष्टि अहंकार हे तिसका नाम रुद्र हे ॥ अरु कृष्ण मूर्त्ति इस निमित्त हे जो आकाशरूप हे ॥ जेसें आकाशविषे नीलता हे तेसें उसविषे कृष्णता हे अरु सर्व जो जीव अपणे अहंकारकों त्याग करी निर्वाण हुए तिनकी समष्टिता होकरी रुद्र रूप भासे इसीतें उग्र था अरु पंचमुख ज्ञानइंद्रियांकी समष्टिता अरु दस भुजा कर्म इंद्रियां ॥ पंचमुखकी समष्टिता अरु राजस तामस सात्विक तीन गुण तीनों नेत्र हे ॥ अथवा भूत भविष्य वर्तमान अथवा ऋग यजु स्याम तीनों वेद नेत्र हे ॥ अथवा मन बुद्धि चित्त तीनों नेत्र थे ॥ ओंकारकी तीन मात्रा उसके नेत्र हे आकाशरूपी वपु था अरु त्रिलोकीरूपी हाथविषे त्रिशुल थे अरु चिदसंवितते फुर्याथा तीसीका भेज्या आयाथा ॥ बहुरी तीसीवि षे लीन होवेगा ॥ केवल आकासरूप था अरु जो कछू करता भया सो सुण ॥ हे रामजी एसा जो रुद्र था मानों आकासकों पंख लागे हे सोइ उडा हे ॥ तिसनें नेत्र प्राणोंकों खेंची लीये तब सर्व जल मुखविषे प्रवेस करने लागे ॥ जेसें नदी समुद्रविषे प्रवेस करतीयां हे तेसें सभ जल रुद्र विषे लीन भए ॥ जेसें बडवाग्नी समुद्रकों पानकरी लेती हे ॥ तेसें रुद्रनें एक

929

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुहुर्तविषे सभ जलकों पानकरी लीया ॥ कहूं जलका अंसभी दृष्ट न आवे ॥ जेसें अंधकारकों सूर्य लीन करी लेता हे तेसें पान करी लीया ॥ जेसें अज्ञानीका अज्ञान संतके संग क
री नष्ट हो जाता हे तेसें जलकों पानकरी लिया ॥ केवल सुध आकास हो गया॥न कहूं पृथ्वी दृष्ट आवे न अग्नी न वायु कोउ तत्व कहूं दृष्ट न आवे॥ एक आकासही दृष्ट आवे ॥ जेसें
उज्वल मोती होताहे तेसें उज्वल आकास द्रष्ट आवें ॥ अवर चारों तत्व कहुं न भासे एक अधोभाग द्रष्ट आवे ॥ मध्य भाग आकास सो रुद्रही द्रष्ट आवें ॥ अरु एक उर्ध भाग द्रष्ट
आवे चउथा चिदाकास दृष्ट आवें जो सर्वात्मा हे अवर कछू दृष्ट न आवें ॥ हे रामजी रुद्रभी आकासरूप था आकार कोउ न था ॥ भांति कर्कै आकार भासताथा ॥ जेसें आकास
विषे नीलता तरवरे भासतें हे भम कर्कै, जेसें सुपनें विषे भम कर्कै आकार भासतेहे तेसें रुद्रका आकार दृष्ट आया केवल आत्म आकासतें इतर कछू न था ॥ जेसें चिदाकासविषे
भूताकास भम कर्कै भासताहे तेसें रुद्रका सरीर भास्या उह रुद्र सर्वात्माथा अरु आकास होकरी भास्या सो किंचन था ॥ हे रामजी आकासविषे रुद्र निराधार भास्याथा ॥ जेसें मेघ
निराधार होते हे तेसें निराधार दृष्ट आया था ॥ ॥ श्रीरामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् इस ब्रह्मांडके उपर क्या हे बहुरी तीसके उपर क्या हे सो कहो ॥ ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी
यह जो ब्रह्मांडका आकास हे तिसपर दसगूणा जल अवसेष हे जलके उपर दसगुण अग्नि हे तिसके उपर दसगुण बायु हे तिसकें उपर दसगुण आकास हे ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे
भगवान् यह तत्व जो तुमनें वर्नन कीयें सो किस उपर हे ॥ ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी यह तत्व पृथ्वीके उपर स्थित हे ॥ जेसें माताकी गोदविषे बालक आनि स्थित होताहे
तेसें तत्व पृथ्वी उपरहे अरु पृथ्वी भागके आश्रय हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् पृथ्वी आदिक तत्व सहित ब्रह्मांड किसके आश्रय हे निराधार किसके आश्रय स्थित हूआ हे ॥ तिन
का चलणा ठहरणा केसें हुआ नास केसें हुआ इह कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी तुं कहू आकासविषे मेघ कीसके आश्रय होते हे ॥ सूर्य चंद्रमा किसके आश्रय होतेहे ॥
जेसें यह हे संकल्पके आश्रय तेसें ब्रह्मांडभी संकल्पके आश्रय हे जेसें सुपनको सृष्टि होतीहे तो तुं देख जो किसके आश्रयहे संकल्पहीके आश्रय हे क्यों? ॥ अरु संकल्प आत्माके
आश्रयहे ॥ तेसें यह जगत् अरु तत्वभी आत्मसत्ताके आश्रय स्थित हें अरु इनका ठहरणा गिरनाभी आत्माके आश्रय हे ॥ जेसें आदि चित्त स्पंद हो करी नीति हुइहे तेसें ही हे ॥ इस
प्रकार गिरना हे इस प्रकार ठहरणा हे इस हे इस प्रकार इसका नास होणाहे ॥ इस प्रकार रहणा हे तेसेंही परम स्वरूपतें इतर कछू नही केवल भममात्र हे ॥ जेसें सूर्यकी कीरणांविषे
जला भास होताहें ॥ तेसें आत्मांविषे भासताहे ॥ चित्त संवितही जगत् आकार हो भासतीहे ॥ जेसें आकासविषे नीलता भासतीहे ॥ तेसें आत्माविषे जगत भासताहे ॥ जेसें तलवार वि
षे स्यामता भासतीहे तेसें आत्माविषे जगतहे॥ जेसें नेत्र दोषकरी आकासविषे मोती भासतेहें॥ तेसें आत्माविषें जगत् भासताहे॥ अरु मिथ्या जगत्की संख्या करीए तउ नही होती ॥ जेसे
सूर्यकी किरणांका आभास अरु रेतके कणकेविषे संख्या नही होती ॥ तेसें जगत्की संख्या नही होती अरु वास्तवतें कछू बन्या नही अजात जात हे ॥ जेसें सुपनेविषे अनहोती सृष्टिभास
तीहे तेसें यह जगत् भासताहे॥ तातें द्रश्यकों मिथ्या जाणीकरी जगत्की वासना त्यागहु ॥ ॥इतिश्री यो० निर्वाण प्र० जगत्मिथ्यात्व प्रतिपादनं नाम शताधिक चतुर्नवतितमः सर्गः॥१९४॥
॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी रुद्रतो बडा भयानक रूप में देख्या था अरु नेत्र बडे तेज करी पूर्ण चंद्रमा सूर्य अग्नि यह तीनों नेत्र हे ॥ अरु बडा भयानक रूप मानो महा प्रलय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के समुद्र मूर्त धारिकें स्थित हुए हे ॥ अरु रुंडकी माला कंठविषे धारि हुइ एसा रुद्र स्थित था ॥ अरु तिसका पछावा जो निकसे वडा अरु स्यामरूपी तिसकों देखी करी में आश्चर्यमान हुआ जो इहां सूर्यभी नही अग्निभी नही अवर कीसीका प्रकाशभी नही यह पछावा किसप्रकार हे ॥ अरु क्या हे अेसे देखता था जो पछावा नृत्य करणे लागा तब तिस पछावेतें ए क स्त्री निकसी आइ शरीर दुर्बल जेसा नाडी निकसी हुइ दृष्ट आवे अरु वडा उंचा आकार कृष्ण वर्न मानों अंधेरी रात्र मुर्त धारके स्थित भइ हे ॥ सुमेरु पर्वतकी नांइ आकार अरु ती न नेत्र बडी भुजा जीसकी उंची ग्रीवा मांनों प्रलय कालके मेघ मुर्त धारीकें आयही स्थित भए हे ॥ अरु गलेविषे रुद्राक्षकी माला अरु रुंडकी माला पडी हुइ इत्यादिक विकराल सुभाव तिसकों देखत भया ॥ अरु वडी भुजा जिसकी अरु हाथहुविषे त्रिशूल खड्ग वाण ध्वज उखल मुसल आदिक आयुद्ध हे ॥ एसा भयानक आकार देखी करी में विचार कीया जो काली भवानी हे तिसकों जाणी करी नमस्कार किया अरु वडा स्याम आकार हे जिसका ॥ जेसें अग्निके जले हुए पर्वतके सिखर स्याम होते हे ॥ तेसें स्याम आकार हे ॥ अरु मस्तकविषे तिसरा नेत्र वडवाग्निकी नांइ तेजवान निकस्या हे कवहु दो भुजा दृष्टि आवे ॥ कवहु सहस्र भुजा दृष्ट आवे कवहु अनंत भुजा दृष्ट आवे कवहु एक एक भुज दृष्ट आवे ॥ कवहु दो भुजा आवे कवहु कोउ भुजा दृष्ट न आवे ॥ कवहु सिरपाद कोउ दृष्ट न आवे ॥ एक बुत जेसा भासे इस प्रकार करिके नृत्य करे ज्यौं ज्यौं नृत्य करे त्यौं त्यौं शरीर स्थूल दृष्ट आवे मानो आकाशकोंभी आच्छादि लिया हे अरु दसो दिशा आकार साथ पूर्न करी हे ॥ नख सिखकी मर्यादा कछू दृष्ट न आवे ॥ एसा आकार बढाया जब भुजाकों हिलावे तब जाणीए जो आकाशकों मापती हे ॥ पाताल पर्यंत चरन अरु आकाश जिसका सीस हे ॥ अरु उदर तिसका पृथ्वी हे सुमेरादिक पर्वत तिसका नाभी स्थान हे ॥ दसो दिशा तिसकी भुजा हे मानों प्रलय कालकी मूर्ती धारी करी स्थित भइ हे अरु वडे पर्वतकी कंदरावत् जिसकी नासीका हे लोका लोक पर्वत तिसकी दंठा हे अरु कंठविषे नदीआकी माला हे जो चलती यां हे अरु वरुण कुबेरादिक देवताके सिरकी माला हे कंठविषे ॥ पवन नासिकाके मार्गतें निकसता हे तिसकरी सुमेरादिक पर्वत तृणोकी नांइ उडे ॥ अरु ब्र ह्मांडकी माला गलेविषे हे हाथविषे बद्धटे ब्रह्मांडरूपी भूषण हे ॥ कटीविषे ब्रह्मांडके घुघरु तडागी हे जब नृत्य करे तब सब ब्रह्मांड नृत्य करही ॥ जेसें पवनकरी पत्र नृत्य कर्तेहे तेसें सु मेरादिक नृत्य करही ॥ एक एक रोमविषे ब्रह्मांडहे जेसें तारागण वायुके आधीन हे ॥ अरु कानविषे धर्म अधर्म रूपी मुद्रा हे वडे कान हे अरु वडा मुख हे मानों संपूर्न ब्रह्मांडकों भछ न करती हे ॥ अरु धर्म अर्थ काम मोक्ष चारों स्थान हे अरु स्थान विषे चारों वेद हे अरु सास्त्रके अर्थरूपी दुध निकसताहे ॥ अरु अवरभी सब जगतकी मर्यादा मुझकों तिसिविषे दृ ष्ट आवे हसे अरु नृत्य कर्णेकरी केइ ब्रह्मांड नृत्य करही ॥ अस्ताचल आदिक पर्वत तृणोंकी न्यांइ नृत्य करही ॥ सब कछु विपर्यय होता दृष्ट आवे ॥ तिसके सरीरविषे आकास अध कों दृष्ट आवे अरु पृथ्वी उर्धकों दृष्ट आवे तारा मंडल सिद्ध देवता विद्याधर गंद्धर्व किन्नर दैत स्थावर जंगम सब उसविषे दृष्ट आवे ॥ मानों संपूर्न ब्रह्मांडोका आदर्स हे ॥ अरु भुजाके उछलणे करी चंद्रमाकी न्यांइ नखका प्रकास होवे मंद्राचल उदयाचल पर्वत कानविषे भूषण दृष्ट आवे ॥ हिमालय पर्वत बरफके कणके वत दृष्ट आवे ॥ हे रामजी इस प्रकार दे वीके सरीर मुझकों अनंत स्रष्टो दृष्ट आवे ॥ कहुं एकठीयां कहुं भिन भिन दृष्ट आवे ॥ कहुं एकही जेसी चेष्टा करे कहुं भिन भिन चेष्टा करे ॥ मानों ब्रह्मांडरूपी रत्नका डब्बा हे ॥ हे रा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मजी ॥ जब संकल्प सहित देखों तब मुझकों सृष्टि दृष्ट आवे ॥ जब आत्माकी उर देखों तब केवल आत्मरूपही भासें अवर कछु दृष्ट न आवे ॥ अरु संकल्प दृष्ट करकें संपूर्न जगत नृत्य कर्ते दृष्ट आवे ॥ अैसें समर्थता किसकी दृष्ट न आवे जो नृत्य न करे सब पर्वत तृणकी नांइ नृत्य करते दृष्ट आवे ॥जगतकी उत्पत्ति स्थिति प्रलय सब तीसहीविषे दृष्ट आवे ॥ जो कछू क्रिया हे सो तीसही करी होती दृष्ट आवे ॥ सिद्ध देवता गंधर्व अप्सरा विमानपरी आरूढ फिरें नछत्रके चक्र फिरतें दृष्ट आवे मानों ब्रह्मांड बहुरी उदे हुए हे ॥ जब आत्मदृष्टि करी देखों तब ब्रह्मस्वरूप भासे॥अरु संकल्प दृष्ट करी जगत भासे॥उह चित्तकला जो संकल्प रूप हे तिसविषे सबही दृष्ट आवे हे रामजी ब्रह्मा विष्णु रुद्र इंद्र अग्नि सूर्य चंद्रमा आदि सब उसिविषे दृष्ट आवे ॥ जेसें मछर वायु करी उडते हे ॥ तेसें अनंत सृष्टि उसके शरीरविषे उडती दृष्ट आवे महा आश्चर्यकों में प्राप्त भया ॥ जो उह भैरव था अरु यह भैरवी उसकी शक्ति हे दोनों मुझकों दृष्ट आए बडे वपु धारीहे ॥ यह नित्तशक्ति सर्वात्मा हे परमात्मकी क्रियाशक्ती सर्व विश्वकों अपणे आपविषे जाणे तीर्थ जेसें समुद्र सब तरंगकों अपणेविषे अ पणाआप जाणता हे तेसें सर्व ब्रह्मांडकों अपणेविषे अपणा आप जाणतीथी अरु सदा सिवतेंभी बडे अहंकारकों धारा हे मानों सर्व ब्रह्मांडकी माला कंठविषे डारि हे अरु जमादिक स ब तिसकी मर्यादा हे ॥हे रामजी इसप्रकार में रुद्र अरु काली भवानीकों देखत भया ॥ रुद्रकें सिरपर जो जटा हे सो मोरकी पंखकी नांइ हे ॥ अरु कालीकों में देखत भया नानाप्रका रके शृंग दमदमतें आदी लेकरी शब्द करतीहे बहुरी शब्द करता भइ सो श्रवण कर ॥ दिग्वंदिग्वं तुदिग्वं पचमना उह संमंमप्रलय मिय तुय ॥ त्रि पंत्री त्रीलं त्रीषलुषलुमं षनुषंसुमं ॥ ष षमष भिगुही गुंहीगुंही उगु मियुगं दलुमददारी मी दीतंदती ॥ हे रामजी इसप्रकारके शब्द करती हुइ मसाणोविषे नृत्य करे हे रामजी एसी देवी तुमारे सहाय होवे जो सर्व शक्ति परमा त्मा हे ॥ सब ब्रह्मांड तिसके आश्रय क्षणविषे अंगुष्ट प्रमाण हो जावे क्षणविषे बडे दीर्घआकारकों धारे ॥ सब जगतविषे जो क्रिया होतीहे सो उसके आश्रय होती हे कहुं उत्पत्ति हो ती हे कहूं जुद्ध पडे होते हे ॥ नाना प्रकारकी क्रिया तिसकी देवीके आश्रय पडी होती हे ॥ जेसें आदर्शविषे प्रतिबिंब होता हे तेसें देवीविषे क्रिया होती हे ॥ ॥ इतिश्री योगवा सिष्ठे निर्वाण प्रकरणे देवीरुद्रोपाख्यान वर्णनं नाम शताधिकपंचनवतितमः सर्गः ॥ १९५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् यह जो तुमनें रुद्र अरु कालिकाका वर्नन कीया सो कवन थे ? महाप्रलय विषे तो रहता कछू नही यह काली कवन थी ?॥ तिसके सरीरविषे तुम नें सृष्टि केसे देखीयां महाप्रलय होकरी तिसके सरीरविषे सृष्टिनें प्रवेस केसें कीया अरु उसके हाथविषे बहुरीयादिक सस्त्र क्या थे ?॥ कहांतें आइ थी अरु कहां गइ अरु तिसका आकार क्या था ?॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी न कोउ रुद्र हे न काली हे न कोउ पुरुष न कोउ स्त्री हे न कोउ नपुंसक हे न पुरुष मिलीकरी कछु हूआ हे ॥ न ब्रह्मांड हे न पिंडहे केवल चिदाकास हे ॥ संकल्पतें उपजे आकार भासते हे ॥ जेसें सुपनेविषे आकार भासते हे तेसें उह आकारभी भासे ॥ वास्तवतें केवल चिदाकास ज्योंकात्यों हे ॥ हे राम जो आत्मपद केसा अनंत हे चैतन हे सत्य प्रकासरूप हैं अविनासी हे अपणे आप सुभावविषे स्थित हे अरु रुद्र देवका आकार ज्यों भास्याथा सो चैतन आत्माही अेसें होकरी भा स्याथा कोउ अवर आकारन था जेसें स्वर्नही भूषण होकरीभासताहे तेसें परम देव चिदाकास अेसें होकरी भास्याथा ॥ काहेतेंजो चैतनस्वरूप हे जेसें मधुरता गनेका स्वरूप हें तेसें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्माका चैतन स्वरूप हे ॥ हे रामजी चैतन सत्ता अपणे स्वरूपकों नही त्यागती अरु आकार होकरी भासतीहे सदा अपणें आपविषे स्थित हैं ॥ जेसें गनेके रसविषे मधुरता न होवे तो उसकों रस नही कहता ॥ तेसें आत्मसत्ताविषे चैतनता न होवे तो चैतन कोउ न कहे जो आत्मा चैतनताकों त्यागे तो परिणामी होवे तब चैतन न कहीए परंतु सदा अपणें आप सुभावविषे स्थितहे ॥ किस अवर अवस्थाकों नही प्राप्त भया इसीतें कहा हे जो कछू भासताहे सो आत्माका किंचन हैं ॥ हे रामजी जेसें गनेके रसविषे मधुरता होतीहे तेसें आत्मा विषे चैतनता हे चैतनमात्रविषे एक चैततताका लछण रहताहे चैतनतारूप इस करी यह जगत अभावरूप लखाताहे ॥ अरु जो शुद्ध चिन्मात्र विषे चित्तका उत्थान नही होता तो जगत् भाव नही लखाता अरु आत्मसत्ता दोनों अवस्थाविषे सदा ज्योंकोत्यों हे जेसें वायु जब स्पंद होताहे तब स्पर्सरूप उसका लक्षण भासताहे ॥ अरु जब निस्पंद होताहे तब उसविषे शब्द कोउ नही प्रवेस करी सकता ॥ अरु वायु दोनों अवस्थाविषे तुल्य हे ॥ तेसें शुद्ध चैतनविषे कीसी शब्दका प्रवेस नही चैतनता भावविषेहे ॥ अरु आत्मसत्ता सदा तुल्यहे तातें वास्तव यह जगत्ही नही हे रामजी आदि, मध्य, अंत, जगत्, आकास, कल्प, महाकल्प, उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, जन्म, मरन, सत असत्, प्रकास, अंधकार, पंडित, मूर्ख, ज्ञानी, अज्ञानी, नाम, रूप, कर्म, रूप, अवलोक, मनस्कार, विद्या, अविद्या, दुःख, सुख, बंध, मोक्ष, जड, चैतन, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकास, आवणा, जावणा, जगत् अजगत्, हेनही बढणा घटणा में तूं वेद शास्त्र पुराण मंत्र अकार उकार मकार जय नाम आदिक थावर जंगम जगत् क्रोया सब ब्रह्मस्वरूप हे ॥ दूसरी वस्तु कछू नही जेसें समुद्रविषे तरंग बुद बुदें आवर्त सब जलरूप हे ॥ तेसें सब ब्रह्मस्वरूप हे ब्रह्मतें इतर जगत कछू वस्तु नही ॥ जेसें सुपनेविषे पर्वत भासतेहे सो अनुभवतें इतर कछू नही ॥ तेसें यह जगत ब्रह्मतें इतर कछू नही ॥ जेसें सूर्यकी किरणां जल रूप होकरी भासतीयां हे तेसें आत्मसता जगतरूप होकरी भासतीहे ॥ हे रामजी ब्रह्मा विष्णु रुद्र इंद्र वरुण कुबेर जम चंद्रमा सूर्य अग्नि जल पृथ्वी वायु आकास आदिक जेते कछू शब्दहे सो सब ब्रह्मसत्ताही अेसें होकरि स्थित भइहे परंतु सदा अपणें आपविषे ज्योंकीत्यों हे ॥ कदाचित परिणामकों नही प्राप्त भइ सो सत्ता सर्वकी आत्माहे ॥ जेसें समुद्र अपणें तरंगभावकों त्यागे तब आपणें सौम्य भावविषे स्थित होवे ॥ तेसें ब्रह्मसत्ता फुरणेकों त्यागे तब अपणे सुभावविषें स्थित होवें सो अनामयहे अर्थ यह जो दुःखतें रहितहे ॥ परमसांतिरूप हे अनंत हे निर्विकारहे ॥ जब इस प्रकार बोध होवे तब तिस ब्रह्मसत्ताकों प्राप्त होवें ॥ अरु बोध अबोध विधि निषेधभी उही हे ॥ जेसें जल अरु समुद्रकी संज्ञाकही हे ॥ अरु तरंग शब्द कहणें करी विलक्षण भासताहे ॥ जब जल तरंग बुद्धिकों त्यागे ॥ तब केवल समुद्ररूप हे ॥ तेसें यह जीव जब अपणे जीवत्वभावकों त्यागें ॥ तब आत्मरूपी समुद्रकों प्राप्त होवें ॥ जीव तका अर्थ यह जो जब द्रश्यका संबध त्याग करेगा तब आत्मा होवेगा ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे अंतरोपाख्यान वर्नंनं नाम शताधिकषण्नवतितमः सर्गः ॥ १९६ ॥

॥ वसिष्टोवाच ॥ ॥ हे रामजी तुजकों जो चिदाकास कहा हें सो परम चिदाकासहे अरु सदा अपणें आपविषे स्थितहे हे रामजी सुद्ध चिदाकास में तेरेतांइ कहा हे सोइ यह रुद्ररूप हे सोइ नृत्य करताथा ॥ तहां आकार कोउ न था केवल चिदघन सत्ताथी सोइ अेसें होकरी किंचन होतीथी ॥ हे रामजी जब आत्मदृष्टिकरी देखता था तब मेरेतांइ चिदाकास रूपही भास्या था ॥ हे रामजी मेरे जेसा होवें सोइ तेसा रूप देखे अवर नही देखी सके ॥ हे रामजी जिसका नाम कल्पांत कहाता हे ॥ सोइ रुद्र अरु भैरव हे उह कल्पांतकी मूर्त्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नृत्य करीकें अंतर्धान हो गइ ॥ अरु वास्तवतें क्या रूप था मायामात्र था ॥ चैतन सत्ताके आश्रय पडे नाचते हे ॥ हे रामजी जेसें सोनेविषे भूषण हे परंतु सोने बिना नही होता ॥ तेसें चैतनता किंचन करी जगत भासता हे ॥ बहुरी उही प्रमादकरी अधिभूतक होजाता हे ॥ अरु वास्तवतें सुद्ध चिदाकास रूप हे ॥ चैतनता करीकें उही जगत रूप हो भासता हे ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् प्रथम तुम आत्मतत्व अद्वैत कहा ॥ यह जगत् प्रमादकरीकें नामरूप कल्पित हे ॥ अरु जो हे तो कल्पकें अंतविषे नास हो जाता हे अद्वैत सत्ता रहती हे ॥ बहुरी कहा चैतता करीकें जगतरूप भासता हे ॥ सो अद्वैतविषे चैतता केसें हुइ हे अरु चेतणे वाला कवण हुआ ॥ प्रलयके अनंतर काली क्योंकरी भासी ? ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी न कोउ चेत हे न कोउ चेतता हे ॥ केवल आत्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ चैतन घन हे परम निर्मल हे अरु सांतरूप हे ॥ अरु सिवतत्वभी उसीकों कहते हे ॥ उही सिवतत्व रुद्र आकारकों धारे हुए दृष्ट आया हे ॥ दुसरा कछू नही केवल परमचिदाकास हे सोइ चिदाकास आकार हो भासताहे ॥ अरु आकार कछू हुआ नही ॥ न भैरव हे न भैरवी हे न काली हे न यह जगत हे ॥ सभ मायामात्र हे जेसें सुपनेंविषे आत्मसत्ता चेतताकरीकें जगतरूप हो भासती हे स्वरूपतें न कछू चैतता हे न जगत हे ॥ आत्मसत्ताहि अपणे आपविषे स्थित हे ॥ तेसें यह जगतभी जाण कछू अवर हुआ नही अद्वैत सत्ताही हे ॥ तिसविषे चेत अरु चैतणेहारे में तुजकों क्या कहो ॥ सभ वृत्ति करीकें भासते हे ॥ आत्माविषे कछू इनका उपजणा नही भया केवल स्वछ चिदाकास हे हमकों तो सदा उही स्वरूप भासता हे ॥ अज्ञानीकों नाना प्रकारका जगत् भासता हे ॥ अरु आत्मा सदा एकरस हे किंचनकरीकें तिसविषे आकार भासते हे भैरव अरु काली सभ निराकार हे अरु भांति करीकें आकार भासते हे ॥ जेसें मनोराजविषे जुद्ध भासते हे जेसें कथाके अर्थ भासते हे सो अन होते संकल्प विलासते हे ॥ तेसें चिदात्माविषे यह जगत भासता हे ॥ जेसें आकाशविषे तरवरे भासते हे तेसें यह आकार भासते हे हे रामजी यह जो जगत प्रलय महाप्रलया दिक शब्द हे तिनका नाश करने अर्थ तुजकों कहता हों ॥ आत्म एक अद्वैत चैतन हे सो चैतनताका अभाव कबहु नही अपणे आपविषे स्थित हे अरु किंचन हे ॥ जेसें सूर्यकी किरणा किंचन रूप होतीयां हें तिनविषे जल भासता हे ॥ तेसें चैतका किंचन जगत भासताहे ॥ सोइ महा प्रलयविषे रुद्र अरु भैरवी हो भासती हे ॥ न कछू रुद्र हे न काली हे सर्व आत्मा ही हे ॥ हे रामजी जो कछू कहणा सुनणा होता हे वाच वाचक करी कहता हे आत्माविषे कहणा अरु सुनणा कछु नही उही चिदाकाश संकल्प करीकें रुद्र नृत्य करता हे ॥ जेसें स्वर्न भूषण होकरी भासता हे तेसें चिदाकाश संकल्प करिकें आकार हो करी भासता हे ॥ दुसरा कछू बन्या नही में तूं अरु जगत चैत अचैत सब उही रूप हे उसविषे कोउ शब्द फुऱ्या नही ॥ जेसें सुपनेविषे नानाप्रकारके शब्द भासते हे सो कछू वास्तव नही पथरकी नांइ मौन हे ॥ तेसें जाग्रत जगतविषेभी जेते कछू शब्द होता हे सो सब सुपन हे कछु हूआ नही केवल आत्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जेसें आकास अपणी शून्यताविषे स्थित हे तेसें आत्मसत्ता अपणे आपभावविषे स्थित हे ॥ जहां न एक हे न द्वैत हे, न सत हे, न असत्य हे, न चित्त हे, न चैत हे, न मौन हे, न अमौन हे, न कोउ चेतनेंवालाहे, चैतके अभाववत् हे, सो क्याहे केवल अचैत चिनमात्र आत्मसत्ता हे निर्विकल्परूप हे ॥ हे रामजी सबतें बडा सास्त्रका सिद्धांत यही हे ॥ तिस दृष्टि मौनविषे तुम स्थित होउ ॥ हे रामजी सर्व सिद्धांतकी समता यही हे जो निर्विकल्प होणा ॥ जिस निर्विकल्प समाधिविषे स्थित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होणा यह सबका सिद्धांत हे ॥ जेसें पथरकी सिला परम मौन होती हे तेसें चैतनें रहित होणा अरु जो कछू प्रत्यक्ष आचार आनीप्राप्त होवे तिसविषें प्रवर्तणा सदा आत्मनिश्चय रहणा इसका नाम परम मौन हे सब क्रिया होती रहे॥अरु अपणेविषे कछू न देखणा॥जेसें नट स्वांग ले आवता हे तिसके अनुसार विचरता हे परंतु निश्चय उसका आदिही वपुविषे होताहे॥ अरु चलायमान नही होता॥तेसें जो कछु अनिश्चित आनि प्राप्त होवे तिसकों जथासास्त्र करणा॥परंतु अपणे निर्गुण निष्क्रिय स्वरुपतें चलायमान न होणा ॥अद्वैत स्वरुपविषे स्थित रहणा ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् रुद्र क्यां था अरु काली सक्ति क्याथी अरु उसके अंग जो वधते घटते थे नृत्य करणा क्या थावस्र क्याथे सो कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥हे रामजी शिवतत्वही आकार होकरी भासताहे अवर आकार कोउ नही सो केसा शिव तत्व हे चिनमात्र हे अमल हे विद्या अविद्याके कार्यतें रहित सांत अवाचपद हे॥यह संज्ञाभी संकल्पविषे तुझकों कही हे आत्मवेत्ता आत्मपदकों अवाचपद कहते हे ॥ तथापि कछु में कहताहों हे रामजी केवल आत्मत्वमात्र चिदाकास हे सोइ शिव भैरव हे तिसके चमतकारका नाम चित्तशक्ति हे तिसीका नाम काली हे ॥ तिसका विषे अरु आत्माविषे अरु सिवरूपविषे अरु कालीविषे भेद कछू नही जेसें पवन अरु स्पंदविषे भेद कछू नही अग्नि अरु उष्णताविषे भेद कछू नही ॥ तेसें चित्तकला अरु आत्माविषे भेद कछू नही॥जेसें पवन निस्पंद होताहे तब तिसका लक्षण नही होता अवाचकरूप होता हे अरु जब स्पंद होताहे तब तिसका लक्षणभी होता हे तिसविषे शब्द प्रवेस करता हे तेसें चित्त शक्ति करी तिसका लक्षण होता हे ॥ आगें तिसके अनेक नाम हे तीसीका नाम स्पंद हे इछा हे तीसीकों चैत्योन्मुखत्व करी वासना कहता हे ॥ इसीके स्वादकी इछातें जब चित्त संवितविषे वासना फुरी तब तिसका नाम वासना करने वाला वासक कहाता हे ॥ बहुरी आगें दृश्य होती हे ॥ जब त्रिपुटी हूइ वासना वासक वास तब वासककों जीव कहता हे जीवत्व भाव लेकरी स्थित होती हे ॥ जब इह इच्छा इसकों होती हे जो में जीव हों मेरा नाश कदाचित् न होवे इस इच्छा करी जीव कहाता हे ॥ एसी संज्ञा चित्शक्तीकी होती हे सो स्पंदविषे होती हे अरु सिवतत्व सो अफुर हे अचैतशक्तिविषे फुरनेकी नांइ स्थित हे ॥ जेसें सूर्यकी किरणाविषे जल हे नही हुएकी न्यांइ भासता हे तेसें यह जगत हे नही अरु हूएकी न्यांइ भासताहे तिसविषे यह संज्ञा देते है ॥ काली जो परमात्माकी क्रिया शक्तिहे सो प्रथम तो कारणरूप प्रकृति हे सब तिसतें हे इसीतें प्रकृत रूप हे विकृति नही अर्थ यह कीसका कार्य नही अरु महदादिकपंचभूत महत्तत्व अरु बुद्धिअहंकार सप्त प्रकृति विकृति हे अर्थ यह जो कार्यभी हे कारनभीहे कार्य आदिदेवीके हे अरु कारण षोडसहे ॥ पंचज्ञान इंद्रिया पंचकर्म इंद्रीयां पंच प्राण एक मन इनके कारन सप्तदस हे अरु षोडस हे सो विकृतहे ॥ अर्थ यह जो कार्यरूपहे कारण किसीका नही अरु पुरुषहे जो परमात्मा सो अद्वैत अचित्त चिन्मात्र हे न कीसीका कारणहे न कारज हे अपणे आपविषे स्थित हे ॥ तातें जेती कछू द्वैत कलना हे कारण कार्यरूप सो सब चित्तशक्ति विषे स्थित हे ॥ जब यह निस्पंद होतीहे ॥ तब शिवपद तत्वविषे निर्वाण होजातीहे कारण कार्यरूपी भ्रम सब मिटीजाता हे ॥ केवल आकासवत सेष रहताहे ॥ सो सुद्धहे ॥ अद्वैत हे अचेत चिन्मात्र सदा अपणे आप भावविषे स्थित हे तिसको क्रियाशक्ति स्पंदरूप एती संज्ञाहे ॥ प्रथम तो सभका कारणरूप प्रकृति हे ॥अरु सोखहे ॥ अर्थ यह जेसे बडवाग्नि समुद्रकों सुकावतीहे तेसें जगतकों सुकातीहे ॥ अरु सिद्धीहे अर्थ यह जो सिद्ध आश्रय भूत करी सेवतेहे अरु जयंति हे अर्थ यहा जो जयहे जिसकी ॥ अरु चंडिकाहे अर्थ यह जिसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्रोधकरी जगत प्रलय होतीहे अरु भयपावताहैं ॥ अरु वीर्य हे अर्थ यह जिसका अनंत वीर्यहे ॥ अरु दुर्गाहे अर्थ यह जो इसका रूप जानणा कठिन हे ॥ अरु गायत्री हे अर्थ यह जिसके पाठकरी संसार सुमद्रतें रक्षा होतीहे ॥ अरु सावित्रीहे अर्थ यह जगत्कीपालना करती हे ॥ अरु कुमारी हें अर्थ यह जों कोमल सुभाव हे ॥ अरु गौरीहे अर्थ यह जिसके गौर अंगहे ॥अरु सिवाहे अर्थ यह जो शिवके डावे अंगविषे निवासहे जिसका॥ अरु विजया हे अर्थ यह जो सब जगत्कों जीती रहीहे ॥ अरु सुशक्तिहे॥अर्थ यह जो अद्वैत आत्माविषे जिसनें विलास रचाहे ॥ अरु इंद्रसारा हे अर्थ यह जो उकार हे इंद्र आत्मा तिसका सार अर्धमात्राहे ॥ तीनोंमात्रा उकार अकार मकारका अधिष्टान हे ॥ हे रामजी राजसी तामसी सात्विकी तीन प्रकारकी क्रिया होतीहे सो इसीतें होतीहे ॥ यह सब संज्ञा क्रिया शक्तिकी कहीहे ॥ अब सत्व अरु बढणा घढणा तिसका सुण ॥ हे रामजी नृत्य जो करतीथी सो क्रियाहे ॥ सो क्रिया सात्विको राजसी तामसी तीन प्रकारकीहे ॥ गुसल जो था सो यामपुर नगरहे अंग तिसकें सृष्टि हे ॥ जब सिवतें व्यतिरेक होतीथी तब अंग बहुत होजाते थे सृष्टिरूप ॥ अरु जब शिवकी उर आवतीथी तबसृष्टीरूप अंग थोरे होजाते थे ॥ अरु जब सिवकों आय मिलतीथी तब शिवही होतीथी ॥ सृष्टिरूपी अंग कोउ न रहताथा ॥ यह तो आत्माकी काली शक्तिकी क्रियाका वर्नन तुजकों सुणाया हे ॥ अब सिवका वर्णन सुण॥ वाणीतें अतीत हे तथापि कछू कहता हों॥परम सुध हे निर्मल अच्युत हे॥तिसविषे कछूहूआ नही क्रिया शक्तिके फुरणे करी जगत् हो भासताहे ॥ जब अपणे अधिष्टानकी उर देखताहे तब अपणा स्वरूप दृष्टि आता हे ॥ क्रिया शक्ति अरु आत्माविषे भेद कछू नहीं ॥ जेसें आकास अरु शून्यताविषे भेद कछू नही ॥ काहेते जो आकासका अंग शून्यता हें॥जेसें अवयवी अरु अवयवविषे भेद कछू नही ॥ जेसें अग्निकारूप उष्णताहे ॥ तेसें आत्माका सुभाव चित्तशक्तिहे ॥ अरु इसका नाम कालीहें जो कृष्णरूप हे॥ जेसें आकास उर्धकों साम भासताहे यह तेसें आकासवपु हे॥ जेतें आकास निराकारहे तेसें काली निराकार स्यामा भासती हे ॥ आकासकी न्यांइ इसका वपु हे तातें इसका नाम कृष्ण वपु हे ॥ अरु काली जगतके नासके अर्थ हे सो जब स्वरूपकी उर आती हे तब जगतका नास करती हे ॥ हे रामजी स्पंद शक्ति जबलग शिवतें व्यतिरकहे तबलग जगतकों रचती हे ॥ जहां यह हे तहां जगत हे जगततें विलक्षण नही रहती ॥ जेसें जहां सूर्यकी किरणांहे तहां जल भास होता हे किरणा बिना जलाभास नही रहता॥तेसें स्पंद शक्ति जगतविना नहि रहती जेसें आकाशके अंग आकाश हे तेसें इसको अंग जगत हे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग समुद्र रूप हे ॥ तेसें जगत इसका रूप हे ॥ अरु इस शक्ति चिदाकाश हे व्यतिरेक नही जब यह फुरती हे ॥ तब जगत आकार हो भासती हे ॥ जब शिवकी उर आवती हे तब शिवरूप हो जाती हे जगतका भास कोउ नही रहता ॥ तातें हे रामजी तुमारी चितशक्ति तुमारी उर आवे तब जगत भ्रम मिटि जावे इसचितशक्तीनें जगत भ्रम रचा हे सिवपुजा हे सो निर्मल शांतरूप हे ॥ अजर अमर हे अचैत चिन्मात्र हे ॥ तिसविषे कछु क्षोभ नही आत्म सत्ता सदा अपणे आपविषे स्थित हे ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् तुम जो कालीके अंगको सृष्टि देखीया सो आत्मविषे सत हे अथवा असत हे सो कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी यह काली देवि आत्माकी क्रिया शक्ति हे अर्थ यह हे जो फुरणा शक्ति हे तिसकरीकें आत्माविषे सत हे ॥ अरु वास्तवतें आत्माविषे कछू नही मिथ्या हे ॥ जेसें तुं मनोराज करीके अपणे विषे दुसरा चितवहि उह कछु वस्तु नहो परंतु तीस कालविषें सत भासता हे ॥ तेसें जेती कछू सृष्टि हे सो आत्माविषे सत कोउ नही परंतु चितशक्ति करी वसती दृष्ट आती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे ॥ जेसें कछु विधिनिषेध पदार्थ हे आकाश पर्वत समुद्र वन जगत तीर्थ कर्म बंध मोक्ष गुरु शास्त्र जुद्ध शस्त्र आदिक जो भासतें हे सो सब चिदाकाश ब्रह्मरूप हे वास्तव इनका हो
णा ब्रह्मतें भिन्न नही सर्व प्रकार सर्वदा काल आत्मा अपणे आपविषे स्थित हे ॥ शुद्ध अद्वैत निराकार हे निर्विकार ज्योंका त्यों हे ॥ जगत तीसविषे कोउ नही उपजा सब जगत
आत्माविषे क्रिया सक्ति रचि हे ॥ सो मायाकालविषे सत हे वास्तवतें कछू नही ॥ जेसें किसी पुरुषकों सुपनेविषे सृष्टि भासती हे ॥ तिसके शरिरकों कोउ हिलावे तो उह नही जाग
ता जो कछू सृष्टि होतीतो हिलावणे करी कोउ स्थान गिरपडता हे ॥ इसितें नास किसीका नही होता वास्तव कछू नही हे रामजी उह सृष्ठि उसके चित्त स्पंदविषे स्थित हे ॥ प्रत्यक्ष
अर्थाकार होती हे ॥ परंतु जबलग निद्रा हे तवलग सृष्टि हे जव निद्रा निवृत्त भइ तव सुपन सृष्टि नही भासती ॥ तेसें यह सृष्टि कछू वास्तव नही ॥अज्ञान करीके चित्तशक्तिविषे भास
तीहे ॥हे रामजी जेते कछू पदार्थ भासते हे सो चित्तके फुरणेविषे भासते हे ॥ जिसका संकल्प सुद्ध होताहे तीसके मनोराजकी सृष्टि देस काल करि प्रत्यक्ष आनि होतीहे तो संकल्प रूप
होतीहे वन्या कछू नही जब संकल्प फुरता हे ॥ तव संकल्पके अनुसार सृष्टि भासती हे तातें संकल्प रूप हूई क्यों अदृष्ट पदार्थ होताहे ॥ जो उसकी सत्यता रिदेविषे होतीहे तब इसका
अर्थ रिदेविषे अनुभव होताहे ॥ जेसें परलोक अदृष्ट हे जव उसकी सत्यता रिदेविषे होतीहे तब उसका राग दोष रिदेविषे फुरता हे ॥ काहेतें जो संकल्पविषे उसका भाव खडा हे तेसें
जवलग चित्त स्पंद फुरता हे तवलग जगत् सभ खडा हे ॥ जव चित्त निस्पंद होताहे तव जगत्की सत्यता नही भासती ॥ हे रामजी जेता कछू जगत् भासता हे सो सभ क्रिया शक्तिनें
आत्माविषे रचा हे जबलग यह काली क्रिया शक्ति सिवतें व्यतिरेक होतीहे तबलग नाना प्रकारके जगत् रचतीहे अरु क्षोभकों प्राप्त होतीहे ॥अरु जब सिवकी उर आतीहे तब सांतरूप
हो जातीहे ॥ वहुरी प्रकृति संज्ञा उसकी नही रहती ॥ अद्वैत तत्वविषे अद्वैत रूप होजाती हे ॥ जेसें जबलग पवन चलता हे तव सीत उष्ण सुगंध दुर्गंध बडा छोटा संज्ञा होतीहे ॥ अ
रु जब ठहरता हे तव कहा नही जाता जो ऐसा हे अथवा ऐसा हे ॥ तेसें जबलग चित्तसक्ति स्पंदरूप होतीहे तवलग जगत्कों रचती हे अरु प्रकृत कारण रूप कहातो हे तिसविषे
दो प्रकार शब्द होते हे विद्या अरु अविद्यारूप सोपडे निकसते हे हे रामजी जो कछू कहणा होता हे सो स्पंदरूप जो चित्रलेखा हे तिसविषे हे ॥ अरु जब सिवतत्वविषे अंकुर हो
ती हे तव अद्वैतरूप हो जाती हे तहां किसी शब्दकी गमनही ॥ हे रामजी शिवक्या हे अरु शक्ति क्या हे सो सुण जेते कछू जीव हे सो शिवरूप हे अरु इनके जो चित्तका फुरणा हे
सो काली कहीए चित्तशक्ती कहीए जवलग इच्छा करी चित्तशक्ति बाहिर फुरती हे तबलग भमका अंत नही आता नानाप्रकारके विकारका अनुभव होता हे शांत नही होता
अरु जव चित्तशक्ति उलट्टि करी अधिष्ठानकों देखता हे तव जगत भ्रम निवृत्त हो जाता हे परम शांतिकों प्राप्त होता हे॥ हे रामजी आत्मा अरु चित्तसंवितविषे भेद कछू नही ॥ जेसें
वायुकों स्पंद निस्पंद विषे भेद कछु नही परंतु स्पंद होतीहे तव जाणता हे अरु निस्पंद होता हे तब नही जाणता ॥ तेसें चित्त संवित जब फुरता हे तब जाणता हे अरु नही फुरता तव न
ही जाणता अरु जानणा न जानणा दोनों नही रहता ॥ हे रामजी जबलग इछा शक्ति शिवकी उर नही देखती तबलग नानाप्रकारकी नृत्य करती हे अर्थ यह जो जगतकों रचती हे
अरु जव शिवकी उर देखती हे तव इसकों नृत्य विरस होजाता हे ॥ अरु सव अंग इसकें सूक्ष्म हो जाता हे ॥हे रामजी इस कालोका जो आकार था सो अप्रमाण प्रमाण विषे आवता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न था अरु सिवकी उर देखणेंतें सूक्ष्म होगया प्रथम पर्वत समान भया बहुरी निकट आइ तब रांमके समानभया बहुरी दृलके समान भया बहुरी निकट आइ तब सूक्षम आकार भया जब शिवके साथ मिली तब शिवरूप हो गइ इसका जो विलास हे सो शून्य हो जाता हे अरु परम सांत शिवपदकों प्राप्त होतीहे ॥ श्रीरामोवाच ॥ हे मुनीश्वर यह जो परमेश्वरी कालीशक्तिहे सो तिसको मिलिकरि सांतिकेसें भइ सो कहो ॥ ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी देवी परमात्माकी इछा शक्ति हे अरु जगतमाता इसका नाम हे ॥ जबलग शिवतत्वतें व्यतिरेक होतीहे तबलग जगतकों रचती हे जब अपणें अधिष्टानकी उर आतीहे जो नित तृप्त हे अरु अनामय हे निर्विकार हे परम सांतरूप द्वैत भावतें रहितहे तब परम सांतिकों प्राप्त होताहे प्रकृत संज्ञा इसकी जाती रहतीहे जेसें नदी जबलग समुद्रकों नही प्राप्त भई तबलग दउडतीहे अरु शब्द करतीहे जब समुद्रकों मिलि तब शब्द करणा अरु दउडना नष्ट होजाताहे ॥ अरु नदी संज्ञाभी नही रहती समुद्रकों मिलिकरि परम गंभीर समुद्ररूप होजातीहे ॥ तेसें जबलग चित्तशक्ति शिवतें व्यतिरेक होतीहे तबलग जगत भमकों रचतीहे ॥ जब शिवतत्वकों मिली तब शिवरूप होजातीहे अरु द्वैतभम मिटि जाताहे ॥ हे रामजी जब यह चित्तशक्ती शिवपद विषे लीन होजातीहे तब प्रथम जो देह इंद्रियां साथ तदरूप भईथी इंद्रियांके इष्ट अनिष्टविषे आपकों सुखी दुःखी माननीथी अरु राग दोषकरि जानतीथी जो नित्य तृप्त अनामय पदके मिलेतें सुख दुःखतें रहित होतीहे ॥ काहे ते जो अनात्म देह इंद्रियांकी तदरूपता अभाव हो जातीहे अरु आत्मतत्व साथ तद्रूप होती हे जेसें पथरकि सिला साथ मिलि करि खड्गकी धारा तीक्ष्ण होतीहे तेसें चित्त संवित जब आत्मपदविषे मिलतीहे तब एक अद्वैत रूप होजातीहे आत्मपदके स्पर्शकीएतें अनात्मभावका त्याग करतीहे ॥ जेसें तांबा पारसके परसतें स्वर्न होजाताहे बहुरी तांबा नही होता ॥ तेसें इह वृत्ति अनात्म भावकों नही प्राप्त होती अरु इह चित्तकला तबलग विषयकी उर धावती हे जबलग अपणे वास्तव स्वरूपकों नही प्राप्त भई ॥ जब अपणें वास्तव स्वरूपकों प्राप्त होतीहे तब विषयकी उर नही धावती ॥ जेसें जिस पुरुषकों अम्रत प्राप्त भयाहे अरु उसके स्वादका अनुभव भयाहे तब उह नीम पान करणेकी इछा नही करता तेसें जिसको आत्मानंद प्राप्त भया सो विषयके सुखकी इछा नही करता ॥ हे रामजी यह संसार भम चित्त संवितविषे दृढ सत्य होकरि स्थित भयाहे अरु संसारके सुखका त्याग नही करि सकता जब आत्म सुख प्राप्त होवेगा तब त्याग देवेगी जेसें जिस पुरुषकों जबलग पारस नही प्राप्त भया तबलग अवर धनकों त्यागि नही सकता जब पारस प्राप्त भया तब तुछ धनका त्याग करताहे बहुरी जतन नही करता तेसें जब इसकों आत्मानंद प्राप्त होताहे तब विषयके सुखका त्याग करताहे अरु पावणेका जतन नही करता ॥ हे रामजी भवरा तबलग अवर स्थानविषे भमताहे जबलग कमलकी पंक्तिकों नही प्राप्त भया ॥ जब पंक्तिकों प्राप्त भया तब अवर स्थानकों त्यागि देताहे तेसें चित्तशक्ति जब आत्मपदविषे लीन भई तब किसी पदार्थकी इछा नहीकरती निर्विकल्प पदकों प्राप्त होतीहे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे पुरुषप्रकृति विचारो नाम शताधिक सप्तनवतितमः सर्गः ॥ १९७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी अब पूर्वका प्रसंग बहुरी सुण जब काली नृत्य करकै निर्वाण होगई तब सिव एकलाही रहा ॥ एक रुद्रही मुझकों दृष्ट आवे ॥ अरु दोखंड आकासके दृष्ट आवहि एक अधोभाग एक उर्धभाग अवर कछू दृष्ट न आवे तब रुद्रनें नेत्रकों पसारिकें दोनों षंड देखे जेसें सूर्य जगतकों देखताहे तेसे देखिकरि प्राणकों अंतर खेचत भया ॥ तब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऊर्ध अध दोनों खंड एकठे होगए ॥ तब ब्रह्मांडकों अंतर्मुख पाए लीया एक शिवहि रहिगया अवर कछु दृष्ट न आवे ॥ हे रामजी जब एक क्षण वितीत भया तब रुद्र बडे आकारकों धरे हूए सो ब्रह्मांडकोंभी लंघि गया सो एक टछके समान होगया ॥ बहुरी अंगुष्ठमात्र सरीर होगया बहुरी एक क्षणविषे सूक्ष्म अणु जेसा होगया ॥ बहुरी रेतिके कणकेतेंभी सूक्ष्म हो गया ॥ बहुरी नेत्रकरी दृष्ट न आवे दिव्य दृष्ट करि में देखता रहा बहुरी उहभी नष्ट होगया केवल चिदाकासही सेष रहा अवर दूसरी वस्तु कछू भासे नही ॥ जेसें वर्षाकालके मेघ स रत्कालविषे नष्ट होजाते हे तेसें रुद्रभी नष्ट होगया ॥ हे रामजी तिसकालविषे मुझकों तीनों एकठे सरन रहे ॥ एक देवी ब्रह्माको शक्ति दूसरी काली शक्ति तीसरी सिला ॥ तब में वि चार किया जो यह सुपन नगरवत आश्चर्य था अवर कछू नही तब क्या देखों जो स्वर्नकी सिलाही पडी हे यह श्रेष्ट सिलाके कोसविषे स्थित थी ॥ तब में विचार किया जो यह सृष्टि सिलाके एक कोसविषे अवर सृष्टिभी होवेगी ॥ काहेतें जो सर्व वस्तु सर्व प्रकार सर्वठोर पूर्नहे ॥ तातें इसविषे अवर सृष्टिभी होवेगी॥ हे रामजी उसविषे में सृष्टिकों देखणे लागा ॥ तब नानाप्रकारकि सृष्टि देखी ॥ जब बोध दृष्टि करि देखों तब सर्व ब्रह्म भासे ॥ अरु संकल्पदृष्टि करी देखों तब आत्मरूपी आदर्सविषे अनंत सृष्टि दृष्ट आवे ॥ जब चर्मदृष्टि करि देखों तब सिलाही पडी हे ॥ इस प्रकार में सिलाकोस विषे चल्या ॥ घास तृणविषे सृष्टि भासे पथरविषे फल फुलविषे अनंत सृष्टि दृष्टि आवे ॥ अरु निःसंकल्प आत्मा दृष्टकरि देखों तब अद्वैत आत्माहि भासे ॥ हे रामजी इस प्रकार में अनंत सृष्टि देखत भया ॥ कहुं अेसी सृष्टि भासे जो ब्रह्मा उपजाहे ॥ अरु रचना रचनेकों समर्थ हुआहे ॥ कहु ब्रह्मांनें चंद्रमा सूर्य उपजा ए हे ॥ अरु काली मर्यादा करी हे अवर कोउ नही उत्पत्ति भया॥ कहुं संपूर्ण पृथ्वी आदिक तत्व उपजाए हे ॥ अरु प्राण नही हुए ॥ कहुं समुद्र नही उपजे कहुं आचार सहित सृष्टि दृष्टि आवे ॥ कहुं चंद्रमा सूर्य नही उपजे अरु कहुं उपजे हे ॥ कहुं चंद्रमा शिवतें नीकसे नही ॥ कहुं क्षीर समुद्र मथ्या नही अमृत नही निकस्या ॥ लक्ष्मी हस्ती घोडा धन्वंतरी वैद नही निकसे कहुं विष नही निकसी अमृत नहि निकसा ॥ देवता पडे मरते हे कहुं क्षीर समुद्र मथ्या हे ॥ तिसतें अमृत निकसा हे धन्वंतरी वैद निकसा हे लक्ष्मीभी निकसी हे कहुं प्रका स नही होता ॥ कहुं सदा प्रकासहि रहता हे ॥ कहुं पृथ्वी उपर पर्वतहि दृष्टआवे अवर कछु नही कहुं इंद्रके वज्रकरी पर्वत काटते हे अरु उडते हे ॥ कहुं प्राणीकों जरा मृत्यु नही होता कल्पपर्यंत ज्योंके त्यों रहते हे ॥ कहुं प्रलय होती हे ॥ कहुं मेघ गरजेत हे कहुं संपूर्ण जलहि दृष्ट आवे अवर कछु नही ॥ कहुं आकाश दृष्ट आवे अवर प्राणी कोउ नही कहुं देवताके जुध पडे होते हे ॥ कहुं देवकों दैत्य जीतते हे ॥ कहुं दैत्यकों देवता जीतते हे ॥ कहुं देव अरु दैत्यकी परस्पर प्रीती हे ॥ कहुं बल अरु इंद्रका रुद्र वत्रासुरका युद्ध प ड़ा होता हे ॥ कहुं मधुकैटभ दैत ब्रह्माकी कन्या तें उत्पत्ति होताहे ॥ कहुं सदा प्रसंनता रहती हे अरु तीनों कालकों जानते हे ॥ कहुं सदा सोकवान नही रहता हे कहुं सत जुगका समा हे ॥ दान पुण्य तपश्चर्या करते हे ॥ कहुं कलियुगका समा हे ॥ प्राणी पापविषें विचरता हे ॥ कहुं अर्ध जुग वित्या हे कहुं रामजी अरु रावणका युद्ध होता हे ॥ रावणकों रा मने मर्दन कीया हे ॥ कहुं रामजीकों रावणने मर्दन कीया हे ॥ कहुं सुमेरु पर्वत तले हे पृथ्वीउपर हे कहुं सेष नाग उपर पृथ्वी हे भू चाल करी भ्रमती हे ॥ कहुं प्रलय कालका ज ल चडा हे ॥ अरु एक बालक वटके वृच्छ उपर बेठा अपणे अंगुष्ठकों चूसताहे सो विष्णु भगवान् हे कहुं ब्रह्माकें कल्पकी रात्र हे महा शून्य अंधकार हे ॥ कहुं कौरव पांडवकी सहा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यता कृष्ण करता ह ॥ कहुं महा भारतका जुद्ध होता हैं ॥ दोंनों उरते अक्षौहिणी सेना निकसेहे ॥ अरु कृष्ण पांडवकी सहायता करताहे कहुं एक सृष्टी नास होती हे ॥ उसी सृष्टि विषे उसी जेसी अवर उत्पत्ति होती हे ॥ उसी जेसा कर्म उसी जेसा कुल जाती गोत्र होते हे ॥ कहुं उसतें अर्थ भाग मिलता हे ॥ कहुं चतुर्थ भाग उस जेसा मिलता हे ॥ कहुं विलक्षण भाग होता हे ॥ हे रामजी इसप्रकार में अनंत सृष्टि देखीयां ॥ आत्म आदर्शविषे प्रतिबिंबित होतीयां हे ॥ अरु जब में आत्म दृष्टी करी देखों तब सब चिदाकाशहि भासे जब संकल्प दृष्टि करी देखों तब जगत भासे ॥ कहुं एसी सृष्टि देखी जहां दशरथका पुत्र राम हे ॥ अरु रावणकें मारणेंकों समर्थ हुआ हे ॥ तुमारारूप बडे तपसी रहतेंहे अरु सदा प्रसंन्न हे मन जिसके ॥ अेसी अनंतसृष्टि देखीयां ॥ रामोवाच हेभगवन् में आगेभी हुआहों अरु अेसाही हुआहों अथवा किसी अवर प्रकार हुआहों सो कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी केइ उसी जेसें होते हे केइ अर्ध लक्षण होते हे केइ चतुर्थ भाग लक्षण होते हे जेसें अंनका बीज उसी जेसा होता हे ॥ कोउ उसतें विशेषभी होताहे तेसें यह पदार्थ सभ पडे प्रणाम होते हे ॥ हे रामजी तुंभी आगें होवेगा ॥ अरु मेंभी आगें होउंगा ॥ परंतु आत्माका विवर्त्त हे॥ जेसें समुद्रतें तरंगभी होता हे विलक्षणभि दृष्टि आते हे परंतु उहि रूप हे॥ तेसें हमारे सदृसभी बहुरी होवेगे हमारे स्वरूपके मूर्त्तिवत् परंतु आत्मत्व भिन्न कछू नही संकल्प करिकें इतरकी न्यांइ भासतें हे विलक्षण रूप ॥ जेसें समुद्रविषे वायुकरी तरंग भासते हे ॥ तेसें आत्मा संकल्प करिकें जगत रूप हो भासते हे ॥ यद्यपि नाना प्रकार हो भासता हे तोभी दुसरा कछू हुआ नही ॥ यह जगत चैतनका विलास हे चित्तके फुरणे विषे अनंत सृष्टि भासती हे ॥ जेसें सुपनेकि सृष्टि बडे आरंभ करी भासतीहे परंतु स्वरूपतें कछू इतर नही तेसें यह जगत आरंभ प्रणाम करि बन्या कछू नही ॥ आत्मसत्ता सदा अपणे आपविषे स्थित हे ॥

॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे अनंत जगत वर्नन नाम शताधिकाष्टनवतितमःसर्गः ॥ १९८ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार में सृष्टि देखत भया बहुरी द्रश्य भमकों त्यागकरि अपणें वास्तव स्वरूपविषे स्थित भया ॥ में अनंत हों नित्यसुद्ध बोध चिदाकास सर्वदा अपणें आपविषे स्थित हों ॥ हे रामजी चिन्मात्र आत्मा किसी स्थानविषे संवेदन आभास फुरीहे ॥ जेसें अनाजके कोठेंतें एकमुष्टी भरी निकासीए अरु क्षेत्रविषे डारीए उसीतें किसि ठोरविषे अंकुर निकसे तेसें चैतनविषे संवेदन फुरीहे ॥ तिस संवेदनसों जगत् उपजाहे जेसें जलके दीए अंकुर निकसि आताहे तेसें मेरेविषे सृष्टिका अनुभव होणे लागा ॥ अरु में जानत भया जो सृष्टि मेरेविषे फुरीहे ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् तुम जो आकासरूप अपणें आपविषे स्थित थे तिसविषे सृष्टि तुमकों केसें फुरीयां? ॥ दृढ बोधके निमित्त मुझकों कहो

॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी वास्तव तो कछू उपजा नही परंतु जेसें हूएहे तेसें सुण ॥ में जो अनुभव आकास अनंत था तिसके किसि स्थानविषे संवेदन चित्त अहं फुर्या अर्थ यह जो में हों तिस अहंभावके होणेकरी आपकों में सूक्ष्म तेज अणु जेसा जानत भया ॥ तिस अणुविषे जो अहं फुरि तिसकों तुम सारखे अहंकार कहतेहें तिस अहंकारकि दृढतातें निश्चयात्मक बुद्धि फुरी तिस बुधितें संकल्प विकल्परूप मन फुर्या तिस मननें आगें प्रपंच रचा ॥ तिस मनविषे देखणेंका स्पंद फुर्या तब चक्षु इंद्रिय भई ॥ अरु जिसकों देखणें लागा रूप द्रश भई ॥ बहुरी सुनणेकी इछा फुरी तब श्रवण इंद्रिय हुइ तब शब्दही सुनत भई ॥ बहुरी रस लेणेकी इछा भई तब जिव्हा इंद्रिय भइ रसकों ग्रहण करने लागी ॥ जब सुगंध लेणे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की इछा करी तब नासिका इंद्रिय भइ ॥ अरु सुगंधकों ग्रहण करनेलागी ॥ बहुरी स्पर्श करणेंकी इछा हूइ तब त्वचा इंद्रिय प्रगट भई अरु स्पर्शकों ग्रहण करणेलागी इस प्रकार ज्ञान इंद्रिय मुझकों आनी फुरी तिनविषे शब्द स्पर्श रूप रस गंध उदे हूइ तब में अपणें साथ स्थूल वपुकों देखत भया ॥ जेसें पुरुष सूक्ष्मतें उठिकरी सुपना देखताहे तिसविषे अपणां सरीर देखताहे तेसें में देखताभया ॥ हे रामजी जिसकों में देखता भया सो दृश्य हूआ ॥ अरु जिसकरि में देखता भया सो इंद्रियां भइयां ॥ अरु जब दृश्य फुरणा हूआ सो काल हुआ अरु जहां हुआ सो देस हुआ ॥ अरु ज्योंकरी हुआ सो क्रिया हूई ॥ ईस प्रकार सब देस काल पदार्थ हुएहे सो में तेरेतांइ कहेहे ॥ हे रामजी वास्तव न कोउ देह हे न इंद्रियहे न सृष्टिहे ॥ चित्तकलाविषे हुएकी न्यांइ दृष्ट आवतेहें जेसें सुपनेकि सृष्टिभासतीहे जब उह सृष्टि मुझकों फुरी तब पूर्व स्वरूप विस्मरनभया ॥ जेसें सुषुप्तिविषे मुझकों अपणा स्वरूप विस्मरनकी न्यांइ होताहे ॥ तेसें मुझकों विस्मरन हूएकी न्यांइ भास्या ॥ जेसें सुपनेविषे जाग्रतस्वरूपका विस्मरन होताहे ॥ जाग्रतविषे सुपन स्वरूपका विस्मरन होताहे ॥ तेसें पूर्वका स्वरूपका मुझकों विस्मरन भया ॥ जब सरीर इंद्रियां मुझकों अपणे साथ भासी तिस विषे में अहं प्रत्यय करीकें सब्द ओंकार उच्चार किया ॥ जेसें बालक माताके गर्भतें उत्पत्ति होकरि शब्द करता हे ॥ तेसें में ओं शब्दका उच्चार किया ॥ जेसें कोउ पुरुष सुपनेविषे उडता हे अरु सब्द करता हे ॥ तेसें में ओंकारका उच्चार किया ॥ केसा ओं हे आदि मध्य अंततें रहित पर म ब्रह्म हों अरु सर्व ब्रह्मांडरूपी तरंगका आधार समुद्र हों ॥ हे रामजी जब में अधिभूतक दृष्टि करि देखों तब मुझकों सिलाही भासे ॥ अरु जब अंतग्राहक दृष्टि करि देखों तब अनंत ब्रह्मांड दृष्ट आवे अरु नाना प्रकारकी क्रिया मर्यादा सहित भासे ॥ अरु जब आत्म दृष्टि करि देखों तब अद्वैत अपणा आपही भासे ॥ हे रामजी जेसें सूर्यकि कीरणांविषे मरुथलकी नदी भासती हे तेसें मुझकों सृष्टि भासे ॥ जेसें मरुथलकी नदी मिथ्या हे तेसें ग्रहण करणें हारी वृत्ति मिथ्याहे ॥ जेसें संवेदनविषे मनन फुरता हे सोभी मिथ्या हे ॥ काहेतें जो नदी मिथ्या हे तो मनन तिसका सत केसें होवे ॥ जेसें उह मिथ्या हे तेसें यहभी रूप अवलोक मनुष्यका मिथ्या हे भांति करकै सत्य भासति हे ॥ जेसें सुपन सृष्टि भांतिमात्र हे ॥ जेसें संकल्प पुरि मिथ्या हे जेसें मनोराजका नगर अरु कथाका वृत्तांत अणहोता भांति करकै प्रत्यक्ष भासता हे ॥ तेसें यह जगत भांति करकै सत भासता हे ॥ वास्तव कछु नही संकल्प विलास विषे बने दृष्टि आते हे ॥ हे रामजी जिस प्रकार मुझकों सृष्टि भासि हे सो सुण ॥ जब मेरे विषे पृथ्वीकी धारणा भई तब पृथ्वी मुझकों सरीर होकरि भासणे लागी काहेतें जो में विराट आत्मा था तिस पृथ्वी उपरि बन पर्वत नदी समुद्र वृछ फूल फल मनुष्य पशू पंछी देवता ऋषीश्वर दैत नाग आदिक जो स्थित हे ॥ सो पृथ्वी मेरा सरीर भया ॥ अरु पर्वत मेरे मुख भए अरु सुमेरादि पर्वत मेरी भुजा भईयां ॥ अरु सप्त समुद्र मेरा आंद्रा भया ॥ अरु सर्व नदी मेरे कंठविषे माला भासे ॥ अरु बन मेरो रोमावली भई अरु मारुथलकी नदी मेरे उपर विस्तार भासे अरु देवता मनुष पशु पंछी दैत यह सब मेरे विषे कीट भासे ॥ सरीरविषे जुआं लीखां आदिक हे अरु किसी ठोर मेरे उपर हिलावते हे अरु बिज बोते हे खेती उगती हे प्राणी खाते हे ॥ कहुंक खोदते हे कहुं पूजा करते हे कहुं समुद्र स्थित हे कहुं नदी चलती हे कहुं राजा राज करते हे मेरे उपर झगडी मरते हे ॥ उह कहता हे पृथ्वी मेरी हे उह कहताहे मेरी हे ॥ इस प्रकार ममता करकै जुद्ध करते हे हस्ती चेष्टा करते हे ॥ केइ रुदन करते हे ॥ केइ हांसी करते हे ॥ कहुं वृत्ति पसारते हे कहुं सुगंध हे कहुं दुर्गंध हे ॥ नदीयां चलति क्षो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भ करती हे देवता अरु दैत मेरे उपर जुद्ध करते हे सीतलता करैं जल मेरे उपर बरफ होजाता हे ॥ इत्यादि इष्ट अनिष्ट स्थान मैं अपणे उपर देखत भया राजसी तामसी सात्विकी जेती कछू जीवकी क्रिया होती हैं सो सबका आधार मैं होत भया ॥ अरु पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षण दिसाकि संज्ञा होत भइ संवेदन फुरणे करकें इस प्रकार मैं आपकों जानत भया ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे अंतरोपाख्यानेपृथिवीधातु वर्णनं नाम शताधिक नवनवतितमःसर्गः ॥ ॥ १९९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् तुमकों जो धारणा करैं पृथ्वीका अनुभव हूआ तिसविषे जगत् उत्पत्ति हूआ सो संकल्परूप था ॥ अथवा मनतें उपजाथा अथवा अधिभूतक रूप था पृथ्वीतें उत्पत्ति केसें हुआ सो कहो ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जेता कछू जगत हे सो संकल्परूप हे अरु अधिभूतकरि न्यांइ भासता हे सो केवल चिदाकास अपणे आपविषे स्थित हे सो चिदाकास में हो ॥ न कदाचित् उपजाहीं न नास होउं गा ॥ सर्वदा अद्वैत अचैत चिनमात्ररूप हों ॥ तिसके संकल्पका नाम मन हे आभासका नाम संकल्प हे ॥ तिसीका नाम ब्रह्मा हे तिसिका नाम इछा हे तिसविषे जगत स्थित हे सो जगत आकासरूप हे वन्या कछू नही ॥ हे रामजी जिसकों सत्य कहता हे अरु असत्य कहता हे सो सुभ असुभ रूप जगत मन विषे स्थित हे ॥ अरु जेते आकार भासते हे सो निराकाररूप हे ॥ आकासरूप भ्रांति करैं पिंडाकार भासते हे ॥ जेसें सुपनेंविषे सुभ असुभ पदार्थ भासते हे सो निराकार हे भ्रांति करैं पिंडाकार भासते हे तेसें यह जगतभी निराकार हे भ्रम करैं पिंडाकार भासते हे ॥ विचार किएतें शून्य हो जाता हे ॥ जेसें मनोराज करैं आकार रचित हे ॥ तेसें हमारे आकार जाण स्वरूपतें कछू उपजे नही ॥ जेसें मृत्तिकाविषे बालक नाना प्रकारकी सेना रचते हे ॥ सो मृत्तिकाभी उनकों भिन्न भिन्न भाव निश्चय होते हे तेसें अद्वैत आत्माविषे मनरूपी बालकनें जगत कलप्या हे ॥ वास्तव कछू नही आत्मतत्व सदा अपणें आपविषे स्थित हे ॥ मृग तृष्णाका जलही नही तो डुबा तिसविषे कोनकुं कहीए तेसें मन आप आभासरूप हे तिसका रचा जगत कैसें सत होवे ॥ हे रामजी सभ चिदाकासरूप हे दुसरा कछु वन्या नही ॥ आत्मरूप आकासविषे मनरूपी नीलता हे सो अविचार सिद्ध हे विचार किएतें नीलता कछु वस्तु नही ॥ जेसें दीपकके विद्यमान अंधकार नही रहता ॥ तेसें विचार किएतें मन अरु मनकी रचना जगत नही रहती ॥ मनका निर्वाण करणा परम सांति हे ॥ अवर उपायको उ नही ॥ हे रामजी जेते कछु क्षोभ हे तिनका कर्ता मन हे ॥ अरु जेती कछु शब्द अर्थ कल्पना उठती हे सो मनकरी उठती हे ॥ मनके निर्वाण हुए कोउ नही रहती ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीस्वर तुंम जो अनंत ब्रह्मांडकी पृथ्वी होकरि स्थित भए सो कछु अवर रूपभि भए अथवा न भए सो कहो ? ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी आत्मरूपी जो जागृत हे तिस विषे में अनंत ब्रह्मांडकी पृथ्वी होकरी स्थित भया में चैतनथा अरु जडकि न्यांइ स्थित भया वास्तवतें न कछु में जगत था केवल चिदाकास हे ॥ तिसविषे न कछु नाना हे न अनाना हे जगत न अस्ति न नास्ति हे अहं त्वं इदंका अभाव हे ॥ केवल परम आकास हे आकासतेंभी निर्मल चिदाकास हे अरु जो हे सो सर्व संब्द ब्रह्म हे जगतके होतेभी अरूप हे ॥ काहेतें जो कछु आरंभ प्रणामकरी नही वन्या केवल आत्माका चमत्कार हे ॥ हे रामजी जहां जहां पदार्थ सत्ता हे तहां तहां जगत वस्तु हे ॥ सर्वदा काल सर्व प्रकार सर्व पदार्थका स्पंद ब्रह्म हे ॥ जहां ब्रह्मसत्ता हे तहां जगत हे ॥ इस प्रकार अनंत ब्रह्मांडकों देखत भया ॥ जब में अनंत ब्रह्मांडकी पृथ्वी हो करी स्थित भया जब जलकी धारना करी तब जलरूप हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर पसर्या ॥ दल घास फुल फल गुछे टास तमाल पत्रविषे में रस हो करी स्थित भया ॥ थंभेविषे मेंही बल हुआ समुद्र हुआ नदीयांके प्रवाह हो करी वहणें लागा ॥ तिनविषे गडगड शब्द करणे लागा तरंग बुदबुदे फेनकों पसारि करीविलास करत भया उसके कणके हो करी मेंही स्थित भया आकासविषे मेघ हो करी स्थित भया वरषा करनें लागा ॥ प्राणीकों तृप्त करणे लागा ॥ तिनविषे रुधिरनें आदि रस होकरि मेंही स्थित भया ॥ तिनकि नाडी विषे मथन करके आपहि प्रवेस कीया ॥ जेसी जेसी नाडी होती हे तेसा तेसा रस होकरि स्थित भया ॥ रस बीज कफ पित्त मूत्र आदिक सभ नाडी विषे मेंही स्थित भया ॥ सर्व प्राणीकी जिव्हा अग्रविषे रस होकरि स्थित भया ॥ स्वादकों ग्रहण करने लागा ॥ अपणे आपकों आपकरि अरु हिमालय विषे बरफ होकरि स्थित भया ॥ हे रामजी मैं चेतनहि जडकि न्यांइ स्थित भया ॥ बीज होकरी मेंही उत्पत्ति करत भया ॥ प्रलयके मेघ होकरि मेंही नास करत भया ॥ इस प्रकार जल होकरि स्थावर जंगम जगत सर्व विषे में स्थित भया ॥ अरु सदा अपणे आपविषे स्थित होकरि अपणे स्वरूपकों त्यागता न भया ॥ जेसें सुपनें विषे जगत अनुभवरूप हे अनहोता भासता हे ॥ तेसें मैं जलरूप होकरि जगतकों धारता भया ॥ हे रामजी इसतें आदि लेकरि जो नाना प्रकारके स्थान हे तिनविषे मैं स्थित भया ॥ अरु फूलकि सिज्ञा उपरि चिरकाल पर्यंत विश्रांम करत भया ॥ अरु गंध होकरि फूल विषे स्थित भया मेघ होकरि आकास विषे विचरता भया ॥ गडा होकरि वर्षा करता भया ॥ पर्वत परि प्रवाह वेग करि उतरता भया कणके कणके हो गया समुद्र नदीयांविषे विचरता भया यह प्रतिभास चिद अणुविषे मुझकों भइ ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे अंतरोपाख्याने जल रूप वर्णनं नाम द्विशतकतमःसर्गः ॥ २०० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी जलकें अनंतर मैं तेजकी भावना करी अर्थ यह जो तेजकों धारा ॥ तब मेरे एते अंग उदे भए चंद्रमा सूर्य अग्नि इन अंगकरि जगतकि क्रिया सिध होणें लागी ॥ जेसें राजाके अंग अनुचर हरकारे होतेहे ॥ जहां तमरूपी चोरकों दीप करूपी हरकारे मारतेहे आकासरूपी जो मैं हों तिसके कंठविषे तारेरूपी माला पडिहे ॥ सूर्यहोकरी मैं जलकों सोसणेलागा ॥ अरु दसोदिसाकों मैं प्रकासता भया आकास जो उर्धता करि स्याम भासताहे सो मेरे निकट प्रकासमान होरहताहे ॥ सब जगतविषे मैं पसरि रहाहों ॥ जहां मैं होउं तहातें तमका अभाव होजावे ॥ चंद्रमा सूर्यरूपी डबाहे तिसविषे दिन रात्र रूपी रत्नहे ॥ दिनरात्र काल वर्षरूपी अनेक रत्नहे सो सर्वदा निकसते रहते हे ॥ राजसी सात्विकि तामसी क्रिया रूपी कमलनीका मैं सूर्य हुआ ॥ अरु सर्व देवता पितरकों तृप्त करत भया ॥ यज्ञकी अग्नि होकरि अग्नि रत्नमोती मणि आदिक जो प्रकास पदार्थ हे तिनविषे प्रकास मैं हों अरु प्राणके अंतर मैं स्थित हूआ प्रान अपानके क्षोभ करि अंनकों पचावताहों ॥ जेसें आत्माके प्रकास करि रूप अवलोक मनसकार प्रकासतेहे ॥ तेसें सब पदार्थ मेरे प्रकासकरि प्रकासतेहे ॥ काहेतें जो तेजरूप मैं हों मानों चैतनसत्ताका मैं दुसरा भाई हों जेसें सर्व पदार्थ आत्मा करि सिद्ध होतेहे ॥ तेसें मुझकरि सिद्ध होतेहे ॥ हे रामजी राजा विषे तेज मैं हों ॥ सिद्धविषे वीर्य होकरी स्थित मैं हों ॥ बलरूप होकरि जगतकों पुष्टि मैं करताहों ॥ वाड वाग्नि दाहक शक्ति होकरि जगतकों मैं नष्ट करताहों ॥ तेजवानविषे मे तेज हों बलवानविषे मैं बल हों ॥ तलेभी मैं हूं अरु मध्यभी मैं हूं अरु चंद्रमा सूर्य तें रहित जो स्थानहे तिनविषे मैं हूं ॥ अग्निरूपी दीपक करके अरु चंद्रमा सूर्यरूपी नेत्रकरिकें स्पष्ट मेंहि देखताहों मध्य मंडलविषे ॥ हे रामजी इस प्रकार तेजरुप होकरि अंतर बाहिर स्थावर जंगम पदार्थविषे स्थित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में भया ॥ अरु जब बोध दृष्टि करि देखौं तब सर्व आत्माही भान होवे ॥ अरु जब अंतवाहक दृष्टि करि देखौं तब आपकों विराटरूपजाणें ॥ जो सर्व जगतविषे मेंही पसरि रहाहौं सर्व पदार्थ मेरे अंग हूएहे तेजवानविषे तेज में हूआ ॥ क्रोधवान विषे क्रोधभी में हूआ ॥ अरु जतीविषे जती में हूआ अरु अजीत हूआ ॥ सर्व उर मेरीही जयहे काहेतें जो जय तिसकि होतिहे जिसविषे बल अरु तेज होताहे ॥ सो बल में हौं ओजभी में हौं तातें मेरी जयहे ॥ हे रामजी स्वर्ग अरु रत्नमणीविषे प्रकास में हूआ अवर जो रुप हे सो में हुआ ॥ ॥ रामो वाच ॥ ॥ हे भगवन् इस प्रकार जो तुम जगतकी क्रियाकों अनुभव करणे लागे ॥ जलरूप होकरि अग्निकों बूझावणे लागा अग्नि होकरि जलकों जलावणें लागे ॥ इत्यादिक क्रिया जो तुमारे उपर होती रही इष्ट अनिष्ट सो तिसकों सुख दुःख करि अनुभव किया अथवा न कीया सो मेरे बोधकें निमित्त कहौं ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जेसें चैतन पुरुष सुपनें विषे पर्वत वृछ देह इंद्रिया नाना प्रकारके जड पदार्थ देखते हे ॥ सो उसविषे तो नही केवल अनुभवरूप हे परंतु निद्रा दोष करी उह द्वैतकी न्यांइ सुपन सृष्टिका जाणताहे ॥ तिसका राग दोष अपणेंविषे मानताहे अरु अवर कछु हे नही ॥ द्रष्टाही दृश्यरूप हो करी स्थित होताहे परंतु निद्रा दोष करी नही जाणि सकता ॥ जब जागता हे तब सब सुपन सृष्टिकों अपणा आपही जाणताहे ॥ तेसें यह जगत अपणें स्वरूपविषे नही ॥ जब बोध स्वरूपविषे जागेगा तब पदार्थ भावना जाती रहेगी सब जगत बोध स्वरूप भासेगा ॥ हे रामजी जिस पुरुषकों देसकाल वस्तुके प्रछेदते रहित अखंड सत्ता उदे भइहे तिसकों ज्ञानी कहते हे जब यह पुरुष परमात्म अवलोकन करताहे तब सब जगत आत्मस्वरूप भासताहें ॥ जिस पुरुषकों सुपन सृष्टि विषे पूर्वका स्वरूप विस्मरन नहि भया ॥ तिसकों अंतवाहक कहताहे ॥ तिसकों पथरके प्रवेस करणें विषेभि खेद नही होता अरु जल अग्निविषे प्रवेस करणेकरीभी खेद नही होता ॥ हे रामजी में जो आकासविषे उडता फिऱ्याहो अरु आकासकों भी लंघकरी ब्रह्मांडके खपर उपर जाय फिऱ्याहों ॥ सो अंतवाहक करिके फिर्याहों ॥ जिसकों अंतवाहक सरीर प्राप्त होताहे तिसकों आवरण कोउ रोकीनही सकता ॥ काहेतें जो सब अंग उसके होतेहें ॥ तातें मुजकों सुध आत्माविषे सुपन हुआहे अरु पूर्वका स्वरूप विस्मरण नही भया ॥ तिसकरि मुजकों सब जगत अपणा स्वरूपही भासताहे ॥ अपणें संकल्पकरी कलपें अपणें अंगही भासतेहे ॥ जेसें किंपुरुषनें मनोराजकरिकें अग्नीका समुद्र रचा अरु उसविषे स्नान करे तउ होताहे क्यों उसकों खेदभी नही होता ॥ सभ अपणे संकल्पविषे उसकों भासतेहे ॥ अंतवाहक सरीर करकें विराट सभकों अपणा आप देखताहे ॥ तेसें सभ जगत मुजकों अपणा आप भासे तो खेद केसें होवें ॥ जेसें सुपनें वाला सुपनें विषें पर्वत नदीयां अग्नि होतीहे सो उहीरूप हें ॥ अरु एक आपभी आकार धारिकें बनि जाताहे ॥ पूर्वका स्वरूप उसकों भुलीजाताहे प्रछन्नता करिकें राग दोष साथ जलताहे ॥ अरु में तत्वरूप बन्या जो आपकों जडरूप देखत भया में आपकों चैतनरूप देखताथा ॥ अरु जडकि न्यांइभी में आपकों जानत भया ॥ इस प्रकार मुजकों अपणा स्वरूप विस्मरण न भया ॥ तब में वैराटरूप सभकों अपणे अंग देखत भया तातें खेद केसें होवें ॥ खेद तब होताहे जब अपणा स्वरूप भूलताहे ॥ अरु प्रछंन बनि जाताहे सो में तो बोधवान रहा जो में स्पंद करिकें सभरूप धारेहे ॥ हे रामजी जिसकों यह निश्चय हे तिसकों दुःख कहां होवे ॥ सुख दुःखरूप जो पदार्थ हे सो में अपनेंविषे एसें देखत भया ॥ जेसें आदर्सविषें प्रतिबिंब भासताहे जिसकों यह दृष्टि होवे तिसकों दुःख कहां हे ? ॥ हे रामजी जिसकों अंतवाहक शक्ति प्राप्त हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीहे उह समर्थहोताहें पातालविषे जावे आकासविषे उडे जहां प्रवेस किया चाहे सो सब होताहे ॥ काहेतें जो सृष्टि संकल्पमात्र हे ॥ हे रामजी अवर कछू सृष्टि बनी नही ॥ आत्मा का किंचनही सृष्टीरूप होकरी भासताहे ॥ हे रामजी यह सृष्टि सब ब्रह्मस्वरूप हें हमकों तो सदा अेसेंही भासतीहे ॥ जब तुं जागेगा तब तुजकोंभी अेसेंही भासेगी सो तुंभी अब जाग्या हे ॥ इसप्रकार में अग्नि होकरि स्थित भया जिसकि सिखातें कालप निकसतीहे सो प्रकास मेंही भया चिद अपणे स्वरूप अनुभवविषे मुजकों जगत भासे तिनविषे में स्थित हुआ अंधकारभी अरु उलूकादिकभी मेरे प्रकासकरी प्रकासतेहे ॥ अरु भावरूप पदार्थभी में अपणें विषे जानत भया ॥ काहेतें जो भावरूप पदार्थ तब भासतेहे जब उनका रूप होताहे सो रूपवान पदार्थ मेंही था इसकारन करी सब मेरेहि करी सिद्ध होतेहे इसप्रकार मुजकों प्रतिभा हुइ ॥ ॥ इ०यो० नि०प्र० अं०चि०व०नाम द्विशताधिकप्रथमःसर्ग ॥ ॥२०१॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी बहुरी में पवनकी धारनाका अभ्यास कीया तब पवनरूप होकरी विचरणे लागा ॥ कमल फूल अरु वृक्षकों हिलावणे लागा तारा नछत्रका आधारभूत भया ॥ तब मेरे करी फिरणे लागे चंद्रमा सूर्यके चलावणे हारा मेंही भया समुद्र नदीयांके प्रवाह मेरेही करी चलते हे मनका बडा वेगभी मेंही हों प्राणी उसके सरीर विषे मेरा निवास हे ॥ मेंही प्रान अपान उदान समान व्यान पंचरूप होकरी स्थित भया हों अरु सभ नाडी विषे मेरा निवास हे ॥ अरु सभ नाडीकों रस अपणा अपणा भागमेंही पहुचावता हों ॥ हलणा चलणा बोलणा लेणा देणा सभ मुजहि करि सिद्धि होता हे ॥ सर्व पदार्थविषे स्पर्श शक्ति मेंही हो ॥ सर्व शब्द मेरेहि करी सिद्ध होता हे ॥ कियारूपी बुंदका में मेघ हों ॥ आकासरूपी जो गह हे तिसविषे मेरा निवास हे दसो दिसा सभ मेरेविषे फुरी हे ॥ देवताकों गंधकरि सुख मेंही देताहों ॥ दीपककों प्रज्वलित मेंही करता हों ॥ पंछीविषे मेरा सदा निवास हे ॥ जेसें अग्निविषे उष्णता रहती हे सबके सुकावणेहारा मेंही हों हरीयावल करणेहाराभी मेंहीहों ॥ हे रामजी इसप्रकार में पवन होकरी स्थित भया तातें रूप अवलोक मनस्कार सर्व पदार्थ मेंहिभया ॥ चंद्रमा सूर्य तारे अग्नि इंद्र ब्रह्मा विष्णु रुद्र वरुण कुवेर जम आदिक जगत हो करी मेंहि स्थित भया पंच भूत करी भूतके अंतरभी मेंही हों॥ अरु बाहिरभी मेंहों प्रान अपानके क्षोभकरीकें दुःख होता हे सो मेंही साकार निराकाररूप हों ॥ रक्तपीत स्यामरंग पदार्थ सब मेंहीहों ॥ पंचभूत चिद्गुणतें फुरेहें सो उसीका रूपहे ॥ जेसें सुपनेकीसृष्टि सब अपणाही रूप होती हे इतर कछू नही ॥ हाड मांस पृथ्वी करी भूतविषे स्थित भयाहों ॥ वायुरूप प्राण होकरी स्थितभया हों ॥ अग्निरूप क्षुधा होकरी स्थित भया हों ॥ आकाशरूप अवकाश हो करी स्थित भयाहों इसप्रकार में सर्वविषे स्थित भयाहों॥ सो मेंभी चैतन वपुहों उह तत्वभी चैतन वपुहे ॥ जेसें सुपनविषे जगत आकाशरूपहे ॥ तेसें उहभी आकाशरूप हे ॥ हे रामजी सर्वका सर्वकाल सर्व प्रकार सर्वात्मा स्थितहे दुसरा कछू नही आत्मसत्ता सदा अपणे आपविषे स्थितहे ॥ इसतें इतर जानणा भांतिमात्र हे ॥ यह दृष्टि ज्ञानवानकीहे ॥ जो असम्यक दर्शी हे तिनकों भिन्नभिन्न पदार्थ भासते हे ॥ इसप्रकार में संपूर्ण जगत अपणेविषेही देखत भया ॥ हे रामजी में कवन हों में जो ब्रह्मरूप था तिसविषे जगत उत्पत्ति होते दृष्ट आए॥ अरु जो में ब्रह्मतें इतर कहों एक तृण न उत्पत्ति होवे में जो ब्रह्मारूपथा तिसतें सृष्टि उत्पन्न होतीयांहे ॥ हे रामजी जब में बोध दृष्ट करी देखा तब आत्मातें इतर कछू न देखा जब अंतवाहक दृष्टि करि देखों तब मेरे तांइं स्पंद करिकें अणुअणुविषे सृष्टि भासती हे जेसें जहां चंदनका अणु होता हे तहां सुगंध होती हे ॥ तेसें जहांजहां तत्वके अणु हे तहांतहां सृष्टि हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे रामजी एक अणुविषे अनंत सृष्टि मुझकों भासे हे ॥ जेसें एक पुरुष सयन करता हे अरु तिसकों सुपनविषे सृष्टि भासती हे ॥ बहुरी सुपनेंतें सुपनांतरकी सृष्टिकों देखता हे तो एकही जीवविषे बहुत भासे क्यों तेसें अणुविषे अनेक सृष्टि हे ॥ हे रामजी जो सृष्टि हे सो आभासरूप हे अरु आभास अधिष्ठानके आश्रय होता हे सो सबका अधिष्ठान ब्रह्मसत्ता हे देस का लके प्रछेदतें रहित हे ॥ अरु अखंड अद्वैत सत्ता हे इसीतें कहा हे ॥ जो अणु अणुविषे सृष्टि हे काहेतें जो कोउ अणु भिन्न वस्तु नही ब्रह्मसत्ताही हे ॥ जो सर्व ब्रह्म हे तो सृष्टिभी ब्रह्म रूप हे ॥ तातें सर्व ब्रह्मही जाण ब्रह्म अरु जगतविषे भेद कछू नही ॥ जेसें वायु अरु स्पंदविषे भेद नही ॥ तेसें ब्रह्म अरु जगतविषे भेद नही ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे ब्रह्म जगत एकता प्रतिपादनं नाम द्विशताधिक द्वितीयः सर्गः ॥ २०२॥ ॥ ७ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी इसप्रकार जब मेरेविषे सृष्टि फुरियां तब में तिनके भमकों त्याग अरु संकल्पकों खेंचि करी अंतर्मुख हुआ अरु अपणे जो कुटिथी. तिसकी उर आया॥जब कुटि देखी तब तिसविषे एक पुरुष बेठा मुझकों द्रष्टि आया तब में विचार किया जो यह किंचन हे अरु मेरा शरिर था सो कहां हे ॥ तब में विचार करी देख्या जो यह कोउ महा सिद्ध हे अरु मेरा शरिर इसनें मृतक जाणी करी गिराय दीयाहे सो सिद्ध केसें बेठा हे ॥ जो पद्मासन बांधिकरी दोनों गिटे पटद्रुके उपर किये हे ॥ अरु सीर ग्रीवा सुधे कीए हे ॥ दोनों हाथ पटपें उर्ध्व कीये हे मानों कमल फूल हे ॥ मानों अंतरका प्रकाश बाह्य आणि उदे हुआ हे ॥ अरु नेत्र मुंदे हे मानों सब वृत्ति मुंदी छोडीयां हे ॥ हे रामजी इसप्रकार समाधि लगाय करी पद्मासन करी आत्मपदविषे स्थित बेठाहे॥बहुरी केसा हे निरावरण बदलतें रहित सूर्यकी न्यांइ प्रकाशता हे ॥ जेसें धुंएतें रहित अग्नि प्रकाशता हे ॥ तेसें उह सिद्ध प्रकाशवान स्थित हे ॥ इस प्रकार में उसकों आत्मपदविषे स्थित देखत भया ॥ जेसें दीपक निर्वाण स्थित होता हे तेसें स्थित देखि करी में विचार किया जो यह इहांही बेठा रहे में अपणे स्थान सप्तर्षीविषे जाउं ॥ इसी प्रकार कूटिके संकल्पकों त्याग करी में उडा ॥ हे रामजी इस प्रकार उडते हुए मार्गविषे मुझकों विचार उपजा जो अब सिद्धकी क्या दसा हे ॥ बहुरी उलटि करी देखों तो कुटीसह सिद्ध उहां नही काहे तें जो कुटी उसकी आधारभूत थी सो मेरे संकल्पविषे स्थित थी ॥ जब मेरा संकल्प निर्वाण हो गया तब कूटी गिरपडी ॥ तब तिसविषे सिद्ध केसें रहे उहभी गिरपडा हे रामजी उसकों गिरता देखिकरि मेंभी उसके पाछें हुआ जो इसका कौतुक देखों तब आगें उह चल्या जावे में पाछें चल्या जावों अधकों ॥ परंतु में स्वाधीन चल्या जावों अरु उह पराधिन चल्या जावे जेसें मेघतें बूंद गिरतीहे सो ठहरती नही जेसें आकासतें वटा गिरे तेसें उह चल्या जावे सप्त दीपके पार दस सहस्र जोजन स्वर्नकि धरती हे तिस उपर आनि पडा जेसें आकासतें रुइका बोवा गिरे तेसें सुखेन आनि पडा अरु उसी प्रकार पद्मासन बांधे हूए सीस ग्रीवा उसी प्रकार सम ठहरे रहे ॥ काहेतें जो उसके सीस ग्रीवा उर्धकों रहे ॥ हे रामजी सरीर हलता चालता प्राणकरी हे ॥ जब प्राण ठहरी जाते हे तब सरीर हलता चलता नही ॥ इस कारन तें सरीर उसका समही रहा जेसें कूटीविषे बेठाथा तिसी प्रकार आसन करि पृथ्वी उपरि आनि पडा तब मेरे मनविषे आया जो इसके साथ कछू चरचाभी किनी चाहीए ॥ परंतु इह तो समाधिविषे स्थित हे किसी प्रकार इसिकों जगावों ॥ हे रामजी एसें विचार करकें में मेघ हो करि वर्षा करने लागा उसके सिर उपरि अरु बडा सब्द करनें लागा जिस सब्दकरि पहाड फूटणें लागे ॥ तिस सब्द अरु वर्षाकरिभी उह न जाग्या तब में गडा हो करि तिसके उपरि वर्षा करने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लागा ॥ जेसें पथरकी वर्षा होती हे जब ऐसी वर्षा करि तब उह नेत्र खोलिकरि देखणे लागा ॥ जेसें पर्वत पर मोर मेघकों देखणे लागे तब में वपुकों त्याग करि उसके आगे आय स्थित भया तब उसनें समाधि खोलि अरु प्राण इंद्रीयां अपणे स्थान विषे आये ॥ हे रामजी तब मुझकों अपणे अप देखत भया तब में अद्वैत भावकों त्यागकरि बोलत भया हे साध तूं कवन हे अरु कहां स्थित हे अरु क्या करताथा अरु किस निमित्त कुटी विषे स्थित था ? ॥ ॥ सिधोवाच ॥ ॥ हे मुनीश्वर में अपणें प्रकृतभाव विषे स्थित हों ॥ अरु सभ कछू कहोंगा परंतु काहली मत करु में स्मरन करूँ कहता हों ॥ हे रामजी मुझकों इसिप्रकार कहिकरि स्मरन करनें लागा ॥ बहुरी स्मरन करकें कहत भया ॥ हे ब्राह्मण वसिष्टजी मुझपर क्षमा करणी संतका सांत सुभाव हे मेरे पासतें तुमारि वडी अवज्ञा हुइ हे परंतु तुम क्षमा करहु मेरा तुमकों नमस्कार हे ॥ हे रामजी इस प्रकार नमस्कार करकें निर्मल आनंदके उपजावणेहारे वचन कहत भया ॥ हे मुनीश्वर यह संसाररूपी नदी हे अरु इसका बडा प्रवाह हे सो कदाचित सूकता नही अरु चित्तरूप समुद्रतें प्रवाह निकसता हे जन्ममरन दोनों इसके किनारे हे ॥ राग दोषरूपी इसविषे तरंग हे अरु भोगकी तृष्णा इसविषे चक्र फिरता हे तिसविषे में बडा दुःख पाया हे ॥ हे मुनीश्वर अपणे सुखके निमित्त देवके स्थानोंविषभी गयाहों ॥ अरु दिव्य भोग भोगे हे जो स्पर्श आदिक भोग हे सो सब में भोगे हे परंतु शांति नही मुझकों प्राप्त भइ जिस सुखकों में चाहताथा सो न पाया सो सुण जेसें पपीहा मेघकी बुंदकों चाहता हे ॥ अरु मरुथलकी भूमिकाविषे उसकों शांति नही होती ॥ तेसें मुझकों विषयके सुखविषे शांति प्राप्त भइ नही ॥ हे मुनीश्वर इस जगतकों असार जाणिकरी मेरा चित्त विरक्त हुआ हे जो एताकाल में भोगभोगे परंतु मुझकों सांति न प्राप्त भइ ॥ असत जाणि करि में फिर्या अरु विचार किया जो सार होवे तिसविषे स्थित होउं तब में जाण्या जो सार अपणा अनुभवरूप ज्ञान संवित हे ॥ अेसें जाणिकरि में तिसविषे स्थित भयाहों ॥ हे मुनीश्वर जेते कछू विषय हे सो विषरूप हे विषके पानकीएतें भी मृतक होताहे ॥ जेसें स्त्रीधन आदिक सुखहे सो मोह अरु दुःखके देणे हारेहे अेसा कवन पुरुषहे जो इनविषे आया सावधान रहताहे यह स्वरूपतें नष्ट करने हारे हे ॥ हे मुनीश्वर देहरूपी एक नदी हे तिसविषे बुद्धिरूपी एक मछी रहतीहे सो जब सिर बाहर निकासतिहे अर्थ यह जो इछा करतीहे तब भोगरूपी बगला इसकों खाय जाताहे अर्थ यह जो आत्ममार्गतें शून्य करताहे ॥ अरु यह जो भोगरूपी चोर हे जब इनका संग यह करताहे तब इसकों लुटी लेतेहें अर्थ यह जो आत्मज्ञानतें शून्य करतेहे ॥ जब आत्मज्ञानतें शून्य हुआ तब जन्मका अंत नही आता अनेक सरीरकों धारताहे ॥ जेसें चक्र उपर चडी हुइ मृत्तिका अनेक बासनके आकार धारतीहे ॥ तेसें आत्मज्ञानतें रहित अनेक सरीरकों धारताहे ॥ सो अब में जाग्याहों मुझकों अब लूटि नही सकते ॥ हे मुनीश्वर भोगरूपी बडे नागहे अवर जो नाग हे तिनके दसेते सरीर मृतक होतेहे ॥ अरु विषयरूपी सर्पके फुत्कारे कर मृतक होता हे ॥ अर्थ यह जो इछा करने करि आत्मपदतें शून्य होताहे जब इसकों विषयकी इछा साथ संबंध होताहे ॥ तब इसका क्षण क्षणविषे निरादर होताहे ॥ जेसें कदलिबनतें रहित हूआ हस्ती महावतके वस आया निरादरकों पावताहे ॥ हे मुनीश्वर जिस सरीरके निमित्त यह विषयकी इछा करताहे ॥ सो सरीरभी नासरूप हे तिसविषे अहंप्रतीत करणी परम आपदाका कारन हे अरु सरीरविषे अहं प्रतीत न करणी परम सुखका कारनहे ॥ जेसें सरपके मुखमें पडा हुआ दर्दुर मछरकों खाणेकी इछा करताहे सो महा मूर्ख हे किसी क्षणविषे काल इस

939

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कों पासि लेवेगा तातें इनकि इछा करणी व्यर्थहे अरु दुःखका कारणहे ॥ हे मुनीश्वर बालक अवस्था वितीत होतीहे तब जुवा अवस्था आतीहे ॥ जुवातें उप्रांत वृध अवस्था आ तीहे तब जर्जरी भावकों प्राप्त होताहे ॥ जेसें वसंत ऋतुकी मंजरी जेठ आखाडविषे सूकिजातीहे तेसें वृध अवस्थाविषे सरीर जरजरी भावकों प्राप्त होता हे अरु दुःख पावता हे ॥ बा लक अवस्था क्रोडा विषे मगन होता हे ॥ जोबन अवस्थाविषे कामादिक करि मग्न होता हे ॥ वृध अवस्थाविषे चिंताकरि मग्न होता हे ॥ इस प्रकार यह तीनों अवस्था वितीत होती हे बहुरी मृत्यु हो जाता हे ॥ जीवकी अवधि इस प्रकार पडी वितीत होती हे परम पदतें अप्राप्त रहते हे ॥ हे मुनीश्वर यह आयुर्बला वीजलीके चमत्कारकि न्यांइ हे ॥ तिस क्षण भंगुर अवस्थाविषे जो भोगकी वांछा करते हे सो महा दुःखकों प्राप्त होते हे ॥ इनविषे सुख देख करि कहे जो में स्वस्थ रहोंगा सो कदाचित् न होवेगा ॥ जेसें जलके तरंगकी गोदि विषे बेठि करि स्थित हूआ चाहे सो नहि रहेगा अवस्य मरेगा ॥ तेसें विषय भोगों करि सांति सुख नही होता ॥ जेसें कोउ महा धूपकरि तप्या हूआ सर्पके फणिकी छाया तले बेठिक रि सुखकी वांछाकरे सो न होवेगा जब आत्मज्ञानरूपी वृछको छायाके नीचे बेठे तब सांत सुखी होवेगा ॥ जिन पुरुषोंनें विषयकी सेवना करी हे सो परम दुःखकों प्राप्त होते हे ॥ जि ननें आत्मपदकी सेवना करीहे सो परमानंदकों प्राप्त होतेहे ॥ जेसें नदीका प्रवाह अधोकों चल्या जाताहे तेसें मूर्खका मन विषयकी उर धावताहे ॥ यह संसार मायामात्र हे इसविषे सांति कदाचित नही प्राप्त होती ॥ जेसें मरुथलको नदीके जलकरि तृषा निवर्त्त नही होती ॥ तेसें विषयभोग करि सांति कदाचित नही होती ॥ जो आत्मपदतें विमुखहे सो विषयकी उर धावतेहे ॥ अरु जो आत्मपदविषे स्थित हे सो विषयकि उर नही दउडते ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग उपजिकरि नष्ट होते हे ॥ जेसें नदीका वेग समुद्रकी उर गमन करता हे ॥ अरु पथर कि सिला गमन नही करती ॥ तेसें भोगरूपी समुद्रकी उर अज्ञानरूपी नदी गमन करती हे ॥ ज्ञानीरूपी पथरकि सिला नही गमन करती ॥ हे मुनीश्वर कमलविषे सुगंध तबलग होती हे जबलग सर्पके मुखका वायु नही लागा ॥ तेसें बुत्थिविषे तबलग विचार हे जबलग चित्तरूपी सर्पके भोग इछारूपी वायु नही लागा ॥ जबलगता हे तब विचाररूपी सुगंधकों ले जाती हे ॥ अरु विषरूपि तृष्णाकों छोडि जाती हे ॥ अरु बाण निसानकी उर तब धावता हे जब धनुष अरु चिलेंकों त्यागता हे त्यागे तें बहुरी नही मिलता ॥ तेसें आत्मारूपी चिलेतें जब चित्तरूपी बाण छूटताहे ॥ तब भोगरूपी निसानकी उर धावता हे जब जाता हे तब फेरि आणा कठिण होताहे अर्थ यह जो अंतर्मुख होणा कठिन होताहे ॥ हे मुनीश्वर यह आ श्चर्य हे जो पदार्थ सुखदायक नही तिनकी उर यह बडा जतन करता हे तोभी सिद्धी नही होते ॥ अरु जो अजतन सिद्धि आत्मपद हे तिसकों त्यागता हे ॥ जिनकों यह सुख जाण ता हे सो सभ दुःखके स्थान हे ॥ जिस अपणे होणेकों यह भला जाणता हे सो अनर्थका कारन हे ॥ जिस देहकों यह सुखरूप जाणता हे सो सर्वरोगका मूल हे ॥ जिनकों यह भो ग जाणता हे सो इसकों दुःख देणेहारे परम रोग हे ॥ जिनकों यह सत जाणता हे सो सभ मिथ्या हे ॥ जिनकों यह स्थिर जाणता हे सो स्थिर नही चलरूप हे ॥ जिनकों यह रस जाणता हे सो सभ विरस हे ॥ जिनकों बांधव जाणता हे सो सभ अबांधव हे द्रढ बंधनरूप हे ॥ अरु जीसकों यह सुख देणे हारी स्त्री जाणता हे सो सर्पिणी हे ॥ परम विषके देणे हा री हे तिसका मृत्यु होताहे बहुरी नही जीवता ॥ अर्थ यह जो आत्मपदविषे स्थित नहि होता ॥ हे मुनीश्वर में परम आपदाका कारण देहकों जाणता हों इसके निवृत्त हूए परम पदकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राप्त होता हे ॥ जिस पुत्र धन आदिककों यह संपदा जाणता हे ॥ सो परम दुःखरूप आपदा हे इनविषे सुख कदाचित् नही ॥ इह श्रवण करी वारता में नही कहता देखिकरि वि चार कियाहे ॥ विचार करिकें अनुभव कीया हे ॥ अनुभव करीकें कहा हे जो इह संसार मायामात्र हे ॥ अरु बडे बडे स्थानों विषेभी में गयाहों परंतु सार पदार्थ मुझकों कोउ दृष्टी नही आया ॥ स्वर्गविषे नंदनवनतें आदि काष्टरूपही दृष्टि आए हे ॥ अरु पृथ्वीविषे आय करि देख्या तो पंचभूत हि दृष्ट आए हे ॥ अरु सरीर विषे रक्त मांस हाड मूत्र आदिक दृष्ट आए हे ॥ तातें देखिकरी में तिनकों धिक्कार कहताहों ॥ जो एसें सरीरविषे अहं प्रत्यय करते हे ॥ इसकि आयुर्बला अेसी हे जेसें दोनों हाथविषे जल लीजीए सो चल्या जाताहे ठहरता नही ॥ अरु जेसें जलविषे तरंग बुद्बुदे उपजी करी नष्ट होते हे ॥ जेसें विजलीका चमतकार होकरि नष्ट होजाता हें ॥ तेसें यह सरीर नासवंत हे अरु जो अैसें सरीरकों पायकरि सुखकि तृष्णा करते हे सो महामूर्ख हे ॥ बालक अवस्था तरंगकि न्यांई नष्ट होजाती हे ॥ जोबन अवस्था विजलीके चमतकारवत छपन होतीजाती हे ॥ वृध अवस्थाविषे केस स्वेत होजाते हे ॥ दंत घासिकरि गिर पडते हे ॥ जेसें नीचे स्थानविषे जल आनि स्थित होता हे ॥ तेसें सब रोग वृध अवस्थाविषे आनि स्थित होता हे ॥ अरु तृष्णा दिनदिन बढती जाती हे ॥ हे मुनी श्वर सब पदार्थ जर्जरी भूत होजाते हे ॥ अरु तृष्णा ज्वान होती हे जेसें वसंतऋतुकी मंजरी बढती जाती हे ॥ अरु जो सुख भोग प्राप्त होकरि बिछुरी जाते हें तिनका दुःख होताहे ॥ हे मुनीस्वर इस प्रकार इनकों असत जाणिकरि में स्वरूपविषे स्थित भया हों ॥ जब पांचों इंद्रीयांके इष्टविषे बडी उत्तम मूर्त्तिधारिकें आनि स्थित होवे ॥ तोभी हमकों खेंचि नही स कते जेसें मूर्त्तिकि लिखी कमलनी भंवरकों खेंची नही सकती ॥ तेसें हम सारखेकों विषय चलाय नही सकते ॥ हे मुनीश्वर तुमारा सरीर में अवज्ञा करि डारी दीया हे ॥ विचार करि कें नहि डार्या जो ब्रह्मा विष्णु रुद्रादिक त्रिकालज्ञ हे तोभी इस चर्मद्रष्टी करी नही जाणी सकते ॥ जब विचार करि देखते हे तब जाणते हे ॥ इस कारणतें विचार बिना में तुमारा स रीर डारी दीया हे ॥ अब तुम क्षमा करो विचार करिकें भूत भविष्य वर्तमानकों जाणता हे ॥ अरु इन नेत्र करि सोइ जाणता हे जो अयभाग होता विसेष नही जाणता ॥ इस कारन करी मुझतें तुमारा सरीर गिर्या हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे आकास कूटी सिद्ध समाधि जोगवर्ननं नाम द्विशताधिक तृतीयःसर्गः ॥ २०३ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्टोवाच ॥ ॥ हे साध मुजतेंभी तेरा गिरना विचारविना हुआहें ॥ जो विचारविना में उठी गयाथा यह कुटी मेरे अंतवाहक संकल्प विषे थी ॥ सो अपणे स्थानकों चल्या इस कारणतें कुटी गिर पडी तुंभी गीर पडा जो वितीगइ सो भली तिसकी क्या चिंतवना करीए ज्ञानवान वीतिकी चिंतवना नही करते जो होणी हुइ सो भली ॥ हे साध अब चलीएं जहां तुमारे जाणा हे तहां जावहु ॥ जहां हमारे जाणा हे तहां हमभी जाते हे ॥ हे रामजी इस प्रकार चरचा करीकें हम दोनों आकासमार्गकों उडें ॥ जेसें पंछी उडता हे तब परस्पर नमस्कार करीकें हम भिन्न भिन्न होगए उह अपणे स्थानकों गया ॥ अरु में अपणे स्थानकों चला में बहुतेरे स्थान देखता आउं परंतु मुजकों कोउ न जाणे ॥ हे रामजी यह संपूर्ण वृत्तांत में तेरे तांइ कहां हे तुं इसकों विचार ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन तुम जो सिद्धके साथ समागम कियाथा सो आकासमार्गविषे केसें शरीर साथ फिरे पंचभूतक शरीर तो पृथ्वी पर डार्या था उह तो पृथ्वीविषे अणुरूप हो गया विचरे किस करीकें ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी अंतवाहक शरीर साथ में विचरता फिर्या हों ॥ तिस करी में सिद्ध देवताके स्थानोंविषे इंद्र वरुण कुबेरके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थानोंविषे फिर्या हों ॥ परंतु मेरे तांइ कछुं न देखे में सभकों देखों संकल्प पुरुष साथ मेरा व्यवहार हुआ अवर किस साथ कहों जो अवर किसीकों भास्या नही ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर अंतवाहक शरीर इंद्रियांका विषय तो नही सिद्ध साथ चरचा केसें करी अरु तुमकों उसनें केसें देखे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार जो तुं कहताहे तो सुण ॥ सिद्धकों में इस निमित्त दृष्ट आया हों जो मेरा सत संकल्पहे ॥ मेरे यह फुरणा हुआ जो सिद्ध मुझकों देखे अरु चरचा करे ॥ इस करी उसनें मुझकों देख्या उसका संकल्पभी मेरेविषे आया तब जाण्या अरु जो दोनों सिद्ध होवे ॥ अरु उनका संकल्प भिन्न भिन्न होवे तो एक दुसरेके संकल्पकों नही जाणते परंतु किसीका विसेष संकल्प होवे तब उह दुसरेके संकल्पकों जाणताहे ॥ तातें उसका संकल्प मेरे देखणेंकों न था अरु मेरा जो दृढ संकल्प था तिस करी उसके संकल्पकों खेंचि अपणो उर ले आया जो बलि होताहे तिसकी जय होतीहे इसकरी उसनें मुझकों देखा ॥ हे रामजी जो अंतवाहक विषे स्थित होता हे ॥ तिसकों तीनों कालका ज्ञान होता हे ॥ परंतु व्यवहारविषे लागे तब भूलिजाता हे ॥ जो वर्तमान पदार्थ होता हे तिसका ज्ञान होता हे ॥ इसी कारणतें उसनें मेरा शरीर डारी दियाथा ॥ जो समाधिके व्यवहार विषे लागाथा ॥ अरु मेरे संकल्प करी उह कुटिभी तब गिरीथी जो में अपणे स्थानके व्यवहारकों चलाथा एसि चिंतना करीके जो में चिंतवनाविषे न होता अरु अंतवाहक शरीरविषे होता अरु उस कुटिके भविष्यत विचारी देखता अरु उस संकल्पकों रहणे देता तो सिद्ध न गिरंता ॥ जो अवर व्यवहारविषे लगा इस करीके अंतवाहक विस्मरन हो गया तब कुटि गिरपडि अरु सिद्धभी गिर पडा ॥ हे रामजी इस प्रकार सिद्ध गिर्या अरु चर्चा हुइ तब में उहांतें चल्या अंतवाहक शरीर करी आकाशमार्गविषे फिरणे लागा सिद्धके समुह देखे देवता विद्याधर गंधर्व किन्नर ऋषि मुनि वरुण कुवेर इंद्र जमतें आदि लेकरी सबके स्थान देखे में सर्वकों देखता फिर्या परंतु मुझकों कोउ न देखे में बडे बडे शब्द करों जो किसी प्रकार शब्द कोउ सुणे अरु मुझकों देखें ॥ परंतु मेरा शब्द कोउ न सुणे अरु न कोउ देखे ॥ जेसें सुपनविषे कोउ शब्द करे तब उसका शब्द जाग्रतवाले कोउ नही सुनते ॥ जेसें असंकल्पवाला दूसरेकि सृष्टि व्यवहार शब्द कोउ नही जाणता तेसें मुझकों कोउ न जानता भया ॥ हे रामजी इस प्रकार में आकाश पिशाच हो करी विचर्या बहुरी देतवाके स्थानोंका पिशाच हो करी विचर्या में सबकों देखों अरु मुझकों कोउ न देखत भया रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् पिशाचका शरीर कवन होता हे अरु पिशाचकी जाती क्या होती हे ॥ अरु पिशाचकी क्रिया क्या होती हे ॥ अरु तिनके रहनेका स्थान क्या होता हे ?॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी पिशाचकी कथा साथ प्रयोजन कछू न था ॥ तथापि तेनें प्रसंग पाय करी पूछा हे तातें में कहता हों ॥ पिशाचका आकार नही होता अरु जो जो रूपधारते हे सो सुण ॥ एक तो आकाशकी नांइ शून्य होते हे ॥ एक पिछावेकी न्यांइ भयकों देते हे ॥ एक मेघ होकरी स्थित होते हे ॥ एक कागरूप धारिकरी स्थित होते हे ऐसें रूप धारिकें विचरते हे उह सबकों देखते जाणते हे अरु उनको कोउ नही जाणता चलता बेठा॥परंतु सीत उष्ण कर्के उहभी दुःख पावते हें॥अरु इच्छा दोष लोभ मान मोह क्रोध आदिक विकार उन विषेभी रहते हे॥सीतल जल भले भोजनकी इछा उहभी करता हे॥अरु नगरविषेभी रहते हे॥वछविषेभी रहते हे॥दुर्गंध स्थानोंविषेभी रहते हे॥कछुं गिदड होकरी दिखाइ देते हे॥कछुं श्वान होकरी दिखाइ देते हे॥मनविषेभी जाय करी प्रवेश करते हे॥बहुरी मंत्र पाठ दान आदिक करी वशभी होते हे सोभी अपणीअपणी बासनाके अनुसार होता हे॥इनविषेभी केइ उत्तम हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेहे केइ मध्यम होते हे ॥ केइ नीच होते हे॥जो उत्तमहे सो देवताके स्थानविषे रहते हे॥अरु जो मध्यम हे सो मनुषके स्थानविषे रहते हे जो नीच हे सो नरकके स्थानविषे रहतेहे॥अरु इनकी उत्पत्ति अचैत चिन्मात्र जो दृश्यतें रहितहें सुद्ध चैतन तिसतें हुइहे॥हे रामजी सभका अपणा आप उही चैतनसत्ताहे कल्प दृछको न्यांइ उसविषे जेसी जेसी वासना होती हे तेसा तेसापदार्थ हो भासता हे ॥ हे रामजी न कछु पिसाच हे न जगत हे ब्रह्मसत्ता हि ज्योंकीत्यों अपणें आपविषे स्थित हे सुद्ध आत्मत्वमात्रविषे जो किंचन हुआ हे जो अहं होकरि फुर्या हे तिसकों जोव कहते हे॥ तिस अहंकी दृढता करिकें मन फुर्या हे सो मन ब्रह्मारूप हो करि स्थित भया हे ॥ तिस ब्रह्मानें मनोराज करिकें आगें जगत् उत्पत्ति कीया हे ॥ ब्रह्माही जगतरूप हो करि स्थित भया हे सो ब्रह्माविषे ब्रह्महि स्थित हे ॥ हे रामजी ब्रह्माका सरीर अंतवाहक हे ॥ केवल आकासरूप हे तिसके दृढ संकल्पकरी अधिभूतक जगत दृढ भया हे ॥ तिसी मनतें अवर मन हुआ हे ॥ हे रामजी जेसें ब्रह्माका सरीर अंतवाहकहे तेसें सभका सरीर अंतवाहकहे परंतु संकल्पकी दृढता करिकें अधिभूतक भासता हे ॥ सभ मनरूपहे परंतु दीर्घ कालका सुपना सो जाग्रत होकरि स्थित भयां हे तिसकरिकें दृढ भासता हे ॥ जिनोंकों संकल्प ब्रह्म शरीरविषे अहंकार हे ॥ तिन अज्ञानीकों जगत अधिभूतक भासता हे ॥ अरु जो प्रबोध रूप हे तिनकों सब जगत संकल्परूप हे ॥ अरु वास्तवते कहे तो उपजा कछु नही ॥ न तुं हे न में हों न ब्रह्मा हे न जगत हे सर्वही ब्रह्मरूप हे॥ जेसें आकाश अरु शून्यताविषे भेद कछू नही जेसें अग्नि अरु उष्णताविषे भेद कछू नही ॥ जेसें वायु अरु स्पंदविषे भेद कछू नही तेसें ब्रह्म अरु जगतविषे भेद कछू नही ॥ ब्रह्मा शब्द अरु जगत दोनों अज हे ॥ न ब्रह्माही उपजा हे न जगत उपजा हे दोनों ब्रह्मरूप हे॥जो ब्रह्मतें इतर भासता हे॥सो भांति मात्र हे॥हे रामजी पंचभूत अरु छठा मन इनका नाम जगत हे ॥ जबलग यह भूत उसविषे दृष्ट आतेहे तबलग भांति हे॥जब इनते रहित केवल चैतन भासे तब इसीका नाम परम पद हे॥हे रामजी जब आत्मपदविषे जागेगा तब पंचभूतभी आत्मातें इतर भासेगें ॥ सभका अधिष्ठान चैतन सत्ताहे ॥जबलग आत्माका प्रमाद हे ॥ तबलग संसारभम न मिटेगा॥अरु सभ जगत् निराकार संकल्प मात्र हे॥परंतु संकल्पकी दृढता करिकें आकासविषे स्थूल भूत दृष्ट आते हे ज्ञानकालविषेभी अज्ञानका लविषे जगत् उपजा नही ॥ परंतु अज्ञानीके रिदेविषे दृढ भासता हे जेसें किसिनें मनोराज करकें नगर रचा होवे सो उसीके रिदेविषे हे अवर कछु नही भासता ॥ तेसें जबलग अज्ञान निद्राविषे सोया हे ॥ तबलग जगत् भासता हे जब जागेगा तब आकासरूप देखेगा ॥ हे रामजी अपणा संकल्प आपकों नही बांधता जबलग स्वरूपका प्रमाद नही भया ॥ तबलग ब्रह्माका संकल्प ब्रह्माकों नही बंधन करता स्वरूपकी अहं प्रत्यय करकें तो संकल्परूप हे अवर दूसरी वस्तु सत्य कछू नही आत्माहि हे ॥ वास्तवतें न जगकी आदि हे न मध्य हे न अंत हे न जगत्का होणा हे न अनहोणा हे आत्मसत्ताहि अपणे आपविषे स्थित हे ॥ हे रामजी जो सर्वात्मा हे तो राग दोष किसका होवे सभ अपणा आपही हे ॥ अपणा आप जो आत्मतत्व हे तिसका किंचन संवेदन फुरणे करकें जगतरूप होकें स्थित भया हे जेसें किसी पुरुषनें मनोराज करकें एक स्थान रचा जब उस विषे दृढ भावना हूइ तब अधिभूतक भासणे लग जाता हे तेसें यह जगतभी ब्रह्माका संकल्प हे ॥ चंद्रमा सूर्य अग्नि रुद्र वरुण कुबेर आदिक सभ संकल्परूप हे संकल्पकि दृढता करिकें अधिभूतक पडे भासता हे ॥ हे रामजी आत्मरूपी एक ताल हे तिसविषे चैतनरूपि जल हे तिसविषे फुरणेरूपी चिकड हे तिसविषे चउदस प्रकारके भूत जात दर्दुर रहते हे सो संकल्प मात्र हे॥ हे रामजी आकासविषे एक

940

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आकास क्षेत्र हे तिसविषे सिला उत्पत्ति होतीहे स्वर्ग लोक देवता बडी सिला हे एक तिनविषे उज्वल सिला हे सो ज्ञानवान हे मध्यम सिला मानुष लोक हे तिर्यक आदिक जोनी नी च सीला हे सो सभहि निर्बीज हे अर्थ यह जो कारणतें रहित हे आत्मा अद्वैत सदा अपणे आप विषे स्थित हे ॥ कछू उत्पत्ति नही भया परंतु भांति करिकें भिन भिन पेड भासते हे ॥ जेसें फेन बुद बुदे तरंग सभ जलरूप हे ॥ तेसें यह जगत सभ आत्मरूप हे ॥ अरु जेसें सुपन सृष्टि अकारणरूप होतीहे ॥ जेसें संकल्प सृष्टि कारण बिना होतीहे ॥ तेसें यह जगत कारण बिना संकल्पतें उत्पत्ति हुआ हे जेसें ब्रह्मादिक जगत उदे हुआ हे तेसें पीसाचभी उदे हुए हे ॥ हे रामजी जेसा किंचन आत्माविषे होताहे तेसा होकरी भासता हे ॥ वास्तवतें पृथि व्यादिक तत्व कछुं नही॥ न कछुं ब्रह्मा उपजा हे न कोउ जगत उपजा हे सभ भ्रम मात्र हे ॥ जेते कछू वपु भासते हे सो सभ निर्वपु हे ॥ चैतनता करिकें फुरे हे ॥ सभ जीवका आदि अंतवाहक सरीर हे ॥ जेसें ब्रह्माका अंतवाहक सरीर था ॥ तेसें सर्व जीवका अंतवाहक सरीर होता हे ॥ परंतु संकल्पकि दृढता करिकें अधिभूतक हो भासता हे ॥ अरु सभ जीवका अपणा अपणा भिन संकल्पहे तिसके अनुसार अपणी सृष्टि होती हे अरु जो तूं कहे भिन भिन हे तो जीव एकठे क्यों दृष्ट आतें हे ॥ एसा चहीए जो अपणी अपणी सृष्टि विषे होवे तिसका उत्तर यह हे जेसें एक नगर वासी अवर नगर विषे जावे अरु एक नगरवासी अवरविषे आवे दोनों जाय एकठे बेठे॥ तेसें सभ जीव एकठे भासते हे तिनके एकठे हुए उसक सृष्टि उह नही देखता ॥ अरु उसकी सृष्टि उह नही देखता ॥ जेसें सुपनेविषे भिन भिन भूत जात होते हे॥ अनुभवविषे एकठे दृष्ट आते हे अरु एक अनुभवविषे भिन भिन होतेहे॥ एक दुसरेकि सृष्टिकों नही जांणते जीव अंतवाहक भुलि गया हे अधिभूतक दृढ हो रहाहे जेसा अनुभव विषे अभ्यास होता हे तेसाहि भासताहे जहां पिसाच होता हे तहां अंधकारभी होताहे॥जो मध्यानका सूर्य उदे होवे अरु पिसाच आगे आवे तो अंधकार हो जाता हे ॥ अेसा तमरूप होताहे जेसें उलूकादिककों प्रकासविषे अंधकार होता हे ॥ तेसें अनेक सूर्यका प्रकाश होवे तोभी पिशाचका अंधकारही रहता हे ॥ हे रामजी जेसा उनविषे निश्चय होता हे तेसाही भान होता हे काहेतें जो उनका ओज तमरूप हे जेसा किसीका निश्चय होता हे तेसा भासताहे ॥ हमकों तो सदा आत्माका निश्चय हे ॥ तातें सदा आत्मतत्वका भान होताहे ॥ जेसें पिशाचपंचभूतक शरीरतें रहित चेष्टा करते हे ॥ तेसें में पंचभूतक शरीरतें रहित आकाशविषे चेष्टा करता रहा हों ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे अंतरोपाख्यानवर्णनं नाम द्विशताधिक चतुर्थः सर्गः ॥ २०४ ॥ ॥ ७ ॥

वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी में चिदाकासरूप हों सो पंचभूतक सरीरतें रहित अंतवाहक सरीर साथ विचरता रहा हों परंतु मुझकों देखे कोउ नही ॥ चंद्रमा सूर्य इंद्र जो सहस्र नेत्रवाले हे अरु सिद्ध गंधर्व ऋषीश्वर मुनीश्वर ब्रह्मा विष्णु रुद्रभी इस चर्मदृष्टि साथ देखि कोउ न सके अरु में सबकों देखता फिरों इंद्रके निकट जाय करि में उसके अंग हिलावतभ या परंतु मुझकों जाणे नही ॥ जेसें संकल्प नर किसकों हिलावे अरु उह देखे अरु अधिभूतक सरीर न हले ॥ तेसें उनके सरीर मेरे हिलावणेकरी हिले नही तब में अति मोहकों प्राप्त भया जो बडा आश्चर्य हे एता काल में रहा अरु मुझकों देखि कछुं नही सकता ॥ तब इह इछा में करी जो मुझकों देखे ॥ तब में जो सतसंकल्परूप था तिसकरि देखणे लागे ॥ जेसें कछुं इंद्र जालकों देखे तेसें मुझकों देखणे लागे ॥ जिननें पृथ्वीतें उपज्या देख्यातो पृथ्वीतें उपज्या वसिष्ठ जाणे॥मनुष्यलोक विषे केइ जलतें उपज्या जाणे जो वारंवार वसिष्ट हे॥ जि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न रिषीश्वरनें मुनीश्वरनें तीर्थ जो जलरूप हे तिनतें उपज्या देख्या तातें वारी वसिष्ट जाण्या जो यह वारि वसिष्टहे ॥ केइ वायुतें उपजा जाणे सिद्धादिक केई जाणे जो सप्तर्षिके मध्य वसिष्ट हे जो तेज वसिष्ट हे इस प्रकार जगतविषे मुझकों देखणें लागे तब सभ साथ व्यवहार करणे लागा ॥ जब बहुतकाल वितीत भया तब भावनाकि दृढता करकें पंचभूतक सरीर मुजकों देखते भए ॥ प्रथम वृत्तांत सभकों विस्मर्न होगया ॥ अधिभूतकता दृढ होतभई ॥ जेसें अज्ञान करकें सुपन नरकों अधिभूतक देखताहे ॥ तेसें मेरे साथ आकारकों देखते भए अरु मुझकों सदा अपणें स्वरूपविषे अहं प्रत्ययतें इतर द्वैत कछू न था भासता ॥ काहेतें जो में ब्रह्मरूप हों अरु वसिष्ट नाम मेरा अेसा हे जेसें जेवरीविषे सर्प होताहे सो में चिदाकासरूप हों अरु अवरकों वसिष्ट प्रतीति उपजीहें ॥ हे रामजी जेसें तुम सारखेकों मेरा आकार दृष्ट आताहे ॥अरु मुजकों अधिभूतक अंतवाहक दोनों सरीर चिदाकासका किंचन भा सताहे में सदा निराकार अद्वैत रूप हों चेष्टा तुमारी हमारी समान हे परंतु मुझकों सदा आत्म पदका निश्चय हे इस कारणतें में जिवन्मुक्त होकरी विचरता हों ॥ अज्ञानीकों क्रियाविषे द्वैत भासता हे ॥ अरु हमकों क्रियाविषेभी अद्वैत भासंता हें ॥ ब्रह्माभी ब्रह्मरूप भासता हे ॥ अरु तिसका संकल्प जो जगत हे सोभी ब्रह्मरूप हे॥जेसें समुद्रविषे तरंग होते हे सो जल रूप हे भिन्न कछु नही ॥ तेसें ब्रह्मविषे जगत ब्रह्मरूप हे भिन्न कछू नही सर्व ब्रह्मही हे॥ तातें में चिदाकाशरूप हों द्वैत कछू नही फुरता जब अहं फुरतीहे तब जगत द्वैतरूप होकरी भास ताहे ॥ जेसें अहंके फुरणेतें सुपन सृष्टि होती हे॥ तेसें जाग्रत सृष्टि होती हे सो संकल्प मात्र हे ॥ ब्रह्मा अरु ब्रह्माका जगत संकल्पकी दृढता करकें अधिभूतककी न्यांइ हो भासता हे वा स्तवतें न ब्रह्मा उपजा हे न जगत उपजा हे चिदानंद ब्रह्म अपणे आपविषे स्थित हे सदा एक रस हे ॥ हे रामजी सृष्टिकी आदि अरु प्रलय पर्यंत जो कछू क्षोभहे तिसविषे आत्मा सदा एक रस हे उसविषे क्षोभ कदाचित नही काहेतें जो वास्तव कछू उपजा नही अरु जो कछू भासता हे सो अज्ञान करकें सिद्ध हे ज्ञान करी जगतभम निवृत्त हो जाता हे ॥ जेसें सुपन सृष्टिविषे इसकों कद्दुं निधि भासी तिसके प्राप्ति निमित्त जतन करता हे अरु जब जाग्या तिसकों सुपना जाण्या बहुरी तिसके पावणेका जतन नही करता तेसें जब आत्मबोध इसकों हूआ तब फेर इस जगतविषे जगत बुद्धि नही रहती अज्ञानही जगतभमका कारण हे तिस अज्ञानके निवृत्तिका उपाय यही हे ॥ जो इस महारामायणका विचार करणा ॥ तिस क रि संसार भम निवृत्त होवेगा ॥ यह संसार अविद्याकरि वासना मात्र हे ॥ इसकों सत्य जाणिकरि जो इसकी उर धावते हे सो परमार्थतें शून्य हे अरु मूढ हे कीट हे अरु बानरकि न्यां इ चंचल हे ॥ जिनकों भोगविषे सदा इछा रहती हे सो नीच पशु हे तिसकों संसार निवृत्त होणा कठिन हे ॥ तृष्णा अंतर सदा रहती हे वैरागकों नही प्राप्त होते ॥ हे रामजी भोग तो ज्ञानवानभी भोगते हे परंतु भोग बुधिकरि नही भोगते ॥ प्रवाह पतित जो कछू प्रारब्ध वेग करिकें आनि प्राप्त होता हे तिसकों भोगते हे अरु जाणते हे जो गुणविषे गुण वर्तते हे ॥ अ रु इंद्रियां सहित भोगकों भांतिमात्र जाणते हे ॥ अरु जो अज्ञानी हे सो आसक्त होकरि भागते अरु तृष्णा करते हे भोगकि तृष्णा करि अंतर जलता हे इसीका नाम बंधन हे ॥ अरु भोग दुःखरूप हे जो इनकों सेवते हे सो अंतरतें सदा तृष्णाकरि जलते हे ॥ तिनका द्वैतरूप जगत भम कदाचित नही मिटता अरु जो ज्ञानवान हे सो सदा आत्माकरि तृप्त रहते हे ॥ तातें सांतरूप हे जेसें हिमालयपर्वतविषे पदार्थ सीतल होजाताहे तेसें आत्मज्ञानकरि अंतर सीतल होजाता हे ॥ अरु आत्मानंदकी प्राप्ति होती हे दुःख कोउ नही रहता अरु जिनका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चित्त सदा स्त्री पुत्र धनविषे आसक्त हे अरु इछा करते हे सो महामूर्ख हे अरु नीच हे तिनकों धिक्कार हे जिसकों आत्मपदकी इछा होवे तिसकों सदा संतहूंका संग करना चहियें तिस शास्त्रोंका श्रवण विचार करे इस अभ्यासकरि आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी ॥ हे रामचंद्र यह शास्त्र विचार कियेतें परम पदकों प्राप्त करनेहारा हे ॥ जो पुरुष इस शास्त्रकों त्यागकरि अवरकि उर लागते हे सो मूर्ख हे ॥ ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे राजन् जब इस प्रकार वसिष्टजीनें कहा तब सायंकालका समा हूआ सर्व श्रोता परसपर नमस्कार करि गये बहुरी सूर्यकि किरण उदेकरि आनि स्थित भये ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे अंतरोपाख्यान वर्णन समाप्तिनाम द्विशताधिकपंचमःसर्गः ॥ ॥ २०५ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी तुझकों अंतरोपाख्यान श्रवन कराया हे ॥ तिसके विचारतें जगत भ्रम नष्ट होजावेगा ॥ एसें जब तुं विचार करि देखेगा तब अनंत ब्रह्मांड आत्माविषे वसते दृष्ट आवेंगे ॥ हे रामजी आत्माविषे जगत कछू वास्तव नही हूआ तातें मिढणाभी नही ॥ चित्तके फुरणेकरि भासता हे जब चित्तका फुरणा अधिष्टान विषे लीन होजावेगा तब अद्वैत तत्व आत्माहि भासेगा ॥ हे रामजी अद्वैत तत्वविषे जगत भ्रमकरि भासता हे ॥ ज्ञानवानकि दृष्टिविषे सदा अद्वैत भासता हे जगतभी सब चिदाकाशरूप हे मेंभी चिदाकास हों तुंभी चिदाकास हे आत्मातें इतर कछू नही आत्मसत्ताही जगत होकरि भासती हे जेसें अपणा अनुभव सुपनविषे सुपन सृष्टि हो भासती हे सो अनुभवरूपही हे तेसें यह जगतभी चिदाकासरूप हे जो नाना प्रकारके विकारभि दृष्ट आवते हे तोभी आत्मसत्ता अनुस्यूत अखंडरूप हे आत्मसत्ता अरु जगतविषे भेद कछू नही ॥ जेसें स्वर्न अरु भूषणविषे भेद कछू नही तेसें ब्रह्म अरु जगतविषे भेद कछू नही ॥ ब्रह्मही चैतनता करकें जगतरूप हो भासताहे ॥ जेसें सुपनेविषे अपणेही अनुभवतें वृथा हो भासते हे सो इतर कछू हूए नही अनुभवतें ॥ जेसें समुद्र अरु तरंगविषे भेद कछू नही तेसें ब्रह्म अरु जगत अरु अनुभव तीनोंविषे भेद कछू नही असम्यक दृष्टि करि भेद भासता हे सम्यकदृष्टी करि भेद कोउ नही ॥ हे रामजी आत्मसत्ताविषे प्रथम आभास फुर्या हे सो ब्रह्मारूप होकरि स्थित भयाहे ॥ सो ब्रह्मा चिदाकासरूपहे ॥ सोई ब्रह्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे उसी ब्रह्मसत्ता अपणे भावकों नही त्याग्या अरु ब्रह्मारूप होकरि स्थित भइहे बहुरी तिसनें जगत रचाहे सो जगतभी आकासरूप हे ॥ वास्तवतें न जगत उपजा हें न ब्रह्मा उपजाहे न सुपना हुआहे परमार्थ सत्ता सदा अपणें आपविषे स्थित हे सो शुद्ध अनंत अविनासी हे अचेत चिन्मात्र हे अरु जगतभी उही स्वरूपहे ॥ हे रामजी में चिदाकासरूप हों न मेरे साथ कोउ आकार हे न में कदाचित उपजा हों न में कदाचित मृतक होताहों ॥ नित शुद्ध अजर अमर सदा अपणें सुभावविषे स्थित हों ॥ अनेक विकारविषेभी एकरसहों ॥ जेसें सुपने विषे बडे क्षोभ होते हे तोभी जाग्रत वपुकों स्पर्श नही करते काहेतें जो उसविषे कछू हूए नही आभासमात्र हे तेसें जगतकी उत्पत्ति प्रलयादिक क्षोभविषे आत्मसत्ताकों स्पर्श नही ॥ अर्थ यह जो क्षोभतें रहित सदा अनुभवरूपहे ॥ जिस पुरुषनें अेसें अनुभवकों नही पिछाना जो सभ कछू जिसकरि सिद्ध होताहे अरु तिसकों छुपाया हे सो महा मूर्खहे उह आत्महत्याराहे ॥ उह महा आपदाके समुद्रविषे डूबेगा ॥ अरु जिसकों अपणें स्वरूपविषे अहंप्रत्यय हूइ हे तिसकों मानसी दुःख कदाचित नही स्पर्श करता ॥ जेसें पर्वतकों चूहा नही चूरन कर सकता तेसें उसकों दुःख नही स्पर्श करता ॥अरु जिसकों आत्माविषें अहंप्रत्यय नही तिसकों सांति प्राप्त नही होती ॥ जेसें वायु विरोले विषे तृण उडा हूआ स्थिर नही होता ॥ तेसें देह अभिमानी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कों सांति कदाचित नही प्राप्त होती ॥ अपणे सुध स्वरूपकों त्यागकरि देह साथ आपकों मिल्या हूआ जाणताहे ॥ सो क्या करताहे जेसें कोउ चिंतामणीकों त्यागी करी राखकों अंगी कार करे ॥ तेसें सुद्ध चिन्मात्र अपणें स्वरूपकों त्याग करि देहविषे आत्म अभिमान करताहे ॥ हे रामजी जब यह पुरुष अनात्मविषे आत्मअभिमान करताहे तब आपकों विकारवान जाणताहे अरु जनमता मरता आपकों मानताहे ॥ अरु जब देह अभिमानकों त्याग करि आत्माकों आत्मा मानताहे तब न जनमताहे न मर्ताहे न शस्त्रकरि काटताहे न अग्नि करि दग्ध होताहे न जलकरि डूबताहे न पवनकरि सूकता हे निराकार अविनासी चिदाकासरूप हें ॥ हे रामजी जब चैतनकोंभी मृत्यु होवे तब पिताके मरे पुत्रभी मरि जावे एकके मरे सभ जगत मरि जावे ॥ काहेतें जो आत्मसत्ता चैतन एकहे अनुस्यूत हे ॥ सो एकके मरे सभ नही मरते तातें चैतन आत्माकों मृत्यु कदाचित् नही सरीरके काटेतें आत्मा कटता नही ॥ सरीर के दग्ध हूए आत्मा दग्ध होतानही ॥ संपूर्न विश्व भस्म हो जावे तोभी आत्मा भस्म नही होता ॥ आत्मा नित्य सुद्ध अनंत अच्युतरूप हें कदाचित स्वरूपतें अन्यथा भावकों नही प्राप्त भया हे रामजी में ब्रह्म हों अहंरूप हों ॥ अर्थ यह जो सभविषे अहंरूप निराकार अंड में हों ॥ न मुजकों जन्महे न मृत्युहे सुखकि इछा नही न कछू हर्ष हे न सोकहे न जीवणेकी इछा हे न मरणेकि इछाहे ॥ जेसें जेवरी विषे सर्प कल्पतेहे, जेसें स्वर्नविषे भूषण कल्पतहे तेसें आत्माविषे वसिष्ट नामरूपहे ॥ देस काल वस्तुके प्रछेदतें रहित अनंत आत्मा हों ॥ नित सुद्ध बोधरूप हों सर्वका स्वरूप आत्मतत्व हे परंतु वास्तवस्वरूपके प्रमाद कर्के अवर अवस्तुकों प्राप्त हूएकी न्यांई भासताहे अरु जो पुरुष स्वरूपविषे स्थित नही हूए संसार मार्गकी उर दृढ भएहे तिनका जीणा वृथाहे कहणा चेतन्यहे नही तो पाषाणकी सिलावत्हे ॥ जेसें लुहारकी षलकातें पवन निकसताहे तेसें उनका जीवना वृथाहे घटीजंत्रकी न्यांई वासना विषे भटकतेहे ॥ आत्मानंदकों नहि प्राप्त होते सदा तपते रहतेहें ॥ अरु जिनकों आत्मपदविषे स्थिति भईहे तिनकों दुःख कदाचित नही स्पर्श करता जब प्रलय कालका पवन चले अरु पुहकर मेघकी वर्षा होवे बडवाग्नि लागे अरु द्वादस सूर्य तपे ॥ तो ऐसें क्षोभविषेभी चलायमान नही होता ॥ काहेतें जो सर्व ब्रह्मस्वरूप जानताहे ॥ जेसें तृणकरि पर्वत चलायमान नही होता ॥ काहे तें जो सर्व ब्रह्मस्वरूप जानता हे ॥ जेसें तृण करि पर्वत चलायमान नही होता ॥ तेसें उह बडे दुःख करिभी चलायमान नही होता ॥ दुःख तब होता हे जब आत्मा तें इतर कछू भासता हे ॥ सो उसकों आत्मातें इतर कछू नही भासता हे रामजी यह सभ जगत आत्म अनुभव रूप हें ॥ काहेतें जो परमात्माका स्वरूप हे ॥ सुपनेविषे अनुभवतें इतर कछू वस्तु नही होती इसी कारनतें सभ जगत अनुभवरूप हे अरु जो इतर भासता हे सो भ्रांतिमात्र हे ॥ यह जगत जो नाना प्रकारका भासता हे सो आत्माविषे अव्यक्तरूप हे ॥ भ्रमकरिकें प्रगट भासता हे ॥ जेसें आकासविषे नीलता भ्रमकरि सिद्ध हे तेसें आत्माविषे जगत भ्रमकरि सिद्ध हें ॥ वास्तव ब्रह्मतें इतर कछू नही आत्मसत्ताहि जगतरूप होकरि भासती हे ॥ तिसविषे जेसा जेसा निश्चय होता हे तेसाहि अधिष्टानरूप भासता हे अरु जिनके कारण करिकें सृष्टिका अधिष्टान दृढ हो रहाहे तिनको तेसाहि भासता हे ॥ जिनकों परमाणुतें सृष्टि उत्पत्ति निश्चय भइहे तिनकों तेसेंहि सत्य भासती हे ॥ माध्यमिक सत असतके मध्य वस्तुकों मांनतें हे ॥ एक मलेछहे चारवाकी सो चारों तत्वतें सृष्टिकी उत्पत्ति मानते हे बौध कहते हे जो कछू वस्तु हे सो बोधहे इसके अभाव हुए शून्यहि रहती हे॥ एक अनेक ब्राह्मण हस्ती गौ स्वान घोडा सूर्यादिक विषे भिन भिन प्रतीत हो रहीहे जो ज्ञानवा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न ब्राह्मण हे सो सर्वविषे एक ब्रह्मसत्ता अनुस्युत देखते हे ॥ हे रामजी वस्तु तो एक हे तिसविषे जेसा निश्चय जिसकों भया हे तेसाहि भासता हे ॥ जेसें चिंतामणी अरु कल्पतरुविषे जेसी भावना करते हे तेसी सिध होती हे ॥ तेसें आत्मसत्ताविषे जेसी भावना करती हे तेसा रूप हो भासता हे ॥ हे रामजी बुद्धिवान करि निर्ने कीया हे जो सारभूत आत्मसत्ता हे जब तिसविषे दृढ अभ्यास करेगा तब आत्मसत्ताहि भासेगी ॥ तिस निश्चय करी चलायमान न होवेगा ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन बुधिवान कवन हे जगतविषे पातालविषे कवन हे भूतलविषे कवन हे स्वर्गविषे कवन हे जिनके पूर्व अपरके विचार करि परावरका साक्षात्कार हुआ हे अरु आत्मस्वरूपका केसा निश्चय करते हे ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी जेता कछू जगत हे सो इंद्रियांके विषयकी तृष्णाकरी जलते हे ॥ इष्टकी प्राप्तिविषे हर्ष करते हें अनिष्टकी प्राप्तिविषे सोक करते हे एसा कोइ हे जो जगतविषे सूर्यकी न्यांइ प्रकासता हे नही तो सभ तृणवत् भोगरूपी वायु विषे भटकते हे ॥ जो सभतें श्रेष्ट कहातहे सोभी विषयरूपी अग्नीविषे जलते हे ॥ जेसें कृम अरु सुभस्थान विषे रहते हे अरु तिनकरि आपकों प्रसंन मानते हे ॥ तेसें देवताभी सदा भोगरूपी अपवित्र स्थानविषे आपकों प्रसंन मानते हे ॥ सो मेरे मतविषे दुर्गंधके कृमि हे ॥ अरु गंधर्व तो मुढ हे तिनकों तो कछू सुध नही ॥ अर्थ यह जो आत्मपदकी गंधभी नही उह तो मेरे मतविषेम्रग हे ॥ जेसें म्रगकों राग करी आनंद भासता हे तेसें गंधर्व राग करी उन्मत रहते हे ॥ आत्मपदतें विमुख हे अरु विद्याधरभी मूर्ख हे काहेतें जो वेदके अर्थरूपी चतुराइकों अग्निविषे जलातेहे अरु वेदका सारभूत अम्रत हे तिसकों नही जानते आत्मपदतें विमुख हे अरु सिद्ध हे सो मेरे मतविषे पंछी हे जो पंछीकी न्यांइ उडते फिरते हे ॥ अभिमानरूपी पवनके चलणे करी अनात्मरूपी गरतविषे आणि पडते हे ॥ वास्तवस्वरूपविषे स्थित होतें नही ॥अरु जक्ष धनके अभिमान करी च तुराइ मूर्खकी प्रीति करीकें जलते हे आत्मपदविषे स्थित नही पावते ॥ जोगणीभी मद करीकें सदा उन्मत्त रहती हे आत्मपदविषे स्थित नहीं पावतीयां॥अरु दैतकोंभी सदा देवताके मारणेकी इछा रहती हे सदा शोकमें रहते हे आत्मपदते विमुख हे तुंम तो आगेभी जाणते हो आगेभी मारे हे अरु अबभी मारोगे ॥ अरु मानुषभी आत्मपदतें गीरे हुए हे इनकोंभी सदा इछा रहती हे जो महबणाइए अरु खाणे अरु धन संचनेके निमित्त जगत करते हे इंद्रियांके अर्थविषे डुबे हुऐ हे ॥ अरु पातालविषे भाग रहते हे जिनका जलविषे निवास हे ॥ सुंदर नागनीविषे आशक्त रहते हे॥सोभी आत्मानंदतें गिरे हुए हे इत्यादिक जो भूत प्राणी हे सो विषय सुखविषे लागे हुए हे आत्म पदतें विमुख हे अरु सब जातविषे विरले जिवन्मुक्त भी हे ॥ अरु ज्ञानवानभी हे सो श्रवण करू ॥ देवताविषे ब्रह्मा विष्णु रुद्र सदा आत्मानंदविषे मग्न हे ॥ चंद्रमा सूर्य अग्नि वायु इंद्र धर्मराज वरुण कुबेर बृहस्पति शुक्र नारद कचतें आदि लेकरी जिवन्मुक्त पुरुष हे सप्त ऋषि अरु दक्ष प्रजापतितें आदिलेकरी जीवनमुक्त हे ॥ सनक सनंद सनत्कुमार सनातन चारों जीवनमुक्त हे ॥ अवरभी मुक्त बहुत हे ॥ सिद्धविषे कपिलमुनी आदिक जिवनमुक्त हे जक्षविषे विद्याधरविषे जोगणीविषे जीवनमुक्त हे ॥ अरु दैतविषे हिरण्यकशिपु प्रल्हाद बल बिभीछन इंद्रजीत स्वरभेय चित्रासुर नमुचि आदिक जीवनमुक्त हे ॥ मनुषविषे राजऋषी ब्रह्मऋषी नागविषे शेष नाग वासुकी नाग आदिक जिवनमुक्त हे ब्रह्मलोक विष्णुलोक शिवलोकविषे कोइ कोइ विरले जिवनमुक्तहे॥हे रामजी जात जातविषें संक्षपतें तुजकों जिवनमुक्त हुए हे सो कहे हे ॥ अरु जहां जहां देखता हे तहांतहां अज्ञानी बहुत हे ॥ ज्ञानवान कोउ विरला दृष्ट आता हे॥जेसें जहां तहां अवर दक्ष बहुत हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परंतु कल्पवृक्ष कोउ विरला होता हे ॥ तैसें संसारविषे अज्ञानी बहुत दृष्ट आते हे ज्ञानी कोउ विरला ह ॥ हे रामजी सूरमा अवर कोउ नही जिनकों आत्मपदविषे स्थित भइ हे सोइ सुरमे हैं अरु संसार समुद्र तरणा तिनहीकों सुगम हे ॥ ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे मुक्त संज्ञावर्णनं नाम द्विशताधिक षष्ठःसर्गः ॥ ॥ २०६ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी जो विवेकी पुरुष विरक्तचित्तहे जिनकों स्वरूपविषे स्थिति भइहे तिनकों एते विकार सुभाविक नष्ट होजातेहे ॥ राग दोष काम क्रोध मोह अभिमान दंभ आदिक विकार सुभाविक नष्ट होजातेहे ॥ जेसें सूर्यके उदे हूए अंधकार सुभाविक निवर्त होजाताहे जेसें बाणकों देखिकरि कउआ भाज जाताहे ॥ तेसें विवेकरूपी बाणकों देखिकरि विकाररूपी कउए भाज जातेहे ॥ अरु एते गुण उनके रिदेविषे सुभाविक आनि स्थित होतेहे उह पुरुष किसी पर क्रोध नही करते अरु जो करते दृष्ट आतेहे सो किसी निमित्तमात्र जानना उनके रिदेविषे कछू नही सदा सीतलता अरु दया उनके रिदेविषे रहतीहे ॥ जो कोउ उनके निकट आताहे सोभी सीतल होजाताहे ॥ काहेतें जो निरावरणस्थित हे ॥ जेसें चंद्रमाके निकट आयेतें सीतल होताहे तेसें ज्ञानवानके निकट आएतें रिदा सीतल होताहे ॥ कोउ पुरुष उनतें उद्वेगवान नही होता अरु जो कोउ निकट आवताहे तिसकों विश्राम के निमित्त स्थान देतेहे अरु उसका अर्थभी पूर्न करतेहे ॥ जेसें कमलके निकट भंवरा जाताहे तिसकों विश्रामका स्थान देतेहे ॥ अरु सुगंधकरि तिसका अर्थ पूर्न करतेहे ॥ तेसें संतजन अर्थ पूर्न कर्तेहे अरु यथाशास्त्र चेष्टा कर्त्तेहे ॥ अरु हेयोपादेयकी विधिकोंभी जाणतेहे ॥ जो कछू सुभाविक आनि प्राप्त होवे तिसकों शास्त्रकी विधि सहित अंगीकारभी करतेहे ॥ अरु रिदेविषे सबकी भावनातें रहित हे अरु दान स्नान आदिक सुभक्रिया तिनविषे सुभाविक होतीहे अरु उदारता वैराग धीरज सम दम आदिक गुण उनविषे सुभाविक होतेहे इस लोक विषेभी सुख देणेहारेहे ॥ परलोकविषभी सुखदेणेहारे हे ॥ हे रामजी जीन पुरुषविषे एसे गुण पाईए सो संत हे संसार समुद्रके पार करणेहारे संतजन बहूत हे जेसें जहाजकों आश्रय करकें समुद्रतें पार होताहे तेसें संसार समुद्रके पार करनेंहारे संतजनहे जिनकों संतजनका आश्रय हूआहे सो तरेहे बहुरी केसेहे संतजन जो संसार समुद्रके पारका पर्वतहे जेसें समुद्रविषे बहुत जल होताहे अरु बडे तरंग उछलतेहे तिसविषे बडे मछ रहतेहे ॥ जब प्रवाह उछलताहे तब पर्वत उस प्रवाहकों रोकताहे उछलणे नही देता ॥ तेसें चित्तरूपी समुद्र हे तिसविषे इछारूपीतरंग हे ॥ राग दोषरूपी मछ रहते हे जब इछारूपी तरंगका प्रवाह उछलताहे तब संतरूपी पर्वत तिसकों रोकतेहे ॥ सो संत अपणें चित्तकोंभी रोकतेहे ॥ अरु उनके निकट कोउ जाताहे तब उसकीभी रक्षा करतेहे ॥ अरु सरीर नष्ट होणे लागे अथवा नगर नष्ट होणें लागे अथवा निकट अग्नि लागे तोभी ज्ञानवानका रिदा स्वरूपतें चलायमान नही होता उह सदा अपणें स्वरूपविषे स्थिर रहताहे ॥ जेसें भूकंप करिकें सुमेर चलायमान नही होता तेसें उही नही चलायमान होता यह जो में तुजकों सुभ गुण कहेहे स्नान दान सो जीवकों सुख देणेंहारेहे ॥ अरु दुःखकों निवृत्त करतेहे इनकरि सुखकी प्राप्ति होतीहे अरु दुःख नष्ट हो जाताहे सो श्रवनकर ॥ जब स्नानदानकी उर यह पुरुष आताहे तब संतकी संगतिविषेभी इसका चित्त लागताहें जब संतकी संगतिविषे चित्त आया तब क्रम करिकें इसकों परम पदकी प्राप्ति होतीहे ॥ तातें इस पुरुषकों यही कर्तव्यहे जो शास्त्रकरि कहाहे तिसकें अनुसार सुभ गुणविषे चेष्टा होवे अरु संतके निश्चयका अभ्यास होवे ॥ हे रामजी जिसकों संतकी संगति प्राप्त होतीहे सोभी संत हो रहताहे संतका संग वृथा नही जाता जेसें अग्नी साथ मि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ल्या पदार्थ अग्निरूप होजाताहे ॥ तेसें संतके संगकरि असंतभी संत होजाताहे ॥ अरु जो मूर्खकी संगति करताहे तव साधुभी मूर्ख होजाताहे ॥ जेसें उज्वल वस्त्र मलके संगकरी मलीन होजाताहे तेसें मूढके संगकरि साधुभी मुढ होजाताहे ॥ काहेतें जो पापके वसतें उपद्रवभी आनि होतेहे ॥ तेसें पापके वसतें साधुकोंभी दुर्जनोंकी संगति करि दुर्जनता आनि उदे होतीहे ॥ तातें हे रामजी दुर्जनोंकी संगति सर्वथा त्यागणी हे अरु संतकी संगति कर्तव्य हे जो परम हंस संत जन पाइयें तो जो साधु होवे जिसविषे एक गुणभी सुभ होवे तिस काभी अंगीकार करीए परंतु साधुके दोष न विचारीए उसका सुभ गुण अंगीकार करीए ॥ जेसें भवरा केतकीके कंटकोंकी उर नही देखताहे उसकी सुगंधका ग्रहण कर्ताहे ॥ तातें हे रामजी संसार मार्गकों त्यागकरि संतकी संगति करो तव संसार भ्रम निवृत्त होजावेगा ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे जीवन्मुक्तिव्यवहारो नाम द्विशताधिकसप्तमःसर्गः२०७

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् हमारे दोष तो सतसास्त्र अरु सतसंग अरु तिनकी जुक्ति करि दुर होतेहे ॥ अरु समान दुःख तीर्थ स्नान दान जप पूजा करि निवृत्त होते हे ॥ अरु अव र जीव जो कीट पतंग पसु पंछी आदिक हे तिनके दुःख केसें निवृत्त होवेंगे सो कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी जो वास्तव सत्ता हे तिसका नाम ब्रह्म हे ॥ अखंड हे अद्वैत हे तिसविषे कछू द्वैतका विभाग नही ॥ परंतु तिसविषे चित्त किंचन आभास फुऱ्या हे सो फुरणा नानात्व हूएकी न्यांइ स्थिन भया हे वास्तव कछू हूआ नही ॥ जेसें सुपने विषे सुपन सृष्टि भासती हे परंतु वास्तव कछू हूइ नही निद्रा दोष करिकें भासती हे ॥ तेसें जाग्रत सृष्टिभी कछू वास्तव हूइ नही अज्ञान करकें जीवकों भासती हे ॥ वास्तवतें सभ ब्रह्मरूप हे ॥ अपणे स्वरूपके प्रमाद करकें जीवत्व भावकों अंगीकार कियाहे ॥ तिस जीवत्वके अंगीकार करणे करि जेसा निश्चय कर्ता हे ॥ अनात्म देहादिक विषे आत्म अभिमान करकें तेसीही गतिकों पावते हे ॥ वहुरी देस काल क्रिया द्रव्यका संकल्प जेसा दृढ होता हे अनुभव सत्ताविषे तेसा हो भासता हे ॥ तिसविषे चार अवस्था कल्पित होतीयां हे जेसी जेसी भावना होती हे तिसके अनुसार अवस्थाका अनुभव होता हे ॥ सो अवस्था कवन कवन हे सो श्रवन कर ॥ एक घन सुषुप्ति हे ॥ दुसरी क्षीण सुषुप्ति हे ॥ तीसरी सुपन अवस्था हे चौथी जाग्रत हे अव इनके भेद सुण ॥ हे रामजी पर्वत पाषाण जो हे सो घन सुषुप्ति विषे हे ॥ जेसें सुषुप्ति अवस्थाविषे कछू फुरता नही जडीभूत हो जाता हे ॥ तेसें तिनकों फुरणा कछू नही फुरता घन सुषुप्ति विषे स्थित हे ॥ अरु दछ क्षीण सुषुप्ति विषे स्थित हे जेसें क्षीण सुषुप्ति विषे कछू फुरणा फुरता हे तेसें दक्षविषेभी फुरणा होता हे ॥ तातें क्षीण सुषुप्तिविषे अरु तिर्यक जो पंछी कीट पतंग जीव हे सो सुपन अवस्थाविषे स्थित हे जेसें सुपनेविषे पदार्थ भासता हे परंतु दृढ समष्टि नही भासता हे ॥ तेसें इनकों थोडा सूक्ष्म ज्ञान हे तातें सुपन अवस्थाविषे स्थित हे अरु मानुप देवता हे सो जाग्रतरूप जगतका अनुभव करते हे ॥ हे रामजी यह चारों अवस्था आत्माविषे स्थित हे ॥ अरु आत्मसत्ताहि विषे स्थित हे ॥ सभका अहं प्रत्ययरूप आत्मा हे ॥ वडेका क्या अरु छोटेका क्या तिसविषे जेसा संकल्प दृढ होता हे तेसाही हो भासता हे ॥ हे रामजी हमकों एक दीन वितीत होता हे ॥ अरु कीटीकों जुगका अनुभव होता हे ॥ अरु उनकें जुगविषे हमकों एक क्षणका अनुभव होता हे अरु हमकों सूक्ष्म अणु होता हे तिनकों उह पर्वतके समान भासता हे ॥ हे रामजी स्वरूप सभका एक आत्मसत्ता हे परंतु भावना करि भिन्न भासता हे अरु एक कीट हे सो वहुत सूक्ष्म हे जव उह चलता हे ॥ तव उह जाणता हे जो मेरा गरुड जेसा वेग हे ॥ उसकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उही सत हो रहाहै ॥ अरु वालखिलका अंगुष्ट प्रमाण सरीर हे तिनकों उही बडा भासता हे विराटकों उही अपणा वडा शरीर भासता हे जेसी जिसकों भावना होती हे तेसाहि तिस कों भासता हे मानुष देवता पशु पंछी सभकों अपणा भिन भिन संकल्प हे जेसा संकल्प किसीकों दृढ हो रहाहे तिसकों तेसाही स्वरूप भासता हे ॥ जेसा मनुष राग दोष भय क्रोध लोभ मोह अहंकार क्षुधा तृषा हर्ष सोक विकार करि आसक्त होता हे ॥ तेसें कीट पतंग पंछी आदिकोंभी होते हे ॥ परंतु एता भेद हे जो जेसें हमकों यह जगत स्पष्ट रूप भासता हे तेसें उनकों नही भासता संसारी सभ हे परंतु वासनाके अनुसार घट वंध भासते हे ॥ अरु दुःखका अनुभव स्थावर जंगमकोंभी होता हे जो किसी स्थानकों अग्नि लागती हे उसविषे वृछ पाषाण जलते हे तव उनकोंभी दुःख होता हे ॥ परंतु सूक्ष्म स्थुलका भेद हे जेसें अवर जीवके सस्त्र प्रहार कीएते सरीर नष्ट होणेका दुःख होता हे ॥ तेसें वृछादिककोंभी होता हे ॥ परंतु घनसुषुप्ति क्षीण सुषुप्ति सुपन जाग्रतका भेद हे ॥ पर्वत पाषणकों सूक्ष्म जेसा दुःख होता हे ॥ वृछकों पाषाणतें विशेष होता हे ॥ परंतु स्पष्ट मान अपमानका दुःख नही होता सुपनकी न्यांई होताहे ॥ अरू मनुष देवताकों स्पष्ट राग दोष जाग्रतकी न्यांइ होताहे ॥ काहेतें जो जाग्रत अवस्थाविषे स्थितहे ॥ अरु वृछ पाषाण आदिकको स्पष्ट दुःख का विकल्प नही उठता जडता सुभावविषे स्थितहे ॥ अरु दुःख कहीए तो सभकों होताहे ॥ अरु तुं अवर आश्चर्य देखजो कीट महा दुःखी रहतेहे ॥ जब मृतक होवे तब सुखी होवे अरु अज्ञान करिकें जो इस सरीरविषे आस्था हूइ हें तिसकोंभी मरणा वुरा भासताहे ॥ तो अवर जीवकों भला केसें लागे? ॥ हे रामजी अपणें स्वरूपके प्रमाद करकें भय क्रोध लोभ मोह जरा मृत्यु क्षुधा तृषा राग दोष हर्ष सोक इछादिक विकारकी अग्निकर जीव जलतेहे ॥आत्मानंदकों नही प्राप्त होते घटी यंत्रकी न्यांई वासनाके अनुसार भठकतेहे ॥ जब वासना दृढ पापकी होतीहे तव पाषाण वृछ जोनिकों पावतेहें जव क्षीण वासना तामसी होतीहे तव तिर्यक पंछी सर्प कीट जोनिकों पावतेहे ॥ हे रामजी राजसी वासना करी मनुष होतेहे ॥ सात्विकी वासना करी देवताहोतेहे अरु जव मनुष सरीर धारि करी निर्वासनीक होतेहे तव मुक्तिकों पावतेहें ॥ जब ज्ञान उत्पत्ति होतेहे तव जीवके दुःख नष्ट होजाताहे अवर दुःखके नास करणेका उपाय कोउ नही ॥ यह जगतके दुःख तवलग भासताहे जवलग इसकों आत्मज्ञान नही उपजा जब आत्मज्ञान उपजा तब जगत भ्रम मिटजाताहे ॥ अरु जो मुझतें पूछे तो वास्तव न कोउ देवताहे न मनुषहे ॥ न पसु पंछीहे न पाषाणहे न वृछहे न कीटहे सव चिदाकासरूपहे दूसरा कछू वन्या नही भ्रांतिकरिकें नानास्वरूप होभासताहे॥ सदा सर्वदा काल सर्व प्रकार आत्मसत्ता अपणें आपविषे स्थित हे॥हे रामजी न कछु जगतका होणाहे न अण होणाहे न आत्मता हे न परमात्मताहे न मौन हे न अमौन हे न शून्यहे न अशून्य हे ॥ केवल अचैत चिन्मात्र अपणें आपविषें स्थित हे ॥ तिसविषे जन्म अरु जन्मांतर भ्रमकरिकें भासतेहे ॥ जेसें रूपनेंतें सुपनांतर भ्रमकरिकें भासताहे ॥ अरु जेसें सुपनेंविषे एक अपणा आप होता हे निद्रा दोष करी द्वैत भासताहे तेसें एक अवभी आत्मा अद्वैतरूप हे ॥ अविचार करीके नानात्व भासताहे अरु दुःखभी अज्ञानकरीकें भासताहे ॥ विचार कीएते दुःख कछु नही पाइ ता जो यह पुरुष मृतक होकरि उत्पत्ति होताहे तो सांति हूइ दुःख कोउ नही अरु जो मृतकहोकरी सांत होजाताहे उपजता नही तोभी दुःख कोउ नही मुक्त हूआ अरु जो मर्ता नही तोभी ज्योंकात्यों हूआ॥ दूःख कोउ नही हूआ अरु जो सर्व चिदाकास हे तोभी दुःख कोउ न हूआ॥हे रामजी अज्ञानीके निश्चयविषे दुःख हे विचार कीएतें दुःख कोउ नही॥अरु यह जगत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मरूपी आदर्शविषे प्रतिबिंबित हे परंतु यह जगतरूपी केसा प्रतिबिंब हे जो अकारणरूपहे इसका कारणरूप बिंब कोउ नही कारणतें रहित हे जेसें नदीविषे नीलताका प्रतिबिंब पडताहे ॥ सो अकारणरूप हे॥तेसें यह जगत अकारणरूपहे ॥ अज्ञानीकों तिसविषे सत्यता हे ॥ प्रमाद दोषकरिके ज्ञानीकों द्वैत नही भासता अज्ञानीकों द्वैत भासताहे॥हे रामजी हमकों तो सदा चिदाकाशही भासता हे ॥ हम जागे हुऐ हे तातें द्वैत कछू नही भासता ॥ जेसें सूर्यकों अंधःकार नही भासता तेसें हमकों द्वैत नही भासता जो ज्ञानी हे तिसकों ब्रह्मतें इतर कछू नही भासता सर्वब्रह्मही भासता हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वान प्रकरणे परमार्थरूप वर्णनंनाम द्विशताधिकाष्टमः सर्गः ॥२०८॥ ॥ ७ ॥ श्रीरामोवाच॥ हे भगवन् जो कछू तुमने कहा हे सो में जाणता भयाहों ॥ परंतु नास्तिक वादीका कल्याणभी किसी प्रकार होता हे ॥ जो नास्तिकवादी कहते हें जवलग जीव हे तवलग सुखी जीवे जव मरी जावेगा तव भस्मीभूत होवेगा न कछु आवणा हे न कछू जाणा हे ॥ तिनको कल्यान कीस प्रकार होवेगा ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी आत्मसत्ता आकाशकी न्यांइ अखंडीत सर्वत्र पूर्ण हे ॥ जवलग तिसका भान नही होता तवलग मनकी तप्तता नष्ट नही होती जव आत्मसत्ताका भान होता हे तव शांति प्राप्त होती हे आपकों अमर जाणता हे ॥ अरु जिस पुरुषनें अखंड निश्चयकों अंगीकार कीया हे तिसकों दुःख स्पर्श नही करता उह ब्रह्मदर्शी होता हे ॥ अरु जिसकों ब्रह्मसत्ताका निश्चय नही भया तिसके मनके ताप नही छोडते स्वरूपके प्रमादकरि आपकों मरता जाणता ह ॥ अरु महा प्रलय रूप आत्माविषे सर्व शब्दका अभाव हे ॥ जेसें महाप्रलय विषे सर्व शब्दका अभाव होता हे॥ तेसें आत्माविषे सर्व सब्दका अभाव हे॥जिसकों आत्माविषे निश्चय हुआ हे तिसकों सर्व सब्दका अभाव हो जाता हे सो महा ज्ञानवान हे उसकों आत्मसत्ताही भासती हे॥ जो वास्तव हे तिसकों हमारा उपदेस नही उह ज्ञानी हे ॥ हे रामजी अत्मसत्ताविषे द्वैत जगत कछू बन्या नहीं ॥ परमार्थ सत्ता सदा अपणे आपविषे स्थित हे ॥ तिसविषे जो सृष्टि भासती सो सुपनवत अकारण हे ॥ तातें ज्ञानवान पुरुष सर्व सब्द अर्थकों नही जाणता हे ॥ अेसा पुरुष हमारे उपदेसके जोग नही काहेतें जो सर्व सास्त्रकां सिद्धांत आत्मपद हे जो तिसकों जाण्या हे तिसकों बहुरी कर्तव्य कछू नही ॥ अरु जिसकों एसी दसा नही प्राप्त भइ सो उपदेसका अधिकारी हे अरु यह जगत आत्माका किंचन हे ॥ अज्ञानीकों सत भासती हे अरु ज्ञानीके निश्चय विषे कछु नही जेसें संकल्पकरी एक वृक्ष रचा तिसके पत्र टास फुलफल उसकों भासते हे अवरके मनविषे शून्य होते हे ॥ तेसें अज्ञानीके निश्चय विषे जगत होता हे ज्ञानीके निश्चय विषे विलास हे ॥ आत्मातें इतर कछु नही ॥ हे रामजी आत्मसत्ता सर्वत्र सर्वव्यापीहे तिसविषे जेसा निश्चय फुरणा होताहे अहं प्रत्यय भावनाकी दृढतातें तेसें हो भासताहे ॥ जिस पदार्थका निरंतर दृढ अभ्यास होताहे ॥ सरीरके त्यागे हुएभी यही अभ्यासरूप धारि लेताहे ॥ अरु आत्मसत्ता ज्ञानमात्रहे केवल अद्वैत संवित सत्रका अपणा आपहे ॥ जेसें इसकों स्वरूपका ज्ञान हुआहे सो सास्त्रके दंडतें रहित होताहे अरु वेदशास्त्र जो पदार्थकों भला बुरा साच अरु जुठ वर्नन करतेहे जिस पुरुषकों तिसविषे निश्चय होताहे तिसकों वासनाके अनुसार वेद फल देतेहे ॥ अरु जिसके निश्चयविषे आत्मतें भिन सर्व शब्दका अभाव हुआहे तिसकों आत्म अनात्म विभाग कलनाभी नही रहती ॥ देह रहे अथवा न रहे ॥ हे रामजी जिसकी संवित जगतके शब्द अर्थविषे बंधी हुइहे ॥ तिसकों पदार्थविषे राग दोष उपजताहे जेसें सुषप्तिविषे आत्मसत्ता हे अरु अभावकी न्यांइ स्थितहे ॥ तेसें नास्तिकवादीभी अपनें जडस्वरूपकों दे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खतेहे ॥ काहेतें जो तिनकों जड शून्यताका अभ्यासहे तिसकरी उनकी संपत्ति द्रश्य सुख साथ बेधी हूइहे ॥ इस करी तिनका जगत भम नही मिटता उस मलीन वासना साथ जो संवित मिलीहे ॥ इस करी उनकों जड पथररूप प्राप्तिहोतेहें ॥ तिस जडताकों भोगीकरी वासनाके अनुसार बहुरी प्रणमेंगें अरु सुख दुःखकों भोगेंगें ॥ उस भावनाकरि कलुक जगत भान शून्य होजाताहे ॥ केतेक काल पीछें चैतन होकरी बहुरी उनही कर्मकों भोगतेहे ॥ जेसें सूर्यके आगें बदल आवे बहुरी निवृत्त होवे तेसें जगत होताहे अरु फुरणारूप जो जीव हे जेसा तिसविषे निश्चय होताहे तेसाही भासताहे ॥ जिसकों एक आत्माविषे निश्चय होताहे सो जन्म मृत्यु आदिक विकारतें रहित होताहे ॥ अरु जिसकों नानास्वरूप जगतविषे निश्चय होताहे सो जन्म मरनतें नही छुटता ॥ हे रामजी जिस बुद्धिविषे पदार्थका रंग चडताहे सो राग दोषरूप नर्कतें मुक्तनही होता अरु जिसकों एक आत्माका अभ्यास होता हे तिसके अभ्यासके बलतें सभ जगत आत्मत्वकरि भासताहे ॥ अरु राग दोषतें मुक्त होताहे जेसें सुपनेविषे किसकों अपणा जाग्रत स्वरूप स्मरन आताहे तब सर्व सुपनका जगत तिसकों अपणा आप भासता हे तेसें जिसकों अत्मज्ञान होताहे तिसकों सर्व जगत अपणा आप भासताहे सर्वदा काल आत्मसत्ता अनुभवरूप जाग्रत जोत हे जिसकों अैसें आत्मसत्ताविषे नास्तिभावना होतीहे ॥ सो अेसी अवस्थाकों प्राप्त होताहे गरतविषे कीट होताहे पाषाण दृढ पर्वत आदिक स्थावर जोनीकों प्राप्त होताहे चिरकाल पर्यंत तिनविषे रहताहे ॥ जबलग उस की बुद्धिकों द्वैतका संजोग होताहे तबलग जगत भमकों देखताहे अरु भम नही मिटता जब उसकी संवितकों द्वैतका संजोग मिटि जावे तब जगत भम निवृत्त होजाताहे ॥ हे रामजी सम्यक ज्ञानकरी जगत भमका अभाव हो जावेगा अभावका निश्चय फुरे तब बहुरी जगत नही भासता अरु जब संसारके पदार्थ करि संवित बेधी हूइहे तब जेसा निश्चय होवेगा तेसाही प्राप्त होताहे ॥ तिस निश्चयके अनुसार गतिकों पावेगा ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन नास्तिकवादीका वृत्तांत तुमनें कहा सो में जाण्या ॥ अरु जिस पुरुषके रिदेविषे जगतकी सत्यता स्थितहे ॥ अरु आत्मबोधके मार्गतें शून्य हे शुद्ध स्वरूपकों नही जाणता तिसका अज्ञान हे ॥ तिसके मोक्षकी जुक्ती अरु तिसकी अवस्था क्या होतीहे मेरे द्रढ बोध निमित्त कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इसका उत्तर तो में प्रथमही तुझकों कहाहे ॥ अब फेर तुजनें जो पुछाहे तातें बहुरी कहताहों प्रथम तो पुरुषका अर्थ सुण जो पुरुष कीसकों कहतेहे ॥ हे रामजी यह जगत नेत्रविषे स्थित नही न श्रवण विषेहे ॥ न नासिका आदि इंद्रिय विषे स्थित हे चैतन संवितविषे स्थित हे जगत सो चैतन संवितहि पुरुष रूप हे ॥ जिस पुरुषकों तिसविषे निश्चय हे सो ज्ञानवान हे ॥ तिसकों द्वैत कलना नही फुरती जो प्रत्यक्ष दृष्टभी आवती हे परंतु उसके निश्चयविषे नही होतीहे जेसें आकासविषे धूडभी दृष्ट आवतीहे परंतु स्पर्श नही करती तेसें ज्ञानवानकों द्वैतकलना स्पर्श नही करती ॥ अरु जिस चैतन संवित साथ फुरणेका संबंधहे तिसकों जगतका आकार भासता हे ॥ अरु जिस पुरुषकी संवितविषे देस कला क्रिया द्रव्यका संबंध हे सो कलंक दृढ हो रहा हे अरु अपणे वास्तव अद्वैत स्वरूपके अभ्यास करी मार्जन नही करता सो वास्तव चैतन आकाशरूपभी हे तोभी कलंक करी वासनाके अनुसार जगत तिसकों आपतें भिन्न भासता हे द्वैत भम नही मिटता ॥ हे रामजी जो पुरुष अेसाभी हे जो देहके इष्ट अनिष्ट प्राप्तविषे सम रहता हे ॥ अरु आत्मसत्ता ज्योंकी त्यों नही भासती तो अज्ञानीहे ॥ आत्मसत्ता जाणेबिना संसार तिसका निवृत्त नही होता ॥ जब आत्मसत्ताका साक्षात्कार होवेगा तब सब भम निवृत्त हो जावेगा ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे रामजी यह पुरुष न जीव हे न फुरणा हे न शरीरके नाश होणे नाश होता हे यह पुरुष केवल चिन्मात्र स्वरूपहे अरु वासना करी भ्रमकों देखता हे अरु जो शून्य वादी हे सो वृच्छ पर्वत जडादिक जोनि कों पावते हे ॥ जो सदा अनुभव तिसकों त्यागी करी अवर कछु इष्ट जानते हे सो मुर्ख हे तिनकों आत्म सुख नही प्राप्त होता आत्माके प्रमाद करी अहंत्वं अंतर बाहिर आदिक शब्द भासते हे ॥ अरु जब आत्मज्ञान हुवा तब सर्व शब्द आत्मरूप होजाता हे ॥ अरु जिन पुरुषनें आत्मअनात्मको निरणेकरी नही देख्या सो पुरुषविषे निच हे अरु जिस पुरुषनें निरणे करीकें आत्माविषे अहंप्रतीति करी हे अनात्मका त्याग कीया हे सो महा पुरुष हे तिसकों मेरा नमस्कार हे अरु जिसनें अनात्माविषे अहं प्रतीति करी हे आत्माकों त्याग करी सो बालक हे जेसें आकासविषे बदलके चक्र हस्ति घोडे आकार भासता हे॥ जेसें समुद्रविषे तरंग भासते हे तेसें आत्मविषे जगत भासता हे सो द्वैत कछू नही॥ जेसें सुपनके नगर अपणे अपणे अनुभवविषे स्थित होते हे अरु बाहिर द्वैतकी न्यांइ भासते हें सो आभास मात्र हे ॥ तेसें आत्माविषे जगत भासता हे सो आभास मात्र हे वास्तव कछू नही जिसकों आत्मसत्ताका अनुभव हुआ हे तिसकों जगतकें शब्द अर्थ रागदोष किसीकी कल्पना नहीं रहती पुन्य पाप फल तिसकों स्पर्श कछू नही कर्ता॥ हे रामजी ज्ञान संवितका नाश कदाचित नही होता ॥ तातें विस्वभी अनुभव रूप हे ॥ इस जगतका निमित्त कारण अरु समवाय कारन कोउ नही ॥ काहेतें जो अद्वैत हे ॥ अरु जो तुं कहे प्रत्यक्ष घटादिक समवाय अरु निमित्त कारन उपजते दिखाते हे ॥ तो जेसें सुपने विषे कारनकार्य अनहोते भासतेहे तेसे यहभी जाण ॥ प्रथम सुपनेविषे बने हुए दृष्ट आतेहे पाछें कारणकरो होते दृष्टी आतेहे तेसें यहभी जाण केवल भ्रममात्र हे ॥ जेसें सुपन सृष्टिका जागे हुएतें अभाव होताहे तेसें ज्ञानकरि इसका अभाव होजाताहे यह दीर्घकालका सुपना हे तातें जागृत कहाताहे ॥ जेसें सुपनेकीसृष्टि अपणा आप होतीहे निद्रा दोष करिकें भिन भासतीहे ॥ तेसें यह जगत अपणा आपहे परंतु अज्ञान करीकें भिन भासताहे ज्ञान जागृततें सब अपणा आप भासताहे तिसविषे राग दोषका अभावहोजाताहे ॥ जेसें चंद्रमा अरु चंद्रमाकी चांदनीविषे भेद कछु नही ॥ तेसें आत्मा अरु जगतविषे भेद कछु नही ॥ आत्माही जगतरूप हो भासताहे हे रामजी तुं अपणे अनुभवविषे स्थित हो करि देख जो सर्व ब्रह्मरूप है जगतका कछू नही भासता सर्वात्मरूप हे अरु साध्य हे ॥ जेसें शरत्कालका आकास सुद्ध होता हे तेसें आत्मसत्ता फुरणेरूपी बदलतें परम सुद्ध सांतरूप हे ॥ तिसविषे स्थित हुएतें मान अरु मोहका अभाव हो जाता हे तृष्णा कीसी पदार्थ विषे नही रहती ॥ प्रारब्ध वेगकरी जो कछू आनि प्राप्त होता हे तिसकों भोगता हे ॥ आत्म दृष्टि करि दुःखतें रहित हुआ प्रत्यक्ष आचारकों करता हे तिसकों साख्रका दंड नही रहता परम सांतरूप विराजताहे॥ इति श्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे नास्तिक वादी निराकरणं नाम द्विशताधिक नवमःसर्गः ॥ २०९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी मैं चिदाकासरूप हों अरु दृश्य दर्शन द्रष्टा ॥ त्रिपुटि जो भासती हे सोभी चिदाकासरूप हे आत्मसत्ता ही त्रिपुटि रूप हो भासती हे दुसरी वस्तु कछु नही ॥ अरु नास्तिकवादी कहते हे जो परलोक कोउ नही अर्थ यह जो आत्मसत्ता कोउ नही सो मूर्ख हे ॥ हे रामजी जो अनुभव आत्मसत्ता न होवे तो नास्तिक किसकरी सिद्ध होवे ॥ जिसकरी नास्तिक वादभी सिद्ध होता हे सो आत्मसत्ता हे जो इष्ट अनिष्ट पदार्थ विषे राग दोष करते हे अरु आत्माकों नास कहते हे सो महामूर्ख हे जेसें जागृतके प्रमाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करकें सुपनमें इष्ट अनिष्ट विषे राग दोष करता हे इष्टकों ग्रहण करता हे अनिष्टकों त्यागता हे अरु जोगतें सर्व अपणाहि स्वरूप भासता हे ॥ ग्रहण त्याग राग दोष किसी पदार्थवि
षे नही रहता तेसें आत्माके अज्ञान करकें किसी पदार्थविषे राग करता हे किसीविषे दोष करता हे जब आत्मज्ञान होता हे तब सभ अपणाही स्वरूप भासता हे ॥ राग दोष किसीविषे
नही रहता अरु चित्तके फुरणे करी जगत उत्पत्ति होता हे चित्तके सांत हूए जगत ले हो जाता हे ॥ तातें जगत मन विषे स्थित हे सो मन आत्माके अज्ञानकरी हुआ हे ॥ जब आत्मा
ज्ञान हूआ तब मनुष देवता हस्ती नाग आदिक स्थावर जंगम जगत सभ आत्मरूप भासता हे ॥ राग दोष किसविषे नही रहता ॥ अरु नास्तिक वादी जो नास्ति कहते हे सो नास्तिका
साक्षी सिद्ध होता हे ॥ जिसकरी नास्तिभी सिद्ध होता हे ॥ सो अस्ति आत्मपद हे तिस अस्ति अनुभवके एते नाम सास्त्रकार कहते हे सत, आत्मा, विष्णु, सिव, चिदाकास, ब्रह्म, अहं ब्रह्म,
अस्मि कहते हे ॥ एक कहते हे शून्य ही रहता हे एक कहते हे अस्तिपद रहता हे ॥ हे रामजी यह सर्व संज्ञा आत्मसत्ताकी हे सो आत्मसत्ता अपणाही आप स्वरूप हे सो में आत्मा
हों यह अंग जो मेरे साथ द्रष्ट आते हे ॥ इनकों द्रष्ट पदार्थ साथ लेपन करीए अथवा चूरन करीए तो मुझकों हर्ष सोक कछु नही इनके बढणे करि में बढता नही ॥ इनके नष्ट हुए
में नष्ट नही होता ॥ हे रामजी तीन शब्द होते हे जो में जनम्या हों अरु जीवता हों अरु मरोंगा ॥ जो प्रथम न होवे अरु उपजे तिसकों जनम कहते हे मध्यविषे जीवता कहते हे बहु
री नास होवे तिसकों मृतक कहतेहे ॥ सो आत्माविषे तिनों विकार नही आत्मा उपजाभी नही काहेतें जो आदीही सिद्ध हे ॥ अरु मृतकभी नही होता काहेतें जो अविनासी हे चैतन आ
कास सभका अधिष्ठान हे कालकाभी अधिष्ठान हे बहुरी तीसका नास केसें होवे अर्थ यह जो उदे अस्तते रहित हे ॥ जिसविषे देस काल वस्तु जगतका किंचन होता हे तिसकरी आ
त्मा नास केसें होवे ? ॥ तातें आत्मा अविनासी हे ॥ हे रामजी जिस वस्तुकों देस कालका प्रछेद होता हे तिसका नासभी होता हे सो देस काल वस्तु तीनों आत्माविषे कल्पित हे ॥
जेसें सूर्यकी किरण विषे जल कल्पित होताहे ॥ तेसें आत्माविषे तिनों कल्पित हे कल्पित वस्तु साथ सत्यका अभाव केसें होवे तातें आत्मा अविनासी हे अरु अद्वैत हे ॥ तिसविषे दुसरी
वस्तु कछु नही ॥ जेसें शून्य स्थानविषे वैताल कल्पित होता हे ॥ तेसें आत्माविषे जगत कल्पित हे ॥ तिस अभावरूप जगत विषे प्रमाद करकें एककों अभाव जाणता हे एककों सद
भाव जाणता हे ॥ जब इस निश्चेकों त्यागकरी अंतर मोक्ष होवे तब इसकों सांति प्राप्त होवेगी ॥ अरु विचार करकें देखीयें तो इस संसारविषे दुःख कछु नही जो मरिकें बहुरी जन्म ले
ताहे तोभी दुःख कछु न हुआ काहेतें जो शरीर वृद्धि भावकों प्राप्त हो करी क्षीण भया ॥ तब तिसकों त्याग करी नौतनकों ग्रहण किया तो उत्साह हुआ जो मृतक हो करी बहुरी नही
उपजता तोभी आनंद हुआ काहेतें जबलग जीवताथा तबलग इसकों ताप था कीसका भाव जाणताथा ॥ किसकों ग्रहण करताथा किसिकों त्याग करता था तिन
करी तपताथा ॥ जब तिनतें छूटा तब बडा आनंद हुआ अरु जो सर्व चिदाकासरूप हे तोभी अपणा आप आनंदरूप हे दुःख कछु न हुआ ॥ हे रामजी एक प्रमाद करी दुःख
होताहे ॥ अवर किसि प्रकार दुःख नही होता यह जगत सब आत्मरूप हे जो आत्मारूप हुआ तो दुःख केसें होवे ॥ अरु जो तुं कहे में अपणे कर्मतें डरता हों परलोकविषे मुझकों भ
यका कारण होवेगा ॥ अेसें जाण जो बुरे कर्मका दुःख इहांभी होताहे ॥ अरु परलोकविषेभी होवेगा तातें बुरे कर्म मत करु ॥ में तुझकों अेसा उपाव कहता हों ॥ जिस करी सर्व दुः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ख तेरे नष्ट हो जाव सो उपाय इह जो कछु में नही ॥ अथवा अेसें जाण जो सर्व मेंही हों ॥ सर्व वासना त्यागी करी आपकों अविनासी जाण अरु आत्मसत्ताविषे स्थित हो
छु ॥ इस जगतभी सब तेरा स्वरूप हे ॥ जब अेसें आत्माकों जाणेगा तब शरीरके त्याग कियेतेंभी दुःख कोऊ न रहेगा ॥ अरु शरीरके होतेभी दुःख कछुं नही ॥ जब पूर्व शरीरकों त्या
ग करी नौतन जन्म लीया ॥ तबभी आनंद छुआ परम सांति प्राप्त भइ ॥ अरु जो चिदाकासरूप हे तोभी परम आनंद छुआ ॥ हे रामजी सर्व प्रकार आनंद हे परंतु भ्रांति करकै दुःख
भासताहे ॥ जब स्वरूपका साक्षात्कार होवेगा तब सर्व जगत ब्रह्मानंद स्वरूप भासेगा ॥ हे रामजी जिसकों आत्मसत्ताका प्रकास हे ॥ सो पुरुष सदा आनंदविषे मग्न रहताहे ॥ अरु प्र
कृत आचारकोंभी करताहे ॥ परंतु इष्ट अनिष्टकी प्राप्तिविषे स्वरूपतें चलायमान कदाचित नही होता ॥ जेसें सुमेरु पर्वत वायु करी चलायमान नही होता तेसा ज्ञानी इष्ट अनिष्टविषे
चलायमान नही होता ॥ परम गंभीरताविषे रहताहे हे ॥ तातें जो कछु आत्मातें इतर उत्थान होताहे तिसकों त्याग करी अपणे स्वभावविषे स्थित होछु ॥ जो चिन्मात्र सत्ता सरतकालके
आकासवत निर्मल हे ॥ जब अेसें स्वछ केवल चिन्मात्रका अनुभव होवेगा तब जगत द्वैत रूप हो करी न भासेगा ॥ व्यवहारविषेभी द्वैत न फूरेगा ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण
प्रकरणे परम उपदेस वर्णनं नाम द्विशताधिकदशमः सर्गः ॥ २१० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन जिन पुरुषकों आत्मा परमात्माका साक्षात्कार
हुआहे ॥ सो केसें होजातेहे ॥ अरु केसा उनका आचार होताहे सो मेरे तांइ कहों ? ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जेसें उनकी चेष्टा अरु जेसें उनका निश्चयहे सो सुण सबके
साथ उनका मित्रभाव होताहे पाषाण साथभी मित्रभाव होताहे अरु बांधवकों अेसें जाणतेहे जेसें वनके वृछ पत्र होतेहे ॥ स्त्री पुत्रादिक साथ अेसें होतेहे जेसें बनके मृग पुत्र साथ
होतेहे जेसें उनविषे स्नेह नही होता तेसें पुत्रादिकविषेभी स्नेह नही करतें ॥ अरु जेसें माताकी पुत्रविषे दया होतीहे तेसें उह सब उपर दया करतेहे ॥ अरु निश्चयतें उदासीन रहतेहे ॥
जेसें आकास किसी साथ स्पर्स नही करता तेसें उह स्पर्श किसी साथ नही करते अरु जेती कछू आपदा हे सो उनकों परमसुखहे अरु जेते कछू जगत्विषे रसहे सो तिनकों विरस हो
जातेहे न किसीविषे राग करतेहे न किसीविषे दोष करतेहे तृष्णा करते दृष्टभी आतेहे परंतु अंतरतें जड पथरकि न्यांइ होतेहे ॥ व्यवहार करतेभी हे परंतु निश्चयतें परम शून्य मौन
होतेहे ॥ अर्थ यह जो सदा समाधिविषे स्थित होतेहे ॥ अरु संग क्रिया करतें दृष्ट आतेहे सो किस प्रकार करतेहे ॥ जो सबकों स्तुति करनें जोगहे जननतें रहित सग क्रियाका आरं
भ करतेभीहे परंतु निश्चेतें सदा आपकों अकर्ता जाणतेहे ॥ अरु जो कछू प्रारब्ध वेगकरि आनि प्राप्त होताहे तिसकों भोगतेहे ॥ अरु देसकाल क्रिया सबकों अंगीकार करतेहे ॥ अरु
जो परस्त्रीयादिक अनिष्ट आय प्राप्त होवें तिसकों त्यागभी करतेहे ॥ परंतु निश्चयतें सदा अकर्ता ज्यों केत्यों रहतेहे ॥ अरु सुख दुःखकी प्राप्तिविषे सम बुद्धि रहतेहे ॥ अरु प्रकृत आचार
विषे यथासास्त्र विचरतेहे ॥ परंतु स्वरूपतें कदाचित चलायमान नही होते जेसें फूलके मारणें करी सुमेर पर्वत चलायमान नही होता ॥ तेसें दुःख सुखकी प्राप्तिविषे चलायमान नही
होते सदासुभावविषेस्थितरहतेहे सुख दुःखकों भोगते उहभी दृष्टि आवतेहे ॥ अरु उनके निश्चेविषे कछूनही होता जेसें स्फटिकमणिविषे कोउ रंग रखिए तब तिसविषे रंग भासताहे ॥ परंतु
उसका रूप कछू अवर नही होजाता फटिक ज्योंकीत्यों रहतीहे ॥ तेसें सुख दुःखके भोग ज्ञानवानविषे दृष्ट आतेहे परंतु स्वरूपतें चलायमान कदाचित नही होता ॥ चेष्टा अज्ञानी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की न्यांइ करते हे परंतु निश्चयतें परम समाधी हे ॥ जेसें अज्ञानीकों भविष्यतका राग दोष सुख दुःख कछू नही होता तेसें ज्ञानीकों वर्तमानका राग दोष नही होता ॥ अरु स्वाभाविक चेष्टा उसको अेसें होती हे ॥ सर्व साथ मित्रभाव हे न उसतें कोउ खेदवान होता हे न उह किसीतें खेदवान होता हे ॥ अरु जब उसकों सुख आनि प्राप्त होता हे तब रागवान दृष्ट आता हे ॥ अरु दुःखकी प्राप्तिविषे दोषवान दृष्ट आताहे परंतु निश्चयतें उसकों हर्ष शोक कछू नही ॥ जेसें नट स्वांग लाताहे जेसास्वांग होता हे तेसी चेष्टा करता हे ॥ राजाका स्वांग होवे अथवा दारिद्र का होवे परंतु निश्चय अपणे रूपविषे होता हे ॥ तेसें ज्ञानवानविषे सुख दुःख दृष्ट आते हे परंतु निश्चय उनका आत्मस्वरूपविषे होताहे ॥ अरु पुत्र धन बांधव आदिककों बुद्बुदेकी न्यांइ जानता हे ॥ जेसें जलविषे तरंग बूदबूदे होते हे ॥ बहुरी लीनभी हो जाते हे परंतु जलकों राग दोष कछू नही ॥ तेसें ज्ञानवानकों राग दोष कछू नही होता अरु सब उपर दया सुभाव होता हे ॥ अरु पतित प्रवाह विषे जो सुखदुःख आनि प्राप्त होता हे तिसकों भोगते हे ॥ जेसें वायु चलते हे तब दुर्गंध सुगंधकों साथ ले जातीहे ॥ परंतु वायुकों राग दोष कछू नही तेसें ज्ञानवानकों राग दोष कछू नही ॥ बाहिर अज्ञानीकी न्यांइ व्यवहार करता हे परंतु निश्चयविषे जगतकों भांति मात्र जाणता हे ॥ अथवा सर्व ब्रह्म जाणता हे सदा स्वभावविषे स्थित होता हे ॥ अनिच्छित प्रारब्धकों भोगता हे परंतु जाग्रतविषे सुषुप्तिको न्यांइ स्थित हे पूरव अरु भविष्यतकी चिंतवना नही करता वर्तमानविषे विचरता हे ॥ सो अंतरतें सीतल रहता हे बाह्य इष्ट अनिष्ट दृष्ट आते हे ॥ अंतरतें अद्वैतरूप हे ज्ञानवान कर्म करता हे परंतु कर्मविषे अकर्मकों जानता हे अरु जिवताही मृतककी न्याइ हें ॥ हे रामजी जेसें मृतक होता हे तिसकों बहुरी जगतकी कलना नही फुरती ॥ तेसें जिसको आत्मपदकी अहं प्रत्यय हुइ हे तिसकों द्वैत नही भासता प्रत्यक्ष व्यवहार उसविषे दृष्टिभी आताहे परंतु निश्चयविषे अर्थ शांत हो गया हे ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् यह ज्ञानीके लक्षण जो तुम कहे सो तिनकों उही जाणे अवर कोउ नही जाणता ॥ काहेतें जो बाहीरकी चेष्टा अज्ञानीके तुल्य हें अरु अंतरतें शांतरूप हे जो ब्रह्मचर्य करीभी अंतरधीर्य होता हे ॥ तपस्या करीभी राग दोष कछु नही फुरता ॥ अरु एक मिथ्या तपसी हे तिसी प्रकार हो बेठते हे उनको निश्चय सत हे अथवा असत्य हे उनकों केसें जाणीए सो कृपा करिकें कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी यह निश्चय सत होवे अथवा असत्य होवे यह लक्षण संतकें हे ॥ अरु आत्माका जो साक्षातकार हे यह निश्चय अपणे आपकरि जाणता हे ॥ अवर किसी करी नही जाणता इसी कारणतें तिसका लक्षण ज्ञानीहि जाणता हे अवर कोउ नही जाणता जेसें सर्पके खुदकों सर्पहि जाणता हे अवर कोउ नही जाणता तेसें ज्ञानीका लक्षण सुसंवेद हे ॥ हे रामजी यह जो गुण कहे हे सो ज्ञानवान बिषे सुभाविकभी रहते हे ॥ अवरकों जतन सिद्ध हे ॥ अरु सर्व जगत तिसकों भांतिमात्र हे ॥ अथवा अनुभव दृष्टि करिकें अपणा आपहि भासता हे ॥ इसि कारणतें परम सांत हे राग दोष उसके निश्चेविषे नही फुरता अरु अपणे निश्चेकों बाह्य प्रगट नही करता ॥ अरु जो अधिकारि होता हे तिसकों जणावताभी हे अरु जो अनधिकारी अज्ञानी हे तिसकों जाणीभी नही सकते जेसें बावन चंदनकी वडी सुगंध हे परंतु दुरतें नही भासती तेसें अग्यानी उसके निश्चेतें दुरहे इस कारनतें उह जाणी नही सकतें ॥ जो उसकों चर्म दृष्टि करि देखे सो उसकों देखी नहि सकता अरु उह अधिकारि विना जणावताभी नही ॥ जेसें अमोलक चिंतामणी होवे अरु नीचकों दीजें तोभी उसके महात्मकों उह नही जाणता तातें उसका निरादर करता हे ॥ तेसें आत्मरूपी चि

992

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तामणी हे अरु अनधिकारी जो अज्ञानी हे सो तिसका महात्म नही जाणतें ॥ उनतें इसका निरादर होता हे ॥ इसी कारनतें ज्ञानवान प्रगट नही करते ॥ हे रामजी अपणे इसकों जो प्रगट करता हे जो हमकों अर्थकी प्राप्ति होवेगी अरु हमारी मान होवेगी ॥ अरु हमारे चेले बनेगे हमारी पूजा होवेगी ॥ सो ज्ञानवान पदार्थकों गंधर्व नगर अरु इंद्रजालकी न्यांइ जाणते हे बहुरी वांछा कीसकी करे ॥ इस कारनतें अनधिकारिकों अपणा इष्ट नही प्रगट करते ॥ जो कोउ निकट वेठता हे तोभी अपणे निश्चयरूपी अंगकों सुकचाए लेते हे जेसें कच्छू अपणे अंगकों सुकचाए लेता हे तेसें उह निश्चेरूपी अंगकों सुकचाए लेता हे ॥ अरु जो अधिकारी देखता हे तिस प्रति प्रगट करते हे ॥ हे रामजी पात्रविषे पदार्थ पाया सोभता हे अपात्रविषे पाया अनिष्ट हो जाता हे ॥ जेसें गउकों घास देता हे तब उहभी क्षीर होता हे ॥ अरु सर्पकों क्षीर दीया विष हो जाता हे ॥ तेसें अधिकारीकों दीया शुभ होता हे ॥ अनधिकारीकों अनिष्ट हो जाता हे ॥ हे रामजी अणिमातें आदी लेकरि जो सिद्धि हे सो जपकरी द्रव्यकरि अरु कालकरि अथवा देसकरि प्राप्त होतीयां हे ॥ सो अभ्यासके वल करि अज्ञानीकोंभी प्राप्त होती हे अरु ज्ञानीकोंभी होतीयां हे ॥ परंतु ज्ञानका फल नही ॥ यह जप आदिकका फल हे अरु जीसकी सिद्धताके निमित्त जो पुरुष दृढ होकरि लागता हे ॥ सोई सिद्ध होता हे ॥ जो इन सिद्धिका दृढ अभ्यास करता हे तब उनकर्कें आकाश मार्गविषे उडणे आणे जाणे लागता हे सो यह पदार्थ तवलग रस देते हे ॥ जबलग आत्म मार्गतें शून्य हे ॥ हे रामजी परम सिद्धता इनकरी प्राप्त नही होती ॥ सो परम सिद्धता आत्मापद हे ॥ जिसकों आत्मपदकी प्राप्ति भई हे सो इनकी अभिलाषा नही करता ऐसा पदार्थ पृथ्वीविषे कोउ नही ॥ आकासविषे देवताके स्थानोविषेभी नही जिसविषे ज्ञानीका चित्त मोहित होवे ॥ सभ पदार्थ ज्ञानवानकों मृग तृष्णाके जलवत भासते हे ॥ अरु मेरे सिधांत विषे तो यही हे जो सदा विषयतें उप्रांत होणा अरु आत्माकों परम इष्ट जानणा इसिका नाम ज्ञान हे अरु जो प्रारब्ध कर्कें आनि प्राप्त होवे तिसकों करता हे ॥ परंतु करणे करि तिसका कछू अर्थ सिद्ध नही होता ॥ अरु अकरणे विषे कछू प्रतिवाए नही होती ॥ न कीसी अर्थका आश्रे करता हे न तिसके निमित्त किसि भूतका आश्रे करता हे सर्वदा अपणे आप सुभावविषे स्थित होताहे ऐसें निश्चेकों पायकरी आश्चर्यमान होताहे कहताहे जो बडा आश्चर्य हे सदा अपणा आप स्वरूप हे तिसकों मैं विस्मर्ण कर्कें एताकाल भमता रहाहों अब मुझकों सांति प्राप्त भइ हे अरु जगतकों देखकें उह हसता हे काहेतें जो यह जगत अनायासरूप हे अपणीही संवितविषे स्थित हे ॥ जेसें आरसीविषे प्रतिबिंब स्थित होता हे ॥ तेसें अपणी संवितविषे जगत स्थित हे तिसकों वह द्वैत जाणतेहे अरु राग दोषकरि जलतेहे ॥ ऐसें अज्ञानीकों देखिकरि हसताहे ॥ अरु व्यवहार करताभी हसताहे जेसें किसीनें सुपने विषे हाथमें स्वर्न दीया अरु देकरि बहुरी लीया अरु इसनें उसकों सुपना जाण्या तब चेष्टा करताहे ॥ परंतु हसताहे कहता हे जो यह मेराही स्वरूप हे ॥ तेसें ज्ञानी व्यवहार करताभी अपणे निश्चेविषे हस्ताहे अरु जेसें किसी ग्रामकों अग्निलगती हे ॥ तिस गावतें निकसि करि अेक पुरुष पर्वत परजाय वेठे तब न जलते कों देखीकरि हसताहे ॥ तेसें ज्ञानवान पुरुषभी संसाररूपी नगर जलतेसों निकसि करि आत्मरूपी पर्वत परजाय वेठाहे ॥ सो अज्ञानीकों दग्ध होता देखीकरि हसताहे जो आप असोच हो करि उनकों सोच देखताहे ॥ हे रामजी जब ज्ञानवान बोधदृष्टि करि देखताहे तब अद्वैतसत्ता भासती हे॥ अरु जब अंतवाहकविषे स्थित होकरि देखताहे तब जेसें होतेहे तेसें उनकों देखताहे आपकों सांतरूप देखताहे अर्थ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह जो आत्मतत्व परमानंदस्वरूप हे तिसतें इतर जेते कछू पदार्थ हे सो सब दोषरूप हे ॥ सिद्धतातें आदी लेकरि जेति कछू क्रिया हे सो संसारका कारन हे जेसें समुद्रविषे केइ तरंग बडे होतेहे केइ छोटे होतेहे परंतु समुद्रहि विषे हे ॥ जीस तरंगकों आश्रय करेगा सो सिद्धताकों प्राप्त होवेगा ॥ हलणे डोलणे कहणेतें मुक्त होवेगा तेसें सिद्धता आदिक जो क्रियाहे सो कछु बडा ऐश्वर्य हे कछु छोटा ऐश्वर्य हे परंतु संसारहि विषे हे जो पुरुष इस क्रियाके त्यागकरि अंतर्मुख होवेगा सो संसाररूपी समुद्रकों त्यागकरि आत्मरूपी पारकों प्राप्त होवेगा ॥ हे रामजी जिस पुरुषकों जीस पदार्थका अभ्यास होताहे सोइ तिसकों प्राप्त होताहे ॥ जेसें पाषाणकों नित प्रति घसावते रहीए तब उहभी चुरण हो जाताहे तेसें जिस पदार्थका सर्वदा अभ्यास करताहे सो प्राप्त होताहे ॥ जिसकों आत्मपद अभ्यास करि प्राप्त होताहे सो परमश्रेष्ठ हो जाताहे अरु सब जगतकें उर्ध विराजताहे अरु परमदयाकी खाण होताहे ॥ जेसें मेघ समुद्रतें जल ले करि वर्षा करतेहे सो जलका स्थानक समुद्र होताहे ॥ तेसें जेते कछू दया करते दृष्ट आतेहे सो ज्ञानवानके प्रसाद करि करतेहे सर्व दयाका स्थान ज्ञानवान हे अरु ज्ञानवान सबका सुहृद हे जो कछू प्रवाहपतित कार्य आनि प्राप्त होताहे तिसकों करताहे अरु जो सरीरकों दुःख आनि प्राप्त होताहे तिसकों अेसें देखताहे जेसें अन्य सरीरकों होताहे अपणे विषे सुख दुःख दोनोंका अभाव देखताहे अरु जिनकों अभ्यास नही प्राप्त भया सो सरीरके राग दोषकरी जलतेहे अरु ज्ञानीकों सांतिवान देख करि अवरकोंभी प्रसंनता उपजी आतिहे जेसें पुन्य करकें जो स्वर्ग गयाहे तिसकों उहां इष्ट पदार्थ दृष्ट आतेहे ॥ कल्पवछ सुंदर मंजरियां संजुक्त अरु सुंदर अपछरा आदिक दृष्ट आतेहे ॥ तिन पदार्थकों देखकरि प्रसंनता उपजीहे तेसें ज्ञानवानकी संगतीविषे जो पुरुष जाताहे तिसकों प्रसन्नता उपजि आतीहे जेसें पूर्नमासीका चंद्रमा सीतलता उपजातीहे तेसें ज्ञानवानकी संगत सीतलता उपजातीहे ॥ ज्ञानवान आत्मपदकों पायकरि आनंदवान होताहे सो आनंद दूर नही होता काहेतें जो आपहि तिस आनंदकरि अष्ट सिद्धि स्वयं तृण समान भासताहे ॥ हे रामजी अेसें पुरुषका आचार अरु जिस स्थानोंविषे रहतेहे सो सुण ॥ केई तो एकांत जाय बेठतेहे ॥ केई सुभस्थानविषे रहतेहे ॥ केई गृहस्थहिविषे रहतेहे केइ अवधुंत हुए सभकों दुर्वचन कहतेहे केइ तपस्या करतेहे केइ परमध्यान लगाय बेठतेहे ॥ केइ नागे फिरतेहे केई राज बेठे करतेहे केई पंडित होकरि उपदेस करतेहे केई परम मौन धार रहेहे ॥ केई पहाडकी कंदरा विषे जाय बेठतेहे ॥ केई ब्राह्मणहे केइ संन्यासीहे केइ अज्ञानीकी न्यांई विचरतेहे केई नीच पामर होतेहे केई आकासविषे उडतेहे ॥ईत्यादिक नानाप्रकारकी क्रिया करते दृष्ट आतेहे ॥ परंतु सदा अपणें स्वरूपविषे स्थितहे ॥ हे रामजी जिसकों पुरुष कहतेहे सो देह इंद्रियां पुरुष नही ॥ अरु अंतःकर्ण चतुष्टयभी पुरुष नही ॥ पुरुष केवल चिदाकासरूपहे सो न कछु करताहे न किसि करि उसका नास होताहे ॥ जेसें नट स्वांगले आताहे अरु सभ चेष्टा करतेहे परंतु नटभावतें आपकों असंग देखताहे ॥ तेसें ज्ञानवान व्यवहारभी करतेहे ॥ परंतु आपकों अकर्ता असंग देखतेहे ॥ अछेद हों अदाह हों अक्लेदहों असोष हो नित हों सर्वगत हों स्थिर हों अचल हों सनातन हों ॥ हे रामजी इस प्रकार आत्माविषे जिसकों अहंप्रतीति भईहे तिसका नास केसें होवें अरु बंधमान केसें होवे? ॥ उह पुरुष भावे जेसें आरंभ करे अरु भावे जेसें स्थानविषे रहे ॥ तिसकों बंधन कछू नही होते ॥ पातालविषे चला जावे अथवा आकासविषे उडता फिरे ॥ अथवा देसांतरविषे भमता फिरे तिसकों न कछू अधिकताहे न कछू उनताहे ॥ पहाडविषे चूर्ण होजावें तोभी चूर्ण नही होता ॥ यह तो चैतन पुरुषहे श

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रीरके नास हुए इसका नास केसें होवे ॥ अेसें अपणेंस्वरूपविषे सदा स्थितहे आकासवत परमनिर्मल हे अजर अमर सिव पदहे तातें हे रामजी अेसें जाणीकरि अपणे स्वरूपविषे स्थित होहुं ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे चैतनआकास परम ज्ञान वर्णनंनाम द्विशताधिकएकादशः सर्गः ॥ २११ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी एक भाव मात्र हे एक भास मात्र हे एक भासित मात्र हे॥ भाव मात्र कहीए केवल चैतन मात्र तिसविषे जो चैत्योन्मुखत्व अहंकार उत्थान हुआ तिसका नाम भास हे ॥ बहुरी तिस विषे जो जगत हुआ तिसका नाम भासता हे ॥ सो भासित कल्पितका नाम हे सो कल्पितके नाश हुऐ अधिष्टानका तो नाश नही होता क्यों ॥ जो अधिष्टान कछु अवर भाव होवे तो नाशभी होवे सो तो कछू अवर वन्यानही तिसके फुरणेविषे तीन संज्ञा हुई हे ॥ सो फुरणाभी तिसका किंचन हे आत्मा फुरणे अफुरणेविषे ज्योंका त्यों हे॥ जेसें स्पंदनिस्पंदविषे वायु एक ही हे तेसें बोधअबोधविषे आत्मा एकही हे॥ बोधअबोध फुरणा अफुरणा एकही अर्थ हे॥ हे रामजी सो आत्मा किसकरी अरु केसें नाश होवे चैतनभी मरती होवे तव इसका किंचन जगत केसें रहे ॥ किंचन कहीए आभास सो आभास अधिष्ठानबीना नही होता तातें आत्माका नाश नही होता अरु तूं जो चैतनकोंभी मरता माने जो मरिकें बहुरी नही उपजता तोभी आनंद हुआ मेराभी यही उपदेस हे जो चैतनता मिटे ॥ जव चैतनता उपजती हे तव जगत भासता हे तिसके मिटेतें आत्माहि सेष रहेगा ब्रह्म चैतनका तो नास नही होता ॥ अरु जो तुं कहे उह चैतन नास हो जाता हे यह अवर चैतन हे जिसतें जगत होता हे तो हे रामजी अनुभव तो एक हे उसका नास केसें मानिअें॥ जेसें बरफ सितल हे भावे किसी ठोरते पान करीए उह सभकों सितलही हे ॥ अरु अग्नि उष्णही हे जिस ठोरतें स्पर्श करिए तहां उष्णही हे ॥ तेसें आत्माका स्वरूप चैतन हे सो एक अखंड रूप हे जहां कोउ पदार्थ भासता हे सो तिसी चैतनता करि प्रकासता हे अरु चैतनसत्ता स्वछ निर्मल हे अद्वैत हे सदा अपणे आपविषे स्थित हे तिसका नास केसें होवे अरु जो तुं सरीरके नास हूए आत्माकों नास होता माने तो अैसें नही ॥ काहेतें जो सरीर इहां अखंड पडा हे ॥ अरु उह परलोकविषे चेष्टा करता हे अरु पिसाच आदिकका सरिरभी नही दृष्ट आता जो सरीर विना अभाव होता होवे तो उनकाभी अभाव हो जावे ॥ तातें सरिरके अभाव हूए आत्माका अभाव नही होता ॥ काहेतें जो सरिरके मृत हूए कछू चेष्टा सरिर साथ होती नही ॥ काहेतें जो पुर्यष्टका जीव कला वीच नही सरिर तो अखंड पडा हे उसतें कछू नही होता जीव परलोकविषे सुख दुःख भोगता हे तो सरीरके नास हूए नास न हुआ क्यों ॥ अरु जों तुं कहे सव सुभाव उसविषे रहता हे ॥ तो सर्वदाकाल उसकों क्यों नही देखता उसी समें आपकों मृतक देखता हे अरु वांधव भाई जन सभ उसी समें मृतक जाणतेहे ॥ अरु जो तुं कहे जीवीत धर्म करी वेष्टीत हे इसीतें सव अवस्थाका अनुभव नही करता ॥ मृत्यु समे जव जिवत्व भाव नष्ट हो जाता हे तव मृतक होता हे ॥ जो ऐसें होवे तो परलोकका अनुभव न करे सो अेसा नही जव शरीर पात होताहे तव सव अवस्थाकोंभी जाणता हे ॥ वहुरी परलोकविषे शब्द होता हे तिसका अनुभव करता हे ॥ अपणे कर्मके अनुसार सुख दुःख भोगता हे अरु देश स्थानकों प्राप्त होता हे ॥ यह वारता शास्त्रकरीभी प्रसिद्ध हे जो वेदशास्त्र पढे करते हे ॥ अरु अनुभव करिकेभी प्रसिद्ध हे जो मृतककों किसनें जाण्या अरु अभावकों किसनें जाण्या जिसनें जाण्या सो आत्मा हे एक अखंड हे ॥ तातें हे रामजी शरीरके नाशविषे आत्माकों नाश नही सो नित्य शुद्ध हे ॥ जेसा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जेसा निश्चय उसविषै होता हे तेसाही हो भासता हे ॥ जेसा मिलताहे तेसा प्रकाशता हे अेसा जो सत आत्मा हे सो कीसीविषे बंधमान नही होता ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प आकार भास ता हे सो जेवरी सर्प तो नही हो जाती ॥ सर्प कल्पितका अभाव हो जाणा हे अरु जेवरी ज्योंकी त्यों रहती हे तेसें आत्मसत्ता आकार हो भासती हे ॥ परंतु आकार तो नही होती ॥ आ कारका अभाव हो जाता हे अरु आत्मसत्ता ज्योंकी त्यों रहती हे इसि कारणतें बंधमान नही होती ॥ अैसी आत्मसत्ताविषे जो विकार भासते हे सो भम मात्र हे अरु भांतिही करी दुःख पावते हे ॥ हे रामजी यह जगत आभास मात्र हे ॥ तिस आभास मात्रविषे जो राग दोष आदिक फुरते हे सो तीनके निवृत्तिका उपाय में तुजकों कहता हों ॥ अरु जो कछु उ पदेश में कीया हे तिसके विचारणे करि भांति निवृत्त हो जावेगी अरु आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी ॥ अभ्यासविना आत्मपदकी प्राप्ति चाहे तो कदाचित न होवेगी ॥ जब वारंवार अभ्यास करेगा तब द्वैत भम मिटिजावेगा अरु आत्मपद प्राप्त होवेगा ॥ जिसका नित अभ्यास करताहे अरु जतनभी तिसका करता हे सो प्राप्त होता हे उह कवन पदार्थ हे जो अभ्यास करी प्रा प्त न होवे? जोथकी करी फिरे नही अरु दृढ अभ्यास करेतो प्राप्त होता हे ॥ राजकी लक्ष्मी तब प्राप्त होती हे जब रणविषे दृढ हो करी जुद्ध करता हे तब जय होती हे ॥ अरु मुखतें कहे मेरी जय होवे तब तो नही होती तेसें आत्मपदभी तब प्राप्त होवेगा जो दृढ अभ्यास करेगा अभ्यासविना कहणे मात्र करी प्राप्त नही होता ॥ हे रामजी इस मनके दो प्रवाह हे ॥ एक जगतका कारण हे एक स्वरूपकी प्राप्तीका कारण हे जो असत्य शास्त्र हे जिनविषे आत्मज्ञान प्रत्यक्ष नही कहा तिनकों त्याग यह जो महारामायण हे मोक्ष उपाय सो चार वेद षट् शास्त्र सर्व इतिहास पुराणका सिद्धांत मेंनें कहां हे जो इसके समान अवर कोउ न कहेगा ॥ न किसीनें कहा हे अेसा जो शास्त्र हे इसके विचारविषे मनकों लगावे तब सिघ्रही आत्मपदकों प्राप्त होवेगा ॥ हे रामजी आत्मज्ञान वर श्रापकी न्यांइ नही जो कहणे मात्रतें सिद्ध प्राप्त होवे इसकी प्राप्ति तब होवेगी जब वारंवार विचार करिकें दृढ अभ्यास करेगा जब भावना होवेगी तब मुक्ति पद प्राप्त होवेगा अेसा कल्याण पिता अरु माता नही करते अरु मित्रभी अेसा कल्यान न करेगे तीर्थ आदिक सुकृतभी न करेगे जेसा कल्याण वारंवार विचारणेतें मेरा उपदेस करेगा तातें अवर सब उपावकों त्याग करि इसिका विचार करु तब भांति सब मिटि जावेगी अरु सिघ्रही आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी ॥ हे रामजी अग्यानरूपी विसुचिका रोग हे तिसकरि जीव पडे जलतेहे ॥ जो हमेरे सास्त्रकों विचारेगा तिसका रोग नष्ट हो जावेगा अरु ईश्वरकी महा मायाहे जो मिथ्या भम करि दुःखी होतेहे जो अपणा दुःख नाश करणा होवे तो मेरा शास्त्र विचारे ॥ जेते कछू सुंदर पदार्थ दृष्ट आते हे सो मिथ्या हे ॥ तिनके निमित्त जतन करणा परम आ पदा हे ॥ यह केसे पदार्थ हे आपातरमणीय हे ॥ जो देखणे मात्र सुंदर हे अरु अंतरतें शून्यहे इनकी प्राप्तीविषे मूर्ख आनंद मानते हे ॥ हे रामजी यह पदार्थ तबलग सुंदर भासते हे जबल ग इसकों मृत्यु नही आया ॥ जब मृत्यु आवेगा तब सब क्रिया रही जावेगी ॥ इनके निमित्त जो बडे जतन करते हे सो मूर्ख हे ॥ जिस कालविषे मृत्यु आता हे तिसी काल इसकों कष्ट आनि प्राप्त होताहे ॥ चंदनका लेप इसकों करिए तोभी सीतल नही होता ॥ अरु जिस द्रव्यके निमित्त बडे जतन करताहे अरु प्राणकों त्यागताहे जुद्ध करताहे धनके निमित्त सो धन स्थिर नही रहता धनका अरु प्राणीका विजोग हो जाताहे जब विजोग होताहे तब कष्ट पावताहे अरु में अेसें उपाय कहता हो ॥ जिसविषे जतनभी थोडा होवे अरु सुगम प्राप्त होवे ॥

919

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सो जब शास्त्रके अर्थविषे दृढ अभ्यास होताहे ॥ तब अजर अमर पद प्राप्त होताहे ॥ तातें तुं बोधवान हों बोध करीकें अभ्यासका जतन कर अजर पदके निमित्त अरु जो जतन न करेगा तो अज्ञानरूपी शत्रु लातां मारेगा ॥ अरु जो शत्रुकों मारणा होवे तो निर्मान निर्मोह हो करी आत्मपदका अभ्यास करु ॥ हे रामजी जो पुरुष अवलग अज्ञानरूपी शत्रुके मारणेका जतन नही करते ॥ अरु आत्मपद पावणेका जतन नही करते ॥ सो परम कष्टकों पावेगें संसाररूपी दुःखतें कदाचित मुक्त न होवेगा ॥ अरु निकसणेका उपाय यही हे जो महारामायण ब्रह्म विद्याका उपदेस तिसकों विचार करीकें अपणे रिदेविषे धारणा ॥ इस उपाय करीकें भांति मिटि जावेगी केसा महारामायण उपदेस हे जो सर्व सिद्धांतका सार हे अरु अवर सास्त्र करी प्राप्त होवे अथवा नभी होवे परंतु इसके विचार करी अवश्य आत्माकों प्राप्त होवेगा ॥ जेसें तिलकी खलतें तेल निकसणा कठिन हे ॥ अरु तिलतें तेल काढीए तो निकसता हे तेसें मेरा उपदेश तिलकी न्यांइं हे अरु इतर हे सो खलकी न्यांइ हे ॥ हे रामजी जेते कछू शास्त्र हे तिनविषे जो मुख्य सिद्धांत हे तिसविषे सार जो सिद्धांत हे सो में तुझकों कहा हे जो आत्मा सदा विद्यमान हे तिसकों भांति कर्के अविद्यमान जाणताहे तिसिके विद्यमान करणेकों सर्व शास्त्र प्रवर्तें हे जो तिनके विचार कर्केभी आत्मापदकों विद्यमान नही जाणता सो मेरे उपदेस विचारणेसों आत्मपदकों विद्यमान जाणेगा यह निश्चय हे हे रामजी अवर शास्त्रके दृढ विचार अरु जतन कर्के जो सिद्धता होणी हे सो इस शास्त्रके विचार करकें सुखे नही प्राप्त होवेगी ॥ शास्त्र कर्ताका अवर लछण नही विचारणा शास्त्रकी जुक्ति विचारि देखणी हे ॥ जो कछु सर्व शास्त्रका सार सिद्धांत हे ॥ सो में तुझकों सुगम मार्ग करी कहा हे इसके विचार करी इसकी जुक्ति देखें ॥ अरु जो कछु अज्ञानी मुझकों कहते हे अरु हसते हे सो में सबही जाणता हों ॥ परंतु मेरा जो कोउ दयाका सुभाव हे तिसकरी में चाहताहों ॥ जो किसि प्रकार नर्करूप संसारतें निकसे इसकारणतें उपदेस करता हों ॥ हे रामजी में तुझकों जो उपदेस करता हों सो में किसि अपणे अर्थके निमित्त नही कर्ता जो मेरा कछु अर्थ सिद्ध होवेगा जो कोउ तुझकों उपदेश करता हे सो सुण ॥ तेरा जो कोउ बडा पुण्य हे सोइ सुद्ध संवित हो करि मलीन संवितकों उपदेस करता हे ॥ सो संवित न देवता हे न मनुष्य हे न जक्ष हे न राक्षस हे पिसाच आदिकभी नही केवल जो ज्ञानमात्र हे सोभी तुंही हे अरु मेंभी उही हों अरु जगतभी उही हे ॥ जो सर्व उही हे तो वासना किसकी करणी हे ॥ हे रामजी इसकों दुःखका कारन वासनाही हे ॥ जो पुरुष इस संसार बंधन दुःखकी चिकित्सा अब न करेगा सो आत्महत्यारा हे अरु बडे दुःखविषे जाय पडेगा ॥ जहांतें निकसणे कहुं समर्थ न होवेगा ॥ तब क्या करेगा तातें अवही उपाय करे जबलग सर्व भावकी वासना निवृत्त नही होती तबलग स्वरूपका साक्षातकार नही होता इसिका नाम बंधनहें जब वासना क्षय होवेंगी तब आत्मपदकि प्राप्ति होवेगी जेते कछू पदार्थ भासतेहे सो अविचारतें सिद्धहे ॥ विचार कीयेतें कछू नही रहते जो विचार कीयेतें न रहे तिनकि अभिलाषा करणी व्यर्थहे ॥ जो वस्तु होती होवे तिसके पावणेका जतनभी करीए तो बनताहे अरु जो वस्तु होवे नही तिसके निमित्त जतन करणा मूर्खताहे यह जगतके पदार्थ असत्यरूपहे ॥ जेसें ससेके सिंग असत हे जेसें मरुथलकी नदी असत होतीहे तेसे यह जगत असतहे जो सम्यक दर्शी ज्ञानवान पुरुष हे सो जानत हे यह जगत ससेके सिंगवत असत भ्रांतिमात्र हे ॥ इसके निमित्त जतन करणा मूर्खता हे ॥ जो पदार्थ कारण विना दृष्ट आवे तिसकों भ्रांतिमात्र जाणीए आत्मा जगतका कारण नही तातें जगत मिथ्या हे आत्मपद सब इंद्रियां अरु मनतें अतीत हे अरु जगत पंचभूतिक हे सो मन इंद्रियांका विषय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे अरु आत्मपद हे सो मन इंद्रियांके विषय नही तो जगतका कारण केसें कहीए जो अशब्द पद हे सो नाना प्रकार शब्दका कारण केसें होवे॥जो निराकार आत्मपदहे सो पृथ्वी आदिकभूत नाना प्रकारके आकारका कारण केसें होवै॥ हे रामजी जेसा कारण होता हे तिसतें तेसा कार्य उपजताहे सो आत्मा निराकार अरु जगत साकार तो निराकार साकारका कारण केसें होवे॥ जेसें वटका बीज साकार होता हे तिसका कार्य वटभी साकार होता हे॥ अरु साकारतें कार्य निराकार तो नही होता॥ तेसें निराकारतें साकार कार्यभी नही होता॥ तातें इस जगतका कारण आत्म नही॥ न समवाय कारन हे न निमित्त कारण हे निमित्त कारण तब होता हे जब कछु दुतीय वस्तु होती हे॥ जेसें मृत्तिकातें कुलाल घट बनावता हे सो आत्मा अद्वैत हे निमित्त कारण केसें होवे॥ अरु समवाय कारणभी तब होता हे जब साकार वस्तु होती हे जेसें मृत्तिका प्रणमकें घट होता हे॥ सो आत्मा निराकार अप्रणामी हे जगतका कारण केसें होवे दोनों कारणतें जो रहित भासे सो जाणीए जो भांतिमात्र हे॥ जेसें सुपने विषे नाना प्रकारके आकार भासते हे सो कारण बिना भासते हे तातें भांतिमात्र हे॥ तेसें यह जगत भी कारण बिना भांतिमात्र भासता हे आत्माविषे जगत कदाचित् नही हूआ॥ जेसें प्रकासविषे तम नही होता तेसें आत्माविषे जगत नही॥ अरु जो तुं कहे भासता क्यों हे तो उसी का किंचन भासता हे सो उही रूप हे॥ जेसें चलती हे तोभी वायु हे अरु ठहरती हे तोभी वायु हे चलणे अरु ठहरणेविषे भेद कछु नही जेसें आकास अरु शून्यताविषे भेद कछु नही तेसें आत्म अरु जगतविषे भेद कछु नही॥उही आत्मसत्ता फुरणे करि जगतरूप हो भासती हे॥ जेसें जल अरु तरंगविषे भेद कछु नही तेसें आत्मा अरु जगतविषे भेद कछु नही॥ अवर कछु द्वैत वस्तु हे नही जो कहते हे जगत कर्मों करि होता हे सो असत्य हे कर्मभी बुद्धि करि होते हे सो आत्माविषे बुद्धिही नही तो कर्म केसें होवे जो कर्मही नही तो जगत केसें होवे जेसें ससेके सिंगके धनुष साथं बाण चलावणा असत्य हे तेसें कर्म करी जगतका होणा असत्य हे॥ अरु एक कहते हे सूक्ष्म परमाणुतें जगत हो जाता हे सोभी असत हे॥ काहेतें जो सूक्ष्म परमाणु प्रणमी करी जगतरूप हूए होते तो बुद्धिरूप जगत न भासता यह तो बुद्धिरूप क्रिया होती दृष्ट आतीहे॥जो परमाणुतें जगत होता तो इनहि करी बढता जाता काहेतें जो परमाणु जड हे उहि बढते जातेहे सो एसें तो नही बुधिपूर्वक चेष्ठा होती दृष्ट आतीहे॥ इसीतें कहाहे जो असत कहतेहें काहेते जों सूक्ष्मभी किसितें उत्पत्ति हूआ चहिअें॥ अरु कोउ रहणेका स्थानभी चहीए सो आत्माविषे देस काल वस्तु तीनों कल्पितहे जो आत्म विषे यह न हुए तो परमाणु केंसें होवे॥ जगत केसें होवे आत्मा अद्वैतहे तातें जगत न उपजाहे न नष्ट होता हे॥ जो उपजा होता तो नष्टभी होता॥ जो उपजा नही तो नष्ट केसें होवे॥ आत्मसत्ता ज्योंका त्यों अपणे आपविषे स्थित है॥ तातें हे रामजी मेंभी आकाशरूप हों तुंभी आकाशरूप हे सब जगतभी आकाशरूप हे किसीके साथ आकार नही सब निराकाररूप हे॥ अरु जो तुं कहे बोलते चालते क्यों हे तो जेसें सुपनेविषे सब आकाश रूप होते हे॥ अरु नाना प्रकारकी चेष्टा करते हे दृष्ट आवते हे अरु बोलते चालते हे॥ तेसें यहभी बोलते चालते हे परंतु आकाशरूप हे॥अरु जो तेरा स्वरूप हे सो श्रवण कर॥ देसकों त्याग करि जो देशांतरको संवित जात हे॥ अरु तिसके मध जो ज्ञान संवित हे॥ सो तेरा स्वरूप हे सो अनामय सर्व दुःखतें रहित हे॥ जेसें जागृत देशकों त्याग करी सुपनमें जाती हे॥ जागृत त्याग दिया अरु सुपन आया नही मध्य जो अचेत चिन्मात्र सत्ता हे तेसें चिदासरूप हे॥ तिसविषे पंडित ज्ञानवानका निश्चय हे ब्रह्मा विष्णु रुद्रादिक तिसीविषे स्थित रहते हे॥ तिनकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कदाचित उत्थान नही होता जेसें बरफतें अग्नि कदाचित नही उपजती ॥ तेसें तिनकों स्वरूपतें उत्थान कदाचित् नही होते सो आत्मसत्ता केसी हें न उपजती हे न विनसती हे न अवरकी अवर होती हे ॥ सर्वदा अपणे सुभावविषे स्थित हे ॥ हे रामजी जेता कछू जगत तुं देखता हे सो वास्तव कछु उपजा नही भ्रम करीकें भासता हे ॥ जेसें सुपनेविषे नाना प्रकारके आरंभ होते दृष्ट आवते हे ॥ अरु जागेतें अत्यंत अभाव भासते हे तेसें यह जगतभी हे ॥ आदि जो अद्वैत तत्वविषे सुपना हुआ हे तिसविषे ब्रह्मा उपजा हे तिसनें आगें जगत रचाहे सो ब्रह्माभी आकासरूप हे स्वरूपतें इतर कछु हूआ नही सभ असत्यरूप हे जेसें सुपने विषे नदी पर्वत दृष्ट आतेहे परंतु कछु उपजे नही अनुभवसत्ता ज्योंकीत्यों स्थित हे ॥ तेसें ब्रह्मातें आदि तृण पर्यंत जगत सभ असत्यरूपहे ॥ जिसको तुं ब्रह्मा कहताहें सो वास्तव कछु उपजा नही तो जगतकी उत्पत्ति में तुझकों केसें कहों जेसें मरूथलकी नदीही उपजी नही तिसविषें मछीयां केसें कहीए ॥ तेसें आदि ब्रह्म नही तिसविषे जगत उपजा केसें कहीए केवल आत्म चैतनसत्ता सदा अपणे आपविषे स्थितहे ॥ अरु यह जगतभी उही रूप हे परंतु अज्ञान कर्कें विपर्ययरूप भासता हे जेसें सुपनविषे पुरुष अनुभवरूप होता हे ॥ अरु अपणे प्रमाद कर्कें नाना प्रकारके पदार्थ भासता हे ॥ पर्वत जल पृथ्वी जन्म मरनादिक विकार देखता हे ॥ परंतु हुआ नही आत्मसत्ता ज्योंकी त्यों स्थित हे अज्ञान कर्कें विषयरूप भासते हे ॥ तेसें इह जगतभी जाण आत्मसत्तातें इतर कछु नही ॥ सब चिदाकाशरूप हे अज्ञान कर्कें आत्मसत्ता जगतरूप हो भासती हे तातें हे राम जिसके अज्ञानतें इह जगत भासता हे अरु जिसके ज्ञान करि निवृत्त हो जाता हे ऐसा जो आत्मतत्व हे तिसके पावणेका जतन कर सो केसा पद हे नित शुद्ध परमानंद स्वरूप हे ॥ अरु सदा अपणे स्वभावविषे स्थित हे सो तेरा अनुभवरूप हे जो सदा अनुभव कर्कें प्रकासता हे तिस विषे स्थित होणा क्या कायरता करणी ॥ हे रामजी जेता कछु प्रपंच हे सो भ्रांति मात्र हे ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प भ्रांति मात्र हे ॥ तेसें आत्माविषे जगत भ्रम मात्र हे तिसको त्याग करि अपणे स्वभावविषे स्थित होऊ ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे सर्व पदार्थाभाववर्णनं नाम द्वादशाधिक द्विशततमः सर्गः ॥ २१२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जिस प्रकार इह जगत आभास फुर्या हे अरु भासताहे सो सुण आदि जो सुद्ध हे अचेत चिन्मात्र हे ॥ तिसविषे जब चैतनता फुरती हे तब सो वेदन होती हे तिसविषे शब्द तन्मात्र होतीहे शब्द तन्मात्रातें आकास उत्पत्ति होती हे ॥ बहुरी स्पर्शकी इछा होती तब वायु उपजती हे जब आकाशविषे उत्थान हुआ ॥ तब तिस वायु अरु आकासके संघर्षण भावतें अग्नी उपजती हे ॥ जब अग्निविषे उष्ण सुभाव होताहे तब जल उत्पत्ति होताहे ॥ अर्थ यह जो जब तेजकी अधिकता होती हे तब जल उत्पत्ति हो आताहे स्वेदवत जब जल बहुत एकठा होताहे तब तिसतें पृथ्वी उत्पत्ति होती हे ॥ इस प्रकार आकास वायुतें जल पृथ्वी उत्पत्ति होतेहे ॥ तब तत्वतें शरीर उपजते हे स्थावर जंगम भूत नाना प्रकार जगत दृष्ट आताहे सो पंचभूतक हे ॥ अरु वास्तवतें न पंचभूत हे न कोउ उपजता हे न नष्ट होताहे केवल आत्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे जेसें सुपनेंविषे नाना प्रकारका जगत आरंभ प्रणाम सहित भासताहे परंतु वास्तव कछु उपजा नही आत्मसत्ताहि चित्तके फुरणे करी जगतरूप हो भासती हे ॥ तेसें यह जाग्रत जगतभी जाण ॥ हे रामजी यह जगत सब अपणा अनुभवरूप हे भ्रम कर्कें आकार सहित भासताहे ॥ जब भली प्रकार कर्कें विचार देखीयें तब जगत भ्रम मिटि जाताहे केवल चैतन आत्मत्वमात्र सेष रहता हे ॥ जेसें निद्रा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोष कर्के सुपनेंविषे नाना प्रकारके क्षोभ भासते हे॥जब जागताहे तब एक अपणा आपही भासताहे तेसें आत्मसत्ताविषे जागेतें अद्वैतही अद्वैत भान होताहे॥हे रामजी जो बोध समें द्वैत कछु न भासे तो अबोध समेभी जाणीए जो द्वैत कछु नहीं हुआ॥ अरु जो बोध समे सत भासे तो जाणीए जो सर्वदा काल इही सत्ता हे॥ हे रामजी यह निश्चय धार जो अवर जगत कछू वस्तु नही जेसें आकासविषे नीलता भासती हे जेसें किरणांविषे जल भासताहे॥ जेसें जेवरीविषे सर्प भासताहे तेसें आत्माविषे जगत भासताहे॥ विचार कियेतें कछू नही पाइता॥ हे रामजी अपणी कल्पनाही इसकों जगतरूप हो भासती हे अवर कछु नही जेसें सुपन सृष्टि अपणी कल्पनारूप हे परंतु निद्रा दोष करी भिन्न हो भासती हे तिसविषे राग दोष उपजता हे अरु जागेतें सब क्षोभ मिटि जाते हे॥ तेसें अज्ञान कर्के जगत सत्य भासताहे तिसविषे राग दोष भासते हे॥ ज्ञान कर्के सब सांत हो जाते हे॥ हे रामजी यह जगत भ्रममात्र हे ज्ञानवानके निश्चयविषे सब चिदाकास हे अरु अज्ञानीके निश्चयविषे जगत हे जो बडे क्षोभ आनि प्राप्त होवे तोभी ज्ञानवानकों चलाय नही सकते उसके निश्चयविषे कछु द्वैत नही फुरता सदा एक रस रहताहे जो प्रलयकालके मेघ आनि गर्जे अरु समुद्र उछले अरु पहाडके उपर पहाड पडे ऐसें भयानक शब्द होवे तोभी ज्ञानवानके निश्चेविषे कछु द्वैत नही फुरता॥ जेसें कडुं पुरुष सोया पडा हे तिसके सुपनेंविषे बडे क्षोभ होते हे॥ अरु जाग्रतकों निकट बेठे नही भासते॥ तेसें ज्ञानवानकों निश्चेविषे द्वैत कछु नही भासता॥ काहेतें जो हे नहीं अरु अज्ञानीकों होते भासते हे॥ जेसें वंध्या स्त्री सुपनेंविषे अपणे पुत्रकों देखतीहे सो अणहोता भ्रम करी उसकों भासताहे तेसें अज्ञानीकों अणहोता जगत सत होकरी भासताहे॥ हे रामजी भ्रम कर्के अणहोता भासताहे अरु होतेका अभाव भासत्ताहे जेसें वंध्या अणहोते पुत्रकों देखती हे अरु पुत्रवाली सुपनेंविषे पुत्रका अभाव देखती हे॥ तेसें अज्ञान कर्के अणहोता जगत सत भासताहे॥ अरु सदा अनुभवरूप आत्माका अभाव भासताहे सो भ्रम कर्के अवरका अवर भासताहे॥ जेसें दिनकों सोया हुआ सुपनेंविषे कडुं रात्रकों देखताहे अरु रात्रकों सोया हुआ सुपनेंविषे दिनकों देखता हे अरु शून्य थानविषे नाना प्रकारके व्यवहार देखता हे॥ अरु अंधकारविषे प्रकाशकों देखता हे सो भ्रम कर्के देखता हे अरु पृथ्वीपर सोया हे॥ अरु सुपनेंविषे आकाशमें दउडता फिरता हे॥ अरु गरतविषे गिरता आपकों देखता हे सो भ्रम कर्के भासताहे तेसें यह जाग्रत जगतभी विपर्यय रूप भ्रम कर्के देखता हे॥ जाग्रत अरु सुपनेंविषे भेद कछु नही॥ जेसें सुपनेविषे मूए हुएभी बोलते चालते दृष्ट आते हे॥ हे रामजी जेसें सुपनेंविषे तुमकों नाना प्रकारका जगत भासताहे॥ अरु जागि करी कहते हो सब भ्रममात्र था तेसें हमकों यह जाग्रत जगत भ्रममात्र भासताहे॥ जेसें जल अरु तरंगविषे भेद कछु नही तेसें जाग्रत अरु सुपनेंविषे भेद कछु नही जेसें दो मनुष एकही जेसें होतेहे॥ जेसें दो सूर्य होवे तिनविषे भेद कछु नहीं होता तेसें जाग्रत अरु सुपनेंविषे भेद कछु नही जानणा॥ रामोवाच॥ हे भगवन सुपनेंकी प्रतिभा अल्पमात्र भासती हे॥ सिघ्रही जागी करी कहताहे एक भ्रममात्र थी अरु जाग्रत दृढ हो करी भासती हे॥ तुम दोनोंकों समान केसें कहते हो?॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी जिस प्रतिभाका प्रत्यक्ष अनुभव होताहे सो जाग्रत कहाती हे अरु जिसका प्रत्यक्ष अनुभव नहीं होता चित्तविषे स्मृति होती हे सो सुपना हे॥ सो जाग्रत अरु सुपना दो प्रकारका हे जिसका प्रत्यक्ष अनुभव होताहे सो जाग्रत हे तिसविषे जब सो य गया तब सुपना आया तिस सुपनेंविषे जगत भासि आया सो जहां जगत भासि आया उहि तिसकों जाग्रत हो गइ अरु जहांतें सोया था उह सुपना हो गया अरु इहां जो सुपना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भास्या तिसकों जाग्रत जाणी चेष्टा करणे लागा भाइ जन लोक साथ ॥ जब उहांतें मृतक हो गया बहुरी उसविषे आया आय करी पीछलीकों सुपना जानणे लागा तो चित्तके भ
म करीकें सुपनेंकों जाग्रत देखत भया था ॥ अरु जाग्रतकों सुपना देखत भया था ॥ हे रामजी सो क्या भया जेसें किसीकों सुपना आया तिसविषे अपणी चेष्टा व्यवहार कर्णे लागा
बहुरी तिस विषे सुपना हुआ तिस सुपनांतरतें जब जाग्या बहुरी उस सुपनेंविषे आया आय करी उसकों सुपना जानणे लागा अरु उस सुपनेंकों जाग्रत जानणे लागा ॥ हे रामजी
जेसें उह सुपनांतरतें जागी करी तिसकों सुपना कहताहे अरु सुपनेंकों जाग्रत कहताहे ॥ तेसें इहां जाग्रत सुपन रूप हे ॥ अरु आगें जो होताहे सो सुपनांतर हे ॥ एक अवर प्रकारहे
जो इस जाग्रतविषे मृतक हुआ शरीर छुटि गया तब परलोककों देखता हे सो परलोक जाग्रत हो गया अरु इस जाग्रतकों सुपना जानणे लागा जेसें सुपनेंतें जाग्या सुपनेकों भम
कहता हे ॥ तेसें इस जाग्रतकों परलोकविषे भम जाणता हे ॥ बहुरी परलोकविषे सुपना आया तब परलोककी जाग्रत सुपनवत् हो गई अरु जो सुपनेंविषे सृष्टि भासी तिसकों जाग्र
त जाणत भया बहुरी उहांतें मृतक हो करी इहां आया तब इह जाग्रत होगई परलोकसुपना हो गया ॥ तातें हे रामजी सुपना अरु जाग्रत दोनों मिथ्या हे ॥ अरु मूर्ख सुपनेंतें जब
जागते हे तब जाणते हे इसका नाम जागणा हे इसकों जाग्रत मानते हे उसकों सुपना जानते हे ॥ अरु हे उह सुपनांतर अरु इह सुपनाहे ॥ इसविषे जो तीव्र संवेग हो रहा हे इसतें उस
कों जाग्रत जाणते हे ॥ अरु उसकों सुपना जाणते हे अरु हे दोनों तुल्य भेद कछु नही आत्माविषें एक दोनों असतरूप हे इनकी प्रतिभा भममात्र भासती हे ॥ अरु आत्मा न कदाचि
त उपंजता हे न मरताहे ॥ अरु उपजताभी हे मरताभी हे ॥ उपजता इस कारणतें नही जो पूर्व सिद्ध हे अरु मरता इसि कारनतें नही जो भविषतकालविषेंभी सिद्ध हे परलोकविषे सुख दुःख
कों भोगताहे ॥ अरु भमकाल विषे जनमताभी हे मरताभीहे सो प्रत्यक्ष भासताहे ॥ अरु वास्तवतें ज्योंका त्यों हे ॥ हे रामजी यह जगत तिसका आभास हे ॥ चैतनका चमत्कार चैत हो करी भास
ता हे ॥ जेसें घट मृत्तिकारूप हे मृत्तिकातें इतर कछु नही ॥ तेसें चैतनभी चैतनरूप हे चैतननें इतर जगत कछु नही ॥ स्थावर जंगम जगत सब चिन्मात्रहे ॥ हे रामजी जेसें तुमकों सुपना आता हे
तिसविषे पथर पहाड भासताहे ॥ सो तुमाराहि अनुभवरूप हे इतर तो कछु नही तेसें इह दृश्य सब चिन्मात्र रूप हे ॥ जेसें घट मृत्तिकातें भिन्न नहि ॥ तेसें जगत चिदाकाशतें भिन्न
नही ॥ जेसें काष्टके पात्र काष्टतें भिन्न नही सब काष्टरूप हे ॥ तेसें जगत चैतनरूप हे चैतननें इतर कछु नही जेसें पाषाणकी मूरत पाषाणरूप हे तेसें जगतभी चैतनरूप हे जेसें समुद्र
तरंग रूप हो भासताहे तेसें चैतन जगत रूप हो भासताहे ॥ जेसें अग्नी उष्णरूप हे तेसें चैत चैतनरूपहे ॥ जेसें वायु स्पंद रूप हे तेसें चैतन चैतरूप हे ॥ जेसें वायु निस्पंद रूप हे तेसें चैतन
चैतरूप हे जेसें पृथ्वी घन रूप होतीहे जेसें आकाश शून्य रूप होताहे ॥ जहां शून्यता हे तहां आकाश हे ॥ तेसें जहां चैत हे तहां चैतन हे जेसें सुपनेंविषे सुद्ध संवित पहाड नदीयां रू
प हो भासती हे तेसें चिन्मात्र सत्ता जगत रूप हो भासती हे ॥ हे रामजी जो कछु पदार्थ तुझकों भासते हे तिनकों त्याग करी आत्माकी उर देख यह विश्व सब आत्मरूप हे सुद्ध चि
दाकाशरूप निर्दुःख आकाशविषे निर्मल हे अेसें जाणी करी तिसविषे स्थित होहु ॥ हे रामजी जब तुझकों स्वभाव सत्ताका अनुभव साक्षात्कार होवेगा तब जेती कछु द्वैत कलना भास
ती हे सो सब शांत हो जावेगी ॥ केवल आत्मतत्व मात्र सेष रहेगा ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे जाग्रत स्वमैकता प्रतिपादनं नाम त्रयोदशाधिक द्विशततमः सर्गः ॥ २१३॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् चिदाकास केसा हे जिसकों तुम परम ब्रह्म कहतेहौं तिसका क्या रूपहे ॥ तुमारे अमृतरूपी वचनोंको पान करता मैं तृप्त नही होता ॥ तातें कृपाकरिकै कहो ॥ ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी जेसें एक माताके गर्भतें दो पुत्र जोडे उत्पत्ति होतेहे ॥ उनका एक जेसा आकार होताहे सो जगत व्यवहार निमित्त उनका नाम भिनभिन होताहे ॥ अवर भेद कछु नही ॥ अरु जेसें दो पात्रविषे जल राखीए तो जल एकहीहे अरु पात्रके नाम भिनभिन होतेहे ॥ तेसें सुपन अरु जाग्रत नाम दो हैं परंतु एकही जेसेंहे सो आत्माविषे दोनों कल्पितहे जिसविषे दोनों कल्पितहे सो चिदाकास हे अरु वृत्ति जो फुरतीहे देस देसांतरको जातीहे ॥ तिसके मध्यविषे जो संवित ज्ञानरूपहे जिसके आश्रय वृत्ति फुरती सो चिदाकास संवितहे ॥ अरु वृछ जो रसकों खेंचिकरि उर्धकों जातेहैं सो तिसके आश्रय जातेहे अेसी जो सत्ताहे सो चिदाकासरूप हे ॥ हे रामजी जेते कछु वृछहे फूलफल टास सो सभ रसके आश्रय फुरतें हे ॥ तेसें यह जगत सब चिदाकाशके आश्रय फुरता हे ॥ तिसके आश्रय वृत्ति फुरती हे अेसी जो सत्ता हे सो चिदाकाश हे ॥ अरु जिसकी इछा सब निवृत होगइ हे अरु राग दोषरूपी मल निवृत्त भया हे शरत्कालके आकाशवत जो शुद्ध संवित हे तिसकों चिदाकाश जाण ॥ हे रामजी जगतका जब अंत होता हे अरु जडता आई नही तिसके मध जो अद्वैत सत्ता हे सो चिदाकाश हे अरु बल्लि फुल फल गुछे वृछ जिसके आश्रे बढते हे सो चिदाकाश हे ॥ अरु रूप अवलोक मनसकार इन तीनोका जहां अभावहे अेसी जो शुद्ध संवित हे सो चिदाकाश हे ॥ अरु पृथ्वी पर्वत नदीयां सर्वका आश्रय हे सो चिदाकाश हे ॥ अरु द्रष्टा दृश्य दर्शन इह तीनों जिसतें उपजे हे बहुरी जिसविषे लीन होते हे अेसी जो अधिष्टान सत्ताहे ॥ सो चिदाकाश हे ॥ अरु जिसतें सर्व उपजते हे अरु जो इह सर्व हे जिसविषे सर्व हे अेसा जो सर्वात्मा हे सो चिदाकाशहे ॥ अर्ध रात्रकों जो उठताहे इंद्रियांकी चपलताका विषयतें अभाव होता हे ॥ अफुर सत्ता तिस कालमें होती हे सो चिदाकाश हे ॥ हे रामजी जिस संवितविषे सुपन सृष्टि फुरतीहे बहुरी जाग्रत भासती हे दोनोंके करनेहारेमें शोभता हे सो चिदाकाश हे ॥ अरु जेसा फुरणा होता हे तेसाहि जगतविषे भासता हे ॥ उही दृष्टा दर्शन दृश्य हो करी भासता हे दुसरा कछू नही ॥ अरु आत्मरूपी सूत्र हे अरु असत सत जगतरूपी मणीके जिसविषे परोये हुएहे जिसके आश्रे इनका फुरणा होता हे सो चिदाकाश हे ॥ हे रामजी जिसके आश्रे निमेष विषे जगत उपजता हे अरु उनमेष विषे लीन होजाता हे ॥ अैसी जो अधिष्टान सत्ता हे तिसकों चिदाकाश जाण यह सब जगत मिथ्या हे भ्रांति करकै भासता हे ॥ जेसें मरुथलकीनदी भासती हे इसतें जो रहित हे जिस विषे संकल्प विकल्प क्षोभ नही ॥ अरु सदा अपणे आपविषे स्थित हे ॥ दुःखतें रहित निर्विकल्प सत्ता हे सो चिदाकाश हे ॥ हे रामजी नेती नेती करी जो पाछे अनाद्य पद शेष रहता हे तिसकों तुं चिदाकास जाण अरु आत्मसत्ता सुद्ध चैतन सबका अपणा आप हे सबका अनुभव रूप हो करी प्रकाशता हे ॥ जेसा तिसविषे फुरणा होताहे ॥ जो यह अेसें हे तेसा हो भासता हे सो चिदाकाश रूप हे ॥ तातें सुद्ध आत्मसत्ताइ फुरणे करी जगत रूप हो भासती हे ॥ जेसें जाग्रतके अंतविषे अद्वैत सत्ता होती हे ॥ बहुरी तिसतें सुपन सृष्टि भासि आती हे तो सुपन सृष्टि वास्तव कछु उपजी नही उही अनुभव सुपन सृष्टि हो भासता हे ॥ तेसें यह जगत जो कार्यरूप दृष्ट आताहे ॥ सो अविद्याकरकै भासताहे वास्तव कछु उपज्या नही ॥ जेसें सुपन सृष्टि अकारण भासतीहे तेसें इह सृष्टि अकारणहे ब्रह्मातें आदि चिटी पर्यंत जेता कछु स्थावर जंगमरूप जगत भासताहे सो सब चिदाकासरूपहे कछु उत्पत्ति नही भया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो दुसरा कछु न हूआ तो कारण कार्यभी कछु न हूआ ॥ हे रामजी न कोउ दृष्टाहे न दृश्यहे न भोक्ताहे न भोगहे ॥ सब कल्पना मात्र हे आत्म अज्ञानकरि कल्पना उठतहें आत्मज्ञान करि लीन होजातिहे ॥ जेसें समुद्रके जाणेतें अवर तरंग कल्पना मिटि जातीहे ॥ अनुभव आत्माविषे कारण कार्य कछु नहीं ॥ अरु जो तुं कहे कारण कार्य भासते क्यों हे तो जेसें इंद्रजालकी बाजी विषे नाना प्रकारके पदार्थ दृष्ट आते हे ॥ परंतु वास्तव कछू नही बने तेसें यह जगत कारण कार्य कछु बन्या नही ॥ जेसें सुपने विषे अपणां अनुभवहि नगर रूप हो भासता हे तेसें यह जगत भासता हे ॥ हे रामजी आत्मसत्ताहि फुरणे करी जगतकी न्यांइ भासती हे ॥ जिस जगतकों इह इंद्ररूप करि कहता हे सोभी अहंरूप हे जिसकों यह समुद्र कहता हे सोभीं अहंकार रूप हे ॥ जिसकों इह रुद्र कहता हे सोभी इसका अनुभवरूप हे इत्यादिक जेता कछु जगत भासता हे सो भावना मात्र हे ॥ जेसि इसकी भावना दृढ होती हे तेसा रूप होकरी भासता हे ॥ जेसें चिंतामणी अरु कल्पांतरविषे जेसी भावना होती तेसेंही सिद्ध होता हे तेसें आत्मसत्ताविषे जेसी भावना होती हे तेसी हो भासती हे तातें चिदाकाशका निश्चय दृढ होता हे तब अज्ञान कर्के जो विरुद्ध भावना भइथी सो निवृति हो जाती हे॥ ॥ इ०यो०नि०प्र०ज०नि०व०नामचतुर्दशाधिकद्विशततमःसर्गः ॥ २१४॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी जब मन थोडाभी फुरता हे तब यह जगत उत्पत्ति हो आता हे अरु जब फुरणेतें रहित होता हे तब जगत भावना मिटि जाति हे ॥ इस प्रकार जो जानता हे सो ज्ञानवान पुरुष हे ॥ इंद्रियां करि देखता सुणता ग्रहण करताभि निर्वासनिक हो जाता हे ॥ अरु जगतकी उरतें घन सुषुप्ति होता हे ॥ हें रामजी जीसका मन निर्वासनिक सांत भया हे ॥ सो बोलता चालता खाता पीताभी पाषाणवत मोन हो जाता हे ॥ तातें यह जगत कछु उत्पत्ति नही भया ॥ जेसें मृग तृष्णाकी नदी अणहोती भासती हे ॥ जेसें भ्रम कर्के आकासविषे दूसरा चंद्रमा भासता हे ॥ तेसें मनके भ्रमकर्के आत्माविषे जगत भासता हे आदि कारणतें कछु उत्पत्ति नही भया जिसका आदि कारण नही पाइए सो कार्य भी असत जाणीए ॥ तातें सभ जगत कारण विनाही भासता हे उपजा कछु नही ॥ हे रामजी जो पदार्थ कारण विना भासता हे ॥ अरु जिसविषे भासता हे सो अधिष्टानसत्ता हे अधिष्टानविषे भास्या तिसकोंभी उह रूप जाणीए ॥ अरु जो अधिष्टांनतें व्यतिरेक भांसे सो भ्रममात्र जाणीए ॥ जेसें सुपने विषे इंद्रियादिक पदार्थ भासि आते हे ॥ तिसविषे दृश्य दर्सन सभ मिथ्या हे हुआ कछु नही तेसें यह जाग्रत जगतभी मिथ्या हे न कछु उपजा हे न स्थित भया हे न आगें होणा हे न नाश होणा हे॥ जो उपजाही नही तो नाश केसें होवे न कोउ दृष्टा हे न दर्शन हे न दृश्य हे केवल चिनमात्र सत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन यह दृष्टा दर्शन दृश्य क्या हे अरु केसें भासता हे यह आगें भी कहाहें अरु बहुरीभी कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी यह दृश्य सभ अदृश्य रूप हे कारण रहित दृश्य हो भासती हे दृष्टा दर्शन दृश्य जेता कछु जगत विस्तार सहित भासताहे सो आदि स्वरूपतें सब परात्म स्वरूप हे॥जेसें सुपनेंविषे आकाशका बन भासे अरु अवर पदार्थ भासे सो सब चिदाकास रूप हे तेसें यह जगतभी चिन्मात्र रूप हे॥ कारण कार्ज भाव कछु नही जेसें वायु स्पंद रूप होती हे तब भासती हे निस्पंद हूए नही भासती ॥ तेसें आत्माविषे चित्त फुरता हें तब आत्मसत्ता जगत रूप हो भासती हे सो क्या वस्तु हे उही आत्मसत्ता रूप भावविषे भाव हे जेसें आकाशविषे शून्यता हे तेसें आत्माविषे जगत आत्मरूपहे तातें कछु भासताहे सो चैतनका आभास प्रकाश हे॥ परमार्थ सत्ता केवल अपणे आपविषे स्थि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त हे ॥ अरु तिसतें इतर कहिये तो न दृष्टा हे न दृश्य हे ॥ आत्मसत्ताही ज्योंकी त्यों हे ॥ रामोवाच ॥ हे ब्राह्मण ब्रह्मके वेत्ता जो इसि प्रकार हे तो कारण कार्जका भेद केसें प्रवर्तता दिखताहे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जेसा जेसा फुरणा तिसविषे होताहे तेसा तेसा रूप हो भासता हे चैतन आकाश ही जगत रूप हो भासता हे अवर कछु कारण हे न कार्य हे जेसें सुपन सृष्टि कारण कार्य सहित भासती हे सो किसी कारणतें तो नही उपजी अकारण रूप हे ॥ तेसें इह सृष्टि किसि कारणतें नही उपजी अकारण रूप हे न कछु कर्ता हे न भोक्ता हे ॥ भ्रम करकै कर्ता भोक्ता भासता हे सुपनेकि न्यांइ विकल्प उठते हे वास्तवतें ब्रह्मसत्ताही हे ॥ हे रामजी जेसें सुपनेविषे नगर अरु जगत भासता हे सो चिदाकाश अनुभव सत्ता ही अेसें हो भासती हे ॥ अनुभवतें इतर कछु नही तेसें यह जगत संपूर्ण चिदाकास हे ॥ जव अेसें जाणेगा तव जगतभी भ्रम तत्व भासेगा ॥ हे रामजी यह जगत चित्तके फुरणे करी उपजा हे जेसें मूर्ख वालक अपणे पछावेविषे वैताल कल्पता हे ॥ तेसें चित्तके भ्रम करी जगतकों कल्पता हे सो इसका कारण ब्रह्मही हे अवर कारण कछु नही ॥ काहेतें जो महा प्रलेविषे चिदाकाशही रहता हे सो कारण किसका होवे ॥ उही सत्ता इंद्ररूप हे उही रुद्ररूप हे नदीयां पर्वत आदिक जेता कछु जगत भासता हे ॥ सो उही रूप हे तिसतें इतर तो द्वैत रूप कछु नही ॥ जेसा जेसा फुरणा तिसविषे होताहे तेसा रूप भासताहे ॥ जेसें चिंतामणी कल्प दृछविषे जेसी भावना कछु करता हे तेसा रूप भासता हे तेसें आत्मसत्ताविषे जेसी भावना होतीहे तेसाहि पदार्थ रूप हो भासताहे ॥ ॥इ०यो०नि०प्र०कारणकार्याभाव व०नामद्वि०पं०सर्गः ॥ २१५ ॥ ॥ ७ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी अचैत चिन्मात्र जो आकाश रूप आत्मसत्ताहे सो इस जगत रूप हो भासतीहे ॥ सुद्ध चिन्मात्रविषे जव अहंफुरणा होताहे तव जगत हो भासताहे सो अहंरूप जीवहे जगतविषे जीवता दृष्ट आताहे परंतु मृतककी न्यांइ स्थित हे ॥ अरु तुं में आदिक सव जगत जीवता वोलता चलता व्यवहार करताभी दृष्ट आताहे परंतु काष्ठ मौनवत स्थित हे ॥ आत्मरूपी रत्नका जगतरूपी चमत्कार हे ॥ जो प्रकास आत्मातें भिन्न कछु नही ॥ जेसें आकाशविषे तरवरे भासते हे जेसें मरुथलविषे जल भासताहे जेसें धूंएका पर्वत मेघ भासताहे सो भ्रांतिमात्रहे ॥ तेसें यह जगत लक्षणभी भासता हे परंतु वास्तवतें कछु नही ॥ अवस्तु भूत हे उपजा कछु नही ॥ हे रामजी चित्तरूपी बालकनें जगतजालरूपी सेना रची हे ॥ सो असत हे पृथ्वी जल अग्नि वायु आदिक भूत भांतिमात्र हे तिनविषे सत प्रतीति करणी मूर्खता हे ॥ बालककी कल्पनाविषे सत प्रतीति वालकही करते हे ॥ इस जगतकों आश्रे करकै जो सुखकी इछा करते हे सो क्या करते हे ॥ जेसें कछु आकाशके धोणेका जतन करे तेसें उनका जतन व्यर्थ हे यह सव जगत भांतिरूप हे इसविषे जो आस्था करते हे ॥ अरु इसके पदार्थ पावणेका जतन करते हे सो क्या करते हे जेसें कछु पुत्र पावणेका जतन करे सो व्यर्थ हे ॥ तेसें जगतविषे जो सुखके पावणेका जतन करते हे सो व्यर्थ जतन हे ॥ हे रामजी यह पृथ्वी आदिकजो संपूर्न भूत पदार्थ भासतेहे सो भांतिमात्र हे ॥ जो भांतिमात्र हे तो इनकी उत्पत्ति किस कर केसें कहीए ॥ जो मूर्ख वालक हे तिनकों पृथ्वी आदिक जगतके पदार्थ सत भासते हे ॥ ज्ञानवानकों सत नही भासते ॥ अज्ञानीकों सत भासते हे ॥ तिन साथ हमारा क्या प्रयोजन हे ॥ जेसें सोएकों सुपनेविषे आत्म अनुभव सत्ताही पृथ्वी पहाड नदीयां जगत हो भासताहे सो सव आकार भासतेभी निराकाररूप हे ॥ तेसें यह जगत आकार सहित भासता हे परंतु आकार कछु वन्या नही उही निराकार सत्ता जगत रूप हो भासती हे ॥ सो निराकारही हे अवर जगत कछु नही ज्योंकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्यों आत्मसत्ता हे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे अभावप्रतिपादनं नाम षोडशाधिकद्विशततमःसर्गः ॥ २१६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन तुम कहते हो जगत अविद्यमान हे अरु अज्ञान करके सुपनेकी न्यांइ सत भासता हे विद्यमानभी हे सुपन नगर शून्य रूप हे ॥ तेसें यह जगत अज्ञानरूप हे ॥ सो अज्ञान क्या हे अरु केते कालकी अविद्या हुइ हे अरु किसकों हे अरु इसका प्रमान क्या हे सो कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो कछु तुझकों जगत दृष्ट आताहे सो सब अविद्या हे ॥ सो अविद्या अनंत हे देस अरु कालकरी इसका अंत कदाचित नही होता तातें अनंत हे जिसकों अपणे वास्तव स्वरूपका अज्ञान तिसकों संत दिखाइ देताहे ॥ इस उपर एक इतिहास हे सो सुण ॥ हे रामजी आत्मरूप चिदाकाश हे तिस चिदाकाशके अणुविषे अनंत ब्रह्मांड स्थित हे ॥ तिसविषे एक ब्रह्मांड इसी जेसाहे ॥ तिस ब्रह्मांडके जगतविषे तुरमत नाम देस हे तिसका राजा विपश्चित था सो एक समें अपणी सभाविषे बेठा था ॥ अरु चारों दिसा उनकी सेना हे ॥ अरु बडे तेजवान अरु अग्नि देवताकों पूजताथा अवर किसी देवताकों पूजता न था अग्निहीकों देवता जाणोकरि पूजताथा अरु बडी लक्ष्मी करी सोभताथा ॥ अरु बहुत गुणकरि संपन्न था ॥ अरु बडे ऐस्वर्यकरि संपन्न था एक कालमें सभाविषे बेठाथा जो पूर्व दिसाकी उरतें हरकारा आया अरु कहत भया हे भगवन् तुमारा जो मंडलेश्वर पूर्व दिसाका था सो जराकरी मृतक भया हे ॥ सो कहां गया मानो ज मको जीतणे गया हे तातें पूर्व दिशाकी रक्षा करो उहां अवर मंडलेश्वर आता हे ॥ हे रामजी इस प्रकार उह कहताथा जो अवर हरकारा हलेसों आया अरु कहत भया ॥ हे भ भगवन् तुम जो पछमदिशाका मंडलेश्वर कियाथा सो तप करी मृतक भया हे ॥ अरु तहां एक अवर मंडलेश्वर आता हे ॥ तातें उहांकि रक्षा करो ॥ हे रामजी इस प्रकार दूसरा ह रकारा कहताथा ॥ जो अवर हरकारा आया अरु कहत भया ॥ हे भगवन् दक्षण दिशाका मंडलेश्वर पूर्व पछिमकी रक्षाके निमित्त गयाथा ॥ सो मार्गहि विषे मृतक भया ॥ तातें दो नोकी रक्षाके निमित्त सेना भेजहु जो शत्रु दृढ आनि हुआ हे ॥ विलंबका समा नहि सिघ्रही सेना पठावहु ॥ हे रामजी इसप्रकार राजा सुणीकर बाहिर निकस्या ॥ अरु कहने ला गा सब सेना मेरे पास आवे अरु दिशाकी रक्षाके निमित्त जावे ॥ बडे शस्त्र लेजावहु हस्ती घोडा रथ आदिक सेना लेजावहु ॥ हे रामजी इसप्रकार राजा कहताथा जो एक अवर पुरुष आया अरु कहत भया हे भगवन् उत्तर दिसाकी उर जो तुमारा मंडलेश्वर था ॥ तिसके उपरि अवर शत्रु आनि पडा हे बडा जुद्ध होता हे ॥ तातें उसकी रक्षाके निमित्त सेना भे जहु ॥ विलंबका समा नही सीघ्र ही भेजहु ॥ अरु दुष्ट आगें केइ चले आते हे में बहुरी जाता हों ॥ जो मेरा स्वामी जुद्ध करता हे ॥ हे रामजी इस प्रकार कहि करि उह गया ॥ त ब द्वारपाल आय करी कहत भया हे भगवन् उत्तर दिशाका मंडलेश्वर आया हे ॥ आज्ञा होवे तो ले आउं ॥ तब राजानें कहा ले आवहु ॥ उहां ले आया राजाके सन्मुख आय करि प्रणाम कीया ॥ राजा देखत भया जो अंग टूट गएहे ॥ अरु मुखतें रुधिर चला जाताहे ॥ अेसी अवस्थामेंभी धीर्य संयुक्त मंडलेश्वर कहत भया ॥ हे भगवन् इह मेरे अं गका हाल भयाहे में तुमारे देस राखणेकों चलाथा ॥ अरु मेरे उपर शत्रु आनि पडा मेरी सेना थोडी थी इस कारणतें दउडिकरि तुमारे पास आया हों जो प्रजाकी रक्षाकरहु ॥ हे रामजी जब इस प्रकार उसनें कहा तब राजानें सभ मंत्री बुलाए ॥ मंत्री राजा पास आये अरु कहत भए ॥ हे भगवन् अब तीन उपाव छोडहु अरु एक उपाव करहुं ॥ एक नम्रता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छोडहु, दुसरा धनदेणा छोडहु, अरु बुद्धिभेदभी छोडहु ॥ ये तीनों अब नही चहीते काहेतें जो नम्रता मानणेंवालें नही यह नीच पापी हे ॥ अरु धनदेणा इस कारणतें नही चहिता जो यह आधीन हे ॥ अरु बुद्धिकरि भेदभी नही जानते जो सभ मिलि एकठे भएहे ॥ तातें यह तीनों उपाय छोडहु अरु एक उपाय करहु जो जुधहि होवें ॥ विलंबका समा नही उनकी सेंना अब निकट आइहें अब उत्साह सहित कर्म करणा हें जो प्राणकी रक्षा नही चाहणी ॥ हे रामजी इह प्रकार जब मंत्रीनें कहा तब राजवचन कीया सभ सेना मेरे संभव करी उनके सनमुख जावहु निसान नगारे हस्ती घोडा रथि पियादा सेना साथ जावे ॥ इस प्रकार जब राजानें कहा तब सभ सेना विद्यमान आनि स्थित भइ नउवत नगारे बाजणे लागे नाना प्रकारके सस्त्र सहित चारों प्रकारकी सेना एकठी भइ तब राजानें कहा हे साधो तुम आगें जावहु सेना आगें होवे तिसके पा छे सेनापती जावे तिसके साथ जुद्ध करहु स्नानकरिकें मेंभी चला आता हों ॥ हे रामजी इस प्रकार कही करी मंत्रीकों चलाय अरु पाछें गंगाजल साथ राजानें स्नान कीया एक स्थानविषे अग्निका कुंडथा तिसके निकट जाय करि हवन किया ॥ जब अग्नी बहुत प्रज्वलित भइ तब राजानें कहा ॥ हे भगवन् एता काल मुजकों वितीत भया हे जो जथासास्त्र वि चरता रहाहों अरु अपणी प्रजाकों सुखी राखी हे अरु अभय कीया ॥ अरु सत्रुकों नास करणेहारा हों ॥ शत्रुकों मारी सिंघासनकें तले दीआ हे ॥ आप सिंघासन पर बेठा हों पा तालवासी दैत सभ में जीति राखे हें ॥ अरु दसो दिसा अपणे आधिन करी हे ॥ सात समुद्र पर्यंत मेरे भय करी कंपते हे ॥ अरु सभ ठोर मेरी कीरती हो रही हे ॥ अरु रत्नोंके स्थान मेरे भरे हुए हे ॥ वस्त्र सेना घोडे हाथीभी बहुत हे ॥ अरु बडे भोगभी में भोगे हें अरु दानभी बडे बडे कीए हे सिद्ध देवता विषेभी मेंरा जस हुआ हे ॥ सभ उर मेरा जस हुआ हे ॥ अरु शरीरभी बडा हुआ हे ॥ अरु क्षोभभी बडा आनि प्राप्त भया हे ॥ अब मेरा जीवणेतें मरणा भला हे ॥ हे भगवन् में तुमकों सीस निवेदन करता हों कृपाकरिकें लेवहु ॥ अरु ज व मुजपर प्रसन्न होवहुगे तब एककी चार मुरत देणी जो चारों उरकों जावें ॥अरु जहां मुजकों कछु कष्ट होवे तहां दर्सन देणा॥हे रामजी इस प्रकार कही करी खड्ग निकास्या अप णा सीस काटिकरी अग्निविषे डारि दिया अरु धड आपहि अग्निविषे जाय पडा ॥ सीस धड दोंनों भस्म होगए अग्नि भछन करि लिए बहुरी उसी जेसी चार मुरतां निकसी आइ उसी जेसें आकार वस्त्र भूषण मुकुट कवच पहिरे हुए नाना प्रकारके शस्त्र धारे हुए उदे भए ॥ हे रामजी इस प्रकार बडे तेज संयुक्त चारो राजा विपश्चित प्रगट भए रथ हस्ती घोडा प्यादा चारो प्रकारकि सेनाभी प्रगट भइ ॥ अरु चारो उरतें उहां शत्रु आणि जुद्ध करने लागे बडा जुद्ध होता हे नगर जलाते हे ॥ अरु हाहाकार शब्द होता हे सुरविर जुद्धविषे प्राणकों त्यागते हे अरु उछली करी लडते हे बडे रुधिरके प्रबाह चलते हे खड्ग बरछीकि वरषा होती हे अग्निका अट्ट अट्ट शब्द होता हे ॥ मानों समेबिना प्रलय आणे लागी हे बडा जुद्ध होता हे जो सुरमेहें सो जुद्धविषे मरणेकों जीवणा मानता हे अरु जिवणेकों मरण जानते हे अेसे निश्चयको धारिके जुद्ध करते हे ॥ अरु कायरहे सो भागि भागि जाते हे ॥ जेसें गरुडके भेकरी सर्प भागी जाते हे ॥ अरु सुरमे सनमुख हो करी लडतेहे ॥ इसप्रकार बडा जुद्ध होणें लागा रुधिरकी नदीया चली ॥ तिनविषे हस्ती घोडा रथ सुरमे वहते जावे अरु बडे बडे वृछ नगर गिरते वहते जावे ॥ अरु मांस भछनके निमित्त जोगणी आनि स्थित भइ हे जो जो जुद्धविषे मृतक होवे तिनकों अपछरा विद्याधरी विमानउपर चडाय करी स्वर्ग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कों ले जावे ॥ हे रामजी इसप्रकार जब जुद्ध हुआ तब राजा विपश्चितकी सेना सब शून्य होगइ क्या जो थोडी हो गइ ॥ अरु राजानें सूण्या जो सेना बहुत मारी गइ हे ॥ तब रा
जानें अस्वार होकरी आय देख्या जो सेना थोडी होगइ हे ॥ एकएक राजा एकएक उरकों गया ॥ चारों राजा चारों उरकों गए ॥ अरु विचार कीया जो यह महा गंभीर सेनारूपी
समुद्र हे तिसविषे शस्त्ररूपी जल हे धारारूपी तरंग हे अरु मछरूपी सूरमे हे अेसा जो समुद्र हे तिसकों अगस्त होकरी में पान करों अेसें विचार करी उद्यम किया काहेतें जो वि
शेष सेना देखी एकतो आगेंहीकों चले आवे अरु एक सुरमें तेज करी सेनाकों जलावे अरु तिसरी बहुत हे अेसी तीन प्रकारकी सेनाके तीन उपाय कीए ॥ प्रथम तो वायव्या
स्त्र हाथलीया परमात्म ईस्वरकों नमस्कार कीया अरु मंत्र पढीकें पवनका अस्त्र चलाया तिसकरि अंधेरी आइ तब जेती सेना आगें चली आतीथी सो सभ पाछें उलटी उडणें लागी
बहुरी मेघरूपी अस्त्र चलाया तब वर्षा होणे लागी ॥ तिसकरि जो तेज उनका सेनाकों जलाताथा सो सीतल होगया ॥ तिसके अनंतर सिव अस्त्र चलाया सो केसा चलाया॥ प्रथम
सस्त्रकी नदी चली बहुरी त्रिसूलकि नदी चलि ॥ बहुरी चक्रकि नदी चली ॥ बहुरी वज्रकी नदी चली ॥ बरछिकी नदी चली ॥ विजलीकी नदी चली अग्नीकी नदी चली इत्यादिक जो
शस्त्र अरु अस्त्र हे तिनकी वर्षा हुइ जब इस प्रकार नदीयां चली ॥ तब जो कछू सेना सनमुख आतीथी सो मृतक होगइ ॥ जेसें कमलनी काटी जातीहे तेसें सुरवीर काटे जावे पहाड
की कंदरा गिरी उडते बहुत जावे समुद्रविषे जाय पडे सुमेर कंदराविषे जाया छुपे समुद्रविषे जायकरी सेना डुबे ॥ जेसें अज्ञानी विषयमें डुबतेहे इस प्रकार दोनों उरतें सेना शून्य भइ
चारों दिसाकी सेना नासकों प्राप्त भइ चीन महाचीन देसके अरु पहाड कंदराके रहणेवाले सब वहते जावे ॥ हे रामजी केइ शस्त्र करी अरु आंधी करी उडे सो सभ क्षेत्रविषे जाय
पडे केइ वनविषे केइ नीचे देसविषे जो पुण्यवान था सो उतम क्षेत्रविषे जाय पडे ॥ मृतक हुए उह स्वर्गकुं गए अरु पापी नीच देसविषे जाय पडे तिसकरी दुर्गतिको प्राप्त हुए केइ पि
साच हुए ॥ कितनेंकों विद्याधरी लेगइयां केइ ऋषीश्वरके स्थानोंविषे जीते जाय पडे ॥ तिनकि उननें रक्षा करी इसी प्रकार बाण करी छेदे हुए नासकों प्राप्त भए रुधिरकि नदीयांविषे
वहते समुद्रकी उर चले जावे ॥ हे रामजी जब सब सेनाशून्य होगई तब आकास सुद्ध हुआ ॥ जेसें ज्ञानीका मन निर्मल होता हे तेसें आकास अधिक क्षोभते रहित भया जब सभ
सेना शून्य भइ तब चारों राजा आगेंकों चले जावे ॥ हे रामजी चारों विपश्चित चारों दिसाके समुद्र उपर जाय प्राप्त भये ॥ तब क्या देखे जो बडे गंभीर समुद्र हे कइं रत्न
चमकते हे कइं हीरा मोती चमकतेहे इत्यादिक रत्न मणीकि जात सब देखत भयें अरु बडे गंभीर समुद्रविषे मछ बडे देखते भये अरु तरंग उछलते हे अरु रेतीविषे नाना प्रकारकें वृच्छ
लगे हुए हे लौंग एलाचीके वृछ चंदनके वृछ हे इत्यादिक वृछ समुद्र उपर जाय करी देखते भये॥ ॥इतिश्री यो० निर्वाणप्र० विपश्चित समुद्रप्राप्तिर्नाम द्विशताधिकाष्टादशःसर्गः॥ २१८

॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी जब इस प्रकार राजा विपश्चत समुद्र पार जाय प्राप्त भए तब उनके साथ जो मंत्री पंहूचेथे सो राजाकौ सब स्थान दिखावते भए केसें स्थान हे बडे
गंभीर स्थान अरु बडे गंभीर समुद्र जो पृथ्वीके चउफेर वेष्टित हे अरु बडे तमाल वृक्ष अरु बावलीयां पर्वतकी कंदरा हे तलाव हे नाना प्रकारके स्थानोकों देखते भए अैसा स्थान रा
जाकों मंत्री दिखाइ करि कहत भए हे राजन तीन पदार्थ बडे अनर्थके कारनहे अरु परमसारका कारणहे॥एक तो लक्ष्मी अरु दूसरा देह आरोग अरु तीसरा जो बनावस्था जो पापी जीवहे सो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लक्ष्मीकों पापविषे लगावतेहे अरु देह आरोगकरि विषयकों सेवतेहे ॥ अरु जोबन अवस्थाविषेभी सुकृत नहि करते पाप करतेहे ॥ अरु जो पुण्यवांन हे सो मोक्षविषे लगातेहे ॥ लक्ष्मीकरि जज्ञादिक सुभ कर्म करतेहे यह अरोग करि परमार्थ साधतेहे ॥ जोवन अवस्थाविषेभी शुभ कर्म करतेहे पाप नहि करते ॥ हे राजन समुद्र अरु पर्वतके किसी ठोर विषे रत्न होतेहे किसी ठोरविषे दर्दुर होतेहे ॥ तेसें संसाररूपी समुद्रविषे कहूं रत्नोंकी न्यांई ज्ञानवान होतेहे ॥ अरु अज्ञानीरूपी दर्दुर होतेहें ॥ हे राजन यह समुद्र केसाहे मानों जीवन्मुक्तहे काहेतें जो जल करीभी मर्यादा नही छांडता अरु राग दोषतें रहित हे किसी स्थानविषे दैत रहते हे ॥ कहुं पंख संयुक्त पर्वत हे ॥ कहुं वडवाग्नि हे कहुं रत्न हे ॥ परंतु समुद्रकों न किसी स्थान विषे राग हे न दोष हे ॥ जेसें ज्ञानवानकों किसीविषे राग दोष नही परंतु सबमें ज्ञानवान कोउ विरला होता हे ॥ जेसें जिस वांसतें मोती निकसता हे सो वांस विरला होता हे ॥ अरु जिस सिपमें मोती निकसता हे सो सीपभी विरला होति हे ॥ तेसें तत्वदर्सी ज्ञानवान कोउ विरला होता हे ॥ हे रामजो संपूर्ण रचना इहांकी देख पर्वत केसें हें जिनके किसी स्थानविषे पंछी रहते हे ॥ किसी स्थानविषे विद्याधर हे व देवीयां विलास करते हे ॥ कहुं जोगी रहते हे ऋषीश्वर मुनीश्वर रहते हे ॥ कहुं ब्रह्मचारी वैरागी रहते हे ॥ इत्यादिक पुरुष रहते हे यह दीप हे अरु शांतसमुद्र हे जिनके वडे तरंग उछलता हे अरु पर्वतका कौतक देख ॥ आकाश देख चंद्रमा सूर्य तारे देख ऋषी मुनि देख सर्वकों ठोर आकाश दे रहा हे महा पुरुषकी न्यांइ अरु आप सदा असंग रहता हे शुभअशुभ दोनोंविषे तुल्य हे ॥ स्वर्गादिक शुभ स्थान हे अरु चांडाल पापी नर्क स्थान हे अरु अपवित्र हे परंतु आकाश दोनोंविषे तुल्य हे ॥ असंगता करकें निर्विकार हे ॥ जेसें ज्ञानीका मन सर्व स्थानतें निर्लेप होता हे ॥ तेसें आकाश सर्व पदार्थतें असंग अरु न्यारा हे अरु महात्मा पुरुषकी न्यांइ सर्व व्यापी हे ॥ हे आकाश तूं केसा हे सर्व प्रकाश तेरेविषे अंधकार दृष्ट आता हे यह आश्चर्य हे ॥ हे आकाश तुं सबका आधारभूत हे तुजकों शून्य कहते हे सो मूर्ख हे ॥ दिन तुजविषे स्वेत भासते हे अरु रात्रकों अंधकार भासता हे ॥ अरु संध्याकालमें तेरे विषे लाली भासती हे अरु तूं तीनोंतें न्यारा हे यह तीनों राजसी तामसी सात्विकी गुण हे तूं इनके होतेभी असंग हे ॥ हे आकाश तूं निर्मल हे प्रकाश अरु तम तेरेविषे दृष्टी आता हे परंतु तूं सदा ज्योंका त्यों हे ॥ यह अनित रूप हे चंद्रमा तेरे विषे सीतलता करता हे ॥ अरु सूर्य दाहक होते हे ॥ अरु तीर्थ आदिक पवित्र स्थान हे पापि आदिक अपवित्र स्थान हे परंतु सबविषे एक समान ज्योंका त्यों रहता हे वछके बढणे उंचे होणेकों तूंही देता हे अपणी महिमाकों तूं आपहि जाणे अवर को उ तेरी महीमाकों पाय नही सकता ॥ तूं निष्किंचन अद्वैत हे अरु सर्वकों धारि रहा हे ॥ अरु सर्वका अर्थ तेरे करि सिद्धि होताहे ॥ तृण जल नीचेंकों जाताहे अरु तुं सबतें उंचा हे अरु विभू हे अनेक पदार्थ तेरेविषे उतपत्ति होतेहें अरु नष्ट होजाते हें तुं सदा ज्योंकात्यों रहता हे ॥ जेसें अग्नितें चिणगारे उपजतेहे अरु अग्निहीं विषे लीन होजातेहें ॥ तेसें तेरेविषे अनंत जगत उपजतेहे अरु लीन होतेहे तुं सदा ज्योंकात्यों रहताहे ॥ जो तुझकों शुन्य कहते हे सो मूढ हे ॥ हे राजन् अेसा आकाश कवन हे सो सुण ॥ अेसा आकास आत्मा हे जो चैतन आकास हे तिसविषे अनंत जगत उतपत्ति होतेहे अरु लीन होजातेहे ॥ तिसकों जो शून्य कहतेहे तो महा मूर्ख हे ॥ जो सर्वका अधिष्टान हे अरु सर्वकों धारि रहाहे अरु सदा निसंग हे ॥ अरु अैसें चिदाकासकों नमस्कार हे ॥ हे राजन् यह आश्चर्य हे जो सदा एकरस हे ॥ तिस विषे नाना तरंग भासतेहे इही मायाहे ॥ हे राजन एक विद्याधर अरु विद्याधरि थे तिन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के मंदिरविषे एक ऋषि आय निकस्या तिसका विद्याधरनें आदर भाव न कीया तब रिषीसरनें श्राप दीया जो तुं द्वादस वर्ष पर्यंत वछ होवेगा तब उह विद्याधर वछ होगया अब जो हम आयेहे हमारे देखतेही उह सापतें मुक्ति हुआ वछभावकों त्यागकरि बहुरी विद्याधर हूआ हे ॥ इह ईश्वरकी माया हे कबहु कछु होजाताहे कबहु कछु हो जाताहे ॥ हे मेघ तुं धन हे तेरी चेष्टाभी सुंदर हे अरु तीर्थविषे सदा तेरा स्नान होताहे अरु तुं सबतें उंच विराजता हे सब आचार तेरा भला दृष्ट आताहे परंतु एक तेरे विषे नीचता हे जो गडेकी वर्षा करताहे ॥ तिस करी खेतीयां नष्ट हो जातीयां हे ॥ बहुरी उगतीयां नही ॥ तैसें अज्ञानीकी चेष्टा देखणे मात्र सुंदर हे अरु अंतरतें मूर्ख हे तिनकी संगती बुरी हे ॥ अरु ज्ञानवानकी चेष्टा देखणे मात्र भली नही तोभी उनकी संगती कल्यान करती हे ॥ हे राजन सबतें नीच स्वान हे काहेतें जो कोइ तिसके निकट आता हे तिसकों काटता हे अरु घरघरविषे भटकता फिरता हे अरु मलीन स्थानोंविषे जाताहे ॥ तैसें अज्ञानी जीव श्रेष्ट पुरुषकी निंदा करताहे अरु मनविषे तृष्णा रहती हे ॥ अरु विषयरूपी मलीन स्थानोंविषें गिरतेहे ॥ सो मूर्ख मनुष मानों स्वान हे अरु स्वान नीचतें नीचहे जो ब्रह्मानें संपूर्न जगतकों रचाहे सुभभी अरु असुभभी तिसविषे स्वान नीचहे सो स्वान क्या समुझा हे ? एक पुरुष स्वानसो प्रश्न करत भया ॥ हे स्वान तुझतें कोइ नीच हे अथवा नही तब स्वाननें कहा मुझतें नीच मूर्ख मनुष्य हे उनतें में श्रेष्ठ हों प्रथम तो में सुरमा हों अरु जिसका भोजन खाता हों तिसकि रक्षा करता हों अरु उसके द्वारे बेठा रहता हों अरु मूर्खतें इह तीनों कार्य नही होते तातें में उसतें श्रेष्ठ हों ॥ काहेतें जो मूर्खकों देहाभीमान हे तातें स्वानसों नीच हे ॥ हे राजन परम अनर्थ का कारण देहाभिमान हे देहके अभिमान करकें परम आपदाकों प्राप्त होताहे सो मूर्ख नही मानों कउआ हे कउआ क्या करता हे सभतें उंचे टास परि जाय बेठताहे अरु कांका करता हे मानों मुषकी धुजा बिराजती हे ॥ हे राजन कमलकी खाण तालके निकट एक कउआ जाय निकस्या क्या देखे जब भंवर कमलकी सुगंध बेठे लेते हे तिनकों देखी करी लागा हसणे अरु कांकां शब्द करत भया ॥ तिसकों देखी भंवरे हसे जो यह कमलकी सुगंधकों क्या जाणे ॥ तैसें जिग्यासी भंवरेवत हे परमार्थरूपी सुगंधकों लेते हें अरु जो अज्ञानीरूपी कउए हे सो परमार्थरूपी सुगंधकों नही जानतें ॥ इस कारणतें मूर्खकों देखी करी जिग्यासी हसते हे जो आत्मरूपी सुगंधकों नही जानते अरे कउआ तुं क्यों हंसकी रीस करता हे ॥ हंस तो हीरा मोती चुगणे हारेहे अरु तुं नीच स्थानोकों सेवणेहारा हे ॥ मंत्रीनें कहा हे भमरे कोएल तुम कमलको देखी करी क्या प्रसंन होते हो प्रसंन तब होवहु जब वसंत ऋतु होवे यह तो वर्षा कालका समाहे यह फुल गडे करी नष्ट हो जावेगें ॥ हे राजन कोएल रूपी जिग्यासीहे तिनकों यह उपदेशहे ॥ हे जिग्यासी जो सुंदर पदार्थ तुमकों दृष्टी आतेहे इनकों देखि करी तुम क्यों प्रसंन होते हो ॥ तब प्रसंन होवे जो यह सत्य होवे यह तो मिथ्या हे ॥ अविद्या करकें रचेहे तुम क्यों प्रसंन होतें हों ॥ अपणें कुलविषे जाय बेठहु ॥ अज्ञानीका मार्ग छोडिदेवहु ॥ जेसें कउआ हंसविषे जाय बेठताहे ॥ तोभी उसका चित्त अपणे गंदगीके भोजनविषे होता हे ॥ जो हंसका आहार मोती हे तिन मोतीकी उर देखताभी नही ॥ तैसें अज्ञानी जीव कदाचित् संतकीसंगतिविषे जायभी बेठताहे तोभी उसका चित्त विषयकी उर भ्रमता फिरता हे स्थिर नही होता ॥ अरु जेसें कोएलका बचा कउआकों माता पिता जाणी करि उनविषे जाय बेठताहे तब उनकी संगतीकरि इहभी गंदगीके भोजन करनेहारा हो जाता हे ॥ तिसको वर्जन करते हे रे बेटा तुं कउआकी संगती मत बेठहु ॥ अपणे कुलविषे बेठ ॥ काहेतें जो तेराभी नीच

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आहार हो जावेगा तेसें जिग्यासी जो अज्ञानीका संग करता ह तब उनके अनुसार तिसकों विषयकी तृष्णा उत्पत्ति होती हे तिसके वर्जन करतेहें रे जिग्यासी तुं मूर्ख अज्ञानी विषे म
त बेठ अपणे कुल हे संतजन तिनविषे बेठ जेसें कोएलके बच्चेकों कउए सुख देणेहारे नही होते ॥ तेसें मुर्ख तुजकों सुख देणेहारे नही होवेगे मंत्री बद्रुरी कहता हे अरी इल तुं क्यों
हंसकी रीस करती हे तुंभी बहुत उंचें उडती हे ॥ परंतु हंसका गुण तेरेविषे कोउ नही ॥ जब तुं मांसकों पृथ्वी पर देखती हे ॥ तब उहां गीर पडती हे अरु हंस नही गिरते ॥ तेसें जो
मुर्ख हे सो संतकी न्याइ उंचे कर्मभी करते हे ॥ परंतु विषयकों देखी करी गीरते हे अरु संत नही गिरते तो मुर्ख संतकी केसें रीस करे ॥ बद्रुरी मंत्री कहता हे हे बगला तुं हंसकी रीस
क्या करता हे अपणे पासंडकों छुपाएकरी तुं आपकों हंसकी न्यांइ उज्वल दिखाता हे ॥ जब मछ नीकसति हे तव तुं ग्रास लेता हे यह तेरे विषे अवगुण हे अरु हंस मानससरोवरके
मोती चुगणेहारे हे तुं दोएमेंते तृष्णा करीके मछी खाणेहारा हे ॥ तुं क्यों आपकों हंस मानता हे ? ॥ तेसें अज्ञानी जीव विषयकी तृष्णा करते हे ॥ अरु ज्ञानवान विवेक करि तृप्त हे
तिनकी रीस अज्ञानी क्यों करता हे ॥ हे राजन् जो हंस हे सो सदा अपणी महिमाविषे रहते हे ॥ अरु अपणा जो मोतीका आहार हे तिसकों भोजन करते हे अवर किसी पदार्थका
स्पर्स नही करते ॥ जेसें चंद्रमुखी कमल चंद्रमाकों देखिकरी सोभा पावते हे चंद्रमा विना सोभा नही पावते॥ तेसें बुद्धिभी तब सोभा पावती हे जब ज्ञान उदे होता हे आत्मज्ञान वि
ना बुद्धि सोभा नही पावती अरु वडे वडे सुगंधवाले वृछ हे तिनका महात्म भंवरे ही जानते हे इतर जीव नही जानते ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी समुद्रके कांठे पर राजा विप
श्चितकों मंत्री अेसें कही करी बद्रुरी कहत भए॥हे राजन अब पृथ्वी नगरके मंडलेस्वर स्थापन करो॥हे रामजी जब अेसें मंत्रीनें कहा तब सर्वदिसाके मंडलेस्वर स्थापन कीए चारों राजा
जो बेठेथे अपणी अपणी दीसाके समुद्र उपर सो आपसमें कहत भए अपणें मंत्रीसों ॥ हे साधो अब हम दिगविजे करी हे समुद्र पर्यंत अब हमारी जय हूइ हे अब चेत जो हे दृश्य सो
दृश्य विभूतिकों देख ॥ समुद्रके पार दीप हे बद्रुरी समुद्र हे ॥ बद्रुरी दीप हे बद्रुरी समुद्र हे ॥ सप्त दीप सात समुद्र हे तिनके पार क्या हे इस प्रकार सर्व दृश्य देखणेकी इछा करीकें अ
ग्नि देवताका आवाहन किया तब इनकी दृढ भावना करीकें अग्नि देवता सनमुख आनि स्थित भया अरु कहत भया ॥ हे राजन जो कछु तुमकों वांछा हे सो मांगो तब राजानें कहा
हे भगवन जो ईश्वरकी माया पंचभूतक दृश्यविषे भूत हे ॥ तिनके देखणेकी हमारी इछा पूरन करणेहारे तुम हों॥ हे देव हम इस शरीर साथ दृश्य देखणे जावे॥जब यह शरीर चलणेतें
रहित होवे तव मंत्र सत्ता करिकें जावें ॥ जहां मंत्रकी गमभी न होवे तहां सिद्धता करिकें जावें ॥ जहां सिद्धताकी गमभी न होवे तहां मनके वेग करी जावे मृतभी होय न जावें यह
वर हमकों देवहु ॥ हे रामजी जब इस प्रकार राजानें कहा तब अग्निनें कहा अेसें ही होवे ॥ इस प्रकार कही करी अग्नि अंतर्धान हो गया ॥ जेसें समुद्रसों तरंग उठ करी बद्रुरी ले हो
जावे ॥ तेसें अग्नि अंतर्धान हो गया जब राजा विपश्चित वरकों पाए करी चलणेकों समर्थ भये तब जेते कछु मंत्री मित्र थे सो रुदन करणे लागे ॥ हे राजन तुमनें यह क्या निश्चय
कियाहे ॥ ईश्वरकी मायाका अंत किसीनें नही पाया तुम चलो अपणे स्थानकों यह क्या निश्चय तुमनें धाराहे ॥ हे रामजी इस प्रकार मंत्री कहते रहे ॥ परंतु राजा उनकों आग्या दे
करी एक एक दिसाके समुद्रविषे प्रवेश किया ॥ चारों दिशाविषे चारों राजा प्रवेश करत भये ॥ जो वडे बडे शक्तिवान गण मंत्री थें सो साथहि चले तब राजा मंत्र शक्ति करीकें समुद्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कों लंघ गया ॥ जेसें कडुं पृथ्वी उपर चले तेसें चल्या गया अवर दिपविषे जाय निकस्या बहुरी वडा समुद्र आया तिसविषे जाय प्रवेश किया अरु वडे तरंग उछले जिनका सो जो जन पर्यंत विस्तार हे ॥ कब अधकों उर्धकों जावें ॥ हे रामजी एसें तरंग उछले मानों पर्वत उछलते हे ॥ जब उर्धकों उछले तब स्वर्ग पर्यंत उछलते भासे ॥ अरु जब अधकों जावें तब पाताल पर्यंत चलतें भासे ॥ जेसें तृण फिरताहे तेसें राजा फिरहि इस प्रकार कष्टतें रहित समुद्रकों लंघ गऐ ॥ अरु दिसाकों लंघगये परंतु मध्य जो वृत्तांत हुआ हे सो सुण क्षीर समुद्र विषे एक मछ रहताथा केसा मछ था जो सर्व देवता तिसकों प्रणाम करतेथे विष्णु भगवानके मछ अवतारके परिवारविषे था जब राजानें क्षीर समुद्रविषे प्रवेश किया तब राजाकों मुखमें डारी लिया ॥ तब राजा मंत्रके बल करी तिसके मुखतें निकसी गया आगें बहुरी एक मछ था तिसनेंभी मुखमें लिया तिसतेंभी निकसी गया ॥ बहुरी आगें पिसाचनीका दे श था उहां राजाकों पिसाचनें मोहित किया काम करीकें अरु दक्ष प्रजापतिकी कछु अवज्ञा करी तिसनें सराप दिया तिस करी राजा वछ हो गया केता काल वछ रहा ॥ बहुरी छुटा एक देशविषे दर्दुर जाय हुआ सो वर्ष पर्यंत खाइ विषे पडा रहा ॥ बहुरो तिसतें छुटा मनुष आय भया तहां किसी सिद्धके श्राप करी सि ला होगया ॥ सो वर्ष पर्यंत सिलाहि रहा तिसतें उप्रांत अग्नि देवतानें सिलातें छुडाया बहुरी मनुष हूआ तब उह सिद्ध आश्चर्यमान हुआ जो मेरे शापकों दुर करिकें मनुष हुआहे ॥ यह तो मुजसोंभी वडा सिद्ध हे अेसें जाणीकरी तिसके साथ मैत्रीकरी इस प्रकार दुसरे समुद्रकों लंघता गया क्षीर समुद्र खारी समुद्र इक्षुके रसके समुद्रकों द्वीपकों लंघता गया बहुरी एक अपसरा करिके मोहित हुआ बहुतकालकरी उंहांतें छुटा बहुरी एक देसविषे पंछी हुआ बहुत काल पर्यंत पंछी होकरी छुटा ॥ बहुरी एक गोपी पीसाचनी थी तिसनें बेल करिके रा ख्या ॥ तब दुसरे विपश्चितनें बेल विपश्चितकों उपदेस कर जगाया ॥ हे रामजी चारों दिसाविषे चारों विपश्चित भमतें फिरे ॥ दक्षण दिसाका तो पिसाचनी करिकें मोहित हुआ कामुक भया ॥ इसतें लेकरि उह जन्मोंकों पावत भया ॥ अरु पूर्वका वहता हुआ मछके मुखमें चलागया उसनें निकासी डारा ॥ इसतें लेकरी तो उह अवस्था देखत भया अरु उत्तरदिसा का जो होत भया ॥ इसी लेकरी अवस्था देखतभया ॥ अरु पश्चिम दिसाका हे हेमचूपंछीकी पिष्ट पर जो प्राप्त हुआ तिसनें कुसादीपविषे जाय डार्या ॥ इसतें लेकरी उहभी अनेक अवस्थाकों प्राप्त हुआ ॥ हे रामजी एक एक विपश्चित अनेक योनी अरु अरु अवस्थाका भिनभिन अनुभव करतभए ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् तुम कहतेहो विपश्चित एकही था उनकी संवितभी एकही थी आकारभी एकही था तो भिन्न भिन्न रुचि केसें भइ जो उह पंछी हुआ उह वछ हुआ इसतें लेकरी वासनाके अनुसार शरीरकों पावतें फिरे ॥ वसिष्ठो वाच ॥ हे रामजी इसविषे क्या आश्चर्य हे उनको संवित एक थी परंतु भम करकें भिन्नता हो जाती हे ॥ जेसें किसी पुरुषकों सुपना आता हे तिसविषे पशु पंछी हो जाते हे अरु भिन्न भिन्न रुचिभी हो जातीहे तेसें उनकी भिन्न भिन्न रुचि हो गइ अरु अवर देख जो शरीर एकही होताहे ॥ तिसविषे नेत्र श्रवण नासिका जिव्हा त्वचाकी रुचि भिन्न भिन्न हो जाती हे अपणे अपणे विषयकों ग्रहण करतो हे ॥ सो एकही शरीरविषे अनेकता भासती हे ॥ तेसें उनकी एकही संवितथी परंतु संकल्प भिन्न भिन्न होगय ॥ मनके फुरण करी एकविषे अनेक भासी ॥ जेसें एकही जोगेस्वर होताहे सो इछा करकें अवर अवर शरीरकों धारि लेताहे एकविषे अनेक होजाताहे ॥ अरु एक सहस्र बाहु अर्जुन था सो एक भुजा साथ जुद्ध करताथा ॥ दुसरी भुजा साथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दान करताथा अरु एक साथ लेता था इसि प्रकार सब भुजा साथ चेष्टा करता था उहभी भिन्न भिन्न हूए एकही शरीरविषे भिन्न भिन्न चेष्टा होतीहे ॥ अरु विष्णु भगवान कहुं दैत साथ जुध कर ताहे कहुं कर्म करताहे कहुं लीला कर्ताहे कहुं सेन करी रहताहे सो संवित तो एकहीहे परंतु चेष्टा भिन्न भिन्न होतीहे ॥ तेसें उनकी संवितविषे अनेक रुचि हुइ इसविषे क्या आश्चर्यहे ॥ हे रामजी इस प्रकार जन्मतें जन्मांतरकों अ विद्यक संसारविषे देखत भए ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन उह तो बोधवान विपश्चित थे बोधवान तो जनम नही पावता उनकों जनम किस प्रकार हुआ ॥ वसिष्ठो वाच ॥ हे रामजी उह विपश्चित बोधवान न थे परंतु बोधके निकट थे धारणा अभ्यासवाले थे जो ज्ञानवान होते तो दृश्य भम देखणेकी इछा काहेकों करते तातें उह ज्ञानवान न थे धारणा अभ्यासी थे अरु समुद्रकों लंघि गए अरु मछके उदरतें बल करि निकसे ॥ सो यह योगसक्ति प्रसिद्ध हे ज्ञानका लछण सुसंवेद हे असंवेद नही राजा विपश्चित ज्ञानवान न थे इस कारण तें देस देसांतरविषे भमते रहे ॥ ज्ञानविन अविद्यक संसारविषे जनम मरनमें भटकते रहे ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन ज्ञानवान जोगेस्वरकों भूत भविष्य वर्तमान तीनोंकालका ज्ञान केसें होता हे ॥ जेसें तीनों काल उसकों विद्यमान हे अरु एक देसविषे स्थित हूआ सर्वत्र कर्मोंकों केसें करता हे ॥ सो सभ मेरे तांइ कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी अ ज्ञानीकी वार्ता यह में तुझकों कही हे ॥ अरु जेता कछुजगत हे सो सभ चिदाकास स्वरूप हे ॥ जिनकों एसी सत्ताका ज्ञान हूआ हे सो महा पुरुष हे ॥ जेसें सुपनेंतें कोइ पुरुष जाग्या हे तो सुपनेकी दृष्ट सभ उसकों अपणांही स्वरूप भासती हे उसविषे बंधमान नही होता ॥ हे रामजी जेती कछु नानात्व भासती हे सो नाना नही अरु अनानाभी नही केवल आत्मसत्ता ज्योंकीत्यों अपणे आपविषे स्थित हे जेसें आकास अपणी शून्यताविषे स्थित हे तेसें आत्मा अपणे आपविषे स्थित हे अरु यह तीनों कालभी ज्ञानवानकों भमरूप हो जाते हे ॥ सभ जगतभी ब्रह्मरूप हो जाते हे द्वैत भाव उसका मिटि जाता हे ॥ ऐसें ज्ञानवानकों ज्ञानीही जानता हे अवर कोउ जानी नही सकता ॥ जेसें अमृतकों जो पानकरता हे सोइ स्वाद जानता हे अवर कोउ जानी नही सकता ॥ हे रामजी ज्ञानी अरु अज्ञानीकी चेष्टा तो तुल्य भासती हे परंतु ज्ञानीके निश्चेविषे कछु अवर हे ॥ अज्ञानीके निश्चेविषे अवर हे जिसका अंतर सीतल भया हे सो ज्ञानवान हे अरु जिसका अंतर जलता हे सो अज्ञानी हे उह बांधा हुआ हे अरु ग्यानवान हे तिसका सरीर चूर्ण होवे अथवा राज आनि प्राप्त होवे तोभी उसकों राग दोष नही उपजता सदा ज्योंकात्यों एकरस रहता हे ॥ उह जीवन्मुक्त हे परंतु यह लछण उसका अवर कोउ नही जाणी सकता उह आपहि जाणता हे सरीरकों दुःखभी आय प्राप्त होता हे सुखभी आय प्राप्त होता हे ॥ मरताभी हे अरु रुदनभी करताहे हस्ताभी हे लेताभी हे देताभी हे इसतें लेकरी सभ चेष्टा करता दृष्ट आता हे ॥ अपणे निश्चय विषे न दुःखी होता हे न सुखी होता हे न देता हे न लेता हे सदा ज्योंकात्यों रहता हे ॥ हे रामजी व्यवहार तो उसकाभी अज्ञानीकी न्यांइ दृष्ट आता हे ॥ परंतु अंतरतें उसका यह निश्चय होता हे ॥ अद्वुत पदविषे स्थित रहता हे ॥ गिरता कदाचित् नही परम उदितरूप होता राग सहित दृष्टभी आता हे परंतु अंतरतें राग किसि विषे नही ॥ क्रोध करताभी दृष्ट आताहे परंतु उसकों क्रोध कदाचित् नही ॥ जेसें आकास सुभ पदार्थकों धारता हे ॥ धुम अरु बदल करि आछांबाभी दृष्ट आता हे परंतु किसी साथ स्पर्श नही करता तेसें ज्ञानवानविषे सभ क्रिया दृष्ट आती हे परंतु अपणे निश्चय विषे किसी साथ स्पर्श नही करता जेसें नटवा स्वांग ले आता हे ॥ चेष्टा करता देखीता हे अरु अंतरतें अपणे नटत्वभावविषे निश्चय होताहे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेसें ज्ञानवानकोंभी सर्व क्रियाविषे अपणां आत्मभाव निश्चय होता हे जेसें जिसकों सुपना आता हे अरु सुपनेविषे अपणा पूर्वरूप स्मरन आता हे ॥ तब सुपनेके पदार्थविषे वर्तता हे तोभी उनके सुख विषे आपकों सुखी नही मानता अरु दुःखविषे आपकों दुःखी नही मानता सभ सृष्टि उसकों अपणा स्वरूप भासती हे तेसें ज्ञानवानकों अपणे स्वरूपके निश्चय करिकें सुख दुःखका क्षोभ नही होता अरु जो अैसें पुरुष हे तिनकों क्या दुःख साथ होता हे ॥ जेसें उनकी इछा होती हे तेसी ही सिद्ध होकरि भासती हे ॥ हे रामजी यह जेती सृष्टि हे सो सभ चित्त सत्ताविषे हे ॥ जो जोगेस्वर पुरुष तिसविषे स्थित होकरि जहां प्राप्त हुआ चाहतेहे तहां अंतवाहक साथ जाए प्राप्त होते हें अरु तीनों काल उनकों विद्यमान होते हे ॥ उह साधन कछु नही परंतु ज्ञानी अवस्य करि किसी निमित्त जतन नही करता ॥ जेसा आनि प्राप्त होता हे तिसविषे प्रसंन रहता हे ॥ हे रामजी एक कालमें ब्रह्माजी साम वेदकों उर्ध मुख करकें गायन कर्तेथे अरु सदासीवका मान न कीया अपमान कीया तब सदासिवनें अपणे नख साथ ब्रह्माके पंचसीस काटि डारे ॥ परंतु ब्रह्माजीके मनविषे कछु क्रोधन फुऱ्या ॥ अरु विचारत भया जो मेंभी चिदाकास था अबभी चिदाकास हो मेरा तो कछु गया नही ॥ सिर साथ मेरा क्या प्रयोजन हे ॥ न कछु हानि हे न कछु लाभ हे ॥ हे रामजी इस प्रकार सर्व विस्व रचणेहारे ब्रह्माजीका सिर काट्या ॥ जो बहुरीभी सिर लगाइ लेता तो समर्थ था परंतु उसकों लगावणेका कछु प्रयोजन न था न लगावणेविषे कछु हानि थी उसकाभि निश्चय सदा आत्मपदविषे हे ॥ इस कारनतें क्षोभ कछु न हूआ ॥ हे रामजी काम जेसा अवर कोउ विकार नही ॥ जो सदासिव पार्वतीकों डावे अंगपर धारते हे अरु काम देवके पांच बाण चलणे करि सर्व विस्व मोहित होती हे तिस कामकों सदासिवनें भस्म करि छोडा हे ॥ तो स्त्रीके त्यागणेकों समर्थ नही क्या परंतु तिनकों राग दोष कछु नही इस कारणतें त्याग नही करते त्यागणे करि कछु अर्थ सिद्धि नही होता ॥ राखणे करी कछु अनर्थ नही होता ॥ जो कछु प्रवाहपतित कार्य हूआ हे तिसकों करता हे खेद कछु नही मानतें ॥ तातें जीवनमुक्त हे अरु विष्णुजी सदा विछेपमें रहता हे ॥ आपभी कर्म करते हे अरु लोकसोंभी करावते हे शरीरकों धारते हे अरु त्याग होते दृढ करते हे इत्यादिक क्षोभविषे रहते हे सो त्यागणेकों समर्थभी हे परंतु त्यागणेविषे उनका कछु कार्य सिद्ध नही होता ॥ अरु कर्णेविषे कछु हानि नही होती उसकों केइ गुण करि गुणवान जानते हे ॥ अरु मुझकों तो शुद्ध चिदाकासरूप भासता हे मुर्ख कहते हे स्याम हे सुंदर हे विष्णु तो सुद्ध चिदाकाश रूप हे ॥ सदा सुद्ध स्वरुपविषे उनकों अहं प्रत्ययहे अरु आकाश मार्गविषे जो सूर्य स्थित हे सो कबहु उर्धकों जाता हे ॥ कबहू नीचेकों जाताहे तिसकों स्थित होणेकी समर्थता नही क्या परंतु चलणा अरु ठहरणा तिसकों दोनों सम हे ॥ खेदतें रहित हो करी प्रवाहपतित कार्यविषे रहता हे तातें जीवन्मुक्त हे अरु जीवन्मुक्त चंद्रमाभीहे ॥ सो घटता घटता सूक्ष्म होता दृष्ट आता हे ॥ कबहु बढता जाताहे सुक्ल अरु कृष्ण दोनों पक्ष तिसविषे रहते हे ॥ रात्रकों प्रकाशताहे उह अपणी क्रियाकों त्याग नही सकता क्या ॥ परंतु क्षोभतें रहित हो करी प्रवाह पतित कार्यविषे विचरताहे तातें जीवन्मुक्तहे ॥ अरु अग्निसदा दोडतारहताहे यज्ञ होमके भोजन करणेकों सर्व उर जाताहे उसकों यह विषे बेठणेकी समर्थता नही क्या परंतु जो कछु अपणा आचारहे तिसकों त्यागता नही ठहरणेविषे कछु कार्य सिद्धि नही होता अरु चलणेविषे कछु हानि नही होती ॥ दोनोंविषे तुल्य जीवन्मुक्त हे ॥ हे रामजी बृहस्पती अरु सुक्रकों बडा क्षोभ रहता हे ॥ बृहस्पती देवताकी जयके निमित्त जतन करता हे ॥ अरु सुक्र दैतके जयके निमित्त जतन करता रहता हे ॥ क्या इनकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्यागणेकी समर्थता नही ॥ परंतु दोनों इनकों तुल्य हे इस कारणतें खेदसों रहित हो करी अपणें कार्यविषे विचरतें हे सो जीवन्मुक्त पुरुष हें ॥ ॥ हे रामजी राजविषे वडे क्षोभ होतेहे सो राजा जनक आनंद सहित राज करता हे अरु जीवन्मुक्त हे ॥ प्रल्हाद वल वृत्रासुर अरु मुर इनतें आदितें ले करी जो दैत जीवन्मुक्त हुएहे समता भावकों लीये खेदतें रहित नाना प्रकारकी चेष्टा करत भयेहे ॥ परंतु अंतरतें सीतल जीवन्मुक्त रहे हे ॥ राजा नल अरु दिलीप अरु मानधातातें ले करी जो हूए हे समता भावकों ले राज किया हे सो जीन्वमुक्त हे अेसें अनेक राजा हूएहे ॥ राजविषे रागवानभी दृष्ट आए हे ॥ परंतु अंतर राग दोषतें रहित सीतल चित्त रहेहे ॥ हे रामजी ज्ञानी अरु अज्ञानीकी चेष्टा तुल्य होतीहे परंतु एता भेद हे जो ज्ञानी का चित्त सांत हे अरु अज्ञानीका चित्त क्षोभविषे हे इष्टकी प्राप्तिविषे हर्षवान होताहे अनिष्टकी प्राप्तिविषे दोष करताहे ॥ ग्रहण त्यागकी इछा करि जलताहे ॥ संसार उसकों सत्य भासताहे अरु जिसका चित्त सांत होगया हे तिसके अंतर न राग हे न द्वेष हे सुभाविक सरीरकी जो प्रारब्धहे सो होतीहे ॥ तिसविषे कछु अपणा अभिमान नही होता तिसके निश्चे विषे सभ आकासरूप हे जगत कछु वन्या नही भ्रममात्र हे ॥ जेसें आकासविषे नीलता भ्रममात्र हे अरु दुर नही होती तेसें यह जगत भ्रम करकै भासताहे परंतुहे नही ॥ जेसें आकास विषे नाना प्रकारके तरवरे भासतेहे ॥ तेसें आत्माविषे जगत भासताहे ॥ जेसें काष्ठकी पुतलो काष्टरूप होतीहे तेसें जगत भ्रमरूप हे ॥ जो कछु भ्रमतें इतर भासताहे सो सभ भविष्य न नगर विषे असत हे अरु जो कछु तुझतें दृष्ट आताहे सो कछु नही सर्व कलनातें रहित सुद्ध संवित जडतातें मुक्त सुभाव एक अद्वैत आत्मसत्ता स्थितहे ॥ केवल आकासरूप हे तिस विषे जगतभी उहीरूपहे पाषाणकी सांलावत घनमौन हे तुंभी तिसीरूप विषे स्थित होहु ॥ इति श्रीयो०नि०प्र० जीवन्मुक्तल० व०नाम द्विशताधिकैकोनविंशतितमःसर्गः ॥ २१९ ॥

१५९

॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् उह राजा विपश्चित वहुरी क्या करत भए ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी जो उनकी दशा हुइ हे सो तूं श्रवन करु पश्चिम दिशाका विपश्चित व नविषे विचरता फिरता था सो एक मत्त हस्तीके वस पडा ॥ तिसनें पहाडकी कंदराविषे मारी डारा ॥ अरु दूसरे विपश्चितकों राकडी लेगया ॥ तिसनें वडवाग्निविषे डारिदिया उहां अग्निनें भछन करिलीया ॥ अरु तिसरे विपश्चितकों एक विद्याधर स्वर्गविषे ले गया उसनें इंद्रकों मान न कीया तिसकों श्राप दिया इह भस्म हो गया इसी प्रकार चउथाभी मूआ उस के मच्छने अष्टुकडे कर डारे ॥ जेसें प्रलय कालविषे लोक भस्म हो जावे तेसें चारोही विपश्चित मरी गए तब उनकी संवित आकाशरूप हुइ ॥ परंतु इनकेविषे जो जगत देखणेका संस्कार था तिसकरी उनकी आकासरूप संवित वहुरी आनि फुरी तीसकरी जाग्रत भासणे लागा पृथ्वी दिप समुद्र स्थावर जंगमरूप जगतकों देखत भए अरु अंतवाहक शरीर साथ चे ष्टा करणे लागे तिनसों एक पलम दिशाका विष्णु भगवानके स्थानविषे मुआ निर्वाण हो गया तिसकी संवितविषे सर्व अर्थ शून्य होगए ॥ उह तहां मुक्त हुआ अरु एक मछके उदरविषे सहस्र वर्ष पर्यंत रहा तिसतें उप्रांत निकस्या वहुरी एक देशका राजा हुआ अरु तहां राज करणे लागा एक चंद्रमाके निकट आया तहां उह मरीके चंद्रमाके लोंककों प्राप्त हुआ स्व र्गविषे अरु एक वहता समुद्रके पाटकों प्राप्त हुवा ॥ आगे चउराशी हजार जोजन पृथ्वी भूत तिसकों लंघता गया इसी प्रकार चारों वहुरि जीवते भए समुद्र बन पर्वतकों लंघते गए सवके आगें दस सहस्र जोजन स्वर्नकी पृथ्वी आइ तहां देवताके विचरणेके स्थान हे तिनकोंभी लंघते गए आगें लोकालोक पर्वत आया ॥ जिसने सर्व पृथ्वीकों आवरणकीया हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जेसें वछके बनका आवरण होता हे ॥ तेसें तिस पंचाशत्कोटि जोजन पृथ्वीकों आवरणकीया हे ॥ पचास हजार जोजन उंचा हे लोकालोक पर्वत तहां ताराका नछत्र चक्र फिरता हे ॥ तिसकोभी लंघ गए ॥ तिसके आगे एक शून्य नक्षत्र था सो केसा था ॥ जो महाशून्य जेसा जहां पृथ्वी जल आदिक तत्व कोउ नही ॥ एक शून्य आकाश हे न कोउ स्थावर पदार्थ हे न कोउ जंगम पदार्थ हे न कोउ उपजे न कब मिटे तिसकों देखत भए इसी प्रकार संपूर्ण भूगोलकों देखत भए ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् भूगोल क्या हे अरु किसके आश्रय हे अरु तिसकेपर क्या हे ॥ वसिष्ठोवाच॥ ॥हे रामजा जेसें गेंद होता हे तेसें भूगोल हे ॥ अरु संकल्पके आश्रय हे सर्व उर तिसके आकाश हे सूर्य चंद्रमा नक्षत्र सहित च क्र फिरता हे ॥ हे रामजी यह बुद्धि करीके बन्या नही संकल्प करीके बन्या हे जो वस्तु बुद्धि करीके बनी होती हे सो क्रम करी स्थित होती हे ॥ अरु यह तो विपर्ययरूप करी स्थि त हे पृथ्वीके चउंफेर दसगुण जल हे ॥ तिसतें पर दसगुण अग्नि हे तिसतें परे दसगुण वायु हे ॥ तिसतेंपर ब्रह्मांड खपर हे ॥ सो खपर एक अधकों एक उध्वकों गया हे ॥ तिसके मधविषे जो पोल हे सो आकाश हे उह वज्र सारकी न्यांइ हे ॥ अंनत कोटि जोजनका विस्तार हे तीस ब्रह्मांडका तिसविषे भूगोल हे तिसके उतर दिशा सुमेर पर्वत हे ॥ पछम दिशा लोकालोक पर्वत हे उपर नछत व चक्र फिरता हे जहां उह आता हे तहां प्रकाश होता हे जहां नही होता तहां तमरूप भासता हे ॥ सो संकल्प रचना हे जेसें बालक संकल्प करी पथरका वटारचे ॥ तेसें चैतनरूपी बालकनें इह संकल्परूपी भूगोल रचा हे ॥ हे रामजी जेसें जेसें उस समें तिसविषे निश्चय हुआ हे तेसें हि स्थित भया हे ॥ जहां पृथ्वी स्थित रहि हे तहांस्थित हे ॥ जहां खात रची हे तहां खातहि हे ॥ अरु हे क्या जेसें सुपनेविषे अविद्यमान प्रतिभा होती हे तेसें भूगोल हे ॥ हे रामजो जिनकों अेसें भासता हे जो सुमेरु विषे देवता हे उत्तर दिशा अरु अवरदिशा मनुषतें आदि लेकरी जीव रहते हे॥अेसें जिनकों ज्ञान हे सो पंडित हे तोभी मूर्ख हे यह तो भम मात्र हे बन्या कछु नही॥ जो हमतें आदिलेक री तत्ववेत्ता हे ॥ जिनकों ज्ञान नेत्र करी आत्मसत्ता ज्योंको त्यों भासती हे ॥ जो मन सहित षट् इंद्रियां करी अज्ञानी देखते हे तिनकों जगत भासता हे अरु ज्ञानवानकों परम ब्रह्म सूक्ष्म ज्योंकात्यों भासता हे ॥ जगतकों असत जाणता हे ॥ जेसें आकाशविषे अन होती नीलता भासती हे॥तेसें आत्माविषे अनहोता जगत भासता हे॥ जेसें नेत्रदूषण करी आकाशविषे तरवरे भासते हे ॥ तेसें अज्ञान करी आत्माविषे जगत भासताहे ॥ सो केवल आभास मात्रहे ॥ हे रामजी जगत उपजाभी दृष्ट आता हे अरु नष्टहोताभी दृष्ट आताहे परंतु बन्या कछु नही॥ जेसें संकल्पका रचा फुरणा अपणे मनविषे भासताहे ॥ तेसें यह जगत मनविषे फुरताहे ॥ यह संपूर्ण भूगोल संकल्पविषे स्थितहे ॥ जेसें बालक संकल्प करिके पथरका वटा रचे तेसें भूगोल यह ब्रह्मांड सो को टि जोजन पर्यंत हे तिसका एक भांग अधकों गया हे एक उर्ध्वकों गया हे तिसविषे चैतनरूपी बालकने यह भूगोल रचा हे सो संकल्पके आश्रे खडा हे जेसें आदिनिति हुइ हे तेसें भासता हे इस पृथ्वीके उत्तर दिसाविषे सुमेरु पर्वत हे ॥ अरु पछम दिसाकी उरलोकालोक पर्वत हे अरु उपर तारा नछत्र चक्र फिरता हे लोकालोकके जिस उरतें आवताहे तिस उर प्रका श होताहे ॥ अरु भूगोल अेसें हे जेसें गेंद होता हे ॥ तिसके एक उर पाताल हे अरु एक उरतें स्वर्ग हे ॥ एक उर मध्य मंडल हे ॥ अरु आकाश सर्व उर हे पातालवासी जाणते हे हम उर्ध हे ॥ आकाशवासी जानते हे जो हम उर्ध हे मध्यमवासी जानतेहे जो हम ऊर्ध इसप्रकार भूगोल हे ॥ तिसकेपर एक खात हे शून्य जेसा महात्मरूप जहां न पृथ्वी हे न कोउ पहाड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे॥न स्थावर हे न जंगम हे न कछू उपजाहे॥कवी महात्मा जेसा हे अरु तिसकेपर स्वर्नकी कंथ हे दससहस्र जोजन तिसका विस्तारहे तिसकेपर दसगुण जल हे पृथ्वीके चउफेर वेष्टन हे तिसतें पर दसगुण अग्नि हे तिसतेंपर दसगुण वायु हे तिसतें पर आकास हे तिसतें पर ब्रह्माकास महाकास हे तिसविषे अनंत ब्रह्मांड स्थित हे सो क्या हे अरु केसें स्थित हे तत्व हे॥ जेसें कपुरके आश्रय तृण ठहरते हे तेसें पृथ्वी भागके आश्रय तत्व हे॥ वस्तुतें क्या हे सुद्ध चैतन ब्रह्मका चमत्कार हे सो ब्रह्म आकासवत् निर्मल हे तिसविषे कोउ क्षोभ नही॥परम सांत हे अरु अनंत हे॥ अरु सर्वका अपणाआप हे हे रामजी अब बहुरी विपश्चितकी वार्ता सुण॥जब उह लोकालोक पर्वत पर जाय स्थित भए॥तब एक शून्य जेसा खात दृष्ट आया॥ पर्वतसों उतरीकरी खात विषे जाय पडा खातभी पर्वतके सिखर उपर था॥ अरु तहां पंछीभी सिखरकी न्यांइ बडे थे उन पंछीनें चंचसों इसके सरीर चुरन कीया॥ तब यह अपणे स्थुल सरीरकों त्यागकरी सूक्ष्म अंतवाहक सरीर अपणा जानत भया॥ ॥ रामोवाच॥ ॥ हे भगवन अधिभूतकता केसें होती हे अरु अंतवाहक क्या हे॥ बहुरी क्या करत भया सो कहो?॥ ॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी जेसें संकल्प करीकें दूरतें दूर चला जावे अरु जिस सरीर साथ जावे सो अंतवाहक हे॥ अरु जो पंचभूतक सरीर यह प्रत्यक्ष भासता हे सो अधिभूतक हे॥ जहां मार्ग करी जाणेकों चित्तका संकल्प उठता हे तब स्थुल सरीर गए विना उह पहुंचि नही सकता॥ जब मार्गकरी चले तब पहुंचता हे सो अधिभूतक हे॥ अरु यह प्रमादकरी होता हे जेसें जेवरीके भुलणेकरी सर्प भासता हे॥ जेसें आत्माके अज्ञानकरी अधिभूतक सरीर भासता हे॥ जेसें मनोराजका पुर बणावे तिसविषे आपभी एक शरीर बनी करी चेष्टा करता फिरे॥ सो जबलग पूर्वका शरीर विस्मरण नही भया तबलग संकल्प शरीर साथ चेष्टा करता हे सो अंतवाहक हे॥ तिसकों संकल्पमात्र जानणा सो विसेष बुद्धि कहाती हे अरु आत्मबोध नही भया जब तिस संकल्प शरीरविषे दृढ भावना होतीहे॥ तिसका नाम अधिभूतक होताहे सो घट वढ कहाताहे॥ तातें जबलग शरीरका स्मरण हे॥ तबलग अधिभूतकता नही होती॥ अरु जब विस्मरण होताहे तब अधिभुतकता हो जातीहे॥ अरु विपश्चित जो अधिभुतक थे सो आत्मबोधतें रहित थे अरु जहां चाहे तहां चले जाते थे॥ अरु स्वरूपतें न कछु अंतवाहक हे न कछु अधिभुतक हे प्रमाद करीकें आकार भासते हे वास्तव सत्र चिदाकाशरूप हे॥ दुसरी वस्तु कछु बणी नही सब उही हे॥ तिसके प्रमाद करकें विपश्चित अविद्यक जगतकों देखणे चले थे सो अविद्या कछु वस्तु नही ब्रह्मही हे तो ब्रह्मका अंत कहां आवे उहांतें चल्या परंतु जाणे जो मेरा अंतवाहक शरीर हे सब पृथ्वीकों लंघ गया तिसके पर जलकोंभी लंघ गया॥ तिसतें परे जो सूर्यवत दाहक अग्निका आवरण हे प्रकासवान तिसकोभी लंघगया मेघ अरु वायुके आवरणकोंभी लंघ्या॥ आकाशकोंभी लंघ गया॥ तिसके परे ब्रह्माकास था तहां इसकों संकल्पके अनुसार बहुरी जगत लागा भासणे तिसकोंभी लंघगया॥ बहुरी तिसके आगें ब्रह्माकास हे फेरि पंचभूतक भासि आया॥ तिसके आवरणकोंभी लंघ गया॥ बहुरी तिस ब्रह्मांड कवाटके परे तत्वकों लंघ करि ब्रह्माकास आया॥ बहुरी तिसविषे अवर पंचभूतक ब्रह्मांड था तिसकोंभी लंघ गया अरु अंत न पाया स्वरूपके प्रमादकरि दृश्यके अंत लेणेकों भटकता फिऱ्या सो अविद्यारूप संसारका अंत केसें आवे जबलग अंत लेणेकों भटकता फिरताहे॥ जब अविद्या नष्ट होवेगी तबही अविद्यारूप संसारका अंत आवेगा॥ हे रामजी जगत कछु बन्या नही उही ब्रह्माकास ज्योंकात्यों स्थित हे तिसका न जानणाहि संसार हे॥ जबलग उसका प्रमाद हे तबलग जगतका अंत न आवेगा॥ जब स्वरूपका ज्ञान होवे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गा तब अंत आवेगा सो जानणा क्या हे चित्तकों निर्वाण करणा ही जानणा है ॥ जब चित्त निर्वाण होवेगा तब जगतका अंत आवेगा ॥ जबलग चित्त भटकता फिरता हे तबलग संसारका अंत नही आता ॥ तातें चित्तका नामही संसार हे जब चित्त आत्मपदविषे स्थित होवेगा तब जगतका अंत होवेगा ॥ इस उपाय विना सांति नही प्राप्त होती ॥ ॥ इति श्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकारणे विपश्चित उपाख्यान वर्ननं नाम द्विशताधिक विंशतितमःसर्ग ॥ २२० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् उह जो दो विपश्चित थे तिनकी क्या दसाथ भई उहभी कहो ॥ उह तो दोनोकी एकही कही ? ॥ ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी एक तो निर्वाण हूआथा अरु दुसरा ब्रह्मांडकों लंघता गया लंघता लंघता एक ब्रह्मांड विषेगया ॥ तब उहां उसकों संतका संग प्राप्त भया ॥ तिनकी संगति करि तिसकों ज्ञान प्राप्त हूआ ॥ ज्ञानकों पायकरी उहभी निर्वाण होगया अरु एक अबलग दूर फिरता हे अरु एक इहां पहाडकी कंदराविषे मृग होकरि विचरताहे ॥ हे रामजी यह जगत आत्माका आभासहे जेसें सूर्यकी किरणां विषे जल भासताहे जबलग किरणां हे तबलग जलाभास निवर्त नही होता तेसें जबलग आत्मसत्ता हे तबलग जगतका चमत्कार निवर्त नही होता आत्माके जाणेतें जगत सत्ता नही रहतो ॥ जेसें किरणके जाणेतें जलाभास नही रहता ॥ जो भासताहे तोभी किरणांहीकी सत्ता भासतीहे तेसें आत्माके जाणेतें आत्माकी सत्ताही भासतीहे ॥ भिन जगतकी सत्ता नही भासती ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् विपश्चित एकही था एकही संवितविषे भिन भिन वासना केसें हूइ हे ? ॥ अरु मुक्त एक हो गया एक मृग होकरी फिरता रहा, एक आगें निर्वाण होगया, इह भिनता केसें हूइ हे संवित एकही थी तिसविषे घट वढ फल केसें प्राप्त हूए सो कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी वासना जो होती हे सो देस काल पदार्थ करिकें होती हे ॥ तिसविषे जिसकी दृढ भावना होती हे तिसकी जय होती हे ॥ जेसें एक पुरुषनें मनोराज करिकें चार मूर्त्ति अपणी कलपी तिनविषे वासना भिन भिन स्थापन करि उह संवित तो एक हे ॥ परंतु पूर्वका सरीर भूलि करि उह दृढ हो गए तो जेसी जेसि भावना तिन सरीरविषे दृढ होती हे सोइ प्राप्त होती हे तेसें संवितविषे नाना प्रकारकी वासना फुरती हे ॥ जेसें एकही संवित सुपनेविषे नानाकार धारतीहे अरु भिन्न भिन्न वासना होतीहे ॥ तेसेंही आकासरूप संवितविषे भिन्न भिन्न वासना होतीहे ॥ हे रामजी संवित एक थी परंतु देस काल क्रिया करकें वासनाभिन्न भिन्न होगइ पूर्वकी संवित स्मृति भुलि गइ ॥ तिस करि घट वढ फलकों पावते भये सो संवित क्या रूप हे ॥ हे रामजी देसतें देसांतरकों संवेदन जाती हे तिसके मध्य जो संवित सत्ता हे सो ब्रह्मसत्ता हे ॥ जेसें एक जाग्रतके आकारकों छोड्या अरु सुपना पाया नही तिसके मध्य जो ब्रह्म सत्ता हे उह किंचनरूप जगत हो करी भासती हे परंतु किंचनभी कछु भिन्न वस्तु नही ॥ एक हे न दो हे एक कहणाभी नही होता दो कहां होवे अरु जगत कहां होवे ॥ इही अविद्याहे जो हे नही अरु भासतीहे॥ जिस जिस आकारविषे जेसी जेसी वासना फुरतीहे वहुरी जो दृढ हो जाती हे तिसीकी जय होतीहे ॥ तिस कारणतें एक विपश्चित जनार्दन विष्णुके स्थानविषे निर्वाण हो गया दुसरा दुरतें दुर ब्रह्मांडकों लंघता गया तिसकों संतका संग प्राप्त भया तिसकरी ज्ञान उदे हुआ वासना मिटि गइ अरु अग्यान तिसका नष्ट हो गया जेसें सूर्यके उदे हुए अंधकार नष्ट हो जाता हे तेसें अज्ञान नष्ट हो गया उह पदकों प्राप्त भया तिसके अज्ञान करकें दुरतें दुर भटकता हे ॥ अरु चोथा पहाडकी कंदराविषे मृग हो करी विचरता हे॥ हे रामजी जगत कछु वस्तु नही अज्ञान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के वसतें भटकतें हे तातें अज्ञानही जगत हे जबलग अज्ञान हे तबलग जगत हे जब ज्ञान उदे होताहे तब अज्ञानकों नाश करता हे तब जगतकाभी अभाव हो जाताहे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् यह जो मृग हुआ हे सो कहां कहां फिर्या हे अरु कहां स्थित हे अरु कवन स्थानविषे फिरे हे सो कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी दो ब्रह्मांडकों लंघते दूरतें दूर चले गएथे ॥ एक अ बलग चला जाताहे पृथ्वी समुद्र वायु आकास उसकी संवितविषे फुरतेहे यह तो दूरतें दूर चला गया हे सो हमारी अधिभूतक दृष्टिका विषय नही ॥ अरु एक ब्रह्मांडकों लंघता गयाथा ॥अब इस जगतविषे पहाडकी कंदराका मृग हुआहे ॥ सो हमारी इस दृष्टिका विषय हे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् यह दूर गएथे अरु एक इस जगतविषे अब मृग हुआ हे ॥ तुम केसें जाण्या जो आगें ब्र ह्मांडविषे था अब इस जगतविषे हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी मैं ब्रह्म हों जेते कछु ब्रह्मांड हे सो मेरे अंग हे ॥ मुझकों सबका ज्ञान हे जेसें अवयवी पुरुष अपणे अंगकों जाणता हे जो यह अंग फुरता हे अरु यह नही फुरता ॥ तेसें मैं सबकों जानता हों ॥ जहां जहां यह फुरता लंघता गया हे सो बुद्धिनेत्र करी मैं जानता हों ॥ परंतु तुमकों जानणेकी गम नही जेसें समुद्र विषे अनेक तरंग फुरते हे अरु समुद्र सबकों जानता हे ॥ तेसें समुद्ररूप हों अरु ब्रह्मांडरूपी मेरेविषे तरंग हे तातें मैं सबकों जानताहों ॥ हे रामजी उह जो मृग हे सो दूर ब्रह्मां डविषे फिरता हे ॥ उह विपश्चित यह मृग नही परंतु उस जेसा हे सो सुण ॥ हे रामजी एक ब्रह्मांड इस हमारे ब्रह्मांड जेसा हे एकही जेसा आकार हे ॥ एकही जेसी चेष्टा हे एकही जेसा जगत हे स्थावर जंगम सब एकही जेसें हे ॥ उहां जो देस काल क्रियाका विचरणा होता हे सो इसके समान होता हे ॥ जेसें नाम रूप आकार इहां होते हे ॥ जेसें बिंबका प्रतिबिंब तुल्यही होता हे ॥ जेसें एकही आकारका प्रतिबिंब जलविषे होता हे अरु दुतीय प्रतिबिंब दर्पणविषे होता हे सो दोनों तुल्य हे ॥ तेसें दोनों ब्रह्मांड एक समान हे ब्र ह्मरूपी आदर्शविषे प्रतिबिंबित होता हे तेसें इस कारनतें यह मृग विपश्चित हे इसी निश्चेकों धारे हूएहे इह अरु उह दोनों तुल्य हे सो पहाडकी कंदराविषेहे ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन् उह विपश्चित अब कहांहे अरु उसका क्या आचार हे ॥ अब मैं जानता हों जो उसका कार्य हुआ हे अरु चलिकरि मुझकों दिखावहू अरु उसकों दर्शन देकरी अज्ञानफांस तें मुक्त करहू ॥ ॥ वालमीकोवाच ॥ ॥ हे अंग जब रामजीनें इस प्रकार कहा तब मुनि सार्दुल वसिष्ट बोलत भया ॥ हे रामजी तुमारा जो लीलाका स्थान जहां हे तुम क्रीडा कर ते हो तिस ठोरविषे उह मृग बांध्या हूआं हे ॥ तुमकों तिरग देसके राजानें आनी दीया हे सो बहूत सुंदर हे इस करकें तुम रख्याहे तिसकों मंगावहू ॥ तब रामजीके सखा बालक वि षे जो निकट वर्तीथे तिनकों कहा जो तिस मृगकों सभाविषे ले आवहू ॥ हे राजन् जब इस प्रकार रामजीनें कहा तब सभाविषे मृगकों ले आए जेते कछु श्रोता सभाविषे बेठेथे सो बडे आश्चर्यकों प्राप्त भए बडी ग्रीवा सुंदर अरु कमलकी न्यांइ नेत्र घासकों खाता कबहु सभाविषे खेले कबहू ठहरि जावे ॥ तब रामजीनें कहा हे भगवन् इसकों उपदेस करीकें जगा वहु जो हमारे साथ प्रश्न उत्तर करे कृपा करहू जो मनुष होवे अब तो प्रश्न उत्तर नही करता ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी इस प्रकार उपदेस इसकों लगेंगा नही काहे तें जो जिसका कोउ इष्ट होता हे तिसकरी सिद्धता तिसकों होती हे तातें मैं इसके इष्टकों ध्यान करीकें विद्यमान करताहों ॥ तिसकरी इसका कार्य सिद्ध होवेगा ॥ वाल्मीकोवाच ॥ ॥ हे रामजी इसप्रकार कही करी वसिष्ठजीनें कमंडलु हाथविषे लेकरी तीन आचमन कीए अरु पद्मासन बांधी करी नेत्र मुंदिलिए ध्यानविषे स्थित होकरी अग्निका आवाहन कीया अरु

160

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहा हे वन्ही इह तेरा भक्त हे ॥ इसकी सहायता करु इस उपर दया कर तुम संतका दयाल स्वभाव हे जब एसें वसिष्ठजीनें कहा तब सभाविषे बडे प्रकाशकों धारे अग्निकी ज्वाला प्रगट भइ काष्ट अंगार ते रहित बडे प्रकाशकों लीए पडी जले जब अेसें अग्नि जागी तब मृग देखीकरी बहुत प्रसन्न भया अरु चित्तविषे बडी भक्ती उत्पन्न भइ ॥ तब वसिष्टजीनें नेत्र खोली करी अनुग्रह सहित मृगकी उर देख्या तिसकरी संपूर्ण पाप उसके दगध होगए अरु वसिष्टजीने अग्निको कहा के हे भगवन् वन्हि इह तेरा भक्त हे ॥ अपणी पूर्वकी भक्ति स्मरनकरीकें इस पर दया करहु ॥ इसके मृग सरीरकों दूर करोकें इसकों विपश्चित सरीर देवहु जो इह अविद्या भमतें मुक्त होवे ॥ हे राजन इस प्रकार वसिष्ठजीनें अग्नीकों कही रामजीकों कहत भए ॥ हे रामजी अब यह मृग अग्निविषे प्रवेस करेगा ॥ तब इसका मनुष सरीर हो जावेगा अेसें वसिष्टजी कहता था जो अग्निको मृग देखी करी एक चरन पाछेकों धारा अरु उछलकरी अग्नीविषे आय प्रवेस कीया ॥ जेसें वाण निसान विषे आय प्रवेस करते हे तेसें प्रवेस कीया ॥ हे राजन तब उस मृगकों खेद कछु न भया ॥ उसकों अग्नी आनंदवान दृष्ट आया ॥ तब उसका मृग शरीर अंतर्धान हो गया ॥ अरु महा प्रकास मनुष शरीरकों धारे अग्नितें निकस्या ॥ जेसें पटके उलेसों स्वांगी स्वांग धारी निकसी आता हे ॥ तेसें निकसी आया भले वस्त्रकों पहिरे हुए सीस पर मुकुट कंठविषे रुद्राक्षकी माला अरु यज्ञोपवीत हुआ अग्निवत प्रकास तेजवान सभा विषे जो बेठथे तिननेंभी अधिक तेज मानो अग्निकोंभी लज्जित कीया हे ॥ जेसें सूर्यके उदे हुए चंद्रमाका प्रकास लज्जित हो जाता हे ॥ तेसें सर्वतें जल जल हो गया तब जेसें समुद्रसों तरंग निकसी करी लीन हो जाता हे ॥ तेसें अग्नि अंतर्धान हो गया ॥ तिसकों देखिकरी रामजी आश्चर्यकों प्राप्त हुआ सर्व सभा विस्मेकों प्राप्त भइ तब बडे प्रकासकों धारणेहारा विपश्चित निकसी करी ध्यानविषे जुडीगया विपश्चिततें आदि लेकरी इस सरीर पर्यंत सर्व स्मरन करीकें नेत्र खोलि दीए ॥ वसिष्टजीके निकट आय करी अष्टांग प्रणाम कीया अरु कहत भया ॥ हे ब्राह्मण ज्ञानके सूर्य हे प्राणके दाता तुमकों मेरा नमस्कार हे ॥ हे राजन् जब इस प्रकार उसनें कहा तब वसिष्टजीनें उसके सिरपर हाथ रखा ॥ अरु कहा हे राजन् तुं उठ खडा हो अब तेरी अविद्या में दूर करोंगा तुं अपणे स्वरूपकों प्राप्त होवेगा ॥ तब राजा विपश्चितनें उठि करि राजा दसरथकों प्रणाम कोया अरु कहा ॥ हे राजन् तेरी जे होवे तब राजा दसरथ आसनतें उठिकरी कहत भया हे राजन् तुम बहुत दुर फिरते रहे हो अब इहां मेरे पास बेठो तब राजा विपश्चित बेठ गया विश्वामित्र आदिक जो ऋषि बेठे थे तिनको जथाजोग प्रणाम करकें बेठि गया ॥ तब राजा दसरथनें विपश्चितकों भास करकें बुलाया बडे प्रकासकों धारे हूए जो विपश्चित था इस कारनतें दसरथनें कहा हे भास तुम तो संसार भमके लोए चिरकाल फिरते रहे हो ॥ थके होहुगे विश्राम करो अरु जो जो देस काल क्रोया करी हे देख्या हे सो कहो ॥ यह आश्चर्य हे जो अपणे मंदिरविषे सोया होवे अरु निद्रा दोषकरकें गरतविषे गिरता फिरे ॥ अरु देस देसांतरकों भटकता फिरे इही अविद्या हे ॥ हे भास जेसें वनके विचरणे वाला हस्ती संगल करी बंधायमान होवे जेसें यह बांध्या हुआ दुःख पावताहे तेसें तु विपश्चितभी था ॥ अरु अविद्या करके तुं भटकता हे जगत्के देखणे निमित्त हे राजन जगत कछू वस्तु नही अरु भासता हे ॥ इही माया हे जेसे भ्रम करकें आकासविषे नाना प्रकारके रंग भासते हें तेसें अविद्या करकें यह जगत भासते हे ॥ अरु सत्य प्रतीत होती हे सो हे क्या आकासरूप ही आकासविषे स्थित ॥ तिस आकासविषे जो कछु तुजने देख्या हे आत्मरूपी चिंतामणिके चमत्कार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साथ सो कहो ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे विपश्चित शरीर प्राप्ति नाम द्विशताधिकैक विंशतितमःसर्गः ॥ २२० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥
॥ दसरथोवाच॥ हे भास बडा आश्चर्य हे जो तुं विपश्चित बुद्धिवान था अरु चेष्टातें तुं अविपश्चित हुआ बुद्धि करीहे सो अविद्याके देखणेकों तुं समर्थ हुआ था इह जगत प्रतिभा तो मिथ्या उठीहे
असतके ग्रहणकी इछा तुझनें क्यों करी ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे राजन जब इस प्रकार राजा दसरथनें कहा तब प्रसंगकों पाय करी विस्वामित्र बोलत भया हे राजा दसरथ यह चेष्टा सोइ करता
हे जिसकों परम बोध नही होता अरु केवल मुर्ख अज्ञानीभी नही होता॥काहेतें जो जिसकों परम बोध आत्माका अनुभव होताहे सो जगत्कों अविद्यक जानताहे अविद्यक जगत्के अंत लेणे
कों एता जतन नही करता उह तो असत्य जानताहे ॥ अरु जो देह अभिमानी मूर्ख अज्ञ हे तोभी यह जतन नही करता काहेतें जो उसकों देखणेकी समर्थताभीनही होती तातें तु मध्य भावीहे
सो आत्मबोधतें रहित हे ॥ अरु अधिभूतक शरीर त्यागकीया हे ॥ सो जतन करता हे ॥ अरु जिनकों उत्तमबोध नही हुआ तो बहुत इसप्रकार भटकते फिरते हे॥ हे राजा इसी प्रकार
वटधानाभी फिरते हे सत्तर लक्ष वर्ष उनकें बीतीत भए हे जो इसी ब्रह्मांडविषे फिरतेहे॥ उननेंभी यही निश्चय धारा हे जो पृथ्वी कहांलग चली जाती हे इस निश्चेतें निवृत्त नही होते ॥
अरु इसी ब्रह्मांडविषे भ्रमते हे ॥ परंतु उनकों अपणी वासनाके अनुसार विपरित अवरही अवर थान पडे भासते हे ॥ हे राजन जेसें किसी बालककों संकल्पका रचा स्वच्छ आकाशमें
होवे ॥ तेसें यह भूगोल ब्रह्माके संकल्पविषे स्थित हे ॥ आकाश वायु अग्नि जल पृथ्वी इन पांचों तत्वका ब्रह्मांड रचा हे ॥ संकल्प करें जेसें एक खेन होवे तिसके चोंफेर कीडी फिरे
सो जिस उरतें उह जाती हे सोइ उर उर्ध भासता हे सो अवरही अवर निश्चय होता हे ॥ तेसें इह संकल्पका रचा भूगोल हे तिसके किसी कोणविषे बटधाना इसप्रकार जिव होत
भये हे ॥ एक राजा था तिसके तीन पुत्र थे तिनकों संकल्प आणि उदे हुआ जो हम जगतके अंतकों देखें इसी संकल्प करी फिरते हे पृथ्वी लंघते हे बहुरी पृथ्वी जल आताहे जल
लंघते हे बहुरी आकाश आता हे ॥ बहुरी पृथ्वी जल वायु आते हे बहुरो उसी भूगोलके चउंफेर फिरते हे ॥ सो यह भूगोल केसा हे जेसें आकाशविषे खेन होवे तेसें यह पृ
थ्वी आकाशविषे हे ॥ इसका अध उर्ध कोउ नही ॥ उरु चर्ण सो अर्ध सिरका पासा उर्ध तिसीके चो फेर उमते रहे ॥ परंतु अपणे निश्चे करी अवरका अवर जानते हे ॥ अरु जबलग
स्वरूपका प्रमाद हे तबलग जगतका अभाव नही होता जब आत्माका साक्षात्कार होता हे तब जगत ब्रह्मरूप हो जाता हे जगत कछू बन्या नही कछूक फुरणेकरीकें भासता हे ॥
सो जेसें सुपनेविषे अज्ञान करकें अनंत जगतकों देखता हे ॥ इह हुआ हे सो फुरणा परम ब्रह्मविषे हुआ हे जो फुरणेविषे हुआ हे सोभी परम ब्रह्म हे ॥ अवर कछू बन्या नही आलस
त्ताही अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जेसें पथरकी सिला घनरूप होती हे तेसें आत्मतत्व चैतनघन हे ॥ जेसें आकाश अरु शून्यताविषे कछू भेद नही तेसें ब्रह्म अरु जगतविषे कछू भेद न
ही ॥ कल्पना परब्रह्मरूप हे अरु ब्रह्मही कल्पनारूप हे ॥ इस जड अरु चैतनविषे कछू भेद नही ॥ हे राजन् जिसकों जगत शब्द करी कहता हे सो ब्रह्मसत्ताही हे न कछु उत्पत्ति हुआ
हे न प्रलय होता हे सर्व ब्रह्मही हे जेसें पहाडविषे पथरतें इतर कछू नही ॥ तेसें जगत ब्रह्मसत्तातें इतर कछु नही ॥ जेसें पाषाणकी पुतली पाषाणरूपही हे ॥ तेसें जगत ब्रह्मरूपही हे ॥
एक सूक्ष्म अनुभव अणुतें अनेक अणु होते हे ॥ जेसें एक पहाडतें अनेक सिला होती हे ॥ हे राजन् जो ज्ञानवान पुरुष हे तिनकों जगत ब्रह्मरूप भासता हे अरु जो अज्ञानी हे तीन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कों नाना प्रकारका जगत भासताहे सो जगत कछू वस्तु नही परंतु जबलग संकल्प हे तबलग जगत फुरताहे जेसें रत्नका चमतकार होताहे तेसें जगत आत्माका चमत्कार हे ॥ अरु चैतन आत्माके आश्रे अनंत सृष्टि फुरती हे ॥ सो सृष्टि सब आत्मरूप हे आत्मातें इतर कछू वस्तु नही जो जाग्रत पुरुष ज्ञानवान हे तिनकों ब्रह्मरूपही भासताहे जो अज्ञानी हे तिनकों नाना प्रकारका जगत भासताहे ॥ हे राजन केइ एक इसकों शून्य कहतेहे जो शून्यही हे अवर कछू नही ॥ अरु केइ इसकों जगत कहतेहे ॥ अरु केइ ब्रह्म कहतेहे जो कीसीकों निश्चा होताहे तिसकों सोइ रूप भासताहे अरु आत्मरूपी चिंतामणि हे ॥ जेसा संकल्प फुरताहे तेसा तेसा हो भासताहे ॥ सर्वका अधिष्ठान ब्रह्मसत्ताहे ॥ जेसा जेसा तिसविषे निश्चा होताहे तेसातेसा होकरी उही भासताहे ॥ दृष्टा दर्शन दृश्य यह त्रिपुटी जो भासतीहे सोभी ब्रह्म होकरी भासतीहे अवर दुतीय कछू वस्तु नही ॥ अरु अवर जो भासताहे सोइ अज्ञान हे ॥ हे राजन् जबलग इसको वासना नष्ट नही होती तबलग इसकों दुःखभी नही मिटते ॥ जब वासना मीटीजावे तब सर्व जगत ब्रह्मरूप अपणा आपही भासे राग दोष किसीविषे न रहे ॥ जेसें सुपनेविषे नाना प्रकारकी सृष्टि भासती हे ॥ जो पूर्व स्वरूप स्मरन आताहे तो सर्वरूप आप होजाताहे ॥ राग दोष उसका मिटि जाताहे ॥ तेसें ज्ञानवानकों यह जगत ब्रह्मरूप अपणा आप भासताहे ॥ अरु समानरूप विचारतें रहित होताहे ॥ जो पूर्व अपूर्व अपरकों विचारणा के इह सुभ हे इह असुभ हे ॥ असुभका त्याग करणा इह गुण विचार हे जबलग पूर्व अपर विचार मनविषे रहता हे तबलग जगतविषे भटकताहे अरु वांध्या रहताहे काहेतें जो सुभ असुभ दोंनों जगत विषे हे जब इनका विस्मरन होजावे संपूर्न जगतकों ममात्र जाणिकरी आत्मपदविषे सावधान होवे तब मुक्त होवेगा अरु इस जीवकों अपणी वासनाही बंधनका कारण हे ॥ जबलग जगतविषे दुःखको वासना होतीहे तबलग राग दोष उपजता हे तिसकरी वांध्या रहता हे ॥ जिनकों जगतके सुखदुःखविषे रागदोषकी भावना नही उपजती अरु वासनाभी नष्ट भइ हे ॥ तिनकों इह जगत ब्रह्मरूप अपणा आपही भासताहे जगतविषे दुःखदायक कछू नही भासता उनकों सब ब्रह्मभासता हे ॥ इतिश्री यो० निर्वाण प्रकरणे वंधानोपाख्यान वर्णनं नाम द्विशताधिक द्वाविंशतितमः सर्गः ॥ २२२ ॥

दसरथोवाच ॥ हे भास तुम चिरकाल पर्यंत जगतविषे फिरते रहेहो ॥ जिस प्रकार तुमनें चेष्टा करी हे अरु जो देसकाल पदार्थ देखे हे सो सबही कहो ॥ ॥ भासोवाच ॥ हे राजन् में जगकों देखता फिऱ्या हों ॥ फिरता फिरता थकि गयाहों ॥ परंतु देखणेकी जो इछा थी इस कारणतें मुझकों दुःख नही भास्या ॥ जो कछू में चेष्टा करीहे अरु जो देखाहे सो कहताहों ॥ हे राजन् में बहुत जनम धारेहे ॥ अरु बहुत वार मृतक भयाहों बहुत वार श्राप पायाहे उंच नीच जनम धारेहे अरु मरीमरी गयाहो अरु बहुत ब्रह्मांड देखेहे परंतु अग्नि देवताके वर करकें॥ अरु एक वारविषे में दछ हूआहों ॥ सहस्र वर्ष पर्यंत फुल फल टास संयुक्त रहाहों॥ जब कोउ काटे तब में दुःखी होउं अंतरतें मन मेरा पीडा पावे बहुरी उहांतें सरीर छूटा तब सुमेरु पर्वत पर स्वर्नका कमल हुआ उहांका जल पान कीया॥बहुरी एकदेश विषे पंछी हुआ सो वर्ष पंछी रहा बहुरी गिदड हुआ उहां हस्तीनें चूरन कीया तब मृतक भया ॥ बहुरी सुमेरु पर्वत पर में सुंदर मृग हुआ देवता अरु विद्याधर मेरे साथ प्रीती करे ॥ तब केता काल रही करी मृतक भया बहुरी देवताके वनविषे मंजरी हुआ देवियां विद्याधरीयां मुजकों स्पर्शकरे अरु सुगंध लेवे तब में देवताकी स्त्री भया बहुरी में सिद्ध हुआ मेरा वचन फुरणे लागा ॥ बहुरी अवर सरीर धार्या एक ब्रह्मांड लंघ गया ॥ बहुरी अवर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुरी अवर इसी प्रकार केते ब्रह्मांड में लंघ गया ॥ एक ब्रह्मांडविषे जो आश्चर्य देख्याहे सो सुणहु एक स्त्री देखी तिसकें सरीरविषे केइ ब्रह्मांड देखे देवी करी में आश्चर्यकों प्राप्त भ
या अरु देसकाल क्रियाकरी पूर्ण त्रिलोकीयांकों देखता में विस्मे हुआ जेसें दर्पणविषे प्रतिबिंब दृष्ट आताहे ॥ तेसें मुझकों जगत भासे ॥ तब उसकों में कहा हे देवी तुं कवन हे अरु
यह सरीर विषे तेरे क्या हे ॥ ॥ देवीउवाच ॥ हे साधु में सुध चिदशक्ति हों अरु इह सब मेरे अंग हे मेरेविषे स्थित हे अरु मेरी क्या वात पुछणीहे जेता कछू जगत तूं देखता हे
सो सब चिदरूप हे चैतननें इतर कछू अवर नही ॥ अरु सवविषे ब्रह्मांड त्रिलोकी आय स्थित हे जो अपणा आपही हे जो पूर्व अपणे सुभावविषे स्थित हे तिनकों अपणेही विषे भा
सतेहे अरु अपणाहि सूक्ष्मरूप भासताहे ॥ अरु जो सुभावविषे स्थित नही तिनकों जगत बाहिर भासेतेहे अरु आपतें भिन भासतेहे ॥ हे राजन् इह जगत कछू बन्या नही ॥ जेसें सुपने
विषे नगर भासताहे ॥ जेसें गंधर्व नगर भासताहे तेसें आत्माविषे जगत भासताहे ॥ जेसें जलविषे तरंग भासताहे सो जलरूप हे तरंग कछू इतर वस्तु नही होते ॥ तेसें सब जगतचिदरू
प विषे भासता हे सो चैतननें इतर कछू नही ॥ परंतु जब सुभावविषे स्थित होकरी देखेगा तब अेसें भासेगा अरु जो अज्ञान दृष्टि करी देखेगा तो नाना प्रकारका जगत दृष्टि आ
वेगा॥ हे राजन दसरथ इस प्रकार उस देवीनें मुजकों कहा॥तब में उहांतें चल्या आगें अवर सृष्टिविषे गया तहां देखो जो सभही पुरुष रहते हे स्त्री कोउ नही पुरुषसों पुरुष उत्पन्न हो
ते हे ॥ तिसतेंभी आगें अवर सृष्टिविषे गया तहां न सूर्य हे न चंद्रमा हे न तारे हे न अग्नि हे न दिन हे न रात्र हे ॥ जेसें चंद्रमा सूर्य ताराका प्रकास होता हे ॥ तेसें सभ अपणे प्रकास करी
प्रकासते हे तिनकों देखीकरी में आगें अवर सृष्टिविषे गया तहां क्या देखे जो आकासहीतें जीव उत्पत्ति होते हे अरु आकासहीविषे लीन होते हे एकठेही सभ उपजते हे अरु एक
ठेही सभ लीन हो जाते हे न उहां मनुष हे न देवता हे न वेद हे न सास्त्र हे न जगत हे इनते विलक्षणही प्रकार हे॥हे राजन इस प्रकार में केइ सृष्टि देखीयां हे सो मुझकों स्मरण आ
तीया हे आगें अवर सृष्टिविषे में गया तहां क्या देख्या जो सव जीव एकही समान हे ॥ न किसकों रोगहे न दुःखहे सव एक जेसें गंगाके तीरपर बेठे हे ॥ हे राजन एक अवर आश्चर्य
देख्या हे सो सुण॥एक सृष्टिविषे में गया तहां क्षीरसमुद्र मंद्राचल करी मथी ताहे॥एक उरतें विष्णु भगवान अरु देवता हे रत्न साथ जड्या हुआ मंद्राचल पर्वतहे॥सेस नाग कर्के रसडोकी न्यांइ
लपेट्या हुआ हे मथणेके निमित्त दुसरी उरतें दैत लागे हे॥वडा सुंदर शब्द होताहे॥तहां उह कौतक देखी करी में आगें गया एक अवर सृष्टि देखीउहां मनुष उडतें फिरतें हे आकाशविषे ॥अरु
देवता पृथ्वीउपर मानुष विचरते हे वेदशास्त्र जाणतेहे ॥हे राजा एक अवर आश्चर्य देख्या जो एक सृष्टि विषे में जाय निकस्या तहां मंद्राचल पर्वतउपर कल्पतरु मंदराचल वलका वन हे तिसविषे
मंदरका नाम एक अप्सरा रहतीथी तहां मद्राचल पर्वतपर जायकरी में सोइ रहा अरु रात्रका समा हे जो उह अपछरा मेरे कंठ साथ आयलागी ॥ तब में जागी करी देख्या अरु
कहा हे सुंदरी तेनें मुझकों किस निमित्त जगायाहे में तो सुख साथ सोयाथा॥तब अपछरानें कहा हे राजन में इसि निमित्त तुझको जगायाहे जो चंद्रमाआनी उदे हूआहे॥अरु चंद्रकांतमणि चंद्र
माकों देखिकरी श्रवेगी अरु नदीकी न्यांइं प्रवाह चलेगा तिसविषे तूं वहिजावे॥इस कारनतें में तुझको जगायाहे॥हे राजा दसरथ जब इस प्रकार उसनें कहा तब तातकालही नदीका प्रवाह चल
णे लागा तब उह प्रवाहकों देखीकरी मेरकों आकासविषे लेउडी पर्वतके उपर गंगाका प्रवाह चलताथा तिसके काठेपर मुझकों स्थित कीया ॥ सप्त वर्ष पर्यंत में उहां रहा॥बहुरी एक ब्रह्मांडविषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गयातहां तारानक्षत्र चक्र सूर्य कछू न था तिसकों देखी करी में आगें गया इसप्रकार अनंत ब्रह्मांड में देखता फिऱ्या हों॥हे राजन् अैसें देस कोउ न होवेगा अरु अैसी पृथ्वी कोउ न होवेगी अैसी नदी पहाड कोउ न होवेगा जिसकों में न देख्या होवेगा अरु अैसी चेष्टा कोउ न होवेगी जो में न करी होवेगी ॥ केइ शरीरके सुख भोगे हे केइ दुःख भोगे हे वन कंदरा अरु गुप्त स्थान में सत्र फीरीदेखेहे परंतु अग्नि देवताके वरकों पाय करी हे राजन फिरता फिरता में थकिगया तोभी आगें चला जाउं अनेक ब्रह्मांड विषक में देखे हे अरु अंत अब आया हे जो यह जगत भ्रम मात्र हे अरु में शास्त्र सुणे हे जो यह जगत हे नही यद्यपी हे नही तोभीदुःखकों देताहे जेसें बालककों अपणे पछावे विषे वैताल भासता हे॥ तेसे यह जगत अविचार करीके भासता हे ॥ अरु विचार कीएतें निवर्त हो जाता हे ॥अरु एक आश्चर्य सुण एक ब्रह्मांडविषे में गया तहां महाआकाश था तिस महाकाशसों गिर्या पृथ्वी उपर आनि पडा तब तहांतें सोइ गया महा गाढ सुषुप्ति रूप हो गया अरु सब जगतका विस्मरण होगया ॥ जब गाढ सुषुप्ति क्षीण भइ तब एक सुपना आया ॥ तिस सुपनेविषे यह जगत तुमारा मुझकों भासी आया तिसविषें पहाड कंदरा देश गुप्त प्रगटस्थान मुझकों भासी आए जहां सिद्धकी गम हे तहांभी में गया हो ॥ अरु जहां सिद्धकी गम नही हे तहांभी में गयाहों ॥ इसप्रकार जतन देखे हे परंतु आश्चर्य हे ॥ जो सुपनेंकी सृष्टि प्रत्यक्ष जाग्रतविषे दृष्ट आवे हे अरु सुपनेके शरीर जाग्रतविषे पडेपडे भासने हे॥ तातें सब जगत भ्रममात्र हे असतही सत होकरी दिखाइ देता हे ॥ इसप्रकार देखी करी में आश्चर्यकों प्राप्त भया हो ॥ ॥ इतिश्री यो० निर्वानप्रकरणे विपश्चित कथा वर्णनंनाम द्विशताधिकत्रयोविंशतितमः सर्गः ॥ २२३ ॥

॥ विपश्चितोवाच ॥ ॥ हे राजन् एक सृष्टि जो में देखी सो केसी आकाशमें हे जोइस महाआकाशमें हे जो इस महा आकाशतें भिन्न नही अरु तहां तुमारीभी गम नही ॥ जेसें सुपनेकी सृष्टि कोउ जाग्रतविषे देखो चाहे सो दृष्ट नही आती तेसें उह सृष्टि हे ॥ हे राजन पृथ्वीका एक स्थान था सो मेरे देखते देखते पच्छावेकी न्यांइ फुरणे लागा बहुरी उह आकाशविषे पहाडकी न्यांइ भासणे लागा ॥ अरु शरीर मनुषका अरु दसोदिसा रोकी लीया अरु आकाशतेंभी बडा भासणे लागा सो आकाशविषेभी समावे नही बहुरी सूर्य चंद्रमाकों मेरे देखते देखते आच्छादी लीया ॥ बहुरी भूकंप जेसा आया मानों प्रलय काल आया हे ॥तब में अपणे इष्ट अग्नि देवताकी उर देखत भया॥अरु कहा हे भगवन् तुम मेरी जन्म जन्म रक्षा करते आये हो अबभी मेरी रक्षा करो ॥ में नष्ट होता हो तब अग्निनें कहा तूं भय मत करु तब में अग्निविषे जीव प्रवेश किया बहुरी अग्निनें कहा मेरे वाहन परी अरूढ हो करी मेरे स्थानविषे चल ॥ तब मुझकों अपणे वाहनं तोते पर चडाय करि मेरे तांइ आकास मार्ग ले उडा ॥ जब हम उडे तब पाछेतें उह सिक्त्रीतक पृथ्वी पर गिऱ्या तिसके गिरने करी सुमेर जेसें पर्वत पातलको चले गए ॥ महा सरीर बडा गिर्या ॥ जेसें सैकडे सुमेर गिरे तेसें गिऱ्या ॥ अरु मंद्राचल मलयाचल अस्ताचलतें लेकरि जो पर्वत थे सो अधको चलेगए अरु पृथ्वी जर्जरी भावकरी फटगइ टोए पडी गए ॥ अरु तिसके सरीरके नीचे जो दछ मानुष दैत स्थावर जंगम जीन आए सो सभ नष्ट हो गए बडा उपद्रव आनीउदे हुआ तिसके सरीर साथ सर्व दिसा पूर्न होगइ ॥ अरु अंग उसके ब्रह्मांडतेंभी पार नीकसी गए ॥ हे राजा दसरथ जब इस प्रकार में भयानक दसा देखी तब अपणे इष्ट अग्निकों कहा ॥ हे देव यह उपद्रव क्यों करी हूआ हे अरु यह सब कवन हे ॥ सो अेसा सरीर पडा आगें तो कोउ देख्या सुण्या नही तब अग्निनें कहा तुं अब तूष्णी होहु ॥ यह सभ वृत्तांत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में तुझकों कहोंगा ॥ इसकों तुं सांत हौणे देही एताकाल तुं विलंब करु इस प्रकार अग्नि कहता था जो देवता विद्याधर गंधर्व सिद्ध जेते कछू स्वर्गके वासी थे सो सभ आनिकरी मि
ली स्थित हूए अरु विचार करत भए जो यह उपद्रव प्रलेकाल विना हूआ हे इसके नास करणेकों देवीजीकी आराधना करीये ॥ हे राजन् अेसें विचार करकें देवीजीकी स्तुती करणे
लागें ॥ हे देवी शव वाहिनी काकदेसी चंडिका हम तेरी सरन आए हे ॥ इस उपद्रवतें हमारी रक्षा करहू अेसें कही करी स्तुति करणे लागें ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वा
ण प्रकरणे महासव वृत्तांत वर्ननं नाम द्विशताधिक त्रयोविंशतितमःसर्गः ॥ २२३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ विपश्चितोवाच ॥ हे राजा दसरथ उह देवता स्तुती करकें शवकी उर देखते भये ॥ जो सभ दीप इसके उदरविषें समाए गएहे ॥ अरु भुजा करकें सुमेरादिक पर्वत आच्छाद गएहे
अवर अंग उसकें गएहे ॥ ब्रह्मांडकोंभी लंघ गये हे अरु साथही पातालकों गये हे तिनकी मर्यादा कहुं पाइ न जावे एक अंगही करकें कहुं पृथ्वी छपि गइ ॥अेसे देखी करी विद्याधर
देवता गंधर्व सिद्ध इनतें ले करी नभचर स्तुति करणे लागे ॥ हे अंबे चंडिका अपणे गणकों साथ ले करी इस उपद्रवतें हमारी रछा करहु हम तेरी सरन आए हे॥ हे राजन जब इस प्रका
र स्तुति करके देवता आराधन करणे लागे ॥ तब चंडिका अपणे गणकों ले करी आकाशमार्गसों आवती भइ जक्ष वैताल भैरव आदिक गण साथ ले आये जेसें मेघ सर्व दिशाकों आ
छादि लेताहे ॥ तेसें सर्व उरतें गण आये अरु आकासकों आछादि लीया अरु चंडिका बडे तेजरूपकों धारे हूए चली आवे मानों अग्नीकी नदी चली आती हे ॥ रक्त नेत्र हे सिर उपरी
पक्के केसहे अरु स्वेत दंत हे अरु बडे शस्त्र धारे हूए हे अरु केइ कोटि जोजन पर्यंत तिसका विस्तार हे ॥ सब दिशा आकाश शरीर करी आछादि लीया हे अरु कंठविषे रुंडकी माला
हे ॥ अरु सब मुडदे वाहन पर आरुढ हूइ हे ॥ अरु परमात्म पदविषे तिसकी स्थिति हे ॥ अरु रिवे प्रकाश संयुक्त शरीर हे सूर्य चंद्रमा अग्नि आदिक प्रकाशकोंभी लज्जित किया हे ॥
अरु हाथविषे खड्ग मूसल ध्वज उखल आदिक नाना प्रकारके शस्त्र धारे हे अरु आकाशविषे तारागणकी न्यांइ गये हे इस प्रकार गण सहित चली आती हे मानों समुद्रतें निकसी बड
वाग्नी चली आती हे ॥ जब इसी निकट आये तब देवता बहूरी प्रार्थना करणे लागे ॥ हे अंबे इस शवकों नाश करहू ॥ अपणे गणकों आज्ञा करहू जो इसकों भोजन करे हम इसकों
देखी करी बडे सोककों प्राप्त हूएहे हम तेरी सरनहे इस उपद्रवतें हमारी रक्षा करु ॥ हे राजा दसरथ जब इस प्रकार देवतानें कहा तब चंडिका प्राण वायुकों खेचती भइ ॥ तिस करीदेवीके
खेचणेतें जेता कछु सबविषे रक्त था सो सब पान करी लीया॥जेसें समुद्रकों अगस्तनें पान कियाहे तेसें पान करी लीया तिस करी देवीका उदर अरु अंग सब भरे पूर्न हो गये ॥ अरु नेत्र लाल हो
आये तब देवी नृत्य करणे लागी ॥ अरु अवर सब शवकों भोजन करणे लागे केइ मुखकों लागे केइ भुजाकों केइ उदरकों केइ वक्षस्थलकों टंगकों केइ चरनकों इस प्रकार सभ अं
गकों गण भोजन करणे लग गये केइ गण आद्रा ले करी आकाशविषे गए सूर्यके मंडलकों गये केइ गण अंगके अंत पावणेकों उडे सो मार्गहीमें मरी गये परंतु अंत कहुं न पाया ॥
अरु देवी जो उस सबकी उर देखे तिस देखणे करी नेत्रतें अग्नी निकसे तिस अग्नि करी मांस परिपक्व होवे अरु गण भोजन करे अरु पकणेके समे जो शरीरतें कहुं रक्तकी बूंद निकसे
तिस करी मंद्राचल अरु हिमाचल पर्वत लाल हो गये मानों पर्वतनें लाल वस्त्र पहिरे हे ॥ अरु रक्तकी नदीयां वहेहे बडे जो सुंदर स्थान थे अरु दिसा सब भयानक होत भइ अरु पृ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थ्वी उपर जीव सब नष्ट हो गये पहाडकी कंदराविषे जाय देव रहे सो बचि गये अवर सब नष्ट हो गये ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन तुम कहते हो उस नीचे आय प्राणी सब न
ष्ट होगए अरु अंग उसके अेसे कहतेहो जो ब्रह्मांडकोंभी लंघगए बद्रुरी कहतेहो देवता बचिरहे सो क्या कारन हे ॥ ॥ वसीष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो उसके सरीर अरु अंगके नीचे
आए सो नष्ट होगए अरु मुख अरु गोवाविषे कछू भेद हे तिसविषे जो पोल हे अरु गोदी अरु टंगके नीचे जो कछू पोलहे अरु सुमेरु मंद्राचल उदयाचल अस्ताचल पर्वतविषे कछू
पुलाडहे तिनकी कंदराविषे बेठे देवता बचिगए ॥ अंगके छिद्रविषे रहेहे इस करी बचि रहेहे अरु कहणे लागे बडा कष्ट हे हमारे बेठणेके स्थान केइ नष्ट होगएहे वछ कहां गए बरफ
का पर्वत हमारा कहा गया ॥ इनकी सुंदरता कहां गइ ॥ बन अरु बगीचे कहां गए चंदनके वछ कहां गए ? अरु जनके समूह कहां गए ? जो हमको यज्ञ करी पुजतेथे यह उंचे वछ
कहां गए जो ब्रह्मलोक पर्यंत जिनके फुल अरु टास जातेथे अरु यह क्षीरसमुद्र कहांगया जिसके मथणेकरी बडा शब्द उदे होताथा अरु तिसके पुत्र जो रत्न कलपतरु अरु चंद्रमा थे
सो कहांगए अरु जंबुदीप कहां गया जिस जंबुके फलकी नदी चलाइथी अरु स्वर्नवत जलके चक्र उठतेथे सो नही कहां गइयां अरु गनेके रसका समुद्र कहां गया हाकष्ट हाकष्ट
बरत्या हे ॥ खंडके पर्वत अरु मिसरीके पवर्त अपछराके विचरणेके स्थान कहां गए ॥ पृथ्वी कहांगइ यह नंदनवनके स्थान कहांगए ॥ जहां हम अपछरा साथ विलास करतेथे तिनवि
षयका अभाव नही हूआ मानों हमकों सूल चुभतेहे ॥ जेसें फलकों कंटक चुंभतेहे ॥ तेसें विषयके आभास रूपी हमकों कंटक चुभतेहे ॥ हे रामजी सोकवान हूए अरु कहते भए ॥
हाकष्ट हाकष्ट हे इस प्रकार विषय स्मरन करकें देवता सोक करतेहे ॥अरु गण उंहां सबकों भोजन कर्तेहे ॥ जेते कछु अंग तिसके थे सो गणनें भोजन करी लीए तिस करी अघाएरहे
अरु कछू सेष रही गया मेदाका अरु दुर्गंध बहुत तब तिसका जो पिंड रहा सो धराकी पृथ्वी हूइं तिसकरी तिस पृथ्वीका नाम मेदिनी होगया ॥ अरु मोठे जो हाडे हूए होतेहे तिसके ॥
सुमेरादिक पर्वत हूए तब ब्रह्माजीनें देख्या जो सब विश्व शून्य जेसी होगइहे तातें बद्रुरी में रचों तब पूर्वकी न्यांइं सृष्टिकों रची ॥ जगत सब कर्म व्यवहार चलणे लगा ॥ ॥ इ
तिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे स्वयंमहात्म्य वृत्तांत वर्ननं नाम द्विशताधिकचतुर्विंशतितमःसर्गः ॥ ॥ २२४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥
॥ ॥ विपश्चितोवाच ॥ ॥ हे राजादशरथ जब यह कर्म हो रहाहे तब मैं अपणे इष्टदेवतासों प्रश्न किया तोतवाहनपर आरुढ हुए मैं कहा ॥ हे महादेव सर्व जगतके इश्वर अरु
जगतके भोक्ता यह सब कवण था अरु कहां स्थित था अरु किस प्रकार गिर्या हे ॥ अग्निरुवाच ॥ ॥ हे राजन अनंत त्रिलोकी जिसका आभास हे तिसविषे इसका वृत्तांत वर्णन हो
वेगा ॥ एक त्रिलोकी विषे इस सबका वृत्तांत नही होता तातें सुण हे राजन एक परम आकाश हे सो चिन्मात्र पुरुष हे सर्वज्ञ हे अनामय हे अरु अनंत हे सो आत्मतत्व केवल
अपणे आपविषे स्थित हे तिसका जो आभास हे सो संवेदन फुरणा हे सोइ किंचन होता हे ॥ सो तिसकों किसी स्थानविषे फुरता हे तब अेसें भावना होती हे जो में तेज अणु हों
तिस भावनाके बसतें अणु जेसी हो जाती हे जेसें कोउ पुरुष सोया हे अरु सुपनेमें आपकों मार्गविषे चलता देखता हे ॥ जेसें तुम सुपनेविषे आपकों पोढे देखहु तेसें चिद संवेदन
आपकों अणु जानत भइ हे ॥ जेसें फुरणा ब्रह्माको हूआ हे तेसे धुडके कणकेका हूआ हे अधिष्टानविषें फुरणा तुल्य हुआ हे ॥ तब उस अणुकों सरीरकी भावना होती हे जो अपणे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साथ सरीर देखती हे सरीरके होणे करी नेत्र आदिक इंद्रियां घन होतीयां हे ॥ तब सरीर अरु इंद्रियां साथ आपकों मिल्या हूआ जाणता हे अपणा आप जाणी करी तिनकों ग्रहण करता हे इंद्रियां करी विषयकों ग्रहण करता हे ॥ तब उही चिदरूप जीव प्रमाद करकें आधाराधेय भावकों मानता हे ॥ अरु अधिष्टान सत्ता विषे कछु हुआ नही अद्वैत सत्ता ज्योंकीत्यों अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जेसें सुपने विषे प्रमाद करकें आपकों कीसी यह विषे बेठे देखता हे ॥ तेसें इहां प्रमाद करकें आधाराधेय भावकों देखता हे प्राण अरु मन अहं कारकों धारता हे ॥ अरु जानता हे मेरे माता पिता हे अरु में अनादिका जीव हों अरु अपणा सरीर जाणीकरी आगें पंचभूतक जगत सरीरकों देखताहे ॥अपने फुरणेके अनुसार हे अंग इसी प्रकार जो आदिक सुद्ध चिनमात्र तत्वविषे फुरणा हुआ तब चित्तकला फुरी यह आपकों तेज अणु जानत भइ ॥ तब तिसविषे अहं वृत्तिकरी अहंकार हुआ अरु निश्चयात्मक बु द्धि हूइ चैततारूप चित्त हुआ संकल्प विकल्प रूप मन हुआ यह उत्पत्ति हो करी बहुरी तन्मात्र उत्पत्ति उपजी फेरी तिनके इछाद्वारा सरीर इंद्रियां उत्पत्तिभइ ॥ बहुरी तिन इंद्रियांके वसते देखणेकी इछा हूइ तिस संवितकालविषे तब आगें दृश्य भासी आइ ॥ तब संवित शक्ती आपकों प्रमाद दोषकरकें दैत जानत भइ ॥ जो में दैत हों अरु साथहि तिसकें अपणे माता पिता फुरी आए जो यह मेरी माता हे यह पिता हे यह कुलहे सो चिरकालकी चली आती हे ॥ इस प्रकार एक दैत अहंकार सहित विचरणे लागा ॥ तब एक कूटीविषे एक ऋ षि बेठा था ॥ तिस कूटीकी उर दैत गया सो किस प्रकार गया जो उसकी कूटीकों चूर्न करत भया ॥ जब ऋषिके निकट गया तब ऋषिनें कहा हे दुष्ट तुझनें क्या चेष्टा ग्रहण करीहे ॥ अब तूं मरी जावेगा अरु मछर होवेगा ॥हे विपश्चित तिस ऋषिके श्रापरूपि अग्नीकरी उसका सरीर भस्म होगया ॥ तब उसकी निराकार चैतन संवित भूताकासरूप हो गइ तब आकास विषे तिसका वायु साथ संयोग हुआ तब उस ऋषि मौनीकें श्रापकी वासना आनी उदे भइ ॥ जेसें पृथ्वीविषे समे पाय करी बीजतें अंकुर उत्पत्ति होताहे तेसें पंच तनमात्रा उदे भइ अरु मछरका सरीर अपणा भासी आया अज्ञान करकें मछर हुआ ॥ जिस मछरकी दो अथवा तीन दिन आरबला होती हे तिसका सरीर पाया ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन जी व जो जनम पावते हे सो जो जनमतें जनमांतरके चले आते हे अथवा ब्रह्मतें उपजे होते हे यह कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी केइ जनमतें जनमांतर चले आते हे ॥ अरु केइ ब्रह्मातें उपजतें होते हे ॥ जिनकों पूर्व वासनाका संसरना होता हे सो वासनाके अनुसार सरीरकों धारतें हे सो जनमतें जनमांतरकों चले आते हे ॥अरु जिनकों संसकार बिना भूत भासी आते हे सो ब्रह्माते उत्पत्ति होते हे ॥ हे रामजी आदि सभ जीव संसकाररूपी जो कारण हे तिसविना उत्पत्ति हूए हे अरु पाछेंतें जनमांतर इनकों होता हे जिसको संसकार वि ना भूत भासे सो जाणीए ब्रह्मातें उपजा हे ॥ अरु जिसकों संसकारकरी सृष्टि भासे सो जाणीए इसके जनमांतर हे जो ए दो प्रकार भूतकी उत्पत्ति में तुझकों कही हे ॥ अब बहुरी उ स मछरका क्रम सुण ॥ हे रामजी जब उह मछरकें जन्मकों प्राप्त हूआ ॥ तब कमलिनीयां अरु हरे घास तृण पत्रविषे मछरकों साथ लीए रहे ॥ तब उहा एक मृग आनी प्राप्त हूआ ॥ तीसका चरन मछर पर आए गया ॥ जेसें किसी उपर सुमेर पर्वत आयपडे तब उह मछर चूरन हुआ अरु मृतक भया अरु मृतक होणेके समे मृगकी उर देख्या ॥ उसके देखणे करकें उसका सरीर मृगरूप हों गया तब उह मरीकें तात्कालही मृग हूआ वनविषे विचरणे लगा तब एक कालमें तिसकों वेधकनें देख्या अरु बाण चलाया तीस बाणकरी मृग वेध्या गया॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेध्या हूआ मृग बेधककी उर देखत भया तिस देखणे करी उह मरीकें बेधक हुआ तब धनुष अरु बाण लेकरी मृग अरु पंछीकों मारणे लागा ॥ बहुरी एक समें वनविषे गया तब एक मुनिश्वर वनविषे देख्या तिसके निकट जाय बेठा मुनीस्वरनें कहा हे भाइ तूं यह क्या पाप चेष्टाका आरंभ करताहे इस चेष्टाकरी नर्ककों प्राप्त होवेगा ॥ तातें तू कीसी जीवकों दुःख न देही ॥ अरु जीन भोगके नीमित्त तूं यह चेष्टा करताहे सो भोग बिजुलीके चमत्कारवत हे ॥ जेसें मेघविषे विजुलीका चमत्कार होताहें ॥ बहुरी मिटि जाताहे तेसें भोग होएकरी मीटी जातेहे ॥ अरु जेसें कमलके पत्र उपर जलकी बूंद ठहरतीहे सो उसकी आरबला कछू नही क्षण पलविषे गिरपडतीहे वायकरकें ॥ तेसें इस सरीरकी आरबला कछू नही ॥ जेसें अंजलीविषे जल पाया ठहरता नही ॥ तेसें जोबन अवस्था चली जातीहे छिनभंगुररूप दक्ष हे अरु जोबन असारहे तिसविषे भोगणा क्याहे इनकरी सांति कदाचित नही होती ॥ जो तुझकों सांतिकी इछा होवे तो निर्वाणका प्रश्न कर ॥ तब तुं दुःखतें मुक्त होवें अपणे हिंसा कर्मकों त्यागि देहु ॥ इसके करणेकरी नर्ककों चला जावेगा ॥ कदाचितभी सांति तुझकों न प्राप्त होवेगी ॥ तुं अपणें हाथकरी अपणें चरनपर कुहाडा क्यों मारताहे ॥ अरु अपणे नासके निमित्त तुं विषका बीज क्यों बोताहे ॥ इस कर्मकरी तूं संसार दुःखविषे भटकत फीरेगा सांतिवान कदाचित न होवेगा ॥ तातें सो उपाय कर जिसकर संसार समुद्रतें पार होवे ॥ ॥ इति०नि०प्र०मछरव्याधवर्णनंनाम द्विशताधिकपंचविंशतितमःसर्गः॥ २२५ ॥ ॥ ७ ॥

॥ अग्निउवाच ॥ हे राजन जब इसी प्रकार ऋषीस्वरनें उस वेधककों कहा तब बेधकनें धनुष अरु बाणकों डारी दिया अरु बोला हे भगवन् जिस प्रकार संसार समुद्रतें पार होउं सो उपाइ कृपा करीकें मुझकों कहो ॥ परंतु केसें होवे जो न दुःसाध्य होवे न मृदु होवे मृदु कहीएं जो अल्पभी न होवे दृढ होवे ॥ ऋषीश्वरोवाच ॥ हे वेधक मनकों एकाग्र करणा इसका नाम शमहे ॥ अरु इंद्रियांकों रोकणा इसका नाम दम हे सोइ मौन हे ॥ यह दोनों जो हे तप अरु मौन मनकों एकाग्र कर्णा इसकरी अंतःकरण सुद्ध होताहे ॥ अरु अंतःकरण सुद्ध विषे आत्मज्ञान उपजताहे ॥ तिस आत्मज्ञानकरी संसारभ्रम निवृत्त होजाताहे अरु परमानंदकी प्राप्ति होतीहे ॥ अग्निरुवाच ॥ हे राजन् इस प्रकार जब ऋषीस्वरनें कहा ॥ तब उह वेधक उठि षडा हूआ प्रणाम करीकें तप करणे जायलागा ॥ केसा तप जो इंद्रिय संजमविषे राखी अरु जो अनिछित जथासास्त्र आनी प्राप्त होवे तिसका भोजन करणा अरु सब क्रियाका अंतरतें मौनव्रत धरना अब केता काल उसकों तप करते वितीत भया तब अंतःकरण सुद्ध हूआ रुषीस्वरके निकट आय करी प्रणाम करी बेठी गया अरु कहत भया ॥ बेधकोवाच॥ ॥ हे भगवन् बाहिर जो दृस्य हे सो अंतर कोस प्रकार प्रवेस करतीहे ॥ अरु सुपनेविषे जो सृष्टि भासतीहे सो अंतरकी बाह्यरूप हो भासतीहे सो केसें भासतीहे यह कृपा करकें कहो ॥ ॥ ऋषीस्वरोवाच ॥ हे बेधक यह बडा गूढ प्रश्न तुझनें कीयाहे ॥ इही प्रष्ण प्रथम मेंभी गणपतीकों कीयाथा संदेह संयुक्त होकरी तब जो कछू उनके कहणे कर में ग्रहण कीयाहे सो सुण ॥ हे बेधक एक समे इसी संदेहके दूर करणेका उपाय में करत भया ॥ पद्मासन बांधकरी बाह्य इंद्रियांकों रोक्या ॥ रोकी करी मनविषे जोडी अरु मन बुधि आदिककों पुर्यष्टकाविषे स्थित कीया स्थित करीकें पुर्यष्टकाकों सरीरतें विरक्त कीया ॥ अरु आकासविषे तिसकों ठहरावत भया निराधार जब विलक्षण हूआ चाहे तब विलक्षण होजावे ॥ अरु जब सरीरविषे व्याप्या चाहे तब व्यापजावे ॥ हे बेधक इस प्रकार जब में जोगधारणा करीकें पूर्ण भया तब एक कालमें एक पुरुष हमारी कुटी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के पास सोयाथा ॥ तिसके स्वास अंतर बाहिर आते जातेथे ॥ तिसकों देखी करी मैं यह इछा करी जो इसके अंतर जायकरी कौतक देखो जो अंतर क्या अवस्था होतीहे ॥ अेसें वि चार करकै मैं पद्मासन बांध्या ॥ अरु जोगकी धारणा करकै उसके स्वास मार्गसों में अंतर प्रवेस जाय कीया ॥ जेसें उष्टउंघता होवे अरु उसके स्वास मार्गतें जेसें सरप जाय प्रवेस करे ॥ तेसें मैं जाय प्रवेस कीया तिसके अंतर अपणे अपणे रसकों ग्रहण करणेहारी नाडी मुझकों दृष्ट आइयां ॥ केइ वीर्यकों ग्रहण करणेहारीयां हे ॥ केइ रक्तकों केइ कफकों ग्रह ण करतीयां हे ॥ केइ मल मूत्रवालीयांहे ॥ सो सब मैं देखत भया अवर अनेक विकार जो उसके अंतर थे सो सब देखता भया देखीकरी मैं अप्रसंन भया महा संकल्परूप स्थान हे रक्त मज्जा करी संयुक्त अंधकार महा नरकके तुल्य है गर्भवास जीवकों ॥ बहुरी आगें गया तहां एक कमल देख्या तिसरिदे कमलविषे तिनकी संवेदन फुरती देखी तिस संवेदन फुरणे विषे जो कछू मैं देख्या हे सो सुण अरु केसी उह संवेदन है संवितशक्ति जो महा तेजवान हे रिदाकास तहां उह स्थितहे ॥ केसी स्थितिहे त्रिलोकीका आदर्सहे ॥ त्रिलोकी विषे जो पदा र्थ हे तिनका दीपक हे ॥ अरु सर्वपदार्थकी सत्तारूप हे अेसा जो संवितरूपी जीवसत्ता है सो तहां स्थित हे ॥ तिस सत्ता साथ में तद्रूपताकों प्राप्त हूआं तहां तिसके अंतर जो में देख्या हे सो सुण ॥ सूर्य चंद्रमा अरु पृथ्वी जल तेज वायु आकाश पर्वत समुद्र देवता गंधर्व इनतें आदि लेकरी जो नाना प्रकारका जगत हे ॥ स्थावर जंगम सब विश्वकों में देखता भया ॥ ब्रह्मा विष्णु रुद्र सहित संपूर्न सृष्टिकों देखी करी मैं आश्चर्यवान हुआ ॥ उसके अंतर सृष्टिक्यों करी भासी सो सुण ॥ हे बेधक जाग्रतविषे उस सृष्टिका अनुभव किया था इंद्रिय करकै ॥ अरु अंतर चिद्रतत्वविषे उसका संस्कार हुआ था उही अंतर भास भासणे लागा ॥ अरु अंतर जो भूत सत्ता थी सो उसके सुपन विषे इह सृष्टिरूप बाह्य वणी अरु मुझकों प्रत्यक्ष भासणे लागी जेसें जाग्रत प्रत्यक्ष अर्थाकार भासतीहे तेसें मुझकों यह सृष्टिभासणे लागी ॥ हे बेधक इस जाग्रत सृष्टि अरु उस सृष्टि विषे भेद कछू न देख्या दोनों तुल्य हे ॥ अरु चिर पर्यंत प्रतीतका नाम जाग्रत हे अरु अल्पकालकी प्रतीतका नाम सुपन हे अरु स्वरूपतें दोनों तुल्य हे जो उसके सुपने अनुभव विषे था सो मुझकों जाग्रत भासी ॥ अरु जो मुझकों जाग्रत भासी सो उसकों सुपना भा स्या निद्रा दोष करकै उसकों सुपना हुआ उसकोभी तिस काल विषे जाग्रतरूप भासणे लागी ॥ काहेतें जो सुपना सुपनरूप हे ॥ सो जाग्रत विषे सुपनाहे सुपनेविषे तो जाग्रत हे तेसें जाग्रतभी अ पणे कालविषे जाग्रत हे नही तो सुपनरूप हे सो जाग्रत विषेभी जो सत प्रतीत हे सोइ प्रमाद हे ॥ इन दोनोंविषे भेद कछू नही ॥ काहे तें जो जाग्रत अरु सुपनका अधिष्टान चैतन सत्ता परब्रह्म हे तिसके प्रमाद करी इसकों प्राणके साथ संबंध हूआ जब प्राण साथ चित्त संवेदन मीली तब तिस फुरणे रूपके एते नाम भए तिसका नाम जीव हूआ मन हूआ चित्त बुद्धि अहंकार आ दिक सब तीसींकें नाम हे ॥ उही संवेदन जो बाह्य रूप हो फुरती हें तब जाग्रत रूप जगत हो भासता हे ॥ पंचज्ञान इंद्रिया पंच कर्म इंद्रियां चतुष्टय अंतःकरण ॥ यह चौदस इंद्रिया अपणे अप णे विषयकों ग्रहण करतीयां हे ॥ इसका नाम जाग्रत हे जब चित्त स्पंद निद्रा दोष करकै अंतर्मुख फुरता हे तब नाना प्रकारकी सुपन सृष्टि देखता हे निद्रा दोष करकै तिस कालमे उही जाग्रत रूप हो भासताहे अधिष्टान जो आत्मसत्ता हे ॥ जब संवेदन तिसकी उर फुरती हे ॥ बाह्य विषयके फुरणेतें रहित अफुरण होतीहे ॥ तब न जाग्रत भासती हे न सुपना भासताहे ॥ केवल आत्मसत्ता निर्विकल्प शेष रहतीहे ॥ हे बेधक मैं विचारी देख्याहे ॥ जो जगत अवर कछु वस्तु नही फुरणेका नाम जगत हे जब चित्त संवेदन फुरणारूप हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ती हे तब जगत् भासता हे ॥ अरु जब चित्त संवेदन फुरणेतें रहित होती हे तब जगत् कल्पना मीटी जाती हे ॥ तातें मेनें निश्चय कीया हे जो वास्तव केवल चिनमात्र हे जगत् कछू व
स्तु नही मिथ्या कल्पना मात्र हे ॥ हे बेधक जगत् भावना त्यागकरी अपणे स्वरूपविषे स्थित होहु ॥ अब उही वृत्तांत बहुरी सुण ॥ जब उसके अंतर सुपन जायत अवस्था देखे तब में
इह इछा करी जो सुषुप्ति अवस्थाभी देखों अरु विचार कीया ॥ जो सुषुप्ति नाम हे प्रलेका ॥ जहां द्रष्टा दर्सन दृश्य तीनोंका अभाव हो जाता हे ॥ परंतु जहां मे देखणेवाला हूआ त
हां महा प्रलय केसें होवेगी ॥ अरु जो में जानणेवाला न होउ तब सुषुप्तिकों कवन जाणेगा ॥ हे बेधक तब में विचारी देख्या जो अवर सुषुप्ति कोउ नही ॥ जहां चित्तकी वृत्ति फुरती
नही तीसीका नाम सुषुप्ति हे ॥ अेसें विचार करकें चित्तकों फुरणेतें रहित कीया तब सुषुप्ति तिसकी देखी ॥ तहां क्या देख्या सो सुण ॥ न कोउ उहां अहंत्वं सब्द हे न सुभ हे न असुभ
हे न जायत सुपन हे न सुषुप्तिकी कल्पना हे ॥ सर्वकल्पनातें रहित चित्तसत्ता में देखतभया ॥ अरु जो तूं कहे सुषुप्ति निर्विकल्प तुझने केसें देखी ॥ तिसका उत्तर यह हे ॥ हे बेधक अनुभ
व ज्ञानरूप आत्मसत्ता सर्वदा कालविषे ज्योंकीत्यों हे ॥ तिसविषे जेसा आभास फुरता हे तेसें ज्ञान होती हे ॥ यह जो तुमभी दिन दिन प्रति देखते हो ॥ सुषुप्तितें उठी करी जानते हो
जो में सुखसों सोयाथा सो अनुभव करकें देख ॥ तेसें मेंभी उह देखता भया ॥ इहां चित्त संकल्प कोउ नही फुरता निर्विकल्प हे परंतु केसा निर्विकल्प हे जो सम्यक बोधतें रहित हे ॥
तीस अभाव वृत्तिका नाम सुषुप्ति हे ॥ अरु बहुरी मुझकों तुरीया देखणेकी इछा भइ ॥ सो तुरीया देखणी महा कठिन हे ॥ तुरीया नाम हे साक्षी भूत वृत्तिका सो सम्यक ज्ञानतें उत्प
त्ति होती हे ॥ सो जायत सुपन सुषुप्ति अवस्थाकी साक्षी भूत अवस्था हे ॥ अरु सुषुप्तिकी न्यांइ हे जेसें सुषुप्तिविषे अहं त्वं आदिक कल्पना कोऊ नही ॥ तेसें तुरीयाविषेभी नही ब्रह्म
का सम्यक बोध होता हे ॥ अरु सुषुप्ति जडीभूत तमरूप अविद्या होती हे ॥ तुरीयाविषे जडता नही होती ॥ सो सुषुप्ति अरु तुरीयाविषे एताही भेद होता हे ॥ सच्चिदानंद साक्षी वृत्ति
होती हे ॥ सम्यक बोधका नाम तुरीयापद हे ॥ अवर तुरीया इसीतें भिन्न कोऊ नही ॥ अेसे निश्चय करी में तीसकों देखता भया॥हे बेधक चारों अवस्था में भिन्न भिन्न देखता भया॥
अरु माया जो हे फुरणा तिस सहित में देखता भया अरु आत्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ तिसविषे न कोउ जायत हे न सुपन हे न सुषुप्ति हे न तुरीया हे ॥ इनका
भेद तहां कछु नही ॥ आत्मसत्ता सदा अद्वैत हे ॥ अरु यह चारो चित्त संवेदन विषे होतीयां हे ॥ हे बेधक अेसें अनुभव करकें बाहिर आया बाहिरभी मुझकों भासणें
लागा ॥ तब में कहा यही जगत मुझकों उसकें अंतर भास्या था बाहिर केसें आया ॥ तब में बहुरी उसके अंतर प्रवेस कीया प्रथम जो उसके अंतर प्रवेस कीया था ॥
अरु तिसके अंतर सृष्टि देखीथी ॥ तब उसकी संवेदन अरु मेरी संवेदन मीली गइथी ॥ जब में अपणी संवेदन उसतें भिन्न करी ॥ तब ब्रह्मांड भासणे लागा एक उसकी संवेदन फुरणको
अरु एक मेरी संवेदनविषे भासणे लागा ॥ काहेतें जो प्रथम उसकी सृष्टिकों देखी करी में अर्थरूप जाणी ग्रहण कियाथा तिसका संस्कार होगया ॥ आत्मसत्ताके आश्रे जेसें संवेदन
फुरती गइ तेसें होकरी भासणे लागा ॥ उसका सुपन मुझकों जायत होकरी भासणे लागा ॥ जेसें एक दर्पणविषे दो प्रतिबिंब भासे तेसें एक अनुभवविषे दो सृष्टि भासणे लगीयां
तब में विचार किया जो सृष्टि संकल्परूप हे ॥ संकल्प जिवका अपणा अपणा हे ॥ अरु अपणे संकल्पकी भिन्न भिन्न सृष्टि हे ॥ अरु अनुभवके आश्रे जेसा जेसा संकल्प फुरता हे ते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सी सृष्टि भासती हे ॥ सृष्टिका कारन अवर कोउ नही ॥ हे बेधक अष्टनिमेष पर्यंत मुझकों दो सृष्टि भासती रही ॥ बहुरी में उसके चित्तकी वृत्ति अरु अपणे चित्तकी वृत्ति एकठी करी मिलाइ ॥ तब दोनों तद्रूप होगये ॥ जेसें जल अरु दुध मिलीकरी एकरूप होजाताहे ॥ तेसें दोनोंचित्त मीलिकरी एक होगए ॥ तब दुसरी सृष्टिका अभाव होगया जेसें भमदृष्टीकरी आकास विषे दोचंद्रमा भासतेहे भमके गएतें दुसरे चंद्रमाका भाव अभाव होजाताहे ॥ तेसें दुतीयवृत्तिके अभाव हूए दुसरी सृष्टिका अभाव होगया ॥ एक इसीकी सृष्टि भासणे लागती हे ॥ नाना प्रकारकें व्यवहार होते दृष्ट आवे ॥ चंद्रमा सूर्य पृथ्वी द्विप समुद्र स्पष्ट भासणे लागे ॥ केते कालतें उप्रांत तीसके चित्तकी वृत्ति सुषुप्तिकी उर आय सुपनसृष्टिका विस्तार लीन होणे लागा ॥ जेसें संध्याके समे सूर्यकी किरणा सूर्यविषे लय होतीया जाती हे ॥ जब सृष्टि चित्तविषे लय होणे लागी तब सुपनसृष्टि मीटी गइ सुषुप्ति अवस्था हुइ॥ सर्व इंद्रियांस्थिर हो गइयां ॥ हे बेधक सुषुप्ति जो होती हे सो जब अन्न भोजन करता हे तब उह समवाही नाडीउपर आनी स्थित होताहे॥ जागृतवाली ठहरी जाती हे तिसकरी प्राणभी ठहरी जाती हे तब मनभी ठहरी जाता हे ॥ तिसका नाम सुषुप्ति होती हे ॥ जब मन बहुरी फुरता हे तब जागृत होता हे ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे मुनीश्वर जब मन प्राणोही करी चलता हे ॥ तब मनका अपणारूप तो कछु न हुआ क्यों ?॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी परमार्थतें कहीए तो देह भी नही तो मन क्या कहिएं ॥ जेसें सुपन विषे पहाड भासते हे तेसें यह शरीर भासता हे ॥ काहेतें जो सबका आदि कारण कोउ नही ॥ तातें जगत मिथ्या भ्रम हे केवल ब्रह्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जो तत्व वेत्ता हे तिनकों तो अेसें भासता हे ॥ अरु अज्ञानीके निश्चेकों हम नही जाणते ॥ जेसें सूर्य उलुकके अनुभवकों नही जाणता अरु उलुक सूर्यके निश्चेकों नही जाणता ॥ तेसें ज्ञानी अज्ञानीका निश्चय भिन होता हे ॥ अरु शुद्ध चिन्मात्र आकाशविषे जगत भ्रम कोउ नही ॥ अरु फुरणे भावकर्के अपणे चैतन वपुकों ग्यान विना ही मनभावकों प्राप्त होता हे॥ तब मन आत्मसत्ताके आश्रे हो करी प्राण वायुकों अपणा आश्रयभूत कलपता हे ॥ जो मेरा प्राण हे ॥ हे रामजी बहुरी जेसी जेसी मनकल्पना करता हे तेसें तेसें देह इंद्रियां जगत भासते हे परम ब्रह्म सर्व शक्ति संपन्न हे तीसविषे जेसी जेसी भावना करी मन फुरता हे तेसा रूप हो भासता हे॥वास्तवतें अवर कछू नही॥ केवल ब्रह्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ मनका फुरणा जेसें जेसें दृढ हुआ हे तेसें तेसें देह इंद्रियां जगत भासणे लागा हे ॥ जेसें सुपनेविषे कल्पना मात्र जगत भासता हे तेसें यह जाण ॥ हे रामजी जेते कछू विकल्प उठते हे सो सब मनके रचे हुए हे ॥ जब मन उदे होता हे तब यह फुरणा होता हे जो यह पदार्थ सत्य हे यह असत हे ॥ जब चितशक्तीका मनसाथ संबंध होता हे तब प्रथम प्राण उदे होते हे प्राणकों ग्रहण करके मन कहता हे मे जीव हों प्राणहि मेरी गतिहे ॥ प्राणविना मैं कहांथा अरु बहुरी कहता हे जब प्राणका विजोग होवेगा तब में मरी जाऊंगा बहुरी न रहोंगा ॥ बहुरी अेसें कहता हे मूआ हुआभी में जीवोंगा ॥ हे रामजी जबलग चहियें तबलग यह तीन विकल्प उठते हे ॥ अरु संसेवालेकों न इस लोक विषे सुख हे न परलोकविषे सुख हे ॥ जबलग आत्मबोधका साक्षात्कार नही हुआ तबलग चित्त निर्वान नही होता अरु तीन विकल्पभी नही मिटते ॥ हे रामजी मनके स्मरनेका उपाइ आत्मज्ञानतें इतर कोउ नही ॥ अरु मनके शांति हुए बिना कल्यान नही होता ॥ दोनों उपाय करी मन शांत होता हे मनकी वृत्ति स्थित करनी अरु प्राण स्पंद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रोकणा जब मन स्थित होता हे ॥ तब प्राण रोके जाता हे ॥ अरु प्राणके स्पंद रोकेतें मन स्थित होता हे ॥ अरु जब प्राण क्षोभते हे तब चित्तभी क्षोभताहे तब अध्यात्मक अधिभूत कताप करी अग्नि जलता हे अरु मनके स्थित करणेतें परम सुख प्राप्त होता हे सो मनकी स्थिति दो प्रकार हे ॥ एक ज्ञानकी स्थिति हे अरु एक अज्ञानकी स्थिति हे ॥ जब प्राणी अ न्न बहुत भोजन करते हैं ॥ तब नाडीउपर अंन जाय स्थित होता हे अरु प्राण ठहरी जाते हे ॥ जब प्राण ठहरे तब मनभी जडी भूत हो जाता हे तिसका नाम सुषुप्ति हे सो नाडी क वन हे जिनउपर अंन जाय स्थित होता हे ॥ सो नाडी उही हे जिनके मार्ग जाग्रतविषे प्रान निकसते हे वासना सहित उही नाडी जब रोकी जातीहे॥ तब मन सुषुप्ति होजाता हे॥ यह अज्ञानीके मनकी स्थिति हे काहेतें जो जडताहे ॥ संसारकों लीए सीघ्रही बहुरी उठ आते हे ॥ जेसें पृथ्वीविषे बीज समे पाय करी अंकुर ले आता हे ॥ तेसें उह संस्कार करके बहुरी सुषुप्तितें उठता हे ॥ अरु जो ज्ञानवान सम्यक दर्शी हे तिनकाचित्त चैतनताकें लिए स्थित होता हे ॥ सो चैतनता दो प्रकारकी हे ॥ एक जोगीकों चैतनता हें जिस समाधि करी मन म नकों स्थित किया हे ॥ सो समाधिनिष्ठ चित्त हे उह जडता नही ॥ जेसें सुषुप्ति विषे जडता होता हे तेसें जडता नही अरु ज्ञानवान जीवन्मुक्तकी सम्यक ज्ञान करी चित्तकी वृत्ति स्थि त हे ॥उनका चित्त वासनातें रहित हे इही स्थित हे॥ जीसका चित्त इस प्रकार स्थित हे॥ तीसी पुरुषकों शांति हे॥अरु जिसका चित्त वासना सहित हे तिसकों शांत कदाचित नही प्राप्त होती ॥ अरु दुःखभी नही मिटतें सो निर्वासनीक चित्त कर्णोंकों सम्यकज्ञानका कारण यह मेरा शास्त्र हे इसके समान अवर कोउ नही ॥ हे रामजी यह जो मोक्षउपायशास्त्र मेंनें कहा हे तिसके विचार करी सीघ्रही स्वरूपकी प्राप्ति होवेगी ॥ तातें सर्वदा इसका विचार कर्तव्य हे ॥ जब इसकों भली प्रकार विचारेगा॥ तब चित्त निर्वासी होजावेगा॥अब उही प्रसंग जो बेधककों क हताहे॥ हे बेधक जब में सउ पुरुषकें चित्तविषे प्राणके मार्ग प्रवेस कीया तब क्या देखों जो इसके प्राण रोके गए हे ॥ अंन करकें जाग्रत नाडी जो फुरतीथी सो रोकी गइ हे ॥ काहेतेंजो अंन पच्या नही ॥ इस कारणतें उह सुषुप्ति विषे हे ॥ तीसकी सुषुप्तिविषे मुझकोंभी अपणा आप विस्मरन होगया ॥ जब कछूक अंन पच्या तब तासके प्राण फुरणे लागे ॥ जब प्राण फुरे तब चित्तकी वृत्तिभी कछूक जडताकों त्यागती भइ संपूर्न जडताकों त्याग नही कीया परंतु कछू अल्प त्याग हे ॥ तब फुरणे करकें चंद्रमा सूर्य आदिक जो कछू विश्व हे सो फुरी आइ ॥ तब में नाना प्रकारके जगतकों देखता भया ॥ मेरेतांइ अपणा पूर्व संसकार भूली गया तहां मेंभी अपणे कुटुंबविषे रहणे लागा ॥ साथही मेरे तांइ अपणी कुटी भासी ॥ अरु स्त्रीपुत्र भाइ जन बांधव सभ भासी आए॥बहुरी मेरेविषे देखते देखते प्रलकालके पुष्कर मेंघ गर्जणे लागे ॥अरु मुसल धारा बरसणे लागी अरु सातों समुद्र उछले अवर जो प्रलेकालके उपद्रव होते हे सो आनी उदे हूए ॥ प्रथम अग्ना लागी जब अग्नी लागी चूकी ॥ अरु सभ स्थान जली रहे तब जलका उपद्रव उदे हुआ ॥ तब में क्या देखों जो नगर ग्राम पुर मनुष्य प सू पंछी सभ वहते जाते हे ॥ अरु हाहाकार शब्द करते हे ॥ बडा क्षोभ आनी हूआ तब एक आश्चर्य में देख्या मेरी कुटीभी वहती जाती हे स्त्री पुत्र भाइ जन इत्यादिक सभ उहां दे खता भया ॥ सो सभ जलके प्रवाहविषे वहते जाते हे ॥ अरु जिस स्थानविषे थे सो स्थानभी वहते जाते हे ॥ अरु मे लुडता जाता हों ॥ वहते वहते अेसे मुझकों कष्ट प्राप्त हूआ जो कहणे विषे नही आता ॥ एक तरंग साथ उर्धकों चला जाउं ॥ अवर तरंग साथ अधकों चला जाउं ॥ तब पूर्व सरीर मुझकों स्मरन आय पडा ॥ तब जेता कछू जगत हे सो मुझकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सभ भासणे लागा ॥ मिथ्या राग दोष सभ मीटी गया ॥ अरु सरीरकी चेष्टा सभ उस प्रकार होवे ॥ जो तरंगके साथ कबहू उर्ध कबहू नीचे आइ पडा परंतु अंतर मेरा सांत हो गया ॥ तिसकालमें नगर देस मंडल वहते जावे ॥ अरु त्रिनेत्र सदासिव वहते जावे ॥ विद्याधर गंधर्व जक्ष किंनर सिद्ध इनतें आदी लेकरी अवरभी सभ वहते जावे ॥ अष्ट दल पंखडी कम लकी पर बेठा ब्रह्माजी वहता जावे ॥ इंद्र कुबेर अपणी पुरीया सहित वहते जावे ॥ अरु विष्णुजी अपणी बेकुंठ पुरी सहित वहता जावे ॥ बडे पहाड दीप लोकपाल सभ वहते जावे ॥ पातालवासी सभ प्रलेके जलविषे वहते जावे ॥ जमभी अपने वाहन साथ चला जावे ॥ अेसी समर्थता कोसीको नही जो कौसीकी कोऊ नीकासे ॥ जो आपही वहते जावे बहुरी डूबी जावे इसी प्रकार गोते खावे ॥ तेसें बडे ऐश्वर्य सहित देव वहते जावे जो संसार सुख निमित्त जतन करते हे सो महा मूर्ख हे अरु तिनके निमित्त जतन करते हे सो सुखभी अरु सुखके देणेहारेभी सब वहते जावे ॥ तेसें सभ ऋषीस्वर वहते जावे ॥ हे बेधक इस प्रकार महाप्रले होती तिसके सुपन विषे मैं देखता भया ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे हृदयांतर सुपनमहा प्रलय वर्णनं नाम द्विशताधिकं षड्विंशतितमःसर्गः ॥ २२६ ॥ ॥७॥ ॥ बेधकोवाच ॥ ॥ हे मुनीश्वर यह जो महा प्रलय तुमही कही जिसविषे ब्रह्मादि कभी वहते जावे सो ब्रह्मा विष्णु रुद्रादिक तो स्वतंत्र हे इश्वर हे ॥ यह परतंत्र हूए वहते जाते तुम केसें देखें अंतर्धान क्यों न हूए ?॥ ॥ मुनीस्वरोवाच ॥ ॥ हे बेधक यह जो प्रले हूइ हे सों एक क्रम कर्के नही हूइ ॥ जब क्रमतें होवे तब यह ईश्वर समाधि कर्के सरीरकों अंतर्धान करी लेते हे ॥ परंतु अंतर्धान होणेका जल चडी जाताहे इनका कछू नेम नही ॥ का हे तें जो यह जगत भमरूप हे ॥ इसविषे क्या आस्था करणी हे अरु सुपने विषे क्या नही बणता ॥ सभी बनी जाता हे सुपन भांति कर्के विपर्ययभी होते हे ॥ इसके लिये उनकों वहते देख्या हे ॥ ॥ व्याधोवाच ॥ ॥ हे मुनीश्वर जब उह सुपन भम था तो तिसका क्या वर्णन करणा ॥ ॥ मुनीश्वरोवाच ॥ ॥ हे बेधक तेरे तांइ इसकों समानता अर्थ कहता हों तातें सुण ॥ स्थावर जंगम जगत वहता देख्या ॥ साथही मेंभी वहता जाउं ॥ अरु जलकी लहरी उछले ॥ इन तरंगविषे में उछलता हों ॥ परंतु मुझकों कष्ट कछू न होवे ॥ तब में वहता वहता एक किनारे जाय लागा ॥ तिसके पास एक पर्वत था ॥ तिसकी कंदराविषे में जाय स्थित भया ॥ तहां देखत भया जो जीव वहते हे अरु जलभी सुकता जाता हे ॥ तब जलके सुकणे करि चिकड हो गया किसि ठहर विषे जल रहा तिसविषे केइ डूबते दृष्ट आवे ॥ ब्रह्माके हंस दृष्ट आवे ॥ कइं जमके वाहन कइं विष्णुके वाहन गरुड दृष्ट आवे ॥ चिकडविषे पहाडकी न्यांइ डुबे दृष्ट आवें ॥ कइं इंद्रके हस्ती कइं विद्याधर दृष्ट आवे ॥ इनतें आदि लेकरि वाहन चिकडविषे डुबते दृष्ट आवे ॥ देवता सिध गंधर्व लोकपाल दृष्ट आए ॥ देखि करि में आश्चर्यवान हुआ ॥ हे बेधक इस प्रकार देखता हुआ में पहाडकी कंदराविषे सोय गया ॥ तब मुझकों अपणी संवित विषे सुपना आया ॥ तिस सुपने विषे मुझकों चंद्रमा सूर्य आदिक नाना प्रकार भूत जलावते दृष्ट आवे नगर पत्तन चलते हे जगत बडे खेदकों प्राप्त हुआ हे तब उहां रात्र हुइ तहां में सोया हुआ अवर सुपनेकों देखत भया ॥ दुसरे दिन तिसविषे में बहुरी जगतकों देखत भया ॥ सूर्य चंद्रमा देस पट्टण नदीयां समुद्र मनुष देवता पशु पंछी नाना प्रकारकी क्रिया संयुक्त दृष्ट आणें लागें ॥ अरु षोडस वर्षका सरीर में आपकों देखत भया ॥ अपणे पिता अरु माता मुझकों दृष्ट आवे ॥ उनकों में पिता माता जानों अरु मुझकों उह अपणा पुत्र जाने ॥ स्त्री कुटुंब बांधव समस्त मुझकों दृष्ट आवणे लागे ॥ अ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रु उह जो में केसा बोधतें रहित अरु तृष्णा सहित अहंममका अभिमान आनि फुर्या ॥ तब एक ग्रामविषे मेरा गह था तिसविषे हम सब कुटी बणाइ ॥ तिसके चौफेर बूटे लगाए ॥ त हां में एक आसन बणाया ॥ तहां कमंडलु अरु माला पडी रहे ॥ में ब्राह्मण था मुझकों धन उपजावणेकी इछा भइ ॥ जो कछू ब्राह्मणका आचार चेष्टा हे सो में करो ॥ बाहिर जाय करि इंटां काष्ट लें आउं ॥ आनिकरि कूटी बनाउं ॥ उह चेष्टा हमारी होणें लागी ॥ शिष्य सेवक हमारी पूजा करें ॥ जथाजोग में उनकों आशीर्वाद करों ॥ इस प्रकार गृहस्थाश्रमवि षे में चेष्टा करों ॥ अरु मुझकों यह विचार उपजे जो इह कर्तव्य हे ॥ इसके करणें करि भला होता हे ॥ नदीयां अरु तालविषे स्नान करों गउकी टहल करों ॥ आए अतिथिकी पूजा करों ॥ हे बेधक इस प्रकार चेष्टा कर्त्ता में सौ वर्ष पर्यंत रहा ॥ तब एक कालमें मेरे गृहविषे मुनीश्वर आया ॥ प्रथम उसकों में स्नान कराया बहुरो भोजन करी तृप्त कीया अरु रात्रके समे उसकों सिज्जाउपर सैन कराया ॥ इस प्रकार उसकी टहल करी ॥ रात्रकों वार्ता चर्चा करणें लागें तिसविषे मुझकों उसनें बडे पर्वत कंदरा अरु सुंदर देश स्थान चित्तके मोहणेहारे सु णाए ॥ अरु नाना प्रकारके स्वाद सुणाए अरु कहणे लागा जो हे ब्राह्मण जेतें कछू सुंदर स्थान अरु संवाद तुझकों सुणाए हें तिनविषे सार चिन्मात्ररूप हे ॥ तातें सब चिन्मात्र स्वरूप हे ॥ सब जगत् तिसका चमत्कार हे आभास किंचन हे ॥ तिसतें इतर वस्तु कछू नही ॥ तातें हे ब्राह्मण उसी सत्ताकों ग्रहण करु ॥ सो सत्ता सबका अनुभवरूप हे अरु परमानंदस्वरूप हे तिसविषे स्थित होहु ॥ हे बेधक जब इस प्रकार उस मुनीश्वरनें मुझकों कहा तब आगें जो मेरा मन जोगकरि निर्मल था ॥ तिस कारणतें उसके बचन मेरे चित्तविषे चुभि गए ॥ अपणे सुभाव सत्ताविषे में जागि उठा तब क्या देखों जो सब मेराही संकल्प हे ॥ मुझसों भिन्न कोउ नहिं में तो मुनीश्वर हों यह सुपना पाया था ॥ में जागि करि देखों तब उसी पुरुषका सु पना था ॥ तब मेर चित्तविषे आइ जो किसी प्रकार इसके चित्ततें बाहिर निकसों अरु अपणे शरीरविषे जाय प्रवेश करों ॥ तब बहुरी विचार्या जो यह जगत् तो उस पुरुषका वपु हे उही पुरुष विराट हे जिसके सुपनेविषे यह जगत् हे ॥ परंतु तिस पुरुषकों अपणें विराटस्वरूपका प्रमाद हे ॥ तिस करकै जेसा वपु हमारा बन्या हे तिसके सुपनेविषे उहभी तेसा एक वि राटतें इतर बनि पडा हे ॥ बहुरी उस विराटकों केसें जाणीए ॥ जो उसके चित्तसों निकसी जावे ॥ हे बेधक इस प्रकार विचार करकै में पद्मासन बांध्या अरु जोगकी धारना करी ॥ उस विराट स्वरूपके सरीरकों देखता भया देखिकरी जहां चित्तकी वृत्ति फुरती थी तिसके साथ मिल्या अरु प्राणके मार्गतें निकसी करी अपणी कुटीकों देखता भया ॥ बहुरी तिसविषे में अपणे शरीरकों पद्मासन देखत भया तिसविषे प्रवेस करकै नेत्र खोले ॥ तब अपणे सन्मुख सिष्य बेठे देखे अरु उह पुरुष सोया था ॥ तिसकों देखि करी एक मूहूर्त बितीत भया तब में आश्चर्यवान हुआ जो भ्रमविषे क्या चेष्टा दिखती हे ॥ इहां एक मूहूर्त बितीत भया हे अरु उहां में सो वर्षका अनुभव किया हे ॥ बडा आश्चर्य हे जो भ्रम करकै क्या नही होता ॥ बहुरी मेरे मनविषे उपजी जो उसके चित्तविषे प्रवेश करकै कछू अवर कौतकभी देखो ॥ तब बहुरी प्राणके मार्गसों उसके चित्तविषे प्रवेश किया ॥ तब क्या देखों जो अगला कल्प बितीत होगया हे ॥ अरु बांधव पुत्र स्त्री माता पिता आदिक नष्ट होगये हे ॥ अरु दुसरा कल्प हुआ हे तिसकीभी प्रलय होती हे बारह सूर्य आनि उदे हुए विस्वकों जलावणे लागे हे ॥ अरु वडवाग्नि जलावणे लागी ॥ मंद्राचल अरु अस्ताचल पर्वत जलि करी टूक टूक होगये ॥ पृथ्वी जर्जरी भावकों प्राप्त हुइ ॥ स्थावर जंगम जीव हाहाकर शब्द करते हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विजुली चमत्कार करती हे ॥ बडा क्षोभ आनि उदे हुआ हे ॥ हे वेधक में अग्निविषे जाय पडा॥मेरा शरीरभी जले परंतु मुझकों कष्ट कछु न होवे जेसें किसी पुरुषकों अपणे सुपनेवि
षे कष्ट आनि प्राप्त होवे अरु जागि उठ्या तो कछू कष्ट नही होता ॥ तेसें अग्निका कष्ट मुझकों कछु न होवे में आपकों उहीरूप जाग्रत वाला जाणों अरु जगत प्रलेकों भममात्र जा
णों इस कारणतें मुझकों कष्ट कछु न होवे ॥ अरु चेष्टा तो मेंभी उसी प्रकार देखता भया अरु करता भया ॥ परंतु अंतरतें ज्योंका त्यों सीतलचित्त रहों ॥ अरु अवर लोक जो थे सो
अग्निके क्षोभ करी कष्ट पावे ॥ ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे हृदयांतर प्रलयाग्नि दाह वर्णनं नाम द्विशताधिकसप्तविंशतितमःसर्गः ॥ २२७ ॥ ॥७॥ ॥७॥

॥ मुनीस्वरोवाच ॥ ॥ हे वेधक प्रलेके क्षोभ विषे मेंभी भटकों बहुरी जलविषे वहता जाउं ॥ परंतु पूर्व सरीर मुझकों विस्मरन न भया ॥ इस कारनतें सरीरका दुःख मुझकों स्प
र्श न करे ॥ अरु में विचारत भया जो यह जगत तो मिथ्या हे ॥ इसविषे विचरणे करकें मेरा क्या प्रयोजन सिद्ध होता हे यह तो सुपनमात्र हे ॥ इसविषे किसनिमित्त खेद पाउं ॥
तातें इसके जगततें बाह्य निकसों ॥ ॥ वेधकोवाच ॥ ॥ हे मुनीश्वर तुम जो उसके सुपनेविषे जगतकों देखत भए सो जगत क्या वस्तु था ॥ अरु सुपना क्या था ॥ उसको संवि
तविषे जगत था ॥ अरु तिस जगंतका उसकों ज्ञान था ॥ उह प्रमादी था तुम तो जाग्रत होकरीकें उसका सुपना देखा ॥ उसके रिदेविषे पहाड कहांतें आया अरु नदियां वछ नाना
प्रकारके भूत जात अरु पृथ्वी आकास वायु जल अग्नी आदिक विस्वकी रचना कहांतें आइ ॥ उह क्या थे यह संसार मेरा दूर करहु अरु जो तुम कहो अपणे सुपनेविषे तुंभी अपणी
सृष्टि देखता हे ॥ हे भगवन् हमकों जो सुपना आता हे ॥ तिसकों हम अपणे स्वरूपके प्रमादकरी देखते हे ॥ अरु तुंम जाग्रत होकरी देख्या हे सो केसें देख्या ? ॥ मुनीस्वरोवाच ॥
हे वेधक प्रथम जो में देख्या था सो आपकों विस्मरन करिकें तिसके रिदेविषे जगत देख्या था बहुरी दुसरी वार जो देख्या था सो आपकों जाणी करि जगत देख्या था ॥ सो क्या वस्तु
हे श्रवण कर ॥ हे बेधक जो वस्तु कारणतें होती हे सो सत होती हे ॥ अरु कारण बिना भासती हे सो मिथ्या होतीहे ॥ अरु मुझकों सृष्टि जो उसके सुपनेविषे भासी सो कारण बि
नाथी ॥ काहे तें जो कारण दो प्रकारका होता हे ॥ एक निमित्त कारण हे जेसें घटका कारण कुलाल होता हे ॥ अरु दुसरा समवाय कारण हे ॥ जेसें घट मृत्तिकाका होता हे ॥ दोनों
कारण करी उत्पत्ति होवे सो सकारण पदार्थ कहाता हे ॥ सो आत्मा दोनों प्रकार जगतका कारण नही आत्मा अद्वैत हे तातें निमित्त कारण नही अरु समवाय कारण इसतें नही ॥ जो
अपणे स्वरूपतें अन्यथा भाव नहीं हुआ जेसें मृत्तिका प्रणमी करी घट होता हे ॥ तेसें आत्माका प्रणाम जगत नही आत्मा अच्युत हे ॥ अरु उह जगत कारण बिना भासि आया तातें
भममात्रही था ॥ हे वेधक वस्तु सोइ होती हे अरु जगतको भांति आत्माविषे भासी तो जगत आत्मरूप हुआ क्यों ॥ जब सृष्टि फुरी नही तब अद्वैत आत्मसत्ताथी ॥ तिसविषे संवेदन
फुरणे करिकें जगत हुएकी न्यांइ उदे हुआ सो क्या हुआ जेसें सूर्यकी कीर्णाविषे जल भासता हे ॥ सो कीरणांहि जलरूप भासतीयांहे तेसें यह जगत आत्माका आभास हे ॥ सो आ
त्माही जगतरूप हो भासता हे ॥ तहां न कोउ सरीर था न कोउ रिदा था न पृथ्वी जल वायु अग्नि आकास था ॥ न उत्पत्ति प्रले न अवर कोउ था केवल चिन्मात्र रूपही था ॥ हे बे
धक ज्ञान दृष्टि करीकें हमकों सच्चिदानंदही भासता हे ॥ सो शुद्ध हे सर्व दुःखतें रहित हे परमानंद हे जगतभी उहीरूप हे॥तुम सारखेकों जो जगत भासता हे शब्द अर्थरूप सो आत्माविषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कछू हुआ नही॥केवल चिन्मात्रसत्ता हे ॥सर्वदा कामकों आत्मारूपहि भासता हे जो तुं चाहे तो तुझकोंभी चिन्मात्रही भासे तो सर्व कल्पना मनतें त्याग कर तिसके पाछें जो शेष रहेगा सो आत्मसत्ता हे॥सबका अनुभवरूप उही हे सो प्रत्यक्ष हे अरु शुद्ध हे सर्वदा सुभावसत्ताविषे स्थित हे॥अरु अमर हे तुमभी तिस स्वभावविषे स्थित होउ हे बेधक आत्मसत्ता परम सूक्ष्म हे जिसविषे आकाशभी स्थूलहे॥जेसें सूक्ष्म अणुतें पर्वत स्थूल होता हे तेसें आत्मासों आकाशभी स्थूल हे सो आत्माविषे क्या सूक्ष्मता हे॥यही सूक्ष्मता हे जो आत्मत्वमात्र हे जिसविषे उत्थान कोउ नहि॥ केवल निर्मल सुभावसत्ता हे अरु निराभास हे॥तिसीविषे यह जगत् भासता हे तातें उही रूप हे॥ जेसें काल होता हे तिसविषे क्षण पल घडी पहर दिन मास वर्ष जुग संज्ञा होती हे सो कालही हे ॥ तेसें एकही आत्माविषे अनेक नामरूप जगत् होता हे जेसें एक बीजविषे पत्र टास फूल फल नाम होते हे तेसें एक आत्माविषे अनेक नामरूप जगत् होता हे सो आत्मा तें इतर कछू वस्तु नही ॥ सब आत्मस्वरूप हे॥ जो आत्मातें इतर भासे सो भममात्र जाण ॥ जेसें संकल्पपुर होता हे तेसें यह जगत् हे॥ हे बेधक आत्माविषे जगत् कछू बन्या नहि सो आत्मा तेरा अपणा आप अनुभवरूप हे अरु परम सुद्ध हे॥तिसविषे न जन्म हे न मर्न हे परम चिदाकास अपणा आप हे ॥जो तेरा हे॥आप अनुभवरूप सुद्ध सत्ताहे॥तिसको नमस्कार हे॥ हे बेधक तुं तिसविषे स्थित होड तब तेरे दुःख नष्ट हो जावेगें ॥ अरु यह जगत अज्ञानीकों सत भासताहे ॥ ज्ञानवानकों सदा आकाशरूप भासताहे ॥ जेसें एक पुरुष सोया हे अरु एक जागता हे ॥ सो सोया हे तिसकों सुपनविषे महल माडी जगत भासताहे अरु जागृतकों आकाशरूप हे ॥ तेसें अज्ञानीकों जगत भासताहे अरु ज्ञानवानकों आत्मरूप हे ॥ बेधको वाच ॥ हे मुनीस्वर एक कहते हे यह जीव कर्म करी होता हे ॥ अरू एक कहते हे कर्म विना उत्पत्ति होताहे ॥ दोनोंविषे सत क्या हे ॥ मुनीस्वरोवाच ॥ हे बेधक आदि जो परमात्मातें ब्रह्मादिक फुरे हे सो कर्म करी नही हुए ॥उह कर्म विनाही उत्पत्ति हुए हे ॥ न कछुं जन्म हे न कर्म हे उह ब्रह्मही स्वरूप हे॥ उनका शरीरभी ज्ञानरूप हे ॥ उह अवर अवस्थाकों नही प्राप्त हुइ ॥ सर्वदा उनकों अधिष्ठान आत्माविषे अहंप्रतीत हे ॥ हे बेधक सृष्टिके आदि जो ब्रह्मादिक फुरे हे सो ब्रह्मतें इतर नही अरु अवर जो अनंत जीव फुरे हे जिनका आदि ही आत्मपदतें प्रगट होणा भयाहे सोभी ब्रह्मरूप हे ब्रह्मतें इतर कछु नही ॥ आदि सभ ब्रह्मा चैतन स्वयंभू हे॥ परंतु ब्रह्मा विष्णु रुद्रादिककों अविद्यानें स्पर्श नही किया ॥ उह विद्यारूप हे अरु जीव अविद्याके वसतें प्रमाद करकें परतंत्र हुए हे बहुरी कर्मकरी कर्मके वस हुए हे संसारविषे शरीरधारते हे जब उनकों आत्मज्ञान प्राप्त होता हे तब कर्मके बंधनतें मुक्त होकरी आत्मपदकों पावते हे ॥ हे बेधक आदि जो सृष्टि हुइ हे सो कर्मबिना उपजी हे ॥ अरु पाछें अज्ञानके वसतें कर्मके अनुसार जनम मरनकों देखते हे ॥ जेसें सुपन सृष्टि आदि कर्मबिना उत्पत्ति होती हे ॥ पाछें कर्मकरि उत्पत्ति होती भासती हे ॥ तेसें यह जगत् हे आदि जीव कर्मविना उपजे हे ॥ पाछें कर्मके अनुसार जन्म पावते हे ॥ अरु ब्रह्मादिकके शरीर शुद्ध ज्ञानरूप हे इश्वरविषे जीवभाव दृष्ट आता हे तोभी तिसकालविषेभी ब्रह्मही स्वरूप हे ॥ उनकों कर्म कोउ नहि केवल आत्माही उनकों भासता हे आत्मातें इतर कछू नही ॥ जेसें सुपनेविषे द्रष्टाही दृश्यरूप होता हे अरु नाना प्रकारके कर्म दृष्ट आते हे परंतु अवर कछू हुआ नहि ॥ तेसें जेता कछू जगत् भासता हे सो सब चिन्मात्र स्वरूप हे अवर कछू नहि ॥ सुखदुःखभी उही भासता हे परंतु अज्ञानीकों जगत् प्रतीति होती हे तबलग कर्मरूपी फांसीकरी बांध्या हुआ दुःख पावता हे॥ जब स्वरूपविषे स्थित होवेगा ॥ तब कर्मके बंधनतें मुक्त होवेगा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वास्तवतें न कोउ कर्म हे न किसकों बंधन हे यह मिथ्या भम हे ॥ केवल आत्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ दुसरा कछू होवे तो में कहों जो यह कर्म हे इसकों बंधन कीया हे ॥ यह जगत् आत्माविषे अैसे हे जेसें जलविषे तरंग होता हे सो भिन्न कछू नहि ॥ जलतें तरंग उत्पत्ति होता हे सो किस कर्मकरी होता हे ॥ अरु क्या उसका रूप हे ॥ जेसें उह जलही रूप हे ॥ तेसें इह जगत आत्मस्वरूप हे आत्मातें इतर कछू नहि ॥ जो कछू कल्पना करीये सो अविद्या मात्र हे ॥ हे बेधक जबलग यह संवित बहिर्मुख फुरती हे तबलग जगत् भासता हे ॥ अरु कर्म होते दृष्टि आते हे ॥ अरु जब संवित अंतर्मुख होवेगी तब न कोऊ जगत् रहेगा न कोऊ कर्म दृष्ट आवेगा ॥ सब आत्मसत्ता भासेगी ॥ जेसें हमकों सदा आत्मसत्ता भास ती हे तेसें तुझकोंभी भासेगी ॥ हे बेधक जो ज्ञानवान पुरुष हे तिनकों जगत् आत्मत्वकरि दिखाई देता हे ॥ अरु जो अज्ञानी हे तिनकों प्रमाद कर्के द्वैतरूप भासता हे ॥ तिसविषे पदा र्थकों सुखरूप जाणिकरि पावणेका जतन करता हे ॥ सुखकरि सुखी होत हे दुःख करि द्वेष करते हे जो परमानंद आत्मपद हे तिसके पावणेका जतन नहि करते हे ॥ अरु ज्ञानवान सदा परमानंदविषे स्थित हे ॥ अरु सब जगत् तिनकों ब्रह्मस्वरूप भासता हे ॥ हे बेधक जेता कछू जगत् तुझकों दृष्ट आता हे सो सबही ब्रह्म चिन्मात्र स्वरूप हे॥ न कोउ सुपन हे न कोउ जाग्रत् हे न कोउ कर्म हे न कोउ अविद्याहे॥सर्व ब्रह्मस्वरूप हे॥सदा अपणे आपविषे स्थित हे तिसविषे अवर कछू नही॥जेसें जलविषे आवर्त स्थित होताहे परंतु जलतें इतर कछू नही॥तेसें ब्रह्मविषे जगत् हुवेकी न्यांइं भासता हे परंतु ब्रह्मतें इतर कछू नही ॥ सब जगत् ब्रह्मस्वरूप हे ॥ तुं विचारकरि देख तब तेरे दुःख मिटि जावेगें ॥ जबलग विचार कर्कै स्वरूपकों न पावे गा ॥ तबलग दुःख न मिटेगा ॥ जब स्वरूपकों पावेगा तब सब कर्म नष्ट होजावेगें ॥ जेता जेता बिचार होता हे तेता तेता सुख हे ॥ जहां बिचार उत्पत्ति होता हे तहांतें अविद्या नष्ट हो जाती हे जेसें जहां प्रकाश होताहे तहां अंधकार नही रहता ॥ तेसें जहां सत असतका विचार उत्पत्ति होताहे तहां अविद्याका अभाव हो जाताहे ॥ बहुरी संसार चक्रविषे न गिरेगा अरु परम पदकों प्राप्त होवेगा ॥ जिस ज्ञानवानकों यह पद प्राप्त भया हे सो दुःखी नही होता ॥ इतिश्री यो० नि० प्र० कर्म निर्णयो नाम द्विशताधिकाष्टाविंशतितमः सर्गः ॥ २२८ ॥

॥ मुनिस्वरोवाच ॥ हे वेधक जो ज्ञानवान पुरुष हे ॥ सो परमानंदकों प्राप्त होताहे ॥ जिस आनंदके पायेतें जो इंद्रीयका आनंद हे सो सूके तृणवत तुछ भासताहे ॥ अरु जेसा सुख पृथ्वी आकाश पातालविषेभी कहुं नही तेसा सुख ज्ञानवानकों प्राप्त होताहे ॥ जिसकों अैसा आनंद प्राप्त भया हे सो किसकी इछा करे ॥ अरु आत्मानंद तब प्राप्त होताहे ॥ ज ब आत्म अभ्यास होवे आत्मा सुद्ध हे अरु सर्वदा अपणे आपविषे स्थित हे ॥ अरु जो कछू आगें दृष्ट आता हे सो अविद्याका विलास हे ॥ जब तुं अपणे स्वरूपविषे स्थित होवेगा त ब सब ब्रह्म तुझकों भासेगा ॥ हे वेधक पृथ्वी आदिक जो तत्व हे सो हे नही ॥ जो कछू होते तो इनका कारणभी कोउ होता ॥ जो यहभी नही तो कारण किसकों कहीये ॥ अरु जो इनका कारण कहुं नही तो कार्य किसका कहीये तातें यह भममात्र हे ॥ विचार कियेतें जगतका अभाव हो जाताहे आत्मसत्ताही ज्योंकी त्यों भासती हे जेसें किसिकों जेवरीविषे सर्प भासताहे ॥ जब उह भली प्रकार देखे तब सर्प भम मिटि जाताहे ॥ ज्योंकी त्यों जेवरी ही भासती हे तेसें विचार कियेतें आत्मसत्ताही भासती हे ॥ जेसें कहुं आकासविषे संकल्पका वृछ रचे तो आकासविषे होवे तेसा भासताहे जेसें किसि पुरुषनें संकल्प करी देवताकीप्रतिमा रची ॥ अरु तिसके आगें अपणी प्रार्थना करणे लागा तिस भावना करी उसका कार्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिद्ध हुआ ॥ सो केसें सिद्ध हुआ अनुभवहीतें सिद्ध हुआ जिसके आश्रे उह प्रतिमा हुइ तिसे करी कार्य सिद्ध भया ॥ हे बेधक जेता कछू जगत तुं देखता हें सो सब संकल्पमात्र हे जेसें सुपनेंविषे नाना प्रकारकी सृष्टि भासती हे सो सुपनमात्र हे ॥ तेसें यह सर्व विश्व ब्रह्माके संकल्पविषे स्थित हे ॥ आदि जो परमात्मातें फुरणा हुआ हे सो कर्म बिना सृष्टि उपजि हे ॥ उह किंचन आभासरूप हे ॥ बहुरी आगें जो ब्रह्मानें रचा हे सो संकल्परूप हें बहुरी आगें अज्ञान करके कर्म कर्णे लागें तब कर्म करी उत्पत्ति होती दृष्ट आइ हे ॥ जेसें सुपनेंविषे सुपनकी सृष्टि भ्रममात्रही दृढ हो भासती हे जबलग सुपन अवस्थाविषे हे तबलग जेसा उहां कर्म करेगा तेसाही भासेगा ॥ अरु जो जागि उठे तो न कछु कर्म हे न जगत हे तेसें यह सब संकल्पमात्र हे ॥ ज्ञानवान करी अभाव हो जाताहें ॥ हे बेधक यह जो मुझकों मनुष्य भासते हें सो मनुष नहीं॥ तिनके कर्म तुझकों केसें कहों ॥ जेसें सुपनेके निवर्त हुए सुपन सृष्टिका अभाव होताहे तेसें अविद्याके निवृत्त हुए अविद्यक सृष्टिका अभाव हो जाताहे ॥ अरु आत्मसत्ता अद्वैत हे तिसविषे जगत कछू बन्या नही उही रूप हे ॥ जेसें आकाश अरु शून्यताविषे भेद कछू नहीं ॥ जेसें वायु अरु स्पंदविषे भेद कछू नही तेसें ब्रह्म अरु जगतविषे भेद कछु नही ॥ अरु जब चित्त संवित फुरती हे तब जगत हो करी भासती हे ॥ अरु जब नही फुरती तब अद्वैत हो करी स्थित होतीहे ॥ अरु आत्मसत्ता फुरणे अफुरणेविषे ज्योंकी त्यों हे ॥ जन्म मरण बंधणा घटणा जो नाम होते हे सो मिथ्या काहेतें हे जो दुसरी वस्तु कछु नही जेसें किसी जल कहा किसी अंभ कहा दोनों एकही के नाम होतेहे तेसें आत्मा अरु जगत एकहीके नाम हे ॥ परंतु अज्ञान करी भिन्न भिन्न भासतेहें जेसें सुपनेमें कार्य भासते हे परंतु हे नही तेसें जाग्रत विषे कारण कार्य भासते हे परंतु हे नहीं ॥ वास्तवतें आत्म तत्व हें ॥ तिस आत्माविषे जो चित्त फुरता हे अहं मम तिस उत्थानतें आगें जो कछु फुरणा होता गया सोइ जगत भया हे तिस जगतविषे जेसा जेसा निश्चा हुआ हे तेसा तेसा भासणे लागाहे ॥ तिसका नाम नेति हे ॥ तिसविषे देस काल पदार्थकी संज्ञा होणे लागी हे ॥ अरु कारण कार्य दृष्ट आते हे सो क्या है केवल आत्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हें ॥ अवर कछु हुआ नही परंतु हूएकी न्यांइ भासतीहे ॥ जेसें सुपनेंविषे नाना प्रकारका जगत भासताहे अरु कारण कार्यभी दृष्ट आता हे परंतु जागे हुऐ कछु दृष्ट नहीं आता काहेतें जो हे नही तेसें यह जगत कारण कार्य रूप दृष्ट आता हें ॥ परंतु हे नही आत्मा करी दृष्ट आता हे तातें आत्माही हे ॥ जेसें संकल्प नगर दृष्ट आता हे तेसें आत्माविषे घन चैतनना करीकें जगत भासताहे ॥ सो उही रूप हे ॥ आत्मातें इतर कछु नही जेसा उसविषे निश्चा होताहे तेसा प्रत्यक्ष अनुभव होताहे ॥ जेता कछु जगत दृष्ट आता हे सो सब संकल्पमात्र हें ॥ संकल्पही जहां तहां उडतें फिरते हे ॥ अरु अनुभव सत्ता ज्योंकी त्यों हे ॥ संकल्पहि मरीकें परलोक देखताहे ॥ बेधकोवाच ॥ हे भगवन परलोकविषे जो यह मरीकें जाता हे तिस शरीरका कारण कवन होताहे अरु तहां हंती अरु हंता कवन होताहे ॥ अरु यह शरीर तो इहांही रहता हे ॥ उहां भोगता शरीर कवन होताहे जिस करी सुख दुःख भोगताहे ॥ अरु जो कहो तिस शरीरका कारण धर्म अधर्म होताहें ॥ तो धर्म अधर्म तो अमुरत हे तिनतें समूरत साकार रूप क्यों करी उत्पत्ति हुआ ॥ मुनीस्वरोवाच ॥ हे बेधक सुद्धअधिष्टान जो आत्म सत्ता हे तिसके फुरणेकी एती संज्ञा होतीहे कर्म आत्मा जीव फुरणा धर्म अधर्म ॥ इनतें आदि ले करी नाना प्रकारके नाम होतेहे ॥ जब सुद्ध चिन्मात्रविषे अहंका उत्थान होताहे तब देहकी भावना होतीहे ॥ अरु देहही भासणे लागती हे ॥ आगें जगत भासता हे ॥ स्वरूपकें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रमाद करी संकल्परूप जगत दृढ हो जाताहै ॥ बहुरी तिसविषे जैसा जैसा फुरणा होताहै तैसा तैसा हो भासताहे ॥ हे बेधक यह जगत संकल्पमात्र हे ॥ परंतु स्वरूपके प्रमाद करी सत भासता हे ॥ अरु प्रमादकरी सरीरविषे अभिमान हो गया हे ॥ तिस करीकें कर्तव्य भोक्तव्य अपणे विषे मानता हे ॥ वासना दृढ हो जाती हे तिस बासनाके अनुसार परलोककों देखता हे ॥ हे बेधक उहां न कोउ परलोक हे न यह लोक हे ॥ जेसें एक सुपनेकों छांडिकरी अवर सुपनेकों प्राप्त होवे तेसें अविदित वासना करिकें इस लोककों त्यागकरि परलोककों देखता हे ॥ जेसें सुपनेविषे निराकारही साकार सरीर उत्पत्ति होता हे तेसें परलोकविषे हे ॥ वास्तवतें क्या हे संकल्पही पिंडाकार होकरि भासता हे ॥ जेसी जेसी वासना होती हे तेसाहि तिसके अनुसार होकरी भासता हे ॥ अरु सरीर पदार्थ सभही आकासरूप हे ॥ हे बेधक असतही सत होकरी जनम मरण भासता हे ॥ जेसा जेसा फुरणा होता हे ॥ तेसा तेसा भासता हे ॥ जगत् आभासमात्र हे ॥ अरु जो ज्ञानवान पुरुष हे तिनकों आत्मभावही सत हे ॥ तिसविषे जेसा निश्चय होता हे तेसा होकरि भासता हे ॥ ज्ञान ज्ञेय ज्ञातारूप जगत भासता हे सो अनुभवतें भिन्न कछू नही ॥ जेसें सुपनेविषे अनेक पदार्थ भासते हे सो अनुभवही अनेकरूप हो भासता हे ॥ अरु प्रलेविषे एक हो जाते हे तेसें ज्ञानरूपी प्रलेविषे सभ एकरूप हो जाते हे ॥ जब संवित फुरती हे तब नाना प्रकारका जगत भासता हे ॥ अरु संवित अफुर होती हे तब प्रले हो जाती हे ॥ तब एकरूप हो जाता हे ॥ एक चिनमात्र सत्ता अपणे आपविषे स्थित हे पृथ्वी आदिक पदार्थ तिसका चमत्कार हे भिन्न वस्तु कछू नही ॥ आत्मसत्ता निर्विकार हे तिसविषे निराकार अरु साकारभी कलपित हे ॥ इनतें रहित निराकार हे जो पुरुष दृश्य साथ मिले चेतन हे सो जड धर्म हे ॥ तिनकों नाना प्रकारके पदार्थ भासते हे ॥ ज्ञानवानकों सतरूप चिनमात्रही भासताहे ॥ हे बेधक यह जगत सभ चिनमात्र हे जब चित्त संवित फुरती हे तब सुपनरूप जगत भासता हे ॥ अरु जब चित्त संवित फुरनेतें रहित होती हे ॥ तब सुषुप्ति होती हे तेसें चित्त संवितके फुरनेकरि सृष्टि होती हे ॥ अरु चित्तके स्थित होणेकरि प्रले हो जाती हे ॥ जेसें सुपन अरु सुषुप्ति आत्माविषे कलपित हे ॥ तेसें आत्मविषे सृष्टि अरु प्रलय कलपित आभासमात्र हे अवर कछू जगत बण्या नही ॥ फुरने करिकें जगत भासता हे तातें जगतभी आत्मरूप हे ॥ पंच तत्वभी आत्माका नाम हे अरु सदा अद्वैत रूप जगत आभासमात्र हे ॥ जेसें आत्माविषे साकार कलपित हे तेसेंही निराकार कलपित हे ॥ जेसें सुपनेविषे किसकों साकार जानता हे किसकों निराकार जानता हे ॥ दोनों फुरना मात्र हे ॥ जो फुरनेतें रहित हे सो आत्मासत्ता हे ॥ अरु साकारभी निराकारभी उही हे ॥ आत्मसत्ताही इस प्रकार हो भासती हे ॥ निराकारहि साकार हो भासता हे ॥ हे बेधक जेता कछू जगत तुझकों दृष्ट आता हे सो सभ चिनमात्र स्वरूप हे ॥ इतर कछू नही परंतु अज्ञान करकें नाना प्रकार कार्य कारण भासता हे अरु जनम मरण आदि विकार भासता हे ॥ वास्तवतें न कोउ जनम हे न मरन हे ॥ न कोउ कार्य हे न कारण हे ॥ अरु जो यह पुरुष मरता होवे तो परलोकभी न देखे ॥ अरु अपणे मरणेकोंभी न जाणे ॥ जो परलोक देखता हे अपणे मरणेकों देखता हे सो मरता नही ॥ जब यह पुरुष मृतक होवे तब पूर्व संसकारकों न पावे ॥ अरु पूर्व स्मृति इसकों न होवे ॥ सो तो पूर्व संसकार करकें क्रिया विषे प्रवर्तता हे ॥ अरु प्रतियोगी करकें स्मृतिभी हो आती हे पदार्थकी ॥ बहुरी कर्मकों भोगता हे ॥ पूर्वलोक तो यह पुरुष मृतक नही होता ॥ भ्रमकरी मरण भासता हे ॥ अरु कारण कार्य रूप पदार्थ भासते हे ॥ जब मरिकें परलोक देखता हे ॥ अरु सुख दुःखकों भोगता हे तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उह सरीर किसी कारण करी नही बन्या ॥ जेसें उह सरीर अकारण हे तेसें अवर जो आकार दृष्ट आते हे सोभी अकारण हे ॥ इसीतें आभासमात्र हे ॥ जेसें सुपनेके सरीर साथ नाना प्रकारकी क्रिया होती हे ॥ अरु देस देसांतरकों देखता हे सो सभ मिथ्या हे ॥ तेसें यह जगत मिथ्या हे अरु मरणभी मिथ्या हे ॥ अरु जो तुं कहे इसके साकारका अभाव देखता हे सो मृतक हे तो हे बेधक जो यह पुरुष परदेस जाता हे तोभी इसका आकार दृष्ट नही आता ॥ जेसें दृष्टिके अभावविषे असत होता हे तेसें देहके त्यागविषेभी इसका असत भाव होता हे ॥ इस पुरुषका अभाव कदाचित नही होना ॥ अरु जो तूं कहे परदेस गया बहुरीभी आय मिलता हे ॥ सरीरके त्यागतें बहुरी नही मिलता परदेस गया बहुरी मिलिकरि वारतां चर्चा आनि करता हे ॥ अरु मूआ तो कदाचित चर्चा नही करता तो मुआभी चर्चा करता हे सो श्रवण करु ॥ जिसके पितर प्रीति करी बांधे हूए मरते हे ॥ अरु जथा शास्त्र उनकी क्रिया नही होती तब उह सुपने वषे आय मिलते हे ॥ अरु जथार्थ कहते हे जो हमारी क्रिया तुमनें नही करी ॥ हम अमके स्थानविषे पडे हे ॥ अरु अमका द्रव्य अमके स्थानविषे पडा हे तुम काढि लेहु ॥ तो जेसें परदेस गण मिलते हे अरु वार्ता चर्चा करतें हे तेसें मुएभी करते हे क्यों ? ॥ हे बेधक वास्तवतें न कोउ जगत हे न मरता हे केवल आत्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जेसा जेसा तिसविषे फुरना फुरता हे तेसा तेसा हो भासता हे ॥ हे बेधक अनुभवरूप कल्प दृढ हे ॥ जेसा तिसविषे फुरना फुरता हे तेसा तेसा हो भासता हे ॥ एक संकल्प सिध वस्तु हे अरु दृष्टि सिध वस्तु हे ॥ जब इनकी दृढ भावना होती हे तब यह दोनों सिध होती हे ॥ जो इंद्रियके विषे द्रव पदार्थ हे सो दृष्टि सिध वस्तु कहाती हे ॥ जो इसीकी भावना होती हे तो यह प्राप्त होतीहे ॥ अरु जो अपणें मनविषे आपही मान छोडीए ॥ जो में ब्राह्मण अथवा क्षत्रीय वैश्य शूद्र वर्ण हों अथवा गृहस्थ वानप्रस्थ ब्रह्मचारी सन्यासी आश्रम हों ॥ इत्यादिक मानणा संकल्प सिद्ध हे ॥ जबलग इनविषे अभ्यास होता हे ॥ तबलग आत्मसत्ताकी प्राप्ति नही होती ॥ अरु जो आत्मसत्ताका अभ्यास होवे तब इन दोनोंका अभाव हो जाता हे आत्माहि प्रत्यक्ष अनुभवकरिकें भासता हे ॥ हे बेधक जिस वस्तुका अभ्यास होता हे तिसीकी सिद्धता होतीहे ॥ जो भावना करे अरु थकीकरी फिरे नही तो अवस्य प्राप्त होता हे ॥ अभ्यासविना कछू सिद्ध नही होता ॥ जेसें कोउ पुरुष कहे में अमके देस जाता हों ॥ तो जबलग उसकी उर चले नही तबलग अनेक उपाव करीभी नही प्राप्त होता ॥ जब उसकी उरचलेगा तब पहुंचि रहेगा ॥ तेसें जब आत्माका अभ्यास बहुत एकाग्र होकरि करेगा तब उसकों प्राप्त होवेगा ॥ अन्यथा आत्मपदकों न प्राप्त होवेगा ॥ हे बेधक जिस पुरुषकों जगतके पदार्थकी इछा हे ॥ तिसकों आत्मपद प्राप्त नही होता अरु जिसकों आत्मपदकी इछा हे ॥ तिसकों उही प्राप्त होवेगा जगतके पदार्थ न भासेगें ॥ जेसी भावना होवेगी जो मेरी देवताकी मूरत होवे तिसकरि में स्वर्गविषे विचरो अरु एक स्वरूपकरी भुलोकविषे मृग होणेकी भावना होवे ॥ तब दृढ अभ्यासकरि उहि हो जाता हे ॥ काहे तें जो जगत संकल्प मात्र हे ॥ जेसा जेसा निश्चय होता हे तेसाहि भासि आता हे ॥ हे बेधक दो स्वरूपकी क्या वारता हे जो सहस्र मूरतकी भावना करे तो उही तद्रूप हो जावेगा ॥ जेसी यह पुरुष भावना करता हे तेसाही रूप हो जाता हे ॥ अरु यह अविद्यक भममात्र जगत हे ॥ इसीकी भावना त्यागकरि आत्मपदका अभ्यास करु ॥ तब तेरे दुःख मिटि जावे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे महासवोपाख्याने निर्णयोपदेसो नाम द्विशताधिक एकोनत्रिंशतितमःसर्गः ॥ २२९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ मुनीश्वरोवाच ॥ हे वेधक जेसें अगाध समुद्रविषे अनेक तरंग फुरतेहे तेसें आत्माविषे अनेक सृष्टि फुरतीयांहे जीव जीव प्रति अपणी अपणी सृष्टिहे परंतु परस्पर अज्ञात हे ॥ एककी सृष्टिकों दुसरा नही जानता ॥ अरु दुसरेकी सृष्टिकों उह नही जानता ॥ जेसें एकही स्थानविषे दोपुरुष सोए होवे ॥ उनकों अपणे अपणे फुरणेकी सृष्टि भासी आतीहे ॥ उन की सृष्टिकें उह नही जानता ॥ उसकी सृष्टिकों उह नही जानता परस्पर अज्ञात हे ॥ तेसें ही सब सृष्टि आत्माविषे फुरतीयांहे परंतु एककी सृष्टिकों दुसरा नही जानता अरु जो धार णाभ्यासी जोगी होताहे ॥ तिसकों अंतवाहक सरीर प्रत्यछ हुवा हे ॥ सो दुसरेकी सृष्टिकोंभी जानताहे ॥ जेसें एक तलावका दर्दुर होताहे अरु एक कूपका दर्दुर होताहे अरु एक स मुद्रका दर्दुर होताहे ॥ सो स्थान तो भिन भिन होतेहे ॥ परंतु जल एकही हे भावे केसा दर्दुर होवे तिसकों जल जानता हे जो मेरेविषे हे ॥ तेसें जगत भिन भिन अंतःकरणविषे हे परं तु आत्मासत्ताके आश्रे हे ॥ आदि जो संवेदन तिसविषे फुरी हे सो अंतवाहक हे ॥ जब अंतवाहक विषे जोगी स्थित होताहे तब अवरके अंतवाहककोंभी जानताहे ॥ इस प्रकार अनं त सृष्टि आत्माके आश्रे अंतवाहकविषे फुरतीयांहे ॥ सो आत्माका किंचन हे ॥ फुरतीयांभी हे अरु मिटि जातियांहे ॥ संवेदनके फुरणेतें सृष्टि उत्पति होतीहे अरु संवेदनके ठहरणेतें मि टि जातीहे ॥ आकासरूप होताहे ॥ अरु वायुके ठहरणेतें जल एकरूप होजाताहे ॥ जलतें इतर कछू नही भासता ॥ तेसें फुरणेकरि आत्माविषे अनंत सृष्टि भासतीयांहे अरु संबेदनके ठहरणेतें सब आत्मारूप होजातीयांहे आत्मातें इतर कछू नही भासतीयांहे ॥ तिसतें इतर प्रमादकरी भासतीयांहे ॥ बहुरी कारण कार्य भ्रम भासताहे ॥ प्रथम जो सृष्टि फुरी हे सो कारणकार्यके क्रमतें रहित फुरीहे ॥ पाछें कारणकार्य क्रम भास्या ॥ बहुरी तिसका संस्कार रिदेविषे हुआ ॥ तब संस्कारके वसतें भासणें लागी ॥ प्रथम संस्कारतें रहित अकस्मात्तें भा सी हे ॥ तिसविषे जिनकों स्वरूपका प्रमाद नही भया ॥ तिनकों सदा परब्रह्मका निश्चय रहताहे ॥ अरु जगत अपणा संकल्प मात्र भासताहे ॥ अरु जिनकों स्वरूपका प्रमाद भयाहे ति नकों संस्कार पूर्वक जगत भासताहे ॥ अवर संस्कारभी कछू वस्तु नही ॥ हे वेधक जो जगत्ही मिथ्या हे तो तिसका संस्कार केसें सत होवे ? परंतु ज्ञानवानकों इस प्रकार भासता हे अ रु जो अज्ञानी हे तिनकों स्पष्ट भासताहे ॥ हे वेधक जेसें तुम संकल्पके रचे पदार्थकों असत जानते हो ॥ जेसें स्मृती सृष्टिकों असत जानते हो जेसें सुपनसृष्टिकों असत जानते हो ॥ तेसें हम इस जाग्रत सृष्टिकोंभी असत जानतेहे॥जेसें मृग तृष्णाका जल असत भासताहे तेसें हमकों यह जगत असत हे॥ बहुरी कारन कार्य कर्म संस्कार हमकों केसें भासे ॥ अरु अज्ञानीकों तीनो भासतेहे॥ हे वेधक जब चित्त संवित बहिर्मुख होतीहे तब जगत भासता हे अरु जब अंतर्मुख होतीहे तब अपणे स्वरूपकों देखतीहे ॥ जब आत्मतत्वका किंचन संवेदन फुरतीहे तबसुपन जगत होभासताहे॥ अरु जो ठहरि जातीहे तब सुषुप्तिप्रलय होजाती हे ॥ फुरणेका नाम सृष्टिकी उत्पत्ति हे अरु ठहरणेका नाम प्रले हेजिसके आश्रे फुरणा फुरता हे सो सुद्ध सत्ता अव्यक्त निराकार हे ॥ सोई आकार रूप भासतहे ॥अरु जो अकारण निराकार हे तिसविषे अकारण आकार भासताहे ॥ तातें जाणताहे जो उही रूप हे अवर कछू नही ॥ आकारभी निराकार हे सृष्टिही दृश्यरूप हो भासती हेजगत आभासमात्र हे ॥ जेसें समुद्रका आभास तरंग होतेहे तेसें आत्माका आभास जगत हे ॥ सो आत्मानंद चिदाकास हे ॥ अरु सर्व जगतका अपणा आप हे ॥ ॥ बेधकोवाच ॥ हे मुनीश्वर तुम जगतकों अकारण कहते हो ॥ सो कारण बिना उत्पत्ति केसें संभवती हे ॥ जो प्रत्यछ भासताहे अरु जो कारण करकै उत्पत्ति कहो तो सुपनवत क्यों कहते हो ॥ सुपन सृष्टि तो कारण बिना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होतीहे तातें यह सृष्टि कारण सहित हे ॥ अथवा कारणतें रहित अकारण हे सो कहो ॥ ॥ मुनीश्वरोवाच ॥ हे वेधक यह जगत आदि अकारणहे॥ आत्माका आभास मात्र अकारण हे सो कहो ॥ मुनीश्वरोवाच ॥ हे वेधक यह जगत आदि अकारण हे ॥ आत्माका आभास मात्र हे ॥ प्रथम कारणतें रहित हे सो आत्माविषे अत्यंत अभाव हे ॥ अवर पदार्थ कछू बणे नहीं ॥ आत्मसत्ता ही अपणे आपविषे स्थित हे सो चिदाकाश चिन्मात्र हे ॥ तिसका किंचन चैतनता हे ॥ जेसें सूर्यकी किर्णका आभास जल भासता हे परंतु जड हे तेसें आत्माका किंचनभी चैतन हे ॥ सो किंचन संवेदन अहंभावकों लेकरी फुरती गइ हे ॥ जेसें जेसें फुरती हें तेसा तेसा जगंत हो भासता हे ॥ जो जो तिसविषे निश्चय किया हे जो यह कर्तव्य हे ॥ इसके कर्णे करी पुण्य हे इसके करणे करी पाप हे ॥ यह करणा हे इह नही करणा देश काल क्रिया क्रम हे ॥ यह इसीप्रकार हे ॥ यह ऋषि हे, यह देवता हे, यह मनुष हे, यह द्वैत हे, यह धर्म हे, यह कर्म हे ॥ इस करी इनकों बंधन हे ॥ इसकरी इनकों मोक्ष हे ॥ हे वेधक जो आदि नेति रची हे ॥ तेसेंही अवलग स्थित हे अन्यथा नही होती तिसविषे कारण कार्य क्रम हे ॥ प्रथम जो सृष्टि फुरी हे सो बुद्धि पूर्वक नही बणी ॥ आकाश मात्र फुरि हे ॥ जेसें फुरी हे तेसेंही स्थित हे ॥ बहुरी पदार्थ जो एक भावकों त्याग करी अवर भावकों अंगीकार करते हे सो कारण कर्के करते हे कारणविना नही होते ॥ काहेतें जो प्रथम सृष्टि अकारण हुइ हे ॥ पाछेंतें सृष्टि भावविषे कारण कार्य हुए हे ॥ परंतु हे वेधक जिन पुरुषकों आत्माका साक्षात्कार हुआ हे ॥ तिनकों यह जगत कारण विना ब्रह्मस्वरूप भासता हे ॥ अरु जिनकों आत्मसत्ताका प्रमाद हे तिसकों जगत कारण असत भासता हे ॥ परंतु आत्मा ब्रह्म निराकार अकारण हे ॥ तिसविषे संवेदनके फुरणे करी अब्रह्मता भासती हे ॥ अरु निराकारविषे आकार भासता हे ॥ अरु अकारणविषे कारणता भासती हे ॥ अरु जब संवेदन जो मनका फुरणा हे सो स्थिर हो जाता हे तब सर्व जगत कारण कार्य सहित भासता हे ॥ प्रथम अकारण फुऱ्या हे पाछेतें देवता मनुष पशू पंछी पृथ्वी जल तेज वायु आकाश पदार्थकी मर्यादा भइ हे ॥ बंध अरु मोक्षकी नेती हुइ हे सों ज्योंकी त्यों हे ॥ जो जल सीतलही हे.अग्नि उष्णही हे॥इत्यादिक जेसें नेति हे ॥ तेसें स्थित हे अरु जब आत्म सत्ताविषे जागता हे तब जगत कारण कार्य सहित नही भासता ॥ जेसें सुपन सृष्टि प्रथम अकारण भासी आती हे ॥ जब दृढ हो जाती हे ॥ तब कारणसों कार्य होता हे दृढ हो आता हे जो मृत्तिका विना घट नही बनता अरु जागि उठे तब सर्व जगत आत्मरूप हो जाता हे ॥हे वेधक यह जगत संवेदनविषे स्थित हे ॥ जबलग अहंभावका फुरणा हे तबलग जगत हे ॥ जब अहंभाव मिटता हे तब सर्व जगत शून्य आकाशवत होता हे ॥ जबलग अहं फुरतीहे तबलग नाना प्रकारका जगत हो भासता हे ॥ जेसी भावना होतीहे तेसा भासता हे अरु सर्व पदार्थ सर्वदा काल अपणी अपणी शक्तिविषे जेसें आदि नेती हुइ हे तेसें ही स्थित हे ॥ जो जीव जेसी क्रियाका अभ्यास करेगा तिसके फलकों पावेगा ॥ जो बंधनके निमित्त करेगा सो बंधनकों पावेगा ॥ अरु मोक्षके निमित्त करेगा तो मोक्षकों पावेगा ॥ ऐसेंही आदिनेति हुइ हे ॥ हे वेधक इसप्रकार किंचन होकरी मिटिजाताहे॥ अरु आत्मसत्ता ज्योंकी त्यों हें ॥ अरु जगतकी उत्पत्ति प्रलय अेसें हे जेसें हाथी अपणी सुंडकों पसारे अरु खेचें ॥ तेसें चित्त संवेदनके पसरणे करी जगत उत्पत्ति होता हे अरु निस्पंदविषे प्रलय हो जाता हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे कार्यकारणाकारण निर्णयो नाम द्विशताधिकत्रिंशत्तमः सर्गः ॥ २३० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ मुनीस्वरोवाच ॥ हे बेधक यह संपूर्ण जगत चिदअणुके ओजविषे हे ॥ अरु तिस संबंधके अभ्यास करीकै आत्मा चिदअणुकी संज्ञाकों पावता भया हे॥ ओज अंतःकरण रिदा तीनों अभेद हे तिसविषे स्थित चैतन सत्ता हे ॥ बाहिरतें मृतकरूपवत होतीहे अरु तिसविषे जीवतरूप हे ॥ अरु तहां बडे प्रकास करी प्रकाशती हे ॥ तिस सत्ता आगें चित्त साथ संयोग हुआ हे ॥ चित्त अरु प्राण कलाका संयोग हुआ हे ॥ हे बेधक जब प्राण क्षोभते हे तब चित्त खेदकों प्राप्त होताहे ॥ अरु जब चित्त खेदकों प्राप्त होताहे तब प्राणभी खेदकों पावते हे जब प्राण स्थित होतेहे तब जीव सांतिकों प्राप्त होताहे ॥ अरु जो प्राण स्थित नही होते तब जीव जाग्रत सुपन सषुप्ति तीनों अवस्थाविषे भटकता हे॥ जाग्रत सुपन सुषुप्ति अवस्था भिन्न आतीहे सो सुण ॥ हे बेधक जब यह पुरुष अंन भोजन करता हे ॥ सो अंन जाग्रत वालो नाडी उपर जाय स्थित होताहे तब उह नाडो रोकी जातीहे॥ तिस करी सुषुप्ति आतीहे जिन नाडीविषे चित्तकी वृत्ति गइ हुइ जाग्रत् जगतकों देखती हे सो जाग्रत् नाडी कहातीया हे ॥ तिन उपर अंन जाय स्थित होता हे अरु चित्तसत्ता जो चित्तविषे प्रतिबिंबित हे सो चित्त नाडी तिसके तले आय जाती हे ॥ तब प्राणवायुभी तिस नाडीविषे ठहरी जाता हे अरु चित्त स्पंदभी ठहरी जाता हे तब सुषुप्ति होती हे ॥ अरु जो पित्त बहुत होती हे तब सूर्य अग्नि आदिक उष्ण पदार्थ सुपनेविषे देखता हे ॥ अरु जब वह अंन पचता हे ॥ अरु उन नाडीविषे प्राण जाते हे तब सुपन अवस्था आती हे ॥ जब जलके शोषणेकों वायु बहता होताहे ॥ तब जीव सुपनेविषे उडता हे ॥ अरु जो कफ बहुत होता हे तब जलकों देखता हे ॥ नदीयां अरु ताल देखता हे तिनविषे जाता हे डुबता हे ॥ जब उष्ण नाडीविषे अन्न जल जाय पहुंचता हे ॥ तब जाग्रत् अवस्था होती हे ॥ इस प्रकार जीव तीनों अवस्थाविषे भटकता हे जगत् न कछू अंतर हे न बाहिर हे ॥ केवल अद्वैत सत्ता ज्योंकी त्यों हे तिसके प्रमादकर्कै चित्त की वृत्ति जब बहिर्मुख फुरती हे तब जगत्कों जाग्रतकरि देखता हे अरु जब बाहिरकी इंद्रियांकों त्याग कर्कै अंतर आती हे ॥ तब अंत सुपन जगत्कों देखती हे ॥ अरु जब अपने सुभावविषे स्थित होती हे तब अवर कल्पना मिटि जातीहे ॥ सर्व ब्रह्मही भासता हे तातें सर्व कल्पनाकों त्यागकरी अपणे स्वरूपविषे स्थित होहु ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे जाग्रत् सुपन सुषुप्ति विचारो नाम द्विशताधिक एकत्रिंशतितमःसर्गः ॥ २३१ ॥ ॥७॥ ॥ ७ ॥ ॥ मुनीश्वरोवाच ॥ हे बेधक यह तीनो अवस्था होती हे अरु जाती हे ॥ इनके अनुभव करनेवाली जो सती हे सो आत्मसत्ता हे ॥ अरु सदा एक रस हे जिस पुरुषकों अपणे स्वरूपका अनुभव भया हे तिसकों अपना किंचन भासता हे अरु जिसकों प्रमाद हे तिसकों जगत् भासता हे ॥ अरु यह जगत् चित्तका कल्प्या हुआ हे ॥ इंद्रियांका जिसकों प्रमाद हे तिसकों जगत भासता हे ॥ अरु यह जगत चित्तका कल्प्या हुआ हे जब इंद्रीयां विषयके सन्मुख होती हे तब जगतकों देखती हे ॥ तिस संकल्प जगतकों देखकरि राग दोषवान होती हे ॥ बहुरी इंद्रीयके अर्थकों पाइकरि जीव हर्ष अरु शोकवान होता हे ॥ हे बेधक जिस चिदअणुका इंद्रिय साथ संबंध हे तिसकों संसारका अभाव नही होता ॥ नेत्र त्वचा जिव्हा नासिका श्रोत्र कर्कै आपकों देखता स्पर्श करता रसलेता सूंघता सुणता मानता हे तब संसारी होकरि दुःख पावता हे ॥ जब इनके अर्थकों त्यागकें अपने स्वभावकी उर आता हे तब सर्व जगतकों आत्मरूप जाणिकरि सुखी होता हे ॥ हे बेधक चित्तके फुरनेका नाम जगत हे ॥ अरु चित्तके स्थित होणेका नाम ब्रह्म हे ॥ जगत अवर कछू वस्तु नही इसीका आभास हे ॥ चित्तके आश्रे सभ नाडी हे तिनविषे स्थित होकरी जीव तीनों अ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वस्थाकों देखता हे ॥ वास्तवतें यह जीव चिदाकास आत्मा हे ॥ अज्ञानकरि जीव संज्ञाकों प्राप्त भया हे ॥ हे वेधक ओज धातु जो हे रिदा तिसविषे चिदअणु स्थित होकरि दीपक जो तीवत प्रकासता हे ॥ तिस ओजके आश्रे सभ नाडी हे ॥ सो अपने रसकों ग्रहण करती हे ॥ जब यह प्रानी भोजन करताहे ॥ अरु अंन जाग्रत नाडीविषे पूर्न होता हे तब जाग्रतका अभाव हो जाता हे ॥ चितकी वृत्ति अरु प्रान आणे जाणेतें रहित हो जाते हे ॥ उह नाडी मूंदी जाती हे ॥ बहुरी जब कफ नाडीविषे प्रान फुरते हे ॥ तब सुपना भासता हे ॥ हे वेधक जब इंद्रियकों ग्रहण करके चित्तकी वृत्ति बाह्य निकसती हे ॥ तब जाग्रत जगत हो भासता हे ॥ अरु जब तनमात्राकों लेकरि चित्तकी वृत्ति ओजधातु विषे फुरती हे तब सुपन भासता हे ॥ अरु जब ओज धातु उपर अंन आदिक द्रवका बोध आनि पडता हे ॥ तब सुषुप्ति होती हे ॥ अरु जब निद्राका अरु जाग्रतका बल होता हे तब दोनों भासते हे ॥ अरु जब दोनों विषे एकका बल अधिक होता हे तब उही भासता हे ॥ जाग्रत अथवा सुषुप्ति ॥ अरु जब निद्रातें रहित मंद संकल्प होता हे ॥ तब तिसकों मनोराज कहताहे ॥ अरु जब बाह्य विषयकों त्यागकरि चित्तकी वृत्ति अंतर्मुख होती हे तब सुपन होता हे ॥ तहां फिरि जिस सिद्धांतविषे जाता हे तिस अनुसार अंतर जगत भासता हे ॥ कफके बलकरि चंद्रमा अरु क्षीरसमुद्र नदीयां ताल जल साथ पूर्ण अरु वृछ फुलफल बगीचे सुंदर बन हिमाला कलपवृछ तमाल सुंदर स्त्रीयां अरु वल्लीयां बावलीयां इत्यादि सुंदर अरु सीतल स्थान देखता हे जब पितका बल अग्नि होता हे तब सूर्य अग्नि अरु सूके वृछ फल टास देखता हे ॥ अरु संध्याकालके मेघकी लाली देखता हे बन स्थानकों अग्नि लागी देखता हे ॥ पृथ्वी अरु रेत तपी हूइ देखता हे ॥ मारुथलकी नदी दृष्ट आती हे ॥ जल उष्ण लागता हे हिमालेका सिखर उष्ण लागता हे ॥ इनतें आदि लेकरी उष्ण पदार्थ दृष्ट आता हे ॥ अरु जब वायुका बल अधिक होता हे तब सुपनेविषे आधि वायुकों देखता हे ॥ पाषाणकी वर्षा होती दृष्ट आती हे ॥ अरु अंधेकूप विषे गिरता हे ॥ हस्ती घोडे उडते दृष्ट आते हे ॥ आपकों उडता फिरता देखता हे ॥ अप्सराके पाछे दउडता हे पहाडकि बरखा होती हे ॥ वायु तीक्ष्ण वेगकरि चलती हे ॥ अंनते आदि लेकरी पदार्थ चलते दृष्ट आते हे ॥ विपरीत होइकरि भासते हे ॥ इस प्रकार वात पित कफ करिके सुपने विषे जगत देखता हे ॥ जिसका बल विशेष होता हे तिस धर्मविषे दृष्ट आता हे ॥ वासनाके अनुसार घट वढ राजसी तामसी सात्विकी पदार्थकों देखता हे ॥ जब तीनों एकठे होकरि कुपते हे ॥ तब प्रलेकाल दृष्ट आते हे ॥ हे वेधक जबलग वात पित कफके अंस साथ मिल्या हुआ पुर्यष्टक कफके स्थानविषे प्रवेस करता हे ॥ तबलग समान जलके क्षोभ भासते हे ॥ इस प्रकार वात पित कफ जिसके स्थानविषे जाता हे ॥ अवरके सुभावकों लेता हूआ तबलग समान क्षोभ भासता हे ॥ अरु जब केवल वातका क्षोभ होता हे ॥ तब महा प्रलेकालके पवन चलते हे ॥ अरु पहाड पर पहाड गिरते भूकंप आते हे ॥ इसतें आदि लेकरि क्षोभ होते हे ॥ अरु जब कफका क्षोभ होता हे तब समुद्र उछलते हे ॥ अरु पितकरि अग्नि लागती हे ॥ महाप्रलेकी न्यांइ तत्व क्षोभवान होते हे ॥ जब प्राण जाग्रत नाडीविषे जाते हे अरु उह अंनकरि पूर्न होती हे तब जीव उसके नीचे आइ जाते हे ॥ जेसें कंधके नीचे दर्दुर आवे जेसें पाषाणकि सिलाविषे कीट आय जावे जेसें काष्टकी पुतली काष्टविषे होवे जेसें इनविषे अवकास नही रहता ॥ तेसें तिस नाडीविषे फुरणेका अवकास नही रहता रोकी जाती हे ॥ तब इसकों सुषुप्ति होती हे ॥ जब कछू अन पचताहे तब चित्त संवित अपणे अंतर सुपना देखती हे ॥ जिसकों सततका विकार विशेष होता हे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिसीका कार्य देखता हे ॥ जब अंन अरु जल पचता हे ॥ तब फिरि जाग्रत जगतकों देखता हे ॥ अरु जब जाग्रत अरु सुपन दोनोंका बल सम होता हे तब दोनोंकों देखता हे ॥ अरु अनुभव करता हे॥ हे बेधक एक प्रकार तीनों अवस्था होतीयां अरु मिटि जातीयां हे सो तीनों गुण करि होतीयां हे ॥ इनका द्रष्टा इनकों अनुभव करणेवाला हे सो गुणतें अतीत हे अरु सर्वका आत्मा हे ॥ यह जगत अरु सुपन जगत संकल्प मात्र हे बण्या कछू नही ॥ ब्रह्मसत्ताही किंचन कर्कै जगतरूप हो भासती हे ॥ परंतु अग्यानी तिसकों जगत जानते हे जगतकों सत जाणिकरि इष्ट अनिष्टविषे राग दोष करते हे ॥ इष्ट राग संयुक्त ग्रहण करते हे अनिष्टकी प्राप्तिविषे द्वेष करते हे॥ जब वाशकी इंद्रियां सुषुप्ति हो जाती हे तब अंतर सुपने विषे भटकता हे ॥ तिसविषे सूर्य चंद्रमा वन फुल फल वछ आदिक जगतकों देखता हे ॥ अरु जब स्वरूपका अनुभव होता हे तब सर्व भटकणा मिटि जाता हे अरु सांतिपदकों प्राप्त होता हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे जाग्रत सुपन सुषुप्ति वर्णनं नाम द्विशताधिक द्वात्रिंशतितमःसर्गः॥ ॥ २३२ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ बेधकोवाच ॥ हे मुनीश्वर उस पुरुषके रिदेविषे जो तुम जगत अरु प्रले देखी थी तिसके अनंतर क्या करत भया अरु क्या अवस्था देखी ॥ मुनीश्वरोवाच ॥ हे बेधक तिस के चित्त स्पंदविषे में देखता भया जो बडे बडे पहाड प्रलेकी वायु साथ सुके तृणकी न्यांइ उडते हे ॥ अरु पाषाणकी वर्षा होतीहे ॥ इस प्रकार में प्रलेके क्षोभकों देखत भया ॥ मेरे देखते देखते जाग्रतवाली नाडीविषे अंन आंनि स्थित हुआ ॥ तहां जो अंनके दाणे गिरे सो पर्वतवत भासे ॥ तब चित्त स्पंद जो संवित थी सो रोकी गइ तिसविषे में था॥ सो तामस नरक विषे जाय पडा ॥ मानों उंहां मेंभी जड हो गया ॥ मुझकों ज्ञान कछु न रहा ॥ जब कछु अंन पच्या अरु कछु अवकास हुआ तब प्रांणका स्पंद फुर्या ॥ जेसें वायु निस्पंद हुइ स्पंद हो करी चले तेसें उहां संवित फुरी ॥ तब सुषुप्ति सो दृश्य हो करी भासणे लगी केसी हे ज्यों आत्मा द्रष्टाही दृश्यरूप हो करी भासणे लागा ॥ परंतु अवर कछु बन्या नही ॥ जेसें अग्नि अरु उष्णताविषे कछु भेद नही ॥ जेसें जल अरु द्रवताविषे कछु भेद नही ॥ जेसें मिरच अरु तीक्ष्णताविषे भेद नही ॥ तेसें आत्मा अरु दृश्यविषे कछु भेद नही॥ हे बेधक इस प्रकार में जगतकों देखता भया ॥ सुषुप्ति जाग्रत दृश्यसों दृश्य उपजी मुझकों दृष्ट आइ ॥ जेसें कुंआरी कन्यातें संतान उपजे तेसें उपजत भइ ॥ बेधकोबाच ॥ हे मुनीश्वर तुम जो कही सुषुप्ति आत्मातें दृश्य उपजी सो सुषुप्ति क्या हे ॥ जिसविषे तुम दवे गएथे ॥ उही सुषुप्ति हे ॥ जिसतें जगत उपजता हे सो मुझकों कहो ॥ मुनीश्वरोवाच ॥ हे बेधक जहां सर्व संबंध का अभाव हे ॥ केवल आत्मसत्तातें इतर कछु कहणा नही ॥ तिसका नाम सुषुप्ति हे ॥ तिसविषे जो फुरणा हुआ तिस फुरणेके तीन पर्याय हे ॥ सो सब सन्मात्रके हे जो वस्तु स्वरूप हे ॥ अरु देस काल वस्तुके प्रछेदतें रहित हे ॥ अरु तीनोंकें प्रछेदतें रहित हे सो सन्मात्र हे ॥ तिस सन्ममात्रविषे अवर कछु बण्या नही ॥ तिसके सब पर्याय हे सो उही रूप हे ॥ उही सत वस्तु अपणे आपविषे विराजता हे ॥ कदाचित अन्यथा भावकों नही प्राप्त होता ॥ किंचनविषेभी उही रूप हे ॥ अरु अकिंचनविषेभी उही रूप हे आत्माहीका नाम सुषुप्ति हे ॥ तिसीतें सब जगत होताहे॥तिस सत्ताका नाम सुषुप्ति हे॥उही सुपन दृश्य हो करी भासताहे॥उसतें इतर कछु नही॥जेसें वायु निस्पंद स्पंदविषे उही रूप हे तेसें आत्मा दोनों अवस्थाविषे एक ही हे ॥ हे बेधक हम सारखेकी बुद्धिविषे अवर कछु बण्या नही ॥ सदा ज्योंका त्यों स्थित हे॥ शरीरके आदिभी अंतभी उही रूप हे॥ तिसविषे जो किंचनद्वारा करी भास्या हे सोभी उ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही रूप हे जेसें सुषुप्ति अवस्थाविषे मुझकों अद्वैतका अनुभव होताहे अवर कछु फुरणा नहीं होता ॥ तिससों जो सुपनं अरु जागृत भासि आती हे सोभी उहीरूप हे ॥ जिसतें फुरती हे ॥ अरु जिसविषे भासती हे तिसतें इतर कछु नही ॥ तातें यह जगत आत्माका किंचन हे सो आत्मारूप हे ॥ जब तुं जागि करी देखेगा तब तुझकों आत्मारूप भासेगा ॥ जेसें सुपन पुर अरु संकल्प नगरका अनुभव होताहे अरु आकाशरूप हे तेसें यह जगत आकाशरूप हें ॥ शक्तिभी उही हे सर्व शक्ति आत्मा हे ॥ निष्किंचनभी उही हे अरु किंचनभी उही हे॥ अरु शून्यभी उही हे ॥ जो वाणीतें कह्या नही जाता तिस अवस्थाविषे ज्ञानी स्थित हे ॥ हे बेधक ज्ञानवानकों अनुभव प्रत्यक्ष करकें अनुभव रूपही भासताहे॥ जेसें सुपने विषे जीव अरु ईश्वर भिन्न भिन्न भासताहे ॥ उपाधि करकें अनुभव भेद भासताहे वास्तवतें भेद कछु नही ॥ तेसें जागृतविषे अज्ञान उपाधि करकें भेद भासताहे ॥ स्वरूपतें आत्मा एक रूप हे ॥ जब अज्ञान निवृत्त होताहे ॥ तब सर्व आत्मारूप भासताहे ॥ हे बेधक सर्व जगत अपणा स्वरूप हे ॥ परंतु अज्ञान करकें भेद होता हे ॥ जब आपको जाणे तब द्वैत भेदभी मिटि जावे ॥ जेसें कछु पुरुष अपनी भुजापर सिंघकी मुरति लिखें अरु उसके भय करी दउडता फिरें अरु कष्ट पावे सो प्रमाद करकें भयमान होताहे ॥ उह तो अपणाही अंगहे ऐसें जाणे तब भय मिटि जाता हे तेसें स्वरूपके ज्ञान करकें जगत भय मिटि जाताहें ॥ जेसें सुपनविषे अज्ञान करकें नानात्व भासती हे अरु वण्या कछु नही तेसें जागृतविषे नानात्व भासताहे परंतु वण्या कछु नही॥जब यह पुरुष अंतर्मुख होताहें तब इसकों बोधकी दृढता हो आती हे॥जेसें प्रातःकालकों ज्यों ज्यों सूर्यकी किर्णा प्रगट होतीहे त्यों त्यों सूर्यमुखी कमल खिलतेहे॥ तेसें ज्यों ज्यों अंतर्मुख होताहे त्यों त्यों बोध खिलता हे ॥ विषयतें वैराग करणा अरु आत्माका अभ्यास करणा इस करी बुद्धि अंतर्मुख होतीहे अरु आत्मपदकी प्राप्ति होतीहे ॥ तब आत्मा सर्व एक रस भासता हे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे सुषुप्ति वर्णनं नाम द्विशताधिकत्रयस्त्रिंशत्तितमः सर्गः ॥ २३३ ॥ ॥ ९ ॥

॥ मुनीश्वरोवाच ॥ हे बेधक तब में उसकी सुषुप्तिसों जागि करी जगतकों देखत भया ॥ जेसें कोउ पुरुष समुद्रसों निकसि आवे अरु जेसें संकल्प सृष्टि फुरी आवे ॥ जेसें आकाशतें बदल फुरी आते हे जेसें वछतें फल निकसि आते हे तेसें उसकी सुषुप्तिसों सृष्टि निकसि आइ ॥ मानो आकाशतें उडि आइ ॥ मानों कल्प वछतें चिंतामणि निकसि आइ हे ॥ जेसें शरीरके रोम खडे हो आते हे ॥ जेसें गंधर्व नगर फुरी आता हे ॥ जेसें पृथ्वीतें अंकुर निकसि आता हे ॥ तेसें सृष्टि फुरी आइ हे ॥ जेसें कंध उपर पुतलीयां लिखीयां होवे ॥ जेसें थंभविषे अनउकरी पुतलीया होवे तेसें में सृष्टिकों देखत भया जेसें थंभेविषे पुतलीया निकसी नही परंतु सिल्पी कल्पताहे जो एती पुतलीयां निकसेगियां॥ तेसें अनहोती सृष्टि आत्मरूपी थंभतें नीकसि आती हे ॥ अरु आत्मरूपी माटीतें पदार्थरूपी बासन निकसतें हें ॥ परंतु यह आश्चर्य हे जो आकाशविषे चित्र होतेहे अरु निराकार चैतन्य आकाशविषे पुतलीयां मनुष्य कलपता हे ॥ हे बेधक जेसें आकाशविषे मकडीके समूह निकसी आते हे तेसें शून्य आकाशतें सृष्टि निकसी करी पुरुषके उदेविषे मुझकों स्पष्ट भासणे लागी ॥ अरु देश कालक्रिया द्रव्य करकें अकस्मातें सत असत पदार्थ भासणे लागते हे ॥ अरु असत पदार्थ सत हो भासते हे॥जेसें मणि मंत्र ओषधी द्रवके बल करी असत पदार्थ सत हो भासणे लागते हे॥अरु सत पदार्थ असत भासते हे तेसें अभ्यासके बलकरी मुझकों पुरुषके रिदेविषे सृष्टि भासणे लागी॥हे बेधक जेसा निश्चय संवितविषे दृढ होताहे तेसा रूप होकरी भासताहे॥वास्तवतें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न कोउ पदार्थ हे न अंतर हे न बाहिर हें नं जागृत हे नसुपन हें नं सुषुप्तिहे॥यह सभ सृष्टि इसके अंतरही स्थित है॥अरु प्रमाद दोष करकै बाहिरसें फल उत्पत्ति होते देखता हे॥जेसें सुप नेविषे सभ पदार्थ अपणे अंतर बाहिर होते भासते हे॥ तेसें यह पदार्थ अपणे अंतरसों बाह्य फुरते भासते हे॥ हे बेधक यह जगत जो आकार संयुक्त दृष्ट आता हे सो सभ निराका र हे॥ अवर कछू बण्या नहीं॥ ब्रह्मसत्ताही अज्ञान करि जगतरूप हो भासती हे॥ जो ज्ञानवान पुरुष हे॥ तिनकों जगत सत असत कछू नही भासता॥ केवल ब्रह्मसत्ता अपणे आ पविषे स्थित भासती हे॥ अरु जो अज्ञानी हे तिनकों भिन्न भिन्न नामरूप भासता हे॥ अरु जब चितकी वृत्ति बाहिर फुरती हे॥ तिसकों जाग्रत कहता हे॥ अरु जब अंतर्मुख फु रती हे तब तिसकों सुपन कहता हे॥ अरु जब वृत्ति स्थित होती हे तब तिसकों सुषुप्ति कहता हे॥ तो एकही चित्तवृत्तिके तीन पर्याय हुए॥ अवर कछू वास्तव तो नही॥ इसि जगतके आदि शुद्ध केवल आत्मसत्ता थी॥ तिसविषे चित्त संवित फुरी॥ तब जगतरूप भासणे लागी॥ अवर किस कारणतें जगत उपजा नहीं॥ जिसका कारण कोउ नही तिसकों अस त जाणीये॥ वास्तवतें कछू बण्या नही सर्व जगत सांतरूप ब्रह्मही हे॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे सुषुप्ति वर्णनं नाम द्विशताधिक चतुस्त्रिंशतितमःसर्गः॥ २३४ ॥ ७॥

॥ वेधकोवाच॥ ॥ हे मुनीस्वर प्रलेके अनंतर तुमकों क्या अनुभव हूआ था॥ ॥ मुनीस्वरोवाच॥ हे बेधक तब मुझकों तिसके अंतर सृष्टि फुरि आइ॥ अपने पुत्र कलत्र स्त्री संपूर्ण कुटुंब भासि आया॥ तिनकों देखिकरि मुझकों ममत्व फुरी आइ॥ अरु पूर्वकी स्मृति भूलि गइ॥ सोडस वर्षकी आरबला मुझकों अपणी भासी॥ गृहस्थाश्रमविषे स्थित भया॥ राग दोष सहित मुझकों जीवके धर्म फुरी आये॥ काहेतें जो दृढ मुझकों हुआ न था हे बेधक जब दृढ बोध होताहे तब राग दोष आदिक जीव धर्म चलाय नही सकतें॥ संसार कों सत्य जाणिकरि वासना कोउ नही होती॥ इसी कारणतें चलायमान नही होता॥ अरु जिसकों बोधकी दृढता नही तिसकों जगतकी वासना खेंचि लेजातीहे॥ हे बेधक अब मुझकों दृढ बोध हुआहे॥ इसकों तरना महा कठिन हे॥ यह पिसाचनी महाबली हे काहेतें जो चिरकाल दृश्यका अभ्यास हूआ॥ इस कारनतें चलाय लेजातीहे॥ जब सत शास्त्र का विचार अरु संतका संग जीवकों प्राप्त होताहे अरु अभ्यास दृढ होताहे तब दृश्यका सद्भाव निवृत्त होजाताहे॥ जबलग यह उपाय मोक्षका नही प्राप्तभया तबलग यह भम दृ ढ होरहाहे॥ जब संतके संग अरु सतसास्त्रके विचारकरि इसकों यह विचार उपजे जो में कवन हों अरु यह जगत क्या हे इसकों विचारिकरि आत्मपदका दृढ अभ्यास होवे त व दृश्य भम मिटि जाताहे काहेतें जो असम्यक ज्ञानकरकै जगत सतभास्याहे॥ जब सम्यकज्ञान हूआ तब जगतका सद्भाव केसें रहे॥ जेसें आकासविषे नीलता भम करकै भासतीहे जेसें बाजीगरकी बाजी जेसें जेवरिविषे सर्प भम करि भासता हे॥ तेसें आत्माविषे जगत भम करी भासता हे॥ जब अपणे स्वरूपविषे जागता हे तब जगत् भम मिटी जाता हे॥ जब लग स्वरूपविषे जाग्या नहीं तबलग जगतभम मिटता नही॥ वेधकोवाच॥ हे मुनीश्वर यह तुम सत कहतेहो॥ जो जगत भम मिटणा कठिन हे॥ में तुमारे मुखतें वारंवार सुणता हो अरु विचारता हों अरु पद पदार्थका ज्ञान मुझकों दृढ होगया हे॥ परंतु संसारभम नष्ट नही होता॥ इह में जानता हो अरु सुनता हों॥ जो संतके संग अरु सतशास्त्रके विचारबिना शांति नही प्राप्त होती॥ यह संसा मुझकों होता हे॥ जो तुम जाग्रत जगत्कों सुपनवत् केसें कहते हो॥ केइ पदार्थ सत भासते हे केई असत भासते हे॥ मुनीश्वरोवाच॥ हे बेधक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह जेता कछू जगत पृथ्वी आदिक पदार्थ सत भासते हे अरु ससेके सिंग आदिक असत भासते हे सो सब मिथ्यारूप हे ॥ जेसें सुपनविषे सत असत पदार्थ भासते हे सो सर्व असतरूप हे ॥ तेसें यह जगत असतरूप हे ॥ तिसविषे अल्प प्रतीतिका अरु चिरकालकी प्रतीतिका भेद हे ॥ जाग्रत चिरकालकी प्रतीत हे तिसकरि पदार्थ सत भासते हे अरु सुपना अल्पकालकी प्रतीत हे तिसकरी सुपन पदार्थ असत भासते हे परंतु दोनों भमरूप हे अरु असत हे ॥ इस कारणतें में तुल्य कहता हों ॥ असतही पदार्थभम कर्के सतकी न्याई भासते हे ॥ अरु यह सर्व जगत सुपनामात्र हे ॥ तिसविषे सत क्या कहों अरु असत क्या कहों ? जेसें सुपनेविषे केइ पदार्थ सत भासते हे ॥ केइ असत भासते हे सो सवही असत्य हे तेसें जाग्रत विषे केइ पदार्थ सत भासते हे केइ असत भासते हे परंतु दोनों भममात्र हे तातें असत्य हे॥हे बेधक प्रतीतका भेद हे ॥पदार्थविषे भेद कछू नही ॥ जिसविषे प्रतीत दृढ होरही हे तिसकों सत कहता हे अरु जिसविषे प्रतीति दृढ नही तिसकों असत कहता हे ॥ एक अैसे पदार्थ हे जो सुपनेविषे उनकी भावना दृढ होगई हें ॥ सो जाग्रतविषेभी प्रत्यक्ष आनि भासताहे अरु मनोराजकी दृढता जाग्रतरूप होजाती हे ॥ सो भावनाकी दृढता हे अवर भेद कछू नही ॥ जिसविषे भावना दृढ होगइ हे ॥ सो सत भाषणे लागा हे ॥ जो ज्ञानवान पुरुष हे तिनकों जगत संकल्पमात्रही भासता हे ॥ संकल्पतें इतर कछू जगतका रूप नही ॥ तिसविषे में सत क्या कहों अरु असत क्या कहों सब जगत भममात्र हे ॥ जो ज्ञानवान हे तिनकों सत असत कछू नही तिनकों सब ज्ञानरूप भासता हे ॥ अरु जिसकों सुपनेविषे जाग्रतकी स्मृति आई हे तिसकों बहुरी सुपन नही भासता हे ॥ तेसें जिसकों जाग्रतरूप सुपनेविषे बोध स्मृति भई हे सो बहुरी मोक्षकों नही प्राप्त होता ॥ तातें न कोउ जाग्रत हे न कोउ सुपन हे ॥ न कोउ नीति हे काहेतें जो नेतिभी कछू अवर वस्तु नही निकसती ॥ जेसें सुपनेविषे नाना प्रकारके पदार्थ भासते हे तिनकी मर्यादा नेतिभी भासती हे ॥ तो उही नेति किसि करी हे ॥ सभ ज्ञानरूप होती हे ॥ तेसें जाग्रतविषेभी सभ ज्ञानरुप हे ॥ संवितके फुरने करि नाना प्रकारके पदार्थ भासते हे ॥ तिसविषे नेतिभी भासती हे ॥ तातें न कोउ जगत् हे न नेति हे ॥ इसका कारण कोउ नही ॥ कारण बिनाही जगत् अकसमात् फुरि आता हे अरु मिटिभी जाता हे ॥ संवेदनके फुरने करी जगत् फुरी आता हे संवेदनके मिटेतें मिटी जाता हे ॥ तातें जगत संबेदनरूप हे ॥ जेसें वायु स्पंदरूप होती हे तेसें संवेदनही जगतरूप हो भासता हे ॥ वायु स्पंदरूप होती हे तब फुरनरूप हो भासती हे ॥ अरु निस्पंद कोउ नही जाणता॥परंतु वायुकों दोनों तुल्य हे ॥ तेसें चित्त संवेदनके फुरने विषे जगत भासता हे ॥अरु ठहरणेविषे जगत किंचन मिटी जाता हे ॥ फुरना अरु ठहरणा दोउ उसके किंचन हे ॥ आप दोनोंविषे तुल्य हे ॥ हे बेधक नेतिभी अज्ञानीके समुझावणे निमित्त कही हे ॥ सुपनाभी असत हे सभ कोउ जानता हे अरु सुपनका वृत्तांत जाग्रतविषे सिद्ध होता दृष्ट आता हे ॥ कोउ कहता हे जो रात्रविषे मुझकों सुपना आया हे ॥ अमका कार्य इसी प्रकार होवेगा ॥ सो जाग्रतविषे होता दृष्ट आता हे ॥ अरु पुत्रकों पिता कह जाता हे मेरी गति करुहु अरु अमुके स्थानविषे द्रव्य पडा हे तुम काढि लेवहू ॥ सो उसी प्रकार होता दृष्ट आया हे ॥ जो नेति होती तो कार्य कोउ सिद्ध न होता सो तो होता हे तातें नेतिभी कछू वस्तु नही ॥ आत्मातें इतर कछू वस्तु नही ॥ जाग्रत नाम तिसका जिसकों आत्म शब्द कहतोह ॥ अरु जिसकों तुम जाग्रत कहते हो सो कछु वस्तु नही जाग्रत नाम जो मन सहित षट इंद्रियांकी संवेदन होतीहे सो सुपनेविषे मन सहित षट इंद्रियांकी संवेदन होती हे ॥ तिनके विषे ग्रहण होता हे तातें जाग्रत वस्तु कछू नही॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो जाग्रत विषे अर्थ सिद्धि होता हे अरु सुपनेविषेभी होवेतो जाग्रतविषे कछु वस्तु न हुइ ॥अरु जो तूं कहे सुपना कछू वस्तुहे तो सुपनाभी नही॥सुपना तहां होता हे जहां निद्रा भ्रम होता हे ॥ केवल शुद्ध चिन्मात्र सत्ता हे॥जगत तिसका किंचन हे॥ जेसें रत्नकी लाटका चमत्कार होता हे सो लाट रत्नतें इतर कछू वस्तु नही ॥ रत्नही व्यापा हे तेसें जाग्रत सुपन जगत आत्मा चमत्कार हे ॥ सो बोधसत्ता केवल अपणे आपविषे स्थित हे सो अनंत हे ॥ तिसविषे जगत कछू बण्या नही जो आत्मातें इतर जगत भासता हे सो नाशरूप हे॥आत्मा सदा अविनासी हे॥हे बेधक जब इह पुरुष शरीरकों छांडताहे॥तब परलोकविषे सुखदुःख केसें भोगता हे? जेसें जलविषे एक तरंग उठि करी मिटि जाता हे॥अवर ठोर अवर प्रकार लेकरी उठता हे ॥ सो जलही जल हे आगेंभी जल था पाछेंभी जल हे ॥ तरंगभी जल हे ॥ जलहीका बिलास इसप्रकार फुरता हे ॥ तेसें यह शरीरभी अनुभवरूप हे ॥ अनुभवतें इतर कछु नही जेसें एक सुपनेकों छांड करी दुसरा सुपना देखता हे तो क्या हे अपणाही आप हे ॥ तेसें यह जगत आत्मारूप हे ॥ हे बेधक जाग्रत सुपन सुषुप्ति तुरिया यही चारो वपु हे ॥ जाग्रत जो सृष्टिकी समष्टिता हे तिसका नाम विराटहे ॥ अरु सुपन जो लिंग शरीरकी समष्टिता हे तिसका नाम हिरण्य गर्भ हे ॥ अरु सुषुप्ति शरीरकी समष्टिता अव्याकृत माया हे ॥ अरु तुरीया सर्व शरीरकी समष्टिता हे सो चैतनरूप आत्मा हे ॥ तुरीया कहीयें जानणा साक्षीभूत ॥ तिसकी समष्टितारूप चैतनवपु हे चारों शरीर उसके हे ॥ अरु सदा निराकार हे अचेत चिन्मात्र हे ॥ हे बेधक यह चारो परमात्माके शरीर हे ॥ सो परमात्मा निराकार हे ॥ अरु आकार जो दृष्ट आते हे ॥ सोभी उही रूप हे ॥ सो आकार कल्पना मात्र हे अरु आत्मा सर्व कल्पनातें रहित हे ॥ तातें सब जगत चिदाकाशरूप हे ॥ जेसें पथरकी सिलाविषे कमल फुल नही लागते तिनका होना असंभव हे तेसें आत्माविषे जगतका होणा असंभव हे ॥ हे बेधक आत्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ तूं जागी करी देख जेते कछू पदार्थ भासते हे ॥ सो संकल्प मात्र हे ॥जिसविषे कल्पित हे सो नाम रूपतें रहित हे तिसकों देखेगा ॥ तब सब जगत आत्मरूप भासेगा ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वानप्रकरणे सुपन निर्णयोनाम द्विशताधिक पंचत्रिंशत्तमः सर्गः ॥ २३५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

178

॥ व्याधोवाच ॥ ॥ हे मुनीश्वर उस पुरुषके रिदेविषे जो तुम सृष्टि देखीथी तिसविषे तुम किस प्रकार विचरतेथे अरु क्या देख्या सो कहो ? मुनीश्वरोवाच ॥ ॥ हे बेधक जो कछू वृत्तांत हे सो तूं सुण जब में उसके रिदेविषे नाना प्रकारका जगत देख्या तब में अपणे कुटुंबविषे रहणे लागा ॥ पूर्बकी स्मृतिकों विस्मरण किया अरु चेष्टा करत भया ॥ षोडश वर्ष पर्यंत सत जाणि करी में चेष्टा करी ॥ तब मेरे गृहविषे एक उग्रतपा नाम ऋषीश्वर मान करणे जोग आया॥तिसका में बहुत आदरकीया ॥ चरण धोए करी सिंघासनपर बेठाया ॥ अरु नाना प्रकारके भोजन करि तिसकों तृप्त किया ॥ तिस ऋषिनें भोजन करकें विश्राम किया ॥ तब में कहा हे परम बोधवान अदृष्ट क्रोधको में जानता हों ॥ अरु तुम परम बोधवान हों तुम आपकों आपही जानते हो ॥ अरु जब तुम आए तब थके हुएथे ॥ परंतु तुमारेविषे क्रोध दृष्ट न आया ॥ अरु नाना प्रकारके तुम भोजन किये ॥ तब तुम हर्षवान भए ॥ इस कारनतें में जान्या जो तुम परम बोधवान हो ॥ तुमारे विषे राग दोष कछू नही ॥ तातें में प्रश्न एक करता हों ॥ संसे संयुक्त होकरी ॥ तिस संसेकों कृपाकरि दूरी करो ॥ हे भगवन् यह जगत् नगर विषे दुर्भिक्ष आनि पडताहे अरु मृत्यु प्राप्त होती हे ॥ एकठे मरि जाते हे अरु कष्ट पावते हे ॥ सो क्या कारण हे यह तो में जानता हों जो जेसें कर्म सुभ अथवा असुभ जी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व कर्ता हे फलकों पावता हे ॥ जेसें धानकों बोता हे तब समे पायंकरि फलभी अवस्य आता हे ॥ तेसें कर्मका फल अवस्य प्राप्त होता हे सो जिसनें कीया हे सोइ भोगता हे अरु ए
कठा कष्ट क्यों करि आनि प्राप्त होता हे ॥ ॥ उपतपोवाच ॥ ॥ हे साध प्रथम सुण जो जगत् क्या वस्तु हे ॥ यह जगत् कारण विना उत्पत्ति भया हे ॥ जो कारण विना दृष्ट आ
वें सो भममात्र जाणीए ॥ तातें तुं विचार करि देख जो यह जगत क्या हे ॥ अरु तुं कवन हे अरु इसविषे क्या हे ॥ अरु इसका अंत प्रमाण कहांलग हे ॥ हे व्याध यह जगत
सुपनमात्र हे ॥ अरु यह शरीरभी सुपनमात्र हे तुं मेरा सुपन नर हे अरु में तेरा सुपन नरहों सब जगत सुपन नर हे ॥ कारण कार्य कोउ नही सब आभासमात्र हे ॥ आभासविषे कछू
अवर वस्तु नही होती ॥ तातें सब जगत आत्मस्वरूप हे ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प भममात्र होता हे तो सर्प कछू नही जेवरी होती हे ॥ तेसें सभ जगत् चिन्मात्र रूप हे तिसविषे कछू बन्या नही ॥
केवल आत्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ तिसविषे अहं हो करि इस प्रकार चैतनता संवेदन फुरती हे ॥ तब जगत् आकारका स्मरन होता हे ॥ जेसें जेसें संकल्प फुरता हे तेसा तेसा जगत्
भासताहे ॥ जेसें सुपन सृष्टि नाना प्रकार हो भासती हे परंतु अनुभवतें इतर कछू नही ॥ जेसें संकल्प नगर भासता हे सो अनुभवतें इतर कछू नही तेसें यह जगत भासता हे ॥ जिस
संवितविषे अपणा स्वरूप स्मरन होता हे तिसकों जगत कारण कार्यरूप भासता हे ॥ सोइ जीव हे जिस संवितकों कर्मकी कल्पना स्पर्स करति हे तिसकों तिन कर्मका फल
नही लागता ॥ कर्तव्य दृष्टभी आता हे परंतु उसके रिदेविषे कर्तव्यका अभिमान नही स्पर्स करता ॥ अरु जिसके रिदेविषे कर्तव्यका अभीमान होताहे तिसकों फलभी
होता हे ॥ हे साध यह जो सृष्टि हे तिसका एक विराट पुरुष हे ॥ तिसका सरीर हे अरु यह विराटभी अवर विराटके संकल्पविषे हे ॥ यह विराठ उस विराटका रोमां
च हे ॥ जब विराट पुरुषके अंगविषे क्षोभ होताहे अरु जीवकी पापवासना एकठी आनि उदे होती हे जब वासना अरु अंगका क्षोभ एकठा होता हे ॥ तब तिस स्थानविषे
उपद्रव कष्ट होता हे ॥ जेसें वनविषे बहुत दछ होते हे ॥ तिनपर वज्र आनि पडे तिसकरी सभ चूर्ण होजावे ॥ तेसें एकठे पाप करी एकठेही मरी जातेहे ॥ अरु एकठे कष्ट
पावे दुर्भिक्ष करी जेसें किसी पुरुषके अंगपर मखी लडे तिस करी उह अंग कंपता हे उस अंग कंपणे करी रोम कंपणे लागी जाते हे अरु जो सर्पादिक जीव कडुं दंसता हे तो
सारा शरीर कष्ट पावताहे अरु सभ रोम कष्ट पावतेहे ॥ तेसें यह जगत विराट पुरुषका शरीरहे ॥ जब किसी नगरविषे पाप उदे होताहे तब एक रोमरूपी नगर जीव कष्ट पावते हे ॥ अरु
जो सारे अंगरूपी देशविषे पाप आनि उदे होताहे ॥ तब सर्पके काटणेवत सारा शरीर विराटका क्षोभमान होताहे तिसके शरीर उपर रोमरूपी जीव सब कष्ट पावतेहे ॥ केवल आत्मस
त्ता अनुभवरूप हे ॥ तिसके प्रमाद करी यह आपदा दृष्ट आती हे ॥ जो यह जगत कारणतें उपजा होता तो सत होता ॥ सो तो कारणतें उपजा नही सत केसें होवे ॥ इस जगतविषे सत
प्रतीत करणी यही अज्ञान हे ॥ हे साध इस आकाशका कारण कोउ नही ॥ पृथ्वीका कारण कोउ नही ॥ अविद्याका कारणभी कडुं नही ॥ स्वयंभूभी अकारण हे ॥ स्वयंभू तिसका ना
म हे जो अपणे आप करी प्रगट हे तिसका कारण कवन होवे ॥ जल अग्नि वायुका कारणभी कडुं नही ॥ जो तुं कहे सबका कारण आत्मा हे ॥ तो आत्मा निमित्त कारण कहेगा अ
थवा समवाय कारण कहेगा सो प्रथम पक्ष निमित्त कारण कहीयें तो नही बणता ॥ काहेतें जो आत्मा अद्वैत हे जो दुसरी वस्तु नही तो निमित्त कारण किसका होवे ॥ अरु समवाय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारण कहीये तोभी नही बणता॥काहेतें जो समवाय कारण आप प्रणमि करी कार्य होताहे॥सो आत्मा अच्युतहे अपणे स्वरूपकों त्यागता नही सो समवाय कारण केसें होवे॥तातें आत्माविषे कारण कार्य भाव नही॥ बहूरी जगत किसका कार्य होवे॥हे अंग जो कारणतें रहित दृष्ट आवे तिसकों जाणीये जो भममात्र भासताहे अरु जो तूं कहे कारण बिना पिंडाकार नही होते कछु कारणभी होवेगा तो हे अंग जो यह पुरुष देहकों त्यागता हे अरु परलोक जाय देखता हे कर्मके अनुसार सुख दुःख भोगता हे॥उस शरीरका कारण कवन कहेगा॥उह तो कारणतें नही उपजा भममात्र हे॥ तेसें यहभी भममात्र जाण॥ जेसें सुपनेविषे नाना प्रकारके आकार भासि आतेहे॥सो किस कारणतें नही उपजे जेसे आकाशविषे तरवरे अरु रंग भासते हे सो भ्रममात्र हे तेसें यह जगत भममात्र हे॥ जेसें बालककों अनहोता वैताल भासताहे तिस करी भयमान होताहे॥ तेसें यह जगत अनहोता स्वरूपके प्रमाद कर भासताहे॥ वास्तवतें परमात्मसत्ता ज्योंकी त्यों हे॥ सोइ संवेदन कर्कें जगतरूप हो भासती हे॥ तातें जगत उही रूप हे जेसें वायु चलणे ठहरणे विषे एकही रूप हे परंतु चलणे करी भासती हे ठहरणे करी नही भासती॥ तेसें चित्त संवित फुरने करीकें जगत आकार हो भासती हे॥ तिसविषे नाना प्रकारके शब्द अर्थ दृष्ट आते हे॥ अरु जब फुरणेतें रहित होतोहे तब अपणे स्वभावकों देखतीहे॥ जब संकल्पकी दृढता होगइ तब कारण कार्य भासणे लागे॥ जिसकों कारण कार्य भासताहे तिसकों जगत सत भासताहे अरु जिसकों कारण कार्यतें रहित भासताहे तिसकों जगत आत्मरूप हे जिसकों कारण कार्य बुद्धि हे तिसकों उही सत हे॥ पुण्य करेगा तब स्वर्ग सुख भोगेगा पाप करेगा तब नरक दुःख भोगेगा॥ तातें उसकों पुण्य करणा भला हे जब जीवके पाप एकठे आनि होतेहे तब दुर्भिक्ष पडतीहे अरु मृत्यु आती हे॥ जेसें पथरकी वर्षा होवे तेसें कष्ट पावतेहे॥ अरु जो मेरा निश्चय पुछे तो न पाप हे न पुण्य हे न दुःख हे न सुख हे न जगत हे॥ जब स्वरूपके प्रमाद कर्कें अहंता उदे होतीहे तब नाना प्रकारके विकार भासने हे॥ जब प्रमाद निवृत्त होताहे तब सब आत्मरूप भासताहे तातें तुं सर्व कल्पनाकों त्यागकरी अपणे स्वरूपविषे स्थित होहु॥ तब सर्व संसे मिटि जावेगे॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे सुपनविचारो नाम द्विशताधिकषट्त्रिंशततमःसर्गः॥ २३६॥ ॥ ७॥

॥ मुनीस्वरोवाच॥ ॥ हे बेधक इस प्रकार उग्रतपा ऋषीस्वर उपदेश करत भया तिस करि में अपणे सुभावविषे स्थित हुआ अरु अक्रतम पदकों प्राप्त हुआ॥उग्रतपाके साथ मानों विष्णु भगवान उपदेस कर्णे आनि बेठाहे॥ तिसके उपदेस करि में जाग्या॥ जेसें कोउ रजकरि वेष्टित स्नान करकें उज्वल होवे तेसें में हुआ॥ अपनी पूर्व स्मृति अरु अवस्थाकों सुमरण करत भया समाधिवाले सरीरकोंभी जाण्या अरु आत्मवपुकोंभी जाण्या सो उग्रतपा यह तेरे पास बेठे हे॥ ॥ अग्निरुवाच॥ ॥ हे राजन जब इस प्रकार मुनीस्वरनें कहा तब बेधक विस्मेकों प्राप्त भया॥ अरु कहा हे मुनीस्वर बडा आश्चर्य हे॥ जो तुम कहते हो सुपनेविषे मुझकों उग्रतपानें उपदेस कीया था बहुरो जाग्रतविषे कहते हो॥ जो इह बेठा हे॥ सो इह वारता तुमारी केसें मानीयें॥ जेसें बालक अपने पछावेविषे वैताल कलपे अरु कहे प्रत्यक्ष बेठा हे जेसें उह स्पष्ट नही भासता॥ तेसें तुमारा बचन स्पष्ट नही भासता॥ इह अपुर्व वारता सुणी करि मुझकों संसा उपजा हे सो तुम दूर करो॥ मुनीश्वरोवाच॥ ॥ हे बेधक यह बात आश्चर्यके उपजावणेहारी हे॥ परंतु जेसें वृत्तांत हुआ हे सो संक्षेपते तुझकों कहताहों॥ सो सुण जब उग्रतपानें मुझकों उपदेश किया तब में कहा॥ हे भगवन तुम इहां विश्राम करो॥ जिसप्रकार में रहताहों तेसें तुमभी रहो तब रहणे लागा॥ अरु में उस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का उपदेश पाय करी बिचारत भया ॥ जो यह जगत मिथ्या हे ॥ मेरा शरीरभी मिथ्या हे ॥ इसके सुख निमित्त मैं क्या जतन करता हौं इंद्रियां तो ऐसी हे जेसें सर्प होते हे ॥ इनके सेवगेवाला संसाररूप विषे बंधनतें कदाचित् मुक्त नही होता मेरे जीवणेंकों धिक्कार हे सो महा मूर्ख हे ॥ मृगकी न्यांइ मारुथलके जलपान करणे निमित दउडते हे अरु थकि पडते हे ॥ सो तृप्त कदाचित न होवेगें ॥ सो में अविद्या कर्के सुखक निमित्त जतन करता था ॥ इनकरि तृप्ति कदाचित नही होती ॥ हे वेधक ममताका रूप जो बांधव हे सो चरनविषे जंजीरहे ॥ अंधकूपविषे गिरनेका कारण हे ॥ तीन साथ बांध्या हुआ इंद्रियांके विषय रूपी कूपविषे में गिर्याथा ॥ विचार कीया जो बंधनका कारण कुटुंब हे ॥ तिसकों में त्याग जाउं ॥ बहुरी विचार कीया जो इनके त्यागविषेभी सुख नही प्राप्त होता ॥ जब अविद्याकों नष्ट करों हे बेधक एसें विचार करि में गुरुकें पासे गया ॥ अरु मनविषे विचार्या ॥ जो जगत भ्रममात्र हे ॥ गुरुभी सुपनमात्र हे इनसों क्या प्राप्त होणा हे ॥ बहुरी विचार कीया जो इह ज्ञानवान पुरुष हे ॥ इनकों अहं ब्रह्मका निश्चय हे ॥ तातें इह ब्रह्मस्वरूप हे कल्याण मूर्त्ति हे ॥ इनसों जाय प्रश्न करों अरु पूछों तब में जाय करि प्रणाम कीया अरु कहा ॥ हे भगवन् उस अपणे सरीरकों देखि आउं॥ अरु इसके सरीरकोंभी देखां जो कहां हे ॥ इस जगतका विराट पुरुष हे ॥ हे बेधक जब इस प्रकार में कहा तब ऋषिनें हसिकरि मुझकों कहा हे ब्राह्मण उह तेरा सरीर कहां हे ॥ उह सरीर दूर गए हे अब कहां देखेगा ॥ आपे तुं जाणेगा ॥ तब में हाथ जोडिकरि ऋषिकों कहा हे ऋषि अब में जाता हों मेरे आवणे पर्यंत तुम इहां बेठ रहणा ॥हे बेधक ऐसें कहिकरि में अधिभूतक देहके अभिमानकों त्यागकरि अंतवाहक सरीर साथ उड्या ॥ तब आकासमार्गविषे में उडता उडता थका परंतु सरीर कहुं न पाए ॥ तब बहुरी ऋषि पास आया अरु कहा ॥ हे पूर्व अपरके वेत्ता भूत भविष्यके जानणेहारे उह दोनों सरीर कहां गए ॥ न इस सृष्टिके विराटका सरीर भासता हे जिसके कंध मार्ग राह हम आएथे ॥ अरु न अपणा सरीर भासता हे ॥ हे संसेरूपी अंधकारके नासकर्ता सूर्य सो कहहु ॥ ॥ उपतपोवाच ॥ ॥ हे कमलनैन अरु तपरूपी कमलकी खाणके सूर्य ॥ हे ज्ञानरूपी कमलके धारणहारा विष्णुकी नाभि, हे आनंदरूपी कमलकी खाण, तुंभी सभ कछू जाणता हे अरु जाग्या हूआ हे आत्मपदविषे ॥ अरु जोगेस्वर हे ध्यान कर्के देख ॥ जो सभ वृत्तांत तुझकों दृष्ट आवे ॥ हे मुनीस्वर यह जगत असत्यरूप हे ॥ इसिविषे स्थिर वस्तु कोउ नही ॥ तूं विचार करि देख जो सरीरकी अवस्था तुझकों दृष्ट आवे ॥ अरु जो मुझकों पुछता हे तो में कहता हों हे मुनीस्वर जिस वनविषे तुम रहते थे ॥ तुमारे सरीर उहां थे ॥ एक कालमें तिस वनविषे अग्निलागी तहां जो नाना प्रकारकी वृछ वल्लीथी सो सभ जलिगइ ॥ अरु जलभी अग्निकरि क्षोभणे लागे ॥ अरु वनचारी पसू पंछी सभ जलि गए ॥ महा कष्टकों प्राप्त भए ॥ तहां तुमारे सरीर जलि गए कुटिभी जलि गइ ॥ ॥ मुनीस्वरोवाच ॥ ॥ हे भगवन उस अग्नि साथ जो संपुर्न वन जलिगया ॥ तिस अग्निका कारण कवन था जो अग्नि लगाई ॥ ॥ उपतपोवाच ॥ ॥ हे मुनीस्वर यह जगत जो हे जिसविषे हम अरु तुम बेठे हे इसिका विराट सोइ हे ॥ जिसके सरीरविषे तुम प्रवेश कीया था अरु जिसविषे उसका सरीर हे अरु तेरा समाधिवाला सरीर हे तिसका विराट ओर हे ॥ उह सृष्टि उस विराटका सरीर हे॥ हे मुनीश्वर उस विराटके सरीरविषे जो क्षोभ हूआ ॥ इस कारणतें अग्नि उत्पत्ति भइ ॥ सरीर अरु वृछ सभ जलि गए इस सृष्टिके विराटका नाम ब्रह्मा हे ॥ तिस ब्रह्माका विराट अवर हे तिसका विराट आत्मा हे ॥ सो सदा अपणे आपविषे स्थित हे तिसविषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अवर कछू बण्या नही जिस पुरुषकों उसका प्रमाद हे तिसकों उपद्रव होते भासते हे ॥ अरु कारण कार्जरूप पदार्थ भासते हे तिसकरी कर्मके अनुसार दुःख सुखकों भोगता हे ॥ जि
सकों स्वरूपका साक्षात्कार हे तिसकों जगत आत्म कर्के भासते हे सर्व उरतें ब्रह्म भासता हे ॥ हे मुनीस्वर जब इस प्रकार बनके पसू पंछी सभ जले तब तुमारी कुटीकों आग लागी
कुटी अरु तुमारे सरीर अग्निकरि जलि गए ॥ जिसके सरीरविषे तुम प्रवेस कीयाथा सोभी जलि गया ॥ अरु तुमारे सिष्यभी जलि गए उसका ओजभी जलि गया ॥ तुम दोनोंकी सं
वित आकास रूप होगइ उह अग्निभी बनकों जलायकरि अंतर्धान होगइ जेसें अगस्त मुनि समुद्रका आचमन कर्के अंतर्धान होगयाथा तेसे अग्नि बनकों जलायकरि अंतर्धान होगई ॥ तु
मारे सरीरकी राखभी नही॥जेसें सुपन सृष्टि जाग्रतविषे दिखाइ नही देती तेसें तुमारे सरीर अदृष्ट हो गए॥हे मुनीस्वर जेता कछू जगत दिखता हे सो सभ सुपनमात्र हे ॥ मैं तेरे सुपनेविषे हों अरु ज
गतका अधिष्ठान ब्रह्मसत्ता हे सो सभका अपणा आप हे॥जगत तिसका आभास हे॥जेसें संकल्प सृष्टि होतीहे जेसें सुपननगर होता हे जेसें गंधर्व नगर होता हे तेसें यह जगत हे ॥हे मुनीस्वर यह
जगत तेरे सुपनविषे स्थितहे॥अरु तुझकों चिरकालकी प्रतीत कर्के जाग्रतरूप कारणकार्य नाना प्रकारका सत होकरि भासताहे॥मुनीश्वरोवाच॥हे भगवन् जो इह सुपन नगर सत होगयाहे तो
सबही सुपन नगर सत होवेगा ?॥ उग्रतपोवाच ॥ हे मुनीश्वर प्रथम तुं सतकों जाण ॥ जो सत क्या वस्तु हे जेता कछू जगत तुझकों भासता हे सो सबही सुपन नगर हे ॥इनविषे को
उ पदार्थ सत नही ॥ ईस जगकों तुं समाधिवाले सरीरकी अपेछाकरी असत कहता हे ॥ अरु जिसकों तुं जाग्रत वपु कहता हे सो किसकी अपेछा करि कहेगा ॥ यह तो अदृष्टरूप हे
क्यों तातें इसकों सुपन जाण ॥ अरु जिस सत्ताविषे इह समाधिवाला शरीरभी सुपना हे तिसकी सत्ताकों तूं जाण तब तुझकों सत पदकी प्राप्ति होवे ॥ जेसें इह जगत आत्मसत्ताविषे
आभास फुर्या हे तेसें उहभी हे तूं जागिकरि देख ॥ इस अरु उसविषे भेद कछू नही ॥ अरु जेता कछू जगत भासता हे सो सब आत्मरूप रत्नका चमत्कार हे जेसें सूर्यकी किरणांकरि अ
नहोता जल भासता हे ॥ तेसें सब जगत आत्मविषे अनहोता भासता हे ॥ आत्माके प्रमादकरि सत भासता हे तूं अपने सुभावविषे स्थित होकरि देख ॥ मुनीश्वरोवाच ॥ हे बेधक इसप्र
कार उग्रतपा ऋषीश्वर रात्रके समे कहता हुआ सिजा परि सेन करि रहा ॥ जब केते कालतें जाग्या तब में कहा हे भगवन् अवर वृत्तांत में पाछें पूछोंगा ॥ परंतु ईह संसा प्रथम दूर क
रो जो व्याधका गुरु मुझकों तुम किस निमित्त कहा ॥ में तो व्याधकों जानताभी नही जो व्याध कवन हे ॥ उग्रतपोवाच ॥ हे दीर्घ तपस्वी तूं ध्यान कर्के देख ॥ तूं तो सब कछू जान
ता हे जिस प्रकार वृत्तांत हे तिसकों जाणेगा ॥ अरु जो मुझसों पुछता हे तो मेंभी कहताहों ॥ अरु यह वृत्तांत तो बडा हे ॥ में तुझकों संक्षेपतें कहताहों ॥ हे मुनीश्वर तुमारे देसमें राजा
की बंधी अरु लोक धर्मकों छोडि देवेगें तब दुर्भिक्ष आनि पडेगी ॥ मेघ होणेतें रहि जावेगे लोक दुःख पावेंगे अरु मरिमरि जावेंगे तेरे कुटुंबभी मरि जावेंगा कुटीभी नष्ट होजावेगी ॥ वृ
छ फल फुलतें रहित होवेंगे ॥ एक तूं अरु में दोनों बनविषे रहि जावेंगें ॥ काहेतें जो हमकों सुख अरु दुःखकी वासना नही हम विदितवेद हे ॥ विदितवेदकों दुःख केसें होवे ॥ हे मु
नीश्वर कोउ काल तो इस प्रकार चेष्टा होवेगी ॥ बहुरी कुटीके चोफेरि फूल फल तमाल वृछ कल्पतरु कमल ताल इनतें आदि लेकरि नाना प्रकारकी सामग्री होवेगी ॥ वडी सुगंध हो
रहेगी ॥ मोर अरु कोकिला आनि विराजेगें ॥ भंवरे कमल आनि गुंजार करेगे ॥ ऐसा बिलास प्रगट होवेगा ॥ मानों इंद्रका नंदनवन आनि लागाहे ऐसी दसा बहुरी होवेगी ॥ ॥इ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिश्रीयोगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे रात्रिसंवादोनाम द्विशताधिक सप्तत्रिंशत्तिमःसर्गः॥ ॥ २३७ ॥ ॥ ७॥ ॥ मुनीस्वरोवाच ॥ हे बेधक इस प्रकार उग्रतपा ऋषीस्वर मुझकों कहत भया ॥ जो हे मुनीस्वर इस प्रकार उह बन होवेगा ॥ तब तूं अरु मैं एक समै तप करते बैठे होवेंगे ॥ तहां एक व्याध मृगके पाछें दउडता तेरी कुटीके निकट आवेगा ॥ तिसकों तुं सुंदर पवित्र कथा उपदेश करेगा ॥ तिसविषे सुपनेंका प्रसंग चलेगा तिस प्रसंगकों पायकरि सुपनें अरु जाग्रतका वृत्तांत उह पुछेगा ॥ तिसकों तूं सुपनका प्रसंग कहेगा ॥ तिस सुपन प्रसंगविषे उसकों परमार्थ उपदेश करेगा ॥ काहेतें जो संतका सुभाव यह हे ॥ अरु मेरे समागमका वृत्तांत उपदेश करेगा ॥ तेरे वचनोंकों पायकरि उह पुरुष विरक्त चित्त हो करी तप करेगा ॥ तिसकरि अंतःकरन उसका निर्मल होवेगा अरु सत पदकों प्राप्त होवेगा ॥ हे मुनीस्वर इस प्रकार वृत्तांत होणाहे सो में तुझको संक्षेपतें कहाहे ॥ तूंभी ध्यान करि देखु तो इस प्रकार होणाहे ॥ इस कारणतें मे तुझकों व्याधका गुरु कहाहे ॥ हे व्याध इस प्रकार जब उग्रतपानें मुझकों कहा तब में सुणिकरि विस्मे भया जो इसनें क्या कहा बडा आश्चर्य हे ॥ इश्वरकी नेति जाणी नही जाती जो क्या होणाहे ॥ हे बेधक इस प्रकार मेरी अरु उसकी चर्चा हूई ॥ तब रात्र वितीत होगई ॥ तब में स्नानकरिकै भली प्रकार उसकी टहल करी प्रीति बढावणेके निमित्त तब उहां उह रहणे लागा॥ बहुरी में विचारत भया जो यह जगत क्या हे अरु इसका कारण कवन हे में क्या हों तब बिचार किया जो यह जगत अकारण हे॥ किसका बणाया नही सुपन मात्र हे॥ आत्मरूपी चंद्रमाकी जगतरूपी चांदणी हे॥ तिसका चमत्कार हैं उही आत्मसत्ताही घटपट आदिक आकार हो भासती हे॥ तातें न कोउ कर्महे न क्रिया हे न कर्ता हे न में हों न जगत हे ॥ अरु जो तूं कहे हे क्यों नही॥ सर्व अर्थ सिद्ध होतेहेग्रहण त्याग सिद्ध होतेहे तो सुण ग्रहन त्याग जो होता हे सो पिंड करी होता हे॥ अरु पिंडतत्वका होता हे॥ सो तो इह पिंड न किसी तत्व करी बण्या हे॥ न अवर किसि माता पिता करी॥ यह तो सुपनेविषे फूरिआया इसका कारण कवण कहीये ॥ अरु जो कहीए भ्रम मात्र हे तो भ्रमका कारण कवण हे ॥ भ्रांतका द्रष्टा कवन हे॥ जिस शरीरकरी दृष्ट आता था इसका द्रष्टारूप में सो तो भस्म होगया॥ तातें जगत अवर कछू वस्तु नही ॥ केवल आदि अंततें रहित आत्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे सो यह मेरा स्वरूप हे ॥ उहां यह जगतरूप होकरी भासता हें ॥ अवर जगत कुछ वस्तु नही॥ केवल ब्रह्मसत्ता स्थित हे ॥ पृथ्वी जल तेज वायु आकाश आदिक पदार्थ सब आत्मरूप जेसें समुद्रतरंगरूप हो भासताहे परंतु कछू अवर नही ॥ तेसें नाना प्रकार हो भासता हे आत्मा कछू अवर नही॥ अरु ब्रह्मसत्ताही निराभास हे आभासभी कछू हुआ नही॥ केवल चैतनसत्ता ऐसें रूप होकरी भासती हे ॥ हे बेधक इस प्रकार में विचार करिकें विगतज्वर हुआ मुनीश्वरके वचनों करि पर्वतकी न्यांइं अचल अपणे सुभावविषे स्थित हूआ जो कछू इष्ट अनिष्ट पदार्थ प्राप्त होवे तिसविषे सम रहों ॥ अभिलाषतें रहित सब अपणी चेष्टाकों करों ॥ परंतु अपणे सुभावविषेस्थित रहों ॥ हे बेधक सुख भोगणेके निमित्त न मुझकों जीवणेकी इछा हे न मरणेकी इछा हे ॥ न जीवणेविषे हर्ष हे न मर्णेविषे सोक हे ॥ सदा आत्मपदविषे स्थित हों कछू संसे मुझकों नही ॥ संपूर्ण संसे फुरणेविषे हे सो फुरणा मेरेविषे नही तातें संसारभी नही ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे रात्रप्रबोधो नाम द्विशताधिकअष्टत्रिंशत्तमःसर्गः ॥ २३८ ॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥ ॥ ७॥

॥ मुनिस्वरोवाच ॥ हे व्याध इस प्रकार में निर्णे किया तब तीनों ताप मेरे नष्ट भए ॥ अरु वीतराग निसंक हुआ किसी पदार्थकी तृष्णा मुझकों न रही ॥ अरु निरहंकार हुआ ॥ अ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नात्माविषे जो आत्म अभिमान था सो निवृत्त हो गया ॥ परम निर्वाण हुआ निराधार अरु निराधेय हुआ अपणे सुभाव आत्मत्व विषे में स्थित सर्वात्मा हुआ ॥ हे बेधक जो कछू शरीरका प्रारब्ध आनि प्राप्त होवे॥तिसविषे जथाशास्त्र विचरों॥परंतु निश्चय कर्तृत्वका अभिमान न होवे॥अरु जगत मुझकों आत्मरूप भासे अरु तृष्णा कर्णेवाली मिथ्या बुद्धि आभासमात्र हे॥ सो आभास कछू वस्तु नही ॥ चिदाकास आत्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ हे बेधक मुनीश्वरका कह्या वृत्तांत होता गया हे ॥ तुं मेरे पास आनि प्राप्त भया हे ॥ जो कछू उपदेश किया हे॥सो में तुझकों कहा हे ॥ जो परम पावन सबका सार हे सो में उपदेश कीया हे॥ जिस प्रकार जगतके पदार्थ तुं अरु में अरु जाग्रत वृत्तांत हे सो में तुझकों कहाहे ॥व्याधोवाच ॥ हे मुनिश्वर इस प्रकार हुआ तब तुं अरु में अरु ब्रह्मादिकभी सब सुपनेंके हुए क्यों ॥ सो असतही सतकी न्यांइ भासते हे ॥ मुनिश्वरोवाच ॥ हे व्याध तुं अरु में अरु ब्रह्मांते आदि तृण पर्यंत सभ जगत् सुपनेके पदार्थ हे ॥ न यह जगत सत हे न असत हे ॥ न मध हे अनिर्वचनीय हे॥काहेतें जो अनुभवरूप हे ॥ हे व्याध जो अनुभव करकै देखीए तो उही रूप हे ॥ जो अनुभवतें भिन कहीए तो हेही नही॥जेसें सुपनेकी सृष्टि अनुभवविषे फुरती हे॥जो अधिष्टानकी उर देखीये तो उही रूप हे॥उसतें इतर कहणेविषे नही आता॥ हे बेधक जेसें कडुं नगर देख्याहे अरु अब दूर हे॥जो स्मृति करकै देखीये तो भासता हे परंतु कछू बन्या नही स्मृतिमात्र हे॥ तेसें जेते कछु पदार्थ भासते हे सो सब संकल्पमात्र हे कछु बने नही॥तुं अपणे स्वभावविषे स्थित होकरी देख ॥ तुं तो बोधवान हे मिथ्या भमविषे क्यों पड्या हे ॥ हे व्याध में तुझकों उपदेश किया हे तिस करी तुझकों विश्राम हुआ हेके नही हुआ॥जो पद पदार्थविषे विश्राम हुआ हे जो अेसी सत्ता हे परम पदविषे क्षणभी विश्राम नही पाया॥काहेतें जो दृढभावना नही हुइ॥ हे बेधक परम पद पावणेका मार्ग यह हे जो संतकी संगत अरु सत शास्त्रकों विचारणा॥ तिनके अभ्यासविषे दृढ अभ्यास करणा ॥ इस मार्ग विना सांति प्राप्त नही होती जब दृढ अभ्यास होवे तब सांति प्राप्त होवे ॥ अरु चित्त निर्वाण हो जावे ॥ द्वैत अद्वैत कल्पना मिटि जावे इसिका नाम निर्वाण कहते हे ॥ अरु जबलग चित्त निर्वाण नही भया तबलग राग दोष नही मिटता ॥ अरु जब अभ्यासके बलकरी चित्त निर्वाण हो जाता हे तब अविद्या नष्ट होजातीहे ॥ अरु आत्मपद प्राप्त होताहे ॥ सांत शिवपदकों पावताहे ॥ जो मान अरु मोहतें रहित हे ॥ अरु संगका दोष जिसनें जीत्याहे ॥ कीसीके संगकरी बंधमान नही होता अरु अध्यात्म विचार नित करताहे सर्व कामना जिसकी निवृत्त हूई हे ॥अरु इष्टके राग दोष धुंधतें मुक्त हे॥सुख दुःखविषे सम रहताहे अेसा जो ज्ञानवान पुरुषहे सो अविनासी आत्मपदकों पावताहे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे यथार्थोपदेसो नाम द्विशताधिकैकोनचत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ २३९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ अग्निरुवाच ॥ हे राजा विपश्चित जब इस प्रकार मुनीश्वरनें कहा तब बेधक बडे आश्चर्यकों प्राप्त हुआ ॥ मुनीश्वरके वचन सुणि करी मूर्तिवत हो गया ॥ जेसें कागद उपर मूरति लिखी होतीहे तेसें आश्चर्य करी स्थित भया ॥ अरु संसेके समुद्रविषे डुबि गया ॥ जेसें चक्र उपर चडा बासन भमता हे तेसें उह संसेविषे भमणे लागा ॥ मुनीश्वरका उपदेश सुण्या परंतु अभ्यास बिना आत्मपदविषे विश्रांति न पाइ ॥ हे राजन परम वचनोंकों तिसनें अंगीकार न किया ॥ जेसें राखविषे आहूति पाइ निरर्थक होतीहे तेसें मूर्खकों उपदेश करणा निरर्थक होताहे ॥ मूर्खता करकै उह संसेविषे रहा अरु विचारत भया जो इस संसार अविद्यक हे तो में इसका अंत लेउं ॥ जो मुझकों आत्मपद भासे तातें तप करों ॥ हे राजा विपश्चित इ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स प्रकार विचार करी उठ्या ॥ उठि करी उनके पास फिरणे लागा ॥ अरु पवित्र चेष्टा करणे लागा व्याधका धर्म तिसनें त्याग किया ॥ जिस प्रकार उह चेष्टा करे तेसें उहभी अधिक चेष्टा करे ॥ बडा उग्रतप करणे लागा ॥ जब सहस्र वर्ष तप कर्तें बीतित भया परंतु मनविषे कामना यही राखी ॥ जो मेरा शरीर बडा होवें दिनदिनविषे बहुत भोजन बढे ॥ में अविद्यक संसारका अंत लेउं जो कहां लग चला जाता हे जब अविद्याका अंत आवेगा तब आगें आत्माका दर्शन होवेगा ॥ तब सहस्र वर्ष उपरांत समाधितें उतर्या ॥ अरु गुरूके निकट आय करी प्रणाम किया अरु कहा ॥ हे भगवन में एता काल तप किया हे ॥ परंतु सांति मुझकों प्राप्त नही भइ ॥ मुनिश्वरोवाच ॥ हे बेधक तुझकों उपदेश किया हे तिसका तुझनें भली प्रकार अभ्यास न किया ॥ इस कारणतें तुझकों सांति नही प्राप्त भइ ॥ हे बेधक में तेरे रिदेविषे ज्ञानरूपी अग्निकी चिणगारी डारीथी परंतु तुझनें अभ्यासरूपी पवन कर्के प्रज्वलित न करी तातें यहभी आछादी गइ ॥ जेसें बडे काष्टके नीचे रंचक चिणगारी आछादी जाती हे ॥ हे बेधक तुं न मूर्ख हे न पंडित हे ॥ जो तुं पंडित होता तो आत्मपदविषे स्थिति पावता ॥ अरु यहभी जब नष्ट नही होवेगा तब अभ्यासकी दृढता होवेगी ॥ तब उह ज्ञान अरु सांति आनि उदे होवेगी ॥ अब जो तेरे रिदेविषे हे भविष्यतभी होणी हे सो में तुझकों कहता हों ॥ हे व्याध यही तुझनें भली प्रकार विचार्या हे जो संसार अविद्यक हे ॥ इसका में अंत लेउं जो कहांलग चल्या जाता हे ॥ इस कारणतें में शरीर बढावों अरु इसका अंत किसी प्रकार देखों ॥ अब तेरे चित्तविषें यही निश्चाहे अरु आगें तेरे यह करणा हे ॥ जो सौ जुग पर्यंत उग्र तप करेगा तब तुझ उपर परमेष्टी ब्रह्मा प्रसंन होवेगा ॥ तब देवता सहित तेरे ग्रहविषे आवेगा ॥ तुझकों कहेगा कछु वर मांग तब तूं कहेगा हे देव अैसा अविद्यक जगत हे ॥ अविद्या किसी अणुविषे हे जेसें दर्पणविषे किसी ठोर मलीनता होतीहे तिसके नाश हुए दर्पण शुद्ध होता हे ॥ तेसें आत्माके किसी कोणविषे अविद्यारूपी मलीनता हे ॥ तिसके नाश हुए उलंघ गये चिदात्माका साक्षात्कार मुझकों होवेगा ॥ जब अविद्यारूपी जगतका अंत देखोंगा तब आत्मा मुझकों भासेगा ॥ मेरा शरीर घडीघडीविषे जोजन पर्यंत बढता जावे ॥ जेसें गरुडका वेग होताहे तेसें बढता जावे अरु मृत्युभी मेरे वस होवे शरीरभी अरोग होवे अरु ब्रह्मांड खपर कोंभी लंघि जावों ॥ अरु जहां मेरी इछा होवे तहां चला जाउं ॥ मुझकों रोके कछु नही जब संसारका अंत देखोंगा ॥ तब आत्माकों प्राप्त होउंगा ॥ हे देव एते वर देउ ॥ जो मेरा मनोरथ पूर्न होवे अवर कछु नही कहणा ॥ हे बेधक जब इस प्रकार तुं वर मागेगा तब ब्रह्माजी कहेगा ॥ जो अैसेंही होवे तब तेरा तप कर्के दुर्बल हुआ शरीर बहुरी चंद्रमा अरु सूर्यकी न्यांइ प्रकाशवान होवेगा ॥ अरु घडीघडीविषे जोजन पर्यंत बढता जावेगा ॥ जेसें गरुडका तीक्ष्णवेग करी चलणाहे ॥ तेसें तेरा शरीर वेग करी बढता जावेगा ॥ जेसें प्रातःकालका सूर्य उदे होता हे अरु प्रकाश बढता जाता हे तेसें तेरा शरीर बढता जावेगा ॥ अरु चंद्रमा सूर्य अग्निकी न्यांइ प्रकाशवान होवेगा ॥ ब्रह्माजी वर देकरी अंतर्धान हो जावेगा ॥ अपणी ब्रह्मपुरीविषे जाय प्राप्त होवेगा ॥ अरु तेरा सरीर प्रलेकालके समुद्रकी न्याई बढता जावेगा ॥ अरु जेसें वायु करी सुके तृण उडते हे ॥ तेसें तुजकों ब्रह्मांड उडते भासेगे तब तेरा शरीर बढता ब्रह्मांड खपरकोंभी लंघ जावेगा ॥ तिसके परे आकाश भासेगा ॥ बहुरी ब्रह्मांड भासेगा आगे बहुरी ब्रह्मांड ॥ इसी प्रकार तूं केइ ब्रह्मांड लंघता जावेगा परंतु तुझकों खेद कछू न होवेगा ॥ महा आकाशकोंभी तूं आछादि लेवेगा जहां किसी तत्वका आवरण आवेगा तिसकों तुं वर प्राप्त देह करी लंघता जावेगा सूक्ष्मता कर्के ॥ हे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेधक इसी प्रकार केइ सृष्टि लंघ जावेगा ॥ केसी सृष्टि हे जो इंद्र जालवत हे ॥ जो दीर्घदर्सी हे सो इनकों असत जानते हे अरु जो प्राकृत जन हे तिनकों जगत सत भासते हे ॥ अरु ज्ञानवानकों मिथ्या भासते हे ॥ तिस मिथ्या जगतकों तुं लंघता जावेगा तहां जाय स्थित होवेगा जहां अनंत सृष्टि फुरती भासेगी ॥ जेसें समुद्रविषे अनेक तरंग उठते हे तेसें तुमकों सृष्टि फुरती भासेगी ॥ परंतु जिसविषे सृष्टि फुरती हे ॥ तिस अधिष्टानका तुझकों ज्ञान न होवेगा ॥ तहां तुं देखेगा जो में बडा उत्कृष्ट हुआ हों ॥ जरु ऐसा अभिमान तुझकों उदे होवेगा तब तपका फल वैरागभी आनि उदे होवेगा ॥ अरु साथही यह संस्कार तेरे रुदेविषे आनि फुरेगा ॥ तिस करी शरीरका तुं निरादर करेगा ॥ अरु कहेगा हा कष्ट हा कष्ट ॥ हे दैव यह क्या शरीर तुझनें मुझकों दीया हे ॥ जगतकें अंत लेणेकों में शरीर बढाया था सो तो अंत कडुं न आया काहेतें जो अविद्या नष्ट न भइ ॥ अविद्या तब नष्ट होतीहे जब ज्ञान होताहे ॥ आत्मज्ञान तब होताहे जब सत शास्त्रका विचार अरु संतका संग होताहे ॥ जो संग अरु सत शास्त्र मुझकों प्राप्त होवे तब ज्ञान उपजेगा ॥ यह तो मुझकों एसा शरीर प्राप्त भया हे जो बडा भार उठाइ फिरता हों ॥ अनेक सुमेर पर्वत होवे तोभी इसके पास तृणवत हे॥ एसा उत्कृष्ट मेरा शरीर हे इस शरीर साथ में किसकी संगत करों अरु किस प्रकार शास्त्रका श्रवन करों ॥ इस शरीर मुझकों दुःख दाइ हे॥ तातें इस शरीरका त्याग करों॥हे बेधक एसें विचार करी तुं प्राणायाम करेगा॥तिसकी धारणा करकेंस रीरकों त्याग देवेगा जेसें पंखी फलकों खाय करी गिटेको त्याग देता हे जेसें इंद्रके वज्र करी खंडित हुएतें पर्वत गिरते हे ॥ तेसें एक सृष्टि भ्रमविषे तेरा शरीर गिरेगा तिसके नीचे केइ पर्वत नदीयां जीव चूरन होवेगें ॥ तहां बडा खेद होवेगा तब देवता चंडिकाका आराधन करेंगे ॥ सो चंडिका भगवती तेरे शरीरकों भोजन करी जावेगी॥तब सृष्टिविषे बहुरी कल्याण होवेगा ॥ इस वनविषे जो तमाल वृछ हे ॥ तिसके निचे तुं तप करेगा इह तेरी में भविष्य कही हे अब जेसी तेरी इछा होइ तेसें करु॥ व्याधोवाच ॥ हे भगवन बडा कष्ट हे ॥ जो में एतें खेदकों प्राप्त होउंगा ॥ तातें सोइ उपाय करहू जिस करी इह भावना निवृत्त हो जावे॥ मुनीश्वरोवाच॥हे बेधक जो कछु वस्तु होणी हे सो अन्यथा कदाचित कछुभी नही होती॥जो कछु शरीरकी प्रारब्ध सो अवश्य होतीहे ॥ जेसें चिलतें छुटा बाण तब लग चला जाता हे जबलग उसविषे वेग होताहे वेग जब पूर्न होता हे तब पृथ्वीपर गिरपडता हे अन्यथा नही होता तेसें ही जेसा प्रारब्धका वेग उछलताहे तेसें ही होवेगा ॥ जो भावी फिरनेकी शक्ति होवे जीव उपासी, तो बांया चरण दाहनें करहि दाहना बांही करहि तो एसें नही होता ॥ तो हुआ हे सो होणा हे सोइ हे ॥ जोतिस शास्त्रवाले जो भविष्यत दसा आगें कहतें हे अरु तेसेंही होताहे ॥ तब उसी प्रकार होताहे ॥ क्यों जो होणी होतीहे जो न होवे तो क्यों कहे तातें भावी मिटती नही ॥ हे बेधक में तुझकों दो मार्ग कहे हे ॥ जबलग इसकों कर्मकी कल्पना स्पर्श करती हे तबलग कर्मके बंधनतें छुटता नही ॥ अरु जो कर्मकी कल्पना आत्माकों स्पर्श न करे तो कर्म कोउ नही बंधन करता॥काहेतें जो उसकों आत्मा अद्वैतका अनुभव होताहे ॥ द्वैतरूप कर्म दिखाइ नही देते॥सुख दुःख सर्व आत्मरूप हो जाते हे॥अरु कर्म तबलग बंधन करते हे जबलग आत्मबोध नही हुआ॥जब आत्मबोध होताहे तब सर्व कर्म दग्ध हो जातेहे ॥ इ०यो०नि०प्र० भविष्यतकथावर्णनं नाम द्विशताधिकचत्वारिंशत्तमःसगः॥२४०॥

॥ व्याधोवाच ॥ ॥ हे भगवन इह जो तुम मुझकों कहा सो सुण करकें आश्चर्यकों प्राप्त हुआ हों ॥ भला सरीर गिरनेतें उपरांत मेरी अवस्था क्या होवेगी ॥ जब बिस्तार रूप वास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ना सरीर आकासरूप होवेगा ? ॥ ॥ मुनीस्वरोवाच ॥ ॥ हे बेधक तेरा सरीर गिरेगा तब तेरी संवित प्रांण वासना सहित आकासरूप हो जावेगी ॥ महासूक्ष्म अणुवत हो जावेगी ॥ तिस संवितविषे तुझकों बहुरी नाना प्रकारका जगत भासेगा पृथ्वी देश काल पदार्थ सब भासि आवेगें ॥ जेसें सूक्ष्म संवितविषे सुपनका जगत भास आता हे तेसें तुझकों जगत भासि आवेगा ॥ तहां तेरी संवितविषे इह आनि फुरेगा जो में राजा हों अष्ट वर्षका हों अरु मेरे पितामाका नाम इंद्र हे ॥ अरु माताका नाम प्रद्युम्नकी पुत्री बधलेखा हे ॥ अरु मेरे पिता मु झकों राज देकरि बनकों गया हे अरु तप करणे लागा हे ॥ अरु चारो उर समुद्र पर्यंत हमारा राज हे ॥ हे बेधक तहां तेरा नाम सिद्ध होवेगा ॥ तहां तूं केई सतवर्ष पर्यंत राज करेगा अरु नाना प्रकारके विषयकों भोगेगा ॥ हे बेधक एक विदुरथ नामा राजा पृथ्वीविषे होवेगा तेरे साथ सत्रुभाव करेगा ॥ तेरी पृथ्वी सीमा लेणेका जतन करेगा ॥ तब तूं मनविषे विचार करेगा जो बडा सिद्ध हों बहुत सत वर्ष में निर्विघ्न भोग भोगे हे ॥ परंतु एक विदुरथ नाम शत्रु हे तिसकों नास करों ॥ हे बेधक तिसके मारने निमित्त तूं सेनाकों ले चढेगा ॥ सो-चार प्र कारकी सेना नासकों प्राप्त होवेगी ॥ हस्ती घोडे रथ प्यादा चार प्रकारकी सेना हे ॥ दोनों उरकी सेना नष्ट होवेगी ॥ अरु तुम रथतें उतरि करि परस्पर युद्ध करोगे ॥ तुझकोंभी बहुत स स्त्र लगेंगे शरीर काट्या जावेगा ॥ तोभी तुं उसके सन्मुख जाय जुद्ध करेगा उसकों मारेगा ॥ टंगा काटि देवेगा कुहाडे साथ तिसकों मारिकें बहुरी अपणे गृहविषे तूं आवेगा ॥ सब दि ग्पाल तुझसों भय पावेगें ॥ तूं बडा तेजवान होवेगा ॥ जो बडा आश्चर्य हे ॥ विदुरथकों जीति करी तुझनें जमपुरि पठाया हे ॥ बडा आश्चर्य हे बडा आश्चर्य हे तब सिद्ध राजा तूं कहे गा हे मंत्री ईसविषे क्या आश्चर्य हे ॥ मेरे भयकरि तो दिग्पालभी कंपते हे ॥ अरु प्रलेकालके समुद्र मेघवत मेरी सेना हे ॥ किसी उरतें आदि अंत नही आती ॥ विदुरथके जीतणेवि षे मुझकों क्या आश्चर्य हे ॥ तब मंत्री कहेगा हे राजा एती सेना तेरे साथ हे तो क्या हुआ ॥ उस विदुरथकी स्त्रीकों तुम नही जानतें ॥ सो केसी देवी हें ॥ जिसके क्रोध फुरणे करी संपूर्न विश्व नास होजाती हे तिसकों तिसकी स्त्री लीलानें तप कर्णेतें वस कीया हे ॥ जो उह माता सरस्वती ज्ञानशक्ति हे ॥ अरु सर्व भूतके रीदेविषे स्थित हे ॥ जेसा तिसविषे कोइ अ भ्यास करता हे सोई सरस्वती सिद्ध करतीहे ॥ हे राजन् उह राजा अरु तिसकी स्त्री लीला सरस्वतिसों मोक्ष मांगतेथे जो किसी प्रकार हम संसार बंधतें मुक्त होवें ॥ इस कारणतें उह मो क्ष भाव हुए अरु तेरी जय हुइ ॥ राजोवाच ॥ हे अंग जो सरस्वती मेरे रिदेविषे स्थित हे तो मुझकों मुक्त क्यों नही करती ॥ मेंभी सदा सरस्वतीकी उपासना करताहों ॥ मंत्रीउवाच ॥ हे राजन सरस्वती जो चित्त संवित हे तिसविषे जेसा निश्चय होता हे तिसकी सिधता होती हे ॥ जो हे राजन तूं अपणी जय ही सदा मांगता था इस कारणतें तेरी जय हुइ अरु उह मुक्ति मांगताथा उसकों मुक्ति हुइ ॥ उसका संसकार पिछला उज्वल था तिसकरि मुक्त भया ॥ अरु तेरा संसकार पिछले जनमका तामसी था तिस कारणतें तुझकों इच्छा न भइ अ रु सांतिभी प्राप्त न भइ ॥ अरु आदि परमात्म सत्तासों जो सभ पदार्थ प्रगट हूए हे सो सुण ॥ केवल जो आत्मासत्ता निष्किचन पद हे सो सदा अपणे सुभावविषे स्थित हे ॥ तिसविषे चैतनता संवेदन फुरती हे ॥ अहं अस्मी जो में हो इस भावनाका नाम चित्त हे ॥ तिस चैतनता देह इंद्रियां प्राण मन बुद्धि आदिक दृश्य जगत कलप्या हे ॥ तिस कल्पना करि विश्व चित्तविषे स्थित हे ॥ अरु चित्त आत्मासों फुर्‍या हे प्रमाद करकें देहादिक कोउ कल्पा हे ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ हे साध आत्मा तो निष्किचन केव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ल पद निर्विकार हे ॥ तिसविषे तामसी देह कहांतें उपजी ? ॥ ॥ मंत्रीउवाच ॥ ॥ हे राजन जेसें सुपने विषे प्रमाद करकै तामसी वपु दृष्ट आता हे परंतु हे नही ॥ तेसें यह आकारभी दृष्ट आते हे ॥ परंतु हे नही अज्ञान करकै भासते हे ॥ तातें तुझकों प्रमाद हुआ हे ॥ तव वासनाके अनुसार जनम पावता फीऱ्या हे इस प्रकार तेरे बहुत जनम बीते हे ॥ परंतु पिछला शरीर जो तुझनें भोग्या हे सो महातामसी था ॥ अर्थ यह जो तामस तामसी था ॥ इस कारनतें तुझकों मोक्षकी इछा न भइ ॥ हे राजन तेरे बहुत ज नम बीते हे तिनकों में जानता हों तूं नही जानता ॥ राजोवाच ॥ ॥ हे निर्मल आत्मा तामस तामसी किसकों कहीए ॥ मंत्रीउवाच ॥ ॥ हे राजन एक सात्विक सात्विकी हे एक केवल सात्विकी हे ॥ एक राजस राजसी हे एक तामस तामसी हे ॥ एक केवल तामसी हे ॥ सो भिन्न भिन्न सुण ॥ हे राजन जो निर्विकल्प अचैतन चिन्मात्र सत्तासों संवित फुरि हे तिनकी अहंप्रतीत अधिष्टानविषे रहिहे अवर निश्चयकों नही प्राप्त भइ ॥ अनात्म भावकों स्पर्श नही कीया अैसे जो ब्रह्मादिक हे सो सात्विक सात्विकी हे ॥ अरु जिनकों विभूति सात्विकी प दार्थ भासणे लागे हे॥ अरु स्वरूपका प्रमाद हे ॥ बुद्धिसाथ स्पर्श कियाभी अरु न कियाभी सो केवल सात्विक हे ॥ अरु जिसकी संवितकों बुद्धिसाथ संबंध हुआ ॥ अरु नाना प्रकारके राजसी पदार्थविषे सत्य प्रतीत हुइ हे॥ अरु राजस कर्मविषे दृढ अभ्यास हे ॥ तिसके अनुसार सरीरकों धारतें चले गए स्वरूपकी उर नही आए ॥ चिर पर्यंत अैसे रहे सो राजस राजसी फुरणा हे ॥ अरु जिनकों बोधविषे अहं प्रतीत भइ स्वरूपका प्रमाद हे अरु जगत सत्य भासता हे ॥ राजसी पदार्थविषे अधिक प्रतित हे ॥ राजसी कर्मका अभ्यास हे ॥ तिसके अनु सार जनम पावते हे बहुरी सीघ्रही स्वरूपकी उर आवे ॥ तिनका नाम केवल राजसी हे ॥ सो राजस राजसीतें श्रेष्ट हे ॥ अरु जिनकों स्वरूपका प्रमाद हे अरु जगतविषे सत प्रतीत हुइ हे ॥ तिस जगतविषे जो तामस कर्म हे तिन कर्मविषे दृढ अभ्यास हूआ हे तिसकरि महा मूढ जनमकों पावते चिर पर्यंत चले जाते हे ॥ दैव संयोगतें कबी मोक्षकी संगति आनि प्राप्त होती हे तोभी त्याग जाते हे सो तामस तामसी हे ॥ अरु जिनकों स्वरूपका प्रमाद हूआ हे अरु तामसी कर्मकी रुचि हे अरु तिन कर्मके अनुसार जनम पावतें जाते हे ॥पावतें पावतें जो हटि पडा तामसी कर्मकों त्यागकरि मोक्ष परायण हो गया सो केवल तामसी हे ॥ तामस तामसीतें श्रेष्ट हे ॥ हे राजन तुं तामस तामसी था ॥ इस कारणतें सरस्वतीसों तुं अपणी जयही मागता रहा ॥ मोछका अभ्यास तुझनें न कीया ॥ ॥ राजोवाच ॥ ॥ हे निर्मल चित्त मंत्री में तामस तामसी था इस कारणतें मोछ इछा न करी परंतु अब मुझ कों सोइ उपाय कछू कह जिसकरि अहं भाव मेरा निवृत्त होवे अरु आत्मपदकी प्राप्ति होवे ॥ ॥ मंत्रीउवाच ॥ ॥ हे राजन निश्चय करि जाण जो कोउ केसे पदार्थकी इछा क रता हे तिसकों उह पदार्थ प्राप्त होता हे ॥ अरु जिसकी भावना करि अभ्यास करता हे ॥ उह पदार्थ निःसंदेह प्राप्त होता हे अरु जिसका दृढ अभ्यास करता हे उही रूप हो जा ताहे ॥ अैसा पदार्थ त्रिलोकीविषे कोउ नही जो अभ्यासके वशतें न पाइ अें ॥ जो प्रथम दिनविषे कोउ विकर्म कोउ तें हूआ हे अरु अगले दिन सुभकर्म करे तब उह विकर्म लोप हो जाता हे ॥ सुभ कर्मही मुख्य हो जाता हे तो तुं आत्मपदका अभ्यास करेगा तब तुझकों आत्मपद प्राप्त होवेगा ॥ तेरा जो तामस तामसी भाव हे सो निवृत्त हो जावेगा ॥ हे राज न जो पुरुष किसी पदार्थ पावणेकी इच्छा करता हे अरु हटिकरि फिरे नही ॥ तो अवश्य तिसकों पावता हे ॥ देह इंद्रियांका अभ्यास इसकों दृढ हो रहा हे ॥ तिसकरि बहुरी बहुरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देह इंद्रियांकों पावता हे ॥ जब तिनतें उलटकरि आत्मका अभ्यास करे तब आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी ॥ देह इंद्रियांका वियोग हो जावेगा ॥ तातें सदा आत्मपदका अभ्यास कर
ड ॥ तिसकरि आत्मपद प्राप्त होवेगा ॥ ॥ मुनीस्वरोवाच ॥ ॥ हे बेधक इस प्रकार तूं सिध राजा होवेगा अरु मंत्री तुझकों उपदेस करेगा ॥ तब तूं राजका त्याग करेगा ॥ अरु बन
विषे जावेगा ॥ उपदेस करणेवाला मंत्री अरु अवर मंत्री सेना संयुक्त तुजकों कहेगे जो तूं राज कर ॥ सभ कहि रहेगे परंतु चित्त विरक्त तेरा होवेगा ॥ राजकों अंगीकार न करेगा ति
स बनविषे संतका स्थान होवेगा तहां जाय करि तुं स्थित होवेगा ॥ परम विराग संपन्न होवेगा ॥ तब उनकी कथा प्रसंग तुझकों स्पर्श करेगा ॥ अरु संततें कछू मांगीये नही तोभी अ
मृतरूपी वचनोंकी वर्षा करतें हे ॥ जेसें पुष्पतें सुगंध मांगीये नही तोभी प्रापति होती हे ॥ तेसें संतजनतें मागे विनाभी अमृत प्राप्त होता हे ॥ जब संतकें अमृत वचन सुणता हे तब
इसकों विचार उत्पत्ति होता हे जो में कवन हों ॥ अरु यह जगत क्या हे अरु जगत किसतें उपजा हे ॥ तब तुं उनके रिदेकों पाइकरि इस प्रकार जानेगा जो में अचेत चिनमात्र स्वरू
प हों ॥ अरु जगत मेरा आभास हे ॥ अरु चित्तका फुरणाही जगतका कारण हे ॥ सो चित्तही मेरेविषे नही ॥ तो जगत केसें होवे जगतभी मेरेविषे हे नही ॥ में अपणेंही आपविषे
स्थित हों ॥ हे बेधक इस प्रकार सर्व अर्थतें मनकों शून्य करकें अपणे स्वरूपविषे स्थित होवेगा ॥ तब परमानंद निर्वाण पदकों प्राप्त होवेगा ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रक
रणे सिद्धनिर्वाण वर्णनं नाम द्विशताधिकचत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ २४१ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ मुनीश्वरोवाच ॥ ॥ हे बेधक इसप्रकार तेरी भावी हे ॥ सो सब में तुझकों
कही हे ॥ आगे जो भला जाणता हे सो तुं करु ॥ अग्निरुवाच ॥ ॥ हे राजा विपश्चित इसप्रकार मुनीश्वरनें बेधककों कहां ॥ तब बेधक आश्चर्यकों प्राप्त हुआ अरु उहांतें उठि खडा
हुआ ॥ मुनीश्वर सहित स्नानकों गए ॥ अरु दोनों तप करे ॥ अरु शास्त्रकों विचारे ॥ जब केता काल वितीत भया तब मुनीस्वर निर्वाण हो गया ॥ तहां बेधकही तप करणेकों समर्थ
भया ॥ जो किसी प्रकार मेरी अविद्या नष्ट होवे ॥ हे राजा विपश्चित सो जुग पर्यंत बेधकने तप किया तब ब्रह्माजी देवताकों साथ ले करी आया अरु कहा कछु वर मांग॥तब उस बेध
कनें कहा जो मेरा शरीर वडा होवे में अविद्याकों देखों॥हे राजन बेधक जानत भया जो इस वर मागेतें मेरा भला नही परंतु दृढ भावनाके बलतें जाणि करी यही वर माग्या ॥जो मेरा
शरीर वडा होवे घडी घडी विषे जोजन पर्यंत वढे॥तब ब्रह्माजीनें कहा एसेंही होवेगा॥इस प्रकार कही करी ब्रह्माजी अंतर्धान होगए॥तब उसका शरीर वढणे लागा एक घडीमें एक जो
जन बढे॥कल्प पर्यंत उसका शरीर बढता गया॥केइ ब्रह्मांड पर्यंत चल्या गया॥जिस उरकों देखों तिस उर अनंत सृष्टि दृष्ट आवे अविद्यारूप जब थाका तब फिर्या॥ जो अविद्याका अंत
तो नहीआता इस शरीरकों में कहां लग उठाइ फिरों॥इसका अब त्याग करों तब आत्मपदकों प्राप्त होउंगा॥हे राजा विपश्चित तब प्राणकों ऊर्ध खेंचि करी शरीरकों त्याग दीया॥उही शरीर
इहां आनि पडा हे॥जिस ब्रह्मांडतें यह गिर्याहे सो हमारे सुपनेकी सृष्टि हे अर्थ यह जो अन्य सृष्टिका था ॥ सुपनवत इस सृष्टिविषे इसकी प्रतिमाआनि पडी हे॥ अरु इहां जागृत सृष्टि
विषे आनि पडा हे॥ तिस पृथ्वी पहाड सब नाश करी डारे हे॥अरु जहांतें गिर्याहे तहां आकाशविषे तरवरेकी न्यांइ उनकों भासता था॥अरु इहां इस प्रकार गिर्या हे॥जेसें इंद्रका वज्र होताहे॥
हे विपश्चितविषे श्रेष्ठ उही बेधक महा सब था जब उसका शरीर गिर्या ॥ तब भगवती उसका रक्तपान कर्या तिसकरी उसका नाम रक्ता भगवती हूआ ॥ अरु अवर जो शरीरकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सामग्री रही सो मेधा पृथ्वी भई ॥ जब चिरकाल वितीत भया तब मृत्तिका पृथ्वी होगई तिस पृथ्वीका नाम मेदिनी पडा ॥ अरु ब्रह्माजीनें जो नौतन सृष्टि रची हे तिस पृथ्वीपर अब कल्याण हूआ हे अब जहां तेरी इछा होवे तहां तूं जावे ॥ मेंभी अब जाताहों इंद्रकों सुवा यज्ञ करणा हे तिसनें मेरा आवाहन कीया हे तहां में जाता हों ॥ भासोवाच ॥ हे राजा दशरथ इस प्रकार मुझकों कहीकरी अग्नि देवता अंतर्धान होगया ॥ जेसें महास्याम मेघतें दामनी चमत्कार करके अंतर्धान होजाती हे ॥ तेसें अग्नि अंतर्धान होगया तब में उहांतें चल्या एक सृष्टिविषे गया तहां अवर प्रकारके शास्त्र अरु अवर प्रकारके प्रानी थे बहुरी आगें अवर सृष्टिविषे गया तहां अैसे प्रानी देखे जिनकी टंगा काष्टकी अरु आचार मनुष्यका था आगें अवर सृष्टि विषे गया तहां अैसे प्रानी देखे जिनकी टंगा काष्टको अरु आचार मनुष्यकाथा ॥ आगें अवर सृष्ठ विषे गया ॥ उनके शरीर पाषाणके अरु दउडते हे व्यवहार करते हे ॥ तिसतें पर अवर सृष्टिविषे गया तहां शास्त्ररूपी उनकी मूर्ती थी ॥ तिसतें आगें गया तहां क्या देखों प्रानी बेठेही रहे ॥ बालतें वारता करते हे परंतु खानपान कछू न करही ॥ हे राजा दशरथ इस प्रकार में चिरकाल पर्यंत फिरता रहा ॥ परंतु अविद्याका अंत कहुं न आया तब में विचार कीया जो आत्मज्ञानी होउं तब अंत आवेगा ॥ अवर किसी प्रकार अंत न आवेगा ॥ इस प्रकार विचार करके में एक वनविषे गया ॥ अरु ज्ञानकी सिद्धताकों तप कर्णे लागा ॥ जब केताक काल तप कीया तब चित्तविषे यह उपजी जो किस प्रकार संतके निकट जाउं ॥ तिसकी संगती करी मुझकों शांतिपद प्राप्त होवेगा ॥ हे राजन् अेसें विचार करी में उहां तें चल्या कल्प वछके बनविषे आया ॥ तहां एक पुरुष मुझकों मिल्या तिसनें कहा ॥ हे साधु कहां चल्या हें मेरे निकट तो आउ ॥ तब में उसकों कहा तूं कवन हे तब उसनें कहा में तेरा तप हों जो तेने कीया हे अब जो कछू वर तूं मांग सो में तुझकों देउं तब में कहा जो हे साध मेरी इछा यही हे ॥ जो में आत्मपदकों प्राप्त होउं ॥ तब उसनें कहा हे साध अब तुझे एक जन्म अवर मृगका पावणा हे ॥ उह शरीर तेरा अग्निविषे जलेगा ॥ तब तूं मनुषका शरीर पावेगा ॥ अरु ज्ञानवानकी सभाविषे जावेगा ॥ तिस सभाविषे जब तूं मनुष शरीर धारेगा अरु ज्ञानवानकी सभाविषे जावेगा तीस सभाविषे तेरे तांइ सब जनमकी अरु कियाकी स्मृति हो आवेगी ॥ अरु तुझकों स्वरूपकी प्राप्ति होवेगी ॥ तूं अब मृग शरीर धारु हे राजा दशरथ इसप्रकार जब इसनें कहा तब में चितवना करी जो मृग होउं॥तब सुपनरूप प्रतिभा मेरे तांइ फुरी ॥ में मृग हो गया॥तुमारी सृष्टिविषे एक पहाडकी कंदराविषे विचरत भया॥अरु तिसका राजा सिकार खेलणे चल्या ॥ उसनें मुझकों देख्या तब मेरे पाछें घोडा उडाया॥ तिसकें आगें में दउडता जाउं॥अरु घोडेका वेग तीक्ष्णथा॥मुझकों उसनें पकडी लिया अपणे गृहमें ले आया तीन दीन राख्या परंतु बहुत सुंदर चेष्टा देखी तिस कारणते प्रसंन्नतातें इहां ले आया॥हे राजा दशरथ अब में मृगके शरीरकों त्याग करी मनुषका शरीर पाया हों जो कछु तेंनें पुछाथा॥सो सब तुझको कहाहे ॥ वाल्मीकोवाच॥ हे अंग जब इसप्रकार विपश्चित कही रहा तब रामजीनें विपश्चितसों प्रश्नकिया॥रामोवाच॥हे विपश्चित उह मृग तो अवर सृष्टिकाथा॥इहांक्यों करी आया॥भासोवाच ॥ हे रामजी जहां उह सब मिल्याथा ॥ उहभी अवर सृष्टिका था ॥ एक कालमें आकाश मार्गविषे दुर्वासऋषीश्वर ध्यान लगाइ बेठा था ॥ तिस मार्ग करी इंद्र पृथ्वीकों आया यज्ञके निमित्त॥मार्गविषे जो दुर्वासा बेठाथा तिसकों शब जाणी करी इंद्रनें चर्न लगाया॥तब उह समाधितें उतरी करी इंद्रकी उर देखत भया ॥अरु श्राप दिया॥ जो हे शक्र तुझने सब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाणि करी मुझकों चरन लगाया हे॥गर्व करकै तातें तेरे यज्ञकों एक शब मृतक नास करैगा॥जिस स्थान उह पडेगा सो पृथ्वीभी नास होवेगी॥जब एसें उस ऋषिनें शाप दिया॥अरु इंद्र यज्ञ करणे लागा तब अवर सृष्टितें उह सब आनि पडा ॥ पृथ्वी चूरण हैगइ ॥ उह तो उस प्रकार गिर्या ॥ अरु में तपरूपी मुनीश्वरके वर करकै मृग हो करी तुमारी सभाविषे आया हों ॥ हे रामजी जो असत होता तो प्रगट न होता अरु जो सत होता तो सुपनरूप न होता॥जो सुपनकी सृष्टिका था॥ हे रामजी तुम हमारी सुपन सृष्टिविषे हो अरु हम तुमारी सृष्टिके सुपन विषे हे ॥ जेसें इह सुपन पदार्थका होणा हुआ हे तेसें सबका होणाभी हुआ हे अरु मृगकाभी हूआहे॥जेसें यह सृष्टि हे तेसें उह सृष्टिभी हे॥जो यह सृष्टि सत हे तो उहभी सत हे॥ परंतु वास्तवतें न यह सत हे न उह सत हे ॥ यहभी भममात्र हे उहभी भममात्र हे ॥ सत वस्तु उही हे जो मन सहित षट इंद्रियांतें अगम हे सो आत्मा सत्ता हे ॥ जिसते यह सर्व हे ॥ अरु जिस विषे सर्व हे ॥ अेसी जो परमात्म सत्ता हे ॥ सो परम सत्ता हे तिसविषे सब कछु बणता हे ॥ हे रामजी जगत संकल्प मात्र हे ॥ संकल्पका मिलणा क्या आश्चर्य हे ॥ छाया अरु धूप एक नही होती ॥ सत अरु झुठभी एकठा नही होता॥ज्ञान अज्ञान एकठा नहीं होता॥परंतु आत्माविषे एकठे होते देखते हे॥हे रामजी जब इह पुरुष सेन करे हे तब अनुभवरूप होताहे ॥ बहुरी सुपनविषे सुपन नगर भासि आताहे ॥ अरु छाया धूपभी भासि आताहे ॥ ज्ञान अज्ञान सत झुठ भास आतेहे॥ जेसें विरुध पदार्थ आकासविषे इह भास आतेहे तेसें संकल्पसों संकल्प मिलि जाताहे इस विषे क्या आश्चर्यहें ॥ अरु सब जगत आकासवत सून्य हे॥ निराकार निर्विकार हे ॥ निराकारविषे आकार निर्विकारविषे विकार भासतेहे यही आश्चर्यहे ॥ अरु जेते कछू आकार दृष्ट आतेहे सो उही निराकार रूप हे ॥ ब्रह्मसत्ताही इस प्रकार होकरि भासतीहे ॥ जगतकों असत कहणाभी नही वणता ॥ जो असत होता तो प्रले होकरी पृथ्वी अप तेज वायुकरि आकास बहुरी प्रगट न होता ॥ प्रले होकरी जो बहुरी उतपत्ति होतेहे तातें असत नही ॥ चैतनरूप आत्माहीका सुभाव हे ॥ आत्मसताही इस प्रकार होकरी भासतीहे ॥ हे रामजी जब प्रले होतीहे तब सब भूत पदार्थ नष्ट होजातेहे ॥ नष्ट होकरी जो बहुरी उत्पत्ति होतीहे इसीतें कहाहे जो यह सृष्टि आत्मा का आभासमात्र हे ॥ अरु ब्रह्मसत्ताविषे अनंत जगत फुरतेहे ॥ अरु अपणी सृष्टिहीकों जीव जानतेहे ॥ यह जीव सब ब्रह्मरूपी समुद्रके कणके हे ॥ सो अवरकी सृष्टिकों अवर न ही जानता ॥ जेसें सिधकी सृष्टि अपणे अपणे अनुभवविषे फुरतीहे ॥ जेसें सुपनेकी सृष्टि भिन्न भिन्न होतीहे ॥ तेसें यह अपणी अपणी सृष्टि हे ॥ अरु मिलिभी जातीहे आत्माविषे सब कछू बणताहे॥जो अनादि अरु आदि एकठी नही होती॥विधि अरु निषेध एकठी नही होती॥विकार अरु निर्विकार एकठे नही होते॥सो आकासविषे अरु आत्मसत्ता सुपनेविषे एकठे दृष्ट आते हे इसविषे कछू आश्चर्य नही ॥ जगत कछू भिन्न वस्तु नही आत्मसत्ताही इस प्रकार होभासती हे ॥ हे रामजी चार सत्ता इस जगतविषे फुरीहे सारधी गोपती अरु समान ब्रह्मसत्ता अरु अविद्या तिनविषे सारधी अरु गोपती सत्ता जिज्ञासीकी भावनाविषे भासतीहे अरु समानसत्ता ज्ञानीकों भासती हे ॥ अरु अविद्या अज्ञानीकों भासती हे ॥ सो चारोभी ब्रह्मतें भिन्न नही ब्रह्महीके नाम हे ॥ ब्रह्मसत्ता सुभाव चैतनता करकै अेसेंही भासतीहे ॥ जेसें वायु फुरणे करकै चलती भासतीहे अरु ठहरणे करकै अचल भासती हे तेसें चैतनता फुरणे करकै नानाप्रकारके कौतुक उठतेहे ॥ फुरणेतें रहित निर्विकल्प होजाताहे अैसा पदार्थ कोऊ नही जो तिसविषे सत नही ॥ अरु अैसाभी पदार्थ कोउ नही जो असत नही ॥ सब समा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न हे जेसें आकासके फुल हे तेसें घटपटादिक हे अरु जैसें इनके उत्थानका अनुभव होताहे तेसे उनका अनुभव होताहे ॥ सब पदार्थ सत्ताहीकरी सत भासते हे ॥ अरु जेते कछू श
ब्द अर्थ फुरे हे सो सब मिटिजाते हे ॥ तातें असत हे आत्मसत्ता ज्योंकी त्यों हे तिसका नाश कदाचित नही होता जो मरीकें जनम्या नही तो आनंद हे मुक्त भया ॥ अरु जो मरीके
जनम लेता हे तोभी अविनासी भया ॥ तातें सोक करणा व्यर्थ हे ॥ हे रामजी जगतके आदिविषेभी ब्रह्मसत्ताथी अरु अंतविषेभी उही होवेगी ॥ जो आदि अरु अंतविषे उही हे ॥
मधविषेभी उही जाणीयै ॥ तातें सब जगत आत्मारूप हे ॥ जेतें कछु शब्द हे ॥ सो सब अर्थ संयुक्त हे ॥ सर्व शब्द अरु अर्थाकार अधिष्टान ब्रह्मसत्ता हे ॥ तातें सब जगत ब्रह्मरूप हे ॥
जिसकों जथार्थ अनुभव होता हे ॥ तिसकों अैसें भासता हे ॥ अरु जिसकों जथार्थका अनुभव नही भया तिसकों नाना प्रकारका जगत भासता हे ॥ अरु आत्माविषे जगत कछु
बण्या नही ॥ सब आकाशरूप हे ॥ ब्रह्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ अरु ब्रह्मतें इतर जो कछु भासता हे ॥ सो भ्रम मात्र नाशरूप हे ॥ जोदृश्य पदार्थ सब नाशरूप हे ॥ जिस
नें सत जाणे हे तिसकेसाथ कछू प्रयोजन नही ॥ जो दुसरा कछू बण्या नही तो में क्या कहों ॥ जिसविषे यह सब पदार्थ आभास फुरतें हे तिस अधिष्टानकों देखे तो सब उही रूप भा
सेंगें ॥ अरु जो पुरुष स्वभाव विषे स्थित हे तिसकों यह बचन सोभावान होते हे ॥ में अनंत सृष्टि देखी हे ॥ अरु भिन्न भिन्न उनके आचार देखे हे दसो दिसाकों में फिर्या हों अरु
भोग बहुत भोगे हे ॥ बडी बडीं विभूति पाइ हे अरु देखी हे ॥ अनेक प्रकारकी चेष्टा करी हे परंतु मुझकों सुपन प्राप्त भया ॥ काहेतें जो सभ भोग पदार्थ अरु कर्म अविद्या कर्के रचे
हूए हे ॥ तिस अविद्याके अंत लेणेकों बहुत काल फिरता रहा हों॥अनेक जुग पर्यंत फिर्या हों अरु अंत कहूं नही आया॥ अरु वसिष्टजीकी कृपाकरी अब मुझकों स्वरूपका साक्षात्कार
हूआ अविद्या नष्ट भइ हे ॥ परमानंदकों प्राप्त हूआ हों ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे विपश्चित देसांतर भ्रम वर्ननं नाम द्विशताधिक द्विचत्वारिंशत्तमःसर्गः ॥ २४२ ॥

॥ वाल्मीकोवाच ॥ ॥ हे साध जब इस प्रकार विपश्चितनें कहा तब सायंकाल हूआ ॥ सूर्य अंतर्ध्यान होगया मानों विपश्चितके वृत्तांत देखणेंको अन्य सृष्टिविषे गया हे ॥ अरु
नउबत नगारे बाजणेलागे ॥ मानों राजा दसरथकी जय जय करते हे ॥ तिस समें राजा दसरथनें धन करि अरु जवाहिर करि भूषण वस्त्र करि जथाजोग राजा विपश्चितका पूजन
कीया ॥ अरु दसरथतें आदि लेकरि सभ राजा वसिष्ठजीकों प्रणाम करत भये ॥ अरु परस्पर प्रणाम कर्के सर्व सभा अपनें स्थानोंकों गये ॥ स्नान कीया जथा क्रम कर्के भोजन की
या नेम कर्के विचार सहित रात्रकों वितीत कीया ॥ जब सूर्यकी किर्णा उदे भइ अपणे अपणे स्थानपर परस्पर नमस्कार कर्के आय बेठे तब वसिष्टजी पूर्वके प्रसंगकों लेकरि बोल्या ॥
हे रामजी इह अविद्या अविद्यमान हे ॥ हे नही अरु भासती हे यह आश्चर्य हे ॥ जो वस्तु सदा विद्यमान हे सो नही भासती ॥ अरु जो अविद्या हेही नही सो सदा भासती हे ॥ इसी
का नाम अविद्या हे ॥ हे रामजी आत्मसत्ता अनुभवरूप हे ॥ तिसका अनुभव होणा निश्चय हो रहा हे॥अरु अविद्यक जगत जो कबी कछू हूआ नही सो स्पष्ट होकरि भासता हे ॥ यह
अविद्या हे हे रामजी सिधराजाके मंत्रीका उपदेसभी तुझनें श्रवण कीया अरु विपश्चितका वृत्तांतभी श्रवण कीया ॥ विपश्चितकें मुखतेंभी श्रवण कीया ॥ अब इस विपश्चितकी अविद्या
नष्ट होती हे ॥ हमारे आसीर्वादतें अरु जथार्थ बचन कर्के ॥ अब इह जीवनमुक्त होकरि विचरेगा ॥ इसकी अविद्या अब नष्ट होती हे ॥ मेरे उपदेसकरि जीवन् मुक्त होकरी जहां इस

182

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की इछा होवे तहां विचरे ॥ परंतु जब आत्माकीउर आया तब अविद्या नष्ट भइ ॥ आत्मतत्वकों जथार्थ न जानणा इसीका नाम अविद्या हे ॥ सो आत्मज्ञान करके नष्ट हो जाती हे जेसें अंधकार तबलग रहता हे जबलग सूर्य उदे नही भया ॥ जब सूर्य उदे होता हे तब अंधकार नष्ट होता हे तेसें अविद्या तबलग अनंत हे जबलग आत्माकी उर नही आया ॥ जब आत्माका साक्षातकार उदे हूआ तब अविद्याका अत्यंत अभाव हो जाता हे ॥ अविद्या अविद्यमान हे असम्यक दर्सीकों सत भासती हे ॥ जेसें मृग तृष्णाका जल अविद्यमान हे ॥ विचारकीयेतें अभाव हो जाता हे तेसें अविद्या भली प्रकार विचारकीयेतें अभाव हो जाती हे ॥ हे रामजी अविद्यारूपी विषकी वल्ली हे ॥ सो देखणे मात्र फूल सहित सुंदर भासतीहें ॥ परंतु स्पर्श कीयेतें कांटे चुभतें हे अरु फल भक्षण कीयेतें कष्टकों प्राप्त करती हे ॥ सो फूल फल क्या हे जेते कछू शब्द स्पर्शरूप रस गंध इंद्रियके विषे हे ॥ जो देखणे मात्र सुंदर भासते हे सो यही फूल फल हे ॥ जब इनकों स्पर्श कर्ता हे तब तृष्णारूपी कंटक चुभते हे ॥ अरु इंद्रियके भोगणेसों राग दोष कष्ट प्राप्त होता हे ॥ हे रामजी अविद्या अंतरतें शून्य हे ॥ अरु बाहिरतें बडे अर्थ संयुक्त भासती हे ॥ जेसें आकासविषे इंद्र धनुष नाना प्रकारके रंग धारे दृष्ट आता हे परंतु अंतरतें शून्य हे ॥ अनहोता भासता हे तेसें अविद्या अनहोती भासती हे ॥ जेसें उह धनुष जलरूप मेघके आश्रे रहता हे ॥ तेसें यह अविद्या जड मूर्खके आश्रे रहती हे ॥ अरु अविद्यारूप धूड हे सो जिसकों स्पर्श करती हे ॥ तिसकों आवरण करि लेती हे ॥ जबलग अर्थ नही जाण्या तबलग भासती हे ॥ विचार कीयेतें कछू नही निकसता ॥ जेसें सिपीविषे रूपा भासता हे विचार कीयेते अभाव होता हे तेसें विचार कीयेतें अविद्या नष्ट हो जाती हे ॥ अरु चंचल हे अरु भासती हे ॥ हे रामजी अविद्यारूपी नदी हे अरु तृष्णारूपी तिसविषे जल हे ॥ इंद्रियाके अर्थरूपी घुमरघेर हे ॥ रागरूपी तिसविषे तंदुए हे जो पुरुष इस नदीके प्रवाहविषे पडा हे तिसको बडे कष्ट प्राप्त होते हे ॥ तृष्णारूपी प्रवाहविषे वहते जाते हे ॥ तिनकी अविद्यारूपी नदीका अंत नही आता ॥ अरु जो किनारेके सन्मुख होकरि पारकों प्राप्त हूए हे तिनकों कोउ कष्ट नही होता ॥ वैराग अरु अभ्यासरूपी बेडी परि चढे हे ॥ जो अविद्यारूप हे॥तिन विषे जो भावना करते हे सो मूर्ख हे ॥ इह अविद्या का विलास हे एक ऐसी सृष्टि हे जिनविषे सेंकडे चंद्रमा उदे होत हे अरु सहस्र सूर्य उदे होत हे अरु केइ ऐसी सृष्टि हे ॥ तिनविषे जीव सदा समता भावकों लीये विचरते हे अरु सदा आनंदी रहते हे॥अरु केइ ऐसी सृष्टि हे जो अंधःकार कबहू नही होता॥अरु केइ ऐसी सृष्टि हे जहां प्रकाश अरु तम जीवके आधीन हे॥जेता कछू प्रकाश चाहे तेताही करे॥ केइ ऐसी सृष्टि हे जहां जीव न मरते हे न बूढे होते हे सदा एक रस रहते हे ॥ प्रलेकालविषे सब एकठेही मरते हे ॥ कहूं ऐसी सृष्टि हे जहां स्त्री कोउ नही ॥ कहूं पहाडकी न्यांइं जीवके शरीर हे ॥ हे रामजी इनतें लेकरी जो अनंत ब्रह्मांड हे सो फूरते हे ॥ सो अविद्याका विलास हे॥जेसें समुद्रविषे तरंग वायुकरी फूरते हे वायुविना नही फूरते ॥ तेसें परमात्मरूपी समुद्रविषे जगतरूपी तरंग उठते हे ॥ अरु मिटिभी जाते हे अविद्यारूपी वायुके संजोगतें ॥ हे रामजी बडे बडे मणीमय अरु मोतीमय स्वर्नमय धातुमय ऐसे जो स्थान हे अरु भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य चार प्रकारके तृप्ति कर्ता पदार्थ हे घृतरूप स्थान पदार्थ हे अरु गनेके रसके समुद्र हे ॥ मांखन दही दूधके समुद्र हे अम्रतके तलाव हे ॥ अरु बडे बडे कल्पवृछ तमालवृछतें आदि लेकरि जो सुंदर स्थान हे अरु सुंदर अप्सरा हे ॥ अरु बडे दिव्य वस्त्र हे इनतें आदि लेकरि जो पदार्थ हे सो सब संकल्परूप हे ॥ अविद्याके रचे हूए हे इनकी जो तृष्णा करते हे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सो मूर्ख हे तिनके जीवणेकों धिक्कार हे ॥ हे रामजी इह अविद्याका विलास हे ॥ विचार कीयेतें कछू नही निकसता ॥ जेसें मारुथलविषे अनहोती नदी भासती हे विचार कीयेतें अभाव होजाती हे ॥ तेसें आत्मविचार कीयेतें अविद्याका विलास जगत अभाव होजाता हे जिसकों आत्माका प्रमाद हे तिसकों देवता मनुष पशू पंछी आदिक इष्ट अनिष्ट अनेक प्रकारके पदार्थ भासतेहे ॥ कारण कार्य भाव करकें जगत स्पष्ट भासता हे ॥ अरु जिसकों आत्माका अनुभव भया हे तिसकों सर्व आत्मा भासता हे ॥ हे रामजी एक सदृष्टि सृष्टि हे अरु एक अदृष्टी सृष्टि हे यह जो प्रत्यक्ष भासति हे सो सदृष्टि सृष्टि हे॥अरु दृष्ट नहि आती सो अदृष्ट सृष्टि हे॥सो दोनों तुल्य हे ॥अरु आकाशविषे जो सृष्टिकों सिद्ध रचि लेते हे सो क्या हे ॥ संकल्पमात्र हे क्यों उनकी सृष्टि परस्पर अदृष्ट हे॥अरु अनेक प्रकारकी रचना हे उनकी स्वर्नकी पृथ्वी हे ॥ रत्न अरु मणी साथ जडी हूइ हे ॥ अरु अनेक प्रकारके विषय हे इंद्रियके अरु अमृत कुंड भरे हुए ॥ अरु अपने आधीन तम प्रकाश हे ॥ अरु अनेक प्रकारकी रचना बणी हुइ हे ॥ तो क्या हे संकल्पमात्र हे क्यों ॥ तिस प्रकार यह जगत संकल्पमात्र हे॥जेसा जेसा संकल्प होता हे तेसी तेसी सृष्टि हो भासती हे आत्माविषे॥हे रामजी सृष्टिरूपी अनेक रत्न आत्मरूपी डब्बे विषे हे ॥ जिस पुरुषकों आत्मदृष्टि प्राप्त भई हे तिसकों सर्व सृष्टि आत्मरूप हे॥अरु जिसकों आत्मदृष्टि नही तिसकों सर्व सृष्टि जगत भिन्न भिन्न भासता हे जेसा संकल्प दृढ होता हे तेसा पदार्थ होभासता हे जेता कछू जगत भासता हे सो सब संकल्प मात्र हे ॥ जो तुझकों ऐसा तीव्र संवेग होवे जो आकाशविषे नगर स्थित होवे तब उही भासणे लगजावे ॥ हे रामजी जिस उर यह पुरुष दृढ निश्चय कर्ता हे सोइ सिद्ध होता हे ॥ जो आत्माकी उर एकत्र होता हे तब उही सिद्ध होता हे ॥ जो दोनों उर होता हे तब भटकणा होता हे ॥ जो जगतकी सत्यताकों छांडिकरि आत्मपरायण हो रहे तब तीव्र भावना करिकें मोक्ष प्राप्त होती हे जो संसारकी उर भावना होतीहे तब संसारकी प्राप्ति होतीहे ॥ जेसें अभ्यास करता हे सोइ सिद्ध होताहे अरु आदि जो सृष्टि हुइ हे सो अकारणहे ॥ तिसविषे दूसरी वस्तु तो कछु नही उही रूप हे बहुरी जेसी जेसी भावना होतीहे तिसके अनुसार जगत भासताहे ॥ जिसकी भावना धर्मकी उर होतीहे अरु सकाम होताहे तिसकों स्वर्गादिक सुख भासते हे ॥ अरु जिसकी भावना अधर्मविषे होतीहे तिसकों नर्कादिक दुःख पदार्थ भासते हे॥सुभ कर्म करी सांतिकी इछा नही भासती ॥ सो सुभभी दो प्रकारके हे एककों स्वर्ग सुख भासते हे एककों सिधिकी भावना करकें सिद्धलोक भासते हे॥अरु जिसकों असुभ भावना होतीहे तिसकों नाना प्रकारके नरक भासते हे॥हे रामजी जब इह संवित अनात्माविषे आत्म अभिमान करती हे॥तिनके कर्मविषे आपकों कर्ता जाणती हे सो पाप करकें अनेक दुःखकों प्राप्त होतीहे॥सो दुःख कहणेविषे नही आते ॥ जेसें पहाडोंविषेभी पीसणेतें बडा कष्ट होता हे॥अंगारकी वर्षाकरि जेसें कष्ट होवे अंधेकूपविषे गिरनेकरी कष्ट होताहे परंतु स्त्रीके भोगणे करी अंगार साथ स्पर्श करता हे॥अग्नि साथ तप्त लोहेसों कंठ साथ लगाता हे अरु जिस स्त्रीनें पर पुरुषकों भोग्या हे॥सो अंधेकूपरूप उखलि विषे खड्गरूपी मूसल करकें कटती हे॥अरु जो देह अभिमानी देवता पितर अतिथिके दीए विना भोजन करता हे तिनकोंभी जम दूत बडा कष्ट देताहे ॥ खड्ग अरु बरछी करी मांसकों काटता हे अरु प्रहार करता हे ॥ परलोकविषे क्षुधा अरु तृष्णा करकें कष्टवान होताहे अरु जिन नेत्र करी पर स्त्री देखी हे तिन नेत्रकों छुरीका प्रहार होताहे ॥ एक वृछ हे तिनकें पत्र लागते हे सो खड्गके प्रहारकी न्यांइ लागते हे ॥ सूली उपरी चढावते हे इनतें आदि ले करी तिनकों कष्ट होताहे ॥ अरु जो सुभ कर्म कर्ते हे सो स्वर्गकों भोगते हे तातें जेसा जेसा कर्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्तै हे तिनके अनुसार जगतकों देखते हे ॥ जिस जिस भावकों चित्तवते शरीर त्यागते हे सो तिसकों प्राप्त होताहै केवल वासनामात्र संसार हे ॥ जैसा निश्चा होताहें तैसाही भासता हे ॥
इतिश्री योगवासिष्ठेनिर्वाणप्रकरणे स्वर्गनरकप्रारब्धवर्नन नाम द्विशताधिकत्रिचत्वारिंशत्तमःसर्गः ॥ ॥ २४३ ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् इह जो तुमने मुनीसर अ
रु बेधकका वृत्तांत कहाहे सो बडा आश्चर्यरूप हे ॥ इह वृत्तांत सुभाविक हूआहे अथवा किसी कारण कार्यकरि हूआहे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी समुद्रतें तरंग उठतेहे तेसें ब्र
ह्मविषे इह प्रतिभा सुभाविक उठतीहे ॥ जेसें पवनविषे फुरना सुभाविक होताहे तेसें आत्माका चमत्कार जगत् रचना सुभाविक होतीहे सो उही रूप हे ॥ तिसतें इतर कछु नही चिन्मा
त्रविषे जो चेतता फुरी हे सो जेसी फुरी तेसें स्थित हे ॥ जबलग इसतें इतर अवर फुरना नही होता तबलग उही रहताहे ॥ जिस प्रतिभा करकै कार्य कारण भासताहे जेसें शुद्ध चिदाकाश
विषे सुपनेकी सृष्टि भासती हे तिसविषे साररूप उही हे ॥ उही चित्त चमत्कार करकै फुरता हे जेसें समुद्रविषे तरंग फुरते हे सो समुद्ररूप हे तिसतें इतर कछु वस्तु नही ॥ तेसें जेता कछु
शब्द अर्थ जगत भासता हे सो उही चिन्मात्र हे ॥ इतर कछु वस्तु नही जिनकों अेसें जथार्थ अनुभव हुआ हे ॥ तिनकों जगत सुपन पुर अरु संकल्प नगरवत् भासताहे पृथ्वी आदिक
पदार्थ पिंडाकार नही भासते उनको सभ ब्रह्मरूप हो जाताहे ॥ हे रामजी जो वस्तु व्यभिचारी नाशवंत हे सो अविद्यारूप हे ॥ अरु जो अव्यभिचारी अविनासी वस्तु हे सो ब्रह्म
सत्ता हे ॥ सो ब्रह्मसत्ता ज्ञान संवितरूप हे ॥ अपणे भावकों कदाचित नही त्यागती अनुभव करकै सर्वदा काल प्रकाशती हे तिसविषे अविद्या केसें होवे जेसें समुद्रविषे धुडका अभाव हे
तेसें आत्माविषे अविद्याका अभाव हे ॥ जेते कछु आकार दृष्ट आते हे सो सभ चिदाकाशरूप हे ॥ जेसें तुं मनविषे संकल्प धारी करी इंद्र हो बेठे अरु चेष्टाभी इंद्र जेसी करणे लागे अ
थवा ध्यान करी इंद्र रचे ॥ जेसें उह ध्यान करी प्रतिभा सिद्ध हो आवे तो जबलग संकल्प रहे तबलग उही भासे जब इंद्रका संकल्प क्षीण हो जावे तब इंद्रभावकी चेष्टाभी निवृत्ति
हो जाती हे सो संकल्प करी उही चिन्मात्र इंद्ररूप हो भासता हे तेसें जेता कछु जगत भासताहे सो सब चिन्मात्ररूप हे ॥ संवेदन करकै पिंडाकार हो भासताहे जब संवेदन फुरणा निवृ
त्त होताहे तब सब जगत आत्मरूप भासताहे ॥ अरु ब्रह्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे जेसा फुरणा होताहे तैसा होभासताहे ॥ सब जगत तिसका चमत्कार हे अरु निराकार हे
॥ जेसें समुद्रविषे तरंग समुद्ररूप होतेहे तेसें निराकार परमात्माविषे जगतभी आकासरूप हे इतर कछू नही सर्व ब्रह्म स्वरूपहे ॥ इसका नाम परम बोध हे जब इस बोधकी दृढता होती
हे तब मोक्ष होता हे ॥ जिसकों सम्यक बोध होताहे तिसकों जगत ब्रह्मस्वरूप भासता हे ॥ अरु अपणाआप भासता हे ॥ अरु जिसकों सम्यक बोध नही भया ॥ तिसकों नाना प्रकारका द्वैत
रूप जगत भासता हे ॥ हे रामजी जिसकी बुद्धि शास्त्र करी तीक्ष्ण भइ हे अरु वैराग अभ्यास करी संपन्न निर्मल भइ हे ॥ तिसकों आत्मपद प्राप्त होता हे ॥ अरु जिसकी बुद्धि शास्त्र
के अर्थ करी निर्मल नही भइ ॥ तिसकों अज्ञान सहित जगत भासता हे ॥ जेसें किसी पुरुषके नेत्रविषे दूषण होताहे तिसकों आकाशविषे दो चंद्रमा भासते हे अरु तरवरे भ्रम क
रकै भासता हे ॥ तेसें अज्ञान करकै जगत भासता हे ॥ जेता कछू जाग्रत जगत हे सो सुपन मात्र हे ॥ जब सुपनेविषे होता हे तब सुपनभी जाग्रत भासती हे ॥ अरु जाग्रत सुपन
वत हो जाती हे ॥ अरु जाग्रतविषे सुपना सुपन हो जाता हे ॥ जाग्रत सत भासती हे सो अल्प कालका नाम सुपना हे ॥ दीर्घ कालका नाम जाग्रत हे ॥ आत्माविषे दोनोंका तुल्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाव होता हे ॥ जेसें क्षणविषे दो भाइ जोडे जनमते हे सो नाम मात्र दो हे वस्तुतें एक रूप हे ॥ तेसें जाग्रत सुपन तुल्यहीहे ॥ अरु जब यह पुरुष शरीरकों त्यागता हे तब परलोक इ
सकों जाग्रत होजाता हे ॥ अरु यह जगत सुपनवत हो जाता हे ॥ जेसें सुपनेतें जागि उठ्या तब सुपनके पदार्थोंकों भ्रम मात्र जानता हे अरु जाग्रतकों सत जानता हे तेसें जब परलोक
जाता हे ॥ तब इस जगतकों सुपनवत भ्रम मात्र जानता हे ॥ अरु कहता हे ॥ सुपने जेसा मैं देख्याथा ॥ उह परलोक सत हो भासता हे बहुरी उहांतें गिरताहे इस लोकविषे आय प
डता हे तब इस लोककों सत जानता हे ॥ अरु जाग्रत मानता हे ॥ अरु उह परलोककों सुपन भ्रम मानता हे ॥ हे रामजी जबलग इसकों शरीर साथ संबंध हे तबलग अनेकवार जा
यतदेखताहे ॥ अरु अनंतही सुपने देखता हे ॥ हे रामजी जेसें मृत्यु पर्यंत इसकों अनेक सुपने आते हे ॥ तेसें मोक्ष पर्यंत इसकों अनेक जाग्रतरूप जगत भासते हे ॥ भ्रमांतरविषे
इनकी सत्यता अरु जाग्रत विषे सुपनेके पदार्थ कोंउ स्मरन करता हे ॥ जेसें सिद्ध प्रबुद्ध हो करी अपणे जन्मकों स्मरण करता हे ॥ अरु कहता हे ॥ सब भ्रम मात्र थे ॥ तेसें यह जब
जागेगा तब कहेगा सब भ्रम मात्र प्रतिभा मुझकों भासी थी ॥ न कोउ बंध हे न कोउ मुक्ति हे ॥ काहेतें जो दृश्य अविद्यक बंध मोक्ष केसा हे ॥ जब चित्तकी वृत्ति निर्विकल्प होती हे
तब मोक्ष भासता हे अरु जबलग वासना विकल्प सत हे तबलग बंध भासता हे ॥ हे रामजी आत्माविषे बंध मोक्ष दोनों नही ॥ बंध होवे तब मोक्षभी होवे ॥ बंध नही तो मोक्ष
केसें होवे ॥ बंध अरु मोक्ष दोनों चित्त संवेद विषे भासता हे ॥ तातें चित्तकों निर्वाण करु ॥ तब सब कल्पना मिटि जावेगी ॥ जेते कछू पदार्थके प्रतिपादन कर्णेहारे शब्द हे ॥ तिनकों
त्याग करी निर्मल ज्ञान मात्र जो आत्मसत्ता हे तिसविषे स्थित होउ ॥ जो कछु खानपान बोलना चालणा सब क्रियाकों करु ॥परंतु अंतरतें परम पद पावणेका जतन करू ॥ हे रामजी
नेतिनेतिकरी सर्व शब्दका अभाव करु ॥ बहुरी अभावकाभी अभावकरु ॥ तिसकें पाछें जो सेष रहेगा सो आत्मसत्ता परम निर्वाणरूप हे ॥ तिसविषे स्थित होऊ ॥ अरु जो कछू अ
पणा आचारकर्म हे सो जथाशास्त्र करू ॥ अरु रिदेतें सर्व कल्पनाकों त्याग करु ॥ इसप्रकार आत्मसत्ताविषे स्थित होऊ ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे निर्वाण उपदेशो
नामद्विशताधिकचतुश्चत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ २४४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जेते कछु पदार्थ भासते
हे सो सब चिदाकास आत्मरूप हे ॥ ज्ञानवानकों सदा उही भासतेहे ॥ आत्मातें इतर कछु नही भासता ॥ रूप दृश्य अवलोक इंद्रियां मनस्कार फुरणा इसीका नाम संसार हे ॥ सो इ
हभी आत्मरूप हे ॥ आत्मसत्ताही इस प्रकार हो भासतीहे ॥ जेसें अपणी संवित सुपनेविषे रूप अवलोक मनस्कार होभासतीहे आत्मातें इतर कछु नही ॥ परंतु अज्ञानकरि भिन्न भिन्न
भासतेहे ॥ अरु जो जाग्याहे तिसकों अपणा आप भासताहे ॥ जेसें अपणी चैतनताही सुपनपुर होकरी भासतीहे तेसें जगतके पूर्व जो चैतनसत्ता थी उही जगत्रूप होकरी भासतीहे॥
अरु जगत् आत्मातें कछू भिन्न वस्तु नही उही स्वरूप हे॥जेसें जलका सुभाव द्रवीभूत होताहे तिस करकें तरंगरूप होभासताहे तेसें आत्माका सुभाव चैतन हे सोइ आत्मसत्ता चैतनता
करकें जगत आकार होभासतीहे ॥ इस प्रकार जाणी करि जो परम सांतिनिर्वाणपद हे तिसविषे स्थित होऊ ॥ हे रामजी जगत कछू हे नही अरु प्रत्यछ भासताहे असतही सत होकरि
भासताहे यही आश्चर्य हे जो निष्किंचन हे अरु किंचनकी न्यांइ होकरि भासताहे ॥ आत्मसत्ता सदा अद्वैत अरु निर्विकार हे परंतु अज्ञान दृष्टिकरकें नाना प्रकारके विकार भासतेहे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ जब सर्व विकारकों निषेधकरी असतरूप जाणीए तब सर्वके अभाव हूए आत्मसत्ता सेष रहतीहे ॥ जेसें शून्य स्थानविषे अणहोता वैताल भासी आता हे तेसें अज्ञानीकों अणहो ता जगत आत्माविषे भासि आताहे ॥ अरु जो पुरुष सुभावविषे स्थित हूएहे तिनकों जगतभी अद्वैतरूप आत्म भासताहे ॥ जब सतसास्त्र अरु संतकी संगति होतीहे तिनके तात्पर्य अर्थ विषे जब दृढ अभ्यास होताहे तब सुभावसत्ताविषे स्थित होतीहे ॥ अरु जिन पदार्थके पावणेंनिमित्त इह जतन करताहे ॥ सो मायिक पदार्थ विजुलीके चमत्कारवत उदेभी होतेहे अरु नष्टभि होतेहे ॥ इह पदार्थ विचारविना सुंदर भासतेहे ॥ इनकी इछा मूर्ख करतेहे ॥ काहेते जो उनकों जगत सत भासताहे ॥ अरु ज्ञानवानकों जगत पदार्थकी तृष्णा नही होती ॥ का हेतें जो जगतकों मृगतृष्णाकी न्याई असत जाणताहे ॥ अरु ब्रह्मभावना विषे दृढ हे ॥ अरु अज्ञानीकों जगतकी भावना हे तातें ज्ञानीके निश्चेकों अज्ञांनी नही जानता ॥ ज्ञानीके नि श्चेकों ज्ञानीही जानताहे जेसें सोए हूए पुरुषकों निद्रा दोषकर्के सुपना आताहे तिसविषे जगत भासता हे ॥ अरु जाग्रत पुरुष जो तिसके निकट बेठा हे उसकों उह सुपन जगत नही भासता हे उह असत हे ॥ तो तिसके निश्चेकों सुपनवाला नही जानता ॥ अरु सुपनवालेके निश्चेकों उह जाग्रतवाला नही जानता ॥ तेसें ज्ञानीके निश्चेकों अज्ञानी नही जानता जेसें मृत्तिकाकी सेनाकों बालक सेनाकरि मानता हे जो जानणेवाले बडे पुरुष हे तिसकों सब मृत्तिकारूप भासती हे ॥ जब उह बालक भली प्रकार जानता हे तब उसकोंभी सेना अरु वै तालका अभाव होजाता हे ॥ मृत्तिकारूप भासती हे ॥ तेसें ज्ञानवानकों सब जगत ब्रह्मरूपही भासता हे ॥ हे रामजी जब इस पुरुषकों आत्माका अनुभव होता हे तब जगतके पदार्थ की इछा नही रहती ॥ जेसें सुपनेविषे किसीकों मणि प्राप्त होती हे तब प्रीति कर्के तिसकों रखता हे जब जागता हे तब उसकों भम जांणिकरि तिसकी इछा नही करता ॥ तेसें जब आ त्मपद विषे जागेगा तब जगतके पदार्थकी इछा न करेगा ॥ जेसें मरुथलकी नदीकों असत जानता हे तब उसविषे जलपानके निमित्त जतन नही करता ॥ तेसें जब जगतकों असत जा नता हे तब जगतके पदार्थकी इछा नही करता ॥ जिस शरीरके निमित्त जतन करता हे सो शरीरभी छिनभंगुरहे ॥ जेसें पत्र उपर जलकी बुंद आनि स्थित होतीहे सो छिनभंगुर असा रहे ॥ पवन लागेतें क्षिणविषे गिर जाती हे तेसें इह शरीर नाशवंत हे ॥ जेसें मृग धूप करी तप्या हुआ मारुथलकी नदीकों सत जाणि करि जलपान करणे निमित्त दउडता हे सो मूर्ख ता कर्के कष्ट पावता हे परंतु तृप्त नही होता ॥ तेसें मूर्ख मनुष विषय पदार्थकों सत जाणि करी तिनके निमित्त जतन करते हे अरु कष्ट पावते हे अरु तृप्त कदाचित नही होते ॥ हे राम जी इह पुरुष अपणा आपही मित्र हे अरु अपणा आपही शत्रु हे ॥ जब सत मार्गविषे विचरता हे अरु अपणा उधार करता हे तब पुरुष प्रयत्न कर्के अपणा आपही मित्र होताहे अरु जो सत मार्गविषे नही विचरता अरु पुरुष प्रयत्न कर्के अपणा उधार नही करता जन्म मरण संसारविषे आपकों डराता हे सो अपणा आपही शत्रु हे अरु जो अपने आपकों जतन कर्के उद्धार करता हे सो अपणे उपर दया करता हे ॥ हे रामजी इंद्रियके विषयरूपी चिकड हे ॥ जो इसविषे गिर्या हुआ हे अरु अपणे उपर निकासणेकी दया नही करता ॥ सो महा अज्ञा न तमकों प्राप्त होताहे जो पुरुष इंद्रीयकों जीतिकें आत्मपदविषे स्थित नही होता तिसकों सांति नही प्राप्त होती ॥ जब बालक अवस्था होतीहे तब शून्य बुद्धि होतीहे अरु वृद्ध अ वस्था विषे अंग क्षीण हो जाते हे ॥ अरु जोवन अवस्थाविषे इंद्रियांके जीतणेकों समर्थ नही होता तो कब होणा हे अवर जो तिर्यक आदिक जोनी हे सो मृतकवत हे ॥ जतनका स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मा जोबनअवस्था हे काहेतें जो बालक अवस्था तों जड गुंग रूप हे वृद्ध अवस्थाभी महानिर्बल जेसी हे॥तिसविषे अपणे अंगही उठावणे कठिन हो जाते हे तो विचारके क्या समर्थ हो वेगा ॥ उह तो बालकवतहे तातें कछु जतन जोबनअवस्थाविषे ही होताहे जो इस अवस्थाविषेभी लंपट रहा सो महा अनिष्ट नरककों प्राप्त होवेगा॥हे रामजी विषयविषे प्रसंन नही होणा इह शरीर नाशरूप हे तो विषय किसकों भोगणे हे ॥ श्रुति कर्कैभी जानता हे अरु अनुभव कर्कैभी जाणता हे जो इह शरीर नाशरूप हे क्यों ॥तिस शरीरविषे सत भावना कर्के जो विषयके सेवणेका जतन करता हे तिनतें पर मूर्ख कहुं नही ॥ उही मूर्ख हे तातें जब इंद्रियांकों जीतेगा तब जन्म जन्मांतरकों प्राप्त न होवेगा ॥ हे रामजी तुम जागहु॥ आपकों अविनासी रूप जाणहू अच्युत परमानंद रूप जाणहू इह जगत मिथ्यारूप भ्रम उदे हुआ हे इसकों त्याग देहु॥ इ० यो० नि० प्रकरणे अविद्यानाशोपदेशो नाम द्विशताधिकपंचचत्वारिंशत्तमःसर्गः२४५

॥ श्रीरामोवाच ॥ हे भगवन् तुम सत कहते हो ॥ जो इंद्रियके जितेविना शांति नही प्राप्त होती॥तातें इंद्रियके जितणेका उपाय कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जिस पुरुषकों बडे भोग आणि प्राप्त हूए हे अरु इस इंद्रियाकों जीति नही तब उह शोभा नही पावता॥जो त्रिलोकीका राज आनि प्राप्त होवे अरु इंद्रियांकों जिती नही तिसकी उपमाभी कछू नही ॥जो बडा शूर बीर हे॥अरु इंद्रियाकों जीती नही सो उसकी शोभाभी कछु नही अरु बडी आयुर्वला हे जिसकी चिरपर्यंत जीता हे अरु इंद्रिया नही जीतीयां तो उसका जीणाभी व्यर्थ हे॥जीस प्रकार इंद्रीयां जीती जाती हे अरु आत्मपद प्राप्त होता हे सो प्रकार सुण ॥ हे रामजी इस पुरुषका स्वरूप आंचित्य चिन्मात्र हे ॥ तिसविषे जो संवित फुरी हे तिस ज्ञान संवितकों अंतः करण दृश्य जगत साथ सबंध हुआ हे ॥ ॥ तिसका नाम जीव हे जहांतें चित्त फुरता हे ॥ तहांही चित्तकों स्थित करु तब इंद्रिय अभाव हो जावेगा ॥ इंद्रियांका नायक मन हे जब मनरूपी मतवारे हस्तीको वैराग अरु अभ्यासरूपी कुंटेसाथ वसकरे तब तेरी जय होवेगी ॥ सब इंद्रियां रोकी जावेगीयां॥ जेसें राजाके वस कियेतें सब सेनाभी उसके वस हो जाती हें ॥ तेसें मनकों स्थित कियेतें सब इंद्रिय वस हो जावेगीयां ॥ हे रामजी जब इंद्रियांकों वस करेगा तब शुद्ध आत्मसत्ता तुझकों भासी आवेगी ॥ जेसें वर्षाकालके अभावतें शरत्कालविषे सुद्ध निर्मल आकाश भासता हे ॥ कुहीड अरु बदलका अभाव हो जाताहे ॥ तेसें जब मनरूपी वर्षाकालका अभाव हो जावेगा अरु वासनारूपी कुहीडका अभाव हो जावेगा ॥ तब पाछें सुद्ध निर्मल आत्मसत्ता भासेगी ॥ हे रामजी जेते कछु पदार्थ जगतविषे दृष्ट भासते हे सो सब असतरूप हे ॥ जेसें मारुथलकी नदी असतरूप होतीहे तेसें जगतके पदार्थ असतरूप हे ॥ इनविषे तृष्णा करणा अज्ञान हे ॥ जो पदार्थ प्रत्यक्ष आनि प्राप्त होवे॥तिसकों त्याग करी वृत्ति आत्माकी उर आवे तब जाणीये जो मुझकों इंद्रका पद प्राप्त हुआ हे ॥ अरु विषय विषे आशक्त होणाही बडी कृपणता हे ॥ अरु इनतें उपांत होणा यही बडी उदारता हे तातें मनकों वस कर तब तेरी जय होवे ॥ जेसें तप्त पृथ्वी जेठ आशाडविषे होती हे अरु चर्नविषे चर्नदासी चडाइ तब इसकों तपत नही होती ॥ अरु सब पृथ्वी सीतल हो जाती हे तेसें अपणे मन वस कीयेतें जगत आत्मरूप हो जाताहे ॥ हे रामजी जिस प्रकार जनेंद्रनें मनकों वस किया हे तेसें तुंभी मनकों वस करु ॥ जिस जिस उर मन जावे तिसतिस उरतें रोकहु ॥ जब दृश्य जगतकी उरतें मनकों रोकेगा तब वृत्ति संवित ज्ञानकी उर आवेगी ॥ जब संवित ज्ञान की उर आइ तब मुझकों परम उदारता प्राप्त होवेगी ॥ अरु सुद्ध आत्मसत्ताका अनुभव होवेगा ॥ तप कर्के संवितका अनुभव होणा कठिन हे ॥ अरु तीर्थ दान कर्कैभी कठिन हे ॥ परं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तु मनके स्थित करणे करी अनुभवकी प्राप्ति सुगम होतीहे ॥ सो मन स्थित करणेका उपाय यही हे जो संतकी संगति करणी अरु रात्र दिन सत शास्त्रके विचारणा ॥ सर्वदा काल इस कों उपाय करि मन सीघ्रही स्थित होताहे ॥ जब मन स्थित हुआ तब आत्मपदका अनुभव होताहे जिसके आत्मपद प्राप्त हुआ हे सो संसार समुद्रविषे डुबता नही ॥ अरु चित्तरूपी समुद्र हे तिसविषे तृष्णारूपी जल हे अरु कामनारूपी लहरी हे जिस पुरुषनें सम संतोष करि इंद्रियां जीती हे सो चित्तरूप समुद्रविषे गोते न खावेगा ॥ इंद्रियांकों जीति करी जिसनें आत्मपद पाया हे तिसकों नानात्व जगत बहुरी नही भासता ॥ जेसें मरुथलकी निराकार नदीविषे लहरी भासति हे ॥ जब भली प्रकार निकट जाएकरी वीचार करी देखीये तब लहरि संयुक्त बहति दृष्ट नही आती ॥ तेसें यह जगत आत्माका आभास हे ॥ जब भली प्रकार विचार देखीये तब नानात्व दृष्ट नही आता ॥ आत्मसत्ताही किंचन कर्के जगतरूप हो भासती हे जेसें जल अपणे द्रवता सुभाव कर्के तरंगरूप हो भासता हे तेसें आत्म सत्ता चैतनता कर्के जगतरूप हो भासती हे ॥ हे रामजी जब आत्मबोध होताहे तब बहुरी दृश्य भ्रम नही भास ता ॥ जेसें साकाररूप नदीका भाव निवृत्त हुइ बहुरी बहती हे अरु जो निराकार नदीका सद्भाव निवृत्त होता हे तब फेरि नदीका सद्भाव होता क्यों ? ॥ निराकार मृगतृष्णाकी नदी जब ज्योंकी त्यों जाणी तब फेरि सत्त न होती हे ॥ हे रामजी वास्तवतें न कर्म हे न इंद्रिय हे न कर्ता हे कछु उपज्या नही ॥ नाना प्रकार दृष्ट आते हे परंतु कछु हुआ नही ॥ जेसें सुपनेवि षे नाना प्रकारकी क्रिया कर्म दृष्ट आते हे ॥ परंतु आकाशरूप हे ॥ कछु हुआ नही तेसें इहभी जाण ॥ आकाशरूप आत्माविषे आकाशरूप जगत स्थित हे ॥ जेसें अवयवी अरु अ वयवविषे कछु भेद नही ॥ तेसें आत्मा अरु जगतविषे भेद नही ॥ जेसें अवयव अवयवीका रूप हे तेसें जगत आत्माकारूप हे ॥ जब आत्माविषे स्थित होवेगा ॥ तब अहं त्वं आदिक शब्दका अभाव हो जावेगा ॥ अरु द्वैत अद्वैत शब्दभी न रहेगा ॥ द्वैत अद्वैत शब्दभी बालक अज्ञानीके समुझावणे निमित्त कहे हे ॥ जो वृद्ध ज्ञानवान हे इन शब्दपर हासी कर्ते हे ॥ जो अद्वैतमात्रविषे इन शब्दका प्रवेश कहाहे ॥ जिनकों इह दसा प्राप्त भइ हे तिनकों न बंध हे न मोक्ष हे ॥ हे रामजी सुषुप्ति अरु तुरीयाविषें कछु थोडा भेद हे जो सुषुप्तिविषे अ ज्ञान जडता रहती हे ॥ अरु तुरीयाविषें अज्ञान जडता नही ॥ चैंतन अनुभव सत्तारूप हे ॥ अरु सुपन जाग्रतविषेभी भेद नही ॥ परंतु एता भेद कहाता हे जो अल्पकालकी अवस्थाकों सुपना कहता हे ॥ अरु चिरकालकी अवस्थाकों जाग्रत कहता हे ॥ हे रामजी जाग्रत सुपन अरु सुषुप्ति इह तीनों सुपन अरु सुषुप्ति रूप हे ॥ जाग्रत अरु सुपन इह उभे सुपनरूपहे अरु सुषुप्ति अज्ञानरूप हे ॥ अरु जाग्रत जो हे सो तुरीयारूप हे ओर जाग्रत् कोउ नही ॥ जिस जागणेतें बहुरी भ्रम प्राप्त होवे तिसकों जाग्रत केसें कहीये उसकों भ्रम मात्र जाणीयें ॥ अरु जिस जागणेतें फेर भ्रमकों न प्राप्त होवे तिसका नाम जाग्रत हे ॥ जाग्रत् सुपन सुषुप्ति तुरीया चारों अवस्था विषे चैतनमात्र घनीभूत होरहाहे ॥ सो चारोंको नही देखता ॥ ज्ञानवान जब प्राणका स्पंद रोकि करि आत्माकी उर चित्तकों लगाते हे ॥ अरु परस्पर ज्ञानमात्रका निर्णे चर्चा करते हे ॥ अरु ज्ञानमात्रकी कथा कीर्तन करते हे ॥ अरु तिस करी प्रसन्न होते हे ॥ एसे जो नित जाग्रत पुरुष हे ॥ अरु निरंतर प्रीति पूर्वक आत्माकों भजते हे ॥ तिनकों आत्मविषयिणी बुद्धि आनि उदे होतीहे ॥ तिसकरी सांतिकों प्राप्त होतेहे ॥ जिनकों सदा अध्यात्म अभ्यास हे अरु अभ्यास विषे उत्तम हूए हे तिनकों आत्मपद प्राप्त होताहे ॥ उही हांसी करते हे काहेतें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो उनकों सांति पद प्राप्त भयाहे ॥ अरु जो अज्ञानी हे सो राग दोषकरि जलतेहे ॥ अरु जिनकों आत्माका दृढ अभ्यास हुआ हें तिनकों अवेदन सत्ता सांति प्राप्त होती हें अरु आत्म स्थिति प्राप्त होतीहे ॥ जिसके आगें इंद्रका राजभी सूके तृण वत भासताहे ऐसा परमानंद आत्मसुख हे ॥ अरु सर्व जगत तिनके आत्मरूप भासताहे अरु जो अज्ञानी हे ॥ तिनकों नाना प्रकारके जगत भास ते हे जेसें सोए हूए पुरुषकों सुपनकी सृष्टि सत होकरी भासती हे ॥ अरु जाग्रतके स्मरनवालेकों सुपनकी सृष्टिभी अपणा आपरूप भासताहे अरु सतरूप भासताहे ॥ अरु ज्ञानवानकों सर्व आ त्मरूप भासताहे ॥ आत्मातें भिन्न कछू नही भासता॥जब आत्म अभ्यासका बल होवे अरु अनात्माके अभावका अभ्यास दृढ होवे तब जगतका अभाव होजावे ॥ अद्वैत सत्ताका भान होवे हे रामजी में तुझकों बहुत उपदेस कीयाहे जब इसका अभ्यास होवे तब इसका फल जो ब्रह्मबोध हे सो प्राप्त होवे॥ अभ्यासबिना नही प्राप्त होता अरु जो एक तृण लोप करना होताहे तोभी कछू जतन होताहे यह तो त्रैलोकी लोप करनाहे ॥ हे रामजी जेसें बडा भार जिस उपरि पडताहे तब उह बडेही बलकरी उठावताहे ॥ बिना बडे बल नही उठता तेसें इस जीव उपर दृ श्यरूपी बडा भार पडाहे जब बडा आत्मरूपी अभ्यासका बल होवे तब इसकों निवृति करे नही तो निवृत्ति नही होता ॥ अरु यह जो में तेरेतांइ उपदेश कीयाहे तिसकों वारंवार वि चारु ॥ में तो तेरेतांइं बहुत प्रकार अरु बहुत वार कहाहे ॥ हे रामजी अज्ञानीकों अेसें बहुत कहने करिभी कछू नही होता ॥ तुझकों जो में उपदेश कीया हे सो सर्वसास्त्रका सिद्धांत हे अरु वेदका सिधांत हे ॥ जिस प्रकार वेदकों पाठ करताहे तिस प्रकार इसकों पाठ करीयें अरु विचारियें अरु इनके रहस्यकों रिदेविषे धारीयें तब आत्मपदकी प्राप्ति होवें ॥ अरु अवर सास्त्रभी इसके अवलोकन करि सुगम होजावेगें ॥ तातें नित प्रति इस सास्त्रकों श्रद्धा सहित सुणे अरु कहे ॥ आदि तें लेकरि अंत पर्यंत सुणे अरु कहे तब अज्ञानी जीवकोंभी ज्ञानकी प्राप्ति अवश्य होवे ॥ जिसनें एक वार सुण्याहे ॥ अरु कहणे लागा हे जो एक वारसुणी छोड्याहे ॥ बहुरी बहुरी क्या सुनणाहे ॥ तब उसकी भांति निवृत्त न होवेगी॥ अरु जो वारंवार सुणे विचारे अरु कहे तब उसकी भांति निवृत्त होजावेगी ॥ सब सास्त्रतें में उतम जुगतांकी संहिता कहीहे जो सीघ्रही मनविषे आतीहे ॥ अैसी जो संहिता कहीहे अ रु जो पुरुष मेरे सास्त्रकों सुनणेवाले हे अरु कहणेवाले हे तिसकों बोध उदे होतहे ॥ अवर सास्त्रका जो अर्थ हे सोभी सुंदरता करकें खुलि आताहे ॥ जेसें लोणका अधिकारि बिजन प दार्थ हे ॥ तिसविषे लोण पाया स्वादी होताहें अरु प्रीति सहित ग्रहण करता हे ॥ तेसें जो इस शास्त्रके सुनणे कहणेवाले हे सो अर्थ अवर शास्त्रकाभी सुंदर करेगा ॥ हे रामजी एसें न करीए जो किसी अवर पछ अपणेकों मानी करी इसकों श्रवणभी न करीये जेसें किसीके पिताका खारा कुआथा अरु तिसकें निकट मिष्ट जलका कुआ था॥ उह अपणे पिताका कुप मानि करी खाराही जल पीता था ॥ निकट कुए मिष्ट जलके त्याग करता था ॥ तेसें अपणा पछ मानि करी मेरे शास्त्रका त्याग नही करणा ॥ जो अेसें जाणि करी मेरे शास्त्रकों न सुणे गा तिसकों ज्ञान प्राप्त न होवेगा ॥ जो पुरुष इस शास्त्रविषे दुषण आरोपण करेगा जो इह सिद्धांत जथार्थ नही कहा तिसकें ज्ञान कदाचित न प्राप्त होवेगा उह आत्महंता हे तिसके वाक्य श्रवण नही करणे अरु जो प्रीत पूर्वक पुजा भाव करकें श्रवण करे विचारे पाठ करे तिसकों निर्मल ज्ञान होवेगा ॥ अरु क्रियाभी निर्मल होवेगी तातें नित प्रति विचारणे जोग हे॥ हे रामजी तुझकों उपदेश कीया हे सो किसी अर्थके निमित्त नही किया दया करकें किया हे ॥ अरु तुम जो किसीकों कहोगें तोभी अर्थ विना दया करकें कहणा ॥ ॥ इतिश्री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे इंद्रिय यज्ञ वरननं नाम द्विशताधिकषट्चत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ २४६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी आत्माविषे जगत क छु हुआ नही ॥ जब सुद्ध चिन्मात्रविषे अहं फुरणा होताहे तब उही संवेदन फुरणा जगतरूप हो भासती हे ॥ जब अधिष्टानकी उर देखता हे तब उही संवेदन अधिष्टानरूप हो जाती हे ॥ अपणे रूपकों त्याग देती हे ॥ अचेत चिन्मात्र होतीहे ॥ हे रामजी फुरणेविषेभी उहि हे ॥ अरु अफुरणेविषेभी उही हे ॥ परंतु फुरणे करी जगत भासता हे सो जगतभी कछु अवर वस्तु न ही उही रूप हे ॥ अरु जब संवित संवेदन फुरनेतें रहित होतीहे तब अपणा चिन्मात्ररूप हो जाती हे ॥ इस कारणतें ज्ञानवानकों जगत आत्मरूप भासता हे ब्रह्मतें इतर नही भासता ॥ जेसें किसी पुरुषका मन अवर ठउर गया होताहे तिसके आगें शब्द होताहे तोभी नही भासता ॥ अरु कहता हे में देख्या सुण्या कछु नही ॥ जिस उर चित्त होताहे तिसका अनुभव होताहे तेसें जिनका मन आत्माकी उर लागता हे ॥ तिनकों सब आत्मा ही भासता हे आत्मातें इतर जगत कछु नही भासता ॥ अरु जिनकों आत्मसत्ताका प्रमाद हे अरु जगत की उर चित्त हे तो उनकों जगत ही भासता हे हे रामजी ज्ञानवानके निश्चेविषे ब्रह्मही भासता हे ॥ अरु अज्ञानीके निश्चेविषे जगत भासता हे ॥ तो ज्ञानी अरु अज्ञानीका निश्चय एक के सें होवे ॥ सुपनेविषे पुरुष हे तिसकों सुपनेका जगत भासता हे जाग्रतकों उह जगत नही भासता ॥ उनकों एकही निश्चा केसें होवे नही होता इह अर्थ हे ॥ जगतके आदिभी ब्रह्म सत्ता थी अरु अंतभी उही रहेगी ॥ मध्यविषे जो भासती हे सोभी उही जाण आत्मा सत्ताही चैतनता करी जगतरूप हो भासती हे ॥ जेसें सुपन सृष्टिके आदिभी ब्रह्मसत्ता होतीहे ॥ अरु अं तभी ब्रह्मसत्ता होतीहे अरु मध्य जो भासता हे सोभी उही हे ॥ आत्मातें इतर कछु नही तेसें इह जगत आदि अंत मध्यविषेभी आत्मातें इतर कछु नही ॥ अरु ज्ञानवानकों सदा इही निश्चयहे ॥ जो जगत कछु उपजा नही न उपजेगा ॥ आत्म सत्ता सदा अपणे आपविषे स्थित हे जो सर्व ब्रह्मही हे ॥ अहं त्वं इह सब अज्ञान करी भासता हे जेसें सुपने विषे अहं त्वं आदि कर्के अनुभव होताहे ॥ तो अहं त्वं आदिकभी कछु नही सब अनुभवरूप हे तेसें इह जगत सर्व अनुभवरूप हे ॥ हे रामजी जेसें एकही रस फुल फल टास टछ हो करी भासता हे ॥ परंतु रसतें इतर कछु नही ॥ तेसें नानात्वरूप जगत भासता हे परंतु आत्मातें इतर कछु नही ॥ जेसें संकल्प नगर अरु सुपन पुर अपणे अपणे अनुभवतें इतर कछु नही निकसता ॥ परंतु स्वरूपके विस्मरण कर्के आकाररूप भासते हे ॥ तेसें इह जगत आकार भासता हे सो ज्ञानरूपतें इतर कछु नही ॥ सब जगत आत्मरूप हे ॥ परंतु अज्ञान कर्के भिन्न भिन्न भासता हे ॥ अरु इह जगत सब अपणा आपरूप हे इतर कछु नही ॥ जो आत्मरूप हे तो ग्राह्य ग्रहण भास केसें होवे ॥ यह मिथ्या भम हे पृथ्वी अप तेज वायु आकाश पर्वत घट पट आदिक स व जगत ब्रह्मरूप हे ॥ ज्ञानवानके सदा यही निश्चा रहता हे जो अचैत चिन्मात्र अपणे आपविषे स्थित हे ॥ ब्रह्मादिकभी कछु फुरी करी उदे नही भये ज्योंके त्यों हे ॥ उत्थान कछु न हु आ अरु अज्ञानीके निश्चेविषे नाना प्रकारका जगत हे ॥ उत्पत्ति स्थिति प्रले ब्रह्मादिक संपूर्ण हे ॥ हे रामजी यह कछु उपजा नही ॥ कारणत्वके अभावतें सदा एक रस आत्मसत्ताही हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे ब्रह्म जगत एकता प्रतिपादनं नाम द्विशताधिकसप्तचत्वारिंशत्तमःसर्गः ॥ ॥ २४७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जाग्रत अरु सुपनाका निर्णय अब सुण ॥ जब इस जगतविषे सोए जाता हे तब सुपनकी सृष्टी देखता हे ॥ उसविषे जाग्रत होती हे ॥ जाग्रत होकरी भा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सती हे अरु जब तहां सोए जाता हे तब बहुरी इह सृष्टि देखता हे ॥ यही जाग्रत हो भासती हे इहां सोए करी सुपनविषे जाग्रत होती हे ॥ उहां सोएकरि इहां जाग्रत होती हे ॥ तो सु
पन जाग्रत हुआ जाग्रतका जाग्रत नही होता ॥ जाग्रत जो वस्तु हे सो आत्मसत्ता हे ॥ तिसविषे जागणा सोइ जाग्रतकी जाग्रत हे ॥ अवर सब सुपन जाग्रत हे ॥जब इहां सेन करता हे
तब सुपनका जाग्रत सत होकरी भासता हे॥ इह असत होजाता हे अरु सुपनविषे उहांतें सेन करता हे अर्थ इह जो जब सुपनेतें निवृत्त होता हे अरु जाग्रतविषे जागता हे तब उहां अ
सत होजाता हे ॥ उह सुपना जाग्रतविषे स्मृतिकों प्राप्त होता हे ॥ अरु जब जाग्रतविषे सोया अरु सुपनविषे जाग्या ॥ तब जाग्रत सुपनभावकों प्राप्त भइ ॥ अरु जब सुपनेतें उठिकरि
जाग्रतविषे आया तब सुपनरूप जाग्रत स्मृतिभावकों प्राप्त भइ ॥ अरु जाग्रत जाग्रतरूप हुइ ॥ तो हे रामजी सुपन तो कोउ न हूआ ॥ इसकों सर्व ठोर जाग्रत हुइ क्यों ॥ अरु जाग्रत
तो कोउ न हूइ ॥ काहेतें जो जब जाग्रततें सुपनेविषे गया तब सुपन जाग्रतरूप होगया ॥ अरु जाग्रत सुपन होगइ॥ अरु जब सुपनेतें जाग्रतविषे आया तब जाग्रत जाग्रतरूप होगइ॥
अरु सुपन जाग्रत सुपनरूप हो गइ ॥ तो क्या हूआ जाग्रत कोउ नही सब सुपन असतरूप हे ॥ अपणे कालविषे इह जाग्रत हे अरु हे सुपनरूप ॥ अरु जब इहांते मृतक होता हे तब
इह जगत सुपनरूप होता हे ॥ सुपनरूप परलोक जाग्रत होता हे ॥ जाग्रत स्मृति प्रत्यक्ष होजाता हे तो उसविषे उह नही रहता ॥ अरु उसविषे उह नही रहता ॥ अरु जाग्रत सुपन दो
नों विषे परलोक नही रहता ॥ अरु इस जाग्रतविषे देखीयें तो सुपना अरु परलोक दोनों नही भासते ॥ अरु सुपनविषे इस जाग्रत अरु परलोक दोनोंका अभाव होजाताहे तो क्या सि
द्ध हूआ ॥ इह सिद्ध हुआ जो सब सुपनमात्रहे ॥ हे रामजी चिरकालकी प्रतीतकों जाग्रत कहते हे अरु अल्पकालकी प्रतीतकों सुपन कहतहे ॥ जो आदि सुपन हूआ अरु तिसविषे दृ
ढ अभ्यास होगया तिसकरी जाग्रत होभासतीहे ॥ तातें जो कछू आकार तुझकों सत भासते हे ॥ सो सब निराकार आकाशरूप हे कछु बण्या नही ॥ जेसें सुपनेविषे त्रिलोकी जगत
भम उदे होताहे परंतु सब आकासरूप होताहे ॥ तेसें इह जगतके पदार्थ अविद्याकरि साकार भासतेहे सो सब निराकार आकासरूप हे ॥ जब अधिष्टान आत्मतत्वविषे जागेगा तब सब
ही आकासरूप भासेगें ॥ अरु अद्वैत आत्मतत्वविषे जो ग्राह्य ग्राहकभाव भासतेहे सो मिथ्या कल्पना हे ॥ वास्तवतें कछू नही सब जगत मृगतृष्णाके जलवत मिथ्या हे ॥ तिसविषे यह
ण क्या करीये अरु त्याग क्या करीयें ॥ इन दोनोंकी कल्पनाकों दूर करु ॥ इह होवे इह न होवे इह कलपनाकों त्यागकरि अपणे स्वरूपविषे स्थित होहु तब सर्व सांति प्राप्त होवेगी ॥
इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे जाग्रत सुपन प्रतिपादनं नाम द्विशताधिकाष्टचत्वारिंशतमः सर्गः ॥ २४८ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥
॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी इन अर्थका जो आश्रयभूतहे सो में तुझकों कहता हों इस जगतके आदि अचेत चिनमात्र था तिसविषे किसि शब्दकी प्रवृत्ति न थी ॥ अशब्द पद था तिस
विषे जानणा फुर्या ॥ तिसका आभास जगत् हुआ तिस आभास विषे जिसके अधिष्टानकी अहं प्रतीत रही हे तिसकों जगत् आकास रूप भासता हे ॥ उह संसारविषे डुबता नही ॥
उसकों अज्ञानका अभाव हे जो डुबता नही तो निकसताभी नही ॥ अज्ञान निवृत्ती ज्ञानकाभी अभाव हे ॥ उह स्वतःज्ञान स्वरूप हे ॥ अरु जिनके प्रमाद हुआ हे तिनकों दोनों अव
स्था होती हे जो ज्ञानवान हे तिसकों जगत् आत्मरूप भासता हे अरु जो ज्ञानतें रहित हे ॥ तिसके भिन्न भिन्न नाम रूप जगत् भासता हे ॥ हे रामजी आत्मा निराख्यात हे ॥ चारो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आख्यातते रहित निराभास सत्ता हे ॥ चारों अख्यात तिसविषे अभास हे तिनके नाम सुण ॥ एक तो आख्यात हे एक विपर्ययाख्यात हे ॥ एक असत्याख्यातहे चउथा आत्माख्यात हे ॥ आख्यात कहीयें ज्ञान ॥ जिसकों इह ज्ञान हे जो में आपको नही जानता इसका नाम अख्यात हे ॥ अरु देह इंद्रीयरूप आप आपकों जानणा इसका नाम विपर्ययाख्यात हे ॥ जगत् असत जानणा इसका नाम असत्याख्यात हे ॥ अरु आत्माकों आत्मा जानणा इसका नाम आत्माख्यात हे ॥ इह चारों ख्यात चिनमात्र आत्मतत्वका आभास हे ॥ आत्मसत्ता निर्विकल्प अचैत चिनमात्र हे तिसविषे वाणीकी गम नही हे ॥ हे रामजी जगत्भी उही स्वरूप हे अवर कछू वण्या नही ॥ घनसिलाकी न्यांइ अचितस्वरूप हे इस उपर एक आख्यान हे श्रवणका भूषन हे ॥ तुझकों कहता हों सो केसा उपाख्यान हे जो द्वैत दृष्टिकों नास करता हे ॥ अरु ज्ञानरूपी कमलका प्रकाश होणेहारा सूर्य अरु परमपावन हे ॥ सो तूं श्रवन कर ॥ हे रामजी एक सिला बडी हे जो कोटि जोजन पर्यंत तिसका विस्तार हे ॥ अनंत हे ॥ जो किसी उरते तिसका अंत नही आता अरु सुध हे ॥ निर्मल हे अरु निरासाध हे ॥ अर्थ इह जो अणु अणुकरि पुष्ट नही भइ ॥ अपणी सत्ताकरी पूर्नहे अरु वहुत सुंदर हे ॥ जेसें सालियामकी प्रतिमा होती हे तेसें सुंदर हे ॥ सालियाम उपर संख चक्र गदा पद्मकी रेखा होती हे ॥ तेसें उस उपर रेखा हे अरु उही रूप हे ॥ अरु वज्रतेंभी क्रूर हे ॥ सिलाकी न्याइ निर्विकास हे अरु निराकार हे ॥ अचैतन हे अरु परमार्थ हे ॥ इह जो कछू चैतनता भासती हे सो उस उपर रेखा हे ॥ अनंत कलप बीति गए हे परंतु तिसका नाश नही होता अविनासी हे ॥ पृथ्वी अप तेज वायु आकाश यह सभ उस उपर रेखा हे ॥ अरु आप पृथ्वी आदिक भूततें रहित हे अरु सिलावत हे ॥ अरु इन रेखाकों जीवतकी न्यांइ चेतती हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन जो उह अचेतन हे अरु सिलाकी न्यांइ निर्विकाश हे ॥ तब उस विषे चैतनता कहांतें आइ ॥ जिस करि जीवित धर्मा हुइ उह तो अचेतन थी ? ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी उह तो न चेतन हे न जड हे सिलारूप हे ॥ पथरतेंभी उजल हे अरु इह चैतनता जो तुम कहते हो ॥ सो चैतनता सुभाव करके दृष्ट आती हे ॥ जेसें जलका सुभाव द्रवीभूत होत हे तेसें चैतनताभी इसका सभाव हे ॥ जेसें जलतें तरंग सुभाविक भासतें हे ॥ तेसें इसतें चैतनता सूभाविक भासती हे परंतु भिन्न कछू नही ॥ सदा अपणे आपविषे स्थित हे अरु किसि करि जाणी नही जाती ॥ अवलग किसी जाणी नही ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् किसनें उसकों देखीभी हे अथवा नही देखी ॥ अरु किसकरि उह भंगभी हुइ हे के नही ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी में उस सिलाकों देखी हे ॥ जो तुमभी उस सिलाकों देखणेकों अभ्यास करोगे तब तुमभी देखोगे ॥ परम शुद्ध हे तिसकों मैल कदाचित्त नही लगती ॥ चिन्हतें रहित हे पोलतें रहित हे ॥ आदी मध्य अंततें रहित हे ॥ तिसके भेदणेकों न कछु समर्थ हे अरु न उह भेदणे जोग हे ॥ अरु तिसतें कोउ अन्य होवे तो तिसकों भेदे ॥ यह जेते पदार्थ हे सो सभ उसीकी रेखा हे ॥ सो अनेक उसकी रेखा हे ॥ पृथ्वी पर्वत वल अप तेज वायु आकास देवता दानव सूर्य चंद्रमा इह उसकी रेखा हे ॥ उसके अंतर स्थित हे ॥ उह सिला महा सूक्ष्म हे निराकार हे आकासरूप हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् आदि मध अंततें रहित हे तब तुम केसें देखी हे सो कहो ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी उह अवर किसकरि जाणी नही जाती ॥ अपणे आप अनुभव करी जाणी जाती हे ॥ में जो देखी हे सो उसी अपणे सुभावविषे स्थित होकरि देखी हे ॥ जेसें थंभेकों अणथंभेविषे स्थित होकरी देखें तेसें में तिसविषे स्थित होकरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखी हे ॥ हमभी तिस सिलाकी रेखा हे॥ तातें में तिसविषे स्थित होंकरी देखी हैं ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् उह कवन सिला हे ॥ उस उपर रेखा कवन हे सो कहो ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी परमात्मरूपी सिला हे अवर कवन होवे अरु में तेरेंतांइ सिलारूप कहा हे ॥ इन वचन कर्के सिलारूप क्यों कहा हे जो घन चैतनरूप हे उसतें इतर कछू नही ॥ अरु अचित्त रूप हे तिस उपर पंचतत्व रेखा सो रेखाभी उही रूप हे ॥ एक रेखा बडीहे तिस विषे अवर रेखा रहतीया हे सो वडी रेखा आकाशहे अवर तत्व आकाशविषे रहते हे सब पदार्थ आकाशविषे हे ॥ सो सब उही रूप हे तुंभी उही रूप हे मेंभी उही रूप हों॥अवर कछु हुआ नही पृथ्वी जल तेज वायु आकाश मन बुद्धि चित्त अहंकार सब ब्रह्मरूप हे॥जेते कछु पदार्थ अरु कर्म भासते हे सो सब ब्रह्मरूपी सिलाकी रेखा हे अवर कछु हुआ नही सर्व कालविषे ब्रह्म सत्ताही स्थित हे ॥ नाना प्रकारके व्यवहारभी दृष्ट आते हे परंतु उही रूप हे अवर कछू हे नही तेसें इहभी जाण॥घट पठ पहाड कंदरा स्थावर जंगम जेता कछू जगत भासता हे सो सब आत्मरूपहे आत्माही फुरणे कर्के ऐसें भासता हे जेसें जलही तरंग लहरि होकरि भासता हे तेसें ब्रह्मसत्ताही जगतरूप होकरि भासती हे ॥ अरु जेते वह पदार्थ हे पवित्र अपवित्र सत असत विद्या अविद्या सब आत्मसत्ताहीके नाम हे ॥ इतर वस्तु कछू हे नही ॥ ब्रह्मसत्ताही अपणे आपविषे स्थित हे ॥ हे रामजी इस सर्वही घन ब्रह्मरूप हे ॥ अरु चिन्मात्र घनही यह सर्व व्यापी रही हे सो परमार्थ सत्ता घन शांतरूप हे ॥ अरु इहभी सर्व परमार्थ घनरूप हे तातें संकल्परूपी कलनाकों त्यागकरि तिसविषे स्थित होहू ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे सिलोपाख्यान समाप्तिवर्णनंनाम द्विशताधिकैकोनपंचाशत्तमःसर्गः ॥ २४९ ॥ ॥७॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो पुरुष सुभाव सत्ताविषे स्थित भए हे तिनकों जो यह चारों आख्यात कहे हे॥इनते ले करी जेते शब्दार्थ हे सो शशेके सिंगवत असत भासते हे॥जगत का निश्चा तिनविषे नही रहता सर्व ब्रह्मांड तिनकों आकाशवत भासता हे॥अख्यातकी कल्पनाभी कछु नही फुरती ॥ अरु जेता कछु जगत दृष्ट आता हे सो निराकार परम चिदाकाशरूप हे ॥ परम निर्वाण सत्तासों युक्त भासता हे अरु तिसविषे निर्वाण हो जाता हे ॥ तातें उही स्वरूप हे ॥ हे रामजी जब इस प्रकार जाणि करी तुं तिस पदविषे स्थित होवेगा ॥ तब बडे शब्दकों करताभी तुं निश्चेतें पाषाण सिलावत मोन रहेगा ॥ देखेगा खावेगा पीवेगा सुंघेगा परंतु अपणे निश्चेविषे कछु न फुरेगा॥ जेसें पाषाणकी सीलाविषे फुरणा कछु नही फुरता तेसें तुं रहेगा ॥ जो चरनों करी दउडता जावेगा तोभी निश्चे करी चलायमान न होवेगा ॥ जेसें आकाश अचल हे जेसे सुमेरु पर्वत स्थित हे तेसें तुंभी स्थित रहेगा ॥ क्रिया तो सब करेगा परंतु अंतरतें क्रियाका अभिमान तुझकों कछु न होवेगा ॥ सुभाव सत्ताविषे स्थित होवेगा ॥ जेसें मूढ बालक अपणे पलावेविषे वैताल कल्पत हे सो अविचार सिद्ध हे विचार कीयेतें कछू नही निकसता ॥ तेसे मूरख अज्ञानी आत्माविषे मिथ्या आकार कलपते हे विचार कीयेतें सब आकाशरूप हे ॥ बण्या कछू नही॥ जेसें मरुथलविषे नदी तबलग भासती हे जबलग विचार करि नही देखता विचार कीयेतें नदी नही रहती तेसें यह जगत विचार कीयेतें नही रहता ॥ चैतन्यरूपी रत्नका चमत्कार हे ॥ चतैन आत्माका किंचन फुरणे करिकें जगत्रूप हो भासता हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् इस जगत्का कारण स्मृति में मानता हों सो स्मृति अनुभवतें होती हे अरु स्मृतितें अनुभव होता हे ॥ स्मृति अरु अनुभव परस्पर कारण हे ॥ जब अनुभव होता हे तब उसकी स्मृतिभी होती हे ॥ उह स्मृति संस्कार बहुरी सुपनेविषे जगतरूप हो क्यों भासती हे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह जगत जो उपजा हे सो किस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संस्कार करि नही उपजा ॥ जो किसी स्मृतिका संस्कार होवे सो नही ॥ तब क्या हे ? काकतालीवत् अकस्मात फुरि आया हे ॥ हे रामजी इह जगत आभासमात्र हे ॥ आभासका अ
भाव कदाचित् नही होता ॥ काहेतें जो उसका चमत्कार हे जो इतर कछू वण्या होवे तो तिसका नासभी होवे ॥ सो इतर तो कछू हुवाभी नही नास केसें होवे ॥ इह जगत सतभी नही
अरु असतभी नही ॥ अपणे सुभावविषे आत्मसत्ता स्थित हे जगत तिसका आभास हे ॥ हे रामजी तूं जो स्मृति कारण कहता हे सो कारण कार्य भाव आभास तहां भासते हे जहां
द्वैत हे ॥ स्वरूपविषे कछू कारण कार्य भाव नही ॥ जेसें सुपनेमें मरुथलविषे जल भास्या तिसविषे जल मानी करी गया तो तूं देखु ॥ आगें जायकरी उसकों उस जलकी स्मृति
हुइ ॥ अथवा सुपनेके व्यवहार कर्ताकों सुपनांतर हुआ तिस सुपनांतरविषे बहुरी जाय व्यवहार करता भया तो हे रामजी तूं देख ॥ जो उसकी स्मृतिभी असत हुइ ॥
अरु जो उसनें अनुभव कीया सोभी असत हे ॥ तेसें इह संसारभी हे कछू भेद नही ॥ हे रामजी तातें न जाग्रत हे न सुपन हे न कोउ सुषुप्ति हे न तुरिया हे ॥ तो क्या हे अ
द्वैत सत्ता सर्व उत्थानतें रहित चिन्मात्र स्थित हे ॥ तातें जगतभी उही रूप हे ॥ जो क्रियाभी दृष्ट आती हे तोभी कछु हुआ नही ॥ जेसें सुपनेंविषे अंगना कंठ साथ आय मिलती हे त
ब उसकी क्रिया तो कछु साची नही तेसें इह क्रियाभी साची नही ॥ अरु जाग्रत सुपन सुषुप्ति तुरीया इन शब्दका अर्थ सुभाव निश्चे ज्ञानवान पुरुषकों हे ॥ संशेके सिंग अरु आका
शके फूलवत असत भासते हे ॥ जेसें वंध्याका पुत्र अरु जेसें स्याम चंद्रमा शब्द कहणे मात्र हे इनका अर्थ असत हे तेसें ज्ञानीके निश्चेविषे पांचो अवस्थाका होणा असंभव हे ॥ अ
थवा सर्वदा काल विषे जाग्रत हे ॥ जाग्रत तिसका नाम हे जहां कछु अनुभव होवे ॥ सो अनुभव सत्ता सदा जाग्रत रूप हे ॥ जेसा पदार्थ आगें आता हे तिसीका अनुभव करता हे
तातें सर्वदा सर्व काल जाग्रत हे ॥ अथवा सर्वदा काल सुपन हे ॥ सुपन उसका नाम हे जहां पदार्थ विपर्यय भासे हे ॥ सो जेते कछु पदार्थ भासते हे सो विपर्ययही भासते हे ॥ विपर्यय
तें रहित आत्मा हे तिसविषे जो पदार्थ भासते हे सो विपर्यय हे ॥ तातें सर्व कालविषे सुपनाही हे ॥ अथवा सर्वदा काल सुषुप्तिही हे ॥ सुषुप्ति तिसका नाम हे जहां अज्ञान वृत्ति होवे ॥
सो अज्ञान कहता हे में आपकोंभी नही जानता ॥ न जानणे करी सर्वदा काल सुषुप्ति हे ॥ अथवा सर्वदा काल तुरीया हे ॥ तुरीया उसका नाम हे जो साक्षीभूत सत्ता होवे जाग्रत सुपन
सुषुप्ति अवस्थाका जिसविषे अनुभव होताहे सो सर्वदाकाल सबका अनुभव करता हे ॥ सो प्रत्यक चैतन हे तातें सर्वदा कालविषे तुरीयापद हे ॥ अथवा सर्वदा काल तुरीयातीत पदहे तुरिया
तीत तिसकों कहते हे जो अद्वैत सत्ता हे ॥ जिसके पास द्वैत कछु नही ॥ सो सर्वदा काल अद्वैत सत्ता हे तिसविषे जगतका अत्यंत अभाव हे जेसें मरुथलविषे जलका अभाव हे ॥ तातें सर्वदा
कालविषे तुरीयातीत पद हे अरु जो मूजतें पूछे तो ॥ हे रामजी मुझकों तरंग बुदबुदे झग आवर्त कछु नही भासते ॥ सर्वदाकाल चिदसमुद्रही भासता हे तिसतें इतर कछु नही ॥ उदे
अस्तें रहित आत्मसत्ता अपणे आपविषे स्थितहे ॥ अरु पृथ्वी आदिक तत्व जो भासते हे सोभी कछु उपजे नही ॥ आत्म सत्ताका किंचन इस प्रकार भासता हे ॥ जेसें नख अरु केस
उपजतेंभी हे अरु अभावभी हो जाते हे तेसें आत्मविषे जगत उपजताभी हे अरु लीनभी हो जाता हे ॥ जेसें नख अरु केसके उपजणे काटणेविषे शरीर ज्योंका त्यों रहता हे तेसें ज
गतके उपजणे अरु लीन होणेविषे आत्मा ज्योंका त्यों रहताहे ॥ हे रामजी यह जगत उपजा नही तिसविषे सत क्या कहीये अरु असत क्या कहीये ॥ कल्पना क्या कहीये अरु स्मृति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या कहीयें॥ अंतर क्या कहीयें अरु बाहिर क्या कहीये अद्वैत सत्ताविषे कल्पना कछु नही बनती यह अर्थ हे ॥ अरु जो तुं कहे बाह्यतें अंतर स्मृति होतीहे परंतु अंतरतें बाहिर दृष्ट आतीहे ॥ तो अंतर अनुभवकी अपेक्षा करके हुइहे सोभी उत्पत्ति नही भइ ॥ अंतर अरु बाहिर क्या कहों जेसें सुपनेंकी सृष्टि भासि आती हे सो अपणाही अनुभव होताहे उही सृष्टिरूप हो भासता हे उहां तो अंतर बाहिर कछु हे नही ॥ तेसें यह जगतभी अंतर बाहिर कछु हे नही सब भमरूप हे ॥ जिसकों इछा कहती हे स्मृत्ति कहता हे ॥ विद्या अविद्या इष्ट अनिष्ट जेते कछु शब्द हे सो सब आत्माके नाम हे ॥ आत्मातें इतर अवर पदार्थ वस्तु कछु नही ॥ हे रामजी जागि करी देख सब तेराही स्वरूप हे ॥ मिथ्या भमकों अंगीकार करैं क्यों इतर कछु देखता हे ॥ जेते कछु शब्द हे सो अर्थविना कछु नही अरु शब्द अर्थका विचार संकल्प करी होताहे ॥ अरु संकल्प तब फुरता हे जब चित्तविषे अहं अभिमान होताहे सो चित्त आत्मासारविषे लीन करु ॥ जब चित्तकों निर्वाण करेगा तब सब जगत सांत हो जावेगा ॥ जेसें दर्पणविषे जगतरूपी प्रतिबिंब होताहे सो जगत कछु वस्तु नही ॥ जब चित्त निर्वाण हो जावेगा तब द्वैत कल्पना सब मिटि जावेगी ॥ यह जो मोक्ष शास्त्र में तुझकों कहा हे ॥ इसके अर्थकों विचार अरु संकल्पकों त्याग करी अपणे परमानंद स्वरूपविषे स्थित हो ॥

इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे जाग्रत सुपन सुषुप्ति अभाव वर्णनं नाम द्विशताधिकपंचाशत्तमः सर्गः ॥ २५० ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इह जगत किसी कारण करी उत्पत्ति नही भया जेसें समुद्रविषे तरंग सुभाविक फुरते हे ॥ तेसें संवित सत्तासों आदि सृष्टि फुरी हे ॥ जेसें जल सुभाविक द्रवता करैं तरंगरूप अपणी सत्ता करी बढता जाता हे तेसें आत्मसत्ता करी जगत विस्तार होता हे ॥ सो आत्मातें इतर कछू नही ॥ आत्मसत्ताही इस प्रकार भासती हे ॥ जब आत्मसत्ता चिन्मात्रका अभ्यास बहिर्मुख फुरता हे तब अंतःकरण चतुष्टयांग होते हे ॥ तिसविषे जो निश्चय होता हे ॥ तिसका नाम नेति हुआ हे ॥ प्रथम अकस्मात्तें सुभाविकही कारण विना फुरी आया हे ॥ उह आभास मात्र हे जब उह दृढ हो गया ॥ तब नेति स्थित भइ ॥ अरु वास्तवतें द्वैत कछू बण्या नही ॥ जो सम्यकदर्शी पुरुष हे ॥ तिसकों सब आत्मा दृष्ट आता हे ॥ जेसें पत्र फूल फल टास सब वृक्ष उपर हे इतर कछू नही ॥ हे रामजी वृक्षतें ज्यों फुल फल टास होते हे सो किस कारण करी बुद्धि पूर्वक तो नही होतें ॥ तेसें यह जगत भी जाण ॥ जो सम्यकदर्शी हे तिसकों भिन्न भिन्न रूपभी पत्र टास आदिक विस्तार एक वृक्षरूप भासता हे ॥ तेसें जथार्थ ज्ञानीकों सर्व आत्माही भासता हे ॥ अरु मिथ्या दृष्टिकों भिन्न भिन्न पदार्थ भासते हे सम्यकदर्शीकों एक वृक्षही भासता हे ॥ हे रामजी वृक्षके देखणेवालाभी अवर होता हे ॥ अरु दृष्टांतविषे दुसरा कोउ नही ॥ चैतन्य आत्माका आभासही चैत हे उही चैतन्यरूप हो भासता हे ॥ तिस चैतन्य आभासकों असम्यक दृष्टी करकै भिन्न भिन्न पदार्थ देखते हे ॥ सम्यकदर्शी सबकों आत्मरूप देखता हे ॥ जेसें पत्र आपकों भिन्न जाणे ॥ फुल फल सब आपकों भिन्न भिन्न जाने ॥ वृक्ष सब अपणा आप जानता हे ॥ ज्ञानी अज्ञानी सब आत्मरूप हे ॥ जेसें कंध उपर पुतलीयां लिखी होतीयां हे सो कंधतें इतर कछू नही कंधरूप हे ॥ तेसें सर्वगत आत्मरूपी कंधकें चित्र हे ॥ सो आत्मातें इतर कछू नही ॥ जेसें आकाशविषे शून्यता हे ॥ जेसें फुलविषे सुगंधता हे जेसें जलविषे द्रवता हे जेसें वायुविषे स्पंद हे जेसें अग्निविषे उष्णता हे तेसें ब्रह्मविषे जगत हे ॥ जेसें आकाश अरु शून्यताविषे भेद कछू नही जेसें फुल अरु सुगंधविषे भेद कछु नही जहां जल हे तहां द्रव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताभी हे ॥ जहां अग्नि हे तहां उष्णता हे जहां वायु हे तहां स्पंदभी हे ॥ तैसें जहां चिदसत्ता है तहां जगतभी हैं ॥ जगत अरु ब्रह्मविषे भेद कछू नही ॥ हे रामजी जगत आत्माका अभ्यास हे ॥ तातें उही रूप हे ॥ यह जगतभी अचैत चिन्मात्र हे ॥ अरु जो तूं कहे अचैत चिन्मात्र हे तो पृथ्वी पहाड आदिक आकार क्यों भासते हे ॥ तो हे रामजी नित प्रति जो तुझकों सुपना आता हे तिस अनुभव आकाशविषे पृथ्वी आदिक तत्व भासी आते हे ॥ तब उही चिन्मात्रही आकार होकरी भासता हे क्यों ॥ अवर कछू नही तैसें यहभी जाण ॥ जेता कछू जगत तुझकों भासता हे ॥ सो सब अनुभवरूप हे ॥ जेसें चिन्मात्र आत्माविषे सृष्टि आभासमात्र हे तैसें कारणकार्य भावभी आभास मात्र हे परंतु उही रूप हे ॥ आत्मसत्ताही इस प्रकार होकरी भासती हे ॥ अरु इह पदार्थ जो कार्य कारण करके उपजे दृष्ट आते हे सो अभ्यासकी दृढता करके भासते हे आदि सृष्टि कछू कारण करके नही उपजी पाछें कारण करी कार्य उत्पत्ति दृष्ट आते हे ॥ यद्यपि कार्य कारण दृष्ट आते हे ॥ तोभी कछू उपजा नही सदा अद्वैतरूप हे जेसें सुपनेविषे नाना प्रकारके कार्य कारण भासी आते हे ॥ परंतु कछू हुए तो नही सदा अद्वैतरूप हे तैसें जाग्रतविषेभी जाण ॥ पदार्थकी स्मृतीभी सुपनविषे होती है ॥ अनुभवभी सुपनेविषे होता हे जो सुपनाही नही फुर्या तोभी मृत्यु कहा हे अरु अनुभव कहां हे ॥ न जगतका अनुभव हे न जगत हे ॥ अनुभवसत्ताही जगतरूप हो भासती हे सो जाग्रतरूप हे ॥ जब तिसका अनुभव होवेगा तब न स्मृति रहेगी ॥ न जगत रहेगा तातें हे रामजी जो अनुभवरूप हे तिसका अनुभव करु ॥ यह जगत भ्रमरूप हे ॥ जो उपजा नही सो स्वतः सिद्ध हे ॥ अरु जो उपजा हे अरु जिसविषे भासता हे तिसकों उसीका रूप जाण ॥ इतर तो कछू नही ॥ जेसें सुपनेविषे पदार्थ भासते हे सो उपजे नही ॥ परंतु उपजे दृष्ट आते हे ॥ सो अनुभवविषे उपजे हे अनुभव स्वतःसिद्ध हे ॥ तिसविषे जो पदार्थ भासते हे सो अनुभवरूप हे ॥ अनुभवही इस प्रकार हो भासता हे तैसें यह सब अनुभवरूप हे इतर कछू नही ॥ जेता कछू जगत है सो आत्मरूप हे ॥ तातें हे रामजी जेता कछू जगत हे सो अकारण हे ॥ आत्माका आभास हे ॥ कारण करकें कछू वण्या नही ॥ अनंत ब्रह्मांड ब्रह्मसत्ताविषे आभास फुरतेहे अरु अज्ञानीकों कार्य कारण सहित भासतेहे तिसविषे नेति हुइ हे ॥ जब जागीकरी देखेगा तब सर्व अद्वैतरूप भासेगा ॥ न कोउ नेति हे न जगत हे ॥ जबलग अज्ञान निद्राविषे सोया हुआ हे तबलग जो पदार्थ उस सृष्टिविषे हे सो इ भासेगा ॥ जेसा कर्म हे सो भासेगा अरु यह जगतरूपी सुपना हे तिसविषे स्वर्गादिक इष्ट पदार्थ हे अरु नर्कादिक अनिष्ट पदार्थ हैं ॥ तिसके प्राप्ति होणेका साधन धर्म अधर्म हे ॥ धर्म स्वर्ग सुखका साधन हे अधर्म नर्क दुःखका साधन हे ॥ जबलग अविद्यारूपी निद्राविषे सोया हुआ हे तबलग इनकों जथार्थ जाणता हे जब जागेगा तब सब आत्मरूप होवेगा ॥ इष्ट अनिष्ट कोउ न रहेगा अरु जेता कछू जगत भासताहे सो सब अनुभवरूप हे ॥ सो अनुभव सदा जाग्रतजोत हे तिसीकों जाण ॥ अरु जिन पुरुषने इस अनुभवकों नही जाण्या सो उन्मत्त पशूहे ॥ काहेतें जो आत्मबोधतें शून्यहे ॥ सदा समीप आत्माकों नही जानते इसतें उन्मत्तहे ॥ उन्मत्तकोंभी अपणा आप भूलि जाताहे ॥ जेसें किसीकों पिसाच लागताहे तब उसकों अपना स्वरूप विस्मरण हो जाताहे ॥ पिसाचही देहविषे बोलताहे तैसें जिसकों अज्ञानरूपी भूत लागा हे सो उन्मत्त भया हे ॥ अपने आत्मस्वरूपकों नही जाणता ॥ अरु विपर्यय बुद्धि करकें देहादिककों आत्मा जानताहे विपर्यय शब्द करता हे ॥ अरु जिनकों स्वरूपविषे अहं प्रतीतहे ॥ तिनकों सर्व जगत आत्मरूप भासताहे ॥ हे रामजी जो आदिसृष्टी किसी कारणकरि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वणी होती तो ईसके पाछें प्रले आदिकविषे कछू सेष रहता सो तो अत्यंत अभाव होतीहे तातें सब जगत अकारण हे ॥ जेसें चिंतामणीतें अकारण पदार्थ दृष्ट आताहे तेसें इह अकारणहे ॥ न कछु संस्कारहे न स्मृतिहे सब आत्माके पर्यायहे ॥ आत्मातें इतर कछू नही ॥ तातें सर्व जगत आत्मरूप जाण ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् जो संस्कारतें अनुभव नही होता अरु अनुभवतें स्मृति नही होती तो प्रसिद्ध इस प्रकार दृष्ट क्यों आते हैं ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह संसाभी तेरा दूर करता हों जेसें हस्तीके बालक मारणेविषे सिंघकों जतन कछू नही होता ॥ तेसें इस संसेके नास करणेकों मुझे जतन कछु नही जेसें सूर्यके उदे हूए तिमिरका अभाव होता हे तेसें मेरे वचनों करि तेरा संसय दूर होजावेगा ॥ हे रामजी जेता कछू जगत तूं देखता हे सो सब चिन्मात्र स्वरूप हे तिसतें इतर कछू नही ॥ जेसें थंभेविषे सिल्पी पुतलीयां कलपता हे परंतु पुतलीयां कछु बनीयां नही ॥ उसके चित्तविषे पुतलीयांका आकार हे तेसें आत्मारूपी थंभा हे तिसविषे चित्तरूपी सिल्पी पुतलीयां कलपता हे ॥ हे रामजी थंभेसों पुतलीयां निकासीयां हे तोभी निकसतीयां हे ॥ परंतु आत्मा तो अद्वैत हे ॥ निराकार हे तिसविषे अवर कछु नही निकसता ॥ तिसविषे वाणीकीभी गम नही चैतनमात्र हे ॥ तिसविषे अहं ऐसा जो फुरणा फुर्या हे तब आपकों चैतन जानत भया ॥ बहुरी आगें शब्दके अर्थ कलपे हे ॥ सो शुद्ध अधिष्ठान चैतन आपकों जानत भया सोइ स्वर्ग हे ॥ ईश्वर जीव ब्रह्मा इंद्र वरुण कुबेर पृथ्वी जल तेज वायु आकाश देश काल इत्यादिक शब्द अरु अर्थ फुरणेहीविषे हुए हे ॥ जेसें एकही समुद्रविषे द्रवता करके आवर्त तरंग फेन बुदबुदे नाम होते हे सो सब ब्रह्मके नाम हे ब्रह्मतें इतर कछू नही ॥ ब्रह्मही अपणे आपविषे स्थित हे ॥ उही फुरणेकरी जगत आकार हो भासता हे ॥ फुरणेतें रहित जगत आकार मिटि जाता हे परंतु फुरणे अफुरणेविषे ब्रह्म ज्योंका त्यों हे ॥ जेसें स्पंद निस्पंदविषे वायु ज्योंकात्यों हे तेसें ब्रह्म ज्योकात्यों हे ॥ अरु जेते कछु पदार्थ भासते हे सो सब ब्रह्मस्वरूप हे ॥ जेसें सुपनेविषे अपणाही अनुभव पहाड वृछ आदिक नाना प्रकारका जगत होभासता हे ॥ तेसें ब्रह्मसत्ता यह जाग्रत जगतरूप होभासती हे ॥ तिसविषे कछु अंतवाहक हो भासता हे ॥ कछु अधिभूतक भासता हे ॥ कहूं ईश्वर कहूं जीव होभासता हे ॥ इसतें आदि लेकरि शब्द अर्थ संयुक्त जीव फुरता गया हे ॥ सो ब्रह्मसत्ता इस प्रकार स्थित भइ हे ॥ जेसें थंभेविषे पुतलीयां थंभरूप होतीयां हे ॥ तेसें आत्माकासविषे जगत आत्मस्वरूप हे ॥ आत्मातें इतर कछु नही ॥ जेसें तिसविषे जगत आभास हे तेसें स्मृति अनुभवभी आभास हे ॥ स्मृति जो संस्कार हे तिसतें जगतकी उत्पत्ति तब कहीये जब स्मृति आभास न होवे सो तो स्मृति संस्कारभी आभास हे यह जगतका कारण केसें होवे ॥ स्मृतिभी तब होती हे जो प्रथम जगत होता हे सो जगत नही तो स्मृति केसें होवे ॥ तातें जगत आभासमात्र हे इसका कारण कोउ नही ॥ हे रामजी स्मृति संस्कार जगतका कारण तब होवे ॥ जो कछू जगत आगें हुआ कहो सो कछू न था ॥ अरु अनुभव तिसका होता हे जो पदार्थ भासता हे सो तो इस जगतके आदि कछू जगतका अंश न था बहुरी अनुभव केसें कहों ॥ जो अनुभवही न हुआ तो स्मृति किसीकों होवे ॥ जो स्मृतीही न हुइ तो बहुरी तीसतें जगत केसें कहों ॥ तातें हे रामजी आदि जो जगत फुर्या हे सो अकारण अकस्मात्तें फुर्या हे ॥ जेसें रत्नकी लाट होती हे तेसें जगत हे ॥ पाछेंतें कारण कार्यरूप भासती हे ॥ आदि अकारणरूप हे ॥ तातें हे रामजी जिसका कारण कोउ न होवे सो जाणीयें जो उपजी नही ॥ जिसविषे भासती हे उही रूप हे ॥ अधिष्टानतें इतर कछू नही तातें सब जगत ब्रह्मस्वरूप हे ॥ स्मृतीभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भमविषे आभास फुरी हे ॥ अनुभवभी आभास हे ॥ सो ब्रह्मतें इतर कछू नही अरु आभासभी कछू फुर्या नही आभासकी न्यांइ जगत भासता हे ॥ आत्मसत्ता अद्वैत हे जिसविषे आभासभी नही बणता न स्मृति हे न अनुभव हे न जाग्रत हे न सुपन हे यह कल्पना कछू नही ॥ तो क्या हे ब्रह्मही हे ॥ अरु फुरणा जो कछु कहते हे सो कछू वस्तु नही ॥ जेसें थंभेविषे सिल्पी पुतलीयां कलपता हे तेसें स्पंद चेतना आत्माविषे जगत कलपती हे ॥ अरु सील्पी जो कलपता हे सो आप भिन्न होकरी कलपता हे ॥ अरु यह चित्तसत्ता अैसी हे जो अपणेही स्वरूपविषे कलपती हे ॥ जगत्रूपी पुतलीयां देखती हे सो आत्मा आकासरूपी थंभ हे तिसविषे जगतभी आकाशरूपी पुतलीयां हे ॥ जेसें आकाश अपणे आकास भावविषे स्थित हे तेसें ब्रह्म अपणे ब्रह्मत्वभावविषे स्थित हे ॥ जगत भिन्नभी दृष्ट आता हे परंतु अचैत चिन्मात्र स्वरूप हे भेद भावकों नही प्राप्त भया ॥ विकारवानभी दृष्ट आता हे परंतु विकार कछू हूआ नही ॥ जेसें सुपनेविषे आपही सब स्पष्ट भासते हे ॥ तेसें इह जगत अपणे आपविषे भासता हे परंतु हे कछु नही ॥ हे रामजी यही आश्चर्य हे जो में अेसा उपदेश कीया हे अपणे अनुभवकों प्रगटकरि कहा हे ॥ अरु जीव आपभी जानते हे सुपनेविषे नित देखते हे अरु सुणतेभी हे परंतु निश्चे करि जाणि नही सकते ॥ अरु सुपन पदार्थकों मूर्खता करि त्याग नही सकते इह आश्चर्य हे ॥ ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे सालभजनकोपदेशो नाम द्विशताधिकैकपंचाशत्तमःसर्गः ॥ २५१ ॥ ॥७॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो पुरुष इंद्रियके इष्ट विषयकों पायकरि सुख नही मानता अरु अनिष्ट विषयकों पायकरि दुःख नही मानता इनके भमतें मुक्त हे ॥ जिसकों बडे भोग आनि प्राप्त हूएहे अरु अपणे स्वरूपतें चलायमान नही होता तिसकों जीवनमुक्त जाण ॥ हे रामजी जेते कछु शब्द अर्थहे सो जिसकों द्वैतरूप नही भासते सो तुं जीवनमुक्त जाण ॥ जिस अविद्यारूपी जाग्रतविषे अज्ञानी जागते हे तिसतें ज्ञानवान सोए रहेहे अरु परमार्थरूपी जाग्रततें अज्ञानी सोए रहेहे नही जानते इह अर्थहे ॥ तिसविषे जीवनमुक्त स्थितहे ॥ इस कारणतें ज्ञानवान इष्ट अनिष्ट विषयकों पायकरी सुखी अरु दुःखी नही होते ॥ तिनका चित्त सदा आत्मपदविषे स्थित हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् जो पुरुष सुखकों पायकरि सुखी नही होता ॥ अरु दुःख साथ दुःखी नही होता सो जड हूआ चैतन तो न हूआ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी सुख दुःख तब लग होताहे जबलग चित्तकों जगतका संबंध होताहे जब चित्त जगतके संबधतें रहित चिनमात्र होताहे तब उपाधिक जो हे सुख अरु दुःख सो नही रहते ॥ जो अपणे सुभावविषे स्थित पुरुष हे ॥ सो परम विश्रामकों प्राप्त होताहे ॥ अरु उह सर्वकों करता हे परंतु स्वरूपतें उसकों कर्तव्यका उत्थान कछु नही होता ॥ निश्चा सदा अद्वैतविषे रहता हे ॥ नेत्रसाथ देखताहे ॥ परंतु द्वैतकी भावना उसकों कछु नही फुरती ॥ जेसें अत्यंत उनमत्त होताहे तिसकों सब पदार्थ दृष्टभी आवतेहे परंतु उसकों पदार्थका ज्ञान कछु नही होता ॥ तेसें जिसकी बुद्धी अद्वैतविषे घनीभूत भइहे तिसकों द्वैतरूप पदार्थ नही भासते ॥ जिनकों द्वैत नही भासता तिनकों सुख दुःख कैसें भासे ॥ तिन पुरुषनें तहां विश्राम कीया हे ॥ जहां न सिज्जा हे न जाग्रत हे न सुपन हे न सुषुप्ति हे ॥ सर्व द्वैततें रहित अद्वैतरूपी सिज्जाविषे विश्राम करि रहेहे ॥ संसार मार्गतें उलंघ गएहे अरु आत्माके प्रमादकरि इसकों कष्ट होताहे ॥ अपणि विभूति विद्याकों त्यागकरि प्रसंन होताहे बहुरी संसारके क्रूर मार्गविषे कष्ट पावताहें उह मनुष नही मानों मृग हे ॥ संसाररूपी जंगलविषे कष्ट पावताहे जब तृषाकरि कायर होताहे तब जलकी उर दउडताहे जहां जाताहे तहां मरूथलकी नदी भासती हे ॥ ज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ल प्राप्त नही होता बहुरी आगें दउडताह ॥ तब अधिक तृषा बढती जातीहे ॥ इस प्रकार दउडता दउडता जड होजाताहे ॥ दुःखी होकरि मरी जाताहे परंतु जल प्राप्त नही होता सो जल अरु दउडना अरु जडता अरु मरना चारों भिन्नाभिन्न सुण ॥ हे रामजी मन रूपी तो मृगहे अरु संसाररूपी जंगल हीविषे आनि पडाहे ॥ अरु इंद्रीयांकें विषयरूपी जलाभास हे तिनकों सत जाणीकरी सांतिके निमित्त तृष्णारूपी मार्गकरि दउडताहे ॥ सो विषय आभासमात्र हे ॥ तिसविषे सांतिरूपी जल हे नही ॥दउडता दउडता वृद्ध अवस्थाविषे जाय पडताहे ॥ तब जड होजाताहे ॥ ऐसें कष्टकों प्राप्त होताहे अरु सांतिरूपी जल नही पावता तृप्त नही होता ॥ हे रामजी इस मनुषही मांनों पेंडोइ हे तिसके सिसपर बडा भार हे ॥ अरु क्रूर मार्ग विषे चल्या जाताहे अरु मार्गविषे इसकों चोरनें लुटी लीयाहे तिसकरि जलताहे इस पुरुषरूपी पेडोइके सीसपर जनमका बडा भार हे ॥ संसेरूपी मार्गविषे खडा हे ॥ कर्म इंद्रीयज्ञान इंद्रीय तिनके जो विषय हे इष्ट अनिष्ट तिनके राग दोषरूपी तसकरनें इससो विचाररूपी धन हरि लीयाहे तिसकरि रागदोष तृष्णारूपी अग्नी साथ जलताहे ॥ बडा आश्चर्यहे जो ऐसे क्रूर मार्गकों त्यागकरि उन परमपदविषे विश्राम पाया हे ॥ अन्य अनंदकों त्यागकरि परमपद आनंदकों प्राप्त भए हे ॥ तिन मुक्त पुरुषकों संसारका दुःख सुख व्यापी नही सकता ॥ पर म अद्वैत शुद्ध सत्ताकों प्राप्त भए हे ॥ सर्वकों देखते हे ग्रहण अरु त्यागरूपी जो अग्नि हे तिसकों त्यागकरी उन परमपदविषे विश्राम पाया हे ॥ सदा सोय रहते हे प्रगट सुखसाथ जो सोते हे सो उही सोते हे ॥ उनके अंतर सदा शांति रहती हे परंतु जडतातें रहित हे ॥ आकाशतेंभी अधिक सूक्ष्मसत्ताकों प्राप्त हूए हे ॥ जेसें समुद्रविषे धुड नही पाइति ॥ जेसें सूर्यविषे तम नही पाइता ॥ तेसें उनविषे लोभ जो हे इंद्रियके इष्ट विषयकी तृष्णा सो नही पाइती ॥ तिनतें रहित होकरी तिननें विश्राम पाया हे ॥ इह आश्चर्य हे अणुतें अणु होकरी अरु महत तें महत हो करी केवल विश्रामवान हुएहे ॥ हे रामजी जो आत्मसत्ताकी उरतें सोए पडे हे तिनकों दुःख होताहे ॥ अरु ज्ञानवान द्वैत जगतकी उर जड हूए हे अरु अपणे स्वरूपविषे चैतनकों दुःख कछु नही ॥ उह जाग्रतकी उरतें सोए हे ॥ तिनकों अविद्यक जो जगत हे दृश्य संबंध सो दूर होगया हे ॥ उह इस उरतें सोए हे उनकों बहुरी दुःख केसें होवे ॥ उह पुरु ष सदा अद्वैतरूप हे ॥ जो अनंत जगतकों करता हे अरु आपकों सदा अकर्ता जानता हे ॥ ऐसें आश्चर्य पदविषे तिननें विश्राम पाया हे ॥ जगतके समुह सत्ता समानविषे स्थित कर्कै विश्राम पाया हे ॥ इह आश्चर्य हे अरु उह संपूर्ण क्रियाकों करते हे परंतु सदा अक्रियपदविषे स्थित हे ॥ संपूर्न पदार्थविषे सुपनवत् जाणीकरी सुषुप्त भए हे ॥ आकाशतेंभी अधिक सू क्ष्म हूए हे ॥ आत्मसत्ताविषे विश्राम पाया हे ॥ सो आत्मसत्ता आकाशकोंभी व्याप रही हे ॥ तिसकों आत्मवत् जाणिकरिकें स्थित भए हे परम स्वछ जो पद हे तिसविषे सर्व शब्द अ र्थ आकाशरूप होजाते हे ॥ आकाशभी आकाश होजाता हे ॥ तिस पदविषे विश्राम कीया हे सो आश्चर्य हे ॥ अरु नेत्र उसके खुले हूए हे अरु सुषुप्तिविषे स्थित हे ॥ क्या सुषुप्ति हे जो दृग् अरु दृश्य भाव उनका दूर होगया हे ॥ अरु जगत्के प्रकाशशतें रहित हे अरु परम प्रकारूप हे ॥ हे रामजी बाह्य जो भोग पदार्थ हे तिनतें रहित हे अंतर आत्माविषे स्थित हे ॥ प्रगट जो सोता हे अरु सुषुप्तिविषे जागता हे अरु जाग्रततें उसकों सुषुप्ति हे ॥ उह सुषुप्ति साथ सोया हे ॥ कर्म करता हे परंतु करता करण भावतें रहित हे ॥ क्रोधभी करता हे क्रोधके फुरने तें रहित हे ॥ सर्व उरतें प्रकाशवान होकरि विराजते हे ॥ निर्भय होकरि विश्राम कर्ते हे ॥ कामना कर्तेभी दृष्ट आते हे परंतु तृष्णातें रहित हे ॥ निःसंकल्प पदविषे स्थित भए हे यह आ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्वर्य हे जिस क्रियाकी उर देखते हे तिसी उर तिनकों शांति भासती हे ॥ काहेतें जो एक मित्र तिनके साथ रहता हे तिसकरि दुःख कोउ तिनके निकट नहीं आता ॥
॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे जीवन्मुक्तलक्षण वर्णनं नाम द्विशताधिकद्वि पंचाशत्तमःसर्गः ॥ २५२ ॥ ॥ॐ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ॐ॥
॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् उह मित्र कवन हे ज्ञानीका कोउ कर्म मित्र हे अथवा आत्माविषे विश्रामका नाम मित्र हे ॥ यह संक्षेप करी मुझकों कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी एक अकृतम कर्म हे अपणे सुकर्म उनका नाम हे ॥ अपणाही जो प्रयत्न हे सो उनका मित्र हे ॥ सो में कहता हों सो सुण॥अध्यात्मक अधिदैविक अधिभूतक इह तीन ताप सदा अज्ञानीकों जलातेहे सो ज्ञानीकों नही भासता ॥ जो बडा कष्ट आनि प्राप्त होवे सो लंघणा कठिनहे ॥ बडु कोप होवे सोभी उसकों स्पर्श करता नही ॥ जेसें कमलकों जल नही स्पर्श करता तेसें ज्ञानीकों कष्ट नही स्पर्श करता ॥ काहेते जो मित्र उसके साथ रहताहे ॥ जेसें बालकका मित्र बालक होता हे सो बडे भयभी उनका हेतू होताहे तेसें चिरकाल जो ज्ञानवाननें अभ्यास कीयाहे सो अभ्यास इसका मित्र हो रहताहे ॥ दुष्ट क्रियाकी उर उह विचरणे नही देता ॥ अरु सुभकी उर वरतावताहे ॥जेसें पिता पुत्रकों अशुभकी उरतें वरजिकरी शुभकी उर लगावता हे तेसें उसकों विचाररूपी मित्र तृष्णातें वर्जना करता हे ॥ अरु आत्माकी उर स्थित करता हे ॥ अरु राग दोषरूपी जो अग्नि हे तिसतें निकासी करी समतारूपी जो शीतलता हे तिसकों प्राप्त करता हे ॥ अेसा उसका विचाररूपी मित्र हे अरु जेते दुःख क्लेश हे तिन सबतें उह तराए ले जाता हे ॥ जेसें मलाह नदीतें तराए ले जाता हे ॥ हे रामजी विचाररूपी मित्र बहुत सुंदर हे अरु शांतरूप हे ॥ सर्व मेलकों जलावणेहारी अग्नि हे जेसें स्वर्नकी मेलकों अग्नि जलाए करी निर्मल करती हे तेसें विचाररूपी अग्नि राग दोषरूपी मलकों जलावती हे ॥ अरु जब विचाररूपी मित्र आता हे तब सुभाविक इसकी चेष्टा निर्मल हो जाती हे ॥ वेद उक्त विचरता हे अरु सब कोउ उसकों देखीकरी प्रसन्न होता हे ॥ दया अरु कोमलता अमान अक्रोध आदिक गुण सुभाविक आनि प्राप्त होते हे ॥ जेसें तिलविषे तेल रहता हे ॥ जेसें फुलविषे सुगंध रहती हे अग्नीविषे उष्णता रहती हे तेसें विचारकरी ज्ञानीविषे शुभ आचार रहते हे ॥ अरु विचाररूपी मित्र सूरमा हे जो कोउ शत्रु होता हे ॥ प्रथम तिसकों मारता हे ॥ अज्ञानरूपी शत्रुकों नास करता हे जेसें सूर्य तमकों नास करता हे अरु दीपक प्रकाशवत साथ होता हे ॥ विषय भोगरूपी अंध कूप जो गंदगी हे तिसविषे गिरने नही देता ॥ सर्व उरतें रक्षा करता हे अरु जिस उरतें उह पुरुष जाता हे तिस उरतें सबकों प्रसन्नता उपजती हे ॥ हे रामजी वचन तिसका अैसा होता हे ॥ जो कोमल अरु मधुर अरु स्निग्ध क्षोभते रहित उदार आत्मा अरु लोकपर उपकार अरु प्रसन्नताकों लीये बोलणा ॥ अरु सुहृदता शांतरूप अरु परमार्थके कारण ॥ हे रामजी वचन तो तिसके अैसें होते हे प्रसन्नताकों लीये हुए अरु आपभी सदा प्रसन्न रहता हे ॥ जेसें पतिव्रता स्त्री भर्तारकों सदा प्रसन्न राखती हे तेसें विचाररूपी मित्र इसकों सदा प्रसन्न राखता हे ॥ सदा शुभ आचारविषे राखता हे ॥ दान तप जज्ञादिक जो शुभ क्रिया हे सो आपही करता हे ॥ अरु लोकों तेंभी करावता हे ॥ अरु जिसके अंतरविषे विवेकरूपी मंत्री आता हे ॥ तहां अपणे परिवारकोंभी साथ ले आता हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन उसका परिवार कवन हे अरु उसका स्वरूप क्या हे अरु उनका आचार क्या हे ॥ संक्षेपते सबही कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी स्नान दान तपस्या ध्यान यह चारो उसके बेंढे हे ॥ स्नान तो इह हे जो सदा पवित्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहता हे ॥ जथाजोग अरु जथा शक्ति दान करता हे अरु बाहिरं वृत्तिकों स्थित अंतर करना ॥ इसका नाम तप हैं ॥ अरु आत्मकी वृत्तिविषे चित्तकों लगावणा इसका नाम ध्यान हे ॥ इह चारों उसके बेटे हे ॥ हे आत्मदर्शी परंतु वृत्तिकों सदा सुभाविक अंतर्मुख व्यवहार होता हे ॥ अरु मुदिता इसकी स्त्री हे सदा प्रसन्न रहणा इसका नाम मुदिता हे सो नमस्कारकों जोग हे ॥ जेसें चंद्रमा द्वितीयाकी रेषाकों देखकरी सब कोउ प्रसन्न रहता हे अरु नमस्कार करता हे तेसें तिसकों देखकरी सब कोउ प्रसन्न होता हे अरु नमस्कार करता हे ॥ अरु मुदितारूपी स्त्री साथ एक सहेली रहती हे ॥ करुणा अरु दया तिसका नाम हे अरु समतारूपी द्वारपालनी सन्मुख खडी रहती हे ॥ जब विवेक राजा अंतःपुरविषे आता हे ॥ तब सन्मुख होकरी सब स्थान दिखाती हे अरु सदा संगी रहती हे ॥ अरु जिस उर राजा देखता हे तिस उर समताइ दृष्ट आती हे सो आनंदके उपजावणे हारी हे ॥ सो दो पुत्र साथ लेकरी पुरिविषे विचरती हे ॥ जिस उरतें राजा भेजता हे तिस उरतें धीर्य अरु धर्मकों लीये फिरती हे ॥ जब राजा असवार होकरी चलता हे तब उहभी समरूपी वाहनपर आरूढ होकरी राजाके साथ जाती हे ॥ जब राजा शत्रु साथ लढाई करता हे सो शत्रु कवन हे पांचों विषय शत्रु हे ॥ तब धीर्य संतोष मंत्री मंत्र देता हे ॥ तब विचाररूपी बाण साथ तिनकों नष्ट करता हे ॥ हे रामजी विचार तिसके सदा संग रहता हे ॥ अरु सब कार्यकों करता हे ॥ यह सुभाविक चेष्टा उसतें होती हे अरु आप सदा अमान रहता हे ॥ कतृत्व अरु भोक्तृत्वका अभिमान तिसकों कोउ नही फुरता ॥ जेसें कागद उपर मूर्त्ति लिखी अभिमानतें रहित होती हे ॥ तेसें उह अभिमानतें रहित हे ॥ अरु जो परमार्थ निरूपणतें रहित निरर्थक वचन हे तिनके बोलणेतें गुंग हे ॥ पथरकी शिलावत अरु निरर्थक संबंध सुनणेतें दोराहे ॥ जेसें पाषाण नही सुनता ॥ अरु जो क्रिया शास्त्रलोक करी निषेध हे तिसकी उरतें सब हे ॥ जेसें सबसों कछु क्रिया नही होती तेसें उसकों क्रियाका उत्थान नही होता ॥ जहां ज्ञानवान अरु जिग्यासीकी सभा होती हे तहां परमार्थके निरूपणकों शेसनाग अरु बृहस्पतीकी न्यांइ होता हे साविधान इत्यादिक जो शुभ क्रिया हे सो उससों सुभाविक होती हे ॥ जेसें सूर्य चंद्रमा अरु अग्निविषे प्रकास सुभाविक होता हे तेसें उनविषे सुभाविक सुभ क्रिया होती हे ॥

॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे जीवन्मुक्तिबाह्यलक्षण व्यवहार वर्णनं नाम द्विशताधिकत्रिपंचाशत्तमः सर्गः ॥ २५३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ ॥ हे रामजी यह जगत वास्तवतें ज्ञानस्वरूप हे ॥ आत्मसत्ताका चमतकार हे अवर कछु बन्या नही ॥ ब्रह्मसत्ताही फुर्नेकरें इस प्रकार हो भासतीहे अवर कारन इसका कोउ नही ॥ जब महाप्रले थी तब सब्द अर्थ द्वैत कछु न था ॥ तिस अद्वैत सत्तातें जगत फुरि आयाहे सो तिसीतें भासी आयाहे ॥ जेसें बीजतें वछ उत्पत्ति होताहे ॥ सो बीजभी जगतका कोउ न था ॥ तो किसी कारनतें उत्पत्ति हूआ अवर तो कारन कोउ न था ॥ तातें अबभी जगतकों महा प्रलेरूप जाण ॥ हे रामजी न कोउ पृथ्वी आदिक तत्व हे न जगत हे न आभास हे न फुरणा हे ॥ जेसें आकासके फुलका सब्द निरर्थक हे तेसें इनका होणाभी निरर्थक हे ॥ केवल ब्रह्मसत्ता स्वछ अपणे आपविषे स्थित हे ॥ रूप इंद्रिया मनभी ब्रह्म स्वरूप हे ॥ जेसें सुपनेविषे अपणा अनुभवहे ॥ नाना प्रकारका जगत आकार अरु इंद्रिय मन होकरि भासताहे ॥ अवर तो कछु नही तेसें यह जगतभी उहीरूप हे ॥ हे रामजी सर्व जगत आत्मरूप हे ॥ जेसें कारणविना आकासविषे दूसरा चंद्रमा भासि आताहे सो कछु हूआ नही ॥ आकासही विषे भासी आताहे तेसें यह जगत आत्माका आभास हे ॥ जिसवि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

षे आभास फुर्या सो अधिष्टान ब्रह्मसत्ता हे ॥ जेते कछु पदार्थ तुझकों भासते हे सो ब्रह्मस्वरूप जाण जेसें मनोराजकी सृष्टि होतीहे सो अपणे अनुभवविषे होती हे उसका सरूप अनुभवतें इतर कछु नही ॥ तेसें सृष्टिके आदि जो अनुभव होताहे ॥ सो अनुभव रूप हे अवर कछु उपज्या नही ॥ उही अनुभव सत्ता इस प्रकार भासती हे ॥ हे रामजी देसतें देसांतरकों संवित प्राप्त होतीहे तिसके मधविषे जो अनुभव हे सो तेरा स्वरूप हे ॥ अवर सब आभास मात्र हे ॥ जाग्रत देसकों त्यागकरि सुपन सरीर साथ मिली नही जो जाग्रत सुपन देसका मध हे ॥ सो मध विषे ब्रह्मसत्ता तेरा स्वरूप हे ॥ सुप्रकासरूप अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जाग्रत जो जगत भासताहे सोभी उसीका सुभाव हे ॥ जेसें रत्नका सुभाव चमत्कार होताहे अग्नीका सुभाव उष्ण हे ॥ जलका सुभाव द्रवणा हे ॥ पवनका सुभाव फुरणाहे तेसें ब्रह्मका सुभाव जगत हे जेसें सूर्यकी किरणांविषे जल भासता हे तेसें आत्माविषे जगत भासताहे ॥ हे रामजी यह आश्चर्य हे जो अज्ञानी सतकों असत जानते हे अरु असतकों सत जानतेहे जो अनुभवसत्ता हे तिसकों छिपावतेहे ॥ अरु ससेके सिंधवत जगत हे ॥ तिसकों प्रत्यछ जानतेहे सो मुर्ख हे तिनकों क्या कहीयें ॥ सबका प्रकासक आत्मसत्ता हे जिसकों तुं सूर्य देखताहे सो उही परम सूर्य देव होकरी भासताहे ॥ चंद्रमा अरु अग्नि उसिके प्रकासकरि प्रकासतेहे ॥ सबका प्रकास तेज सत्ता उही हे ॥ जेसें सूर्यकी किरणाविषे सूक्ष्म अणु होताहे ॥ तेसें आत्मसत्ताविषे सूर्यादिक भासतेहे ॥ जिसकों साकार कहता हे अरु निराकार कहता हे सो सब ससेके सिंगवत हे ॥ ज्ञानवानकों अैसें भासता हे जो जगत कछु उपजा नही तो में क्या कहों ॥ जहां सर्व सब्दका अभाव होजाताहे तिसके पाछें चिन्मात्रसत्ता सेष रहती हे ॥ तहां शून्यकाभी अभाव होजाताहे ॥ हे रामजी जिनकों तुं जीता कहताहे सो जीताभी कोंउ नही ॥ जो जीता नही तो मुआ केसें होवे ॥ जो कहीएं जीता हे तो जेसें जीताहे तेसें मृतक हे ॥ मृतक अरु जोतेविषे कछू भेद नही ॥ तातें सर्व सब्दतें रहित अरु सबका अधिष्टान उही सत्ता हे ॥ तिसविषे नानात्व भासताभी हे परंतु हूआ कछु नही ॥ पर्वत जो स्थूल दृष्ट आते हे सो अणुमात्रभी नही ॥ जेसें सुपनेविषे पृथ्वी आदिक तत्व भासते हे परंतु कछु हूए नही केवल आत्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे तिसते जगत भासता हे ॥ हे रामजी जो परमार्थ सत्तातें जगत भास आया सो अवर तो कोउ न हूआ क्यों ॥ तातें उही सत्ता जगत्रूप हो भासती हे ॥ केइ कहते हे इस आत्माविषे हे केइ कहते हे इस आत्माविषे कछु नही ॥ सो आत्माविषे दोनों शब्दका अभाव हे अरु अभावकाभी अभाव हे ॥ इहभी तेरे जानणेके निमित्त कहता हों ॥ स्वस्थ हे परम शांतरूप हे ॥ उस अरु तेरेविषे कछु भेद नही ॥ परिपूर्ण अच्युत अनंत अद्वैत हे सोइ जगतरूप होकरी भासता हे ॥ जेसें कोउ पुरुष सैन करता हे तब सुषुप्तिविषे अद्वैतरूप होजाता हे ॥ बहुरी सुषुप्तीतें सुपना फुरि आता हे ॥ बहुरी सुषुप्तिविषे लीन होजाता हे तो उपज्या क्या अरु लीन क्या भया ॥ सुपनेके आदिभी अद्वैत सत्ता थी अरु अंतभी उही रही ॥ अरु मध्य जो कछु भास्या सोभी उही रूप हूआ ॥ आत्मातें इतर तो कछु न हूआ क्यों ॥ तातें जेता कछु जगत भासता हे सो ब्रह्मस्वरूप हे ब्रह्मतें इतर कछु नही ॥ हे रामजी हमकों तो सदा अनुभवरूप जगत भासता हे ॥ हम अैसें नही जानते जो अज्ञानीकों क्या भासता हे ॥ जेसें सुपनेकी सृष्टितें जाग्या हे तिसकों अद्वैत अपणा आप भासता हे तेसेंही तुरीयाविषे भासता हे ॥ तुरीया अरु जाग्रतविषे भेद कछु नही ॥ जाग्रतही नाम तुरीयाका हे जाग्रत तुरीयारूप हे यहभी क्या कहणा हे सवही अवस्था तुरीयारूप हे ॥ तुरीया नाम हे जाग्रत सत्ताका जो अनुभव साक्षी जोति हे सो जाग्रतविषेभी

॥ ८८ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साक्षी अनुभवरूप हे सुपनविषेभी साक्षीरूप हे ॥ सुषुप्तिविषेभी साक्षीरूप हे ॥ तातें सब तुरीयारूप हे ॥ परंतु जिसकों स्वरूपका अनुभव हूआ हे तिस ज्ञानवानकों अेसेंही भासता हे ॥ अरु ज्ञानीकों भिन्न भिन्न अवस्था भासती हे ॥ हे रामजी एक पदार्थकों दृत्तिनें त्याग कीया हे अरु दूसरे पदार्थविषे लागी नहीं ॥ उह जो मध्यविषे अनुभव जोति हे तिसकों तूं आत्म सत्ता जाण ॥ अरु तिसविषे जो बहुरी कछु भास्या ॥ सोभी उही रूप जाण ॥ जेसें जाग्रतकों त्यागकरि सुपनेके आदि साक्षी अनुभवमात्र होता हे ॥ तिस सत्ताविषे सुपन शरीर अरु पदार्थ भासते हे सोभी आत्मरूप हे ॥ तेसें जो कछु जाग्रत् शरीर अरु पदार्थ भासते हे सो आत्मरूप हे जब तुम अैसें जाणोगे तब तुमकों दुःख कोउ स्पर्श न करेगा ॥ जेसें सुपनेकी सृष्टिविषे अपणे स्वरूपकी स्मृति आइ तब दुःखभी अदुःख होता हे ॥ बोलणा चलणा खाणा पीणा देणा इनतें आदि लेकरी शब्द अरु अर्थ होते हे अरु जुद्ध कर्म द्वैतरूप होते हे ॥ सो सब अद्वैत अपणा आप होजाते हे ॥ व्यवहारभी सब करता हे परंतु अपणे निश्चेविषे कछु नही फुरता ॥ तेसें जो पुरुष अपणे स्वरूपविषे जागे हे तिनकों सब जगत् आत्मरूपही भासता हे ॥ जेसें अग्निविषे उष्णता सुभाविक हे, जेसें बरफविषे सीतलता सुभाविक हे तेसें ज्ञानवानकों आत्मदृष्टी सुभाविक हे ॥ अवर लोककों यह दृष्टी जतन करि प्राप्त होती हे ॥ अरु ज्ञानवानकों सुभाविक होती हे ॥ जिसकों तुम इछा कहतेहों सो ज्ञानवानकों सब भमरूप हे ॥ अनिछाभी ब्रह्मरूप भासती हे अरु ज्ञानवानकों आत्मानंद प्राप्त हुआ हे ॥ अपणा जो सुभावसर हे सदा तिसविषे स्थित हे ॥ अवर कल्पना उसकों कोउ नही उठती ॥ उह विद्यमान निरावरण दृष्टकों लेकरि स्थित होता हे॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे द्वैतएकताअभाववर्णनं नाम द्विशताधिकचतुःपंचाशत्तमःसर्गः ॥ २५४ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जेसें सुपनेविषे पृथ्वी आदिक पदार्थ भासतेहे सो अविद्यमान हे कछु हे नही॥ तेसें पिता माता जो आदि ब्रह्माजीहे तिसकोंभी आकाशरूप जाण ॥ उहभी कछु हूआ नही ॥ आत्मसत्तातें इतर कछु उसका होणा नहीं ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग अरु बुद्बुदे उठतेहे सो सुभाविक हे ॥ तरंग शब्द कहणाभी उनकों नही बनता ॥ उह तो जलरूप हे॥ तेसें जीसकों तुम ब्रह्माजी कहते हो सो अवर कोउ नही ॥ आत्मसत्ताही इस प्रकार हो भासतीहे ॥ ब्रह्माजी इस जगतका विराट हे ॥ जेसें पत्र फूल फल टास वलके अंग हे तेसें सब भूत विराटके अंग हे ॥ जो विराट ब्रह्माही आकाशरूप हे तो तिसके अंग जगतकी वार्ता क्या कहीयें ॥ हे रामजी विराटके न प्रान हे, न आकार हे, न इंद्रियां हे, न मन हे, न बुद्धि हे, न इछा हे, केवल अद्वैत चिन्मात्रसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जो विराट नही तो जगत केसें होवे ॥ जो तुं कहे आकाशरूपके अंग केसें भासते हे तो हे रामजी जेसें सुपनेविषे वडे पहाड पर्वत प्रत्यक्ष दृष्ट आते हे परंतु कछु बने नही आकाशरूप हे तेसें आदि विराटभी कछु बन्या नही आकाशरूप हे ॥ तिसके अंग में साकाररूप केसें कहों सब आकार संकल्पपुरकी न्यांइं कल्पित हे ॥ एक आत्मसत्ताही सर्वदा काल ज्योंकीत्यों स्थित हे ॥ तिसविषे स्मृति क्या कहीए अरु अनुभव क्या कहीए ॥ अनुभव स्मृतिभी तिसका आभास हे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग आभास होतेहे तेसें आत्माविषे अनुभव अरु स्मृतिभी आभासहे ॥ ॥ अरु स्मृतिभी तिसकी होतीहे जिसका प्रथम अनुभव होताहे ॥ सो अनुभवभी जगत्विषे होताहे ॥ जहां जगतभी उपजा न होवे तो अनुभव अरु स्मृति तिसकी केसें होवे ॥ तातें न अनुभव हे न स्मृति हे इस कल्पनाकों त्याग देहि ॥ जहां पृथ्वी होतीहे तहां धुडभी होतीहे ॥ जहां पृथ्वीतें रहित आकासही होवे तहां धुड केसें उडे ॥ तेसें जहां पदार्थ होतेहे तहां स्मृति अनुभवभी होताहे ॥ जहां पदार्थही नही तो यह केसें होवे ॥ तातें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोनोंका अभाव है ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् स्मृतिवानविषे इष्ट स्मृतिका अनुभव तो प्रत्यक्ष होताहै ॥ प्रथम पदार्थका अनुभव होताहै ॥ पाछें उसकी स्मृति होतीहै तिस स्मृति संसकारतें बहुरी अनुभव होताहे ॥ ऐसेंहीं भमादिकका क्यों न होवे ॥ यह तो प्रत्यक्ष भासताहे तुम केसें इसका अभाव कहनेहो अरु अभावविषे विशेषता क्या हे ?॥ ॥ वसिष्ठो वाच ॥ हे रामजी स्मृतितें अनुभव तहां होताहे जहां कार्य कारण भाव होताहे अरु ब्रह्मातें आदि लेकरी काष्ट पर्यंत जेता कछु जगत तुझकों भासताहे सो सब आकासरूप हे ॥ कछु बन्या नही अविद्यमानही भमकरि विद्यमान भासताहे ॥ जेसें सूर्यकी किरणांविषे जल भासताहे सो अविद्यमान हे ॥ भमकरि जल भासताहे तेसें यह जगत भमकरि भासताहे अरु स्मृति तिसकी होतीहे ॥ जिस पदार्थका प्रथम अनुभव होतेहे जो कहिए भमादिक स्मृति संस्कारतें उपजाहे तो ऐसें नही बनता काहेतें जो प्रथम तो ज्ञानवानका स्मृतितें होणा नही हो ता ॥ तो तिनका स्मृति कारण केसें कहीयें अरु दुतीय यह हे जो इस जगतके आदि कोउ जगत न था ॥ जिसकी स्मृति मानीए इस जगतके आदि केवल अद्वितीय आत्मसत्ता थी तिसविषे स्मृति क्या अरु अनुभव क्या ॥ तातें ब्रह्मादिकका होंणा अरु जगतका होणा किसी कारण कार्य भाव करि नही अकारण हे ॥ हे रामजी प्रथम तो तुम यह देखु ॥ जो ज्ञानी कों जगत नही भासता तो स्मृति किसकी कहीए ॥ उसकों तो केवल ब्रह्मसत्ताही भासतीहे जेसें सूर्यकों रात्रकी स्मृति नही होती तेसें ज्ञानीकों जगतकी स्मृति नही होती ॥ हमारे निश्चे विषे तो यह हे जो जगत न हूआहे न आगें होवेगा ॥ केवल अपणे आपविषे ब्रह्मसत्ता स्थित हे सो अद्वैत हे ॥ अवर सब तिसका आभासहे जो आभासकों सत जाणताहे तो स्मृति कोंभी सत जाण ॥ अरु जो आभासकों असत जाणताहे तो स्मृतिकोंभी असत जाण ॥ जेसें सुपने विषे सृष्टिका आभास होताहे तिसविषे अनुभवभी होताहे अरु स्मृतिभी होतीहे ॥ जागेतें सृष्टि अनुभव स्मृतिका अभाव होजाताहे ॥ तेसें परमात्मसत्ता अद्वैतके जाग्रतविषे अनुभव अरु स्मृतिका अभाव हे ॥ तिसविषे जगत कछु बन्या नही ॥ जेसें कोउ पुरुष मरुथलविषे भमकरी नही देखता हे ॥ अरु सत जाणीकरि उसकी स्मृति करता हे ॥ जो नही देखीथी सो उसके निश्चेही विषे नही हे अवर कछु नदी तो नही ॥ जो नदीही असत हे तो स्मृति केसें सत होवे ॥ तेसें अज्ञानीके निश्चेविषे जगत भास्या हे सो जगतही असत हे ॥ तिसकी स्मृति अनुभव केसें होवे ॥ ज्ञानवानके निश्चेविषे ऐसेंही भासता हे ॥ हे रामजी स्मृति जो होतीहे सो पदार्थकी होती हे ॥ सो पदार्थ कोउ नही सर्व ब्रह्मही अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जेसें जेसा तिसविषे फुरणा होता हे तेसाही होकरी भासता हे ॥ परंतु अवर कछु वस्तु नही ॥ जेसें वायु चलताभी हे अरु ठहरताभी हे सो चलणे अरु ठहरणेविषे वायुकों भेद कछु नही तेसें ज्ञानवानकों जगतके फुरणे अफुरणेविषे ब्रह्मसत्ता अभेद भासती हे ॥ कारण कार्य नही भासता जेसें पत्र टास फुल फल सब वृछके अवयव हे तेसें जगत आत्माके अवयव हे ॥ आत्माविषे प्रगट होते हे बहुरी लीनभी होजाते हे इतर कछु नही ॥ जब चित्त सुभा व फुरता हे तब जगत होकरी भासता हे ॥ कछु आरंभ अरु प्रमाण करकै नही होता आभासमात्र हे ॥ जेसें घट पट आदिक आत्माका आभास हे तेसें स्मृतिभी आभास हे ॥ स्मृतिभी जगतविषे उदे भइ हे जो जगतही असत हे तो स्मृति केसें सत होवे ॥ अरु जो यथार्थ दर्सी हे तिनकों सब ब्रह्मरूप भासता हे ॥ हमकों न कछु मोक्ष उपाय भासता हे न इसका कोउ अधिकारी भासता हे ॥ हमारे निश्चेविषे अद्वैत ब्रह्मसत्ताही भासती हे ॥ जेसें नट स्वांगकों धारता हे सो सब स्वांगकों आभास मात्र जानता हे ॥ किसी स्वांगकों सत नही जानता सब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषे स्वांगी अनागत जानता हे तिसतें इतर कछु नही ॥ तेसें हमकों ब्रह्मतें इतर कछु नही भासता ॥ अरु अज्ञानीकें निश्चेकों हम नही जानते ॥ जिस प्रकार उसकों जगत शब्द हे ॥ सो
उसके निश्चेकों कोउ नही जानताहे ॥ हमारे निश्चेविषे सब चिन्मात्रहे अज्ञानीकों जगत द्वैतरूप भासता हे अरु विपर्यय भावना होती हे ज्ञानवानकों चिन्मात्रतें इतर कछु नही भासता ॥
जेसें सुपनेकी स्रष्टी अपणे अनुभवविषे स्थित होती हे ॥ सर्वका अधिष्ठान अनुभवसत्ता हे ॥ परंतु निद्रा दोष करिकें भिन्न भिन्न भासतीहे ॥ तेसें अज्ञानीकों जगत भिन्न भिन्न भासता हे
अरु जो जागे हूए ज्ञानवान हे तिनकों भिन्न कछु नही भासता ॥ न उनकों अविद्या भासती हे न मूर्खता न मोह भासता हे सब अपणा आप हमकों ब्रह्मस्वरूप भासता हे ॥ जहां कछू
दूसरी वस्तु बनी नही ॥ तहां स्मृति अरु अनुभव किसका कहीये ॥ यह कलना सबही मिथ्या हे ॥ हे रामजी सर्व अर्थका जो अर्थभूत हे सो ब्रह्म हे सब पदार्थ तिसविषे कल्पित हे स्मृति
अरु अनुभव मनविषे होता हे सो मन आत्माविषे ऐसें हे ॥ जेसें सूर्यकी किरणांविषे जलाभास होता हे ॥ तिसविषे स्मृति क्या कहीए अरु अनुभव क्या कहीए सब कल्पित हे यह अ
र्थ हे अरु पृथ्वी आदिक तत्व आत्माविषे कछु बने नही ॥ ब्रह्मसत्ताही इस प्रकार भासती हे ॥ ज्ञानवानकों सदा ऐसेंहि भासता हे ॥ आभासभी आत्माविषे आभास हे ॥ कारण कार्य
भाव कदाचित् नही भासता ॥ जेसें सूर्यकों अंधःकार कदाचित् नही भासता तेसें ज्ञानवानकों कारण कार्यभाव दिखाइ नही देता ॥ जेसें सुपनेके आदि अद्वैत सत्ता होती हे तिसविषे
अकारण सुपनेकी स्रष्टी फुरीआती हे तेसें अद्वैत सत्ताविषे अकारण आदि स्रष्टी फुरी आई हे ॥ न पृथ्वी हे न कोउ अवर पदार्थ हे ॥ सब चिदाकाशरूप हे अवर कछु बन्या नही ॥ आ
भास मात्र जगतविषे स्मृतिकी कल्पना केसें होवे ? ॥ ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे स्मृतिआभाव जगत्परमाकाश वर्णनं नाम द्विशताधिकपंचपंचाशत्तमःसर्गः ॥ २५५ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन जिसविषे सर्व अनुभव होताहे तिसके देहविषे अहं प्रत्यय किस प्रकार होतीहे उह तो सर्वात्मा हे ॥ तिस सर्वात्माकों एक देहविषे अहं प्रत्यय होणा य
ह क्यों करि होताहे अरु काष्ट पाषाण पर्वत अरु चैतनका अनुभव किस प्रकार होगया हे उह तो अद्भुत स्वरूप हे तिसविषे जड चैतन यह दोनो भेद केसें हुए ? ॥ बसिष्ठोवाच ॥
हे रामजी जेसें सरीरविषे हाथ आदिक अपणे अंग हे तिन सर्व अंगविषे एक सरीर फुरणा व्याप्या हूआहे ॥ अरु जो तिन अंगविषे एक अंगकों पकडी करी कहे जो नाम ले कवन हे
तब उह अपणी नाम संख्या कहता हे तो तुं देख जो उस एक अंगविषे अपणा आप कहा क्यों ॥ परंतु सर्व अंगविषे उसकी आत्मता तो नास नही होजाती हे ॥ तेसें आत्माअनुभवरू
प हे तोभी एक अंगविषे उसकी आत्मता फुरता हे ॥ तिसकरि उसकी सर्वात्मता खंडन तो नही होजाती ॥ जेसें पत्र फूल फल टास आदिक सर्व अंगविषे वृछ एकही व्याप्या हूआ हे
परंतु जो एक टास अथवा पत्रकों पकडिकरि कहता हे तो कहता हे यह वृछ हे हे तो इसके एक अंगविषे वृछ भावना कहणा इसविषे वृछका सर्वात्मभाव नष्ट नही होता तेसेंही स
र्वात्मा एक देहविषे अहंभाव सिद्ध होता हे ॥ जड अरु चैतनभी दोनों भाव एकहीके धारे हे ॥ एकहीके दोनों स्वरूप हे ॥ जेसें एकही शरीरविषे दोनों सिद्ध होतेहे हाथ पांव आ
दिक जड हे ॥ अरु नेत्र इसके दृष्टा चेतन हें ॥ सो एकही शरीर दोनों धारे हे अरु दोनों एकही शरीरका स्वरूप हे तेसें एक आत्मानें दोनों धारे हे अरु एकहीके स्वरूप हे ॥ जेसें
वृछ अपणे अंगकों धारता हे ॥ अरु वृछ स्वभावकोंभी धारता हे तेसें सर्वात्मा सर्वकों धारता हे ॥ जेसें सुपन स्रष्टि सर्वकों अनुभव धारती हे ॥ अरु सर्व क्रियाकोंभी धारती हे तेसें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मसत्ता सर्व जगत अरु जगतकी सर्व क्रियाकों धारती हे काहेतें जो सर्वात्मा हे ॥ जो सर्वात्मा हे सो क्यों न धारे ॥ जेसें एकही समुद्रविषे अनेक तरंग उठते हे ॥ परंतु सबही समुद्रके आश्रे हे अरु उही रूप हे तेसें जेते कछु जीव हे सो परमात्माविषे फुरते हे अरु परमात्माके आश्रे हे अरु उही रूप हे जेसें तरंग आपकों जाणे जो में जलही हों तब तरंग संज्ञा उसकी जाती रहती हे जलरूपही देखता हे ॥ तेसें जीव जब परमात्मा साथ आपकों अभेद जाणे जो में आत्माही हों तब जीवत्वभाव उसका अभाव हो जाता हे ॥ परमात्माही देखता हे ॥ हे रामजी जेसें जलविषे द्रवता करकें तरंग भासता हे परंतु तरंग जलतें इतर कछु वस्तु नही ॥ तेसें शुद्ध चिन्मात्रविषे संवेदन करकें आदि ब्रह्मा फुर्या हे ॥ तिसनें यह जगत मनोराज करी कल्प्या हे ॥ सो आकाशरूप निराकार हे अवर कछु बन्या नही ॥ अरु जो विराटही आकाशरूप हुआ तो उसका शरीर केसें साकार होवे उहभी निराकार हे ॥ जेसें अपणा अनुभव सुपनेविषे पर्वत नदीयां जड चैतन होकरी भासता हे तेसें जेता कछु जगत भासता हे सो सर्व आत्मरूप हे ॥ हे रामजी जेसें एक निद्राके दो स्वरूप हे सुपन अरु सुषुप्ति ॥ तेसें एकही आत्मानें जड अरु चैतन दो स्वरूप धारे हे ॥ अरु जगत आत्माविषे कछु बन्या नही यह आभासरूप हे ॥ आत्मसत्ताही अपणे वचन द्वारा जगतरूप हो भासती हे ॥ जेसें आकाशविषे घन शून्यता करी निलता भासती हे सो अविचार सिद्ध हे ॥ नीलता कछु बनी नही तेसें आत्माविषे घन चैतनता करकें जगत भासता हे परंतु जगत आकार कछु बन्या नही ॥ सर्वदा काल आत्मा अद्वैत निराकार हे ॥ अनंत सृष्टि आत्माविषे आभास उपजी करी लीन हो जाती हे ॥ आत्मा ज्योंकात्यों हे जेसें समुद्रविषे तरंग उपजी लीन हो जाते हे परंतु जलरूप हे ॥ तेसें परब्रह्मविषे सृष्टि परब्रह्मरूप हे ॥ हे रामजी यह जगत विराटका शरीर हे शीस उसका महा आकाश हे ॥ दशोदिशा तिसकी भुजा हे अरु पृथ्वी उसके चरण हे ॥ पातालरूप तलीआ हे अंतरीक्ष मध्यलोक उसका उदर हे ॥ सर्व जीव तिसकी रोमावली हे ॥ इनतें लेकरी सर्व पदार्थ विराटके अंग हे ॥ सो विराट आकाशरूप हे जेसें विराट ब्रह्माजी आकाशरूप हे तेसें तिसका जगतभी आकाशरूप हे ॥ तातें सर्व जगत विराटरूप हे सो ब्रह्मही हे अवर कछु बन्यानही ॥ चंद्रमा सूर्य उसके नेत्र हे में अरु तूं यह इनतें आदि लेकरी जेते कछु शब्द हे तिन शब्दका अधिष्ठान ब्रह्म हे ॥ सो ब्रह्म में हों केसा हों जिसविषे दुसरा बन्या कछु नही ॥ सदा में अपणेहि आपविषे स्थित हों ॥ हे रामजी जेते कछु शास्त्रके मत हे शून्यवादी पांचरात्रिक शैवी शाक्तें आदि लेकरी सो सबका अधिष्टान ब्रह्मरूप हे सबका साररूप उही सर्वात्मरूप हे ॥ जेसा किसीकों निश्चय होता हे तेसा उनकों फल सर्वरूप होकरी देता हे अवर कछु बन्या नही ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे ब्रह्मजगतएकताप्रतिपादनंनाम द्विशताधिकषटपंचाशत्तमः सर्गः ॥ २५६ ॥ ॥७॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस जगतके आदि शुद्ध ब्रह्मसत्ता थी तिसविषे जो जगत आभास फुर्या हे तिसकोंभी तूं उही स्वरूप जाण ॥ जेसें सुपनेके आदि अनुभव आकाश होता हे तिसविषे सुपन सृष्टि फुरी आती हे सों अनुभवरूप हे इतर कछु नही ॥ तेसें यह जगत अनुभवरूप हे इतर कछु नही ॥ जेसें समुद्र द्रवता करके तरंगरूप हो भासती हे तेसें ब्रह्मचैतनता जगतरूप हो भासता हे ॥ सो जगतभी उही रूप हे ॥ हे रामजी वास्तवतें न कोउ दुःख हे दुःख अरु सुख अज्ञानकरी भासते हे ॥ जेसें एक निद्राविषे दो वृत्ति भासती हे ॥ एक सुपन वृत्ति अरु एक सुषुप्ति वृत्ति ॥ तेसें अज्ञानीकी दो वृत्ति होती हे ॥ सुखकी अरु दुःखकी ॥ अरु ज्ञानवानकों सर्व ब्रह्मरूप हे ॥ जेसें कोउ पुरुष सुपनेतें जाग उठता हे तो उस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कों सुपनकी सृष्टि असतरूप भासतीहे तेसें ज्ञानवानकों यह सृष्टि असत भासतीहे ॥ जेसें मरुथलकी नदीके जलका अत्यंत अभाव जिसनें जाण्याहे सो जलपानकी इछा नही करता ॥ तेसें सम्यकदर्शी जगतकों असत जानता हे ॥ तातें जगतके पदार्थकी इछा नही करता ॥ अरु जो असम्यकदर्शी हे तिसकों जगत सत भासता हे सो कीसी पदार्थकों ग्रहण करता हे किसका त्याग करता हे ॥ हे रामजी इश्वर जो परमात्मा हे तिसविषे जगत इस प्रकार हे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग होते हे ॥ जेसें समुद्र अरु तरंगविषे भेद कछु नही तेसें आत्मा अरु जगतविषे भेद कछु नही ॥ अरु जो तुं कहे अविद्याही जगतका कारण होवे तो अविद्या जगतका कारण कहाती हे जो जगततें प्रथम सिद्ध होती हे सो अविद्या तो अविद्यमान हे ॥ जेसें परमात्माविषे जगत आभासमात्र हे तेसें अविद्याभी आभासमात्र हे ॥ जो आपही आभासमात्र होवे सो जगतका कारण केसें कहीयें ॥ जगतका आभास अरु अविद्याका आभास एकठाही फुर्या हे ॥ जेसें सुपनेविषे सृष्टि भासी आती हे तिसविषे घटपटादि पदार्थ भासते हे सो किसी कुलालनें मृत्तिका लेकरी तो नही बणाए ॥ जेसें घट भास्या हे तेसें कुलाल अरु मृतिकाभी भासी आए ॥ सबका भासणा एकठाही होताहे तेसें जगत अरु अविद्या एकठेही फुरे हे ॥ अविद्या पूर्व तो सिद्ध नही होती ॥ तो अविद्याकों जगतका कारण केसें मानीये ॥ हे रामजी परमात्मातें जगत अरु अविद्या एकठाही आभास फुर्या हे सो आभास कछु वस्तु नही ॥ ब्रह्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे न कछु अविद्या हे न जगत हे सदा ज्यों की त्यों आत्मसत्ता स्थित हे ॥हे रामजी निर्विकल्पविषे जगतका अत्यंत अभाव होताहे ॥ सो निर्विकल्प केसें होवे जो निर्विकल्प होताहे तब जडता आतीहे ॥ अरु जब विकल्प उठता हे तब संसार उदे होताहे अरु जब ध्यान लगाताहे ॥ तब ध्याता ध्यान ध्येय त्रिपुटी हो जातीहे ॥ इस प्रकार तो निर्विकल्पता सिद्ध नही होती ॥ काहेतें जो निर्विकल्पविषेभी स्वरूपकी प्राप्ति नही होती ॥ निर्विकल्प तिसका नाम हे जहां चित्तकी वृति न फुरे॥तो तबभी स्वरूपकी प्राप्ति नही होती काहेतें जो तहांभी अभाव वृत्ति रहतीहे सुषुप्तिवत ॥ उह जडात्मक सुषुप्ति रूप हे ॥ अरु सविकल्प सुषुप्ति हे ॥ तिसकेविषेभी स्वरूपकी प्राप्ति नही होती तातें सम्यक बोधका नाम निर्विकल्प हे ॥ सम्यक बोधनिर्विकल्पता कर्के जगतका अत्यंत अभाव जिसकों भयाहे सो जीवन्मुक्त हे॥ उही निर्विकल्प कहाता हे ॥ अरु उही परम जडता हे ॥ जहां जगतका परम असंभव हे ॥ हे रामजी उह जो निर्विकल्प अरु सविकल्प हे तिसकरी स्वरूपकी प्राप्ती नही होती ॥ इह दोनों मनकी वृत्ति हे ॥ जेसें एक निद्राकी दो वृत्ति हे ॥ सुपन सुषुप्तिरूप ॥ तेसें इह निर्विकल्प अरु सविकल्प मनकी वृत्ति हे ॥ निर्विकल्प सुषुप्तिरूप पथरवत अरु सविकल्प सुपनवत चंचलरूप ॥ अरु निर्विकल्पविषेभी अभाव वृत्ति रहती हे तिसकरीभी मुक्ती नही होती ॥ मुक्ती तब होती हे जब अत्यंत अभाव दृश्यका होवे तब मुक्त होवे ॥ हे रामजी आत्मअनुभव आकाशतें इतर कछु उत्थान नही होता ॥ तिसका नाम अत्यंत सुषुप्ति निर्विकल्पता हे ॥ हे रामजी ऐसें होकरी तूं चेष्टाभी करेगा ॥ तोभी कर्तृत्व अरु भोक्तृत्वका अभिमान तुझकोंन होवेगा आत्माकों अद्वैत जानणा जगतकों अत्यंत अभाव जानणा इसका नाम बोध हे॥ इस बोधकी द्रढताहोणी ओर तिसकेध्यानकी द्रढता होवे ॥ तब उसका नाम परम पदहे उसीका नाम निर्वाणहें तिसीका नाम मोक्षहे ॥ सो केसा पदहे किंचनभी उहीहे अकिंचनभी उहीहे ॥ सर्वदा काल अपणे आपविषे स्थित हे॥ तिसविषे न नानात्व कहणा हे न अनाना सब्द हे न सविकल्प कहता हे न निर्विकल्प हे न सतहे न असत हे न एक हे न दोहे॥ सर्व सब्दका अंत हे॥ जिसविषे किसी शब्द कर्के वाणी नही प्रवर्तती तिस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सत्ताकों प्राप्त होणेका उपाय मैं कहता हौं ॥ हे रामजी यह मोक्ष उपाय ग्रंथ मैं तुझकों कहाहै इसकों विचारणा जो पुरुष अर्थ प्रबुध हे ॥ जो पद पदार्थ जानणें वाला हैं अरु तिस कों मोक्षकी इछा हे ॥ सो इस ग्रंथकों विचारता हैं अरु सुभ आचारककै बुद्धिकों निर्मल करता हे अरु असुभ क्रियाका त्याग करे तिसकों सीघ्रही आत्मपदकी प्राप्ति होवेगी ॥ हे राम जी जो पद मोक्ष उपाय सास्त्रके विचारकरि प्राप्त होता हे सो तीर्थ स्नान तप दानकरि नही प्राप्त होता अरु तप दानादिक करिकें स्वर्गकों प्राप्त होता हे ॥ मोक्षकों नही प्राप्त होता ॥ मोक्षपद अध्यात्म सास्त्रके अर्थ अभ्यास करि प्राप्त होता हे यह जगत आभासमात्र हैं ॥ उही ब्रह्मसत्ता जगत रूप होकरी भासती हे ॥ जेसे जलही तरंगरूप होकरि भासता हे ॥ जेसें वायुस्पंद रूप होकरि भासता हे तेसें ब्रह्म जगतरूप होकरि भासता हे ॥ जेसें स्पंद अरु निस्पंद विषे वायु ज्योंकीत्यों हे परंतु स्पंद होती हे तब भासति हे अरु निस्पंद होती हे तब नही भासती तेसें ब्रह्मविषे संवेदन फूरती हे तब जगत हौ भासती हे अरु जब निर्वेदन होती हे अंतर्मुख अधिष्टानकी उर आती हे तब जगत समेट्या जाता हैं ॥ परंतु संवेदनके फुरने विषेभी उहीहे अरु अफुरनेविषेभी उहीहे ॥ तातें हे रामजी सर्व जगत ब्रह्मस्वरूप हैं ॥ ब्रह्मतें इतर कछु बना नही अरु जो इतर भासता हे सो भ्रममात्रही जानणां ॥ जब आत्मपदका आभास होवे तब भ्रांति सांत होजाती हे ॥ जेसें प्रकाश करी अंधकार नष्ट होजाता हे तेसे आत्मपदके अभ्यास करि भ्रांति निवृत्त होती हे ॥ यद्यपी नानाप्रकारकी सृष्टी भासती हे परंतु कछु हूइ नही जेसें सुपने विषें सृष्टि द्रष्ट आती हे परंतु कछु बनी नहि ॥ उह अनुभवरूप आत्मसत्ता सृष्टि आकार होकरी भासती हे तेसें यह जगत सभ अनुभवरूप है ॥ जेसें रत्न अरु रत्नके चमत्कार विषे कछु भेद नही ॥ तेसें आत्मा अरु जगत्विषे कछु भेद नही ॥ हे रामजी तुं सुभाव निश्चे होकरि देख जो भ्रम मीटि जावे ॥ सृष्टि स्थिति प्रलय सभ तिसकी संज्ञा हे अवर दूसरी वस्तु कछु नही ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकर्णे ब्रह्मगीता परमनिर्वाणवर्णनं नाम द्विशताधिक सप्तपंचाशत्तमःसर्गः ॥ २५७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जेते कछु आकार तुझकों भासते हे सो संवेदनरूप हैं ॥ अवर कछु बन्या नही ॥ सृष्टीके आदिभी अद्वैत सत्ता थी अरु अंतभी उही हे ॥ मधविषे जो आकार भासते हे सोभी उही रूप जाण ॥ जेसें सुपन सृष्टिके आदि शुद्ध संवित होती हे तिसविषे आकार भास आता हे सोभी अनुभवरूप हैं ॥ अवर कछु बन्या नही ॥ आत्मसत्ताही पिंडाकार होभासती हे अरु जेते कछु पदार्थ भासता हे सो आकाशरूप आभासमात्र हे ॥ अवर कछु बन्या नही ॥ आत्मसत्ताही सदा शुद्ध हे परंतु अज्ञानकरि अशुद्धकी न्यांइं भासती हे ॥ विकारतें रहित हे परंतु विकारसहित भासती हे ॥ अनाना हे परंतु नानाकी न्यांइ भासती हे ॥ आकारतें रहित हे परंतु आकार सहित भासती हे ॥ जेसें सुपन सृष्टि आपणा अनुभवस्वरूप होती हे परंतु स्वरूपके प्रमादकरि नाना प्रकार भिन्न भिन्न होभासती हे जागेतें एक आत्मरूप होजाती हे तेसें यह सृष्टिभी अज्ञान करी नाना प्रकार भासती हे ज्ञानकरी एक रूप भासती हे ॥ विद्यमान भासती हे तोभी असतही जाण आत्मसत्ता सदा शुद्धरूप हे अरु शांत हे अनंत हे ॥ तिसविषे देश काल पदार्थ आभास मात्र हे ॥ जो तुं कहे आभास मात्र तो अर्थाकार क्यों होते हे तिसका उत्तर यह हे जेसें सुपनेविषें अंगना कंठ साथ मिलती हे तिसविषे प्रत्यक्ष राग होता हे विषयरस होता हे सो आभास मात्र हे तेसें यह जाग्रत विषे अर्थाकार क्षुधाकों अन्न तृषाकों जल अवरभी सब एसेंही होते हे ॥ अरु जेते कछु पदार्थ प्रत्यक्ष भासते हे जो इनका कारन विचारिये तो कारन कोउ नही पाइता ॥ जिसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारन कोउ न पाइये सो जाणीयें जो आभासमात्रहे॥ हे रामजी इह जगत बुद्धिपूर्वक नही बण्या॥ आदि जो आभास फुर्या है सो बुद्धिपूर्वकहे॥ तिसविषे जगत संकल्प दृढ भया॥ तब कारण करके कार्य भासणे लगा॥ परंतु जीनकों स्वरूपका प्रमाद भया तिनकों कारण करी कार्य भासणे लागे॥ जो आत्मा सुभावविषे स्थित भएहे तिनकों सर्व जगत आत्मस्वरूप हे॥ हे रामजी कारण करके कार्य तब होवे जो पदार्थभी कछू वस्तु होवे॥ जेसें पिताकी संज्ञा तब हाती हे जो पुत्र होताहे॥ अरु जो पुत्रहीन होवे तब पिता केसें कहीये तेसें कारण तब कहीयें जब कार्य होवे॥ जो कार्य जगतही कछू नही तो कारन केसें कहीये॥ हे रामजो कारण अरु कार्य अज्ञानीके निश्चेविषे होते हे॥ जेसें चरखे उपर बालक चढताहे उह आपही भमता हे तिसकों सब पृथ्वी भमती दृष्ट आती हे॥ तेसें अज्ञानीकों मोह दृष्ट करी कारन कार्य भाव दृष्ट आता हे॥ अरु ज्ञानीकों कारण कार्य भाव नही भासता॥ अरु स्मृतिभी जगतका कारण तब कहीये जो स्मृति जगततें पूर्व होवे॥ सो स्मृति भाव अनुभवभी इस जगतविषेही फुरी हे॥ इसभी आभासमात्र हे परंतु जिसकों भासी हे तिसकों तेसीही हे॥ हे रामजी स्मृति अरु संस्कार अरु अनुभव यह तीनों आभास मात्र हे॥ जेसें सूर्यकी किरणांविषे जल भासता हे तेसें आत्माविषे तिनों भासता हे॥ तातें इस कलनाकों त्यागकरी जगत आभासमात्र जाण॥ जेसें सुपनेविषे घट भासते हे जो उनका कारण मृत्तिका कहीये तो बणती नही काहेतें जो घट अरु मृत्तिका आभास एकठाही फुर्या हे॥ सो तो आभास मात्र हुए तिनविषे कारण किसकों कहीये अरु कार्य किसकों कहीये॥ तेसें स्मृति संस्कार अरु अनुभव अरु जगत सब एकठे फुरेहे॥ इनविषे कारण किसकों कहीये अरु कार्य किसकों कहीये॥ तातें सब जगत आभासमात्र हे॥ हे रामजी जेता कछु जगत तुझकों भासता हे सो आत्मसत्ताका आभास हे॥ आत्मसत्ताही इस प्रकार होभासती हे॥ जेसें नेत्रका खोलणा अरु मूंदणा होता हे॥ तेसें परमात्माविषे जगतकी उत्पत्ति अरु प्रले होती हे॥ जब चित्त संवेदन फुरती हे तब जगतरूप होभासती हे॥ जब फुरनेतें रहित होती हे तब जगत आभास मिटि जाता हे॥ उत्पत्ति अरु जगतकी प्रलेविषे आत्मसत्ता ज्योंकी त्यों हे॥ जेसें खुलणा अरु मुंदणा उभे नेत्रका सुभाव हे॥ तेसें फुरना अरु अफुरना उभे संवेदनके सुभाव हे॥ जेसें चलणा अरु ठहरि जाणा उभे वायुके सुभाव हे॥ जब चलती हे तब भासती हे अरु नही भासती तब नही चलती अरु चलणेविषे वायुकी तीन संज्ञा होतीहे॥ एक मंदमंद चलती हे अथवा बहूत चलती हे सीतल अरु उष्ण परस होता हे तिसरा सुगंध दुर्गंध होतीहे॥ यह तीनों संज्ञा फुरनेविषे होती हे॥ जब फुरने चलनेतें रहित होती हे तब तीनों संज्ञा मिटि जाती हे॥ जेसें एकही अनुभवविषे सुपने अरु सुषुप्तिकी कल्पना होती हे॥ सुपनेविषे जगत होभासता हे अरु सुषुप्तिविषे नही भासता॥ परंतु दोनोविषे अनुभव एकही हे॥ तेसें संवितके फुरनेकरी जगत भासता हे अरु ठहरणेविषे अच्युतरूप होजाती हे॥ आत्मसत्ता ज्योंकी त्यों एकरूप हे॥ तातें जो कछु जगत भासता हे सो आत्मातें इतर कछु नही उही रूप हे॥ जगतकी उत्पत्ति स्थिति अरु प्रले तीनों आत्माका आभास हे तिसविषे आस्था नही करणी॥ हे रामजी इह परम सिद्धांत तुझकों में उपदेश कीया हे परंतु जिन जुगतिकरी में कहा हे तिन जुगति करी न किसीनें कहा हे न कोउ कहेगा॥ यह अज्ञानीकों बडि संसाररूपी भांति उदे भइ हे॥ परंतु जो मेरे शास्त्रकों वारंवार विचारेगा तब उसकी भांति निवृत्त होजावेगी॥ दिनके दो विभाग करे अर्ध दिन पर्यंत मेरा शास्त्र विचारे अरु अर्ध दिन अपणे आचारविषे व्यतीत करे॥ अरु जो अर्ध दिन शास्त्रका विचार न करि शके तो एक प्रहर विचारे॥ जेसें सूर्यके उदे भए अंधः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार निवृत्त होता हे ॥ तेसें इसकी भांति निवृत्त होजावेगी ॥ अरु जो मेरे वचनोंकों वृथा जाणिकरी निंदा करेगा तिसकों आत्मपदकी प्राप्ति न होवेगी ॥ काहेतें जो उसनें शास्त्रके पैए कों नही जाण्या ॥ तातें इस जीवकों यह कर्तव्य हे जो प्रथम अवर शास्त्रकों देखी विचारि लेवे पाछेतें इसकों विचारे ॥ जो इसकों इस शास्त्रकी महीमा भासे ॥ हे रामजी यह मोक्षो पाय जो शास्त्र हे सो आत्मबोधका परम कारण हे ॥ अरु यह जीव पद पदार्थकों जानणेवाला होवे अरु इस शास्त्रकों वारंवार विचारे तब इसकी भांति निवृत्त होजावेगी ॥ जो संपूर्ण ग्रंथके आश्रेकों न जाणी सके तो थोडा थोडा वांचे अरु विचारे ॥ इसके तांइ सब भासी आवेगी ॥हे रामजी कछु यह पुरुष पदार्थकों जांनणेवाला होवे ॥ सो फिरि इसके विचारणे अ रु पढने करि बुद्धिवान अरु प्रीतिवान करि लेता हे ॥ इसके विचारणेवालेकी बुद्धि अवर शास्त्रकी उर नही जाती ॥ तातें इसकों विचारणेजोग हे अरु जो पुरुष आत्मविचारतें रहित हे तिसका जीणा वृथा हे ॥ अरु जिनकों यह विचार हे तिनकों सब पदार्थ आत्मरूप होजाते हे ॥ जो एक स्वासभी आत्मविचारतें रहित होता हे सो वृथा जाता हे ॥ एक स्वासके समा न संपूर्न पृथ्वीका धन नही ॥ जो संपूर्न पृथ्वीके रत्नन जावे अरु एक स्वास गया बहुरी मांगीए तो नही पाइता ॥ ऐसें स्वासकों जो वृथा गमावते हे तिनकों तूं पशू जाण ॥ हे रामजी आरबला विजुलिके चमत्कारवत् हे ॥ जेसें विजुलिका चमत्कार होकरि मिट जाता हे ॥ तेसें शरीर आरबला होकरि नष्ट होजाता हे ॥ ऐसें शरीरकों धारि करी जो सुखकी तृष्णा कर ते हे सो महा मूर्ख हे ॥ हे रामजी यह संपूर्न जगत आभासमात्र हे ॥ सत भासता हे तोभी इसकों असत जाण ॥ जेसें सुपन सृष्टीविषे मृतक होता हे ॥ तिसके बांधव रुदन करते हे ॥ प्रत्यक्ष अनुभव होता हे परंतु हूआ कछु नही ॥ सब भांतिमात्र हे ॥ तेसें यह जगत भममात्र जाण ॥ इ०यो०नि०परमार्थगीता वर्ननं नाम द्विशताधिकाष्टपंचाशत्तमःसर्गः ॥ २५८ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन जगत तो अनेक अरु असंख्यरूप हूए हे अरु आगें होवेगें ॥ तिन जगतकी कथा करि मेरे तांइ तुंमनें क्यों न उपदेश करी जगाया ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इह जो जगतके जाल समूह हे तिनविषे जो पदार्थ हे सो सब शब्द अर्थतें रहित हे ॥ जो शब्द अर्थतें रहित हूए तो कछु न हूए क्यों ॥ तातें उही व्यर्थ कहणेका प्रयोजन क्या॥ हे रामजी जब तुं विदित वेद होवेगा निर्मल त्रिकालदर्सी तब इन जगतको तुं जाणेगा ॥ अरु में आगेंभी तुझकों बहुत वार कहा हे ॥ वारंवार उही वर्नन करणा इसविषे पुनरुक्ति कही ये बहुरी कहणा दूषण होतीहे परंतु समुझावणेके निमित्त कहा हे ॥ जेसें एक सृष्टिकों जाण्या तेसें संपूर्न सृष्टिकों जाण्या ॥ जेसें एक मुष्टि अंनके समुहसों भरिकें देखी तो जाणी लि या सब ऐसें ही हे तेसें एक सृष्टिकों जथार्थ जाण्या तेसें अवर सृष्टीकोंभी जाणी लीया ॥ हे रामजी जेता कछू जगत हे सो किसी कारण करी नही उत्पत्ति भया॥ कारण विना पदार्थ जिसविषे भास्या सो जांणीए उही रूप हे ॥ अरु सृष्टिके आदिभी उही सत्ता थी अरु अंतभी उही होवेगी मध्यविषे जो कछू भास्या सोभी उही रूप जाणीए ॥ जेसें सुपनेके आदिभी अपणा अनुभव निर्मल होताहे ॥ सुपनेके निवृत्ति किएभी उही रहता हे ॥ सुपनेके मध्य जो पदार्थ भास्या ॥ एसाभी उही जाणीए अवर वस्तु कछु नही ॥ अनुभवसत्ताही इस प्रकार हो भासती हे ॥ जब तुं विदित वेद होवेगा ॥ तब सर्व जगत तुझकों आपणा आप भासेगा॥हे रामजी एक एक अणुविषे अनेक सृष्टि हे सो आकाशरूपहे कछु हूइ नही ॥ तिस उपर ए क आख्यान कहता हों सो सुण ॥हे रामजी पद्मजा ब्रह्माजीसों में एक काल प्रश्न कीयाथा ब्रह्माजी एकांत बेठा था ॥ में कहां हे भगवन यह सृष्टि केतीक हे अरु किसविषेहे तब पिता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माने कहा ॥हे मुनीस्वर जेते कछु जगत हे तिनके शब्द अर्थ हे सो सभ ब्रह्मरूप हैं ॥ ब्रह्मतें इतर कछु नही ॥ जो अज्ञानी हे तिनकों नाना प्रकारका जगत भासता हे अरु जो ज्ञानवान हे तिनकों जगत सब आत्मरूप भासता हे जिस प्रकार जगत हुआ हे सो सुण ॥ हे रामजी ब्रह्मरूपी आकाश हे ॥ तिनके सुक्ष्म अणु विषे फुरणा हुआ ॥ जो अहं अस्मि ॥ तब उह अणु आपकों जीव जानत भया ॥ जेसें अपणे सुपनेविषे आपकों जीव जाणे अरु होवे सर्वात्मा तेसें चिद अणु सर्वात्मा अहंकारकों अंगीकार करकै आपकों जीव जानणे लागा ॥ तिस विषे जो निश्चा हो गया तिस करि बुद्धि भइ ॥ जेसें वायुविषे फुरणा होवे तेसें तिसविषे संकल्प विकल्परूपी फुरणा हुआ ॥ तिसका नाम मन भया ॥ तब मनके साथ मिलि करी उह चिदअणु देहकों चैतता भया ॥ तब अपणेविषे देह अरु इंद्रीयां भासणे लगीयां अपणे साथ शरीर देखी करी जो यह शरीर मेरा हे ॥ जेसें सुपनेविषे अपणे साथ शरीरकों देखे अरु बडा स्थूल दृष्ट आवे ॥ तेसें स्थूल शरीर अपणे साथ देखता भया ॥ जेसें सुपनेमें सूक्ष्म अनुभवसों बडे पर्वत दृष्ट आते हे ॥ तेसे सूक्ष्म अणुसों स्थूल विराट शरीर भासणे लागा ॥ बहुरी देसकालकी कल्पना करी अरु नाना प्रकारके स्थावर जंगम प्राणी विराट भासणे लागे ॥ जेसें सुपनेविषे देश काल पदार्थ भासी आवे सो कछु हे नही तेसें देशकाल पदार्थ भासि आए परंतु हे कछु नही ॥ जब चित्त संवित बहिर्मुख फुरती हे तब नाना प्रकारका जगत भासता हे ॥ जब अंतर्मूख होतीहे ॥ तब अवाचरूप हो जातीहे जेसें वायु चलणे ठहरणेविषे एकरूप होतीहे तेसें फुरणे अफुरणेविषे संवित एकही अभेद हे ॥ हे रामजी जेता कछु जगत हे ॥ सो आकाशविषे आकाशरूप स्थित हे अपणे आपविषे स्थित हे ॥ अणु अणु प्रति सर्वदा काल सृष्टि हे परंतु रूप क्या हे आभासमात्र हे ॥ जो चैत संबंधी हो करि जीव सृष्टिका अंत लेवे तो सृष्टि अनंत हे ॥ इनका अंत कहुं नही आता ॥ यह सृष्टि अविद्यारूप हे ॥ सो अविद्याहि चैत हे जब अविद्या संबंधी हो करी जगतका अंत देखेगा ॥ तब अंत कहुं न आवेगा संसरनेका नाम संसार हे ॥ जब स्वरूपविषे स्थित होवेगा तब सब जगत ब्रह्मरूप हो जावेगा ॥ जगतकी कल्पना कछु न भासेगी ॥ हे रामजी इस जगतके आदिभी अद्वैत सत्ताथी अरु अंतभी अद्वैत सत्ता रहेगी मध जो कछु भासता हे ॥ तिसकोंभी उही रूप जाण अवर कछु बण्या नही ॥ इह जगत अकारण हे ॥ अधिष्टान सत्ताके अज्ञान करि भासता हे इसीका नाम जगत हे अरु इसीका नाम अविद्या हे ॥ अधिष्टानकों जानणा इसीका नाम विद्या हे ॥ हे रामजी न कोउ अविद्या हे न जगत हे ॥ ब्रह्मही अपणे आपविषे स्थित हे ॥ कोउ जगत कहो कोउ ब्रह्म कहो एकही वस्तुके नाम हे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे ब्रह्मांडोपाख्यानंनाम द्विशताधिकैकोनषष्टितमः सर्गः ॥ २५९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ रामोवाच ॥ ॥ हे भगवन इह में जाण्या हे जो जगत अकारण हे जेसें संकल्प नगर सुपन पुर होता हे तेसें इह जगत हे ॥ जो अकारणही हे तो अब इहां पदार्थ काहेकों उपजतें दृष्ट आते हे ॥ हे सकारणरूप कारण विना तो नही उत्पत्ति होते भासते हे सो इह क्या हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ब्रह्मसत्ता सर्वात्म हे तिसविषे जेसा निश्चा होता हे तेसा होकरि भासता हे सो क्या भासता हे अपना अनुभवही ऐसें होकरी भासता हे॥ जेसें सुपने विषे अपणा अनुभवही नाना प्रकारके पदार्थ होकरि भासता हे परंतु उपजा कछू नही ॥ सर्व पदार्थ आकाश रूप हे ॥ तेसें इह जगत कछु उपजा नही कारणतें रहित आकाशरूप हे ॥ हे रामजी आदि सृष्टि अकारण हूइ हे ॥ पाछेंतें सृष्टि विषे आभासरूप मननें जेसा जेसा निश्चा कीया हे तेसेंही हे काहेतें जो सर्वशक्तरूप हे ॥ अरु आदि सृष्टी जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपजत हें सो अकारण रूप हें ॥ पाछैंतें सृष्टी काल विषे कारण कार्य रूप हूए हैं ॥ जेसें सुपन सृष्टि आदि कारण विना होतीहे ॥ पाछेंतं कारण कार्य भासते हे अरु वास्तवतें न कोउ आकाश हे न शून्य हे न असून्य हे ॥ न सत हे न असत हे ॥ न असत सतके मध हे ॥ न नित हे न अनित हे न परम हे न अपरम हे न सुध हे न अशुद्ध हे ॥ द्वैत कछु नही सभ भम हे ॥ हे रामजी ज्ञानवानकों सर्व शब्द अरु अर्थ ब्रह्मरूप भासते हे ॥ हमकों तो कारण कार्य भावकी कल्पना कछु नही ॥ जेसें सूर्य विषे अंधकारका अभाव हे ॥ तेसें ज्ञानवानकों कारण कार्यका अभाव हे ॥ जो सर्वात्माही हे तो कारण कार्य किसकों कहीयें ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन ज्ञानीकी बात पूछताहों उनकों कारण कार्य भाव किस निमित्त भासताहे ॥ जो कारण कार्य नही तो मृत्तिका अरु कुलाल आदि कर्कै घटादिक क्योंकरि उत्पत्ति होते दृष्ट आते हें ॥ तातें तुम कहो जो ज्ञानवानकों अकारण केसें भासते हे ॥ अरु अज्ञानीकों स कारण क्यों करि भासते हे ॥ इह मेरे तांइ ज्ञानी अरु अज्ञानीका निश्चा कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी न कोउ कारण हें न कार्य हे ॥ न कोउ अज्ञानी हे ॥ में तुझकों क्या कहों जो ज्ञानवान पुरुष हे तिनके निश्चेविषे जगतकी कल्पना कोउ नही फुरती॥उनके निश्चेविषे जगत हे नही तो ज्ञानी अरु अज्ञानी क्या॥ हे रामजी आकाशका वल नही तो तिसका वर्ण न क्या करियें ॥ अरु जेसें हिमाले पर्वतविषे अग्नीका कणका नही पाइता ॥ तेसें ज्ञानीके निश्चे विषे जगत नही पाईता ॥ ज्ञानी अज्ञानी अरु कारण कार्य इह शब्द जगतविषे होते हे ॥ जो जगतही फुर्या नही तो कारण कार्य ज्ञानी अज्ञानी तुझकों क्या कहों ॥ जेसें सुपनेविषे सृष्टी सुषुप्ति विषे लीन होजाती हे ॥ तहां शब्द अरु अर्थ कोउ नही फुरता ॥ तेसें ज्ञा नवानके निश्चेविषे जगतही नही फुरता ॥ हे रामजी हमकों तो सर्व ब्रह्मही भासता हे ॥ मुझकों कछु कहणा नही आता ॥ परंतु कछु कहता हों तुझने पूछाहे इसनिमित्त अज्ञानीके निश्चेकों अंगीकार कर्कै कहताहों ॥ हे रामजी यह जगत अकारण हे अरु आभासमात्र हे ॥ किसी आरंभ अरु परिणाम करि नही भया ॥ जब पदार्थका कारण विचारीयें तब सभ अ धिष्टान ब्रह्म निकसता हे सो अद्वैत अच्युत हे अरु सर्व इछातें रहित हे ॥ तिसकों कारण केसें कहीयें तातें जांणता हे जो जगत आभासमात्र हे अवर वस्तु कछु नही ॥ आत्मसत्ताही इस प्रकार भासती हे ॥ जेसें सुपनेकी सृष्टी अकारण होती हे तिस विषे अनेक पदार्थ भासते हे ॥ तिनका कारण बिचारीयें तो सभका अधिष्टान अनुभव निकसती हे तिसविषे आरं भ अरु प्रणाम कछु हूआ नही ॥ सृष्टि अनुभव रूप होभासती हे जो पुरुष सुपने विषे हे तिसकों स्वरूपकें प्रमादकरि कारण कार्य जगत भासता हे पुण्य पाप सभ जथार्थ भासते हे ते सें जाग्रत जगत भासता हे ॥ हे रामजी सृष्टि आदि अकारण हुइ हे पाछे सृष्टि कालविषे कारण कार्य रूप हो भासते हे अरु जिसकों अपणा वास्तवस्वरूप स्मरन हे तिसकों अकारण भासता हे ॥ अरु जिस अज्ञानीकों अपणे वास्तव स्वरूपका प्रमाद हे तिसकों कारण कार्य रूप सृष्टि सुपनवत भासती हे हे रामजी वस्तु एकही अनुभव आत्मसत्ता हे परंतु जेसा जेसा अनुभव विषे संकल्प दृढा होता हे ॥ तिसहीकी सिद्धि होती हे जिसका तीव्र संवेग होता हें ॥ सोइ होय भासता हे इस विषे संदेह कछु नही ॥ कल्पवछके पदार्थ निकसी आते हे सो क्या हे ॥ संकल्पकी तिव्रता कर्कै प्रत्यछ आनि होते हे ॥ उह कीसका कार्य कहीए अरु जगत किसी कारण करि उत्पत्ति होता तो महाप्रले विषेभी कछु सेष रहंता जेसें अग्निके पाछें सुहा रही आती हे सो तो कछु नही रहता ॥ जेसें सुपनेकी सृष्टी जागें हूए कछु नही रहती ॥ तेसें महाप्रले विषे जगतका सेष कछु नही रहता ॥ तातें जाणीता हे जो आभासमात्र हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जेसें ध्यानविषे ध्याता पुरुष जो किसी आकारकों रचता हे तिसका कारण कोउ नही होता ॥ उह तो आकाशरूप हे ॥ अनुभवसत्ताही फुरनें करकै इस प्रकार होभासती हे आकार तो कोउ नही ॥ जेसें गंधर्व नगर कारणतें रहित भासता हे तेसें यह जगत कारण विना भासी आया हे न कोउ पृथ्वी हे न कोउ जल हें न तेजवायु आकाश हे ॥ सभ आकाशरूप हे परंतु संकल्पकी दृढता करकै पिंडाकार भासताहे ॥ हे रामजी जब इह पुरुष मरि जाता हे तब सरीर इहांही भस्म होजाता हे ॥ बहूरी परलोकविषे जो शरीर अपणेकों देखता हे अरु तिस शरीर साथ स्वर्ग नर्कविषे सुख दुःख भोगता हे ॥ तिसका कारण कवन हे उसका कारण कोउ नही पाइता ॥ अपणी चैतनताविषे संकल्पकी वासना जो दृढ हुई हे तिसके अनुसार शरीर भासता हे ॥ स्वर्ग नरकविषे दुख सुख भासते हे अवर तो कछु वस्तु नही ॥ सभ पदार्थ संकल्पके रचे हूए हे सो सभ आत्मरूप हे ॥ जेसें आकाश व्योम शून्य एकही वस्तुके नाम हे ॥ कोउ जगत कहो कोउ ब्रह्म कहो इन विषे भेद कछु नही फुरणेका नाम जगत कहाता हे ॥ अफुरका नाम ब्रह्म हे ॥ जेसें वायुकों चलणे ठहरणे विषे भेद कछु नही ॥ तेसें ब्रह्मकों फुरणे अफुरणे संवेदनविषे भेद कछु नही ॥ जो सम्यक्दर्शीहे तिनकों सभ जगत ब्रह्मस्वरूप भासताहे ॥ तिस कारणतैं दोष किसीविषे नही रहता ॥ जो बडा कष्ट आनी प्राप्त होता हे तोभी खेदवान नही होता ॥ जेसें कोउ पुरुष सुपने विषे जुध करताहे अरु उसकों अपणा जाग्रत स्वरूप चित्त में आया तब सुपनेकों सुपना जाणत भया तब जुध करताहे तोभी दुःख मीटी जाता हे ॥ तेसें जो पुरुष परम पदविषे जाग्या हे ॥ तिसकी सभ क्रिया होती हे परंतु आपकों अक्रिय जानता हे ॥ हे रामजी सभ चेष्टा उसकी होती हे परंतु उसके निश्चे विषे क्रियाका अभिमान नही होता ॥ जेसें नटुवा सभ स्वांग धारता हे परंतु आपकों स्वांगतें रहित नटवा जानता हे अरु स्वांग क्रियाकों असत जानता हे ॥ काहेतें जो उसकों अपणा स्वरूप स्मरन हे तेसें ज्ञानवान सभ क्रियाकों असत जानता हे ॥ हे रामजी जेते कछु पदार्थ भासते हे सो अजात जात हे॥उपजे कछु नही जेसें सुपनेविषे पदार्थ भासतेहे परंतु उपजे कछु नही अपणा अनुभव इस प्रकार भासता हे तेसें यह जगतके पदार्थभी अनुभवरूप जाण ॥ हे रामजी बहुत शास्त्र अरु वेद में तुझकों किसी निमित्त सुनावों अरु किसी नीमित्त पढे अरु वेदांत जों शास्त्रहे तिन सभका सिद्धांत यही हे जो वासनातें रहित होणा ॥ इसका नाम मोक्ष हे अरु वासना सहितहे तिसका नाम बंधहे ॥ अरु वासना कीसकी करिये इह तो सभ सृष्टि अकारण रूप भ्रममात्र हे इसविषे क्या आस्था बढाइयें ॥ यह तो सुपनके पर्वत हे ॥ इ०यो०नि०ब्रह्मगीतावर्ननंनाम द्विशताधिकषष्ठितमःसर्ग. ॥ २६० ॥ ॥ श्रीरामोवाच ॥ हे भगवन सब जगतविषे दो प्रकारके पदार्थहे एक अप्रत्यक्ष पदार्थ एक प्रत्यक्ष पदार्थ अरु एक मध्य भावीहे जेसें वायु अप्रत्यक्ष कहीयें रूपते रहितहे ॥ परंतु स्पर्श संयोगतें भासती हे सो मध्यभी प्रत्यक्ष हे॥ अप्रत्यक्षकहीये जो किसी साथ मिले नही सो इह संवित अप्रत्यछ हे॥हे मुनीस्वर चंद्रमाके मंडलविषे इह संवेदन जातीहे अरु बहुरी गिरतीहे ॥ वृत्ति चित करकै चंद्रमाकों देखती हे अरु बहुरी आती हे तो जानी हे जो निराकार हे ॥ जो साकार होती तो चंद्रमारूप हो जाती बहुरी संवेदन आती ॥ जेसें जलविषे जल डार्या बहुरी नही निकसता ॥ इस कारनतें जानता हे जो इह अप्रत्यक्ष कहिये निराकार हे ॥ हे मुनीस्वर इस शरीरविषे जो प्रान आते हे जाते हे अज्ञानीका आशय लें करी में कहता हों ॥ सो केसें आते अरु जाते हे अरु जो तुम कहो ॥ संवित जो ज्ञान शक्ति हे सो इह शरीर अरु प्रानकों लीये फिरती हे जेसें पेंडाइ भारकों लीये फिरताहे तेसें संवित शरीर अरु प्रानकों लीये फिरतीहे ॥ तो एसें कह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

णा नही बणता काहेतें जो संवित अप्रत्यक्ष निराकार हे ॥ सप्रत्यक्ष साकार साथ तो मिलती नही उह चेष्टा क्यों करि करे ॥ अरु जो कहो संवित निराकारही चेष्टा कराती हे तो पुरुषकी संवित चाहती हे जो पर्वत नृत्य करे उह तो इसका चलाया नही चलता ॥ अरु साथ ही कहते हे जो इह पदार्थ उठ आवे परंतु उह नही उठ आते ॥ काहेतें जो पदार्थ साकाररूप हे अरु वृत्ति निराकार हे इसका उत्तर कहो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस शरीरविषे एक नाडी हे जब उह अवकाशरूपी होतीहे तब उसमेंसें प्राण वायु निकसताहे अरु जब संकोच रूप होती हे तब प्राणवायु अंतर आती हे ॥ जेसें लुहारकी खल होती हे तेसें इसके अंतर पुरुष बल हे तिसकरि चेष्टा होती हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् लुहारकी खलभी तब हलती हे जब उसके साथ बलका स्पर्श होता हे अरु स्पर्श तब होता हे जो प्रत्यक्ष वस्तु होती हे चैतन्यता सो निराकार हे ॥ तिसकों स्पर्श क्यों करी कहीये ॥ जो तुम कहो उसकी इछाही करी स्पर्श होता हे तो हे मुनीश्वर मैं चाहता हों जो मेरे सन्मुख वृछ हे सो गिर पडे उह तो गीरता नही काहेतें जो इछा निराकार हे जो साकार स्पर्श होवे तब गिर पडे उसकी शक्ति करी अरु जो इछाही करी चेष्टा होती हे तो कर्म इंद्रीयां किस निमित्त धारीयां हे इछाही करी जगतकी चेष्टा होवे अरु इहभी संसा हे जो एकके बहूत क्योंकरी होजाते हे अरु बहुतका एक क्यों करी होजाता हे ॥ एक चैतन हे जब प्राण निकसी जाते हे तब जड जेसा होजाता हे ॥ पाषाण अरु वृछकी न्यांइ होजाता हे आत्मा तो सर्व व्यापी हे ॥ जड केसें होजाता हे अरु एक पाषाण वृछरूप जड हे एक चैतन हे ॥ यह भेद एक आत्माविषे केसें हूआ हे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी तेरे संसेरूपी जो वृछ हे तिस सबकों में वचनरूपी कुहाडे करी काटतां हों ॥ जिनकों तूं सप्रत्यक्ष साकार कहता हे सो आकार कोउ नही सब निराकार हे ॥ उह शुद्ध आत्मा अद्वैत सत्ता इस प्रकार हो भासती हे ॥ इह आकार कछु बणे नही जेसें सुपननगरविषे आकार भासते हे ॥ सो आकाशरूप निराकार हे तेसें यह आकारभी तुझकों दृष्ट आते हे सो सब निराकार हे ॥ अरु सुपनेविषे जो पर्वत भासते हे सो किसके आश्रे होता हे अरु देहादिक भासते हे सो किसके आश्रे होत हे तातें उह कछु बणे नही ॥ अनुभवसत्ताही आकाररूप हो भासती हे तेसें इहभी जाण आकार कोउ नही ॥ हे रामजी जब इन पदार्थका कारण विचारीयें तो कारण कोउ नही निकसता ॥ इसीतें जाणता हे जो आभासमात्र हे बणे कछु नही ॥ आत्मसत्ताही इस प्रकार होभासती हे अरु आत्मसत्ता अद्वैत हे परम शुद्ध हे ॥ तिसविषे जगत कछु बण्या नही ॥ में आकार क्या कहों अरु निराकार क्या कहों ॥ पृथ्वी जल तेज वायु आकाशभी द्वैत कछु नही ॥ शुद्ध आत्मसत्ताही इस प्रकार होभासतीहे जेसें सकल्पकरी रचे पदार्थ होने हे सो अनुभवतें इतर कछु नही होते तेसे इह सब पदार्थ अनुभवरूप हे ॥ अनुभवतें इतर कछु नही इस उपर एक आख्यान कहताहों सो श्रवनकों शोभता हे ॥ हे रामजी आगेंभी में तुझकों कहा हे अबही कहताहों प्रसंगकों पायकरी जो एक कालमें एक सृष्टिविषे इंद्र ब्राह्मण था मानों ब्रह्माजी हे ॥ तिसके गृहविषे दस पुत्र होत भए मानों दसो दिशा हे ॥ केते कालतें उह मृतक भया तिसकी स्त्री पतिव्रता थी तिसके प्राणभी भ्रमणके पाछें छुटि गए ॥ जेसें दिनके पाछें संध्या जाती हे तेसें ब्राह्मणी गइ तब तिन पुत्रनें जथाशास्त्र क्रम करी तिनकी क्रिया करी ॥ बहुरी एक पहाडकी कंदराविषे जाय स्थित भए अरु विचारत भए ॥ जो किसी प्रकार हम उंचे पदकों पावें ॥ हे रामजी आगें में तुझकों सुणाया हे ॥ जो मंडलेश्वर अरु चक्रवर्त्ती राजा अरु इंद्रादिकके पदकों विचारत भए॥ बहुरी बडे भाइनें निर्णे करकै यही कहा ॥ जो सभतें उंचा ब्रह्माजीका पद हे जिसकी इह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सब सृष्टि रची हुइ हे ॥ हम दसही ब्रह्मा होवें अेसें विचार करके दसही पद्मासन करी बेठे ॥ निश्चे इह धार्या जो हम चतुर्मुख ब्रह्मा हे सब सृष्टि हमारी रची हे अेसें होगए ॥ मानों पू
तलीयां लिखी हूइ हे खानपानतें रहित मास जुग वर्ष वितीत होगए उह ज्योंके त्यों रहे ॥ चलायमान न भए जेसें जल निची ठोरकों जाता हे ॥ उंचे नही फिरता तेसें उह अपणे नि
श्चेकों न त्यागत भए ॥ दृढ रहे जब केताक काल व्यतीत भया तब उनके शरीर गिर पडे ॥ उनकों पंछी खाय गए इह जो ब्रह्माकी वासना संयुक्त संवित थी तिस वासना करके दसही ब्र
ह्मा होगए अरु दसही तिसकी सृष्टि देश काल पदार्थ नेति सहित हो गइयां॥ जेसें हमारी सृष्टि हे तेसें उह सृष्टि भइयां ॥ हे रामजी उह सृष्टि क्या रूप हूइयां ॥ आत्माही वस्तु हूइयां अ
वर तो कछु नही॥कछु अवर होवे तब कहों ॥ तातें सृष्टिका अवर रूप कछु नहीं ॥ अपणा अनुभवही सृष्टि रूप भासता हे जेते कछु पदार्थ भासतेहे सो सब आत्मरूपहे ॥ हे रामजी जे
सें हम ब्रह्माके संकल्पविषे रचे हे तेसें उननेंभी रची लीये ॥ उहभी इस प्रकार स्थित होगए तातें सर्व जगत ब्रह्मस्वरूप हे ॥ जो कछु कारण करके जगत बण्या होता तो जाणता जो क
छु हुआ हे इसका कारण कोउ नही पाइता ॥ संकल्पमात्र आभासमात्र हे तातें कहता हे जो ब्रह्मही हे अवर वस्तु कछु नही ॥ जो कछु पदार्थ भासते हे पाषाण वछ जड चैतन सो
सब भ्रमस्वरूप हे उसतें इतर कछु नही ॥ हे रामजी महाभून जो हे अरु वछ पृथ्वी आकाश पहाड यह सब चिदाकाशरूप हे ॥ चिदाकाशतें इतर कछु नही जेसें इंद्रके पुत्र एकतें अ
नेक होगए तेसें इह सृष्टिभी एकतें अनेक हे ॥ अरु प्रलेविषे अनेकतें एक होजातीयां हे ॥ जेसें एक तूं सुपनेविषे अनेक होजाता हे अरु सुषुप्तिविषे अनेकतें एक होजाते हे तेसें यह ज
गत हे ॥ केसा हे अकारणरूप हे अरु जो कारणभी मानीये तो आत्मरूपी कुलाल हे ॥ संकल्प चक्र हे अरु अनुभव चैतनरूपी घट तिसतें उपजते हे ॥ आभासभी उही हे कछु दूसरी
वस्तु नही ॥ इह सब जगत उही रूप हे जेसें इंद्र ब्राह्मणके पुत्रकों अपणे अनुभवहीतें सृष्टि फुरि आइयां सो अनुभवरूपही भासणे लागा ॥ अवर सृष्टितें कछु न भइयां ॥ तेसें इह सृष्टि
भी जाण ॥ हे रामजी घटभी चैतन हे वछभी चैतन्य हे पृथ्वीभी चैतन्य हे जल अग्नि वायु सब चैतन्यरूप हे ॥ चैतन्यतें इतर कछु नही जेसें सुपनेविषे अपणा अनुभवही घट पहाड न
दीयां पदार्थ होभासती हे अनुभवतें इतर कछु नही ॥ तेसें इह जगत अनुभवतें इतर नही ॥ ज्ञानीकों सदा इही निश्चा रहता हे अब एक अनेकका उत्तर सुण ॥ हे रामजी जेसें मनोरा
जविषे अेकतें अनेक होजाता हे अरु अनेकतें एक होजाता हे चैतन्यतें जड होजाता हे सो जड कोउ पदार्थ नही भासता पदार्थ चैतन्यरूप हे जहां अंतःकरण प्रगट पाइता हे सो चै
तन भासता हे जहां अंतःकरण नही पाइता सो जड भासता हे ॥ चैतन्यका आभास अंतःकरणविषे पाइता हे ॥ जब पुर्यष्टका निकसी जाती हे तब जड भासता हे ॥ इह अज्ञानीकी
दृष्टि कही हे अरु मुझकों पूछे तो जिसकों जड कहते हे अरु जिसकों चैतन कहते हे पहाड वछ पृथ्वी कहते हे सो सब ब्रह्मरूप हे ब्रह्मते इतर कछु नही ॥ जेसें सुपनेविषे केइ जड भा
सते हे केइ चैतन भासते हे ॥ नाना प्रकारके पदार्थ भिन्नभिन्न भासते हे सो आत्मरूप हे इतर कछु नही तेसें इह जगत सब आत्मरूप हे ॥ इछा अनिछा सब ब्रह्मरूप हे ॥ सब नामरू
प आत्माके हे अवर दूसरी वस्तु कछु नही शून्य अशून्य सत असत सब आत्माके नाम हे ॥ आत्मातें इतर कछु नही ॥ हे रामजी जिसकों मूर्ख जड कहते हे सो जड नही सब चैतन्य
रूप हे ॥ अरु सृष्टि कालविषे जडही हे ॥ उह संवेदनविषे जडीरूप होकरी रचित हूए हे ॥ उह चैतन्यही रचे हे ॥ जिसकों अपणे वास्तवस्वरूपका प्रमाद हे तिनकों जड चैतन भिन्न भि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च भासते हैं ॥ अरु जो ज्ञानवान पुरुष हे तिनकों एक ब्रह्मसत्ता भासती हैं ॥ हे रामजी इह मैं तुझकों उपदेश कीया हे सो वारंवार विचारणेजोग हे ॥ जो कोउ इसकों नित विचारत रहेगा तिसके दोष घटते जावेंगे अरु रिदा शुद्ध होवेगा ॥ अरु जो ब्रह्मविद्याकों त्यागकरी जगतकी उर चित्त लगावेगा तिसके दोष बढते जावेंगे ॥ हे रामजी ज्यौंज्यों इस जीवकों ब्रह्म विचार उदे होता जावेगा त्यौं त्यौं दुःख नाश होते जावेंगे ॥ ज्यों ज्यों दिन उदे होता हे त्यों त्यों तम नष्ट होजाता हे ॥ विचारके त्यागे दुःख बढते जाते हे जो महापापी हे तिनके पाप मेरे शास्त्रका संग न करणे देवेंगे ॥ तिनकों इह जगत् वज्रसारकी न्यांइ दृष्ट रहता हे ॥ संसार भ्रम निवृत्त कदाचित नही होता अरु जेता कछु जगत भासता हे सो सब आकाशरूप हे॥ में तुं अरु भाव अभाव आदिक जेते कछु शब्द हे सो सब ब्रह्मसत्ताके नाम हे सो केसी सत्ताहे ॥ परम शुद्ध हे अरु निरामय हे अरु अद्वैत हे ॥ सदा अपणेही आपविषे स्थित हे ॥ अरु तिसविषे जेते पदार्थ भासते हे सो अैसे हे ॥ जेसें सिलाविषें शिल्पी पूतलीयां कलपता हे सो शिल्पीके चित्तविषे होतीयां हे तेसें जगतके पदार्थकी प्रतिभा सब मनविषे हे ॥ सो क्या रूप हे उसीका किंचन रूप हे ॥ सो किंचन कछु भिन्न वस्तु नही ॥ जो सदा अपणे आपविषे स्थित हे परम मौनरूप हे ॥ तिसविषे विकल्प कोउ नही प्रवेश करी सकता ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे इंद्राख्यानवर्नन नाम द्विशताधिकैकषष्ठितमःसर्गः ॥ २६१ ॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी सर्व लोक चिन्मात्र हे इसितें सांतरूप हे अरु अद्वैतरूप हे ॥ अज्ञानीकों भिन्न भिन्न जगत भासता हे ज्ञानीकों सब निराकार आकाशरूप हे ॥ आकार कछु बणे नही आत्मसत्ता निराकार हे ॥ उही परम शुद्ध सत्ता इस प्रकार भासती हे सो सांतरूप हे अनंत हे चिन्मात्र हे ॥ इंद्रियांभी ज्ञानरूप हे ॥ हाड मांस रुधिर हाथ पेर सिर आदिक संपूर्ण शरीर ज्ञानमात्र हे ॥ ज्ञानतें इतर कछु नही चिन्मात्र ही इस प्रकार भासता हे ॥ जेसें सुपनेंविषे शरीरादिक अरु पहाड नदीयां वृक्ष भासते हे सो अपणाही अनुभव रूप हे अवर कछु बण्या नही ॥ तेसें इह जगत सब अनुभवरूपहे ॥ कारणतें रहित कार्य भासता हे ॥ तुं अपणे अनुभवविषे जागि करि देख जो सब अनुभवरूपहे ॥ आकाशविषे आकाशभी आकाशरूप हे सतविषे सत हे भावविषे भाव हे अभावविषे अभाव हे सर्व आत्मरूप हे इतर कछु नही ॥ अरु जो तुं कहे वस्तु कारणहीतें उत्पत्ति होतीहे सो सत होती हे ॥ परंतु जगतका कारण कछु नही पाइता तातें इह मिथ्या हे ॥ कारणभी इसका तब कहीयें जब इह कछु वस्तु होवे ॥ अरु कार्यभी तब कहीयें जब इसका कारण सत होवे ॥ हे रामजी ब्रह्मसत्ता तो न किसिका समवाय कारण हे न किसका निमित्त कारण हे अच्युत हे ॥ इसीतें समवाय कारण नही अरु अद्वैत हे तातें निमित्त कारणभी नही ॥ सर्व इछातें रहित हे तिनकों कारण किसका कहीए जो कारण नही तो कार्य किसका होवे ॥ तातें जेता कछु जगत भासता हे सो आभास मात्रहे उसी ब्रह्मसत्ताका नाम जगत हे ॥ जेसें निद्रा एक हे तिसके दो स्वरूप हे ॥ एक सुपन एक सुषुप्तिरूप हे ॥ फुरणे रूपका नाम सुपन हे अफुरणे रूपका नाम सुषुप्ति हे ॥ तेसें दो स्वरूप चैतनके हे ॥ फुरणे रूप चैतनका नाम जगत हे अफुरूपका नाम ब्रह्म हे ॥ जेसें एकही वायुके चलणा ठहरणा दो पर्याय हे ॥ जब चलती हे तब लखणेविषे आती हे अरु ठहरती हे तब अलक्ष हो जातीहे ॥ शब्दका विषय नही होती तेसें ब्रह्मसत्ता अफुरविषे शब्दकी प्रवृत्ति नही होती ॥ जब फुरती हे तब द्रष्टा दर्सन दृश्य त्रिपुटीरूप हो भासती हे एकतें अनेक रूप हो भासती हे ॥ अनेकतें एकरूप हे जेसें एकही ज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लं नदी नाला तलाव आदिक भिन्न भिन्न संज्ञाकों पावता हे अरु जब समुद्रविषे मिलता है तब एकरूप हो भासता हैं ॥ जैसें एकही कालके बहुत नाम होतेहे दिन मास वर्ष जुग क
ल्प घटी मुहूर्त आदिक नामकों पावता हे ॥ परंतु काल तो एकही हे जेसें एक मृत्तिकाकी सैना हस्ती घोडे आदिक बहुत नाम होतेहें ॥ परंतु मृत्तिका तो एकही हे ॥ जेसें फुल फल टा
स पत्र भिन्न भिन्न नाम होतेहें परंतु वृछ तो एकही रूप हे जेसें तरंग बुद बुदे आवर्त्त फेन आदिक नाम होतेहे परंतु जल एकही हे तेसें परमात्माविषे जगत अनेक रूप नामकों प्राप्त हो
ताहे परंतु सदा एकही रस रूप हे ॥ ॥ जेसें सुपनेंविषे एकही अद्वैत अनुभव सत्ता होतीहे अरु भिन्न भिन्न नाम रूप हो भासती हे जब जागता हैं तब अद्वैतरूप होताहे तेसें यह जगत
भी भिन्न भिन्न नामरूप भासता हे परंतु आत्मसत्ता एकही हे ॥ हे रामजी जब तूं तिसविषे जागेगा ॥ तब तुझकों सब अपणे आप अनुभवही भासेगा ॥ सो अनुभव केसा हे केवल आ
त्मत्वमात्र हे ॥ अनन्य अनुभवरूप हे सो आत्मरूपी समुद्र हे तिसविषे जगतरूपी जलके कणके हे ॥ जेसें आकाशविषे नछत्र फुरते हे तेसें आत्मविषे जगत फुरते हे आकाशतेंभी तारे
भिन्नहे परंतु आत्मातें जगत भिन्न नही ॥ जलतें बुंद अभिन्नहे ॥ इ० यो० नि० प्र० सर्व ब्रह्मप्रतिपादनं नाम द्विशताधिकद्विषष्ठितमः सर्गः ॥ २६२ ॥ ॥ श्रीरामोवाच ॥ हे भगवन अंधकार
विषे जो पदार्थ होताहे सो ज्योंका त्यों नही भासता ॥ अरु सूर्यका प्रकाश होताहे तब ज्योंका त्यों भासताहे इह निमित्त कहता हों जो संसेरूपी तमकरकै जगत ज्यों कात्यों नही भासता ॥ तुमारे
वचन रूपी सूर्यके प्रकाश करकै जो पदार्थ वस्तुहे तिसकों सम्यकज्ञानकरी जानोंगा ॥ हे भगवन पूर्व एक इतिहास हूआहे ॥ तिसविषे मुझकों संसाहे सो दूर करहू ॥ हे प्रभो एक काल में अध्यय
नसालाविषे विपश्चित पंडितसों अध्ययन करताथा अरु बहूत ब्राह्मण बेठे थे तब एक ब्राह्मण विदितवेद अरु बहुत सुंदर अरु वेदांत सांख्य शास्त्रके अर्थकरि संपन्न जो सभही उसके कंठविषेथा॥
अरु बडा तपसी ब्रह्मलक्ष्मी करकै तेजवान मानों दुरवासा ब्राह्मण हे ॥ ऐसा ब्राह्मण सभाविषे आया परस्पर नमस्कार करकै आसन परस्थित भया॥हम सभ उसकों प्रणाम कीया ॥ अवर
जो परस्पर शास्त्रोंकी चर्चा होतीथी पंडितकी वेदांत सांख्य पातंजलादिककी सो सभ तूष्णी होगए ॥ अरु में तिससों बोल्या के हे ब्राह्मण तुम बडे मार्ग करकै आए हो तुमारा पेडा करना
किसि परमार्थ निमित्त होता हे तुम मार्ग संगकरी कहांते आएहो सो कहो ॥ ब्राह्मणोवाच ॥ हे भगवन जिस प्रकार वृत्तांत हे सो में कहताहों ॥ हे रामजी विदेह नगरका में
ब्राह्मणहों तहांमें जन्मलीयाथा अरु कुंद एक बुंटा होता हे तिसका फुल स्वेत हे ॥ तिस जेसें मेरे दंत हे इस कारणतें मेरा नाम पिताताने कुंददंत राखा हे ॥ विदेह राजा जन
कका जो नगर हे तहासों आया हों ॥ सो केसा नगर हे आकाश विषे जो स्वर्ग मानों तिसका प्रतिबिंब हे ॥ अरु सभही सांतिवान अरु निर्मल तहांके रहणेवाले हैं तहां में विद्या पढ
ने लागा तिसकरि मेरा मन उद्वेगवान हूआ जोइह संसार महा क्रूर बंधन हे ॥ किस प्रकार इस बंधनतें छुटो ॥ हे रामजी ऐसा वैराग मुझकों उत्पन्न हूआ जो किसी प्रकार सांतिवान
होउं ॥ तब उंहांतें में निकस्या जो जो सुभ स्थान थे तहां विचरणे लागा ॥ संतऋषीके स्थान अरु ठाकुर द्वारे तीर्थ इनतें आदि लेकरि जो पवित्र स्थान हे तिनका दर्शन कीया ॥ तहां
तें आते एक पर्वत था तिस उपर में गया तहां जाय करी तप करणे लागा ॥ चिर पर्यंत में तप कीया बहूरा उंहांतें चल्या ॥ एकांतके निमित्त आगें एक आश्चर्य देख्या सो कहताहों ॥
हे रामजी में उहांते चल्या आता था जो बडा बन हे ॥ अरू बहुत स्यामहें मानों आकाशकी मूर्ति हे ॥ शून्य अरू तम रूप हे तिस बन विषे एक वृछ मुझकों दृष्ट आया कोमल जि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सके पत्र हे अरु सुंदर टास हे तिसके साथ एक पुरुष लटकतहे पांवविषे मुंजका रसा हे॥ वृछ साथ बांधा हुआ हे सीस नीचे अरु चर्न उपरकों दोनों हाथ छाती परी जुडे हुए ॥ अरु लटकता हे तब में विचार किया जो यह मत मृतक होवे इसकों देखों जब में निकट गया तब उसके स्वाश आते जाते देखे ॥ अरु शरीर जुवावस्था कांति वारी हुइ अरु अंतरतें सब का ज्ञाता सीत उष्ण अरु अंधेरी मेघकों सहि रहाहे ॥ जानता सबकों हे परंतु सही रहाहे ॥ हे रामजी तब में जानत भया जो यह तपसी हे इसकी सुरवीरता बडी हे ॥ तब में उसके निकट बेठि गया अरु उसके चरन जो बांधे हुए थे तिनकों कछु ढीला किया बहुरी उसकों में कहा॥ हे साध ऐसी क्रूर तपस्या तुं किसि निमित्त करता है अपणा वृत्तांत मुझकों कहे॥ हे रामजी जब इस प्रकार में कहा तब उह नेत्रकों खोलकें कहत भया ॥ हे साध इस तप में किसी अपनी कामनाके अर्थ करता हों सों अेसी कामना हे ॥ जो तुम सुणोगे तब हांसी करोगे ॥ हे रामजी जब इस प्रकार उसनें कहा तब में कहा हें साध हांसी कहुं न करेगा तुं अपणा वृत्तांत कहु ॥ अरु जो तेरा कछु कार्य हौवेगा अरु मुझसों होवेगा सो में करों गा ॥ जब में इस प्रकार वारंवार कहा तब उसनें कहा ॥ मनकों उद्वेगतें रहित कर्कें सुण में कहता हों ॥ हे साध में ब्राह्मण हों अरु मथुराविषे मेरा जन्म हे ॥ तहां जब बाल अवस्था मेरी वितीत भइ अरु जोबन अवस्थाका आदि हुआ ॥ तब वेद अरु शास्त्रकों में भली प्रकार जाण्या ॥ तब एक वासना आन उदे भइ जो सबतें बडा सुख राजा भोगता हे ॥ तातें में राजा होउं अरु सुख भोगों ॥ जो क्या सुख हे अवर सुख में भोगे हे बहुरी विचार किया जो राजका सुख तब भोगों जब राजा होहुं सो राजा क्यों करी होउं राज तब होताहे जब तप करताहे तातें में तप करों ॥ हे साध एसें विचार करी में तप कर्नें लागा हों॥ द्वादस वर्ष वितीत भएहे अरु आगेंभी करोंगा॥ जबलग सप्तद्वीपका राज मुझकों नही प्राप्त होता तबलग तप करोंगा यही निश्चे में धारा हे ॥ मेरा शरीरही नष्ट हो गया अथवा सप्तद्वीपका राज मुझकों प्राप्त भया यह मेरा निश्चा हे सो में तुझकों कहाहे अब जहां जाणेकी तुझकों इछा हो ए तहां जाउ ॥ हे रामजी इस प्रकार कही करी उस तपसीनें बहुरी नेत्र मुंदि करि चित्त स्थित करणेकों समाधान करी इंद्रीय करी विषयका त्याग करी मन निश्चल कीया ॥ तब में उस कों कहा हे मुनीस्वर मेंभी तेरे पास बेठा हों जबलग तेरे तांइ वरकी प्राप्ति नही होती तबलग में तेरी टहल करोंगा ॥ मेरे तांइ तेरे उपर दया आइ हे ॥ हे रामजी इस प्रकार में उसकों कही करी षटमास पर्यंत में उसके पास बेठि रहा ॥ उसकी रछा करत रहा जब धूप आवे तब छाया करों आधी मेघविषे अपनें शरीरकों कष्ट देकें रछा करों॥ उद्वेगतें रहित षट्मास जब बीते तब सूर्यके मंडलतें एक पुरुष निकस्या ॥ बडा प्रकाशवान जेसें विष्णु भगवानका तेज हे तेसें तेजवान भास करी हमारे निकट आया ॥ तिनकों देखी करी में मन वाणी शरीर तीनों करि पूजा करि ॥ तब उस पुरुषनें कहा ॥ हे तपसी अब इस तपकों त्याग ॥ अरु जो कछु इछा हे सो मांग तेरी इछा तो यही हे जो में सप्तद्वीपका राजा होउ ॥ सो तुं सप्तद्वीप पृथ्वीका राजा होवेगा ॥ अरु सप्त सहस्र बर्ष पर्यंत राज करेगा ॥ परंतु अवर शरीर साथ होवेगा ॥ हे रामजी इस प्रकार कहि करि उह पुरुष सूर्यके मंडलविषे अंतर्ध्यान हो गया ॥ जेसें समुद्रतें तरंग निकसी करि लय हो जावे तेसें लीन भया तब उसकों में कहा ॥ हे ब्राह्मण अब क्यों तुं संकट लेता हे जिस निमित्त तुं तप करता था सो वर तो तुझकों प्राप्त भया॥ अब क्यों संकट करता हे ॥ हे रामजी जब इस प्रकार में कहा जो सूर्यके मंडलतें एक पुरुष बडा तेजवान निकसी करि तुझकों वर दे गया हे तब नेत्र खोले ॥ अरु में उसके चरनोंसों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रसडी खोली ॥ तब उसका तेज बडा होगया ॥ उसके शरीरकी कांति प्रकाशवान भइ ॥ तब निकट एक जलते रहित तलाव था उसके पुन्यकरी उहभी जलसों पूर्न होगया ॥ तिसविषे
हम दोनोंनें स्नान कीया ॥ बहुरी मंत्र पाठ कीया अरु संध्याकरी बहुरी हम दोनों वछके निचे आए जो वछ फलतें रहित था सो फल करो पूर्न होगया ॥ उसकी पुन्यवासना कर्के उन
फलकों भछन कोया ॥ तिन दिन पर्यंत उहां रहा बहुरी चला ॥ अरु कहत भया हे साध हम देशकों चले हे ॥ जबलग शरीर हे तबलग शरीरके सुभावभी हे ॥ आगें एक बन आया
बहुत सुंदर फुल फल बूंटे सले हुए हे भवरे विचरते हे ॥ जलके प्रवाह चलतेहे ॥ कोएल अरु तोते अरु बगले इनतें आदि लेकरी पंछी पशु वछ हम देखत भए ॥ आगें ताल वछ बहुत
देखे ॥ बहुरी आगें कंदराके स्थान आए अेसें स्थान हम लंघते गए ॥ हे रामजी राजसी तामसी सात्विकी तिनों गुणके रचे स्थानकों लंघते मथुरा नगरके मार्ग आए ॥ जो सुधा मार्गथा
तिसकों छांडीकरी उह टेढे मार्ग चला ॥ तब में कहा हे साध सुधे मार्गकों छांडी तूं टेढा क्यों चलता हे तब उसनें कहाहे साध तूं चला आउ ॥ इस मार्ग गौरी भगवतीका स्थान हे तिन
का दर्शन कर्तें जावे ॥ अरु मेरे सप्त भाइ अवर गौरीके स्थान इस कामनाकों लेकरि तप करतेथे तिनकीभी सुधि ले आवे ॥ हे रामजी जब हम उस मार्गके सन्मुख चले तब एक आ
गें महा शून्य वन था मानों शून्य आकाश हे ॥ महा तम रूप हे तहां कोउ वछ दृष्ट न आवे ॥ अवर पशु पंछी मनुष कोउ दृष्ट न आवे ॥ तिस बनविषे उसने मुझकों कहा ॥ हे ब्राह्मण
इस स्थानविषे में आगें षट्मास रहाहों ॥ अरु मेरे सप्त भाइ अवर थे ॥ उनोंनेंभी इह कामना धारिकरी देवीका तप आरंभ्यां था ॥ चलहू देखीये महा पवित्र स्थानेह जिसके दर्शन कीयेतें
संपूर्न पाप नष्ट होजाते हे तब में कहा चलियें पवित्र स्थानकों देख्या चहीये ॥ हे रामजी अेसें विचारकरी चले जावें ॥ जाते मरुथलकी तपी हूइ पृथ्वीपर जाय निकसे ॥ उह ब्राह्मण
देखीकरी गिरपडा अरु कहत भया ॥ हाकष्ट हाकष्ट हम कहां आनि पडे मुझकोंभी भ्रम उदे हूआ जो यह क्या भया ॥ बहुरी उठ्या उठिकरी आगें गए तब एक वछ हमकों दृष्ट
पडा तिसके नीचें एक तपसी बेठाहे ॥ ध्यानविषे स्थित देखि करि हम तिसके निकट गए जाय करि कहा ॥ हे मुनीस्वर जाग जाग ॥ जब हम बहुत वार कहा तब उसनें नेत्र खोलि क
रि हमकों देखे ॥ अरु कहा कवन हो तुम कवन हो ॥ अेसें कही करि कहा बहुत आश्चर्य हे ॥ इहां गौरीका स्थान था उह कहां गया ॥ वछ बावलीयां कमल थे उह कहां गए ॥ व
डे सुंदर स्थान थे सो कहां गए ॥ अरु बडे ऋषीस्वर मुनीस्वरके स्थान थे सो कहां गए ॥ हे साध इह क्या आश्चर्य हुआ सो तुम कहो तब हमनें कहा हे मुनीस्वरके हम नहीं जानते ॥
हम तो अब आए हे इसकों तुमही जाणहु तब कहत भया बडा आश्चर्य हे ॥ हे रामजी अेसें कही करि बहुरी ध्यानविषे स्थित होगया ॥ अरु वितीत वृत्तांतका ध्यान करि देखत भया ॥
एक मुहूर्त पर्यंत देखी करि बहुरी नेत्र खोलि करि कहा बडा आश्चर्य होये बीत्याहे ॥ तब हमनें कहाहे भगवन जो कछु वृत्तांत हुआ सो कृपा कर्के हमकों कहों ॥ तब तपसीनें कहा हे
साधो इहां एक समे वाघेस्वरी भवानी इस वनविषे आती भइ ॥ तिसनें एक रहणेका स्थान बनाया ॥ तिसविषे शिवकी अर्ध शरीर गौरी रहत भइ ॥ अरु उस स्थानके निकट बहुत सुंदर व
छ लगाए ॥ कल्प वछ तमाल वछ कदंब वछ इत्यादिक बहुत लगाए ॥ अरु कमल फुल आदि ले करि सर्व ऋतुके फुल लगाए ॥ बावलीयां बगीचे रमणीय रचे अरु कोएल भंवरे तो
ते मोर बगले इनके आदि ले करि जो पंछी हे सो विश्राम करे अरु शब्द कर ही ॥ अरु निकट ऋषीस्वर मुनीस्वर तपसीकी कुटीयां मानों इंद्रका नंदन बन हे ॥ अरु निकट गांवकी व

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्ती बहुत आनि हुई ॥ हे साधो इहां आठं ब्राह्मण तपके निमित्त आए थे ॥ षटमास इहां रहि गए हें बहुत सुंदर स्थान हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे ब्रह्मगीता गौरी बाग वर्नन नाम द्विशताधिकत्रयोषष्टितमः सर्गः ॥ २६३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ कदंबोवाच ॥ हे साधोमुझसों पुछो तो अपणा वृत्तांत मे कहताहों ॥ में मालव देशका राजा था अरु चिर पर्यंत खेदतें रहित में विषय भोग भोगे हें ॥ बहुरी मुझकों यह विचार आनि उपजा जो इह संसार सुपन मात्र हे ॥ इसकों सत जाणी स्थित होणा मुर्खता हे ॥ एती आरबला मेरी बीती गइ में सुकृत कछु न कीया ॥ इह विषय भोग आपातरमणीय नासवंत हे ॥ इनकों में चिर पर्यंत भोगता रहाहों अरु मुझकों सांति न प्राप्त भई तृष्णा बढती गई ॥ तातें उही उपाय करो जिसकरी मुझकों सांति प्राप्त होवे ॥ बहुरी दुखी कदाचित न होउ ॥ हे साधो इह विचार मुझकों आनि उदे भया ॥ तब में वैराग कर्के राजको लक्ष्मी त्याग करी ॥ ऋषि अरु मुनिके स्थान देखता इस कदंब वृछके नीचें आनी स्थित भया ॥ अरु ब्राह्मण आठ भाइ आएथे सो एक तो इह इसी पर्वत उपर तप कर्णे जाय लगाथा अरु एक स्वामिकार्तिकके पर्वत उपर तप कर्णे लगाथा एक बनारसविषे तप कर्णे लगा ए क हीमालै उपर तप कर्णे लगा ॥ चार भाइ तो इस प्रकार चारों स्थानकों गए ॥ अरु अवर चार भाई ईहां नप कर्णे लागे ॥ अरु कामना आठोंकी हे जो हम सप्त द्वीप पृथ्वी के राजा होवें ॥ हे साधो इसकों तो सूर्यनें वर दीया हे अरु अवर जो सात थे तिननें वाघेसरी भवानीकों इष्ट कर्के तप कीया ॥ जब उह प्रसंन भई अरु कहा वर मांगहूं तब उनहूंने कहा हम सप्तद्वीप पृथ्वीके राजा होवें ॥ सातनें एकै वर मांगा तिनकों वर देकरि परमेस्वरी अंतर्ध्यान होगई ॥ अरु यहभी वर माग्या जो इहांके वासी हे तिनका स्थानभी हमारे पास होवे ॥हे साधो इस वरकों पाइ करि उहांतें चले अपणे गृह गए अरु उह सदासिवकी अर्ध शरीर बारहवर्ष पर्यंत रही ॥ बहुरी उनकी मर्यादा थापणे निमित्त उहांतें अंतर्ध्यान होगई ॥ इहांके वासीभी सभ जाते रहे वागेस्वरीके जाणेकरी इह स्थान शून्य होगया ॥ एक इह कदंब वृछका बच्चा रहि गया हे ॥ एक में ध्यानविषे स्थित रहा हों ॥ इह वृछभी रहा हे जो वागेस्वरीनें अपणे हाथ करी लगाया हे इस कारणतें इह नष्ट नहीं भयो अरु जर्जरी भावभी नही भया ॥ हे साधो इसके पास जो वस्तीवाले मनुष थे सोभी जाते रहे ॥ भगवती अं तर्धान होगई ॥ में ध्यान इष्ट ें रहा अवर जीव इहां आएकरि अदृष्ट होगए ॥ इस कारण सभ सुभ आचार रहे अरु उन आठो भाइ विषे एक इह बेठाहे ॥ इसकोंभी घर जाणा हे ॥ सात आगें गएहे उहां सभ एकठे जाय होवेंगें॥जेसें अष्ट वसु ब्रह्मपुरीविषे एकत्र होवे तेसें एकत्र होवेंगें॥ हे साधो जब यहतें तप कर्णे निमित्त निकसेथे तब इनकी स्त्रीयानें विचार कीया जो हमारे भर्ता तो तप कर्णे गए हे हमभी जाय तप करें ॥ तिन आठनें तप आरंभ कीया सो सो वृत्त चांद्रायण तिनने राखे॥महा कृश जेसें शरीर होगए जेसें वसंत ऋतुकी मंजरी जेठ आसाढ विषे कृश होजातीहे तेसे उह हो गइयां ॥ एक भर्ताका वियोग दुसरा तप करि कृश होगईयां ॥ तब पार्वती वाघेस्वरी प्रसंन भई अरु कहा ॥ कछु वर मांगहूं ॥ जेसें मेघकों दे खकरी मोर प्रसन्न होकरी बोलता हे तेसें उह प्रसंन होकें बोलीयां ॥ हे देवताकी इस्वरी हम यह वर मांगतीया हे जो हमारे भर्तार अमर होवे ॥ जेसें तेरा अरु शिवका संयोगहे तेसें ह मारा होवे ॥ तब भवानीने कहा ॥ हे सुभद्रे इस शरीर करी तो अमर किसी नहिरहणा ॥ आदि जो सृष्टि हूइ हे तिस विषे नेति हूइ हे जो शरीर करी किसी नही रहणा ॥ जेता कछु ज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गत देखीताहै सो सभ नांस रूप है॥कोउ पदार्थ स्थिर नहीं रहता ॥ अवर कछु वर मांगो ॥ तब उह ब्राह्मणीनें कहा ॥ हे देवी भला जो हमारे भर्ता मरे ॥ तो इनके जीव हमारे यहविषे रहे ॥ इनकी संवित बाहिर न जावे ॥ तब वागेस्वरीनें कहा ऐसेंही होवेगा ॥ उनके जीव तुमारेही घर विषे रहेगें ॥ अरु उनकों जो लोकांतर भासेगातिस साथही तुमभी उनकी स्त्री हो करी स्थित होवेगीआं ॥ ऐसें कहीकरी अंतर्धान होगई ॥ कुंददंतोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार सुणकरी में आश्चर्य वान हुआ बहुरी मेंनें कहा हे मुनीस्वर तुझने आश्चर्य कथा सुणाइ हे ॥ जो आठों भाईनें एकही वर पाया सप्तद्वीप पृथ्वीका अरु पृथ्वी एकहीविषे तिन सभकों राज क्यों करि प्राप्त होवेगा ॥ हे रामजी जब इस प्रकार उसकों में कहा तब कदंबतपा कहत भया ॥ हे साधु यह क्या आश्चर्य हे ॥ अवर आश्चर्य सुण ॥ हे ब्राह्मण जब यह आठों भाई घरतें निकसेथे तपके निमित्त तब इनके जो पिताभाता थे तिनने विचार कीया जो हमारे पुत्र तप करनें गए हे ॥ हमभी उनके निमित्त जाय तप करें ॥ उनकी स्त्रीयां साथ लेकरी तीर्थ अरु ठाकुर द्वारे दिखावते फिरे ॥ दिखाइकें उन एकांत बेठिकरि तप कीया ॥ तब कछ्र चांद्रायण कर्के देवीकों प्रसन्न कीनी ॥ अरु वर लेकरी अपनें घरकों आणे लागे ॥ तब एक स्थान विषे दुर्वासा ऋषीस्वर बेठाथा जेसा दुर्बल जेसें अंग तिसके अरु विभूति ल गाई हूई ॥ अरु बडी जटा खुली हूइ ॥ तिसकों देखीकरी पासतेहि लंघकरि चले गये ॥ तिसकों नमस्कार न कीया तब उसनें कहा ॥ हे ब्राह्मण तुं क्यों दुष्ट सुभावकर्के हमारे पास च ला गया हमकों नमस्कारभी न कीया ॥ अब तेरे वर निवृत्त होवेंगे ॥ जो तुमकों प्राप्त हूआ हे सो न होवेगा॥विपरीति हो जावेगा तब उननें कहा हे मुनीस्वर यह बचन केसें कहते हों॥ हमारे उपर क्षमा करु ॥ यह ऐसेंही कहते रहे जो उह अंतर्धान होगया ॥ तब ऐसें सुणीकरी यह अपणे यह विषे आनि स्थित भये सोकवान होकरि ॥ तो हे ब्राह्मण तुं देखु जो जब लग आत्मबोधतें शून्य हे ॥ तबलग अनेक दुःख उपजेंगें ॥ केइ प्रकारके आश्चर्य भासेगें ॥ संदेह दूर न होवेंगा ॥ अरु जब आत्मबोध हूआ तब कोउ संसा आश्चर्य न भासेगा ॥ हे ब्राह्मण इह सब चिदाकास विषे माया मात्रही रचना बणती हे ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठेनिर्वाणप्रकर्णे ब्राह्मणकथावर्ननंनामद्विशताधिकचतुः षष्टितमः सर्गः ॥ २६४ ॥ ॥ ७ ॥

॥ कुंददंतोवाच ॥ हे भगवन् में इह सुणीकरी आश्चर्यवान हूआहों अरु एक संशा उत्पत्ति हूआ हे सो निवृत्त करो ॥ तुमने कहा एकठे एक दीपविषे आठो सप्त द्वीपके राजे होवेगें दीप तो सप्त एकही अरु राज करनेवाले आठ ॥ यह केसें राज करेगें अरु इनतें वरभी पाया अरु सरापभी पाया ॥ इह एकठे क्यों करी होवेगें ॥ जेसें धूप अरु छाया एकठी होणी आ श्चर्य हे जेसें दीन अरु रात्र एकठे होणे कठिन हे तेसें वर अरु श्राप एक होणे कठिन हे ॥ कदंबतपोवाच ॥ हे साधो जो कछु इनकी भविष्यत होणी हे सो में कहताहों जब केताक काल वितीत होवेगा गृहस्थविषे तब इनके शरीर छुटते जावेगें ॥ क्रम कर्के आठके शरीर छुटेगे ॥ इनकों कुटुंबीजलावेग ॥ इनकी पुर्यष्टका अनुभव साथ मिली हूइ एक मुहूर्त पर्यंत जडीभूत सुषुप्त होवेगी ॥ तिसके अनंतर चैतनता फुरी आवेगी ॥ शंख चक्र गदा पद्म चतुर्भुज विष्णुका रूप धारिकें वर आवेंगे ॥ अरु त्रिनेत्र हाथविषे त्रिशूल भृकूटी चडाय क्रोधवान सदाशिवका रूप धारिकरी सराप आवेंगे ॥ दोनों एकठे आनि होवेंगे ॥ तब वर कहेंगे ॥ हे सराप तुम क्यों आएहो ?॥ अब तो हमारा समा हे ॥ जेसें एक ऋतुके समे दूसरी नहीं आती॥ तेसें तुम न आवहू ॥ तब सराप कहेंगे ॥ हे वरो तुम क्यों आए हो अब तो हमारा समा हे ॥ जेसें एक ऋतुके होते दुसरीका आवणा नही बणता तेसें तुमारा आणा नही बणता तब वर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहेंगे ॥ हे सराप तुमारा कर्ता ऋषि मनुष हे ॥ अरु हमारा कर्ता देवता हे ॥ मनुष करी देवता पूजणे जोग हे ॥ काहेतें जो बडे हे तातें तुम जावहू ॥ जब इस प्रकार वर कहेंगे ॥ तब सराप क्रोधवान होवेंगे ॥ अरु मारणेके निमित्त त्रिशूल हाथविषे उठावेंगे ॥ तब वर कहेगे हे सरापो तुम अरु हम लडेगे तब पाछें किसी बडे न्याय कर्ता पास जावेंगे ॥ तब हमारा युद्ध निवृत्त करेगा ॥ सो प्रथम क्यों न जावे किसी बडे पास जो कछु हमारे तांइ कहे सो अंगिकार करणा तातें अबहि चलो ॥ तब सराप कहेंगे हे वरो कोउ युक्त सहित वचन कहता हे तिसकों सब कोउ मानता हे ॥ तुम भला कहा हे चलीयें ॥ अेसें चर्चा करकें दोनों ब्रह्मपुरीविषे जावेंगे ॥ जाय करि ब्रह्माजीकों प्रणाम करेंगे ॥ हे देव यह हमारा न्याय करो ॥ जो प्रथम वृत्तांत कहि करी वर उनकों स्पर्श करे हे ॥ अथवा सराप स्पर्श करे हे ॥ तब ब्रह्माजी कहेगा हे साधो जो जीनका अभ्यास उनक अंतर दृढ होवे सो प्रवेश करो ॥ तब वरके स्थान सराप जायकरी ढुंढेगे ॥ अरु सरापके स्थान वर जाए ढुंढेगे ॥ ढुंढकरी सराप आय कहेंगे ॥ हे स्वामी हमारी हानि हूइ हे ॥ अरु वरकी जय हूइ हे ॥ काहेतें जो उनके अंतर वरही स्थित हे ॥ जिसका अभ्यास अंतर स्थित हे तिसीकी जय होती हे ॥ सो तो इनके अंतर वज्रसारकी न्यांइ वर स्थित हे ॥ हे स्वामी हमारा अधिभूतक शरीर कोउ नहीं ॥ हम संकल्परूप हे तिस संकल्पकी दृढता होती हे सोइ आनि उदे होता हे ॥ वरका कर्ताभी ज्ञानमात्र होता हे वरकों लेताभी उही ज्ञानरूप हे वरकों ग्रहण करता जानता जो इह हमारा स्वामी हे तिस संकल्पकरी वरका कर्ता दवना हे ॥ जो में वर दीया हे ॥ अरु ग्रहन करनेवाला जानता हे जो में वर लीया हे ॥ हे इश्वर उसका जो वररूप संकल्पहे उसके निश्चेविष दृढ होजाता हे ॥ जिस संकल्पकी संवित साथ एकता होती हे बहुरी उही प्रगट होता हे इसी प्रकार सरापभी हे ॥ तो क्या हे न कोउ वर हे न सराप हे ॥ दोनों संकल्परूप हे ॥ जेसा संकल्प अनुभव आकाशविषे दृढ होता हे सोइ भासता हे ॥ वर देणेवालाभी अनुभवसत्ता हे अरु लेणेवालाभी आत्मसत्ता हे ॥ उही सत्ता वररूप होकरी स्थित होती हे ॥ उही सत्ता सरापरूप होकरि स्थित होती हे ॥ तिस संकल्पकी दृढता होती हे तिसीका अनुभव होताहे ॥ हे स्वामी इह तुमसों सुण्या हूआ हम कहतें हे जो बाह्यकर्म कोउ इसकों फलदायक नही होता ॥ जो कछु उसके अंतर सार होता हे सोइ फल होता हे ॥ इनके अंतर तो वरका संकल्प दृढ हे हमारा हे नही ॥ तातें हमारा तुमकों नमस्कार हे ॥ अब हम जाते हे ॥ हे कुंददंत इस प्रकार करकें सराप अधिभूतक शरीर त्यागकरी अंतवाहक शरीर साथ अंतर्धान होजावेंगे ॥ जेसें आकाशविषे भ्रम करकें तरवरे भासे अरु सम्यक् ज्ञानकरी अंतर्धान होजावे तेसें सराप अंतर्धान होजावेगें ॥ तब ब्रह्माजी कहेगा हे वरो तुम सीघ्रही उन पास जावहू ॥ तब उह वर बहुरी पूछेंगा ॥ अरु दुसरा वर जो उनकी स्त्रियांनें लियाथा ॥ जो उनकी पुर्यष्टका अंतःपुरविषे रहे तातें हे भगवन् हमकों क्या आज्ञा हे हम तो उनकों उसी मंदिरविषे रखणा हे ॥ अरु उनकों समद्वीप पृथ्वीका राजभी भोगणाहे अरु दिग्विजय करणा हे इह केसें होवेगा तब ब्रह्माजी कहेगा हे साधो इह क्या हे ॥ जो सप्त द्वीपकी पृथ्वीका राज करणा हे उनका तुमारे साथ विरोध कछु नही ॥ तुम उसी मंदिरविषे उनकी पुर्यष्टका रखणी हे ॥ अरु उहांही राज भुगावणा ॥ अपणा जो कछु तुमारा सुभाव हे सो करणा ॥ कुंददंतोवाच ॥ हे भगवन् इस करी तो हमकों बडा संसा उत्पत्ति हुआ हे उसी मंदिरविषे आठों भाइ समद्वीप पृथ्वीका राज केसें करेगे ॥ एती पृथ्वा उस मंदिरविषे क्यों करि समावेगी इह आश्चर्य हे ॥ जेसें कमल फुलकी डोडीविषे कोउ कहे हस्ती सेन करे अरु हस्तीकी पंक्ति उसीविषे हे सो आश्चर्य हे ते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सें इह आश्चर्य हे ॥ ब्राह्मणोवाच ॥ हे साधो ब्रह्मरूपी आकाश हे ॥ तिसके अणुका जो सूक्ष्म अणु हे तिसविषे जो सुपन फुर्या हे सो हमारा जगत हे ॥ तिस सुपनविषे इह सृष्टि समाए रही हे तो मंदिरविषे समावणा क्या आश्चर्य हे ॥ हे साधो इह जगत सब सुपन मात्र हे अहं त्वं आदिक जगत सब सुपन निद्राविषे फुरता हे ॥ आत्मसत्ता सदा अद्वैत हे ॥ परम सांत अरु अनंत हे ॥ तिसविषे जगत आभासमात्र हे ॥ जेसें सुपनेविषे अपणा अनुभव सूक्ष्मतें सूक्ष्म होता हे तिसविषे त्रिलोकी भासी आती हे ॥ जो सूक्ष्म संवितविषे त्रिलोकी भासी आती हे ॥ तो मंदिरविषे भासणा क्या आश्चर्य हे ॥ हे साधो जब इह पुरुष मरि जाता हे तब इसकी सूक्ष्म पुर्यष्टका जड होजांती हे ॥ तिसविषे बहुरी त्रिलोकी फुरी आती हे सो तुम देखहू ॥ सूक्ष्महीविषे भासी आइ क्यों जो परमसूक्ष्मविषे सृष्टि बणी जाती हे ॥ तो मंदिरविषें होणेका क्या आश्चर्य हे ॥ हे साधो जेता कछु जगत भासता हे सो सब आत्मविषे स्थित हे तिसका किंचन इस प्रकार होभासता हे तातें तुम जावहु ॥ उनकों राज भुगावहु ॥ हे कुंददंत जब इस प्रकार ब्रह्माजी कहेगा तब वर नमस्कार करकें अधिभूतक शरीरकों त्याग देवेंगे ॥अं तवाहक शरीर साथ उनके रिदेविषे आनि स्थित होवेगें॥ जेसें एक शत्रुकों दूर करी दूसरा आनि स्थित होवे तेसें सरापकों दूर करकें उनके रिदेविषे वर आनिस्थित भये ॥ तिनकों त्रिलोकी भासणे लागी ॥ अरु पुर्यष्टकाकों अंतःपुरविषे वरनें रोकि छोडियां ॥ जेसें जल बनकों रोकता हे तेसें उनकी पुर्यष्टकाकों रोक छोडियां ॥ हे कुंददंत इस प्रकार उनकों अपणे अंतःपुरवि षे सृष्टि भासी अरु जानत भये ॥ हम सप्त द्वीपके राजा हुए हे इस प्रकार आठही उस अंतःपुरविषे सप्तद्वीप पृथ्वीके राजा हुए॥परंतु उसकों उह न जाणे॥ परस्पर अज्ञात सृष्टिके॥ एक राजा सप्त द्वीपका भया अरु रहणेका स्थान जंबूद्वीपविषे जो उजेन हे तिस विषे उसकी राजधानि हुइ॥ अरु एक कुशाद्वीपविषे रहणे लागा ॥ एक राजा क्रौंचद्वीपविषे रहणे लागा अरु एक द्वीप साकविषे रहे ॥ जो तिसकों हरकारे आनी कहेंगे पातालके नाग बडे दुष्ट हे ॥ तिसकों किसी प्रकार जीतो ॥ तब उह समुद्रके मार्ग पातालविषे नागकों जीतणे जावेगा अरु चो था एक द्वीपविषे अपणी स्त्री साथ शांत होजावेगा ॥ अरु एक राजा सालमल द्वीपविषे स्थित होवेगा तहां स्वर्णकी पृथ्वी हे बडी प्रकाश संयुक्त हे ॥ तिस द्वीपविषे एक पर्वत होवेगा॥ तिसके उपर एक ताल होवेगा तिस तालविषे विद्याधरी साथ लीला करता फिरेगा ॥ अरु पंचम एक क्रौंचदीपविषे राजा होवेगा ॥ दिग्विजय करकें आवेगा तिसकी जो प्रजा होवेगी सो बडी धर्मात्मा मानसी पीडातें रहित होवेगी ॥ अरु एक गोमेदक नाम द्वीपविषे होवेगा ॥ तिसका युद्ध पुष्कर द्वीपवाले साथ होवेगा अरु एक पुष्कर द्वीपका राजा होवेगा ॥ सो गोमेदक वाले राजा साथ युद्ध करेगा ॥ हे कुंददंत इस प्रकार उह सृष्टि अपणे अंतःपुरविषे देखेगें अरु राज भोगेगे ॥ ॥ परस्पर उनकी सृष्टि अदृश्य होवेगी ॥ अरु राजधानीभी सबकी में तेरे तांइ कही ॥ एककी जंबूद्वीप उजेनविषे एककी साकद्वीपविषे एककी कुशाद्वीपविषे एककी क्रौंचद्वीपविषे एककी पुष्करद्वीपविषे ॥ एककी गोमेदक द्वीपविषे एक लोकालोक पर्वत स्वर्न पृथ्वीविषे ॥ हे साधो इस प्रकार उनकी भविष्यत होणी हे सो में सब तुमकों कही हे ॥ अरु जेसा इसके अंतर निश्चा होता हे तेसाही इसकों फल होता हे ॥ बाह्य इह केसीही क्रिया करे ॥ अरु अंतर इसके सत्ता नही होती ॥ तब उह फलदायक नही होती ॥ जेसें नट स्वांग बनायकरी चेष्टा करता हे ॥ परंतु उसके अंतर उसका सद्भाव नही होता इसकरी उह फल दायक नही होती अरु पुत्रविषे अरु अंतर उनकी उर चित्त लगा रहता हे तो अंतर्भावना करी उह परे पुष्ट होते हे ॥ हे साधो जेसा इसके अंतर निश्चा होता हे सोइ वरदायक होताहे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तातें निश्चा परमार्थका करणा जोग हे ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे ब्राह्मणंभविष्यनराज्यप्राप्तिवर्णनं नाम द्विशताधिकपंचषष्टितमःसर्गः ॥ २६५ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ कुददंतोवाच ॥ हे मुनीस्वर मुझकों संसा बडा प्राप्त हूआ हे जो उसी अंतःपुरविषे अपणे अपणे सभद्वीपका राज करेंगें सो केसें होवेगा ? ॥ कदंबतपोवाच ॥ हे साधो जेता कछु जगत तुझकों द्रष्ट आता हे सो कछू बणा नही ॥ सुद्ध चिनमात्र सत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ उनकों जो अंतःपुरविषे अपणी अपणी स्रष्टी भासेगी सो क्या रूप हे ॥ उनका जो अपणा अनुभव हे सोइ स्रष्टी रूप हो भासेगा ॥ आपही स्रष्टी रूप अरु आपही राजा होवेगें ॥ इह जो कछू जगत तुझकों भासता हे सोभी परम ब्रह्म हे इतर कछू नही ॥ जेसें समुद्र विषे तरंग सुभाविक फुरते हे सो जलही रूप हे अरु लीन होते हे ॥ सो जलही रूप हे ॥ जलते इतर कछु नही ॥ न कछू उपजा हे न मीटता हे तेसें ब्रह्मविषे जगत उपजता अरु लीन होता हे ॥ ब्रह्मतें इतर कछू नही तातें उह ब्राह्मणभी अजरूप हे अपणे आपकों फुरणे करकें जगत रूप देखेंगें ॥ हे साधो जब सुषुप्ति होती हे तब अद्वैत अपणाही अनुभव होता हे ॥ बहुरी तीसविषे सुपनकी स्रष्टी फुरी आती हे सो क्या रूप हे ॥ उही सुषुप्ति रूप हे ॥ तेसें परम सुषुप्तिरूप जो आत्मा हे ॥ जहां सुषुप्तिभी लीन हो जाती हे तिसविषे इह जगत फुरता हे सो उही रूप हे ॥ आधार आधेयतें रहित ब्रह्मसत्ता आपणे आपविषे स्थित हे ॥ हे साधो जेसें एकही मंदिर विषे बहुत पुरुष सेन करे ॥ उनकों अपणे अपणे सुपनेकी स्रष्टी भासती हे ॥ तो कछू आश्चर्य नही ॥ तेसें उनकों अपणी अपणी स्रष्टी भासेगी ॥ इस विषे क्या आश्चर्य हे ॥ जो कछू जगत भासता हे ॥ सो ब्रह्मविषे हे ॥ अरू ब्रह्मरूपही अपणे आपविषे स्थित हे ॥ कुंददंतोवाच ॥ हे भगवन आत्मसत्ता तो एक हे अरु केवल हे ॥ जिसविषे एक कहणाभी नही परम सांतरूप सिव पद हे अरु अद्वैतरूप हे तो नाना प्रकार क्यों भासती हे ॥ इह तो सुभावसिद्ध हे ॥ सो नानात्व होकरी वास्तव क्यों भासती हे ?॥ कदंबतपोवाच ॥ हे साधो सर्व सांतरूप हे ॥ अरु चैतन्य आकाश हे ॥ नाना प्रकार जो भासती हे ॥ सो अवर कोउ नही ॥ आत्मसत्ताही अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जेसें सुपन स्रष्टी भासती हे सो बणी कछू नही अपणा अनुभवही स्रष्टीरूप हो भासता हे ॥ तेसें इह जगत अनुभव रूप हे ॥ हे साधो स्रष्टीके आदी अद्वैत आत्मसत्ता थी तिसविषे जो जगत भासी आया सोभीतुं वही रूप जाणहू ॥ जेसें समुद्रही तरंग रूप हो भासता हे तेसें आत्मसत्ता स्रष्टीरूप होभासती हे ॥ जेसें पुरुष थंभेतें रहित स्थानविषे सोया हे तिसकों बहुत थंभ संयुक्त मंदिर भासी आया ॥ तो उहां बण्या तो कछू नही अनुभव आकाशही थंभ रूप हो भासता हे ॥ तेसें जो कछू जगत तुमकों भासता हे सो अपणे अनुभव रूप जाणहू ॥ जेसें आकाशविषे शून्यता हे ॥ जेसेंअग्नीविषे उष्णता हे जेसें बरफविषे सीतलता है तेसें आत्माविषे जगत हे कोउ जगत कहो कोउ ब्रह्म कहो ब्रह्म अरु जगतविषे भेद कछू नही ॥ जेसें वछ अरु तरु एकही वस्तु हे तेसें ब्रह्म अरु जगत एकही वस्तुके दो नाम हे ॥ इस जगत अरु इंद्रियां मनतें अतीत आत्माकों जाणहू ॥ अरु जो इन तीनका विषय हे ॥ सोभी आत्माकों जाणहू ॥ अवर दुसरी वस्तु कछू नही ॥ अरु नाना रूप जो द्रष्ट आता हे सो नानात्व नही भया ॥ दुसरा नही भासता हे ॥ जेसें सुपने विषे बडे आरंभ द्रष्ट आते हे सेना अरु नाना प्रकारके पदार्थ भासते हे परंतु कछू हुइ नही ॥ तेसें यही जगत नानाप्रकार भासता हे परंतु कछू हुआ नही सर्व चिदाकाश रूप हे ॥ जेसें एक निद्राकी दो वृत्ति हे ॥ एक सुपन एक सुषुप्ति रूप ॥ सुपनविषे नानात्व भासती हे अरु सुषुप्ति विषे एक सत्ता होती हे तेसें चित्त संवितके फुरणेविषे ना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नात्व भासता हे अरु अफुरविषे एक हे ॥ हे साधो सर्वदा कालविषे एक रूप हे परंतु प्रमाद करकै भेद भासता हे जेसें सुपन सृष्टी अपणाही अनुभव रूप हे परंतु प्रमादकरकै भिन्नभिन्न भासता हे तेसें यह जगत हे ॥ हमकों तो सर्वदा काल उही भासता हे ॥ जेसें पत्र फूल फल टास एकही वृक्षके नाम हे जो वृक्षका ज्ञाता हे तिसकों सब वृक्ष रूप भासता हे तेसें सर्व नामरूप करी हमकों आत्माही भासता हे ॥ आत्मातें इतर कछू नही भासता ॥ आदी फुरणेविषे जेसें निश्चा हूआ हे सो अवर निश्चे पर्यंत तेसेंही रहता हे ॥ इह सभ विश्व संकल्प रूप हे संकल्पका अधिष्ठान ब्रह्म हे ॥ ब्रह्मही संकल्परूप होकरी भासता हे तातें जेता कछू संकल्परूप जगत भासताहें सो ब्रह्मरूपहे॥ ब्रह्म अरु जगतविषे भेद कछू नही एकही वस्तुके दो नाम हे ॥ जेसें वृक्ष अरु तरु दोनों एक वस्तुके नाम हे तेसें ब्रह्म अरु जगत दोनों एक चैतनके नाम हे ॥ हे साधो जो शब्द वाणीतें अगोचर हे तीसकों ब्रह्म जाण ॥ अरु जो शब्द वाणीविषे आता हे तिसकोंभी तूं ब्रह्मजाण ॥ ब्रह्मतें इतर कछू नही जो ज्ञानवान हे तिसकों सब ब्रह्मही भासता हे अज्ञानीकों नानात्व भासता हे ॥ जब अध्यात्म अभ्यास करेगा तब सभ जगत ब्रह्मरूपही भासेगा ॥ इसका नाम घोष हे हे साधो नाना प्रकार हो करी जगत देखाइ देता तोभी नानात्व कछू नही जेसें समुद्रविषे द्रवता करकै नाना प्रकारके तरंग बुदबुदे चक्र दृष्टी आते हे परंतु जलतें इतर कछू नही तेसें जेते कछू पदार्थ दृष्ट आते हे सो सभ आत्मरूप हे ॥ जेते कछू जीव बोलते दृष्ट आते हे सोभी महामौन रूप हे अवर कछू बण्या न ही ॥ चित्तके फुरणे करकै नाना प्रकारके पदार्थ भासते हे परंतु आत्मातें इतर कछू नही ॥ उही चिदाकाश ज्यों कात्यों स्थित हे अवर कछू बण्या नही ॥ जो कछू आत्माते इ तर विद्यमान भासता हे तीसकों अविद्यमान जाण ब्रह्मा विष्णु रुद्रतें आदी लेकरी जेता कछू जगत भासता हे ॥ सो सब सुपन विलास हे ॥ जेसे नेत्र दूषण करकै आकाशविषे त रवरे भासते हे तेसें भमदृष्टि करकै आत्माविषे जगत भासता हे बण्या कछु नही ॥ जेसें सुषुप्तिविषे पुरुष सोया होता हे तिसकों फुरणा नही फुरता ॥ बहुरी तिसी सुषुप्तिसों सुपन सृष्टी फुरी आती हे सो बणी कछू नही उही सषुप्ति रूप हे ॥ अरु सुपने विषे स्थित पुरुष हे तिसकों सत भासता हे ॥ अरु जो अनुभव विषें जाग्या हे तिसकों सुषुप्ति रूप हे ॥ तेसें इह जगत जाण आत्मातें इतर कछू नही जब जागीकरी देखेगा तब सब चिन्मात्रही भासेगा सांतरूप हे अनंत हे ॥ सदा अपणे आपविषे स्थित हे ॥ तिसविषे जो ज गत भासता हे सो सतभी नही अरु असतभी नही ॥ सत इस कारणतें नही ॥ जो आभासमात्र हे अरु नासवंत हे अरु असत इस कारणतें नही जो प्रगट भासता हे ॥ वास्तवतें आत्मस त्तासों भिन्न नही ॥ भाव अभाव सुख दुःख उदे अस्त उही आत्मसत्ता इह प्रकार हो भासती हे ॥ जेसें एकही निद्राके दो पर्याय हे ॥ सुपनभी अरु सुषुप्तिभी निद्राके नाम हे तेसें जगत अरु आत्मा दोनों एकही सत्ताके पर्याय हे ॥ जेसें एकही वायु स्पंद अरु निस्पंद दो रूप होतीहे तेसें आत्मसत्ताके दोनों रूप हे ॥ जब संवेदन जो हे जानणा सो नही फुरता तब अग्नी वाची रूप होताहे अरु जब अहं इस भावकों ले करी फुरती हे तब संकल्परूपी सृष्टि बणी जाती हे ॥ आकाश वायु अग्नी जल पृथ्वी तत्व भासी आते हे ॥ नछत्र चक्र देव ता मनुष पशू पंछी जलका नीचे चलणा अग्नीका उर्ध चलणा ॥ तारागण प्रकाशवान पृथ्वी स्थित भूत इनतें आदि ले करी जो स्थावर जंगमरूप सृष्टि हे सो अपणे सुभाव सहित भासती आती हे ॥ सुभ असुभ कर्म होतेहे तिसविषे सुख दुःख फलकी नेती होतीहे सो क्याहे ॥आत्मसत्ताही इस प्रकार भासती हे जेसें तुं मनोराज करकै सुपननगर कल्पी लेवे तिसविषे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनेक प्रकारकी चेष्टा होवे सो जबलग संकल्प होवे तबलग उही सृष्टि स्थित होतीहे जब संकल्प मिटी गया तब सृष्टि ले हो जातीहे तो वस्तु कछु न भइ ॥ तेरा अनुभवही सृष्टिरूप हो करी स्थत भया ॥ तेसें इह जगत अनुभवरूप हे अवर कछु नही ॥ कुंददंतावाच ॥ हे रामजी संकल्प जो फुरता हे सो पूर्व स्मृतिकों ले करी फुरता हे ॥ ब्रह्माविषे जो मनोराज संकल्पकी सृष्टि उत्पत्ति होतीहे सो किसी संस्कारकों ले करि फुरती हे इह संसा मेरा निवृत्त करो ॥ कदंबतपोवाच ॥ हे साधो इह संपूर्न सृष्टि किसी संस्कारतें नही उत्पत्ति भइ भम कर्के भासती हे ॥ जेसें सुपनेंविषे आपकों मृतक हुआ जानता हे सो इसकों पूर्वला संस्कारकी स्मृत्ति तो नहा होती अपूर्व हा भासी आती हे तेसें इह पदार्थ जो तुझकों भासते हे सो अपूर्व हे किसि स्मृति करि नही भए ॥ स्मृति अनुभव तो जगतहीविषे उत्पत्ति भए हे ॥ जब जगतका फुरणा न था फुर्या तब स्मृति अनुभवभी न थे ॥ जब जगत फुर्या तब इहभी फुर्या हे ॥ तातें संपूर्न जगत अपूर्व हे भम कर्के भासता हे ॥ जेसें सुपनेविषे मूआ कीसा कुल विषे अपना जन्म देखे अरु उसकों कुल चिरकालकी चल आती हे अेसें भासे अरु जब जागी उठ्या ॥ तब पूर्व किसकों कहे स्मृति किसकी करे ॥ न कछु जन्म रहता हे न कुल रहता हे ॥ तेसें ज्ञानवानकों इह जगत आकाशरूप भासता हे ॥ तो में तुझकों पूर्वकी स्मृति क्या कहों ॥ हे ब्राह्मण अवर कछु बण्या नही आत्मसत्ताही ज्योंकी त्यों स्थित हे ॥ जिसतें इह सर्व जगत हुआ हे अरु जीसविषे इह सर्व हे जो सर्व हे सो सर्वात्मा हे ॥ जो उही हे तो दूसरा किसकों कहों ॥ तातें अेसें जाणी करि तुम विचारो तब सर्व दुःख तुमारे नष्ट होवेगा ॥ हे साधो छ जो कारक हे सो ब्रह्मरूप हे ॥ कर्ता करण कर्म संप्रदान अपादान अधिकरण ॥ इह छ एक ब्रह्मरूप हे कर्ता कहीये कर्मके करणे हारा ॥ अरु कर्म कहीये जो कर्म करणा होवे ॥ करण कहीये क्रियाका साधक अरु संप्रदान कहीये जिस निमित्त होवे अपादान कहीये जीसतें ले करीये अरु अधिकरण कहीये जिसविषे करीये ॥ हे साधो इह छ कारक ब्रह्मरूप हे ॥ इसविषे विस्वका कर्त्ताभी ब्रह्म हे ॥ विश्वकर्माभी ब्रह्म हेविस्वका साधक भा ब्रह्म हे ॥ जिसविषे निमित्त इह विश्व हे सोभी ब्रह्म हे ॥ जिसविषे इह विश्व होताहे सोभी ब्रह्म हे ॥ हे साधो अेसा जो सर्वात्मा हे तिसकों नमस्कार हे ॥ हे साधो तिस सर्वात्माकों अेसें जानणा ॥ यही उसकी परम पूजा हे ॥ अेसें ही तुम पूजन करहू हे साधो अब तुम जावहू अपणा जो कछु वांछित हे ॥ तिसविषे विचरहू ॥ अरु तुमकों अपणे बांधव चितवते होवेगे तिनके पास जावहु ॥ जेसें कमल पास भंवरे जाते हे अरु हमभी समाधिविषे स्थित होतेहे ॥ जो कछु गुह्य बात हे सोभी में कहता हों जिसतें कोउ सुख पावताहे सोउ करता हे ॥ मुझकों जगत दुःखदायक दृष्ट आया हे ॥ इस कारणतें समाधिविषे जुडताहों ॥ हे साधो जद्यपी मेरेतांइ सब अवस्था तुल्य हे भेद कछु नही ॥ तोभी चित्तकी वृत्ति जो संसारके कष्टतें दुःखित हो करि आत्मपद विषे स्थित हूइ हे तिस स्थितीका जो कोउ सुख हे तिसके संस्कार करी बहुरी तिसी उर धावता हे ॥ तातें तुम जावहु में स्थित समाधिविषे होताहों ॥

इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे कुंददंतोपदेसो नाम द्विशताधिकषटषष्टितमः सर्गः ॥ २६६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ कुंददंतोवाच ॥ हे रामजी इस प्रकार कही करी उह बहुरी समाधिविषे जुडी गया ॥ इंद्रियां अरु मनकी कियातें रहित हुआ ॥ मानों कागद उपर मूरत लीख छोडी हे अेसें हो गया ॥ तब हम बहुरी जगाय रहे ॥ बडे शब्द करि रहे परंतु उह न जाग्या तब हम उहांतें चले ब्राह्मणके घर आए ॥ उनके घरविषे बडा उत्साह हुआ बहुरी समे पाय क्रम कर्के सातौ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाइ मरी गए अरु अष्टम मेरा मित्र जीता रहा ॥ बहुरी उहभी मृतक हो गया ॥ तब में बहुत सोकवान हुआ मेरा प्रीतमभी मरी गया अब में क्या करों ॥ हे रामजी में विचार किं
या जो बहुरी कदंबतपा पास जाउं जो मेरा दुःख नष्ट होवेगा तब में गया ॥ जाय करी तीनमास पर्यंत उसके पास रहा ॥ उसकों में जगाय रहा परंतु उह न जाग्या ॥तीन मास होए
चुके ॥ तब उह जाग्या ॥ में उसकों प्रणाम करके कहा हे मुनीस्वर उह तो अपणे अपणे राजकों भोगणे लागे हे अरु में एकला कष्टवान हूआ हों ॥ तातें मेरा दुःख तुम नष्ट करो ॥ में
तुमारी सरन आया हों ॥ कदंबतपोवाच ॥ हे साधो में तुझकों उपदेश करों परंतु तुझकों स्वरूपका साक्षातकार न होवेगा ॥ काहतें जो अभ्यास तुझसों न होवेगा ॥ अरु अभ्या
स विना साक्षात्कार स्वरूपका नही होता ॥ मेरा कहणाभी व्यर्थ होवेगा तातें में दुःख नष्ट होणेका उपाय तुझकों कहता हों॥ तिसकरी तुं मेरे समान होवेगा ॥ दुखतें रहित अनंत आत्मा
होवेगा ॥ हे साध अजुध्या नगरी हे तिसका राजा दसरथ हे ॥ तिसके ग्रहबिषे रामजी पुत्र हे ॥ निस रामजीकों वसिष्ठजी मोक्ष उपाय उपदेश करेगा बडी सभाविषे कहेगा तहां तुं
जा तुझकोंभी स्वरूपकी प्राप्ति होवेगी संसा मत कर ॥ हे रामजी जब इस प्रकार उस तपसीनें मुझकों कहा तब उहांतें चल्या में तुमारे पास आया हों ॥ जो कछु तुं पुछता था सो सब
वृत्तांत कहाहे जो कछु देख्या सुण्या हे सोइ कहाहे ॥ रामोवाच ॥ हे वसिष्ट उह वृत्तांत में उसके सुण्या था सो प्रभोकें आगें कहाहे ॥ अरु कुंददंतभी तुमारे पास इह बेठाहे ॥ अब
इसतें पुछीये जो स्वरूपकी प्राप्ति हूइ हे अथवा नही हूइ तुम इसकी अवस्था पूछहु ॥ वालमीकोवाच ॥ हे भारद्वाज जब इस प्रकार रामजीनें कहा ॥ तब वसिष्टजी मुनीविषे सार्दूल हे
सो तिसकी उर कृपादृष्टी करके बोलत भये ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हेब्राह्मण इह मोक्ष उपाय जो में संपूर्न कहा हे तिसकों सुणीकरी तूं क्या जानत भया हे ॥ कुंददंतोवाच ॥ हे सर्व
संसयके छेदणेहारे जो कछू मुझकों संसेरूपी तम आवरण था सो सब नष्ट होगया हे ॥ तुमारे वचन रूपी प्रकाशकरी अज्ञान रूपी अंधकारका नास भया हे ॥ अरु जो कछू जान
णे जोग पद हे सो मेंनें जाण्या हे जो कछू पावणे जोग था सो में पाया हे ॥ अब में अपनें सुभावविषे स्थित भया हों ॥ अब मुझकों कल्पना कोउ नही रही ॥ में अनंत आत्मा हों
नित सुद्ध अच्युत हों परमानंद स्वरूप हों ॥ सर्व जगत मेराही स्वरूप हे ॥ हे भगवन अंतःपुरविषे जो एती सृष्टी समावणेका संसा था सो तुमारे बचन करी दूर भया हे ॥ अरु एक एक
राइवीषे मुझकों ब्रह्मांड भासते हे अरु आत्मत्व भाव करके दिखाइ देते हें ॥ जेसें अनेक दर्पण विषे अपणा मुखही भासता हे तेसें मुझकों सर्व उरतें अपणा आपविषे ही भासता हे ॥
हे भगवन तुमारे वचन में आदीतें लेकरी अंत पर्यंत संपूर्न श्रवन कीये हे ॥ केसें बचन तुमनें कहे हे परम पावन हे अरु सारतें परम सार हे ॥ आत्मबोधका कारण हे ॥ तिनके विचारे
मेरी भ्रांति निवृत्ती हो गइ हे अरु अपणें आपविषे स्थित भया हों ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठेनिर्वाणप्रकरणे कुंददंतविश्रामप्राप्तिर्नामद्विशताधिकसप्तषष्टितमःसर्गः ॥ २६७ ॥ ॥ ७ ॥
॥ वाल्मीकोवाच ॥ जब इस प्रकार कुंददंतनें कहा तब वसिष्ठजी सुणीकरी परमउचित वचन परम पद पावणेका कारण बहुरी कहत भए ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी अब कुंददंत
आत्म अनुभवविषे विश्राम पाया हे इसकों अब हस्तामलकवत् अपणा आप अनुभवरूप जगत भासता हे ॥ आत्माहि निद्राखरूप होकरी भासताहे अरु आत्माही द्रष्टारूपहे ॥ अवर
दूसरी वस्तु कछु नही अपना अनुभव जगतरूप होभासता हे ॥ सो अनुभव आकाश केसा हे ॥ सम शांतरूप हे अनंत हे अखंड हे सदा ज्योंका त्यों हे ॥ हे साधो नानारूप भा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सता हैं परंतु अनाना हैं ॥ सदा ज्योंकों त्यों अद्वैत चिन्मात्र परम शून्य हे ॥ जिसविषे शून्यभी शून्य होजाती हे ॥ चैत दृश्यरूप जो फुरना ह तिसतें रहितें हे ॥ इसी कारणतें परम शून्य हे ॥ बोलता दृष्ट आता हे तोभी परम मौन हे ॥ हे रामजी तिसविषे जगत कछु बणा नही ॥ जेसें सुपनेविषे पहाड दृष्ट आते हे सो न सत हे न असत हे तेसें इह जगत सत असततें विलक्षण हे काहेतें जो कछु बण्या नही ॥ जो कछु भासता हे सो आत्मा हे ॥ जेसें रत्नका प्रकाश चमत्कार होताहे तेसें आत्माका प्रकाश जगत हे ॥ जेसें समुद्र द्रवता करकें तरंगरूप होभासता हे तेसें ब्रह्म संवेदन करकें जगतरूप होभासता हे अरु आदि स्पंद फुरी आए हे सो जगतरूप होकरी स्थित भया हें ॥ सो जेसें हूआ तेसें हुआ सो कार्य कारण भावतें रहित हे ॥ जिसकों प्रमाद हे तिसकों यह कारण भाव भासता हे उसकों तेसाही हे ॥ जब सत जानीकरी पाप करत हें सो बडे पाप आनी उदे होते हे तब स्थावर रूप होता हे ॥ बहुरी स्थावरकों त्यागके जंगम मनुष होता हे ॥ हे रामजी इस प्रकार इह ज्ञान संवित चैतसंबंधी होकरी नाना प्रकारके रूप धारती हे अरु प्रमाद करकें भिन्न भिन्न भासती हे ॥ परंतु स्वरूपतें कछु अवर नही होती ॥ सदा अखंडरूप हे जबलग प्रमाद होताहे तबलग जगतका आदी अरु अंत नही भासता जब प्रमादतें जागता हें तब सर्व कल्पना मीटी जाती हे ॥ हे रामजी जेता कछु जगत भासता हे सो कछु बण्या नही उही ब्रह्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जब जाग्रत अवस्थाका अभाव होताहे अरु सुषुप्ति आती हे तिसविषे न शुभकी कल्पना रहती हे न अशुभकी कल्पना रहती हे॥ उदे अस्तकी कल्पनातें रहित अद्वैत सत्ता रहती हे ॥ जब बहुरी तिसविषे चैतनता फुरती हे तब बहुरी सुपनाकी सृष्टि भासती हे ॥ कइं स्थावर जंगम सृष्टी भासती हे ॥ जिनविषे संवेदन फुरती भासती हे सो जंगम कहाता हे अरु जिनविषे संवेदन फुरना नही भासता सो स्थावर कहाता हे परंतु अवर कछु नही ॥ उही अद्वैत अनुभव सत्ता स्थावर जंगमरूप होभासती हे ॥ तेसें आत्मा अनुभव इह जगत होभासता हे ॥ हे रामजी सृष्टिके आदि परम सुषुप्ति सत्ता थी तिसविषे संवेदन फुरनें करकें जगत भासी आया सो उही संवेदनरूप जगत हे ॥ जिस आत्मसत्ताविषे फुरी हे उही रूप हे इतर कछु नही ॥ जेसें शरीरके अंग हस्त पाद नख केसादिक सब शरीररूप हे ॥ तेसें परमात्माके अंग हस्त पादादिक जंगम सृष्टि अरु नख केसादिक स्थावर सृष्टि सब आत्मारूप हे अवर दूसरी वस्तु कछु नही वणी ॥ जेसें सुपनसृष्टि अनुभवरूप होती हे जेसें संकल्प पुर रची सृष्टी संकल्परूप होती हे तेसें इह सृष्टी अनुभवरूप हे ॥ अरु इहं किसि कारणकरी नही उपजा तातें ब्रह्महीरूप हे ॥ ब्रह्मके सूक्ष्म अणुविषे सृष्टि फुरी हे सो क्या रूप हे ॥ ब्रह्म ही सृष्टि हे अरु सृष्टिही ब्रह्म हे ॥ ब्रह्म अरु जगतविषे भेद कछु नही ॥ परंतु अज्ञान निद्रा करकें भिन्न भिन्न भासता हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् निद्राका केताक प्रमाण हे अरु केते काल पर्यंत रहती हे अरु सूक्ष्म अणुविषे सृष्टि केसें फुरी हे अरु केसें स्थित हे अरु अणु किसकरी उसकी संज्ञा हे ॥ अरु अनंत क्यों करी हे अरु जो देवता असुरादिकरूपकों चित्त प्राप्त हूआ हे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी अज्ञान निद्रा अपणे कालविषे तो अनादि हे ॥ नहीं जाणी जाती जो कबकी भइ जाती हे अरु अंतभी नही जाण्या जाता जो कबलग रहेगी ॥ अज्ञानकालविषे तो इसका आदी अंत प्रमाण कछु नही भासता ॥ अरु बोधमें इसका अत्यंताभाव देखता हे ॥ अरु चित्तसत्ताकी जो अनंतता पूछें सो हें रामजी अद्वैत चिन्मात्र आत्मसमुद्र हे तिसविषे सूक्ष्म भाव अहं अस्मि जो संवित फुरती हे तिसका नाम चित्त हे ॥ तिस चित्तविषे आगें जगत होताहे शुद्ध चिन्मात्रविषे संवेदन चित्त फुरता हे तिसविषे जगत हे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उहीं चित्त देवता असुर अरु जंगमरूप होभासता है ॥ नाग पिशाच कीटादिक स्थावर जंगमरूप होए भासती है अरु वस्तुतें चैतनसत्ताही है तिसतें इतर कछु नहीं ॥ सब चिदाकाशरूप है फुरनेकरी नाना प्रकार है ॥ हे रामजी परम शुद्ध चिदअणु साथ मिलीकरी चित्त अनेक ब्रह्मांडकों धारता है तिस सूक्ष्म अणुविषे अनंत ब्रह्मांड फुरते है परंतु तिसतें भिन्न नही ॥ जैसें एक पुरुष सेन करता है तिसकों सुपनेविषे अनेक जीव भासी आते है तिन जीवविषे अपने अपने सुपनेकी सृष्टि फुरती है सो अनेक सृष्टि होजाती है ॥ तैसें सूक्ष्म चिद अणुविषे अनंत सृष्टि फुरती है ॥ परंतु कछु आत्मसत्तातें इतर नही बण्या ॥ जैसें सूर्यकी किरणांविषे अनंत त्रिसरेणु होती है सो सूक्ष्म होती है तैसें परमात्मा सूर्यके चिदअणु सूक्ष्म है इन तिसरेणुतें भी सूक्ष्म चिदंअणुविषे अनंत सृष्टि अपणी अपणी फुरतीयां है ॥ हे रामजी जबलग चित्त फुरता रहता है तबलग सृष्टिका अंत नही आता ॥ असंख्य जगतभ्रम इस आगें देखे है अरु असंख्यही आगे देखेगा ॥ जब चित्त फुरणेतें रहित होता है तब जगत कलना मिटि जाती है ॥ जैसें सुपनेविषे सृष्टि भासती है बडे व्यवहार होतेहै ॥ जब जागी उठता है तब सुपनसृष्टि व्यवहारकी कल्पना मिटी जाती है अद्वैत अपणा आपही भासता है ॥ तैसें चित्तके ठहरेतें सब भ्रम मिटी जाता है ॥ हे रामजी सूक्ष्म चिदंअणुभी इसकी संज्ञा तब हुई है जब इसकों चित्तका संबंध हूआ है जब चित्तकों अपने सुभावविषे स्थित करेगा तब द्वैत कल्पना सूक्ष्मस्थूल भाव मिटी जावेगे ॥ अरु सूक्ष्म जो इसकी संज्ञा है सो अविद्यक भाव कर्के है ॥ जो इंद्रियका विषय नही इस करी अणुता है अरु सूक्ष्म अणुविषे व्याप्या हुआ है इसकरी सूक्ष्म अणु कहाता है ॥ अरु अनंतता इस कर्के जो सबकों धारी रहा है अरु इह जगत क्या है ॥ हे रामजी इह जगत अभावमात्र है ॥ जैसें मरुथलविषे जलाभास होता है तैसें आत्माविषे जगत भासता है ॥ यह जगत हेही नही तो इसका कारण कवन कहीये ॥ आदि सृष्टि अकारण फुरी है बहुरी इसविषे कारण कार्य भासणे लागे ॥ सो आभासकी दृढता होगइ है ॥ जैसें सुपनेविषे आदी सृष्टि अकारण बीज वृछ कुलाल माटी घट एकठे फुरी आते है जब उस सुपनकी दृढता होजाती है तब कारण कार्य भासते है परंतु जो सोया पडा है तिसकों दृढ भासते है ॥ तैसें अज्ञानीकों जगत कार्य कारण दृढ भासता है॥ज्ञानवानकों सब अपणा आपही भासता है ॥ जैसें सुपनेतें जागे सुपन सृष्टि अपणा आपही भासती है जो मैंही था अवर कछू न था तैसें ज्ञानवानकों सब जगत आकाशरूप भासता है ॥ पृथ्वी अप तेज वायु आकाश देवता मनुष पशु पंछी पर्वत वृक्ष नदी स्थावर जंगम जेता कछू जगत है सो सब आकाशरूप है ॥ संवेदनके फुरने करी द्रष्ट भासते है वास्तवतें इतर कछू नही ॥ हे रामजी इस जगत चित्तविषे स्थित है ॥ जैसें किसी पुरुषनें थंभेविषे पुतलीयां कल्पीयां सो पुतलीके दो रूप होते है जो सिलपीकों चित्तविषे फुरतीयां है सो आकाश रूप है अरु जो थंभेविषे कल्पीयां है सो थंभे रूप है थंभेविषे स्थितरूप है ॥ अरु सिल्पीके चित्तविषे नृत्य करतीयां है ॥ हे रामजी अवर तो कछू नही थंभे रूप है ॥ सो सील्पीके चित्तविषे कल्पनामात्र है ॥ तैसें चित्तरूपी सिल्पीकी जयतरूपी पुतलीया कल्पनामात्र है ॥ आत्मरूपी थंभा ज्यों कार्त्यों है आत्मातें इतर कछूनही जैसें पट उपर मूरत लिखी होवें सो मृत्तिका रूप पटही है पटतें इतर कछू नही उह पटही मूरत रूप भासताहै ॥ तैसें इह जगत आत्मातें इतर कछू नही ॥ आत्माही जगत रूप हो भासता है ॥ आत्मा अरु जगत विषे भेद कछू नही ॥ जैसें ब्रह्म आकाश रूप है तैसेंही जगत आकाश रूप है ॥ जगत रूप आधार है ब्रह्म तिसविषे वसणेहारे है ॥ अरु ब्रह्मारूप आधार है जगत तिसविषे वसणेहारा है ॥ हे रामजी जे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ते समूह हे जगतविषे विद्या अरु अविद्या रूप सो सब संकल्प करी रचित हे ॥ अरु वास्तवतें सब आत्मस्वरूप हे ॥ समता सतता निर्विकारता इनतें आदी लेकरी अरु इनतें विपरीत अविद्यारूप सो सब एकही रूप हे ॥ एकही विषे फुरते हें ॥ अरु एकही रूप हे ॥ जेसें सुपन जगत अनुभव रूप अनुभवविषे स्थित होता हे सो सर्व आत्मरूप होता हे ॥ तेसें इह जगत सर्व ब्रह्मरूप हे ॥ ब्रह्मतें इतर न कछू वरकी कल्पना हे न सरापकी कल्पना हे ॥ ब्रह्मसत्ता निर्विकार अपणे आपविषे स्थित हे ॥ तिसविषे न कारण हे न कार्य हे ॥ जेसें ताल नदीमेघ एकही जल होता हे तेसे सब जगत ब्रह्मरूप हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन वर अरु सरापके करता तो प्रलभ्न पाइते हे कारण विना तो कार्य नही पाइता तुम केसें कहते हो ॥ जो कारण कार्यकोउ नही ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी शुद्ध चिदाकाश आत्मसत्ताका किचन जगत होताहे जेसें समुद्रविषे तरंग फुरते हे तेसें आत्मसत्ताविषे जगत फुरते हे ॥ जेसें तरंग जलरूप होते हे तेसें जगत आत्मरूप हे ॥ आत्मातें इतर कछू नही जेसें आदी परमात्मातें सृष्टिका फुरणा हुआ हे तेसेंही स्थित हे अन्यथा नहीं होता ॥ सब जगत संकल्परूप हे ॥ अनेक प्रकारकी वासना संवेदनविषे फुरती हे जिनकों स्वरूपका विस्मरण भया हे तिनकों इह जगत सतरूप भासता हे ॥ जो उनकों विचार उत्पत्ति होवे तो उही काल हे ॥ जिस कालविषे विचार उत्पत्ति होता हे ॥ तिसीकालविषे अज्ञान निद्राका अभाव होता हे ॥ हे रामजी जब विचार अभ्यास करें मन तद्रूप होताहे ॥ तब इसकों जथाभूत दर्शन होता हे ॥ अरु संपूर्ण ब्रह्मांड अपणा आपही भासते हे ॥ काहेंते जो अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जो सबका अधिष्टान आत्मसत्ता हे तिसविषे इसकों अहंप्रतीत होती हे ॥ इसकारणतें अपणे आपविषे सृष्टि भासतीयां हे ॥ जेसें स्पंद फुरते हे तेसेंही उसका सिद्ध होता हे ॥ निरावरण दृष्ट होता हे निरावरण दृष्ट करें सर्व संकल्प सिद्ध होता हे काहेतें जो इह जगत सब आत्माविषे संकल्पका रचा हुआ हे ॥ तिसविषे इसकों अहंप्रत्यय हुइ हे ॥ हे रामजी जो संकल्प उसकों उठता हे जो यह कार्य ऐसें होवे सो तेसेंही होता हे ॥ हे रामजी शुद्ध संवेदनविषे संकल्प होता हे सोइ हो भासता हे ॥ सो संकल्पही रूप हे संकल्पतें इतर नही इस कारणतें वर अरु सरापका अवर कारण कोउ नही ॥ वर अरु सरापभी संकल्परूप हे अरु तिसकरी जो पदार्थ उत्पत्ति हुआ हे सो किसी कारण समवाय करी तो नही उत्पत्ति हुआ ॥ संकल्पही करी हुआ क्यों तातें सब अकारणरूप हे ॥ अरु ब्रह्मरूपी समुद्रके तरंग उठते हे अवर कारण अरु कार्य में तुझकों क्या कहों ॥ सब जगत ब्रह्मरूप हे अवर द्वैत अरु एककी कल्पना कछू नही ॥ हे रामजी हमकों सदा ब्रह्मसत्ताही भासती हे कार्य कारण कोउ नही भासता जेसें सुपनेविषे किसीके घरमें पुत्र भया बडे उत्साहकों प्राप्त हुआ ॥ जब जाग्रतका संस्कार चित्त आया तब उसका पिताही उपजा नही तो पुत्र केसें कहीयें सब अपणा आपही हो जाता हे न कोउ कारण भासता हे न कार्य भासता हे ॥ अरु जो सुपनेंविषे सोया हे तिसकों जेसें भासता हे तेसेही भासता हे ॥ जेसें वर अरु श्रापका आशरा संकल्प हे संकल्पही वर श्राप हो भासता हे कारणभी होताहे ॥ अरु जिसकों सुद्ध संवेदन साथ एकता भइ हे सो निरावरण हे ॥ तिसविषे जेसें फुरना आभास फुरता हे तेसाही सिद्ध होता हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन एक ऐसें हें ॥ जिनकों आवरन हे अरु उनका संकल्प जेसें फुरता हे वर देवे अथवा सराप देवे तेसेंही हो जाता हे॥अरु स्वरूपका साक्षात्कार उनकों नही भया अरु सुभ कर्म उनविषे प्रत्यक्ष पाइते हे ॥ तो सुभ कर्म ही कारण भये वर सरापके तुम केसें कहते हो जो निरावरण पुरुषका संकल्प सिद्ध होताहे ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी सुद्ध चि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न्मात्र जो सत्ता हे सोइ चित्त धातु कहाती हैं ॥ तिस चित्त धातुविषें जो आभास फुरणा हे सो संवेदन कहाती हे ॥ सो संवेदन जब फुरती हे तब जाणता हैं जो में ब्रह्म हों ॥ तो संवेदन ही आपकों जगतका पिता मा जानत भइ क्यों ? ॥ तिसीनें आगें मनोराज कल्या तब पंचभूतका जानणा हुआ ॥ जो शून्य रूप आकाश हुआ स्पंदरूप वायु हे उष्णरूप अग्नी हे द्रव तारूप जल हे कठोर रूप पृथ्वी हे ॥ बहुरी देश अरु कालकी कल्पना भइ ॥ स्थावर जंगम पदार्थकी कल्पना करि वेद शास्त्र धर्म अधर्मका फुरणा हुआ ॥ तिसविषे इह निश्चा हुआ जो इह तपसी हे इसनें तप कीया हे ॥ इसके कहेतें वर होवे अरु जो कछू कहे सो होवे ॥ स्वरूपके साक्षात्कारतें रहित हे तोभी इसका कहा होवे इह तपका फल हे ॥ आदी संकल्प अेसें हुआ हे तो वर सरापका कर्ता तपसी नही इसका अधिष्ठान उही संवेदन हे ॥ जिसतें आदी संकल्प फुर्या हे ॥ हे रामजी वर अरु सराप संकल्परूप हे ॥ संकल्प संवेदनतें फुर्या हे संवेदन आत्माका आभास हे तो में कारण अरु कार्य क्या कहों अरु जगत क्या कहों ॥ आत्माका आभास संवेदन ब्रह्मा हे ॥ तिसनें आगें संकल्पपुर सृष्टि रची हे ॥ हम तुम आदि क सब उसके संकल्पविषे हे ॥ सो ब्रह्माजी केसा हे निराकार अरु निराधार हे निरालंब स्थित हें कछु आकारकों नही प्राप्त भया ॥ तातें उसकी विश्वभी उही रूप जाण ॥ हे रामजी जेसें उसका स्पंद हुआ हे तेसेंही स्थित हे अन्यथा नही होता॥जो उही विपर्यय करे तो होवे अवरसों नही होता ॥ अग्निविषे उष्णता वायुविषे स्पंदता इत्यादिक जो पदार्थ हे सो अपणे अपणे सुभावविषे स्थित हे ॥ अरु हमकों सब ब्रह्मरूप हे ॥ जेसें शरीरविषे हाड मांसतें इतर नही होता तेसें हमकों ब्रह्मतें इतर नही भासता ॥ जेसें घटविषे मृत्तिकातें इतर कछु नही हो ता जेसें काष्टकी पुतली काष्टतें इतर नही होती तेसें जगत ब्रह्मतें इतर नही होता ॥ हे रामजी जेता कछु जगत तुझकों भासता हे सो ब्रह्माही हे ॥ ब्रह्मही फुरने करी नाना प्रकार जगत होभासता हे ॥ जैसें समुद्र द्रवता करकें तरंग बुदबुदे फेन होभासता हे तेसें ब्रह्म संवेदनकरी जगतरूप होभासता हें परब्रह्मतें इतर कछु नही ॥ जेसें पर्वततें जल गिरता हे सो कणके कण के होभासता हे जल गिरकरी ठहर जाता हे तब समुद्ररूप होता हे ॥ परंतु जलतें इतर कछु नही होता तेसें जब चित्त फुरता हे तब नाना प्रकार जगत होभासता हे ॥ जब चित्त ठहर जाता हे तब सर्व जगत एक अद्वैतरूप हो भासता हे ॥ परब्रह्मतें इतर कछु नही होता ब्रह्मही स्थावर जंगमरूप होभासता हे ॥ जहां पुर्यष्टकका संबंध नही भासता सो अजंगम कहा ताहे ॥ जहां पुर्यष्टकाका संबंध होता हे तहां जंगमरूप भासता हे परंतु आत्माविषे उभे तुल्य हे ॥ जेसें एकही हाथकी अंगुली हे जिसकों उष्णता अथवा सीतलताका संयोग होताहे सो फुरणे लगती हे जिसकों सीतल उष्णका संयोग नही होता सो नही फुरती ॥ तेसें जिस आकारकों पुर्यष्टकाका संयोग हे सो फुरता हे चैतनता भासती हे अरु जिसकों पुर्यष्टकाका सं योग नही तिसविषे जडता भासती हे ॥ सो जडभी आगे दो प्रकारका हे ॥ एककों पुर्यष्टकाका संयोग हे अरु जड हे ॥ एककों पुर्यष्टकाका संयोग नही अरु जड हे ॥ वृछ पर्वतकों पुर्य ष्टकाका संयोग हे ॥ परंतु घन सुषुप्ति जडताविषे स्थित भइ हे तिस कारणतें जड भासते हे ॥ अरु मृत्तिका पुर्यष्टकातें रहित हे ॥ इस कारणतें जड हे ॥ परंतु वास्तवतें स्थावर जंगम इष्ट अनिष्ट वर सराप देश काल पदार्थ सबही ब्रह्मरूप हे ॥ ब्रह्मसत्ताही अेसें स्थित भइ हे जेसें अपणे अनुभवविषे संकल्प नगर नाना प्रकारका भासता हे परंतु संकल्परूप हे ॥ संकल्पतें इतर कछु नही जेसें मृत्तिकाकी सेना अनेक प्रकारकी होतीहे परंतु मृत्तिकारूप हे ॥ मृत्तिकातें इतर कछु नही ॥ तेसें सर्वका अर्थकों धारणे हारी चैतन धातु नाना प्रकारके आकारकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भास होती हे परंतु चैतनतातें इतर कछु नही होती ॥ हे रामजी धातु उसकों कहते हैं जो अर्थकों धारे सो जेते पदार्थ तेरे तोइ भासते हे सब अर्थ रूप हे अरु वस्तु रूप जो धातु हे सो आत्मसत्ताहे तिसनें दो अर्थ धारेहे ॥ एक सुपन अर्थ एक बोध अर्थ ॥ सुपनअर्थविषे तो नानात्व भासती हे बोध अर्थविषे एक अद्वैत सत्ता भासती हे ॥ जेसें एकही धातु मिलने अरु बिछुरने दो अर्थकों धारती हे॥सो केसें अर्थ हे॥ सो परस्पर प्रतियोगी शब्द हें परंतु एकहीनें धारे हे ॥ तेसें सुपनका अर्थ अरु बोध अर्थ इन दोनोंकों आत्मसत्तानें धाइ हे ॥ जेसें तरंग बुदबुदे जलरूप हें तेसें जगत ब्रह्मरूपहे जो ज्ञानवान हे तीनकों सब ब्रह्मरूप भासता हे अज्ञानीकों नानात्व भासता हे तातें तूं सुभाव निश्चे होकरी देखु॥ सब ब्रह्मरूपहे इतर कछु नही॥

॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे ब्रह्मप्रतिपादनंनामद्विशताधिकाष्टषष्टितमःसर्गः ॥ २६८ ॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥

रामोवाच ॥ हे भगवन जो सर्व ब्रह्मही हे तो नेति क्या हे अरु नाना प्रकारके पदार्थ क्यों भासते हे तिसविषे तुम कहते हो जो जगत संकल्पकरी रचित्त हे तो हे भगवन यह जो पदार्थ असंख्यरूप हे तिनकी संज्ञा करि नही जाती ॥ अरु इन पदार्थका सुभाव एक एकका अचलरूप होकरी केसेंस्थित हे इह कृपा करकें कहो ॥ अरु सर्व देवताविषे सूर्यका प्रकाश अधिक क्यों हे अरु एकही सूर्यविषें दिन छोटे बडें क्यों होते हे अरु रात्र छोटि बडी क्यों होती हें इह बिचित्रता क्या हे ?॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी सुधचिनमात्र सत्ताविषें अकस्मातें आभास फुर्‍या हे तिस आभासका नाम नेति हे अरु सृष्टिभी आभास मात्र हे ॥ किसी कारण करकें नही उपजी ॥ जिसकें आश्रय आभास फुरता हे सो उही वस्तु अधिष्ठानही होता हे तातें जगत सब ब्रह्मरूप हे ॥ चिनमात्र सत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ न उदे होती हे न अस्त होती हें ॥ परिणामतें रहित सदा अद्वैत रूप स्थित हे तिसविषे न जाग्रत हे न सुपन हे न सुषुप्तिहे ॥ तीनों अवस्था आभासमात्र हे ॥ चैतन सत्ताविषे इनकरी द्वैत नही बण्या ॥ इह तीनों इसीका सुभाव प्रकाश रूप हे ॥ इसतें इतर कछू नही ॥ जेसें आकाश अरु शून्यताविषे भेद कछू नही जेसें वायु अरु निस्पंद विषे भेद कछू नही ॥ जेसें अग्नी अरु उष्णताविषे भेद कछू नहीं ॥ जेसें कपुर अरु सुगंधविषे भेद नही तेसें जाग्रत आदिक जगत अरु ब्रह्मविषे भेद कछू नही ॥ हे रामजी सुद्ध चिन्मात्रविषे जो चित्तभाव हूआ हे ॥ तिसविषे चैतन आभास फुर्‍या हे तिसविषे जेसा संकल्प फुर्‍या हे तेसें स्थित भया हे ॥ इह इसप्रकार होवे अरु एता काल रहे ॥ उस संकल्प निश्चेका नाम नेति हे ॥ जेसें आदि संकल्प द्रढ भया हे तेसेंही अबलग पदार्थ स्थित हे ॥ पृथ्वी जल तेज वायु आकाश अपणे अपणे भाव विषे स्थित हे ॥ अपणे सुभावकों त्यागते नही ॥ जबलग उनकी नेति हे तबलग तेसेंही स्थित हे जगत सत्ताविषे ॥ हे रामजी इसका नाम नेति हे जो जेसे आदि संकल्प धारा तेसें स्थित हे ॥ अरु वस्तुतें क्या हे ॥ आभासरूप हे ॥ अकस्मातूतें इह आभास फुर्‍या हें सो आभास किसी सूक्ष्म अणुविषे फुर्‍या हे ॥ जेसें समुद्रके किसी स्थानविषे तरंग बुदबुदे फुरते हे संपूर्न समुद्रविषे नही फुरते तेसें जहां संवेदन विषे जेसा फुरना होता हे तेसें स्थित होता हे सो नेति हे॥ जेसें तरंग बुदबुदे समुद्रतें भिन्न नही ॥ तेसें नेति आत्मातें भिन नही जेसें द्रवता करकें समुद्रविषे तरंग फुरते हे तेसें आत्माविषे संवेदन करकें नेति अरु जगत फुरते हे सो उहीरूप हे ॥ आत्मातें भिन कछू नही ॥ जेसें किसी कहा चंद्रमाका प्रकाश हे सो चंद्रमा अरु प्रकाशविषे भेद कछू नही तेसें आत्मा अरु जगतविषे भेद कछ नही ॥ इह विस्व आत्माका सुभाव हे ॥ जेसें एकही कालकी वहुत संज्ञा होती हे ॥ दिन पक्ष वार मास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्ष जुग कल्प इत्यादिक बहुत नाम हे परंतु काल एकही हे तैसें भिन भिन्न जगत्के नाम हें सो सब ब्रह्मही हे ॥ हे रामजी सब संवेदन चित्तके सनमुष होती हें ॥ तब प्रथम सब्द तन्मात्रा फुरती हे तिसतें आकाश उपजता हे सो आकाशका शून्यता सुभाव हे ॥ जब फिरी स्पर्श तन्मात्राकों चेत्या तिसतें वायु फुर्या हे वायुका स्पंद सुभाव हे बहुरी रूप तन्मात्राकों चेत्या तब तिसतें अग्नी प्रगट हुइ ॥ अग्निका उष्ण सुभाव हे ॥ बहुरी रसतन्मात्राकों चैत्या तब तिसतें जल प्रगट भया ॥ जलका द्रव सुभाव हे बहुरी गंध तन्मात्राकों चेत्या तब तिसतें पृथ्वीका थिर सुभाव हे ॥ इस प्रकार पंचभूत फुरी आये ॥ हे रामजी आदी जो शब्द तन्मात्रा फुरी हें सो जेते कछू शब्द समूह वाणी हे सो उछ हुआ तिसका बीज हे ॥ सब तिसीतें उत्पत्ति हूए हे ॥ पदार्थ वाक्य वेद शास्त्र पुरान सब तिसीतें फुर हे ॥ इसी प्रकार पृथ्वी अप तेज वायु आकाश इनका जो कार्ज सुभाव हे सो सबका बीज आदी इनकी तन्मात्रा हे ॥ तिस तन्मात्राका बीज उह संवित सत्ता हे ॥ हे रामजी अब इन तत्वकी खाण सुन ॥ पृथ्वीतें अणुभी होतीहे अरु एक दलाभी होती हे ॥ सो पृथ्वी तो एक हे अणुभी उही हे ॥ तेसें सर्व तत्वकों समुझि देखणा पृथ्वी की खाण भूपीठ हे ॥ सो संपूर्न भूत जातकों धारता हे ॥ अरु जलकी खाण समुद्र हे जौ सर्व पदार्थविषें रस रूप होकरी स्थित हे ॥ अग्निका जो तेज प्रकाश हे तिनकी समष्टिता सूर्य हे ॥ अरु सर्व स्पंदकी समष्टिता पवन हे अरु संपूर्न शून्य पदार्थकी खाण आकाश हे ॥ इस प्रकार इह पाचों तत्व संकल्पतें उपजे हे ॥ जेसें बीजतें अंकुर उपजता हे तेसें इह भूत संकल्पतें उपजे हे संकल्प संवेदनतें फुर्या हे अरु संवेदन आत्माका आभास हे ॥ सो आत्मा अद्वैत हे अच्युत हे निर्विकल्प हे सर्वदा अपणे आपविषे स्थित हे ॥ तिसके आश्रे संवेदन आभास फुरी हे बहुरी संवेदनतें संकल्प फुर्या हे संकल्पकरी जगत बणी गया हे ॥ जेसें समुद्रविषे तरंग फुरता अरु लीन होता हे तेसें संकल्पविषे जगत उपजता हे बहुरी संकल्पही विषे लीन होता हे ॥ जेसें तरंग जलरूप हे तेसें पृथ्वी जल तेज वायु आकाश सब चैतनरूप हे ॥ जेते कछु पदार्थ देखणे सुनणेविषे आते हे अरु नही आते सो सब चैतनरूप हे ॥ आत्मातें इतर कछु नही ॥ उही आत्मा इस प्रकार होता हे सुपनेविषे अपणा अनुभवही पदार्थ होभासता हे परंतु कछु बण्या नही ॥ नाना प्रकार भासता हे तोभी अनाना हे ॥ तेसें जगत नाना प्रकार भासता हे तोभी कछु बण्या नही ॥ जेसें एक निद्राके दो रूप हे एक सुपन एक सुषुप्तिरूप हे ॥ जब फुरना होता हे तब सुपन सृष्टि भासती हे ॥ जब फुरना निवृत्त होजाता हे तब सुषुप्ति होती हे ॥ जेसें एक वायुके दो रूप हे ॥ स्पंद होती हे तब भासती हे निस्पंद होती हे तब नहा भासती ॥ तेसें जब संवेदन फुरती हे तब जगत भासता हे जब नही फुरती तब जगत नही भासता इसीका नाम महाप्रले हे ॥ सो दोनों आत्माका आभास हे ॥ हे रामजी संकल्परूप जो हे ब्रह्माजी बालक तिसनें आत्माविषे आकाश रचा हे पृथ्वी रची हे ॥ आकाशविषे नछत्र चक्र रचे हें ॥ अवर संपूर्न क्रम रचा हे ॥ जेसें बालक अपणेविषे संकल्प रचे ॥ तेसें ब्रह्मनें रचा हे ॥ एक भूगोल रचा हे तिस उपर नछत्र चक्र रचे हे तिस चक्रके दो भाग हे सो अन्योन्य सनमुख स्थित हे ॥ तिस सूर्य होता हे सातघडी दिन अरु रात्रका प्रमाण हे जब सूर्य नछत्र चक्रके उर्ध उर उदे होता हे तब दिन बडे होते हे ॥ जब अधउर उदे होता हे तब दिन छोटे होजाते हे ॥ ज्यों ज्यों सूर्य क्रम करके उर्धतें अधकी उर उदे होताहे त्यों त्यों दिन छोटे होते जाते हे ॥ रात्र बढती जाती हे बहुरी षट्मासतें उपरांत पौष त्रयोदशीतें करी सूर्य क्रम करके ज्यों ज्यों उर्धको उदे होताहे त्योंत्यों दिन बढता जाताहे ॥ आशाढकी द्वादसीतें लेकरी पोष त्रयोदसी पर्यंत रात्र बढती जाती हे बहुरी रात्र घटती हे दिन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बढता जाता हे ॥ जब सूर्य मध्य चक्रके उदे होता हे तब दिनरात्र समान होजाता हे ॥ सो क्या हे ॥ संवेदन रूप जो ब्रह्मा हे तिसीका संकल्प विलास हे ॥ जेसें सिल्पी सिलाविषे पुतलीयां कल्पता हे अरु चेष्टा कराता हे सो बण्या कछू नही ॥ सिलाही अपने घन सुभावविषे स्थित होती हे ॥ तेसें चित्तरूपी सिल्पी आत्मारूपी सिलाविषे जगतरूपी पुतलीयां कलपता हे ॥ परंतु कछू बन्या नही ॥ ब्रह्मसत्ता सदा अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जब संवेदन चैतती हे जब रूप देखणेकी इच्छा होती हे तब चक्षु इंद्रिय बणि जाती हे ॥ उह रूपकों ग्रहण करती हे ॥ जब स्पर्शको इछा होती हे तब तुचा इंद्रियबणी जाती हे उह स्पर्शकों ग्रहण करती हे ॥ जब गंधकी इच्छा होती हे तब घ्राणइंद्री बणी करी गंधकों ग्रहण करती हे ॥ जब शब्द सुनणेकी इछा होती हे तब श्रवन इंद्रिया बणि जाती हे उह शब्दविषयकों ग्रहण करती हे ॥ जब रसकी इच्छा होती हे तब रसना इंद्री प्रगट होकरी स्वादकों ग्रहण करती हे ॥ जब अपणे उर वायुकों देखणेकी उर चेततीहे तब अपणे साथ वायुकों देखती हे ॥ तिस वायुविषे प्राण फुरते देखती हे ॥ हे रामजी देखणा सुनणा रसलेणा स्पर्श करणा बोलणा मंध लेणा जहां जहां इंद्रीयां विषयकों ग्रहण करत भइ सो देस हे अरु जिस विषयकों ग्रहण करणे लागीयां सो पदार्थ हे ॥ अरु जिस समे ग्रहण करणे लागीयां सो काल हे ॥ इस प्रकार देश काल पदार्थ हुए हे बहुरी यह सुभ हे यह अशुभ हे ॥ इस क्रम करकै कर्म भासणे लागे ॥ हे रामजी इस प्रकार संवेदन फुरी करी जगतकों रचा हे ॥ शरीरकों रची करी इष्ट अनिष्टकों ग्रहण करती हे ॥ तुं कहे इंद्रियांतो भिन्न भिन्न हे अरु अपणे अपणे विषयकों ग्रहण करतीयां हे सर्व इंद्रियके इष्ट अनिष्ट इस जीवकों केसें होतेहे ॥ तब इसका दृष्टांत सुण ॥ हे रामजी जेसें तुं एक होताहे अरु मणीके बहुत होतेहे सो सर्वका आश्रासूत्र होतेहे तेसें अहंकाररूपी सूत्र हे अरु सर्व इंद्रिरूपी मणके हे इह कारणतें अहंकार जीव आश्रेभूत इंद्रियके सुख साथ सुखी होताहे अरु इंद्रियके दुःख साथ दुःखी होताहे ॥ अरु इंद्रियां आपहीतें कार्य कारण करणेकों समर्थ नही होती ॥ अहंकार जीवकी सत्ता करकै चेष्टा करती हे ॥ जेसें संखकों आपतें बाजणेंकी समर्थता नहो जब पुरुष बजावता हे आप शब्द करता हे तब संख बाजताहे तेसें इंद्रियकी चेष्टा अहंकार अरु जीव करकै होतीहे ॥हे रामजी वास्तवते न कोउ इंद्रि हे न इनके विषय हे ॥ न मनका फुरणा हे सब आभासमात्र हे ॥ जब संवेदन फुरती हे तब एती संज्ञाकों धारतीहे जब संवेदन निर्वाण होतीहे तब सर्व कल्पना मिटी जातीहे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे जीवसंसरनवर्ननं नाम द्विशताधिकैकोनसप्ततितमः सर्गः ॥ २६९ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इह संपुर्ण कल्पनाका क्रम में तुझकों कहा हे जेता कछु जगत देखता हे सो संवेदनरूप हे सुद्ध चिन्मात्र सत्ताका जो आदि आभास चैतनताका लक्षण चित्त अहं अस्मि तिसका नाम संवेदन हे ॥ तिसके एते पर्याय हूए हे ॥ कोउ ब्रह्मा कहते हे कोउ विष्णु कहताहे केइ प्रजापति कहते हे ॥ केइ शिव कहताहे इनतें आदि ले करि पर्याय हूए हे ॥ तिस संवेदन आगें संकल्प फुरी विस्व रची हे ॥ सो केसी विस्व हे जो अकारण हे ॥ किसी कारण करि नही बणी ॥ काकतालीवत अकस्मात आभास फुर्या हे ॥ आकार सहित दृष्ट आता हे परंतु अंतवाहकहे ॥ व्यवहार सहित दृष्ट आती हे परंतु अव्यवहार हे ॥ हे रामजी संवेदन जो अंतवाहकरूप हे तिसने आगें विस्व रची हे सोभी अंतवाहकरूप हे परंतु अज्ञानीकों संकल्पकी दृढता करकें अधिभूतकरूप हो भासता हे जेसें संकल्प नगर अरु सुपन पुर संकल्पते इतर कछु नही संकल्पकी दृढता करकै साकाररूप पहाड नदीयां घट पट आदि पदार्थ प्रत्यक्ष भासते हे ॥ परंतु ब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

णे तो कछु नही शून्य रूप हे तेसें इह जगत निराकार शून्य रूप हे ॥ हे रामजी आदि जो अंतवाहकरूप संवेदन फुरी हे सो बहिर्मुख फुरणे करकै देश काल पदार्थ रूप ही स्थित भइ हे ॥ जब बहिर्मुख फुरणामिटी जाता हें तब जगत आभासभी मिटी जाताहे जेसें सुपन आभास जगत तबलग भासता हे जबलग निद्राविषे सोया होताहे ॥ जब जागता हे तब सुपन जगत मिटी जाता हे एक अद्वैतरूप अपणा आपही भासता हे तेसें यह जगत अज्ञानके निवृत्त हूए लीन हो जाता हे ॥ सब जगत निराकारहे संकल्पकी दृढता करकै आकार भासतेहे ॥ हे रामजी संवेदनविषे जो संकल्प फुरता हे उही अंतःकरण चतुष्टय हो भासता हे ॥ पदार्थके चितवणे करि इसका नाम चित्त होताहे ॥ संकल्प विकल्पके संसरणे करि इसका नाम मन होताहे ॥ अरु ज्योंका त्यों निश्चे करणे करि इसका नाम बुद्धि होताहे वासनाके समूह मिलणे करि पुर्यष्टका कहाती हे सो सब संकल्पमात्र हे तिनतें जगत उपजा सोभी संकल्परूप हे ॥ जेसें इंद्रजाल बाजी अरु सुपन नगर संकल्पकी दृढता करकै पिंडाकार भासते हे परंतु सब आकाशरूप हे तेसें यह जगत आकाशरूप हे आत्मातें इतर कछु हे नही ॥ अरु जो तूं कहे भासता क्यों हे तो जीसविषे भासता हे सो उही रूप जाण ॥ अरु देशकाल नदी पहाड पृथ्वी देवता मनुष दैत ब्रह्मातें आदि कीट पर्यंत जो स्थावर जंगमरूप जगत भासता हे ॥ सो सब ब्रह्मरूप हे ॥ वेदशास्त्र जगत कर्म स्वर्ग तीर्थ इत्यादिक जो पदार्थ हे सो सब ब्रह्मरूप हें ॥ उही निराकार अद्वैत ब्रह्मसत्ता संवेदन करकै जगतरूप होभासती हे ॥ जेसें सुपनेविषे अपणाही अनुभव सृष्टिरूप होभासताहे तेसें अपणाहि अनुभव यह जगत होभासता हे तातें सब ब्रह्मरूप हे ॥ जेसें समुद्र द्रवता करकै तरंग होभासताहे अरु जलही जल हे तेसें शुद्ध चिन्मात्रविषे संवेदन करकै जगत आभास फुरता हे सो ब्रह्मही ब्रह्म हे इतर कछु नही ॥ हे रामजी जो कछु तुझकों भासता हे सो सब अच्युत अनंतरूपअपणे आप विषे स्थित हे ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठेनिर्वाणप्रकरणे सर्व ब्रह्मरूपप्रतिपादनं नाम द्विशताधिक सप्ततितमःसर्गः ॥ २७० ॥ ॥ ७ ॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥७॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब दृष्टा दृश्यरूपकों चेतता हे तब विस्व होती हे ॥ सो विस्व सब अंतवाहक रूप हे अंतवाहक कहीयें निराकार संकल्प रूप हे ॥ जब दृश्यविषे अहं भाव करकै चेतता रहता हे तब अंतवाहकतें अधिभूतक शरीर हो जाता हे ॥ आदि जो ब्रह्मा संवेदन फुर्या हे सो अंतवाहक शरीर हूआ हे जब वारंवारअपने शरीरकों देखता भया॥ तब उहभी चतुष्टय मुख अधिभूतक होगया ॥ ओंकारकों उच्चार करकै वेद अरु वेदके क्रमकों रचता भया॥अरु संकल्प करकै विस्वरचता भया ॥ जेसें कोउ बालक मनोराज करकै बगीचारचे तिसविषे नाना प्रकारके वृछ अरु फूल फल टास पत्र रचे तेसें ब्रह्माजी रचतभया ॥ सो अंतवाहक जीव उपजाए ॥ जब जीवकों शरीरविषे दृढ अभ्यास हूआ तब अंतवाहकतें अधिभूतक होगए ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन ब्रह्मसत्ता तो निराकार थी तिसकों शरीरका संयोग केसें भया हे ॥ तिसतें अधिभूतकता केसी होगई ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी न कोउ शरीर हे ॥ न किसकों शरीरका संयोग भया हे ॥ केवल अद्वैत आलसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ तिसविषे चैतन संवेदन फुरी हे ॥ उह संवेदन दृश्यकों चेततो रहती हे सोई जगत रूप होकरि स्थित भई हे ॥ जब संकल्पकी दृढता होगई तब अपणे साथ शरीर भासणे लागा अरु अवर आकार भासणे लागे सो आकार केसें हे॥ आकाशही रूप हे कछु बणे नही ॥ जेसें सुपन सृष्टि उपजी कहीए ॥ सो उपजी कछु नही ॥ अरु तिसका कारणभी कोउ नही ॥ केवल आकाश रूप हे ॥ कोउ पदार्थ उपजा नही ॥ परंतु स्वरूपके विस्मर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ण कर्के आकार भासते हे ॥ तेसें इह शरीर अरु जगत जो भासता हे सो केवल आभास मात्र हे ॥ असंभावनाकी दृढता कर्के प्रत्यक्ष भासता हे ॥ जब स्वरूपका विचार करि देखेगा तब सांत होजावेगा ॥ हे रामजी अविद्याभी कछु वस्तु नही ॥ जेसें सुपनेके पदार्थ अविद्यमान होत हे अरु विद्यमान भासते हे जब जागता हे तब अविद्यमान होजाते हे ॥ तेसें इह जगत विचार सिद्ध हे विचार कीयेतें सांत हो जाता हे ॥ जब विचार करि देखेगा तब सर्वात्माही भासेगा ॥ हे रामजी आत्मसत्ता अव्यभिचारी हे अर्थ इह जो सत्तामात्र हे इसका अभाव कदाचित नही होता अरु अच्युत हे सदा ज्योंका त्यों हे ॥ अपणे भावकों त्यागती कदाचित नही इसतें इतर भासे सो भ्रममात्र जाण ॥ हे रामजी विचार कर्के जब दृश्यभ्रम सांत होता हे तब मोक्ष प्राप्त होता हे ॥ आत्मसत्ता ज्ञानरूप हे ॥ अरु निराकार हे ॥ सदा अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जब सम्यक् ज्ञानका बोध होता हे तब जगत भ्रम नष्ट होता हे ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीस्वर सम्यक ज्ञान किसकों कहते हे अरु बोध किसकों कहते हे ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी केवल जो बोधमात्र हे सो बोध कहीता हे तिसकों ज्योका त्यों जानणां इसका नाम सम्यक ज्ञान हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन केवल बोध किसकों कहते हे अरु केवल ज्ञान किसकों कहते हे ? ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे राघव चैत जो हे दृश्य तिसतें रहित जो चिन्मात्र हें तिसकों तूं केवल बोध जाण ॥ तिसविषे वाणीकी गम नही ॥ इसी प्रकार अचेत चिनमात्र सत्ताकों ज्योंकात्यों जानणा सोई केवल ज्ञान हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन केवल बोध अचेत चिन्मात्र हे तो चैत जो हे दृश्य जगत भ्रम सो तिसविषे क्यों भासता हे ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी चिन्मात्र जो दृष्टा रूप हे तिसविषे संवेदन जो हे जानणा सोइ चेतता कहीयें जब चेतता फुरती हे तब उही चैतता चैतरूप दृश्य होभासती हे ॥ जेसें स्पंदतें रहित वायु निर्लछ रूप होती हे अरु जब फुरती हे स्पंदरूप होती हे तब स्पर्श कर्के भासती हे तेसें संवेदन कर्के दृश्य भासती हे ॥ सो उही संवेदन दृश्य हो भासती हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन जो दृष्टा दृश्यरूप भासता हे ॥ तो दृश्य बाह्य क्यों भासता हे ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी इसी कारण भ्रम कहा हे ॥ जो हे अपने अंतर अरु बाह्य भासती हे ॥ जेसें सुपनेकी सृष्टि अपने ही अंतर होती हे वास्तवतें न अंतर हे न बाहिर हे ॥ आत्मसत्ताही अपणे आपविषे स्थित हे ॥ तेसें अबभी ज्योंकीत्यों स्थित हे ॥ अंतर अरु बाह्य भ्रमकर्के भासती हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन जो आत्मसत्ता ज्योंकीत्यों हे अरु दृश्य भ्रमकरि भासती हे तो सशेके सिंगभी भ्रममात्र हे उह क्यों नही भासते ॥ अहं अरु त्वं क्यों भासते हे भूतकी चेष्टा प्रत्यक्ष भासती हे ?॥ वसिष्टोवाच हे रामजी अहं त्वं आदिक जगतभी कल्पनामात्र हे ॥ जेसें सशेके सिंग कल्पनामात्र हे ॥ जेसें आकाशविषे दूसरा चंद्रमा भ्रमकरि भासता हे ॥ तेसें इह जगतभी भ्रम मात्र हे ॥ जेसें मृग तृष्णाका जल अरु संकल्प नगर भ्रममात्र हे तेसें इह जगत भ्रममात्र हे ॥ किसी कारण करी नही उपजा ॥ जेसें सुपनेविषे सशेके सिंग नही भासते अवर जगत भासता हे तेसें यह भ्रम हे ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर भूत भविष्य वर्तमान तीनकालविषे जगत स्मृति अनुभव करि जाणता हे ॥ अरु कारण कार्य भाव पाईता हे ॥ तुम भ्रममात्र केसें कहते हो ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी मैं कहता हों जो कारण कर्के कार्य होता हे सो तो सत होता हे ॥ तातें तूं कह जगत्का कारण क्या हे ॥ जेसें बीजतें वट होता हे तेसें इसका कारण कवन हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन जगत सूक्ष्म अणुतें उपजता हे अरु लीनभी सूक्ष्म तत्वके अणुविषे होता हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी सूक्ष्म अणु किसविषे रहते हे ?॥ रामोवाच ॥ हे मुनीस्वर महाप्रलेविषे सुद्ध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चिनमात्रसत्ता शेष रहती हे तिसविषे अणु रहते हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी महाप्रले किसकों कहते हे जहां सर्व शब्द अर्थका अभाव हे ॥ तिसका नाम महा प्रले हे ॥ तहां सुद्ध चिन्मात्र सत्ता रहती हे ॥ तिसविषे वाणीकि गम नहि तो सूक्ष्म अणु केसें होवे अरु कारन कार्य भाव केसें होवे ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीस्वर जो सुद्ध चिन्मात्र सत्ता रहती हे तिसविषे जगत केसें निकसि आता हे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥हे रामजी विस्व कछु उपजी होवेतो में तुझकों कहौ ॥ जो इस प्रकार जगत्की उत्पत्ति होतीहे ॥ जो जगत कछु उपजा नही ॥ तो इसकी उत्पत्ति केसें कहों जब चिन्मात्र विषे चैतता फुरती हे तब जगत अहं त्वं आदिक भासता हे ॥ सो फूरणाही रूप हे अवर कछु उपजा नहीं उही रूप हे ॥ हे रामजी ज्ञानकों जो दृश्य भ्रम साथ मिलाप हे सो बंधनका कारण हे तिसका अभाव होणा मोक्ष हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ज्ञानके भए जगतका अभाव केसें होता हे इह तो दृढ हो र हाहे ॥ इसकी शांति कैसें होती हे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी सम्यक ज्ञानकरी जो बोध होता हे तिस बोध करकै दृश्यका संबंध निवृत्त होताहे ॥ सो बोध केसा हे निराकार निज सीतलरूप हे ॥ तिस करी मोक्षविषे प्रवर्तता हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् बोधतो केवलरूप हे सम्यक्ज्ञान किसकों कहते हे जिसकरी यह जीव बंधनतें मुक्त होता हे ? ॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी जिस ज्ञानकरी ज्ञेय दृश्यका संयोग नही तिसकों केवल ज्ञानी अविनासीरूप कहते हे ॥ जब ज्ञेयका अभाव होताहे तब सम्यकज्ञान कहता हे ॥ जगत ज्ञेय अविचार सिद्ध हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ज्ञानसों ज्ञेय भिन्न हे ॥ अथवा अभिन्नहे अरु ज्ञान उत्पत्ति कारण केसें होताहे ॥ ? वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी बोधमात्रका नाम ज्ञानहे ॥ तिसतें ज्ञान ज्ञेय भिन्न नही ॥ जेसें वायुतें वायुका फुरणा भिन्न नही ॥ रामोवाच ॥हे त्रिकालज्ञ भूत भविष्य वर्तमानके जानणेहारे जो सशाके सिंगकी न्यांइ ज्ञेय असत हे तो भिन्न होकरी क्यों भासते हे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी बाह्य जगत ज्ञेय भांति करकै भासता हे तिसका सद्भाव नही ॥ न अंतर जगत हे न बाहिर जगत हे ॥ अर्थतें रहित भासता हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् अहं त्वं आदिक प्रत्यक्ष भासते हे अर्थ सहित अनुभव होता हे तुम केसें अभाव कहते हो ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी यह सर्व जगत विराट पुरुषका वपु हे सो आदि विराटभी उपजा कछु नही तो अवरकी उत्पत्ति केसें कहिये ? ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर तीनों कालविषे जगत्का सद्भाव पाइता हे ॥ तुम कहते हो उपजा नहि ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जेसें सुपनेविषे सब जगत अर्थ प्रत्यक्ष भासते हे अरु कछु उपजा नही ॥ जेसें मृगतृष्णाका जल, आकाशविषे द्वितीयचंद्रमा संकल्पनगर भमकरी भासता हे तेसें अहं त्वं आदिक जगत भमकरी भास ता हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् अहं त्वं आदिक जगत दृढ भासता हे तो केसें जाणीए जो उपजा नही ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी पदार्थ कारणतें उपजताहे ॥ सो निश्चेकरि सत्य जाणता हे जब महाप्रलय होती हे तब कारणकार्य कछु नही रहता ॥ सब शांतरूप होता हे बहुरी तिस महाप्रलेसों जगत फुरी आता हे इसतें जाणीता हे जो सब आभासमात्र हे ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर जब महा प्रले होती हे तब अज अविनासी सत्ता शेष रहती हे तातें जाणीता हे जो उही जगतका कारण हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जेसा कारण होता हे तेसाही तिसका कार्य होता हे ॥ तिसतें विपर्यय नहि होता ॥ जो आत्मसत्ता अद्वैत आकाशरूप हे तो जगतभी उही रूप हे॥घटतें पटकी न्यांइ अवर तो कछु नही उपजता ॥ रामो वाच ॥ हे भगवन् जब महाप्रले होती हे तब जगत सूक्ष्म रूप होकरी स्थित होता हे तिसतें बहुरी प्रवृत्ति होती हे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे निःपाप रामजी महाप्रलेविषे जो तुझनें स्व

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ष्टिका अनुभव किया सो क्यारूप होती हे ? ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् ज्ञप्तिरूप सत्ताही तहां स्थित होती हे ॥ तुम सारखेने अनुभव कीया हे सो आकाशरूप हे ॥ सत अरु असत शब्द करि नही कही जाती ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे महाबाहो जो अेसें हुआ तोभी जगत तो ज्ञप्ति रूप हुआ क्यों ॥ तातें जन्म मरणतें रहित सुद्ध ज्ञानरूप हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन तुम कहते हो जो जगत कछु उत्पत्ति नही भया भममात्र हे सो भम कहांतें आया हे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस जगत चित्तके फुरणे करि भासता हे ॥ जेसें जेसें चित्त फुरणे करता हे तेसें तेसें भासता हे इसका अवर कारण कोउ नही ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन जो चित्तके फुरणे करि भासता हे ॥ तो परस्पर विरुद्ध केसें भासते हे ॥ अग्निकों जल नष्ट करता हे जलकों अग्नि नष्ट करती हे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी दृष्टा जो पुरुष हे सो दृश्य भावकों नही प्राप्त होता ॥ अरु अेसी कछु वस्तु नही भानरूप आत्माही चैतन घन सर्व रूप हो भासता हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन चिन्मात्र तत्व आदि अंततें रहित हे ॥ जब जगतकों चेतता हे तब होताहे ॥ तोभी कछु तो हुआ क्यों जगत चैतका असंभव केसें कहीये ? ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी इसका कारण कोउ नही ॥ तातें चैतका असंभव हे चैतन सदा मुक्ति अरु अवाच्यपद हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन जो इस प्रकार हे तो जगतका अरु तत्व का फुरणा केसें होताहे अहं त्वं आदिक द्वैत कहांतें आया हे ? ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी कारणके अभावतें यह जगत कछु आदितें उपजा नही सर्व सांत रूप हे अरु नाना भास ता हे सो भममात्र हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन प्रकाशरूप सर्वदा जो निर्मल तत्वहे सो निरुल्लेख अचल रूप हे ॥ तिसविषे भ्रांति केसें हे अरु किसकों हे ? ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी कारणके अभावतें निश्चे करि जाण जो भ्रांति कछु वस्तु नही ॥ अहं त्वं आदिक सर्व एक अनामय सत्ता स्थित हे ॥ रामोवाच ॥ हे ब्राह्मण भमकी न्यांइ प्राप्त हुआ हों ॥ इसतें अधिक पूछ नहो जानता ॥ अरु अत्यंत प्रबुद्धभी नही अब क्या पूछों ? ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी इह प्रश्न कर जो कारण विना जगत केसें उत्पत्ति हुआ हे ॥ जब विचार करके कारणका अभाव जाणेगा तब परम सुभाव अशब्द पदविषे विश्रांतिकों पावेगा ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन में इह जानता हों जो कारणके अभावतें जगत कछु उपजा नही परंतु चैतका फुरणा भम केसें हुआ ? ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी कारणके अभावतें सर्वत्र सांतिरूप हे ॥ भमभी कछु अवर वस्तु नही ॥ जबलग आत्मपदविषे अभ्यास नही तबलग भम भासता हे अरु शांति नही प्राप्त होती ॥ अभ्यास करके केवल तत्व विषे विश्रांति पावेगा तब भ्रम मिटी जावेगा ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन अभ्यास केसें होताहे अरु अनभ्यास केसें होताहे एक अद्वैतविषे अभ्यास अनभ्यास केसें भ्रांति होतीहे ? ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी अनंत तत्वविषे सांति भी कछु वस्तु नही ॥ जो आभास सांति भासता हे सो महा चिदघन अविनास रूप हे ॥ रामोवाच ॥ हे ब्राह्मण उपदेश अरु उपदेशके अधिकारी इह जो भिन्न भिन्न शब्द हे सो सर्व आत्माविषे केसें भासता हे ? ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी उपदेश अरु उपदेशकों जोग इह शब्दभी ब्रह्महीविषे स्थित हे ॥ सुद्ध बोधविषे बंध मोक्ष दोनोंका अभाव हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन जो आदि उत्पत्ति कछु हुआ नही तो देश काल क्रिया द्रव्य इनके भेद केसें भासते हे ? ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी देश काल क्रिया द्रव्य यह जो भेद हे सो संवेदन दृश्यविषे हे सो अज्ञानमात्र भासते हे अज्ञानमात्रतें इतर कछु नही ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन बोधकों दृश्यकी प्राप्ती केसें हूइ जहां द्वैत एकता कारणका अभाव हे तहां दृश्य सम केसें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी बोधकों दृश्य प्राप्ती अरु द्वैत एकका भ्रम मूर्खका विषय हे ॥ हम सारखेका विषय नही ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन जो अंत तत्व केवल बोधरू
प हे तो अहं त्वं हमारेविषे केसें होताहे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी शुद्ध बोध सत्ता विषे जो बोधका जानणा हे सो अहं त्वं करि कहाता हे ॥ जेसें पवनविषे फुरणा हे तेसें तिस
विषे चेतता फुरती हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन जेसें निर्मल अचल समुद्रविषे तरंग बुदबुदे होते हे सो जलतें इतर कछु नही तेसें बोधविषे बोधसत्तातें इतर कछु नही ॥ अपणें आप
विषे स्थित हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो अैसे हे तो किसका किसकों दुःख होवे ॥ एक अनंत तत्व अपणे आपविषे स्थित हे ॥ अरु पूर्ण हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन जो एक हे
तो अहं त्वं आदिक कलना कहांतें आई हे ॥ भोक्ताकी न्यांई भोगता हे ॥ जो निर्मल हे तो इह केसें दृढता हुइ हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी ज्ञेय जो हे दृश्यसत्ता तिसका जानणा ति
सकों बंधन नही ॥ काहेतें जो ज्ञानही सर्व अर्थरूप होकरी स्थित भया ॥ तो बंध अरु मोक्ष कीसकों होवे ? ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन ज्ञानि जो बाह्य अर्थकों देखती हे ॥
जेसें आकाशविषे लीनता अरु सुपनेविषे पदार्थ सो असतरूप सत होभासते हे ॥ तेसें इह बाह्य अर्थ असतही सत हो भासते हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी कारणतें रहित जो बाह्य
अर्थ सतभी भासते हे सो भ्रममात्र हे इतर कछु नही ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन सुपन कालविषे सुपनेके पदार्थका दुख होता हे सत होवे अथवा असत होवे ॥ तेसें इह
जगत विषे दुःख होता हे सत असतका ॥ परंतु इसके निवृत्तिका उपाय कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो इसप्रकार हे ॥ जगत सुपनेकी न्याई तो जो कछु पिंडा
कार भासता हे सो सब भ्रममात्र करकै भासता हे ॥ सर्व अर्थ सांतरूप हे नानात्व कछु नही ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन सुपन अरु जाग्रत विषे पिंडाकार पर अपर रूप
हे ॥ केसें उत्पत्ति होत हे अरु केसें सांत होत हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी पूर्व अपरका विचार करीयें जो जगत आदिविषे क्या रूप था अरु अंतविषे क्या रूप होता हे
जब अेसें विचार होवेगा तब शांति होजावेगी ॥ जेसें सुपनेविषे स्थूल पदार्थ पिंडरूप भासते हे सो सब आकाशरूप हे तेसें जाग्रत पदार्थभी आकाशरूप हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन्
भिन्न भावकी भावना प्राप्त होती हे तब जगतकों केसें देखता हे अरु संस्कार कुहीड भ्रम शांत केसें होता हे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो निर्वासी पुरुष हे तिसकों जगतका
सदैव उठि जाता हे ॥ जेसें संकल्पनगर जेसें कागदकी मूर्त्ती असत भासते हे तेसें उसकों जगत असत भासते हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन वासनातें रहित पिंडभाव शांत हुए जगतकों सुपनव
त जानता हे ॥ तिसतें उप्रांत क्या अवस्था होतीहे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जगतकों जब संकल्परूप जानता हे तब वासना निर्वाण होती हे ॥ पंचतत्वका क्रम उपजणा बिनसणा
लीन होजाता हे ॥ परम तत्व भासता हे सब आकाशरूप होजाता हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन अनेकजन्मकी जो वासना दृढ होरही हे अरु अनेक शाखा करी पसरी हे संसारका कार
ण घोर वासना हे सो केसें शांत होती हे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब इसकों यथा भूतार्थ ज्ञान होताहे तब भ्रांतिरूप जगत स्थित हुआ आत्माविषे शांत होताहे ॥ जब पिंडाकार
अर्थ पदार्थ सो जाता हे तब कर्मरूप दृश्य चक्र शांत होजाता हे ॥ जेसें सुपन पदार्थ जाग्रतविषे नष्ट होजाता हे तेसें आत्मतत्वके बोधकरी सब वासना नष्ट होजातीहे ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर
जब पिंड ग्रहण निवृत्त हुआ अरु कर्मरूप दृश्य चक्र निवृत्त हूआ तब बहुरी क्या प्राप्त होता हे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी पिंडग्रहण भ्रम शांत होताहे तब सुकचण अरु क्षोभतें रहित होता हे ॥ ज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गत आस्था दृश्यकी शांति होजाती हे ॥ अरु चित्त परमात्मतत्वकों प्राप्त होता हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् यह बालकके संकल्पवत् केसें स्थित हे ॥ जो संकल्परूप हे तो इसके जो जडविषे पदार्थ हे तिनके नष्ट हुए इसकों दुःख क्यों प्राप्त होताहे ?॥इस जगतकी आस्था शांत केसे होतीहे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो पदार्थ संकल्पकरी उत्पत्ति हूआ हे तिसके नष्टविषे दुःख नही होता ॥जो पूर्व अपर विचार करकै चित्ततें रचा जाणीये तो भ्रम शांत होजाता हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् चित्त केसा हे तिसकरी रचा केसें विचारीये?॥ वसिष्ठोवाच॥हे रामजी चित्तसत्ता जो चैत्यो न्मुखत्व फुरती हे ॥ तिसकों संकल्परूप चित्त कहाताहें ॥ तिसतें रहित विचारणेसों वासना शांत होजाती हे ॥ रामोवाच ॥ हे ब्राह्मण चैततें रहित चित्त केसें होताहे अरु चित्तकरी उदे हूआ चैत जगत निर्वाण केसें होता हे?॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी चित्त कछु उत्पत्ति नही भया अनहोता द्वैत भासता हे कछु हे नही ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन जगत प्रत्यक्ष भासताहे ॥ जो उपजा नही तो इसका अनुभव केसें होताहे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी अज्ञानीकों जेसें जगत भासता हे सो सत नही अरु जो ज्ञानवानकों भासता हे सो अवाचसत्ता अद्वैतरूप हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् अज्ञानीकों तिनों जगत केसें भासते हे जो सत नही ॥ अज्ञानवानकों केसें भासते हे जो कहणे विषे नही आता ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी अज्ञानीकों द्वैत सघन दृढ भासता हे ॥ अरु ज्ञानवानकों सघन द्वैत नही भासता ॥ काहेतें जो आदि तो उपजा नही अद्वैत आत्मतत्व अवाच्यपद भासता हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन जो आदितें उपजा न होवे तो अनुभवभी न होवे इह तो अनुभव प्रत्यछ होताहे असत केसें कहीये ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी असतही सतकी न्यांइ होभासती हे ॥ इह कारणतें रहित भासता हे ॥ जेसें सुपनेविषे पदार्थका अनुभव होता हे परंतु वास्तवतें कछु नही ॥ तेसें यह असतही अनुभव होताहे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन सुपनेविषे असंकल्पविषे जो दृश्यशंका अनुभव होता हे सो जाग्रतके संस्कारतें होता हे अवर कछु नही ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी सुपन अरु संकल्प तिसके संस्कारतें होता हे सो जाग्रतके संस्कार केसें होते हे उही रूप हे अथवा जाग्रततें अन्य हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन सुपनेके पदार्थ अरु मनोराज सो जाग्रतके संस्कारतें जाग्रतकी न्यांइ भासता हे सो भ्रमविषे भासते हे ? ॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी जो सुपनविषे जाग्रतके संस्कार करकै जगत जाग्रतकी न्यांइ भासता हे जो सुपनेविषे किसिका घर लुटि गया ॥ अथवा जलके प्रवाहविषे वही गया तो जाग्रतविषे तो कछु हुआ नही ॥ प्रातःकालकों देखता हे उठकरी तब ज्यों कात्यों भासता हे ॥ तो संस्कारभी कछु न हुआ ॥ सब कल्पनामात्र जानणा ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन अब मैं जाण्या हे जो यह सर्व ब्रह्मही हे न कोउ देह हे न जगत हे न उदे हे न अस्त हे॥ सर्वदा काल सर्व प्रकार उही ब्रह्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे॥तिसतें इतर जो कछु भासते हे सो भ्रममात्र हे अरु भ्रमभी कछु वस्तु नही ॥ सर्व चिदाकाश ब्रह्मरूप हे ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो कछु भासता हे सो सब ब्रह्मही का प्रकास हे ॥ उही अपणे आपविषे प्रकाशता हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन सर्गके आदि देह चित्तादिक केसें फुरी आए हे अरु केसें आत्माका प्रकाशरूप जगत हे ॥ प्रकाशभी तिसका होता हे जो साकाररूप होता हे ब्रह्म तो निराकार हे ॥ दीपक आदिकवत् आकारतें रहित हे ॥ तिसका प्रकाश केसें कहीये ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी सर्व ब्रह्मरूप हे प्रकाश अरु प्रकाशकका भेदभी कछु नही दूसरी वस्तुभी कछु नही ॥ उही अपणे आपविषे स्थित हे तातें स्वप्रकाश कहा हे ॥ सूर्य आदिकका प्रकाश त्रिपुटी करी भासता हे ॥ सोभी तिसके आश्रे होकरी प्रकाशता हे ॥ तिसके प्रकाशका आधारभूत कहाता हे ॥ ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सके आश्रे होकरी सूर्य जगतकों प्रकाशता हे ॥ अरु आत्मसत्ता अद्वैतसत्ता हे अरु विज्ञान घन हैं ॥ तिसविषे चित्त संवेदन फुरी हे उही जगतरूप होकरी स्थित भइ हे ॥ आत्मसत्ता अरु जगतविषे भेद कछु नही ॥ जेसें आकाश अरु शून्यताविषे भेद कछु नही ॥ तेसें आत्मा अरु जगतविषे भेद नही ॥ उही इस प्रकार हूएको न्यांइ स्थित भया हे ॥ हे रामजी निराकार साकाररूप हो भासता हे सुपनवत ॥ हे रामजी इस जगतके आदि अद्वैत चिन्मात्र सत्ता थी ॥ तिसीसों जो नाना प्रकारका जगत दृष्ट आया ॥ तो उही रूप हूआ क्यों ? अवर कारणतो कोउ नही ॥ जेसें सुपनेके आदि अद्वैत सत्ता निराकार हे ॥ तिससों सूर्यादिक पदार्थ भास आतेहे सोभी उही रूप हुए क्यों ? प्रगट भासतेभी हे तेसें इह जगतभी अकारण अरु निराकार जाण ॥ हे रामजी न कोउ जाग्रत हे न सुपन हे न सुषुप्ति हे ॥ सब आभासमात्र हे यही आत्मसत्ता अपने आपविषे स्थित हे ॥ हमकों तो उही सदा विज्ञानघन आत्म सत्ता भासती हे ॥ जेसें दर्पणविषे अपणा मुख भासता हे तेसें हमकों अपणा आप भासता हे ॥ अरु अज्ञानीकों भांतिरूप जगत भासता हे ॥ जेसें दलके कुंडविषे पुरुष भासता हे दूरतें भांति करकै तेसें अज्ञानीकों जगत भासता हे ॥ हे रामजी न कोउ द्रष्टा हे न दृश्य हे ॥ द्रष्टा तब कहीये जो दृश्य होवे ॥ अरु दृश्य तब कहीये जो द्रष्टा होवे ॥ जो दृश्य नही तो द्रष्टा किसका अरु जो द्रष्टाही नही तो दृश्य किसका ॥ तातें निर्विकार ब्रह्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जो आकारभी भासते हे तोभी निराकार हे आत्मसत्ताही संवेदन करकै आकाररूप हो भासती हे ॥ जेसें थंभेविषे चितेरा पुतलीयां कलपता हे जो एतो पुतली थंभेविषे हे ॥ तो उसकों प्रत्यक्ष भासती हे खोदे विनाही॥ तेसें खोदेबिना ब्रह्मरूपी थंभविषे मनरूपी चितेरा इह पुतलीयां देखता हे ॥ सो हुआ कछु नही हे रामजी इन मेरे वचनों तु सुपन अरु संकल्प दृष्टांत करकै देखु ॥ जो अनुभवरूपही आकार होभासता हे ॥ अनुभवतें इतर कछु नही ॥ इस मेरे वचनरूपी उपदेशकों रिदेविषे धारहू ॥ अरु अज्ञानीके बचनको छरदकी न्यांइ त्यागहू ॥ इति० यो० नि० विद्यावादबोधोपदेशो नाम द्विशताधिक द्विसप्ततितमःसर्गः ॥२७२॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन् बडा आश्चर्य हे जो हम अज्ञान करकै जगतकों देखते भये ॥ जगत तो कछु वस्तु नही सर्व ब्रह्मही हे ॥ अरु अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जगत भमकरी भासता हे अब में जाण्या हे ॥ जो इह जगत भममात्र था ॥ वस्तुतें न यह पीछे था न होणा हे ॥ न आगें होवेगा ॥ सर्व सांत निरालंब विज्ञानघन सत्ता हे अरु भांतिभी कछु वस्तु नही ॥ ब्रह्मही अपणे आपविषे स्थित हे ॥ सो केसा हे निर्विकार हे सांतरूप हे ॥ जेसें सर्गके आदि अरु परलोकके आदि सुपनेके आदि सकल पूरके आदि इन स्थानविषे अद्वैत चिन्मात्र सत्ता होती हे तिसकी आभास संवेदन स्पंद फुरती हे तब अनेक पदार्थ सहित जगत भासी आता हे सो अनुभव रूप होता हे ॥ इतर कछु वस्तु नही ॥ तेसें इह जगत अनुभव रूप हे ॥ हे प्रभो अब में तुमारी कृपातें ऐसें निश्चे कीया हे जो जगत अविचार सिद्ध हे ॥ विचार कीयेतेंनिवृत्ति हो जाता हे ॥ जेसें ससेके सिंग अरु आकाशके फुल असत होते हे तेसें जगत असत हे ॥ बडा आश्चर्य हे जो असत रूप अविद्यानें मोहित कीया था अब में जाण्या हे ॥ जो अविद्या कछु वस्तु नही ॥ अपणी कल्पनाही आपकों बंधन करती हे जेसें अपने पछावेविषे बालक भूत कल्पता हे ॥ अरु आपही भय पावता हे॥ तेसें अपणी कल्पनाही अविद्यारूप भासती हे ॥ जबलग विचार प्राप्त नही भया तबलग भासती हे ॥ विचार कियेतें अविद्या अत्यंत अभाव होजाती हे ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प भासता हे ॥ जेवरीके जाणे सर्प अत्यंत अभाव होजाता हे जेसें स्थाणुविषे भमकरकै पुरुष भासता हे तेसें आत्माविषे अविद्यारूप जग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त भ्रम करी भासता हे ॥ जेसें आकाशके फुल अरु सशेके सिंग कछु वस्तु नही तेसें अविद्याभी कछु वस्तु नही ॥ जेसें बंध्याका पुत्र भासे तोभी भ्रममात्र जाणता हे जेसें सुपनेविषे अपने मरणेका अनुभव होवे तोभी भ्रममात्र हे तेसें अविद्यारूप जगतभासता हे तोभी असत हे ॥ प्रमाणरूप नही प्रमाण कहीये जो जथार्थ ज्ञानका साधक होवे ॥ सो इह जो प्रत्यक्ष प्रमाण हे सो जथार्थ करता नही ॥ काहेतें जो वस्तु रूप आत्मा हे ॥ सो ज्योंकात्यों नही भासता ॥ विपर्यय जगत रूप भासता हे सिपविषे रूपेवत तातें इह प्रत्यक्ष अनुभवभी होता हे तोभी असत रूप हे ॥ प्रमाण क्योंकरी जानणां हे हे भगवन यह जगत अवर कछु वस्तु नही॥ केवल कल्पना मात्र हे॥ जेसें जेसें आत्माविषे संकल्प दृढ होता हे तेसें तेसें जगत भासता हे ॥ अरु जो कोउ पुरुष स्वर्गविषे बेठा होवे तिसके रीदेविषे कोउ चिंता उपजी तब उसकुं स्वर्गभी नर्करूप होजाता हे काहेतें जो भावना नर्ककी होजाती हे॥ हे भगवन यह जगत केवल वासनामात्र हे॥ आत्माविषे जगत कछु आरंभ परिणाम कर्के बण्या नही ॥ इह जगत चित्त विषे हे॥ जेसें पथ्थरकी सिलाविषे सिल्पी पुतलीयां कल्पताहे सो जेसी कलपतें तेसें हे भासता हे सिलातें इतर कछु नही तेसें आत्माविषे चित्तनें जगत पदार्थ रचे हे जेसें जेसें भावना करता हे तेसें तेसें इह भासता हे॥ अरु आत्माविषे जगत न कछु हूआ हे न आगें होणा हे ॥ केवल अपने आप विषें आत्मसत्ता स्थित हे स्वच्छ हे ॥ अद्वैत अरु परम मोन रूप हे द्वैत एक कल्पनातें रहित हे ॥ परम मुनीस्वर कर्के सेवणे जोग हे ऐसा जो पद हे सो में पाया हों ॥ अपणे आपविषे स्थित हों सर्व दुखतें रहित हौं ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठेनिर्वाणप्रकरणेरामविश्रांतिर्वर्ननंनामद्विशताधिकत्रिसप्ततितमः सर्गः ॥ २७३ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीस्वर जो आदि अंत मधतें रहित पद हे अरु मुनिकरी जानणाभी कठिन हे ॥ सो पद में पाया हों ॥ एक अरु द्वैतकी कल्पना जो शास्त्र वेद करी कही हे सो मेरी मिटि गई हे ॥ अब में परम सांतिको प्राप्त भया ॥ अरु निसंक हूआ हों ॥ कोउ दुःख मुजकुं नही रहा ॥ सब जगत मुझकों आत्मरूपही भासता हे ॥ हे भगवन् अब में जाण्या हे॥ जो न कोउ अविद्या हे॥ न विद्या हे न सुख हे न दुःख हे॥ सर्वदा अपणे आत्मपदविषे स्थित हे॥ पावणे जोग पद सो में पाया हों जो आगेंही प्राप्त था जो कहते हे हम तिस पदकुं नहीं जांणते तिनकोंभी प्राप्त रूप हे ॥ परंतु अज्ञान करकें नही जाणते ॥ सो पद अवर कीसकरी नही जाणता ॥ अपणे आपकरी जाणता हे अरु ऐसेंभी नही ॥ जो किसीकरी जणाए ॥ अरु जानणे जोग अवर होवे ॥ आपही बोधरूप हे ॥ सदा अपणा आपही हे ॥ अवर न कोउ भांति हे न जगत हे सर्व आत्माही हे ॥ हे मुनीस्वर अज्ञान अरु ज्ञानभी ऐसें हे ॥ जेसें सुपन सृष्टि भासे॥ तिसविषे अंधकार भासे सो अंधकार तब नाश होवे जब सूर्य उदे होवे ॥ अरु जब सुपनेतें जाग उठे तब न अंधकार रहता हे न प्रकाशही रहता हे ॥ तेसें आत्मपदविषे जागेतें ज्ञान अज्ञान दोका अभाव होजाता हे ॥ द्वितिय कल्पनां मिटि जाती हे ॥ जब संवेदन फुरती हे ॥ तब जगत भासता हे परंतु जगत आत्मसत्तातें भिन्न कछु वस्तु नही ॥ जेसें आकाश अरु शून्यता विषे कछु भेद नही तेसें आत्मा अरु जगतविषे भेद कछु नही ॥ जेसें सिलाका अंतर जडीभूत होता हे तेसें आत्माका रूप जगत हे ॥ जेसें जलरूप तरंगविषे भेद कछु नही तेसें आत्मा अरु जगत अभेद रूप हे ॥ हे मुनीस्वर जिस पुरुषकों ऐसें आत्माविषे अहं प्रतीत भइ हे सो कार्य कर्ता दृष्ट आता हे ॥ तोभी अंतरतें निश्चेकरि कछु नही करता॥ असांतरूप दृष्ट आता हे तोभी सदा सांतरूपहे॥ हे मुनीस्वर अज्ञान रूपी मध्यानका सूर्यहे अरु जगतकी सत्यतारूपी दिनहे जगतका भाव अभाव पदार्थरूपी तिसका प्रकाशहे अरु तृष्णारूपी मारुथल हे ॥ तिस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषे अज्ञानी जीवरूपी मार्गपंथीहे तिनकों दिन अरु मार्ग निवृत्त नही होता अरु जो ज्ञानवान सुभावविषे स्थितहे तिनकों न संसारकी संततारूपी दिन भासताहे॥न तृष्णारूपी मरुथल भासता हे उह संसारकि उरतें सोइ रहे हे ॥ ऐसी अद्वैतसत्ता तिनकों प्राप्त भई हे ॥ जहां सत असत दोनों नही तिस कारणतें जगत कलना नही भासती॥ हे मुनीस्वर अब में जाग्या हों सब जगत मुझकों अपणा आपही द्रष्ट आता हे ॥ में निर्वाण रूप निराकार हों निरिच्छित रूप हों परंतु में सुभावसत्ता रूप हों ॥ अब कोउ दुःख मुझकों नही ॥ हे मुनीस्वर तिस पदकों में पाया हों ॥ जिसके पावणे करि तृष्णा कदाचित् नही उपजे जेसें पाषाणकी सिलाविषे प्राण नही फुरते तेसें मुझविषे तृष्णा नही फुरति ॥ सर्व आत्मरूपहि मुझकों भासता हे ॥ अरु इह जो जीव हे तिसविषे जीवत्व कछु नही जीवत्व भांति सिद्ध हे ॥ सब आत्मस्वरूप हे मुझकों तो निरालंब सत्ता अपणा आपही भासती हे ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठेनिर्वाणप्रकरणेरामविश्रांतिवर्ननंनामद्विशताधिक चतुःसप्ततितमःसर्गः ॥ २७४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीस्वर आत्माविषे अंनत स्रष्टि फुरतीयां हे ॥ जेसें मेघकी बूंदका अंत गणती कछु नही होती तेसें परमात्माविषे स्रष्टिका अंत गणती नही होती ॥ जेसें एक रत्नकी असंख्यात किर्णां होतीयां हे ॥ तेसें परमात्माविषे असंख्य स्रष्टि हे ॥ केइ परस्पर मिलतीयांहे केइ नही मीलतीयां ॥ परंतु स्वरूपतें एकरूप हे जेसें अेक समुद्रमें लहरियां उठतियांहे ॥ केइ नउतन भिन भिन अवरही प्रकारकी उठतीयांहे॥ एक तो परस्पर ज्ञात होती हे ॥ एक नही होती हे ॥ अरु जेसें एकही ज्वालाके बहूत दिपक होत हे ॥ कोई अन्योन्य होते हे ॥ कोउ परस्परी मिलते हे ॥ सरूपतें एक रूप हे ॥ तेसें आत्माविषे अनंत जगत फुरते हे ॥ परस्परतें एक रूप हे ॥ जो नाना प्रकारका जगत दृष्ट आया तिसविषे तो उह रूप हूआक्यों ॥ अवर कारण तो कोउ नही ॥ जेसें शून्यके आदि निराकार सत्ता होती हे तिसी सों सूर्यादिक पदार्थ भासी आते हे सोभी उही रूप हूएक्यों ॥ प्रगट भासतेभी हे परंतु निराकार होते हे ॥ जेसें यह जगतभी अकारण निराकार हे ॥ हे मुनीश्वर अब में ज्योंकात्यों जाण्या हे ॥ जेसें सुपनेविषे मूए हूए बोलते दृष्ट आते हे अरु जीवते हूए मृतक द्रष्ट आतेहे ॥ सुपनकालविषे पदार्थविपर्यय भासतेहे परंतु जब जागि उठे तब ज्योंके त्यों भासतेहे ॥ तेसें में जागी उठया हों ॥ मुझकों विपर्यय नही भासता ॥ जथाभूतार्थ मुझकों अब सर्वात्माही भासता हे ॥ हे मुनीस्वर जो ज्ञानवान पुरुष हे सो परम समाधिविषे स्थित हे तिनकों उथान कदाचित नही होता अर्थ यह जो सरुपतें इतर नही भासता व्यवहार करते द्रष्ट आते हे ॥ परंतु व्यवहारतें रहित हे ॥ काहेतें जो अभिलाषा कछु नही रही ॥ विना अभिलाषा चेष्टा करते हे अंतरतें कछु कर्तृत्वका अभिमान नही फुरता ॥ इसीका नाम परम समाधि हे ॥ जब बोधकी प्राप्ति होंती हे ॥ तब तृष्णा कोउ नही रहती ॥ सब पदार्थ विरस हो जाते हे काहेतें जो आत्मपद परमानंदरूप हे ॥ जो तृष्णातें रहित हे तिसीका नाम मोक्ष हे ॥ अरु तिसीका नाम निर्वाण हे ॥ जिसविषे उत्थान कोउ नही ॥ हे मुनीस्वर आत्मानंद अैसा पद हे जीस पदके आंनदकों ब्रह्मा विष्णु रुद्रादिक ज्ञानवानकी वृत्ति सदा दोडती हे ॥ संसारके पदार्थकी उर नही धावती ॥ अरु जीस पुरुषकों सीतल स्थान प्राप्त भया हे सो बडुरी जेठ आषाड की धूपकों नही चाहता ॥ जो मरूथलकों दोडे तेसें ज्ञानवानकी वृत्ति आंनदकी उर नही धावती ॥ हे मुनीश्वर में निश्चे कीया हे ॥ जो तृष्णा जेसा ताप कोउ नही॥ अतृष्णा जेसी शांति कोउ नही ॥ जो पुरुष परम ऐस्वर्यकों प्राप्त हे अरु अंतर तृष्णा जलावती हे सो कृपण दरिद्रीहे ॥ अरु आपदाका स्थान हे ॥ अरु जो निर्धन द्रष्ट आता हे परंतु अंतर तृष्णा कोउ नही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सो परम ऐश्वर्य करी संपन्न हैं अरु परम संपदाकी मूर्ती हे ॥ अरु जो बडा पंडित हे परंतु तृष्णासहित हे सो परम मूर्ख जाणीए ॥तिसकों बोधकी प्राप्ति कदाचित नही होणी जेसें मूर्तिकी अग्नि सीतकों निर्वाण नही करती तेसें उसकी मूर्खताकों पंडित निर्वाण न करेगा ॥ हे मुनीश्वर सहस्रके सहस्रविषें कडुं पुरुष तृष्णा विरहित होताहे ॥ जेसें सिंह पिंजरविषे पडा पिंजरेकों तोडी निकसे तेसें कडुं विरला तृष्णाकी जालकों तोडी निकसताहे ॥ जो पंडित स्वरूपकों विचारकें वितृष्णा नही होता अरु अतीत होकरी वितृष्णा नही होता तो पंडित अरु अतीत दोनों मूर्ख हे ॥ जेता जेता तृष्णाकों घटावेंगा त्यों त्यों जाग्रत बोध उदे होवेगा ॥ ज्योंज्यों रात्रकी क्षीणता होती हे त्योंत्यों दिनका प्रकाश होता हे ॥ अरु ज्योंज्यों रात्रीकी वृद्धि होती हे त्यों त्यों दिनकी क्षीणता होती हे ॥ तेसें ज्योंज्यों तृष्णा बढती जावेगी त्योंत्यों बोधकी प्राप्ति कठिन होवेगी ॥अरु ज्योंज्यों तृष्णा घटती जावेगी त्योंत्यों बोधकी प्राप्ति सुगम होवेगी ॥ हे मुनीश्वर अब में तिस पदकों प्राप्त हुआ हों ॥ जो अच्युत निराकार पद हे अरु द्वैत एक कलनातें रहित हे तिस पदकों मैं आत्माकरि जाण्या हे ॥ अब मैं निःशंक हुआ हों अरु जिस पदकों पाएतें इछा कोउ नही रही सो परमानंद आत्मपद हे ॥

इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे रामविश्रांतिवर्णनं नाम द्विशताधिक पंच सप्ततितमःसर्गः ॥ २७५ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी बडा कल्याण हुआ हे जो तुं जाग्या हे ॥ हे रामजी इह परमपावन वचन तुझनें कहेहें जिनके सुणेतें पापका नाश होताहे ॥ बहुरी केसें वचन तुझनें कहे हें जो अज्ञानरूपी अंधकारके नाश कर्ता सूर्य हे ॥ अरु मन तनके तापकों नाश कर्ता चंद्रमाकी किरणां हे ॥ हे रामजी जो पुरुष अपणे सुभावविषे स्थित हे तिनकों व्यवहार अरु समाधिविषे एकही दशा हे ॥ अनेक प्रकारके चेष्टा करतेभी दृष्ट आते हे परंतु उनके निश्चेविषे कर्तृत्वका अभिमान कछु नही फुरता ॥ सदा परम ध्यानविषें स्थित हे ॥ जेसें पथरकी शिला होती हे तिसविषे स्पंद कछु नही फुरता तेसें उनकों कछु कर्तृत्व बुद्धि नही फुरती काहेतें जो दृश्यविषे उनका अहंकार देहाभिमान निवृत्त भया हे ॥ स्वस्वरूप चिन्मात्रविषे स्थित पाइ हे सो केसा आत्मपद हें परम शांतरूप हे ॥ द्वैत कलनातें रहित एक हे अेसा जो पद हे सो ज्ञानवान आत्मता करकै जाणता हे ॥ तिसकों निर्वाण कहते हे तिसकों मोक्ष कहते हे ॥ हे रामजी अेसा जो पद हे तिसविषे हम सदा स्थित हे ॥ अरु ब्रह्मा विष्णुतें आदि लेकरी जो ज्ञानवान पुरुष हे ॥ सो तिसी पदविषे स्थित हे नाना प्रकारके चेष्टा करतेभी दृष्ट आते हें परंतु सदा सांत रूप हे ॥ तिनकों क्रिया अरु समाधि विषे एकही आत्म निश्चे रहता हे ॥ जेसें वायु स्पंदविषे एकही हे ॥ तरंग अरु ठहराएं विषे जल यही हे तेसें ज्ञानी दोनोंविषे सम हे जेसें आकाशरूप अरु शून्यता विषे भेद नही तेसें आत्मा अरु जगतविषे भेद नही ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन तुमारी कृपातें मुझकों कलना कोउ नही फुरती ॥ ब्रह्माविष्णु रुद्रतें आदि लेकरी जेता कछु जगत हे सो सब आकाशरूप मुझकों भासताहे सर्वदा काल सर्व प्रकार में अपणे आपविषे स्थित हों ॥ अच्युत अरु अद्वैतरूप हों मेरेविषे जगतकी कलना कोउ नही ॥ चित्त संवेदन द्वारा मैंही जगतरूप होभासता हों ॥ अरु स्वरूपतें कदाचित चलायमान नही भया ॥ अचैत चिन्मात्र स्वरूप हों अपणे आपतें इतर मुझकों कछु नही भासता ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी में जाणता हों जो तूं जाग्या हे परंतु अपणे दृढ बोधके निमित्त मुझसों बहुरी प्रश्न करु जो इह जगत हे नहि तो भासता क्यों हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन में तुमसों तब पूछों जो जगत आकार मुझकों भासता होवे ॥ सो मुझकों जगत कछु भासता नही जेसें संकल्प

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के अभाव हुए संकल्पकी चेष्टा नही भासती ॥ जैसें बाजीगरकी मायाका अभाव हुए बाजी नही भासती ॥ जेसें सुपनेके अभाव हुए सुपनसृष्टि नही भासती जेसें भविष्यत्कथाके पु
रुष नही भासते तेसें मुझकों जगत नही भासता ॥ बहुरी संसा किसका उठावों ॥ आदि जो चित्त संवेदन फुरी हे सो विराट्पुरुष होकरि स्थित भया हे ॥ तिसनें आगें देश काल पदार्थ
रचे हे ॥ अरु स्थावर जंगम जगतकों रचा हे तिसकें समष्टि वपुका नाम विराट् हे ॥ जेसें सुपनका पर्वत होवे तेसें इहं विराटपुरुष हे बहुरी केसा विराट हे जो आप आकाशरूप हे ॥
जो आपही आकाशरूप हे तिसका रचा जगत में क्यों पूछों ॥ जेसें सुपनेको मृत्तिकाही आकाशरूप हे अर्थ इह जो उपजीही अनउपजी हे तिसके पात्रका में क्यों पूछों ? तातें न को
उ विराट हे न तिसका जगत हे ॥ मिथ्याही विराट हे ॥ मिथ्याही तिसकी चेष्टा हे ॥ केवल आत्मसत्ता अपणें आपविषे स्थित हे न कोउ जगत हे न कोउ तिसका विराट हे ॥ जेसें सुप
नेका पर्वत आभासमात्र होताहे तेसें इह जगत आकार भासता हे जेसें बीजतें वृछ होताहे तेसें ब्रह्मतें जगत प्रगट हुआ हे ॥ इहभी केसें कहिये ॥ बीज साकार होताहे तिसविषे वृछका
सद्भाव रहता हे ॥ उही प्रणमी कर्के वृछ होता हे ॥ आत्मा अेसें केसें होवे ॥ आत्मा तो निराकार हे तिसविषे जगतका होणा नही काहेतें जो निर्विकार हे अरु अद्वैत हे ॥ निर्वैद हे ति
सकों जगतका कारण केसें कहीये ॥ न कोउ जाग्रत हे न सुपन हे न सुषुप्ति हे ॥ इह अवस्थाभी आकाशमात्र हे ॥परिणाम भावकों नही प्राप्त भया सदा अपणे आपविषे स्थित हे ॥
हे मुनीश्वर में तूंभी आकाशरूप हे ॥ आकाश वायु अग्नि जल पृथ्वी सब आकाशरूप हे ॥ अब सर्व आत्माही मुझकों भासता हे ॥ हे मुनीश्वर एक सविकल्प ज्ञान हे एक निर्विकल्प
ज्ञान हे ॥ सो आकाशवत् अचैत चिन्मात्र हे ॥ चैत जो दृश्य हे तिसके संबंधतें रहित हे सो आकाशवत निर्मल जाण ॥ सो निर्विकल्प ज्ञान हे जिनकों इह ज्ञान प्राप्त भया हे सो महा
पुरुष हे तिसकों मेरा नमस्कार हे ॥ अरु जिसकों दृश्यका संयोग हे सो सविकल्प ज्ञान जीवकों होताहे सो संसारी हे ॥ तिसकों भिन्न भिन्न जगत विषमता सहित भासता हे परंतु उ
ही भिन्न कछु नही ॥ जेसें समुद्रविषे नाना प्रकारके तरंग भासते हे तोभी जलस्वरूप हे तेसें भिन्न भिन्न जीव अरु तिनका ज्ञान हे तोभी मुझकों अपणा आपही भासता हे ॥ जेसें अव
यवीकों सब अंग अपणे ही भासते हे तेसें सर्व जगत अपणा आपही केवल अद्वैतरूप भासता हे जगतकी कलना कोउ नही फुरती ॥ जेसें सुपनेंतें जागेकों सुपन सृष्टि नही फुरती ॥
कल्पनातें रहित अपणा आपही अद्वैत भासता हे ॥ तेसें मुझकों जगत कल्पनातें रहित अपणा आपही भासता हे ॥ हे मुनीस्वर आगमतें ले करी जो शास्त्र हे तिनतें उल्लंघ बचन में क
हे हे परंतु जो मेरे रिदेविषे हे सोइ कहा हे ॥ जो कछु अंतर होताहे सोइ बाह्य प्रगट वाणी करी कहाता हे ॥ जेसें जो बीज बोता हे सोइ अंकुर निकासता हे बीज बिना अंकुर नही
निकसता ॥ तेसें जो कछु मेरे रिदेविषे हे सोइ वाणि करी कहाता हे ॥ अरु इह विद्या सर्व प्रमाण करी सिद्ध हे ॥ हे मुनीस्वर जिसकों इह दसा प्राप्त हे सोइ जानताहे अवर कोउ नही
जाण सकता ॥ अरु जिसनें मद्यपान किया हे सोइ उन्मत्तताकों जानता हे अवर कोउ नही जाणा सकता ॥ तेसें जो ज्ञानवान हे सोइ आत्मरसकों जाणता हे अवर कोउ नही जाण
ता ॥ सो केसा आत्मरस हे जिसक पाएतें बहुरी कोइ नही कल्पना रहती ॥ हे मुनीस्वर में आत्मा अजन्मा अविनासी अरु परम सांतरूप हों ॥ उभय एककी कल्पनातें रहित अचेत चि
न्मात्र हों ॥ अरु जगंतरूप हूएकी न्यांइभी में भासता हों अरु निराभास हों ॥ मेरेविषे आभासभी कोउ वस्तु नही ॥ काहेतें जो निराकार हों ॥ इस प्रकार में अपणे आपकों जथार्थ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चिन्मात्र जाण्या हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे रामविश्रांति वर्णनं नाम द्विशताधिकषट्सप्ततितमः सर्गः ॥ २७६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे भारद्वाज इस प्रकार रामजी कहि करि एक मुहूर्त पर्यंत तुष्णी हो गया ॥ अर्थ यह जो परमात्मपदविषे विश्रांतिकों पावत भया ॥ इंद्रिय अरु मनकी वृत्ति जो हे सो आत्मपदविषे उपसम भइ ॥ तिसतें उशांत जाणी करीभी कमलनेन रामजी लीलाके निमित्त प्रश्न करत भया ॥ रामोवाच ॥ हे संसेरूपी मेघके नाश कर्ता सरत्काल ॥ मु झकों एक संसा कोमल जेसा भया तिसकों दूर करहु ॥ हे मुनीस्वर आत्मपद अव्यक्त हे अरु अचिंत्य हे ॥ अर्थ इह इंद्री अरु मनका विषय नही ॥ इंद्रियां करी ग्रहण नही होता अरु मनकि चिंतवनाविषेभी नही आता ॥ जो बडे महा पुरुष हे तिनके कहणे विषेभी नही आता अेसा जो अचेत चिन्मात्र आत्मतत्व हे सो शास्त्र करी केसें जाण्या जाता हे ॥ शास्त्र तो अ विछेद प्रतियोगी करि कहते हे सो सविकल्प हे ॥ सविकल्प करकें निर्विकल्प पद केसें जाण्या जाताहे ॥ गुरु अरु शास्त्र करकें जाणोए ॥ अरु विकल्परूप जो हे शास्त्र तिनविषेभी सा र अर्थ पाइता हे॥परंतु विकल्प परिछेद प्रतियोगी जो तिस साथ हे तिन करकें सर्वात्मा क्यों करीजाणीयें ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी गुरु अरु शास्त्र करि नही जाणता अरु गुरु शास्त्र विनाभी नही जाणता ॥ हे रामजी नाना प्रकार जो विकल्परूप शास्त्र हे तिन करकें निर्विकल्परूप केसें जाणताहे॥परंतु तिस प्रकार इन करि जाणता हे सोभी सुण ॥ हे रामजी एक व्यवधान दे सके किटक थे सो गृहस्थविषे रहते थे तिनकों आपदा आनि प्राप्त हुइ उह चिंता करि दुर्बल होते जावे ॥ अरु भोजनभी न जुड जावे ॥ जेसें वसंत ऋतुकी मंजरी जेठ अषाडके धुप करी सुकि जाति हे जेसें कमल जलतें निकस्या सुक जाता हे तेसें संपदारूपी जलतें निकसि करि कीटक आपदारूपी धूप करि सूकि गए ॥ तब उननें विचार किया जो किसी प्रकार हमारी उदर पूर्नता चले ॥ तातें हम बनविषे जाए करि लकडीचुणि लेवे जो हमारा कष्ट दूर होवे ॥ हे रामजी अेसें विचार करकें उह बनविषे गए ॥ बनविषे जाए करि लकडीयां ले आए ॥ इसी प्रकार लकडीयां ले आवे ॥ जब एक बनतें अवर बनविषे देखे तब उहांते ले आवे ॥ बजारविषे वेचि करि उदर पूर्ना करे ॥ जब केताल काल वितीत भया तब कोउ चंदनकी लकडीकों पछाणे सो उनतें विसेष मोल पावे ॥ एककों ढुंढते ढुंढते रत्न प्राप्त भए ॥ तिनकों विसेष ऐश्वर्य प्राप्त भया ॥ सो लकडी उठावनेके जतनतें रहित भए ॥ बहुरी अवर स्थान ढूंढणे लागे जो रत्नतेंभी विसेष कछु पाइयें ॥ सो बनकि पृथ्वीकों खोदते खोदते कोइ चिंतामणिकों प्राप्त भए॥ उह बडे ऐश्वर्यकों प्राप्त भए जेसें ब्रह्मा इंद्रादिक हे तेसें होत भए॥ हे रामजी जिननें उद्यम करकें बनकी सेवना करि तिनकों बडा सुख प्राप्त भया जो लकडियां उठावते रहे तिनकी उदर पूर्ना ही भइ अरु दुःख निवृत्त न भया॥अरु जिनकों चंदनकी लक डीयां प्राप्त भइ तिनके उदर पूर्नातें अवरभी संताप मिटे ॥ अरु जिनकों चिंतामणि प्राप्त भइ तिनके सर्व संताप मिटि गए ॥ उह परमऐश्वर्यवान भए ॥ परंतु सबकों बनसों प्राप्त भ या ॥ अरु जो बनके निकट उद्यम करि न गए घरहि बेठे रहे सो दुःखित हो करि प्राणोंकों त्यागते भए परंतु सुख न पाये ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे चिंतामणिप्राप्ति र्नाम द्विशताधिकसप्तसप्ततितमःसर्गः ॥ ॥ ७ ॥ ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन इह जो तुम किटकका वृत्तांत कहा सो इसका तात्पर्य में कछु न जाण्या ॥ उह कीट कवन थे अरु बन क्या था॥अरु आपदा क्या थी सो कृपा करि प्रगट कहो॥ वसिष्ठोवाच॥ हे रामजी जेतें कछु जीव तुं देखता हे सो सब कीट हे तिनकों अज्ञानरूपी आपदा लागीहे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अध्यात्मक अधभूतक आधिदैवक जो तीनों तापहे ॥ अध्यात्मक काम क्रोधादिक मानसी दुःख हे, अधिभूतक देहके वात पित कफ आदिक दुःखहे, अरु अधि दैविक जो ग्रहतें दुःख अनिछित आनि प्राप्त होताहे॥ तिन तापकि चिंता करि जलतेहे॥हे रामजी तिनविषे प्रयत्न कर्के शास्त्ररूपी वनविषे गएहे॥सो सुखी भएहे॥जो अर्थी सुखके निमित्त शास्त्ररूपी वनकों सेवते भए तिनकों सत कर्मरूपी लकडीयां प्राप्त भइ॥तिन करि जो नरकरूपी उदर पूर्नाका दुःख था सो निवृत्त भया॥अरु स्वर्गरूपी सुख पावते भए॥बहुरी शास्त्ररूपी बनकों सेवते सेवते उपासनारूपी चंदन वृछ जिनकों प्राप्त भया तिस करि अवर दुःखभी निवृत्त भए अरु विशेष सुखकों पावते भए॥सो जब अपणे इष्ट देवकों सेवताहे तब स्वर्गादिक विशेष सुखकों पावता हे॥ अपणे स्थानकों प्राप्त होताहे॥बहुरी शास्त्ररूपी वनकों ढूंढताहे ॥ तब विचारूपी रत्न विसेष सुखकों पावताहे ॥ जब सत असतका विचार इसकों प्राप्त होताहे तब सर्व दुःख इसके नष्ट होजाते हे ॥ अरु इह जो सुख प्राप्त होताहे सो शास्त्र कर्के होताहे क्यों ? जेसें अवर पदार्थ चंदन लकडीयां वनविषे प्रगट थे चिंतामणि गुप्तथी॥तेसें अवर शास्त्रविषे धर्म अर्थ काम प्रगट हे॥अरु ज्ञानरूपी चिंतामणि गुप्त हे ॥ जब शास्त्ररूपी बन पृथ्वीकों वैराग अरु अभ्यासरूपी जतन करि खोजे तब आत्मरूपी चिंतामणिकों पावता हे॥ हे रामजी बनविषे उन चिंतामणि तब पाइ क्यों जो उहां चिंतामणिका बन था॥परंतु जब अभ्यास किया तब पाइ परंतु उसी बन विषे पाइ॥तेसें गुरु शास्त्रभी माटीके खोदणेवत हे॥ जब भला अभ्यास करताहे तब आपहि चिंतामणिवत आत्मप्रकाश आता हे ॥ जेसें माटीके षोदणे करि चिंतामणिका प्रकाश उपजता नही ॥ काहेतें जो चिंतामणि आगें ही प्रकाश रूप हे ॥ षोदणेकरि आवरण दूर किया तब आपही भास आइ ॥ तेसें गुरु सास्त्रके बचन तिनके अभ्यास करि अंतः करण सुध होता हे ॥ तब आत्मसत्ता स्वतः प्रकाश आती हे ॥ सो गुरु अरु शास्त्र रिदेकी मलीनता दुर करते हे ॥ जब मलीनता दुर होती हे तब आत्मसत्ता सुभाविक प्रकाशती हे ॥ तातें गुरु शास्त्रकरि मलीनता दूर होती हे ॥ परंतु इनकी कल्पनाभी द्वैतविषे होती हे ॥ सो कल्पना द्वैत संसारकों नाश करने वाली हे ॥ परमार्थकी अपेछा कर्के शास्त्र गुरुभी द्वैत कल्पना हे अरु अज्ञानीकि अपेछाकरि गुरु शास्त्र कृतार्थ करते हे इनके अभ्यासकरि आत्मपद पाइता हे ॥ प्रथम अज्ञानी शास्त्रकों भोगके निमित्त सेवते हे ॥ अरु शास्त्र विषे भोगका अर्थ जाणते हे ॥ जेसें लकडीयांके निमित्त बनकों सेवतेथे अरु शास्त्रविषे सब कछु हे ॥ जेसें किसिकों रुचि करि अभ्यास होता हे तेसें पदार्थ तिसकों प्राप्त होता हे ॥ शास्त्र एकही हे परंतु पदार्थविषे भेद हे ॥ जेसें गनेकिरस एक हे तिसतें गुड सक्कर षंड मिसरी होती हे तिनविषे भेद हे ॥ तेसें शास्त्र एक हे तिनविषे पदार्थ भिन्नभिन्न हे ॥ जिस जिस अर्थ पावणे के निमित्त इह जतन करेगा तिसीकों पावेगा ॥ शास्त्रविषे भोगभी हे ॥ अरु मोक्षभी हे ॥ अज्ञानी भोगके निमित्त इह जतन करते हे परंतु उहभी धन्य हे काहेतें जो शास्त्रकों सेवणे तो लागे हे क्यों ? सेवते सेवते कबहूं किसी कालविषे आत्मपदरूपी चिंतामणिभी प्राप्त होवेगी ॥ परंतु आत्मपद पावणे निमित्त शास्त्र श्रवण करणा जोग हे ॥ सुण सुणकरि अभ्यास द्वारा आत्मपद प्राप्त होवेगा ॥ तब सर्व उरतें सम भाव होवेगा ॥ जेसें सूर्यकेउदे हूए सर्व उरतें प्रकाश पसरि जाता हे ॥ तेसें सर्व उर समता प्रकाशेगी ॥ तब सुषुप्तिकी न्यांइ स्थिति होवेगी ॥ अर्थ इह जो द्वैत अरु एक कलनाभी शांत होजावेगी ॥ अनुभव अद्वैतविषे जाग्रत होवेगी परंतु किस करि होवेगी ॥ संतके संग अरु शास्त्रके विचार अभ्यासद्वारा होवेगी ॥ सो संत जन कवन हे जो परोपकारी संसार समुद्रतें पार करने वाले होवे ॥ सो संत जन हे तिनके संगकरी आ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लपद प्राप्त होवेगा ॥ हे रामजी गुरु शास्त्र नेतिनेति करिजतावतें हे अर्थ इह जो अनात्म धर्मकों निषेधकरि आत्मतत्व शेष रखते हैं ॥ जब अनात्म धर्मकों त्याग करेगा ॥ तब आत्म तत्व शेष रहेगा तिसकों जाणि लेवैगा ॥ तिसके जाणेतें अवर कछु जानणा नही रहता ॥ तिसके जानणेविषे जतनभी कछु नही॥आवरण दूर करणे निमित्त जतन हे ॥ जेसें सूर्य आगें बदल आता हे तिसकरि सूर्य नही भासता सो बदलोंके दूर करणेकों जतन चहीता हे ॥ सूर्यके प्रकाश निमित्त जतन नही चहीता ॥ जब बदल दूर हूए तब सुभाविकही सूर्य प्रकाशता हे तेसें गुरु अरु शास्त्रके जतनकरि अहंकार रूपी आवरण दूर होते हे ॥ तब आत्मा सुप्रकाश भास आता हे ॥ सात्विक गुण जो हे गुरु अरु शास्त्र तिनकरि रज तम गुणोका अभाव होताहे ॥ तब परम अनुभव जोति करि आत्मा अकस्मात प्रकाशि आताहे॥ जब प्रकाश भया तब उसविषे उन्मत होजाता हे ॥द्वैतरूपी संसारकी कल्पना नही रहती॥जेसें सुंदर स्त्रीकों देख करिकामी पुरुष उन्मत्त होजाता हे अरु संसारकी उरतें सुरति भूलि जाति हे ॥ तेसें ज्ञानी आत्मपदकों पाइकरि उन्मत होता हे अरु संसारकी उरतें सुरति भूल जाते हे ॥ परम ऐश्वर्यवान होता हे॥ सो तिसका साधन शास्त्रका विचार हे ॥ बनके सेवणेतें चिंतामणि पावणेका दृष्टांत कहा हे सो जाणि लेणा ॥ इ० यो० नि० गुरुशास्त्रउपमावर्णननामद्विशताधिकाष्टसप्ततितमःसर्गः ॥ २७८ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो कछु सिद्धांत संपूर्ण हे सो में तुझकों विस्तार करके कहा हे ॥ तिसके श्रवण करी अरु वारंवार विचारणेकरि मूढभी निरावरण होवेंगे ॥ तो उत्तम पुरुषकों निरावरण होणेविषे क्या आश्चर्य हे ॥ हे रामजी इह मेंभी जाणता हों जो तूं विदित वेद भया हे ॥ प्रथम उत्पत्ति प्रकरण तेरे ताइं कहा हे जो जगतकी उत्पत्ति इस प्रकार हूइ हे बहुरी स्थिति प्रकरण कहा हे जो जगतकी स्थिति इस प्रकार हुइ हे ॥ उत्पत्ति कहिए जो चित्त संवेदनके फुरणेकरि जगत उपजा हे ॥ अरु संवेदन फुरणेकी दृढताकरि जगत स्थित भया हे ॥ तिसतें उप्रांत उपशम प्रकरण कहाहे जो मन इस प्रकार अफुर होता हे ॥ जब चित्त उपशम भया तब परम कल्याण हूआ मनके फुरणेका नाम संसार हे ॥ जब मन उपशम होजाता हे तब संसार कल्पना मिट जाती हे ॥ इह संपूर्ण विस्तार करके कहा हे परंतु अब जाणताहों जो तूं बोधवान भया हे ॥ हे रामजी में तुझकों आत्मज्ञानका उपाय कहा हे॥ अरु जिनकों ज्ञान प्राप्त भया तिनके लक्षणभी कहे हे ॥ सो अबभी संक्षेपतें कहताहों ॥ हे रामजी प्रथम बालक अवस्थाविषे इसकों इह बणता हे जो संतजनका संग करना ॥ अरु सतशास्त्रका विचारणा ॥ इस शुभ आचारकरी अभ्यासद्वारा इसकों आत्मपदकी प्राप्ति होती हे ॥ तब समता आनि प्राप्त होती हे ॥ अरु सर्व साथ सुहृद होजाता हे ॥ सो माता सुहृदता केसी हे परमानंदरूप जो हे मुदिता तिसकि जननी हे ॥ सो सदा इसके संग रहती हे ॥ जेसें सुंदर पुरुषकों देखिकरी तिसकी स्त्री प्रसन्न होतीहे उसके प्राणका त्यागणा अंगिकार करती हे परंतु उस पुरुषकों नही त्यागती ॥ तेसें जो ज्ञानवान पुरुष ब्रह्मलक्ष्मीकरी सुंदर कांति हे तिसकों समता मुदिता सुहृदतारूपी स्त्री नही त्यागतीयां ॥ सदा इसके हृदेरूपी कंठ लागी रहतीयां हे ॥ उह पुरुष सदा प्रसन्न रहता हे ॥ हे रामजी जिसकों देवताका राज प्राप्त होता हे ॥ उहभी अेसा प्रसन्न नही होता अरु जिसकों सुंदर स्त्रीयां प्राप्त होवे उहभी अेसा प्रसंन नही होता जेसा ज्ञानवान प्रसन्न होता हे ॥हे रामजी समता केसी हे जो द्विधारूपी अंधकारके नाश कर्ता सूर्य हे ॥ अरु तीन तापरूपी उष्णताके नाश करणेकों पूर्णमासिका चंद्रमा हे ॥ बहुरी केसी हे सुहृहता अरु समता जो सौभाग्यरूपी जलका नीचा स्थान हे ॥ जेसें जल नीचे स्थान सुभाविक चला जाता हे ॥ तेसें सुहृदताविषे सौभाग्यता सुभाविक होती हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जेसें चंद्रमाकी किरणांके अमृतकरी चकोर तृप्तिवान होताहे तेसें आत्मरूपी चंद्रमाकी समता सुहृदतारूपी किरणांकों पायकरी भ्रतादिक चकोर तृप्त होकरी आनंदवान होते हे अरु जिते हे ॥ हे रामजी उह ज्ञानवान अेसी कांति करि पूर्ण हे ॥ जो कदाचितभी क्षीण नही होती ॥ जेसें पूर्णमासीके चंद्रमाविषेभी उपाधि दृष्ट आती हे ॥ परंतु ज्ञानवानके मुखविषे तेसें भी उपाधि नही ॥ जेसें उत्तम चिंतामणिकी कांति होति हे तेसें ज्ञानवानकी कांति हे ॥ राग दोष कर्कै क्षीण कदाचित नही होती ॥ सदा प्रसन्न रहता हे ॥ हे रामजी समता वही मानों सौभाग्य कमलकी खाणी हे ॥ अेसें आनंदकों लिये जगतविषे विचरता हे ॥ जो प्रकृत आचारकों करता हे जो कछु कार्य करता हे अरु भोजन करता हे जो कछु ग्रहण करता हे जो कछु देता हे सो सब लोक उसके कर्तृत्वकी स्तुति करते हे ॥ हे रामजी अेसा जो पुरुष हे सो ब्रह्मादिकों करीभी पूजणेजोग हे ॥ सर्वही उसीका मान करते हे अरु सर्व उसके दर्शनकी इच्छा करते हे दर्शन कर्कै प्रसन्न होता हे जेसें सूर्यके उदे हूए सूर्यमुखी कमल खिलीआते हे ॥ सर्व हुलासकों प्राप्त होते हे तेसें उसका दर्शन देखकरी सर्व हुलासकों प्राप्त होते हे ॥ अरु जो कछु उह करते हे सो शुभ आचारही करते हे ॥ अरु जो कछु अवरभी करि बेठते हे तोभी उसकि निंदा लोक नही करते काहेतें जो जाणते हे इह समदर्शि हे ॥ समता कर्कै उह सर्वका सुहृद होता हे ॥ शत्रुभी उनके मित्र होजाते हे जिनकों समताभाव उदे हूआ हे तिनकों अग्नि जलाय नही सकता अरु जल डुबाइ नही सकता ॥ वायु तिनकों सुकाय न हि सकता ॥ अरु जेसि इछा करे तेसि सिद्धि होतीहे ॥ हे रामजी जिसकों समता प्राप्त हुइ हे ॥ सो पुरुष अतोल होजाता हे ॥ संसारकि उपमा उसकों कोउ दे नही सकता ॥ अरु जिसकों समता नही प्राप्त भइ सो सर्व संग सुहृदताका अभ्यास करे तब जो उसका शत्रु होवे सोभी मित्र होजाताहे ॥ काहेतें जो अभ्यासकी दृढता कर्कै इसकों शत्रुभी मित्र भासणे लागते हे ॥ जो सर्वविषे समताका अभ्यास करता हे सोइ दृढ होता हे ॥ तब समता भावतें कदाचित चलायमान नही होता ॥ हे रामजी एक राजाथा तिसनें अपणे शरीरका मांस काढ क्षुधार्थीकों दीया ॥ परंतु समतातें चलायमान न भया ज्योंकात्यों रहा ॥ अरु एक पुरुषकों पुत्री अतिप्यारी थी तिसनें किसीकों दीनी ॥ सो तिसने अवर शत्रुकों जाय दीनी ॥ परंतु वह ज्योंकात्यों रहा ॥ एक अवर राजा था उसकों स्त्री अति प्यारि थी उसका कछु व्यभिचार श्रवण कीया तिसकों मार डारी ॥ परंतु समतारूप धर्मकों न त्यागत भया ॥ हे रामजी जब राजाके गृहविषे मंगल होता हे तब अपणे नगरकों भूषणों अरु वस्त्रोंकरि सुंदर करता हे अरु प्रसन्न होताहे ॥ सो अवस्था राजा जनककी देखी थी ॥ अरु एक समे सर्व स्थान अति सुंदर अग्निकरि जलते देखे तो अपणे समताभावतें चलायमान न भया ॥ अरु एक अवर राजा था उसनें राजभी अवरकों देदीया आप राजबिना विचरता भया ॥ परंतु समता भावतें चलायमान न भया ॥ हे रामजी एक दैत था उसकों देवताका राज प्राप्त भया बहुरी राज नष्ट होगया ॥ परंतु दोनों भावोंविषे समही रहा ॥ एक बालक था उसनें चंद्रमाकों मोदक लडु जाणिकरी फूंक मारी परंतु उह ज्योंका त्यों रहा ॥ हे रामजी इत्यादिक में अनेक देखे हे जिनकों आत्मज्ञान सम्यक प्राप्त भया हे सो सुख दुःखकरि चलायमान नही भए ॥ हे रामजी प्रारब्ध ज्ञानाकों भोगणी तुल हे परंतु राग दोषकरि अज्ञानी तपायमान होता हे ॥ अरु दृढ समुझके वसतें ज्ञानी तपायमान नही होता हे ॥ सर्व अवस्थाविषे उसकों समता भाव होता हे सो आत्मपदके साक्षात् करे समता भाव होता हे ॥ सो आत्मपद तप कर्कैभी नही प्राप्त होता नही तीर्थोंकरि न दान करि न जग्य करि प्राप्त होता हे ॥ जब अपणा विचार उत्प

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्ति होनाहे तब सर्व भांति निवृत्त होजाती हे अरु सर्व जगत आत्मरूपही भासता हे ॥ इसी दृष्टिकों लीये प्राकृत आचारविषे विचरते हे ॥ परंतु निश्चेतें सदा निर्गुण हे ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर अे सी अद्वैत दृष्टि निष्टा जिनकों प्राप्त भइ हे तिनकों कर्मोंके कर्णे साथ क्या प्रयोजन हे ॥ उह त्याग क्यों नही करते ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो पुरुष अद्वैत निष्ट हे तिनकों त्याग ग्रहणकी भ्रां ति चलती जाती हे ॥ तिस भ्रमतें रहित होकरी प्रारब्धके अनुसार चेष्टा करते हे ॥ हे रामजी जो कछु सुभाविक क्रिया उनकों बणी पडि हे तिसका त्याग नही करते ॥ तिसविषे उनकों ज्ञान प्राप्त भया हे सो आचार करते हे अवरकों ग्रहण नही करते ॥ अरु उसका त्याग नही करते ॥ हे रामजी जिनकों गृहस्थहीविषे ज्ञान प्राप्त भया हे सो गृहस्थहीविषे विचरतें हे त्याग नही करते जेसें हम स्थित हे अरु जिनकों राजविषे ज्ञान प्राप्त भया हे सो राजहि विषे रहे हे जेसें तुम हो जो ब्राह्मणकों ज्ञान प्राप्त भया हे ॥ सो ब्राह्मणहीके कर्मोंविषे रहे हे ॥ इसी प्रकार क्षत्रीय वैश्य शूद्र जिस स्थानविषे किसीकों ज्ञान प्राप्त भया हे ॥ सोइ कर्म करता हे हे रामजी केइ ज्ञानवान गृहस्थहीविषे रहे हे॥ केइ राजही करते हे॥ केइ सन्यासि हो रहे हे॥ के इ बनविषे विचरते फिरते हे केइ पर्वत कंदराविषे ध्यान स्थित हो रहे हे ॥ केइ नगरविषे रहते हे केइ ज्ञानवान मथुराविषे केइ केदारनाथविषे प्रयागविषे केइ जगन्नाथविषे रहते हे केइ देवताका पूजन करते हे कर्म करते हे ॥ केइ तीर्थ अग्निहोत्र करते हे ॥ हमारी न्यांइ केइ जप करते हे ॥ केइ अस्ताचल पर्वतमें केइ उद्याचल पर्वतमें केइ मंद्राचल हीमाले पर्व त विषे इत्यादिक स्थानमें विचरते हे ॥ केइ शास्त्र विहित कर्म करते हे केइ अवधूत हो रहाहे ॥ केइ भीक्षा मागी मागी भोजन करते हे ॥ केइ कठिन बचन बोलते हे ॥ केइ अज्ञानी हूए विचरते हे केइ विद्या अध्ययन करते हे ॥ इत्यादिक नाना प्रकारकि चेष्टा ज्ञानवानभी करते हे ॥ काहेतें जो उनकों सुभाविक आनि प्राप्त भइ हे ॥ जतन करी कछु नही करते ॥ हे रामजी सुभ कर्म करे अथवा असुभ कर्म करे ॥ कोउ क्रिया उनकों बंधन नही करती ॥ अरु जो अज्ञानी हे सो जेसें कर्म करेगे तेसेंहि फलकों भोगेगें ॥ पुण्य कर्म करेगा तब स्वर्ग सुख भोगेगा ॥ पाप करि नरक दुःख भोगेगा ॥ अरु जो सुभ कर्म कामनातें रहित करेगा तब अंतःकरण सुद्ध होवेगा ॥ संतके संग अरु सत शास्त्र करि सुद्धताकों प्राप्त होवेगा ॥ हे रा मजी जो अर्ध प्रबुध हे अरु पाप करणे लागि जावे अरु आत्म अभ्यास त्याग देवे सो दोनों मार्गतें भ्रष्ट हे ॥ न स्वर्गकों प्राप्त होताहे अनात्मा पदकों प्राप्त होताहे ॥ अरु तप दान ति र्थादिक सेवणे करिभी आत्मपद प्राप्त नही होता जब विचार उपजता हे अरु आत्मपदका अभ्यास करता हे तब आत्मपद पावता हे ॥ जब आत्मपद प्राप्त भया तब निसंक हो जाता हे ॥ चेष्टा व्यवहार करताभी दृष्ट आता हे परंतु अंतरतें उसका चित्त सांत हो जाता हे ॥ जेसें तांबेका तष्ट होवे जब उसकों पारसका परस करीयें तब उह स्वर्न हो जाता हे सो आ कार उसका तष्टही रहता हे ॥ परंतु तांबा भावका अभाव हो जाता हे तेसें जब चितकों आत्मपदका स्पर्श होताहे तब चित्त सांत हो जाता हे परंतु चेष्टा उसी प्रकार होतीहे ॥ अरु ज गतकि सत्यता नष्ट हो जातीहे ॥ हे रामजी अब तुम जागे हो अरु निसंक भए हों राग दोषरूपी तुमारा नष्ट हो गया हे ॥ अरु तुम निर्विकार आत्मपदकों प्राप्त भये हो ॥ जन्म मृत्यु बढणा घटणा जुवा वृद्ध होणा इन सर्व विकारतें रहित आत्मपदकों तुम पाये हो॥ सर्वका अधिष्टान जो परम सुद्ध चैतन हे सो तुमकों प्राप्त भया हे ॥ हे रामजी जो कछु में कहणा था सो कहा हे अरु सारका सार आत्मपद कहा हे ॥ अरु जो कछु जानणे जोग था सो तुमनें जाण्या हे॥ इसतें उप्रांत न कछु कहणा रहा हे न कछु जानणा रहाहे एते पर्यंत कहणा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरु जानणा ह ॥ अब तुम निसंक हो करी विचरो ॥ तुमकों संसे कोउ नही रहा ॥ क्षय अरु अतिसेतें रहित पद तुम पाये हो ॥ अर्थ इह जो अविनासी अरु सर्वतें उत्तम पदकों पाये हो ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे साधो जब इस प्रकार वसिष्टजी मुनीविषे सार्दुल कहि करी तुष्णी हो रहा तब जेती कछु सभा बेठीथी सो सर्व ही परम निर्विकल्पपदविषे स्थित हो गइ॥जेसें वायुतें रहित कमल फुल पर भंवरे अचल होतेहे तेसें चित्तरूपी भंवरे आत्मपद कमलके रसकों लेते हूए स्थित हो रहे ॥ ब्रह्मकों जाणि करी ब्रह्मरूप हूए ब्रह्मविषे स्थित भये जेते कछु निकट मृग थे सो तृण भक्षणकों त्यागकरि अचल होगए अवर पशू पंछी थे सो सुणिकरी निस्पंद होरहे ॥ अरु स्त्रियां बालकों संयुक्त चपल थी सो सुणिकरी जडवत् होगइयां ॥ पूर्व जो मुक्तिवान मोक्ष उपायके श्रवणकों सिधोंके गण आतेथे तिननेंभी बडे फूलकी वर्षाकरी ॥ तमाल कदंब पारिजात कल्प इत्यादिक दिव्य वृक्षोंके जो फूल हे तिनकी देवता अरु सिधोंनें वर्षा करी ॥ नगारे भेरी संख बजावणेलागे अरु वसिष्टजीकी स्तुति करने लागे बडे शब्द भये तिन करकैं दसो दिसा पूरन भइयां ॥ उपरतें देवतासिधोंके नगारेके शब्दहूए ॥ तिनकरि पर्वतों विषे शब्दभाव उठे ॥ अरु दिव्य फूलोंकी सुगंध पसरी मानों पवनभी रंगित भयाहे ॥ तब सिद्ध कहत भए ॥ हे वसिष्ठजी हमनेंभी अनेक मोक्षउपाय श्रवण कियेहे अरु उच्चार कीये कहेहे परंतु जेसा तुमनें कहाहे तेसा न आगें श्रवण कीयाहे न गाया हे न कह्या हे ॥ तुमारे मुखारबिंदतें जो श्रवण कियाहे तिसकरि हम परम सिद्धांतकों जाणत भएहें ॥ इसके श्रवण करि पशु पंछी मृगभी कृतार्थ भएहे ॥ अवर मनुषोंकी वार्ता क्या कहीयें उह तो कृतार्थही भए हे ॥ निष्पाप ज्ञानकों पायकरि मुक्तहोवेगे ॥ वालमीकोवाच ॥ हे साधो अैसें कहि करि बहुरी फूलोंकी वर्षाकरी अरु चंदनका लेप वसिष्ठजीकों करें ॥ जब इस प्रकार पूजा करि चूके अरु कहि रहे तब अवर जो निकट बेठेथे सो परम विस्मयकों प्राप्त भए ॥ जो अैसा परम उपदेस वसिष्टजीनें कियाहे तब राजा दसरथ उठ ठाढा भया ॥ हस्त जोडीकरि वसिष्टजीकों नमस्कर किया अरु कहत भया हे भगवन षट् ऐश्वर्यसो संपन्न तुमारी कृपाकरि हम पूर्न भए हें केसें हम पूर्न भए हे ॥ हे भगवन तुम संपूर्न शास्त्र श्रवण कराया हे ॥ तिसकों सुणिकरि हम पूजन करणे जोग हे ॥ सो हे देव तुमारा पूजन किस साथ करे ॥ अैसा पदार्थ पृथ्वीविषे कोउ नही अरु आकाश लोक देवताविषेभी कोउ नही ॥ जो तुमारी पूजाकों जोग होवे ॥ सर्व पदार्थ कल्पित हे ॥ अरु जो सतपदार्थ साथ पूजा करें तो सत तुमहीतें पाया हें तातें अैसा पदार्थ कोउ नही जो तुमारी पूजा जोग होवे ॥ तथापि अपअपणि सक्ति अनुसार पूजन करते हे ॥ परंतु तुमारे क्रोधवान नही होणा ॥ अरु हांसीभी नही करणो ॥ हे मुनीस्वर मैं राजा दशरथ अरु संपूरन मेरे अंतःपुरकी स्त्रीयां अरु चतुष्टय पुत्र राज संपूर्न पूजा सहित अरु जो कछु लोकविषे जस किया अरु जो कछु परलोकके निमित्त पुण्यकीये हे सो सर्व तुमारे चरणोंके आगें निवेदन हे ॥ हे साध इस प्रकार कहि करि राजा दशरथ वसिष्टजीके चरनों परि गिर्या ॥ तब वसिष्ठजी बोले हे राजन तूं धन्य हे ॥ जिनकि अैसी सरधा हे परंतु हम तो ब्राह्मण हे ॥ हमारे राज क्या करणा हे अरु राजका व्यवहार क्याजांणें ॥ अरु कबहूं ब्राह्मणने राज कीया हे ? ॥ राजा छत्री होते हे तातें तुझहीसों राज होवेगा ॥ अरु इह जो तेरा शरीर हे ॥ सो मैं अपणाही जाणता हों ॥ अरु इह चतुष्टय पुत्र तेरे मैं आगेंतें अपणे जांणताहों ॥ हम तो तेरे प्रणाम करकैंही तुष्ट हे ॥ यह राजका प्रसाद हमनें तुझकोंही दीया ॥ वाल्मीकोवाच ॥ जब इस प्रकार वसिष्टजीनें कहा ॥ तब राजा दशरथ बहुरी कहत भया ॥ के हे स्वामी तुमारे लायक कोउ पदार्थ नही तुम ब्रह्मांडोके इस्वर हो ॥ अैसें बचन तुम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रती कहणे विषेभी हमकों लज्जा आती हे ॥ परंतु जोगके निमित्त तुमारे आगें विनती करी हे ॥ जो मोक्ष उपाय शास्त्र श्रवण कीया हे ॥ अपणि शक्तिके अनुसार पूजन करें तब वसि
ष्ठजीनें कहा बेठो तब राजा बेठ गया ॥ बहुरी रामजी निरभिमान होकरि कहत भए ॥ हे संसेरूपी तिमिरके नाशकर्ता सूर्य ॥ तुमारा पूजन हम तिस साथ करे जो पदार्थ गृहविषे अप
णा होवे सो हे गुरुजी मेरें पास अवर तो कछु नही ॥ एक नमस्कारहि हे ॥ ऐसें करि चरणोंपर गिर्या ॥ नेत्रोंतें जल चल्या जावे वारंवार उठे बहुरी गिरपडे ॥ चरनोंपर आत्मानंद प्राप्ति
के उत्साह करकें ॥ जब वसिष्टजीनें कहा बेठ जाऊ तब रामजी बेठीगए ॥ बहुरी लछमन भरत शत्रुघ्न अर्घ्य पाद करि पूजने लागे ॥ राजर्षि ब्रह्मर्षि सर्व पूजणें लागे ॥ फूलोंकि वर्षा बडी
चढिगई ॥ वसिष्ठजीका शरीरभी ढांक्या गया ॥ जब वसिष्ठजीनें भुजासाथ फुल दूर किये ॥ तब मुख दृष्ट आणे लागा॥ जेसें बादलोंके दूर भए चंद्रमा दृष्ट आता हे तेसें मुख भास्या ॥
तब वसिष्टजीनें कहा ॥ हे ऋषीस्वरों व्यास वामदेव विश्वामित्र नारद भृगु अत्रि ॥ इत्यादिकनें लेकरि जो बेठेथे तिन प्रति कहा ॥ हे साधो जो कछु में बचन कहे हे सिधांतके ॥ इन
तें घट अथवा बढ होवे सो तुम अब कहो ॥ जेसा जेसा स्वर्ण होता हे तेसी तेसी अग्नि बिच दिखाइ देता हे ॥ तेसें तुम कहो ॥ तब सबने कहा हे मुनीश्वर इह तुम परम सार बचन क
हें हे ॥ जो जो तुमारे बचनोंकों घट बढ जाणिकरि तिनकि निंदा करेगा ॥ सो महापतित होवेगा ॥ इह बचन परम पद पावणेका कारण हे ॥ हे मुनीश्वर हमारे अंतरभी जो कछु ज
न्म जन्मांतरकि मल थी सो नष्ट भइ हे ॥ हम तो पूर्ण ज्ञानवान थे ॥ परंतु पूर्व जन्म जो धारे हे ॥ तिनकि स्मृति हमारे चित्त विषेथी जो अमका जन्म हम इस इस प्रकार पाया था ॥
अरु अमका जन्म इस प्रकार पाया था ॥ सो सर्व स्मृति अब नष्ट भइ हे ॥ जेसें स्वर्ण अग्नि विषे डार्या सुद्ध होता हे ॥ तेसें तुमारे बचनों करि स्मृतिरूप मल हमारा नष्ट भया हे ॥ अ
ब हम जाण भए हे ॥ जो न कोउ जनम था न हम कोउ जनम पाया हे ॥ हम अपणेही आपविषे स्थित हे ॥ हे मुनीश्वर तुम केसे हो जो संपूरण विश्वके गुरु हो अरु ज्ञान अव
तार हों ॥ ऐसें तुमकों हमारा नमस्कार हे ॥ राजा दशरथभी धन्य हे ॥ जिसके संयोग करि हम मोक्ष उपाय श्रवण कीया हे ॥ अरु इह रामजी विष्णु भगवान हे ॥ वाल्मीकोवा
च ॥ इसी प्रकार ऋषीश्वर मुनीश्वर वसिष्ठजीकों परम गुरुजाणि करि स्तुति करणे लागे ॥ अरु रामजीकों विष्णु भगवान जाणिकरि स्तुति करने लागे ॥ अरु राजा दशरथकि स्तुति क
रत भए ॥ जिसके ग्रहविषे विष्णु भगवाननें अवतार लीया हे ॥ स्तुति करकें वसिष्ठजीकों अर्घ्य पाद करि पूजने लागे ॥ बहुरी आकाशके सिद्ध बोले ॥ हे वसिष्ठजी तुमकों हमारा नम
स्कार हे ॥ तुम गुरुकेभी गुरु हो ॥ हे प्रभो जो कछु तुमनें उपदेश कीया हे ॥ अरु जो कछु तिसविषे जुक्ति कहीयां हे ॥ ऐसे वचन वागेश्वरी जो हे सरस्वती सोभी कहे अथवा न क
हे ॥ तुमकों वारंवार नमस्कार हे ॥ अरु राजा दशरथ चतुर द्वीप पृथ्वीका राजा तिसकोंभी नमस्कार हे ॥ जिसके प्रसंगकरि हम ज्ञान अरु जुक्तां श्रवण कीयां हे ॥ अरु इह रामजी वि
ष्णु भगवान नारायण हे ॥ चारों आत्मा हे इनकों हमारा प्रणाम हे ॥ इह जो चारों भाइ हे सो इश्वर देवता हे ॥ विष्णु भगवान जाकें उपर कृपा करता हे ॥ राजकुमार जीवनमुक्त
अवस्थाकों धारिकरि बेठे हे ॥ अरु वसिष्ठजी परम गुरु हे ॥ अरु विश्वामित्र तपकी मूर्ति हे ॥ वाल्मीकोवाच ॥ इस प्रकार जब सिद्ध कहि रहे ॥ तब फूलकि वर्षा करने लागे ॥ जे
सें हिमालय पर्वत पर बरफकी वर्षा होती हे अरु बरफकरि पूर्ण होजाता हे ॥ तेसें वसिष्ठजी पुष्पकरि पूर्नभए ॥ आकाशचारि जो ब्रह्मलोकके वासि थे तिननेंभी पुष्पकी वर्षा करि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अवर जो सभाविषे बैठे थे तिननैंभी पूजन कीया ॥ अरु अवर जो ब्रह्मर्षि बैठे थे सभाविषेतिनकाभी जथा जोग पूजन कीया॥इस प्रकार जब सिद्ध पूजन करि चूके तब केइ ध्यान निष्ट हो रहे ॥ सबके चित्त सरत कालके आकाशवत निर्मल होगए ॥ अपणे सुभावविषे स्थित भये ॥ जेसें सुपनेकी सृष्टिका कौतक देखिकरि कोउ जागि उठे अरु हसे तेसें उह हसणे लागे ॥ तब वसिष्ठजी रामजीकों कहत भए ॥ हे रघुवंसी कुलरूपी आकाशके चंद्रमा तूं अब किस दशाविषे स्थित हे ॥ अरु क्या जाणता हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन सर्व धर्मज्ञानके समुद्र तुमारी कृपातें में अब अपणे आपविषे स्थित हों अरु कोउ कल्पना नही रही परम शांतिवान भया हों ॥ मुझकों शेषविसेष कोउ नहि भासता ॥ केवल अपणा आपही पूर्न भासता हे॥ अब मुझकों संसा कोउ नही रहा ॥ अरु इछाभी कछु नही रही ॥ में परम निर्विकल्प पद पाया हों ॥ कोउ कल्पना मुझकों नही फूरती जेसें नील पीतादिक उपाधितें रहित स्फटिक प्रकाशती हे तेसें में निरुपाधि स्थित हों ॥ संकल्प विकल्प उपाधिका अभाव हो गया हे ॥ परम सुधताकों प्राप्त भया हों ॥ चित्त मेरा शांत हो गया हे ॥ चेष्टा मेरी पूर्ववत होवेगी अरु निश्चेविषे कछु न फुरेगा ॥ जेसें सिलाविषे प्राण नही फुरतें मुझकों द्वैत कल्पना कछु नही फुरती ॥ हे मुनीश्वर अब मुझकों सब आकाशरूप भासता हे ॥ में शांतरूप होकरि परम निर्वाण हों ॥ भिन्न भाव जगत मुझकों कछु नही भासता सर्व अपणा आपही भासता हे अब जो कछु तुम कहो सोइ करों ॥ अब मुझकों सोक कोउ नही रहा॥जेसा राज करणा भोजन, छांदन, बेठणा, चलणा, पान करणा, जेसें तुम कहहू तेसेंही करों॥तुमारे प्रसाद करि मुझकों सर्व समान हे ॥ इ० यो० नि० विश्रामप्रकटीकरणंनामद्विशताधिकैकोनाशीतितमःसर्गः ॥२७९॥

॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे भारद्वाज जब अेसें रामजीनें कहा तब वसिष्ठजी कहत भए ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी बडा कल्याण हूआ जो अपणे आपविषे स्थित भया अब तुझनें जथार्थ जाण्या हे ॥ अब जो कछु सुनणेकी इच्छा हे सो कहों ॥ रामोवाच ॥ हे संसेरूपी अंधकारके नाश कर्ता सूर्य अरु संसेरूपी वृक्षोंके नाश कर्ता कुठार ॥ अब तुमारे प्रसाद करकें में परमविश्रांतिकों प्राप्त भयाहों ॥ अरु जाग्रत् सुपन सुषुप्तिकी कलनातें रहित हों ॥ जाग्रत् जगतभी मुझकों सुषुप्तिवत् भासता हे श्रवण करनेकी इछाभी नही रही ॥ अब परम ध्यान मुझकों प्राप्त भया हे अर्थ इह जो आत्मतें इतर कछु वस्तू नही भासती ॥ में आत्माहों अज अविनासी हों ॥ सांत रूपहों अनंत हों ॥ सदा अपणे आपविषे स्थित हों ॥ अेसें मुझकों मेरा नमस्कार हे ॥ प्रले कालका हवन चले अरु समुद्र उछले इत्यादिक अवर क्षोभ होवे तोभी मेरा चित्त स्वरूपतें चलायमान न होवेगा ॥ अरु जो त्रिलोकीका राज मुझकों प्राप्त होवे तो मेरे चित्तविषे हर्ष न उपजेगा ॥ में सत्तासमानविषे स्थित हों ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे भारद्वाज जब इस प्रकार रामजीनें कहा तब मध्यानका सूर्य सिर उपर उदे भया ॥ राजा जो बेठेथे रत्नमणीके भूषण करि भूषित तिन मणांकि कांति किरणांकरी अति विशेष हुइ ॥ सूर्य साथही एक होगइ मानों अेसें वचन सुणिकरि नृत्य करती हे ॥ तब वसिष्ठजीनें कहा हे रामजी अब हम गमन करते हे मध्यानकि उपासनाका समा हे जो कछु तुझे पूछणा होंवै सो बहुरी काल पूछणा ॥ तब राजा दशरथ उठी खडा हुआ ॥ पुत्र सहित वसिष्ठजीका बहुत पूजन कीया ॥ अवर जो ऋषीश्वर मुनीश्वर ब्राह्मण थे तिनकों जथाजोग पूजन कीया ॥ मोती हिराकी माला अरु मुहरा रूपीये घोडे गउ वस्त्र भूषण इनतें आदि लेकरी जो ऐश्वर्यकी सामग्री हे तिसकरि जथाजोग पूजन कीया ॥ जो विरक्त संन्यासी थे तिनकों प्रणामकरी प्रसन्न कीये ॥ अवर जो राजर्षि थे तिनकोंभी पूजन कीया ॥ तब वसिष्ठजी उठी खडे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुए ॥ परस्पर नमस्कार किया ॥ मध्यानके नौबत नगारे बाजणे लागे सब श्रोता उठकरि अपणे आप साथ विचरणे लागे चले जावे ॥ अरु सीस हिलावे हाथकी अंगुली हिलावे ॥ नेत्रकी भावा हिलावे परस्पर चर्चा करते जावे सब अपणे स्थानोंकों गए ॥ वसिष्ठजी संध्या उपासना करणे लागे अरु जेते श्रोता थे सो विचार पूर्वक रात्रकों वितीत करत भए सूर्यकी किरण साथ बहुरी आए ॥ गगन चारी सप्तलोकके रहने वाले ऋषि देवता आए ॥ सर्व श्रोता भूमिवासी राजर्षि ब्रह्मर्षि अवर जो श्रोता थे सो सब आयकरि अपणे स्थानपर बेठि गए ॥ परस्पर नमस्कार किया तब रामजी हाथ जोडिकरी उठि खडा हूआ अरु कहा ॥ हे भगवन् अब जो कछु मुझकों श्रवन करणा अरु जानणा रहता हे सो तुमही कृपा करके कहो ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जो कछु सुनणेजोग था सो तुझनें सुण्या हे अब तूं कृतकृत भया हे जो कछु रघुवंसीका कुल हे सो सबही तुझनें तारा हे अरु जो आगें हुए हे अरु जो अब हे अरु जो आगें होवेगें सो सब तुझनें कृतकृत कीये हे ॥ अब तूं परम पदकों प्राप्त भया हे अवर जो कछु तुझकों पूछेकी इछा हे सो पूछले ॥ अरु हे रामजी जो सत्ता समानविषेस्थित भया हे तो विश्वामित्रके साथ जाय करि इसका कार्य करु अरु कछु पूछणेकी इछा हे सो पूछले ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन आगें जो में आपकों देखता था ॥ सो इस देह संयुक्त प्रछन्नरूप देखता था ॥ अरु अब आपकों देखता हों ॥ जो आपतें इतर मुझकों कछु नहि भासता ॥ सब अपणा आपही भासता ॥ ॥ हे मुनीश्वर अब इस शरीर साथभी मुझकों प्रयोजन कछु नही रहा ॥ जेसें फुलसों सुगंध ले करि पवन चला जाता हे अपणे स्थानकों अरु फूलसाथ तिसका प्रयोजन नही रहता तेसें इस देहविषे जो कछु सार था सो में पाय करि अपणे आपविषे स्थित हों ॥ शरीर साथभी मुझकों प्रयोजन नही रहा ॥ अब राज भोगणे करी कछु सुख दुख नही ॥ इंद्रीयके इष्ट अनिष्टविषे मुझकों हर्ष सोक कोउ नही ॥ में अब सर्वतें उत्तम पदकों प्राप्त भया हों ॥ सर्व कलनातें रहित हों ॥ अविनासी अव्यक्तरूप सर्वतें निरंतर सदा अपणे आपविषे स्थित हों ॥ निराकार निर्विकार हों जो कछु पावणें जागे था सो पाया हे ॥ जो कछु सुनणें जोग था सो सुण्या हे ॥ जो कछु तुमारे कहणा था सो कहा हे ॥ अब तुमारी वाणी सफल भइ हे ॥ जेसें कोउ रोगीकों औषध देता हे तिस औषध साथ उसका रोग जाता हे ॥ अरु उसका कल्याण होता हे तेसें तुमारी वाणी करि मेरा संसेरूप रोग गया हे ॥ अरु अपणे आपकरि तृप्त भया हों ॥ अब में निःसंक होकरि अपणे आपविषे स्थित हों ॥ इतिश्रीयोगवासिष्ठेनिर्वानप्रकरणेनिर्वाणवर्ननंनामद्विशताधिकाशीतितमःसर्गः ॥ २८० ॥ ॥ ७ ॥

वसिष्ठोवाच ॥ हे महाबाहो रामजी तुं मेरे परम बचन सुण ॥ दृढ अभ्यासके निमित्त कहताहों ॥ जेसें आदर्शकों ज्योंज्यों मार्जन करताहे त्योंत्यों उज्वल होताहे तेसें वारंवार श्रवण करि अभ्यास दृढ होताहे ॥ अरु जेता कछु जगत भासताहे ॥ सो सब चिदानंद स्वरूप हे ॥ भासतीभी सोई वस्तु हे जो आगें भानरूप होतीहे सो भानरूप चैतन हे ॥ तातें जो पदार्थ भासते हे सो सब चैतनरूप हे ॥ अरु जो भिनभिन पदार्थ भासते हे सो द्वैतकी कल्पनातें भासतेहे ॥ वास्तवतें भानरूप चैतन हे जेसें जो उच्चार करताहे सो सब शब्द हे ॥ सब्दरूप एक हे अरु अर्थकरी भिनभिन भासतेहे जब अर्थकी कल्पना त्याग दीजें तब यही शब्द हे ॥ अरु जो अर्थ करीये इह जलहे इह पृथ्वी हे इह अग्नि हे ॥ इनतें आदि लेकरि अनेक शब्द अरु अर्थ होतेहे ॥ अर्थतें रहित शब्द एकही हे तेसें इह सब चैतन हे ॥ चित्तकि कल्पना करि भिन भिन पदार्थ भासतेहे अवर वस्तु कछु नही ॥ अवर भासता हे सो तिसीका आ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भास हे ॥ हे रामजी आभासभी अधिष्टानसत्ता भासती हे ॥ परंतु ज्ञानविषे भेद होताहे ॥ सो ज्ञानविषेभी भेद नही वृत्तिविषे भेद हे ॥ जिसविषे अर्थ भासते हे अरु ज्ञानरूप अनुभवसत्ता हे तिसविषे जेसें अर्थकी वृत्ति आभास होतीहे तिसकों जाणीताहे जेसें जेवरी एक पडी होतीहे तिसविषे सर्पका अर्थ वृत्ति न ग्रहण करेतो सर्प तो कछु नही ॥ उह जेवरीही हे तेसें अर्थ भेद ग्रहण करीयें नही तो ज्ञानही हे ॥ जेते कछु पदार्थ भासते हे सो सब ज्ञानरूपही हे अवर कछु बण्या नही ॥ हे रामजी सुपनेके दृष्टांत में तुझकों जतावणेके निमित्त कहेहे ॥ वास्तवतें सुपनाभी कोउ नही ॥ अद्वैत सत्ता अपणे आपविषे स्थितहें ॥ जेसें समुद्र सदा जलरूप हे द्रवता कर्के तरंग बुदबुदे भासतेहे सो नानारूप नही अरु नाना हो भासताहे ॥ तेसें सर्व जगत अनानारूप हे अरु नाना हो भासताहे ॥ तूं अपनें सुपनेकी स्मृतिकों विचारि देख ॥ जो तेरा अनुभवही नाना प्रकार होभासताहे ॥ परंतु कछु हूआ नही ॥ तेसें इह जाग्रत जगतभि तेरा अपणा आपहे अवर दुसरा कछु नही ॥ सदा निराकार निर्विकार आकासरूप आत्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन जो अद्वैत सत्ता निराकार निर्विकार सदा अपणे आपविषे स्थित हे तो पृथ्वी कहांतें उपजी हे ? जल केसें उपजा हे ? अग्नि, वायु, आकाश, पुन्य, पाप इत्यादिक कल्पना चिदाकाशविषे केसें उपजे हे ? मेरे दृढ बोधके निमित्त कहहू ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी इह तुं कह जो सुपनेविषे पृथ्वी उपजी जो होतीहे सो कहांतें उपजी हे अरु जल वायु अग्नि आकाश पाप पुन्य कहांतें उपजे हे देश काल पदार्थ कहांतें उपजे हे ? ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर सुपनेविषे जो पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश देश काल पदार्थ भासतेहे सो सब आत्मरूप होतेहे ॥ आत्मसत्ता ही ज्योंकी त्यों होतीहे सो तत्ववेताकों ज्योंकी त्यों भासतीहे अरु जो असम्यक दर्शीहे तिनकों भिन्न भिन्न पदार्थ भासते हे ॥ भासणा तुमकों तुल्य होताहे परंतु जिसकी वृत्ति जथाभूत अर्थकों ग्रहण करतिहे तिसकों ज्योंकी त्यों आत्मसत्ता भासतीहे ॥ अरु जिसकी वृत्ति जथाभूत अर्थकों ग्रहण नही करती ॥ तिसकों उही वस्तु अवररूप हो भासतीहे ॥ हे मुनीश्वर अवर जगत कछु बण्या नही ॥ उही आत्मसत्ता स्थितहे जब कठोररूपकी संवेदन फुरती हे तब पृथ्वी पहाडरूप हो भासती हे ॥ अरु द्रवताका स्पंद फुरता हे तब जलरूप हो भासता हे ॥ अरु उष्णरूपकि संवेदन फुरतीहे तब अग्नि भासती हे इसी प्रकार वायु आकाशादिक पदार्थ जेसें फुरना होताहे तेसें हो भासता हे ॥ जेसें जल तरंगरूप होभासता हे परंतु जलतें इतर कछु नही ॥ जलही रूप हे तेसें आत्मसत्ता जगत रूप हो भासती हे उही रूप हे ॥ अवर जगत कछु वस्तु नही ॥ इह गुणक्रिया सब आकाशविषे हे वास्तव कछु नही ॥ काहेतें जो कारणतें रहितहे सब असतरूप हे ॥ अहंत्वंतें आदिक ले करी जेता कछु जगत भासता हे सो सब आकाशरूप हे ॥ कछु बण्या नही अपणे आपविषे आत्मसत्ता स्थित हे ॥ न कोउ आधार हे ॥ अद्वैत सत्ता सदा अपणे आपविषे स्थित हे ॥ अरु नानारूप हो भासती हे ॥ जब चित्त संवेदन फुरती हे तब पृथ्वी जल बायु आकाश पदार्थ देश काल हो भासता हे ॥ कहुं सर्व आत्माका ज्ञान फुरता हे ॥ कहां परिछिन्नता भासती हे ॥ परंतु वास्तवतें कछु बण्या नही उही वस्तु हे ॥ जेसा तिसविषे फुरना फुरता हे तेसा हो भासता हे ॥ अनुभव सत्ता परम आकाशरूप हे ॥ जिसविषे आकाशभी आकाशरूप हे ॥

॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे चिदाकाश जगत एकताप्रतिपादनं नाम द्विशताधिकैकाशीतितमः सर्गः ॥ २८१ ॥ ॥ ७ ॥

॥ रामोवाच ॥ हे भगवन इह प्रश्न हे ॥ जो जाग्रत अरु सुपनविषे कछु भेद नही अरु परम आकाशरूप हे तो तिस सत्ताकों जाग्रत अरु सुपन शरीर साथ केसें संयोग हे उह तो निर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वयव निराकार हे ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जेते कछु आकार तुझकों भासते हे सो सब आकाशरूप हे ॥ आकाशविषे आकाश स्थित हे ॥ सर्गके आदि आकारका अभाव था सो अबहि जाण जो उपजा कोउ नही ॥ परम आकाश सत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जब तिस अद्वैत सत्ता चिन्मात्रविषे चित्त किंचन होताहे ॥ तब उही सत्ता आकारकी न्यांइ भासती हे ॥ परंतु कछु हुआ नही ॥ आकाशही रूप हे जैसें सुपनेविषे शरीरोंका अनुभव करता हे सो कछु आकार तो नही होते आकाशरूप होते हे तैसें इह जगतभी निराकार हे ॥ परंतु फुरणेकरी आकार हो भासती हे ॥ जिन. तत्वतें शरीर होता हे सो तत्वही उपजे नही तो शरीरकी उत्पत्ति केसें कहों ॥ हे रामजी अवर जगत कछु उपजा नही ॥ ब्रह्मही किंचन करि जगतरूप हो भासता हे ॥ जेसें जल अरु द्रवताविषे भेद नही जेसें आकाश अरु शून्यताविषे भेद नही॥तेसें ब्रह्म अरु जगतविषे भेद नही ॥ संवेदन कर्के अर्थ संकेत हे॥ जब संवेदना न फुरे तब अर्थ संकेत न होवे ॥ भिन्न भिन्न वस्तुतें एकही सत्ताके नाम हे ॥ भिन्न नाम तब भासते हे जब वेदना फुरती हे नही तो शब्द जल रवके तुल हे वस्तुतें भेद नही ॥ जेसें वायु अरु स्पंदविषे भेद नही परंतु स्पंदरूप होभासती हे निस्पंद नही भासती परंतु दोनों रूप वायुके हे ॥ तेसें स्पंदकरी ब्रह्मविषे किंचन जगत भासता हे ॥ जब संवेदन नही फुरती तब जगत नही भासता ॥ परंतु दोनोंरूप ब्रह्मही हे ॥ ब्रह्म अरु जगतविषे भेद कछु नही ॥ जेसें एक निद्राके दोरूप होते हे ॥ एक सुपन अरु दूसरी सुषुप्ति ॥ परंतु दोनों एकनिद्राके पर्याय हे तेसें जगतका होणा अरु न भासणा एक ब्रह्मकी दोनों संग्या हे ॥ कोउ ब्रह्म कहो कोउ जगत कहो ब्रह्म अरु जगतविषे भेद कछु नही॥ब्रह्मही जगतरूप होभासता हे ॥ जेसें निर्मल अनुभवसों सुपनविषे सिला भासि आती हे ॥ सो सिला तो कछु सुपनेविषे उपजी नही ॥ अपणा अनुभवहि सिलारूप होभासता हे ॥ तेसें जेते कछु आकार अब भासते हे सो सब आकाशरूप हे ॥ आत्मसत्ताही आकाशरूप जगत होभासती हे ॥ अवर जगत कछु उपजा नही होता ॥ न सत हे न असत हे न आता हे न जाता हे ॥ केवल आत्मसत्ता अपने आपविषे स्थित हे ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर आगें तुम मुझकों अनेक सृष्टि कही हे ॥ केइ जलविषे केइ अग्निविषे केइ पृथ्वीविषे केइ वायुविषे आकाशविषे पथरविषे ॥ केइ आकाशविषे पंछीवत् उडतीयां फिरतीयां हे ॥ इत्यादिक नाना प्रकारकी सृष्टि तुमनें कहीहे अब इह प्रश्न हे जो हमारि सृष्टि किसतें उत्पत्ति भइ हे ?॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी प्रश्न उही करता हे जो अपूर्व होताहे ॥ जो आगें देख्या अरु सुण्या न होवे अरु जगत करी जाण्याभी न होवे ॥ इस जगतकी उत्पत्ति वेद पुराण कहते हे ॥ अरु लोकविषेभी प्रसिद्ध हे जो ब्रह्म कर्के हुइ हे ॥ अरु वस्तुतें चिदाकाशरूप हे कछु उपजी नही ॥ इह दोनों प्रकार में तेरे तांइ कहे हे तिनकों तूं जाणिकरीभी प्रश्न करता हे सो तेरा प्रश्नही नही बणता ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर इह सृष्टि कितनीकहे अरु कहां लग चली जाती हे अरु केते काल पर्यंत रहेगी? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जेती कछु सृष्टि तूं जाणता हे सो सृष्टि कोउ नही ॥ ब्रह्मही ब्रह्मविषे स्थित हे अरु सृष्टि बद्धत हे ॥ परंतु वस्तुतें कछु हुइ नही ॥ आदि अंत मध्यतें रहित हे सो ब्रह्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ अरु इह जेती कछु सृष्टि हे सो आभासमात्र हे ॥ ब्रह्म जो आदि अंत मधतें रहित हे ॥ तिसका आभासभी तेसाही हे ॥ जेता वृछ होताहे तेतीही छाया होतीहे ॥ तेसें ब्रह्मका आभास सृष्टि हे अरु वास्तवतें पूछे तो आभासभी कोउ नही ॥ ब्रह्मही अपणे आपविषे स्थित हे ॥ उही जगतरूप आपकों देखता हे ॥ ब्रह्मतें इतर कछु नही जेसें सुपनपुरविषे पर्वत नदी आयुध नाना प्रकारके व्यवहारके रूप धारिकरी आत्मसत्ता स्थित हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीहे सो कछु बण्या नही ॥ जेसें संकल्प नगर भासता हे तेसें इह जगतभी जाण ॥ अवर कछु बण्या नही आत्मसैत्ता जगत रूपं होभासती हे ॥ जो जगत किसी कारण करि उपजा हो ता तो सत होता ॥ इसका कारण कोउ नही पाइता तातें असत हे ॥ न कोउ निमित्त कारण पाइता हे न समवाय कारण पाइता हे ॥ हे रामजी जो कारणतें उपजा न होवे अरु भासे तिसकों आकाशमात्र जाण सुपनपुरवत् ॥ अरु जिसविषे आभास भासती हे सो अधिष्ठान सत्ता हे जेसें जेवरीविषे सर्प भासता हे ॥ सो सर्प कछु नही ॥ जेवरीही सति होती हे ॥ तेसें जगत अधिष्ठान ब्रह्मसत्ता हे सोइ सत हे ॥ शुद्ध निर्दुःख हे अच्युत हे विज्ञान हे ॥ सदा अपणे आपविषे स्थित हे ॥ उही सत्ता जगतरूप हो भासती हे ॥ जेसें जलही तरंगरूप हो भासता हे ॥ तेसें ब्रह्मही जगतरूप होभासता हे ॥ हे रामजी इह जगत ब्रह्मका रिदा हे ॥ अर्थ इह जो अपणा सुभाव हे ब्रह्मतें इतर कछु नही ॥ ज्ञानीकों सर्वदा अेसेंही भासता हे जेसें सुपनेंतें जागे सब अपणा आपही भासता हे ॥ तेसें इह जगत अपणा आप हे ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे जगदा भाववर्नन नाम द्विशताधिकद्यशीतितमःसर्गः ॥ २८२ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इस जगतका कारण कोउ नही ॥ जो जगतही नही तो कारण केसें होवे ॥ अरु कारण नही तो जगत केसें होवे तातें सर्व ब्रह्मही हे ॥ इस उपर एक उपाख्यान हे सो सुण ॥हे रामजी कुस द्वीपविषे पूर्व अरु पछम दिसाके मधविषे जो अैलवती नगरी हे ॥ सो केसी नगरी हे स्वर्नकी अरु महा उज्वलरूप हे ॥ तिसविषे बडे थंभ उर्धकों गएहे ॥ मानों पृथ्वी अरु आकासकों इननें ही पूर्न कीया हे ॥ अेसें उहां स्वर्नके थंभ थे तिस नगरीका एक प्रगपती राजा हे ॥ एक कालमें आकाशतें सीघ्र बेग करी उसके गृहविषे में आया ॥ उसने भली प्रकार अर्घ पाद साथ प्रीति करी मेरा पूजन कीया अरु सिंघासन उपर बेठाया ॥ बेठाय करी उसनें मुझसों महा प्रश्न कीया जिन प्रश्नतें उप्रांत कोउ प्रश्न नही ॥ राजोवाच ॥ हे भगवन संसेरूपी तमके नाश कर्ता तुम सूर्य हो मुझकों संसाहे सो दूर करहू ॥हे मुनीस्वर जब महा प्रले होतीहे तब कार्य कारण सर्व शब्दकी कल्पना अभाव हो जातीहे तिसके पाछें महा आकाश सत्ता सेष रहतीहे तिसविषे वाणीकी गम नही अवाच पद हे तिसतें बहुरी सृष्टि केसें उत्पत्ति होतीहे उहां उपादान कारण अरु निमित्त कारण तो कोउ न था ॥ सृष्टि केसें हुइ ॥ श्रुति अरु पुराण करी सुणता हे ॥ जो महा प्रलेसों बहुरी सृष्टि उत्पत्ति भइ हे अरु दूसरा प्रश्न यह हे जंबुद्वीपविषे कोउ मृतक भया ॥ अथवा कहुं अवर ठउर गया हुआ मृतक भया तो उसका उह सरीर तो उहां भस्म हो गया ॥ अरु परलोकविषे पुन्य पापका फल दुःख भोगता हे जिस शरीर करी भोगता हे तिस शरीरका कारण कोउ नही ॥ जो तुम कहो पुन्य अरु पाप शरीरका कारण हे तो पुन्य पाप आपही निराकार हे ॥ तिनतें साररूप शरीर केसें उपजे ॥ अरु जो तुम कहो परलोक कोउ नही ॥ पुन्य पापभी कोउ नही ॥ तो श्रुति अरु पुराणके बचनों साथ विरोध होताहे ॥ सबही वर्णन करते हे जो मरी करी परलोक जाताहे ॥ जेसें कर्म कीये हे तेसें भोगता हे अरु जिस शरीर साथ भोगता हे तिसका कारण कोउ नही ॥न कोउ पिता हे न माता हे ॥सो शरीर केसें उत्पत्ति भया ॥ अरु तिसरा प्रश्न यह हे जो इह परलोकविषे जाता हे ॥ इसके निमित्त दान पुन्य करते हे ॥ उनका फल इसकों केसें प्राप्त होताहे ॥ अरु चतुर्थ प्रश्न यह जो महा प्रलेतें ब्रह्मा उत्पत्ति भया हे उसका नाम स्वयंभू केसें हुआ हे ॥ जो महा प्रलेतें न उपजा होवे अरु अपणा आपहितें उपजा होवे ॥ इस कारणतें स्वयंभू कहाता हे ॥ अरु महा प्रलेविषे सेष अद्वैत रहा था ॥ तिसतें उत्पत्ति भया हे तोभी स्वयंभू केसें कहीये ॥ जो कहो स्वयंभू अपणे आपतें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपजता हे तो अपणा आप आत्मा हे ॥ सो सबका अपणा आप हे अब क्यों नही ॥ तिसतें स्वयंभू ब्रह्मा उत्पत्ति होता अरु पंचम प्रश्न यह हे जो एक पुरुष था तिसका एक मित्र था एक शत्रु था तिन दोनोंनें प्रागविषे जाइ करी करवत लीया ॥ जो इसका मित्र था तिसनें वांछा करी जो मेरा मित्र चिरकाल जीवता रहे ॥ चिरंजीव होवे ॥ दूसरे यह संकल्प धारा जो मेरा शत्रु इसी कालविषे मरी जावे ॥ हे मुनीस्वर एकही कालविषे दो अवस्था केसें होवेंगीया अरु षष्टम प्रश्न यह हे जो सहस्र ही मनुष ध्यान लगाइ बेठे हे ॥ हम इसी आका शके चंद्रमा होवे सो एकही आकाशविषे सहस्र चंद्रमा केसें होवेगे ॥ अरु सप्तम प्रश्न यह हे जो सहस्र पुरुष ध्यान लगाय बेठे हे ॥ एक सुंदर स्त्री वेठीथी तिसके निमित्त जो हमारें तांइ प्राप्त होवे ॥ सब तिसको वांछा करते हे हम भरता होवे ॥ अरु एकका निश्चा यही हे अरु उह स्त्री पतिव्रता हे ॥ तिसके सहस्र भर्ता एक कालविषे केसें होवेगे ॥अरु अष्टम प्रश्न यह हे जो एक पुरुष था तिसकों किसिनें वर दीया जो तुं जाय करी मृतक होय सप्तद्वीपका राज करु ॥ अवर किसिनें श्राप दीया जो तेरा जीव अपणे ही गृहविषे रहेगा ॥ मृतक हो य बाहिर न जावेगा ॥ इह दोनों एकही कालविषे केसें होवेगे ॥ अरु नवम प्रश्न यह हे जो एक काष्टका थंभा था तिसकों एकनें कहा स्वर्नका हो जावेगा उह स्वर्नका हो गया ॥ सो स्वर्न केसें उत्पत्ति भया तिसका कारण कोउ न था ॥ कारण विना कार्य केसें उत्पन्न भया ?॥ जेसा अंनका बीज बोता हे तेसाही अंन कार्य उत्पत्ति होताहे अवर नही उगता तो का ष्टतें स्वर्न केसें उत्पत्ति भया ॥ अरु जो कहों संकल्प करी उपजा तो हमभी संकल्प करते हे अमका कार्य अेसे होवे उह क्यों नही होता तातें जाणता हे जो संकल्पतेंभी उत्पत्ति नही होता ॥ हे मुनीस्वर जिस प्रकार इह वृत्तांत हे सो कहो ॥ अरु एक कहते हे जो आगें असतही था तो असततें जगतकी उत्पत्ति केसें भइ इह मुझकों संसा हे ॥ तिसकों दूर करहू जो कोउ संतके निकट आनि प्राप्त होताहे सो निष्फल नही जाता तातें कृपा करके कहो ॥ इतिश्री योगवासिष्टे निर्वाण प्रकरणे प्रश्नवर्नंनं नाम द्विशताधिकत्र्यशीतितमः सर्गः ॥ २८३ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी जब इस प्रकार उसनें मुझकों संसयका समूह कहा ॥ तब में उसकों कहत भया ॥ के हे राजन जेते कछु तुझकों संसे हे सो में सब दूर करूंगा जेसें संपूर्न अंधकारकों सूर्य नाश करता हे ॥ तेसें में संसे नाश करोंगा ॥ हे राजन जेता कछु जगत तुझकों भासता हे सो सब ब्रह्मरूप हे ॥ सदा अपणे आपविषेस्थित हे ॥ जब तिसविषे चित्त अैसें फुरता हे तब उही चित्त संवेदन जगतरूप होभासता हे ॥ तातें जो कछु आकार भासते हे सो सब चिन्मात्ररूप हे न कोउ कार्य न कारण हे ॥ अरु जो तूं प्रत्यक्ष प्रमाण करि संसा करे जो सब चिन्मात्ररूप हे तब जो इह शरीर मृतक होजाता हे तब चेतता क्यों नही ॥ चाहीये जो तिस कालमेंभी इसविषे जानणा होवे तो हे राजन जब जाग्रतका अंत होता हे ॥ अरु सुपना आया नही तब सुद्ध चिन्मात्र रहता हे ॥ जब तिसविषे सुपन सृष्टि भासि आतीहे ॥ तिस सृष्टिविषे केइ चैतन भासते हे॥ केइ मृतक केइ जड भासतेहे ॥ स्थावर जंगम नाना प्रकारकी सृष्टि भासतीहे ॥ परंतु अवर तो कछु नही ॥ उही चिन्मात्र स्वरूपहे॥ उही अनुभवरूप होभासती हे॥ कहूं चैतनवोलते चलते भासतेहे ॥ परंतु उही हे जो चैतनता न होती तो भासते केसें ॥ जातें भासते हे तातें सब चैतन हे तेसें इस जगतविषे कहूं बोलते चलते भासते हे ॥ कहूं सब भासते हे ॥ परंतु उही चिन्मात्रसत्ता हे जेसा जेसा संकल्प तिस विषे फुरता हे ॥ तेसा तेसा हो भासता हे ॥ हे राजन जेसें प्रथम प्रलयतें सृष्टि उत्पत्ति भइथी ॥ तेसें उत्पत्ति होती हे ॥ इह सृष्टि किसीका कार्य नही ॥ अरु किसिका कारनभी नही वि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ना कारन उपजा भासता हे ॥ हे राजन जो महाप्रलैविषे शेष रहता था सो चिन्मात्र हे ॥ तिस चिन्मात्र सत्तासों जो प्रथम सुद्ध संवेदन फुरी हे ॥ सो ब्रह्मा विराट रूप होकरि स्थित भई ॥ तिसनें जगत कल्पना करी हे तिसविषे नेति रची हे ॥ जो इह पदार्थ इस प्रकार हे तेसें चित संवेदनविषे दृढ होकरी भास्या हे तिसका नाम जगत हे ॥ उही आत्मसत्ता किंच नरूप होकरि जगतरूप भासती हे ॥ हे राजन जेसें तेरे संकल्पकी आदि अरु सुपन सृष्टिकी आदि सुद्ध आत्मसत्ता थी उही फुरनें करकें पदार्थरूप होभासती हे तेसें इह जाण ॥ वर न कोउ कार्य हे न कोउ कारण हे जेसें सुपन सृष्टि अकारण होती हे तेसें इह जगत अकारण हे ॥ जो आदि अंतके विचारतें रहित हे ॥ अरु वर्तमान प्रत्यछ प्रमाणकों मानते हे ॥ तिन कों कार्य कारण प्रत्यछ भासते हे ॥ तिनके बचनभी निरर्थक हे ॥ जेसें अंधेकूपके दर्दूर सब्द करते हे तेसें उहभी निरर्थक प्रत्यछ प्रमाण करि कार्य कारणके वाद करते हे ॥ तिनकों हमारे बचन सुनणेका अधिकार नही ॥ अरु हमकोंभी तिनकें बचन सुनणे योग नही ॥ हे राजन जिस शास्त्रके श्रवणकरि अरु जिस गुरुके मिलणेकरि संपूर्ण संसे निवृत्त न होवे ॥ तिस शास्त्र अरु गुरुका कहणाभी अंधेकूपके दर्दूरवत व्यर्थ हे ॥ जो परमार्थ सत्तातें बिमुख हूए हे ॥ तिनकों इह भ्रम अपणे विषे भासता हे ॥ शरीरके मृतक हूए आपकों मरता जानते हे जो में मूआ हों ॥ बहुरी वासना अनुसार शरीर उपजता जीता हे तब मानताहे जो अब में उपजा हों ॥ बहुरी अपने पुन्य पाप कर्मका अनुभव करता हे ॥ जेसें सुपनेविषे अपणे सा थ शरीर देखता हे ॥ तेसें परलोकविषे अपणे साथ शरीर भासि आता हे ॥ तेसें इह शरीरभी भासि आया हे ॥ न कोउ इसका कारण हे न पंचभूतक हे ॥ न इसका शरीर हे न किसि कारणतें भूत उपजे हे ॥ अपणी कल्पना आकाररूप होकरि भासती हे ॥ अवर आकार कोउ नही ॥ केवल ब्रह्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जेसा संकल्प तिसविषे दृढ होता हे ॥ तेसा पदार्थ भासि आता हे ॥ हे राजन जो तूं इस जगतकों सत मानता हे तो सभ कछु सिद्ध होता हे ॥ शरीरभी हे ॥ परलोकभी हे नरक स्वर्गभी हे ॥ जेसा इह लोक हे तेसा परलो क हे ॥ जो इहलोक निश्चेविषे सत हे तो उह लोकभी सतही भासेगा ॥ जेसा कर्म करेगा तेसा फल भोगेगा ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे प्रश्नोत्तरवर्णनं नाम द्विशताधिकचतु राशीतितमः सर्गः ॥ २८४ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे राजन जेता कछु जगत तुझकों भासता हे सो सब संकल्पमात्र हे ॥ जेसें कोउ बालक अपणे मनविषे टछकों रचे तिसविषे फूल फल टास कल्पे सो संकल्पमात्र हे ॥ तेसें इह जगत संवेदनरूप ब्रह्मनें कल्पा हे ॥ तिसके मनविषे फुरता हे ॥ सो संकल्परूप हे ॥ जेसें उसनें संकल्प कीया हे तेसेंही स्थित हे ॥ जेसें तिसविषे कम रचा हे जो इस प्रकार इह पदार्थ होवेगा सो तेसेंही स्थित भया हे ॥ देश काल पदार्थ तेसेंही स्थित हे ॥ इसका नाम नेति हें ॥ हे राजन तुझने प्रश्नकीया जो पुरुष अरूप हे अरु दूर हे तिसके अर्थ किसीनें दीया तिसकों केसें पहुंचता हे ॥ अरु सरूप अरूपका केसें संयोग हे ॥ जो कोउ सुद्ध संवेदन पुरुष हे तिनकों सब पदार्थ निकट भासता हे अरु जो कोउ पुरुष मनोराज कलपता हे ॥ तिसविषे बडा देश रचे सो दुरतें दूर मार्ग हे ॥ तो जो उस देसके वासी हे ॥ तिनकों देशकि अपेछा करि दूसरा देश दूरतें दूर हे ॥ परंतु जिसका मनोराज हे तिसकों तो सब निकट हे ॥ अपणा आपहि रूप हे ॥ तिस प्रकार जो सुद्ध संवेदन रूप हे तिनके अर्थ जो कोउ देता हे ईश्वर अर्थ अथ वा देवताके अर्थ तिसकों निकटतें निकट सब अपणेविषे भासता हे ॥ आदि नेति इसी प्रकार हुइ हे ॥ जो सुद्ध संवेदनकों सब अपणे निकटतें निकटही भासे ॥ काहेतें जो सब संकल्प हे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जेसि रचना संकल्पविषे रचती हे तेसें होती हे ॥ संकल्पविषे क्या नही होता अरु थंभेका प्रश्न जो तुझने कीया हे काष्टका स्वर्न केसें होता हे सो सुण ॥ हे राजन आदि जो संवेदन रूप ब्रह्मा हे ॥ तिसनें अपणे मनोराजविषे नेती करी हे जो तपादिक कर्के इसका वर अरु सराप सिद्ध होता हे ॥ उसके कहेतें ॥ जो काष्टका थंभा स्वर्न होगया तो तूं विचार करि दे ख ॥ जो इस कारणतें काष्टका स्वर्न भया हे ॥ सो संकल्प मात्र हे ॥ जो संकल्पतें इतरभी कछु होता तो काष्टका स्वर्न न होता ॥ अरु इह सर्व विस्व संकल्परूप हे ॥ जेसा संकल्प दृढ होता हे ॥ तेसा हो भासता हे ॥ जेसें तूं अपणे मनोराजविषे संकल्प करे हे जो इह ऐसें रहे ॥ अरु जो इसतें अवर प्रकार करे तो अवर होजावे सो होता हे क्यों॥ तेसें वर अरु सरा पभी अवर प्रकार होजाते हे ॥ न अवर कोउ जगत हे न कार्य हे न कारण हे ॥ उही आत्मसत्ता ज्योंकीत्यों हे॥ जेसें संकल्प जिसविषे फुरता हे तेसें होभसता हे ॥ अरु तूं पूछता हे अ सततें बहुरी जगत केसें उत्पत्ति होता हे ॥ जो आपही न होवे तिसतें जगत केसें प्रगटे ॥ हे राजन असत इसीका नाम हे जो जगत असत था ॥ तिस श्रुतिनें असत कहा ॥ जो आदि असत था सो असतता जगतकी कही हे ॥ आत्मातो असत नही होता सबका शेषभूत आत्माहे जब तिसविषे संवेदन फुरती हे ॥ तब ब्रह्म अलक्षरूप होजाताहे॥ परंतु तिस संवेदनके फुरणे अरु मिटणेविषे ब्रह्म ज्योंकात्यों हे ॥ तिसका अभाव नही होता ॥ जेसें जलविषे तरंग उपजता हे बहुरी लीन होजाता हे ॥ परंतु तिसके उपजणे मिटणेविषे जल ज्योंकात्यों हें ॥ तरं ग तिसका आभास फुरते हे जेसें तूं मनो राज करि एक नगर कलप बहुरी संकल्प छांडि देवे तब संकल्परूप नगरका अभाव होजाता हे ॥ परंतु सदा अविनासी रहता हे ॥ जेसें सुपने की स्रष्टि उपजतीभी हे अरु लीनभी होजाती हे परंतु अधिष्टांन ज्योंकात्यों हे ॥ हे राजन जेसें रत्नका प्रकाश किरण उठती हे ॥ अरु लीनभी होजाती हे परंतु रत्न ज्योंकात्यों होता हे॥ तेसें आत्माविस्वके भाव अभावविषे ज्योंकात्यों होता हे ॥ तिसका आभास जगत उपजता मिटता भासता हे ॥ उपजता हे तब उत्पत्ति भासती हे ॥ मिटता हे तब प्रले होजाती हे परंतु उभय आभास हे ॥ जेसें वायु फुरति हे तब भासती हे ठहरजाती हे तब नही भासती ॥ परंतु वायु एक हे ॥ तेसें आत्मा एकही हे ॥ फुरनेका नाम उत्पत्ति हे अफुरका नाम जगतकि प्रले हे ॥ सो सर्व किंचन रूप हे ॥ ॥ इतिश्री योगवासिष्टे निर्वाण प्रकरणे प्रश्नोत्तरद्वितीयो नाम द्विशताधिकपंचाशीतितमः सर्गः ॥ २८५ ॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे राजन तुझनें प्रागके दो पुरुषका प्रश्न कीया हे तिसका उत्तर सुण ॥ जो उसका शत्रु बण्या गया हे सो उसका पाप था अरु जो उसका मित्र बण्या गया था सो उसका पुन था ॥ प्राग तीर्थ धर्म क्षेत्र था ॥ हे राजन पापरूप वासनाके अनुसार तिसकों मृत्यु भासती हे अरु पुण्यरूपी जो मित्र हे सो पापरूपी शत्रुकों रोकताहे ॥ पुण्यरूपी ती र्थके बल कर्के रिदेसों अल्परूपी पाप बेगकरी भासता हे ॥ अरु जब उसकों मृत्यु आती हे तब आपकों मरता जानता हे जो में मूआहों॥ भाइ जन कुटुंबि रुदन करते हे॥ जब अपनी उर देखता हे तब जानता हे जो में तो मूआ नही ॥ जब मृतक सर्गकी उर देखता हे तब आपकों मूआ जानता हे ॥ भाइ जन रुदन करते हे ॥ इस प्रकार उसकों मरना भासता हे ॥ भाइ जन जलावणे चले हे ॥ अग्निविषे जलता देखता हे ॥ जो अग्निविषे इननें मुझकों पाया हे में जलता हों ॥ जब बहुरी पुण्यकि उर देखता हे तब जानता हे जो में मूआ नही जी ता हों ॥ जब बहुरी पापकी उर देखता हे तब जानता हे जो में मूआ हों ॥ मुझकों जमदूत ले चले हे ॥ यह परलोक हे ॥ इहां सुख दुःख भोगता हे जब बहुरी पुण्यकी उर देखे तब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाणे जो में मूआ नही जीताहों ॥ इह मेर भाइ जन बेठे हे इहां मेरा व्यवहार चेष्टा इस प्रकार उभय अवस्थाकों एक पुरुष देखता हे ॥ जेसें संकल्पपुर विषे उभय अवस्था देखे ॥ जेसें सुपननगरविषे उभय अवस्था देखे ॥ एकही पुरुष नाना प्रकारकी चेष्टा देखता हे ॥ कहूं जीता देखता हे कहूं मृतक देखता हे ॥ कहूं व्यवहार कहूं निर्व्यापार देखता हे ॥ इत्यादिक नाना प्रकारकी चेष्टा एकही पुरुषविषे होती हे ॥ तेसेंही एकही पुरुषकों पुण्यपापकी वासनाकरी जीणा मरणा भासता हे ॥ हे राजन इह संपूर्न जगत संकल्पमात्र हे ॥ जेसा संकल्प दृढ होता हे तेसा रूप होभासता हे ॥ परलोक जानणाभी अपणे वासनाके अनुसार भासता हे ॥ अरु जो कछु उसके निमित्त बांधव पुत्र देते हे सो पुत्र बांधवभी उसकी पुण्य पाप वासना करी स्थित भए हे ॥ जो कछु इसके निमित्त कर्ते हे ॥ तिनकरी इह सुख दुःख नरक स्वर्ग भोगता हे ॥ अवर कोउ बांधव पुत्र नही ॥ उसकी वासनाही नाना प्रकारके आकारकों धारिकरी स्थित भइ हे ॥ हे राजन् सहस्रही चंद्रमाका तुझनें प्रश्न कीया हे तिसका उत्तर सुण ॥ सहस्र इसी आकाशविषे स्थित होते हे ॥ अपणी अपणी वासना करि कला संयुक्त चंद्रमा हो विराजते हे ॥ परंतु एककों दुसरा नहि जानता परस्पर अज्ञात हे ॥ जो अंतवाहक दृष्टि करि देखे तिसकों भासते हे ॥ हे राजन् जो कोउ अेसी भावना करे जो में उसके मंडलकों प्राप्त होउं तो ततकालही जाय प्राप्त होता हे ॥ जेसें एकही मंदिरविषे बहुत मनुष सोएहे तिनकों अपने अपने सुपनेकी सृष्टि भासती हे सो अन्योन्य विलक्षण हे ॥ एककी सृष्टिकों दूसरा नही जानता तेसें एक आकाशविषे सहस्र चंद्रमा बणते हे ॥ जेसें इंद्र ब्राह्मणके दस पुत्र दस ब्रह्मा हो बेठे तेसें जिसकी तीव्र भावना कोउ करता हे सोइ होजाता हे ॥ जो कोउ भावना करे हम इसी मंदिरविषे सप्तदीपका राज करें तब हो जाताहे॥काहेतें जो अनुभवरूप कल्प वछ हे ॥ जेसी तीव्र भावना तिसविषे होतीहे॥ तेसी हो भासती हे ॥ वरके वसतें उस पुरुषकों सप्त द्वीपका राज प्राप्त भया ॥ अरु सरापके वसतें उसका जीव उसि मंदिरविषे रहा ॥ तिस मंदिरहिविषे द्वीपका राज करत भया ॥ जेसें सुपनेविषे राज करेहे तेसें अपने मंदिरविषे अपनी संवेदनही सृष्टिरूप होभासती हे ॥ इस प्रकार जो एक स्त्रीकी भावना करैं सहस्र पुरुष ध्यान लगाय बेठे हे ॥ जो हम तिसके भर्ता होवें सोभी होजाते हे ॥ हे राजन् उनकी जो तीव्र भावना हे उही स्त्रीका रूप धारि करि उनकों प्राप्त होवेगी ॥ उह जाणेगे जो उही स्त्री हमकों प्राप्त भइ हे ॥ इह जगत केवल संकल्पमात्र हे ॥ संकल्पतें इतर वस्तु कछु नही ॥ सब चिदाकाशरूप हे अपणे अनुभव करि प्रकाशता हे जेसें तिसविषे संकल्प फुरता हे तेसें हो भासता हे ॥ पृथ्वी जल तेज आदिक तत्व कोउ नही ॥ आत्मसत्ताही इस प्रकार स्थित हे सो परम शांत हे ॥ निराकार निर्विकार अद्वैत एक रूप हे ॥ राजोवाच ॥ हे मुनीश्वर जगतके आदि जो आत्मसत्ता थी सो किस आकाररूप देहविषे स्थित थी ॥ देह विना तो स्थित नहि होती ॥ जेसें आधार विना दीपक नही रहता आधार होता हे तब तिसविषे जागताहे तेसें आत्मसत्ता किसविषे स्थित थी ? ॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे राजन जेते कछु आकार तुझकों भासते हे जिनकों देखिकरी तुझनें प्रश्न उठायाहे सो हे नही ॥ ब्रह्मसत्ताही अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जिनभूतों करी देह बण्या भासता हे सो भूतभी मृग तृष्णाके जलवत हे ॥ जेसें जेवरीविषे सर्प भ्रममात्र हे ॥ जेसें सीपविषे रूपा जेसें आकाशविषे दूसरा चंद्रमा भ्रममात्र हे ॥ अत्यंत अभाव हे तेसें इह भूताकार ब्रह्मविषे भ्रमकरी भासते हे अत्यंताभाव हे कछु बणे नही ॥ ब्रह्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ अरु तुझनें पूछाथा जो ज्यों स्वयंभू अपणे आपतें उपजते हे तो अब क्यों नहि होता ॥ सो हे राजन केइ इसके सदृश पडे उ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्पत्ति होते हे ॥ अनेक जो सृष्टि हैं ॥ वास्तवतें कछु उपजीयां नेही कबहुं कछु नाना प्रकार भासता हैं ॥ परंतु नाना प्रकार नही भया ॥ जेसें सुपनविषे सदा तूं देखता हे जो अद्वैत अपणा आपही नाना रूप होभासता हे ॥ पर्वतउपर दोडता फिरता हे सो किसि शरीर करी दोडता हे ॥ अरु क्या रूप होता हे ॥ जेसें उह पर्वतभी आकाशरूप हे ॥ शरीरभी आकाश रूप होताहे ॥ भ्रमकरी पिंडाकार भासता हे ॥ तेसें इह जगतभी आकाशरूप हे ॥ भ्रमकरि पिंडाकार भासता हे ॥ हे राजन तूं अपणे स्वभाव स्थित होकरि देखु ॥ इह जगत सब तेरा अनुभव आकाश हे ॥ सुपनेका दृष्टांतभी में तेरे जतावणे निमित्त कहा हे ॥ सुपनाभी कछु हुआ नही सदा आत्मसत्ता अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जब तिसविषे आभास संवेदन फुरती हे तब उही जगतरूप होभासती हे ॥ जब आभास संकल्प मिटि जाता हे तब प्रलेकाल भासता हे ॥ वास्तव न कोउ उत्पत्ति होती हे न प्रले भइ हे ॥ ज्योंकीत्यों आत्मसत्ता स्थित हे ॥ जेसें एक निद्राके दो रूप होते हे एक सुपन दूसरा सुषुप्ति ॥ सो जाग्रतविषे दोनों आकाशमात्र होतीयां हे तेसें आभासकी दो संज्ञा होती हे ॥ एक जगत अरु दूसरी महाप्रले ॥ आत्मरूपी जाग्रतविषे दोनोंका अभाव होजाताहे ॥ जो हे राजन तूं स्वरूपविषे जागि करि देखु ॥ जेतो कछु कलना हे तिसकों त्याग करि देखु ॥ सब आत्मरूप हे अवर कछु नही ॥ हे रामजी इस प्रकार में राजाकों कहि करि उठि खडा हुआ ॥ उसनें भलि प्रकार प्रीत संयुक्त पूजन कीया जब पूजनकरि चूंका तब में जिस कार्य लियें आयाथा सो कार्य करि स्वर्गकों चला गया ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे राजा प्रश्नोत्तरसमाप्तिवर्ननं नाम द्विशताधिकं षडशीतितमःसर्गः ॥२८६॥ ॥७॥ ॥७॥ ॥३॥

॥ वसिष्ठोवाच ॥ हे रामजी इह जगत सब चिदाकाशरूप हे ॥ अवर दुतीय कछु बण्या नही ॥ रामोवाच ॥ हे भगवन तुम कहते हो सब चिदाकाश हे बण्या कछु नही ॥ इह तो सिद्ध साध विद्याधर लोकपाल देवता इत्यादिक लोक भासते हे ॥ लोक अरु लोकपाल बण्या क्यों नही कछु? ॥ वसिष्टोवाच ॥ हे रामजी इह जो सिद्ध साध विद्याधर देवता इनतें ले करी जो लोक अरु लोकपाल हे ॥ सो वस्तुतें कछु उपजे नही ब्रह्मसत्ताही अपणे आपविषे स्थित हे ॥ अरु इह जो प्रत्यछ भासते हे ॥ सुद्ध संकल्प करी रचे हूए हे ॥ परंतु वस्तुतें कछु बणे नही भ्रम करी इनकी सतता भासती हे जेसें मृगतृष्णाकि नदी, जेसें जेवरीविषे सर्प, जेसें सीपविषे रूपा, जेसें संकल्प नगर तेसें आत्माविषे इह जगत हे ॥ हे रामजी जेसें सुपनेविषे नाना प्रकारकि रचना भासती हे परंतु कछु हुआ नही तेसें इह जगत हे ॥ जो पुरुष इसकों देखि करी सत मानता हे ॥ उह सम्यक दर्शी नही ॥ जो आत्माकों देखता हे सो इ देखता हे ॥ सोइ सम्यक दर्शी हे ॥हे रामजी इह लोक अरु लोकपाल जगत सत्ताविषे ज्योंके त्यों हे ॥ जेसें स्थित हे तेसें ही हे अरु परमार्थतें कछु उपजे नही ॥ अनुभव सत्ताही संवेदन करी दृश्यरूप हो भासतीहे ॥ द्रष्टाही दृश्यरूप हो भासता हे परंतु स्वरूपतें इतर कछु न हुआ ॥ जेसें आकाश अरु शून्यताविषे भेद नही ॥ जेसें अग्नि उष्णताविषे भेद नही तेसें ब्रह्म अरु जगतविषे भेद नही ॥ हे रामजी एक अब अवर तुं वृत्तांत सुण ॥ सुपनेविषे जेसें अब हम हे तेसें एक आगेंभी चित्त प्रतिमा हुइथी पूर्व एक कल्पविषे तुम अरु हम हूए थे तुं मेरा सिष्य था अरु में तेरा गुरु था ॥ एक बनविषे तेनें मुझकों प्रश्न कीया ॥ सिष्योवाच ॥ हे भगवन एक मुझकों संसा हे सो नाश करो ॥ जो महा प्रलेविषे नाश क्या होताहे ॥ अरु अविनासी क्या रहता हे? ॥ गुरुरुवाच ॥ हें तात जेता कछु शेष विशेषरूप जगत हे सो सब नाश हो जाता हे ॥ जेसें सुपनेका नगर सुषुप्तिविषे लीन हो जाता हे ॥ तेसें सब जगत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लीन हो जाता हे ॥निर्विसेष ब्रह्मसत्ता सेष रहती हे ॥ अवर क्रिया काल कर्म सब नाश हो जाते हे॥आकाशभी नाश हो जाता हे ॥ पृथ्वी अप तेज वायु पहाड नदीयां इनतें करी जो जगत हे क्रिया काल द्रव्य संयुक्त सो सब नाश हो जाता हे ॥ ब्रह्मा विष्णु रुद्र इंद्र इह जो कार्यके कारण हे ॥ तिसका नामभी नही रहता संवेदन शक्ति जो हे चैतनका लक्षणरूप सो भी नही रहता ॥ अचेत चिन्मात्र एक चिदाकाश ही सेष रहता हे ॥ सिष्योवाच ॥ हे मुनीश्वर जो वस्तु सत होतीहे तिसका नाश नही होता ॥ अरु जो असत होतीहे सो आभासरूप हे ॥ इह जगत तो विद्यमान भासताहे सो महा प्रलेविषे कहां जावेगा ? ॥ गुरुरुवाच ॥ हे तात जो सत हे तिसका नाश कदाचित नही होता ॥ जो असत हे तिसका भाव नही ॥ सो जेता कछु जगत तुझकों भासता हे सो सब भममात्र हे ॥ इसविषे कोउ वस्तु सत नही ॥ भासता हे परंतु स्थित नही रहता ॥ जेसें मृगतृष्णाका जल स्थित नही जेसें दूसरा चंद्रमा भासता हे सो भममात्र हे जेसें आकाशविषे तरवरे भममात्र हे तेसें इह जगत जो भासता हे सो भममात्र हे ॥ जेसें सुपन नगर प्रत्यक्षभी भासता हे परंतु भममात्र हे ॥ तेसें इह जगत भमरूप जाण ॥ हे तात आत्मसत्ता सर्वत्र सर्वदा काल अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जेसें सुपनेंविषे जाग्रतका अभाव होताहे अरु जाग्रतविषे सुपनेका अभाव होताहे ॥ सो सृष्टि कहां जाती हे ॥ जेसें जाग्रतविषे सुपन सृष्टि अभाव हो जाति हे तेसें महा प्रलेविषे इसका अभाव हो जाता है ॥ सिष्योवाच ॥ हे भगवन इह जो भासता हे सो क्या हे ॥ अरु जो नही भासता सो क्या हे ॥ अरु इसका रूप क्या हे अरु चिदाकाशतें केसें हुआ हे ? ॥ गुरुरुवाच ॥ हे सिष्य जब शुद्ध चिदाकाशविषे किंचन संवेदन फुरती हे तब जगतरूप हो भासती हे ॥ तातें इसका रूपभी चिदाकासही हे ॥ चिदाकासतें इतर कछु नही ॥ सृष्टि अरु प्रले दोनों उसीका रूप हे ॥ जब संवेदन फुरती हे अरु जब संवेदन अफुर होतीहे तब प्रलेरूप हो भासती हे ॥ सो दोनों उसके रूप हे ॥ जेसें एकही वपुविषे दो सरूप हे ॥ दंत कर्कें शुक्ल लागता हे अरु केसकरि कृष्ण लागता हे ॥ तेसें आत्माविषे सर्ग अरु प्रले दो रूप होते हे ॥ सो दोनों आत्मरूप हे ॥ जेसें एकही निद्राकी दो अवस्था होती हे एक सुपन अरु दूसरी सुषुप्ति ॥ अरु जाग्रतविषे उभय नही॥ तेसें निद्रारूप संवेदनविषे सर्ग अरु प्रले भासती हे ॥ अरु जाग्रतरूप आत्माविषे दोनोंका अभाव हे ॥ हे तात जो कछु तुझकों भासता हे सो सब चिदाकाशरूप हे अवर कछु नही॥ ब्रह्मसत्ताही अपणे आपविषे स्थित हे ॥ जेसें सुपनेविषे अपणा अनुभवही जगतरूप होभासता हे तेसें आत्माविषे जगत भासता हे ॥ सिष्योवाच ॥ हे भगवन जो इसी प्रकार हे जो द्रष्टाही दृश्यरूप होभासता हे ॥ तो अवर जगत तो कछु न हुआ क्यों सर्व उही हे ॥ गुरुरुवाच ॥ हे तात इसी प्रकार हे अवर जगत वस्तु कछु नही ॥ चिदाकाश जगत रूप होभासता हे ॥ आत्मसत्ताही इस प्रकार भासती हे अवर कछु नही काहेतें जो सब उसीका किंचन हे ॥ सर्वविषे सर्वदा काल सर्व प्रकार सृष्टि होकरि फुरती हे ॥ अरु किसीविषे किसी काल किसी प्रकार कछु हुआ नही ॥ आत्मसत्ताही अपणे आपविषे स्थित हे॥ जो कछु जगत भासता हे सो उही रूप जाण ॥ जिसकों तूं सर्ग कहता हे जिसकों तूं प्रले कहता हे सो सब आत्मसत्ताके नाम हे॥उही सर्वविषे सर्वदा काल सर्व प्रकार स्थित हे ॥एकही जो परम देव हे सोइ घट पट रूप हुआ हे ॥ पर्वत रूप पटरूप जल तृण अग्नि पृथ्वी आकाश स्थावर जंगम आसत नासत शून्य अशून्य क्रिया काल मूर्ति अमूर्ति बंध मोक्ष इनते आदि लेकरी जेते कछु शब्द अर्थ करकें पदार्थ सिद्ध होते हे सो सर्व आत्मरूप हे ॥ सर्वविषे सर्वदाकाल सर्व प्रकार आत्माही हे ॥ अरु जिसविषे सर्वदा काल सर्व प्रकार नही सोभी आ

S22

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाही हे ॥ सदा ज्योंकात्योंही हे ॥ जेसें सुपनेविषे सब कछु भासता हे सो सब कछु आत्मसत्ताही हे ॥ अरु दूसरा कछु बण्या नही ॥ हे तात तृणही करता हे तृणही भोगता हे तृणही सर्वेश्वर हे ॥ घट करता हे घट भोगता हे घटही सर्वका इश्वर हे ॥ पट करता हे पट भोगता हे पटही परम इश्वर हे ॥ नर करता हे नर भोगता हे नरही सर्वका इश्वर हे ॥ इसी प्रकार एक एक वस्तुकों नाम कर्के जो वस्तु हे सो करता भोक्ता सर्व ब्रह्मरूप हे ॥ ब्रह्मातें लेकरि तृणपर्यंत जो कछु जगत भासता हे सो सर्व आत्मरूप हे ॥ क्षय अरु उदय अंतर वाहिर कर्ता भोक्ता सब इश्वर हे ॥ सो विज्ञानमात्र हे कर्ता भोक्ता उही हे ॥ अरु न करता हे न भोगता हे ॥ विधिमुख कर्केभी उही हे अरु निषेधभी उही हे शुद्ध दृष्टि कर्के सब चिदात्माही भासता हे ॥ अरु सर्व दुःखतें रहित हे ॥ अरु जिनकों आत्म दृष्टि नही प्राप्त भइ तिनकों भिन्न भिन्न जगत भासता हे सो केसा जगत हे ॥ सो अनुभवतें इतर कछु नही अेसें जाणिकरि अपणे स्वरूपविषे स्थित होहु ॥ हे रामजी इस प्रकार में पूर्व तुझकों कहा था ॥ परंतु तिसकरि तूं बोधकों न प्राप्त भया सो अभ्यासकी ऊनता कर्के उही संस्कार अब तुझकों आनि प्राप्त भया हे ॥ तिस कारणतें अब तूं जाग्या हे ॥ हे रामजी अब तूं अपणे स्वरूपविषे स्थित भया हे तातें कृतकृत हुआ हे ॥ अपणी राजलक्ष्मीकों भोगु ॥ अरु प्रजाकी पालना करु ॥ अरु अंतरतें आकाशवत निर्लेप रहु ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे पूर्वरामकथावर्णनं नाम द्विशताधिक षडशीतितमःसर्गः ॥ २८६ ॥ ॥३॥ ॥७॥ ॥७॥

॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे भारद्वाज जब वसिष्ठजी इस प्रकार रामजीकों कहि रहे तब आकाशविषे जो सिद्ध देवता स्थित थे सौ बडे फूलकी वर्षा करणे लागे ॥ मानों मेघ बरफकी वर्षा करते हे ॥ मानों आकाश कंपायमान हूआ हे ॥ तिसतें तारे गिरते हे ॥ जब पुष्पकी वर्षा करी चूके तब राजा दशरथ उठि षडा हूआ ॥ अर्घ पादकर्के पूजन कीया अरु हाथ जोडिकरि कहणे लागा ॥ राजादशरथोवाच ॥ बडा कल्याण हूआ ॥ बडा हर्ष हूआ ॥ हे मुनीश्वर तेरे प्रसाद करि हम आत्मपदकों प्राप्त हूए हे ॥ अबकृतकृत्य हूए हे अरु चित्तका विजोग हूआ हे ॥ तिसकरि दृश्य फूरणेकाभी अभाव भया हे ॥ हम अचेत चिन्मात्र हे ॥ परम पदकों प्राप्त भए हे ॥ सब संताप मिटि गए हे जो संसाररूपी अंधमार्गथा ॥ तिसतें थके हूए अब विश्रांतिकों प्राप्त भए हे ॥ अब में पहाडकी न्यांइ अचल हूआ हों ॥ सब आपदाकों तरि गया हों ॥ जो कछु जानणाथा सो जाणि रहा हों हे मुनीश्वर तुम बहूत जुगत दृष्टांत करकें जगाया हे शून्यके दृष्टांत, अरु सीपविषे रूपे, मृगतृष्णाकाजल ॥ जेवडीविषे सरप;आकाशविषे दूसरा चंद्रमा, अरु बेडी कर्के नदी किनारे चलते भासते हे जल विषे तरंग, स्वर्नविषे भूषण, वायुका फुरणा, गंधर्व नगर, संकल्प, पुर इनतें आदि लेकरि द्रष्टांत कहे हे ॥ तिनकर्के हम जाण्या हे ॥ जो आत्मसत्तातें इतर कछु नही तुमारी कृपातें अैसें जाण्या हे ॥ वाल्मीकोवाच ॥ जब इस प्रकार दशरथनें कहा तब रामजी उठ्या ॥ इस प्रकार हाथ जोड करि कहणें लागा ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर तुमारी कृपा करि मेरा मोह नष्ट भया हे ॥ अब में परम पदकों प्राप्त हूआ हों॥ किसीविषे मुझकों न राग हे न दोष हे ॥ परम शांतिकों प्राप्त भया हों ॥ न अब मेरे तांइ किसी करणे करि अर्थ हे न अकरणेविषे कछु अनर्थ हे ॥ मे परम शांतपदकों प्राप्त हूआ हों ॥ हे मुनीश्वर तेरे वचनकों में सिमरन कर्के आश्चर्यकों प्राप्त होता हों ॥ अरु हर्षित होता हों ॥ संदेह नष्ट होगए हे ॥ अब मुझकों अवर नहि भासता सर्व ब्रह्मही भासता हे ॥ लछमणोवाच ॥ हे भगवन में संतके बचन एकठे करता रहाथा ॥ अरु संपूर्न जो मेरे पुन्य थे ॥ सो अब एकठे भए थे सबका फल अब फल्या हे उदे हूआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे ॥ सर्व संसेते रहित परम पदकों प्राप्त भया हौं ॥ तुमारी कृपाके जो कोउ बचन हैं सो चंद्रमाकी किरणावत सीतल हे तिसतैंभि अधिक हे ॥ तिस करकै मैं परम शांति पाइ हे ॥ दुख संताप सर्व नष्ट भया हे ॥ शत्रुघ्नोवाच ॥ हे मुनीश्वर जरा अरु मृत्युका जो कोउ भय था ॥ सो तुमनें दूर कीया हे ॥ अपणे अमृतरूपी वचनोंका सुधा पान कराया हे ॥ अब हमारे संसे सब नष्ट भए हे ॥ हम आत्मापदकों प्राप्त भये हे ॥ हमारे जो कोउ चिरकालके पुन्य थे तिनका फल आज पाया हे ॥ विश्वामित्रोवाच ॥ हे मुनीश्वर सर्व तीर्थके स्नान किए तें अैसा पवित्र नही होता ॥ अवर कर्म करिभी अैसा पवित्र नही होता ॥ जेसें तुमारे बचनों करकै पवित्र हूए हे ॥ आज हमारे श्रवण पवित्र हूए हे ॥ नारदोवाच ॥ हे मुनीश्वर अैसा मोक्ष उपाय में देवताकेविषे श्रवण नहि किया ॥ न सिद्धके स्थानविषे सुण्या हे ॥ न ब्रह्माके मुखतें सुण्या हे ॥ हे मुनी तुमनें पूर्न उपदेश कीया हे ॥ इसके श्रवण कियेतें बहुरी संसा नही रहता ॥ दशरथोवाच ॥ हे मुनीश्वर आत्मज्ञान जेसी संपदा कोउ नही तातें तुम परम संपदा हमकोंदीई हे ॥ जिसके पाएतें बहुरी किसी पदार्थकी इछा नही रही ॥ अब तो हम अपणे सुभावविषे स्थित भए हे ॥ संपूर्न कर्म हमकों छांड गए हे ॥ अरु इह जो तुमारे बचन सुणे हे सो हमारे बहुत जन्मके जो कोउ पुन्यथे सो एकठे आनि हुए थे ॥ तिनका इह फल अब आनि लागा हे ॥ रामोवाच ॥ हे मुनीश्वर बडा हर्ष हूआ जो सर्व संपदाका अधिष्टान हे सो प्राप्त हूआ हे ॥ अरु सर्व आपदाका अंत भया हे अरु ज्ञानतें रहित जो अज्ञानी हे ॥ सो बडे अभागी हे ॥ जो आत्मपदकों त्यागकरि अनात्म पदार्थकी उर धावते हे ॥ सोभी जतन करि प्राप्त होते हे तिनतें विमुख होवे तब आत्मपद प्राप्त होवे ॥ सो आत्म पदकों पायकरि में शांतिवान हूआ हो ॥ हर्ष सोकतें रहित हूआ हों अचल पद पाया हे ॥ अरु अचित्त अविनासी हे ॥ सदा अपणे आपविषे स्थित हों ॥ तुमारी कृपाकरि आपकों अैसा जानत भया हों ॥ लछमणउवाच ॥ हे मुनीश्वर सहस्र सूर्य एकत्र उदे होवे तोभी रुदेके तमकों दूर नही करते ॥ सो तम तुमनें दूर किया हे अरु सहस्र चंद्रमा एकठे उदे होवे तो अंतरकी तपतकों निवृत्त नही करि सकते सो तुमनें संपूर्न तपत निवृत्त करी हे ॥ हम निःसंताप पदकों प्राप्त भए हे ॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे साध जब इस प्रकार सब कहि रहे ॥ तब वसिष्ठजी कहत भए ॥ हे रामजी इस मोछ उपाय कथाकों सुणिकरि जेते कछू ब्राह्मण हे तिनकों यथा जोग पूजन करहु अरु दान करहू ॥ ॥ जो इतर जीव हे सोभि जथा जोग जथा सक्त पूजन करते हे ॥ तुम तो राजा हो ॥ जब इस प्रकार वसिष्ठजीनें कहा तब राजा दशरथने उठकरि दश सहस्र ब्राह्मण मथुरावासि विद्यावानकों भोजन कराया ॥ दछणा वस्त्र भूषण घोडे गिरांव आदिक दीये ॥ जथा जोग पूजन किया बडा उत्साह हुआ ॥ अंगनानृत्य करन लागी ॥ नगारे सरणाइ बाजंत्र बाजे हे ॥ चक्रवर्ति राजा होकरि उत्साह करत भया ॥ अबलग त्रिलोकका राजा हे ॥ इस प्रकार सप्त दिन पर्यंत ब्राह्मण अतिथि निर्धन सर्वकों द्रव्य करि पूजन कीया ॥ अंन अरु वस्त्र आदिक करि सबकों प्रसन्न कीया ॥ इतिश्री योगवासिष्ठे निर्वाणप्रकरणे उत्साहवर्णनं नाम द्विशताधिकसप्ताशीतितमः सर्गः ॥ २८७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥७॥

॥ वाल्मीकोवाच ॥ हे भारद्वाज इस प्रकार वसिष्ट मुनिके बचन सुणि करि रघुवंसि कृतकृत हुए ॥ जेसें रामजी सुणिकरि संसेतें रहित जीवन्मुक्त हुए विचरे हे तेसें तुमभी विचरो ॥ यह मोक्षउपाय ऐसा हे जो अज्ञानी श्रवण करे सोभी परम पदकों प्राप्त होवे तुमारी क्या बात हे ॥ तुम तो आगेंभी बुद्धिमान हो अरु जिस प्रकार मुझकों ब्रह्माजीनें कहा था ॥ सो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेंनें तुमकों सुणायाहे॥ जेसें रामजी आदिक कुमार अरु दशरथ आदिक राजे जीवन्मुक्त होकरी विचरे हे तेसें तुमभी विचरो॥ उनविषे मोहभी दृष्ट आया हे परंतु स्वरूपतें चलायमान नही भये तेसेंही विचरो॥ अरु ज्ञान जेसा सुख अवर कोउ नही अरु अज्ञान जेसा दुःख कोउ नही॥ इसतें अधिक केसें कहीये॥ इह जो मोछ उपाय में तुझकों कहा हे सो परम पावन हे अरु संसार समुद्रतें पार करणेहारा हे॥ दुःखरूपी अंधकारकों नाश कर्ता सूर्यरूप हे॥ सुखरूपी कमलकी खाणकाताल हे॥ जो पुरुष इसका वारंवार विचार करे सो तो महा मूर्ख होवे तोभी शांतपदकों प्राप्त होवे॥ जो कोउ इस मोक्ष उपायकों पढेगा, कथा करेगा, अरु सुणेगा, अरु लिखेगा, अरु लिखिकरि पुस्तक देवेगा, जो रिदेविषे कामना होवेगी, तो ब्रह्मलोककों प्राप्त होवेगा॥ सो राजसुयजग्यके फलकों पावेगा॥ अरु बहुरी विचार करि ज्ञानकों पावेगा अरु मुक्त होवेगा॥ हे अंग इह जो मोक्ष उपाय हे सो वडा शास्त्र हे॥ इस विषे वडी कथा हे नाना प्रकारकी जुगता हे॥ तिन कथा अरु जुगत कर्कें वशिष्ठजीनें रामजीकों जगाया हे॥ सो में तुझकों सुणाया हे अपणे उपदेश करि तिसकों जीवन्मुक्त कीया॥ अरु कहत भया जो तुम राज लछमी भोगहू सोइ में तुझकों कहता हों जो जीवन्मुक्त होकरि अपणे तप कर्मविषे सावधान होवहु॥ अरु निश्चे आत्मसत्ताविषे रखणा॥ इस उपदेश कर्कें रघुवंसी कृतकृत भए हे॥ सो में तुझकों ज्योंकात्यों कहा हे॥ इस निश्चेकों धारिकरि कृतकृत होहु॥ इतनें इतिहास कथा हे तिनके भिन्न भिन्न नाम सुणहु॥ वैराग प्रकरण विषे संपूरन रामजीका प्रश्न हे॥१॥ अरु मुमुक्षु प्रकरणविषे शुक निर्वाणही कहा हे॥ २॥ अरु उत्पत्ति प्रकरणविषे इह अष्टआख्यान कहे हे॥ एक आकाशजका १ दुसरा लीलाका २ तीसरा सुचीका ३ चतुर्थ इंद्रब्राह्मणके पुत्रका ४ पंचम कृत्रिम इंद्र अरु अहल्याका ५ षष्टम चितोपाख्यान ६ सप्तम वाल्मीककी कथा ७ अष्टम सांवरका आख्यान॥८॥ स्थिति प्रकरणविषे चार आख्यान कहे हे॥ एक भृगके सुतका १ दुसरा दाम व्याल कटका २ तीसरा भीम भास दटका ३ चतुर्थ दासूरका॥ ४॥ उपशम प्रकरणविषे एकादश आख्यान कहे हे॥ एक जनककी सिद्धगीता १ दूसरा जो हे पुण्यपावनका २ तीसरा बलकों विज्ञानकी प्राप्तीका वृत्तांत ३ चतुर्थ प्रल्हादविश्रांति ४ पंचम गाधीका वृत्तांत ५ षष्टम उद्दालक निर्वाण ६ सप्तम सुरग निश्चे ७ अष्टम परघ निश्चे ८ नवम भासका ९ दसम विलाससंवादका १० एकादश वीतहका॥ ११॥ निर्वाणप्रकरणविषे सप्तविंशति आख्यान कहेहे॥भुशंडवशिष्टका १ महेशवशिष्टका २ सिलाकोश ३ उपदेश अर्जुनका ४ सुपनसत रुद्रका ५ वैतालका ६ अरु भागिरथका ७ अरु गंगाअवतारका ८ सिखरध्वजका ९ बृहस्पति कच प्रबोध १० मिथ्या पुरुषका ११ भृंगीगणका १२ इक्ष्वाकु निर्वाणका १३ मृगव्याधि दृष्टांतका १४ वलदहस्पतिका १५ मंकीनिर्वाणका १६ विद्याधरका १७ हरणो पाख्यान १८ आख्यानो पाख्यान १९ विपश्चितका २० सिवका २१ सिलाका २२ इंद्र ब्राह्मणके पुत्रका २३ कुंददंतका २४ महाप्रश्न उत्तरवाक्य २५ सिष्यगुरुका २६ महोत्सवग्रंथ प्रशंसाफल २७ चतुष्टयप्रकर्णविषे पंचास आख्यान वर्नन भए॥

इतिश्रीयोगवासिष्ठे महारामायणे वसिष्ठरामचंद्र संवादे निर्वाणप्रकरणे मोक्षोपाय वर्णनं नाम द्विशताधिकाष्टाशीतितमः सर्गः॥ २८८॥ ॥ ७ ॥

॥ समाप्तोयं श्रीयोगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणे उत्तरार्द्धं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ समाप्तोऽयं हिंदुस्थानी भाषायां श्रीयोगवासिष्ठः ॥

अनुक्रमणिका.

सर्ग	सर्गनाम	पत्र	सर्ग	सर्गनाम	पत्र	सर्ग	सर्गनाम	पत्र	सर्ग	सर्गनाम	पत्र	सर्ग	सर्गनाम	पत्र
१	दिवसरात्री व्यापार व०	२	१२	ज्ञानज्ञेयविचार	११	२३	भुषंडोपाख्यान समाप्ति	१८	३४	देवनिर्णय	२९	४५	शिलाकोशोपदेश	३६
२	विश्रामदृढीकरण	२	१३	भुषंडोपाख्याने सुमेरु०	११	२४	परमार्थ योगोपदेश	१८	३५	महेश्वरवर्णन	३०	४६	सत्ताउपदेश	३७
३	ब्रह्मैकप्रतिपादन	३	१४	भुषंडी दर्शन	११	२५	देहसत्ताविचार	२०	३६	नितीनृत्य	३०	४७	ब्रह्मैक्यता प्रतिपादन	३७
४	चित्तभावाभाव वर्णन	४	१५	भुषंडी समागम	१२	२६	वसिष्ठाश्रमवर्णन	२२	३७	अंतर्बाह्यपूजा	३१	४८	स्मृतिविचार योग	३८
५	राघव विश्रांति	४	१६	भुषंडोपाख्याने अस्ता०	१२	२७	रुद्रवसिष्ठसमागम	२२	३८	देवअर्चनाविधान	३१	४९	संवेदन विचार	३९
६	अज्ञानमहात्म्य	५	१७	संतमहात्म्य	१३	२८	इश्वरोपाख्याने जग०	२३	३९	देवपूजाविचार	३२	५०	यथार्थोपदेश	४०
७	अविद्यालता	६	१८	भुषंडोपाख्याने जिव०	१४	२९	वसिष्ठेश्वरसंवादे चैत०	२४	४०	जगन्मिथ्यात्वप्रतिपा०	३३	५१	नारायणावतार	४१
८	अविद्या निराकरण	७	१९	चिरअतीत वर्णन	१५	३०	इश्वरोपाख्याने मन०	२६	४१	परमार्थविचार	३४	५२	अर्जुनोपदेश	४२
९	अविद्या चिकित्सा	७	२०	भुषंडोपाख्याने संक०	१५	३१	देहपातविचार	२७	४२	विश्रां तिआगमन	३४	५३	अर्जुनोपदेशे सर्व ब्र०	४३
१०	जिवन्मुक्ति निश्चयोप०	८	२१	भुषंडोपाख्याने प्राण०	१६	३२	दैवप्रतिपादन	२८	४३	चित्तसत्ता सूचन	३५	५४	जीवनिर्णय	४४
११	जिवन्मुक्ति निश्चयव०	१०	२२	भुषंडोपाख्याने चिरं०	१७	३३	परमेश्वरोपदेश	२९	४४	बिलोपाख्यान	३६	५५	श्रीकृष्ण संवादे अर्जु०	४५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्ग	सर्गनाम	पत्र	सर्ग	सर्गनाम	पत्र	सर्ग	सर्गनाम	पत्र	सर्ग	सर्गनाम	पत्र	सर्ग	सर्गनाम	पत्र
५६	श्रीकृष्णार्जुनसंवादे०	४६	७३	चित्तत्यागं वर्णन	६५	९०	मिथ्या पुरुषोपाख्या०	७९	१०७	अविद्यानाशरूप०	९४	१२४	पंचम भूमिका	१०६
५७	प्रत्यक आत्मबोध	४६	७४	राजाविश्रांति वर्णन	६७	९१	परमार्थ योगोपदेश	८०	१०८	जीवत्वाभाव प्रतिपा०	९५	१२५	षष्ठः भूमिका उपदेश	१०७
५८	विभूतियोगोपदेश	४७	७५	शिखरध्वज विश्रांति	६८	९२	महाकर्त्तादि उपदेश	८१	१०९	सारप्रबोधन	९५	१२६	सप्तम भूमिका लक्षण०	१०८
५९	जागृत्स्वप्न विचार	४८	७६	शिखरध्वज बोधन	६८	९३	कलना निषेध	८२	११०	ब्रह्मैकत्वप्रतिपादन	९६	१२७	संसरणा अभाव	१०८
६०	ब्रह्मैक्यप्रतिपादन	४८	७७	शिखरध्वज प्रथमबोध	६९	९४	संतलक्षण महात्म्य	८२	१११	निर्वाण वर्णन	९७	१२८	इच्छाचिकित्सो उपदेश	१०९
६१	वैतालप्रश्नोक्ति	५२	७८	शिखरध्वज बोध	७०	९५	इक्ष्वाकुप्रत्यक्षो पदेश	८३	११२	तृतीयभूमिकालक्षण०	९८	१२९	कर्मबीजदाह उपदेश	११०
६२	राजा वैतालसंवादे वै०	५२	७९	शिखरध्वज बोध	७०	९६	राजाइक्ष्वाकु प्रत्यक्ष०	८४	११३	तृतीयभूमिकालक्षण०	९९	१३०	अहंकार नाशविचार	१११
६३	भगीरथउपदेश	५३	८०	परमार्थो पदेश	७१	९७	मनुइक्ष्वाकुपाख्याने०	८६	११४	विश्ववासनारूप वर्णन	१००	१३१	विद्याधर वैराग	११२
६४	निर्वाण वर्णन	५४	८१	शिखरध्वज बोध	७१	९८	परम निर्वाण वर्णन	८७	११५	सृष्टि निर्वाण एकता०	१००	१३२	संसारेच्छ	११३
६५	भगीरथोपाख्यान स०	५४	८२	शिखरध्वज स्त्री प्राप्ति	७३	९९	मोक्षरूप वर्णन	८८	११६	विश्वाकाश एकताप्र०	१०१	१३३	संसाराडंबरोपदेश	११४
६६	शिखरध्वज चूडाला०	५४	८३	विवाह लीला	७५	१००	परमार्थो पदेश	८८	११७	विश्वविलय	१०१	१३४	चित्त चमत्कार	११४
६७	चूडालाप्रबोध	५५	८४	माया शक्रागमन	७६	१०१	समाधान वर्णन	८९	११८	विश्वपरिणाम	१०२	१३५	सर्गोपसर्गोपदेश	११४
६८	अग्निसोमविचार योग	५६	८५	माया पिंजर	७६	१०२	मनुइक्ष्वाकुसंवाद स०	९०	११९	जगतअभावप्र०	१०३	१३६	यथाभूतार्थ भावरूप०	११५
६९	चिंतामणि वृत्तांत व०	५९	८६	चूडाला प्राकट्य	७७	१०३	ज्ञानीलक्षणविचार	९१	१२०	पिंडनिर्णय	१०४	१३७	इंद्रोपाख्याने त्रिसरेणु०	११५
७०	हस्ति उपाख्यान	६३	८७	शिखरध्वव चूडाला०	७८	१०४	कर्माकर्म विचार	९१	१२१	वृहस्पति बळसंवाद	१०५	१३८	संकल्प असंकल्पएकता	११६
७१	हस्ति वृत्तांत	६४	८८	वृहस्पति बोधनं नाम	७८	१०५	तुरीयापद विचार	९२	१२२	वृहस्पति बळ संदाद	१०५	१३९	भूषंड विद्याधरोपा०	११७
७२	शिखरध्वज सर्व त्याग	६५	८९	मिथ्या पुरुषाकाश र०	७९	१०६	काष्टमौन वृत्तांत	९३	१२३	चित्त अभाव प्र०	१०६	१४०	अहंकारअस्त योगो०	११७

॥१२१॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्ग	सर्गनाम	पत्र	सर्ग	सर्गनाम	पत्र	सर्ग	सर्गनाम	पत्र	सर्ग	सर्गनाम	पत्र	सर्ग	सर्गनाम	पत्र
१४१	विराटआत्मा वर्णन	११८	१५८	परमनिर्वाण योग	१३४	१७३	द्वैतएकता प्रतिपादन	७	२९०	विराटशरीरवर्णन	२२	२०७	जीवन्मुक्ति व्यवहार	३८
१४२	ज्ञानबंधयोग	११९	१५९	वसिष्ठगीता उपदेश	१३५	१७४	परमशांति निर्वाण	८	२९१	जगतब्रह्माप्रलय	२३	२०८	परमार्थरूप वर्णन	३९
१४३	सुखेन योगोपदेश	१२०	१६०	संसारोपदेश	१३६	१७५	आकाशकुटी वसिष्ठ०	८	२९२	ब्रह्मजलप्रलय वर्णन	२३	२०९	नास्तिकवाद निराकरण	२०
१४४	मंकीरिष परम वैराग०	१२२	१६१	जगत उपसमयोगो०	१३७	१७६	विदितवेद अहंकार	९	२९३	वासनाक्षय प्रति०	२३	२१०	परम उपदेश	२१
१४५	मंकीरिष वैरागयोग	१२३	१६२	पुनःनिर्वाणोपदेश	१३७	१७७	ब्रह्मजगतएकता प्रति०	९	२९४	जगतमिथ्यात्व प्रतिपा०	२४	२११	चतन्याकाश परगज्ञान	२१
१४६	मंकीरिष प्रबोधनं	१२३	१६३	ब्रह्मैकता प्रतिपादन	१३८	१७८	जगतजाल समूह	१०	२९५	देवीरुद्रोपाख्यान	२५	२१२	सर्वपदार्था भाव	४४
१४७	मंकीरिष निर्वाण प्राप्ति	१२४	१६४	हरिणोपाख्याने व०	१३८	१७९	जगतजाल समूह	११	२९६	अंतरोपाख्यान	२६	२१३	जागृत्त्वमै कता प्र०	४६
१४८	सुखेन योगोपदेश	१२५	१६५	मनमृगोपाख्यान यो०	१४०	१८०	बोधजगतएकता प्रति०	१२	२९७	पुरुष प्रकृति विचार	२६	२१४	जगत निर्वाणप्र०	४७
१४९	निरास योगोपदेश	१२६		उत्तरार्धस्य अनु०		१८१	जगतएकता प्रतिपाद०	१३	२९८	अनंतजगत वर्णन	२९	२१५	कारणकार्या भाव	४८
१५०	भावनाप्रति पादनो०	१२६	१६५	स्वभावसत्ता योगोप०	१	१८२	विद्याधरीविशोक व०	१४	२९९	अंतरोपाख्याने पृथ्वी०	३०	२१६	विश्वाभाव प्रतिपा०	४८
१५१	हंस सन्यासयोग	१२८	१६६	मोक्षोपदेश	२	१८३	विद्याधरी वेग	१६	२००	अंतरोपाख्यानजलरूप	३१	२१७	विपश्चितसमुद्र प्राप्ति	४९
१५२	निर्वाणयुक्ति उपदेश	१२८	१६७	विवेकदूत वर्णन	२	१८४	विद्याधरी अभ्यास	१६	२०२	अंतरोपाख्याने चिद०	३२	२१८	जीवन्मुक्ति लक्षण	५०
१५३	शांतिस्थिति योगोप०	१२९	१६८	सर्वसत्ता उपदेश	३	१८५	प्रत्यक्षप्रमाण जगतनि०	१८	२०२	ब्रह्मजगतएकता प्र०	३२	२१९	विपश्चितोपाख्याने ब्र०	५१
१५४	परमार्थ योगोपदेश	१३०	१६९	सप्तप्रकारजीवसृष्टि०	४	१८६	शिलांतर वसिष्ठब्रह्मता०	१९	२०३	आकाशकुटी सिद्ध०	३३	२२०	विपश्चितशरीरप्राप्ति	५५
१५५	परमार्थ योगोपदेश	१३१	१७०	सर्वशांति उपदेश	५	१८७	अन्यजगत प्रलय वर्ण०	२०	२०४	अंतरोपाख्यान	३४	२२१	वटधानोपाख्यान	५६
१५६	इच्छानिषेध योगोप०	१३२	१७१	ब्रह्मस्वरूप पतिपादन	६	१८८	निर्वाण वर्णन	२१	२०५	अंतरोपाख्यान वर्णन०	३६	२२२	विपश्चितकथावर्णन	५७
१५७	जगत उपदेश	१३३	१७२	निर्वाण वर्णन	७	१८९	विराटआत्मा वर्णन	२२	२०६	जीवन्मुक्त संज्ञा	३७	२२३	महाक्षय वृत्तांत	५८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्ग	सर्गनाम	पत्र	सर्ग	सर्गनाम	पत्र	सर्ग	सर्गनाम	पत्र	सर्ग	सर्गनाम	पत्र	सर्ग	सर्गनाम	पत्र
२२४	स्वयंमहात्म्य	५८	२३७	रात्रसंवाद	७२	२५०	जागृत्स्वप्न सुषुप्त्य भाव	८३	२६३	ब्रह्मगीतागौरीबाग	९५	२७६	चिंतामणिप्राप्ति	१०८
२२५	मच्छरव्याधि	५९	२३८	रात्रप्रबोध	७३	२५१	सालभजनकोपदेश	८४	२६४	ब्राह्मणकथा	९७	२७७	गुरुशास्त्रोपमा	१०९
२२६	हृदयांतर स्वप्नमहाप्र०	६०	२३९	यथार्थोपदेश	७३	२५२	जीवन्मुक्त लक्षण	८६	२६५	ब्राह्मण्यभविष्यतराज्य	९७	२७८	विश्राम प्रकटी करण	११०
२२७	हृदयांतर प्रलयाग्निदाह	६१	२४०	भविष्यतकथा	७३	२५३	जीवन्मुक्त बाह्यलक्षण	८७	२६६	कुंददंतोपदेश	९९	२७९	निर्वाण वर्णन	१११
२२८	कर्मनिर्णय	६३	२४१	सिद्धनिर्वाण	७४	२५४	द्वैतएकता अभाव	८७	२६७	कुंददंत विश्रामप्राप्ति	१००	२८०	चिदाकाश जगतैक०	११३
२२९	महासवोपाख्याने नि०	६४	२४२	विपश्चित देशांतरभ्रम	७६	२५५	स्मृति अभावजगतप०	८८	२६८	सर्वब्रह्म प्रतिपादन	१००	२८१	जगदाभाव	११४
२३०	कार्या कारणाकारण०	६६	२४३	स्वर्गनरक प्रारब्ध	७७	२५६	ब्रह्मजगत एकताप्र०	८९	२६९	जीवसंसरण	१०३	२८२	राजाप्रश्न व०	११५
२३१	जागृत्स्वप्नसुषुप्ति वि०	६७	२४४	निर्वाण उपदेश	७९	२५७	ब्रह्मगीतापरम निर्वाण	९०	२७०	सर्वब्रह्म प्रतिपादन	१०४	२८३	प्रश्नोत्तरव०	११६
२३२	जागृत्सुपन सुषुप्ति	६७	२४५	अविद्यानाशोपदेश	७९	२५८	परमार्थ गीता	९१	२७१	विद्यावादबोधोपदेश	१०४	२८४	प्रश्नोत्तर व०	११६
२३३	सुषुप्तिवर्णन	६८	२४६	इंद्रियजयव०	८०	२५९	ब्रह्मांडोपाख्यान	९२	२७२	रामविश्रांति व०	१०७	२८५	प्रश्नोत्तर समाप्ति०	११७
२३४	सुषुप्ति वर्णन	६९	२४७	ब्रह्मजगत एकताप्र	८१	२६०	ब्रह्मगीता व०	९२	२७३	रामविश्रांति व०	१०७	२८६	पूर्वराम कथाव०	११८
२३५	स्वप्न निर्णय	६९	२४८	जागृत्स्वप्न प्रति०	८२	२६१	इंद्राख्यान	९३	२७४	रामविश्रांति व०	१०८	२८७	उत्साह वर्णन	११९
२३६	सुपन विचार	७०	२४९	शिलोपाख्यान समाप्ति	८२	२६२	सर्वब्रह्म प्रतिपादन	९५	२७५	रामविश्रांति व०	१०८	२८८	ग्रंथप्रशंसा प्रकरण०	११९

॥ समाप्तोऽयं निर्वाण प्रकरण स्यपूर्वार्द्धो त्तरार्द्धस्या नुक्रमणिका.॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रस्तावना

यह योगवासिष्ट नामका ग्रंथ पहिला संस्कृत भाषाकी कवितामें वाल्मीक ऋषिनें बनाया हे, सो ज्ञान मार्गमें बडा सुंदर हे तिसमें श्रीरामचंद्रजीकों वसिष्टमुनीनें ज्ञानका उपदेश किया हे. तिसके श्लोक ३२००० हे तिसमें वैराग १मुमुक्षु २उत्पत्ति ३स्थिति ४उपशम ५ओर निर्वान एसे ६ प्रकरन हे. सो पंजाबमें १ पटियालागामका राजा साहीबसंग १०० वर्षके अगाडी था. इसकी दो बहीन विधवाथी इनोनें १निरंजनी साधु रामप्रसाद था तिसकों कहा जो हमकों योगवासिष्ठकी कथा सुनाओ तो अच्छी बात होय तब वानें कथा सुनाइ इतनेमें वा दो बाइननें दो लखिया गुप्त बेठाये थे सो कथा प्रमान लिख जाते थे एसें १ पुस्तक लिखा गया तिसमेंतें फिर लिखात लिखात सब हिंदुस्थानमें ग्रंथ प्रसिद्ध हो गया हे य ह बात मेंनें सुनी लिखी हे सो सच्ची दिखती हे. क्यों जो यह ग्रंथका तरजुमा नही हे ओर कथाकी ढब हे. ओर यह साधु पंजाबका हे तिसिनें हिंदी बोलीमें कथा कही हे तिसमें कितनेक लवज पंजाबी हे; सो दिखते हे ओर यह ग्रंथ लिखात लिखात बहोत अशुद्ध हो गयाथा सो सब मेरे पुत्रनें शुद्ध कियाहे,ओर भाषा वाक्य तात्पर्य साधुनें कहाहे सोइ रखाहे कुछ फिराया नही हे. क्यों जो इसमें मूळ ग्रंथका आधार चैयें ओर तेसें करत बडे ग्रंथमें तो बर्षन बीतजाय ओर यह तो जाहीर नामाकी मुदतमें छपायकें दिया चैयें ओर लोगन कों तो यही बडा सुंदर दिखताहे फिर बहोत श्रम करनेका फल क्या? ओर इसग्रंथकी लिखि हुइ पोथी १ मेंनें बहोत रुपयेकी मोल लीहे इसिमें एक पंक्तिमें चारपांच ठिकानें छेक ना हुवाहे सो जाननें वाला जानेगा.

इस ग्रंथके पहिले वैराग अरु मुमुक्षु दो प्रकरन खोजा जेराज भाइ मनजी भाइ जो बडा ज्ञाननिष्ट हे तिसकी मरजीसें, डाक्टर धीरजराम दलपतरामनें गुजराती लीपीमें मेरेइ पास शुद्ध करवाकें छपाये हे, उससेंभी यह सुंदर ग्रंथका लोगोंकों थोडाबहुत रस लगाहे.

३ ओर यह ग्रंथ छापनेके लिये मोकों अछे अछे बहोत आदमीनें कहा सो सबकुं मेंनें कहा जो इस छपानेमें रुपयेकी बडी रकम चैयें तिसकी खातरी होय जब छपे. फेर ति स कारनमें भले भले आदमीके पाश में गया ओर मदत मांगी तब वामें दो प्रकारकी मदत मिली हे सो एकतो इनाम दाखल ओर दुसरी पुस्तक बदल तिसमें इनाम दाखल रुपैया १२०० दिये इनके नाम.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३०० शेठ मथुरादास लवजी भाटिये भीमांनी शेठके घरके
५०० शेठ द्वारिकादास विसनजी कच्छी भाटियेके शेठ शेठ जीवराज बालुका नाति
५०० ओझा गवरी शंकरभाइ उदेशंकर नागर बंमन श्री भावनगरका दिवान

और पुस्तक लेने बदल जिस शेठोनें मदत करी हे तिसके नाम.

३० शेठ हंसराज करमशी लुहांनाका शेठ बडा उदार
२५ शेठ जेराजभाइ मनजीभाइ खोजा ज्ञाननिष्ठ
२० नगरशेठ मंगळदास नथुभाइ बनिया जस्टिस आफ्धी पीस:
१५ दिवान गवरीभाइ शंकर उदेशंकर नागर बंमन श्रीभावनगरका दिवान
१५ शेठ करसनदास माधवदास नागर बनियाका शेठ जस्टिस आफ्धी पीस
१५ शेठ शरीफ शालेमहमद खोजा बडा नम्र
१० शेठ लखमीदास खीमजी हालाइ भाटियाके शेठ जस्टीस आफ्धी पीस
१० शेठ गोकलदास तेजपाल कछी भाटियाके शेठ जस्टीस आफ्धी पीस
१० शेठ भगवानदास परसोतमदास लाड बनियाका शेठ बडानम्र जस्टीस आफ्धी पीस
१० शेठ प्रेमचंद रायचंद बनिया बडा धनवाला जस्टिस आफ्धी पीस
१० राजेश्री झवेरीलाल उमयाशंकर मुंबइका नागर ब्योपारी बडा नम्र
६ डाक्तर भाऊदाजी बडा उदार जस्टिस आफ्धी पीस
५ डाक्तर धीरजराम दलपतराम वाल्मीक कायस्थ जस्टीस आफ्धीपीस
६ शेठ नारानजी त्रीकमजी बनिया
५ दिवान भगवानलाल मदनजी श्री लींबडीका दिवान

इस सबननें इसि रीतसों मदत कीहे तिस पाछें ग्रंथ छपाना शुरु हुवा एसे भले आदमी मिले तबेंइ मेरे जेसेसों एसा काम बने इस वास्तें इन भले गृहस्थोंका मेरे उपर तो उपकार भयाइ हे परंतु जो जो इस ग्रंथके रसिक जनहे सो सबनपर भया हे एसें जानना.

कवि हिराचंद कानजी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोहा

कवि हीराचंद कानजी, ताको सुत हरिदास ॥ तानें शोध यथामती, कीनो ग्रंथ प्रकाश ॥ १ ॥
संवत उन्निसो उपर, भये वर्ष बाइस ॥ अगहनमें पूरनभयो, कृपाकरी जगदीश ॥ २ ॥
मुंबइमें कृष्णाजि सुत, गणपत जाको नाम ॥ कानोबा तत्पुत्र पुनि, ताको आत्माराम ॥ ३ ॥
ताके मुद्रायंत्रमें, भयो ग्रंथ अभिराम ॥ बांचहिं सुनहिं ताहिकों, पूरन होहिं काम॥ ४ ॥

जाहेरखबर

जिनोंकों यह पुस्तक लेनेकी दरकार होवे तिनोनें रुपैया ३० तीस भेजके मंगाय लेना.
१ मुंबइ बाहरकोटमें मंडी बंदरपें शेठ हंसराज करमशीकी दुकानके कीलीदार शिवजी देवचंदके पाशसों ओर पांजरापोळके पास कुंभार टुकडीमें दुजे नंबरके घरमें मेरे सांसों
२ ओर तीन महिना पीछें में राजकोट जानेका हो तहां मेरे घरसों लेना.
३ ओर जो कोइ दशसों जादा ग्रंथ लेगा तिनसों दर ग्रंथका ३ रुपैयाके हिसाबसों कमती लीया जायगा.

संवत १९२२ के मार्गशीर्ष शुदि ५ इसवी सन १८६५ नवंबर क० ही० का०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ इति श्रीयोगवासिष्ठे निर्वाण प्रकरणं षष्ठं समाप्तं ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri